अथ - आतम पुराण

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library has been created with the approval and personal blessings of Sri Satguru Uday Singh Ji. You can easily access the wealth of teaching, learning and research materials on Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library online, which until now have only been available to a handful of scholars and researchers.

This new Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library allows school children, students, researchers and armchair scholars anywhere in the world at any time to study and learn from the original documents.

As well as opening access to our historical pieces of world heritage, digitisation ensures the long-term protection and conservation of these fragile treasures. This is a significant milestone in the development of the Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library, but it is just a first step on a long road.

Please join with us in this remarkable transformation of the Library. You can share your books, magazines, pamphlets, photos, music, videos etc. This will ensure they are preserved for generations to come. Each item will be fully acknowledged.

To continue this work, we need your help

Your generous contribution and help will ensure that an ever-growing number of the Library's collections are conserved and digitised, and are made available to students, scholars, and readers the world over. The Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library collection is growing day by day and some rare and priceless books/magazines/manuscripts and other items have already been digitised.

We would like to thank all the contributors who have kindly provided items from their collections. This is appreciated by us now and many readers in the future.

Contact Details

For further information - please contact

Email: NamdhariElibrary@gmail.com

॥ इति आत्मपुराणं समाप्तम् ॥

राजव

तं

नेः २ अन्य

दश

त्रा करते हुए का

जी ओर । गर जो अपने अनेक

साधन सम्पन्न औ तिमान् थे स्वा

श्रीमान्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्री ामीचिद्घनानन्दगिरिजीका जीवनचरित्र।

श्रीमन्निखिलगुणगणालंकृतविद्वद्गण शिरोवतंस श्रीमत्पर ा परिव्राजकाचार्य पूज्यपाद श्रीमत्स्वामि चिद्घनानन्दगिरिजी महाशय महोदयका जन्म किस संवत् में और कहांपर हुआ था इस बातका कुछ पता नहीं मिलता। हां इतना अवश्य मालूम हुआहे कि, इनका शरीर सिंधुदेशका था। यह बातभी स्वामीजी महाराजके मुखसे विदित नहीं हुई किन्तु उस देशके रहनेवालोंके कहनेसे जाननेमें आई है। इन्होंने प्रथम ब्रह्मचर्यावस्थामें हरिद्वारके निकट 'कनखल' तीर्थमें कुछ काल पर्यंत व्याकरणादि ग्रंथोंका अभ्यास किया। फिर श्रीकाशीपुरीमें आकर "न्याय वेदान्त" शास्त्रादिकोंको पढ कितनेही समयतक अधिकारी छात्रोंको पढाया। तदनन्तर मानुषानन्दसे लेकर हिरण्यगर्भ लोक पर्यंतके विषय सुखको विषवत् परित्याग कर अर्थात् इस असार संसारको छोडकर परमपूज्य ब्रह्मविद्वरिष्ठ श्री १०८ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीस्वामी उद्धवानंदगिरिजी महाशयके चरणकमल में प्राप्त होकर संन्यास आश्रमको धारण किया और कितनेही काल पर्यंत स्वस्वरूपावस्थान रूप निर्विकल्पक समाधिमें स्थित रहे अर्थात् इनकी चित्तवृत्ति स्वस्व रूपसे उत्थान भावको प्राप्त नहीं होतीथी। फिर संसारके दुःखरूपी सूर्यसे संतप्त प्राणियोंके पुण्यपुंजकी प्रेरणासे श्रीस्वामीजी महा राजके मनमें रामेश्वरादि देवदर्शन करनेके लिये कुछकाल पर्यंत पर्यटन करनेकी इच्छा हुई। तदनुसार वह श्रीकाशीपुरीसे प्रस्थान कर गोतमीतटको और फिर गोदावरी तीर्थको गये। पश्चात् शनैः २ अन्यान्य तीर्थोंकी यात्रा करते हुए श्रीरामेश्वर क्षेत्रको गये। वहांपर श्रीरामेश्वरजी और सेतुका दर्शनकर श्रीद्वारिकापुरीकी यात्रा करते हुए काठियावाडके अंतर्गत भावनगर राजधानीमें पहुंचे। वहांके दीवान श्रीगौरीशंकरजी और विजयशंकरजी नागर जो अपने अनेक जन्मोंके उपार्जित पुण्योंके प्रभावसे बडे शुद्धान्तः करण विवेकादि साधन सम्पन्न और परम प्रीतिमान् थे स्वामीजी महाराजका आगमन सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और हाथ

जोड़कर इनकी शरण आये। इन्होंने स्वामीजी महाराजसे प्रार्थना की कि, महाराज हमलोग अनादिकालसे वारंवार इस जन्ममरणादि महादुःखरूपी संसारसागर में निमग्न होरहे हैं। इस कारण जिस वस्तुको पानेसे यह प्राणी जन्म मरणादिके खेदसमुद्रको तर जाते हैं उसीका कृपया हमको उपदेश दीजिये । परम श्रद्धालु गौरीशंकरजी प्रभृति अधिकारियोंका ऐसा वचन सुनकर परम करुणानिधि श्रीस्वामीजी महाराजने उनको उपनिषद्रत्नालय रूप आत्मपुराण श्रीमद्भगवद्गीता और तत्वानुसंधान, तथा शारीरक भाष्यादि ब्रह्मविद्या प्रतिपादक ग्रंथोंका श्रवण कराया। इनके सुननेसे ये अधिकारीवर्य प्राप्तव्य वस्तुको प्राप्तकर परम कृतार्थ भावको पहुंच गये। इन्होंने विनय किया कि " भगवन्! इस जगत्में मंदमतिवाले मुमुक्षु बहुत हैं जिनकी संस्कृत ग्रंथके श्रवणादिमें प्रवृत्ति नहीं हो सकती उन लोगोंके लिये आत्मपुराण गीता और तत्वानुसंधानादि ग्रंथोंकी प्राकृत भाषामें व्याख्या कर देवें तो अति उत्तम कार्य हो, क्योंकि इन ग्रंथोंके मनन करनेसे बहुतेरे मुमुक्षु जन परमकल्याणको प्राप्त होंगे और आप महानुभावोंका शरीर केवल जिज्ञासुजनोंके हितार्थही उत्पन्न हुआ है।" उक्त अधिकारियोंकी प्रार्थना सुनकर परम कृपालु श्रीस्वामीजी महाराजने भावनगरमें १२ वर्ष पर्यंत स्थित होकर "आत्मपुराण, गीता, तत्वानुसंधान और न्यायप्रकाश" इन चार ग्रंथोंकी हिन्दीभाषामें व्याख्या की । पश्चात् काशीजीमें पधारकर मोहल्ला टेढीनींबमें परम पूज्य श्रीमत्स्वामी उद्धवानन्दजीकी धर्मशालामें निवास किया। यहांपर श्रीस्वामीजी महाराजका ११ वर्षतक विराजना रहा और संवत् १९५४ की कार्तिक शुक्ला १ को अनुमान ६५ वर्षके वयमें यह स्थूल शरीरादि उपाधिका परित्याग कर निर्विशेष स्वस्वरूपको प्राप्त हुए। अब इन महाराजके स्थानमें इनके शिष्य मंडलीश श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीस्वामी गोविन्दानन्दजी महाराज विद्यमान हैं ॥

प्रकाशक-खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालयाध्यक्ष-मुम्बई.

अब या प्राकृतआत्मपुराणग्रंथके उत्पतिकादेश तथा निमित्त वर्णनकरेहैं।

गुजरातदेशविषे समुद्रकेतीरऊपर एक "भावनगर"नामाशहरहै ॥ ताभावनगरशहरविषे नागरब्राह्मणजातिकरिकेयुक्त देसाईगुला वराइकेपुत्र देसाईविजयशंकर रहैहैं ॥ सोविजयशंकर पुर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं यासंसारकेव्यवहारतैं उपरामहोइके केवलवेदांतशास्त्रकेश्र वणविषे तथा विचारविषे तत्परहोताभया ॥ तथा ऋग्वेदादिकोंकेऐतरेयादिकउपनिषदोंका निरंतरपाठकरताभया ॥ ताविजयशंकरनैं एकवार संस्कृतआत्मपुराणकाश्रवणकऱ्या ॥ताआत्मपुराणविषे सर्वउपनिषदोंकेअर्थकूंश्रवणकरिके ताकूं या प्रकारकीमनविषेइच्छाउत्प न्नहोतीभई ॥ जोयहआत्मपुराणग्रंथही हमारेकूं तथा सर्वमुमुक्षुजनोंकूं सर्वदा विचारकरणेयोग्यहै ॥ परंतु व्याकरणादिकसाधनोंतैंविना संस्कृतग्रंथविषेप्रवृत्तिहोणी अत्यंतकठिनहै ॥ तथा वृद्धअवस्थाविषे व्याकरणादिकोंकापठनकरणाभी योग्यनहीं है ॥ यातैं यह आत्म पुराणग्रंथ जोकदाचित् भाषाविषेहोवै तौ हमारेकूं तथा सर्वमुमुक्षुजनोंकूं विचारणेविषेआवै ॥ ऐसीशुभइच्छाकरतेहुए दैवयोगतैं श्रीस्वामीचिद्घनानंदगिरिजी तीर्थयात्राकेनिमित्त श्रीकाशीजीतैंनिकसिकै श्रीरामेश्वरादिकतीर्थयात्राकरिकै श्रीद्वारकानाथकेदर्शनकर णेवासतै ताभावनगरविषेआवतेभये ॥ तास्वामीचिद्घनानंदगिरिकेसमीप दर्शन करणेवासते सोविजयशंकर जाताभया ॥ तथा कोईआत्मविचारकाप्रसंगचलावताभया ॥ तास्वामीकीब्रह्मविद्याविषेनिष्ठादेखिकेएकदिनविषे किसीप्रसंगपाइके याप्रकारकीप्रार्थना करताभया ॥ हेस्वामिन् हमसर्वमुमुक्षुजनोंकेहितवासतैं आप कृपाकरिके या संस्कृत आत्मपुराणकेप्राकृतकरणेकापरिश्रम अंगीकार करो ॥ ताकेप्रार्थनाकूंअंगीकारकरिके सोस्वामीजी ताविजयशंकरके विश्वनाथमहादेवकेमंदिरविषेनिवासकरिके ता आत्मपुराणके भाषाकरणेकाआरंभकरतेभये ॥ संवत् १९३१ शके १७९६ वैशाखसुदी ६ रविवारकूंआरंभकऱ्या ॥ संवत् १९३४ शके १७९९ कार्तिकशुदी ११ शुक्रवारकूंसमाप्तभया ॥ ताभाषाआत्मपुराणग्रंथकी सर्वत्रप्रवृत्तिकरणेवासते श्रीस्वामीजीकीआज्ञातैं देसाईविजय

शंकरनें प्रथमवार प्रसिद्धकऱ्याथा ॥ उसीको अब तीसरीवार श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीमत्स्वामी चिद्घनानंद गिरिजीने शुद्ध करके ग्रंथ तथा छापनेकी आज्ञादीनी सो श्रीमहाराजकी आज्ञासे हमने छापके प्रसिद्ध कऱ्याहे ॥

उक्तस्वामीजी महाराजने अपने बनाये आत्मपुराण भाषा तथा श्रीमद्भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका भाषाटीका और तत्त्वानुसन्धानके छापनेकी आज्ञा "श्रीवेङ्कटेश्वर" यंत्रालयकोही प्रदान कर चुकेहैं।

इस कारण कोई महाशय उक्त ग्रंथोंके छापनेका इरादा न करें कि, लाभकी आशासे इन्हीं महाराजके गीता छापनेवाले लोभियों की भांति हानि उठावें।

मुमुक्षुजनोंका कृपाकांक्षी–

क्षेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष–मुम्बई.

नाम.	की. रु. आ.	ड. म. रु. आ.
प्रश्नोत्तरमुक्तावली भाषाटीका (वेदान्त) ...	०–३	०–॥
जीवन्मुक्तगीता भाषाटीका	०–१	०–॥
भक्तिमीमांसा-शांडिल्यऋषिप्रणीताआचार्य स्वप्नेश्वरविरचितेन भाष्येण संयुता ...	०–८	०–१
❋❋योगवासिष्ठ सटीक संस्कृत... ...	२०–०	२–०

वेदान्त भाषा।

नाम.	की. रु. आ.	ड. म. रु. आ.
योगवासिष्ठ बड़ा भाषा संपूर्ण	१२–०	१–१०
योगवासिष्ठषुटकवैराग्य मोक्ष प्रकरण वेदांत उत्तम कागज़ अक्षर बड़ा	१–०	०–२
वासिष्ठसार भाषा वेदांत ६ प्रकरण ...	२–८	०–८
विचारसागर सटीक निश्चलदासजीकृत ...	२–०	०–४
एकादशस्कंध भाषा चतुरदासकृत और... नानक विलास	१–०	०–३
अमृतधारा वेदांत	०–१२	०–२
संतोषसुरतरु वेदांत	०–८	०–१
संतप्रभाव वेदांत	०–६	०–१
विचारमालासटीकपंचीकरणसहित... ...	०–१२	०–१
अभिलाषसागर भाषा (वेदांत)	०–३	०–॥
अध्यात्मप्रकाश भाषा (वेदान्त)... ...	०–२	०–४
विज्ञानगीता कविकेशवदासकृत	०–८	०–१
सुंदरविलास (ज्ञानसमुद्र, ज्ञानविलास, सुन्दराष्टकादि सहित) सटिप्पण ...	१–०	०–२
प्रत्येकानुभव शतक भाषा (वेदान्तका ग्रंथहै)	०–४	०–१
पक्षपातरहित अनुभवप्रकाश- वेदांत वर्णन (कामलीवालेबाबाकी बनाईहुई) ...	३–०	०–४
मुक्तिकोपनिषद् भाषाटीका	०–६	०–॥
कैवल्योपनिषद्	०–१	०–॥
मोक्षगीता बड़ी (सवालक्ष) रामनाम ...	१–०	०–२
वृत्तिप्रभाकर स्वामीनिश्चलदासकृत (वेदान्तका ग्रंथ शुद्धकर नया छपाहै)... ...	३–०	०–८

नाम.	की. रु. आ.	ट.म. रु. आ.
आनन्दामृतवर्षिणी वेदान्त (आनन्दगिरिजी-प्रणीत-गीताकेकठिनस्थलोंकाभावप्रतिपादनहै)	०—१२	०—१
दशोपनिषद्भाषा-स्वामि अच्युतानंदकृत ...	२—०	०—४
तत्त्वानुसंधानभाषा	२—४	०—६

धर्मशास्त्र ग्रंथाः।

नाम.	की. रु. आ.	ट.म. रु. आ.
मनुस्मृति सटीक कुल्लूकभट्टकृत संस्कृत टीकासहित जिल्दबंधी.	२—०	०—४
मनुस्मृति सान्वय भाषाटीका ग्लेज ...	२—८	०—७
तथा रफ्	२—०	०—७
व्रतराजअतिउत्तमटिप्पणीसहितजिसमेंवर्षभरकी सबतिथियोंकेव्रतउद्यापननिर्णयकथाहैं	४—०	०—१०
व्रतराजटिप्पणीसहित रफ्	३—०	०—१०
निर्णयामृत(अनेक प्राचीन ग्रंथोंसे शुद्ध हुवाहै)...	१—१२	०—४
याज्ञवल्क्यस्मृति मिताक्षरा पं मिहिरचंद कृत पद, योजना, भावार्थ और तात्पर्यार्थ और टिप्पणी तथा भाषाटीकासहित अत्युत्तम	५—०	०—१०
धर्मसिंधु	३—०	०—५
निर्णयसिंधु टिप्पणीसहित अत्युत्तम ...	३—०	०—६
तथा रफ् कागज	२—८	०—६
अष्टादशस्मृति उत्तम शुद्ध मोटा टैप ...	२—०	०—४
विवादार्णवसेतु(धर्मशास्त्र व न्याय राजनीति)...	२—०	०—४
बृहत्पाराशरीस्मृति. (धर्मशास्त्र)... ...	१—८	०—३
पाराशरीस्मृतिका उत्तरखंड	०—४	०—॥

संपूर्ण पुस्तकोंका बडासूचीपत्र अलगहै आध आनेका टिकट भेजनेसे विनादाम भेजा जाताहै।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-बम्बई.

आत्मपुराणग्रंथके अध्यायोंकीतथाउपनिषदोंकी तथासंवादोंकी अनुक्रमणिका ।

अध्यायः	वेदसहितउपनिषद्.	ऋषियोंकासंवाद.
१	ऋग्वेदकाऐतरेयउपनिषदर्थवर्णन.	सनकादिकमुनियोंका वामदेवादिमुनीकेप्रति उपदेश.
२	ऋग्वेदका कौषीतकीउपनिषदर्थवर्णन.	देवराजइंद्रका प्रतर्दनराजाकेप्रति उपदेश.
३	ऋग्वेदका कौषीतकीउपनिषदर्थवर्णन.	राजाअजातशत्रुका बालाकिब्राह्मणकेप्रति उपदेश.
४	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	दध्यङ्ऋषिका इंद्र तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेश.
५	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	याज्ञवल्क्यमुनिका आश्वलायनादिब्राह्मणोंकेसाथसंवाद.
६	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	याज्ञवल्क्यमुनिका जनकराजाकेप्रति उपदेश.
७	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	याज्ञवल्क्यमुनिका मैत्रेयीस्त्रीके प्रति उपदेश.
८	यजुर्वेदका श्वेताश्वतरउपनिषदर्थवर्णन.	श्वेताश्वतरऋषिका संन्यासियोंकेप्रति उपदेश.
९	यजुर्वेदका कठवल्लीउपनिषदर्थवर्णन.	यमराजाकानचिकेताकेप्रति उपदेश.
१०	यजुर्वेदका तैत्तिरीय नारायणीयउपनिषदर्थवर्णन.	वरुणऋषिका भृगुपुत्रकेप्रति उपदेश.
११	जाबालादिकएकादशउपनिषदर्थवर्णन.	वैराग्यादिसाधनोंसहित परमहंससंन्यासकानिरूपण.
११	सामवेदका छांदोग्यउपनिषदर्थवर्णन.	उद्दालकऋषिका श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति उपदेश.
१३	सामवेदका छांदोग्यउपनिषदर्थवर्णन.	सनत्कुमारभगवान्का नारदमुनिकेप्रति उपदेश.

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ काशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अज्ञानतिमिरांधस्यज्ञानांजनशलाकया ॥ चक्षुरुन्मीलितंयेनतस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ १ ॥ शंकरंशंकराचार्यंकेशवंबादरायणम् ॥ सूत्रभाष्यकृतौवंदेभगवंतौपुनःपुनः ॥ २ ॥ अथपरमकृपालुजोपरमेश्वरहै ॥ सो सृष्टिकेआदि कालविषे ॥ जीवोंकेमोक्षवासते वेदोंकूंरचताभया ॥ तहाँ प्रथमकर्मकांडविषे ॥ जीवोंकेचित्तशुद्धिकेवासते ॥ वर्णाश्रमकेधर्मोंकूं निरूपणकरताभया ॥ दूसराजोउपासनाकांडहै ताविषे,जीवोंकेविक्षेपकीनिवृत्तिवासते नानाप्रकारकेउपासनाकूं निरूपणकरताभया ॥ तीसराजोउपनिषद्रूपज्ञानकांडहै ताविषे कर्मऔरउपासनाकरिकेशुद्धभयाहैचित्तजिन्होंका ऐसेजोमुमुक्षुहैं तिन्होंके ब्रह्मभावकीप्राप्तिऔरजन्ममरणकीनिवृत्तिरूपमोक्षवासते जीवब्रह्मकेअभेदकूं निरूपणकरताभया ॥ याकहनेतैंयहसिद्धभया ॥ संपूर्णवेद जीवब्रह्मकेअभेदकेप्रतिपादकहैं ॥ जीवब्रह्मकेभेदकेप्रतिपादकनहींहैं॥काहेतैंजीवब्रह्मकेभेदकूंदेखणेवालाजोपुरुषहै ॥ ताकूं वेदविषेभयकीप्राप्तिकहीहै ॥ किंवा ॥ जीवईश्वरकेभेदकूंजोवेदबोधनकरे ॥ तोवेद अप्रमाणहोवेगा ॥ काहेतैंजीवईश्वरकाभेद मैंईश्वरनहीहूं यालोकोंकेअनुभवकरिकेसिद्धहै ॥ लोकोंकरिकेनहींजान्या ॥ ऐसाजोफलवालाअर्थ ताकेबोधनकरिकेही वेदोंकूंप्रमाणता शास्त्रविषेकहीहै ॥ जीवब्रह्मकाभेद लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और भेदज्ञानतैं मोक्षरूपफलकीभीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा जन्ममरणरूपदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं भेदकेजनावणेमैं वेदोंकातात्पर्यनहींहै ॥ ऐसाजोपरमेश्वरकातात्पर्य ताकूंनजाणिकरिके भेदवादिजेनैयायिकादिकहैं ॥ तेसंपूर्णवेदोंका जीवब्रह्मकेभेदनिरूपणविषे तात्पर्य वर्णनकरतेभये ॥ ताजीवब्रह्मकेभेदकूंनिश्चयकरिके जन्ममरणरूपदुःखकूं जीव प्राप्तहोतेभये ॥ ताजीवोंकूं दुःखीदेखिकरिके परमकृपालुजोश्रीशंकरहै ॥ सो श्रीशंकराचार्यरूपअवतारकोंधारिकरिके उपनिषदोंका औरश्रीव्याससूत्रोंका भाष्यकरतेभये ॥ ताभाष्यविषे भेदवादियोंकाखंडनकरिकेसर्वउपनिषदोंका ॥ जीवब्रह्मकेअभेदबोधनविषे तात्पर्यनिरूपणकरतेभये ॥ ताभाष्यतैं उपनिषदोंकेअर्थजानणेमैं जिनोंकिबुद्धिसमर्थनहींहै ऐसेजेमुमुक्षुहैं ॥ तिनोंपरि कृपाकरिके स्वामीशंकरानंद जोजोवाक्यमुमुक्षुकेमननमैंउपयोगीहैं ॥ ताताउपनिषदोंकेवाक्योंकाअर्थ आत्मपुराणविषे निरूपणकरतेभये ॥ ता आत्मपुराणविषेभी लोकोंकेप्रवृत्तिकूंनदेखिकरिके

पिंडतकाकाराम तापरि टीकाकूंकरतेभये ॥ ताटीकासहितआत्मपुराणतैंभी व्याकरणादिकोंकेआभ्यासतैंरहितजोहैं भाषाकेपठनकरणे वालेमुमुक्षु ॥ तिनोंकूं श्रुतीअर्थकाज्ञानहोवेनहीं ॥ यातैं तिनोंकेवासतै जोजोउपयोगीटीकाहैं ताकूंमिलाइके संपूर्णमूलकाभाषाकरेंहैं ॥ तहाँप्रथमअध्यायविषेऋग्वेदकाजोऐतरेयउपनिषदहै ताकेअर्थका निरूपणकरेंहैं ॥ ताविषें गुरुशिष्यकेसंवादकरिके प्रथम अधिकारीका लक्षण निरूपणकरेंहैं ॥ पठनकरेहैवेदजिसनें ॥ औरगुरुनेंकह्याजोअर्थ ताकेधारणेमें समर्थहैबुद्धिजाकी ॥ और कृपाकरिकेयुक्तहैमनजा का ऐसाजोकोईकमुमुक्षुहै ॥ सोपंचप्रकारकेभेदज्ञानकरिके भयकूंप्राप्तभयाजोजगत् ताकूंदेखिकरिके एककालविषे विचारकरताभया ॥ सोपंचप्रकारकाभेदयहहै ॥ जीवईश्वरकाभेद१ जीवोंकापरस्परभेद२ जीवजडकाभेद३ ईशजडकाभेद४ जडजडकाभेद५॥अब ताविचारके स्वरूपकूंकहेंहैं॥वडाकष्टहै॥संपूर्णजेदेहधारीजीवहैं तेयासंसाररूपशूलकरिके जन्ममरणरूपदुःखकूंप्राप्तहोइरहेहैं॥ कैसायहसंसाररूपशूलहै॥ कामक्रोधादिरूपकाकोंकाहैवासजिसविषे ॥ और स्त्रीरूपवृक्षकरिकेसुखकूंप्राप्तभयाहै ॥ यद्यपिस्त्रीरूपवृक्ष याकेसुखकाकारणनहींहै॥ उलटा याकेदुःखकाकारणहै॥तथापि जैसे मार्गकेचलनेतैंपरिश्रमकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै ताकूं दुःखकाकारणजोपादोंकाप्रहार सोभी सुखकाकारणहो वेहै ॥ तैसे विषयोंविषेंहैप्रीतिजाकी ऐसाजोपुरुषहै ताकूं दुःखकाकारणजोस्त्रीहै सोसुखकाकारणप्रतीतहोवेहै ॥ ऐसेसंसाररूपशूलतैं सर्वप्रा णियोंकूं याळोकविषे भयकाहेतैंनहींहोता ॥ ऐसाविचारकरिके बुद्धिमान्जोमुमुक्षुहै॥सोअपणेगुरुकूंपूछताभया॥हेभगवन् यासंसारशूलकूंप रित्यागकरिके किसउपायकरिके पुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवे॥कैसायहसंसाररूपशूलहै तीक्ष्णहै॥और अज्ञानरूपलोहहैकारणजाका ॥और सत्व रज तम येतीनगुणरूपशिखाकरिकेयुक्तहैं॥इसप्रकार शिष्यकरिकेपूछाहुआ कृपाकासमुद्रजोगुरुहै॥सो शिष्यकेप्रति कहताभया॥ हेशिष्य अज्ञानकीनिवृत्तिकाउपाय एकज्ञानहींहै॥और कर्मउपासनादिक अज्ञानकीनिवृत्तिककारणनहींहैं॥शिष्यउवाच॥हेभगवन् मैंनें संसाररूपशू लकीनिवृत्तिकाउपायपूछाहै॥और आपनें अज्ञानकीनिवृत्तिकाउपायकह्या॥यातैं हमारेप्रश्नकेसमान उत्तरनहींभया॥श्रीगुरुरुवाच॥हेशिष्य कामक्रोधादिरूपकाकोंका औरस्त्रीरूपवृक्षकाहै निवासजाविषे ॥ ऐसाजो संपूर्णसंसाररूपशूलहै॥सो परमेश्वरकीमायाकरिकेउत्पन्नभयाहै ॥

ज्ञानतैंमायाकीनिवृत्तिहूए ताकाकार्यजोसंसारशूल ताकीभीनिवृत्तिबनेहै ॥ जैसेतंतुकेनाशतैंपटकानाशहोवैहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगव
न् पूर्व आपनें ज्ञानकरिकेअज्ञानकीनिवृत्तिकही ॥ और अब ज्ञानकरिकेमायाकीनिवृतिकही ॥ यातैं पूर्वउत्तरकहणेकाविरोधहोवैहै ॥
॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य माया औरअज्ञान येदोनोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहैं ॥ जैसे घट औरकलश येदोनोंशब्द एकहीअर्थकेवाच
कहैं ॥ यातैंविरोधनहीं ॥ शिष्यउवाच ॥ पूर्व आपनें ज्ञानतैंअज्ञानकीनिवृत्तिकही सोबनैंनहीं ॥ काहेतैं घटपटादिकपदार्थोंकाज्ञानतो लो
कोंकूंहै ॥ परंतुकिसीकेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य वेदांतशास्त्रकेश्रवणतैंउत्पन्नभयाजोज्ञानहै ॥ सोई अज्ञानका
निवर्त्तकहै ॥ तिसतैंभिन्नजितनेज्ञानहैं तेसंपूर्ण अज्ञानरूपहैं ॥ यातैं तिनोंतैं अज्ञानकीनिवृतिहोवैनहीं ॥ जैसेसन्निपातकरिकेभ्रमकूंप्राप्तभ
याजोपुरुष ॥ तानैंकह्या मेरेकूं भेरीकाशब्द श्रवणहोवैहै ॥ ताज्ञानकूं लोकविषेभीकोई यथार्थमानतानहीं ॥ यातैं मैंब्रह्महूं ऐसाजो वेदां
तकेश्रवणतैं और गुरोंकीकृपाकरिके उत्पन्नभयाज्ञान ॥ सोईही मोक्षकेप्राप्तिकामार्गहै ॥ तातैं हेशिष्य संसाररूपशूलकापरित्यागकरिके
ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपजोमुक्तिमंडपहै ताकूंप्राप्तहोवो ॥ और अपणेस्वरूपकेअज्ञानकीनिवृत्तिवासते मैंब्रह्महूं याज्ञानकूं वेदांत श्रवणादिकों
करिके अवश्यसंपादनकरो ॥ और आत्मज्ञानतैंभिन्न देहरूपबंधनकेदेणेहारे जेयज्ञादिककाम्यकर्महैं ॥ तिनोंका परित्यागकरो ॥ सोआ
त्मज्ञानकैसाहै ॥ संसाररूपशूलकाकारणजोअज्ञान ताका नाशकरणेहाराहै॥ और भेदतैंरहितजोआत्मस्वरूपब्रह्म ताकी प्राप्तिकरणेहाराहै
॥ यातै आत्माकाज्ञानही सर्वतैंअधिकहै ॥अब आत्मस्वरूपब्रह्मविषे देशपरिच्छेद १ कालपरिच्छेद २ वस्तुपरिच्छेद ३ यातीनोंपरिच्छेदों
काअभावहै याअर्थकेजनावणेवासते प्रथम घटादिकअनात्मपदार्थोंविषे तीनपरिच्छेदोंकूंदिखावैहैं ॥ अत्यंताभावकीप्रतियोगिताकानाम
देशपरिच्छेदहै ॥ जैसेभूतलविषेरह्याजोघट ताघटकाअन्यदेशविषे अत्यंताभावहै ॥ ताअत्यंताभावकाप्रतियोगिपणा घटविषेहै ॥ ताका
नाम देशपरिच्छेदहै ॥ प्रागभावऔरप्रध्वंसाभावकीप्रतियोगिताकानाम कालपरिच्छेदहै॥जैसे घटकीउत्पत्तितैंपूर्व कपालोंविषे घटकाप्राग
भावरहैहै ॥ औरघटकेनाशहूए ताकपालोंमैं घटका प्रध्वंसाभावरहैहै ॥ तादोनोंअभावोंकाप्रतियोगिपणा घटविषेहै ॥ ताकानाम काल

परिच्छेदहै॥अन्योन्याभावकीप्रतियोगिताकानाम वस्तुपरिच्छेदहै॥जैसे पट घटनहींहै याप्रतीतितैं घटकाअन्योन्याभाव पटविषेभासैहै ॥ ताअन्योन्याभावकाप्रतियोगिपणा घटविषेहै ॥ ताकानाम वस्तुपरिच्छेदहै ॥ इसरीतिसैं सर्वअनात्मपदार्थ तीनपरिच्छेदोंकरिकेयुक्तहैं ॥ और आत्मस्वरूपब्रह्मविषे तीनपरिच्छेदोंकाअभावहै ॥ काहेतैं ब्रह्मव्यापकहै यातैं देशपरिच्छेद ब्रह्मविषेनहीं ॥और उत्पत्तिनाशतैंरहितहै यातैं कालपरिच्छेद ब्रह्मविषेनहीं ॥ और सर्वकाआत्माहै यातैं वस्तुपरिच्छेद ब्रह्मविषेनहीं ॥ याअभिप्राययतैंही श्रुतिनें जीवब्रह्मकाअभेद कथनकर्‍याहै ॥ औरआत्मस्वरूपब्रह्मकेप्राप्तिकासाधनज्ञानहै ॥ यातैं ज्ञानकूं श्रुतिब्रह्मरूपकहतीभईहै ॥ और जैसे ज्ञानकूं ब्रह्मरूप श्रुतिविषेकह्याहै ॥ तैसेज्ञानकूं सत्यरूपभी श्रुतिविषेकह्याहै ॥ काहेतैं सत्यब्रह्मको प्राप्तिकरणेहाराज्ञानहै ॥ यद्यपि अज्ञानके निवर्तकवृत्तिज्ञानकूं ब्रह्मरूपऔसत्यरूपकहणा बनेनहीं ॥ काहेतैं श्रवणादिकोंकरिकेज्ञानकीउत्पत्ति शास्त्रविषेकहीहै ॥ तथापि सत्यब्रह्मके प्राप्तिकासाधनज्ञानहै ॥ यातैं ज्ञानकूं ब्रह्मरूप औरसत्यरूप कह्याहै॥जैसे आयुष्कीवृद्धिकरणेहारा जोघृतहै ताकूं शास्त्रमें आयुष्कहेहैं ॥ यातैं ब्रह्मशब्दऔरसत्यशब्दका मुख्यअर्थ ज्ञाननहीं किंतुगौणअर्थहै॥आत्माही ब्रह्मऔरसत्यशब्दका मुख्यअर्थहै॥अबसत्यकेलक्षणकूंकहेहैं ॥ आदिकालविषे और अंतकालविषे औरमध्यकालविषे जो अपणे स्वरूपकूंनहींत्यागे॥किंतु तीनोंकालोंविषे एकरसहोवे ताकूं सत्य कहेहैं ॥ ऐसासत्यस्वरूपमैंहूं ॥ मेरेतैं अन्यअनात्मवस्तु सत्यनहीं ॥ इसरीतिसैं शास्त्रकरिके सत्यशब्दकाअर्थकह्या॥ अबलोकप्रसिद्धितैं सत्यशब्दकाअर्थकहेहैं ॥ जोवस्तु अस्तियाज्ञानका और अस्ति याशब्दका विषयहोवे ॥ सोलोकविषे सत्यशब्दकाअर्थहै ॥ काहेतैं वंध्यापुत्रविषे 'वंध्यापुत्रोऽस्ति' याज्ञानकीविषयताहैनहीं ॥ यातैं वंध्यापुत्रकूं लोकविषे औरशास्त्रविषे कोई सत्यकहेनहीं ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् घटः अस्तिपटः अस्ति यारीतिसैं अस्तिशब्दऔरअस्तिबुद्धिकेविषय घटपटादिकभीसत्यहोणेचाहियें ॥ औरसिद्धांतमें ब्रह्मतैंभिन्न कोईसत्यपदार्थनहीं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य सत्‌चित्‌आनंदरूपब्रह्ममैंहूं यातैं मेरीहीसत्यता सर्वअनात्मपदार्थोंविषे प्रतीत होवैहै॥यातैं आत्मातैंभिन्नकोई सत्यनहीं ॥ तासत्यस्वरूपआत्माकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै॥ताकूंभी सत्य श्रुतिने कह्याहै॥जैसेलोकवि

षे सत्यअर्थकूंबोधनकरणेहारा जोविचारवान्पुरुषकावचनहै ॥ तावचनकूं सत्यकहैंहैं ॥ यातैं सत्यशब्दका परमात्माहीमुख्यअर्थहै ॥
और ज्ञान सत्यशब्दका गौणअर्थहै ॥ अथवा शत्रुतैंरहितजोहिरण्यगर्भहै ताकूं श्रुतिविषे सत्य कह्याहै ॥ तैसे अज्ञानऔर
अज्ञानकाकार्यप्रपंचरूपशत्रुकानाशकरणेहारा ॥ आत्मज्ञानहै यातैं ज्ञानकूं श्रुति सत्यकहैहै ॥ शत्रुतैंरहितपणा ज्ञानविषे
तैसेहिरण्यगर्भविषे समानहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ज्ञानकाशत्रु जोअज्ञान औरताकाकार्यप्रपंच ॥ ताकूं आपनें असत्य
कह्या सोबनेनहीं ॥ काहेतैं तीनकालविषे जाकाअभावहोवै सो असत्यकहियेहै ॥ अज्ञानऔरताकेकार्यप्रपंचका तीनकालमैं अभावहैनहीं॥
यद्यपि ज्ञानकालमैं अज्ञानकानाशहोवैगा ॥ तथापि वर्तमानकालविषे औरअतीतकालविषे अज्ञान विद्यमानहै ॥ काहेतैं अज्ञान अना
दिहै ॥ औरताकाकार्यप्रपंचभी वर्तमानकालविषेहै यातैं अज्ञान औरप्रपंच असत्यनहीं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य जोवस्तुकिसीकालवि
षेहोवै ॥ और किसीकालविषेनहींहोवै ॥ सो असत्यकहियेहै॥तीनकालोंविषे जाकाअभावहोवै सोईही असत्यहोवैहै यहनियमनहीहै ॥ या
तैं अज्ञानकातो भविष्यतकालमैंअभावहै और प्रपंचका भूतभविष्यत्दोनोंकालोंविषे अभावहै ॥ यातैं अज्ञानऔरप्रपंच दोनों असत्यहैं॥
जैसे वंध्यापुत्र भूतभविष्यत्कालविषेहैनहीं ॥ यातैं वर्तमानकालविषेभी ॥ ताकूं सत्यकोईकहैनहीं यातैं आत्मातैंभिन्नसर्व वंध्यापुत्रकें
समान असत्यहैं ॥ काहेतैं जैसे वंध्यापुत्रका अपरोक्षज्ञान नहींहोवैहै ॥ तैसे कार्यसहित अज्ञानकाभी अपरोक्षज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं दोनों
समानहैं ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् आत्माकेप्रकाशकूंपाइकरिके कार्यसहितअज्ञान भासैहै ॥ और वंध्यापुत्र भासैनहीं ॥ यातैं वंध्यापुत्र
तैं कार्यसहितअज्ञानमैं विलक्षणताहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य मुमुक्षुकूं यद्यपि वंध्यापुत्रतैंअज्ञानमैंविलक्षणता प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि
ज्ञानीकूं दोनोंसमानहैं॥यातैं आत्माकेसत्ताप्रकाशकूंपाइके अज्ञान भासैहै औरवंध्यापुत्र भासैनहीं यहकहना बनेनहीं॥ काहेतैं जोआत्माके
सत्ताप्रकाशकूंपाइके अज्ञानकूं सत्यमानोंगे तो वंध्यापुत्रभी सत्यहोणाचहिये॥जैसे लोकविषे परधनकरिके कोई धनीकहैनहीं॥तैसे आत्माके
सत्ताप्रकाशकरिके अज्ञानकूंसत्यकहना बनेनहीं॥यातैं कार्यसहितअज्ञान औरवंध्यापुत्र दोनों ज्ञानीकूंसमानहैं॥और मुमुक्षुकीदृष्टिकूंअंगी

कारकरिके आनंदरूपआत्माविषे अज्ञानकूं रज्जुसर्पकीन्याई कल्पितमानैं ॥ तोभी भेदबुद्धिमिथ्याहीसिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं कल्पितवस्तुका अधिष्ठानतैंभेदहोवैनहीं ॥ और अनेकजन्मोंकेपुण्यकरिके मैंब्रह्महूं ऐसाजाकूंबोध उत्पन्नभयाहै ॥ ताकूं अन्यकोईअनात्मवस्तु जानणेयो ग्यनहींहै ॥ काहेतैं जीवब्रह्मकाअभेदज्ञानहीपरमानंदकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तातैं परमानंदकीप्राप्तिकरणेहारा वेदांततैंउत्पन्नभयाजोज्ञान॥ ताकापरित्यागकरिके जन्ममरणरूपबंधनकाकारनजोकर्महै ताकूं मुमुक्षु नकरै ॥ और सत्चित्आनंद सर्वकाअंतर्यामीअद्वितीय आत्मा कूं जेजेजीव परित्यागकरतेभये ॥ तेसंपूर्ण तामसीपश्वादिशरीरोंकूं प्राप्तहोतेभये ॥ परमेश्वरकेउत्पन्नकरेवेदोंकूंनमानणा यहही परमेश्वर कापरित्यागहै हेशिष्य याकेविषे पुरातनइतिहासकूंकहैंहैं ॥ कैसाइतिहासहै ॥ मोक्षकेसाधनकूंजनावणेहाराहै ॥ और सनकादिकऋषियोंका औरप्रजाका संवादहैजाविषे ऐसेइतिहासकूं तुम श्रवणकरो ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे ब्रह्मासनकादिकोंकूं उत्पन्नकरताभया कैसेहैंतेसनकादि क ॥ पुरुषोंकेतर्ककानहींविषयजोवेदकाअर्थ ताकूंजानणेहारेहैं ॥ और चक्षुआदिकजोबाह्यइंद्रिय औरमनरूपजोअंतरइंद्रिय तिनोंकूं जि नोंनें वशकियाहै ॥ और यथालाभकरिके संतोषकूंप्राप्तभयेहैं ॥ और शीतउष्णादिकजिनोंनेंसहनकियाहै और आत्मज्ञानकरिकेयुक्तहैं ॥ और लोकोंकेकल्याणवास्ते जिनोंनें शरीरधारणकर्याहै ॥ ऐसेजेसनकादिकहैं ॥ ते प्रजाकूं मोक्षकेसाधनआत्मज्ञानतेंरहितदेखिकरिके और विषयोंमेंआसक्तदेखिकरिके कृपाकरिकेकहतेभये॥हेप्रजा आत्मज्ञानहीं तुमारेकूं सुखकासाधनहै॥तातैंभिन्नसर्व दुःखकेसाधनहैं॥ऐसा सनका दिकोंकावचन श्रवणकरिकेभी पूर्वसंस्कारकेवशतैं मोहकूंप्राप्तभई सोप्रजा तासनकादिकोंकेवचनोंका अनादरकरिके विषयसुख वासते कर्मोंकूं करतेभये॥ताप्रजा विषेभी अधम मध्यम उत्तम यहतीनप्रकारकी जो तामसीप्रजाहै॥ते पापकरिकेयुक्तहुए वेदकीआज्ञाकूं नमानते भये॥और पूर्वमलिनसंस्कारतैंउत्पन्नभईजोबुद्धिताकरिके शब्दस्पर्शादिविषयोंकूं सुखकासाधनमानतेभये॥ताशब्दादिविषयोंमेंसुखसाधनबु द्धितैं तिनोंकेमनवाक्शरीरविषे दोष उत्पन्नहोतेभये॥ताविषे परधनादिकोंकीइच्छादिक मनकेदोषहैं॥ कठोरवचन औरमिथ्याबोलना यह वाक्इंद्रियकेदोषहैं॥और चोरीसेंआदिलेके शरीरकेदोषहैं॥तिनोंदोषोंकरिकैं तीनप्रकारकेशरीरोंकूं पावतेभये॥तहाँकोई आकाशमें विचरणे

हारे पक्षीआदिक होतेभये ॥ कोई भूमिविषे वृक्षादिक होतेभये॥कोई सर्पादिक होतेभये॥कैसेपक्षीआदिकशरीरहैं॥मनुष्योंकरिकेभोग्यहैं ॥ और नाशकरणेयोग्यहैं ॥ और छेदनकरणेयोग्यहैं ॥ और हस्तपादवागादिकइंद्रिय जिनोंविषेनहींहैं ॥ और सुखसैंरहितहैं ॥ अतिसैंकरि केदुखीहैं ॥ तिनोंविषेभी पक्षी हस्तोंतैंरहितहैं॥और वृक्ष ज्ञानइंद्रियऔरकर्मेंद्रियोंतैंरहितहैं ॥ यद्यपि पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण मनबुद्धि या सप्तदशतत्वरूपलिंगशरीर वृक्षोंविषेभीहै॥ यातैंइंद्रियोंका वृक्षविषे अभावकहना बनेनहीं ॥तथापि जैसे मनुष्यादिकोंकेइंद्रिय प्रसिद्धहैं ॥ तैसेवृक्षादिकोंकेनहींहैं ॥ किंतु सूक्ष्महैं ॥ यातैं नहुयेसमानहैं॥और ग्रामओरवनविषेरहणेहारे जेपशुहैं॥ तेस्पष्टवाणीतैंरहितहैं ॥ काहेतैं तिनोंकीवाणीतैं अर्थकाबोधहोवेनहीं॥और सर्पादिक पादादिकोंतैंरहितहैं॥ यहवार्तासर्वलोकोंकूं प्रसिद्धहै॥याप्रकार तामसपुरुषोंकी गतिकही ॥ अब सात्विकपुरुषोंकिगतिकहणेवासते प्रथम राजससात्विकपुरुषोंकेप्रकृतिकूं दिखावैहैं॥दूसराप्रजा आत्मज्ञानकापरित्यागक रिकेवेदनें बोधनकरेजेयज्ञादिककर्म औरअग्निसूर्यवायुआदिकदेवतावोंकीउपासना तिनोंकूं सुखकासाधनमानिकरिके करतेभये ॥ और भिन्नभिन्नफलकेबोधकवेदवाक्योंकूंदेखिकरिके कर्मउपासनाकरणेहारीप्रजाका दोप्रकारकाभेद होताभया ॥ तहाँराजसीप्रजा स्वर्गादिसुखवा सते कर्मउपासनाकूं करतेभये ॥ और सात्विकप्रजा इसप्रकार परस्परविचारकरिके कर्मउपासनाकूंकरतेभये॥ताविचारकेस्वरूपकूंकहेहैं ॥ वेदोंकूंजानणेहारे जेसनकादिकहैं ॥ तिनोंनें हमारेकूं पूर्व मोक्षकासाधनआत्मज्ञान कह्याथा ॥ ताज्ञानविषेअबीहमाराअधिकारहैनहीं ॥ काहेतैं जाकाज्ञान सुखकासाधनहै ॥ ऐसा जो त्वंपदकालक्ष्य साक्षीकूटस्थ ॥ और ततपदकालक्ष्यपरब्रह्म ॥ तिनोंकूं हमोंनें देहादिकों तैंभिन्न नहींकियाहै ॥ और वेदोंकेजानणेहारे ॥ जेपूर्वहमारेपितादिकथे ॥ तिनोंकेवचनोंकरिकेभी सोपरमात्मा हमोंनें नहींजान्या ॥ और आपनीबुद्धिकरिकेभी सोपरमात्मा हमोंनें नहींजान्या ॥ और मनकीप्रवृत्तिमेंकुशलजोहमहैं ॥ तिनोंनें मनकरिकेभी सोपरमात्मा नहींकल्पनाकर्या ॥ और यादेहरूपमंदिरविषे सोपरमात्मा प्राणइंद्रियकरिकेभी हमोंनें नहींजान्या ॥ और चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिके स्वप्नविषेभी सोपरमात्मा हमोंनें नहींदेख्या ॥ और श्रुतिवाक्योंकरिकेभी सोनिर्गुणपरमात्मा हमोंनें नहींजान्या ॥ और हमोंनें आपणे

श्रद्धावान्‌शिष्योंकेताईंभी कभीनिर्गुणपरमात्मा उपदेशनहींकऱ्या ॥ औरस्थूलशरीरतेंभिन्न औरकर्त्ता पुण्यपापकेफलकाभोक्ता आत्माहै ऐसा आत्माकास्वरूप हमोंनेंजान्याहै ॥ और श्रुतिनेंभी आत्माकूं श्रोता द्रष्टा विज्ञाता कह्याहै ॥ और वाक्प्राणकेव्यापारविषे परस्परलयचिंतनरूप अंतर अग्निहोत्रकूंजानणेहारे कवषमुनिकेपुत्र जैसे बाह्यअग्निहोत्रतेंवैराग्यकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तैसेयज्ञादिककर्मोंविषे वैराग्यकूं हम प्राप्तनहींभये ॥ यातें गुरुकेसमीपजाइकेआपणेस्वरूपकेनिर्णयकरणेविषेभीहमाराअधिकारनहीं ॥ और जोहम ता परमात्माकूंनजाणिकरिके स्वर्गादिकोंकीप्राप्तिवासते कर्मोंकूंहींकरेंगे ॥ तो हमाराजन्म निष्फलजावेगा ॥ काहेतें सर्वजीवोंकाशरीर परमात्मानें निर्गुणब्रह्मकेजानणेवासतेरच्याहै ॥ विषयभोगवासतेनहींरच्या ॥ याकारणतेंहीं श्रुतिविषे पादकेनखाग्रतेंलेकरिके मस्तकपर्यंत ऊरू उदर हृदय आदिकस्थानोंविषे ब्रह्मकाप्रवेशकह्याहै ॥ तिनोंदेहोंविषेभीगुरुशास्त्रआदिकसाधनोंकरिकेयुक्त पुरुषकादेहहीं स्पष्टआत्मज्ञानवासतेहै ॥ काहेतें श्रुतिनें यापुरुषशरीरविषेहींआत्माकाअपरोक्षज्ञानकह्याहै॥और पूर्व सनकादिकोंनें हमारेताईं श्रुतिकरिकेसिद्धऔरमोक्षकासाधन आत्मज्ञानहींतुमारेकूं करणेयोग्यहै ऐसाकह्याथा ॥ और सनकादिकोंनें कह्याजो आत्मज्ञानताकेसंपादनमैं आपणेसामर्थ्यकूंनदेखिकरिके और याज्ञानविषे हमारेकूं किसप्रकारअधिकारहोवेगा ऐसीचिंताकरिके मौनकूंधारिकेहम इहांआवतेभयेहैं ॥ तातें विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूपअधिकारकीप्राप्तिवासते कर्म औरउपासनाकूं हमकरें ॥ ऐसाविचारकरिके प्रजाउपासनाकूंऔरकर्मोंकूं फलकीइच्छासेंरहितहोइके करतेभये ॥ ताकर्मउपासनाकरिकेशुद्धभयाहैमनजिनोंका ॥ और शमदमादिकसाधनोंकरिकेयुक्त ॥ और आत्मज्ञानतेंरहित ॥ ऐसेजेमुमुक्षुहैं ॥ ते पुनःसनकादिकऋषियोंकूंप्राप्तहोइकरिके ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासते तिनोंकेताईं अपणासंपूर्णअभिप्रायकहतेभये ॥ तिनोंकेवचनकूंश्रवणकरिके कृपाकरिकेयुक्त सर्वज्ञसनकादिक आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतेतिनोंकूं कहतेभये ॥ सनकादिकउवाच ॥ हेप्रजा वाणीऔरमनका आत्माविषयनहींहै ॥ काहेतें जाति गुण क्रिया करिकेयुक्तवस्तुकाहीं शब्द बोधनकरैहै॥जैसे घट यह शब्द घटत्वजातिवालेघटकूं बोधन करैहै॥ और नीलघट यास्थानमें नीलशब्द नीलगुणवालेका बोधनकरैहै ॥

औरपाचकयहशब्द पाकरूपक्रियावालेपुरुषकूं बोधनकरैहै॥इसरीतिसैं किसीधर्मकूंग्रहणकरिकेही शब्द अपने अर्थकूंबोधनकरैहै ॥ और आत्माजातिआदिकधर्मोतैंरहितहै ॥ यातैं शब्दकी आत्माविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ इसरीतिसैं मनवाणीकाअविषय और सत्चित्आनंदरूप आत्माकूं यद्यपिहम कहणेकूंसमर्थनहींहैं॥और तुमभी जानणेकूंसमर्थनहींहो॥ तथापि निर्गुणपरमात्माविषे जगत्काआरोपणकरिके तृतजग त्कानिषेधरूप जो अध्यारोपअपवाद ॥ ताकरिकेसिद्ध जोभागत्यागलक्षणा ॥ तालक्षणाकरिके परमात्माकूं हम अब तुमारेतांईकहतेहैं॥ दृष्टांत ॥ जैसेसोयेहुएराजाकूं बंदीपुरुष जगावतेहैं ॥ तैसे वास्तवतेंशुद्ध और अज्ञानरूपनिद्राकरिकेसोयेहुएपरमात्माकूं वेदांतशास्त्र भाग त्यागलक्षणाकरिके बोधनकरैहैं ॥ प्रजाउवाच ॥ हेभगवन् पूर्व आपनेंकह्या शुद्धआत्माकूं वेदांत बोधनकरैहैं ॥ सोबनैंनहीं ॥ काहेतें आत्मा अहंकारआदिकोंकरिकेविशिष्टहै ॥ यातैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकेसिद्धहै ॥ सनकादिकउवाच ॥ हेप्रजा आत्माविषे जोसाका रपणाहै ॥ सो मायाकरिकेकल्पितहै ॥ यातैंमिथ्याहै ॥ और सर्वकल्पनाकाअधिष्ठानवस्तुही आत्मशब्दकाअर्थहै ॥ अब याअर्थकूं स्पष्टकरिकेदिखावैहैं ॥ हेबुद्धिमानप्रजा ॥ शास्त्रसंस्कारतैंरहित जेलौकिकपुरुषहै ॥ और शास्त्रकेजानणेहारेजेवादीपुरुषहैं ॥ तिनोंनें लोकविषे दोप्रकारकाशब्द और दोप्रकारकाज्ञान निश्चयकियाहै ॥ और ताशब्द और ज्ञानका विषयरूपअर्थभी दोप्रकारकानिश्चयकि याहै ॥ तहाँ अहं याशब्दका और अहं याज्ञानका अंतरआत्मा अर्थहै ॥ और न अहं याशब्दका और न अहं याज्ञानका बाह्यअनात्म वस्तु अर्थहै ॥ तहाँ अहं या शब्दतैं और अहं या ज्ञानतैं आत्मारूपअर्थ भिन्नहै ॥ और न अहं या शब्दतैं और नअहं याज्ञानतैं अना त्मरूपअर्थ भिन्नहै ॥ इसरीतिसैं परस्परभिन्न जे शब्द ज्ञान अर्थ ॥ तिनोंकूं एकरूपजाणिकरिके भ्रांतपुरुष आत्माकूं अहंयाशब्द और अहंयाज्ञानका विषयमानैंहैं ॥ और अनात्मपदार्थोंकूं न अहंयाशब्दका और नअहंयाज्ञानका विषयमानैंहैं ॥ यातैं अहं और नअहं यहसर्वव्यवहार भ्रमरूपहै ॥ इसरीतिसैं घट ऐसेशब्दतैं और घट ऐसेज्ञानतैं घटरूपअर्थ भिन्नहै ॥ ताविषे घट ऐसा जो लोकों काव्यवहारहै ॥ सोभी शब्द औरज्ञान औरअर्थ रूपहै ॥ यातैं भ्रमरूपहै ॥ काहेतें लौकिकपुरुषतैं किसीनेंपूछा यहकौनवस्तुहै

तब घट यहउत्तर लौकिकपुरुष कहेंहैं ॥ और कैसाज्ञान तुमारेकूंभयाहै ऐसाकिसीनें पूछा तबभी घट यहउत्तर कहेंहैं ॥ और कौनशब्द तुमनें श्रवणकऱ्या ऐसाकिसीनेंपूछा तबभी घट ऐसाउत्तर कहेंहैं ॥ इसरीतिसें परस्परभेदवाले शब्दज्ञानअर्थोंकूं एकरूपकरिकेजानणा भ्रांतिसेंबिनाबनेंनहीं ॥ यातें सर्वलोकोंकाव्यवहार भ्रमरूपहै ॥ और यहलोकोंकाव्यवहार युक्तिकूंभी नहींसहारता ॥ यातें भी भ्रमरूपहै ॥ काहेतें वाकइंद्रियविषे शब्दरहेहैं ॥ और हृदयविषे ज्ञानरहेहै और अर्थजोघटादिकहै सो भूमीविषेरहेहै ॥ ताअर्थकूं शब्दऔरज्ञानरूपमानणा यह पुरुषोंकीभ्रांतिसेंबिना बनेंनहीं ॥ किंवा ॥ शब्द ज्ञान अर्थ यातीनोंकूं एकमानणेमें व्याघात दोषभी होवेहै ॥ काहेतें जब शब्दऔरज्ञान प्रकाशकहोवें ॥ और शब्दज्ञानकाजोअर्थ सो प्रकाश्यहोवे ॥ तब शब्दज्ञान औरअर्थ दोनोंका परस्परभेदहीसिद्धहोवेहै ॥ काहेतें लोकविषे प्रकाशकऔरप्रकाश्यका परस्परभेदही देख्याहै ॥ जैसे किसीपुरुषनें पिताऔर पुत्र एकस्थानविषेदेखेहोवें ॥ और दूसरेदेशमें तापुत्रकूंदेखिकरिके ताकेपिताकास्मरण तापुरुषकूंहोवेहै ॥ यास्थानमें पुत्र प्रकाशकहै ॥ और पिता प्रकाश्यहै ॥ तिनोंकाभेद लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे प्रकाशक जेशब्दऔरज्ञानहैं ॥ तिनोंका प्रकाश्यरूप अर्थसें जोअभेदमानोंगे ॥ तो आपणेतेंआपणाभेरूप व्याघातदोष प्राप्तहोवेंगा ॥ अब पूर्वकह्याजोअर्थ ताअर्थकूं सिद्धांतविषेजोडेहैं ॥ इसप्रकार व्यवहारकालविषे अहंयाशब्दका और अहंयाज्ञानका लोकोंनें आत्मा विषयमान्याहै ॥ और नअहंयाशब्दऔरज्ञानका अनात्मवस्तु विषयमान्याहै ॥ तहां अहं याशब्दऔरज्ञानकापरित्यागकरिके तिनोंका जो अर्थ भेदतेंरहित बाकीरह्या ॥ सोईही भेदतेंरहित सर्वशक्तिसंपन्न परमात्मा जगत्कीउत्पतितेंपूर्वहोताभया ॥ और लोकप्रसिद्ध जेशब्द औरज्ञान औरअनात्माहैं ॥ ते पूर्व नहीं होतेभये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अंधकारकाविरोधीसूर्यभगवान् अंधकारकीनिवृत्तिकरिके अंधकारतें औरताविषेविचरणेहारेपिशाचादिकोंतें रहितहुआ प्रकाशेहै ॥ तैसे परमात्माभी आपणाकार्यप्रपंच आपणेविषेलयकरिके अद्वितीयरूपतें पूर्वस्थितहोवेहै ॥ अब याअर्थकूंही स्पष्टकरिकेदिखावेहैं ॥ दिनदिनविषे जैसे सूर्यविषे अंधकार लयकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे सत्यआनंदरूपआत्माविषे यह

संपूर्णजगत् लयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे संपूर्णरात्रियोंविषे सूर्यकाआच्छादनकरिके अंधकार अविद्यातैंउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे सत् चित्आनंदस्वरूपआत्माकूंआच्छादनकरिके आत्मासैंविरुद्धस्वभाववाला असत् जड दुःख अनात्मस्वरूप जगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे सर्पकोउत्पत्तितैंपूर्व रज्जुहीस्थितहै ॥ और सर्प आपणीउत्पत्तितैंपूर्वनहींहै ॥ तैसे अनात्मजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वआनंदस्वरूपआत्माही स्थितहोताभया ॥ और अनात्माजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व नहींस्थितहोताभया ॥ प्रजाउवाच ॥ हेभगवन् सृष्टितैंपूर्व आपनें अद्वितीयपरमात्माकह्या ॥ सोबनैंनहीं ॥ काहेतैंसृष्टितैंपूर्व यद्यपि कार्यरूपप्रपंचकाअभावहै ॥ तथापि सर्वजगत्का कारणरूपमाया विद्यमानहै ॥ सनकादिकउवाच ॥ हेप्रजा आत्मातैंभिन्नहोइके माया प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं मायाकूंसत्यमानोहो ॥ अथवा प्रमाणकरिकेमायासिद्धहै ॥ यातैं मायाकूंसत्यमानोहो ॥ तहाँ प्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं जैसे सुषुप्तिकूंप्राप्तभयापुरुष जाग्रत्स्वप्नकेअनंतसंस्काररूपगर्भकरिकेयुक्तअविद्याकूं देखताहुआभी आपणेतैं ताअविद्याकूं भिन्ननहींदेखता ॥ इसप्रकार मायावाला महेश्वर आनंदरूपआत्माभी संपूर्णजगरूपगर्भकरिकेविशिष्टमायाकूं देखताहुआभी आपणेतैंभिन्न ताकूं नहींदेखता ॥ सुषुप्तिविषे और प्रलयविषे संस्काररूपहोइके जगत् अज्ञानमैंरहैहै ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे वर्षाकेनिवृत्तहूए मंडूकोंकेसूक्ष्मअवस्थारूपसंस्कार भूमिविषेरहैहैं ॥ और वर्षा केहूए पुनःतिनोंका प्रादुर्भावहोवैहै ॥ ऐसे संस्काररूपतैं अज्ञान विषेरह्याजोजगत् ताका सृष्टिकालमैं प्रादुर्भावहोवैहै ॥ और माया प्रमाणकरिकेसिद्धहै यातैंसत्यहै ॥ यहदूसरापक्षभीबनैंनहीं ॥ काहेतैं मायाहैऐसीजा मायाकीसिद्धिहै ॥ सोभी मायातैंहीमायाकीसिद्धिहै ॥ प्रमाणतैं मायाकीसिद्धि विवेकीपुरुषोंनें अंगीकारकरीनहीं ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे सुषुप्तपुरुषकीसुषुप्ति सुषुप्तिकरिकेही सिद्धहै ॥ किसीप्रमाणकरिके सिद्धनहीं ॥ और जोप्रमाणअंगीकारकरे ॥ ताकूं यहपूछैहैं ॥ तासुषुप्तिरूपअविद्याविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ अथवा अनुमानप्रमाणहै ॥ अथवा शब्दप्रमाणहै ॥ अथवा इनोंतैंकोईभिन्नप्रमाणहै तहाँ प्रत्यक्षप्रमाणहै याप्रथमपक्षमैंभी सुषुप्तपुरुषकेप्रत्यक्षप्रमाणकरिकेसिद्धहै ॥ अथवा अन्यपुरुषकेप्रत्यक्षप्रमाणकरिकेसिद्धहै ॥ यह

दोनोंपक्ष बनेंनहीं ॥ काहेतें इंद्रियजन्यज्ञानकानाम प्रत्यक्षहै याविषे प्रत्यक्षप्रमाणकरिके सुषुप्तिकूंजाणतानहीं ॥ इंद्रियोंका लयहोवेहै यातें सुषुप्तपुरुष प्रत्यक्षप्रमाणकरिके सुषुप्तिकूंजाणतानहीं ॥ तैसे जागताहुआजोअन्यपुरुषहै ॥ सोभी अन्यकेसुषुप्तिकूं प्रत्यक्षप्रमाणतेंजाणतानहीं ॥ काहेतें जैसे एकपुरुषकेज्ञानका दूसरेपुरुषकूं प्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ तैसे अज्ञानरूपसुषुप्तिकाभी दूसरेपुरुषकूं प्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ यातें प्रत्यक्षप्रमाणतें सुषुप्तिकीसिद्धि बनेंनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् यद्यपि प्रत्यक्षप्रमाणतें सुषुप्तिकीसिद्धिबनेंनहीं ॥ तथापि यहपुरुष सुषुप्तिवालाहै इंद्रियोंकीक्रियातेंरहितहोणेतें ॥ याअनुमानकरिके सुषुप्तिरूपअज्ञानकीसिद्धि बनेंहै ॥ समाधान ॥ इंद्रियोंकेक्रियाकाअभावरूपहेतु सुषुप्तिकासाधकबनेंनहीं ॥ काहेतें सुषुप्तिरूपसाध्यकेअभाववाले जेस्वप्नऔरसमाधि॥ तिनोंविषेभीइंद्रियोंकेक्रियाकाअभावरूपहेतु रहेहै ॥ यातें व्यभिचारीहै ॥ साध्यकूंछोडिकरिके जोहेतु कभीरहैनहीं ॥ सोहेतु साध्यकीसिद्धिकरैहै ॥ यातें अनुमानप्रमाणभीसुषुप्तिकासाधकनहींहै ॥ शास्त्ररूपशब्दप्रमाण सुषुप्तिरूपअज्ञानकासाधकहै ॥ यहतीसरापक्षभी बनेंनहीं ॥ काहेतें पुरुषोंकरिकेरचाहुआशास्त्र अविद्यारूपसुषुप्तिविषे प्रमाणहै ॥ अथवा अपौरुषेयवेद ताविषे प्रमाणहै ॥ तहां प्रथमपक्षतो बनेंनहीं ॥ काहेतें प्रत्यक्षादिप्रमाणोंकरिकेसिद्ध पदार्थोंकूंही पुरुषोंकरिकेरचाहुआशास्त्र प्रतिपादनकरैहै ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाण अविद्याकेसाधकहैंनहीं ॥ यातें लौकिकशास्त्रभी ताविषे प्रमाण नहीं ॥ और वेदप्रमाणहै यहदूसरापक्षभीबनेंनहीं ॥ काहेतें फलवालेअर्थविषेही वेदप्रमाणहोवेहै ॥ फल नाम सुखकीप्राप्तिऔरदुःखकीनिवृत्तिकाहै ॥ तेदोनों जीवब्रह्मकेऐक्यज्ञानतेंहोवैहैं ॥ अविद्याकेज्ञानतेंहोवैनहीं ॥ यातें अविद्याविषे शास्त्रप्रमाणनहीं ॥ शंका ॥ वेदविषे मायाऔरअविद्याकेबोधकवाक्य औरअविद्यातें जगत् कीउत्पत्तिकेबोधकवाक्य बहुतदेखतेहैं ॥ तिनोंका क्या अभिप्रायहै ॥ समाधान ॥ फलकेअभावहोणेतें अविद्याकेबोधनविषे शास्त्रकातात्पर्यनहीं ॥ किंतु अद्वितीय आनंदरूपआत्माकेजनावणेवासतेंही अविद्याका औतातेंजगत्कीउत्पत्तिका वेदविषेकथनहै ॥ ताकेसीअविद्याहै ॥ जैसेदीपकरिके अंधकारकाज्ञानहोवेनहीं तैसे प्रमाणकरिके अविद्याकाज्ञानहोवेनहीं॥किंतु अविद्यातेंही अविद्यासिद्धहै॥इसप्रकार प्रलयका

लविषे परमात्मा कार्याकारपरिणामकूंनहींप्राप्तभई जोमाया तामायाकरिकेविशिष्टभीहै तोभी परमात्मा मायातेंरहितकह्याहै दृष्टांत॥जैसे सूर्यभगवान्अंधकारकाकारणजोअज्ञान ताकरिकेविशिष्टभीहै ॥तोभीदिनविषेकार्यरूपअंधकारतेंरहितहै॥यातेंसूर्यअंधकारतेंरहित कहिये है॥इसप्रकारस्थितहुआपरमात्मा सृष्टिकेआदिकालविषे ऐसाविचार करताभया ॥कैसाहैसोपरमात्मा॥पूर्वपूर्वकल्पोंविषेसृष्टिकूंविषयकरणे हारा जोमायाकावृत्तिरूपज्ञान तातेंउत्पन्नभयेजेसंस्कार तिनोंकरिकेयुक्तहै ॥ औरजीवोंकेपुण्यपापारूपअदृष्टकरिके प्रगटहुएहैंसंस्कार जिसपरमात्माके ॥ सोपरमात्मा विचारकरताभया ॥ अब ताविचारकेस्वरूपकूंकहैहैं ॥ मायाउपहितशुद्धपरमात्माविषे पंचभूत औरताकाकार्यब्रह्मांडसंपूर्ण सूक्ष्मरूपहोइकरिकेरह्याहै ॥ यातें इसप्रकार स्पष्टकरिके स्वर्ग औरआकाश औरभूमि यातीनोंलोकोंकूं रचों ॥ यहाँ स्वर्गकरिके ऊपरिकेसर्वलोकोंकाग्रहणकरणा ॥ और भूमिलोककरिके नीचेकेसर्वलोकोंकाग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार विचारकरिके सत्यसंकल्पजोपरमेश्वरहै ॥ सो ब्रह्मांडकूंरचताभया कैसाब्रह्मांडहै ॥ विराट्भगवान्काशरीरहै ॥ औरहिरण्यगर्भका शरीररूपजोपंचसूक्ष्मभूत तिनोंविषेस्थितहै ॥ और भूरादिचतुर्दशलोकोंकरिकेयुक्तहै ॥ और चेतनकीसत्तातेंभिन्नजाकीसत्तानहीं ॥ और नाम रूप क्रियाहैं शरीरजाका ॥ तहाँ नामकरिके शब्दरूपप्रपंचका ग्रहणकरणा ॥ और रूपकरिके अर्थरूपप्रपंचका ॥ ग्रहणकरणा ॥ और क्रियाकरिके नामरूपकाकारणजोकर्महै तिनोंका ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार सर्वज्ञऔरसर्वशक्तिमान्परमेश्वर संपूर्णजगत्कूंरचिकरिके ऐसाविचार करताभया ॥दृष्टांत ॥ जैसे असुरोंकाबालक रागद्वेषतेंरहितहुआ आपणीमायाकेबलतें पदार्थोंकूंरचताहै ॥ तैसे परमेश्वर जगत्कूंरचताभया अब ताविचारकेस्वरूपकूंकहैहैं ॥ येजेपंचभूतहैं ॥ और जलहैप्रधानजिनोंविषेऐसेपंचभूतोंविषेस्थित ॥ जोयहब्रह्मांडहै॥ और ताब्रह्मांडविषेस्थित जेयहचतुर्दशलोकहैं ॥ यहसंपूर्ण अचेतनहैं ॥ यातें क्षणमात्रविषे नाशकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे स्वामी तेंरहितगृह नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे प्राणतेंरहितहुआशरीर नाशहोवैहै ॥ ऐसाविचारकरिके पिताकीन्याईं पालनकरणेहारा जो परमेश्वरहै ॥ सो पूर्वआपणेआपणेसत्त्वगुणादिककारणोंतें उत्पन्नभये जेसंपूर्णइंद्रिय और देवताआदिकजगत् ताके प्रगटकरणे

वासते ताअंडविषे नानाप्रकारकेछिद्रोंकूं करताभया ॥ तहाँ मुखछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोइके शब्दव्यवहारकरणेहारा वाक्इंद्रिय प्रगट होताभया ॥ तावाक्इंद्रियतैं वैदिकयज्ञादिककर्मोंकी सिद्धिकरणेहारा अग्निदेवताप्रगटहोताभया ॥ और नासिकाछिद्ररूपगोलककूंप्राप्त होइके घ्राणइंद्रिय प्रगटहोताभया ॥ ताघ्राणइंद्रियतैं गंधउपाधिवालावायुदेवता प्रगटहोताभया ॥ और अक्षिछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहो इके चक्षुइंद्रिय प्रगटहोताभया ॥ ताचक्षुइंद्रियतैं भगवान्सूर्यदेवता प्रगटहोताभया और कर्णछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोईके श्रोत्रइं द्रिय प्रगटहोताभया ॥ ताश्रोत्रइंद्रियतैं संपूर्णदिशा प्रगटहोती भई ॥ और संपूर्णदेहविषे अतिसूक्ष्मजेअनंतछिद्रहैं तिनोंतैं सर्व शरीरविषेव्यापक जोचर्मरूपत्वचाहै सोप्रगटहोतीभई ॥ तात्वचारूपगोलककूंप्राप्तहोइके लोमऔरकेशसहित स्पर्शनइंद्रिय प्रगटहोता भया ॥ ता स्पर्शनइंद्रियसहितलोमऔरकेशोंतैं संपूर्णऔषधिआदिकस्थावरप्रगटहोतेभये ॥ और स्थावररूपउपाधिवाला वायुदेवता प्रग टहोताभया ॥ तेकैसेस्थावरहैं ॥ सर्वजीवोंकेउपकारवासतैं दिनरात्रिविषे जिनोंनें आपणेमैं कलेशकूंधारणकर्‍याहै ॥ और मांसका कमलरूपहृदयगोलक उत्पन्नहोताभया॥सोहृदयकैसाहै॥पंचछिद्रोंकरिकेयुक्तहै॥और भीतरआकाशविषे जाकानिवासहै॥ताहृदयरूपगो लककूंप्राप्तहोइके मन प्रगटहोताभया ॥ तामनतैं जगत्केआनंदकरणेहाराचंद्रमादेवता प्रगटहोताभया ॥और नाभिछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहो इके अपानवायुप्रगटहोताभया॥कैसाअपानहै दुःखसैंसहनकियाजावैहै॥याकारणतैंही प्राणायामकूं शास्त्रविषेअतिसैकठिनकह्याहै॥और मुख द्वारतैंप्राप्तभयाजोअन्नऔरजल तिनोंकूं नीचेदेशविषेलेजावैहै॥यातैं याकूं अपानकहैहैं॥ताअपानतैं महानमृत्यु प्रगटहोताभया ॥कैसामृत्यु है सर्वप्राणियोंकूंभयकेदेणेहाराहै ॥ अपान मृत्युकाकारणहै ॥ यहवार्ता लोकोंविषेभीप्रसिद्धहै ॥काहेतैं अन्नकेदोषोंकेविना किसीस्थानविषे भी प्राणी मरतेनहीं॥ किंतु अन्नदोषोंतैंही सर्वत्रप्राणी मरतेहैं॥और अनादिकोंकूं यह अपानवायु ग्रसैहै॥याकारणतैं अपानतैंमृत्युकाप्रगट होनाकह्याहै॥और उपस्थछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोइके वीर्यसहितउपस्थइंद्रिय प्रगटहोताभया॥सोकैसावीर्यहै॥जरायुज औरअंडज देहोंकूं विस्तारकर्त्ताहुआलोकविषेभी प्रसिद्धहै॥और पंचमआहुतिकासाधनहै॥यहवार्ता आगेकहैंगे॥और षट्कोशोंवालाजोशरीर ताका कारण

है ॥ तिनोंविषेत्वचा औररुधिर औरमांस यहतीनकोश माताकेअंशतेंहोवैहैं ॥ और नाडी अस्थि मज्जा यहतीनकोश पिताकेअंशतेंहोवै हैं ॥ और वीर्यसहितताउपस्थइंद्रियतें जलहैप्रधानजिनोंविषेऐसेजेपंचभूत तेहैंशरीरजाका ऐसाजो प्रजापतिदेवता सो प्रगटहोताभया ॥ इसप्रकार ऐतरेयउपनिषदविषे इंद्रियऔरतिनोंकेदेवताओंका प्रगटहोणाकह्याहै॥अब बाकीरहेजेदेवताओरइंद्रिय तिनोंकाभीश्रुतिविषेस्थित जेवाक्औरअग्निआदिकशब्द तिनशब्दोंकीलक्षणातें ग्रहणकाप्रकार दिखावैहैं ॥ पूर्वकह्याजो मृत्युकाकारणअपान सो गुदाछिद्रतेंस्प ष्टहोवैहै ॥ याकारणतें सोअपानवायु देवतासहितपायुइंद्रिय होवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अपानकरिके देवतासहित पायुइंद्रियकाभी प्रगट होणाग्रहणकरणा ॥ और घ्राणइंद्रियकूंप्राप्तहोइके गंधतेंरहितभीवायु गंधवालाहोवैहै ॥ याकारणतें घ्राणइंद्रिय पृथिवीहै ॥ यास्थानविषे गंधसहितवायुकरिके पृथिवीदेवताकाग्रहणकरणा ॥ और पूर्व त्वचातेंलोमोंकाप्रगटहोणाकह्या ॥ तेलोम कंपकरिकेयुक्तहैं ॥ और लोमोंविषेकंपवायुकरिकेजन्यहै ॥ यातें ऐसानिर्णयहोवैहै ॥ लोमऔरस्पर्शनइंद्रियकरिकेयुक्तत्वचारूपगोलकतें वायुदेवता प्रगटहोता भया ॥ और आवरणकाविरोधीअवकाशरूपलक्षण ॥ आकाशऔरदिशाका समानहै ॥ यातें पूर्वकहीजेदिशा तेआकाशरूपहैं ॥ और पूर्वहृदयविषे मनकाप्रगटहोणाकह्या ॥ तहाँ मनकेप्रगटहूए बुद्धिका औरअहंकारका और चित्तकाभी प्रगटहोणाजानिलेणा ॥ काहेतें श्रुति विषे मनकरिकेही सर्वजगत्कीउत्पत्तिकहीहै ॥ और पूर्वमनकेदेवताचंद्रमाकाप्रगटहोणाकह्या ॥ ताचंद्रमाकरिके बुद्धि अहंकार चित्तके जेदेवता ब्रह्मा रुद्र महेश इनोंकाभी प्रगटहोणाग्रहणकरणा ॥ और पूर्व अपानकाप्रगटहोणाकह्या ॥ ताअपानकरिके क्रियाशक्तिवालेसर्व प्राणोंका ग्रहणकरणा ॥ और पूर्व मुखरूपगोलकविषे वाक्इंद्रियका प्रगटहोणाकह्या ॥ और ताकेदेवताअग्निका प्रगटहोणाकह्याथा ॥ तहाँ वाक्इंद्रियकरिके मुखरूपएकस्थानविषेरहणेहारे रसनइंद्रियकाभी प्रगटहोणाजानणा ॥ और अग्निदेवताकरिके वरुणदेवताकाभी प्रगटहो णा ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार अनंतप्रकारकेछिद्र अंडविषेरचिकरिके दोहस्तोंकूं औरदोपादोंकूं परमेश्वर प्रगटकरताभया ॥ और हस्तोंतें इंद्रदेवताकूं प्रगटकरताभया ॥ और पादोंतें उपेंद्रदेवताकूं प्रगटकरताभया ॥ इसप्रकार विराट्भगवान्केदेहमें जेमुखादिकछिद्रहैं ॥ तिनों

छिद्रोंविषे जैसेश्रुतिविषेकह्याहै तिसीप्रकार संपूर्णदेवताओंकूं औरसंपूर्णवाक्तैंआदिलैकेइंद्रियोंकूं परमेश्वर प्रगटकरताभया॥जभी कर्मऔर उपासनाकरिकेप्राप्तभया जोदेवशरीर ॥ सोभीदुखोंकरिकेयुक्तहै ॥ तौ अन्यशरीरका क्याकहणाहै ॥ इसअभिप्रायकरिकेताविराट्शरीरकूं समुद्ररूपकरिकेवर्णनकरैंहैं॥ अनंतकोटियोंकूंअनंतकोटिवारगणनाकरेसैं जोसंख्याहोवै इतनेंयोजनविस्तारवाळा विराट्कादेहरूपसमुद्रहै॥ यद्यपि समुद्रकेसंख्याका शास्त्रविषेनियमलिख्याहै ॥ तथापि प्रळयकाळविषेनियमनहींहै ॥ काहेतैं प्रळयकाळविषे योजनोंकीगणतीकर णेहारा कोईहैनहीं ॥ यद्यपि ईश्वर प्रळयकाळविषेभीहै ॥ तथापि ईश्वरकूं गणतीसैंकोइप्रयोजनहैनहीं ॥ यातैं योजनोंकीगणतीकरैनहीं ॥ और जैसेसमुद्र देखणेकरिके सर्वप्राणियोंकूं भयकीउत्पातिकरैहै ॥ तैसे सर्वात्माविराट्मैंहूं ॥ ऐसाजोविराट्काज्ञान तातैं परिच्छिन्नदृष्टिवा ळेअज्ञानीपुरुष भयकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और पंचमहाभूतरूपजलहैंजाविषे ॥ और चतुर्दशलोकरूप तरंगमालाहैं जिसविषे ॥ और जैसें समुद्र शुक्तिऔरशंखोंकरिके शोभायमानहै ॥ तैसे यहविराट्भगवान्काशरीरभी जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज याचारिप्रकारकेशरीररूप शु क्तिऔरशंखोंकरिके शोभायमानहोरह्याहै ॥ और कामक्रोधादिकरूपमगरोंकाआश्रयहै ॥ काहेतैं जैसेसमुद्रकेमगर आपणेतंतुवोंसे पुरुषकूं बाधिकरिके समुद्रविषे गिडायदेतेहैं॥तैसे कामक्रोधादिकभी वासनारूपतंतुवोंसेंबांधिकरिकै यापुरुषकूं संसाररूपसमुद्रविषेगिरायदेतेहैं॥या तैं मगरकेसमानहैं ॥ और जैसे समुद्रविषे नानाप्रकारकेबंधनकरणेहारेहैं ॥ तिनोंमेंभी कोईतो समुद्रकेपारजाणेमेंप्रतिबंधकहैं ॥ जैसे हनु मान्‌केछायाकेग्रहणकरणेहारेराक्षसहैं ॥ और कोईक समुद्रविषे तरणेकेप्रतिबंधकहैं ॥ जैसे जलोंकेभ्रमणहैं ॥ और कोईक बाहरनिकसणे मैंप्रतिबंधकहैं ॥ जैसे ग्राहोंकेमुखहैं इसप्रकार बंधनकेकरणेहारे संचित औरक्रियमाण औरप्रारब्धकर्महैं जिसविषे ॥ ऐसाविराट्भगवान् काशरीरहै ॥ और त्वचाआदिकधातुवोंकरिकेदुर्गंधहै ॥ और विष्ठामूत्रमळकाआश्रयहै ॥ यद्यपि दुर्गंधादिकअन्नकेदोष ॥ विराट्शरीरवि षेकहणे श्रुतिसैंविरुद्धहै ॥ तथापि व्यष्टिशरीरद्वारा ताविषेजानणे ॥ स्वभावतैं ताविषे दुर्गंधादिकनहीहैं ॥ ऐसेविराट्शरीरविषे प्राप्तभये जेवागादिकदेवता तेक्षुधाऔरतृषाकरिव्याकुलहुए औरविराट्शरीरकेतृप्तकरणेयोग्य अन्नऔजळकूंनदेखतेहुए आपनापिताजो परमेश्वरहै

ताकूं कहतेभये ॥ हेभगवन् संपूर्णजगत्जाकाशरीरहै ऐसाजोविराट्भगवान्काशरीर आपने उत्पन्नकऱ्याहै ॥ याशरीरतैंभिन्न कोई अन्न औरजल देखतानहीं ॥ और याशरीरविषेहमारेकूं भोजनकरणेयोग्यअन्नादिक नहींदेखते ॥ और पानकरणेयोग्यजल नहींदेखते ॥ तातैं हेभगवन् हमारेसुखवासतै थोड़ेअन्नऔरजलकरिके जाकीतृप्तिहोवे ऐसाकोईशरीर उत्पन्नकरो ॥ जिसविषेस्थित होके हम अन्न औरजलकूं प्राप्तहोवैं ॥ इसप्रकार वाकादिकदेवतावोंकरिकेकह्याहुआ सोपरमात्मा गौकेदेहकूं रचताभया ॥ तिसगौदेह विषे वाकादिकदेवताओंकी प्रीतिनहोतीभई ॥ काहेतैंगवादिकशरीरोंविषेपूर्वकऱ्याहुआकर्महीं भोगताहै ॥ नवीनबुद्धिऔरकर्मका संपादनहोवेनहीं ॥ इसप्रकार गौकेशरीरविषेतिनोंकीप्रीतिकूं नदेखिकरिके परमात्मा पुत्रोंकीप्रीतिवासते अश्वकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ताअश्वविषेभी तिनोंकोप्रीति नहोतीभई ॥ काहेतैं अश्वविषे हस्तोंका औरज्ञानकर्मकेसाधनोंका अभावहै ॥ इसप्रकार पुत्रोंकीप्रीति वासते परमेश्वर चौरासीलक्षदेहोंकूं रचताभया ॥ परंतु किसीशरीरविषेभी तिनोंकीप्रीति नहोतीभई ॥ तापश्चात्मनुष्यशरीरकूं परमेश्वर रचताभया ॥ तामनुष्यशरीरकूं उत्पन्नहुआदेखिकरिके देवता तिसशरीरमें प्रीतिकरतेभये ॥ और हर्षवान् होके परमेश्वरकेप्रति कहतेभये ॥ हेपितः यहमनुष्यशरीर आपनेहीं साक्षात्रचाहै ॥ किसीद्वारा नहींरचाहै ॥ यातैं हर्षकाकरणेहाराहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे बुद्धिमान्तक्षादिक जोआपणेहस्तसेवस्तुरचैंहैं ॥ सोरमणीकहोवैहैं ॥ औरजोआपणेभृत्योंसैंवस्तुकरावैं सो रमणीकनहींहोवैहै ॥ यह लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और यामनुष्यशरीरविषे साक्षात् ईश्वरकाकार्यपणा युक्तहै ॥ काहेतैं यहमनुष्य वस्तुकूं जाणिकरिके कथनकरैहै॥ तात्पर्ययह ॥ ज्ञानइंद्रिय औरकर्मइंद्रिय करिके युक्तहै ॥ यद्यपि वानरादिकशरीरोंविषेभी चक्षुआदिकइंद्रियोंसैंज्ञानहोवैहै ॥ यातैं मनुष्यशरीरविषेतिनोंतैंविशेषता बनैनहीं ॥ तथापिमनुष्यसेभिन्न वानरादिकोंकेइंद्रियोंका वस्तुकेसाथसंबंधहूएभी सर्वप्रकार अज्ञानकी निवृत्तिहोवैनहीं ॥ औरघटादिकअर्थकेसाथ इंद्रियोंकेसंबंधहूए बहुतस्थानमें मनुष्य अज्ञानतैंरहितहोवैहै ॥ यातैं वानरादिकोंतैंमनुष्य श्रेष्ठहैं ॥ औरकेसायहमनुष्यशरीरहै ॥ इसलोककेजेसुखऔरसुखकेसाधनतिनोंकूंजाणताहै ॥ और स्वर्गादिकलोकोंकेजेसुख और

तिनोंकेसाधन जेयज्ञादिककर्म तिनोंकूंभी शास्त्रसेजाणेहै॥ और अतीतकालविषेजोहूआकार्य औरआगेहोणेवालाजोकार्यहै ताकूं जाणेहै ॥ औरसुखकीप्राप्तिके औरदुःखकीनिवृत्तिके जेसाधनहैं ॥ तिनोंकेजानणेवासतैं साधनोंकेजानणेहारेजेमहात्माहैं तिनोंके समागमकाप्रकार भी यहमनुष्य जाणेहै ॥ और महात्माओंकेसमागमहूए यहमेरेकूंकरणेयोग्यहै यहनहींकरणेयोग्य यहसंपूर्ण प्रमाणसैंज्ञानताहै ॥ और यामनुष्यशरीरविषेहीं वेदवाक्योंतैं आत्माकासाक्षात्कारहोवेहै ॥ ऐसेमनुष्यशरीरविषेही संपूर्णदेवता संतोषकूंमानतेभये ॥ इसप्रकार ॥ हर्षकरिकेयुक्तहुएपुत्रोंकूं पिता आज्ञाकरताभया ॥ हेदेवतावो याव्यष्टिशरीरविषे आपणेआपणेगोलकरूपस्थानविषे तुम प्रवेशकरो ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इंद्रियोंकेरहणेयोग्ययास्थानविषे ॥ हमाराप्रवेश बनेनहीं ॥ काहेतें हम व्यापकहैं ॥ औरयहअल्पस्थानहै ॥ किंवा इंद्रियोंकरिकेही अर्थकीसिद्धिहोवेगी ॥ हमारेप्रवेशकाकछूप्रयोजनभीनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो तुह्मारेसंबंधीजेइंद्रियहैं ॥ तिनोंवि षे भेदभावकूंछोडिकरिके एकताअभिमानकरिकेप्रवेशकरो ॥ दृष्टांत॥जेसे सांचेमैंढालेहुएताम्रादिकधातुवां एकभावकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ यहाँ यहअभिप्रायहै ॥ एकदूसरेकीअपेक्षाकूंनकरिके जेआपणेआपणेकार्यकूंकरें ॥ तिनोंका एक अधिकरणमेंरहणाहोवेनहीं ॥ इंद्रियऔरदेव तावोंकू परस्पर अपेक्षाहै ॥ काहेतें चक्षुतें विना प्रकाशरूपसूर्य सिद्धहोवेनहीं और सूर्यतैंविनाचक्षुइंद्रियसिद्धहोवेनहीं ॥ काहेतें सूर्यतैंविना चक्षुइंद्रिय रूपादिकवस्तुवोंकेज्ञानकूं उत्पन्नकरेनहीं ॥ याकारणतैंही अंधकारमें रूपका चक्षुजन्यज्ञानहोवेनहीं ॥ औररूपादि कवस्तु केज्ञानरूपकार्यतेंही चक्षुइंद्रियका अनुमितिज्ञानहोवेहै ॥ काहेतें इंद्रियोंका इंद्रियोंकरिकेप्रत्यक्षहोवेनहीं ॥ यातेंय सिद्धभया ॥ सूर्यहोवे तभीरूपादिकोंका प्रत्यक्षज्ञानहोवे ॥ ताज्ञानरूपकार्यत करणरूपचक्षुकाअनुमितिरूपज्ञानहोवे ॥ इसप्रकार परंपराकरिके सूर्य चक्षुइंद्रियकासाधकहै ॥ इसप्रकार संपूर्णइंद्रिय औरतिनोंकेदेवता परस्परअपेक्षाकेरहैं ॥ यातें इंद्रियोंसेमिलिकरि के देवतावोंका व्यष्टिशरीरविषेप्रवेश बनेहै ॥ इसप्रकार परमेश्वरकरिकेकहेहुए संपूर्णदेवता तेसेहीकरतेभये ॥ तिनोंविषे अग्निदेवता पूर्वउत्पन्न भयाजो वाक्इंद्रिय तासैं एकताकूंप्राप्तहोकरिके मुखरूपगोलकविषे स्थितिकूंप्राप्तहोताभया ॥ और जलोंकापतिजोवरुणहै ॥ सो रसनइं

द्रियकेसाथ एकताअभिमानकरिके जिह्वाकेअग्रभागरूपगोलकविषे स्थितहोताभया ॥ और गंधविशिष्टवायुदेवता घ्राणइंद्रि यकेसाथ एकताअभिमानकरिके नासिकाछिद्ररूपगोलकविषे प्रवेशकरताभया औरसूर्यदेवता चक्षुइंद्रियविषे एकताअभिमानक रिके अक्षिरूपगोलकविषे प्रवेशकरताभया ॥ और दिग्देवता श्रोत्रइंद्रियकेसाथ एकताअभिमानकरिके करणछिद्ररूपगो लकविषे प्रवेशकरताभया ॥ और स्थावररूपउपाधिवालाजोवायुदेवताहै ॥ सो लोमसहितस्पर्शनइंद्रियविषे एकताअभिमान करिके त्वचारूपगोलकविषे स्थितहोताभया ॥ और चंद्रमादेवता मनकेसाथ एकताअभिमानकरिके हृदयरूपगोलकविषे प्रवेश करता भया ॥ और मृत्युदेवता पायुइंद्रिकेसाथ एकता अभिमानकरिके गुदाछिद्ररूपगोलकविषे स्थितहोताभया ॥ और प्रजापतिदेवता उपस्थइंद्रियकेसाथ एकता अभिमानकरिके शिश्नछिद्रविषे प्रवेशकरताभया ॥ इतनेदेवताओंकाप्रवेशश्रुतिविषेकह्याहै ॥ इसरीतिसे दूसरेभीदेवता अध्यात्मइंद्रियोंविषे और अधिदेवोंविषे वर्तमानजोभेद तासेरहितहुए और इंद्रियोंकेसाथएकताअभिमानकूंप्राप्तहुए आपणे आपणे स्थानविषे प्रवेशकरतेभये ॥ या प्रकार व्यष्टिशरीरविषे प्रवेशकरिके अधिदेव अध्यात्म अधिभूत यह त्रिपुटि सिद्धहो वेहै ॥ तहाँ सूर्यादिक अधिदेवहैं ॥ और चक्षुइंद्रियादिक अध्यात्महैं ॥ और रूपादिकविषय अधिभूतहैं ॥ यहरीतिसर्वइंद्रियोंविषे जानणी ॥ इसप्रकार परमेश्वररूपपिताने सर्वदेवतावोंकूं यथायोग्यस्थान दिये ॥ तिसतैंअनंतर अशना और पिपासादेवता आपणे सेवृद्धसर्वदेवतावोंकूं स्थानकोप्राप्तिदेखिकरिके परमेश्वरतें स्थानकूंयाचतेभये ॥ ताअशनापिपासादेवतावोंका पूर्वपूर्वदेवतावोंकेस्थान सेभिन्नस्थानकूं नदेखिकरिके परमेश्वर अध्यात्मअधिदेवरूपदेवतावोंकेविषेही तिनोंकूं स्थानदेताभया ॥ और परमेश्वर कहताभया ॥ हेअशनापिपासा ॥ इनोंदेवतावोंकोतृप्तिकरिकेही तुह्मारीतृप्तिहोवेगी ॥ इसप्रकार परमेश्वरने तिनोंकास्थानकऱ्या ॥ सोअबीभी ऐसा दीख ताहै ॥ सूर्यादिकदेवतावोंकेताईं घृतादिरूपहविषदियेहुए तिनदेवतावोंके अशनापिपासाकीशांतिहोवेहै ॥ और अध्यात्मइंद्रियों केप्रति रूपादिकविषयरूपहविषदियेहुए किंचित्काल तिनोंकेअशनापिपासाकीशांतिहोवेहै ॥ यहही तिनोंकीतृप्तिहै ॥ इसप्रकार तिनदेवतावोंकूं

स्थानदेकरिके अन्नप्राप्तिकीइच्छावान्जोदेवताहैं तिनोंके उपकारवासते तिनदेवतावोंकरिकेनहींकह्याहुआभी पिताजोपरमेश्वरहे सो ऐसाविचारकरताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे पिता पुत्रोंकरिकेनहींकह्या हुआभी तिनोंका अन्नऔरवस्त्रादिकोंसे पालनकरेहे ॥ यहजे इंद्रियऔरदेवतारूपहमारेपुत्रहैं ॥ ते क्षुधाकरिकेयुक्तहैं ॥ यातें इनोंके वासते मैं अन्नकूंरचों ॥ ऐसाविचारकरिके परमात्मा नानाप्रकारकेउपायोंकरिके पंचभूतोंतें बहुतप्रकारकाअन्न रचताभया ॥ काहे तें एकप्रकारकेअन्नतें सर्वप्राणियोंकीतृप्तिहोवेनहीं ॥ जैसे मनुष्यादिकोंका व्रीहिऔरतृणादिक स्थावररूपअन्नहैं ॥ और सिंहादिकोंका मृगादिरूप जंगम अन्नहै और सर्पादिकोंका वायुऔर मूषकादिक अन्नहे ॥ इसप्रकार अन्नोंकेउत्पन्नहुए याअन्नकूंतुमग्रहणकरो ऐसेपरमेश्वरकरिकेकहेहुएभी संपूर्णदेवता अपानवायुसेविना ताअन्नग्रहणेमें नसमर्थहोतेभये ॥ याकारणतेंहीं श्रुतिविषे सर्वदेवतावोंका ईश्वर औरअन्नाद अपानवायु कह्याहे ॥ अन्नकूंजोदेवे सोअन्नादकहियेहे ॥ यद्यपि यह अपानवायु हमारेताईं अन्नकेदेणेहाराहे ऐसामानिकरिके सर्वदेवतावोंनें ताअपानवायुका आश्रयणकिया ॥ तथापि सोअपानवायु सर्वव्यवहारकेसाधकअंतर्यामीआत्मातेंविना अन्नग्रहणकरणेकूं नसमर्थहोताभया ॥ दृष्टांत॥ जैसे चेतनपुरुषतेंविना कुठार छेदनरूपकार्यकरणेमें समर्थनहींहोवेहे ॥ ऐसादेखिकरिके परमेश्वर तिनदेवतावोंकरिकेनहींकह्याहुआभी विचारकरताभया ॥ यह अधिदेवादिरूपजगत् प्राणवायुकरिकेयुक्तप्रगटभयाभी ॥ तौभी प्रकाशरूपमेंपरमात्मातेंविना यहजडजगत् किसीप्रकारभी सिद्धहोवेनहीं॥ याकहणेतेंयहसिद्धभया॥जोजो जडवस्तुहैं ॥ सोसो प्रकाशकीअपेक्षाकरेहैं॥दृष्टांत॥जैसे यहअन्न भोजनकरणेयोग्यहे॥और यहशब्द कहणे योग्यहे ॥ और यहरूपादिक देखणेयोग्यहे ॥ याप्रकारकेज्ञान भोक्ता वक्ता द्रष्टा रूपप्रकाशकआत्मातेंविना सिद्धहोवेंनहीं ॥ तहाँएकही आत्मा प्राणविशिष्टहुआ भोक्ताकहियेहे ॥ और वाक्इंद्रियविशिष्टहुआ वक्ताकहिएहे ॥ और चक्षुविशिष्टहुआ द्रष्टाकहियेहे ॥ यारीतिसे श्रोतादिकभीजानणे ॥ यहशास्त्ररीतिसेदृष्टांतकह्या॥अब लोकप्रसिद्धदृष्टांत कहेहैं ॥ जैसेप्रकाशविना अंधकारविषे रूपवान्घटादिपदार्थोंकूं यह लोक नहीं जाणेहे॥शंका॥हेभगवन् पूर्व आपने यह नियमकह्या॥जो जो जडवस्तुहे ॥सो सो आपणीसिद्धिमें प्रकाशकीअपेक्षाकरेहे॥

सोनियम यद्यपि घटादिकोंमेंतो बनेहै ॥ तथापि अंधकारविषे तानियमकाव्यभिचारहै ॥ काहेतें अंधकार जडतोंहै परंतु आपणीसि
द्धिमें प्रकाशकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ उलटा प्रकाशतेंनिवृत्तहोवैहै ॥ समाधान ॥ अंधकार यद्यपि सूर्यादिकप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैहै ॥
तथापि चक्षुरूपप्रकाशकीअपेक्षाकरैहै ॥ याकारणतेंही चक्षुसेंरहितपुरुष अंधकारकूंनहीं देखैहै ॥ अंधकारकूंप्रकाशकीअपेक्षाहै याअर्थ
कूंअब अनुमानप्रमाणतेंसिद्धकरैहैं ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषे घटादिकोंतेंभिन्नसूर्यादिकप्रकाश कारणहै ॥ तैसे अंधकारतेंभिन्न
चक्षुकाप्रकाश ता अंधकारकेज्ञानमें कारणहै ॥ अनुमानकाप्रकारयहहै ॥ अंधकार जो है सो प्रकाशकीअपेक्षाकरैहै ॥ काहेतें जडहोणेतें
जैसे अंधकारजडहै ॥ यातें चक्षुकेप्रकाशकीअपेक्षाकरैहै ॥ तैसे चक्षुआदिकभीजडहैं ॥ यातें तिनोंकाभी दूसरेप्रकाशनेंप्रकाशकरीता
है सो चक्षुआदिकोंकेप्रकाशकरणेहारा आत्माहै ॥ शंका ॥ चक्षुकाप्रकाशक आत्मा आपनेकह्या ॥ सोबनैंनहीं ॥ काहेतें सूर्यकरिकेही
चक्षुकाप्रकाशबनेहै॥समाधान ॥ जैसे विषयरूपघटने सूर्यकाप्रकाश नहींकरीता ॥ तैसे विषयरूपसूर्यनेंभी चक्षुकाप्रकाश नहींकरीता ॥
याकहणेतें यहअनुमानसिद्धभया ॥ चक्षुआदिकजेप्रकाशहैं ॥ ते आपणीसिद्धमेंदूसरेप्रकाशकी अपेक्षाकरैहैं ॥ काहेतें जडहोणेतें ॥ जो
आपणीसिद्धिमें दूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैहै ॥ सो जडभीनहींहोवैहै ॥ जैसे स्वयंप्रकाशआत्मा किसीप्रकाशकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ यातें
जडभीनहींहै ॥ किंतु चेतनहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्व आपनें यहकह्या ॥ जो चक्षुआदिकप्रकाश जडहैं ॥ यातें दूसरेप्रकाशकीअपे
क्षाकरैहैं ॥ सोबनैनहीं ॥ काहेतें चक्षुआदिकप्रकाशजोहैं ॥ सो आपणीसिद्धिमें दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ काहेतें प्रकाशरूपहोणे
तें ॥ दीपककीन्याई ॥ याअनुमानकाविरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ जैसे दीपक सजातीयदूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैहै ॥ तैसे सर्वप्रकाश
सजातीयदूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैहैं यहनियमनहीं ॥ काहेतें मणिआदिकप्रकाशोंविषे प्रकाशरूपतातोहै ॥ परंतु सजातीयदूसरे
प्रकाशकीअपेक्षाका अभाव नहींहै ॥ किंतु अपेक्षाहीहै ॥ यहसर्ववादियोंकूंसंमतहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् प्रकाशपणा मणिऔरचक्षुआदि
कसंपूर्णोंमें समानहै ॥ परंतु कोईकप्रकाश दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरैहै ॥ और कोईप्रकाश दूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैहै ॥ यामें क्या

कारणहे ॥ समाधान॥हेशिष्य प्रकाश्यपणा औरप्रकाशकपणाविषे परिच्छिन्नपणा औरव्यापकपणाकारणहे॥जोजो प्रकाशकपरिच्छिन्नहे॥
सोसो प्रकाश्यहे ॥ जैसे दीपककीअपेक्षाकरिके मणिआदिक परिच्छिन्नहें ॥ यातेंप्रकाश्यहे ॥ और जोजो व्यापकप्रकाशहे॥सोसो प्रकाश
कहे ॥ जैसे मणिआदिकोंकीअपेक्षाकरिके दीपादिकप्रकाश व्यापकहें ॥ यातें मणिआदिकोंके प्रकाशकहें ॥ याकहणेतेंयहसिद्धभया ॥
जो व्यापकहोवे औरप्रकाशस्वरूपहोवे ॥ सोईही दूसरेपरिच्छिन्नप्रकाशकूं प्रकाशेहे ॥ सोप्रकाशपणा औरव्यापकपणा मैंकूटस्थविषेहे ॥
यातें मेंहीं सर्वप्रकाशोंकाप्रकाशकहूं ॥ याकहणेतेंयहअनुमानसिद्धभया॥आपणेतेंभिन्नसर्वका प्रकाशकरणेहारी ॥ जोबुद्धिहे॥ सो मुझकूट
स्थकरिकेप्रकाश्यहे॥काहेतें परिच्छिन्नहोणेतें॥दृष्टांत ॥ जैसे व्यापकऔरप्रकाशस्वरूपबुद्धिकरिके सूर्यऔरघटादिरूपजगत् प्रकाश्यहे ॥
जाकाप्रकाशकरिये सोप्रकाश्यहोवेहे॥पंचभूतोंकेसत्त्वगुणकाकार्यहे॥यातें बुद्धिप्रकाशरूपहे॥और हिरण्यगर्भकाउपाधिहे यातें व्यापकहे॥
इसप्रकार श्रुतिने कथनकरीजोआत्माकीव्यापकता॥सोव्यापकता असंभावनाआदिकदोषोंतें बुद्धिविषे आरूढहोवेनहीं॥यातें तिनदोषों
कीनिवृत्तिवासतें तीनपरिच्छेदोंकाअभाव आत्माविषेदिखावेहें॥जैसे गोव्यक्तिरूपएकदेशविषे गोत्वजातिरहेहे॥अश्वादिकोंविषेरहेनहीं॥तैसे
मैंपरमात्मा किसीएकदेशविषेस्थितनहींहूं॥काहेतें जोमैं किसीदेशविषेनहींहोवों॥तो तिसदेशकेपदार्थोंकी सत्ताऔरप्रकाश नहींहोवेगा ॥या
तें मैं सर्वत्रव्यापकहूं याकहणेतें देशपरिच्छेदकाअभाव आत्माविषे दिखाया ॥ और जैसे भूत भविष्यत् वर्तमान पदार्थ किसीकाल
विषेहें और किसीकालविषेनहींहें ॥ यातें कालपरिच्छेदवालेहें ॥ तैसे मैंपरमात्मा किसीएककालविषेनहींहूं ॥ किंतु तीनोंकालोंविषेहूं ॥
याकहणेतेंकालपरिच्छेद काअभाव आत्माविषे दिखाया॥और जैसे अस्तियाशब्द औरज्ञानका विषयभूमि घटतेंभिन्न प्रतीतहोवेहे॥और
नास्ति याशब्द और ज्ञानका विषयवंध्यापुत्र घटतेंभिन्न प्रतीतहोवेहे॥यातें घटादिक वस्तुपरिच्छेदवालेहें॥तैसे मैंपरमात्मातेंभिन्नअस्ति
नास्तियाशब्द और ज्ञानका विषय कोई हेनहीं॥काहेतें मैंहीं सर्वका आत्माहूं॥याकहणेतें वस्तुपरिच्छेदकाअभावआत्माविषे दिखाया॥
तीनोंपरिच्छेदोंकेलक्षण पूर्वनिरूपणकरिआयेहें ॥ यातेंयहांनहींकहे ॥ अब अद्वितीय आत्माकीसिद्धिवासते प्रपंचकूं मिथ्यारूपकरिके

निरूपणकरेंहैं ॥ मुझपरमात्माविषे यह संपूर्णजगत् कल्पितहै ॥ कैसाजगत्है ॥ देश और कालादिकरें स्वरूपजाका ॥ और नाम रूपक्रियाकरिकेयुक्तहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे. रज्जुविषेसर्प कल्पितहोवैहै ॥ तातें मैपरमात्माही सर्वत्रव्यापकहूं ॥ मेरेसेभिन्न कोई वस्तु नहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जगत्काभेद आत्माविषेमतहोवे ॥ परंतु जैसे घटविषेरहेजे रूपादिकगुण ॥ तिनोंतें घट भिन्नहोवैहै ॥ तैसे सत्‌चित् आनंदधर्मोतें आत्मा भिन्नक्योंनहींहोवे ॥ यातें वस्तुपरिच्छेद आत्माविषेहै ॥ समाधान ॥ सत् चित् आनंद यहजेधर्महैं ॥ तेमैंअंतर्यामीपरमात्मातेंजोभिन्नहोवैं ॥ तो आपणेसत्‌चित् आनंदस्वरूपतेंही रहितहोवैंगे ॥ काहेतें व्यापकमेरेतें जो आनंदभिन्न होवे ॥ तो वस्तुपरिच्छेदवालाहोवैगा ॥ जोपरिच्छिन्नहै ॥ सो आनंदरूपनहीहोवैहै ॥ श्रुतिनें व्यापककूंहीसुखरूपकह्याहै ॥ इसप्रकार सत् जोमैं प्रकाशस्वरूपआत्मातें भिन्नहोवे ॥ तो असत्‌होवैगा ॥ और चित् जोशुद्धसत्‌स्वरूप आत्मातैंभिन्नहोवे ॥ तोअसत्‌होवैगा ॥ काहेतें मेरेतें भिन्न इनोंको कोईसिद्धिकरणेहाराहैनहीं ॥ यातें सत् चित् आनंद आत्मास्वरूपहै ॥ आत्मातैंभिन्ननहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सत्‌चित्‌आनंदधर्म जोआत्मातैंअभिन्नमानोंगे ॥ तो आत्मा धर्मीहै और सत्‌चित् आनंद धर्महैं॥ यह धर्मधर्मीव्यवहार नहींहोवैगा ॥ काहेतें भिन्नोंकाही धर्मधर्मीभाव लोकविषेदेखाहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य अत्यंतभिन्नोंका औरअत्यंतअभिन्नोंका धर्मधर्मीभाव होवैनहीं ॥ काहेतें अत्यंतभिन्नोंका जोधर्मधर्मीभावहोवे ॥ तो गौतें अश्व अत्यंतभिन्नहै ॥ यातें अश्व गौकाधर्म होणाचहिये ॥ और होवैनहीं तैसेअत्यंतअभिन्नोंका जोधर्मधर्मीभावहोवे ॥ तो घटऔरकलशका अत्यंतअभेदहै ॥ यातें कलश घटकाधर्म होणाचाहिये और होवैनहीं ॥ यातें परस्परभिन्नऔरअभिन्नस्थलविषेही धर्मधर्मीव्यवहार होवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् एक अधिकरणविषे एकवस्तुकाभेद औरअभेद विरुद्धहै ॥ समाधान ॥ एकसत्तावाले भेद औरअभेदका परस्परविरोधहोवैहै ॥ भिन्नसत्तावाले भेदऔरअभेदका परस्परविरोधहोवैनहीं ॥ तैसे यहां सत्‌चित्‌आनंदधर्मोंका आत्मातैंअभेदतो पारमार्थिकसत्तावालाहै औरभेद कल्पितसत्तावालाहै ॥ यातें तिनोंका परस्परविरोधनहीं ॥ ताकल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकेही धर्मधर्मीभावव्यवहार सिद्धहोवैहै ॥

दृष्टांत ॥ जैसे किसीराजाने दूसरेराजाकूं बंदीखानेमेंराखिके पश्चात्छोड़िदिया॥ और एकग्रामदिया ताग्रामकूंपाइके सोराजा संतोषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे कल्पितभेदकूंहीअंगीकारकरिके धर्मधर्मीभावव्यवहार सिद्धहोवैहै ॥ सत्यभेदकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ और कल्पितभेदकरिके द्वैतभीहोवैनहीं ॥ यातैं शुद्धपरमात्मासेकल्पितभेदवाले ॥ जेसत्चित्आनंदधर्म॥ते रज्जुसर्पकीन्यांई भेदकूंउत्पन्नकरैनहीं॥और परमार्थतैं तो सत्चित्आनंद मेरास्वरूपहै ॥ यातैं व्यापक औरप्रकाशस्वरूप मैंपरमात्माकारिकेही सूर्यादिकऔरघटादिकसर्वजडप्रपंचका प्रकाश युक्तहै ॥ और सर्वकेप्रकाशक मैंपरमात्माका दूसरेवस्तुकरिकेप्रकाश युक्तनहींहै॥दृष्टांत॥ जैसे घटकरिके सूर्यकाप्रकाश होवैनहीं ॥ और संपूर्णयाजडसंघातकी मेरेअधीनसिद्धिहै ॥ इसीकारणतैं असत्जडदुःखरूपयादेहादिकोंकूं आपणेतादात्म्यअध्यासतैं सत्चित्आनंदरूप करणेवासतैं याकलेवरविषे मैंहीपरमात्मा प्रवेशकरोंगा॥तासंघातविषे जोपरमेश्वरकाप्रवेशहै ताके दोप्रयोजनहैं ॥ एकतो भोगकीसिद्धिहै॥ औरदूसरा आपणेस्वरूपकाज्ञानहै ॥ तहां प्रथमप्रयोजनकाविचार पूर्वकह्या ॥ अब दूसरेप्रयोजनकाविचार निरूपणकरैहैं ॥ इसप्रकार चिंतनकरिके पुनःयाप्रकार परमेश्वर चिंतनकरता ॥ यासंघातविषे ज्ञानशक्तिरूपबुद्धिवालेमैंपरमात्माके प्रवेशका कोणद्वारहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसीकिसीमार्गकरिके प्रवेशकरो॥यामे विचारकाक्याप्रयोजनहै॥समाधान॥यासंघातविषे पादकाजोनखहै ताकेअग्रभागरूपमार्गकरिके पूर्व प्राण प्रवेशकरताभयाहै काहेतैं प्राण क्रियाशक्तिवालाहै औरज्ञानशक्तितैंरहितहै ॥ यातैं यासर्वतैंनीचेमार्गकरिके प्राणका प्रवेश युक्तहै ॥ और मैंज्ञानशक्तिपरमात्मा सर्वतैंउत्कृष्टहूं ॥ यातैं प्राणइंद्रियादिकभृत्योंकेप्रवेशकाजोमार्गहै॥तामार्गकरिके हमाराप्रवेश बनैनहीं ॥ और मैंचेतनतैंविना ॥ यासर्वजडोंकी चेष्टाहोवैनहीं॥यातैं मैंइनोंतैंश्रेष्ठहूं ॥ दृष्टांत॥ जैसे चेतनतैंविना रथविषेचेष्टाहोवैनहीं ॥इसप्रकार प्रवेशकेमार्गकाविचारकरिके ॥ पुनःपरमेश्वर दूसराविचार करताभया ॥ जातैं मैंज्ञानशक्तिवालाहूं ॥ तातैं आपणेईश्वरस्वरूपकूं नविचारिके कैसेप्रवेशकरोंगा ॥ किंतु आपणेस्वरूपकाभीविचारकरिकेही हमाराप्रवेश युक्तहै ॥ तहां आपणेस्वरूपके बोधनकीइच्छाकरिके परमात्मा ऐसाविचारकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् अनात्मरूपकरिके देह प्रसिद्धहै ॥ यातैं विचारकाकछुप्रयोजननहीं ॥ काहेतैं

अप्रसिद्धवस्तुकाहीविचारहोवैहै ॥ समाधान ॥ यद्यपि शास्त्रकेतात्पर्यजाननेहारेजेविद्वान्हैं ॥ तिनोंकीदृष्टिविषे देह अनात्माप्रसिद्धहै ॥
तथापि मंदबुद्धिपुरुषोंकेउपकारवासते देहकीअनात्मता दृश्यत्वादिकहेतुवोंकरिके आत्मज्ञानीपुरुषोंनें जनावणेकूंयोग्यहै ॥ यातें विचार
सफलहै॥याकरणेतैंयहअनुमानसिद्धभया॥यहदेहजोहै सो अनात्माहै॥काहेतें दृश्यहोणेतें ॥और परिच्छिन्नहोणेतें॥और जडहोणेतें ॥ जो
अनात्मानहींहै॥सो दृश्यपरिच्छिन्न जडभी नहींहै॥जैसे आत्माहै॥और देह अनिर्वचनीयहै॥यातेंभीअनात्माहै ॥ अबयाअर्थकूं विस्तारतें
निरूपणकरेंहैं ॥अनुभवकेविषयजेवस्तुहैं॥तिनोंविषे कौणदेहहै ॥ शंका ॥हेभगवन् संघातकानामदेहहै॥यहलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥समाधान ॥
हेशिष्य केवललोकप्रसिद्धितें अर्थकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ जो केवललोकप्रसिद्धितें अर्थकीसिद्धिहोतीहोवे ॥ तो देहभी आत्माहोणाचाहिये ॥
काहेतें विचारहीनबहुतपुरुष देहकूंही आत्मामानेंहैं॥यातें प्रमाण औरयुक्तितैंअविरुद्ध लोकप्रसिद्धितेंही अर्थकीसिद्धिहोवैहै॥और विचारक
रिकेसंघातकूंदेखिये ॥ तो देहकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतें समानधर्मवाल्योंका जोपरस्परसंबंधहै ताकानाम संघातहै ॥ तेसंघात बहुतहैं ॥
तिनोंविषे किससंघातकानामदेहहै ॥ तहाँ श्रोत्र त्वक् चक्षु घ्राण रसन यह पंचज्ञानइंद्रियोंकासंघातहै ॥ १ ॥ और वाक् पाणि पाद पायु
उपस्थ यह पंचकर्मइंद्रियोंकासंघातहै ॥२॥ और प्राण अपान व्यान उदान समान यह पंचप्राणोंकासंघातहै॥३॥ और त्वचा रुधिर मांस
मेद अस्थि मज्जा रेत यह सप्तधातुवोंकासंघातहै ॥ ४ ॥ और कफ वात पित्त यह तीनदोषोंकासंघातहै ॥ ५ ॥ और विष्ठा मूत्र यह दोनों
कासंघातहै ॥ ६ ॥ और कदाचित्उत्पत्तिवाले स्वेद पूय यह दोनोंकासंघातहै ॥ ७ ॥ और केशलोमआदिकोंका अतंरुपातसंघातहै ॥८॥
यह जो भिन्नभिन्न अष्टसंघातोंकासमुदाय ॥ तिनोंविषे किससंघातकानामदेहहै औरसंघातकूंजोदेहमानेहै वादी ॥ तासें यहपूछाचाहिये ॥
पूर्वकहेजेअष्टसंघात ॥ तिनसंपूर्णोंकाजोसंघात ॥ ताकानाम देहहै अथवा एकएकसंघातकानामदेहहै ॥ यहदोनोंपक्ष बनेंनहीं ॥ काहेतें
जिससमुदायकूं तुम देहमानोंहो ॥ सोसमुदायही निर्वचनकरणेयोग्यनहीं तहाँ पूर्वकहेजेअष्टसंघात तिनोंकाजोसमुदाय सो महासमुदाय
कहियेहै ॥ और पंचज्ञानइंद्रियआदिकोंका भिन्नभिन्नजोसमुदाय सो अवांतरसमुदाय कहियेहै ॥ यहदोनोंप्रकारकेसमुदायका निर्वचन

होवैनहीं ॥ काहेतें सोदोप्रकारकासमुदाय समुदायियोंतेंभिन्नहै ॥ अथवा तिनोंतेंअभिन्नहै ॥ तिनोंविषे प्रथमभिन्नपक्षतो बनैंनहीं ॥काहेतें समुदायियोंतेंभिन्न समुदायकास्वरूप युक्तिकरिकेसिद्धहोवैनहीं ॥ ओर दूसराजो अभिन्नपक्षहै सोभी बनैंनहीं ॥ काहेतें महासमुदायका नामदेहहै यापक्षमें महासमुदायकेसमुदायी जेअष्टअवांतरसमुदाय ॥ तिनोंसे जभी महासमुदाय अभिन्नभया ॥ तभी एकएक अवांतर समुदायविषेभी महासमुदायव्यवहार तथादेहव्यवहार होणाचाहिये ॥ ओर होवैनहीं ॥ किंवा अवांतरजेअष्टसमुदायहैं ॥ तिनोंविषे एक एकसमुदायकानामदेहहै ॥ यापक्षमें अवांतरसमुदायीजे एकएकइंद्रियआदिक तिनोंसे जभी अवांतरसमुदाय अभिन्नभया ॥ तभी एक एकइंद्रियआदिकोंविषे समुदायव्यवहार तथादेहव्यवहार होणाचाहिये ॥ ओरहोवैनहीं ॥ यातें अभिन्नपक्षभी बनैंनहीं ॥ यहाँ समुदायके घटकानाम समुदायीहै ॥ महासमुदायकेघटक अवांतरसमुदायहैं ॥ यातें ताके समुदायीहैं ॥ तैसे अवांतरसमुदायकेघटक एकएकइं द्रियआदिकहैं ॥ यातें ताके समुदायीहैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् पूर्वआपने समुदाय समुदायियोंसेंभिन्नहै ओर अभिन्नहैं यादोनोंपक्षोंविषे दोषकहे॥यातें दोनोंपक्षोंकूं हम अंगीकारकरैंनहीं ॥ किंतु पूर्वकहेजेइंद्रियआदिक ॥ ते संपूर्णमिलेहुये समुदायहोवैहैं ॥ यातें यापक्षविषे दूषणनहींहै॥समाधान ॥ हे शिष्य यापक्षविषेभी पुनरुक्तिदोष होवैहै॥ काहेतें सर्वसमुदायियोंका एकबुद्धिकरिकेविषयकरणारूपजोमेलन सो समुदायहै यह सर्वशास्त्रकासिद्धांतहै॥ संपूर्णमिलेहुये समुदायहोवैहैं याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया॥मेलनरूपसमुदायकरिकेविशिष्टजोहै सो समुदायहै ॥ जैसे देवदत्त धनीउत्पन्नभयाहै ॥ याख्यानविषे विशेष्यजोदेवदत्त ताकेविषे उत्पत्तिकाअन्वयहोवैनहीं ॥ किंतु विशेषण जोधनहै ताकेविषे उत्पत्तिकाअन्वयहोवैहै ॥ तैसे मेलनरूपसमुदायविशिष्टजोहै सो समुदायहै याख्यानविषेभी मेलनरूपजोसमुदाय सोविशेषणहै ॥ ताकेविषे जोसमुदायकाअन्वयकरिये ॥ तौ समुदाय समुदायहै यहप्रतीतहोवैहै ॥ जैसे घट घटहै यहाँ पुनरुक्तिहोवैहै ॥ तैसे समुदाय समुदायहै यहाँभी पुनरुक्ति स्पष्टहै ॥ यहाँअन्वयनाम संबंधकाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् मेलनविशिष्टोंकानाम समुदायहै यापक्षविषे आपने दोष कह्या ॥ यातें यहपक्ष अंगीकारकरणेयोग्यनहीं ॥ किंतु इंद्रियादिकोंकाजोपरस्परमेलन तामेलनकाहीनाम समु

दायहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य मेलननाम संबंधकाहै ॥ सो तादात्म्यसंबंधहै ॥ अथवा संयोगहै ॥ अथवा समवायहै ॥ तिनोंविषे प्रथम तादात्म्यपक्षतो बनैनहीं ॥ काहेतैं भेदकूंसहारणेहाराजोअभेद सो तादात्म्यसंबंध कहियेहै ॥ तहाँ निरपेक्षजोअभेदहै सो तो वास्तवहै ॥ और धर्मीप्रतियोगीकीअपेक्षाकरणेहाराजोभेदहै सो कल्पितहै यहसिद्धांतहै ॥ यातैं वास्तवतैंअभिन्नवस्तुवोंकामेलन कहणा ॥ मेरेमुखविषे जिह्वानहींहै यावाक्यकेसमानहै ॥ इसरीतिसे प्रथमतादात्म्यपक्ष बनैनहीं ॥ और संयोगसंबंधकानाम मेलनहै यहदूसरापक्षभी बनैनहीं॥काहेतैं दोद्रव्योंकासंयोगसंबंधहोवैहै॥सो संयुक्तदोद्रव्योंतैंभिन्न प्रतीतहोवैनहीं ॥ याकारणतैंही ॥ प्रभाकरोंनेसं योगकूं विकल्पमात्र कह्याहै ॥ और समवायसंबंधकानाम मेलनहै यहतीसरापक्षभी बनैनहीं ॥ काहेतैं गुणगुणीआदिकोंका ॥ नैयायि क समवायसंबंधमानेहैं सोसमवाय आपणेसंबंधीजेद्रव्यगुणादिक तिनोंविषे संयोगसंबंधकरिकेरहेहै ॥ अथवा समवायकरिके समवायरहै है ॥ तहाँआद्यपक्षतो बनैनहीं ॥ काहेतैं दोद्रव्योंका संयोगहोवैहै समवाय द्रव्यहैनहीं ॥ यातैं ताका संयोगबनैनहीं॥और समवायसंबंधक रिके आपणेसंबंधीयोंविषे समवाय रहैहै यहदूसरापक्षभी बनैनहीं ॥ काहेतैं जासमवायसंबंधकरिके समवाय रहैहै ॥ सोसमवाय प्रथमसम वायतैं अभिन्नहै अथवा भिन्नहै तहाँप्रथम अभिन्नपक्षतो बनैनहीं ॥ काहेतैं आपणीस्थितिविषे आपणीअपेक्षारूप आत्माश्रयदोष प्राप्तहो वैहै॥औरभिन्नहै यहदूसरापक्षभी बनैनहीं॥काहेतैं सोदूसरासमवाय आपणेसंबंधियोंविषेकिससमवायकरिकेरहेहै॥जोतौ प्रथमसमवायकरिके दूसरासमवाय आपणेसंबंधियोंविषेरहै॥तो अन्योन्यआश्रयदोषप्राप्तहोवैगा॥काहेतैं प्रथमसमवाय दूसरेसमवायकरिके आपणेसंबंधियोंविषे रह्या ॥ और दूसरासमवाय प्रथमसमवायकरिकेआपणेसंबंधियोंविषेरह्या ॥ यादोषकीनिवृत्तिवासतै दूसरासमवाय तीसरेसमवायकरिके आपणेसंबंधियोंविषे रहैहै यह अंगीकारकरोगे तो सोतीसरासमवाय किससमवायकरिके आपणेसंबंधियोंविषे रहैहै ॥ जोतो प्रथमसमवाय करिके संबंधियोंविषेरहै॥तो चक्रकादोष प्राप्तहोवेगा॥काहेतैं प्रथमसमवाय दूसरेकरिकेरह्या ॥ और दूसरा तीसरेकरिकेरह्या॥और तीसरा पुनः प्रथमकरिकेरह्या ॥ यहचक्रकीन्याईभ्रमणहोवैहै ॥ जो तीसरेसमवायकोस्थितिवासतै चतुर्थसमवाय औरचतुर्थवासतैपंचम याप्रकार

समवायोंकीधारामानोगे॥तो अनवस्थादोष प्राप्तहोवेगा॥यातैं समवायसंबंधरूपमेलनकानाम समुदायनहीं॥किंवा ॥ जो संयोगऔरसमवाय संबंधरूपमेलनकानाम समुदायहोवै॥तो वृक्षोंकाजोसमुदाय सो वन कहियेहै॥यास्थानविषे वृक्षोंका परस्परसंयोग औरसमवायसंबंध हैनहीं॥ यातै समुदायव्यवहार नहोणाचहिये और समुदायव्यवहार होवैहै ॥ यातैंभी संयोगसमवायसंबंधरूपमेलनकानाम समुदायनहीं ॥ किंवा॥ संबंधकूं जोवादी समुदायमानैहै ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ संबंध यहाँ दोपदहैं एकतो सं यहपदहै ॥ और दूसरा बंध यहपदहै ॥ तहाँ संप दका क्याअर्थहै ॥ और बंधपदका क्याअर्थहै ॥ यहवादीनैं कह्याचाहिये ॥ शंका ॥ हेभगवन् सं याशब्दका सम्यकपणाअर्थहै ॥ और बं ध याशब्दका बंधनअर्थहै ॥समाधान॥ हेशिष्य यहअर्थ तेरेवचनतैंविना किसीभी संसारसंबंधीवस्तुविषे हम देखतेनहीं ॥ किंतु तेरेवचन विषेहीहै ॥ अब याअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरैहैं ॥ जोवस्तु तीनकालविषे नपरिणामकूं प्राप्तहोवै ॥ सो सम्यककहियेहै ॥ और यहसं पूर्णजगत् जड़है यातैं रज्जुसर्पकीन्याई परिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥और श्रुतिविषेभी आत्मातैंभिन्न सर्वजगतकूं मिथ्याकह्याहै ॥ यातैं आत्मा तैंभिन्न किसीवस्तुविषेभीसम्यकपणा बनैनहीं॥तैसे बंध यापदकाअर्थजोबंधन सोभीबनैनहीं ॥काहेतैं लोकविषे बंधायमानजेवस्तुहैं ॥ ति नोंतैं बंधनभिन्नदेख्याहै॥ जैसे बंधायमान जेदोगौहैं ॥ तिनोंतैंरज्जुरूपबंधन भिन्नहै ॥किंवा॥मूर्त्तवस्तुही लोकविषे बंधन देखाहै ॥ और अमूर्त्तवस्तु बंधनहोवैनहीं ॥ याकारणतैंही अमूर्त्तआकाशनै घटपटादिकपदार्थ नहींबंधीते ॥ तैसे यादेहविषे इंद्रियआ दिकोंकेपरस्परबंधनकरणेहारा औरइंद्रियआदिकसर्वसंघाततैंभिन्न रज्जुआदिकोंकीन्याई कोईमूर्त्तपदार्थ नहींदेखीता ॥ यातैं संबंधपदकाअर्थ कोईप्रसिद्धहैनहीं ॥ इसप्रकार संघात देहहै यापक्षकाखंडनकऱ्या॥अब संघातकेघटकजेइंद्रियआदिकहैं तिनोंकि अनात्म ताकूंनिरूपणकरैंहैं॥मुमुक्षुकेआत्मबोधवासतै एकएकइंद्रियआदिकोंकेअनात्मताकाभी विचारकरणेयोग्यहै॥और विद्वान्पुरुषोंने इंद्रिय आदिकोंकीआत्मता कहींभी नहींअनुभवकरी॥काहेतैं सर्वतैंजोअंतरहोवै सो आत्माकहियेहै॥और इंद्रिय बाह्यहै ॥यातैं घटादिकोंकीन्याईं अनात्माहै॥इसप्रकार विद्वान्केअनुभवप्रमाणकरिके इंद्रियोंकीअनात्मताकही॥अब अनुमानप्रमाणतैंभी इंद्रियोंकीअनात्मता सिद्धकरैहैं॥

वाकादिकइंद्रियांजेहैं ते अनात्माहोणेकूंयोग्यहैं॥काहेतैं दृश्यहोणेतैं औरपरिच्छिन्नहोणेतैं॥जोजोवस्तु दृश्य औरपरिच्छिन्नहोवैहैं॥सोवस्तु अनात्माहीहोवैहैं॥जैसे देहहै ॥ शंका॥ हेभगवन् कर्त्ताकानाम आत्माहै॥यहशास्त्रविषेकह्याहै॥और स्वतंत्रकानाम कर्त्ताहै॥सोस्वतंत्रपणा आपणेआपणे व्यापारोंविषे इंद्रियोंकूंभीहै ॥ यातैं इंद्रियही आत्माहै ॥ समाधान ॥ जोजोस्वतंत्रहोवैहै ॥ सोचेतनहोवैहै ॥ चेतनतातैंविना स्वतंत्रपणारहैनहीं॥जैसे अग्नितैंविना धूम रहैनहीं॥यातैं मुझपरमात्माचेतनतैं विना संपूर्णइंद्रियोंविषे चेतनताकाअभावहै॥याकारणतैं अचेतनइंद्रियोंको किसीआपणेव्यापारविषे स्वतंत्रतानहींहै॥दृष्टांत॥जैसेअचेतनरथादिक चेतनअश्वआदिकोंतैंविना स्वतंत्र गमनकरैंनहीं॥ और ज्ञानइंद्रियऔरअंतःकरणके जेज्ञानरूपव्यापारहैं ॥ और कर्मइंद्रियऔरप्राणोंके जेक्रियारूपव्यापारहैं॥ तेसंपूर्णव्यापार मुझपरमात्माकेसमीपताकरिकेही सिद्धहोवैहैं ॥ यातैं स्वतंत्रपणा चेतनआत्माविषेहीहै ॥ जडइंद्रियोंविषे स्वतंत्रताहैनहीं ॥ अथवा ॥ वाकादिकइंद्रियोंकी शब्दकाउच्चारणादिक जेआपणेआपणेव्यापारहैं तिनोंविषे स्वतंत्रताहैभी ॥ तथापि अन्यव्यापारोंविषे इंद्रियआदिक समर्थहैं नहीं ॥ यातैं तिनोंविषे आत्मतावनैनहीं ॥ अबयाअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरैंहैं ॥ शब्दकाउच्चारण वाकइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और ग्रहण हस्तइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और गमन पादइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और मलकापरित्याग पायुइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और आनंद उपस्थइंद्रियकाव्यापारहै ॥ जैसे राजा आपणेआपणेकार्यविषे भृत्योंकूं जोडताहै ॥ तैसे मुझपरमात्माने आपणेआपणेव्यापारोंविषे इंद्रियादिक स्थापनकरेंहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जडइंद्रियोंकेव्यापारकाजोनियमहै ॥ सो मुझअंतर्यामीआत्माकूंबोधनकरैंहैं ॥ काहेतैं चेतनतैंविना जडोंकी नियम करिकेप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु वायुकरिकेचलायेहुयेसूकेपत्रकीन्यांई नियम तैं रहित प्रवृत्तिहोवैहै ॥ यहरीति ज्ञानइंद्रियप्राणादिकोंविषेभी जानणी ॥ और रूपादिकोंकाज्ञान शब्दज्ञान गंधज्ञान रसज्ञान स्पर्शादिकोंकाज्ञान यह क्रमतैं चक्षुः श्रोत्र घ्राण रसन त्वक् यापंचज्ञानइंद्रियोंके नियमकरिकेव्यापारहैं ॥ पूर्वकहीरीतिसैं इनव्यापारोंकानियमभी सर्वांतर्यामी आत्माकूं बोधनकरैहै ॥ और प्राणोंकाभी इंद्रियोंकीन्यांई नियमकरिकेव्यापारहै ॥ काहेतैं अन्नऔरजलकूं सूक्ष्मनाडीछिद्रोंविषे

स्थापन प्राणकरेहै ॥ यातैं प्राणोंका एकतो यहआश्चर्यरूपक्रियाहै ॥ और दूसरा वागादिक इंद्रियोंकेस्थितिकीकारणतारूपजीवनभी प्राणोंकाकार्यहै ॥ इनदोव्यापारोंतैंविना अन्यकिसीव्यापारका प्राण कारणहैनहीं ॥ और संकल्प निश्चय अभिमान स्मरण यहचारों क्रम तैं मन बुद्धि अहंकार चित्तके नियमकरिकेव्यापारहैं ॥ अब पंचभूतोंके और विषयोंके व्यापारोंकानिरूपणकरैंहैं ॥ जैसे पात्र घृतको धा रण करे है ॥ तैसे जगत्काधारणकरणा पृथिवीकाव्यापारहै ॥ और क्लेदन जलकाव्यापारहै ॥ और तंडुलादिकोंकूंपकावणा तेजका व्यापारहै ॥ और संकोचविकासरूपक्रिया वायुकाव्यापारहै और स्थितिमैं चलनेमैं अनुकूल जो अवकाशता सो आकाशकाव्यापार है ॥ याव्यापारोंतैंभिन्न पृथिवीआदिकोंका कोईव्यापारहै नहीं ॥ और श्रोत्रादिकइंद्रियोंका जीवकेबंधनकरणेकाजोस्वभावहै ॥ तास्वभावकाप्रगटकरणा यहही शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयोंकाव्यापारहै ॥ काहेतैं विषयसंबंधतैंविना केवलइंद्रियोंविषे बंधन कीकारणताहैनहीं ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे विषयोंकूंअतिग्रहकह्याहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् इंद्रियादिकोंविषे स्वतंत्रताकाअभावहै ॥ यातैं आत्मानहींहै ॥ तौभी ज्ञानशक्तिहोणेतैं सर्वज्ञपरमात्माकाउपाधिजोबुद्धि सो स्वतंत्रहै ॥ यातैं बुद्धि आत्माकाहेतैंनहोवै ॥ समाधा न ॥ बुद्धिविषे सर्वज्ञपरमेश्वरकाउपाधिपणा यद्यपि प्रसिद्धहै ॥ तथापि सोबुद्धि आत्मानहीं ॥ काहेतैं बुद्धिविषे जोसर्ववस्तुकेविषयकरणे कासामर्थ्यहै ॥ सो शुद्धपरमात्माकी समीपताकेअधीनहै ॥ स्वतंत्र बुद्धिविषेनहीं ॥ ईहाँ यहअभिप्रायहै ॥ सर्वजगतकेप्रकाशकरणे द्वारा एकचेतनज्ञानशब्दकामुख्यअर्थहै॥और जैसे जलआपणेसंबंधकरिके अस्वच्छघटादिकपदार्थोंविषे सूर्यादिकोंकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेकी योग्यताप्रगटकरेहै॥तैसेबुद्धिभी आपणेसंबंधकरिकेघटादिकपदार्थोंविषेचेतनकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेकीयोग्यताकूंप्रगटकरेहै ॥ और आवर्ण कोनिवृत्तिकरेहै और आपभी बुद्धि चेतनकेप्रतिबिंबकूं ग्रहण करेहै॥यातैं बुद्धि ज्ञानशब्दकागौणअर्थहै॥याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ जैसे सूर्यकेप्रतिबिंबकरिकेयुक्तहुआ दर्पण भित्तिआदिकपदार्थोंकूंप्रकाशेहै ॥ तौभी दर्पण आपप्रकाशरूपनहीं ॥ तैसे चेतनकेप्रतिबिंबकूंग्रह णकरिकेबुद्धि सर्वअर्थोंकूंप्रकाशेहै ॥ तथापि बुद्धि आपप्रकाशरूपनहीं ॥ यातैं शुद्धपरमात्माकीसमीपताकरिकेही बुद्धिविषेसामर्थ्यहै ॥

और मुझपरमात्मातैंविना बुद्धिविषे सामर्थ्यहैनहीं ॥ जैसे श्रीकृष्णभगवान्‌केसमीपतातैंही अर्जुनविषे सामर्थ्य है ॥श्रीकृष्णतैंविना अर्जुन विषे सामर्थ्यहैनहीं॥यातैं बुद्धिआत्मानहीं ॥ और मुझव्यापकपरमात्मानैं ताबुद्धिकीजड़ताभी निश्चयकरीहै॥काहेतैं बुद्धि विषयाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जो परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सो जडहोवैहै जैसे मृत्तिकादिकहैं ॥ और चेतन परिणामकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ यातैंभी बुद्धि आत्मानहीं ॥ अब पूर्वकहीजेप्राणोंकीअनात्मता ताकूं श्रुतिप्रमाणतैंसिद्धकरैहैं ॥ यद्यपिप्राण जीवनकाहेतुहै ॥ और इंद्रियोंकीअपेक्षाकरिकेअंतरहै ॥ तथापि मुझपरमात्माकीसामर्थ्यतैंही जीवनविषे प्राणहेतुहै॥ और श्रुतिनैंभी कह्याहै ॥ प्राणकरिके और अपानकरिके कोई प्राणी नहींजीवैहै ॥ किंतु प्राणऔरअपानकाअधिष्ठान जो आत्मा ॥ ताकरिके प्राणीजीवतेहैं यातैं प्राण आत्मानहींहै ॥ याकहणेतैंयहसिद्धभया ॥ पूर्वकहेजेवाकइंद्रियसेआदिलेके ॥ तिनोंकूं किसीप्रकारकरिकेभी एकएककूं आत्मतानहींहै काहेतैं जो संपूर्णवाकादिकोंकाप्रयोजकहोवै ॥ सो आत्माकहियेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जो आपणीसमीपताकरिके वाकादिकोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्तकरावै ॥ और जिसकेवासते यहवाकादिक प्रवर्तहोवैं ॥ सो आत्माकहियेहै ॥ यह आत्माकालक्षण वाकइंद्रियआदिकोंविषेहैनहीं ॥ काहेतैं वाकादिक सर्वअर्थकेसाधकहैंनहीं ॥ किंतु आपणेआपणेव्यापारकीसिद्धिकरैहैं ॥ यातैं आत्मानहीं ॥ और वाकादिकसंपूर्ण मिलिकरिकेसंघातरूपहैं ॥ यातैंमैंपरमात्माकेअर्थहैं जैसे गृहादिकपदार्थ मृत्तिकाकाष्ठादिकपदार्थोंकासमुदायरूपहैं॥यातैं गृहपुरुषकेअर्थहैं॥और जोजोपदार्थ परकेवासतेहोवैहै ॥ सोसो अनात्माहोवैहै ॥ जैसे गृहादिक अनात्माहैं॥यातैं मेरेसुखकेसाधन जेवाकादिक ॥ तिनोंविषे मैंपरमात्माकी आत्मता कैसेहोवै॥तात्पर्ययह॥तेवाकादिक आत्मारूपनहींहै॥और यहवाकादिकसंपूर्ण मिलिकरिके आपणेवासतेनहींहैं॥और एकएकभी आपणेवासतेनहींहैं ॥ किंतु मैंपरमात्माकेवासतेहैं ॥ यातैं यह संपूर्णवाकादिक मेरास्वरूपनहीं ॥ जभी संपूर्णवाकादिक मिलिकरिके मेरा स्वरूपनहीं भये॥तभीएकएकवाकादिक मेरास्वरूप कैसेहोवैंगे॥किंतु नहींहोवैंगे॥शंका॥ हे भगवन् यह संपूर्णवाकादिक आपईश्वरकेभृत्य हैं॥यातैं आपकीप्रेरणातैंविनाही तुमारेभयकरिकेशब्दकेउच्चारणादिक जेआपणेआपणेव्यापारहैं तिनोंकूं करैंगे॥दृष्टांत॥जैसे राजाके भय

कारिके भृत्य आपणेआपणेकार्यकूंकरेहैं ॥ यातें संघातविषे तुह्मारे प्रवेशका कोईप्रयोजननहींहै ॥ समाधान ॥ यद्यपि यहवाकादिक मेरे भय करिके आपणेआपणेव्यापारोंकूं करेहैं ॥ तथापि मुझपरमात्माकूं त्वंपदका अर्थरूपकरिके यहवाकादिक नहींजाणते॥और सर्वजगत् काकारण जोमैंतत्पदकाअर्थ ॥ ताकूंभी यहवाकादिक नहींजाणते ॥ जभी त्वंपदार्थकूं औरतत्पदार्थकूं यहवाकादिक नहींजाणते ॥ तभी तिनोंकेएकताकूं कैसेजाणेंगे ॥ किंतु नहींजाणेंगे ॥ यातें मैंपरमात्माही यासंघातमेंप्रवेशकरिके मैंकौनहूं ऐसाविचारकरों ॥ यहाँ वाकादिकइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिके मैं शब्दउच्चारणकरूंहूं औरमैंदेखूंहूं याप्रकारकाअभिमानही परमेश्वरकाप्रवेशहै ॥ याहीकूं प्रतिबिंबवाद औरअवच्छेदवादकरिके शास्त्रविषेकह्याहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् जिसआपणेस्वरूपकाविचार आपनेकरणाहै॥ सोविचार याशरीरकेप्रवेशतैंबिनाहींकरो ॥ किसवासते यादुःखरूपशरीरविषे प्रवेशकरतेहो ॥ समाधान ॥ जैसामेरास्वरूपहै तैसाहोवो ॥ इसकालविषे आपणेस्वरूपकीचिंताकरिके कछुप्रयोजन सिद्धहोवैनहीं ॥ यातेंसंघातविषेप्रवेशकरिके इनवाकादिकोंकूं सुखकीप्राप्तिकरिके आपणेस्वरूपकानिर्णयकरोंगा॥यहाँवाकादिकोंकूं सुखकीप्राप्ति और आपणेस्वरूपकानिर्णय यहदोप्रयोजन प्रवेशकेहैं ॥इसप्रकार परमात्मा चिंतनकरिके आपणेस्वरूपकेचिंतनकूंपरित्यागकरिकेशरीरविषेप्रवेशवासतैं द्वारकूंविचारताभया ॥ सो सर्वदेवतावोंकापितापरमेश्वर आपणे भृत्योंकेप्रवेशके जे मुखादिकद्वारहैं॥तिनोविषे आपणीयोग्यताकूंनदेखिकरिके आपणीसमीपताकरिके मूर्धसीमाकूंभेदनकरिके याशरीरविषे प्रवेशकरताभया॥तहाँ शिरविषे जेवाम दक्षिण मध्य यहतीनकपालहैं॥तिनोकेमध्यभागकानाम मूर्धसीमाहै॥ सो केशोंतेंरहितकूशपुरुषके मस्तकविषे देखे हैं ॥ अथवा स्त्रियोंकेकेशविभागकीजोरेखा सो जहाँसमाप्तहोवे तास्थानकानाम मूर्धसीमाहै ॥ यह सर्वपुरुषोंकूंप्रसिद्धहै ॥ औरजैसे प्रसिद्धद्वारकापुरीविषे प्रवर्षणनामापर्वततैंकूदिकरिके आकाशरूपउपऊर्धमार्गतें श्रीकृष्ण प्रथम प्रवेशकरताभया॥तैसे यामनुष्यशरीररूपपुरीविषे कृष्णस्वरूपपरमात्मा ऊर्धमार्गतें प्रवेशकरताभया॥यातें सर्वमनुष्योंकाशरीर द्वारकापुरीहै॥ यहाँ मनुष्यशरीरविषेहीं आत्मसाक्षात्कारकीयोग्यताहै ॥ यातें मनुष्यशरीरविषे प्रवेशकह्या ॥ तामनुष्यशरीरकरिके सर्वशरीरोंका ग्रहणकरणा ॥शंका॥

हेभगवन् श्रुतिऔर स्मृतिविषे नवद्वार प्रसिद्धहैं ॥ यहमूर्धद्वार प्रसिद्धहैनहीं ॥ यातैं याद्वारकरिके शरीरकूं द्वारावतीपुरी केसाकह्या ॥
समाधान ॥ जिसकारणतैं परमेश्वर मस्तककूंभेदन करिके याशरीररूपपुरीविषे प्रवेशकरताभया ॥ यातैं मस्तककेऊर्धभागविषेजोद्वा
रहै सोद्वार उपासकपुरुषोंने विद्दति यानामकरिकेकथनकरीताहै ॥ और लोकविषेभी मस्तकविषेकटुतैलकेधारणतैं कटुताका बुद्धि
मानपुरुषोंनैं अनुभवकरीताहै ॥ और मूढपुरुषोंकरिके श्रीकृष्ण औरताकाद्वार दोनों जानणेकूंअशक्यहैं ॥ यातैं परमेश्वरकेप्रवेशका
द्वार अप्रसिद्धनहींहै ॥ और वाकादिकभृत्योंकेप्रवेशकेजेनवद्वार ॥ तिनोंकेसमान यहपरमेश्वरकेप्रवेशकाद्वार हैनहीं ॥ यातैं तिननवद्वारों
केसाथ॥याद्वारकी श्रुतिस्मृतिविषे गणतीनहींकरी॥और जाकारणतैं योगीपुरुष॥याऊर्धद्वारतैंनिकसिकरिके ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा मुक्ति
काकारण जोदेवयामार्गहै ताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताकारणतैं यहऊर्द्धद्वार नंदनहै॥जिसकरिके आनंदकीप्राप्तिहोवै सो नंदनकहियेहै यद्यपि इंद्र
केवनकानामनंदनहैतथापि नीचेपतनकीभीतिजन्यदुःखकरिके इंद्रकावनयुक्तहै॥यातैं ताविषे सुखकीकारणताका ॥संशयहै॥अब याऊर्द्ध
द्वारकीनंदनवनकेसमानताकूं कहैहैं॥ जैसे स्वर्गविषेप्राप्तभये जेकर्मीपुरुष तिनोंके सुखकाकारण नंदनवनहै ॥ तैसे यहऊर्द्धद्वारभी ब्रह्मलो
कद्वारामुक्तिरूपसुखकाकारणहै॥ इसप्रकार जीवरूपकरिके परत्माकाप्रवेशकह्या॥अब उपाधिकेअभिमानकरिके तापरमात्माकूं संसारकी
प्राप्तिका निरूपणकरैहैं ॥ प्रसिद्धजेनवद्वार औरनाभि औरऊर्द्धद्वार यह एकादशद्वारहैंजाविषें ऐसेशरीररूपपुरीकूंप्राप्तहोके अग्निआ
दिकदेवतावोंकाप्रभुजोपरमात्माइंद्र सो आपणेनिवासवासते तीनग्रहोंकूं करताभया॥चक्षुइंद्रियकेरहणेकाजोगोलक तागोलकविषे प्रथमनि
वास ॥ और चित्तकाजोस्थान हृदयकमलकेदलहैं तिनदलोंविषे दूसरानिवास ॥ और हृदयकमलकेअंतरआकाशविषे तीसरानिवास॥या
तीनग्रहोंविषे अहंकाररूपसिंहजाऊपरि चैतन्यपरमात्माकेप्रतिबिंबरूपगर्भकूंधारणेहारी जोज्ञानशक्तिरूपस्त्री ताकेसाथशयनकूंप्राप्तहोके
इंद्ररूपआत्मा जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति रूपतीनस्वप्नोंकूं देखताहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् स्वप्नतो यद्यपि स्वप्नरूपहै ॥ तथापि जाग्रतऔरसुषु
प्तिकूं स्वप्नरूपताकहनी बनैनहीं ॥ समाधान॥ यहइंद्ररूपजीवात्मा आपणेस्वरूपज्ञानतैंरहितहै॥यातैं जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यहतीनों याकूं

स्वप्नस्वरूपहै ॥ काहेतें जोजैसावस्तुकास्वरूपहोवै तैसाही ताकूंदेखे याकानाम जाग्रत्है ॥ और यहजीवात्मा अद्वितीयआनंदरूपआपणे
स्वरूपकूंभुलायके दुःखी कर्त्ता भोक्ता आपकूंमानैहै यातें अज्ञानरूपनिद्राकरिके जोजोवस्तुदेखताहैसोसर्व स्वप्नहै ॥ तहाँ प्रथम जाग्रत्रू
पस्वप्नकूं निरूपणकरैहैं ॥ वास्तवतैंशुद्धपरमात्मा शब्दस्पर्शादिकबाह्यस्थूलभोगोंकीप्राप्तिवासते अनादिअज्ञानकरिके भोगकाकारणधर्म
अधर्मकूं जिसकालविषे अंगीकारकरैहै ताकानाम जाग्रत्है ॥ तिसजाग्रत्कालविषे वामदक्षिणदोनोंनेत्रोंविषे भगवान् स्त्री पुरुष यादोनों
रूपकरिके प्रगटहोवैहै ॥ तहाँ दक्षिणनेत्रविषेरह्याजोरूप सो अधिकप्रकाशरूपबलवालाहै ॥ यातें भोक्तापुरुषरूपहै ॥ और वामनेत्रविषे
रह्याजोरूप सो अधिकप्रकाशरूपबलवालानहींहै ॥ यातें भोग्यस्त्रीरूपहै ॥ यारीतिसें भोक्ताऔरभोग्यरूपतें परमेश्वरकीउपासनाश्रुतिवि
षेकह्याहै ॥ इसप्रकार व्यष्टिशरीरकेअभिमानकरिके आपणेकूंपरिच्छिन्नमानताहुआ भगवान् वाकादिकसर्वइंद्रियोंकूं अंगीकारकरिके कर्म
केफलकास्वीकाररूपभोगकूं प्राप्तहोताभया ॥ तहाँ बाह्यनानाप्रकारकेभोगोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ जिसतें मैंउत्पन्नभयाहूं यहमेरापिताहै ॥
और यहमेरीमाताहै ॥ और यहमेरेभ्राताहैं और यहमेरीभगनियांहैं ॥ और यहमेरेबांधवहैं ॥ और यहमेरेभृत्यहैं ॥ और यहमेरीस्त्रियां
हैं ॥ और यहमेरेपुत्रहैं ॥ और यहमेरीपुत्रियांहैं ॥ और यहमेरेमित्रहैं ॥ और यहमेरेशत्रुहैं ॥ और यहमेरेउदासीनहैं ॥ मित्रऔरशत्रुभाव
तैंरहितकानाम उदासीनहै ॥ और यहमेरेनियामकहैं ॥ धर्ममर्यादाविषेजोस्थापनकरैताकूं नियामककहैहैं ॥ जैसे पितागुरुराजादिकहैं ॥
और यहमेरेऋत्विकहैं॥यज्ञकेकरावणेहारेब्राह्मणोंकूं ऋत्विक्कहैहैं॥और यहमेरेगुरुहैं॥और यहस्त्रीहै॥और यहपुरुषहै॥और यहनपुंसकहै ॥इ
सप्रकार चेतनशरीरोंविषे भोगोंकूंकह्या॥अब जड़ोंविषेभोगोंकूंकहैहैं॥यहग्रहमेरेहैं॥और यहभूमिमेरीहै॥औ यहअन्नमेरेहैं॥और यहसुवर्णमेराहै
और यहपशुमेरेहैं ॥ और यहवस्त्रमेरेहैं ॥ और यहभूषणमेरेहैं ॥ और यहसिंहासनमेराहै ॥ और यह सुंदरहै ॥ और यह असुंदरहै ॥ यहै
अधिकहै ॥ यह थोड़ाहै ॥ यह समीपहै ॥ यह दूरहै ॥ अब ज्ञानकर्मइंद्रियोंकाविषयरूपभोगोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ यहशब्दहैं ॥
और यहस्पर्शहैं ॥ और यहगंधहैं ॥ और यहरसहैं ॥ और यहरूपहैं और यहशब्द कहणेयोग्यहैं ॥ और यह हस्तोंकरिकेम

हणकरणेयोग्यहैं ॥ और यह पादोंकरिकेचलनेयोग्यहैं ॥ और यह आनंदहै ॥ और यह मलादिकोंकेपरित्यागहैं ॥ अब जिसकरिकेवि षय बंधनपुरुषकूंकरैहैं ताभोगकूं कहैहैं ॥ यह हमारेसुखकेकारणहैं ॥ और यह हमारेदुःखकेकारणहैं ॥ अब विषयोंकेफलरूपभोगकूं कहैहैं ॥ यह सुखहै ॥ और यह दुःखहै ॥ अब कालभोगकूंकहैहैं ॥ यह पूर्वहोताभया ॥ और यह वर्तमानहै ॥ और यह आगेहोवेगा ॥ इसप्रकार ॥ आपणेविषे स्वामीपणेकाअध्यासरूप जेबाह्यभोगहैं ॥ ताकूं कथनकऱ्या ॥ अब तादात्म्यअध्यासरूपशरीरके भोगोंकूं कहैहैं ॥ मैं पुरुषहूं ॥ और मैं स्त्रीहूं ॥ और मैं नपुंसकहूं ॥ और मैं मनुष्यहूं ॥ और मैं पशुहूं ॥ और मैं जरायुजहूं ॥ और मैं स्वेदजहूं ॥ और मैं उद्भिजहूं ॥ और मैं अंडजहूं ॥ इसप्रकार शरीरविषेस्थित जेअन्नकेपरिणामसंपूर्णविकार ॥ तिनविकारोंकूं अज्ञानरूपनिद्राकरिकेसोयाहुआआत्मामायाकरिके आपणास्वरूपमानेहै ॥ और वास्तवतैंतो देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै ॥ अब शरीरकेधर्मोंकाअध्यास निरूपणकरैहैं ॥ मैं बालकहूं और मैं जवानहूं ॥ और मैंवृद्धहूं ॥ और मैंरोगीहूं ॥ और मैंरोगरहितहूं ॥ और मैंरूपवान्हूं ॥ और मैंकुरूपहूं ॥ और मैं शास्त्रविहितआचरणवालाहूं ॥ और मैं शास्त्रनिषिद्धआचरणवालाहूं ॥ याप्रकार देहकेधर्मोंकूं आत्माविषे अज्ञानकरिकेमानेहैं ॥ अब चारिवर्णोंका और चारिआश्रमोंका आत्माविषे अध्यास निरूपणकरैहैं ॥ मैंब्राह्मणहूं ॥ और मैंक्षात्रियहूं ॥ और मैंवैश्यहूं ॥ और मैंशूद्रहूं ॥ और मैंब्रह्मचारीहूं ॥ और मैंगृहस्थहूं ॥ और मैंवानप्रस्थहूं ॥ और मैंसंन्यासीहूं ॥ याप्रकार वर्णआश्रमकेसाथ अध्यासहुये पश्चात्तिसतिसवर्णआश्रमके जेअवांतरजातियां और धर्म और तिस तिसदेशके आचार यहसंपूर्णदेहधर्मोंकूं अज्ञानकरिके आपणेविषे मानताहै ॥ जैसे ब्राह्मणत्वजाति दशप्रकारकेब्राह्मणोंविषेरहैहै ॥ और एकएकब्राह्मणविषे रहीहुईजेगौडत्वद्राविडत्वादिकजातियां ते अवांतरजातियांहैं ॥ और दक्षिणदेशविषे मातुलीकन्याकेसाथिविवाह ॥ और गुजरातदेशविषे मरेसैंपीछे सर्वसंबंधियोंकामिलिकेभोजन ॥ और मारवाड़मैं चर्मपात्रकेजलकाग्रहण ॥ यह देशोंकेआचारहैं ॥ अब इंद्रियोंकेधर्मोंका अध्यास आत्माविषे निरूपणकरैहैं ॥ मैंअधिकदृष्टिवालाहूं और मैंमंददृष्टिवालाहूं ॥ इत्यादिक इंद्रियोंकेधर्म आपणे

विषे मानताहै ॥ काहेतैं मैंअंधहूं मैंकाणाहूं मैंबधिरहूं इत्यादिकवचनोंकरिकै अंतरअध्यासकूं प्रकटकरैहै ॥ इहां यहतात्पर्यहै ॥ जिस वस्तुकूं मनकरिकेध्यानकरताहै ॥ तिसवस्तुकूं वाक्इंद्रियकरिकेकथनकरैहैं ॥ यहनियम शास्त्रविषेकह्याहै ॥ और यहपुरुष मैंअंधहूं मैंकाणाहूं ऐसाकथनकरैहैं ॥ सोकथन चक्षुइंद्रियादिकोंकेसाथि आत्माकेअध्यासतैंविना सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं मैंअंधहूं इत्यादिककथन पुरुषोंकेभीतरअध्यासका अनुमानकरावैहै ॥ यहरीति सर्वअध्यासविषेजानणी ॥ और व्यापकआत्माकूं परिछिन्नमानणा यह देहादिकअध्यासतैंविना बनैंनहीं ॥ काहेतैं यहपुरुष एकदेहकाअभिमानकरिकै दूसरेदेहकाअभिमान नहींकरता ॥ जैसे मैंब्राह्मणत्वजातिवालाहूं ॥ और क्षत्रियत्वजातिवाला मैंनहींहूं ॥ और ब्राह्मणत्वजातिवाले जेदूसरेब्राह्मणहैं तेभी मैंनहींहूं ॥ किंतु ते मेरेसैंभिन्नहैं ॥ यहपरिच्छिन्नपणाभी देहादिकोंकेअध्यासकूं बोधनकरैहै ॥ और अहं याशब्दकालक्ष्यअर्थ शुद्ध आत्माहै ॥ और अहं यावृत्तिज्ञानका विषयभी शुद्धआत्माहै ॥ सोआत्मा अहं याशब्द और ज्ञानतैं वास्तवतैंभिन्नहै ॥ काहेतैं शब्द और ज्ञानतैं अर्थ भिन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार आत्माके बोधकअहंशब्दका आत्मसाक्षात्कारतैंरहितपुरुष देहादिकअर्थ मानैंहै ॥ और आत्मविषयक अहं याज्ञानकाभी देहादिकविषयमानैंहैं ॥ याकहणेतैं यह अर्थसिद्धभया ॥ अन्यवस्तुकेवाचकशब्दका अन्यवस्तुविषे कथनकरणा यह अध्यासतैंविना होवैनहीं ॥ जैसे रजतरूप अर्थकेवाचक रजतशब्दका सन्मुखशुक्तिविषे यह रजतहै ऐसाकथन रजत अध्यासतैंविना होवैनहीं ॥ तैसे यहपुरुषभी आत्माकेवाचक अहं शब्दका देहादिकोंविषे अहंगौरः ऐसाकथनकरैहै ॥ यातैं शरीरादिकोंविषे अहं शब्दकाकथन मैंगौरहूं याप्रकारकेज्ञानोंको भ्रमरूपता सिद्धकरैहै ॥ इसप्रकार देहादिकोंकेसाथि तादात्म्य अध्यासकरिकै आत्माविषे भेदज्ञानका निरूपणकर्‍या ॥ अब ताअध्यासकरिकै बाहरिवस्तुवोंकूं विषयकरणेहारे भेदज्ञानकूं निरूपणकरैहैं ॥ यह पिता मेराहै और यह मातामेरीहै ॥ इनतैंभिन्नकोईमेरापिता और मातानहीं हैं ॥ और येदेवताओंकेमंदिर और नदीतीरसैंआदिलैकेवस्तु सर्वलोकोंकेवासतेहैं ॥ इसतैं आदिलेके भेदोंकूं अज्ञानरूपनिद्राकरिकेसोयाहुआ आत्मा स्वप्नकीन्याई देखताहै ॥ और किसीस्थानविषे

विनाहीं कारणतें शोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ और किसीस्थानविषे हर्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अब प्राणोंकेअध्यासकूंजनावणेहारा ॥ जो प्राणोंकेधर्मों
काआत्माविषेअध्यास ताकूंनिरूपणकरेहैं ॥ मैंक्षुधावालाहूं और मैंतृषावालाहूं ॥ याप्रकार प्राणोंकेधर्मक्षुधापिपासाकूं आत्माविषेमानेहै
अब मनकेधर्मोंका आत्माविषे अध्यासदिखावेहैं ॥ काम संकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा वृत्तिज्ञान भय
यह श्रुतिविषेकहेजेमनकेधर्म्मते आत्माविषेमानिकरिके यहपुरुष तपायमानहोवेहै ॥ और वास्तवतें तो आत्मा असंगहै ॥ और
निर्गुणहै ॥ औरदेशकालवस्तुपरिच्छेदतेंरहितहै ॥ और आनंदचेतनरूपहै ॥ सोयहीआत्मा आपणेस्वरूपकेअज्ञानकरिके आका
शादिकपंचभूतोंविषे औरताकेकार्यप्रपंचविषे यहवस्तुसमीचीनहै॥औरयहवस्तुअसमीचीनहै इसरीतिसें नानाप्रकारकीभेदबुद्धियोंकूंकरता
हुआ नानाप्रकारकेसुखऔरदुःखोंकूं इसलोकविषे प्राप्तहोवेहै॥यह भेदज्ञानका अवांतरफलहै और मुख्यफलतो श्रुतिविषेकह्याहुआ जन्म
मरणकाप्रवाहहै ॥ और पूर्वकहेजे ज्ञानइंद्रियऔरकर्मइंद्रियोंकेव्यापार॥ और आकाशादिकपंचभूतोंकेव्यापार ॥ और भूतोंकेकार्यप्रपंचके
व्यापार ॥ तिनसर्वव्यापारोंकूंअज्ञानकरिके आपणेविषे आत्मामानेहै ॥ औरपूर्वकहेजितनेजाग्रत्अवस्थाकेज्ञान ॥ तेसंपूर्णअध्यासकरि
केव्याप्तहुयेहैं ॥ यातें सत्‌चित्‌आनंदअनंतरूपआत्माका जोयहजाग्रत्‌है ॥ सोसंपूर्णस्वप्नहै ॥ काहेतें प्रबोधकाजहांअभावहोवे ॥ और
मिथ्यावस्तुकाजहांदर्शन होवे ॥ ताकानामस्वप्नहै ॥ यहस्वप्नकालक्षण जाग्रत्‌विषेभीघटैहै ॥ काहेतें अज्ञानअवस्थाविषे आत्मज्ञानरूप
प्रबोधकाअभावभीहै ॥ और मैंब्राह्मणहूं मैंक्षत्रियहूं औरमैंअंधहूं याप्रकार अनात्मदेहादिकोंकेधर्मोंका आत्माविषेआरोपणरूपमिथ्यादर्श
नभीहै ॥ यातें जाग्रत् स्वप्नरूपहै ॥ अब याअर्थकूं लोकप्रसिद्धितेंभीस्पष्टकरेहैं ॥ जोपुरुष चक्षुइंद्रियसेंआदिलेकेजितनीप्रत्यक्षज्ञानकी
सामग्रीहै तिससामग्रीकरिकेयुक्तहोवे ॥ और सोपुरुष जभीघटादिकवस्तुवोंकूं घटादिरूपकरिकेनजाणे ॥ किंतु घटादिकोंकूं पटादिरूप
करिकेजाणे ॥ ताभ्रांतपुरुषकूं जाग्रत्‌अवस्थाविषेभी लोक सोयाहुआकहेहैं ॥ यातें यालोकव्यवहारतेंभी विपरीतदर्शनकानामस्वप्नप्रसिद्ध
होवेहै ॥ सोलक्षण जाग्रत्‌विषेभी पूर्वकहीरीतिसेंघटैहै ॥ याप्रकार यहआनंदरूपआत्माभी विपरीतदर्शनकरिकेविशिष्टहै यातें ताका

जाग्रत्भी स्वप्नरूपहै यद्यपि स्वप्नविषे इंद्रियोंकीउपरामताहोवैहै ॥ सोउपरामता जाग्रत्‌विषेहैनहीं ॥ तथापि मिथ्यादर्शनरूपधर्म जाग्रत् स्वप्नविषेसमानहै ॥ यातैं जाग्रत्भी स्वप्नरूपहै ॥ इसप्रकार मिथ्याजाग्रत्अवस्थाकानिरूपणकिया ॥ अब स्वप्नअवस्थाकानिरूपणकरैहैं॥ याप्रकार जाग्रत्अवस्थाविषे नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूंदेखिकरिके इंद्राणीसहितपरमात्मारूपइंद्र दूसरास्थानजोहृदयकमलकेदलहैं ताविषे प्रवेशकरताभया यहाँ आत्माविषेकर्ताभोक्तापणेकीउपाधिजोबुद्धिहै ताकानाम इंद्राणीहै ॥ तास्थानविषे इंद्रऔरइंद्राणीकेसमीप पूर्वपूर्वक र्मोंकेअनुसारकरिके नटकीन्याई अनंतप्रकारकेआपणेरूपोंकूं मन दिखावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सोमन ज्ञानाकार औरविषयाकार परिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और अनंतजन्मोंविषेउत्पन्नभये जेपदार्थोंकेसंस्कार ॥ तिनोंकरिकैमनयुक्तहै ॥ याकारणतैं मनविषे ऐसासामर्थ्यहै ॥ अब प्रसिद्धजाग्रत्‌तें स्वप्नविषे इंद्रियोंकीउपरामतारूपविलक्षणता दिखावैहैं ॥ तिसस्वप्नअवस्थाविषे मनकरिकेउत्पन्नकिये जेनानाप्रकारके कार्यरूपस्वांगहैं ॥ तिनोंकूं परमात्मारूपइंद्र देखैहै॥कैसापरमात्माहै ॥ ज्ञानकर्मइंद्रियोंतैंरहितहै॥और जाग्रत्‌केसंस्कारकरिकेविशिष्टहै ॥ और स्वप्नभोगकेदेणहारेकर्मोंकरिकेविशिष्टहै ॥ यास्थानविषे दोप्रक्रिया शास्त्रविषेकहीहैं ॥ स्वप्नविषे मनहीं रथादिकविषयाकार और ज्ञानाकार परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसा कोईकग्रंथकार मानैहैं ॥ औरकोईकग्रंथकारतो ॥ मनविषेरहीजेवासना ताकरिकेविशिष्टअज्ञानही स्वप्नविषे रथादिविषयाकार औरज्ञानाकार परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ऐसा मानैहैं ॥ अब जाग्रत्‌तें दूसरीभीविलक्षणता स्वप्नविषेदिखावैहैं ॥ तास्वप्नअवस्थाविषे द्रष्टा आपणेस्वरूपविषे और दृश्यपदार्थोंविषे स्वरूपनियमदेशनियम कालनियम कारणनियम इनचारिप्रकारके नियमोंकेअभावकूं देखताहै ॥ अब दृश्यपदार्थोंविषे स्वरूपनियमके अभावकूं निरूपणकरैहैं ॥ स्वप्नविषेप्रतीतभयाजोहस्ती ॥ सो क्षणपीछे वृक्षहोइकेप्रतीतहोवैहै ॥ और सोवृक्ष क्षणपीछे पर्वतहुआप्रतीतहोवैहै ॥ और सोपर्वत क्षणपीछे तृणहुआप्रतीतहोवैहै ॥ इसप्रकार स्वप्नविषे दृश्यपदार्थोंकेस्वरूपका नियमहोवैनहीं ॥ अब द्रष्टाविषे स्वरूपनियमकेअभावकूं निरूपणकरैहैं ॥ इसप्रकार स्वप्नविषे ब्राह्मणद्रष्टा क्षणसैंपीछे आपकूं शूद्रहुआदेखैहै ॥ और क्षणसैंपीछे आपकूंपशुहुआदेखैहै ॥ और कहीं क्षणसेपीछे

आपकूंदेवताहुआदेखैहै ॥ और कहींक्षणसैंपीछेआपकूं महाराजाहुआदेखैहै ॥ याप्रकारद्रष्टाकेस्वरूपविषेभी नियमका अभावहै ॥ अब स्वप्नविषे देशनियमकेअभावकूंदिखावैहैं ॥ सूक्ष्मजेस्वप्नवहनामानाडियांहैं ॥ तिनोंविषेस्थितहुआद्रष्टा तासूक्ष्मस्थानविषे समुद्रकूं और सुमेरुपर्वतकूं औरसप्तद्वीपोंकरिकेयुक्तपृथिवीकूं देखैहै ॥ यातैं स्वप्नविषे देशनियमकाभीअभावहै ॥ अब कालनियमके अभावकूं दिखावैहैं ॥ सिहजोऊपरिस्थितहुआयहपुरुष रात्रिविषे सूर्यसहितदिनकूंदेखैहै ॥ यातैं कालनियमकाभी स्वप्नविषे अभावहै ॥ अब कारणनियमके अभावकूं दिखावैहैं॥याभारतखंडविषेस्थितहुआपुरुष यापुरुषशरीरकरिकेही सूर्यचंद्रमाकूं स्वप्नविषे भक्षणकरैहै ॥औरभक्षणका कोई कारणहैनहीं॥काहेतैंवस्तुकेभक्षणमैं तीनकारणहोवैहैं।एकतो भक्षणकरणेयोग्यवस्तुकामुखकेसाथिसंबंध॥औरदूसरामुखकीअपेक्षा करिकेवस्तुविषेस्वल्पता॥और तीसरा भोक्तापुरुषकासामर्थ्य॥इनतीनोंकारणोंकाअभावहै॥ तौभी स्वप्नविषेपुरुष सूर्यचंद्रमाकूंभक्षणकरैहै और स्वप्नविषे रथकेकारण तक्षा काष्ठ वास्यादिकोंका अभावहै॥तौभी संकल्पमात्रतैं रथकूंउत्पन्नकरैहै॥यातैं कारणकाभी स्वप्नविषेनियमनहीं ॥ इसीवासतैंमायातैंविना स्वप्नकाकोईकारणहैनहीं॥ किंतु मायाही ताकाकारणहै॥यातैं श्रुतिकेतात्पर्यजानणेहारे व्यासभगवान्आदिकोंनैं स्वप्नकूं मायामात्रकह्याहै ॥ अब सुषुप्तिअवस्थारूपतीसरेस्वप्नकूंनिरूपणकरैहैं ॥ सोइंद्ररूपआत्मा स्वप्नकूंदेखिकरिके अथवाजाग्रत्कूंदेखिकरिके इंद्राणिकरिकेसहित ॥ तीसराजोहृदयकमलकेअंतरआकाशरूपस्थानहै ताविषे प्रवेशकरताभया ॥ यहांयहतात्पर्यहै ॥ जाग्रत्तैं उत्तरकालमैं स्वप्नहोवैहै ॥ और स्वप्नतैंउत्तर सुषुप्तिहोवैहै ॥यहनियमनहींहै॥ काहेतैं कभी तो जाग्रत्तैंउत्तर सुषुप्तिहोवैहै ॥ और सुषुप्तितैं उत्तरस्वप्नहोवैहै ॥ और कभी जाग्रत्तैंउत्तर स्वप्नहोवैहै॥ और स्वप्नतैंउत्तर सुषुप्तिहोवैहै॥और तिसहृदयआकाशविषे भोग्यरूप इंद्राणीकूंआलिंगनकरिके ताइंद्राणीकेसाथि अभेदकूंप्राप्तहोवैहै॥तात्पर्ययह॥तहां भोक्ताभोग्यपणा भिन्नहोइकेप्रतीतहोवैनहीं ॥शंका॥हेभगवन् सुषुप्तिविषे यद्यपि अज्ञानकाकार्यरूपभोग्यनहींहै॥तथापि अज्ञानरूपभोग्य तहांहै॥यातैं भोक्ताभोग्यकाअभेद बनैंनहीं ॥ समाधान॥ सुषुप्तिविषे आवरणरूपमायाकूं यहद्रष्टा देखताहुआभी नहींदेखैहै ॥ यहांयहतात्पर्यहै जैसैं दीपकरैं अंधकारकाज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसैं

किसीप्रमाणसैं अज्ञानकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु साक्षीचेतनकरिकैंही अज्ञानकीसिद्धिहोवैहै ॥ सोसाक्षी सुषुप्तिअवस्थाविषेभीहै ॥ यातैं द्रष्टाचेतन सुषुप्तिविषे अज्ञानकूंदेखैहै ॥ और सुषुप्तितैंजाग्रत्हुआपुरुष मैंकछुनहींजाणताभया ऐसाअज्ञानकास्मरणकरैहै और जोजो स्मृतिज्ञानहोवैहै ॥ सोसो पूर्वअनुभवकरिकेजन्यहोवैहै यहनियमहै ॥ यातैं मैंकछुनजानताभया ऐसाजो जाग्रत्विषेअज्ञानकास्मरणहै ॥ सोस्मरणसुषुप्तिविषे अज्ञानकेअनुभवकूंसिद्धकरैहै ॥ यारीतिसैं सुषुप्तिविषे सामान्यतैंअज्ञानकूंदेखताहुआभी स्पष्टकरिके अज्ञानकूंनहींदेखता ॥ यातैं सुषुप्तिविषे भोक्ता औरभोग्यका अभेदकह्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी अज्ञानरूपआवरण सुषुप्तिविषे स्पष्टनहींहै ॥ तबी प्रतिबंधककेअभावहोणेतैं यहपुरुष आपणेस्वरूपकूं सुषुप्तिविषेजाणेगा ॥ यातैं सुषुप्तिमात्रकरिकैही सर्वजीवोंकामोक्ष होणाचाहिये ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहद्रष्टा अद्वितीयआनंदरूपआपणेस्वरूपकूं जाणतानहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिविषे विशेषज्ञानकाअभावहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिविषे प्रतिबंधकका यद्यपिअभावहै ॥ तथापि शास्त्रऔरगुरुसैंआदिलेकेज्ञानकीसामग्री तहाँहैनहीं यातैं सुषुप्तिविषे मोक्षकासाधनआत्मज्ञान होवैनहीं॥और सुषुप्तिविषे आपणेस्वरूपकाअज्ञान विद्यमानहै॥याकारणतैं आत्मसाक्षात्कारकेअभावहोणेतैं और साक्षीभाष्यमिथ्याअविद्याकीविद्यमानताहोणेतैं सुषुप्तिस्वप्नरूपहै ॥ ऐसा श्रुतिविषेकथनकऱ्याहै ॥ काहेतैं प्रबोधका जहाँअभावहोवै ॥ और मिथ्यावस्तुकादर्शनहोवै ॥ सो स्वप्नकहियेहै ॥ यह पूर्वकह्यास्वप्नकालक्षण सुषुप्तिविषेभीघटैहै ॥ इसप्रकार जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यहतीनहैं स्वप्नजाके ॥ और चक्षु हृदयकमळ औरहृदयकमळकेअंतरआकाश यह तीनहैंगृहजाके ॥ अथवा पिताकाशरीर औरमाताकाशरीर पुनःपिताकाशरीर यहतीनहैंगृहजाके ॥ और याशरीररूपद्वारवतीपुरीविषे स्थितिहै जाकी ॥ और देहादिकोंविषेहै अहंममअभिमानजाका ॥ और अहंममअभिमानरूपजन्मकूंप्राप्तभया ॥ ऐसाजोपरमात्मादेवहै ॥ सो गुरोंकीकृपा करिके अज्ञानरूपनिद्रातैंजाग्रत्हुआ ऐसाविचारकरताभया ॥ वास्तवतैं उत्पत्तितैंरहित मैंपरमात्मा जिनपंचभूतोंतैं विशेषरूपकरिकेप्रगटभयाहूं ॥ तेयहआकाशादिकपंचभूत मेरेपरमात्माकेउपाधिरूपकरिकेउत्पन्नभयेहैं ॥ कैसेयहपंचभूतहैं

शरीरादिकभेदकरिकै अनंतप्रकारकेहैं ॥ और संक्षेपतैं दोप्रकारकेहैं ॥ कोई जड़रूपहैं और कोई अजड़रूपहैं ॥ तहाँ भोग्यरूपकरिकेजड़
हैं ॥ और भोक्तारूपकरिकेअजड़हैं ॥ अब भूतोंविषेभोग्यपणा औरभोक्तापणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैंहैं ॥ तहाँ बाह्यआकाशादिकपंचभू
त स्थावरजंगमोंकरिकै केवलभोग्यहैं ॥ और वृक्षादिकस्थावरोंका तथामनुष्यादिकजंगमोंका परस्परभोक्ताभोग्यपणा नियमसैंनहींहै ॥
कभी स्थावर भोक्ताहोवैहैं॥और जंगम भोग्यहोवैहैं॥और कभी स्थावर भोग्यहोवैहैं॥और जंगम भोक्ताहोवैहैं॥यहाँजोउपकारकरै सो भोग्य
कहियेहै॥और जापरिउपकारकरिये सोभोक्ताकहियेहै॥जैसे मनुष्यादिक जलकासिंचनरूपउपकार वृक्षोंऊपरिकरैंहैं॥यातैं मनुष्यादिकजंग
म भोग्यहैं ॥ और वृक्षादिकस्थावर भोक्ताहैं ॥ और वृक्षादिकछायाकाष्ठफलादिकोंकीप्राप्तिरूपउपकार मनुष्यादिकोंऊपरिकरैंहैं ॥ या
तैं मनुष्यादिकजंगम भोक्ताहैं ॥औरवृक्षादिकस्थावर भोग्यहैं ॥ यह सर्वजनोंकूंप्रसिद्धहै ॥ इसप्रकार भोक्तारूपऔरभोग्यरूप
सैं दोप्रकारकाप्रपंचहै यह पूर्वकह्या ॥ अब विचारकरिकेदेखियेतो मेरेचेतनविषेही भोक्ता और भोग्यपणा घटताहुआ मेरे अद्वितीय
ताकूं बोधनकरैहै याअर्थकूं निरूपणकरैंहैं ॥ जड़वस्तुवोंकूं भोक्तापणा तीनकालविषेबनैनहीं ॥ काहेतैं जो कर्ताहोवैहै ॥ सोईही भोक्ता
होवैहै ॥ जड़वस्तुवोंकूं भोगरूपक्रियाका कर्तापणाहैनहीं ॥ यातैं भोक्तापणाभी जड़वस्तुवोंकूं बनैनहीं ॥ यहाँ यह तात्पर्य है ॥ यह
वस्तु मेरेसुखकासाधनहै ॥ यहवस्तु मेरेदुःखकासाधनहै ॥ याप्रकारकेज्ञानकानामभोगहै ॥ सो चेतन आत्माविषेहीघटैहै ॥ काहेतैं
सर्वजड़वस्तु चेतनआत्माकेसुखकेसाधनहैं ॥ जड़वस्तु जड़केसुखकासाधनहोवैनहीं ॥ यातैं भोगकाआश्रयरूपभोक्ता आत्माहै ॥ और
भोगरूपक्रियाकाकर्ताभी जड़वस्तुहोवैनहीं ॥ काहेतैं स्वतंत्रकानामकर्ताहोवैहै ॥ सोस्वतंत्रता आत्मातैंभिन्नजड़वस्तुमे बनैनहीं ॥
यातैं कर्ताभी-आत्माहीहै ॥ याअर्थकूंपूर्वनिरूपणकरिआयेहैं ॥ अब जड़वस्तु भोग्यभीनहीं याअर्थकूंनिरूपणकरैंहैं ॥ यहवस्तु मेरे
सुखकासाधनहै .या अंतःकरणकीवृत्तिविषेआरूढजोफलचेतनताकीआश्रयतारूपभोग्यताभी जड़वस्तुविषे बनैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥
चेतनजड़केसंबंधकूंकरणेहाराजोअज्ञानहै सो विचारकालविषेनिवृत्तहोवैहै ॥ यातैं यहवस्तु मेरेसुखकासाधनहै या अंतःकरणकीवृत्तिविषे

आरूढजोफलचेतनरूपप्रकाश सो मैं आत्माहूं ॥ मेरेतैंभिन्न कोईप्रकाशरूपनहीं ॥ और अंतःकरणकीवृत्तिविषेजोप्रकाशहै ॥ सोभी मेरेपरामत्माकेसंबंधसैंहै ॥ स्वतंत्र अंतःकरणकीवृत्तिविषेप्रकाशनहींहै ॥ जैसे सूर्यकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरिकेही दर्पण भित्तिआदिकों कूंप्रकाशैहै ॥ सोदर्पण आपप्रकाशरूपनहींहै ॥ तैसैं बुद्धिभी परमात्माकेप्रकाशकूंपाइके प्रकाशैहै ॥ यहपूर्वकहआयेहैं ॥ यातैं समष्टि व्यष्टिदेहोंका मैंपरमात्मा प्रकाशकहूं ॥ और संपूर्णदृश्य मेरेअधीनहै ॥ जैसे महाराजाकीसभाविषे राजाकीआज्ञाकेविना कोईपुरुष स्वतंत्र वचनउच्चारणकरैनहीं ॥ तैसे हमुपरमात्माकरिकैरहित ॥ कोईदृश्यवस्तु स्वतंत्र वचनकूंनहींकहैहै ॥ अब आत्मातैंभिन्नसर्व अनिर्वचनीयहै याअर्थकूं निरूपणकरैहैं॥तीनपरिच्छेदोंसेरहितशुद्धकूटस्थविषे भोक्ताभोग्यस्वरूपप्रपंचकल्पितहै॥ काहेतैं शुद्धपरमात्माके अज्ञानकरिके संपूर्णजगत्उत्पन्नभयाहै ॥ जैसे रज्जुकेअज्ञानतैंप्रतीतभयाजोसर्प सो कल्पितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मेरेतैंभिन्नकरिके किसी वस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यद्यपि श्रुतिवचनतैंही प्रपंचविषेमिथ्यापणासिद्धहै ॥ तथापि असंभावनाकीनिवृत्तिवासते प्रपंचकाक्यास्वरूप है ऐसा युक्तिसैंभीविचारकऱ्याचाहिये ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रुतिओरगुरुनैं बलात्कार सें मेरेकूं प्रपंचमेमिथ्यापणा अंगीकारकरायाहै ॥ ऐसा जो वादीकेचित्तविषेपश्चात्ताप ताकीनिवृत्तिवासते युक्तिसैं अवश्यप्रपंचमेमिथ्यापणासिद्धकरणा ॥ तहां प्रपंचका क्यास्वरूपहै ॥ नाम रूप क्रिया इनतीनोंकेसमुदायकानाम प्रपंचहै ॥ अथवा एकएकनामादिकोंकानाम प्रपंचहै ॥ तहां प्रथमपक्षबनेनहीं ॥ काहेतैं सोस मुदाय नामरूपक्रियातैंभिन्नहै अथवाअभिन्नहै ॥ तहां भिन्नपक्षतावनैंनहीं ॥ काहेतैं नामरूपक्रियातैंभिन्नसमुदायकास्वरूप दीसैनहीं ॥ और दूसराअभिन्नपक्षभीबनैंनहीं ॥ काहेतैं एकएकनामादिकोंविषे समुदायव्यवहार और प्रपंचव्यवहार होणाचहिये॥औरहोवैनहीं॥याअर्थ कूं देहकेखंडनप्रसंगमें विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं॥यहां नाम यापदकरिके शब्दकाग्रहणकरणा॥ और रूप यापदकरिके इंद्रियजन्यज्ञान केविषयभूतअर्थकाग्रहणकरणा॥और क्रिया यापदकरिके कर्मकाग्रहणकरणा॥अब नामरूपक्रियाकेसमुदायकानामप्रपंचहै याप्रथमपक्षवि षेदूसरे दूषणकहणेवासते विकल्पकूंकरैहैं ॥ सोनामरूपक्रियाभी नामरूपक्रियास्वरूपहै॥अथवानहींहै॥तहां अंत्यपक्षतोबनेनहीं ॥ काहेतैं

नामरूपक्रियाकूं जो नामरूपक्रियास्वरूपनहींमानोंमे ॥ तो नामरूपक्रियाकूं अप्रपंचरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रपंचस्वरूप नामरूपक्रियाकूं प्रपंचसैंबाध्यमानपणेमैं एकतो व्याघातदोष प्राप्तहोवैहै ॥ और दूसरा श्रुतिसैंविरोधहोवैहै ॥ और नामरूपक्रिया नाम रूपक्रियास्वरूपहैं ॥ यहप्रथमपक्षभीबनैनहीं ॥ काहेतें नामरूपक्रियाकूं एकएककूं नामरूपक्रियास्वरूपताहै ॥ अथवा एकएककूं एकएकरूपताहै ॥ यादोनोंविकल्पोंकातात्पर्ययहहै ॥ एकनाम नामरूपक्रियास्वरूपहै ॥ और एकरूप नामरूपक्रियास्वरूपहै ॥ और एकक्रिया नामरूपक्रियास्वरूपहै ॥ अथवा नाम नामस्वरूपहै ॥ और रूप रूपस्वरूपहै ॥ और क्रिया क्रियास्वरूपहै ॥ तहाँ प्रथम पक्षतोबनैनहीं ॥ काहेतें एकएकनामादिकोंकूं नामरूपक्रिया यहतीनरूपताविषे अनुभवकाअभावरूप प्रथमदूषणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ एकनाम नामरूपक्रियारूपतैंप्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे रूप और क्रियाभी नामरूपक्रियास्वरूपतैंप्रतीतहोवैनहीं ॥ और एकएकनामादिक नामरूपक्रियास्वरूपहैं ॥ याप्रथमपक्षविषे अनवस्थादूषणहैकारणजिनोंका ऐसेजे प्रागलोप विनगमनाविरह प्रमाणापगम यहतीनदूषणहैं इनसर्वदूषणोंकासमुदायरूप दूसरादूषणभी प्राप्तहोवैहै ॥ अब तिनदूषणोंकानिरूपणकरैहैं ॥ भेदकूंसहारणेहाराजोअभेद ॥ सोतादा त्म्यसंबंधकहियेहै ॥ सोतादात्म्य दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतो द्रव्यऔरगुणका क्रिया औरक्रियावान्का जातिऔरव्यक्तिकाअवयव और अवयवीका विशेषऔरनित्यद्रव्योंका समवायसंबंध नैयायिकमानैहैं ॥ तासमवायसंबंधकेस्थानमैं वेदांतशास्त्रविषे तादात्म्यसंबंध मानैहैं ॥ यास्थानविषे द्रव्यगुणादिकोंका अभेदतो वास्तवहोवैहै ॥ और भेद कल्पितहोवैहै ॥ यहवार्तापूर्व कहिआयेहैं ॥ और पूर्वकहेजेद्रव्यऔर गुणादिक ॥ तिनोतैंभिन्नस्थानविषे दूसरातादात्म्यहोवैहै ॥ जैसे दूरदेशविषेस्थितभिन्नभिन्नवृक्षोंका पुरुषकूं तादात्म्य प्रतीतहोवैहै ॥ यास्थानविषे वृक्षोंकापरस्परभेदतो वास्तवहै ॥ और अभेद कल्पितहै ॥ यादोप्रकारकेतादात्म्यकहणेतें यहअर्थसिद्ध भया ॥ नामरूपक्रियाएकएककूं प्रथमतादात्म्यसंबंधकरिकेतो नामरूपक्रियास्वरूपताहैनहीं ॥ किंतु दूसरेतादात्म्यसंबंधकरिके नामरू पक्रियास्वरूपताहै ॥ यातें जैसे वाक्इंद्रियविषेस्थितनामका बाह्यघटादिकोंकेसाथितादात्म्यविषे नामऔरघटादिकोंका परस्परभेद

नामरूपक्रियाकूं जो नामरूपक्रियास्वरूपनहींमानोंगे ॥ तो नामरूपक्रियाकूं अप्रपंचरूपता प्राप्तहोवेगी ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रपंचस्वरूप नामरूपक्रियाकूं प्रपंचसैंबाह्यमानणेमैं एकतो व्याघातदोष प्राप्तहोवैहे ॥ और दूसरा श्रुतिसैंविरोधहोवैहे ॥ और नामरूपक्रिया नाम रूपक्रियास्वरूपहैं ॥ यहप्रथमपक्षभीबनेनहीं ॥ काहेतैं नामरूपक्रियाकूं एकएककूं नामरूपक्रियास्वरूपताहे ॥ अथवा एकएककूं एकएकरूपताहे ॥ यादोनोंविकल्पोंकातात्पर्ययहहे ॥ एकनाम नामरूपक्रियास्वरूपहे ॥ और एकरूप नामरूपक्रियास्वरूपहे ॥ और एकक्रिया नामरूपक्रियास्वरूपहे ॥ अथवा नाम नामस्वरूपहे ॥ और रूप रूपस्वरूपहे ॥ और क्रिया क्रियास्वरूपहे ॥ तहाँ प्रथम पक्षतोबनैंनहीं ॥ काहेतैं एकएकनामादिकोंकूं नामरूपक्रिया यहतीनरूपताविषे अनुभवकाअभावरूप प्रथमदूषणहे ॥ तात्पर्ययह ॥ एकनाम नामरूपक्रियारूपतैंप्रतीतहोवेनहीं ॥ तैसे रूप और क्रियाभी नामरूपक्रियास्वरूपतैंप्रतीतहोवैंनहीं ॥ और एकएकनामादिक नामरूपक्रियास्वरूपहैं ॥ याप्रथमपक्षविषे अनवस्थादूषणहेकारणजिनोंका ऐसेजे प्रागलोप विनगमनाविरह प्रमाणापगम यहतीनदूषणहैं इनसर्वदूषणोंकासमुदायरूप दूसरादूषणभी प्राप्तहोवैहे ॥ अब तिनदूषणोंकानिरूपणकरैहैं ॥ भेदकूंसहारणेहाराजोअभेद ॥ सोतादा त्म्यसंबंधकहियेहे ॥ सोतादात्म्य दोप्रकारकाहोवैहे ॥ एकतो द्रव्यऔरगुणका क्रिया औरक्रियावान्का जातिऔरव्यक्तिकाअवयव और अवयवीका विशेषऔरनित्यद्रव्योंका समवायसंबंध नैयायिकमानैंहैं ॥ तासमवायसंबंधकेस्थानमैं वेदांतशास्त्रविषे तादात्म्यसंबंध मानैंहैं ॥ यास्थानविषे द्रव्यगुणादिकोंका अभेदतो वास्तवहोवैहे ॥ और भेद कल्पितहोवैहे ॥ यहवार्तापूर्व कहिआयेहैं ॥ और पूर्वकहेजेद्रव्यऔर गुणादिक ॥ तिनोंतैंभिन्नस्थानविषे दूसरातादात्म्यहोवैहे ॥ जैसे दूरदेशविषेस्थितभिन्नभिन्नवृक्षोंका पुरुषकूं तादात्म्य प्रतीतहोवैहे ॥ यास्थानविषे वृक्षोंकापरस्परभेदतो वास्तवहे ॥ और अभेद कल्पितहे ॥ यादोप्रकारकेतादात्म्यकहणेतैं यहअर्थसिद्ध भया ॥ नामरूपक्रियाएकएककूं प्रथमतादात्म्यसंबंधकरिकेतो नामरूपक्रियास्वरूपताहैनहीं ॥ किंतु दूसरेतादात्म्यसंबंधकरिके नामरू पक्रियास्वरूपताहे ॥ यातैं जैसे वाकइंद्रियविषेस्थितनामका बाह्यघटादिकोंकेसाथितादात्म्यविषे नामऔरघटादिकोंका परस्परभेद

वास्तवहै ॥और अभेद कल्पितहै ॥ तैसे नामविषे नामकातदात्म्यअंगीकारकियेहुयेभी प्रथमनामसैंदूसरेनामका वास्तवभेद अंगीकारक
रणाहोवैगा ॥ और तादूसरेनामविषे तीसरेनामकातादात्म्य ॥ तीसरेनामविषे चतुर्थनामकातादात्म्य मानणाहोवैगा॥ याप्रकार अनंतनामों
कीधारामानणेमैं अनवस्यादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ इसप्रकार रूपक्रियाविषेभी अनवस्थादिकदोषजानणे ॥ जो अनवस्यादोषकूं वादीअंगी
कारकरै ॥ तौ उत्तरउत्तरनामोंकरिकैंहीं अर्थकाज्ञानरूपव्यवहारकोसिद्धिहोवैगी ॥ पूर्वपूर्वनामोंकोव्यर्थतारूप प्राग्लोपदोष प्राप्तहो
वैगा ॥ और अनंतनामोंकरिकैविशिष्टघटविषे किसनामसैं घट याव्यवहारकूंउत्पन्नकर्‌याहै ॥ यह विनगमनाविरहरूप दूसरादूषण हो
वैगा ॥ अनंतअर्थोंविषे एकअर्थकासाधकयुक्तिकानाम विनगमनाहै ॥ विरहनाम अभावकाहै ॥ और एकवस्तुविषे अनंतनामोंकूंविषय
करणेहारा कोईप्रमाणहैनहीं ॥ यातैं प्रमाणापगमरूप तीसरादूषण प्राप्तहोवैगा ॥ अपगमनाम अभावकाहै ॥ यातैं एकएकनामादिकनाम
रूपक्रियास्वरूपहैं ॥ ऐसीवादीकीकल्पना प्रत्यक्षादिकप्रमाणतैं औरश्रुतिप्रमाणतैं रहितहै ॥ काहेतैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै एक
एकनामादिकोंविषे नामरूपक्रियास्वरूपता दीसैनहीं ॥ और श्रुतितोसंपूर्णजगत्‌कूं नामरूपक्रियास्वरूपकहैहै ॥ एकएकवस्तुकूं नामरू
पक्रियास्वरूप श्रुतिकहैनहीं ॥ यातैं एकएकनामादिक नामरूपक्रियास्वरूपनहीं यहसिद्धभया ॥ और नाम नामस्वरूपहै ॥ और रूप
रूपस्वरूपहै ॥ और क्रिया क्रियास्वरूपहै ॥ यादूसरेपक्षविषेभी पूर्वकहेअनवस्थादिकदूषणोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं असंगतहै ॥ किंवा ॥
नाम नामस्वरूपहै ॥ यहनियम बनैंनहीं॥काहेतैं श्रोत्रइंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोणेतैं नामकूं रूपस्वरूपताभीबनैहै ॥ इंद्रियजन्यज्ञानकेवि
षयअर्थकूं रूपकहैहैं॥यहपूर्वकहिआयेहैं॥और नाम कभीतोनामस्वरूपहै॥और कभी रूपस्वरूपहै॥यहअनियमभी बनैंनहीं ॥काहेतैं नाम
कीनाम स्वरूपतैंहीं प्रतीतिहोवैहै ॥ रूपस्वरूपतैं नामकी कभीभीप्रतीतिहोवैनहीं॥याकहणेतैं नामरूपक्रियाकासमुदायप्रपंचनहीं॥यापूर्व
कहेपक्षकाभी समाधानजानणा॥अब दूसरेप्रकारतैंभी प्रपंचकीअनिर्वचनीयता निरूपणकरैहैं॥ सोरीतियहहै॥नामरूपक्रियाकेसमुदायकूंप्रपं
चकहैहैं॥तहाँ नामरूपक्रियाकेस्वरूपकी जभीसिद्धिहोवै॥तभी ताकासमुदायरूपप्रपंच सिद्धहोवै॥सोनामरूपक्रियाकेस्वरूपका निर्वचनहो

वैनहीं ॥यातैं तिनोंकेसमुदायरूपप्रपंचकाभी निर्वचनहोवैनहीं ॥ याअर्थकोसिद्धिवासतैं प्रथम विकल्पकूंकरैहैं ॥ नामरूपक्रियाकेसमुदाय कूंप्रपंचकहैहैं ॥ यास्थानविषे नामका क्यास्वरूपहै॥ और रूपका क्यास्वरूपहै॥और क्रियाका क्यास्वरूपहै॥तहाँ शब्दकूं नामकहैहैं ॥ ऐसाजोवादीकहे ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ शब्दका क्यास्वरूपहै ॥ ताशब्दकेस्वरूपका तुम निरूपणकरो ॥ तात्पर्य यह ॥ लक्षणऔरप्रमाणकरिकै वस्तुकोसिद्धिहोवैहै ॥ शब्दकूं नामकहैहैं ॥ याप्रकारके केवलकथनसैं वस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं शब्दकी सिद्धिवासतैं ताशब्दकेलक्षणकूं तुम कथनकरो ॥ तहाँ वादी शब्दकेलक्षणकूंकहैहै ॥ शंका ॥ शब्दकूंविषयकरणेहारे शब्दऔरज्ञानका जोकारणहोवै ॥ सो शब्दकहियेहै ॥ जैसे घटकूंविषयकरणेहारा यहघटहै ऐसाजोशब्दऔरज्ञान ॥ तादोनोंका घटकारणहै ॥ तैसेशब्दकूं विषयकरणेहारा यहशब्दहै ऐसाजो शब्दऔरज्ञान ॥ तादोनोंका शब्दकारणहै ॥ याशब्दकेलक्षणकूंअतिव्याप्तिदोषकरिकै सिद्धांती खंडनकरैहै ॥ समाधान ॥ जोलक्षण आपणेलक्ष्यविषेभीरहै॥औरलक्ष्यतैंभिन्नअलक्ष्यवस्तुविषेभीरहै॥सोलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहोवैहै ॥ जैसे शृंगवालीगौहै ॥ यास्थानविषे शृंग लक्षणहै ॥ और गौ लक्ष्यहै ॥ सोशृंगरूपलक्षण आपणालक्ष्यजोगौ ताविषेभी रहैहै ॥ और लक्ष्यतैंभिन्नजोमहिषादिकअलक्ष्य तिनोंविषेभी रहैहै ॥ यातैं सो शृंगरूपलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहै ॥ तादुष्टलक्षणतैं वस्तुकीसि द्धिहोवैनहीं ॥ तैसे यहशब्दकालक्षणभी अतिव्याप्तिदोषवालाहै॥काहेतैं जैसे यहशब्दहै याप्रकारके शब्द और ज्ञानका शब्द कारणहै ॥ तैसे वंध्यापुत्रहै याप्रकारके शब्द और ज्ञानका वंध्यापुत्रभी कारणहै ॥ यातैं यादुष्टलक्षणतैं शब्दकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ अब दूसरेलक्षणतैं वादी शब्दकीसिद्धिकरैहै ॥ शंका ॥ सत्य अर्थकूंविषयकरणेहारेज्ञानका जोकारणहोवै सो शब्दकहियेहै ॥ वंध्यापुत्रहै याज्ञानका यद्यपि वंध्यापुत्रकारणहै ॥ तथापिवंध्यापुत्रहै यहज्ञान सत्य अर्थकूंविषयकरैनहीं ॥ किंतु असत्यवंध्यापुत्रकूंविषयकरैहै ॥ यातैं वंध्यापुत्रविषे यालक्षणकी अतिव्याप्तिनहीं ॥ और सत्यअर्थकूंविषयकरणेहाराजो घटहै ऐसाज्ञान ॥ ताकाकारण घट ऐसाशब्दहै ॥ यातैं यादोषरहित लक्षणतैं शब्दकीसिद्धिबनैहै ॥ याप्रकारकेवादीकेलक्षणकूं अव्याप्तिदोषकरिकै सिद्धांती खंडनकरैहै ॥ समाधान ॥ जोलक्षण आपणे

लक्ष्यकेएकदेशविषेरहे और एकदेशविषेनरहे॥ सो अव्याप्तिदोषवालाहोवैहे॥जैसे शुक्लरूपवालीगौहे॥यास्थानविषे शुक्लरूप गौकालक्षणहे सो नीलरूपवालीगौविषे रहैनहीं ॥ यातें अव्याप्तिदोषवालाहे ॥ तैसे सत्यअर्थकूंविषयकरणेहारेज्ञानकीकारणतारूपलक्षणभी भेरीआदि कोंकेध्वनिरूपशब्दविषे हैनहीं॥ काहेतें भेरीशब्दतें किसीपुरुषकूं अर्थकाबोधहोवैनहीं ॥ यातें अव्याप्तिदोषवाले यालक्षणतें शब्दकीसि द्धिहोवैनहीं ॥ अभी ध्वनिरूपशब्दविषे अव्याप्तिदोषकेनिवारणवासतें अन्यलक्षणतें वादी शब्दकीसिद्धिकरेहे ॥ शंका ॥ वर्णोंकेसाथि तादात्म्यसंबंधकरिकै जोअर्थज्ञानकीकारणताहे सोशब्दकालक्षणहे ॥ यालक्षणकी ध्वनिरूपशब्दविषे अव्याप्तिनहीं ॥ काहेतें ध्वनिकूं व र्णोंकाअभिव्यंजक मीमांसक मानैंहैं॥यातें ध्वनिका वर्णोंकेसाथितादात्म्यसंबंधहे॥जोवस्तु जाकीप्रतीतिकरावे ॥ सोवस्तु ताकाअभिव्यंज कहोवैहे ॥ यहाँयहतात्पर्यहे॥जैसे नैयायिकोंकेमतमें घटत्वादिकजाति सर्वत्ररहेहे ॥ तोभीताजातिकी सर्वत्र प्रतीतिहोवैनहीं॥किंतु घटादि कव्यक्तिविषेही घटत्वादिकजातिकी प्रतीतिहोवैहे॥यातें घटादिकव्यक्ति घटत्वादिकजातिका अभिव्यंजकहे तायघटादिकव्यक्तिकाघटत्वा दिकजातिकेसाथि तादात्म्यसंबंधहे ॥ तैसे मीमांसक वर्णोंकूंनित्यमानैंहैं॥तानित्यवर्णोंकी सर्वदा प्रतीतिहोणीचहिये॥याशंकाकीनिवृत्तिवा सते ध्वनिकूं अभिव्यंजक मीमांसक मानैंहैं॥ताध्वनिका वर्णोंकेसाथितादात्म्यसंबंधहे॥और वर्णोंकाभी वर्णोंविषे तादात्म्यसंबंधहे॥यातें जैसे वर्णोंकेसाथितादात्म्यसंबंधकरिकै वर्णोंकूं अर्थज्ञानकीकारणताहे॥तैसे वर्णोंकेसाथितादात्म्यसंबंधकरिकै ध्वनिरूपशब्दकूंभी अर्थज्ञा नकीकारणताहे॥यातें यादोषरहितलक्षणतें शब्दकीसिद्धिबनेहे अब यावादीकेलक्षणकूंखंडनकरणेवासते सिद्धांती वादीसेंपूछेहे॥समाधान॥ वर्णोंकेसाथितादात्म्यसंबंधकरिकेसंपूर्णमनुष्योंकेज्ञानकीकारणता शब्दका लक्षणहे॥अथवा जिसमनुष्यकेइंद्रियसेंशब्दकासंबंधहोवे तामनु ष्यकेज्ञानकीकारणता शब्दकालक्षणहे॥तहाँप्रथमपक्ष बनैनहीं॥काहतें वर्णतादात्म्यवालाशब्दभी नियमकरिकै सर्वमनुष्योंकेज्ञानका का रणहोवैनहीं याकारणतेंबधिरमनुष्यविषे और सुषुप्तिवालेविषे और मूर्छावालेविषे और प्रमत्तमनुष्यविषे और रोगीविषे अर्थज्ञानकूं शब्द उत्पन्नकरैनहीं॥ यातें यह लक्षण असंभवदोषवालाहे ॥ जोलक्षण आपणेलक्ष्यविषेरहेनहीं ॥ सो असंभवदोषवालाहोवैहे ॥ जैसे

एकशफवाली गौहै ॥ यास्थानविषे एकशफरूपलक्षण किसीगौविषे रहैनहीं ॥ किंतु अश्वादिकोंविषेरहैहै ॥ तैसे सर्वमनुष्योंकेज्ञानकी कारणता किसीशब्दविषैहैनहीं ॥ और वर्णोंकेसाथितादात्म्यवालाहोवै और जिसमनुष्यकेइंद्रियकेसंबंधवालाहोवै तामनुष्यकेज्ञानकीकारणता शब्दकालक्षणहै ॥ यादूसरेपक्षकेअंगीकारकियेहुये ॥ यद्यपि पूर्वकह्याअसंभवदोष नहींहै ॥ यथापि पर्वतविषेवह्निज्ञानकेकारण धूमादिकोंविषेअतिव्याप्तिरूपदूषणतें यालक्षणकीभी रक्षाहोवैनहीं॥यहां यहतात्पर्यहै ॥ शब्द और अर्थका परस्पर तादात्म्यसंबंधहोवैहै॥ धूमयावर्णोंसें धूमरूप अर्थका तादात्म्यसंबंधहै॥और चक्षुइंद्रियकेसंबंधतें पुरुषोंकेवह्निज्ञा कीकारणतावालाभी धूमहै॥काहेतें धूमकूंनेत्रोंसेंदेखिकरिके पर्वतादिकोंविषेवह्निकाज्ञान पुरुषोंकूंहोवैहै॥यातैंयाशब्दकेलक्षणकीधूमविषे अतिव्याप्तिहोणेतें यालक्षणतेंभी शब्दकीसिद्धिहोवै नहीं ॥अब धूमविषेअतिव्याप्तिदोषकीनिवृत्तिवासते वादी अन्यरीतिसें ताक्षलणकरिके शब्दकीसिद्धिकरैहै ॥शंका॥ वर्णोंकेसाथितादात्म्यसंबंधवालाहोवै और जामनुष्यकेश्रोत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहोवै तामनुष्यके अर्थ ज्ञानकीकारणता शब्दका लक्षणहै ॥ यालक्षणकी धूमविषे अतिव्याप्तिनहीं ॥ काहेतें धूमका यद्यपि पूर्वकहीरीतिसें वर्णोंकेसाथितादात्म्यभीहै ॥ औरनेत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहुआधूम मनुष्योंकि वह्निज्ञानकाकारणभीहै॥तथापि श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहुवाधूम ज्ञानकाकारणनहीं॥और शब्दतो श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहुआ ज्ञानकाकारण होवैहै ॥ यहां श्रोत्रकासंबंध श्रोत्रइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतारूप जानणा ॥ अब याशब्दकेलक्षणकूंभी शब्दत्वजातिविषे अतिव्याप्तिदोषकरिके सिद्धांती खंडनकरैहै ॥ समाधान ॥ पूर्वधूमविषेअतिव्याप्तिदोषकेनिवारणवासते लक्षणविषे श्रोत्रइंद्रियकासंबंधकह्या ॥ सोसंबंध भी शब्दकेसिद्धिकाकारणनहीं ॥ काहेतें शब्दविषेस्थित शब्दत्वजातिका वर्णोंकेसाथि तादात्म्यसंबंधहै और श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधतें ज्ञानकीकारणताभी ताशब्दत्वविषेहै ॥ यातें शब्दत्वजातिविषे लक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैहै ॥ यद्यपि गुणहोवै ॥ और वर्णोंकेसाथितादात्म्यसंबंधवालाहोवै ॥ और श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधतैंज्ञानकाकारणहोवै ॥ सो शब्दकहियेहै ॥ याप्रकार गुणपदकेनिवेशतें शब्दत्वजातिविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ काहेतें शब्दत्वजातिविषे गुणत्वधर्महैनहीं ॥ तथापिगुणका आगेआकाशनिरूपणविषे खंडनकरैंगे ॥

यातें याලक्षणतेंभी शब्दकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ लक्ष्यतेंभिन्नवस्तुविषे जोलक्षणरहे ॥ सोअतिव्याप्तिदोषवालाहोवैहै ॥ और पूर्वकह्यालक्षण यद्यपि शब्दत्वजातिविषे रहेहै ॥ तथापि सोशब्दत्वजाति लक्ष्यशब्दतेंभिन्ननहीं ॥ काहेतें जातिऔरव्यक्तिका तादात्म्यहोवैहै ॥ यातें शब्दत्वजातिभी शब्दकेलक्षणका लक्ष्यहै ॥ समाधान ॥ शब्दत्वजातिकूं जोशब्दस्वरूपमानोंगे ॥ तो शब्दकास्वरूप रूपभावकूं प्राप्तहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयजोअर्थ सो रूपकहियेहै॥यहरूपकालक्षण शब्दत्वादिकजातिविषेभी वर्तेहै ॥ यातें संपूर्णजगतकूं नामरूपक्रियास्वरूप कथनकरणेहारीश्रुतिविषे जातिआदिक रूपकेअंतर कहेहैं ॥ अभी शब्दत्वजातिकूं जोशब्दरूपमानोंगे ॥ तो नामऔररूपका भेदसिद्धहोवैमानहीं ॥ शंका ॥ शब्दत्वजाति संपूर्णशब्दोंविषेरहेहै ॥ और शब्द सर्वत्ररहेनहीं॥ यातें शब्दत्वजातिका औरशब्दका भेद प्रसिद्धहै ॥ समाधान ॥ जैसे संपूर्णककारोंविषे कत्वजातिरहेहै ॥ और संपूर्णशब्दोंविषे शब्दत्वजातिरहेहै तैसेसंपूर्णघटादिकअर्थोंविषे शब्दकासंबंधभी प्रतीतहोवैहै॥यातें सर्वत्रअनुगतपना शब्दत्वजातिविषे और शब्दविषेसमानहै ॥ तात्पर्ययह ॥ किसीप्रकारकरिकेरूपतेंनामकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ इसप्रकार नामकेअनिर्वचनीयताकूंसिद्धकरिके अब. रूपऔरक्रियाविषेभी अनिर्वचनीयता सिद्धकरेहैं ॥ जैसेनाम किसीप्रकारतें सिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे रूपऔरक्रियाभी किसीप्रकारतें सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें अल्पमुख औरबडाउदर यह घटकास्वरूपहै ॥ सो,घटतेंभिन्नहोइके वैसे प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे क्रियाभीरूपतेंभिन्नहोइके प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें जैसे रूपरूपतेंभिन्ननहींहै ॥ तैसे क्रियाभी रूपतेंभिन्ननहींहै ॥ अब नामतेंभिन्नरूपकीअनिर्वचनीयताकूं दिखावैहैं ॥ जाकारणतें संपूर्णरूप नामके अनुकूल ज्ञानकूंउत्पन्नकरेहैं ॥ यातेंरूप वास्तवनहींहै ॥ किंतु विकल्पमात्रहै ॥ और श्रुतिविषेभी सर्वविकार नाममात्रकहेहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मनुष्यविषे तीक्ष्णहैअग्रभागजाकाऐसाशृंग असत्यहै ॥ तैसे रूपभी असत्यहै ॥ शंका ॥ असत्य वंध्यापुत्र औरनरशृंगविषे वंध्यापुत्रहै औरनर शृंगहै ऐसाज्ञान होवैनहीं ॥ और घटादिपदार्थोंविषेतो घटहै पटहै ऐसाज्ञान होवैहै ॥ यातें वंध्यापुत्रकी और घटपटादिकरूपोंकी तुल्यता होवैनहीं ॥ समाधान ॥ नरशृंगविषे औरवंध्यापुत्रविषेनरशृंगहै

औरवंध्यापुत्रहै ऐसाउत्पन्नभयाजोज्ञान ॥ सो किसीकरिकै निवारणहोवैनहीं ॥ काहेतें सांख्यशास्त्रवाले विकल्पज्ञानकाविषय वंध्यापुत्रादिकअसत्यपदार्थ मानैं हैं ॥ और नैयायिक आहार्यज्ञानकाविषय मानैहैं ॥ जास्थानविषे जिसवस्तुका अत्यंताभावहोवे ॥ तास्थानविषे तिसवस्तुकाज्ञान पुरुषकोइच्छातैं जोउत्पन्नहोवे ॥ सोज्ञान आहार्यकहियेहै ॥ जैसे जलविषे अग्निकाअत्यंताभावहै ॥ और जलविषेअग्निकाज्ञानमेरेकूंहोवे ऐसीइच्छा अभीपुरुषकूंहोवे ॥ तभी ताइच्छातैं जलअग्निवाला है ऐसाज्ञान तापुरुषकूं उत्पन्नहो होवैहै ॥ याज्ञानकूं नैयायिक आहार्यज्ञानकहैहैं ॥ याकहणतैं यहसिद्धभया ॥ जैसे घटहै पटहै याज्ञानकेविषय घटपटादिकहैं ॥ तैसे वंध्यापुत्रहै और नरशृंगहै याआहार्यज्ञानकेविषय वंध्यापुत्रऔरनरशृंगादिकभीहैं ॥ यातैं दोनों समानहैं ॥ शंका ॥ घटहै और वंध्या पुत्रहै याज्ञानोंकी समानतानहीं ॥ काहेतें घटादिकोंकाज्ञानतो इंद्रियतैंजन्यहै और वंध्यापुत्रकाज्ञान इंद्रियकरिकैजन्यनहीं ॥ समाधान ॥ संपूर्णइंद्रियोंकरिकै घटादिकोंकेज्ञानजन्यहैं ॥ यातैं वंध्यापुत्रकेज्ञानतैं विलक्षणहैं ॥ अथवा एकएकइंद्रियकरिकैज न्यहैं ॥ यातैं वंध्यापुत्रकेज्ञानतैं विलक्षणहैं ॥ तहां प्रथमपक्षतो बनैनहीं ॥ काहेतें गंधज्ञानका एकघ्राणइंद्रिय कारणहै ॥ चक्षुआदिकइंद्रिय कारणहै नहीं ॥ तैसे रूपज्ञानका चक्षुइंद्रिय कारणहै ॥ अन्यइंद्रिय कारणहैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे धनकेवृ द्धिकीइच्छाकरिकै व्यापारविषेप्रवृत्तभयेपुरुषके मूलधनकोभी हानिहोइजावे ॥ तैसे वंध्यापुत्रतैं घटादिकोंविषेविलक्षणता कीसि द्धिवासते सर्वइंद्रियजन्यज्ञानकोविषयतामानणेमैं गंधादिकोंकूं वंध्यापुत्रकोतुल्यताही प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें गंधादिकोंमैं सर्वइंद्रियज न्यज्ञानकीविषयताहैनहीं ॥ और एकएकइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयता गंधादिकोंविषेहै ॥ असत्यनरशृंगवंध्यापुत्रविषे हैनहीं ॥ यातैं वि लक्षणहैं ॥ यहदूसरापक्षभीबनैनहीं ॥ काहेतें गंधादिकोंविषे एकएकइंद्रियजन्यज्ञानकी विषयतारूप विशेषताकूं जोअंगीकारकरोगे ॥ तो तुमारेमतविषे नरशृंगादिकोंकाज्ञान मनरूपइंद्रियकरिकैहोवे ॥ याकेविषे कोईप्रतिबंधकहैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ याविशेषतातैंभी वंध्या पुत्रतैं गंधादिकोंकीविलक्षणता सिद्धहोवैनहीं ॥ शंका ॥ मनकरिकै वंध्यापुत्रकाज्ञान होवैनहीं ॥ काहेतें नेत्रादिकइंद्रियोंसैंबिना

५

मन किसीज्ञानकूं उत्पन्नकरेनहीं ॥ औरनेत्रादिकइंद्रियोंका वंध्यापुत्रकेसाथै संबंधहैनहीं ॥ यातें मनकूं इंद्रियोंकीअपेक्षाही वंध्यापुत्र केज्ञानविषे प्रतिबंधकहै ॥ समाधान ॥ संपूर्णज्ञानोंकोउत्पत्तिविषे इंद्रियोंकीअपेक्षा मन करे है यहनियमनहीं ॥ काहेतें नेत्रादिकों केअविषय जेसुखदुःखादिक ॥ तिनोंका जैसेमनकरिकै ज्ञानहोवैहै ॥ तैसे मनकरिके वंध्यापुत्र औरनरशृंगके ज्ञानविषेभी कोईबाधकहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंसेंविना सुखदुःखादिकोंकिअनंतज्ञानोंकूं मनउत्पन्नकरैहै ॥ तामनकूं इंद्रियोंसेंविना वंध्यापुत्रकेज्ञानकूं उत्पन्नकरणेमे कोइंभारहोवैनहीं ॥ शंका ॥ मनकरिकै असत्यवस्तुकाज्ञान लोकविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥ समाधान ॥ जैसे वैरिविषेरह्यादुःख सुखरूपकरिके वंध्यापुत्रकीन्यांईअसत्यहै ॥ तोभी तावैरिकेदुःखकूं सुखरूपकरिकै पुरुष जाणेहै ॥ यहलोक विषेप्रसिद्धहै॥तैसे असत्यवंध्यापुत्रनरशृंगकाज्ञान मनकरिकै बनेहै॥अब लोकप्रसिद्धितैंभी रूप नामतैंभिन्ननहीं याअर्थकूं निरूपणकरैहैं ॥ घटादिकपदार्थोंविषे पुरुषोंकी प्रवृत्तिहोवैहै ॥ सोप्रवृत्ति इच्छाकरिकैजन्यहोवैहै ॥ काहेतें इच्छासैंविना किसीवस्तुविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ और सोइच्छा ज्ञानकरिकैजन्यहोवैहै॥ काहेतें अन्यदेशविषेस्थितपदार्थोंकेज्ञानकाअभावहोणेतें तिनपदार्थोंकीइच्छा होवैनहीं॥यारीतिसें प्रवृत्तिसेंपूर्वकालविषे इच्छाद्वाराप्रवृत्तिकाकारणज्ञान शब्दतैंविना विचारवान्पुरुषोंकूंहोवैनहीं॥किंतु शब्दकूंविषयकरताहुआज्ञान अर्थकूंविषयकरैहै ॥ यातें एकज्ञानकेविषय नामऔररूपका अभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ याप्रकार युक्तिसैंनिरूपणकियेहुये नामरूपक्रियासिद्धहोवैंनहीं ॥ अब पंचभूतोंविषे युक्तिसैंअनिर्वचनीयता दिखावैहैं ॥ तेपंचभूत नामरूपक्रियातैंभिन्नहोइके किसीस्थानविषे रहैंनहीं ॥ यातें अनिर्वचनीयहैं ॥ तिनपंचभूतोंविषेभी प्रथम आकाशका क्यास्वरूप तुम मानोहो ॥ शंका ॥ अवकाशस्वरूप आकाशहै ॥ यह सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥समाधान॥अवकाशस्वरूप आकाशहै॥यातुमारेकहणेतें आवरणकेअभावकाजोअधिकरणहोवै सो आकाशहोवैहै ॥ यहआकाशकालक्षण सिद्धभया सोयहलक्षण वंध्यापुत्रविषेभीरहेहै ॥ जैसे आकाशविषे आवरणकाअभावहै ॥ तैसे वंध्यापुत्रविषेभी आवरणकाअभावहै॥असत्यवस्तुविषेभी अभावकीअधिकरणता शास्त्रविषेकहीहै ॥ यातें जैसे आकाशकूंअवकाशस्वरूप तेनैंमान्याहै॥तैसे

वंध्यापुत्र अवकाशस्वरूप काहेतैंनहीं ॥ किंतु वंध्यापुत्रकूंभी अवकाशस्वरूपतावनैंहैतात्पर्ययह ॥ आकाशकेलक्षणकीवंध्यापुत्रविषेअति
व्याप्तिहोवैहै ॥ यातैं यादुष्टलक्षणतैं आकाशकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ जो शब्दगुणवालाहोवै ॥ और अवकाशस्वरूपहोवै ॥ सो आ
काशकहियेहै ॥ वंध्यापुत्रविषे यद्यपि पूर्वकहीरीतिसैं अवकाशस्वरूपताहै तथापि शब्दगुण ताविषेहैनहीं ॥ और आकाशविषे श
ब्दगुणहै ॥ यातैं वंध्यापुत्रतैं आकाशकाभेदहै तात्पर्ययह ॥ या आकाशकेलक्षणकी वंध्यापुत्रविषे अतिव्याप्तिनहीं ॥ समाधान ॥
शब्दगुणकरिकेभी वंध्यापुत्रतैं आकाशकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोशब्दगुण आकाशरूपगुणीतैंभिन्नहै अथवा अभिन्नहै ॥
तहाँ प्रथमभिन्नपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं जैसे घटतैंपटभिन्नहै ॥ यातैं घटका पट गुणहोवैनहीं ॥ तैसे आकाशरूपगुणीतैं शब्दगुणकूं
जोभिन्नमानोंगे ॥ तौ अकाशका शब्द गुणनहींहोवैगा ॥ और शब्दगुण आकाशतैंअभिन्नहै ॥ यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं
जैसे गंधगुणका गंधतैंअभेदहै ॥ तहाँ गंधका गंधगुणहै ऐसाकोईकहैनहीं ॥ तैसे आकाशतैं शब्दगुणकाअभेदमानोंगेतो ॥ आकाशका
शब्दगुणहै या अर्थकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ यद्यपि शब्दकाओर आकाशका कल्पितभेदमानणेतैं गुणगुणीभाव बनैहै ॥ तथापि
जैसायक्षहोवैहै ॥ तैसाही ताकाबलीहोवैहै ॥ यारीतिसैं कल्पितभेद कल्पित आकाशकीही सिद्धिकरेगा ॥ कल्पितभेदतैं वास्तवआ
काशकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ गुण और गुणीका तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ भेदकूंसहारणेहाराजोअभेद सो तादात्म्यकहियेहै ॥ सो
भेद और अभेददोनों वास्तवहैं यातैं वास्तवभेदतैं वास्तव आकाशकीसिद्धिबनैंहै ॥ समाधान ॥ विरुद्धस्वभाववालेपदार्थ एकस्थानविषे
रहैंनहीं ॥ जैसे उष्णस्पर्श और शीतस्पर्श एकवस्तुविषे रहैंनहीं ॥ याप्रकारकीयुक्तिसहित बुद्धिरूपनेत्रकरिके समानसत्तावालेभेद और
अभेद कहाँ दीखैंनहीं ॥ खोटाआग्रहकरिके ॥ वास्तवभेदओरअभेदकेअंगीकारकियेहुये पूर्वकह्याजो भेदपक्षविषे औरअभेदपक्षविषे दोष
सो बलात्कारसैंप्राप्तहोवैगा ॥ यातैं वास्तवभेदओरअभेद एकवस्तुविषे बनैंनहीं ॥ किंवा ॥ जाभेदओरअभेदसैं वादीगुणगुणीभाव
सिद्धकरैहै ताभेदओरअभेदकास्वरूप विचारकियेतैं सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं शब्दादिकगुण औरआकाशादिकगुणीकाभेद और अभेद

जोवादो मानेंहे ॥ तासैंयहपूछाचहिये ॥ सोभेदऔर अभेद शब्द औरआकाशादिकवस्तुतैंअभिन्नहे अथवा भिन्नहे तहाँप्रथम अभिन्नपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं जो भेद और अभेद वस्तुकास्वरूप अंगीकारकरोगेतो॥यह भिन्नहे और यहअभिन्नहे और यहदोवस्तुहैं याप्रकारकाकथन असंगतहोवेगा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे घटघटकूंलेआवो घटघटकूंलेआवो याप्रकारकाशब्द किसीस्थानविषे विद्वानोनैं उच्चारणनहींकरीता काहेतैं यहशब्द पुनरुक्तिदूषणसहितहे ॥ एकवारउच्चारणकरेशब्दका फेरि उच्चारणकरणेकानाम पुनरुक्तिहे ॥ तैसे भेद और अभेदकूं वस्तुकास्वरूपमानणेमें यहफळ वृक्षतैं भिन्नहे यहघट मृत्तिकातैं अभिन्नहे औरयहदोवस्तुहैं याकथनविषेभी पुनरुक्तिदोषहोवेहे ॥ यातैं भेद और अभेद वस्तुकास्वरूपनहीं ॥ और भेद और अभेद वस्तुतैंभिन्नहैं ॥ यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं भेदवालेकूंभिन्नकेहेहैं ॥ भेद और अभेद वस्तुतैंभिन्नहैं ॥ याकहणेतैं वस्तुकेभेदवाळे भेद और अभेदहैं यहसिद्धहोवेहे ॥ तहाँ दूसरे भेदविषे तीसरावस्तुकाभेद मानोंगे ॥ तीसरेविषे चोथाभेद ॥ याप्रकार भेदोंकोधारामानणेमे अनवस्थादोष प्राप्तहोवेहे ॥ यादोषकी निवृत्तिवासते और प्रथमभेद और अभेदकोसिद्धिवासते दूसराभेद वस्तुकास्वरूप जभीकहोगे ॥ तभी यहतेरावचन बकबंधनकीन्याईं होवेगा ॥ जैसे बकपक्षीकेबांधणेकोइच्छावाळा कोईपुरुष याप्रकारकाउपाय चित्तविषेकल्पनाकरे मछलीविषेहेचित्तएकाग्रजाका ऐसाजो आतपविषेस्थित बकपक्षीहे ॥ ताकेमस्तकविषे माखण जाइकेमेरास्तों ॥ सोमाखण सूर्यकोआतपकरिकेंद्रवीभावहोइके याबककेनेत्रविषे पड़े ॥ तामाखणकेपडणेतैं अंधहुयाबककूं मेंबांधों ॥ ऐसीचित्तविषेकल्पनाकरिके तैसाहीउपायकरे ॥ जैसे तापुरुषकाउपाय व्यर्थहे ॥ काहेतैं बककेसमीपगयेविना ताकेमस्तकऊपरि माखण राख्याजावेनहीं ॥ जभीताकेसमीपगया ॥ तभी ताकालविषेहीं ताकाबंधन बनिसकेहे ॥ तैसे प्रथमभेद और अभेदकूं वस्तुतैंभिन्नमानिके॥ तिनोंकेसिद्धिवासतैं कल्पनाकर्‌याजोदूसराभेद ॥ ताकूंवस्तुकास्वरूपमानणेमे केवल व्यर्थप्रयासहे ॥ यातैं शब्दगुणको किसीप्रकारतैंभी सिद्धिहोवेनहीं ॥ शब्दकोअसिद्धिहुये आकाशकी वंध्यापुत्रतैंविलक्षणता सिद्ध होवेनहीं ॥ जैसे आकाशकाशब्दगुण युक्तिसैंसिद्धनहींभया ॥ तैसे वायुकास्पर्शगुण और अग्निकारूपगुण औरजलकारसगुण पृथिवीका

गंधगुण पूर्वकहीरीतिसैंसिद्धहोवैनहीं ॥ तिनस्पर्शादिकगुणोंकेअभावहोणेतैं वायु आदिकभूतोंकूंभी वंध्यापुत्रकीसमानताहे ॥ किंवा ॥ अवकाशकूंजोदेवे सोआकाश ॥ स्पर्शकूंजोकरे सोवायु ॥ अन्नादिकोंके पाककूंजोकरे सोअग्नि ॥ तृषाकूंजोनिवारणकरे सोजल ॥ लोकोंकूंजोधारणकरे सोपृथिवी ॥ याप्रकारकेलक्षण आकाशादिकोंकेलोकप्रसिद्धहैं ॥ तिनोतैंभीआकाशादिकोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं तेआकाशादिकपंचभूत सर्वलोकोंकेताईं अवकाशादिकोंकूंदेवेंहैं ॥ अथवा जिसकिसप्राणीकेताईं देवेंहैं ॥ तहां प्रथमपक्षतो असंभवदोषकरिकेयुक्तहे ॥ काहेतैं वातपित्तादिधातुवोंकीन्यूनअधिकताकरिके जड़भावकूंप्राप्तभयेप्राणियोंकूं आकाश अवकाशकूंनहींकरैहै ॥ और वायु स्पर्शकूंनहींकरैहे ॥ और अग्नि पाकादिकोंकाकारणनहीं ॥ और जल तिनोंकेतृषाकी निवृत्तिनहींकरैहे ॥ और पृथिवी धारणनहीं करैहे ॥ याप्रकार अन्यधर्मोंविषेभी सर्वत्र अनुगमकाअभावहे ॥ और आकाशादिकभूत जिसकिसप्राणीकूं अवकाशादिक देवेंहैं ॥ यह दूसरापक्ष मानणेतैं आकाशादिकभूतोंका मिथ्यापणाहीं ॥ सिद्धहोवैहे ॥ काहेतैं जैसे स्वप्नकेपदार्थ जिसकालविषेप्रतीतहोवेंहैं ॥ तिसीकालविषेहैं ॥ प्रतीतितैंपूर्वउत्तरकालविषेहैंनहीं ॥ यातैं मिथ्याहैं ॥ तैसे आकाशदिकभूतभी जिसजिसपुरुषकरिके प्रतीतहोवैहैं॥तिसतिसपुरुषकेप्रतीतिकालविषेहैं॥प्रतीतितैंपूर्वउत्तरकालविषेहैंनहीं॥यातैंमिथ्याहैं॥जभीआकाशादिकपंचभूतहीअसत्यभये ॥ तभी तिनभूतोंकाकार्यप्रपंचसत्यकेसेहोवैगा ॥ किंतु सोप्रपंचभी असत्यहीहोवैगा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे असत्यवंध्यापुत्रका पुत्रभी असत्यहीहोवैहे ॥ सत्यहोवैनहींतैसेअसत्य पंचभूतोंकाकार्यप्रपंचभी सत्यहोवे नहीं ॥ यातैं आत्मातैंभिन्नपंचभूत ॥ औरताकाकार्यप्रपंच वंध्यापुत्रकीन्याईं असत्यहे यहसिद्धभया ॥ अब आकाशादिकप्रपंचकाकारणमायाकी असत्यरूपतानिरूपणकरैंहैं ॥ तहां कार्यप्रपंचकीमायातैंविना अनुपपत्तिरूप अर्थापत्तिप्रमाणतैं मायाकीसिद्धिहे ॥ अथवा श्रुतिप्रमाणतैं मायाकीसिद्धिहे ॥ अथवा अनुभवप्रमाणतैं मायाकीसिद्धिहे ॥ तहां प्रथमपक्ष बनेनहीं ॥ काहेतैं जैसे असत्यवंध्यापुत्रको मायाकरिकैभीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे पूर्वकहीरीतिसैं प्रपंचकूं असत्यहोणेतैं ताप्रपंचकी मायाकरिकैभीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ शंका लोकविषे असत्यकोभी मायातैंउत्पत्तिदेखीहे ॥ जैसे भूमिविषेस्थित ॥

मायावीनट आपणीमायाकरिके आकाशविषेस्थित असत्यआपणादूसरास्वरूप दिखावैहै ॥ तैसे असत्यप्रपंचकोभी मायाकरिकेउत्पत्तिव
नैहै ॥ समाधान ॥ तास्थलविषेभी निमित्तकारणरूपमायाकरिके सत्यमायावीपुरुषकाही नानारूपकरिकेप्रादुर्भाव देखाहै ॥ तात्पर्य
यह ॥ आकाशविषेस्थितस्वरूपका परिणामीउपादानकारण मायानहीं ॥ किंतु मायाकाविषयनटकाआत्माही तिसतिसस्वरूपक
रिके प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं असत्यवस्तुकीउत्पत्तिविषे माया कहाँभीसमर्थनहींदेखी ॥ याकारणतैं माया परतंत्रहै ॥ स्वतंत्रनहीं ॥
और माया श्रुतिप्रमाणकरिकेसिद्धहै ॥ यहदूसरापक्षभीवनैंनहीं ॥ काहेतैं मायाकूं जगत्केउत्पत्तिस्थितिनाशकीकारणता यद्यपि श्रुति
वाक्योंनेंकहीहै ॥ तथापि सोजगत्कीकारणता मायाकूंहैनहीं ॥ माया आपहींअसत्यहै ॥ असत्य किसीका कारणओरकार्यहोवैन
हीं ॥ और मायातैं जगत्कीउत्पत्तिकूं बोधनकरणेहारीश्रुतिका अद्वितीयब्रह्मकेजनावणेमे तात्पर्यहै ॥ मायाकेबोधनमे तात्पर्यहैनहीं ॥
काहेतैं फलवालेअर्थकूं श्रुति बोधन करैहै ॥ सोफलकोप्राप्ति अद्वितीयआत्माकेज्ञानतैंहोवैहै ॥ मायाकेज्ञानतैंहोवैनहीं ॥ और माया
अनुभवकरिकेसिद्धहै ॥ यहतीसरापक्षभीवनैनहीं॥काहेतैं जाकालविषेअविवेकीपुरुष आपणेसत्चित्आनंदस्वरूपकूंनहींअनुभवकरता ॥
ताकालविषे यहपुरुष मायाकूं मेंअज्ञानीहूं याप्रकारकेअपरोक्षज्ञानकाविषयमानैंहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसेसोयाहुआबालक आपणेदेहकूंराक्षसमा
निकरिके भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माभी सत्चित्आपणेस्वरूपकूं विस्मरणकरिके आत्मस्वरूपकेआवरणकरणेहारीमा
याकूं आपही कल्पनाकरैहै तात्पर्य यह ॥ विचाररहितभ्रांतपुरुषकेअनुभवकरिकेतो मायाकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं भ्रांतिज्ञान जोवस्तु
कीसिद्धिकरै॥ तो शुक्तिविषेरजतकी और रज्जुविषेसर्पकोभी सिद्धिहोणीचाहिये॥ओर विचारसहितअनुभवकेउत्पन्नहुये माया ठहरैनहीं ॥
जैसे सूर्यकेउदयहुये अंधकारठहरैनहीं ॥ यातैं माया अनुभवकरिके सिद्धनहीं ॥ इसप्रकार किसीप्रमाणकरिके मायासिद्धनहीं ॥ यातैं
मुझअद्वितीयआत्माविषे मायाहैनहीं ॥शंका॥ जोमाया चैतन्यआत्माविषेनहींहै ॥ तो मेंअज्ञानीहूं यहअनुभव किसकूंविषयकरैहै ॥ समा
धान ॥ यहमाया मुझपरमात्मातैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु मेराहीस्वरूपहै ॥ जैसे बालककेशरीरतैं राक्षस भिन्ननहीं ॥ किंतु आपणेशरीरकूंहीं

राक्षसमानिके बालक भयकूंप्राप्तहोवैहै॥तात्पर्ययहहै॥यथार्थज्ञानकाअविषय आत्माकास्वरूपही माया अज्ञानअविद्या याप्रकारकेशब्दों करिके कहीताहै ॥ यातैंमाया स्वतंत्रनहीं॥शंका॥माया अविद्या अज्ञान याप्रकारकेशब्द और ज्ञानके बलतैं चैतन्यआत्मातैंभिन्न स्वतंत्र मायाकीसिद्धि काहेतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ जोशब्दऔरज्ञानकूं प्रमाणताहोवै ॥ तौ ताकेबलतैं मायाकीसिद्धिहोवै ॥ सो शब्दऔरज्ञान प्रमाणरूपहैंनहीं ॥ काहेतैं वस्तुकेअसत्यहुयेभी शब्दऔरज्ञान होवैहै॥याकारणतैंही असत्यबंध्यापुत्रविषे बंध्यापुत्रहै याप्रकारकाशब्दऔ रज्ञानदेखीताहै ॥ यातैं शब्दऔरज्ञानकूं आपणेविषयकेसिद्धकरणेकासामर्थ्यनहीं॥तहाँ शब्दकातौ पूर्वनामकेविचारविषेखंडनकरिआयेहैं॥ अब ज्ञानस्वरूपबुद्धिकाखंडनकरैहैं ॥ सोबुद्धि क्यास्वरूपहै यहप्रथम विचारकियाचाहिये ॥ तात्पर्ययह ॥ सोबुद्धि बोधरूपहै ॥ अथवा अबोधरूपहै ॥ तहाँ अबोधरूपबुद्धिहै यह दूसरापक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं जैसे अबोधस्वरूपहोणेतैं ॥ घटादिक स्वतंत्रनहींहैं ॥ किंतु परतंत्रहैं ॥ तैसे अबोधस्वरूपहोणेतैं बुद्धिकूंभी स्वतंत्रतासिद्धहोवैनहीं ॥ और बुद्धि बोधस्वरूपहै याप्रथमपक्षविषेभी सोबोध धर्मरूपहै ॥ अथवा सर्वकाअधिष्ठानधर्मीस्वरूपहै ॥ तहाँ धर्मस्वरूपबोधहै ॥ याप्रथमपक्षविषे बोधकूं जोधर्मरूपतासिद्धहोवै ॥ तौ बोधस्वरूपबुद्धिसिद्धहोवै ॥ परंतु विचारकियेतैं बोधकूंही धर्मरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ और धर्मीस्वरूपबोधहै ॥ यादूसरेपक्षविषे बोधकूं अधिष्ठानमेंपरमात्मासैंअभिन्नहोणेतैं बोधरूपबुद्धि स्वतंत्रसिद्धहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेनिर्णयकरणेवासते प्रथम बोधके स्वरूपकाविचारकर्‍याचाहिये ॥ बोधकेस्वरूपका निर्णयकरिकेही बोधस्वरूपबुद्धिकाभी निर्णयहोवैगा ॥ तहाँ प्रथम धर्मरूपबोधहै यापक्षविषे विचारकूंकरैहैं ॥ सोबोध घटपटादिकविषयोंकाधर्महै ॥ अथवा ज्ञानकेकारणचक्षुआदिकइंद्रियोंकाधर्महै ॥ अथवा आत्माका धर्महै ॥ आथवा बुद्धिकाधर्महै ॥ तहाँ विषयकाधर्मबोधहै ॥ यहप्रथमपक्ष बनैंनहीं॥ काहेतैं जोबोध घटादिकविषयोंकाधर्महोवै ॥ तौ घटादिकविषय चेतनहोणेचाहियें ॥ जोजो बोधवालाहोवैहै ॥ सोसो चेतनहोवैहै ॥ यहनियमहै ॥ शंका ॥ घटादिकविषय चेतनस्वरूपहैं ॥ यह हम अंगीकारकरैहैं ॥ समाधान ॥ घटादिकोंकूं जोचेतनस्वरूप मानोंगे ॥ तौ घटादिकोंकूं आपणेज्ञानमेंअन्यकीअपेक्षानहींहोवैगी ॥

काहेतें चेतन स्वप्रकाशहोवैहै ॥ जो आपणीसिद्धिविषे अन्यप्रकाशकीअपेक्षानकरे ॥ सो स्वप्रकाशकहियेहै ॥ और घटादिक आपणी सिद्धिविषे अन्यप्रकाशकी अपेक्षाकरैंहैं ॥ यातें घटादिकविषयकाधर्म बोधनहीं ॥ किंवा ॥ जो घटादिकविषयकाधर्म बोधमानोंगेतो ॥ भोक्ताओरभोग्यकाविपरीतभाव प्राप्तहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ भोग्यरूपकरिकेप्रसिद्धघटादिकविषय भोक्तास्वरूपहोवैंगे ॥ और घटादिकविषयोंतेंभिन्नभोक्ता भोग्यस्वरूपहोवैगा॥काहेतें बोधवाला भोक्ताहोवै॥यह भोक्ताकालक्षणहै॥और घटादिकविषयोंकूंभोक्ताकहणा अनुभवविरुद्धहै ॥ यातें घटादिकविषयकाधर्म बोधनहीं ॥ और इंद्रियोंकाधर्मबोधहै यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें जोजाकाधर्महोवैहै ॥ सो सदैव ताविषे प्रतीतहोवैहै ॥ जैसे अग्निका उष्णस्पर्शधर्महै ॥ किसीकालविषे अग्नि उष्णस्पर्शतेंरहित प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे जोबोध इंद्रियकाधर्महोवै ॥ तो जहांजहां इंद्रियहोवै ॥ तहाँतहां नियमसें बोध प्रतीतहोणाचाहिये ॥ औरनियमसें बोधप्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु कभीतोइंद्रियकेहुवे बोध प्रतीतहोवैहै ॥ और कभी नहींभी प्रतीतहोवैहै ॥ यातें इंद्रियोंकाधर्मबोधनहीं ॥ अब नियमकेअभावकूंनिरूपणकरैंहैं ॥ शब्दकेविद्यमानहूयेभी बधिरपुरुषकाचक्षुइंद्रिय शब्दकूंजानैनहीं ॥ तैसे रूपकेविद्यमानहूयेभी अंधपुरुषकाश्रोत्रइंद्रिय रूपकूंजानैनहीं ॥ और जिसकालविषे मनसावधाननहीं ॥ ताकालविषे सन्मुखदेशविषेस्थित अथवा पृष्ठदेशविषेस्थित पुरुषकूं चक्षुइंद्रिय जानैनहीं॥तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियभी शब्दादिकविषयोंकूं जानैनहीं ॥ जो इंद्रियोंकाधर्मबोधहोवै॥तो जहां इंद्रियहोवैं॥तहां अवश्यबोध प्रतीतहुआचाहिये॥और सर्वत्रबोध प्रतीतहोवैनहीं॥यातें इंद्रियोंकाधर्म बोधनहीं ॥किंतु बोधका उपकरणइंद्रियांहै तात्पर्ययह ॥ अंतःकरणकीवृत्तिविषे आरूढचेतनकानामबोधहै ॥ सोवृत्ति इंद्रियादिकोंतेंउत्पन्नहोवैहै ॥ यातें इंद्रियांबोधकेउपकरणहैं उपकरणमानणेमें पूर्वकहेदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ इंद्रियोंविषेस्थितजोबोधहोवै ॥ तो तिनइंद्रियोंकाधर्महोवै ॥ सोबोध किसीइंद्रियविषे प्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतुघटादिकअर्थविषेस्थितहुआ बोध प्रतीतहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ स्फुरणकानाम बोधहै ॥ सोबोध घटस्फुरणहोवैहै औरपटस्फुरणहोवैहै याप्रकारकेअनुभवतें विषय विषेस्थितहुआ प्रतीतहोवैहै ॥किंवा॥परोक्षज्ञानकेविषयभूतइंद्रियोंविषे

बोधहै॥याविषे कोईप्रमाणभीनहीं॥शंका॥जैसे नैयायिकोंकेमतमें आत्माविषेस्थितबोध घटादिकपदार्थोंकूंविषयकरैहै ॥ तैसे इंद्रियोंविषे
स्थितबोधभी घटादिकोंकूंविषयकरैगा ॥ बोधका घटादिकविषयकेसाथि विषयतारूपसंबंधनैयायिकोंकीन्यांई यहाँभीबनैहै ॥समाधान॥
जो अन्यवस्तुविषेस्थितहुआबोध अन्यवस्तुकूं प्रकाशकरताहोवै ॥ तो तादात्म्यसंबंधतैंघटविषेस्थितहुआबोध पटकूं काहेतैंनहींप्रकाश
करता ॥ जैसे इंद्रियोंविषेस्थितबोधका घटादिकविषयकेसाथि विषयतासंबंध तुमनैं अंगीकारकऱ्याहै ॥ तैसे घटविषेस्थितबोधका पटादि
कोंकेसाथि विषयतासंबंधभी किसीतैंनिवारणहोवैनहीं ॥ यातैं इंद्रियोंकाधर्म बोधनहीं ॥किंवा॥ जो चक्षुइंद्रियविषेस्थितबोधकरिकै घटादि
कोंकाभान अंगीकारकरैगे ॥ तो तुह्मारेमतविषे चक्षुइंद्रियका जैसेघटकेसाथिसंयोगसंबंधहै ॥ और घटविषेस्थितरूपकेसाथि संयुक्तसमवा
यसंबंधहैतैसे घटविषेस्थितरसादिकोंकेसाथिभी चक्षुका संयुक्तसमवायसंबंध संभवैहै ॥ यातैं जैसे घटकारूप चक्षुइंद्रियविषेस्थितबोधविषे
प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे घटविषेस्थितरसादिक चक्षुइंद्रियविषेस्थितबोधविषे काहेतैंनहींप्रतीतहोते ॥ किंतु प्रतीतहोणेचाहियें ॥और हमारेमत
विषेतोयादोषकीप्राप्तिनहीं ॥ काहेतैं रूपाकारवृत्तिविषेआरूढ चेतनरूपबोधका तादात्म्यरूपविषयतासंबंधरूपविषेहैरसविषेहैनहीं ॥ यातैं
चक्षुइंद्रियकरिकेरसादिकोंकीप्रतीति होवैनहीं ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ अन्यपदार्थविषेस्थितहुआबोध अन्यपदार्थकूं प्रकाशैनहीं ॥
जो ऐसाअंगीकार करोगे॥तो घटविषेस्थितहुआबोध पटकाभीप्रकाशकरैगा ॥ याअतिप्रसंगदोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ और जोघटादिकोंविषे
धर्मरूपतैंबोधरहै॥तो घटादिकोंका बोधकरिकैप्रकाशबनैं ॥परंतु घटादिकोंविषे धर्मरूपकरिकै बोधरहैनहीं ॥ जो घटादिकोंकाधर्मबोधहोवै
तो घटादिक भोक्ताहोणेचाहियें ॥ यह पूर्वकहिआयेहैं ॥ यातैं इंद्रियोंकाधर्मबोधनहीं ॥ और आत्माकाधर्मबोधहै ॥ यहतीसरापक्षभी
बनैंनहीं ॥ काहेतैं अन्यविषेस्थितहुआबोध अन्यकूंप्रकाशैनहीं ॥ यादोषकी यहाँभीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं शुद्ध आत्माविषे धर्मरूपतैं बोध
रहैनहीं ॥ शंका ॥ आत्माविषेस्थितहुआबोध घटादिकोंकूं मतप्रकाशकरै ॥ तोभी आत्माकेप्रकाशवासतै आत्माकाधर्मबोधहम अंगीका
रकरैहैं॥समाधान॥जो शुद्ध आत्माकाधर्मबोधहोवै तोधर्मतैंधर्मीकूंभिन्नहोणेतैं बोधतैंभिन्न शुद्ध आत्माकूं जडता प्राप्त होवैगी ॥ किंवा जैसे

घटादिकनकूं बोध प्रकाशैहे॥तैसे शुद्ध आत्माकूं बोध प्रकाशैनहीं॥ काहेतें घटादिकपदार्थ बोधविषे कल्पितहैं॥यातें अधिष्ठा नस्वरूपबोध तिनोंकूं प्रकाशैहे ॥ तात्पर्ययह ॥ घटउपहितचेतनमें घट कल्पितहै॥जाकाळविषे अंतःकरणकीवृत्ति नेत्रद्वारानिकसिके घटाकारहोवैहे ॥ ताकाळविषे घटउपहितचेतनकेसाथि वृत्तिउपहितचेतनरूपबोधका अभेदहोवैहे ॥ काहेतें चेतनमें परमार्थसैंतो भेद हैनहीं ॥ किंतु उपाधिकरिकेभेदहै तेउपाधियाँ जबपर्यंत भिन्नभिन्नदेशविषेस्थितहोवैहैं॥तबपर्यंत चेतनकाभेदकरेहैं॥और जभी उपाधियाँएकदेशविषेस्थितहोवैहैं ॥ तभी ताउपाधिवाळेचेतनोंका भेदकरैंनहीं ॥ किंतु तहाँ चेतनोंकाअभेदहोवैहे ॥ जैसे मठतेंभिन्नदेशविषे जभी घटरहे ॥ तभीतो घटाकाशका और मठाकाशका भेदहोवैहे ॥ और जभी मठकेभीतर घटकूंलेआवें ॥ तभीमठाकाशकेसाथि घटाकाशका अभेदहोवैहे ॥ यारीतिसैं घटउपहितचेतनकेसाथि अभेदभावकूंप्राप्तभया जोघटाकार वृत्तिउपहित चेतनरूपबोध ॥ ताबोधविषे घटादिककल्पितहै ताकल्पित घटादिकनकूं अधिष्ठानस्वरूपबोध प्रकाशैहे तिसप्रकार शुद्धआत्माका कोई अधिष्ठानहैनहीं॥ किंतु मैंही आपणीमहिमाविषेस्थित हुआ सर्वअनात्म वस्तुकाअधिष्ठानहूं ॥ औरजोबोधकूं शुद्धआत्माकाअधिष्ठान मानोंमे ॥ तौ सोबोधही आत्मासिद्धहोवैगा ॥ काहेतें सर्वकाअधिष्ठान आत्माहीहोवैहे ॥ और शुद्धआत्मातैंभिन्नबोधकूं जोप्रकाशस्वरूपमानोंमे ॥ तो ताबोधकरिके शुद्धआत्माकाभान होवैनही ॥ जैसे पुत्रकेपंडितहुयेभी पिता पंडितहोवेनहीं ॥ यातें आत्माकाधर्मबोधनहीं यहसिद्धभया ॥ और बुद्धिकाधर्मबोधहै यहचतुर्थ पक्षभी बनैनहीं ॥ काहेतें सोबुद्धि बोधतैंभिन्ननहीं ॥ बोधकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुईबुद्धि ज्ञानपदवीकूं प्राप्तहोवैहे ॥ अंतःकरणका परिणामरूपबुद्धिकूं स्वतः ज्ञानरूपताहैनहीं ॥ जभी बोध बुद्धिकाधर्ममानोंगे ॥ तभी बोधतैंभिन्नहुईबुद्धिज्ञानपदवीसैं रहित होवेगी ॥ किंवा ॥ जोबुद्धिकाधर्म बोधहोवे ॥ तो बोधतैंभिन्नहुईबुद्धि क्यास्वरूपहै ॥ बोधतैंभिन्नहोणेतें बोधस्वरूपतो होवैनहीं किंतु अबोधस्वरूप बुद्धिअंगीकारकरनीहोवेगी ॥ और सोअबोधस्वरूपबुद्धि घटादिकोंकीन्यांई शुद्धआत्माविषेकल्पितहोणेंते शुद्धआत्माके अधीनहै स्वतंत्रनहीं ॥ यातें बुद्धिकाधर्मभी बोधनहीं यहसिद्धभया ॥ अब बोधकूंअनंतहोणेतें बुद्धिभी बोधस्वरूपहै याप्रकारकी वादीकेशं

काकीनिवृत्तिवासते और बोधकूंएकआत्मस्वरूपताकेसिद्धिवासते बोधकेस्वरूपविषे अन्यविचारकूंकरेंहैं ॥ सोबोध जगत् विषे एकहै ॥
अथवा अनेकबोधहैं ॥ तहाँएकबोधहै यहप्रथमपक्ष बनेंनहीं ॥ काहेतें जोएकबोध होवैतो ॥ संस्कारोंकाभेद और प्रमाणोंकाभेद और
प्रमाज्ञान औरस्मृतज्ञान औरअप्रमाज्ञान इनोंका परस्परभेद नहोणाचाहिये ॥ तात्पर्ययह ॥ नाशअवस्थाकूंप्राप्तहुवेज्ञानतें संस्कार
उत्पन्नहोवैहै ॥ तासंस्कारोंकाभेद ज्ञानकेभेदतेंविनाबनेंनहीं ॥ और प्रत्यक्षअनुमान उपमान शब्द अर्थापत्तिअनुपलब्धि यहषट्
प्रमाणोंकाभेदभी प्रमाज्ञानकेभेदतेंविना बनेंनहीं ॥ यातें एकबोधनहीं यद्यपि आगे बोधकीएकताहीसिद्धकरणीहै ॥ तथापि ताएकता
कीदृढतावासते एकताखंडनकाविकल्प प्रथमकऱ्याहै ॥ और बोधअनेकहैं यादूसरेपक्षविषेभी यहविचार कऱ्याचाहिये ॥ जैसे स्वरूपतें
घटपटकाभेदहै ॥ तैसे बोधोंका परस्पर स्वरूपतेंभेदहै ॥ अथवा जैसे घटाकाशऔर मठाकाशका महाकाशतें घटमठरूपउपाधिकरिके
भेदहै ॥ तैसे उपाधिकरिके बोधोंकापरस्परभेदहै ॥ तहाँ स्वरूपतेंबोधोंकाभेदहै यहप्रथमपक्ष बनेंनहीं ॥ काहेतें बोधस्वरूपता संपूर्णबो
धोंविषे समानहै ॥ यातें एकबोधविषे दूसरेबोधकाभेद रहेनहीं ॥ जैसे घटविषे घटकाभेदरहेनहीं यातें स्वरूपतेंबोधकाभेदनहीं ॥ और
उपाधिकेभेदतें बोधोंकाभेदहै ॥ यहदूसरा पक्ष हमारेकूं अंगीकारहै ॥ काहेतें जैसे घटमठरूपउपाधियोंकेभेदकरिके आकाश नानाहो
वैनहीं ॥ किंतु घटमठरूपउपाधिविषेस्थितभेदका आकाशविषे आरोपणहोवैहै ॥तैसे अबोधस्वरूपअंतःकरणकीवृत्तिकेभेदहुयेभी सोभेद
बोधविषे परमार्थतेंहैंनहीं ॥ किंतु वृत्तिरूपउपाधिविषेस्थितभेदका बोधविषे आरोपणहोवैहै ॥ ताआरोपितभेदकरिकेही प्रमाज्ञान
अप्रमाज्ञान स्मृतिज्ञान याप्रकारका भेदव्यवहारहोवैहै ॥ और बोधकेउपाधिवृत्तिरूपज्ञानकेभेदतें संस्कारोंकाभेद औरप्रमाणोंकाभेदभी
बनेंहैं ॥ और जैसे कल्पितमृगतृष्णाकेजलकरिके पृथिवी गोलीहोवैनहीं ॥ और जैसे कल्पितसर्पकरिके रज्जु विषवालीहोवैनहीं ॥ तैसे आ
रोपितभेदकरिके बोधविषे नानापणासिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ बोधोंका जोपरस्परवास्तवभेदमानेंहैं ॥ तासेंयहपूछेंहैं ॥ तेबोध परस्परअ
पेक्षावालेहैं ॥ अथवा परस्परअपेक्षातेंरहितहैं ॥ तहाँ अंत्यपक्षमानणेमें बोधोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें अन्यबोधकीअपेक्षातेंरहित

एकबोधकरिकेही सर्वव्यवहारकीसिद्धि बनिसकैहे ॥ अनंतबोधमानणेका कछुप्रयोजननहीं ॥ और बोध परस्परअपेक्षावाळेहैं ॥ यहप्रथम पक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें जोबोध आपणेप्रकाशवासते दूसरेबोधकीअपेक्षा करताहोवै ॥ तौ अबोधस्वरूपहोवैगा ॥ जैसे घट आपणेप्रकाशवासते बोधकीअपेक्षाकरैहे ॥ यातैं अबोधस्वरूपहै ॥ याकहणेतैं बोध एकहै यहसिद्धभया ॥ अब बोधकेस्वप्रकाशताकीसिद्धिवासतेअन्यविचारकूंकरैहैं॥सो बोध अज्ञातहुआ सर्वव्यवहारकाकारणहै॥अथवा ज्ञातहुआ ॥तहाँ अज्ञातहुआबोध व्यवहारकाकारणहै॥यहप्रथमपक्ष बनैंनहीं॥काहेतें ज्ञानकीविषयताकेअभावकानाम अज्ञातताहै ॥ सोअज्ञातता दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतो स्वप्रकाशतारूप ॥ और दूसरी जडत्वधर्मविशिष्ट चेतनकेसंबंधकाअभावरूप ॥ तहाँ बोधविषे स्वयंप्रकाशतारूप प्रथमअज्ञातताकूं सिद्धांतरूपता आगेकहैंगे ॥ अब दूसरीअज्ञातताकूं खंडनकरैहैं ॥ जैसे घट अज्ञातहुआभी जलकीआधारतारूपकार्यका कारणहै ॥ तैसे यहबोधअज्ञातहुआ किसीकार्यकाकारणनहीं ॥ और जोबोधकूं अज्ञातमानैंगे ॥ तौ बोधभी जडहोणेतैं बोधसैंरहितहुआ घटादिकोंकेसमान होवैगा ॥ और बोध ज्ञातहुआ व्यवहारकाकारणहै ॥ यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें ज्ञानकाविषयजोवस्तु सोज्ञातकहियेहै ॥ जो बोधकूंविषयकरणेहारा दूसराबोधमानोंगे ॥ तौ बोधकूं घटादिकोंकीन्यांई अबोधरूपता एकदूषण प्राप्तहोवैहै ॥ और दूसरा अनवस्थारूपदूषण प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें प्रथमबोध दूसरेबोधकाविषयहुआ व्यवहारकासाधकहै सोदूसराबोध जो अज्ञातहुआ प्रथमबोधकीसिद्धिकरैगा ॥ तौ अज्ञातपक्षविषे जितनेपूर्वदूषणकहेहैं॥ तिनदूषणोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं सोदूसराबोधभी तीसरेबोधकाविषयहुआही प्रथमबोधकीसिद्धिकरैगा ॥ सोतीसराबोध चतुर्थबोधकाविषयहुआ दूसरेबोधकीसिद्धिकरैगा ॥ याप्रकार बोधोंकोधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ बोधकूंसिद्धकरणेहारा कोईबोधहैनहीं ॥ यातैं अनवस्थादोषहोवैनहीं समाधान ॥ बोधकासाधक जो बोधनहींमानोंगे ॥ तौ जगत्‌विषे अंधताकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ किसीभीवस्तुकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ यातैं यहबोध बोधतैंरहितनहीं ॥ शंका ॥ बोधअज्ञातहै यापक्षविषेभी दोष पूर्वआपनेंकहे और ज्ञातपक्षविषेभी दोष पूर्वआपनेंकहे ॥ यातैं तिनदोषोंकीनिवृत्तिवासते बोधकूं स्वयंप्रकाशता हम

अंगीकारकरैंहैं ॥ समाधान ॥ विचारकियेहुवे सोअद्वितीयबोध स्वयंप्रकाशहै ॥ याप्रकारका अर्थ जोतेरीबुद्धिविषे आरूढहुआहै ॥ सो
हमारेकूंभीइष्टहै॥बोधकीस्वयंप्रकाशता हमभी अंगीकारकरैंहैं॥शंका॥बोधकूं स्वयंप्रकाशतामानणेविषे तुमारेकूं किसलाभकीप्राप्तिहोवैहै॥
समाधान ॥ सोस्वयंप्रकाशबोधस्वरूप मैंआत्माहूं ॥ मेरेतैंभिन्न बोधनहीं तात्पर्ययह॥ जोबोधमुझआत्मातैंभिन्नहोवै॥तो घटादिकोंकीन्यांई
मैंआत्माका दृश्यहोवेगा ॥ और दृश्यवस्तु स्वयंप्रकाशहोवैनहीं ॥ किंतु अन्यकरिकेप्रकाश्यहोवैहै ॥ और बोधकूं अन्यकरिकेप्रकाशमान
णेमैं पूर्वकहे अनवस्थादिकदूषण प्राप्तहोवैंहैं ॥ यातैं सोबोध मुझआत्मातैंअभिन्नहै॥बोधकूं आत्मस्वरूपताहुवे भूमाअनंदकीप्राप्तिहीलाभहै॥
शंका ॥ भूमाआनंदकेप्राप्तहुयेभी ताकेरक्षाकीचिंता तुमारेकूं प्राप्तहोवैगी ॥ समाधान॥ अनित्यवस्तुकीरक्षाहोवैहै ॥ नित्यवस्तुकीरक्षाहोवै
नहीं ॥ और सत्यस्वरूपमैआत्माकूं अनित्यताहैनहीं ॥ यातैं मुझ आत्मासैंअभिन्न भूमाआनंदकूंभीअनित्यतासंभवैनहीं॥ भूमानाम व्याप
ककाहै अब आनंदस्वरूपआत्माविषे अनित्यताकेअभावकीसिद्धिवासते तीनपरिच्छेदोंकेअभावकूं निरूपणकरैंहैं॥जोवस्तु आदिकालविषे
औरअंतकालविषे नहींहोवै॥सोवस्तु अनित्यकहियेहै॥और मैंआनंदस्वरूपआत्मा तीनकालविषे विद्यमानहूं ॥ यातैं आनंदस्वरूपमैआत्मा
अनित्यनहींहूं॥किंतु नित्यहूं॥औरमेरेतैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं॥किंतु मैंहीसर्वत्रहूं॥याकहणेतैंवस्तुपरिच्छेदकाअभाव आत्माविषेदिखाया॥
और जोवस्तु किसीएककारणविषेरहैहै॥अथवाकिसीएकदेशविषेरहैहै॥अथवा किसीएककालविषेरहैहै ॥ सोवस्तुतिसआपणेआधारतैं और
जगत् तैंभिन्नहोवैहै॥ताभेदकरिकेतिसवस्तुकूं अनित्यताप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैंजोजो भेदवालावस्तुहोवैहै ॥ सोसो अनित्यहोवैहै ॥ याप्रकारका
नियमव्यासभग वान्नैं सूत्रविषेकह्याहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ भेदवालेहैं ॥ यातैं अनित्यहैं ॥ और घटपटादिकनकीन्यांई मैं
आनंदस्वरूपआत्मा किसीकारणविषे अथवा किसीदेशकालविषे रहतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ संपूर्णदेशकालादिककल्पितवस्तुका मैं
आनंदस्वरूपआत्मा आधारहूं मुझआत्माकाआधार कोईकल्पितवस्तुहोवैनहीं ॥ यातैं मैं आनंदस्वरूपआत्माकूं किसीप्रकारभी अनित्य
तानहीं ॥ याकहणेतैं आत्माविषे देशपरिच्छेदऔरकालपरिच्छेदकाअभाव दिखाया ॥ किंवा ॥ देश औरकाल औरतिसदेशकालकरिके

उत्पन्नभयाजोवस्तु औरतिसदेशकालविषेस्थित जोसत्यअसत्यस्वरूप जड़वस्तु ॥ यहसंपूर्ण मुझ अधिष्ठानस्वरूपआत्माविषे रहेहैं ॥ और मैंसर्वकाअधिष्ठानआत्मा किसीअनात्मवस्तुविषे रहतानहीं ॥ किंतु आपणेमहिमाविषे मैंस्थितहूं ॥ अब नानाप्रकारकेप्रपंचका अद्वितीयआत्मा आधारहै याअर्थकूं अनेकदृष्टांतोंकरिकै स्पष्टकरैहैं ॥ जैसे मालाकेमणिके सूत्रविषेरहैहैं ॥ तैसे यहस्थूलप्रपंच मुझसूत्र आत्माविषेरहैहै ॥ और जैसे पृथिवीकेसूक्ष्मजेकणिकेहैं ते पृथिवीविषे रहैहैं ॥ तैसे यहसूक्ष्मप्रपंच कारणस्वरूपमुझईश्वरविषे रहैहै ॥ और जैसे गंगादिकनदियोंकेजल आपणेनामऔररूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषे स्थितहोवैहैं ॥ तैसे यह अव्याकृतरूपकारण मुझब्रह्मविषे स्थितहोवैहै ॥ और जैसे अग्निविषे धूमरूपअंधकार रहैहै ॥ तैसे सृष्टिकालविषे अनित्यजड़दुःखरूप यह प्रपंच सत्‌चित्‌आनंदस्वरूप मैं आत्माविषे रहैहै ॥ और जैसे वायुके आधार मेघ और तृण रहैहैं ॥ तैसे यह प्रपंच स्थितिकालविषे मुझ आत्माविषे रहैहै यहाँ गंध करिकैगंधकाआधार पृथिवीकेसूक्ष्मभाग लेणे ॥ और जैसे शरदऋतुविषे आकाशमेंलयभावकूं प्राप्तहुयेमेघ रहैहैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे यह प्रपंच मुझपरमात्माविषे रहैहै ॥ इसप्रकार आत्माकूं तत्पदार्थईश्वरस्वरूपताकरिकै जगत्‌कोआधारता कही ॥ अब त्वंपदार्थजी वरूपताकरिकै कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकप्रपंचकीआधारता आत्माविषे तीनदृष्टांतोंकरिकैदिखावैहैं ॥ जैसे सुहृद्‌पुरुषविषे दुष्टता कल्पित है ॥ और जैसे दुष्टपुरुषविषे साधुता कल्पितहै ॥ और जैसे बालककेशरीरविषेराक्षसभाव कल्पितहै ॥ इसप्रकार मुझआत्माविषे संपू र्णजगत् कल्पितहै ॥ कैसामैंआत्माहूं ॥ स्वयंप्रकाशहूं और सुखस्वरूपहूं ॥ और मुझआत्माविषे लेशमात्रभीदुःखनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् संपूर्णजगत्‌काआत्मा ॥ आपहो ॥ ताजगत्‌विषेविद्यमानदुःखकेसाथि आपकासंबंध काहेतेंनहीं ॥ समाधान ॥ अद्वितीयआ त्मस्वरूपकेविचारकियेतें याजगत्‌विषे कभीभीदुःखहैनहीं ॥ काहेतें जोजोवस्तु उत्पन्नहोवैहै ॥ सोसो जड़होवैहै ॥ और दुःखकीउत्पत्ति सर्वप्राणियोंकूं प्रसिद्धहै ॥ यातें दुःखभीजड़है ॥ और मुझचेतनआत्माविषे जड़वस्तु परमार्थतेंहोवैनहीं ॥ यातें जड़दुःखस्वरूप मैंनहीं ॥ शंका ॥ जैसेदुःख उत्पन्नहोवैहै यातेंजड़है ॥ तैसे सुखभी उत्पन्नहोवैहै ॥ यातें सुखभीजड़है ॥ और जड़वस्तु परमार्थतेंहोवैनहीं यहपूर्व

आपनैंकह्याहै ॥ यातैं सुखस्वरूपताभी आत्माकूं नहींहोवैगी ॥ समाधान ॥ जैसे दुःख उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे आत्मास्वरूपहोणेतैं सुख
कीउत्पत्ति विवेकीपुरुषोंनैं अंगीकारनहींकरी ॥ किंतु सुखकूंनित्यमानैंहैं ॥ औरमूढ़पुरुषतो आनंदस्वरूपआत्माकेप्रतिबिंबयुक्त अंतः
करणकीवृत्तिकूं सुखरूपमानिके ताका उत्पत्ति और नाश अंगीकारकरैंहै ॥ शंका ॥ सो अंतःकरणकीवृत्तिही मुख्यसुखरूप काहेतैंन
हींहोवै ॥ समाधान ॥ अंतःकरणकीवृत्तिकूं सुखस्वरूपमानणा ॥ श्रुति और युक्तिसैं विरुद्धहै ॥ काहेतैं श्रुतितो व्यापक आत्माकूंहीं
सुखरूपकहैहै ॥ और परिच्छिन्नवस्तुकोसुखरूपताकूं खंडनकरैहै ॥ और अनुमानरूपयुक्तिसैंभी वृत्तिकूं सुखरूपताासिद्धहोवैनहीं ॥
काहेतैं जोजो उत्पत्तिवालाहोवैहै सो सुखस्वरूपहोवैनहीं ॥ जैसे दुःख उत्पत्तिवालाहै ॥ यातैं सुखरूपनहीं ॥ तैसे अंतःकरणकीवृत्तिभी
प्रसिद्ध उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं ॥ सुखस्वरूपनहीं ॥ अब आत्मसाक्षात्कारकाकारण जोवैराग्यहै ॥ ताकीउत्पत्तिवासतै विषयजन्यसुख
विषे ॥ दुःखरूपताकूं निरूपणकरैंहैं ॥ विषयतैंउत्पन्नभयाजोफल सो सुखरूपहै अथवा ताफलकेसाधनविषयहीं सुखरूपहैं ॥ तहाँ प्रथम
पक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं विषयतैंउत्पन्नभयाजोफल सो तीनकालविषे सुखरूपनहीं ॥ किंतु दुःखरूपहै ॥ शंका ॥ जो विषयजन्यफल सुख
रूपनहोवै ॥ तो विषयतैंहमारेकूं सुखउत्पन्नभयाहै ॥ यहलोकोंकाकथन असंगतहोवैगा ॥ और सर्वलोक ऐसाकथनकरैंहैं यातैं विषय
जन्यफलही सुखरूपहै ॥समाधान ॥ विषयतैं सुखरूपफल उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु दुःखरूपफल उत्पन्नहोवैहै ॥ तादुःखविषे पूर्वपूर्वभ्रम
जन्यसंस्कारोंतैं ॥ पुरुषोंकूं सुखबुद्धिहोवैहै ॥ सोदुःखविषेसुखबुद्धि भ्रमरूपहै ॥ काहेतैं अन्यवस्तुविषे अन्यबुद्धिकानाम भ्रांतिहै॥ यातैं
विषयजन्यफल सुखरूपनहीं ॥ और विषयहीसुखरूपहै ॥ यादूसरेपक्षकेखंडनवासतै प्रथम स्त्रीरूपविषयविषे सुखरूपताकाखंडनकरैंहैं ॥
ताकेखंडनहुवे सर्वविषयोंमैं सुखरूपताकाखंडन होवैहै ॥ जैसे संपूर्णमल्लोंविषे जो प्रधानमल्लहोवै ॥ ताकेजयकियेहुये संपूण मल्लोंतैंजय
होवैहै ॥ तैसे संपूर्णलोकोंनैं सर्वविषयनतैं अधिकमान्याहुआ जोस्त्रीरूपविषय ॥ ताविषे जभी सुखरूपताकाखंडनभया ॥ तभी सर्व
विषयनमैं सुखरूपताकाखंडन सिद्धहोवैहै ॥ यातैं प्रथम स्त्रीरूपविषयविषेहीं सुखरूप ताकाअभाव कह्याचाहिये ॥ जैसे मृतकमंडूक

फूलिके उदरतैंफाटिजावे ॥ सो दुर्गंधीवालाहोवैहै ॥ और अधिकमांसवालाहोवैहै ॥ और रुधिरविष्ठामूत्रकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ और कोमलस्पर्शवालाहोवैहै ॥ और स्निग्धहोवैहै ॥ ऐसे दुर्गंधमंडूकचर्मविषे औरस्त्रीकीयोनिविषेविचारकियेतैं किंचित्मात्रभी भेद नहीं ॥ किंतुदोनोंसमानहैं ॥ तथापि कामीपुरुषोंकूं जोदुर्गंधमंडूकचर्मतैं स्त्रीकीयोनिविषेसुंदरताप्रतीतहोवैहै ॥ सोकेवल भ्रांति करिकेप्रतीतहोवैहै ॥ और रोमोंतैंरहितस्त्रीकेदोनों स्तनविषे और पुरुषके कटीभागकेनीचेस्थितमांसपिंडोंविषे विचारकियेतैंकिंचित् मात्रभी भेदनहीं ॥ तथापि अविवेकीकामीपुरुषोंकूं जोभेद प्रतीतहोवैहै ॥ सो केवल भ्रांतिकरिकेप्रतीतहोवैहै ॥ और रोमोंतैंरहित पुरुषोंकेमुखविषे और स्त्रियोंकेमुखविषे विचारकियेतैं किंचित्मात्रभी भेदनहीं ॥ तथापिअविवेकीकामीपुरुषोंकूं जोभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सो केवल भ्रांतिकरिकेप्रतीतहोवैहै ॥ और नपुंसकोंका औरस्त्रियोंकाभी विचारकियेतैं किंचित्मात्रभी भेदनहीं ॥ भ्रांतिकरिके अविवेकी पुरुषोंकूं भेदप्रतीतहोवैहै॥ तैसे पुरुषोंकेशरीरविषे औरस्त्रियोंकेशरीरविषे विचारकियेतैं किंचित्मात्रभी भेदनहींहै॥शंका॥पुरुषशरीरविषे औरस्त्रीशरीरविषे प्रसिद्धभेद लोकोंकूं प्रतीतहोवैहै॥तिनदोनोंशरीरोंकूंअभेदकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ समाधान ॥ पुरुषशरीरविषेऔरस्त्री शरीरविषे तत्वोंकेभेदतैंभेदहै ॥ अथवा आत्माकेभेदतैंभेदहै॥ तहां तत्वोंकेभेदतैंभेदहै यहप्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं पंचकर्मइंद्रिय पंच ज्ञानइंद्रिय पंचभूत पंचप्राण चारिअंतःकरण याचौवीसतत्वोंकासमुदायही स्त्रीपुरुषादिकप्राणीमात्रका शरीरहै॥ यहवार्त्ता पूर्वदेहकेखंडन विषे कहिआयेहैं॥यातैं तत्वोंकेभेदतैं स्त्रीपुरुषादिकशरीरोंविषे भेद सिद्धहोवैनहीं॥और आत्माकेभेदतैंभेदहै ॥ यह दूसरापक्षभी बनैंनहीं॥ काहेतैं स्त्रीपुरुषादिकसंपूर्णप्राणीमात्रकेहृदयदेशविषे सत्चित्आनंदस्वरूपमैं आत्मा स्थितहूं॥कैसामैं आत्माहूं अहं याज्ञानकाविषयहूं॥ और अहं याशब्दकालक्ष्यहूं॥और सर्वत्र व्यापकहूं॥और आधारतैंरहितहूं ॥ इसप्रकार स्त्रीशरीरविषे औरपुरुषशरीरविषे चौवीसतत्वोंकी तथा आत्माकी समानताहुवेभी कामरूपपिशाचकेवशहुवे पुरुषऔरस्त्रियां यहस्त्रीहै यहपुरुषहै याप्रकारकेभेदकूंकल्पनाकरिके मुखतैंउत्पन्नहुईलालाओंकूं परस्पर पानकरैंहैं॥और स्वेदादिकमलोंकूं ग्रहणकरैंहैं॥और जैसे मेष परस्पर शरीरकाताडनकरैंहैं॥और जैसे महादेवकी

प्रसन्नतावासतै पिशाच परस्पर शरीरकाताडनकरैहैं॥तैसे स्त्रीऔरपुरुष कामकरिकेउन्मत्तहुवे परस्पर शरीरकाताडनकरैहैं ॥ याप्रकारका
व्यापारकरतेहुवे तिनोंकेअंगोंतैं वीर्यरूपहोइके अतिहास्ययुक्तपुरुषकीन्याई काम निकसैहै॥और कभी नहींभीनिकसैहै॥तात्पर्ययह॥जैसे
महाराजाकोसभाविषे स्थितपुरुषोंकूं किसीनिमित्ततैं अतिहास्यकावेग उत्पन्नहोवैहै ॥जभी ताहास्यकेवेगकूं नहींसहारिसकैहैं॥तभी सभातैं
बाहीरनिकसिजावैहैं॥और जभी सहारिसकैहैं॥तभीसभाविषेहीस्थितहोवैहैं॥बाहिरनहींनिकसैहैं॥ तैसे शरीरकेभीतरस्थित जोदेवतावोंकी
सभा॥ताकेमध्यविषेस्थितहुआकाम जैसे महादेवकेविनोदवासतै नाटककूंरच्याथा॥तैसे नाटककूंरचैहै॥तानाटककरिके विपरीतआचरणकूं
प्राप्तभये स्त्रीऔरपुरुषोंकूंदेखिकरिके हास्यकेवेगकूं नसहारताहुआकाम वीर्यरूपहोइके बाहीरनिकसैहै ॥ याकहनेतैं यहसिद्धभया ॥
मुखकेलालादिकोंकूं अधरामृतरूपकरिके कथनकरताहुआ कामशास्त्रकाभी पुरुषोंकेवैराग्यउत्पत्तिविषेहीं तात्पर्यहै॥ जैसे लोकविषे आ
पणेविपरीतआचरणकूंश्रवणकरिके ताविपरीतआचरणतैं पुरुष निवृत्तहोवैहै ॥ तैसेकामीपुरुषकेविपरीतआचरणकाकथनरूपउपहास्यकूं
करताहुआकामशास्त्रकाभी ताविपरीतआचरणतैंनिवृत्तिविषेही परमतात्पर्यहै॥ताविपरीतआचरणविषे तात्पर्यनहीं ॥शंका॥तामैथुनधर्मतैं
यद्यपि सुखकोप्राप्तिरूपपुरुषार्थ होवैनहीं॥तथापि कामकोशांतिरूपदुःखकीनिवृत्तिस्वरूपपुरुषार्थताकरिकेप्राप्तहोवैहै॥समाधान ॥मैथुनध
र्मतैं दुःखकीनिवृत्तिभी होवैनहीं॥उलटा क्लेशकीप्राप्तिहोवैहै॥जैसे पिशाचादिरूपग्रहकरिकेयुक्तपुरुष ताग्रहकेबलतैं विपरीतचित्तहुवे परस्पर
सन्मुखहोइके अथवाविमुखहोइके आपणेकटीभागोंका ताडनकरैहैं ॥ तातैं अतिक्लेशकूंप्राप्तहोइकरिके पिशाचरूपग्रहतैंनहींछूटेहुवेभी तेपु
रुषसुखीपुरुषकीन्याईपूर्वव्यापारतैंरहितहुवे स्थितहोवैहैं॥तैसे कामरूपग्रहतैं नहींछूटेहुवेभीकामीस्त्रीपुरुष पूर्वव्यापारतैंनिवृत्तहुवेसुखीकी
न्याईप्रतीत होवैहै यातैं कामकी निवृत्तिरूपदुःखकीनिवृत्तिभी मैथुनधर्मतैंहोवैनहीं॥और जैसे घृतकाष्ठादिकोंकरिके अग्निकीशांतिहोवैन
हीं॥किंतुउलटा वृद्धिहोवैहै ॥ तैसे मैथुनधर्मकरिकेकभीभीकामकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ उलटा ताकरिके कामकी वृद्धिहोवैहै॥किंवा॥ प्रथम
जावस्तुविषे पुरुषको इच्छा होवैहै ॥ तावस्तुविषे पश्चात् तिसपुरुषकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ यह नियमहै यातैं इच्छा कारणहै ॥ और प्रवृत्ति

ताकाकार्यहै ॥ और कारणतैंविना कार्यहोवैनहीं ॥ यातैं कार्यतैं कारणकाअनुमान होवैहै ॥ जैसे नदीकेजलकीवृद्धितैं वर्षाकाअनुमान होवैहै ॥ तैसे स्त्रीऔरपुरुषोंकेकामकी जोनिवृत्तिहुईहोवे ॥ तो पुनःमैथुनधर्मविषे प्रवृत्ति न हुई चाहिये ॥ और दिन दिनविषे इनोंकी प्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं ऐसाजान्याजावैहै ॥ इनोंको कामकीनिवृत्तिनहींभई॥ शंका ॥ जैसे मैथुनधर्मविषे प्रवृत्तिरूपहेतुतैं स्त्रीकेतथापुरुषके कामकाअनुमानहोवैहै ॥ तैसे मैथुनधर्मतैंनिवृत्तिरूपहेतुतैं कामकेअभावकाभीअनुमानहोइसकैहै ॥ समाधान ॥ निवृत्तिरूपहेतुतैं कामकाअभाव सिद्धहोवैनहीं॥काहेतैं जोकामके अभावविना निवृत्तिनहोतीतौनिवृत्तिरूपहेतुतैं कामके अभावका अनुमानहोता॥ सोनिवृत्ति कामकेअभावविनाहींहोवैहै॥यातैं निवृत्तिरूपव्यभिचारीहेतुतैं कामकेअभावकोसिद्धिहोवैनहीं॥यहाँ यह तात्पर्यहै॥मैथुनधर्मतैं जोस्त्रियोंकी तथापुरुषोंकी निवृत्तिहोवैहै ॥ सोनिवृत्ति सुखरूपफलकी प्राप्तितैंनहीं काहेतैं फलकीप्राप्तिहूये पुनःसाधनकोइच्छाहोवैनहीं ॥ और यहाँ पुनःसाधनकोइच्छादेखीतीहै ॥ यातैं सुखरूपफलकोप्राप्तितैं सोनिवृत्तिनहीं ॥ तैसे कामकेअभावतैंभी सोनिवृत्तिनहीं ॥ किंतु जितने पर्यंत स्त्रीतथापुरुषोंकूं शरीरविषे श्रम उत्पन्ननहींभया ॥ तबपर्यंत मैथुनधर्मविषे परस्पर प्रवृत्तहोवैहैं और जभी श्रमयुक्तहोवैहैं तभी तातैंनिवृत्तहोवैहैं ॥ यातैं केवल श्रमकरिकेनिवृत्तिहोवैहैसुखकीप्राप्तिकरिके अथवाकामकेअभावकरिके सोनिवृत्ति होवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे परस्परयुद्धकरतेहुवे दोनोंमल्लोंकी युद्धतैंनिवृत्तिहोवैहै ॥ सोनिवृत्ति सुखरूपफलकोप्राप्तिकरिके अथवाकामनाकेअभावकरिके होवैनहीं ॥ किंतु केवल श्रमकरिकेसोनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं निवृत्तिरूपहेतुतैं कामकाअभाव सिद्धहोवैनहीं ॥किंवा ॥ वीर्यकेबाह्य निकसणेविषे किंचिन्मात्रभी सुखहोवैंनहीं ॥ उलटा दुःखहोवैहै ॥ तथापि तादुःखकूं भ्रांतिकरिकेसुखमानैहैं ॥ और ताभ्रांतिसिद्धसुखतैं अधिकसुख विष्ठामूत्रकेपरित्यागविषे होवैहै ॥ काहेतैं वीर्यकेपरित्यागहुयांपीछे पुरुषोंकूं पश्चात्ताप तथा बलकीहानि होवैहै ॥ और विष्ठामूत्रकेपरित्यागहुयांपीछे पश्चात्तापादिक होवैनहीं ॥ उलटा प्रसन्नताहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे समीपकिसीवृक्षविषे ॥ जभी मधुकीप्राप्तिहोवे ॥ तभी मधुकीप्राप्तिवासतै पर्वतकेऊपरिजाणा व्यर्थहै ॥ तैसे वीर्यकेपरित्यागजन्यसुखतैं विष्ठामूत्रकेपरित्यागजन्य अधिकसुखके

नित्यप्राप्तहुवेभी वीर्यपरित्यागजन्यसुखकीप्राप्तिवासते पुरुषोंकायत्न व्यर्थहै ॥ शंका ॥ जैसा रततैंसुख उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसा विष्ठामूत्रके
परित्यागतैं सुखहोवैनहीं॥समाधान॥वीर्यकेपरित्यागविषे जेसे तैनें रतशब्दकीअर्थता मानीहै ॥ तैसे विष्ठामूत्रकेपरित्यागविषे रतशब्दकी
अर्थता किसदूषणकेभयतैं तैनें नहींमानीती॥किंतु मानीचाहिये॥काहेतैं सुखके अनुकूलव्यापारत्वरूप रतशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्त वीर्य
केपरित्यागविषे तथा विष्ठामूत्रकेपरित्यागविषे समानहै किंवा शब्दसहित अपानवायुकेपरित्यागविषे जोसुखहोवैहै ॥ सोसुख संपूर्णदेवां
गनाकेसंयोगविषेभी होवैनहीं ॥यातैं जैसेभ्रांतपुरुषोंनें देवांगनाजन्यसुखकीप्राप्तिवासते यज्ञादिककर्मकरीतेहैं ॥तैसे अपानवायुजन्यसुखकी
प्राप्तिवासते यज्ञादिककर्म काहेतैंनहीकरीते ॥ तात्पर्ययह॥तृणादिकतुच्छ वस्तुकीप्राप्तिवासतै जोपुरुष चिंतामणिका परित्यागकरैहै ॥
ताबुद्धिहीनपुरुषकूं चिंतामणिशापदेवैहै ॥ तैसे अपानवायुके निर्गमनजन्यसुखतैंभी अतिनिकृष्टजोदेवांगनाजन्यसुख ॥ तातुच्छसुखकी
प्राप्तिवासते चित्तशुद्धिद्वारामोक्षकेसाधनयज्ञादिककर्मोंकूं जोपुरुष करैहै ॥ ताअल्पबुद्धिपुरुषकूं यज्ञादिककर्मभी शापदेवैहै ॥ किंवा
जोवादी विषयजन्यसुखकूंमानैहै ॥ तातैं यह पूछाचाहिये ॥ तासुखका स्त्रीकाशरीर तथा पुरुषकाशरीर कारणहै ॥ अथवा तिनदोनोंशरी
रोंकासंबंध कारणहै ॥ अथवा प्रजाकीउत्पत्तिकारणहै॥अथवासमानजातिवालीप्रजाकीउत्पत्तिकारणहै ॥ तहाँ स्त्रीकाशरीर तथापुरुषका
शरीर सुखकाकारणहै॥यहप्रथमपक्ष बनैंनहीं॥काहेतैं जोशरीरविषे सुखउत्पन्नहोताहोवै ॥ तो सुखकीप्राप्तिवासते स्त्रीपुरुषकेसमीप गमन
करैहै ॥ सो नहोणाचाहिये ॥ तैसे पुरुषसुखकीप्राप्तिवासते स्त्रीकेसमीप गमनकरैहैं ॥ सो नहोणाचाहिये ॥ काहेतैं सुखकासाध
अपनाशरीर दोनोंकाविद्यमानहै ॥ यातैं देहविषे किसीस्त्रीकूं तथापुरुषकूं सुखहैनहीं ॥ और स्त्रीपुरुषकासंयोग सुखकाकारणहै ॥ य
हदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं जो स्त्रीपुरुषकासंयोगही सुखकाकारणहोवै ॥ तोमैथुनधर्मतैंअनंतरभी तासंयोगतैं सुखहोणाचाहि
ये ॥ और सुखहोवैनहीं ॥ उलटा पश्चात्तापहोवैहै ॥ इसीकारणतैं महात्मापुरुषोंनें कह्याहै ॥ श्लोक ॥ भोजनांतेश्मशानांते मैथुनांतेचया
मतिः ॥ सामतिःसर्वदाचेत्स्यात् नरोनारायणोभवेत् ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ भोजनकेअंतविषे तथाश्मशानभूमिविषे तथामैथुनकेअंतविषे

जैसी पुरुषकूं दोषदृष्टिहोवैहै ॥ सोदोषदृष्टि जोपुरुषकूं सर्वकालविषेरहै ॥ तो यहपुरुष साक्षात् परमेश्वरस्वरूपहोवै ॥ परंतु ऐसीदृष्टि सर्वदारहैनहीं ॥ १ ॥ यातैं स्त्रीपुरुषकासंयोगभी सुखकाकारणनहीं ॥ और प्रजाकीउत्पत्ति सुखकाकारणहै ॥ यहतीसरापक्षभी बनैंनहीं॥ काहेतैं जोप्रजाकीउत्पत्ति सुखकाकारणहोवै ॥ तो मत्कुण औरकीट तथायूकादिक प्रजाकीउत्पत्तितैंभी हमारेकूं सुखहोणाचाहिये ॥ और होवैनहीं ॥ उलटा दुःखहोवैहै ॥ यातैं प्रजाकीउत्पत्तिभी सुखकाकारणनहीं ॥ और सजातीयप्रजाकीउत्पत्ति सुखकाकारणहै ॥ यहचतुर्थपक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे पुत्रादिरूपप्रजावालेभीपुरुष पुत्रादिकोंकरिके दुःखीदेखीतेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रतिकूलपुत्रादिकतो प्रसिद्ध पितामाताके दुःखकेकारणहोवैहैं ॥ और अनुकूलपुत्रादिकभी पालनपोषणकीचिंताद्वारा पितामाताके दुःखकेकारणहोवैहैं ॥ तहां पूर्वग्रंथकरिके स्त्रीरूपविषयविषे सुखकीकारणताखंडनकरी ॥ अब रसनइंद्रियकेविषयरसादिकोंविषे सुखकीकारणता खंडनकरैहैं ॥ जैसे स्त्रीरूपविषय यापुरुषके सुखकाकारणनहीं ॥ तैसे अन्नऔरजलभी याके सुखकेकारणनहीं ॥ काहेतैं भोजनकियाहुआअन्न तथापानकऱ्याहुआजल उत्तरकालविषे यापुरुषके दुःखकेकारण प्रतीतहोवैहैं॥तात्पर्ययह॥ भोजनकरिकेतृप्तहुयेपुरुषकूं जभीकोई अन्नपरोसैहै ॥ तभी ऊंचेस्वरतैंनिवारणकरैहै ॥ यातैंयहजाण्याजावैहै ॥ यापुरुषका अन्नविषेद्वेषहै ॥ और जो द्वेषकाविषयहोवैहै ॥ सो दुःखकासाधनहोवैहै ॥ जैसे सिंहसर्पादिकहैं ॥ यातैं अन्नादिक सुखकेकारणनहीं ॥ शंका ॥ जोअन्न औरजल सुखकेकारणनहोवैं ॥ तो सुखकी प्राप्तिवास्तै अन्नजलविषे लोकोंकीप्रवृत्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वलोकोंकी अन्नजलविषे प्रवृत्तिदेखीतीहै यातैं अन्नऔरजल सुखकेहीकारणहैं ॥ समाधान ॥ अन्नऔरजल सुखकेकारणनहीं ॥ किंतु अन्नजलतैं किंचित्काल क्षुधातृषाकीशांतिहोवैहै ॥ जैसे प्रज्वलितअग्निविषे पायाहुआकाष्ठोंकासमूह क्षणमात्र ताअग्निकीऊंचीज्वालावोंकूं निवारणकरैहै ॥ और जैसे जलकरिकेगीलीपृथिवीकूं वायु रूक्षकरैहै ॥ तावायुकाअनादरकरिके जलकासिंचन क्षणमात्र तापृथिवीकेरूक्षताकूं निवारणकरैहै ॥ इसप्रकार शरीरकेभीतरस्थित अग्निऔरप्राणभी अप्रतिबद्धहुवे प्राणियोंकेक्षुधाऔरतृषाकूं उत्पन्नकरैहैं॥तहां प्राण क्षुधाकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और अग्नि तृषाकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और पुरुषोंनें

शरीरकेभीतरपाया जोअन्नऔरजल ॥ ताकरिके किंचित्काल क्षुधाऔरतृषाकोशांतिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह॥अन्नऔरजलकेपडनेतें प्राणा
ग्निकानिरोधहोवैहै॥तानिरोधतें क्षणमात्र क्षुधातृषाकोशांतिहोवैहै॥ताक्षुधातृषाकासहनरूपशांतिविषेही अल्पबुद्धिभ्रांतपुरुष सुखकूंमानैहैं
॥ यातें रसनइंद्रियकेविषयअन्नादिकोंविषे सुखकीकारणतानहीं ॥ याप्रकार शब्दादिकविषयोंकेप्राप्तहुवेभी पुरुषोंकूंसुख उत्पन्नहोवैनहीं ॥
किंतु क्षणमात्र इच्छाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥शब्दादिकविषयोंकीइच्छाकरिके प्रथम चित्त चंचलरहेहै ॥ तेशब्दादिकविषय जभी
प्राप्तहोवैहैं ॥ तभी क्षणमात्र चित्तकेचंचलताकी निवृत्तिहोवैहै ॥ ताचंचलताकीनिवृत्तिरूप चित्तकीअवस्थाकूंही मूढपुरुष सुखरूपमानैहैं
॥ और ज्ञानीपुरुषतो ऐसेजानैहैं ॥ चित्त भूतोंकेसत्वगुणकाकार्यहै ॥ यातेंनिर्मलहै ॥ तथापि शब्दादिकविषयोंकीइच्छाकरिके चलायमा
नहुआचित्त आनंदरूपआत्माकेप्रतिबिंबकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ और ताशब्दादिकविषयोंकी जभीप्राप्तिहोवैहै ॥ तभी किंचित्काल इच्छाके
निवृत्तहुवे चित्त स्थिरहोवैहै ॥ तास्थिरचित्तविषे आनंदरूपआत्माका प्रतिबिंबहोवैहै ॥ जिसआनंदरूपआत्माकेप्रतिबिंबकरिके दुःखरूप
चित्तभी सुखकीन्याई प्रतीतहोवैहै ॥ सोबिंबभूतआत्माही मुख्यसुखस्वरूपहै ॥ याअभिप्रायतेंही शास्त्रविषे विषयप्राप्तिकालविषेभी ज्ञानी
कूं नित्यसुखकाअनुभव कह्याहै ॥ और अज्ञानीकूं क्षणिकसुखकाअनुभव होवैहै ॥ यातें शब्दादिकविषयनतें किंचित्मात्रभी पुरुषोंकूं
सुखउत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु दुःखरूपअंतःकरणकेपरिणामविषेही भ्रांतपुरुषोंनें सुखबुद्धिकरीहै ॥ किंवा ॥ विषयजन्यअंतःकरणकापरि
णामरूपफलविषे उत्पत्ति और नाश तथापरिच्छिन्नता रूपदोषरहेहैं॥यातें ताविषे बुद्धिमान्पुरुषोंकूं सुखबुद्धिकैसेहोवै॥किंतु नहींहोवैगी॥
काहेतें श्रुतिविषे व्यापकआत्माकूंही सुखस्वरूपकह्याहै ॥किंवा॥व्याकरणकीरीतिसें सुखशब्दकाअर्थकरियै॥तोभी अंतःकरणकेपरिणामकूं
सुखस्वरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें जाकरिके इंद्रियोंकेगोलक प्रसन्नहोवैहैं॥सो सुखकहियेहै॥और विषयजन्यसुखकेविचारकियेतेंउलटा दो
षचिंताकरिके हृदयरूपगोलक तपायमानहोवैहै॥यातें जितनेविषयजन्यसुखहैं॥तेसंपूर्ण दुःखरूपहैं ॥ और पूर्वकहीयुक्तितें किसी कारण करि
के सुख उत्पन्नहोवैनहीं॥किंतु सुख नित्यहोवैहै॥और जोउत्पन्नहोवैहै॥सो सुखरूपनहीं॥यातें ऐसानित्यसुखस्वरूप मैं आत्माहूं॥पुनःकेसामैं

आत्माहूं ॥ सत्‌चित्‌अद्वितीयस्वरूपहूं ॥ शंका ॥ सत्‌चित्‌ आनंद याप्रकारकेशब्दोंकेभेदतें आत्माकेस्वरूपकाभेद काहेतैंनहींहोवे ॥ समाधान॥बुद्धिमान्‌पुरुषोंकूं सत्यादिकशब्दनकेभेदतें सत्‌चित्‌ आनंदरूपअर्थोंकोभेदबुद्धि कभीभीउत्पन्नहोवैनहीं ॥ काहेतें शब्दोंकेभेद हुयेभी अर्थकीएकता लोकविषेदेखीहै ॥ जैसेएकहीपुरुषव्यक्तिविषे पिता पुत्र पति भ्राता याप्रकारकेभिन्नभिन्नशब्द पुत्र पिता स्त्रीभ्राता दिकोंनें क्रमतैंकथनकरीतेहैं॥तथापि ताशब्दोंकेभेदतें पुरुषव्यक्तिकाभेदहोवैनहीं॥तैसे मुझआत्माविषे सत्‌ चित्‌ आनंद परिपूर्ण याप्रकार केभिन्नभिन्नशब्दशास्त्रनेकथनकरेहैंतथापिसत्यादिकशब्दोंकेभेदतैंमुझआत्माकाभेदहोवैनहीं॥अबजानिमित्तकूंग्रहणकरिकेसत्यादिकशब्द आत्माकूंबोधनकरैंहैं तानिमित्तकूं दिखावैहैं॥जैसे वंध्यापुत्र असत्यहै॥तैसे मैंआत्माअसत्यनहींहूं॥किंतु असत्यतैंविलक्षणहूं॥ताविलक्षणतारूप निमित्तकूंग्रहणकरिकें सत्यशब्द मेंआत्माविषे प्रवर्तेहै॥और जैसेघटादिकजड़पदार्थ अन्यकरिकेप्रकाश्यहैं॥तैसे मैं आत्माअन्यकिसीकरिके प्रकाश्यनहींहूं॥यातें मैंआत्मा जड़नहींहूं॥किंतु घटादिकजडपदार्थतैंविलक्षणहूं ॥ ताविलक्षणतारूपनिमित्तकूंग्रहण करिके चेतनशब्द मुझ आत्माविषे प्रवर्तेहै॥और जोवस्तु प्रतिकूलहोवैहै॥सो सुखशब्दकाअर्थ होवैनहीं॥किंतु दुःखशब्दका अर्थहोवैहै जैसे सिंहसर्पादिकहैं॥औरजो वस्तु अन्यकाशेषहोवैहै ॥ सोभी सुखशब्दकाअर्थहोवैनहीं॥ किंतुदुःखशब्दकाअर्थहोवैहै ॥ जैसे स्त्रीधनादिकहैं ॥ ऐसा दुःखरूप मैंआत्मा नहींहूं ॥ किंतु दुःखतैंविलक्षणहूं ॥ यातैं ताविलक्षणतारूपनिमित्तकूंग्रहणकरिके आनंदशब्द मुझआत्माविषे प्रवर्तेहै ॥ याहीरीतिसैंहीआत्म शब्द एकशब्द अद्वितीयशब्द अस्थूलशब्द अनणुशब्द भेदरहितसच्चिदानंदस्वरूपमेंआत्माविषे प्रवर्तेहैं ॥ यहां यहअभिप्रायहै॥ आत्मा केप्रतिपादकशब्द दोप्रकारकेहोवैहैं॥ एक विधिमुख औरदूसरेनिषेधमुख॥ तहां विधिमुखसत्यादिकशब्दतो प्रथम आत्माका बोधनकरिके पश्चात्‌ असत्यादिकोंतैंव्यावृत्ति बोधनकरैंहैं ॥ और निषेधमुखअद्वितीयादिकशब्दतो प्रथम साक्षात्‌व्यावृत्तिकूंबोधनकरिके अर्थतैं आत्मा कूंबोधनकरैंहैं ॥ व्यावृत्तिनामभेदकाहै ॥ यातै सत्यादिकशब्दोंकेभेदहूयेभी तिनोंकेअर्थकाभेदनहीं ॥ किंतु एकहीआत्माकूंसर्वसत्या दिकशब्द बोधन करैंहैं यहसिद्धभया ॥ अब युक्तितैं सत्यादिकशब्दोंकेअर्थकाअभेद निरूपणकरैंहैं ॥ तहां सुखतैं प्रकाश भिन्ननहीं ॥

काहेतें जोसुखतें प्रकाशभिन्नहोवे ॥ तोदुःख तथादुःखकेसाधनसर्पादिकोंकीन्यांई प्रकाशभीप्रतिकूल होवैगा अथवा सुखकेसाधनस्त्रीतथा धनादिकनकीन्यांई अन्यभोक्ताकाशेषभूत होवैगा ॥ और अनुकूलतमहोणेतें प्रतिकूल तथाअन्यकाशेषभूत प्रकाश हैनहीं ॥ यातें प्रकाश सुखतैंभिन्ननहीं ॥ तात्पर्य ॥ यह सुखकेसाधन जेस्रक्चंदनादिकविषय ॥ ते अनुकूलकहियेहैं ॥ और तिनविषयोंकेसंबंधतें उत्पन्नभयी जोअंतःकरणकीवृत्ति ॥ सोअनुकूलतरकहियेहे ॥ औरतिनोंकाप्रकाशकआनंदस्वरूपआत्माअनुकूलतमकहियेहे।यातेंप्रतिकूलतातथा अन्यशेषता दोनोंप्रकाशविषेवनैंनहीं ॥ तर तम यहदोनोंशब्द अधिकताकेवाचकहैं ॥ शंका ॥ प्रकाशऔरसुखकापरस्परभेदमतहोवे ॥ तथापि तिनदोनोंधर्मों तें आत्मारूपधर्मी भिन्नकाहेतैंनहींहोवे ॥ समाधान ॥ यहआत्मा प्रकाशस्वरूपतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतें आत्मा सर्वअंतःकरणकीवृत्तियोंका प्रकाशकहे ॥ और जोप्रकाशतैंभिन्नहोवेहे ॥ सो सर्ववृत्तियोंकूंप्रकाशकरेनहीं ॥ जैसे बुद्धिआदिकहैं और जो आत्माप्रकाशतैंभिन्नहोवे ॥ तो अप्रकाशस्वरूपहोणेतें घटादिकोंकीन्यांई अनात्मस्वरूपहोवैगा ॥ और घटादिकोंकीन्यांई अनात्मस्वरूपता आत्माकी वादीकूंभी अंगीकारनहीं ॥ यातें प्रकाशतें आत्मा भिन्ननहीं ॥ किंतु प्रकाशस्वरूपहे ॥ और जैसे सुखतैंप्रकाशभिन्ननहीं यहपूर्वकह्या ॥ तैंसे प्रकाशतैं सुखभी भिन्ननहीं ॥ काहेतें जो प्रकाशतैं भिन्नहोवेहे ॥ सो अप्रकाशस्वरूपहोवेहे ॥ और अप्रकाशमानसुखकूं सुखरूपता बनेनहीं ॥ शंका ॥ जैसे दीपककरिके घटादिकोंकोप्रकाशमानताहोवेहे ॥ तहां घटादिकोंतें दीपकभिन्नहे ॥ तैसे सुखतैंभिन्नप्रकाशकरिकेभी सुखकोप्रकाशमानता बनेंहे ॥ सुखप्रकाशका अभेदमानणा निष्फलहे ॥ समाधान जैसे रज्जुआदिक व्यावहारिकपदार्थ औरसर्पादिक कल्पितपदार्थ आपणेतैंभिन्नप्रकाशकरिके प्रकाशमान होवेहैं ॥ तैसे आपणेतैंभिन्नप्रकाशकरिके सुख प्रकाशमानहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेतैंअभिन्नप्रकाशकरिके सुख प्रकाशमानहोवेहे यातें सुखऔरप्रकाशका अभेदहे ॥ यहां यहतात्पर्यहे॥रज्जुआदिकदृश्यपदार्थ चेतनविषेकल्पितहैं ॥ यातेंतिनोंकी भिन्नप्रकाशकरिकेप्रकाशमानता संभवेहे ॥ और आत्मस्वरूप सुख कल्पितहैनहीं ॥ किंतु सर्वकाअधिष्ठानहे ॥ यातें भिन्नप्रकाशकरिके ताकी प्रकाशमानता बनैंनहीं ॥ और जैसे प्रकाशतैं आत्मा

भिन्ननहीं॥ तैसे सुखतैंभी आत्मा भिन्न नहीं किंतु अभिन्नहै॥प्रकाशस्वरूपसुखतैं जो आत्मा भिन्नहोवै॥तो घटादिकोंकी न्यांई अनात्मा होवैगा और आत्माकोअनात्मता अंगीकारहैनहीं ॥ यातैं प्रकाश सुख आत्मा यातीनोंका अभेदहै यहसिद्धभया॥यहां प्रकाशशब्दकरिके चैतन्यकाग्रहणकरणा ॥ और सुखशब्दकरिके आनंदकाग्रहणकरणा और आत्मा आनंद प्रकाश यहतीनों सत्तातैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जैसे सत्तातैंभिन्नहोणेतैं वंध्यापुत्र असत्यहै॥तैसे सत्तातैंभिन्नहूवेआत्मा आनंद प्रकाशकूंभीवंध्यापुत्रकीन्यांई असत्यताप्राप्तहोवैहै ॥ और आत्माकीअसत्यता कोईअंगीकारकरैनहीं॥और जैसे आत्मा आनंद प्रकाश यहतीनों सत्तातैंभिन्ननहीं ॥ तैसे सत्ताभी यातीनोंतैंभिन्नन हीं ॥ काहेतैं जो आत्माआनंदप्रकाशतैं सत्ता भिन्नहोवै ॥ तो घटादिकोंकोन्यांई अनात्मादुःखजडस्वरूपहोवैगा ॥ और अनात्मास्वरू पहुईसत्ता वंध्यापुत्रकेसमान असत्यहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ आत्मानाम आपणेस्वरूपकाहै॥आपणेस्वरूपतैं जभी सत्ताभिन्नहुई ॥ तभी वंध्यापुत्रकीन्यांई असत्यहोहोवैगी ॥यातैं सत्ता आत्मातैंभिन्ननहीं॥ सो सत्चित्आनंदस्वरूप मैंपरमात्माहूं॥और देशकालवस्तुपरिच्छे दतैंरहितहूं ॥ यातैं मैंपरमात्मा अनंतहूं ॥ और जैसे रज्जुविषे सर्प कल्पितहै ॥ तैसे मुझ अनंतआत्माविषे सर्वप्रपंच कल्पितहै ॥ और कारण कार्य देश कालादिकोंकेवाचक सर्वशब्दोंकातथासर्वज्ञानोंका मैंपरमात्माहीं विषयहूं ॥ याकारणतैंहीं वेदांतवाक्योंतैं तथावेदांतवा क्यजन्यज्ञानतैं परिपूर्णआत्माकूंभी मैंदेखताभयाहूं ॥ यातैं मैंकृतकृत्यहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसआत्मस्वरूपकेनिश्चयकरणेवासते यादुः खरूपशरीरविषे हमनैं प्रवेशकियाथा ॥ सो आत्मसाक्षात्कार अभीहमारेकूं प्राप्तभयाहै ॥ यातैं किंचित्मात्रभी हमारेकूं अभीकर्तव्यनहीं रह्या॥और यहपरमात्मादेव गुरुऔरवेदांतवाक्यजन्यज्ञानतैं अपरोक्ष आपणेस्वरूपकूंदेखताभया॥याकारणतैंहीं"अयमिद्रः"यानामकूंप्राप्तहु आआनंदआत्मा ब्रह्मरूपहोताभया ॥ काहेतैं ब्रह्मकेजानणेहारेकूं ब्रह्मरूपता श्रुतिविषेप्रसिद्धहै ॥ और ताइंद्रनामापरमात्माकूं अग्निआदि कदेवता तथादेवभाववालेमनुष्य इंद्र यापरोक्षनामतैं कथनकरतेभये ॥ याकारणतैं यहदेवता प्रत्यक्षनामग्रहणतैं द्वेषमानैहै ॥ जैसे लोक विषेभी महान्पुरुषोंकूं आचार्यादिकपरोक्ष नामोंकरिके जोबुलावैहै ॥ ताऊपरितेमहान्पुरुष प्रसन्नहोवैहै ॥ और जोदेवदत्त तथायज्ञदत्त

यांप्रकारसाक्षात्नामकरिकेमहान्पुरुषोंकूं बुलावैहैं ॥ ताऊपरिद्वेषकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जभीदेवता तथाशिष्टपुरुषभीप्रत्यक्षनामग्रहणतें द्वेषकरैहैं ॥ तभी परमेश्वर प्रत्यक्षनामग्रहणतें द्वेषकरैहै यामैक्याआश्चर्यहै और इंद्रनामा परमेश्वरकूं इंद्रनामकरिके यहदेवता कथनकरैं हैं ॥ और आपभी प्रत्यक्षनामग्रहणतें द्वेषकरैहैं याकारणतें विवेकीपुरुषोंनें परोक्षप्रिय देवताकहेहैं ॥ और यालोकविषेभी सत्मार्गविषे विचरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ तेदेवताकेसमानहैं ॥ तिनोंविषेभी देवताओंकीन्याईं नियमकरिके परोक्षनामग्रहणतैंहीं प्रसन्नतादेखीहै ॥ याकारणतैंहीं पितातथाआचार्यादिकोंके साक्षात्देवदत्तादिकनामोंकूं बुद्धिमान्पुरुषकथनकरैंनहीं ॥ तैसेस्त्रियोंभी आपणेपतिआदिकोंके साक्षात्देवदत्तादिकनामोंकूं कथनकरैंनहीं ॥ किंतुस्वामीतेंआदिलैकेजेपरोक्षनामहैं ॥ तिनोंकरिके व्यवहार कूंसिद्ध करैहैं ॥ यांप्रकारसनकादिकऋषि सात्विकीप्रजाकूं आत्माकाउपदेशकरिके कहतेभये ॥ हेआत्मज्ञानविषेअधिकारीप्रजा ॥ तुमारेताईं अध्यारोपअपवादकरिके आत्माकास्वरूप अबपर्यंत हमोंनें कथनकऱ्या ॥ सोकैसाआत्माहै ॥ महावाक्योंका तथामहावाक्यजन्यवृत्तिज्ञानका विषयहै ॥ तथापि तुमोंनें घटादिकोंकीन्याईं स्वरूपतेंआत्मा विषयरूपनहींजानणा ॥ किंतुवेदांतकेतात्पर्यज्ञानद्वारा अविषयरूपकरिकेही आत्मा जानणेयोग्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे शृंगकूंग्रहणकरिके गो दिखाईआवैहै ॥ तैसे आत्माकूंदिखावणेमे कोईसमर्थनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् आपसर्वशक्तिसंपन्नहो ॥ यातें गोकीन्याईं साक्षात्आत्माकूंहमारेताईं बोधनकरो ॥ समाधान॥हेअधिकारीप्रजा॥अध्यारोपअपवादरूपमायातेंविना कोणपुरुष ऐसासमर्थहै ॥ जो अद्वितीयआत्माकूं कथनकरिसके ॥ औरश्रवणकरिसकै ॥ किंतु अध्यारोपअपवादकरिकेही आत्माकूं गुरुशास्त्र कथनकरैहैं ॥ और अधिकारीश्रवणकरैहैं॥ याकारणतैंहीं तैतरीयश्रुतिविषे आत्मा मनतथावाणीका अविषयकह्याहै ॥ और केनउपनिषद्विषे यहकह्याहै ॥ तत्ववेत्तापुरुषोंकेमतविषे आत्मा अविषयहै॥ और जेअविवेकीपुरुष बुद्धिआदिकोंकूं आत्मामानैंहैं ॥ तिनोंकेमतविषे घटादिकोंकीन्याईं आत्माभीविषयहै ॥ और कठउपनिषद्विषे यहकह्याहै ॥ वाणीकेअविषयआत्माकूं जो कथनकरैहै॥सोआत्माकावक्ताभी आश्चर्यरूपहै॥और इंद्रियकेअविषयआत्माकूंजोश्रवणकरै

है॥ सो श्रोताभी आश्चर्यरूपहै और मनकेअविषयआत्माकूंआचार्यकेउपदेशकरिके जोसाक्षात्करैहै ॥ सोलब्धाभीआश्चर्यस्वरूपहैहेसात्वि कीप्रजाहसतैंआगेआत्माकेस्वरूपकहणेकूंहमसमर्थनहींहैंकिंतुदिशामात्रकरिकेआत्माकाउपदेशहमोंनेंतुमारेताईकन्याहैआगेतुमसर्वयुक्तियों कूंजानणेहारेहो ॥ और वेदशास्त्रकूंभी भलीप्रकारजानणेहारेहो ॥ यातें आपणीबुद्धिकरिकेविचारकरिके तिसआत्माकूं तुम प्राप्तहोवो ॥ दृष्टांत ॥ जैसेरामेश्वरकीप्राप्तिकोइच्छावान् किसीपुरुषनें किसीसेंपूछा ॥ किसमार्गकरिके रामेश्वरकोहमारेकूं प्राप्तिहोवेगी ॥ तभी तापु रुषनें दक्षिणदिशा दिखायदी ॥ आगे जाणेवालापुरुष आपणीबुद्धिकरिकेहीं रामेश्वरकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे हेप्रजा ॥ आत्माकूंदिशामात्रक रिके हमोंनें तुमारेताईं कथनकन्याहै ॥ आगे आपणीबुद्धिकरिके तुम आत्माकूंजाणो ॥वशिष्ठभगवान्‌नेंभी रामचंद्रकूं याप्रकारकह्याहै ॥ ॥श्लोक॥उपदेशक्रमोराम व्यवस्थामात्रपालनम् ॥ ज्ञप्तेस्तुकारणंशुद्धा शिष्यप्रज्ञैवकेवला॥२॥अर्थयह ॥ चतुष्टयसाधनसंपन्नमुमुक्षु श्रोत्रि यब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाइके वेदांतश्रवणकरे ॥ यहश्रुतिनें आज्ञाकरीहै ॥ ताआज्ञाकेपालनवासतेंहीं गुरुका शिष्यकेप्रतिउपदेशहै ॥ और आत्मसाक्षात्कारकातो शिष्यकीशुद्धबुद्धिहींकेवलकारणहै ॥ अशुद्धबुद्धिवालेपुरुषकूं ब्रह्माकेउपदेशतेंभी आत्मसाक्षात्कारहो वेनहीं ॥ याकारणतेंहीं ब्रह्माकेउपदेशतें विरोचनकूं आत्मज्ञाननहींभया ॥ और हेसात्विकीप्रजा॥ वैराग्यरहितपुरुषोंकरिके यहपरमात्मा जानणेकूंयोग्यनहीं ॥ किंतु वैराग्यवान्‌पुरुषोंकरिकेही यहपरमात्मा जानणेयोग्यहै ॥ यातें हेप्रजा ॥ आत्माकेसाक्षात्कारवासते तुम वैराग्यकूंसंपादनकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन् वैराग्यकाकौंणउपायहै ॥जाकरिके हम वैराग्यकूंसंपादनकरें॥ समाधान॥ हे अधिकारीप्रजा ॥ वैराग्यकेप्राप्तिकाउपाय ॥ तुमारेताईं हम पूर्वकहिआयेहैं ॥ सुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंविषे सर्वदा दोषोंकूंदेखणा यहही वैराग्यकेउत्पत्ति काकारणहै ॥ याप्रकार अधिकारीप्रजाकूंउपदेशकरिके लोकोंकेशोककूंहरणेहारे जेसनकादिकमहात्माहैं ॥ ते पुनःप्रश्नकरणेकीइच्छावान अधिकारियोंकाअनादरकरिके तहाँअंतर्धानहोतेभये॥और तिनसनकादिकऋषियोंकेगयेहुये दुर्लभगुरोंकेलाभतेंप्रसन्नहैमनजिनोंका ऐसेजे संपूर्णअधिकारीप्रजाहैं ॥ ते परस्पर याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेभये ॥ हमअधिकारियोंके अहोभाग्यहै अहोभाग्यहै ॥ जाकरणतें सनका

दिकऋपि हमारेगुरुहोतेभयेहैं ॥ कैसेसनकादिकऋषिहैं॥ सर्वप्राणीमात्रविषे जिनोंकीसमानदृष्टिहै ॥ और कामक्रोधकरिकेरहितहैं ॥ और जैसे वायु बाह्यभीतर विचरेहै ॥ तैसे सर्वपुरुषोंके अंतरिबाहरि विचरणेहारेहैं ॥और परकेउपकारविषें जिनोंकीनित्यप्रीतिहै ॥ और आप शीतउष्णादिकोंकूं सहारेहैं ॥ और परदोषोंकेकथनविषे जिनोंने मौनधारणकऱ्याहै ॥ और आप सर्वदोषोंतेंरहितहैं ॥ और आत्मज्ञान करिके संपन्नहैं ॥ और जैसे शरद्ऋतुकासमुद्र क्षोभतेंरहितहोवेहै ॥ तैसे क्षोभतेंरहितहैं ॥ और निश्चलहैं ॥ और निर्मलजिनोंकामनहै ॥ और पूर्णिमाकेचंद्रमाकीकांतिकेसमान जिनोंकीकांतिहै॥ऐसेसनकादिकऋषियोंनें हमारेहितवासतै आत्माकाउपदेशकऱ्याभी॥तोभी हमारे वैराग्यकेअभावतें तिनोंकासर्वउपदेशव्यर्थताकूंप्राप्तहोताभया॥दृष्टांत॥जैसे बधिरपुरुषकेसमीप गीतगायनकऱ्याहुआ व्यर्थताकूंप्राप्तहोवेहै॥ और सनकादिकोंकेवचनतें हमारेकूं आत्माकाअपरोक्षज्ञान उत्पन्न नहींभया ॥ किंतु परोक्षज्ञानमात्र उत्पन्नभयाहै ॥ जैसे विद्याध्ययन कालविषे सामान्यतें अर्थकाज्ञानहोवेहै ॥ तैसे आत्माकापरोक्षज्ञान हमारेकूं भयाहै॥और सनकादिकोंकेवचनतें यज्ञादिककर्मोंकेकरताभो क्ताहम अद्वितीय आत्मस्वरूपनहीहैं॥याप्रकारका महान्संशय हमारेकूं उत्पन्नभयाहै॥तात्पर्य यह जैसे गुड़ मधुररसकेअनुभवका यद्यपि कारण है तथापि सोगुड़ पित्तरोगवालेपुरुषकूं कटुताकेअनुभवका कारणहोवेहै॥तैसे सनकादिकऋषियोंकेवाक्य यद्यपि यथार्थआत्मज्ञान केकारणहैं ॥ तथापि हमारे दोषतें तेवाक्य संशयकूंउत्पन्नकरतेभयेहैं ॥ और सनकादि [illegible]केवचनोंविषेहमारामन स्थितहोतानहीं ॥ काहेतें सनकादिकोंनें हमारेकूं अद्वितीयआत्मस्वरूपकह्या सोबनेंनहीं ॥ काहेतें हम कर्मकेकरताहैं ॥ और कर्मकेफलकेभोक्ताहैं ॥ यातें अद्विती यआत्मस्वरूप हम कैसेहोवें॥किंतु अद्वितीयआत्मस्वरूप हम नहींहैं॥और सनकादिकोंनें पूर्व अहं याज्ञानकाविषय तथा अहं याशब्दका लक्ष्य आत्माकह्याथा॥सोभी बनेंनहीं॥काहेतें अहं याज्ञानकीविषयता हमारेविषेंहैनहीं॥तथा अहं याशब्दकीलक्षताभी हमारे विषेंहैनहीं॥ यातें हे अधिकारियो ॥ हमारेकूं आत्माविषे दृढअसंभावना उत्पन्नभईहै ॥ इसीकारणतैं हमारीअसंभावनाकूंदेखिकरिके हमोनेंनहींपूछेहुवे भी सनकादिकऋषि आत्मज्ञानकी प्राप्तिवासते हमारेतांई वैराग्यरूपउपायकूंहीं कहतेभये॥और पदार्थोंविषे दोषदृष्टिरूपवैराग्यकाउपा

यभी हमारेताई कहतेभये॥ तातैं हे अधिकारियो॥हमसर्व मिलिकरिके पदार्थोविषेदोषोंकूंविचारकरैं॥तहाँ प्रथम याशरीरविषेकोणदोषहैं॥ ऐसाविचारकर्‍याचाहिये ॥ ऐसाचिंतनकरिके अग्निहोत्रकूंकरणेहारेअधिकारी परस्परमिळिके दोषोंकूंविचारतेभये ॥ तहाँ गर्भदुःखके निरूपणकरणेवासतैं प्रथम कर्मकेवशतैं जीवोंकास्वर्गादिकलोकविषेगमनकूं तथा आगमनकूंदिखावैहैं ॥ सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे हवनकरी जेअग्निहोत्रविषेआहुतिदो ॥ तेकेसीदोनोंआहुतियांहैं ॥ जलप्रधानदुग्धादिकोंकापरिणामहोणेतैं जल जिनोंविषे प्रधानहै ॥ और होमतैं अनंतर अग्नितैं सूक्ष्मरूपकरिके आकाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ पुनःकेसीआहुतियांहैं ॥ कर्मकूंकरणेहारे जेहमप्रमाताहैं ॥ तिनोंकाव्यापकजोजीवात्मा ताकरिकेसर्वदायुक्तहैं ॥ याप्रकार अंतरिक्षलोककूं प्राप्तभईजे सायंकालकी तथाप्रातः कालकीदोनोंआहुतियाँ ॥ और शरीरकेदाहकालविषे स्वर्गकोप्राप्तिवासतै दईजोतीसरीआहुति ॥ यहतीनोंआहुतियाँ हमकर्मीपुरुषोंकूं ग्रहणकरिके प्रथम स्वर्गलोकरूपअग्निकूंप्राप्तकरैहैं ॥ तहाँ पुण्यकर्मकूंभोगिकरिके तातैंअनंतर मेघरूपदूसरीअग्निकूंप्राप्तकरैहैं ॥ तासैंअनं तर वर्षाद्वारा पृथिवीरूपतीसरीअग्निकूं प्राप्तकरैहैं ॥ तासैंअनंतर अन्नद्वारा पुरुषरूपचतुर्थअग्निकूंप्राप्तकरैहैं ॥ तहाँ जीवकास्वर्गलोकतैंमे घद्वाराभूमिलोकमैं आवणेविषे इतनाभेदहै ॥ पुण्यपापकरिकेयुक्त जोकोईकजीवहै ॥ सो पुण्यकर्मकेउदयतैं प्रथम स्वर्गसुखकूंभोगिकरिके पुण्यकर्मकेक्षयहूये तास्वर्गतैंगिरैहै ॥ पुनः पापकर्मकेउदयतैं नरकदुःखकूंभोगिकरिके तानरकतैं भूमिलोकविषेगिरैहै ॥ तामिरणेकाल विषे जैसाजैसायाजीवकाकर्म उदयहोवैहै ॥ ताकर्मकेअनुसार पराधीनताकरिकेयहजीव नानाप्रकारजंतुवोंकीयोनियोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और केवल पुण्यकर्मकेउदयतैं यहपुण्यवान्जीव स्वर्गलोकविषे संपूर्णपुण्यकर्मकेफलकूंभोगिकरिकें नरककीप्राप्तितैंविनाही वर्षाद्वारा या भूमिलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ केसाभूमिलोकहै ॥ औषधियोंकरिकेपूर्णहै ॥ और मनुष्यशरीरकाकारण जेपुण्यऔरपापहैं ॥ तिनोंकरिकेयुक्तहु आ औरमूढअवस्थाकूंप्राप्तहुआ ऐसाजोपराधीनजीव ॥ सो अन्नकेसाथिएकरूपहोइकरिके पुनःपुरुषकेशरीरविषे प्रवेशकरैहै ॥ जैसे रज्जुकरिकेंबांध्याहुआघट कूपविषेप्रवेशकरैहै ॥ तैसे कर्मरूपरज्जुकरिकेंबांध्याहुआजीव पिताशरीरविषेप्रवेशकरैहै ॥अन्यदृष्टांत ॥ जैसे

शृंखलाकरिकैबांध्याहैशरीरजाका औरहरणकन्याहैधनतथाबांधवजाका ऐसाजो दोषवान्पुरुषहै ॥ सो राजाकेभृत्योंनें बंधनग्रहणकूंप्रासक
रीताहै ॥ तैसे कर्मरूपशृंखलाकरिकैबांध्याहुआ औरबांधवोंतैंरहित एकाकीयहजीवभी इंद्रियादिकोंकेअभिमानीदेवतावोंनें पिताशरीरकूं
प्राप्तकरीताहै ॥ और सोपिताकाशरीर अंधकूपकीन्यांई भयकाकारण याजीवकूं प्रतीतहोवैहै ॥ कैसापिताकाशरीरहै ॥ सर्पोंकेसमान भय
करणेहारे जेकृमिगणहैं ॥ तिनोंकरिकै व्याप्तहै ॥ और जैसे धनकेहरणेवासतै राजाकेपुरुष लोकोंकूंसंतापकरैहैं ॥तैसे अन्नद्वारा पिताकेउद
रविषेप्राप्तहुएजीवकूं पिताकीजठराग्नि संतापकरैहै और जैसे हिमालयपर्वतविषे व्याधिग्रस्तबलहीनपुरुषकूं महान्वायु शोषणकरैहै ॥ तैसे
पिताकेउदरविषेस्थितयाजीवकूं पिताकाप्राणवायु शोषणकरैहै ॥ यद्यपि पिताशरीरविषे यहजीव मूर्छासहितहोवैहै ॥ यातैं दुःखकाअनु
भव संभवैनहीं ॥ तथापि वैराग्यकेउत्पत्तिवासतैं दुःखकाअनुभवकह्याहै ॥ और जैसे योनिद्वारा माताकेगर्भविषे यहजीव प्रवेशकरैहै
॥ तैसे मुखरूपयोनिछिद्रकरिकै पिताकेगर्भविषे यहजीव प्रवेशकरैहै ॥ और जैसे कामकरिकैपीडाकूंप्राप्तभईस्त्री गर्भकेधारणेकीइ
च्छाकरैहै ॥ तैसे क्षुधातृषाकरिकैपीडाकूंप्राप्तहुवा यहपुरुषभी जीवयुक्तअन्नरूपगर्भके धारणकीइच्छाकरैहै ॥ यातैं जैसे माताकेशरी
रविषे यहजीव गर्भभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे पिताशरीरविषेभी गर्भभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ जो स्त्रीकेसमानहीं जीवरूपगर्भकूं पि
ता धारणकरताहोवै ॥ तो जैसे स्त्रीकेगर्भाधानविषे पुरुषरूपपिताऔरताकामैथुनरूपव्यापार कारणहोवैहै ॥ तैसे पुरुषकेगर्भाधानविषे
भी पुरुषरूपपिता औरताकाव्यापार कह्याचाहिये ॥ समाधान ॥अन्नद्वारा पुरुषशरीरविषेप्राप्तभया जोजीवरूपगर्भ॥ताका लोकविषे
प्रसिद्धजोपिताहै सोतो माताहै ॥ काहेतैं जोगर्भकूंधारणकरैहै सोमाताकहियेहै॥और मायाविशिष्टईश्वररूपपुरुष याका पिताहै॥और ईश्वर
कातयापिताका संयोग मैथुनधर्मकीन्यांई यागर्भकाकारणहै ॥ यातैंभी पिताके तथामाताकेशरीरविषे समानगर्भ भावकूं यहजी
व प्राप्तहोवैहै ॥ और यहजीव माताकेगर्भविषे जैसे दुःखकूंअनुभवकरैहै ॥ तैसेहींदुःखकूं पिताकेउदरविषेस्थितहुआ यहजीव प्रा
प्तहोवैहै ॥ तहाँ अन्नकेसाथि एकरूपहुआ यहजीव प्रथम पुरुषकेमुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहाँ दंतोंकरिकै ताकाशरीर भेदनहोवैहै ॥ और

मुखकेदुर्गंधकरिके ताकाघ्राणइंद्रिय व्याप्तहोवेहै ॥ याप्रकार पिताकेमुखविषे अनंतदुःखोंकूं अनुभवकरिके पुनःदुःखकरिके कंठछिद्रकूं प्राप्तहोवेहै॥तहां अल्पमार्गकंठछिद्रविषे यहजीव कृमिकीन्यांई चेष्टाकरेहै ॥ और कफकरिकेव्याप्तहोवेहै॥और व्याकुल जाकी इंद्रियांहोवेहैं॥ और शक्तितेंरहितहोवेहै॥और अतिशयकरिकेदुःखीहोवेहै ॥ याप्रकार कंठविषेस्थितहुआ यहजीवदुःखोंकूंप्राप्तहोवेहै॥दृष्टांत॥जैसे गरुडके मुखविषेप्राप्तभईमाछली सर्वओरतें चलायमानहोवेहै ॥ और गरुडकेमुखतेंछूटनेकीइच्छाभीकरेहै॥तथापि छूटनहींसकेहै ॥ तैसे यहजीव कंठछिद्रविषेरुक्याहुआ अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरेहै ॥ याप्रकार कफकेस्थानकंठदेशविषे अनंतदुःखोंकूं यहजीवप्राप्तहोइके॥जैसे योनिद्वार तेंनिकसणेमें दुःखहोवेहै॥तैसेदुःखकरिके कंठस्थानतेंनिर्मुक्तहोवेहै ॥ पुनःयहजीवहृदयदेशमेंस्थितपित्तकूंप्राप्तहोवेहै ॥ कैसापित्तहै विषाद्रव केसमानजाकाआकारहै ॥ औरजैसेत्वचाकूं उतारिकरिकेकिसीपुरुषकूं तप्ततेलविषेपाइये ॥ तातेलविषेपड़नेतें जैसा पुरुषकूं दुःखहोवेहै ॥ तैसेदुःखकूं अनुभवकरताहुआ यहजीव कफस्थानकंठतें पित्तकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तहां हृदयदेशविषे पित्तकूंप्राप्तहुआ यहजीव अनंतदुःखोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ सोकैसापित्तहै ॥ प्राणवायुकरिके मर्कटकीन्यांई चलायमानहै ॥ और जठराग्निकरिके तपायमानहै ॥ ऐसेपित्तविषेप्राप्तभया यहजीव कभीनीचेजावेहै ॥ और कभीऊपरिजावेहै ॥ और कभीपित्तविषेहीं चारोंओरतेंभ्रमणकरेहै ॥ जैसे तप्ततेलविषेप्राप्तभयाजल नीचे ऊपरिभ्रमेहै ॥ तैसे यहजीव पित्तविषेभ्रमैहै ॥ याप्रकार पित्ताशयविषे अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिके पुनःवातकाआश्रयजोवायुहै ॥ ताकूं यहजीव प्राप्तहोवेहै ॥ कैसासोवायुहै ॥ पुरीततिरूपकोटकेमध्यविषेस्थितहै ॥ और नाभिरूपपर्वततेंजाकानिर्गमनहोवेहै ॥ पुरीततिनाम आंद्रकाहै ॥ और जैसे तृण वायुविषेप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे यहजीव वाताशयवायुविषे प्राप्तहोवेहै ॥ और जैसे तक्षा काष्ठकूं वास्याकरिके छेदन करेहै ॥ तैसे प्राणवायु अन्नमिलितयाजीवके सर्वअंगोंकूं छेदनकरेहै ताछेदनकरिके याजीवकेइंद्रिय व्याकुलहोवेहैं ॥ पुनःसोकैसावायुहै अग्निकेसमान जाकाउष्णस्पर्शहै ॥ और रूक्षहै ॥ और दुःखकरिकेसहन कियाजावेहै ॥ ऐसेवायुविषे स्थितहोइके किंचित्काल तहांदुःखकाअनुभवकरिके पुनःजठराग्निकूं यहजीव प्राप्तहोवेहै ॥ तहां जठराग्निविषे जीवमिलितअन्नकापाकहोवेहै ॥ तापाककरिकेभी यहजीव

प्रारब्धकर्मकेवशतें मृत्युकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ तापाकर्ते सोअन्न उत्तम मध्यम अधम भावकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तहाँ अन्नकाउत्तमभाग मनभावकूं प्राप्तहोवैहे ॥ और अधमभाग विष्ठाभावकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और अन्नकेमध्यमभागकेसाथि एकरूपहुआयहजीव त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा यावद्धातुवोंकूं क्रमतेंप्राप्तहोवैहे ॥ तहाँ समाननामावायुकेबलतें पूर्वपूर्वधातुकूंप्राप्तहोइके पुनःउत्तरउत्तरधातुकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तहाँ एकएकधातुकेप्रवेशविषे याजीवोंकूं अनंतदुःसहदुःखप्राप्तहोवैहैं ॥ जब एकधातुकेप्रवेशविषेभी जीवोंकूं दुःसहदुःखोंकोप्राप्तिहोवैहे ॥ तब षट्धातुकेप्रवेशविषे दुःसहअनंतदुःख याजीवोंकूं प्राप्तहोवैहैं याकेविषे क्याकहणाहे ॥ तहाँ प्रथम त्वचाकेप्रवेशविषे जीवके दुःखोंकूं दिखा वैहैं॥यहजीव अन्नकेमध्यमभागकेसाथिएकरूपहोइकरिकै नाडीद्वारा प्रथमत्वचाकूंप्राप्तहोवैहे॥तेकैसीनाडियांहैं॥केशकेअग्रभागकूंशतभाग करिये॥ताएकभागकेसमान सूक्ष्महैं॥और बहत्तरि७२०००सहस्र जिनोंकीसंख्याहे॥और हृदयदेशतें जिनोंकानिर्गमनहुआहे॥ऐसेसूक्ष्मना डीमार्गतें यहजीव त्वचाकूंप्राप्तहोवैहे॥सोकैसीत्वचाहे॥सर्वशरीरविषेव्यापकहे॥और केशतथालोमकरिकैयुक्तहे॥ऐसेसूक्ष्मनाडियोंकेप्रवेशवि षेतथानाड़ीमार्गकेगमनविषे तथातिननाडियोंतेंनिकसणेविषेतथा नाड़ीद्वारात्वचाकोप्राप्तिविषे जेजे जीवोंकूं दुःखहोवैहैं ॥ तेस्मृतिविषेप्रसि द्धहैं ॥ तिनदुःखोंकेकहणेतेंभी हमारेकूं मोह प्राप्तहोवैहे ॥ इसप्रकार त्वचाविषे अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै तात्वचातें पुनःरुधिररूप द्वितीयधातुकूं यहजीव प्राप्तहोवैहे ॥ सोकैसारुधिरहे ॥ लाक्षाकेरससमान आकारक्तवर्णहे ॥ और जाकेदेखणेकरिकै भययुक्तपुरुषोंकूं मोह उत्पन्नहोवैहे ॥ ऐसेरुधिर विषे अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै पुनःतारुधिरतें मांसरूपतृतीयधातुकूं यहजीव प्राप्तहोवैहे ॥ सोकैसा मांसहे ॥ अतिसघनहे ॥ औरशाल्मली वृक्षकेपुष्पकेसमान आकावर्णहे ॥ ऐसे मांसविषे प्राप्तहुआ यहजीव कभी मूर्च्छाकूंप्राप्तहोवैहे और कभीभयकूं प्राप्तहोवैहे ॥ और कभी इंद्रियताकीव्याकुल होवैहै ॥ इसप्रकार मांस विषेअनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकैपुनः तामांसतें पतनहुआ यहजीव अग्नितथाप्राणवायुकरिकैचलायाहुआ मेदरूपचतुर्थधातुकूं प्राप्तहोवैहे ॥ जैसे अग्निकरिकैतपायाहुआ घृत चूर्णविषेप्रवेशकरैहे ॥ तैसे यहजीवमेदविषेप्रवेशकरैहे ॥ कैसासोमेदहे गोधूमकेचूर्णसमान आकाशुक्लवर्णहे ॥ ऐसेमेदविषे

अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिके पुनःतामेदतें अस्थिरूपपंचमधातुकूं यहजीव प्राप्तहोवेहै ॥ जैसे मृत्तिका काष्ठसमुदायकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे पुरुषकेगर्भविषेस्थितयहजीव अस्थियोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तेकैसेअस्थिहैं ॥ शरीररूपगृहकेस्थूणाहैं ॥और तीनसौसाठ ३६० जिनोंकीसंख्या शास्त्रविषेकहीहै ॥ ऐसेअस्थियोंविषेअनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिके पुनःताअस्थियोंतें मज्जारूपषष्ठधातुकूं शनैःशनैःकरिके यहजीव प्राप्तहोवेहै॥जैसे काष्ठविषेस्थित हुआजलशनैःशनैःकरिकेकाष्ठविषेप्रवेशकरेहै॥तैसे यहजीव मज्जाविषेप्रवेशकरेहै ॥सोकैसीमज्जाहै॥अस्थियोंकेभीतरस्थितहै॥ और साररूपवीर्यकरिकेयुक्तहै॥इसप्रकार मज्जाकासाररूपहुआ कोईकाल यहजीवरहेहै ॥ पुनःस्त्रीसंबंधरूपनिमित्ततेंपिताकूं जब कामरूपअग्नि मनविषेउत्पन्नहोवेहै ॥ तब सर्वओरतें मज्जा वीर्यरूपसारकूं परित्यागकरेहै ॥ जैसे अग्निकेसंबंधतें घृत द्रवीभावहोवेहै तैसे कामाग्निकरिके मस्तकतेंलेकरिकेपादपर्यंत सर्वअंगोंतें मज्जाकासारनिकसेहैसोमज्जाकासाररूपवीर्य पिताकरिके सहनकियानहींजावेहै॥याअर्थकूं च्यारिदृष्टांतोंकरिकेदिखावेहैं ॥ जैसे दशममासविषे प्रसवकालमें स्त्रीकरिके यहगर्भ दुःखकरिकेसहनकियाजावेहै ॥ तैसेकामाग्निकेउत्पन्नहुवे पिताकरिके यहवीर्यरूपगर्भ दुःखकरिकेसहनकियाजावेहै॥और जैसे आर्द्रवृक्ष आपणेकोटरविषे अग्निकूंनहींसहारिसकेहै ॥ तैसे पिताभी वीर्यरूपगर्भकूं ताकालविषे नहींसहारिसकेहै और जैसे किसीपुरुषनें शत्रुकेनाशवासते श्येनयज्ञादिरूपकर्मकिया ॥ ताकर्मकरिके तिसशत्रुकामन कभीभीस्थितहोवेनहीं ॥ तैसेकामाग्निकेतापकरिके पिताकावीर्य स्थितहोवेनहीं ॥ और जैसे पारद देहविषे स्थितनहींहोवेहै ॥ तैसे कामाग्निकरिकेद्रवीभावहुआमज्जाकासारवीर्य कभीभी देहविषेस्थितिनहींकरता ॥ यद्यपि माताकेउदरतें गर्भकूं प्रसूतिकाकारणवायु बाहरिचलावेहै ॥ और पिताकेशरीरतें गर्भकूं कामाग्नि चलावेहै ॥ यातें दोनोंकीसमानता संभवेनहीं ॥ तथापि जैसे माताकेशरीरविषे यहजीव गर्भरूपहोइकेस्थितहोवेहै ॥ तैसे पिताकेशरीरविषेभी गर्भरूपहोईके स्थितहोवेहै ॥ और जैसे प्रसवकालविषे माताकूं यहगर्भ व्यामोहकरेहै ॥ तैसे पिताकूंभी यहवीर्यरूपगर्भ व्यामोहकरेहै ॥ यातें दोनोंविषे जीवकीगर्भरूपता समानहै ॥ अन्यवस्तुविषेअन्यबुद्धिकानाम व्यामोहहै ॥ तहां वीर्यरूपगर्भकेनिर्गमनकालविषे पिताकेव्यामोहकूं दृष्टांतकरिकेदिखावेहैं ॥ जैसे कफ

दोषतें निंबादिककटुवस्तु मधुरभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसेकामाग्निरूपदोषकेउत्पन्नहुयेतें याकामीपुरुषकूं दुःखकासाधनभीस्त्रीशरीर सुख
कासाधनप्रतीतहोवैहै ॥ और दुर्गंधजलकरिकेयुक्तस्त्रीकामुख यद्यपिविचारकियेतें ग्लानिकाकारणहै ॥ तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकूं
चंद्रमाकीन्यांई सुखकासाधनप्रतीतहोवैहै ॥ और मलकरिकेयुक्तस्त्रीकेनेत्र यद्यपि विचारकियेतें ग्लानिकेसाधनहैं ॥ तथापि कामदोषतें
कामीपुरुषकूंकमलकीन्यांई रमणीकप्रतीतहोवैहैं ॥ और स्त्रीकेनेत्रोंकेकटाक्ष विषयुक्तबाणकीन्यांई संपूर्णनरकोंकेकारणहैं॥तथापि काम
दोषतें कामीपुरुषकूं सर्वदा पुष्पकेसमानप्रतीतहोवैहैं ॥ और श्लेष्मकेनिकसणेकामार्ग ॥ जोस्त्रीकीनासिकाहै ॥ सो यद्यपि विचारकियेतें
ग्लानिकाकारणहै ॥ तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकूं दुग्धकीन्यांई मधुरप्रतीतहोवैहै॥और पायुइंद्रियकेसमानजोस्त्रीकेअधरहैं ॥ सो यद्य
पि विचारकियेतें ग्लानिकेसाधनहैं ॥ तथापि कामीपुरुषकूंकामदोषतें अमृतकीन्यांई प्रतीतहोवैहैं ॥ और अंधकारकेसमान
स्याम जेस्त्रीकेकेशहैं ॥ ते यद्यपि नेत्रकीशक्तिकूं हरणेहारेहैं ॥ तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकेनत्रोंकूं हर्ष उत्पन्नकरैहैं ॥ और
मांसकीग्रंथि जेस्त्रीकेस्तनहैं ॥ ते यद्यपि विचारकियेतें ग्लानिकेकारणहैं ॥ तथापि कामदोषतें कामी पुरुषकूं अमृतकरिकेपूरितसुवर्ण
केकलश प्रतीतहोवैहैं ॥ और अधिकमांसकरिकेयुक्त जोस्त्रीकाउदरहै ॥ अथवा मांसरहितजोउदरहै ॥ सो सूकरतथाश्वानकेउद
रसमानहै ॥ और विष्ठामूत्रकास्थानहै ॥ सो यद्यपि विचारकियेतें ग्लानिकाजनकहै ॥ तथापिकामग्रहकरिकेपीडित कामीपुरुषकूं
आनंदकाकारण प्रतीतहोवैहै ॥ और पायुरूपनदीकेतीररूप जोस्त्रीकेस्फिजहैं ॥ सो विष्ठामूत्रकरिकेलेपितहैं ॥ यातें विचारकियेतें
यद्यपि ग्लानिकेकारणहैं ॥ तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकूं रमणीकप्रतीतहोवैहैं ॥ कटीकेनिचेमांसपिंडोंकानाम स्फिजहै ॥ तिनहींकूं
जघनभीकहैहैं ॥ और भगंदररोगकेसमान और मूत्रगंधकरिकेदूषित जो स्त्रीकीयोनिहै ॥ सो यद्यपि विचारकियेतें ग्लानिका
कारणहै ॥ तथापि कामदोषतेंकामीपुरुषकूं स्वर्गकेसमान प्रतीतहोवैहै ॥ और ऊरूतेंलेकरिकेपादपर्यंत जोमांसयुक्तअस्थिरूप स्त्रीकी
जंघाहैं ॥ सो यद्यपि विचारकियेतें ग्लानिकेकारणहैं ॥ तथापि कामदोषतें कामीपुषकूं स्वर्णकेसमान तथाकदलीके स्तंभसमान

रमणीकप्रतीतहोवैहैं॥ इसप्रकार कामदोषकेबलतैं कामीपुरुषकूं जैसे स्त्री अमृतसमान प्रतीतहोवैहै॥तैसे कामदोषकेबलतैं स्त्रीकूंभी पुरुष अमृतसमान प्रतीतहोवैहै ॥ यहाँयहतात्पर्यहै ॥ कोईकदोष कार्यकाप्रतिबंधकहोवैहै ॥ जैसे नेत्रविषेस्थितपित्तदोष शंखविषेश्वेतज्ञान रूपकार्यकाप्रतिबंधकरैहै ॥ और कोईकदोष विपरीतकार्यकूंउत्पन्नकरैहै ॥ जैसे अग्निकरिकेदग्धवेत्रबीज कदलीकाआरंभकरैहै ॥ अथवा जैसेभस्मकरोगकरिकेदूषितजठराग्नि बहुतअन्नकूंपचावैहै इसप्रकार कामरूपदोषभी विपरीतकार्यकाआरंभकरैहै ॥ तथा कार्यकाप्रतिबंध करैहै ॥ तहाँ स्त्रीकेमुखादिकअवयवोंविषे चंद्रमादिकबुद्धिरूपविपरीतकार्यकीआरंभकता कामदोषकूं पूर्वग्रंथकरिकेदिखाई ॥ अब सर्वज्ञा नोंकीप्रतिबंधकता कामदोषकूं दिखावैहैं ॥ इसप्रकार कामीपुरुषके कामाग्निजन्यवीर्यरूपगर्भकेक्षोभहुवे ॥ तिसकालविषे यहकामीपुरुष शास्त्रप्रमाणतैं धर्मकूंनहींजाणैहै ॥ और अधर्मकूंनहींजाणैहै ॥ और रात्रिकूं तथादिनकूं नहींजाणैहै ॥ और आपणेकूं तथापरकूं नहींजा णैहै ॥ और सुहृदकूं तथामित्रकूं नहींजाणैहै ॥ और स्त्रीकेअवयवोंविषे नेत्रकरिकेदोषोंकूंदेखताहुआभी यहकामीपुरुष कामदोषकेबल तैं अंधपुरुषकीन्याईं नहींदेखैहै॥औरदोषोंकूंश्रवणकरताहुआभीयहकामीपुरुष बधिरकीन्याईं नहींश्रवणकरैहै॥ औरघ्राणइंद्रियकरिकेदुर्ग धकूंसूंघताहुआभी कामीपुरुष घ्राणदोषीपुरुषकीन्याईं नहींसूंघैहै ॥ और रसनइंद्रियकरिके रसकाअनुभवकरताहुआभी रसनरहितपु रुषकीन्याईं नहींअनुभवकरैहै ॥ और त्वकइंद्रियकरिके स्पर्शकरताहुआभी यहकामीपुरुष त्वकइंद्रियरहितपुरुषकीन्याईं नहींस्पर्शक रैहै ॥ इसप्रकार ज्ञानइंद्रियकेशक्तिकीप्रतिबंधकता कामदोषविषे दिखाई ॥ अब कर्मइंद्रियोंकेशक्तिकीप्रतिबंधकता कामदोषविषे दिखावैं हैं ॥ कामदोषकेबलतैं पंडितभीयहपुरुष जडकीन्याईं भाषणकरैहै॥ और यहकामीपुरुष हस्तइंद्रियवालाहैभी॥ तोभीहस्तइंद्रियतैंरहित पुरुषकीन्याईं वस्तुकाग्रहणकरैहै॥और पादइंद्रियवालाभी यहकामीपुरुषहै ॥ तोभी पादरहितपंगुपुरुषकीन्याईं गमनकरैहै॥और मलपरि त्यागकीइच्छाकाजनकजोउदरकाफूलना॥ताकेहुवेभी रोगरहित यहकामी पुरुष मलकापरित्यागनहींकरैहै॥अथवा मलकापरित्यागकरता हुआभी नहींपरित्यागकरैहै॥तात्पर्ययह॥शरीरकेमलदर्शनकाफल शरीरविषे वैराग्यकीउत्पत्तिहै॥सो मलदर्शनतैं जभी शरीरविषेवैराग्यउ

त्पन्ननहींभया॥तब मलकापरित्यागकरताहुआभी नहींकरैहै॥अब बल ऐश्वर्य प्रभुताकी प्रतिबंधकता कामदोषविषे दिखावैहैं॥यहकामीपुरु
ष बलवालाभीहै तोभी बलरहितप्रतीतहोवैहै॥और ऐश्वर्यवालाभीहै॥तोभी दरिद्रकीन्यांई प्रतीतहोवैहै॥और प्रभुतावाला राजाभीयहकामी
पुरुषहै॥तोभीभृत्यकीन्यांईप्रतीतहोवैहै॥अब चतुष्टयअंतःकरणकीप्रतिबंधकता कामदोषविषेदिखावैहैं॥यहकामीपुरुष बुद्धिमान्भीहै।तोभी
बुद्धिरहितप्रतीतहोवैहै॥और मनसहितभीहै।तोभी मनरहितप्रतीतहोवैहै।और अहंकारवालाभी यहकामीपुरुषहै।तोभीअहंकाररहितप्रतीत
होवैहै॥और चित्तकेविद्यमानहूवेभीचित्तरहित यहकामीपुरुषप्रतीतहोवैहै ॥ इसप्रकारकामरूपज्वरकेवशहुआवीर्यरूपगर्भकेधारणकरणेहा
राकामीपुरुष विवेकीपुरुषोंकरिकेनिंदित औरपश्चातापकाविषय जोपूर्वकहीअवस्था ताकूं प्राप्तहोवैहै।शंका।कामदोषनैंस्त्रीतैंभिन्नपदार्थोंवि
षे सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकोप्रतिबंधकता किसवास्तैं करीतीहै॥समाधान॥कूटस्थआत्माकूं मोहरूपफांसीसैंबांधिकरिके महामोह स्वतंत्रराज
करणेकी इच्छाकरैहै ॥ सोमहामोह विवेकतैंभयकूंप्राप्तहुआ कामकूंप्रधानमंत्रीकरताभया ॥ सोकाम आपणेप्रभुमहामोहकूं ऐसा कह
ताभया ॥ हेमहामोह आप विवेकतैंकिंचित् मात्रभी भयनहींकरो ॥ काहेतैं जिसपुरुषशरीरविषे विवेककीउत्पत्तिकीआशाहै ॥ तापुरुष
शरीरकूं सर्वइंद्रियोंसहित निंदितस्त्रीशरीरविषे मैंप्रवर्तकरोंगा ॥ ऐसीप्रतिज्ञा कामनैं महामोहकेआगेकरी ॥ ताप्रतिज्ञाकेपालनकरणे
वास्तैं अन्यत्रइंद्रियोंकेव्यापारकाप्रतिषेधकरिके स्त्रीविषेहीं सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकूं काम प्रवर्तकरताभया ॥ इसअभिप्रायतैं कामीपु
रुषकेसर्वइंद्रियोंकाव्यापार स्त्रीविषे दिखावैहैं ॥ सोकामीपुरुष कामकेउत्पत्तिकालविषे नेत्रोंकरिकेस्त्रीकूंहीदेखैहै ॥ और एकाग्रमनहुआ
सोकामीपुरुष श्रोत्रइंद्रियकरिके तास्त्रीकाहीश्रवणकरैहै ॥ और घ्राणइंद्रियकरिकेभी तास्त्रीकूंहींसूंघैहै ॥ और रसनइंद्रियकरिके वारंवार
तास्त्रीकेरसकूंहीं आस्वादन करैहै ॥ और त्वक्इंद्रियकरिके आदरपूर्वक सर्वअंगोंकरिके तास्त्रीकाहीस्पर्शकरैहै ॥ अब स्त्रीविषयक कर्म
इंद्रियोंकेव्यापारकूं दिखावैहैं ॥ सोकामीपुरुष वाक्इंद्रियकरिके तिसस्त्रीकूंहींसुखकाकारणकहैहै ॥ और हस्तइंद्रिय करिके आदरपूर्वक
वारंवारतास्त्रीकाहीग्रहणकरैहै ॥ और यहकामीपुरुषपादइंद्रियकरिकेभी देवतातपादुरुकेसमान तास्त्रीकेसमीपहीं गमनकरैहै और पायु

इंद्रियकरिके मलकापरित्यागरूपव्यापारकरणेकूंभी यहकामीपुरुष प्रवर्त्तहोहै ॥ परंतु पायुइंद्रियकाव्यापार स्त्रीविषे अशक्यहै ॥ यातैं
तिसतैंनिवृत्तहोवैहै ॥ याकहणेतैं कामीपुरुषकेउपहासकूंदिखाया ॥ अब स्त्रीविषे चतुष्टयअंतःकरणकेव्यापारकूंदिखावैहैं ॥ जैसे विवेकी
पुरुष मनकरिके देवताकास्मरणकरैहै ॥ तैसे यहकामीपुरुष मनकरिके तास्त्रीकाहीस्मरणकरैहै ॥ और जैसे योगीपुरुष बुद्धिकरिके आ
त्माकूंनिश्चयकरैहै ॥ तैसे यहकामीपुरुष बुद्धिकरिके तास्त्रीकूंहीनिश्चयकरैहै ॥ और जैसे शुद्धबुद्धिवालेविवेकीपुरुष रात्रिदिनविषे चित्तक
रिके विष्णुकूंचिंतनकरैहैं ॥ तैसे यहकामीपुरुष रात्रिदिनविषे तास्त्रीकूंहीं चित्तकरिकेंचिंतनकरैहै ॥ और यहकामीपुरुष कामदोषकेबलतैं
तास्त्रीकूंही आत्मामानैहैं ॥ जाकारणतैंतिसस्त्रीकरिकेताडनकियाहुआभी तिसस्त्रीकूंहींअधिकमानैहै ॥ अब स्त्रीकीअधीनताजन्यपुरुषकेदोष
कहणेवासतैंप्रथमलोकप्रसिद्धस्त्रीकेदोषोंकूंदिखावैहैं ॥ सोस्त्रीभीस्वाधीनहुवेकामीपुरुषकूंजैसेमर्कटकूंपुरुषनचावैहैतैसेनचावैहै ॥ तात्पर्ययह
आपणेअभिप्रायकेअनुसारहीं सर्वकार्यकूं करावैहै ॥ अब स्त्रीकेअव्यवस्थितस्वभावरूपदोषकूं दिखावैहैं ॥ कभी सोस्त्री अनेकप्रकारकी
सेवाकरिके पुरुषकूं सन्मानकरैहै ॥ और कभी तीक्ष्णबाणसमानवचनोंकरिके पुरुषकूं निरादरकरैहै ॥ और कभी सोस्त्रीपतिकूं
ऐसाकहैहै ॥ हेनाथ तुम हमारेकूं देहतेतथाप्राणोंतैंभी अधिकपियारेहो ॥ और कभी ऐसाकहैहै ॥ तुम किसकेपतिहो॥ मै तुह्मारेकूंजाणती
भीनहीं ॥ और कभीसोस्त्री पतिकेसाथि वचनउच्चारणकरैहै ॥ और कभी वचनभीनहींउच्चारणकरैहै ॥ और कभी सोस्त्री पतितैं
धनकीयाचनाकरैहै और कभी सोस्त्री पतिकूं आप धनदेवैहै ॥ अब स्त्रीकेनिर्दयतारूपदोषकूं दिखावैहैं ॥ कभी सोस्त्री परपुरुष
विषेआसक्तहुई सोयेहुयेआपणेपतिका नाशकरैहै ॥ और कभी अन्यपुरुषकूंकहिकरिके पतिकूंनाशकरावैहै ॥ इसप्रकार
साधुस्वभाववाली भीस्त्री आपणेअनिष्टकरणेहारेअन्यपुरुषोंकूं आपणेपतिकरिके तथाभ्रातादिकोंकरिके नाशकरावैहै॥और व्यभिचारिणी
स्त्रीतो स्नेहतैंरहितहुई ॥ आपणेपति तथापुत्र तथापितादिकोंकूंभी अन्यबलीपुरुषोंकरिके नाशकरावैहै ॥ और कभी सोस्त्री शिष्टपुरुषों
कीसभाविषे साधुपुरुषोंकूंभी मिथ्यावचनकरिके उपहासकेयोग्यकरैहै ॥ और कभी सोस्त्री आपणेस्वल्पकार्यविषे पिताकूं तथाभ्राताकूं

तथापुत्रकूं तथाविद्यासंपन्नब्राह्मणकूं नाशकरेहै ॥ यह वार्ता सर्वलोकविषे प्रसिद्धहै ॥ इसप्रकारकोस्त्रीविषे आसक्तपुरुषकूं इसजन्मविषे निश्चयकरिके दुःखप्राप्तहोवैहै ॥ और परलोकविषेनरकप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं कौनऐसाविवेकीपुरुषहै जोस्त्रीविषेआशक्तिकरे है ॥ किंतु मूढपुरुषोंकोही आसक्तिहोवैहै ॥ यहाँयहअभिप्रायहै ॥ राजादिकतौ स्नेहतैंरहितहुये पुरुषोंकानाशकरेहैं ॥ और डाकिनी स्नेहयुक्तहुईनाश करेहै ॥ और स्त्रीतौ स्नेहयुक्तहुई तथास्नेहतैंरहितहुई दोनोंप्रकार पुरुषकानाशकरेहै ॥ सोस्त्रीभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौआपणीस्त्री ॥ दूसरीपरस्त्री ॥ तहाँ स्नेहकरिकेयुक्तहुईभी आपणीस्त्री पतिकाअन्यस्त्रीकेसमीपगमनदेखिकरिके ॥ क्रोधकूंप्राप्तहुई विषदेकरिके तथाअन्यकिसीमंत्रादिकोंकरिके आपणेपतिकूंनाशकरेहै ॥ और जब परस्त्री अन्यपुरुषविषेस्नेहयुक्तहोवैहै ॥ तब सोपरस्त्रीकिसीनिमित्तसैंक्रोध युक्तहुई तिसपरपुरुषकूं आपणेपिताद्वारा तथाभ्राताद्वारा नाशकरावैहै ॥ इसप्रकार आपणीस्त्री तथापरस्त्री पुरुषविषेस्नेहयुक्तहुईभी दोनों लोकोंविषे भयकाकारणहै ॥ और जब आपणीस्त्री यापुरुषविषे स्नेहरहितहोवैहै ॥ तब सोस्त्री एकांतस्थानविषे कामज्वरकरिके पीडितपुरुषकूं कठोरवचनोंकरिके ताडनकरेहै ॥ और ताकेसमीपभीनहींजावैहै ॥ अथवा किसीकार्यकेबहानेकरिके इसकामातुरपुरुषकूं परित्यागकरिके अन्यपुरुषकेसमीप गमनकरेहै ॥ और जब पति स्त्रीकापरपुरुषकेसमीपगमनकूं जाणैहै॥तब सोस्त्री जोबलवतीहोवैहै ॥तो रात्रिविषे पुरुषकूं आपहीनाशकरेहै॥और जब सोस्त्री बलहीनहोवैहै॥तब अन्यपुरुषोंकरिके पतिकानाशकरावैहै॥और जब परस्त्री अन्यपुरुषविषेस्नेहरहितहोवैहै॥तब सोस्त्रीतो तत्काल यापुरुषकेमरणकाकारणहै॥एकांतस्थानविषे यहपुरुषमेरेकूं याचनाकरताथा॥ऐसेआपणेसंबंधियोंकूंकहिकरिके यापुरुषकूं नाशकरावैहै॥इसप्रकार आपणीस्त्रीविषे तथापरस्त्रीविषे अनंतप्रकारकेदोषहैं॥तेदोष कामीपुरुषोंनैं रात्रिदिनविषे सर्वदा अनुभवकरीतेहैं॥और जैसे कामीपुरुषकेदुःखकाकारण स्त्रीहै॥तैसे कामयुक्तस्त्रीकेभी दुःखकाकारण पुरुषहै॥यातैं यहसिद्धभया ॥ कामहीं सर्वदुःखकाकारणहै ॥ स्त्री तथापुरुष दुःखकेकारणनहीं ॥ जोस्त्रीही पुरुषकेदुःखकाकारणहोवै ॥ तो कामरहितस्त्रीभी पुरुषके दुःखकाकारणहोणीचाहिये ॥ और कामरहितस्त्री पुरुषकेदुःखकाकारण होवैनहीं ॥ और जोपुरुषही स्त्रीकेदुःखकाकारणहोवै ॥ तो काम

रहितपुरुषभी दुःखकाकारणहोणाचाहिये॥ और कामरहितपुरुष ख्रीकेदुःखकाकारणहोवैनहीं॥यातें कामकेउत्पत्तिहूवे दुःखकीउत्पत्ति ॥ और कामकेअभावतेंदुःखकाअभाव ॥ याप्रकारके अन्वयव्यतिरेककरिके कामकूंही सर्वदुःखकीकारणताहै॥इसप्रकारदुःखकाकारण कामरूपशत्रुकूंजाणिकरिके बुद्धिमान् पुरुषताकामकापरित्यागकरै॥याकेविषे विद्वानोंकाअनुभवकहैहैं ॥श्लोक॥ कामकिंकरतांप्राप्य जनोनोकस्यकिंकरः॥एकंकामंपरित्यज्यजनोसौकस्यकिंकरः॥३॥अर्थयह॥एककामकेअधीनहुआयहपुरुष सर्वका दासहोवैहै और एककामका जब परित्यागकरैहै॥तब किसीकाभीदास नहींहोवैहै॥३॥अब कामकामूल तथाताकेनिवृत्तिकाउपाय दिखावैहैं॥यहनारीरमणीकहै॥ऐसीबुद्धितें कामउत्पन्नहोवैहै ॥ और रमणीकबुद्धिसौंदर्यादिकगुणबुद्धितें उत्पन्नहोवैहै ॥ यातें गुणबुद्धि रमणीकबुद्धिद्वारा कामकाकारणहै ॥ ताकेनाशविना कामकानाशहोवैनहीं ॥ और तागुणबुद्धिकानाश पूर्वकहेजेस्त्रीविषेदोष तिनोंके ज्ञानतेंहोवैहै ॥ और दोषोंकेदर्शनतें गुणबुद्धिकाकारणमोहभी नाशहोवैहै ॥ सोकैसामोहहै ॥ जगत्कूं अंधकरणेहाराहै ॥ और सुंदरतागुणरहितनारीआदिकोंविषे सुंदरताबुद्धिकाकारणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आवरणशक्ति और विक्षेपशक्तिकरिके युक्तहै ॥ पुनःसोमोहकैसाहै ॥ अतिविस्तृतकामरूपवृक्षकाबीजहै ॥ यातें तिसमोहकेनष्टहूवे क्षणमात्रविषे काम आपहींनाशहोवैहै ॥ जैसे मूलकेनष्टहूवे वृक्ष नाशहोवैहै ॥ और इच्छास्वरूपकामकेनष्टहूवे क्रोधभी तिसीकालविषे नाशहोवैहै ॥ काहेतें इच्छारूपकामका जभी कोईपुरुष निरोधकरैहै ॥ तभी सोइच्छारूपकामही द्वेषरूपक्रोधाकारपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जो पुरुष इच्छातेंरहितहै ॥ तिसकूं किसीनिमित्तकरिके क्रोधउत्पन्नहोवैनहीं॥ अब कामकेतथाक्रोधके निवृत्तिकाफलवर्णन ॥ श्लोक ॥ ॥ विवेकवह्निनादग्धे कामक्रोधेसमूलके ॥ संसारेभगवानेष आनंदात्माप्रसीदति ॥ ४ ॥ अर्थयह ॥ महावाक्यकरिकेजन्य आत्मज्ञानरूपअग्निकरिके मूलअज्ञानसहितकामक्रोधकेनाशहुये इसीशरीरविषे महावाक्यकाअर्थरूप आनंदआत्मा प्रादुर्भावहोवैहै ॥ ४ ॥ याअर्थविषे स्मृतिवचनकूंभीदिखावैहैं ॥ श्लोक ॥ कामजानामितेमूलं संकल्पात्किलजायसे ॥ संकल्पेतुमयात्यक्ते कथंत्वंमयिजायसे ॥ ५ ॥ अर्थयह ॥ हेकाम तेरामूल मैजाणताहूं॥संकल्पतें तुम उत्पन्नहोवोहो ॥ सोसंकल्प हमनें परित्यागकऱ्याहै यातें॥

किसीप्रकारकरिकेभी हमारेविषे तुमारी उत्पत्ति संभवैनहीं ॥ ९ ॥ इसप्रकार कामविषे सर्व अनर्थकोमूलताकूं तथाकामकेनिवृत्तिके उपायकूं यहकामीपुरुष नजाणताहुआ और वीर्यरूपगर्भकरिकेयुक्तहुआ औरकामरूपग्रहकरिकेव्याकुलहुआ औरसर्पकीन्याईउपस्थरूप सर्पकरिकेदंस्याहुआ ऐसाजो कामी पुरुषहै॥ सो ताकालविषे किंचित्मात्रभी नहींजाणता॥और कामरूपग्रहकेप्रवेशतें तथाउपस्थरूपसर्प कृतभक्षणतें यहकामीपुरुष वीर्यरूपगर्भकरिकेक्षीणहुआ तावीर्यरूपगर्भकेत्यागकीइच्छाकरैहै॥सोकेसावीर्यरूपगर्भहै ॥ शरीरकासारभूतहै और सर्वअंगोंतें पृथक्‌कियाहुआहै॥ऐसेवीर्यरूपगर्भकूं जब यहकामीपुरुष नहींसहारिसकैहै॥तब नारीकीयोनिविषे ताका परित्यागकरैहै ॥ याप्रकारमैथुनधर्मतें पिताकास्वल्पस्वरूपजोवीर्यरूपगर्भहै॥सो स्त्रीकीयोनिकूं प्राप्तहोवैहै॥और जैसे भारकरिकेदुःखीहुआपुरुष भारकेत्याग कियेतें सुखीहोवैहै॥तैसे वीर्यरूपगर्भकेत्यागतें यहगर्भीपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवैहै॥और जैसेपिशाचादिकग्रहकरिकेआविष्टपुरुष दुःखकूंप्राप्तहोवैहै और ताग्रहकेनिवृत्तहुवेतें सुखकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसे यहगर्भीपुरुष वीर्यरूपगर्भकेनिकसणेतेंसुखकूंप्राप्तहोवैहै॥यहां,वीर्यकेनिर्गमनतें सुखकी प्राप्ति लौकिकदृष्टिसैंकहीहै॥औरविचारदृष्टिसैंतो वीर्यकेनिर्गमनविषे पुरुषोंकी महाहानिहोवैहै॥जैसे जीर्णभावकूंनहींप्राप्तभयाजोअन्नहै॥सो प्राणांतदुःखकूंउत्पन्नकरिकेनिकसैहै॥तैसे यहवीर्यभी प्राणांतदुःखकूंउत्पन्नकरिकेनिकसैहै॥और जैसे पुरुषोंकेबलकानाशक अजीर्णअन्नका निर्गमनहै॥तैसे वीर्यकानिर्गमनभी पुरुषकेबलकानाशकहै॥और जैसे अतीसाररोग पुरुषोंकेसर्वतेजकूंहरणेहाराहै॥ तैसे वीर्यकाबाह्यनिर्गमनभीपुरुषोंकेसर्वबलकानाशकहै॥याप्रकार वीर्यकेबाह्यनिर्गमनतें पुरुषोंकी महाहानिकही॥ अब तावीर्यकेनिरोधतें पुरुषोंकूं महाफलकीप्राप्तिदिखावैहैं ॥ पुरुषोंकरिकेनिरुद्धकऱ्याहुआ जोवीर्यरूपसप्तमधातु ॥ ताको ओजनामा अष्टमीदशाहोवैहै ॥ हृदयदेशविषेस्थित औरपीतवर्णवाला जोजीवकेनिवासकास्थान ॥ ताकूं ओजनामकरिके योगवाशिष्टमैंकह्याहै ॥ ताओजनामादशाकरिके यहजीव तेजयुक्तहुआ जीवैहै ॥ और यावीर्यकेनिरोधकियेहुवे पुरुषोंकूं विरूपकरणेहारीजराअवस्थाभी शीघ्रनहींप्राप्तहोवैहै ॥ और मृत्युभी शीघ्रनहीं प्राप्तहोवैहै ॥ और बलभी तापुरुषका नाशनहींहोवैहै ॥ औरवीर्यकेनिरोधकरणेहारेब्रह्मचारीपुरुषोंकूं परलोकविषे ब्रह्मलोककीप्राप्ति

होवेहै ॥ और इसलोकविषे महाकीर्ति ताकीहोवेहै ॥ यातें वीर्यकेनिरोधतेंही ब्रह्मचारीपुरुषोंके दोनोंलोकसिद्धहोवेहैं ॥ और वीर्यकेपरि
त्यागतें कामीपुरुष दोनोंलोकोंतेंभ्रष्टहोवेहैं ॥ और वीर्यकेनिरोधतें योगीपुरुष आकाशविषेगमनकरणेकूंभी समर्थहोवेहैं ॥ और अणिमा
दिकअष्टसिद्धियोंकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ इसप्रकार वीर्यकानिरोध महाफलकाहेतुहै ॥ तावीर्यकेपरित्यागतें कामीपुरुष महाहानिकूंप्राप्तहोवेहैं ॥
जैसे इक्षुकादंड पीडनतेंनिःसारहोवेहै ॥ तैसे यहकामीपुरुषभी स्त्रीकीभुजावोंकरिकेपीडनतें साररूपवीर्यतेंरहितहोवेहै ॥ और कामरू
पअग्निकरिके सर्वअंगोंतेंनिर्गमनभयाजोवीर्यहै ॥ सोकैसावीर्यहै ॥ आयुषऔरबलके वृद्धिकरणेहाराहै ॥ ऐसेवीर्यकूंयहमूढकामीपुरुष
अज्ञानकरिकेआवृतहुआ स्त्रीविषेपरित्यागकरैहै ॥ इसप्रकार स्त्रीकेयोनिस्थानविषेप्राप्तभयाजो जीवमिलितवीर्य ॥ ताका पुरुषशरीरतेंनि
र्गमनरूप प्रथमजन्म कहीताहै ॥ और तायोनिविषेप्राप्तभयायहजीव नानाप्रकारकेसहस्रअवस्थावोंकूं प्राप्तहोवेहै तेंकैसी अवस्याहैं ॥
एकएकअवस्थाभी दुःखतथाशोकोंकेसहस्रोंकरिके व्याप्तहैं ॥ और गर्भउपनिषद्‌विषे तेअवस्था विस्तारतेंनिरूपणकरीहैं ॥ और
वीर्यरूपगर्भकेधारणकरणेहारायहपुरुष स्त्रीकेउदरविषे गर्भरूपकरिके प्रवेशकरैहै ॥ याकारणतें पुरुषकेवीर्यरूपगर्भकेधारणकरणेहारी
सोस्त्री पुरुषनें सर्वप्रकारकरिके रक्षाकरणेकूंयोग्यहै ॥ अब तारक्षाकेप्रकारकूंदिखावेहैं ॥ वस्त्रोंकरिके तथाअन्नकरिके गर्भिणीस्त्रीकारक्षण
पुरुषनें करणा ॥ तथा धनकरिके रक्षणकरणा ॥ और चतुर्थमासविषे हृदयदेशविषेगर्भ स्थितहोवेहै ॥ तिसकालविषे जिसजिसपदार्थमें
स्त्रीकोअभिलाषाहोवे ॥ तिसातिसपदार्थोंकोप्राप्तिकरिकेभी स्त्रीकारक्षणकरणा ॥ तापदार्थोंकेनदेनेतें बालककूंदुःखकी प्राप्ति सुश्रुतग्रंथ
विषे कहीहै ॥ तहां यह प्रसंगहै॥ चतुर्थमासविषे चक्षुइंद्रियकेविषयजे रूपादिकपदार्थ तिनोंकी जोस्त्रीकूंअभिलाषाहोवे॥और तापदार्थोंकी
प्राप्ति स्त्रीकूंनहींहोवे ॥ तब बालककेचक्षुइंद्रियविषे पीडाउत्पन्नहोवेहै॥तैसे रसनइंद्रियकेविषयजेरसादिकहैं ॥ तिनोंकीजब स्त्रीकूंअभिलाषा
होवे ॥ और तारसादिकोंकोप्राप्तिहोवेनहीं ॥ तब बालककूं रसनइंद्रियविषेपीडा उत्पन्नहोवेहै ॥ इसप्रकार जिसजिस इंद्रियकाविषय
गर्भिणीस्त्रीकूं नहींप्राप्तहोवेहै ॥ तिसतिसइंद्रियविषे बालककूं पीडाहोवेहै ॥ यातें सर्वइंद्रियोंकेविषयोंकीप्राप्तिकरिके पुरुषनें स्त्रीका

रक्षणकरणा ॥ और नानाप्रकारकेरथादिकोंकरिके स्त्रीकारक्षणकरणा ॥ और स्नानकरिके तथासिहजांकरिके तथा आसनादिकोंकरिके पुरुषनैं स्त्रीकारक्षणकरणा ॥ और गृहकेव्यापारकीनिवृत्तिकरिकेभी स्त्रीकारक्षणकरणा और औषधादिकोंकेसेवनतें स्त्रीकीरक्षाकरणी ॥ तथा अपथ्यवस्तुकीनिवृत्तितें स्त्रीकीरक्षाकरणी ॥ इसप्रकार गर्भिणीस्त्रीकापालनकरणा पुरुषकूंउचितहै ॥ काहेतें लोकविषे यहमर्यादाप्रसिद्धहै ॥ जोपुरुष उपकारकरैहै ताऊपरि दुर्जनपुरुषभी उपकारकरैंहैं॥और सज्जनपुरुष उपकारकरैंहैं याकाक्याकहणाहै ॥ तैसे यहनारी भी पुरुषकेवीर्यरूपगर्भकेधारणतें पुरुषऊपरि उपकारकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ पुरुषकेदुःखकाकारणवीर्यरूपगर्भ यास्त्रीनैं आपणेविषेधारण कऱ्याहै ॥ यातें कृतघ्नतादोषकी निवृत्तिवासते पुरुषनैं सर्वप्रकार गर्भिणीस्त्रीकारक्षणकरणा ॥ किंवा ॥ वीर्यरूपगर्भविशिष्टपुरुष गर्भरूपकरिके स्त्रीविषेप्रवेशकरैहै॥और पुनः नवीन होइके तास्त्रीविषे उत्पन्न होवे है ॥ याकारणतें पुरुषकी स्त्रीजननीहै ॥ यातेंभी रक्षा करणे योग्य है ॥ और गर्भाधानकाल तें लेकरिके जब पर्यंत योनितें जीवका निर्गमन होवैहै ॥ तब पर्यंत स्त्रीके रजके साथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तभया जोपुरुषकाअंश ॥ ताकूं यहस्त्री आपणेशरीरकीन्याई धारणकरैहै ॥ यातेंभी पुरुषकरिके स्त्रीरक्षाकरणेकूंयोग्यहै ॥ तहाँ पूर्वग्रंथकरिके पुरुषकेशरीरविषेप्रवेशरूप प्रथमगर्भकरिके जीवकूं दुःखोंकीप्राप्तिकही ॥ अब स्त्रीकेशरीरविषेप्रवेशरूप द्वितीयगर्भकरिके जीवकूं दुःखोंकीप्राप्तिकानिरूपणकरैहैं ॥ योनिद्वारा जाविषेप्रवेशहोवे ऐसाजो स्त्रीकाउदरहै ॥ सोकैसाउदरहै ॥ कृमितथाविष्ठादिकोंकरिके दूषितहै ॥ ऐसेउदरविषेअनंतदुःखोंकूं जीव अनुभवकरिके पुनःयोनिद्वाराबाहरिआवैहै ॥ यागर्भदुःखकेभयतेंहीसर्वमुमुक्षु ब्रह्मज्ञानकीइच्छाकरैहैं ॥ और ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासते आलसतैंरहितहुये शास्त्रउक्तनिष्कामकर्मोंकूंकरैंहैं ॥ सोकैसागर्भ दुःखहै ॥ जैसा मरणकालविषे पुरुषोंकूंदुःखहोवैहै ॥ और जैसा नरकविषेदुःखहोवैहै ॥ तिसदुःखतैंभीकोटीकोटीगुणितअधिकदुःखयोनियंत्रविषे जीवकूंहोवैहै ॥ और जैसे मरणकालविषे जीवकूंपीडाहोवैहै ॥ तातैंशतगुणअधिकपीडा योनियंत्रकेप्रवेशविषे तथानिर्गमनविषे जीवकूंहोवैहै ॥ और माताकेउदरविषे जोजीवकानिवासहै ॥ सो नरककेनिवासतैंभीअधिकहै ॥ और तिसमाताकेउदरविषे देहधा

रीजीवोंनें अनंतदुःखोंकाअनुभवकरीताहै ॥ जेदुःख कथनकरेहुवेभी हमारेकूं विव्हलता उत्पन्नकरैहैं ॥ और विष्ठामूत्रकागृह जोजननीकाउदरहै ॥ ताविषेनिवासतैं दुःसहदुःखकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ सोमाताकाउदररूपगृहकैसाहै ॥ पूयऔररुधिरकरिकैलिप्तहै ॥ और नानावर्णयुक्तजेकफवातपित्तधातुवां ॥ तिनधातुरूपचित्रोंकरिकैयुक्त जेमांसमयभित्ति ॥ तिनभित्तियोंकरिकैयुक्तहै ॥ याकारणतैं दुःसहहै ॥ और उदरकेकृमिरूप जेसर्पोंकेसदृश तिनोंकरिकै युक्तहै ॥ और व्याधिरूपजेवृश्चिकहैं तिनोंकरिकैपूरितहै ॥ और माताकाजो महान्प्राणवायुहै ॥ तिसकरिकै चलायमानभयेहैं नाडीरूपरज्जुजिसके और जाकेभीतर सर्वदाअग्निरहहै ॥ याकारणतैंही अर्द्धदग्धहै ॥ और संकुचितहै गर्भकाअवकाशजिसविषे ॥ ऐसेमाताकेउदरविषे दुःसहदुःख जीवोंकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ सोगर्भदुःख विवेकीपुरुषोंकूं प्रसिद्धहै और विशेषकरिकै योगीपुरुषोंनैं गर्भकादुःख स्मरणकरीताहै ॥ इसप्रकार गर्भविषे अनंतदुःखोंकूं जीव प्राप्तहोवैहै ॥ सहस्रजन्मोंकूंधारि करिकै जोगर्भदुःखोंकीगिणतीकरिये ॥ तोभी गिणेजावैंनहीं ॥ यातैं किंचित्मात्र गर्भकेदुःख तुमारेकूं हमनैंकहेहैं ॥ और गर्भउपनिषद् विषेभी याप्रकार किंचित्दुःख कथनकरैहैं ॥ गर्भकेसर्वदुखकहणेकूं कोईभी समर्थनहीं ॥ यातैं प्रधानप्रधान जेगर्भकेदुःखहैं ॥ तिनोंकूं हम कथनकरैहैं ॥ तागर्भविषे अष्टमासपर्यंत जीवोंकूं मूर्छारूपअज्ञानरहैहै ॥ सोकैसाअज्ञानहै ॥ सर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ और गर्भविषे जीवकूं आपणीक्षुधापिपासाकरिकै अथवा माताकेक्षुधापिपासाकरिकै अतिसंतापहोवैहै ॥ और शरीरविषे असमर्थताहोवैहै ॥ और नवम मासविषे जीवकूं अनंतजन्मोंकेदुःखोंकीस्मृतिहोवैहै ॥ तहां दुःखोंकास्मरणकरिकै याप्रकार कथनकरैहैं ॥ श्लोक ॥ आहाराविविधाभुक्ताः पीताश्चविविधाः स्तनाः ॥ मातरोविविधादृष्टाः पितरःसुहृदस्तथा ॥ यदियोन्याःप्रमुच्येयं तत्प्रपद्येमहेश्वरम् ॥ ६ ॥ अर्थयह ॥ नवममा सविषे पूर्वदुःखनकास्मरणकरिकै यहजीव ऐसाकथनकरैहै ॥ चौरासीलक्षशरीरोंविषे मैनें आहारभीअनंतप्रकारकेभोजनकरेहैं ॥ और अनंतप्रकारके मैनें स्तनपानकरेहैं ॥ और अनंतप्रकारकेमातावोंकूं मैनें देखाहै ॥ और अनंतप्रकारकेपितावोंकूं मैनें देखाहै ॥ तथा अनंतप्रकारकेसुहृदोंकूं देखाहै ॥ अभी इसयोनितैं जब मैनिकसोंगा ॥ तब परमेश्वरकेशरणकूंप्राप्तहोवोंगा ॥ ६ ॥ इसप्रकार पूर्वदुःखोंकूं

स्मरणकरिके गर्भविषे याप्रकार जीव कथनकरैहै और माताकूंभीपीडाउत्पन्नकरैहै ॥ याप्रकार उदरविषे नानादुःखोंकूंसहनकरिके परिपूर्णहुआ जोबालकहै ॥ ताकूं प्रसूतिकालकावायु माताकेउदरतैंबाहरिनिकासैहै ॥ सोकैसाबालकहै ॥ कलिलादिअवस्थाक्रमकरिके जिसके सर्वहस्तपादादिकअवयवपूर्णभयेहैं ॥ यहाँयहतात्पर्यहै ॥ प्रथमरात्रिकरिके कलिलअवस्थाहोवैहै ॥ और सप्तरात्रिकरिके बुद्बुद होवैहै ॥ और अर्द्धमासकरिके पिंडहोवैहै ॥ और एकमासकरिकेकाठिन्यहोवैहै ॥ और दूसरेमासकरिकेशिरहोवैहै ॥ और तीसरेमास करिकेपादहोवैहैं ॥ और चतुर्थमासकरिके अंगुली उदर कटीदेश होवैहैं ॥ और पंचममासकरिके पृष्ठदेशहोवैहै ॥ और षष्ठमासक रिके मुख नासिका नेत्र श्रोत्र होवैहैं ॥ और सप्तममासकरिके जीवकासंयोगहोवैहै ॥ और अष्टममासकरिके सर्वअंगोंकीपूर्णताहोवैहै ॥ और नवममासकरिके ज्ञानकीपूर्णतातैं पूर्वजन्मोंकीस्मृतिहोवैहै ॥ याप्रकारगर्भउपनिषद्विषे बालककेअवयवोंकीपूर्णता माताकेउदर विषेकहीहै ॥ पुनःसोकैसाजीवहै ॥ त्याम्रकियाहैगर्भासनजिसनैं ॥ गर्भविषे याप्रकारकाआसनहोवैहै ॥ पृष्ठ तथाग्रीवा कुंडलीकृत होवैहैं ॥ और हस्तपाद संकुचितहोवैहैं ॥ और कुक्षिविषे जाकामस्तकहोवैहै ॥ पुनः सोकैसाबालकहै ॥ प्रसवकेसमीपकालविषे जरायु रूपपटकरिकैरहितहै ॥ और माताके उदरविषे मेंडूककीन्याईं जहाँतहाँ धावनकरैहै ॥ और हस्तोंकरिके तथापादोंकरिके तथा शरीरकीक्रियाकरिके माताकेउदर भेदनकरणेवासते उद्यमवालाहुआहै ॥ और कदाचित् सोबालक माताकेकुक्षिदेशविषे धावनकरैहै ॥ और कदाचित् हृदयदेशविषे धावनकरैहै ॥ और कदाचित् योनियंत्रविषे धावनकरैहै ॥ जैसे मर्कट एकस्थानविषे स्थितनहींहोवैहै ॥ तैसे यहबालकभी माताके उदरविषे कदाचित् स्थितिकूंनहींप्राप्तहोता ॥ पुनःसोकैसाबालकहै ॥ आपणेशरीरकेमध्यदेशविषे मस्तककूं धारिकरिके कियाहैनीचेमस्तकजिसनैं ॥ और अनंतप्रकारकेक्लेशोंकरिके जननीकूं क्लेशकरैहै ॥ यातैं अतिनिंदितहै ॥ और जैसे सर्पके ग्रसणेतैं मेंडूक पुकारैहै ॥ तैसे यहबालकभी पुकारैहै ॥ याप्रकारकेबालककूं प्रसूतिकालकाप्राणवायु माताकेउदरतैं बाहरिनिकासैहै ॥ जैसे मूषककूं सर्प निकासैहै ॥ और काष्ठकेभेदनकरणेहाराजोककचहै ॥ तिसकेअग्रभागकेसहस्रोंतैंभीअतितीक्ष्ण जोस्वल्पयोनियंत्रहै ॥

तातैंनिकसिकरिकै कीटकीन्याँई यहबालक भूमिविषेप्राप्तहोवैहै ॥ ताबालककेनिकसणेतें स्त्रीकूंभी महा पीडाहोवैहै ॥ जैसे कृमिक
रिकैयुक्तव्रणकेकोपहुये पुरुषोंकूं पीडाहोवैहै ॥ तिसपीडातैंभीअधिकपीडा योनियंत्रविषेबालककेप्राप्तहूवे स्त्रीकूं होवैहै ॥ और जैसे
उदरविषे व्रणकेहूवे तथासर्पकेहूवे अस्मदादिकपुरुषोंकूं पीडाहोवै है॥तैसे गर्भकेधारणतैं गर्भिणीस्त्रीकूं पीडाहोवैहै॥और पूयकरिकैपूरितव्र
णकेभेदनकरिके तिसव्रणतैंकीटोंकेनिर्गमनहुये जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकूं सुखहोवैहै ॥ तैसाही सुख गर्भकेत्यागकिये स्त्रीकूं होवैहै ॥ और
विष्ठामूत्रकेनिरोधतैं अस्मदादिकपुरुषोंकूं जैसा दुःखहोवैहै ॥ तिसतैंभीअधिकदुःख गर्भकेधारणविषे स्त्रीकूं होवैहै ॥ और चिरकालके
निरुद्धहुये जेमलमूत्रादिक ॥ तिनोंकेपरित्यागतैं जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकूं सुखहोवैहै ॥ तैसाहीसुखगर्भिणीस्त्रीकूं गर्भकेत्यागतैंहोवैहै ॥
अब अभूतउपमाकरिकै स्त्रीकेदुःखकूं दिखावैहैं ॥ बीसअंगुलपरिमाणदीर्घहोवै ॥ और विस्तारकरिकै तथाविशालताकरिकै वित
स्तिमात्रजाका परिमाणहोवै ॥ और अस्थितथाश्वासोकरिकै युक्तहोवै ॥ ऐसाजोकोईकजंतुविशेष ॥ सोअस्मदादिकपुरुषों
केउदरविषेस्थितहोवै ॥ तिसजंतुकरिकै जैसा अस्मदादिकपुरुषोंकूंदुःखप्राप्तहोवैहै ॥ तैसाहीदुःख स्त्रीकूं गर्भधारणतैंहोवैहै ॥
और पायुद्वारतैं तिसजंतुकेनिकसणेकरिकै जैसा अस्मदादिकपुरुषोंकूं दुःखप्राप्तहोवै ॥ तैसाहीदुःख गर्भिणीस्त्रीकूंगर्भकेत्यागतैंहोवै
है ॥ और षोडशअंगुलपरिमितहैमध्यका अवकाशजाका ऐसाजो वर्तुलाकारकंकण ॥ तिसतैंनिकसणेविषे जैसा अस्मदा
दिकपुरुषोंकूं दुःखहोवै ॥ तैसाहीदुःख बालककूं माताकेउदरतैंनिकसणेविषेहोवैहै ॥ इसप्रकार माताकेउदरविषेप्रवेशतथाउदरतैं
निर्गमनविषे मातासहितयाजीवकूं अनंतदुःखप्राप्तहोवैहैं ॥ तेकैसेदुःखहैं ॥ लोकप्रसिद्धदुःखोंकीउपमातैंरहितहैं ॥ इसप्रकार पिता
काआत्मास्वरूपपुत्र लोकोंकेप्रवाहकेअविच्छेदवासते माताकेउदरतैंबाहरिनिकसताभया ॥ सोकैसापुत्रहै ॥ आपणेदर्शनकरिकै पिताकूं
आनंदउत्पन्नकरैहै ॥ और उत्पन्नभयेपुत्रकूं आपणेअंकविषेस्थापनकरिकै अथवाभूमिविषेस्थापनकरिकै प्रसन्नमनहुआपिता जन्मकालके
संस्कारोंकूं करैहै ॥ और जन्मतैंपूर्व गर्भाधानतैंलेकरिकै जोजोसंस्कार पुत्रविषे पिताकरैहै ॥ तथा जन्मतैंउत्तरकालविषे जोजोसंस्कारपि

ताकरैहै ॥ तेसंपूर्णसंस्कार आपणेकूंहीं पिताकरैहै ॥ काहेतैं सोपिता पुनःपुत्ररूपतैंतनयीनहोइकरिके स्त्रीविषेउत्पन्नहोवैहै ॥ और पिताका कार्यजोसंततिकाप्रवाह ॥ तिसकूं पौत्रादिकरूपकरिके यहपुत्र विस्तारकरैहै ॥ और सत्मार्गवर्तीपुत्र पिताकेस्वर्गकाभीकारणहोवैहै ॥ और इसमनुष्यलोककाभी साधकपुत्रहै ॥ काहेतैं पुत्रादिकोंकरिकेहीं मनुष्यलोक वशवर्तीहोवैहै ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ इसलोककी तथास्वर्गादिकलोककी प्राप्ति पुत्रकरिकेहोवै है ॥ परंतु मोक्षकीप्राप्ति पुत्रकरिकेहोवैनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिनें पुत्रधनादिकोंविषे मोक्षकोसाधनताकानिषेधकरिके केवलत्यागकरिकेही मोक्षकीप्राप्तिकहीहै ॥ और पूर्व अन्नद्वारा पिताशरीरविषेप्रवेशतैंअनंतर वीर्यद्वारा पिताशरीरतैंनिर्गमनरूप प्रथमजन्म जीवका कह्याथा ॥ तिसजन्मकीअपेक्षाकरिके माताकेउदरतैंनिर्गमनरूप द्वितीयजन्म याजीवका होवैहै और पुनःअन्नद्वारा पिताशरीरविषेप्राप्तहोइकरिके वीर्यद्वारानिर्गमनरूप तीसरेजन्मकूं आगेनिरूपणकरैंगे ॥ और सत्कर्मवर्ती पुत्रकेजन्मकरिके पिताकूंभी स्वर्गकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं चौरासीलक्षशरीरोंविषे मनुष्यशरीरही अतिशयकरिकेदुर्लभहै ॥ ऐसे मनुष्यशरीरकूंपाइकरिके पुण्यकर्मोंकूंहीं पुरुषनें संपादनकरणा ॥ और यामनुष्यशरीरकीप्राप्तिकूं देवताभीसर्वदाइच्छाकरैहैं ॥ तात्पर्य यह ॥ देवतादिकशरीरोंविषे तथापश्वादिकशरीरोंविषे नवीन पुण्य तथापाप संपादनहोवैनहीं ॥ किंतु पूर्वमनुष्यशरीरविषे कियाजो पुण्य तथापाप ॥ ताकाफल सुख तथादुःख भोग्याजावैहै ॥ और तिसमनुष्यशरीरविषेभी भारतखंडविषे विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूपअधिकारकेसंपादनयोग्य जब याजीवकाशरीरहोवैहै ॥ तभीहीं अष्टदोषोंकेनिवृत्तिकाउपाय ब्रह्मविद्या संपादनहोवैहै ॥ ब्रह्मविद्यातैंअन्यउपायकरिके अष्टदोषोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं॥तात्पर्ययह॥भारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके ब्रह्मात्मज्ञानहीं पुरुषोंकूं संपादनकरणेयोग्यहै॥काहेतैं आत्मज्ञानहीं सर्वअनर्थकीनिवृत्तिकासाधनहै॥और सर्वयज्ञादिककर्मोकेफलकाभी आत्मज्ञानविषेहीं अंतर्भावहै॥अब अष्टदोषोंकानिरूपणकरैहैं॥इच्छा१द्वेष२भय३मोह४क्षुधा५तृषा६निद्रा७विष्ठामूत्रजन्यपीड़ा८ यहअष्टदोष सर्वदेहधारीजीवोंकूं होवैहैं॥और आत्मज्ञानतैंविना अन्यउपायकरिके नाशहोवैनहीं॥किंतु आत्मज्ञानकरिकेहीं नाशहोवैहै॥अथ इच्छाअनुगमनिरूपणम्॥

सात्विकपुरुष मोक्षकीइच्छाकरैंहैं।और राजसपुरुष मोक्ष औरविषय दोनोंकीइच्छाकरैंहैं।और तामसपुरुषकेवल विषयोंकीहींइच्छाकरैंहैं।यातें इच्छातेंरहित कोईभीदेहधारीजीवनहीं॥अथ द्वेषअनुगमनिरूपणम्॥ सात्विकपुरुष विषयोंविषेद्वेषकरैंहैं॥और राजसपुरुष वैरियोंविषेद्वेषकरैंहैं ॥ और तामसपुरुष वैरियोंविषे तथामित्रोंविषे द्वेषकरैंहैं ॥ यातें द्वेषतेंरहित कोईभीदेहधारीजीवनहीं ॥ अथ भयअनुगमनिरूपणम् ॥ सात्विकपुरुषोंकूं प्रमादतेंभयहोवैहै ॥ और राजसपुरुषोंकूं यमतेंभयहोवैहै ॥ और तामसपुरुषोंकूं केवल राजादिकोंतेंभयहोवैहै ॥ यातें भयतेंरहित कोईभीदेहधारीजीवनहीं ॥ अथ अज्ञानरूपमोहअनुगमनिरूपणम् ॥ सात्विकपुरुषकूं आत्माकाअज्ञानहोवैहै ॥ और राजसपुरुषकूं शास्त्रविद्याकाभी अज्ञानहोवैहै ॥ और तामसपुरुषोंकूं सर्ववस्तुविषे अज्ञानहोवैहै ॥ यातें मोहतेंरहित कोईभीदेहधारीनहीं॥अथ क्षुधातृषानिद्राअनुगमनिरूपणम् ॥ क्षुधा और तृषा तथानिद्रा यहतीनों सर्वदेहधारीजीवोंकूं समानहोवैहैं ॥ और विष्ठामूत्रजन्यपीडातो वृक्षादिकस्थावरोंकूंछोडिकरिके अन्यसर्वदेहधारीजीवोंकूंहोवैहै॥अथवा विष्ठामूत्रजन्यपीडा स्थावरजंगमसर्वदेहधारीजीवोंकूं होवैहै।याकारणतेंहीं वृक्षादिकभी आपणेचिक्कणरसका परित्यागकरैंहैं ॥ जारसकूं लोकविषेगूंदकहैंहैं ॥ इसप्रकार अष्टदोषसर्वदेहधारीजीवोंविषेस्थितहैं॥ और सत्त्व रज तम यातीनगुणोंकेअभिमानका नाशकरणेहारा जोआत्मज्ञानहै ॥ तासैंविना किसीउपायकरिकेभी अष्टदोषोंकानाश होवै नहीं ॥ एकआत्मज्ञानकरिकेहीं नाशहोवैहै ॥ और अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज यहचारिप्रकारके जेदेहधारीजीवहैं ॥ ते अष्टदोषोंका परित्यागकरिके कभीभी स्थितहोवैंनहीं ॥ और यहमनुष्यशरीर ब्रह्मविद्याकरिकेअष्टदोषोंकेजयवासते परमेश्वरनें प्राप्तकऱ्याहै ॥ तामनुष्यशरीरकूंपाईके ब्रह्मविद्यातेंशून्यमूढपुरुष उलटा अष्टदोषोंकेवशवर्ती होवैंहैं ॥ तहां प्रथमबाल्यअवस्थाविषे दोषोंकाअनुगम दिखावैंहैं ॥ माताकेउदरतेंजन्म्याजोबालक ॥ सोनानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरता हुआ और भूमिविषेसोयाहुआ माताकेस्तन्यकीइच्छाकरैहै ॥ तिसस्तन्यपानकीइच्छातेंअन्यदुःखोंसेंआदिलेके जितनेदुःखोंकूं यह अज्ञानीजीव प्राप्तहोवैहै ॥ तेसंपूर्णदुःख अष्टदोषोंकरिकेजन्यहोवैंहैं ॥ और पूर्वपूर्वइच्छादिकअष्टदोषोंकेअनुभवजन्य जेसंस्कारहैं ॥ तिनोंकरिके उत्तरउत्तर अष्टदोषोंकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ और

जैसे माताकेउदरविषे यहबालक असमर्थहोवैहै ॥ तैसे जन्मतैं उत्तरभी आपणीइच्छापूर्वक हस्तपादादिकअंगोंकीप्रवृत्तिमैं समर्थहोवै नहीं ॥ और मत्कुणादिकजंतुवोंकेनिवारणविषे तथाआपणेअंगोंकेकंडूयनाविषेभी यहबालक समर्थहोवैनहीं ॥ यातैं अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहै और आपणीइच्छापूर्वक अन्नकूं तथाजलकूं यह बालक प्राप्त होवैनहीं ॥ किंतु क्षुधाकालविषे माता याकूं जलदेवैहै ॥ और तृषाकालविषे अन्नदेवैहै ॥ यातैंभी अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कंठकेअस्पष्टताकरिके किंचित् शब्दकाउच्चारणकरताहुआभी यहबालक नहीं उच्चारणकरैहै ॥ और कदाचित् अतिशयकरिकेदुःखीहुआ यहबालक उच्चस्वरकरिके माताकूं बुलावैहै ॥ तावचनकूंश्रवणकरिके सोमाता कभी ताकेसमीपआवैहै ॥ और कभी नहींभीआवैहै ॥ यातैंभी अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और विष्ठाकरिकेतथामूत्रकरिके तथामुखकेलालाकरिके लिप्तहुवे जे बालककेहस्तपादादिकअंगहैं ॥ तिनअंगोंकूं कदाचित् सोमाता जलकरिके प्रक्षालनकरैहै ॥ और कदाचित् नहींभीकरैहै ॥ यातैंभी अतिदुःखकूं बालक प्राप्तहोवैहै ॥ और यहबालक व्यर्थहीहँसैहै ॥ और व्यर्थही रुदनकरैहै ॥ और व्यर्थही भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मोहकरिकेयुक्तहुआ ॥ यहबालक कदाचित् विष्ठादिकोंकूंभीभक्षणकरैहै ॥ और यहबालक वारंवार शब्दउच्चारणेकीइच्छाकरैहै ॥ और शब्दकेउच्चारणकरणेकासामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और गमनकरणेकीतथावस्तुकेग्रहणकरणेकी यहबालक इच्छाकरैहै॥और गमनकरणेका तथावस्तुकेग्रहणकरणेका सामर्थ्यहैनहीं ॥यातैंभी बालक अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मोहकूंप्राप्तहुआ यहबालक आपणीमाताकूं तथापिशाचीकूं अभेदकरिकेजाणैहै ॥ और आपणेपिताकूं तथाभ्राताकूं तथाराक्षसकूं अभेदकरिकेजाणैहै ॥ इसप्रकार बाल्यअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषजन्य कोटिदुःखोंकूंअनुभवकरिके तिसबाल्यअवस्थाकेअंतभूत जोकुमार अवस्याहै तिसकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकुमारअवस्थाविषे यहबालक जानुकरिके तथाहस्तोंकरिके धीरेधीरे गमनकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ कुमारअवस्थाविषे शीघ्रगमनकरणेकी बालक इच्छाकरैहै ॥ और शीघ्रगमनकरणेका सामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और शब्दउच्चारणेमैं असामर्थ्यहोणेतैं एकवस्तुकेप्राप्तिकीइच्छाकरिके अन्यवस्तुकेवाचकशब्दका उच्चारण बालक करैहै ॥

तावांछितवस्तुकेअप्राप्तितैंभी अतिदुःखकूं यहबालक प्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे श्वान शंकायुक्तहुआ गृहविषे प्रवेशकरैहै ॥ तैसे यहबालकभी शंकायुक्तहुआ आपणेगृहविषे प्रवेशकरैहै ॥ और मोहकूंप्राप्तहुआ यहबालक हितकारीमातापितादिकोंतैंभी भयकूंप्राप्तहोवैहै और पुरुषकेअभिप्रायकाबोधनकरणेहारी जोहस्तादिकोंकीचेष्टाहैं ॥ तिसतैं पुरुषकेअभिप्रायकूंजाणिकरिके श्वानादिकपशुवोंकीभी प्रवृत्ति तथानिवृत्ति होवैहै ॥ और यहबालक हस्तादिकोंकीचेष्टातैंभी अभिप्रायकूंजाणतानहीं ॥ यातैं पशुतैंभी अतिअधमहै ॥ और किंचित्कालपाइके यहबालक पादोंकरिकैगमनकरैहै ॥ और अतिसैंकरिकैचंचलहोवैहै ॥ और स्पष्टवाणीकरिके शब्दकूंउच्चारणकरैहै ॥ और आपणेहितकूं तथाअहितकूं नहींजाणैहै ॥ और पितामाताकरिके तथाअन्यबांधवोंकरिके तथाबल्यान्बालकोंकरिके यहबालक ताडनाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और दुर्वचनोंकरिके निरादरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे श्वान गृहगृहविषे व्यर्थभ्रमणकरैहै ॥ तैसे यहबालकभी व्यर्थहीएकस्थानतैंदूसरेस्थानकूं गमनकरैहै ॥ और जैसे उन्मत्तपुरुष व्यर्थही वस्तुकाग्रहणकरैहै ॥ और व्यर्थही शब्दकाउच्चारणकरैहै ॥ तैसे यहबालकभी व्यर्थही वस्तुकाग्रहणकरैहै ॥ और व्यर्थही शब्दकाउच्चारणकरैहै ॥ और धूलिकरिके जिसकेसर्वअंग धूसरहोरहेहैं ॥ और महान्श्रमकरिकेयुक्तहैं औरअन्यबालकोंकेसाथियहबालक व्यर्थहीस्नेहकरैहै ॥ और व्यर्थहीद्वेषकरैहै ॥ और आपणेगृहविषे अविद्यमानवस्तुकीभी राजाकीन्यांई यहबालक याचनाकरैहै ॥ और तिसवस्तुकेनहींप्राप्तहुवे यहबालक भोजनकूंनहींकरैहै ॥ और कदाचित् रुदनकरैहै ॥ इसप्रकार कुमारअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषजन्य अनंतदुःखोंकूं यहजीव अनुभवकरिके पुनःकोटीदुःखोंकेउत्पत्तिकास्थान जोयौवनअवस्थाहै ॥ ताकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ और तिसयौवनअवस्थाविषे ॥ स्त्रीभावकरिके तथापुरुषभावकरिके नानाप्रकारकेदुःखोंकूं सोजीव प्राप्तहोवैहै ॥ कैसासोजीवहै ॥ आपणेसामर्थ्यतैंरहितहै ॥ और कर्मरूपपाशकेअधीनहै ॥ और जभी सोजीव कर्मकेवशतैं नारीभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तभी पतितैंआदिलेके जितने आपणेसंबंधीहैं तिनोंतैं भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सर्वदा स्त्री अस्वतंत्रहोवैहै ॥ और गृहविषे महान् जाकूं व्यापारहोवैहै ॥ और जैसे कामीपुरुषोंकूं सर्वदा स्त्रीकीइच्छारहैहै ॥ तैसे

स्त्रियोंकूंभी सर्वदा कामीपुरुषोंकीइच्छारहेहै॥और जैसे शृंखलाकरिकेबंधेहुवेचोरादिक दुःखपूर्वक कालकूं वितीतकरेंहैं॥तैसे यहस्त्री जनभी पतिआदिकोंकरिकेनिरोधकूंप्राप्तहुआ तथाआपणेसंबंधियोंकरिकेनिरोधकूंप्राप्तहुआ अथवा धर्मलोपकेभयकरिकेनिरोधकूंप्राप्तहुआ दुःखतैं कालकूंवितीतकरेहै ॥ और पुरुषकेअप्राप्तिकरिके तथाप्राप्तहुवेपुरुष वीषेभी रुचीके अभावकरिके सोनारी दुःखरूपसमुद्रविषेप्राप्तहोवेहै ॥ और पुत्रकीइच्छाकरिके तथागर्भधारणकरिके अनंतदुःखोंकूं सोस्त्री प्राप्तहोवेहै ॥ इसप्रकारस्त्रीभावकूंप्राप्तहुआयहजीव यौवनअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकरिकेजन्य अनंतदुःखोंकूं अनुभवकरेहै ॥ और जभी यहजीव कर्मकेवशतैं पुरुषशरीरकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तहांभी यौवन अवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकरिकेजन्य अनंतदुःखोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तिसयौवनअवस्थाविषे शास्त्रकेजानणेहारेपुरुषकूंतो धर्मतैं तथा ईश्वरादिकोंतैं भयहोवैहै ॥ और व्यवहारविषेकुशल जेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं राजादिकोंतैंभयहोवैहै ॥ और मूढपुरुषकूं केवल आपणेपिता दिकोंतैंभयहोवेहै ॥ और धनतैंरहितपुरुषकूं सर्वदा पराधीनताहोवेहै ॥ और यौवनअवस्थाविषे स्त्रीकेअप्राप्तहुवे ताकीइच्छातैं पुरुषकूं दुःखहोवेहै ॥ और स्त्रीकेप्राप्तहुवेभी ताकेविषेइच्छाहैनहीं ॥ यातैंभी पुरुषकूं अतिदुःखहोवेहै ॥ और कर्मकेअधीन जेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं ॥ प्रथमयौवनहीं ज्वरकेसमान प्रधानदोषहै ॥ तिसयौवनरूपज्वरविषेभी अभिमानकाजनकजो ब्राह्मणादिकउत्तमकुलकी प्राप्ति और विद्याकीप्राप्ति औरधनकीप्राप्ति यहतीनदोष महान्‌अनर्थकेकारणहैं ॥ जैसे लोकप्रसिद्धज्वरविषे जभी वात पित्त कफ यहतीनधातुरूपदोषोंका कोपहोवैहै ॥ तभी तिसपुरुषका मरणतैंविना अन्यकोईउपायहोवैनहीं ॥ किंतु मरणहींहोवेहै ॥ तैसे यौवनरूपज्वरभी कुल विद्या धन यातीनदोषोंकरिकेयुक्तहुआ अनंतअनर्थोंका आरंभकरैहै ॥ यातैं तिसयौवनरूपज्वरकेनिवृत्तकरणेका उपाय मरणतैंविना अन्यकोई हम देखतेनहीं॥और तिसयौवनरूपज्वरकरिके मोहकूंप्राप्तहुआ जीव कभी गायनकरेहै ॥ और कभी नाना प्रकारकी आपणीगतिकूं दिखावेहै॥और कभी हँसेहै॥और कभी मत्तहस्तीकीन्याई यहपुरुष आपणेपितादिकोंकेसमानजेवृद्धहैं॥तिनोंकूंभी भूमिपरिगिरावेहै॥और कभीयुद्धकरैहै॥ और युद्धकरणेहारेअन्यपुरुषोंकूंविदारणकरेहै॥और कभी नृत्यकरेहै॥और चारोंओरतैं धावनकरे

है॥ओर कभी हमारेसमानकोनहे ऐसाअहंकार करेंहे ॥ ओर कभीशयनकरेंहे ॥ इसप्रकार योवनअवस्थाविषे निरंकुशहुआ यहपुरुष ना
नाप्रकारकोदुष्टचेष्टाओंकूं वारंवारकरेंहे ॥ ओरतिसयोवनअवस्थाविषे यहपुरुष विषयभोगतें तृप्तिकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ ओर विहितकर्मकूं त
थानिषिद्ध कर्मकूंभी नहींजाणेंहे ॥ ओर जिसकामन सर्वदा स्त्रीजनोंनें ग्रहणच्याहे ॥ तात्पर्ययह ॥ मनकरिके सर्वदास्त्रियोंकाहीचिंतनक
रेंहे ॥ ओर परधनकेहरणेकोजिसकूं नित्यहीउत्कंठाहे ॥ ओर शास्त्रकीआज्ञाकापरित्यागकरिकेवर्त्तेहे ॥ ऐसे योवनअवस्थावान्पुरुषकूं
शीघ्रही कालभगवान् आइके प्राप्तहोवेहे ॥ ओर जैसे युवान्मंडूककूं सर्प ग्रसेंहे ॥ तैसे गृहविषेतथाक्षेत्रविषेतथाबांधवोंविषे आसक्त जो
दुर्बुद्धियहजीवहे ॥ तिसकूं अतिदारुणकालभगवान् ग्रसेंहे ॥ इसप्रकार योवनअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकरिकेजन्य अनंतदुःखोंकूं
यहजीव प्राप्तहोवेहे अब वृद्धअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकरिकेजन्यदुःखोंकूं दिखावेंहें ॥ रात्रिदिनविषे दुःखोंकाग्रह ओरचिंताकरि
केयुक्त ऐसाजो युवान्पुरुषहे ॥ तिसकूं जरारूपपिशाचिनी ग्रसेंहे ॥ केसीसोजराहे ॥ श्वेतकुष्ठकरिकेयुक्तहे ॥तिसकुष्ठिनीजराकेसंगकरिके
दुष्टहुआ यहपुरुषभी सर्वओरतेंश्वेतहोवेहे ॥ ओर कुरूपहोवेहे॥ ओर शक्तितेंरहितहोवेहे ॥ ओर दुःखकरिके तथाशोककरिके युक्तहोवेहे॥
ओर अनुभवकरीवस्तुकाभी जराअवस्थावान्पुरुषकूं स्मरणहोवेनहीं ॥ यातें अनादरकापात्रहोवेहे ॥ओर जराअवस्थाविषे यहमंदपुरुष
कासश्वासरोगकरिके व्याकुलहोवेहे ॥ ओर योवनअवस्थाविषे करेजेपापकर्महें ॥ तिनपापकर्मोंका जराअवस्थाविषेस्मरणकरताहुआ
सोवृद्धपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरेंहे॥ओर केसेंकेसेपापकर्म मेनें करेहें॥याप्रकारकापश्चात्तापकरेंहे॥ओर विद्यातथाधनकरिकेयुक्तजोजराअ
वस्थावान्पुरुषहे॥तिसकूंभी पुत्रादिक आदरनहींकरेंहें ॥तोंमूर्खतथानिर्धनवृद्धकोक्याकथाहे॥ओरजिसपराधीनतारूपअवस्थाकूंयहपुरुषवा
ल्यअवस्थाविषेप्राप्तभयाथा॥ तिसीपराधीनतारूपअवस्थाकूंजराअवस्थाविषे यहपुरुष प्राप्तहोवेहे॥ओर वास्तवतेंविचारकरियेतो वाल्यअ
वस्थातेंभी जराअवस्था अतिशयकरिकेनिंदितहे ॥ काहेतें शक्तितेंरहित तथाविष्ठामूत्रादिकोंकरिकेलिप्त जोबालकहे ॥ तिसकी अविवे
कीलौकिकपुरुषभी निंदाकरेनहीं ॥ ओर मलादिकोंकरिकेलिप्त तामसवृद्धकूंदेखिकरिके अविवेकीपुरुषभी ताकीनिंदाकरेंहें ॥ यातें वाल्य

अवस्थातैं जरा अवस्था अतिनिकृष्टहै ॥ इसप्रकार वृद्धअवस्थाविषे कालपाशकेवशहुवे संपूर्णजीव नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और वृद्धअवस्थाविषे पुरुषकूं विषयकीप्राप्तिविषे महान्इच्छाहोवैहै और शक्तिकेअभावतैं तथाइंद्रियोंकेक्षयतैं ॥ किंचित्विषयकूंभी वृद्धपुरुष प्राप्तहोवैनहीं और वृद्धपुरुषका बांधवोंविषे स्नेह वर्द्धताजावैहै और शत्रुवोंविषेद्वेष वर्द्धताजावैहै ॥ परंतु तिसकेस्नेहतैं किसीमित्रका उपकार होवैनहीं ॥ यातैं ताकास्नेहव्यर्थहै ॥ और तिसकेद्वेषतैं किसीशत्रुकी हानिहोवैनहीं ॥ यातैं ताकाद्वेषभीव्यर्थहै ॥इसतैंआदिलेके अनंतदुःखोंकूं वृद्धाअवस्थाविषे यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैं अनंतर यौवनअवस्थाविषेउत्पन्नकन्याजोपुत्रहै ॥ तिसकूं इसमनुष्यलोकविषे स्थापनकरैहै ॥ सोकैसापुत्रहै ॥ पिताकाद्वितीयशरीरहै ॥ और अनंतपुण्योंकरिकेप्राप्तभयाहै ॥ और पिताकरिकेकर्तव्यजोवेदोंकाअध्ययन तथायज्ञादिककर्म ॥ तिनोंकूं करणेहाराहै ॥ और यज्ञादिकोंकरिके सर्वभूतोंकिसुखकाकरताहै ॥ और पितानें आरंभकरे जे कूपतडागादिककार्य ॥ तिनोंकूंभी परिपूर्णकरणेहाराहै ॥ और जोकार्य पितानें नहींकऱ्याथा ॥ तिसशुभकार्यकूंभी करणेहाराहै ॥ इसप्रकार पिताकेसर्वकार्यकूंकरणेहारा जोसत्मार्गवर्तीपुत्रहै ॥ तिसकूं इसलोकविषेस्थापनकरिके जराअवस्थाकरिकेयुक्तहुआपिता मरणअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर कालभगवान्रूपरथवाही सूक्ष्मशरीररूपरथकूं सामग्रीकरिके संपन्नकरैहै ॥ सोकैसासूक्ष्मशरीररूपरथहै ॥ पुण्यपापरूपचक्रोंकरिकेयुक्तहै ॥ और दुःखरूपपाथेयकरिकेपूरितहै ॥ मार्गविषे भोगणेयोग्यवस्तुकानाम पाथेयहै ॥ और इंद्रियरूपदुष्टअश्वोंकरिकेयुक्तहै ॥ और बुद्धिरूपकाष्ठकरिकेरचितहै ॥ और कास तथाश्वास तथाहिडकी रूपशब्दोंकरिकेयुक्तहै ॥ ऐसेसूक्ष्मशरीररूपरथकूं कालभगवान् त्यागकरैहै ॥ और यहजीव यद्यपि शरीरकेसंबंधतैं बाल्यअवस्थाविषे तथायुवाअवस्थाविषे तथा वृद्धअवस्थाविषे अनंतदुःखोंकूं अनुभवकरिआयाहै ॥ तथापि अभ्यासकेबलतैंयास्थूलशरीरकेपरित्यागकीइच्छानहींकरैहै ॥ और तिसमरणकालविषे अतिदुःखकूंप्राप्तहुआ यहजीव आपणेपुत्रोंकूं तथाबांधवोंकूं स्मरणकरैहै ॥ और मरणकेक्षोभतैं महान्त्रासकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और शरीरजिसकाकांपैहै ॥ और स्त्रीपुत्रादिकबांधवभी इसप्राणीकूंचारोंतरफघेराकरिकेस्थितहोवैहैं ॥ परंतुमृत्युदुःखतैंरक्षाकरणेकूं

कोईभीसमर्थहोवेनहीं॥दृष्टांत॥ जैसे हिंसाकेस्थानविषेस्थितजेपशुहैं ॥ ते अद्यहिंसाकूंप्राप्तहुवेपशुकी रक्षाकरिसकैंनहीं ॥ तैसे बांधवयाकी रक्षाकरिसकेनहीं ॥ और जैसे बहत्तरिसहस्र ७२००० वृश्चिकएककालविषे सूचीकेअग्रभागतुल्यमुखोंकरिके अस्मदादिकपुरुषोंके शरीरों विषेदंशकरैं॥तिसतैंजोअस्मदादिकपुरुषोंकूंदुःखहोवेतिसतैंभीअधिकदुःखमरणअवस्थाकूंप्राप्तहुवेपुरुषकूंशरीरकेत्यागविषेउत्पन्नहोवैहै ॥ ता दुःखकरिकेसोपुरुषहस्तोंकूंतथापादोंकूं चलावैहै ॥ जैसेंहिंसाकूंप्राप्तहुआपशुपादोंकूं चलावैहै॥औरतादुःखकरिकेयहपुरुषचेतनतातैंरहितहोवै है ॥ ऐसे दुःखकूंप्राप्तहुवेपुरुषकूंदेखिकरिकेसर्वबांधवशोककूंप्राप्तहोवैहैं॥औररुदनकरैहैं॥दृष्टांत ॥जैसे बंधनकरिकेदुःखकूंप्राप्तहुवेकाककूंदेखि करिके सर्वकाक शोककरिकेयुक्तहुवे पुकारैहैं ॥ परंतु तिसकेछुडावणेमे तिनोंकूं सामर्थ्यहैनहीं॥और जैसे व्याधपुरुषकरिके बंधनकूंप्राप्तहु आ ग्रामसूकरअनंतशब्दोंकूंकरैहै ॥ तैसेअनंतशब्दोंकूंकरतेहुवे यापुरुषकूं कालरूपव्याध बांधिकरिके जहांसंबंधियोंकूंदर्शननहींहोवे ऐसे दूरदेशविषे लेजावैहै ॥ और जैसे पाशकरिकेबंध्याहुआ कपोत दीनताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे कालपाशकरिकेबंध्याहुआ यहजीवभी दीनता कूंप्राप्तहोवैहै ॥ औरजैसे बडिशयुक्तकुंडीकूं जलविषे धीवर पावैहै॥तिसबडिशकेभक्षणवासते प्राप्तभईजोमत्स्यहै॥तिसकूं धीवर गृहविषेले जावैहै ॥ तैसेमर्त्यलोकरूपमहाह्रदविषे स्त्रीपुत्रधनादिरूपबडिशकेभक्षणकरणेवासते प्राप्तभयाजो यहजीवरूपमत्स्यहै ॥ तिसकूं मृत्यु रूपधीवर बांधिकरिके परलोकविषेलेजावैहै ॥ और जैसे वनविषेस्थितमृगकूं बाणोंकरिके व्याध मारैहै ॥ तैसे संसाररूपवनविषेस्थित जीवरूपमृगकूं ज्वरादिकव्याधिरूपबाणोंकरिके कालरूपव्याध हननकरैहै ॥ और मरणअवस्थाविषे ग्लानीकूंप्राप्तभयाहैसुखजा का ॥ और अनंतहिडकियोंकरिकेयुक्त दीनपुरुषकूं देखिकरिकेभी कालभगवान् दयाकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥काहेतैं प्रजापतिकीआज्ञातैं जिस मृत्युनैं प्रजाकाहननरूपवृत्तिकूं धारणकऱ्याहै ॥ यहवार्ता मोक्षधर्मविषेप्रसिद्धहै॥ जीवहिंसारूपअधिकारकीनिवृत्तिवासते अनंतकालपर्यंत तपकूं मृत्यु करताभया ॥ तोभी मृत्युकेताईं प्रजापति तिसहिंसारूपअधिकारकूंहीं देताभया ॥ और जैसे पथिकपुरुषकूं चोर हननक रैहै ॥ तैसे हापुत्र हास्त्री हाकलत्र याप्रकार सहस्रशब्दोंकूंकरतेहुवे जीवरूपपथिककूं यहकालरूपचोरहननकरैहै ॥ और जैसे हिंसास्थानका

स्वामी आपणेकार्यवासते मेषकूं हननकरैहै ॥ तैसे कालभगवान्भी आपणेकार्यवासते याजीवकूं हननकरैहै ॥ सोकैसाजीवहै ॥ कफकरि
केअवरुद्धभयाहैकंठजाका ॥ और घुरघुर याप्रकारकेअनंतशब्दोंकूंकरैहै॥यहाँ जन्ममरणकीसमानअधिकरणताकारक्षणहीं॥ कालभगवान्
काकार्य जानणा ॥ और जैसे अपराधीपुरुषकूं राजाकेभृत्य लेजावैंहैं ॥ तैसे पुकारतेहुवेसर्वबांधवोंका अनादरकरिके यमकिंकर इसजी
वकूंलेजावैंहैं ॥ और याजीवकेशरीरविषे प्राणोंकूंधारणकरणेहारियांबहत्तरिसहस्र ७२००० नाडीरहैंहैं ॥ तिननाडियोंतैंप्राणनिकासणे
वासते मृत्युभगवान् तिननाडियोंकेबंधनोंकूंछेदनकरैहै ॥ और जैसे कृषिकेकरणेहारापुरुष अनायासतैं कदलीवनकूं कुठारकरिकेछेद
नकरैहै ॥ तैसे यहमृत्युभगवान्भी अंतरकालरूपकुठारकरिके याजीवकेअंगोंसाथिजोप्राणोंकासंबंधरूपबंधनहै तिसकूं छेदनकरैहै ॥
और मरणकालविषे मृत्युभगवान् कालरूपकुठारकरिके पुरुषोंकेशरीरविषे पादकेअग्रभागतैंलेकरिकेकेशपर्यंत अनंतपीडावोंकूंउत्प
न्नकरैहै ॥ जैसे साढेतीनकोटितीक्ष्णसूचियां एककालविषे अस्मदादिकपुरुषोंकेशरीरविषे लागैं ॥ और जैसे दुःखकूंउत्पन्नकरैं ॥
तैसाहीदुःख मरणकालविषे पुरुषोंकूं होवैहै ॥ और तीक्ष्णककचोंकरिके अस्मदादिकजीवितपुरुषोंकेअंगोंकूं बहुतवारछेदनेतैं जै
सादुःख अस्मदादिकपुरुषोंकूंहोवैहै ॥ तैसाहीदुःख सर्वदेहधारीजीवोंकूं मरणकालविषे होवैहै ॥ और पादतैंलेकरिकेमस्तकपर्यंत
त्वचाके उतारणेविषे जैसादुःख अस्मदादिकजीवितपुरुषोंकूं होवैहै ॥ तैसाहीदुःख मरणकालविषे जीवोंकूंहोवैहै ॥ और तप्ततैलविषे
प्रवेशकरणेतैं जैसादुःख अस्मदादिकजीवितपुरुषोंकूं होवैहै ॥ तैसाहीदुःख मरणकालविषे पुरुषोंकूंहोवैहै ॥ और मुखनासिकादिक
नवद्वारोंकेनिरोधतैं जैसाअस्मदादिकपुरुषोंकूंदुःख होवैहै ॥ तैसाहीदुःख मरणकालविषे पुरुषोंकूंहोवैहै ॥ अथवा तिसतैंभीअधिकदुः
खहोवैहै ॥ और दुर्मार्गवर्तीपुरुषोंकूं जैसानरकजन्यदुःखहोवैहै ॥ तैसाहीदुःख मरणकालविषे जीवोंकूंहोवैहै ॥ अथवा तिसनरकदुःखतैं
भीअधिकदुःख मरणकालविषेहोवैहै ॥ और मरणकालविषे सोपुरुष किसीक्षणमें मूर्छाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और किसीक्षणविषे मूर्छातैं
जाग्रतहोवैहै ॥ और किसीक्षणविषे भयानकयमकिंकरोंकूंदेखिकरिके भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसभयतैं कदाचित् विष्ठामूत्रादिकोंकाभी

परित्यागकरैहै ॥ और नेत्रोंतैंअश्रुकापरित्यागकरैहै ॥ और किसीक्षणविषे यमकिंकरोंकूंदेखिकरिके महाभयानकशब्दकूंकरैहै ॥ तेकैसेय मकिंकरहैं॥अतिसैंकरिकेदीर्घहैं ॥ और विकरालजिनोंकेमुखहैं ॥ और स्यामजिनोंकास्वरूपहै॥और जिनोंकेकेश खुलेहुयेहैं॥और चाबुक तथापाश जिनोंकेहस्तोंविषेहैं ॥ ऐसेयमकिंकरोंकूंदेखिकरिके भयकूंप्राप्तहुआ यहजीव मुखतैंफेनकूंवमनकरैहै ॥ और सर्वद्वारोंतैं मलोंका परित्यागकरैहै ॥ और तेयमकिंकर सनमुखआइकरिके प्रथम यापापीजीवकूं दुर्वचनोंकरिकेताडनकरैहैं ॥ पश्चात् बांधिकरिके परलो कविषेलेजावैहैं ॥ अब तिनयमकिंकरोंकेवचनोंकूंदिखावैहैं ॥ हेपापीजीव तेरेकूंधिक्कारहै ॥ काहेतैं इसमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइ करिकेभी तैंने नरककाकारणरूप पापकर्महीं संपादनकऱ्या ॥ और आपणामुख्यहितजोमोक्षहै तिसकूं तैंनैं आत्मज्ञानकरिकेसंपाद नकऱ्यानहीं ॥ और गौणहित जेस्वर्गादिकहैं ॥ तिनोंकूंभी यज्ञादिककर्मोंकरिके तैंने संपादनकऱ्यानहीं ॥ उलटा यहमेराशत्रुहै और यह मेरामित्रहै और यहउदासीनहै याप्रकारकोभेदबुद्धिकरिके आपणाअनर्थ आपहीतुमनैं संपादनकऱ्या॥ यातैं आपणाशत्रु तुम आपहीहुआ दूसराकोई तुमाराशत्रुहैनहीं ॥ काहेतैं गुरुशास्त्रादिकआत्मज्ञानकीसामग्रीकूंप्राप्तहोइकेभी जन्ममरणरूपबंधनको तुमनैं निवृत्तिकरीनहीं॥ और जेअपमानादिक आपणेकूंप्रतिकूलहोवैहैं ॥ तेअपमानादिक जो अन्यपुरुषकूंकरैहै ॥ सोपुरुष आपणाही आपशत्रुहोवैहै ॥ यातैं भेदबुद्धिही अनर्थकाकारणहै ॥ और जोपुरुष भेदबुद्धिकरिके अन्यजीवोंकूंपीडाकरैहै ॥ तिसकूं जीवितकालविषे अन्यराजादिकबली पुरुषोंतैं भयहोवैहै ॥ और मरणकालविषे इमयमकिंकरोंतैं भयहोवैहै ॥ यातैं दोनोंलोकविषेभयकाहेतु जोभेदबुद्धिजन्यपरपीडा ॥ ताकूं कोनबुद्धिमानपुरुष करैगा ॥ किंतु नहींकरैगा ॥ याप्रकारके दुर्वचनोंकरिके यमकिंकर पापीजीवकी ताडनाकरैहैं ॥ और जैसे राजाकेभृत्य अपराधीपुरुषके चोरीआदिकअपराधकूं स्मरणकराइके ताकूं बांधिकरिकेलेजावैहैं॥तैसे यमकिंकरभी भेदबुद्धिरूपअपराधकूं तथाअनात्मदेहादिकोंविषेआत्मबुद्धिरूपअपराधकूं स्मरणकराइके याजीवकूं परलोकविषेलेजावैहैं ॥ तहां प्रथम देहकेदोषोंकूंदिखावैहैं ॥ हेपापिष्ट जिसदेहविषे तुमनैं आत्मबुद्धिकरीहै ॥ सोदेहकैसाहै॥पिताकेवीर्यरूपमलतैं औरमाताकेरक्तरूपमलतैं उत्पन्नभयाहै ॥ और विष्ठा

तथामूत्रादिकमलोंकरिकेपूरितहे ॥ यहसर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्धहे ॥ तथाशास्त्रविषेभीकह्याहे ॥ श्लोक ॥ यदंतरस्यदेहस्य वहिःस्याद्य
तदेवचेत् ॥ दंडमहावारयेयुःशुनःकामांश्चमानवाः ॥ ७ ॥ अर्थयह ॥ इसशरीरकेअंतर जेविष्ठामूत्रमांसरुधिरादिकमलहैं ॥ सोजेवाहरि
होवें तो सर्वपुरुष दंडकूंग्रहणकरिके आपणेशरीरको रक्षावासते ॥ सर्वदा काकोंकूं तथाश्वानोंकूंहीं निवारणकरें ॥ यातें यहशरीर अतिसें
करिकेंनिंदितहे ॥ और विनाशीहे ॥ और शतवर्षपर्यंत सेवनकऱ्याहुआभीयहशरीर परित्यागकरिजावेहे ॥ यातें कृतघ्नहे ॥ और सहस्र
परिणामोंकरिकेयुक्तहे ॥ और पुरुषकेअधीननहीं ॥ और शरीरविषेआत्मबुद्धिद्वारा पुरुषार्थकानाशकहे ॥ यातें सर्वदा दुःखकाकारण
यहशरीरहे ॥ ऐसेंनिंदितशरीरविषे आत्मअभिमानकरिकें तुमनें अनंतपापकर्म करेंहैं ॥ तिनपापोंकरिकेजन्य अनंतदुःख तुमारेकूं प्राप्त
होवेंगे ॥ यहवार्ता व्यासभगवाननेंभीकहीहे ॥ श्लोक ॥ सर्वाशुचिनिधानस्य कृतघ्नस्यविनाशिनः ॥ शरीरकस्यापिकृते मूढाः पापानिकुर्व
तइति ॥ ८ ॥ अर्थयह ॥ विष्ठामूत्रादिकसर्वअशुचिपादार्थोंकागृह औरकृतघ्न औरविनाशी ऐसेशरीरकेपालनपोषणवासते मूढपुरुष पापों
कूंकरेंहैं ॥ ८ ॥ और हेपापीजीव ॥ याअनित्यदेहकेभोगोंकीसिद्धिवासते पुत्रस्त्रीधनादिकोंविषे ममताअभिमानकरिके तुमनें किंचित्मा
त्रभी सुकृतकऱ्यानहीं ॥ उलटा पापकर्मोंकूं तुमनें संपादनकऱ्याहे ॥ यातें हमारेकूं वडाखेदहोवेहे ॥ यद्यपि यज्ञादिकोंकरिकेपुण्य
केसंपादनमे शरीरकाआयास तथाधनादिकोंकाखरच होवेहे ॥ यातें तुमनें संपादनकऱ्यानहीं ॥ तथापि मैंब्रह्महूं याअभेदज्ञानकेसं
पादनमे शरीरकाआयास तथाधनादिकपदार्थोंकाखरच होवेनहीं ॥ ऐसेअतिसुलभआत्मज्ञानकूंभी तुमनें संपादनकऱ्यानहीं ॥ यातें
हेपापिष्ठ तेरेकूंधिकारहे ॥ किंवा ॥ मनवाणीकाअविषय जोनिर्गुणब्रह्महे ॥ तिसके साक्षात्कारकरणेकूं मैं समर्थनहींहूं ऐसाजोतूंकहे ॥ त
थापि सर्वसुखकेकरणेहारी जोनिर्गुणब्रह्मकीउपासनाहे ॥ तिसकूं तुमनें किसवासतेनहींकऱ्या ॥ किंवा ॥ मन अतिशयकरिकेचंचलहे ॥
यातें निर्गुणब्रह्मकेध्यानविषे लगतानहीं ऐसाजोतूंकहे ॥ तथापिपरस्त्रीगमनादिकपापकर्मविषे जितनातेरेकूं शरीरकाआयास तथा
धनादिकोंकीहानिरूपक्लेश प्राप्तभयाहे ॥ तिसक्लेशकालेशमात्रभी परमेश्वरकेनामकीर्तनमे हेनहीं ॥ और स्वर्गादिकोंकी प्राप्तिकरणेहा

राहे ॥ ऐसेपरमेश्वरकेनामकीर्तनरूपसुकृतकूं तुमनें काहेतैंनहींसंपादनकऱ्या ॥ और जैसे तुमनें मनकूंसावधानकरिके सर्वदा परपुरुषोंकेदोषोंका विचारकऱ्याहे॥तैसे महत्फलकीप्राप्तिकरणेहारा जोक्षणमात्रआत्मविचार तिसकूं काहेतैंतुमनें नहींसंपादनकऱ्या॥क्षणमात्र ब्रह्मविचारकाफल अन्यशास्त्रविषेभीकह्याहे॥श्लोक॥स्नातंतेनसमस्ततीर्थसलिलेदत्ताचसर्वावनिः ॥ यज्ञानांचकृतंसहस्रमखिलादेवाश्चसंपूजिताः॥संसाराचसमुद्धृताःस्वपितरस्त्रैलोक्यपूज्योप्यसौ ॥ यस्यब्रह्मविचारणेक्षणमपिस्थैर्यंमनःप्राप्नुयात् ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषकामन क्षणमात्रभी ब्रह्मविचारविषेस्थितिकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तिसपुरुषनें ॥ सर्वतीर्थोंकेजलोंविषेभीस्नानकिया ॥ और सर्वपृथिवीभी तिसनें दान करी ॥ औरसहस्रयज्ञभी तिसनेंकरे ॥ और संपूर्णदेवताभी तिसनें पूजनकरे ॥ औरसंसारसमुद्रतैं आपणेपितरभी तिसनें उद्धारकरे॥और तीनलोकोंकरिकेपूज्यभी सोपुरुषहे ॥ १ ॥ ऐसेआत्मविचारकूंभी तुमनें कऱ्यानहीं ॥ और जैसे तुमनें परप्राणियोंकेनाशवासते महान् उद्यमकऱ्याहे ॥ तैसे किंचित्मात्रभी उद्यम स्वर्गकीप्राप्तिवासते तथा मोक्षकीप्राप्तिवासते तुमने काहेतैंनहींकऱ्या ॥ तात्पर्ययह ॥ जोतूं वृक्षादिकोंकीन्याई उद्यमतैंरहितहोता ॥ तो तेरेकूं हम उपालंभनहींदेते ॥ परंतु तुमनें सर्वशक्तिसंपन्नमनुष्यशरीरकूंपाइकरिकेभी शास्त्रविहितपुण्यकर्मोंकूं संपादनकऱ्यानहीं ॥ उलटा पापकर्मोंकूंसंपादनकऱ्या ॥ यातैं तूं दंडकरणेयोग्यहे ॥ और तुम हमारेपापोंकूं कैसे जाणतेहो ऐसाजोतूंकहे ॥ सो बनेंनहीं ॥ काहेतैं इसलोकविषे जेजेपाप तैनें राजादिकोंतैंगुप्तकरेहैं ॥ अथवा आपणेबलतैं जेजेपाप तुमनें प्रसिद्धकरेहैं ॥ तिनसर्वतुमारेपापोंकूं सूर्यचंद्रमादिक कथनकरेहैं॥ तिनोंतैं हम तेरेपापोंकूंजाणेहैं ॥ तेकैसेपापहैं॥मर्मसदृशहैं ॥ तात्पर्ययह जैसे मर्मस्थान भेदनकूंप्राप्तहुवे दुःखकूंउत्पन्नकरेहै ॥ तैसे पापकर्मभीप्रसिद्धहुवे दुःखकूंउत्पन्नकरेहैं ॥ और यमकिंकरोंकेवशकूंप्राप्तहुआ जोपापीजीवहे ॥तिसकूंतेयमकिंकरपुनःयाप्रकारकहैहैं॥हेपापिष्ठ॥तूंयाप्रकारकाअहंकारकरताथा॥इसलोकविषेमैंसर्वतैंबलीहूं ॥ मेरेतैंअधिक बलवान् कोईभीपुरुषनहीं ॥ याकर्मविषेप्रवृत्तहूवेमेरेकूं कोणशिक्षाकरेगा ॥ ऐसीदुर्बुद्धिकरिके अनंतप्रकारकेदुर्विचारकूंकरिके अहंकारतैं पापकर्मविषे तूं प्रवृत्तहोताभया ॥ और शास्त्रोक्तमर्यादाकाभी तूं परित्यागकरताभया ॥ यातैं सर्वलोकोंकरिके तूं शोककरणेयोग्यहे ॥

ऐसा सर्वलोकोंकूंपीडाकरणेहारा जोदुर्बुद्धितूंहै ॥ तिसकेशिक्षाकरणेवासते हमयमकिंकर आइकेप्राप्तभयेहैं ॥ केसेहमहैं ॥ तुमारेतेंभीअ
धिकबलवान्है ॥ और तुमनें जेजेपापकर्मकरेहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं हमयमकिंकर जाणतेहैं ॥ यमराजाकीसभाविषे वासरादिकोंनें सर्वतेरेपा
पकर्म हमारेप्रति श्रवणकरायेहैं ॥ दिवसविषे तुमनें जेजेपापकर्मकरेहैं ॥ तेसंपूर्णपापकर्म दिवसनें तथा सूर्यभगवान्नें हमारेप्रति
कहेहैं ॥ और रात्रिविषे जेजेपापकर्म तुमनें करेहैं ॥ तेसंपूर्णपापकर्म रात्रिनें तथाचंद्रमानें हमारेप्रति कहेहैं ॥ और दोनोंसंध्याविषे जेजेपा
पकर्म तुमनें करेहैं ॥ तेसंपूर्णपापकर्म दोनोंसंध्यानें हमारेप्रति कहेहैं ॥ और सर्वकालविषे जेजेपापकर्म तुमनेंकरेहैं ॥ तेसंपूर्णपापकर्म आ
काश वायु अग्नि जल पृथिवी इनपंचभूतोंनें हमारेप्रति कहेहैं ॥ और जोतूंऐसाकहे ॥ गुह्यस्थानविषेकरेजोहमनेंपापकर्म तिनोंकूं सूर्या
दिक केसेजाणेंहैं ॥ यहतेराकहनाबनेंनहीं ॥ काहेतें सूर्यादिकसर्वज्ञहैं ॥ और सर्वप्राणियोंकेसाथि यमराजाकेगुप्तपुरुष सर्वदाविचरेहैं ॥
परमेश्वरकोमायाकरिकेमोहितहुवे तुमलोक तिनयमकेपुरुषोंकूं जाणतेनहीं ॥ याप्रकारकेदुर्वचनोंकूंकहिकरिके दारुणपाशियोंकरिके ताप
पीजीवकूंबांधिकरिके औरचाबुकोंकरिकेताडनकरिके पश्चात् तिसपापीजीवकूं परलोकविषे यमकिंकर लेजावेंहैं ॥ और जैसे
प्रसिद्धद्वारावतीपुरीतें कृष्णभगवान्केस्वधामविषेगमनहूवे अनंतर तिसद्वारावतीपुरीकूं समुद्र लयकरताभया ॥ तैसे शरीररूपद्वारा
वतीपुरीकास्वामीजोयहजीवहै तिसका जभीशरीररूपद्वारावतीपुरीतें कालरूपसारथिकरिकेयुक्तसूक्ष्मशरीररूपरथकरिके परलोकविषे
गमनभया ॥ तिसतेंअनंतर अग्निरूपसमुद्र याशरीररूपद्वारावतीकूं लयकरेहै ॥ और जैसे पतिकेमृत्युहुवेतेंअनंतर विधवास्त्री शोभातेंर
हितहोवेहै ॥ तैसे जीवरूपकृष्णभगवान्केनिर्गमनहुवेतेंअनंतर यहशरीररूपपुरी शोभातेंरहितहोवेहै ॥ और जैसे प्रसिद्धद्वारकापुरी
तें कृष्ण भगवान्केनिर्गमनहुयेतेंपश्चात् अर्जुनसहितसर्वबंधुजन दुर्जनआभीरपुरुषोंकरिकेहरणकरेस्त्रीआदिक सर्वपदार्थोंकेरक्षाकरणेकूं
समर्थनहींहोतेभये ॥ तैसेशरीररूपपुरीतें याजीवकेनिर्गमनहुवेअनंतर याकेस्त्रीधनादिकपदार्थोंकेरक्षाकरणेकूं कोईभीबांधव समर्थ
होवेनहीं ॥ और पूर्व याशरीररूपपुरीविषे मूर्द्धद्वारकरिके परमात्माका जीवरूपतेंप्रवेशभयाथा ॥ तिसीमूर्द्धद्वारतें जभीयाजी

वकानिर्गमनहोवैहै ॥ तभी ब्रह्मलोककूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ और जभी चक्षुआदिकद्वारोंकरिकै इसजीवकानिर्गमनहोवैहै ॥ तभी योपुण्य वान्जीवहोवैहै ॥ सो स्वर्गादिकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपापकर्मवालाजीवहोवैहै ॥ सो चक्षुआदिकद्वारोंतैंनिर्गमनहुआभी नरककूंहींप्राप्त होवैहै ॥ इसप्रकार परलोकविषेजीवकेनिर्गमनहुयेतैंअनंतर ताकेसंबंधियोंकीअवस्थाकहैहैं ॥ यापुरुषकेजीवतेहुये जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव यापुरुषतैंविना एकग्रासमात्रभीनहींभोजनकरतेथे ॥ तेईहीस्त्रीपुत्रादिकबांधव यापुरुषकेमृत्युहुयेतैंअनंतर स्वादुअन्नकूं मळपर्यंतभोजन करैहैं ॥ और यापुरुषकेजीवतेहुये जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव यापुरुषकूं कोमलसिहजांऊपरि शयनकरावतेथे ॥ तेईहीस्त्रीपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर यापुरुषकूं प्रज्वलितअग्निविषेपावैहैं ॥ औरजेस्त्रीपुत्रादिकबांधव जीवतेहुयेयापुरुषकूं कोमलस्पर्शवाळे गंधपुष्पोंकरिकै तथाहस्तोंकरिकै स्पर्शकरतेहुयेभी भयकूंप्राप्तहोतेथे॥तेईहीस्त्रीपुत्रादिकबांधव चिताविषेस्थितयापुरुषकूं तीक्ष्णकाष्ठोंकरिकैस्पर्शकरैहैं ॥ और जीवतेहुयेयापुरुषकूं जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव अश्वकरिकै तथापालकीकरिकै तथाहस्तीकरिकै तथारथकरिकै लेजातेथे॥तेईहीस्त्रीपुत्रादि कबांधव मरणतैंअनंतर तापुरुषकूं काष्ठकेसाथिबांधिकरिकै काष्ठकीन्याईं श्मशानभूमिविषे लेजावैहैं॥और जीवताहुआजोपुरुष मंगलीकवा दित्रोंकेसाथि ग्रामतैंबाहरिजाताथा॥सोईहीपुरुष मरणतैंअनंतर शोकयुक्तस्त्रियोंकेरोदनकेसाथि जावैहै॥और जीवतेहुयेयापुरुषकेआगेजेबांध व दधिआदिकमंगलीकवस्तुकूं लेचलतेथे॥तेईहीपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर यापुरुषकेआगे धूमयुक्तअग्निकूं लेचालैहैं॥और जीवताहुआ यहपुरुष जिनस्त्रीपुत्रादिकोंकूं क्षणमात्रभीनहींत्यागकरताथा॥सोईहीपुरुष मरणकाळविषे विरक्तपुरुषकीन्याईं सर्वबांधवोंकूंत्यागिकेजावैहै॥ और जीवितकालविषे जिसपुरुषतैंविना स्त्रीपुत्रादिकबांधव क्षणमात्रभी स्थितनहींहोतेथे॥मरणतैंअनंतरतेईहीस्त्रीपुत्रादिकबांधवतापुरुषतैंवि ना सुखपूर्वक स्थितहोवैहैं॥और जैसे सूर्यकूंदेखिकरिकेकमल विकाशमानहोवैहैं॥तैसे जीवतकाळविषे जिसपुरुषरूपसूर्यकूंदेखिकरिकै स्त्री पुत्रादिकबांधवोंकेमुखरूपकमळ विकाशमानहोतेथे॥मरणतैंअनंतर तिसीहीपुरुषकेदर्शनहुयेतथास्पर्शहुये तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव स्नानकूंक रैहैं॥और पूर्वजीवितकालविषे जापुरुषकेपादोंतैंनिःसरणभयेजळकूं स्त्रीपुत्रादिकबांधव आपणेमस्तकविषेधारणकरतेथे ॥मरणतैंअनंतर ति

स्त्रीपुरुषकेस्पर्शतें तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव ग्लानकूंकरैंहैं ॥ अथवा स्पर्शकूंहीनहींकरैंहैं॥इसप्रकारप्रत्यक्षदोषोंकरिकैयुक्त संसाररूपशूलविषे प्रा
प्तभयायहजीव परमेश्वरकोमायाकरिकै मोहितहुआ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धसंसारदुःखोंकूंभी जाणतानहीं ॥ याप्रकार मरणतैंअनंतर
बांधवोंकी अवस्थाकही ॥ अब परलोकविषे जीवकीअवस्थाकूंकहैंहैं ॥ यास्थूलशरीरकूं परित्यागकरिकेःअतिदुःखीहुआ यहजीव परलो
ककूंगमनकरैहै ॥ और क्षुधापिपासाकरिकैंपीडितहोवैहै ॥ और यमकिंकरोंकरिकै निरादरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अनंतकोटियोजनदूर
यमकास्थानहै ॥ तहाँ स्वल्पकालकरिकै ॥ याजीवकूं यमकिंकर लेजावैंहैं ॥ जैसे पाशकरिकै बांध्याहुआ औरचाबुकोंकरिकैताडनकिया
हुआ अजाकूं बलात्कारतैं राजाकेभृत्य लेजावैंहैं॥तैसे याजीवकूंभी यमकिंकर परलोकविषेलेजावैंहैं॥और तायमस्थानविषे पापीजीवोंकूं य
मकीशासनातैं अनंतदुःख प्राप्तहोवैंहैं॥तिनसमग्रदुःखोंके कथनकरणेकूं तथाश्रवणकरणेकूं कोईभी समर्थनहीं॥तथापिवैराग्यवासते किंचि
त्मात्रदुःख शास्त्रविषे कथनकरैंहैं ॥ तायमपुरीकेमार्गविषे मांसअहारी सूकरादिकोंका तथाकाकगृध्रादिकपक्षियोंका महाउपद्रव
ताजीवकूंहोवैहै ॥ और तामार्गविषे पापीजीवकूं नानाप्रकारकेशस्त्रोंकरिकै राक्षसोंकेसमान चोर हननकरैंहैं ॥ ताशस्त्रोंकरिकैभी पाप
केवशतैं ताजीवका मृत्युहोवैनहीं ॥ और तामार्गविषे सोपापीजीव कहीं विष्ठातथापूयकरिकैपूर्णनदियोंका उलंघनकरैहै ॥ और ति
ननदियोंविषे निमज्जनकरैहै ॥ और तानदियोंविषेजेमगरहैं तिनोंतैं भयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और यमराजाकेस्थानविषे अग्निकापरिणा
मरूपनरकहै तथा जल पृथिवी वायु आकाशका परिणामरूप नरकहै ॥ तथा शस्त्रोंकापरिणामरूप नरकहै ॥ तथा अंधकारकाप
रिणामरूप नरकहै ॥ इसतैं आदिलेके अनंतप्रकारकेनरक पापीजीवोंकूं दुःखकोप्राप्तिकरैंहैं ॥ और खड्गकीधारसमानहैंतीक्ष्णपत्रजि
नोंके ऐसे वृक्षोंकेवनरूपनरकतैंआदिलेके महाभयानकनरकोंविषे सोपापीजीव अनंतकल्पपर्यंत दुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और परलो
कविषे पापीजीवोंकूं दुःखकरणेहारेजेनरकहैं ॥ ते गरुडपुराणादिकोंविषेप्रसिद्धहैं ॥ यातैं यहाँकथनकरेनहीं ॥ इसप्रकार सोपापी
जीव नरकदुःखोंकूंअनुभवकरिकै कालवशतैं पुनःवृष्टिद्वाराअन्नभावकूंप्राप्तहोइके मनुष्यलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जोपुण्यवान्जी

वहोवैहै ॥ सो स्वर्गविषे महान्सुखकाअनुभवकरिके तापुण्यकर्मकेसमाप्तितैंअनंतर पूर्वकहोरीतितैं वृष्टिद्वाराअन्नभावकूंप्राप्तहुआयालोक विषे प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार यालोककूंप्राप्तहोइकरिकेपूर्वकीन्यांई पुण्यपापकेवशतैंपुनःपिताद्वारा तथामाताद्वारा नानाप्रकारकेजन्मोंकूंसर्व दायहजीव प्राप्तहोवैहै॥औरपूर्व याजीवका पिताशरीरतैंजन्म तथामाताशरीरतैंजन्म निरूपणकरिआयेहैं॥तिनदोनोंजन्मोंकीअपेक्षाकरिकेपु नःपिताशरीरतैंतीसराजन्मजीवकूंप्राप्तहोवैहै॥इसप्रकार पितातैंजन्म॥पुनःमातातैंजन्म॥पुनःपितातैंजन्म॥ यहतीनोंजन्म घटीयंत्रकीन्यांई पु ण्यपापकेवशतैं जीवोंकूं प्राप्तहोवैहै॥और जबपर्यंत याजीवकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिनहींहोती ॥ तबपर्यंत मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ पुनःजन्मकूंप्राप्त होवैहै ॥ पुनःबाल्यअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ पुनःयुवाअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ पुनःवृद्धाअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ पुनःमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार संसारविषे यहजीव भ्रमण करैहै ॥ और जैसे सूर्यादिकोंके रविवार सोमवार आदिक सप्तवारोंकी धारा उच्छेदतैंरहित हुई वर्ते है ॥ तैसे याजीवके जन्ममरणादिकषट्विकारभी विच्छेदतैं रहितहुये वर्तैहै ॥ और जैसे जीर्णवस्त्रोंका परित्यागकरिके पुरुष नवीन वस्त्रोंका ग्रहणकरैहै ॥ तैसे आत्मज्ञानतैंरहित जीवभी एकशरीरकापरित्यागकरिके द्वितीयशरीरका ग्रहणकरैहै ॥ और जैसे सूर्यादिरूप तेजकूंप्राप्तहोइकरिके अंधकार लयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे जन्मअवस्थाकूंप्राप्तहोइकरिके मरणअवस्था लयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे प्रकाश तथाअंधकार यामनुष्यलोककूं परित्यागकरतानहीं ॥ किंतु दोनोंविषे कभीअंधकारहोवैहै कभी प्रकाश होवैहै ॥ तैसे अविवेकीजीवकूं भी जन्मतथामरण परित्यागकरैनहीं ॥ दोनोंविषे एकवन्यारहैहै ॥ यातैं सर्वदुःखोंकाकारण जोअज्ञानहै ॥ ताकेनाशकरणेहारा आनंदरू पआत्माकाज्ञान जबपर्यंत पुरुषोंकूंनहीं उत्पन्नभया ॥ तबपर्यंत जन्ममरणादिकअनंतदुःखजीवोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ आनंदरूपआत्माकाज्ञानहीं सर्वअनर्थकेनिवृत्तिकाकारणहै ॥ तातैंभिन्न सर्वउपाय जन्ममरणकेहेतुहैं ॥ और पूर्व सनकादिकऋ षियोंनेंभी हमारेकूं आत्मज्ञानकाहीं उपदेशकऱ्याथा ॥ याप्रकार सर्वअधिकारीजन वैराग्यकीउत्पत्तिवासते देहतैंआदिलेकेसर्वअनात्म वस्तुविषे दोषोंकाविचार करतेभये॥तादोषोंकेविचारतैं तिनअधिकारियोंकूं देहादिकोंविषे वैराग्य उत्पन्नहोताभया॥ और तिनसर्वअधिका

रियोंविषे एकवामदेवनामाअधिकारीमृत्युकूंप्राप्तहोताभया ॥ अदृष्टरूपभावीप्रतिबंधकेवशतें सनकादिकऋषियोंकेउपदेशतें तिसवामदे
वकूं याजन्मविषे आत्मज्ञानभयानहीं ॥ यातें पुनःपिताकेमर्भद्वारा माताकेगर्भविषे प्रवेशकरताभया ॥ तहां पूर्वसंस्कारकरिकेयुक्त
वामदेव नवममासपर्यंत स्थितहोताभया ॥ और नवममासविषे नियमकरिकेसर्वजीवोंकूं गर्भविषे बोधउत्पन्नहोवैहै ॥ ताबोधतें सर्वजीव
पूर्वपूर्वआपणेजन्मोंकूं स्मरणकरैहैं ॥ और वामदेवतो नवममासविषे आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोताभया ॥ काहेतें भावीप्रतिबंधकेवशतें वा
मदेवकूं पूर्वजन्मविषे आत्मज्ञाननहीं उत्पन्नभयाथा ॥ नवममासविषे तापारूपप्रतिबंधकेनिवृत्तहुये पूर्वसनकादिकोंकेउपदेशकी वामदे
वकूं स्मृतिहोतीभयी ॥ तिसतें मननिदिध्यासनकरिकेसंपन्नहुआ वामदेव गर्भविषेहीं आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोताभया ॥ और पूर्व जि
नअधिकारियोंकेसाथिमिलिकरिके वामदेवने सनकादिकऋषियोंतें ब्रह्मविद्याकाश्रवणकऱ्याथा ॥ तथा सर्वविषयोंविषे दोषोंकाविचारक
ऱ्याथा ॥ तिनसर्वआपणेमित्रोंकूं गर्भविषेस्थितहुआ वामदेव याप्रकारकेवचनोंकूं कहताभया ॥ वामदेवउवाच ॥ हेमित्रो पूर्वजन्मविषे मै
भी तुमारे मध्यमैथा ॥ परंतु पूर्वजन्मविषे परिच्छिन्नदेहादिकोंविषेआत्मबुद्धिकरिके परिच्छिन्नभावकूं मैं प्राप्तहोताभया॥ और अभी हमा
रेकूं गर्भविषे ॥ सनकादिकोंकेउपदेशकेस्मरणतें आत्माकाज्ञान उत्पन्नभयाहै ॥ यातें आपणेअद्वितीयस्वरूपतेंभिन्न किंचित्मात्रभीव
स्तुमै देखतानहीं ॥ किंतु सर्वकूं आत्मरूपजाणताहूं ॥ पूर्वदक्षिणादिकअष्टदिशाभी मेरेकरिकेहींपूर्णहैं ॥ और आकाशभी मेरेकरिकेही
पूर्णहै ॥ और सृष्टिकेआदिकालविषे स्वायंभुवादिकमनुभी मैंहीं पूर्वहोताभयाहूं ॥ और सूर्यभगवान्भी मैंहींहूं ॥ और शक्तिसंपन्नजेइंद्रा
दिकलोकपालहैं तेभी मेराहीस्वरूपहैं॥ मेरेतेंभिन्न तिनोंकीसत्तानहीं॥और अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज यहचारि प्रकारकेप्राणीभी मेरेतें
भिन्ननहीं ॥ किंतु मेराहीस्वरूपहैं ॥तात्पर्ययह ॥ हिरण्यगर्भतेंआदिलेकेस्थावरपर्यंत जेजेपुण्यपापयुक्तजीवहैं ॥ तेसंपूर्ण मेराहीस्वरूपहैं॥
मेरेतें कोईभीवस्तुभिन्ननहीं ॥शंका॥ जभी सर्ववस्तु तुमारेतेंभिन्ननहीं ॥ तभी जन्म अस्तित्व वृद्धि परिणामअपक्षय नाश यहषट्विकार
आत्माविषेप्राप्तहोवैंगे ॥ समाधान ॥ इंद्रियसहितदेहके यहजन्मादिकषट्विकारहैं ॥ सोषट्विकारयुक्तदेह मेरेविषे कल्पितहै ॥ यातें क

ल्पितदेहकेधर्ममुझअधिष्ठानकूं स्पर्शकरैंनहीं ॥दृष्टांत॥ शीतकीनिवृत्तिवासतेगुंजापुंजविषे वानरोंनें कल्पनाकऱ्या जोअग्नि ॥ तिसअग्निके उष्णस्पर्शतें जैसे गुंजापुंजका दाहहोवैनहीं ॥ तैसे कल्पितदेहादिकोंके धर्म जन्मादिकभी मुझअधिष्ठानकूं स्पर्शकरैंनहीं ॥ और मैंआनंदरूपआत्मा वाक्आदिकइंद्रियोंके तथातिनोंकेदेवताओंके जन्मादिकोंकूं जाणताहूं॥परंतु तिनोंकेजन्मादिकविकारअधिष्ठानरूपमैंआत्माकूं सुख तथादुःख प्राप्तकरैंनहीं ॥ काहेतें तेसंपूर्ण मेरेविषे कल्पितहैं ॥ और जैसे पूर्वअज्ञानअवस्थाविषे शरीरइंद्रियादिकोंकेअध्यासतें मैंब्राह्मणहूं मैंस्थूलहूं मैंवधिरहूं मैंमूकहूं इसतैंआदिलेकेशरीरइंद्रियादिकोंकेधर्म मेरेविषे प्रतीतहोतेथे ॥ तेसंपूर्णधर्मओर शरीरसहितइंद्रियतथा तिनइंद्रियोंकेदेवता अभी हमारेकूंस्पर्शकरैंनहीं ॥ काहेतें अद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिके तिनशरीरादिकोंकाअध्यास निवृत्त होइ गयाहै और हेमित्रो जैसे लोहकरिकेरचितकारागृह पुरुषके बंधनकाहेतुहोवैहै ॥ तैसेअज्ञानरूपलोहकरिकेरचित चौराशीलक्षशरीररूपपुरियांभी पूर्व हमारेबंधनकाकारण होतियांभैयां और जैसे लोकविषे महान्शरीरवालाजोश्येनपक्षीहै ॥ सो अतिबलवान्होवैहै ॥ यातें पाशोंकरिके दुर्ग्रहहै ॥ तथापि दृढपाशतें ताकूंबांधिकरिके लोहेकेपिंजरविषे निरोधकरैंहैं ॥ तैसे अज्ञानरूपलोहकरिकेरचित ॥ चौराशीलक्षशरीररूपपुरियांभी बंधनरहितमुझअद्वितीयआत्माकूं देहादिकोंविषे आत्मबुद्धिरूपपाशोंकरिके निरोधकरातियांभैयां ॥ और जैसे पिंजरा विषे निरुद्धहुआश्येनपक्षी वज्रसमानआपणेतुंडकरिके पिंजरेकेनोचेदेशकूंभेदनकरिके बाहरिनिकसिजावैहै ॥तैसे मैंभी अज्ञानरूपतुंडकरिके चौराशीलक्षशरीररूपपुरियोंकूं तथाकामक्रोधादिककीलोंकरिकैंयुक्त देहादिकोंविषेआत्मबुद्धिरूपपाशकूं छेदनकरताभयाहूं ॥ और हे मित्रो ॥ जोपूर्व सनकादिकऋषियोंनें देहस्त्रीपुत्रादिकोंविषेवैराग्य आत्मज्ञानकाकारण तुमारेकूं कह्याथा ॥ सोहमनें अभी आत्मज्ञानरूपफलकीउत्पत्तितें निश्चयकऱ्याहै ॥ और पूर्वजन्मविषे तुमारेसाथिमिलिकरिके हमनें विषयोंविषे दोषोंकाविचारकऱ्याथा ॥ परंतु भावीअदृष्टरूपप्रतिबंधकेवशतें हमारेकूं ताजन्मविषे आत्मज्ञान भयानहीं ॥ मरणकेअनंतर ताप्रतिबंधकेक्षयहुए सनकादिकऋषियोंकी कृपातें तथाविषयोंविषेवैराग्यतें हमारेकूं अब आत्मज्ञान उत्पन्नभयाहै॥यातें विषयोंविषेवैराग्य॥औरगुरुकीकृपा यहदोनों आत्मज्ञानके

मुख्यकारणहैं॥और तुमारेकूं जोआत्मज्ञान नहींउत्पन्नभया॥सोभी किसीप्रतिबंधकेवशतैं नहींभया ॥ यातैं वैराग्यविषे तथागुरुकेउपदेश विषे आत्मज्ञानकीकारणतानहींहै ऐसी तुमनें असंभावना कभीनहींकरणी ॥ और हे मित्रो गुरुकीकृपातैं कैसाहमारेकूंज्ञानउत्पन्नभयाहै ॥ जिसज्ञानकेबलतैं संसारतैंभी मै भयकूंनहीं प्राप्तहोता ॥ और कालतैं तथामृत्युतैंभी मै भयकूंनहींप्राप्तहोता काहेतैं द्वितीयवस्तुतैंभयकी प्राप्ति श्रुतिनें कहीहै ॥ और मै अद्वितीयहूं ॥ सर्वप्रपंच मेरेविषेकल्पित है ॥जैसे रज्जुविषेसर्पकल्पितहै ॥ कल्पितप्रपंचतैं द्वैतभाव मेरेविषेहोवेनहीं ॥ यातैं मै अद्वितीयहूं ॥ और मृत्युतैंरहितहूं॥ काहेतैं मेरेविषेकल्पितजोमृत्युहै ॥ सो मुझ अधिष्ठानकी किंचित्मात्रभीहानि करेनहीं ॥ और जैसे लोकविषे आपणेकूं कोई आप नाशकरैनहीं ॥ तैसे मृत्युकाभीआत्मस्वरूपजोमैंहूं ॥ तिसमेरेकूं मृत्यु नाशकरै नहीं और जन्म तथामरण तथाबाल्यअवस्थायुवाअवस्था जराअवस्था यहसंपूर्ण देहविषेदेखीतेहैं ॥ मुझ अद्वितीयआत्माविषे हैंनही ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अन्यपुरुषकेसुखकरिके तथादुःखकरिके अन्यपुरुष सुखीतथादुःखीहोवैनहीं ॥ तैसे देहादिकोंतैंभिन्न जोमै आनंदरूप आत्माहूं ॥ तिसमेरेकूं देहादिकोंकेधर्म जन्ममरणादिक प्राप्तहोवैंनहीं ॥ और इच्छा द्वेष भय मोह क्षुधा तृषा निद्रा विष्ठामूत्रकीबाधा यह पूर्वकहेजेअष्टदोष॥ते आनंदस्वरूप मुझ आत्माकूं स्पर्शकरैंनहीं॥काहेतैं इच्छा द्वेष भय मोह यहचारि मनकेधर्महैं ॥और क्षुधा तृषा प्राणोंकेधर्महैं ॥ और निद्रा मनका तथाइंद्रियोंका धर्महै ॥ और विष्ठामूत्रकीबाधा शरीरकाधर्महै ॥ और मै साक्षीआत्मा मनइंद्रियादिक सर्वदृश्यका प्रकाशकहूं ॥ यातैं प्रकाश्यदृश्यकेधर्म मुझ प्रकाशककूं स्पर्शकरैंनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे प्रकाश्यघटादिकपदार्थोंकेधर्म प्रकाशकसूर्यकूं स्पर्शकरैंनहीं॥अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेदिखावैहैं॥मोक्षकी तथास्वर्गकी औरयालोकविषेविषयजन्यसुखकी मन इच्छाकरै है ॥ आनंदरूपमैंआत्मा तिनोंकीइच्छाकरतानहीं॥और अज्ञानविषे तथानरकविषे मनहीं द्वेषकरेहै॥और यालोककेदुःखोंविषे तथादुःखके साधनसिंहसर्पादिकोंविषेभी मनहीं द्वेषकरेहै ॥ मैंआनंदरूप सर्वकाआत्मा किसीविषे द्वेषकरतानहीं ॥ किंवा ॥ जो विषयकीकामनावाला तथाभेददृष्टिवाला पुरुषहोवैहै सो कामनाकेप्रतिबंधकअन्यपुरुषविषे द्वेषकरेहै ॥ यहवार्त्ता लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और मैंआप्तकामहूं ॥

और अभेददर्शीहूं ॥ यातें हमारा किसीकेसाथिद्वेष संभवैनहीं ॥ और भय तथामोह दोनों मनकेधर्महैं ॥ मैंअद्वितीयआत्माहूं ॥ यातें
भय मेराधर्मनहीं ॥ और बोधस्वरूपमैंहूं ॥ यातें मोहभी मेराधर्मनहीं किंवा यालोकविषे जोपुरुष आपणेतैं शत्रुकूं भिन्नजाणताहै ॥ तथा
प्रतिकूलजाणताहै ॥ सोईहीपुरुष मोहकूं तथाभयकूंप्राप्तहोवैहै और मैं आपणेस्वरूपतैंभिन्न किसीमित्रकूं तथाशत्रुकूं तथाउदासीनपुरुष
कूं जाणता नहीं॥और किसीकूंप्रतिकूलभीनहींजाणता ॥ यातें किसकारणकरिके मेरेकूं भय तथामोह होवे॥तात्पर्ययह ॥ भयतथामोहका
कारण जोभेदबुद्धितथाप्रतिकूलताज्ञान सो मेरेविषेहैनहीं॥यातेंकारणकेअभावतें भयतथामोह मेरेकूंस्पर्शकरैंनहीं ॥और प्राणकेधर्म जेक्षु
धातृषाहैं॥तेभी प्राणतैंरहितशुद्ध आत्माकेधर्महोवैंनहीं ॥ और कारणविषेलयरूपनिद्राभी जिसकालविषे स्वप्नहींहोवैहै ॥ तिसकालविषे
मनकाधर्महै और वाक्आदिकइंद्रियकातो स्वप्नदर्शनकालविषे तथाअदर्शनकालविषे नित्यहीधर्महै ॥ यातें मनतथाइंद्रियकाधर्मनिद्रा मनत
थाइंद्रियतैंरहितशुद्धआत्माकूं प्राप्तहोवैनहीं॥औरविष्ठामूत्रकीबाधा शरीरकाधर्महै॥शरीरतैंरहितशुद्धआत्माकूं सोबाधाहोवैनहीं॥ अधिकारी
प्रजाउवाच ॥हेवामदेव॥ हममित्रोंकेताईं अद्वितीय अमृत अजर आत्माहै याप्रकार निषेध मुखकरिके आत्माकाउपदेश किसवास्तेकरते
हो॥जैसे कोईपुरुष शृंगतेंपकड़िकरिके गोकूंदिखावे॥तैसे विधिमुखकरिके आत्माकूं काहेतैंनहींदिखावते ॥ वामदेवउवाच ॥ हेमित्रो तुमारे
हितवासते नानाप्रकारकेवचनोंकरिके बोमैंनें आत्माकास्वरूप कथनकऱ्याहै॥सोआत्माकास्वरूप वास्तवतैं गोआदिकोंकीन्याईं इंद्रियोंकाबाह्य
नकाविषयहैनहीं॥ और अद्वितीय अमृत अजर इसतें आदिलेकेनिषेधवाक्यभी लक्षणावृत्तिकरिके आत्माकूंबोधनकरैंहैं ॥ और हेमित्रो सो
अद्वितीयआत्मा चक्षुआदिकबाह्य इंद्रियोंकरिके जान्याजावैनहीं॥तथामन बुद्धि चित्त अहंकार याचतुष्टयअंतःकरणकरिकेभी जान्याजावै
नहीं ॥ अधिकारीजनउवाच॥ हेभगवन् इंद्रियोंका यद्यपि आत्माविषयहैनहीं॥तथापि वेदांतवाक्यतैंउत्पन्नभयी जोबुद्धिकीवृत्तिहै॥तिसका
तथाअज्ञानका आत्मा विषयहोवैगा ॥ वामदेवउवाच ॥ हेमित्रो बुद्धिकेवृत्तिका तथाअज्ञानका प्रकाशकरणेहारा साक्षीआत्माहै ॥ यातें
आत्मा तिनोंकाविषयहोवैनहीं ॥ उलटा बुद्धिकीवृत्ति तथाअज्ञान आत्माकरिकेभास्यमानहैं ॥ यातें आत्माकाविषयहैं॥तातें हेमित्रो पूर्व

सनकादिकऋषियोंनें उपदेशकऱ्याजो देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित सर्वकाप्रकाशक आनंदस्वरूपआत्मा तिसकूं भलीप्रकारविचारक रिके तुमसाक्षात्कारकरो ॥तात्पर्ययह ॥ भावीप्रतिबंधकीशंकाकरिके तुमोंनेंआत्मविचारतैंनिवृत्तहोणानहीं ॥ काहेतें पुण्यपापरूपअदृष्टका नामभावीप्रतिबंधहै॥सोवर्तमानप्रतिबंधकी सहायतातैं विनाविचारकाप्रतिबंधकहोवैनहीं ॥ किंतु वर्तमानप्रतिबंधकेसहायताकूंपाइकरिकेहीं प्रतिबंधकहोवैहै ॥ जब वर्तमानप्रतिबंधकाअभावहोवे ॥ तब अदृष्टरूपभावीप्रतिबंधकाभी अभावनिश्चयकरणा ॥ यातैं विषयविषेआसक्ति बुद्धिकीमंदता कुतर्क विपर्ययविषेदुराग्रह इनच्यारिप्रकारकेवर्तमानप्रतिबंधोंकापरित्यागकरिके तुमशीघ्रही आत्मविचारविषेप्रवृत्तहोवो ॥ जाकरिके हमारेन्याईं तुमारेकूं पुनःजन्मकोप्राप्तिनहींहोवे ॥ अधिकारीजनउवाच॥हेभगवन् आत्मविचारविषेतो हम प्रवृत्तहोवैं॥ परंतु तत्व वेत्तातुमारेकूंभी गर्भदुःखकीप्राप्तिदेखिकरिके दुःखकीनिवृत्तिरूपजोआत्मविचारकाफलहै ताविषे हमारेकूं संशयहोवैहै ॥ जो आत्मविचार करिकेभी दुःखकीनिवृत्तिहोतीहै अथवानहींहोती यहसंशय आत्मविचारकेप्रवृत्तिकाप्रतिबंधकहै ॥ वामदेवउवाच ॥ हेमित्रो तुमारीदृष्टिक रिके मेंगर्भविषेस्थितहूं ॥ तथा गर्भकेदुःखोंकूंअनुभवकरोंहूं ॥ और हमारीदृष्टिकरिकेतो हम सर्वदेहइंद्रियादिकोंतैंरहितहैं ॥ और हेमित्रो पूर्वजन्मविषे हमनें तथातुमोंनें मिलिकरिके जोगर्भकेदुःखकाविचारकियाथा॥तितनाहीदुःख अभीमें गर्भविषे अनुभवकरताहूं॥अथवा तिस तैंभीअधिकदुःखका अनुभवकरताहूं॥परंतु सर्वविषेआत्मबुद्धिरूप पौर्णमासीकेचंद्रमाकीशीतलताकरिके गर्भदुःखरूपग्रीष्मऋतुकासूर्य हमारेकूंसंतापकरतानहीं॥यातैं हेमित्रो आत्मज्ञानकूंहीं तुम संपादनकरो॥इसप्रकार आत्मज्ञान विषेश्रद्धाकरावणेवासते अनंतप्रकारकेवच नोंकूंकहिकरिके वामदेवमुनि माताकेगर्भतैंनिकासिकरिके भूमिलोकतैंआदिलेकेब्रह्मलोकपर्यंतजीवन्मुक्तहोइके विचरताभया ॥ कैसाहैसो वामदेव ॥ सनकादिकऋषियोंकेसमानहै ॥ औरयालोककेसुखतैं तथापरलोककेसुखतैंजाकीइच्छानिवृत्तभयीहै ॥ औरउद्यमतैंरहितहै और निर्मलहैचित्तजाका ॥ ऐसाजोवामदेवहै॥सो प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिवासते मनुष्यलोकविषे तथास्वर्गादिकलोकोंविषेप्राप्तभयेजे भोगहैं तिनोंकूं भोगताभया ॥ ताभोगोंकरिके प्रारब्धकर्मकेनाशहुएतैंअनंतर सोवामदेव विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ इसप्रकार गर्भविषेस्थित

वामदेवकेवचनोंकूंश्रवणकरिके तेसर्वअधिकारीजन आश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये ॥ और आपसविषेपरस्परकहतेभये॥ बड़ाआश्चर्यहै ॥यहवाम
देव हमसर्वअधिकारियोंकेसमूहतें किसीपुण्यकेप्रभावतें निकसताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पंकविषे निमग्नगोओंकेसमूहतें कोईएकगोपुण्य
केप्रभावतें निकसिजावैहै ॥ तैसे यहवामदेव हमारेतैंनिकसताभया ॥ और जैसे पाशकरिकेबांधेहुए पक्षियोंकेसमूहतें कोईएकपक्षी
पुण्यकेबलतें सर्वपक्षियोंकापरित्यागकरिके निकसिजावैहै तैसे कामक्रोधादिकरूपपाशकरिकेबांधेहुएहमसर्वजनोंका परित्यागकरिके
यहवामदेव अभीजाताभया ॥ और जैसे दुर्भिक्षआदिकउपद्रवकेप्राप्तहुएभी मोहकेवशतें देशकापरित्याग लोक करेनहीं ॥ तिनलोकोंविषे
कोईएकपुरुष स्नेहतेंरहितहुआ सर्वबांधवोंकापरित्यागकरिकेतिसदेशतेंनिकसिजावैहै ॥ तैसे यहवामदेव हमसर्वजनोंकापरित्यागकरिके जा
ताभया ॥ और जैसे मार्गविषेचलेजेअनेकपुरुष ॥ तिनोंविषे किसीएकपुरुषकूं पुण्यकेप्रभावतें भूमिविषेस्थितधनकीप्राप्तिहोइजावै ॥ तैसे ह
मसर्वअधिकारीजनोंविषे यहवामदेव आत्मसाक्षात्काररूपधनकूं प्राप्तहोताभया ॥ और जैसे गुरुकीसेवाविषेप्रवृत्तभयेजेअनेकशिष्य ॥
तिनोंविषेकोईएकशिष्यहीं महान्‌विद्याकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे हमसर्वअधिकारियोंविषे यहवामदेवहीं महाविद्यारूपफलकूं प्राप्तहोताभया ॥
यातें यहवामदेवही पुरुषहै ॥ और हमसर्व नपुंसककेतुल्यहैं॥और जैसे बहुतपुरुष मंत्रकेजपविषेप्रवृत्त होवैहैं॥तिनोंविषे किसीएकपुरुषकूं
हीं सिद्धिप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे विचारविषेप्रवृत्तहुएहमसर्वोंविषे यावामदेवकूंहीं विचारजन्य आत्मज्ञानरूपफल होताभया ॥ और जैसे अनंत
व्याधपुरुषोंकरिके निरोधकर्‌याजोमृगोंकासमूह ॥ तिनोंकेमध्यतें कोईएकमृगही निकसिजावैहै ॥ तैसे हमसर्वदुःखीजनोंकेमध्यतेंएकवाम
देवहीं जाताभया ॥ और याबुद्धिमान्‌वामदेवका कोईअद्भुतपुण्यकर्महै॥जिसपुण्यकर्मकेप्रभावतें गर्भविषेस्थितवामदेवकूं आत्मसाक्षात्कार
उत्पन्नभयाहै ॥ और हमारेकूं गुरुशास्त्रादिकसाधनोंकरिकेसंपन्नयाभूमिलोकविषेभी आत्मज्ञान उत्पन्नभयानहीं ॥ और यहवामदेव
गर्भविषेस्थितहुआ हमारेप्रति वचनोंकूंकहताभया ॥ यातें हम ऐसाजानतेहैं ॥ यावामदेवका हमारेविषे स्नेहनहीं ॥ केवल हमारेऊप
रिकृपाहै ॥ जोस्नेहहोता तो बाहरिनिकसिके आपणेमातापितादिकोंकूंभी उपदेशकरता ॥ और यहवामदेवतो जन्मताहुआही माता

पितादिकसर्वबांधवोंकीउपेक्षाकरिके जडउन्मत्तपुरुषकीन्याई अथवापिशाचकीन्याई संबंधियोंकरिकेअज्ञातदेशविषे जाताभया ॥ यातें केवल कृपाकरिके वामदेवनें हमारेप्रति उपदेशकऱ्याहे ॥ स्नेहकरिकेउपदेशकऱ्यानहीं ॥ और गर्भविषेस्थितहोइके जोवामदेवनें हमारेप्रति उपदेशकऱ्याहे ॥ ताके दोप्रयोजनहैं ॥ एकतो पूर्वहमोंनें जोगर्भकेदुःखोंकाविचारकियाथा सोयथार्थहे ॥ और दूसरा आत्मज्ञानकेवलतें गर्भदुःख संतापकरैनहीं ॥ यहदोप्रयोजनहैं॥और हमसर्व नपुंसककीन्याई निरादरकेपात्रहैं॥काहेतें मनुष्यशरीरकूंपाइके भी हमोंनें आत्मज्ञानकूं संपादनकऱ्यानहीं॥अज्ञानकरिके व्यर्थहीकाल वितीतकऱ्या ॥ और यामनुष्यलोकाविषे अनंतप्रकारकेदुःख हमोनें भोगेहैं ॥ और स्वर्गादिकलोकोंविषेभी किंचित्मात्रसुखकूं हम प्राप्तनहींभये ॥ काहेतें स्वर्गादिकलोकोंविषे तीनप्रकारकेदोष रहेहैं ॥ एकतो सातिशयदोष ॥ अर्थयह ॥ जिसके अधिकपुण्यहोवैहैं ॥ तिसकूं अधिकभोगोंकीप्राप्ति स्वर्गविषेहोवेहे ॥ और जिसके न्यूनपुण्यहोवैहैं ॥ तिसकूं न्यूनभोगोंकीप्राप्ति होवैहे ॥ आपणेतेंअधिकभोगवालेदेवताकूंदेखिकरिके न्यूनभोगवालेदेवताकूं ईर्षाहोवैहे ॥ और दूसरा इंद्रादिकदेवताओंकोअधीनतारूपदोषहैं ॥ तापराधीनतातें ॥ सर्वदा जीवकूं भयहोवैहे ॥ और तीसरा नीचे पतनरूपदोषहे ॥ तात्पर्ययह ॥ स्वर्गविषे कर्मदेवताओंकूं आपणेपुण्यकर्मका ज्ञानरहेहे॥जोइतनाकाल हमनेंस्वर्गविषेरहणाहे॥जिसकालविषेनीचेपतनका तिनोकूं ज्ञानहोवैहे ॥ तिसकालविषे महाशोककूं प्राप्तहोवैहैं यातीनदोषोंकी स्वर्गविषे निवृत्तिहोवैनहीं॥यातें स्वर्गभीदुःखरूपहे और कभी हम पुण्यकेवशतें भूमिलोकतें स्वर्गकूंप्राप्तहोतेभये ॥ पुनःस्वर्गलोकतें पुण्यकेक्षयहुये भूमिलोककूंप्राप्तहोतेभये पुनः पुण्यकेवशतें ताभूमिलोकतें स्वर्गलोककूंप्राप्तहोतेभये और कभी पापकेवशतें हमभूमिलोकतेंनरककूंप्राप्तहोतेभये॥और पुनःतानरकतें भूमिलोककूं प्राप्तहोतेभये॥और पुनः पापकेवशतें नरककूंप्राप्तहोतेभये ॥ दृष्टांत ॥जैसे आकाशविषे स्थितकपोतपक्षीभूमिदेशविषेस्थितकपोतीकूंदेखिकरिके भूमिदेशकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और भूमिदेशविषेस्थितकपोत आकाशविषेकपोतीकूंदेखिकरिके आकाशकूंगमनकरेहे ॥ और पूर्वदिशाविषेस्थितकपोत पश्चिमदिशाविषेस्थितकपोतीकूंदेखिकरिके पश्चिमदिशाकूं गमनकरेहे॥इसप्रकार विषयसुखकीतृष्णाकरिकेजैसे

कपोत नीचेऊपरिभ्रमणकरैहै॥तैसे हमभी विषयसुखकीतृष्णाकरिकेकभी देवताशरीरकूं और कभीमनुष्यशरीरकूं और कभीस्थावरादिक शरीरोंकूं प्राप्तहोतेभयेहैं॥तैकेसेशरीरहैं॥केवलदुःखऔरशोककेदेणेहारेहैं॥इसप्रकार सर्वअधिकारीजन परस्पर विचारकूंकरतेभये॥ताविचारकरिके उत्पन्नभयाहैवैराग्यजिनोंकूं और सनकादिकोंकेउपदेशविषे उत्पन्नभयीहैश्रद्धाजिनोंकी ऐसेजे सर्वअधिकारीजनहैं॥ ते पुनःपरस्पर आत्मविचारकूंकरतेभये॥ हेश्रेष्ठब्राह्मणो ॥ पूर्वसनकादिकोंकेउपदेशतें और अभी वामदेवकेउपदेशतें जिसआत्माकेजानणेका हमोंनेंउद्यम कन्याहै ॥ सोआत्मा कोनहै ॥ तहां चक्षुआदिकइंद्रियोंकेसमुदायकरिकेसहित प्रत्यक्ष जोयहदेह प्रतीतहोवैहै ॥ सोईही आत्माहै ॥ अथवा शास्त्र करिकेजोप्रतीतहोवैहै सत्चित्आनंदस्वरूप सो आत्माहै ॥ तहां देहकूंतो आत्मतासंभवैनहीं ॥ काहेतें देह उत्पत्तिनाशवान्‌है ॥ जो उत्पत्तिनाशवान्‌वस्तुहोवैहै ॥ सो आत्माहोवैनहीं ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ उत्पत्तिनाशवान्‌हैं ॥ यातें आत्मानहीं ॥ किंवा ॥ जो आत्मा देहस्वरूपहोवै ॥ तो स्वर्गकीप्राप्तिवासते वेदनें बोधनकरेजेयज्ञादिककर्म तिनोंकूं कोईभीपुरुष करेगानहीं ॥ काहेतें देहकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ यातें ताकानाशभी अवश्यअंगीकारकरणाहोवैगा ॥ जोजोवस्तु उत्पत्तिमान्‌होवैहै ॥ सोसोवस्तु नाशवान्‌होवैहै यहनियमहै ॥ और नष्टहूएदेहका स्वर्गनरकविषेगमन संभवैनहीं ॥ यातें वेदनें बोधनकन्याजो पुण्यकर्म तथापापकर्म सोसर्व व्यर्थहोवैगा ॥ किंवा ॥ देहकूंआत्मामानणेमें शास्त्रउक्तकर्मकोहीं केवल व्यर्थतानहीं ॥ किंतु लौकिककर्मकोभी व्यर्थताहोवैहै ॥ काहेतें बाल्य अवस्थाविषे अध्ययनकरीजोविद्या ॥ ताकाफल युवाअवस्थाविषे तथावृद्धअवस्थाविषेहोवैहै ॥ सो नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतें बाल्य अवस्थाकादेह युवाअवस्थाविषे तथावृद्धअवस्थाविषे रहैनहीं ॥ अवयवोंको वृद्धितें तथाक्षयतें देहकानाश सर्वमतवाले अंगीकारकरैंहैं ॥ और जैसे चैत्रपुरुषनें कन्याजोकर्म ताकाफल मैत्रपुरुषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु चैत्रपुरुषकूंहीं प्राप्तहोवै है ॥ काहेतें जो कर्मकाकरताहोवैहै ॥ सोईही तिसकर्मकेफलकाभोक्ताहोवैहै ॥ अन्य भोक्ताहोवैनहीं ॥ तैसे बाल्यदेहरूपआत्मानेंकन्याजो विद्याअध्ययनरूपकर्म ताकर्मकाफल युवादेहरूपआत्माकूं तथावृद्धदेहरूपआत्माकूं नहींप्राप्तहोणाचाहिये ॥और प्राप्तहोवैहै॥यातें देह आत्मानहीं॥

शंका ॥ जो करताहोवैहै सोईही भोक्ताहोवैहै यह नियम संभवैनहीं ॥ काहेतें लोकविषे करतातैंभिन्नहीं फलका भोक्ता देखाहै ॥ जैसे सेवकोंकरिकैकन्याजोयुद्धहै ताकेफलकूं राजा भोगैहै ॥ और शास्त्रविषेभी करतातैंभिन्नहीं भोक्तादेखाहै ॥ जैसे पिताकरिकैकन्याजो वैश्वानरयज्ञ ताकेफलकूं पुत्र भोगैहै ॥ और पुत्रकरिकैकन्याजो गयाश्राद्धहै ताकेफलकूं पिता भोगैहै ॥ तैसे बाल्यदेहरूपआत्मानैं कन्याजो विद्याअध्ययनरूपकर्म ताकेफलकूं युवादेहरूपआत्मा तथावृद्धदेहरूपआत्माभोगैहै यहवार्ताभी संभवैहै ॥ यातें देहकूं आत्मामानणेमें कर्मकीव्यर्थतारूपदोषनहीं ॥ समाधान ॥ सेवकका राजाकेसाथि स्वामित्वसंबंधहै ॥ यातेंसेवककृतयुद्धकेफलकूं राजा भोगैहै ॥ और पिताका पुत्रकेसाथि पुत्रत्वसंबंधहै ॥ यातें पिताकृत वैश्वानरयज्ञकेफलकूं पुत्र भोगैहै ॥ और पुत्रका पिताकेसाथि पितृत्वसंबंधहै ॥ यातें पुत्रकृत गयाश्राद्धकेफलकूं पिता भोगैहै इसप्रकार बाल्यदेहका युवादेहकेसाथि तथावृद्धदेहकेसाथि स्वामित्वादिककोईसंबंध हैनहीं ॥ यातें देहकूंआत्मामानणेमें कर्मोंकी व्यर्थतारूपदोष वज्रलेपहै ॥ किंवा ॥ जोदेहही आत्माहोवै तो जोमैं पूर्व बालकथा सोईहोमैं अभीवृद्धहूं ॥ यह बालक वृद्धआत्माकेअभेदकूं विषयकरणेहारीप्रत्यभिज्ञा नहींहोणी चाहिये ॥ काहेतें बाल्यदेहका तथावृद्धदेहका भेद प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै सिद्धहै ॥ और परस्परभिन्नपदार्थोंका अभेदज्ञान होवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पिताओरपुत्र परस्पर भिन्नहैं ॥ यातें तिनोंका अभेदज्ञानहोवैनहीं ॥ यातेंभी देह आत्मानहीं ॥ किंवा ॥ अनुमानप्रमाणतेंभी देहकूं अनात्मताही सिद्धहोवैहै ॥ यहदेहजोहै सो अनात्माहोणेकूंयोग्यहै ॥ काहेतें जडहोणेतें ॥ जोजो वस्तु जडहोवैहै ॥ सो अनात्माही होवैहै ॥ जैसे घटादिक जडहैं यातें अनात्माहैं ॥ और जडत्वधर्मकरिकै घटओर देहके समानताहुएभी जोदेहकूं आत्मामानोंगे ॥ तो घटभी आत्माहोणाचाहिये ॥ और घट आत्माहोवैनहीं ॥ शंका ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंकीआधारता देहविषेहै घटविषेहैनहीं ॥ यातेंदेहही चेतनहै घट चेतननहीं ॥ समाधान ॥ इंद्रियोंकीआधारतारूपहेतुतें देहविषे घटतेंविलक्षणताकहणी संभवैनहीं ॥ काहेतें जैसे देहविषे इंद्रियोंकीआधारताहै ॥ तैसे घटविषेभी परंपरासंबंधकरिकै इंद्रियोंकीआधारताहै ॥ तहां विषयतासंबंधकरिकैइंद्रियोंकेआधार

जेरूपरसादिकहैं तिनोंकीआधारता घटविषेहै ॥ यापरंपरासंबंधकरिके इंद्रियोंकीआधारता घटविषेभीहै ॥ साक्षात्संबंधकीन्यांई परंपरासंबंधभी आधारताकानियामकहोवैहै ॥ जैसे पर्यंकविषेसोयेहुएपुरुषमें गृहविषेसोयाहै ऐसा लोकोंकाव्यवहार होवैहै ॥ यास्थान विषे पुरुषका साक्षात्संबंध पर्यंककेसाथिहै ॥ पर्यंकद्वारा गृहकेसाथि परंपरासंबंधहै ॥ तापरंपरासंबंधकूंलेके गृहविषेपुरुषकीआधारता प्रतीतहोवैहै तैसे घटविषेभी परंपरासंबंधकरिकेइंद्रियोंकीआधारता संभवैहै ॥ यातैं देहकीन्यांई घटभी चेतनहोणाचाहिये ॥ किंवा ॥ इंद्रियोंकीआधारताकरिके देहकूं चेतनतातभीहोवे ॥ जभी इंद्रियोंविषे प्रथम चेतनतासिद्धहोवे ॥ सोइंद्रियोंविषे चेतनतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं चक्षुतैंआदिलेकेजेइंद्रियहैं ॥ तिनोंविषे एकएकइंद्रिय चेतनहै ॥ अथवा सर्वइंद्रियोंकासमुदाय चेतनहै ॥ तहाँ प्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं जोसर्वइंद्रियोंविषे एकचक्षुइंद्रियकूंहीं चेतनमानिये ॥ तो अंधपुरुषकूं चक्षुइंद्रियहैनहीं ॥ यातैं ताकूं कोईभीज्ञान नहींहोणाचाहिये॥ और अंधपुरुषकूंभी शब्दादिकोंकाज्ञानतो होवैहै ॥ और जोश्रोत्रइंद्रियकूंही चेतनमानिये ॥ तो बधिरपुरुषकूं श्रोत्रइंद्रियहैनहीं ॥ यातैं ताकूं रूपादिकोंकाभीज्ञान नहींहोणाचाहिये ॥ और बधिरपुरुषकूं रूपादिकोंकाज्ञानतो होवैहै ॥ ऐसेअन्यइंद्रियोंविषेभी जानिलेणा ॥ और जोऐसेकहैं ॥ अंधपुरुषकूं रूपकाज्ञान नहींहोवैहै ॥ सोकहनाभीबनैंनहीं ॥ काहेतैं रसादिकोंका ज्ञान अंधपुरुषकूंहोवैहै ॥ तेरसादिक रूपस्वरूपहैं ॥ काहेतैं इंद्रियजन्यज्ञानका जोविषयहोवे सो रूपकहियेहै ॥ इंद्रियजन्यज्ञान के विषय रसादिकभीहैं ॥ यातैं रसादिक रूपस्वरूपहैं ॥ यहवार्त्ता पूर्व नामरूपक्रियात्मकरूपजगत्‌है याआर्थकेनिरूपणविषे कहिआयेहैं ॥ यातैं रूपकाज्ञान अंधपुरुषकूंभीसंभवैहै ॥ इसप्रकार बधिरपुरुषकूंभी ओष्ठकेचलनेतैं शब्दकाज्ञानहोवैहै ॥ तथा पृष्ठदेशविषे हस्तकरिके अक्षरों केलिखणेतैंभी शब्दकाज्ञान बधिरकूंहोवैहै ॥ सो नहोणाचाहिये ॥ यातैं एकएकइंद्रिय विषे चेतनतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ सर्वइंद्रियोंविषे एकएकइंद्रिय आत्माहै ॥ यहकहना संभवैनहीं ॥ काहेतैं जोसर्वइंद्रियोंविषे एकचक्षुइंद्रियकूं आत्माकहोगे ॥ तो चक्षुइंद्रियरूपआत्माहीं प्रधानहोवैगा ॥ अन्यश्रोत्रादिकइंद्रिय गौणहोवैंगे ॥ सोयहमानणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं सर्व इंद्रियसमान

हैं ॥ तिनोंविषे एककूंप्रधानमानणाअन्यकूं गौणमानणा याकेविषे कोई युक्तिहैनहीं ॥ केवल कथनमात्रहै ॥ यातैंएकएकइं
द्रियकूं आत्मतानहीं यह सिद्धभया ॥ और सर्वइंद्रियोंकासमुदाय आत्माहै यह दूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जोसर्वइंद्रियोंकासमूह
आत्माहोवे ॥ तो एकचक्षुइंद्रियकेनाशहुएतैंसर्वइंद्रियोंकासमूहरूपआत्मा रह्यानहीं ॥ यातैं अंधपुरुषकाशरीर आत्मातैंरहित होणाचा
हिये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे नैयायिकोंके मतविषे सहस्रतंतुतैंउत्पन्नभयाजो पटहै सो एकतंतुकेनाशहुएतैं नाशहोइजावैहै ॥ तैसेएकचक्षु इंद्रिय
केनाशहुएतैं आत्मातैं रहित अंधकाशरीरहोणाचाहिये ॥ और होवैनहीं यातैं इंद्रियोंकासमुदाय आत्मानहीं ॥ शंका ॥ जैसेग्रामविषे जो
प्रधानपुरुषहोवैहै॥ सो जभीमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभीप्रधानपुरुषपणा दूसरेजीवतेपुरुषोंविषे होवैहै ॥ तैसे यहाँभीचक्षुइंद्रियकेनाशहुये
बाकीरहेजे श्रोत्रादिकइंद्रियहैं तिनोंविषे आत्मतारहैहै ॥ यातैं इंद्रियहीं आत्माहैं ॥ समाधान ॥ दृष्टांतविषे जैसे एकप्रधानपुरुषकेनाश
हुएभी ताकेनिर्णयरूपव्यवहारकालोप होवैनहीं ॥ किंतु दूसरेजीवतेप्रधानपुरुष ताकेनिर्णयरूपव्यवहारकूं करैहैं ॥ उलटाकिसीस्थान
विषे तो ऐसादेखीताहै प्रथम प्रधानपुरुष आपणेग्राममात्रकेनिर्णयकूं करताथा ॥ ताकेमृत्युहुए दूसरेप्रधानपुरुष अन्यग्रामकेनिर्णयकूंभी
करैहैं ॥ तैसे यहाँभी चक्षुइंद्रियकेनाशहुए ताकाकार्यजोनीलपीतादिकरूपोंकाज्ञानहै सो अन्यश्रोत्रादिकइंद्रियोंतैंभी होणाचाहिये ॥
और ॥ चक्षुइंद्रियकाकार्य श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं होवैनहीं ॥ जोकदाचित्होवे तो अंधपुरुषकूंभी श्रोत्रादिकइंद्रियतैं नीलपीतादिकरूप
काज्ञान होणाचाहिये और होवैनहीं ॥ यातैं तुमारादृष्टांत विषमहै ॥ शंका ॥ हमारादृष्टांत विषमनहीं ॥ काहेतैं किसीस्थानविषे प्रधान
पुरुषकेमृत्युहुए ताकेनिर्णयरूपव्यवहारका लोपभीदेखाहै ॥ समाधान ॥ यातुमारेकहणेकरिके यहअर्थसिद्धभया ॥ किसीग्रामविषे
प्रधानपुरुषकेमृत्युहुए ताकेव्यवहारकूं अन्यप्रधानपुरुष करैहैं ॥ और किसीप्रधानपुरुषकेमृत्युहुए ताकेव्यवहारकूं अन्यकोइपुरुष कर
तानहीं ॥ किंतु ताकेव्यवहारका लोपहोइजावैहै ॥ तैसे यहाँभी सर्वअंधपुरुषोंकूं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिके नीलपीतादिकरूपकाज्ञान मतहो
वे ॥ परंतु किसीकिसीअंधपुरुषकूंतो होणाचाहिये ॥ और किसीभीअंधपुरुषकूं रूपकाज्ञान होवैनहीं॥यातैं प्रधानपुरुषकेदृष्टांततैं इंद्रियों

विषेआत्मता संभवैनहीं ॥ शंका ॥ इंद्रियोंतैंआत्माकूंभिन्नमानणेविषेभी अंधपुरुषकूं नीलपीतादिकरूपकेज्ञानकीप्राप्तिरूप दोष काहेतैं
नहींहोवै ॥ समाधान ॥ इंद्रियोंतैंभिन्नआत्माहै यापक्षविषे अंधपुरुषकूं नीलादिकरूपकेज्ञानकीप्राप्तिरूपदोष होवैनहीं ॥ काहेतैं शब्द
स्पर्शरूप रस गंधके ज्ञानोंविषे क्रमतैं श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचइंद्रिय करणहैं ॥ अंधपुरुषविषे चक्षुइंद्रियकाअभावहै ॥
यातैं ताकूं नीलादिकरूपकाज्ञान होवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मणिआदिकपदार्थोंकेचाक्षुषज्ञानमें उपकरण जोदीपकादिकप्रकाश ॥
ताकेअभावहुये चक्षुवालापुरुषभी मणिआदिकपदार्थोंकूं देखैनहीं ॥ तैसे चक्षुइंद्रियकेनष्टहुए अंधपुरुष रूपकूंदेखैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे
एकदीपककेनाशहुए तिसीस्थानविषे दूसरेदीपककीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे एकइंद्रियकेनाशहुये दूसरेइंद्रियकीउत्पत्ति किसीआस्तिकपुरु
षनें अंगीकारकरीनहीं ॥ काहेतैं आस्तिकोंकेमतविषे धर्मअधर्मरूपअदृष्टतैंविना किसीकार्यकी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और जिसचार्वाकना
स्तिककेमतविषे देहतैंभिन्न कोईआत्माहैनहीं॥तिनोंकेमतविषे एकइंद्रियकेनाशहुए तिसीस्थानविषे द्वितीयइंद्रियकीउत्पत्ति होणीचाहिये॥
और जोदेहात्मवादीकहै ॥ हमारेमतविषेभी अदृष्टरूपकारणकाअभावहै ॥ यातैं एकइंद्रियकेनष्टहुए तिसीस्थानविषेद्वितीयइंद्रियकीउत्प
त्तिहोवैनहीं॥सोयहकहना बनैनहीं॥काहेतैं पूर्वजन्मविषेसंपादनकरे पुण्यपापरूपअदृष्ट उत्तरउत्तरजन्मविषे कार्यकीउत्पत्तिकरैहैं यहनियम
है ॥ और पूर्वजन्म देहात्मवादियोंकेमतविषे संभवैनहीं ॥ जिसतैं अदृष्टकीउत्पत्तिहोवै ॥ यातैं एकइंद्रियकेनष्टहुए द्वितीयइंद्रियकीउत्पत्ति
देहात्मवादीकेमतविषे अवश्यहोणीचाहिये॥किंवा॥जैसे देहात्मवादीकेमतविषे एकइंद्रियकेनष्टहुए द्वितीयइंद्रियकीउत्पत्तिरूपदोषहोवैहै॥
तैसे इंद्रियआत्मवादीकेमतविषेभी यहदोष प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं पूर्वजन्मकेअभावहोणेतैं पुण्यपापरूपअदृष्टकीउत्पत्तिइंद्रियआत्मवादी
कूंभी संभवैनहीं॥यातैं एकचक्षुइंद्रियकेनष्टहुएभी वाकीरहेजेश्रोत्रादिकइंद्रिय तिनोंकरिकेद्वितीयचक्षुइंद्रियकीउत्पत्ति होणीचाहिये॥दृष्टांत॥
जैसेग्रामविषे एकप्रधानपुरुषकेमृत्युहुएतिसकेकार्यविषेदूसरेप्रधानपुरुषकूंमहाजनलोकस्थापनकरैहैं॥और जैसेएकराजाकीमृत्युहुए तास्था
नविषे द्वितीयराजाकूं प्रजा अंगीकारकरैहै॥शंका ॥एकचक्षुइंद्रियकेनष्टहुए ताकेस्थानविषे दूसरेचक्षुकूंश्रोत्रादिकइंद्रिय तभीस्थापनकरे ॥

जभी सर्वइंद्रियोंकी परस्परएकमतिहोवै ॥ सोएकमति तिनोंकीहैनहीं ॥ यातें एकचक्षुकेनष्टहुए द्वितीयचक्षुकीउत्पत्ति श्रोत्रादिकइंद्रियोंतें होवैनहीं ॥समाधान ॥ जोइंद्रियोंकी परस्पर एकमतिनहींहोवै॥ तो किसीइंद्रियकरिकेभी कोईक्रियाहोवैनहीं॥दृष्टांत॥जैसे ग्रामविषे प्रधान पुरुषोंकी जभी परस्परएकमति नहींहोती ॥ तभी किसीभीकार्यकीसिद्धिहोतीनहीं ॥ यातें किसीप्रकारकरिकेभी इंद्रियोंविषे चेतनता कीसंभावना होवैनहीं ॥ और रूपरसादिकविषयोंकेसाथि चक्षुआदिकइंद्रियोंका केवल संबंधमात्रहोवैहै ॥ इंद्रियोंतें किसीभीअ र्थकाप्रकाश होवैनहीं यातेंरूपादिकविषयोंकेप्रकाशकरणेहारा इंद्रियोंतेंभिन्नहीं कोईचेतनहै ॥ इसप्रकार इंद्रियोंकूंअचेतनहोणेतें देहविषे चेतनकीआधारतासंभवैनहीं ॥ यातें घटकी तथादेहको विलक्षणतावनेनहीं ॥ किंतु दोनोंसमानहैं ॥ शंका ॥ जैसे काथाओरचूनाकरिके युक्त तांबूलविषे रक्तता उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे आकाशादिकपंचभूतोंकेसमुदायरूपशरीरविषे चेतनता उत्पन्नहोवैहै ॥ सोईहीचेतनता शरी रविषेघटतैंविलक्षणताहै ॥समाधान॥पंचभूतोंकेमिलणेतें शरीरविषे चेतनता उत्पन्नहोवैहै॥यहतुमाराकहणा वनेनहीं॥काहेतें पंचभूततो घट विषेभी मिलेहुएहैं ॥ यातें घटविषे चेतनता काहेतेंनहीं उत्पन्नहोती॥ किंतु होणीचाहिये॥शंका॥घटविषे पृथिवीआदिकभूततोहैं॥परंतु वायु घटविषेहैनहीं ॥ यातें ताकेविषे चेतनता उत्पन्नहोवैनहीं ॥समाधान॥ घटविषे वायुका अभावकहना संभवैनहीं॥काहेतें सर्वत्रआकाशविषे वायुकेअवयव परस्परमिलेहुएरहेहैं ॥ याकारणतेंहीं व्यजनकेचलावणेकरिके तिनअवयवोंका परस्परविभाग होवैहै ॥ सोआकाश घटविषे भीहै॥यातें घटविषेभी वायुहै॥यातें शरीरकीन्यांई घटविषेभी चेतनताहोणीचाहिये॥किंवा॥ वायुकेसंबंधतें देहविषे चेतनतासंभवैभीनहीं॥ काहेतें मृतकशरीरविषे तथाघटविषे वायुकेसंयोगहुएभी चेतनता देखीतीनहीं ॥ यातें पंचभूतोंकेमिलनेतें शरीरविषे चेतनता उत्पन्नहो वैहै ॥ यहवचन तेरा मिथ्याहै ॥ किंवा ॥ जोइंद्रियोंविषेचेतनताहोवै ॥ तोइंद्रियोंविषे मुख्यआत्मताहोवै ॥ और इंद्रियोंकेआधारशरीरविषे गौणआत्मताहोवै॥सो इंद्रियोंविषे चेतनताहैनहीं॥यातें इंद्रियोंविषे मुख्यआत्मता और देहविषे गौणआत्मता यहदोनों संभवैनहीं ॥यहां य हतात्पर्यहै॥वेदकेविरोधीनास्तिकोंकेअनंतमतहैं॥तिनोंविषे एकचार्वाकहै॥ तेचार्वाकभी चारिप्रकारकेहोवैहैं ॥ एकतो देहकूंहीं आत्मामानैं

हैं॥और दूसरे इंद्रियोंकूंहीं आत्मामांनेंहैं॥और तीसरे हृदयकूंहीं आत्मामांनेंहैं॥और चौथे प्राणकूंहीं आत्मामांनेंहैं॥तहां देहात्मवादीकात
याइंद्रियआत्मवादीका पूर्व खंडनकऱ्या ॥ अब हृदयआत्मवादीका औरप्राणआत्मवादीका खंडनकरेंहैं॥यद्यपि हृदयदेशविषे सर्वदेहधारी
जीवोंकूं ज्ञानहोवेहे॥तथापि सोहृदयदेशआत्मानहीं॥काहेतें जैसे देह मांसरूपहे ॥ यातें आत्मानहीं॥तैसे हृदयदेशभी मांसरूपहे ॥ यातें
आत्मानहीं॥और जैसे बाह्यवायु आत्मानहीं॥ तैसे प्राणभी वायुरूपहे॥यातें आत्मानहीं॥शंका ॥जिसकेअदर्शनतें मृत्युहोवे सो आत्माक
हियेहे॥यहआत्माकालक्षण प्राणविषेहीं संभवेहे ॥ काहेतें प्राणकेअदर्शनतेंहीं मृत्युहोवेहे॥जबपर्यंत शरीरविषे प्राणोंकादर्शनहोवेहे ॥ तबप
र्यंत शरीरविषे मृत्युव्यवहार होवेनहीं ॥ यातें प्राणहीं आत्माहे ॥ समाधान ॥ शरीरविषेप्राणोंकेअदर्शनतें मृत्युहोवेहे ॥ यातुमारेकहणेतें
प्राणोंकेअप्रत्यक्षतें मृत्युहोवेहे यहअर्थसिद्धहोवेहे ॥ काहेतें चार्वाक एकप्रत्यक्षप्रमाणकूंहींमांनेंहे ॥ सोप्राणोंकेअप्रत्यक्षतें मृत्युहोवेनहीं ॥
काहेतें स्थावरवृक्षादिकोंविषे प्राणोंकाप्रत्यक्षज्ञान किसीपुरुषकूं हैनहीं ॥ तोभी वृक्षादिकका मृत्युहोवेनहीं ॥ और जोऐसाप्राणात्मवादी
कहे ॥ जंगमजेमनुष्यादिकशरीरहें तिनोंविषे प्राणोंकेअप्रत्यक्षतें मृत्युहोवेहे ॥ सोयहतुमाराकहनाभी बनेनहीं ॥ काहेतें जंगममनुष्यादि
कशरीरविषेभी मूर्छादिकअवस्थामे प्राणोंकाप्रत्यक्षहोवेनहीं ॥ यातें मूर्छादिकअवस्थाविषे मृत्युहोणाचाहिये ॥ और मृत्युहोवेनहीं ॥
यातें प्राण आत्मानहीं ॥ शंका ॥ जाकेनिर्गमनतें मृत्युहोवेहे ॥ सो आत्माकहियेहे ॥ यहआत्माकालक्षण ॥ प्राणोंविषेहीसंभवेहे ॥ काहे
तें प्राणोंकेनिर्गमनतेंहीं मृत्युहोवेहे ॥ और मूर्छाअवस्थाविषे प्राणोंकानिर्गमनहोवेनहीं ॥ किंतु शरीरकेभीतरिहीं प्राणोंकिगतिकानिरोध
होवेहे ॥ यातें मूर्छादिकअवस्थाविषे मृत्युहोवेनहीं ॥ यातें प्राणहीं आत्माहें ॥ समाधान ॥ जाकेनिर्गमनतेंमृत्युहोवे सोआत्माकहियेहे
ऐसाप्राणहे ॥ यहजोतुमाराकहणाहे सो केवलव्यर्थहे ॥ काहेतें जठराग्निकेनिर्गमनतेंभी प्राणियोंकामृत्यु देख्याहे ॥ यातें जठराग्निभी तु
मारेमतविषे आत्माहोणाचाहिये ॥ और जठराग्निकीआत्मता प्राणात्मवादीकूंभी अंगीकारहेनहीं ॥ शंका ॥ अग्निकानिर्गमन मृत्युकाहेतु
तभीहोवे जभी अग्निकेनिर्गमनका किसीकूंप्रत्यक्षहोवे ॥ सोअग्निकानिर्गमन प्रत्यक्षहोवेनहीं ॥ समाधान ॥ जठराग्निकेनिर्गमनका यद्यपि

प्रत्यक्षज्ञान होवैनहीं ॥ तथापि जैसे नासिकाछिद्रकेअग्रभागविषे हस्तरासणेतैं प्राणवायुकेस्पर्शकेअभावकाज्ञान होवैहै ॥ तिसस्पर्शके
अभावरूपहेतुतैं प्राणोंकेनिर्गमनकाअनुमान होवैहै ॥ तैसे जठराग्निके निर्गमनकाभी शीतलस्पर्शरूपहेतुतैं अनुमानहोवैहै ॥ शंका ॥
प्राणोंकेनिर्गमनतैंतथाजठराग्निकेनिर्गमनतैं प्राणियोंकामृत्यु होवैहै ॥ यातैं दोनोंहीं आत्माहैं ॥ समाधान॥ अग्निऔरप्राणदोनों आत्माहोवैं
नहीं॥काहेतैंजोदोनोंकूं आत्मामानोंगे ॥ तोएकशरीरविषे दोआत्मा सिद्धहोवैंगे ॥ सोएकशरीरविषेदो आत्मामानणेविरुद्धहैं ॥काहेतैं जोमैं
पूर्वमातापितादिकोंकूंदेखताभया ॥ सोईहोमैं अभी तिनोंकास्मरण करोंहूं ॥ याप्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान आत्माकीएकताकूंविषयकरणे
द्वारा नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतैं अन्यकरिकेदेखीवस्तुका अन्यकूंस्मरणहोवैनहीं ॥ यातैं अग्निऔरप्राणदोनों आत्मानहीं ॥ किंवा ॥
जाकेनिर्गमनतैंमृत्युहोवै सो आत्माकहियेहै ऐसाजो आत्माकालक्षणकरैं ॥ तो रुधिरभी आत्माहोणाचाहिये ॥ काहेतैं रुधिरकेनिर्गम
नतैंभी प्राणियोंकामृत्यु लोकविषेदेखाहै ॥ और अग्नि प्राण उभयआत्मवादीतेरेकूं रुधिरकीआत्मता अंगीकारहैनहीं ॥ किंवा ॥ रुधि
रकूं आत्मामानणा संभवैभीनहीं ॥ काहेतैं रुधिरकेसुकावणेद्वारा जोकोईरोगविशेषहै ॥ तिसकरिकेयुक्तहुएप्राणी रुधिरतैंविनाभी किसी
स्थानविषे जीवतेदेखेहैं ॥ और शास्त्रविषेभी हिरण्यकशिपुआदिकोंकाशरीर तपकरिके रुधिरतैंरहित केवलअस्थिमात्र कह्याहै ॥ यातैं
रुधिरकूं आत्मतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ प्राण अग्नि रुधिर यातीनोंकूं आत्मतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोजोवस्तु जडहोवैहै ॥ सो अना
त्माहोवैहै ॥ जैसे घटादिकहैं ॥ इसप्रकार शरीरतैंबाहरिस्थित जेप्राण अग्नि रुधिर तिनोंविषे जडताप्रत्यक्षसिद्धहै ॥ यातैं शरीरकेभीं
तरिस्थित जेप्राण अग्नि रुधिरहैं तेभी जडहैं ॥ और जडवस्तु आत्माहोवैनहीं ॥ किंतु चेतनहीं आत्माहोवैहै॥ यातैं प्राण अग्नि रुधिर यह
तीनों आत्मानहीं ॥ और मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचारिप्रकारकाअंतःकरणभी आत्मानहीं ॥ काहेतैं एकशरीरविषे अनंतआत्मामा
नणेविषे जोमैं पूर्वपितादिकोंकूंदेखताभया सोईहोमैं अभीस्मरणकरताहूं ॥ यह प्रत्यभिज्ञाज्ञान नहींहोणाचाहिये ॥ शंका ॥ चारिअंतः
करणकासमुदाय आत्मामतहोवै ॥ परंतु एकएकअंतःकरण आत्माकाहेतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ एकएकअंतःकरणकूंभी आत्मतासं

भयेनहीं ॥ काहेतें अंतःकरण वृत्तिरूपतें चक्षुआदिकइंद्रियद्वारा बाहरिनिकसिकरिके घटादिकविषयावच्छिन्नचेतनकेआश्रितजोआवर णहै ताको निवृत्तिकरैहै ॥ और तावृत्तिउपहित साक्षीचेतन ताघटका प्रकाशकरैहै ॥ यातें साक्षीचेतनकरिके जोघटादिकोंकाप्रका शहै ॥ ताविषे अंतःकरण उपकरणहै ॥ जो उपकरणहोवैहै ॥ सो आत्माहोवैनहीं ॥ जो उपकरणभी आत्माहोताहोवै ॥ तौ दीपादिकप्र काश तथाचक्षु आदिकइंद्रियभी विषयकेप्रकाशविषेउपकरणहैं ॥ यातें आत्माहोणाचाहिये ॥ काहेतें प्रकाशतेंविना अंधकारविषेस्थितघ टादिकोंका चक्षुकरिकेज्ञानहोवैनहीं॥तैसे चक्षुआदिकइंद्रियतैंहीनपुरुषकूं रूपादिकविषयकाज्ञान होवैनहीं॥यातें अंतःकरणकीन्याई दीपा दिकप्रकाश तथाचक्षुआदिकइंद्रिय यहसंपूर्ण विषयप्रकाशविषे उपकरणहैं॥और उपकरण आत्माहोवैनहीं॥यातें अंतःकरण आत्मानहीं॥ ॥ शंका ॥ इंद्रियोंकीन्याई मन बुद्धि चित्त अहंकार ज्ञानविषे उपकरणनहीं ॥ किंतु करताहै ॥ और करता आत्माहीहोवैहै ॥ समाधान ॥ मनआदिकोंविषे करतापणा अंगीकारकियेहुएभी तिनोंविषे आत्मतासिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारोंकेमध्यमें कोईएक करताहै ॥ अथवा चारोंहीं करताहैं ॥ तहां एककरताहै यहप्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतें जडत्वधर्म चारोंविषे समानहै ॥ तिनोंमें एककूं करतामानणा ॥ और दूसरेकूं करतानहींमानणा ॥ याकेविषे कोईयुक्तिहैनहीं ॥ और चारों करताहैं यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें ॥ एकशरीरविषे अनेककरताआत्मामानणेविषे पूर्वदोष कहिआयेहैं ॥ यातें अंतःकरण आत्मा नहीं ॥ किंवा ॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारोंकूं जोवादी आत्मामानैहै ॥ तिसतें यहपूछाचाहिये ॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचारि शब्द आत्माहैं ॥ अथवा मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारिशब्दोंतेंउत्पन्नभईयां जेअर्थविषयक अंतःकरणकीचारिवृत्तियांहैं ते आत्माहैं ॥ अथवा मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारिशब्दोंके जेचारिअर्थहैं ते आत्माहैं ॥ तहां प्रथम और द्वितीयपक्ष संभवैनहीं ॥ काहेतें मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचारिशब्द औरतिनोंतेंउत्पन्नभईयां जेअंतःकरणकीचारिवृत्तियां यहसंपूर्ण अर्थप्रकाशके उपकरणहैं ॥ यातें आत्मानहीं ॥ और मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारिशब्दोंके जेचारिअर्थहैं ते आत्माहैं ॥ यहतीसरापक्षभी बनैनहीं ॥ काहेतें तेचा

रिअर्थ जड़हैं अथवा चेतनहैं ॥ तहाँ प्रथमजडपक्ष बनैंनहीं॥ काहेतें जोजोवस्तु जडहोवैहै सो परिच्छिन्नहोवैहै॥और जोजोवस्तु परिच्छिन्न होवैहै सो अनित्यहोवैहै॥और जोजोवस्तु अनित्यहोवैहै सो अनात्माहोवैहै ॥जैसे घटादिकपदार्थहैं॥तैसे मन बुद्धि चित्त अहंकार रूपअर्थों कूं जड़मानणेविषे अनात्मताही सिद्धहोवैहै॥और अनेकजड़ोंकूं आत्मामानणेविषे पूर्वकह्या प्रत्यभिज्ञाज्ञानकाविरोधभी प्राप्तहोवैहै॥ यातें मन बुद्धि चित्त अहंकार रूपअर्थ आत्मानहीं ॥ शंका ॥ जोजोवस्तु जड़होवैहै सो परिच्छिन्नहोवैहै ॥ यह पूर्वआपनें नियमकह्या सो संभ वैनहीं ॥ काहेतें आकाश काल दिशा यहतीनों जडतोहैं ॥ परंतु परिच्छिन्नहैंनहीं॥ किन्तु व्यापकहैं ॥ याकारणतेंहीं आकाशादिक नित्य हैं ॥ समाधान ॥ आकाशादिकोंविषे परिच्छिन्नताकाअभाव संभवैनहीं ॥ काहेतें श्रुतिविषे आकाशादिकोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ जो जो उत्पत्तिमानकार्यहोवैहै ॥ सो आपणेउपादानकारणकेएकदेशविषेरहैहै॥यातें आकाशादिकभी आपणेकारणकीअपेक्षाकरिके परिच्छि न्नहैं॥शंका॥जो आकाश परिच्छिन्नहोवै॥तो शास्त्रविषे आकाशकेदृष्टांतकरिके आत्माविषे व्यापकतासिद्धकरीहै॥सो असंगतहोवैगी॥समा धान॥व्यापकता दोप्रकारकीहोवैहै॥एक निरपेक्षव्यापकता॥और दूसरी सापेक्षव्यापकता ॥तहाँ निरपेक्षव्यापकतातो एकआत्माविषेहीहै॥ और आकाशादिकोंविषे आपणे कार्यजेवायुआदिकहैं तिनोंकीअपेक्षाकरिके सापेक्षव्यापकताहै॥तिसीसापेक्षव्यापकताकूं अंगीकारकरिके ही आत्माविषे आकाशकादृष्टांत दियाहै॥और आत्माकीअपेक्षाकरिकेतो आकाशादिक परिच्छिन्नहीहैं ॥ यातें नित्यनहीं॥और जेनैयायि क आकाशादिकोंकूंविभुमानैहैं ॥ तिनोंकीरीतितेंभी आकाशादिकोंकूं नित्यतासिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें नैयायिकोंनें आकाशादिकविभुप दार्थोंविषेभी अन्योन्याभावकीप्रतियोगितारूप वस्तुपरिच्छेद अंगीकारकर्‍याहै॥ परिच्छिन्नवस्तु नित्यहोवैनहीं ॥ यातें आकाशादिक अ नित्यहैं ॥ याकहणेतें यहसिद्धभया ॥ सर्वअनात्मपदार्थोंविषे वस्तुपरिच्छेद औरदेशपरिच्छेद औरकालपरिच्छेद विद्यमानहै ॥ यातें सर्वअनात्मपदार्थ अनित्यहैं ॥ तिनोंविषे आकाशादिकनित्यहैं ॥ औरघटादिकअनित्यहैं ॥ यहजो लोकोंकूं प्रपंचविषे भेदप्रतीतहोवैहै॥ सो केवल अविवेकतैंप्रतीतहोवैहै ॥ यातें मन बुद्धि चित्त अहंकारकूं जडमानिकरिके जोतिनोंकूं नित्यमानणा ॥ सो अत्यंतविरुद्धहै और

मन बुद्धि चित्त अहंकार रूप अर्थ चेतनहैं ॥ यहजोदूसरापक्ष अंगीकारकरें ॥ तो सत्यआनंदस्वरूपआत्मातैं मन बुद्धि चित्त अहंकार अभिन्नहींसिद्धहोवैंगे ॥ किंवा ॥ सत् चित् आनंद आत्मा इनचारोंका परस्परभेद विचारकियेतैं सिद्धहोवैनहीं ॥ और जोवादी सत् चित् आनंद आत्मा याचारोंका परस्परभेद मानैहै॥तातैं यहहमपूछैहैं॥सत्तैंसत्भिन्नहै चित्तैंचित्भिन्नहै आनंदतैंआनंदभिन्नहै आत्मातैं आत्माभिन्नहै॥याप्रकारपरस्परभिन्नहैं॥अथवा सत्तैंचित्भिन्नहैचित्तैं आनंदभिन्नहै आनंदतेआत्माभिन्नहै॥याप्रकारइनचारोंकापरस्परभेदहै॥तहाँ प्रथमपक्ष संभवैनहीं॥काहेतैं जैसे लोकविषे घटपटादिकवस्तु आपणेस्वरूपतैं आप भिन्नहोवैनहीं॥तैसेसत्कासत्तैंभेदचेतनकाचेतनतैंभेद यहकहना संभवैनहीं॥और सत् चित् आनंद आत्मा इनचारोंका परस्परभेदहै॥यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं॥काहेतैं प्रकाशस्वरूपचेतन्य आनंदतैंभिन्ननहीं ॥ जोआनंदतैंचेतन्यभिन्नहोवै॥तो प्रतिकूलहोवैगा॥जोप्रतिकूलहोवैहै सोजडहोवैहै॥यातैंआनंदतैंचेतन्यभिन्ननहीं ॥ तैसे आनंदभी चेतन्यतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जोप्रकाशरूपचेतन्यतैं आनंदभिन्नहोवै ॥ तो दुःखरूपहोवैगा ॥ इसप्रकार सत्यभी आनंदतैं औरचेतन्यतैं भिन्ननहीं ॥ जोसत्यआनंदतैं औरचेतन्यतैं भिन्नहोवै ॥ तो असत्रूपहोवैगा ॥जभी सत्यभी असत्यभया ॥ तभी यहवस्तु सत्यहै यहवस्तु असत्यहै याप्रकारकाभेदव्यवहार लोकविषे नहींहोवैगा॥ यातैं आनंदतैं तथाचेतन्यतैं सत्य भिन्ननहीं ॥ तैसे आनंद औरचेतन्यभी सत्यतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जोआनंद औरचेतन्य सत्यतैंभिन्नहोवै ॥ तो वंध्यापुत्रकेसमान असत्यहीहोवैंगे ॥ इसप्रकार सत् चित् आनंदतैं आत्माभीभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जो आत्मा सत्चित्आनंदतैंभिन्नहोवै ॥तो असत् जड दुःख स्वरूपहोवैगा॥ सो संभवैनहीं काहेतैं सर्वप्राणियोंकूं मैंहूं याप्रतीतिमे आत्माकोसत्यरूपता प्रतीतहोवैहै ॥ और मैंकभीभी अप्रियनहींहूं याप्रतीतिमेंआत्माकीआनंदरूपता प्रतीतहोवैहै ॥ और मैंजानताहूं याप्रतीतिमैं आत्माकीचेतन्यता प्रतीतहोवैहै॥यातैं सत्चित्आनंदतैं आत्मा भिन्ननहीं ॥ किंवा ॥ सर्वप्राणीमात्रकूं अनंतआत्माका अहंरूपकरिके तथाआत्मरूपकरिके संशयतैंरहितज्ञान देखीताहै ॥ मैंहूं अथवानहींहूं याप्रकारकासंशय किसीकूं होवैनहीं ॥ किंतु मैंसर्वदाहूं ऐसानिश्चय सर्वप्राणियोंकूंहोवैहै॥यातैं सत्चित्आनंदयहतीनोंभी आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ जोआत्मातैं

सत् चित् आनंद भिन्नहोवे ॥ तो सत्यका सत्यरूपतेंज्ञान और चित्का चित्रूपतें ज्ञान और आनंदका आनंदरूपतेंज्ञान किसीकूंभी नहींहोवेगा ॥ काहेतें आत्मातेंभिन्न नरशृंगविषे सत्यबुद्धि किसीकूंहोवेनहीं ॥ और आत्मातेंभिन्न घटादिकोंविषे चेतन्यबुद्धि होवेनहीं ॥ और आत्मातेंभिन्न सिंहसर्पादिकोंविषे आनंदबुद्धिहोवेनहीं ॥ यातें आत्मातें सत्चित्आनंद भिन्ननहीं ॥ शंका ॥ सत् चित् आनंद आत्मा इनचारोंका यद्यपि परस्परभेदनहीं ॥ तथापि घटपटादिकजडवस्तुवोंकरिके आत्माविषे वस्तुपरिच्छेद काहेतेंनहींहोवे ॥ समाधान ॥ आत्मातेंभिन्न कोईभीवस्तु जगत्काकारणनहीं काहेतें आत्मानाम आपणेस्वरूपकाहे ॥ आपणेस्वरूपतें जोभिन्नहोवेहे ॥ सो नर शृंगकीन्याई निःस्वरूपहोवेहे ॥ यातें आत्माही सर्वजगत्काकारणहे ॥ कारणतें कार्य भिन्नहोइकेप्रतीतहोवेनहीं ॥ दृष्टांत जैसे मृत्तिका तेंघट भिन्नहोइकेप्रतीतहोवेनहीं ॥ तैसे कार्यरूपजगत्भी कारणरूपआत्मातें भिन्नहोइकेप्रतीतहोवेनहीं ॥ शंका ॥ जडजगत्काकारण आत्मानहीं ॥ किंतु जगत्आपणाकारण आपहीहे ॥ समाधान ॥ किसीस्थानविषे कोईभीवस्तु आपणाकारण आपहोवेनहीं॥ काहेतें कार्यकीउत्पत्तितें पूर्वक्षणविषे जोवस्तुरहे सो कारणहोवेहे ॥ और कारणतेंपश्चात्भावी जोवस्तुहोवे सोकार्यहोवेहे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मृत्तिका घटकीउत्पत्तितें पूर्वविद्यमानहे ॥ यातें घटका मृत्तिकाकारणहे ॥ औरघट मृत्तिकातेंपश्चात्भावीहे ॥ यातें मृत्तिकाका घटकार्यहे ॥ जोजडजगत् आपनाकारणआपहींहोवे ॥ तो जगत् आपहीआपनेतेंपूर्ववृत्तिओरआपहीआपनेतेंपश्चात् भावी कहणाहोवेगा ॥ सो अत्यंतविरुद्धहे शंका ॥ अज्ञानकेबलतें जडजगत् आपणाकारणआप काहेतेंनहींहोवे ॥ समाधान ॥ अज्ञानकेबलतेंभी जगत् आपनाकारणआप होवेनहीं ॥ काहेतें अज्ञानकेबलतें रज्जुआदिकोंकूं कल्पितसर्पादिकोंकीही कारणता देखीहे ॥ रज्जुकूं रज्जुकेप्रतिकारणता अज्ञानकेबलतेंभी संभवेनहीं ॥ यातें आत्मातेंभिन्न किसीजडवस्तुकीसत्तानहीं ॥ याकहणेतें आत्माविषे वस्तुपरिच्छेदकाअभाव दिखाया ॥ अब देशकालपरिच्छेदकाअभाव आत्माविषे दिखावेहे ॥ जैसे गोत्वजाति गो व्यक्तिविषेरहेहे ॥ तैसे आत्मा किसीदेशविषेरहेनहीं ॥ किंतु सर्वदेशविषेरहेहे ॥ और जैसे वर्षादिक सर्वकालविषेरहेनहीं ॥ किंतु किसी

कालविषेरहेहै ॥ तैसे आत्मा किसीकालविषेनहीं ॥ किंतु सर्वकालविषेविद्यमानहै ॥ काहेतैंदेशकालादिकजितने लौकिकआधारहैं ॥ तिन सर्वोंकी प्रकाशस्वरूपआत्मातैंविना सिद्धिहोवैनहीं ॥ यातें आत्मा देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै ॥ शंका ॥ जभी आत्माकास्वरूप देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै॥तौ प्रपंचकाभान काहेतैंहोताहै॥समाधान॥देशकालतैंआदिलेके जितनाअनिर्वचनीयजगत्है॥सोसंपूर्णआत्माविषे अज्ञानीपुरुषोंनें कल्पनाकन्याहै ॥दृष्टांत॥ जैसे मध्याह्नकेसूर्यविषे घूकादिकपक्षी रात्रिकोकल्पनाकरैहैं॥औरजैसेसोयेहुएपुरुषोंकूं स्वप्नविषे निद्रादोषकरिकेनानाप्रकारकाजगत् प्रतीहोवैहै॥तैसे आत्माकेअज्ञानकरिके संपूर्णजगत्हमारेकूं प्रतीतहोवैहै॥औरसत्चित्आनंदस्वरूपआत्माविषे देशकालवस्तुपरिच्छेदकाअभावहै॥याकारणतैं आत्माअनंतहै॥ और सृष्टिकेआदिकालविषे सनकादिकऋषियोंनेइसी आत्माका हमारेताई उपदेशकन्याथा ॥ और अभी वामदेवनैंभी इसी आत्माका हमारे ताई उपदेशकन्याहै ॥ और इसी अद्वितीयआत्माकेजानणेकीइच्छाकरिके हमसर्वअधिकारियोंकासमाज यहाँ स्थितहै ॥ और इसीअद्वितीयआत्माकेजानणेवासते विचारकेआरंभकालविषे हमोंनें यासंघातविषेकौनआत्माहै याप्रकारकाकथन कन्याथा ॥ सोईहोअद्वितीयआत्मा अभी हमोंनें अंतःकरणादिकोंकेविचारकरिके निश्चय कन्याहै ॥ याकारणतैं हमसंपूर्णअधिकारी कृतकृत्यहैं ॥ और हमोंनें आनंदस्वरूपआत्माकूं अंतःकरणकेविवेकतैं निश्चयकन्याहै ॥ यातैं जितनेहृदयादिकनाम अंतःकरणकेवाचकहैं ॥ तिनसंपूर्णनामोंकूं शुद्धआत्माविषे हम समर्पणकरैंहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जितनेंक हृदयादिकनामहैं तेसंपूर्ण अंतःकरणविशिष्टचेतनके तथा अंतःकरणकीवृत्तिविशिष्टचेतनके वाचकहैं ॥ तहाँ भागत्यागलक्षणाकरिके अंतःकरणतथावृत्तिरूपजडभागकेत्यागकियेतैं संपूर्णहृदयादिकपद शुद्धआत्माकेबोधकहैं ॥ शंका ॥ मनवाणीकेअविषय शुद्धआत्माविषे विशिष्टचेतनकेवाचकहृदयादिकपदोंका प्रयोगकरणा व्यर्थहै ॥ समाधान ॥ शुद्धआत्माविषे हृदयादिकपदोंकाप्रयोगकरणाव्यर्थनहीं ॥ किंतु अर्थवान्‌है ॥ काहेतैं जैसेहमअधिकारियोंनें हृदयादिकपदोंकरिके शुद्धआत्माकानिश्चयकन्याहै ॥ तैसे सर्वअधिकारियोंनेंहृदयादिकपदोंकरिके शुद्धआत्माकानिश्चयकरणा ॥ याप्रकार अधिकारियोंकेबोधकरणेवासते हृदयादिकपदोंका शु

द्धआत्माविषेहमोंनेंप्रयोगकऱ्याहे ॥ तहाँ उपासनातेंतथापंचकोशोंकेविचारतें हृदयदेशविषे आत्माका अपरोक्षज्ञानहोवैहे ॥ याकारण
तें आत्माकूं हृदय कहैहैं ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्मा संपूर्णविश्वको प्रकाशकरैहे ॥ याकारणतें याआत्माकूं मन कहैहैं॥ अथवा सर्व
मुमुक्षुवोंनें मनकरिके आत्मानिश्चयकरीताहे॥याकारणतें आत्माकूं मन कहैहैं॥और आत्माविषेकल्पितजोसर्वप्रपंच ताकूं यह आत्मा भली
प्रकारजानेहे॥याकारणतें आत्माकूं संज्ञान कहैहैं॥और आत्माकीआज्ञाविषे सर्ववाकूआदिकइंद्रिय औरअग्निआदिकसर्वदेवता वर्तैहैं॥याका
रणतें आनंदस्वरूपआत्माकूं अज्ञान कहैहैं॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा जडचेतनरूपप्रपंचकेभेद विचारपूर्वक आपणेस्वरूपकूं तथापर
मात्माकूं विशेषकरिकेजाणेहे॥याकारणतें आत्माकूं विज्ञान कहैहैं॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्रपंचकाप्रकाशकजोआपणास्वरूपहे
ताकूं मेंहूं याप्रकारकरिके सर्वदाजानेहे ॥ याकारणतें आत्माकूं प्रज्ञान कहेहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा एकवारिजाण्याजो आपणा
स्वरूप तथाअन्यकोईअनात्मवस्तु ताका विस्मरणकरैनहीं॥याकारणतें आत्माकूं मेधाकहैहैं॥औरयह आनंदस्वरूपआत्मा चक्षुआदिकइं
द्रियकरिके सर्ववस्तुकूं देखेहे ॥ याकारणतें आत्माकूं दृष्टि कहैहैं॥और जैसे स्तंभादिक गृहकेभीतरिप्रवेशकरिके गृहकूंधारणकरैहैं ॥ तैसे
यहआनंदस्वरूपआत्माभी सर्वशरीरोंविषेप्रवेशकरिके देहइंद्रियादिकोंकूं धारणकरैहे॥याकारणतें आत्माकूं धृति कहैहैं॥अथवा जैसे काष्ठ
मृत्तिकाकरिकेरचितसेतु क्षेत्रादिकोंकीमर्यादाकूं धारणकरैहे॥तैसे यह आनंदस्वरूपआत्माभीवर्णआश्रमकीमर्यादाकूं औरतिनोंकेधर्मकीम
र्यादाकूं धारणकरैहे ॥ याकारणतें याआत्माकूं धृति कहैहैं ॥ और जैसे काष्ठादिकोंकापात्रविशेष जोप्रस्थहे सोधान्यादिकअन्नकेपरिमाणकूं
निश्चयकरावैहे॥और जैसेरज्जुअविच्छिन्नचेतन आपणेविषेकल्पित जैसर्पदंडादिकहैं तिनोंकेपरिमाणकूं जनावैहे॥तैसे यहआनंदस्वरूपआ
त्माभी संपूर्णविश्वकेपरिमाणकूं निश्चयकरैहे ॥ याकारणतें आत्माकूं मतिकहैं हैं ॥ अथवा सर्वप्राणियोंविषेस्थितहुआ यह आत्मा सर्वप्रा
णियोंकेहितकूं तथाअहितकूं भलीप्रकार निश्चयकरैहे ॥ याकारणतें आत्मा कूं मति कहैहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा यहवस्तु मेरे
कूंप्राप्तहोवे यहवस्तु हमारेकूंनहींप्राप्तहोवे याप्रकारकाजोमनहे ताकेरोकणेमें समर्थहे ॥ याकारणतें आत्माकूं मनीषा कहैहैं ॥ और यह

आनंदस्वरूपआत्मा देह इंद्रिय अंतःकरण अज्ञानादिकोंकूं प्रकाशकरैहे ॥ याकारणतें आत्माकूं श्रुति कहैहैं ॥ अथवा अध्यात्मदुःख अधिदैवदुःख अधिभूतदुःख यातीनप्रकारकेदुःखोंकूं विषयकरणेहारियां जे अंतःकरणकीवृत्तियांहैं तिनोंकूं आत्मा प्रकाशकरैहे ॥ याकारणतें आत्माकूं श्रुति कहैहैं ॥ अथवा आत्माकेप्रकाशकरिके संपूर्णजगत् आपणेआपणेकार्यकोसिद्धिकरैहे ॥ याकारणतें आत्माकूं श्रुति कहैहैं ॥ और जैसे माता आपणेपुत्रोंकूं स्मरणकरैहे ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी जैरेतेंविना यहसंपूर्णजगत् कैसेसिद्धहोवे याप्रकारका स्मरणकरैहे॥याकारणतें आत्माकूं स्मृति कहैहैं॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थाकूं सम्यक्कल्पनाकरैहे ॥ याकारणतें आत्माकूं संकल्प कहैहैं॥और याआनंदस्वरूपआत्माकीइच्छाकरिके यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहे॥याकारणतें आत्माकूं क्रतु कहैहैं॥अथवा आनंदस्वरूपआत्माका प्रपंचकूंविषयकरणेहारा जोमायाकोवृत्तिरूपज्ञानहैताज्ञानतेंयहसंपूर्णप्रपंचउत्पन्नभयाहे याकारणतें आत्माकूं क्रतु कहैहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा आपनीसमीपताकरिके प्राणोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्तकरैहे ॥ याकारणतें आत्माकूं असु कहैहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा सुखप्राप्तिकीइच्छाकूं तथादुःखनिवृत्तिकीइच्छाकूं प्रकाशकरैहे ॥ याकारणतें आत्माकूं काम कहैहैं ॥ और प्रजाकोउत्पत्तिकाकारणजो स्त्रीसंगमकोअभिलाषा ताकूं यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रकाशकरैहे ॥ याकारणतें आत्माकूं वश कहैहैं ॥ इसप्रकार हृदयदेशविषेस्थितजोअंतःकरण औरताकीवृत्तियां तिनोंकेहीं संपूर्णहृदयादिकशब्द वाचकहैं ॥ ताअंतःकरणविषे हमअधिकारियोंनें आनंदस्वरूपआत्मा जान्याहे ॥ याकारणतें वृत्तिसहितअंतःकरणके जितनेहृदयादिकनामहैं तेसंपूर्णनाम आनंदस्वरूपआत्माके हमोनें कथनकरैहैं ॥ और अंतःकरणकेहृदयआदिकनाम परमात्माविषे संभवेंभीहैं ॥ काहेतें परमात्मातेंभिन्न कोईपदार्थहैनहीं ॥ और वास्तवतेंविचारकरियेतो जितनेघटपटादिकनामहैं॥तेसंपूर्ण परमात्माकाहीबोधनकरैहैं॥काहेतें परमात्मातेंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं॥जावस्तुकूं घटपटादिकनाम बोधनकरैं ॥ यहवार्ता वार्तिकग्रंथकेकरताजोसुरेश्वराचार्यहैं तिनोंनेंभी कहीहे ॥ श्लोक ॥ अतोऽनुभवएवैको विषयोऽज्ञातलक्षणः ॥ अक्षादीनांस्वतःसिद्धो यत्रतेषांप्रमाणता ॥ १० ॥ अर्थयह ॥ स्वप्रकाश और अज्ञात

जो चेतनहै ॥ सोईही प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाविषयहै ॥ ताचेतनविषैहीं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकू प्रमाणताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अज्ञात अर्थ काजोबोधकहावे सो प्रमाणकहियेहै ॥ अज्ञानकाजोआश्रयहोवे और अज्ञानकाजोविषयहोवे सो अज्ञातकहियेहै ॥ अज्ञानका आश्रय और विषय चेतनहै ॥ चेतनतैंभिन्न जडवस्तु अज्ञानकाआश्रयविषय होवैनहीं ॥ यातैं आत्माकेबोधनकरिकेही संपूर्णप्रमाणोंविषे प्रमाणतासि द्धहोवैहै ॥ १० ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्माहीं शुद्धब्रह्महै ॥ और जगत्काकारण मायाविशिष्टईश्वरभी यह आनंदस्वरूपआत्माही है ॥ और समष्टिसूक्ष्मशरीरकाअभिमानी हिरण्यगर्भभी यह आनंदस्वरूपआत्माहीहै ॥ और समष्टिस्थूलशरीरकाअभिमानी विराट्भग वान्भी यहआनंदस्वरूपआत्माहीहै ॥ और विराट्भगवान्केशरीरविषे तथाअस्मदादिक सर्वप्राणियोंकेशरीरविषे भोक्ता और तीनलोकोंकूधारणकरणेहारा तथासर्वकूप्रकाशकरणेहारा जोपरमात्माइंद्रहै ॥ सोभी यहआनंदस्वरूपआत्माहीहै ॥ अथवा प्रसिद्धजो देवतावोंकाराजाइंद्रहै सोभी यहआनंदस्वरूपआत्माहीहै ॥ और मरीचितैंआदिलेकेजे प्रजापतिहैं तेभी आनंदस्वरूपआत्माहीहैं ॥ और शरीरकेआश्रितजोवाक्आदिकइंद्रिय और तिनोंकेअग्निआदिकदेवता तेसंपूर्ण आनंदस्वरूपआत्माहीहै ॥ आत्मातैंभिन्न किंचित्मात्रभीनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे स्वप्नविषे भिन्नभिन्नकल्पनाकरे जेप्रमाता तेसंपूर्ण हमहीहैं ॥ हमारेतैंभिन्न कोईस्वप्न विषेप्रमातानहीं ॥ इतनैंकरिके आत्माविषे सजातीयभेदकाखंडनकऱ्या ॥ अब विजातीयभेदकू खंडनकरैहैं पृथिवी जल तेज वायु आकाश यहपंचभूत मैंआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ और अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज यहजेचारिप्रकारके भूतहैं ॥ ते स्थावरजं गमरूपकरिके तथाकार्यकारणरूपकरिके दोप्रकारकेहैं ॥ तेसंपूर्ण आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं॥और जैसे अग्नितैं उष्णता औरप्रकाश भिन्ननहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं स्थूलसूक्ष्मरूपप्रपंच भिन्ननहीं ॥ और जैसे जलतैं शीतलता औरद्रवत्व भिन्ननहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं प्रपंचभिन्ननहीं ॥ और जैसे पृथिवीतैं कठिनता औरगंध भिन्ननहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं स्थूलसूक्ष्मप्रपंच भिन्ननहीं ॥ और जैसेवायुतैं क्रिया तथास्पर्श भिन्ननहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं प्रपंच भिन्ननहीं ॥ और जैसे आकाशतैं अवकाश

तथाशब्द भिन्ननहीं॥तैसे आनंदस्वरूपआत्मातें जगत् भिन्ननहीं॥ और जैसे दोषतैंरहितसूर्यकेप्रकाशविषे अंधकारका यद्यपिअभावहै ॥
तथापि उलूकआदिक सूर्यविषे अंधकारकोकल्पनाकरैहैं॥तैसे जगततैंरहित आनंदस्वरूपआत्माविषे अज्ञानीजन जगत्कोकल्पनाकरैहैं॥
और जैसे अमूर्तआकाशविषे मेघादिकमूर्तपदार्थ रहैहैं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यहसंपूर्णजडजगत् रहैहै ॥ और जैसे नानाप्रकार
केमेघादिक आकाशमें किसीकालविषेप्रतीतहोवैहैं सर्वदा प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यहसंपूर्णजगत् कदाचित्प्रतीत
होवैहै सर्वदाप्रतीतहोवैनहीं ॥ और जैसे मायावीराक्षसोंकाबालक प्रयोजनतैंविना मायाकरिकैपदार्थोंकूंरचैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआ
त्मा प्रयोजनतैंविनाहीं जगत्कूंरचैहै ॥ और जैसे मदिरापानकरिकेअंधहुआपुरुष आवरणतैंरहितदेशविषेभी भित्तिआदिकआवरणों
कूंदेखैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा असत्जगतकूंदेखैहै ॥ और जैसे कोईपुरुष आपणेचित्तकेदोषकरिके दोषतैंरहितआपणे
पिताओरगुरुआदिकोंविषे दोषोंकूंदेखैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रपंचरूपदोषतैंरहितआपणेस्वरूपविषे प्रपंचकूंदेखैहै ॥ और जैसे
सोयाहुआपुरुष स्वप्नविषे आपणीएकताकूं नहीजाणैहै ॥ किंतु नानारूपकरिके आपणेकूंजाणैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा जाग्रत्
स्वप्नसुषुप्तिरूपतीनस्वप्नोंकूंदेखताहुआ आपणीएकताकूंनहींदिखता ॥ और जैसे नलिकाकेभ्रमणहूए नलिकाऊपरिआरूढजोशुकहै सो न
लिकाकरिकेनहींबांध्याहुआभी आपकूंबांध्याहुआमानिकरिके भ्रमणकरैहै॥तैसे यहजीवात्मा नित्यमुक्तआनंदस्वरूपआत्माकेअज्ञानतैं सं
साररूपशूलविषे भ्रमणकरैहै ॥ और जैसे गंधकेलोभकरिके भ्रमर कमलकूंत्यागतानहीं ॥ तहां रात्रिकेप्राप्तहूए कमल संकोचकूंप्राप्तहोवैहै
ताकमलकेभीतरि निरुद्धहुआभ्रमर अत्यंतदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ऐसाविचारकरैहै ॥ जबरात्रिबितीतहोवैगी ॥ और प्रातःकालहोवैगा ॥
तब मैंनिकसिजाऊंगा ॥ ऐसाविचारकरतैंहीं हस्तीताकमलकूंभक्षणकरिलेवैहै ॥ तैसे यहजीवात्मा स्त्रीआदिकविषयोंविषेआसक्तहुआ अनं
तप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे कोईधनीपुरुष भ्रांतितैं आपणेधनीपणेकूंविस्मरणकरिके लोकविषेदुःखकाहेतुजोदरिद्रताहै
ताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यह आत्मा आनंदकासमुद्रजो आपणास्वरूपहै ताकूंविस्मरणकरिके तुच्छविषयसुखकोप्राप्तिवासते अत्यंत

दीनदशाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ओर जैसे सर्वगुणोंकरिकेसंपन्नकोईकपुरुषकिसीव्यभिचारिणीस्त्रीकरिकेमोहितहुआ दीनताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मा मायाकरिकेमोहितहुआ नानाप्रकारकीदीनताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ओर जैसे त्रिलोकीकानाथजोइंद्रहै सो सर्वदेवतावोंकाअधिपतिहै ॥ यातैं कामदेवताकेवशकरणेकाभी इंद्रकूंसामर्थ्यहै ॥ तोभी कामनीकूंवशकरणेमेंसमर्थनहींहोवैहै ॥ किंतु कामकरिकेकामिनीकेअधीनहोवैहै ॥ तैसे मायातैंआदिलेकेसर्वका अधिष्ठानजोआत्माहै॥ सो मायाकूंवशकरणेमेंसमर्थनहींहोवैहै ॥ ओर जैसे प्रियपुत्रादिकोंनें कियाजोनिरादर तानिरादरविषे पिता दोषकूंनहींदेखैहै ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मा मायाकेदोषोंकूंनहींदेखैहै ॥ ओर जैसे भारशृंगनामाजोकोईमृगविशेषहै॥सो आपणेशृंगोंकेभारकूं प्रसन्नहुआ धारणकरैहै ॥ तैसे यह आत्मा आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं मायाकेभारकूं धारणकरैहै॥ओर जैसे दुर्जनपुरुषकेसंगतैं साधुपुरुष दोषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा मायाकेसंगतैं दोषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ओर जैसे दुर्जनपुरुषकोदृष्टिकरिके निर्दोषपुरुषविषेभी दोषहोवैहै तैसे अज्ञानीपुरुषकी दृष्टिकरिके आत्माविषे अनंतदोषयुक्तसंसारहै ॥ ओर जैसे आपणोप्रजाविषेस्थितदुःखकूं राजा आपणेविषे मानैहै ॥ तैसे यहअंतःकरणविषेस्थितदुःखकूं तादात्म्यअध्यासकरिके आत्मा आपणेविषेमानैहै ॥ ओर जैसे कारणसामग्रीतेंरहित एकस्वप्नपुरुषविषे अकस्मात्तैं संपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे अकस्मात्तैं स्थूलसूक्ष्मरूपप्रपंच उत्पन्नहोवैहै ॥ ओर जैसे स्वप्नविषे यहपुरुष प्रयोजनतैंविना आपणेकूंआपहीदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा जाग्रत्विषे व्यर्थहीआपणेकूंदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ ओर जैसे स्वप्नतैंजाग्रत्भयेपुरुषकूं स्वप्नकेदुःखकानाशहोवैहै॥ओर सोपुरुष ऐसाजाणैहै॥मेरेकूं पूर्वदुःखनहींहोताभया॥ओर अभीवर्तमानकालविषेभी मेरेकूंदुःखनहींहै ॥ओर आगेभीहमारेकूंदुःखनहींहोवेगा ॥ इसप्रकार तीनकालविषे स्वप्नकेदुःखकाअभावनिश्चयकरैहै ॥ तैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति रूपसंसारस्वप्नतैं आत्मसाक्षात्काररूपजाग्रत्केप्राप्तहुए ॥ याआनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वदुःखोंकानाशहोवैहै ॥ ओर तिसज्ञानअवस्थाविषे आत्मा याप्रकारजानैहै ॥ मेरेकूं पूर्वकालविषेदुःखनहींहोताभयाओरअभी वर्तमानकालविषेभी मेरेकूं दुःखनहीं॥ओर आगेभी हमारेकूंदुःखनहींहोवेगा ॥ इसप्रकारतीनका

छविषेआपणेस्वरूपमे विद्वान्दुःखकूंनहींमानता ॥ किंतु अंतःकरणादिकोंकेधर्मदुःखादिकजाणेंहै ॥ और जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिरूपसंसारस्व प्नतें ब्रह्मसाक्षात्काररूपजाग्रत् हमसर्वअधिकारियोंकूं प्राप्तभयाहै ॥ याकारणतें हम महान्पुण्यवान्हैं ॥ और पूर्वजोहमोंनें अंतःकरणके वाचक हृदयवादिकनाम अद्वितीयआत्माविषे कथनकरेथे ॥ तिनसर्वनामोंविषे प्रज्ञानामहीं अत्यंत शोभायमानहै ॥ काहेतें प्रज्ञा यानामविषे दोशब्दहैं ॥ एकतोप्रशब्दहै ॥ और दूसरा ज्ञाशब्दहै ॥ तहां सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभेदोंतेंरहितताप्रशब्दकाअर्थहै ॥ और ज्ञाशब्दकाप्रकाशअर्थहै तादोनोंशब्दोंकेअर्थ आनंदस्वरूपआत्माविषेहीं घटैहैं ॥ आत्मातेंभिन्न अनात्मवस्तुविषे घटेनहीं ॥ यहां यहअभिप्रायहै ॥ समानजातिवालेपदार्थोंकाजोपरस्परभेदहै ताकूं सजातीयभेदकहैंहैं ॥ जैसे एकब्राह्मणकादूसरे ब्राह्मणतेंभेदहै ॥ तहां ब्राह्मणत्वजाति दोनोंविषेसमानहै ॥ यह सजातीयभेदभी आत्माविषेनहीं ॥ काहेतें आत्माकेसमानजातिवालादूसराकोईआत्माहैनहीं ॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थोंका जोपरस्परभेदहै॥ताकूं विजातीयभेदकहैंहैं ॥ जैसे ब्राह्मणका क्षत्रियतेंभेदहै॥ तहां ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वदोनोंजाति एकअधिकरणमेंरहैंनहीं ॥ यातें परस्परविरुद्धहैं ॥ यहविजातीयभेदभीआत्माविषेरहेनहीं ॥ काहेतें आत्मातेंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं ॥ यद्यपि अनात्माजगत् आत्मातेंविजातीयहै॥ तथापि कल्पितप्रपंचतें आत्माविषे विजातीयभेदसिद्धहोवेनहीं ॥ समानसत्तावालापदार्थहीं भेदकासंपादकहोवेहै ॥ और आपणेविषेस्थितजोभेदहै ताकूं स्वगतभेदकहैंहैं ॥ जैसे एकहीशरीरविषे हस्तपादादिकोंकापरस्परभेदहै ॥ यहस्वगतभेदभी आनंदस्वरूपआत्माविषेनहीं ॥ काहेतें स्वगतभेद सावयवपदार्थोंविषेहोवेहै ॥ और आत्मा निरवयवहै ॥ इसप्रकार तीनभेदतेंरहित और प्रकाशस्वरूप आत्मा प्रज्ञाननामकरिके पूर्वहमोंनें कथनकऱ्याहै ॥ प्रज्ञाशब्दका औरप्रज्ञानशब्दका एकहीं अर्थहै ॥ सोप्रज्ञानशब्दकाअर्थ आनंदस्वरूपआत्माहीं ब्रह्मातेआदिलेकेस्थावरपर्यंत सर्वकेशरीरोंविषे व्यापकहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे संपूर्णकाष्ठोंविषे अग्निस्थितहै ॥ और आकाशादिकजेपंचभूतहैं ॥ और तिनोंकेकार्यजेस्थावरजंगमहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका प्रज्ञारूपनेत्रहीं निर्वाहकहैं॥ ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अस्मदादिकपुरुषोंके मांसमयनेत्र निर्वाहकहैं ॥ यहां इतनाभेदहै ॥ मांसमय

नेत्रतो केवल निमित्तकारणहुए निर्वाहकहैं ॥ और यहप्रज्ञारूपनेत्रतो उपादानकारणहुआ प्रपंचकानिर्वाहकहै ॥ काहेतें संपूर्णजगत्को
आत्मातैंउत्पत्ति और आत्माविषेस्थिति और आत्माविषेहीलय श्रुतिनैं कथनकऱ्याहै ॥ सोउत्पत्तिस्थितिलयकोकारणता उपादानका
रणविषेहीं होवैहै ॥ जैसे घटको उत्पत्ति स्थितिलय मृत्तिकाविषे होवैहै ॥ यातें मृत्तिका घटकाउपादानकारणहै ॥ किंवा ॥ तीनलोकों
केभींतरि सूर्य चंद्रमा अग्नि आदिकोंकाजोप्रकाशहै ॥ सोभी प्रज्ञारूपनेत्रतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु प्रज्ञास्वरूपहै ॥ प्रज्ञास्वरूपचेतन्यतैंबिना
सूर्यादिकोंकीभी सिद्धिहोवैनहीं ॥ यहवातोसंपूर्णप्राणियोंके अनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ काहेतैंसंपूर्णप्राणीमात्र किसीकालविषे किसीदेशविषे
किंचित् किंचित्वस्तुकूं जाणतेहीहैं ॥ सोसंपूर्ण प्रज्ञारूपनेत्रकरिकेजाणेहैं ॥प्रज्ञारूपनेत्रतैंबिना किसीभीवस्तुकाज्ञानहोवैनहीं ॥ अब चेत
न्यरूपप्रज्ञाकी सर्वत्रव्यापकताजनावनेवासते प्रथम वृक्षादिकस्थावरपदार्थोंविषे प्रज्ञाकासद्भाव दिखावैहैं ॥ जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकूं
अन्नादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिके सुखकाज्ञानहोवैहै ॥ तासुखकेज्ञानतैं शरीरकीवृद्धिहोवैहै ॥ और अन्नादिकोंकेअहारकरिके दुःखकाज्ञान
होवैहै ॥ तादुःखकेज्ञानतैं शरीरकाक्षयहोवैहै ॥ तैसे वृक्षादिकोंकोभी जलसिंचनकरिके वृद्धिदेखीतीहै ॥ और मूलादिकोंकेछेदनतैं तथा
अत्यंतउष्णतातैं तथा अत्यंतशीततैं वृक्षादिकोंका क्षयदेखीताहै ॥ सोवृद्धि तथाक्षय सुखदुःखकेज्ञानतैंबिना होवैनहीं ॥ यातैं वृद्धिरूप
हेतुतैं वृक्षादिकोंकेसुखज्ञानका अनुमानहोवैहै ॥ और क्षयरूपहेतुतैं तिनोंके दुःखज्ञानका अनुमानहोवैहै ॥ इसप्रकार स्थावरोंविषे चेत
न्यरूपप्रज्ञा अनुगतहै ॥ और ग्रामके तथावनके जेपशुहैं ॥ तिनोंकी हरिततृणयुक्तहस्तादिकोंकूंदेखिकरिके प्रवृत्तिहोवैहै ॥ और दंडादि
कयुक्तहस्तकूंदेखिकरिके निवृत्तिहोवैहै॥सोप्रवृत्ति सुखसाधनताज्ञानतैंबिना होवैहैनहीं॥किंतु यहवस्तु मेरेसुखकासाधनहै याप्रकारकेज्ञानतैं
प्रवृत्तिहोवैहै॥और सोनिवृत्ति दुःखसाधनताज्ञानतैंबिना होवैनहीं॥किंतु यहवस्तु हमारे दुःखकासाधनहै याप्रकारकेज्ञानतैंनिवृत्तिहोवैहैयह
रीति अस्मदादिकपुरुषोंके प्रवृत्तिऔरनिवृत्तिविषे प्रसिद्धहै॥यातैं प्रवृत्तिरूपहेतुतैं पशुआदिकोंविषे सुखसाधनताज्ञानका अनुमानहोवैहै॥
और निवृत्तिरूपहेतुतैं तिनोंविषे दुःखसाधनताज्ञानका अनुमानहोवैहै ॥ इसप्रकार पिपीलिकातैं आदिलैकेमनुष्यपर्यंत जितनेकजंगम

प्राणीहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका अनुकूलवस्तुविषेप्रवृत्ति ओरप्रतिकूलवस्तुतेंनिवृत्ति रूपव्यवहार समानहैं ॥ यातें संपूर्णजंगम सुखदुःखकेज्ञान वालेहैं ॥ ओर वशिष्ठादिकमुनियोंके तथाब्रह्माआदिकदेवतावोंके सुखदुःखकाज्ञान शास्त्रप्रमाणतें जान्याजावेहे ॥ अथवा चेतनतारूपहे तुतें वशिष्ठादिकोंके सुखदुःखकेज्ञानका अनुमानहोवेहे ॥ जोजोचेतनहोवेहे सो सुखदुःखकेज्ञानवालाहोवेहे ॥ जैसे अस्मदादिकपुरुषहैं ॥ सोचेतनता वशिष्ठादिकमुनियोंविषे तथादेवतावोंविषेभीहे ॥ यातेंतेभी सुखदुःखकेज्ञानवालेहैं ॥ इसप्रकार सर्वप्राणीमात्रविषे जोसुखदुः खका अनुभवहे ॥ सोअनुभवहीं प्रज्ञाशब्दकरिकेकथनकऱ्याहे ॥ ओर सुखविषे तथादुःखविषे कोईभीक्रिया नहींहे ॥किंतु जबपर्यंत सुख दुःखरूपफलकीउत्पत्तिनहींभई ॥तबपर्यंतहीं संपूर्णकारक क्रियाकूंकरेंहैं ॥ सुखदुःखरूपफलकीउत्पत्तितेंअनंतर क्रियाकूंकरेंनहीं॥दृष्टांत॥ जैसे जबपर्यंत तृप्तिरूपफलकीउत्पत्तिनहींभई ॥ तबपर्यंत करताआदिककारकोंनें भोजनरूपक्रियाकरीतीहे ॥ तृप्तिरूपफलकेउत्पन्नहुए विद्यमान कारकोंनेंभी भोजनरूपक्रिया करीतीनहीं ॥ ओर सुखदुःखरूपफलकेभोक्ताजेहमहैं ॥ तिनोंकूं प्रज्ञारूपनेत्रतेंविना सुख दुःख उत्पन्नहोवेनहीं ॥ ओर प्रज्ञारूपनेत्रतेंविना सुखदुःखकीस्थितिभी संभवेनहीं ॥ काहेतें जोप्रज्ञारूपनेत्रतें सुखदुःखभिन्नहोवें॥तो शशशृंगकी न्याईं असत्होवेंगे ॥ यातें प्रज्ञास्वरूपनेत्रतें सुखदुःख भिन्ननहीं किंतुअभिन्नहैं ॥ ओर जैसे अस्मदादिकोंकेसुखदुःख प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ तेसे सर्वदेहधारीजीवोंकेसुखदुःख प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ प्रज्ञातेंअतिरिक्तनहीं ॥ ओर जैसे सर्वदेहधारीजीवोंकेसुखदुःख प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ प्रज्ञातेंभिन्न कियेहुए शशशृंगकीन्याईं असत्होवेंहैं ॥ तैसे जितनाककार्यकारणरूपप्रपंचहे सोसंपूर्ण प्रज्ञास्वरूपहे काहेतें ताप्रज्ञारूपनेत्रकेविद्यमान हूएहीं प्रपंचकास्फुरणहोवेहे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुकेविद्यमानहूए सर्प प्रतीतहोवेहे ॥ रज्जुतेंभिन्नकियाहुआसर्प शशशृंगकीन्याईं असत्होवेहे ॥ तैसे प्रज्ञातेंभिन्नकियाहुआ सुखदुःखादिकप्रपंच असत्होवेहे ॥ शंका ॥ सर्वअर्थोंकाप्रकाशकबुद्धिहे ॥ यातें बुद्धि हीप्रज्ञाहे ॥ समाधान ॥ जैसे सुखदुःखादिकप्रपंच जडहे ॥ यातें आपनीसिद्धिविषे प्रज्ञारूपप्रकाशकीअपेक्षाकरेहे ॥ तैसे बुद्धिभीजडहे ॥ यातें आपणीसिद्धिमें चेतन्यरूपप्रज्ञाकीअपेक्षाकरेहे ॥ ओर पंचभूतोंकेसत्वगुणकाकार्यरूपबुद्धिविषे चेतनकेप्रातीबिं

वग्रहणकरणेकीयोग्यताहै ॥ यातैं बुद्धिविषे प्रज्ञाशब्द गौणहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सूर्यकेप्रकाशविषे प्रकाशशब्द गौणहै ॥ और सर्वप्रकाशों
काप्रकाशक भेदतैंरहित आनंदस्वरूपआत्माविषेहीं प्रज्ञाशब्द मुख्यहै ॥ और मायासहित भूतभौतिकसकलप्रपंचका स्वप्रकाशचेतनक
रिकेहीं प्रकाशहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं श्रुतिनें सर्वप्रपंचकानिर्वाहक प्रज्ञानेत्र कह्याहै ॥ और सोप्रज्ञाही सर्वप्रपंचकेस्थितिकाआधारहै ॥
काहेतैं प्रज्ञा प्रपंचकाउपादानकरणहै ॥ उपादानकरणविषेहीं कार्यकीस्थिति लोकविषेदेखीहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मृत्तिकारूपउपादानकार
णविषेहीं घटकीस्थितिहोवैहै ॥ और यहसंपूर्णजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर स्पष्टनामरूपकरिके प्रज्ञाविषे रहैहै ॥ और
मध्यकालविषे स्पष्टनामरूपकरिके प्रज्ञाविषेरहैहै ॥ यातैं संपूर्णजगत् प्रज्ञारूपउपादानकारणविषे रहैहै ॥ यहाँयहअभिप्रायहै ॥ उपादान
कारण तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतो परिणामीउपादानकारण ॥ और दूसरा आरंभकउपादानकारण ॥ और तीसरा विवर्तउपादानकार
ण ॥ तहाँ चैतन्यरूपप्रज्ञाकूं प्रपंचकेप्रति परिणामीउपादानकारणतातो संभवैनहीं॥काहेतैं प्रज्ञा निरवयवहै ॥ सावयवदुग्धादिकही दधिआ
दिकपरिणामकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ किंवा ॥ परिणामीउपादानकारण कार्यकेसमानसत्तावालाहोवैहै ॥ जैसे दुग्धविषे औरदधिविषे व्यावहारिक
सत्ता अथवा प्रातिभासिकसत्ता समानहै ॥ तैसे चैतन्यरूपप्रज्ञाको औरप्रपंचकी समानसत्तानहीं ॥ किंतु विषमसत्ताहै॥चैतन्यविषेतो पार
मार्थिकसत्ताहै ॥ और प्रपंचविषे व्यावहारिकसत्ताहै ॥ अथवा प्रातिभासिकसत्ताहै ॥ यातैं प्रपंचका परिणामीउपादानकारण प्रज्ञानहीं ॥
और चैतन्यरूपप्रज्ञा प्रपंचकाआरंभकउपादानकारणभीनहीं ॥ काहेतैं आरंभ बहुतपदार्थोंतैंहोवैहै॥एकतैं आरंभहोवैनहीं ॥ जैसे नैयायि
कोंकेमतविषे अनंतपरमाणुमिलिकरिके जगत्काआरंभकरैहैं ॥ और प्रज्ञाएकहै ॥ यातैं जगत्का आरंभकउपादानकारण होवैनहीं ॥
किंतु प्रपंचका विवर्तउपादानकारण प्रज्ञाहै ॥ आपणेवास्तवस्वरूपकूंनत्यागिके जोअन्यथाप्रतीतहोवै ॥ सो विवर्तउपादान कहियेहै ॥
या अर्थकूं दृष्टांतकरिकेस्पष्टकरैहैं ॥ जैसे विशुद्धआकाशविषे गंधर्वनगर औरनीलता प्रतीतहोवैहै और जैसे बालककूं आपणेमनविषेदुः
खकेदेणेहारेराक्षसादिक प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसेचैतन्यरूपप्रज्ञाविषे संपूर्णजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं वेदांतशास्त्रकेजाननेहारेमहात्मा

प्रज्ञाकूं ब्रह्मरूपकरेहैं ॥ काहेतें "प्रज्ञानमानंदंब्रह्म" यामहावाक्यविषे प्रज्ञानकूंब्रह्मस्वरूपकह्याहै ॥ प्रज्ञान औरप्रज्ञाशब्दका एकही अर्थहै ॥ प्रज्ञातेंपृथक् स्थूलसूक्ष्मरूपप्रपंचहैनहीं ॥ यातें प्रज्ञाकूं ब्रह्मस्वरूपता संभवैहै ॥ और जैसे शंकुकरिकेसंपूर्णपत्र व्याप्तहोवैहैं ॥ तैसे चैतन्यस्वरूपप्रज्ञाकरिके देशकालतैंआदिलेके संपूर्णभावअभावरूपप्रपंच व्याप्तहै ॥ और जैसे एकहीआकाश पाताल भूमि स्वर्ग यातीनलोकूंकूं तथातीनलोकतें बाह्यदेशकूं व्याप्यकरिके स्थितहोवैहै॥तैसे चैतन्यरूपप्रज्ञा सर्व जगत्कूं व्याप्यकरिकेस्थितहोवैहै॥ और जैसे आकाशविषे कल्पित जोगंधर्वनगर तथामेघ औरनीलिमा आदिक ॥ तेसंपूर्ण आकाशस्वरूपहैं आकाशतैंपृथक्नहीं ॥ तैसे चैतन्यस्वरूपप्रज्ञाविषे कल्पित जोजडचेतनरूपप्रपंच ॥ सो प्रज्ञास्वरूपहीहै ॥ प्रज्ञातैंपृथक्नहीं ॥ इसप्रकार विचारकरिके संपूर्णअधिकारीजन विवेकवैराग्यआदिकसाधनोंकरिकेसंपन्नहुए जीवब्रह्मकेअभेदकूं निश्चयकरतेभये तानिश्चयकरिके शरीरआदिकोंविषे ॥ अहंअभिमानका परित्यागकरतेभये ॥ और गृहपुत्रादिकोंविषे ममअभिमानका परित्यागकरतेभये ॥ प्रारब्धकर्मकी भोगतैंविना निवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातें प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिवासते इच्छा अनिच्छा परइच्छा पूर्वक भोगोंकूंभोगतेभये ॥ तात्पर्ययह ॥ जीवन्मुक्तहुए सर्व अधिकारीजन विचरतेभये ॥ और जैसे वामदेवमुनि प्रारब्धकर्मकोभोगतैंसमाप्तिकरिके विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया॥ तैसे संपूर्णअधिकारी जन भोगतैंप्रारब्धकर्मकोसमाप्तिकरिके आनंदस्वरूपआत्मा हमहैं याप्रकार अद्वितीयआत्माकाअनुभवकरतेहुए सुखस्वरूपब्रह्मविषे अभेदरूपविदेहमोक्षकूं प्राप्तहोतेभये ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य सनकादिकऋषियोंका औरवामदेव आदिकअधिकारीप्रजाका जो परस्पर संवादरूप इतिहासहै ॥ सोइतराकेपुत्रऋषिनें आपनेशिष्योंकेतांईवेदकेवचनोंकरिकेकथनकऱ्याहै याकारणतें याउपनिषद्काऐत्तरेयनाम है ॥ और याइतिहासकरणेका यहप्रयोजनहै ॥ अध्यायकेआरंभविषे पूर्वयहकह्याथा ॥ अद्वितीयआत्माकाज्ञानजोहै सोईही मोक्षकामार्ग है और आत्मज्ञानहीं पुरुषनें संपादनकरणेयोग्यहै ॥ और सत्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारा आत्मज्ञानहै ॥ यातें आत्मज्ञान सत्यस्वरूपहै ॥ और ब्रह्मस्वरूपहै ॥ ऐसेआत्मज्ञानतें पुरुषोंनें प्रमादनहींकरणा ॥ किंतु ताकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ और आत्मज्ञानकीउपेक्षाकरिके

मोक्षकीप्राप्तिवासते अन्यसाधन मुमुक्षुनें नहींसंपादनकरणे ॥ और जेजेपुरुष याआत्मज्ञानकी उपेक्षाकरतेभयेहैं ॥ तेसंपूर्णदुर्बुद्धिपुरुष प
राभवकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् जैसे लोकविषे एकमल्लका दूसरेमल्लकरिके पराभवहोवैहै ॥ तैसे यहां आत्मज्ञानरहित
पुरुषोंका किसकरिके पराभवहोवैहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य द्वैतकेज्ञानतें श्रुतिनें भयकीप्राप्तिकहीहै॥ यातें अंतर्यामीईश्वरहीं यमराज
कीन्यांई आत्मज्ञानरहितपुरुषोंका पराभवकरणेहाराहै ॥ और माया काकार्यजो अहंममअभिमानरूपसंसारहै ॥ सो यमकिंकरकीन्यांई
आत्मज्ञानरहितजीवोंका पराभवकरणेहाराहै ॥ यातें आत्मज्ञानकूंहीं मुमुक्षुनें अवश्यसंपादनकरणा ॥ याअर्थविषे पुरुषोंकेश्रद्धाकीउत्प
त्तिवासते ऐतरेयमुनि याइतिहासकूं कथनकरतेभये ॥ तात्पर्ययह वामदेवतेंआदिलेके जितनेपूर्वअधिकारीभयेहैं ॥ तेसंपूर्ण आत्मज्ञानक
रिकेही मोक्षकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ याकारणतें इदानींकालकेमुमुक्षुवोंनेंभी मोक्षकीप्राप्तिवासते आत्मज्ञानकूंहीं अवश्यसंपादनकरणा ॥ य
हही इतिहासकहणेका प्रयोजनहै ॥ और मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके जेपुरुष याइतिहासकेअर्थकूं नहींजाणते ॥ तिनपुरुषोंकूं संसाररूपसु
भट हननकरेगा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे व्याध मृगोंकूंहननकरैहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् बाणोंकरिके मृगोंकूं व्याध हननकरैहै यहां संसाररू
पसुभटकोनशस्त्रोंकरिके अज्ञानीजीवोंकूंहननकरैहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य जिनशस्त्रोंकरिके संसारसुभट अज्ञानीजीवोंकूं हननकरैहै॥
सो हम पूर्वविस्तारतेंकहिआयेहैं ॥ तथापि संक्षेपतेंफेरि हम कहतेहैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ प्रथमतो पितामाताकेउदरविषे त्वचा रुधिर मां
स मेद् अस्थि मज्जा वीर्य वासप्तधातुरूपगर्तोंविषे अज्ञानीजीवोंकानिपातनरूप शस्त्रकरिके संसारसुभट हननकरैहै ॥ और गर्भविषेविष्ठा
मूत्रादिकोंकेलेपनरूपशस्त्रकरिके संसारसुभट हननकरैहै ॥ और गर्भविषे बंधनकरणेहारे जे जरायुचर्म तथाअस्थि आदिक बंधनहैं ॥
ताबंधनरूपशस्त्रोंकरिके हननकरैहै ॥ और सर्पकेसमान जेउदरकेकृमिरूपपाशहैं ॥ तापाशरूपशस्त्रोंकरिके हननकरैहै ॥ और उदरविषे
स्थितजोजठराग्नि औरप्राणवायु ॥ तिनोंकरिके उत्पन्नभयेजेदुःसहतापहैं ॥ तिनतापरूपशस्त्रोंकरिके हननकरैहै ॥ और सूक्ष्मउपस्थछि
द्रतेंनिर्गमनरूपशस्त्रोंकरिके अज्ञानीजीवोंकूं संसारसुभट हननकरैहै ॥ और गर्भविषे अनेकजन्मोंकीस्मृतिरूप शस्त्रकरिके औरमूर्छाक

रिके सर्वपदार्थोंकीविस्मृतिरूपशस्त्रकरिके संसारसुभट अज्ञानीजीवोंका हननकरैहै ॥ इसप्रकार गर्भविषे अज्ञानीजीवोंकूं नरकके समान अनंतदुःखोंकीप्राप्तिकरिके पुनः बाल्यअवस्थाविषे असामर्थ्य और पराधीनतारूपशस्त्रकरिके संसारसुभट अज्ञानीजीवोंकूं हननकरैहै ॥ और मोहकरिकेविष्ठा मूत्रादिकोंकाभक्षणरूपशस्त्रकरिके तथाक्रीडाकीअप्राप्तिरूपशस्त्रकरिके संसारसुभट हननकरैहै ॥ और माता पिता अध्यापक आदिकोंतेंभीतिरूपशस्त्रकरिके अज्ञानीजीवोंकूं संसारसुभट हननकरैहै ॥ इसप्रकार बाल्यअवस्थाविषे नरककेसमान अनंतदुःखोंकी प्राप्तिकरिके पुनःयुवाअवस्थाविषे कामदेवनेंकन्याजो चित्तरूपभूमिविषे स्त्रीकीमूर्त्तिकालेखन ॥ तात्पर्य यह ॥वारंवार ॥ चित्तकरिके स्त्रीकास्मरण ॥ तास्मरणरूपशस्त्रकरिके और नानाप्रकारके भ्रमणरूपशस्त्रोंकरिके संसारसुभट अज्ञानी जीवोंकूं हननकरैहै ॥ इसप्रकार युवा अवस्थाविषे अनंतदुःखोंकीप्राप्तिकरिके पुनःवृद्धअवस्थाविषे जराअवस्थाकीप्राप्तितेंउत्पन्नभयेजे नानाप्रकारकेकासश्वासादिकरोग ॥ तारोगरूपशस्त्रोंकरिके अज्ञानीजीवोंकूं संसारसुभट हननकरैहै ॥ इसप्रकार वृद्ध अवस्थाविषे अनंत दुःखोंकोप्राप्तिकरिके पुनःमरणअवस्थाविषे कालसर्पकरिकेग्रसनरूपशस्त्रकरिके तथायमकिंकररूपशस्त्रोंकरिके अज्ञानीजीवोंकूं संसार सुभट हननकरैहै ॥ इसप्रकार मरणअवस्थाविषे अनंतदुःखोंकीप्राप्तिकरिके पुनःनरकविषे नानाप्रकारकेआयुधोंकापरिहाररूपशस्त्रकरि के और पृथिवीजलआदिकोंकेविकार जेअनंतनरकहैं तानरकोंकीप्राप्तिरूपशस्त्रकरिके आत्मज्ञानरहितपुरुषोंकूं संसारसुभट हननकरैहै ॥ और स्वर्गतेंनीचेपतनरूपशस्त्रकरिके संसारसुभटहननकरैहै ॥ इसप्रकार परलोक विषे अनंतप्रकारकेदुःखोंकी प्राप्तिकरिके पुनःमनु ष्यलोकविषे देहादिकोंकोप्राप्तिवासते पितामाताकेगर्भविषेप्रवेशरूप शस्त्रोंकरिके आत्मज्ञानरहितजीवोंकूं संसारसुभट हननकरैहै ॥ औ र जैसे लोकविषेएकमल्लदूसरेनिर्बलमल्लकूं कभीनीचेगिडावैहै ॥ और कभी ऊपरिगेडैहै ॥ औरकभी पूर्वपश्चिमआदिकअष्टदिशाओंविषे गेडैहै ॥ और आपणेभुजारूपशस्त्रोंकरिके ताकूं मर्दनकरैहै ॥ याप्रकार ताकापराभवकरैहै ॥ तैसे यहसंसारसुभटभी आत्मज्ञानतेंरहित दीनजीवोंकूंचौरासीलक्षशरीररूपदशदिशाओंविषे गिडावताहुआ औरपूर्वउक्तपितामाताकेशरीरविषे प्रवेशआदिकशस्त्रोंकरिकेमर्दनकर

ताहुआअज्ञानीजीवोंका पराभवकरैहै ॥ जैसे यूकादिकक्षुद्रजंतुकेपराभवकरणेमे अस्मदादिकपुरुषोंकूं आयास नहींहोवैहै तैसे आत्मज्ञा
न तैंरहित पुरुषोंकेपराभवकरणेमैं संसारसुभटकूंभी किंचित्मात्र आयासनहींहोवैहै ॥ हेशिष्य संसारसुभटनैं प्राप्तकरेजे जन्ममरणआदि
कपराभवहैं ॥ तिनपराभवोंकूं जेजेपुरुष जाणतेहैं ॥ और तिनपराभवोंकेज्ञानकाफळ जोवैराग्यहै ताकूं जेपुरुष संपादनकरैहैं ॥ तेसुभट
पुरुषहीं यावेदांतशास्त्रकेअर्थकूंजाणतेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जबपर्यंत आत्माकासाक्षात्कारनहींभया ॥ तबपर्यंतही संसारसुभट यूकादिक
क्षुद्रजंतुकीन्यांई जीवोंका पराभवकरैहै ॥ और जब याजीवकूं गुरुमुखतें वेदांतकेश्रवणआदिकोंकरिकै आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ त
न क्षुद्रजंतुकीन्यांई संसारहीं पराभवकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ऐतरेयउपनिषद्काअर्थजीवब्रह्मकाअभेदहै ॥ यह आपनैं पू
र्वकह्या ॥ सो हमारीबुद्धिविषे आरूढहोवैनहीं ॥ काहेतें दूसरेउपनिषद् जीवब्रह्मकेअभेदरूपअर्थकूं बोधनकरैहैं अथवा भेदकूंबोधनकरैहैं
यहसंशय हमारेकूंहोवैहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य सर्वउपनिषद् जीवब्रह्मकेअभेदकूंहीं बोधनकरैहैं ॥ जीवब्रह्मकेभेदमैं किसीउ
पनिषद्का तात्पर्यनहीं ॥ तहाँ प्रथम ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषदकाअर्थ जीवब्रह्मकाअभेद तुमारेताई हमनैं कह्या ॥ अब ऋग्वेदकाजो
कौषीतकीउपनिषद्है ताकरिकै कथनकऱ्याजोअर्थहै ॥ सोभी तेरेकूं श्रवण करणेयोग्यहै ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्वामि
उद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतात्मपुराणे ऐतरेयार्थप्रकाशोनाम प्रथमोऽध्यायःसमाप्तः ॥१॥
श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेप्रथमोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेप्रथमोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेद्वितीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥
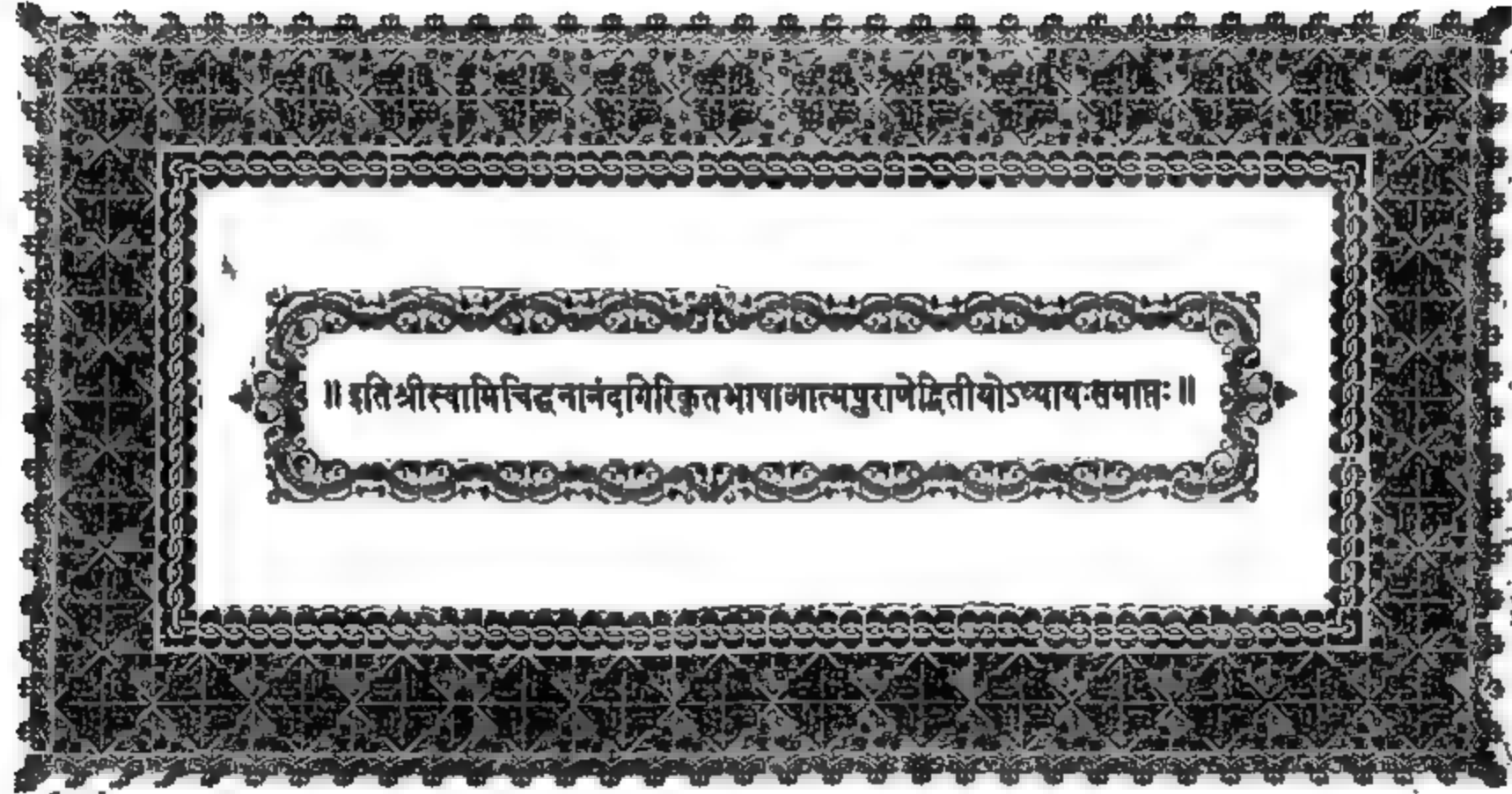
णाकाअभावकथनकऱ्याहे ॥ तहाँ यहप्रसंगहे ॥ आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरणेहारेजेगुरुहैं ॥ तिनोंकेताईं जोशिष्य समुद्रपर्यंत पृथिवी दक्षिणा देवे ॥ तोभी आत्मज्ञानकेसमान सोदक्षिणा नहींहोवेहे ॥ यातें आत्मज्ञानहींसर्वतेंअधिकहे ॥ किंवा ॥ लोकविषेभी गुरुशब्द अधिकअर्थ कावाचकहोवेहे ॥ सोसर्वतेंअधिक अद्वितीयआत्माहे ॥ यातें ताअद्वितीयआत्माकूंविषयकरणेहारा आत्मज्ञानभी अधिकहे ॥ यातें यह सिद्धभया ॥ जिसकूंअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारभयाहे ॥ सोईहीगुरुपदवीकेयोग्यहे ॥ और जिनोंकूं आत्माकासाक्षात्कारनहींहे ॥ ते संपूर्ण शिष्यपदवीकेयोग्यहैं ॥ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे कौषीतकीसारार्थप्रकाशे इंद्रप्रतर्दनाख्यानंनाम द्वितीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥

इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेद्वितीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे द्वितीयाऽध्याय प्रारंभः ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ द्वितीयाध्यायप्रारंभः ॥ तहाँ प्रथमअध्यायविषे ऋग्वेदकाजोऐतरेयउपनिषद्है ताकेअर्थकूंनिरूपणकऱ्या ॥ अबद्वितीयअध्यायविषे ऋग्वेदकाजोकौशीतकीउपनिषद्है ताकेअर्थकूं निरूपण करैंहैं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य मैंकहूं यहजो जीवब्रह्मकेअभेदकाज्ञानहै ॥ सोयद्यपि अनंतकोटीजन्मोंकरिकेभीदुर्लभहै ॥ तथापिविवेकीपुरुषोंनें गुरुकीसेवा तथाश्रद्धाआदिकसाधनोंकरिके पाईताहै ॥ और याआत्मज्ञानतेंविना कोईभीपदार्थ मनुष्योंकाहिततमनहीं ॥ आत्मज्ञानहीं अत्यंतहिततमहै ॥ काहेतें निरतिशयसुखकोप्राप्तिका तथामूलसहितसर्वदुःखकोनिवृत्तिका आत्मज्ञानहीं साधनहै ॥ आत्मज्ञानतेंभिन्नसर्वपदार्थबंधनकेकारणहैं ॥ हेशिष्य याअर्थविषे पूर्व प्रतर्दनराजाकाइंद्रकेसाथिसंवादरूप इतिहास कथनकऱ्याहै ॥ ताइतिहासकूं तुम श्रवणकरो ॥ श्रीकाशीजीविषे दिवोदासनामाराजा पूर्वहोताभया ॥ तादिवोदासराजाकापुत्र प्रतर्दननामाराजाहोताभया ॥ सोकैसाप्रतर्दनराजाहै॥बाहरिकेजेराजाआदिकशत्रुहैं ॥ और भींतरिकेजेकामक्रोधादिकशत्रुहैं ॥ तेसंपूर्णशत्रु जिसनेंजीतेहैं ॥ और क्षत्रियोंकेधर्मविषे सर्वदा जिसकोप्रीतिहै ॥ सोप्रतर्दनराजा धर्मयुद्धकरिके पृथिवीकेसंपूर्णराजाओंकूं जीतताभया ॥ तिसतेंअनंतर देवताओंकेजीतणेवासतै सोप्रतर्दनराजा एकलाही धनुषकूंलेकरिके स्वर्गकूंजाताभया॥ तहाँ स्वर्गकेद्वारेऊपरिजाइकेस्थितहुआ॥ और इंद्रकेपासि दूतकूंभेजताभया ॥प्रतर्दनउवाच॥हेदूत देवराजइंद्रकूंहमारा यहसंदेसाजाइकेकहो ॥ अथसंदेसवचन ॥ हेदेवराज यद्यपि संपूर्णलोक तुमारेकूं देवताओंकाइंद्रकहैंहैं ॥ और हमारेकूं मनुष्योंकाइंद्रकहैहैं ॥ तथापि तुमहमदोनोंविषे इंद्रतासंभवैनहीं ॥ काहेतें परमऐश्वर्यवान्जोहोवै सो इंद्रकहियेहै ॥ जाऐश्वर्यकेसमान तथाअधिक दूसराऐश्वर्यनहोवै सो परमऐश्वर्यकहियेहै॥ऐसापरमऐश्वर्य एकविषेहींसंभवैहै॥ दोनोंविषेसंभवैनहीं ॥ यातें तुमारेहमारेविषे इंद्रशब्द मुख्यनहीं किंतुगौणहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे देवदत्तपुरुष सिंहहै यास्थानविषे सिंहशब्द मृगराजपशुविशेषविषेतौ मुख्यहै ॥ और देवदत्तपुरुषविषे गौणहै ॥ और हेदेवराज तुमारेतेंभिन्न जितनेराजे पृथिवीविषेस्थितहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूंहम जीतिआयेहैं ॥ आपणेइंद्रभावकेगौणताकीनिवृत्तिवासतै तुमारेजीतणेकीइच्छाकरिके हम स्वर्गविषेआयेहैं ॥ यातें हेदेवराज हमारेसाथियु

द्धकरणेवासतें सेनाकूंलेकरिकै शीघ्रहींतुमआवो ॥ अथवा अकेलेआवो ॥ और जोयुद्धकरणेकातुमारेकूंसामर्थ्यनहींहोवे ॥ तो हमारेसमी
पआइकै ऐसावचनकहो जोहमपराजयकूंप्राप्तभये ॥ यादोनुंवार्ताविषे जोतुमारीइच्छाहोवैसोकरो॥ और धनुषहैदूसरासहायकजिसका ऐसा
जोमैंप्रतर्दनहूं सो तुमारेप्रियधामस्वर्गकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यामेरेप्रभावकूं विचारिकरिकै जोतुमारेकूंउचितहैसोकरो ॥ इसप्रकार प्रतर्द
नराजाकरिकैकह्याहुआदूत देवसभाविषेजाताभया ॥ तहां देवराजइंद्रकूंनमस्कारकरिकै प्रतर्दनराजाकेसंदेसवाक्यकूं दूत कहताभ
या ॥ कैसासोइंद्रहै ॥ सुधर्मानामादेवसभाविषेस्थितहै ॥ और सूर्यकोन्याई जाकातेजहै और संपूर्णदेवतावोंकरिकैपरिवेष्टितहै ॥ दू
तउवाच ॥ हेभगवन् सर्वलोकोंका औरसंपूर्णलोकपालोंका आपहीं एकस्वामीहो ॥ परंतु एककिंचित्वार्ता हम तुमारेप्रति कथनकरैंहैं
भूमिलोकविषे काशीनामाएकमहान्देशहै ॥ सो तुमारेस्वर्गतैंभी अत्यंतरमणीकहै ॥ काहेतें देवतावोंकीनदीजोश्रीगंगाजीहै ॥ सो
स्वर्गकोउपेक्षाकरिकै श्रीकाशीनामादेशकूंगमनकरैहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ जो स्वर्गतेंभीकाशीनामादेश रमणीकहै ॥ तहां
श्रीगंगाजीकेतीरविषे श्रीकाशीनाम्नीपुरीविद्यमानहै ॥ सोकैसीहैकाशीपुरी ॥ श्रीमहादेवकेत्रिशूलकपरिस्थितहै ॥ और आपणीशोभा
करिकै स्वर्गकाभी तिरस्कारकरणेहारीहै ॥ और जिसकाशीविषे मृत्युकूंप्राप्तभये अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज यहचारिप्रकारकेजीव
महादेवकेतारकमंत्रउपदेशतें आत्मज्ञानद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और काशीकेमरणेतैं वेदपाठीब्राह्मण जोमोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसी
हीमोक्षकूं कृमिपतंग आदिक्षुद्रजंतु प्राप्तहोवैहैं ॥ और जोकाशीपुरीविषे भगवान् महादेव विराजमानहैं ॥ कैसेहैं सोभगवान् महादेव ॥
सर्वप्राणीमात्रका आत्मस्वरूपहैं ॥ और संपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लयकूंकरणेहारेहैं ॥ और भवानीकाजोहृदयरूपकमलहै ताके
प्रफुल्लितकरणेहारे सूर्यहैं ॥ और कर्पूरकेसमान जिनोंकागौरवर्णहै ॥ और भगवान्महादेवकूंनमस्कारकरणेहारे जैसंपूर्णतुमदेवताहो ॥
तिनदेवतावोंनैं अपनेमस्तकविषेस्थितरत्नयुक्तभूषणोंकीकिरणावोंकरिकै जोमहादेवकेचरणकमल प्रकाशमानकरैहैं ॥ और जोभगवान्
महादेवकेउपकारकूंमानतेहुए संपूर्णमुनि और चारोवेद वारंवार जोमहादेवकावर्णनकरैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे महाराजाकूं बंदी

ओर चारण वर्णनकरेंहैं ॥ यहाँयहतात्पर्यहै ॥ जैसे राजा बंदीचारणोंऊपरि धनकोप्राप्तिरूपउपकार करेहै ॥ याकारणतें बंदी ओर चारण राजाकावर्णनकरेंहैं ॥ तैसे महादेवभी मुनियोंऊपरि ब्रह्मविद्याकोप्राप्तिरूपउपकार करेंहैं ॥ याकारणतें मुनि भगवान्महादेवकावर्णनकरेंहैं ओर वेदोंऊपरि प्रमाणताकोप्राप्तिरूपउपकारकूं भगवान्महादेव करेंहैं ॥ याकारणतें वेद ताकावर्णनकरेंहैं ॥ काहेतें फलवान्अर्थकेबोधनकरिकेहीं वेदोंकूंप्रमाणताशास्त्रविषेकहीहै ॥ अनात्मवस्तुकेज्ञानतें सुखकोप्राप्तिरूपफल अथवादुःखकीनिवृत्तिरूपफल प्राप्तहोवे नहीं ॥ यातें अनात्मवस्तुकेबोधनकरिके वेदोंविषे प्रमाणतासिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु ॥ सर्वांतर्यामीमहादेवकेज्ञानतेंहीं सुखकीप्राप्तिओर दुःखकीनिवृत्तिरूपफलहोवेहै ॥ यातें भगवान्महादेवकेबोधनकरिकेहीं प्रमाणताकूं वेद प्राप्तहोवेंहैं ॥ पुनःसोमहादेवकेसेहैं ॥ जिसकीइच्छामात्रकरिकेब्रह्मातेंआदिलेकेसंपूर्णदेवता याजगत्विषे अनंतवार प्रादुर्भावकूं तथा तिरोभावकूं प्राप्तहोवेंहैं॥ओर जोमहादेवकीप्राप्तिकीइच्छाकरिके हिमाचलकीपुत्रीपार्वतीदेवी उग्रतपकूंकरतीभयीहै ॥ सो केसीपार्वतीहै ॥ संपूर्णस्त्रियोंविषे प्रधानहै ॥ ओर पूर्वजन्मविषेभी सतीरूपकरिके भगवान्महादेवकीस्त्रीहै ॥ ओर जिसभगवान्महादेवके सेनानी ओर गणेश दोनों महाबलवान्पुत्रहैं ॥ ओर जयकरिकेशोभायमान जेप्रमथगणप्रधानहैं ॥ ते जिसमहादेवकेसेनापतिहैं ॥ ओर जिसमहादेवकेनामग्रहणतें यहजीव संसाररूपदुःखकूंनहींप्राप्तहोवेहै ॥ ओर जिसमहादेवकेचरणकमलकेपूजनतें पुरुषोंकूं मनवाञ्छितफलकीप्राप्तिहोवेहै ॥ यहवार्ता शिवपुराणविषे व्यासभगवान्नेंभीकहीहै ॥

॥ श्लोक ॥ महादेवमहादेव महादेवेतियोवदेत् ॥ एकेनैवभवेन्मुक्तिर्द्वाभ्यांशंभुर्ऋणीभवेत् ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष श्रद्धाकरिके महादेव महादेव महादेव याप्रकार तीनवार महादेवकेनामकूंउच्चारणकरेंहैं ॥ तिसपुरुषकूं एकनामकरिकेतो मुक्तिरूपफलकीप्राप्ति महादेव करेंहै ॥ ओर दोनोंनामोंकरिके महादेव भक्तोंकेऋणीहोवेंहैं ॥ काहेतें मुक्तितेंअधिककोईपदार्थ जगत्विषेहैनहीं ॥ जिसकीप्राप्तिकरिके महादेव ऋण तेंरहितहोवें ॥ १ ॥ पुनःसोमहादेवकेसेहैं ॥ ब्रह्मांडविषेस्थित जेविषयभोगहैं तिनभोगोंकीइच्छातेंरहितहैं ॥ ओर ब्रह्मविद्याकेसमुद्रहैं ॥ ओर सर्वदाशुद्धहैं ॥ ओर चित्तकेनिरोधकूंकरणेहारेसर्वयोगीजनोंकेगुरुहैं ॥ ओर जिसभगवान् महादेवतें संपूर्णजगत्

उत्पन्नहोवैहै ॥ और जिसभगवान्महादेवविषे संपूर्णजगत् स्थितहै ॥ और जिसमहादेवविषे संपूर्णजगत् लयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसे भगवान्महादेवकेगुणोंकूं वर्णनकरणेमे कौनप्राणी समर्थहै ॥ किंतु कोईभीसमर्थनहीं ॥ ऐसेभगवान्महादेव जिसकाशीपुरीविषे विद्यमा नहैं ॥औरमुक्तिकेदेणेहारियांजे अयोध्यापुरी १ मथुरापुरी २ मायापुरी ३ काशीपुरी ४ कांचीपुरी ५ अवंतिकापुरी६द्वारकापुरी७यहसप्तपुरि यांहैं॥ तिनोंकेमध्यमे श्रीकाशीपुरीकाहीअधिकसौभाग्य संपूर्णजीवोंनें अनुभवकरीताहै ॥ काहतें काशीपुरीविषे भोगमोक्षदोनोंकी सुल भताहै ॥ और हेदेवताओ तुमारीजोअमरावतीपुरीहै ॥ सोभी काशीपुरीकेसमाननहीं ॥ काहतें तुमारीपुरीविषेप्राप्तभयेजीवोंकूं भूमिलो कविषेगिरनेंका सर्वदाभयरहैहै ॥ और नागोंकीजोभोगवतीपुरीहै ॥ सोभी श्रीकाशीपुरीकेसमाननहीं ॥ जभी तुमारीअमरावती पुरी औरनागोंकीभोगवतीपुरी काशीपुरीकेसमाननहींभयी ॥ तभी अन्यपुरियोंकीक्याकथाहै ॥ और काशीपुरीकूं श्रीगंगाजी सर्वदासेवनकरैहैं ॥ और भगवान्महादेव सर्वदा जिसकाशीपुरी विषेरहैहैं ॥ और सर्वपुरियोंतें सौभाग्यकी जाविषेअधिकताहै ॥ या कारणतें याकूं काशीपुरीकहैहैं ॥ प्रकाशमानकानामकाशीहै ॥ ऐसीकाशीपुरीकाराजा दिवोदासनामा सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ सोकैसा दिवोदासराजाहै ॥ संपूर्णशत्रु जिसनैंजीतेहैं ॥ और आपणीप्रतिज्ञाकूंसत्यकरणेहाराहै ॥ और क्षत्रियोंकेधर्मोंविषे जाकीप्रीतिहै ॥ और हस्ति अश्व रथ पदाति यहचारिप्रकारकीसेनाकरिकैयुक्तहै ॥ और आपभी सोदिवोदासराजा अतिबलवान्है ॥ और यज्ञादिककर्मोंविषेत त्परहै ॥ याकारणतें तुमदेवताओंकूंभी प्रसिद्धहै ॥ ऐसादिवोदासराजा श्रीकाशीपुरीविषेस्थितहै ॥ और तादिवोदासराजाकापुत्र प्रतर्दन नामाराजाभी अतिप्रसिद्धहै ॥ सोकैसाप्रतर्दनराजाहै ॥ संपूर्णशुभगुणोंकरिकै आपणेपिता तथापितामह आदिकोंकेसमानहै ॥ औरसंपूर्ण प्राणीमात्रविषे जाकीकृपादृष्टिहै ॥ और याप्रतर्दनराजाके पर्वतकेसमान अनेककोटीहस्तीहैं॥ और सूर्यकेअश्वसमान अनंतगुणयुक्त अश्व भी अनंतकोटीहैं ॥ औरपुरारिकेरथसमान महाशब्दकेकरणेहारे रथभी अनेककोटीजिसकेहैं ॥ और बलकरिकैआपणेसमान पदातिभी असंख्यातहैं॥और यहप्रतर्दनराजा शस्त्रविद्याविषेभी अतिकुशलहै ॥ और युद्धविषेछलतेंरहितहै ॥ और यहप्रतर्दनराजा यद्यपि महादेव

केप्रसादतैं संपूर्णअस्त्रोंके प्रयोगरूपसंधानकूं जाणेंहै ॥ और निर्मोक्षरूपविसर्गकूंजाणेंहै ॥ और अस्त्रोंकीमर्यादारूपस्थितिकूंजाणेंहै ॥ और उपसंहाररूपसंहृतिकूंजाणेंहै ॥ तथापि यहप्रतर्दनराजा किसीऊपरि अस्त्रकूंचलावतानहीं॥काहेतैं जोअस्त्रकरिके पुरुष हननभया ॥ सो मेरे करिकेहनननहींभया ॥ जैसे कोईअसमर्थपुरुष श्येनयज्ञरूपअभिचारकरिके शत्रुकानाशकरैहै ॥ तिसकेसमानहीं अस्त्रकरिकेशत्रुकानाश करणाहै ॥ यातैं अभिचारऔरअस्त्रविषे किंचित्मात्रभी विशेषतानहीं ॥ ऐसाविचारकरिके यहप्रतर्दनराजा अस्त्रोंकरिकेशत्रुकूंनहींहननकरैहै ॥ किंतु शत्रुकूं जैसीयुद्धकीइच्छाहोवैहै ॥ तैसीहीयुद्धकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहप्रतर्दनराजा शत्रुकरिकेताडनकियाहुआ प्रथम शत्रुकूंनहीं हननकरैहै ॥ किंतु शत्रुकरिकेताडनकियाहुआ पश्चात् शत्रुकूंहननकरैहै ॥ और शत्रुकरिकेप्रथमताडनकियाहुआभी यहप्रतर्दनराजा पंचासवर्षतैंऊपरिआयुप्रवालेशत्रुकूं नहींहननकरैहै॥तथा षोडशवर्षतैंन्यूनआयुप्रवालेशत्रुकूंभी नहींहननकरैहै ॥ काहेतैं शूरवीरोंकेव्रतकूं जिस प्रतर्दनराजानैं धारणकर्याहै॥शूरवीरकेधर्म धनुर्वेदविषेकहेहैं ॥श्लोक॥ मूर्छितंनैवविकलं नाशस्त्रंनान्ययोधिनम्॥पलायमानंशरणं गतंनैवच हिंसयेत् ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ मूर्छाकूंप्राप्तभयेशत्रुकूं तथाव्याकुलकूं तथाशस्त्ररहितकूं तथाअन्यकेसाथियुद्धकरणहारेकूं तथापलायमानकूं तथाशरणागतकूं इतनेपुरुषोंकूं शूरवीर हननहींकरै ॥ २ ॥ और याप्रतर्दनराजाका दूसराव्रतहै ॥ ब्राह्मणोंका तथादेवतावोंका औरगौवोंका तथावृषभोंका कदाचित्भी अपमाननहींकरता ॥ और हेदेवराजयाप्रतर्दनराजाका दूसराव्रतहै ॥ अहंकारकरिकेयुक्त औरक्षत्रधर्मविषेस्थित देवताहोवैं अथवा ब्राह्मणहोवैं अथवा आपणापितापितामहहोवैं तिनसंपूर्णोंकूं आपणेबलकरिके मैंजीतोंगा ॥ याप्रकारकेव्रतकरिकेयुक्त प्रतर्दनराजाकेसमीप एककालविषे नारदादिकमुनि जातेभये ॥ और कदाचित् प्रसंगपाईके प्रतर्दनराजाकेप्रति याप्रकारकेवचनकूंकहतेभये ॥ हेप्रतर्दनराजा ॥ संपूर्णपृथिवीकेराजे तुमनैं जीतेहैं ॥ परंतु इंद्रादिकदेवता क्षत्रधर्मकरिके संपूर्णपृथिवीके राजावोंतैं बलवान्हैं ॥ काहेतैं तिनदेवतावोंकेसाथियुद्धकरणेकूं असुर तथा दानव तथा दैत्य कोईभीसमर्थनहीं ॥ जभी असुर दानव दैत्यभी देवतावोंकेसाथि युद्धकरणेकूंसमर्थनहींभये ॥ तभी मनुष्योंकीक्याकथाहै ॥ और यालोकविषे एकइंद्रकूंभी जीतणेवि

पे कोईसमर्थनहीं ॥ तो संपूर्णसेनाकरिके तथालोकपालोंकरिके युक्तइंद्रकूं कौन जीतणेमेंसमर्थहोवै ॥ किंतु कोईभी इंद्रकेजीतणेमें समर्थनहीं ॥ इसप्रकार नारदादिकमुनियोंकेवचनकूंश्रवणकरिके औरआपणेप्रतिज्ञारूपव्रतकूंस्मरणकरिके सो प्रतर्दनराजा ॥ देवतावोंकेसाथियुद्धकरणेवासते उत्साहकरिके अकेलाहीस्वर्गकूंआताभया ॥ हेदेवराज ॥ सोप्रतर्दनराजा यहाँआइके तुमारीपुरीकेद्वार ऊपरि समानपृथिवीविषेस्थितहै ॥ और सोप्रतर्दनराजा मुझदूतकूंबुलाइकरिके तुमदेवतावोंकेसमीपभेजताभयाहै ॥ जोप्रतर्दनराजानें ह हमारेकूं संदेसवचनकह्याथा ॥ सोसपूर्ण हमनें तुमारेतांई कह्या ॥ अगेजैसीतुमारीइच्छाहोवै तैसाकरो ॥ इसप्रकार संपूर्णसंदेसवचनकूं देवराजइंद्रकेतांई दूतकथनकरताभया ॥ इसप्रकार दूतकेवचनोंकूंश्रवणकरिके औरप्रतर्दनराजाकेअभयरूपपुरुषार्थकूंविचारिकरिके देव राजइंद्रभी अतिविस्मयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और आपणेक्षत्रधर्मकूंस्मरणकरिके क्रोधयुक्तहोताभया ॥ और संपूर्णदेवतावोंकूंसाथिलेके शी घ्रहीं आपणीपुरीतैंबाहरि निकसताभया ॥ और युद्धकरणेवासतेप्राप्तभयेजेसंपूर्णइंद्रादिकदेवता तिनोंकूंदेखिकरिके सोप्रतर्दनराजाभी तिसस्थानतैंनहींचलायमानहोताभया ॥ और सोप्रतर्दनराजा इंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र हेसंपूर्णदेवतावो तुम तीक्ष्णबाणोंकरिके प्रथम हमाराहननकरो ॥ पश्चात् हमतीक्ष्णबाणोंकरिके तुमाराहननकरैंगे ऐसीहमारीप्रतिज्ञाहै ॥ इसप्रकार प्रतर्द नराजाकावचन श्रवण करिके इंद्रसहितसंपूर्णदेवता क्रोधकरिकेमूर्छितहोतेभये ॥ और कुंडलाकारसेनाकीरचनाकरिके प्रतर्दनराजाकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरतेभये ॥ और याप्रतर्दनराजाकूंहननकरो और बांधो याप्रकारकेवचनकूं परस्पर देवता उच्चारणकरतेभये ॥ और तहाँ युद्धविषे नानाप्रकारकेवादित्रोंकेशब्द प्रकटहोतेभये ॥ और संपूर्णइंद्रादिकदेवता ॥ क्रोधयुक्तहुए प्रतर्दनराजाऊपरि बाणोंकी वर्षाकरतेभये ॥ जैसे बादल पर्वतऊपरि जलकोवर्षाकरैहैं ॥ तादेवतावोंकेबाणोंकरिके प्रतर्दनराजाकाशरीर भेदनहोताभया ॥ पश्चात् सोप्रतर्दनराजाभी शीघ्रही तीक्ष्णबाणोंकरिके संपूर्णदेवतावोंकूं हननकरताभया ॥ ताप्रतर्दनराजाकेबाणोंकरिके कितनेदेवतावोंकीभुजा भेदनहोतियांभैयां ॥ और कितनेदेवतावोंकेस्तन भेदनहोतेभये ॥ और कितनेदेवतावोंकेमस्तक भेदनहोतेभये ॥ इसप्रकार देवतावों

कोसेनाविषे कोईभीदेवता प्रतर्दनराजाकेबाणकरिकेअविद्धनहींरह्या ॥ किंतु संपूर्णदेवता बाणोंकरिकैविद्धहोतेभये ॥ और भुजाविषेबा
णोंकेप्रहारतैंउत्पन्नभईजोपीडा ॥ तापीडाकरिकेदुःखीहुएसंपूर्णदेवतावोंकेभुजातैं नानाप्रकारकेआयुध भूमिविषे गिडतेभये ॥ और युद्ध
विषे प्रतर्दनराजा किसीदेवताकूं शतबाणोंकरिके वेधनकरताभया ॥ और किसीदेवताकूं पंचासबाणोंकरिके वेधनकरताभया ॥ और
देवराजइंद्रकूंतौ सहस्रबाणोंकरिके वेधनकरताभया ॥ और भूमिविषेमिडिपडेहैंआयुधजिनोंके ऐसेदेवतावोंकूंदेखिकरिके सोप्रतर्दन
राजा आपणेधनुषकेरज्जुकूंउतारताभया ॥ और देवराजइंद्र याप्रकारकेमहान् आयुधकूंदेखिकरिके और प्रतर्दनराजाकेपुरुषार्थकूंदेखि
करिके विस्मयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और प्रतर्दनराजाकेप्रति इंद्र कहताभया ॥ हेपृथिवीकेपतिप्रतर्दनराजा ॥ तुमारेयुद्ध और पुरुषार्थक
रिके मैं बहुतसंतुष्टभयाहूं ॥ यातैं जिसवरकीतुमारेकूंइच्छाहोवे ॥ सोवर तूं हमारेतैंमांग ॥ इसीकालविषे सोवर मैं तुमारेताई देवोंगा ॥
हेप्रतर्दन तुमारेयुद्ध और पुरुषार्थकेसमान किसीकायुद्ध और पुरुषार्थ हमनें नहींदेख्या ॥ तेरेतैंविना ऐसाकौनसमर्थहै ॥ जो देवतावों
सहितहमारेकूं स्वर्गविषेआइके पराजयकरे ॥ और संपूर्णदेवतावोंकूं एकक्षणविषे तीक्ष्णबाणोंकरिकेभेदनकरे ॥ किंतु तूंहीऐसासमर्थहै ॥
इसप्रकार जभी देवराजइंद्रनैंकह्या ॥ तभी सोप्रतर्दनराजा इंद्रकेताई दंडवत्प्रणामकरताभया ॥ और याप्रकारवचन कहताभया ॥ हेदे
वराज तुमनैं जोयहवचनकह्या ॥ जो देवतावोंकेसहितमुझइंद्रकूं तुमनैं जयकरा यावचनकरिके तुमनैं हमारेप्रतिज्ञारूपवचनकूंपूर्णकऱ्या॥
और हेदेवराज मुझ दुर्बुद्धिबालककेअपराधकूं तुमक्षमाकरो ॥ काहेतैं जेतुमदेवता पुष्पोंकरिकेभीताडनकरणेयोग्यनहींहो ॥ तिनदेवता
वोंकूं तीक्ष्णबाणोंकरिके हमनैं ताडनकऱ्याहे ॥ यातैं यहहमारा महान् अपराधहै ॥ और हेदेवराज हमारेकरिकेपूजणेयोग्य जेहमारेपि
तापितामहआदिकहैं ॥ तिनोंकरिकेंभी तुमदेवता पूजणेयोग्यहो ॥ यातैं हमारेकरिकेतौ अत्यंतपूजनेयोग्यहो ॥ और हेदेवराज तुम
देवता सत्वगुणकरिकेयुक्तहो ॥ याकारणतैंहीं हमारेअपराधकूंनविचारकरिके आपनें हमारेताई वरदेनेकाउद्यमकऱ्याहे ॥ और हमम
नुष्य रजोगुणकरिकेयुक्तहैं ॥ याकारणतैं देवतावोंकेहननरूपपापविषे हम प्रवृत्तभयेहैं ॥ और हेदेवराज सर्वविषेआत्मदर्शी जेसाधुजनहैं ॥

तिनोंकूं यहवस्तु हमाराहै औरयहवस्तुपरकाहै याप्रकारकीविषमबुद्धि कभीनहींहोती याकारणतैंहीं हमअपराधीविषे तुम वरकूंदेतेहो ॥ और हेदेवराज यालोकविषे आपसरीसेमहात्माहीं पुरुषोंविषेउत्तमपुरुषहैं ॥ काहेतैं जोहमसरीसेअपकारीपुरुषोंविषेभी तुमदेवता उपकारकरोहो ॥ अपकारीविषे उपकारकरणा यहही उत्तमपुरुषोंकालक्षणहै ॥ और हेदेवराज जैसे स्तंभोंनैं गृहकूंधारणकरीताहै ॥ तैसे अपकारीपुरुषोंविषे जेउपकारीपुरुषहैं ॥ तिनोंनैं स्तंभकीन्यांई तीनलोकोंकूंधारणकरीताहै ॥ और हेदेवराज उपकारीपुरुषों विषे संपूर्णपुरुष उपकारकूंकरैहैं यह लौकिकपुरुषोंविषेप्रसिद्धहै ॥ परंतु हमसरीसेअपकारीपुरुषोंविषे आपसरीसेकोईमहात्माही उपकारकूंकरैहैं ॥ और हेदेवराज हममनुष्य रजोगुणकरिकेयुक्तहैं ॥ याकारणतैं लोकविषे आपणेहितकूं तथाआपणेअहितकूं हम नहींजाणते ॥ काहेतैं जो हमारेकूं आपणेहितका तथाअहितका ज्ञानहोता तो तुमदेवतावोंकेसाथि युद्धकरणेवासते हम नहींआवते ॥ यातैं युद्धकरणेवासते जोहमारायहाँआगमनहै ॥ सोआगमनहीं हमारेहित और अहितके अज्ञानकूं बोधनकरैहै ॥ और हेदेवराज जैसे कोईक्षुद्रजंतु मशकादिक अज्ञानकरिकें महान्हस्तियोंकेसाथि युद्धकरणेवासतेआवै ॥ तैसे आपणेहितऔर अहितकेज्ञानतैंरहितमैंभी तुमदेवतावोंकेसाथि युद्धकरणेवासतेआयाहूं ॥ और हेदेवराज हममनुष्य आपणेहित अहितकेज्ञानतैंरहितहैं ॥ याकारणतैं आपणेहितकीप्रार्थना हम नहींकरिसकते ॥ यातैं हेत्रिलोकोनाथ संपूर्णदुःखोंकानाशकरणेहारा जोहिततमवस्तुहै ॥ सो आपहीविचारिकरिके हमारेताईदेवो ॥ इसप्रकार प्रतर्दनराजाकेवचनकूंश्रवणकरिके देवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकेप्रतिकहताभया ॥ हेप्रतर्दनराजा याचनातैंविना आपणीबुद्धिकरिके कोईभीपुरुष किसीकेताई वरकूंनहींदेता ॥ किंतु याचनातैंअनंतरहीं संपूर्णपुरुष वरकूंदेतेहैं ॥ यातैं हेप्रतर्दनराजा तुमभी प्रथम हमारेसैंवरमागो ॥ इसप्रकार इंद्रकेवचनकूंश्रवणकरिके सोबुद्धिमान्प्रतर्दनराजा सत्यवादी इंद्रकेप्रति युक्तिसहितवचनकूंकहताभया ॥ हेदेवराज यहजोतुमनेंवचनकह्या ॥ जो प्रार्थनातैंविना कोईपुरुष किसीकूंवरनहींदेता ॥ यहआपकावचनसत्यहै ॥ परंतु यह आपकावचन भेददर्शीविषमपुरुषोंविषेघटैहै ॥ आप सरीसेसमदृष्टिपुरुषोंविषे यहवचनघटतानहीं ॥ और हेदेवराज तुमारेतैंविना ऐसाको

नपुरुषहे ॥ जो अपकारीशत्रुकेताईं वरकूंदेवे ॥ किंतु तुमईएसेहो ॥ यातें यहनिश्चयहोवेहे ॥ तुमदेवता किसीविषेविषमदृष्टिवालेनहीं ॥ किंतु सर्वविषेसमदृष्टिवालेहो ॥ यातें हेदेवराज जो आपनें हमारेदेणेवासते वरकीप्रतिज्ञाकरीहे ॥ तभी आपणीबुद्धितेंहिततमवरकूंविचारि करिके हमारेताईं देवो ॥ और हेदेवराज जोहम आपणीइच्छातेंवरकूंमागेंगे ॥ तो आपकीवरदेणेकीजोप्रतिज्ञाहे ॥ सोप्रतिज्ञा हानिहो वेगी ॥ काहेतें वरनाम श्रेष्ठकाहे ॥ और श्रेष्ठनाम हिततमकाहे॥ सो हिततम हम जाणतेनहीं ॥ यातें अज्ञानकरिके जोजोवर हममांगेंगे सो अश्रेष्ठहीहोवेंगा ॥ अश्रेष्ठकानामवरहेनहीं ॥ और आपनेंतो वरदेणेकोप्रतिज्ञाकरीहे ॥ यातें आपणीप्रतिज्ञाकीरक्षावासते आप हीविचारकरिके हमारेताईं वरकूंदेवो ॥ इसप्रकार प्रतर्दनराजाकावचन श्रवणकरिके तथाप्रतर्दनराजाकेबुद्धिकीचातुर्यतादेखिकरिके देवरा जइंद्र पुनःसंतोषकूंप्राप्तहोताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोदेवराज अत्यंतसंतुष्टभया ॥ तो इंद्रकीप्रसन्नताही विद्याकीप्राप्तिविषेकारणहे ॥ काहेतें गुरुकीप्रसन्नतातेंबिनाविद्याकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ और श्रुतिविषे याप्रकारकह्याहे ॥ इंद्र आपणेसत्यप्रतिज्ञातें नचलायमानहोताभया॥ याकहणेतें ऐसातात्पर्यजान्याजावेहे ॥ प्रतर्दनराजाकेताईं विद्यादेणेविषे देवराजइंद्रकूं कोईप्रतिबंधकरणेहारा प्राप्तभयाभी॥तौभी देवराज इंद्र आपणेप्रतिज्ञाकूंसत्यकरणेवासतें प्रतर्दनराजाकेताईं ब्रह्मविद्याकूंदेताभया ॥ सोप्रतिबंधकरणेहाराकौनहे ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ब्रह्म वेत्ताब्राह्मणकेप्रति जोब्रह्मविद्याकावचनहे ॥ तावचनकीस्मृतिही प्रतिबंधकरणेहारीहे ॥ अब ताब्रह्मविद्याकेवचनकूंकहेंहें ॥ एककालमें अनधिकारीपुरुषोंविषेप्राप्तहुईब्रह्मविद्या अत्यंतखेदकूंप्राप्तहोतीभयी ॥ और ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेसमीपजाइके ब्रह्मविद्या कहतीभई ॥ हेब्रा ह्मण जैसे वेश्या सर्वपुरुषोंकरिकेसेवितहोवेहे ॥ तैसे धनकेलोभकरिके मुझब्रह्मविद्याकूं वेश्याकेसमान तुम मतकरो ॥ किंतु ॥ कुलीन स्त्रीकीन्याईं हमारेकूं तुम गुप्तराखो ॥ और श्रद्धातेंहमारासेवनकरो ॥ जाकारणतें मेंब्रह्मविद्या तुमारेकूंइसलोकविषे तथापरलोकविषे अक्षयनिधिकेसमानहूं ॥ और हेब्राह्मण जोतुम ऐसाकहो ॥ संपूर्णजनोंकेउपकारविषे हमारीप्रीतिहे ॥ और उदारताकरिकेहमयुक्तहें ॥ और दीनजनोंऊपरि हमारीअत्यंतकृपाहे ॥ यातें ब्रह्मविद्याकूं हम गुप्तराखिसकतेनहीं ॥ तथापि हेब्राह्मण गुणहीनपुरुषोंकेताईं

हमारेकूं कदाचित् तुमनें नहींदेणा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अत्यंतरूपवान्आपणीपुत्री नपुंसककूं कोईदेतानहीं ॥ और हेब्राह्मण इतनेदोष सर्वदाहमारेकूंदुःखकेदेणेहारेहैं ॥ गुणवान्पुरुषोंविषे दोषोंका आरोपणरूपानिंदा ॥ और कुटिलता ॥ और इंद्रियों कीअधीनता ॥ और नित्यहीस्त्रियोंकासंग ॥ और अनम्रता ॥ और शरीरकरिकेंमनकरिके वचनकरिके गुरुकीभक्तितेंरहितहोणा इसतेंआदिलेकेदोष जिसपुरुषविषेहोवैं ॥ तिसपुरुषकेताई मुझब्रह्मविद्याकूं कदाचित् तुमनेंनहींदेणा॥ किंतु इतनेदोषोंतेंजोपुरुषरहितहोवे ॥ और शमदमादिकगुणोंकरिकेंयुक्तहोवे ॥ तिसकेताई हमारेकूंदेणा ॥ अथवा हमारेकूंगुह्यराखणा ॥ इनदोनोंपक्षोंविषे किसीभीपक्षकूं जोतुम अंगीकारकरोगे ॥ तो तुमारेकूं कामधेनुकीन्याई मनवांछितपदार्थोंको मैं प्राप्तिकरोंगी ॥ और जोतुम धनकेलोभकरिके गुणहीन पुरुषोंकेताई मुझब्रह्मविद्याकूंदेवोगे ॥ तो फलतेंरहितलताकीन्याई मैंवंध्याहोवोंगी ॥ और हेब्राह्मण पूर्वउक्तदोषवान्पुरुषकूंविद्यानहींदेणी ॥ याअर्थविषे सर्वजनोंकेउपकारवासते युक्तिसहितवचनकूं हम कथनकरेंहैं तुमश्रवणकरो ॥ शिष्यकेहृदयविषेस्थितजोअज्ञानरूपअंधकारहे ॥ ताकूं सूर्यादिकदेवताभी नाशकरिसकेंनहीं ॥ ऐसेशिष्यकेअज्ञानरूपअंधकारकूं जोगुरु आत्मसाक्षात्कारकरिकेनाशकरेहै ॥ और तूंब्रह्मस्वरूपहै यामहावाक्यरूपअमृतकूं जोगुरु पानकरावेहै ॥ तामहावाक्यरूपअमृतकरिके शिष्यकेकर्णोंकूं दुःखतेंरहितकरेहै ॥ और जोगुरु अनंतयुक्तियोंकरिके शिष्यकूं सर्वदाआत्माकाबोधनकरेहै ॥ यातें सोगुरुहीं मुमुक्षुपुरुषोंका पिताओरमाताहै ॥ गुरुतेंभिन्नदूसराकोईपितामाताहैनहीं ॥ काहेतें गुरुकेब्रह्मविद्यारूपसंप्रदायविषेप्रवेशतेंहीं संपूर्णजन्ममरणादिकदुःखोंकानाशहोवेहै ॥ और लौकिकपितामाताकेसंततिविषेप्रवेशतें पुत्रकूं जन्ममरणादिकदुःखकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ उलटा जन्ममरणादिकोंकीप्राप्तिहोवेहै ॥ यातें जन्ममरणरूपदुःखकेनिवृत्तिकाउपाय ब्रह्मविद्यारूपगुरुसंप्रदायतें विना दूसराकोईहैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मविद्यारूपगुरुसंप्रदायहीं जन्ममरणरूपदुःखकेनिवृत्तिकाउपायहै ॥ यातें गुरुही मुमुक्षुजनोंका पितामाताहै ॥ किंवा ॥ पितामाताशब्दकाअर्थभी गुरु विषेहीघटेहै ॥ लौकिकपितामाताविषे घटतानहीं ॥ काहेतें रक्षाकरणेहारेकानामपिताहै ॥ और पूजाकरणेहारेकानाममाताहै ॥ तहां आत्मसाक्षात्कारकीप्रा

तिकरिके जन्ममरणरूपसंसारकेभयतें मुमुक्षुजनकीगुरुरक्षाकरैहै ॥ यातें गुरुहीपिताहै ॥ और आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिरूपस्वारा
ज्यविषे शिष्यकूं गुरुही स्थापनकरैहै ॥ यातें गुरुहीमाताहै ॥ ऐसे गुरुकेसाथिशरीरकरिकै तथावाणीकरिकै तथामनकरिकै कदाचित्
भी मुमुक्षुजन द्रोहनहीकरे ॥ तहां ताडनादिक शरीरकृतद्रोहहै ॥ और अनुचितवचनकाउच्चारण वाणीकृतद्रोहहै ॥ और अनिष्टकाचिं
तन मनकृतद्रोहहै ॥ वाणीकृतद्रोहकाफल यहशास्त्रविषेकह्याहै ॥ श्लोक ॥ गुरुंहुंकृत्यत्वंकृत्य विप्रान्निर्जित्यवादतः ॥श्मशानेजायतेवृक्षः
कंकगृध्रोपसेवितः ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष अपनेगुरुकूं हुंकरिकेबोलताहै ॥ अथवा तूंकरिकेबोलताहै ॥ और जोपुरुष ब्राह्मणोंकूं वाद
करिकेजीतताहै ॥ सोपुरुष श्मशानभूमिविषे वृक्षशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मांसकेभक्षणकरणेहारे जेकंकगृध्रआदिकपक्षीहैं ॥तिनोंकरिकै
सोवृक्षसेवितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यद्यपि संपूर्णवृक्षशरीर पापकाफलहैं ॥ तथापि श्मशानभूमिविषेवृक्षशरीरकीप्राप्ति अत्यंतउग्रपापका
फलहै॥काहेतें श्मशानभूमिकावृक्ष सर्वदाश्मशानकेअग्निकरिकै दाहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातेंकिसीप्रकारकरिकैभीपुरुषनें गुरुकाद्रोहनहींकरणा
॥२॥और हेब्राह्मण गुरुकेसाथिद्रोहनहींकरणा किंतुगुरुकी सेवाकरणा यहजोवचन हमनैंकह्या॥सोब्रह्मविद्यादेणेहारेगुरुविषेकह्या॥औरवेद
कातोयह तात्पर्यहै॥लौकिकविद्याकेउपदेशकरणेहारेजेगुरुहैं ॥ तिनोंकेसाथिभी पुरुषनें कदाचित्द्रोहनहींकरणा॥याकारणतेंहीं लोकविषे
जिसअध्यापकपुरुषनें जिनोंशिष्योंकूं लौकिकविद्या अध्ययनकराईहै ॥ तिसअध्यापककूं तेशिष्य गुरुकरिकेमानैंहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मवि
द्याकेदेणेहारेजेगुरुहैं ॥ तथालौकिकविद्याकेदेणेहारेजेगुरुहैं ॥ तिनोंविषे जोजोशिष्य श्रद्धाभक्तिकूंकरैहै ॥ तिसकीविद्या सफलहोवैहै ॥
और जोजोशिष्य श्रद्धाभक्तितैंरहितहोवैहै ॥तिसकीविद्या निष्फलहोवैहै ॥ यातें हेब्राह्मण जोतेरेकूं मेरब्रह्मविद्याकेकहणेकीइच्छाहोवे ॥ औ
र मेरेरक्षाकरणेविषे तेराअभिप्रायहोवे॥ तो ऐसेगुणवान्शिष्यकेताई तुमनें ब्रह्मविद्याकथनकरणी॥जोशिष्य गुरुकाभक्तहोवे॥और ब्रह्मवि
द्याकेश्रवणविषे जाकीश्रद्धाहोवे॥और प्रमादतैंरहितहोवे॥और अर्थकेधारणेविषे जाकीबुद्धिकुशलहोवे॥और ब्रह्मचर्यकरिकेयुक्तहोवे॥ऐसेअ
धिकारीशिष्यतैंविना किसीकेताई तुमनें ब्रह्मविद्यानहींकरणी॥याप्रकारकाब्रह्मवेत्ताकेप्रति जोब्रह्मविद्याकावचनहै॥तावचनकूंस्मरणकरिकै

सत्यपाशकरिकेवंध्याहुआइंद्रपरमसंशयकूंप्राप्तहोताभया।तात्पर्ययह।प्रतर्दनराजाकेताईब्रह्मविद्यादेणेयोग्यहे।अथवानहींदेणेयोग्यहे।याप्रकारकेसंशयकूंप्राप्तहुआइंद्रपुनःऐसाविचारकरताभया॥ब्रह्मविद्यानेंजोअधिकारीशिष्यकेगुणकहेहैं ॥ तिनसर्वगुणोंकरिकेंयुक्तयहप्रतर्दनराजाहै नहीं यद्यपियत्किंचितगुण प्रतर्दनराजाविषेहैं॥तथापि यह हमाराशत्रुहै ॥ यातें इसकेताईं ब्रह्मविद्यादेणेयोग्यनहीं अथवा याप्रतर्दनराजानें मेरेवरकूं देखिकरिके शत्रुताकापरित्यागकन्याहै॥यातें अधिकारीशिष्यकेगुणोंकरिके यहप्रतर्दनराजा संपन्नहै ॥ याकारणतैंइसकेताईं विद्या देणेयोग्यहै ॥ यहाँबहुतविचारकरणेकाकछुप्रयोजननहीं ॥ यहप्रतर्दनराजा अधिकारीशिष्यकेगुणोंकरिकेंयुक्तहै अथवानहींहै॥सर्वथा प्रतर्दनराजाकेताईं हिततमविद्याका हम कथनकरेंगे॥काहेतें हमनें पूर्वऐसीप्रतिज्ञाकरीहै॥ जो तुमारेताईं मैंवरकूंदेताहूं ॥ याप्रतिज्ञाकूं ब्रह्मविद्याकेदानतें हम सत्यकरेंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ जहाँदोनोंवाक्योंका परस्परविरोधहोवेहै ॥ तहाँ एकवाक्य प्रबलहोवेहै ॥ और एकवाक्यदुर्बलहोवेहै ॥ जिसवाक्यकीकिसीप्रकारगतिनहींहोइसके सोवाक्य प्रबलहोवेहै और जिसवाक्यकीकिसीप्रकारगतिहोइसके सोवाक्य दुर्बलहोवेहै यहाँ प्रसंगविषे ब्रह्मविद्याकाजोवचनहै ताकीगतिहोइसकेहै यातेंदुर्बलहै ॥ काहेतें ब्रह्मविद्याकेअधिकारी दोप्रकारकेहोवेहैं॥ एकतो उत्तम अधिकारीहोवेहैं ॥ और दूसरे मध्यमअधिकारीहोवेहैं ॥ तहाँ स्त्रीसंगतेंरहितजेविरक्तसंन्यासीहैं ॥ ते उत्तमअधिकारीहैं ॥ और गृहस्थ मध्यमअधिकारीहैं ॥ यहप्रतर्दनराजाभी गृहस्थहै ॥ यातेंविद्याकामध्यमअधिकारीहै ॥ याप्रकार ब्रह्मविद्याकेवचनकीगति होइसकतीहै ॥ और "नानृतंवदेत्" अर्थयह मिथ्यावचनकूं पुरुष नहींकहे ॥ यावचनकी विद्यादेणेतैंविना अन्यकोईगतिहैनहीं ॥ यातें यहवचन विद्यावाक्यतैंप्रबलहै इसप्रकार विचारकरिकेदेवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकूं कहताभया ॥ हेप्रतर्दनराजातुमइंद्रकूं तूंजाण ॥ कैसामैंहूं संपूर्णजगत्का आत्माहूं ॥ और बुद्धिआदिकोंकासाक्षीहूं ॥ और जैसे आकाश सर्वकूंव्याप्यरह्याहै ॥ तैसे सर्वजगत्कूं बाहरिभीतरव्याप्यकरिके मैंस्थितहूं ॥ और स्वप्नकेतुल्य जोसंपूर्णस्थूलसूक्ष्मजगत्है तिसतैंमैंरहितहूं ॥ याकारणतैं मैं तुरीयाशिवरूपहूं ॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं मैंरहितहूं ॥ और सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद ॥ यातीनभेदरूपबीजकेदाहकरणेहारा मैंअग्निस्वरूपहूं ॥ और

जैसे कल्पितसर्पदंडादिकोंकाअधिष्ठान रज्जुहे ॥ तैसे स्थूलसूक्ष्मसर्वप्रपंचका मैंहीअधिष्ठानहूं ॥ याकारणतें एकहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठान स्वविषयकज्ञानद्वारा कल्पितसर्पदंडादिकोंकानाशकरहे ॥ तैसे मैंअधिष्ठानआत्माभी स्वविषयकज्ञानद्वारा सर्व कल्पितप्रपंचकानाशकरणेहाराहूं ॥ और मायाविशिष्टहुआ मैंहीईश्वरहूं ॥ हेप्रतर्दन एसाजोमेरास्वरूपहे ताकूंविशेषकरिकेतूंजाण ॥ मेरे स्वरूपकाज्ञानही तुमसनुष्योंकेवासते हिततमहे ॥ यज्ञादिकर्मोंकाफल जोस्वर्गकासुखहे ॥ और ताकेसाधनजेअप्सरादिकहैं ॥ तेसंपूर्ण बंधनकेकारणहैं ॥ यातें मनुष्योंकेवासते हितनहीं ॥ और उपासनाकाफलजोब्रह्मलोककासुखहे ॥ और तासुखकेजेसाधनहैं ॥ तेसंपूर्ण बंधनकेहेतुहैं ॥ यातें मनुष्योंकेतांई हितनहीं ॥ जभी स्वर्गलोककासुख तथाब्रह्मलोककासुखभी मनुष्योंकेवासते हितनहीं भया ॥ तभी मनुष्यलोकविषेस्थित जोवनितादिकविषयजन्यसुखहै ॥ सो अत्यंतअल्पहै ॥ और शीघ्रनाशवान्‌हे ॥ ऐसामनुष्यलोक कासुख मनुष्योंकेवासते किसप्रकारहितहोवे किंतुहितनहीं ॥ और हेप्रतर्दन जैसेकदलीकास्तंभ सारतेंरहितहोवेहे ॥ तैसे संपूर्णशरीर सारतेंरहितहैं ॥ और जैसे जलविषेउत्पन्नहुवेबुदबुद क्षणविषेनाशहोवेहैं ॥ तैसे यहसंपूर्णशरीर नाशवान्‌हैं ॥ ऐसे अनित्यशरीरविषे वनितादिकसाधनोंकरिकेउत्पन्नभयाजोसुख सोकेवलदुःखरूपहीहे आत्मारूपमेंईश्वरही एकसुखरूपहूं ॥ मेरेतेंभिन्नसर्वअनात्मवस्तुदुःखरूपहैं ॥ यातें हेप्रतर्दन याप्रपंचविषे किसीकालमें कोईभीवस्तु हितनहीं॥जभी प्रपंचविषे कोईवस्तु हितभीनहींभया॥तभी हिततर औरहिततमकी कैसेआशाहोवे ॥ तात्पर्ययह हिततेंजोअधिकहोवे ताकानाम हिततरहे और हिततरतेंजोअधिकहोवे ताकानामहिततमहे ॥आनंदस्वरूपमुझईश्वरतेंभिन्न कोईभीअनात्मपदार्थ हित हिततर हिततम नहींहे ॥ शंका॥हेदेवराजइंद्र लोकविषे जोकोई पदार्थ हित हिततर नहींहोवे॥ तो पूर्वआपनें आत्मज्ञानकूं हिततमकह्या सो कैसेबनैगा ॥ काहेतें हित और हिततरकीअपेक्षाकरिके हिततम कह्याजावेहे॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन जैसे कल्पिततीनशरीरोंकी अपेक्षाकरिके शुद्धआत्माकूं तुरीयकहेहैं ॥ तैसे भ्रांतिज्ञानकरिके सिद्ध जोहित और हिततरहे तिनकी अपेक्षाकरिके आत्मज्ञानकूं हिततमकह्याहे ॥ तहां मनुष्योंका तथादेवतावोंका जोविषयजन्यसुखहे ॥ सोपुरुषों का हितहे

और तिसविषयजन्यसुखतें वैराग्यहिततरहै ॥ और तिसवैराग्यतें आत्मज्ञान हिततमहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् मनुष्यलोककेविषयज
न्यसुख तथास्वर्गादिकलोकोंकेविषयजन्यसुख हितहैं॥और वैराग्य हिततरहै॥यह पूर्वआपनेकह्यासोसंभवैनहीं॥काहेतें मनुष्यलोककेसुख
तेंस्वर्गादिकलोकोंकेसुख उत्कृष्टहैं॥यातें मनुष्यलोककेसुखतो हितहैं॥और स्वर्गादिकलोकोंकेसुख हिततरहैं॥वैराग्यकूं हिततरताबनैनहीं॥
समाधान॥ मनुष्यलोककेसुखतें स्वर्गादिकलोकोंकेसुखोंविषे जोविशेषतातुमनैंकही॥सोविशेषता स्वरूपतैंहै॥अथवा साधनोंतैंविशेषताहै ॥
तहाँ स्वरूपतैंविशेषताहै यहप्रथमपक्ष संभवैनहीं॥काहेतें मनुष्यलोककेजेविषयजन्यसुखहैं॥तथा स्वर्गलोककेजेविषयजन्यसुखहैं ॥तथा ब्र
ह्मलोककेजेविषयजन्यसुखहैं॥तिनसंपूर्णसुखोंविषे अनुकूलताधर्मसमानहै॥यातें स्वरूपतें स्वर्गादिकसुखविषे विशेषतासंभवैनहीं ॥ और सा
धनोंकीविशेषतातें स्वर्गादिकसुखकीविशेषताहै यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जैसे स्वर्गादिकलोकोंविषेस्थितदेहधारीजीवोंकूं नाना
प्रकारकेआहारहैं॥और चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकेयुक्तशरीरहैं॥और मनोरमस्त्रियाहैं॥ तैसेमनुष्यलोकविषेस्थितदेहधारीजीवोंकूंभीनानाप्रका
रकेआहारहैं॥और नेत्रादिइंद्रियोंकरिकेयुक्तशरीरहैं ॥ और मनोरमस्त्रियाहैं ॥तात्पर्ययह॥ जैसे अमृतकेपानतें देवताओंकीतृप्तिहोवैहै ॥ तैसे
व्रीहियवादिकअन्नकेभक्षणतें मनुष्योंकीतृप्तिहोवैहै॥ तैसेही तृणादिकोंके भक्षणतें पशुआदिकोंकीतृप्तिहोवैहै॥और जैसे स्वर्गादिकलोकोंविषे
स्थितअप्सरा देवताओंकेसुखकासाधनहैं॥ तैसे मनुष्यलोकविषेस्थितस्त्रियांभी पुरुषोंकेसुखकासाधनहैं॥इसतेंआदिलेके सर्वसाधनोंकीसमा
नताहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् मनुष्यलोककासुख पराधीनहै यातें निकृष्टहै ॥ और स्वर्गादिकलोकोंकासुख पराधीननहीं यातें उत्कृष्टहै ॥
समाधान ॥ हेप्रतर्दन॥ जैसे राजाकीसेवातेंप्राप्तभया जोलौकिकसुखहै ॥सो पराधीनहोवैहै ॥ तैसे देवताओंकेआराधनतें प्राप्तभयाजो ब्रह्मलो
ककासुख तथा स्वर्ग लोकका सुख सोभी पराधीनहीहोवैहै॥यातें संपूर्णलोकोंविषे जीवोंकूं पराधीनतासमानहै ॥ स्वतंत्रता किसीभीलोक
विषेनहीं ॥ काहेतें अस्मदादिकसंपूर्णतेंअधिकजोहिरण्यगर्भहै॥ सोभी अंतर्यामीईश्वरकेअधीनहै ॥ और मैंइंद्र हिरण्यगर्भकेअधीनहूं॥जभी
हिरण्यगर्भ और मैंइंद्रभी पराधीनहुआ ॥ तभी अन्यलोकोंकेस्वतंत्रताकोक्याकथाहै ॥ किंवा ॥ मनुष्यलोकतेंआदिलेके हिरण्यगर्भकेलो

कपर्यंत जितनेकविषयजन्यसुखहैं ॥ तेसंपूर्णसुख सातिशयदोषकरिकेयुक्तहैं यातैंभीसमानहैं ॥ काहेतैं अंतर्यामीईश्वरकेआनंदतैं शतभागन्यून हिरण्यगर्भकाआनंदहै ॥ और हिरण्यगर्भकेआनंदतैं शतभागन्यून प्रजापतिकाआनंदहै ॥ और प्रजापतिकेआनंदतैं शतभागन्यून मुझइंद्रकाआनंदहै ॥ जभी हिरण्यगर्भकाविषयजन्यआनंद तथामुझइंद्रकाआनंदभी सातिशयदोषकरिकेयुक्तहुआ ॥ तभी दूसरे आनंदकोक्याकथाहै ॥ और हेप्रतर्दन जैसे तुममनुष्योंकूं मनुष्यलोककीस्त्रीकेआलिंगनतैं सुखउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे मुझइंद्रकूं स्वर्गलोककीस्त्रीकेआलिंगनतैं सुखउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसाही हिरण्यगर्भकूं स्त्रीकेआलिंगनतैंसुखहोवैहै ॥ और तैसाही ईश्वरकूं स्त्रीकेआलिंगनतैंसुखहोवैहै ॥ विषयजन्यसुखविषे किंचित्मात्रभी विशेषतानहीं॥यातैं स्वर्गादिकसुखकूं हिततरतासंभवैनहीं॥किंतु विषयजन्यसुख मेरेकूं मतहोवे ऐसाजोवैराग्यहै सोईहो हिततरहै ॥ काहेतैं विषयजन्यजितनेसुखहैं ॥ तेसंपूर्ण घटादिकोंकीनाईं नाशकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और यहवैराग्यरूप सुख उत्तमपुरुषोंकूं एकवारउत्पन्नहुआ नाशकूंनहींप्राप्तहोता ॥ किंतु दिनदिनविषे बढ्तांजावैहै ॥ यातैं विषयजन्यसुखतैं वैराग्यहिततरहै ॥ किंवा ॥ जैसे वमनकरेअन्नविषे तथाविष्ठादिकोंविषे जोपुरुषोंकावैराग्यहै ॥ तावैराग्यविषे केवलदोषदृष्टिहीकारणहै ॥ तैसे विषयजन्यसुखविषे दोषदृष्टिही वैराग्यकाकारणहै ॥ दोषदृष्टितैंभिन्न कोईवैराग्यकाकारणनहीं ॥ और विषयजन्यसुखविषेतो साधनादिक अनेककारणहैं ॥ यातैंभी विषयसुखतैं वैराग्यरूपसुख हिततरहै ॥ किंवा ॥ जिसपुरुषकूं विषयविषेदोषदर्शनतैंभी वैराग्य उत्पन्ननहींभया ॥ उलटा विषयसुखविषे इच्छाअधिकहोतीजावैहै ॥ ऐसेवैराग्यरहितपुरुषोंकूं यहमेरेतैंअधिकसुखीहै और जोइसकेसमीपसुखकेसाधनहैं सोहमारेसमीपनहींहैं याप्रकारकाविषमताज्ञानरूपअग्नि सर्वदादाहकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मलोकपर्यंत विषयजन्यसंपूर्णसुखोंकोप्राप्तिहुएभी दीनताकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ वैराग्यकोप्राप्तिहुए दीनताकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैंभी वैराग्यही हिततरहै ॥ और यावैराग्यतैं मैंआनंदस्वरूपआत्माहूं ऐसाजो अद्वितीयआत्माकाज्ञानहै सो हिततमहै ॥ काहेतैं वैराग्यतैं मूलअज्ञान कीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं मिथ्याज्ञानजन्यसंस्कारोंतैं वैराग्यवान्पुरुषकूं भयबन्यारहैहै ॥ और मैं अद्वितीयआत्मा

केज्ञानतैं मूल अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै यातैं ज्ञानवान्पुरुषकूं मिथ्याज्ञानजन्यसंस्कारोंतैंभयहोवैनहीं ॥ याकारणतैंवैराग्यतैं अद्वितीयआत्माकाज्ञान हिततमहै ॥ किंवा ॥ आत्मस्वरूपआनंदकेभानविषे प्रतिबंधकजेदुःखहैं ॥ तिनदुःखोंकोनिवृत्तिविषे वैराग्य कारणहै ॥ आत्मस्वरूपआनंदकेभानविषे वैराग्य साक्षात्कारणनहीं किंतुपरंपराकारणहै ॥ और शुद्ध अद्वितीयआत्मा काज्ञानतो आत्मस्वरूपआनन्दकेभानविषे साक्षात्कारणहै ॥ यातैंभी आत्मज्ञान वैराग्यतैंहिततमहै ॥ और हेप्रतर्दन मैंइंद्रस्वरूपआत्माके ज्ञानतैंभिन्न कोइंभीवस्तु लोकविषेहिततमनहीं मेराज्ञानहीं हिततमहै ॥ और हेप्रतर्दन ब्रह्महत्यासे आदिलेके जेपापलोकशास्त्रविषेप्रसिद्धहैं ॥ जिनपापोंकरिके अनंतकोटीकल्पोंविषे जीवोंकूं अनंतदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसेब्रह्महत्यादिकपापभी मेरेज्ञानकेप्रभावतैं जीवोंकूं कदाचित्स्पर्शनहींकरते ॥ और हेप्रतर्दन ज्ञानवान्पुरुषकूं ब्रह्महत्यादिकपाप स्पर्शनहींकरते॥ याप्रकारकेहमारेवचनकूं आत्मज्ञानकीस्तुतिरूपअर्थवाद तुम नहींजानना॥ किंतु यथार्थकरिकेजानना ॥ काहेतैं याआत्मज्ञानकेप्रभावतैं कोइंभीपाप हमारेकूंस्पर्शनहींकरताभया॥ याअर्थकूं विस्तारकरिके तुमारेताई हम कथनकरैंहैं तुमश्रवणकरो ॥ तीनोंलोकोंकाराजाजोमैंइंद्रहूं॥ सो आपणीरक्षाकेवास्ते तथाप्रजाकी रक्षाकेवास्ते अनंतपापोंकूंकरताभयाहूं ॥ तोभी आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं तिनपापोंकरिके हमारा रोमभीछेदननहींभया ॥ अब तिन पापोंकूंदिखावैंहैं । हेप्रतर्दन एककालविषे त्वष्टानामादेवताकापुत्र विश्वरूप हमदेवतावोंका पुरोहितहोताभया ॥ सोविश्वरूप किसीस्थानविषे दैत्योंकोभगिनीतैंउत्पन्नभयाथा ॥ तिसविश्वरूपके तीनमस्तकहोतेभये ॥ एक सात्विकस्वभाववान् ॥ दूसरातामसस्वभाववान् ॥ तीसरा राजसस्वभाववान् ॥ तहां देवतावोंकेअनुसारीहुआविश्वरूप सात्विकमुखकरिके अमृतकूंपानकरताभया॥और असुरोंकेअनुसारीहुआसो विश्वरूप तामसमुखकरिके सुराकूंपानकरताभया ॥ और राजसमुखकरिके सोविश्वरूप मनुष्योंकीनाई अन्नादिकोंकूंभक्षणकरताभया ॥ और सोविश्वरूप कदाचित् किसीयज्ञविषे ऋत्विक्हूंकरिके देवतावोंकेताई उच्चस्वरकरिके यज्ञकेभागोंकूंदेताभया ॥ और आपणीमाताकेपक्षपातीजेअसुरहैं तिनोंकूंभी मंदस्वरकरिके यज्ञकेभागोंकूंदेताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् विश्वरूप जैसेंदेवतावोंकेताई यज्ञकेभाग

कूंप्रत्यक्षदेताभया ॥ तैसे असुरोंकू प्रत्यक्षयज्ञकाभाग काहेतैंनहींदेताभया ॥ समाधान ॥ यज्ञकेभागीअसुरहैंनहीं ॥ यातैं तिनोंकेताई प्र त्यक्षयज्ञकाभाग देणासंभवैनहीं ॥ यहवार्ता लोकविषेभीप्रसिद्धहै ॥ जैसे किसीचारिपुरुषोंकू राजाने एकग्रामदियाहोवे ॥ तिसग्रामके ते चारिपुरुषभागीहैं ॥ और तिसग्रामविषे पिशुनवृत्तितैंजीवनकरणेहारा कोईदुष्टपुरुषभीरहैहै ॥ सो यद्यपि ग्रामकाभागीनहीहै ॥ तथापि तादुष्टपुरुषकूं ग्रामकाभागमिलैहै ॥ परंतु तादुष्टपुरुषकूं ग्रामकाभाग प्रसिद्धनहींमिलैहै किंतुअप्रसिद्धमिलैहै ॥ और चारिभागीपुरुषोंकू ग्रामकाभाग प्रसिद्धमिलैहै ॥ परंतु अभागीपुरुषकूं जोभागदेणाहै ॥ सो ग्रामकेस्वामीका अनर्थकरणेहाराहै ॥ काहेतैं अप्रसिद्धभागकीप्रा प्तिकरिके शनैःशनैःसामर्थ्यकूंप्रातभयासे।दुष्टपुरुष एककालविषे ग्रामकेस्वामियोंकाहननकरैहै ॥और ग्रामादिकसंपदाकाभी हरणकरैहै ॥ यातैं भागतैंरहितपुरुषकूंभागकीप्राप्ति स्वामीकेअनर्थकाकारणहै ॥ यहवार्तालोकविषेप्रसिद्धहै ॥ इसप्रकारविचारकरिके औरदेवतावोंकेअ निष्टकरणेहारी जाअसुरोंकेताईयज्ञभागकीप्राप्तिरूपविश्वरूपकीक्रियाहै ताकूंदेखकरिके ताविश्वरूपपुरोहितविषे ऐसीबुद्धिकूं मैंइंद्र करता भया ॥ यहविश्वरूपपुरोहित हमारेशत्रुअसुरोंकेहितकीइच्छाकरैहै ॥ यातैं हमराजोंका तथादेशका यह घातकरैगा ॥ यातैं यहदुरात्मा विश्वरूप मारणेयोग्यहै ॥ अब विश्वरूपकेदुरात्मभावकूंदिखावैहैं ॥ विश्वासकरिकेयुक्तजेहमदेवताहैं ॥ तिनोंकेनाशकरणेवास्ते यहविश्व रूप हमारेशत्रुवोंकेताई यज्ञभागोंकूंदेवैहै ॥ यातैं यहविश्वरूप दुरात्माहै ॥ विश्वासघातीपुरुषकूं लोकविषेभी दुरात्माकहैहैं ॥ किंवा ॥ जोपुरुष जिसकेअन्नकूं सर्वदाभोजनकरैहै॥सोअन्नकाभोक्तापुरुष तिसअन्नदातापुरुषका आत्माहोवैहै ॥ और आत्मद्रोहीपुरुष अत्यंतपाप वान्होवैहै ॥ यह सर्वशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ और यहविश्वरूप सर्वदा हमदेवतावोंकेअन्नकूंभोजनकरैहै ॥ यातैं हमदेवता विश्वरूपकेआ त्माहैं ॥ हमारेसाथ द्रोहकूंकरताहुआयहविश्वरूप आपणेआत्माकेसाथद्रोहकूंकरैहै ॥ आत्मद्रोहीपुरुषकेसमान कोईपापीनहीं ॥ य द्यपि यहविश्वरूप वेदोंकावेत्ताहै औरब्राह्मणहै औरहमसर्वदेवतावोंकापुरोहितहै यातैंमारणेयोग्यनहीं ॥ तथापि हमयजमानोंकेना शवास्ते इसनें उद्यमकऱ्याहै ॥ यातैं यहदुरात्माविश्वरूप अवश्यमारणेयोग्यहै ॥ हेप्रतर्दन इसप्रकारकाविचारकरिके मैंइंद्र देवतावों

कोसभाविषे ताविश्वरूपकेतीनोंमस्तकोंकूं वज्रकरिकैछेदनकरताभया ॥ तापापकर्मकरिके जिसआत्मज्ञानकेप्रभावतैं मेरारोममात्रभी
नहींछेदनहोताभया ॥ और हेप्रतर्दन याआत्मज्ञानकेप्रभावतैं वेदान्तविचारतैंरहितकोटीसंन्यासियोंकेमारणेकरिकेभी हमारेकूं पापका
स्पर्शनहींहोताभया ॥ किसीकालविषे किसी देशमैं कोटीसंन्यासी एकठ्ठेभयेथे ॥ कैसेतेसंन्यासीथे ॥ वर्णआश्रमकेजेआचारहैं तिनों
विषे जिनोंकोप्रीतिथी ॥ और ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास या चारिआश्रमोंविषे उत्तमआश्रम जोसंन्यासहै ताकरिकेयुक्तथे ॥
और यहइंद्र हमारा आत्माहै याप्रकारकेसर्वात्मज्ञानतैंरहितथे ॥ ऐसे बहिर्मुखसंन्यासियोंतैं मैंइंद्र पूछताभया ॥ तुमसंपूर्णकोनहो ॥
ऐसा जभी हमनैंपूछा ॥ तभी तेसंन्यासी हमारेप्रति कहतेभये ॥ वर्णआश्रमकेकर्मोंकूंकरणेहारे हम संन्यासीहैं ॥ ऐसाकहिकरिके
पुनःतेसंन्यासीदैवकरिकैमोहकूंप्राप्तहुए ऐसावचन हमारेप्रति कहतेभये ॥ तूकौनहै जो हमसंन्यासियोंकूं पूछणेवास्ते यहां आयाहै ॥
इसप्रकार निरादरयुक्तवचन संन्यासियोंका श्रवणकरिकेभी कृपाकरिकेयुक्तमैंइंद्र तिनसंन्यासियोंकूं कहताभया ॥ हेसंन्यासियो
तुमसंपूर्णोंकाआत्मा मैंइंद्रहूं ॥ ऐसेमेरेवचनकूंश्रवणकरिके तेसंपूर्णसंन्यासी क्रोधयुक्तहोतेभये ॥ कैसेतेसंन्यासीहैं ॥ हैंतोमूर्ख परंतु
आपणेकूंपंडितजिनोंनैंमान्याहै ॥ ऐसेसंन्यासी दैवकरिकैमोहितहुए पुनःनिरादरयुक्तवचनकूं मुझ इंद्रकेप्रति कहतेभये ॥ शरीररूपविग्रह
वालातूं किसप्रकार इंद्रहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ इंद्र याप्रकारकाशब्द तथाइंद्रशब्दकाअर्थ ॥ दोनोंतैंभिन्नकोइइंद्र संभवेनहीं ॥ तहां इंद्र
याशब्दकूंइंद्रकहैंहैं ॥ याप्रथमपक्षविषे विग्रहवान् तुमारेकूं इंद्ररूपतासंभवेनहीं ॥ और इंद्रशब्दके अर्थकूंइंद्रकहैंहैं ॥ यादूसरेपक्षविषेभी
विग्रह हविष्काभोग ऐश्वर्य प्रसन्नता फलप्रदान याविग्रहआदिकपंचविशेषणोंकरिकेविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थहै ॥ अथवा
तुमनैंकह्याजो हमसंपूर्णसंन्यासियोंकाआत्मा सो इंद्रशब्दकाअर्थहै ॥ तहां प्रथमपक्षतो संभवेनहीं ॥ काहेतैं शरीररूपविग्रहकरिकेवि
शिष्ट देवताविशेष जोइंद्रशब्दकाअर्थहोवे ॥ तो जैसे यज्ञविषे अतिथीकाप्रत्यक्षहोवैहै ॥ तैसे इंद्रकाभी प्रत्यक्षज्ञानहोणाचाहिये ॥ और
इंद्रका यज्ञविषे प्रत्यक्षज्ञान होतानहीं ॥ यातैं शरीररूपविग्रहवान् देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थ संभवेनहीं ॥ और हविष् अन्नका भोग

रूपविशेषणकरिकेविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थहै यहभीकहना संभवैनहीं ॥ काहेतें जैसे अतिथिकेताईं यज्ञविषेंदियाजोअन्न ताअ न्नकूं अतिथिभोजनकरैहै ॥ यहसर्वलोकोंकूंप्रत्यक्षदीसेहै ॥ तैसे यज्ञविषेइंद्रादिकदेवतावोंकेताईं दियाजोहविरूपअन्न ताअन्नकूं देवता भोजनकरैंनहीं ॥ जो देवता हविरूपअन्नकूं यज्ञविषेभोजनकरतेहोवैं ॥ तो हमारेकूं अतिथिकीनाईं दीखेचाहियें और दीखतेनहीं ॥ ॥ शंका ॥ देवता यद्यपि प्रसिद्ध हविरूपअन्नकूंभक्षणकरैंनहीं ॥ तथापि जैसेभ्रमर पुष्पकेगंधकूं ग्रहणकरैहै ॥ तैसे देवताभी अन्नके सारअंशकूं ग्रहणकरैहैं ॥ समाधान ॥ देवता अन्नकेसारअंशकूंभीग्रहणकरैंनहीं ॥ काहेतें जोदेवता अन्नकेसारअंशकूंग्रहणकरैं ॥ तो गणे शकूंसमर्पणकरेजेमोदक तेमोदक सार अंशतेंरहितहोयेचाहियें ॥ और सारअंशतेंरहित मोदकहोवैंनहीं ॥ यातें हविष्काभोगरूपविशेष णकरिकेयुक्त देवता विशेषभी इंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ और ऐश्वर्यरूपविशेषणकरिकेविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थहै यह कहनाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें आपणेविषे स्वामित्वकाअभिमान और अन्यविषे ममत्वअभिमानकानाम ऐश्वर्यहै ॥ अथवा अनेकरू पोंविषे एककालमेंप्राप्तिवास्ते अनंतस्वरूपधारणकरणेकीजोशक्तिहै ताकानाम ऐश्वर्यहै ॥ यादोनोंपक्षविषे रागवान्देवता सिद्धहोवैहै ॥ यातें जैसे रागवान् औरनानास्वरूपोंकूंधारणकरणेहारीवेश्याका कोईबुद्धिमान् पुरुष पूजनकरतानहीं ॥ तैसे रागवान् औरनानास्वरूपों कूंधारणकरणेहारेदेवतावोंकूं कौनबुद्धिमान् पुरुष पूजनकरेगा ॥ किंतु कोईभीपूजननहींकरेगा ॥ यातें ऐश्वर्यविशिष्टदेवताविशेषभी इंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ और प्रसन्नतारूपविशेषणकरिकेविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थहै यहकहनाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें यज्ञादिककर्मकेकरणेतें देवताप्रसन्नहोवैहैं ॥ अथवा यज्ञादिककर्मोंतेंविनाभी देवता प्रसन्नहोवैंहैं ॥ तहां प्रथमपक्षतो संभवैनहीं काहेतें जोकर्मकेकियेतैंहीं देवताप्रसन्नहोवैं ॥ तो हममनुष्योंतेंदेवताविषे कौनविशेषतासिद्धभई ॥ सेवारूपकर्मकेकरणेहारेप्राणीऊपर हममनु ष्यभी प्रसन्नहोतेहैं ॥ तैसे यज्ञरूपकर्मकेकरणेहारेपुरुषऊपर देवताभी प्रसन्नहोतेहैं ॥ यातें हममनुष्योंतें देवतावोंविषे विशेषतासिद्धनहीं होवैगी ॥ और कर्मकियेतैंविनाहीं देवताप्रसन्नहोवैंहैं यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतें कर्मकियेतैंविना कहींभी देवताकीप्रसन्नता देखी

नहीं ॥ यातें प्रसन्नतारूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेषभी इंद्रशब्दकाअर्थनहीं ॥ याकारणतें फलप्रदानरूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेषभीइंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ काहेतें प्रसन्नतातें अनंतरहीं फलकादेणासंभवैहै॥प्रसन्नताकेअभावहुए फलप्रदानभी देवता विषेसंभवैनहीं ॥ यातें फलप्रदानरूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेषभी इंद्रशब्दकाअर्थनहीं ॥ इतनेग्रंथकरिके विग्रहादिकपंचविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थहै याप्रथमपक्षका संन्यासियोंनें खंडनकऱ्या ॥ अब हमसंपूर्णोंकाआत्मा इंद्रशब्दका अर्थहै ॥ याद्वितीयपक्षकूं संन्यासी खंडनकरेंहैं ॥ हमसंपूर्णोंकाआत्मा इंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ काहेतें संपूर्णप्राणियोंकाआत्मा एकएक शरीरविषे भिन्नभिन्नहोवैहै ॥ जोसंपूर्णशरीरोंविषे एकही आत्माहोवै ॥ तो एकशरीरविषे ॥ सुखतथादुःखके हुए सर्व शरीरोंविषे सुखदुःखकाअनुभव होणाचाहिये ॥ और अनुभवहोवैनहीं ॥ यातें सर्वशरीरोंविषे आत्माएकनहीं ॥ किंतु नानाआत्माहैं ॥ और पुण्यपापकाकरताआत्माहै ॥ और आत्माहीं ताकेफलसुखदुःखका भोक्ताहै ॥ और आत्माअमूर्तहै और विभुहै बुद्धि १ सुख २ दुःख ३ इच्छा ४ द्वेष ५ प्रयत्न ६ धर्म ७ अधर्म ८ संस्कार ९ संख्या १० परिमाण ११ पृथक्त्व १२ संयोग १३ विभाग १४ याचतुर्दशगुणोंकरिकैयुक्त आत्माहै ॥ और अहंसुखी अहंदुःखी याप्रतीतिकाविषय आत्माहै ॥ और तूं हमसंन्यासियोंतैंभिन्नप्रतीतहोवैहै ॥ यातें हमसंपूर्णसंन्यासियोंका आत्मा तूंकैसेहोवैगा ॥ किंतु हमारा आत्मा तूंनहींहै ॥ यातें इंद्रशब्दकाअर्थ इंद्रनहीं ॥ किंतु इंद्र याप्रकारकाशब्दही इंद्रहै ॥ इंद्रशब्दतें भिन्न कोईइंद्रदेवताकास्वरूपनहीं ॥ याप्रकार सर्वदेवता शब्दस्वरूपहैं शब्दतैंभिन्न कोईभीदेवतानहीं ॥ हेप्रतर्दन तेबहिर्मुखसंन्यासी याप्रकारकीकुतर्ककरिकैयुक्त तथानिरादरकरिके युक्तवचनोंकूं कहिकरिके पुनःमेरेऊपर क्रोधकूंकरतेभये ॥ तिनसंन्यासियोंकीमूर्खताकूं तथावचनोंकीक्रूरताकूं तथाविनाकारणतैंक्रोधकूं देखिकरिके पुनःकृपाकरिकैयुक्त मैंइंद्र तिनसंन्यासियोंकूं कहताभया ॥ हेसंन्यासियो देवतावोंकेविग्रहआदिकनहींहोते ॥ और शरीरशरीरविषे आत्माकावास्तवभेद होवैहै ॥ और तूंइंद्र हमाराआत्मानहींहै ॥ यहजोपूर्वतुमोंनेंकह्या ॥ याअर्थविषे कोईवेदकावचनजोप्रमाणहोवै ॥ तो तुम कथनकरो॥हेप्रतर्दन याप्रकार अभी तिनसंन्यासियोंतैं हमनैंप्रमाणपूछा ॥

तभी तेमूर्खसंन्यासी पुनःक्रोधकरिकैयुक्तहुये एकभीवेदकावचन नहींकथनकरतेभये कुटिलकरीहैभृकुटी औरमुखजिनोंनें ऐसेतेसं
न्यासी पुनःमेरीनिंदाकरिके आवोजावो याप्रकारका कथनकरतेभये ॥ सोकथनभी मुखसैंनहींकरतेभये ॥ किंतु अत्यंतनिरादरकासूचक
जोहस्तकीचेष्टा ताकरिके बोधनकरतेभये ॥ हेप्रतर्दन इसप्रकार जभी संन्यासियोंनें हमारानिरादरकऱ्या ॥ तभी त्रिलोकीकेरक्षणवास्ते
उद्यमवाला मैंइंद्र आपणेमनकरिके याप्रकारकाविचार करताभया ॥ जो यासंन्यासियोंविषे क्याकारणे कूं योग्यहे ॥ तात्पर्ययह ॥ यासं
न्यासियोंको उपेक्षाकरणीयोग्यहे अथवा दंडकरणेयोग्यहे ॥ तहां उपेक्षाकरणी यहप्रथमपक्षतोसंभवैनहीं ॥ काहेतें त्रिलोकीकूंअधर्मतें
रक्षाकरणेवास्ते हमाराअवतारहे ॥ और दंडकरणा यहदूसरापक्षतो अपराधनिर्णयतैंविना होवैनहीं ॥ यातें इनसंन्यासियोंका अपराध
निर्णयकऱ्याचाहिये अपराधीनिर्णयतें अनंतरहीं दंडकरणाउचितहे ॥ तहां अपराधनिर्णयकरणेवास्ते संन्यासका तथासंन्यासकेधर्मोंका
तथासंन्यासकेफलका बोधनकरणेहारीश्रुतियोंकेअर्थकानिरूपणकरैंहैं ॥ विवेकादिकसाधनचतुष्टययुक्तपुरुष आत्मसाक्षात्कारकीप्रा
प्तिवास्ते संपूर्णकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासकूंकरै॥ और सर्वकर्मोंकात्यागकरिके संन्यासीनें श्रवणमनननिदिध्यासनकरिके एकवेदांतकेअर्थका
विचार सर्वदाकरणेयोग्यहे ॥ इसप्रकार संन्यासतथावेदांतविचारकरिकै जिसपुरुषकूं अद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकासाक्षात्कारभयाहे॥
सोपुरुष जन्ममरणरूपसंसारदुःखकूं नहींप्राप्तहोता ॥ याप्रकार श्रुतिनें कथनकऱ्याहे ॥ यहां विवेकादिकसाधनसंपत्तिपूर्वक सर्वकर्मोंके
त्यागकानाम संन्यासहे ॥ और सर्वदावेदांतशास्त्रकाविचार संन्यासीकाधर्महे ॥ और जन्ममरणादिकअनर्थकीनिवृत्ति तथाब्रह्मभावकीप्रा
प्तिरूपमोक्षकीप्राप्ति संन्यासकाफलहे ॥ याप्रकारकासंन्यास इनोंविषेहैनहीं ॥ किंवा ॥ दोप्रकारकासंन्यास श्रुतिविषेकह्याहे ॥ एकतो क्रमतें
संन्यास॥और दूसरा क्रमतैंविनासंन्यास॥ तहां प्रथम ब्रह्मचारीहोणा पश्चात्गृहस्थहोणा पश्चात्वानप्रस्थहोणा पश्चात्संन्यासीहोणा यहक्रम
तैंसंन्यास उत्कटवैराग्यतैंरहितपुरुषकूं ७० सत्तरिवर्षतैंअनंतर श्रुतिनैंकह्याहे॥ और जिसपुरुषकूं विषयोंविषेउत्कटवैराग्यहे ॥ तिसपुरुषकूं
क्रमतैंविनाभी श्रुतिनें संन्यासविधानकऱ्याहे ॥ जिसदिनविषे पुरुषकूं विषयोंविषेउत्कटवैराग्यहोवे उसीदिनविषे संन्यासकूंकरे ॥ ब्रह्मचारी

होवै अथवा गृहस्थहोवै अथवा वानप्रस्थहोवै ॥ यादोप्रकारकेसंन्यासविषे क्रमतैंसंन्यासतौ इनोंकाहैनहीं ॥ काहेतें यहसंपूर्ण युवाअवस्थावा लेहैं ॥ और दूसराक्रमतैंविनासंन्यासभी इनोंविषेनहीं ॥ काहेतें यहसंपूर्ण आत्मज्ञानतैंरहितहैं ॥ और नीतितैंरहितहैं ॥ और क्रोध रूपशत्रुकेवशहुएहैं ॥ याकारणतें दुर्बुद्धिमूर्ख आपणेहितकूंनहींश्रवणकरते ॥ उलटा हितकेउपदेशकरणेहारेमुझइंद्रकेसाथ द्वेषकूंकरेंहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मरणकेनिकटप्राप्तभया रोगीपुरुष हितकारीवैद्यकेसाथ द्वेषकरैहै ॥ तैसे यहसंन्यासी मृत्युकेनिकटहुए मेरेसाथद्वेषकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यद्यपि यहसंन्यासी अपराधीहै ॥ तथापि तुमारेकूं क्षमाकरणेयोग्यहै ॥ किसीदूसरेकेउपदेशतें इनोंकूं आत्मसाक्षात्कार होवैगा ॥ समाधान ॥ मुझइंद्रकेवचनकूं जभीइनोनें अंगीकारनहींकऱ्या ॥ तभी येसंन्यासी किसीकेउपदेशकूं नहींअंगीकारकरेंगे ॥ काहे तें इनसंन्यासियोंकेबोधवासते इनोंकेनिरादरयुक्तवचनकूंसहनकरिकेभी कृपायुक्तमैंइंद्र इनोंतें श्रुतिप्रमाणपूछताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ नि रादरकूंसहनकरिके उपदेशकेकरणेहारा हमारेतैंविना दूसराकोईहैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेबहिर्मुखसंन्यासियोंतें तुमनें काहेवासतेश्रु तिप्रमाणपूछा ॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन हमारेपूछणेकायहअभिप्रायथा ॥ जभी यहसंन्यासी आत्माकेवास्तवभेदविषे कोईवेदकावचनक हैंगे ॥ तभी तिसीवेदवचनकरिके इनोंकेताई मैंआत्माकाउपदेशकरौंगा ॥ यामेरेअभिप्रायकूंनजाणिकरिके यहमूढसंन्यासी विनाहीकारण तें मेरेऊपर क्रोधकूंकरतेभये ॥ और वेदकेवचनरूपप्रमाणोंकूंभी यहसंन्यासीजाणतेनहीं ॥ और कुतर्कोंकूंकथनकरणेहारेहैं ॥ यातें यहसं न्यासी दंडकरणेयोग्यहै॥किंवा॥यहशास्त्रकानियमहैचांडाल शत्रु पतित दुराचारी इनच्यारोंविषे कोईभी जोयथार्थप्रश्नपूछे॥तो बुद्धिमान्पुरु षनें ताप्रश्नकाउत्तरकह्याचाहिये ॥ यानियमकाभी इनसंन्यासियोंनें त्यागकऱ्याहै ॥ काहेतें साक्षात्मुझइंद्रकरिकेपूछेहुएभी यहसंन्यासी उत्तरकूंनहींकहतेभये ॥ किंवा ॥ इनदुर्बुद्धिसंन्यासियोंकाजन्मभीनिष्फलहै ॥ काहेतें सर्वकर्मकात्यागरूपसंन्यासकूं इनोंनें धारणकऱ्याहै॥ यातें यह कर्मकेअधिकारीभीनहीं॥और वैराग्यादिकसाधनोंतैंरहितहैं॥यातें यह ज्ञानकेअधिकारीभीनहीं॥वैराग्यविवेकशमादिकषट्संपत्ति मुमुक्षुता याच्यारिसाधनोंकरिकेयुक्तपुरुष वेदांतश्रवणविषे अधिकारीहोवैहै ॥ शंका ॥ संन्यासियोंविषे वैराग्यकाअभाव तुमनें कैसेजान्या

है ॥ समाधान ॥ क्रोधरूपहेतुतैं इनोंकेवैराग्यकाअभाव जान्याजावैहै ॥ जहाँ क्रोधरहैहै तहाँ वैराग्यरहैनहीं ॥ काहेतैं प्रथमतो जीवोंकूंज न्महींकष्टरूपहै ॥ ताजन्मतैंभी जन्मकाकारणजोकामहै सो कष्टतरहै ॥ तिसकामतैंभी क्रोध कष्टतमहै ॥ सोक्रोध इनसंन्यासियोंविषे विद्य मानहै ॥ यातैं इनोंविषे वैराग्यकाअभावहै ॥ अब कामतैं क्रोधकोअधिकताकूंदिखावैहैं ॥ कामकरिकेजन्यजोदुःखहै सो परिणामकालविषे प्राणियोंकूंहोवैहै ॥ कामकेवर्तमानकालविषे दुःखहोवैनहीं ॥ और क्रोधतो परिणामकालविषे तथावर्तमानकालविषे सर्वदा जीवोंकूं दुःख केदेणेहाराहै ॥ यातैं कामतैंक्रोध अधिकदुःखरूपहै ॥ किंवा ॥ दूसरीभी कामतैंक्रोधकी अधिकताहै ॥ कामतो जिसशरीरविषेउत्पन्नहो वैहैतिसीशरीररूपआश्रयकूं संतापकरैहै अन्यकूंसंतापकरैनहीं ॥ और परकेताडनरूपफलकरिकैयुक्तहुआ क्रोधतो जिसशरीरविषेउ त्पन्नहोवैहै तिसशरीररूपआश्रयकूं तथाजिसशरीरऊपरक्रोधहोवैहै ताशरीररूपविषयकूं दोनोंकूं संतापकरैहै ॥ याकारणतैंहीं क्रोधकरि केयुक्तहुए कोईकप्राणी आपणेमस्तकका ताडनकरैहैं औरकूपादिकोंविषेगिरैहैं ॥ यातैंभी कामतैंक्रोधकष्टतमहै ॥ किंवा ॥ अन्यभी का मतैंक्रोधकीअधिकताहै ॥ उत्पत्तिकाकारण कामहै ॥ यातैं काम रजोगुणकापरिणामहै ॥ और क्रोध नाशकाकारणहै ॥ यातैं तमोगुणका परिणामहै ॥ काहेतैं अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज यांचारिप्रकारकेप्राणियोंकीजो शरीर मन वाणी करिकैंहिंसाहोवैहै ॥ सोहिंसा क्रोधतैं हींहोवैहै क्रोधतैंविना हिंसाहोवैनहीं ॥ यातैंभी कामतैं क्रोधअधिकहै ॥ किंवा ॥ जैसे कुष्ठादिकरोग त्वचाकूंनाशकरैहैं ॥ तैसे विषयविषेव्या पिरहोजोपुरुषकोकीर्तिहै ताकूं तत्कालहीं क्रोधनाशकरैहै॥किंवा॥परताडनारूपफलकरिकैयुक्तहुआ यहक्रोध जीवोंकूं स्वर्गतैंभीविमुखक रैहै॥तात्पर्ययह ॥ स्वर्गकेकारणजेयज्ञादिककर्महैं तेभी क्रोधकियेतैं स्वर्गरूपफलकेहेतुहोवैनहीं॥दृष्टांत॥जैसेदुर्जनपुरुष राजद्वारविषेप्रवेश रूपफलकरिकैयुक्तहुआ प्रवेशकरावणेहारेपुरुषकूं राजद्वारतैं निकासिदेवैहै ॥ तैसे क्रोधभी पुरुषकूंस्वर्गतैंविमुखकरैहै॥ किंवा ॥ जैसे अश्व वारपुरुषकूं दुष्टअश्व गर्तविषेजाइकेगेरैहै ॥ तैसे यहक्रोधभी पुरुषोंकूं नरकविषेजाइकेगेरैहै ॥ यातैं सुखकोप्राप्तिकोइच्छावान्पुरुषकूं क्रो धकेसमान कोईशत्रुनहीं क्रोधहीपरमशत्रुहै ॥ यातैं सुखकोप्राप्तिकोइच्छावान्पुरुषनैं अवश्य क्रोधकानिरोधकरणा ॥ यहक्रोध कामतैंभी

अधिकदुःखकादेणेहाराहै ॥ किंवा ॥ जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नि शुष्ककाष्ठकूं तथाआर्द्रकाष्ठकूं दाहकरैहै ॥ तैसे पुरुषविषेउत्पन्नहुआक्रोध भी स्वर्गकेसाधनोंकूं तथामोक्षकेसाधनोंकूं नाशकरैहै॥तात्पर्ययह॥साधनोंविषे जोफलकीउत्पत्तिकासामर्थ्यहै सो क्रोधकरिकैनष्टहोइजावैहै॥ किंवा ॥ जैसे वृक्षविषे अग्निरूपहेतुकेज्ञानतैं सरसताकेअभावकाअनुमितिज्ञान दूरदेशविषेस्थितपुरुषकूं होवैहै॥ ताअनुमानकाप्रकारयहहै यहवृक्ष सरसताकेअभाववालाहै ॥ काहेतैं अग्निवालाहोणेतैं ॥ प्रसिद्धवृक्षकीनाई ॥ याअनुमानतैं जैसे वृक्षविषे सरसताकेअभावकानिश्च यहोवैहै ॥ तैसे क्रोधरूपहेतुकेज्ञानतैं इनसंन्यासियोंविषेभी वैराग्यकेअभावकाअनुमितिज्ञानहोवैहै ॥ ताअनुमानकाप्रकारयहहै॥ यहसंपूर्ण संन्यासी वैराग्यतैंरहितहैं ॥ काहेतैं क्रोधवान्होणेतैं ॥ प्रसिद्धअज्ञानीपुरुषोंकीनाई ॥ याअनुमानकरिके इनसंन्यासियोंविषे वैराग्यकेअभा वकाज्ञानहोवैहै ॥किंवा॥ जहाँ क्रोधरहैहै तहाँ इच्छाभीअवश्यरहैहै इच्छातैंविनाक्रोधहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोइच्छाकेविषयका कोईप्रतिबंधक रैहै॥सोइच्छाही क्रोधाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥यहवार्ता गीताविषे भगवान्नैं कामएषक्रोधएष याश्लोकविषे प्रतिपादनकरीहै और लोकवि षेभी यहवार्ताप्रसिद्धहै॥जोकोईपुरुष किसीवस्तुकोइच्छाकरिके किसीपुरुषकेपासजावै॥ तिसवस्तुकीप्राप्तिविषे जोकोई प्रतिबंधकरैहै॥तिस ऊपर तापुरुषका अत्यंतक्रोधहोवैहै ॥ जो इच्छानहींउत्पन्नहोवैतो॥ताकेफलकाभी कोईप्रतिबंधकरैनहीं॥दृष्टांत॥जैसे असत्वंध्यापुत्रकेराज का कोईप्रतिबंधकरैनहीं॥यातैं प्रतिबंधकरिके फलतैंहीनहुईइच्छाही क्रोधाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥ और इनसंन्यासियोंविषे क्रोधदीसता है ॥ यातैं क्रोधकाकारणरूपइच्छाभी अवश्यइनोंविषे होवैगी ॥ और जहाँ इच्छारहैहै तहाँवैराग्यहोवैनहीं ॥ यातैं यहसंन्यासी वैराग्यतैंरहि तहैं ॥ किंवा ॥ इनसंन्यासियोंविषे काम क्रोध दोनोंविद्यमानहैं ॥ कैसेकामक्रोधहैं ॥ निवृत्तिकेउपायतैंरहितहैं ॥ याकारणतैं जयकरणे कूंअसक्यहैं ॥ ऐसेकामक्रोधकेविद्यमानहुए इनसंन्यासियोंविषे वैराग्य कैसेसंभवे ॥ किंतु इनोंविषेवैराग्यनहींहै ॥ यद्यपि स्त्रीकेसंसर्गकी इच्छाकानामकामहै ॥ तथापि ॥ यहाँकामशब्दकरिके इच्छामात्रकाग्रहणकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् आपनैं निवृत्तिकेउपायतैंरहित कामक्रोधकूंकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं मुमुक्षुजन उपायोंकरिके कामक्रोधकीनिवृत्तिकरैहैं ॥ समाधान ॥ जिसउपायकरिके मुमुक्षुजन

कामक्रोधकीनिवृत्तिकरैहै ॥ सोउपाय इनसंन्यासियोंविषेहैनहीं काहेतें ब्रह्मवेत्तामहात्मापुरुषोंकीसेवा तथाप्रश्नरूप सत्संगहीं कामक्रोधके निवृत्तिकाउपायहै ॥ सो उपाय इनोंविषेहैनहीं॥सर्वब्रह्मवेत्तावोंविषेमुख्य गुरु इंद्रकेसाथ यहसंन्यासी मुखतें भाषणभी जभीनहीं करते ॥ तभी इनोनें सेवा तथाप्रश्न क्याकरणाहै ॥ यातें इनोंकेकामक्रोधकेनिवृत्तिकाकोइंउपायनहीं ॥ किंवा ॥ वैराग्यतैंरहित इनसंन्यासियोंकूं संन्यासआश्रमकंधारणतैं किसीफलकोभीप्राप्तिनहींहोवैगी ॥ उलटा इनदेहाभिमानियोंका यासंन्यासकरिके पतनहोवैगा ॥ किंवा ॥ वैराग्यतैंविना इनोंकासंन्यास निष्फलहै ॥ काहेतें संन्यास तथासंन्यासकाफल दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतो विविदिषासंन्यास औरदूसरा विद्वत्संन्यास ॥ तहाँब्रह्मज्ञानकोप्राप्तिवास्ते ॥ सर्वकर्मोंकेत्यागकूं विविदिषासंन्यासकहैहैं ॥ और आत्मसाक्षात्कारकोप्राप्तितं अनंतर जीवन्मुक्तिकेसुखवास्ते सर्वकर्मोंकेत्यागकूं विद्वत्संन्यासकहैहै ॥ तहाँ गुरुमुखतैंवेदांतकाश्रवणकरिकेआत्माकूंनिश्चयकरणा विविदिषासंन्यासकाफलहै॥और जीवन्मुक्तिकेसुखकोप्राप्ति विद्वत्संन्यासकाफलहै ॥ तहाँ विविदिषासंन्यासके आत्मसाक्षात्काररूपफलकी इनसंन्यासियोंविषे संभावनाहैनहीं ॥ काहेतें इनोंविषे आत्मसाक्षात्कारकोइच्छाहैनहीं ॥ इच्छाकेअभावतैं यहमूर्खसंन्यासी आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवास्तेगुरुकेसमीपभीजावैंगेनहीं ॥ गुरुकेसमीपगयेविना आत्मसाक्षात्कार दुर्लभहै ॥ यातें विविदिषासंन्यासकाफल आत्मसाक्षात्कार भी इनोंविषेसंभवैनहीं ॥ जभी विविदिषासंन्यासकाफल आत्मसाक्षात्कार इनोंविषेनहींभया ॥ तभी आत्मसाक्षात्कारतैंअनंतरहोणेवाला जीवन्मुक्तिकाआनंदरूप विद्वत्संन्यासकाफल इनोंविषे कैसेहोवैगा ॥ यातें दोनोंफलकेअभावतें इनोंकासंन्यास निष्फलहै ॥ किंवा ॥ यहसंन्यासी ऐसाभीनहींजाणते ॥ जो संन्यासशब्दकाअर्थ हमारेविषेघटताहै अथवानहीं ॥ जभी संन्यासशब्दके अर्थकूंभी इनोंनें नहीं जान्या ॥ तभी अन्यअर्थकूं यहकैसेजानेंगे ॥ अब संन्यासशब्दकेअर्थकूं दिखावैहैं ॥ संन्यास याशब्दविषे दोपदहैं ॥ एकतो संपदहै और दूसरा न्यासपद है ॥ तहाँ मैब्रह्मरूपहूं या आत्मज्ञानरूपशस्त्रकरिकेमूलअज्ञानसहितकामक्रोधादिकशत्रुओंकाछेदन संपदकाअर्थहै॥और पुनरावृत्तितैंरहित ब्रह्मभावकरिकेस्थिति न्यासपदकाअर्थहै ॥ दोनोंपदोंकोमिलिकरिके यहअर्थहोवैहै ॥ आत्मज्ञानरूपशस्त्रकरि

के मूलअज्ञानसहितकामक्रोधादिकोंकीनिवृत्तिकरिके पुनरावृत्तितैंरहितब्रह्मभावकरिकेस्थिति यह संन्यासशब्दकाअर्थ इनवैराग्यही नोंविषैहैनहीं ॥ यातैं इनोंकासंन्यास निष्फलहै ॥ किंवा ॥ यहसंन्यासशब्दकाअर्थ यद्यपि विद्वत्संन्यासविषेघटैहै ॥ तथापि वि विदिषासंन्यासविषे घटैनहीं ॥ यातैं विविदिषासंन्यासके संग्रहवास्तैं अन्यप्रकारतैं संन्यासशब्दकाअर्थकहैहैं ॥ तहाँ साधनस हितइसलोकके सुखका तथासाधनसहितपरलोकके सुखका त्याग संपदकाअर्थहै ॥ और आत्मज्ञानकीप्राप्तिवास्ते गुरुकेसमीप स्थिति न्यासपदकाअर्थहै ॥ दोनोंपदोंकोमिलिकरिके यहअर्थहोवैहै ॥ साधनसहितसंपूर्णसुखोंकापरित्यागकरिके आत्मज्ञानकीप्राप्तिवास्ते गुरुकेसमीपस्थिति ॥ यह विविदिषासंन्यासशब्दकाअर्थभी इनसंन्यासियोंविषैहैनहीं ॥ यातैंभी इनोंकासंन्यासनिष्फलहै ॥ किंवा ॥ विविदिषासंन्यास तथा विद्वत्संन्यास यहदोनोंसंन्यास मोक्षकेकारणहैं ॥ तेदोनों इनोंविषैहैंनहीं ॥ केवल संन्यासमात्र इनोंनें धारणकऱ्या है ॥ केवलसंन्यासमात्रतैं मोक्षहोवैनहीं ॥ जोकेवलसंन्यासमात्रतैंहीमोक्षहोवै ॥ तौ संन्यासीकेस्वांगकूंधारणकरणेहारेनटोंकाभी मोक्षहोणा चाहिये औरहोवैनहीं ॥ यातैं संन्यासमात्र मोक्षकाकारणनहीं ॥ किंतु विषयजन्यसुखकीइच्छाकेपरित्यागतैं तथाकामक्रोधादिकोंकेपरित्या गतैं मोक्षहोवैहै ॥ शंका ॥ जोपुरुष कामक्रोधादिकोंके वशकरणेमैं समर्थनहींहै ॥ सोपुरुष क्याउपायकरै ॥ समाधान ॥ जोपुरुष सर्वप्र कारतैं कामक्रोधादिकोंकेवशकरणेमैंसमर्थनहींहै ॥ सोपुरुष वारंवार सत्संगकूं तथावेदांतशास्त्रकेविचारकूं करै ॥ जैसे शरदऋतुजलकीम लिनताकूंनष्टकरैहै ॥ तैसे सत्संग औरवेदांतशास्त्रकाविचार शनैःशनैःकरिके कामक्रोधादिकोंकूं नाशकरैहै ॥ और जैसे दुष्टअश्व अश्व विद्याकेजानणेहारेपुरुषकरिके अनंतवारसिखायाहुआभी चिरकालपीछे आपणेदोषोंतैंरहितहोवैहै ॥ तैसे कामक्रोधादिकोंकेवश हुआदुष्टमनगुरुशास्त्रकरिकेसिखायाहुआभीचिरकालपीछे दोषोंतैंरहितहोवैहै ॥ यातैं श्रद्धाकरिकेव्यवधानतैंरहित चिरकालपर्यंतकिया सत्संग औरवेदांतशास्त्रकाविचारही कामक्रोधादिकोंकीनिवृत्तिद्वारा पुरुषोंकेमोक्षकासाधनहै ॥ इनसाधनोंकीभी इनसंन्यासियोंविषे आशाहैनहीं ॥ काहेतैं यहहैंतोमूढ परंतु इनोंकूंआपणेविषे पंडितताकाअभिमानहै ॥ अभिमानीपुरुषतैं सत्संगहोवैनहीं ॥ और इन संन्या

सियोंनें गुरुवेदांतकेवचनकाभी अनादरकऱ्याहै ॥ और आत्मज्ञानतैंरहितहैं ॥ और कर्मक्रियाविषेतत्परहैं ॥ कर्मीपुरुषोंकूं सत्तरिवर्षतैंअ
नंतरहीं संन्यासकाअधिकारहै ॥ ७० सत्तरिवर्षतैंपूर्व कर्मीपुरुषोंकूं संन्यासकाअधिकारहैनहीं ॥ और जिसपुरुषकूं विषयोंविषेउत्कटवैरा
ग्यहोवै ॥ औरआत्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तापुरुषकूं संन्यासकेग्रहणकरणेविषे कालकानियमनहीं ॥ जभीइच्छाहोवै तभीग्रहण
करै ॥ काहेतें श्रुतिविषे आत्माअनात्माकेविवेकवासतै संन्यासकाविधानकऱ्याहै ॥ ताआत्माअनात्माकेविवेककूं यहमूढसंन्यासी करतेन
हीं यातैंपतितहैं ॥ सुरेश्वराचार्यनें वार्तिकग्रंथविषेभी यहवार्ताकहीहै ॥ श्लोक ॥ प्रत्यक्त्वविवेकाय संन्यासःसर्वकर्मणाम् ॥ श्रुत्या
विधीयतेयस्मात् तत्त्यागीपतितोभवेत् ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ देहादिकोंतैंआत्माकेविवेकवासतै सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास श्रुतिनें विधान
कऱ्याहै ॥ जोपुरुष संन्यासकूंधारणकरिकै आत्मविचारकापरित्यागकरैहै ॥ सोपुरुष पतितहोवैहै ॥ १ ॥ किंवा ॥ जोपुरुष उत्कटवैराग्य
तैंरहितहै ॥ और ब्रह्मलोककीप्राप्तिकीकामनावालाहै ॥ तिसपुरुषकूं७०सत्तरिवर्षतैंअनंतर क्रमसंन्यासविषे अधिकारहै ॥ तासंन्यासकरि
कै ब्रह्मलोकविषेजावैहै ॥ याप्रकारकेक्रमसंन्यासकरिकै तथापूर्वउक्त अक्रमसंन्यासकरिकै जेपुरुष रहितहैं ॥ केवलवेशमात्र जिनोंनें धारण
कऱ्याहै ॥ तिनोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्ति तथामोक्षकीप्राप्ति होवैनहीं किंतु दोनोंतैंभ्रष्टहोवैहैं ॥ किंवा ॥ यहसंन्यासी यद्यपि सदाचारकरिकेपु
क्तहैं औरब्राह्मणहैं यातैंउत्कृष्टहैं ॥ तथापि जैसे दुष्टअश्व मार्गकापरित्यागकरिकै कुमार्गविषेचालैहै ॥ तैसे यहसंन्यासीभी आत्मविचाररू
पमार्गकापरित्यागकरिकै कुमार्गविषेवर्ततेहैं ॥ इनोंकीशिक्षाकरणेहारा कोईहैनहीं ॥ काहेतें शिक्षाकरणेहारा एकतोगुरुहोवैहै ॥ और दूस
राराजाहोवैहै ॥ तहां गुरुतोइनसंन्यासियोंकाकोईहैनहीं ॥ जो इनोंकूंबलात्कारतैं आत्मविचाररूपमार्गविषेचलावै ॥ और यहसंन्यासी
आपणेबलकरिकैआपनेंकूं वेदांतविचारविषेप्रवर्तकरणेमेंभीसमर्थहोवैनहीं ॥ काहेतें गुरुइंद्रकरिकैउपदेशकियेहुएभी यहसंन्यासी वेदके
अर्थविषे बुद्धिकूंएकाग्रनहींकरतेभये ॥ यातैं ऐसाजान्याजावैहै ॥ इनोंकामन किसीप्रकार वशहोणेवालानहीं ॥ यातैं यहदुरात्मासंन्यासी
राजाकरि कै शासनाकरणेयोग्यहैं ॥ सोराजा तीनलोकोंकामैंइंद्रहूं ॥ यातैंमैंहीं इनोंकूंशासनाकरों ॥ इसप्रकार संन्यासियोंकेअपराधोंकूं

विचारकरिके दंडदेणेकानिश्चयकऱ्या ॥ पुनः याप्रकारकाइंद्र विचारकरताभया ॥ इनसंन्यासियोंकूं कौनदंडकरिये ॥ तहाँ धनकाह
रणरूपदंड तो इनोंविषेसंभवेनहीं ॥ काहेतैं या संन्यासियोंकेपास धनकासंग्रहहैनहीं ॥ और दूसरा मस्तककामुंडनरूपदंडभी इनसंन्या
सियोंविषेसंभवेनहीं ॥ काहेतैं यहसंन्यासी प्रथमहींमुंडितहैं ॥ और तीसरा देशतैंनिकासणारूपदंडहै ॥ सोभी इनसंन्यासियोंविषे
संभवेनहीं ॥ काहेतैं संपूर्णदेश हमाराहै ॥ किंवा ॥ इनसंन्यासियोंकूं या स्थूलशरीरकरिके जोत्रिलोकीतैंबाहिरजाणेकासामर्थ्यहोवे ॥ तो
इनोंकूं देशतैंनिकासणारूपदंडसंभवे ॥ सोइनसंन्यासियोंकूं यास्थूलशरीरकरिके त्रिलोकीतैंबाहिरनिकसणेविषेसामर्थ्यहैनहीं ॥ और सं
पूर्णत्रिलोकीहमारादेशहै ॥ यातैं देशतैंनिकासणारूपदंडभी इनसंन्यासियोंविषे संभवेनहीं ॥ परिशेषतैं इनसंन्यासियोंविषे शरीरकाना
शरूपदंड कऱ्याचाहिये ॥ इसप्रकारकाविचारकरिके संपूर्णलोकोंकारक्षणकरनेहारा मैंइंद्र वेदांतविचारतैंरहितसंपूर्णसंन्यासियोंकूं वनविषे
हननकरिके श्वानोंकेताईं देताभया ॥ और तिनसंन्यासियोंकेमस्तक मांसतैंरहितअस्थिरूपहैं ॥ यातैं ते मस्तक भूमिविषेगिरतेभये ॥
और अंतर्यामीमैंइंद्रकरिकेप्रेरनाकरेहुवेतेश्वान कर्मीलोकोंकोदिखावणेवासते तिनसंन्यासियोंकेमांसकूंलेकरिके यज्ञभूमिकेदक्षिणदिशाविषे
भक्षणकरतेभये ॥ ताकरिके कर्मीलोकोंकूं याअर्थकाबोधनकरतेभये ॥ हेकर्मीलोको वैराग्यतैंविनातुमोंनैं कर्मोंकात्यागनहींकरणा ॥
जोवैराग्यतैंविना तुम कर्मोंकापरित्यागकरोगे ॥ तो जैसे इनसंन्यासियोंकोदुर्गतिभईहै ॥ तैसे तुमारीभीदुर्गतिहोवेगी ॥ याअर्थकेबोध
नकरणेवासते मुझइंद्रकरिकेप्रेरनाकरेहुवेश्वान यज्ञभूमिविषे संन्यासियोंकेमांसकूंभक्षणकरतेभये ॥ और तिनसंन्यासियोंके जेवनविषेमस्त
कपडेथे ॥ तेमस्तक खर्जूरवृक्षाकारपरिणामकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर खर्जूरवृक्षोंकाजोसाररूपरसहै सो ऊर्ध्वभागकूंजाताभया ॥
पुनःसोरसभूमिविषेपतनहोताभया तारसतैं करीरवृक्ष उत्पन्नहोतेभये॥तेकेसेकरीरहैं सौम्यस्वभाववालेहैं ॥याकारणतैंहीं देवतावोंकीप्रसन्न
ताकरणेवासतैंतेकरीरयज्ञकोआहुतिकासाधनहै ॥शंका॥करीरोंविषेसौम्यता किसहेतुतैंप्राप्तहोतीभई ॥ समाधान ॥ परंपराकरिकेकरीरोंकी
संन्यासियोंतैंउत्पत्तिभईहै॥ और संन्यासी स्वभावतैंकोधतैंरहित और सौम्यस्वभाववान्थे ॥यातैं कारणकोसौम्यताकरिके करीरोंविषेसौ

म्यताहै ॥ शंका ॥ पूर्वआपनें संन्यासियोंविषे क्रोधादिकोंकाकथनकऱ्या ॥और अभी क्रोधादिकोंतेंरहित सौम्यस्वभाव संन्यासियोंकोक
ह्या ॥ यातें पूर्वउत्तर कथनका विरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ देहत्यागतेंपूर्व यद्यपि तिनसंन्यासियोंविषेक्रोधादिकथे ॥ तथापि देहकाप
रित्यागरूपदंडतें पापरूपक्रोधादिक तिनसंन्यासियोंकेनिवृत्तहोतेभये॥और संन्यासियोंकास्वभावजोसौम्यताहै तिसविषेस्थितहोतेभये ॥
॥ शंका ॥ तौभी संन्यासियोंकोसौम्यता करीरोंविषे किसप्रकारआवतीभई ॥ समाधान ॥ तिनसंन्यासियोंकाजोवीर्यहै सो ऊर्ध्वगतिवाला
है ॥ तावीर्यकरिकैयुक्तजेसंन्यासियोंकेमस्तकहैं ॥ तिनोंतेंखर्जूरवृक्ष उत्पन्नहोतेभये ॥ और तिनमस्तकोंविषे चिरकालपर्यंत कामरूप अ
ग्निकेक्षोभतेंरहितवीर्यकूं तिनसंन्यासियोंनें धारणकऱ्याथा ॥ सोसौम्यस्वभाववान्वीर्यही खर्जूररसभावकमकरिके करीरभावकूंप्राप्तहोता
भया ॥ तासौम्यकरीरोंकीआहुतिकरिके सर्वकाआत्मामैंइन्द्र प्रसन्नहोवोंहों ॥ और सर्वजीवोंकूंउपकारकरणेहारो सौम्यतमवृष्टिकूं करताहूं
तात्पर्ययह ॥ संन्यासीतो सौम्यहैं ॥ और तिनोंकेवीर्यकापरिणामकरीर सौम्यतरहै ॥ और करीरोंकापरिणामरूपवृष्टि सौम्यतमहै ॥ यहां
तरतमशब्द अधिकताकेवाचकहैं ॥ और करीरशब्द वांसकावाचकहै ॥ शंका ॥ शरीरत्यागतेंअनंतर तिनसंन्यासियोंकी कोनगतिहोती
भई ॥ समाधान ॥ पूर्व ता संन्यासियोंकेआत्मविचारविषे कोईपापकर्म प्रतिबंधकथा ॥ तापापकर्मकी शुक्लइंद्रकेदंडकरिके निवृत्तिहोती
भई ॥ पश्चात् तेसंन्यासी क्रोधादिकोंतेंरहितहोतेभये ॥ और याशरीरकूंपरित्यागकरिके जन्मांतरकूंपावतेभये ॥ ताजन्मांतरविषे ब्रह्म
विद्याकेप्रवर्तक जेव्यासभगवान् तथानारदादिकऋषिहैं तिनोंकीब्रह्मविद्यारूपसंततिविषे प्राप्तहोतेभये ॥ तहां मैंब्रह्मइं याप्रकारके
आत्मज्ञानकरिके तिनोंकेसंपूर्णविकार नष्टहोतेभये ॥ और शुक्लइंद्रकेसाथ तेसंन्यासी अभेदभावकूंप्राप्तहोतेभये ॥ हेप्रतर्दन
इसप्रकार विश्वरूपपुरोहितकूं तथावरशापदेणेविषेसमर्थ और कर्मकांडविषेतत्पर ऐसेजेब्राह्मणसंन्यासीयेतिनसंन्यासियोंकूं मैंइंद्र
हननकरताभया ॥ तौभी आत्मज्ञानकेप्रभावतें मेरेकूं किंचित्मात्रभी पापकास्पर्शनहींहोताभया ॥ हेप्रतर्दन केवल विश्वरूपपुरोहितकूं
तथासंन्यासियोंकूं हमनें नहींहननकऱ्या ॥ किंतु ॥ अन्यभीकोटीदैत्योंकूं हमनें हननकऱ्याहै॥ कैसेतेदैत्यथे ॥ वेदोंकूंजानणेहारेथे ॥ और

मायाकाआचार्यजोमयदैत्यहै तिसकूंभी मोहकरणेहारियां ऐसीजोमायाहैं तिनमायावोंकरिकेयुक्तथे ॥ और हमारेसमान जिनोंकाब
लथा ॥ कोईहमारेतैंभीअधिकबलवान्थे ॥ और सूर्यकीन्याई जिनोंकातेजथा ॥ ऐसेदैत्योंके अनंतप्रकारकीमायाकूं तथाविचित्रब
लकूं तिरस्कारकरिके जिसआत्मज्ञानकेप्रभावतें तिनदैत्योंकूं मैंइंद्र हननकरताभया ॥ तहाँ स्वर्गलोकविषे प्रह्लादकेसंबंधीदैत्यों
कूं मैं हननकरताभया और अंतरिक्षलोकविषे पुलोमाकेपुत्रोंकूं मैंहननकरताभया ॥ और भूमिलोकविषे कालसंज्ञनामादैत्योंकूं मैं ह
ननकरताभया ॥ हेप्रतर्दन इसप्रकार विश्वरूपपुरोहितकूं तथाकोटीसंन्यासियोंकूं तथाकोटीदैत्योंकूं मैंइंद्र हननकरताभया ॥ परंतु तिन
ब्राह्मणोंकेशापकरिके तथातिनदैत्योंकेशस्त्रोंकरिके जो आत्मज्ञानकेप्रभावतें मेरारोममात्रभी छेदननहींहोताभया ॥ और लोकविषे
मेरीअपकीर्तिभीनहींहोतीभई ॥ उलटा लोकविषे हमारी याप्रकारकीकीर्तिहोतीभई ॥ जोलोकवेदकरिकेनिंदित अनंतकर्मोंकूं इंद्र करता
भया ॥ तोभी आत्मज्ञानकेप्रभावतें ताकूं किंचित्मात्रभी पापकास्पर्शनहींहोताभया याप्रकारकीकीर्तिहमारीहोतीभई ॥ हेप्रतर्दन निवृ
त्तिकेउपायतैंरहित जेब्राह्मणसंन्यासियोंकेशापहैं ॥ तथा निवृत्तिकेउपायतैंरहित दैत्योंके ब्रह्मअस्त्रतें आदिलेकेजितनेकअस्त्रहैं ॥ तथा
मयदैत्यकूंभीमोहितकरणेहारियां जितनीकदैत्योंकीमायाहैं॥तथा मेरेतैंअधिकबलवान् दैत्योंकरिके चलायेजेशस्त्रहैं ॥ कैसेहैंतेशस्त्र मृत्यु
केमुखसमानहैं ॥ और सुमेरुपर्वतकूंभीभेदनकरणेहारेहैं ॥ याप्रकारके ब्राह्मणोंकेशाप तथादैत्योंकेअस्त्र तथादैत्योंकीमाया तथादैत्योंके
शस्त्र यहसंपूर्ण जिसआत्मज्ञानकेप्रभावतें मेरेलोमकूंभी नहींछेदनकरतेभये ॥ हेप्रतर्दन जैसे मुझ इंद्रकूं आत्मज्ञानकेप्रभावतें निषिद्ध
कर्मोंकेकरणेकरिकेभी पापकास्पर्शनहींहोताभया ॥ तैसे दूसराभीजोकोईदेवता अथवामनुष्य याआत्मज्ञानकूंसंपादनकरेगा॥ तिसकूंभी
आत्मज्ञानकेप्रभावतें निषिद्धकर्मोंकेकरणेकरिके पापकास्पर्शनहींहोवेगा ॥ पापकेउत्पत्तिकरणेहारेनिषिद्धकर्मोंकूं अब संक्षेपतैंनिरूपण
करैहैं ॥ आपणेमातापिताकेनाशकरणेतें ॥ जीवोंकूं पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और स्वर्णकीचोरीतें पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और वेदपाठी
ब्राह्मणकेमारणेतें पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और गर्भकेनाशकरणेतें पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और ब्रह्मवेत्तामहात्माकेमारणेतें पापकीउत्प

त्तिहोवैहै ॥ और आपणेमित्रकेमारणेतैं पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और ब्राह्मणकूं अथवा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या तीनवर्णोंकूं मदिराकेपान करणेतैं पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और आपणीमाताकेसाथमैथुनतैं पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिनोंविषेभी स्वर्णकीचोरीकरणेहारापुरुष ॥ तथा ब्रह्महत्याकोकरणेहारापुरुष ॥ तथा मदिरापानकरणेहारापुरुष ॥ तथा गुरुकीस्त्रीकेसाथमैथुनकरणेहारापुरुष ॥ यहचारों कर्मक रिकेचंडालहैं ॥ याकारणतैं पतितहैं ॥ याचारोंकेसाथ एकवर्षपर्यंत जोकोईपुरुष स्नानपानादिकसंबंधकूंकरताहै ॥ सोभी तिनचारोंके समानहींपापकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहपंच महापातकहैं ॥ इसतैंआदिलैकेजितनेपापकर्मशास्त्रविषेकहेहैं ॥ तिनसंपूर्णपापकर्मोंकरिकै तत्त्व वेत्ताका लोममात्रभी छेदननहींहोता ॥ हेप्रतर्दन जिसपुरुषकूं मुझ अद्वितीयआत्माकाज्ञानभयाहै ॥ सोपुरुष जोकदाचित् पापकर्मकरणे कीइच्छाभीकरताहै ॥ तोभी तापापकर्मकरिकै तिसकेमुखकीकांति निवृत्तनहींहोती ॥ और जो आत्मज्ञानतैंरहितपुरुषहै ॥ तिसकी पापकर्मतैं मुखकीकांति निवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं यालोकविषे ब्रह्मविद्याकेसमान कोईभीवस्तुनहीं ॥ ब्रह्मविद्याहीं सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ और हेप्रतर्दन याब्रह्मविद्याका कैसाप्रभावहै ॥ तत्त्ववेत्तापुरुष पापकर्मकीइच्छाकरैहै अथवा अनंतपापकर्मोंकूंकरैहै ॥ तोभी तिसतत्त्व वेत्तापुरुषको सर्वात्मदृष्टिकूंदेखिकरिकै बांधव तथाराजा तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं पंक्तितैंबाहरनहींकरते ॥ और शरीरकादंडनहींकरते ॥ और वाणीकरिकै तिसतत्त्ववेत्ताकूं शिक्षाभीनहींकरते ॥ उलटा ताके आत्मज्ञानकेप्रभावकूंदेखिकरिकै विस्मयकूंप्राप्तहुवे बांधव तथा राजाआदिक तातत्त्ववेत्ताकूं अधिकतैं अधिक आदरकरैहैं ॥ काहेतैं संपूर्णविश्वकूं आत्मस्वरूपकरिकेजानणेहाराजोतत्त्ववेत्तापु रुषहै ॥ तिसतैंभिन्न कोईराजाआदिकहैंनहीं ॥ किंतु संपूर्णराजादिकोंका तत्त्ववेत्तापुरुष आत्माहै ॥ और आपणेआत्माकेअनिष्टकूं कोईभीप्राणीकरतानहीं ॥ यातैं तत्त्ववेत्तापुरुषका बांधव तथाराजादिक कोईभी निरादरनहींकरता ॥ किंतु संपूर्ण ताका आदरकरैहैं ॥ यातैं अद्वितीयआत्माकाज्ञानहीं पुरुषोंकूं हिततमहै ॥ इसप्रकार इंद्रकेमुखतैं हिततमआत्मज्ञानकूंश्रवणकरिकै सो प्रतर्दन राजा आपणेअभिप्रायकेबोधनकरणेहारियां जेशरीरकीचेष्टाहैं तिनचेष्टावोंकरिकै इंद्रसैंपूछताभया ॥ अब ताचेष्टावोंकूंदिखावैहैं ॥ इंद्रकेवचनों

कूंश्रवणकरिकै ताप्रतर्दनराजाकामुख विकासमानहोताभया ॥ और नेत्रभी कमलकीन्याई प्रफुल्लितहोतेभये ॥ परंतु तुमारेवचनों करिकै मैंकृतार्थभयाहूं याप्रकारकेवचनकूं तथा विरोधयुक्ततुमारेवचनतैं हमारेकूंसंशयउत्पन्नभयाहै याप्रकारकेवचनकूं सोप्रतर्दनराजा इंद्रकेप्रति न कहताभया किंतु मौनहोताभया ॥ इसप्रकारकीचेष्टाकरिकै प्रतर्दनराजानैं आपणेजडताकूंसूचनकऱ्या ॥ इष्टअर्थ और अनिष्टअर्थकेदर्शनकरिकै उत्पन्नभयाजो कर्तव्यअर्थकाअनिश्चय ताकानाम जडताहै ॥ तहाँ इंद्रकूंमैंने वरकरिकैवशकऱ्याहै ॥ यातैं हिततमआत्मज्ञानकूं अवश्यहमारेताईदेवैगा ॥ याप्रकारका इष्ट अर्थकादर्शन प्रतर्दनराजाकूं होताभया ॥ और मेरेकूंतुम जानो यहवचन जोइंद्रनैंकह्या ॥ यहाँ मेरेकूं याअस्मदशब्दके अनेकअर्थ संभवहोइसकतेहैं ॥ जोमैं किंचित्मात्रकथनकरोंगा ॥ तो मेरीबुद्धिकीमंदता सिद्धहोवैगी ॥ याप्रकारके अनिष्टअर्थकादर्शन प्रतर्दनराजाकूं होताभया ॥ इसप्रकार जडभावकूंप्राप्तहुए प्रतर्दनराजाकूंदेखिकरिकै सर्वज्ञइंद्र आपणेमनकरिकै याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ यहप्रतर्दनराजाआपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताहै ॥ आत्मज्ञानकी स्तुतिकरणेहाराजोयहइंद्रहै तिसनैं आत्मज्ञानविषेहमारेविश्वासकरावणेवासतैं आपणेकूंपापकर्मोंका अस्पर्शदिखाया॥तो भी इंद्रकरिकैउप देशकऱ्याजोहिततमज्ञानताज्ञानकेविषयविषे हमारेकूंसंशयहोवैहै ॥ काहेतैं मेरेकूंतुंजान यहजोपूर्वहमारेताई ॥ इंद्रनैं उपदेशक ऱ्या ॥ यहाँमेरेकूं याअस्मदशब्दकरिकै तथाज्ञानकरिकै कौनअर्थकूं इंद्रनैं बोधनकऱ्या ॥ सहस्राजिसकेनेत्रहैं औरवज्रजिसकेहस्त विषेहै औरसंपूर्णदेवता जिसकेपादोंकोसेवाकरैहैं औरशचीकापति ऐसाजोस्थूलशरीरहमारेसन्मुखस्थितहै सो अस्मदशब्दकाअर्थहै ॥ अथवा या शरीरतैंभिन्न औरशरीरके अंतर अन्यकोईआत्मा ॥ अर्थहै ॥ सोशरीरकेअंतरवर्तमानआत्माभी कौनहै ॥ मेरेकूंतुमजाणो याश ब्दकावक्ताजीवात्माहै ॥ अथवा साक्षीआत्माहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मेरेकूंतुमजाणो यहजोवचन इंद्रनैंकह्या ॥ यहाँ मेरेकूंयाअस्मदशब्दका क्याअर्थहै ॥ स्थूलशरीरअर्थहै अथवाजीवात्माअर्थहै अथवासाक्षीचेतनअर्थहै ॥ तहाँ स्थूलशरीरविषे तथाजीवविषे तो मेरेकूंतुमजाणो याइंद्रकेवाक्यकीविषयता संभवैनहीं ॥ काहेतैं स्थूलशरीर तथाजीव दोनों परिच्छिन्नहैं ॥ तापरिच्छिन्नकेज्ञानतैं अपरिच्छिन्नफलकीप्राप्ति

होवैनहीं ॥ और तोसराजोसाक्षीकूटस्थहै तिसविषेभी मेरेकूंतुमजाणो याइंद्रकेवचनकी तथाज्ञानकी विषयतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोसाक्षी
चेतन मनवाणीकाअगोचरहै ॥ याप्रकारकेसंशयकूं जोमैं प्रगटकरोंगा॥तौ मेरेबुद्धिकीमंदतासिद्धहोवैगी॥ और जोयासंशयकूंनहींप्रगटकरों
गा ॥ तौ हमारेकूं संशयविपर्ययतैंरहित आत्मज्ञान नहींहोवैगा ॥ इसप्रकारकोंचिंताकरिकै व्याकुलभयाहैमनाजिसका ऐसाजोयहप्रतर्द
नराजाहै ॥ सोसुझइन्द्रकेप्रति किंचित्मात्रवचनकूं नहींकहता ॥ काहतैं आपणेबुद्धिकीन्यूनतासंपादकक्रियाविषे बुद्धिमान्पुरुषोंकीरुचि
होवैनहीं ॥ किंवा ॥ प्रतर्दनराजानैं याअभिप्रायकरिकैभी मौनकूंधारणकऱ्याहै ॥ हममनुष्य आपणेहिततमकूंनहीं जाणते॥ यातैं तुमआ
पहीविचारिकरिकै हिततमवरकूंदेवो ॥ याप्रकार जभीहमनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी इंद्र आपहींहमारेवासतैं हिततमवरकूंकथनकरताभ
या ॥ यातैं इंद्रकूं वरप्रदानकरिकै हमनैं आपणेवशकऱ्याहै ॥ जोमैं नहींभीपूछोंगा ॥ तोभी आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते आपहीइंद्र
हमारेसंशयकीनिवृत्तिकरैगा ॥ याप्रकारका मनविषेविचारकरिकै यहप्रतर्दनराजा हमारेसैंपूछतानहीं ॥ और आत्मज्ञानकीइसकूं प्राप्ति
भईनहीं ॥ याकारणतैं मैंकृतार्थहुआहूं ऐसावचनभी यहप्रतर्दनराजा कहतानहीं ॥ यातैं आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते
याप्रतर्दनराजाकूं हिततमआत्मज्ञानविषे जबपर्यंत संशयका अभावहोवै तबपर्यंत विनाहीपूछेतैं इसकेताईं उपदेशकरणायोग्यहै॥याप्रकार
काविचारकरिकै पुनःइंद्र ऐसाविचारकरताभया॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा अलौकिकपदार्थहै॥और मनवाणीकाअगोचरहै॥यातैं या आत्मा
केसाक्षात्कहणेविषे हमसमर्थनहीं ॥ और यहप्रतर्दनराजाभी साक्षात् आत्माकेजानणेविषे समर्थनहीं ॥ किंतु उपाधिद्वारा आत्माकेकथन
विषे हमसमर्थहैं॥और यहप्रतर्दनराजाभी उपाधिद्वारा आत्माकेजानणेविषे समर्थहै॥यातैं किसीउपाधिकूंद्वारकरिकै प्रतर्दनराजाकेताईं आ
त्माका मैंउपदेशकरों ॥ तिनउपाधियोंविषेभी स्थूलशरीरतथाइंद्रियादिकउपाधियोंकीअपेक्षाकरिकै क्रियाशक्तिवालाप्राण औरज्ञानश
क्तिवालीबुद्धि यहदोनोंउपाधियों आत्माकेसमीपहैं॥यातैंलोकप्रसिद्धप्राणकूं तथाप्रज्ञारूपउपाधिकूं अंगीकारकरिकै प्रतर्दनराजाकेताईं अ
लौकिकआत्माकाहम कथनकरैं॥अब संपूर्णउपाधियोंतैं प्राणऔरप्रज्ञारूपउपाधिविषे अधिकताकूंदिखावैहैं॥प्राणऔरप्रज्ञाकेविद्यमानहुए

देहइंद्रियादिकोंकीस्थितिहोवैहे॥और प्राणप्रज्ञाकेअभावहुवे देहइंद्रियादिकोंकीस्थितिहोवैनहीं ॥ याअन्वयव्यतिरेककरिके संपूर्णशरीरादि
कउपाधियोंकीसाधकता प्राणप्रज्ञाविषेसिद्धहोवैहे॥यातैंप्राणप्रज्ञाही सर्वउपाधियोंतैंउत्कृष्टहैं ॥ यहाँ यहतात्पर्यहै॥जिसउपाधिकेकथनकरि
के मुमुक्षुकूं सुखेनहीं आत्माकाबोधहोवे और लाघवहोवे ॥ तिसीउपाधिकूंअंगोकारकरिके तत्त्ववेतापुरुषनें आत्माकाउपदेशकरणा ॥या
प्रकारकानियमभीप्राणप्रज्ञाविषेहींघटैहे॥काहेतैंजिसकेविद्यमानहुएदेहादिकोंकीस्थिति ॥औरजिसकेअविद्यमानहुएदेहादिकोंकाअभावयाअ
न्वयव्यतिरेककरिके देहादिकसंघातकीसाधकता आत्माकालक्षणहे ॥ सोलक्षण प्राणप्रज्ञाविषेभीसंभवेहे ॥ यातें प्राणप्रज्ञा आत्माहैं॥याप्र
कार प्राणप्रज्ञाविषे जभी मुमुक्षुकीआत्मबुद्धिहोवैहे तभी प्राणप्रज्ञाकेसाक्षात्प्रवर्तकशुद्धआत्माविषेभी सुखेनहीं मुमुक्षुकीबुद्धिहोवेहे ॥
तात्पर्ययह ॥ जैसे अत्यंतसूक्ष्मअरुंधतीतारेकूं जानणेहारापुरुष अन्यकिसीपुरुषकूं जभी अरुंधतीदिखावेहे ॥ तभी अरुंधतीकेसमीपव
र्ती जेस्थूलतारेहैं ॥ तिनोंकूं प्रथम अरुंधतीरूपकरिकेंदिखावेहे ॥ जभी देखणेहारेपुरुषकीदृष्टि तिनस्थूलतारोंविषेठहरेहे ॥ तभी क्रमतेंसा
क्षात्अरुंधतीविषेभी ताकीदृष्टिपहुंचेहे ॥ तैसे शुद्धआत्माकेजनावणेवासते प्राणप्रज्ञाकाही आत्मरूपकरिके प्रथमउपदेशकऱ्याचाहिये ॥
किंवा ॥ प्राणप्रज्ञाशब्दकेलक्षणावृत्तिकरिके आत्माकाबोधमानणेमें प्राणप्रज्ञाकाआत्माकेसाथ साक्षात्संबंधसंभवेहे ॥ यातें लाघवभीहे ॥
और शरीरादिकउपाधिकूं अंगीकारकरिके जोआत्माकाबोधनकरिये ॥ तो प्राणप्रज्ञाद्वारा आत्माकाबोधहोवैहे साक्षात्बोधहोवैनहीं॥ और
शरीरादिकपदोंकेलक्षणावृत्तिकरिके आत्माकाबोधमानणेमे शरीरादिकोंकाआत्माकेसाथि प्राणप्रज्ञाद्वारा परंपरासंबंधसंभवेहे ॥ साक्षात्
संबंधसंभवेनहीं ॥ सोपरंपरासंबंध गौरवरूपदूषणकरिकेयुक्तहे ॥ यातें प्राणप्रज्ञारूपउपाधिकूं अंगीकारकरिके आत्माकेबोधनाविषेही सुग
मताऔरलाघवताहे ॥शंका ॥ पूर्वउक्तअन्वयव्यतिरेककरिके देहइंद्रियादिकोंकीसाधकतारूप आत्माकालक्षण प्राणप्रज्ञाविषे संभवेनहीं ॥
काहेतें प्राणप्रज्ञाका परस्पर व्यतिरेकहे तात्पर्ययह ॥ प्राणकूंछोडिकेप्रज्ञारहेहे ॥ और प्रज्ञाकूंछोडिकेप्राणरहेहे ॥ समाधान ॥ क्रियाशक्ति
वालाप्राण प्रज्ञातैंविनारहेनहीं ॥ तथा ज्ञानशक्तिवालीप्रज्ञाभी प्राणतैंविनारहेनहीं ॥ जहाँ प्रज्ञाकाअभावहोवेहे ॥ तहाँ प्राणकाभीअभाव

होवैहै ॥ जैसे स्थावरवृक्षोंविषे प्रज्ञास्वरूपबुद्धि प्रत्यक्षदीखैनहीं ॥ यातैं प्राणभी तिनवृक्षोंविषेदीखैनहीं ॥ शंका ॥ जैसे शरीरविषे शस्त्रकरिकैघावहोवैहै ॥ सोघाव चिरकालपीछेमिलिजावैहै ॥ तैसे वृक्षविषे कुठारादिकोंकरिकेकन्याजोघाव सोभी चिरकालपीछेमिलि जावैहै ॥ और जैसे शरीरकीवृद्धिहोवैहै ॥ तैसे वृक्षोंकीभीवृद्धिहोवैहै ॥ यातैं घावकामेलनरूपहेतुतैं तथावृद्धिरूपहेतुतैं वृक्षोंविषे प्राणकाअ नुमानसंभवैहै ॥ यातैं प्रज्ञारूपबुद्धिकूंछोडिकेभी प्राण वृक्षोंविषेरहैहै ॥ समाधान ॥ जैसे घावकेमेलनरूपहेतुतैं तथावृद्धिरूपहेतुतैं वृक्षोंवि षे प्राणकाअनुमानसंभवैहै ॥ तैसे लताकाउच्चदेशविषेगमनरूपहेतुतैं तिनोंकिप्रज्ञारूपबुद्धिकाभी अनुमानहोइसकैहै ॥ वृक्षोंविषे सूक्ष्मरूप करिके यद्यपि प्राणप्रज्ञाहैं ॥ तथापि स्पष्टरूपकरिकेनहीं ॥ शंका ॥ जहाँ प्रज्ञाकाअभावहोवैहै॥तहाँ प्राणकाभीअभावहोवैहै॥ यह पूर्वआ पनैंकह्या॥सोसंभवैनहीं॥काहेतैं सुषुप्तिविषे प्रज्ञारूपबुद्धिकेअभावहुवेभी प्राणकीविद्यमानतादीखैहै॥समाधान॥सुषुप्तिअवस्थाविषे प्रज्ञाका अत्यंताभावनहीं॥किंतु कारणस्वरूपहोइकेबुद्धिसुषुप्तिअवस्थाविषेरहैहै॥यातैंजहाँ प्रज्ञाकाअभावहोवैहै ॥तहाँ प्राणकाअभावभीअवश्यहो वैहै यहसिद्धभया॥औरजहाँ प्राणकाअभावहोवैहै॥तहाँ प्रज्ञाकाअभावभीअवश्यहोवैहै॥जैसे घटादिकोंविषे प्राणकाअभावहै॥यातैंतिनोंविषे प्रज्ञाकाभीअभावहै॥यातैंप्राणऔरप्रज्ञाएकदूसरेकूंछोडिकेरहैंनहीं॥यहसिद्धभया॥तेप्राणऔरप्रज्ञादोनोंआत्मज्ञानकेहेतुहैं॥काहेतैंजैसेस्तंभादि कजडहोणेतैं आपणेप्रतीतिविषे दीपकादिकप्रकाशकोअपेक्षाकरैहैं ॥तैसे प्राण और प्रज्ञाभी जडहोणेतैं आपणीप्रतीतिविषे किसीदूसरेप्रका शकी अपेक्षाकरैहैं॥सो प्राणप्रज्ञाकेप्रकाशकरणेहारा कूटस्थआत्माहै॥ याप्रकारकीयुक्तिकरिके प्राणप्रज्ञाकूं आत्मज्ञानकीकारणताहै॥यहाँ यह अभिप्रायहै॥ प्राणशब्द और प्रज्ञाशब्द शक्तिवृत्तिकरिकेतो आत्माकेबोधकहैंनहीं॥काहेतैं शक्तिवृत्तिकरिके सत्यादिकपदभी आत्मा कूंबोधनकरैनहीं ॥ किंतु ॥ लक्षणावृत्तिकरिके प्राणशब्द औरप्रज्ञाशब्द आत्माकेबोधकहैं ॥ सोलक्षणा शक्यअर्थकीअनुपपत्तितैंविनाहो वैनहीं॥ जैसे गंगाविषेग्रामहै यावाक्यविषे गंगापदकाशक्यअर्थ जलकाप्रवाहहै॥ ताप्रवाहविषे ग्रामकीअधिकरणता अनुपपन्नहै॥यातैं गंगा पदकी तीरविषेलक्षणाहोवैहै॥तैसे यहाँप्रसंगविषेभी प्राणमैंहूं और प्रज्ञामैंहूं यहवचन इंद्रनैंकह्या॥ तहाँ शरीरकेअंतरसंचारीवायु प्राणशब्द

काशक्यअर्थहै ॥ और अंतःकरणकीवृत्तिविशेषबुद्धि प्रज्ञाशब्दकाशक्यअर्थहै ॥ तादोनोंशक्यअर्थोंविषे आत्मतासंभवैनहीं ॥ यातें प्राण शब्दको तथाप्रज्ञाशब्दको प्राणप्रज्ञाकेप्रवर्तकचेतनआत्माविषे लक्षणासंभवैहै ॥ याअर्थकेनिरूपणकरणेवासते प्रथम प्राणप्रज्ञाशब्दकेश क्यअर्थकूं तथाशक्य अर्थकेअनुपपत्तिकूं दिखावैहैं ॥ तहाँ प्राण याशब्दविषेदोपदहैं॥एकतो प्रपदहै और दूसरा अनपद है॥तहाँ प्रपदका अतिशय अर्थहै ॥ और अनपदका चलनरूपक्रियाअर्थहै ॥ तैसे प्रज्ञा याशब्दविषेभीदोपदहैं ॥ एकतो प्रपदहै और दूसरा ज्ञा पदहै ॥ तहाँ प्र पदका अतिशयअर्थहै ॥ और ज्ञा पदका ज्ञानअर्थहै ॥ तिनदोनोंपदोंकामिलिकरिके यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ अतिशयकरिकेजोचलाय मानहोवै सो प्राणकहियेहै ॥ और अतिशयकरिकेजोजाणे सो बुद्धिकहियेहै ॥ शरीरकेअंतरस्थितवायु अतिशयकरिकेचलायमानहोवै है ॥ यातें ताकूं प्राणकहेहैं ॥ और अंतःकरणकीवृत्तिविशेषबुद्धि घटपटादिकपदार्थोंकूं अतिशयकरिकेजानैहै ॥ यातें ताकूं प्रज्ञाकहेहैं ॥ और वास्तवतेंविचारकरिये तो प्राणविषेचलनाबनैनहीं ॥ काहेतें प्राणजडहै ॥ जडविषे स्वतंत्रक्रियाहोवैनहीं ॥ जैसे रथादिकजडपदा र्थोंविषे चेतनअश्वादिकोंतैं विना किसीकालविषे तथाकिसीदेशविषे स्वतंत्र चलनरूपक्रियाहोवैनहीं ॥ तैसे जडप्राणविषेभी चेतनतैं विना स्वतंत्र चलनरूपक्रियासंभवैनहीं याप्रकार बुद्धिविषेभी घटपटादिकपदार्थोंकेजानणेकासामर्थ्य संभवैनहीं ॥ काहेतें प्राणकीन्याईं बु द्धिभीजडहै॥जडवस्तु आपणेकूं तथाअन्यकिसीपदार्थकूं जानैनहीं ॥तात्पर्यहै॥जैसे प्रथम मूलधन किसीकेपास जभीहोवैहै॥तभीताधनके वृद्धिकीभी संभावनाहोवैहै ॥ मूलधनतैंविना धनकीवृद्धि संभवैनहीं ॥ तैसे सामान्यतें जभी प्राणविषे चलनरूपक्रियाहोवै ॥ और बुद्धि विषे ज्ञानहोवै ॥ तभी ताक्रियाविषे तथाज्ञानविषे अतिशयतारूपविशेषता संभवै ॥ सो जडप्राणविषे चलनरूपक्रियासंभवैनहीं ॥ तथा बुद्धिविषे ज्ञानसंभवैनहीं ॥ यातें जिसचेतनआत्माकेसमीपताकरिके शरीरइंद्रियादिकोंविषे तथा अंतरवायुविषे चलनरूपक्रियाहोवैहै ॥ सोचेतनआत्माहीं प्राणशब्दका लक्ष्यअर्थहै ॥ याप्रकार प्रज्ञाशब्दकालक्ष्यअर्थभी चेतनआत्माहीहै ॥ काहेतें चेतनआत्माहीं संपूर्णजड पदार्थोंकूं प्रकाशैहै ॥ और स्वप्रकाशतारूपकरिके भेदरहितआपणेस्वरूपकूंभी चेतनआत्मा प्रकाशकरेहै ॥ अन्यकोईपदार्थ आत्माकूं

प्रकाशकरैनहीं ॥ ऐसा स्वप्रकाशआनंदस्वरूपमैंआत्माहीं प्राणप्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ मेरेतैंभिन्नकोईवस्तु प्राणप्रज्ञाशब्दकाअर्थ संभवै नहीं ॥ याप्रकारका आपणेमनविषेविचारकरिके सोदेवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकूं कहताभया ॥ हेप्रतर्दनराजा नानाप्रकारकीक्रियाकाकारण मैंहूं ॥ यातें मैं प्राणस्वरूपहूं ॥ और भेदतैंरहितस्वयंप्रकाशमैंहूं ॥ यातें मैंहीं प्रज्ञास्वरूपहूं ॥ और संपूर्णप्राणियोंकेजीवनकाकारणमैंहूं ॥ यातें मैंहीं आयुषहूं ॥ और मैं आपजन्ममरणतैंरहितहूं ॥ यातें मैंहीं अमृतस्वरूपहूं ॥ हेप्रतर्दन प्राण प्रज्ञा आयुष् अमृत ऐसाजोआपणास्वरूप हमनें तुमारेताईं कथनकऱ्याहे ॥ तिसस्वरूपकूं तुम वारंवारविचारकरो ॥ और अनात्माकार विजातीयवृत्तियोंकापरित्यागकरिके तास्वरूपाकारसजातीयवृत्तियोंकरिकै मेरेस्वरूपकूं साक्षात्कारकरो ॥ दृष्टांत ॥ जैसे यहघटहै याप्रकारकेअनंतज्ञानोंकरिके एकघटपदार्थ विषयकरीताहे ॥ हेप्रतर्दन जैसे पुरुषतैं दंडभिन्नहोवैहै ॥ तैसे आयुष् और अमृत यादोनोंविशेषणोंकूं प्राणतैंभिन्ननहीं तुमनैंजानणा ॥ किंतु आयुष् और अमृत यादोनोंविशेषणोंकूं प्राणतैंअभिन्न जानणा ॥ जैसे आकाशकूं नभकहैहैं ॥ और नभकूं आकाशकहैहैं ॥ आकाशपद औरनभपदके अर्थकाभेदनहीं॥तैसे आयुष्अमृतपदकेअर्थका और प्राणपदके अर्थका भेदनहीं॥किंतु आयुष् और अमृत प्राणस्वरूपहैं ॥और प्राण आयुष् अमृतस्वरूपहैं ॥शंका॥ जो आयुष् अमृत प्राण यातीनोंपदोंका एकहीअर्थमानौंगे ॥ तो पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ एकअर्थकेबोधकअनेकपदोंकेउच्चारणकानाम पुनरुक्तिहै॥ जहां पुनरुक्तिदोषहोवैहै ॥ तहां एकपदकूंहीसार्थकताहोवैहै॥ दूसरे पद व्यर्थहोवैहैं॥समाधान॥जैसे सत्य ज्ञान आनंद यहतीनपद एकही आत्माके बोधकहैं॥परंतु तिनशब्दोंकेप्रवृत्तिकानिमित्त भिन्नभिन्नहे॥ यातें पुनरुक्तिदोषहोवैनहीं ॥ तैसे यहां भीआयुष् अमृत प्राण यहतीनपद एकहीअर्थकेबोधकहैं परंतु तिनोंकिप्रवृत्तिकानिमित्त भिन्नभिन्नहैं ॥ यातें पुनरुक्तिदोषहोवैनहीं ॥ अब या अर्थकूंहीं स्पष्टकरिकेदिखावैहैं ॥ लोकोंकेजीवनकाकारणजोहोवै सो आयुष्कहियेहै ॥ सोजीवनकाकारणप्राणहै ॥ काहेतैं शरीरविषे जबपर्यंत प्राणरहैहै ॥ तबपर्यंत ताविषे जीवनव्यवहारहोवैहै ॥ प्राणतैंविना जीवनव्यवहार होवैनहीं ॥ यानिमित्तकूंलैके प्राणकूं आयुष्कह्याहे ॥ और शरीरत्यागतैंअनंतर स्वर्गरूपअमृतकूं तथाशरीरकेविद्यमानहुए मोक्षरूप

अमृतकूंप्राणकरिकेही जीव प्राप्तहोवैहै॥यानिमित्तकूंलेके प्राणकूं अमृतकह्याहै॥सो आयुष्अमृतस्वरूपप्राण मैंआत्माहूं ॥किंवा॥जैसे प्राण स्वरूप मैं आत्माहूं ॥ तैसे प्रज्ञास्वरूपभी मैं आत्माहूं॥काहेतें ज्ञानशक्तिरूपप्रज्ञाकरिकेही आकाशादिकव्यावहारिकप्रपंचकूं औरस्वप्नादि कप्रातिभासिकपदार्थोंकूंमैंआत्माजानाहूं॥हेप्रतर्दन।जोपुरुषप्राणस्वरूपमैंआत्माकूंआयुषरूपकरिकेउपासनाकरैहै॥सोपुरुष १००शतवर्षपर्यं तजीवैहै और जोपुरुष प्राणस्वरूपमैंआत्माकूं अमृतरूपकरिकेउपासनाकरैहै ॥ सोपुरुष अक्षयस्वर्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष प्राण स्वरूपमुझआत्माकूं आयुष् अमृत दोनोंरूपकरिके उपासनाकरैहै ॥ सोपुरुष शतवर्षपर्यंतजीवन औरअक्षयस्वर्गकीप्राप्ति यादोनोंफलोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेप्रतर्दन जभीप्राणरूपउपाधियुक्तमुझआत्माके उपासनाकाहीऐसाफल प्राप्तहोवैहै॥तभी प्राणरूपउपाधितैंरहित शुद्धआत्मा केज्ञानतैं पुरुषोंकूं महाफलकीप्राप्तिहोवैहै याकेविषे क्याआश्चर्यहै॥इसप्रकार जभीइंद्रनैं प्राणस्वरूपआत्माकूंकह्या ॥तभीप्रतर्दनराजा ताके विषे कारणकूंपूछताभया ॥ प्रतर्दनउवाच॥ हेभगवन् प्राणस्वरूपमैंहूं याआपकेवचनकूंश्रवणकरिके और पूर्वउक्तमुनियोंकेवचनोंकूंस्मरण करिके मेरेचित्तविषे याप्रकारकासंशयहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आपने प्राणकूंहीप्रधानकह्या ॥ और मुनियोंनैं प्राणकूंप्रधानकह्यानहीं॥ यातैं किसअर्थविषे हम आत्मबुद्धिकरैं ॥ अब तामुनियोंकेवचनोंकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र एककालविषे हमारीसभामैं मुनिआवतेभये ॥ तेवे दकेवेत्तामुनि किसीप्रसंगपाइके हमारेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ अंतरवायुकरिकेसहितसंपूर्णइंद्रियोंका प्राणशब्द वाचकहै ॥ केवल अंतरवायुकावाचक प्राणशब्दनहीं ॥ काहेतैं अतिशयकरिके आपणेव्यापारकूंजोकरै सोप्राणकहियेहै ॥ यह प्राणशब्दकाअर्थ संपू र्णइंद्रियोंविषेभी घटेहै ॥ यातैं संपूर्णइंद्रियोंकूं प्राणशब्दकीअर्थता संभवैहै ॥ तिनसंपूर्णप्राणोंविषे एककूं नियमकरिकेप्रधानतानहीं ॥ किंतु आपणेआपणेव्यापारविषे संपूर्णोंकूं प्रधानताहै ॥ काहेतैं वाकइंद्रियका शब्दउच्चारण कार्यहै ॥ और चक्षुइंद्रियका रूपादिकोंकादर्श नकार्यहै इसप्रकार अन्यइंद्रियोंकेभी आपनेआपनेकार्य भिन्नभिन्नहैं ॥ ताकार्यकेभेदकरिके यद्यपि इंद्रिय भिन्नभिन्नहैं तथापि आपणेआप णेकार्यविषे संपूर्णइंद्रिय एकभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे ग्रामविषेभिन्नभिन्नास्थित महाजनपुरुष विवाहादिककार्यकेवास्ते संपूर्ण एकभावकूं

प्राप्तहोवैहै ॥ जिसकालविषे एकइंद्रिय आपणेव्यापारविषे प्रवर्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे अन्यइंद्रियोंकी आपणेव्यापारविषे प्रवृत्तिहोवैनहीं॥ यहही इंद्रियोंकीएकताहै ॥ काहेतें जिसकालविषे वाक्इंद्रिय शब्दकेउच्चारणरूपआपणेव्यापारकूंकरैहै ॥ तिसकालविषे नेत्रादिकइंद्रिय आपणेआपणेव्यापारोंकूंकरैंनहीं ॥ और जिसकालविषे चक्षुइंद्रिय रूपादिकोंकादर्शनरूपव्यापारकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तिसकालविषे वाकादिकइंद्रिय आपणेव्यापारोंकूं उत्पन्नकरैंनहीं ॥ इसप्रकार सर्वइंद्रियोंविषे जानिलेणा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे वरकूं आपणेविवाहविषे प्रधानता होवैहै ॥ और तिसीवरकूं दूसरेकेविवाहविषे गौणताहोवैहै ॥ यातें नियमकरिके वरविषे प्रधानता तथागौणता नहीं ॥तैसे वचनादिकव्यापारविषे वाक्इंद्रियकूं प्रधानताहै ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंकूं गौणताहै ॥ और रूपदर्शनविषे चक्षुइंद्रियकूं प्रधानताहै ॥ वाकादिकइंद्रियोंकूं गौणताहै ॥ इसप्रकार सर्वइंद्रियोंविषे आपणेआपणेव्यापारविषे प्रधानता अन्यइंद्रियकेव्यापारविषेगौणता जानिलेणी॥नियमकरिकेप्रधानता किसीइंद्रियविषेभीनहीं॥ यातें संपूर्णसमानहैं॥और श्रुतिविषेभी वाक्आदिकसंपूर्णप्राणोंकी समानता तथाअनेकता कथनकरीहै॥ किंवा ॥ युक्तितैंविचारकरिये तौभी वाक्आदिकसंपूर्णप्राणोंकी समानताही सिद्धहोवैहै ॥ विषमता सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें यहपुरुष जिसकालविषे वाक्इंद्रियकरिके शब्दकाउच्चारणकरै है ॥ तिसकालविषे चक्षुइंद्रियकरिके देखतानहीं ॥ और जिसकालविषे नेत्रकरिकेदेखता है ॥ तिसकालविषे वाक्इंद्रियकरिके वचनकूंउच्चारणकरता नहीं इसप्रकार संपूर्णइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रधानताहै और अन्यइंद्रियकेव्यापारविषे गौणताहै ॥ जोनियमकरिके वाक्आदिकइंद्रियोंकूं प्रधानताहीहोवे ॥ तो दर्शनरूपव्यापारविषे चक्षुकीन्याई वाक्इंद्रियकूंभी प्रधानताहोणीचाहिये ॥ और दर्शनरूपव्यापारविषे वाक्इंद्रियकूं प्रधानताहैनहीं ॥ किंवा ॥ जोनियमकरिके इंद्रियोंविषे गौणताहीमानिये ॥ तो शब्दउच्चारणरूपव्यापारविषेभी वाक्इंद्रियकूं प्रधानतानहोणीचाहिये ॥ किंतु गौणताहोणीचाहिये ॥ और गौणताहोवैनहीं ॥ याप्रकार सर्वइंद्रियोंविषे प्रधानताका तथागौणताका नियमनहीं ॥ किंवा ॥ वाक्आदिकसंपूर्णप्राणोंविषे एककालमैंक्रियाहोवैनहीं ॥ किंतु एकइंद्रियकेव्यापारकी जभीउपरामताहोवैहै तभी दूसराइंद्रिय आपणेव्यापारकूंकरैहै ॥ शंका ॥ जो संपूर्ण

इंद्रिय एककालविषे आपणेआपणेव्यापारोंकूं न उत्पन्नकरतेहोवैं ॥ तौ यहलोकोंकाअनुभव व्यर्थहोवैगा ॥ वाक्इंद्रियकरिके वचन कूंउच्चारणकरताहुआमैं चक्षुइंद्रियकरिके रूपकूंदेखताहूं ॥ और श्रोत्रइंद्रियकरिके शब्दकूंश्रवणकरताहूं ॥ और घ्राणइंद्रियकरिके मैं गंध कूंग्रहणकरताहूं ॥ और त्वक्इंद्रियकरिके मैंस्पर्शकूंजाणताहूं ॥ और रसनइंद्रियकरिके मैंरसकूंजानताहूं ॥ और हस्तइंद्रियकरिके मैंग्रहणकरताहूं ॥ और पादइंद्रियकरिके मैंचलताहूं ॥ और उपस्थइंद्रियकरिके मैंआनंदकूंप्राप्तहोताहूं ॥ और पायुइंद्रियकरिके मैंमला दिकोंकापरित्यागकरताहूं ॥ और प्राणकरिके मैंश्वासादिकक्रियाकूंकरताहूं ॥ और अहंकारकरिके मैंअहंभावकरताहूं ॥ और मनकरिके मैंसंकल्पविकल्पकूंकरताहूं ॥ और चित्तकरिकें सामान्यरूपतैंपदार्थोंकूं मैंजानताहूं ॥ और बुद्धिकरिके देहविषेस्थितसुखदुःखादिकपदा र्थोंकूं सामान्यरूपतैं तथाविषेशरूपतैं मैंजानताहूं ॥ याप्रकारकेलोकोंकेअनुभवप्रमाणतैं संपूर्णइंद्रियोंविषे एककालमैंहीसंपूर्णव्यापार प्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं नियमरहितप्रधानताकूंलेके संपूर्णइंद्रियोंकू समानकहणा संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ एककालमैं संपूर्णइंद्रियोंके व्यापारविषे ॥ जोलोकोंकाअनुभव तुमनैंकह्या ॥ सोअनुभव भ्रमरूपहै ॥ काहेतैं जिसक्षणविषे एकइंद्रियकाव्यापार होवैहै ॥ तिसक्षणमैं दूसरेइंद्रियकाव्यापार होवैनहीं ॥ किंतु दूसरेक्षणविषे दूसरेइंद्रियकाव्यापार होवैहै ॥ और तीसरेक्षणविषे तीसरेइंद्रियकाव्यापार होवैहै ॥ इसप्रकार क्षणक्षणतैंपीछे इंद्रियोंकाव्यापारहोवैहै ॥ परंतु सोक्षण अतिसूक्ष्महै ॥ यातैं अविवेकीपुरुषोंकूं ऐसीभ्रांतिहोवैहै ॥ जो एककाल विषे हमारेकूं संपूर्णदर्शनादिकव्यापार उत्पन्नभयेहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे नीचेऊपरिस्थित अनेकपद्मपत्रोंका एककालविषे सूचीकरिकेभेदन होवैनहीं ॥ किंतु प्रथमक्षणविषे सूचीमैंक्रियाहोवैहै ॥ और द्वितीयक्षणविषे पूर्वदेशतैंसूचीकाविभाग उत्पन्नहोवैहै ॥ और तृतीयक्षणविषे सूचीकेपूर्वसंयोगकानाश होवैहै ॥ और चतुर्थक्षणविषे पद्मपत्ररूपउत्तरदेशकेसाथ सूचीकासंयोग उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार एकएकपत्र केभेदनविषे चारिचारिक्षणहोवैहैं ॥ परंतु तेक्षण अतिसूक्ष्महैं ॥ यातैं अविवेकीजनोंकूं ऐसीभ्रांतिहोवैहै ॥ जोएककालविषे हमनैं अनंत पद्मपत्रोंकूं सूचीकरिकेभेदनकऱ्या ॥ इसीप्रकार वाक् आदिकप्राणोंकेव्यापारभी भिन्नभिन्नकालविषे उत्पन्नहोवैहैं ॥ परंतु सोकाल अति

सूक्ष्महै ॥ यातैं एककालताकीभ्रांति अविवेकीपुरुषोंकूंहोवैहै ॥ यातैं संपूर्णप्राण समानहैं ॥ हेदेवराजइंद्र याप्रकार संपूर्णप्राणोंविषेसमा
नता मुनियोंनैं पूर्वहमारेप्रति कहीथी ॥ और आपनैं वायुरूपप्राणविषेही आत्मबुद्धिकाविधानकऱ्या ॥ सो किसकारणतैंकऱ्या ॥ यह
संशय हमारे चित्तविषेहोवैहै ॥ याप्रकारकेप्रतर्दनराजाके वचनकूं श्रवणकरिकै प्राणकीप्रधानताविषे कारणकेकथनकीइच्छावान्हुआ
इंद्र ताप्रतर्दनकेवचनकूं अंगीकारकरताभया ॥ और पुनःइंद्र कहताभया ॥ हेप्रतर्दनराजा इसलोककेजीवनकीकारणता प्राणविषेहै ॥
और परलोककेजीवनकीकारणताभी प्राणविषेहै ॥ अन्यकिसीवाक्आदिकइंद्रियविषेहैनहीं ॥ सोजीवनकीकारणताही प्राणविषे आत्मबु
द्धिकाहेतुहै ॥ और सोजीवनकीकारणताहीवाक्आदिकइंद्रियोंतैं प्राणविषेविशेषताहै॥दूसरीकोईविशेषताहैनहीं ॥ और हेप्रतर्दन पूर्वतुमनैं
ऋषियोंकेवचनोंकरिकै प्राणविषे प्रधानताका तथागौणताका अनियमकह्या ॥ सोअनियमभी वायुरूपमुख्यप्राणविषे संभवैनहीं ॥ किंतु
वाक्आदिकइंद्रियरूपगौणप्राणोंविषेही सोअनियम संभवैहै ॥ काहेतैं जबपर्यंत प्राणोंकाव्यापार शरीरविषे होतारहताहै ॥ तबपर्यंत
संपूर्णवाक्आदिकइंद्रियोंविषे वचनादिरूपक्रियाहोवैहै ॥ प्राणकाव्यापार जभीउपरामहोवैहै ॥ तभी किसीइंद्रियविषे कोईभीक्रियाहोवै
नहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकोंके अनुभवसिद्धहै ॥ और प्राणकेविद्यमानहुए वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ त्वक् चक्षु श्रोत्र रसन घ्राण या
दशइंद्रियोंविषे एकएकइंद्रियकेव्यापारतैंविना अथवा सर्वइंद्रियकेव्यापारतैंविनाभी प्राणियोंकाजीवन देख्याहै ॥ जैसे वाक्इंद्रियकेवचन
रूपव्यापारतैंविना मूकप्राणी जीवैंहैं ॥ और हस्तइंद्रियकेग्रहणरूपव्यापारतैंविना कुणपपुरुष जीवैंहैं ॥ और पायुइंद्रियकेमलविसर्गरूप
व्यापारतैंविना कोईरोगीप्राणी जीवैंहैं ॥ और उपस्थइंद्रियके आनंदरूपव्यापारतैंविना ब्रह्मचारी जीवैंहैं ॥ और त्वक्इंद्रियकेस्पर्शनरू
पव्यापारतैंविना कुष्ठी प्राणी जीवैंहैं ॥ और चक्षुइंद्रियकेदर्शनरूपव्यापारतैंविना अंधपुरुष जीवैंहैं ॥ और श्रोत्र इंद्रियकेश्रवणरूपव्यापा
रतैंविना बधिरपुरुष जीवैंहैं॥और रसनइंद्रियकेरसग्रहणरूपव्यापारतैंविना रसनदोषवान् पुरुष जीवैंहैं॥ और घ्राणइंद्रियकेगंधग्रहणरूपव्या
पारतैंविना घ्राणदोषवालेपुरुष जीवैंहैं ॥ और अंतःकरणकेनिश्चयरूपव्यापारतैंविना जडउन्मत्तपुरुष जीवैंहैं ॥ इसप्रकार सर्वइंद्रियोंकेव्या

पारतैंविना प्राणी जीवैहैं ॥ परंतु प्राणकेव्यापारतैंविना कोई प्राणी कहींजीवतादेख्यानहीं ॥ यातैं सर्वइंद्रियोंतैं प्राण उत्कृष्टहै॥याकारणतैं हेप्रतर्दन प्राणरूपउपाधिकूंअंगीकारकरिके प्राणस्वरूपमैंहूं याप्रकारकाउपदेश तुमारेताई हमने कह्याहै ॥ और संपूर्णवाकादिकइंद्रियोंतैं प्राणकीउत्कृष्टताकूंअंगीकारकरिकैही श्रुतिविषे प्राणोंकीउक्थरूपकरिके उपासनाकहीहै॥ गोलककरिके तथाइंद्रियोंकरिके तथा देवतावों करिके युक्तहुआभीयहशरीर मूर्च्छादिक अवस्थाविषे मृतककेसमानहोवैहै ॥ तिसशरीरकूं आसनादिकोंतैं यहप्राण उठावैहै ॥ याकारणतैं प्राणकूंउक्थनामकरिके विवेकीपुरुष उपासनाकरैंहैं ॥ किंवा ॥ संपूर्णवाकादिकोंतैंपूर्व कारणरूपप्राणहीं उत्थानकूंपावैहै॥याकारणतैंभी प्राणकूं उक्थकहैंहैं ॥ और जोसर्वतैंपूर्व उत्थानकूंपावैहै सो श्रेष्ठहोवैहै ॥ जैसे हिरण्यगर्भ सर्वतैंपूर्वउत्थानकूंपावैहै यातैं श्रेष्ठहै ॥ तैसे प्राणभीसर्वतैंपूर्व उत्थानकूंपावैहै यातैं श्रेष्ठहै ॥ और जो श्रेष्ठहोवैहै सोहिततमहोवैहै ॥ यातैं प्राणस्वरूपमैंआत्माही हिततमहूं ॥ मेरेतैंभिन्न कोईहिततमनहीं ॥ अब प्राणकूंप्रज्ञास्वरूपतादिखावैहैं ॥ हेप्रतर्दन जैसे नेत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकूं तथावाकादिककर्मइंद्रियोंकूं मुख्यप्रज्ञास्वरूपतानहीं ॥ किंतु अंतःकरणकीवृत्तिकेसंबंधतैं नेत्रादिकइंद्रियोंकूं गौणप्रज्ञास्वरूपताहै ॥ तैसे प्राणकूं गौणप्रज्ञास्वरूपतानहीं ॥ किंतु प्राणकूं मुख्यप्रज्ञास्वरूपताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे आयुष्औरअमृतका तथाप्राणका परस्परभेदनहीं ॥ किंतु प्राणही आयुष् अमृतस्वरूपहै ॥ यह पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ तैसे प्राण और प्रज्ञाकाभी परस्परभेदनहीं ॥ किंतु प्राणहीं प्रज्ञास्वरूपहै किंवा ॥ लोकप्रसिद्धजोवायुरूपप्राणहै ॥ तथा अंतःकरणकीवृत्तिरूपजोप्रज्ञाहै ॥ तेदोनोंभी जैसे खाटकेचारिपाद भिन्नभिन्नहुएप्रतीतहोवैंहैं ॥ तैसे भिन्नभिन्नहोइके प्रतीतहोवैंनहीं॥किंतु जीवनकालविषे सर्वजीवोंकेशरीरमैं एकठेहीं प्राणप्रज्ञा प्रतीतहोवैंहैं॥ और मरणकालविषेभी एकठेहीं प्राणप्रज्ञालोकांतरविषेगमनकरैंहैं ॥ यातैं प्राण औरप्रज्ञा अभिन्नहैं जभी लोकप्रसिद्धप्राण और प्रज्ञाविषे भेदनहींसिद्धभया ॥ तभी भी प्राणप्रज्ञाशब्दके लक्ष्यअर्थ अलौकिक अद्वितीय शुद्धआत्माविषे किसकारणतैंभेदसिद्धहोवै ॥ किंतु किसीप्रकारकरिके भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं प्राणप्रज्ञास्वरूप मैं आत्माहूं ॥ किंवा ॥ अन्वयव्यतिरेककरिकेभी प्राणकूंहीं आत्मतासिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्था

विषे प्राणविद्यमानहै ॥ यातैं प्राणका सुषुप्तिमरणविषेअन्वयहै ॥ और वाकादिकइंद्रियोंका सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्था विषे लयहोवैहै ॥ यातैं तिनवाकादिकोंका तहाँव्यतिरेकहै ॥ याप्रकारका अन्वयव्यतिरेकही प्राणकीआत्मरूपता सिद्धकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेदिखावैंहैं ॥ जिससुषुप्तिअवस्थाविषे स्थूलसूक्ष्मशरीरकाअभिमानी यहजीवात्मा शयनकूंप्राप्तहुआ किंचित्मात्रभी स्वप्नपदार्थोंकूं नहींदेखता ॥ तिससुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा प्राणउपहितपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यद्यपि जाग्रत् स्वप्नअवस्थाविषेभी अभेदहै ॥ तथापि जाग्रत् और स्वप्नअवस्थाविषे उपाधिकरिकेभेद औरवास्तवतैंअभेद दोनों विद्यमानहैं ॥ और यहाँसुषुप्तिअवस्थाविषेतौ केवलअभेदहीहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ वाक्आदिकपंचकर्मइंद्रिय औरनेत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय और चतुष्टयअंतः करण और वाक्आदिकइंद्रियोंकेविषय यहसंपूर्णउपाधियां जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे आत्माकेभेदकरणेहारियांहैं ॥ तिन उपाधियोंकरिकेभी सुषुप्तिअवस्थाविषेआत्माकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं यहसंपूर्णवाक्आदिकइंद्रिय आपणेआपणेविषयोंसहित सुषु प्तिअवस्थाविषे प्राणउपहितमुझपरमात्माविषे लयकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे मुझपरमात्माकीएकता संभवैहै ॥ और हेप्रतर्द न मैंआत्माअद्वितीयहूं यातैं स्वरूपतैंमेरेविषेभेदसंभवैनहीं ॥ किंतु वाक्आदिकउपाधियोंकरिके मुझआत्माविषेभेद प्रतीतहोवैहै ॥ तेवा क्आदिकउपाधियां सुषुप्तिअवस्थाविषे लयहोवैंहैं ॥ यातैं सर्वभेदतैंरहितप्राणस्वरूपमुझआत्माकी एकताही सुषुप्तिअवस्थाविषेसिद्धहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् सुषुप्तिअवस्थाविषे वाक्आदिकसंपूर्णइंद्रियोंका प्राणविषेलय आपनैंकह्या ॥ यातैं यहनिश्चयहोवैहै ॥ वाक्आदिक इंद्रियोंकाउपादानकारण प्राणहै ॥ काहेतैं कार्यकेलयकाआधार उपादानकारणहीहोवैहै ॥ निमित्तकारण होवैनहीं ॥ जैसे घटकेलयकाआ धार मृत्तिकाहै ॥ कुलालहैनहीं ॥ यातैं कुलालकीन्याईं वाकादिकइंद्रियोंका प्राणतैंभिन्नहीकोई निमित्तकारण कह्याचाहिये ॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन वाकादिकइंद्रियोंका उपादानकारण तथानिमित्तकारण प्राणस्वरूपमैंआत्माहीहूं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकहीऊर्णनाभिजंतु तंतुकाउ पादान तथानिमित्तकारण होवैहै ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे घटईश्वरकेसंयोगका एकईश्वरही उपादान तथानिमित्तकार

ण होवैहै ॥ और हेप्रतर्दन सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसप्राणस्वरूपमुझआत्माविषे वाक्आदिकइंद्रिय लयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसीप्राणस्वरूपमु
झआत्मातैं जाग्रत्अवस्थाविषे संपूर्णवाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ और जैसे मृत्तिकातैंउत्पन्नभयाघट मृत्तिकातैंभिन्नहोवैनहीं ॥ तैसे
प्राणस्वरूपमुझआत्मातैं उत्पन्नभयेवाक्आदिकइंद्रिय मेरेतैंभिन्न किसीप्रकारहोवैंनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जभी वाक्आदिकइंद्रिय प्राण
स्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं तभी भिन्नहोइकेकाहेतैंप्रतीतहोतेहैं॥समाधान ॥ हेप्रतर्दन यहवाक्आदिक प्राणस्वरूपमुझपरमात्माकीविभूतियांहैं
यातैं मुझ आत्मातैंभिन्नहोइकेउत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु मेरास्वरूपहुएहीं मेरेतैंउत्पन्नहोवैहैं ॥ अविवेकतैं तिनोंकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ शं
का ॥ हेभगवन् वाक्आदिकइंद्रियरूपविभूतियोंकी प्राणस्वरूपआत्मातैं अभिन्नरूपकरिके आपने उत्पत्तिकही ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहे
तैं लोकविषे भिन्नोंकाहीं कार्यकारणभाव देख्याहै ॥ समाधान ॥ भिन्नोंकाहीं कार्यकारणभावहोवैहै ॥ यहनियम संभवैनहीं ॥ किंतु अ
भिन्नोंकाभी कार्यकारणभावहोवैहै ॥ जैसे प्रज्वलितअग्नितैं कण उत्पन्नहोवैहैं ॥ तेकण अग्नितैंभिन्ननहीं किंतुअभिन्नहैं ॥ तैसे जाग्रत्
अवस्था विषे प्राणस्वरूपमैं आत्मातैं वाक्आदिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ तावाक्आदिकइंद्रियोंतैं अग्निआदिकदेवता उत्पन्नहोवैहैं ॥ ताअ
ग्निआदिकदेवतावोंतैं शब्दउच्चारणादिकविषय उत्पन्नहोवैहैं ॥ अब दृष्टिसृष्टिवादकेस्पष्टकरणेवासतैं ॥ याही अर्थकूं युक्तियोंकरिकैनिरू
पणकरैहैं ॥ हेप्रतर्दन सुषुप्तिअवस्थाविषे सुषुप्तपुरुष विषयसहितवाक्आदिकइंद्रियोंकूं देखतानहीं ॥ तथा अन्यकोईजाग्रत्पुरुषभी सुषु
प्तपुरुषकेवाकादिकइंद्रियोंकूं देखतानहीं ॥ औरसुषुप्तपुरुषकेप्राणकूंतौ अन्यजाग्रत्पुरुषदेखैहैं ॥ याकारणतैंभी प्राणकूंहीं वाकादिकइंद्रि
योंकीकारणता सिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं जिसवस्तुकेविद्यमानहुएही जोवस्तु प्रतीतहोवै ॥ और जिसवस्तुकेविद्यमानहुएभी जोवस्तुतहांनप्रती
तहोवै तिसवस्तुका सोवस्तु कार्यहोवैहै ॥ जैसेमृत्तिकाकेविद्यमानहुएहीं घटादिक प्रतीतहोवैहैं ॥ और घटकीउत्पत्तितैंपूर्व मृत्तिकाके
विद्यमानहुएभी घटादिक तहांप्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातैंमृत्तिकाके घटादिक कार्यहैं॥शंका ॥ हेभगवन् जिसके विद्यमानहुए जोप्रतीतहोवैहै॥
सो ताकाकार्यहोवैहै ॥ यहकार्यकालक्षण आपनेंकह्या ॥ सोलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहै ॥ काहेतैं सूर्यादिकप्रकाशकेविद्यमानहुएही

घटादिकोंकी चक्षुइंद्रियकरिकैप्रतीतिहोवैहै ॥ प्रकाशतैंविना अंधकारविषेस्थितघटादिकोंकी प्रतीतिहोवैनहीं ॥ यातैं घटादिकभी प्रकाश केकार्य होणेचाहिये ॥ और प्रकाशकेकार्य घटादिकहैंनहीं ॥ समाधान ॥ जिसवस्तुके विद्यमानहुएही जोवस्तु उत्पन्नहोवै ॥ और तिसव स्तुतैंभिन्नकिसीवस्तुतैं उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और तिसवस्तुकेविद्यमानहुएभी जोवस्तु कदाचित्तहाँउत्पन्नहोवैनहीं ॥ सोवस्तु तिसवस्तुका कार्यहोवैहै ॥ जैसे तंतुकेविद्यमानहुएही पट उत्पन्नहोवैहै ॥ तंतुतैंभिन्नमृत्तिकाकेविद्यमानहुएभी पटकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और पटकीउ त्पत्तितैंपूर्व तंतुवोंकेविद्यमानहुएभी तुरीवेमादिकसामग्रीतैंविना तहाँ पट उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं तंतुओंका पटकार्यहै ॥ और मृत्तिकाका कार्यघटहै सूर्यादिकप्रकाशका घटकार्यनहीं ॥ यातैं यहकार्यकालक्षण निर्दोषहै ॥ सोयहकार्यकालक्षण वाक्आदिकइंद्रियोंविषेभी घटैहै काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राणकेविद्यमानहुएभी तहाँवाक्आदिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ और जाग्रत अवस्थाविषे प्राणकेविद्यमानहुए हीं वाक्आदिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैंहैं ॥ और प्राणतैंभिन्नकिसीकारणतैं वाक्आदिक उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ यातैं वाक्आदिकइंद्रिय प्राणकाकार्य हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निकूंछोडिकेधूमरहेनहीं ॥ किंतु जहाँधूमरहैहै तहाँ अवश्य अग्निरहैहै ॥ और अग्नितो धूमकूंछोडिकरिकेभी तप्तलोहविषे रहैहै ॥ यातैं अग्निव्यापकहै और धूम व्याप्यहै ॥ तैसे प्राणकूंछोडिके वाक्आदिकइंद्रिय रहैंनहीं और प्राणतो सुषुप्ति अवस्थाविषे वाक्आदिकइंद्रियोंकेलयहुएभीरहैहै ॥ यातैं प्राण व्यापकहै ॥ और वाक्आदिकइंद्रिय व्याप्यहैं ॥ कारण व्यापकहोवैहै ॥ और कार्य व्याप्यहोवैहै ॥ किंवा सुषुप्तिविषे विषयसहितवाक्आदिकइंद्रियोंकासमूह जोप्राणविषे लयनहीं भयाहोवै ॥ तो सुषुप्तिविषे सुषुप्तपुरुषकरिकैतथाअन्यजाग्रतपुरुषकरिके सविषयवाकादिकइंद्रिय प्रतीतहोणेचाहिये ॥ और सुषुप्तिविषे सविषयवाकादिकइंद्रिय प्रतीतहोवैं नहीं ॥ यातैं ऐसाजान्याजावैहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे विषयसहितवाकादिकइंद्रिय प्राणविषेलयहुएहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे दंडादिकों करिकेप्रध्वंसहुआघट मृत्तिकारूपआपणेकारणविषे लयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् वाकादिकइंद्रियोंका तथाशब्दउच्चारणादिक विषयोंका परस्परभेदहै ॥ यातैं सुषुप्तिविषे वाक्आदिकइंद्रियोंकेलयहुएभी तिनोंकेविषयोंकालय संभवैनहीं ॥समाधान॥ कारणकेअभाव

हुए कार्य उत्पन्नहोवैनहीं॥जैसे प्रदीपतैंविना प्रदीपकाकार्यप्रभा उत्पन्नहोवैनहीं॥ तैसे वाकादिकइंद्रियोंकेलयहुएतिनोंकेकार्यशब्दउच्चारणा
दिकविषयभी सुषुप्तिअवस्थाविषे उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं तिनविषयोंकाभीलयसंभवैहै ॥ किंवा जोवस्तु जिसवस्तुविषे लयहोवैहै ॥
सोवस्तु तिसीवस्तुतैं उत्पन्नहोवैहै यहनियमहै ॥ जैसे प्रज्वलितअग्निविषे कणोंका लयहोवैहै ॥ और तिसीअग्नितैं तिनकणोंकीउत्प
त्तिहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे वाक्आदिकइंद्रियोंका प्राणविषेलयहोवैहै ॥ औरजाग्रत्अवस्थाविषे तिसीप्राणतैं वाक्आदिकोंकी
उत्पत्ति होवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे अग्निविषे जोजोकण लयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सोसोकण पुनःउत्पन्नहोवैंनहीं॥किंतुतिनोंतैंभिन्नहींकण
उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे सुषुप्तिमैं प्राणविषेलयभयेजे वाक्आदिकइंद्रिय ॥ तिनोंतैंभिन्नहींवाक्आदिकइंद्रियोंकी जाग्रत्विषे उत्पत्तिहोणीचा
हिये ॥ समाधान ॥ जैसे अग्नितैंउत्पन्नहुआकण पूर्वविलीनकणतैंभिन्न प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्विषे प्राणतैंउत्पन्नभयेवाकादिक पूर्व
विलीनवाकादिकोंतैं भिन्नहुवेप्रतीतहोवैंनहीं ॥ किंतु सुषुप्तिविषे जेवाक्आदिकइंद्रिय प्राणविषेलयभयेथे ॥ तेहीवाकादिकइंद्रिय पुनः
जाग्रत्विषे प्राणतैंउत्पन्नहुएप्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं तिनोंकेभेदविषे प्रत्यक्षप्रमाणसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ वर्तमानवाक्आदिकइंद्रियोंतैं
पूर्वविलीनवाक्आदिकइंद्रियोंकाभेद अनुमानप्रमाणतैंसिद्धहोवैहै ॥ ताअनुमानकाप्रकारयहहै ॥ पूर्ववाक्आदिकइंद्रियजेहैं ते वर्तमानवाक्
आदिकइंद्रियोंतैंभिन्नहैं ॥ काहेतैं विलीनहोणेतैं॥जोजोवस्तु पूर्वविलीनताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोसो वर्तमानवस्तुतैंभिन्नहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥
जैसे पूर्वअग्निविषेविलीनहुएकण वर्तमानकणतैंभिन्नहैं ॥ याअनुमानप्रमाणतैं पूर्वउत्तरवाक्आदिकइंद्रियोंका भेदहीसिद्धहोवैहै ॥समाधान ॥
याअनुमानतैंभी वाक्आदिकइंद्रियोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोहेतु आपणेसाध्यकूंछोडिकेअन्यत्ररहैनहीं ॥ ताहेतुतैं तिससाध्य
कीसिद्धिहोवैहै ॥ जैसे धूमरूपहेतु वह्निरूपसाध्यकूंछोडिके अन्यत्ररहैनहीं ॥ यातैं धूमरूपहेतुतैं पर्वतविषे वह्निकोसिद्धिहोवैहै ॥ और
जोहेतु आपणेसाध्यकूंछोडिके अन्यत्रभीरहैहै ॥ ताहेतुतैं तिससाध्यकीसिद्धिहोवैनहीं जैसे प्रमेयत्वहेतु वह्निकेअभाववालेजलादिकोंविषे
भीरहैहै ॥ यातैं प्रमेयत्वरूपव्यभिचारीहेतुतैं पर्वतविषेवह्निरूपसाध्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे यहविलीनत्वरूपहेतुभी भेदरूपसाध्यकूं

छोडिके अन्यत्रवर्तेहै ॥ यातें व्यभिचारीहै ॥ काहेतें बहुतधूलीकरिकेआच्छादितजोघटहै ॥ तिसविषे विलीनत्वरूपहेतुतोरहैहै ॥ परंतु वर्तमानतिसोघटतें ताकाभेदहोवेनहीं किंतु जोपूर्वधूलीकरिकेआच्छादितघटथा ॥ सोईहीघट धूलीतेंरहितहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ यातें विलीनत्वरूपव्यभिचारीहेतुतें वाक्आदिकइंद्रियोंकेभेदकीसिद्धिसंभवेनहीं ॥ शंका ॥ धूलीकरिकेआच्छादितघटविषे जैसे वर्तमानतिसीघटकाभेदरूपसाध्यनहीं तैसे विलीनत्वरूपहेतुभी ताकेविषेनहीं ॥ यातें विलीनत्वरूपहेतु व्यभिचारीनहीं ॥ समाधान ॥ वस्तुकेअदर्शनकानाम लयहै ॥ अदर्शनतैंभिन्न कोईलयशब्दकाअर्थनहीं ॥ जैसे स्वप्नकेपदार्थोंकाजाग्रत्‌विषेदर्शनहोवैनहीं ॥ यातें स्वप्नपदार्थोंका जाग्रत्‌विषेलयकहताहै ॥ तैसे धूलीकरिकेआच्छादितघटकाभी ताकालविषेदर्शनहोवैनहीं यातें विलीनत्वरूपहेतु ताघटविषेसंभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ अदर्शनकानामलयहै यहआपनेंकह्या ॥ सो यद्यपि प्रातिभासिकस्वप्नपदार्थोंविषेतो घटैहै ॥ तथापि व्यावहारिकपदार्थोंविषे घटैनहीं ॥ काहेतें जोसर्वत्र अदर्शनकानामहीं लयहोवे ॥ तौ देशांतरविषेस्थितपुत्रादिकबांधवोंकादर्शन किसीकूंहोवेनहीं ॥ यातें मेरे पुत्रादिकबांधव लयहुएहैं याप्रकारकाव्यवहार लोकविषेहोणाचाहिये ॥ और ऐसाकोईकथनकरतानहीं ॥ यातें अदर्शनकानाम लयनहीं ॥ समाधान ॥ जिसकालविषे पुत्रादिकबांधवोंकाअदर्शनहोवैहै ॥ तिसकालविषे तिनोंकालयहीहोवैहै ॥ और जिसकालविषे तिनपुत्रादिकबांधवोंकादर्शनहोवैहै ॥ तिसकालविषे तिनोंको पुनःउत्पत्तिहोवैहै ॥ याअर्थमानणेविषे किंचित्‌मात्र भी हमारीहानिनहीं ॥ शंका ॥ जोलयहुएपुत्रादिकोंकोपुनःउत्पत्तिमानोंगे ॥ तौ मृत्युहुएपुत्रादिकबांधवोंकोभी पुनःउत्पत्तिहोणीचाहिये और मृतहुएपुत्रादिक बांधवोंकूं पुनःकोईदेखतानहीं ॥ समाधान ॥ पुत्रादिकबांधवोंकेदर्शनविषे मरण तथा जीवन कारणनहीं ॥ किंतु तिनोंतैंभिन्नहीं अदृष्टादिककारणहैं ॥ काहेतें अत्यंतदूरदेशविषेस्थित जीवतेहुएबांधवोंकाभी कदाचित् पुनःदर्शनहोतानहीं ॥ यातें जीवन तथामरण पुनःदर्शनकेकारणनहीं ॥ शंका ॥ दूरदेशविषेस्थितबांधवोंकादर्शन तादेशविषेजाणेकरिके संभवैहै ॥ और मृतबांधवोंकादर्शन किसीप्रकारसंभवेनहीं ॥ यातें जीवनहीं पुनःदर्शनकाकारणहै मरणनहीं ॥ समाधान ॥ जैसे जीवनकूं कदाचित् पुनःदर्शनकोकारणता तुमनें

दिसाई ॥ तैसे मरणकूंभी कदाचित् पुनःदर्शनकीकारणतासंभवैहै ॥ काहेतैं स्वप्नविषे चिरकालमरेहुएबांधवोंकाभी कदाचित् लोकों कूंदर्शनहोवैहै ॥ यातैं नियमकरिके जीवन तथामरण पुनःदर्शनकेकारणनहीं ॥ किंतु ॥ अदृष्टादिकही पुनःदर्शनकेकारणहे ॥ शंका ॥ दर्शनकालविषे पुत्रादिकबांधवोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यह पूर्वआपनैंकह्या ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे जेजेपुत्रादिक उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनोंकूं याप्रकारकाज्ञान नियमतैंहोवैहै ॥ देवदत्तनामामैं यज्ञदत्तनामापितातैं उत्पन्नभयाहूं ॥ यातैं ऐसाजान्याजावैहै ॥ तिसपितातैंमैंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञानतो व्यापकहै ॥ और पुत्रादिकोंकीउत्पत्ति व्याप्यहै व्यापकतैंविना व्याप्यकीस्थितिहोवैनहीं ॥ जैसे अग्नितैंविना धूमकीस्थितिहोवैनहीं ॥ जोदर्शनदर्शनविषे पुत्रादिकोंकीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तो तिसतैंमैंअभीउत्पन्नभयाहूं ऐसाज्ञान पुत्रादिकोंकूंहोणाचाहिये ॥ और ऐसाज्ञानकिसीकूंहोतानहीं ॥ यातैं व्यापकरूपज्ञानकेअभावहोणेतैं ताज्ञानकाव्याप्यरूप जोपुत्रादिकोंकीउत्पत्ति सोभी दर्शनकालविषेहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ तिसतैंमैंउत्पन्नभयाहूं याज्ञानकूं उत्पत्तिकीव्यापकता जोसर्वत्रहोवै ॥ तो तुमारापूर्वपक्ष संभवै ॥ परंतु ताज्ञानकूं उत्पत्तिकीव्यापकता सर्वत्रहैनहीं ॥ काहेतैं घटादिकजडपदार्थोंकी उत्पत्तितोहोवैहै ॥ परंतु घटादिकजडपदार्थोंविषे तिसतैंमैंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञानहोवैनहीं ॥ शंका ॥ तिसतैंमैंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञान यद्यपि घटादिकजडपदार्थोंविषेतोहैनहीं ॥ तथापि घटादिकोंकिद्रष्टापुरुषकूं याप्रकारकाज्ञानहोवैहै ॥ मृत्तिकादिकोंतैं यहघट उत्पन्नभयाहै ॥ यातैं जहाँउत्पत्तिहोवैहै ॥ तहाँ याप्रकारकाज्ञान अवश्यहोवैहै ॥ समाधान ॥ द्रष्टापुरुषकेज्ञानकूं घटकेउत्पत्तिकीव्यापकता संभवैनहीं काहेतैं एकअधिकरणविषेरहणेहारेपदार्थोंकाही परस्पर व्याप्यव्यापकभाव होवैहै ॥ जैसे एकअधिकरणविषेरहणेहारे धूम तथावह्निका परस्पर व्याप्यव्यापकभावहोवैहै ॥ और जे भिन्नभिन्नअधिकरणविषेरहेहैं ॥ तिनोंका परस्परव्याप्यव्यापकभावहोवैनहीं ॥ जैसे शीतस्पर्शका तथाउष्णस्पर्शका परस्पर व्याप्यव्यापकभाव होवैनहीं ॥ तैसे उत्पत्तिका तथापूर्वउक्तज्ञानका एकअधिकरणहैनहीं ॥ किंतु उत्पत्तिका अधिकरणतोघटहै ॥ और ज्ञानकाअधिकरण घटकाद्रष्टापुरुषहै ॥ भिन्नभिन्नअधिकरणविषेरहणेहारे उत्पत्तितथा ज्ञानका परस्पर व्या

प्यव्यापकभावमानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं उत्पत्तिका तथापूर्वउक्तज्ञानका परस्परव्याप्यव्यापकभाव संभवैनहीं ॥ शंका ॥ घटादिक जडपदार्थोंकेउत्पत्तिका तथापूर्वउक्तज्ञानका परस्पर व्याप्यव्यापकभाव यद्यपि संभवैनहीं ॥ तथापिचैतन्यमनुष्यादिकोंकूं तिसतैंमैंउत्पन्न भयाहूं याप्रकारकाज्ञान होवैहै यातैं चैतन्यमनुष्यादिकोंकेउत्पत्तिकाही पूर्वउक्तज्ञानव्यापकहै ॥ जडोंकेउत्पत्तिकाव्यापकनहीं ॥समाधान॥ तिसतैंमैंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञान चेतनमनुष्यादिकोंकेउत्पत्तिकाव्यापकभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं चेतनमनुष्यादिकभी उत्पत्तितैं अनंतर याप्रकारजाणतेनहीं ॥ जोइसतैंहमउत्पन्नभयेहैं ॥ किंतु माता तथापिताकेवचनोंतैं ताबालककूं चिरकालकेपीछे सोज्ञानहोवै है यातैं चेतनकेउत्पत्तिका पूर्वउक्तज्ञानव्यापकहै यहतुमाराकहणाभीव्यर्थहै ॥ किंवा चेतनकेउत्पत्तिका पूर्वउक्तज्ञान व्यापकहै ॥ यहतेरावचन मेरेमुखविषेजिह्वानहींहै याप्रकारकेवचनकीन्याई व्याघातदोषकरिकैयुक्तहै ॥ काहेतैं चैतन्य आत्मास्वरूपहै यातैंनित्यहै तानित्यचैतन्यकीउत्पत्तिकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ शंका ॥ यहदेवदत्तनामापुरुष उत्पन्नभयाहै याप्रकारकाअनुभव ॥ सर्वपुरु षोंकूंहोवैहै ॥ यातैं चैतन्यकीभीउत्पत्तिसंभवैहै ॥ समाधान ॥ सोलोकोंकाअनुभव जोयथार्थहोवै ॥ तौ चैतन्यकेउत्पत्तिकूंसिद्धकरै परंतुसोलोकोंकाअनुभवभ्रांतिरूपहै ॥ काहेतैंअन्यवस्तुकेधर्मोंकाअन्यवस्तुविषेआरोपणकानामभ्रांतिज्ञानहै॥जैसे रज्जुविषेयहसर्पहैयाप्रका रकाज्ञान भ्रमरूपहै॥तैसे उत्पत्ति तथानाश दोनोंदेहकेधर्महैं॥चैतन्यकेधर्मनहीं ॥परंतुअज्ञानरूपदोषकरिकैअविवेकीपुरुषचैतन्यआत्माविषेउत्पत्तितथानाशमानैहैं॥यातैंतेपुरुषभ्रांतहैं॥तिनोंकेअनुभवतैंचैतन्यकेउत्पत्तिकीसिद्धिहोवैनहीं ॥शंका॥ जोचैतन्यकोउत्पत्तितथानाशन हींहोताहोवै तौ दर्शनकालविषेपुत्रादिकोंकीउत्पत्ति तथाअदर्शनकालविषेतिनोंकालय याप्रकारकीदृष्टिसृष्टिवादतुमारा कैसेसिद्धहोवैगा समाधान॥दर्शनकालविषे तथाअदर्शनकालविषे चैतन्यकी उत्पत्ति तथानाश हमभीअंगीकारकरतेनहीं॥किंतु तहाँभी शरीरादिकअनात्म पदार्थोंकाहीउत्पत्ति तथानाश होवैहै॥किंवा॥जन्मशब्दकेअर्थकाविचारकरिये॥तौभी दृष्टिसृष्टिवादहीसिद्धहोवैहै॥काहेतैं प्रादुर्भावकानामज न्महै॥सोप्रादुर्भाव दर्शनतैंभिन्ननहीं॥किंतु वस्तुकादर्शनहीं प्रादुर्भावहै॥जैसेप्रातःकालविषे जब सूर्यकादर्शनहोवैहै ॥ तब लोक ऐसाकथन

करैहैं ॥ सूर्यकाप्रादुर्भावभयाहे ॥ याळोकोंकिव्यवहारतैं दर्शनकानामहीं प्रादुर्भावसिद्धहोवैहे॥यातैं पुत्रादिकपदार्थोंकादर्शनहीं तिनपुत्रादि कोंकीउत्पत्तिहे॥और पुत्रादिकोंकाअदर्शनहीं तिनपुत्रादिकोंकालयहे॥यहदृष्टिसृष्टिवादहीं उत्तमसिद्धांतहे॥शंका ॥ जैसे प्रथम माताकेउद रतैं अभीपुत्रकीउत्पत्तिहोवैहे॥तभी पिता ताबालककेजन्मसंस्कारोंकूंकरैहे॥तथा देवदत्तादिकनामकूं राखैहे ॥तैसे पुत्रकेदर्शनकालविषेभी जन्मकेसंस्कारहोणेचाहिये॥काहेतैं तुमारेमतविषे जभीजभी पुत्रकादर्शनहोवैहे ॥तभीतभी तापुत्रकाजन्महोवैहे॥ समाधान ॥यहदोष केव ल हमारेमतविषेनहीं ॥ किंतु तैंयादीकेमतविषेभी यहदोष समानहे ॥ काहेतैं तेरेमतविषे जैसे ज्येष्ठपुत्रकेशरीरतैं कनिष्ठपुत्रकाशरीर भिन्नहे ॥ यातैं तिनकेसंस्कारभी भिन्नभिन्नहोवैहैं ॥ तैसे पुत्रकेबाल्यशरीरतैं ॥ युवानशरीरभीभिन्नहे ॥ बाल्यशरीरका तथायुवानशरी रका अभेद तेरेकूंभीअंगीकारनहीं ॥ यातैं बाल्यशरीरकीन्याई युवानशरीरकेउत्पन्नहुएभी पुनःजन्मकेसंस्कारहोणेचाहिये ॥ और युवा अवस्थाकेप्राप्तहुए जन्मकेसंस्कारोंकूं कोई करतानहीं ॥ शंका ॥ बाल्यशरीरका तथायुवानशरीरका परस्परभेदनहीं किंतु अभेदहे ॥ यातैं जन्मकेसंस्कारोंकीआपत्तिरूपदोष हमारेमतविषेसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ बाल्यशरीरका तथायुवानशरीरका अभेदसंभवैनहीं ॥ काहेतैं बाल्यशरीरकेपरिमाणतैं यौवनशरीरकापरिमाण भिन्नहे ॥ आश्रयकेभेदतैंविना परिमाणकाभेद संभवैनहीं ॥ जैसे पंचहस्त परिमितपटतैं दशहस्तपरिमितपट भिन्नहोवैहे ॥ तैसे अल्पपरिमाणवाळेबाल्यशरीरतैं दीर्घपरिमाणवाळायौवनशरीरभी भिन्नहे ॥ शरी रकाभेदहीं जन्मसंस्कारोंविषेकारणहे ॥ यातैं यौवनशरीरकीउत्पत्तिविषे ॥ जन्मसंस्कारोंकीप्राप्तिरूपदूषण तुमारेकूंभी अवश्य होवैगा ॥ ॥ शंका ॥ जोबाल्यशरीरतैं यौवनशरीर भिन्नहोवै ॥ तो देवदत्तनामापुरुषकूं आपणेशरीरविषे याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहे ॥ जो मैंबालकथा सोईमैं अभीयुवानहूं ॥ तथा तादेवदत्तपुरुषविषे अन्यपुरुषोंकूंभी याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहे सोई यहदेवदत्तहे ॥ यहदोनोंप्रकारकेप्रत्यभिज्ञाज्ञान ॥ बाल्ययौवनदेवदत्तकेअभेदकूं विषयकरैहैं ॥ सो नहोणेचाहिये ॥ तैसे तुमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी सोईमैंदेवदत्तहूं अथवा सोईयहदेवदत्तहे ॥ यहदोनोंप्रत्यभिज्ञाज्ञान नहींहोणेचाहिये ॥ और सर्वपुरुषोंकूं याप्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान

होवैहै ॥ समाधान ॥ सोईमैंदेवदत्तहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान पूर्वउत्तरशरीरकेअभेदकूंविषयकरैनहीं ॥ किंतु दोनोंशरीरोंविषे आरोपितजोआत्माकीएकता ताकूंविषयकरैहै ॥ और तादेवदत्तपुरुषविषे दूसरेयज्ञदत्तनामापुरुषकूं सोईयहदेवदत्तपुरुषहै ऐसाजोप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहै ॥ सोभी आपणेसंबंधियोंकेवचनविषेविश्वासतैंहोवैहै ॥ शरीरकेअभेदतैं किसीमतविषेभी प्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं ॥ यातैं हेवादिन् बाल्ययौवनादिकशरीरोंविषे आरोपितजोआत्माकीएकता ॥ ताएकताकूंग्रहणकरिकैहीं सर्वमतविषे प्रत्यभिज्ञाज्ञानकासंभव होइसकैहै ॥ शरीरोंकीएकतामानणी निष्फलहै ॥ शंका ॥ हमारेमतविषे आत्माकेअभेदकूंग्रहणकरिके सोईमैंदेवदत्तहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु शरीरकाआरंभकरणेहारी जो अवयवोंकीरचनाविशेषहै ॥ सोरचना बाल्ययौवनशरीरविषेएकहीहै ॥ यातैं ताअवयवोंकीरचनाविशेषकूंग्रहणकरिके पूर्वउक्तप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैहै ॥ अथवा बाल्ययौवनशरीरकेआरंभकरणेहारा जोपितामाताका शुक्रशोणितहै ताशुक्रशोणितकूंग्रहणकरिके पूर्वउक्तप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैहै ॥ समाधान ॥ आरंभककारणकेअभेदतैं पूर्वउक्तप्रत्यभिज्ञाज्ञानसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोकारणकेअभेदतैं प्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवै ॥ तौ एककाष्ठकरिकै अथवा एकपाषाणकरिकै रचेहुए जेदोस्तंभहैं ॥ तिनदोनोंस्तंभोंकाकारणएकहीहै ॥ यातैं तिनदोनोंस्तंभोंविषे सोईयहस्तंभहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान होणाचाहिये ॥ और भिन्नभिन्न स्तंभोंविषे याप्रकारका अभेदज्ञान किसीपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातैं आरंभककारणकेअभेदकूंग्रहणकरिके सोप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं ॥ शंका ॥ भिन्नभिन्नशरीरोंविषेआरोपित जोआत्माकीएकता ॥ ताकूं ग्रहणकरिके सोईमैंदेवदत्तहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान देवदत्तकूंहोवैहै॥यह पूर्व आपनेकह्या॥सो यद्यपि देवदत्तकेप्रत्यभिज्ञाज्ञानविषेसंभवैहै ॥ तथापि स्तंभकेप्रत्यभिज्ञाज्ञानविषेसंभवैनहीं॥ काहेतैं स्तंभ जडहै यातैं सोईमैंस्तंभहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान ताकूंहोवैनहीं ॥ किंतु तास्तंभकेद्रष्टापुरुषकूं सोईयहस्तंभहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहै ॥ सो न होणाचाहिये ॥ काहेतैं तहाँ आत्माका अभेदहैनहीं ॥ समाधान ॥ आत्माकेअभेदकूंग्रहणकरिके यद्यपि स्तंभविषे अभेद प्रत्यभिज्ञा नहींहोती ॥ तथापि जैसेदेवदत्तपुरुषविषे यज्ञदत्तनामापुरुषकूं आपणेसंबंधियोंकेवचनोंकाविश्वासकरिके सोईयहदे

वदत्तहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहै ॥ तैसे स्तंभकेद्रष्टापुरुषकूंभी अन्यपुरुषकेवचनकाविश्वासकरिके सोईयहस्तंभहै याप्रका
रकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैहै ॥ किंवा ॥ बाल्ययौवनशरीरविषे पितामाताकेशुक्रशोणितकीएकताकूंग्रहणकरिके जोपूर्ववादीनें प्रत्यभि
ज्ञाज्ञानकह्या ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जैसेअंकुरकेउत्पन्नहुए बीज नष्टहोइजावैहै ॥ तैसे शरीरकेउत्पन्नहुएतें अनंतर शुक्रशो
णितभी नष्टहोइजावैहै ॥ यातें ताशुक्रशोणितकूंग्रहणकरिके प्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ पूर्वजोवादीनेंयहकह्याथा ॥ बाल्य
यौवनशरीरविषे एकही अवयवोंकीरचनाविशेष कारणहै ॥ यातें ॥ ताअवयवोंकीरचनाविशेषकूंग्रहणकरिकेही प्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैहै ॥
सोकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें अवयवोंकीरचनाविशेषकूं जोशरीरकीकारणता किसीप्रमाणकरिकेसिद्धहोवै ॥ तो तारचना
कूंग्रहणकरिके प्रत्यभिज्ञाज्ञानसंभवै ॥ परंतु अवयवोंकीरचनाविशेषकूंशरीरकीकारणता किसीप्रमाणकरिकेसिद्धहोवैनहीं ॥
काहेतें जैसे पृथिवीआदिकोंकेपरमाणुअतिसूक्ष्महैं ॥ यातें तिनोंकाप्रत्यक्षज्ञान किसीकूंहोवैनहीं ॥ तैसे शरीरकेआरंभकरणे
हारेअवयवभी अतिसूक्ष्महैं ॥ यातें प्रत्यक्षप्रमाणकरिकेतिनोंकाज्ञानसंभवैनहीं ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकेअप्रवृत्तहुए अनुमानादिकोंक
रिकेभी तिनअवयवोंकाज्ञानसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ परमाणुवोंकरिके किसीकार्यकीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ काहेतें परमाणुजडहैं
और अनेकहैं जडवस्तुविषे कार्यकेआरंभकरणेकाविचारसंभवैनहीं ॥ और जोवादी परमाणुवोंकूंचेतनमानें तौभी भिन्नभिन्न
अभिप्रायवाले अनेकपरमाणुवोंतें एककार्यकीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ यातें परमाणुरूपअवयवोंकीरचनाविशेषकूंग्रहणकरिके सोईमैंहूं
यहप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं ॥ शंका ॥ प्रत्यक्षज्ञानकेविषयजेस्थूलअवयवहैं ॥ तिनअवयवोंकीरचनाविशेषही बाल्ययौवनशरीरकाका
रणहै ॥ यातें ताकूंग्रहणकरिकेही सोईमैंहूं यहप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैहै॥समाधान ॥ बाल्यशरीरविषे जोस्थूलअवयवोंकीरचनाहै सोईहीरच
नायौवनशरीरविषेसंभवैनहीं॥काहेतें जोबाल्यशरीरकेअवयवोंकीरचना यौवनशरीरविषेहोवै ॥ तो यौवनशरीरका बाल्यशरीरतें अधिकप
रिमाण तथाअधिकपराक्रम न होणाचाहिये ॥ और बाल्यशरीरतें यौवनशरीरविषे अधिकपरिमाण तथाअधिकपराक्रम सर्वलोकोंकूंअनुभ

वसिद्धहै ॥ यातैं बाल्ययौवनशरीरविषे स्थूलअवयवोंकीरचना भिन्नभिन्नहै एकनहीं ॥ लोकविषेभी परिमाणकीन्यूनअधिकतातैं अवयवों केरचनाकाभेदहीदेख्याहै ॥ जैसे दशमणपरिमितमाषराशितैं पंचमणमाषको जोकोईनिकासिलेवै ॥ अथवा तामाषकीराशीविषे पंचमणमाषको कोईअधिकमिलाइदेवै ॥ तहाँ माषराशीकेरक्षकपुरुष अवयवोंकीरचनाविशेष भिन्नभिन्नहींमानैंहैं ॥ एकरचनामानैंनहीं ॥ यातैं परिमाणकेभेदहुए अवयवरचनाभी भिन्नभिन्नहीहोवैहै एकहोवैनहीं ॥ यातैं हेवादिन् जैसे तुमारेमतविषे बाल्यशरीरतैंभिन्नयौवनशरीरकेउत्पन्नहुएभी पुनःजन्मकेसंस्कारहोवैंनहीं ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी दर्शनतैंपुत्रकीउत्पत्तिहुएभी पुनःजन्मकेसंस्कारहोवैंनहीं ॥ शंका ॥ यौवनशरीरविषे यहदेवदत्त उत्पन्नभयाहै॥याप्रकारकाज्ञान किसीपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातैं यौवनशरीरविषे पुनःजन्मकेसंस्कारकीप्राप्तिरूपदूषण हमारेमतविषे संभवैनहीं ॥समाधान॥हमारेमतविषेभी दर्शनकालविषे पुत्रादिकोंकेउत्पन्नहुएभी तापुत्रादिकोंविषे यहपुत्रहमाराउत्पन्नभयाहै याप्रकारकाज्ञान पितामातादिकसंबंधियोंकूं होवैनहीं॥यातैं हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी पुनःजन्मकेसंस्कारोंकीप्राप्तिरूपदोषनहीं॥शंका॥तुमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषे पुत्रादिकोंकाअदर्शनहीं तिनोंकामरणहै॥यातैं जैसे मरणकेअनंतर पुत्रादिकोंकीदाहक्रिया करीतीहै॥तैसे तिनोंकेअदर्शनतैंअनंतरभी तिनपुत्रादिकोंकीअग्निदाहक्रियाकरीचाहिये॥और अदर्शनतैंअनंतरपुत्रादिकबांधवोंकोअग्निदाहादिकक्रिया,कोईकरतानहीं॥समाधान॥हेवादिन् जैसेतुमारेमतविषे यौवनशरीरकेउत्पन्नहुए बाल्यशरीरनाशहोइजावैहै॥काहेतैंजोयौवनशरीरकेप्राप्तहुएभीबाल्यशरीर नाशनहींभयाहोवै ॥ तो यौवनकालविषेभी बाल्यशरीरकीप्रतीति होणीचाहिये॥औरयौवनकालविषे बाल्यशरीरकीप्रतीति होतीनहीं ॥ यातैं यौवनकालविषे बाल्यशरीरकानाशहोवैहै ॥ तानष्टहुएबाल्यशरीरको जैसे तुम अग्निदाहादिकक्रियानहींकरते ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी पुत्रादिकसंबंधियोंकेबाहरगयेहुए तिनपुत्रादिकोंकादर्शनहोवैनहीं ॥ सो अदर्शनहीं तिनपुत्रादिकबांधवोंकामरणहै ॥ ताअदर्शनरूपमरणकेहुएभी तिनपुत्रादिकसंबंधियोंकेदाहादिकक्रियाकूं हम करैंनहीं ॥ यातैं हमारेमतविषे तथा तुम्हारेमतविषे यहउत्तर समानहै ॥ शंका ॥ हेदृष्टिसृष्टिवादिन् तुम्हारेमतविषे किंचित् मात्रविशेषताहै ॥ काहेतैं पुत्रादिकसंबंधी जभी दे

शांतरतैंगृहविषे आवैहै ॥ तभी ताकेमातापिताकूं याप्रकारकाज्ञान होवैहै ॥ सोईयहहमारापुत्रहै ॥ याअभेदज्ञानकेबलतैं पूर्वउत्तरश
रीरोंकाअभेदही सिद्धहोवैहै ॥ समाधान ॥ बाल्यशरीरतैं अनंतर यौवनशरीरकेउत्पन्नहुएभी सोईयहदेवदत्तहै याप्रकारकाअभेद
ज्ञान तुम्हारेमतविषेभीहोवैहै यातैं तुमारेमतविषेभी बाल्ययौवनशरीरका अभेद होणाचाहिये ॥ और बाल्ययौवनशरीरकाअभेद
पूर्वउक्तरीतिसैं संभवैनहीं ॥ यातैं यहउतरभी तुमारेहमारेमतविषे समानहै ॥ शंका ॥ पुत्रादिकसंबंधियोंकाअदर्शनहीं जोतिनपुत्रा
दिकोंकामरणहोवे ॥ तो जैसे पुत्रादिकबांधवोंकेमरणतैं अनंतर पितामातादिकसंबंधी शोककूंकरैहैं तथा रुदनकूंकरैहैं ॥ तैसे
पुत्रादिकबांधवोंकेअदर्शनकालविषेभी शोक तथारुदनादिक होणेचाहिये ॥ समाधान ॥ हेवादिन् जैसे तुमारेमतविषे यौवनशरीरकोप्राप्ति
कालविषे बालकशरीरकेनाशहुएभी पितामातादिकसंबंधी शोककूं तथारुदनकूं करैनहीं ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी पुत्रादिक
बांधवोंकेअदर्शनकालविषे पितामातादिकसंबंधी शोककूं तथारुदनकूं करैनहीं ॥ शंका॥ यौवनशरीरकीप्राप्तिकालविषे बाल्यशरीरकेनष्टहु
एभी सोईयहहमारापुत्रहै याप्रकारकाअभेदज्ञान मातापितादिकसंबंधियोंकूं होवैहै ॥ यातैं सोअभेदज्ञानहीं हमारेमतविषे अग्निदाहादिक
क्रियाका तथाशोकादिकोंका प्रतिबंधकहै ॥ समाधान ॥ पुत्रादिकबांधवोंकेअदर्शनतैंअनंतर जभी तिनपुत्रादिकबांधवोंकापुनःदर्शनहोवे
है ॥ तभी सोईयहहमारापुत्रहै याप्रकारकाअभेदज्ञान पितामातादिकसंबंधियोंकूं होवैहै ॥ यातैं सोअभेदज्ञानहीं हमारेमतविषेभी अग्निदा
हादिकक्रियाका तथाशोकादिकोंका प्रतिबंधकहै ॥ यातैं यहउत्तरभी तुमारेहमारेमतविषे समानहै ॥ शंका ॥ पुत्रादिकसंबंधियोंकाअद
र्शनहीं जोतिनपुत्रादिकोंका मरणहोवे ॥ तो पुनःदर्शनकालविषे तेपुत्रादिकबांधव याप्रकारकहैहैं हम नहींमरेथे ॥ यहतिनोंकावचन तुमा
रेमतविषे असंगतहोवैगा ॥ यातैं अदर्शनकानाम मरणनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् तुमारेमतविषेभी यौवनदेहकेप्राप्तहुए बाल्यशरीर नष्ट
होइजावैहै ॥ परंतु सोयौवनपुरुष ऐसाकहैहै हमनहींमरेथे ॥ यातैं यावचनकेविरोधतैं तुमारेमतविषेभी बाल्यशरीरकानाश नहींहोणाचा
हिये ॥ यहवार्ता तेरेकूंभीअंगीकारनहीं ॥ शंका ॥ बाल्यशरीरका तथायौवनशरीरका परस्परभेदहै ॥ ताभेदकाज्ञान पुरुषकूं होवैनहीं ॥

यातें पूर्वउत्तरशरीरकेभेदकाअज्ञानरूपदोषकरिकैयुक्त युवानपुरुषका हमनहींमरेथे याप्रकारकावचन प्रमाणरूपनहीं ॥ किंतु सोवचन अप्रमाणरूपहे ॥ यातें तावचनकरिकै बाल्यशरीरकीनित्यतासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ पुनःदर्शनकालविषे पुत्रादिकबांधवोंका जोयहवचनहे हमनहींमरेथे ॥ सोयहवचनभी पूर्वउत्तरशरीरकेभेदकाअज्ञानरूपदोषयुक्तपुरुषकरिकेजन्यहे ॥ यातें अप्रमाणरूपहे ॥ ताअप्रमाणवचनतें पूर्वशरीरकीनित्यता हमारेमतविषेभी सिद्धहोवैनहीं ॥ यातें यहउत्तरभी हमारेतुमारेमतविषे समानहीहै ॥ किंवा ॥ पूर्वशरीरतें उत्तरशरीरविषे भेदकेविद्यमानहुएभी ताभेदकाज्ञान लोकोंकूंहोवैनहीं ॥ यातें ताभेदज्ञानका कोईप्रतिबंधकमान्याचाहिये ॥ सोप्रतिबंधक पूर्वउत्तरशरीरकेभेदकाअज्ञानरूपदोषहे ॥ यादोषकेप्रभावतेंहीं पूर्वउत्तरशरीरकेभेदकाज्ञान पुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ याकारणतेंहीं पितामातादिकबांधव पुत्रकेपूर्वशरीरकेनाशहुएभी शोककूं तथारुदनकूं नहींकरैहैं ॥ किंवा ॥ पूर्वउत्तरशरीरकेभेदज्ञानकाप्रतिबंधक पूर्वउक्तअज्ञानरूपदोषकूं जोनहींमानोगे ॥ तो पुत्रादिकोंके पूर्वशरीरतें उत्तरशरीरविषेभेदकाज्ञान पितामातादिकबांधवोंकूं अवश्यहोवेगा ॥ ताभेदज्ञानकरिकै पुत्रादिकोंकेपूर्वशरीरविषे मरणबुद्धिहोवेगी ॥ और तामरणबुद्धितें पितामातादिकोंकूं शोकादिकोंकीप्राप्तिहोवेगी ॥ यातें यादोषकीनिवृत्तिवासतै पूर्वउत्तरशरीरकेभेदज्ञानकाप्रतिबंधक पूर्वउक्तअज्ञानरूपदोष हमनें तथातुमनें अवश्यमान्याचाहिये ॥ यातें हेवादिन् जैसे तुमारेमतविषे बाल्यशरीरका तथायौवनशरीरका अभेदहैनहीं किंतुभेदहे ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी पूर्वदर्शनकेविषयजे पुत्रादिक तथाउत्तरदर्शनकेविषयजेपुत्रादिक तिनदोनोंका अभेदनहीं किंतुभेदहे ॥ और हेवादिन् जैसे तुमारेमतविषे यौवनशरीरकेप्राप्तिकालविषे बाल्यशरीरकेनष्टहुएभी पितामातादिक तापुत्रविषे मरणबुद्धिकरैनहीं ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी अदर्शनकालविषेपुत्रादिकोंकेनष्टहुएभी पितामातादिकसंबंधी तापुत्रविषे मरणबुद्धिकरैनहीं ॥ यातें हेवादिन् तुमनें जेजेदोष हमारेमतविषेकहे ॥ तेतेदोष तुमारेमतविषेभीप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिनदोषोंकोनिवृत्तिवासतै जोजोउत्तर तुमनेंकह्या ॥ सो सो उत्तर हमारेमतविषेभीसंभवैहे यह सिद्धभया ॥ किंवा ॥ लोकविषेप्रसिद्ध जोजीवोंकाजन्म तथामरणहे ॥ सोजन्ममरणहीं हमारेदृष्टिसृष्टिवादकूं सिद्धकरैहे ॥ काहेतें सोजन्म

तथामरण ज्ञानतैंविना अन्यकिसीकारणतैंसिद्धहोवेनहीं ॥ किंतु ज्ञानतैंहीं ताजन्मकी तथामरणकी सिद्धिहोवैहै ॥ जबपर्यंत पुत्रादिकवां
धवोंकेजन्मकूं तथामरणकूं पितादिकसंबंधी नहींजानते ॥ तबपर्यंत हर्षकूं तथाशोककूं प्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु पुत्रादिकोंके जन्मतथामरण
केज्ञानतैंअनंतरहीं पितादिकसंबंधी हर्षकूं तथाशोककूं प्राप्तहोवैंहैं ॥ तैसे यहपुत्रादिकभी किसीअन्यकेवचनतैं आपणेजन्मकूंजाणिकरिके
हर्षकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और आपणेमरणकूंजानिकरिके शोककूं प्राप्तहोवैंहैं ॥ आपणेजन्मकेज्ञानतैंविना तथामरणकेज्ञानतैंविना किसीपुरुष
कूंभी हर्षशोककीप्राप्ति होवैनहीं ॥ तहाँ पुत्रादिकोंके जन्मकूं तथामरणकूं पितामातादिकसंबंधी प्रत्यक्षप्रमाणतैंहींजानेंहैं ॥ और पुत्रादिक
आपणेजन्मकूं तथामरणकूं प्रत्यक्षप्रमाणतैंजाणतेनहीं ॥ किंतु पितामातादिकसंबंधियोंकेवचनरूपशब्दप्रमाणतैं तथाअनुमानप्रमाणतैं
आपणेजन्ममरणकूं जानैंहैं ॥ काहेतैं योनितैंनिर्गमनकालविषे यहजीव दुःखकरिकेमूर्छाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ मूर्छाअवस्थाविषे किसीवस्तुका
ज्ञान होवैनहीं ॥ यातैं योनितैंनिर्गमनरूपआपणेजन्मकूं ताकालविषे प्रत्यक्षजानणेमैं यहजीव समर्थहोवैनहीं॥तैसे मरणकालविषेभी यहजी
वदुःखकरिके मूर्छाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ताकालविषेभी यहजीव आपणेमरणकूं प्रत्यक्षजानिसकेनहीं॥ किंतु शब्दप्रमाणतैं तथाअनुमा
नप्रमाणतैं आपणेजन्मकूं तथामरणकूं यहजीव जानैंहै ॥ यातैं हेवादिन् जैसे लौकिकपितामातादिकसंबंधियोंकेवचनकरिके आप
णेजन्ममरणकूं तुमनें निश्चयकन्याहै ॥ तैसे सर्वज्ञईश्वरकरिकेरचितवेदप्रमाणतैंभीपुत्रादिकपदार्थोंकादर्शनहीं तिनपुत्रादिकोंकीउत्प
त्ति औरपुत्रादिकपदार्थोंकाअदर्शनहीं तिनपुत्रादिकोंकामरण याअर्थकीसिद्धिसंभवैहै ॥ शंका ॥ वाक्आदिकइंद्रियोंका तथाअग्निआ
दिकदेवतावोंका परित्यागकरिके केवल पुत्रादिकविषयोंविषे दृष्टिसृष्टिवादकीसिद्धिवासते युक्तियोंका कथनविरुद्धहै ॥ काहेतैं आत्मातैं
भिन्नसर्वपदार्थ तुमारेमतविषे दृष्टिसृष्टिवादकेविषयहैं॥ समाधान ॥ जैसे पुत्रादिकविषयोंविषे सोईयहदेवदत्तहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान
होवैहै ॥ तैसे वाक्आदिकइंद्रियोंविषे तथाअग्निआदिकदेवतावोंविषे सोईयहवाक्इंद्रियहै और सोईयहअग्निदेवताहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञा
ज्ञान किसीपुरुषकूं होवैनहीं ॥ काहेतैं जिसवस्तुविषे प्रत्यक्षज्ञानकीविषयताहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषेहीं प्रत्यभिज्ञाज्ञानकीविषयताहोवैहै ॥

सोप्रत्यक्षज्ञानकीविषयता वाक्आदिकइंद्रियोंविषेहैनहीं ॥ यातें प्रत्यभिज्ञाज्ञानकीविषयताभी वाक्आदिकइंद्रियोंविषे संभवैनहीं ॥ यहाँ यहअभिप्रायहै ॥ केवल इंद्रियकरिकेजन्यज्ञानकानाम प्रत्यक्षहै ॥ जैसे चक्षुइंद्रियकरिके यह देवदत्तहै याप्रकारकाप्रत्यक्षज्ञान होवैहै ॥ और पूर्वसंस्कारसहकृतइंद्रियकरिकेजन्यज्ञानकानाम प्रत्यभिज्ञाज्ञानहै ॥ जैसे देशांतरविषे तथाकालांतरविषे देख्याहुआजोदेवदत्तहै ॥ तादेवदत्तकेसाथ जभी चक्षुइंद्रियकासंबंधहोवैहै ॥ तभी सोईयहदेवदत्तहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानलोकोंकूंहोवैहै तिनइंद्रियोंविषेभी वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यापंचकर्मइंद्रियोंविषेतो ज्ञानकीकारणता होवैनहीं ॥ किंतु शब्दकाउच्चारणादिकक्रियाकीकारणताहोवैहै ॥ और चक्षु त्वक् रसन घ्राण श्रोत्र यापंचज्ञानइंद्रियोंविषेज्ञानकीकारणताहोवैहै ॥ तिनोंविषेभी रसनइंद्रिय रसगुणकूंग्रहणकरैहै ॥ रसके आश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैनहीं॥ तैसे घ्राणइंद्रिय गंधगुणकूंग्रहणकरैहै ॥ गंधगुणकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ और श्रोत्रइंद्रियशब्दगुणकूं ग्रहणकरैहै ॥ शब्दकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ यातें यातीनइंद्रियोंकरिकेजन्यज्ञानोंकीविषयता वाक्आदिकइंद्रियोंविषे संभवैनहीं ॥ काहेतें वाक्आदिकइंद्रिय द्रव्यरूपहैं गुणरूपहैंनहीं ॥ और चक्षुइंद्रिय रूपादिकगुणोंकूं तथारूपादिकगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैहै ॥ तैसे त्वक्इंद्रियभी स्पर्शादिकगुणोंकूं तथास्पर्शादिकगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैहै ॥ तिनदोनोंविषेभी चक्षुइंद्रियतो उद्भूतरूपकूं तथा उद्भूतरूपवालेद्रव्यकूं ग्रहणकरैहै॥तैसे त्वक्इंद्रियभी उद्भूतस्पर्शकूंतथाउद्भूतस्पर्शवालेद्रव्यकूं ग्रहणकरैहै ॥ सोउद्भूतरूप तथाउद्भूतस्पर्श वाक्आदिकइंद्रियोंविषेहैनहीं॥किंतु अनुद्भूतरूपस्पर्शादिक इंद्रियोंविषेरहैहैं॥यातें चक्षुइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयता तथात्वक्इंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतावाक्आदिकइंद्रियोंविषेसंभवैनहीं ॥ किंतुशास्त्रप्रमाणतैंतथाअनुमानप्रमाणतैंवाक्आदिकइंद्रियोंका परोक्षज्ञानहोवैहै तैसे वाक् आदिकइंद्रियोंकेअग्निआदिकदेवतावोंकाभी परोक्षहीज्ञानहोवैहै ॥ यातें परोक्षज्ञानकेविषय जेवाक्आदिकइंद्रिय तथाअग्निआदिकदेवता ॥ तिनोंविषे सोईयहवाक्इंद्रियहै औरसोईयहअग्निदेवताहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं ॥ यातें केवलश्रुतिवचनतैंही वाक्आदिकइंद्रियोंविषे तथाअग्निआदिकदेवतावोंविषे दृष्टिसृष्टिवाद सिद्धहोवैहै ॥ और पुत्रादिकविषयोंविषेतो सोईयहदेवदत्तहै याप्रकारका प्रत्य

भिज्ञाज्ञान संभवैहै ॥ यातैं ताप्रत्यभिज्ञारूपविरोधकीनिवृत्तिवासतैं पुत्रादिकविषयोंविषेही दृष्टिसृष्टिवादका युक्तियोंसैंनिरूपणकऱ्या ॥
और वास्तवतैंतो आत्मातैंभिन्नसंपूर्णजडवस्तु दर्शनकालविषे उत्पन्नहोवैंहैं ॥ और अदर्शनकालविषेलयहोवैहैं ॥ वाक्आदिकइंद्रियोंका
यद्यपि अस्मदादिकजीवोंकूं प्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं॥ तथापि अग्निआदिकअभिमानीदेवतावोंकूं वाक्आदिकइंद्रियोंका प्रत्यक्षहीज्ञानहोवैहै ॥
यातैं देवतावोंकेदर्शनतैं वाकादिकइंद्रियोंकीउत्पत्ति और देवतावोंकेअदर्शनतैं तिनोंकानाश संभवैहै॥और जैसे आकाशादिकभूतोंकेका
र्यवाकादिकइंद्रियोंका दर्शनकालविषे जन्महोवैहै ॥ और अदर्शनकालविषे मरणहोवैहै ॥ तैसे आकाशादिकपंचभूतोंकाभी दर्शनकालविषे
जन्महोवैहै ॥ तथा अदर्शनकालविषे नाशहोवैहै ॥ और जैसे बाल्ययौवनादिकशरीरोंविषे प्रत्यभिज्ञारूपविरोधका पूर्वसमाधानकियाहै
तैसे आकाशादिकपंचभूतोंविषेभी प्रत्यभिज्ञाज्ञानरूपविरोधकासमाधानजानिलेणा ॥ और पूर्व बाल्ययौवनशरीरादिकोंविषे जैसे अवय
वोंकूं तथा अवयवरचनाकूं प्रत्यभिज्ञाज्ञानकीकारणताका खंडनकऱ्याहै ॥ तैसे आकाशादिकभूतोंविषेभीजानिलेणा ॥ यातैं आत्मातैंभि
न्नसर्वजडवस्तुका दर्शनहींजन्महै ॥ और अदर्शनहीं तिनोंकानाशहै ॥ शंका ॥ अदर्शनहींजो वस्तुकानाशहोवै ॥ तो जिसकालविषे
पुरुषकूं तडागकेजलकाज्ञाननहींहै ॥ तिसकालविषे तुमारेमतविषे तडागकाजल नाशहोइगयाहै ॥ यातैं जलकेविरोधीअग्निकी तहाँ
उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और ऐसा कभी होवैनहीं यातैं दृष्टिसृष्टिवाद असंगतहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यादोषकी तुमारेमतविषेभीप्राप्ति
होवैहै ॥ काहेतैं अन्यकिसीपुरुषकेबाल्यअवस्थाके नाशहुए ताबाल्यअवस्थाकाविरोधीयौवनअवस्था तुमारेकूंभी प्राप्तहोणीचाहिये॥जैसे
अन्यपुरुषकेबाल्यअवस्थाकाविरोधी यौवनअवस्थातुमारेकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तैसेअदर्शनकालविषे जलकेनष्टहुएभी तहाँ अग्निउत्पन्नहोवैनहीं
शंका ॥ यौवनअवस्थाकीप्राप्तिविषे धर्मअधर्मरूपकर्म कारणहैं ॥ यातैं अन्यपुरुषकीयौवनअवस्था हमारेकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ समाधान ॥
हेवादिन् जैसे तुमनें कर्मोंकूंअंगीकारकरिके दूषणकोनिवृत्तिकरी ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीभी कर्मोंकूंअंगीकारकरिके सर्वदूषणोंकीनिवृत्ति
करैंहैं ॥ अदर्शनकालविषे तडागकेजलकानाशहुएभी कर्मोंकेवशतैं तहाँजलहीउत्पन्नहोवैहै ॥ अग्नि उत्पन्नहोवैनहीं ॥ शंका ॥ आकाश

दिकपंचभूतोंकेकार्यजेशरीरादिकहैं ॥ ते सुखदुःखरूपभोगकेसाधनहैं ॥ यातें तिनोंकीउत्पत्तिविषे यद्यपि धर्माधर्मरूपकर्मोंकूं कारणता संभवैहै ॥ तथापि आकाशादिकपंचभूतोंकीउत्पत्तिविषे कर्मोंकूंकारणता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् आकाशादिकपंचभूतों केप्रति कर्मोंकूंकारणतानहींहै ॥ यहतुमनैं आशंकानहींकरी ॥ किंतु ॥ याकहणेकरिकै तुमनैं आपणेअज्ञानकूंप्रगटकऱ्याहै ॥ काहेतैं श्रुतिविषे तथास्मृतिविषे तथाव्यासभगवान्केसूत्रोंविषे याप्रकारकह्याहै ॥ जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंकरिकैयुक्तहुआ मायाविशिष्टपर मात्मा भूतभौतिकरूपप्रपंचकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और तिसप्रपंचका पालन तथासंहार करैहै ॥ जोपरमात्मा जीवोंकेकर्मतैंविनाहीं ज गत्कीउत्पत्तिकरैगा ॥ तो परमात्माविषे विषमता तथानिर्दयतारूप दोषकीप्राप्तिहोवैगी॥काहेतैं कोईपुरुष धनीहै ॥ और कोईकपुरुष निर्धनहै ॥ और कोईकपुरुष सुखीहै ॥ और कोईकपुरुष दुःखीहै ॥ और कोईकपुरुष पंडितहै ॥ और कोईकपुरुष मूर्खहै ॥ याप्र कारकेविषमप्रपंचकूंकरताहुआपरमात्मा विषमता तथानिर्दयतारूप दोषवालाहोवैगा ॥ और समदृष्टिईश्वरविषे विषमता तथा निर्दय तारूपदोष संभवैनहीं ॥ यातें तादोषकीनिवृत्तिवासते अवश्यकर्मोंकूंअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ किंवा ॥ जोवस्तु जिसजीवके सुखकासा धनहोवैहै ॥ सोवस्तु तिसजीवकेपुण्यकरिकेउत्पन्नहोवैहै ॥ और जोवस्तु जिसजीवकेदुःखकासाधनहोवैहै ॥ सोवस्तु तिसजीवकेपापकर्म करिकेउत्पन्नहोवैहै ॥ सोसुखदुःखकीकारणता जैसेशरीरादिकभौतिकपदार्थोंविषेहै ॥ तैसे आकाशादिकपंचभूतोंविषेभीहै ॥ यातें आका शादिकपंचभूतोंकीउत्पत्तिविषेभी जीवोंकेअदृष्टोंकूंकारणताहै ॥ शंका ॥ पूर्वपूर्वसृष्टिविषेस्थितजेजीवहैं ॥ तिनजीवोंकेकर्मोंकूं यद्यपि उत्त रउत्तरसृष्टिकेप्रति कारणतासंभवैहै ॥ तथापि सर्वसृष्टियोंतैंप्रथमजोसृष्टिउत्पन्नभयीहै ॥ ताकेविषे कर्मोंकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ यातें संपूर्णकार्यकेप्रति कर्मोंकूंकारणतानहीं ॥ समाधान ॥ संपूर्णसृष्टियोंतैंप्रथमकोईसृष्टिहैनहीं ॥ किंतु बीजअंकुरकीन्याई संसारका प्रवाह अनादिहै ॥ पूर्वपूर्वकर्मोंकेअनुसार उत्तरउत्तरसृष्टि उत्पन्नहोवैहै ॥ और यासंसारका आत्मज्ञानतैंविना अन्यउपायकरिकै नाशभी नहींहोवैहै ॥ किंतु आत्मज्ञानकरिकैही यासंसारकानाशहोवैहै ॥ शंका ॥ कर्मोंकूंही जोसर्वसंसारकीकारणतामानोगे ॥ तो मायाविषे

जगत्कोकारणतामानणीव्यर्थहोवेगी ॥ समाधान ॥ कर्मोंविषेजगत्कोकारणतामानणे मैं मायाकोव्यर्थता होवैनहीं ॥ काहेतैं मायातैंविना कर्मोंकेफलकीहीव्यवस्थासंभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ कार्तिकमासविषे कृत्तिकानक्षत्रकेयोगहुए जोपुरुष कार्तिकस्वामीकादर्शनकरैहै ॥ सोपुरुष सप्तजन्मोंविषे धनकरिकेयुक्तवेदपाठीब्राह्मण होवैहै ॥ याप्रकारकाफल कार्तिकस्वामीकेदर्शनरूपकर्मकरिकेप्राप्तहोवैहै ॥ यह शास्त्रविषेकह्याहै ॥ ताकेविषे याप्रकारकीशंकाहोवैहै॥कार्तिकस्वामीकेदर्शनकरणेहारेपुरुषकूं जन्मांतरविषे ब्राह्मणशरीरकोप्राप्ति तथाधना दिकोंकीप्राप्ति रूप फलहोवैहै ॥ और तिसब्राह्मणतैंभिन्नपुरुषोंविषे तादर्शनरूपकर्मकरिके दुःखकोप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेनियमविषे कौनकारणहै ॥ याप्रकारकीशंकाका हमनहींजानते याप्रकारकेउत्तरतैंविना दूसराकोईउत्तरहैनहीं ॥ किंतु हमनहींजानते याप्रकारकाउत्त रही कहनाहोवैगा ॥ और हमनहींजानते यहप्रतीति मायाकूंहीविषयकरैहै ॥ यातैं सर्वपुरुषोंकेअनुभवकरिकेसिद्ध औरसर्वकार्यकेसिद्ध करणेहारीमाया व्यर्थनहीं किंतु सार्थकहै ॥ शंका ॥ हमनहींजानते याप्रकारकाशब्द भावरूपमायाकावाचकहैनहीं ॥ किंतु ज्ञानकेअभा वकावाचकहै ॥ यातैं याशब्दतैं मायाकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ मैंनहींजानता यहशब्द किसीएकज्ञानकेअभावकूंबोधनकरैहै ॥ अथवा सर्वज्ञानोंकेअभावकूं बोधनकरैहै ॥ तहां प्रथमपक्षतोबनैंनहीं ॥ काहेतैं जिसकालविषे घटकाज्ञानपुरुषकूंहोवैहै ॥ तिसकालवि षेघटकाज्ञान तापुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातैं ताघटज्ञानकेअभावकूंअंगीकारकरिके मैंनहींजाणता यहप्रयोग होणाचाहिये ॥ और घट ज्ञानकालविषे यहप्रयोग होवैनहीं ॥ यातैं यत्किंचित्ज्ञानकेअभावकूं मैंनहींजाणता यहशब्द बोधनकरैनहीं ॥ और मैंनहींजानता यह शब्द संपूर्णज्ञानोंकेअभावकूं बोधनकरैहै ॥ यहद्वितीयपक्षभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं अभावकेज्ञानविषे प्रतियोगीकाज्ञान तथाअनुयोगीका ज्ञान कारणहोवैहै ॥ प्रतियोगीअनुयोगीकेज्ञानतैंविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ जिसवस्तुकाअभावहोवैहै सोवस्तु ताअभावकाप्रति योगीहोवैहै ॥ और जिसवस्तुविषे अभावरहैहै सोवस्तु ताअभावकाअनुयोगीहोवैहै ॥ जैसे घटकेअभाववालाभूतलहै ॥ यास्थानविषे अभावका घटप्रतियोगीहै ॥ और भूतल अनुयोगीहै ॥ तैसे संपूर्णज्ञानोंकेअभावका संपूर्णज्ञान प्रतियोगीहै ॥ और जीवात्मा अनुयोगी

है ॥ तहाँ भूतभविष्यत्काळविषेहोणेहारेसंपूर्णज्ञानोंका अल्पज्ञपुरुषकूं ज्ञानसंभवैनहीं ॥ यातैं मैंनहींजानता यहशब्द सर्वज्ञानोंकेअभावकूंभी बोधनकरैनहीं ॥ किंतु भावरूपमायाकूंहींबोधनकरैहै ॥ यातैं माया अवश्यअंगीकारकरीचाहिये ॥ अब अन्यप्रकारतैं मायाकीआवश्यकता निरूपणकरैहैं ॥ स्वभावही जगत्काकारणहै यह स्वभाववादी कोईकनास्तिक मानैहै॥और काळहीजगत्काकारणहै यह काळवादी कोईकनास्तिक मानैहै ॥ इसतैं आदिलेके जेनास्तिकोंकेपक्षहैं ॥ तिनपक्षोंकूंखंडनतर्करूपराक्षसराजा मायारूपीजननीकीसहायतातैंविना भक्षणकरैनहीं ॥ किंतु मायारूपीजननीकीसहायतातैंहीं तिनपक्षोंकूंभक्षणकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ खंडनकरणेयोग्यजेनास्तिकोंकेमतहैं ॥ तथाखंडनतर्करूपजोराक्षसराजाहै ॥ तिनसर्वोंकीजननी मायाहै ॥ सोमाया खंडनतर्करूपकनिष्ठपुत्रविषे अतिस्नेहयुक्तहै ॥ यातैं नास्तिकोंकेचित्तविषे हमनहींजानते यारूपकरिकेप्रगटहुईसोमाया खंडनतर्करूपकनिष्ठपुत्रकेताईं ॥ नास्तिकोंकेमतरूपज्येष्ठपुत्रोंकूं भक्षणकरणेवास्ते देवैहै॥यातैं खंडनतर्करूपकनिष्ठपुत्रके जयकासंपादनरूपदुर्घटकर्मकेकरणेहारीमाया अवश्यमानणीचाहिये ॥ किंवा॥जिसकाळविषे खंडनतर्करूपराक्षसराजासर्वनास्तिकोंकेमतोंकूं खंडनकरैहै ॥ तिसकाळविषे सामायाजननी आपणेदुर्घटतारूपकर्मकूं प्रगटकरैनहीं ॥ किंतु गुप्तराखैहै ॥जोमायारूपीजननी आपणेदुर्घटतारूपकर्मकूंभी प्रगटकरै॥तो खंडनतर्करूपराक्षसराजा तामायाकेदुर्घटतारूपकर्मकूंभी खंडनकरिदेवै॥यद्यपि आपणीमाताकानाशकरणा अनुचितहै॥तथापि आपणेकुळकानाशकरणा राक्षसोंकास्वभावहै॥ याकारणतैंमायारूपीजननी खंडनतर्करूपकनिष्ठपुत्रतैं गुप्तहोइकेरहैहै ॥तात्पर्ययह॥सर्वनास्तिकोंकेमतोंकूंखंडनकराइके आपगुप्तहोइकेरहणा॥यहभी मायाकादुर्घटकर्महै॥यातैं मैंनहींजानता याअनुभवकरिकेसिद्धमाया अवश्यमानीचाहिये॥शंका॥अर्थकेबोधकवचनकानामउत्तरहोवैहै मैंनहींजाणतायहवचन निरर्थकहै॥यातैं यावचनकूं उत्तररूपतासंभवैनहीं॥समाधान॥प्रतिवादीकेमोनका जोवचन कारणहोवैहै ॥ तावचनकानाम उत्तरहै ॥ मैंनहींजानता यहवचनभी प्रतिवादीकेमोनकाकारणहै यातैं यावचनकूंभी उत्तररूपतासंभवैहै॥ तात्पर्ययह ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूंअंगीकारकरिकेहीं परस्परवाद होवैहै ॥जोपुरुष मैंनहींजानता याप्रकारकाकथनकरैहै ॥ तापुरुषतैं कोईभीप्रतिवादी

पूछतानहीं॥किंतु मौनरहेहैं॥यातैं प्रतिवादीकेमौनकासंपादनहीं तावचनकाफळहै॥शंका॥मैंनहींजानता याप्रकारकीप्रतीतिकाविषय जोअ ज्ञानहै॥ताअज्ञानरूपदोषकूंअंगीकारकरिकै प्रतिवादीकाजयकरणाभीपराजयकेतुल्यहै॥समाधान ॥अज्ञान दोप्रकारकाहोवैहै॥एकतोआत्म विषयक अज्ञान॥और दूसराअनात्मवस्तुविषयक अज्ञान॥तहाँ आत्मविषयकअज्ञानतो जीवोंकेमहाहानिकाकारणहै ॥ और जन्मादिकअ नात्मपदार्थविषयकअज्ञान जीवोंकोहानिकरैनहीं॥तात्पर्ययह॥जिसपुरुषकूं आत्मज्ञानभयाहै॥तिसपुरुषकूं सर्वअनात्मवस्तुका मिथ्यारूप करिकैज्ञानभयाहै ॥ तामिथ्याप्रपंचकेविशेषरूपकरिकैजानणेकीइच्छाभी आत्मज्ञानीपुरुषकूं होवैनहीं ॥ यातैं आत्मज्ञानीपुरुषकूं अनात्म पदार्थोंकाअज्ञानदूषणनहीं ॥ उलटा भूषणहै ॥ तैसे आत्मज्ञानतैंरहित अज्ञानीपुरुषकूंभी जन्मादिक अनात्मपदार्थोंकाअज्ञान दूषण नहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे नेत्रहीनअंधपुरुषकूं ॥ रूपादिकपदार्थोंकाअज्ञान दूषणनहीं ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे कर्दमकरिकैलिप्तपुरुषकूं पुनः धूळीकालेप दूषणहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानतैंरहितअज्ञानीपुरुषकूं अनात्मपदार्थोंकाअज्ञान दूषणहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थके निरूपणकरणेवासते प्रपंचकीउत्पत्तिविषे तर्ककेअयोग्यताकूं निरूपणकरैहैं॥ आनंदस्वरूपआत्मातैं जगत्कीउत्पत्ति शास्त्रविषेकहीहै ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं आत्मा प्रकाशस्वरूपहै ॥ और द्वैततैंरहितहै ॥ और असंगहै ॥ और गुणोंतैंरहितहै ॥ और अनंतहै ॥ और विक्रियातैंरहितहै ॥ और मनवाणीकाअविषयहै ॥ ऐसाअद्वितीयआत्मा ॥ नानाप्रकारकेविचित्रजगत्कूं किसप्रकार उत्पन्नकरताभया ॥ याप्रकारकीशंकाकेहुए ताशंकाकेसमाधानकरणेकूं तथाजानणेकूं कोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ यातैं प्रपंचकीउत्पत्ति तर्ककाविषयनहीं ॥ सोकैसाप्रपंचहै ॥ जिसप्रपंचविषे एकएकवस्तुभी शतकोटीप्रमाणोंकरिकै जानीजावैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ यावस्तुका क्या स्वरूपहै ॥ और कितने इसविषेधर्महैं ॥ और कितने यावस्तुकेअवयवहैं ॥ याप्रकार कोईवस्तु जाणीजावैनहीं ॥ जभी एकवस्तुकेजानणेविषेभी कोईपुरुष समर्थनहीं ॥ तभी सर्वजगतकेजानणेविषे कौनपुरुष समर्थहोवैगा ॥ किंतु ऐसाकोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ और जिनपुरुषोंकूं ऐसा अभिमानहै ॥ हम सर्वजगत्कूंजाणतेहैं ॥ तिनपुरुषोंतैं ॥ हम यह पूछैहैं ॥ सन्मुखदेशविषेस्थितजोयहघटहै ॥ तिसकेस्वरूपका

प्रथम तुमनिरूपणकरो ॥ याघटकेनिरूपणकियेहुए संपूर्णप्रपंचकाभी तुमारेसैं निरूपणहोवैगा ॥ तहाँ घटकेस्वरूपका तथा अन्यपदार्थोतैंघटकोव्यावृत्तिका तथाव्यावृत्तिकेप्रयोजकधर्मोका निरूपणहीं घटकानिरूपणहै ॥ यातैं सन्मुखदेशविषे स्थितघटका स्वरूप क्याहै ॥ इतिस्वरूपप्रश्न ॥ और यहघट घटतैंभिन्नकाहतैंनहींहोवै ॥ तात्पर्ययह ॥ याघटकी अन्यपदार्थोतैंव्यावृत्ति किसप्रकारहै ॥ इतिव्यावृत्तिप्रश्न ॥ और सन्मुखदेशवृत्तियाघटकेव्यावृत्तिकाप्रयोजक नेत्रइंद्रियकासंबंधही कहणाहोवैगा ॥ यद्यपि घटत्वादिकजातियांभी व्यावृत्तिकेप्रयोजक संभवैहैं ॥ तथापि घटत्वादिकजातियोंका आगेनिराकरणकरैंगे ॥ यातैं घटत्वादिकजातियोंकूं व्यावृत्तिकी प्रयोजकता संभवैनहीं ॥ सोनेत्रइंद्रियकासंबंध सन्मुखदेशवृत्तिघटविषेहै अन्यपदार्थकेसाथनहीं ॥ याकेविषे कौननियामकहै ॥ इतिधर्मप्रश्न ॥ याप्रकार सिद्धांतीकेतीनप्रश्नोंकूं श्रवणकरिकै वादी प्रथमघटकेस्वरूपकानिरूपणकरैहै ॥ शंका यहहै ॥ याप्रकारकेशब्दकावाच्य जोवस्तुहै ताकानाम घटहै ॥ समाधान यहहै ॥ याप्रकारकेशब्दकीवाच्यतारूपलक्षणतैं घटकोसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं यहहै याशब्दकोवाच्यता जैसे घटविषेहै ॥ तैसे पटादिकोंविषेभीहै ॥ यातैं यहलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहै ॥ लक्ष्यविषे तथाअलक्ष्यविषे जोलक्षणकावर्तणाहै ताकानाम अतिव्याप्तिहै ॥ शंका ॥ यहघटहै याप्रकारकेशब्दकोवाच्यता घटकालक्षणहै ॥ पटादिकोंविषे यद्यपि यहहै याप्रकारकेशब्दकोवाच्यताहै ॥ तथापि यहघटहै याप्रकारकेशब्दकीवाच्यता पटादिकोंविषेहैनहीं॥किंतु केवलघटविषेहै ॥ यातैं पूर्वउक्तअतिव्याप्तिरूपदूषण यालक्षणविषेनहीं ॥ समाधान ॥ यहघटहै याप्रकारकेशब्दकोवाच्यता जैसेसन्मुखदेशवृत्तिघटविषेहै ॥ तैसे अन्यघटविषेभीहै॥यातैं यहलक्षणभी अतिव्याप्तिदूषणकरिकेयुक्त होणेतैं सन्मुखदेशवृत्तिघटकोसिद्धिकरैनहीं॥शंका॥अघटकेभेदवालाजोहोवै॥सो घटकहियेहै ॥ समाधान ॥ यालक्षणतैंभी घटकोसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं अघटकेभेदवालाजोहोवै सो घटकहियेहै ॥ यालक्षणविषेअघटशब्दका क्या अर्थहै ॥ घटकेभेदकूंहीं अघट कहोगे॥सोघटकाभेद अन्योन्याभावरूपहै॥यातैं प्रतियोगीरूपघटकेनिर्णयतैंविना घटकेभेदकानिर्णयसंभवैनहीं ॥ और घटका निर्णय अबपर्यंतभयानहीं ॥ यातैं जैसे सन्मुखदेशवृत्तिघटविषे घटकेभेदकासंशयहै तैसे पटादिकोंवि

षेभी घटकेभेदकासंशयहै ॥ यातैं सन्मुखदेशवृत्तिघट पटहोणाचाहिये ॥ और पटघटहोणाचाहिये घटकूं पटरूपता तथापटकूं घटरूपता अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा ॥ अघटकेभेदरूपलक्षणकरिकै जोघटकीसिद्धिकरिये ॥ तो घटकीसिद्धिविषे घटकी अपेक्षारूप आत्माश्रय दूषणकीभीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं यालक्षणतैंभी घटकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥शंका॥ इंद्रियोंतैंभिन्नहोवे औरसन्मुखदेशवृत्तिघटकेसाथजोइंद्रियका संयोगसंबंधतासंबंधकानिरूपकहोवे सो घटकहियेहै॥यालक्षणविषे इंद्रियोंतैंभिन्नहोवै यापदका जोनहींनिवेशकरते॥तो इंद्रियोंविषेही घटके लक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ काहेतैं घटकेसाथ जोनेत्रइंद्रियकासंयोगसंबंधहै ॥ सोसंयोगसंबंध घटतथानेत्रइंद्रियदोनोंविषे रहैहै ॥ यातैं जैसे घट तासंबंधकानिरूपकहै॥तैसे नेत्रादिकइंद्रियभी तासंबंधकानिरूपकहै ॥ परंतु नेत्रादिकइंद्रिय इंद्रियोंतैंभिन्नहैंनहीं॥और घटतो नेत्रादिक इन्द्रियोंतैं भिन्नहै यातैं इंद्रियविषे लक्षणकीअतिव्याप्तिवारणवास्तैं इंद्रियोंतैंभिन्नहोवे यहपद अवश्यदेणाचाहिये॥समाधान॥यालक्षणतैंभी सन्मुखदेशवृत्तिघटकीसिद्धिहोवैनहीं॥काहेतैं जिसक्षणविषेनेत्रइंद्रियका सन्मुखदेशवृत्तिघटकेसाथ संयोगसंबंधहै ॥ तिसीक्षणविषे ताघटकेस मीपवर्तिअन्यपदार्थोंकेसाथभी नेत्र इंद्रियका संयोगसंबंधहै॥ तासंयोगसंबंधके तेअन्यपदार्थभी निरूपकहैं॥और इंद्रियोंतैंभिन्नभीहैं ॥ यातैं तिनपदार्थोंविषे घटकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ जलकेआनयनकी जिसविषेशक्तिहोवै सो घटकहियेहै ॥ समाधान ॥ जलकेआ नयनकीशक्तिरूपलक्षणतैंभी सन्मुखदेशवृत्तिघटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे सन्मुखदेशवृत्तिघटविषे जलकेआनयनकीशक्तिहै ॥ तैसे अन्यघटविषे तथापटविषे तथाअन्यकिसीपात्रविषेभीजलकेआनयनकीशक्तिदेखातीहै॥यातैं सोसन्मुखदेशवृत्तिघटपटादिरूपहोणाचाहिये॥ तात्पर्ययह॥याघटकेलक्षणको पटादिकोंविषे अतिव्याप्तिहोवैहै॥शंका॥जलकाआनयनरूपक्रिया घटरूपकारककीही अपेक्षाकरैहै ॥ पटादि कोंकी अपेक्षाकरैनहीं ॥ यातैं पटादिकोंविषे पूर्वउक्तलक्षणकी अतिव्याप्तिनहीं ॥ समाधान ॥ जोजोक्रियाहोवैहै ॥ सो पूर्वकारककेसमान कारककीअपेक्षाकरैहै ॥ जैसे पाकरूपक्रिया पूर्वअग्निकेसमानअग्निकीअपेक्षाकरैहै॥केवल पूर्वअग्निमात्रकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तैसे जलकाआ नयनरूपक्रियाभी केवलघटमात्रकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंतु पार्थिवत्वरूपकरिकै घटकेसमानजेपटादिकहैं तिनोंकीभीअपेक्षाकरैहै ॥ यातैं

जलकेआनयनकीशक्ति पटादिकोंविषेभीहै ॥ किंवा ॥ जलकेआनयनकीशक्तिवालाजोहोवै सो घटकहियेहै ॥ याप्रकारका जोघटका लक्षणकरिये॥तो सच्छिद्रघटविषे जलकेलेआवणेकीशक्तिहैनहीं॥यातैं तासच्छिद्रघटविषे घटबुद्धिनहींहोणीचाहिये ॥ और सच्छिद्रघटविषे घटबुद्धि सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ घटकेलक्षणकी सच्छिद्रघटविषे अव्याप्तिहोवैहै ॥ किंवा ॥ जलकेआनयनकीशक्ति जोघटकालक्षणहोवै ॥ तो काचेघटविषे जलकेआनयनकीशक्तिहैनहीं ॥ यातैं काचेघटविषे घटबुद्धिनहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वपुरुषोंकूं ताकेविषे घटबुद्धिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकइंद्रियकरिकै शक्तिकाप्रत्यक्षज्ञान किसीकूंहोवैनहीं ॥ किंतु कार्यरूपहेतुतैं शक्तिकाअनुमानहोवैहै ॥ जैसे स्फोटादिककार्यतैं अग्निविषे दाहशक्तिकाअनुमानहोवैहै ॥ काचेघटकरिकैजलकाआनयनरूपकार्यहोवैनहीं ॥ यातैं अनुमानकरिकैभी काचेघटविषे शक्तिकीसिद्धिहोवैनहीं॥किंवा॥जलकेआनयनकीजिसविषेशक्तिहोवै सोघटकहियेहै॥ऐसाजो घटकालक्षणकरिये ॥ तो जलकेआनयनकीशक्ति एकघटमात्रविषेनहीं ॥ किंतु अन्यभीअनेकपात्रोंविषे जलकेआनयनकीशक्तिहै॥यातैं तिनोंविषेभी घटबुद्धिहोणीचाहिये॥और घटतैंभिन्नपात्रोंविषे घटबुद्धिकिसीकूंहोवैनहीं॥तात्पर्ययह॥याघटकेलक्षणकी अन्यपात्रोंविषे अतिव्याप्तिहोवैहै॥यातैं यादुष्टलक्षणतैंभी घटकीसिद्धिहोवैनहीं॥आनयननाम लेआवणेकाहै॥ शंका ॥घटत्वजातिवालाजोहोवै सो घटकहियेहै ॥ समाधान ॥ घटत्वजातिरूपलक्षणतैंभी घटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोघटत्वजाति सर्वत्रव्यापकहै ॥ अथवा परिच्छिन्नहै ॥ जोकहो घटत्वजातिव्यापकहै ॥ तो जैसे घटत्वजातिका घटकेसाथसंबंधहै ॥ तैसे पटादिकोंकेसाथभी अवश्य संबंधमानणाहोवैगा॥ काहेतैं सर्वमूर्तपदार्थोकेसाथ जाकासंबंधहोवै सो व्यापककहियेहै ॥ जैसे आकाशका सर्वघटपटादिकमूर्तपदार्थोकेसाथ संबंधहै ॥ यातैं आकाश व्यापकहै ॥ तैसेही जोघटत्वजातिकूं व्यापकमानोंगे ॥ तो पटादिकोंकेसाथभी घटत्वजातिकासंबंधहोणेतैं पटादिकोंविषे घटत्वजातिरूपलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैगी॥ताअतिव्याप्तिरूपदूषणकीनिवृत्तिवासतै सोघटत्वजाति जोपरिच्छिन्नमानोंगे॥ तो सोघटत्वजाति घटव्यक्तिविषेही चलिकेआवैहै ॥ पटादिकोंविषेजावैनहीं ॥ यानियमविषे कौनप्रयोजकहै ॥ और जो तुम ऐसाकहो ॥ अनंतगौवोंकेविद्यमानहुएभी जैसे वत्स आपणी

माताकूं पहचानिकरिके ताकेसमीपजावैहै ॥ तैसे घटत्वजातिभी आपणेघटव्यक्तिकूंपहचानिकरिके ताविषे प्रवेशकरैहै ॥ घटादिकों विषे प्रवेशकरैनहीं ॥ सोयह तुम्हाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं वत्स चेतनहै यातैं ताकेविषे आपणे माताकाज्ञानसंभवैहै ॥ और घट त्वजाति जडहै यातैं ताकेविषे यहघटरूपव्यक्तिहमारीहै याप्रकारकाज्ञान संभवैनहीं किंवा ॥ मूर्तद्रव्यविषेही गमनरूपक्रिया नैयायिक मानैहैं ॥ जैसे पृथिवी जल तेज वायु मन यहपंचमूर्तद्रव्यहैं ॥ यातैं इनोंविषे गमनरूपक्रियाहोवैहै ॥ और आकाश काल दिशा आत्मा यह चारि अमूर्तद्रव्यहैं औरव्यापकहैं ॥ यातैं इनोंविषे क्रियाहोवैनहीं ॥ और घटत्वजाति द्रव्यरूपनहीं तथामूर्तरूपनहीं ॥ यातैं घटत्वजातिविषे गमनरूपक्रियासंभवैनहीं ॥ और क्रियारहितघटत्वजातिकाघटविषेप्रवेशहोणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ शंका ॥ घटत्वजातिविषे स्वभावतैंक्रियाहैनहीं ॥ यातैं सोघटत्वजाति स्वतंत्र घटव्यक्तिविषे आइसकेनहीं ॥ किंतु घटतैंभिन्नकिसीव्यक्तिविषे सो घटत्वजातिरहेहै ॥ जिसकालविषे घटकोउत्पत्तिहोवैहै तिसकालविषे ताव्यक्तिका घटकेसमीप आगमनहोवैहै ॥ ताव्यक्तिकेसाथ घटत्व जातिभी घटविषेआवैहै ॥ दृष्टांत जैसे रूपादिकगुणोंविषे स्वतंत्र गमनरूपक्रियासंभवैनहीं ॥ परंतु रूपादिकगुणोंकेआश्रय जेकुसुंभादि कद्रव्यहैं ॥ तिनोंका जभी वस्त्रकेसाथ संभवहोवैहै तभी ताकुसुंभादिकोंकेसाथ रूपादिकोंकाभी वस्त्रविषेजाणाहोवैहै ॥ समाधान ॥ वस्त्र केसंबंधतैंपूर्वही जैसे कुसुंभादिकोंविषे रक्तरूपकीप्रतीतिहोवैहै ॥ तैसेघटव्यक्तितैंविना किसीअन्यव्यक्तिविषे घटत्वजातिकीप्रतीतिहोवैन हीं ॥ यातैं अन्यव्यक्तिकेआगमनतैं घटत्वजातिका घटविषेआगमन संभवैनहीं ॥ शंका ॥ अन्यव्यक्तिकेआगमनतैं घटत्वजातिका घटवि षेआगमन होवैनहीं ॥ किंतु जिसदेशविषेघटकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिसदेशविषे आपणेप्राद्रुर्भाववासते घटत्वजाति पूर्वहीस्थितहोवैहै ॥ स माधान ॥ घटकोउत्पत्तितैंपूर्व घटत्वजाति तहाँरहैहै ॥ यहतुम्हाराकहना संभवैनहीं ॥ काहेतैं घटकी उत्पत्तितैंपूर्व घटत्वजातिका कोई आश्रयहैनहीं ॥ और जोघटकोउत्पत्तितैंपूर्व घटत्वजातिका घटतैंभिन्नकोईआश्रयमानोंगे ॥ तौ उत्पन्नहुएघटविषेभी घटत्वजातिका स्व तंत्र गमन तथाआश्रयकेगमनतैंगमन पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकेसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ जिसकालविषे घट उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसकालविषे घटके

साथ घटत्वजातिभी उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं पूर्वउक्तदोष यापक्षविषे संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ जैसे घटकेसाथ नीलपीतादिकरूपोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे घटत्वजातिकीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ काहेतैं जातिकीउत्पत्ति नैयायिक मानैंनहीं ॥ जो उत्पत्तिमानपदार्थभी जातिहोवै ॥ तौ नीलपीतादिकगुणभी घटत्वजातिस्वरूपहोणेचाहिये ॥ और नीलपीतादिकरूपोंकूं कोई घटत्वजातिकहैनहीं ॥ यातैं किसीप्रकारकरिकेभी घटत्वजातिकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ सोघटत्वजाति अभावरूपहै ॥ अथवा भावरूपहै ॥ तहाँ अभावरूपघटत्वजातिहै याप्रथमपक्षविषेभी कौनअभावरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ दोप्रकारकाअभाव नैयायिक मानैं हैं ॥ एक अनित्यअभाव ॥ और दूसरानित्यअभाव ॥ तहाँ प्रागभाव तथाप्रध्वंसाभाव यहदोनोंअभाव अनित्यहैं ॥ और अन्योन्याभाव तथाअत्यंताभाव यहदोनोंअभाव नित्यहैं ॥ तहाँ प्रथमप्रागभावरूपता घटत्वजातिविषे संभवैनहीं ॥ काहेतैं सोघटत्वजाति घटकाप्रागभावरूपहै ॥ अथवा पटादिकोंकाप्रागभावरूपहै ॥ तहाँ घटकाप्रागभावरूप जोघटत्वजातिकूंमानो ॥ तौ घटविषे घटत्वजातिकीप्रतीति नहींहोणीचाहिये ॥ काहेतैं घटकेउत्पन्नहुए घटकाप्रागभाव नाशहोइजावैहै ॥ यातैं घटकाप्रागभावरूप घटत्वजातिनहीं ॥ तैसे पटकाप्रागभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ काहेतैं प्रागभाव प्रति योगीकीउत्पत्तितैंपूर्व प्रतियोगीकेसमवायिकारणविषेरहैहै ॥ अन्यकिसीविषे प्रागभावरहैनहीं ॥ पटकाप्रागभाव पटकीउत्पत्तितैंपूर्व तंतुवोंविषेरहैहै ॥ घटविषे रहैनहीं ॥ यातैं पटादिकोंकाप्रागभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ और घटत्वजातिकूं जोप्रागभावरूपमानोगे ॥ तौ प्रतियोगीकेउत्पन्नहुए प्रागभावकानाशहोवैहै ॥ यातैं घटत्वजातिकाभी नाशमानणाहोवैगा ॥ सोघटत्वजातिकी उत्पत्ति तथानाश तुमारेकूं अंगीकारहैनहीं ॥ यातैं प्रागभावरूप घटत्वजातिनहीं॥ और प्रध्वंसाभावरूप घटत्वजातिहै॥याद्वितीयपक्षविषेभी घटकाध्वंसरूपघटत्वजातिहै ॥ अथवा पटादिकोंकाध्वंसरूप घटत्वजातिहै ॥ तहाँ घटकाध्वंसरूप जोघटत्वजातिहोवै ॥ तौ घटकेविद्यमानहुए नहींप्रतीतहोणीचाहिये ॥ काहेतैं घटकेविद्यमानकालविषे घटकाध्वंसहैनहीं ॥ यातैं घटकाध्वंसरूप घटत्वजातिनहीं ॥ तैसे पटादिकोंकाध्वंसरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ काहेतैं पटकाध्वंस पटकेसमवायिकारणतंतुवोंविषेरहैहै ॥ घटविषे पटकाध्वंस कभीभीरहैनहीं ॥ यातैं पटादिकोंका

प्रध्वंसाभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥किंवा॥ जोप्रध्वंसाभावरूप घटत्वजातिकूंमानिये ॥ तो प्रध्वंसाभावकीउत्पत्तिहोवैहै॥ यातैं घटत्वजा
तिकीभी उत्पत्तिमानणीहोवैगी ॥ सोजातिकीउत्पत्ति तुमारेकूं अंगीकारहैनहीं ॥ यातैं प्रध्वंसाभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ इसप्रकार अ
न्योन्याभावरूपता तथाअत्यंताभावरूपता घटत्वजातिकूं संभवैनहीं॥ काहेतैं घटकाअन्योन्याभावरूप तथाघटकाअत्यंताभावरूप जोघट
त्वजातिहोवै ॥ तो घटविषेघटत्वजातिकोप्रतीतिहोवैहै सोनहोणीचाहिये ॥ किंतु पटादिकोंविषे घटत्वजातिकोप्रतीति होणीचाहिये ॥ का
हेतैं घटकाअन्योन्याभाव तथाअत्यंताभाव घटविषे रहैनहीं ॥ किंतु पटादिकोंविषे रहैहै॥ यातैं घटकाअन्योन्याभावरूप तथाअत्यंताभा
वरूप घटत्वजातिनहीं ॥ और जोवादी ऐसाकहै ॥ पटका अन्योन्याभावरूप तथाअत्यंताभावरूप घटत्वजातिहै ॥ सोयहकहनाभी
संभवैनहीं ॥ काहेतैं पटका अन्योन्याभाव तथाअत्यंताभाव जैसे घटव्यक्तिविषेहै ॥ तैसे स्तंभादिकपदार्थोंविषेभीहै ॥ यातैं स्तंभादिकों
विषेभी घटत्वजातिकीप्रतीति होणीचाहिये ॥ और जोवादीऐसाकहै ॥ घटतैंभिन्नसर्वपदार्थोंका अन्योन्याभावरूप तथाअत्यंताभावरूप
घटत्वजातिहै॥सोयहभीकहणासंभवैनहीं॥ काहेतैं अभावकेज्ञानविषे प्रतियोगीकाज्ञानकारणहोवैहै॥प्रतियोगीज्ञानतैंविना अभावकाज्ञानहो
वैनहीं ॥ और घटतैंभिन्नसर्वपदार्थोंकाज्ञान ईश्वरतैंविना किसीअल्पज्ञजीवकूं संभवैनहीं ॥ यातैं घटतैंभिन्नसर्वपदार्थोंका अन्योन्याभावरूप
तथाअत्यंताभावरूप घटत्वजातिका किसीपुरुषकूंभी प्रत्यक्षज्ञाननहींहोवैगा ॥ और यहघटहै याप्रत्यक्षज्ञानकीविषयता घटत्वजातिवि
षे वादीनेभी अंगीकारकरीहै॥यातैं घटत्वजाति अभावरूपनहीं यहसिद्धभया॥और घटत्वजाति भावरूपहै ॥ याद्वितीयपक्षविषेभी सोभाव
रूपघटत्वजाति नित्यहै अथवाअनित्यहै॥तहां अनित्यरूपतातो घटत्वजातिविषेसंभवैनहीं॥काहेतैं जो अनित्यवस्तुहोवैहै ॥ सो अभाव
करिकेव्याप्तहोवैहै॥जैसे घटादिकअनित्यहैं॥यातैंअभावकरिकेव्याप्तहैं ॥तात्पर्ययह ॥ जोघटत्वजातिकूं अनित्यमानोंगे॥तोएकघटकेअभाव
हुए घटत्वजातिकाभीअभाव अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ घटत्वजातिकेअभावहुए सर्वत्र घटाभावबुद्धिहोणीचाहिये ॥ और ऐसाहोवैनहीं ॥
यातैं घटत्वजाति अनित्यनहीं ॥ और घटत्वजाति नित्यहै ॥ याप्रथमपक्षविषेभी किसहेतुतैं घटत्वजातिनित्यहै ॥ यहतुमारेकूं कथाचा

हिये ॥ शंका ॥ घटत्वजातिकेनाशकाकोईकारणहैनहीं ॥ यातैं घटत्वजातिनित्यहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् घटत्वजातिकेनाशका कोई
कारणनहींहै ॥ यहकेवल तुमारेकूंभ्रांतिभईहै ॥ काहेतैं श्रुतिविषे आत्मज्ञानकरिकै सर्वअनात्मपदार्थोंकानाश कथनकन्याहै ॥ किंवा ॥
जोघटत्वजातिकेनाशका कोईकारणनहींहोवै ॥ तौ घटकेनाशकाभी कोईकारणनहींहोणाचाहिये ॥ काहेतैं आश्रयकीनित्यतातैंविना आ
श्रितवस्तुकीनित्यता संभवैनहीं ॥ यातैं घटत्वजातिकीनित्यतावासतै घटव्यक्तिकूंभी नित्यमान्याचाहिये ॥सोघटकीनित्यता तुमारेकूंभी
अंगीकारनहीं ॥ यातैं घटत्वजातिनित्यनहीं ॥ किंवा ॥ अनित्यवस्तुकेआश्रित जोवस्तुरहैहै ॥ सो अनित्यहीहोवैहै ॥ जैसे अनित्यतंतुवों
केआश्रित पट अनित्यहीहोवैहै नित्यहोवैनहीं ॥ तैसे अनित्यघटव्यक्तिकेआश्रितरही जोघटत्वजाति सोभी अनित्यहीहोवैगी ॥ सोजातिकी
अनित्यता तुमारेकूं अंगीकारहैनहीं ॥ किंवा ॥ सोघटत्वजाति भावरूपहोवै अथवा अभावरूपहोवै ॥ याकेविषे हम विचारनहींकरते ॥
परंतु ताघटत्वजातिकेमानणेकरिकै किसफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहतुमारेकूं कह्याचाहिये ॥ शंका ॥ घटविषेस्थितजोपटादिकोंकाभेद
ताभेदकाअनुमितिज्ञानहीं घटत्वजातिकेमानणेकाफलहै ॥ ताअनुमानकाप्रकारयहहै ॥ यहघट पटादिकोंतैंभिन्नहै ॥ काहेतैं घटत्वजातिवा
लाहोणेतैं जोपटादिकोंतैंभिन्ननहींहै ॥ सोघटत्वजातिवालाभीनहींहै ॥ जैसे पटादिकहैं ॥ समाधान ॥ घटत्वजातिरूपहेतुतैं घटविषे पटा
दिकोंकाभेद तभीसिद्धहोवै ॥ जभी घटत्वजातिका पटत्वजातितैंभेद सिद्धहोवै ॥ घटत्वपटत्वजातिकेभेदकीसिद्धिविना घटपटरूप
व्यक्तियोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं॥ यातैं प्रथम घटत्वजातिविषे पटत्वजातिकाभेद सिद्धकन्याचाहिये ॥शंका॥घटत्वजातिविषेपटत्वजातिका
भेदभीअनुमानप्रमाणकरिकैहीसिद्धहै॥ताअनुमानका यहप्रकारहै॥घटत्वजाति पटत्वादिकजातियोंतैंभिन्नहै॥काहेतैं घटकेआश्रितहोणेतैं॥
जोजो घटकेआश्रितहोवैहै॥सोपटत्वादिकजातियोंतैंभिन्नहोवैहै ॥ जैसेघटविषेस्थितरूपादिकगुणहैं॥समाधान ॥ घटाश्रितत्वरूपहेतुतैंघटत्व
जातिविषे पटत्वादिकजातियोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं॥काहेतैं घटकीसिद्धि अबपर्यंत तुमारेसैंभई नहीं॥घटकीसिद्धितैंविना घटाश्रितत्वरूप
हेतुकीभी सिद्धिसंभवैनहीं ॥ और असिद्धहेतुतैं असिद्धसाध्यकी अनुमिति कहाँभीहोवैनहीं ॥ किंतु सिद्धहेतुतैं असिद्धसाध्यकीअनुमिति

होवैहै ॥ जैसे सिद्धधूमरूपहेतुतैं पर्वतविषे असिद्धवह्निरूपसाध्यकी अनुमितिहोवैहै ॥ जो असिद्धहेतुतैंभी अनुमितिहोतीहोवै ॥ तो पर्वतविषेधूमज्ञानतैंरहितपुरुषकूंभीवह्निकी अनुमिति होणीचाहिये ॥ और धूमज्ञानतैंविना वह्निकीअनुमितिकिसीकूं होवैनहीं ॥ तैंसे घटाश्रितत्वरूपअसिद्धहेतुकरिकैघटत्वजातिविषे पटत्वादिकजातियोंकाभेद सिद्धकरणा अत्यंतविरुद्धहै॥यातैं घटत्वजातिके स्वरूपका तथाफलका अनिरूपणहोणेतैं ताघटत्वजातिरूपलक्षणकरिकै घटकोसिद्धिसंभवैनहीं यहसिद्धभया ॥शंका॥ घटहै याप्रकारकेशब्दकीवाच्यता तथा घटहै याप्रकारकेज्ञानकीविषयता घटकालक्षण संभवैहै॥समाधान॥सामान्यतैंशब्दकीवाच्यतातथाज्ञानकीविषयता घटकालक्षणहै अथवा घटहै याशब्दकीवाच्यता तथा घटहै याज्ञानकीविषयता घटकालक्षणहै ॥ तहाँ प्रथमपक्षतो संभवैनहीं ॥ काहेतैं सामान्यतैंशब्दकीवाच्यता तथा ज्ञानकीविषयता पटादिकोंविषेभीहै ॥ यातैं पटादिकोंविषे तालक्षणकोअतिव्याप्तिहोवैगी ॥ तैसे दूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं घटहै याशब्दकीवाच्यता तथाज्ञानकीविषयता तभी सिद्धहोवै ॥ जभी घटकीप्रथमसिद्धिहोवै ॥ सोघटकीसिद्धि अबपर्यंत भईनहीं ॥ यातैं ताघटकेविषयताकोभीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ घटहै याप्रकारकेज्ञानकी विषयतारूपलक्षणतैं घटकीसिद्धि तभी होवै ॥ जभी प्रथम ताविषयताकीसिद्धिहोवै ॥ सोविषयताकीसिद्धि तुमारेसैंहोणी कठिनहै ॥ काहेतैं जिसघटकरिकै सर्वलोक जलादिकोंकूंलेआवैंहैं ॥ तिसप्रसिद्धघटकास्वरूपभी जभी तुमारेसैं निरूपणनहींभया ॥ तभी ताघटविषेरहीजोज्ञानकीविषयताताकास्वरूप तुमारेसैं कैसेनिरूपणहोवैगा ॥ किंतु ताविषयताकास्वरूप तुमारेसैं कभीसिद्धहोइसकेगानहीं ॥ और जो असिद्धविषयतातैंघटकीसिद्धिकरोगे ॥ तो असिद्धवस्तुकरिकैअसिद्धवस्तुकीसिद्धिरूप पूर्वउक्तदूषण तुमारेकूं प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं घटहै याज्ञानकीविषयतारूपलक्षणतैंभी घटकोसिद्धिसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ मूलदेश तथा उदर जिसका विशालहोवै और मुख जिसकाअल्पहोवै ताकानाम घटहै ॥ समाधान ॥ यालक्षणकरिकैभी सन्मुखदेशवृत्तिघटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं पृथिवीविषे जितनेघटहैं तेसंपूर्ण यालक्षणकरिकैयुक्तहैं ॥ यातैं सन्मुखदेशवृत्तिघटकेलक्षणको देशांतरवृत्तिघटोंविषे अतिव्याप्तिहोवैगी ॥ शंका ॥ सन्मुखदेशविषे

जोवर्तैहै सो घटकहियेहै ॥ अथवा इसकालविषेजोवर्तैहै सो घटकहियेहै ॥ समाधान ॥ सन्मुखदेशविषेवर्तणा तथा इसकालविषे वर्तणा ॥ यादोनोंलक्षणोंतैं घटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे सन्मुखदेशविषे तथाइसकालविषे घटवर्तैहै ॥ तैसे अन्यपटादिकपदार्थभी तादेशकालविषे रहैहैं ॥ यातैं याघटकेलक्षणकी तिनपटादिकोंविषे अतिव्याप्तिहोवैहै ॥ किंवा ॥ हेवादिन् घटहै याप्रकार सर्वलोक कथनकरैहैं ॥ और घटहै याप्रकार तूंभी घटकूंजाणताहै ॥ तिसविषे किसहेतुतैं यहघटहै ॥ याप्रकारकीहमारीशंकाका दूसराकोईउत्तर तुमारेसैं होइसकैगानहीं ॥ किंतु हमनहींजाणते याप्रकारकाउत्तर तूंदेवैगा अथवा हमारेऊपर क्रोधकरैगा इनदोनूंउत्तरोंतैंभिन्न किंचित्मात्रभी तुमारेसैं घटकास्वरूप निरूपणनहींहोवैगा ॥ जभी सर्वलोकप्रसिद्ध तथासन्मुखदेशवृत्ति घटकेस्वरूपनिरूपणकरणेकूं तुम समर्थनहींभये ॥ तभी संपूर्णप्रपंचकेस्वरूपकहणेकूं तुम किसप्रकारसमर्थहोवोगे किंतु नहींहोवोगे ॥ यातैं हमनहींजानते यातुमारेअनुभवकरिकैसिद्ध अज्ञानकूंहीं घटका तथा सर्वप्रपंचका उपादानकारण मान्याचाहिये ॥शंका॥ "मायांतुप्रकृतिंविद्यात्"॥ अर्थ यह ॥ मायाकूंजगत्काउपादानकारणजानणा ॥ याश्रुतिप्रमाणकरिकै मायाविषे जगत्कीकारणतासिद्धहै ॥ यातैं युक्तियोंसैं जगत्की कारणता मायाविषे कथनकरणीनिष्फलहै ॥ समाधान ॥ श्रुतिप्रमाणविषे जिनपुरुषोंकोश्रद्धाहै ॥ तिनोंकूं केवलश्रुतिप्रमाणतैंहीं मायाविषे जगत्कीकारणता सिद्धहोवैहै ॥ और जिनपुरुषोंकूं श्रुतिप्रमाणविषे श्रद्धानहींहै ॥ तिनोंकूं हमारेयुक्तियोंसैंहीं अज्ञानकीसिद्धिहोवैहै॥ यातैं युक्तियोंकरिके मायाविषे जगत्केकारणताकाकथन निष्फलनहीं ॥ किंवा ॥ यहसंपूर्णप्रपंच सत्यरूपकरिके तथाअसत्यरूपकरिके निरूपणकियाजावैनही ॥ यातैं अनिर्वचनीयहै ॥ ताअनिर्वचनीयप्रपंचका मायातैंविना दूसराकोईकारण संभवैनहीं ॥ किंतु अनिर्वचनीयमायाही अनिर्वचनीयजगत्काकारण संभवैहै ॥ ताअनिर्वचनीयमायाका तथाताकेकार्यप्रपंचका किसीतैंभीनिरूपणहोइसकेनहीं॥काहेतैं लोकविषेप्रसिद्ध जोइंद्रजालकाकरणेहारापुरुषहै ॥ तिसकेमायाकूं तथामायारचितअनेकपदार्थोंकूं सर्वलोक देखतेभीहैं ॥परंतु ताकेस्वरूपनिरूपणकरणेविषे कोईभी समर्थहोवैनहीं ॥ जभी लौकिकऐंद्रजालिकपुरुषकेमायाकूं तथामायाकेकार्यकूं कोईपुरुष जानणेमैंसमर्थन

हींभया ॥ तभी सर्वशक्तिसंपन्नपरमेश्वरकीमायाकूं तथामायाकेकार्यप्रपंचकूं ॥ कौनपुरुष निरूपणकरिसकेगा ॥ किंतु कोईनिरूपणकरणे मैंसमर्थनहीं ॥ यातें माया तथामायारचितसकलप्रपंच अनिर्वचनीयहैं ॥ किंवा ॥ जिसपदार्थको उत्पत्तिविषे योग्यदेश तथायोग्यकाल कारणनहींहोवैंहैं ॥ सोपदार्थ मायाकरिकैरचितहोवैहै ॥ जैसे मथुराकेसमीपवनविषे रात्रिमेंसोयाहुआपुरुष आपणेहृदयदेशविषे सूर्यग्रहणकरिकेयुक्तसमुद्रकूं देखैहै॥तहां अल्पहृदयदेशविषे समुद्रकोयोग्यतानहीं॥तथारात्रिकालविषेसूर्यग्रहणकीयोग्यतानहीं ॥तथापिस्वप्नविषे तिनपदार्थोंकीप्रतीतिहोवैहै॥यातें स्वप्नपदार्थ मायाकरिकैरचितहैं ॥ तैसे योग्यदेश तथाकालतैंविनाहीं चराचररूपप्रपंचकूं मूढपुरुषदेखैहैं॥ यातें यहप्रपंचभीमायाकरिकैरचितहै॥किंवा ॥जिनपुरुषोंकूं शुद्धआत्माकासाक्षात्कारभयाहै ॥ तिनपुरुषोंकूं माया तथामायाकाकार्य असत्यप्रतीतहोवैहै॥दृष्टांत॥जैसे आकाशविषे स्थितजोसर्पकेपादोंकाचिह्न तिनोंकूं अंधपुरुषदेखैहै ॥ औरमूकपुरुषकेवचनकूं बधिरपुरुष श्रवणकरैहै ॥ यहवार्ता जैसे असत्यहै ॥ तैसे तत्त्ववेत्तापुरुषकोदृष्टिविषे जगत् अत्यंतअसत्यहै ॥ और आत्मज्ञानतैंरहितमूढपुरुष हम जगत्कूं जाणतेहैं याप्रकारका जोकथनकरैहैं ॥ सोकेवलअभिमान तिनोंकूंहै ॥ जगत्कास्वरूप तिनोंनैं जान्यानहीं ॥ यातें मायाबोपरमेश्वरकरिकैरचितप्रपंचकूं कोईभीपुरुष जाणिसकतानहीं ॥ किंवा ॥ मायाभीपरमेश्वरकरिकैरचितप्रपंचकाअज्ञान देहधारीजीवोंकूं दूषणरूप नहीं ॥ किंतु आत्मज्ञानरहितजीवोंकूं प्रपंचकाअज्ञान भूषणरूपहै ॥ और अज्ञानीपुरुष जोकहैहैं ॥ हमारेकूं किसीवस्तुकाअज्ञाननहीं ॥ यहतिनोंकाकहणा केवलमिथ्याहै ॥ काहेतें जिसस्थूलशरीरविषे सर्वदा अविवेकीपुरुषोंकूंआत्मबुद्धिहै ॥ तिसशरीरकेस्वरूपकूंभी अविवेकीपुरुष यथावत् जाणतेनहीं ॥ तो बाह्यप्रपंचकेस्वरूपकूं किसप्रकारजाणेंगे॥किंतु नहींजाणेंगे ॥ किंवा॥जिनइंद्रियोंकरिके यहपुरुष स्वर्गकीप्राप्तिकेहेतु विहितकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथानरकप्राप्तिकेहेतु निषिद्धकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथा मोक्षकेहेतु निष्कामकर्मोंकूंकरैहै ॥ तिनइंद्रियोंके स्वरूपकूंभी यहजीव यथावत् जाणतानहीं ॥ तो बाह्यप्रपंचकूं यहमूढपुरुष कैसेजाणिसकेगा ॥ किंतु नहींजाणेगा ॥ किंवा ॥ मेरेकूं सर्वदासुखकीप्राप्तिहोवै ॥ और मेरेकूं दुःखकीप्राप्ति कभीभीनहींहोवै ॥ याप्रकारकीबुद्धिकरिके यहजीव कार्यविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ परंतु मेरेकूं

याशब्दकेअर्थकूं यहमूढ़पुरुष जानतानहीं ॥ तो बाह्यप्रपंचकूं यहमूढ़पुरुष किसप्रकार जाणेगा कितुनहींजाणैंगा ॥ किंवा ॥ पूर्वजन्म विषे हमारे कौनसंबंधीथे ॥ और आगेहमारे कौनसंबंधीहोवैंगे ॥ याप्रकारका ज्ञानभी जिसपुरुषकूं नहींहै ॥ सोमूढ़पुरुष अन्यबाह्यप्रपंचकूं किसप्रकारजानैंगा किंतु नहींजानैंगा ॥ किंवा ॥ बाल्यअवस्थाविषे तथायुवाअवस्थाविषे जेजेपदार्थ इसपुरुषनैं अनुभवकरेहैं ॥ तिनपदार्थोंकाभी इसकूं यथावत्स्मरणहोतानहीं ॥ तथा आगामीपदार्थोंकूंभी यहजीव यथावत्जाणतानहीं ॥ तो सकलप्रपंचकूं किस प्रकार यहजानैगा किंतुनहींजानैंगा ॥ यातैं किसीपुरुषकूंभी प्रपंचका यथावत्प्रत्यक्षनहीं ॥ किंवा ॥ लोकविषेभी जोजोअर्थ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयनहींहोवैहै ॥ तिसअर्थकेज्ञानविषे शब्दकूंहीं प्रमाणतादेखीहै ॥ जैसे व्यतीतहुआ कोईव्यवहार तथाआपणेकुलकेआचार आदिक इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयहैंनहीं ॥ किंतु मातापितादिकवृद्धपुरुषोंके वचनरूपशब्दप्रमाणतैं तिनकुलाचारादिकोंका पुत्रकूंज्ञानहोवैहै ॥ तैसे पूर्वउक्तरीतितैं घटादिकप्रपंचकेस्वरूपकाभी किसीइंद्रियकरिके निर्णयहोइसकतानहीं ॥ यातैं प्रपंचभी अतिइंद्रियहै ॥ तातिइंद्रियप्रपंचकीसिद्धिविषेभी दृष्टिसृष्टिवादकूंबोधनकरणेहाराशब्दही प्रमाणहै ॥ शंका ॥ पितामातादिकवृद्धपुरुष जैसे कुलाचारादिक धर्मोंकूंकथनकरैंहैं ॥ तैसे दर्शनकालविषे पदार्थोंकेउत्पत्तिकूं तथाअदर्शनकालविषे पदार्थोंकेलयकूं पितामातादिक कथनकरैंनहीं ॥ यातैं शब्दप्रमाणतैंभी दृष्टिसृष्टिवादकीसिद्धि संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ मातापितादिकोंकेवचनतैं दृष्टिसृष्टिवादकीसिद्धिमतहोवे ॥ परंतु तिनसंपूर्णोंकागुरुजोवेदभगवान्है ॥ सो दृष्टिसृष्टिवादकूं कथनकरैहै ॥ यातैं श्रुतिप्रमाणतैंहीं दृष्टिसृष्टिवादकीसिद्धिहोवैहै ॥किंवा॥जिनमनुआदिकवृद्धपुरुषोंकेवचनकूं संपूर्णलोक प्रमाणरूपकरिकेमानैंहैं ॥ तेमनुआदिकवृद्धपुरुषभी अस्मदादिकपुरुषोंकीन्याई वेदकेवचनोंतैंहीं आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ शंका ॥ सोवेदभगवान् किसकेवचनकरिके ज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ समाधान ॥ सो वेदभगवान्भी वेदकेवचनोंकरिकेही ज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किसीअन्यकेवचनकरिके वेदपुरुषकूं ज्ञानहोवैनहीं ॥ काहेतैं वेदपुरुषकाशरीर जोशब्दरूपवेदहै ॥ सोभारतादिकोंकीन्याई पौरुषेयनहीं ॥ किंतु अपौरुषेयहै ॥ तहीं पूर्वकल्पविषे वर्णोंको तथाश्लोकोंकी तथाकथाप्रसंगकी जोजोआनुपूर्वीहोवैहै

तिसीआनुपूर्वीतें किंचित्विलक्षण औरकिंचित्समान आनुपूर्वी जिसकी उत्तरकल्पविषेहोवै ॥ ताकूं पौरुषेयकहेहैं ॥ ऐसे महाभारतादि
कहैं ॥ काहेतें पूर्वकल्पविषे जैसेमहाभारतकूं व्यासभगवान्नें कथनकऱ्याथा ॥ तैसेहीमहाभारतकूं उत्तरकल्पविषे व्यासभगवान् रचैन
हीं ॥ किंतु पूर्वतेंकिंचित्विलक्षणहीरचैहै ॥ यातें महाभारतादिक पौरुषेयहैं और वेदविषेतौयह नियमहै ॥ पूर्वकल्पविषे परमेश्वरतें
जिसप्रकारसेवेदोंकाप्रादुर्भाव भयाथा ॥ उत्तरकल्पविषेभी तिसोप्रकारसेवेदोंका परमेश्वरतेंप्रादुर्भावहोवैहै ॥ किंचित्मात्रभी पूर्वउत्तरवे
दोंविषे विलक्षणताहोवैनहीं ॥ यातेंवेद अपौरुषेयहैं ॥ किंवा जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकेवचनविषे इतरप्रमाणकी अपेक्षारहैहै ॥ इत
रप्रमाणकोसहायतातेंविना अस्मदादिकपुरुषोंकावचन किसीअर्थकूंसिद्धकरिसकैनहीं ॥ तैसे वेदभगवान्कूं आपणेज्ञानवासतें ॥
तथाप्रमाणतावासतें दूसरेकिसीप्रमाणकीअपेक्षाहैनहीं यातें वेदभगवान् अस्मदादिकपुरुषोंकूं जैसीआज्ञाकरै सोआज्ञा श्रद्धापूर्वक अव
श्य हमलोकोंको अंगीकारकरनीचाहिये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे महाराजाकीआज्ञाकूं श्रद्धापूर्वक प्रजा अंगीकारकरैहै ॥ और सोवेदभगवान् सुषु
प्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे प्राणमें संपूर्णवाक्आदिकइंद्रियोंकेलयकूं बोधनकरैहै ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे तथाजन्मकालवि
षे तिसीहीप्राणतें वाक्आदिकइंद्रियोंकीउत्पत्तिकूं कथनकरैहै॥याप्रकारकीवेदभगवान्कीआज्ञा अवश्य हमलोकोंको अंगीकारकरनीचाहि
ये ॥ किंवा ॥ सोवेदभगवान्मातापितादिकोंतेंभी अतिसुहृदहै ॥ यातें मायामयअनिर्वचनीयप्रपंचविषेस्थित हमजीवोंकूं कृपाकरिके जि
सजिसवचनकाउपदेशकरैहै ॥ तेसंपूर्णवचन हमजीवोंकेमोक्षकासाधनहैं ॥ किंवा ॥ जैसे सूर्यकेसन्मुखहुआचक्षु सूर्यकेतेजतें प्रतिघातकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वेदभगवान्काज्ञान किसीवस्तुतें प्रतिघातकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सर्ववस्तुकूंविषयकरैहै ॥ यातें वेदभगवान्कूं किसी
भीवस्तुका अज्ञाननहीं ॥ याकारणतेंही भ्रम प्रमाद विप्रलिप्सादिकदोष वेदभगवान्विषेनहीं ॥ वचनकरणेकीइच्छाकूं विप्रलिप्साकहैहैं ॥
॥ किंवा ॥ वेद याशब्दकेअर्थकाविचारकियेतेंभीआवरणरहितज्ञानस्वरूपताही वेदकूं सिद्धहोवैहै ॥ और जोज्ञानस्वरूपहोवैहै ॥ सो जड
तथापरिच्छिन्नरूप होवैनहीं ॥ यह प्रथमअध्यायविषे कहिआयेहैं ॥ यातें परिपूर्ण तथाचैतन्यरूप जोप्राणउपहितपरमात्माहै ॥ सोईही

वेदस्वरूपहै ॥ याकारणतैंही वेदकूं शब्दब्रह्मकहैहैं ॥ ऐसे ब्रह्मरूपवेदभगवान्‌केप्रति तुमनैं यहवचन किसवास्तेकह्याहै ॥ याप्रकारकेप्रश्न
करणेकूं कोइंभीजीव समर्थनहीं ॥ दृष्टांत॥ जैसे नेत्रहीनअंधपुत्र चक्षुयुक्तपिताकूं नीलादिकरूपकेज्ञानविषे प्रश्नकरिसकैनहीं॥ यातें वेदभ
गवान्‌नैं कथनकर्‍याजोअर्थ ॥ ताअर्थकेनिश्चयकरणेविषे जिसप्रकारकरिकै हमजीवोंकीबुद्धि समर्थहोवै ॥ तिसीप्रकारकाप्रयत्न हमजी
वोंकूं करणेयोग्यहै ॥ किंवा ॥ जैसे धर्मात्माराजाकेवचनकूं प्रजा परित्यागकरैनहीं ॥ और जैसे पितामाताकेवचनकूं सुपुत्र परित्यागकरै
नहीं ॥ किंतु श्रद्धापूर्वक तावचनोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तैसे वेदभगवान्‌केवचनकूंभी श्रोतापुरुषनैं कदाचित्‌परित्यागनहींकरणा ॥ किंतु श्रद्धा
पूर्वक वेदकेवचनकूं अवश्यअंगीकारकरणा ॥ और तिसवेदकेवचनतैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे विषयसहितसंपूर्णवाक्‌आ
दिकइंद्रिय प्राणविषे लयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जाग्रत्‌अवस्थाविषे तिसीहीप्राणतैं वाक्‌आदिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ किंवा ॥ जैसे सुषुप्तिअ
वस्थाविषे संपूर्णवाक्‌आदिकइंद्रिय प्राणविषे लयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे मरणअवस्थाविषेभी संपूर्णवाक्‌आदिकइंद्रिय प्राणविषेलयकूंप्राप्तहो
वैहैं ॥ और जैसे जाग्रत्‌अवस्थाविषे संपूर्णवाक्‌आदिकइंद्रिय तिसीप्राणतैंउत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे जन्मअवस्थाविषेभी संपूर्णवाक्‌आदिकइंद्रिय
तिसीप्राणतैंउत्पन्नहोवैहैं यहअर्थसिद्धभया ॥ किंवा ॥ शरीरविषे प्राणकेविद्यमानहुए वाक्‌आदिकइंद्रियोंकीविद्यमानताहोवैहै ॥ और लो
कांतरविषे प्राणकेगमनहुए वाक्‌आदिकइंद्रियोंकाभी तहाँ गमनहोवैहै ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककानिश्चयही प्राणस्वरूपपरमात्माकी
सिद्धिहै ॥ यद्यपि अन्वयव्यतिरेककानिश्चय प्राणकेसिद्धिकासाधनहै ॥ यातैं साधनकूंसिद्धिरूपकहणा संभवैनहीं ॥ तथापि जैसेभूमिविषे
स्थितधनकीसिद्धि अंजनरूपसाधनकरिकैहोवैहै॥यातैंताअंजनरूपसाधनकूंभी लोकविषेसिद्धिकहैहैं ॥तैसे मरणअवस्थाविषे अन्वयव्यतिरे
कनिश्चयकरिकैही प्राणस्वरूपआत्माकीसिद्धिहोवैहै ॥ यातैं ताअन्वयव्यतिरेकरूपसाधनकूं सिद्धिरूपकरिकैकथनकर्‍याहै ॥ अब मरण
अवस्थाविषे इंद्रियोंकेलयकूं स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ मरणअवस्थाविषे यहपुरुष नानाप्रकारकीव्याधियोंकरिकै अत्यंतदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥
और तिसदुःखकरिकै मूर्च्छाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सामर्थ्यतैंरहितहोवैहै॥यातैं तामरणअवस्थाविषेयहपुरुष किंचित्‌मात्रभी शब्दउच्चारणेवि

षे समर्थनहींहोता ॥ याप्रकारताकीदीनअवस्थाकूंदेखिकरिके स्त्रीपुत्रादिकसर्वबांधव अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिसपुरुषकेसमीपस्थि
तहोइके याप्रकारपूछेहैं ॥ हेपिता मुझप्रियपुत्रकूं तूंजाणताहे ॥ और हेपति मुझप्रियस्त्रीकूं तूंजाणताहे ॥ और हेभ्राता मुझसुहृद्मित्रकूं
तूंजाणताहे ॥ इसप्रकार स्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकरिके पूछाहुआभीसोपुरुष जभी काष्ठकीन्याई किसीकूंभीनहींजाणता ॥ तभी तेसर्वबांधव
याप्रकार कहैहैं ॥ इसकूं किसीवस्तुकाभीज्ञान अभी नहींरह्या ॥ जोइसकाज्ञान नहींनिवृत्तहोता ॥ तो हमप्रियमित्रोंकेवचनकूं पूर्वकीन्याई
यह श्रवणकरता ॥ और पूर्वकीन्याई हमारीतरफदेखता ॥ तथा हमारेसाथ किंचित्बोलता ॥ और यहपुरुष पूर्वजीवितअवस्थाकीन्याई
अभी हमारीतरफ देखतानहीं तैसे बोलताभीनहीं॥यातें ऐसाजान्याजावैहै॥याकेविषे अभीज्ञाननहींरह्या॥याप्रकार सर्व बंधुजन कथनकरैहैं॥
यातें तामरणअवस्थाविषे वाक्आदिकसकलइंद्रिय आपणेआपणेविषयोंसहित प्राणविषे लयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जैसे सुषुप्तितें अनंतर
यहपुरुष जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मरणतेंअनंतर जभी यह जीवजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी विषयोंसहितसंपूर्णवाक्आदिकइं
द्रिय पुनःतिसप्राणतेंउत्पन्नहोवैहैं ॥ शंका ॥ जैसे जीवित अवस्थाविषे याजीवकेप्रति वाक्आदिकइंद्रिय भोगोंकूंप्राप्तकरैहैं ॥ तैसे मरण
कालविषेभी वाक्आदिकइंद्रिय भोगोंकूं काहेतैंनहीं प्राप्तकरैहैं ॥ समाधान ॥ पूर्वजीवितअवस्थाविषे जेवाक्आदिकइंद्रिय भृत्यकीन्याई
याजीवकूंभोगोंकीप्राप्तिकरतेथे ॥ तेहीवाक्आदिकइंद्रिय मरणअवस्थाविषे याजीवकूं असमर्थजानिकरिके ताकापरित्यागकरैहैं ॥ तात्पर्य
यह ॥ मरणअवस्थाविषे तेवाक्आदिकइंद्रिय आपणेआपणेविषयतैंउपरामहोइके याजीवकूंभोगकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ यहहीवाक्आदिक
इंद्रियोंकापरित्यागहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसेअसमर्थराजाकूंप्रजापरित्यागकरैहै ॥ और जैसे धनकूंनहींप्राप्तहुएसुभट युद्धकेमध्यकालविषे आपणे
स्वामीकूंपरित्यागकरैहैं ॥ तैसे मरणअवस्थाविषे वाकादिकइंद्रियभी जीवकृतआत्मअभिमानरूपधनकूंनहींप्राप्तभये याजीवकापरित्या
गकरैहैं ॥शंका॥मरणअवस्थाविषे वाक्आदिकइंद्रियोंतैंविनाहीं किसीअन्यकारणतें नामादिकव्यवहार काहेतैंनहींहोता॥समाधान॥अन्यक
रिकेसाध्यजोव्यवहारहै ॥ सो तिसीतैंअन्यकिसीकरिके सिद्धहोवैनहीं ॥ जैसे जिसग्रामकूं संपूर्णवैश्य परित्यागकरेजावैहैं ॥ तिसग्रामविषे

वैश्यकरिकेसाध्यजोवाणिज्यादिककार्यहै सो अन्य किसीब्राह्मणादिकोंतैंहोवैनहीं ॥ तैसे वाक्आदिकइंद्रियोंकेपरित्यागहुए यापुरुषविषे वाक्आदिकइंद्रियोंकरिकेसाध्यनामादिकव्यवहार अन्यकिसीकारणतैंउत्पन्नहोवैनहीं ॥ शंका ॥ मरणअवस्थाविषे यापुरुषकापरित्याग करिके वाक्आदिकइंद्रिय कहाँ जावैहैं ॥ समाधान ॥ जैसे महाराजाकेजयरूपकार्यकरणेवास्ते युद्धविषेप्राप्तभयाजोअल्पदेशकाअधिपति राजा तिसका जभी शत्रुकरिकेनाशहोवैहै तभी ताकेसुभट अन्यराजाकेआश्रयकरणेकीइच्छाकरैंहैं ॥ परंतु तेसुभट आपणेस्वामी केअत्यंतभक्तहैं ॥ यातैं अन्यकिसीराजाकूंआश्रयणकरैंनहीं ॥ किंतु आपणेस्वामीकाभीस्वामीजोमहाराजाहै तिसीकूंहीं आश्रयणकरैंहैं॥ तैसे जीवितअवस्थाविषे विषय तथादेवतासहित वाक्आदिकइंद्रिय अहंममअभिमानीरूपजीवकेआश्रितरहैंहैं ॥ और मरणअवस्थाविषे ताजीवकूंमूर्च्छितहुआदेखिके तेवाक्आदिकइंद्रिय सर्वकेअधिपतिरूपप्राणकूं आश्रयणकरैंहैं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ प्राणकेविद्यमानहुए वाक्आदिकइंद्रियोंकीशरीरविषेविद्यमानता ॥ और प्राणकेअभावहुए वाक्आदिकइंद्रियोंका अभाव याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिके प्राणविषेहीं संपूर्णवाक्आदिकोंकालय तथाप्राणतैंहींतिनोंकीउत्पत्ति सिद्धहोवैहै॥यातैं प्राणतैंभिन्न किंचित्मात्रभीवस्तुनहीं यहसिद्धभया॥ किंवा ॥ जीवितअवस्थाविषे प्राणकेविद्यमानहुए प्रज्ञाभीरहेहै ॥ और मरणकालविषे प्राणकेनिर्गमनहुए प्रज्ञाभीरहैनहीं ॥ यातैं प्राण और प्रज्ञाकाअभेदहै यहजोपूर्वकह्याथा सो दोषतैंरहितसिद्धभया ॥ काहेतैं प्राणतैंरहितपुरुषविषे प्रज्ञाभीदेखातीनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसकालविषे पुरुषकेप्राण निकसिजावैंहैं ॥ तिसकालविषे यापुरुषकेबांधव याप्रकारकहैंहैं ॥ इसपुरुषविषे अभी ज्ञाननहींरह्या ॥ यालो कव्यवहारतैंभी प्राण और प्रज्ञाका अभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ किंवा ॥ प्राणस्वरूप तथाप्रज्ञास्वरूप मेरेकूंतुंजाण ॥ याप्रकारके इंद्रकेवचन विषे जैसे प्राणशब्दकाअर्थ श्वासमात्रनहीं ॥ किंतु परमात्माही प्राणशब्दकाअर्थहै ॥ तैसे प्रज्ञाशब्दकाअर्थभी केवलबुद्धिमात्रनहीं ॥ किंतु स्वयंप्रकाशचैतन्यहीं प्रज्ञाशब्दकाअर्थहै ॥ तहाँ प्राणकोअद्वितीयरूपता पूर्वकही ॥ अब प्रज्ञाकेअद्वितीयरूपताकूंदिखावैंहैं ॥ इंद्रउवाच॥ हेप्रतर्दन प्रज्ञापदकाअर्थजोसंवित्‌है ॥ सोवास्तवतैंएकहै ॥ तथापि उपाधिकेसंबंधतैं जैसे एकसंवित् नानारूपहोइकेप्रतीतहो

वैहे ॥ सोप्रकार तेरेताई मैंकथनकरताहूं ॥ तथा नानारूपहुईसंवित् जिसप्रकारकरिके पुनः एकभावकूं प्राप्तहोवैहे ॥ सोप्रकारभी मैं तुमारेताई कथनकरोंहूं ॥ तुम एकाग्रमनकरिकैश्रवणकरो ॥ वाक्आदिकपंचकर्मइंद्रिय और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय शरीर अंतःकरण यहद्वादशकरण आपणेआपणेविषयोंकरिकेयुक्तहुए प्रज्ञारूपसंवित्केभेदकूंकरेहैं ॥ तहाँ शब्दकाउच्चारण वाक्इंद्रियकाविषय है ॥ और वस्तुकाग्रहण हस्तइंद्रियकाविषयहे ॥ और गमन पादइंद्रियकाविषयहे ॥ और मलकापरित्याग पायुइंद्रियकाविषयहे ॥ और आनंद उपस्थइंद्रियकाविषयहे ॥ यह कर्मइंद्रियोंकेपंचविषय तथापंचकर्मइंद्रिय प्रज्ञाकेभेदकूंउत्पन्नकरेंहैं ॥ और शब्द श्रवणइंद्रियका विषयहे ॥ और स्पर्श त्वक्इंद्रियकाविषयहे ॥ और रूप चक्षुइंद्रियकाविषयहे ॥ तथा रस रसनइंद्रियकाविषयहे ॥ तथा गंध घ्राणइंद्रियकाविषयहे ॥ यह शब्दादिक पंचज्ञानइंद्रियोंकेविषयहैं॥और सुख तथादुःख यहदोनों शरीरकेविषयहैं॥और कामनातथासंकल्पादिक अंतःकरणकेविषयहैं॥इसप्रकार आपणेआपणेविषयोंकरिकैयुक्तहुए पूर्वउक्तवाकादिकद्वादशकरण प्रज्ञाकेविभागकूंकरेहैं॥दृष्टांत॥जैसेदशगोपाळ आपणेप्रयोजनकीसिद्धिवास्ते एकहीगौकूं दुहेहैं॥तात्पर्ययह॥तागौतैंदुग्धकूंपृथक्करेहैं॥ तैसे वाक्आदिकद्वादशकरणभी एकहीप्रज्ञारूपीगौकूंदुहेहैं ॥तात्पर्ययह॥ चिदाभासरूपप्रज्ञाकेभागोंकूंपृथक्करेहैं ॥ इसप्रकार सो एकहीप्रज्ञा उपाधिकेवशतें अनेकभावकूंप्राप्तहोवैहे॥ जैसे एकही अग्निकीशिखाकूं द्वादशकाष्ठरूपउपाधिकेवशतें द्वादशप्रकार लोककथनकरेंहैं॥तैसे वाक्आदिकइंद्रियोंकेभेदकरिके एकहीप्रज्ञाकूं भिन्नभिन्न हम कथनकरेंहैं ॥ और जैसे द्वादशदीपकोंकरिकै गृहादिकदेशविषे द्वादशप्रकारकाप्रकाश उत्पन्नहोवैहे॥तैसे वाक्आदिकद्वादशकरणोंकरिकै एकहीबोध विषयोंविषे द्वादशप्रकारउत्पन्नहोवैहे॥तात्पर्ययह॥एकहीप्रज्ञाका जोजोभाग जिसजिसइंद्रियनैं भिन्नकरीताहे ॥ तिसतिसप्रज्ञाकेभागनैं तिसतिसइंद्रियकेविषयका प्रकाशकरीताहे ॥ याकारणतैंही चक्षुइंद्रियकरिकेजन्यअंतःकरणकीवृत्तिविषेस्थित जो चिदाभासरूपप्रज्ञाकाभागहे॥सो चक्षुइंद्रियकेविषयरूपादिकोंकूंही प्रकाशकरेहे॥रसादिकोंकूंप्रकाशकरेनहीं॥इसप्रकार अन्यइंद्रियोंविषेभी जानिलेणा ॥ किंवा॥ पूर्वउक्तवाक्आदिकद्वादशकरण प्रज्ञाकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुएही आपणेनामादिकविषयोंकूंप्राप्तहोवैहैं॥प्रज्ञाके

तादात्म्यतैंविना कोईभीइंद्रिय आपणेविषयकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ वाक्‌आदिकइंद्रियोंतैंविना नामादिकविषयोंकीसिद्धिहोवैनहीं यातैं नामादिकविषय वाक्‌आदिकइंद्रियस्वरूपहैं ॥ तैसे प्रज्ञातैंविना वाक्‌आदिकइंद्रियों कोभीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं वाक्‌आदिकइंद्रियभी प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ प्रज्ञातैंभिन्न वाकादिकनहीं ॥ यारीतिसैं प्रज्ञाकोअद्वितीयरूपताहीसिद्धहोवैहै ॥ शंका ॥ वाकादिकइंद्रिय प्रज्ञाकी अपेक्षातैंविनाहीं आपणेविषयोंकूं काहेतैंनहींप्रकाशकरते ॥ समाधान ॥ वाक्‌आदिकद्वादशकरण प्रज्ञाकेबलतैंहीं आपणेआपणे विषयकूं जानैंहैं ॥ प्रज्ञातैंविना आपणेबलकरिके किसीवस्तुकूं वाक्‌आदिकजाणिसकेनहीं ॥ याहीअर्थकूं लौकिकअनुभवकरिके अब स्पष्टकरे हैं ॥ जिसपुरुषकामन सावधाननहींहोता ॥ तिसपुरुषकूं जोकोईअन्यपुरुष वचनकहैहै तभी सोपुरुष याप्रकार ताकूंकहैहै॥हमारामन तुमारेवचनविषेनहींथा॥यातैं हमनैं तुमारेवचनकूंनहींजान्या॥तुम फेरितावचनकूंकहो ॥ इसप्रकार नेत्रोंकरिकेरूपकूंदेखताहुआ तथाशरीरकरिकेसुखदुःखकाअनुभवकरताहुआभी यहपुरुष मनकोअसावधानताहुए किंचित्‌मात्रभीनहींजाणता॥तात्पर्ययह॥वाक्‌आदिकइंद्रियोंकाआपणेआपणेविषयोंकेसाथ संबंधहुएभी प्रज्ञातैंविना किसीभीविषयकाप्रकाश होवैनहीं ॥ किंवा ॥ वाकइंद्रियतैंआदिलेके जेद्वादशकरणहैं तथा तिनोंके नामादिक जेद्वादशविषयहैं॥तेसंपूर्ण प्रज्ञातैंविना कदाचित्‌भी प्रतीतहोवैंनहीं॥दृष्टांत॥जैसे मृत्तिकातैंविना घटशरावादिक विकार प्रतीतहोवैनहीं यातैं यहसिद्धभया ॥ जिसवस्तुकेविद्यमानहुए जोवस्तुप्रतीतहोवे ॥और जिसवस्तुकेअविद्यमानहुए जोवस्तु नहींप्रतीतहोवे सोवस्तु तिसवस्तुतैंभिन्ननहींहोवैहै॥जैसे मृत्तिकाकेविद्यमानहुए घटकीप्रतीतिहोवैहै ॥और मृत्तिकाकेअविद्यमानहुए घटकीप्रतीति होवैनहीं॥यातैंघटादिकमृत्तिकातैंभिन्ननहीं॥किंतु मृत्तिकातैंघटादिकअभिन्नहैं॥तैसे वाक्‌आदिकद्वादशकरणतथानामादिकद्वादशविषययहसंपूर्ण प्रज्ञाकेविद्यमानहुए प्रतीतहोवैंहैं ॥ और प्रज्ञाकेअविद्यमानहुए प्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातैं तेसंपूर्णवाक्‌आदिक प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ प्रज्ञातैं किंचित्‌मात्रभीतिनोंकाभेदनहीं ॥ यातैं सोप्रज्ञा एकरूपहै ॥ और प्राणतैंअभिन्नहै यहसिद्धभया ॥ प्रतर्दनउवाच हेभगवन् उक्तरीतितैं प्रज्ञाकूंजो सर्वरूपताहोवै ॥ तो वाक्‌आदिकइंद्रियभी प्रज्ञाकाहीस्वरूपहैं ॥ यातैं जैसे प्रज्ञाविषेआत्मबुद्धिआपनैं उपदेशकरी ॥ तैसे वा

क्आदिकइंद्रियोंविषे आत्मबुद्धिकरणेमैंकौनदोषहै ॥ इंद्रउवाच ॥ हेप्रतर्दन वाक्आदिकोंकूं यद्यपिप्रज्ञास्वरूपताहै ॥ तथापि वाक्आदि कोंकूं सर्वरूपताहैनहीं॥यातैं तिनोंविषे आत्मबुद्धिकरणीसंभवैनहीं॥और प्रज्ञाविषे तथाप्राणविषे पूर्वउक्तरीतितैं सर्वरूपताहै॥यातैंप्राणविषे तथाप्रज्ञाविषेही आत्मबुद्धिकरणेयोग्यहै ॥ यातैं हेप्रतर्दन वाक्आदिकोंकूंप्रज्ञास्वरूपताहै ॥ यातैं तिनोंविषेभीआत्मबुद्धिकरणेयोग्यहै ॥ याप्रकारकेसंशयका परित्यागकरिकै प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंइंद्रकूं तुमनिश्चयकरो॥कैसामैंहूं वाक्इंद्रियकरिकै तेरेकूंउपदेशकर ताहुआभी वास्त वतैंवाक्इंद्रियतैंरहितहूं ॥तात्पर्ययह॥ वाक्आदिकोंकरिकैविशिष्टहुआ आत्मा वक्ता श्रोता द्रष्टाइसतैंआदिलेके संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ दृष्टांत जैसे एकहीब्राह्मण पाकक्रियाकरिकैपाचकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पाठरूपक्रियाकरिकै ॥ पाठकसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे एकहीअद्विती यआत्मा वाक्आदिकोंकरिकैविशिष्टहुआ वक्ताआदिकसंज्ञावोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिनवाक्आदिककरणोंकापरित्यागकरिकै परिशेषतैंरह्याजो प्राणप्रज्ञास्वरूपआत्मा ताकूं तुमनिश्चयकरो ॥ कैसासोआत्माहै ॥ आपणेआपणेव्यापारोंकरिकैयुक्त जेवाक्आदिककरणहैं तिनोंकूं प्रकाशकरणेहाराहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् प्राणकूं तथाप्रज्ञाकूं पूर्वआपनैं अद्वितीयरूपकह्या ॥ और वाक्आदिकसर्वोंका प्रकाश ककह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे प्रकाश्यरूपघटादिकोंका तथाप्रकाशकरूपदीपादिकोंका परस्परभेदही देख्याहै ॥ समाधान ॥ वाक्आदिकजेद्वादशकरणहैं ॥ तथा नामादिकजेद्वादशविषयहैं ॥ तेदोनों परस्परअपेक्षावालेहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका परस्परभी भेद सिद्धहोवैनहीं जभी तिनदोनोंका परस्परभेद निरूपणनहींभया तभी अधिष्ठानरूपप्राणप्रज्ञाकेसाथ तिनवाक्आदिकोंकाभेद किस प्रकारकरिकै निरूपणकर्‍याजावै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुतैंकल्पितसर्प भिन्नहोवैनहीं ॥ तैसे प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्मातैं कल्पितवाक् आदिकभी भिन्नहोवैंनहीं ॥ अब वाक्आदिककरणोंविषे तथानामादिकविषयोंविषे परस्परसापेक्षताकूं दिखावैहैं ॥ भूतमात्राहै नामजि नोंका ऐसेजेनामादिकद्वादशविषयहैं ॥ तेवाक्आदिकद्वादशकरणोंकूंआश्रयणकरिकैही सिद्धहोवैहैं ॥ वाक्आदिकोंतैंविना नामादिकों कीसिद्धिहोवैनहीं ॥ इसप्रकार प्रज्ञामात्राहैनामजिनोंका ऐसेजेवाक्आदिकद्वादशकरणहैं ॥ तेभी नामादिकविषयोंकूंआश्रयणकरिकैही

सिद्धहोवैहै ॥ नामादिकविषयोंतैंविना वाक्आदिककरणोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोकेवल वाक्आदिककरणोंकूंही अंगीकारकरिये॥ और नामादिकविषयोंकूं नहींअंगीकारकरिये॥ तो वाक्आदिकोंविषे करणताहीनहींरहेगी॥काहेतैं वाक्आदिकोंविषेजोकरणताधर्महै ॥ सो नामादिकविषयोंकरिकेनिरूपितहै याकारणतैंही लोकविषे करणहै याप्रकारकाशब्दश्रवणकरिके किसविषयकाकरणहै याप्रकारकीजिज्ञासा पुरुषोंविषे देखीतीहै ॥ यातैं वाक्आदिककरणोंकूं नामादिकविषयोंकोअपेक्षाहै ॥ तैसे जोकेवल नामादिकविषयही अंगीकारकरिये ॥ और वाक्आदिककरणोंकूं नहींअंगीकारकरिये ॥ तो नामादिकविषयोंविषे विषयताधर्म नहींरहेगा ॥ काहेतैं नामादिकविषयोंविषे जोविषयताधर्महै सो वाक्आदिककरणोंकरिकेनिरूपितहै ॥ याकारणतैंही लोकविषेविषयहै याप्रकारकेशब्दकूंश्रवणकरिके किसकरणका विषयहै ॥ याप्रकारकरणकीजिज्ञासा पुरुषोंविषेदेखीतीहै ॥ यातैं नामादिकविषयोंकूंभी वाक्आदिककरणोंकोअपेक्षाहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पितासंज्ञा तथापुत्रसंज्ञा पुत्र तथापिताकेविद्यमानहुएहोवैहै ॥ पिताकेअभावहुए पुत्रकोईकहैनहीं ॥ और पुत्रकेअभावहुए पिता कोईकहैनहीं तैसे वाक्आदिकोंविषे करणसंज्ञा नामादिकविषयोंकेविद्यमानहुएही होवैहै ॥ औरनामादिकोंविषे विषयसंज्ञा वाक्आदिककरणोंकेविद्यमानहुएही होवैहै ॥ यातैं वाक्आदिककरणोंकूं नामादिकविषयोंकोअपेक्षाहै ॥ और नामादिकविषयोंकूं वाक्आदिककरणोंकोअपेक्षाहै ॥ एककेअभावहुए दूसरेकोसिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ श्रुतिविषे भूतमात्रारूप नामादिकविषय दशकहेहैं ॥ तथा वाक्आदिककर्णभी दशकहेहैं ॥ यातैं द्वादशकरणोंकाकथन तथाद्वादशविषयोंकाकथनश्रुतिसेविरुद्धहै॥ समाधान ॥ श्रुतिविषे शरीर तथाअंतःकरण यादोनोंकरणोंकूंतथासुखदुःख और कामादिक यादोनोंविषयोंकू परित्यागकरिके केवलवाक्आदिकबाह्यकरणोंकूं तथा नामादिकबाह्यविषयोंकूं दशप्रकार कथनकऱ्याहै यातैं श्रुतिकेसाथ याग्रंथकाविरोधनहीं ॥ शंका ॥ वाक्आदिककरण तथानामादिकविषय यद्यपि परस्परअपेक्षावालेहैं ॥ तथापि आपणीसिद्धिविषे किसीतीसरेकीअपेक्षाकरैनहीं यातैं वाक्आदिकोंकीप्रकाशकतारूपहेतुकरिके आत्माकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ समाधान ॥ जेजेसापेक्षपदार्थहोवैहैं ॥ तेपरस्परअपेक्षाक

रिकैसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु ॥ आपणेतैंभिन्न जोकोईनिरपेक्षवस्तुहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिकैही सापेक्षपदार्थ सिद्धहोवैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुविषे अयंसर्पःयाप्रकारकाज्ञान पुरुषकूंहोवैहै ॥ ताज्ञानविषे अयंशब्दकाअर्थरज्जु विशेष्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और सर्प विशेषणरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और जभी तारज्जुविषे सर्प अयं याप्रकारकाज्ञानहोवैहै ॥ तभी ताज्ञानविषे सर्पतो विशेष्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और अयंशब्दका अर्थ रज्जु विशेषणरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै॥ और विशेषण तथाविशेष्य परस्पर सापेक्षहोवैहैं॥यातैं तिनोंकूं विषयकरणेहारेज्ञानभी परस्पर सापेक्षहीहोवैहैं॥ यातैं यहसिद्धभया॥ जैसे अयंसर्पः तथा सर्पःअयं यहदोनोंज्ञानपरस्पर अपेक्षावालेतौहैं॥ परंतु निरपेक्षरज्जुतैंविना परस्परअपेक्षामात्रकरिकै तिनज्ञानोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु निरपेक्षरज्जुकीअपेक्षाकरिकैही तिनज्ञानोंकीसिद्धि होवैहै तैसे वाक्आदिककरण तथानामादिकविषय यद्यपि परस्परअपेक्षावालेहैं ॥ तथापि तिनोंकी निरपेक्षआत्मातैंविना सिद्धिहोवैनहीं किंतुनिरपेक्षआत्माकरिकैही तिनोंकीसिद्धिहोवैहै ॥किंवा॥ वाक्आदिककरण तथानामादिकविषय परस्परभिन्ननहीं ॥ तैसे आत्मारूपआश्रयतैंभी भिन्ननहीं ॥ याअर्थकूं अनुमानप्रमाणकरिकैभीसिद्धकरैहैं ॥ ताअनुमानकाप्रकारयहहै ॥ सविषयवाक्आदिककरण परस्पर तथाआश्रयतैं भिन्ननहीं ॥ काहेतैं सर्वदापरस्परसापेक्षहोणेतैं ॥ जेजेपदार्थ परस्परसापेक्षहोवैहैं ॥ तेपरस्पर तथाआश्रयतैं भिन्ननहींहोवैहैं ॥ जैसे पूर्वउक्त रज्जुसर्पविषयकज्ञान परस्परसापेक्षहैं ॥ यातैं परस्पर तथारज्जुरूपआश्रयतैं भिन्ननहीं किंवा ॥ नामादिकविषय जैसे वाक्आदिककरणोंतैं तथाआत्मारूपआश्रयतैं भिन्ननहीं ॥ तैसे आपणेज्ञानतैंभी भिन्ननहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुविषेप्रतीतभयाजोसर्प ॥ सो यहसर्पहै याप्रकारकेज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ जोभिन्नहोवै तो ताज्ञानकीनिवृत्तिकालविषेभी प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और कल्पितसर्पयहसर्पहै याज्ञानकीनिवृत्तिकालविषे प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं कल्पितसर्प आपणेज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ तैसे नामादिकविषयभी आपणेज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ किंवा॥चक्षुआदिककरणोंकरिकै पुरुषोंकूं अंतःकरणकीवृत्तिरूपजडज्ञान उत्पन्नहोवैहै॥ कैसेहैंतेवृत्तिरूपज्ञान ॥ रूपादिकविषयोंकाआश्रयरूपहैं।तिनवृत्तिरूपज्ञानोंकाद्रष्टा प्राणप्रज्ञास्वरूपमेंचैतन्यहूं।यातैं तेवृत्तिरूपजडज्ञान चैतन्यरूपमुझआत्मातैंभिन्ननहीं।दृष्टांत जैसेस्वप्नविषे

जीवोंकूंरथादिकपदार्थोंकिज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ तेरथादिकविषयसहितज्ञान स्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ तैसे विषयसहितवृत्तिरूपजड़ज्ञान मैंद्रष्टाआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ प्राणप्रज्ञाशब्दकालक्ष्यअर्थआत्माहीं अद्वितीयहै ॥ तिसआत्मातैंभिन्न कोईभीवस्तु नहीं ॥ अब याहीअर्थकूं चक्रकेदृष्टांतकरिकेदिखावैहैं ॥ जैसे रथकेचक्रविषे तीनभागहोवैहैं ॥ एकनेमी दूसराअरा तीसरानाभि ॥ तहाँ भूमिकेसाथ जाकास्पर्शहोवैहै ऐसाजो कंकणकेआकारकाष्ठहै ताकूंनेमोकहैहैं ॥ औरनेमी जिनोंकेआश्रितरहैहै ॥ ऐसेजे बीचकेवक्रकाष्ठ हैं ॥ तिनोंकूं अराकहैहैं ॥ और तिनअरोंका जोआधाररूपकाष्ठहै जाकेविषे शलाकाफिरैहैं ताकूं नाभिकहैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे नेमी अराकेआधार रहैहै ॥ और अरा नाभिकेआधार रहैहैं ॥ सोनाभि किसीकेआश्रितरहेनहीं ॥ किंतु संपूर्णोंकाआधारहोवैहै ॥ तैसे नामादिकविषय वाक्‌आदिककरणोंकेआश्रितरहैहैं ॥ और वाक्‌आदिककरण प्राणप्रज्ञास्वरूपमुझआत्माकेआश्रितरहैहैं ॥ और प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्मा किसीकेआश्रितरहतानहीं ॥ किंतु सकलविषय तथावाक्‌आदिकोंका मैंआत्मा अधिष्ठानहूं ॥ यातैं हेमतर्दन नामादिकविषयरूप तथावाकादिककरणरूप जोयह सकलसंसाररूपचक्रहै ॥ तासंसाररूपचक्रका प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्मानाभिहूं ॥ काहेतैं जैसे प्रसिद्धरथकेचक्रकोनाभिकिसीकेआश्रितरहेनहीं ॥ तैसे मैंआत्माभी किसीअन्यकेआश्रितरहतानहीं ॥ किंतु सकलजगत् मेरे आश्रित हैहै ॥ किंवा ॥ विषय तथाविषयी यादोनोंकानाम जगत्‌है ॥ तहाँ नामादिक विषयहैं ॥ और वाकादिककरणविषयीहैं ॥ ताविषयविषयीरूप सकलप्रपंचका प्रकाशकरणेहारा प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्माहूं ॥ किंवा ॥ प्राणप्रज्ञास्वरूपमुझआत्मातैंही यहस्थूलसूक्ष्मसकलप्रपंच उत्पन्नभयाहै ॥ और मुझआत्माविषेही सकलजगत् अभीस्थितहै ॥ और मुझआत्माविषेही सकलजगत् लयकूंप्राप्तहोवैगा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मूढ़बालकनैं आपणेशरीरविषे कल्पनाकऱ्याजोराक्षस ॥ ताराक्षसकी उत्पत्ति तथास्थिति तथालय तिसबालकतैंहीहोवैहै ॥ तैसे प्राणप्रज्ञास्वरूपमुझआत्मातैंही सकलप्रपंचकी उत्पत्ति तथास्थिति तथालय होवैहै॥किंवा॥ जैसे सर्वभेदतैंरहितआकाशविषे घटमठादिक उपाधियोंकेवशतैं भेदप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे शरीरादिकउपाधियोंकरिके मैंअद्वितीयआत्माविषे नानाप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ किंवा ॥

मुझअद्वितीयआत्माविषे उपाधिदृष्टिवालेबहिर्मुखपुरुषोंकूंही भेदप्रतीतहोवैहै ॥ उपाधिदृष्टितैंरहित अंतर्मुखपुरुषोंकूंमुझअद्वितीयआत्मा
विषेभेद प्रतीतहोवैनहीं ॥ दृष्टांत॥ जैसे रंगकरिकै लिखित वृक्षादिरूपचित्रयुक्तपटविषे यद्यपि नीचापणातथाऊंचापणा संभवैनहीं ॥ तथा
पि वृक्षादिरूपचित्रोंकीदृष्टिकरिकै अविवेकीपुरुषोंकूं याप्रकारकीविषमदृष्टिहोवैहै ॥ यावृक्षका मूलदेश नीचेहै और शाखा ऊपरहैं॥और जिन
पुरुषोंकूं वृक्षादिरूपचित्रोंकीदृष्टिनहीं ॥ किंतु केवलपटदृष्टिहै तिनोंकूं सोविषमदृष्टि होवैनहीं तैसे प्रपंचरूपउपाधिकीदृष्टिकरिकै अविवेकी
पुरुषोंकूं मुझअद्वितीयआत्माविषे भेदप्रतीतहोवैहै॥ औरउपाधिदृष्टितैंरहित विवेकीपुरुषोंकूं प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्माविषे भेदबुद्धिहोवैनहीं
अब प्राणप्रज्ञाशब्दकेवास्तवअर्थकूंदिखावैहैं॥हेप्रतर्दन वायुरूपप्राणतैं यद्यपि मैंआत्माभिन्नहूं तथापि अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज याचा
रिप्रकारकेजीवोंका मुझआत्मातैंहीं जीवनहोवैहै ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्माहीं प्राणशब्दकाअर्थहूं ॥ तथा प्राणशब्दजन्यज्ञानका
विषयहूं ॥ शंका ॥ चैतन्यआत्माविषेही प्राणियोंकेजीवनकीकारणताहै वायुरूपप्राणोंविषेनहीं ॥ याअर्थविषेकौनप्रमाणहै ॥ समाधान॥
तैतरीयउपनिषदविषे चैतन्यआत्माविषेही जीवनकीकारणताकहीहै॥तहां यहकह्याहै॥ प्राणकरिकै तथाअपानकरिकै कोईभीप्राणी जीवता
नहीं ॥ किंतु जिसचैतन्यआत्माकोसमीपताकरिकै यहप्राणअपानादिक प्रवर्तमानहोवैहैं ॥ ताचैतन्यआत्माकरिकैहीं यहसंपूर्णप्राणी जी
वैहैं ॥ यातैं सर्वप्राणियोंकेजीवनकाकारण अद्वितीयआत्माही प्राणशब्दकाअर्थहै यहसिद्धभया ॥ अब प्रज्ञाशब्दकेअर्थकूंदिखावैहैं ॥ पंच
ज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय अंतःकरण शरीर याद्वादशकरणोंकूं तथानामादिकतिनोंकेविषयोंकूं आपणेस्वप्रकाशस्वरूपकरिकै मैंअद्विती
यआत्मा जानताहूं ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अथवा ॥ मेरेप्रकाशकेविद्यमानहुएही संपूर्णप्रपंच प्रतीतहो
वैहै ॥ आपणेप्रकाशकरिकै जडजगत्काभान होवैनहीं ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अथवा देशपरि
च्छेद तथाकालपरिच्छेद तथावस्तुपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंतैं मैंआत्मारहितहूं ॥ तथा स्वप्रकाशहूं ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्मा
प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अथवा॥ लोकविषे ज्ञानतैंभिन्नबाह्यरज्जुआदिकजडपदार्थ कल्पितसर्पादिकोंकेअधिष्ठानरूप देखेहैं ॥ और मैंआत्मा

ज्ञानतैंभिन्ननहीं किंतुज्ञानस्वरूपहूं ॥ तथा बाह्यभीमैंआत्मानहीं किंतु सर्वतैंअंतरहूं ॥ इसप्रकार रज्जुआदिकबाह्यअधिष्ठानोंतैं विलक्षण रूपकरिकेयुक्तहुआभी मैंआत्मा सर्वप्रपंचकाअधिष्ठानहूं ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अथवा ॥ सजातीयभेद तथाविजातीयभेद तथास्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहितजोआत्मस्वरूपहै ॥ ताआत्मस्वरूपप्रज्ञाकरिके मैंनित्यहींयुक्तहूं ॥ याकारणतैं मैं अद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अब आत्मपदकेअर्थकूंदिखावैंहैं ॥ हेप्रतर्दन तेरेताईं जोहमनैं वारंवार प्राणप्रज्ञास्वरूपआत्माका उपदेशकन्याहै ॥ सोईहीआत्मा तेरावास्तवस्वरूपहै ॥ तैसे स्थावरोंका तथाजंगमोंकाभी सोईहीआत्मा वास्तवस्वरूपहै ॥ और सोई हीआत्मा सर्वप्राणियोंविषे अहंशब्दकीलक्षणाकरिके जान्याजावैहै ॥ और अहं याज्ञानकाविषयहै ॥ और वास्तवतैं अहं याशब्दतथा ज्ञानके संबंधतैंरहितहै ॥ और सोईहीआत्मा आकाशकीन्याईं भेदतैंरहितहुआ याजगत्विषेस्थितहै ॥ किंवा ॥ जैसे घटमठादिकनाना उपाधियोंविषेस्थितआकाशका आकाशहींएकनामहोवैहै ॥तात्पर्ययह॥ घटउपाधिविषेस्थितआकाशकूं घटाकाशकहैंहैं ॥ मठरूपउपाधि विषेस्थितआकाशकूं मठाकाशकहैंहैं ॥ इसप्रकार नानाउपाधियोंविषेस्थितहुआभी आकाश आकाश यानामतैंरहितहोवैनहीं ॥ यातैं सोअनुगत एकआकाशनाम आकाशकेएकताकूं बोधनकरैहै ॥ तैसे नानाशरीररूपउपाधियोंविषेस्थितअद्वितीयआत्माकाभी एक आत्माहीनामहोवैहै ॥ यातैं सर्वत्रअनुगत एकआत्मानाम मुझअद्वितीयआत्माकीएकताकूं बोधनकरैहै ॥ शंका ॥ आत्मा जोवास्तव तैंएकहीहोवे ॥ तो नानारूपकरिकेकाहेतैंप्रतीतहोवैहै ॥ समाधान ॥ अविद्यारूपदोषकेबलतैं एकहीअद्वितीयआत्मा जगत्रूपहोइकेप्रती तहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकहींस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषे निद्रादोषकेबलतैं अनंतरूपहोइकेप्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे स्वप्नविषेप्रतीतभये जेरथादिकपदार्थ ते कल्पितहैं ॥ यातैं स्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ तैसे अज्ञानकरिकेकल्पित यहसंपूर्णजगत्भी मुझअद्वितीयआत्मातैं भिन्ननहीं ॥ अब आनंदशब्दकेअर्थकूंदिखावैंहैं ॥ हेप्रतर्दन ॥ संपूर्णजीवोंकूं मैंआत्मा अतिशय करिकेप्रियहूं ॥ यातैं मैंआत्मा आनंदस्वरूपहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे तथापरलोकविषे भोगणेयोग्यजेस्त्रीआदिकपदार्थहैं तेप्रियहैं ॥ और तिनविषयोंतैंउत्पन्नभयाजो अंतः

करणकापरिणामरूपसुख सोप्रियतरहे ॥ और आत्मा सकलकाशेषिरूपहे ॥ यातें आत्मा प्रियतमहे ॥ स्त्रीपुत्रादिकपदार्थ जिसकेवासते होवे सोशेषिकहियेहे ॥ ऐसाशेषिरूपआत्माहे ॥ अन्यसंपूर्णपदार्थ आत्माकाशेषरूपहैं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेदिखावेहैं ॥ संपूर्ण प्राणी सुखकी तथासुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंको जभीइच्छाकरैंहैं तभी आत्माकेवासतेहीं सुखादिकोंकीइच्छाकरैंहैं ॥ मेरेकूं सुखकीप्राप्ति होवे ॥ मेरेकूं स्त्रीपुत्रादिकोंकीप्राप्तिहोवे ॥ याप्रकारकीइच्छा संपूर्णजीवकरैंहैं ॥ जोकेवल सुखकीहोइच्छाहोवे तो वैरीकेसुखकीभी इच्छा होणीचाहिये ॥ और वैरीकेसुखकीकोईइच्छाकरेनहीं॥किंतु आत्मसंबंधीसुखकी सकलप्राणी इच्छाकरैहैं ॥ यातें आत्माकेवासतेंही सुख की तथासुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंकी इच्छाहोवैहे ॥ सुखकेवासतें तथासुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंकेवासतें आत्माकीकोईइच्छाकरे नहीं ॥ यातें मैंअद्वितीयआत्माही सर्वकाशेषिरूपहूं ॥ अन्यसंपूर्णपदार्थ आनंदस्वरूपमैंआत्माकेशेषरूपहैं ॥ भोगकेसाधनोंकूं शेषकहैंहैं ॥ भोक्ताकूं शेषिकहैंहैं ॥ किंवा ॥ मनुष्यलोकतेंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनीकी विषयजन्यसुखकीन्यूनअधिकता है ॥ सो जिसविषेजाइकेपरिअवसानकूंप्राप्तहोवे ॥ सो आनंदस्वरूपमैंआत्माहूं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेदिखावैहैं ॥ मनुष्यलोकके आनंदतें शतगुणअधिकआनंद पितरोंकूंहोवेहे॥पितरोंतें शतगुणअधिकआनंद गंधर्वोंकूंहोवेहे॥गंधर्वोंतें शतगुणअधिकआनंद कर्मदेवतावों कूंहोवेहे॥कर्मदेवतावोंतें शतगुणअधिकआनंद आजानदेवतावोंकूंहोवेहे॥आजानदेवतावोंतें शतगुणअधिकआनंद प्रजापतिकूंहोवेहे प्रजाप तितें शतगुणअधिकआनंद हिरण्यगर्भकूंहोवेहे ॥ विषयजन्यसुखविषे हिरण्यगर्भलोककासुख सर्वतेंउत्कृष्टहे॥सोहिरण्यगर्भकाआनंद आनं दससुद्ररूपमैंआत्माके एककणकेसमानहे ॥ तात्पर्ययह ॥ विषयजन्यसकलसुखोंतें उत्कृष्टहिरण्यगर्भकाआनंदभी जभी आनंदससुद्रआ त्माके एककणकेसमानभया॥तभी मनुष्यादिकोंकेआनंदकीक्याकथाहे॥यातें सकलआनंदोंकाअवधिरूप मैंआत्माहूं ॥ यातें मैंआत्मा आ नंदस्वरूपहूं ॥ किंवा॥शब्दस्पर्श रूप रस गंध यहपंचप्रकारकेविषय लोकोंनें सुखकेकारणमानेहैं ॥ तेशब्दादिकविषयभी मुझपरमात्मा कूंहीं सुखकीप्राप्तिकरैंहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दादिकविषयोंतेंप्रगटभयाजोसुख सो मैंआत्माकाहीस्वरूपहे॥शंका ॥ शब्दादिकविषयोंतेंउ

त्पन्नभयेसुखोंकूं आत्मरूपतासंभवेनहीं॥काहेतें सत्चित्आनंदरूप आत्माकालक्षण तिनसुखोंविषेहैनहीं॥समाधान॥जिनपुरुषोंकूंवेदांतवा
क्योंतेंआत्माकायथार्थज्ञानभयाहै ॥ तेपुरुष शब्दादिकविषयजन्यसुखविषेभी वृत्तिरूपउपाधिकापरित्यागकरिके सुखमात्रकूं सत्चित्आ
नंदरूपहीमानेहैं॥ और आत्मज्ञानतेंरहित मूढपुरुषतो शब्दादिकविषयोंकूंहीसुखरूपमानेहैं॥ याकारणतेंहो तत्ववेत्तापुरुषकूं विषयकीप्रा
प्तिकालविषेभी आत्मस्वरूपनित्यसुखकाहीभान शास्त्रविषेकह्याहै ॥ किंवा ॥ शब्दादिकविषयोंविषे जोसुख प्रतीतहोवेहै ॥ सोभी आनं
दस्वरूपमुझआत्माकेसंबंधतेंहीं प्रतीतहोवेहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गुडविषेजोमधुरताहै सो किसीवस्तुकेसंबंधतेंनहीं ॥ किंतु स्वतःही गुड
विषेमधुरताहै ॥ तागुडकाजिसवस्तुकेसाथसंबंधहोवेहै ॥ सोवस्तुभी मधुरप्रतीतहोवेहै ॥ तैसे मुझआत्माविषे जो आनंदरूपताहै सो
किसीकेसंबंधतेंनहीं ॥ किंतु मैंआत्मा स्वतःहीआनंदस्वरूपहूं ॥ तिसआनंदस्वरूपमुझआत्माकेसंबंधतें शब्दादिकविषयों विषे आनंद
रूपताप्रतीतहोवेहै ॥ स्वतः शब्दादिकविषयोंविषे आनंदरूपतानहीं ॥ तोभी आत्मज्ञानतेंरहितमूढपुरुष शब्दादिकविषयों कूंही
सुखरूपमानेहैं ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे वायुकास्पर्श शीतलनहीं तथाउष्णभीनहीं ॥ किंतु जलकेशीतस्पर्शतें तथाअग्निकेउष्णस्पर्शतें
विलक्षणहीं वायुकास्पर्शहै ॥ तथापि शीतस्पर्शवालेजलकेसाथतथाउष्णस्पर्शवालेतेजकेसाथ जभीवायुकासंबंधहोवेहै ॥ तभीतासमुद्र
संबंधीवायुकूं शास्त्रसंस्कारोंतेंरहित मूढपुरुष शीतस्पर्शवालाकहेहै॥तथा तेजसंबंधीवायुकूं उष्णस्पर्शवालाकहेहै ॥ और विचारवान्पुरुष
वायुकूं उष्णस्पर्शवाला तथाशीतस्पर्शवाला मानेंनहीं ॥ काहेतें जलकेसूक्ष्मअवयवोंकूं वायुउठाइ लेआवेहै ॥ तिनजलकेअवयवोंका
जभी शरीरसेसंबंधहोवेहै ॥ तभी शीतलताप्रतीतहोवेहै ॥ तेजलकेअवयवसूक्ष्महैं यातें तिनोंका चाक्षुषप्रत्यक्षहोवेनहीं ॥ याप्रकार
उष्णस्पर्शविषेभी जानिलेणा ॥ तैसे शब्दादिकविषयोंविषे आनंदस्वरूपआत्माकेतादात्म्यसंबंधकरिकेही आनंदरूपताहै ॥ स्वतःशब्दा
दिकविषयोंविषे आनंदरूपतानहीं ॥ तथापि आत्मज्ञानतेंरहित मूढपुरुषोंकूं याप्रकारकीभ्रांतिहोवेहै ॥ विषयोंतेंहीहमारेकूंसुखकीप्राप्तिहो
वेहै ॥ यातें हेप्रतर्दन मैंअद्वितीयआत्माही आनंदस्वरूपहूं ॥ शंका ॥ जो आत्माही आनंदरूपहोवे तो आत्मा सर्वदाविद्यमानहै ॥

किसीकालविषेभी आत्माकाअभावनहीं ॥ यातैं सर्वदा आनंदकोप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ और सर्वदाआनंदकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥किंवा॥ शब्दा
दिकविषयही हमारेकूंसुखकेदेणेहारेहैं ॥ याप्रकार संपूर्णलोक कथनकरैंहैं ॥ ताकेविषे कौनकारणहै ॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन सर्वबुद्धिआ
दिकजडसंघातकासाक्षी प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्माहीं एकसुखरूपहूं ॥ ऐसेमुझआत्माका जभीयाजीवोंकूं अज्ञानहोवैहै ॥ तभी अज्ञानक
रिकेआवृतहुए तेमूढपुरुष शब्दादिकविषयोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरैंहैं ॥ ताइच्छाकरिके अनंतदुःखोंकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ हेप्रतर्दन तिनअ
ज्ञानजन्यदुःखोंका तूभीपूर्वअनुभवकरिआयाहै ॥ यातैं आनंदरूपआत्माकेसर्वदाविद्यमानहुएभी ॥ अज्ञानरूपआवरणकेवशतैं पुरुषोंकूं
आत्मआनंदकाभानहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ शब्दादिकविषयहमारे सुखकाकारणहैं ॥ याप्रकार जोसर्वलोक कथनकरैंहैं ॥ याकेविषे यहका
रणहै ॥ शब्दादिकविषयोंकेअप्राप्तिकालविषे तिनशब्दादिकोंकीइच्छाकरिके पुरुषोंकीबुद्धि चंचलहोवैहै ॥ और जभीपूर्वपुण्यकेवशतैं
तिनशब्दादिकविषयोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तभी किंचित्काल ताइच्छाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ताइच्छाकेनिवृत्तहुए किंचित्काल सोबुद्धि चंचल
तातैंरहित एकाग्रहोवैहै ॥ जबपर्यंत दूसरेपदार्थकीइच्छाउत्पन्ननहींभई ॥ तबपर्यंत सोएकाग्रबुद्धि मुझआनंदस्वरूपआत्माकरिकेव्याप्त
होवैहै ॥ याकारणतैंहीं सोएकाग्रबुद्धि सुखरूपआत्माकीन्याईं सुखरूपहुई प्रतीतहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोहपिंडविषे उष्णस्पर्श तथाप्र
काशमानता यद्यपि नहींहै ॥ तथापि अग्निकरिकेयुक्तहुआलोहपिंड अग्निकेसमान उष्णस्पर्शवाला तथाप्रकाशमान प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे
बुद्धि यद्यपि सुखरूपनहीं तथापि आनंदस्वरूपमैंआत्माकरिकेव्याप्तहुई सोएकाग्रबुद्धि सुखरूपहोइकेप्रतीतहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आनं
दरूपआत्माकेप्रतिबिंबयुक्तबुद्धिकी एकाग्रअवस्थाकूंहीं मूढपुरुष सुखरूपमानैंहैं ॥ और सोबुद्धिकोएकाग्रअवस्था शब्दादिकविषयोंकी
प्राप्तिकरिकेहीहोवैहै ॥ शब्दादिकविषयोंतैंबिना सोबुद्धिकीएकाग्रता होवैनहीं ॥ याप्रकार मूढपुरुष मानिकरिके शब्दादिकविषय हमारे
कूंसुखकीप्राप्तिकरैंहैं याप्रकारका कथनकरैंहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् आनंदरूपआत्माकेप्रति बिंबयुक्तबुद्धिकीएकाग्रअवस्थाजोलो
कप्रसिद्धसुखहोवै ॥ तो सर्वप्राणीमात्रकूं विषयजन्यसुख समानहोणाचाहिये ॥ और विषयजन्यसुख समानहोवैनहीं ॥ समाधान ॥

हेप्रतर्दन जैसे छिद्रयुक्तजोसर्षपकादाणाहै ॥ सो महान्समुद्रविषेप्राप्तहुआभी आपणेछिद्रकेपरिमाणहीं जलकाग्रहणकरैहै ॥ आपणे छिद्रतैंअधिकजलका ग्रहणकरैनहीं ॥ तैसे आनंदसमुद्रमैआत्माविषेप्राप्तभयीजोविषयजन्यबुद्धि ॥ सो आपणेपरिमाणहींआत्मानंदकूंग्रहणकरैहै ॥ आपणेपरिमाणतैंअधिकआनंदकूं बुद्धि ग्रहणकरैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अतिस्वच्छदर्पणविषे सूर्यकेप्रतिबिंबकी अधिकताहोवैहै ॥ और मलिनदर्पणविषे सूर्यकेप्रतिबिंबको न्यूनताहोवैहै ॥ तैसे शुद्धसत्वगुणयुक्तएकाग्रबुद्धिविषे आनंदस्वरूपआत्माकाप्रतिबिंब स्पष्टहोवैहै ॥ यातैं तहांआनंदकीअधिकताप्रतीतहोवैहै ॥ और मलिनसत्वगुणयुक्तबुद्धिविषे आनंदकाप्रतिबिंब स्पष्टहोवैनहीं ॥ यातैं तहां आनंदकीन्यूनता प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैंही चिरकालपीछे गृहविषेआयाजोपुरुष ताकूं जैसा प्रथम स्त्रीकेदर्शनतैं तथापुत्रादिकोंकेदर्शनतैं आनंदहोवैहै तैसो पुनःदर्शनतैं आनंदहोवैनहीं ॥ किंतु प्रथमदर्शनजन्यआनंदतैं न्यूनआनंद होवैहै ॥ काहेतैं प्रथम पुत्रादिकोंकेदर्शनतैं बुद्धि अत्यंतएकाग्रहोवैहै ॥ यातैं आनंदकीअधिकता प्रतीतहोवैहै ॥ और पश्चात् अन्यपदार्थोंकीइच्छाकरिकै बुद्धिचंचलहोवैहै ॥ यातैं पुनःपुत्रादिकोंकेदर्शनहुएभी प्रथमजैसाआनंद होवैनहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ आनंदस्वरूपआत्माके प्रतिबिंबयुक्त जोएकाग्रबुद्धिहै ॥ ताकूं मूढपुरुष सुखरूपमानैंहैं ॥ सोसुखइच्छाकीनिवृत्तितैंविना होवैनहीं ॥ यातैं इच्छाकीनिवृत्तितासुखविषे कारणहै ॥ ताइच्छाकीनिवृत्ति शब्दादिकविषयोंकीप्राप्तितैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं शब्दादिकविषयोंकूं सुखकाकारणमानिकै अविवेकीपुरुष तिनशब्दादिकविषयोंकीप्राप्तिविषे यत्नकरैंहैं ॥ इसप्रकार छिक्कातथाकंडूयनआदिकोंतैं जोसुखउत्पन्नहोवैहै ॥ तिसविषेभी पूर्वउक्तरीतिजानिलेणी ॥ यातैं हेप्रतर्दन संपूर्णशरीरोंविषे आनंदस्वरूपमैंआत्माहीं सुखदेणेहाराहूं ॥ मेरेतैंभिन्नकोई सुखदेणेहारानहीं ॥ और सोईही आनंदस्वरूपआत्मा तेरास्वरूपहै ॥ और हेप्रतर्दन अद्वितीयआनंदस्वरूप मैंआत्माहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै अबतुम्हाराअज्ञाननिवृत्तभयाहै ॥ यातैं स्थूलशरीरभी तुम्हारानहीं ॥ जभी स्थूलशरीरका तुमारेविषे अभावभया ॥ तभी स्थूलशरीरकेधर्मजरामरणादिक तुमारेविषे किसप्रकारहोवैंगे किंतुनहींहोवैंगे ॥ और हेप्रतर्दन बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूप जोतेरास्वरूपहै तिसविषे

बुद्धिभीनहीं ॥ बुद्धिकेअभावहुए बुद्धिकेधर्मजेपुण्यपापादिकहैं तेभी तेरेस्वरूपविषेनहीं ॥ तात्पर्ययह जैसे लोकविषे प्रकाश्यघटादिकों केधर्म प्रकाशकदीपकादिकोंकूं स्पर्शकरैंनहीं ॥ तैसे प्रकाश्यबुद्धिकेपुण्यपापरूपधर्मप्रकाशकसाक्षी आत्माकूं स्पर्शकरैंनहीं ॥ तिसपुण्य पापकेअभावहुए इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखदुःखरूपफलकाभोक्ता आत्माहोवैनहीं ॥ और हेप्रतर्दन जोपुण्यपापरूपकर्मकेफल काभोक्ताहोवैहै ॥ तिसकी अधिकभोगोंकरिके वृद्धिहोवैहै॥और अल्पभोगोंकरिके न्यूनताहोवैहै॥और तूं कर्मोंकाकर्ता तथाभोक्ताहैनहीं॥ यातें तुमारीबुद्धि तथान्यूनता किसकारणतैंहोवैकितुनहींहोवैगी ॥ और हेप्रतर्दन जोअद्वितीयआत्मा मेरास्वरूपहै ॥ सोईहीअद्वितीय आत्मातेरास्वरूपहै॥और तूही सर्वकासाक्षीहै॥ऐसाआत्मस्वरूपतूं पुण्यपापरूपकर्मकेपराधीन कदाचित्भीनहीं॥किंतुआपणीसमीपताक रिके बुद्धिआदिकोंकूं पुण्य तथापाप करावताहै ॥ हेप्रतर्दन तूपरमात्मादेव जिसपुरुषकूं स्वर्गविषेलेजाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं पुण्यकर्मकरावैहै ॥ और जिसपुरुषकूं नरकविषेलेजाणेकी तूइच्छाकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं पापकर्म तूकरावैहै॥और जिसपुरुषकूं मनुष्यलोक विषेलेजाणेकी तूइच्छाकरैहै तिसपुरुषकूं पुण्यतथापापदोनों करावैहै ॥ शंका ॥ पुण्यकर्म तथा पापकर्मका करावणेहारा जोपरमात्माकूं मानैंगे ॥ तोजीवोंकीन्याई विषमता तथानिर्दयता रूपदोषकीप्राप्ति परमात्माविषेभीहोवैगी ॥ समाधान ॥ पुण्यकर्मकरिके यहपुरुष पुण्यकर्मवालाहोवैहै ॥ और पापकर्मकरिके पापकर्मवालाहोवैहै ॥ याप्रकार श्रुतिविषे कथनकर्‍याहै ॥ और तिनपुण्यपापकर्मोंकाज्ञान अल्पज्ञजीवकूंहैनहीं ॥ किंतु सर्वज्ञपरमात्माकूंहै ॥ यातें याजीवकेपूर्वपुण्य कर्मकेअनुसार उत्तरउत्तरजन्मविषे पुण्यकर्मोंकूंईश्वर करावैहै ॥ और याजीवके पूर्वपापकर्मके अनुसार उत्तरउत्तरजन्मविषे पापकर्मोंकूं परमात्माकरावैहै ॥ यातें परमात्माविषे विषमता तथानिर्दयतारूप दोषकीप्राप्तिनहीं ॥ यातें हेप्रतर्दन सर्वकर्मोंकाप्रेरक मुझ परमात्माकास्वरूपजोतूंहै ॥ सो पुण्यपाप रूपकर्मकेअधीननहीं ॥ किंवा ॥ हेप्रतर्दन संपूर्णबुद्धिआदिकोंकासाक्षी तथासकलकाप्रेरक जोतेरास्वरूप मैंनें कथनकर्‍याहै ॥ सोईहीतेरास्वरूप सर्वलोकोंकोपालनकरैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे माता बालकोंकापालनकरैहै ॥ किंवा ॥ हेप्रतर्दन जैसे गृहकास्वामी आपणेपु

त्रादिकबांधवोंकूं नानाप्रकारकेभोगोंकीप्राप्तिकरिके तृप्तकरैहै॥तैसे तूंपरमात्मादेवभी संपूर्णजगतकूंआपणामानिकरिके नानाप्रकारकेभोगों कोप्राप्तिकरिके सर्वदातृप्तकरैहै ॥ और हेप्रतर्दन जैसे काष्ठतथामृत्तिकाकरिकेरचितप्रसिद्धसेतु जलकीमर्यादाकूंधारणकरैहै ॥ तैसे पुण्यवा नूजीव स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पापीजीव नरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेमर्यादाकूंधारणकरणेहारे जेवेद तथाब्राह्मणादिकहैं ॥ तिनोंके साथ विरोधकरणेहारेजेराक्षसादिकहैं ॥ तिनोंकूं आपणेबलकरिके तूंपरमात्माही वशकरैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे राजा आपणेबलकरिकेदुष्टपुरु षोंकूंवशकरैहै ॥ और हेप्रतर्दन स्थावर तथाजंगम सर्वभूतोंविषे आकाशकीन्याई समानव्यापक जोपरमात्मादेवहै ॥ सो तेरेताई हमने कथनकऱ्या ॥ तिसअद्वितीयमेंपरमात्माकूं आत्मास्वरूपकरिकेतूंजाण ॥ और हेप्रतर्दन यहअद्वितीयआत्माकाज्ञानहीं मनुष्योंकेवासते हिततम हम मानतेहैं ॥ आत्मज्ञानतैंबिना कोईभीवस्तु जीवोंकाहिततमनहीं ॥ श्रीशंकरानंदमुनिरुवाच ॥ हेशिष्य आपणेप्रतिज्ञाकेसत्य करणेवासते देवराजइंद्र इसप्रकार हिततमआत्मज्ञानकूं प्रतर्दनराजाकेताई कथनकरताभया ॥ ताइंद्रकेउपदेशकूंश्रवणकरिके सोप्रतर्दनरा जा इंद्रकीन्याई आत्मज्ञानयुक्तहोताभया ॥ और देवराजइंद्रकूं दंडवत्प्रणामकरिके तथाइंद्रकीआज्ञाकूंपाइके सोप्रतर्दनराजा आपणीश्री काशीपुरीकूंजाताभया ॥ तहाँ श्रीकाशीपुरीविषेआइके प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिकरणेवासतैं नानाप्रकारकेभोगोंकूंभोगताभया ॥ और भो गोंकूंभोगिकरिके जभीप्रारब्धकर्मकोसमाप्तिभई ॥ तभी शरीरकापरित्यागकरिके सोप्रतर्दनराजा इंद्रकेवास्तवअद्वितीयस्वरूपकूं प्राप्तहो ताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मकेसाथ अभेदरूप जोविदेहमोक्षहै ताकूं प्राप्तहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ यहजोआत्मज्ञान हमने तेरेताई कथन कऱ्याहै ॥ सोईहीआत्मज्ञान प्रतर्दनादिकमहान्अधिकारियोंनें इंद्रादिकमहान् गुरुवोंतैंपायाहै॥यातैं यहआत्मज्ञानहीं अत्यंतदुर्लभहै॥पुनः सोआत्मज्ञानकैसाहै॥जिसआत्मज्ञानकीअप्राप्तितैं गुरुपदवीकेयोग्यजेब्राह्मणहैं तेभीशिष्यभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥और जिसआत्मज्ञानकीप्राप्तितैं शिष्यपदवीकेयोग्यक्षत्रियादिकभी गुरुभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं आत्मज्ञानहीं गुरुपणेकासंपादकहै ॥किंवा॥ आत्मज्ञानविषेजोमहानताहै॥ सोमहानता अन्यकिसीपदार्थविषेनहीं ॥ किंतु सोमहानता आत्मज्ञानविषेहीहै ॥ याकारणतैंही छांदोग्यउपनिषद्‌विषे ज्ञानकेसमान दक्षि

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे तृतीयोऽध्याय प्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ तृतीयअध्यायप्रारंभः ॥ तहाँद्वितीय अध्यायविषेऋग्वेदकेकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या॥तहाँ देवराजइंद्रने प्रतर्दनराजाकेताई प्राणप्रज्ञाउपहितआत्माका उपदेशकऱ्या ॥ तिसप्राणप्रज्ञारूपउपाधितैंभिन्नकरिकेआत्माकेजानणेविषे ॥ जेपुरुष समर्थनहीहैं ॥ तिनमुमुक्षुपुरुषोंकेबोधवास्तेप्राणादिकउपाधियोंतैंभिन्नकरिके आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंकथनकरणेहारा जोकौषीतकीउपनिषद्काचतुर्थअध्यायहै॥ताकेअर्थकूं अब तृतीयअध्यायविषे निरूपणकरैहैं ॥ तहाँ पूर्वअध्यायविषेआत्मज्ञानकूंहीं हिततमकह्या ॥ तिसकूंश्रवणकरिके शिष्य अत्यंत आश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और संशयकरिकेयुक्त हुआसोशिष्यआपणेगुरुकेप्रति याप्रकार पूछताभया ॥शिष्यउवाच॥हेभगवन् प्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंकातथा वामदेवादिक अधिकारियोंका परस्परसंवादरूपइतिहासकरिकेऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्करिकेप्रतिपादितआत्मज्ञान आपने कथनकऱ्या सोकैसाआत्मज्ञानहै॥संसाररूपशूलकेनिवृत्तिकासाधनहै ॥ और द्वितीयअध्यायविषे इंद्रप्रतर्दनकेसंवादकरिके तिसीहीआत्मज्ञानकूंदृढकरिके हमारेताई आपनेकथनकऱ्या॥और पूर्वआपनेयहकह्या॥यहआत्मज्ञानही मनुष्योंकाहिततमहै॥आत्मज्ञानतैंभिन्नकोईभीपदार्थहिततमनहीं ॥याप्रकार आपकेवचनकूंश्रवणकरिके मैंअभी कृतकृत्यभयाहूं ॥ परंतु हमारेहृदयरूपकमलकूं आपकेवचनरूपपवनतैं उत्थानकूंप्राप्तभयासंशयरूपभ्रमर चलायमानकरैहै॥तात्पर्ययह॥जैसे पवनकेवेगतेउडिकरिके भ्रमर कमलकूंचलायमानकरैहै ॥तैसेपूर्वआपकेवचनतैंउत्पन्नभयासंशय हमारेहृदयकूं चलायमानकरैहै॥अब तासंशयकूंदिखावैहैं॥हेभगवन् द्वितीयअध्यायकेअंतविषे आपने यहकह्या ॥ इसअद्वितीयआत्माकेज्ञानतैं गुरुपदवीकेयोग्यब्राह्मणादिकभी शिष्यभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥और शिष्यपदवीकेयोग्यक्षत्रियादिकभी इसअद्वितीयआत्माकेज्ञानतैं गुरुभावकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ यहआपकाकथन हमारेकूंदुर्घटप्रतीतहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ याकहणेकरिके आपनें आत्मज्ञानकीस्तुतिकरीहै ॥ अथवा यहवार्तापूर्वकभीहुईहै ॥ यातैं आपने हमारेप्रतिकहीहै ॥ यहसंशय हमारेकूंहोवैहै ॥ और हेभगवन् हमारेकूंतौ यहवार्ता दुर्घटप्रतीत होवैहै ॥ काहेतैं जैसे मुकुटकेधारणकरणेयोग्य मस्तकहोवैहै ॥ और पादोंविषेधारणकरणेयोग्य उपानहहोवैहैं ॥ सोउपानह मस्तकविषे

धारणहोवैंनहीं ॥ और मुकुट पादोंविषेधारणहोवैनहीं ॥ तैसे ब्राह्मणादिकोंविषेवर्त्तमानजोगुरुपणा सो क्षत्रियादिकशिष्योंविषे वर्तेनहीं ॥
और क्षत्रियादिकोंविषे वर्तमानजोशिष्यपणा सो ब्राह्मणोंविषे वर्तेनहीं ॥ याप्रकारकीदुर्घटता हमारेकूं प्रतीतहोवैहै ॥ यातें हेभगवन् आत्म
ज्ञानकीप्राप्तितें शिष्योंविषे गुरुपणा जोवेदविषे कहीं कथनकर्‍याहोवे तो हमारेप्रति आप कथनकरो ॥ आपतैंभिन्न कोईदूसरापुरुष हमा
रेकूं बोधकरणेहाराहैनहीं ॥ इसप्रकार शिष्यकेवचनकूंश्रवणकरिके अत्यंतहर्षयुक्तहुआश्रीगुरु शिष्यकेप्रति कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवा
च ॥ हेशिष्य आत्मज्ञानकीप्राप्तितें शिष्यभी गुरुभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और आत्मज्ञानकीअप्राप्तितें गुरुभी शिष्यभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥
यहजो हमने पूर्वतुमारेताईं कथनकर्‍याहै सो आत्मज्ञानकीहमनेस्तुतिनहींकरी ॥ किंतु यहवार्ता पूर्वहोइगईहै ॥ तहाँ कौषीतकी
नामाऋषि बहुतकालपर्यंत तपकूंकरताभया ॥ तातपकेप्रभावतें वेदमंत्रोंकेजानणेकीसामर्थ्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ पुनःसोकौषीतकी
नामाऋषि मुमुक्षुलोकोंकेकल्याणवासते आपणेशिष्योंकेप्रति कौषीतकीनामाउपनिषद्‌कूं कथनकरताभया ॥ ताकौषीतकीउपनिषद्‌विषे
यहवार्ता कथनकरीहै ॥ तथा बृहदारण्यकउपनिषद्‌विषे सूर्यभगवान् याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति यहवार्ता कथनकरताभयाहै ॥ तहाँ यहकथ
नकर्‍याहै ॥ यद्यपि क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहतीनोंवर्णशिष्यपदवीकेयोग्यहैं गुरुपदवीकेयोग्यनहीं ॥ और ब्राह्मण गुरुपदवीकेयोग्यहैं ॥
शिष्यपदवीकेयोग्यनहीं ॥ तथापि आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते ब्राह्मणभी क्षत्रियराजाकाशिष्य होताभयाहै ॥ यहवार्ता बृहदारण्यक
तथाकौषीतकीउपनिषद्‌के चतुर्थ अध्यायविषेप्रसिद्धहै ॥ यातें हेशिष्य आत्मज्ञानकेप्रभावतें शिष्यभी गुरुभावकूंप्राप्तहोवैहै॥यहजोहमने
पूर्वकह्याहै॥सो आत्मज्ञानकीस्तुतिरूपअर्थवादनहीं किंतुयथार्थहै ॥ तहाँ कौषीतकीउपनिषद्‌विषे बालाकिब्राह्मणका राजाकेसाथसंवा
दरूप पुरातनइतिहासकथनकर्‍याहै॥तिसइतिहासकूं तुम श्रवणकरो ॥ ताकेश्रवणतें यहतुमारासंशय निवृत्तहोवैगा ॥ गर्गगोत्रविषेहैउत्प
त्तिजाकी ऐसाबलाकनामा एकब्राह्मणहोताभया ॥ सो बलाकनामाब्राह्मणकैसाथा ॥ षट्‌अंगोंकरिकेयुक्तचारिवेद जिसनेअध्ययनकरेहैं ॥
और धर्म विषेजिसकीनिष्ठाहै ॥ ऐसेबलाकनामाब्राह्मणकापुत्र बालाकिनामाब्राह्मण होताभया ॥ सोबालाकिब्राह्मणभी आपणेपिताकेसमा

नहीं वेदवेदांगविद्याविषेकुशलहोताभया ॥ परंतु मैंसर्वब्राह्मणोंतैंविद्याविषेअधिकहूं ॥ मेरेसमान कोईभीलोकविषेविद्वान्नहीं ॥ याप्रकारके विद्यामदकरिके तथा धनकेमदकरिके तथायौवनकेमदकरिके तिसबालाकिनामाब्राह्मणकी धर्मविषेनैष्ठानहींहोतीभयी॥और सोबालाकिब्राह्मण सर्वदिशावोंकेपंडितोंकूंजीतणेवासते हिमालयपर्वततैंआदिलेके सेतुबंधरामेश्वरपर्यंत जितनेकमध्यविषे कुरुदेश पांचालदेश काशीदेश मिथिलादेश इसतैंआदिलेके सर्वदेशोंविषे विचरताभया ॥ सोकैसाबालाकिहै ॥ जिसकीसर्वदेशोंविषेकीर्तिप्रसिद्धहै ॥ और बोलणे विषे अत्यंतवाचालहै ॥ और आत्मातैंभिन्नसर्वअनात्म पदार्थोंकूं जानणेहाराहै ॥ और आत्मसाक्षात्कारतैंरहितहै ॥ और प्राणकूंहींजिसने आत्मामान्याहै ॥ ऐसाबुद्धिमान्सोबालाकिब्राह्मण आपणेविद्याकेबलकरिके पांचालादिकदेशोंविषेस्थितजेब्राह्मण तथाक्षत्रिय तथावैश्य तिनसंपूर्णोंकूं जीतताभया॥इसप्रकार सर्वदेशोंकेब्राह्मणादिकोंकूंजीतिकरिके अत्यंतअभिमानकरिकेयुक्तहुआसोबालाकि काशीदेशकेब्राह्मणादिकोंकेजीतणेवासते कदाचित्काशीदेशविषे आवताभया ॥तहाँ काशीदेशविषे एककाशीकेराजाकूंछोडिकरिके जितनेब्राह्मणक्षत्रियवैश्यथे तिनसंपूर्णोंकूं सोबालाकिब्राह्मण जीतताभया ॥ पुनःसोबालाकि ब्राह्मण अजातशत्रुनामाकाशीराजाकेजीतणेकोइच्छाकरिके तहाँराजाकेसमीप जाताभया॥सोकाशीकाराजा अजातशत्रु कैसाहै॥अतिशयकरिकेधर्मात्माहै॥और सर्वधर्मात्मापुरुषोंविषेमुख्यहै ॥ और विनयकरिकेयुक्तहै ॥ और सत्यविषेजिसकीस्थितिहै ॥ और महात्मापुरुषोंकीसेवाविषे जिसकीनित्यहींप्रीतिहै ॥ औरजिसकेबलतैंअधिकबलवाला कोईभीशत्रु भूमिविषेउत्पन्नभयानहीं ॥ याकारणतैंहीं सोकाशीराजा अजातशत्रु यानामकूंप्राप्तभयाहै ॥ अथवाअंतरकेशत्रुजेअहंकारादिक हैं॥ते जिसकाशीराजाकेनष्टहुएहैं ॥ याकारणतैंसोराजा अजातशत्रु यानामकूंप्राप्तभयाहै ॥ अब अंतरशत्रुवोंकेअभावकूंदिखावैहैं ॥ आपणे शत्रुवोंविषे तथामित्रोंविषे तथाशत्रुमित्रभावतैंरहितउदासीनपुरुषोंविषे जिसराजाकी स्वप्नविषेभीविषमबुद्धिनहीं ॥ किंतुसर्वविषेजाकी समानबुद्धिहै॥और आपणेशरीरविषे तथाकृमिविषे जिसराजाकोविषमबुद्धिनहीं ॥ किंतु दोनोंविषेसमानबुद्धिहै॥तात्पर्ययह॥यहहमाराशत्रुहै ॥ औरयह हमारामित्रहै ॥ याप्रकारकीविषमबुद्धितैंहीं रागद्वेषादिक उत्पन्नहोवैहैं ॥ विषमबुद्धिरूपकारणकेअभावहुए रागद्वेषादि

रूपकार्यभी उत्पन्नहोवैंनही ॥ और सोविषमबुद्धि अजातशत्रुराजाविषेहैनहीं ॥ यातैं संपूर्णरागद्वेषादिकोंकाअभाव राजाविषेहै ॥ ऐसा अजातशत्रुराजा आपणीसभाविषेस्थितथा ॥ ताराजाकेजीतणेवासतै सोबालाकि तहाँआताभया ॥और विनाहींप्रसंगतैं सोबालाकि राजा केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेराजन् तूं ब्रह्मज्ञानतैंरहितहै॥ और जन्ममरणरूपसंसारसमुद्रविषेडूबाहुआ है ॥ यातैं तुमारेताई मैं ब्रह्मकावास्तवस्वरूप उपदेशकरताहूं॥तूं मनकूंसावधानकरिकेश्रवणकर ॥ इसप्रकार बालाकिब्राह्मणकावचन श्रवणकरिके सोअजात शत्रुराजा अत्यंतहर्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ और बालाकिब्राह्मणकेप्रति याप्रकारकेवचनकूं राजा कहताभया॥हे बालाकि ब्रह्मका मैंतुमारेताई उपदेशकरताहूं यहजो आपने प्रसंगतैंविनाहीं वचनकह्या ॥ तिसवचनरूपवर्षाकरिके हमारेकर्णोंकूं आपने शीतलकऱ्या ॥ और आपके यावचनकूंश्रवणकरिके मेरेहृदयविषे अत्यंतआनंद उत्पन्नभयाहै॥दृष्टांत॥जैसे किसीपुरुषका एकहीपुत्रहोवै॥सोपुत्र बहुतकालका किसी दूरदेशविषेगयाहोवे ॥और किसीपुरुषतैं तापुत्रकामरणा पिताने श्रवणकऱ्याहोवै॥और सोताकापिता धनसंपत्तिकरिकेयुक्तहोवे ॥ और वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहुआहोवै॥ऐसेपिताकूं मरणकेसमीपकालविषे जोकदाचित् सोपुत्र आइकेप्राप्तहोवे ॥ तापुत्रकेवचनकूंश्रवणकरिके जैसे तावृद्धपिताकूं आनंदहोवैहै ॥तैसे ब्रह्मकेउपदेशकीप्रतिज्ञारूप आपकेवचनकूं श्रवणकरिकेमेरेकूंअत्यंतआनंद उत्पन्नभयाहै ॥ और हे बालाकि हमारीसभाविषे अनेकबुद्धिमान्ब्राह्मण आवतेहैं॥और वेदोंकेपाठकूंउच्चारणकरिके तथावेदोंकेअर्थकूंप्रकाशनकरिकेआपणेआपणे विचित्रकर्मोंकूं दिखावैहैं और लोकविषेप्रसिद्ध जेनानाप्रकारकीविद्याहैं॥तिनविद्यावोंकूं तेब्राह्मणकथनकरैहैं ॥ और ब्रह्मविद्याकेप्रसंगकेप्राप्त हुएभी तथाहमारेकरिकेंपूछेहुएभी तेब्राह्मण ब्रह्मविद्याकूं कोइंकथनकरतानहीं ॥ तेकैसेब्राह्मणहैं ॥ विद्याकरिके लोकविषेप्रसिद्धहैं ॥ और वृद्धअवस्थायुक्तहैं ॥ और अनंतहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मविद्याके नहींउपदेशकरणेविषे तीनकारणहोवैहैं ॥ एकतो अप्रसिद्धि ॥ और दूसरा अयोग्यता ॥ और तीसरा असहायता ॥ यातीनोंकारणोंका इनब्राह्मणोंविषेअभावहै ॥ काहेतैं ब्रह्मविद्यावान्रूपकरिके इनब्राह्मणोंकी सर्वत्रप्रसिद्धिहै ॥ यातैं अप्रसिद्धिरूपकारणभी इनोंविषेनहीं ॥ और यहब्राह्मण वृद्धअवस्थाकरिकेयुक्तहैं ॥ और श्रद्धापूर्वक हमने

२१

इनोतैंब्रह्मविद्यापूछीहै ॥ यातैं अयोग्यतारूपकारणभी इनोंविषेनहीं ॥ और यहसहस्रब्राह्मण एकठेहुएहैं ॥ यातैं असहायतारूपकारणभीइनोंविषेनहीं ॥ किंतु प्रसिद्धि तथायोग्यता तथासहायता यहतीनकारण ब्रह्मविद्याउपदेशके इनब्राह्मणोंविषे विद्यमानहैं ॥ तथापि इनब्राह्मणोंतैं हमारेताई कभीभीब्रह्मविद्याकाउपदेशकर्‌यानहीं ॥ और हेबालाकि आपविषेयातीनोंकारणोंकाअभावहै ॥ काहेतैंबाल्यआवस्थाकरिकैंयुक्तहो ॥ यातैं प्रसिद्धिरूपकारणभी आपविषेनहीं ॥ और हमनैं आपसैंब्रह्मविद्यापूछीनहीं ॥ यातैं योग्यतारूपकारणभी तुमारेविषेनहीं ॥ और आप अकेलेहो ॥ यातैं सहायतारूपकारणभी आपविषेनहीं॥ याप्रकार उपदेशकेतीनकारणोंकेअभावहुएभी ब्रह्मकाउपदेश तुमारेताई मैंकरताहूं ॥ यहजो आपने हमारेप्रति वचनकह्या ॥ ताआपकेवचनकूंश्रवणकरिके हम बहुतसंतोषकूंप्राप्तभयेहैं ॥ यातैं हेबालाकि आप ब्रह्मकाउपदेशहमारेप्रतिकरो अथवा नहींकरो ॥ परंतु ब्रह्मउपदेशकीप्रतिज्ञारूपतुमारेवचनको हमनैं यहदक्षिणा मनविषेधारणकरीहै ॥ एकसहस्रगौवां तैंब्रह्मवक्ताकेताई मैंदेताहूं ॥ केसियांते गौवांहैं ॥ घटकीन्याईं जिनोंकाऊधसहै ॥ और एकवर्षविषे वत्सकूंदेणेहारियांहैं ॥ और जिनोंकास्वभाव अत्यंतसौम्यहै ॥ ऐसी गौवांको एकसहस्र मैंतुमारेताई देताहूं ॥ इसप्रकारकेवचनकूंकहिकरिके सोअजातशत्रुराजा जैसे शास्त्रविषेगोदानकीविधिकहीहै ॥ तिसप्रकार सुवर्णादिकसामग्रीयुक्तसहस्रगौवांकूं बालाकिकेताई देताभया ॥ ब्रह्मउपदेशकी प्रतिज्ञामात्रतैं सहस्रगौवांकेदेणेविषे अजातशत्रुराजाका यह अभिप्रायहै ॥ ब्रह्मवेत्ता तथाउदारताआदिकसर्वगुणसंपन्न मैंअजातशत्रुराजाकूं नजाणिकरिके यहब्राह्मण जनकराजाकेसमीपजावेहै ॥ और मोहकेवशहुएतेब्राह्मण याप्रकारकेवचनकूं कथनकरैहै ॥ जैसे पिता पुत्रोंकेताई धनादिकपदार्थोंकूंदेवेहै ॥ तथा पुत्रोंकरिकेअध्ययनकरीविद्याकूंभी पिता श्रवणकरैहै ॥ तैसे जनकराजाभी ब्राह्मणोंकेताई धनकादान तथाब्रह्मविद्याकादान करैहै और आपभीजनकराजा ब्राह्मणोंतैंब्रह्मविद्याकाश्रवणकरैहै ॥ याप्रकार जोलोक कथनकरैहै ॥ सो मुझअजातशत्रुराजाकेप्रभावकूंनजाणिकरिके केवलभ्रांतितैंकथनकरैंहैं ॥ काहेतैं जनकराजाकेप्रति अभीकोईब्राह्मण ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताहै ॥ तभी तिसउपदेशतैंअनंतर जनकराजा तिसब्राह्मणकेताईं

सहस्रगो दक्षिणादेताहे ॥ और मैंअजातशत्रुराजातो ब्रह्मविद्याहमतुमारेताईकथनकरतेहैं याप्रकारकेवचनमात्रकहणेहारेब्राह्मण
केताईभी सहस्रगोवोंकूंदेताहूं ॥ यातें जनकराजातें हमारीउदारता अधिकहे ॥ तिसहमारीउदारताकूं न जाणिकरिके जनकराजाकेसमीप
लोक जावैंहैं ॥ याप्रकार अजातशत्रुराजाकेअभिप्रायकूं सोअल्पबुद्धिबालाकि नहींजाणताभया ॥ किंतु याप्रकार जाणताभया ॥ याअ
जातशत्रुराजाकूं ब्रह्मजानणेकी अत्यंतउत्कटजिज्ञासाहे ॥ याकारणतें ब्रह्मविद्याकेउपदेशतैंप्रथमहीं सहस्रगो हमारेताईं राजानें दीयाँहैं ॥
यातें याराजाकी जिज्ञासा पूर्णकरीचाहिये ॥ याप्रकारकीभ्रांति बालाकिकूंहोतीभई और बालाकिने जोब्रह्मकास्वरूप आपणेगुरुतैंजान्या
था ॥ तिसीब्रह्मका राजाकेताईउपदेशकरताभया ॥ तहाँ व्यष्टिरूपकूंधारणकरणेहाराजो अध्यात्महे ॥ और समष्टिरूपकूंधारणकरणे
हाराजो अधिदेवहे ॥ सोअध्यात्मअधिदेवरूपप्राणहीं ब्रह्महे ॥ याप्रकार अव्याकृतपर्यंत सविशेषप्राणरूपब्रह्म बालाकिने जान्याथा ॥ सो
राजाकेताई कथनकरताभया ॥ परंतु अव्याकृततैंपरे जोनिर्गुणब्रह्महे ॥ ताकूं बालाकिने जान्यानहींथा ॥ यातें राजाके ताईं नहींकहता
भया ॥ इसप्रकार जोजोब्रह्मकाउपदेश बालाकि राजाकेताईकरे ॥ तिसतिसउपदेशकूं राजाअजातशत्रु हेबालाकि यहहमनेंआगे जान्याहे
याप्रकारकेवचनकरिके तथानिषेधकाबोधकजोहस्तकीचेष्टाहे ताकरिके खंडनकरताजावे ॥ और पुनःसोबालाकि याप्रकार कहताभया ॥
हेराजन् आदित्य १ चंद्रमा २ विद्युत् ३ मेघमंडलकाशब्द ४ आकाश ५ वायु ६ अग्नि ७ जल ८ यहअष्ट अधिदेवब्रह्मपुरुषहैं ॥ और
प्रतिबिंबकेग्रहणकरणेयोग्य जोदर्पणादिकउज्वलवस्तु १ और दशोदिशारूपश्रोत्र २ और वेगकरिकेचलतेहुएपुरुषकेपश्चात्होणेवालाजो
ध्वनिरूपशब्द ३ औरपुरुषकेसमानहैआकारजाकाऐसाजोछायास्वरूप ४ और स्थूलशरीर ५ तथासूक्ष्मशरीर ६ और दक्षिणनेत्रविषे
स्थितजोसूक्ष्मशरीरकाआकार ७ तथावामनेत्रविषेस्थितजोसूक्ष्मशरीरकाआकार ८ यहअष्ट अध्यात्मब्रह्मपुरुषहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ आदि
त्यादिकषोडशस्थानोंविषेस्थित जेषोडशब्रह्मपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं ब्रह्मबुद्धिकरिके मैं उपासनाकरताहूं ॥ यातें हेराजन् तूभी तिनषोडशपु
रुषोंकूं ब्रह्मबुद्धिकरिकेउपासनाकर ॥ तिसउपासनातें तुमारेकूं महाफलकीप्राप्तिहोवेगी ॥ याप्रकार बालाकिकेवचनकूंश्रवणकरिके सोअ

जातशत्रुराजा बालाकिकेप्रति कहताभया ॥ हेबालाकि इनषोडशब्रह्मपुरुषोंकूं हमनें पूर्वभलीप्रकारजान्याहे ॥ और हमनें पूर्व तिनब्रह्मपुरुषोंकीउपासनाभीकरीहे ॥ यातें पूर्वजानीवस्तुका पुनः उपदेशकरणा तुमाराव्यर्थहे॥इसप्रकार बालाकिने जोजोब्रह्मकास्वरूपजान्याथा॥ तिनसंपूर्णोंकूं राजाअजातशत्रु हमनें यहआगेजान्याहे ॥ याप्रकारकेउत्तरकरिके खंडनकरताभया ॥ इसतैंपरे निर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूं सोबालाकिब्राह्मणजाणतानहीं ॥ जो राजाकेताई उपदेशकरे ॥ और बालाकिने पूर्वयहप्रतिज्ञाकरीथी ॥ हेराजन् मैंतुमारेताई ब्रह्मकाउपदेशकरताहूं ॥ सोप्रतिज्ञा बालाकिकी मिथ्याहोतीभई ॥ यातें ताबालाकिकामुख अत्यंतग्लानियुक्तहोताभया ॥ और चोरकीन्याई नीचेमुखकरिके सोबालाकि सभाविषेतूष्णीभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ सोकैसाबालाकिहै ॥ कुलमदकरिके तथाविद्यामदकरिके तथाधनमदकरिके अत्यंतअहंकारीहुआहे ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकेतिरस्कारजन्यपापोंकरिके नष्टहोइगयीहैमुखकीकांतिजिसकी ॥ और शरदऋतुकेमेघकीन्याई व्यर्थहेगर्जनाजिसकी ॥ ऐसेबालाकिब्राह्मणकूं राजाअजातशत्रु देखिकरिके ताबालाकिकेअभिमानकीनिवृत्तिवास्तेनिर्दयपुरुषकीन्याईउच्चस्वरकरिके याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदुष्टबुद्धिबालाकिविप्र जिसब्रह्मज्ञानका तुमनें हमारेप्रतिकथनकर्‍याहे ॥ इतनाहींतुमारेकूंब्रह्मज्ञानहे ॥ अथवा इसतें अधिकभीकछुतेरेकूंज्ञानहे ॥ जोइसतेंअधिकतेरेकूंज्ञानहोवे तोहमारेप्रतिकहो ॥ और हेबालाकि तेरेतैंभीअधिकविद्यावालेसहस्रब्राह्मण यहांहमारीसभाविषेस्थितहैं ॥ परंतु विद्यामदकरिकेमोहित तेरेसमान कोईभीब्राह्मणनहीं ॥ किंतु एकतुंही विद्यामदकरिकेमोहकूंप्राप्तभयाहे ॥ यातें हेबालाकि जोतेरेकूं पूर्वउक्तज्ञानतेंअधिकज्ञानहोवे ॥ तो हमारेप्रतिकहो ॥ इसप्रकार अजातशत्रुराजाकेवचनोंकूंश्रवणकरिके सोबालाकिब्राह्मण याप्रकारकहताभया ॥ हेराजन् जिसब्रह्मकाउपदेश हमनें तुमारेताईकर्‍याहे ॥ सोईहीब्रह्मकास्वरूप गुरुनें पूर्वहमारेताई उपदेशकर्‍याहे ॥ इसतैंअधिकब्रह्मकेस्वरूपकाउपदेश गुरुनें हमारेताई कर्‍यानहीं ॥ यातें पूर्वउक्तकार्यब्रह्मकेस्वरूपतैंभिन्न निर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूं मैं जानतानहीं ॥ इसप्रकार बालाकिब्राह्मणकेवचनकूंश्रवणकरिके सो अजातशत्रुराजा याप्रकारकेवचनकूं बालाकिकेप्रति कहताभया

हेबालाकिब्राह्मण जोतैंनैं पूर्वंब्रह्मकास्वरूप हमारेताई उपदेशकऱ्या ॥ तिसतेरेउपदेशकरिकैनिर्गुणब्रह्मकास्वरूप जान्याजा
वैनहीं ॥ यातैं मैंतुमारेताई ब्रह्मकाउपदेशकरोंहूं ॥ यहतुमारावचन मिथ्याहोवैहै ॥ और मिथ्यावचनतैंपरेकोईपापकर्मनहीं ॥ याकार
णतैंहीं बुद्धिमान्पुरुष आपणेवचनकूंमिथ्याकरैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ आपणेसत्यवचनकरणेविषे जोकदाचित् पुत्रस्त्रीधनादिकपदार्थों
काभीपरित्यागहोताहोवै ॥ तो तिनपुत्रादिकोंकापरित्यागकरिकैभी बुद्धिमान्पुरुष आपणेवचनकूंसत्यकरैहै ॥ आपणेवचनकूंमिथ्याक
रैनहीं ॥ काहेतैं मिथ्यावादीपुरुष याजगत्विषे कर्मचांडालहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ चांडाल दोप्रकारकेहोवैहैं ॥ एकतो जातिकरिकैचां
डालहै ॥ जैसे प्रसिद्धश्वानादिकोंकूंभक्षणकरणेहारेचांडालहैं ॥ तिनोंविषे चांडालत्वजातिरहैहै ॥ और दूसरे कर्मकरिकैचांडालहोवैहैं ॥
जैसे मिथ्यावादीपुरुषहैं ॥ मिथ्यावचनरूपकर्मकरिकै तेचांडालहैं ॥ तिसविषेभी जोपुरुष स्वतंत्रहुआ गुरुकेसमीप तथाराजादिकोंके
समीप मिथ्यावचनकूंकहैहै ॥ सोपुरुष विशेषकरिकेकर्मचांडालहै ॥ यातैं मिथ्यावचनकेसमान कोईभीपापकर्मनहीं ॥ किंवा ॥ " व
र्णिनांहिवधोयत्र तत्रसाक्ष्यऽनृतंवदेत् "॥ अर्थयह ॥ जहां ब्राह्मणादिकोंकीहिंसाहोतीहोवै ॥ तहां ब्राह्मणादिकोंकीरक्षावासतै साक्षीपुरुष
मिथ्यावचनकूंभीउच्चारणकरै ॥ तामिथ्यावचनकरिकै साक्षीपुरुषकूं पापहोवैनहीं ॥ उलटा पुण्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ इसतैंआदिलेके जोशा
स्त्रने मिथ्यावचनकहणकेकारणकहेहैं ॥ तिनकारणोंतैंविना जोपुरुष मिथ्यावचनकूंकथनकरैहै ॥ तिसपुरुषकीजिह्वाकूं शस्त्रकरिकै यम
किंकर छेदनकरैहैं ॥ किंवा॥ लोकविषे जितनेकिअधमपुरुषहैं ॥ तिनसंपूर्णोंविषे मिथ्यावचनकहणेवालापुरुषही मुख्यअधमहै ॥ किंवा ॥
जोपुरुष अग्निआदिकदेवतावोंकेसमीप तथागुरुकेसमीप तथाराजाकेसमीप मिथ्यावचनकूंउच्चारणकरैहै ॥ तिसमिथ्यावादीपुरुषकूं विचा
रतैंविनाहीं राजा हननकरै ॥ याप्रकार यद्यपि शास्त्रविषेकह्याहै ॥ तथापि हेपापिष्टबालाकि तुंब्राह्मणहै ॥ याकारणतैं तुमारेशरीरकाहनन
मैंनेंनहींकऱ्या ॥ कैसामैंहूं सर्वधर्मकूंजानणेहाराहूं ॥ तिसविषेभी राजसभाविषे विशेषकरिकै मैंधर्मकूंजानोहूं ॥ किंवा ॥ हेबालाकिअनेकसा
धुब्राह्मणोंका तुमनैं निरादरकऱ्याहै ॥ तापापकर्मकरिकेही मैंब्रह्मकाउपदेशतुमारेताईकरताहूं यहतुमारीप्रतिज्ञा मिथ्या भईहै ॥ काहेतैंय

यहशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ जोकोईअधमपुरुष समदर्शीसाधुब्राह्मणोंकूं शरीरकरिकै तथावाणीकरिकै तथामनकरिकै दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तिसअधमपुरुषकेसर्वमनोरथोंकूं सूर्यादिकदेवता नष्टकरैहैं ॥ तिसपुरुषका कोईभीमनोरथ सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोपुरुष सर्वप्राणियोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे आपणेकूंहीदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथाजोपुरुष सर्वप्राणियोंकूंसुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे आपणेकूंहींसुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे जोपुरुष आपणेमस्तककूं दूसरेकामस्तकजाणिकरिकै ताडनकरैहै॥सोपुरुष आपहीदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे आपणाआत्मास्वरूपजोसर्वप्राणीहैं ॥ तिनोंकूं आपणेतैंभिन्नमानिकरिकै जोपुरुष किसीप्राणीकूंदुःखकीप्राप्तिकरैहै॥सोअधमपुरुष आपणेकूंहींदुःखकीप्राप्तिकरैहै॥किंवा॥ हेबालाकि विद्यादिकों के मदकरिकैउत्पन्नभयाजोमोह ॥ तामोहकरिकै तुमनैं बहुतसाधुब्राह्मणोंकानिरादरकऱ्याहै॥तिसनिरादररूपपापकर्मकाफल अबीतेरेकूंआइकेप्राप्तभयाहै॥ यातैं हेबालाकि ब्रह्मकाउपदेश मैंतुमारेताईंकरताहूं यहजोमिथ्यावचन तुमने हमारेप्रतिकथनकऱ्याहै ॥ ऐसामिथ्यावचन आजदिनतैंलेकरिकैकिसीकालविषे किसीपुरुषकेआगे तुम नहींकहणा ॥ और हेबालाकि शमदमादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जेमुमुक्षुब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकूं विशेषकरिकैगुरुहीशिक्षाकरैहै॥ क्षत्रियादिक शमादिसाधनयुक्तब्राह्मणोंकेशासनाकरणेकूं यद्यपियोग्यनहींहैं ॥ तथापि तूंशमदमादिकसाधनोंतैंरहित उन्मत्तब्राह्मणहै ॥ याकारणतैं हमनें तुमारेकूं शासनाकरीहै ॥तात्पर्ययह॥ एकधर्मशास्त्रतो याप्रकारकहैहै॥ "नाऽदंड्यो नामराज्ञोऽस्ति धर्माद्विचलितःस्वकात्"॥अर्थयह॥ जोपुरुष आपणेवर्णाश्रमकेधर्मतैंरहितहुआ विपरीतआचरणकूंकरैहै॥ सोपुरुष राजाकरिकैदंडकरणेयोग्यहै ॥ और दूसरेधर्मशास्त्रविषे यहकह्याहै॥"अक्षतोब्राह्मणोव्रजेत्"॥अर्थयह॥ शरीरकादंड ब्राह्मणकूं राजानैंनहींकरणा॥ यादोनोंशास्त्रोंकीव्यवस्थाकरिकै मैंने वाणीकरिकै तेरानिरादरकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ चारिप्रकारकादंड नीतिशास्त्रविषेकह्याहै ॥ धिक्दंड१ वाक्दंड२धनदंड३शरीरदंड४याचारिप्रकारकेदंडविषे कोईभीदंड जोतुमारेकूंनकरिये ॥ तो प्रथमशास्त्र व्यर्थहोवैगा ॥ ताप्रथमशास्त्रकीप्रमाणतावासते तुमारेविषे दंडकरणेकीप्राप्तिअवश्यहोवैहै॥तिनदंडोंविषेभी शरीरकादंड ब्राह्मणविषे"अक्षतोब्राह्मणोव्रजेत्"याद्वितीय

शास्त्रकरिकेहींनिवारणकऱ्याहै ॥ यातें शरीरकाहननरूपदंड ब्राह्मणविषेसंभवैनहीं ॥ और धनकाहरणरूपदंडभी ब्राह्मणविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतें भिक्षुकब्राह्मणोंविषे धनकीयोग्यताहैनहीं ॥ और धिक्दंड तथावाक्दंड दुरात्माब्राह्मणोंविषेभी संभवैहै ॥ याकारणतें हेबालाकि तुमारेकूं कठोरवाणीकरिकै हमने ताडनकऱ्याहै ॥ और हेबालाकि धर्मशास्त्रविषे राजाकायहधर्मकह्याहै ॥ उत्तमपुरुषोंकेताईं तथाअधम पुरुषोंकेताईं राजानें सर्वदाहितकाउपदेशकरणा ॥ याशास्त्रकूंअंगीकारकरिकै मैंतेरेताईं हितकाउपदेशभीकरताहूं ॥ तुम श्रवणकरो॥हेबा लाकि जोतुमनें पूर्वषोडशब्रह्मपुरुषकहेहैं ॥ तिनोंकेज्ञानतें मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तिनषोडशपुरुषोंका तथासकलप्रपंचका कारणजो परमात्माहै ॥ तिसकेज्ञानतेंहीं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें सोपरमात्माही तुमारेकूंजानणेयोग्यहै ॥ और तिसपरमात्माकाज्ञान गुरुकेउपदे शतैंविना होवैनहीं ॥ यातें आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै आपणेगुरुकेसमीप तुमजावो ॥ और गुरुकेउपदेशतें जोआत्मज्ञानकूं तूंनहींसंपादनकरेगा ॥ तो यहविद्यामद वारंवारतुमारेकूं जन्ममरणरूपनरककीप्राप्तिकरैगा ॥ और हेबालाकि जोपरमात्मा इसजगत्की उत्पत्तिकातथास्थितिका तथालयका कारणहै ॥ सोईहीपरमात्मा ब्रह्मशब्दकाअर्थहै ॥ और ब्रह्मशब्दजन्यज्ञानकाविषयहै ॥ इसप्रकार राजाअजातशत्रुकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोबालाकिब्राह्मण अभिमानतेंरहितहोताभया ॥ औरयाप्रकारकेअभिप्रायकरिकै सोबालाकि राजाअजातशत्रुकूंहीं गुरुरूपकरिकैनिश्चयकरताभया अब ताबालाकिकेअभिप्रायकूं दिखावैहैं ॥ जिसआत्माकेज्ञानतें पुरुषोंविषेगुरुपणाहोवैहै ॥ सो आत्मा अत्यंतगुरुहै ॥ ताआत्माकेउपदेशकरणेहारा जोकोईकपुरुषहै ॥ तिसकूंभी गुरुपणायोग्यहै ॥ और अहंकारादिक जिसपुरुषकेआश्रितरहैं हैं ॥ तिसकूंभी लघुताकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातें तेअहंकारादिक अत्यंतलघुहैं ॥ तिनअहंकारादिकोंकी जोपुरुष निवृत्तिकरैहै ॥ सोपुरुषभी गुरुहोणेकूंयोग्यहै ॥ यहदोनोंप्रकारकालक्षण याअजातशत्रुराजाविषेघटैहै ॥ काहेतें विद्यामद तथाध नमद तथाकुलमद यहतीनप्रकारकामद मेरेकूं नरककीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और इसलोकविषेभी जिसमदकेसंबंधतें महात्मापुरुषोंकीस भाविषे निरादररूपलघुताकूं मैंप्राप्तभयाहूं ॥ यातें विद्यादिकोंकामद अत्यंतलघुहै ॥ और अनंतप्रकारकेदुःखोंकूंकरणेहाराहै ॥ याप्रकार

कहमोरमदकूं याराजानैं अनादररूपउपायकरिकै निवृत्तकऱ्याहै ॥ और राजा आपविद्यादिकमदतैंरहितहै ॥ यह गुरुकालक्षण या अजा तशत्रुराजाविषेघटैहै ॥ यातैं यहअजातशत्रुराजाही हमारागुरुहोणेकूंयोग्यहै॥किंवा ॥ याअजातशत्रुराजाकापरित्यागकरिकै अन्यकिसीगुरु केसमीप जोमैंजावोंगा ॥ तौ हमारे विषे कृतघ्नतादोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ काहेतैं जोपुरुष किसीपुरुषकेकियेउपकारकूंनहींमानता सोपुरुष कृतघ्नहोवैहै ॥ और याराजानैं हमारेअहंकारादिकोंकोनिवृत्तिकरीहै ॥ यातैं याराजानैं हमारेऊपर महान्उपकारकऱ्याहै ॥ ताराजाकेउ पकारकूं नमानिकरिकै जोमैं अन्यगुरुकेसमीपजावोंगा ॥ तौ मैंभी कृतघ्नहोवोंगा ॥ यातैं याअजातशत्रुराजाकूंहीं गुरुमानिकै याकेशरण कूंप्राप्तहोवों ॥ किंवा ॥ इसलोकविषे राजाअजातशत्रु जैसे ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूंजाणताहै तैसे दूसराकोईपुरुष ब्रह्मकेवास्तवस्वरूप कूंजाणतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे द्वितीयाकाचंद्रमा जिसपुरुषनें नेत्रोंकरिकैप्रत्यक्षदेख्याहोवे ॥ सोईहीपुरुष दूसरे पुरुषकूं चंद्रमादिखावणेमैंसमर्थहोवैहै ॥ और जिसपुरुषने आप चन्द्रमानहींदेख्या ॥ सोपुरुष दूसरेकूं चंद्रमादिखावणेमैंसमर्थहोवै नहीं ॥ तैसे याराजातैंभिन्नपुरुषोंनैं ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूंजान्यानहीं ॥ तो हमारेप्रति ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूं ते कैसेकहैंगे॥किंवा॥ पूर्वजि नगुरुवोंतैं मैंविद्याअध्ययनकरीहै ॥ तिनोंकूंभी ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकाज्ञाननहीं ॥ काहेतैं जोतिनोंकूंब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकाज्ञानहोता ॥ तौ प्राणकेसमानप्रियमैंशिष्यकेताईं तेगुरु ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरते ॥ और तिनगुरुवोंनैं ब्रह्मविद्याकाउपदेश हमारेताईं कऱ्यानहीं ॥ किंतु जितनीविद्या तिनगुरुवोंकूंआवतीथी ॥ तितनीसर्वविद्या तिनगुरुवोंने हमारेताईं अध्ययनकराईहै ॥ ब्रह्मविद्या तिनगुरुवोंनैं हमारेप्र तिकहीनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तिनगुरुवोंकूं ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकाज्ञाननहीं ॥ और हिमालयतैंआदिलेकैसेतुबंधरामेश्वरपर्यंत ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंविषे जितनेकप्रसिद्धविद्वान्हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं मैंपराजयकरिकै राजाअजातशत्रुकेपराजयकरणेवासते यहांआयाहूं ॥ यातैं याराजातैं तथापूर्वहमारेगुरुवोंतैं भिन्नजितनेकब्राह्मणादिकविद्वान्हैं ॥ तेसंपूर्ण हमारेशिष्यभावकूंप्राप्तभयेहैं ॥ यातैं तिनोंतैंभी ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीसंभावना होवैनहीं ॥ जोतिनब्राह्मणादिकोंकूं ब्रह्मविद्याआवतीहोती तौ हमारेसैंपराजयकूंप्राप्त

नहींहोते ॥ और तिनसंपूर्णब्राह्मणोंकूं मैंपराजयकरिआयाहूं ॥ यातें तिनोंविषेब्रह्मविद्याकीसंभावनाहोवेनहीं ॥ और यहअजातशत्रुराजा यद्यपिहैतोमनुष्य ॥ तथापि गुणोंकरिकेदेवतावोंकेसमानहै ॥ अथवा देवतावोंतैंभीअधिकगुणवान्है ॥ काहेतैं यह अजातशत्रुराजा प्रमादतैंरहितहुआ ब्रह्मविद्याकूंधारणकरैहै ॥ और अधिकारीमुमुक्षुजनोंकेताईभी ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैहै ॥ यातें यहअजातशत्रुराजा देवतावोंतैंभीअधिकहै ॥ और इंद्रादिकदेवतातो देवांगनावोंकेमुखकादर्शनरूपमदिरापानकरिके अत्यंतमोहकूंप्राप्त भयेहैं ॥ यातें तेदेवता ब्रह्मविद्याकूंजाणतेहुएभीनहींजाणते ॥ दृष्टांत ॥ जैसे याभूमिलोकविषे मद्यपानकरणेहारेपुरुष आपगृहादिकोंकूं जाणतेहुएभीनहींजाणते ॥ और यह अजातशत्रुराजा इतनीलक्ष्मीकूंपाइकेभी मुनिलोकोंकीन्याई अभिमानतैंरहितहै ॥ और पुत्रादिक प्रियवस्तुकेप्राप्तहुए याअजातशत्रुराजाकूं हर्षनहींहोता ॥ और अप्रियवस्तुकेप्राप्तहुए याराजाकूंशोकनहींहोता ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसवस्तु विषे पुरुषकारागहोवैहै ॥ तिसवस्तुकेप्राप्तहुए तापुरुषकूं हर्षउत्पन्नहोवैहै ॥ यातें रागही हर्षकाकारणहै ॥ और जिसवस्तुविषे पुरुषकाद्वेषहोवैहै ॥ तावस्तुकेप्राप्तहुए तिसपुरुषकूं शोकउत्पन्नहोवैहै ॥ यातें द्वेषहीशोककाकारणहै ॥ सोराग तथाद्वेष या अजात शत्रुराजाविषेहैनहीं ॥ यातें हर्ष तथाशोकभी याराजाविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतें या अजातशत्रुराजाकूं जैसे आपणेपुत्रहैं तैसेहीशत्रुहैं ॥ पुत्रों विषे याराजाकारागनहीं ॥ और शत्रुवोंविषे याराजाकाद्वेषनहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे एकअजातशत्रुराजाही कामक्रोधतैंरहितहै ॥ दूसराकोईपुरुष कामक्रोधतैंरहितहैनहीं ॥ काहेतैं जोयहराजा कामदोषवालाहोता ॥ तो हमारेताईं सहस्रगौवोंकूंनहींदेता ॥ और यहअ जातशत्रुराजातो मैंब्रह्मकाउपदेशतुमारेप्रतिकरताहूं याहमारेवचनमात्रकरिके सहस्रगौवों हमारेताईदेताभयाहै ॥ यातें याराजाविषे काम दोषनहीं ॥ और जेपुरुष कामदोषयुक्तहोवैहैं ॥ ते सुपात्रविषेदानकरैंनहीं ॥ किंतु कुपात्रजेवेश्यादिकस्त्रियांहैं ॥ तथा वेश्याकेपृष्ठदेशविषे वादित्रोंकूंबजावणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेकौतुकोंकूंकरणेहारे जेनटादिकहैं ॥ इसतैंआदिलेकेजितनेककुपात्रहैं ॥ तिनकुपा त्रोंकूं सहस्ररुपये कामीपुरुषदेवैहैं ॥ परन्तु ब्रह्मवेत्तासुपात्रपुरुषकेताईं पंचकोडीभी कामीपुरुष देसकतेनहीं ॥ यातें यहसिद्धभया

जिन जिन पुरुषोंकाद्रव्य सुपात्रोंविषेखरचहोवैहे तेपुरुष कामदोषतैंरहितहैं ॥ और जिनपुरुषोंकाद्रव्य कुपात्रोंविषेखरचहोवैहे तेपु
रुष कामदोषवालेहैं ॥ और याअजातशत्रुराजाकाद्रव्य सुपात्रोंविषेहीखरचहोवैहे ॥ यातैं यहराजा कामदोषतैंरहितहे ॥ किंवा ॥ कामदो
षकरिकेजन्यजेजन्ममरणादिकदोषहैं ॥ तिनदोषोंकूं जोपुरुष जानताहे ॥ सोईहीपुरुष कामदोषतैंरहितहोवैहे ॥ कामजन्यदोषकेज्ञानतैं
रहितपुरुष कामतैंरहितहोइसकेनहीं ॥ और यह अजातशत्रुराजा कामजन्यजन्ममरणादिकदोषोंकूं भलीप्रकारजाणेहे ॥ यातैं यहराजा
कामदोषतैंरहितहे॥किंवा॥याअजातशत्रुराजाविषे क्रोधभीनहीं॥काहेतैं जेक्रोधवान्पुरुषहोवैहैं ॥ तिनोंका जभीकोईपुरुष अपराधकरैहे ॥
तभी तेक्रोधीपुरुष तिसअपराधीपुरुषकूंमारैहैं ॥ अथवा तिसअपराधीपुरुषकेमारणेविषे जोसमर्थनहींहोवैहे ॥ तो आपणेमस्तककूंताडनक
रैहैं॥यहक्रोधवान्पुरुषोंकालक्षणहे ॥ सोलक्षण याराजाविषेहैनहीं ॥ काहेतैं सभाविषेआइके मुझअज्ञानीने याब्रह्मवेत्ताअजातशत्रुकीअव
ज्ञाकरीभी तोभी यहराजा हमारेऊपरक्रोधवान्नहींभया ॥ उलटा हमारेहितकीइच्छाकरैहे ॥ यातैंयाराजाविषेक्रोधनहीं ॥ जोयाराजाविषे
क्रोधहोता तो मुझअपराधीकेहितकीइच्छानहींकरता ॥ किंवा ॥ हमनें पूर्व आपणेगुरुवोंकेमुखतैं तथाशास्त्रतैं यहश्रवणकऱ्याहे ॥
एकब्रह्मवेत्तापुरुषकूंछोडिकरिके सर्व प्राणीमात्रकेहृदयविषे कामक्रोधरहेहैं ॥ और ब्रह्मवेत्तापुरुषविषे कामक्रोधरहैनहीं ॥ याप्रकार गुरु
शास्त्रकेवचनतैंभी यह अजातशत्रुराजाही ब्रह्मवेत्तासिद्धहोवैहे॥काहेतैं याराजाविषे कामका तथा क्रोधका अभावहे ॥ यातैं ऐसेब्रह्मवेत्तारा
जाका परित्यागकरिके ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतै अन्यकिसीदेवताकेसमीपजाणा हमारेकूंउचितनहीं॥किंवा देवतावोंतैंब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे
हमारेकूंसंशयहोवैहे ॥ काहेतैं इसलोकविषे जैसे मनुष्यादिकोंका प्रत्यक्षदर्शनहोवैहे ॥ तैसे देवतावोंका प्रत्यक्षदर्शन किसीपुरुषकूंहो
तानहीं ॥ और जोदेवतावोंकेदर्शनवासतै अनेककालपर्यंत मैंतपकूंकरोंगा ॥ तोभी इसीजन्मविषे हमारेकूं तिनदेवतावोंकादर्शनहो
वेगा ॥ अथवा दूसरेजन्मविषे तिनदेवतावोंकादर्शन हमारेकूंहोवेगा ॥ यहसंशय हमारेकूंहोवैहे ॥ किंवा ॥ महान्तपकरिके इसीजन्म
विषेदेवतावोंकादर्शनहुआभी ॥ तोभी सर्वदेवतावोंविषेमुख्यब्रह्मवेत्ता कोईविरलाहीदेवताहोवैहे ॥ किंवा ॥ तपकेप्रभावतैं कदाचित् तिस

मुख्यब्रह्मवेत्तादेवताकादर्शनभी हमारेकूंहोवे ॥ तोभी सोदेवता रजोगुणकरिकेयुक्तहै ॥ यातें हमारेताई ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरेगा॥अथवा नहींउपदेशकरेगा ॥ अथवा किसीद्रव्यादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिके हमारेकूं मोहउत्पन्नकरेगा ॥ याप्रकारकासंशय हमारेकूंहोवैहै ॥ यातें देवतावोंकेउपदेशतेंब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे हमारेकूं संभावनाहोवैनहीं ॥ और देवतावोंतेंभिन्न जितनेकइसलोकविषे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या तीनवर्णोंमें प्रसिद्धविद्वान्हैं तेसंपूर्ण हमारेतेंपराजयकूंप्राप्तभयेहैं ॥ यातें तिनोंतेंभी ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकीसंभावना हमारेकूंहोवैनहीं ॥ इस प्रकारकाविचारकरिके सोबालाकिब्राह्मण ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते हस्तविषेकाष्ठोंकूंधारणकरिके तिसअजातशत्रुराजाकेसमीप जाताभया दृष्टांत ॥ जैसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकाबालक अष्टमवर्षविषे हस्तोंमेंकाष्ठोंकूंग्रहणकरिके और आचार्यकेसमीपजाइके याप्रकारकीप्रार्थनाकरैहै ॥ हेभगवन् मैंतुमाराशिष्यहूं ॥ यातें हमारेकूंउपदेशकरो तैसे बालाकिब्राह्मणभी राजाअजातशत्रुकेसमीपआइके याप्रकार कहताभया ॥ हेभगवन् मैंतुमाराशिष्यहूं ॥ यातें हमारेताई ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ याप्रकारकेवचनकरिके बालाकि इसअर्थकूं बोधनकरताभया ॥ इसलोकविषे जोकोईपुरुष ब्रह्मविद्याकरिकेअधिकहै ॥ सोईहीपुरुष गुरुपदवीकेयोग्यहै सो ब्राह्मणहोवे ॥ अथवा क्षत्रियहोवे ॥ अथवा वैश्यहोवे अथवा शूद्रहोवे अथवा स्त्रीहोवे ॥ अथवा नपुंसकहोवे ॥ अथवा राक्षसहोवे ॥ सर्वथा ब्रह्मविद्यावाला गुरुपदवीकेयोग्यहै ॥ और जिसपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिनहींभई ॥ सो ब्राह्मणभीहोवे ॥ तथा अन्यविद्यावोंविषेबृहस्पतिकेसमानहोवे ॥ तोभी सोपुरुष शिष्यपदवीकेयोग्यहै ॥ गुरुपदवीकेयोग्यनहीं ॥ एकब्रह्मवेत्ताही गुरुपदवीकेयोग्यहै ॥ याप्रकार आपणेअभिप्रायकूं सोबालाकि बोधनकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार अभिमानतेंरहितबालाकिकूं राजाअजातशत्रु देखिकरिके आपणेआसनतें उठताभया ॥ और दोनोंहस्तोंकूंजोडिकरिके सोराजा बालाकिकेताई प्रणामकरताभया ॥ और याप्रकारकेवचनकूं सोराजा बालाकिकेताई कहताभया ॥ हे बालाकिब्राह्मण इसलोकविषे ब्रह्मानें ब्राह्मणत्वजातिवालेसर्वब्राह्मणोंकूं गुरुरूपकरिकेउत्पन्नकर्‍याहै और क्षत्रियादिकअन्यवर्णोंकूं स्वभावतें शिष्यरूपकरिके ब्रह्माने उत्पन्नकर्‍याहै ॥ यातें हेबालाकि तूब्राह्मणहोइके मुझक्षत्रियकेशिष्यभावरूपविपरीतकर्मकीइच्छा किसवासतें

करताहै ॥ किंतु यहविपरीतकर्मकरणा तुमारेकूंउचितनहीं ॥किंवा॥ हेबालाकिविपरीतकर्मविषेप्रवृत्ति तीनकारणोंतैंहोवैहै ॥ एकतौ क्रोध
करिकेविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ और दूसरा भयकरिकेविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ और तीसरा अज्ञानकरिकेविपरीतकार्यविषे
प्रवृत्तिहोवैहै तहाँ क्रोधकरिकेजोआपकी याविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तिहोतीहोवै ॥ तो हमारेऊपरक्षमाकरिके ताक्रोधकोनिवृत्तिकरो ॥ तात्प
र्ययह ॥ मुझअल्पबुद्धिबालकने राजधर्मकूंअंगीकारकरिके जेजेकटुवचन तुमारेताईकहेहैं ॥ तिनसंपूर्णहमारेअपराधोंकूं तुम क्षमाकरो ॥
क्षमाकरणाब्राह्मणोंकास्वभावहै ॥ किंवा हेबालाकि मैंने जोआपकूंकटुवचनकहेहैं ॥ सोविनाअपराधतैंनहींकहे ॥ किंतु हमने बहुतजनोंके
मुखतैं याप्रकारकावचन श्रवणकऱ्याथा ॥ जोबालाकि धनमदकरिकेतथाकुलमदकरिके तथाविद्यामदकरिके अनंतसाधुब्राह्मणोंका
निरादर करैहै ॥ और हेबालाकि जैसा हमने पूर्वश्रवणकऱ्याथा ॥ तैसाही हमने तुमारेकूंदेख्या ॥ इसीकारणतैं तुमारेमदकी
निवृत्तिवासतैं हमने तुमारेकूंकटुवचनकहेहैं ॥ और हेबालाकि तुमारेप्रति जोहमने कटुवचनकहेहैं ॥ सो आपणेप्रमादतैंनहीं
कहे ॥ किंतु धर्मशास्त्रकेअनुसारकहेहैं ॥ काहेतैं धर्मशास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ दुराचारीजेब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकेदुराचरणकूं भलीप्रकारनिर्णय
करिके राजानें तिनब्राह्मणोंका वाणीकरिकेनिरादरकरणा ॥ याप्रकार धर्मशास्त्रविषे हमनेश्रवणकऱ्याहै ॥ याकारणतैं हमने
तुमारेकूंकटुवचनकहेहैं ॥ किंवा ॥ हेबालाकि आपसरीखेब्राह्मणलोकोंनैंही हमारेप्रति राजधर्मकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तिसधर्मकेआचरणवि
षे जोहमाराकोईप्रमाद आप देखतेहोवो ॥ तौभी हमबालकऊपरक्षमाकरो ॥ और हेबालाकि तुमारेक्षोभकूंदेखिकरिके हमारेकूं बहुतशो
कहुआहै ॥ जो हमारेकूं धिक्कारहै ॥ और हमारेराजकूंभी धिक्कारहै ॥ तथा राजसंबंधीधर्मोंकूंभी धिक्कारहै ॥ जिनराजसंबंधीधर्मोंकूंअंगीका
रकरिके हमने ब्राह्मणकानिरादरकऱ्याहै ॥ किंवा ॥ हेबालाकिब्राह्मण मेरेभयतैं जोतुं याविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तहोताहोवै ॥ सोकदाचित्
नहींहोणा ॥ काहेतैं नीचजातिवालाजोकोई अपराधीप्राणीहोवैहै ॥ तिसकूंभी हम हननन्हींकरते ॥ तो तुमसरीखेउत्तमब्राह्मणोंकूं हम
कैसेहननकरेंगे ॥ हेबालाकि जेकोईपुरुष चोरीरूपप्रथमअपराधकूंकरैहै ॥ तिनचोरपुरुषोंकेताई धनादिकपदार्थोंकूंदेकरिके चोरीकरणेतैं

मैंनिवृत्तकरताहूं ॥ ताधनकूंलेकरिकेभी तेपुरुष पुनःचोरीरूपदूसरेअपराधकूं जभीकरैं हैं तभी तिनपुरुषोंकूंआपणेदेशतें मैंनिकासिदेता हूं ॥ तादेशकेनिकासणेतैंअनंतरभी तेपुरुष जभीचोरीरूपतृतीयअपराधकूंकरैंहैं ॥ तभी श्वानकेपदसमानहैआकारजिसका ऐसीजोलोहे कीमुद्राहै तिसकूंअग्निविषेतपाइके तिनचोरोंकेमस्तकविषेदेवैंहैं ॥ और जभी तेपुरुष पुनःचतुर्थवार चोरीआदिक अपराधकूंकरैंहैं ॥ तभी तिनपुरुषोंकेएकहस्तकाछेदन हम करैंहैं ॥ और तेपुरुष पुनःपंचमवार जभी चोरीआदिकअपराधकूंकरैंहैं ॥ तभी तिनचोरोंके दूसरेहस्तकाछेदन हमकरैंहैं ॥ और तेपुरुष पुनःषष्ठवार चोरीआदिकअपराधकूं जभीकरैंहैं तभी तिनोंकेएकपादकाछेदन हमकरैंहैं ॥ और तेपुरुष पुनःसप्तमवार जभी चोरीआदिकअपराधकूंकरैंहैं ॥ तभी तिनोंके द्वितीयपादकाछेदन हमकरैंहैं ॥ इसप्रकार सप्तवार अपराधकरणेहारेपुरुषोंकूं हम प्राणोंतैं रहित करतेनहीं ॥ जभी तेपुरुष अष्टमवार अपराधकूं करैंहैं ॥ तभी तिनपुरुषोंकूं हम हननकरैंहैं ॥ और हे बालाकि युद्धविषेभी शत्रुकूं धर्मयुद्धतैंहीं मैंहननकरोंहूं ॥ अधर्मतैंकिसीशत्रुकूं मैंहननकरतानहीं ॥ काहेतें जोशूर वीर युद्धकरणेवासते हमारेसन्मुखहोवैंहै ॥ और षोडशवर्षतैंअनंतर पंचास वर्षपर्यंत आयुष्वालाहोवैहै ॥ और सावधानहोवैहै ॥ और प्रथम हमारेऊपरशस्त्रकूंचलावैहै ॥ ऐसे शूरवीरकूं पश्चात् मैं हनन करोंहूं ॥ वृद्धअवस्थावानकूं तथाबाल्यअवस्थावान कूं तथाअसावधानपुरुषकूं युद्धविषे मैंहननकरोंनहीं ॥ और हेबालाकि शत्रुवोंकूं तथाअपराधीपुरुषोंकूंभी जभी मैंहनननहींकरता ॥ तभी संपूर्णदेहधारियोंकरिकेपूजणेयोग्य तुमब्राह्मणोंकूं मैं कैसेहननकरोंगा ॥ किंतु ब्राह्मणकूं कदाचित् मैंहनननहींकरता ॥ यातें हेबालाकि याप्रकारकेहमारेस्वभावकूंविचारिकरिके तुम भयतैंरहितहोवो ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्राह्मणहोइके क्षत्रियकाशिष्यहोणा यहविपरीतकर्म दोनोंलोकोंविषेनिंदितहै ॥ तानिंदितकर्मविषे हमाराभयकरिके तुमप्रवृत्तमतहोवो ॥ और हेबालाकि जोतूं आपणेअज्ञानकीनिवृत्तिवासते याविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तहोताहोवै ॥ तौभी पूर्वलेआपणेगुरुवोंकेसमीप तुमजावो ॥ तिनोंकेउपदेशतैंहीतुम्हारेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवेगी॥ हे बालाकि तुम्हारेताईं हम नमस्कारकरतेहैं ॥ जहांसेतुम्हाराआगमनभयाहै ॥ तहांहीं तुमपुनःजावो ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य इसप्रकार

जभीराजाअजातशत्रुने बालाकिब्राह्मणकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोबालाकि तिससभातैंनहींजाताभया ॥ किंतु आपणेलज्जाकूं तथाचिंताकूं वोधनकरणेवासते नीचेमुखकरिकै पादकेअग्रभागतैं भूमिकूंलिखताभया ॥ और उच्चश्वासोंकूंउठावताभया ॥ इसप्रकार बालाकिकेशरीर कीचेष्टाकूंदेखिकरिकै सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेहृदयकेअभिप्रायकूंजाणताभया ॥ तहाँ ब्राह्मणहोइकेक्षत्रियकाशिष्यहोणा याविपरीत कर्मकीइच्छातैंउत्पन्नभयीजोबालाकिकूंलज्जा ॥ तालज्जासे नीचेमुख तथापादकरिकैभूमिकालेखन रूपदोनोंचेष्टावोंतैं राजा जानताभया और याराजाकापरित्यागकरिकै किसतैंमैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवोंगा ॥ याप्रकारकीबालाकिकीचिंताकूं उच्चश्वासरूपचेष्टातैं राजा जाणताभया काहेतैं पादकरिकैभूमिकालेखन तथानीचेमुख लज्जातैंविनाहोवैनहीं ॥ किंतु लज्जाकरिकैहीहोवैहै ॥ तैसे उच्चश्वासोंकाउठावणाभी चिंतातैं विनाहोवैनहीं ॥ किंतु चिंताकरिकैहीहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोवस्तु जिस वस्तुतैंविनानहींहोवै ॥ और जिसवस्तुकेविद्यमानहुए जोवस्तु होवै ॥ तावस्तुकरिकै तिसकाअनुमानहोवैहै ॥ जैसे अग्नितैंविनाधूमहोवैनहीं ॥ और अग्निकेविद्यमानहुए धूमहोवैहै ॥ यातैं धूमरूपहेतुतैं पर्वतादिकोंविषे अग्निकाअनुमानहोवैहै ॥ तैसे लज्जातैं विना नीचेमुख तथापादकरिकैभूमिकालेखन होवैनहीं ॥ किंतु लज्जाकरिकैहीहोवै है ॥ यातैं नीचेमुख तथाभूमिकालेखन रूप दोनोंहेतुवोंतैं बालाकिकेलज्जाकाअनुमान राजा करताभया ॥ तैसे चिंतातैंविना उच्चश्वासों काउठावणाहोवैनहीं किंतु चिंताकरिकैहीहोवैहै ॥ यातैं उच्चश्वासरूपहेतुतैं बालाकिकेचिंताकाअनुमान राजा करताभया ॥ अन्यपुरुष केअंतःकरणकाधर्म जो लज्जातथाचिंता ॥ तिसका अन्यपुरुषकूंप्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं किंतु अनुमितिज्ञानहोवैहै ॥ इसप्रकार बालाकिके अभिप्रायकूं जाणिकरिकै सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेप्रति कहताभया ॥ हेबालाकि जोउत्तमवर्णयुक्तधर्मात्माब्राह्मण यहक्षत्रिय हमारे ताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरेगा याप्रकारकीइच्छाकरिकै क्षत्रियादिकोंकेसमीपजावैहै ॥ याप्रकारकेविपरीतकर्मकूं हम अत्यंतअनुचितमा नैंहैं ॥ काहेतैं आपयज्ञकूंकरणा १ तथादूसरेयजमानकेप्रति यज्ञकूंकरावणा २ आपविद्याकाअध्ययनकरणा ३ तथाशिष्योंकेताईं विद्याकाअध्ययनकरावणा ४ आपदानकरणा ५ तथाशुद्धयजमानतैंदानलेणा ६ यहषट्कर्म ब्राह्मणोंकेशास्त्रविषेकहेहैं ॥ और

आप यज्ञकूंकरणा १ तथादानकूंदेणा २ तथाविद्याकूंअध्ययनकरणा ३ यहतीनकर्म ब्राह्मणकेसमानहीं क्षत्रियकेहैं ॥ परंतु यज्ञकूं करावणा १ तथाविद्याकूंअध्ययनकरावणा २ तथाप्रतिग्रहकूंलेणा ३ यहतीनकर्म क्षत्रियकेकिसीशास्त्रविषेनहींकहे ॥ यातैंहेबालाकि आचार्यहोइके ब्राह्मणोंकेताईं विद्याउपदेशकरणेविषे यद्यपि हमारेकूं शास्त्ररीतिसैंअधिकारनहीं ॥ तथापि हमारायह नियमहे ॥ जोधर्मात्माब्राह्मण धनतैं आदिलेकेप्राणपर्यंत किसीभीपदार्थकीयाचना करताहे ॥ तिसब्राह्मणकेताईं प्राणपर्यंतपदार्थोंकाभी हम दानकरेंहैं ॥ यहहमारानियमहे ॥ यातैं हेबालाकि तुमब्राह्मण यद्यपि हमारेगुरुहो ॥ तथापितुमने हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकीयाचना करीहे ॥ जोमैं तुम्हारेताईं प्राणोंतैंभीअतिप्रियब्रह्मविद्याकूं नहींदेवोंगा ॥ तो हमारेनियमकाभंगहोवेगा ॥ यातैं आपणेनियमकीरक्षावासते तुमयाचकगुरुवोंकेताईं ब्रह्मविद्याकादान मैंकरताहूं ॥ यातैं हेबालाकि तुम्हाराहमारा गुरुशिष्यभावसंबंधनहीं ॥ किंतु दातायाचकभाव संबंधहे ॥ तात्पर्ययह ॥ तुम्हारेविषे शिष्यबुद्धिकरिके तथाआपणेविषे गुरुबुद्धिकरिके तुम्हारेताईं मैंब्रह्मविद्यानहींकहता ॥ किंतु तुम्हारेविषे याचकबुद्धिकरिके तथाआपणेविषे दाताबुद्धिकरिके तुम्हारेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेश हम करतेहैं ॥ तिसब्रह्मविद्याकूं तुम श्रवणकरो ॥ याप्रकारकावचन कहिकरिके सो अजातशत्रुराजा बालाकिकेताईं प्रणामकरताभया ॥ और आपणेसिंहासनऊपर बालाकिकूंबैठावता भया ॥ और आपअजातशत्रुराजा भूमिविषेस्थितहोइके बालाकिकेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ राजाअजातशत्रुरुवाच ॥ हे बालाकि प्राणादिकजडपदार्थोंतैंभिन्न तथादेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित जोस्वप्रकाशआनंदस्वरूप आत्माहे ॥ तिसकूंहीं तूंब्रह्मरूपकरि केजाण ॥ इसप्रकार राजाकेवचनकूंश्रवणकरिके उत्पन्नभयाहैविश्वासजिसकूं ऐसाजोबालाकिब्राह्मणहे ॥ तिसकेप्रति अन्वयव्यतिरेक करिके जडप्राणोंकोअनात्मताबोधनकरणेवासते सोअजातशत्रुराजा आपणेआसनतैंउठताभया ॥ और बालाकिकेहस्तविषेआपणेहस्तकूं धारणकरिके सिंहासनतैं बालाकिकूंउतारताभया ॥ और गुह्यअर्थका सभाविषेउपदेशहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सभाकापरित्यागकरिके बा लाकिसहितराजाअजातशत्रु अंतःपुरविषेजाताभया ॥ तहाँ अंतःपुरकेद्वारदेशविषे कोईपुरुष सोयाहुआया ॥ सर्वइंद्रियोंकीचेष्टातैंरहित

वेहै ॥ तैसे राजाअजातशत्रु प्राणविषेअनात्मता बोधनकरिकै शुद्धआत्माके बोधनकरणेवासते प्रथमभोक्तारूपविशिष्टआत्माकेबोधकरावणे
केउपायकूंरचताभया॥ताउपायकूंदिखावैहैं ॥अंतःपुरकेद्वाररूपरसोयेहुएपुरुषकेहस्तकूं आपणेहस्तकरिकैराजापेषणकरताभया॥औरदूसरे
किसीपुरुषकूंप्रेरणाकरिकै तासोयेहुएपुरुषकेपृष्ठदेशविषे यष्टिमरावताभया॥इसप्रकार हस्तकेपेषणकरिकै तथायष्टिकेमारणेकरिकै उत्पन्न
भयीहैपीडाजिसकूं ऐसाजोसुखदुःखकेअनुभवकरणेहाराभोक्तापुरुषहै॥सो पीडाकरिकै जाग्रत्होताभया॥जैसेभस्मकरिकैआवृतअग्निभस्म
केनिवृत्तहुए प्रज्वलितहोवेहै ॥ तैसे सोपुरुष क्रोधकरिकैप्रज्वलितहोताभया ॥ इसप्रकार तापुरुषकूंदेखिकरिकै सोबालाकि नेत्रादिकइंद्रियों
करिकेयुक्तभोक्ताआत्माकूं प्राणतैंभिन्नकरिकै निश्चयकरताभया॥परंतु भोक्तातैंभिन्न बुद्धिआदिकोंकासाक्षी जोशुद्धआत्माहै॥ताकूं सोबाला
कि नहींजाणताभया ॥ अब शुद्धआत्माहीभोक्ताकाहेतैंनहींहोवै याप्रकारवादीकेआशंकाकोनिवृत्तिकरणेवासते जिसनिमित्तकूंग्रहणकरिकै
भोक्ताशब्द विशिष्टआत्माविषेप्रवर्तहोवेहै तानिमित्तकूं दिखावैहैं ॥ तहाँ भोजनरूपक्रिया भोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्त संभवैनहीं ॥ का
हेतैं भोजनरूपक्रिया नियमकरिकैसर्वभोक्तावोंविषेरहैनहीं ॥तात्पर्ययह॥ भोजनरूपक्रियावालेविषे जोभोक्ताशब्दकीप्रवृत्तिहोवै॥तो जोजो
क्रियाहोवेहै सोदुःखरूपहोवैहै यहनियमहै ॥ यातैंदुःखवान्पुरुषविषेही भोक्ताशब्दकीप्रवृत्तिहोवैगी ॥ सुखवान्पुरुषविषे भोक्ताशब्दकी
प्रवृत्तिनहींहोवैगी ॥ और सुखीपुरुषकूंभी लोकविषेभोक्ताकहैहैं ॥ किंवा ॥ भोजनरूपक्रियाकूंजोभोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्तमा
निये ॥ तो भोक्तापणेतैंरहित जेमुख तथादंत तथाजिह्वादिकहैं ॥ तिनोंविषेभीभोजनरूपक्रियारहेहै॥यातैं तिनोंकूंभी भोक्ताकह्याचाहिये॥
और मुखादिकोंकूं कोईभोक्ताकहतानहीं ॥किंवा॥ भोजनरूपक्रियाकाफलजोतृप्तिहै ॥ तातृप्तिरूपनिमित्तकूंग्रहणकरिकै जोभोक्ताशब्दकी
प्रवृत्तिहोतीहोवै ॥ तो तृप्तिदोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतो पुष्टिरूपतृप्ति ॥ और दूसरी तुष्टिरूपतृप्ति ॥ तहाँ पुष्टिरूपतृप्तिवालेकानाम जोभो
क्ताहोवै ॥ तो भित्तिआदिकजडपदार्थभी भोक्ताहोणेचाहिये ॥ काहेतैं मृत्तिकादिकोंकेलेपनतैं भित्तिआदिकोंकीभी पुष्टिहोवैहै ॥ और
लोकविषेभित्तिआदिकोंकूं कोईभोक्ताकहैनहीं ॥ यातैं पुष्टिरूपतृप्तिभी भोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्तनहीं ॥ किंतु परिशेषतैं सुखदुःखरूप

तृप्तिही भोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्तहै ॥ तिनसुखदुःखदोनोंविषेभी सुखही भोगशब्दकामुख्यअर्थहै दुःख भोगशब्दकामुख्यअर्थनहीं ॥ किंतु गौणअर्थहै ॥ काहेतें लोकाविषे वनितादिकविषयजन्यसुखवान्पुरुषकूंहीं भोगवान्कहैहैं ॥ और शूलविषेस्थितपुरुषकूं कोईभोगवान्कहैनहीं ॥ यातें भोगशब्दकामुख्यअर्थ दुःखनहीं ॥ शंका ॥ दुःखविषे सुखरूपताकरिके भोगशब्दकीअर्थता मतहोवै ॥ परंतु सुखकी जनकतारूपकरिके दुःखकूं भोगशब्दकीअर्थता काहेतेंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ यालोकाविषे किसीभीपुरुषकेप्रीतिकूं दुःख उत्पन्नकरैनहीं ॥ यातें तादुःखकरिके सुखरूपतृप्तिसंभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपदार्थविषेप्रीतिहोवैहै ॥ सोईहीपदार्थ सुखरूपतृप्तिकाजनकहोवैहै ॥ दुःखविषे किसीप्राणीकी प्रीतिहोवैनहीं ॥ यातें सुखरूपतृप्तिकूं दुःख उत्पन्नकरैनहीं ॥ किंवा ॥ अनुकूलभोवनितादिकविषयहैं ॥ तिनोंके वारंवारभोगणेकरिके जेपुरुषोंकूं सुखउत्पन्नहोवैहै ताकूं लोकाविषेतृप्तिकहैहैं ॥ सोतृप्ति अनुकूलपदार्थतेंउत्पन्नहोवैहै ॥ प्रतिकूलदुःखादिकोंतें सोतृप्ति कदाचित्भीउत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातें भोगशब्दकामुख्यअर्थ दुःखनहीं ॥ किंतु भोगशब्दकागौणअर्थ दुःखहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे देवदत्तमनुष्यसिंहहै ॥ यास्थानविषे सिंहशब्दकामुख्यअर्थ मृगराजपशुविशेषहै ॥ और देवदत्तनामामनुष्य सिंहशब्दकागौणअर्थहै ॥ सिंहविषेवर्तमान जेक्रूरतादिकगुणहैं ॥ तेगुण देवदत्तनामामनुष्यविषेभीरहैहैं ॥ यातें ताकूंसिंहकहैहैं ॥ तैसे भोगशब्दकामुख्यअर्थसुखहै ॥ और गौणअर्थदुःखहै ॥ काहेतें जैसेसुखकोप्राप्ति पुरुषकेचित्तविषे मैंसुखीहूं याअभिमानरूपअतिशयताकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे दुःखकीप्राप्तिभी पुरुषकेचित्तविषे मैंदुःखीहूं याअभिमानरूपअतिशयताकूंउत्पन्नकरैहै ॥ अतिशयताकेउत्पत्तिकीकारणता सुखविषे तथादुःखविषे समानहै॥यातें भोगशब्दकागौणअर्थदुःखहै॥सुखही भोगशब्दकामुख्यअर्थहै॥इसप्रकार सुखदुःखरूपभोगकाआश्रय ॥ जोविशिष्टआत्मारूप भोक्ताहै॥ताकाउपदेश बालाकिकेप्रति राजानेकऱ्या ॥ तिसभोक्ताआत्माकेज्ञानतें मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु शुद्धआत्माकेज्ञानतें मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतें शुद्धआत्माकेबोधकरणेवासते सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेप्रति कहताभया ॥ हेबालाकि सुखदुःखरूपभोगकी प्राप्तिकालविषे भोक्तारूपविशिष्टआत्माविषे मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं याप्रकारकेअनुभवकरिकेसिद्धजोभोक्तापणाहै ॥ सोभो

क्तापणा शुद्ध असंगआत्माविषे वास्तवतैंसंभवैनहीं ॥ किंतु कार्यकारणभावतैंरहित स्वप्रकाशआनंदस्वरूपआत्माविषे अध्यासतैंही भोक्तापणाप्रतीतहोवैहै ॥ दृष्टांत जैसे सर्पभावतैंरहितरज्जुविषे अध्यासकरिकैसर्पप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे सुखदुःखरूपभोगतैंरहित अद्वितीयशुद्धआत्माविषे अध्यासतैंभोक्तापणाप्रतीतहोवैहै ॥ किंवा ॥ सजातीय विजातीय स्वगत भेदतैंरहित शुद्धआत्माविषे अज्ञानरूपमायातैं विना भोक्तापणेकाअध्याससंभवैनहीं ॥ याकारणतैंही वेदकेतात्पर्यकूंजानणेहारेमहात्मापुरुषोंने ताअद्वितीयआत्माविषे मायाकल्पना करीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपदार्थ जिसपदार्थतैंविना नहींसिद्धहोइसकै ॥ सोपदार्थ तापदार्थकीकल्पनाकरावैहै ॥जैसे दिनविषे भोजनकूं न करणेहारेपुरुषविषेजोस्थूलताहै ॥ सोस्थूलता रात्रिभोजनतैंविनासंभवैनहीं यातैं सोस्थूलता तापुरुषकेरात्रिभोजनकूंकल्पनाकरावैहै॥तैसे अकर्ता अभोक्ता शुद्धआत्माविषे मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं याप्रकार जोभोक्तापणेकाअध्यासहै ॥ सोअध्यास मायातैंविनासंभवैनहीं ॥ यातैं सोअध्यास शुद्धआत्माविषे मायाकीकल्पनाकरावैहै ॥ इसप्रकार अर्थापत्तिरूपप्रमाणकरिकै सिद्धभयीजोमाया ताके दोस्वभावहैं ॥ एक तो आवरणशक्तिरूपस्वभावहै ॥ और दूसरा विक्षेपशक्तिरूपस्वभावहै ॥ तहाँ मायाकाआवरणशक्तिरूपस्वभाव जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थाविषेविद्यमानहै ॥ जबपर्यंत आनन्दस्वरूपआत्माकासाक्षात्कार पुरुषकूंनहींहोता ॥ तबपर्यंत मायाकीआवरणशक्तिनिवृत्ति होवैनहीं ॥ किंतु अद्वितीयआत्माकेज्ञानतैंही मायाकेआवरणशक्तिकानाशहोवैहै ॥ और मायाका दूसराजोविक्षेपशक्तिरूपस्वभावहै ॥ सो दोप्रकारकाहै ॥ एक जाग्रत्रूपहै ॥ और दूसरा स्वप्नरूपहै ॥ तहाँ जिसअवस्थाविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै बाह्यघटपटादिकस्थूलपदार्थोंकाज्ञानहोवै ताअवस्थाकूं जाग्रत्कहैहैं ॥ और जिसअवस्थाविषे पूर्वसंस्कारोंकूंग्रहणकरिकै केवलमनतैंही ज्ञानउत्पन्नहोवैहै ताअवस्थाकूं स्वप्नकहैहैं ॥ यह जाग्रत् तथास्वप्न दोनों विक्षेपरूपहैं ॥ यातैं हे बालाकि जैसे जाग्रत्विषे सुखकीप्राप्तिकरिकै तथादुःखकीप्राप्तिकरिकै मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं यहभोगरूपअतिशयता पुरुषोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नविषेभी सुखदुःखकीप्राप्तिकरिकै मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं यह भोगरूपअतिशयता पुरुषोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ और स्वप्नविषे भोगरूपअतिशयताका जोआधारहै॥ सोईही जाग्रत्विषे भोगरूपअतिशय

ताका आधारहै ॥ तहाँ स्वप्नविषे सुखदुःखजन्यभोगकाआधार केवलमनहीं है ॥ मनतैंभिन्नकोईभी स्वप्नविषेभोगकाआधारनहीं ॥ काहेतैं नेत्रादिकइंद्रियोंकातौ स्वप्नविषेलयहोवैहै ॥ यातैं इंद्रियोंविषेभी भोगकीआधारतासंभवैनहीं ॥ और यद्यपि प्राण तथाशुद्धआत्मा स्वप्नविषेभीहै ॥ तथापितिनोंविषे भोगकीआधारतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं प्राणतौजडहै ॥ यातैं भोगकीआधारता प्राणविषेसंभवैनहीं ॥ और शुद्ध आत्मा असंगहै ॥ यातैं ताकेविषेभी भोगकीआधारतासंभवैनहीं॥इसप्रकार स्वप्नविषे इंद्रियादिकोंविषे भोगकीआधारतासंभवैनहीं॥परिशेषतैं मनहीं स्वप्नविषे सुखदुःखजन्यभोगकाआश्रयहै ॥ जभी स्वप्नविषे भोगकाआधार मनअंगीकारकऱ्या ॥ तभी जाग्रत्अवस्थाविषेभी तिसीमनकूंहीं सुखदुःखकेभोगकाआश्रय मान्याचाहिये ॥ किंवा ॥ जो स्वप्नकेभोगकाआधारतौ मनअंगीकारकरिये ॥ और जाग्रत्केभोगकाआधार मनतैंभिन्नकोईदूसरा अंगीकारकरिये तौ स्वप्नतैंअनंतरजाग्रत्विषे पुरुषकूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहै ॥ जोमैं स्वप्नविषेराजकेसुखकूंअनुभवकरताभया सोईहीमैं अब जाग्रत्विषे एकांतकेसुखकूंअनुभवकरताहूं ॥ यहप्रत्यभिज्ञाज्ञान स्वप्नभोक्ताके तथा जाग्रत्भोक्ताके अभेदकूंविषयकरैहै ॥ सोप्रत्यभिज्ञाज्ञान असंगतहोवैगा ॥ यातैं स्वप्नका तथाजाग्रत्का एकहीमनरूपभोक्ता मान्याचाहिये ॥ शंका हेभगवन् जैसे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंतैं प्राणोंकोउत्पत्तिभयीहै यातैंप्राणजडहैं ॥ तैसे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंतैं मनकोभीउत्पत्तिभयीहै यातैंमनभीजडहै ॥ जडप्राणोंविषे भोगकीआधारता जैसे पूर्वआपनेखंडनकरी ॥ तैसे जडमनविषेभी भोगकीआधारतासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेबालकि यद्यपि प्राणोंकीन्याई मनभीअचेतनहै ॥ तथापि प्राणोंतैंमनविषेविशेषताहै ॥ काहेतैं आकाशादिकपंचभूतोंकेमिश्रितसत्वगुणतैं अंतःकरणकीउत्पत्तिभयीहै ॥ यातैं मनप्रकाशकहै और आकाशादिकपंचभूतोंकेमिश्रितरजोगुणतैं प्राणकोउत्पत्तिभयीहै ॥ यातैं प्राण प्रकाशकनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे प्रदीप तथाघट दोनोंविषे जडताधर्मसमानहै ॥ तौभी प्रदीपकरिकेही घटकाप्रकाशहोवैहै ॥ घटकरिके प्रदीपकाप्रकाशहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जडमनकूं जोप्रकाशकमानोंगे ॥ तौप्रदीपादिकोंकीन्याईं मनविषे बाह्यपणासिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेबालकि मनकाजोवृत्तिरूपप्रकाशहै ॥ सो स्वतंत्रकिसीपदार्थकूंप्रकाशतानहीं ॥ किंतु चेत

नआत्माकेआभासकीअपेक्षाकरिकेही पदार्थोंकूंप्रकाशेहै ॥ और तिसचेतनआत्माकेआभासकूंग्रहणकरिके सोमनकीवृत्तिरूपप्रकाश आपणेजडभावकूंपरित्यागकरेहै ॥ किंवा ॥ नानाप्रकारकेज्ञानवाला अंतःकरणहै यहजोशास्त्रविषेकहाहै ॥ सोभी चेतनकी अपेक्षाकरिके ही नानाप्रकारकेज्ञानवाला अंतःकरणसंभवेहै ॥ तात्पर्ययह जोअंतःकरण स्वभावतैंहीचेतनहोवे ॥ तौ एकप्रकारकाहीज्ञान सर्वदाहोणा चाहिये॥और सर्वदाएकप्रकारकाज्ञानहोवैनहीं॥ और अंतःकरणकूं जोचेतनकीअपेक्षामानिये॥तौ सर्वदाएकप्रकारकेज्ञानकीआप त्तिरूपदोष होवेनहीं ॥ काहेतैं जिसकालविषे इच्छादिकोंतैंविलक्षण चेतनकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेयोग्य अंतःकरणकीवृत्ति उत्पन्नभयीहै ॥ तिसीकालविषे सोज्ञानहै॥अन्यकालविषेसोज्ञाननहीं॥इसप्रकार नानाज्ञान अंतःकरणविषेसंभवेहै ॥ ऐसेअंतःकरणविषे अविद्याजन्यतादात्म्यअध्यासरूपसंबंध करिकेस्थितहुआ यहपरमात्मा विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवेहै॥और तिसअंतःकरणविषेस्थितहोइके यहआनंदस्वरूपआत्मा संपूर्णदेहादिकोंकूंप्रकाशकरेहै॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा पुरुषसंज्ञाकूंप्राप्तहोवेहै॥ऐसेआनंदस्वरूपआत्माविषे अंतःकरणकापरिणामरूपदुःख जैसे वास्तवतैंनहीं॥तैसेअंतःकरणकापरिणामरूपसुखभी वास्तवतैं आत्माविषेनहीं ॥ याकहणेतैं यह अनुमानसिद्धहोवेहै ॥ जन्यसुखजोहै सो आत्माविषेवतैंनहीं ॥ काहेतैं जडहोणेतैं तथापरिच्छिन्नहोणेतैं तथादृश्यहोणेतैं ॥ जोजो जडपरिच्छिन्न दृश्य वस्तु होवेहै॥सो आत्माविषेवास्तवतैंरहैनहीं ॥ जैसे जडपरिच्छिन्नदृश्यरूपदुःख आत्माविषे वास्तवतैंरहैनहीं॥किंवा॥ सुखदुःखकीन्याई सुखदुःखप्राप्तिकेसाधनभी जडपरिच्छिन्नदृश्यरूपहैं यातैं तेसाधनभी आत्माविषे वास्तवतैंरहेनहीं ॥ यातैं कार्यकारणभावतैंरहित स्वयंप्रकाश आत्माही विज्ञानमयभोक्ताका वास्तवस्वरूपहै ॥ याअर्थका बालाकिकेप्रति बोधकरणेवासते सोअजातशत्रुराजा याप्रकारकाविचार आपणेमनविषे करताभया॥याबालाकिने पूर्वहमारेउपदेशतैं यद्यपि प्राणोंतैंभिन्नकरिके विज्ञानमयभोक्ताआत्माकूंजान्याहै॥तथापि विज्ञानमयभोक्तामिथ्याहै ॥ यातैं ताकेज्ञानतैं बालाकिकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ किंतु शुद्धआत्माकेज्ञानतैं मोक्षहोवेहै ॥ यातैं आपणीप्रतिज्ञाके सत्यकरणेवासते याबालाकिकेताईं विज्ञानमयभोक्ताकेवास्तवस्वरूपकाउपदेश कऱ्याचाहिये ॥ याप्रकारकाविचारकरिके सो अजातशत्रु

राजा विज्ञानमयभोक्ताविषे प्रश्नोंकूंकरताभया ॥ अब तिनप्रश्नोंकूंदिखावैहैं ॥ हेबालाकि यासोयेहुएपुरुषकेउत्थानरूपव्यापारतैं तुमने
विज्ञानमयकूं प्राणतैंभिन्नकरिके तथाभोक्तारूपकरिके जान्याहै ॥ परंतु यहविज्ञानमयभोक्ता किसदेशविषेस्थितहुआ शयनकूंकरताभया
॥ १ ॥ और विज्ञानमयभोक्ताकेशयनका आधारकोनहै ॥ २ ॥ और यहविज्ञानमयभोक्ता किसदेशतेंउठिकरिके जाग्रत्‌अवस्थाविषेआया
है ॥ ३ ॥ इसप्रकार विज्ञानमयभोक्ताविषे तीनप्रश्नोंकूं राजाकरताभया ॥ अब लोकोंकेव्यवहारकूंग्रहणकरिके तिनप्रश्नोंकेपरस्परभेदकूंदि
खावैहैं ॥ लोकविषे शयनकरतापुरुष कदाचित् आपणेविषेस्थितहुआ शयनकूंकरैहै ॥ जैसे खडाहुआपुरुष आपणेआश्रितहुआ शयन
कूंकरैहै॥और कदाचित् आपणेतैंभिन्नसिहजाआदिकोंविषेस्थितहुआपुरुष शयनकूंकरैहै॥यातैं शयनकरतापुरुषकेआधारकानियमनहीं ॥
॥ शंका ॥ शयनकरतापुरुषकेआधारकाजोप्रथमप्रश्नहै सो यद्यपिसंभवैहै॥तथापि शयनकाआधारकोनहै यहदूसराप्रश्नसंभवैनहीं ॥काहेतैं
जोशयनकरतापुरुषकाआधारहोवैहै ॥ सोईही ताकेशयनकाभीआधारहोवैहै ॥ समाधान ॥ जोशयनकरतापुरुषकाआधारहोवैहै ॥ सोईही
ताकेशयनकाआधारहोवैहै ॥ यहलोकविषे नियमनहीं ॥ किंतु कहांतो शयनकरतापुरुषका तथाशयनकाएकही आधारहोवैहै ॥ जैसे
एकहीमंचकादिक शयनकर्तापुरुषका तथाताकेशयनका आधारहै ॥ और कहीं शयनकर्तापुरुषका तथाताकेशयनका भिन्नभिन्नआधा
रहोवैहै ॥ जैसे शयनकर्तापुरुषकाआधारतो मंचकादिकहैं ॥ और मंचकऊपरस्थितजोतूलकादिकहैं ॥ सो ताकेशयनकाआधारहै ॥
इसप्रकार शयनकर्तापुरुषकेआधारकूं तथाशयनकेआधारकूं लोकविषे भिन्नभिन्नमानैहैं ॥ यातैं प्रथमप्रश्नकरिके दूसराप्रश्न चरितार्थनहीं
किंतु भिन्नहीदूसराप्रश्नसंभवैहै ॥ शंका ॥ द्वितीयप्रश्नकूं प्रथमप्रश्नतैंभिन्नहुएभी तृतीयप्रश्नकूं द्वितीयप्रश्नतैंभिन्नतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं
जोशयनकाआधारहोवैहै ॥ सोईही शयनकरतापुरुषकेआगमनकी अवधिहोवैहै ॥ शयनकेआधारका जभी निश्चयहोवैगा॥तभीशयनकर्ता
पुरुषकेआगमनकेअवधिकाभी निश्चयहोइजावैगा ॥ यातैं तृतीयप्रश्नव्यर्थ है ॥ समाधान ॥ जो शयनकाआधारहोवैहै ॥ सोईही
शयनकर्तापुरुषकेआगमनकीअवधिहोवैहै ॥ यहनियमनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे शयनकेआधारतैंभिन्नभी आगमनकीअवधि

कहाँदिख्याहै ॥ जैसेमंचकऊपरसोयाहुआपुरुष मंचकतैंउठिकरिकैबाहरिआयाहै ॥ याप्रकार कोईलोक कहैंनहीं ॥ किंतु मंचकतैं उठिकरिके गृहविषेस्थितहोइके तागृहतैंबाहरआयाहै याप्रकार लोक कथनकरैंहैं ॥ याप्रकारकेलोकोंकेव्यवहारतैं शयनकेआधारमंचकतैं आगमनकाअवधिगृह भिन्नहीप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं द्वितीयप्रश्नकरिकै तृतीयप्रश्न चरितार्थनहीं ॥ किंतु द्वितीयप्रश्नतैंभिन्नही तृतीयप्रश्नसंभवैहै ॥ इसप्रकार सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेप्रति शयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताकेस्वरूपबोधनकरणेवासते तथास्वप्नसुषुप्तिरूपदोप्रकारशयनकेस्वरूपबोधनकरणेवासते तथादोप्रकारकेशयनकाआधारबोधनकरणेवासते तथाशयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताकेआगमनकीअवधिबोधनकरणेवासते बालाकिकेप्रति तीनप्रश्नोंकूं राजापूछताभया ॥ इसप्रकार गुह्यअर्थकेबोधनकरणेहारे जेराजाकेतीनप्रश्नहैं तिनोंकूंश्रवणकरिके सोबालाकि तिनप्रश्नोंकेउत्तरदेणेवासतै आपणेचित्तविषे बहुतवारविचार करताभया ॥ परंतुतिनराजाकेप्रश्नोंकेउत्तरकूं किंचित्मात्रभी सोबालाकि न जाणताभया इसप्रकार बालाकिकेअज्ञानकूंदेखिकरिकै सोअजातशत्रुराजा आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते तिनप्रश्नोंकेउत्तरकूंकहताभया ॥ कैसासोउत्तरहै बालाकिकेसर्वसंशयोंकूं निवारणकरणेहाराहै ॥ तहाँस्वप्नअवस्थाविषेविज्ञानमयभोक्ताकेस्वरूपकास्पष्टबोधकरणेवासते प्रथम स्वप्नसुषुप्तिरूपदोप्रकारकेस्वप्नकूंदिखावैहैं ॥ हेबालाकि याभोक्तापुरुषकाशयन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतो स्वप्नरूपशयनहोवैहै ॥ और दूसरा सुषुप्तिरूपशयनहोवैहै ॥ तहाँ प्रथमस्वप्नरूपशयनकूं तुम श्रवणकरो ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे यहआत्मा अंतः करणविषेजोचेतनकाआभास ताआभासरूपविज्ञानकरिकै नेत्रादिकइंद्रियोंकेताईं आपणेआपणेरूपादिकविषयोंकेग्रहणकरणेकीसामर्थ्यकूंदेवैहै ॥ याकारणतैं जाग्रत्अवस्थाविषे यहआत्मा चक्षुमय श्रोत्रमय इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं जाग्रत् अवस्थाविषे विज्ञानमयभोक्ताका स्पष्टभानहोवैनहीं ॥ और स्वप्नरूपशयनकेसन्मुखहुए सोविज्ञानमयभोक्ताआत्मा नेत्रादिकोंकेसामर्थ्यकूंउपसंहारकरिकै शयनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसस्वप्नकालविषे यहभोक्ताआत्माचक्षुमय श्रोत्रमय इत्यादिकनामोंकापरित्यागकरिकै केवलविज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ तिसस्वप्नअवस्थाविषे शयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताकास्वरूप नेत्रादिकइंद्रियोंतैंभिन्नहो

इके प्रतीतहोवैहै ॥ इसप्रकार शयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताकेस्वरूपकूंकहिकरिके अब ताकेआधारकूंदिखावैहैं ॥ हेवालाकि यहविज्ञानमयभोक्ताआत्मा स्वप्नविषे हितानामानाड़ियोंविषेस्थितहुआ शयनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा हृदयविषेस्थितहुआ यहविज्ञानमयभोक्ताआत्मा शयनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा पुरीतत्विषेस्थितहुआ यहभोक्ताआत्मा शयनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार भिन्नभिन्नश्रुतिवाक्योंकेअनुसार शयनकर्तापुरुषकेआधारकूंकहिकरिके अब हृदयकेस्वरूपकूं तथापुरीतत्केस्वरूपकूं तथाहितानामानाडियोंकेस्वरूपकूं स्पष्टकरिके दिखावैहैं ॥ तहाँ संपूर्णप्राणियोंका उदर तथाउरस्थान छिद्रकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ ताउदर तथाउरस्थानके मध्यदेशविषे नीचेंहैमुखजिसका तथाचित्तकेनिवासकास्थान ऐसाजोमांसमयकमलहै ताकूं हृदयकहैंहैं ॥ और तिसहृदयकूंचारोंओरतैंवेष्टनकरणेहाराजोसर्पाकार चर्महै ताकूंलोकविषेआंद्राकहैंहैं ताकानाम पुरीतत्है ॥ आपणेहृदयका तथापुरीतत्काज्ञान किसीभीप्राणीकूं नेत्रोंकरिकैहोवैनहीं ॥ किंतु अन्यकिसीप्राणीकेउदरकाभेदनहुए ताकेहृदयका तथापुरीतत्काज्ञान अन्यपुरुषकूं नेत्रोंकरिकैहोवैहै ॥ अबनाडियोंकूंदिखावैहैं ॥ सहस्रविभागकूंप्राप्तभयाजोएककेश ॥ ताकेशकेएकविभागका जितनापरिमाणहोवैहै ॥ तिसपरिमाणकेसमानहैपरिमाणजिनोंकाऐसियोंअनंतनाडियांहृदयदेशविषेरहैं हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सूत्रकरिकेरचितजोजालहै ॥ तिसकेप्रथमग्रन्थितैं अनंतसूत्रोंकानिर्गमनहोवैहै ॥ तैसे हृदयदेशतैं अनंतनाडियोंकानिर्गमनहोवैहै ॥ तहाँ प्रश्नउपनिषद्विषे जितनीनाड़ियोंकी संख्याकहीहै तिससंख्याकूं अबदिखावैहैं ॥ जैसे एकहीवृक्षतैं प्रथमस्थूलस्कंधनिकसैहैं ॥ तिनस्कंधोंतैं अन्ययत्किंचित्स्थूलशाखानिकसैहैं ॥ और तिनस्थूलशाखावोंतैं अत्यंतसूक्ष्मअन्यशाखानिकसैहैं ॥ तैसे हृदयरूपएकवृक्षतैं स्थूलस्कंधोंकेसमान एकउपरिशत १०१ नाडियांनिकसैहैं ॥ और तिनस्कंधरूपनाडियोंविषे एकएकनाडीतैं किंचित्स्थूलशाखाकेसमान एकएकशत १०० नाड़ियांनिकसैहैं ॥ और तिनएकएकशतसर्वनाडियोंविषे एकएकनाडीतैं अत्यंतन्यूनशाखाकेसमान बहत्तरिसहस्र ७२००० नाड़ियाँनिकसैहैं ॥ तिनसर्वनाडियोंकीमिलिकेइतनीसंख्याहोवैहै ॥ बहत्तरिकोटि बहत्तरिलक्ष दशसहस्र दोशत एक इतनीनाडियाँ हृदयरूपवृक्षतैं

निकसैंहैं ॥ और अन्नकापरिणामजोरसहै ॥ तारसकरिके तेसर्वनाडियों पूर्णहोवेंहैं ॥ तिनोंविषेभी कईकनाडियों पिंगलरसकरिकेपूर्णहैं ॥ और कईक शुक्लरसकरिकेपूर्णहैं॥और कईकनाडियां कृष्णरसकरिकेपूर्णहैं॥और केईक नाडियां पीतरसकरिकेपूर्णहैं॥और केईक नाडियां लोहितरसकरिकेपूर्णहैं ॥ ऐसेरसोंकीसूक्ष्मताकूंविचारिकरिकेभी हमारामन मोहकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोवस्तु जिसकेभीतर प्रवेशकरेहै ॥ सोवस्तु तिसकीअपेक्षाकरिकेसूक्ष्महोवेहै ॥ जैसे पुरुष आपणेगृहविषेप्रवेशकरेहै ॥ यातें गृहकीअपेक्षाकरिके पुरुष सूक्ष्म है ॥ तैसे प्रथमतो नाडियांहीं अत्यंतसूक्ष्महैं ॥ तिननाडियोंविषेभी जोअन्नकापरिणामरूपरसप्रवेशकरेहै ॥ तारसकीसूक्ष्मताविषे कोईभी दृष्टांत हम देखतेनहीं ॥ इसप्रकार हृदयदेशतैंनिर्गमनभयीओं जेसूक्ष्मनाडियांहैं ॥ ते पादतेंलेकरिकेमस्तकपर्यंत सर्वशरीरकूंव्याप्यकरिके रहेहैं दृष्टांत ॥ जैसे वृक्षकेपर्णोंकूं शंकु व्याप्यकरिकेरहेहै ॥ ऐसे सूक्ष्मनाडियोंविषे सर्वइंद्रियोंकाउपसंहारकरिके मन प्राप्तहोवेहै ॥ सोकेसामनहै ॥ धर्मअधर्मरूपपाशकरिकेबंध्याहुआहै ॥ और नानाप्रकारकेसंस्कारोंकरिकेयुक्तहै ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे द्रष्टा दर्शन दृश्य यात्रिपुटीरूपकरिके स्थितहोवेहै ॥ और साक्षीचेतनकरिकेप्रकाश्यमानहै ॥ ऐसा मन जभी नाडियोंविषेप्रवेशकरेहै ॥ तभी विज्ञानमयभोक्ताआत्मा आपणेमायाकेबलकरिके तथापूर्वपूर्वसंस्कारोंकीसहायतातें अनंतप्रकारकेपदार्थोंकूं तहांदेखेहै ॥ स्वप्नविषे कदाचित् भिक्षुकपुरुष महाराजाहोवेहै ॥ और कदाचित् महाराजाभी स्वप्नविषे भिक्षुकहोवेहै ॥ और स्वप्नविषे कदाचित् नीचजातिवाला चांडालभी उत्तमब्राह्मणहोवेहै ॥ और कदाचित् उत्तमब्राह्मणभी स्वप्नविषे चांडालहोवेहै ॥ और स्वप्नविषे कदाचित् हिरण्यगर्भभी स्थावर तथाग्रामशूकर तथाकृमि होवेहै ॥ और कदाचित् स्वप्नविषे स्थावर तथाग्रामशूकर तथाकृमिभी प्रजापतिहोवेहै ॥ इसप्रकार मायाकरिकेमोहितहुआदेहधारीजीवपुण्यपापकर्मकेअनुसार स्वप्नविषे उच्चशरीरोंकूं तथानीचशरीरोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ अब जाग्रत्के तथास्वप्नके समानताकूं दिखावेहैं ॥ देवाळाकि जैसे मायाकरिके स्वप्नविषे रथादिकपदार्थ प्रतीतहोवेहैं ॥ वास्तवतें तहां रथादिकपदार्थहैंनहीं ॥ जोस्वप्नकेपदार्थवास्तवहोवें ॥ तो जाग्रत्विषेभी प्रतीतहोणेचहिये ॥ और जाग्रत्विषे प्रतीतहोवेंनहीं ॥ यातें

स्वप्नकेपदार्थमिथ्याहैं ॥ तैसे जाग्रत्केपदार्थभी मायाकरिकेप्रतीतहोवैहैं वास्तवतैंहैं नहीं ॥ जो जाग्रत्केपदार्थ वास्तवतैंहोवैं ॥ तो समाधिकालविषेभी तत्त्ववेत्ताकूं प्रतीतहोणेचाहिये ॥ और समाधिकालविषे तत्त्ववेत्ताकूं पदार्थ प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं स्वप्नकी न्याई जाग्रत्केपदार्थभी मिथ्याहैं ॥ किंवा ॥ जैसे स्वप्नविषे आपणेआत्माकाअज्ञान जीवोंकूंहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्विषेभी जीवोंकूंआत्माकाअज्ञानहै ॥ यातैंभी जाग्रत्स्वप्नदोनोंतुल्यहैं ॥किंवा॥ जैसे स्वप्नविषे पदार्थोंकाविपरीतभानहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्विषेभीपदार्थोंकाविपरीतभानहोवैहै ॥ यातैं भी जाग्रत्स्वप्नदोनोंतुल्यहैं ॥ शंका ॥ जाग्रत्स्वप्नदोनोंकीतुल्यता संभवेनहीं ॥ काहेतैं स्वप्नकेपदार्थोंकी अल्पकालविषेस्थितिहोवैहै ॥ और जाग्रत्केपदार्थोंको दीर्घकालविषेस्थितिहोवैहै ॥ समाधान ॥ जैसे जाग्रत्विषे धन वस्त्र तृणादिक सकलजड़पदार्थ पार्थिवत्व रूपकरिकेप्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे स्वप्नविषेभी धनादिकपदार्थ पार्थिवत्वरूपकरिकेप्रतीतहोवैं हैं॥ और जैसे जाग्रत्विषे धनादिकजड़पदार्थ अस्तिरूपकरिकेप्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे स्वप्नविषेभी धनादिकजडपदार्थ अस्तिरूपकरिकेप्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं जाग्रत्स्वप्नदोनोंसमानहैं ॥ और जाग्रत्पदार्थोंविषे चिरकालस्थायित्व ॥ तथा स्वप्नपदार्थोंविषे अल्पकालस्थायित्व॥यहदोनोंविशेषधर्म अज्ञानकरिकेकल्पितहैं॥यातैं तिनकल्पितधर्मोंतैं जाग्रत्स्वप्नकेपदार्थोंकीविलक्षणता सिद्धहोवैनहीं॥किंवा जैसेस्वप्नअवस्थाविषेएकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष अज्ञानरचितनानाप्रकारकेपदार्थोंकूंदेखैहै ॥तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी एकही आनंदस्वरूपआत्मा अज्ञानरचितअनंतपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ यातैंभी जाग्रत्स्वप्नदोनोंसमानहैं ॥ इसप्रकार स्वप्नअवस्थाकानिरूपणकरिके पुनःसोअजातशत्रुराजा कहताभया ॥ हेबालाकि यास्वप्नअवस्थाविषे शयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताकास्वरूप स्पष्टकरिके हमनैंतुमारेप्रतिदिखाया ॥ सोविज्ञानमयभोक्ता प्राणतैंभिन्नहै ॥ काहेतैं जैसेराजाकीपुरीकीरक्षाकरणेहाराभृत्य राजातैंभिन्नहोवैहै॥ तैसे यहप्राणभी भृत्यकीन्याई स्थूलशरीररूपपुरीकीरक्षाकरैहै॥और विज्ञानमय भोक्ताआत्मा महाराजाकीन्याई प्राणादिकसकलजडपदार्थोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे प्रवर्तकरैहै ॥ यातैं ताविज्ञानमयभोक्तातैंप्राणभिन्नहै ॥किंवा॥जैसेमहाराजाआपणीपुरीकीरक्षावासतेकिसीप्रधानमंत्रीकूं तापुरीविषेस्थापनकरिके औरआपणीसेनाकूंलेकरिके किसीशिकारादिक

निमित्ततैं आपणे देशोंविषेविचरैहै॥तैसे यहविज्ञानमयभोक्ताभी स्थूलशरीररूपपुरीकीरक्षावासतैप्राणरूपप्रधानमंत्रीकूंस्थापनकरिकैमनस
हितसर्वइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै आपणीइच्छापूर्वक याकलेवरविषेभ्रमणकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अज्ञानरचितअनेकपदार्थोंकूंदेखेहै ॥ इसप्रकार
स्वप्नरूपप्रथमशयनकूंनिरूपणकरिकै ॥ अब सुषुप्तिरूपद्वितीयशयनकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेबालाकि इसप्रकार नाडीआदिकोंविषेविचरताहु
आसोमन जिसकालविषेआपणेकारणरूपअज्ञानविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहआत्मादेव परिपूर्णतारूपजोदूसरासुषुप्तिरूपशयन
है ताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ चेतनविषेजोपरिच्छिन्नताहै॥ सोवास्तवतैंनहीं ॥ किंतु परिच्छिन्नताउपाधिकेसंबंधतैं चेतनविषेपरिच्छि
न्नताहोवैहै ॥ यहां अंतःकरणविशिष्टचेतन्यकानाम विज्ञानमयभोक्ताहै ॥ सोअंतःकरण जाग्रत्‌विषे तथास्वप्नविषे रहेहै ॥ यातैं जाग्रत्‌विषे
तथास्वप्नविषे विज्ञानमयभोक्ताआत्माकीपरिच्छिन्नता निवृत्तिहोवैनहीं ॥ और सुषुप्तिविषे अंतःकरणकाअज्ञानविषेलयहोवैहै ॥ यातैं सो
विज्ञानमयभोक्ताआत्मापरिच्छिन्नभावकूंपरित्यागकरिकै सत्यपरमात्माकेसाथअभेदरूपपूर्णताकूं प्राप्तहोवैहै॥अब सुषुप्तिरूपद्वितीयशयन
केआधारकूंनिरूपणकरैंहैं ॥ सोविज्ञानमयभोक्तातिसनाडीरूपद्वारकरिकै हृदयकमलकेअंतरस्थित परमात्मारूपमहान्‌आकाशकूं प्राप्तहो
वैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ परिच्छिन्नभावकूंपरित्यागकरिकै मायाविशिष्टपरमात्माकेसाथअभेदरूपपरिपूर्णताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याकहणेकरिकै
विज्ञानमयभोक्ताकेद्वितीयशयनकाआधार मायाविशिष्टपरमात्मा दिखाया ॥ और तिसमायाविशिष्टपरमात्माविषेही नेत्रादिकसर्वइंद्रियों
करिकैसहितमनकालयहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ कारणविषेहीकार्यकालयहोवैहै यहनियमहै ॥ मायाविशिष्टपरमात्माही इंद्रियादिकसकल
प्रपंचकाउपादानकारणहै ॥ यातैं सुषुप्तिविषे तिसमायाविशिष्टपरमात्माविषे इंद्रियादिकोंकालय संभवेहै॥दृष्टांत जैसे समुद्रकाजलहीघनी
भूतहुआ लवणभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं समुद्रकाजल लवणकाकारणहै ॥ तिसकारणरूपसमुद्रकेजलविषे प्राप्तहुआलवणकापिंड लयभा
वकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे इंद्रियसहितमन परमात्मारूपकारणविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा ॥ जैसे पटविषेलिखेहुए
चित्रपटके संकोचकियेहुए लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे मनकेलयहुए मनकरिकैकल्पितसर्वपदार्थोंकालयहोवैहै ॥ तिसकालविषे सर्व कार्य

प्रपंचतैंरहितहुआ एकअद्वितीयपरमात्मा परिशेषतैंरहेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि कार्यप्रपंचकालयहोवैहे ॥ तथापि अज्ञानरूपकारण तहांविद्यमानहे ॥ यातैं सुषुप्तिविषे परमात्माकूं अद्वितीयरूपतासंभवेनहीं ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि अज्ञानहे ॥ तथापि ताअज्ञानका स्पष्टरूपकरिके तहांभानहोवैनहीं ॥ यातैं न हुएकेसमानहे ॥ अब याहीअर्थकूंलोकप्रसिद्धदृष्टांत करिकेस्पष्टकरैंहैं ॥ जैसे कोईयुवाअवस्थावान् कामीपुरुष चिरकालकेपीछेआपणेगृहविषेआवे ॥ और अत्यंतरूपवाली तथाषोडशवर्षके आयुष्वाली जोआपणीप्रियस्त्रीहे ॥ ताकेसाथआलिंगनकरिकेमाघमासविषे मंदिरविषेशयनकरे ॥ तिसकालविषे सोकामीपुरुष आनंद करिकेपरिपूर्णहुआ बाह्यपदार्थोंकूं तथाअंतरपदार्थोंकूं किंचित्मात्रभी नहींजाणता ॥ और तिसकालविषे आपणेकूं तथाप्रियस्त्रीकूं देखता हुआभी नहींदेखता ॥ तैसे यहविज्ञानमयभोक्ताभी सुषुप्तिविषे परमात्माकेसाथतादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके आपणेविषेस्थितमायाकूंभी नहींजाणता ॥ किंतु अज्ञानकीवृत्तियोंकरिके केवलआपणेस्वरूपआनंदकूंहीं अनुभवकरैहे ॥ याकारणतैं श्रुतिविषे ताकूं आनंदभुक्कह्या हे ॥ किंवा ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जभी यहविज्ञानमयभोक्ता विद्यमानमायाकूंभी नहींजाणता ॥ तभी लयभावकूंप्राप्तहुए जेमायाकेकार्य स्वप्नपदार्थ तथाजाग्रत्केपदार्थ तिनोंकूं कैसेजाणेगा ॥ किंतु किसीपदार्थकूंभी तहां नहींजाणता ॥ केवल आनंदकरिकेपरिपूर्णहोवैहे ॥ अब सुषुप्तिविषेदुःखकीनिवृत्तिकूं तथापरमानंदकीप्राप्तिकूं कुमार तथामहाराजा तथामहाब्राह्मण यातीनदृष्टांतोंकरिके निरूपणकरैंहैं ॥ अथकुमारदृष्टांत ॥ अन्नादिकोंकेभक्षणकरणेमेंअसमर्थ जोबालकहे ॥ तिसबालककूं माता गलपर्यंत दुग्धपानकराइके मत्कुणतथायूकादि कोंतैंरहित कोमलआसनऊपर शयनकरावैहे ॥ ताआसनविषेसोयाहुआ सोबालक परमआनंदकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और सुखतैंहँसैहे ॥ और आनंदकरिकेपरिपूर्णहुआसोबालक आपणेसमीपवर्तीमातापितादिकोंकूं देखताहुआभीनहींदेखैहे ॥ केवलआनंदकरिकेपरिपूर्णहोवैहे ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहविज्ञानमयभोक्ता परमआनंदकोप्राप्तिकरिके सर्वदुःखोंतैंरहितहोवैहे ॥ और तिसकालविषे आनंदकरिकेपरिपूर्णहुआ यहविज्ञानमयभोक्ता मायाकूंदेखताहुआभीनहींदेखैहे ॥ अब महाराजाकेदृष्टांतकूंदिखावैंहैं ॥ जैसे नानाप्रकारकेधनकरिकेपूर्ण

तथाशत्रुवोंतैंरहित जोसंपूर्णपृथ्वीहै ॥ तापृथ्वीकाराज जिसकूंप्राप्तहोवे ॥ और शरीरजिसकास्थूलहोवे ॥ और अत्यंतबलवान्होवे ॥
और युवाअवस्थाकरिकैयुक्तहोवे और सर्वरोगोंतैंरहिताजिसकाशरीरहोवे ॥ और रूपकरिकैयुक्तहोवे ॥ और हस्तपादादिक
अंगोंकीउज्वलतारूपलावण्यकरिकैयुक्तहोवे ॥ और जगत्विषेजिसकीकीर्तिहोवे ॥ और धर्मकरिकैसंपन्नहोवे ॥ और वेदोंकूं तथावे
दकेअंगोंकूं जानणेहाराहोवे ॥ और मनकेहरणकरणेहारियां जेअनंतस्त्रियांहैं तिनोंकरिकै सेवितहोवे ॥ और तिनस्त्रियोंकरिकै
गानकरेजेमधुरगीतहैं तथानानाप्रकारकेवादित्रोंकेजेशब्दहैं तिनोंकरिकैसेवितहोवे और ब्राह्मणोंके तथाचारणबंदीजनोंके जेजयशब्दहैं
तथाआशीर्वादहैं तिनोंकरिकै सेवितहोवे ॥ और पिताकेसमानगुणवाले तथापितामाताकेभक्त ऐसेजेअनेकपुत्रहैं तिनपुत्रोंकरिकैसेवितहो
वे ॥ इसप्रकारके सर्वगुणोंकरिकैसंपन्न जोमहाराजाहै ॥ सो सर्वभोगोंकीप्राप्तिकरिकै जैसे परमानंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहविज्ञानमयभोक्ता
सुषुप्तिविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे सोमहाराजा किंचित्मात्रभी दुःखकूंनहींजानता ॥ तैसे यहविज्ञानमयभोक्ता सुषुप्तिविषे
किंचित्मात्रभी दुःखकूंनहींजानता ॥ तात्पर्ययह ॥ इच्छाकेविषय जेस्त्रीधनादिकपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंकी जब नहीं प्राप्तिहोवैहै ॥ तब
ताइच्छातैंअनंतदुःखोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिनदुःखोंसेनिवृत्तिकेदोउपायहैं ॥ एकतो तिनस्त्रीधनादिकपदार्थोंकीप्राप्ति तिनदुःखोंकेनिवृत्तिका
उपायहै ॥ और दूसरीइच्छाकीनिवृत्ति तिनदुःखोंकीनिवृत्तिकाउपायहै ॥ तहाँ महाराजारूपदृष्टांतविषेतो सर्वपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै दुःखों
काअभावहै ॥ और सुषुप्तिमेंविज्ञानमयभोक्ताविषेतो इच्छादिकसर्वविक्षेपकीनिवृत्तितैं सर्वदुःखोंकाअभावहै ॥ अब महाब्राह्मणरूपदृष्टांत
कूंनिरूपणकरैहैं ॥ तहाँ प्रथम महाब्राह्मणकेस्वरूपकूंदिखावैहैं ॥ नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकूं तथाअंतरमनादिकोंकूं जिसनेवशकऱ्याहै ॥ और
सर्वइच्छावोंकाजिसनेपरित्यागकऱ्याहै॥और यथालाभविषे जोसंतोषवालाहै॥और शरीरकरिकैतथामनकरिकै तथावाणीकरिकै दुष्टजनोंनें
कऱ्याजोअपकार तिसअपकारकूंजाणताहुआभी जोपुरुष याप्रकारकामनविषेविचारकरिकै तिनदुष्टपुरुषोंकेसाथ द्वेषकूंनहींकरैहै ॥उलटा
तिनोंऊपर उपकारकूंकरैहै ॥ अब ताकेविचारकूंदिखावैहैं ॥ जोदुःख तथाअपमानादिक आपणेकूंप्रतिकूलहोवैहै ॥ तिसदुःखकूं तथाअपमा

नादिकोंकूं जोपुरुष शरीरकरिके तथामनवाणीकरिके अन्यकिसीप्राणीविषेकरैहै ॥ सोदुःख तथाअपमानादिक करणेहारेपुरुषकूंहीं इसलोक विषे तथापरलोकविषे प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार आपणेकूंअनुकूलजोसुखहै तिससुखकीप्राप्ति जोपुरुष अन्यप्राणीविषेकरैहै ॥ तिसकरणे हारेपुरुषकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे तासुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं पुरुषनें किसीप्राणीकेदुःखकीइच्छानहींकरणी ॥ किंतु सर्वप्राणि योंकेसुखकीइच्छाकरणी ॥ याप्रकारकाविचारकरिके जोपुरुष किसीप्राणीकूंदुःख नहींदेवैहै ॥ किंतु सर्वप्राणियोंकूंसुखदेवैहै ॥ और सर्ववे दोंकेअर्थकूंजोजाणैहै ॥ और जोपरनिंदातैंरहितहै ॥ और आपणेदोषोंविषे सर्वदाजिसकीदृष्टिहै ॥ और दुष्टप्राणियोंकेसंगतैंजोरहितहै ॥ और आत्मातैंभिन्नसकलजगत्अनित्यहै॥और आत्माहीएकनित्यहै॥याप्रकारकेनित्यअनित्यविवेककरिके जोपुरुष सर्वदायुक्तहै॥और पूर्व पक्षतर्कविषेतथासिद्धांततर्कविषे जोपुरुष अतिकुशलहै ॥ और इसलोकविषे तथापरलोकविषे स्थित जेनानाप्रकारकेअन्नपानादिकपदार्थ तथामनोहरस्त्रियां तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचप्रकारकेविषय॥तिनसंपूर्णोंकूं वमनकरेहुएअन्नकीन्याईं देखताहुआजोपुरुष तिन विषयोंविषे इच्छानहींकरैहै॥और स्थूलशरीरका तथासूक्ष्मशरीरका अभिमानकरणेहारे जितनेप्राणीहैं॥तिनोंकूं पुण्यपापकेवशतैं सुखकी प्राप्ति तथादुःखकीप्राप्ति अवश्यहोवैहै ॥ याप्रकारकीदोषदृष्टिकरिके जोपुरुष स्थूलसूक्ष्मशरीरतैंमुक्तहोणेकीइच्छाकरैहै ॥ और जोपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमका अथवा गृहस्थआश्रमका अथवा वानप्रस्थआश्रमका परित्यागकरिके तथाविधिपूर्वकशिखासूत्रकापरित्यागकरिकेदंडा दिकग्रहणपूर्वक संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिके आत्मज्ञानकीप्राप्तिवास्ते श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीप जावैहै ॥ और गुरुकेमुखारविंदतैं उच्चारणहुएजेवेदोंकेवचन तिनवचनोंका अद्वितीयब्रह्मविषेतात्पर्यकानिश्चयरूपश्रवणकूंकरिके तथाश्रवणकरेहुएअर्थविषे नानाप्रकारकी युक्तियोंकरिकेविरोधकापरिहाररूपमननकूंकरिके तथाताअर्थविषेचित्तकीएकाग्रतारूपनिदिध्यासनकूंकरिके जोपुरुष मैंब्रह्महूं याप्रकारके साक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार इंद्रियोंकेनिग्रहतैं आदिलेके तत्त्वसाक्षात्कारपर्यंत कथनकरेजेशुभगुण तिनशुभगुणोंकरिके युक्त जोपुरुषहै ताकूं महाब्राह्मणकहैहैं ॥ ऐसामहाब्राह्मण जैसे रागद्वेषादिकोंतैंरहितहुआ परमआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्ति

अवस्थाविषे यहविज्ञानमयभोक्ता परमआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे याप्रकारकेमहाब्राह्मणविषे अनर्थकेकरणेहारेरागद्वेषादिक नहींरहैहैं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्था विषे याविज्ञानमयभोक्ताविषेभी अनर्थकेकरणेहारेरागद्वेषादिक नहींरहैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ रागद्वेषादिक सकलधर्म अंतःकरणकेहैं ॥ सोअंतःकरण सुषुप्तिविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ताकेधर्मरागद्वेषादिक सुषुप्तिविषेहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जिनपदार्थोंविषे सुखसाधनताज्ञानहोवैहै ॥ तिनपदार्थोंविषे रागहोवैहै ॥ सुखसाधनताज्ञानतैंविना रागहोवैनहीं ॥ यातैं सुखसाधनताज्ञान रागकाकारणहै ॥ और जिनपदार्थोंविषे दुःखसाधनताज्ञानहोवैहै ॥ तिनपदार्थोंविषे द्वेषहोवैहै ॥ दुःखसाधनताज्ञानतैंविना द्वेषहोवैनहीं ॥ यातैं दुःखसाधनताज्ञान द्वेषकाकारणहै ॥ सोसुखसाधनताज्ञान तथादुःखसाधनताज्ञान किसीपदार्थविषे तत्ववेत्तामहाब्राह्मणकूंहैनहीं ॥ काहेतैं अद्वितीयआत्मातैंभिन्नसकलप्रपंचकूं जिसने शशशृंगकी न्याई असत्यजान्याहै ॥ असत्यवस्तुविषे सुखकीसाधनता तथादुःखकी साधनता संभवैनहीं ॥ यातैं पूर्वउक्तमहाब्राह्मणविषे रागद्वेषसंभवैनहीं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेभी अंतःकरणकेलयहुए सुखसाधनताज्ञान तथादुःखसाधनताज्ञान किसीपदार्थविषे सुषुप्तपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातैं ताकेविषेभी रागद्वेषकाअभाव संभवैहै ॥ इसप्रकार सुषुप्तिरूप द्वितीयशयनकानिरूपणकरिके पुनःसोअजातशत्रुराजा कहताभया ॥ हेबालाकि शयनकर्तापुरुषकाकोनआधारहै याप्रथमप्रश्नका तथाशयनकाकोनआधारहै याद्वितीयप्रश्नका यहउत्तर हमनें कह्या ॥ परमात्मारूपआकाशही शयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताका तथासु षुप्तिरूपशयनका आधारहै ॥ तिसपरमात्मातैंभिन्नकोईभी तिनोंकाआधारनहीं ॥ और हेबालाकि विज्ञानमयभोक्ताका जोपरमात्मा केसाथअभेदहै ॥ तथा अंतःकरणादिकोंकाजोताकेविषेलयहै ॥ यहही शयनकास्वरूपहै ॥ और जैसे घटाकाश महाकाशतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु घटाकाश महाकाशस्वरूपहै ॥ तैसे हमनें तुमारेताईं कथनकऱ्याजोविज्ञानमयभोक्ता सो परमात्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु परमा त्मास्वरूपहै ॥ और सोपरमात्माही सर्वप्राणियोंविषे व्याप्यकरिकेप्रकाशकरेहै ॥ याकारणतैंहीं श्रुतिविषे तापरमात्माकूं आकाश कह्याहै ॥ और हेबालाकि जैसे घटमठादिकअनेकउपाधियोंविषे स्थितहुआभीआकाश सर्वत्रआकाशरूपकरिके प्रतीतहोवैहै ॥

याकारणतें आकाश एकहै तैसे तुमाराआत्मा तथाहमाराआत्मा तथाअन्यकिसीप्राणीकाआत्मा मैंआपणेस्वरूपकूंनहींजाणता तथाअन्यकूंमैंनहींजाणता याप्रकार अज्ञानकाआश्रयरूपहुआप्रतीतहोवैहै ॥ और मैंसुखपूर्वकशयनकरताभया याप्रकारसुषुप्तिकासाक्षीरूपकरिकेप्रतीतहोवैहै ॥ यातें सर्वप्राणियोंविषे एकआत्मा अनुगतहै ॥ और हेवालाकि यद्यपि जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषेभी आत्माकीवास्तवतें एकरूपताहीहै॥तथापि जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे अंतःकरणकरिकेंविशिष्टहुआआत्मा विज्ञानमयभावकूंप्राप्तहोवैहै यातें सोविज्ञानमयभावही जाग्रत्स्वप्नविषे आत्माकेभेदकाकारणहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे आपणेकार्यसहितअंतःकरणका अज्ञानविषेलयहोवैहै॥यातें सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माकाभेदहोवैनहीं ॥ दृष्टांत॥ जैसेघटमठादिरूपउपाधियोंकेविद्यमानहुएही आकाशकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ और घटमठादिकउपाधियोंकेनाशहुए आकाशविषेभेद प्रतीत होवैनहीं ॥ तैसे अंतःकरण तथावाक्आदिक इंद्रिय जाग्रत्स्वप्नविषे आत्माकेभेदकरणेहारेहैं॥ तेमनसहितसर्ववाक्आदिकइंद्रिय सुषुप्तिअवस्थाविषेपरमात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥ यातें सुषुप्तिअवस्थाविषे एक अद्वितीयपरमात्मारेहैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि अंतःकरणादिककार्यनहींहैं ॥ तथापि कारणरूपअज्ञान तहांविद्यमानहै ॥ यातें अज्ञानरूपउपाधिकेवशतें आत्माकाभेद सुषुप्तिविषेभीसंभवैहै ॥ समाधान ॥ अज्ञानके दोस्वरूपहैं ॥ एकतो आवरणस्वरूप ॥ और दूसरा विक्षेपस्वरूप ॥ तहांआवरणस्वरूपअज्ञानविषे भेदकीजनकताहै ॥ अथवा विक्षेपस्वरूपअज्ञानविषे भेदकीजनकताहै ॥ तहां आवरणरूपतेंअज्ञानविषेभेदकीकारणताहै ॥ यहप्रथमपक्षतोसंभवैनहीं ॥ काहेतें सुषुप्तिविषे आत्माकूंआवरणकरणेहाराअज्ञानतो विद्यमानहै ॥ परंतु सो अज्ञान तहां आत्माकेभेदकूंउत्पन्न करैनहीं ॥ यातें आवरणस्वरूपअज्ञानविषे आत्माकेभेदकीकारणता संभवैनहीं ॥ और सुषुप्तिविषे विक्षेपस्वरूपअज्ञान आत्माकेभेदकाकारणहै यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतें विक्षेप दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतो जाग्रत्रूप ॥ और दूसरास्वप्नरूप ॥ यहदोनोंप्रकारका कार्यरूपविक्षेप सुषुप्तिविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें विक्षेपरूपअज्ञानभी आत्माकेभेदकूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंदृष्टांतकरिकेस्पष्टकरैहैं ॥ जैसे वर्षाकालकी

अँधेरीरात्रिविषे संपूर्णमेघादिक अन्धकारविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाकेप्राप्तहुए आत्माके अज्ञानविषे सर्वकार्य प्रपंच लयभावकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जैसें सूर्यभगवान्केउदयकरिके तिसअन्धकारकेतिरस्कारहुए पुनःतेमेघादिक तिसीअन्धकारतें प्रगटहोवैंहैं ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमात्मातें पुनःकर्मोंकेवशतें जाग्रत् उत्पन्नहोवैहे ॥ तात्पर्ययह ॥ जभीतो जाग्रत्प्रपंचकेभोगदेणेहारेपुण्यपापरूपकर्मोंका उद्भवहोवैहे ॥ तभी मायाविशिष्टपरमात्मातें जाग्रत्प्रपंचकीउत्पत्तिहोवैहे ॥ और जभी स्वप्नकेभोगदेणेहारेपुण्यपाप रूपकर्मोंकाउद्भवहोवैहे ॥ तभी तापरमात्मातें स्वप्नप्रपंचकीउत्पत्तिहोवैहे ॥ यातें हेवालाकि जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकी प्राप्तिविषे नियमनहीं ॥ किंतु आपणेस्वरूपकेअज्ञानतें यहपरमात्मादेव कर्मोंके वशतें कदाचित् स्वप्नअवस्थातेंअनंतर जाग्रत्अवस्थाकूं प्राप्तहोवैहे ॥ और कदाचित् सुषुप्तिअवस्थातेंअनंतर जाग्रत्कूंप्राप्तहोवैहे ॥ और कदाचित् जाग्रत्अवस्थातेंअनंतर स्वप्नकूं प्राप्तहोवैहे और कदाचित् जाग्रत्अवस्थातेंअनंतर सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और कदाचित् स्वप्नअवस्थातेंअनंतर सुषुप्तिअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहे ॥ इसप्रकार कर्मोंकेअधीनहुआ यहजीवात्मा सर्वशरीरोंविषे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिरूप तीनअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैहे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे बालकोंनि यष्टिकरिकेआकाशविषेचलायाहुआकंदुक चारोंदिशावोंविषे तथाभूमिविषे तथाआकाशविषे निरंतर भ्रमणकरैहै तैसे पूर्वकरेहुएशुभअशुभकर्मोंकेवशतें यहपरमात्मादेव कभी जाग्रत्कूंप्राप्तहोवैहे॥और कभी स्वप्नकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और कभी सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैहे ॥ इसप्रकार निरंतरभ्रमणकरैहै ॥ और जैसे वायुकरिकेचलायेहुएतूलकी कदाचित्भी स्थितिहोवैनहीं ॥ तैसे कर्मरूपवायुकेवशतें याशरीरविषे जाग्रत्आदिकअवस्थावोंकाप्रवाह कदाचित्भी स्थिरहोवैनहीं किंतु निरंतरही जाग्रत्आदिकअवस्थावोंकाप्रवाह चलाजावैहे ॥ और जैसे आकाशविषे संपूर्णमेघमंडलकूं वायुभ्रमणकरावैहे ॥ तैसे कर्मरूपवायुभी देहादिकप्रपंचकूं भ्रमणकरावैहे ॥ और जैसे जलोंकाप्रवाह सूकेकाष्ठकूं कदाचित्उच्चस्थानविषेगेडेहे ॥ और कदाचित् नीचस्थानविषेगेडेहे ॥ तैसे पुण्यपापरूपकर्मकेवशतें यहजीवात्मा कभी देवशरीरकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और कभी मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और कभी कृमिशरीरकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और कभी वृक्षादिकस्था

चरशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जभी पुण्यकर्मकीअधिकताहोवैहै ॥ तभीतो देवभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥और जभी पुण्यपापकीसमानता होवैहै ॥ तभी मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जभी पापकर्मोंकीअधिकताहोवैहै ॥ तभी कृमिआदिकशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार कर्मकेवशतैंयहजीव नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और देवतावोंतैंआदिलेके कृमिपर्यंत सर्वशरीरोंविषे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीन अवस्थावोंकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ जाग्रतआदिकतीनअवस्थावोंतैंरहित कोईभीप्राणीनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् मनुष्यादिकोंविषे यद्यपि तीनअवस्थासंभवैहैं ॥ तथापि देवतावोंविषे तीनअवस्थासंभवैनहीं ॥ काहेतैं शास्त्रविषे देवतावोंकूं अस्वप्नकह्याहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्था देवतावोंविषेसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवालाकि देवतावोंकूं जोअस्वप्नकह्याहै ॥ सोदेवतावोंविषे स्वप्नअवस्थानहींहोती याअभिप्रायतैंनहीं कह्या ॥ किंतु देवतावोंविषे सत्वगुणकीप्रधानताहै ॥ यातैं मनुष्योंकीन्याई क्षणक्षणविषे देवतावोंकूंस्वप्नहोवैनहीं ॥ किंतु देवतावोंविषे अल्पस्वप्नहोवैहै ॥ याअभिप्रायतैंही शास्त्रविषे देवतावोंकूंअस्वप्नकह्याहै ॥ जोसर्वथा देवतावोंविषे स्वप्नका अभाव अंगीकारकरिये ॥ तो सर्वदेवतावोंविषेमुख्यविष्णुभगवान् शेषनागकीसिहजाऊपरशयनकरैहै यहशास्त्रकाकहणा असंगतहोवैगा ॥ यातैं देवतावोंतैंआदिलेकेसर्व प्राणी जाग्रत्आदिकतीनअवस्थावोंकरिकेयुक्तहैं यहसिद्धभया ॥ यातैं हेवालाकि सुषुप्तिअवस्थाविषे सत्यपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूं प्राप्तहुआ विज्ञानमयभोक्ता कर्मोंकेवशतैंजाग्रत्आदिकअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् अन्यउपनिषदोंविषे यद्यपि सुषुप्तिविषेमायाविशिष्टपरमात्माविषे अंतःकरणादिकोंकालय कथनकऱ्याहै ॥ तथापि याकौषीतकीउपनिषद्विषे प्राणविषेही सर्ववाकआ दिकइंद्रियसहितअंतःकरणकालय कथनकऱ्याहै ॥ यातैं श्रुतियोंका परस्परविरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ सुषुप्तितैंउत्थानकूंप्राप्तहुआ यहपु रुष जाग्रत्विषे याप्रकारकास्मरण करैहै ॥मैं कछुनहींजाणताभया॥ यापुरुषकेस्मरणरूपअभिप्रायकरिकेतो मायाविशिष्टपरमात्माविषेही सकलवाक्आदिकोंकालय सिद्धहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राणोंकेलयकूं लोक अंगीकारकरैंनहीं ॥ किंतु प्राणकूंछोडिके अन्यस र्ववाक्आदिकोंकेलयकूं सुषुप्तिअवस्थाविषेलोक अंगीकारकरैहैं ॥ यातैं लोकोंकेअभिप्रायकूंअंगीकारकरिके श्रुतिनें प्राणविषे वाकआदिक

इंद्रियोंकालय कथनकऱ्याहे ॥ यातैंप्राणशब्दकोलक्षणावृत्तिकरिके मायाविशिष्टपरमात्माकाही ग्रहणकरणा ॥ याप्रकारतें दोनोंश्रुतियों काविरोधहोवेनहीं ॥यातें हेवालाकि सुषुप्तिअवस्थाविषे परमात्मास्वरूपप्राणविषेही स्थूलसूक्ष्मरूपसर्वप्रपंच लयभावकूंप्राप्तहोवेहै॥काहेतें जोसुषुप्तिअवस्थाविषे मनसहितवाक्आदिकइंद्रिय लयभावकूंनहींप्राप्तहोते ॥ तो जाग्रत्कीन्याई सुषुप्तिविषेभी तिनवाक्आदिकोंकीप्रती तहोती ॥ और सुषुप्तिविषे मनसहित वाक्आदिक प्रतीतहोवेनहीं ॥ यातें वाक्आदिकोंकालयहीं सुषुप्तिविषेजान्याजावेहे ॥ और हेवा लाकि जैसे आधार आधेयभावसंबंधकरिके भूतलविषे घट प्राप्तहोवेहै ॥ तहीं भूतल आधारहै॥और घट आधेयहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहविज्ञानमय भोक्ता आधारआधेयभावसंबंधकरिके परमात्माकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ किंतु आधारआधेयभावतैंरहित केवलअभेद संबंधक रिके परमात्माकूंप्राप्तहोवेहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गृहाकाशविषेप्राप्तभयाघटाकाश घटकेनाशहुएतैंअनंतर गृहाकाशकेसाथ एकतारूप संबंधकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहविज्ञानमयभोक्ता अंतःकरणादिकउपाधियोंतैंरहितहुआ परमात्माकेसाथएकतारूप संबंधकूंप्राप्त होवेहै ॥ और हेवालाकि जैसे गृहाकाशका गमन तथाआगमन होवेनहीं ॥ किंतु घटाकाशकाही गृहविषे आगमनहोवेहै तथा गृहतें गमनहोवेहै ॥ तैसे हृदयदेशविषेस्थितपरमात्माका गमन तथाआगमन होवेनहीं ॥ और घटाकाशके समानविज्ञानमयभोक्ताकातो नित्यहीं सुषुप्तिविषे गमन तथाजाग्रत्विषेआगमन होवे ॥ और हेवालाकि वास्तवतैंविचारकरिये तो विज्ञानमयभोक्ताकेस्वरूपविषे भीगमनतथाआगमन संभवेनहीं ॥ किंतु अंतःकरणरूपउपाधिके गमन आगमनतैं विज्ञानमयविषे गमन आगमन प्रतीतहोवेहै ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेगमनआगमनतैं घटाकाशविषे गमन आगमन प्रतीतहोवेहै ॥ वास्तवतैं घटाकाशविषे गमन तथाआगमन नहीं ॥ और हेवालाकि यद्यपि यहपरमात्मादेव आकाशकीन्याई देहके अंतर तथाबाहरि सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि हृदयदेश विषेही परमात्माकाअंतर्यामीपणासिद्धहोवेहै ॥ अन्यत्र अंतर्यामीपणासिद्धहोवेनहीं ॥ याकारण तें हृदयदेशविषे परमात्माकी स्थितिकहीहै ॥ ऐसे अंतर्यामीपरमात्माकरिके साक्षात्प्रकाशितजोमनहै ॥ तिसमनविषे संपूर्णवाकादिकइंद्रियोंतैंविशेषताकूं

अबनिरूपणकरैंहैं ॥ सुखकेउपभोगवासते तथादुःखकेउपभोगवासते संपूर्णप्राणियोंकेशरीर उत्पन्नभयेहैं ॥ काहेतें शरीरतैंविना सुखदुः
खकाभोगहोवैनहीं ॥ और शब्दादिकविषयोंकेप्रकाशकूं उपभोगकहैहैं ॥ सोशब्दादिकविषयोंकाप्रकाश श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैंविना होवैनहीं
किंतु श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकेही शब्दादिकविषयोंकाप्रकाशहोवैहै ॥ और तिनसंपूर्णश्रोत्रादि कइंद्रियोंकानियामकमनहै ॥ काहेतें आपणे
आपणेशब्दादिकविषयोंकेसाथ श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधहुएभी जबपर्यंत मनकासंबंध श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेसाथ नहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत यह
श्रोत्रादिकइंद्रिय आपणेशब्दादिकविषयोंकूं जाणतेनहीं ॥ किंतु मनकेसंबंधहुएतैंअनंतरही श्रोत्रादिकइंद्रिय शब्दादिकविषयोंकूंजाणैं हैं ॥
यातें यहजान्याजावैहै ॥ संपूर्ण श्रोत्रादिकइंद्रिय मनकेअधीनहैं ॥ अबयाहीअर्थकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिके निरूपणकरैंहैं ॥ जैसे लोक
विषे काष्ठकरिकेरचित दशअश्व एकदीर्घकाष्ठविषेस्थितहोवैं हैं ॥ और तिसदीर्घकाष्ठकेमध्यछिद्रविषे नीचेहैमुखजाकाऐसीएकनलिकाहो
वैहै ॥ और तिनदशअश्वोंकेपादोंसाथबांधेहुएदशसूत्र तिस मध्यछिद्रद्वारा नलिकाविषेपरोयेहोवैं हैं ॥ और तिनसूत्रोंकूं पिता बालककेह
स्तविषेदेवैहै ॥ और सोबालक पिताकेअंकविषेस्थितहुआ तिनसूत्रोंकूंआकर्षणकरिके तिनअश्वोंकूं नानाप्रकारकीचेष्टाकरावैहै ॥ तैसे श
रीररूपदीर्घकाष्ठहै तिसविषे वाक्आदिकइंद्रियरूपदशअश्वहैं ॥ और प्राणवायुरूपसूत्रकरिके तेवाक्आदिकबांध्येहुएहैं ॥ और नाडीरूप
छिद्रद्वारा तेप्राणरूपसूत्र हृदयरूप नलिकाविषेपरोयेहैं॥और परमेश्वररूपपिताहै ॥ और मनरूपबालकहै॥तामनरूपबालककूं परमेश्वररू
पपिता आपणेहृदयकमलरूप गोदविषेबैठाइके प्राणवायुरूपसूत्रोंकूं ग्रहणकरावैहै ॥ तिनप्राणरूपसूत्रोंकूंग्रहणकरिके सोमनरूपबालक
वाक्आदिकइंद्रियरूप अश्वोंकूं तथाप्राण रूपसूत्रोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्त्तकरावैहै ॥ याकारणतें सर्ववाक्आदिकइंद्रियोंतें
बुद्धिविषेउत्कृष्टताहै ॥ अब दूसरीरीतितैंभी वाक्आदिकइंद्रियोंतैंबुद्धिविषे उत्कृष्टताकूंदिखावैंहैं ॥ जैसे सूर्यभगवान्काप्रकाश यद्यपि सर्व
पदार्थोंविषेसमानहै ॥ तथापि उपाधिकेवशतें तासूर्यकेप्रकाशविषेभेददेख्याहै ॥ जैसे ताम्रादिकधातुवोंकरिकेरचित जोकुशूलहै ॥
ताकेविषे सूर्यकेतेजकी अल्पअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ और तिसकुशूलतें स्वच्छदर्पणविषे सूर्यकेतेजकी अधिकअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ और

तिसदर्पणतैंभी कूपाणविषे सूर्यकेतेजकी अधिक अभिव्यक्तिहोवैहै ॥ और तिसकूपाणतैंभीमणिविषे सूर्यकेतेजकी अधिकअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ और तिनमणियोंतैंभी सूर्य्यकान्तमणिविषे सूर्यकीअधिकअभिव्यक्तिहोवैहै काहेतें कुशूलादिकउपाधियोंविषेस्थितहुआसूर्यकातेज दाहादिककार्यकूंकरैनहीं ॥ और सूर्यकांतमणिविषेस्थितहुआ सूर्यकाप्रकाश दाहादिककार्यकूंभीकरैहै ॥ यातें कुशूलादिकसर्व उपाधियोंतैं सूर्यकांतमणिविषे सूर्यकेतेजकी अधिक अभिव्यक्तिहोवैहै ॥ तैसे कुशूलकेसमान यास्थूलशरीरविषे तथादर्पणकेसमान प्राणविषे तथाकूपाणकेसमान कर्मइंद्रियोंविषे तथामणिकेसमान ज्ञानइंद्रियोंविषे तथासूर्यकांतमणिकेसमान बुद्धिविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा स्वभावतें यद्यपि एकरूपकरिकैहीस्थितहोवैहै ॥ तथापि बुद्धिरूपअंतःकरण अतिस्वच्छहै ॥ यातें ताअंतःकरणविषेस्थितहुआ यहआनंदस्वरूपआत्मा भोक्तासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै॥ अन्यशरीरादिकउपाधियोंविषेस्थितहुआआत्मा भोक्तासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे सूर्यभगवान् सूर्यकांतमणिविषेस्थितहोइके दाहादिककार्यकूंकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा अंतःकरणविषेस्थितहुआही कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपसंसारकूं तथालोकांतरविषे गमनागमनकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यद्यपि अल्पअंतःकरणविषे व्यापकआत्माकीस्थितिसंभवैनहीं ॥ तथापि जैसे अल्पदर्पण महान्पर्वतकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरैहै ॥ तैसे अल्पअंतःकरणभी अतिस्वच्छहोणेतैं आत्माकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरैहै ॥ यहहीं अंतःकरणविषे आत्माकीस्थितिहै ॥ किंवा ॥ सोअंतःकरण सर्वदाहृदयकमलरूपगृहविषेही निवासकरैहै ॥ और कदाचित् जाग्रत् अवस्थाविषे सो अंतःकरण नेत्रादिकस्थानविषेभी निवासकरैहै ॥ जिसकालविषे सुषुप्तिहोवैहै तिसकालविषेनेत्रादिकस्थानकूंछोडिकरिके सोअंतःकरण हृदयकमलरूपआपणेगृहविषे आवैहै ॥ ताअंतःकरणकेआगमनतैं विज्ञानमयभोक्ताभी हृदयदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्य यह ॥ चैतन्यविषे स्वभावतैंतो गमन तथाआगमन रूपक्रिया हैनहीं ॥ किंतु उपाधिके गमन तथाआगमनतैं चैतन्यआत्माविषे गमन तथा आगमन होवैहै ॥ सोअंतःकरण जाग्रत्अवस्थाविषे दक्षिणनेत्रादिकस्थानोंविषेरहैहै ॥ यातें विज्ञानमयभोक्ताभी तहाँरहैहै ॥ और सुषुप्तिकालविषे नेत्रादिकस्थानोंकूंछोडिकरिके सोअंतःकरण हृदयकमलरूपआपणेगृहविषे आवैहै ॥ यातें विज्ञानमयआत्माभी हृदयकमलकूं

प्राप्तहोवैहै ॥ किंवा ॥ जैसे पशु तथामनुष्य आपणेगृहकूंछोडिके अन्यदेशविषेजावैहैं ॥ तहाँ हानिकूं तथालाभकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ताहानिकूं भी लाभकेसमानमानिके तेपशु तथामनुष्य पुनःआपणेआपणेगृहविषेआवैहैं ॥ तैसे बुद्धिरूपअंतःकरणभी आपणेहृदयदेशरूपगृहकूंप रित्यागकरिके नेत्रादिकदेशविषेजावैहै ॥ तहाँ हानिकूं तथालाभकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ताहानिकूंभी लाभकेसमानमानिके सोअंतःकरण नेत्रादि कदेशतैं पुनःआपणेहृदयकमलरूपगृहविषेआवैहै ॥ और जैसे विदेशतैंआपणेगृहविषेप्राप्तहुएजीवोंकूं लाभकाविचारकरिके सुखकीप्राप्ति होवैहै ॥ और हानिकाविचारकरिके दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे नेत्रादिरूपविदेशकूंछोडिके हृदयकमलरूपआपणेगृहकूंप्राप्तहुई बुद्धि लाभकेविचारकूंकरिके सुखकूंअनुभवकरैहै ॥ और हानिकाविचारकरिके दुःखकूंअनुभवकरैहै ॥ एकहृदयकमलकूंछोडिके नख तैंलेकरिकेशिखापर्यंत संपूर्णशरीर तथानेत्रादिकइंद्रियोंसहितसंपूर्णगोलक तथापुरीतत् तथाशिर यहसंपूर्णस्थान बुद्धिका परदेशहै ॥ एक हृदयकमलही बुद्धिका आपणादेशहै ॥ किंवा ॥ जाग्रत्के तथास्वप्नके भोगदेणेहारेकर्मोंका जब क्षयहोवैहै ॥ तभी हृदयकमलकेमध्य वर्ति दहराकाशरूपपरमात्माविषेप्राप्तहुईसोबुद्धि आपणेकारणविषेमूर्च्छाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे अत्यंतमूर्च्छाकूंप्राप्तहुआजोपुरुषहै ॥ ति सकूं लोकविषे मृतकहुआकहैहैं ॥ तैसे सुषुप्तिविषे आपणेकारणविषेमूर्च्छाकूंप्राप्तहुईबुद्धिविषे लयव्यवहारहोवैहै ॥ और जैसे आकाशविषे प्राप्तहुआजो सूक्ष्मतूलहै ॥ तिसतूलका आकाशविषेलय लोक कथनकरैहैं ॥ तैसे हृदयकमलकेअंतर परमात्मारूपआकाशविषे प्राप्तहुई बुद्धिकूं लयनामकरिके वेद कथनकरैहै ॥ और जैसे पटकेसंकोचकियेतैं पटविषेस्थितचित्र लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे पित्तधातुकरिके हृदयकमलकेसंकोचरूपहेतुतैंभी बुद्धिविषे लयव्यवहारहोवैहै ॥ यातैं हेबालाकि सोविज्ञानमयभोक्तापुरुष सुषुप्तिअवस्थाविषे अंतःकरण रूपउपाधिकेलयहुए परमात्माकेसाथ अभेदरूपशयनकूंअनुभवकरिके पुनःसोविज्ञानमयआत्मा जाग्रत्केभोगदेणेहारेकर्मोंकेउदयहुए जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे ऊर्णनाभीजंतुविशेष अन्यसाधनोंकीअपेक्षातैंविनाही अनंततंतुवोंकूं आपणेतैंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे शयनतैंउत्थानकूंप्राप्तहुआ यहपरमात्मादेव प्राणादिकअनंतसृष्टिकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नि आपणेसमानरूपवा

लेअल्पकणोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तैसे शयनतैंउत्थानकूंप्राप्तहुआ यहआत्मदेवभी प्राणोंकूं तथाअंतःकरणकूं तथाज्ञानकर्मइंद्रियोंकूं तथा तिनइंद्रियोंकेनानाव्यापारोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और तिनवाक्‌आदिकइंद्रियोंतैं अग्निआदिकदेवता उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तिनअग्निआदिक देवतावोंतैं शब्दादिकविषय तथासंपूर्णलोक उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसप्रकार जाग्रत्‌अवस्थाविषे नित्यहीं वाक्‌आदिकइंद्रियोंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ तथा अग्निआदिकदेवतावोंकोउत्पत्तिहोवैहै ॥ तथा नामादिकविषयोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्था विषे नित्यहीं तिनवाक्‌आदिकइंद्रियोंकालयहोवैहै ॥ तथा अग्निआदिकदेवतावोंका तथानामादिकविषयोंका लयहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जाग्रत्‌विषे नित्यही वाकादिकोंकीउत्पत्ति ॥ और सुषुप्तिविषे नित्यही वाक्‌आदिकोंकालय यह आपनें कह्या ॥ याअर्थ विषे हमारानिश्चयहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवाला कि वेदभगवान्‌नें कथनकऱ्याजोअर्थहै ॥ ताअर्थविषे कदाचित्‌भी बुद्धिमानपुरुषोंनें अविश्वासनहींकरणा ॥ किंतु जिसअर्थकूं शास्त्रबोधनकरे ॥ सोईहोअर्थ बुद्धिमानपुरुषोंनें अंगीकारकरणेयोग्यहै ॥ काहेतें जेस्वर्गादिक पदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयनहींहोवैहैं ॥ तिनस्वर्गादिकअतिइंद्रियपदार्थोंविषे शास्त्रप्रमाणतैंहीं ज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ शास्त्रप्रमाणतैंभिन्न प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै तिनस्वर्गादिकपदार्थोंकाज्ञान होवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसअर्थविषे परस्परविरोधी दोप्रमाणोंकीप्रवृत्तिहोवै है ॥ तिसीअर्थविषे संशयहोवैहै ॥ सोयहां संभवैनहीं ॥ काहेतें वेदकरिकैबोधनकरेअर्थविषे किसीप्रत्यक्षादिकप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातें वेदकेअर्थविषे संशयकरणा बुद्धिमान्‌पुरुषकूं योग्यनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ शास्त्रप्रमाणनैंबोधनकरे जे स्वर्गादिक तथाइंद्रादिकदेवता तथाधर्मअधर्मरूपअदृष्ट ॥ इनसंपूर्णविषे प्रत्यक्षप्रमाणकाबाध सर्वलोकोंनें अनुभवकरीताहै ॥ काहेतें जोशा स्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकोंविषेभी प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहोतीहोवै॥तौ सर्वजीवोंकूं नेत्रादिरूपप्रत्यक्षप्रमाणतैंस्वर्गादिकोंकाप्रत्यक्षज्ञान होणा चाहिये ॥ और प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै जीवोंकूं स्वर्गादिकोंअनुभवहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोप्रत्यक्षप्रमाणकरिकै जीवोंकूंस्वर्गकाअनुभवहोता होवै ॥ तो स्वर्गनरकादिकोंविषे मूढपुरुषोंकापरस्परविवाद नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतें प्रत्यक्षप्रमाणकेविषय जेघटादिकपदार्थहैं ॥ तिनों

विषे कोईपुरुष विवादकरैनहीं ॥ और स्वर्गनरकादिकोंविषे तौ मूढपुरुषोंका बहुतप्रकारकाविवाद लोकविषेदेखीताहै ॥ केईपुरुषतौ या प्रकारकथनकरैंहैं ॥ स्वर्गनरकादिकहैंनहीं ॥ और केईमूढपुरुष याप्रकार कथनकरैंहैं ॥ इस मनुष्यलोकविषेही स्वर्गनरकहैं ॥ इसमनुष्य लोकतैंभिन्न कोईस्वर्गनरकहैंनहीं॥धनादिकपदार्थोंकरिकेयुक्तपुरुष स्वर्गसुखकूंभोगैंहैं॥निर्धनदरिद्रीपुरुष तथापशुआदिक नरकदुःखभोगैं हैं ॥ याप्रकार स्वर्गनरकादिकोंविषे मूढपुरुषविवादकूंकरैंहैं ॥ सो न होणाचाहिये ॥ यातैं प्रत्यक्षप्रमाणकरिके स्वर्गादिकोंकाअनुभव किसीजीवकूंहोवैनहीं ॥ यद्यपि शास्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकोंका योगीपुरुषकूं प्रत्यक्षहीज्ञानहोवैहै ॥ तथापि योगीपुरुषकाप्रत्यक्षप्रमाण शास्त्रप्रमाणकाविरोधीहोवैनहीं ॥ काहेतैं शास्त्रकेअनुकूलआचरणकरिकेही योगीपुरुषकाप्रत्यक्ष उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं सोयोगीकाप्रत्यक्ष प्रमाण पूर्वसिद्धशास्त्रप्रमाणरूपआपणेकारणकेसाथ विरोधकूंकरैनहीं ॥ यातैं शास्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकअर्थविषे प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहो वैनहीं ॥ यहसिद्धभया ॥ किंवा ॥ जैसे शास्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकअर्थविषे प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे अनुमानप्रमाणकीभी प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ काहेतैं प्रत्यक्षप्रमाणकीअपेक्षाकरिकेही पश्चात् ॥ अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपुरुषकूं पूर्वमहान सादिकोंविषे वारंवार धूमतथाअग्निकेसहचारदर्शनतैं धूम वह्निकाव्याप्यहै याप्रकारकाव्याप्तिज्ञान प्रत्यक्षप्रमाणतैं उत्पन्नभयाहै ॥ सोईही पुरुष पर्वतविषेधूमकूंदेखिके पूर्वव्याप्तिकास्मरणकरताहुआ पर्वतविषेअग्निकाअनुमानकरैहै ॥ यातैं प्रत्यक्षप्रमाण अनुमानप्रमाणकाकार णहै ॥ सोप्रत्यक्षप्रमाण पूर्वउक्तरीतितैं स्वर्गादिकपदार्थोंविषे प्रवर्तहोवैनहीं ॥ यातैं अनुमानप्रमाणभी स्वर्गादिकपदार्थोंकूं बोधनकरिसके नहीं ॥ किंवा ॥ जोप्रत्यक्षप्रमाणकीअपेक्षातैंविनाही अनुमानप्रमाण आपणेअर्थकूंबोधनकरैगा ॥ तौ अनुमानसंज्ञातैंही रहितहोवैगा ॥ काहेतैं अनुमान याशब्दविषे दोपदहैं ॥ एक अनुपदहै ॥ और दूसरा मानपदहै ॥ तहां अनुपदकाअर्थ पश्चात्‌है ॥ और मानपदकाअर्थ प्रमाणहै ॥ तादोनोंपदोंकामिलिके पश्चात्भाविप्रमाण यहअनुमानशब्दकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ याप्रकार अनुमानशब्दकेविचारकियेहु एभीप्रत्यक्षप्रमाणतैंअनंतरहीं अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिसिद्धिहोवैहै ॥ किंवा ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकेजन्य प्रत्यक्षज्ञानकी अल्पविषयविषेप्रवृ

त्तिहोवैहै याकारणतैंभी शास्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकोंविषे प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ काहेतें इंद्रियइंद्रियविषे जोज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ ताकूंप्रत्यक्षज्ञानकहैहैं ॥ सोप्रत्यक्षज्ञान एकप्रकारकाहोवैनहीं ॥ किंतु नेत्रादिकइंद्रियोंकेभेदतें भिन्नभिन्नही प्रत्यक्षज्ञान होवैहै ॥ तहां चक्षुइंद्रियतैंउत्पन्नहुएप्रत्यक्षज्ञानकूं चाक्षुषप्रत्यक्ष कहैहैं ॥ और रसनइंद्रियजन्यप्रत्यक्षज्ञानकूं रासनप्रत्यक्षकहैहैं ॥ और त्वक्इंद्रियजन्यप्रत्यक्षज्ञानकूं त्वाचप्रत्यक्षकहैहैं ॥ और घ्राणइंद्रियजन्यप्रत्यक्षज्ञानकूं घ्राणजप्रत्यक्षकहैहैं ॥और श्रोत्रइंद्रियजन्यप्रत्यक्षज्ञानकूं श्रावणप्रत्यक्षकहैहैं ॥ इसप्रकार इंद्रियोंकेभेदतें प्रत्यक्षज्ञानभी भिन्नभिन्नहीहोवैहैं ॥ यातें सर्वपदार्थोविषे एकप्रत्यक्षज्ञानकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु भिन्नभिन्नरूपादिकविषयोंविषे भिन्नभिन्नहीं चाक्षुषादिकज्ञानोंकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ चाक्षुषज्ञानकेविषय जेरूपादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकूं रासनज्ञान विषयकरैनहीं ॥ और रासनज्ञानकेविषयजेरसादिकहैं ॥ तिनोंकूं चाक्षुषज्ञान विषयकरैनहीं ॥ इसप्रकार अन्यप्रत्यक्षज्ञानोंविषेभीजानिलेणा ॥ याप्रकार अल्पअर्थकूंविषयकरणेहारा प्रत्यक्षज्ञान शास्त्रप्रतिपादितअर्थकूं विषयकरिसकै नहीं ॥ किंवा ॥ जिसकालविषे देवदत्तनामापुरुषकेनेत्रोंकासंबंध घटादिकपदार्थोंकेसाथहोवैहै ॥ तिसकालविषे देवदत्तनामापुरुषकूंहीं ताघटकाप्रत्यक्षज्ञानहोवैहै ॥ देवदत्तपुरुषतैंभिन्न जोयज्ञदत्तनामापुरुषहै ॥ तिसकूं इंद्रियकेसंबंधतैंविना ताघटकाप्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं ॥ यातें प्रत्यक्षज्ञानकेयोग्यघटादिकविषयोंविषेभी स्वतंत्र प्रत्यक्षज्ञानकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु विषयकेसाथ इंद्रियकेसंबंधकीअपेक्षाकरिकेहीं प्रत्यक्षकोप्रवृत्तिहोवैहै ॥ याकहणेतें यहसिद्धभया ॥ जभी प्रत्यक्षज्ञानकेयोग्यघटादिकपदार्थोंविषेभी प्रत्यक्षज्ञानकीस्वतंत्रप्रवृत्तिनहींभयी ॥ तबी वेदप्रतिपादिकस्वर्गादिकअतिइंद्रियपदार्थोंविषे किसप्रकार प्रत्यक्षकीप्रवृत्तिहोवैगी ॥ किंतु नहींहोवैगी ॥ किंवा ॥ वेदप्रमाणकीअपेक्षातैंरहित जोकेवलप्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ सो दोषोंतैंरहितहोवैनहीं ॥ किंतु दोषकरिकेहीयुक्तहोवैहै ॥ काहेतें नेत्रादिकइंद्रियोंकानाम प्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ और तिननेत्रादिकइंद्रियोंविषे अंधत्वबधिरत्वादिकदोषोंकासर्वपुरुषोंकूं प्रत्यक्षहीज्ञानहोवैहै ॥ यातें दोषयुक्त प्रत्यक्षप्रमाण वेदकेअपूर्वअर्थकूं बोधनकरिसकैनहीं ॥ किंवा ॥ वेदबोधितस्वर्गादिकअर्थविषे उक्तरीतिकरिकै प्रत्यक्षप्रमाणकेअप्रवृत्तहुए

अनुमानप्रमाणभी तिनस्वर्गादिकपदार्थोंविषे प्रवृत्तिहोवेनहीं ॥ काहेतें प्रत्यक्षप्रमाणकीअपेक्षाकरिकेंही अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवेहै ॥
यहवार्ता पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ शंका ॥ वेदप्रतिपादितस्वर्गादिकअर्थोंविषे प्रत्यक्षप्रमाणकी तथाअनुमानप्रमाणकी प्रवृत्तिमतहोवे ॥
तथापि अर्थापत्तिआदिकप्रमाणोंकीप्रवृत्ति स्वर्गादिकपदार्थोंविषे होवैगी ॥ समाधान॥ तेअर्थापत्तिआदिकप्रमाण अनुमानप्रमाणतेंअभिन्न
है अथवा भिन्नहै ॥ तहां प्रथम अभिन्नपक्ष संभवे नहीं ॥ काहेतें तेअर्थापत्तिआदिकप्रमाण जभी अनुमानप्रमाणकेअंतरभूतमानोंगे ॥
तो अनुमानप्रमाणकेप्रवृत्तिविषे जे पूर्वदोषकहेहैं ॥ ते संपूर्णदोष अर्थापत्तिआदिकप्रमाणोंविषेभी प्राप्तहोवेंगे ॥ यातें अनुमानप्रमाणतेंअ
भिन्न अर्थापत्तिआदिकप्रमाण संभवेंनहीं ॥ और अर्थापत्तिआदिकप्रमाण अनुमानप्रमाणतें भिन्नहैं यह द्वितीयपक्षभी संभवे नहीं ॥ काहे
तें जोअर्थापत्तिआदिकप्रमाणोंकूं अनुमानप्रमाणतेंभिन्नभी अंगीकारकरोगे॥तोभी तेअर्थापत्तिआदिकप्रमाण स्वतंत्र किसीप्रमाज्ञानकूंउत्प
न्नकरतेनहीं॥किंतु किसीदृष्टांतकूंअंगीकारकरिकेंही किसीपुरुषकेप्रमाज्ञानकूं उत्पन्नकरैंगे ॥ दृष्टांततेंविना अर्थापत्तिआदिकप्रमाण कहांभी
ज्ञानकूंउत्पन्नकरैंनहीं॥और सोदृष्टांत प्रत्यक्षतेंभिन्ननहीं॥किंतु प्रत्यक्षकेअंतरभूत दृष्टांतहै ॥ और प्रत्यक्षकाखंडन पूर्वविस्तारतेंकरिआयेहैं
यातें अनुमानप्रमाणतेंभिन्नहुएभी अर्थापत्तिआदिकप्रमाण वेदप्रतिपादितस्वर्गादिरूपअर्थविषे प्रवृत्तहोवेनहीं ॥यातेंहेवाळाकि संपूर्णदोषोंते
रहित यहवेदभगवान् जिसजिसअर्थकूंबोधनकरेहै॥सोईहीअर्थ मुमुक्षुपुरुषोंनेंअवश्यग्रहणकरणेयोग्यहैदृष्टांत॥जैसेधर्मात्माराजाकीआज्ञाकूं
प्रजाग्रहणकरेहै॥तैसे वेदभगवान्काअर्थ बुद्धिमानपुरुषोंनेंग्रहणकरणेयोग्यहै॥वेदकेअर्थविषे कदाचित्भी असंभावनानहींकरणी॥और सोवे
दभगवान्तो दिनदिनविषे जाग्रत्अवस्थाकेप्राप्तहुएवाक्आदिकइंद्रियोंकीउत्पत्तिकूं कथनकरेहै ॥ तथा अग्नि आदिकदेवतावोंकीउत्पत्तिकूं
कथनकरेहै ॥ तथा नामादिकविषयोंकोउत्पत्तिकूं कथनकरेहै॥और सुषुप्तिअवस्थाविषे तिनसंपूर्णवाक्आदिकोंकेलयकूं वेदभगवान् कथ
नकरेहै ॥ यातें हेवाळाकि याप्रकारकेवेदअर्थविषे तुम श्रद्धाकूंकरो ॥ और हेवाळाकि पूर्व सोयेहुएपुरुषकेउत्थापनकालविषे याशरीरविषे
स्थित आनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश हमनें तुमारेप्रतिकथाथा ॥ और पश्चात् हृदयकमळ विषेस्थित आत्माकाउपदेश हमनें तुमारेप्रति

कन्या॥यातें तुमनें आत्माविषेपरिच्छिन्नदृष्टिनहींकरणी॥किंतु आत्माविषे पूर्णदृष्टिकरणी॥अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेदिखावैहैं॥हेबालाकि
जैसेएकहीपरिपूर्णआकाशघटमठशरावादिकउपाधियोंविषे स्थितहोवैहै॥ तैसे एकहीपरिपूर्णआत्मा वाक्‌आदिकउपाधियोंविषे स्थितहोवैहै
तावाक्‌आदिकविशिष्टआत्माकूं मूढपुरुष वक्तारूपकरिके तथाश्रोतारूपकरिके ॥ तथाद्रष्टारूपकरिके मानैहैं॥तिसप्रकार तुमनें आत्माकूं
परिच्छिन्नकरिकेनहींमानणा ॥ किंतु उपाधिकापरित्यागकरिके परिपूर्णआत्माकूं तुमनें जानणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोआत्मा सर्वत्रप
रिपूर्णहोवे ॥ तो हृदयदेशविषेआत्माकीस्थिति पूर्व आपनें काहेवासतेकथनकरी॥समाधान॥ हेबालाकि जैसे केशोंकेछेदनकरणेकासाधन
जोक्षुरहै ॥ सोक्षुर नापितकीपिटारीरूपकिसीएकदेशविषेरहैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा केवलहृदयदेशविषेरहैनहीं ॥ किंतु सर्वप्रा
णियोंकेअंतर तथाबाहर व्याप्यकरिकेरहैहै॥तथापि अंतःकरणविषे तथाइंद्रियोंविषे तथाशरीरविषे आत्माकीविशेषकरिकेउपलब्धिहोवैहै ॥
याकारणतें हृदय इंद्रियशरीरविषे आत्माकीस्थिति हमनें कथनकरीहै॥दृष्टांत॥ जैसे अग्निसामान्यरूपकरिकेसर्वत्रस्थितहै ॥ तथापि काष्ठ
विषे अग्निकीविशेषरूपकरिकेउपलब्धिहोवैहै ॥ याकारणतें काष्ठविषेअग्निस्थितहै याप्रकार लोककथनकरैहैं यातें हेबालाकि जैसे नापित
कीपिटारीविषे क्षुररूपशस्त्रकीशोभहीउपलब्धिहोवैहै तैसे हृदयकमलविषेस्थितबुद्धि अत्यंतस्वच्छहै ॥ यातें ताबुद्धिविषे आत्माकीउपल
ब्धि विशेषकरिकेहोवैहै ॥ याअभिप्रायतें बुद्धिविषे आत्माकीस्थिति हमनें कथनकरीहै ॥ और जैसे नापितकीपिटारीविषेही क्षुररूपशस्त्र
रहैहै अन्यत्ररहैनहीं॥तैसे बुद्धिरूपदेशविषेही आत्मारहैहै अन्यत्ररहैनहीं॥ याअभिप्रायतें आत्माकीबुद्धिविषेस्थिति हमनें नहींकथनकरी॥
इसप्रकार हृदयविषेआत्माकेविशेषअभिव्यक्तिकूंबोधनकरणेहाराजोक्षुरकादृष्टांतहै ॥ तिसकेअभिप्रायकूंनिरूपणकरिके ॥ अब हृदयकी
अपेक्षाकरिके शरीरादिकोंविषेआत्माके अल्पप्रकाशकूं बोधनकरणेहारा जोअग्निकादृष्टांतहै ताकेअभिप्रायकूं दिखावैहैं ॥ हेबालाकि
सोआनंदस्वरूपआत्मा जरायुज अंडजस्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकूं उत्पन्नकरिके आपणेचेतन्यरूपकरिके नखकेअग्र
भागतैंलेकरिकेशिखापर्यंत तिनसर्वशरीरोंविषे व्याप्तहोताभया ॥ और जैसे अग्नि यद्यपि सर्वत्रसमानहै ॥ तथापि अरणीरूपकाष्ठविषे

अग्निकेविशेष अभिव्यक्तिकूंदेखिकरिकै काष्ठविषेस्थितअग्निहै याप्रकारकाकथन सर्वलोक करैहैं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि चैतन्यरूपकरिकैसर्वत्रसमानहै ॥ तथापि शरीरविषे चैतन्यकेविशेषअभिव्यक्तिकूंदेखिकै शरीरविषे आत्मास्थितहै याप्रकारकाकथनभी संभवैहै यहाँ शरीरविषे जोआत्माकी विशेषअभिव्यक्तिकही ॥ सो घटादिकोंकीअपेक्षाकरिकैजानणी ॥ अंतःकरणकीअपेक्षाकरिकैतौ शरीरविषे आत्माकीअल्पअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ यातैं हेबालाकि आकाशकीन्याई सर्वत्रपरिपूर्णआत्मा याशरीरविषे चैतन्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैं सर्वशरीरोंविषे नखकेअग्रभागतैंलेकरिकै परमात्माकाप्रवेश श्रुतिनैं कथनकऱ्याहै ॥ और हेबालाकि जैसे मृत्तिका घटाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मृत्तिकाविषे मुख्यप्रज्ञा तथागौणप्रज्ञा संभवैनहीं ॥ तैसे मनइंद्रियदेहादिरूपसंघातभी अनंतप्रकारके परिणामकूंप्राप्तहोवैहै यातैं यासंघातविषेभी मुख्यप्रज्ञा तथागौणप्रज्ञा संभवैनहीं ॥ किंतु प्रज्ञास्वरूपआत्माकेतादात्म्यअध्यासकेबलतैं अविचारकालविषे शरीरादिकोंमैं चैतन्यस्वरूपप्रज्ञा प्रतीतहोवैहै विचारकियेतैं शरीरादिकोंविषे प्रज्ञासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् मनविषे तथाइंद्रियोंविषे तथाशरीरविषे प्रज्ञाकाअभावआपनैंकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं बुद्धिरूपप्रज्ञा तिनमनादिकोंविषेभीसंभवैहै ॥ समाधान ॥ हेबालाकि चैतन्यआत्मातैंभिन्न मनइंद्रियशरीरादिकसंपूर्ण जडहैं ॥ और विकारवान्हैं ॥ यातैं तिनमनादिकोंविषेस्थित बुद्धिरूपप्रज्ञाभी जडहै ॥ काहेतैं जैसे शरीरादिक परिणामकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे बुद्धिभी परिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं बुद्धि जडहै चैतन्यरूपनहीं ॥ यातैं हेबालाकि आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न किसीभीवस्तुविषे ज्ञानस्वरूपप्रज्ञानहीं ॥ किंतु एकआत्माही ज्ञानस्वरूपहै ॥ और हे बालाकि जैसे आत्मातैंभिन्न किसीअनात्मपदार्थविषेज्ञाननहींहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न किसीअनात्मपदार्थविषे सुखभीनहींहै ॥ किंतु एकआत्माही सुखरूपहै ॥ ऐसा सुखस्वरूप तथाज्ञानस्वरूप यहआत्मासुखतथाज्ञानतैंरहितमनइंद्रियदेहादिकोंकूं आपणेतादात्म्यसंबंधतैं सुखयुक्त तथाज्ञानयुक्त करैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे धनीपुरुष आपणेसेवकोंकूं धनयुक्तकरैहै ॥ तैसे सुखज्ञानस्वरूपआत्मा मनइंद्रियादिकोंकूं सुखतथाज्ञानयुक्तकरैहै ॥ और हेबालाकि ऐसे सुखस्वरूप तथा ज्ञानस्वरूप आत्माकूं आश्रय

णकरिकैही संपूर्णवाक्आदिकअध्यात्म तथाअग्निआदिकअधिदेवता आपणेआपणेनामादिकविषयोंकूंनिश्चयकरैहैं ॥ तिसआत्माकेसम्बंध तैंविना स्वतंत्रहोइके कोईभीवाक्आदिक किसीअर्थकूं निश्चयकरैंनहीं॥ दृष्टांत॥जैसे यथार्थज्ञानकरिकैयुक्त अथवा विपरीतज्ञानकरिकैयुक्त जोकोइक धनीपुरुषहै ॥ तिसधनीपुरुषकेनिश्चयकेअनुसारही ताकेभृत्य किसीकार्यकानिश्चयकरैहैं ॥ ताधनीपुरुषकेनिश्चयतैंविना भृत्यों का स्वतंत्रकोईनिश्चय होवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् बाह्यकार्यविषे यद्यपि भृत्योंकूं धनीपुरुषकीपराधीनताहै ॥ तथापि ज्ञानरूपअंतरनिश्चयविषे तिनभृत्योंकूं धनीपुरुषकीअपेक्षासंभवैनहीं ॥समाधान॥ हेवालाकि ज्ञानरूपअंतरनिश्चयकीउत्पत्तिविषे यद्यपि भृत्योंकूं धनीपुरुष कीअपेक्षानहीं ॥ तथापि धनीपुरुषकेनिश्चयतैंविना तिनभृत्योंकानिश्चय निष्फलहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ज्ञानरूपनिश्चयतैं पुरुषोंकीकार्यविषे प्रवृत्तिहोवैहै ॥ सोप्रवृत्ति धनीपुरुषकेनिश्चयतैंविना स्वतंत्र भृत्योंकीहोवैनहीं ॥ किंतु धनीपुरुषकीसंमतिकूंग्रहणकरिकैही भृत्योंकी किसी कार्यविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे ज्ञानरूपआत्माकूंआश्रयणकरिकैही संपूर्णवाक्आदिकदेवता तथाएकएकवाक्आदिक यहकार्य अवश्यकरणेयोग्यहै और यहकार्य नहीं करणेयोग्यहै और यहवचन कहणेयोग्यहै और यहवस्तु देखणेयोग्यहै याप्रकार पदार्थोंकूंनिश्चयकरैहैं ॥ ज्ञानस्वरूपआत्मातैंविना स्वतंत्रहुआ कोईभीवाक्आदिकदेवता किसीपदार्थकूंजानैंनहीं ॥ यहां दृष्टांततैंसिद्धांतविषे इतनीविशेषताहै ॥ दृष्टांतविषे धनीपुरुषकेज्ञानतैंभिन्नहीभृत्योंकिज्ञानहोवैहै ॥ और सिद्धांतविषेतो आत्माकेस्वरूपज्ञानतैंभिन्न कोईभीज्ञान वाक्आदिकइंद्रियोंविषे नहीं ॥ किंतु आत्मस्वरूपज्ञानही वाक्आदिकइंद्रियोंकरिकैयुक्तहुआ नानाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं आत्माही ज्ञानस्वरूपहै ॥ आत्मातैंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थ जडहैं ॥ और हेवालाकि जैसे भोगकेसाधनधनादिकपदार्थोंकरिकैयुक्त कोईकवैश्यपुरुष आपणेपुत्रोंकिसहित तथाभृत्योंकेसहित धनादिकपदार्थोंकूंभोगैहै ॥ पुत्रादिकोंतैंविना अकेलाही सोवैश्यपुरुष धनादिकपदार्थोंकूंभोगैनहीं ॥ जोअकेलाही सोवैश्यपुरुष धनादिकपदार्थोंकूंभोगै तो ताकासर्वधन चोरलेजावैं॥यातैं सर्वभृत्योंसैमिलिकैसोधनीवैश्य पदार्थोंकूंभोगैहै॥तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी वाक्आदिकदेवतावोंकेसहितहीभोगोंकूं भोगैहै ॥ वाक्आदिकइंद्रियोंतैंविना केवलशुद्धआत्मा भोगोंकूंभोगैनहीं ॥ और

जैसे धनीवैश्यके पुत्रादिकबांधव तथाभृत्य ताधनीवैश्यतैंविना स्वतंत्र किसीपदार्थकूंनहींभोगते ॥ किंतु ताधनीवैश्यकेसहितही पुत्रादिक बांधव भोगोंकूंभोगेहैं ॥ तैसे वाकआदिकभी आत्मातैंविना स्वतंत्रहोइके किसीपदार्थकूं भोगतेनहीं ॥ किंतु आत्माकेसाथमिलिकेही वाकआदिक भोगोंकूंभोगेहैं॥यहांयहतात्पर्यहै॥सुखदुःखकेअनुभवकानामभोगहै॥सोभोग उपाधिरहितशुद्धआत्माविषे संभवेनहीं तैसेवाक आदिकजडपदार्थोंविषेभी सोभोग संभवे नहीं ॥ किंतु अंतःकरणादिकउपाधियोंकरिकेयुक्तआत्माही भोगकाआश्रयहै ॥ वास्तवतैं कोई भोगकाआश्रयहैनहीं ॥ यातैं सोभोग मिथ्याहै और हेवालाकि जोहृदयाकाश शुद्धआत्मारूपकरिके हमनें तुमारेताई कथनकऱ्याहै ॥ सोईहीपरमात्मा यासर्वसंघातकाअधिपतिहै ॥ और सोईहीपरमात्मा यासंघातकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहुआ बुद्धिमान्पुरुषोंक रिकेभी जानणेकूंअशक्यहै॥ हेवालाकि जो आत्मा दुर्विज्ञेयनहींहोता॥तोसर्वशास्त्रकेजानणेहारेतुमारेकूं आत्माकेयथार्थस्वरूपविषे भ्रांति नहींहोती और पूर्वतुमने प्राणकूंही आत्मारूपकरिके हमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै॥यातैं यहतुमारीभ्रांतिही आत्माकेदुर्विज्ञेयताकूं बोधनकरैहै॥ शंका ॥ हेभगवन् जभी यहआनंदस्वरूपआत्मा यासंघातविषे दुर्विज्ञेयहै ॥ तभी यासंघाततैंभिन्नअन्यकिसीस्थानविषेस्थित आत्माका हमारेप्रतिउपदेशकरो ॥ तिसीस्थानविषेस्थितआत्माकूं मैंनिश्चयकरोंगा ॥समाधान॥ हेवालाकि यासंघातकूं छोडिके अन्यत्रस्थितआत्मा केजानणेविषे किंचित्मात्रभी तुम उत्साहकूं मतकरो॥किंतु यासंघातविषेहीआत्माकेजानणेकाउत्साह तुमकरो॥दृष्टांत॥ जैसे अग्निकीउप लब्धिकास्थान जेकाष्ठहैं ॥ तिनकाष्ठोंकरिकेयुक्त अग्निकापरित्याग करिके काष्ठसंबंधतैंरहितअग्निकीप्राप्तिकोइच्छा कोईभीबुद्धिमान् पुरुष करैनहीं॥तैसे आत्माकीउपलब्धिकास्थान जोयहसंघातहै॥तिससंघातकापरित्यागकरिके अन्यदेशविषे आत्माकाअन्वेषणकरणा व्यर्थ है॥ यातैं हेवालाकि इसीशरीरविषे अंतःकरणादिकसर्वउपाधियोंतैंरहित कूटस्थआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकेनिश्चयकरो॥इसप्रकार अजातशत्रुराजा पूर्वउक्ततीनप्रश्नोंकेअर्थकूं विस्तारतैंनिरूपणकरताभया॥अब तिसीहीतीनप्रश्नोंकेअर्थकूं संक्षेपतैंनिरूपणकरैहैं॥हेवालाकि हृदयाकाशरूप जोसर्वकाआत्माहै ॥ सोआत्माही शयनकर्तापुरुषका तथाशयनका आधारहै ॥ और सोईहीहृदयाकाशस्वरूपआत्मा शयनकर्तापुरुषके आगमनकाअवधिरूपहै॥और हेवालाकि वाकआदिककरणोंकालयरूपशयन दोप्रकारकाहोवैहै॥एकतो स्वप्नरूपशयन होवैहै और दूसरा

सुषुप्तिरूपशयन होवैहै ॥ तहाँ प्रथम स्वप्नरूपशयनकाकर्ता बुद्धितैंविना संपूर्णवाक्आदिकहैं ॥ और दूसरेसुषुप्तिरूपशयनकाकर्ता बुद्धिहै ॥ और दोनोंप्रकारकेशयनतैं आगमनकर्ताभी बुद्धिसहितवाक्आदिकइंद्रियोंकासमूहहै ॥ यद्यपि पूर्वग्रंथविषे विज्ञानमयभोक्ताकूं शयनकाकर्ता तथाआगमनकाकर्ता कथनकरिआयेहैं ॥ और यहांबुद्धिकूं तथावाकआदिकोंकूं शयनकाकर्तारूपकारिकेकथनकऱ्या ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि विचाराकियेतैं सोविरोध संभवैनहीं ॥ काहेतैं बुद्धिविशिष्टचेतन्यकानाम विज्ञानमयहै ॥ तहांचेतन्यअंशविषेतो कर्तापणा संभवैनहीं ॥ किंतु परिशेषतैं बुद्धिविषेही कर्तापणासंभवैहै ॥ याअभिप्रायकरिकेहो यहांबुद्धिकूं शयनकाकर्ताकह्याहै॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधनहीं॥और हेवाळाकि प्राणरूपउपाधिविषे तथाप्रज्ञारूपउपाधिविषे जोहृदयाकाशरूपआत्मा तुमारेताईहमनैंकथनकऱ्याहै॥इसीही प्राणप्रज्ञारूपउपाधियुक्तआत्माकूं पूर्वदेवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकेताई कथनकरताभयाहै॥और इसीही आत्माकेसाक्षात्कारकेप्रभावतैं सोदेवराजइंद्र तीनलोकोंकेउपद्रवकरणेहारेअसुरोंकूं हननकर्ताभयाहै ॥ तथा नीतितैंरहितविश्वरूपादिक ब्राह्मणोंकूं हननकर्ताभयाहै॥तथा वेदांतविचारतैंरहित अनंतसंन्यासियोंकूं हननकर्ताभयाहै ॥ तथापि आत्मज्ञानकेप्रभावतैं देवराजइंद्रका रोममात्रभी छेदननहींहोताभया ॥ और इसीहीआत्माकेज्ञानकेप्रभावतैंसोदेवराजइंद्र सर्वदेवतावोंकेमध्यविषे अत्यंतश्रेष्ठताकूंप्राप्तहोताभयाहै ॥ और युद्धादिककार्यविषे सोइंद्र किसीदेवताकीअपेक्षाकूंनहींकरताभया ॥ किंतु बलनामाअसुरतैंआदिलेकेसर्वअसुरोंकूं अकेलाही सोइंद्र हननकरताभया ॥ याकारणतैं सर्वबलवानोंविषे सोइंद्र प्रधानबलीहोताभया ॥ और सोदेवराजइंद्र आपणेतेजकरिकेविराजमान होताभया ॥ याकारणतैं स्वराट् यासंज्ञाकूंप्राप्तहोताभया॥और शुभगुण तथाकीर्तिआदिकोंकरिकेयुक्तहुआ सोदेवराजइंद्र सर्वदेवतावोंका प्रधानहोताभया ॥ यातैं हेवाळाकि ॥ जैसेअद्वितीयआत्माकेज्ञानकेप्रभावतैं देवराजइंद्र सर्वकास्वामीहोताभया॥ तैसे इदानींकालविषेभी जोकोईपुरुषयाआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानकूं विवेकादिकसाधनोंकरिकेसंपादनकरेगा ॥ सोपुरुषभी ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं सर्वजीवोंका स्वामीहोवैगा॥शंका॥हेभगवन् पूर्वआपनैं यहकह्या॥जोदेवराजइंद्र आत्मज्ञानकेप्रभावतैं सर्वअसुरोंकूंजीतताभया ॥ सो संभवैनहीं काहेतैं पुराणोंविषे असुरोंकरिके इंद्रकापराजयभी बहुतवार कथनकऱ्याहै॥समाधान॥हेवाळाकि जबपर्यंत देवराजइंद्र प्रजापतिकेउपदेशतैं आत्म

ज्ञानकूं नहींप्राप्तभयाथा॥तबपर्यंतहीं देवराजइन्द्रकूंजीतिकरिके असुर तीनलोकके अधिपतिहोतेभये॥और प्रजापतिकेउपदेशतें आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोएतैंअनंतर सर्वअसुरोंकाहननकरिके सोदेवराजइंद्रही तीनलोकका अधिपतिहोताभया॥यातें हेबालाकि याआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकाज्ञानहीं सर्वतैंअधिकहै॥ताज्ञानकूंहीं पुरुषोंने यत्नकरिकेसंपादनकरणा॥श्रीगुरुरुवाच॥हेशिष्य इसप्रकार कौषीतकीऋषि आपणे शिष्योंकेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेश करिके तूष्णीभावकूंप्राप्तहोताभया॥औरब्रह्मकेनिरूपणतैंअनंतर ताब्रह्मकाअवश्यकहणेयोग्यजो सत्यकासत्यहै याप्रकारकागुह्यनाम ॥ तानामकूंअर्थसहित सोकौषीतकीऋषि आपणेशिष्योंकेताईं नहींकथनकरताभया॥किंतु याज्ञवल्क्यकेतपकरिके संतोषकूंप्राप्तहुआसूर्यभगवान् याज्ञवल्क्यनामाशिष्यकेताईं सत्यकासत्यहै याप्रकारकेब्रह्मकेनामकूं अर्थसहितउपदेशकरताभया ॥ और कौषीतकीऋषितो देवराजइंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुआ संपूर्णब्रह्मविद्या आपणेशिष्योंकेताईं नहींउपदेशकरताभया ॥ किंतु चारिअध्यायरूप जोकौषीतकीउपनिषदहै ॥ तिसके प्रथमअध्यायविषे प्राणरूपपर्यंकविषे स्थितब्रह्मकीउपासनाकूं कथनकरताभया ॥ और द्वितीयअध्यायविषेअंगोंसहितप्राणविद्याकूं कथनकरताभया ॥ और तृतीयअध्यायविषे इंद्रप्रतर्दनकेसंवादकरिके निर्गुणब्रह्मविद्याकूं कथनकरताभया और चतुर्थअध्यायविषे बालाकिअजातशत्रुकेसंवादकरिके तिसीनिर्गुणब्रह्मविद्याकूं कथनकरताभया ॥ इतनीविद्या कौषीतकीऋषि आपणेशिष्योंकेताईं उपदेशकरिके इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुआ सोकौषीतकीऋषि विद्याउपदेशतैंउपरामहोताभया ॥ यहसंपूर्णवार्ता चतुर्थअध्यायविषेकथनकरैंगे ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदपूज्यपाद शिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे कौषीतकिसारार्थप्रकाशे बालाकिअजातशत्रुसंवादोनाम तृतीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ३ ॥

इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे चतुर्थोऽध्यायप्रारंभः ॥

१५

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ अथ चतुर्थअध्यायप्रारंभः ॥ तहां प्रथमअध्यायविषे ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे ऋग्वेदकेकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब सप्तअध्यायोंकरिकै यजुर्वेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकरैंहैं ॥ तहां प्रथमबृहदारण्यकउपनिषद्केअर्थकूं चारि अध्यायोंकरिकैनिरूपणकरैंहैं ॥ तहां पूर्वतृतीयअध्यायकेअंतविषे गुरुनैं शिष्यकेताईं यहअर्थकथनकऱ्या ॥ देवराजइंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुआ कौषीतकिऋषि आपणेशिष्योंकेताईं संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरताभया ॥ और सूर्यभगवान् याज्ञवल्क्यऋषिकेताईं संपूर्णब्रह्म विद्याकाउपदेश करताभया ॥ यहविचित्रकथा तृतीयअध्यायकेअंतविषे गुरुनैंकही ॥ तिसविचित्र वार्ताकूंश्रवणकरिकै शिष्य अतिविस्मयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सूर्यभगवाननैं याज्ञवल्क्यकेताईं उपदेशकरीजोब्रह्मविद्या ॥ तासब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकीयद्यपि शिष्यकूंकामनाहै ॥ तथापि सोशिष्य अत्यंतबुद्धिमान्है ॥ यातैं तासब्रह्मविद्याका साक्षात्प्रश्न नहींकरताभया ॥ किंतु कौषीतकिऋषि इंद्रतैंभयकूं प्राप्तहोताभया ॥ यावचनकूंश्रवणकरिकै संशययुक्तहुआशिष्य प्रथम कौषीतकि ऋषिकेभयकाकारण पूछताभया ॥ भयकेकारणपूछणेविषे शिष्यका यहगुह्यअभिप्रायहै ॥ जबी कौषीतकिऋषिकेभयकाकारण मैं पूछोंगा ॥ तबी कौषीतकिऋषिकेभयकेकारणकूं कथनकरतेहुए श्रीगुरु तासंपूर्णब्रह्मविद्याकूंभीकथनकरैंगे ॥ याअभिप्रायतैं शिष्य प्रथम कौषीतकिऋषिकेभयकाकारण पूछताभया ॥ शिष्य उवाच ॥ हेभगवन् देवराजइंद्र ऐसाकौनक्रूरकर्म करताभया ॥ जिसकारणतैं कौषीतकीऋषिकूं इंद्रतैंभयहोताभया ॥ याविचित्र आख्यानकेश्रवणकरणेकीहमारेकूंइच्छाहै ॥ आप कृपाकरिकै हमारेताईं कथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै श्रीगुरु वेदकेमंत्रोंकरिकैकथनकरीजो दध्यङ्अश्विनका तथाइंद्रका परस्पर संवादरूपकयाहै ॥ तिसविचित्रकथाकेउपदेशकरणेवासते प्रथम ब्रह्मविद्याकेप्रवर्त्तक संपूर्णगुरुवोंकूं स्मरणकरताभया ॥ काहेतैं जैसेविवेकादिकसाधनचतुष्टय ब्रह्मविद्याश्रवणकेसाधनहैं ॥ तैसे ब्रह्मविद्याके प्रवर्त्तकगुरुवोंकास्मरणभी पापरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ यातैं ब्रह्मविद्याअध्ययनकालविषे ब्रह्मविद्याके

प्रवर्त्तकगुरुवोंकास्मरण मुमुक्षुजनानें अवश्यकरणाचाहिये ॥ तहाँ मधुकांडकेअंतविषे तथायाज्ञवल्क्यकांडकेअंतविषे पुरुषनामकरिके घटित ऋषियोंकेनाम कथनकरेहैं ॥ यातें तिनदोनोंवंशोंकूं पुरुषवंश कहैहैं ॥ और खिलकांडकेअंतविषे स्त्रीनामकरिकेघटित ऋषियोंके नामहैं ॥ यातें तावंशकूं स्त्रीवंशकहैहैं ॥ तहाँ मधुकांडविषे तथायाज्ञवल्क्यकांडविषे वर्तमान जेदोनोंपुरुषवंशहैं ॥ तथाखिलकांडविषे वर्तमान जोस्त्रीवंशहै ॥ यातीनवंशोंविषेवर्तमानऋषियोंका कोईकशास्त्रवाले भेदमानेहैं ॥ और कोईकशास्त्रवाले तिनोंकाअभेदमानेहैं ॥ ताभेदअभेददोनोंपक्षोंविषे अभेदपक्षहीश्रेष्ठहै ॥ काहेतें एकअद्वितीयब्रह्मही गुरुमूर्तिकूंधारणकरिके शिष्यकेताई उपदेशकरैहै ॥ यहवेदांतशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ यातें अभेदपक्षकूंअंगीकारकरिके प्रथम स्त्रीवंशविषेस्थितऋषियोंके परंपराकूंनिरूपणकरैहैं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे शिष्य ॥ याजगत्विषे पौतिमाषीनामास्त्री ब्रह्मविद्याकेअधिकारीहमसर्वजनोंकीमाताहै ॥ काहेतें जिसपौतिमाषीकापुत्र इसलोकविषे सर्व ब्राह्मणोंकेताईं दुर्विज्ञेयब्रह्मविद्याकूं देताभयाहै ॥ सोकैसाहैपौतिमाषीकापुत्र ॥ जिसकूंस्त्रीवंशविषे पौतिमाषीपुत्रकहैं हैं ॥ और दोनोंपुरुषवंशविषे जिसकूं पौतिमाष्यकहैहैं ॥ हेशिष्य यापौतिमाषीपुत्रतेंआदिलेके हिरण्यगर्भपर्यंतजितनेक ब्रह्मविद्याकेप्रवर्त्तकगुरुहैं तिनसंपूर्णोंकेनामोंकूं हम तुमारेताईं कथनकरैहैं ॥ तिनब्रह्मवेत्ताऋषियोंकेनामश्रवणतें तथा नामस्मरणतें ब्रह्मविद्याकेप्रतिबंधक संपूर्णपाप कर्मोंका नाशहोवैगा ॥ तिसतेंअनंतर संपूर्णवेदांतअर्थकेजानणेविषे तूं समर्थहोवैगा ॥ यहवार्ता साक्षात्श्रुतिविषेभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ यस्य देवेपराभक्तिः यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशंतेमहात्मनः ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषकी विष्णुतथामहादेवआदिकदेवतावोंविषे परमभक्तिहै ॥ और जैसे देवतावोंविषेपरमभक्तिहै तैसीही ब्रह्मविद्याकेदातागुरुविषे परमभक्तिहै ॥ तिसमहात्मापुरुषकीबुद्धिविषे वेदांतकरिकेप्रतिपादनकरे अर्थ आरूढहोवैहैं॥जिसपुरुषकी देवतावोंविषे तथागुरुविषे परमभक्तिनहींहै ॥ तिसपुरुषकीबुद्धिविषे वेदांतकेअर्थ आरूढहोवैंनहीं ॥ यातें मुमुक्षुपुरुषनें अवश्य गुरुकीभक्तिकरणी ॥ अथ वंशावलीवर्णनम् ॥ हेशिष्य ॥ सोपौतिमाषीपुत्र नामाऋषि कात्यायनीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥तिसीकात्यायनीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे गोपवनकहैंहैं ॥और सो

कात्यायनीपुत्र गोपवननामाऋषि भारद्वाजीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसीभारद्वाजीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे पौतिमाष्यकैंहहैं ॥ यहपौतिमाष्य पूर्वपौतिमाष्यतैंभिन्नजानणा ॥ और सोभारद्वाजीपुत्र पौतिमाष्यनामाऋषि पाराशरीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसीपाराशरीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषेगोपवनकैंहहैं ॥ यहगोपवनभी पूर्वगोपवनतैंभिन्नजानणा ॥ और सोपाराशरीपुत्र गोपवननामाऋषि औपस्वस्तीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसीऔपस्वस्तीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंश विषे कौषिककैंहहैं ॥ और सोऔपस्वस्तीपुत्र कौषिकनामाऋषि पाराशरीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ यहपाराशरीपुत्र नामाऋषिभी पूर्वपाराशरीपुत्रतैंभिन्नजानणा ॥ तिसपाराशरीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे कौंडिन्यकैंहहैं ॥ और सोपाराशरीपुत्रकौंडि न्यनामाऋषिकौशिकीपुत्रनामाऋषितैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥तिसीकौशिकीपुत्रनामाऋषिकूंपुरुषवंशविषेशांडिल्यकैंहहैं ॥ औरसोकौ शिकीपुत्रशांडिल्यनामाऋषि आलंबीपुत्रनामाऋषितैं तथावैयाघ्रीपुत्रनामाऋषितैं यादोनोंगुरुवोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसीआलं बीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे कौशिककैंहहैं ॥ और तिसीव्याघ्रीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे गौतमकैंहहैं ॥ और तिनदोनोंविषे आलंबीपुत्रकौशिकनामाऋषितो साक्षात्ब्रह्मातैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और दूसराव्याघ्रीपुत्र गौतमनामाऋषि कापीपुत्रनामाऋ षितैं तथाकाण्वीपुत्रनामाऋषितैं यादोनोंगुरुवोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसकापीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे अग्निवेश्यकैंहैं ॥ काण्वीपुत्रनामाऋषिका पुरुषवंशविषे समानसंख्यावालाकोईनामहैनहीं यातैं लिख्यानहीं ॥ और तिनदोनोंविषे काण्वीपुत्र नामाऋषितो साक्षात्ब्रह्मातैंहीं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और दूसरा कापीपुत्र अग्निवेश्यनामाऋषि आत्रेयीपुत्रनामाऋषितैं तथाशांडिल्यनामाऋषितैं यादोनोंगुरुवोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसआत्रेयीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे आनभिम्लातकैंहैं ॥ शांडिल्यनामाऋषिकेअभेदकाबोधककोईनाम सोवंशविषेहैनहीं ॥ यातैं नहीं कथनकऱ्या॥ और तिनदोनोंविषे शांडिल्यनामाऋ षितो साक्षात् ब्रह्मातैंही ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और दूसरा आत्रेयीपुत्र आनभिम्लातनामाऋषि गौतमीपुत्रनामाऋषितैं

ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसगौतमीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे आनभिम्लातकहेंहें ॥ और सोगौतमीपुत्र आनभिम्लातनामा ऋषि भारद्वाजीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसभारद्वाजीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे गौतमकहेंहें ॥ और सोभारद्वाजीपुत्र गौतमनामाऋषि पाराशरीपुत्रनामादोऋषियोंतें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥ तिनदोनोंऋषियोंकूं पुरुषवंशविषे एककूं सैतवकहेंहें ॥ और दूसरेकूंप्राचीनयोग्यकहेंहें ॥ और सोपाराशरीपुत्र सैतवनामाऋषि तथाप्राचीनयोग्यनामाऋषि यहदोनोंभ्राता वात्सीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिसवात्सीपुत्रनामाऋषिकूं मधुकांडविषेस्थितपुरुषवंशविषे पाराशर्यकहेंहें ॥ और याज्ञवल्क्यकांडविषेस्थितपुरुषवंशविषे पाराशर्यायणकहेंहें ॥ और सोवात्सीपुत्र पाराशर्यायणनामाऋषि पाराशरीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥तिसपाराशरीपुत्रनामाऋषिकूं मधुकांडविषे भारद्वाजकहेंहें ॥ और याज्ञवल्क्यकांडविषे गार्ग्यायणकहेंहें ॥ और सोपाराशरीपुत्रभारद्वाजनामाऋषि वार्कारुणीपुत्रनामाऋषितें तथागौतमतें यादोनोंगुरुवोंतें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसवार्कारुणीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे उद्दालकायनकहेंहें॥ और मधुकांडविषे भारद्वाजकहेंहें॥तिनदोनोंविषे वार्कारुणीपुत्र भारद्वाजनामाऋषितो साक्षात् ब्रह्मातेंही ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥और दूसरागौतमनामाऋषि द्वितीयवार्कारुणीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥तिसवार्कारुणीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे जाबालायनकहेंहें ॥ और मधुकांडविषे भारद्वाजकहेंहें ॥ और सोवार्कारुणीपुत्र भारद्वाजनामाऋषि आर्तभागीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसआर्तभागी पुत्रनामा ऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे माध्यंदिनायनकहेंहें ॥ और मधुकांडविषे पाराशर्यकहेंहें ॥ और सोआर्तभागी पुत्र माध्यंदिनायननामाऋषि शौंगीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसशौंगीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे सौकरायणकहेंहें ॥ और सोशौंगीपुत्र सौकरायणनामाऋषि सांकृतीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिससांकृतीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे काषायणकहेंहें ॥ और सोसांकृतीपुत्र काषायणनामाऋषि आलंबायनीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसआलंबायनीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे सायकायनकहें

हैं ॥ और मधुकांडविषे वैजपायनकहैंहैं ॥ और सोआलंबायनीपुत्र वैजपायननामाऋषि आलंबीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता भया ॥ तिसआलंबीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे कौशिकायनिकहैंहैं ॥ और सोआलंबीपुत्र कौशिकायनिनामाऋषि जायंतीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसजायंतीपुत्रनामाऋषिकूं दोनोंपुरुषवंशोंविषे घृतकौशिककहैंहैं ॥ और सोजायंतीपुत्र घृतकौशिक नामाऋषि मांडूकायनीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसमांडूकायनीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे पाराशर्यायणकहैंहैं ॥ और सोमांडूकायनीपुत्र पाराशर्यायणनामाऋषि मांडूकीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसमांडूकीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे पाराशर्यकहैंहैं ॥ और सोमांडूकीपुत्र पाराशर्यनामाऋषि शांडलीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसशांडिलीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे जातूकर्ण्यकहैंहैं ॥ और सोशांडिलीपुत्रजातूकर्ण्यनामाऋषि राथीतरीपुत्रनामाऋषितैं तथा यास्कनामाऋषितैं यादोनोंगुरुवोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसराथीतरी पुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे आसुरायणकहैंहैं ॥ तिनदोनोंविषे यास्कनामाऋषितो साक्षात्ब्रह्मातैंही ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और दूसरा राथीतरीपुत्र आसुरायणनामाऋषि भालुकी पुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसभालुकीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे त्रैवणिकहैंहैं ॥ अब स्त्रीवंशविषेवर्तमान जेअधिक षट्ऋषिहैं॥तिनोंका आसुरायणऋषिविषे अंतरभावकूं दिखावैहैं॥सोभालुकीपुत्र त्रैवणिनामाऋषि क्रौंचकीपुत्रनामादोनोंऋषियोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और ते क्रौंचकीपुत्रनामादोनोंऋषिवैदभृतीपुत्रनामाऋषितैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोतेभये॥और सोवैदभृतिपुत्रनामाऋषिकार्षकेयीपुत्रतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया।और सोकार्षकेयीपुत्रनामाऋषिप्राचीनयोगीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया।और सोप्राचीन योगीपुत्रनामाऋषि सांजीवीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और सोसांजीवीपुत्रनामाऋषि प्राश्रीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्त होताभया॥कैसाहैसोप्राश्रीपुत्रनामाऋषि स्त्रीवंशकेअंतविषेस्थितहै ॥ और आसुरिनामादेशविषेरहणेतैं अथवा आसुरिनामागुरुकेसमीपरहणेतैं जिसप्राश्रीपुत्रनामाऋषिकूं आसुरिवासीकहैंहैं॥ और सोप्राश्रीपुत्रनामाऋषि पूर्वउक्तराथीतरी पुत्रआसुरायणनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं

प्राप्तहोताभया ॥ कैसाहै सो आसुरायणनामाऋषि पूर्वउक्त जातूकर्ण्यनामाऋषिकातौगुरुहै ॥ और त्रैवणिनामाऋषिकाशिष्यहै ॥शंका॥
हेभगवन् त्रैवणिनामाऋषिकेगुरुवोंकीपरंपराविषेवर्तमान प्राश्नीपुत्रनामाऋषि त्रैवणिनामाऋषिकेशिष्यआसुरायणनामाऋषितैं किसप्रकार
ब्रह्मविद्याकूंग्रहणकरताभया ॥ आपणेशिष्यकेभीशिष्यतैं विद्याकाग्रहणकरणा संभवेनहीं ॥ समाधान ॥आपणेशिष्यकेभीशिष्यतैं यद्यपि
विद्याकाअध्ययनकरणा असंगतहै॥तथापि किसीनिमित्तकरिके पूर्वअध्ययनकरीविद्याकेविस्मरणहुए तथासंशयकेउत्पन्नहुए पुनःविद्याका
अध्ययन प्रसिद्धदेख्याहै ॥ और महाभारतकेगदापर्वविषेभी यहवार्ताप्रसिद्धहै ॥ तहाँयहकह्याहै ॥ एककालविषे द्वादशवर्षपर्यंत दुर्भिक्ष
पड़ाथा ॥ तादुर्भिक्षकरिके संपूर्णब्राह्मणोंको विद्या विस्मरणहोतीभयी ॥ और सरस्वतीकीकृपाकरिके एकसारस्वतनामाब्राह्मणकूं विद्या
काविस्मरणनहींहोताभया ॥ और दुर्भिक्षकेनिवृत्तिहुए पुनःतेसंपूर्णब्राह्मण तासारस्वतनामाब्राह्मणतैं विद्याकूंअध्ययनकरतेभये ॥ इस
प्रकार विद्याकेविस्मरणहुए पुनः विद्याकाअध्ययन संभवैहै और सोपूर्वउक्तआसुरायणनामाऋषिकागुरु त्रैवणिनामाऋषि औपजंघनिना
माऋषितैंभी ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोऔपजंघनिनामाऋषि आसुरिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ सोकै
साहैआसुरिनामाऋषि ॥ तीनवंशोंविषे जिसकासमानरूपहै ॥ और जिसआसुरिनामाऋषितैंलेके नीचेनीचे जोनानाप्रकार
ऋषियोंकेवंशकाभेदहै॥सोवंशकाभेद किसीपुरुषकरिकेभीसमाधानकरणेकूंअशक्यहै॥तात्पर्ययह॥पौतिमाषीपुत्रनामाऋषितैंलेके आसुरि
नामाऋषिपर्यंतऋषियोंकेनामोंकीविलक्षणतादेखिके तथासंख्याकीविलक्षणतादेखिकेकोईकशास्त्रवालेत्रीवंशकूंभिन्नहींअंगीकारकरैंहैं।और
कोईकशास्त्रवाले महात्मापुरुष बहुतस्थानविषे नामोंकीसमानताकूंदेखिकरिके त्रीवंशकूं भिन्नमानैंनहीं।किंतु अभिन्नमानैंहैं॥तैसेदोनोंपुरुषवं
शविषेभी कोईकशास्त्रवालेपुरुष अग्निवेश्यनामाऋषितैंलेके कौशिकायनिनामाऋषिपर्यंत परस्परनामोंकीविलक्षणताकूंदेखिके भेदहींअंगी
कारकरैंहैं॥और अग्निवेश्यनामाऋषितैं पूर्वविद्यमानजेऋषिहैं ॥ तथा कौशिकायनिनामाऋषितैं परेविद्यमानजेऋषिहैं ॥ तिनोंकातो
परस्परअभेदहीअंगीकारकरैंहैं ॥ और कोईकशास्त्रवालेपुरुषतो सर्वत्र अभेदहीअंगीकारकरैंहैं ॥ काहेतैं एकहीऋषिके नानाप्रकारकेनाम

संभवैहैं ॥ नामोंकेभेदकूंदेखिके ऋषियोंकाभेदमानणा निष्फलहै॥किंवा ॥ तिनवंशोंका परस्परभेदअंगीकारकरिये ॥ अथवा अभेदअंगी
कारकरिये ॥ सर्वप्रकारकरिके आसुरिनामाऋषिविषे स्त्रीवंशका तथादोनोंपुरुषवंशका अभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आसुरिनामा
ऋषितैंपूर्व तीनोंवंशोंविषेभेदका तथाअभेदका विवादहै ॥ आसुरिनामाऋषितैंअनंतर केवलअभेदहीहै॥ इसप्रकार स्त्रीवंशकूंनिरूपणकरि
के अब दोनोंपुरुषवंशोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ तहां सोआसुरिनामाऋषिभारद्वाजनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोभारद्वाज
नामाऋषि आत्रेयनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोआत्रेयनामाऋषि माटिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और
सोमांटिनामाऋषि गौतमनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोगौतमनामाऋषि दूसरेगौतमनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता
भया ॥ और सोदूसरा गौतमनामाऋषि वात्स्यनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोवात्स्यनामाऋषि शांडिल्यनामाऋषितैं
ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोशांडिल्यनामाऋषि कैशोर्यकाप्यनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोकैशोर्य
काप्यनामाऋषि कुमारहारितनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोकुमारहारितनामाऋषि गालवनामाऋषितैं ब्रह्मविद्या
कूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोगालवनामाऋषि विदर्भीकौंडिन्यनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोकौंडिन्यनामाऋषि
वात्सनेयाद्वाभ्रवनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोवात्सनेयाद्वाभ्रवनामाऋषि पथिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहो
ताभया ॥ तिसपथिनामाऋषिकूं सौभरिभीकहैहैं ॥ और सो सौभरिपथिनामाऋषि अयास्यांगिरसनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहो
ताभया ॥ और सोअयास्यांगिरसनामाऋषि त्वाष्ट्रआभूतिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोत्वाष्ट्रआभूतिनामाऋषि
त्वाष्ट्रविश्वरूपनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोत्वाष्ट्रविश्वरूपनामाऋषि अश्विन्नामादोऋषियोंतैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहो
ताभया ॥ जिनअश्विन्नामाऋषियोंके विद्याउपदेशरूपानिमित्ततैं देवराजइंद्र दध्यङ्अथर्वणनामाऋषिऊपर कोपकूंकरताभया ॥
और तेअश्विन्नामादोनोंऋषि दध्यङ्अथर्वणनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोतेभये ॥ कैसाहैसोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषि देवराजइंद्रकाभा

गुरुहै ॥ और सोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषि देवआथर्वणनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोदेवआथर्वणनामाऋषि प्राध्वंसनमृ
त्युनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोप्राध्वंसनमृत्युनामाऋषि प्रध्वंसननामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सो
प्रध्वंसननामाऋषि एकर्षिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोएकर्षिनामाऋषि विप्रचित्तिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता
भया ॥ और सोविप्रचित्तिनामाऋषि व्यष्टिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोव्यष्टिनामाऋषि सनारुनामाऋषितैं ब्रह्मवि
द्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोसनारुनामाऋषि सनातननामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोसनातननामाऋषि सनकनामा
ऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोसनकनामाऋषि विराट्भगवान्तैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोविराट्भगवान् हिर
ण्यगर्भतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसहिरण्यगर्भतैं आगे कोईब्रह्मविद्याकावक्तानहीं ॥ किंतु हिरण्यगर्भही सर्वकाअवधिरूपहै ॥ तिस
हिरण्यगर्भकेताईं सर्वदा हमारानमस्कारहै ॥ कैसाहै सो हिरण्यगर्भ संपूर्णजगत्का तथावेदरूपवृक्षका मूलरूपहै ॥ इसप्रकार स्त्रीवंशके
साथ पुरुषवंशकाअभेद अंगीकारकरिके पुरुषवंशकानिरूपणकर्या ॥ अब भेदपक्षकूंअंगीकारकरिके स्त्रीवंशकानिरूपणकरैहैं ॥ श्रीगुरु
रुवाच ॥ हेशिष्य दोनोंपुरुषवंशोंविषे ऋषियोंकेनामोंकोसमानता बहुतस्थानविषेदेखीतीहै ॥ यातैं दोनोंपुरुषवंशोंका यद्यपि अभेदसं
भवैहै ॥ तथापि स्त्रीवंशविषे ऋषियोंकेसंख्याकाभेद देखीताहै तथा प्रकरणकाभी भेददेखीताहै तथा तिनऋषियोंकेनामोंकी भी विलक्ष
णतादेखीतीहै ॥ यातैंस्त्रीवंशकाभेदही हमारेचित्तविषे प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं ताभेदपक्षकूंअंगीकारकरिके अब स्त्रीवंशकानिरूपण तेरेताईं
हम करैहै ॥ तिसकूं तुम श्रवणकरो ॥ पूर्व अभेदपक्षकूंअंगीकारकरिके पौतिमाष्यनामाऋषितैंलेके उत्तरउत्तर आसुरिनामाऋषिपर्यंतस्त्री
वंशकानिरूपणकर्या ॥ अब ब्रह्मातैंलेके नीचेनीचे ऋषियोंकेनामोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य पूर्व पुरुषवंशकेअंतविषेकथनकर्या
जोस्वयंभूब्रह्मा तिसब्रह्मातैं विराट्भगवान् ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसविराट्भगवान्तैं काश्यपेयनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्त
होताभया ॥ तिसकाश्यपेयनामाऋषिकूं तुरभीकहैहैं ॥और तिसतुरनामाकाश्यपेयऋषितैं यज्ञवचस्नामा राजस्तंबायनऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्रा

प्तहोताभया ॥ और तिसयज्ञवचस्नामाऋषितैं कुश्रिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥ और तिसकुश्रिनामाऋषितैं वात्स्यनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसवात्स्यनामाऋषितैं शांडिल्यनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसशांडिल्यनामाऋषितैं वामकक्षायणनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसवामकक्षायणनामाऋषितैं माहित्थिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसमाहित्थिनामाऋषितैं कौत्सनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया और तिसकौत्सनामाऋषितैं मांडव्यनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसमांडव्यनामाऋषितैं मांडूकायनिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसमांडूकायनिनामाऋषितैं सांजीवीपुत्रनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिससांजीवीपुत्रनामाऋषितैंलैके नोचेनीचे पौतिमाषीपुत्रपर्यंत जोशिष्योंकी परंपरा पूर्वकथनकरिआयेहैं॥सोईहीपरंपरायहां सांजीवीपुत्रतैंनीचेनीचजानणी ॥ परंतु पूर्वतैंहां इतनाभेदहै ॥ पूर्व स्त्रीनामकरिकेअघटितजेपौतिमाष्यतथागौपवनादिकनामहैं ॥ तिननामोंकापरित्यागकरिकै तथापूर्वउक्तआसुरायणऋषिविषे अंतर्भावकापरित्यागकरिकै अन्यसंपूर्णशिष्योंकीपरंपरापूर्वकीन्याई जानणी ॥ यातैं हेशिष्य पौतिमाषीपुत्रनामाऋषितैंआदिलैके जितनेकऋषि स्त्रीवंशविषेविद्यमानहैं ॥ तिनसर्वऋषियोंका आद्यगुरु स्वयंभूब्रह्माहै ॥ ताब्रह्माकूंही हिरण्यगर्भकहैं हैं ॥ और कोईकबुद्धिमान्पुरुष सूर्यभगवान्कूंभी स्त्रीवंशकाआद्यगुरुकहैं हैं ॥ यातैं हेशिष्य तिसप्रक्रियाकूंभी हम तुमारेताई कथनकरेहैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ सोकैसाहै सूर्यभगवान् ॥ जिससूर्यभगवान्कातेज मुमुक्षुजनोंनें सर्वदा ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ और जोसूर्यभगवान् हमजीवोंकेअंतरस्थितहोइके बुद्धिकीसंपूर्णवृत्तियोंकूंधर्मादिकोंविषे प्रवर्त्तकरेहै ॥ और जोसूर्यभगवान् मायाविशिष्टईश्वरस्वरूपहै ॥ तथा हिरण्यगर्भस्वरूपहै ॥ तथा वैश्वानरस्वरूपहै ॥ और जोसूर्यभगवान् भूमिलोक अंतरिक्षलोक स्वर्गलोक यहतीनलोकस्वरूपहै॥तथा ऋग् यजुष् साम यहतीनवेदस्वरूपहै॥ तथा जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यहतीनअवस्थास्वरूपहै ॥ तथा ब्रह्मा विष्णु महादेव यहतीनदेवतास्वरूपहै ॥ और जोसूर्यभगवान् प्रणवकाअर्थस्वरूपहै॥ऐसेसूर्यभगवान्तैं अंभिणीनामादेवता ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसअंभिणीनामादेवतातैं वाक्देवताब्रह्म

विद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसवाक्‌देवतातें कश्यपनामानैध्रुविऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसनैध्रुवि कश्यपनामाऋषितें शिल्पनामाकश्यपऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसशिल्पकश्यपनामाऋषितें हरितकश्यपनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और तिसहरितकश्यपनामाऋषितें वार्षगणनामा असितऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥ औरतिस वार्षगणअसितनामाऋषितें जिह्वावान्‌नामा वाध्योगऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसजिह्वावान्‌वाध्योगनामाऋषितें वाजश्रवस्‌नामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसवाजश्रवस्‌नामाऋषितें कुश्रिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और कुश्रिनामाऋषितें उपवेशिनामाऋषिब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसउपवेशिनामाऋषितें अरुणनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसअरुणनामाऋषितें उद्दालकनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसउद्दालकनामाऋषितें याज्ञवल्क्यनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसयाज्ञवल्क्यनामाऋषितेंआसुरिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसआसुरिनामाऋषितें आसुरायणनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और तिसआसुरायणनामाऋषितें प्राश्रीपुत्रनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसप्राश्रीपुत्रनामाऋषितें सांजीवीपुत्रनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ सोसांजीवीपुत्रनामाऋषि पूर्वब्रह्मातैंप्रवर्तभयावंशविषे मांडूकायनिनामाऋषिका शिष्यरूपकरिकेकथनकऱ्याथा ॥ इसप्रकार प्राचीनयोगीपुत्रनामाऋषितें आदिलेके पौतिमाषीपुत्रनामाऋषिपर्यंत स्त्रीनामघटितनामोंकरिके जेजेऋषिपूर्वनिरूपणकरेथे ॥ तेसंपूर्णऋषि पुरुषनामतैंरहितहुए सांजीवीपुत्रनामाऋषिके शिष्यपरंपराविषेजानणे ॥ इसप्रकार सूर्यभगवान्‌तें निर्गमनभई जोब्रह्मविद्या ॥ तथा स्वयंभूब्रह्मातैंनिर्गमनभईजोब्रह्मविद्या ॥ यहदोनोंप्रकारकीब्रह्मविद्या सांजीवीपुत्रनामाऋषिविषे एकभावकूं प्राप्तहोतीभई ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पर्वतकेदोशृंगोंतें निर्गमनभयेजोनदीकेदोप्रवाह ॥ ते किंचित्‌दूरजाइके एकताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसेसूर्यभगवान्‌तें तथाब्रह्मातें निर्गमनभइयां जेब्रह्मविद्यारूपदोनदी तेदोनोंप्रकारकीब्रह्मविद्या सांजीवीपुत्रनामाऋषिकूंप्राप्तहोइके एकभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मातैंलेके तथासूर्यभगवान्‌तैंलेके सांजीवीपुत्रपर्यंत दोप्रकारकेशिष्यपरंपराकूं ब्रह्मविद्याप्राप्तहोवैहै ॥

और सांजीवीपुत्रतैंलेके नीचेनीचे एकप्रकारकेशिष्यपरंपराकूं ब्रह्मविद्याप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार भेदपक्षकूंअंगीकारकरिके स्त्रीवंशका निरूपणकर्‍या ॥ अबतिसीभेदपक्षकूंअंगीकारकरिके दोनोंपुरुषवंशोंकी जितनीअंशविषेसमानरूपताहै तथा जितनीअंशविषे तिनों कीविलक्षणताहै तिनदोनोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ तहाँ बृहदारण्यकउपनिषद्के तृतीयचतुर्थअध्यायरूपमधुकांडविषे तथाबृहदारण्यक उपनिषद्के पंचमषष्ठमअध्यायरूपयाज्ञवल्क्यकांडविषे पौतिमाष्यनामाऋषितैंआदिलेके स्वयंभूब्रह्मापर्यंत बहुतस्थानविषे पुरुषवं शकीसमानरूपताही देखीहै ॥ और आग्निवेश्यनामाऋषिके तथाकौशिकायननामाऋषिके मध्यवर्तिजेऋषिहैं ॥ तिनऋषियोंविषे समा नरूपताहैनहीं ॥ किंतु विलक्षणताहै ॥ तहाँ प्रथम मधुकांडविषे विलक्षणताकूंनिरूपणकरैहैं ॥ आग्निवेश्यनामाऋषिके दोगुरुहोतेभये ॥ एकतौ शांडिल्यनामाऋषि ॥ और दूसरा आनभिम्लातनामाऋषि ॥ तिनदोनोंविषे आनभिम्लातनामाऋषिका अन्यआनभिम्लातनामा ऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसदूसरे आनभिम्लातनामाऋषिका तृतीयआनभिम्लातनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसतृतीयआन भिम्लातनामाऋषिका गौतमनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसगौतमनामाऋषिके सैतवनामाऋषि तथाप्राचीनयोग्यनामाऋषि यह दोनोंगुरुहोतेभये॥और सैतव तथाप्राचीनयोग्यनामादोनोंऋषियोंका पाराशर्यनामाऋषि गुरुहोताभया॥और तिस पाराशर्यनामाऋषिका भारद्वाजनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसभारद्वाजनामाऋषिके द्वितीयभारद्वाजनामाऋषि तथागौतमनामाऋषि दोनों गुरुहोतेभये तिनदोनोंऋषियोंविषे गौतमनामाऋषिका अन्यभारद्वाजनामाऋषि गुरुहोताभया॥ और तिसभारद्वाजनामाऋषिका अन्यपाराशर्यनामा ऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसपाराशर्यनामाऋषिका वैजपायननामाऋषि गुरुहोताभया॥और तिसवैजपायननामाऋषिका कौशिका यनिनामाऋषि गुरुहोताभया॥ इसप्रकार मधुकांडविषे आग्निवेश्यनामाऋषितैंलेके कौशिकायनिनामाऋषिपर्यंत विलक्षणताकथनकरी॥ अब याज्ञवल्क्यकांडविषेताविलक्षणताकूंनिरूपणकरैहैं ॥ तहांआग्निवेश्यनामाऋषिका गार्ग्यनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और ति सगार्ग्यनामाऋषिका दूसरागार्ग्यनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसदूसरेगार्ग्यनामाऋषिका गौतमनामाऋषि गुरु होताभया ॥

और तिसगौतमनामाऋषिका सैतवनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिससैतवनामाऋषिका पाराशर्यायणनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसपाराशर्यायणनामाऋषिका गार्ग्यायणनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसगार्ग्यायणनामाऋषिका उद्दालकायननामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसउद्दालकायननामाऋषिका जावालायननामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसजावालायननामाऋषिका माध्यंदिनायननामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसमाध्यंदिनायननामाऋषिका सौकरायणनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिससौकरायणनामाऋषिका काषायणनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसकाषायणनामाऋषिका सायकायननामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिससायकायननामाऋषिका कौशिकायनिनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ हेशिष्य मधुकांडविषे स्थितपुरुषवंशविषे तथायाज्ञवल्क्यकांडविषेस्थितपुरुषवंशविषे इतनोहीविलक्षणताहै ॥ ताविलक्षणताकूंदेखिकरिकै कोईकविद्वान्पुरुष तिनदोनोंपुरुषवंशोंकेभेदकूंही अंगीकार करैहैं ॥ और कोईकविद्वान्पुरुष याप्रकार अंगीकारकरैहैं ॥ मधुकांडकेअंतविषे तथायाज्ञवल्क्यकांडकेअंतविषे तथाखिलकांडकेअंतविषे एकहीवंशकानिरूपणकऱ्याहै ॥ परंतु मधुकांडादिरूपउपाधिकेभेदकरिकै वंशकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैं वंशकाभेदनहीं ॥ और कोईकविद्वान्पुरुष कल्पकेभेदतैंवंशकाभेद अंगीकारकरैहैं ॥ और वेदकेअर्थकूंयथार्थजानणेहारे जेश्रीशंकराचार्यादिकहैं ॥ तेतो सर्वप्रकार तिनवंशोंकाअभेदनहीं अंगीकारकरैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोतिनवंशोंका सर्वथाअभेदहीहोवै ॥ तो एकवारकथनतैंहीप्रतिबंधकेनिवृत्तिद्वारा विद्याकीप्राप्तिरूपफलकासंभवहोइसकैहै तीनवारवंशकाकथन निष्फलहै ॥ समाधान ॥ तीनवार वंशकाकथन निष्फल नहीं किंतु सफलहै ॥ काहेतैं जैसे एकहीप्राण ज्येष्ठरूपकरिकैआराधनकऱ्याहुआ ॥ तथाश्रेष्ठरूपकरिकैआराधनकऱ्याहुआ भिन्नभिन्न फलकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे एकहीऋषियोंकावंश मधुकांडविषे स्थितनामोंकरिकैस्मरणकऱ्याहुआ मधुविद्याकेप्रतिबंधकपापकर्मकीनिवृत्तिद्वारा मधुविद्यारूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और सोईही ऋषियोंकावंश याज्ञवल्क्यकांडविषेस्थितनामोंकरिकैस्मरणकऱ्याहुआ याज्ञवल्क्यविद्याकेप्रतिबंधकपापकर्मोंकीनिवृत्तिद्वारा याज्ञवल्क्यविद्यारूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और सोईहीऋषियोंकावंश खिलकांडविषेस्थितनामों

करिकेस्मरणकऱ्याहुआ सर्वविद्याकेप्रतिबंधकपापकर्मकीनिवृत्तिद्वारा सर्वविद्यारूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं तीनोंकांडविषे ऋषियोंके नामोंकाभेदहै ॥ ऋषियोंकेस्वरूपविषेभेदनहीं ॥ किंवा स्त्रीवंशविषे जोपूर्व किंचित्मात्रविलक्षणता कथनकरिआयेहैं ॥ सोविलक्षणता भी भेदकाकारणहोवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे दोनोंपुरुषवंशविषे आग्निवेश्यनामाऋषिके तथाकौशिकायनिनामाऋषिके मध्यवर्तिऋषियोंके जोनामोंकाभेदहै ॥ सोभेद दोनोंपुरुषवंशकेभेदकूंउत्पन्नकरैनहीं॥तैसे कहांन्यूनऋषियोंकाकथनऔर कहीं अधिक ऋषियोंकाकथन और कहांदोगुरुवोंकाकथन और कहांब्रह्मातथासूर्यरूपदोसंप्रदायोंकाकथन ॥ यहसर्वप्रकारकीविलक्षणताभी स्त्रीवंशकेभेदकूंसिद्धकरैनहीं ॥ किंवा ॥ ब्रह्मविद्याकाप्रवर्तक जो सूर्यभगवान्है ॥ सो स्वयंभूब्रह्मातैंभिन्ननहीं ॥ तैसे स्वयंभूब्रह्मातैं विराट्भगवान् वास्तवतैंभिन्ननहीं॥तैसे विराट्भगवान्तैं ऋषि वास्तवतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु उपाधिकरिकेतिनोंकापरस्परभेद प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं ऋषियोंकेस्वरूपकाभेदनहीं ॥ किंतुतिनोंकेनाममात्रकाभेदहै ॥ किंवा सांजीवीपुत्रनामाऋषितैंलेके ब्रह्मापर्यंत श्रुतिही तिनऋषियोंकेसमानरूपताकूं कथनकरैहै ॥ यातैं पौतिमाषीपुत्रपर्यंतभी तिनवंशोंविषे भेदनहींजानणा ॥ किंतु अभेदहीजानणा ॥किंवा ॥ तीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेदहोवै ॥ अथवा अभेदहोवै ॥ सर्वप्रकारकरिके मुमुक्षुपुरुषनैं तिनऋषियोंका वारंवार स्मरणहींकरणेयोग्यहै ॥ और जोकदाचित् सर्वऋषियोंकेस्म रणकरणेकी जिसपुरुषकूंसामर्थ्यनहींहोवै ॥ तिसपुरुषनैंभी पौतिमाषीपुत्रनामाऋषिकातो अवश्यहीस्मरणकरणा ॥ काहेतैं ब्रह्मविद्याके अधिकारीहमसर्वपुरुषोंकागुरु पौतिमाषीपुत्रनामाऋषिहीहै ॥ कैसाहैसोपौतिमाषीपुत्रनामाऋषि स्त्रीवंशविषे तथापुरुषवंशविषे प्रसिद्धहै ॥ इतिवंशव्याख्यानंसंपूर्णम् ॥ हेशिष्य पूर्वजोतुमनैं भयकाकारणपूछाथा ॥ तिसकेकथनकरणेवासते यहऋषियोंकावंश हमनैं तुमारेताई कथनकऱ्याहै॥अब तिनऋषियोंकेवंशविषे एकविचित्रइतिहासकूं हमनैंश्रवणकऱ्याहै ॥ तिसइतिहासकूं तुम श्रवणकरो ताइतिहासकेश्रवणक रणेतैं तुमारेसंदेहकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ कैसाहैसोइतिहास इंद्रके तथाअश्विनीकुमारोंके गुह्यकर्मकूं प्रकाशकरणेहाराहै ॥और अश्विनीकुमारोंकूं देखिके क्रोधयुक्तहुएकिसीऋषिनैं कथनकऱ्याहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य कोईकऋषि किसीकार्यकीसिद्धिवासते अश्विनीकुमारोंकेसमीप

जाताभया॥औरतेअश्विनीकुमारकिसीनिमित्तकरिकैतिसऋषिकीअवज्ञाकरतेभये॥ तिसकरिकैक्रोधयुक्तहुआसोऋषिअश्विनीकुमारोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ तुमोंनैं जोपूर्वंगुह्यपापकर्मकन्याहे ॥ तिसकूं मैं भलीप्रकारजाणताहूं ॥ अहंकारकरि केयुक्तहुएतुम जोहमारेकार्यकूंनहींकरोगे ॥ तो जैसेबादल महान्वृष्टिकूंप्रगटकरैहे ॥ तैसे तुमारेपापकर्मकूंमैं प्रगटकरोंगा ॥इसप्रकार ऋषि केवचनकूंश्रवणकरिके तेमहात्माअश्विनीकुमार याप्रकारकाविचारकरतेभये ॥ जोयहऋषि हमारेपापकर्मकूंप्रगटकरैगा ॥ तिसकरिके हमारीकिंचित्मात्रभीहानि नहींहोवैगी ॥ उलटा जगत्विषे हमारीकीर्तिहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ अज्ञानीपुरुषकेपापकर्म जभी प्रगटहो वैहैं ॥ तभी परलोकविषे ताअज्ञानीकेदुर्गतिकूंविचारिकरिके संपूर्णलोक ताअज्ञानीकीनिंदाकरैहैं ॥ और आत्मज्ञानीपुरुषकेपापकर्मकूं देखिके लोक निंदाकरैनहीं ॥ उलटा याप्रकारकहैहैं ॥ यातत्त्ववेत्ताज्ञानीपुरुषनैं ऐसाउग्रपापकर्मकन्याभी ॥ तोभी जिसआत्मज्ञानके प्रभावतैं याका रोममात्रभीछेदननहींहोताभया ॥ याप्रकार सर्वलोक तत्त्ववेत्ताज्ञानीपुरुषकी कीर्तिकरैहैं ॥ याप्रकार आपणेमनविषेविचा रकरिके तेअश्विनीकुमार कहतेभये ॥ हेऋषि कूरपुरुषकीन्याई हमोंनैं ऐसाकौनपापकर्मकन्याहे ॥ और किसप्रकार हमोंनैं सोपापकर्म कन्याहे ॥ तथा किसनिमित्तकरिके हमोंनैं सोपापकर्मकन्याहे ॥ यहसंपूर्णवृत्तांत हमारेप्रति तुमकहो ॥ और हेऋषि जोतू हमारेगुह्यपाप कर्मकूं प्रगटकरिकैनहींकहैगा ॥ तो तुमारेकार्यकूं हम नहींसिद्धकरैंगे ॥ यातैं आपणेकार्यकीसिद्धिवासते सोहमारापापकर्म प्रगटकरो ॥ हमारेपापकर्मकूं जभी तुम प्रगटकरोगे ॥ तभी हम तुमारेकार्यकीसिद्धिकरैंगे ॥ यहहमारासत्यवचनहे ॥ इसप्रकार अश्विनीकुमारोंके वचनकूं श्रवणकरिके आपणेकार्यकीसिद्धिवासतै सोऋषि तिनोंकेगुह्यपापकर्मकूं तथाताकेनिमित्तकूं अश्विनीकुमारोंकेआगे कहताभया ॥ ऋषिरुवाच ॥ हेअश्विनीकुमारो ब्रह्माकाशिष्यजोविराट्भगवान्हे ॥ तिसतैंआदिलैके पौतिमाष्यपर्यंत शिष्यपरंपराकरिके विचित्र जो यहपुरुषवंश प्रवृत्तभयाहे ॥ तिसपुरुषवंशविषे ब्रह्मातैंलेकेनीचेनीचे जोद्वादशमादध्यङ्अथर्वणनामाऋषिहे ॥ सो देवअथर्वणनामाऋषि काशिष्यहोताभया ॥ और तुमदोनोंका गुरुहोताभया ॥ सोकेसाहेदध्यङ्अथर्वणनामाऋषि ॥ ब्रह्मविद्याकरिकैयुक्तहे ॥ और मधुकांडके

अर्थकूंजानणेहाराहै ॥ ऐसादध्यङ्अथर्वणनामामुनि तुमदोनोंकेताईं वेदकेपाठकूं तथावेदकेअर्थकूं पढावताभया ॥ परंतु तुमारेकूंवैराग्यतें रहित देखिकरिके सोऋषि तुमारेताईं उपनिषद्रूपवेदांतभागकेअर्थकूं नहींपढावताभया ॥ किंतु अर्थसहितवेदकेकर्मकांडकूं तुमारेताईं पढावताभया और तिसदध्यङ्अथर्वणनामागुरुतें जैसातुमोनें वेदोंकेपाठकूं तथाअर्थकूं अध्ययनकऱ्याथा ॥ तिसीप्रकार तुमदोनों त्वाष्ट्र विश्वरूपनामाऋषिकेताईं कथनकरतेभये ॥ और सोत्वाष्ट्रविश्वरूपनामाऋषि आभूतिनामात्वाष्ट्रकेताईं कथनकरताभया ॥ और सोआभू तित्वाष्ट्रनामऋषि अपास्यनामाआंगिरसऋषिकेताईं वेदकाकथनकरताभया ॥ इसप्रकार सोवेदविद्या परंपराकरिके पौतिमाष्यनामाऋ षिविषे प्राप्तहोतीभयी ॥ और सोपौतिमाष्यनामाऋषि मनुष्यलोकवर्त्तिहमसर्वअधिकारियोंका गुरुहोताभया ॥ इसप्रकार वेदविद्याकेसं प्रदायकूंप्रवर्तकरिके सोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषि ब्रह्मज्ञानकेप्रभावतें महान्यशकूंप्राप्तहोताभया ॥ और किसीदेशविषे आश्रमकूंकरिके निवासकरताभया ॥ और तिसआश्रमविषेनिवासकरताहुआ सोदध्यङ्ऋषि पक्षपाततैंरहितहोइकै देवतावोंके तथाअसुरोंके तथामनुष्योंके सुखकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसजिसपुरुषकूं स्वर्गरूपफलकेप्राप्तिकीइच्छाहोवे ॥ अथवा पशुपुत्रादिरूपफलकेप्राप्तिकी इच्छाहोवे ॥ अथवा वैरीकेमारणेकीइच्छाहोवे ॥ तिसतिसपुरुषकेताईं तिसतिसउपायकरिकेसहित तिसतिसफलकाउपदेश करतेभये ॥ और लोकोंकेहितवासते तिनकर्मोंकेपरिणामकालविषे होणेहारा जोसुख तथादुःख ॥ तिनसंपूर्णोंका उपदेशकरतेभये ॥ तात्पर्ययह ॥ स्वर्गकेप्राप्तिकाजोउपायपूछे ॥ ताकेप्रति याप्रकारकहतेभये ॥ दर्शपौर्णमासनामायज्ञकूं जोतुम करोगे तौ तुमारेकूंस्वर्गकीप्राप्ति होवेगी ॥ परंतु पुण्यकर्मकेक्षयहुएतेंअनंतर स्वर्गतेंनीचेगिडनेंकरिके महान्दुःख तुमारेकूंप्राप्तहोवेगा ॥ और पुनःउत्तमकुलविषे तुमाराजन्महोवेगा ॥ और जोकोईपुरुष शत्रुमारणेकाउपाय दध्यङ्ऋषितैंपूछे ॥ ताकेप्रति याप्रकारकहतेभये ॥ जोतुम श्येनयज्ञ करोगे ॥ तौ तुमारेशत्रुकामरणहोवेगा ॥ परंतु श्येनयज्ञकेकरणेकरिके पश्चात् तुमारेकूं नरककीभीप्राप्तिहोवेगी ॥ और जोपुरुष चित्तके शुद्धिकाउपाय दध्यङ्ऋषितैंपूछे ॥ ताकेप्रति याप्रकार कहतेभये ॥ फलकीइच्छाकूंपरित्यागकरिके जोतुम कर्मोंकूंकरोगे ॥ तौ

तुमारेचित्तकीशुद्धिहोवैगी ॥ और पश्चात् श्रवणादिद्वारा आत्मज्ञानकीभी तुमारेकूंप्राप्तिहोवैगी ॥ इसप्रकार सोदध्यङ्अथर्वणऋषि सर्वजीवोंकेताईं हितकाउपदेशकरताभया ॥ और जोकोईपुरुष ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकीइच्छाकरिकै तिसदध्यङ्ऋषिकेसमीपआवे ॥ तिसकेताईंतो याप्रकारकाउपदेश करतेभये ॥ विवेक वैराग्य शमादिकषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचतुष्टयसाधनोंकूं प्रथम तुम संपादनकरिकेआवो ॥ पश्चात् तुमारेताईं मैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरोंगा ॥ इसप्रकार सोदध्यङ्ऋषि संपूर्णप्राणियोंकेताईं हितकाउपदेशकरता भया ॥ और तिसमहात्मादध्यङ्ऋषिकीकीर्ति तीनलोकोंविषे दशदिशावोंविषे पसरतीभई ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ यद्यपि दध्यङ्ऋषिका सर्वप्राणीमात्रविषेस्नेहहै तथापि तुमदोनों बाल्यअवस्थातैंलेकै तिसमुनिकेशिष्यहो यातैं दध्यङ्मुनिका तुमदोनोंविषे अधिकस्नेहहोताभया ॥ इसप्रकार स्नेहकरिकैयुक्त दध्यङ्अथर्वणमुनितैं तुमनैं ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीप्रार्थनाकरीभी ॥ तौभी तुमारी विषयोंविषेआसक्तिदेखिकै सोदध्यङ्ऋषि तुमारेताईं ब्रह्मविद्याकूंनहींदेताभया ॥ और विवेकादिकसाधनोंकी दृढताकरावणेवास्ते सोदध्यङ्ऋषि वारंवार याप्रकारकहताभया ॥ जैसे अकालविषेपड़ीहुईवर्षा निष्फलहोवैहै ॥ और जैसे सूर्यकेसमीप दीपक निष्फलहोवैहै ॥ और जैसे पूर्वअन्नकेअजीरणहुए भोजनकऱ्याहुआदूसराअन्न निष्फलहोवैहै ॥ और जैसे तिसवस्तुकीइच्छातैंरहितपुरुषकेताईं तिसीवस्तुकादेणा निष्फलहोवैहै ॥ तैसे विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूप अधिकारतैंरहितपुरुषकेताईं उपदेशकरीहुईब्रह्मविद्या निष्फलहोवैहै॥यातैं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतै विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूपअधिकारकूं तुम संपादनकरो ॥ याप्रकार सोदध्यङ्अथर्वणमुनि तुमारेताईं उपदेश करताभया ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ एककालविषे तुमदोनों किसीनिमित्तकरिकै देवराजइंद्रकीअवज्ञाकूंकरतेभये ॥ कैसेतुमदोनोंहो ॥ सुन्दररूपकेअभिमानकरिकैयुक्तहो ॥ तथा विद्याकेअभिमानकरिकैयुक्तहो॥ याकारणतैंहीं सर्वदेवतावोंकेअधिपतिइंद्रकीअवज्ञाकूंतुमकरतेभये ॥ तिसतुमारीअवज्ञाकूंदेखिकरिकै क्रोधयुक्तहुआसोइंद्र तुमारेयज्ञभागकूंनिवृत्तकरताभया ॥ और तीनलोकोंविषेयाप्रकारकीआज्ञा करताभया ॥ हेसंपूर्णलोको यहदोनोंअश्विनीकुमार चिकित्साकरनेहारेहैं यातैं अशुद्धहैं और पूर्वजन्मविषेभी नीचजातिवालेहैं ॥ यातैंभी

अशुद्धहैं ॥ अशुद्धपुरुषोंकेताईं यज्ञकाभागदेना उचितनहीं ॥ यातैं आजदिनतैंलैके किसीपुरुषनैं इनदोनोंकेताईं यज्ञकाभागनहींदेणा याप्रकारकीआज्ञा देवराजइंद्र करताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो इसप्रकार जबी देवराजइंद्रने सर्वदेवतावोंके तथा मुनियोंके सन्मुखवच नकह्या ॥ तबी तुमदोनोंकाभाग सर्वयज्ञोंतैंनिवृत्तहोताभया ॥ इसप्रकार यज्ञभागतैंरहितहुएतुमदोनों अत्यंततपायमानहोतेभये ॥ और दध्यङ्अथर्वणनामागुरुकेसमीपजाइके पुनः यज्ञभागकेप्राप्तिकाउपाय तुम पूछतेभये॥ हेगुरो आज देवराजइंद्रनैं सभाकेमध्यविषे हमदोनों कायज्ञभाग निवृत्तकर्‍याहै ॥ अब हमदोनोकूं कोनउपाय करणेयोग्यहै ॥ यह आप कृपाकरिकेंकहो ॥ और हेगुरो जोआपकीआज्ञाहोवे तोसंपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रकूं युद्धकरिकैंतत्तकरणेविषेभी हमदोनों समर्थहैं ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभी आपनैं संदेहनहींकरणा ॥ परंतु आपकी आज्ञातैंविना हम युद्धकरणेविषेसमर्थनहीं ॥ अब ऋषिकेसंदेहकीनिवृत्तिवासते आपणेसामर्थ्यकूं अश्विनीकुमार निरूपणकरेहैं ॥ हेगुरो हमाराकैसासामर्थ्यहै ॥ हमदोनोंविषेएकभी तीनलोकसहितब्रह्माकूं तथाविष्णुकूं तथामहादेवकूं तथासंपूर्णदेवतावोंस हितइंद्रकूंजीतणेविषेसमर्थहै ॥ तो हमदोनों मिलिकैंकिसकूंनहींजीतैंगे ॥ किंतु संपूर्णोंकूंजीतणेविषेहमसमर्थहैं ॥ काहेतैं मृतसंजीवनीविद्याकूं हमजाणतेहैं ॥ यातैं किसीशस्त्रकरिके तथा किसीअस्त्रकरिके तथाकिसीव्याधिकरिके हमारा मृत्युहोवैनहीं ॥ और हेगुरो देवतावोंनैं तथाअसुरोंने तथामनुष्योंनैं करीजोनानाप्रकारकीमाया ॥ तेमायाभी हमारेकूं किंचित्मात्रस्पर्श करिसकैंनहीं ॥ और सर्पादिकोंविषेस्थितजेजंगमरूपविषहैं ॥ तथा कालकूटादिकजेस्थावरविषहैं ॥ तेसंपूर्णनानाप्रकारकेविष हमारेलोममात्रकूंभी छेदनकरिसकैंनहीं ॥ और हेगुरो पुरुषोंकेमरणेकासाधन जेनानाप्रकारकीऔषधियाँहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेजेमंत्रहैं ॥ तथा नानाप्रकार केजेभूतपिशाचादिकहैं ॥ तथा श्येनयज्ञरूपजेअभिचारहैं ॥ तथा ब्राह्मणोंकेजेनानाप्रकारकेशापहैं ॥ यहसंपूर्ण यद्यपि मृत्युकेसाधनहैं ॥ तथापि तेसंपूर्ण हमारेकूं स्पर्शकरिसकैंनहीं ॥ काहेतैं आपकीकृपाकरिके तथास्वभावतैं हम सिद्धियुक्तहैं ॥ यातैं तिनसंपूर्णमायाआदि कोंकी निवृत्तिकाउपाय हम जाणतेहैं ॥ यातैं हमारेजीतणेविषे कोईभीसमर्थनहीं ॥ और हेगुरो युद्धतैंविनाभीहमदोनों देवतावों

केजीतणेविषेसमर्थहैं ॥ काहेतैं स्वर्गविषेहे प्रवाहजिसका ऐसीजोश्रीगंगाजीहे ॥ तिसविषे जोहम एकऔषधिपावैं ॥ तो संपूर्णदेवतावों सहितइंद्रका एकक्षणविषे मृत्युहोइजावे ॥ और हेगुरो एकमंत्रकेप्रयोगकरिकै संपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रकेचित्तविषे स्वर्गतैंवैराग्यउत्पन्नकरणेविषेभी हमसमर्थहैं ॥ और संपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रकूं स्वर्गलोकतैंभूमिलोकविषेगिडावणेमैंभी हमसमर्थहैं ॥ और अन्यदिशाविषेस्थित देवराजइंद्रकूं मोहकेवासतैं अन्यदिशाविषेस्थितकरणेमैंभी हमसमर्थहैं ॥ और हेगुरो यद्यपि देवतावोंकूं स्वर्गकीअप्सरावोंविषेही कामकीअभिलाषाहोवैहै ॥ मनुष्यलोककीस्त्रियोंविषे देवतावोंकूं कामअभिलाषाहोवैनहीं ॥ तथापि संपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रकूं तथासंपूर्णमुनियोंकूं ऐसा हमकाम उत्पन्नकरैं ॥ जोसंपूर्णदेवता तथामुनि मनुष्यलोककीस्त्रियोंकीअभिलाषाकरैं ॥ याप्रकारकी हमारेविषेसामर्थ्यहै ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ दध्यङ्ऋषिनामागुरुकेविश्वासकरावणेवासते याप्रकारकेवचनोंकरिके आपणेबलकूं तुमदोनों प्रगटकरते भये ॥ इसप्रकारकेतुमारेवचनोंकूंश्रवणकरिके सोदध्यङ्ऋषिनामातुमारागुरु आपणेमनविषे चिरकालपर्यंत विचारकरताभया ॥ और विचारकरिके सोदध्यङ्ऋषि तुमारेताई याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ सर्वशत्रुवोंकेनाशकरणेविषेसमर्थहोइके क्रोधरूपअंतरशत्रुकेवशकूं तुममतप्राप्तहोवो ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे बाह्यशत्रुवोंकेजीतणेविषे तुम समर्थहो ॥ तैसे कामक्रोधादिकअंतरशत्रुवोंकेजीतणेविषेभी तुम समर्थहोवो ॥ अब क्रोधविषे शत्रुपणादिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ तुमदोनोंकाशत्रु इंद्रनहीं ॥ तथाअन्यभीकोई तुमाराशत्रुनहीं ॥ किंतु यहक्रोधही तुमाराशत्रुहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् क्रोधकाकौनअपराधहै ॥ जाकरिकै क्रोधकूं आप शत्रुकहोहो ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ तुमसर्वदेवतावोंकरिकैपूजणेयोग्यजोइंद्रहै तिसकेनाशकरणेविषे जोतुमारीप्रवृत्तिभईहै ॥ सो केवल क्रोधकेप्रभावतैंभईहै ॥ क्रोधतैंविना ऐसेनिषिद्धकर्मविषे किसीबुद्धिमान् पुरुषकीप्रवृत्ति होवैनहीं ॥ किंतु क्रोधकेवशहुएहीजीव गुरुआदिकवृद्धपुरुषोंकेतिरस्कारकरणेविषे प्रवृत्तहोवैं हैं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ पूर्वकालविषे तुमारेकूं इंद्रकेजीतणेकीइच्छा कबीभईनहीं ॥ और इसकालविषेतुमारेकूं इंद्रकेजीतणेकीइच्छाभईहै ॥ याकेविषेकौनकारणहै ॥ यहतुम

विचारिकरिकेदेखो ॥ क्रोधतैंविना दूसराकोईकारण याकेविषेनहीं ॥ किंतु अन्वयव्यतिरेककरिके क्रोधही याकेविषेकारणहै ॥ यातैं क्रोधही तुमारा परमशत्रुहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ संपूर्णशत्रुवोंकेराजा जोकामक्रोधहैं ॥ तथा ताकेकिंकर जेइंद्रियहैं ॥ तिनसंपूर्णोंके जीतणेतैंविना देवशरीरकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु कामक्रोधादिकोंकेजीतणेकरिकैही देवताशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तुमदोनोंनैंभी पूर्वजन्मविषे कामक्रोधादिकराजाकूं तथाइंद्रियरूपकिंकरोंकूं जीत्याहै ॥ जाकरिके अबीतुमारेकूं देवताशरीरकी प्राप्तिभयीहै ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ जिससामर्थ्यंकरिके पूर्वतुमोंनें कामक्रोधादिक वशकरेहैं ॥ सोसामर्थ्य अबीतुमाराकहांगयाहै और हेअश्विनीकुमारो ॥ हमतो आपणेमनविषेऐसाजाणतेहैं ॥ जैसे किसीदेशकाकोईकराजा अन्यदेशकेराजाकूंजीतेहै और किसीकालविषे सोराजा सामर्थ्यकूंपाइके पूर्वलेवैरकूंस्मरणकरिके तिसीराजाकूंजाइकेजीतेहै तैसे पूर्वजन्मविषे तुमदोनों कामक्रोधादिकसहितसंपूर्णइंद्रियोंकूं जयकरिआयेथे ॥ तेइंद्रियरूपकिंकर पूर्ववैरकास्मरणकरिके क्रोधरूपराजाकूंसाथलेके स्वर्गविषे तुमारेजीतणेवासतेआयेहैं और हेअश्विनीकुमारो ॥ क्रोधरूपअंतरशत्रुकेजीतणेविषे अबी तुमारासामर्थ्यनहींभया ॥ तबी इंद्रकेजीतणेविषे तुमकिसप्रकारसमर्थहोवोगे ॥ किंतु इंद्रकेजीतणेविषे तुमारासामर्थ्यनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ देवतावोंकीसभाविषे देवराजइंद्रनें वचनरूपबाणोंकरिके जोपूर्वतुमाराताडनकऱ्याथा ॥ सोभी प्रथम कामरूपशत्रुकेवशहुएतुमारेकूंदेखिकरिके इंद्रनें तुमाराताडनकऱ्याथा ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपुरुषकूं कोईकामनानहींहै ॥ ऐसाजोब्रह्मज्ञानीपुरुषहै ॥ तिसकूं संपूर्णजगत् आत्मस्वरूपहै ॥ यातैं ताका कोईताडनकरैनहीं ॥ कामनावालेपुरुषकाईीं जहांतहां निरादरहोवैहै ॥ अब क्रोधकीन्याई कामविषेभी अन्वयव्यतिरेककरिके अनर्थकीकारणताकूंदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ देवराजइंद्र पूर्व तुमदोनोंकानिरादरकिसकारणतैंनहींकरताभया ॥ और इसकालविषे देवराजइंद्रनें तुमारानिरादर किसकारणतैंकऱ्याहै ॥ याप्रकारकेविचारतैं तुम दोनोंरहितहो ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ यातुमारेनिरादरविषे कामतैंविना कोईदूसराकारणनहीं है ॥ किंतु कामही तुमारेनिरादरकाकारणहै ॥ जबपर्यंत तुमारेविषे कामनहींभयाथा ॥ तबपर्यंत देवराजइंद्रनें तुमारानिरादरकऱ्यानहीं ॥ और जभीतुमारे

विषे कामकीउत्पत्तिभई तभीदेवराजइंद्रनें तुमारानिरादरकऱ्या॥यातेंकामही तुमारेनिरादरकाकारणहे॥ औरहेअश्विनीकुमारो॥संपूर्णदेवता
वोंकरिके पूजणेयोग्यजोइंद्रहे ॥ तिसकेजीतणेविषे तुमदोनों किसप्रकारसमर्थहोवोगे ॥ किंतुइंद्रकेजीतणेविषे तुमारासामर्थ्यनहीं ॥ काहेतें
एककामरूपशत्रुनें सर्वदेवतावोंकीसभाविषे तुमारा अपमान करायाहे ॥ तिसकामरूपएकशत्रुकेजीतणेविषे जभी तुम समर्थनहींभये ॥
तभी सर्वदेवतावोंसहितइंद्रकूं तुम किसप्रकारजीतोगे ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वएककामरूपशत्रुनें तुमाराअपमानकरायाथा ॥ अबक्रोधरूपपुत्र
करिकेयुक्तहुआसोकामरूपशत्रु तुमारेकिसअनर्थकूंनहींकरैगा ॥ किंतु तुमारेसर्वअनर्थोंकूंकरेगा ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ संपूर्णदेहधारी
जीवोंके कामक्रोधहो परमशत्रुहैं ॥ जोपुरुष कामक्रोधरूपअंतरशत्रुवोंकीउपेक्षाकरिके बाह्यराजादिकशत्रुवोंकेजीतणेकीइच्छाकरैहै ॥
सोपुरुष अत्यंतमूर्खहे ॥ यातें हेअश्विनीकुमारो जोतुमारेकूं शत्रुवोंकेजीतणेकासामर्थ्यहे ॥ तो कामक्रोधरूपमहानबलवान्शत्रुवोंकूं तुम
जीतो ॥ अब कामकेमहान्प्रभावकूंदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ संपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरणेहाराजोब्रह्माहे ॥ तिसकूंभी यहकाम जीतता
भयाहे॥और संपूर्णजगत्कूंपालनकरणेहाराजोविष्णुहे तिसकूंभी यहकामदेव जीतताभयाहे ॥ और संपूर्णजगत्कासंहारकरणेहाराजोरुद्रहे
तिसकूं भी यहकामदेव जीतताभयाहे ॥और संपूर्णदेवतावोंकाअधिपतिजोइंद्रहे तिसकूंभी यहकामदेवजीतताभयाहे ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥
जभी ब्रह्मादिकईश्वरोंकूंभी कामदेवतानें जीतलिया ॥ तभी स्त्रियोंकेक्रीडामृग जेअन्यदेवताहैं ॥ तिनोंकूं कामदेव नहींजीतैगा याकेविषे
क्याकहणाहे ॥ किंतु सर्वप्राणीमात्रकूं कामदेव आपणेअधीनकरेहे ॥ यद्यपि संपूर्णजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहारे ब्रह्माविष्णुमहेशा
दिकईश्वरोंविषे कामकोअधीनता संभवैनहीं तथापि सर्वत्रकामकेप्रभावकूंजनावणेवासते ब्रह्माविष्णुआदिकईश्वर लीलामात्रकरिके कामादि
कोंकूंधारणकरेहैं ॥ वास्तवतें तेब्रह्मादिक कामादिकोंतेंरहितहैं ॥ और हेअश्विनीकुमारो सर्वदेहधारीजीवोंकाशत्रुजोकामहे ॥ सोकामही
तुमारेकूंजीतणेयोग्यहे ॥ परंतु ताकामदेवकूं तुमोंनेंजीत्यानहीं ॥ उलटा कामदेवनें तुमदोनोंकूंजीत्याहे ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ याका
मदेवतेंभीक्रोध अतिशयकरिकेबलवान्हे ॥ यातें क्रोधकेजीतणेविषे तुमारेकूं अत्यंतयत्नकऱ्याचाहिये ॥ काहेतें अनंतप्रकारकेउपायों

करिकै मुनिलोक कामदेवकूंतो आपणेवशकरैहैं ॥ परंतु कामदेवकापुत्रजोक्रोधहै ॥ ताक्रोधकेजीतणेविषे तेमुनिलोकभी समर्थहोवैंनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ यहकामक्रोधरूपपितापुत्रदोनों महान्शूरवीरहैं ॥ इनोंकेजीतणेविषे कोईपुरुष समर्थनहीं ॥ किंतु संपूर्णजगत्कूं जीतकरिकै यहकामक्रोधदोनों जयकरिकैशोभायमानहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ जोतुमदोनों शत्रुवोंकेनाशकरणेविषेसमर्थहो ॥ और अत्यंतमानयुक्तहो ॥ तो प्रथम कामक्रोधरूपशत्रुकूं तुम जयकरो ॥ पश्चात् देवराजइंद्रकेजीतणेकाउद्यम तुमकरो ॥ ऋषिरुवाच ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार क्रोधकेशांतिकरणेहारेवचनोंकरिकै सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु वैरकेनिवृत्तिकाउपदेश तुमारेताई करताभया ॥ तथापि क्रोधरूपअग्निकरिकैतपायमानहुएतुमदोनों जबी तिनवचनोंकरिकैशांतिकूंनहींप्राप्तहोतेभये ॥ तबी सोदध्यङ्अथर्वणतुमारागुरु सामभेदरूपदोनोंउपायोंका परित्यागकरिकै तुमदोनोंकोशांतिकरणेवासतै उपप्रदानरूपउपायकूं करताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ साम भेद उपप्रदान दंड याचारिउपायोंकरिकै लोकविषे प्राणी वशवर्तिहोवैहैं ॥ तहां प्रियवचनोंकरिकै क्रोधादिकोंकीनिवृत्तिकूं सामकहैं हैं ॥ और अन्यशत्रुकेपक्षपाततैं निवृत्तकरिकै आपणेपक्षविषेलेआवणेकूं भेदकहैहैं ॥ और मनवांछित पदार्थोंकेदेणेकी प्रतिज्ञाकूं उपप्रदानकहैहैं ॥ और ताडनाकूंदंडकहैहैं ॥ इनचारोंउपायोंविषे प्रियवचनोंकरिकैक्रोधादिकोंकीनिवृत्तिरूपसाम तथा कामक्रोधादिकशत्रुवोंकेपक्षपाततैंनिवृत्तिकरिकै आपणेसमतारूपपक्षविषेस्थापनरूपभेद यहदोनोंउपाय दध्यङ्ऋषिनैं करे ॥ परंतु तिनसामभेदरूपउपायकरिकै अश्विनीकुमारोंकेकामक्रोधादिकोंकीशांतिनहींहोतीभयी ॥ यातैं सोबुद्धिमान्दध्यङ्ऋषि तिनदोनोंउपायोंकापरित्यागकरिकै उपप्रदानरूपतृतीयउपायकूं करताभया ॥ अब ताउपप्रदानरूपउपायकूंदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ जिसब्रह्मविद्याकेप्राप्तिवासतै पूर्वतुमोंनैंहमारेप्रतिप्रार्थनाकरीथी ॥ सोब्रह्मविद्या मैंतुमारेताई तबीउपदेशकरोंगा ॥ जबी तुम सर्वप्राणियोंविषे वैरकापरित्यागकरोगे ॥ यातैं जोतुमारेकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकोइच्छाहोवै ॥ तो देवराजइंद्रविषे वैरकापरित्यागकरो ॥ ऋषिरुवाच ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकारकेवचन जबी तुमारेताई दध्यङ्ऋषिनैंकहे ॥ तबी तुमदोनों याप्रकारकेवचन दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रति कहतेभये ॥

हेगुरोयहकाल सामरूपउपायका तथाभेदरूपउपायकाहैनहीं ॥ और उपप्रदानरूपउपायकाभी यहकालहैनहीं ॥ काहेतें पूर्वआपने अनंतवार यहकथनकऱ्याहै ॥ जबीतुम विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूपअधिकारकूं संपादनकरोंगे ॥ तबी हम तुमारेताईं ब्रह्मविद्या काउप देशकरेंगे ॥ यातें ब्रह्मविद्याकेलोभकरिकैंभीइंद्रकेसाथवैरकापरित्यागहमकरेंगेनहीं ॥ यातें हेगुरो कृपाकरिकै हमारेताईं युद्धकरणेकी आज्ञादेवो ॥ एकलक्षणविषे संपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रकूं हम जीतेंगे ॥ याकेविषे आप किंचित्मात्रभी संदेहनहींकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो याप्रकारकेतुमारेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु उपप्रदानरूपउपायकाभीपरित्यागकरके तुमारेप्रति दंडरूपीवचनोंका कथनकरताभया ॥ कैसाहैसोदध्यङ्ऋषि ॥ तुमारेहितकीजिसकूंइच्छाहै ॥ और सर्वप्राणियोंविषे जाकीसमानदृष्टिहै ॥ अब तिनदंडरूपी वचनोंकूंनिरूपणकरैहै ॥ हेअश्विनीकुमारो जोकोईपुरुष पंचजीवोंकाभीपालनकरैहै ॥ सोपुरुष पंचभूतहैंशरीरजाकाऐसाजोईश्वरहै ताईश्वरकास्वरूपजानणा ॥ तापंचप्राणियोंकेपालनकरणेहारेपुरुषकूं जोकोईपुरुष हननकरैहै ॥ सोपुरुष ईश्वरसहितपंचभूतस्वरूपसंपूर्ण विश्वकूं हननकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ईश्वरसहितसंपूर्णविश्वकेहननकरिकै जोपापउत्पन्नहोवैहै ॥ तापापकूं सोपुरुषप्राप्तहोवैहै ॥ हेअश्विनी कुमारो ॥ जबी पंचजीवोंकेपालनकरणेहारेपुरुषकेहननतें इतनापापहोवैहै ॥ तबी तीनलोकोंकेपालनकरणेहारेइंद्रकेहननकरिकै महान् पापीकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकेविषे क्याकहणाहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जोपुरुष उपकारकरणेहारेआपणेस्वामीकाहननकरैहै ॥ सोअध मपुरुष संपूर्णकुटुंबसहित आपणेमाताकूं तथापिताकूं हननकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ संपूर्णकुटुंबसहित आपणेमातापिताकेमारणेकरिकै जोपाप उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसीपापकूं स्वामीकेद्रोह करणेहारापुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ और शास्त्रविषेभी ब्रह्महत्यादिकपापोंकीनिवृत्तिकेउपाय कहेहैं ॥ परंतुकृतघ्नतादोषजन्यपापकीनिवृत्तिकाउपाय किसीशास्त्रविषेभी कह्यानहीं ॥ यातें कृतघ्नतादोषकेसमान कोईभीपापकर्म जग तविषेनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जोपुरुष आपणेस्वामीकेसाथद्रोहकरैहै ॥ सोअधमपुरुष अंधतामिस्रनामानरकविषे चिरकालपर्यं त निवासकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्महत्याकरणेहारेपुरुषतैंभी आपणेस्वामीकेसाथद्रोहकरणेहारापुरुष अत्यंतअधमहै ॥ काहेतें ब्रह्महत्या

संभवेहै ॥ इंद्र १ अग्नि २ यम ३ रक्ष ४ वरुण ५ प्रभंजन ६ धनेश७ ईश्वर८ शेष९ब्रह्मा१०यहदश दिक्पालहैं ॥ तहाँ पूर्वादिकअष्टदिशा
वोंके इंद्रादिक अष्टदिक्पालहैं ॥और ब्रह्मा ऊर्ध्वदिशाकापतिहै ॥ और शेष अधोदिशाकापतिहै ॥ यादशदिक्पालोंकेजीतणेविषेभी कोई
देवता तथादानव समर्थहैंनहीं ॥ तभी सर्वदेवतावोंकेअधिपतिइंद्रकूं कौन जीतेगा ॥ किंतु इंद्रकेजीतणेविषे कोईपुरुष समर्थनहीं ॥
और हेअश्विनीकुमारो ॥ तुमदोनोंविषे जोसामर्थ्यहै ॥ सोभी इंद्रादिकदेवतावोंकेअनुग्रहकरिकैहीहै ॥ इंद्रादिकदेवतावोंके कोपहुए तुम
दोनों काष्ठकीन्याई सामर्थ्यतैंरहितहो ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ तुमदोनों द्वादशआदित्योंकूं तथाअष्टवसुवोंकूं तथाएकादशरुद्रोंकूं
तथाएकन्यूनपंचासमरुत्गणकूं किसप्रकारजीतोगे ॥ किंतु तिनोंकेजीतणेविषे तुमदोनों समर्थनहींहोवोगे ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥
संपूर्णलोकपालजेहैं ॥ तथा संपूर्णदेवताजेहैं ॥ तथा संपूर्णमुनिजेहैं ॥ तथा संपूर्णसिद्धजेहैं ॥ तथा संपूर्णचारणजेहैं ॥ तथा ब्रह्माजोहै ॥
तथा विष्णुजोहै ॥ तथा रुद्रजोहै ॥ तथा संपूर्णशक्तियाजेहैं ॥ तथा आकाशादिकपंचभूतोंकेअभिमानीदेवताजेहैं ॥ तथा चंद्रमाजोहै ॥
तथा संपूर्णग्रहजेहैं ॥ तथा संपूर्णनक्षत्रजेहैं ॥ तथा संपूर्णतारागणजेहैं ॥ इनोंतैंआदिलेकेजितनाकविश्वहै ॥ तेसंपूर्णइंद्रकेपक्षविषेहैं ॥
तुमारेपक्षविषे कोईभीदेवतानहीं ॥ जबी तुमदोनों इंद्रकेसाथयुद्धकरोगे ॥ तबी यह संपूर्णलोकपालादिक प्रथम तुमारेसाथयुद्धकरणे
वासते सन्मुखहोवैंगे ॥ तिनसंपूर्णलोकपालादिकोंकूं जबी तुमजी[illegible] ॥ तबी इंद्र तुमारेसाथ युद्धकरेगा ॥ सोतिनसंपूर्णलोकपालादिकों
केजीतणेविषे तुमारासामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं इंद्रकेसाथ युद्धकरणेकी इच्छाका तुमपरित्यागकरो ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जहां युद्ध
करणेतैंविना कार्यकीसिद्धिनहींहोवे ॥ तहां युद्धकरणाभीउचितहै ॥ परंतु बलकरिके तथाबुद्धिकरिके तथाशूरवीरोंकीसहायताकरिके
जोआपणेसमानहोवे तिसकेसाथही युद्धकरणाउचितहोवैहै ॥ और जोबलकरिके तथाबुद्धिकरिके तथाअन्यशूरवीरोंकीसहायताकरिके
आपणेतैंअधिकहोवे ॥ तिसकेसाथयुद्धकरणाउचितनहीं ॥ और यहदेवराजइंद्र बलकरिके तथाबुद्धिकरिके तथाअन्यदेवतावोंकीसहायता
करिकें तुमदोनोंतैंअधिकहै ॥ यातैं इंद्रकेसाथयुद्धकरणातुमारेकूंउचितनहीं ॥ अब इंद्रकीअधिकताकूंदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥

तुमदोनोंविषेजितनाकीसामर्थ्यहै ॥ तितनासामर्थ्य संपूर्णदेवतावोंकेमध्यविषेएकएकदेवताविषेहै ॥ और स्वर्गविषे इंद्रकेसमीप जितने कदेवता निवासकरैहैं ॥ तिनसंपूर्णदेवतावोंविषे एकएकदेवताभी जगत्कीउत्पत्तिकरणेविषे तथाजगत्कोस्थितिकरणेविषे तथासंहारक रणेविषे समर्थहै ॥ ऐसे अनंतदेवतावोंकरिकेयुक्त इंद्रकेसाथ युद्धकरणेविषे तुमारासामर्थ्यनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ स्वर्गविषेस्थित इंद्रादिकदेवतावोंकेसाथ जोद्वेषकरणाहै ॥ सोकेवल स्वर्गतैंनीचेगिरनेकाकारणहै ॥ यातैं जोतुमारेकूं स्वर्गविषेरहणेकीइच्छाहोवै ॥ तौ इंद्रकेसाथ तुम द्वेषमतकरो ॥ इंद्रकेसाथद्वेषकरणेकरिकै स्वर्गतैंभी तुमारानीचेपतनहोवैगा ॥ ऋषिरुवाच ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसलोक विषे तथापरलोकविषे भयकूं बोधनकरणेहारे और नानाप्रकारकीयुक्तियोंसहित जेयाप्रकारकेवचनहैं ॥ तिनवचनोंरूपीदंडकरिके सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु तुमदोनोंका ताडनकरताभया ॥ तिसदध्यङ्ऋषिगुरुकेवचनोंकूंश्रवणकरिकैभी तुमदोनों तागुरुकेवचनोंकूंअंगी कारनहींकरतेभये ॥ काहेतैं एकतोइंद्रनैंतुमारायज्ञभागनिवृत्तकऱ्याथा ॥ और दूसरा सर्वदेवतावोंकीसभाविषे तुमदोनोंका अपमानक ऱ्याथा ॥ याकारणतैं तुमदोनों अत्यंतदुःखीहोतेभये ॥ यातैंहितकारीगुरुकेवचनोंकूंभी नहींमानतेभये ॥ और हेअश्विनीकुमारो तुमदोनों पुनःदध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रति याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेभये॥हेगुरो इंद्रकेसाथयुद्धकरणेकरिकै जोकदाचित् हमारामरण होवै ॥ तथानरककी प्राप्तिहोवै तिसकूंहम अंगीकारकरतेहैं ॥ परंतु आप हमारेकूंयुद्धकरणेकीआज्ञादेवो ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकारकेतुमारेवचनोंकूंश्रवण करिकै सोदध्यङ्मुनितुमारागुरु पुनःयज्ञभागकेप्राप्तिकीइच्छारूपतुमारेअभिप्रायकूंजाणताभया ॥ औरकृपाकरिकैयुक्तहुआसोदध्यङ्मुनि बिनाईयत्नतैंयज्ञभागकीप्राप्तिवासते पुनःयाप्रकारकेवचनोंकूंकहताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ अत्यंतकोमलपुष्पोंकरिकैभी किसीशत्रु केसाथयुद्धकरणेयोग्यनहीं ॥ तौ तीक्ष्णशस्त्रोंकरिकैयुद्धकरणा कैसेयोग्यहोवैगा ॥ किंतु सर्वप्रकारतैं युद्धकरणायोग्यनहीं ॥ काहेतैं युद्ध विषे इतनेदोषरहेंहैं ॥ एकतो हमाराजयहोवैगा ॥ अथवा शत्रुकाजयहोवैगा ॥ याप्रकारकासंशय १ और दूसरा श्रेष्ठपुरुषों केनाशकाअवश्यहोणा २ और तीसरा युद्धविषेप्राप्तहुआपुरुष शस्त्रोंकेघावतैंविना तथाबांधवोंकेमृत्युतैंविना जयकूंप्राप्तहोवैनहीं ३ और

चतुर्थ पराजयकेहुए परमनिंदा ४ यहचारिदोष संपूर्णयुद्धविषे अवश्यहोवैंहैं ॥ यातैंयुद्धकरणायोग्य नहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जिस युद्धविषेमरणेतैं पुरुषकूं नरककीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जीवनेकरिकै लोकविषेअपकीर्तिहोवै ॥ और जिसयुद्धविषे ब्राह्मणोंका तथाबांधवोंका तथादेवतावोंका नाशहोवै ॥ ऐसेअधर्मयुद्धविषे क्षत्रियराजाकूंभीउद्यमकरणायोग्यनहीं ॥ किंतु ऐसेअधर्मयुद्धतैं क्षत्रियराजाकूं भागणा हीश्रेष्ठहै ॥ और हे अश्विनीकुमारो ॥ याक्षणभंगुरसंसारविषे अधिकारीशरीरकूंपाइके पुरुषोंकूं आत्मज्ञानही संपादनकरणेयोग्यहै ॥ युद्धादिक संपादनकरणेयोग्यनहीं ॥ कैसाहैयहसंसार जैसे केलेकास्तंभ सारतैंरहितहोवैहै ॥ तैसे सारतैंरहितहै ॥ और संपूर्णदुःखोंक रिकैपूर्णहैजीवनकाल जिसविषे ॥ और निमेषमात्रहैजीवन जिसविषे ॥ ऐसेअनित्यसंसारविषे मनुष्यशरीरकूंपाइके पुरुषनें आपणेहित काउपायही संपादनकरणा ॥ सोहितकाउपाय अद्वितीयआत्माकाज्ञानहीहै ॥ आत्मज्ञानतैंभिन्न संपूर्णयुद्धादिककर्म पुरुषोंकेअहितके साधनहैं ॥ यातैं हेअश्विनीकुमारो ॥ देवराजइंद्रकेसाथयुद्धकरणा ॥ इसलोकविषे तथापरलोकविषे तुमारेदुःखकाकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् आपनेंसर्वप्रकारतैंयुद्धकानिषेधकऱ्या सो संभवेनहीं ॥ काहेतैं युद्धशास्त्रविषे अनंतप्रकारकेयुद्धकरणेकीरीतिलिखीहैं ॥ यातैं सोयुद्धशास्त्र व्यर्थहोवेगा ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो युद्धशास्त्र व्यर्थनहीं ॥ युद्धशास्त्रनैंभी तहाँ युद्धकाविधानकऱ्याहै ॥ जहाँ युद्धकरणेतैंविना आपणेमरणेकानिश्चयहोवै ॥ और युद्धकरणेतैं जीवनेकीसंभावनाहोवै ॥ तिसकालविषे पुरुष युद्धकूंकरे ॥ यहयुद्धशास्त्रविषेकह्याहै ॥ सोयाप्रकारका युद्धकरणेकाकाल तुमदोनोंविषे प्राप्तभयानहीं ॥ किंतु युद्धकरणेतैंविनाही तुमारे कार्य कीसिद्धिहोइसकैहै ॥ यातैं हेअश्विनीकुमारो ॥ युद्धकरणेकीइच्छाकापरित्यागकरिके पुनःयज्ञभागकेप्राप्तिकाउपाय आपणीबुद्धिकरिके तुम निश्चयकरो ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ यास्थूलशरीरकेपराक्रमतैं बुद्धिकापराक्रम अधिकहै ॥ काहेतैं पुरुषकरिकैचलायाहुआ शस्त्र किसीएकशत्रुकूंजयकरैहै ॥ कदाचित् एकशत्रुकूंभीजयकरतानहीं ॥ और नानाप्रकारकेउपायोंकूंनिश्चयकरणेहाराबुद्धिरूपीशस्त्र तो बुद्धिमान्पुरुषकरिकैचलायाहुआ संपूर्णजगत्कूंजीतलेवैहै ॥ यातैं शरीरकेपराक्रमतैं बुद्धिकापराक्रम अधिकहै ॥ और हेअश्विनी

कुमारो ॥ याबुद्धिका कैसापराक्रमहै ॥ यहपुरुष कोटिजन्मोंकरिकैभी शरीरकेयुद्धादिकपराक्रमतैं जिनपदार्थोंकूंनहींसंपादनकरिसकता ॥ तिनपदार्थोंकूं सोपुरुष बुद्धिकेपराक्रमतैं थोड़ेकालविषेसंपादनकरिसकैहै ॥ जैसे कोटिजन्मोंकूंपाइकेभी यहपुरुष युद्धादिरूपशरीरकेपराक्रमतैं हिरण्यगर्भकेलोककूं प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ और बुद्धिकरिकैनिश्चयकऱ्याजो हिरण्यगर्भकीउपासनारूपउपाय ॥ ताउपासनारूपउपायकरिके थोड़ेकालविषेही हिरण्यगर्भकेलोककीप्राप्तिहोइसकैहै ॥ यातैं शरीरकेपराक्रमतैं बुद्धिकापराक्रमही अधिकहै ॥यातैं हेअश्विनीकुमारो ॥ ताबुद्धिकरिके पुनःयज्ञभागके प्राप्तिकाउपायतुमनिश्चयकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ युद्धतैंविना दूसराकोईउपाय हम जाणते नहीं ॥ जिसउपायकरिकै हम पुनःयज्ञभागकूंप्राप्तहोवैं ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इंद्रकेसाथयुद्धकरणेकरिकै तुमारेकूं कदाचित्भी यज्ञभागकीप्राप्तिहोणेवालीनहीं ॥ यातैं पुनःयज्ञभागकीप्राप्तिवासतै ॥ तुमारेताई एकसुगमउपाय हमकैहैं ॥ तुम सावधानहोइकेश्रवण करो ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ शर्यातिनामाराजानैं यज्ञकरणेकाउद्यमकऱ्याहै ॥ और शर्यातिनामाराजाका जामाताजोच्यवननामाऋषिहै ॥ तिसच्यवनऋषिकूं यज्ञकेहोताकरणेकासंकल्प शर्यातिराजानैं मनविषेकऱ्याहै ॥ परंतु सोच्यवननामाऋषि नेत्रोंतैंअंधहै ॥ यातैं शर्यातिराजाकूं याप्रकारकासंशयहुआहै यहनेत्रोंतैंरहितच्यवनऋषि किसप्रकार हमारेकूं यज्ञकरावैगा ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोच्यवननामाऋषि शर्यातिराजाका जामाता किसप्रकारहोताभया ॥ और सोच्यवनऋषि नेत्रोंतैंरहित किसप्रकारहोताभया ॥ यहसंपूर्णवार्ता हमारेप्रति कथनकरो ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ ताशर्यातिनामाराजाकी सुकन्यानामाएककन्याथी ॥ सोकन्याबाल्यअवस्थाविषे आपणेपिताकेसाथ वनविषेजातीभयी ॥ और तिसवनविषे च्यवननामाऋषि बहुतकालकातपकरताथा ॥ कैसाहैसोच्यवनऋषि ॥ जिसकासंपूर्णशरीर मृत्तिकाकरिकै ढक्यागयाहै ॥ और नेत्रोंकरिकेसूर्यभगवान्कूंदेखिरह्याहै ॥ और सर्वतपस्वियोंविषेउत्तमहै ॥ऐसेच्यवनऋषिकूंदेखिकरिकै सोकन्या याप्रकारकाविचारकरतीभयी ॥ यापृथिवीकेछिद्रोंविषेकाहैकाप्रकाशहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोकन्या किसीतृणकूंहाथविषेलेकै भूमिकेछिद्रविषेस्थितच्यवनऋषिकेनेत्रोंकूं भेदनकरतीभयी ॥ तिसतैं अनंतर तानेत्रोंतैं रुधिरकाप्रवाह चलता

भया ॥ तारुधिरकूंदेखिकरिकै सोशर्यातिराजा तामृत्तिकाविषेमुनिकूंजाणताभया ॥ और अत्यंतभयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसच्यवन ऋषिकूं नेत्रोंतैंरहितअंधदेखिके मुनिकेसेवाकरणेवासतै सुकन्यानाम्नीकन्याकूं च्यवनऋषिकेताईं देताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो इसप्रकार सोच्यवननामाऋषि नेत्रोंतैंरहितअंधहै ॥ और वृद्धअवस्थाकरिकैंयुक्तहैतिसच्यवननामाऋषिकूं जोतुम नेत्रोंकीप्राप्तिकरोगे ॥ तथा यौवनअवस्थाकीप्राप्तिकरोगे ॥ तो सोच्यवनऋषि समर्थहै ॥ यातैं पुनः तुमारेकूं यज्ञभागकीप्राप्तिकरावैगा ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार जबीदध्यङ्ऋषितुमारेगुरुनैंकह्या ॥ तबी तुमदोनों च्यवननामाऋषिकूंनेत्रयुक्तकरतेभये ॥ तथा यौवनअवस्थायुक्तकरतेभये ॥ पश्चात् सोच्यवनऋषिभी बलात्कारसैं तुमारेताईं यज्ञभागकूं दिवावताभया ॥ यहवार्ता भागवतकेनवमस्कंधविषे विस्तारतैंकथनकरीहै हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार तुमारेकूंयज्ञभागकीप्राप्तिहोतीभयी ॥ पश्चात् एककालविषे तुमारेगुरुदध्यङ्अथर्वणकेआश्रमविषे देवराजइंद्र आवताभया ॥ ताइंद्रकूं आपणेआश्रमविषेआयाहुआदेखिकरिके सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकाबहुतसनमानकरताभया ॥ तिसतैंअनंतरसोइंद्र सुखपूर्वक आसनऊपरबैठताभया ॥ और नानाप्रकारकीकथावोंकरिकै सोइंद्र अत्यंतहर्षकूंप्राप्तहोताभया इसप्रकार संतोषकूंप्राप्तहुए इंद्रकेप्रति सोदध्यङ्ऋषि याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ तीनलोकोंकापतितुंइंद्र हमारेआश्रमविषे अतिथिहोइकेआयाहै ॥ यातैं तुमारे प्रसन्नताकरणेवासतै मैं कौनपदार्थ देवों ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार जभीतुमारेगुरुदध्यङ्ऋषिनैं इंद्रकेप्रतिवचनकह्या ॥ तभीसोदेवराजइंद्र तुमारेगुरुदध्यङ्ऋषिकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया हेदध्यङ्ऋषि ॥ जोहमारेप्रसन्नताकरणेकीतुमारेकूंइच्छाहै ॥ तो सर्वप्राणियोंकरिकेदुर्लभ जोब्रह्मविद्याहै सोब्रह्मविद्या हमारेताईं उपदेशकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ जबी इसप्रकार इंद्रनैं तुमारेगुरुदध्यङ्ऋषिकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु महान्संशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे कन्याकापिता किसीपुरुषकेप्रति मैंतुमारेताईं कन्यादेताहूं याप्रकारकावचनकहे ॥ और पश्चात् तापुरुषविषे विद्यादिकगुणोंकेअभावकूंदेखिकरिकेसोकन्याकापिता इसगुणहीनपुरुषकेताईं कन्याकूंदेवों अथवा नहींदेवों याप्रकारकेसंशयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे

सोदध्यङ्ऋषिभी देवराजइंद्रकेताई पूर्व प्रियपदार्थकेदेणेकीप्रतिज्ञाकरताभया ॥ परंतु सोदेवराजइंद्र गुरुभक्तितैंरहितहै ॥ तथा विषयों विषेआसक्तहै ॥ यातैंब्रह्मविद्याका अधिकारीनहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकेताई ब्रह्मविद्यादेणेयोग्यहै अथवानहीं देणेयोग्यहै ॥ याप्रकारकेसंशयकूं प्राप्तहोताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जोदेवराजइंद्रकेताई मैं ब्रह्मविद्यानहींउपदेशकरोंगा ॥ तौ हमारावचन मिथ्याहोवैगा ॥ और जोइंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरोंगा ॥तौ अनधिकारीइंद्रकेताई दईहुईब्रह्मविद्या निष्फलहोवैगी॥याप्रकार विद्या केदेणेपक्षविषे तथानहींदेणेपक्षविषे दोषोंकाविचारकरिकै सोदध्यङ्अथर्वणऋषि महान्संशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और पुनःसोदध्यङ्ऋषि आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ अनधिकारीपुरुषकेताई ब्रह्मविद्यादेणेकरिकै ऐसापाप उत्पन्नहोवैनहीं ॥ जैसापाप मिथ्यावचनकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते इंद्रकेताई अवश्य ब्रह्मविद्यादेणीचाहिये ॥ याप्रकारकाविचार करिकै सोदध्यङ्ऋषि कहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सर्वलोकविषेप्रसिद्ध जोहमारेअश्विनीकुमारदोशिष्यहैं ॥ तिनोंनैंब्रह्मविद्याकीप्राप्ति वासते पूर्वहमारेआगे प्रार्थनाकरीथी ॥ परंतु तिनअश्विनीकुमारोंकूं वैराग्यादिकसाधनोंतैंरहितदेखिकरिकै तिनोंकेप्रति मैं ब्रह्मविद्या काउपदेश नहींकरताभया ॥ ऐसीदुर्लभब्रह्मविद्याकाउपदेश मैं तुमारेताई करताहूं ॥ तुम सावधानहोइके श्रवणकरो ॥ हेदेवराजइंद्र जैसे सुखशब्दकामुख्यअर्थ आत्मस्वरूपआनंदहै ॥ आत्मस्वरूपआनंदतैंभिन्न विषयजन्यआनंद सुखशब्दकागौणअर्थहै ॥ तैसेविद्याशब्दका भी मुख्यअर्थ ब्रह्मविद्याहीहै ब्रह्मविद्यातैंभिन्नदूसरीविद्या विद्याशब्दकागौणअर्थहै ॥ अब ब्रह्मविद्याविषे विद्याशब्दकीमुख्यअर्थता दिखावणेवासते प्रथमविद्याशब्दकेअर्थकूंदिखावैहैं ॥ कार्यरूपकरिकैअनंतरूपोंकूंप्राप्तहुआ तथावासनारूपीजालकामूलरूप और सर्वप्रा णियोंकूंभयकादेणेहारा ऐसाजोअज्ञानहै ॥ तिसअज्ञानकूं निःशेषतैंजोनिवृत्तकरै तिसकानाम विद्याहै ॥ अथवा वैराग्यादिकसाधनयुक्त अधिकारियोंकेताई आनंदस्वरूपआत्माकूंजोदेवै ताकानाम विद्याहै ॥ अथवा अधिकारियोंकेप्रति जोआत्माकासाक्षात्कार करावै ताकानाम विद्याहै ॥ याप्रकारकाविद्याशब्दकाअर्थ ब्रह्मविद्याविषेहीघटैहै ॥ ब्रह्मविद्यातैंभिन्नविद्याविषे याप्रकारकाअर्थघटै

नहीं ॥ काहेतें ब्रह्मविद्याही पुरुषोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिकरैहै ॥ तथा आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिकरैहै ॥ ब्रह्मविद्यातैंभिन्नकोईविद्या अज्ञानकीनिवृत्ति तथापरमानंदकीप्राप्ति करैनहीं यातें ब्रह्मविद्याही विद्याशब्दकामुख्यअर्थहै ॥ याप्रकार विद्याशब्दकेअर्थकूं निरूपणकरिके सोदध्यङ्ऋषि कहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सपूर्णवेदांतशास्त्रकरिके प्रतिपादनकरणेयोग्य जोयहब्रह्मपुरुषहै ॥ सो आपणेसत्. तआनंदरूपकरिके संपूर्णजगत्कूं व्याप्तकरिरह्याहै ॥ याकारणतें यहब्रह्मनामापुरुष पूर्णसंज्ञाकूंप्राप्तभयाहै ॥ और हेदेव राजइंद्र ॥ असत्शब्दकाअर्थ तथाअसत्शब्दजन्यज्ञानकाविषय जोतत्पदकाअर्थपरोक्षईश्वरहै ॥ और सत्शब्दकाअर्थ तथासत्शब्दजन्यज्ञानकाविषय जोत्वंपदकाअर्थअपरोक्षजीवहै ॥ तिनदोनोंकूं परमात्माकेसत्आनंदस्वरूपकरिके तूं पूर्णजाण ॥ शंका–हेभगवन् ! आत्माकेभेदकाकारणजोप्रपंचरूपउपाधिहै ॥ तिसकेविद्यमानहुए परमात्माकीसर्वत्रपूर्णता संभवैनहीं ॥समाधान॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जो प्रपंच आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्नहोवै ॥ तो प्रपंच आत्माकेभेदकूंउत्पन्नकरै ॥ परंतु आनंदस्वरूपआत्माअधिष्ठानतें प्रपंच भिन्ननहीं॥किंतु पूर्णपरमात्मातैंहीं यहप्रपंचउत्पन्नहोवैहै ॥ और पूर्णपरमात्माविषेही यहसंपूर्णजगत् स्थितहै ॥ और पूर्णपरमात्माविषेही यहसकलजगत् लयहोवैहै ॥ अधिष्ठानआत्माकीसत्तातैंभिन्न जगत्कीसत्तानहीं ॥ यातें संपूर्णजगत अधिष्ठानरूपआत्माविषेकल्पितहै॥जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुए ॥ कल्पितसर्पकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ परिशेषतैं रज्जुरूपअधिष्ठान रहैहै ॥ तैसे अधिष्ठानस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारहुए ॥ संपूर्णकल्पितप्रपंचकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ परिशेषतैं पूर्णपरमात्माही प्रपंचरूपउपाधितैंरहितहुआ स्थितहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे वर्षाकालविषे आकाशतैंहीं मेघ उत्पन्नहोवैहैं ॥ और आकाशविषेहीं मेघ स्थितहोवैहैं ॥ और आकाशविषेही मेघोंकालयहोवैहै ॥ और संपूर्णमेघोंकानिवृत्तहुए परिशेषतैं एकआकाशहीरहैहै ॥ तैसे कल्पितप्रपंचकेनिवृत्तहुए परिशेषतैं एकअद्वितीयपरमात्माहीरहैहै॥और हेदेवराजइंद्र॥ जैसे आकाश सर्वत्रपूर्णहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपपरमात्माभी सर्वत्रपूर्णहै ॥ और जैसे शरीरादिकअनात्मपदार्थ भूत भविष्यत् वर्तमान यातीन कालोंविषे एकस्वभाववालेहोवैंनहीं ॥ किंतु बाल्ययौवनादिकनानास्वभावोंकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा नानास्वभावोंकूं

प्राप्तहोवेनहीं ॥ किंतु तीनकालोंविषे एकस्वभाववालाहै ॥ और सत्‌चित् आनंद स्वरूपहै ॥ ऐसे निर्गुणपरमात्माकेवास्तवस्वरूपकूं शुद्ध अंतःकरणवालेविद्वान्‌पुरुषही अनुभवकरेंहैं ॥ मलिनअंतःकरणवालेपुरुष आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं जाणिसकेंनहीं ॥शंका ॥ हेभगवन् ॥ जिसआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं विद्वान् पुरुष अनुभवकरेंहैं॥तिसआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं घटपटादिकोंकीन्याई इदंतारूपकरिके हमारेप्रति कथनकरो ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहआनंदस्वरूपपरमात्मा वास्तवतैंअसंगहै और निर्गुणहै ॥ और जगत्‌कीउत्पत्तिस्थितिलयतैं रहितहै ॥ यातैं ऐसेनिर्गुणपरमात्माकूं घटादिकोंकीन्याई इदंतारूपकरिकेबोधनकरणेविषे कोईभीविद्वान् समर्थनहीं ॥ किंतु ऐसे निर्गुण परमात्माविषे जगत्‌कीउत्पत्तिस्थितिलयका आरोपणकरिके शिष्यकेताईं तिसनिर्गुणब्रह्मकाउपदेश गुरुकरेंहैं ॥ प्रपंचकेअध्यारोपअप वादतैंबिना साक्षात्‌निर्गुणपरमात्माकेबोधकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ काहेतैं यहनिर्गुणपरमात्मा स्वप्रकाशज्ञानस्वरूपहै ॥ यातैं बाह्यचक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकेभी जान्याजावेनहीं ॥ तैसे अंतरमनबुद्धिआदिकोंकरिकेभी जान्याजावेनहीं ॥ तथाअन्य किसीप्रमाणकरिकेभी जान्याजावेनहीं ॥ ऐसेमनवाणीकेअविषयनिर्गुणपरमात्माविषे जगत्‌कीउत्पत्तिस्थितिलय किसप्रकारसंभवे ॥ याप्रकारकेविचारयुक्त जेमहात्मापुरुषहैं ॥ तिनोंनें जगत्‌केउत्पत्तिकीसिद्धिवासते तिसनिर्गुणपरमात्माविषे मायाकल्पनाकरीतीहै ॥ सोमाया अज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु मैंअज्ञानीहूं याअनुभवकरिकेसिद्ध अज्ञानस्वरूपहीमायाहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ तिसअज्ञानरूपमायाकूं यहपरमात्माही प्रकाशकरेहै ॥यातैं सोअज्ञानरूपमायासंपूर्णपरमात्माकूंआच्छादनकरेनहीं॥किंतुपरमात्माकेकिंचित्‌देशकूं सोमाया आच्छादनकरेहै जोसर्वओरतैंपरमात्माकूं माया आच्छादनकरे॥तो अस्तिभातिप्रियरूपकरिके आत्माकाभान नहींहोणाचाहिये॥ और सर्वप्राणियोंकूं मैंसर्वदाविद्यमानहूं याप्रतीतिविषे अस्तिरूपकरिके परमात्माकाभानहोवैहै ॥ और मैंभासताहूं याप्रतीतिविषे भातिरूप करिके परमात्माकाभानहोवैहै ॥ और मैंकभीभीअप्रियनहींहूं याप्रतीतिविषेप्रियरूपकरिके परमात्माकाभानहोवैहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र यहआनंदस्वरूपपरमात्मापुरुष आपणेस्वप्रकाशज्ञानस्वरूपकरिकेसंपूर्णबुद्धिआदिकजडपदार्थोंकाद्रष्टाहै ॥ और सजातीय विजातीय स्वगत भेदतैंरहितहै ॥ ऐसेस्वतःसिद्धआनंदस्वरूपपरमात्माके साक्षात्‌बोधनकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ अब याहीअर्थ

कूंरूपष्टकरिकेदिखावैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ शब्दस्पर्शादिकविषयोंकेअनुभवतें उत्पन्नभयाजोपुरुषकूंसुखहै ॥ तिसआपणेसुखकूं सो
पुरुष जभीअन्यकिसीपुरुषकेप्रति कथनकरैहै ॥ तभी अन्यकिसीपदार्थकूंदृष्टांतकरिके ताआपणेसुखका कथनकरैहै ॥ किसीदृष्टांततें
विना विषयजन्यसुखकेसाक्षात्कथनकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ जभी अनुभवकरेहुएविषयजन्यसुखकूंभी कोईपुरुष साक्षात्
कथनकरणेविषे समर्थनहींभया ॥ तभी अलौकिकआनंदस्वरूपआत्माकूं कौनपुरुष साक्षात्कथनकरिसकैगा ॥ किंतु आनंदस्वरूपआ
त्माकेसाक्षात्कथनकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ यातें हेदेवराजइंद्र तानिर्गुणपरमात्माविषे जगत्काअध्यारोपकरिके मैंतुमारेताई
आनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश करताहूं ॥ जोतुमाराअंतःकरण शुद्धहोवैगा ॥ तो आपेहीतूं परमात्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणैगा ॥ अब
परमात्माविषेजगत्केअध्यारोपकूंदिखावैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ याअनादिसंसारविषे जैसे रात्रिदिनकाप्रवाह निरंतरवर्तमानहै ॥तात्पर्ययह ॥
रात्रिकेनिवृत्तहुए दिनकीउत्पत्तिहोवैहै॥और दिनकेनिवृत्तहुए पुनःरात्रिकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याप्रकार दिनरात्रिकाप्रवाह निरंतरवर्तमानहै ॥
तैसे जगत्की उत्पत्तिका तथाप्रलयका प्रवाहभी निरंतरवर्तमानहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जगत्कीउत्पत्तितैंअनंतर प्रलयहोवैहै ॥ और प्रलयके
अनंतर पुनःजगत्कीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याप्रकार जगत्केउत्पत्तिप्रलयकाप्रवाह निरंतरवर्त्तमानहै ॥ और जैसे रात्रिके तथादिनके जोमध्य
काकालहै ताकूं लोकविषेसंध्याकहैहैं ॥ तैसे जगत्केउत्पत्तिका तथानाशका जोमध्यकालहै ताकूं शास्त्रविषेस्थितिकहैहैं ॥ अब जगत्के
स्वरूपकूंदिखावैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहसंपूर्णजगत् नाम रूप क्रिया स्वरूपहै ॥ तहाँ विश्व लोक दृश्य प्रपंच याप्रकारकेशब्दोंकूंनाम
कहैहैं ॥ और आकाशादिकपंचभूतोंकूं तथापंचभूतोंकेकार्यशरीरादिकव्यक्तियोंकूं रूपकहैहैं ॥ और जगत्केउत्पत्तिकूं तथासंहारकूं क्रिया
कहैहैं ॥ इसप्रकार संपूर्णजगत्विषे नामरूपक्रियास्वरूपताकथनकरिके ॥ अब एकएकघटपटादिकपदार्थविषे नाम रूप क्रिया स्वरूपता
दिखावैं हैं ॥ जैसे एकघटका घट कुंभ कलश यहनामहैं ॥ और उदरवडा मुखछोटा यह घटकारूपहै ॥ और जलादिकोंकाआनयन ॥
यहघटकीक्रियाहै ॥ इसप्रकारपटादिकसर्वपदार्थोंविषेभी नामरूपक्रिया जानिलेणी ॥ अब नामरूपक्रियाकेपरस्परअभेदकूंदिखावैं हैं ॥ हेदे

वराजइंद्र जैसे घटादिकपदार्थ कभी नवीनअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और कभी जीर्णअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सोनवीनअवस्था तथाजीर्णअवस्था घटादिकपदार्थोंतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु घटादिकोंकास्वरूपहीहै ॥ तैसे आनयनादिरूपक्रियाभी घटादिकपदार्थोंकीअवस्थाविशेषहै ॥ यातैं घटादिकवस्तुकेस्वरूपतैं क्रियाभिन्ननहीं ॥ किंतु रूपस्वरूपहीक्रियाहै ॥ और सोघटादिकोंकारूप घटादिकनामोंतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं घटादिकनामोंतैंविना घटादिकोंकेरूपकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं घटादिकोंकारूप नामस्वरूपहै ॥ इसप्रकार नाम रूप क्रिया यह तीनों परस्परभिन्ननहीं किंतु अभिन्नहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे नामरूपक्रियायहतीनों परस्परभिन्ननहींहैं ॥ तैसे आपणेकारणतैंभी नामरूपक्रिया भिन्ननहीं ॥ किंतु नामरूपक्रिया आपणेकारणतैं अभिन्नहीहोवैहैं ॥ कार्यका कारणकेसाथअभेद लोकविषेभीदेख्याहै ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिककार्य रज्जुरूपकारणतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ तथा परस्परभी भिन्नहोवैनहीं ॥ किंतु कल्पितसर्पदंडादिक रज्जुरूपकारणतैं तथापरस्परअभिन्नहीहैं ॥ तैसे नामरूपक्रिया आपणेकारणतैं तथापरस्पर भिन्ननहीं किंतुअभिन्नहीहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे आकाशविषेकल्पितमेघादिक आपणीउत्पत्तितैंपूर्व आकाशस्वरूपहीहोवैहैं ॥ तैसे नामरूप क्रियास्वरूपसकलजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व अद्वितीयब्रह्मरूपहीहोताभया ॥ याप्रकार श्रुतिनैं जगत्कोउत्पत्तितैंपूर्व ब्रह्मरूपकरिकेजगत्कीस्थिति कथनकरीहै ॥ सोब्रह्मविषेजगत्कीस्थिति ब्रह्मकूंजगत्काकारणमानणेतैंविना संभवैनहीं ॥ काहेतैं आपणीउत्पत्तितैंपूर्व कार्य कारणविषेहीरहेहै ॥ कारणतैंभिन्नकिसीपदार्थविषे कार्य रहैनहीं ॥ जैसे घटरूपकार्य आपणीउत्पत्तितैंपूर्व मृत्तिकारूपकारणविषेरहेहै ॥ मृत्तिकातैंभिन्नकिसीपदार्थविषे घटरूपकार्य रहैनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ अद्वितीयब्रह्मविषे श्रुतिनैं कथनकरीजोजगत्की कारणता सो मायातैंविनासंभवैनहीं ॥ यातैं अद्वितीयनिर्गुणपरमात्माविषे जगत्केकारणताकीसिद्धिवासते तेविद्वान्पुरुष तिसअद्वितीयब्रह्मविषे मायाकीकल्पनाकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ सोमायाभी अधिष्ठानब्रह्मतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु अज्ञातब्रह्मकानामहीमायाहै ॥ याकारणतैं विवेकीमहात्मापुरुष ब्रह्मविषेजगत्कीकारणताकेसिद्धिवासते तिसअज्ञातपरमात्माकूंही मायाकेवाच

कअव्याकृतादिकशब्दोंकरिकेकथनकरैहैं ॥ अब मायाविशिष्टपरमात्माकेनामोंकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ कोईवेदवेत्तापुरुषता मायाविशिष्टपरमात्माकूं अव्याकृतकहैहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं आकाश कहैहैं ॥ और कोईक वेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं अक्षरकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं मायीकहैहैं ॥ और को ईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं अधीश्वरकहैहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं अंतर्यामीकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं ईश्वरकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं कार णकहैहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं ब्रह्मकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं पूर्ण कहैहैं ॥ इत्यादिकअनंतनामोंकरिकै तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं वेदवेत्तापुरुष कथनकरैं हैं ॥ अब अव्याकृतशब्दकेअर्थकूंदिखावैहैं ॥ हेदे वराजइंद्र ॥ सृष्टिकीउत्पत्तितैंपूर्व मायाविशिष्टपरमात्माविषे यासंपूर्णप्रपंचकानामरूप अस्पष्टरूपकरिकैरहै हैं॥याकारणतैं तिसमायाविशि ष्टपरमात्माकूं अव्याकृतकहैं हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे शीतकालविषे सूक्ष्मरूपहोइकेमेघ आकाशविषेरहैहैं॥और पुनःवर्षाकालविषे तिसीआकाशतैं स्थूलरूपकरिकैमेघ उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे तिसअव्याकृतपरमात्माविषे नामरूपक्रियास्वरूपजगत् सूक्ष्म रूपहोइकैरहैहै ॥ और पुनःसृष्टिकालविषे तिसअव्याकृतपरमात्मातैंही स्थूलरूपकरिकैयहजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं मायाविशिष्टअव्या कृतपरमात्माही संपूर्णजगत्काकारणहै॥अब हिरण्यगर्भकेस्वरूपकूंदिखावैहैं॥हेदेवराजइंद्र॥आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी यहपंचभूत॥ तथा नेत्र त्वक् रसन घ्राण श्रोत्र यहपंचइंद्रिय ॥ तथा प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्राण ॥ तथा मन ॥ या षोडशकलावोंके समूहकूं वेदवेत्तापुरुष सूक्ष्मशरीरकहै हैं ॥ तासमष्टिसूक्ष्मशरीरविषे अहंअभिमानकरिकैयुक्तहुआ सोमायाविशिष्टपरमात्माही हिरण्यगर्भ संज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और हेदेवराजइंद्र॥तिसहिरण्यगर्भकूं कोईकवेदवेत्तापुरुष सूत्रआत्माभीकहैहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यग र्भकूं मृत्युकहैहैं॥और कोईवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं मृत्युकहैहैं॥और कोईवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूंअशनायाकहैं हैंओर कोई

वेदवेत्तापुरुषतिसहिरण्यगर्भकूं प्रभंजनकहैहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं स्वयंभूकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूंईशकहैंहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं कार्यब्रह्मकहैहैं ॥ इसतैंआदिलेके अनंतनामोंकरिकै हिरण्यगर्भ काकथनकऱ्याहै॥और हेदेवराजइंद्र ॥ इसहिरण्यगर्भकास्वरूप अत्यंतसूक्ष्महै ॥ और नानाप्रकारकेवर्णोंकरिकैयुक्तहै॥तात्पर्ययह ॥ ईश्वर इंद्रियप्राणविषय अंतःकरण इतनेपदार्थोंकासमुदाय जाकास्वरूपहै॥और हेदेवराजइंद्र॥जैसे प्रथम बीजतैं अंकुरउत्पन्नहोवे है ॥ और अंकुर तैंवृक्षउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं बीज अंकुरद्वारा वृक्षकाकारणहै ॥ और अंकुर साक्षात्वृक्षकाकारणहै ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमात्मा हिरण्यगर्भद्वारा प्रपंचकाकारणहै ॥ और यहहिरण्यगर्भ आकाशादिकस्थूलपंचभूतोंका तथापंचभूतोंकेकार्यस्थूलशरीरादिकोंका ॥ साक्षात्हींकारणहै ॥ और यहसंपूर्णजगत् याहिरण्यगर्भकाहीस्वप्नहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जबी यहसंपूर्णजगत् हिरण्यगर्भका स्वप्नमानोंगे ॥ तो हिरण्यगर्भविषे जीवपणासिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ उपाधिदृष्टिकरिकै यहहिरण्यगर्भ जबी आपणे चैतन्यस्वरूपकूंनहींअनुभवकरता ॥ तबी यहहिरण्यगर्भ जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और चैतन्यदृष्टिकरिकै यहहिरण्यगर्भ आपणेव्यापक स्वरूपकाहीअनुभवकरैहै ॥ यातैं यह हिरण्यगर्भ ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे महाभारतविषे युधिष्ठिरादिकपंचपांडवोंविषे देवतावोंकाअंश तथामनुष्यकाअंश दोनोंकथनकरेहैं ॥ तैसे समष्टिसूक्ष्मउपाधिकीदृष्टिकरिकै हिरण्यगर्भविषे जीवव्यवहारहोवैहै ॥ और उपाधितैंरहितव्यापकचैतन्यदृष्टिकरिकै हिरण्यगर्भविषे ईश्वरव्यवहारहोवैहै ॥ अब हिरण्यगर्भविषे ईश्वरस्वरूपताकेस्पष्टकरणे वासतै ताहिरण्यगर्भविषे सर्वात्मताकूं तथाजगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकोकारणताकूं दिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहहिरण्य गर्भही जडचेतनरूपसंपूर्णजगत्स्वरूपहै ॥ और यहहिरण्यगर्भही इंद्रादिकसकलदेवतास्वरूपहै ॥ और यहहिरण्यगर्भही दशदिशा स्वरूपहै ॥ याकरिकै हिरण्यगर्भकीसर्वत्रव्यापकतादिखाई ॥ अब जगत्कीकारणताकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे मायावी राक्षसोंकाबालक आपणेमायाकेप्रभावतैं अनेकपदार्थोंकीउत्पत्ति स्थिति लयकूंकरैहै ॥ तैसे यहहिरण्यगर्भभगवान् आपणेमायाके

बलतैं संपूर्णजगत्के उत्पत्तिकूंतथास्थितिकूं तथासंहारकूंकरैहै ॥ यातैं हिरण्यगर्भही संपूर्णजगत्काकारणहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ याजगत्विषे हिरण्यगर्भतैंअधिक तथाहिरण्यगर्भकेसमान कोईभीदेहधारीजीव नहीं ॥ किंतु संपूर्णदेहधारीजीवोंतैं यहहिरण्यगर्भ भगवान् अधिकहै ॥ यातैं यहहिरण्यगर्भभगवान् अतिशयतादोषतैंरहितहै ॥ और हेदेवराजइंद्र जैसे राजाकेप्रियभृत्य आपणीआपणीइच्छाकेअनुसार शुभकर्मविषे तथाअशुभकर्मविषे प्रवर्तमानहोवैंहैं ॥ तिनप्रियभृत्योंकोइच्छाकेअनुसारही राजा तिनोंकूं प्रेरणा करैहै॥तैसे पूर्वपूर्व पुण्यपापरूपकर्मकेअनुसार पुण्यकर्मविषे तथापापकर्मविषे प्रवर्तमानभयेजीवोंकूं यहहिरण्यगर्भभगवान् प्रेरणाकरैहै ॥ यातैं यहहिरण्यगर्भभगवान् अंतर्यामीहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेदिखावैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहहिरण्यगर्भभगवान् जिनपुरुषोंकूं नरकविषेलेजाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तिनपुरुषोंकूं प्रेरणाकरिकैं पापकर्महीकरावैहै ॥ और यहहिरण्यगर्भभगवान् जिनपुरुषोंकूंस्वर्गविषेलेजाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तिनपुरुषोंकूं प्रेरणाकरिकैं पुण्यकर्महीकरावैहै ॥ और सोहिरण्यगर्भभगवान् जिनपुरुषोंकूं मनुष्यलोकविषेलेजाणेकी इच्छाकरैहै ॥ तिनपुरुषोंकूं प्रेरणाकरिकै पुण्यकर्म तथापापकर्म दोनोंकरावैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषेधर्मात्माराजा शुभकर्मकरणेहारेपुरुषकूं सुखकोप्राप्तिकरैहै ॥ और अशुभकर्मकरणेहारेपुरुषोंकूं दुःखकोप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे यहहिरण्यगर्भभगवान्भीपुण्यकर्मवान्पुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और पापकर्मवान्पुरुषोंकूं दुःखकोप्राप्तिकरैहै॥और यहहिरण्यगर्भभगवान्पापीपुरुषकीइच्छाकेअनुसार तापापीपुरुषकूं पापकर्मविषेप्रेरणाकरैहै॥और धर्मात्मापुरुषकोइच्छाकेअनुसार ताधर्मात्मापुरुषकूं पुण्यकर्मविषेप्रेरणाकरैहै॥यातैं हिरण्यगर्भविषे विषमतादोष तथानिर्दयतादोष होवैनहीं॥दृष्टांत॥ जैसे पिता माता नानाप्रकारकेपदार्थोंकोप्राप्तिकरिकै बालककूं सुखकीप्राप्तिकरैंहैं॥और कदाचित् सोपितामाता ताडनाकरिकै बालककूं दुःखकोप्राप्तिभीकरैंहैं॥परंतु बालककेताडनाकालविषे पितामाताकी बालकऊपर निर्दयताहोवैनहीं ॥ किंतु बालककेहितवास्तैंही पितामाता ताकाताडनकरैंहैं ॥ तैसे यहहिरण्यगर्भभगवान्भीजीवोंकेचित्तकीशुद्धिवासते तिनजीवोंकेकर्मोंकेअनुसार तिनजीवोंकूं नरकदुःखकीप्राप्तिकरैंहैं ॥ यातैं हिरण्यगर्भविषे विषमतादोष तथा निर्दयतादोष संभवै

नहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहहिरण्यगर्भभगवान् सृष्टिकेआदिकालविषे संपूर्णजगत्कूंविचारकरिकें उत्पन्नकरैहै ॥ और स्थितिकालविषे संपूर्णजगत्का पालनकरैहै ॥ और प्रलयकालविषे संपूर्णजगत्का संहारकरैहै ॥ याहिरण्यगर्भतैंभिन्न दूसराकोईपुरुष जगत्के उत्पत्ति स्थिति लय करणेविषेसमर्थनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ सोहिरण्यगर्भभगवान् जलहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेस्थूलपंचभूतोंकूंउत्पन्नकरिकैं तिनजलोंविषे आपणेशक्तिरूपवीर्यकूं पावताभया ॥ सोकैसावीर्यहै ॥उपासकपुरुषोंनें करेजेकर्म तथाउपासना तिनोंका सूक्ष्मपरिणामरूप है ॥ ऐसाशक्तिरूपवीर्य जभी हिरण्यगर्भनें जलविषेपाया ॥ तभी सोशक्तिरूपवीर्य जलकेऊपरस्थितहोताभया तात्पर्ययह ॥ जैसे अंकुर कीउत्पत्तिकालविषे बीज फूलिजावैहै ॥ तैसे सोवीर्य फूलताभया ॥ और तिसतैंअनंतर सोवीर्य दधिकेसमानहोताभया ॥ और तिसतैं अनंतर सोवीर्य अत्यंतकठिनभावकूं प्राप्तहोताभया और अत्यंतकठिनभावकूंप्राप्तहुआ सोवीर्य पृथिवीरूपहोताभया ॥ और तिसपृथिवी कासाररूप यहब्रह्मांडगोलक होताभया ॥ याकारणतैंही यहपृथिवी साररूपतैंरहितहुईरूक्षप्रतीतहोवैहै ॥ और सोपृथिवीकासाररूप ब्रह्मांडगोलककैसाहै ॥ कुक्कटकेअंडेसमान जाकाआकारहै ॥ और भूरादिकसप्तलोकोंकाआधारहै ॥ ऐसाब्रह्मांडरूपगोलक एकवर्षपर्यंत तिनजलोंविषेस्थितहोताभया ॥ और जैसे शुष्कतुंबीफल वायुकरिकै जलविषेभ्रमणकरैहै ॥ तैसे जलविषे वायुकरिकैताडनकऱ्याहुआ यहब्रह्मांडरूपगोलक एकवर्षकेसमाप्तहुएतैंअनंतर कुक्कटकेअंडकीन्याई भेदनहोताभया ॥ तिसब्रह्मांडरूपगोलकतैं सप्तलोकहैंशरीरजाका ऐसाविराट्भगवान् प्रगटहोताभया ॥ सोकैसाहैविराट्भगवान् ॥ भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेस्थित जितनाकप्रपंचहै ॥ सोसंपूर्ण विराट्भगवान्काहीस्वरूपहै ॥ और यह विराट्भगवान्ही संपूर्णजीवोंकूं भोगोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहविराट्भगवान्ही जीवों कूं स्वर्गरूपगौणअमृतकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा मोक्षरूप मुख्यअमृतकी प्राप्तिकरैहै ॥ और यहविराट्भगवान्ही वृक्षादिकस्थावरप्राणियोंकूं तथामनुष्यादिकजंगमप्राणियोंकूं नानाप्रकारकेअन्नादिकोंकीप्राप्तिकरिकैं वृद्धिकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ याविराट्भगवान्कीकैसी महिमाहै ॥ संपूर्णजगत् जिसकेमहिमाकाएकपादहै ॥ और तीनपादोंकरिकैयुक्त सोमहिमा जिसविराट्भगवान्केस्वप्रका

शस्वरूपविषेस्थितहै ॥ और जैसे लोकविषे सेनापतितैंआदिलेके संपूर्णद्रव्यादिकपदार्थ राजाकीमहिमाहै ॥ तिससेनापतिआदि
कमहिमातैं तिसमहिमाकाआश्रयरूप महाराजा अधिकहोवैहै ॥ तैसे संपूर्णप्रपंचरूपमहिमातैं यहविराट्भगवान् अधिकहै ॥ और
हेदेवराजइंद्र ॥ सकामपुरुषोंकेस्वर्गादिकलोकोंकोप्राप्तिवासतै कर्मकांडरूपप्रवृत्तिमार्गकाकर्ताभी यहविराट्भगवान्हीहै ॥ तथा
निष्कामपुरुषोंकेमोक्षकोप्राप्तिवासतै ज्ञानकांडरूपनिवृत्तिमार्गकाकर्ताभीयहविराट्भगवान्हीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ आकाशादिकपंच
भूतोंकरिकेरचितसंपूर्णप्रपंचतैं यहविराट्भगवान् अधिकहै॥याकारणतैं बुद्धिमान्पुरुष ताकूं विराट्कहैहैं॥और यहविराट्भगवान् संपूर्ण
प्राणियोंकीशरीररूपपुरियोंकूं आश्रयणकरिकेस्थितहोवैहै॥और आपणेस्वरूपकरिके संपूर्णशरीरोंकूंपूर्णकरैहै॥याकारणतैं विराट्भगवान्कूं
अधिपुरुषकहैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ब्रह्मांडविषेस्थित जोयहविराट्भगवान्है॥तिसविराट्भगवान्तैंहीयहसंपूर्णशरीर उत्पन्नभयेहैं ॥ तथा
संपूर्णपर्वत तथापृथिवी उत्पन्नभयीहै ॥ याकारणतैं सोविराट्भगवान् संपूर्णदेहधारीजीवोंतैंअधिकहै॥और हेदेवराजइंद्र ॥ यहविराट्भगवा
न्हीं यज्ञस्वरूपहै ॥ और ऋक साम यजुष् अथर्वण याचारिवेदोंकाकारणभी यहविराट्भगवान्हीहै ॥ और याविराट्भगवानतैंही गायत्री
आदिकछंद उत्पन्नभयेहैं॥तथा अजातैंआदिलेके संपूर्णग्रामकेपशु तथावनकेपशु उत्पन्नभयेहैं॥और याविराट्भगवान्केमुखतैं देवराजइंद्र
तथाअग्नि तथासंपूर्णब्राह्मण उत्पन्नभयेहैं॥और याविराट्भगवान्केबाहुतैं इंद्र वरुणादिक देवक्षत्रिय उत्पन्नभयेहैं॥तथा भूमिकेराजे मनुष्यक्ष
त्रिय उत्पन्नभयेहैं॥और याविराट्भगवान्केऊरुदेशतैं विश्वेदेवादिकदेववैश्य तथासंपूर्णमनुष्यवैश्य उत्पन्नभयेहैं ॥ और याविराट्भगवान्
केपादोंतैं पूषानामादेवशूद्र तथासंपूर्णमनुष्यशूद्र उत्पन्नभयेहैं ॥ और याविराट्भगवान्केमनतैं चंद्रमा उत्पन्नभयाहै ॥ और याविराट्भ
गवान्केनेत्रोंतैं सूर्यभगवान् उत्पन्नभयाहै॥ और याविराट्भगवान्केप्राणतैं वायु उत्पन्नभयाहै॥और याविराट्भगवान्कीनाभितैं आकाश
उत्पन्नभयाहै ॥ और याविराट्भगवान्केमस्तकतैं स्वर्गलोक उत्पन्नभयाहै ॥ और याविराट्भगवान्केश्रोत्रतैं दशोंदिशा उत्पन्नभईआहैं॥
इसप्रकारअन्यभीसंपूर्णदेवता तथाशब्दादिकविषय याविराट्भगवान्तैंही उत्पन्नभयेहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ घृततैंआदिलेकेजेद्रव्यहैं ॥

तथावसंतऋतुतैंआदिलेकेजेकालहैं ॥ तथाअग्निआदिकजेदेवताहैं॥तथा यज्ञकाकर्ताजोयजमानहै॥और यज्ञादिकजेकर्महैं ॥ यहसंपूर्ण विराट्भगवान्‌तैंभिन्ननहीं ॥ किंतु विराट्भगवान्‌कास्वरूपहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जितनेकलोकविषेप्राणियोंकेमस्तकहैं ॥ तेसंपूर्णमस्तक याविराट्भगवान्‌केहीहैं ॥यातें यहविराट्भगवान् असंख्यातमस्तकोंवालाहै॥औरलोकविषेजितनेकप्राणियोंकीइंद्रियहैं॥तेसंपूर्णइंद्रिय याविराट्भगवान्‌कीहैं ॥ याकारणतैं यहविराट्भगवान् असंख्यातइंद्रियवान्‌है ॥ इसप्रकार हस्तपादादिकसर्वअंगोंविषेभीजानिलेणा ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहविराट्भगवान्‌हीं संपूर्णभूतभौतिकप्रपंचकूं व्याप्तकरिके हृदयदेशविषेस्थितहै ॥ और संपूर्णबुद्धिआदिकोंकासाक्षीहै ॥ और संपूर्णदृश्यधर्मतैं परेहै ॥ और आवरणतैंरहितस्वयंप्रकाशहै ॥ ऐसेस्वप्रकाशविराट्भगवान्‌कूं हेइंद्र मैंसाक्षात्‌अनुभवकरताहूं ॥ कैसाहैसोविराट्भगवान् ॥ नामरूपात्मकसकलप्रपंचकाकारणहै ॥ और हृदयदेशविषेस्थितहुआ सोविराट्भगवान् शब्दउच्चारणआदिकसकलव्यवहारोंकूंसिद्धकरैहै ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ ऐसेविराट्भगवान्‌केस्वरूपकूं प्रतिबंधकोंनिवृत्तिहुए ब्रह्माकेउपदेशतैं तूंभी साक्षात्‌अनुभवकरैगा ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहविराट्भगवान् दशोंदिशास्वरूपहै ॥ यातैं सकलसामग्रीसहितयज्ञस्वरूपभी यहविराट्भगवान्‌हीहै ॥ जेपुरुष यज्ञकरिके ताविराट्भगवान्‌कापूजनकरैंहैं ॥ तेमहात्मापुरुष तिसयज्ञरूपधर्मकरिके तिसविराट्भगवान्‌केमस्तकरूपस्वर्गलोककूं प्राप्तहोवैंहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहविराट्भगवान्‌कैसाहै ॥ स्वर्गलोक याविराट्भगवान्‌का मस्तकहै ॥ और सूर्यचंद्रमादोनों याविराट्भगवान्‌के नेत्रहैं ॥ और वायु याविराट्भगवान्‌का प्राणहै ॥ और अंतरिक्षलोक याविराट्भगवान्‌केदेहका मध्यदेशहै ॥ और संपूर्णजल याविराट्भगवान्‌के मूत्राशयहैं ॥ और संपूर्णभूलोक याविराट्भगवान्‌के पादहैं॥ और आहवनीयनामाअग्नि याविराट्भगवान्‌का मुखहै ॥ और गार्हपत्यनामाअग्नि याविराट्भगवान्‌का हृदयहै ॥ और दक्षिणाग्निनामाअग्नि याविराट्भगवान्‌का मनहै ॥ और यज्ञविषेसंस्कारयुक्तजोभूमिहै ॥ सो याविराट्भगवान्‌का वक्षस्थलहै ॥ और कुशा याविराट्भगवान्‌के लोमहैं ॥ और संपूर्णओषधि तथावनस्पति याविराट्भगवान्‌के केशहैं ॥ याप्रकार विराट्भगवान्‌काध्यान उपासकपुरुषकरैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहविस्तारतैंविराट्भगवान्‌कास्वरूप

हमनें तुमारेप्रतिकह्या ॥ अब संक्षेपतेंविराट्भगवान्‌केस्वरूपकूं तुम श्रवणकरो ॥ जितनाकप्रपंच प्रत्यक्षदिखाईदेवेहे ॥ और जितनाकप्र
पंच प्रत्यक्षनहींदेखीता ॥ यहसंपूर्णजगत् विराट्भगवान्‌का स्वरूपहे ॥ ऐसेविराट्भगवान्‌रूपपुत्रकूं उत्पन्नहुआ देखिकरिके क्षुधाकरिके
पीडितहुआ सोहिरण्यगर्भ विराट्रूपपुत्रकेभक्षणकरणेवासते मुखकूंपसारताभया ॥ शंका ॥हेभगवन् ॥ हिरण्यगर्भभगवान्‌की पुत्रकेभक्षण
रूपनिंदितकर्मविषे काहेतैंइच्छाहोतीभयी ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहक्षुधारूपीपिशाची किसजीवकीबुद्धिकूंभ्रष्टनहींकरती ॥ किंतु
सर्वप्राणियोंकी बुद्धिकूं यहक्षुधारूपीपिशाची भ्रष्टकरैहे ॥ याकारणतें सोहिरण्यगर्भ पुत्रकेभक्षणकरणेविषे उद्यमकरताभया ॥ तात्पर्य
यह ॥ हिरण्यगर्भसरीखेईश्वरोंकूंभी जभी क्षुधारूपीपिशाची अनर्थविषेप्रवृत्तकरैहे ॥ तभी अन्यअविवेकीजीवोंकीक्याकथाहे ॥ किंवा ॥
यासंसारविषेनानाप्रकारकेरोगहैं ॥ और तिनरोगोंकेनिवृत्तिकेउपायभी नानाप्रकारकेशास्त्रविषेकहेहैं ॥ और याक्षुधारूपरोगकेनिवृत्तिका
उपाय अन्नभक्षणतेंविना दूसराकोईहैनहीं ॥ एकअन्नकाभक्षणहीं क्षुधारूपरोगकेनिवृत्तिकाउपायहे ॥ याकारणतें सर्वरोगोंतें यहक्षुधारूप
रोग अधिकहे ॥ किंवा ॥ जैसे पुत्रकेमरणतें पितामाताकूं दुःखहोवेहे ॥ तिसदुःखतेंभीअधिकदुःख क्षुधावान्‌पुरुषकूं होवेहे ॥ याअर्थविषे
हिरण्यगर्भहीदृष्टांतहे ॥ काहेतें पुत्रकेमरणजन्यदुःखकूंअल्पजाणिकरिके सोहिरण्यगर्भ क्षुधाजन्यदुःखकीनिवृत्तिवास्ते पुत्रकेभक्षणकर
णविषेप्रवृत्तहोताभया ॥ यातें यहजान्याजावेहे ॥ पुत्रकेमरणजन्यदुःखतेंभी क्षुधाजन्यदुःख अधिकहे ॥ किंवा ॥ जैसे दयातेंर
हितराक्षस देहधारीजीवोंकोहिंसाकरेहैं॥तैसे यालोकविषे क्षुधाकरिकेआतुरहुआपुरुष आपणेपिताकूं तथामाताकूं तथागुरुकूं तथाभ्राताकूं
तथाबांधवोंकूं हननकरैहै ॥ किंवा ॥ यहक्षुधारूपीपिशाची सत्य शौच श्री धैर्य बल वीर्य पराक्रम यश धर्म दया इसतें
आदिलैके सर्वगुणोंका नाशकरैहे ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेदिखावेहैं ॥ क्षुधाकरिकेआतुरहुआयहपुरुष आपणेस्त्रीकूं तथापितामाता
दिकसंबंधियोंकूं श्वानकीन्याई तिरस्कारकरैहे ॥ यातैंयहजान्याजावेहे ॥ क्षुधाकरिकेआतुरहुआपुरुष दयातेंरहितहोवेहे ॥ जोदयावान्
पुरुषहोवेहे ॥ सो किसीकानिरादरकरैनहीं ॥ दयातेंरहितपुरुषही पितामातादिकसंबंधियोंका निरादरकरैहे ॥ किंवा ॥ सर्वदेहधारीजीवों

विषे याक्षुधारूपीपिशाचीका विचित्रबलहै ॥ काहेतें यालोकविषे निद्रा काम क्रोधादिकदोष अत्यंतप्रबलहैं ॥ तथापि तिनकामादिकदोषोंकूं यहक्षुधारूपीपिशाची शीघ्रहीनाशकरैहै ॥ तथा सत्यादिकशुभगुणोंकूंभी यहक्षुधारूपीपिशाचीशीघ्रहीनाशकरैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ सत्यादिकशुभगुणोंतैं ॥ तथाकामादिकअशुभगुणोंतैं यहक्षुधारूपीपिशाची बलवान्है ॥ लोकविषेभी बलवान्पुरुषकरिकेहीं निर्बलपुरुषका पराजयहोवैहै ॥ अब क्षुधाविषे निद्रादिकदोषोंकेजयकीकारणताकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरैहैं ॥ क्षुधाकरिकेआतुरहुआ यहपुरुष कोमलसिहजाऊपरसोयाहुआभी निद्राकूंनहींप्राप्तहोता ॥ यातैं निद्रारूपदोषतैंभी यहक्षुधारूपीपिशाची प्रबलहै ॥ और क्षुधाकरिकेआतुरहुआयहपुरुष जभीकिसीतैंअन्नकीयाचनाकरैहै ॥ तभी सोअन्नदातापुरुष नानाप्रकारकेदुर्वचनोंकरिके ताक्षुधावान्पुरुषका निरादरकरैहै ॥ तानिरादरकरिकेभी सोक्षुधातुरपुरुष क्रोधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं क्रोधरूपदोषतैंभी यहक्षुधारूपीपिशाची बलवान्है ॥ ॥ किंवा ॥ चंद्रकेसमानहैमुखजिनोंका ॥ तथा पीनहैंदोनोंस्तनजिनोंके ॥ तथा कोमलहै शरीरजिनोंका ॥ तथा षोडशवर्षकी अवस्थाहैजिनोंकी ॥ तथा कोमलहैभाषणजिनोंका॥तथा अपसरावोंकेसमानहैसुंदरताजिनोंकी॥तथा कामकरिकेयुक्तहैशरीरजिनोंका॥ इत्यादिकगुणोंकरिकेयुक्तजेस्त्रियांहैं॥तिनस्त्रियोंकरिके आलिंगनकर्‍याहुआभी यहक्षुधावान्युवान्पुरुष बालककीन्याई कामदोषकूंप्राप्तहोवै नहीं ॥ यातैं कामदोषतैंभी यहक्षुधारूपीपिशाची बलवानहै ॥ किंवा ॥ क्षुधाकरिकेआतुरहुआयहपुरुषस्वर्णादिकद्रव्यकीभी इच्छाकरता नहीं ॥ तथा अश्वादिकपशुवोंकीभी इच्छाकरतानहीं॥ तथा तीनलोकसंबंधीपृथिवीकेराजकरणेकीभीइच्छाकरतानहीं॥यातैं यहक्षुधारूपी पिशाची लोभदोषतैंभी प्रबलहै ॥ किंवा ॥ काम क्रोध लोभ यातीनोदोषोंनें तीनलोकोंकूंजीत्याहै ॥ यातैं काम क्रोध लोभ यहतीनोंदोष महाबलवानहैं ॥ ते काम क्रोध लोभभी याक्षुधारूपीपिशाचीकेभयतैं जहांतहांभागेफिरतेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जबीकाम क्रोध लोभ यह तीनोंशूरवीरभी क्षुधारूपपिशाचीकेभयतैं याप्रकारकेदुर्गतिकूंप्राप्तहोवै हैं॥तबीकामक्रोधलोभकरिके पराजयकूंप्राप्तभयेजेसत्यादिकगुण हैं॥ तिनोंकूं यहक्षुधारूपीपिशाची नहींपराजयकरैगी यहकहणाबनैनहीं ॥ यातैंयहक्षुधारूपीपिशाचीसत्यादिकशुभगुणोंतैं प्रबलकारकहै

धादिकअशुभगुणोंतैं बळवानहै ॥जिसक्षुधारूपीपिशाचोकेवशहुआ यहहिरण्यगर्भभगवान्आपणेंपुत्रकेभक्षणकरणेकोइच्छाकरताभयाहे ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकार जबो हिरण्यगर्भनें विराट्रूपपुत्रकेभक्षणकरणेवासते मुखकूंपसाऱ्या ॥ तभीसोविराट्ता हिरण्यगर्भ पिताकूंदेखिकरिके भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और भाण याप्रकारकेशब्दकूंकरताभया ॥ हेदेवराजइंद्र यहदेहाभिमानही जीवोंकेअनर्थकाकारणहै काहेतें जिसदेहाभिमानकरिकेयुक्तहुआ विराट्पुत्र हिरण्यगर्भपिताकूंक्षुधातुरदेखिके भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ यद्यपि मरणतेंअनंतर यास्थूलशरीरकूं श्वानादिकजंतु भक्षणकरैंगे याप्रकारकाज्ञान विराट्कूंहै ॥ तथापि जीवितकालविषे जिसदेहाभिमानकेप्रभावतें साक्षात्पिताकेताईभी यहविराट् शरीरकादाननहींकरताभया ॥ यातें यहदेहाभिमानहीं सर्वधर्मकाप्रतिवंधकहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् विराट्भगवान्नें हिरण्यगर्भपिताकेताई जोशरीरकादाननहींकऱ्या ॥ याकेविषे देहाभिमानप्रतिवंधकनहीं ॥ किंतु अन्यहींकोईप्रतिवंधकहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ पिताकेताई शरीरदेणेविषे विराट्भगवानकूं कोनप्रतिवंधकहै ॥ पिताकेताई शरीरकादानकरणा हमारेअनिष्टकासाधनहै याप्रकारकाअनिष्टसाधनताज्ञान प्रतिवंधकहै ॥ अथवा पिताकेताई शरीरकादानकरणा निष्फलहै याप्रकारकानिष्फलताज्ञान प्रतिवंधकहै ॥ तहां प्रथमपक्षतोसंभवेनहीं ॥ काहेतें जैसे किसीपुरुषनें कोईकपदार्थ किसीपुरुषकेपास रख्याहोवे ॥ तिसपदार्थकूं जबी सोपुरुषमाँगे ॥ तबी देणेहारेपुरुषकूं तिसपदार्थकेदेणेविषे किसोअनिष्टकोप्राप्तिहोवेनहीं ॥ उलटा नदेणेविषे प्रतीतिकीहानिरूप अनिष्टकी प्राप्तिहोवैहै ॥ तेसे पिताकेवीर्यकरिके पुत्रकाशरीर उत्पन्नहोवैहै ॥ यातें पुत्रकाशरीर पिताकाहीहै ॥ तिसपुत्रकेशरीरकूं जभी पिताभक्षणकरे ॥ तभी पुत्रकूं किंचित्मात्रभी अनिष्टकोप्राप्तिहोवेनहीं ॥ उलटा नदेणेकरिके प्रतीतिकीहानिरूपअनिष्टकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें पिताकेताई शरीरदानकरणेविषे अनिष्टसाधनताज्ञान प्रतिवंधकनहीं ॥ और पिताकेताई शरीरदानकरणेविषे निष्फलताज्ञान प्रतिवंधकहै ॥ यहदूसरापक्षभी संभवेनहीं ॥ काहेतें याअनित्यशरीरकरिके जोकिसीकाकार्यसिद्धहोइसके ॥ तो इसतेंपरेकोईदूसराकर्तव्यनहीं॥किंतु इसनैं करिकेहीं शरीरकोसफलता सिद्धहोवैहै ॥ यातें पिताकेताई शरीरदानकरणेविषे निष्फलताज्ञानभी प्रतिवंधकनहीं ॥ किंवा ॥ अन्य किसी

क्षुधातुरपुरुषकेताईं जोकोईकपुरुष अन्नादिकपदार्थदेवैहे ॥ तिसअन्नदातापुरुषकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिहोवैहे ॥ यहशास्त्रविषेकथनक
न्याहे ॥ जभी अन्नादिकोंकेदानकरणेतैंभी पुरुषोंकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिहोवैहे ॥ तभी साक्षात्आपणेशरीरकेदानकरणेतैं फलकीप्रा
प्तिनहींहोवैगी यहकहणा अत्यंतअनुचितहे ॥ किंतु शरीरकेदानकरणेतैं जीवोंकूं महान्फलकीप्राप्तिहोवैहे॥तात्पर्ययह जिसीकिसीक्षुधातुर
अतिथिकेताईं अन्नदानकरणेहारेपुरुषकूंभी जभी स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिहोवैहे ॥ तभी क्षुधातुरसाक्षात्आपणेपिताकेताईं यास्थूलशरीर
केदानकरणेकरिकै यहपुरुष किसफलकूंप्राप्तनहींहोवैगा ॥ किंतु सर्वफलकूंप्राप्तहोवैगा ॥ यातैं पिताकेताईं शरीरदानकरणेविषे निष्फलता
ज्ञान प्रतिबंधकनहीं ॥ किंवा ॥ याअशुचिशरीरविषे जेपुरुष आत्मअभिमानकरैंहैं ॥ तिनोंतैं यहपूछाचाहिये ॥ श्लोक ॥ विण्मूत्रादिमला
नांहि संचयोदेहईरितः ॥ अस्मिन्नहंमतिश्चेत्स्यात् बाह्येकस्मान्नसाभवेत् ॥ अर्थयह हेदेहाभिमानीजीवो ॥ विष्टा मूत्र मांस रुधिर मज्जा
अस्थि इत्यादिकमलोंकासमुदायरूपयहशरीरहे ॥ ऐसेअशुचिशरीरविषे जभीतुमोंनैं आत्मबुद्धिकरीहै॥ तभी शरीरतैंबाहरजेविष्टामूत्रमां
सादिकहैं ॥ तिनोंविषेआत्मबुद्धि तुम काहेतैंनहींकरते ॥ किंतु शरीरतैंबाहरदेशविषेस्थित जेविष्टामूत्रादिकमलहैं ॥ तिनोंविषेभी
तुमारेकूं आत्मबुद्धिकरीचाहिये ॥ शरीरतैंबाहरदेशविषेस्थितविष्टामूत्रादिकोंविषे तथाशरीरकेभीतरस्थितविष्टामूत्रादिकोंविषे
किंचित्मात्र भीविलक्षणतानहीं ॥ यातैं जैसेशरीरतैंबाह्यविष्टामूत्रादिकमलोंविषे तुम आत्मबुद्धिकरतेनहीं ॥ तैसे विष्टामूत्रादिकोंके
समुदायरूप याशरीरविषेभी तुमारेकूं आत्मबुद्धिकरणीउचितनहीं ॥ १ ॥ इसप्रकार देहाभिमानरूपकार्यअविद्याविषे अनर्थकीकारणता
दिखाई ॥ अब देहाभिमानकाकारणजोअज्ञानरूपमायाहे ताकेविषे सर्वअनर्थकीकारणताकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहपरमेश्वरकीमा
याकैसीहे ॥ मायाकेआश्रयजेपुरुषहैं तिनोंकूंभी मोहितकरणेहारीहे ॥ याकारणतैंहीं यामायानैं मायाकेआश्रयविराट्पुरुषकूं मोहितकन्या
है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मायानैं विराट्पुरुषकूंमोहितकन्याहे यह कैसेजान्याजावे ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहशरीरकेसाहे ॥
पिताकेवीर्यतैंउत्पन्नभयाहे ॥ यातैं पिताकाहीहे ॥ पुत्रका यहशरीरनहीं ॥ और दुर्गंधिकरिकेयुक्तहे ॥ और सर्वदाअपवित्रहे ॥ और क्षण

क्षणविषे नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और घटकीन्याई अनात्मरूपहै ॥ और स्थायीपणेतैंरहितहै ॥ ऐसेनिकृष्टशरीरकूंभी सोविराट्पुरुष क्षुधातुरपिताकेताई नहींदेताभया ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहसंपूर्ण मायाकाहीप्रभावहै तात्पर्ययह ॥ जोपुरुष द्रव्यादिकपदार्थों केदान करणेविषे कृपणहोवैहै ॥ तिसपुरुषका तिनद्रव्यादिकपदार्थोंविषेअध्यासहोवैहै ॥ अध्यासतैंविना कृपणताहोवैनहीं ॥ यातैं कृपणतारूपहेतुतैं अध्यासकाअनुमानहोवैहै ॥ और सोअध्यास अज्ञानरूपमायातैंविना संभवैनहीं ॥ यातैं अध्यासरूपहेतुतैं अज्ञानरूपमायाका अनुमानहोवैहै ॥ तैसे हिरण्यगर्भपिताकेताई शरीरदानकरणेविषे जोविराट्पुरुषकीकृपणताहै ॥ सोकृपणताहीअध्यासद्वारा अज्ञानरूपमायाका अनुमानकरावैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ शरीरादिकोंविषेआत्मअभिमानरूपजोमोहहै ॥ तथा अज्ञानरूप जोमोहहै ॥ यहदोनोंप्रकारकामोह जभी विराटादिकमहान्पुरुषोंकूंभी अनुचितकार्यविषेप्रवृत्तकरैहै ॥ तभी अन्यलौकिकपुरुषोंकूं अनुचितकार्यविषेनहींप्रवृत्तकरैगा यहकहनासंभवैनहीं ॥ यातैं यहदोनोंप्रकारकामोहही जीवोंकेसर्वअनर्थकाकारणहै ॥ हेदेवराज इंद्र ॥ विराट्पुरुषनैं भयकरिके जोभाण याप्रकारकीवाणीउच्चारणकरी ॥ सोविराट्पुरुषकीवाणी सर्वदेहधारीजीवोंकी वर्णरूपवैखरी वाणी तथाध्वनिरूपवैखरीवाणी होतीभयी ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ क्षुधाकरिकेआतुरहुआ सोहिरण्यगर्भभगवान् विराट्पुत्रकेभक्षणकरणेवासते प्रवृत्तभयाभी ॥ परंतु ताविराट्पुत्रकूं सोहिरण्यगर्भ भक्षणनहींकरताभया काहेतैं सोहिरण्यगर्भभगवान् विद्याकरिकेसंपन्नहै यातैं विद्याकेबलतैं पुत्रकेभक्षणरूपनिषिद्धकर्मतैं निवृत्तहोताभया ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र यहविद्या किसपुरुषऊपर उपकारकूं नहींकरती ॥ किंतु सर्वजनोंऊपर यहविद्या उपकारकरैहै ॥ याअर्थविषे हिरण्यगर्भहीदृष्टांतहै ॥ काहेतैं पुत्रकेभक्षणरूपनिषिद्धकर्मविषे यहहिरण्यगर्भ प्रवृत्तभयाभी ॥ तोभी यहविद्या ताहिरण्यगर्भकूं निषिद्धकर्मतैं निवृत्तकरतीभयी ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे हिरण्यगर्भकूं निषिद्धकर्मतैं विद्या निवृत्तकरतीभई ॥ तैसे अन्यभीजोकोईपुरुष याविद्याकूंसंपादनकरैगा ॥ तिसपुरुषकूंभी सोविद्या निषिद्धकर्मतैंनिवृत्तकरिके शुभकर्मविषेप्रवृत्तकरैगी ॥ अब विद्याकेप्रभावकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ लोककरिके तथाशास्त्रकरिके निषिद्धकर्मोंकूं करणेहारा

जोपुरुषहै ॥ तथा अत्यंतदीनदशाकूं प्राप्तभयाजोपुरुषहै ॥ तिनसंपूर्णोंकूं यहविद्या सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा सुखकेसाधनद्रव्यादिकपदा
र्थोंकी प्राप्तिकरैहै ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ दोनोंलोकोंकेहानिकरणेहारा तथाकीर्तिकेनाशकरणेहारा जोआपदारूपीदुस्तरसमुद्रहै ॥ तिस
विषेप्राप्तहुआभी यहपुरुष जिसविद्याकेप्रभावतैं तिसआपदारूपीसमुद्रकूं सुखपूर्वकहीतरिजावैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहविद्याही सर्व
देहधारीजीवोंकीमाताहै ॥ विद्यातैंभिन्न दूसरीकोई जीवोंकीमातानहीं ॥ काहेतैं लोकप्रसिद्धमाताकेउदरतैंउत्पन्नहुआयहजीव इसलोकविषे
तथापरलोकविषे सुखकूंप्राप्तहोवैनहीं और याविद्यारूपीमातातैं प्रगटहुआयहपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और
हेदेवराजइंद्र ॥ यहविद्याहीसर्वदेहधारीजीवोंकाधनहै ॥ याविद्याकेसमान कोईदूसराधननहीं ॥ काहेतैं लोकविषेप्रसिद्धजेसुवर्णादिकधनहैं ॥
तेदेणेकरिके न्यूनताकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और परलोकविषेभी पुरुषकेसाथचलतेनहीं॥और यहविद्यारूपीधन सुपात्रपुरुषोंकेताईं दानकऱ्याहुआ
दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोताजावैहै ॥ और परलोकविषेभी याजीवकापरित्यागकरतानहीं ॥ यातैं स्वर्णादिकलौकिकधनतैं यहविद्यारूपी
धन अत्यंतउत्कृष्टहै और हेदेवराजइंद्र काम क्रोध लोभ मोह क्षुधा इत्यादिकशत्रुवोंकरिकेहननकूंप्राप्तहुआयहपुरुषएकविद्यारूपीशस्त्रक
रिकेही तिनकामादिकशत्रुवोंकाहननकरैहै ॥ विद्यारूपीशस्त्रतैंविना अन्यकिसीउपायतैं कामादिकोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं॥यातैं हेदेवराजइंद्र॥
याविद्याकेसमान कोईहितकारीपदार्थनहीं याकारणतैंही सोविद्या हिरण्यगर्भकेहृदयविषे प्राप्तहोइके ताहिरण्यगर्भकूं कहतीभयी ॥ अब
ताविद्याकेवचनोंकूंदिखावैहैं ॥हेहिरण्यगर्भ॥ पुत्रकाभक्षणकरणा तुमारेकूंयोग्यनहीं॥ काहेतैं सर्वलोकोंकूं धर्ममर्यादाविषेस्थापनकरणे वासते
तुमारा प्रादुर्भावहुवाहै ॥ यातैं सर्वलोकोंके तुम गुरुहो ॥ जबी तुमही मर्यादाकाभेदनकरोगे ॥ तबी इसतैंअनंतर कोनजीव मर्यादाकूंपाल
नकरैगा ॥ किंतु कोईभीजीव मर्यादाकापालननहींकरैगा ॥ और हेहिरण्यगर्भ यालोकविषे सर्वजीवोंकूं आपणे आपणेधर्मविषेस्थापनक
रणेहारे तुमहो ॥ और तुमारेकूंधर्ममर्यादाविषे स्थापनकरणेहारा मुझविद्यातैंभिन्न दूसराकोईहैनहीं ॥ किंतु मैंविद्याही तुमारेकूं धर्ममर्या
दाविषेस्थापनकरणेहारीहों ॥ और हेहिरण्यगर्भ जोतूं हमारेउपदेशकूंअंगीकारकरिके विराट्पुत्रकूंभक्षणकरैगा ॥ तो दोनोंलो

कविषे तुमारायश नष्टहोवैगा ॥ और पुत्रकरिकैउत्पन्नहोणेहाराजोऔ स्वर्ग सोभी तुमारानष्टहोवैगा ॥ यातें पुत्रकाभक्षणकरणा तुमारेकूंउचित नहीं ॥ और हेहिरण्यगर्भ ॥ यहपुत्रकाभक्षणरूपकर्म चांडालोंकरिके तथापशुवोंकरिकेभी निंदितहै ॥ काहेतें क्षुधाकरिकेआतुरहुएचांडाल तथापशुभी पुत्रकाभक्षणकरतेनहीं ॥ यातें चांडाल तथापशुवोंकरिकेभीनिंदित जोपुत्रकाभक्षणरूप कर्महे ॥ तिसविषे प्रवृत्तहोणा तुमारेकूंउचितनहीं ॥ और हेहिरण्यगर्भ ॥ जेश्वानादिकपशु कामकरिकेमोहितहुए आपणीमाताके साथ तथाभगिनीकेसाथभी मैथुनकरेहैं ॥ तेश्वानादिकपशुभी आपणेपुत्रोंकूं कबीभक्षणनहींकरते ॥ तबी धर्मकेस्थापनकरणेहारे तुमारेविषे यहपुत्रकाभक्षणरूपकर्म कैसेसंभवैगा ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकार विद्यानें जबीहिरण्यगर्भकेप्रति उपदेशकन्या ॥ तबी सोहिरण्यगर्भभगवान् ताविद्याकेवचनोंकाविचारकरिके पुत्रकेभक्षणतैंनिवृत्तहोताभया ॥ और सोहिरण्यगर्भभगवान् ॥ ताविराट्पुत्रके ताईं आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिके तथासर्ववेदोंकाकथनकरिके तहांअंतर्धानहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोविराट्भगवान् एकलाहीस्थित होताभया ॥ और जैसे निर्जनदेशविषेस्थितहुआबालक भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोविराट्पुरुष हिरण्यगर्भपिताकूंनदेखिकरिके क्षणमात्र भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और क्षणतैंपश्चात् सोविराट्पुरुष विचारकरिके ताभयकापरित्यागकरताभया ॥ अब ताविचारकेस्वरूपकूं दिखावेहैं ॥ श्रुतिविषे द्वितीयवस्तुतैंभयकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ सोमेरेस्वरूपतैंभिन्न कोईदूसरापदार्थहैनहीं ॥ काहेतें जोमेरेस्वरूपतें ब्रह्म भिन्नहोवे ॥ तौ ब्रह्मविषेअद्वितीयपणा नहींरहैगा ॥ और शास्त्रविषे ब्रह्मकाअद्वितीयस्वरूपहीकथनकऱ्याहै ॥ यातें मेरेस्वरूपतें ब्रह्म भिन्न नहीं ॥ और जोमेरेस्वरूपतैंआत्माभिन्नहोवे ॥ तो जैसे मेरेतैंभिन्न घटपटादिक अनात्माहैं ॥ तैसे आत्माभी अनात्माहोवैगा ॥ और आत्माकूंअनात्माकहणासंभवैनहीं ॥ यातेंआत्माभी मेरेस्वरूपतैंभिन्ननहीं ॥ इसप्रकार ब्रह्मकेस्वरूपकाविचारकरिके तथाआत्माकेस्वरूपकाविचारकरिके सोविराट्भगवान् भेददृष्टिकापरित्यागकरताभया ॥ ताभेददृष्टीरूपकारणकेनिवृत्तहुए सोविराट्भगवान् भयरूपकार्यसेंरहितहोताभया ॥ अब भेददृष्टिविषे भयकीकारणता स्पष्टकरिकेदिखावेहैं ॥ जैसे लोकविषेदुःखकेसाधनजेसिंहसर्पादिकहैं ॥ तिनोंकूं

जबीयहपुरुष आपणेतैंभिन्नकरिकेमानताहै ॥ तबी तिनसिंहसर्पादिकोंतैं सोपुरुष भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबीयहपुरुष भेददृष्टिकाप रित्यागकरैहै ॥ तबी किसीपदार्थतैंभयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिके भेददृष्टिही जीवोंकेभयकाकारणहै ॥ ताभेददृष्टिकूं सोविराट्भगवान् पूर्वउक्तविचारकरिके परित्यागकरताभया ॥ यातैं सोविराट्भगवान् निर्भयताकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सोवि राट्भगवान् यद्यपि विचारकरिके भयतैंरहितहोताभया ॥ तथापि कामदोषकरिकेयुक्तहुआ सोविराट्भगवान् स्त्रीतैंविना किंचित्मात्रसु खकूंभी नहींप्राप्तहोताभया ॥ और जैसेलोकविषे कामीपुरुषोंकूं स्त्रीतैंविना वामभागविषेस्थित संपूर्णआकाश शून्यरूपकरिकेप्रतीतहोवै है ॥ तैसे विराट्भगवान्कूंभीस्त्रीतैंविना वामभागविषेस्थितसंपूर्णआकाश शून्यरूपकरिकेप्रतीतहोताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ संपूर्णकामना वोंविषे एकएकअंशविषे शून्यताज्ञानकोकारणताहै ॥ जैसे स्त्रीकोकामनावालाकामीपुरुष वामभागकेआकाशकूं शून्यरूपमानैहै ॥ और पुत्रकोकामनावालापुरुष अंकआकाशकूं शून्यरूपमानैहै और पशुवोंकोकामनावान्पुरुष गृहअंगणकेआकाशकूं शून्यरूपमानैहै ॥ और धनकीकामनावालापुरुष कोशआकाशकूंशून्यमानैहै ॥ इसप्रकार जिसजिसपदार्थकी ॥ पुरुषकूंकामनाहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थके रहणेकास्थानकूं शून्यरूपकरिकेमानैहै ॥ एकनिष्कामपुरुषहीं सर्वत्रआत्माकूंपूर्णकरिकेमानैहै ॥ यातैंपदार्थोंकोकामनाहीं दुःख काकारणहै ॥ जिसकामनाकेप्रभावतैं साक्षात्विराट्भगवान्कूंभी दुःखकीप्राप्तिहोतीभयी ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकार जीवों केपुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं विराट्भगवान्विषे उत्पन्नभयाजोकामरूपसर्प ॥ तिसकामरूपीसर्पकरिके दैन्यकूंप्राप्तहुआसोविरा ट्भगवान् आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ सर्वत्रव्यापकजोयहहमाराशरीरहै ॥ सो किसीभोगकेभोगणेविषे समर्थनहीं ॥ यातैं भोगोंकेभोगणेवासते याशरीरतैंभिन्न किसीअल्पशरीरकूं मैंउत्पन्नकरों ॥ जिसशरीरकरिकेमेरेकूं विषयजन्यसुखकीप्राप्तिहोवै ॥ हेदेव राजइंद्र ॥ इसप्रकारकाविचारकरिके सोसत्यसंकल्पविराट्भगवान् दूसरेशरीरकूंउत्पन्नकरताभया ॥ सोकैसाहैदूसराशरीर ॥ जैसे दोनोंशु क्तिकाओंकासंपुटहोवैहै ॥ तैसे अर्द्धशरीरजिसकास्त्रीरूपहै॥और अर्द्धशरीरपुरुषरूपहै॥ याप्रकारकेशरीरकूं सोविराट्भगवान् रचताभया॥

हेदेवराजइंद्र ॥ विराट्भगवान्‌तैंउत्पन्नभयाजो स्त्रीपुरुषात्मकशरीर सो कारणअज्ञानकरिकेंघटितहे ॥ यातें मायाविशिष्टईश्वरस्वरूपहे ॥ और सोशरीर अंतःकरणादिकसूक्ष्मपदार्थोंकरिकेंघटितहे ॥ यातें हिरण्यगर्भस्वरूपहे ॥ और सोशरीर स्थूलभौतिकपदार्थोंकरिकेंघटितहे ॥ यातें विराट्स्वरूपहे ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे यहस्त्रीपुरुषात्मकशरीर ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट्स्वरूपहे ॥ तेसे जितनेकलोकविषेस्त्रीशरीरहैं ॥ तथा जितनेकपुरुषशरीरहैं ॥ तथा जितनेकनपुंसकशरीरहैं ॥ तथा जितनेकस्थावरजंगमशरीरहैं ॥ तेसं पूर्णशरीर ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट् स्वरूपहैं ॥ काहेतें सर्वप्राणियोंकेसमष्टिस्थूलशरीरकाअभिमानी विराट्भगवान्‌हे ॥ यातें सर्वप्राणियों केसाथ विराट्भगवान्‌कातादात्म्यहे ॥ और सर्वप्राणियोंकेसमष्टिसूक्ष्मशरीरकाअभिमानीहिरण्यगर्भहे ॥ यातें सर्वप्राणियोंकेसंघातसाथ हिरण्यगर्भकातादात्म्यहे ॥ और सर्वप्राणियोंकेसमष्टिकारणशरीरकाअभिमानी ईश्वरहे ॥ यातें सर्वप्राणियोंकेसंघातसाथ ईश्वरकातादात्म्यहे ॥ यहां अज्ञानरूपमायाकानाम कारणहे ॥ और अपंचीकृतपंचभूतोंकूं तथातिनोंकेकार्यअंतःकरणादिकोंकूं सूक्ष्मकहेहैं ॥ और पंचीकृतपंचभूतोंकूंतथातिनोंकेकार्यकूंस्थूलकहे हैं इसप्रकारसंपूर्णप्राणियोंकेसंघात स्थूल सूक्ष्म कारण स्वरूपहैं ॥ यातें सर्वप्राणियोंके शरीरसाथ विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वरका तादात्म्यसंबंधहे यहासिद्धभया ॥ अब पूर्ववृत्तांतकूंदिखावे हैं ॥ हेदेवराजइंद्र विराट्भगवान्‌तैंउत्पन्नभयाजो स्त्रीपुरुषस्वरूपदूसराशरीर ॥ तिसशरीरतैंहीं यहसंपूर्णमनुष्यादिकसृष्टि उत्पन्नभईहे ॥ यातें सोविराट्भगवान्‌कादूसराशरीर व्यष्टिकोटीविषेगण्याजावेनहीं किंतुसमष्टिकोटीविषे तिसकीगिणतीहे ॥ अब तिसविराट्भगवान्‌केदूसरेशरीरतें मनुष्यादिकसृष्टिकेउत्पत्तिकाप्रकारदिखावे हैं हेदेवराजइंद्र ॥ ऐसेस्त्रीपुरुषात्मकशरीरकूं उत्पन्नहुआदेखिकरिके सोविराट्भगवान्‌ताशरीरकेदोविभागकरताभया ॥ दृष्टांत जैसे शुक्तिकासंपुटविषेस्थितकोट शुक्तिकासंपुटकेदोविभागकरेहे ॥ तेसे सोविराट्भगवान् तिसशरीरकेदोविभागकरताभया ॥ तहां एकविभाग स्त्रीरूपहोताभया ॥ जिसकूं शास्त्रविषे शतरूपाकहेहैं ॥ और दूसराविभाग पुरुषरूपहोताभया ॥ जिसकूं शास्त्रविषे स्वायंभुवमनुकहे हैं ॥ तिसीशतरूपा मनु दोनोंतें यहसंपूर्णमनुष्यादिकसृष्टि उत्पन्नभईहे ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकारजभीविराट्भगवान्

नैं शतरूपानामस्त्रीकूं तथामनुकूं उत्पन्नकऱ्या ॥ तभी सोशतरूपानामस्त्री मनुपुरुषकूंकामातुरदेखिकरिके भावीजीवोंकेकर्मअनुसार या प्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरतीभई ॥ अब शतरूपाकेविचारकूंदिखावें हैं ॥ यहमनुनामापुरुष विराट्भगवान्कास्वरूपहै ॥ यातें हमारापिताहोवे है ॥ अथवा एकहीविराट्भगवान्तें इसमनुकी तथाहमारी उत्पत्तिभई है ॥ यातें यहमनुनामापुरुष हमाराभ्राताहोवे है ॥ यातें यामनुनामापुरुषकेसाथ व्यभिचारिणीस्त्रीकीन्याई मैंकैसेविषयसंबंधकरोंगी ॥ किंतु इसमनुकेसाथ विषयसंबंधकरणा हमारेकूंउचितनहीं ॥ यद्यपि कामकरिकेमोहितहुआ यहमनुनामापुरुष स्वर्गकेप्राप्तिकासाधनधर्मकूं तथानरककेप्राप्तिकासाधनअधर्मकूं जाणतानहीं ॥ तथापि स्वर्गनरककेप्राप्तिकासाधनधर्मअधर्मकूं मैं भलीप्रकारजाणतीहूं ॥ यातें यानिंदितकर्मविषे प्रवृत्तहोणा हमारेकूंयोग्यनहीं ॥किंवा ॥ स्त्रियोंविषे यद्यपि पुरुषोंतेंअधिककामहोवेहै ॥ तथापि यालोकविषे कामकरिकेआतुरहुएपुरुषही विशेषकरिके धर्ममर्यादाका उल्लंघनकरैं हैं ॥ कामकरिकेआतुरहूयाभीस्त्रियां विशेषकरिके धर्ममर्यादाका उल्लंघनकरेनहीं ॥ किंतु स्त्रियोंविषे पुरुषोंतेंअधिकधैर्यहोवेहै ॥ यातें आपणेहितकाउपाय मेरेकूंभीचिंतनकरणेयोग्यहै ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकार बहुतवारविचारकरिके सोशतरूपानामस्त्री मनुनामापुरुषके निवृत्तकरणेवासते याप्रकारकाउपाय चिंतनकरतीभयी ॥ अब ताउपायकूंदिखावें हैं यहमनुनामापुरुष कामकरिकेआतुरभयाहै ॥ यातें इसकूं धर्मकाउपदेशकरिके जोमैं निवारणकरोंगी तोभी यहमनु हमारेवचनकूंअंगीकारकरैगानहीं ॥ काहेतें जेपुरुष कामकरिकेआतुरहोवैं हैं ॥ तिनपुरुषोंकूं तिसकालविषे साक्षात्गुरु तथाईश्वरभी आइकेनिवारण करे तोभी कामातुरपुरुष तिनोंकेवचनकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ तो हमस्त्रीकेवचनकूं यहमनु कैसेअंगीकारकरेगा ॥ यातें धर्मकाउपदेशरूपउपायतें यामनुकानिवारण होवैनहीं किंतु यापूर्वस्वरूपकापरित्यागकरिके दूसरेस्वरूपकूंधारणकरिके मैंअंतर्धानहोवों ॥ यहही मनुकेनिवारणकरणेकाउपायहै ॥ काहेतें लोकविषेसमानजातिवालीस्त्रीविषेही पुरुषोंकी कामभावनाहोवैहै ॥ विलक्षण जातिवालीस्त्रीविषे पुरुषोंकी कामभावनाहोवैनहीं ॥ जैसे मनुष्योंकूं मनुष्यत्वजातिवालीस्त्रीविषेही कामभावनाहोवैहै ॥ पशुत्वजातिवालीस्त्रीविषे मनुष्योंकूंकामभावनाहोवैनहीं ॥ तैसे पशुवोंकूं पशुत्वजातिवालीस्त्रीवि

पेही कामभावनाहोवेहै॥मनुष्यत्वजातिवालीस्त्रीविषे पशुवोंकूंकामभावनाहोवैनहीं॥यातें इसस्वरूपकापरित्यागकरिके मैं दूसरेरूपकूंग्रहण करों॥हेदेवराजइंद्र॥इसप्रकारकाविचारकरिके सोशतरूपानामस्त्री पूर्वस्वरूपकापरित्यागकरिके गोशरीरकूं धारणकरतीभयी॥ताशतरूपा कूंगोहुआदेखिकरिके सोमनुनामापुरुषभी वृषभरूपकूंधारणकरताभया॥तिसगोवृषभदोनोंतें संपूर्णगो तथावृषभ उत्पन्नहोतेभये॥औरपुनः शतरूपानामास्त्री तिसगोशरीरकापरित्यागकरिके अश्विनीस्वरूपकूं धारणकरतीभई ॥ तिसअश्विनीकूंदेखिकरिके सोमनुनामापुरुषभी अश्वशरीरकूंधारणकरताभया ॥ तिसअश्विनीअश्वदोनोंतें संपूर्णअश्व तथाअश्विनी उत्पन्नहोतेभये ॥ इसप्रकार जिसजिसजातिवालेस्त्रीश रीरकूं सोशतरूपानामस्त्री ग्रहणकरतीभई ॥ तिसतिसजातिवालेपुरुषशरीरकूं सोमनुनामापुरुषभी ग्रहणकरताभया ॥ तिनदोनोंतें तिसति सजातिवाले स्त्रीशरीर तथापुरुषशरीर उत्पन्नहोतेभये ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ याप्रकार मनुशतरूपादोनोंतेंस्त्रीपुरुषरूप जितनेकस्थाव रजंगमप्राणीहैं तेसंपूर्ण उत्पन्नहोतेभये ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकार सोपरमात्मादेव दोपादोंवालेमनुष्यादिकोंकूं तथाचारिपादोंवालेअश्वा दिकपशुवोंकूं तथापादोंतेंरहितसर्पादिकोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इतनैंग्रंथकरिकेमायाविशिष्टपरमात्मातें जगत्केउत्पत्तिकाप्रकार निरूप णकऱ्या ॥ अब तिसीजगत्विषे परमात्माकेप्रवेशकाप्रकार निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जोपरमात्मादेव समष्टिअज्ञानरूपउपाधिविषे प्रविष्टहुआ जगत्काकर्ताईश्वरसंज्ञाकूं प्राप्तहोवेहै ॥ और जोपरमात्मादेव समष्टिसूक्ष्मउपाधिविषेप्रविष्टहुआ हिरण्यगर्भसंज्ञाकूं प्राप्तहोवेहै॥ और जोपरमात्मादेव समष्टिस्थूलउपाधिविषेप्रविष्टहुआ विराट्संज्ञाकूं प्राप्तहोवेहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव संपूर्णशरीररूपपुरियोंविषे प्रवेश करताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे महाकाश मठरूपउपाधिविषेप्रविष्टहुआ मठाकाशसंज्ञाकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और सोमठाकाश मठकेभीतरअल्पगृ हविषेप्रविष्टहुआ अपवरकआकाशसंज्ञाकूं प्राप्तहोवेहै ॥ और सोअपवरकआकाश घटरूपउपाधिविषेप्रविष्टहुआ घटाकाशसंज्ञाकूं प्राप्तहो वेहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेव समष्टिअज्ञानरूपउपाधिविषे प्रविष्टहुआ ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और समष्टिसूक्ष्मउपाधिविषे प्रविष्टहुआ हिरण्यगर्भसंज्ञाकूंप्राप्तहोवेहै और समष्टिस्थूलउपाधिविषेप्रविष्टहुआ विराट्संज्ञाकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और सोईहीपरमात्मादेव आपणेचैतन्यरू

पकरिके सर्वप्राणियोंकेशरीरविषे पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत प्रवेशकरैहै ॥ याकारणतैं जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहाँ यहअभिप्रायहै ॥ जैसे अन्नादिकपदार्थोंका गृहविषेप्रवेशहोवैहै ॥ तहाँ अन्नादिकपदार्थोंकाजो गृहविषेसंयोगसंबंधहै ॥ सोईहो अन्नादिकपदार्थोंका गृहविषेप्रवेश है ॥ याप्रकारकाप्रवेश परमात्माकासंभवैनहीं ॥ किंतु अज्ञानादिकउपाधियोंविषेस्थितहोइके जोपरमात्माकास्फुरणहै ॥ यहही परमात्मा काप्रवेशहै ॥ याहोप्रवेशकूं शास्त्रविषे आभासवादकरिके तथाअवच्छेदवादकरिके कथनकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे सर्वत्रव्यापकआ काशकूं भ्रांतपुरुष घटविषेस्थितहुआमानैहैं ॥ परंतु सोआकाश वास्तवतैंघटविषेरहैनहीं ॥ उलटा घटादिकसर्वपदार्थ आकाशविषेरहैं हैं तैसे सर्वजगत्केअधिष्ठानस्वरूपपरमात्माकूं विचारहीनपुरुष शरीरविषेस्थितहुआमानैहैं ॥ परंतु सोपरमात्मादेव वास्तवतैंशरीरादि कोंविषेरहैनहीं ॥ उलटा शरीरादिकजडपदार्थ परमात्माकेआश्रितरहैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र जैसे घटकीउत्पत्तितैंपूर्वही यद्यपि सर्वत्रआ काशविद्यमानहै ॥ तथापि घटकीउत्पत्तितैंअनंतर घटविषेआकाश प्रविष्टहुआहै याप्रकार लोक कथनकरैहैं ॥ तैसे शरीरकोउत्पत्तितैंपू र्वहीयद्यपि परमात्मा सर्वत्रविद्यमानहै ॥ तथापि शरीरकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर शरीरविषेआत्माप्रविष्टभयाहै ॥ याप्रकारकाव्यवहारहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे सूर्यभगवान्काप्रकाश यद्यपि सर्वपदार्थोंविषेसमानहीहै ॥ तथापि सूर्यकांतमणिविषेप्रविष्टहुआ सूर्यकातेज दाहादिककार्यकूंकरैहै ॥ घटादिकपदार्थोंविषेस्थितहुआ सूर्यकातेज दाहादिककार्यकूंकरैनहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपपरमात्मा यद्यपि सर्वत्रसमानहीव्यापकहै ॥ तथापि हृदयदेशविषे तापरमात्माकोविशेषकरिकेउपलब्धिहोवैहै ॥ याकारणतैं हृदयदेशविषे आत्माकी स्थितिशास्त्रविषेकहीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र जैसे नापितपुरुषकेशस्त्ररारखणेकी ओवडीपिटारीहै ॥ तिसपिटारीकेकिसीएकदेशविषेही क्षुररूपशस्त्रकी शीघ्रउपलब्धिहोवैहै ॥ तैसे संपूर्णशरीरविषे एकहृदयदेशविषेही आत्माकोशीघ्रउपलब्धिहोवैहै ॥ याकारणतैं हृदय देशविषे आत्माकोस्थितिकही है ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे अग्नि सामान्यरूपकरिके यद्यपि सर्वपदार्थोंविषेरहैहै ॥ तथापि विशेषरूपकरिके काष्ठविषेही अग्निकीउपलब्धिहोवैहै ॥ तैसे सामान्यरूपकरिके यहपरमात्मादेव यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि

विशेषरूपकरिके शरीरविषेही आत्माकीउपलब्धिहोवैहै॥और हेदेवराजइंद्र॥जैसे स्वरूपतें अग्निविषे यद्यपि न्यूनता तथाअधिकताहैनहीं॥ तथापि काष्ठरूपउपाधिकी न्यूनताअधिकतातें अग्निविषेन्यूनता तथाअधिकता प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यद्यपि वास्तवतें न्यूनता तथाअधिकता हैनहीं ॥ तथापि शरीरादिकउपाधियोंकी न्यूनताअधिकताकरिके आत्माःविषे न्यूनताअधिकता प्रतीतहोवै है शंका ॥ हेभगवन् ॥ जो आत्मा सर्वशरीरोंविषे विशेषरूपकरिकेस्थितहै ॥ तो सर्वजीवोंकूं आत्माकासाक्षात्कार होणाचाहिये ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे अग्नि यद्यपि सर्वकाष्ठोंविषेविद्यमानहै ॥ तथापि मथनकरिके किसीकाष्ठविषेही अग्निउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वशरीरोंविषेविद्यमानहै ॥ तथापि श्रवणादिकसाधनोंकरिके किसीशरीरविषेही आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यद्यपि वेदांतशास्त्रकेश्रवणतेंविनाहीं अस्तिभातिरूपकरिके सर्वजीवोंकूंआत्माकाज्ञानहै ॥ तथापि परिपूर्णआनंदअद्वितीयरूपकरिके आत्माकाज्ञान श्रवणादिकसाधनोंतेंविना होवैनहीं ॥ किंतु श्रवणादिकसाधनोंकरिकेही अद्वितीयरूपकरिकेआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे काष्ठरूपउपाधिकेभेदकरिके अग्नि महान्भावकूं तथाअल्पभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ वास्तवतें अग्निविषे महान्पणा तथाअल्पपणा हैनहीं ॥ तैसे शरीरादिकउपाधिकेभेदकरिके यहआनंदस्वरूपआत्मा महान्भावकूं तथाअल्पभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ वास्तवतें आत्मा एकरसहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे एकही अग्निकाप्रकाश काष्ठरूपउपाधिकेभेदकरिके नानाप्रकार होवैहै ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव अंतःकरणादिकउपाधिकेभेदकरिके नानाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे रात्रिविषे सूक्ष्मरूपकरिके यद्यपि सूर्यकाप्रकाश विद्यमानहै ॥ तथापिअंधकारकरिकेअभिभवकूंप्राप्तहुआ सोसूर्यकाप्रकाश किसीपदार्थकूंविशेषकरिके प्रकाशैनहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रविद्यमानहै ॥ तथापि अज्ञानकरिकेआवृतहुआ यहआत्मा प्रकाशकरैनहीं॥शंका॥ हेभगवन् ॥ प्रकाशस्वरूपआत्माविषे अज्ञानकृतआवरण संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे दिनविषे अंधकाररूपराहु सूर्यकूंआश्रयणकरिकेरहेहै ॥ और तासूर्यकूंही आच्छादनकरेहै ॥ तैसे अज्ञानअवस्थाविषे प्रकाशस्वरूपआत्माकूंआश्रयणकरिके अज्ञानरहेहै

और ताआत्माकूंही आच्छादनकरैहे ॥ याकारणतैंही शास्त्रविषे अज्ञानकूं स्वाश्रयस्वविषयकह्याहे ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अंधकार जिसगृह केआश्रितरहैहे ॥ तिसीगृहकूं आच्छादनकरैहे ॥ तैसे अज्ञानभी अंधकाररूपहे ॥ यातैं जिसशुद्धआत्माकेआश्रितरहैहे ॥ तिसीहीशुद्ध आत्माकूं आच्छादनकरैहे ॥ अब पूर्वकथनकऱ्याजोआत्माविषेजगत्‌काअध्यारोप ताकेअपवादकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे सूर्यकीआतपविषे तथासूर्यविषे यद्यपि प्रकाशपणासमानहे ॥ तथापि सूर्यभगवानहीं पूर्णप्रकाशस्वरूपहे ॥ सूर्यकीआतप पूर्णप्रकाशरूप नहीं ॥किंतु परिच्छिन्नप्रकाशरूपहे॥तैसे वाक्‌आदिकइंद्रियोंविषेजो आत्माकाप्रकाशहे॥तो परिपूर्णप्रकाशनहीं॥किंतु परिच्छिन्नप्रकाशहे॥ आनंदस्वरूपआत्माहीं परिपूर्णप्रकाशरूपहे ॥और हेदेवराजइंद्र॥ यद्यपि यहआनंदस्वरूपआत्मा एकएकवाक्‌आदिकइंद्रियविषे वर्तमान हुआभी वास्तवतैंपरिपूर्णहीहे ॥ तथापि मैंवाक्‌हूं मैंश्रोत्रहूं इत्यादिकविपरीतज्ञानोंकाविषयहुआ आत्मा परिच्छिन्न कीन्याई प्रतीतहोवैहे ॥ परिपूर्णआत्माविषे परिच्छिन्नदृष्टि जन्ममरणरूपसंसारकाकारणहे ॥ यातैं विद्वान्‌पुरुष आत्माकूंपरिच्छिन्नकरिकेनहींदेखैहैं ॥ किंतु सर्वत्रप रिपूर्णकरिकेदेखैहैं॥ अब वाक्‌आदिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिके आत्माविषेपरिच्छिन्नताकूंनिरूपणकरैहैं॥हेदेवराजइंद्र॥जैसे एकहीदे वदत्तनामापुरुष जभीअन्नादिकोंकूंपकावैहे ॥ तभी तादेवदत्तकूं लोक पाचककहैहैं॥और जभीसोदेवदत्तपुरुष पाठकूंकरैहे॥तभी तादेवदत्त पुरुषकूं लोक पाठककहैहैं॥यातैं पाकरूपक्रियाकूंग्रहणकरिके देवदत्तपुरुषविषे पाचकशब्दकीप्रवृत्तिहोवैहे॥और पाठरूपक्रियाकूंग्रहणक रिके तिसीदेवदत्तपुरुषविषे पाठकशब्दकीप्रवृत्तिहोवैहे॥पाकरूपक्रियातैं तथापाठरूपक्रियातैं रहितदेवदत्तपुरुषकेस्वरूपविषे पाचक पाठ कनाम प्रवृत्तहोवैनहीं॥यातैं पाचक पाठकनाम देवदत्तपुरुषकेपरिच्छिन्नताकेबोधकहैं॥परिपूर्णताकेबोधकनहीं॥काहेतें पाचकशब्दतैं पाक क्रियाविशिष्टदेवदत्तकाहीबोधहोवैहे॥पाठक्रियाविशिष्टदेवदत्तकाबोधहोवैनहीं तैसे पाठकशब्दतैं पाठक्रियाविशिष्टदेवदत्तकाहीबोधहोवैहे ॥ पाकक्रियाविशिष्टदेवदत्तकाबोधहोवैनहीं ॥ यातैं पाचकपाठकनाम देवदत्तपुरुषकेपरिच्छिन्नताकेबोधकहैं ॥ तैसे वाक्‌आदिकनामभी किसीनिमित्तकूंग्रहणकरिके आत्माविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ स्वरूपतैंशुद्धआत्माविषेकिसीनामकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं संपूर्णवाक्‌आदिकनाम

आत्माकेपरिच्छिन्नताकेबोधकहैं॥जिसजिसनिमित्तकूंग्रहणकरिके वाक्आदिकनाम आत्माविषेप्रवृत्तहोवैहैं॥तिसतिसनिमित्तकूं अब निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा शब्दकाउच्चारणरूपव्यापारकूंकरैहै याकारणतें वाक्संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै औरयहपरमात्मा देवघटपटादिकसर्वपदार्थोंकाग्रहणकरैहै ॥ याकारणतें हस्तसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा मार्गविषेगमनकरैहै ॥ याकारणतें पादसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा मलादिकोंकेपरित्यागद्वारा सर्वप्राणियोंकापालनकरैहै ॥ याकारणतें पायुसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्राणियोंकेआनंदकूंउत्पन्नकरैहै ॥ याकारणतें शिश्नसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा जीवोंकेपुण्यपाप काफलजोसुखदुःखकाभोगहै तिसका अधिकारीहोवैहै ॥ याकारणतें उपस्थसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार वाक्आदिककर्मइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासतें आत्माविषे वाक्आदिकशब्दोंकीप्रवृत्तिदिखाई ॥ अब घ्राणादिकज्ञानइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासतें आत्माविषेघ्राणादिकशब्दोंकीप्रवृत्तिकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा गंधकूंग्रहणकरैहै ॥ याकारणतें घ्राणसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै॥और यहआनंदस्वरूपआत्मादेखेहुएपदार्थकूंनिःशंकहुआकथनकरैहै॥याकारणतेंचक्षुसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै॥ औरयहआनंदस्वरूपआत्मा शब्दकूंश्रवणकरैहै॥याकारणतेंश्रोत्रसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा मधुरादिकषट्रसोंकूंग्रहणकरैहै॥याकारणतें रसनसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा शीतउष्णस्पर्शकूंअनुभवकरैहै ॥याकारणतें त्वक्संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥अब आत्माविषे प्राणके तथाअंतःकरणकेनामोंकीप्रवृत्तिकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र॥यहआनंदस्वरूपआत्मा शरीररूपयंत्रविषे अतिशयकरिकेचलायमानहोवैहै ॥ याकारणतें प्राणसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा संपूर्णजगत्कूंविकल्पनाकरैहै ॥ याकारणतें मनसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे स्त्री गर्भकूंधारणकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वरूपविषे संपूर्णजगत्कूंवासनारूपकरिके धारणकरैहै ॥ याकारणतें धीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा अनुसंधानरूपवृत्तिविषे स्फुरणहोवैहै ॥ याकारणतें चित्तसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अहंयाप्रकारकानाम सर्वप्राणीमात्रकेआत्माकाबोधकहै ॥ याकारणतेंहीं लोकविषे तुमकोनहो

याप्रकार किसीकरिकेपुछाहुआपुरुष अहंदेवदत्तः याप्रकारकाउत्तरदेवैहे ॥ ताउत्तरविषे अहंशब्दका प्रथमउच्चारणकरैहे ॥ और देवदत्त शब्दका पश्चात् उच्चारणकरैहे ॥ यातैं अहंशब्द सर्वप्राणीकेआत्माकावाचकहे ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र वाक्तैंआदिलेकेजितनेकनाम पूर्वकथनकरे ॥ तथा अन्यभी देव मनुष्य असुर इत्यादिकजेअनेकनामहैं ॥ तेसंपूर्णनाम परिच्छिन्नरूपकरिके आत्माकूंबोधनकरैहैं ॥ परिपूर्णरूपकरिके आत्माकूं वाक्आदिकनाम बोधनकरैनहीं ॥ यातैं वाक्आदिकशब्दोंकाअर्थ जोपरिच्छिन्नआत्माहे ॥ सो विद्वान्पुरुषों करिकेजानणेयोग्यनहीं ॥ किंतु परिपूर्णआत्माहीं जानणेयोग्यहे ॥ और हेदेवराजइंद्र जैसे जलरूपउपाधिकेभेदकरिके एकहीसूर्यभगवान् अनेकप्रतिबिंबरूपकरिके प्रतीतहोवैहे ॥ जलरूपउपाधिकेनिवृत्तहुए तेसर्वप्रतिबिंब बिंबरूपसूर्यविषे एकताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तेसेएकहीआनंदस्वरूप आत्मा उपाधिकेसंबंधतैं पूर्वउक्तवाक् आदिकविशेषरूपकूंप्राप्तहोवैहे ॥ अंतःकरणादिकउपाधियोंकेनिवृत्तहुए तेसंपूर्णवाक्आदिकविशेषरूप आत्माविषे एकताभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ऐसाजोपरिपूर्णआत्माहे ॥ सोईहीआत्मा स्वरूपकरिकेजानणेयोग्यहे॥और हेदेवराजइन्द्र जैसे एकहीमहाकाश घटाकाश मठाकाश गृहाकाश इत्यादिकविशेषरूपोंविषे अनुगतहे ॥ तेसे एकहीआनंदस्वरूपआत्मा वाक्आदिक सर्वविशेषरूपोंविषे अनुगतहे ॥ और सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदोंतैंरहितहे॥काहेतैं सर्वजीवोंविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा अहंयाशब्दका तथाअहंयाज्ञानका विषयरूपहोइकेप्रतीतहोवैहे॥यातैं हेदेवराजइंद्र परिपूर्णअर्थकाबोधकजोआत्मशब्दहे॥ तथा लक्षणावृत्तिकरिके परिपूर्णअर्थकाबोधकजोअहंशब्दहे ॥ तिनदोनोंशब्दोंकरिकेहो बुद्धिमान्पुरुष परिपूर्ण आत्माकूंजाणेहे ॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ जैसे अनेकपुरुष आपणेशरीरविषे अहंब्राह्मणःअहंस्थूलःयाप्रकार अहंशब्दकाप्रयोगकरैहैं ॥ तहां वक्तापुरुषोंकेभेदतैं तथाअहंशब्दकेभेदतैं अहंशब्दकेअर्थरूपशरीरका भेदहीदेख्याहे ॥ तेसे अहंशब्दके तथाआत्मशब्दके वक्तापुरुषोंकेभेदतैं तथाअहंशब्द आत्मशब्दकेभेदतैं अहंशब्द आत्मशब्दके अर्थरूपआत्माकाभी भेदहीहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ वक्तापुरुषोंकेभेदतैं तथाशब्दप्रयोगकेभेदतैं पदार्थकाभेदहीहोवैहे ॥ यहनियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे एकहीघटव्यक्तिविषे अनेकपुरुष घटहे कलशहे याप्रकार

भिन्नभिन्नशब्द उच्चारणकरैहैं ॥ तहाँ वक्तापुरुषोंका तथाशब्दोंकातो परस्परभेदहै ॥ परंतु घटव्यक्तिकाभेदनहीं ॥ किंतु एकहीघटव्यक्ति सर्वशब्दोंविषेप्रतीतहोवैहै॥ तैसे सर्वपुरुष आत्माकूं अहंरूपकरिकै तथाआत्मरूपकरिकै कथनकरैहैं॥तहाँ यद्यपि वक्तापुरुषोंका परस्परभेद है ॥ तथा अहंशब्द आत्मशब्दका परस्परभेदहै ॥ तथापि आत्मशब्दका तथाअहंशब्दका लक्षअर्थ जोआत्माहै ताका भेदसंभवैनहीं ॥ किंतु एकहीआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्राणियोंके अहंशब्दविषे तथाआत्मशब्दविषे अनुगतहुआप्रतीतहोवै है ॥ यातैं वक्तापुरुषोंकेभेद तैं तथाशब्दकेभेदतैं आत्माकाभेदनहीं ॥ किंतु एकहीआत्मा सर्वप्राणीमात्रविषेव्यापकहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गृहविषे स्थितआकाशकूं गृहाकाशकहैं हैं ॥ और मठविषेस्थितआकाशकूं मठाकाशकहैहैं और घटविषेस्थितआकाशकूं घटाकाशकहैं हैं ॥ तहां घटाकाशश ब्दकाअर्थजो घटउपहितआकाशहै ॥ तथा मठाकाशशब्दकाअर्थ जोमठउपहितआकाशहै ॥ तिनदोनोंका यद्यपि परस्परभेदसंभवै है तथापि आकाशशब्दकाअर्थजो शुद्धमहाकाशहै तिसकाभेद संभवैनहीं ॥ तैसे पूर्वउक्तवाकादिकनामोंकाअर्थ जोविशिष्टआत्मा हैं ॥ तिनोंकायद्यपि परस्परभेदसंभवैहै।तथापिआत्मशब्दकाअर्थतथाअहंशब्दकाअर्थ जोशुद्धआत्माहै।ताकाभेदसंभवैनहीं।किंतुसर्वजगत्विषे आत्मशब्दकाअर्थ तथाअहंशब्दकाअर्थशुद्धआत्मा अनुगतहै॥औरहेदेवराजइंद्र।यह जोआत्मशब्दकाअर्थतथाअहंशब्दकाअर्थशुद्धआत्मा हमनैंतुम्हारेप्रति कथनकन्याहै॥ इसीशुद्धआत्माकेसाक्षात्कारकाउपाय मुमुक्षुजनोंकूं करणेयोग्यहै॥आत्मातैंभिन्न शब्दादिकविषयोंकेप्रा प्तिकाउपायअधिकारीजनोंकूं करणेयोग्यनहीं ॥ काहेतैं शास्त्रविषे बुद्धिमान्पुरुषोंनैं यहकह्याहै ॥ जिसपदार्थकेप्राप्तिकेउत्तरकालविषे सुखकीप्राप्तिहोवै ॥ तिसीहीपदार्थकेप्राप्तिवासतै बुद्धिमान्पुरुषोंनैं यत्नकरणा॥और जिसपदार्थकेप्राप्तिकेउत्तरकालविषे दुःखकीप्राप्तिहोवै ॥ ऐसेपदार्थकीप्राप्तिवासतै बुद्धिमान्पुरुषनैं यत्ननहींकरणा॥किंतु तिनपदार्थोंकेनिवृत्तिका यत्नकरणा॥याप्रकारकानियम शास्त्रविषेकह्याहै ॥ तहाँशब्दादिकविषयोंकेप्राप्तिकेउत्तरकालविषे जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु अनंतप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै॥यातैं शब्दादिकवि षयोंकीप्राप्तिवासतैं यत्नकरणाव्यर्थहै ॥ और आत्माकेसाक्षात्काररूपप्राप्तिकेउत्तरकालविषे जीवोंकूं निरतिशयआनंदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं

आनंदस्वरूपआत्माकेप्राप्तिवासतैंही बुद्धिमान्पुरुषोंकूं यत्नकरणाउचितहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे शब्दस्पर्शादिकविषय परिणामकालविषे दुःखकेकारणहैं ॥ यातैं बुद्धिमान्पुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यनहीं ॥ तैसे शब्दस्पर्शादिकविषयभोगकेसाधन जे स्थूलशरीर तथासूक्ष्मशरीर तथाकारणशरीर यहतीनप्रकारकेशरीरहैं ॥ तेभी भोगकीप्राप्तिद्वारा उत्तरकालविषे अनंतप्रकारकेदुःखोंकाकारणहैं ॥ यातैं स्थूल सूक्ष्म कारण यहतीनप्रकारकेशरीरभी अधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यनहीं ॥ किंतु परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ एकआनंदस्वरूपआत्माही अधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र शब्दादिकविषयोंतैंआदिलेके कारणशरीरपर्यंत जितनाकदृश्यप्रपंचहै ॥ तिसका परित्यागकरिकै यासंघातविषेस्थितजोसत्चित्आनंदस्वरूपआत्माहै तिसकूं जभी यहपुरुष जाणैहै ॥ तभी सर्वपदार्थोंविषे सत्चित्आनंदस्वरूपकरिकेआत्माकेजानणेविषे यहपुरुष समर्थहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे किसीपुरुषकीगौ जभी गृहतैंबाहर कहां चलीजावैहै ॥ तभी सोपुरुष तागौकेपादोंकेचिन्हयुक्तभूमिकूंदेखिकरिकेयाप्रकारकानिश्चयकरैहै ॥ इसीपूर्वदिशाविषे हमारीगौगईहै ॥ दूसरीकिसीदिशाविषेनहींगई ॥ याप्रकारकानिश्चयकरिके सोपुरुष जभीतिसीमार्गविषे शनैंशनैंचालैहै ॥ तभी सोपुरुष तिसगौकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे अधिकारीजनोंकेप्राप्तहोणेयोग्यजो यासंघातविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसकूं जभीयहपुरुष निश्चयकरताहै ॥ तभी सर्वभूतप्राणीविषेस्थित सत्चित्आनंदस्वरूपआत्माकूंभी साक्षात्कारकरिसकैहै ॥ यासंघातविषेस्थितआत्माकेज्ञानतैंविना सर्वत्रव्यापकरूपकरिकेआत्माकाज्ञान होइसकेनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ अंतःकरणरूपमार्गविषे गौकेपादकेचिन्हकीन्याई साक्षीरूपकरिकेवर्तमानजो आत्माहै ॥ ताकूं जभीअधिकारीजन निश्चयकरैहै ॥ तभी स्थावर जंगमरूपसंपूर्णजगत्कूं सत्चित्आनंदआत्मास्वरूपकरिके निश्चयकरैहै यातैं हेदेवराजइंद्र ऐसेआनंदस्वरूपआत्माकेलाभतैंपरे यालोकविषे दूसराकोईपदार्थ लाभनहीं ॥ किंतु आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिही परमलाभहै ॥ ताआनंदस्वरूपआत्माकेप्राप्तहुए जितनेकलौकिक यशकीर्तिआदिक अल्पपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्ण आत्मज्ञानीपुरुषकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह जैसे लोकविषे जितनेकिमनुष्यादिकोंकेपादहैं॥तेसंपूर्णपाद हस्तिकेपादविषेअंतरभूतहोवैहैं ॥ तैसेआत्मज्ञानरूपफल

विषे सर्वकर्मोंकेफलका अंतर भावहोवै है॥यातें आत्मातैंभिन्न सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकाज्ञानहीं अवश्यसंपादन करणेयोग्यहै॥अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते पुत्रादिकसर्वप्रियपदार्थोंतैं आत्माविषे मुख्य प्रियता दिखावैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ लोकविषे आत्माकूंप्रियकहैं हैं ॥ तथा पुत्रादिकपदार्थोंकूंभी प्रियकहैंहैं ॥ तिनदोनोंविषेआत्मातो निरुपाधिकप्रीतिकाविषयहै ॥ यातैं अतिशय करिकैप्रियहै ॥ और पुत्रादिकपदार्थ सोपाधिकप्रीतिकेविषयहैं ॥ यातैं पुत्रादिकपदार्थ अतिशयकरिकैप्रियनहीं ॥ अब पुत्रादिकपदार्थों विषे सोपाधिकप्रीतिकीविषयता निरूपणकरैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र पुत्रविषे तथास्त्रीविषे तथाधनविषे तथाबांधवादिकोंविषे जोलोकोंकीप्रीति होवैहै ॥ सो आपणेआत्माकेवासतैंहीहोवै है ॥ पुत्रादिकोंकेवासतै साप्रीतिहोवैनहीं ॥ जोपुत्रादिकोंकेवासतैंहीं साप्रियताहोवै ॥ तो वैरी पुरुषकेपुत्रादिकोंविषेभी सोप्रियता होणीचाहिये ॥ और वैरीकेपुत्रादिकोंकूं कोईभीपुरुष प्रियमानतानहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ पुत्रा दिकोंविषेजोपुरुषकीप्रियताहै ॥ सा आपणेआनंदकेवासतैंहै ॥ और आपणेआत्माविषेजोप्रियताहै ॥ सोकिसीदूसरेकेआनंदवासतैनहीं ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्माविषे निरुपाधिकप्रीतिकीविषयताहै ॥ और पुत्रादिकोंविषे सोपाधिकप्रीतिकीविषयताहै ॥ याकारणतैंहीं श्रुति विषे पुत्रादिक सर्वपदार्थोंतैं आत्माकूं अधिकप्रियकह्याहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसेआत्माकीअपेक्षाकरिकै पुत्रादिक बाह्यहै ॥ यातैं तिनोंविषे सोपाधिकप्रीतिकीविषयताहै ॥ तैसे आत्माकीअपेक्षाकरिकै प्राणादिकभी बाह्यहैं ॥ यातैं तिनोंविषेभी सोपाधिकप्रीतिकीहा विषयताहै ॥ अब प्राणादिकोंकेबाह्यताकूंनिरूपणकरैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ स्थूलशरीराकारपरिणामकूंप्राप्तभये जेशब्दादिकविषयहैं ॥ तिनोंतैं प्राणविशिष्टइंद्रिय अंतरहै ॥ और तिनइंद्रियोंतैं संकल्पविकल्परूपमन अंतरहै ॥ और तिसमनतैं निश्चयरूपबुद्धि अंतरहै ॥ और तिसबुद्धितैं अहंकारविशिष्टजीव अंतरहै ॥ और तिसजीवतैं अव्याकृतनामाकारणअज्ञान अंतरहै ॥ और तिसकारणरूपअज्ञानतैं शुद्ध आत्मा अंतरहै ॥ ता शुद्धआत्मातैंअंतर कोईभीपदार्थनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं युक्तिकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे घटका द्रष्टापुरुष घटरूपविषयतैंअंतरहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकूंजाणैहै ॥ यातैं द्रष्टाआ

त्माकाविशेषणजेइंद्रियहैं ॥ ते रूपादिकविषयोंकीअपेक्षाकरिके अंतरहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा मनकरिकेइंद्रियोंकूंजाणेहे ॥ यातें द्रष्टाआत्माकाविशेषणजोमनहे ॥ सो इंद्रियोंकीअपेक्षाकरिकेअंतरहे ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा निश्चयरूपबुद्धिकरिके मनकूं जाणेहे ॥ यातेंद्रष्टाआत्माकाविशेषणजोबुद्धिहे ॥ सो मनकोअपेक्षाकरिकेअंतरहे ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा अहंकारविशिष्टजीवरूपकरिके ताबुद्धिकूंजाणेहे ॥ यातें द्रष्टाआत्माकाविशेषणजोजीवहे ॥ सो बुद्धिकोअपेक्षाकरिकेअंतरहे ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा ताअहंकारविशिष्टजीवकूं कारणअज्ञानउपहितसाक्षीरूपकरिकेजाणेहे ॥ यातें द्रष्टाआत्माकाविशेषणजोअज्ञानहे ॥ सो जीवकीअपेक्षाकरिकेअंतरहे ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वप्रकाशस्वरूपकरिके ताअज्ञानकूंप्रकाशेहे ॥ यातें कारणअज्ञानतें आत्माअंतरहे ॥ आत्मातेंअंतर कोईदूसरापदार्थनहीं ॥ किंतु आत्माकीअपेक्षाकरिके सर्वअज्ञानादिकपदार्थ बाह्यहैं ॥ आत्माहीं सर्वकेअंतरहे ॥ याकारणतेंहीं आत्मा आनंदस्वरूपहे ॥ और आत्मा आनंदस्वरूपहे ॥ याकारणतेंहीं पुत्रादिकोंतेंलेकेकारणअज्ञानपर्यंत सर्वपदार्थोंतें अतिशयकरिकेप्रियहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ एकआत्माहीप्रियहे यहजोनियम आपनेकह्या ॥ सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें यद्यपि मुख्यप्रियता आत्माविषेहीहे ॥ अन्यपुत्रादिकोंविषे मुख्यप्रियतानहीं ॥ तथापि गौणप्रियता पुत्रादिकोंविषेभी संभवेहे ॥ यातें पुत्रादिकपदार्थभी प्रियहैं ॥ समाधान हेदेवराजइंद्र श्रुतिविषे आत्मातेंभिन्नसर्वपदार्थोंकूं नाशवान्कह्याहे ॥ यातें विचारकियेतें पुत्रादिकपदार्थोंविषे ॥ गौणप्रियताभी संभवेनहीं ॥ और जोपुरुष आत्मातेंभिन्न शरीर पुत्र धनादिकपदार्थोंकूंप्रियकहेहे ॥ तिसपुरुषके तेशरीरपुत्रधनादिकपदार्थ अवश्यनाशकूंप्राप्तहोवेंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनपुत्रधनादिकपदार्थोंकूं लोकोंनें प्रियमान्याहे ॥ तेपुत्रादिकपदार्थ नाशवान्हैं ॥ यातें तिनोंकावियोग अवश्यहोणेहाराहे ॥ कदाचित् यापुरुषकेविद्यमानहुए पुत्रादिकपदार्थोंकानाशहोवेहे ॥ और कदाचित् पुत्रादिकपदार्थोंकेविद्यमानहुए यापुरुषकामृत्युहोवेहे ॥ यादोनोंप्रकारकेवियोगकरिके जीवोंकूं अनंतदुःखोंकीप्राप्तिहोवेहे ॥ यातें पुत्रादिकपदार्थोंविषे बुद्धिमान्पुरुषोंकूं प्रीतिकरणीयोग्यनहीं ॥ किंतु नाशतेंरहितजोआनंदस्वरूपआत्माहे ॥ तिसविषेही बुद्धिमान्पुरुषोंकूं प्रीतिकरणीयोग्यहे ॥ यातें हेदेवराजइंद्र ॥

जोपुरुष केवलआत्माकूंहींप्रियजाणताहे ॥ तिसविद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके किसीपुरुषनें आत्मातैंभिन्न पुत्रादिकपदार्थोंकूं प्रियनहीं कहणा ॥ जोकदाचित् विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके कोईकपुरुष आपणेपुत्रादिकोंकूंप्रियकहेगा ॥ तो तापुरुषकेमिथ्यावचनकूं नसहार ताहुआसोविद्वान्पुरुष तेरेप्रियपुत्रादिकनाशवान्हें याप्रकार जोकदाचित् वचनकहेगा ॥ तो तिसमहात्माविद्वान्पुरुषकेवचनकरिकै शीघ्रही तिनपुत्रादिकपदार्थोंकानाशहोवेगा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे कोईमूढपुरुष रंगकूं रजतरूपमानिकरिकै किसीपरीक्षकपुरुषकेसमीपजाइके यहरजतहे याप्रकारकाकथनकरे ॥ तापुरुषकेमिथ्यावचनकूं नहींसहनकरताहुआ सोपरीक्षकपुरुष यहरंगहे रजतनहीं याप्रकारकावचन जभीकहेहे ॥ तभी तापरीक्षकपुरुषकेवचनकरिकै तामिथ्यारजतका नाशहोइजावेहे ॥ यातें आत्माकूंप्रियजानणेहारेविद्वान्पुरुषकेसमीप जाइके पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकूं किसीपुरुषनें प्रियनहींकहणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आत्माकूंप्रियजानणेहारेविद्वान्पुरुषके वचनमा त्रकरिकै पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकानाश संभवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जिसविद्वान्पुरुषनें एकआत्माकूंहींप्रियजान्याहे ॥ सो विद्वान्पुरुषयहपुत्रादिकपदार्थविनाशी हैं याप्रकारके वचनमात्रकरिकै तिनोंकिनाशकरणेविषेसमर्थ हे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विद्वान्पुरु षतो रागद्वेषतैंरहितहोवेहें ॥ और दयालुहोवे हैं ॥ यातें तेरे पुत्रादिकनाशवान्हें याप्रकारकाकठोरवचन कैसेउच्चारणकरेंगे ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जोकदाचित् विद्वान् याप्रकारकावचन नहींभीकहें ॥ तोभी विद्वान्पुरुषकेसमीप मिथ्यावचनकाउच्चारणनहींकरणा ॥ काहेतें श्रुतिविषेब्रह्मज्ञानीपुरुषकूं ब्रह्मस्वरूप कह्याहे ॥ यातें जैसे परमेश्वर वचनउच्चारणतैंविनाहीं जीवोंकूं पुण्यपापकेफल सुखदुःखदेवे हे ॥ तैसे परमेश्वरस्वरूप यह विद्वान्पुरुषभी वचनउच्चारणतें विनाहीं पुण्यपापकेफल सुखदुःखकूंदेवेहे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे श्रीगंगाजी केतीरविषेनिवासकरिकै जोपुरुष पापकर्मकूंकरेहे ॥ तिसपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिहोवेहे ॥ और जो पुरुष तहांनिवासकरिकै पुण्यकर्मकूंकरे हे ॥ तिसपुरुषकूं सुख कीप्राप्तिहोवेहे ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके जोपुरुष सत्यवचनकाउच्चारणरूप शुभकर्मकूंकरेहे ॥ तिसकूं सुखकीप्राप्तिहोवेहे ॥ और जोपुरुष असत्यवचनकाउच्चारणरूप अशुभकर्मकरेहे ॥ तिसकूं दुःखकीप्राप्तिहोवेहे ॥ यातें श्रीगंगाजीकीन्याई

विद्वान्पुरुष विषेभी निर्दयतारूपदोषकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वेआपनेंयहकह्या ॥ विद्वान्पुरुषके समीपजाइके जोकोई पुरुष पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकूंप्रियकहताहै ॥ तिसपुरुषकेपुत्रादिकप्रियपदार्थ नाशहोवैहैं ॥ यह आपकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतें इसजन्मविषेकऱ्याहुआपुण्यपापरूपकर्म इसजन्मविषेसुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु जन्मांतरविषेही सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ यहशास्त्रविषेकह्याहै ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यद्यपि बहुतस्थानविषेतौ जन्मांतरविषेही पुण्यपापकर्मकाफलहोवैहै ॥ तथापि अत्यंतउग्र जोकोईक पुण्यपापकर्महै ॥ तिसका इसीजन्मविषे सुखदुःखरूपफलहोवैहै ॥ और विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके जोमिथ्यावचनकाउच्चारणकरणाहै ॥ यहभी अत्यंतउग्रपापकर्महै ॥ यातें तापापकर्मकाफलदुःख इसीजन्मविषेसंभवैहै ॥ किंवा ॥ स्थावररूपकरिकेंप्रसिद्ध जो अश्वत्थ तुलसी प्रतिमा आदिक अल्पदेवताहैं ॥ तिनोंकेसमीपजाइके जोपुरुष मिथ्यावचनकाउच्चारणकरैहै तिसमिथ्यावादीपुरुषकेताईं सुखतेंनहींबोलतेहुएभी तेप्रतिमादिकअल्पदेवता जभी फलकीप्राप्तिकरैहैं॥ तभी सर्वदेवतावोंकाआत्मास्वरूप तथावचनउच्चारणादिकव्यवहारकरणेविषेसमर्थ ऐसाजोविद्वान्पुरुषहै ॥ सो मिथ्यावादीपुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्ति कैसेनहींकरेगा ॥ किंतु अवश्यकरेगा ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके जोकोईपुरुष पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकूंप्रियकहैहै ॥ तिसपुरुषके पुत्रादिकप्रियपदार्थ नाशकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके जोकोईपुरुष आत्माकूंहीप्रियकहैहै ॥ तिसपुरुषके पुत्रादिकप्रियपदार्थ नाशकूंनहींप्राप्तहोते ॥ किंतु अधिकआयुष्वालेहोवैहैं ॥ यातें हेदेवराजइंद्र वैराग्यादिकसाधनोंतेंरहित जोपुरुष प्रियरूपकरिकेआत्माकेजांनणेविषे समर्थनहींहोवे ॥ और पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेजीवनकीइच्छाकरताहोवे ॥ सोपुरुष प्रियरूपकरिकेआत्माकीउपासनाकरै ॥ ताउपासनाकरिकै तिसपुरुषकेपुत्रादिकप्रियपदार्थ चिरकालपर्यंत जीवतेरहैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यथार्थअनुभवज्ञानतें उपासनाकाकितनाभेदहै ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ ध्यानकरणेयोग्यवस्तुकेविद्यमानहुए अथवाअविद्यमानहुए केवल गुरुशास्त्रकेवचनतें जोमानसज्ञान उत्पन्नहोवै ॥तिसज्ञानविषे विश्वासकरिके गुरुशास्त्रउपदेशितअर्थ विषे सजातीयवृत्तियोंकेप्रवाहतें जोविजातीयवृत्तियों

कानिरोधहै ताकानाम उपासनाहै ॥ जैसे श्रुतिविषे स्वर्ग मेघ मनुष्यलोक पुरुष योषित् यापांचोंकीअग्निरूपकरिके उपासनाकहीहै तहाँ स्वर्गादिक यद्यपि अग्निरूपनहींहैं॥तथापिगुरुशास्त्रकेवचनतें तिनस्वर्गादिकोंविषे पुरुषकी अग्निबुद्धिहोवैहै॥ताकेविषे विश्वासमात्रकरिके स्वर्गादिकोंविषे निरंतर अग्निआकारसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहोवैहै ॥ तिसतें घटादिविषयकविजातीयवृत्तियोंका निरोधहोवैहै ॥ याकानाम उपासनाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यथार्थअनुभवरूपप्रमाज्ञानतो प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंके तथाविषयके अधीनहोवैहै ॥ और उपासना प्रमाणके तथाविषयके अधीनहोवैनहीं ॥ किंतु गुरुशास्त्रकेवचनविषे विश्वासकेअधीनहोवैहै ॥ इतना दोनोंकाभेदहै ॥ पूर्व प्रियरूपकरिकेआत्माके उपासनाकाफल पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकाजीवन कह्या ॥ अब प्रियरूपकरिके आत्माकेयथार्थअनुभवकाफल कहैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जोपुरुष आनंदस्वरूपआत्माकूं प्रियरूपकरिकेजाणताहै ॥ सोपुरुष सर्वदेवतास्वरूपहोवैहै ॥ याअर्थविषे तुमनें किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ यातें हेदेवराजइंद्र आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतें अधिकारीपुरुषोंकूं सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहजोअर्थ हमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सो केवलआपणेमनकीयुक्तियोंतें नहींकथनकऱ्याहै ॥ किंतुयाअर्थविषे एक पुरातनवृत्तांतहै ॥ ताकूं तुम श्रवणकरो ॥ कैसा सोवृत्तांतहै ॥ अनेकमहात्माब्राह्मणोंकेसमाजविषे विचारतेंप्रगटभया ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ एककालविषे किसीनिमित्तपाइके किसीदेशविषे अनेकब्राह्मण एकठेभयेथे ॥ तेकैसेब्राह्मणथे ॥ चारिवेदोंविषे तथाषट्अंगोंविषे तथाषट्शास्त्रोंविषे अत्यंत निपुणथे ॥ तिसब्राह्मणोंकेसमाजविषे नानाप्रकारकीलौकिककथा तथावैदिककथा प्रगटहोतीयांभइयां॥और तिसब्राह्मणोंकेसमाजविषे किसीप्रसंगपाइके याप्रकारकीकथा प्रवृत्तहोतीभई ॥ अब ताकथाकूंदिखावैं हैं ॥हेदेवराजइंद्र॥ ताब्राह्मणोंकेसमाजविषे कोईकविद्वान्ब्राह्मण सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करतेभये ॥ हेसर्वब्राह्मणो ॥ ब्रह्मविद्याकेजानणेहारेपुरुष ब्रह्मज्ञानकरिके सर्वात्मभावकीप्राप्तिकथनकरैं हैं ॥ याकेविषे हमारेकूं यहसंशय होवै है ॥ जिसब्रह्मकेज्ञानकरिके अधिकारीजनोंकूं सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोब्रह्मभी किसीपदार्थकेज्ञानकरिके सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ अथवा किसीपदार्थकेज्ञानतेंविनाहीं सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ यादोनोंपक्षोंविषे किसीपदार्थकेज्ञानकरिके सोब्रह्म सर्वात्मभावकूं

प्राप्तभयाहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरो ॥ तौ जिसपदार्थकेज्ञानतैं ब्रह्मकूं सर्वात्मभाव प्राप्तभयाहै ॥ तापदार्थका तुम निरूपणकरो ॥ और हेब्राह्मणो ॥ किसीपदार्थकेज्ञानतैंविनाहीं सोब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरौगे ॥ तौ ब्रह्मकाज्ञान निष्फलहोवैगा ॥ काहेतें जैसे ब्रह्मकूं ज्ञानतैंविनाहीं सर्वात्मभावकीप्राप्तिभईहै ॥ तैसे अन्यअधिकारियोंकूंभी ब्रह्मज्ञानतैंविनाहीं सर्वात्म भावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासते ब्रह्मज्ञानकासंपादनकरणा निष्फलहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ किसीपदार्थकेज्ञानतैं ब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ याप्रथमपक्षविषेभी यहविचार कऱ्याचाहिये ॥ सोब्रह्म आपणेतैंभिन्न किसीपदार्थकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभा वकूंप्राप्तभयाहै ॥ अथवा आपणेस्वरूपकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ यादोनोपक्षोंविषे प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरौगे ॥ तौ ब्रह्मकाज्ञान निष्फलहोवैगा ॥ काहेतें जिसअन्यपदार्थकेज्ञानकरिकै ब्रह्मकूं सर्वात्मभावकीप्राप्तिभई है ॥ तिसीअन्यपदार्थकेज्ञानक रिकै दूसरेअधिकारीजनोंकूंभी सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासते ब्रह्मज्ञानकासंपादनकरणा निष्फलहै ॥ और हेब्राह्मणो सोब्रह्म आपणेस्वरूपकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरौगे ॥ तौभी ब्रह्मज्ञान निष्फलहो वैगा ॥ काहेतें जैसे ब्रह्मकूं आपणेस्वरूपकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्तिभई है ॥ तैसे अन्यअधिकारीजनोंकूंभी आपणेआत्मास्वरूप केज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासते ब्रह्मज्ञानकासंपादनकरणा निष्फलहै ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकार ब्रह्मका तथाआत्माका परस्परभेद अंगीकारकरिकै तेब्राह्मण सर्वब्राह्मणोंकेसमाजविषे प्रश्नकूंकरतेभये ॥ तिनअधिकारी जनोंकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै तेसंपूर्णवेदवेत्ताब्राह्मण अन्यकिसीपदार्थकेज्ञानतैंसर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवे है याप्रथमपक्षका तथाविनाहींज्ञा नतैं सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवे है याद्वितीयपक्षका परित्यागकरिकै आत्माकेज्ञानतैंसर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवे है यातृतीयपक्षकूंअंगीका रकरिकै तथाआत्माब्रह्मकेअभेदकूंअंगीकारकरिकै ताप्रश्नकेउत्तरकूं कहतेभये ॥ अब ताउत्तरकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ अज्ञानकरिकै तथाअन्यकिसीपदार्थकेज्ञानकरिकै सोब्रह्म सर्वात्मभावकूंनहींप्राप्तभया ॥ किंतु ब्रह्मशब्दका तथाआत्मशब्दका अर्थ जोआ

पणास्वरूपहै॥तिसकेज्ञानकरिकैब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै॥ यातैं हेब्राह्मणो॥जैसे आत्माकेज्ञानतैं ब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥तैसे सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासतै अन्यअधिकारीजनोंनैंभी आत्माकाज्ञानहीं संपादनकरणा॥शंका॥हेभगवन्॥ब्रह्मकेज्ञानतैंविनाकेवलआत्माकेज्ञानमात्रतैं सर्वात्मभावकीप्राप्तिसंभवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ सोब्रह्म किसीप्राणीकेआत्मातैंभिन्ननहीं॥किंतु सर्वप्राणियोंकाआत्मारूप ब्रह्महै ॥ यातैं आत्माकाजोज्ञानहै सोईहो ब्रह्मकाज्ञानहै॥और जोब्रह्मकाज्ञानहै सोईही आत्माकाज्ञानहै॥अब ब्रह्मके तथाआत्माके अभेद जनावणेवासते व्याकरणशास्त्रकोरीतितैं ब्रह्मशब्दके तथाआत्मशब्दके अर्थकूं निरूपणकरैहैं ॥ तहां देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित तथा सर्वतैंअधिक जोअर्थहै ॥ तिसकूं ब्रह्मशब्द बोधनकरैहै ॥ तैसे देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित तथासर्वकेअंतरव्यापक जोअर्थहै ॥ तिसकूं आत्मशब्द बोधनकरैहै ॥ तहां देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितब्रह्मविषे जोसर्वतैंअधिकताहै ॥ सो सर्वके साथअभेदरूपहै ॥ अभेदतैं भिन्न कोईदूसरी ब्रह्मविषेअधिकतानहीं ॥ तैसे देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितआत्माविषे जोसर्वकेअंतरव्यापकताहै ॥ सोभी सर्वकेसाथ अभेदरूपहै ॥ अभेदतैंभिन्न कोईदूसरी व्यापकता आत्माविषे नहीं ॥ जोब्रह्मका तथा आत्माका किसीदेशकालकेसाथ तथाकिसीस्थूलसूक्ष्मपदार्थकेसाथ भेद अंगीकारकरिये ॥ तो पूर्वउक्तब्रह्मशब्दकाअर्थ तथा आत्मशब्दकाअर्थ ब्रह्मविषे तथाआत्माविषे नहींघटेगा ॥ यातैं जैसे हस्तशब्द तथाकरशब्द एकहीअर्थकेवाचकहैं॥ तैसे ब्रह्मशब्द तथाआत्मशब्द सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयचैतन्यकेबोधकहैं॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयचैतन्य ब्रह्मशब्दका तथा आत्मशब्दका अर्थहै यहआपनैंकह्या ॥ सो संभवेनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे ब्रह्मका तथा आत्माका ॥ भेदहीप्रतीतहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ ब्रह्मविषे जोभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सो वास्तवतैं ब्रह्मविषेभेदनहीं ॥ किंतु उपाधिकेसंबंधतैं ब्रह्मविषे भेद प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोभेद मिथ्याहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आकाशविषे यद्यपि वास्तवतैंभेदनहींहै ॥ तथापि आकाशविषेउत्पन्नभये जेमेघविद्युतआदिकहैं ॥ तिनमेघादिकोंनैं भेदरहितआकाशविषेभी भेदउत्पन्नकरीताहै ॥ तैसे ब्रह्मविषे यद्यपि वास्तवतैंभेदनहींहैं ॥ तथापि ब्रह्मतैं उत्पन्नभये जेस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंनैं भेदरहितब्रह्मविषेभी भेदउत्पन्न

करीताहे ॥ याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेदिखावेहैं ॥ जैसे भेदतेंरहितआकाशविषे कल्पितगंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै ॥ तिसकल्पितगंधर्वनगररूप उपाधिकरिके आकाशका प्रथमभेद प्रतीतहोवैहै ॥ तिसतेंअनंतर गंधर्वनगरविषेस्थित जेनानाप्रकारकेगृहहैं ॥ तिनोंकरिके आकाशका भेद प्रतीतहोवैहै ॥ तिसतें अनंतर तिनगृहोंविषेस्थित जेअल्पगृहहैं ॥ तिनोंकरिके आकाशकाभेद प्रतीतहोवैहै॥तिसतेंअनंतर तिनगृहों विषेस्थित जेघटादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकरिके आकाशकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ याप्रकार उपाधिकेसंबंधतें भेदरहितआकाशविषे अनेकभेद प्रतीतहोवैहैं ॥ यातें तेसंपूर्णभेद आकाशविषेकल्पितहैं ॥ तैसे भेदरहित आनंदस्वरूपआत्माविषे प्रथम आकाशादिकपंचमहाभूतों करिके भेदप्रतीतहोवैहै ॥ तिसतें अनंतर पंचमहाभूतोंविषेस्थित जे संपूर्णस्थूलसूक्ष्मशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंकरिके आत्माविषभेद प्रतीत होवैहै ॥ तिसतेंअनंतर प्राण बुद्धि इंद्रियादिकोंकरिके आत्माविषभेद प्रतीतहोवैहै ॥ याप्रकारउपाधिकेसंबंधतें भेदरहितआत्माविषे अनेकप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ यातें तेसंपूर्णभेद आत्माविषेकल्पितहैं ॥ ताकल्पितभेद करिके आत्माकोवास्तवएकता निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातें हेब्राह्मणो ॥ आत्माका तथाब्रह्मका परस्परभेदनहीं किंतु अभेदहीहे ॥ और ब्रह्मवेत्तामहात्मापुरुष ब्रह्मज्ञानकरिके जोसर्वात्मभावकीप्राप्ति कथनकरेहैं॥सोतिनोंकाकहणा मिथ्यानहीं किंतु यथार्थ है॥ काहेतें समष्टिव्यष्टिउपाधिवान्ब्रह्म पूर्वपूर्व ब्रह्मज्ञानकरिकेहीं सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहे ॥ शंका॥ हेभगवन् जोब्रह्म सर्वत्रव्यापकहे ॥ तो आपणेव्यापकस्वरूपकूं सर्वदा काहेतैंनहींजाणता ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे निद्राविषेसोयाहुआ महाराजा निद्रादोषकरिके आपणेमहाराजपणेकूंनहींदेखता ॥ किंतु आपणेकूंदरिद्रीमानेहे ॥ तैसे अज्ञानरूपमायाकरिके आवृत्तहुआ यहब्रह्म आपणेव्यापकस्वरूपकूंनहींदेखता ॥ किंतु आपणेकूंपरिच्छिन्नमानेहे ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे भेदतेंरहितशुद्धआकाशविषे मेघ धूम पवनादिकउपाधियां नानाप्रकारकाभेद उत्पन्नकरेहैं ॥ तैसे भेदतेंरहितशुद्धआत्माविषे यहअज्ञानरूपमायाहीभेदकाकारणहे ॥ और हेब्राह्मणो जैसे रात्रिकालविषे अंधकार सूर्यकेप्रकाशकूंआच्छादनकरेहे ॥ तैसे संसारकालविषे अज्ञानरूपमाया प्रकाशस्वरूपआत्माकूं आच्छादनकरेहे ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे चारोंओरतें महान्वनकरिकेयुक्त जोकोईकग्रामहे ॥

तिसग्रामविषेरहणेहारेपुरुषकूं शत्रुराजाकीसैनाका तथासैनाकरिकैग्रामकेलूटणेका अज्ञानरहैहै ॥ और कदाचित्‌दैवयोगतें तिसग्रामवासीपुरुषकूं जभी शत्रुराजाकेसैनाका तथालूटणेका दर्शनहोवै है ॥ तभी तादर्शनकरिकै वनवासीपुरुषके पूर्वअज्ञानकीनिवृत्तिहोवै है ॥ और एकवारनिवृत्तहुआ सोअज्ञान पुनःकदाचित्‌भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे याआत्मारूपब्रह्मविषे अनादिकालकाअज्ञानरहैहै ॥ जवपर्यंत अधिष्ठानआत्माकासाक्षात्कार नहींहोवैहै ॥ तवपर्यंत अज्ञानकीनिवृत्ति किसीउपायकरिकैभीहोवैनहीं ॥ किंतु अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकैही अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और अधिष्ठानआत्माकेज्ञानकरिकै नाशकूंप्राप्तहुआअज्ञान पुनःकदाचित्‌भीउत्पन्नहोवै नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥अधिष्ठानआत्माकेज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्ति आपनैं कथनकरी सो संभवैनहीं काहेतें जो अज्ञान घटादिक पदार्थोंकीन्याईं भावरूपहोवै ॥ तो ताकी ज्ञानकरिकैनिवृत्तिसंभवै ॥ परंतु सोअज्ञान भावरूपहैनहीं ॥ किंतु ज्ञानकेअभावकानाम अज्ञानहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ ज्ञानकाअभावरूप अज्ञाननहीं ॥ काहेतें प्रकाशस्वरूपजोआत्माहै ॥ सोईहीज्ञानस्वरूपहै आत्मातैंभिन्न जडबुद्धिआदिक ज्ञानरूपनहीं ॥ और सोज्ञानरूपआत्मा नित्यहै ॥ यातें ताकाअभावमानणा संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोआत्माही एकज्ञानरूपहोवै ॥ तो सर्वलोकोंकूं अंतःकरणकीवृत्तिविषे घटज्ञानमेरेकूंउत्पन्नभयाहै पटज्ञान मेरेकूंउत्पन्नभयाहै याप्रकारकाज्ञानव्यवहार होवैहै ॥ सोव्यवहार नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतें तुमारेमतविषे आत्मातैंभिन्न कोईपदार्थ ज्ञानरूपहैनहीं ॥ एकआत्माहीं ज्ञानरूपहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो जैसे लोहेकेपिंडविषे दाहकरणेकीशक्ति तथाप्रकाशकरणेकीशक्ति यद्यपि नहीं है तथापि जभीअग्निकालोहेकेसाथ तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ तभी सोलोहेकापिंड दाहकरैहै तथाप्रकाशकरैहै याप्रकार लोक कथनकरैंहैं ॥ तैसे जड अंतःकरणविषे तथाताकीवृत्तियोंविषे यद्यपि वास्तवतें प्रकाशपणानहीं तथापि प्रकाशस्वरूपआत्माकाजभी अंतःकरणकेसाथ तादात्म्यअध्यासहोवैहै ॥ तभीअंतःकरणविषे तथाताकीवृत्तियोंविषे प्रकाशताप्रतीतहोवैहै ॥सो अंतःकरणविषेप्रकाशता आत्माकीहीहै ॥ यातें अंतःकरणकीवृत्तियोंविषे जोलोकोंकाज्ञानव्यवहारहै ॥ सो गौणहैमुख्यनहीं ॥ आत्माहीं मुख्यज्ञानरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अंतःकरणादिकजडपदार्थों

विषे प्रकाशताधर्म मतहोवे ॥ तथापिआत्माकोधर्म जोकोईकप्रकाशहै ताकेअभावकानाम अज्ञानहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ आत्मातैं भिन्न जोज्ञानरूपप्रकाश अंगीकारकरिये ॥ तौ आत्माविषे तथाप्रकाशविषे जडताभावकीप्राप्तिहोवैगी॥ काहेतैंजोजोभेदवालापदार्थहोवैहै॥ सो विकाररूपहोवैहै ॥ और जोजोविकाररूपहोवैहै ॥ सोसो जडरूपहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थहैं ॥ और जोआत्माकूं तथाताकेप्रकाशकूं जडरूपअंगीकारकरोगे ॥ तौ जोजोपदार्थ जडहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ अनात्माहीहोवैहै ॥ जैसे घट तथाघटगतशुक्लादिकरूप दोनोंजडहैं यातैंअनात्माहैं ॥ तैसे आत्मा तथाप्रकाश दोनों जडहोणेतैं अनात्मभावकूंप्राप्तहोवैंगे॥ सोआत्माकी तथाप्रकाशकी अनात्मता तुमारेकूंभी अंगीकारहैनहीं ॥ यातैं आत्मातैं प्रकाश भिन्ननहीं और हेब्राह्मणो जैसे आत्मातैं प्रकाश भिन्न नहीं ॥ तैसे आत्मा प्रकाश दोनोंतैं आनंदभी भिन्ननहीं ॥ जो आत्माप्रकाशदोनोंतैं आनंद भिन्नहोवै ॥ तौ आत्मा प्रकाश आनंद यातीनोंविषे पूर्वउक्तरीतितैंअनात्मभावकीप्राप्ति होवैगी ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अन्यकिसीपुरुषकाशरीर तथाशरीरविषेस्थित गौरत्वादिकधर्म तथा तिनोंकूंप्रकाशकरणेहारादीपक यातीनोंका परस्परभेदहै ॥ यातैं तिनतीनोंविषे अनात्मता अनुभवकरिकैसिद्धहै तैसे आत्मा प्रकाश आनंद यातीनोंकूं जोपरस्परभिन्न अंगीकार करोगे ॥ तौ तीनोंविषे अनात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी यातैं आत्माप्रकाशदोनोंतैं आनंदभिन्ननहीं ॥ किंतु आत्माही प्रकाशस्वरूप तथाआनंद स्वरूपहै ॥ किंवा ॥ जोवादी प्रकाशरूपआत्माविषे प्रकाश धर्म मानैहै ॥ तासे हम यहपूछैहैं ॥ प्रकाशरूपआत्माविषे जोप्रकाशधर्मरहैहै ॥ सो अंतःकरणादिकेजडपदार्थोंकेभानवासतैहै ॥ अथवा आत्माकेभानवासतैहै ॥ तहां प्रथमपक्षतो संभवैनहीं ॥ काहेतैं आत्मारूप प्रकाशकरिकैही अंतःकरणादिकजडपदार्थोंकाभान संभवहोइसकैहै ॥ यातैं अंतःकरणादिकोंकेप्रकाशवासते आत्माविषे प्रकाशधर्ममानणा निष्फलहै ॥ और आत्माकेप्रकाशवासते आत्माविषे प्रकाशधर्मकाअंगीकारहै यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रकाशरूपआत्माविषे जोअन्यप्रकाशकरिकेप्रकाश्यता अंगीकारकरोगे ॥ तौ आत्माविषे जडताभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतैं जोजोपदार्थ अन्यप्रकाशकरिके प्रकाश्यहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ जडहोवैहै ॥ जैसे नेत्रजन्यअंतःकरणकीवृत्तिअवच्छिन्नचैतन्यकरिकै दीपादिकपदार्थ प्रकाश्यहै ॥

यातें दीपादिकजडहैं ॥ तैसे आत्माभी जोअन्यप्रकाशकरिके प्रकाश्यहोवैगा ॥ तो दीपादिकोंकीन्याई जडहीहोवैगा ॥ सोआत्माकीजडता तुमारेकूंभीअंगीकारनहीं ॥ यातें आपणेतैंभिन्नप्रकाशकरिके आत्मा प्रकाश्यनहीं ॥ किंवा ॥ प्रकाशस्वरूपआत्मा जिसअन्यप्रकाशकरिके प्रकाश्यहै ॥ सोप्रकाशभी किसीअन्यप्रकाशकरिके प्रकाश्यहै अथवानहीं ॥ जोकहो सोअन्यप्रकाश किसीअन्यप्रकाशकरिके प्रकाश्यनहीं किंतु स्वप्रकाशहै ॥ तो प्रथमआत्मरूपप्रकाशकूं स्वप्रकाशमानणेविषे कौनअपराधहै ॥ आत्मारूपप्रकाशकूंछोडिके द्वितीयप्रकाशकूं स्वप्रकाशमानणेविषे केवलव्यर्थही तुमारापर्यासहै ॥ और जोकहो सोदूसराप्रकाशभी किसीतीसरेप्रकाशकरिके प्रकाश्यहै ॥ और सोतीसराप्रकाश किसीचतुर्थ प्रकाशकरिकेप्रकाश्यहै ॥ तो तुमारेकूं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातें प्रकाशस्वरूपआत्मा किसीअन्यप्रकाशकरिके प्रकाश्यनहीं ॥ किंतु आपणेस्वप्रकाशरूपकरिके आत्मा आपणेकूं तथाजडअंतःकरणादिकोंकूं प्रकाशैहै ॥ यातें आत्माहीज्ञानस्वरूपहै ॥ और तीनकालविषेनित्यहै ॥ ऐसेज्ञानस्वरूपआत्माकाअभाव किसीप्रकार संभवैनहीं ॥ यातें ज्ञानकेअभावकानाम अज्ञानहै यहजोपूर्व तुमोंनें कह्याथा सोअत्यंतविरुद्धहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आत्मा सत्यरूप तथाप्रकाशरूप नहीं ॥ किंतु शून्यरूपहै ॥ यातें शून्यरूपआत्माविषे प्रकाशधर्मसंभवैहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जो आत्माकूं शून्यरूप अंगीकारकरोगे ॥ तो जैसे असत्यनरशृंगविषे आत्मता नहींहै ॥ तैसे असत्यआत्माविषेभी आत्मता नहींरहेगी ॥ और आत्माविषे आत्मताकाअभाव तुमारेकूंभी अंगीकारनहीं ॥ यातें आत्मा शून्यरूपनहीं ॥ किंवा ॥ आत्माकूंशून्यरूप मानिके ताकेविषेप्रकाशधर्म अंगीकारकरणा ॥ यहभी अत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतें सत्यवस्तुही अधिष्ठानहोवैहै ॥ असत्यवस्तु किसीपदार्थकाअधिष्ठानहोवैनहीं ॥ जो असत्यवस्तुभी किसीका अधिष्ठान होवै ॥ तो वंध्यापुत्रभी रूपादिकगुणोंका अधिष्ठान होणाचाहिये ॥ और वंध्यापुत्रविषे रूपादिकगुणोंकीअधिष्ठानता कोई अंगीकार करैनहीं ॥ यातें सर्वकाअधिष्ठानआत्मा शून्यरूपनहीं ॥ किंवा ॥ जो आत्मा नरशृंगकीन्याई असत्यहोवै ॥ तो जैसे नरशृंगकी अस्तिरूपकरिकेप्रतीति किसीभीप्राणीकूं होतीनहीं ॥ तैसे आत्माकीभी अस्तिरूपकरिकेप्रतीति नहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वप्राणियोंकूं अहं

अस्मि याप्रकार अस्तिरूपकरिके आत्माकीप्रतीतिहोवे है॥ यातें नरशृंगकीन्याई आत्मा असत्यनहीं ॥ किंतु सर्वदासत्यरूप है ॥ तास
त्यस्वरूपआत्माकाअभाव कदाचित्संभवैनहीं ॥ यातें ज्ञानकाअभावरूप अज्ञाननहीं ॥ किंतु सोअज्ञान भावरूपहै ॥ ताभावरूपअज्ञान
कीनिवृत्ति ब्रह्मविद्या करिकेसंभवैहै ॥ अब ताब्रह्मविद्याकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं॥हेब्राह्मणो ॥ सर्वभेदतेंरहित तथास्वप्रकाश तथासत्य
स्वरूप तथा आनंदस्वरूप जो यहआत्माहै ॥ तिसकूंविषयकरणेहारीतथामहावाक्यतेंउत्पन्नभयी जोचैतन्यकेआभासंयुक्तअंतःकरणकी
वृत्ति ताकानाम ब्रह्मविद्याहै ॥ याप्रकारकीब्रह्मविद्या जबपर्यंत नहींउत्पन्नभई ॥ तबपर्यंत जीवोंकिअज्ञानकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ और जब
पर्यंत अज्ञानकोनिवृत्तिनहींहोती ॥ तबपर्यंत जन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातें जन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्तिवासते ब्रह्मवि
द्याका अवश्यसंपादनकरणा ॥ और हेब्राह्मणो ॥ यद्यपि सत्चित्आनंदस्वरूपब्रह्म सर्वजीवोंका आत्मास्वरूपहै ॥ तथापि ब्रह्मविद्यातें
विना अज्ञानकरिकेआवृतहुआ यहब्रह्म जन्ममरणरूपसंसारतें जीवोंकीरक्षाकरेनहीं ॥ किंतु ब्रह्मविद्याकरिके अज्ञानकेनिवृत्तहुएतेंअनंतर
आवरणतेंरहितहुआ तथाअनुभवकाविषयहुआ ब्रह्म जन्ममरणरूपसंसारतें जीवोंकीरक्षाकरैहै॥दृष्टांत॥जैसे गृहविषेदाब्याहुआधनजबपर्यंत
गृहीपुरुषकरिके अज्ञातरहैहै॥ तबपर्यंत तागृहीपुरुषकीदरिद्रताकूं निवृत्तकरे नहीं ॥और सोईहीधन जभी गृहीपुरुषकरिकेज्ञातहोवैहैतभी
तागृहीपुरुषकीदरिद्रताकूंनिवृत्तकरैहै ॥ तैसे सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थित यहआनंदस्वरूपआत्मा जबपर्यंत जीवोंकरिकेअज्ञातहै ॥
तबपर्यंत जन्ममरणरूपसंसारतें जीवोंकीरक्षाकरेनहीं ॥ और जभीयहआनंदस्वरूपआत्मा ब्रह्मविद्याकरिकेज्ञातहोवै है ॥ तभी जन्ममरण
रूपसंसारतें जीवोंकीरक्षाकरैहै ॥यातें जन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्तिवासते तथापरमआनंदकीप्राप्तिवासते अधिकारीजनोंनें ब्रह्मविद्या अव
श्यसंपादनकरणी ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जोआत्मारूपब्रह्म अपरोक्षज्ञानकाविषयहुआ जन्ममरणरूपसंसारतें जीवोंकीरक्षाकरैहै ॥ सोईही
ब्रह्म समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिकरिकेयुक्तहुआ ईश्वरभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोईहीब्रह्म समष्टिसूक्ष्मरूपउपाधिकरिकेयुक्तहुआ
हिरण्यगर्भभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोमायाविशिष्टईश्वर तथाहिरण्यगर्भ जीवोंकीन्याई गुरुकेउपदेशतें ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु

आपहीस्वतंत्र वेदांतकेअर्थकूंविचारकरिके ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहाँ मायाविशिष्टईश्वरविषे तथाहिरण्यगर्भविषे इतनीविशेषताहै ॥ ईश्वरकाउपाधि जोकारणअज्ञानहै ॥ सो अहंअज्ञः याप्रकार अहंकारविषेआरूढहुआ आवरणरूपव्यामोहकूं उत्पन्नकरैहै ॥ अहंकारविषेआरूढहुएतैंविना केवलअज्ञान आवरणरूपव्यामोहकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ सोअहंकार परमेश्वरविषेहैनहीं ॥ यातैं सर्वज्ञपरमेश्वरकूं आवरणतैंरहित सर्वदा वेदांतकेअर्थकाअनुसंधानरहैहै ॥ और समष्टिसूक्ष्मरूपकार्यउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भहै ॥ तिसविषे अहंकाररहैहै ॥ यातैं सोहिरण्यगर्भ किंचित्आवरणकूंअनुभवकरिकेही वेदांतकेअर्थकाअनुसंधानकरैहै ॥ इतनीविलक्षणता यद्यपि ईश्वरविषे तथाहिरण्यगर्भविषेहै ॥ तथापि गुरुकेउपदेशकी दोनोंकूंअपेक्षानहीं ॥ ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अग्नि जल वायु वृक्ष अंडजादिकचारिप्रकारकेप्राणी यहसंपूर्ण भय व्यथा शब्द नोदना द्वारा जीवोंकूंनिद्रातैंजाग्रत्करैहैं ॥ तिनअग्निजलादिकोंतैंरहित जोकोईकदेशहै ॥ तिसदेशविषेशयनकरिके नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूंदेखताहुआ तथागाढसुषुप्तिकूं प्राप्तहोइके सर्वज्ञानतैंरहितहुआ कोईपुरुष आपही निद्रातैंजाग्रत् होवैहै ॥ तैसे समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिविषेस्थितहुआब्रह्म तथासमष्टिसूक्ष्मरूपउपाधिविषेस्थितहुआब्रह्म गुरुकेउपदेशतैंविना आपही वेदांतकेअर्थकाविचारकरिके आपणेअद्वितीयस्वरूपकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मायाविशिष्टपरमेश्वरविषे तथाहिरण्यगर्भविषे गुरुकेउपदेशकी अपेक्षानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मायाविशिष्टपरमेश्वरकूं तथाहिरण्यगर्भकूं गुरुकेउपदेशतैंविनाही ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहजो पूर्वआपनेंकह्या सो यद्यपिसंभवैहै ॥ तथापि परमेश्वरविषे तथाहिरण्यगर्भविषे जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणता संभवैनहीं ॥ काहेतैं परमेश्वरविषे जगत्केउत्पत्तिकाअनुकूल कोईव्यापारहैनहीं ॥ और लोकविषे व्यापारवालेहीकुलालादिक घटादिकोंकेकारणहोवैं हैं ॥ व्यापारतैंरहित कोईकारणदेख्यानहीं ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ शुद्धचैतन्यकूं जोहम जगत्काकारणअंगीकारकरैं ॥ तो यहतुमारापूर्वपक्ष संभवै ॥ सो शुद्धब्रह्मकूं जगत्काकारण हमभी अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु मायाविशिष्टईश्वरकूं जगत्काकारण हम अंगीकारकरैंहैं ॥ यातैं जैसे स्वप्नअवस्थाकूं तथागाढसुषुप्तिकूं प्राप्तभयाजोव्यष्टिउपाधिवालाजीवहै ॥ तिसजीवविषे स्वप्नपदार्थोंकेउत्पत्तिकाबीजरूप

योग्यकर्मोंकेभोगवासतै तथासाधनसंपत्तिद्वारा ॥ मोक्षरूपसुखकीप्राप्तिवासतै जीवोंकेताईं शरीरादिकोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे लोकविषे गुरुकेउपदेशकूंपालनकरतेहुएशिष्य उत्तरकालविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे परमेश्वरनैं कथनकरेजेवेदहैं ॥ तिनोंकूं श्रद्धापूर्वकमानतेहुएजीव परमआनंदकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं परमेश्वरकेआज्ञारूपवेदोंकूं अवश्यमान्याचाहिये ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ द्वैत भानकाविरोधीजोब्रह्मविद्याहै ॥ तिसविद्याकरिकैनित्ययुक्तहुआपरमेश्वर किसप्रकार द्वैतजगत्‌कूंउत्पन्नकरैगा ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्तब्रह्मवेत्तापुरुष निद्राविषेसोयाहुआ स्वप्नभोगकेदेणेहारेप्रारब्धकर्मकेवशतैं नानाप्रकारकेजगत्‌कूं तहाँ उत्प न्नकरैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेव ब्रह्मविद्याकरिकै आपणेस्वरूपकूंजाणताहुआभी मायाकरिकै संपूर्णभूतभौतिकप्रपंचकूंउत्पन्नकरैहै॥यहाँ॥ इतनीविशेषताहै ॥ ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्तजोनिष्कामपुरुषहै ॥ सो आपणेकर्मोंकेअनुसार स्वप्नपदार्थोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और मायावि शिष्टपरमात्माविषे पुण्यपापरूपकर्महैंनहीं ॥ यातैं आपणेकर्मोंकेअनुसार परमेश्वर जगत्‌कूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ किंतु जीवोंकेपुण्यपापरूपक र्मोंकेअनुसार परमेश्वर जगत्‌कूंउत्पन्नकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे शुक्तिरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुएतैंअनंतर कल्पितरजतकीनिवृत्तिहो वैहै ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमात्माकूं अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै कल्पितप्रपंचकीनिवृत्तिकाहेतैंनहींहोती ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो जैसे स्वप्नअवस्थाविषे सो विद्वान्‌पुरुष स्वप्न पदार्थोंकूंदेखताहुआभी आपणेकूं तथास्वप्नपदार्थोंकूं भिन्नकरिकैनहींदेखैहै ॥ किंतु यहसं पूर्णस्वप्नपदार्थ मेरास्वरूपहैं ॥ मुझअधिष्ठानतैंभिन्न इनपदार्थोंको किंचित्‌मात्रभीसत्तानहीं ॥ याप्रकार विद्वान्‌पुरुषकूं स्वप्नविषेअ धिष्ठानआत्माकेज्ञानहुएभी जैसे स्वप्नपदार्थोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु प्रारब्धकर्मकेवशतैं तिनस्वप्नपदार्थोंकाभान विद्वान्‌पुरुषकूंहोवैहै तैसे आत्मासाक्षात्कारकरिकैयुक्त परमात्मादेव संपूर्णद्वैतप्रपंचकूंदेखताहुआभी आपणेस्वरूपतैंभिन्नकरिकैनहींदेखता ॥ किंतु यहसंपूर्ण जगत् मेराहीआत्माहै ॥ मेरेआत्मातैंभिन्न कोईप्रपंचहैनहीं ॥ याप्रकार परमात्माकूं अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारहुएभी जीवोंकेपुण्यपाप रूपकर्मोंकेवशतैं जगत्‌कालयहोवैनहीं ॥ किंतु मिथ्यारूपकरिकै जगत्‌काभानहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ दोप्रकारकाभ्रम लोकविषेहोवैहै ॥

एकतो निरुपाधिकभ्रमहोवैहै ॥और दूसरा सोपाधिकभ्रमहोवैहै ॥ तहां अधिष्ठानकेज्ञानकरिकै जाकीस्वरूपतैं निवृत्तिहोवैहै ॥सो निरुपाधिकभ्रमहोवैहै॥जैसे शुक्तिरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैं कल्पितसर्पकी तथाताकेज्ञानकी स्वरूपतैंनिवृत्तिहोवैहै॥यातैं शुक्तिविषेरजतभ्रम तथा रज्जुविषेसर्पभ्रम इत्यादिकसंपूर्णभ्रम निरुपाधिकभ्रमहैं॥और अधिष्ठानकेज्ञानकरिकै जाकीस्वरूपतैंनिवृत्तिनहींहोवै ॥ किंतु ताकेविषेसत्यपणा निवृत्तहोवै॥सो सोपाधिकभ्रमहोवैहै॥जैसे जपाकुसुमकेसमीपवर्ति जोस्फटिकमणिहै ॥सो रक्तरूपवालीप्रतीतहोवैहै॥तहांअधिष्ठानरूपस्फटिकमणिकेज्ञानहुएभी जबपर्यंत जपाकुसुमरूपउपाधि विद्यमानहै॥तबपर्यंत रक्तरूपकी तथाताकीप्रतीतिकी स्वरूपतैंनिवृत्तिहोवै नहीं॥किंतु ताकेविषे सत्यताबुद्धिकीनिवृत्तिहोवैहै॥जपाकुसुमकेनिवृत्तहुएही रक्तताकी तथाताकेप्रतीतिकी स्वरूपतैंनिवृत्तिहोवैहै॥यातैं शुक्लरूपवाली स्फटिकमणिविषे रक्तरूपकीप्रतीति सोपाधिकभ्रमहै॥तैसे प्रपंचकीजोप्रतीतिहोवैहै॥सोभी सोपाधिकभ्रमहै॥यातैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं अधिष्ठान ब्रह्मकेसाक्षात्कारहुएभी जबपर्यंत प्रारब्धकर्मरूपउपाधि निवृत्तनहींभई॥तबपर्यंत मिथ्यारूपकरिकेप्रपंचकाभान संभवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥जो परमात्माएकअद्वितीयहोवै॥तो संसारविषे कोईजीवबद्धहै और कोईजीवमुक्तहै याप्रकारकाबंधमोक्षव्यवहार न होणाचाहिये॥समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे आत्मसाक्षात्कारकरिकेयुक्तविद्वान्पुरुष जभीस्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी तहांस्वप्नविषे अज्ञानकरिकेकल्पितअनेकजीवोंकूंदेखैहै ॥ और तिसस्वप्नअवस्थाविषे स्वप्नद्रष्टाविद्वान्पुरुषकेविदेहमोक्षतैंविनाहीं तिनस्वप्नकल्पितजीवोंविषे कोईक जीव श्रवणादिकसाधनोंकरिकै मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिनमुक्तजीवोंतैंभिन्न दूसरेजीव बंधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे जगत्केनिर्वाहवास्ते मायाविशिष्टपरमात्माकेस्थितहुएभी इसलोकविषे कोईमुमुक्षुजन श्रवणादिकसाधनोंकरिकै मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिनमुक्तपुरुषोंतैं भिन्न अज्ञानीजीव संसाररूपबंधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार एकअद्वितीयआत्माकूंअंगीकारकरिकैभी कल्पितबंधमोक्षकीव्यवस्था संभवैहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे आत्मज्ञानकरिकेयुक्तविद्वान्पुरुष ॥ स्वप्नविषे अनेकप्रकारकेचेतनजीवोंकूंदेखैहै ॥ तथा अनेकप्रकारकेघटादिकजडपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ और तिनस्वप्नजीवोंविषे यहजीव अभेददर्शीहै यातैंमुक्तहै औरयहजीव भेददर्शीहै यातैंबंधायमानहै ॥

याप्रकारसोस्वप्नद्रष्टाविद्वान्पुरुष तिनजीवोंकेबंधमोक्षकीकल्पनाकरैहै ॥ परंतु सो बंध तथामोक्ष वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो स्वप्नद्रष्टाविद्वान्पुरुषविषे हैनहीं ॥ तथा स्वप्नकल्पितजीवोंविषेभी सोबंधमोक्ष वास्तवतैंहैनहीं ॥ केवल निद्रादोषकरिके बंधमोक्ष प्रतीतहोवेहै ॥ तैसे वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो मायाविशिष्टपरमेश्वरविषे तथाअन्यजीवोंविषे बंध मोक्ष हैनहीं ॥ केवल अज्ञानकरिके बंधमोक्ष प्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ जो वास्तवतैंबंधमोक्षनहींहोवे ॥ तो बंधकेनिवृत्तिके तथामोक्षकीप्राप्तिके साधनोंकूं प्रतिपादनकरणेहाराशास्त्रव्यर्थ होवैगा ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे स्वप्नविषे बहुतअज्ञानीजीव शास्त्रकेउपदेशकरिके स्वर्गकूं तथामोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं स्वप्नविषे कल्पितअज्ञानीजीवोंकेप्रति शास्त्रकूं व्यर्थतानहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी शास्त्रकेउपदेशकरिकेअज्ञानीजीव स्वर्गादिकलोकोंकूं तथा मोक्षकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं अज्ञानीजीवोंकेप्रति श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्र व्यर्थनहीं ॥ किंतु अर्थवालाहै ॥ इसप्रकार अज्ञानीजीवोंकेप्रति शास्त्रकीअर्थवत्ताकथनकरिके ॥ अब ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्रति शास्त्रकीव्यर्थताकूंदिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे तिसीस्वप्नविषे स्वप्नद्रष्टा विद्वान्पुरुषकेप्रति शास्त्रकूंव्यर्थताहै ॥ तथा स्वप्नविषेकल्पनाकरे जेअन्यजीवन्मुक्तपुरुष तिनोंकेप्रतिभी शास्त्रकूंव्यर्थताहै ॥ काहेतें श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकेउपदेशजन्यज्ञान जीवोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिकरैहै ॥ सोअज्ञान तिनविद्वान्पुरुषोंविषेहैनहीं ॥ यातैं तिनज्ञानीपुरुषों केप्रति शास्त्रकूं व्यर्थता है ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी जिनपुरुषोंकूंआत्माकासाक्षात्कारभया है ॥ तिनपुरुषोंकेप्रति तथापरमेश्वरके प्रति श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकीव्यर्थता हम अंगीकारकरैहैं ॥ किंवा ॥ हेब्राह्मणो ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रविषे तभी व्यर्थताप्राप्तहोवे ॥ जभी सर्वजीवोंकेउपदेशविषे शास्त्रकी साधारणप्रवृत्तिहोवे ॥ सो सर्वजीवोंकेउपदेशविषे शास्त्रकी साधारणप्रवृत्तिहोवेनहीं ॥ किंतु अनधिकारी पुरुषोंकापरित्यागकरिके अधिकारीपुरुषोंकेउपदेशविषे शास्त्रकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे वैश्यस्तोमनामायज्ञकाअधिकारी वैश्यहीहोवैहै ॥ ब्राह्मण तथाक्षत्रिय ताकेअधिकारीहोवैंनहीं ॥ यातैं सोवैश्यस्तोमनामायज्ञ ब्राह्मणकीअपेक्षाकरिके तथाक्षत्रियकीअपेक्षाकरिके व्यर्थहै ॥ और तिनवैश्योंविषेभी जोवैश्य फलकीकामनावालाहोवैहै॥तथा स्त्रीधनादिकपदार्थोंकरिकेयुक्तहोवैहै ॥ तथा पापादिकदोषोंतैंरहितहोवैहै॥

यांप्रकारकेवैश्यकीअपेक्षाकरिकैही सोवैश्यस्तोमनामायज्ञ सफलहोवैहै ॥ फलकामनादिकविशेषणोंतैंरहित वैश्यकीभीअपेक्षाकरिकै सोवै श्यस्तोमनामायज्ञ निष्फलहीहै ॥ इसप्रकार बृहस्पतिसवनामायज्ञविषे ब्राह्मणकाहीअधिकारहै ॥ क्षत्रियवैश्यका ताकेविषेअधिकारहै नहीं ॥ यातैं क्षत्रियवैश्यकीअपेक्षाकरिकै सोबृहस्पतिसवनामायज्ञ निष्फलहै ॥ और तिनब्राह्मणोंविषेभी जोब्राह्मण फलकीकामनावाला होवैहै ॥ तथा स्त्रीधनादिकपदार्थोंकरिकै युक्तहोवैहै ॥ तथा पापादिकदोषोंतैं रहितहोवैहै ॥ याप्रकारकेब्राह्मणकीअपेक्षाकरिकैही सोबृह स्पतिसवनामायज्ञ सफलहै ॥ फलकामनादिकविशेषणोंतैंरहित अन्यब्राह्मणकीभीअपेक्षाकरिकै सोबृहस्पतिसवनामायज्ञ निष्फलहीहै ॥ इसप्रकार राजसूयनामायज्ञविषे क्षत्रियकाहीअधिकारहै ॥ ब्राह्मणवैश्यका तिसविषेअधिकारनहीं ॥ यातैं ब्राह्मणवैश्यकीअपेक्षाकरिकै राज सूयनामायज्ञ व्यर्थहै ॥ तिनक्षत्रियोंविषेभी जोक्षत्रिय फलकीकामनावालाहोवैहै ॥ तथा स्त्रीधनादिकपदार्थोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तथा पापादिकदोषोंतैंरहितहोवैहै ॥ याप्रकारकेक्षत्रियकीअपेक्षाकरिकैही सोराजसूयनामायज्ञ सफलहै ॥ फलकामनादिकविशेषणोंतैंरहित क्षत्रियकीभीअपेक्षाकरिकै सोराजसूयनामायज्ञ व्यर्थहीहै ॥ ऐसे दूसरेभीयज्ञादिककर्म अधिकारीपुरुषोंकेप्रति सार्थकहैं ॥ और अनधि कारीपुरुषोंकेप्रति निरर्थकहैं ॥ तैसे मुक्तिकूंप्रतिपादनकरणेहारा वेदांतशास्त्रभी सर्वजीवोंकेप्रति सार्थकनहीं ॥ किंतु आत्मज्ञानतैंरहित विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्न मुमुक्षुजनोंविषेही सार्थकहै ॥ यातैंहेब्राह्मणो ॥ जैसे समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिवालापरमेश्वर तथास मष्टिसूक्ष्मरूपउपाधिवालाहिरण्यगर्भ ब्रह्मविद्याकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ तैसे समष्टिस्थूलउपाधिवालाविराट्भगवान् तथास्वा यंभूमनुआदिकभी ब्रह्मविद्याकरिकैही सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयेहैं ॥ तैसे इदानींकालविषेभी केईकमहात्मापुरुष ब्रह्मविद्याकरिकैही सर्वा त्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे आगेभी केईकमहात्मापुरुष ब्रह्मविद्याकरिकैही सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ याप्रकार ब्रह्मविद्याकेसर्वात्मभावरू पफलकीसमानताकूंकहिकरिकै ॥ अब ब्रह्मविद्याकेउत्पत्तिविषे किंचित्विलक्षणताकूंदिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे पक्षियोंविषे आकाशकेच लणेकीजोचातुर्यताहै॥तथा मत्स्योंविषेजलकेचलणेकीजोचातुर्यताहै सोचातुर्यता किसीयत्नकरिकैसाध्यहोवैनहीं॥किंतु जन्मतैंही तिनोंविषे

सोचातुर्यताहैतैसे विराट् भगवान्विषे तथाकपिलमुनिविषे तथासनत्कुमारादिकोंविषे अदृष्टादिकआगंतुककारणोंतैंविनाहीं ब्रह्मविद्याउत्पन्नहोवैहै ॥ और वाल्मीकि तथावामदेवादिकोंविषेतो देशकालादिकनिमित्तकरिकै फलदेणकूंसन्मुखभयेजे अनंतजन्मकेपुण्यकर्म ॥ तिनपुण्यकर्मादिकआगंतुकनिमित्तकरिकै ब्रह्मविद्या उत्पन्नहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे यौवन कालविषे पुरुषोंकूं पूर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं यश धन पुत्रादिकसुख प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वामदेवादिकोंकूं पूर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं ब्रह्मविद्याकोप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे नेत्रोंकरिकै सर्वजनोंकूं रूपकाज्ञानहोवैहै ॥ तैसे गुरुउपदिष्टशास्त्रकरिकै संपूर्णअधिकारियोंकूं ब्रह्मविद्याकोप्राप्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनैं विराटादिकोंविषे स्वभावतैंहीब्रह्मविद्याकीउत्पत्ति कथनकरी ॥ और अभी संपूर्णब्रह्मविद्याकेप्रति शास्त्रकूंकारणता कथनकरी ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथका विरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ विराटादिकोंविषे स्वभावतैंहींब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और वामदेवादिकोंविषे पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकहणेविषे यहतात्पर्यहै ॥ जैसे अस्मदादिकजीवोंकूं ब्रह्मचर्यादिकसाधनपूर्वक ॥ गुरुकेसमीपनिवासकरणेतैं ब्रह्मविद्याकोप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे विराट्भगवान् तथाकपिलमुनिआदिकोंविषे यद्यपि ब्रह्मविद्याकी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तथापि ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व विराटादिकोंविषे तथावामदेवादिकोंविषे श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकीतो अवश्यअपेक्षारहैहै ॥ शास्त्रकेचिंतनतैंविना विराटादिकोंविषेभी ब्रह्मविद्या उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं विराटादिकोंकेब्रह्मविद्याविषेभी शास्त्रकूं कारणताहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आकाशविषेगमनकरणेमैं यद्यपि पक्षी अन्यकिसीसाधनकोअपेक्षाकरैनहीं ॥ तथापि पंखोंकीअपेक्षाकरैहै ॥ तैसे विराटादिकमहान्पुरुष ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे यद्यपि अध्ययनादिकोंकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तथापि ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व श्रुतिरूपशास्त्रकीअपेक्षाकरैहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ विराट्भगवान् कपिलमुनिआदिक स्वभावतैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और वामदेववाल्मीक्यादिक पूर्वपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और गुरुउपदिष्टशास्त्रकरिकै सर्वअधिकारीजन ब्रह्मविद्याकूंप्राप्त होवैहै॥ यातीनोंपक्षोंविषे जैसेशास्त्रकूं ब्रह्मविद्याकेप्रति कारणताहै॥तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे शास्त्रकेतात्पर्यकानिर्णयरूपजोश्रवणहै ॥ तिसकूं

भीसंपूर्णब्रह्मविद्याकेप्रति कारणताहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे क्षुधावान्पुरुषकेतृप्तिविषे भोजनहीं कारणहोवैहै ॥ भोजनतैंविना किसीकीतृप्तिहोवै नहीं ॥ तैसे श्रवणतैंविना किसीकूंभी ब्रह्मविद्या प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु संपूर्णविराट्भगवान्आदिकोंकूं श्रवणतैंहीं ब्रह्मविद्या प्राप्तहोवैहै ॥ अब ब्रह्मविद्याकेस्वरूपकूंदिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ ब्रह्मशब्दतैं तथाआत्मशब्दतैं तथाब्रह्मशब्दआत्मशब्दजन्यवृत्तिरूपज्ञानतैं रहित जोब्रह्मशब्दका तथाआत्मशब्दका सर्वतैंअधिक तथासर्वकेअंतरव्यापकरूप अर्थहै सो मैंहूं ॥ याप्रकारकेअभेदज्ञानकूं बुद्धिमान्पुरुष ब्रह्मविद्याकहैहैं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ याप्रकारकोब्रह्मविद्या जभी उत्पन्नहोवैहै ॥ तभी सर्वात्मभावरूपफलकीप्राप्तिविषे ब्राह्मणत्वादिकउत्त मजातिकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंतु इसब्रह्मविद्याकरिकै जैसे ब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ तैसे दूसराभीजोकोईमनुष्य तथामुनि तथा देवता तथादानव श्रवणादिकसाधनोंकरिकै ब्रह्मविद्याकूंसंपादनकरैगा ॥ सो निश्चयकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैगा ॥ और हेब्राह्मणो ॥ मैंब्रह्महूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकरिकै अनेकब्राह्मण तथामुनि तथाअनेकअसुर सर्वात्मरूपब्रह्मकूंप्राप्तभयेहैं यहब्रह्मविद्याकाफल हमसर्व ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकूं परोक्षनहीं ॥ किंतु ब्रह्मविद्याप्राप्तिकेउत्तरक्षणविषे यह फल हमसर्वब्राह्मणोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ हमसर्वअधिकारीजनोंकेमध्यविषे एकवामदेवनामामुनिहोताभया ॥ और सोवामदेवनामामुनि माताकेगर्भविषेस्थितहोइकै हमसर्वअधि कारियोंऊपरकृपाकरिकै ब्रह्मविद्याकेफलविषे हमारेविश्वासकरावणेवासते याप्रकारकेवचनोंकूंकहताभया ॥ वामदेवउवाच ॥ हेअधिकारि ब्राह्मणो ॥ माताकेगर्भविषे ब्रह्मविद्याकरिकै हमारेकूं सर्वात्मभावकोप्राप्तिभईहै ॥ यातैं सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूप ब्रह्मविद्याकेफलविषे तुमारे विश्वासकरावणेवासतै तुमारेप्रति हम वचनोंकूंकहैं हैं ॥ तिनवचनोंकूं सावधानहोइके तुम श्रवणकरो ॥ हेअधिकारीजनो ॥ तुमारीदृष्टिक रिकै तुमारेमध्यविषे कोईकवामदेवनामामैं पूर्वशरीरकापरित्यागकरिकै इदानींकालविषे माताकेगर्भविषेनिवासकरोंहूं ॥ और आपणीदृष्टि करिकेतो मैंसर्वात्मारूपहूं ॥ और हेअधिकारिब्राह्मणो ॥ पूर्वजन्मविषे हमारेकूं तथातुमसंपूर्णअधिकारियोंकूं सनकादिकमुनियोंनें समानहीं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्याथा ॥ परंतु तिसकालविषे हमसंपूर्णअधिकारीजन विषयोंविषेआसक्तथे ॥ यातैं हृदयदेशविषेस्थितआत्माकूंभी

हम नहींजाणतेभये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जन्मकेअंध जेपुरुषहैं ॥ ते आपणेहस्तविषेस्थित अत्यंतप्रकाशमानमणियोंकूंभी देखतेनहीं ॥ तैसे विषयोंविषेआसक्तिरूपदोषकेवशतैं हृदयदेशविषेस्थितआत्माकूंभी हम नहींदेखतेभये ॥ और हेअधिकारीजनो ॥ताविषयआसक्तिरूप प्रतिबंधकेवशतैं पूर्वजन्मविषे हमारेकूं आत्माकासाक्षात्कारभयानहीं ॥ याकारणतैंहीं इदानींकालविषे हमारेकूं शरीररूप बंधनकी प्राप्ति भईहै ॥ यातैं हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ जैसे हमारेकूंशरीररूपबंधनकीप्राप्तिभईहै ॥ तैसे तुमारेकूं पुनः शरीररूपबंधनकीप्राप्ति जैसे नहीं होवे ॥ ऐसाकोईउपाय तुमकरो ॥ सोउपाय आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईहैनहीं ॥ यातैं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते तुमसंपूर्णअधि कारी यत्नकरो ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ ब्रह्मविद्याकरिके सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलकाअनुभव हमनें गर्भविषेअभीकऱ्याहै ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकेफलविषे तुमोंनें संदेहनहींकरणा ॥ और हेब्राह्मणो ॥ सत्ययुगविषेहीं ब्रह्मविद्याकरिके सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवे है ॥ कलियुगादिकोंविषे होवेनहीं ॥ याप्रकारकासंदेहभी तुमोंनें नहींकरणा ॥ काहेतैं ब्रह्मविद्याकेउत्पन्नहुएचारोंयुगोंविषे सर्वात्मभावकी प्राप्तिहोवेहै ॥ यातैं हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ तुमारेविश्वासकरावणेवासते सर्वात्मभावकी प्राप्तिरूप ब्रह्मविद्याकाफल हम तुमारेप्रति कथन करैहैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ मनुष्यादिकसृष्टिकाकारणजोस्वायंभूमनुहै सोभी मैंहींहोताभया ॥ और सर्वजगत्‌कूं प्रकाशकरणेहारा जोसूर्यभगवान्‌है सोभी मैंहींहोताभया ॥ और कक्षीवान्‌नामाजोमुनिहै सोभी मैंहींहोताभया ॥ और लोकविषे प्रसिद्ध जोसूर्यादिकप्रकाशहै तिनोंकेभीप्रकाशकरणेहारा जोचैतन्यरूपप्रकाशहै सोभीमैंहींहूं ॥ इतनेंकरिकेवामदेवनें आपणेविषेईश्वरभाव दिखाया ॥ अब आपणेविषेजीवभावकूंदिखावेहैं ॥ हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ चतुर्दशलोकविषेस्थित जितनेकशरीरहैं तिनोंकूं मैंहीं प्राप्तहोवोंहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ वास्तवतैंजन्ममरणतैंरहितहुआभीमैं शरीरादिकउपाधिकेजन्ममरणतैं आपणेविषे जन्ममरणमानोंहूं ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ सर्वत्र पसरिरहीहैदृष्टिजिसकी ऐसाजोभृगुकापुत्रशुक्रहै सोभीमैंहींहूं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ मैंहीं परशुरामअवतार कूंधारणकरिके कश्यपकेताईं धनकरिकेपूर्ण संपूर्णपृथिवीकूंदेताभयाहूं ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ पुण्यपापरूपकर्मकरिकेयुक्तजे

जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेजीवहैं ॥ तिनजीवोंकेताईं मेघरूपहोइके मैंहींवृष्टिदेवोंहूं ॥ कैसीहैसोवृष्टि ॥ पुण्यपाप
काफलजोऊँचनीचशरीरहैं तिनोंकाकारणहै ॥ याकारणतैंहीं सोवृष्टि जीवोंके सुखका तथादुःखका कारणहै ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥
तीनलोकविषेस्थितजलोंकूं सूर्यरूपहोइके मैंहीं आकर्षणकरोंहूं ॥ कैसाहैसोसूर्यभगवान् ॥ वैश्वानरादिकरूपकरिकै सर्वकेअंतर तथाबाहर
विचरणेहाराहै ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ जैसे क्षुधाकरिकेआतुरहुआबालक माताकेशरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे दैत्योंकरिकै अभिभवकूं
प्राप्तहुए इंद्रादिकदेवता मेरेहीशरणकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ तारकासुरकापक्षपातीजोशंबरनामादुरात्माअसुरहै ॥तिसनें
मायाकरिकैरचियां जेननानवे ९९ पुरीहैं ॥ तेपुरियाँकैसियांहैं ॥ नित्यहीं देवतावोंकेभयकूंकरणेहारियांहैं ॥ ऐसेमायारचित ननानवेपुरि
योंकूं स्वामिकार्तिकेयरूपकूंधारणकरिकै मैंहीं विनाशकरताभयाहूं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे प्रणवरूपतारकमंत्र मुमुक्षुजनोंकेहृदयकेअज्ञानकूंना
शकरैहै ॥ हेब्राह्मणो ॥ याप्रकारकेवचनोंकरिकै सोवामदेवनामाऋषि सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूप ब्रह्मविद्याकेफलकूं पूर्वहमारेप्रति कथन
करताभया॥तेवामदेवकेवचन अभी हमारेस्मृतिविषेविद्यमानहै॥यातैं हेब्राह्मणो॥सर्वात्मभावकी प्राप्तिरूपफलकासाधन एकब्रह्मविद्याहीहै
यातैं ताब्रह्मविद्याकूं अधिकारीपुरुषोंनें अवश्यसंपादनकरणा ॥ दध्यङ्ङृषिरुवाच ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकार तेसंपूर्णविद्वान्ब्राह्मण ब्रह्म
आत्माकेअभेदज्ञानतैं सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलका कथनकरतेभये ॥ यातैं इदानींकालविषेभी जोकोईदेवता तथादानव तथामनुष्य
ब्रह्मविद्याकूंसंपादनकरैगा ॥ तिसकूंभी अवश्य सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ मैंअद्वितीयब्रह्महूं याप्रकारकीब्रह्मविद्या
जिसपुरुषकूंप्राप्तभईहै ॥ तिसपुरुषकूं आपणेवशकरणेविषे तुमदेवताभी समर्थनहींहो ॥ काहेतैं तुमसर्वदेवता आपणेकूंवशकरणेविषेसमर्थ
नहींहो ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निआपणेतैंभिन्न काष्ठादिकोंकूं दाहकरैहै ॥ आपणेकूं अग्निदाहकरैनहीं ॥ तैसे तुमसर्वदेवता आपणेतैंभि
न्नपुरुषोंके वशकरणेविषेसमर्थहो ॥ परंतु आपणेकूंवशकरणेविषे तुमदेवता समर्थनहींहो ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यद्यपि हमदेवता आपणे
आत्माकेवशकरणेविषे समर्थनहींहैं ॥ तथापि हमारेतैंभिन्न जोविद्वान्पुरुषहै॥तिसकेवशकरणेविषे हमदेवता काहेतैंसमर्थनहीं॥समाधान॥

हेदेवराजइंद्र ॥ ब्रह्मविद्याकरिके विद्वान्पुरुष सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें सोविद्वान्पुरुष तुमदेवतावोंतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु तुमसर्वदे
वतावोंका सोविद्वान् आत्माहै ॥ यातें आपणेआत्मारूपविद्वान्केवशकरणेविषे तुमदेवता समर्थनहींहो ॥ शंका हेभगवन् ॥ आत्मा सर्व
तेंअंतरहोवैहै ॥ और यहविद्वान्पुरुष स्थूलशरीरकरिकेयुक्तहुआ बाह्यप्रतीतहोवैहै ॥ यातें यहविद्वान्पुरुष हमाराआत्माकिसप्रकारसंभ
वैहै ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे घटरूपउपाधिकरिकेयुक्तहुआ आकाश यद्यपि सर्वत्रव्यापकनहींहै ॥ तथापि घटरूपउपाधितैंवि
मुक्तहुआआकाश सर्वकेहृदयदेशविषेविद्यमानहै ॥ तैसे ब्रह्मविद्याकरिके निवृत्तहुआहैदेहाभिमानजिसका ऐसाजोविद्वान्पुरुषहै ॥ सो तुम
सर्वदेवतावोंका आत्मासंभवैहै ॥ यातें हेदेवराजइंद्र ॥ ऐसे सर्वात्मारूपविद्वान्पुरुषकी जोतुमदेवता किंचित्मात्रप्रतिकूलताकरोगे ॥ तथा
अनुकूलताकरोगे ॥ तो साप्रतिकूलता तथाअनुकूलता तुमारेकूंही प्राप्तहोवैगी ॥ असंगविद्वान्पुरुषकूं साअनुकूलता तथाप्रतिकूलता
स्पर्शकरैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आपणेमस्तककूं अन्यपुरुषकामस्तकमानिकेजोकोईकमूढपुरुष ताडनकरैहै ॥ सोमूढपुरुष आपहीपीडा
कूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सर्वकाआत्मारूपजोविद्वान्है ॥ तिसकूं आपणेतें भिन्नमानिके जोमूढपुरुष तिसविद्वान्काताडनकरैहै ॥ सोमूढपुरुष
आपणाहींताडनकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सर्वप्राणीमात्रके दोरूपहोवैहैं ॥ एकतो असंगरूप ॥ और
दूसरा संगवान्रूप ॥ संबंधकूंसंगकहैहैं ॥ संबंधतेंजोरहितहोवै ताकूं असंगकहैहैं ॥ और ॥ संबंधवालाजोहोवै ताकूं संगवान्कहैहैं ॥
तहां वास्तवतेंसंबंधरहित विद्वान्पुरुष सर्वप्राणियोंकाअसंगरूपहै ॥ और अविद्याकरिकेकल्पित जो कर्ताभोक्ताप्रमाणताहै ॥ सो सर्वप्रा
णियोंका संगवान्रूपहै ॥ तहां आपणेअसंगरूपविद्वान्पुरुषविषे जोकोईमूढपुरुष किंचित्मात्रभी प्रतिकूलताकरैहै ॥ सोप्रतिकूलता असं
गविद्वान्पुरुषकूं स्पर्शकरैनहीं किंतु प्रतिकूलताकरणेहारा जोसंगवान्प्रमाताहै तिसविषेही सोप्रतिकूलता प्राप्तहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे
कोईकमूढबालक दर्पणसंबंधतैंरहित तथामंदहास्यकरिकेयुक्त आपणेमुखकूं सन्मुखदर्पणविषेस्थितमानैहै ॥ और सोमूढबालक जभी
दर्पणविषेस्थितमुखके प्रतिकूलताकरणेकीइच्छाकरैहै ॥ तभी प्रथम आपणेग्रीवाविषेस्थितमुखकी प्रतिकूलताकरैहै ॥ पश्चात् दर्पणविषे

स्थितमुखकी प्रतिकूलताकरैहै ॥ग्रीवाविषेस्थितमुखकेप्रतिकूलताविना दर्पणविषेस्थितमुखकीप्रतिकूलता॥ होवैनहीं॥ और तिसप्रतिकूल ताकरिकेदर्पणविषेस्थितअसंगमुखकूं किंचित्मात्रभीदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु प्रतिकूलताकरणेहारेबालककीग्रीवाविषेस्थित जोमु खहै तिसविषेहीं ताप्रतिकूलताजन्यदुःखहोवैहै ॥ तैसे असंगविद्वान्पुरुषकी जोतुमदेवता किंचित्मात्रभीप्रतिकूलताकरौगे ॥ तौ सोप्रति कूलता असंगविद्वान्पुरुषकूं स्पर्शकरैगीनहीं ॥ किंतु कर्ताभोक्ताजोतुमदेवताहो ॥ तिनोंविषेहीं सोप्रतिकूलता प्राप्तहोवैगी॥ दुःखकेजनक जेताडनाआदिकहैं ताकूं प्रतिकूलकहैहैं॥ और सुखकेजनक जेपूजनादिकहैं॥ ताकूं अनुकूलकहैहैं॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ हमदेवतावों तैंअभिन्न जोविद्वान्पुरुषहै ॥ तिसकूं दुःखकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ और हमारेकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकेविषे कौनकारणहै ॥ समा धान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे बिंबरूपशरीरकेअलंकारकरणेतैं दर्पणविषेस्थित प्रतिबिंब अलंकारवालाहोवैहै ॥ और बिंबरूपशरीरकेतिर स्कारकरणेतैं दर्पणविषेस्थित प्रतिबिंब तिरस्कारवालाहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष तुमसर्वजीवोंकाबिंबरूपहै और तुमसंपूर्णजीव ताकेप्रतिबिंबरूपहो॥यातैं जोतुमदेवतातिसविद्वान्पुरुषके सुखकूं तथादुःखकूं करौगे॥ तौ सो सुख तथादुःखतुमदेवतावोंकूंहींप्राप्तहोवैगा ॥ विद्वान्पुरुषकेअसंगरूपविषे सुखदुःखादिकोंकासंबंध संभवैनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जोकोईपुरुष श्रद्धाकरिके असंगविद्वान्कापूजन करैहै ॥ सोपूजन तिसपूजनकरणेहारेपुरुषविषेहीं सफलहोवैहै ॥ विद्वान्पुरुषविषे तापूजनकासंबंधसंभवैनहीं ॥ दृष्टांत॥ जैसे जोकोईपुरुष जलकरिके तथाधूलिकरिके सूर्यभगवान्काआच्छादनकरैहै ॥ परंतु सोजल तथाधूलि सूर्यभगवान्कूं आच्छादनकरिसकैनहीं ॥ किंतु उलटा आच्छादनकरणेहारेपुरुषकाही आच्छादनकरैहै॥तैसे विद्वान्पुरुषकेकरेहुएपूजनादिक असंगविद्वान्पुरुषकूं स्पर्शकरैनहींकिंतुकर णेहारेपुरुषविषेही तेपूजनादिक सफलहोवैहैं॥ इसप्रकार फलसहितब्रह्मविद्याकूंकहिकरिके ॥ अब अविद्याकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जेपुरुष आपणेतैंदेवतावोंकूंभिन्नमानिके तिनदेवताओंकीउपासनाकरैहैं ॥ ऐसेभेददर्शीअज्ञानीजीवरूपीपशुवोंके तुमदेवतास्वामीहो ॥ अब अज्ञानीजीवोंकूं पशुरूपकरिकेनिरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषेप्रसिद्धगौवोंकीशाला

काष्ठकरिके तथा मृत्तिकाकरिके रचीजावैहै ॥ तैसे अज्ञानरूपीमृत्तिका तथाकाष्ठोंकरिके यहसंसाररूपीशाला ब्रह्मानें उत्पन्नक रीहै ॥ कैसीहैसोसंसाररूपीशाला ॥ भेददर्शीअज्ञानीजीवरूपगौवोंकेरहणेकास्थानहै ॥ कैसेहैंते अज्ञानीजीवरूपपशु ॥ तुमदेवतावोंके ताई हव्यकव्यादिकपदार्थोंकूंदेवैंहैं ॥ यातें तेअज्ञानीजीव तुमदेवतावोंका आश्रयरूपहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे दुग्धादिकोंकूंदेणे हारियांजेगौवांहैं ॥ तिनोंकूं लोक आपणाआश्रयमानैंहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकप्रसिद्ध गौवोंकीशालाविषे ताशालाकेभारकूं धारणकरणेहारियां अनेकस्थूणाहोवैंहैं ॥ और तिनस्थूणावोंविषे एकदीर्घरज्जु बांधीहोवैहै ॥ और तिसदीर्घरज्जुविषे अनेकअल्परज्जु बांधियांहोवैंहैं ॥ और तिनअल्परज्जुवोंविषे एकएकरज्जुकेसाथ एकएकगौ बांधीहोवैहै ॥ तैसे यहसंसाररूपीएकशालाहै ॥ और संसा ररूपीशालाकेभारकरिके व्याकुल जेकामक्रोधादिकहैं ॥ ते यासंसाररूपीशालाकेस्थूणाहैं ॥ और अग्निहोत्रादिककर्म ब्राह्मणकूंकरणे योग्यहैं इत्यादिक जेविधिवाक्यहैं ॥ तथा ब्राह्मणादिकोंकोहिंसाकरणेयोग्यनहीं इत्यादिक जेनिषेधवाक्यहैं ॥ यहदोनोंप्रकारकेवेदके वचन एकदीर्घरज्जुहै ॥ सावेदवचनरूपीदीर्घरज्जु कामक्रोधादिरूपस्थूणावोंकेसाथ बांधीहुईहै ॥ और अग्निहोत्रादिककर्मके अधिकारि योंकूंबोधनकरणेहारे जेब्राह्मणादिकनामहैं ॥ ते अल्परज्जुकेसमानहैं ॥ और तेब्राह्मणादिकनामरूपअल्परज्जु विधिनिषेधवचनरूपदीर्घ रज्जुविषे बांधियांहैं ॥ और तिनब्राह्मणादिकनामस्वरूप अनेकअल्परज्जुवोंविषे एकएकरज्जुकेसाथ एकएकअज्ञानीजीवरूपपशुबां धयाहुआहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यद्यपि ब्राह्मणादिकनामरूपी रज्जुवोंविषे अनेकअज्ञानीजीवबांधेहुएहैं ॥ तथापि यज्ञदानादिककर्मोंकूं करणेहारा जोअज्ञानीगृहस्थहै ॥ सो तुमसर्वदेवतावोंका कामधेनुसमानहै ॥ अब अज्ञानीगृहस्थविषे कामधेनुपणादिखावैंहैं ॥ हेदेवराज इंद्र ॥ अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणेहारा जोएकअज्ञानीगृहस्थहै ॥ सो तुमसर्वदेवतावोंकूंपालनकरैहै ॥ तथा ॥ सर्वपितरोंकूंपालनकरैहै ॥ तथा अतिथिआदिकमनुष्योंकूं पालनकरैहै ॥ तथा सर्वमुनियोंकूंपालनकरैहै ॥ तथा अन्यभीअनेकप्राणियोंकापालनकरैहै ॥ यातें यह अज्ञानीगृहस्थ तुमसर्वदेवतावोंका कामधेनुगौहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषे एकएककुटुंबीगृहस्थके अनेकपशुहोवैंहैं ॥ तैसे

तुमदेवतावोंके अनेकपशुहैंनहीं ॥ किंतु एकहीअज्ञानीगृहस्थ कामधेनुगौकीन्याईं तुमसर्वदेवतावोंकापालनकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषे किसीकुटुंबीगृहस्थकेअनेकपशुहोवें हैं ॥ और तिनपशुवोंविषे जोकदाचित् एकपशुकूंभी चौर लेजावैहै ॥ तौ तिसकुटुंबी पुरुषकूं महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ जभी एकपशुकेजाणेकरिकैभी तिसकुटुंबीगृहस्थकूं महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तभी सर्वपशुवोंकेजा णेकरिकै जोतिसकुटुंबीगृहस्थकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै सो कह्याजावैनहीं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे सर्वपशुवोंकेजाणेकरिकै ताकुटुंबीगृह स्थकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे तुमसर्वदेवतावोंकापशुजोअज्ञानीपुरुषहै ॥ तिसकाजभीब्रह्मविद्याकरिकै अज्ञानकानाशहोवैहै ॥ तभी तुमसर्वदेवतावोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसेलोकविषे तेकुटुंबीगृहस्थ चौरोंतैंआपणेपशुवोंकीरक्षाकरणेवासतै रात्रि दिनविषेसावधानहुए तिनचौरोंकेनिवृत्तिकाउपायकरैहैं ॥ तैसे ब्रह्मविद्याकोप्राप्तिवासतै जेपुरुष ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकूंसंपादनकरैहैं ॥ ति नपुरुषोंके ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकेभंगकरणेवासतै अनंतप्रकारकेउपद्रवोंकूं तुमदेवताकरोहो ॥ जीवोंकेबुद्धिकूंविपरीतकरणा यहही देवता वोंकाउपद्रवहै ॥ यातैं जोमुमुक्षुजन ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीइच्छावालाहोवै ॥ सो प्रथम श्रद्धापूर्वक देवतावोंकाआराधनकरै ॥ ताआराधनकरिकै जभी देवता प्रसन्नहोवैहैं ॥ तभी अधिकारीजनोंकूं सत्बुद्धिको प्राप्तिकरिकै ब्रह्मविद्याकेसर्व प्रतिबंधोंतैं रक्षाकरैहैं ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ नदेवादंडमादाय रक्षंतिपशुपालवत् ॥ यंहिरक्षितुमिच्छंतिबुद्ध्यासंयोजयंतितम् ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जैसे पशुवोंकेपालनकरणेहारेपुरुष हाथविषेदंडलेके सिंहादिकोंतैं पशुवोंकीरक्षाकरैं हैं ॥ तैसे देवता हाथविषेदंडलेके भक्तजनोंकीरक्षाकरैंनहीं ॥ किंतु जिसभक्तजनकेरक्षाकरणेकी देवताइच्छाकरैहैं ॥ तिसपुरुषकूं सत्बुद्धिकीप्राप्तिकरैहैं ॥ १ ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व प्रतिबंधकीनिवृत्तिवासतै मुमुक्षुजनोंनैं अवश्यदेवतावोंकाआराधनकरणा और जोपुरुष ब्रह्मविद्याकोप्राप्तितैंपूर्व देवतावोंकाआराधननहींकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे अनंतप्रकारकेविघ्न देवताकरैं हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषे पशुवोंकेहरणकरणेहारे जेअत्यंतबलवान्चौरहैं ॥ तेचौर पशुवोंवालेकुटुंबीगृहस्थोंकूं प्रियलागतेनहीं तैसे अज्ञानीजीव

रूप तुमारेपशुवोंकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिद्वारा हरणकरणेहारे जेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तेविद्वान्पुरुष तुमदेवतावोंकूंप्रियलागतेनहीं ॥ यद्यपि सर्वदेवतावोंकाआत्मारूप जोविद्वान्पुरुषहै॥ तिसविषे देवतावोंकाद्वेषसंभवैनहीं॥तथापि चित्तशुद्धितैंरहितजेकर्मकेअधिकारीजीवहैं ॥ तिनोंकूंजेविद्वान् कर्मतेंरहितकरैंहैं ॥ तिनविद्वानोंविषेही देवतावोंकाद्वेषहोवैहै ॥ यहवार्त्तागीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नैंभी अर्ज्जुनकेप्रतिकहीहै ॥ श्लोक ॥ नबुद्धिभेदंजनयेदज्ञानांकर्मसंगिनाम् ॥ अर्थयह ॥ चित्तशुद्धितेंरहित कर्मकेअधिकारीजेजीवहैं ॥ तिनोंकूं विद्वान्पुरुष कर्मोंतैंनिवृत्तनहींकरे ॥ किंतु तिनोंकूं शुभकर्मोंविषेलगावे ॥ १ ॥ याभगवान्केवचनका जेविद्वान्पुरुष उल्लंघनकरैंहैं ॥ तिनोंविषेही देवतावोंकाद्वेष होवैहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व यद्यपि तुमदेवता विघ्नकरोहो ॥ तथापि ब्रह्मविद्याकेउत्पन्नहुएतैं अनंतर ताविद्याकेसर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलका प्रतिबंधकरणेविषे तुमदेवताभी समर्थ नहींहो ॥ यातैं यहविद्वान्पुरुष सर्वकाआत्मारूपहै ॥ यातैं तुमदेवतावोंकाभीआत्माहै ॥ तथा यहविद्वान्पुरुष अद्वितीयब्रह्मरूपहै ॥ यातैं तुमदेवतावोंतैंभी अधिकहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके आत्मातैंभिन्न पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकूं प्रियरूपकरिकैनहींकथनकरै ॥ यहजोपूर्वकथनकन्याथा सो संभवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ पुत्रादिकसर्वअनात्मपदार्थोंतैंप्रिय जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसकूं न जाणिकरिकै जोपुरुष मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिस अज्ञानीपुरुषका स्वरूपभूतहुआभी यह आनंदस्वरूपआत्मा ताअज्ञानीपुरुषकूं जन्ममरणकेप्रवाहतैंरक्षाकरैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गुरु तथापुस्तकद्वारा वेदकेसमीपविद्यमानहुएभी जबपर्यंत यहपुरुष गुरुमुखतैं तावेदकाअध्ययननहींकरता ॥ तबपर्यंत सोनहींअध्ययनकन्याहुआ वेदभगवान् ब्राह्मणकूं पवित्रकरिनहींसकता ॥ किंतु गुरुमुखतैं जान्याहुआवेदही ब्राह्मणकूं पवित्रकरैहै ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्माभी गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै नहींजान्याहुआ जीवोंकूं जन्ममरणरूपसंसारतैंरक्षाकरिसकतानहीं ॥ किंतु गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजान्याहुआ यहआत्मा जीवोंकूं संसारतैंरक्षाकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ गुरुशास्त्रद्वारा यज्ञादिककर्म जानेहुएभी अनुष्ठानतैंविना पुरुषोंकूं फलकीप्राप्ति करैनहीं ॥ तैसे यहविवेकादिकसाधन गुरुशास्त्रद्वाराजानेहुएभी अनुष्ठानतैंविना पुरुषोंकूं आत्मज्ञानरूपफलकीप्रा

तिकरतेनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जोपुरुष आनंदस्वरूपआत्माकूंनजाणिकरिके अश्वमेधादिकमहान्यज्ञोंकूंकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं ते अश्वमेधादिकयज्ञरूपीकर्म किंचित्कालपर्यंत स्वर्गविषेसुखकीप्राप्तिकरिके पुनःक्षयकूंप्राप्तहुए तेकर्म याजीवकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं जिसपुरुषकूं नित्यआनंदकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ सोपुरुष अन्यसर्वउपायोंकापरित्यागकरिके आत्मज्ञानकेप्राप्तिवासतै पुरुषार्थकरै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जोपुरुष आत्मज्ञानकेसंपादनविषे समर्थनहींहोवै ॥ सोपुरुष उपासनाकूं तथानिष्कामकर्मोंकूं करे ॥ ताउपासनाके तथानिष्कामकर्मोंके प्रभावतैं चित्तशुद्धिद्वारा इसलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवैहै ब्रह्मविद्याकी प्राप्तिही उपासनाकामुख्यफलहै ॥ अब उपासनाकेअवांतरफलकूंनिरूपणकरैहैं ॥हेदेवराजइंद्र॥ यहउपासकपुरुष संसारविषेनिवासकरताहुआभी हिरण्यगर्भकेसमान ऐश्वर्यताकूंप्राप्तहोवैहै ॥तात्पर्ययह॥ जैसे हिरण्यगर्भभगवान् जिसजिसपदार्थकीइच्छाकरैहै ॥ तिसतिसपदार्थकूं आपणीइच्छामात्रकरिकेउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे यहउपासकपुरुषभी कर्मउपासनाके प्रभावतैं सर्वपदार्थोंकूं आपणीइच्छामात्रकरिके उत्पन्नकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जोपुरुष मैंब्रह्महूं याप्रकारकीबुद्धिकरिके आनंदस्वरूपआत्माकूंसाक्षात्कारकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं यह संपूर्णअनात्मप्रपंच परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ जैसे तुमदेवतावोंकूं वमनकऱ्याहुआअन्न त्यागणेयोग्यहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ याआनंदस्वरूपआत्माकूंनजाणिकरिके जोपुरुष अन्यअनात्मपदार्थोंकूं जाणैहै॥तापुरुषकूं शास्त्रकेवेत्तामहात्मापुरुषअनात्मज्ञकहैहैं ॥ जैसे बालाकिब्राह्मण आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंनजाणिकरिकेप्राणकूंहीआत्माजाणताभया ॥ याकारणतैं सोअनात्मज्ञबालाकि श्रीकाशीविषे अजातशत्रुराजाकाशिष्य होताभया ॥ याकथाकूं तुम भलीप्रकारजाणतेहो ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न कोईभीअनात्मपदार्थ जानणेयोग्य नहीं ॥ अब आत्मातैंभिन्न सर्वपदार्थोंकूं अनात्मरूपकरिकेनिरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र॥ यास्थूलशरीरविषे अभिमानीजीवकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके जोस्थूलपदार्थोंकीप्रतीतिहोवैहै ॥ ताकूं शास्त्रविषेजाग्रत्अवस्थाकहैहैं सोजाग्रत्अवस्था ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय तथा ध्याता ध्यान ध्येय इत्यादिकत्रिपुटीस्वरूपहै ॥ और साक्षीचैतन्यकरिकेभास्यहै यातैं दृश्यरूपहै ॥ और जोजोदृश्यपदार्थहोवैहै ॥ सोसो

अनात्माहीहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ दृश्यहैं यातैंअनात्माहैं ॥ तैसे त्रिपुटीरूपजाग्रत्प्रपंचभी दृश्यहै ॥ यातैं अनात्माहीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकपदार्थोंकेउत्पत्तिकेयोग्य देशकालादिकोंकेअभावहुएभी पूर्वपूर्ववासनावोंकरिकैविशिष्ट हुआमन अनेकप्रकारकेपदार्थोंकूं स्वप्नविषेउत्पन्नकरैहै ॥ यातैं तेस्वप्नकेपदार्थ मायामात्रहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे देशकालादिकसामग्रीतैंवि नाहीं आकाशविषे गंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै यातैं सोगंधर्वनगर मिथ्याहै ॥ तैसे स्वप्नकेपदार्थभी मिथ्याहैं ॥ और उत्पत्ति नाशवान्हैं ॥ यातैं तेस्वप्नपदार्थभी आत्मारूपनहीं ॥ किंतु अनात्मारूपहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ पुरीततत्रूपीकोटकेमध्यविषेस्थितजोहृदयहै ॥ तिसहृदयविषे नाडीरूपमार्गद्वाराजाइकै सुषुप्तिअवस्थाविषे जोअज्ञानकरिकै युक्तहोवैहै ॥ सोअज्ञानविशिष्टजीवभी शुद्धआत्मातैंभिन्नहै॥ यातैं घटादिकोंकीन्याई सोभी अनात्मारूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जभी जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिविषेस्थितसर्वपदार्थ आत्मारूपनहींभये ॥ तभी तिनोंतैंभिन्न आत्माका कौनस्वरूपहै ॥ यहआप कृपाकरिकैकथनकरो ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सोआत्मा स्वप्रकाशस्वरूप है ॥ जोप्रकाश आपणेप्रकाशविषे तथाकिसीपदार्थकेप्रकाशविषे अन्यकिसीदूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैहै ॥ ताकूं वेदांतशास्त्रविषेस्वप्र काशकहैहैं ॥ ऐसास्वप्रकाशस्वरूप आत्माहै ॥ आत्मातैंभिन्नसंपूर्ण परप्रकाशहैं॥ शंका ॥ हेभगवन् यास्वप्रकाशआत्माकेलक्षणकी सूर्या दिकभौतिकप्रकाशविषे अतिव्याप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं सूर्यादिकप्रकाशभी आपणेप्रकाशविषे तथाघटादिकपदार्थोंकेप्रकाशविषे अन्यकिसी प्रकाशकीअपेक्षाकरतेनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सूर्यादिकभौतिकप्रकाश यद्यपि आपणेप्रकाशविषे तथा घटादिकपदार्थोंके प्रकाशविषे अन्यकिसीभौतिकप्रकाशकीअपेक्षाकरतेनहीं ॥ तथापि चैतन्यरूपअलौकिकप्रकाशकी सूर्यादिकप्रकाशभी अपेक्षाकरैहैं ॥ यातैं सूर्यादिकप्रकाशोंविषे स्वप्रकाशआत्माकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसआत्माका हृदयदेशविषेनिवास शास्त्रनैं कथनकऱ्याहै ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे जिसआत्माका मनविषेनिवास शास्त्रनैं कथनकऱ्याहै ॥ और जाग्र त्अवस्थाविषे जिसआत्माका स्थूलशरीरविषेनिवास शास्त्रनैं कथनकऱ्याहै ॥ तिनस्वप्रकाशआत्माका निषेधमुखकरिकै हम तुमारेताईं

उपदेशकरैहैं ॥ पूर्वतृतीयअध्यायकेअंतविषे यहकह्याथा ॥ देवराजइंद्रतैं भयकूंप्राप्तहुआ कौषीतकिनामाऋषि ॥ सत्यकासत्यहै यहजोब्रह्मकागुह्यनामहै ॥ तानामकूं अर्थसहित आपणेशिष्योंकेप्राति उपदेशनहींकरताभया ॥ अव तिसीअर्थकूं यहाँस्पष्टकरिकैनिरूपणकरे हैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सुषुप्तिअवस्थाकेप्राप्तहुए याजीवकेपंचज्ञानइंद्रिय तथापंचकर्मइंद्रिय तथाच तुष्टयअंतःकरण इनसंपूर्णोंका अज्ञानविषेलयहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाकेनिवृत्तहुए संपूर्णइंद्रियोंसहितअंतःकरण तिसीअज्ञानतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ और जोजोपदार्थ उत्पत्तिनाशवान्होवैहै ॥ सोसोपदार्थ घटादिकोंकीन्याई असत्यहीहोवैहै ॥ यातैं उत्पत्तिनाशवान्होणेतैं अंतःकरणसहितसकलइंद्रियअसत्यहैं ॥ औरसुषुप्तिअवस्थाकेप्राप्तहुए यद्यपि प्राण लयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथासुषुप्तिअवस्थाकेनिवृत्तहुए यहप्राण उत्पन्नहोवैनहीं यातैं प्राण सत्यहै॥तथापि यहआनंदस्वरूपआत्मा वास्तवतैंसत्यरूपहै॥ यातैंसत्यप्राणोंतैं उत्कृष्टहै ॥ और यहप्राण जडरूपहै॥तथा अनात्मारूपहै॥यातैं आनंदस्वरूपआत्मातैं यहप्राण अपकृष्टहै॥याअभिप्रायतैंही श्रुतिनैं ब्रह्मकूं सत्यकासत्यकह्याहै ॥ तहाँ प्रथमसत्यशब्दकरिके प्राणसहित संपूर्णभूतभौतिकप्रपंचका ग्रहणकरणा॥ ताप्रपंचरूपकार्यका यहआनंदस्वरूपपरमात्मा विवर्तउपादानकारणहै ॥ यातैं यहपरमात्मापुरुष सत्यकाभीसत्यहै ॥ शंका॥हेभगवन् ॥ प्राणसहितसंपूर्णभूतभौतिकप्रपंच अनित्यहै ॥ यातैं ताकूंसत्यकहणासंभवैनहीं॥समाधान॥हेदेवराजइंद्र॥ रूपादिकगुणोंतैंरहित जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ताकेसाक्षात्कारकरावणेवासतै ताब्रह्मकेदोरूप श्रुतिविषेकथनकरैहैं॥तहाँ प्रथमब्रह्मकारूप चारिविशेषणोंकरिकेयुक्तहै॥ तेचारिविशेषणयहहैं ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकेयोग्यहोणेतैं सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै॥यातैं ताकूं सत्यकहैहैं॥और देशकालादिकपरिच्छेदवालाहै॥ यातैंताकूं स्थितिमान् कहैहैं॥और प्रत्यक्षप्रमाणकरिकेसिद्ध जोअवयवोंकीरचनाविशेष ताअवयवरचनाकरिकेयुक्तहै॥यातैं ताकूं मूर्तकहैहैं और प्रत्यक्ष नाशवान्है यातैं ताकूं मर्त्यकहैहैं॥ इसप्रकार सत्य स्थितिमान् मूर्त मर्त्य याचारिविशेषणोंकरिकेयुक्त प्रथमब्रह्मकारूपहै॥तहाँ प्रथमसत्यरूपकासार सूर्यमंडलविषेस्थितहै॥ सोकेसाहैसूर्यमंडल ॥ संपूर्णजीवोंकूं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकेसिद्धहै ॥ और तप्तकरणेकाहैस्वभावजिसका॥ और परमेश्वरकाविग्रहहै ॥ ऐसेसूर्य

मंडलविषे प्रथमसत्यरूपकासार स्थितहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं सोसूर्यमंडल सर्वरूपादिकों काप्रकाशकहै ॥ अब चारिविशेषणोंकरिकैयुक्त ब्रह्मकेद्वितीयरूपकूंदिखावे हैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ ब्रह्मकाजोद्वितीयरूपहै॥सो परोक्षहोणेतैं केवलशास्त्रप्रमाणकरिकै जान्याजावैहै॥यातैं ताकूं श्रुतिविषे त्यत्कह्याहै॥और सर्वत्रव्यापकहै यातैं ताकूं गतिमान्कह्याहै॥और दृश्यमानअवयवरचनाविशेषतैंरहितहै॥यातैं ताकूंअमूर्तकहैं हैं॥और नाशतैं रहितहै यातैं ताकूं अमृतकहैं हैं ॥ इसप्रकार त्यत् गतिमान अमूर्त अमृत याचारिविशेषणोंकरिकैयुक्त ब्रह्मकाद्वितीयरूप कह्याहै॥तहाँसूर्यमंडलविषेस्थित समष्टिसूक्ष्मशरीरकाअभिमानीजोहिरण्यगर्भहै॥सोप्रथमत्यत्शब्दकेअर्थकासाररूपहै॥काहेतैंहिरण्यगर्भ केशरीरआरंभकरणेवासतैंहीं सूक्ष्मभूतोंकीउत्पत्तिहै॥इतनैंकरिकै ब्रह्मकेअधिदैवरूप दोस्वरूपोंकूंनिरूपणकऱ्या॥अबताब्रह्मकेअध्यात्मरूप दोस्वरूपोंकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥अध्यात्मरूपयासंघातविषेस्थित जोब्रह्मकेदोरूपहैं ॥ तिनदोनोंकाभीपूर्वकीन्याईसारभावजा नणा ॥ तहाँ चक्षु सत्पदार्थकासाररूपहै॥और दक्षिणनेत्रविषेस्थित जोसूक्ष्मव्यष्टिअभिमानीपुरुषहै ॥ सो त्यत्शब्दकेअर्थकासाररूपहै ॥ यादोनोंरूपतैंभिन्नपंचभूत असाररूपहै ॥ अब सत्शब्दकेअर्थकूं तथात्यत्शब्दकेअर्थकूंनिरूपणकरैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ पृथिवी जल तेज यहतीनोंभूत प्रत्यक्षज्ञानकेविषयहैं ॥ यातैं पृथिवीआदिकतीनभूतोंकूं श्रुति सत्शब्दकरिकैकथनकरैहै ॥ और वायु आकाश यहदोनोंभूत परोक्षज्ञानकेविषयहैं ॥ यातैं तिनदोनोंकूं श्रुति त्यत्शब्दकरिकैकथनकरैहै ॥अब स्थूलसूक्ष्मसमष्टिव्यष्टिकेअभेदकूंनिरूपण करैं हैं ॥ हेदेवराजइंद्र॥ सूर्यकाजोमंडलहै तथा पुरुषकाजोदक्षिणनेत्रहै यहदोनों पृथिवी जल तेजरूपहैं॥ यातैं तेदोनों परस्परअभिन्नहैं॥ और सूर्यमंडलविषेस्थितजोपुरुषहै ॥ तथा दक्षिणनेत्रविषेस्थितजोपुरुषहै ॥ सो अमूर्तपुरुष एकहीहै ॥ और स्थूलशरीरके अंतरहै ॥ यातैं तापुरुषकूं आत्माकहैंहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ स्थूलकूं जोपृथिवी जलतेज यातीनभूतरूपमानोंगे॥ तथा सूक्ष्मकूं जोवायु आकाश यादोनोंभूतरूपमानौगे॥तौ स्थूलकूं तथासूक्ष्मकूं शरीररूपतानहींसंभवैगी ॥ काहेतैं श्रुतिविषे सर्वशरीरोंकूं पंचभूतरूपकह्याहै ॥ ताश्रुति काविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ पंचीकरणप्रक्रियाकीरीतिसे पृथिवी जल तेज यातीनस्थूलभूतोंविषेआकाश वायु यहदो

नोंसूक्ष्मभूत विद्यमानहैं ॥ यातैं स्थूलकूं शरीररूपतासंभवैहै ॥ इसप्रकार सूक्ष्मकेआरंभकरणेहारे जे वायु आकाशहैं ॥ तिनदोनोंविषेभी सूक्ष्मरूपकरिकै पृथिवी जल तेज यहतीनोंभूतविद्यमानहैं ॥ यातैं ताअमूर्तसूक्ष्मकूंभी शरीररूपता संभवैहै ॥ अब सूक्ष्मशरीरके नाना प्रकारकेरूपोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ पूर्वपूर्ववासनावोंकरिकैजन्य तासूक्ष्मशरीरके नानाप्रकारकेरूपहैं ॥ तिनोंविषे कोईकरूपोंकूं हम तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ जिसकालविषे रजोगुणकरिकैयुक्तहुआ यहपुरुष स्त्रीआदिकपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ तिस कालविषे यहपुरुष हरिद्राकरिकैरंजितवस्त्रकेसमान रूपवाला होवैहै ॥ और जिसकालविषे यहपुरुष सत्त्वगुणकेप्रभावतैं श्रद्धादिकगुणों वालाहोवैहै॥तथारजोगुणकेप्रभावतैं क्रोधादिकोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे यहपुरुष किंचितशुक्लजोपर्वतकाकंबलहै ताकेसमानरूपवालाहोवैहै ॥ और जिसकालविषे यहपुरुष एकांतदेशविषेस्थितहुआभी रजोगुणकेप्रभावतैं विषयोंकास्मरणकरैहै ॥ तिसकालविषे यह पुरुष इंद्रगोपकेसमान अत्यंतरक्तवर्णवालाहोवैहै ॥ वर्षाकालविषेहोणेहारा जो अत्यंतरक्तरूपवान् कोईजंतुविशेषहै ताकूं इंद्रगोपकहैं हैं ॥ और जिसकालविषे यहपुरुष सत्त्वगुणकेप्रभावतैं विद्यायुक्तहुआभी रजोगुणकेप्रभावतैं लोकोंकेसाथ ईर्षाकरैहै ॥ तिसकालविषे यहपुरुष दाहशक्तिमान् तथाप्रकाशशक्तिमान् जोअग्निकीज्वालाहै ताकेसमानरूपवालाहोवैहै ॥और जैसे श्वेतकमल स्वभावतैंहीं शुद्ध तथाकोमल होवैहै ॥ तैसे किसीकालविषे यहपुरुष सत्त्वगुणकेप्रभावतैं जन्मतैंहीं शमदमादिकगुणोंवाला तथाकोमलस्वभाववाला होवैहै ॥ और जिस कालविषे यहपुरुष शुद्धसत्त्वगुणकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे यहपुरुष विद्युत्केसमान सर्वप्रकाशकज्ञानवालाहोवैहै ॥ जैसे हिरण्य गर्भभगवान् सर्वपदार्थविषयकज्ञानवालाहै॥और हेदेवराजइंद्र॥जेसकामपुरुषहैं तिनोंकूंहीं उपासनाकेप्रभावतैं हिरण्यगर्भकीन्यांई सर्वज्ञता प्राप्तहोवैहै॥और सा सर्वज्ञता उपासनारूप मानसकर्मकरिकैजन्यहोणेतैं अनित्यहै॥यातैं मुमुक्षुजनोंनैं तासर्वज्ञताकीभीइच्छानहींकरणी॥ तात्पर्ययह ॥ जितनीकपदार्थोंकीकामनाहैं ॥ तेसंपूर्णआत्मरूपआनंदकाप्रतिबंधकहैं॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनैं सर्वकामना परित्यागकरणेयोग्य हैं॥हेदेवराजइंद्र॥इसप्रकार पुण्यपापरूपकर्मकरिकै तथावासनावोंकरिकै जन्य सहस्त्ररूप अमूर्तसूक्ष्मपुरुषकेहैं॥तिनसर्वरूपोंकेकथनकरणे

विषे हम समर्थनहींहैं ॥ तथा भगवतीश्रुतिभी तिनसर्वरूपोंकेकथनकरणेविषेसमर्थनहीं ॥ यातें संक्षेपतें तुमारेप्रतिहमनैंकथनकरेंहैं ॥ अब मूर्त अमूर्त यादोनोंरूपोंकेनिषेधकरणेवासतें प्रथम तिनोंविषेअविद्याकाकार्यपणा दिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र जैसे तंतुवोंकाकार्यजोपटहै ॥ तिसपटविषे तंतु अनुगतहोइकेरहेहैं॥ तैसे स्थूलसूक्ष्मरूप जोयहप्रपंचहै॥सो अविद्यातें उत्पन्नभयाहै॥यातें सोकारणरूपअविद्या संपूर्णप्रपंचरूपकार्यविषे अनुगतहोइकैरहेहै ॥ और हेदेवराजइंद्र॥जैसे पटादिकपदार्थ तथातिनोंकेकारणतंतुआदिक दृश्यहैं यातें अनात्माहैं ॥ तैसे स्थूलसूक्ष्मप्रपंच तथातिनदोनोंकाकारणअविद्या यहतीनोंभी दृश्यरूपहैं यातें अनात्माहीहै ॥शंका॥हेभगवन्॥ स्थूलसूक्ष्मरूपकार्यप्रपंच तथा ताकाकारणमाया यहदोनों दृश्यरूपहैं यातेंआत्मामतहोवे ॥ परंतु तिनदोनोंकाअभावरूप जोनिषेधहै॥ सो आत्मा काहेतेंनहींहोवे॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे प्रपंचरूपकार्य तथाअविद्यारूपकारण आत्मानहींहैं ॥ तैसे तिनोंकाअभावरूपनिषेधभीआत्मानहींहै ॥ काहेतें जैसीप्रतियोगीकीसत्ताहोवैहै ॥ तैसीही ताकेअभावकीसत्ताहोवैहै जैसे शुक्तिविषेप्रतीतभयाजोरजतहै सो कल्पितहै ॥ यातें ताकल्पितरजतकाअभावभी कल्पितहीहोवैहै ॥ तैसे अनात्मप्रपंचकाअभावभी अनात्माहीहोवैहै यातें हेदेवराजइंद्र ॥ सर्वअनात्मप्रपंचका निषेधकरिके यहजोआनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश हमनें तुमारेप्रतिकऱ्याहै ॥ इसतेंअधिकउपदेश कोईभीब्रह्मवेत्तागुरु शिष्यकेप्रति करतानहीं॥किंतु संपूर्णब्रह्मवेत्तागुरु सर्वप्रपंचकानिषेधकरिके याआनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश आपणेशिष्योंकेप्रति करेंहैं॥शंका॥हेभगवन्॥ प्रपंचकेनिषेधतैंविनाही तूंआनंदस्वरूपब्रह्महै याप्रकारविधिमुखकरिके आत्माकाउपदेश गुरु काहेतैंनहींकरता॥समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा मनवाणीकाअविषयहै॥यातें विधिमुखकरिके आत्माकेउपदेशकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ याकारणतैंहीं ब्रह्मवेत्तागुरुवोंनें सर्वअनात्माप्रपंचकानिषेधकरिके मुमुक्षुजनोंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरीताहै॥तात्पर्ययह॥ब्रह्मकाउपदेश दोप्रकारकाहोवैहै॥एकतो विधिमुखकरिकेउपदेश॥ और दूसरा निषेधमुखकरिकेउपदेश॥तहां यहअंतर्यामीआत्मा ब्रह्मस्वरूपहै तथासत्यरूपहै तथाज्ञानरूपहै तथा आनंदस्वरूपहै तथापरिपूर्णरूपहै॥याप्रकारकेउपदेशकूं विधिमुखउपदेशकहेहैं ॥ और यहआनंदस्वरूप आत्मा कार्यरूपनहीं

तथा कारणरूपनहीं तथास्थूलरूपनहीं तथा सूक्ष्मरूपनहीं ॥ याप्रकारकेउपदेशकूं निषेधमुखउपदेशकेहैहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंविषे निषेधमुख उपदेशकी उत्कृष्टताकहणेवासतै प्रथम विधिमुखउपदेशविषे अपकृष्टताकूंदिखावैंहैं॥ हेदेवराजइंद्र ॥ तूंब्रह्मरूपहै तथा मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका विधिमुखकरिकेबोध जोहमनैंपूर्व तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ सोविधिमुखबोध शब्दकेअनुगमकरिकेविशिष्टहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं मनवाणीकेअविषयआत्माविषे सोविधिमुखबोध संभवेनहीं ॥ किंवा ॥ तत्त्वमसि ॥ अर्थयह ॥ सोब्रह्मतूंहै ॥ याप्रकार विधिमुखकरिके प्रवृत्तभयाजोबोधहै ॥ ताकेविषे तत्पदकेअर्थका तथात्वंपदकेअर्थका परस्परअभेद प्रतीतहोवैहै ॥ सोसंभवेनहीं ॥ काहेतैं तत्पदकाअर्थजोमायाविशिष्टईश्वरहै ॥ ताकेविषेतो सर्वज्ञपणा तथापरोक्षपणा रहैहै ॥ और त्वंपदकाअर्थ जोअविद्याविशिष्टजीवहै ॥ ताकेविषे अल्पज्ञपणा तथाअपरोक्षपणा तथादुःखीपणा रहैहै ॥ याप्रकार विरोधीधर्मवालेतत्त्वंपदार्थका परस्परअभेद संभवेनहीं ॥ किंतु जैसे अग्नि तथाबरफ परस्परविरुद्धधर्मवालेहैं ॥ यातैं तिनोंकापरस्परभेदहै ॥ तैसेविरुद्धधर्मवालेतत्त्वंपदार्थकाभी परस्परभेदहीसंभवैहै ॥ याप्रकारकीआशंकाकेनिवृत्तिवासतै ॥ तथातत्त्वंपदार्थकेअभेदकीसिद्धिवासतै तत्त्वं यादोनोंपदोंविषे भागत्यागलक्षणा अंगीकारकरणीहोवैगी (जहां पदकेवाच्यअर्थकेएकदेशकापरित्यागकरिके एकदेशकाग्रहणहोवै ॥ ताकूं भागत्यागलक्षणाकहैहैं)॥ यहां तत्पदकावाच्यअर्थ ईश्वरहै ॥ ताकेविषे दोभागहैं ॥ एकतो चैतन्यभागहै ॥ और दूसरा माया तथामायाकृतसर्वज्ञत्वादिकधर्म भागहै तहां माया तथासर्वज्ञत्वादिकधर्मरूप द्वितीयभागकापरित्यागकरिके प्रथम चैतन्यभागविषे तत्पदकीलक्षणाकरणी ॥ इसप्रकार त्वंपदकावाच्यअर्थजोजीवहै ॥ ताकेविषेभीदोभागहैं ॥ एकतो चैतन्यभागहै ॥ और दूसरा अविद्या तथाअविद्याकृतअल्पज्ञत्वादिकधर्म भागहै तहां अविद्या तथाअविद्याकृतअल्पज्ञत्वादिकधर्मरूप द्वितीयभागकापरित्यागकरिके चैतन्यरूपप्रथमभागविषे त्वंपदकी लक्षणाकरणी ॥ तिनदोनोंचैतन्यभागोंका परस्परअभेदसंभवैहै ॥ याप्रकार लक्षणावृत्तिकूंअंगीकारकरिके जोविधिमुखउपदेशहै ॥ सो केवल क्लेशकाहेतुहै ॥ किंवा ॥ विधिमुखकरिके आत्माकेउपदेशविषे अनुमानप्रमाणकोअपेक्षारूप गौरवदूषणकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं सत्

चित्‌आनंदस्वरूप जोत्वंपदकाअर्थ है॥ताका जैसेअधिकारीपुरुषकेस्वरूपविषे भेदनहींहैं॥तैसे सर्वजीवोंकेआत्माविषेभी ताकाभेदनहींहै॥ तैसेतत्‌पदार्थविषेभीताकाभेदनहीं है॥ याप्रकारकेअर्थकूंसिद्धकरणेहारा जोअनुमानप्रमाणहै॥ताको अवश्यअपेक्षाकरणीहोवैगी॥ताअनुमानकाप्रकारयहहै ॥ त्वंपदकाअर्थ जोजीवहै ॥ सो परमात्मातैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपहोणेतैं॥ अधिकारीपुरुषके आत्माकीन्याई ॥ याप्रकारकेअनुमानप्रमाणकीअपेक्षा विधिमुखउपदेशकूंहै ॥ यातैं विधिमुखउपदेश अपकृष्टहै ॥ किंवा ॥ विधिमुखउपदेशविषे तत्‌पदार्थके तथात्वंपदार्थके शोधनतैंविना तिनदोनोंकापरस्परअभेद संभवैनहीं ॥ यातैं तत् त्वं पदार्थकाशोधन अवश्यकन्याचाहिये ॥ और देहादिकजडपदार्थोंकीव्यावृत्तितैंविना तत्‌त्वंपदार्थकाशोधन होवैनहीं ॥ यातैं देहादिकजडपदार्थोंकीव्यावृत्ति अवश्यकरीचाहिये ॥ और सोदेहादिकजडपदार्थोंकीव्यावृत्ति युक्तिरूपअनुमानतैंविना सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं देहादिकजडपदार्थोंकीव्यावृत्तिवासतैं अनेकप्रकारकेअनुमानोंकीअपेक्षा करणीहोवैगी ॥ याप्रकार अनेकअनुमानोंकीअपेक्षारूपगौरवदोष विधिमुखउपदेशविषे प्राप्तहोवैहै ॥ यातैंभी विधिमुखउपदेश अपकृष्टहै ॥ किंवा॥विधिमुखउपदेशविषे जिसजिसअनुमानकीअपेक्षाहोवैहै ॥ सोअनुमानभी स्वतंत्रहुआ किसी अर्थकीसिद्धिकरैनहीं ॥ किंतु अन्यप्रमाणकीअपेक्षाकरैहै ॥ जो अनुमानप्रमाण अन्यकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहींकरै ॥ तो ताकेविषे अनुमानपणाहीं नहींरहैगा ॥ काहेतैं अनुमान याशब्दविषे दोपदहैं ॥ एकतो अनुपद है ॥ और दूसरा मानपदहै॥तहांअनुपदकाअर्थ पश्चात्‌भावीहै ॥ और मानपदकाअर्थ प्रमाणहै॥तादोनोंपदोंकामिलिकरिके पश्चात्‌भावीप्रमाण याप्रकारकाअर्थहोवै है॥जोअनुमानप्रमाण किसीप्रमाणकीअपेक्षानहींकरैगा ॥ तो अनुमान याप्रकारकाशब्द ताकेविषेव्यर्थहोवैगा ॥ याकहणेतैंयहसिद्धभया ॥ जीवजोहै सो ब्रह्मतैंअभिन्नहै ॥ काहेतैं सत्‌चित्‌आनंदरूपहोणेतैं ॥ अधिकारीपुरुषकेआत्माकीन्याई ॥ याप्रकार जीवब्रह्मकेअभेदकासाधक जो अनुमानहै ॥ तथा देहादिकजेहैं ते अनात्माहोणकूंयोग्यहैं ॥ काहेतैं जडहोणेतैं तथादृश्यहोणेतैं तथापरिच्छिन्नहोणेतैं ॥ घटादिकोंकी न्याई ॥ याप्रकार देहादिकोंविषे अनात्मताकासाधक जेअनुमानहैं॥ तिनअनुमानोंका कोईमूलरूप प्रमाण कह्याचाहिये ॥ जिसमूलरूप

प्रमाणकीसहायतातैं ते अनुमान विधिमुखउपदेशविषे सहायताकरैं ॥ जैसे धूमरूपहेतुतैं पर्वतविषे अग्निकाअनुमान तभीहोवैहै ॥ जभी प्रथम गृहादिकोंविषे प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै धूमरूपहेतुविषे अग्निकेव्याप्तिकाज्ञानहोवैहै ॥ व्याप्तिज्ञानतैंविना धूमरूपहेतुतैं पर्वतविषेअग्निका अनुमानहोवैनहीं॥यातैं धूमविषे व्याप्तिकूंग्रहणकरणेहारा तथा पर्वतविषे धूमकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रत्यक्षप्रमाणहै॥सो पर्वतविषेअग्निकेअनुमानका मूलरूपहै ॥ तैसे यहांप्रसंगविषे जडत्वादिकहेतुवोंकरिकै जोदेहादिकोंविषे अनात्मताकाअनुमानहै ॥ तिसविषेभी जडत्वादिकहेतुवोंविषे अनात्मतारूपसाध्यकेव्याप्तिज्ञानवासतै तथाजडत्वादिकहेतुकेज्ञानवासतै अन्यकिसीप्रमाणकीअपेक्षाहोवैगी ॥ तहां प्रत्यक्षप्रमाणतौ ताअनुमानकामूलहोवैनहीं ॥ काहेतैं दृष्टांतरूपघटादिकोंविषे यद्यपि जडत्वादिकहेतु प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धहै तथापि अनात्मतारूपसाध्यका घटादिकोंविषेप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ काहेतैं आत्माकेभेदकानाम अनात्मताहै ॥ सो आत्माकाभेद अन्योन्याभावरूपहै ॥ और प्रतियोगीकेज्ञानतैंविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं प्रतियोगीरूपआत्माकेप्रत्यक्षतैं विना ताकेभेदकाप्रत्यक्षसंभवैनहीं ॥ यातैं पूर्वउक्तअनुमानका प्रत्यक्षप्रमाण मूलनहीं ॥ किंवा ॥ जडत्वरूपहेतुकरिकै देहादिकोंविषे अनात्मताकासाधकजो पूर्वअनुमानहै ॥ तिस अनुमानविषे दृष्टांतरूपजेघटादिकहैं ॥ तिनोंविषे यद्यपि सोअनात्मता प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैदेखीहै ॥ तथापि सोअनात्मता तिनघटादिकोंविषेहीरहैहै ॥ घटादिकोंतैंभिन्न देहादिकोंविषे सोअनात्मता रहैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटकूंविषयकरणेहाराजो यहघटहै याप्रकारकाज्ञानहै ॥ सोज्ञान घटविषे स्तंभता धर्मकूंविषयकरैनहीं ॥ तथापि सोस्तंभता धर्म स्तंभतैंनिवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु स्तंभविषेवर्तै है॥ तैसे घटादिकदृष्टांतोंविषे आत्मता धर्म मतहोवै ॥ तथापि सोआत्मताधर्मदेहादिकोंविषेरहैगा ॥ याविपरीतअर्थकेमानणेविषे कोईबाधकतर्कहैनहीं शंका ॥ आत्मा चैतन्यहोवैहै ॥ जोदेहही आत्माहोवै ॥ तौ देहविषेजडता नहींहोणीचाहिये ॥ और देहविषेजडता प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं देह आत्मानहीं ॥ याप्रकारकीतर्क देहकेआत्मताका बाधकसंभवैहै ॥ समाधान ॥ जेचारिवाकनास्तिक आत्मताधर्म देहकाही स्वभावमानैं हैं ॥ तिसकेआगेयहतुमारातर्क संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे घटादिकोंविषेरहेहुए जडत्वदृश्यत्वादिकधर्म घटादिकोंकेस्वभावकूं नि

वृत्तकरैनहीं ॥ तैसे देहविषेरहेहुए जडत्वदृश्यत्वादिकधर्मभी देहकेआत्मतास्वभावकूंनिवृत्तकरैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे सत्तानामाजाति द्रव्य गुण कर्म यातीनपदार्थोंविषेरहेहै ॥ परंतु सोसत्ताजाति तिनद्रव्यादिकोंकेस्वभावकूंअन्यथाकरैनहीं ॥ तैसे जडत्व दृश्यत्वादिकधर्म आत्माविषे तथाअनात्माविषे रहें हैं ॥ परंतु तिसआत्माके तथाअनात्माके स्वभावकूं अन्यथाकरैनहीं ॥ याप्रकार मानणेविषे देहात्मवादीचारवाककूं कोईबाधकतर्कहैनहीं ॥ जिसबाधकतर्ककेभयतैं जडत्वदृश्यत्वादिकधर्म आत्माविषेनहीं अंगीका रकरे ॥ तात्पर्ययह ॥ जहां धूमरूपहेतुतैं अग्निकाअनुमानहोवैहै ॥ तहां धूमरूपहेतु कार्य हैं ॥ और अग्निताधूमकाकारणहै ॥ जो अग्नितैंविना धूमकीस्थिति कहांअंगीकारकरिये ॥ तो धूमका तथाअग्निका परस्परकार्यकारणभाव नहींरहेगा ॥ याप्रकारकीतर्क तहां बाधकहै ॥ और यहांप्रसंगविषे अनात्मतारूपसाध्यतैंविनाभी जोजडत्वदृश्यत्वादिकधर्म अंगीकारकरिये ॥ तो याकेविषेकोईबाधक तर्कहैनहीं ॥ काहेतैं जडत्वदृश्यत्वादिकधर्मोंका जोअनात्मताधर्म कारणहोवै ॥ तो अनात्मताधर्मरूपीसाध्यतैंविना जडत्वदृश्यत्वा दिकधर्मरूपहेतु नहींरहैं ॥ सोतिनोंका परस्परकार्यकारणभावहैनहीं ॥ यातैं आत्माविषे जडत्वदृश्यत्वादिकधर्मोंके अंगीकारकरणे विषे कोईबाधकतर्क देहात्मवादीकूंहैनहीं ॥ शंका ॥ आत्माकासर्वत्रचैतन्यरूपकरिकेही अनुभवहोवै है ॥ जोजडदेहकूंहींआत्मामानोगे ॥ तो ताअनुभवकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ आत्माकाजोचैतन्यरूपकरिकेअनुभवहोवैहै ॥ ताअनुभवविषे कौनकरणहै ॥ नेत्रादिक बाह्यइंद्रिय करणहैं अथवा मन करणहै ॥ तहां चैतन्यरूपकरिकेआत्माकेअनुभवविषे नेत्रादिक बाह्यइंद्रिय करणहैं यहप्रथमपक्षतो संभवैनहीं ॥ काहेतैं बाह्यअनात्मपदार्थोंके विषयकरणेकरिकेभी नेत्रादिकइंद्रियोंकूं बाह्यइंद्रियकहैहैं ॥ तेनेत्रादिकइंद्रिय जभीअंतरआ त्माकूंविषयकरैंगे ॥ तभी तिनोंविषे बाह्यइंद्रियपणा नहीं रहेगा ॥ यातैं नेत्रादिकबाह्यइंद्रिय आत्माकूं चैतन्यरूपकरिकेग्रहणकरैनहीं ॥ किंवा ॥ चैतन्यरूपकरिकेआत्माकेअनुभवविषे मनकरणहै यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जोआत्माकूंचैतन्यरूपकरिके मन ग्रहण करे ॥ तो आत्माविषेजडत्वादिकधर्मोंकाविरोधहोवै सोमन आत्माकूंचैतन्यरूपकरिके ग्रहणकरतानहीं॥किंतु अहंअस्मि याप्रकार आत्मा

केसत्तामात्रकूं मन ग्रहणकरैहै ॥ यातैं आत्माविषे जडत्वादिकधर्मोंकानिवारणहोवैनहीं ॥ शंका ॥ अहंअस्मि याप्रकारकाज्ञान यद्यपि आत्माकेचैतन्यरूपताकूंविषयकरैनहीं ॥ तथापि अहंजानामि याप्रकारकाज्ञान आत्माकेचैतन्यरूपताकूंविषयकरैहै ॥ समाधान ॥ जैसे तांबूलकेयोगकरिके पुरुषोंकेमुखविषेरक्ततताउत्पन्नहोवै है तैसे मनकेयोगकरिके आत्माविषेउत्पन्नभई जोचैतन्यताताचैतन्यताकूंहीं अहंजानामि याप्रकारकाअनुभव विषयकरै है ॥ शुद्धआत्माकेचैतन्यताकूं सोअनुभव विषयकरैनहीं यातैं आत्माकेजडत्वादिकधर्मका विरोधी जोचैतन्यपणाहै ॥ ताकूं कोई प्रत्यक्षप्रमाण विषयकरैनहीं ॥ किंवा ॥ जभी आत्माकेचैतन्यताविषे प्रत्यक्षप्रमाणकी प्रवृत्तिनहीं भई ॥ तभी वादीकूं नित्यहीपरोक्ष जेआत्माकेव्यापकतादिकधर्म हैं ॥ तिनोंविषे प्रत्यक्षप्रमाणकोप्रवृत्ति किसप्रकारहोवैगी ॥ किंतु नहीं होवैगी ॥ इतनैंकहणेकरिकेयहसिद्धभया ॥ विधिमुखउपदेशके सहायताकरणेवासतै प्रवृत्तभयेजे पूर्वउक्तअनुमान ॥ तिनअनुमानों की मूलकारणताप्रत्यक्षप्रमाणविषेसंभवैनहीं ॥ यातैं मूलकारणकेअभावहोणेतैं ते अनुमान आत्माकेनिर्णयविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं पूर्वउक्तदोषोंकीनिवृत्तिवासतै श्रुतिप्रमाणहीं तिनअनुमानोंकामूलरूप मानणाहोवैगा ॥ सोश्रुतियहहै ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म आनंदोब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्म सत्यरूपहै ॥ तथाज्ञानरूपहै तथाअनंतरूपहै तथाआनंदरूपहै ॥ याप्रकारकेश्रुतिरूप मूलप्रमाणोंकूं अंगीकारकरिके तेपूर्वउक्त अनुमान विधिमुखउपदेशविषे सहायताकरैंहैं ॥ किंवा जिसश्रुतिरूपमूल प्रमाणकीसहायतातैं पूर्वउक्तअनुमान विधिमुखउपदेशकीसहायताकरैं हैं ॥ ते श्रुतिवाक्यहो निषेधमुखउपदेशकेप्रधानताकूं बोधनकरैं हैं ॥ काहेतैं सत्यादिकपदोंकी शक्तिवृत्तिकरिकेशुद्धब्रह्मविषे प्रवृत्ति किसीविद्वान्नैं अंगीकारकरीनहीं ॥ किंतु ॥ भागत्यागलक्षणाकरिके सत्यादिकशब्द ब्रह्मकूंबोधनकरैं हैं ॥ तहां सत्यशब्द असत्यकीव्यावृत्तिकरिके ब्रह्मकूंबोधनकरैहै ॥ और ज्ञानशब्द अज्ञानकीव्यावृत्तिकरिके ब्रह्मकूंबोधनकरैहै ॥ और अनंतशब्द देश काल वस्तु परिच्छेदकीव्यावृत्तिकरिके ब्रह्मकूंबोधनकरैहै ॥ और आनंदशब्द दुःख कीव्यावृत्तिकरिके ब्रह्मकूंबोधनकरैहै ॥ इसप्रकार संपूर्णसत्यादिकशब्द असत्यादिकधर्मोंकानिषेधकरिके शुद्धब्रह्मकूं बोधनकरै है ॥ यातैं तेसंपूर्णश्रुतिवाक्य निषेधमुखउपदेश

केही प्रधानताकूंबोधनकरें हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ श्रुतिवाक्य निषेधमुखकरिके ब्रह्मकूं किसवासतें बोधनकरें हैं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहअद्वितीयब्रह्म सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभेदोंतेंरहितहुआ आपणेमहिमाविषेस्थितहै ॥ ऐसेनिर्गुणब्रह्मकूं जेश्रुतिवाक्य किसीगुणविशिष्टरूपकरिके बोधनकरेंगे ॥ तो तिनश्रुतिवाक्योंविषे अप्रामाण्यतादोषकोप्राप्तिहोवेगी ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सर्पत्वधर्मतेंरहितरज्जुकूं सर्परूपकरिकेबोधनकरणेहारा जो यहसर्पहै ॥ याप्रकारकावाक्यहै ॥ तिसवाक्यकूं लोकविषे अप्रमाणमानें हैं ॥ तैसे सर्वधर्मोंतेंरहित निर्गुणब्रह्मकूं किसीगुणविशिष्टरूपकरिके बोधनकरणेहारा विधिवाक्यभी अप्रमाणहोवेगा ॥ यातें आपणेअप्रमाणतादोषकीनिवृत्तिवासते संपूर्णसत्यादिकवाक्य निर्गुणब्रह्मकूं निषेधमुखकरिकेबोधनकरें हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सर्वभेदतेंरहित एकअद्वितीयब्रह्म यालोकविषे प्रसिद्धहैनहीं ॥ यातें ताअप्रसिद्धब्रह्मकूं शास्त्र कैसेबोधनकरेगा ॥ प्रसिद्धपदार्थकूंही शब्द बोधनकरैहै ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ लोकप्रसिद्धअर्थकूंही शास्त्र बोधनकरैहै ॥ यहनियम सर्वत्रनहीं ॥ किंतु लोकविषेअप्रसिद्धपदार्थकूंभी शास्त्र बोधनकरैहै ॥ जैसे यूपशब्दकाअर्थ यद्यपि लोकविषेअप्रसिद्धहै ॥ तथापि यूपंतक्षति याप्रकारकेवेदवचनतें संस्कारकरिकेविशिष्ट काष्ठविशेष यूपशब्दकाअर्थप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे लोकविषे यद्यपि अद्वितीयनिर्गुणब्रह्म अप्रसिद्धहै ॥ तथापि सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म इत्यादिकश्रुतिवचनोंकेविश्वासतें बुद्धिमान्पुरुषोंकरिके सोनिर्गुणब्रह्म जानणेयोग्यहै ॥ अब विधिमुख उपदेशकूं तथानिषेधमुखउपदेशकूं लक्षणकरिके तथालोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिके निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ याआनंदस्वरूपआत्माकेबोधनकरणेवासतें शास्त्रकी दोप्रकारकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ एकतो विधिमुखकरिकेप्रवृत्तिहोवै है ॥ और दूसरी निषेधमुखकरिकेप्रवृत्तिहोवै है ॥ यहदोनोंप्रकारकीप्रवृत्ति अधिकारीजनोंकेबुद्धिअनुसार होवै है ॥ अब विधिमुखउपदेशकूंदिखावे हैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे कोईधनीपुरुष गोशालाविषेजाइके गोपालपुरुषतेंपूछे ॥ हमारीगोकौनहै और आगेतेंसोगोपालपुरुष तागौकेशृंगकूंपकडिकरिके ताधनीपुरुषकूंदिखावै ॥ यहतुमारीगौहै ॥ याकूं शृंगग्राहिकान्यायकहैहैं ॥ इसप्रकार शृंगग्राहिकान्यायकरिके जोशास्त्र आत्माकूंबोधनकरे है ॥ ताकूं विधिशास्त्रकहे हैं ॥दृष्टांत॥ जैसे तुमारेहस्तविषेआमलकफलहै यह

लौकिकविधिवाक्यहै ॥ इसप्रकार कोईविधिवाक्य आनंदस्वरूपआत्माकूंबोधनकरेनहीं ॥ काहेतें यहआत्मा मनवाणीकाअविषयहै ॥ यातें सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म इत्यादिकविधिवाक्यभी असत्यादिकोंकीव्यावृत्तिद्वाराही शुद्धआत्माविषेप्रवृतहोवेहैं ॥ अब निषेधशास्त्रकूं लक्षण करिकै तथालोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै निरूपणकरैहै ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ भ्रांतपुरुषोंनें लक्ष्यरूपकरिकै अंगीकारकरेजेअनेकपदार्थ ॥ तिन सर्वोंकानिषेधकरिकै परिशेषतैंवास्तवलक्ष्यपदार्थकूं जोशास्त्र अर्थतैंबोधनकरैहै ताकूं निषेधशास्त्र कहैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रथअश्वादिक नानाप्रकारकीसेनाकरिकैयुक्त जोकोईकराजाहै ॥ तिसकूं नजाणिकरिकै कोईकमूढबालक आपणेपितासैंपूछताभया ॥ यासर्वसमाज विषे कौनराजाहै ॥ याप्रकार बालककेवचनकूंश्रवणकरिकै ताबालककेप्रति राजाकेजनावणेकीइच्छाकरताहुआ सोपिता प्रथम यहराजाहै याप्रकारकेवचनकूंनहींकहताभया ॥ किंतु याप्रकारकाविचार आपणेमनविषे करताभया ॥ याबालककेप्रति प्रथमहीं यहरा जाहै याप्रकारकावचन जोमैंकहोंगा ॥ तौ यहबालक मूढबुद्धिहै ॥ यातें किसीअन्यपुरुषकूं अथवा किसीछत्रचामरादिकसामग्रीकूं राजा रूपकरिकैमानैगा ॥ यातें यहराजाहै ॥ याप्रकारककावचन प्रथम याबालककेप्रति कहणायोग्यनहीं ॥ किंतु राजातेंभिन्न सर्वपदार्थोंका निषेध मैंकरों ॥ परिशेषतैं सर्वपदार्थोंतैंविलक्षणराजाकूं यहबालक आपहीजाणैगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोपिता ताबालककेप्रति कहताभया ॥ हेपुत्र यहजेवृक्ष दीसैं हैं तेभीराजानहीं ॥ और यहअश्वभी राजानहीं ॥ और यहहस्तिभीराजानहीं ॥ और यहरथभी राजा नहीं ॥ और यहपदातिपुरुषभी राजानहीं ॥ और नानाप्रकारकेआयुधोंकूंधारणकरणेहारे जे यहपुरुषहैं तेभी राजानहीं ॥ और यहविचि त्रतुर्याभी राजानहीं ॥ और यहश्वेतछत्रभी राजानहीं ॥ और यहचामरभी राजानहीं ॥ और छत्र चामर तुर्यादिकहैं हस्तविषेजिनोंके ऐसेजेयहपुरुषहैं तथास्त्रियांहैं तेभी राजानहींहैं ॥ और यहनीलकंचुकवालापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहपीतकंचुकवालापुरुषभी राजा नहीं ॥ और यहरक्तकंचुकवालापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहचित्र वस्त्रोंकूंधारणकरणेहारापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहसुवर्णमयखड्ग कूंधारणकरणेहारापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहस्वर्णमयधनुषकूं धारणकरणेहारा पुरुषभी राजानहीं ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै सोपिता

राजातैंभिन्नसर्वपदार्थोंका निषेधकरताभया ॥ तिसतैंअनंतरसोबालक परिशेषतैं सर्वतैंविलक्षणरूपकरिकै राजाकूंप्रत्यक्षदेखताभया ॥ कैसाहैसोराजा॥स्वर्ण केसमानउज्ज्वलहैंअंगजिसके॥और श्वेतछत्रहैमस्तकउपरजिसके॥और समीपवर्तिजेगनिकाहैं॥तिनोंकेहस्तरूपीकमलोंविषेविचरणेहारे जेचामररूपीहंसहैं ॥ तिनोंकरिकैसेवितहैमस्तकजिसका ॥ और श्वेतदुकूलकूंधारणकऱ्याहैजिसनें ॥ और दिव्यहैकांतिजिसकी ॥ ऐसेराजाकूं सर्वसेनातैंविलक्षणरूपकरिकै सोबालक प्रत्यक्षदेखैहै ॥ इसप्रकार निषेधशास्त्रभी एकआत्माकूंछोडिकरिकै अन्य सर्वस्थूल सूक्ष्मप्रपंचका निषेधकरैहै ॥ तिसनिषेधतैंअनंतर यह अधिकारीपुरुष सर्वप्रपंचतैंविलक्षणरूपकरिकै आत्माकूं आपहींनिश्चय करैहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ यहनिषेधमुखकरिकैउपदेशही आत्माकेबोधकरणेविषे श्रेष्ठउपायहै ॥ जोयहनिषेधमुखउपदेश नहींअंगीकारकरिये ॥ तो भावअभावतैंरहित निर्गुणपरमात्माकूं कौनबोधनकरैगा ॥ किंतु निषेधमुखउपदेशतैंविना निर्गुणपरमात्माकेबोधकरणेविषे कोईभीवाक्य समर्थनहीं यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ महावाक्यकालक्ष्यरूप जो अद्वितीयआत्माहै ॥ सो मनवाणीकाअविषयहै ॥ और शब्दकी प्रवृत्तिकेनिमित्त जे जाति गुण क्रियादिकहैं ॥ तिनोंतैं यह आत्मारहितहै ॥ यातैं सत्यादिकश्रुतिवाक्यभी ताआत्माकूं साक्षात् प्रतिपादनकरिसकैनहीं ॥ ऐसे अद्वितीयआत्माकूं कौनपुरुष मनकरिकैविषयकरैगा ॥ किंतु कोईभीपुरुष मनकरिकै आत्माकेजानणेविषे समर्थ नहीं ॥ ऐसेअद्वितीयआत्माकेबोधकरणेवासतै जबी निषेधशास्त्र स्थूलसूक्ष्मरूपसर्वजगत्कानिषेधकरैहै तबी सोआनंदस्वरूपआत्मादेव आपहीं अधिकारीपुरुषोंकेहृदयविषे प्रकाशमान होवैहै॥ दृष्टांत॥ जैसे दीपक मंदिरविषेप्राप्तहोइके नेत्रोंकूंआवरणकरणेहाराजोअंधकारहै ताकीनिवृत्तिमात्रकरैहै ॥ इतनाहीं दीपककाउपयोगहै॥अंधकारकीनिवृत्तिहुएतैंअनंतर नेत्रवान्पुरुष स्वतंत्रहीं घटादिकपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ तैसे यहभावअभावरूप तथाकार्यकारणरूप तथास्थूलसूक्ष्मरूप संपूर्णजगत् आत्मानहींहै याप्रकार जभी निषेधशास्त्र कथनकरैहै ॥तभी अधिकारीपुरुष आपहीं आत्माकूंसाक्षात्कारकरैहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ अद्वितीयआत्माकेबोधवासतै यहनिषेधमुखउपदेशही उत्कृष्टहै काहेतैं जैसे विधिमुखउपदेशविषे तत्त्वंपदार्थकेशोधनकी तथाअनुमानादिकोंकी अपेक्षाहै ॥ तैसे निषेधमुखउपदेशविषे किसीअनुमाना

दिकोंकीअपेक्षाहैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ नेतिनेति याप्रकारकीश्रुतिनें मूर्तअमूर्तरूपप्रपंचकानिषेधकऱ्याहै ॥ तिसमूर्तअमूर्तप्रपंचतैं भिन्न जेकेईकजडपदार्थहैं तिनोंका श्रुतिनों निषेधकऱ्यानहीं ॥ यातें तिनपदार्थोंकेसाथ आत्माकातादात्म्यअध्यासहोणेतें अधिकारीपुरुषोंकूं शुद्धरूपकरिकेआत्माकाभान नहींहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ कारणअज्ञानसहित जोमूर्त अमूर्तरूप प्रपंच हमनें तुमारे प्रति कथनकऱ्याहै ॥ इतनाहीं जडप्रपंचहै ॥ इसतैंअधिक कोईदूसराजडप्रपंचनहीं॥याकारणअज्ञानसहित मूर्तअमूर्तरूपप्रपंचकेनिषेधकियेतैंहीं विद्वान्पुरुषोंकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ यातें हेदेवराजइंद्र ॥ नेतिनेति याप्रकारकीश्रुति अद्वितीयआत्मातैंभिन्न सर्वजडप्रपंचकानिषेधकरैहै ॥ तहां प्रथमनकारकरिके कार्यकारणरूप तथास्थूलसूक्ष्मरूप जितनाकभावप्रपंचहै ताका आत्माविषेनिषेधकरैहै ॥ और दूसरेनकारकरिके ताभावप्रपंचकेअभावकूंनिषेधकरैहै ॥ जभी भावअभावरूपजडप्रपंच आनंदस्वरूपआत्मातैंनिवृत्तभया ॥ तभी यहआनंदस्वरूप स्वप्रकाशआत्माहीं परिशेषतैंरहैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अग्निकेविशेषभावकाकारणजेकाष्ठहैं ॥ तेकाष्ठ जभी अग्निकरिकेदाहकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तभी काष्ठोंतैंरहितहुआ सोअग्नि पूर्वविशेषरूपकापरित्यागकरिके आपणेसामान्यरूपविषे स्थितहोवैहै ॥ तैसे आत्माके विशेषरूपकाकारण जोभावअभावरूपजडप्रपंचहै ॥ ताकी जभी निवृत्तिहोवैहै ॥ तभी यहआनंदस्वरूपआत्माभी उपाधिकृतविशेषरूपकापरित्यागकरिके आपणेसत्चित्आनंदस्वरूपविषे स्थितहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहमैंहूं यहतूं हैं यहदृश्यप्रपंचहै यहअन्यजीवहै याप्रकारकेसंपूर्णभेद मूर्तअमूर्तरूपउपाधिकरिकेकरेहुएहैं ॥ यातें तेसंपूर्णभेद आनंदस्वरूपआत्माविषे वास्तवतैंहैंनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे भेदतैंरहितआकाशविषे धूम विद्युत् मेघ नानाप्रकारकेभेदोंकूं उत्पन्नकरैंहैं ॥ तैसे भेदतैंरहितअद्वितीयआत्माविषे स्थूलसूक्ष्म शरीर नानाप्रकारकेभेदोंकूं उत्पन्नकरैंहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ आकाशविषे भेदकूंकरणेहारेजेमेघादिकहैं ॥ तिनोंका उपादानकारण आकाशनहीं ॥ और आत्माकेभेदकूं करणेहारा जोस्थूलसूक्ष्मप्रपंचहै ॥ तिसकातो आत्माहीं उपादानकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ असंगआत्माविषे जगत्कीकारणता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ असंगआत्माविषे जगत्कीकारणता नहींसंभवैहै यहवार्ता

सत्यहै ॥ असंगआत्माविषे जगत्कीकारणता हमभी अंगीकारनहींकरते ॥ किंतु मायाविशिष्टपरमात्माविषे जगत्कीकारणता हम अंगी
कारकरैं हैं ॥ यातैं स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णप्रपंच परमेश्वरकीमायाकरिकैरचितहै ॥ यातैं संपूर्णप्रपंच मिथ्याहै॥शंका॥हेभगवन्॥ संपूर्णप्रपंच
मायाकरिकैरचितहै यातैं मिथ्याहै यहवार्ता यद्यपि संभवैहै ॥ तथापि माया मायाकरिकैरचितहैनहीं ॥ यातैं सोमाया सत्यहोवैगी ॥ जो
मायाकूंभी अन्यमायाकरिकैरचित अंगीकारकरौगे ॥ तो सोदूसरीमाया तीसरीमायाकरिकै रचितहोवैगी ॥ याप्रकार मायावोंकी अनव
स्थाहोवैगी ॥ किंवा मायाकूं वेदांतशास्त्रविषेअनादी मानै हैं ॥ यातैं मायाविषे मायाकाकार्यपणासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥
जो मायाकाकार्यहोवैहै सो मिथ्याहोवैहै ॥ यहजोमिथ्याप्रपंचकालक्षण हमने कह्याहै ॥ सो केवलकार्यप्रपंचकाकह्याहै ॥ कारणरूपमा
याकेमिथ्यापणेका यहलक्षणनहीं ॥ और सिद्धांतविषे कार्यप्रपंचकीन्याई मायाभीमिथ्याही है ॥ यातैं अधिष्ठानचैतन्यविषे जोअध्यस्त
होवै सो मिथ्याकहियेहै ॥ यहमिथ्यात्वकालक्षण मायाविषे तथामायाकेकार्यविषे दोनोंविषेहै ॥ काहेतैं जैसे स्थूलसूक्ष्मप्रपंच अधिष्ठा
नचैतन्यविषे अध्यस्तहै तैसे मायाभी अध्यस्तहै॥यातैं दोनों मिथ्याहैं॥लोकविषेभी ऐंद्रजालिकपुरुषनैं प्रवृत्तकरीजोमाया तथातामायाक
रिकैउत्पन्नकरेजेपदार्थ तेसंपूर्ण मिथ्याहीहोवै हैं ॥ तैसे माया तथामायारचितसंपूर्णप्रपंचभी मिथ्याहीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोक
विषे मायावी ऐंद्रजालिकपुरुषकरिकै रचेहुए स्थूलसूक्ष्मपदार्थ लोकोंकूं प्रतीतहोवैं हैं ॥ तैसे मायाविशिष्टइंद्रकरिकैरच्याहुआ यहइंद्र
जालरूपप्रपंच सर्वजीवोंकूं प्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तीनलोकोंविषे मैंहीइंद्रहूं ॥ मेरेतैंभिन्न कोईदूसराइंद्रहैनहीं ॥ समाधान ॥
हेदेवराजइंद्र ॥ जोपरमात्मादेव पूर्व सर्वात्मरूपकरिकै आत्माकूंजाणताभयाहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव यहांइंद्रशब्दकरिकै कथनकर्‍याहै ॥
तुमारेकूं सर्वात्मरूपकरिकैआत्माकाज्ञानहैनहीं ॥ यातैं तूंइंद्रनहीं ॥ किंवा ॥ परमऐश्वर्यवान् जोहोवै सो इंद्रकहियेहै ॥ याप्रकार इंद्रशब्द
काअर्थभी सर्वात्मज्ञानकरिकैयुक्त सर्वज्ञपरमात्माविषेहीघटैहै तुमारेविषेघटैनहीं ॥ काहेतैं जिसऐश्वर्यकेसमान तथाअधिक कोईऐश्वर्यनहीं
होवै ताकूं परमऐश्वर्यकहैं हैं ॥ ऐसापरमऐश्वर्य तुमारेकूंहैनहीं ॥ किंतु तुमारेतैंभी सहस्रगुणाअधिकऐश्वर्य हिरण्यगर्भभगवान्कूंहै ॥ यातैं

सर्वात्मज्ञानकरिकैयुक्त जोपरमात्मादेवहै सोईहीइंद्रहै ॥ और सोईहीपरमात्माइंद्र संपूर्णजगत्काकारणहै ॥हेदेवराजइंद्र ॥ स्थूलसूक्ष्मशरीरकेसाथ तुमारातादात्म्यअध्यासहै ॥ यातैं तापरमात्मारूपइंद्रतैं तूंउत्पन्नभयाहै ॥ याकारणतैं तुमारेविषेइंद्रपणासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोमैंइंद्रनहींहोवों तौसर्वलोक मेरेकूं इंद्र किसवासतेकहते हैं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ अस्मदादिकपुरुषोंकेसमीपजोऐश्वर्यहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिकै तुमाराऐश्वर्य अधिकहै ॥ याकारणतैं सर्वलोक तुमारेकूंइंद्रकहै हैं ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ ब्रह्मात्मसाक्षात्कारयुक्तजोईश्वरहै सोईही इंद्रहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ अज्ञानकृतदेहाभिमानकालविषे तुमाराऐश्वर्य तथाश्वानकाऐश्वर्य समानहीहै ॥ काहेतैं जैसे नानाप्रकारकेऐश्वर्यविषे तथाआपणेदेवताशरीरविषे तथातीनलोकोंविषे ॥ तथास्वर्गकीस्त्रियोंविषे रमणीकबुद्धिकरिकै तुमारीआसक्तिहै ॥ तैसे श्वानकूंभी आपणेऐश्वर्यादिकपदार्थोंविषे रमणीकबुद्धिकरिकै आसक्तिहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोपदार्थसुंदरहोवैहै ॥ ताकेविषे रमणीकबुद्धितैं आसक्तिहोवैहै ॥ असुंदरपदार्थविषे रमणीकबुद्धिहोवैनहीं यातैं ताकेविषे आसक्तिभीहोवैनहीं ॥ तेसुंदरपदार्थ ॥ हमारेसमीपविद्यमानहैं ॥ यातैं तिनपदार्थोंविषे हमरीआसक्तिसंभवैहै ॥ और श्वानकेसमीप कोईसुंदरपदार्थहैनहीं ॥ यातैं श्वानकी आसक्तिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र हमारेसमीप सुंदरपदार्थहैं श्वानकेसमीप सुंदरपदार्थनहीं ॥ यह केवल तेरेकूंअभिमानभयाहै ॥ काहेतैं निरपेक्षऐश्वर्यादिकपदार्थ तुमारेसमीपभीनहीं तैसे श्वानकेसमीपभीनहीं ॥ किंतु अस्मदादिकजीवोंकीअपेक्षाकरिकै तुमारेकूंमहान्ऐश्वर्यहै॥तैसे कीटादिकक्षुद्रजंतुवोंकीअपेक्षाकरिकै श्वानकूंभी महान्ऐश्वर्यहै॥और जैसे अस्मदादिकजीवोंकीअपेक्षाकरिकै तुमाराशरीर कोमलहै ॥ तैसे सूकरादिकोंकीअपेक्षाकरिकै श्वानकाशरीरभी कोमलहै ॥ और जैसे तुमारेदेवताशरीरविषे इंद्राणीआदिकअप्सरावोंकीप्रीतिहै तैसे श्वानकेशरीरविषेभी श्वानिणीस्त्रीयोंकीप्रीतिहै ॥ और जैसे तुमदेवतावोंकूं अमृत प्रियलागेहै ॥ तैसे वमनकरचाहुआ अन्न श्वानकूंभी प्रियलागेहै ॥ और जैसे आपणेऊपरउपकारकरणेहारेजीवोंविषे तुमदेवता प्रीतिकरोहो ॥ तैसे श्वानभी आपणेस्वामी ऊपर प्रीतिकरैहै ॥ और जैसे अपकारीपुरुषऊपर तुमदेवता कोपकरोहो ॥ तैसे अपकारी जीवोंविषे

श्वानभी क्रोधकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ तीनलोकोंका मैंपालनकरताहूं ॥ यातैं तीनलोकोंका मैइंद्र उपकारकरताहूं ॥ और यहश्वान तीनलोकोंकाउपकारकरतानहीं याप्रकारकाअभिमानभी तुम मतकरो ॥ काहेतैं पृथिवी जल अग्नि वायु सूर्य दिशा चंद्रमा विद्युत् मेघ आकाश धर्म सत्यवाक्य मनुष्यत्वादिकजाति मनबुद्धिप्राणादिरूप जोहिरण्यगर्भकाशरीरहै तथाविराट्भगवान्काजो शरीरहै यहदोनोंप्रकारकेशरीर तथाचिदाभास ॥ यहसंपूर्णपृथिवीआदिकपदार्थ स्थूलरूपकरिकै तथासूक्ष्मदेवतारूपकरिकै सर्व प्राणियोंका उपकारकरैं हैं ॥ तथा श्वानादिकप्राणियोंकेस्थूलसूक्ष्मशरीरभी अदृष्टद्वारा पृथिवीआदिकसर्वपदार्थोंकाउपकारकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपदार्थ जिसप्राणीकेसुखकाकारणहोवैहै ॥ सोपदार्थ तिसप्राणीकेपुण्यरूपअदृष्टकरिकै उत्पन्नहोवैहै ॥ और जोपदार्थ जिसप्राणीकेदुःखकाकारणहोवैहै ॥ सोपदार्थ तिसप्राणीकेपापकर्मकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ यह शास्त्रकानियमहै ॥ यातैं श्वानादिकसर्वप्राणी पुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा पृथिवीआदिकेकीकारणहै ॥ यातैं तेश्वानादिकप्राणी पृथिवीआदिकोंऊपर उपकारकरैं हैं ॥ और तेपृथिवीआ दिकपदार्थभी श्वानादिकप्राणियोंकूं सुखादिकोंकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ यातैं तेपृथिवीआदिकपदार्थ श्वानादिकप्राणियोंऊपर उपकारकरैं हैं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ सर्वऊपरिउपकाररूपधर्म श्वानविषे तथातुमारेविषे समानहीं हैं ॥ मैंसर्वऊपरउपकारकरोंहूं यहव्यर्थअभिमान तुममत करो ॥ याकहणेकरिकेयहअर्थ दिखाया ॥ जेपदार्थ परस्परउपकारकरैं हैं ॥ तिनोंका एकहीकारणहोवै है ॥ जैसे दोनोंभ्राता परस्परउप कारकरैंहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका एकहीपितामाता कारणहोवैहै ॥ तैसेयहसंपूर्णप्रपंचभी परस्परउपकारकरैहै ॥ यातैं यासकलप्रपंचका एकहीमायाविशिष्टपरमात्मादेव कारणहै ॥ और सोमायाविशिष्टपरमात्माही सर्वजडप्रपंचविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैस्थितहुआ सर्वऊप रउपकारकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं हेदेवराजइंद्र पृथवीआदिकपदार्थ तथामनुष्यादिकप्राणी कोईभी किसीऊपर किंचित्मात्रभी उपकारकर्तानहीं ॥ किंतु नेतिनेति याश्रुतिकरिकै पूर्वहमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याजोपरमात्मा ॥ सोईही नाशरहित स्व प्रकाश परमात्मादेव पृथवीआदिकपदार्थोंविषे तथास्थावरजंगमप्राणियोंविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैस्थितहुआ सर्वऊपरउपकारकरैहै ॥

हेदेवराजइंद्र ॥सोपरमात्मादेव पृथिवीविषेस्थितहोइके सर्वप्राणियोंकेभोगकेसाधनजेशरीरहैं तिनशरीरोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ याकारणतैं सर्व प्राणियोंकेऊपरि पृथवी उपकारकरैहै ॥ और आधाररूपपृथवीतैंविना जीवोंविषेसुखदुःखकाभोगसंभवैनहीं ॥ याकारणतैं सोईहीपरमात्मा देव सर्वप्राणियोंकेशरीरविषेस्थितहोइके पुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा पृथवीकीवृद्धिकूंकरै है ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी पृथवीऊपर उपकारकरै हैं यहांयहअभिप्रायहै ॥ पृथवीका तथासर्वप्राणियोंका परस्पर कार्यकारणभावहै तथापरस्पर भोक्ताभोग्यभावहै ॥ तहां जडअंशकीप्रधान ताकरिकै पृथिवीविषे तथासर्वप्राणियोंविषे कार्यपणा तथाभोग्यपणाहै ॥ और चैतन्यकीप्रधानताकरिकै पृथवीविषे तथासर्वप्राणियोंविषे कारणपणा तथाभोक्तापणाहै ॥ यहरीति आगेजलादिकोंविषेभी जानिलेणी ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ सोपरमात्मादेव जलोंविषेस्थितहोइके जीवोंकेशरीरविषे वीर्यकीवृद्धिकूंकरैहै ॥ याकारणतैंजल सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरैहैं ॥ और सोपरमात्मादेव जीवोंकेवीर्यविषेस्थितहो इके शरीरोंकीउत्पत्तिकरैहै॥तिनशरीरोकरिकैउत्पन्नभये जेपुण्यपापरूपअदृष्ट॥तिनअदृष्टोंकरिकैपुनःजलादिकोंकीवृद्धिकरैहै॥याकारणतैं सर्वप्राणी जलोंऊपर उपकार करैहैं ॥ यहरीति आगेभीजानिलेणी ॥ और हेदेवराज इंद्र ॥ यहपरमात्मादेव अग्निविषेस्थितहोइके संपूर्ण जीवोंकेवाक्इंद्रियोंकूं शब्दउच्चारणरूपव्यापारविषे प्रवृत्तकरै है ॥ तथा रुधिरादिकधातुवोंकूंपकावैहै ॥ याकारणतैं अग्निदेवता सर्वप्राणियों ऊपरउपकारकरै है॥औरयहपरमात्मादेव सर्वप्राणियोंकेवाक् इंद्रियविषेस्थितहोइके मंत्रउच्चारणद्वाराअग्निकूंसंस्कारयुक्तकरैहैं॥जिसअग्निकूं वेदविषे आहवनीय गार्हपत्य दक्षिणाग्निइत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरैं हैं॥याकारणतैं सर्वप्राणीअग्निऊपरि उपकारकरैहैं॥और हेदेवराजइंद्र यहपरमात्मादेव वायुविषेस्थितहोइके सर्वजीवोंकेप्राणोंकूंचलावैहै ॥ याकारणतैं वायु सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरैहै ॥ और यहपरमा त्मादेव प्राणविषेस्थितहोइके पुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा वायुकूंप्रवृत्तकरैहै ॥ यातैं सर्वप्राणी वायुऊपरि उपकारकरै हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र यहपरमात्मादेव सूर्यविषेस्थितहोइके सर्वजीवोंकेनेत्रोंकूं रूपादिकविषयोंविषेप्रवृत्तकरैहै ॥ याकारणतैं सूर्यभगवान् सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेव सर्वप्राणियोंकेनेत्रविषेस्थितहोइके यहसूर्य है याप्रकार सूर्यकूंसिद्धकरैहै ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी

सूर्यऊपरि उपकारकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहपरमात्मादेव पूर्वादिकदशदिशावोंविषेस्थितहोइके सर्वप्राणियोंके श्रोत्रइंद्रियऊपरि उपकारकरैहे ॥ यातें दशोंदिशा प्राणियोंऊपरि उपकारकरैहैं ॥ और सर्वप्राणियोंकेश्रोत्रइंद्रियोंविषेस्थितहोइके सोपरमात्मादेव दिशावोंकेप्रतिध्वनिरूपशब्दकूंजाणेहे ॥ तात्पर्ययह ॥ भेरीआदिकोंकेशब्दजन्य जोप्रतिध्वनिरूपशब्दहे॥तिसतैंहीं विशेषकरिकेदिशावोंकाज्ञानहोवैहे॥सोप्रतिध्वनिकाज्ञान श्रोत्रइंद्रियकरिकेहोवैहे॥यातें प्रतिध्वनिकेज्ञानद्वारा श्रोत्रइंद्रिय दिशावोंकूंसिद्ध करैहे ॥ यहही सर्वप्राणियोंका दिशावोंऊपरि उपकारहे ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ सोपरमात्मादेवचंद्रविषेस्थितहोइके सर्वजीवोंकेमनकूंप्रवृत्त करैहे ॥ याकारणतें चंद्र सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरैहे ॥ और सर्वजीवोंकेमनविषेस्थितहोइके सोपरमात्मादेव मनकेसंकल्पजन्यजेकर्म हैं तिनकर्मोंकरिके चंद्रलोककीवृद्धिकरैहे ॥ अथवा यहचंद्रहे याप्रकार मनकरिकेचंद्रकूंजाणेहे ॥ याकारणतें सर्वप्राणी चंद्रऊपरि उपकार करैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहपरमात्मादेव विद्युतविषेस्थितहोइके सर्वप्राणियोंकेअंधकारकीनिवृत्तिकरैहे ॥ याकारणतें विद्युत सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरैहे ॥ और सर्वजीवोंकेत्वकविषेस्थित जोउज्ज्वलतारूपतेजहै॥तातेजकेअभिमानीविषेस्थितहोइके यहपरमात्मादेव सर्वत्रव्यापविद्युतकेतेजकूंजाणेहे ॥ याकारणतैंसर्वप्राणी विद्युतऊपरि उपकारकरैहे ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहपरमात्मादेव मेघोंविषे स्थितहोइके गर्जनारूपशब्दकरिकेसर्वजीवोंकिआनंदकूं उत्पन्नकरैहैं ॥ याकारणतें मेघ सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरैहे ॥ और सोपरमात्मादेव जीवोंकेध्वनिरूपशब्दविषेस्थितहोइके तागर्जनासहितमेघकूं श्रेष्ठकरिकेमानैहे ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे मुखविषे स्थितलाला बाह्यरसकेज्ञानविषेकारणहोवैहैं ॥ तैसे अंतरध्वनिरूपशब्दभी बाह्यशब्दकेज्ञानविषेकारणहैं ॥ याकारणतें सर्वप्राणिमेघोंऊपरि उपकारकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहपरमात्मादेव आकाशविषेस्थितहोइके सर्वप्राणियोंकूं हृदयरूपछिद्रकीप्राप्तिकरैहे ॥ याकारणतें आकाश सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरै हे ॥ और हृदयाकाशविषे स्थितहोइके यहपरमात्मादेव सर्वत्रव्यापकआकाशकूंजाणे हे ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकोंकरिके निरूपआकाशकाज्ञान संभवेनहीं ॥ किंतु साक्षीचैतन्यकरिके आकाशकाज्ञानहोवैहे ॥ सोसाक्षीचै

तन्य विशेषकरिके हृदयाकाशविषेहीरहेहे ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी आकाशऊपरि उपकारकरैंहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ सोपरमात्मा देव धर्मविषेस्थितहोइके सर्वजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरे हे ॥ याकारणतैंधर्म सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरैहे ॥ और सोपरमात्मा देव धर्मवान् जीवोंविषेस्थितहोइके पुनःधर्मकूंकरे हे ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी धर्मऊपरि उपकारकरैंहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ सोपरमात्मादेव सत्य वाक्यविषेस्थितहोइके जीवोंकूंयथार्थअर्थकाबोधकरे हे ॥ याकारणतैं सत्यवाक्य सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरैहे ॥ और सोपरमात्मादेव सत्यवक्तापुरुषोंविषेस्थितहोइके पुनःसत्यवाक्यकाउच्चारणकरैंहे ॥ याकारणतैं सर्वजीव सत्यवाक्यऊपरि उपकारकरैंहैं ॥ और हेदेवराज इंद्र ॥ यहपरमात्मादेव मनुष्यत्व ब्राह्मणत्वादिकजातियोंविषेस्थितहोइके अधिकारसंपादनद्वारा जातिअभिमानीजीवोंकूं सुखकीप्राप्ति करेहे ॥ याकारणतैं मनुष्यत्व ब्राह्मणत्वादिकजाति सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरैंहे ॥ और सोपरमात्मादेव मनुष्यव्यक्तिविषे तथाब्राह्मण व्यक्तिविषे स्थितहोइके मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं याप्रकार मनुष्यत्वादिकजातियोंकूंसिद्धकरैहे ॥ याकारणतैं मनुष्यादिकसर्वप्राणी मनुष्यत्वादिकजातिऊपरि उपकारकरे हे ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहपरमात्मादेव देहइंद्रिय मन प्राण बुद्धि रूपयासंघातविषेस्थितहोइके विज्ञानमयभोक्ताके जन्ममरणादिकोंकूंकरैहे ॥ तात्पर्ययह ॥ देहतैंआदिलेकेबुद्धिपर्यंत जोसंघातरूपउपाधिहे तिसविषेस्थित जेजन्मादिक धर्म तिनधर्मोंकरिके विज्ञानमयकूं जन्मादिकधर्मवालाकरैहे ॥ याकारणतैं यहसंघात विज्ञानमयभोक्ताऊपरि उपकारकरे हे ॥और सोपरमात्मादेव बुद्धिकीवृत्तियोंविषेस्थितहोइके विषयसहितबुद्धिकूंप्रकाशकरैहे ॥ याकारणतैं सोविज्ञानमय संघातऊपरि उपकारकरैहे यातैं हेदेव राजइंद्र ॥ पूर्वउक्तरीतितैं पृथिवीआदिकोंविषेस्थित होइके जोपरमात्मादेव सर्वत्रउपकारकरैंहे ॥ सोआत्मा श्वानका तथातुमारा एक हीं है ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे मक्षिका सर्ववनस्पतितैं रसकूंग्रहणकरिके मधुरूपरसकूं एकठाकरैं हैं ॥ याकारणतैं मक्षिका मधुरूप रसऊपरि उपकारकरैं हैं ॥ और सोमधुरूपरसभी तिनमक्षिकावोंकेक्षुधाकीनिवृत्तिकरैहे याकारणतैं सोमधुरूपरस तिनमक्षिकावोंऊपरिउपकारकरे हे याप्रकार मक्षिका तथामधुरूपरस परस्परउपकारकरैं हैं ॥ तैसे पृथिवीतैंआदिलेके जितनाकजगत्मंडलहे ॥ सो

जिसजिसप्राणीऊपरि उपकारकरै है ॥ सोसोप्राणी तिसतिसपृथिवीआदिकोंऊपरि उपकारकरैहै ॥ दृष्टांत॥जैसे लोकविषे धनीपुरुषआपणे भृत्योंविषे धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिरूप उपकारकरैहै ॥ और तेभृत्यभी ताधनीपुरुषऊपरि नानाप्रकारकीसेवारूपउपकार करैहै॥और हेदेवराजइंद्र ॥ पृथिवीआदिकोंकेजितनेकीउपकार हमनैं तुमारेप्रति कथनकरेहैं॥तेसंपूर्ण दृष्टांतमात्रकेजनावणेवासतेकहेहैं॥वास्तवतैंतेउपकार अनंतप्रकारके हैं॥यहवार्ता सुरेश्वराचार्यनैंभी कही है॥ श्लोक ॥ सर्वसर्वस्यकार्यस्यात् सर्वःसर्वस्यभोजकःइत्येषामधुविद्याऽत्रवैषम्यक्लेशहारिणी ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ सर्वपदार्थ सर्वपदार्थोंकेकार्य हैं ॥ और सर्वपदार्थ सर्वपदार्थोंकेभोक्ताहैं॥याप्रकारकीमधुविद्याविषमतारूपीक्लेशकेनिवृत्तकरणेहारीहै ॥ १ ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ पूर्वउक्तपृथिवीआदिकपदार्थोंविषे एकएक पृथिवीआदिक पदार्थ आपणेतैंभिन्नसर्वपदार्थों ऊपरि उपकारकरैहैं ॥ तैसे पृथिवीतैंभिन्नसर्वजलादिकपदार्थ पृथिवीऊपरि उपकारकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ पंचीकरणकीरीतिसैं पृथिवी आपणेभागकूंदेकरिकै जलादिकोंकीपूर्णताकरै है ॥ और तेजलादिकभी आपणेआपणेभागकूंदेकरिकै पृथिवीकीपूर्णताकरैहैं ॥ यहरीति सर्वत्रजानिलेणी ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे एकशरीरकेहस्तपादादिकअवयव परस्परउपकारकरैहैं ॥ याकारणतैं तिनअवयवोंका एक हीआत्माहै ॥ तैसे पृथिवीआदिकपदार्थभी पूर्वउक्तरीतितैं परस्परउपकारकरै हैं ॥ याकारणतैं तिनपृथिवीआदिकपदार्थोंकाभी एकही आत्मा माननेयोग्यहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ सोपरमात्मादेवकैसाहै आपणे स्वप्रकाशतेजकरिकै विराजमानहै ॥ और जन्ममरणादिकविकारोंतैं रहितहै यातैंपरमअमृतरूपहै ॥ और सोईहोपरमात्मादेवसंपूर्णप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइके बुद्धिकेसर्ववृत्तियोंकूं प्रकाशेहै ॥ और वास्तवतैंसंगरहितहै ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जोपरमात्मादेव स्थावर जंगमरूप सर्वशरीरोंविषे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै स्थितहै ॥ सोईहोपरमात्मादेव तुमारा तथाश्वानका आत्माहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे घटमठरूपउपाधियोंविषेविद्यमानजोभेदहै ॥ सोभेद असंगआकाशकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ तैसे शरीर रूपउपाधियोंविषे विद्यमानजोभेदहै ॥ सोभेद असंगआत्माकूंस्पर्शकरैनहीं और हेदेवराजइंद्र सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थित तथाजन्ममरणतैंरहित तथासर्वभेदतैंरहित तथासर्वकाआत्मारूप जोब्रह्म हमनैं

तुमारेप्रति कथनकर्याहै ॥ सोईहीब्रह्म आपणे आत्माकेज्ञानतैं सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ यहवार्ता पूर्वब्राह्मणोंकेपरस्परविचारविषे हम तुमारेप्रति कथनकरिआयेहैं ॥ औरहेदेवराजइंद्र ॥ सोईहीपरमात्मादेव संपूर्णजीवोंकूं तथातुमदेवतावोंकूं आपणेवशवर्तिकरिके पालनकरैहै ॥ यातैं मैंइंद्रही सर्वजीवोंकापालनकरोंहूं ॥ याप्रकारका तुमाराअभिमान व्यर्थहीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे सूर्यभगवान् ब्रह्मांडविषे स्थितहोइके सर्वलोकोंकूंप्रकाशेहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेव सर्वभूतोंकेअंतरस्थितहोइके प्रकाशे है ॥ याकारणतैं यह परमात्माहीं राजाहै ॥ मैंइंद्र तीनलोकोंकाराजाहूं याप्रकारका तुमाराअभिमान व्यर्थहीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे रथकेचक्रविषे नेमि नाभि अरा यहतीनप्रकारकेकाष्ठरहें हैं ॥ तहां पृथिवीविषेजाकास्पर्शहोवेहै ऐसाजो चंद्रमाकीन्याईवर्तुलाकारकाष्ठहै ताकूं नेमिकहेहैं ॥ और जाकेविषे शलाकाफिरेहै ताकूं नाभिकहेहैं ॥ और नाभिनेमिकेमध्यविषे जेवककाष्ठहैं तिनोंकूं अराकहेहैं ॥ तेअरा स्वतंत्ररहेंनहीं ॥ किंतु नेमिके तथानाभिके दोनोंकेआश्रितरहेहैं ॥ तैसे पृथिवीकाअभिमानी जो आत्माकाअंशहै सो नेमिकेसमानहै ॥ और शरीरकाअभिमानी जो आत्माकाअंशहै सो नाभिकेसमानहै ॥ और सर्वशरीर तथापृथिवी अराकेसमानहै ॥ तहां पृथिवीकाअभिमानी जो आत्माकाअंशहै ॥ तथाशरीरकाअभिमानी जो आत्माकाअंशहै ॥ तिनदोनोंकेआश्रितहीं संपूर्णशरीर तथापृथिवीरहेहैं ॥ स्वतंत्ररहिसकेनहीं॥ कैसेहैंते आत्माकेदोनोंअंश ॥ पूर्वकहीरीतिनैं सर्वकेउपकारकरणवासते पृथिवीआदिकोंविषेस्थितहैं ॥ यहरीति जलादिकपदार्थोंविषेभी जानिलेणी ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे रथकेचक्रविषे एकहीशिशपकाकाष्ठ नेमि नाभि अरा यातीनरूपोंकूंधारणकरिके उपकारक उपकार्य भावकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथा आधार आधेय भावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव पृथिवीआदिक अधिदेवभावकूं तथाशरीरादिक अध्यात्मभावकूं तथापृथिवीआदिकोंकेअभिमानीपुरुषभावकूं प्राप्तहोइके सर्वत्र उपकारकूंकरेहै ॥ हेइंद्र ॥ तुम देवता तथापृथिवीआदिकपदार्थ किसीऊपर उपकारकरतेनहीं ॥ यातैं हमहीं उपकारकरेहैं याप्रकारका तुमाराअभिमान व्यर्थ है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यद्यपि परमात्माही सर्वत्रास्थितहोइके उपकारकरेहै यहवार्तासत्यहै ॥ तथापि सोपरमात्मादेव उत्कृष्टदेव

तादिकशरीरोंविषेस्थितहोइकेहीं सर्वत्रउपकारकरैहै ॥ श्वानादिकनीचशरीरोंविषेस्थितहोइके सोपरमात्मादेव किसीऊपरि उपकार करैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ उत्कृष्टशरीरविषेस्थितहोइकेहीं परमात्मा उपकारकरैहै ॥ याप्रकारकाभी तुमाराअभिमान व्यर्थ है ॥ काहेतें जोपरमात्मादेव तुमदेवतावोंकेहृदयविषेस्थितहोइके सर्वत्रउपकारकूंकरैहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव श्वानकेहृदय देशविषेस्थितहोइके सर्वत्रउपकारकूंकरैहै ॥ यातें हेदेवराजइंद्र ॥ बहुतकहणेकाकछुप्रयोजननहीं ॥ संक्षेपकरिकै आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं तुम निश्चयकरो ॥ अब तासंक्षेपकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सत्वगुणकरिकैयुक्त जेहमऋषिहैं॥तथा रजोगुणकरिकैयुक्त जेतुंमदेवताहों॥ तथा तमोगुणकरिकैयुक्त जेश्वानादिकपशुहैं ॥ तिनसंपूर्णोंविषे यहपरमात्मादेव समानव्यापकहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ श्वानकीसर्वलो कनिंदाकरैहै ॥ और देवतावोंकी लोक निंदाकरैनहीं ॥ यातें देवताशरीर उत्कृष्टहै ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहभी तुमाराअभिमान व्यर्थहै ॥ काहेतें जैसे तुमदेवता तथाहममनुष्य श्वानकेजन्मकोनिंदाकरैहैं ॥ तैसे हमारेकूं विषयोंविषे आसक्तदेखिकरिकै ब्रह्मवेत्ताविरक्त पुरुष हमारेजन्मकीभीनिंदाकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे तुमदेवतावोंकूं तथाहममनुष्योंकूं आपणेशरीरविषे उत्कृष्टताबुद्धिहै तैसे श्वानकूंभी आपणेशरीरविषे उत्कृष्टताबुद्धिहै॥यातें हेदेवराजइंद्र ॥ जिसआत्माकेतादात्म्यसंबंधकरिकै निकृष्टशरीरोंविषेभी उत्कृष्टताप्रती तहोवैहै ॥ सोईही आनंदस्वरूपआत्मा अधिकारी पुरुषोंकरिकै जानणेयोग्यहै॥और हेदेवराजइंद्र॥ऐसेआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानविषे अहं ममअभिमानहीं प्रतिबंधकहै॥यातें शरीरविषे अहंअभिमानका परित्यागकरिकै तथाअप्सरावोंसहितस्वर्गविषे मम अभिमानकापरित्यागक रिकै तुम आत्माकूं निश्चयकरो ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जिसशरीरविषे लोकोंने अहंअभिमानकर्‍याहै ॥ सोशरीरकैसाहै॥जैसे श्वानकीविष्ठा दुर्गन्धकरिकै युक्त होवैहै तैसे दुर्गंधकरिकै युक्तहै ॥ और क्षणक्षणविषे परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेशरीरविषेबुद्धिमानपुरुषोंकूं अहंअभि मानकरणा उचितनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जबपर्यंत जीवोंकूं शरीरादिकोंविषे अहंबुद्धिहोवैहै ॥ तथा स्त्रीपुत्रधनादिकोंविषे ममबुद्धिहो वैहै ॥ तबपर्यंत जीवोंकूं आनंदस्वरूपआत्माकोप्राप्ति तथाजन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ यातें हेइंद्र शरीरविषे अहंअभिमा

नकापरित्यागकरिके तथाअप्सरावोंसहितस्वर्गविषे ममअभिमानकापरित्यागकरिके आनंदस्वरूपआत्माकूं तुम निश्चयकरो॥ऋषिरुवाच ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकार सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिके इंद्रकेप्रतिब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ कैसाहै सोदध्यङ्ऋषि॥ देवराजइंद्रकूं ब्रह्मविद्याकाअनधिकारीजाणताहुआभी आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतै संपूर्णब्रह्मविद्याका उपदेशकरता भया ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार आनंदकेदेणीहारी दध्यङ्ऋषिकेवाणीकूं श्रवणकरिकेभी सोदेवराजइंद्र आनंदकूंनहींप्राप्तहोताभया किंतु विषयोंविषेआसक्तिकरिके अंधहुआ सोइंद्र उलटाक्रोधकूंप्राप्तहोताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे कोईदयालुपुरुष सर्पकूंक्षुधातुरदेखिके तास र्पकूं दुग्धपानकरावे ॥ तादुग्धकूंपानकरिके सोसर्प तादयालुपुरुषकेप्राणहरणेवासतै क्रोधकरैहै ॥ तैसे श्रीमदकरिके अंधहुआसोइंद्र दध्य ङ्ऋषिकीअमृतमयवाणीकूंश्रवणकरिकेभी क्रोधकूंहीप्राप्तहोताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे जिसपुरुषकी जिसजिसपदार्थविषे आसक्तिहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थकी जभीकोई निंदाकरैहै ॥ तभी सोपुरुष तिसनिंदाकरणेहारेपुरुषऊपरि अत्यंतक्रोधकरैहै ॥ तैसे स्वर्गा दिकभोगोंविषेआसक्तइंद्र तिनस्वर्गादिकभोगोंकीनिंदाकूंश्रवणकरिके अत्यंतक्रोधवान्होताभया ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ क्रोधकरिके युक्तहुआ सोइंद्र आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ हमारेशत्रु जेअसुरहैं ॥ तिनोंनें हमारेराजकेपरित्यागकरावणेवासतै यह ब्राह्मण हमारीतरफिभेजाहै ॥ याकारणतैंही यहब्राह्मण हमारेप्रति स्वर्गकेपरित्यागकरणेकाउपदेशकरै है ॥ किंवा ॥ वास्तवतैंविचारक रिकेदेखियेतो यहब्राह्मण श्रेष्ठनहीं ॥ काहेतैं जे श्रेष्ठब्राह्मणहोवैंहैं ते मिथ्यावचनकहतेनहीं ॥ और यहदुरात्मातो सर्वथा मिथ्याहीभाषण करैहै ॥ काहेतैं तीनलोकोंकेपति मुझइंद्रकूं श्वानकेसमानकथनकरैहै ॥यातैं याब्राह्मणकेसमान कोईमिथ्यावादीनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्प ष्टकरिकेदिखावैहैं ॥ ब्रह्महत्याकरणेहारेपुरुषकूं जन्मांतरविषे श्वानशरीरकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं श्वानशरीर ब्रह्महत्याकाफलहै ॥ और सोश्वान विष्ठादिकमलोंकूं भक्षणकरैहै ॥ और ताश्वानकेस्पर्शतैंभी लोक स्नानकरैहैं ॥ याप्रकारकातो श्वानहै ॥ और मैइंद्रकैसाहूं ॥ एक शतअश्वमेधयज्ञोंकरिके इंद्रपदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं अश्वमेधयज्ञोंकाफल इंद्रशरीरकीप्राप्तिहै ॥ और मैइंद्र सर्वदाअमृतकापानकरोंहूं ॥

और बहुतकालपर्यंत उपासनाकरिकै लोकोंकूं हमारादर्शनहोवैहै ॥ ऐसेमुझइंद्रकूं यहदुरात्माब्राह्मण सर्वथा श्वानकेसमानहींकथनकरैहै ॥ यातैं यहब्राह्मण अत्यंतमिथ्यावादीहै ॥ किंवा ॥ यज्ञोंकरिकैभीदुर्लभ जेदेवांगनावोंकेशरीरहैं ॥ तिनोंकूं यहब्राह्मण श्वानिणीकेशरीर समान कथनकरैहै ॥ जिसअभिप्रायकरिकै यहब्राह्मण ऐसेअनुचितवचन कहैहै ॥ सोअभिप्राय हम जाणतेहैं ॥ किंवा ॥ वज्रकूं धारणकरणेहारामैंइंद्र एकलाहीं संपूर्णजगत्केवशकरणेविषेसमर्थहूं ॥ ऐसेमैंइंद्रविषे श्वानकीसमानता किसनिमित्तकूंलेके याब्राह्मणनैं कहीहै ॥ सर्वप्रकार यहमिथ्यावादीहै ॥ यातैं यहब्राह्मणनहीं किंतु यहकोईअसुरहै ॥ स्वर्गकेलेणेवासतै तपस्वीब्राह्मणकारूपधारिकै हमदेवतावोंकिबुद्धिकूं तथाअन्यब्राह्मणादिकवर्णोंकेबुद्धिकूं भ्रष्टकरणेवासतै आयाहै ॥ किंवा ॥ कदाचित् यहब्राह्मणभीहोवै ॥ तौभी हमदेवतावोंकापक्षपातीब्राह्मणनहीं ॥ किंतु दैत्योंकागुरुजोशुक्रहै सोईहोवैगा ॥ अथवा शुक्रके शंडामर्कनामाजोदोपुत्रहैं ॥ ते अत्यंत बुद्धिमान्हैं ॥ तिनोंविषे कोईएकहोवैगा ॥ किंवा ॥ इसदुरात्माकेब्राह्मणपणेकाविचारकरणाव्यर्थहै ॥ यातैं इसअधमपुरुषकूं इसीकालविषे मैंहननकरों ॥ अथवा यास्थानतैं इसकूं मैंनिकासिदेवो ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार सोइंद्रआपणेमनविषेविचाकरिकै याप्रकारका निश्चय करताभया ॥ जोमैं याअधमब्राह्मणकूं अबीहींहननकरोंगा ॥ अथवा यास्थानतैंनिकासिदेवोंगा ॥ तौ हमारीलोकविषे अपकीर्तिहोवैगी ॥ यातै किसीअन्यउपायकरिकै याअधमब्रह्मणकूं मैंहननकरो ॥ किंवा ॥ अश्विनीकुमार जोहमारे बुद्धिमान्देवताथे ॥ तिनोकूंभीयाअधमब्राह्मणनेंहीं हमारेतैंविमुखकऱ्याथा ॥ यातैंभी यहब्राह्मण दंडकरणेयोग्यहै ॥ यातैं याब्राह्मणकूं ब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेकी मैंआज्ञादेवो ॥ जोयहब्राह्मण हमारीआज्ञाकूंउल्लंघनकरिकै किसीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैगा ॥ तो हम याब्राह्मणकामस्तक छेदनकरैंगे ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकारकेउपायकाविचारकरिकै सोदेवराजइंद्र तुमारेगुरुदध्यङ्ङृषिकूं याप्रकारकीआज्ञा करताभया ॥ हेब्राह्मण जोब्रह्मविद्या तुमनैं हमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ सोब्रह्मविद्या आजदिनतैंलेकरिकै जोकिसी अन्यपुरुषकेप्रति उपदेशकरोंगा ॥ तो वज्रकरिकै तुमारेमस्तककूं मैंछेदनकरोंगा ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार जभी देवराजइंद्रनें तुमारेगुरुदध्यङ्ङृ

षिकेप्रति आज्ञाकरी ॥ तभी सोदध्यङ्ङ्ऋषि तुमारा गुरु देवराजइंद्रऊपरि किंचित्मात्रभीक्रोध नहींकरताभया उलटा प्रसन्नमनहुआ सोदध्यङ्ङ्ऋषि ताइंद्रकीआज्ञाकरिकै आपणेइष्टकीसिद्धि मानताभया ॥ अब जिसविचारकरिकै दध्यङ्ङ्ऋषिकूं हर्षहोताभया ताविचारकूं निरूपणकरैं हैं ॥ यादेवराजइंद्रकीआज्ञाकूं जोमैं पालनकरौंगा ॥ तौ हमारेकूं दोप्रकारकेदोषोंकीनिवृत्तिरूप इष्टअर्थकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहाँ एकतौ ब्रह्मविद्याकेउपदेशविषे निष्ठुरतारूपदोषकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ और दूसरा अनधिकारीपुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याकादानरूपदोषकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ यातैं इंद्रकीआज्ञा हमारेकूंपालनकरणेयोग्यहै ॥ किंवा ॥ जैसे विद्याकेउपदेशतैंअनंतर गुरुकीप्रसन्नतावासते शिष्य गुरुकेप्रति दक्षिणादेवैहै ॥ तैसे यादेवराजइंद्ररूपीशिष्यनैं यहजोआज्ञारूपीदक्षिणा हमारेप्रतिदईहै ॥ साआज्ञारूपीदक्षिणा हमारेकूं परम अनुकूलहै॥काहेतैंयाआज्ञातैंअनंतर दुर्बुद्धिअनधिकारीपुरुषोंकेप्रति मैं कदाचित् ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरौंगा॥किंवा॥कामक्रोधादिकों करिकेयुक्त जेअनधिकारीपुरुषहैं ॥ तिनोंकेताईं दईहुईब्रह्मविद्या निष्फलहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे चांडालकेताईं दईहुईगौ निष्फलहोवैहै ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे रूपकरिकै तथायौवनकरिकैयुक्त आपणीकन्या नपुंसककेताईं दईहुई निष्फलहोवैहै ॥ तैसे विषयासक्तअनधिकारी पुरुषकेताईं दईहुई ब्रह्मविद्या निष्फलहोवैहै ॥ किंवा ॥ जोविद्वान्पुरुष स्नेहकरिकैमोहितहुआ अथवा धनकरिकैमोहितहुआ विषयासक्तअनधिकारीपुरुषोंकेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैहै ॥ सोविद्वान्पुरुष आपणेकूं तथाब्रह्मविद्याकूं तथा श्रोताकूं यातीनोंकूं नाशकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अनधिकारीपुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषे ब्रह्मविद्या निष्फलहोवैहै ॥ और अनधिकारीश्रोता दोनोंलोकोंतैंभ्रष्ट होवैहै ॥ और ब्रह्मविद्याकेवक्ताकूं द्वेषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्ता महाभारतविषेभीकही है ॥ श्लोक ॥ यश्चाधर्मेणवैब्रूयात् यश्चाधर्मेणपृच्छति ॥ तयोरन्यतरःप्रैति विद्वेषंवाधिगच्छति ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष अधर्मकरिकै ब्रह्मविद्याकूंकथनकरैहै ॥ और जोपुरुष अधर्मकरिकैब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरैहै ॥ तिनदोनोंविषे एकचल्याजावैहै ॥ अथवा द्वेषकूंप्राप्तहोवै है ॥ १ ॥ यातैं अनधिकारीपुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा योग्यनहीं ॥ किंवा ॥ अतिथिकेसन्मानकरणेविषे तत्पर जोमहतपस्वीमुनिहैं ॥ तिनोंकूं दूसराकोईपापकेउत्पत्ति

कानिमित्तहैनहीं ॥ अनधिकारीपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशहीं पापकेउत्पत्तिकानिमित्तथा ॥ अब इंद्रकेआज्ञारूपीकृपातें सोपाप कभीउत्पन्नहोवैंगानहीं ॥ किंवा ॥ जिनोंकेसंगकरिकै अनंतप्रकारकीभेदबुद्धिउत्पन्नहोवै है और बहिर्मुखहैचित्तजिनोंका ऐसेजेमनुष्यहैं तथादेवताहैं तथाअसुरहैं ॥ तिनोंकरिकै हमाराकिंचित्मात्रभीप्रयोजनसिद्धहोवैनहीं ॥ उलटा इनभेदवादियोंकेसंगतैं चित्त बहिर्मुख होवै है ॥ कैसेहैंयहभेददर्शीपुरुष ॥ याजाग्रत्अवस्थाविषे जिसजिसपदार्थकाअनुभवकरैहैं ॥ तिसतिसअनुभवजन्यसंस्कारोंकेप्रभावतैं तिसतिसपदार्थकूं जैसेस्वप्नविषेप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे मरणकालविषेभी तिसीतिसीपदार्थकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं भेदबुद्धिहीं जीवोंकेजन्ममरण रूपसंसारकाकारणहै और मेरेविषे भेदबुद्धिकाकारण दूसराकोईहैनहीं ॥ किंतु शिष्योंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशरूपकार्यहीं मेरे भेदबुद्धिकाकारणहै ॥ यातैं ताभेदबुद्धिजन्यसंस्कार अज्ञानीजीवोंकीन्याई मेरेकूंभी कदाचित्जन्मादिकोंकीप्राप्तिकरैंगे ॥ किंवा ॥ मैंगुरुहूं यहशिष्यहै याप्रकारकीभेदबुद्धि अविद्यातैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं उपदेशकालविषे सोभेदबुद्धि अविद्यातैंविनाअनुपपन्नहुई ब्रह्मवेत्तापुरुषविषेभी अविद्याकेलेशकूंबोधनकरैहै ॥ यातैं विद्याके उपदेशकालविषे अज्ञानीपामरपुरुषोंकेसमान मैंहोवोंगा ॥ किंवा ॥ यह मैंहूं यहमेराहै यहमेरानहीं है याप्रकारकाभेददर्शन जबपर्यंत जीवोंकानिवृत्तनहींहोता ॥ तबपर्यंत देहरूपकारागृहतैं जीवोंकीमुक्तिहोतीनहीं यातैं भेददर्शनहीं जीवोंकेबंधनकाकारणहै ॥ सोहमाराभेददर्शन याइंद्रनैं कृपाकरिकैनिवृत्तकऱ्याहै ॥ यातैं देवोअथर्वणनामा हमारेगुरुतैंभी यहइंद्र हमारापरमगुरुहै॥ तात्पर्ययह॥आत्मसाक्षात्कारतैंअनंतर जीवन्मुक्तिकेसुखवासतै मनोनाशवासनाक्षयहमारेकूं अवश्यकरणेयोग्यहै तामनोनाश वासनाक्षयकाउपाय देवोअथर्वणनामाऋषिनैं परंपराकरिकै हमारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ यातैं सोदेवोअथर्वणनामाऋषि हमारागुरुहै ॥ और यादेवराजइंद्रनैंतौ साक्षातहीं हमारामनोनाश तथावासनाक्षयकऱ्याहै ॥ काहेतैं शिष्यकेप्रति विद्याउपदेशकालविषे हमाराचित्त बहिर्मुखहोवैहै ॥ ताचित्तकीबहिर्मुखताकेनिवृत्तिवासतै याइंद्रनैं हमारेप्रति ब्रह्मविद्याके नउपदेशकरणेकीआज्ञाकरीहै ॥ यातैं यहइंद्र हमारापरमगुरुहै ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकारकाविचार आपणेहृदयविषेकरिकै सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु देवराजइंद्र

ऊपरि क्षमाकरताभया ॥ शंका ॥ गुरुकेसाथि द्रोहकरणेहाराजोइंद्रहै ॥ तिसकेप्रति सोदध्यङ्ऋषि शाप काहेतैंनहींदेताभया ॥ समाधान ॥ याप्रकारकाआपणेमनविषे विचारकरिकै सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकूं शापनहींदेताभया ॥ अब ताविचारकूं दिखावैहैं ॥ श्वान सर्पादिकजेतामसीजीवहैं ॥ तेअपकारीजीवोंविषेक्रोधकरेहैं ॥ यहवार्त्ता लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ जबी विद्वान्पुरुषभी अपकारी जीवोंऊपरि क्रोधकरैगा ॥ तौ श्वानसर्पादिकतामसीजीवोंतैं विद्वानपुरुषविषे कौनविशेषताहोवैगी॥किंतु श्वानसर्पादिकोंकेतुल्यहीं सोविद्वा न्होवैगा ॥ यातैं जेपुरुष अपकारीजीवोंऊपरिक्रोधनहींकरते ॥ उलटा तिनोंऊपरि उपकारकरते हैं॥ तेपुरुषहीं विद्वान्हैं ॥ अपकारीजीवो ऊपरि जेपुरुष क्रोधकरेहैं ॥ तेपुरुष विद्वान्होवैनहीं ॥ किंवा ॥ अपकारीजीवोंविषे विद्वान्पुरुष क्रोधकरेहैं ॥ यहजोकोईवादी अंगीकार करै ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ कूटस्थआत्माकाअपकारमानिकै सोविद्वान्पुरुष अपकारीजीवोंऊपरिक्रोधकरेहै ॥ अथवा शरीरादिकजड पदार्थोंकाअपकारमानिकै सोविद्वान्पुरुष अपकारीपुरुषऊपरिक्रोधकरेहै॥तहां प्रथमपक्षतौसंभवैनहीं॥ काहेतैं कूटस्थआत्मा अविकारी है तथाअसंगहै ॥ यातैं ताकेविषे अपकाररूपविकारकासंबंधसंभवैनहीं ॥ तैसे दूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं विद्वान्पुरुषोंनैं शरीरादिक जडपदार्थोंतैं आत्माकूंभिन्नमान्याहै ॥ यातैं शरीरादिकोंकेअपकारहुएभी विद्वान्पुरुषकीहानिहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एक पाषाणकरिकै दूसरेपाषाणकाताडनकियेंहुएभी चेतन्यपुरुषोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे जडदंडादिकोंकरिकै जडशरीरकेअप कारहुएभी विद्वान्पुरुषकूं दुःखहोवैनहीं ॥ शंका ॥ यद्यपि शरीर पाषाणकीन्याईजडहै ॥ तथापि सोशरीर आत्माकेसुखका साधनहै ॥ यातैं शरीरकेअपकारहुए विद्वानपुरुषकाक्रोधसंभवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे भृत्योंकेअपकारहुए राजाकूंक्रोधहोवैहै ॥ समाधान जैसे कोईपुरुष आपणेएकहस्तकरिकै दूसरेहस्तका तथापादका तथामस्तकका ताडनकरेहै ॥ ताताडनकरिकै तिसपुरुषकूं क्रोधहोवैनहीं ॥ काहेतैं एकशरीर विषेवर्तमान हस्तपादादिकअवयवोंका एकहीआत्माहै ॥ तैसे एकशरीरकरिकै दूसरेशरीरकेताडनहुएभी विद्वान्पुरुषोंकूं क्रोधहोवैनहीं ॥ काहेतैं शास्त्रप्रमाणकरिकै तथायुक्तियोंकरिकै तथाआपणेअनुभव

करिके विद्वान्पुरुषनें सर्वशरीरोंविषे एक आत्मा निश्चयकऱ्याहे ॥ यातें ऐसेविद्वान्पुरुषकूं जैसे आपणाशरीर सुखका साधनहे ॥ तैसे सर्वशरीर सुखकेसाधनहें ॥ याकारणतें सो विद्वान्पुरुष किसीऊपरि क्रोधकरतानहीं ॥ किंवा ॥ जोपुरुष अपकारकरणे हारेजीवोंऊपरिक्रोधकरैहे ॥ सोपुरुष आत्मवेत्तानहीं ॥ किंतु सोपुरुष आत्माकेनाशकरणेहाराहे ॥ याकारणतेंहीं नास्तिकहे ॥ और सर्वभूतोंकीहिंसाकरणेहाराहे ॥ तात्पर्ययह ॥ असंगआत्माकातो अपकारहोवेनहीं ॥ किंतु शरीरादिकजडपदार्थोंकाअपकारहोवैहे ॥ ताशरीरादिकोंविषे जिसपुरुषकूं आत्मबुद्धिहोवैहे ॥ तिसीपुरुषकूं शरीरकेअपकारकरणेहारेजीवोंऊपरि क्रोधहोवैहे ॥ यातें शरीरादिको विषे आत्मबुद्धिहीं क्रोधकाकारणहे और चार्वाकनास्तिकभी शरीरकूंहींआत्मामानेंहें ॥ यातें क्रोधवानपुरुषविषे तथानास्तिकविषे किंचित्मात्रभी भेदनहीं ॥ और क्रोधकीउत्पत्तितेंअनंतर यहपुरुष शरीरकरिके तथामनकरिके तथावाणीकरिके जीवोंकीहिंसा अवश्य करैहे ॥ यातें क्रोधवानपुरुषहीं सर्वभूतप्राणियोंकीहिंसाकरणेहाराहे ॥ याकहणेतेंयहसिद्धभया ॥ जिसपुरुषकूंएकअद्वितीयआत्माकाज्ञा नभयाहे ॥ सोपुरुष किसीप्राणीऊपरि क्रोधकरतानहीं ॥ और जोपुरुष किसीप्राणीऊपरि क्रोधकरैहे ॥ सोपुरुष आत्मवेत्तानहीं ॥ किंवा॥ जिसपुरुषकूं एकअद्वितीयआत्माकाज्ञाननहींभया॥किंतु याप्रकारकाज्ञान जिसकूंभयाहे॥आपणेपुण्यकर्मकरिके जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिहोवै हे ॥ और आपणेपापकर्मकरिके जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहे ॥ यातें पुण्यपापहीं जीवोंकेसुखदुःखकेकारणहे ॥ दूसराकोई जीवोंके सुखदुः खकाकारणनहीं ॥ याप्रकारकाज्ञानभी जिसपुरुषकूंभयाहे ॥ सोपुरुषभी अपकारीजीवोंऊपरि क्रोधकरतानहीं ॥ तो सर्वात्मदर्शीतत्ववेत्ता पुरुष अपकारीजीवोंऊपरि कैसेक्रोधकरैगा ॥ किंतु नहींकरैगा ॥ किंवा जोपुरुष शास्त्रकूंजाणताहुआभी क्रोधवान्होवैहे ॥ सोपुरुष किस प्रकार विद्वान्होवैगा ॥ किंतु सोक्रोधवानपुरुष विद्वान्नहीं ॥ काहेतें जोपुरुष विद्यावालाहोवैहे ताकूं विद्वान्कहैं हैं ॥ और सर्वप्राणियोंविषे आत्मबुद्धिकरिकेसर्वकेहितकीइच्छाकरणी यहविद्याकाफलहे ॥ सोविद्याकाफल क्रोधवान्पुरुषविषेसंभवेनहीं ॥ यातें जैसे गर्दभ मृत्तिका केभारकूंउठावैहे ॥ तैसे क्रोधवान्पुरुष निष्फलहीं शास्त्ररूपीभारकूंउठावैहे ॥ किंवा ॥ जोपुरुष ॥ किंचित्मात्र शास्त्रकापठनकरैहे ॥

अथवा श्रवणकरैहै ॥ अथवा नहींश्रवणकरैहै ॥ परंतुसर्वप्राणियोंविषे आत्माकूंपरिपूर्णजानिकै शरीर मन वाणीकरिकै किसीप्राणीकाद्रोह नहींकरता ॥ तिसीपुरुषनैं सर्वशास्त्रकेयथार्थअर्थकूंजान्याहै ॥ यहवार्ता महाभारतविषेभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ आत्मानंचेद्विजानीयात् सर्वं भूतगुहाशयं ॥ श्लोकेनयदिवार्द्धेनक्षीणंतस्यप्रयोजनम् ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष एकश्लोककरिकै अथवाअर्द्धश्लोकरिकै सर्वभूतोंविषेव्या पक आत्माकूंजाणताहै ॥ तिसपुरुषका सर्वप्रयोजनसिद्धभयाहै ॥ गीताविषेभी श्रीकृष्णभगवान्नैं अर्जुनकेप्रतिकह्याहै ॥ श्लोक ॥ आ त्मौपम्येनसर्वत्र समंपश्यतियोऽर्जुन ॥ सुखंवायदिवादुःखं सयोगीपरमोमतः ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ हेअर्जुन ॥ जैसे आपणेकूंसुख प्रियहो वैहै ॥ और दुःख अप्रियहोवैहै ॥ तैसे जोपुरुष सर्वप्राणियोंकेसुखकूं प्रियमानैहै ॥ और दुःखकूं अप्रियमानै है ॥ सोईहींपुरुष परमयो गीहै ॥ १ ॥ किंवा ॥ जोपुरुषशरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै प्राणियोंकाद्रोहकरैहै ॥ सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोक विषे आत्मास्वरूपआनंदकूं प्राप्तनहींहोता ॥ यातैं जीवोंकाद्रोहहीं सर्वअनर्थकाकारणहै ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु इंद्रकूं शापनहींदेताभया ॥ उलटा सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र॥तुमनैं जोहमारेकूं ॥ आज्ञाकरीहै ॥ ताआज्ञाकूं मैंअवश्यपालनकरोंगा ॥ जोमैं तुमारीआज्ञाकानहींपालनकरों ॥ तौतुमनैं हमारेमस्तककाछेदन करणा ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ ब्रह्मविद्याके नउपदेशकरणेकीआज्ञा जोतुमनैं हमारेप्रतिकरीहै ॥ साआज्ञा हमारेदुःखकाकारणनहीं ॥ किंतु उलटा जीवन्मुक्तिकेसुखकाकारणहै ॥ परंतु सर्वदेवतावोंकाअधिपति तूंइंद्र स्वर्गलोकतैंचलिकै हमारेआश्रमविषेआयाहै ॥ यातैं तुमारेप्रसन्नताकरणेवासतै मै कौनपदार्थ तुमारेप्रतिदेवो ॥ याप्रकारकाविचार मैंकरोंहूं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ धनकरिकै तथाशरीरक रिकै ॥ तथाअन्यकिसीउपायकरिकै तुमारेप्रसन्नताकूं मैअवश्यसिद्धकरोंगा तुमतैं याकेविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेअश्विनी कुमारो ॥ इसप्रकारकावचन जभी दध्यङ्ऋषि तुमारेगुरुनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोदेवराजइंद्र सात्त्विकस्वभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ और मुनिकेकोमलस्वभावकूंदेखिकरिकै भयकूंप्राप्तहुआ सोइंद्र याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेब्राह्मण ॥ आपणेवर्णाश्रमकेधर्मोंकूंकरणे

हारेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकाभीमैंकदाचित् द्रोहनहींकरता॥ तौ सर्वऊपरिउपकारकरणेहारा जोतूंश्रेष्ठब्राह्मणहैं ॥ तिसकाद्रोह मैंकैसेकरौंगा॥ और हेब्राह्मण ॥ मैंनें जोपूर्व विश्वरूपादिकब्राह्मणोंका हननकऱ्याथा ॥ तथा अनंतसंन्यासियोंकाहननकऱ्याथा ॥ सोभी तिनोंकेदुष्टस्वभाव कूंजाणिकरिकेहीं हननकऱ्याथा ॥ अपराधतैंविना मैं किसीका हननकरतानहीं ॥ यातैं हेब्राह्मण जोतूं मेरेआज्ञाकाउल्लंघनहींकरैगा ॥ तौतुमा राशिर छेदननहींहोवैगा ॥ और जोतूं हमारीआज्ञाकाउल्लंघनकरेगा ॥ तौविश्वरूपादिकोंकीन्याईं तुमाराभी शिरछेदनहोवैगा ॥ और हेब्राह्म ण पूर्वजोहमनें तुमारेप्रतिकह्याथा ॥ हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ सो तुमनें हमारेवचनकूंअंगीकारकरिके हमारेप्रतिब्रह्मविद्या काउपदेशकऱ्या ॥ ताविद्याकेउपदेशकरिके हमारीइच्छाकूं तुमनें पूर्णकऱ्या ॥ दूसराकोईकार्य अबीकरणेयोग्यहैनहीं ॥ यातैं हेब्राह्मण तु माराकल्याणहोवै॥हम अबीआपणेस्वर्गलोककूंजातेहैं॥हेअश्विनीकुमारो॥याप्रकारकेवचनोंकूं सोदेवराजइंद्र कहिकरिके आपणेस्वर्गलोककूं जाताभया ॥ और तुमारागुरु दध्यङ्ऋषि महानसमुद्रकीन्याईं क्षोभतैंरहितहुआ तिसीआश्रमविषेस्थितहोताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरिकेहमारेइच्छाकूं तुमनें पूर्णकऱ्या॥यहजोवचन इंद्रनेंदध्यङ्ऋषिकेप्रतिकह्या सो संभवैनहीं॥काहेतैंजोइंद्रकूंब्रह्मविद्या कीप्राप्तिहोती ॥ तो दध्यङ्ऋषिऊपरि क्रोधनहींकरता॥समाधान॥हेअश्विनीकुमारो॥दध्यङ्अथर्वण तुमारागुरु देवराजइंद्रकेप्रति संपूर्णब्रह्म विद्याकाउपदेशकरताभया ॥ तथा नानाप्रकारकेकर्मोंका तथा नानाप्रकारकेउपासनावोंका उपदेशकरताभया तथा नानाप्रकार जगत्के उत्पत्तिकाउपदेशकरताभया ॥ परंतु सोदेवराजइंद्र रागादिकप्रतिबंधकेवशतैं ब्रह्मविद्याकूंछोडिकरिके अन्यसंपूर्णविद्याकूंग्रहणकरताभया याकारणतैं इंद्रनें आपणेइच्छाकीपूर्णताकहीहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार इंद्रकेगएतैंअनंतर सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु मौनकूं धारणकरिके स्थितहोताभया ॥ और तुमदोनों बहुतकालकेपीछे वैराग्यादिकसाधनोंकूंसंपादनकरिके ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतैं दध्यङ्ऋषि केसमीप जातेभये॥तहाँ जाइके दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रति प्रणामकरिकै तुमदोनों याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेगुरोहमनेंपूर्व आपतें ब्रह्मवि द्याकीप्रार्थनाकरीथी ॥ और आपनें यहप्रतिज्ञाकरीथी ॥ वैराग्यादिक साधनोंकूं तुम संपादनकरिआवो ॥ पश्चात् तुमारेप्रति मैं ब्रह्मविद्या

काउपदेशकरौंगा ॥ सोअभी हमदोनों वैराग्यादिकसाधनोंकूं संपादनकरिकै आपकेचरणकमलोंकूं प्राप्तभयेहैं ॥ यातैं हेगुरो आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतै हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकारकावचन जभी तुमोंनैकह्या ॥ तभी सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै परमसंशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ अब ताविचारकूंदिखावैहैं ॥ जोमैं अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौंगा ॥ तौ इंद्र हमारामस्तकछेदनकरैगा ॥ और जोमैं अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहीं करौंगा तौ हमारावचन मिथ्याहोवैगा॥याप्रकारकाविचारकरिकै सोदध्यङ्ऋषि परमसंशयकूंप्राप्तहोताभया॥दृष्टांत॥जैसे शकटवालापुरुष याप्रकारकाविचारकरिकै संशयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जोमैं बलदोंकेआगेचालोंगा ॥ तौ बलदोंकेपाद हमारेपादोंऊपरिआवैंगे ॥ और जोमैं बलदोंकेपीछेचालोंगा ॥ तौ शकटकेचक्र हमारेपादोंऊपरिआवैंगे ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोविवेकीपुरुष संशयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे दध्यङ्ऋषि तुमारागुरु संशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकार संशयकूंप्राप्तहोइकै सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु याप्रकारकानिश्चय आपणेमनविषेकरताभया ॥ अश्विनीकुमारोंकेउपदेशकरणेविषे जोहमारामृत्युहोवैगा सोश्रेष्ठहै ॥ परंतु हमारावचन मिथ्यामतहोवै ॥ अब मिथ्यावचनजन्यदुःखतैं मरणजन्यदुःखविषे अल्पतादिखावैं हैं॥यालोकविषे जोप्राणी उत्पन्नभयाहै॥तिसप्राणीकामरण अवश्यहोवैहै॥ और मरणकालविषे रोगादिकनिमित्तकरिकै जीवोंकूं दुःखभी अवश्यहोवैहै॥यातैं मरणजन्यदुःख नसहनकरणेयोग्यनहीं॥किंतु संपूर्णप्राणीतामरणजन्यदुःखकूं अनंतवारअनुभवकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अन्यजीवोंकामृत्यु ज्वरादिकरोगोंकरिकैहोवै हैं ॥यातैं तिनोंकूं अल्पदुःखहोवै है ॥ और इंद्रकेवज्रजन्यमृत्युतैं परमदुःखहोवै है ॥ समाधान ॥ इतनैंनिमित्तकरिकै जीवोंकामृत्युहोवै है ॥ ज्वरादिकव्याधि सर्प चोर सिंह विष अग्नि जल शत्रु अजीर्णअन्नइतनैंनिमित्तोंविषे किसीएकनिमित्तकरिकैहीं जीवोंकामृत्युहोवैहै ॥ और यहइंद्रकावज्रभी दिव्यअग्निरूपहै ॥ यातैं तिननिमित्तोंकेभीतरिहीं हैं ॥ कोईअपूर्वनिमित्तनहीं ॥ यातैं मरणजन्यदुःखनसहनकरणेयोग्यनहीं ॥ किंतु सहनकीयाजावैहै ॥ अब मरणजन्यदुःखतैं मिथ्यावचनजन्यदुःखविषे अधिकता दिखावैहै ॥ जोमैं आपणावचन मिथ्याकरौंगा ॥ तौ मेरेकूं अनंत

कोटिकल्पपर्यंत नरकविषे अनंतप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ जिननरकदुःखोंकेनिवृत्तिका कोईभीउपायनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोकोईपुरुष पापकर्मकूं तथाताकेफलकूं नजाणताहुआ तिसपापकर्मकूंकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं अल्पदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोकोईपुरुष पापकर्मकूं तथाताके नरकादिकफलकूं शास्त्रप्रमाणतैंजाणिकरिकैभीपुनःतिसपापकर्मकूंकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं तापापकर्मकरिके अधिकदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और मैं मिथ्यावचनरूपीपापकर्मकेफलकूंजाणताहूं ॥ यातैं जाणिकरिके जोमैं मिथ्यावचनकरूंगा ॥ तौ मेरेकूं अधिकदुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा ॥ जोपुरुष देहाभिमानकरिके युक्तहुआमिथ्यावचनकाउच्चारणकरैहै ॥ सोपुरुष जीवताहुआभी मृतकजानणा ॥ काहेतैं यालोकविषे सर्वप्राणी तामिथ्यावादीपुरुषकीनिंदाकरैहैं ॥ और मरिकरिके सोमिथ्यावादीपुरुष नरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं दोनोंलोकविषे मिथ्यावादीपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकहणेकरिके यहअर्थ बोधनकऱ्या॥जोपुरुष सकामहै तिसपुरुषकूंतौ स्वर्गकामोयजेत् इत्यादिकविधिवाक्योंका तथानानृतंवदेत् इत्यादिकनिषेधवाक्योंका दोनोंका अधिकारहै॥और जोनिष्कामविद्वान्पुरुषहै तिसकूं यद्यपि स्वर्गकामोयजेत् इत्यादिकविधिवाक्योंकाअधिकारनहीं ॥ तथापि नानृतंवदेत् इत्यादिकनिषेधवाक्योंकाअधिकार निष्कामविद्वान्पुरुषकूंभीहैं॥याकारणतैंही सोदध्यङ्ऋषि नानृतंवदेत् यानिषेधवाक्यकाउल्लंघन नहींकरताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार आपणेमनविषेविचारकरिके सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु तुमारेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ बाल्यअवस्थातैंलेकरिके मैंनें कबीभीमिथ्यावचनकाउच्चारणनहींकऱ्या॥तौ अबीवृद्धअवस्थाविषे मिथ्यावचनकाउच्चारण मै किसवासतेकरौंगा॥ किंतु मिथ्यावचनकरणा हमारेकूं उचितनहीं ॥ तथापि मिथ्यावचनकानिमित्त जोमैंनें आपणेमनविषेचिंतनकऱ्याहै ॥ सो तुमारेप्रति मैंकथनकरताहूं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ देवतावोंका तथामनुष्योंका तथा असुरोंका तथाअन्यभीसर्वप्राणियोंका मै उपकारकरणेहाराहूं ॥ याप्रकारका हमारास्वभाव तुमदोनोंजाणतेहो ॥ पुनः कैसामैहूं ॥ प्रियपदार्थोंकेभोगकरिकै पूर्वलेपुण्यकर्मोंकूं मै समाप्तकरताहूं ॥ और अप्रियपदार्थोंकेभोगकरिकै पूर्वलेपापकर्मोंकूं मै समाप्तकरताहूं॥और जैसे अज्ञानोजीवोंकूं प्रियवस्तुकेप्राप्तहुए हर्षहोवैहै॥तथा अप्रियवस्तुकेप्राप्तहुए शो

कहोवैहै ॥तैसे मेरेकूं प्रियअप्रियवस्तुकीप्राप्तितैं हर्षशोकहोवैनहीं॥किंतु दोनोंकीप्राप्तिविषे मै समानरहोंहूं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे याल्लोकविषे भेददर्शीअज्ञानीपुरुषोंका कोईशत्रुहोवैहै कोईमित्रहोवैहै कोईउदासीनहोवैहै कोईबंधुहोवैहै कोईद्वेष्यहोवै है कोईमध्यस्थहोवैहै तैसे मुझसमदर्शीका कोईशत्रु मित्र उदासीन बंधु द्वेष्य मध्यस्थ हैनहीं॥तहाँ अपकारतैंविनाहीं स्वभावतैंजोअपकारकरैहै ताकूंशत्रुकहैहैं॥ और जोपुरुष प्रतिउपकारकीनअपेक्षाकरिके उपकारकरैहै ताकूं मित्रकहैहैं॥ और जोपुरुष उपेक्षाकरैहै ताकूं उदासीनकहैहैं॥औरजोपुरुष किंचित्संबंधकरिकेउपकारकरैहै ताकूं बंधु कहैहैं ॥ और जोपुरुष अपकारकी अपेक्षाकरिके अपकारकरैहै ताकूं द्वेष्यकहैहैं ॥ और जो पुरुष विवादकरतादोनोंपुरुषोंकेहितकीइच्छाकरैहै॥ताकूं मध्यस्थकहैं हैं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ या आपणेब्राह्मणशरीरविषे तथासंपूर्ण स्थावरजंगमशरीरोंविषे तथाश्वानशरीरविषे तथाहिरण्यगर्भकेशरीरविषे मै समानरूपकरिकेस्थितहूं॥काहेतैं मै सर्वरूपहूं ॥अब सर्वरूपताकूं दिखावैहैं हेअश्विनीकुमारो ॥ मैही पुरुषहूं ॥ तथामैही स्त्रीहूं तथामैही नपुंसकहूं ॥ तथामैहीपंचमहाभूतहूं ॥ तथामैहीभौतिकप्रपंचहूं ॥ तथा मैही मनुहूं ॥ तथामैही सूर्यहूं ॥ तथामैही चंद्रमाहूं ॥ तथामैही अग्निहूं ॥ तथामैही संपूर्णज्योतिहूं ॥ तथामैहीभूर् भुवःस्वर् महर् जन तप सत्य यहऊपररिकेसप्तलोकहूं ॥ और मैही अतल वितल सुतल रसातल तलातल महातल पाताल यह नीचेकेसप्तलोकहूं ॥ और हेअश्विनीकुमारो॥जैसे स्वप्नविषे स्वप्नद्रष्टापुरुषतैं स्वप्नकेपदार्थ भिन्ननहींहोवैहै॥तैसे संपूर्णस्थूलसूक्ष्मप्रपंच मेरेतै भिन्न नहीं किन्तु मेराही स्वरूपहै ॥ और ब्रह्मांडविषेस्थित जे स्वेदज अंडज जरायुज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेजीवहैं ॥तिनोंविषे कोईजीव उत्कृष्टहै और कोईजी व निकृष्टहै ॥ तिनसंपूर्णोंका मैआत्माहूं ॥ और सर्वभेदतैंरहितब्रह्मकूं मै आत्मारूपकरिकेजाणताहूं ॥ याकारणतैंमेरेविषे मायाकाभीस्पर्श नहीं ॥ तामायाकेअभावहुए काम क्रोध लोभ इत्यादिकदोषभी मेरेस्वरूपविषेहैंनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥मैही परमात्मादेव लीला मात्रकरिके संपूर्णजगतकीउत्पत्तिकरोहूं॥और मैही संपूर्णजगत्कापालनकरोहूं ॥ और मैही संपूर्णजगत्कासंहारकरोहूं॥दृष्टांत ॥ जैसे ऊर्ण नाभिजंतु अन्यकारणकीसहायतातैंविनाहीं आपणेशरीरमात्रतैं तंतुवोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा तिनतंतुवोंका पालनकरैहै ॥तथा तिनतंतुवों

कूं आपणेविषेलयकरैहै॥तैसे मैंहीं परमात्मादेव संपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करोंहूं परंतु ऊर्णनाभिरूपदृष्टांततैं हमारेविषे इतनीवि
लक्षणताहै॥ऊर्णनाभिजंतु सावयवहुआतथासंबंधवालाहुआ तंतुवोंका परिणामीउपादानकारणहै॥और मैंपरमात्मादेवतो निरवयवहुआतथा
असंगहुआ जगत्काविवर्तउपादानकारणहूं॥शंका॥हेभगवन्॥ जोऊर्णनाभिजंतुतैं आपविषे विलक्षणताहोवे॥तो ऊर्णनाभीजंतुकेंदृष्टांतकरि
के आपणेविषे जगत्कीकारणता सिद्धकरणीसंभवेनहीं समानस्वभाववालाही दृष्टांतहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ समा
नस्वभाववालापदार्थ दृष्टांतहोवैहै यहवार्ता यद्यपि सत्यहै ॥ तथापि सर्वअंशकरिकैसमानता दृष्टांतविषेहोवैनहीं ॥ किंतु किसीएकअं
शकरिकै दृष्टांतविषे समानताहोवैहै ॥ साएकअंशकरिकैसमानता यहांभीहै ॥ काहेतैं जैसे ऊर्णनाभिजंतु तंतुवोंकाउपादानकारण तथानि
मित्तकारणदोनोंहै ॥ तैसे मैंपरमात्मादेव जगत्का उपादानकारण तथानिमित्तकारण दोनोंहूं ॥ याप्रकार अभिन्ननिमित्तउपादानकारणता
मात्रअंशविषे ऊर्णनाभिकादृष्टांतहै ॥ सर्वअंशविषेनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे स्वप्नविषेप्रतीतभयेजे रथादिकपदार्थहैं ॥ ते स्वप्न
द्रष्टापुरुषतैंभिन्नहोवेनहीं ॥ तैसे संपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय मुझपरमात्मातैं भिन्ननहीं॥हे अश्विनीकुमारो॥ ऐसाब्रह्मनिष्ठमैं आपणे
आश्रमविषेस्थितथा ॥ और किसीकालविषे देवराजइंद्र हमारेआश्रमविषे आवताभया॥और तिसइंद्रकूं अतिथिजाणिकरिके यथाशक्ति मैं
ताइंद्रकापूजनकरताभया ॥ पुनः मैं इंद्रकेप्रतिकहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र तुमारीप्रसन्नताकरणेवासते मैं कौनप्रियपदार्थदेवों ॥ हेअश्वि
नीकुमारो ॥ इसप्रकारकावचन जभीमैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोइंद्र हमारेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेऋषि जोतुं हमारेकूं
प्रसन्नकऱ्याचाहताहै ॥ तौ दुर्लभब्रह्मविद्या हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकारकावचन जभी देवराजइंद्रनैं कह्या ॥
तभीमैं इंद्रकेप्रति मधुकांडकेअर्थयुक्त दुर्लभब्रह्मविद्याकाही उपदेशकरताभया ॥ ब्रह्मविद्यातैंभिन्न किसीअन्यविद्याकाउपदेश नहींकर
ताभया ॥ काहेतैं जगत्विषे ब्रह्मविद्याहीएकदुर्लभहै ॥ ब्रह्मविद्यातैंभिन्न शब्दरूपशादिकविषयतो सर्वलोकोंविषे सर्वजीवोंकूं सुलभहैं ॥
तहां स्वर्गलोकविषे जैसे कर्मीजीवोंकूं विषयप्राप्तहैं ॥ तैसे नरकविषेस्थित जीवोंकूंभी विषयप्राप्तहैं ॥ और ब्रह्मलोकविषेस्थित जीवोंकूं

जैसे विषयजन्यसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे विष्ठाविषेस्थित क्रिमिआदिकजीवोंकूंभी विषयजन्यसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं शब्दस्पर्शादिक विषय दुर्लभनहीं ॥ किंतु आत्मातैंभिन्न सर्वविषयोंकीप्राप्ति कर्मउपासनाकरिकै जीवोंकूंहोवैहै ॥ और यहब्रह्मविद्यातो अत्यंतदुर्लभहै ॥ काहेतैं जोकभी हमारेकूं पूर्व ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिभईहोती ॥ तो अबी जन्ममरणरूपसंसार हमारेकूं नहींप्राप्तहोता ॥ और जन्ममरणरूपसंसार अभी हमारेकूंप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ पूर्वहमारेकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिनहींभई ॥ यातैं ब्रह्मविद्या अत्यंतदुर्लभहै ॥शंका॥ हे भगवन् ॥ जैसे ब्रह्मविद्यादुर्लभहै ॥ तैसे ब्रह्मलोकादिकोंकेप्राप्तिकेसाधन जेकर्मउपासनाहैं तेभी दुर्लभहीहैं ॥ समाधान ॥ कर्मउपासना दुर्लभनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे बहुतब्राह्मण कर्मउपासनाकूं यथार्थजाणतेहैं ॥ तथा तिनकर्मउपासनावोंकाअनुष्ठानभी बहुतब्राह्मण करैहैं ॥ यातैं कर्मउपासना दुर्लभनहीं ॥ किंतु ब्रह्मविद्याहीदुर्लभहै ॥ गीताविषेभी श्रीकृष्णभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति ब्रह्मविद्याकीदुर्लभता कहीहै ॥ श्लोक ॥ मनुष्याणांसहस्रेषु कश्चिद्यततिसिद्धये ॥ यततामपिसिद्धानां कश्चिन्मांवेत्तितत्वतः ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ सहस्रमनुष्योंविषे कोईएकपुरुषही मेरीप्राप्तिवासते यत्नकरैहै ॥ और तिनयत्नकरणेहारेपुरुषोंविषेभी कोईएकपुरुषही वास्तवस्वरूपतैं मेरेकूं जाणेहै ॥ १ ॥ किंवा ॥ लोकविषेभी तिसपदार्थकूं लोक दुर्लभमानैं हैं ॥ जिसपदार्थकेसमानजातिवाला कोईदूसरापदार्थ नहींहोवैहै ॥ और जिसपदार्थकेसमानजातिवाला कोईदूसरापदार्थहोवैहै ॥ तिसपदार्थकूं लोकविषेभी कोईदुर्लभमानतानहीं ॥ याप्रकारकीदुर्लभता सुखके साधनशरीरादिकोंविषे तथाविषयजन्यसुखरूपफलविषे हैनहीं ॥ काहेतैं शरीरस्वरूपजातिकरिकै सर्वशरीर समानजातिवालेहैं ॥तथा सुखस्वरूपजातिकरिकै संपूर्णविषयजन्यसुख समानजातिवालेहैं ॥ यातैं संसारसंबंधी संपूर्णपदार्थोंविषे दुर्लभतानहीं ॥ और कार्यप्रपंचसहित अविद्याकूंनाशकरणेहारी जोब्रह्मविद्याहै ॥ ताकेसमानजातिवाला कोईदूसरापदार्थहैनहीं ॥ यातैं सोब्रह्मविद्याही दुर्लभहै ॥ अब याअर्थके स्पष्टकरणेवासते प्रथम सर्वलोकोंविषे शरीरादिकसाधनोंकीसमानता दिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ यास्थूलशरीरतैंविना सुखदुःखका भोगहोवैनहीं ॥ यातैं ब्रह्मलोकविषेस्थितजीवोंका तथाविष्ठाविषेस्थितजीवोंकास्थूलशरीर समानहीहैं॥और आत्मज्ञानतैंविना ब्रह्मलोकवि

षे स्थितजीवोंकूं विषयइंद्रियकेसंबंधतें जैसेसुखउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे विष्ठाविषेस्थितजीवोंकूंभी विषयइंद्रियकेसंबंधतें सुखउत्पन्नहोवैहै ॥ यातें सुखभी सर्वत्र समानहीं है ॥ याकहणेकरिकै स्थूलशरीरकीसर्वत्रसमानतादिखाई ॥ अब सूक्ष्मशरीरकी सर्वत्र समानतादिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यहपंचकर्मइंद्रिय ॥ तथा श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रिय ॥ तथा मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचतुष्टयअंतःकरण ॥ तथा प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्राण ॥ यहसंपूर्णवाक्आदिक सूक्ष्मशरीरके अवयवहैं ॥ तेवाक्आदिकअवयवभी ब्रह्मलोकविषेस्थित जंगमजीवोंके तथामनुष्यलोकविषेस्थित जंगमजीवोंके समानहींहैं ॥ और किस स्थानविषे अभिव्यक्तिकीन्यूनता तथाअधिकताकरिकै तिनोंकीविषमताभीप्रतीतहोवैहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ वाक्तेंआदिलेके प्राण पर्यंत जितनेकिसूक्ष्मशरीरकेअवयवहैं ॥ ते जैसेमनुष्यादिकजंगमशरीरोंविषेहैं ॥ तैसे वृक्षादिकस्थावरशरीरोंविषेभीहैं॥परंतु जैसे मनुष्या दिकजंगमोंविषे तिनवाक्आदिकोंकीअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ तैसे वृक्षादिकस्थावरोंविषे तिनोंकीस्पष्टअभिव्यक्तिहोवैनहीं ॥ यातें वृक्षादिक स्थावरशरीरभी मनुष्यादिकजंगमशरीरोंकेसमानहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अभिव्यक्तइंद्रियोंवाले जेमनुष्यादिक जंगमहैं ॥ तिनोंकेसाथ अनभिव्यक्तइंद्रियवाले वृक्षादिकस्थावरोंको समानताकहणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ समाधान ॥ आपणेआपणेविषयों केग्रहणकरणेवासतै जोइंद्रियोंकाव्यापारहै ॥ ताव्यापारकरिकैयुक्तइंद्रियोंकूं अभिव्यक्तकहैंहैं ॥ और ताव्यापारतैंरहितइंद्रियोंकूं अनभि व्यक्तकहैंहैं ॥ सोइंद्रियोंकाअनभिव्यक्तपणा मनुष्यादिकजंगमोंविषेभी कदाचित्रहैहै ॥ जैसे गृहकेभीतरस्थितहुआ कोईपुरुष बाह्यअश्व केशब्दकूं श्रवणकरिकै ताशब्दरूपीहेतुतैंबाह्यवर्तमानअश्वका मनकरिकेअनुमानकरैहै तिसकालविषे सर्ववाक्आदिकइंद्रिय आपणे आपणेव्यापारतैंरहितहोवैं हैं ॥ इसप्रकार न्यूनइंद्रियवालेजे बधिर तथाअंधादिक हैं तथावृक्षादिकजे हैं ॥ तिनोंकूं जोज्ञानउ त्पन्नहोवैहै ॥ सोइंद्रियोंतैंविना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु इंद्रियोंकरिकैहीउत्पन्नहोवै है ॥ परंतु तिनबधिरादिक न्यूनइंद्रियवालेपुरुषोंकी जेनेत्रादिकअभिव्यक्तइंद्रियहैं ॥ तितैंतैंभिन्नश्रोत्रादिकइंद्रियआपणेव्यापारतैंरहितहुए वर्तैहैं ॥ यातें बधिरअंधादिकोंविषे तथावृक्षादिकों

विषे इंद्रियोंकाअभावनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सर्पविषेकर्णरूपगोलकहैंनहीं यातैं ताकेविषेश्रोत्रइंद्रियका अभावहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ गोलकके अभावतैं इंद्रियोंकाअभावसंभवैनहीं ॥काहेतैं किसीशरीरविषेतौ नेत्रादिकइंद्रिय आपणेआपणेगोलकविषेस्थितहोइके कार्यकूंकरैंहैं ॥ और किसीशरीरविषे एकहीगोलकविषे दोइंद्रियस्थितहोइके आपणेआपणेकार्यकूंकरैं हैं ॥ जैसे सर्पकेचक्षुगोलकविषेस्थितहोइके श्रोत्रइंद्रिय तथा नेत्रइंद्रिय आपणेआपणेकार्यकूंकरैंहैं ॥ यातैं सर्वशरीरोंविषे वाक्आदिक सूक्ष्मशरीरकेअवयवविद्यमान हैं ॥ इतनैंग्रंथकरिके सुखदुःखकेसाधन वाक्आदिकइंद्रियोंकी सर्वत्रसमानतादिखाई ॥ अब सुखदुःखरूपफलकी सर्वत्रसमानतादिखावैंहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो॥ वाक्आदिकइंद्रियोंविषे कोइएकइंद्रियहैअभिव्यक्त जिनोंकी अथवा संपूर्णवाक्आदिकइंद्रियहैंअभिव्यक्तजिनोंकी ऐसेजे मनुष्यादिकजंगमहैं तथावृक्षादिकस्थावरहैं ॥ तिनोंकूं जोसुखदुःख उत्पन्नहोवैहै ॥ सो केवल मनविषेही उत्पन्नहोवैहै ॥ मनकूंछोडिकरिके अन्यकिसीविषे सुखदुःखकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और सोसुख तथादुःख एकइंद्रियकेव्यापारतैंउत्पन्नहोवै अथवा अनेकइंद्रियोंकेव्यापारतैं उत्पन्नहोवै ॥ याकेविषे कोईनियमनहीं ॥ परंतु तासुखविषे तथादुःखविषे स्वरूपतैंकोईविशेषतानहीं ॥ किंतु सर्वशरीरोंविषे समानहीसुखदुःखहोवैहै ॥ किंवा ॥ इंद्रियोंकरिकेप्राप्तहोणेयोग्य जे शब्दस्पर्शादिकविषयहैं तिनोंविषे जिसविषयविषे पुरुषकारागहोवैहै ॥ तिसविषयकोप्राप्ति जभीतापुरुषकूंहोवै है ॥ तभी तापुरुषकेमनविषे सुखकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ औरजिसविषयविषे पुरुषकाद्वेष होवैहै ॥ तिसविषयकी प्राप्ति जभी तापुरुषकूंहोवैहै ॥ तभी तापुरुषकेमनविषे दुःखकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं आसक्तिरूप राग सुखकाकारणहै ॥ और द्वेष दुःखकाकारणहै ॥ सोराग जैसेदेवतावोंकूंआपणेशरीरादिकोंविषेहै ॥ तैसे विष्ठाविषेस्थित क्रिमिआदिकनीचजीवोंकूंभी आपणेशरीरादिकोंविषेरागहै ॥ इसप्रकार दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे अपकारीजीवोंविषेद्वेषभी देवतादिक उत्कृष्टशरीरोंविषे तथाक्रिमिआदिकनीचशरीरोंविषे समानहीहै ॥ यातैं रागद्वेषजन्यसुखदुःखभी सर्वशरीरोंविषेसमानहीहैं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेदिखावैंहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ जिसपुरुषका मृगोंकेमारणेविषे रागहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं मृगकेप्राप्तिकरिके जैसासुखहोवैहै ॥ तथा जिसपुरुषकूं

गायन श्रवणकरणेविषे रागहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं गायनकीप्राप्तिकरिके जैसासुखहोवैहै ॥ तैसाहीसुख कामीपुरुषकूं स्त्रीकेआ लिंगनतैंहोवैहै ॥ और स्त्रीकेकामनावालेपुरुषकूं स्त्रीकेप्राप्तहुए जैसासुखहोवैहै ॥ तैसाहीसुख पुत्रकीकामनावालेपुरुषकूं पुत्रकीप्राप्ति तैंहोवैहै ॥ और पुत्रकी प्राप्तितैं पुत्रार्थीपुरुषोंकूं जैसासुखहोवैहै ॥ तैसाहीसुख क्षुधातुरपुरुषकूं अन्नकी प्राप्तितैंहोवैहै ॥ याप्रकारकीरीति सर्वत्रजानिलेणी ॥ यातैं आसक्तिरूपरागकरिके सर्वशरीरोंविषे समानहीं सुखउत्पन्नहोवैहै यहसिद्धभया ॥ अब द्वेषकरिकेसर्वजीवोंविषेदुः खकीसमानता दिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ अनिष्टवस्तुकेप्राप्तहुए एकइंद्रियकेव्यापारतैं तथाअनेकइंद्रियोंकेव्यापारतैं जोमनविषेदुःख उत्पन्नहोवैहै ॥ सोभी सुखकीन्याईं सर्वत्रसमानहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ विष्टाविषेस्थितजोक्रिमिहै तिसकूं मरणकालविषे जैसादुःखहोवैहै ॥ तैसाहीदुःख ब्रह्मलोकविषेस्थितजीवोंकूंमरणकालविषेहोवैहै ॥ अब सिंहावलोकनन्यायकरिके पुनःसुखकी सर्वत्रसमानतादिखावैहै ॥ जैसे सिंह मृगकूंमारिके दूरिजाइके पुनःमृगकीतरफदेखैहै ॥ जोकदाचित् दूसरामृग तहांआयाहोवै तो तिसकूंभीमारो॥ याकूंसिंहावलोकन न्या यकहैंहैं ॥हेअश्विनीकुमारो ॥ ब्रह्मलोकविषेस्थितब्रह्माकूं विषयइंद्रियकेसंबंधतैं जैसासुखहोवैहै॥ तैसाहीसुख विष्टाविषेस्थितक्रिमिकूं विषय इंद्रियकेसंबंधतैंहोवैहै ॥ और जैसे ब्रह्मलोकविषेस्थित ब्रह्माकूं सुखकेसाधन स्त्री पुत्र अन्नादिकपदार्थहैं॥तैसे विष्टाविषेस्थितक्रिमिकूंभीसुख केसाधन स्त्री पुत्र अन्नादिकपदार्थविद्यमानहैं ॥ और जैसे ब्रह्मलोकविषेस्थितब्रह्मा जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे विष्टाविषेस्थितक्रिमिभी जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सुखदुःखकेप्राप्तिकरणेहारादेहअभिमान जैसे ब्रह्माकूंहोवैहै ॥ तैसे विष्टाकेक्रिमिकूंभीहोवैहै ॥ यातैं विषयज न्यसुख तथाविषयजन्यसुखकेसाधन स्त्रीपुत्रादिक विष्टाकेक्रिमितैंआदिलेके ब्रह्मापर्यंत सर्वशरीरोंविषे प्राप्तहैं॥ यातैं तिनोंविषेदुर्लभता संभ वैनहीं ॥ किंतु जन्ममरणकेनिवृत्तकरणेहारी ब्रह्मविद्याहीं दुर्लभहै ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार ब्रह्मविद्याकीदुर्लभता मैंआपणेमनविषे विचारकरिके देवराजइंद्रकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाही उपदेशकरताभया॥परंतु सोदेवराजइंद्र ब्रह्मविद्याकाअधिकारीथानहीं॥यातैं ताब्रह्मविद्याकूं श्रवणकरिके सोइंद्र उलटाक्रोधवान्होताभया॥और हमारेप्रति याप्रकारकी गुरुदक्षिणादेताभया हेब्राह्मणआजदिनतैंलेके ॥ यहब्रह्मविद्या

तुमनें किसीकेप्रति नहींउपदेशकरणी ॥ जोतूं स्नेहकेवशहुआ किसीकेप्रति यहब्रह्मविद्या कथनकरेगा ॥ तौ तुमारेमस्तककूं वज्रकरिकै मैं छेदनकरोंगा॥हेअश्विनीकुमारो॥याप्रकारकीआज्ञा जबीहमारेकूंइंद्रनैंकरी॥तबीमैं ताआज्ञाकूंअंगीकारकरताभया॥याकारणतैंहीं तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याके उपदेशकरणेविषे हमारेकूं महाचिंताप्राप्तभईहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोआपनैं देवराजइंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेकावचनदियाहै ॥ तौहमारेप्रतिआप किसप्रकार ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरोंगे॥तात्पर्ययह॥जोहमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरोंगे ॥ तौ इंद्रकेप्रति जोआपनैंवचनदियाहै सो मिथ्याहोवैगा॥और जो तावचनकेसत्यकरणेवासते हमारेप्रति नहीं उपदेशकरोंगे॥तौ पूर्वहमारेप्रति जोआपनैं वचनदियाहै सो मिथ्याहोवैगा॥समाधान॥हेअश्विनीकुमारो॥हमनैं पूर्व तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकावचनदियाहै॥और अबी इंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याके नहींउपदेशकरणेकावचनदियाहै ॥ परंतु याकेविषेइतनीविशेषताहै॥किसीकेप्रति मैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरोंगा॥ याप्रकारका नियमकरिकैवचन हमनैं इंद्रकेप्रति नहींदिया॥किंतु जोहमनैं किसीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या ॥ तौ तुमनें हमारामस्तक छेदनकरणा॥याप्रकारकावचन हमनैं इंद्रकेप्रति कह्याहै॥यातैं तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषे हमारेकूं कोईप्रतिबंधकनहीं॥आपणे वचनकेसत्यकरणेवासते मैं तुमारेप्रति अवश्यब्रह्मविद्याकाउपदेशकरोंगा ॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ इंद्रकेवज्रकरिकै मृत्युहोणेकाभयही हमारे उपदेशविषे प्रतिबंधकहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ मरणेतैं हमारेकूंभयनहीं ॥ काहेतैं यासंसारविषे जोजीव उत्पन्नभयाहै ॥ तिसका किसीनकिसीनिमित्ततैं अवश्यमृत्युहोवैगा ॥ तिनमृत्युकेनिमित्तोंविषे जोदेवराजइंद्र हमारेमृत्युकाकारणहोवै तौ अत्यंतदुर्लभहै ॥ ॥ तात्पर्ययह ॥ दध्यङ्ऋषि आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते देवराजइंद्रतैंभी भयकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ याप्रकारकी हमारीकीर्ति सर्वलोक करैंगे ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ संपूर्णधनकानाशहोइजाणाभी श्रेष्ठहै ॥ और संपूर्णस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकापरित्यागहोइजाणाभीश्रेष्ठहै ॥ तथा आपणामृत्युहोइजाणाभी श्रेष्ठहै ॥ परंतु मिथ्यावचनकाभाषणकरणा बुद्धिमान्पुरुषोंकूं श्रेष्ठनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ आपणेमरणकूंतुच्छजाणिकरिकै तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषेभी हमारेकूं मिथ्यावचनकेभाषणकी महान्चिंत

होवैहै ॥ काहे तें जभी मैंतुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकाआरंभकरौंगा॥तभी उसीकालविषे देवराजइंद्र हमारामस्तकछेदनकरैगा ॥ मस्त
कछेदनहुएकिसप्रकारमैं तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौंगा ॥ यातें पुनःहमारावचन मिथ्याहोवैगा॥ और वचनकेमिथ्याहोणेकरिके मैं
नरकविषेप्राप्तहोवौंगा ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकारकीचिंता हमारेमनविषेहै ॥ औरतुमदोनों बुद्धिमान्हो ॥ यातें जोउपाय हमारेकूंक
रणेयोग्यहोवे ॥ सोउपाय तुम हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार जभीदध्यङ्ऋषि तुमारेगुरुनें तुमारे प्रतिकह्या ॥
तभी तुमदोनों आपणेअर्थकेलोभकरिकेयुक्तहुए दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेगुरो दुष्टइंद्रतें आप भयकूंमत
प्राप्तहोवो ॥ काहेतें अंगोंकेसंधानकरणेहारी जोमृतसंजीवनीविद्याहै तिसकूं हम जाणतेहैं ॥ यातें इंद्रकरिके चलायाहुआभीवज्र ताहमारी
विद्याकेप्रभावतें निष्फलहोवैगा ॥ और हेगुरो इंद्रकेवज्रकूंनिष्फलकरणा जोतुमारेकूंइष्टनहींहोवे ॥ तौ हमदोनों दूसराउपायकरैंगे ॥ ता
उपायकूं आपश्रवणकरो ॥ यहजो अश्व सन्मुखदीखैहै ॥ ताकेमस्तककूं हमछेदनकरेंगे ॥ तथा आपकेमस्तककूं छेदनकरेंगे ॥ पश्चात्
अश्वकामस्तक आपकीग्रीवाविषेस्थापनकरेंगे ॥ औरआपकामस्तक अश्वकीग्रीवाविषेस्थापन करेंगे ॥ तिसतेंअनंतर अश्वकेमस्तक
करिके आपनें हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा ॥ जभीदेवराजइंद्र वज्रकरिके आपकेमस्तककाछेदनकरेगा ॥ तभीहम पूर्वकीन्याई
आपकामस्तक आपकीग्रीवाविषेस्थापनकरेंगे ॥ और अश्वकामस्तक अश्वकीग्रीवाविषे स्थापनकरेंगे ॥ हेगुरो याउपायकरणेतें इतनेफ
लहोवैहैं ॥ एकतो अश्वका तथाआपका मरणनहींहोवैहै ॥ और दूसरा हमदोनोंकूं गुरुहिंसानहींहोवैहै ॥ और तीसरा आपका अपमृत्यु
नहींहोवैहै ॥ इंद्रकेवज्रकरिके जोमृत्युहोवैहै ॥ ताकूं शास्त्रविषे अपमृत्युकहेहैं ॥ और चतुर्थ आपका हमारेसैं मिथ्यावचननहींहोवैगा ॥
इतनेफल याउपायविषेहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ आपणेअर्थकेलोभकरिकेयुक्त तुमदोनोंनें जभीयाप्रकारकावचन दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रतिक
ह्या ॥ तभी सोसमदर्शी दध्यङ्ऋषि तुमारेवचनकूंअंगीकारकरताभया ॥ तिसतेंअनंतर जैसे दयातेंरहित कोईपुरुष पशुकामस्तकछेदन
करैहै ॥ तैसेदयातेंरहितहुए तुमदोनों शस्त्रकरिके आपणेदध्यङ्ऋषिगुरुकेमस्तककूं छेदनकरतेभये ॥ तथा अश्वकेमस्तककूंभी छेदन

करतेभये ॥ तिसतैंअनंतर दध्यङ्ङृषिकामस्तक अश्वकीग्रीवाविषे स्थापनकरतेभये ॥ और अश्वकामस्तक दध्यङ्ङृषिकीग्रीवाविषे स्थापनकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर हयग्रीवसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ सोदध्यङ्ङृषि तुमारागुरु प्रथम तुमारेप्रति चित्तशुद्धिकेसाधन कर्मउपासना उपदेश करताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोदध्यङ्ङृषि याप्रकारकाउपदेश तुमारेप्रति करताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो जबपर्यंत चित्तशुद्ध नहींभया ॥ तबपर्यंत कर्मउपासना करणेयोग्यहैं ॥ चित्तकेशुद्धहुएतैंअनंतर कर्मउपासनाकरणेका कोईप्रयोजननहीं ॥ यातैं चित्तकीशुद्धिहुएतैंअनंतर कर्मउपासनाका परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ किंतु केवलवेदांतशास्त्रकाविचारही निरंतरकरणेयोग्यहै ॥ और तिसतैंअनंतर सोदध्यङ्ङृषि तुमारागुरु जोब्रह्मविद्या इंद्रकेप्रतिउपदेशकरीथी ॥ सोईहीब्रह्मविद्या तुमारेप्रति उपदेशकरताभया ॥ और सोदध्यङ्ङृषि तुमारागुरु पुनःतुमारेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ यह जोब्रह्मविद्या हमनें तुमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ सोब्रह्मविद्या आजदिनतैंलेके आगेआगे निःशंकहोइके कोईऋषि आपणे शिष्योंप्रति नहींकहेगा ॥ किंतु शंकायुक्तहुए कौषीतकिआदिकऋषि आपणेशिष्योंकेप्रति यहब्रह्मविद्या उपदेशकरैंगे ॥ काहेतैं यहदेवराजइंद्र हस्तविषेवज्रलेके हमारेमारणेवासतै आकाशविषेस्थितहै ॥ और सोइंद्र याप्रकारकासंकल्प आपणे मनविषेकरिरह्याहै ॥ जोयहब्राह्मण हमारीआज्ञाकाउल्लंघनकरिके अश्विनीकुमारोंकेप्रति समग्रब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैगा ॥ तौ वज्रकरिके याब्राह्मणकामस्तक मैं छेदनकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिके सोदेवराजइंद्र आपणे वचनकेसत्यकरणेवासतैं आकाशविषेस्थितहै ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ जबीमैं तुमारेप्रति समग्रब्रह्मविद्याकाउपदेश करिरहौंगा ॥ तबी सोदेवराजइंद्र हमारेमस्तककूं अवश्यछेदनकरैगा ॥ और हमारेमस्तककूंछेदनहुआदेखिकरिके संपूर्णब्राह्मण भयकूंप्राप्तहोवैंगे और इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुएतेब्राह्मण आपणेप्रियपुत्रोंकेताईंभी संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरैं गे ॥ किंतु कौषीतकिआदिककोईकऋषितो आपणेशिष्योंकेप्रति अर्द्धब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैंगे ॥ और कोईकऋषितो तपादिकोंकरिके परमात्मादेवकूंप्रसन्नकरैंगे ॥ तापरमात्मादेवकेअनुग्रहकरिकेयुक्तहुए तेऋषि किसीएकशिष्यकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैंगे ॥ परंतु तिनोंकूंभी देवराजइंद्रतैं यत्किंचित्भय

अवश्यहोवैगा ॥ तात्पर्ययेयह ॥ सूर्यकेसमानहै तेजजिसका ऐसाजो सूर्यभगवान्‌काशिष्य याज्ञवल्क्यमुनिहै ॥ तिसकूंछोडिकरिके अन्यसंपूर्णऋषि इंद्रतैं भयकूंप्रातहोवैंगे ॥ एकयाज्ञवल्क्यमुनि इंद्रतैं भयकूंनमानिकरिके आपणेशिष्योंकेप्रति संपूर्णब्रह्मविद्याका उपदेशकरेगा ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार जभी दध्यङ्ङृषिनैं तुमारेप्रति संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या ॥ तभी सोदेवराजइंद्र वज्र करिके तुमारेगुरुकामस्तक छेदनकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर तामस्तककूं भूमिविषे गिडयाहुआदेखिके तुमदोनों तामस्तककूं उठाइके पुनःअश्वकीग्रीवाविषे स्थापनकरतेभये ॥ और अश्वकीग्रीवाविषेस्थित जोदध्यङ्ङृषिकामस्तकथा ॥तिसकूं उतारिके पुनःदध्यङ्ङृषिके ग्रीवाविषे स्थापनकरतेभये ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ दध्यङ्ङृषिनैं जोब्रह्मविद्या तुमारेप्रतिउपदेशकरीथी ॥ और जिसब्रह्मविद्याकेलोभकरिके गुरुकेमस्तककाछेदनरूप अनुचितकर्म तुमोनैं कऱ्याथा ॥ सोब्रह्मविद्या पुनःतुमारेस्मरणकरावणेवासते संक्षेपतैं मैं कथनकरताहूं तुम श्रवणकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे लोकविषे महाराजा आपणेनिवासवासते प्रथम महानपुरीरचैहै ॥ तिसतैंअनंतर अल्पपुरियोंकूंरचैहै ॥ तैसे जगत्‌काकारण परमात्मादेव प्रथम समष्टिशरीररूपी महानपुरीकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर व्यष्टिशरीररूपी अनंतपुरियोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तिनोंविषेभी कोईकशरीर चारिपादोंवाले उत्पन्नकरताभया ॥ जैसे गोअश्वादिकहैं ॥ और कितनेकशरीर दोपादोंवाले उत्पन्नकरताभया ॥ जैसे मनुष्यादिकहैं ॥ और कितनेकशरीर तीनपादोंवाले उत्पन्नकरताभया ॥ और कितनेकशरीर एकपादवाले उत्पन्नकरताभया ॥ और कितनेकशरीर पादोंतैंरहितउत्पन्नकरताभया ॥ जैसे सर्पादिकहैं ॥ इसतैंआदिलेकेअनंतप्रकारकेशरीरोंकूं सोपरमात्मादेव रचताभया ॥ और जैसे पक्षी आपणेशरीरकासंकोचकरिके आपणेगृहविषेप्रवेशकरैहै ॥ तैसे यहविभुपरमात्मादेवभी परिच्छिन्नताअभिमानरूप अत्यंतसूक्ष्मस्वरूपकूंधारणकरिके तिनशरीररूपीपुरियोंविषे प्रवेशकरताभया ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ यह आनंदस्वरूपआत्मादेव संपूर्णशरीररूपीपुरियोंविषेनिवासकरैहै ॥ याकारणतैं याआत्मादेवकूं शास्त्रविषे पुरुषकहैहैं ॥ अथवा यहपरमात्मादेव आपणे अस्तिभातिप्रियरूपकरिके संपूर्णशरीररूपपुरियोंकूं पूर्णकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं

श्रुति पुरुषकहैं हैं॥और हेअश्विनीकुमारो॥जैसे संपूर्णघटमठादिकपदार्थ अंतरबाहर आकाशकरिकेव्याप्तहैं॥तैसे यहसंपूर्णप्रपंच अंतरबाहर परमात्मापुरुषकरिकेव्याप्तहैं ॥ और जैसे तंतुवोंकरिकेव्याप्तहुआ तथाओतप्रोतहुआ पट तंतुवोंविषेहीस्थितहोवे हे ॥ तैसे यहसंपूर्णजगत् आनंदस्वरूपआत्माविषेहीस्थितहोवेहे ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जोआनंदस्वरूपआत्मा पूर्व सर्वशरीरोंविषे प्रवेशकरताभया॥ सोईही आनंदस्वरूपआत्मा ॥ इदानींकालविषे तुमारेहृदयदेशविषे तथाहमारेहृदयदेशविषे तथाअन्यसर्वप्राणियोंके हृदयदेशविषे विशेषरूपकरिके प्रतीतहोवे हे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जो जल पूर्वघटविषेप्रवेशकरेहे ॥ सोईहीजल मध्यकालविषे घटविषेस्थितहुआ प्रतीतहोवे हे ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे जल स्वभावतें यद्यपि एकरूपवालाहे ॥ तथापि स्थूलघटविषे स्थितहुआ सोजल स्थूलकह्याजावेहे ॥ और सूक्ष्मघटविषेस्थितहुआ सोजल सूक्ष्मकह्याजावेहे ॥ और अग्निकरिकेतप्तघटविषेस्थितहुआ सोजल तप्तकह्याजावेहे ॥ और शीतलघटविषेस्थितहुआ सोजल शीतलकह्याजावेहे ॥ और धूलीकरिकेआच्छादितघटविषेस्थितहुआ सोजल मैलाकह्याजावे हे ॥ और सुगंधघटविषेस्थितहुआ सोजल सुगंधकह्याजावेहे ॥ और दुर्गंधघटविषेस्थितहुआ सोजल दुर्गंधकह्याजावेहे ॥ और वायुकरिकेचलायमानघटविषेस्थितहुआ सोजल चलायमानकह्याजावेहे ॥ और निश्चलघटविषेस्थितहुआ सोजल निश्चलकह्याजावेहे और सूर्यकरिकेप्रकाशितघटविषेस्थितहुआ सोजल प्रकाशवान कह्याजावेहे ॥और अंधकारकरिकेआवृतघटविषेस्थितहुआ सोजल अंधकाररूपकह्याजावेहे॥इसप्रकार जिसजिसउपाधिकेसाथ जलकासंबंधहोवेहे तिसतिसउपाधिकेस्वरूपकूं जल प्राप्तहोवे हे ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी स्थूलशरीरके तादात्म्यसंबंधतें आपणेकूंस्थूलमानेहे ॥ और सूक्ष्मशरीरकेतादात्म्यसंबंधतें यहआत्मा आपणेकूंसूक्ष्ममाने हे ॥ और जडशरीरकेतादात्म्यसंबंधतें यहआत्मादेव आपणेकूंजडमानेहे ॥ और बुद्धिमान्शरीरकेतादात्म्यसंबंधतें यहआत्मादेव आपणेकूंबुद्धिमान्मानेहे ॥ और धनीशरीरकेतादात्म्यसंबंधतें यहपरमात्मादेव आपणेकूंधनीमानेहे ॥ और निर्धनशरीरकेतादात्म्यसंबंधतें यहपरमात्मादेव आपणेकूंनिर्धनमानेहे ॥ और देवतादिकउत्कृष्टशरीरकेतादात्म्यसंबंधतें यहपरमात्मादेव आपणेकूंउत्कृष्टमाने हे ॥ और नीचशरीरके

तादात्म्यसंबंधतैं यहपरमात्मादेव आपणेकूंनीचमानैहै ॥ आर सुखीदुःखीशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहपरमात्मादेव आपणेकूंसु
खीदुःखीमानैहै ॥ इसतैंआदिलेकेअनंतप्रकारके शरीरादिकउपाधियोंकेधर्म अज्ञानकरिकैमोहितहुआ यहआत्मा आपणेविषेमानैहै ॥
अन्यदृष्टांत ॥ जैसे विषयासक्तकामीपुरुष कामिनीकेधर्मोंकूंआपणेविषेमानैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ कामिनीकूंचितातुरदेखिकरिकै सो
कामीपुरुष आपभीचितातुरहोवैहै ॥ और कामिनीकूंदुःखीदेखिकरिकै सोकामीपुरुष आपभीदुःखीहोवैहै ॥ और कामिनीकूंप्रसन्न
देखिकरिकै सोकामीपुरुष आपभीप्रसन्नहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि बुद्धिआदिकोंकेसुखदुःखादिकधर्मोंतैंरहितहै ॥
तथापि अज्ञानकृत तादात्म्यसंबंधतैं तिनबुद्धिआदिकोंके सुखदुःखादिकधर्मोंकूं आपणेविषेमानैहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ यहही
परमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषे आकाशादिकपंचभूतोंकूं तथातिनभूतोंकेकार्यशरीरोंकूं तथाशब्दप्रपंचकूं उत्पन्नकरिकै तिनसर्व
पदार्थोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके तिनसर्वपदार्थोंकेभिन्नभिन्न नामोंकूंकरताभया ॥ और यहपरमात्मादेव वाक्आदिकइंद्रियों
केसाथ तथावाक्आदिकोंकाप्रेरकजोबुद्धिहै ताकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके वचनउच्चारणादिक नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूंकरताहु
आ वाक्आदिरूपहोवैहै ॥ तथा तूं मैं अन्यप्राणी इत्यादिकअनंतरूपोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ वास्तवतैंभेदरहित
असंगआत्मा जोनानाप्रकारकेभेदोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ सोआपणे इंद्रस्वभावकेजनावणेवासतै करैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यहपरमात्मादेव
संपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरिकै तासंपूर्णजगत्कूं आत्मारूपकरिकैदेखताभया ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव इंद्रसंज्ञाकूंप्राप्तहोताभया ॥
सोइंद्रसंज्ञा जगत्कीउत्पत्तितैंविना संभवैनहीं ॥ यातैं वास्तवतैंभेदरहितहुआभी यहपरमात्मादेव नानाप्रकारकेभेदोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥
अब शरीरादिकउपाधियोंविषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासतै प्रथम तिनोंविषेमायाकोकार्यतादिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे लोकविषे
मायावीऐंद्रजालिकपुरुष आपणीमायाकरिकै नानाप्रकारके हस्तिव्याघ्रादिकरूपोंकूं धारणकरैहै ॥ तैसेएकहीपरमात्मादेव आपणीमाया
करिकै नानाप्रकारकेरूपोंकूं धारनकरैहै ॥ परंतु तिनमायाकृतविशेषरूपोंकरिकै परमात्माका अस्तिभाति प्रियरूप वास्तवस्वभाव नि

वृत्तहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं युक्तियोंकरिकेनिरूपणकरें हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ यालोकविषे बुद्धिमान् जेसुवर्णकारादिकपुरुषहैं ॥ तेभी अन्यस्वभाववालेसुवर्णादिकपदार्थोंका अन्यस्वभावकरणेविषे समर्थहोवैंनहीं ॥ किंतु तिसीसुवर्णादिकोंविषे कुंडलकटकादिक विशेषरूपोंकूंकरैंहैं ॥ यातें वस्तुकेस्वभावकूंअन्यथाकरणेविषे कोईभीप्राणीसमर्थनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकशत शिल्पिपुरुष एकठेहोइकेभी तंतुरूपसूत्रकूं सुवर्णरूपकरिसकैंनहीं ॥ तथा एकसहस्र कुलाल एकठेहोइकेभीकाष्टकूं मृत्तिकाकरिसकैंनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जो उपायकरिके वस्तु अन्यभावकूंनहींप्राप्तहोताहोवे तो धातुमारणेकेशास्त्रविषे ताम्रादिकधातुवोंकूं सुवर्णकरणेकाप्रकार लिख्याहै सो असंगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ धातुमारणेकेशास्त्रकोरीतिसें जेपुरुष ताम्रादिकधातुवोंकूंसुवर्णकरैंहैं ॥ तेपुरुषभी असत्यसुवर्णकीउत्पत्तिकरैं नहीं ॥ काहेतें जोउपायकरिकेअसत्यवस्तुकीभी उत्पत्तिहोतीहोवे तो असत्यशशशृंगकी तथावंध्यापुत्रकीभी उपायकरिकेउत्पत्तिहोणी चाहिये ॥ और असत्यनरशृंगादिकोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातें औषधिआदिकउपायोंकरिके असत्यसुवर्णकीउत्पत्तिहोवैनहीं किंतु औषधिकेबलतें ताम्रादिकधातुवोंके पूर्वरक्तरूपकाअभिभवकरिके ताकेविषे पीतरूपकीउत्पत्तिकरैं हैं ॥ तथापि पूर्वताम्रधातुतें सोसुवर्णभिन्न नहीं ॥ शंका हेभगवन् ॥ जोपूर्वताम्रधातुतें सुवर्ण भिन्ननहींहोवैहै ॥ तो यहसुवर्ण पूर्वताम्रधातुतें भिन्नहै याप्रकारकीभेदप्रतीति तिनपुरुषोंकूं नहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ तहाँ ताम्रधातुकातथासुवर्णका यद्यपि परस्परभेदनहीं ॥ तथापि रक्तरूपका तथापीतरूपका परस्पर भेदहै ॥ ताभेदकूंअंगीकारकरिकेहीं तिनपुरुषोंकूं याप्रकारकीभ्रांतिहोवे है यहसुवर्ण पूर्वताम्रतेंभिन्नहै ॥ यातें हेअश्विनीकुमारो ॥ मृत्तिकासुवर्णादिकोंका जैसापूर्वस्वभावहै ॥ तैसाही सर्वकालविषेरहैहै किसीकालविषे तिनोंकास्वभाव अन्यथाहोवैनहीं ॥ शंका हेभगवन् ॥ जो वस्तुकास्वभाव अन्यथानहींहोताहोवे ॥ तो कुलाल दंडचक्रादिकसामग्रीमृत्तिकातैंघटकीउत्पत्तिकरैहै ॥ तेकुलालादिककारण व्यर्थहोवैंगे ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ कुलालादिकोंकरिके मृत्तिका अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु कुलालादिककारणोंकरिके सो मृत्तिका घटशरावादिकविशेषरूपोंकूंप्राप्तहोवैहै यातें ॥ कुलालादिककारण व्यर्थनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तेघटशरावादिकविशेषरूप

ही मृत्तिकाकास्वभाव काहेतैंनहींहोवैं ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ तेघटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकाकास्वभावनहीं ॥ जोघटशरावादिकविशेषरूपमृत्तिकाका स्वभावहीहोवैं ॥ तौ घटादिकविशेषरूपोंकेनाशहुएतैंअनंतर मृत्तिकाकीप्रतीति नहींहोणीचाहिये ॥ और घटशरावादिकोंतैंविनाभी मृत्तिकादेखीतीहै ॥ यातैं घटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकाकास्वभावनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसवस्तुका जो स्वभावहोवैहै ॥ तास्वभावकेनिवृत्तहुए तावस्तुकीभीनिवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे तेजकास्वभाव जोप्रकाशहै ॥ ताप्रकाशकेनिवृत्तहुए सोतेजभीनिवृत्तहोवैहै ॥ तैसे घटशरावादिकविशेषरूप जोमृत्तिकाकास्वभावहोवे ॥ तौ घटादिकोंकेनाशहुए मृत्तिकाभीनाशहोणाचाहिये ॥ और घटादिकोंकेनाशहुएभी मृत्तिकाकानाशहोवैनहीं ॥ यातैं घटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकाकास्वभावनहीं ॥ किंवा ॥ लोकविषेभी विशेषरूपकेनष्टहुए वस्तुकानाशहोवैनहीं ॥ जैसे मूर्तत्वस्वभाववालीपृथिवी पूर्वपिंडरूपविशेषभावकूं परित्यागकरिके घटभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथापि आपणाजोमूर्तत्वस्वभावहै ॥ ताकूं कदाचित्‌भी पृथिवीपरित्यागकरैनहीं॥याकहणेतैं यहसिद्धभया॥ मृत्तिका सुवर्णादिक वस्तुवोंकेविद्यमानहुएभी घटशरावादिकविशेषरूप तथाकुंडलकंकणादिकविशेषरूप प्रतीतहोतेनहीं ॥ यातैं तेघटादिकविशेषरूपमृत्तिकादिकवस्तुवोंविषे आगमापायोधर्म हैं॥और जोपदार्थ आगमापायीहोवैहै ॥ सोपदार्थ तावस्तुकास्वभाव नहींहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मायावीऐंद्रजालिकपुरुष आपणीमायाकेप्रभावतैं कवी सिंहरूपकूंधारणकरैहै ॥ और कवी हस्तिरूपकूंधारणकरैहै ॥ सो सिंहपणा तथाहस्तिपणा मायावीपुरुषविषे सर्वदाहोवैनहीं ॥ किंतु किसीनिमित्तपाइके कवीकवीहोवैहै ॥ यातैं आगमापायीहोणेतैं सोसिंहपणा तथाहस्तिपणा मायावीपुरुषकास्वभावनहीं ॥ तैसे घटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकादिकवस्तुकास्वभावनहीं ॥ अब तिनविशेषरूपोंविषे सत्यअसत्यतैं विलक्षणतादिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ तेविशेषरूप जोवस्तुकीन्याई सत्यरूपहोवैं ॥ तौ वस्तुकेस्वभावकीन्याई तिनविशेषरूपोंकाबाध नहींहोणाचाहिये ॥ और वस्तुकेविद्यमानहुएभी तिनविशेषरूपोंकाबाध देखीताहै ॥ यातैं तेविशेषरूप सत्यनहीं ॥ किंतु सत्यतैं विलक्षणहै ॥ और तेविशेषरूप असत्यभीनहीं ॥ काहेतैं वंध्यापुत्र तथानरशृंगादिक जेअसत्यपदार्थहैं॥ ते नेत्रा

दिकइंद्रियोंकेसंबंधकरिके किसीभीजीवकूं प्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ और यहविशेषरूपतो सर्वप्राणियोंकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधकरिकै प्रत्यक्षहोवै हैं ॥ यातैं तेविशेषरूप असत्यतैंभी विलक्षणहैं ॥ और जोपदार्थ सत्यअसत्यतैंविलक्षणहोवैहे॥सोपदार्थ शुक्तिरजतकीन्याई मिथ्याहीहोवैहे ॥ और जोपदार्थ मिथ्याहोवैहे ॥ सोपदार्थ मायाकाहीकार्यहोवैहे ॥ यातैं संपूर्णविशेषरूपोंका मायाहीकारणहे ॥ अब तामायाकूंनिरूपणकरेहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ वास्तवतैं अत्यंतअसत् जोविशेषरूपहे ॥ तिनोंका नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै प्रत्यक्षसंभवैनहीं ॥ और तिनविशेषरूपोंकाप्रत्यक्ष सर्वजनोंकूंहोवैहे ॥ यातैं जिसकेप्रभावतैं तिनअसत्यविशेषरूपोंका प्रत्यक्षहोवैहे तिसकानाम मायाहे ॥ तात्पर्ययह जैसे दिनविषेभोजनकूंनकरणेहाराजो स्थूलपुरुषहे ॥ तिसकीस्थूलता रात्रिभोजनतैंविना संभवैनहीं ॥ यातैं तापुरुषकीस्थूलता तापुरुषकेरात्रिभोजनकीकल्पनाकरावैहे ॥ तैसे अत्यंतअसत्य विशेषरूपोंकीजोप्रतीतिहे ॥ सो मायातैंविनासंभवैनहीं ॥ यातैं सोविशेषरूपोंकी प्रतीतिही मायाकीकल्पनाकरावैहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अत्यंतअसत्य जे वंध्यापुत्र नरशृंगादिकहैं ॥ तिनोंकाप्रत्यक्षज्ञान किसीजीवकूं होवैनहीं ॥ और अत्यंतअसत्य विशेषरूपोंकाप्रत्यक्षज्ञान सर्वजीवोंकूंहोवैहे याकेविषे कौनकारणहे ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो॥असत्य नरशृंग वंध्यापुत्रका तथाघटादिकविशेषरूपोंका यद्यपि वास्तवतैंभेदनहीं॥ तथापि दुर्घटअर्थकूंसिद्धकरणेहारी जोमायाहे तामायाकरिकै तिनोंकाभेदकल्पनाकरीताहे ॥ और जैसे विशेषरूप तथानरशृंगादिकोंतैंतिनोंकाभेद यहदोनों मायाकरिकेकल्पनाकरीतेहैं ॥ तैसे मायाभी मायाकरिकैही कल्पनाकरीतीहे ॥ काहेतें जैसे घटादिकविशेषरूप तथानरशृंगतैंतिनोंकाभेद यहदोनों असत्यहैं ॥ तैसेमायाभी असत्यहीहे ॥ असत्यवस्तुकीसिद्धि मायातैंविनाहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे गुहाविषेस्थित व्याघ्रका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै ज्ञानहोवैहे ॥ तैसे मायाका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैज्ञानहोवैनहीं ॥ काहेतें जिसपदार्थकरिकै जिसपदार्थकीनिवृत्तिहोवैहे ॥ तिसपदार्थकरिकै तिसपदार्थकीसिद्धिहोवैनहीं॥जैसे प्रकाशकरिकैअंधकारकीनिवृत्तिहोवैहे॥यातैं प्रकाशकरिकै अंधकारकीसिद्धिहोवैनहीं॥तैसे प्रमाणजन्यज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहे॥यातैं प्रमाणकरिकै अज्ञानरूपमायाकीसिद्धिसंभवैनहीं॥किंतु मायाकरिकैही मायाकीसिद्धिहोवैहेअब अ-

ज्ञानीजीवोंकीप्रतीतितैं मायाकीसिद्धिकरैहैं॥हेअश्विनीकुमारो॥असत्यजेनरशृंगवंध्यापुत्रहैं॥तिनोंतैं शुक्तिरजतादिकविशेषरूपोंकाभेदकिस
हेतुतैंहै॥याप्रकारकाप्रश्न जबीकोइपुरुष अज्ञानीजीवोंकेप्रति करैहै॥तबी तेअज्ञानीपुरुष हम नहींजाणते याप्रकारकाउत्तरदेवैहैंयातैंहमनही
जाणते यहजोअज्ञानीजीवोंकीप्रतीतिहै॥सोप्रतीतिही दुर्घटमायाकासाधकहै॥अब मायाकेदुर्घटताबोधनकरणेवासतैंचारिप्रकारकामायाशब्द
का अर्थनिरूपणकरैहैं॥तहाँ जोतीनकालविषेनहींहोवै ताकूं बुद्धिमान्पुरुष मायाकहैं हैं॥१॥अथवा॥कार्यकारणरूपजगत्केभेदकाजोकारण
होवै ताकूं शास्त्रकेवेत्तापुरुष मायाकहैं हैं ॥२॥ अथवा ॥ हमजीवोंकेआत्मस्वरूपज्ञानकूं जोआच्छादनकरैहै ताकूं विद्वान्पुरुष मायाकहैं
हैं ॥ ३ ॥ अथवा ॥ यथार्थज्ञानकरिकै जोनिवृत्तहोवैहै ताकूं विद्वान्पुरुष मायाकहैं हैं ॥ ४ ॥ अब याहीमायाशब्दकेअर्थोंकूंस्पष्टकरिकै
दिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा वास्तवतैंअसंगहै ॥ और स्वप्रकाशहै ॥ तथा सजातीयभेद विजातीयभेद स्वग
तभेद यातीनभेदोंतैंरहितहै ॥ ऐसे असंग अद्वितीयआत्माविषे मायाकासंभवहोवैनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ ऐसेअसंगअद्वितीय
आत्माविषे वास्तवतैं जगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ और श्रुतिविषे आत्माकूं जगत्काकारण तथासर्वजगत्रूप कह्याहै ॥ याप्रकारकावि
चारकरिकै वेदवेत्तापुरुष असंगआत्माविषे जगत्कीकारणताकेसिद्धिवासते तोअसंगआत्माविषे मायाकीकल्पनाकरैहैं ॥ और हे अश्विनी
कुमारो ॥ जैसे सूर्यकेउदयहुए अंधकारकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे याप्रकारकाज्ञान जभीजीवोंकूंहोवैहै ॥ तभी तिनोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवै
है ॥ सोअज्ञानयहहै ॥ यहआनंदस्वरूपआत्माही ॥ संपूर्णजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयका कारणहै ॥ और यहसंपूर्णजगत् अस्तिभातिप्रिय
रूपहै॥ और यहआत्मा सत्चित्आनंदस्वरूपहै ॥ तथा ब्रह्मरूपहै॥याप्रकारकेयथार्थज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और हेअश्विनी
कुमारो जैसे रज्जुकेविशेषरूप जे सर्पदंडादिकहैं ॥ ते रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैं निवृत्तहोइजावैहैं ॥ तैसे निर्विशेषआत्माका विशेषरूप
जोप्रपंच है तथा प्रपंचकाकारणजोअज्ञानहै ॥ सो अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै निवृत्तहोइजावैहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष
ताअज्ञानकूंमायाकहैं हैं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे दीपककरिकै अंधकारकाज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसे हमसरीखेविवेकीपुरुष जहाँजहाँ

दृष्टिकरैंहै ॥ तहां मायाकूंदेखतेनहीं ॥ यातैं यथार्थज्ञानकरिकै जानिवृत्तहोवै सो मायाकहियेहै ॥ यहमायाशब्दकाअर्थ संभवैहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ सोजगत्काकारण माया यद्यपि एकहै ॥ तथापि यहघटहै यहपटहै इत्यादिकअनेकज्ञान घटादिकविषयोंकेअज्ञानों कीनिवृत्तिकरैं हैं ॥ याकारणतैं सोएकहीमाया अनंतरूपोंकूंधारणकरैहै ॥ तिनअनंतरूपोंकूं शास्त्रविषे तूलाअज्ञानकहैंहैं॥तथा अवस्थाअज्ञानकहेंहैं॥मूलाअज्ञानका तथा तूला अज्ञानका इतनाभेदहै॥जोअज्ञान ब्रह्मकेआश्रितहोइके ब्रह्मकूंहीआच्छादनकरैहै॥और ब्रह्मकेज्ञानतैंहींनिवृत्तहोवैहै॥ताकूं मूलाअज्ञानकहैंहैं॥और जोअज्ञान घटादिकविषयावच्छिन्न चैतन्यकेआश्रितहोइकैघटादिकविषयावच्छिन्नचैतन्यकूंहीं आच्छादनकरैहै ॥ और घटादिकविषयावच्छिन्नचैतन्यकेज्ञानकरिकैहीं निवृत्तहोवैहै ॥ ताकूं तूलाअज्ञानकहेंहैं ॥ तथा अवस्थाअज्ञानक-हैंहैं॥याअवस्थाअज्ञानोंकूंग्रहणकरिकेही "इंद्रोमायाभिःपुरुरूपईयते" इत्यादिकश्रुतियोंविषे अनेकमाया कथनकरियां हैं॥और अजामेका इत्याकिकश्रुतियोंविषे जोमायाकीएकताकहीहै॥सो मूलाअज्ञानकूंलेकेकहीहै॥याप्रकारकीमायाकरिकै यहपरमात्मारूपइंद्र नानाप्रकारके रूपोंकूंधारणकरैहै॥दृष्टांत॥जैसे एकहीमायावीऐंद्रजालिकपुरुष आपणीमायाकरिकै अनेकरूपोंकूंधारणकरैहै॥तैसे वास्तवतैं एक अद्वितीय परमात्मादेव आपणीमायाकरिकै ॥ अनंतरूपोंकूंधारणकरैहै ॥ याप्रकार व्यासभगवानादिकतत्त्ववेत्तापुरुषोंनैं ॥ मायाकरिकै आत्माविषे नानारूपता कथनकरीहै ॥ तथापि तिनमहात्मापुरुषोंका आत्माकेनानापणेविषे तात्पर्यनहीं ॥ किंतु आत्माकेएकताबोधनकरणेवासतै तेमहात्मापुरुष लौकिकप्रमाणकरिकैसिद्ध नानाप्रकारकेभेदोंका अनुवादकरैंहैं ॥ लोकप्रसिद्धअर्थके कथनकरणेहाराजोवचनहै ताकूं अनुवादकहेंहैं ॥ जैसे अग्नि हिमकाऔषधहै यहवचन लोकप्रसिद्धअर्थकाअनुवादकरैहै ॥ काहेतैं अग्निविषे हिमकेनिवृत्तिकीकारणता सर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्धहै ॥ तैसे सर्वअज्ञानीजीवोंके अनुभवकरिकै सिद्धजोनानाप्रकारकाभेदहै ॥ तिसका विद्वान्पुरुष अनुवादकरैंहैं ॥ और पुनः तेमहात्मापुरुष जगत्केकारणविषे लौकिकप्रमाणोंकी अप्रवृत्तिदेखिकरिकै सर्वव्यवहारकीसिद्धिवासतै एकमायाकूंही कारणरूपकरिकेकल्पनाकरे हैं॥तात्पर्ययह ॥ संपूर्णविद्वान्पुरुष अद्वितीयआत्माकेबोधकरावणेवासतै तथामुमुक्षुजनोंकेबुद्धिकीवृद्धिवासतै आनंदस्वरूप

आत्माविषे अनेकप्रकारकरिकेजगत्काआरोपणकरैहैं॥हेअश्विनीकुमारो॥इसीअभिप्रायकरिके दध्यङ्ङ्ऋषिनैं तुमारेबोधकरावणेवासतेआत्मा केभेदकाकारण जो शरीर इंद्रिय विषयकाभेदहै॥सोतुमारेप्रति कथनकऱ्याहै॥परंतु आत्माकेभेदविषे॥ऋषिकातात्पर्यनहीं किंतु आत्मा विषे भेदकाआरोपणकरिके ताकेनिषेधद्वारा अद्वितीयआत्माकेजनावणेविषे दध्यङ्ङ्ऋषिकातात्पर्यहै अबइंद्रियोंविषे भेदकीकारणतादिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे स्वर्गविषेस्थित जोदेवराजइंद्रहै ॥ सो त्रिलोकीविषे अनेककार्यकरणेवासते आपणीमायाकरिकै अनेकरूपों कूंधारणकरैहै ऐसेदेवराजइंद्रकेरथोंविषे वायुकेसमानवेगवाले अनेकप्रकारकेअश्व जुडेहुएहैं ॥ तैसे यासंसारविषेस्थितजोपरमात्मारूपइंद्रहै तिसके शरीररूपीरथोंविषे अत्यंतप्रबल इंद्रियरूपीअश्व विद्यमानहैं॥और ते इंद्रियरूपी अश्व एकएकशरीरविषे दशप्रकारकेहैं ॥ तेसंपूर्णइं द्रियरूपीअश्वआत्माकेभेदकरणेहारेहैं ॥ तात्पर्ययह नेत्रादिकइंद्रियोंका जभीविषयकेसाथ संबंधहोवैहै॥तभी अंतःकरणकीवृत्ति ताविषया कारहोवैहै॥यातैं नेत्रादिकइंद्रिय अंतःकरणकीवृत्तियोंकेभेदकरणेहारेहैं ॥ और वृत्तियोंकेभेदहुए तिनवृत्तियोंविषे प्रतिबिंबितआत्माकाभी भेदहोवैहै ॥ यारीतितैं नेत्रादिकइंद्रिय आत्माकेभेदकरणेहारेहैं॥इतनैंकरिके आत्माविषे इंद्रियोंकेभेदकाअध्यारोपदिखाया ॥ अब तिनोंके अपवादकूंदिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो॥ जिनइंद्रियादिकोंकरिके यहआत्मा भेदकूंप्राप्तहोवैहै॥तिनइंद्रियोंसहितसंपूर्णप्रपंचका यहआत्मा देव अधिष्ठानहै ॥ याकारणतैंहीं नेतिनेति यहश्रुतिकल्पितप्रपंचकानिषेधकरिके सर्वभेदतैंरहित अधिष्ठानआत्माकूं बोधनकरैहै ॥ इतनैं करिके त्वंपदार्थकाशोधन दिखाया ॥ अब तत्पदार्थकेशोधनकाप्रकारदिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ जोवस्तु नानाप्रकारकेभेदोंक रिकेभी भेदकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ ताकूं विद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपकरिकेनिश्चयकरैं हैं ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ पूर्वपश्चमादिकदेशोंतैं तथाभूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंतैं रहितहै ॥ और अंतरबाह्यस्वभाववालेजेपदार्थ हैं ॥ तिनोंतैंभी सोब्रह्मरहितहै ॥ इसप्रकार तत् त्वं पदार्थकाशो धनकरिके अब तत्त्वंपदार्थकेअभेदकूंदिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ संपूर्णदेहधारीजीवोंका एकअद्वितीयआत्माहै॥सोअद्वितीयआत्मा अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकमहावाक्योंकरिके ब्रह्मरूपकरिकेजानणेयोग्यहै ॥ कैसाहैसोब्रह्मरूपआत्मा ॥ द्रष्टारूपकरिके तथाश्रोतारूपकरिके

संपूर्णजगत्काअनुभवकर्त्ताहै ॥ और संपूर्णजगत्काआत्माहै ॥ और संपूर्णबुद्धि आदिकोंकासाक्षीहै ॥ और स्वप्रकाशआनंदस्वरूपहै ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु सर्वमुमुक्षुजनोंकेकल्याणवासतै तुमारेप्रति आनंदस्वरूपआत्माका ब्रह्मरूपकरिके उपदेशकरताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोऋषि अश्विनीकुमारोंकेप्रति पूर्वगुह्यवृत्तांत कथनकरताभया ॥ और तिस ऋषिकेवचनोंकूंश्रवणकरिके तेअश्विनीकुमार अत्यंतप्रसन्नहोतेभये ॥ और ऋषिकेसर्वज्ञताकूंजाणिकरिके तिसमहात्माऋषिकूं प्रणामकरते भये ॥ और जिसकार्यकेवासतै सोऋषि अश्विनीकुमारोंकेपासआयाथा ॥ ताऋषिकेकार्यकूं अश्विनीकुमार सिद्धकरतेभये ॥ और हेशिष्य पूर्वतुमनैंकौशीतकिऋषिकेभयकाकारणपूछाथा ॥ सोकौषीतकिऋषिकेभयकाकारण हमनैं तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकऱ्या ॥ दध्यङ्ऋषिकेमस्तककूंछेदनहुआदेखिकरिके सोकौषीतकिऋषि इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहोताभया ॥ याकारणतैंही शिष्योंकेप्रति समग्रब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरताभया ॥ यहही कौषीतकिऋषिकेभयकाकारणहै ॥ और हेशिष्य दध्यङ्अथर्वणका तथाअश्विनीकुमारइंद्रका परस्परसंवादरूप जोयह इतिहास हमनैं तुमारेप्रतिकह्याहै ॥ सोइतिहास पूर्व वेदकेमंत्रोंकरिके कथनकऱ्याहुआहै ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारे कूंइच्छाहोवै सोहमारेप्रतिकहो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे बृहदारण्यकमधुकांडसारार्थप्रकाशके दध्यङ्अश्विसंवादोनाम चतुर्थोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे पंचमोऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ पंचमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषे यजुर्वेदकाजोबृहदारण्यकउपनिषद्है ताके मधुकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब पंचमअध्यायकरिके तथाषष्ठेअध्यायकरिके तिसीबृहदारण्यकउपनिषद्के याज्ञवल्क्यकांडकाअर्थ निरूपणकरैंहैं ॥ तहां पूर्वअध्यायविषे दध्यङ्ऋषिके आख्यानकूंश्रवणकरिके सोशिष्य अत्यंतआश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और पुनःकिंचित्अर्थकेपूछणेकोइच्छावान्हुआ सोशिष्य दोनोंहाथजोडिकरिके श्रीगुरुकेप्रति कहताभया॥तहां आपणेविषेबुद्धिमान्पणा जनावणेवासतै सोशिष्य पूर्वअध्यायोंविषेश्रवणकरीकथाकूं गुरुकेप्रतिकथनकरैहै शिष्यउवाच ॥ हे भगवन् ॥ प्रथमअध्यायविषे आपनें सनकादिकऋषियोंके तथावामदेवादिकअधिकारीजनोंके संवादकरिके ऐतरेयउपनिषदकेअर्थकानिरूपणकऱ्या ॥ और द्वितीयअध्यायविषे इंद्रप्रतर्दनकेसंवादकरिके आपनें कौषीतकिउपनिषदकेअर्थकानिरूपणकऱ्या॥ और तृतीयअध्यायविषे अजातशत्रुबालाकिकेसंवादकरिके आपनें तिसीकौषीतकिउपनिषद्केअर्थका निरूपणकऱ्या ॥ और चतुर्थअध्यायविषे जोब्रह्मविद्या कौषीतकिऋषिनें इंद्रकेभयतेंनहींकहीथी ॥ सोब्रह्मविद्याभी दध्यङ्ऋषिअश्विनीकुमारोंकेसंवादकरिके आपनें कथनकरी ॥ और वेदविद्याकेप्रवर्त्तकजेऋषिहैं ॥ तिनऋषियोंकावंशभी आपनें हमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ कैसाहैसोऋषियोंकावंश ॥ हिरण्यगर्भतेंलेके तथासूर्यभगवान्तेंलेके पौतिमाष्यनामाऋषिपर्यंत विस्तारहैजिसका॥पुनःकैसाहैसोवंश हिरण्यगर्भ तथासूर्यभगवान् यह दोनोंहैंमूलजिसके ॥ और एकस्त्रीवंश तथादोपुरुषवंश यहतीनप्रकारकीहै शिष्योंकीपरंपराजिसविषे ॥ ऐसाजोऋषियोंकावंशहै सोभी आपनें हमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ और तिसतीनप्रकारकेवंशविषेभी कितनेकऋषियोंके विलक्षणनामोंकूंदेखिकरिके तिनोंकाभेदही आपनें कथनकऱ्या ॥ और कितनेकऋषियोंकिनामोंकीसमानरूपतादेखिकरिके तिनऋषियोंकाअभेदही आपनें कथनकऱ्या ॥ और तिनऋषियोंकि वंशविषे देवो अथर्वणनामाऋषिकाशिष्य जोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषिहै ॥ जोदध्यङ्ऋषि अश्विनीकुमारोंकेप्रति तथाइंद्रकेप्रति मधुकांडकाउपदेशकर्ताभया॥ऐसेदध्यङ्ऋषिकावृत्तांतभी आपनें हमारे प्रतिकथनकऱ्या ॥ और दध्यङ्ऋषिविषे देवराजइंद्रकीजोदुरात्मताहै

सोभी आपनैकथनकरी॥औरगुरुकेमस्तककाछेदनरूप जोउग्रकर्महै॥ताकेविषे प्रवृत्तकरणेहारीजोअश्विनीकुमारोंकीलिप्साहै॥सोभी आपनैं हमारे प्रति कथनकरी ॥ और हेभगवन् पूर्वआपनैंयहकह्या॥इंद्रनैं जबीदध्यङ्ङ्ऋषिकामस्तकछेदनकर्‍या॥तबी सोदध्यङ्ङ्ऋषि हयग्रीवभावकूंप्राप्तहोइकै अश्विनीकुमारोंकेप्रति कहताभया॥हेअश्विनीकुमारो ॥ आजादिनतैंलैकेआगेआगे यहसंपूर्णब्रह्मविद्याकोईभीऋषि नहीं कथन करैगा॥एकसूर्यभगवान्काशिष्य याज्ञवल्क्यमुनि इंद्रतैंनिर्भयहोयके आपणेशिष्योंकेप्रतिसंपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैगा ॥ याप्रकारका दध्यङ्ङ्ऋषिकावचन पूर्वआपनैं कह्याथा॥और तृतीयअध्यायविषे अजातशत्रु बालाकिकेसंवादविषे आपनैंभीयहवार्त्ताकहीथी॥याज्ञवल्क्यमहामुनि सूर्यभगवान्तैं वेदविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेभगवन् ॥ याकेविषे हमयहपूछाचाहेहैं ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि किसशिष्यकेताईं सो ब्रह्मविद्या देताभया ॥ और किसप्रकार सोब्रह्मविद्या देताभया ॥ और सोब्रह्मविद्या कैसीहै ॥ यातीनप्रश्नोंकेउत्तरश्रवणकरणेकीहमारे कूंइच्छाहै ॥ इसप्रकार शिष्यकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोश्रीगुरुअत्यंतआनंदकूंप्राप्तहोताभया और कहताभया हेशिष्य ॥ वेदविषेकथन करी जोविचित्रकथाहै ॥ सोकथा मैं तुमारेप्रतिकथनकरताहुं ॥ तुम सावधानहोइकै श्रवणकरो ॥ श्रीगुरुरुवाच हेशिष्य ॥ याज्ञवल्क्यनामाऋषि प्रथम वैशंपायननामाऋषितैं वेदविद्याकाअध्ययनकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर किसीनिमित्तकरिकै क्रोधवान्हुआ सोवैशंपायननामाऋषि याज्ञवल्क्यतैंसंपूर्णविद्यालेताभया॥ताविद्याकापरित्यागकरिकै सोयाज्ञवल्क्यनामामुनि पुनःविद्याकीप्राप्तिवासतै महान्तपकरिकै सूर्यभगवान्कूंप्रसन्नकरताभया॥कैसाहैसोसूर्यभगवान्सूर्यमंडलविषेहैनिवासजिसका॥और नामरूपक्रिया स्वरूपजोसंपूर्णप्रपंचहै॥ सोप्रपंचहैस्वरूपजिसका॥और रक्तपुष्पकेसमानजोनेत्रहैं तिनोंकूंछोडिकरिकै नखतैंलेके केशपर्यंत संपूर्णशरीर जिसकासुवर्णकेसमानहै ॥ और सूर्यतैंऊपरिकेजेलोकहैं ॥ तथा चक्षुविषेवर्तमानजो सूर्यभगवान्का अध्यात्मरूपहै तिसतैंनीचेकेजेलोकहैं ॥ तथामध्यवर्ति जेलोकहैं ॥ तिनसर्वलोकोंविषेस्थित जितनेकजीवहैं ॥ तिनोंकूं यहसूर्यभगवान्हीं मनवांछितपदार्थोंकोप्राप्तिकरैहै ॥ और यहसूर्य भगवान् समष्टिसूक्ष्मउपाधिवालाहै ॥ तथा समष्टिकारणउपाधिवालाहै ॥ याकारणतैं श्रुतिविषे ताकूं हिरण्यगर्भरूपकरिकै तथाईश्वर

रूपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और जिससूर्यभगवान्‌तैं श्वासोंकीन्याई यत्नतैंविनाहीं संपूर्णवेद उत्पन्नभयेहैं ॥ और जोसूर्यभगवान् ऋग् यजुष् साम यहतीनवेदस्वरूपहै तहाँ दिनकेप्रथमभागविषे ऋग्वेदरूपकरिकै सूर्यभगवान् प्रकाशकरैहै ॥ और दिनकेमध्यभागविषे यजुर्वेदरूपकरिकै सूर्यभगवान् प्रकाशकरैहै ॥ और दिनकेअंत्यभागविषे अथर्वांगिरसकरिकैयुक्तजोसामवेदहै ॥ तिससामवेदरूपकरिकै सूर्यभगवान् प्रकाशकरैहै ॥ और जैसे लोकविषेप्रसिद्धमधु पुरुषोंकेआनंदकाकारणहै ॥ तैसे वसुआदिकदेवतावोंकेआनंदकाहेतु तथासर्वकर्मोंकेफलकूंदेणहारा जोआदित्यरूपमधुहै ॥ तिसविषे जोसूर्यभगवान् सर्वदाविराजमानहै ॥ कैसाहैसोआदित्यरूपमधु रक्त शुक्ल कृष्ण अतिकृष्ण गुह्य यापंचरूपोंकरिकैयुक्तहै ॥ पुनःकैसाहैसोआदित्यरूपमधु यथाक्रमतैंरक्तादिरूपवाले जेऋग् यजुष् साम अथर्वांगिरस उपनिषद् ॥ इनपांचप्रकारके वेदरूपीभ्रमरोंकरिकै रचितहै ॥ और जैसे लोकविषे मक्षिका पुष्पोंतैंरसकूंग्रहणकरिकै मधुदेशविषेलेजावैहैं ॥ तैसे ऋग्वेदादि रूपभ्रमर यागादिककर्मरूपीपुष्पोंविषे मंत्ररूपतैं प्राप्तहोइकै यागादिककर्मोंकीसूक्ष्म अवस्थारूप जेपुण्यरूपीअदृष्टहैं ॥ ताअदृष्टरूपीरसकूं तेवेदरूपीभ्रमर आदित्यरूपीमधुविषेलेजावैहैं ॥ तिसतैंअनंतर सोसूर्यभगवान् सर्वकेआनंदकाहेतुजोवृष्टिहै ताकूंकरैहै ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ अग्नौ प्रास्ताहुतिःसम्यगादित्यमुपतिष्ठति ॥ आदित्याज्जायतेवृष्टिर्वृष्टेरन्नंततःप्रजाः ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ अग्निविषेप्राप्तकरीहुईआहुति सूक्ष्मरूपकरिकै आदित्यकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तिसआदित्यतैंवृष्टि उत्पन्नहोवैहै ॥ और वृष्टितैंअन्न उत्पन्नहोवैहै और अन्नतैंप्रजाउत्पन्नहोवैहै ॥ १ ॥ पुनःसोकैसाहैसूर्यभगवान् ॥ सर्वप्राणियोंका बाह्यवर्तमानप्राणहै ॥ और ब्रह्मातैंआदिलेके जितनेकस्थावरजंगमप्राणीहैं तिनोंके हृदयदेशविषेस्थितहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेसूर्यभगवान्‌कूं सो याज्ञवल्क्यमुनि तपकरिकैप्रसन्नकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर तिसीसूर्यभगवान्‌तैं सोयाज्ञवल्क्यमुनि चारिवेदोंकाअध्ययन करताभया ॥ तिसतैंअनंतर गृहस्थाश्रमकूंधारणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि अधिकारीशिष्योंकेप्रति चारिवेदोंकाअध्ययन करावताभया ॥ और तिसयाज्ञवल्क्यमुनिके शिष्योंकीमंडली चारिप्रकारकीहोतीभई ॥ एकमंडली ऋग्वेदके

अध्यायनकरणेहारी ॥ और दूसरीमंडली यजुर्वेदकेअध्ययनकरणेहारी ॥ और तीसरीमंडली सामवेदकेअध्ययनकरणे हारी ॥ और चतुर्थमंडली अथर्वणवेदकेअध्ययनकरणेहारी ॥ और जैसे सूर्यभगवान् पूर्वादिक दिशावोंकेमध्यविषे प्रकाशमानहै ॥ तैसे सोयाज्ञवल्क्यमुनि चारिप्रकारकेशिष्योंकीमंडलीविषे विराजमानहोताभया ॥ और लोकविषे तायाज्ञवल्क्यमुनिकी महान्कीर्तिहोतीभयी ॥ अब याज्ञवल्क्यमुनिकेकीर्तिकूं वारांगनाकेसमानरूपकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ याज्ञवल्क्यके साथ द्वेषकरणेहारे जितनेकीआश्वलादिकब्राह्मणहैं ॥ तेसंपूर्ण गनिकाकेपतियोंकेसमानहैं ॥ तिनआश्वलादिकोंकूं याज्ञवल्क्य कीकीर्तिरूपीवारांगना प्राप्तहोतीभई ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवारांगना कामीपुरुषोंकूंतापकरैहै ॥ तैसे याज्ञवल्क्यकीकीर्तिरूपीवारां गनाभी आश्वलादिकब्राह्मणोंकूं तापकरतीभई ॥ और कोईपुण्यवान् तथाबुद्धिमान् जेजनकादिकहैं ॥ ते आश्वलादिकब्राह्मणोंकरिकै निवारणकरेहुएभीतायाज्ञवल्क्यमुनिकीकीर्तिरूपवारांगनाकूं भोगतेभये ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे जोकोईपुरुष किसीपरस्त्रीविषे आसक्तहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं अनेकलोक निवारणकरैं हैं ॥ तोभी सोपुरुष तिनलोकोंकाकहणा अंगीकारकरतानहीं ॥ तैसे याज्ञ वल्क्यमुनिकीकीर्तिरूपवारांगनाविषे असक्तहुआजनकराजा किसीब्राह्मणकाकह्या नहींमानताभया ॥ और जैसे लोकविषे कोईराजा जभीकिसीवारांगनाविषे आसक्तहोवैहै ॥ तभीताकेभृत्य राजाकूं तावारांगनातैंनिवृत्तकरणेवासते कोईअत्यंतरूपवालीआपणीपुत्री राजा केताईदेवैं हैं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यमुनिकीकीर्तिरूपवारांगनाविषे जनकराजाकीआसक्तिदेखिकरिकै तिसकीर्तिरूपवारांगनातैं जनकराजाकूं निवृत्तकरणेवासतैं तेआश्वलादिकब्राह्मण असूयारूपीस्त्रीविषे निंदारूपीनवीनवधूकूं उत्पन्नकरतेभये ॥ अब आश्वलादिकोंके निंदावचनों कूंदिखावैहैं ॥ जोयहयाज्ञवल्क्यमुनि किसीलौकिकगुरुतैं विद्याकूंनहींप्राप्तभयाहै ॥ किंतु साक्षात्सूर्यभगवान्तैंहीं विद्याकूंप्राप्तभयाहै ॥तो मुखतैं विनाहीं शिष्योंकेप्रति विद्या काहेतैंनहींपढावता ॥ और जैसे हमसर्वब्राह्मण मुखकरिकेविद्यापढावतेहैं॥ तैसे यहयाज्ञवल्क्यभी मुख करिकैही विद्यापढावताहै ॥ यातैं मैंसूर्यभगवान्तैंविद्यापढीहै ॥ यहयाज्ञवल्क्यकाकहणा मिथ्याहै॥किंवा॥सूर्यकेरथविषेस्थितहोइके हमनैं

विद्यापढीहै ॥ यहभीयाज्ञवल्क्यकाकहणा मिथ्याहै ॥ काहेतें जो पूर्व सूर्यकेरथविषेबैठिकरिकै याज्ञवल्क्यनें विद्यापढीहोवै॥ तौ अवी प्रज्व लितमहान्अग्निविषेस्थितहोइके यहयाज्ञवल्क्यमुनि वेदोंकापठन काहेतैंनहींकरता ॥ किंवा ॥ तेजकासमूह जोसूर्यहै सो जवी याज्ञव ल्क्यकेप्रति वेदोंकाकथनकरताभयाहै ॥ तौइदानींकालविषे तेजकासमूहजोमहान्अग्निहै सो हमारेप्रति वेदोंकाकथन काहेतैंनहींकरता ॥ किंवा ॥ जोतुमयहकहो ॥ याज्ञवल्क्यकेतपकरिकै प्रसन्नहुआसूर्यभगवान् दूसरेशरीरकूंधारणकरिकै याज्ञवल्क्यकेप्रति वेदपढावताभया है ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जो सूर्यदेवताकाशरीर अंगीकारकरोगे ॥ तो जैसे शरीरवाले स्त्रीआदिकप्राणी अनित्यहैं तैसे सूर्यभगवान्भी अनित्यहीहोवैगा ॥ जभी सूर्यदेवता अनित्यभया॥तभी हमारेतें ताकेविषे कौनविशेषताहोवैगी ॥ यातें सूर्यभगवान् तें याज्ञवल्क्यमुनि वेदविद्याकूंप्राप्तभयाहै॥ याकेविषे कोईयुक्तिसंभवैनहीं ॥ और यालोकविषे दूसराकोईगुरु याज्ञवल्क्यकाप्रसिद्धहैनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ यहयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीइच्छातें वेदकेसमानवाक्योंकूंकल्पनाकरिकै पठनकरैहै ॥ और यहवेद सूर्यतैंमैंने पठनकर्याहै ॥ याप्रकार सर्वलोकोंविषेप्रसिद्धकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं मोह उत्पन्नकरैहै ॥ किंवा ॥ गुरुसंप्रदायकेअनुसार जोउदात्तादिकस्वरविशिष्टवर्णोंकीआनुपूर्वीहै ताकूं बुद्धिमान्पुरुष वेदकहैहैं ॥ याप्रकारवेदकेलक्षणतैंरहित जितनेकवाक्यहैं ॥ ते नट पुरुषोंकेवाक्योंकेसमानहैं ॥ और या याज्ञवल्क्यकीकोईगुरुसंप्रदाय लोकविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥ यातें याज्ञवल्क्यकेवचनभी नटपुरुषोंके वचनसमानहैं ॥ किंवा ॥ यहयाज्ञवल्क्य हस्तकेकंपकरिकैयुक्त तथापदक्रमकेसंप्रदायतैंरहित यजुर्वेदकूं नटकीन्याई पठनकरैहै ॥ यातें याज्ञवल्क्यकूं यजुर्वेद किंचित्मात्रभी नहींआवता ॥ किंवा ॥ पूर्ववैशंपायननामाऋषितैं इसयाज्ञवल्क्यनें यजुर्वेदकाअध्ययनकर्याथा ॥ तिसकूंभी यहयाज्ञवल्क्य इदानींकालविषेजाणतानहीं ॥ तो अन्यवेदोंकूं यहयाज्ञवल्क्य कैसेजाणैगा ॥ हेशिष्य ॥ इसतैंआदिलेके अनंतप्र कारकेनिंदावचनोंकरिकै तेआश्वलादिकब्राह्मण याज्ञवल्क्यकीकीर्तिरूपीवारांगनाकेनिरोधकरणेविषे प्रवृत्तहोतेभये ॥ परंतु सोयाज्ञवल्क्य कीकीर्तिरूपवारांगना जनकराजाकेहृदयतैं निवृत्त नहींहोतीभई ॥ इतनैंकरिकै आश्वलादिकब्राह्मणोंकेनिंदावचनोंकूं दिखाया ॥ अब

याज्ञवल्क्य मुनिकीक्षमाकूंदिखावेहैं ॥ हेशिष्य इसप्रकार आश्वलादिकब्राह्मणोंनें करीजोनिंदा ॥ तिसनिंदाकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि आप जा णताहुआभी तथाअन्यलोकोंतें श्रवणकरताहुआभी किंचित्मात्र क्षोभकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ किंतु आत्मज्ञानकेप्रभावतें सोयाज्ञवल्क्य मुनि उलटाप्रसन्नहोताभया ॥ और जैसे वर्षाकालविषे गर्जनातेंरहितहुएमेघ जलकीवर्षाकरें हैं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यभी आपणेमुखतें आपणीस्तुतिकूं नकरताहुआ पूर्वकीन्याई शिष्योंकेप्रति अर्थसहितसर्ववेदोंका कथनकरताभया ॥ और निंदाकरणेहारे जेआश्वलादिक ब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकेप्रति सोयाज्ञवल्क्यमुनि किंचित्मात्रभीवचन नहींकहताभया॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकीकीर्तिकूंश्रवण करिकें सोमिथिलाकापति जनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेदेखणेकीइच्छा करताभया ॥ और जनकराजाके याअभिप्रायकूंजाणिकरिकें ते आश्वलादिकराजाकेपुरोहित अनंतप्रकारकेउपायोंकरिकें तथापूर्वउक्तनिंदावचनोंकरिकें राजाकूंनिवारणकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभीआश्वलादिकपुरोहितों नें राजाजनककेप्रतिकह्या ॥ तभी सोबुद्धिमान्जनकराजा तिनआश्वलादिकब्राह्मणोंकेदुष्टअभिप्रायकूं जाणि करिकेभी तिनोंकूंकिंचित्मात्रभी नहींकहताभया ॥ परंतु याज्ञवल्क्यमुनिकेदेखणेकी राजाकूं बहुतइच्छाहै ॥ याकारणतें सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेदेखणेवासतै यज्ञकाआरंभकरताभया ॥ और जेआपणेविश्वासवालेब्राह्मणथे तथाक्षत्रियथे तथावैश्यथे ॥ तिनोंकेप्रति सोजनकराजा याप्रकारकीआज्ञा करताभया ॥ हेब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यो ॥ हमनें यज्ञकरणेकाविचारकर्‍याहै ॥ यातें तुम सर्वदेशोंविषेजा इके सर्वब्राह्मणोंकूं बुलाइलेआवो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जनकराजाकेआज्ञाकूंपाइके तेसंपूर्णभृत्य कुरुदेश तथापांचालदेशतेंआदिलेके सर्वदेशोंविषेजातेभये ॥ और तिनदेशोंविषेस्थित जितनेकीविद्वानब्राह्मणथे ॥ तिनसंपूर्णोंकूं शिष्योंसहितलेआवतेभये ॥ तथा याज्ञवल्क्य मुनिकूंभी सर्वशिष्योंसहितलेआवतेभये और तिनब्राह्मणोंकेआवणेकरिकें जनकराजाकेगृहविषे महान्वेदोंकीध्वनि होतीभई ॥ कैसीहैसो वेदोंकीध्वनि ॥ एकशूद्रोंकूंछोडिकरिकें अन्यजितनेक ब्राह्मणहैं तथा क्षत्रियहैं तथावैश्यहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं आनंददेणेहारीहै ॥ अब तिनब्रा ह्मणोंकेसमाजविषे प्रधान प्रधान ब्राह्मणोंकूंदिखावेहैं॥हेशिष्य॥तिसजनकराजाकेयज्ञविषे आश्वलनामाब्राह्मण ऋग्वेदउक्तकर्मोंकेकरणेहारा

होता होता भया ॥ और जरत्कारुनामाब्राह्मणकापुत्र आर्त्तभागनामाब्राह्मण तहाँ आवताभया ॥ तथा लह्यनामाब्राह्मणकापुत्र भुज्युनामा ब्राह्मण तहाँ आवताभया तथा चक्रनामाब्राह्मणकापुत्र उषस्तनामाब्राह्मण तहाँ आवताभया॥तथा कुषीतकनामाब्राह्मणकापुत्र कहोलनामा ब्राह्मण तहाँ आवताभया ॥ तथा ब्रह्मनिष्ठा गार्गीस्त्री तहाँ आवतीभई ॥ तथा अरुणनामाब्राह्मणकापुत्र उद्दालकनामाब्राह्मण तहाँ आवताभया ॥ तथा शकलनामाब्राह्मणकापुत्र जोशाकल्यनामाब्राह्मणहै जाकूं विदग्धभीकहैहैं ॥ सोविदग्धनामाब्राह्मण तहाँ आवताभया ॥ कैसाहैसोशाकल्यअत्यंतवाचालहै और अत्यंतमानीहै ॥ और पापकरिकैमोहितहुआ सोशाकल्य सर्वदा याज्ञवल्क्यकेसाथ द्वेषकरैहै ॥ और चारिवेदोंकिवक्ता जेअनेकशिष्यहैं तिनशिष्योंकेसहित याज्ञवल्क्यमुनिभी तायज्ञविषेआवताभया ॥ तथा आश्वलादिब्राह्मण आपणेआपणेशिष्योंसहित तहाँ आवतेभये ॥ तिनोंतैंअन्यभी अनेकविद्वान्ब्राह्मण आपणेआपणेशिष्योंसहित तहाँ आवतेभये ॥ सम्पूर्णमिलिके अनेककोटिब्राह्मण होतेभये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेआगमनकाउपाय करताभया ॥ और किसीप्रसंगपाइके सोजनकराजा आश्वलादिकपुरोहितोंतैं आदिलेके सर्वब्राह्मणोंकेप्रति हाथजोडिके यहवचन कहताभया॥हेब्राह्मणो॥ अश्वमेधादिकयज्ञोंकरिके मैं देवतावोंकेपूजनकरणेकीइच्छाकरौंहूं ॥ तथा बहुतदक्षिणाकरिके सर्वब्राह्मणोंकेपूजनकीइच्छाकरौंहूं॥आप सर्व ब्राह्मणहमारेकूं यज्ञकरणेकीआज्ञादेवो ॥ तिसतैंअनंतर मैंसर्वदिशावोंकूं भेरीआदिकोंकेशब्दोंकरिके पूर्णकरौंगा॥हेशिष्य॥इसप्रकार जभी जनकराजानैंब्राह्मणोंकेप्रतिकह्या ॥ तभी तेसंपूर्णब्राह्मण राजाजनककूं यज्ञकरणेकीआज्ञादेतेभये ॥ तिसतैंअनंतर जनकराजाकूं यहइच्छा होतीभई ॥ यहजितनेकब्राह्मण हमारेयज्ञविषे एकठेहुएहैं ॥ तेसंपूर्णब्राह्मण महात्माहैं ॥ तथा सदाचारकरिकेयुक्तहैं ॥ तथा वेदोंविषे और वेदोंकेअंगोंविषे कुशलहैं ॥ और संपूर्णशिष्योंकरिकेयुक्तहैं ॥ परंतु इनसर्वब्राह्मणोंविषे अधिकवेदकावेत्ता कौनब्राह्मणहै ॥ याप्रकारकी इच्छा जनकराजाकूंहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर सोजनकराजा सर्वब्राह्मणोंविषे एकब्राह्मणकीअधिकताजानणेवासतैं याप्रकारकेउपायोंकूं मनविषेविचारताभया ॥ जोमैं याब्राह्मणोंकिसमाजविषे किसीएकब्राह्मणतैं याप्रकारपूछौंगा ॥ तुमसर्वब्राह्मणोंविषे कौनब्राह्मण अधिकवि

द्वान्है ॥ तो सोब्राह्मण किसीआपणेमित्रकूंहीं अधिकविद्वान्कहेगा ॥ काहेतैं जिसपुरुषका जिसपुरुषविषे द्वेषहोवैहै ॥ सो साक्षात्देवताहोवै अथवा गुरुहोवै अथवा सर्वविद्याविषे बृहस्पतिकेसमानहोवै ॥ तौभी सोद्वेषवानपुरुष सर्वथा ताकीनिंदाहीकरैहै ॥ और जिसपुरुषका जिसपुरुषविषे स्नेहहोवैहै ॥ सोएकअक्षरभी नहींजाणताहोवै ॥ और कृपिकरणेहारे पुरुषोंकीन्याई महामूढहोवै ॥ तौभी सोस्नेहवान्पुरुष ताकीसर्वदा स्तुतिहीकरैहै ॥ यातैं रागद्वेषवान् किसीब्राह्मणकेपूछणेतैं सर्वतैं अधिकविद्वान्ब्राह्मणका निश्चयहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोब्राह्मण रागद्वेषतैंरहित उदासीनहोवै ॥ तिसतैंपूछिकरिकै अधिकविद्वान्कानिश्चय तुमकरो ॥ समाधान ॥ उदासीनपुरुषकेपूछणेतैंभी अधिकताकाज्ञानहोवैनहीं ॥ काहेतैं शमदमादिकगुणोंकेज्ञानतैं अधिकताकाज्ञानहोवैहै ॥ और क्रोधादिकदोषोंकेज्ञानतैं न्यूनताकाज्ञानहोवैहै ॥ सोशमदमादिकगुणोंकाज्ञान तथाक्रोधादिक दोषोंकाज्ञान उदासीनपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातैं ताकेवचनतैंभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणकाज्ञान संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् उदासीनपुरुषकूं यद्यपि ब्राह्मणोंकेगुणदोषोंकाज्ञाननहींहै॥ तथापि ताउदासीनपुरुषकेआगे संपूर्णब्राह्मणोंकेगुणोंकूं तथादोषोंकूं आप वर्णनकरो ॥ पश्चात् सोउदासीनपुरुष तुमारेप्रति सर्वतैं अधिकविद्वान्का कथनकरैगा ॥ समाधान॥ हमारेमुखतैं ब्राह्मणोंकेगुणोंकूं श्रवणकरिकै सोउदासीनपुरुष जिसब्राह्मणविषेअधिकताकहैगा॥ तिनगुणोंकरिकै मैंहीं प्रथम तिसब्राह्मणविषे अधिकताजाणिसकताहूं ॥ उदासीनपुरुषकेप्रति ब्राह्मणोंकेगुणोंकाकथनकरणा निष्फलहै ॥ यातैं उदासीनपुरुषकेवचनतैंभी सर्वतैं अधिकब्राह्मणकानिश्चयहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ एकएकब्राह्मणकूं एकांतदेशविषेबुलाइकै तुम यहपूंछो हेब्राह्मण तुम सर्वतैं अधिकहो अथवा नहींहो ॥ जोब्राह्मण आपकूंसर्वतैंअधिककहै ॥ तिसकूंहीं तुमनैं सर्वतैं अधिकजानणा ॥ समाधान ॥ याप्रकारकेउपायतैंभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणका निश्चयहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोमैं एकएकब्राह्मणकूंबुलाइकेपूछौंगा ॥ तो संपूर्ण ब्राह्मण आपणेकूंहीं अधिककहैंगे ॥ कोईभीब्राह्मण आपणेकूंन्यूननहींकहैगा ॥ यातैं याउपायकरिकैभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणका निर्णयहोवै नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ गुह्यअर्थकेबोधनकरणेहारेजेप्रश्नहैं ॥ तेप्रश्न सर्वब्राह्मणोंप्रति तुमकरो॥जोब्राह्मण तिनप्रश्नोंका भलीप्रकार उत्त

रकहै ॥ तिसब्राह्मणकूं तुमनैं अधिकजानणा ॥ समाधान ॥ याप्रकारकेउपायकरिकेभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणका निर्णयहोइसकैनहीं ॥ उलटा हमारी हानिहोवैगी ॥ काहेतैं जोमैं तिनब्राह्मणोंकेप्रति गुह्यप्रश्नोंकूंकरौंगा ॥ तौ क्रोधवान्होइके तेब्राह्मण हमारेकूंशापदेकेदग्धकरैंगे ॥ यातैं इनपूर्वउक्तसंपूर्णउपायोंतैं सर्वतैंअधिकब्राह्मणका निर्णयहोवैनहीं ॥ किंतु परस्परविवादतैंही याब्राह्मणोंविषे अधिकताका तथान्यूनताका निर्णयहोवैगा ॥ यातैं यासभाविषे सर्वब्राह्मणोंकापरस्पर विवादकराइके सर्वतैं अधिकब्राह्मणका मैं निर्णय करों ॥ तिसविषेभी जोमैं इन सर्वब्राह्मणोंकूं यहकहौंगा ॥ हेब्राह्मणो तुमसंपूर्ण परस्परविवादकरो तौ यहब्राह्मण क्रोधवान्होइके मेरेकूं शापदेकेभस्मकरैंगे ॥ यातैं मेरेकहेतैंविनाही यहसंपूर्णब्राह्मण आपसविषे परस्परविवादकरैं ॥ ऐसाकोईउपाय हमकरैं ॥ सोऐसाउपाय धनतैंविना कोईदूसराहै नहीं ॥ किंतु धनहीसर्वविवादकाकारणहै ॥ यातैं सर्वब्राह्मणोंकेमध्यविषे बहुतधनकूं मैं राखों ॥ तिसधनकेलोभकरिके यहब्राह्मण आपहीविवादकरैंगे ॥ औरतिनोंकेविवादतैं सर्वतैंअधिक विद्वान्ब्राह्मणका हमारेकूं निर्णयहोवैगा ॥ याप्रकारकेउपायकूं सोराजाजनक आपणेमनविषेनिश्चयकरताभया ॥ अब धनविषेसर्वविवादोंकीकारणता दिखावैहैं ॥ विषयभोगकासाधन जोयहधनहै ॥ सो किसजीवके चित्तकूं क्षोभनहींकरता ॥ किंतु सर्वजीवोंके चित्तकूं क्षोभकरैहै ॥तात्पर्ययह॥ जेब्रह्मवेत्ता सन्यासीहैं तिनोंकेभी चित्तकूं यहधन क्षोभकरैहै तोअन्यकुटुंबीगृहस्थोंकेचित्तकूं सो धन किसवासते नहींक्षोभकरेगा ॥ किंतु अवश्य तिनोंके चित्तविषे क्षोभकरेगा ॥ किंवा ॥ चित्तकेक्षोभकेकारण जेकाम क्रोध लोभ मोहादिकहैं ॥ तेभी याधनकरिकेही उत्पन्नहोवैहैं ॥ धनतैंविना कामक्रोधादिकविकार उत्पन्नहोवैनहीं॥अब अन्वय व्यतिरेककरिके धनविषे कामक्रोधादिकोंकीकारणता दिखावैहैं ॥ तहांधनकेविद्यमानहुए जोकामक्रोधादिकोंकीविद्यमानताहै याकूं अन्वयकहैहैं ॥ और धनकेअभावहुए॥जोकामक्रोधादिकोंकाअभावहै ताकूं व्यतिरेककहैहैं॥तहां प्रथम व्यतिरेककूंदिखावैहैं॥क्षुधाकरिकेपीडित जोनिर्धनदरिद्रीपुरुषहै ॥सो कामजन्यसुखकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोनिर्धनपुरुष याप्रकारकाविचार आपणेमनविषे करिके विवाह नहींकरैहै ॥ जोमैं विवाहकरौंगा ॥ तौजितनाकीअन्न स्त्रीभोजनकरेगी ॥ इतनाअन्नतौ मेरेकूंहीभोजनकरणेवासतैचाहिये॥स्त्रीकूंभोजनकरणे

वासतें मैंकहांसेंअन्नदेवोंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिके सोदरिद्रीपुरुष स्त्रीकूं गृहविषेलेआवेनहीं ॥ और जैसेंक्रिमिकरिकेयुक्त दुर्गंधमुडदेकूं कोईपुरुष स्पर्शकरतानहीं तैसे पुरुषकूंनिर्धनदेखिकरिके ॥ कामकरिके आतुरहुईभीस्त्री तानिर्धनपुरुषकेस्पर्शकरणेकीइच्छाकरतीनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ धर्मशास्त्रकीरीतिसें विवाहीहुई जापतिव्रतास्त्री है ॥ सोभी आपणेपतिकूंनिर्धनदरिद्रीदेखिकरिके सर्वदा ताकेमरणेकीइच्छा करेहै ॥ तो अन्यव्यभिचारिणीस्त्रियोंकीक्यावार्ता है ॥ किंवा ॥ जैसे सिद्धांजन पृथिवीविषेस्थितधनकेदर्शनकासाधनहोवैहै॥तैसे यहदरिद्र तारूपीसिद्धांजनभी सर्वधर्मोंकेदर्शनविषे साधनहोवैहै ॥ काहेतें जैसे आपणीमातादिकोंविषे किसीपुरुषकूं कामभावनाहोवैनहीं ॥ तैसे यहदरिद्रीपुरुष किसीभीस्त्रीविषे कामनाकरतानहीं ॥ किंतु क्षुधाकरिकेआतुरहुआ दरिद्रीपुरुष एकअन्नमात्रकीइच्छाकरेहै ॥ किंवा ॥ जैसे विवेकीपुरुष सर्वकूंआत्मारूपजाणिके किसीऊपर क्रोध नहींकरेहै ॥ तैसे यहदरिद्रीपुरुषभी राजाकीभयतें तथाधर्मराजाकीभयतें किसीप्राणीऊपर क्रोध नहींकरता ॥ किंवा सोनिर्धनदरिद्रीपुरुष याप्रकारकाविचारकरिके किसीपापकर्मविषे प्रवृत्तहोतानहीं ॥ अब ताकेविचारकूंदिखावैं हैं मैंने पूर्वजन्मोंविषे अत्यंतपापकर्मकरेहैं ॥ जिनपापकर्मोंकाफल यहदरिद्रता हमारेकूंप्राप्तभई है ॥ यादरिद्रतातैंपरे दूसराकोईपापकर्मकाफल क्याहोवैगा ॥ किंतु यहदरिद्रताही सर्वपापकर्मोंकाफलहै ॥ काहेतें जैसे ब्रह्महत्यारेपुरुषका सर्वलोक निरादरक रैहैं ॥ तैसे मेरेकूंदरिद्रीहुआदेखिकेयहहमारीमाता तथापिता तथास्त्री तथापुत्र यहसंपूर्ण हमारानिरादरकरें हैं ॥ कोईभी हमाराआदरकर तानहीं ॥ यातें पूर्वलेपापकर्मोंकाफल जोयहदरिद्रताहै ॥ ताकूं भलीप्रकारअनुभवकरताहुआभी मैं जोपुनःपापकर्मोंकूंकरोंगा ॥ तौपुनः जन्मांतरोंविषे हमारेकूंयहदरिद्रता प्राप्तहोवैगी ॥ यातें हमारेकूं पापकर्म करणेयोग्यनहीं ॥ दृष्टांत जैसे सर्पकूं आपणेमृत्युकासाधनजाणि करिके कोईबुद्धिमान्पुरुष तासर्पकाउल्लंघनकरतानहीं ॥ याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिके निर्धनदरिद्रीपुरुष पापकर्मविषेप्रवृत्तहो तानहीं ॥ किंवा ॥ जोनिर्धनदरिद्रीपुरुष किंचित्मात्रभीधर्मकूंनहींजाणता ॥ सोभी जभीपापकर्मोंकूंनहींकरता ॥ तौ शास्त्रप्रमाणतें धर्म कूंजाणताहुआदरिद्रीपुरुष किसवासतेपापकर्मोंकूंकरेगा ॥ किंतु ॥ नहींकरेगा ॥ किंवा जोधनतेंरहित दरिद्रीपुरुषहै ॥ सो राजादिकोंतें

भयवान्हुआ परद्रव्यकी तथापरस्त्रीकी इच्छाकरतानहीं ॥ और क्षुधाकरिकैपीडितहुआ सोदरिद्रीपुरुष थोडेअन्नकीप्राप्तिकरिकैभी प्रसन्न होवैहै ॥ यातैं दरिद्रीपुरुषविषे लोभभीनहीं ॥ इतनैंग्रंथकरिके धनकेअभावहुए कामादिकदोषोंकाअभावरूप व्यतिरेकदिखाया ॥ अब धनकेविद्यमानहुए कामादिकदोषोंकीप्राप्तिरूप अन्वयकूंदिखावै हैं॥धनकेमदकरिकेअंधहुआ यहधनीपुरुष आपणेबलकरिके राजाकीतथा गुरुकी तथादेवतावोंकीभी अवज्ञाकरै है॥ताकरिकै यहधनीपुरुष इसलोकविषेतथापरलोकविषे अनंतदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥किंवा यहधनी पुरुषजभीपरस्त्रीआदिकपदार्थोंविषेमोहकूंप्राप्तहोवै है॥तभी इसलोकविषे ताकी कीर्तिनष्टहोइजावैहै॥और संपूर्णलोक ताकूं धिक्कारकरै हैं॥ और मृत्युहोइकै सोधनीपुरुष नरकविषेदुःखकूंभोगैहै ॥ किंवा ॥ जैसे प्रज्वलितअग्नि घृतकरिके तथाकाष्ठोंकरिके तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसेयहधनीपुरुष धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिके कभीभी तृप्तहोवैनहीं ॥ किंतु अधिकअधिकपदार्थोंकेप्राप्तिकी सर्वदाइच्छाकरैहै ॥ कदाचित् पूर्वलेपुण्यकेप्रभावतैं ताधनीपुरुषकूं समुद्रपर्यंतपृथिवीकाराजभी प्राप्तहोइजावै ॥ तोभी पुनःस्वर्गलोककेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ यातैं धनीपुरुषकेलोभकीशांति होतीनहीं ॥ किंवा ॥ तालोभकरिके सोधनीपुरुष परस्त्रियोंका तथापरधनका हरणकरैहै ॥ यातैं सर्वजनोंकरिके सो निंदितहै ॥ ऐसेनिंदितकर्मोंकूंकरिकेभी सोधनीपुरुष निर्लज्जपुरुषकीन्याई अन्यप्राणियोंकूंहँसैहै ॥ यातैं सर्वजीवोंतैं सोधनीपुरुष अधमहै ॥ किंवा ॥ धनकरिकेमोहकूंप्राप्तहुआ यहधनीपुरुष आपणेहितकूं तथाअहितकूं जाणतानहीं ॥ किंतु मोहकेवशहुआ सोधनी पुरुष आपणेदुःखकूंहीं संपादनकरैहै ॥ किंवा ॥ धनकरिकेमोहकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष आपणेहितकारीमाताकूं तथापिताकूं तथापुत्रकूं तथावेदवेत्ताब्राह्मणोंकूंशरीरकरिके तथामनकरिके तथावाणीकरिके हननकरैहै ॥ इसप्रकार धनीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वदोषोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जोधनरहितदरिद्रीपुरुषहै तिसकूं कामक्रोधादिकदोष प्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु याप्रकारकाविचारकरिके सोदरिद्रीपुरुष सर्वदाआनंदविषे मगनरहैहै ॥ अब ताकेविचारकूंदिखावैहैं ॥ जोमैं किसीधनीपुरुषतैं अन्नादिकपदार्थोंकीयाचनाकरौंगा ॥ और आगेतैं सोधनीपुरुष हमारेप्रति अन्नमात्रभीनहींदेवैगा ॥ तोहमारीयाचनाहीं व्यर्थजावैगी ॥ ताकरिकै हमारेकूं पश्चात्तापहोवैगा ॥

यातैं किसीधनीकेआगे याचनाकरणीयोग्यनहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै निर्धनदरिद्रीपुरुष लोभादिकोंतैंरहितहोवै है ॥ किंवा ॥ यहजो हमारीमाताहै तथापिताहै तथाअन्यबांधवहैं ॥ तेसंपूर्ण हमारेहितकारी हैं ॥ यातैं मातापितादिक जोजोआज्ञा हमारेप्रतिकरैं ॥ सोआज्ञा हमारेकूंअवश्यमानीचाहिये ॥ याप्रकारका विचारकरिकै सोनिर्धनदरिद्रीपुरुष मोहतैंभी निवृत्तहोवै है ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ धनक रिकेहीं संपूर्णकामक्रोधादिकदोष उत्पन्नहोवै हैं ॥ जेब्रह्मवेत्तापुरुषहैं तिनोंकूंभी जभी धनकरिकै कामक्रोधादिकदोष प्राप्तहोवै हैं॥ तभीवहि मुंखअज्ञानीजीवोंकी क्याकथाहै ॥ यातैं सर्वतैंअधिकविद्वान्ब्राह्मणकेनिर्णयकरणेवासते यासर्वब्राह्मणोंकेसमाजविषे जूवाकीन्याईं मैं बहुत धनकूंराखों ॥ जोइनसर्वब्राह्मणोंविषे अधिकविद्वान्ब्राह्मणहोवैगा ॥ सोजभी याधनकूंलेजावैगा ॥ तभी यहसंपूर्णब्राह्मण क्रोधकरिकैंव्याकुल हुएआपही तिसब्राह्मणकेसाथविवादकरैंगे ॥ शंका हेभगवन् ॥ धनकरिकैजो तुम ब्राह्मणोंकाक्षोभकरावोगे ॥ तो तुमारेकूंपापहोवैगा ॥ समाधान ॥ नीतिपूर्वकजोधर्महै सो राजावोंकेपापकासाधनहोवैनहीं ॥ किंतु सुखकासाधनहोवै है ॥ ताधर्मकेकरणेकरिकै हमारेकूं पाप होवैगानहीं॥तात्पर्ययह॥ब्राह्मणोंकेक्षोभविषे मैं कारणनहीं॥किंतु तिनोंकेलोभादिकदोषही कारणहैं ॥ यातैं याउपायकरिकै सर्वतैं अधिक ब्राह्मणकेजानणेविषे हमारेकूं किंचित्मात्रभी पापनहींहोवैगा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सर्वतैंअधिकजाणिकै जिसब्राह्मणकेताईं धनदेवोगे ॥ सोब्राह्मण जोकदाचित् ताधनकरिकै पापकर्मकरैगा ॥ तो तुमारेकूंभी परंपराकरिकै पापकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ सर्वतैंअधिकजोवि द्वान्है ॥ तिसकूं ताधनकरिकै पापकर्महोवैगानहीं ॥ काहेतैं शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तब्राह्मणहीं सर्वतैंअधिकहोवै है ॥ तेशमदमादिक गुण जहाँरहैंहैं ॥ तहां कामक्रोधादिकदोषोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और कामक्रोधादिकोंतैंविना पापकर्मविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ तेकामक्रो धादिकदोष शमदमादिकगुणवान्पुरुषविषे संभवैनहीं॥यातैं कामक्रोधादिकोंतैंरहित शमदमादिकगुणवान् सर्वतैंअधिकविद्वान्पुरुष किस प्रकार पापकर्मकूंकरैगा ॥ किंतु कदाचित्भी सोविद्वान्पुरुष पापकर्मनहींकरैगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोजनकराजा पुनःयाप्रकारकाविचार करताभया॥याब्राह्मणोंकेसमाजविषे याज्ञवल्क्यमुनितैंविना अन्यकिसीब्राह्मणविषे सर्वतैंअधिकताकी संभावनाहो

वेनहीं ॥ किंतु सूर्यभगवान्काशिष्य यहयाज्ञवल्क्यमुनिहीं सर्वतैंअधिकप्रतीतहोवैहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ संभाषणकरेतैंविनाहीं याज्ञवल्क्यकीअधिकता आपनैं कैसेजाणी ॥ समाधान ॥ काम क्रोध लोभ मोह गर्व इत्यादिकदोषोंका जाकेविषेअभावहोवैहे ॥ सोविद्वा न्होंहोवैहे ॥ यहविद्वान्कालक्षण याज्ञवल्क्यमुनिविषेही घटैहे ॥ काहेतैं या याज्ञवल्क्यमुनिविषे काम क्रोध लोभ मोह हैनहीं ॥ और इत नीविद्याकूंपाइकेभी याकेविषेगर्वनहीं ॥ और जडपुरुषकीन्याई मौनकूंधारणकरिकै यहयाज्ञवल्क्यमुनिस्थितहै ॥ यातैं यहजान्याजा वैहे ॥ याकेसमान कोईदूसराविद्वान्नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोयहयाज्ञवल्क्यमुनि रागद्वेषादिकोंतैंरहितहै ॥ तौ तुमारेधनकूंकैसेग्रह णकरैगा ॥ रागतैंविना धनादिकपदार्थोंकाग्रहण होवैनहीं ॥ समाधान ॥ यहयाज्ञवल्क्यमुनि हमारेधनकूंजोग्रहणकरैगा ॥ सो आपणेभोग वासतैं नहींग्रहणकरैगा ॥ किंतु जीवोंकेउपकारवासते धनकूंग्रहणकरिकै याब्राह्मणोंकूं सभाविषेजीतैगा ॥ किंवा ॥ यहहमाराधन जभी याज्ञवल्क्यमुनिकेहस्तविषेआवैगा ॥ तौ ताधनकरिकै सर्वप्राणियोंका उपकारहीहोवैगा ॥ काहेतैं याज्ञवल्क्यमुनिका धन तथाशरीर आपणेभोगवासतेनहीं ॥ किंतु केवल परउपकारकेवासतैहे ॥ किंवा ॥ जैसे कोईपामरपुरुष धनादिकपदार्थोंकीलिप्साकरिकै युक्तहुआ प्रसन्नदृष्टितैं राजाकूंदेखैहे ॥ तैसे यह याज्ञवल्क्यमुनि प्रसन्नदृष्टितैं वारंवार हमारेकूंदेखैहे ॥ यातैं यहजान्याजावैहे ॥ यामुनिका हमारेऊपर परमअनुग्रहहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जहांजहां प्रसन्नतापूर्वकदृष्टिहोवैहे ॥ तहांतहां धनादिकपदार्थोंकीलिप्साहोवैहे अथवा अनुग्र हहोवैहे ॥ लिप्सातैंविना तथा अनुग्रहतैंविना प्रसन्नतापूर्वक दृष्टिहोवैनहीं ॥ तहां धनादिकपदार्थोंकीलिप्सातौ याज्ञवल्क्यमुनिविषेहै नहीं ॥ परिशेषतैं अनुग्रहकरिकैहीं हमारीओरदेखतैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ याज्ञवल्क्यमुनिविषे रागद्वेषनहींहै यहतुम कैसेजाणते हो ॥ समाधान ॥ याज्ञवल्क्यमुनिकेजीतणेकीहैइच्छाजिनोंकूं ऐसेजेयह अहंकारीब्राह्मणहैं ॥ ते परस्परहँसतेहुए दुरुत्तरवाक्योंकूंकथनकरैं हैं ॥ तिनब्राह्मणोंकेवचनोंकूं यहयाज्ञवल्क्यमुनि अज्ञानीपुरुषकीन्याई श्रवणकरैहै और तिनवचनोंकूंश्रवणकरिकैभी यहयाज्ञवल्क्यमुनि जडपुरुषकीन्याई तिनोंकाउत्तरकहतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहे॥या याज्ञवल्क्यमुनिकेचित्तविषे क्षोभनहीं॥और जोपुरुष क्षोभतैंरहित

होवैहै ॥ सोईहीपुरुष रागद्वेषतैंरहितहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसतैंआदिलैके बहुतप्रकारकाविचार सोजनकराजा आपणेमनविषेकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोजनकराजा कामधेनुगौकेसमान १००० एकसहस्रगौवोंकूं तथा४०००० चालीससहस्र सुवर्णकेनिष्कोंकूं सभाविषेस्थापनकरताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ एकसहस्रगौवोंके दोसहस्र शृंगहोवैहैं ॥ तहांएकशृंगकेसाथ बीसबीस सुवर्णकेनिष्क राजाबांधताभया ॥ नवेतोला परिमाणसुवर्णकूं निष्ककहे हैं ॥ याप्रकार शास्त्रकीरीतिसैं सोजनकराजा सभाविषे गौवोंकूंस्थापनकरताभया ॥ और सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन राजा कहताभया ॥ हेसर्वब्राह्मणो ॥ जोतुमारेमध्यविषे श्रेष्ठब्रह्मवेत्ताब्राह्मणहोवै ॥ सो यहसंपूर्णगौवों आपणेआश्रमविषेलैजावै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारके जनकराजाकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेसंपूर्णब्राह्मण नीचेमुखकरिकै तूष्णीभावकूंप्राप्तहोतेभये ॥ आपणेविद्याकेबलकरिकै सर्वब्राह्मणोंकेजीतणेविषे कोईभीब्राह्मण समर्थनहींहोताभया ॥ याप्रकार संपूर्णब्राह्मणोंकूंतूष्णीहुआदेखिकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि सामवेदपाठीशिष्यकेप्रति यहवचन कहताभया ॥ हेसामवेदपाठीशिष्य ॥ तूं यहसंपूर्णगौवां हमारेगृहविषे शीघ्रहीलैजावो ॥ और सर्वब्राह्मणोंकेप्रति ऊँचेस्वरकरिकै यहवचनकहो ॥ सर्वतैंअधिक ब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्यमुनि सर्वब्राह्मणोंकीगौवोंकूंलैजावैहै ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोसामवेदपाठीशिष्य तिसीप्रकार सर्वब्राह्मणोंकेप्रति वचनकहिकैं सर्वगौवोंकूं याज्ञवल्क्यमुनिकेआश्रमविषेलेजाताभया ॥ तिसतैंअनंतर तेसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यऊपर क्रोधवान्होतेभये ॥और जनकराजातौ परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया तात्पर्ययह ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि एकहीकालविषे ब्राह्मणोंकेतौ दुःखकाकारणहोताभया ॥ और जनकराजाके सुखकाकारणहोताभया ॥ याकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि याअर्थकूंबोधनकरताभया ॥ सांख्यशास्त्रवाले शब्दस्पर्शादिकविषयोंविषेही सुखदुःखमानैंहैं ॥ सो तुमोंने अंगीकारनहींकरणा ॥ किंतु आपणेमनविषे सुखदुःखरहे हैं यहपक्ष तुमोंनें अंगीकारकरणा ॥काहेतें जोस्नेहकरिकैयुक्त चित्तहोवैहै ताकेविषेतौ सुखकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ जैसे जनकराजाकूं सुखउत्पन्नभयाहै ॥ और जोचित्त द्वेषकरिकैयुक्तहोवैहै ताकेविषे दुःखकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ जैसे ब्राह्मणोंकूं दुःखकीउत्पत्तिभईहै ॥ जोविषयकाहीं सुखदुःखधर्महोवै॥तौ सर्वलोकोंकूं ताविषयतें सुखकीहीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ अथवा

दुःखकीही प्राप्तिहोणीचाहिये ॥ किसीकूं सुखकोप्राप्ति और किसीकूं दुःखकीप्राप्ति यहविषमता संभवैनहीं ॥ और यहविषमता सर्वजीवोंकूं अनुभवहोवैहै ॥ यातैं विषयकाधर्म सुखदुःखनहीं ॥ किंतु बाह्यकारणतैंविनाहीं यहवस्तु रमणीकहै तथायहवस्तु अरमणीकहै याप्रकारकी कल्पनातैं मनविषे सुखदुःख उत्पन्नहोवैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे निर्जनवनविषे प्राप्तभयाजोवीतरागपुरुषहै ॥ ताकूं आपणेमनतैंहीं तहांआनंद होवैहै ॥ और तिसीनिर्जनवनविषे प्राप्तभयाजोरागीपुरुषहै ॥ तिसकूं आपणेमनतैंहीं तहांदुःखकीप्राप्तिहोवै है॥किसीविषयतैं तावनविषेस्थि तपुरुषोंकूं सुखदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं मनहीं सुखदुःखकाआश्रयहै ॥ अब दुःखकरिकेजन्य ब्राह्मणोंकेक्रोधकूंदिखावै हैं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार गौवोंकूंगयाहुआदेखिकै क्रोधकरिकै तिनब्राह्मणोंकेआसन चलायमानहोतेभये ॥ और मुखकेश्मश्रु कंपायमानहोतेभये ॥ और नीचेकेदांतोंकीजोपंक्तिहै सोमुखकेभीतर प्रवेशकरतीभई ॥ और ऊपरकेदांतोंकीपंक्तिकरिकै नीचेकेअधरकूंदबावतभये ॥ और जैसे भूता वेशवालापुरुष नानाप्रकारके रुदनादिककरैहै ॥ तैसे क्रोधकरिकैयुक्तहुए केईकब्राह्मण रुधिरकरिकैपूरितनेत्रोंकरिकै अश्रुवोंकापरित्याग करतेभये और केईकब्राह्मण उन्मत्तपुरुषकीन्याई नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरतेभये ॥ याप्रकार तिनब्राह्मणोंके यज्ञमंडलविषे महान्घोरश ब्द होताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पूर्णिमाकेप्राप्तहुए समुद्रविषेक्षोभहोवैहै ॥ तैसे सर्वब्राह्मण क्षोभवान्होइकै याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हमसर्वविद्वान्ब्राह्मणोंकूंयहयाज्ञवल्क्य एकलाहीउल्लंघनकरिकेजावैहै ॥ यातैं हमारेकुलोंकूंधिक्कारहै ॥ तथा हमारेअध्यापनकरावणेकीजे महान्शालाहैं तिनोंकूंभी धिक्कारहै ॥ तथा हमारेजीवनकूंभी धिक्कारहै ॥और अध्ययनकालविषे जोहमोंनैं गुरुवोंकीसेवाकरीहैतासेवाकूंभी धिक्कारहै ॥ तथा हमारेवेदअध्ययनकूं धिक्कारहै ॥ तथा वेदोंकेअध्ययनकरणेहारे जेहमारेशिष्यहैं तिनोंकूंभीधिक्कारहै॥हेशिष्य॥याप्रकार सर्वब्राह्मणोंकीअवस्थाकूंदेखिकरिकै आश्वलनामाब्राह्मण बहुतक्रोधवान्होताभया ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिकेसमीपआइकै सोआश्वलनामा ब्राह्मण याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेगुरुसंप्रदायतैंरहित दुराचारीयाज्ञवल्क्य हमसर्वब्राह्मणोंकेमध्यविषेक्या तुहीं एकसर्वतैं अ धिकविद्वान्है ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ तुमारेविषे विद्याकरिकैतो अधिकताहैनहीं ॥ किंतु लोभकरिकै तथागर्वकरिकै तेरेविषे हमारेतैं

अधिकताहै ॥ केसेहैंहमसंपूर्णब्राह्मण हिरण्यगर्भकेसमानहैं ॥ तथा गर्वलोभादिकदोषोंतैंरहितहैं ॥ तथा शमदमादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ और तर्करूपीमननकीसिद्धिवासतै चतुर्दशविद्याकूं हम जानणेहारेहैं ॥ तेचतुर्दशविद्यायहहैं ॥ ऋग यजुष् साम अथर्वण यहचारिवेद ॥ तथा शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त ज्योतिष पिंगल यहषट् वेदकेअंग ॥ मीमांसाशास्त्र न्यायशास्त्र पुराण धर्मशास्त्र ॥ यहचतुर्दशविद्या हैं ॥ आयुर्वेद धनुर्वेद गंधर्ववेद अर्थशास्त्र याचारोंकूंमिलाइके अष्टादशविद्याहोवैं हैं ॥ हे याज्ञवल्क्य ॥ यापृथिवीविषे लज्जातैंरहितहुआ पुरुष कौनपंडितनहींहोता ॥ किंतु लज्जातैंरहितहुआपुरुष पंडितहीहोवैहै ॥ जैसे हमसर्वब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंविषे लज्जातैंरहितहुआ तूं पंडित है ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ महान्बली जेवासुकीआदिकसर्पहैं तिनोंकूं पादोंकरिकेकौनस्पर्शकरैगा ॥ और तीनलोकोंकूंदाहकरणेहारा जो कालकूटविषहै तिसकूं योगसाधनातैंरहित कौनपुरुष भक्षणकरैगा ॥ और प्रज्वलितजोअग्निहै तिसकूं मुष्टिविषेबांधिकरिके कौनपुरुष गृहविषेलेजावैगा ॥ तैसे यासर्वब्राह्मणोंकूं तेरेतैंविना कौनपुरुष क्रोधकरावैगा किंतु तेरेतैंविना दूसराकोई ब्राह्मणोंकेक्रोधकरावणेहारा नहीं ॥ एकतूंहीं गर्व लोभ अनम्रता करिकैयुक्तहुआ ब्राह्मणोंकेक्रोधकरावणेहाराहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ यासंपूर्णब्राह्मणोंविषे एकएकब्राह्मणभी क्रोधकरिकैयुक्तहुआ संपूर्णजगत्केदाहकरणेविषेसमर्थ है ॥ तो क्रोधकरिकैयुक्तहुए यहसंपूर्णब्राह्मण तेरेसरीखेअधम ब्राह्मणकूं किसवासतेनहींदाहकरैंगे ॥ किंतु अवश्यतेरानाशकरैंगे ॥ हेशिष्य ॥ इत्यादिककठोरवचनरूपीबाणोंकरिके सो आश्वलनामा ब्राह्मण याज्ञवल्क्यमुनिकेकर्णोंकूंभेदनकरताभया ॥ तथापि सोयाज्ञवल्क्यमुनि किंचित्मात्रभी क्षोभकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पाषाणोंकीवृष्टिकरिके ताडनाकूंप्राप्तहुआ पर्वत क्षोभकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यमुनिभी क्षोभकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ उलटा आश्वलकेवचनोंकूंश्रवणकरिके हँसताहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि याप्रकारकावचन आश्वलनामाब्राह्मणकेप्रति कहताभया ॥ हेआश्वलब्रा ह्मण ॥ याब्राह्मणोंकेसमाजविषे जोजोब्राह्मण ब्रह्मवेत्ताहैं ॥ तिसतिसब्राह्मणकेताईं हमसर्वदा नमस्कारकरैहैं ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जो तुमारी ऐसीब्राह्मणोंविषेश्रद्धाहै ॥ तो सर्वब्राह्मणोंकोगौवाँ तुमनैं काहेवासतेहरणकरियाहैं ॥ समाधान ॥ हेआश्वल ॥ सुवर्णकरिके

सहित गौवोंकूंदेखिकरिके तिनगौवोंविषेहमारीअभिलाषाहुई ॥ याकारणतैं हमनैं गौवोंकाहरणकर्‍याहे ॥ याकेविषे किसवासतैंब्राह्मण क्रोधकरैहैं ॥ हेआश्वल ॥ जोमैं इनब्राह्मणोंकीगौवां लेजाता ॥ तो याब्राह्मणोंकाक्रोध हमारेऊपर घटता ॥ परंतु हमनैं इनब्राह्मणोंकीगौवांलियानहीं ॥ किंतु जनकराजा गौवोंकादाताहे ॥ और मैं गौवोंकूंलेजाणेहाराहूं ॥ याकेविषे ब्राह्मणोंकेक्रोधका कौनकारणहे ॥ यहवार्ता तुम विचारकेकहो ॥ और हेआश्वल यहजनकराजा बहुतधनवान्हे ॥ जोइनसर्वब्राह्मणोंकूं तथातुमारेकूं हमारेन्याई धनग्रहणकरणेकी इच्छाहोवे ॥ तो राजाजनकतैं तुमसंपूर्णब्राह्मण धनकूंलेवो ॥ तुमारेताईं दानदेणेविषे हम राजाकूंनिवारणकरतेनहीं ॥ यातैं हमारेऊपर क्रोधकरणा तुमारेकूं उचितनहीं॥हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं आश्वलकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोआश्वलनामाब्राह्मण जैसेघृतकेपायेतैं अग्निक्षोभकूं प्राप्तहोवेहे ॥ तैसे पुनःक्षोभकूं प्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर याज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ विवादकरणेवासते सोआश्वल याज्ञवल्क्यकेप्रति अष्टप्रश्न करताभया ॥ तिनोंविषे चारिप्रश्नोंकानाम अतिमोक्षहे ॥ और चारिप्रश्नकानामसंपद्हे ॥ तहां कर्मीपुरुषोंके जेवाक्आदिकअध्यात्महैं ॥ तिनवाक्आदिकअध्यात्मोंकाजोअग्निआदिकअधिदेवोंकेसाथ परिच्छेदहे ॥ तापरिच्छेदरूपमृत्युकेनिवृत्तिकासाधन जोवाक्आदिकोंकाअग्निआदिकोंके साथ अभेदज्ञानहे ताकूं मोक्षकहैहैं ॥ और ताअभेदज्ञानकरिके वाक्आदिकअध्यात्मोंकूं जोअग्निआदिकअधिदेवभावकीप्राप्तिरूपफलहे ताकूं अतिमोक्षकहैहैं ॥ ताअतिमोक्षरूपफलकूंविषयकरणेहारे प्रश्नोंकूंभी अतिमोक्षकहैहैं ॥ और निकृष्टवस्तुविषे किंचित्मात्रसमानधर्मकूंलेके जोउत्कृष्टदृष्टिहे ताकूं संपद्कहैं हैं ॥ जैसे श्राद्धकेअन्नविषे अमृतदृष्टि ॥ तथाब्राह्मणविषे विष्णुदृष्टि ॥ तासंपद्कूंविषयकरणेहारेप्रश्नोंकूंभी संपद्कहे हैं ॥ अब चारिअतिमोक्षप्रश्नोंकूंदिखावेहैं ॥ आश्वलउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ऋत्विगादिकसाधनोंकरिकेसंपन्नहुएभी अग्निहोत्रादिककर्म परिच्छेदभावजन्य जोप्रमादरूपमृत्युहे ताकरिकेंव्याप्तहैं ॥ यद्यपि शास्त्रउक्तकर्मोंकेअनुष्ठानतैं अशास्त्रीय इंद्रियादिकोंकीवृत्तियांनिवृत्तहोवैं हैं ॥ तथापि परिच्छिन्नभाव ज्ञानतैंविना निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं किसज्ञानकरिके यजमान परिच्छिन्नभावका परित्यागकरिके अपरिच्छिन्नभावरूपफलकूंप्राप्तहोवेहे ॥ १ ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥

दिनरात्रिरूपकालकरिकै संपूर्णपदार्थ परिच्छिन्नहोइरहे हैं ॥ तापरिच्छिन्नभावकीनिवृत्ति किसज्ञानकरिकैहोवैहे ॥ २ ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष रूपकालकरिकै संपूर्णपदार्थ परिच्छिन्न होइरहे हैं ॥ तापरिच्छिन्नभावकीनिवृत्ति किसज्ञानकरिकैहोवैहे ॥ ३ ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै निराश्रयआकाशविषे यजमान किससाधनकरिकैगमनकरैहे ॥ ४ ॥ अब इनचारिप्रश्नोंकेउत्तरोंकूंदिखावैं हैं ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआश्वलब्राह्मण ॥ कर्मकर्तायजमानकी जोअध्यात्मवाकहै ॥ और तावाक्का अधिदैवरूपजोअग्निहै ॥ और तावाक्का अधियज्ञरूपजोहोताहै ॥ यातिनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारीजो अधिदैवअग्निरूपयजमानकावाकमैंहूं याप्रकारकी होताकीदृष्टिहै ॥ सोदृष्टि यजमानके प्रथम परिच्छेदजन्यमृत्युकेतरणकासाधनहै ॥ १ ॥ और हेआश्वल ॥ यजमानकाजोअध्यात्मचक्षुहै ॥ और ताचक्षुका अधिदैवरूपजोसूर्य है ॥ और ताचक्षुका अधियज्ञरूपजोअध्वर्युहै ॥ यातिनोंकेअभेदकूं विषयकरणेहारी जो अधिदैवसूर्यरूप यजमानकाचक्षु मैंहूं याप्रकारकी अध्वर्युकीदृष्टिहै ॥ सोदृष्टि यजमानके द्वितीयपरिच्छेदकूंनिवृत्त करैहे ॥ २ ॥ और हेआश्वल यजमानका अध्यात्मरूपजोप्राणहै ॥ और ताप्राणका अधिदैवरूपजोवायुहै ॥ और ताप्राणका अधियज्ञरूप जोउद्गाताहै ॥ यातिनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारी जो अधिदैववायुरूप यजमानकाप्राण मैंहूं याप्रकारकी उद्गाताकीदृष्टिहै ॥ सोदृष्टि यजमानकेतृतीयपरिच्छेदकूंनिवृत्तकरै है ॥ ३ ॥ और हेआश्वल ॥ यजमानका अध्यात्मजोमनहै ॥ और तामनका अधिदैवरूपजोचंद्रमा है ॥ और तामनका अधियज्ञरूप जोब्रह्माहै ॥ यातिनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारी जोअधिदैवचंद्रमारूप यजमानकामन मैंहूं याप्रकारकी ब्रह्माकीदृष्टिहै ॥ तादृष्टिकेप्रभावतैं यजमान आकाशविषेगमनकरैहे ॥ ४ ॥ यहां दृष्टिशब्दकरिकै सर्वत्र ज्ञानकाग्रहणकरणा ॥ और परिच्छेदशब्दकरिकै भेदकाग्रहणकरणा ॥ और ऋग्वेदकेजानणेहारेब्राह्मणकूं होता कहैं हैं ॥ और यजुर्वेदकेजानणेहारेब्राह्मणकूं अध्वर्यु कहैं हैं ॥ और सामवेदकेजानणेहारेब्राह्मणकूं उद्गाता कहैं हैं ॥ और ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंकेजानणेहारेब्राह्मणकूं ब्रह्मा कहैं हैं ॥ यहचारिऋत्विक् यज्ञकेकरावणेहारे होवैं हैं ॥ और यज्ञकेकरणेहारे क्षत्रियादिकोंकूं यजमान कहैं हैं ॥ हेशिष्य इसप्र

कार अतिमोक्षरूप चारिप्रश्नोंकेउत्तरकूं जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैंकह्या ॥ तभी सो आश्वलनामाब्राह्मण पुनःसंपद्रूप चारिप्रश्नोंकूंकर
ताभया ॥ आश्वलउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ होताके संपद्रूपज्ञानकरिकै यजमानकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ १ ॥ और अध्वर्युके संपद्
रूपज्ञानकरिकै यजमानकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ २ ॥ और ब्रह्माके संपद्रूपज्ञानकरिकै यजमानकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै
॥ ३ ॥ और उद्गाताके संपद्रूपज्ञानकरिकै यजमानकूंकिसफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ४ ॥ अब याचारिप्रश्नोंकेउत्तरोंकूंदिखावैं हैं ॥ याज्ञ
वल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआश्वल ॥ याज्या पुरोनुवाक्या शस्या यातीनऋचावोंविषे त्रित्वसंख्यारहैहै ॥ तथा तीनलोकोंविषेभी त्रित्वसं
ख्यारहैहै ॥ ता त्रित्वसंख्यारूप समानधर्मकूंग्रहणकरिकै जभीहोतायाज्यादिकतीनऋचावोंकूं तीनलोकरूपकरिकैदेखैहै ॥ तभी ताहो
ताके संपद्रूपज्ञानकरिकै यजमानकूं तीनलोकोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ यहां यज याप्रकारकीप्रेरणातैंअनंतर पठनकरीहुई ऋचाकूं
याज्याकहैं हैं ॥ और ब्रूहि याप्रकारकीप्रेरणातैंअनंतर पठनकरीहुईऋचाकूं पुरोनुवाक्याकहैं हैं ॥ और एकश्वासकरिकै पठनकरीहुईऋ
चाकूं शस्याकहैं हैं ॥ १ ॥ और हेआश्वल ॥ अध्वर्यु नैं अग्निविषे हवनकरियां जेआहुतियां ॥ ते उज्ज्वलत्व सशब्दत्व अधोगा
मित्व रूपकरिकै तीनप्रकारकी हैं ॥ और जैसे आहुतियोंविषे उज्वलत्वादिकधर्म रहैहैं ॥ तैसे देवलोक पितृलोक मनुष्य
लोक यातीनलोकोंविषेभी उज्वलत्वादिकधर्म रहैहैं तिनउज्वलत्वादिक समानधर्मोंकूंग्रहणकरिकै जबी सोअध्वर्यु तिनआहुतियोंकूं देव
लोकादिरूपकरिकैदेखैहैं ॥ तभीताअध्वर्युकेसंपद्रूपज्ञानकरिकै यजमानकूं देवलोक पितृलोक मनुष्यलोक यातीनलोकोंकाजयरूपफल
प्राप्तहोवै है ॥ २ ॥ और हेआश्वल ॥ वृत्तिरूपकरिकै मन अनंतहै ॥ और विश्वेदेवताभीअनंतहैं ॥ ता अनंतत्वरूप सामान्यधर्मकूंग्रह
णकरिकै जबी ब्रह्मा मनकूं विश्वेदेवतारूप करिकैचिंतनकरैहै॥तबी ताब्रह्माकेसंपद्रूपज्ञानकरिकै यजमानकूं अनंतफलकीप्राप्तिहोवैहै॥३॥
और हेआश्वल ॥ उद्गातानैं गायनकरियांजे याज्या पुरोनुवाक्या शस्या यहतीनऋचा ॥ तिनतीनोंऋचावोंकूं जबी उद्गाता प्राण
अपान व्यान रूपकरिकै देखैहै ॥ तबी ताउद्गाताकेसंपद्रूपज्ञानकरिकै यजमानकूं भूर्भुवः स्वर यातीनलोकोंकाजयरूपफल प्राप्तहो

वेहै ॥४॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं आश्वलकेअष्टप्रश्नोंकाउत्तरकह्या ॥ तबी सोआश्वल याज्ञवल्क्यकेजीतणेकी आप
णेविषेसामर्थ्य नहींदेखताभया ॥ और लज्जाकूंप्राप्तहुआ सोआश्वल याज्ञवल्क्यकेसाथ विवादकरावणेवासतै आर्तभागनामाब्रह्मणकेमुखकी
ओर देखिकै पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोआर्तभाग याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नोंकूंकरताभया ॥ आर्त्तभाग
उवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ ग्रह कितनेहैं ॥ तथा अतिग्रह कितनेहैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेआर्त्तभाग ॥ अष्टग्रहहैं ॥ और अष्ट अतिग्रहहैं
आर्त्तभागउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ ते अष्टग्रह कौनहैं ॥ और ते अष्टअतिग्रह कौनहैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेआर्त्तभाग ॥ श्रोत्र १
त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ प्राण ५ मन ६ वाक् ७ हस्त ८ यहअष्टइंद्रिय जीवोंकूंबंधनकरैंहैं ॥ यातैं इनअष्टोंकूं ग्रहकहैंहैं ॥ और शब्द १
स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ इच्छा ६ नाम ७ क्रिया ८ यहअष्ट श्रोत्रादिकअष्टइंद्रियोंके क्रमतैंविषयहैं ॥ तिनशब्दादिकविषयोंतैं
विना केवलश्रोत्रादिकइंद्रिय जीवकूंबंधनकरैंनहीं ॥ किंतु शब्दादिकविषयोंकरिकैयुक्तहुए श्रोत्रादिकइंद्रिय जीवोंकेबंधनकाहेतुहैं ॥ यातैं
शब्दादिकअष्टविषयोंकूं अतिग्रहकहैंहैं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेआर्त्तभाग ॥ जैसे प्रसिद्धसमुद्रविषे प्राप्तहुएपुरुषकूं
मकरादिकग्रह भक्षणकरैंहैं ॥ और तिनमकरादिकग्रहोंकूं तिनोतैंभीअधिकबलवान् तिमिंगलादिकअतिग्रह भक्षणकरैंहैं ॥ तैसे संसाररूप
समुद्रविषे प्राप्तहुएअज्ञानीजीवकूं श्रोत्रादिकइंद्रियरूपग्रह भक्षणकरैंहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जीवकूं श्रोत्रादिकइंद्रिय आपणेअधीनकरैंहैं ॥
और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियरूपग्रहोंकूं शब्दादिकविषयरूपअतिग्रह भक्षणकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दादिकविषय श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं
आपणेअधीनकरैं हैं ॥ यहही तिनोंकाभक्षणहै ॥ और हेआर्त्तभाग ॥ जैसे मार्जार मूषककूं ग्रहणकरैहै ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रिय याजीवकूं
आपणेवशकरैं हैं ॥ और जैसे धीवरपुरुष जलविषेस्थित मत्स्योंकूं ग्रहणकरैहै तैसे शब्दादिकविषय श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेवशकरैं हैं॥
और हेआर्त्तभाग ॥ जैसे पिशाचादिकग्रहकरिकैयुक्तहुआ यहपुरुष आपणेहितकूं तथाअहितकूं जाणतानहीं ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियोंके
अधीनहुआ यहजीव आपणेमोक्षरूपहितकूं तथाबंधरूप अहितकूं देखतानहीं ॥ और हेआर्त्तभाग ॥ जैसे किसीबलवान्पुरुषकरिकै

बांध्याहुआ मकर यद्यपि किसीपुरुषकेमारणेकीइच्छा नहींकरैहै ॥ तथापि ताबलवान्पुरुषरूपअतिग्रहकरिकै प्रेरणाकर्‍याहुआ सोमकर अन्यपुरुषकेमारणेवासते प्रवृत्तहोवैहै ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियरूप ग्रह यद्यपि जीवोंकेबंधनकरणेकीइच्छानहीं करैं हैं ॥ तथापि शब्दादिकविषयरूप अतिग्रहोंके अधीनहुए श्रोत्रादिकइंद्रिय जीवकेबंधनकरणेवासते प्रवृत्तहोवैं हैं ॥शंका॥ हेभगवन् ॥ याज्ञवल्क्यमुनिनैं अष्टग्रह तथाअष्टअतिग्रहकहे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें अन्यशास्त्रविषे पंचकर्मइंद्रिय पंचज्ञानइन्द्रिय एकअंतःकरण यहएकादशइंद्रियकहेहैं ॥ और एकादशही तिनोंकेविषयकहें हैं ॥ ताशास्त्रका विरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यद्यपि इन्द्रिय तथाविषय एकादशहैं ॥ तथापि श्रोत्रादिकअष्टइंद्रियोंकीप्रधानताकूं तथाशब्दादिकअष्टविषयोंकीप्रधानताकूं ग्रहणकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं अष्टग्रह तथाअष्टअतिग्रह कथनकरे हैं ॥ अथवा ॥ त्वक्इंद्रियविषे तथाहस्तइंद्रियविषे पाद पायु उपस्थ यातीनोंका अंतर्भावमानिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं अष्टग्रह अष्टअतिग्रह कहेहैं ॥ तिनोंविषेभी उपस्थइंद्रियका त्वक्इंद्रियविषेअंतर्भावहै ॥ काहेतें त्वक्इंद्रिय सर्वशरीरविषेव्यापकहै ॥ यातें स्त्रीकेसंबंधतें जोउपस्थविषे सुखउत्पन्नहोवैहै ॥ सोसुख स्पर्शकरिकैजन्यहै ॥ यातें सोसुख त्वक्इंद्रियकरिकैजन्यहै ॥ यारीतिसे उपस्थका त्वक्इंद्रियविषेअंतर्भावहै ॥ और पादइंद्रियतें गमनरूपक्रियाहोवै है ॥ और पायुइंद्रियतें मलकापरित्यागरूप क्रियाहोवै है ॥ और हस्तइंद्रियतैंग्रहणरूपक्रियाहोवैहै ॥ याप्रकार क्रियाकीसाधनता तीनोंविषेसमानहै ॥ यातें पायुका तथापादका हस्तइंद्रियविषे अंतर्भावहै ॥ अथवा ॥ जिसकालविषे पायुइंद्रियका मलकापरित्यागरूपव्यापारहोवैहै ॥ तथा पादइंद्रियका गमनरूपव्यापारहोवैहै ॥ तिसकालविषे हस्तइंद्रियका आकुंचन प्रसारणरूप व्यापार अवश्यहोवैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ पायु पाद हस्त यातीनोंके नाडियोंकेबंध समानहैं ॥ तानाडीबंधकीसमानताकूंग्रहणकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनै पायुपादका हस्तविषेअंतर्भावकह्याहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं आर्त्तभागकेप्रश्नकाउत्तरकह्या ॥ तभी सोआर्त्तभाग पुनःदूसराप्रश्न करताभया ॥ आर्त्तभागउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ हिरण्यगर्भतैंआदिलैकै जितनाकीजडअजडप्रपंचहै ॥ तिसकूं यहग्रहअतिग्रहरूपमृत्यु भक्षणकरैहै यातें संपूर्णजगत् ग्रहअतिग्रहरूप

मृत्युका अन्नहै ॥ और सोग्रहअतिग्रहरूपमृत्युभी जिसदेवताकाअन्नहै ॥ सोदेवतायहाँकौनहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ग्रहअतिग्रहरूपमृत्युके भक्षणकरणेहाराकोई दूसराहै अथवा नहीं है ॥ जोकहो ग्रहअतिग्रहरूपमृत्युकेभक्षणकरणेहारा कोईदूसराहै ॥ तौ सोभक्षणकरणे हारा दूसरा नित्यहै अथवा अनित्यहै ॥ जोकहोनित्यहै ॥ तौ द्वैतापत्तिहोवैगी ॥ और जोकहो सोअनित्यहै ॥ तौ तादूसरेकेभक्षणकरणेहारा कोईतीसरा मानणाहोवैगा ॥ और तीसरेकेभक्षणकरणेहारा चौथामानणाहोवैगा ॥ याप्रकार अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ और जोकहो ग्रहअतिग्रहरूपमृत्युकेभक्षणकरणेहारा कोईहैनहीं ॥ तौ मोक्षकीप्राप्तिवासतै नानाप्रकारकेयत्नकरणे व्यर्थहो वैंगे ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआर्त्तभाग॥जैसे सर्वपदार्थोंकूंभक्षणकरणेहाराजोअग्निहै॥ताअग्निकूं जल भक्षणकरैहै॥ तैसे सर्वजगतकूंभ क्षणकरणेहारा जोग्रहअतिग्रहरूपमृत्युहै ताकूं आत्माकासाक्षात्कार भक्षणकरैहै॥यातैं मोक्षकीप्राप्तिवासतै यत्न व्यर्थनहीं॥और जैसे कतक रेणु जलकेमृत्तिकाकूंनिवृत्तकरिकै आपभी निवृत्तहोइजावैहै ॥ कतकरेणुकीनिवृत्तिवासतै दूसरेकिसीसाधनकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ तैसे महा वाक्यतैंजन्य जोअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानहै ॥ सो कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरिकै आपहीनिवृत्तहोइजावैहै ॥ ताज्ञानकीनिवृत्तिविषे किसीदूसरेसाधनकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ यातैं द्वैतापत्ति तथाअनवस्था यहदोनोंप्रकारकेदोष प्राप्तहोवैंनहीं ॥ २ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं दूसरेप्रश्नका उत्तरकह्या ॥ तबी सोआर्त्तभाग पुनःतीसराप्रश्न करताभया ॥ आर्त्तभागउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जिसकालविषे ब्रह्मवेत्तापुरुष स्थूलशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तिसकालविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण अज्ञानीजीवकेप्राणोंकीन्याई लोकांतरवि षेजावैहैं अथवा नहींजावैहैं ॥ जोकहो अज्ञानीपुरुषकेप्राणोंकीन्याई ब्रह्मवेत्तापुरुषकेभीप्राण लोकांतरविषेजावैहैं ॥ तौ जैसे अज्ञानीजीवकूं लोकांतरविषे पुनःदूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूंभी लोकांतरविषे पुनःशरीरकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोकहो मरणकाल विषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण लोकांतरविषेनहींजाते ॥ तौ शरीरविषेप्राणोंकेस्थितहुए मृत्युहोवैनहीं ॥ यातैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकेशरीरविषे कदा चित्भी मरणव्यवहार नहींहोणाचाहिये ॥ और प्रारब्धकर्मकेनाशतैंअनंतर ब्रह्मवेत्तापुरुषकेशरीरविषे सर्वलोकोंकूं मरणव्यवहारहोवैहै ॥

याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआर्त्तभाग ॥ ब्रह्मवेत्तापुरुषका जबी प्रारब्धकर्म क्षयहोवैहै॥ तबी ताब्रह्मवेत्तापुरुषकाप्राण शरीरतैंबाहरजावैनहीं किंतु याशरीरकेभीतरहीं लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अविद्या काम कर्म यहतीनों प्राणोंकेलोकांतरगमनविषे कारणहैं ॥ते अविद्याकामकर्म ब्रह्मवेत्तापुरुषके आत्मज्ञानकरिकैनिवृत्तहुएहैं ॥ यातैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राणोंका लोकांतरविषेगमनहोवैनहीं ॥ याकारणतैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं अज्ञानीकीन्याई पुनःशरीरकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और स्थूलशरीरकेसाथ प्राणोंकेसंबंधकीनिवृत्तिकानाम मरणहै ॥ सोसंबंधकी निवृत्ति प्राणोंकेलयहुएभी संभवैहै ॥ यातैं विद्वान्पुरुषकेशरीरविषे मरणव्यवहारभी संभवैहै ॥ शंका॥ ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण शरीरतैंबाहरजातेनहीं ॥ किंतु शरीरकेभीतरहीलयहोवैहैं यहवार्त्ता केसेजाणीजावै॥समाधान ॥जीवतअवस्थाविषे अत्यंतकृशशरीरभी मरणतैंअनंतर भेरीकीन्याई सूजिकेस्थूलहोइजावैहै ॥ तास्थूलताकाकारण दूसराकोइपदार्थहैनहीं ॥ किंतु धनंजयनामाप्राणहीं तास्थूलताकाकारणहै ॥ यातैं मरणतैंअनंतर शरीरकीविलक्षणस्थूलतारूपहेतुतैं शरीरविषे प्राणोंकेलयकाअनुमानहोवैहै ॥ शंका ॥ ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण लोकांतर विषेनहींजावैहैं याकेविषे कौनप्रमाणहै ॥ समाधान ॥ याअर्थविषे साक्षात्श्रुतिभगवतीहीप्रमाणहै ॥ सोश्रुतियहहै॥अस्यपरिद्रष्टुरिमाः षोडशकलाःपुरुषायणाःपुरुषंप्राप्यास्तंगच्छंति ॥अर्थयह॥ जैसे नदियां समुद्रविषेलयहोवै हैं॥तैसेब्रह्मवेत्तापुरुषके एकादशइंद्रिय पंचप्राण यह षोडशकला अधिष्ठानपुरुषविषेप्रतीतहोवैहैं ॥ और तिसीअधिष्ठानपुरुषविषे लयकूंप्राप्तहोवै हैं॥यातैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण लोकांतरविषेगमनकरैंनहीं॥जोब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राणभी लोकांतरविषेगमनकरैंगे॥तौ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूंभी अज्ञानीजीवकीन्याई अवश्यदूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवेगी ॥ औरपुनःपुनःशरीरकूंजोधारणकरै है ॥ ताकूं मोक्षकीप्राप्तिसंभवैनहीं॥ यातैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण लोकांतरविषेजावैंनहीं॥३॥हेशिष्य याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं तृतीयप्रश्नकाउत्तरकह्या॥तबीसोआर्त्तभाग पुनःचतुर्थप्रश्न करताभया॥आर्त्तभागउवाच ॥हेयाज्ञवल्क्य ॥ जिसकालविषे सोब्रह्मवेत्तापुरुष विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसकालविषे ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूं कौनवस्तु नहींपरित्यागकरता॥तात्पर्ययह ॥ जीवन्मुक्तिअवस्थाकीन्याई तहां सावशेष द्वैतकालयहोवै है ॥ अथवा निरवशेष द्वैतकालयहोवैहै ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआर्त्तभाग

दूसरेसर्वेपदार्थ मुक्तपुरुषकापरित्यागकरैहैं ॥ परंतु वामदेवादिकनाम मुक्तपुरुषोंकापरित्यागकरैनहीं॥यद्यपि वामदेवादिकमुक्तपुरुष नाम रूप क्रिया स्वरूपभेदप्रपंचतैं मुक्तहुएहैं॥यातैं वास्तवतैं तिनमुक्तपुरुषोंविषे वामदेवादिकनामोंकासंबंध संभवैनहीं ॥ तथापिलौकिकपुरुष इदानीं कालविषे तिनवामदेवादिकमुक्तपुरुषोंके वामदेवादिकनामोंकूंग्रहणकरैहैं॥यातैं लौकिकपुरुषोंकोदृष्टिकरिकै मोक्षअवस्थाविषे मुक्तपुरुषोंके वामदेवादिकनामरहैहैं॥और तेमुक्तपुरुषोंकेनाम अनंतहैं॥तथा विश्वेदेवताभी अनंतहैं॥यातैं जोपुरुष ताअनंतनामोंविषे अनंतविश्वेदेवतावोंकाअभेदचिंतनकरैहै ॥ तापुरुषकूं अनंतफलकीप्राप्ति होवैहै॥४॥हेशिष्य॥यहचारिप्रश्न आर्त्तभागनैं ज्ञानीपुरुषविषेकरे॥तिनचारिप्रश्नोंकाजभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं उत्तरकह्या॥तभी सोआर्त्तभागपुनः अज्ञानीपुरुषविषे पंचमाप्रश्नकरताभया॥आर्त्तभागउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य॥जिसकालविषे याजीवोंकूं मरणअवस्थाप्राप्तहोवैहै॥तिसकालविषे याजीवोंका अध्यात्मरूप वाक्इंद्रिय अधिदेवरूपअग्निकूंप्राप्तहोवैहै॥ और अध्यात्मरूपप्राण अधिदेवरूपवायुकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अध्यात्मरूपनेत्रइंद्रिय अधिदेवरूपसूर्यकूंप्राप्तहोवैहै॥और अध्यात्मरूपश्रोत्रइंद्रिय अधिदेवरूपदिशावोंकूं प्राप्तहोवैहै॥और अध्यात्मरूपमन अधिदेवरूपचंद्रमाकूं प्राप्तहोवैहै॥और अध्यात्मरूपशरीर अधिदेवरूपपृथिवीकूंप्राप्तहोवैहै॥और शरीरकेभीतरस्थित अध्यात्मरूपआकाश अधिदेवरूपबाह्यआकाशकूंप्राप्तहोवैहै।औरशरीरविषेस्थित अध्यात्मरूपलोम अधिदेवरूपओषधियोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और शरीरविषेस्थित अध्यात्मरूपकेश अधिदेवरूपवनस्पतिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और अध्यात्मरूपरुधिर तथावीर्य अधिदेवरूपजलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार अन्यअध्यात्मरूपइंद्रियोंकाभी आपणेअधिदेवरूपविषे लयजानणा ॥ अग्निआदिकदेवतावोंके अनाश्रितहोइके आपणेआपणेव्यापारकूंनकरणा यहही मरणकालविषे वाक्आदिकोंका अग्निआदिकोंविषेलयहै ॥ याप्रकार मरणकालविषे संपूर्णवाक्आदिकइंद्रियोंकेलयहुए यहअज्ञानीजीव किसकेआश्रितहुआ परलोकविषे सुखदुःखकूंभोगैहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार आर्त्तभागकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताप्रश्नकेअर्थकूंगुह्यमानिके सभाविषे ताप्रश्नकेउत्तरकूंनहींकहताभया ॥ किंतु आर्त्तभागकेहस्तकूंग्रहणकरिकै एकांतदेशविषेलेजाइके ताप्रश्नकेउत्तरकूंयाज्ञवल्क्यमुनि कहताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहआर्त्तभाग

काप्रश्न कर्मविषयकहे ॥ और आगे याज्ञवल्क्यमुनिनें सभाविषेस्थितहोइके ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणाहे ॥ यातें यहजान्याजावैहे ॥ ब्रह्मविद्यातैंभी कर्मविद्या अतिगुह्यहे ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मविद्यातैंकर्मविद्या गुह्यहे याअभिप्रायकरिके याज्ञवल्क्यमुनि आर्त्तभागकूं एकांतदेशविषेनहींलेगया ॥ किंतु याप्रकारकेअभिप्रायकरिके याज्ञवल्क्यमुनि आर्त्तभागकूं एकांतदेशविषेलेजाताभया ॥ अब ता अभिप्रायकूंदिखावैं हैं ॥ मरणकूंप्राप्तहुआ अज्ञानीजीव आपणेपुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसार परलोकविषे सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहे ॥ यहवार्त्ता बालकोंतैंलेकेगोपालपुरुषपर्यंत सर्वलोक जाणे हैं ॥ यातें प्रसिद्धअर्थका जोहम विद्वानोंकीसभाविषेविचारकरैंगे ॥ तो याआर्त्तभागकेप्रश्नविषे तथाहमारेविषे तुच्छताप्राप्तहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ सभाविषेसर्वविद्वान्ब्राह्मण आर्त्तभागका तथाहमारा उपहासकरैंगे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे भोजनकरिके क्षुधाकीनिवृत्तिहोवैहे यहवार्त्ता संपूर्णलोक जाणैहे ॥ तहां बुद्धिमान्पुरुषोंकीसभाविषे जाइके कोईएकपुरुष किसकरिकेक्षुधाकीनिवृत्तिहोवैहे याप्रकारकाप्रश्नकरे ॥ और आगेतैंकोईबुद्धिमान्पुरुष भोजनकरिके क्षुधाकीनिवृत्तिहोवैहे याप्रकारका उत्तरकहै तहां प्रश्नकर्त्तापुरुषका तथाउत्तरदेणेहारेपुरुषका दोनोंका सभाविषे उपहासहोवैहे ॥ तैसे हमदोनोंका सभाविषे उपहासहोवैगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिके याज्ञवल्क्यमुनि आर्तभागकूं एकांतदेशविषेलेजाताभया ॥ अब याज्ञवल्क्यकेउत्तरकूंदिखावैहैं ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआर्त्तभाग ॥ जैसे जीवितअवस्थाविषे यहअज्ञानीजीव पुण्यपापकेअनुसार सुखदुःखकूंभोगैहे ॥ तैसे मरणतैंअनंतरभी यह अज्ञानीजीव पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकेआश्रितहुआ सुखदुःखरूपफलकूंभोगैहे ॥ अबयाहीअर्थकूंस्पष्टकरिके दिखावैहैं ॥ हेआर्त्तभाग ॥ जोपापीपुरुषहोवैहे सो नरककूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जोपुण्यवान्पुरुषहोवैहे सो देवभावकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जोपुरुष पुण्यपापदोनोंवालाहोवैहे ॥ सो मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और हेआर्त्तभाग ॥ यहजीव यद्यपि आपणेवास्तवरूपकरिके अधिकभीनहींतथान्यूनभीनहीं तथासमानभीनहीं ॥ तथापि कर्मोंकेवशहुआ यहजीव अधिकताकूं तथान्यूनताकूं तथासमानताकूं प्राप्तहोवैहे॥तहाँ जोपुण्यात्माजीवहोवैहे सो हिरण्यगर्भादिरूपअधिकताकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जोपापात्माजीवहोवै हे सो वृक्षादिरूपन्यूनताकूं

प्राप्तहोवैहै ॥ और जोजीव पुण्यपापदोनोंकाकर्त्ताहोवैहै ॥ सो मनुष्यादिरूप समानताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेआर्त्तभाग ॥ जोपुरुष शरीरकरिकै तथावाणीकरिकै तथामनकरिकैअन्यकिसीप्राणीकूंसुखकीप्राप्ति करैहै ॥ अथवा दुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ सोपुरुष इसजन्मविषे अथवा अन्यजन्मविषे तिसीशरीर मन वाणीकरिकै सुखकूंअथवादुःखकूं प्राप्तहोवैहै॥और जोपुरुष जिसदेशविषे तथाजिसकालविषे तथाजिसनिमित्तकरिकै तथाजिसप्रकारकरिकै तथाजिसशरीरकरिकै तथाजिसअवस्थाकरिकै अन्यप्राणियोंकेन्यून अथवा अधिक सुखकूं अथवा दुःखकूं उत्पन्नकरैहै सोपुरुष जन्मांतरकूंपाइकै तिसीदेशविषे तथातिसीकालविषे तथातिसीनिमित्तादिकोंकरिकै तैसेहीन्यून अथवा अधिक सुखकूं अथवा दुःखकूं प्राप्तहोवैहै॥यातैं इसलोकविषे तथापरलोकविषे जोअज्ञानीजीवोंकूं सुखदुःखरूपफल होवैहै॥सोपूर्वलेपुण्यपापरूपकर्म करिकै तिसीदेशकालादिकोंविषे समानहींहोवैहै ॥ और किसीस्थानविषे विशेषभीहोवैहै ॥ जैसे काशीआदिकदेशविषे तथासूर्यग्रहणकालविषे सुपात्रब्राह्मणकेप्रति थोड़ाभीदानकरयाहुआ कोटिकोटिगुणावृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे वर्षाकालविषे उत्तमभूमिविषे पाये हुए शालिआदिकबीज वृद्धिकूँप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे उत्तमदेशकालादिकोंविषे दियाहुआदान वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेआर्त्तभाग ॥ जोपुरुष धनादिकपदार्थोंकेवृद्धिकरणेवासते व्यापारादिककरैहै ॥ तिसपुरुषके जैसे धनादिकपदार्थ दिनदिनविषे वर्द्धतेजावैं हैं ॥ तैसे देहाभिमानी अज्ञानीजीवोंके पुण्यपापरूपकर्म दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोतेजावैंहैं ॥ और जैसेलोकविषे अत्यंतसूक्ष्म जो वटकाबीजहै ॥ सोदेशकालादिकनिमित्तकूंपाइकै महान्‌वटकेवृक्षकाकारणहोवैहै ॥ तैसे यज्ञादिककर्मोंकेअनंतर सूक्ष्मरूपकरिकै रह्या हुआ पुण्यपापरूपअदृष्टभी देशकालादिकनिमित्तकूंपायकै महान्‌सुखदुःखकाकारणहोवैहै ॥ यातैं पुण्यपापरूपकर्मही सुखदुःखरूपफलकेभोगविषे प्रधानकारणहै ॥ ॥ ८ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं आर्त्तभागके पंचप्रश्नोंकाउत्तरकह्या ॥ तभीसोआर्त्तभाग याज्ञवल्क्यमुनिकीस्तुति करताभया ॥ तथायाज्ञवल्क्यमुनिभी ताआर्त्तभागकीस्तुतिकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोआर्त्तभाग भुज्युंनामाब्राह्मणकेमुखकीओर देखिकै पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सो भुज्युनामाब्राह्मण याज्ञवल्क्यतैं आपणीउत्कृष्टता बोधनकरणेवासते पूर्व

लाआपणा वृत्तांतश्रवणकराइके याज्ञवल्क्यकेप्रतिप्रश्नकरताभया ॥ भुज्युरुवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ पूर्व ब्रह्मचर्यअवस्थाविषे हमब्राह्मण वेदविद्याकेअध्ययनकरणेवासतै मद्रनामादेशविषेविचरतेभये ॥ तहांकपिगोत्रविषेहैउत्पत्तिजिसकी ऐसाजोपतंजलनामाब्राह्मणहै ॥ ताके गृहविषे एकआश्चर्यरूपवार्त्ताकूं हमदेखतेभये ॥ सोवार्त्ता यहहै एककालविषे तापतंजलनामाऋषिके कन्याकेशरीरविषे भूतकीन्याई अ ग्निदेवता प्रवेशकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर हमसंपूर्णविद्यार्थी ताकन्याकेसमीपजाइके यहपूछतेभये ॥ तुमारानाम क्याहै ॥ तथा तुमारा गोत्रक्याहै ॥ तिसतैंअनंतर सोअग्निदेवता हमारेप्रतिकहताभया ॥ सुधन्वा हमारानामहै ॥ और आंगिरस हमारागोत्रहै ॥ तिसतैंअनंतर हम संपूर्णब्राह्मण ताअग्निदेवतासे कर्मोंकेफलकाअंत पूछतेभये ॥ तिसतैंअनंतर सोअग्निदेवता यहउत्तरदेताभया ॥ जिसस्थानविषे पारि क्षितपुरुष स्थितहोवैहैं ॥ सोस्थानहीं सर्वकर्मोंकिफलकाअंतहै ॥ तिसतैंअधिक कर्मोंकाफलनहीं ॥ याप्रकार जभीअग्निदेवतानैं हमारेप्रति उत्तरकह्या॥तभी हम संपूर्णब्राह्मण पुनःअग्निदेवतासेपूछतेभये॥तेपारिक्षितपुरुष किसस्थानविषेस्थितहोवैहैं॥याप्रकार जभीहमोनैंपूछा तभी सोअग्निदेवता हमारेप्रति पारिक्षितपुरुषोंकेस्थानकूं कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जेअग्निदेवताकेप्रति पूर्वहमोंनैं प्रश्नकरेथे ॥ तेईहीप्रश्न अभी हम तुमारेप्रति करतेहैं ॥ तिनोंका तुम उत्तरकहो ॥ जिसस्थानविषे पारिक्षितपुरुष स्थितहोवैहैं सोस्थान कौनहै ॥ १ ॥ और तिसस्थानकेआवांतरलोकोंका कितनापरिमाणहै ॥ २ ॥ और तिनपारिक्षितपुरुषोंकाक्यास्वरूपहै ॥ ३ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी भुज्युनैं याज्ञवल्क्यकेप्रति तीनप्रश्नकरे ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि भुज्युकेप्रति कहताभया हेभुज्युब्राह्मण याप्रश्नोंकाउत्तर पूर्व तुमारे प्रति अग्निदेवतानैंकह्याथा ॥ ताअर्थकूंभलीप्रकारजाणताहुआभीतूं पुनःसभाविषे वेदकेगुह्यअर्थकूं किसवासतैपूछताहै ॥ किंतु एकवारजा न्याहुआ वेदकागुह्यअर्थ पुनःसभाविषेपूछणा तेरेकूंउचितनहीं ॥ तथापि हे भुज्यु तेरेविश्वासकरावणेवासतै तथावेदअर्थकेगुह्यताके रक्षणकरणेवासतै संक्षेपतैं याप्रश्नोंकाउत्तर हम तुमारेप्रति कथनकरैं हैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ हेभुज्यु ॥ उपासना सहित अश्वमेधयज्ञकेकरणेहारेपुरुष जिसस्थानविषे उपासनासहितअश्वमेधयज्ञकाफल भोगैं हैं ॥ तिसीस्थानविषे पारिक्षितपुरुष जावैं

हैं ॥ यहां उपासनासहितअश्वमेधयज्ञकेकरणेहारेपुरुषही पारिक्षितहैं यहअर्थ याज्ञवल्क्यमुनिनैं वेदअर्थकेगुह्यताकीरक्षाकरणेवासतै नहींकह्या ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं संक्षेपतैंउत्तरकह्या ॥ तभी सोभुज्युब्राह्मण याज्ञवल्क्यकी सर्वज्ञताविषे अविश्वासकरिकै पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिसैं पूछताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य उपासनासहितअश्वमेधयज्ञके करणेहारेपुरुष जिसस्थानविषेजावैं हैं ॥ सोस्थान हमारेप्रति विस्तारतैंकहो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी भुज्युनैंपूछा ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्य मुनि याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरताभया ॥ सभाविषे वेदकेरहस्यअर्थकेप्रकाशकरणेकी यद्यपि हमारेकूंइच्छानहीं है ॥ तथापि यहभुज्यु वारंवार हमारेसैं सोअर्थ पूछताहै ॥ यातैं सभाविषे वेदकेरहस्यअर्थकेप्रकाशकरणेकरिकै जोपापकीउत्पत्तिहोवैगी ॥ सो याभु ज्युकूंहीहोवैगी ॥ हमारेकूंहोवैगीनहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि विस्तारतैं ताप्रश्नोंकेउत्तरकूंकहताभया ॥याज्ञवल्क्य मुनिरुवाच ॥ हेभुज्यु ॥ ससुद्रपर्यंत धनकरिकैपूर्णजोपृथिवीहै ॥ सोपृथिवीहैवशवर्त्तिजिनोंके ऐसेजे अश्वमेधयज्ञकेकर्त्तापुरुषहैं ॥ तिनों कानाम परिक्षितिहै ॥ और तिनपरिक्षितिपुरुषोंकूंही शास्त्रविषे पारिक्षितिकहैं हैं ॥ अब सर्वकर्मकेभोगकास्थान जोविराट्भगवान्का शरीरहै ताकूं भूलोकरूपकरिकै वर्णनकरताहुआ याज्ञवल्क्यमुनि प्रथम ताकेपरिमाणकूंदिखावैहै ॥ हेभुज्यु ॥ यहसंपूर्णजंबुद्वीप एक लक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ और जिसजंबुद्वीपकूं चारोंओरतैं मेखलाकीन्याई वेष्टनकरिरह्याहुआ जोक्षारसमुद्रहै ॥ सोभी एकलक्षयो जनपरिमाणवालाहै ॥ १ ॥ और तिसतैंपरे प्लक्षद्वीपहै ॥ सोप्लक्षद्वीप दोलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ तिसप्लक्षद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनक रिरह्याहुआ जोइक्षुरसोदनामासमुद्रहै ॥ सोभी दोलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ २ ॥ और तिसतैंपरे शाल्मलीद्वीपहै ॥ सोशाल्मलीद्वीप चारिलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ताशाल्मलीद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोसुरोदनामासमुद्रहै ॥ सोभी चारिलक्षयोजनपरिमा णवालाहै ॥ ३ ॥ और तिसतैंपरे कुशद्वीपहै ॥ सोकुशद्वीप अष्टलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ताकुशद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोघृतोदनामासमुद्रहै ॥ सोभी अष्टलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ४ ॥ और तिसतैंपरे क्रौंचद्वीपहै सोक्रौंचद्वीप षोडशलक्षयोजनपरिमाण

वालाहै ॥ ताक्रौंचद्वीपकूं चारोओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोक्षीरोदनामासमुद्रहै ॥ सोभी षोडशलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ५ ॥ और तिसतैंपरे शाकद्वीपहै॥सोशाकद्वीप बत्तीसलक्षयोजनपरिमाणवालाहै॥ताशाकद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोदधिमंडोदनामासमुद्रहै ॥ सोभी बत्तीसलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ६ ॥ और तिसतैंपरे पुष्करद्वीपहै सोपुष्कर द्वीप चौंसठिलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ तापुष्करद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोशुद्धोदनामासमुद्रहै सोभी चौंसठिलक्षयोजनपरिमाणवालाहै॥७॥ यासप्तद्वीपोंका तथासप्तसमुद्रोंकामिलिके दोकोटि चौपनलक्षयोजन परिमाणहोवैहै॥और सप्तद्वीपोंका तथासप्तसमुद्रोंका मिलिके जितनेयोजनपरिमाणहै॥तितनेही योजन शुद्धोदनामासमुद्रतैंपरेभूमिकापरिमाणहै॥और ताभूमितैंपरे अष्टकोटि तथाचोगणचालीसलक्षयोजनपरिमाणवाली सुवर्णकीभूमिहै॥ तिसभूमितैंपरे मंडलाका लोकालोकनामापर्वतहै॥तिसलोकालोकपर्वतकाजोमध्यदेशहै जिसमध्यदेशकूंशास्त्रविषे मानसोत्तरसूर्यस्थानकहैहैं ॥ तिसमध्यदेशविषे रात्रिदिनकरिकै सूर्यभगवान् सर्वदा भ्रमणकरैहै ॥ ता मानसोत्तरपरिमंडलकापरिमाण एकलक्ष साढीनवकोटियोजन शास्त्रविषेकह्याहै ॥ इतनैंयोजनपरिमाण रात्रिदिनविषे सूर्यभगवान्चालैहै॥और रात्रिदिनाविषे जितनैंयोजनपरिमाण सूर्यभगवान्चालैहै ॥ तिनयोजनोंकूं बत्तीसगुणाकरणेतैं जितनीयोजनोंकोसंख्याहोवैहै ॥ तितनेयोजनपर्यंतदेश सूर्यभगवान्कीकिरणावोंकरिकैव्याप्तहोवैहै ॥ तितनैंदेशकूं बुद्धिमान्पुरुष भूलोककरिकैकथनकरैं हैं ॥ यहभूलोक विराट्भगवान्काशरीरहै ॥ और याभूलोकविषेही सर्वकर्मोंकाफल भोग्याजावैहै ॥ अब उपासकपुरुषों करिके प्राप्तहोणेयोग्यजोदेशहै ताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेभुज्यु ॥ याभूलोकतैंपरे जितनेकयोजनभूलोककापरिमाणहै तिसतैंद्विगुणअधिकयोजनपरिमाणवालीभूमि स्थितहै॥ कैसीहैसोभूमि॥भित्तिकीन्याईं चारोंओरतैं भूलोककूंआवरणकरिरहीहै॥ और ता आवरणरूपभूमितैंपरे ताभूमिकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरणेहारा तथाताभूमितैंद्विगुणअधिकयोजनपरिमाणवाला समुद्र स्थितहै॥जासमुद्रकूं शास्त्रविषेघनोदनामकरिकैकथनकरैं हैं ॥ और ताघनोदनामासमुद्रतैंपरे ब्रह्मांडहै॥जिसब्रह्मांडका एककपाल रजतमयहै ॥ और दूसराकपाल सुवर्णमयहै॥और तिनदोकपालोंकीजोसंधिहै ॥ सोसंधि क्षुरकेधाराकीन्याईं अत्यंततीक्ष्णहै ॥ अथवा मक्षिकाके

पक्षकीन्याई अत्यंतसूक्ष्महै ॥ याप्रकारकीसोसंधि ब्रह्मांडतैंबाहरनिकसणेकेमार्गविषेस्थितहै ॥ हेभुज्यु॥उपासनासहित अश्वमेधयज्ञकेकरणे
हारे जेपारिक्षितपुरुष तुमनेपूर्वपूछेथे ॥ तेपारिक्षितपुरुष जभी शरीरकापरित्यागकरैं हैं ॥ तभी तापारिक्षितपुरुषकूं नानाप्रकारके देवता
तथाउपासनारूपबल घनोदनामासमुद्रपर्यंत लेजावैंहैं ॥ तिसतैंआगे किसीदेवताकासामर्थ्यनहीं ॥ और हेभुज्यु ॥ जैसे उपासनासहित
अश्वमेधयज्ञकेकर्तापुरुष पारिक्षितहैं ॥ तैसे अश्वमेधयज्ञतैंविना केवल हिरण्यगर्भकीउपासनाकरणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तेभी पारिक्षितहैं ॥
काहेतैं जिसकरिकै संपूर्णपापकर्मोंकाक्षयहोवैहै ताकूं परिक्षितकहैं हैं ॥ सोपापकर्मोंकाक्षय जैसे अश्वमेधयज्ञकरिकैहोवैहै ॥ तैसे उपासना
करिकैभी पापकर्मोंकाक्षयहोवैहै ॥ यातैं उपासना तथाअश्वमेधयज्ञ दोनों परिक्षितशब्दकाअर्थ हैं ॥ तापरिक्षितशब्दकेअर्थकूंजोजानणेहा
राहै ताकूं पारिक्षितकहैहैं ॥ यारीतिसैं केवलउपासकपुरुषविषेभी पारिक्षितशब्दकीप्रवृत्तिहोवैहै॥और हेभुज्यु॥ ताब्रह्मांडरूपकटाहकेसंधि
विषेस्थित जोसूक्ष्ममार्ग है ॥ तिसमार्गविषे सर्वदेवतावोंकाअधिपति इंद्रदेवताभी जाणेमैंसमर्थनहीं ॥ जभीइंद्रभी तामार्गविषेजाणेमैं
समर्थनहींभया ॥ तभी घनोदनामासमुद्रकेपारिजाणेविषेभी असमर्थजेअन्यदेवताहैं ॥ ते तिससूक्ष्ममार्गविषे किसप्रकारजाइसकैंगे ॥
किंतु तेअन्यदेवता घनोदनामासमुद्रके ओरले किनारेविषेही स्थितहोवैं हैं ॥ शंका ॥ जभी इंद्रादिकदेवताभी तामार्गकेजाणेविषे समर्थ
नहीं हैं ॥ तभी पारिक्षितपुरुष किसप्रकार ब्रह्मांडतैंबाहरहोवै हैं ॥ समाधान ॥ हेभुज्यु ॥ सोविराट्रूपइंद्रदेवता पक्षीकारूपधारणकरिकै
तिनपारिक्षितपुरुषोंकूं घनोदनामासमुद्रतैं पारकरैहै ॥ और ताघनोदनामासमुद्रकेपारलेकिनारे हिरण्यगर्भरूप वायुदेवता आकाशविषे
स्थितहै ॥ तावायुकेताईं पारिक्षितपुरुषोंकूंदेकरिकै सोइंद्रदेवता पीछेफिरिआवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोहिरण्यगर्भरूपवायुदेवता तिनपारि
क्षितपुरुषोंकूंसूक्ष्मरूपकरिकै आपणेशरीरकेसाथ अभिन्नकरिकै तासंधिरूपमार्गद्वारा ब्रह्मांडतैंबाहरलेजावै है ॥ और जिसस्थानविषे पूर्वपू
र्वउपासकपुरुषगये हैं ॥ तिसीस्थानविषे तेपारिक्षितपुरुष प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ तेपारिक्षितपुरुष हिरण्यगर्भरूपकरिकै ब्रह्मां
डकेअंतर तथाबाह्यव्याप्तहोइकैरहैहैं ॥ यातैं सर्वकर्मोंकेफलकाअंत हिरण्यगर्भलोकहै ॥ हिरण्यगर्भलोकतैंपरे कोईकर्मकाफलनहीं॥हेशिष्य

पूर्वअग्निदेवतानें जैसाउत्तर भुज्युकेप्रति कह्याथा ॥ तैसाहीउत्तर जभी याज्ञवल्क्यमुनिने भुज्युकेप्रतिकह्या ॥ तभीसोभुज्यु याज्ञवल्क्यके जीतणेकीइच्छाकापरित्यागकरताभया ॥ और उषस्तब्राह्मणकेमुखकीओरदेखिके सोभुज्यु पुनःप्रश्नकरणेतैंनिवृत्तहोताभया तिसतैंअनंतर सोउषस्त याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उषस्तउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जैसे अप्रकाशरूपलोह अग्निकेसंबंधतैंप्रकाशमान होवैहे ॥ तैसे वृत्तिअवच्छिन्नसाक्षीचैतन्यकेसंबंधतैं घटपटादिकजडपदार्थ प्रतीतिहोवैहैं यातैं घटपटादिकजडपदार्थोंविषे मुख्य अपरोक्षप णानहीं ॥ किंतु घटादिकोंविषे गौणअपरोक्षपणाहे ॥ और ब्रह्मस्वप्रकाशचैतन्यहे ॥ यातैं ब्रह्मविषे मुख्यअपरोक्षपणाहे॥और सोब्रह्म सर्व केअंतरबाहरव्यापकहे ॥ यातैं सोब्रह्महीं आत्मारूपहे ॥ यहवार्ता संपूर्णशास्त्रकथनकरैंहैं ॥ परंतु यहवार्त्ता संभवैनहीं ॥ काहेतैं शास्त्रने आत्माविषे ब्रह्मरूपता तथाअद्वितीयरूपता यहदोनोंधर्म कथनकरेहैं ॥ याकेविषे हमविवादनहींकरते परंतु ब्रह्मरूपता तथाअद्वितीयरूप ता यहदोनोंधर्म जिसआत्मारूमधर्मीविषेरहैहैं ॥ सोआत्मा यासंघातसेभिन्न हमारेकूं प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं हेयाज्ञवल्क्य यासंघातसेजो आत्माविलक्षणहे ॥ तो हमारेप्रति कथनकरो ॥ तिसतैंअनंतरहम तुम्हारेकूंबुद्धिमान्जाणेंगे ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभीउषस्तनैं याज्ञव ल्क्यकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उषस्तकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउषस्त ॥ यहआत्मा अद्वितीयब्रह्म रूपहे ॥ यातैं अत्यंतसमीपआत्माविषे तेरेकूंअसंभावनाकरणीउचितनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहआत्माहे याप्रकारकाउत्तर जोयाज्ञवल्क्य मुनिनेकह्या ॥ ताकेविषे याज्ञवल्क्यमुनिका यहअभिप्रायहे ॥ जोयहउषस्तब्राह्मण अंतर्मुखहोवैगा ॥ तौ यहआत्माहे याप्रकारकेउत्तरमा त्रकरिकैही आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणके संतोषकूंप्राप्तहोवैगा ॥ परंतु सोउषस्त बहिर्मुखथा ॥ यातैं यहआत्माहे याप्रकारकेउत्तरकरि के आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंनजाणताभया ॥ उलटा संशययुक्तहुआ सोउषस्त पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उषस्तउ वाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोआत्माकौनहे ॥ तात्पर्ययह ॥ स्थूलशरीर आत्माहे ॥ अथवा सूक्ष्मशरीर आत्माहे ॥ अथवा तिनोंकाप्रकाश कसाक्षी आत्माहे ॥ तहाँ स्थूलशरीर तथासूक्ष्मशरीर आत्माहे यहदोनोंपक्ष संभवैनहीं ॥ काहेतैं स्थूलसूक्ष्म यहदोनोंशरीर परिच्छिन्नहैं

यातें तिनोंविषे सर्वव्यापकतासंभवैनहीं ॥ और शास्त्रविषे आत्माकूंसर्वांतर्यामीकह्याहै ॥ किंवा ॥ बुद्धिआदिकोंकासाक्षी आत्माहै यहतीसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतें साक्षी आत्माहै याकेविषे कोईप्रमाणहैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी उषस्तने आत्माकास्वरूप पूछ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उषस्तकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेउषस्त ॥ जैसे बालक सूत्रकरिके मर्कटोंकूं नानाप्रकारकीनृत्य करावैहै ॥ तैसे तुम्हारेशरीरविषेस्थितहोइके जो तुम्हारे प्राण अपान उदान समान व्यानकूं तथाबुद्धिआदिकसंघातकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरैहै ॥ सोईही तुम्हारा आत्माहै ॥ याकहणेकरिके याज्ञवल्क्यमुनिने यह अनुमानबोधनकर्‍या ॥ प्राणादिकोंकाप्रवर्त्तकजोआत्माहै ॥ सो तिनप्राणादिकोंतैंभिन्नहै ॥ काहेतें प्राणादिकोंकाप्रवर्त्तकहोणेतें ॥ जोजोपदार्थजिसजिसपदार्थका प्रवर्त्तकहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ तिसतिसपदार्थतैंभिन्नहीहोवैहै ॥ जैसे मर्कटोंकूंप्रेरणाकरणेहाराबालक मर्कटोंतैं भिन्नहीहोवैहै ॥ तैसे सर्वकाअंतर्यामीयहआत्माभी प्राणादिकसर्व संघातका प्रवर्त्तकहै ॥ यातें प्राणादिकसर्वसंघाततें यह आत्माभिन्नहै ॥ हेशिष्य ॥ उषस्तकीमंदबुद्धि देखिकरिके याज्ञवल्क्यमुनिने अनुमानप्रमाणकरिके आत्माकास्वरूप निरूपणकर्‍या ॥ तथापि याज्ञवल्क्यमुनिकेअभिप्रायकूंनजाणिकरिके सोउषस्तब्राह्मण उपहासपूर्वक पुनःयाज्ञवल्क्यकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उषस्तउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ पूर्वस्पष्टकरिके आत्माकेस्वरूपजानणेवासते हमने तुम्हारेप्रति प्रश्नकर्‍याथा॥सोतुमने अबपर्यंत स्पष्टकरिकेआत्माकास्वरूप हमारेप्रति कथनकर्‍यानहीं॥यातें जोतूं संघाततैंविलक्षण आत्माकेस्वरूपकूं जाणताहै ॥ तो जैसेकोईपुरुष गोकूंशृंगतैंपकडिके यहगौहै याप्रकार स्पष्टदिखावैहै ॥ तैसे अभीस्पष्टकरिके आत्माकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ पूर्व हमने संघातसेविलक्षणआत्माकास्वरूप पूछाथा ॥ और अभी तुमने प्राणादिकोंकाप्रवर्त्तकआत्माहै यहउत्तर कह्या ॥ सोयहतुम्हाराउत्तर संघातसेविलक्षण आत्माकूं सिद्धकरतानहीं ॥ काहेतें लोकविषे व्यापारवान्‌पुरुषही अन्यमर्कटादिकोंका प्रेरकहोवैहै ॥ व्यापारतैंरहितकोई प्रेरकहोतानहीं ॥ सोव्यापारवालायहसंघातहै ॥ यातें यहसंघातही प्राणादिकोंका प्रवर्त्तकहै ॥ और प्राणादिकोंकूं जोआपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्त्तकरैहै सो आत्माहै ॥ यातुम्हारे

कहणेकरिकै संघातविषेही आत्मपणासिद्धहोवैहै ॥ यातैं हेयाज्ञवल्क्य जैसे कोईपुरुष किसीअन्यपुरुषतैं गौकास्वरूपपूछे॥और आगेतैंसो पुरुष तिसकेताई अश्वदिखाइदेवे ॥ तैसे हमनेतो संघाततैंविलक्षण आत्माकास्वरूप पूछाथा ॥ और तुमने संघातकूंही आत्मरूपकरिकै कथनकऱ्या ॥ यातैं यहतुम्हाराउत्तर अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं हेयाज्ञवल्क्य संघातसेंविलक्षणकरिकै करामलककीन्याई आत्माकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी उषस्तने उपहासयुक्तवचनकहे ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि किंचित्मात्रभीक्रोधकूं नहीं प्राप्तहोताभया ॥ उलटा आपणीगंभीरताकरिकै मंदमंद हँसताहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताउषस्तकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनि रुवाच ॥ हेउषस्त ॥ संघातसेंविलक्षणआत्माकास्वरूप हमारेप्रतिकहो यहजोतूं प्रश्नकरताहै॥ सोतुम्हाराआत्मा अत्यंतअपरोक्षहै ॥ काहेतैं 'अहंअस्मि' याप्रकारकी अंतःकरणकीवृत्तिकरिकै तूंभी आत्माकूंजाणताहै ॥ यातैं अपरोक्षआत्माविषे असंभावना संभवैनहीं ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकारकाउत्तर जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैंकह्या ॥ तभी सोउषस्त पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उषस्तउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ तुमने अहंबुद्धिकाविषय आत्माकह्या ॥ याकरिकै आत्माकानिर्णयहोवैनहीं ॥ काहेतैं अहंबुद्धि बहुतपदार्थोंविषेहोवैहै ॥ तहाँ अहंस्थूलःयाप्रकारकीअहंबुद्धि स्थूलशरीरकूंविषयकरैहै ॥ और 'अहंकाणः' अहंबधिरःयाप्रकारकीअहंबुद्धि इंद्रियोंकूंविषयकरैहै ॥ और अहंक्षुधापिपासावान् याप्रकारकीअहंबुद्धि प्राणोंकूंविषयकरैहै ॥ और अहंनिश्चयवान् याप्रकारकीअहंबुद्धि बुद्धिकूंविषयकरैहै ॥ और अहंअज्ञः याप्रकारकीअहंबुद्धि अज्ञानकूंविषयकरैहै ॥ यातैं स्थूलशरीरतैंआदिलेके अज्ञानपर्यंत सर्वसंघातविषे अहंबुद्धिकीविषयता प्रतीतहोवैहै ॥ तिनसंपूर्णोंविषे कौनआत्माहै यह जान्याजावैनहीं ॥ यातैं हेयाज्ञवल्क्य ॥ जोतुम्हारेकूं आत्माकाज्ञानहै ॥ तो बुद्धिआदिकजडपदार्थोंतैंभिन्नकरिकै आत्माकास्वरूप हमारेप्रतिकहो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी उषस्तनेकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उषस्तकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेउषस्त ॥ विद्वान्पुरुषोंकेअनुभवकरिकैसिद्ध जोआत्माकीअपरोक्षताहै ॥ ताअपरोक्षतारूपकरिकै आत्माकेनिरूपणाविषे तुम्हाराआग्रहहै ॥ अथवा जैसे घटविषे इंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतारूप

अपरोक्षताहै ॥ तैसे अपरोक्षतारूपकरिके आत्माकेनिरूपणविषे तुमाराआग्रहहै ॥ तहाँ जोतूं प्रथमपक्षअंगीकारकरै ॥ तो जैसे विद्वान्पुरुष आत्माकेस्वरूपकूं निरूपणकरै है ॥ तैसे हमने तुम्हारेप्रति आत्माकास्वरूप निरूपणकर्‍याहै ॥ परंतु तूं बहिर्मुखहै ॥ यातें विद्वान्पुरुषकीन्याई तुमने आत्माकूंजान्यानहीं ॥ और हेउषस्त ॥ जोतूं दूसरापक्ष अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें नित्यअपरोक्षरूप यहआत्मा चिदाभासयुक्तबुद्धिकरिके घटपटादिकपदार्थोंकूंजाणैहै ॥ और ताबुद्धिकूं आपणे स्वप्रकाशरूपकरिकैआत्मा प्रकाशैहै ॥ यातें हेउषस्त ऐसे बुद्धिआदिकोंकेद्रष्टाआत्माकूं तूंकिसकरिकैविषयकरैगा ॥ किंतु बुद्धिसहितसर्वइंद्रिय द्रष्टाआत्माकूंविषयकरिसकैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थोंका प्रकाशकजोचक्षुइंद्रियहै ॥ ताचक्षुइंद्रियकूं घटादिकपदार्थ प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ तैसे विषयइंद्रियकेसंबंधतें उत्पन्नभईआं जेअंतःकरणकीवृत्तियां ॥ तिनवृत्तियोंकूं यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रकाशकरैहै ॥ यातें तेवृत्तियां प्रकाशक आत्माका प्रकाशकरैंनहीं ॥ हेउषस्त ॥ जो बुद्धिआदिकजडपदार्थोंकाप्रकाशकहै ॥ तथा सर्वकेअंतर व्यापकहै ॥ तथा उत्पत्तिनाशतेंरहितहै ॥ सोईही संघातसेविलक्षण तुम्हाराआत्माहै ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य॥आत्मातेंभिन्न बुद्धिआदिकपदार्थ सत्यहैं अथवा असत्यहैं ॥ जोकहो बुद्धिआदिकपदार्थ सत्यहैं ॥ तो जैसे घट पटादिकोंकेअंतरनहींहोता ॥ तैसेआत्माविषे सर्वांतरपणानहींहोवैगा ॥ और जोकहो आत्मातेंभिन्न बुद्धिआदिकपदार्थ असत्यहैं ॥ तौभी आत्माविषे सर्वांतरपणा संभवैनहीं ॥ काहेतें आत्मा सर्वकेअंतरव्यापकहै यावचनविषे सर्वशब्दकरिकै बुद्धिआदिकोंकाग्रहणकरणाहोवैगा ॥ ते बुद्धिआदिकपदार्थ तुम्हारेमतविषे अत्यंतअसत्यहैं ॥ यातें तिनबुद्धिआदिकोंकेअभावहोणेतें आत्माविषे सर्वांतरपणा संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेउषस्त या आनंदस्वरूपआत्मातेंभिन्न जितनेकी बुद्धि इंद्रिय शरीरादिकपदार्थहैं तेसंपूर्ण जडहैं ॥ यातें घटादिकपदार्थोंकीन्याई तेबुद्धिआदिकजन्ममरणवालेहैं ॥ याकारणतें तेबुद्धिआदिक कल्पितहैं ॥ तिनकल्पितबुद्धिआदिकोंविषे अधिष्ठानआत्माकीव्यापकतासंभवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे कल्पित जे सर्प दंड जलधारादिकहैं ॥ तिनकल्पितसर्पादिकोंविषे रज्जुरूपअधिष्ठान व्यापकहै॥ तैसे कल्पित

बुद्धिआदिकोंविषे अधिष्ठानआत्मा व्यापकहै ॥ यातें आत्माविषे सर्वांतरपणा संभवैहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभीयाज्ञवल्क्यमुनिने संघातसेविलक्षण आत्माकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ तभी सोउषस्त यहनिश्चयकरताभया ॥ यहयाज्ञवल्क्यमुनि अत्यंतबुद्धिमान्‌है ॥ यातें हमारेसे जीताजावैगानहीं ॥ याप्रकारकानिश्चयकरिकै सोउषस्तब्राह्मण कहोलब्राह्मणकेमुखकी ओरदेखिकरिकै पुनःप्रश्नकरणेतें निवृत्तहोताभया ॥ तिसतेंअनंतर सो कहोलब्राह्मण याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति यहप्रश्नकरताभया ॥ कहोलउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य पूर्वउषस्तब्राह्मणके प्रसंगविषे आत्माकूं ब्रह्मरूपता तुमनेकही सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें समानधर्मवालेपदार्थोंकाही परस्पर अभेदहोवैहै ॥ विरुद्धधर्मवालेपदार्थोंका परस्पर अभेदसंभवैनहीं ॥ जैसे उष्णस्पर्शवालेअग्निका तथा शीतस्पर्शवालेवरफका परस्पर अभेदहोवैनहीं ॥ तैसे यासंघातकाप्रकाशक जोआत्माहै ॥ सो क्षुधा पिपासा शोक मोह जरा मरण यहषट्‌ऊर्मिरूपसंसारवान् प्रतीतहोवैहै ॥ और ब्रह्म तो क्षुधापिपासादिकषट्‌ऊर्मिरूपसंसारतैंरहितहुआ शास्त्रतैंप्रतीतहोवैहै ॥ यातें संसारीआत्माका असंसारीब्रह्मकेसाथअभेदकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी कहोलनेकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि कहोलकेप्रति उत्तरकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेकहोल ॥ विरुद्धधर्मोंवालेपदार्थोंका अभेदनहींहोता यहजोवार्त्ता तुमनेकही सोसत्यहै ॥ परंतु तेक्षुधादिक धर्म आत्माकेनहीं ॥ किंतु क्षुधा पिपासा प्राणोंकाधर्महै ॥ और शोक मोह मनकेधर्महैं ॥ और जरा मरण शरीरकेधर्महैं ॥ आत्माकाकोईधर्महैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकाप्रकाशक जो सूर्यभगवान्‌है तासूर्यभगवान्‌कूं घटादिकोंकेधर्म स्पर्श करैंनहीं ॥ तैसे प्राणादिकोंकूं प्रकाशकरणेहारा जोआत्माहै ॥ ताआत्माकूं प्राणादिकोंकेक्षुधापिपासादिकधर्म स्पर्शकरैंनहीं ॥ यातें जैसे ब्रह्म जन्मादिकसंसारतैंरहितहै ॥ तैसे यहआत्माभी जन्मादिकसंसारतैंरहितहै ॥ याकारणतें वेदकेवेत्तामहात्मापुरुष आत्माकूं ब्रह्मरूप कहैहैं ॥ किंवा ॥ जिनपुरुषोंकूं निःसंशय आत्माकाज्ञानभयाहै ॥ तिनपुरुषोंकाभी जभी जन्ममरणादिरूपसंसार निवृत्तहोवैहै ॥ तभी साक्षात्‌ब्रह्मरूपआत्माविषे जन्ममरणादिरूपसंसार नहींरहैहै याकेविषेंक्याकहणाहै ॥ और हेकहोल जन्मादिकसंसारतैंरहित तथाअज्ञानतैं

रहिततथासर्वबुद्धिआदिकोंकासाक्षी जोब्रह्मरूपआत्माहै ॥ ताआत्माकासाक्षात्कार विक्षेपवान्पुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ किंतु विक्षेपतैंरहित जे विरक्तमहात्मा पुरुषहैं ॥ तिनोंकूंहीं आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ याकारणतैं पूर्ववामदेवादिकमहान्पुरुष आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतैं सर्वएषणावोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभयेहैं ॥ याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे विवेकवैराग्यादिक आत्मसाक्षा त्कारकेसाधनहैं ॥ तैसे उपरतिशब्दकाअर्थसंन्यासभी विक्षेपकीनिवृत्तिद्वारा आत्मसाक्षात्कारकासाधनहै ॥ यहाँसंन्यासशब्दकरिकै वि विदिषासंन्यासकाग्रहणकरणा ॥ अब एषणाकेस्वरूपकूं तथातिनोंकेभेदकूं दिखावे हैं ॥ हेकहोळ ॥ तीनप्रकारकीएषणाहोवे है ॥ एक पुत्र एषणा १ दूसरीवित्तएषणा २ तीसरीलोकएषणा ३ तहाँ मेरेकूंपुत्रहोवे याप्रकारकीइच्छाकूं पुत्रएषणाकहैहैं ॥ तापुत्रएषणाकरिकै यहपुरुष स्त्रीकेसंग्रहादिकोंविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ औरमेरेकूंधनहोवैहै ॥ याप्रकारकीइच्छाकूंवित्तएषणाकहै हैं ॥ सोधनभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतो देवधनहोवैहै ॥ और दूसरा मानुष्यधनहोवे है ॥ तहाँ देवलोककेजयकासाधनजो कर्मउपासनाहै ताकूं देव धनकहै हैं ॥ और यामनुष्य लोककेभोगकासाधन जोपशुसुवर्णादिरूपधनहै ताकूं मानुष्यधनकहैहैं ॥ तादोनोंप्रकारकेधनकी इच्छाकूं वित्तएषणाकैंह हैं ॥ और मेरे कूंसुखहोवे याप्रकारकीइच्छाकूं लोकएषणाकहैहैं ॥ सोसुखभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतो मनुष्यलोक विषे वर्तमानसुख ॥ और दूसरा देवलोकविषेवर्त्तमानसुख ॥ यादोनोंप्रकारकेसुखकीइच्छाकूं लोकएषणाकहै हैं ॥ यद्यपि इच्छाकेविषयपदार्थ अनंतहैं ॥ यातैं इच्छाभी अनंतहीसंभवैहै ॥ तथापि यातीनइच्छावोंकेभीतरहीं सर्वइच्छावोंकाअंतरभावहै ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतो वित्त एषणा तथालोकएषणा यहदोप्रकारकोही एषणासिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं जैसे पशु क्षेत्र सुवर्णादिकधन पिताकेसुखकासाधनहैं ॥ तैसे पुत्रभी पिताकेसुखकासाधनहै ॥ यातैं इसलोककेजेसाधनहैं तथापरलोककेसुखकेजेसाधनहैं तिनसंपूर्णोंकानाम वित्तहै ॥ तावित्तएषणा करिकै संपूर्णसुखकेसाधनोंकीएषणाकाग्रहणहोवैहै ॥ और लोकएषणाकरिकैइसलोकके तथापरलोककेजितनेकसुखरूपफलहैं तिनों केएषणावोंकाग्रहणहोवैहै ॥ यातैं फलएषणा तथासाधनएषणा यहदोनोंप्रकारकीएषणाहीं सर्वत्र अनुगतहैं ॥ याकारणतैंहीं संपूर्णजीव

प्रथमसुखरूपफलकीइच्छाकरैहैं ॥ परंतु सोसुख साधनोंतैंविनासिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं तासुखकेसाधनकीभीइच्छाकरैहैं ॥ यालोकोंकेव्यव हारतैंभी दोप्रकारकीहीएषणा सिद्धहोवैहै ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ विद्वान्पुरुष जोएषणावोंकापरित्यागकरैहैं ॥ याकेविषे कौनकार णहै ॥ समाधान ॥ हेकहोल ॥ जन्ममरणादिकसंसारतैंरहित जोस्वप्रकाशआनंदस्वरूपआत्माहै ताकेविषेहीं सुखहै ॥ और आत्मातैं भिन्नसर्वअनात्मपदार्थ परिणामकालविषे दुःखकेदेणेहारेहैं ॥ यातैं तिनअनात्मपदार्थोंविषे किंचित्मात्रभीसुखनहीं ॥ याप्रकारकाविचार करिकै विद्वान्पुरुष सर्वएषणावोंकापरित्यागकरैहैं ॥ अब आत्मातैंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थोंविषे दुःखरूपतादिखावैहैं ॥ हेकहोल ॥ यालो कविषे जितनेकसुखकारीपदार्थहैं॥तिनसंपूर्णपदार्थोंविषे माता पुत्रकीअत्यंतसुखकारीहोवैहै ॥ काहेतैं यहमाता बाल्यअवस्थाविषे पुत्रकूं दुग्धपानकरावैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै जलअग्निआदिकोंतैं पुत्रकीरक्षाकरैहै॥तथा आपणेहस्तोंकरिकै पुत्रकेविष्ठामूत्रादिकों कूंउठावैहै॥ तथा पुत्रविषे नानाप्रकारका स्नेहकरैहै॥इसतैंआदिलेके अनंतप्रकारकेउपायोंकरिकै माता पुत्रकापालनकरैहै॥यातैं माताजैसा कोईपदार्थ सुखकारीनहीं॥परंतु क्रोधकरिकैयुक्तहुई सोमाता ताडनाकरिकै बालककूं दुःखकीभीप्राप्तिकरैहै ॥ अथवा सोमाता जभी मृत्यु कूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभीभी बालककूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं॥बाल्यअवस्थाविषे माताकेमरणेकरिकै जैसाबालककूंदुःखहोवैहै ॥ तथा यौवनअवस्थाविषे स्त्रीकेमरणेकरिकै जैसापुरुषकूंदुःखहोवैहै ॥ तथा वृद्धअवस्थाविषे पुत्रकेमरणेकरिकै जैसापिताकूंदुःखहोवैहै॥ तैसादुःख वज्रकेपडनेतैं तथाजीवतेहुए अग्निविषेप्रवेशकरणेतैं तथाशरीरकेछेदनकरणेतैं तथाशूलविषे आरूढहोणे तैं तथापर्वतकेनीचेगिडनेतैंभी जीवोंकूंनहींहोवैहै ॥ यातैं अत्यंतसुखकारीमाताभी वियोगकालविषे जीवोंकेपरमदुःखकाकारणहोवैहै ॥ किंवा ॥ जैसे माताकावियोग जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ तैसे पितातैंआदिलेकैजितनेकसुखकारीप्रियबांधवहैं तिनोंकाभी जभीवियोगहोवै है ॥ तभी याजीवकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनपदार्थोंका परस्परसंबंधहोवैहै ॥ तिनपदार्थोंका देशकालादिकनिमित्त करिकै वियोगभीअवश्यहोवैहै ॥ तावियोगकेनिवारणकरणेकूं कोईभीजीव समर्थनहीं ॥ यातैं मातापितादिकसंपूर्णप्रियपदार्थ वियोगका

लविषे याजीवकेदुःखकेहीकारणहोवैं हैं ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतो तीनकालविषे पदार्थ दुःखकेकारणहैं ॥ काहेतैं जबपर्यंत पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिनहींहोती तब पर्यंत तिनोंकोइच्छाकरिकै जीवकूंदुःखहोवैहै ॥ और जभी पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तभी तिनोंकेरक्षणादिकोंकरिकैदुःखहोवैहै ॥ और जभी तिनप्रियपदार्थोंकानाशहोवैहै ॥ तभी तिनोंकेवियोगकरिकै जीवोंकूंदुःखकोप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं आत्मातैंभिन्नसर्वप्रियपदार्थ याजीवकेदुःखकाकारणहैं ॥ इतनेकरिकै प्रियपदार्थोंविषे दुःखकीकारणतादिखाई ॥ अब अप्रियपदार्थोंविषे दुःखकीकारणतादिखावैं हैं ॥ हेकहोल ॥ जैसे अग्निका जिसजिसपदार्थकेसाथ संबंधहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थकूं अग्नि दाहकरैहै ॥ तैसे सिंहसर्पादिक अप्रियपदार्थोंका जिसजिसजीवकेसाथ संबंधहोवैहै तिसतिसजीवकूं तेसिंहसर्पादिक नाशकरैहैं ॥ यहवार्त्ता सर्वजीवोंकूंअनुभवसिद्धहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ मातापितादिक प्रियपदार्थ वियोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवैंहैं ॥ और सिंह सर्प शत्रु आदिकअप्रियपदार्थ संयोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवैंहैं ॥ इतनेकरिकै मातापितादिक चैतन्यपदार्थोंविषे दुःखकी कारणता दिखाई ॥ अब जडपदार्थोंविषे दुःखकीकारणता दिखावैंहैं ॥ हेकहोल ॥ जैसे चैतन्यरूप प्रिय अप्रिय पदार्थ वियोगकालविषे तथासंयोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवैंहैं ॥ तैसे सुवर्णादिकजडपदार्थभी जिसजिसजीवकूंप्रियहोवैंहैं ॥ तिसतिसजीवकूं वियोगकालविषे तेसुवर्णादिकजडपदार्थ परमदुःखकोप्राप्तिकरैंहैं ॥ और जिसजिसजीवकूं तेसुवर्णादिकजडपदार्थ अप्रियहोवैंहैं ॥ तिसतिसजीवकूं तेसुवर्णादिक जडपदार्थ संयोगकालविषे परमदुःखकोप्राप्तिकरैं हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अग्नि पतंगोंकूंदाहकरैहै ॥ तैसे वैराग्यहीनजीवोंकूं प्रियअप्रियपदार्थ सर्वदा दुःखकीहीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और हेकहोल ॥ जेपुरुष रागकरिकैअंधहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं यद्यपि संसार दुःखरूप नहींप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि रागदोषतैंरहित जेविवेकोपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं पुत्र धन लोक शरीर बांधव इत्यादिकसंपूर्णसंसार दुःखकाहीकारणप्रतीतहोवैहै ॥ और हेकहोल ॥ यद्यपि संपूर्णअनात्मपदार्थ जीवोंकेदुःखकाकारणहैं ॥ तथापि वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतो पदार्थोंकीइच्छाही जीवोंकेदुःखकाकारण सिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकी तथाशत्रुवोंकेमारणेकी इच्छाकरिकै

युक्तहुआयहजीव धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिवासते तथाशत्रुकेमारणेवासते नानाप्रकारकायत्नकरैहै ॥ परंतु धनकीप्राप्तिविषे तथाशत्रुवोंके मारणेविषे जभीसोजीव नहींसमर्थहोवैहै॥तभी तासे निवृत्तहोवैहै॥ और जिसजिसपदार्थतैं यहजीव निवृत्तहोवैहै॥सोसोपदार्थ याजीवकेपरमदुःखकाकारणहोवैहै ॥ शंका ॥ जिसपदार्थकेप्राप्तिविषे पुरुषकासामर्थ्यनहींहै ॥ ऐसेपदार्थकीप्राप्तिकीइच्छा किसकारणतैंकरैहै ॥ समाधान ॥ शरीरइंद्रियादिकोंविषे अहंअभिमानरूप विपरीतज्ञानकरिकै तथापुत्रधनादिकोंविषे ममअभिमानरूप विपरीतज्ञानकरिकै यहजीव नप्राप्तहोणेयोग्यपदार्थोंविषेभी इच्छाकरैहै ॥ और जभीतिनपदार्थोंकोप्राप्तिनहींहोवैहै ॥ तभी याजीवकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं फलतैंरहितहुईइच्छाही जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ किंवा ॥ मनुष्यलोकतैंआदिलेके हिरण्यगर्भलोकपर्यंत जितनेक देहधारीजीवहैं ॥ तिनोंके शरीर इंद्रिय पुत्रादिकपदार्थ सर्वथाअनुकूल होवैंनहीं ॥ यातैं प्रतिकूलहुए शरीर पुत्रादिकपदार्थ याजीवोंके दुःखकेहीकारण होवैं हैं ॥ इतनेग्रंथकरिकै अनात्मपदार्थोंविषे दुःखरूपतादिखाई ॥ अब अनात्मपदार्थोंविषे सुखरूपताकेअभावकूंदिखावैहै ॥ हेकहोल आत्मातैंभिन्न किसीभीअनात्मपदार्थविषे सुखरूपतानहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ जिसजीवकेसुखकाकारण होवैहै ॥ सोईहीपदार्थ कालांतरविषे तिसजीवकेदुःखकाकारणहोवैहै ॥ और जोपदार्थ जिसजीवकेदुःखकाकारणहोवैहै ॥ सोईहीपदार्थ कालांतरविषे तिसजीवकेसुखकाकारणहोवैहै ॥ जैसे ज्वरव्याधितैंरहितपुरुषकूं घृतादिकपदार्थ सुखकेकारणहोवैंहैं ॥ और तेहीघृतादिकपदार्थ कालांतरविषे ज्वरव्याधियुक्त तिसीपुरुषके दुःखकेकारणहोवैं हैं ॥ और जेघृतादिकपदार्थ ज्वरव्याधियुक्तपुरुषकूं दुःखकेकारणहोवैं हैं ॥ तेही घृतादिकपदार्थ कालांतरविषे ज्वरव्याधिरहित तिसीपुरुषके सुखकेकारणहोवैं हैं ॥ इसप्रकार सर्वअनात्मपदार्थोंविषे सुखकीकारणताका व्यभिचारजानिलेणा ॥ जोआत्मपदार्थ नियमकरिकै सुखकेहीजनकहोवैं ॥ तो सर्वकालविषे तिनोंतैंसुखकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और सर्वकालविषे तिनोतैंसुखकीउत्पत्तिहोवैनहीं यातैं अनात्मपदार्थोंविषे सुखकीकारणतानहीं ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जोअनात्मपदार्थोंविषे सुखकीकारणतानहींहोवे ॥ तो सुखकोप्राप्तिवासते संपूर्णजीव शब्दस्पर्शादिकविषयोंकीइच्छाकिसवासतैकरतेहैं ॥ समाधान ॥ हेक

होत ॥ शब्दस्पर्शादिकविषय हमारेसुखकेसाधनहैं ॥ यहजोसर्वलोकोंकाअनुभवहै ॥ सो यथार्थनहीं किंतुभ्रांतिरूपहै ॥ काहेतें आनंदो ब्रह्म अर्थयह ब्रह्म आनंदरूपहै ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मकूंहीं आनंदस्वरूपकह्याहै ॥ और सोब्रह्मनित्यहै यातें ब्रह्मरूपआनंदभी नित्यहै ॥ तानित्यआनंदकीशब्दादिकविषयोंतैंउत्पत्तिकहणी भ्रांतिसेविनासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोसुख शब्दस्पर्शादिकविषयों करिकेजन्यहोवैगा तौ सोसुख नित्यआत्मातैं भिन्नहींहोवैगा ॥ और जोआत्मातैंभिन्नहोवै है ॥ सो दुःखरूपहीहोवैहै ॥ जैसेआत्मातैं भिन्नकरिकेजान्याहुआ वैरीपुरुषकासुखभी जीवोंकूं दुःखरूपहोइकेप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे जो सुख आत्मातैंभिन्नहोवैगा ॥ तौ दुःखरूपही होवैगा ॥ और सुखकूंदुःखरूपतासंभवैनहीं ॥ यातें सुख आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंवा ॥ शब्दस्पर्शादिकविषय हमारेसुखकेसाधनहैं यहजोलोकोंकाअनुभवहै ॥ ताकेविषे याकारणहै ॥ जैसे खद्योतजंतु रात्रिविषे संपूर्णव्यापकआकाशकीअभिव्यक्तिकरिसकैनहीं ॥ किंतु व्यापकआकाशके किंचित्देशकी अभिव्यक्तिकरैहै ॥ तैसे शब्दस्पर्शादिकविषयभी संपूर्ण आत्मरूपव्यापकसुखकी अभिव्य क्तिकरैनहीं ॥ किंतु व्यापकसुखकी किंचित्मात्र अभिव्यक्तिकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दस्पर्शादिकविषयोंकेसाथश्रोत्रादिकइं द्रियोंका जभीसंबंधहोवैहै ॥ तभी आनंदस्वरूपआत्माकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेहारी अंतःकरणकीवृत्ति उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोअंतःकरण कीवृत्ति जितनापरिमाणहोवै है ॥ तितनापरिमाणही आत्मारूपसुखकोअभिव्यक्तिकरैहै ॥ यातें अंतःकरणकीवृत्तिविषेस्थित जोशब्द स्पर्शादिकविषयोंकीजन्यता ताजन्यताकूं आत्मारूपसुखविषे आरोपणकरिकेमूढपुरुष सुखकूंविषयजन्यमानैहैं ॥ यातें सुख विषयजन्यहै यहलोकोंकाअनुभव केवलभ्रमरूपहै यातें ॥ हेकहोल आत्मातैंभिन्नसर्वजगत्कूंदुःखरूपजाणिके वामदेवादिकविद्वान्पुरुष आत्मरूपनित्यसुखकीप्राप्तिवासतैं सर्वेषणावोंकापरित्यागकरिके संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभये हैं ॥ इतनेग्रंथकरिके आत्मज्ञानकी प्राप्तिकासाधन तथाजीवन्मुक्तिकेसुखकासाधन जोसन्यासहै ताकूं निरूपणकऱ्या ॥ अब आत्मज्ञानकेसाधन जे श्रवण मनन निदिध्यासनहैं तिनोंकिस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेकहोल ॥ स्वप्रकाश सुखरूपजोब्रह्महै ताकेप्राप्तिकीइच्छाहै जिसकूं ॥ और

शास्त्रकेपदार्थोंका तथावाक्यार्थोंका ज्ञानहैजिसकूं ॥ ऐसाजो चतुष्टय साधनसंपन्न मुमुक्षुजनहै ॥ सो प्रथम गुरुमुखतैं वेदांतवाक्यों काश्रवणकरिकै तिन वेदांतवाक्योंका अद्वितीयब्रह्मविषे तात्पर्यनिश्चयकरै ॥ याकानामश्रवणहै ॥ ताश्रवणतैंअनंतर सोमुमुक्षुजन जन्म मरणादिविकारवान् तथाआसक्तिद्वारा सर्वएषणावोंकाजनकजोयहशरीरहै ताकूं अन्वयव्यतिरेककरिकै दुःखकाकारणजानै ॥ और सर्व एषणावोंकापरित्यागकरिकै सोमुमुक्षुजन बालककीन्याई रागद्वेषतैंरहितहोइके स्थितहोवै ॥ तात्पर्ययह ॥ रागद्वेषपूर्वक जोविषयोंविषे इंद्रियोंकीप्रवृत्तिहै ॥ सोप्रवृत्तिही जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ याकारणतैंही रागद्वेषपूर्वक इंद्रियोंकीप्रवृत्तितैंरहितजोबालकहै ॥ सो दुःखकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं यहमुमुक्षुजनभीबालककीन्याई रागद्वेषपूर्वक इंद्रियोंकीप्रवृत्तितैंरहितहोइके वेदांतकेअर्थकामननकरै ॥ नानाप्रकारकी युक्तियोंकरिकै विरोधनिवृत्ति पूर्वक जोवेदांतके अर्थकाचिंतनहै ताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष मननकहैहैं ॥ सोमनन रागद्वेषवान् बहिर्मुखपुरुषतैंहोइसकेनहीं ॥ यातैंरागद्वेषतैंरहितहोइके मुमुक्षुजन वेदांतकेअर्थकामननकरै ॥ और ताश्रवणमननतैंअनंतर यहमुमुक्षुजन अनात्माकार विजातीयवृत्तियोंकापरित्यागकरिकै ॥ आत्माकार सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूप जोनिदिध्यासनहै ताकूं निरंतरकरै तात्पर्ययह ॥ मनवाणीका विषय जोदृश्य प्रपंचहै ॥ तिसतैं मैं विलक्षणहूं ॥ और मैं आनंदस्वरूपहूं ॥ और मैं स्वप्रकाशहूं ॥ और मैं सजातीय विजातीय स्वगत भेदतैंरहितहूं ॥ याप्रकारकीवृत्तियोंका निरंतरप्रवाहरूपजोनिदिध्यासनहै ॥ तानिदिध्यासनविषेहै नेष्ठाजिसकी ॥ तथा पूर्वउक्तश्रवणमननकूं चिरकालपर्यंत श्रद्धापूर्वक सेवनकर्याहै जिसनै ॥ ऐसाजोमुमुक्षुजनहै ॥ सो ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ता ब्रह्मविद्यावान्पुरुषकूंही श्रुतिविषेब्राह्मणकह्याहै ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ पूर्वकथनकरेजेश्रवणमनननिदिध्यासन ॥ तिनोंकापरित्याग करिकै यहमुमुक्षुजन अन्यकिसीउपायकरिकै ब्रह्मज्ञानरूपब्राह्मणभावकूं प्राप्तहोवैहै अथवा नहींहोवैहै ॥ जोश्रवणादिकोंतैंविना किसीअन्यउपायकरिकै ब्राह्मणभावकीप्राप्तिहोतीहोवै ॥ तौ सोउपाय हमारेप्रति कथनकरो ॥ समाधान ॥ हेकहोल ॥ पूर्वक हेजेश्रवण मनन निदिध्यासन ॥ तिनोंकूंपरित्यागकरिकै यहमुमुक्षुजन अन्यकिसीउपायकरिकै ब्राह्मणभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥

किन्तु श्रवणादिकोंकरिकैही यहमुमुक्षुजन ब्राह्मणभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं हेकहोल ॥ नाम रूप क्रियातैंरहित तथास्वप्रकाशसुखरूप जोअ द्वितीयब्रह्महै सोमैंहूं ॥ याप्रकारका निर्विकल्पकज्ञान जिसपुरुषकूंभयाहै ॥ तिसीब्रह्मवेत्तापुरुषकूं श्रुति ब्राह्मणकहैं हैं ॥ और याप्रकारका ब्राह्मणपणा श्रवण मनन निदिध्यासनतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं ताब्राह्मणभावकी प्राप्तिवास्तैं मुमुक्षुजननें अवश्य श्रवणादिकसाधन संपादनकरणे ॥ और हेकहोल ॥ याप्रकारकाब्राह्मणपणा जोकदाचित् श्रवणादिकसाधनोंतैंविना अन्य किसीसाधनतैंहोताहोवै तो निःशंकहोवै ॥ याकेविषे हमाराआग्रहनहीं ॥ काहेतैं जैसे नदीके पारउतरणारूपफल नौकाकरिकै होवैहै ॥ अथवा उडुपादिकसाधनोंकरिकैहोवैहै ॥ जभी उडपादिकसाधनोंकरिकैही नदीकेपारजाणारूपफल सिद्धहोइसकै ॥ तभी नौकाकरिकै पारजाणेविषे कोईबुद्धिमान्पुरुष आग्रहकरतानहीं ॥ परंतु जोनदी महान्वेगवालीहोवैहै ॥ तथा अत्यंतविस्तारवाली होवैहै ॥ तथा जोनदीविषे अगाधजलहोवैहै ॥ ऐसीनदीकेपारजाणेविषे जैसे एकनौकाही साधनहोवैहै ॥ नौकातैंविना उडुपादिकसाध नोंकरिकै ऐसीनदीतैंपारहोणा संभवैनहीं ॥ तैसे पूर्वउक्त ब्राह्मणपणेविषे श्रवणादिकहीसाधनहैं ॥ श्रवणादिकों तैंविना किसीअन्यउ पायकरिकै याप्रकारकाब्राह्मणपणा प्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सो श्रवणादिकोंतैंभिन्नउपाय हिरण्यगर्भकीउपासनाहोवैगी ॥ अथवा अश्वमेधयज्ञादिक उत्कृष्टकर्महोवैं गे ॥ तेसंपूर्णउपासना तथाकर्म श्रवणादिकोंतैंविना आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरैं नहीं ॥ किंतु उपास नाकरिकै तथाकर्मोंकरिकै चित्तकीशुद्धिहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत् मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर गुरुमुखद्वारा वेदांतकेश्रवणकरिकै तथामनननिदिध्यासनकरिकै मुमुक्षुपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं चित्तकीशुद्धिविषे कर्मउपासनाका उपयोगहै ॥ साक्षात्आत्मज्ञानविषे कर्मउपासनाकूं कारणतानहीं ॥ किंतु श्रवणादिकोंकूंही सा क्षात्कारणताहै ॥ तहाँ वेदांतशास्त्र जीवईश्वरके अभेदकूंबोधनकरैहै अथवा जीवईश्वरकेभेदकूंबोधनकरैहै ॥ याप्रकारकी प्रमाणगतअसं भावना वेदांतशास्त्रकेश्रवणतैं निवृत्तहोवैहै ॥ और आत्मा नित्य व्यापकसुखरूपहै अथवा अनित्य परिच्छिन्नदुःखरूपहै ॥ याप्रकारकी

प्रमेयगतअसंभावना वेदांतशास्त्रकेमननतैं निवृत्तहोवैहै ॥ और अनित्य अशुचि दुःखरूप शरीरादिकोंविषे नित्य शुचि सुखरूपताबुद्धि कूं विपरीतभावनाकहैहै ॥ साविपरीतभावना निदिध्यासनतैं निवृत्तहोवैहै ॥ याप्रकार असंभावनाविपरीतभावनाके निवृत्तिद्वारा श्रवण मनन निदिध्यासन आत्मज्ञानकेसाधनहैं ॥ यातैं श्रवणादिकोंकरिकैही ॥ ब्राह्मणभावकोप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेकहोल ॥ जिसपुरुषने गुरुमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणनहींकऱ्या ॥ तथा मनन निदिध्यासननहींकऱ्या ॥ तथा वित्तएषणा पुत्रएषणा लोकएषणा यातीनप्रकारके एषणावोंकापरित्यागनहींकऱ्या ॥ केवल विषयभोगविषे जोपुरुष आसक्तहै॥ऐसे साधनहीनपुरुषकूं किसीलोकविषे तथाकिसीकालविषे जोपूर्वउक्तब्राह्मणपणा प्राप्तहुआहोवे ॥ तौ हमारेप्रति तुमकथनकरो ॥ किंतु ऐसेसाधनहीनपुरुषोंकूं किसीलोकविषे तथाकिसीकालविषे ब्राह्मणपणा प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं हेकहोल ॥ जैसे अन्नकाभक्षणनियमकरिकै तृप्तिकाउपायहै ॥ अन्नकेभक्षणतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै पुरुषकी तृप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मज्ञानकोप्राप्तिरूपब्राह्मणपणेविषे श्रवण मनन निदिध्यासनहींनियमकरिकैसाधनहैं ॥ याकारणतैं हिरण्यगर्भकूंभी क्षणमात्र वेदांतवाक्यकेविचारतैं ही आत्मज्ञानकोप्राप्तिकहीहै ॥ तथा योगीपुरुषभी प्रणवकेअर्थकाविचारकरिकैही आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ श्रवणमनननिदिध्यासनतैंविना कोईभीपुरुष आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिने कहोलकेप्रति उत्तरकह्या ॥ तभी सोकहोलब्राह्मण याज्ञवल्क्यकूंबुद्धिमान् जाणिकरिकै याज्ञवल्क्यकेजीतणेकीइच्छाका परित्याग करताभया ॥ और गार्गीकेमुखकीओरदेखिकरिकै सोकहोलब्राह्मण पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर तर्कविषेकुशल जोवचक्नुऋषिकीपुत्रीगार्गीहै ॥ सोअनुमानप्रमाणकूंअंगीकारकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरतीभई ॥ गार्ग्युवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यहोवैहैं ॥ सोसोपदार्थ आपणेकारणविषे स्थितहोवैहैं ॥ तथा अंतर बाह्य कारणकरिकैव्याप्तहोवै है ॥ जैसे पटरूपकार्य तंतुरूपकारणविषे रहैहै ॥ तथा अंतरबाह्य तंतुरूपकारणकरिकै व्याप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ तैसे यामनुष्यलोकविषेवर्तमान जितनेस्थावर जंगमरूप पार्थिवपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपार्थिवपदार्थ कार्यरूपहैं ॥ यातैं कारणरूपजलविषे स्थित

हैं ॥ तथा अंतर बाह्य कारणरूपजलकरिकै व्याप्तहैं ॥ जोकदाचित् पार्थिवपदार्थ जलकरिकै व्याप्त नहींहोवैं ॥ तौसक्तुकेमुष्टिकीन्याई विशीर्णभावकूं प्राप्तहोणेचाहिये ॥ और यहघटादिकपार्थिवपदार्थ विशीर्णभावकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ घटादिकपार्थिवपदार्थ जलरूपकारणकरिकैव्याप्तहैं ॥ याकहणेकरिकै यहअनुमान बोधनकऱ्या ॥ स्थावरजंगमरूप जेपार्थिवपदार्थ हैं ॥ ते जलरूपकारणकरिकै व्याप्तहैं ॥ काहेतें कार्यरूपहोणेतैं पटकीन्याई ॥ यातैं हेयाज्ञवल्क्य ॥ पृथिवीकीन्याई ते जलभी कार्यरूपहैं ॥ यातैं तेजलभी किसीआपणेकारणविषे ओतप्रोतहोवैंगे ॥ सो जलोंकाकारण कौनहै ॥ जिसविषे जलओतप्रोतहैं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारजभी गार्गीने प्रश्नकऱ्या ॥ तभी याज्ञवल्क्यमुनि उत्तरकूंकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेगार्गी ॥ तेजल वायुरूपकारणविषे ओतप्रोतहैं ॥ यद्यपि वेदांतमतविषे जलोंकाउपादानकारण तेजहै ॥ और तेजकाउपादानकारण वायुहै ॥ यातैंवायुकूं जलोंकाउपादानकारणकहणा संभवैनहीं ॥ तथापि लोकविषे अग्निरूपतेजकीकाष्ठरूप इंधनविषेही उपलब्धिहोवैहै ॥ काष्ठरूपइंधनतैं विना अन्यकिसीपदार्थविषे अग्निरूपतेजकी उपलब्धिहोवैनहीं ॥ और काष्ठोंविषेस्थित धूमतैंरहितजोअग्निहै ॥ ताकेविषे जलकाविरोधीपणा प्रत्यक्षदेखीताहै ॥ यातैं जलकाविरोधीजोअग्निहै ॥ ताकेविषे जलकीउपादानकारणता संभवैनहीं ॥ और काष्ठरूपइंधनतैंरहितजो अग्निहै ॥ ताकेविषे जलकीकारणता शास्त्रप्रमाणतैंविना अन्यकिसीप्रमाणकरिकै सिद्धहोवैनहीं ॥ एकशास्त्रप्रमाणकरिकैहीसिद्धहै ॥ यद्यपि आर्द्रइंधनयुक्तअग्निविषेधूमकेसंबंधद्वारा जलकीकारणताप्रत्यक्षप्रमाणकरिकै सिद्धहै ॥ तथापि तास्थलविषे जलकीकारणता अग्निविषेहै अथवा आर्द्रइंधनविषेस्थितजलविषेहै ॥ यह निर्णयहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं अग्निकापरित्यागकरिकै वायुविषे जलकीकारणता कथनकरीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे पुत्रकाकारणजोपिताहै ॥ सोपिता पुत्रकेपुत्रकाभीकारणहै ॥ तैसे तेजकाकारणजोवायुहै सोवायु तेजके कार्यजलकाभी कारणहोइसकैहै ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभीविरोधनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिने उत्तरकह्या ॥ तभी सोगार्गी पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिसे पूछतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोवायु किसकारणविषे ओतप्रोतहै॥याज्ञवल्क्यउवाच॥

हेगार्गी ॥ सोवायु अंतरिक्षलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोअंतरिक्षलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोअंतरिक्षलोक गंधर्वलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोगंधर्वलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोगंधर्वलोक सूर्यलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सूर्यलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोसूर्यलोक चंद्रमालोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोचंद्रमालोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच॥हेगार्गी॥सोचंद्रमालोक नक्षत्रलोकविषे ओतप्रोतहै॥गार्गीउवाच॥हेयाज्ञवल्क्य ॥सोनक्षत्रलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोनक्षत्रलोक देवलोकविषे ओतप्रोतहै॥गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोदेवलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोदेवलोक इंद्रलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोइंद्रलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोइंद्रलोक प्रजापतिलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोप्रजापतिलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोप्रजापतिलोक ॥ ब्रह्मलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ अब अंतरिक्षादिक शब्दोंकेअर्थकूंनिरूपणकरैं हैं॥अवकाशरूपकरिके सर्वलोकोंकूंप्रसिद्ध जोस्थूलआकाशहै ताकूं अंतरिक्ष कहे हैं॥और गंधर्वलोक सूर्य्यलोक चंद्रमालोक नक्षत्रलोक देवलोक इंद्रलोक यहषट्प्रकारकेशब्दआकाशादिकपंचभूतोंकी जोउत्तरउत्तर सूक्ष्मअवस्थाहैं तिनोंकिवाचकहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ अंतरिक्षलोककेआरंभक जेआकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तिनोंतें अंतरिक्षलोककूंसर्वओरतें परिवेष्टनकरिकेस्थित जेगंधर्वशरीरोंकेआरंभकपंचभूतहैं ते सूक्ष्महैं ॥ तैसे गंधर्वलोककूंसर्वओरतेंपरिवेष्टनकरिकेस्थित जेसूर्यलोककेआरंभकपंचभूतहैं ॥ तेभूत गंधर्वलोककेआरंभकभूतोंतें सूक्ष्महैं ॥ इसप्रकार इंद्रलोकपर्यंत आकाशादिकपंचभूतोंकीसूक्ष्मता जानिलेणी ॥ याकेविषेभी इतनीविलक्षणताहै ॥ गंधर्वलोकतेंलेके इंद्रलोकपर्यंत जेषट्प्रकारकी भूतोंकीअवस्थाकही तेअवस्थाभी पूर्वपूर्वअवस्थाकी

अपेक्षाकरिके सूक्ष्महैं ॥ और उत्तरउत्तर अवस्थाकीअपेक्षाकरिके स्थूलहैं ॥ जैसे गंधर्वलोककीअपेक्षाकरिके सूर्यलोक सूक्ष्महै ॥ और चंद्रमालोककीअपेक्षाकरिके सोसूर्यलोक स्थूलहै ॥ तैसे चंद्रमालोकभीसूर्यलोककीअपेक्षाकरिके सूक्ष्महै ॥ और नक्षत्रलोककीअपेक्षाक रिके सोचंद्रमालोक स्थूलहै ॥ इसप्रकार इंद्रलोकपर्यंत स्थूलता तथासूक्ष्मता जानिलेणी ॥ अब इंद्रलोक प्रजापतिलोक ब्रह्मलोक याती नशब्दोंकेअर्थोंकूंनिरूपणकरेंहैं ॥ तहाँ संपूर्णदृश्यप्रपंचकूं जोआत्मारूपकरिकेदेखे ताकूं इंद्रकहेंहैं ॥ याप्रकारका इंद्रशब्दकाअर्थ विराट् पुरुषविषेहीघटैहै ॥ काहेतें यहसंपूर्णविश्व विराट्पुरुषकेशरीरविषे स्थितहै॥यातें ताविश्वकूं आत्मरूपकरिके सोविराट्पुरुष देखेहै ॥ यातें इंद्रशब्दकरिके विराट्पुरुषकाग्रहणकरण॥और ब्रह्मांडरूपीकटाहकेअंतर तथाबाह्य वर्त्तमानजोसूत्रआत्माहै ॥जासूत्रआत्माकूं पारिक्षित पुरुष प्राप्तहोवें हैं॥यातें प्रजापतिशब्दकरिके ता सूत्रआत्माकाग्रहणकरणा॥और मायाअज्ञानशब्दकाअर्थ जोसर्वकाकारणअव्याकृतहै ॥ सोअव्याकृतसूत्रआत्माकेस्थितिकाआधारहै यातें ब्रह्मलोकशब्दकरिके ता अव्याकृतकाग्रहणकरणा ॥ कैसाहैसोअव्याकृत ॥ समष्टिरूपक रिके एकप्रकारकाहै॥और व्यष्टिरूपकरिके अनेकप्रकारकाहै॥हेशिष्य॥याप्रकारके याज्ञवल्क्यमुनिकेवचनोंकूंश्रवणकरिके सोगार्गी आपणे मनविषेयाप्रकारकाविचार नहींकरतीभई॥सोविचार यहहै ॥ सर्वजगत्काकारणरूपजोअव्याकृतहै सो यद्यपि शुद्धआत्माकेआश्रितरहेहै ॥ तथापि सोअव्याकृत जडादिकोंकीन्याई अनुमानप्रमाणतें जान्याजावैनहीं ॥ काहेतें कार्यजोहै सो कारणकरिकेव्याप्तहै ॥ कार्यत्वधर्मवा लाहोणेतें पटरूपकार्यकीन्याई ॥ याअनुमानकोप्रवृत्तितैंपूर्व जोजोकार्यहोवे है सोसोकारणकरिकेव्याप्तहोवे है याप्रकारकाव्याप्तिज्ञान तथा कार्यत्वरूपहेतुकाज्ञान अवश्यचाहिये ॥ व्याप्तिज्ञानतैंविना तथाहेतुज्ञानतैंविना अनुमानप्रमाणतें किसीअर्थकोसिद्धिहोवेनहीं ॥ और अव्याकृतकाआश्रयरूपकरिके आत्माकेज्ञानविषे पूर्वउक्तव्याप्तिज्ञानका तथाकार्यत्वरूपहेतुकेज्ञानका किंचित्मात्रभी उपयोगनहीं ॥ काहेतें अज्ञानमायारूपअव्याकृत अनादिहै ॥ यातें ताअव्याकृतविषे कार्यपणासंभवैनहीं ॥ और शुद्धआत्माविषे कार्यपणा तथाकारण पणा दोनोंसंभवैनहीं ॥ यातें अव्याकृतकाआश्रयआत्मा अनुमानप्रमाणकाविषयनहीं ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो सूत्रआत्मा

भी अनुमानकाविषयनहीं ॥ काहेतैं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकूं लेके अनुमानकीप्रवृत्तिहोवे है ॥ लोकप्रसिद्धदृष्टांततैंविना किसीअनुमानकी प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ सोलोकप्रसिद्धदृष्टांत सूत्रआत्माकीसिद्धविषैहैनहीं याकारणतैंहीं ब्रह्मांडतैंबाह्यसूत्रआत्माहै याप्रकारकीप्रक्रिया किसी नैयायिकनेलिखीनहीं ॥ यातैं सूत्रआत्मा तथाअव्याकृतकाआश्रयरूप शुद्धआत्मा अनुमानरूपतर्ककाविषयनहीं ॥ याप्रकारकेविचारकूं नकरिकै सोगार्गी आग्रहतैं पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरतीभई ॥ गार्ग्युवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोअव्याकृतरूप ब्रह्मलोक किस कारणविषे ओतप्रोतहै ॥ हेशिष्य केवलशास्त्रप्रमाणकरिकैजानणेयोग्य जोआत्माकावास्तवस्वरूपहै ॥ सो जभी गार्गीने आपणीमूर्खतातैं अनुमानप्रमाणकीरीतिकरिकैपूछा ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि गार्गीकेप्रतिकहताभया याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेगार्गी ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा केवलशास्त्रप्रमाणकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ यातैं शास्त्रप्रमाणकरिकैही आत्माकास्वरूप तुम्हारेकूंपूछणेयोग्यथा ॥ परंतु तामर्यादाकापरित्यागकरिकै अनुमानकीरीतिसे जोतुमने आत्माकाप्रश्नकऱ्याहै॥ सोतुम्हाराप्रश्न व्यर्थहै॥काहेतैं सर्वकाअधिष्ठानआत्मा किसीअनुमानकाविषयहैनहीं यातैं ॥ हेगार्गी॥ सर्वकाअधिष्ठानरूपआत्मादेवता अनुमानरीतिसे तुमने कदाचित्नहींपूछणा॥ और॥हेगार्गी॥विचारतैंरहितहोइकेजोतूं दुराग्रहतैं अतिप्रश्नकरैगी॥ तौ तुम्हारामस्तक भूमिविषेपतनहोवैगा ॥ काहेतैं जोपुरुष परमउत्कृष्टपदार्थकूं निकृष्टपदार्थकेसमानदेखेहै ॥ तापुरुषकूं परमअनर्थकीप्राप्तिहोवैहै ॥ जैसे अर्ज्जुनके हस्तविषेस्थित जो पाशुपतअस्त्रहै सो अन्यशरकेसमान होणेयोग्यहै ॥ अस्त्रत्वधर्मवालाहोणेतैं ॥ दूसरेशरकीन्याई ॥ याप्रकारकेअनुमानकरिकै पाशुपतअस्त्र अन्यशरकेसमान करणेयोग्यनहीं ॥ और जोकोईपुरुष दुराग्रहकरिकै तापाशुपतअस्त्रकूं अन्यशरकेसमानकरैहै ॥ तौ सोपाशुपतअस्त्र ता विपरीतदर्शीपुरुषके मस्तककूंछेदनकरिकै भूमिविषेगिडावैहै ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे अथर्वणवेदतैंउत्पन्नभयेजे मारणेकेमंत्रहैं ॥ तेमंत्रभी अतिक्रोधकरिकैयुक्त दुर्वासामुनिकेहृदयदेशविषेस्थितहोवे ॥ तेमंत्र यद्यपि प्राकृतमंत्रोंकेसमान होणेयोग्यनहीं ॥ तथापि जोपुरुष दुराग्रहकरिकै तिनमंत्रोंकूं प्राकृतमंत्रोंकेसमानकरैहै ॥ तौ तेअथर्वणवेदकेमंत्र ताविपरीतदर्शीपुरुषकेमस्तककूं भूमिविषेगिडावैहैं ॥ तैसे ॥ हेगार्गी ॥ अनुमानकाअविषयजो

आत्माहै ताकूं जलादिकोंकीन्याई अनुमानकाविषयमानिके जोतूं आत्माका अतिप्रश्नकरैगो ॥ तौ तुम्हाराभीमस्तक भूमिविषेपतनहो वैगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेवचनकूं श्रवणकरिके सोगार्गी अत्यंतभयकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और अरुणऋषिकापुत्र जोउ द्दालकनामाऋषिहै ॥ ताकेमुखकीओरदेखिके सोगार्गी पुनःप्रश्नकरणेतें निवृत्तहोतीभई ॥ तिसतेंअनंतर सोउद्दालकऋषि अत्यंतक्रो धवान्होइके पूर्वअग्निदेवतानें उपदेशकऱ्याजो अत्यंतगुह्यअर्थहै ता गुह्यअर्थकाप्रश्न याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति करताभया ॥ तहाँ भुज्युकीन्याई आपणेविद्याकीउत्कृष्टताबोधनकरणेवासतें सोउद्दालक प्रथम आपणेपूर्ववृत्तांतकूं कथनकरताभया ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य पूर्वब्रह्मचर्यआश्रमविषे हमबहुतब्रह्मचारी वेदोंकेअध्ययनकरणेवासतें मद्रदेशविषे पतंचलनामाब्राह्मणकेगृहविषे स्थितहोतेभये ॥ और किसीकालविषे तापतंचलनामाब्राह्मणकीस्त्रीकेशरीरविषे पिशाचकीन्याई अग्निदेवता प्रवेशकरताभया ॥ तिसतेंअनंतर पतंचलगुरुकेसहित हमसंपूर्णब्राह्मण ताअग्निदेवतासे पूछतेभये ॥ तूंकौनहैं ॥ तिसतेंअनंतर सोअग्निदेवता हमसंपूर्ण ब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेब्राह्मणो ॥ आथर्वण हमारागोत्रहै ॥ और कबंध हमारानामहै ॥ तुमसंपूर्णब्राह्मणोंके उपकारवासतें यास्त्रीकेशरीरविषे हमने प्रवेशकऱ्याहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ याप्रकारकावचनकहिके सोअग्निदेवता हमसंपूर्णशिष्योंकरिके परिवेष्टित पतंचलनामाहमारेगुरुकेताई याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेपतंचल ॥ जैसे मालाकेपुष्पोंकूं सूत्र धारणकरैहै ॥ तैसे यहसंपूर्णभूतभौतिकप्रपंच जिससूत्रकरिके बांध्याहुआहै ॥ तासूत्रकूं तूं जाणताहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी अग्निदेव ताने हमारेगुरुकेप्रति कऱ्या ॥ तभी सोपतंचलनामा हमारागुरू अग्निदेवताकेप्रति कहताभया ॥ हेअग्निदेवता ॥ संपूर्ण जगत्कूं जिस सूत्रने धारणकऱ्याहै तासूत्रकूं हम नहींजाणते ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ याप्रकारकाउत्तर जभी हमारेगुरुनेकह्या ॥ तभी सोअग्निदेवता पुनः हमारेगुरुसे पूछताभया ॥ हेपतंचल ॥ जोसर्वजगत्काप्रेरकअंतर्यामीहै तिसकूं तूं जाणताहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ याप्रकारकादूसराप्रश्न जभी अग्निदेवताने हमारेगुरुसेपूछा ॥ तभी सोपतंचलनामा हमारागुरु यहउत्तर देताभया ॥ हेअग्निदेवता अंतर्यामीकेस्वरूपकूंभी हमनहींजाणते

हेयाज्ञवल्क्य ॥ पतंचलनामा हमारेगुरुने जभी अग्निदेवताकेप्रति सूत्रका तथा अंतर्यामीका स्वरूपनहींकह्या ॥ तभी सोअग्निदेवता कृपाकरिके युक्तहुआ पतंचलनामा हमारे गुरुकेप्रति कहताभया॥हेपतंचल॥हमने जोतुम्हारेसे सूत्रका तथाअंतर्यामीका स्वरूपपूछाहे ॥ तासूत्रकूं तथा अंतर्यामीकूं जोपुरुषजाणताहे॥सोपुरुष सर्वज्ञभावकूंप्राप्तहोवैहे॥तात्पर्ययह॥सोपुरुष परमात्माकूं तथाभूरादिकसप्तलोकोंकूं तथा संपूर्णदेवतावोंकूं तथासंपूर्णप्राणियोंकूं तथापंचभूतोंकूं तथा आत्माकूं इत्यादिकसर्वपदार्थोंकूं जाणताहे ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ याप्रकार सूत्रअंतर्यामीकेज्ञानकोउत्कृष्टता कथनकरिकै सोअग्निदेवता हम संपूर्णब्राह्मणोंकेप्रति तासूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं कथन करताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ ताअग्निदेवताकेउपदेशकरिकै हमसूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं भलीप्रकार जाणतेहैं ॥ और तूं तासूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं न जाणिकरिकै जोसर्वब्राह्मणोंकीगौवों आपणेगृहविषेलेजावैगा ॥ तो शीघ्रही तुम्हारामस्तक भूमिविषेपतनहोवैगा ॥ हेशिष्य याप्रकारकाप्रश्न जभी उद्दालकनेकन्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हे उद्दालक ॥ पूर्व अग्निदेवताने जोतुम्हारेप्रति सूत्रका तथाअंतर्यामीका स्वरूपकह्याहे ॥ तासूत्रकूं तथाअंतर्यामीकूं हम भलीप्रकारजाणतेहैं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिनें उद्दालककेप्रति कह्या ॥ तभी सोउद्दालक क्रोधवान् होइके याज्ञवल्क्यकेप्रति कहताभया ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जैसे अज्ञानोपामरपुरुष हमसर्वअर्थकूंजाणतेहैं याप्रकारकेवचन उच्चारणकरैहैं ॥ तैसे तूंभी हमसूत्रकूंजाणतेहैं हम अंतर्यामीकूंजाणतेहैं याप्रकारकावचनमात्र उच्चारणकरैहैं ॥ परंतु सूत्रकेस्वरूपकूं तथा अंतर्यामीके स्वरूपकूं तूं कथनकरतानहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहे ॥ तेरेकूं सूत्रका तथा अंतर्यामीका ज्ञाननहीं ॥ काहेतें जिसपुरुषकूं जापदार्थकाज्ञानहोवैहे ॥ सोपुरुष हमजाणतेहैं याप्रकारकेवचनमात्रका उच्चारणकरतानहीं ॥ किंतु तापदार्थकेस्वरूपका कथनकरताहे ॥ यातें हे याज्ञवल्क्य ॥ जोतूं सूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं जाणताहे ॥ तौहमारेप्रति कथनकरो ॥ और जोतूं सूत्रअंतर्यामीकेस्वरूपकूंनहींजाणता ॥ तो हम सूत्रअंतर्यामीकूंजाणतेहैं याप्रकारकी व्यर्थगर्जना मतकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी

उद्दालकऋषिने याज्ञवल्क्यकेप्रतिकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेउद्दालक ॥ जोतुमने सर्वजगत्केबंधनकाकारण सूत्रपूछाथा सोसूत्र प्राणरूपवायुहे ॥ काहेतें जैसे तंतु पटकूंधारणकरैहैं ॥ तैसे यहप्राणरूपवायु इस लोककूं तथाअन्यलोककूं तथा सर्वभूतप्राणियोंकूं धारणकरैहै ॥ याकारणतैंही मरणकालविषे जभी प्राणोंकालोकांतरविषे निर्गमन होवैहै ॥ तभी हस्तपादादिकसंपूर्णअवयव शिथिलहोइजावैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सूत्रकेनिर्गमनहुए मालाकेपुष्प शिथिलहोइजावैं हैं ॥ याप्रकारकी लोकप्रसिद्धयुक्तिकरिकेभी प्राणकूंही सूत्ररूपतासंभवैहै ॥ यहाँ प्राणवायुशब्दकरिके समष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरीरकाग्रहण करणा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिने सूत्रकास्वरूपकह्या ॥ तभी सोउद्दालक याज्ञवल्क्यकेवचनकूं अंगीकारकरता भया ॥ और पुनःसोउद्दालक प्रश्नकरताभया ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जोपूर्व अग्निदेवताने हमारेप्रति सूत्रकास्वरूप कह्याथा॥सोईही सूत्रकास्वरूप तुमने हमारेप्रतिकह्या॥यातें सूत्रकेस्वरूपविषे हमपुनः प्रश्नकरतेनहीं॥परंतु अंतर्यामीकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारजभी उद्दलकने अंतर्यामीकास्वरूप पूछा ॥ तभीसोयाज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउद्दालक ॥ जोसर्वज्ञ परमात्मादेव पृथिवी जल अग्निभुवलोक वायु स्वर्ग आदित्य दिशा चंद्रतारक आकाश अंधकार तेज या द्वादशअधिदेवोंविषे श्रुतिने कथनकऱ्याहे ॥ और जोपरमात्मादेव स्थावरजंगमरूप सर्वअधिभूतोंविषे श्रुतिनें कथनक ऱ्याहे ॥ और जोसर्वज्ञपरमात्मादेव प्राण वाक् चक्षु श्रोत्र मन त्वक् बुद्धि उपस्थइंद्रिय याअष्टप्रकारकेअध्यात्मोंविषे श्रुतिने कथनकऱ्या हे ॥ और जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिक एकवीसस्थानोंविषे स्थितहुआभी तिनपृथ्वीआदिकस्थानों तें भिन्नहीरहैहै ॥ जैसे गृहवालापुरु ष आपणेगृहतैंभिन्नहोवैहै ॥ तैसे जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिकों तैंभिन्नहोवैहै ॥ और जिनपृथिवीआदिकोंके अंतरस्थित परमात्मादेव है ॥ ते पृथिवीआदिकभी जिसपरमात्मादेवकूं नहींजाणिसकते ॥ और जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिकोंकूं नियमकरिके आपणेआपणेका र्यविषे प्रवृत्तकरणेवासतैं किसीदूसरेशरीरकूं ग्रहणनहींकरता किंतु जैसे अस्मदादिकजीवोंका शुक्रशोणितकाविकाररूप यहशरीर

है ॥ तैसे जिसपरमात्मादेवके पृथिवीआदिकहीशरीरहै ॥ और जैसे राजा आपणेभृत्योंकूं नानाप्रकारकेव्यापारोंविषे नियमकरिके प्रवृत्तकरैहै ॥ तैसे जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिकोंकेअभिमानी चेतनरूपलिंगशरीरोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे नियमकरिके प्रवृत्तकरैहै ॥ सोमायाका अधिपतिपरमात्मादेवही अंतर्यामीहै ॥ यातैं हेउद्दालक ॥ जोअंतर्यामीकास्वरूप तुमनैं पूर्वपूछाथा ॥ सोअंतर्यामीपरमात्मादेव तुम्हारा तथाहमारा तथासर्वजीवोंका आत्मारूपहै ॥ कैसाहैसोअंतर्यामी ॥ जन्म मरण क्षुधा तृषा शोक मोह याषट्ऊर्मियोंतैं रहितहै ॥ हेशिष्य॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति पृथिवीआदिकोंविषे एकवीसवारअंतर्यामीकेस्वरूपका उपदेशकरताभया॥ तात्पर्ययह ॥ जोपृथिवीविषेस्थितहै और पृथिवीतैंभिन्नहै ॥ और पृथिवीजिसकूंजाणतीनहीं ॥ और पृथिवीजिसकाशरीरहै ॥ और जोपृथिवीकूंआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरैहै ॥ सोपरमात्मादेव हेउद्दालक तेराअंतर्यामीअमृतहै ॥ इसप्रकारजलादिकोंविषेभीजानिलेणा ॥ याप्रकार पृथिवीआदिकोंविषे एकवीसवार अंतर्यामीकास्वरूपकहिकरिके सोधर्मात्मायाज्ञवल्क्यमुनि नेतिनेति याश्रुतिकूंअंगीकारकरिके सर्वधर्मोंकेनिषेधकरणेहारे जेअदृष्टत्वादिकआत्माकेधर्महैं तिनोंकूं कथनकरताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउद्दालक यहअंतर्यामीपरमात्मादेव ज्ञानवान्पुरुषकेनेत्रोंकरिकैभी देख्याजावैनहीं ॥ तथा श्रवणोंकरिके यहअंतर्यामीदेव सुन्याजावैनहीं ॥ और मनकरिके चिंतनकर्‍याजावैनहीं ॥ और शुद्धबुद्धिकरिकैभी निश्चयकर्‍याजावैनहीं॥ याप्रकार अन्यकिसीइंद्रियकरिकैभी यहअंतर्यामीपरमात्मादेव जान्याजावैनहीं॥ यातैं यहपरमात्मादेव अदृष्टत्वअश्रुतत्वादिकधर्मोंवालाहै ॥ और यहअंतर्यामीआत्मा दृष्टि श्रुति मति विज्ञाति याप्रकारकेबुद्धिवृत्तियोंकूं प्रकाशकरैहै याकारणतैं अंतर्यामीआत्माकूं द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता इत्यादिकनामोंकरिके श्रुति कथनकरैहै ॥ और हेउद्दालक ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंके तथाबुद्धिआदिकोंके जितनेकबाह्य अंतर व्यापारहैं ॥ तिनसंपूर्णव्यापारोंकूं यह अंतर्यामीआत्मा जाणताहै ॥ परंतु नेत्रादिकइंद्रिय ताअंतर्यामीपरमात्माकूं जाणिसकतेनहीं ॥ यातैं अंतर्यामीआत्मातैंभिन्न कोईपदार्थ द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता रूपनहीं ॥ किंतु अंतर्यामीआत्माहीं द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञातारूपहै ॥ यातैं हेउद्दालक यहअंतर्यामीपरमात्मादेवही तुमाराआत्माहै ॥ अंतर्यामी

तैंभिन्न तुम्हाराआत्मानहीं ॥ काहेतें जोपदार्थ चेतन्यरूपपरमात्मातैंभिन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थ जडहोवैहै ॥ और जोपदार्थ जडहोवै है ॥ सोपदार्थ घटादिकोंकीन्याई उत्पत्तिनाशवान्होवै है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाउत्तर जभीयाज्ञवल्क्यमुनिने उद्दालकऋषिकेप्रति कथनकऱ्या ॥ तभी सोउद्दालकऋषि पुनःप्रश्नकरणेतें उपरामहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर वचक्नुकूऋषिकीपुत्री गार्गीनामास्त्री सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेब्राह्मणो ॥ तुमसंपूर्ण हमारावचन श्रवणकरो ॥ इस याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति मैं दोप्रश्नकरतीहूं ॥ जोयहब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनि तिनदोनोंप्रश्नोंकाउत्तर हमारेप्रति कहैगा ॥ तौ तुमसंपूर्णब्राह्मणोंविषे कोईभीब्राह्मण याज्ञवल्क्यकूंजीतसकैगानहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अनेकखद्योतजंतुवोंविषे कोईभीखद्योत सूर्यकूंजीतसकेनहीं ॥ तैसे कोईभीब्राह्मण याज्ञवल्क्यकूं जीतसकैगानहीं ॥ यातैं तुमसंपूर्णब्राह्मण हमारेकूं प्रश्नकरणेकीआज्ञादेवो ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ब्राह्मणोंकीआज्ञातैंविनाहीं गार्गी याज्ञवल्क्यकेप्रति किसवासते प्रश्न नहींकरतीभई ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिके सोगार्गी ब्राह्मणोंतें आज्ञालेतीभई ॥ सोविचारयहहै ॥ जोकदाचित् किसीब्राह्मणने आपणेमनविषे प्रश्नकरणेकाआरंभकऱ्याहोवै ॥ और मध्यविषे मैं स्त्रीकेप्रश्नकूंश्रवणकरिके सोब्राह्मण क्रोधवान्होइके मेरेकूंशापदेवेगा ॥ यातैं सर्वब्राह्मणोंकीआज्ञालेके मैं प्रश्नकरों ॥ याप्रकारकाविचारकरिके सोबुद्धिमतीगार्गी ब्राह्मणों तैंआज्ञालेतीभई ॥ तिसतैंअनंतर ते सर्वब्राह्मण गार्गीकूं प्रश्नकरणेकीआज्ञादेतभये ॥ और तिनब्राह्मणोंकीआज्ञाकूंपाइके सोगार्गी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ यालोकविषे जैसे तूं प्रसिद्धहै ॥ तैसे मैंगार्गीभी प्रसिद्धहूं ॥ और जैसे तूं अधिकबुद्धिमान्है ॥ तैसे मैंगार्गीभी अधिकबुद्धिमतीहूं ॥ काहेतें नीतिशास्त्रविषे पुरुषोंकीअपेक्षाकरिके स्त्रियोंकीबुद्धि तथाअविवेक तथाधैर्य तथाकाम तथाक्रोध चारिगुणअधिक कह्याहै ॥ तिनसर्वस्त्रियोंविषे सरस्वतीकेसमान मैं तीक्ष्णबुद्धिवालीहूं॥ शंका ॥ हेगार्गी तेरी कोनऐसीबुद्धिहै ॥ जिसबुद्धिकरिके तूं सर्वतैंअधिक आपणेकूंमानेहै ॥समाधान ॥हेयाज्ञवल्क्य॥ सर्वजगत्विषे आत्मबुद्धिही हमारेअधिकताकाकारणहै ॥ याकारणतैं मैं सर्वजगत्कूं पुरुषभावतैंरहितमानतीहूं ॥ एकआपणेकूंहीं पुरुष

मानतीहूं ॥ काहेतें जगत्‌विषे जितनेकी स्त्री पुरुष नपुंसकहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं मैं आत्मरूपकरिकेदेखतीहूं ॥ यातेंयहसिद्धभया ॥ जिसकूं सर्वत्रव्यापकआत्माकाज्ञानहै सोईही पुरुषहै ॥ और जिसकूं व्यापकअद्वितीयआत्माकाज्ञाननहींभया ॥ ऐसेअज्ञानीजीव नपुंसकहैं अथवास्त्रियां हैं ॥ अब अज्ञानीजीवोंविषे नपुंसकपणादिखावैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ शक्तिहीनकूं लोकविषे नपुंसककहैहैं ॥ याप्रकारका नपुंसककालक्षण अज्ञानीजीवोंविषेहीघटेहै ॥ काहेतें यहअज्ञानीजीव अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेस्थित जोआनंदस्वरूपस्वप्रकाशआत्माहै ताकेजानणेविषेभी समर्थहोते नहीं ॥ यातें यहसंपूर्णअज्ञानीजीव नपुंसकहैं ॥ अब अज्ञानीजीवोंविषे स्त्रीपणा दिखावै हैं ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ उच्चस्तनोंवालीमैंगार्गी स्त्रीनहींहूं ॥ किंतु जिनपुरुषोंकूं आनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकाज्ञाननहींभया ॥ तेअज्ञानीपुरुषहीं स्त्रीहैं ॥ काहेतें जैसे लोकप्रसिद्धस्त्रियोंका आपणेतेंभिन्नपतिहोवैहै ॥ और तापतिकेसर्वदा स्त्री अधीनरहे है ॥ कदाचित्‌भी स्त्री स्वतंत्रहोवैनहीं ॥ तैसे अज्ञानीजीवोंकेभी आपणेतैंभिन्नपतिहैं ॥ सर्वदा अज्ञानीजीवरूपीस्त्री तिनपतियोंके अधीनरहैहैं ॥ यातें अज्ञानीजीवही स्त्रीहैं ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ तिनस्त्रियोंविषेभी यहअज्ञानीजीव वारांगनास्त्रीकेसमानहै ॥ काहेतें जैसे वारांगनास्त्रीकूं बहुतपुरुषभोगैहैं ॥ तैसे याअज्ञानीजीवरूपीस्त्रीकूंभी काम क्रोध लोभ मोहादिक अनेकपति भोगैहैं ॥ यातें यहसंपूर्णअज्ञानीजीव वारांगनास्त्रीकेसमानहैं ॥ और मेरेविषे काम क्रोधादिकहैंनहीं ॥ यातें मैंहीं पुरुषहूं ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ जैसे लोकप्रसिद्धस्त्री पुरुषकेसंबंधतें गर्भकूंधारणकरै है ॥ तैसे यहअज्ञानीजीवभी कालरूपीपुरुषकेसंबंधतें सप्तमधातुवीर्यरूपगर्भकूंधारणकरै हैं ॥ याकारणतैंभी यहअज्ञानीजीवही स्त्रीहैं ॥ अब कामादिकविकारोंकाअभाव आपणेविषेदिखावैहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ मैंगार्गी वरयौवनअवस्थाविषेस्थितहूं ॥ तथा सर्वयुवानपुरुषोंकेमध्यविषेस्थितहूं ॥ तथापिमैं किंचित्‌मात्रभी कामादिकविकारोंकूं नहींप्राप्तहोती ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ जैसे एकांतदेशविषे स्त्री नग्नहोवैहै ॥ तैसे सभाकेमध्यविषे मैंनग्नस्थितहूं ॥ और यहसंपूर्णब्राह्मण कामादिकविकारोंके भयकरिके युक्तहैं ॥ यातें मेरीतरफ देखतेभीनहीं ॥ और मेरादेहअभिमान निवृत्तभयाहै ॥ यातें यासंपूर्णब्राह्मणोंकूं मैं नेत्रोंकरिके देखतीहूं ॥ तथा आपणेहस्तोंकरिके स्पर्शकरतीहूं ॥

तथापि हमारेविषे किंचित्मात्रभी कामादिकविकार नहींहोते ॥ यातें मैं स्त्रीनहीं ॥ किंतु अज्ञानीजीवही स्त्री हैं ॥ शंका ॥ हेगार्गी शास्त्रदृष्टिकरिके यद्यपि तेरेविषेस्त्रीपणानहींहै ॥ तथापि लोकदृष्टिकरिके तेरेविषे स्त्रीपणाहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ लोक दृष्टिकरिकेभी स्त्रीशब्दकाअर्थ जिसविषेघटेहै ॥ सोईही स्त्रीहै ॥ और मेरेविषेस्त्रीशब्दकाअर्थ घटतानहीं ॥ यातें मैं किसप्रकार स्त्रीहो वोंगी किंतु मैंस्त्रीनहीं ॥ अब व्याकरणकोरीतिसे स्त्रीशब्दकेअर्थकूं दिखावेहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ याप्रकारकेशब्दोंकासमूह जिसप्राणी विषेहोवे ॥ ताप्राणीकूं बुद्धिमानपुरुष स्त्रीकहेहैं ॥ तेशब्द यहहैं ॥ मैं समीचीन वधूहूं ॥ और मैं यौवनअवस्थाकरिकेयुक्तहूं ॥ और मैं सुंदरस्तनोंवालीहूं ॥ औरयालोकविषे मेरे समान कोईस्त्री सुंदरनहीं ॥ और यहपतिमेराहै और यहमेरेपुत्रहैं ॥ और यहमेरी पुत्रियाँहैं ॥ और यहधन तथाअन्न मेरेगृहविषेहै ॥ और मैं वंध्याहूं ॥ और मैं बहुतकुटंबवालीहूं इसतेंआदिलेके अहंममअभिमानक रिके उत्पन्नभयेजेनानाप्रकारकेशब्द ॥ तिनशब्दोंकासमूह जिसजिसअज्ञानीजीवविषे वर्तेहै ते अज्ञानीजीवही यालोकविषेस्त्रियाँहैं और हेयाज्ञवल्क्य ॥ जेप्राणी आनंदस्वरूपआत्माके ज्ञानकरिकेपूर्णहै ॥ तिनप्राणियोंकूंश्रुतिपुरुषकहेहैं ॥ तेआत्मज्ञानकरिकेयुक्त प्राणी शरीरकरिकेस्त्रीहोवैं ॥ अथवा पुरुषहोवैं ॥ अथवा नपुंसकहोवैं ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभीज्ञानीकोहानिनहीं ॥ सर्वथा आत्मज्ञानवानहीं पुरुषहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ जैसेएकहीनट आपणीमायाकरिके स्त्रियोंकूंमोहनकरणेहारा सुंदरपुरुषरूपकूं धारणकरेहै ॥ और क्षणमा त्रविषे सोनट पुरुषकेधैर्यकूंनाशकरणेहारी सुंदरस्त्रीकेरूपकूं धारणकरैहै ॥ और क्षणमात्रविषे सोनट नपुंसककेरूपकूंधारणकरैहै ॥ परंतु तास्त्रीआदिककल्पितरूपोंकरिके तानटका पूर्वला वास्तवस्वरूप अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ तैसे एकहीयहआनंदस्वरूपआत्मा आप णीमायाकरिके कभी पुरुषशरीरकूंग्रहणकरैहै ॥ और कभी स्त्रीशरीरकूंग्रहणकरैहै ॥ और कभीनपुंसकशरीरकूंग्रहणकरैहै ॥ परंतु तिन कल्पितशरीररूपउपाधियोंकरिके आत्माकावास्तवएकत्वरूप निवृत्तहोवेनहीं॥और हेयाज्ञवल्क्य॥ जैसे एकहीपुरुष स्वप्नविषे निद्रादोष तें पुरुष स्त्री हस्ति अश्व इत्यादिकअनेकरूपोंकूंप्राप्तहोवैहै॥परंतु तिनकल्पितरूपोंकरिके स्वप्नद्रष्टापुरुषकावास्तवस्वरूपनिवृत्तहोवेनहीं॥

तैसे एकहीपरमात्मादेव आपणीमायाकरिकै स्त्रीपुरुष नपुंसक हस्ति अश्व इत्यादिक अनेकरूपोंकूंधारणकरैहै ॥ परंतु तिनकल्पितरूपों करिकै आत्माकावास्तवस्वरूप निवृत्तहोवैनहीं॥यातें हेयाज्ञवल्क्य॥आत्मज्ञानरूपीपुरुषभावकरिकै युक्त तथासर्वज्ञताकरिकैयुक्त मैंगार्गी वाक्रूपीधनुषविषे प्रश्नरूपीदोबाणोंकूंधारणकरिकै तुम्हारेहननकरणेवासतै आईहूं॥यातें हेयाज्ञवल्क्य ॥ वादरूपयुद्धविषे जोतुम्हारा सामर्थ्यहोवै ॥ तौ धैर्यकूंधारणकरिकै हमारेसाथ वादरूपयुद्धकरो ॥ और जोतुम्हारेकूंवादरूपयुद्धकरणेकासामर्थ्यनहींहोवै ॥ तौ हमारेआगेनम्रताभावकरो ॥ यादोनोंप्रकारोंविषे जैसीतुम्हारीरुचिहोवैसोकरो ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ जैसे काशीराजदिवोदासकापुत्र प्रतर्दननामाराजा एकलाही धनुषबाणकूंलेके इंद्रकेसाथयुद्धकरणेवासतैं स्वर्गविषेप्राप्तहोताभया ॥ और जैसे यहजनकराजा सुवर्णमणिरत्नोंकरिकैजडितधनुषकूंग्रहणकरिकै तथा लोहमय तीक्ष्णबाणोंकूं हस्तविषेग्रहणकरिकै शत्रुवोंकेपीडाकरणेवासतैं युद्धविषे तिनशत्रुवोंकेसनमुखस्थितहोवैहै ॥ तैसे धैर्यकूंधारणकरिकै मैंगार्गीभी प्रश्नरूपीबाणोंकरिकै तुम्हारेहननकरणेवासतै यहाँस्थितहूं ॥ यातें हेयाज्ञवल्क्य ॥ तिनप्रश्नोंकेउत्तरकूं जोतुंजाणताहै ॥ तौ हमारेप्रतिकथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेवचन जभी गार्गीने याज्ञवल्क्यके प्रतिकहे ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि गार्गीकेप्रति कहताभया ॥ हेगार्गी ॥ जोतुम्हारेकूंप्रश्नकरणाहै सोनिःशंकहोइकेकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोगार्गी प्रश्नकरतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जोसूत्रआत्माकास्वरूप शास्त्रवेत्तापुरुषोंने ब्रह्मांडकेऊपरले कपालतैंऊपरस्थित कथनकऱ्याहै ॥ और जिससूत्र आत्माकास्वरूप शास्त्रवेत्तापुरुषोंनें ब्रह्मांडकेनीचलेकपालतैंभीनीचेस्थित कथनकऱ्याहै ॥ और जिससूत्रआत्माकास्वरूप दोनोंब्रह्मांडकपालोंकेमध्यविषेकथनकऱ्याहै ॥ और जिससूत्रआत्माकास्वरूप शास्त्रवेत्तापुरुषोंनें भूत भविष्यत् वर्त्तमान स्वरूपसकलप्रपंचरूप कथनकऱ्याहै ॥ सोसूत्रआत्मा किसकारणविषे ओतप्रोतहुआवर्त्तैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहप्रश्नतौ पूर्वहीगार्गीनेकऱ्याथा ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिने याप्रश्नका उत्तरभी पूर्वहीकह्याथा ॥ यातें गार्गीने पुनः यहप्रश्न किसवासतैंकऱ्या ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ पूर्व अनुमानरूपतर्ककूंग्रहणक

रिकै गार्गीने यहप्रश्नकऱ्याथा ॥ और अभी शास्त्र कीरीतिकूं ग्रहणकरिकै गार्गीने प्रश्नकऱ्याहै ॥ याप्रकारकीविलक्षणता बोधनकरणे वासतैही पूर्वउत्तरप्रश्नविषे शब्दोंकाभेद गार्गीने राख्याहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभीगार्गीने कऱ्या तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि गार्गीकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ जो तुमने सूत्रआत्मारूपकार्यका कथनकऱ्याहै ॥ सोसूत्रआत्मारूपकार्य आवर्णविक्षेपशक्तिवाले अव्याकृतरूपआकाशविषे ओतप्रोतहोइकेरहैहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाउत्तर जभी याज्ञवल्क्यमुनिने गार्गीकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोगार्गी याज्ञवल्क्यकूंनमस्कारकरिकै कहतीभई ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ प्रथमप्रश्नकाउत्तर तुमने हमारेप्रतिकह्या ॥ अभी दूसराप्रश्न मैं तुम्हारेप्रति करतीहूं तुम सावधानहोइकै ताप्रश्नकाउत्तरकहो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी गार्गीनेकह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्य कहताभया ॥ हेगार्गी ॥ निःशंकहोइकै तुम दूसराप्रश्नकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यके वचनकूं श्रवणकरिकै सोगार्गी जोप्रथमप्रश्नविषे सूत्रआत्माकाआधारपूछाथा ॥ सोईही पुनःदूसरीवार पूछतीभई ॥ और याज्ञवल्क्यनेभी जोप्रथमप्रश्नकेउत्तरविषे सूत्रआत्माका अव्याकृतरूपआकाश आधारकह्याथा ॥ सोईही द्वितीयप्रश्नकेउत्तरविषे कहताभया॥शंका॥ हेभगवन् ॥ प्रथमप्रश्नकूं दूसरीवारकरणेविषे गार्गीका क्याअभिप्रायहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जिसअभिप्रायकरिकै गार्गीने प्रथमप्रश्नकूं दूसरीवारकऱ्याहै ॥ ताअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो ॥ जैसे गृह केवलस्तंभोंकेआश्रितरहैनहीं ॥ किंतुस्तंभोंके तथा भित्तियोंके आश्रितरहैहै ॥ तैसे सूत्रआत्मारूपकार्यभी अव्याकृतरूपआकाशविषे तथाअन्यकिसीकारणविषे रहताहोवैगा ॥ याप्रकारकेअभिप्राय करिकै गार्गी प्रथमप्रश्नकूं पुनःदूसरीवार करतीभई ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि प्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं पुनःदूसरीवार किस वासतैं कहताभया ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जिसअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं प्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं दूसरीवार कथनकऱ्याहै ॥ तिसअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो ॥ सूत्रआत्मारूपकार्य अव्याकृतरूपआकाशतैंविना अन्यकिसीकेआश्रितरहतानहीं ॥ किंतु जैसे मेघ केवलभूताकाशके आश्रितरहैं हैं ॥ तैसे यहसूत्रआत्मारूपकार्यभी केवलअव्याकृतरूपआकाशके आश्रितहोइरहैहै ॥ याअभिप्राय

करिके याज्ञवल्क्यमुनिने प्रथमउत्तरकूंहीं पुनःदूसरीवार कथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाउत्तर जभी याज्ञवल्क्यमुनिने गार्गीकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोगार्गी पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिसेपूछतीभई ॥ गार्ग्युवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य सोअव्याकृतरूपआकाश किसविषे ओतप्रोतहोइकेरहैहै ॥ याप्रश्नकरणेविषे गार्गीका यहअभिप्रायहै ॥ अव्याकृतरूपआकाशकाअधिष्ठान जोआत्माहै ॥ सोमनवाणीकाअविषयहै ॥ यातें ताआत्माकूं जोयाज्ञवल्क्य नहींकथनकरैगा ॥ तो अप्रतिभारूप निग्रहस्थानकूं प्राप्तहोवैगा ॥ और जोयहयाज्ञवल्क्य मनवाणीकेअविषय आत्माकूंकथनकरैगा ॥ तो विप्रतिपत्तिरूप निग्रहस्थानकूं प्राप्तहोवैगा ॥ दोनोंप्रकारतें याज्ञवल्क्यका पराजयहीहोवैगा ॥ तहाँ कथनकरणेयोग्यअर्थकेअज्ञानकूं अप्रतिभाकहै हैं ॥ और विरुद्धकथनकूंविप्रतिपत्तिकहै हैं ॥ और पराजयकेकारणकूं निग्रहस्थानकहै हैं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी गार्गीनेकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि गार्गीकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी सर्वलोकोंके बुद्धिआदिकोंकासाक्षी तथानित्यहीअपरोक्ष जोआत्मारूपअक्षरहै॥ताअक्षरविषे यहअव्याकृतआकाश ओतप्रोतहोइकेरहैहै ॥ यहाँ अव्याकृतआकाशशब्दकरिके मूलाज्ञानका ग्रहणकरणा ॥ सोमूलाज्ञान जीवके तथाईश्वरके आश्रित रहता नहीं ॥ किंतु जीवईश्वर विभागतैंरहित जोशुद्धचैतन्यहै ॥ ताकेआश्रित मूलाज्ञानरहैहै ॥ और सोशुद्धचैतन्यरूपआत्मा सर्वत्रव्यापक है ॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ यातें शुद्धआत्माहीअक्षरहै ॥ ताआत्मारूपअक्षरकेआश्रित अव्याकृतआकाशरहै है अब पूर्वउक्त अप्रतिभा तथाविप्रतिपत्ति रूपनिग्रहस्थानकीनिवृत्तिवासतें अनात्मपदार्थोंकेनिषेधद्वारा अक्षरआत्माकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेगार्गी ॥ जैसे घट बिल्वफलकीअपेक्षाकरिके स्थूलहोवै है ॥ और पर्वतकीअपेक्षाकरिके सोघट सूक्ष्महोवै है ॥ याप्रकार जितनेकिस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णोंतें यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै ॥ और तृणकीन्याई जितनेक ह्रस्वपदार्थहैं ॥ तथा तालवृक्षकीन्याई जितनेकिदीर्घपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्ण ह्रस्वदीर्घपदार्थोंतें यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै और अग्निकीन्याई जितनेक रक्तवर्णवालेपदार्थहैं ॥ तिनोंतैंभी यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै ॥ और जलकीन्याई जितनेकस्नेहवालेपदार्थ हैं ॥ तिनोंतैंभी यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै ॥ और छायासदृशभूमिकी

न्याई जितनेककृष्णवर्णवालेपदार्थहैं ॥ तिनोंतैंभी यह अक्षरआत्मा विलक्षणहै ॥ और तमालवृक्षकोन्याई श्याम तथा अंधकारकीन्याई नेत्रोंकूंनिरोधकरणेहारे जितनेकपदार्थहैं ॥ तिनोंतैंभी यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै ॥ और यहअक्षरआत्मा गतिसेरहितहै ॥ यातैं गतिमान् वायुतैंभी विलक्षणहै ॥ और यहअक्षरआत्मा छिद्रतैंरहितहै ॥ यातैं छिद्रवान्आकाशतैंभी विलक्षणहै और यहअक्षरआत्मा अमूर्तहै ॥ तथा संगतैंरहितहै ॥ यातैं मूर्तसंगवान्तेजतैंभी विलक्षणहै ॥ और यहअक्षरआत्मा मधुरादिकरसोंतैंरहितहै॥ यातैं मधुररसवालेजलतैंभी विलक्षणहै ॥ और यहअक्षरआत्मा गंधतैंरहितहै ॥ यातैं गंधवालीपृथ्वीतैंभी विलक्षणहै ॥ और हेगार्गी ॥ याअक्षरआत्माका पंचज्ञानइंद्रिय तथा पंचकर्मइंद्रियभी स्वरूपनहीं ॥ और याअक्षरआत्माका मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचतुष्टयअंतःकरणभी स्वरूपनहीं ॥ और याअक्षरआत्माका प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्रकारकाप्राणभी स्वरूपनहीं ॥ और मोक्षपर्यंतहैस्थितिजिसकी ऐसाजो दोनोलोकोंविषेगमनकरणेहारा सूक्ष्मशरीरहै ॥ सोभी याअक्षरआत्माकास्वरूपनहीं ॥ और अद्वितीयआत्माकेभेदकरणेहारा जोअविद्यारूप कारणशरीरहै ॥ सोभी अक्षरआत्माकास्वरूपनहीं ॥ और हेगार्गी ॥ जोयहअक्षरआत्मा केवलअंतरहीहोवे ॥ तो बाह्यकेपदार्थोंकूं कौनप्रकाशकरेगा ॥ और जोयहअक्षरआत्मा केवलबाह्यहीहोवे ॥ तो अंतरकेपदार्थोंकूंकौनप्रकाशकरेगा आत्मातैं भिन्न सर्वपदार्थ जडरूपहैं॥यातैं तिनोंविषे प्रकाशतासंभवेनहीं॥और यहअक्षरआत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै अंतरबाह्य सर्वपदार्थोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ यातैं सर्वकासाक्षी अक्षरआत्मा अंतरबाह्यपणेतैंरहितहै॥और यहअक्षरआत्मा निर्विकारअसंगहै यातैं भोक्तापणेतैं तथाभोग्यपणेतैंरहितहै ॥ और हेगार्गी ॥ जैसे आकाशविषे मेघोंकासमूह तथाअंधकार प्रतीतहोवेहै ॥ और जैसे रज्जुविषे सर्पदंडादिक प्रतीतहोवें हैं॥तैसे याअक्षरआत्माविषे यहसंपूर्णजगत् प्रतीतहोवेहै तात्पर्ययह॥जैसे मेघादिकोंकरिकै आकाशकाभेद होवेनहीं॥और जैसे कल्पित सर्पादिकोंकरिकै रज्जुकाभेद होवैनहीं तैसे कल्पितप्रपंचकरिकै अधिष्ठानरूपअक्षरआत्माका भेद होवैनहीं ॥यातैं अक्षरआत्मासर्वभेदतैंरहितहै॥हेशिष्य॥इतनेग्रंथकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनें उपाधितैंरहित अक्षरआत्माकास्वरूप कथनकऱ्या॥ताअक्षरआत्माकास्वरूप ॥जिनपु

रुषोंकेचित्तविषे नहीं आवता ॥ तिनपुरुषोंकेअनुग्रहवासतैं मायाविशिष्टअंतर्यामीकेजनावणेहारोलिंगोंकूं दिखावैं हैं ॥ अप्रत्यक्षपदार्थकूं जोजनाइदेवै ताकूं लिंगकहैं हैं ॥ जैसे पर्वतविषे अप्रत्यक्षअग्निकूं धूमरूपीलिंग जनावैहै ॥हेगार्गी ॥ जैसे भृत्य नियमकरिके राजाकीआज्ञा विषेवर्तै है॥तैसे यह सूर्यचंद्रमाभी नियमकरिके जगत्केव्यवहारकूंचलावैहैं॥यातैं यहजान्याजावैहै ॥ कोईसर्वज्ञपरमात्मादेव सूर्यचंद्रमाका अधिपतिहै ॥ जिसपरमात्माकीआज्ञाकरिके यहसूर्यचंद्रमा नियमसैंवर्तैहैं ॥ यातैं सूर्यचंद्रमाकी नियमसेप्रवृत्ति अंतर्यामीकेजनावणेहारा लिंगहे॥औरहेगार्गी॥जोजोपदार्थ गुरुत्वधर्मवालाहोवैहै॥तिसका किसीआधारतैंविना नीचैपतनहोवैहै ॥जैसे गुरुत्वधर्मवालेवस्त्रादिक पुरुष रूपआधारतैंविना भूमिविषेपतनहोवैहैं॥तैसे संपूर्णभूतप्राणियोंकेभारकूंधारणकरणेहारीपृथिवी तथास्वर्ग यहदोनोंभी गुरुत्वधर्मवालेतौहैं॥ परंतु तिनोंका नीचेपतनहोतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ कोईसर्वज्ञपरमात्मादेव पृथिवीके तथास्वर्गके धारणकरणेहाराहै ॥ यातैं गुरुत्वधर्मवालीपृथिवीकी तथास्वर्गकी स्थितिभी परमात्माकेजनावणेहारालिंगहै ॥ और हेगार्गी ॥ जैसेराजाकरिके प्रेरणाकरेहुएभृत्य नियमसे कार्यकरैहैं ॥ तैसे निमेषतैंआदिलेके संवत्सरपर्यंत जितनाक मुहूर्त प्रहर दिन पक्ष मास ऋतु रूपकालहै ॥ सोकाल नियम करिके सर्वभूतप्राणियोंके हितकूं तथाअहितकूं करैहै ॥ तथा सर्वपदार्थोंकेआयुष्कीगणतीकरैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ कोईसर्वज्ञपर मात्मादेव कालकेप्रेरणाकरणेहाराहै ॥ यातैं नियमपूर्वक कालकीप्रवृत्तिभी परमात्माकेजनावणेहारालिंगहै ॥ और हेगार्गी ॥ हिमालया दिकपर्वतोंतैं उत्पन्नभइयां जेनानाप्रकारकी गंगादिकनदियां ॥ तिनगंगादिकनदियोंका उत्पत्तिकालविषे जिसजिस पूर्वादिकदिशावों विषे प्रवाहभयाहै ॥ तिसीतिसी पूर्वादिकदिशावोंविषे अबपर्यंत नियमसे प्रवाह चल्याजावैहै ॥ कदाचित्भी तिनोंका अन्यथाभावहोता नहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ कोईसर्वज्ञपरमात्मादेव गंगादिकनदियोंकूं नियमसेचलावणेहाराहै ॥ यातैं गंगादिकनदियोंका नियमसे प्रवाहभी अंतर्यामीपरमात्माकेजनावणेहारालिंगहै ॥ और हेगार्गी ॥ शास्त्ररीतिसैं दानकरताजोधर्मात्मापुरुषहै ॥ तिसकी प्रामाणिकशिष्ट पुरुष स्तुतिकरैहैं॥और ताधर्मात्मापुरुषकूं शिष्टपुरुष आश्रयणकरैहैं॥और जोपुरुष प्रमादकरिके द्यूतादिकविसनविषे द्रव्यका खरचकरैहै

तिसप्रमादीपुरुषकी प्रामाणिकशिष्टपुरुष उपेक्षाकरैहैं तथानिंदाकरैहैं ॥यातैं यहजान्याजावैहै ॥ कोई कर्मकेफलकाप्रदाता सर्वज्ञपरमात्मा देवहै॥जिसकेभयतैं प्रामाणिकशिष्टपुरुष धर्मात्मापुरुषकूं आश्रयणकरैहैं॥तथा ताकीस्तुतिकरैहैं ॥ और जोसर्वज्ञपरमात्माकूं न अंगीकार करिये ॥ तो जैसे प्रमादीपुरुषकी प्रामाणिकशिष्टपुरुष उपेक्षाकरैहैं तथानिंदाकरैहैं ॥ तैसे धर्मात्मा पुरुषकी प्रामाणिकशिष्टपुरुष उपेक्षा तथानिंदा किसवासतैंनहींकरते ॥ यातैं याप्रकारका प्रामाणिकशिष्टपुरुषोंकाव्यवहारभी सर्वज्ञपरमात्माकेजनावणेहारालिंगहै ॥ और हेगार्गी ॥यज्ञकर्तापुरुषकूं देवता आश्रयणकरैहैं ॥ और श्राद्धादिककर्मकर्त्तापुरुषकूं पितर आश्रयणकरैहैं ॥ यातैं सर्वकार्यविषेसमर्थ देवतावोंका तथापितरोंका जोमनुष्यकेअधीनजीवनहै॥ सोभी अंतर्यामीपरमात्माकेजनावणेहारा लिंगहै ॥ यातैं हेगार्गी ॥जिसअक्षरआत्माके आश्रित अव्याकृतआकाश हमने पूर्वकथनकऱ्याथा॥तिसीअक्षरआत्माकी आज्ञाविषे यहसंपूर्णजगत् वर्तताहै॥और हेगार्गी॥याअक्षरआत्माकूं नजाणिकरिकै जोपुरुष यज्ञ दान तप होम इत्यादिकअनेककर्मोंकूं बहुतकालपर्यंत करताहै ॥ तिसअज्ञानीपुरुषकूं तेयज्ञादिककर्म नाशवान्फलकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ मेरेस्वरूपकेअज्ञानहुए संपूर्णयज्ञादिककर्म नाशवान्फलकूं उत्पन्नकरैं ॥ याप्रकारकानियम जिसपरमात्मा देवने कऱ्याहै ॥ ऐसे परमात्माविषे असंभावनाकरणी योग्यनहीं ॥ और हेगार्गी ॥ जैसे कृमिकरिकैयुक्तश्वानकूं देखिकरिकै संपूर्णलोक ताश्वानकाशोककरैहैं॥तैसे अधिकारी मनुष्यशरीरकूंपाइके याअक्षरआत्माकूं नजाणिकरिकै जोपुरुष मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥ सोअज्ञानीपुरुषकृपणहै॥तथासर्वलोकोंकेशोककाविषयहै॥और हेगार्गी॥जोपुरुष याअक्षरआत्माकूंजाणिकरिकै याशरीरकापरित्यागकरैहै॥ सोविद्वान्पुरुष यालोकविषेकृतकृत्यहै॥और सोईहीपुरुष ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणहै॥शिष्यउवाच॥ हेभगवन् ॥याज्ञवल्क्यमुनिने गार्गीकेप्रति जैसे अक्षरआत्माकेज्ञानकाउपदेशकऱ्या॥तैसे अक्षरआत्माके ज्ञानकेसाधनोंकाउपदेश किसवासतैंनहींकऱ्या॥श्रीगुरुरुवाच॥ हेशिष्य ॥ गुरुमुखतैंवेदांतशास्त्रकाश्रवण तथामनन तथानिदिध्यासन यहतीनों अक्षरआत्माकेज्ञानकेसाधनहैं॥तेश्रवणादिकसाधन पूर्वकहोलब्राह्मणकेप्रति याज्ञवल्क्यमुनिने कहेथे॥और गार्गीनेभी तिनसाधनोंका श्रवणकऱ्याथा॥याअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै याज्ञवल्क्यमुनिने पुनःगार्गीकेप्रति

श्रवणादिकसाधन नहींकहे ॥ अथवा ॥ याज्ञवल्क्यमुनिने ब्रह्मसाक्षात्काररूपफलवान्पुरुषकूं ब्राह्मणकह्या ॥ सोब्रह्मसाक्षात्काररूपफल श्रवणादिकसाधनोंतेंविना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातें जैसेकिसीवृद्धकुमारीकूंइंद्रनेकह्या ॥ हमारेसें तूं वरमांग ॥ आगेतें सोवृद्धकुमारी यहवर मांगतीभई ॥ मेरेपुत्र कांस्यकेपात्रविषे क्षीरकूंभोजनकरें ॥ याप्रकारकेवचनकरिके सोवृद्धकुमारी पति पुत्र धन इत्यादिकसर्वपदार्थोंकूंले तीभई ॥ तैसे ब्रह्मसाक्षात्काररूपफलकेकथनकरणेकरिके याज्ञवल्क्यमुनिने संपूर्णश्रवणादिकसाधन कथनकरे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मायाविशिष्टअंतर्यामीकास्वरूप याज्ञवल्क्यमुनिने पूर्वउद्दालककेप्रति कथनकरऱ्याथा ॥ और गार्गीनेभी सोश्रवणकरऱ्याथा ॥ और अभी विनाहींपूछेतें याज्ञवल्क्यमुनिने गार्गीकेप्रति पुनःअंतर्यामीकास्वरूप किसवास्तैंकह्या ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जिसअभिप्रायकरिके याज्ञवल्क्यमुनिने पुनःअंतर्यामीकास्वरूप गार्गीकेप्रति कह्याहे ॥ ताअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो ॥ उद्दालकब्राह्मणकेप्रति द्वितीयप्रश्नकेविचारविषे जोअंतर्यामी कथनकऱ्याथा ॥ सोअंतर्यामी अक्षरआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोअंतर्यामी अक्षरआत्मारूपहे ॥ तात्पर्ययह॥शुद्धआत्माकूं अक्षरकहैंहैं ॥ सोशुद्धआत्माहीं जभी मायारूपउपाधिकूंअंगीकारकरिके जगत्के उत्पत्ति स्थिति लय नियमन प्रवेशइत्यादिककार्योंकूंकरेहे ॥ तभीताअक्षरआत्माकूं अंतर्यामीकहैंहैं॥यातेंअक्षरआत्मातैं अंतर्यामीभिन्ननहीं॥याअर्थकेबोधनकरणेवासते याज्ञवल्क्यमुनिने पुनःअंतर्यामीकेस्वरूपकूं कथनकऱ्याहे ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ यहअक्षरआत्मा नेत्रादिकसर्वदृश्यप्रपंचका साक्षीहे ॥ यातें ताअक्षरआत्माकूं नेत्रादिकदृश्यप्रपंच जाणिसकैनहीं ॥ और जैसे भित्तितें घट भिन्नहोवैहे ॥ तैसे द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता रूपजोयहजीवात्माहे ॥ सो ताअक्षरआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु यहजीव अक्षरआत्मारूपहे ॥ यातें हेगार्गी स्थूलसूक्ष्मप्रपंचरूप विक्षेपकाकारण तथा आत्माकूंआच्छादनकरणेहारा जोअव्याकृतआकाशहे ॥ सो अव्याकृतआकाश याअक्षरआत्माविषेहीरहेहे ॥ हेशिष्य ॥ याज्ञवल्क्यरूपीमेघतें उत्पन्नभयाजोवाक्यरूपीअमृत ॥ कैसाहेसोवाक्यरूपीअमृत ॥ श्रद्धावान्पुरुषोंके कर्णोंकेतापकूंहरणेहाराहे याकारणतें अत्यंतदुर्लभहे ॥ ऐसेअमृतरूपीवचनकूंश्रवणकरिके सोगार्गीअत्यंतआनंदकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और कृपाकरिकेयुक्तहुई

सोगार्गी सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेसर्वब्राह्मणो ॥ तुमसर्वब्राह्मणोंकोसभाकेमध्यविषे मैंगार्गी पक्षपाततैंरहितहोइके एकवचन कहतीहूं ॥ तावचनकूं तुम सर्वब्राह्मण सावधानहोइकेश्रवणकरो ॥ यालोकविषे यद्यपि हमने बहुतप्रकारके पुरुषदेखेहैं ॥ तथापि याज्ञवल्क्यकेसमान कोईपुरुष हमने नहींदेख्या ॥ अब आत्मज्ञानयुक्त यहयाज्ञवल्क्यहीपुरुषहै याअर्थकेबोधन करणेवासते आत्मज्ञानतैंरहित अज्ञानीजीवोंकीनिंदाकूं दिखावैहै ॥ हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे हमने केईकपुरुष धवलगृहकेसमानदेखे हैं ॥ तात्पर्ययह॥जैसे धवलगृह दूरसेरमणीकलागैहै॥और भीतरजडताकरिकैयुक्तहै॥तैसे केईकपुरुष दूरसेतो रमणीकलागतेहैं॥औरभीतरतमोगुणकरिके जडतायुक्तहैं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे हमने केईकपुरुष भारवाहीवृषभकेसमानदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह॥जैसे वृषभ आपणे प्रयोजनतैंविनाहीं भारकूंउठावैहै ॥ तैसे कोईकपुरुष शास्त्रकूंपढिकरिके अन्यलोकोंकेप्रतितो शास्त्रकेअर्थकाउपदेशकरतेहैं ॥ परंतु आपणे मनविषेरंचकमात्रभी शास्त्रकेअर्थकूंनहींधारणकरते॥यातैं व्यर्थहीं शास्त्ररूपीभारकूंउठावैहैं॥और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषेहमनेकेईकपुरुष शुकसारिकाकेसमानदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे शुकसारिकापक्षी सुंदरशब्दोंकाउच्चारणकरैं ॥ परंतु तिनशब्दोंकेअर्थकूंजाणतेनहीं॥ तैसे केईकपुरुष सुंदरशब्दोंकूंउच्चारणकरतेहैं ॥ परंतु तिनशब्दोंकेअर्थकूंजाणतेनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे हमने केईकपुरुष विशालनेत्रोंवालेभी अंधपुरुषकेसमानदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अंधपुरुष अत्यंतसमीपवर्त्तिपदार्थोंकूंभी देखतानहीं ॥ तैसे केईकपुरुष अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेवर्तमान आत्माकूंभीदेखतेनहीं ॥ और हेब्राह्मणो॥यालोकविषे हमने केईकपुरुष चित्रलिखित मूर्तिकेसमान देखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे चित्रलिखित मूर्ति देखणेविषे बहुतसुंदरलागैहै ॥ परंतु किसीकार्यकरणेविषे सोमूर्ति समर्थहोवैनहीं ॥ तैसे केईकपुरुष देखणेविषेबहुतसुंदरलागतेहैं ॥ परंतु किसीकार्यकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो॥यालोकविषे हमने केईकपुरुष कुपथ्यभोजनकेसमान देखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे कुपथ्यभोजन प्रथम आनंदकाहेतुहोवैहै ॥ और परिणामकालविषे दुःखकाकारणहोवैहै ॥ तैसे केईकपुरुष सभाविषे लोकोंकेप्रति सत्यअर्थकाउपदेशकरिके किंचित्मात्रप्रसन्नताकूंउत्पन्नकरैं हैं ॥ और एकांतदेशविषे असत्य

अर्थकाउपदेशकरिके दुःखकाकारणहोवै हैं॥और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे हेमन केईकपुरुष व्याघ्रकेसमानदेखेहैं॥तात्पर्ययह॥जैसे व्याघ्र मृगादिकपशुवोंकाहननकरैहै॥तैसे केईकपुरुष शरीर मन वाणी करिके सर्वदा जीवोंकोहिंसाकरैहै॥औरहेब्राह्मणो यालोकविषे हमने केईक पुरुष मदिरापानकरिके मत्तवानरकेसमानदेखेहैं॥तात्पर्ययह ॥ जैसे मदिरापानकरिके मत्तहुआवानर अत्यंतचंचलहोवैहै॥तैसे केईकपुरुष अज्ञानरूपीमदिरापानकरिके शास्त्रविरुद्ध नानाप्रकारकोचेष्टाकरैहैं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे हमनें केईकपुरुष कामरूपीशत्रुके वशहुए देखेहैं ॥ और केईकपुरुष हमने क्रोधरूपीशत्रुकेवशहुएदेखेहैं ॥ और केईकपुरुष हमने लोभमोहादिकशत्रुवोंकेवशहुएदेखेहैं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ वेदोंकूं तथावेदकेअंगोंकूं जानणेहारेजेदेवतापुरुषहैं ॥ तेभी सत्व रज तम यातीनगुणोंकरिकेयुक्तहैं ॥ यातें विषयोंविषे रागवान्ही हमने देखेहैं ॥ और तिनदेवतापुरुषोंके स्वप्नविषे तथाजाग्रत्विषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जाग्रत्विषे जोनिद्राकाविरोधीपणाहै ॥ यहही जाग्रत्विषे स्वप्नतेंविलक्षणताहै ॥ सोविलक्षणता त्रिगुणअभिमानीदेवतावोंकेजाग्रत्विषेसंभवैनहीं ॥ काहेतें तिनदेवतावोंने अद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिके आपणे अज्ञानकोनिवृत्तिकरीनहीं ॥ और जबपर्यंत जीवोंकूं अद्वितीयआत्माकासा क्षात्कारनहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत अज्ञानकीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ और त्रिगुणअभिमानीदेवतापुरुषोंकूं जोब्रह्मकाज्ञानहोवैहै ॥ सोभी अज्ञान रूपीनिद्राविषेहीहोवैहै ॥ ताज्ञानकरिके तिनोंकेमूलाज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे कितनेकपुरुष व्याकरण शास्त्रकूंपढें हैं ॥ ताव्याकरणकरिके पदार्थोंकेज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवैहै ॥ और कितनेकपुरुष मीमांसाशास्त्रकूंपढें हैं ॥ तामीमांसाशास्त्रकरिके वाक्यार्थज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवैहै ॥ और कितनेकपुरुष न्यायशास्त्रकूंपढें हैं ॥ तान्यायशास्त्रकरि के प्रमाणज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवैहै ॥ और कितनेकपुरुष धर्मशास्त्रकूंपढें हैं ॥ ताधर्मशास्त्रकरिके धर्मअधर्मकेज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवैहै ॥ इसप्रकार अन्यशास्त्रकूंभीपढिके तिसोतिसोअर्थविषे तिनोंकीबुद्धि कुशलदेखीतीहै ॥ परंतु अद्विती यब्रह्मकाप्रतिपादक जोवेदांतशास्त्रहै ॥ ताकेअर्थविषे तिनपुरुषोंकेबुद्धिकीकुशलता देखीतीनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे जिनपुरु

षोंकूं वेदांतशास्त्रकेअर्थकाज्ञानभीहै ॥ सोज्ञानभी समग्रनहीं ॥ किंतु यत्किंचित्अर्थकाज्ञानहै ॥ तायत्किंचित्अर्थकेज्ञानतें संशयकीनि वृत्तिहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जिनपुरुषोंकूं समग्रवेदांतशास्त्रकेअर्थकाज्ञानभीहै ॥ तौभी कामक्रोधादिकप्रतिबंधोंकेवशतें सोज्ञान तिनपुरुषोंकेमूलाज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे समर्थहोतानहीं॥दृष्टांत॥जैसे अग्निकेसंबंधकरिके नष्टहुईहै शक्तिजिनोंकी ऐसेजेभूनेधानहैं ॥ तेधान किसीफलकूंउत्पन्नकरतेनहीं ॥ तैसे कामक्रोधादिकप्रतिबंधोंकरिकैयुक्तहुआज्ञान तिनपुरुषोंकेमूलाज्ञानकीनिवृत्तिकरतानहीं ॥ अब कामक्रोधादिकोंकोअपेक्षाकरिके अहंकारविषे ज्ञानकीमुख्यप्रतिबंधकतादिखावैं हैं ॥ हेब्राह्मणो जैसे अपराधीचौरपुरुषोंकेबंधनकागृह स्तंभोंकेआश्रितरहैहै ॥ तिनस्तंभोंविषेभी एकमध्यकास्तंभ मुख्यहोवैहै ॥ और दूसरेकोणोंकेस्तंभ गौणहोवैं हैं ॥ तैसे अज्ञानीजीवोंकेबंधन कागृह यहसंसार कामक्रोधादिकस्तंभोंके आश्रितरहैहै ॥ तिनस्तंभोंविषेभी यहअहंकार मध्यकामूलस्तंभहै ॥ और कामक्रोधादिक कोणोंकेस्तंभहैं ॥ और जैसे कोणस्तंभोंकेनाशहुएभी जबपर्यंत मूलस्तंभविद्यमानहोवैहै ॥ तबपर्यंत गृहकानाशहोवैनहीं ॥ तैसे कामक्रोधादिकोंकेनिवृत्तहुएभी जबपर्यंत यहअहंकार विद्यमानहोवैहै॥तबपर्यंत यासंसारकीनिवृत्तिहोतीनहीं॥यातें आत्मज्ञानविषे मुख्यप्रतिबंधकहै अब अहंकारकी सर्वत्रव्यापकतादिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ यहअहंकार सर्वजीवोंविषेस्थितहै ॥ अहंकारसेरहित कोईभीजीव मैं नहींदेखती काहेतें या जनकराजाकेयज्ञविषे सर्वदेशोंकेविद्वान्ब्राह्मण एकठेहुएहैं ॥ तिनोंविषे कितनेकब्राह्मण एक कामदोषतेंरहितहैं॥और कितनेक ब्राह्मण काम क्रोध दोनोंदोषतेंरहितहैं ॥ और कितनेकब्राह्मण काम क्रोध लोभ मोह इत्यादिकबहुतदोषोंतेंरहितहैं॥परंतु अहंकारतेंरहित कोईभीब्राह्मण मैं देखतीनहीं ॥ यातें अहंकार सर्वत्रव्यापकहै ॥ अब अहंकारविषे दुर्विज्ञेयतादिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो॥अहंकारतेंभिन्न जितनेककाम क्रोध लोभ मोहादिकदोषहैं ॥ तिनोंविषे बुद्धिमान्पुरुष शास्त्रप्रमाणतें तथाआपणेअनुभवतें दुःखकीकारणताजाणिके तिनकामादिकोंकापरित्यागकरैहैं ॥ परंतु अहंकारविषे जोदुःखकीकारणताहै ॥ सो शास्त्रप्रमाणतें तथाअनुभवतें जाणीजावैनहीं ॥ काहेतें सर्वशास्त्रकेवेत्ता जेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तिनोंविषेभी अहंकारदेखीताहै ॥ जो शास्त्रप्रमाणतें तथाअनुभवप्रमाणतें तिनविद्वान्पुरुषोंने अहंकारविषे

दुःखकीकारणताजाणीहोवे ॥ तौ किसवास्तै पुनःअहंकारकरतेहैं ॥ यातैं तिनशास्त्रवेत्तापुरुषोंने अहंकारविषे दुःखकीकारणता नहीं जाणी ॥ याअर्थविषे शास्त्रवेत्ता तुमसर्वब्राह्मणहीं दृष्टांतहो ॥ अब अहंकारविषेयालोकपरलोकके दुःखकीकारणतादिखावैहै ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे मदिरापानकरिकै पुरुष विपरीतदर्शीहोवैहै तैसे अहंकाररूपीमदिरापानकरिकै यहपुरुष विपरीतदर्शीहोवैहै॥और ताविपरीतदर्शनकरिकै यहअहंकारीपुरुषआपणेमातापिताका तथाअन्यबांधवोंका तथादेवतावोंका तथापंडितब्राह्मणोंका निरदार करैं हैं ॥ और कृष्णसर्पकेसमान शीघ्रहीमृत्युकेकारणजेराजेहैं ॥ तिनोंकीभी अहंकारीपुरुष अवज्ञाकरैं हैं और सोयेहुएसर्पकेसमान मृत्युकेकारण जेबुद्धिमान् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यहैं ॥ तिनोंकीभी सोअहंकारीपुरुष अवज्ञाकरैं हैं ॥ याप्रकार सर्वजीवोंकीअवज्ञाकरणेहारा जोअहंकारीपुरुषहै ॥ सो यालोकविषे शीघ्रही प्राणांतदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सर्वप्राणियोंकीअवज्ञाकरिकै उत्पन्नभयाजोपापहै ॥ तापापकर्मकरिकै सोअहंकारी पुरुष मरिकै रौरवनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यालोकविषे तथापरलोकविषे अहंकारही जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ हेब्राह्मणो ॥ याप्रकारका अहंकारदोष इसयाज्ञवल्क्यविषेहैनहीं ॥ यातैं कामक्रोधादिकदोपभी याज्ञवल्क्यविषेनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे व्यापकअग्निकेअभावहुए व्याप्यधूम तहांरहेनहीं ॥ तैसे व्यापकअहंकारकेअभावहुए व्याप्यकामक्रोधादिक तहांरहैंनहीं ॥ यातैं हेब्राह्मणो तीनलोकोंविषे यहयाज्ञवल्क्यही एकपुरुषहै ॥ याज्ञवल्क्यकेसमान कोईदूसरापुरुषनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिविषे सर्वत्रपूर्णकूं पुरुषकह्याहै ॥ और याब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनिकरिकै स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णजगत् पूर्णहोइरह्याहै ॥ यातैं यहयाज्ञवल्क्यही एकपुरुषहै तात्पर्ययह ॥ श्रुतिने ब्रह्मकूं सर्वत्रपूर्ण कह्याहै ॥ और ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ब्रह्मकूंजानणेहारापुरुष ब्रह्मरूपहोवैहै ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं ब्रह्मरूपताकहीहै ॥ यातैं ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनिविषे सर्वत्रपूर्णतासंभवैहै ॥ हेब्राह्मणो ॥ ऐसायाज्ञवल्क्यकास्वरूप मैंगार्गीने शास्त्रप्रमाणकरिकै तथाआपणे अनुभवतैं निश्चयकऱ्याहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ दूसराएकआश्चर्य तुमदेखो ॥ नचक्षुषागृह्यतेनापिवाचा ॥ अर्थयह ॥ मांसमयचक्षुकरिकै तथावाणीकरिकै आत्मा जान्याजावैनहीं ॥ याप्रकारकाश्रुतिवाक्य असत्यकीन्याहै मेरेकूंप्रतीतहोताहै ॥ काहेतैं श्रुतिनेतो यहकह्याहै ॥

सर्वत्रपूर्णपुरुष मांसमयनेत्रोंकरिकै देख्याजावैनहीं॥और मैंगार्गी यामांसमयनेत्रोंकरिकै सर्वत्रपूर्णयाज्ञवल्क्यपुरुषकूं आपणेसन्मुखदेखती हूं॥ यातैं ताश्रुतिवाक्यविषे सत्यपणेकीसंभावनाहोवैनहीं॥ और हेब्राह्मणो॥ वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ सो श्रुतिवाक्य सत्यहीहै॥ काहेतैं मांसमयनेत्रोंकरिकै तुमसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेवास्तवस्वरूपकूं जाणतेनहीं॥ और मैंगार्गीतौ शास्त्रप्रमाण तथाअंतरअनुभव यादोनोंकरिकैयुक्तजोनेत्रहैं॥ तानेत्रोंकरिकै याज्ञवल्क्यकेवास्तवस्वरूपकूंजाणतीहूं॥केवलमांसमयनेत्रकरिकै मैंभी नहींजाणती॥दृष्टांत जैसे सोऽयंदेवदत्तः॥ याप्रत्यभिज्ञाज्ञानविषे अतीत तथाअंशकेज्ञानमें केवलनेत्रइंद्रियकूंकारणतानहीं॥ किंतु पूर्वसंस्कारसहकृतनेत्रइंद्रियकूंकारणताहै॥ तैसे यापूर्णपुरुषकेज्ञानविषेभी केवलनेत्रइंद्रियकूंकारणतानहीं॥ किंतु शास्त्रप्रमाण तथाअंतरअनुभव यादोनोंकरिकैयुक्तनेत्रइंद्रियकूं कारणताहै॥ यातैं पूर्वउक्तश्रुतिकाविरोधनहीं॥ और हेब्राह्मणो॥ जिसमातापितातैं यहब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्य उत्पन्न भयाहै॥ सोमातापिताभी धन्यहै॥ और जिसपृथ्वीऊपर यहयाज्ञवल्क्य विचरताहै॥ सोपृथ्वीभी धन्यहै॥ और यासभाविषे मुझगार्गीकूं तथाजनकराजाकूं तथातुमसंपूर्णब्राह्मणोंकूं इसयाज्ञवल्क्यमुनिका दर्शनभयाहै॥ तथा ताकेवचनोंकाश्रवणभयाहै॥ यातैंमैंगार्गी तथाजनकराजा तथातुमसंपूर्णब्राह्मण धन्यधन्यहैं॥ और हेब्राह्मणो॥ याजगत्‌विषे याज्ञवल्क्यकेसमान कोईपुरुष पूर्वहुआ नहीं॥ और इदानींकालविषे कोईहैनहीं॥ और आगेकोईहोवैगानहीं॥ यातैं हेब्राह्मणो॥ शीतलचंदनकेसमान तथाक्षीरसमुद्रके समान जोयहयाज्ञवल्क्यहै॥ ताकाविवादरूपीमथन तुम मतकरो॥ जोतुमब्राह्मण अहंकारकरिकै याज्ञवल्क्यकेसाथ विवादकरोगे॥ तो जैसे अतिमथनकरिके क्षीरसमुद्रतैं कालकूटविष उत्पन्नभयाथा॥ तथा अतिमथनकरिकै जैसे चंदनतैं अग्निउत्पन्नहोवैहै॥ तैसे याज्ञवल्क्यमुनितैं शापरूपीकालकूटविष तथाशापरूपीअग्नि उत्पन्नहोवैगा॥ ताशापरूपीअग्निकरिकै तुमसर्वब्राह्मणोंकानाशहोवैगा॥ यातैं याज्ञवल्क्यकेसाथ तुम विवादमतकरो॥ किंतु दोनोलोकोंविषेदुःखकादेणेहारा जोअहंकारहै॥ ताकापरित्यागकरिकै तुमसर्वब्राह्मण याज्ञवल्क्यगुरुकूं नमस्कारकरो॥ और हेब्राह्मणो॥ आत्माकेअपरोक्षज्ञानवाला जोयहयाज्ञवल्क्यहै॥ तिसकेसाथ परोक्षज्ञानवालेहमोंनैं व्यर्थही विवादका

आरंभकऱ्याहै ॥ ताविवादकरिकै हमारेकूं दुःखकोहीप्राप्तिहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे एकपुरुषकूं नेत्रोंकरिकै काशीकाअपरोक्षज्ञानभयाहै ॥ और दूसरेपुरुषकूंशब्दप्रमाणकरिकै काशीकापरोक्षज्ञानभयाहै ॥ तिसपरोक्षज्ञानवालेपुरुषका अपरोक्षज्ञानवालेपुरुषकेसाथ ॥ काशीकेस्वरूपनिर्णयकरणेविषे विवादसंभवैनहीं ॥ तैसे आत्माकेअपरोक्षज्ञानवान् याज्ञवल्क्यकेसाथ आत्माकेपरोक्षज्ञानवाले हमसंपूर्णोंका विवादसंभवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ पूजाकरणेयोग्य आत्मज्ञानरूपीसमुद्र जोयहयाज्ञवल्क्यहै ॥ तिसकूं उल्लंघनकरणेवासतैं हमप्रतिवादियोंने विवादरूपीपादकरिकै स्पर्शकऱ्याहै ॥ यातैं हमारेविषे महान्पापकीउत्पत्तिभई है ॥ तापापकेनिवृत्तिकाउपाय दूसराकोईहैनहीं ॥ किंतु याज्ञवल्क्यकेताईं वारंवार नमस्कारकरणाही तापापकेनिवृत्तिकाउपायहै ॥ यातैं हेब्राह्मणो ॥ तापापकीनिवृत्तिवासतैं तथामनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिवासतैं तुमसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेताईं नमस्कारकरो ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभीकहीहै ॥ आत्मज्ञंह्यर्चयेद्भूतिकामः ॥ अर्थयह ॥ इसलोकके तथापरलोकके धनपुत्रादिकपदार्थोंकोकामनावाला जोसकामपुरुषहै ॥ सो शरीरकरिकै तथाधनकरिकै ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषकीसेवाकरै ॥ तासेवाकरिकै सर्वमनवांछितपदार्थ तिसपुरुषकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ १ ॥ यातैं हेब्राह्मणो ॥ याज्ञवल्क्यकेजीतणेकी इच्छाकापरित्यागकरिकै तुमसर्वब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेताईं नमस्कारकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेवचन सर्वब्राह्मणोंकेप्रतिकहिकै सोगार्गी याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं प्रणामकरिकै पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर गार्गीकेवचनरूपीअमृतकेपानकरिकै निवृत्तहुएहैं अहंकारादिकदोषजिनोंके ऐसेजेआश्वलादिकसर्वब्राह्मणहैं ॥ तेसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेताईं नमस्कारकरतेभये॥तिनब्राह्मणोंविषेभी केईकब्राह्मण मस्तककरिकै प्रणामकरतेभये ॥ और केईकब्राह्मण वाणीकरिकै नमस्कारकरतेभये ॥ और केईकब्राह्मण मनकरिकै नमस्कारकरतेभये ॥ एकविदग्धनामा शाकल्यब्राह्मण भावीमृत्युकरिकै मोहितहुआ याज्ञवल्क्यकेताईं नमस्कार नहींकरताभया ॥ और जन्मकालकेनक्षत्रहैं॥ भाविअर्थ केबोधकजिनोंके ऐसेजेज्योतिषशास्त्रकेजानणेहारेविद्वान्हैं ॥ ते शाकल्यकेजन्मनक्षत्रोंकूंदेखिकरिकै याप्रकारकाभावीअर्थ निश्चयकरतेभये ॥ यहशाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ विविधप्रकारकीईर्षाकरिकै दग्धहोवैगा ॥ याप्रकारकेभा

वीअर्थकूंजाणिके ते ज्योतिष्शास्त्रकेजानणेहारेपंडितशाकल्यका विदग्धनामरासतेभये॥और शास्त्रविषेबुद्धिमान्पुरुषकूंभीविदग्धकहेहैं॥ यातेंसोविदग्धनाम शाकल्यकेबुद्धिमान्पणेकूंबोधनकरताहुआ शाकल्यकेमातापिताकूं आनंदकीप्राप्तिकरताभया॥ और वास्तवतेंविचा रकरिकेदेखियेतो विदग्धशब्दका प्रथमअर्थही शाकल्यविषेघटैहै ॥ विदग्धशब्दका दूसराअर्थ शाकल्यविषेघटतानहीं॥ काहेतें जोबु द्धिमान्पुरुषहोवैहै ॥ सो आपणेहितकारीवचनोंकूं अंगीकारकरैहै ॥ और यहशाकल्यतो गार्गीके हितकारीवचनोंकूं श्रवणकरिके उलटा क्रोधवान्होताभया॥ दृष्टांत॥ जैसे सर्पकेप्रति दुग्धपानकरायाहुआभीविषकीहीवृद्धिकरैहै॥ तैसे गार्गीकेहितकारीवचनभी शाकल्यके क्रोधकाहेतु होतेभये॥यातें शाकल्यविषे बुद्धिमान्पणा संभवेनहीं॥अब विदग्धशब्दकाप्रथमअर्थ शाकल्यविषे दिखावैहैं॥हेशिष्य॥याज्ञ वल्क्य सूर्यभगवान्तैंविद्याकूंप्राप्तभयाहै॥याप्रकारकावचन जिसदिनविषे शाकल्यनेश्रवणकऱ्या॥तिसदिनतैंलेके सोशाकल्य विविधप्रकार कीईर्षाकरिकेदग्धहोताभया॥और याज्ञवल्क्य सूर्यभगवान्तैं शुक्लयजुर्वेदकूंप्राप्तभयाहै॥याप्रकारकावचन जोकिसीप्रसंगपाइके किसीपुरुष केमुखतैंशाकल्य श्रवणकरे॥तौतिसवचनकहणेहारेपुरुषकेप्रति याप्रकारकाकठोरवचन सोशाकल्य कहताभया॥ यहयाज्ञवल्क्य जैसे सूर्यभगवान्तैं शुक्लवर्णवालेयजुर्वेदकूं प्राप्तभयाहै॥तैसे चंद्रमातैं रक्तवर्णवाले अथर्वणवेदकेकांडकूंभी प्राप्तभयाहै॥ तथा भौमतैं हरितवर्ण वाले ऋग्वेदकेकांडकूंभी प्राप्तभयाहै॥याप्रकारके उपहासयुक्त कठोरवचनोंकूं रात्रिदिनविषे सोशाकल्य लोकोंकेप्रति कथन करताभया॥ और याज्ञवल्क्यकीनिंदाकूं नहींसहनकरणेहारे जेसज्जनपुरुषहैं॥ तिनोंने याज्ञवल्क्यकेसाथ विवादकरावणेवासते शाकल्यकूंप्रेरणा करीभी॥ तौभी मेरेसमानयाज्ञवल्क्यनहींहै याप्रकारकेअभिमानकरिके सोशाकल्य विवादकरणेवासतेभी याज्ञवल्क्यकेसमीप आवे नहीं॥ किंतु जैसे अर्ज्जुनकेसाथ करण स्पर्द्धाकरताभया॥ और जैसे इंद्रकेसाथ नमुचिनामादानव स्पर्धाकरताभया॥ तैसे सो शाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ स्पर्द्धाकरताभया॥ शंका॥ हेभगवन् याज्ञवल्क्यकेसाथ जो शाकल्यकीबहुतस्पर्द्धाथी॥ तौ सर्वब्राह्म णोंतैंप्रथमही शाकल्यने याज्ञवल्क्यकेप्रति किसवासते प्रश्ननहींकऱ्या॥ समाधान॥ हेशिष्य॥ जिसकालविषे याज्ञवल्क्यने गौवोंका

हरणकऱ्याथा ॥ तिसकालविषेभी सोशाकल्य तासभाविषेस्थितथा ॥ परंतु ताकालविषे सोशाकल्य आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करिके प्रश्नकूं नहींकरताभया ॥ अब शाकल्यके विचारकूं दिखावैहैं ॥ इसयाज्ञवल्क्यने सर्वब्राह्मणोंकीसभाविषे जोगौवोंकाहरण कऱ्याहै ॥ सो अत्यंतअनुचितकर्मकऱ्याहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ सर्वब्राह्मणोंकेपरोक्ष इसयाज्ञवल्क्यने मैंसूर्यभगवान्काशिष्यहूं याप्र कारकामिथ्यावचनकहिके सर्वलोकोंकूं मोह उत्पन्नकऱ्याहै ॥ तापापकर्मका याप्रकारकाफल अभीयाज्ञवल्क्यकूं प्राप्तभयाहै ॥ आजदिनतैं लेके पूर्वपूर्वकालविषे इसयाज्ञवल्क्यका जोप्रतिष्ठापूर्वक जीवनथा ॥ सोआजदिनतैंलेके आगेआगे समाप्तभया ॥ काहेतैं यहयाज्ञवल्क्य भंडपुरुषकीन्याई पाखंडीहै याप्रकारजाणिकरिके हमने तथाअन्यसर्वब्राह्मणों ने इसयाज्ञवल्क्यकीउपेक्षाकरीहै ॥ और विद्वान्पुरुष जिस पुरुषकीउपेक्षाकरैहैं ॥ तिसपुरुषकूं लोकविषेभीकोई सत्कारकरतानहीं ॥ यातैं सर्वब्राह्मणोंकाअपमानकरिके गौवोंकेहरणेतैं याज्ञवल्क्यकूं यहफल प्राप्तभया॥किंवा॥जैसे सूर्यभगवान्केसमीपअंधकाररहतानहीं॥तैसे सर्वविद्वान्ब्राह्मणोंकेसमीप किसीपुरुषका पाखंडचलतानहीं ॥ याप्रकारकेअर्थकूंभी पापकरिकेमोहितहुआ यहयाज्ञवल्क्य जाणतानहीं ॥ जोब्राह्मणोंकेमहात्मकूं यहयाज्ञवल्क्य जाणताहोवे ॥ तो जिन ब्राह्मणोंकि एकबालककेतेजकूं देवराजइंद्रभी सहारिनहींसकता ॥ ऐसे सर्वब्राह्मणोंकेसमीप यहयाज्ञवल्क्य गौवोंकाहरणरूप अनुचितकर्म नहींकरता ॥ हेशिष्य ॥ इसतैंआदिलेके बहुतप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिके अहंकारकरिकेयुक्तहुआ सोशाकल्य पूर्वतूष्णीहोता भया ॥ और ताशाकल्यनें जभी सर्वब्राह्मणोंकापराजयदेख्या ॥ तथा सर्वब्राह्मणोंसहित गार्गीका याज्ञवल्क्यकेताईं नमस्कारदेख्या ॥ तभी जैसे पादकरिकेहतहुआसर्प क्रोधवान्होवैहै ॥ तैसे शाकल्यकेनेत्र क्रोधकरिकेपूर्णहोतेभये ॥ और भृकुटी तथाललाट ता शाक ल्यका कुटिलहोताभया ॥ और वारंवार उच्चैःश्वासोंकूंउठावताभया ॥ और जैसे किसीपुरुषका जभीपुत्रमरेहै ॥ तभी सोपुरुष देवकूं धिक्कारकरैहै ॥ तैसे सोशाकल्य देवकूंधिक्कार करताभया ॥ और सोशाकल्य आपणेमनविषे याप्रकारकाचिंतन करताभया॥ यालोकविषे जैसाकि देवकाबलहै ॥ तैसा शास्त्रअध्ययनकाभी बलनहीं ॥ और तैसाउत्तमकुलकाभीबलनहीं ॥ और तैसामंत्रादिकोंकाभीबलनहीं ॥

काहेतें शास्त्र उत्तमकुल मंत्रादिकोंकरिकेयुक्त इनसर्वब्राह्मणोंका जोयाज्ञवल्क्यने पराजयकऱ्याहे ॥ सोकेवल देवबलसेंहीं पराजयकऱ्याहे ॥ दूसराविद्यादिकोंकाबल कोईयाज्ञवल्क्यकूँदेनहीं ॥ यातें देवकाबल विद्यादिकसर्वबलोंतें अधिकहे ॥ किंवा ॥ इतिहासोंविषे बुद्धिमान्पुरुषोंने याप्रकारकेवचनकहेहैं ॥ निमेष मुहूर्त प्रहर दिन पक्ष मास ऋतु अयन संवत्सर इत्यादिरूप जोकालभगवान्हे॥ सो प्रतिकूलहुआ सर्वजीवोंकीबुद्धिकूं अन्यथाकरैहे ॥ और अनुकूलहुआ सोकाल सर्वजीवोंकीबुद्धिकीवृद्धिकरैहे ॥ ताकालकेउल्लंघनकरणेविषे कोईभोपुरुष समर्थनहीं ॥ यहइतिहासोंकावचन आजदिनविषे सत्यहुआ ॥ काहेतें जैसे कोईपाखंडीपुरुष मूढबालकोंकूं पराजयकरैहे ॥ तैसे ब्रह्माकेसमानविद्यावाले इनसर्वब्राह्मणोंकूं यहदुर्बुद्धियाज्ञवल्क्य जीतताभयाहे॥ यातें यहजान्याजावैहे ॥ कालभगवान्कूं कोईपुरुष उल्लंघनकरिसकतानहीं ॥ जिसकालभगवान्की प्रतिकूलतातें इनसर्वविद्वान्ब्राह्मणोंका पराजयभयाहे ॥ और जिसकालभगवान्कीअनुकूलतातें विद्याहीन याज्ञवल्क्यका जयभयाहे ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोकार्य होणेवालाहोताहे ॥ सोकार्य अवश्यहोताहे ॥ सहस्रउपायोंकरिकेभी ताकार्यकीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ यहजोवार्ता शास्त्रविषेलिखीहे सोभी आजदिनविषे सत्यभई ॥ काहेतें यासमाजविषे जितनेकब्राह्मण एकट्ठे भयेहैं ॥ तेसंपूर्ण ब्रह्माकेसमानविद्यावालेहैं ॥ और यहकृपणयाज्ञवल्क्य विद्यातेंरहितहे ॥ परंतु इसयाज्ञवल्क्यकाजय होणेहाराथा ॥ और इनसर्वब्राह्मणोंकापराजय होणेहाराथा ॥ सोअवश्यभया ॥ याकरिके हमारेकूंबहुतखेदहुआहे ॥ अथवा यहकाल हमारेयशकेवृद्धिकरणेवासतेंप्राप्तभयाहे ॥ काहेतें इसयाज्ञवल्क्यने सर्वविद्वान्ब्राह्मणोंकूंजीत्याहे ॥ और मैं जभी इसयाज्ञवल्क्यकूंजीतोंगा ॥ तभी सर्वलोकोंविषे हमारायशहोवैगा ॥ यातें यहकाल हमारेकूं यशकीप्राप्तिकरणेवासतेंआयाहे ॥ हेशिष्य ॥ इसतेंआदिलेके नानाप्रकारकाविचार सोशाकल्य आपणेमनविषेकरताभया ॥ और भावीअर्थकेजानणेहारी गार्गीने जो पूर्वहितकाउपदेशकऱ्याथा ॥ ताउपदेशकूं परित्यागकरिके सोदुर्बुद्धिशाकल्य याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरणेकाआरंभ करताभया ॥ अब जिसदुर्बुद्धिकरिके शाकल्यने गार्गीकावचन नहींअंगीकारकऱ्याथा ॥ ताशाकल्यकेदुर्बुद्धिकूंदिखावैं हैं ॥ यहगार्गी कुमारीहे ॥ तथा यौवनअवस्थाकरिकेयुक्तहे ॥ और पितामाताकेगृहसे

बाहरनिकसिके व्यभिचारिणोस्त्रीकीन्याई आपणीइच्छासेविचरतीहै॥ और कामीपुरुषोंविषे यागार्गीकी सदेवइच्छारहेहै॥और यासभाविषे एकयाज्ञवल्क्यतैंबिना जितनेकब्राह्मणहैं ॥ ते सदाचारकरिकेयुक्तहैं ॥ और स्नानशौचादिककर्मोविषे जिनोंकी नित्यहीं प्रीतिहै ॥ और जटाश्मश्रुवोंकरिकेयुक्तहैं ॥ और तपकरिकैजिनोंकाशरीर कृशभयाहै॥और वृद्धअवस्थाकरिकेयुक्तहैं ॥ ऐसेयहउत्तमब्राह्मण यानग्नगार्गीकूं नेत्रोंकरिकेभी नहींदेखते ॥ तो यानिर्लज्जगार्गीविषे तेब्राह्मण किसवासतेंइच्छाकरेंगे ॥ और यहयाज्ञवल्क्य यौवनअवस्थाकरिकेयुक्तहे ॥ तथा शरीर जिसका स्निग्धहै ॥ तथा निरंतर शरीरकापोषणकरेहै ॥ तथा अत्यंतकामीहै ॥ तथा वेदकेअर्थोंकूं अन्यथाकरणेहाराहै ॥ ऐसा दुर्बुद्धि यहयाज्ञवल्क्यपापनेत्रोंकरिके गार्गीकीयोनिकूं तथास्तनोंकूंतथामुखकूंवारंवारदेखैहै॥औरजिसकालविषे यहयाज्ञवल्क्ययासभाविषे आयाहै ॥तिसकालतैंलेकेअबपर्यंत इसयाज्ञवल्क्यकोदृष्टि राजाजनकविषे तथागार्गीविषे हमदेखतेंहैं ॥ इनदोनोंकूंछोडिके किसीब्राह्मणकी तरफ यहयाज्ञवल्क्य देखतानहीं॥और याज्ञवल्क्यतैंभिन्न जितनेकीदूसरेब्राह्मणहैं॥ते गुरुकेचर्णकमलोंके अर्चनपरायणहैं ॥और गुरुशास्त्र करिकेशिक्षितहैं ॥ यातैं नासिकाकेअग्रभागविषे दृष्टिकूंराखिके यासभाविषेस्थितहैं ॥ और यहअधमयाज्ञवल्क्य यासभाविषेजो आयाहै ॥ सो आपणेविद्याकेप्रकाशकरणेवासतेनहींआया ॥ किंतु यागार्गीस्त्रीवासतै तथासुवर्णवासतै यासभाविषेआयाहै ॥ याकारणतैंहीं यहयाज्ञवल्क्य वारंवार गार्गीकेमुखकूं तथाजनकराजाकेमुखकूं देखैहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोव्यभिचारिणीस्त्रीहोवैहै ॥ सो व्यभिचारीपुरुषकूं शीघ्रहींपछाणिलेवैहै ॥ और जोव्यभिचारीपुरुषहोवैहै ॥ सोभी व्यभिचारिणोस्त्रीकूं शीघ्रहींपछाणिलेवैहै ॥ काहेतें यालोकविषे जोजो पदार्थ जिसने बहुतवार अनुभवकऱ्याहोताहै ॥ तिसतिसपादर्थकूं सोपुरुष शीघ्रहींजाणिलेवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जलविषे मत्स्य मीनकेग मनआगमनकूं शीघ्रहींजाणिलेवैहै ॥ तैसे यहगार्गीभी बाल्यअवस्थातैंलेके आपणीइच्छासैंविचरणेहारी व्यभिचारिणीहै ॥ और यहयाज्ञवल्क्यभी व्यभिचारीहै ॥ याकारणतैंहीं इनदोनोंका परस्पर स्नेहभयाहै ॥ किंवा ॥ जेकुलीनस्त्रियांहोवै हैं ॥ ते आपणेभर्त्ताकूं तथापुत्रकूं तथाभ्राताकूं तथामातुलकूं तथाश्वशुरकूं तथाअन्यकिसीकुलीनस्त्रीकूं परित्यागकरिके आपणेगृहकेद्वारपर्यंतभी नहींजावैं हैं ॥ किंतु भर्ता

दिकोंविषे किसीएककूंसाथलेके बाहरजावें हैं ॥ यहकुलीनस्त्रियोंकाधर्महै ॥ सोधर्म यागार्गीविषेहैनहीं ॥ काहेतें यहगार्गी नग्नहोइके एक लीहीतीनलोकोंविषेभ्रमणकरैहै ॥ और लोकविषे जहाँ तहाँ व्यभिचारीकामीपुरुषोंकूं देखतीरहतीहै ॥ परंतु जैसे कलियुगविषे वर्णआश्र मतेंरहित व्यभिचारीपुरुषहोवें हैं ॥ तैसे यात्रेतायुगविषे कोईपुरुष वर्णआश्रमतेंरहितनहीं ॥ जो इसगार्गीकीइच्छाकरे ॥ अब याहीअर्थ कूंस्पष्टकरिकैदिखावें हैं ॥ यात्रेतायुगविषे जेपुत्रकीकामनावालेगृहस्थहैं ॥ ते आपणीस्त्रीकेसाथभी सर्वदासंभोगकरैंनहीं ॥ किंतु ऋतु कालविषे संभोगकरें हैं ॥ यातेंतिनगृहस्थोंकूंभी यागार्गीकीइच्छानहीं ॥ और तिनगृहस्थोंतेंभिन्न जेब्रह्मचारी तथावानप्रस्थ तथासं न्यासीहैं ॥ ते ऊर्ध्वरेताहैं ॥ यातें तेभी यागार्गीकीइच्छाकरतेनहीं और जेनीचजातीवालेचांडालहैं ॥ तेभी आपणीस्त्रीकाप रित्यागकरिके परस्त्रीकीइच्छाकरतेनहीं ॥ तो शिष्टपुरुष परस्त्रीकीकैसेइच्छाकरैंगे ॥ और जेइंद्रादिकदेवताहैं ॥ तेस्वर्गलोककीस्त्री कूंछोडिके मनुष्यलोककीस्त्रीका स्पर्शभीनहींकरते ॥ यातें तेदेवताभी यागार्गीकीइच्छाकरतेनहीं ॥ और जेश्वानादिकपशुहैं ॥ ते आपणेसमानजातिवालीस्त्रीकूं छोडिके विजातीय मनुष्यस्त्रीकीइच्छाकरतेनहीं ॥ और यहगार्गी नित्यहीकामकरिके आतुरहै ॥ याकारणतेंही नग्नहोइके सर्वब्राह्मणोंकेसन्मुखस्थितहै ॥ तौभी एकपापात्मायाज्ञवल्क्यकूंछोडिके यहधर्मात्माब्राह्मण यागार्गीकीतरफ देखतेभीनहीं ॥ और कलियुगकेव्यभिचारीपुरुषोंकेसमान कामातुर यहयाज्ञवल्क्य वारंवार गार्गीकीतरफदेखैहै ॥ और यहव्यभिचारि णीगार्गीभी इसयाज्ञवल्क्यकूंव्यभिचारीदेखिके एकांतदेशविषेलेजाणेवासते व्यभिचारिणीस्त्रियोंकीचातुर्यताकूं अंगीकारकरिके वारंवार याज्ञवल्क्यकूं नमस्कारकरैहै ॥ और लोकोंकेप्रति यहकथनकरैहै ॥ यहयाज्ञवल्क्यब्रह्मवेत्ताहै ॥ यातें मैं इसकूंनमस्कारकरतीहूं ॥ और जैसे ऐंद्रजालिकपुरुष लोकोंकिदृष्टिकाप्रतिबंधकरैहै ॥ तैसे राजाजनकके तथासर्वब्राह्मणोंकेदृष्टिकाप्रतिबंधकरिके यासभाविषे मैं याज्ञवल्क्यकेसाथ व्यभिचारकरौंगी ॥ याप्रकारकाविचार करिके यहगार्गी सभाविषेस्थितहै ॥ और सर्वब्राह्मणोंकेसमीपयहगार्गी वारं वार याज्ञवल्क्यकीस्तुतिकरैहै ॥ और यहसंपूर्णविद्वान्ब्राह्मणभी याव्यभिचारिणीगार्गीके अंतरअभिप्रायकूं नँ जाणिके ताकेवचनकरिके

मोहितहुए याज्ञवल्क्यकूं नमस्कारकरेहैं ॥ और सर्वधर्मात्मावोंविषेमुख्य जोयहजनकराजाहे ॥ सोभी व्यभिचारिणीगार्गी केवचनकरिके मोहकूंप्राप्तभयाहे ॥ याकारणतैंहीं यहजनकराजा वारंवार याव्यभिचारीयाज्ञवल्क्यकेताई नमस्कारकरेहे ॥ हेशिष्य ॥ सर्वदाब्रह्मचर्यधर्म विषेस्थित जोगार्गीहे ॥ तागार्गीकी इत्यादिकअनेकप्रकारकेवचनोंकरिके सोदुरात्माशाकल्य निंदाकरताभया ॥ और जैसे मृत्युकेसमीपप्राप्तहुआ पतंग प्रज्वलितमहान्अग्निकेउल्लंघनकरणेका उद्यमकरेहे ॥ तैसे मृत्युकेसमीपप्राप्तहुआ सोशाकल्यज्ञानसमुद्ररूपयाज्ञवल्क्यके उल्लंघनकरणेवासते उद्यमकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोशाकल्य अनेकप्रश्नोंकरिके याज्ञवल्क्यसे देवतावोंकीसंख्यापूछताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी तितनेहींउत्तरोंकरिके देवतावोंकीसंख्या शाकल्यकेप्रति कहताभया ॥तहाँ सोयाज्ञवल्क्यमुनि विस्तारतैं तिनदेवतावोंकी अनंतसंख्याकहताभया ॥ और संक्षेपतैं सूत्रआत्मारूप एकप्राणकूंही देवताकहताभया ॥ दूसरेसर्वदेवता तिससूत्रआत्मारूपप्राणकीविभूतियां हैं ॥ इसप्रकार विस्तारतैं तथासंक्षेपतैं सोयाज्ञवल्क्य देवतावोंकीसंख्या कहताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोशाकल्य याज्ञवल्क्यकेप्रति दूसरेअष्टप्रश्न करताभया ॥ तिनोंकेउत्तरभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि शाकल्यकेप्रति कहताभया ॥ हेशिष्य ॥ जैसे मंडूक सर्पकेमुखविषेप्राप्तहोवेहे ॥ तैसे कालरूपीसर्पकेमुखविषेप्राप्तहुआ सोमूढबुद्धिशाकल्य जभी याज्ञवल्क्यकेप्रति बहुतप्रश्नकरताभया ॥तभी सोयाज्ञवल्क्य शाकल्यकेप्रति कहताभया हे शाकल्य जैसेतूं विनाहीकारणतैं द्वेषकरताहे ॥ तैसे तुम्हारेपितापितामहादिकवृद्धपुरुष किसीकेसाथद्वेष नहींकरतेभये हैं ॥ तथा अन्यब्राह्मण तथाब्रह्मचारी तथाअन्यक्षत्रियादिकभी तेरेन्याई विनाहींकारणतैं किसीकेसाथद्वेष नहींकरतेभयेहैं ऐसेउत्तमकुलविषे उत्पन्नहुआ तूं विनाहींकारणतैं मेरेविषेद्वेष किसवासतैंकरताहे ॥ हेशाकल्य ॥ मेरेद्वेषकरिके तुम्हारामृत्युमतहोवे ॥ याप्रकारकीइच्छा मैं सर्वदाकरताहूं॥और हेशाकल्य जैसे हमारे मातापिताका तथापुत्रोंका तथा स्त्रीका तथाअन्यबांधवोंका हमारेशरीरविषे प्रेमहे॥तैसे तुम्हारेमातापिता स्त्री पुत्र बांधवादिकोंका तुम्हारेशरीरविषे प्रेमहे॥यातैंयहाँ तुम्हारेमरणेकरिके तिन तुम्हारेमातापितादिकसंबंधियोंकूं दुःखकीप्राप्तिमतहोवे॥ऐसीइच्छा मैं करताहूं॥और हेशाकल्य॥यहवेदविद्या हमने सूर्यभगवान्तैं पाई है॥याकारणतैं

हमारीविद्याकातेज दुःसहहै ॥ यातैं हमारीविद्याकीअवज्ञा तूं मतकर ॥ जोतूं अहंकारकरिकै हमारीविद्याकीअवज्ञाकरैगा॥तौक्षणमात्रविषे सो हमारीविद्या तुमारेकूंभस्मकरैगी ॥ हेशाकल्य ॥ जिसकालविषे सूर्यभगवान्तैं विद्याअध्ययनकरिकै मैं पृथिवीविषेआवताथा ॥ तिस कालविषे प्रसन्नहोइकै सूर्यभगवान् हमारेताई कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य तेरेताई जोमैंने विद्यादईहै ॥ ताविद्याकूं जोपुरुषनहींमानैंगा ॥ तिसपुरुषकूं मैंसूर्यभगवान् तिसीकालविषे भस्मकरौंगा ॥ हेशाकल्य ॥ याप्रकारकावचन जभीसूर्यभगवान्नैं हमारेप्रतिकह्या ॥ तभीमैं सूर्यभगवान्केप्रति यहप्रार्थनाकरताभया ॥ हेभगवन् हमारीविद्याकरिकै किसीप्राणीकानाशनहींहोवै ॥ ऐसा हमारेप्रति वरदेवो ॥ हेशा कल्य ॥ याप्रकारकीप्रार्थना जभी हमनैं सूर्यभगवान्केप्रतिकरी ॥ तभी सोसूर्यभगवान् याप्रकारकानियम करताभया॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जोपुरुष दुराग्रहकरिकै तुमारेसन्मुख बीसवार प्रश्नकरैगा ॥ तिसदुरात्मापुरुषकूं तुमारीजिह्वाविषेस्थितहोइकै मैंसूर्यभगवान् शाप देवौंगा॥तिसशापकरिकै सोपुरुष शीघ्रहीभस्महोइजावैगा ॥हेशाकल्य॥ याप्रकारकावचन जभीसूर्यभगवान्नैं हमारेप्रतिकह्या तभीमेरेकूं भय होताभया॥ याकारणतैं मैंपुनःसूर्यभगवान्केप्रति प्रार्थनानहींकरताभया॥हेशाकल्य॥सर्वलोकविषेप्रसिद्ध जोहमारागुरुसूर्यभगवान्है तिसकूं किसीपापरूपप्रतिबंधकेवशतैं तूं जाणतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ कालभगवान्करिकै तूं मोहकूंप्राप्तभयाहै ॥ और हेशाकल्य ॥ सूर्यभगवान्केवचनकूंस्मरणकरिकै मेरेकूं तुमारीबहुतचिंताहोतीहै ॥जोहमारेद्वेषकरिकै तुमारीक्यागतिहोवैगी ॥ हेशाकल्य यद्यपि तूं हमारेसाथ सर्वथाद्वेषकरताहै ॥ तथापि हमारा तेरेविषेद्वेषनहीं ॥ काहेतैं जैसे आपणेशरीरविषे मैंआनंदस्वरूपआत्मास्थितहूं ॥ तैसे तुमारेशरीरविषे तथाअन्यप्राणियोंकेशरीरविषे तथास्थावरजंगमसर्वशरीरोंविषे मैंआनंदस्वरूपआत्मास्थितहूं ॥ यातैं यहसंपूर्णजगत् मुझआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं॥औरमुझआनंदस्वरूपआत्मातैंही याजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय होवैहै॥ऐसेसर्वात्मज्ञानकरिकैयुक्त जोमैंहूं ॥ तिसका किसीप्राणीविषेद्वेषनहीं॥और हेशाकल्य॥सुखदुःख हर्षशोक अशनापिपासा इत्यादिकद्वंद्वधर्म मेरेस्वरूपविषे तीनकाल नहीं॥और जैसे घटरूपउपाधिकै उत्पत्ति स्थिति लयतैं घटाकाशकी उत्पत्ति स्थिति लय होवैनहीं॥तैसे शरीररूपउपाधिकै उत्पत्ति स्थिति

नाश हुएभीमुझअद्वितीयआत्माकी उत्पत्ति स्थिति नाश होवैनहीं॥और हेशाकल्य ॥ जो क्रियावालाहोवैहै ॥सोकिसीका हननकरैहै और मैं आनंदस्वरूपआत्मा निष्क्रियहूं ॥ यातैं किसीभीप्राणीका मैं हननकरतानहीं ॥ और मैंआनंदस्वरूपआत्मा निराकारहूं ॥ यातैं कोईभी प्राणी हमारा हननकरतानहीं॥और हेशाकल्य ॥ जैसे कृमिआदिकक्षुद्रजंतुवोंका आत्मस्वरूपज्ञान अज्ञानकरिके आवृतरहैहै ॥ तैसे तुमाराभी आत्मस्वरूपज्ञान अज्ञानकरिकेआवृतभयाहै ॥ याकारणतैं सर्वात्मदर्शी मुझयाज्ञवल्क्यकूं आत्मघातीपापीपुरुषकेसमान तूंदेखताहै ॥ हेशाकल्य ॥ ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषकेसाथ जोद्वेषहै ॥ सो प्रसिद्धअग्नितैंभीअधिकहै ॥ ताद्वेषरूपीअग्निकरिकै तुमारेकूंभस्महुआदेखिकै यहसंपूर्णलोक तुमाराशोक मतकरै ॥ और हे शाकल्य ॥ तुमारीस्त्री विधवाभावकूंप्राप्तहोइके तथासर्वभूषणोंतैंरहितहोइके अत्यंत दीनहुई रुदनमतकरै ॥ हेशाकल्य ॥ तुमारेमरणेकरिकै तुमारेपुत्रादिकसर्वबांधवशोकरूपीसमुद्रविषे मतप्राप्तहोवैं॥और तुमारेमरणेकरिकै तुमारेशत्रु आनंदकूंमतप्राप्तहोवैं ॥ और हेशाकल्य ॥ तूं प्रेतशरीरकूंप्राप्तहोइके क्षुधापिपासाकरिकेपीडितहुआ तथादुःखकरिकेव्याकुल हुआ धर्मराजकी पुरीकूं मतदेख ॥ और हेशाकल्य ॥ मरणेतैंअनंतर पुत्रोंनेंदियाजोबलिप्रदान तथातिलोदक ॥ तिसकूं काककीन्याई तूं मतभक्षणकर और हेशाकल्य ॥ यहतुमाराकोमलशरीर अग्निका तथाश्वानोंका भक्ष मतहोवै ॥ और हेशाकल्य ॥यासर्वशिष्योंकापरित्यागकरिके तूं एकलाहींपरलोकविषे मतजाव॥और हेशाकल्य॥ जैसेभल्लातनामावृक्षकाफल जीवोंकानाशकरैहै तैसे तुमारेचित्तरूपीभूमीविषे बहुतकालकरिके उत्पन्नभयाजो ब्रह्मवेत्ताकाद्वेषरूपीवृक्ष॥सोद्वेषरूपीवृक्ष तुमारेकूं मृत्युरूपफलकीप्राप्तिमतकरै॥और हेशाकल्य॥मरेतैंअनंतर तुमारेअस्थियोंकूं चौररूपीचांडाल मतस्पर्शकरै॥और हेशाकल्य॥जैसे पतंग अग्निविषेप्राप्तहोइके भस्महोवैहै॥ तैसे सूर्यभगवान्‌हैजिह्वाविषेजिसके ऐसाजोमैंअग्निहूं ॥ तिसविषे तूं मतभस्महो ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे यालोकविषे अन्नकेभूनणेहारेपुरुष भठ्ठीविषेस्थित प्रज्वलितअग्निकूं आपणेहस्तोंकरिके स्पर्शकरैंनहीं किंतु दीर्घकाष्ठरूपदंडकरिकेयुक्त जोलोहेकीकणछीहै ॥ तिसकरिके अग्निकूंस्पर्शकरैं हैं ॥ तैसे यहसभारूपीभठ्ठीहै ॥ और मैं याज्ञवल्क्यकाष्टोंकेसमानहूं ॥ और मेरागुरुसूर्यभगवान् अग्निरूपहै ॥ और

तेरेकूंविवादकरणेविषे प्रेरणाकरणेहारे जेयहसंपूर्णब्राह्मणहैं ॥ ते अन्नभूनणेहारेपुरुषोंकेसमानहैं ॥ और तूं कणछीकेसमानहै ॥ और यह संपूर्णब्राह्मण बुद्धिमान्हैं ॥ यातैं आपणोरक्षाकरणेवासते तुझमूढबुद्धिकूं कणछीकेसमानकरिके सूर्य रूपअग्निविषे प्रवेशकरावेंहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जेब्राह्मण तेरेकूंविवादकरणेवासते प्रेरणाकरतेहैं ॥ तेब्राह्मणभी तेरेमरणेविषेही प्रसन्नहैं ॥ परंतु कालभगवान्करिकेमोहितहुआ तूं आपणेमरणेकूंजाणतानहीं ॥ यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवेहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेवचन जभीयाज्ञवल्क्यनैं शाकल्यकेप्रतिकहे ॥ तभी कालकेवशहुआ सोशाकल्य तिनवचनोंकूंविपरीतमानिके पुनःअधिकद्वेषकूं करताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मरणकेसमीपप्राप्तहुआरोगीपुरुष हितकारीवैद्यकेसाथ द्वेषकरैहै ॥ और जैसे राज्यतैंभ्रष्टहोणेवाला राजा हितकारीमंत्रियोंकेसाथद्वेषकरैहै ॥ और जैसे भाग्यहीनपुरुष राजाकेसाथद्वेषकरैहै ॥ और जैसे पापकरणेहारापुरुषसत्यउपदेशकरणेहारेगुरुकेसाथ द्वेषकरैहै ॥ तैसे सोशाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ द्वेषकरताभया ॥ अब जिसबुद्धिकरिके सोशाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ द्वेष करताभया ताबुद्धिकूंदिखावेहैं ॥ जैसे कोईपुरुष मूढबालकोंकूं भयउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे यहमंदबुद्धियाज्ञवल्क्य मेरेकूं भय उत्पन्नकरैहै ॥ और मेरीसर्वज्ञताकूं तथानिर्भयताकूं यहमंदबुद्धियाज्ञवल्क्य जाणतानहीं ॥ किंवा ॥ कृषिकरणेहारेमूढपुरुषोंकेजेग्रामहैं ॥ तथा पर्वतकेजेग्रामहैं ॥ तिनग्रामोंविषेस्थित जे बालकहैं तथास्त्रियां हैं ॥ तथाकाष्ठादिकजडपदार्थहैं ॥ तिनोंकेमध्यविषेबैठिके जैसे कोईनिर्लज्जपुरुष निःशंकहोइके मिथ्याभाषणकरैहै ॥ तैसे यहयाज्ञवल्क्य सर्वविद्वानोंकीसभाविषे निःशंकहोइके मिथ्याभाषणकरैहै॥काहेतैं इसयाज्ञवल्क्यकागुरु जोसूर्यहै॥सो मुझद्वेषकरणेहारेशाकल्यके भस्मकरणेविषे जोसमर्थहोता ॥ तो इसकालतैंपूर्वकालविषेभी द्वेषकरणेहारेमेरेकूं काहेतैं नहींभस्मकरता ॥ किंवा ॥ यहसूर्य जडहै यातैं याकेविषेभस्मकरणेकासामर्थ्यनहीं ॥ काहेतैं सूर्य चंद्रमा इंद्र याप्रकारकेशब्दोंकानाम देवताहै॥ अथवा सूर्य चंद्रमा इंद्र इत्यादिकशब्दोंकेजोअर्थ हैं ॥ तिनोंकानाम देवताहै ॥ शब्दतैं तथाअर्थतैं भिन्न कोईदेवताकास्वरूपहैनहीं ॥ तहां जोसूर्यशब्दकूं सूर्यदेवतामानिये ॥ तो सोसूर्यशब्द आकाशकागुणहै ॥ यातैं सर्वलोकोंकूं ताशब्दविषेजडता अनुभवसिद्धहै ॥ और जोसूर्यशब्दकेअर्थकूं सूर्यदेवता

मानिये ॥ तौभी तेजोमयमंडल सूर्यशब्दकाअर्थ है॥ता तेजोमयमंडलविषेभी जडताप्रसिद्धहै॥और सूर्यशब्दतैं तथातेजोमयमंडलतैं भिन्न जोकोईचैतन्यसूर्यशब्दकाअर्थ मानिये॥तौभी सोसूर्य देवता पापकर्म तैंविनाकिसीप्राणीकूंभस्मकरतानहीं॥किंतु जीवकेपापकर्मकीअपेक्षा करिकेही ताकूंभस्मकरैहै ॥ सोपापकर्म मेरेविषेहैनहीं ॥ यातैं सोसूर्य हमारीक्याहानिकरैगा ॥किंवा॥सूर्यतैंहमनैंविद्यापढीहै यहभी याज्ञव ल्क्यकावचन मिथ्याहै ॥ काहेतैं यहयाज्ञवल्क्य भूमिविषेस्थितहै ॥ और सूर्य अत्यंतदूरआकाशविषेस्थितहै ॥इनदोनोंका परस्परसंबंध संभवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारका विपरीतचिंतनकरिके सोशाकल्य पूर्वतैंभीअधिकद्वेष करताभया ॥ तिसतैंअनंतर क्रोधकरिकैयुक्त हुआ सोशाकल्य याज्ञवल्क्यकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥कुरु पांचालादिकदेशोंविषे रहणे हारेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकूं तुमनैं पराजयकऱ्याहै ॥ और सर्वब्राह्मणोंकेगौवोंकूं तथासुवर्णकूं तूं लैगयाहै ॥ तिसपापकर्मकरिके तेरेकूं निर्जल वनविषे अनेकवार ब्रह्मराक्षसशरीरकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ जिसब्रह्मविद्याकेअभिमानकरिके तुमनैं सर्वमहात्माब्राह्मणोंकूं पराजयकऱ्याहै ॥ सोब्रह्मविद्या हमारेसन्मुख तूं कथनकर॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी शाकल्यनैं कह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्य आपणेविषेब्रह्मवेत्तापणा दिखावणेवासतै याप्रकारकावचन शाकल्यकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य देवतावोंसहित तथादेवतावोंकेकारणसहित सर्वदिशावोंकूं मैं जाणताहूं ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ पूर्वादिकदिशावोंकेदेवता कौनहैं ॥ और तिन देवतावोंका कारणकौनहै ॥ और तिनदेवतावोंकेकारणकाभीकारण कौनहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर ऊर्ध्व यापंचदिशावोंके क्रमतैं आदित्य यम वरुण सोम अग्नि यहपंचदेवताहैं ॥ तेदेवता मुझआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु आनं दस्वरूपमैंआत्माहीं आदित्यादिकदेवतारूपकरिकैस्थितहूं॥ और हेशाकल्य ॥ सोआदित्यदेवता चक्षुरूपकारणविषेस्थितहै ॥ और यम देवताश्रोत्रइंद्रियरूपकारणविषेस्थितहै ॥ और वरुणदेवता रसनइंद्रियरूपकारणविषेस्थितहै ॥ और सोमदेवता मनरूपकारणविषे स्थितहै ॥ और अग्निदेवता वाक्इंद्रियरूपकारणविषेस्थितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ हिरण्यगर्भकीउपासनाकरिके हिरण्यगर्भरूपकूं

प्राप्तहोणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसके जेअध्यात्मरूपचक्षुआदिकइंद्रियहैं ॥ तेचक्षुआदिकही अधिदैवसूर्यादिरूपकरिके परिणामकूंप्राप्त होवें हैं ॥ याकारणतें चक्षुआदिकइंद्रिय सूर्यादिकदेवतावोंकेकारणकहे हैं ॥ और हेशाकल्य ॥ रूपादिकविषयोंने आपणेप्रकाशकरणेवा सतें चक्षुआदिकइंद्रियोंकाआरंभकरीताहै ॥ याकारणतें चक्षुआदिकइंद्रिय रूपादिकविषयरूपकारणविषेरहें हैं ॥ तहाँ चक्षुइंद्रिय शुक्लनीलपीतादिकरूपोंविषेरहैहै ॥ और श्रोत्रइंद्रियकरिके ग्रहणकरणेयोग्य जोकर्मकांडरूपवेदहै ॥ ताका ॥ दोप्रकारकाअर्थहोवैहै ॥ एकतो मनवाणीशरीरके क्लेशकरणेहारे यज्ञदानव्रतादिरूपअर्थ हैं ॥ और दूसरा श्रद्धारूपअर्थ है तहाँ श्रोत्रइंद्रिय यज्ञदानादिरूपकर्म विषे रहे है और ते यज्ञदानव्रतादिरूपकर्म श्रद्धाविषेरहें हैं याकारणतेंही अश्रद्धासेकरेहुए यज्ञदानव्रतादिककर्म फलकूंदेतेनहीं ॥ श्रद्धा करिकेकरेहुए यज्ञदानादिक फलकूंदेवें हैं ॥ और जलरूपजोरसनइंद्रियहै ॥ सो रेतरूपकारणविषेरहैहै ॥ और दोषोंतेंरहितजोमनहै ॥ सो सत्यअर्थविषे रहैहै ॥ तैसे वाक्इंद्रियभी सत्यअर्थविषेरहैहै ॥ काहेतें यन्मनसाध्यायतितद्वाचावदति ॥ अर्थयह यहपुरुष जिस अर्थकूं मनकरिकेध्यानकरताहै ॥ तिसीअर्थकूं वाणीकरिकेकथनकरताहै ॥ याश्रुतिविषे मनका तथावाणीका एकहीविषयकह्याहै ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे सर्वजलोंकीउत्पत्तिका तथास्थितिका कारण समुद्रहै ॥ तैसे सूर्यादिकदेवतावोंके तथानेत्रादिकइंद्रियोंके तथारूपा दिकविषयोंके उत्पत्तिका तथास्थितिकाकारण हृदयहै ॥ यहाँ हृदयशब्दकरिके मायाविशिष्ट अंतर्यामीपरमात्माकाग्रहणकरणा ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिके दिखावैहैं ॥ हेशाकल्य ॥ जैसे लोकप्रसिद्धभित्ति विषे प्रथम रेखामात्र देवतादिकमूर्तियोंके चित्र स्थितहोवै हैं ॥ और तिनरेखारूपचित्रोंविषे श्वेतपीतनीलरक्तादिकवर्ण स्थितहोवैहैं ॥ और तिनश्वेतादिकवर्णोंविषे देवतावोंकेमुख विषे दुग्ध स्थितहोवैहै ॥ और नेत्रोंविषे अंजन स्थितहोवैहै ॥ और मस्तकऊपर मुकुट स्थितहोवैहै ॥ और हस्तोंविषे धनुष्बाणादिक स्थितहोवैहैं ॥ याप्रकार चित्रादिकपदार्थ एकदूसरेके आश्रितहुए सर्वलोकोंकूं प्रतीतहोवैहैं ॥ परंतु वास्तवतेंविचारकरिके देखियेतो ते संपूर्ण चित्रादिकपदार्थ एकभित्तिकेआश्रितरहैहैं ॥ तैसे पूर्वादिकदिशा तथाअग्निआदिकदेवता तथानेत्रादिकइंद्रिय तथारूपादिकविषय

इत्यादिकसंपूर्णजगत् साक्षात् अथवा परंपराकरिकै एकपरमात्मारूपहृदयविषेरहैहैं ॥ तहाँ वृत्तियोंसहितअंतःकरण साक्षात्हृदयविषेरहै है ॥ और दूसराजगत् अंतःकरणद्वारा परंपरासंबंधकरिकै हृदयविषेरहै है ॥ और देशाकल्य ॥ जैसे चित्रोंकाआधारजोभित्तिहै ॥ ताकूं जभीमृत्तिकाकरिकैलीपिये ॥ तभी तेचित्र लयभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे ब्रह्मज्ञानरूपीमृत्तिकाकेलेपकरिकै यहजगत्रूपीचित्र लयभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और देशाकल्य ॥ जैसे नीचेऊंचेपणेतैंरहित जोसमानभित्तिहै ॥ ताकेविषे कोईचित्र ऊंचाप्रतीतहोवैहै ॥ और कोईचित्र नीचाप्रतीतहोवैहै ॥ परंतु सोऊंचानीचापणा वास्तवतैंहैनहीं किंतु कल्पितहै ॥ तैसे सर्वत्रसमानजोपरमात्मारूपहृदयहै ॥ ताकेविषे इंद्रादिकदेवता उत्कृष्ट प्रतीतहोवैहैं ॥ और वृक्षादिकस्थावर निकृष्टप्रतीतहोवैहैं ॥ परंतु सोउत्कृष्टता तथानिकृष्टता परमात्मारूपहृदयविषे वास्तवतैंनहीं किंतु कल्पितहै ॥ और देशाकल्य ॥ जैसे चित्रकारपुरुष नीलपीतादिकनानाप्रकारकेवर्णोंकरिकै भित्तिविषे चित्रोंकूंरचैहै॥ तैसे नानाप्रकारकीवासनाकरिकैयुक्त बुद्धिरूपचित्रकार अहंममअभिमानरूपीवर्णोंकरिकै परमात्मारूपहृदयविषे जगत्रूपीचित्रोंकूंरचै है ॥ और देशाकल्य जैसे चित्रकेउपयोगी जेनीलपीतादिकरंगहैं ॥ तिनोंकूं धारणकरणेहारी जोकाष्ठकरिकैरचित छायाहै ॥ सोछाया भित्तिकेसाथसंबंधमात्रकरिकै ताभित्तिविषे नानाप्रकारकेचित्रोंकूंरचैहै ॥ तैसे भित्तिभी ताछायाकीसमीपताकरिकै ॥ नानाप्रकारकेचित्रोंकूंरचैहै ॥ काहेतैं जोभित्तिनहींहोवै तो चित्रोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैंभित्ति तथाछाया दोनों चित्रोंकेप्रति कारणहैं ॥ तैसे मायाविशिष्ट चैतन्यरूपीभित्तिविषे नानाप्रकारकीवासनायुक्त बुद्धिरूपछाया जगत्रूपचित्रोंकूंरचैहै ॥ यातैं मायाविशिष्टपरमात्मा तथाबुद्धि यहदोनों जगत्केकारणहैं ॥ और देशाकल्य ॥ जैसे भित्तिविषेस्थितचित्रोंऊपर जभी वारंवार मृत्तिकाकालेपकरीताहै ॥ तभी तेचित्र लेशमात्रकरिकै ताभित्तिविषेस्थितहुएभी बाह्यस्पष्टरूपकरिकैप्रतीतहोतेनहीं ॥ तैसे प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिपर्यंत परमात्मारूपहृदयविषे आभासमात्रकरिकैरह्याहुआभीजगत्रूपचित्र वारंवार ब्रह्माकारवृत्तिरूपीमृत्तिकाकेलेपकरिकै समाधिकालविषे प्रतीतहोतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे पुनःपुनःमृत्तिकाकेलेपतैं चित्रोंकीनिःशेषतैंनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु पुनःपुनःमृत्तिकाकेलेपतैं चित्रोंका अदर्शनरूपलयहोवैहै ॥ भित्तिके

निवृत्तहुएही चित्रोंकी निःशेषतैं निवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मज्ञानकरिकैअज्ञानकेनिवृत्तहुएभी जबपर्यंत प्रारब्धकर्मनहींनिवृत्तहोता ॥ तब पर्यंत निःशेषतैं प्रपंचकोनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ किंतु जीवन्मुक्तपुरुषकूं विचारकालविषे प्रपंचकाअदर्शनहोवैहै ॥ प्रारब्धकर्मकेनिवृत्त हुएही निःशेषतैं प्रपंचकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं जीवन्मुक्तपुरुषोंकूं आभासमात्रकरिकै जगत्काभानहोवैहै ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे मायावीऐंद्रजालिकपुरुषरूपकारणकरिकै आकाशविषेनानाप्रकारकीसेना प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे बुद्धिरूपकारणकरिकै परमात्मारूप हृदयविषे नानाप्रकारकाप्रपंच प्रतीतहोवैहै ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे मायावीपुरुषरूपकारणके नाशहुए अथवा सुषुप्तिअव स्थाकेप्राप्तहुए अथवा दूसरेकिसीकार्यविषे आसक्तहुए आकाशविषेस्थित नानाप्रकारकाजगत् प्रतीतहोतानहीं ॥ तैसे किसीरोगादिकों करिकै बुद्धिरूपकारणके नाशहुए अथवा सुषुप्तिकेप्राप्तहुए अथवा आत्माविषे एकाग्रहुए परमात्मारूपहृदयविषेस्थित प्रपंचरूपीचित्र प्रतीतहोवैनहीं ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे मायावीपुरुषने आकाशविषे उत्पन्नकरेजेनानाप्रकारकेपदार्थ ॥ तेपदार्थ मायावीपुरुषतैं भिन्ननहीं ॥ किंतु मायावीपुरुषकास्वरूपही हैं ॥ तैसे परमात्मारूपहृदयविषे बुद्धिने कल्पनाकऱ्याजोजगत् ॥ सोजगत् बुद्धितैं भिन्ननहीं ॥ किंतु बुद्धिस्वरूपहीहै ॥ याअभिप्रायकरिकैही वेदांतशास्त्रविषे दृष्टिसृष्टिवादका कथनकऱ्याहै ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे आ काशविषेस्थितहुआअंधकार अंधकारकरिकैहीप्रतीतहोवैहै ॥ सूर्यादिकप्रकाशकरिकै अंधकारकीप्रतीतिहोवैनहीं ॥ तैसे परमात्मारूपहृ दयविषेस्थितहुईबुद्धि बुद्धिकरिकैहीप्रतीतहोवैहै॥और जैसे सूर्यादिकप्रकाशकरिकै अंधकारकेनिवृत्तहुए विशुद्धआकाशविषे दोषरहितनेत्र वालेपुरुष अंधकारकूंदेखतेनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुए विशुद्धआत्माविषे कारणसहितबुद्धिकूं विद्वान्पुरुष देखते नहीं ॥ यातैं आत्मातैंभिन्न बुद्धिआदिकजडपदार्थ प्रमाणकरिकैसिद्धनहीं ॥ किंतु भ्रांतिकरिकैसिद्धहैं ॥ शंका ॥ बुद्धिकूं जोप्रमाणजन्यय थार्थज्ञानकाविषय नहींअंगीकारकरोगे ॥ तो जोप्रमाणजन्ययथार्थज्ञानका अविषयहोवैहै ॥ सो शशशृंगकीन्याई असत्यहीहोवैहै ॥ यातैं बुद्धिभी असत्यहीहोवैगी ॥ और जोपदार्थ असत्यहोवैहै ॥ सोपदार्थ किसीकार्यकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ यातैं असत्यबुद्धिकरिकै किसी

कार्यकीसिद्धि नहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ जैसे शशशृंग तथावंध्यापुत्र यद्यपि असत्यहैं ॥ तथापि सोशशशृंग तथावंध्यापुत्र शशशृंग वंध्यापुत्र याप्रकारकेशब्दों तैं स्वविषयक विकल्परूपज्ञानकूंउत्पन्नकरैहैं ॥ तैसे कार्यकारणसहितबुद्धि यद्यपिअसत्यहै ॥ तथापि सोबुद्धि नानाप्रकारकेभ्रांतिरूपज्ञानोंकूं उत्पन्नकरैहे ॥ यातैं शशशृंगकीन्याई असत्यबुद्धिविषेभी नानाप्रकारकेव्यवहारकीकारणता संभवैहे ॥ शंका ॥ बुद्धिकेअसत्यहुएभी बुद्धिकाकारणजोअज्ञानहै सो सत्यक्योंनहींहोवै॥ जोअज्ञानकूंभी असत्यमानोगे॥तौ असत्यवस्तु किसीकूं अनर्थकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ यातैं असत्य अज्ञानविषे जन्म मरणादिरूपअनर्थकीकारणता नहींहोनीचाहिये ॥ समाधान ॥ जैसे बुद्धिअसत्यहै ॥ तैसे बुद्धिकाकारणअज्ञानभी असत्यही है ॥ और असत्यवस्तुविषेभी अनर्थकीकारणता लोकविषेदेखीतीहै ॥ जैसे मक्षिकाके नहींभक्षणहुएभीजिसपुरुषकूं याप्रकारकीभ्रांतिहोवैहे ॥ हमने मक्षिकाकाभक्षणकऱ्याहे ॥ तिसपुरुषकूं वमनहोवैहै ॥ अथवा ॥ सर्पकेअविद्यमानहुएभी जिसपुरुषकूंऐसीभ्रांतिहोवैहे हमारेकूंसर्पनें दंस्यकऱ्याहे ॥ और तासर्पकाविष हमारेकूंचढताहे ॥ सोपुरुष प्राणोंकापरित्यागकरैहे ॥ यातैं जैसे असत्यमक्षिकाकाभक्षण वमनरूपअनर्थकाकारणहे ॥ और असत्यसर्प मृत्युरूपअनर्थकाकारणहे ॥ तैसे अत्यंतअसत्यअज्ञानभी भ्रांतपुरुषोंके जन्ममरणादिरूपअनर्थकाकारण संभवैहे॥और हे शाकल्य ॥ जैसे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष असत्यअज्ञानकरिके हस्तिअश्वादिकनानाप्रकारकेरूपोंकूंधारणकरैहे ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव असत्यअज्ञानकेवशतैं प्रपंचरूपकूंधारणकरैहे॥और हेशाकल्य ॥ हमसरीखेविद्वान्पुरुषोंकीदृष्टिकरिके यद्यपि अज्ञान तीनकालविषेअसत्यहे ॥ तथापि तुम्हारेसरीखेजेअविवेकीपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं यहअज्ञान वज्रकेपर्वतसमान दुर्भेद्यहे॥ याकारणतैंही तेरेसरीखेअविवेकीपुरुष अत्यंतसमीपहृदयदेशविषेस्थित आत्माकूंभीनहींजाणते॥दृष्टांत ॥ जैसे नेत्रोंतैंरहितअंधपुरुष हस्तकरिकेस्पर्शकरीहुई निधिकूंभीजाणतानहीं ॥ यातैं हे शाकल्य ॥ संपूर्णप्रपंचरूपचित्रकाआश्रय परमात्मारूपहृदयहे यहउत्तर हमने तुम्हारेप्रतिकह्या ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुम्हारेकूंइच्छाहोवे सोअर्थ हमारेसे तुमपूछो॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यने शाकल्यकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोमूढबुद्धिशाकल्य पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तनहींहोताभया ॥ किंतु

जैसे कालकरिकैमोहिताहुआ मंडूक कृष्णसर्पकेबुलावणेहारीवाणीकूं वारंवार उच्चारणकरैहै॥ तैसे पापकर्मकरिके प्रेरणाकऱ्याहुआ यहशा
कल्यभी कालरूपसर्पकेबुलावणेहारी जोपुनःप्रश्नरूपीवाणीहै तिसकूं उच्चारणकरताभया ॥ ऐसेशाकल्यकूंदेखिकरिके सोयाज्ञवल्क्य करु
णाकरिके अत्यंतदुःखीहोताभया ॥ अब जोविचारकरिके याज्ञवल्क्यकूं चित्तविषेदुःखहुआ ताविचारकूंदिखावैहैं ॥ बडाकष्टहै यादुर्बुद्धिशा
कल्यकामरणा अभीसमीपप्राप्तभयाहै ॥ काहेतैं रक्तवर्णवालेहैंनेत्रजिसके तथा ऋग् यजुष् साम यहतीनवेदहैंस्वरूप जिसके ॥ ऐसाजोसू
र्यभगवान् हमारागुरुहै ॥ सो आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतै अभी मंडलतैंनीचेउतरकरिके मेरीजिह्वाविषेस्थितहोगा ॥ तिसतैं अनंतर
परवशहुईयहमेरीजिह्वा यादुर्बुद्धिशाकल्यकेप्रति शापदेवैगी ॥ ताशापकरिके यहशाकल्य क्षणमात्रविषे भस्महोवैगा ॥ याप्रकारकाविचा
रकरिके कृपाकरिकैयुक्तहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि चित्तविषेदुःखीहोताभया ॥ और याशाकल्यका किसीप्रकारकरिकेमरणनहींहोवे तौश्रेष्ठ
वार्ताहै ॥ याप्रकारकाचिंतन सोयाज्ञवल्क्य करताभया ॥ तिसतैंअनंतर मृत्युकेसमीपप्राप्तहुआ सोमूढबुद्धिशाकल्य पुनःयाज्ञवल्क्यकेप्र
तियाप्रकारका प्रश्नकरताभया ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ संपूर्णप्रपंचरूपीचित्रकाआधारजोहृदयहै ॥ सो किसकेआश्रितरहैहै ॥
हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभीशाकल्यनेकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्य हेअहल्लिक याप्रकारकासंबोधनदेकै शाकल्यकेप्रति कहता
भया॥अब पंचप्रकारकरिके अहल्लिकशब्दकेअर्थकूंदिखावैं हैं॥ तहाँ दिनविषेजोलयकूंप्राप्तहोवैं और रात्रिविषेप्रादुर्भावहोवैं ताकूं अहल्लिकक
हैं हैं ॥ ऐसेप्रेतशरीरहोवैं हैं ॥ और यहशाकल्यभी मरिकेप्रेतभावकूंप्राप्तहोवैगा ॥ याकारणतैं याज्ञवल्क्यने शाकल्यकूं अहल्लिककह्याहै
॥ १ ॥ अथवा दिनकीन्याई प्रकाशमानअर्थविषे जोसंशयरूपलयकूंप्राप्तहोवै ताकूं अहल्लिककहैं हैं ॥ सोयाज्ञवल्क्यकेस्पष्टअर्थविषे याशा
कल्यकूं संशयहुआहै याकारणतैं याज्ञवल्क्यने शाकल्यकूं अहल्लिककह्याहै ॥ २ ॥ अथवा ॥ सूक्ष्मअर्थकूंनिश्चयकरणेहारा जोहृदयहै ॥
ताहृदयतैं जोपुरुष रहितहोवैहै ताकूं अहल्लिककहैं हैं॥तहाँस्पष्टकरिके कथनकऱ्याजोअर्थ है ताकेविषे कोईबुद्धिमान् पुनः प्रश्नकरतानहीं॥
और यहशाकल्यतो स्पष्टअर्थविषेभी पुनःपुनःप्रश्नकरैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सूक्ष्मअर्थकेनिश्चयकरणेहाराजोहृदयहै तिसतैं यहशा

कल्यरहितहै ॥ जोशाकल्यकोबुद्धि सूक्ष्मअर्थकूंग्रहणकरती ॥ तो यहशाकल्य पुनःपुनःप्रश्ननहींकरता ॥ याकारणतैं याज्ञवल्क्यने शाकल्यकूं अहल्लिक कह्याहे ॥ अथवा ॥ याज्ञवल्क्यनेकथनकऱ्याजो प्रपंचरूपचित्रकाआधार परमात्मारूपहृदय तिसकूं शाकल्यनेजान्यानहीं ॥ किंतु मरणेतैंअनंतर पृथिवीविषेस्थित जोमांसमयहृदयहे ॥ जिसमांसमयहृदयकूं श्वानादिकभक्षणकरें हैं ॥ ता मांसमयहृदयकूंहीं शाकल्यने जान्याहे ॥ याकारणतैं याज्ञवल्क्यने शाकल्यकूं अहल्लिक कह्याहे ॥ ४ ॥ अथवा ॥ दिनकाकरणेहारा जोसूर्यभगवान्हे॥ सो यासभाविषे याशाकल्यकानाशकरैगा ॥ याकारणतैं याज्ञवल्क्यने शाकल्यकूं अहल्लिक कह्याहे ॥ ५ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनि अहल्लिकसंबोधनदेके शाकल्यकेप्रति उत्तरकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ प्रपंचरूपचित्रकेधारणकरणेहारा जोपरमात्माहे॥तिसकूंही हमने हृदयरूपकरिकेकह्याहे॥परंतु तुमने यहवार्ताजाणीनहीं॥किंतु प्रसिद्धमांसकेखंडकूं तुमने हृदयरूपकरिके जान्याहे ॥ यातैं तेरेअभिप्रायकेअनुसार मैं ताप्रश्नकेउत्तरकूंकहताहूं ॥ हेशाकल्य सोहृदय मेरेसूक्ष्मशरीरकेआश्रितरहेहै काहेतैं सूक्ष्मशरीरतैंविना यहस्थूलशरीरस्थितहोवैनहीं ॥ और स्थूलशरीरतैंविना यहसूक्ष्मशरीरभी स्थितहोवैनहीं॥ जभी सूक्ष्मशरीरतैं यहस्थूलशरीर पृथक्होवैहे ॥ तभी मांसमयहृदयसहित यास्थूलशरीरकूं श्वानादिक भक्षणकरें हैं ॥ तथा काकादिकपक्षी खंडखंडकरिकेलेजावें हैं ॥ याअभिप्रायकरिकेही सूक्ष्मशरीरकूं हृदयसहितस्थूलशरीरकाआधारकह्याहे ॥ हेशिष्य ॥ याज्ञवल्क्यने पूर्वशाकल्यकेप्रति हृदयशब्द करिके परमात्माका कथनकऱ्याथा ॥ तिसकूंनजाणिकरिके जैसे सोशाकल्य पूर्व हृदयकाआश्रयपूछताभया ॥ तैसे सोमूढबुद्धिशाकल्य पुनःआधारपूछताभया ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ तुमने परस्परआश्रित जेस्थूलसूक्ष्मशरीरकहे ॥ ते स्थूलसूक्ष्म शरीर किसकेआश्रितरहें हैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ सोस्थूलसूक्ष्मशरीर प्राणकेआश्रितरहेहै ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोप्राण किसकेआश्रितरहे हे ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ सोप्राण अपानकेआश्रितरहेहै ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोअपान किसकेआश्रितरहेहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ सोअपान व्यानकेआश्रितरहेहे ॥ शाकल्यउवाच ॥

हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोव्यान किसकेआश्रितरहैहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ सोव्यान उदानकेआश्रितरहैहै ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोउदान किसकेआश्रितरहैहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ सोउदान समानकेआश्रितरहैहै ॥ हेशिष्य ॥ यहजो शाकल्यने प्रश्नकरेहैं ॥ सोयाज्ञवल्क्यकेअभिप्रायकूं नजाणिकरिकेकरेहैं ॥ काहेतें सर्वप्राणियोंकीबुद्धिविषे जोसाक्षीरूपकरिके सर्वदाअ परोक्षहै ताकूं हृदयकहैं हैं ॥ याअभिप्रायतें हृदयशब्दकरिके याज्ञवल्क्यने परमात्माकह्याथा ॥ और सोशाकल्य हृदयशब्दकरिके अंतःकरणकेनिवासकास्थान जोमांसमयहृदयहै ताका ग्रहणकरताभया ॥ जोशाकल्यने हृदयशब्दकरिके परमात्मा जान्याहोता ॥ तौ सोहृदय किसकेआश्रितरहैहै याप्रकारकाप्रश्न शाकल्य नहींकरता ॥ काहेतें सभूमाकुत्रप्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि ॥ अर्थयह ॥ सोव्यापकपरमात्मा किसविषे स्थितहै याशंकाकेहुए ॥ सोव्यापकपरमात्मा आपणेमहिमाविषेस्थितहै ॥ याश्रुतिविषे परमात्माका कोई दूसराआश्रय कह्यानहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ शाकल्यने हृदयशब्दकरिके परमात्माकाग्रहणनहींकर्‍या ॥ किंतु मांसमयहृदय काग्रहणकर्‍याहै ॥ और सोहृदय मेरेविषेस्थितहै याउत्तरवाक्यविषे याज्ञवल्क्यने मेरेविषे याअस्मद्शब्दकरिके अहंप्रतीतिविषेभासमान आत्माकाही कथनकर्‍याथा ॥ और सोमंदबुद्धिशाकल्य ता अस्मद्शब्दकरिके सूक्ष्मशरीरकाहीग्रहणकरताभया ॥ और याज्ञवल्क्यने प्राण अपान व्यान उदानयाचारिशब्दोंकीलक्षणावृत्तिकरिके प्राणादिकोंकाप्रवर्त्तक मायाविशिष्टपरमात्माकाही कथनकर्‍याथा ॥ और सोशाकल्य प्राणादिकशब्दोंकरिके वाचार्थभूतवायुकाही ग्रहणकरताभया ॥ याकारणतेंहीं सोबुद्धिहीनशाकल्य सोप्राणकिसविषेरहैहै सोअपानकिसविषेरहैहै याप्रकारकेप्रश्नकरताभया॥ और अंत्यविषे याज्ञवल्क्यने सर्वभूतोंकाआधार समान कह्याथा ॥ और तास मानकूंभी सोशाकल्य वायुरूपही जाणताभया ॥ परंतु समानशब्दकरिके याज्ञवल्क्यनें वायुकाकथन नहींकर्‍याथा ॥ किंतु सर्वकाआत्मारूप जोपरमात्मादेवहै ॥ सो याज्ञवल्क्यने समानशब्दकरिके कथनकर्‍याथा ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ आनंदस्वरूपहै ॥ और नेतिनेति याप्रकारकीश्रुति दोनकारोंकरिके स्थूलसूक्ष्मप्रपंचकानिषेधकरिके जिसपरमात्मादेवकूं बोधनकरैहै ॥ अथवा अज्ञानकालविषे विद्यमान

जोभावअभावरूप दोप्रकारकाजगत्‌है ॥ ताका निषेधकरिके नेतिनेति यहश्रुति जिसपरमात्माकूंबोधनकरै है ॥ पुनःकैसाहै सोपरमात्मा देव ॥ सजातीयभेद तथाविजातीयभेद तथा स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहितहै ॥ और सोपरमात्मादेव निर्गुणहै ॥ यातैं बुद्धिआदिककारणोंकरिकेजान्याजावैनहीं ॥ और जैसे वस्त्र बहुतकालपाइके जीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माकालकरिके जीर्णभावकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ याकारणतैं यह आनंदस्वरूपआत्मा अशीर्यहै ॥ और जैसे जलादिकपदार्थोंकेसाथ आकाशकासंबंधहोवैनहीं ॥ यातैं आकाश असंगहै ॥ तैसे बुद्धिआदिकोंकेसाथ आत्माकावास्तवतैं संबंधहैनहीं ॥ यातैं यह आनंदस्वरूपआत्माभी असंगहै ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्मा अबद्धहै ॥ यातैंदुःखकासंबंधरूपव्यथाकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ और यहआत्मा विनाशतैंरहितहै ॥ यातैंहिंसाकूंभी प्राप्तहोतानहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभीशाकल्यने याज्ञवल्क्यकेप्रति बहुतप्रश्नकरे ॥ तभी सो सूर्यभगवान् आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवास्तैं याज्ञवल्क्यकीजिह्वाविषेस्थितहोइके शाकल्यसैंपूछताभया ॥ अब ताप्रश्नकी सिद्धिवास्तै शाकल्यकेपूर्वअष्टप्रश्नोंकेउत्तरकूं प्रसंगतैंदिखावैहैं ॥ तहाँ पूर्वशाकल्यने देवतावोंकीसंख्यापूछीथी ॥ ताका याज्ञवल्क्यने यहसमाधानकऱ्याथा ॥ विस्तारतैंतो देवता अनंतहैं ॥ और संक्षेपतैंतो एकप्राणदेवताहै ॥ ताप्राणरूपएकदेवताकी यह अष्ट विभूतियांहैं ॥ शारीरपुरुष १ काममयपुरुष २ आदित्यपुरुष ३ श्रौतपुरुष ४ छायामयपुरुष ५ प्रतिबिंबपुरुष ६ जलस्थपुरुष ७ पुत्रपुरुष ८ ॥ तहाँ पृथिवीरूप यास्थूलशरीरविषे मातातैं उत्पन्नभयेजे त्वक् मांस रुधिर यहतीनकोश ॥ तेकोश शारीरनामापुरुषका आयतनहैं ॥ १॥और स्त्रीकेसंभोगकीइच्छारूप जोकामहै ॥ सोकाम काममयनामापुरुषका आयतनहै॥२॥और शुक्लनीलपीतादिकजेनानाप्रकारकेरूपहैं ॥ तेरूप आदित्यनामापुरुषका आयतनहैं ॥३॥और प्रतिध्वनिरूपशब्दविषे विशेषकरिकेहैअभिव्यक्तिजिसकी ऐसाजो श्रौतनामापुरुषहै ॥ ताश्रौतपुरुषका आकाश आयतनहै ॥ ४॥और अंधकाररूपजोतमहै ॥ सोतम छायामयनामापुरुषका आयतनहै ॥ ५ ॥ और प्रतिबिंबकेग्रहणकरणेयोग्य जेदर्पणादिकस्वच्छपदार्थहैं ॥ तिनोंविषेस्थितजो प्रतिबिंबनामापुरुषहै ॥ ता प्रतिबिंबपुरुषका भास्वररूप आयतनहै ॥ ६ ॥ और जल

जलस्थपुरुषका आयतनहै ॥ ७ ॥ और उपस्थइंद्रिय पुत्रनामापुरुषका आयतनहै ॥ ८ ॥ और अग्नि १ हृदय २ चक्षु ३ श्रोत्र ४ हृदय ५ चक्षु ६ हृदय ७ हृदय ८ यहअष्ट शारीरादिकअष्टपुरुषोंके क्रमतें चक्षुहैं ॥ यहाँ हृदयशब्दकरिके बुद्धिकाग्रहणकरणा और अन्नादिकोंकापरिणाम रूपजोअमृतहै ॥ सोअमृत शारीरपुरुषकाकारणहै ॥ १ ॥ और स्त्री काममयपुरुषकाकारणहै ॥ २ ॥ और चक्षुइंद्रिय आदित्यपुरुषकाकारणहै ॥ ३ ॥ और दिशा श्रौतपुरुषकाकारणहै ॥ ४ ॥ और मृत्यु छायामयपुरुषकाकारणहै ॥ ५ ॥ और प्राण प्रतिबिंबपुरुषकाकारणहै ॥ ६ ॥ और वरुण जलस्थपुरुषकाकारणहै ॥ ७ ॥ और प्रजापति पुत्रनामापुरुषकाकारणहै ॥ ८ ॥ इसप्रकार अष्टपुरुष ॥ और तिनपुरुषोंकेअष्टआयतन ॥ और तिनपुरुषोंके अष्टचक्षु ॥ और तिनपुरुषोंकेअष्टकारण ॥ याचारिप्रकारकेअष्टकोंविषे कारणरूपतैंप्रवेशकरिके जोपरमात्मादेव तिनोंकूं आपणेआपणेव्यवहारकरणेविषे समर्थकरैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे तंतुरूपकारण पटरूपकार्यविषेप्रवेशकरिकेही शीतनिवृत्तिआदिकसर्वव्यवहारोंकूंकरैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी संपूर्णकार्यप्रपंचविषे प्रवेशकरिके नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूंसिद्धकरैहै ॥ और जैसे तंतुरूपकारणपटरूपकार्यकूं कार्यपणेतैंरहितकरिके केवलकारणरूपकरिके स्थितहोवैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी प्रपंचकेउपसंहारकालविषेपूर्वादिकदिशावों तें आदिलेके समानपर्यंत सर्वकार्यकाउपसंहारकरिके कार्यभावतैंरहित एकअद्वितीयरूपकरिकेस्थितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वादिकदिशावोंविषे वर्तमानजोपदार्थ हैं तिनपदार्थोंसहित पूर्वादिकदिशावोंका सूर्यादिकदेवतावोंविषे उपसंहारकरैहै ॥ और तिनसूर्यादिकदेवतावोंका चक्षुआदिकइंद्रियोंविषे उपसंहारकरैहै ॥ और तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंका रूपादिकविषयोंविषे उपसंहारकरैहै ॥ और तिनरूपादिकविषयोंका हृदयविषेउपसंहारकरैहै ॥ और ताहृदयका स्थूलसूक्ष्मशरीरविषे उपसंहारकरैहै ॥ और तास्थूलसूक्ष्मशरीरका प्राणविषे उपसंहारकरैहै ॥ और ताप्राणका अपानविषे उपसंहारकरैहै॥और ताअपानका व्यानविषेउपसंहारकरैहै॥और ताव्यानका उदानविषेउपसंहारकरैहै॥और ताउदानका समानविषे उपसंहारकरैहै ॥ इसप्रकारजोपरमात्मादेव सृष्टिकालविषे जगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ और प्रलयकालविषे संपूर्णजगत्कासंहारकरिके बुद्धिआदिक

उपाधियोंतैं तथातिनोंकेसुखदुःखादिकधर्मोंतैंरहितहोइके कार्यकारणभावतैंरहित शुद्धस्वरूपविषेस्थितहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटमठादिकउपाधियोंविषे स्थितहुआआकाश अंतरबाह्यभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जभी सोआकाश घटादिकउपाधियोंका परित्यागकरैहै ॥ तभी अंतरबाह्यपणेतैंरहितहोइके सोआकाश आपणेपरिपूर्णस्वभावविषे स्थितहोवैहै ॥ तैसे शरीरादिकउपाधियोंकेसंबंधकरिके यापरमात्मादेवविषे अंतरबाह्यपणा प्रतीतहोवैहै ॥ और जभीयहपरमात्मादेव शरीरादिकउपाधियोंकापरित्यागकरैहै ॥ तभी अंतरबाह्यपणेतैंरहितहोइके सोपरमात्मादेव आपणेपरिपूर्णस्वभावविषेस्थितहोवै है॥और जैसे मधुरादिकरस केवलरसनइंद्रियकरिकेही जान्याजावैहै ॥ रसनइंद्रियतैंभिन्न किसीइंद्रियकरिके जान्याजावैनहीं ॥ तैसे जोपरमात्मादेव केवल उपनिषद्प्रमाणकरिकेही जान्याजावैहै ॥ उपनिषद्प्रमाणतैंभिन्न किसीप्रत्यक्षादिकप्रमाणकरिके जान्याजावैनहीं ॥ हेशाकल्य ॥ ऐसेपरमात्मादेवकास्वरूप तुम्हारेसैं मैं एकवारपूछताहूं ॥ जोतूं तापरमात्माकेस्वरूपकूंजाणताहै ॥ तो हमारेप्रतिकहो ॥ हेशाकल्य ॥ तुम्हारेप्रश्नोंकाउत्तर हमने बहुतवारदियाहै॥यातैं हमारे एक प्रश्नकाउत्तर तुमभीकहो ॥ हेशाकल्य ॥ जोतूं हमारेप्रश्नकाउत्तर नहींकहेगा ॥ तो तीरथतैंरहित तथामनुष्योंकेसमूहकरिकेयुक्त जोयह जनकपुरीरूपअशुभदेशहै ॥ तथा दक्षिणायनकेकृष्णपक्षकीअमावस्यारात्रिरूप जोअशुभकालहै ॥ ताकेविषे तुझदुर्बुद्धिशाकल्यकामृत्यु होवैगा ॥ और हेशाकल्य ॥ मुझब्रह्मवेत्ताकेसाथ द्वेषकरणेहारा जोतूंशाकल्यहै ॥ तिसतुम्हारी मरणेतैंअनंतर अस्थियांभी तुम्हारेगृहकूं नहीं प्राप्तहोवैंगी किंतु चोररूपीचांडाल धनकेलोभकरिके अर्द्धमार्गविषे तिनअस्थियोंकूंलेजावैंगे ॥ हेशिष्य ॥ जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकोकरणेहारा जोसूर्यभगवान्है ॥ सो अत्यंतक्रोधवानहोइके याज्ञवल्क्यकीजिह्वाविषेस्थितहोइके याप्रकारकावचन शाकल्यकेप्रति कहताभया ॥ और सोशाकल्य आत्मज्ञानतैंरहितथा॥यातैं किंचित्मात्रभी ताप्रश्नकेउत्तरकूं नहींकहताभया ॥ तिसतैंअनंतर सूर्यभगवान्केशापकरिके ताशाकल्यका मन तथावाक्आदिकइंद्रिय शरीरतैंउत्क्रमणकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर ताअशुभदेशकालविषे शाकल्यकामस्तक शीघ्रहीभूमिविषेपडताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे देवतावोंकूंजीतकरिके स्वर्गविषेनिवासकरणेहारा जोनमुचिदानवथा ॥ ताकामस्तक वज्रक

रिकै भूमिविषेपडताभया ॥ तैसे शाकल्यकामस्तक भूमिविषेपडताभया ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी शाकल्यकामृत्युभया ॥ तभी सर्वत्र हाहाकारशब्दहोताभया ॥ और संपूर्णराजमंडली महान्क्षोभकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और ताशाकल्यकेजेशिष्यथे तथाबांधवथे ॥ तेसंपूर्ण रुदनकरतेभये ॥ और शाकल्यकूंभूमिविषे पतनहुआदेखिकै तासभाविषेस्थित जितनेकब्राह्मणथे तथाबालकथे तथास्त्रियाँथीं ॥ तेसंपूर्णजन शाकल्यकूंधिक्कारधिक्कारकरतेभये ॥ और तेसंपूर्णसभावासीजन याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यकेसाथ याशाकल्यनें द्वेषकऱ्याथा ॥ ताद्वेषरूप विषकेवृक्षका मृत्युरूपफल याशाकल्यकूंप्राप्तभया ॥ यद्यपि यहशाकल्य विद्यादिकसर्वगुणोंक रिकैयुक्तथा ॥ तथापि ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषरूप प्रबलदोषतैं यहशाकल्य मृत्युकूंप्राप्तहोताभया ॥ कैसाहैसोब्रह्मवेत्ताकाद्वेष ॥ जैसे एकहीप्रलय कालकाअग्नि स्थावरजंगमरूपसंपूर्णजगतकूंदाहकरे है ॥ तैसे एकहीब्रह्मवेत्ताकाद्वेष विद्यादिकसंपूर्णगुणोंकूंनाशकरेहै ॥ याअर्थविषे यहशाकल्यहीदृष्टांतहै ॥ काहेतैं यहशाकल्य यद्यपि बहुतविद्याविषेकुशलथा ॥ तथा सर्वगुणोंकरिकैसंपन्नथा ॥ तथापि ब्रह्मवेत्ताकाद्वेष रूपीअग्निनें याशाकल्यकूं क्षणमात्रविषेदग्धकरिदिया ॥ किंवा ॥ जैसे यालोकविषेसमुद्रकेसुकावणेकी किसीकूंसंभावनाहोतीनहीं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यकेशापकरिकै याशाकल्यकेमरणेकी यद्यपि किसीप्राणीकूं संभावनानहींथी ॥ तथापि ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यकेद्वेषकरिकै याशाक ल्यका मृत्युहोताभया ॥ यातें ब्रह्मवेत्ताकाद्वेष अद्भुतप्रभाववालाहै॥किंवा॥ सर्वगुणोंकरिकैसंपन्न तथाबहुतविद्याविषेकुशल यहशाकल्यभी ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै जभी याप्रकारकीदुर्गतिकूंप्राप्तहोताभया ॥ तभी विद्यादिकगुणोंतैंरहितइतरपुरुषब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै किसदुर्गतिकूं नहींप्राप्तहोवैंगे ॥ किंतु सर्वदुर्गतियोंकूं प्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषकेसाथ कदाचित्द्वेषनहींकरणा ॥ किंवा ॥ ब्रह्मवित्परमा प्नोति ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मवेत्तापुरुष ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहश्रुति हमोने आजदिनविषे सत्यहुईदेखी ॥ काहेतैं विद्यादिकसर्वगुणसंपन्न जोयहशाकल्यहै ॥ ताकेमारणेविषे जीवोंकासामर्थ्यहैनहीं ॥ किंतु अचिंत्यशक्तिपरमात्माकाही यहकार्य है ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहयाज्ञवल्क्य साक्षातब्रह्मरूपहै ॥ किंवा ॥ ब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारकीश्रुतिभी आजदिनविषे हमोने सत्यहुई

देखी ॥ काहेतें जैसे आपणेशत्रुकेनाशहुए देहधारीजीव सुखकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यकाशत्रुजोशाकल्यहै ॥ ताकेनाशहुए संपूर्ण लोक सुखकूंप्राप्तभयेहैं ॥ और जैसे देहधारीजीव आपणीनिंदाकरतेनहीं ॥ किंतु आपणेतैंभिन्नजीवोंकीनिंदाकरैं हैं ॥ तैसे यहसंपूर्णलोक याज्ञवल्क्यकीनिंदाकरतेनहीं ॥ किंतु वारंवार शाकल्यकीहीनिंदाकरैं हैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ ब्रह्मवेत्ता यहयाज्ञवल्क्य सर्वजीवों काआत्माहै ॥ जोयहयाज्ञवल्क्य सर्वजीवोंकाआत्मारूपनहींहोता तौ जैसे देवदत्तनामापुरुषके शत्रुकेमरणेकरिकै यज्ञदत्तनामा पुरुषकूं सुखकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यके शत्रुकेमरणेकरिकै अन्यसर्वलोकोंकूं सुखकीप्राप्तिनहींहोणीचाहिये ॥ और शाकल्य केमरणेकरिकै सर्वलोक सुखकूंप्राप्तभयेहैं ॥ यातैं यहयाज्ञवल्क्य सर्वजीवोंका आत्मारूपहै ॥ याकारणतैंही आपणाआत्मारूपजोयाज्ञ वल्क्यहै ॥ ताकी कोईप्राणी निंदाकरतानहीं ॥ किंतु संपूर्णलोक शाकल्यकीही निंदाकरैंहैं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे सर्वपापकर्मोंतैं ब्रह्म हत्यारूपपापकर्म अधिकहोवैहै ॥ और ताब्रह्महत्यातैंभी ब्रह्मवेत्तापुरुषकाद्वेषरूपपापकर्म अधिकहोवैहै ॥ काहेतैं इसजन्मविषेकरीहुईब्रह्म हत्या इसीजन्म विषे पुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरेनहीं ॥ किंतु सोब्रह्महत्या दूसरेजन्मविषे तापुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहब्रह्मवेत्तापुरुषकाद्वेषतौ इसजन्मविषे तथाजन्मांतरविषे पुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ याअर्थविषे यहशाकल्यही दृष्टांतहै ॥काहेतैं उत्तमसिंहजा आसनादिकोंकेयोग्य तथाअत्यंतकोमल जोयहशाकल्यकाशरीरथा ॥ सो ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकैपिशाचउन्मत्तपुरुषकीन्याई याअपवित्रभूमिविषेपडाहै ॥ यातैं ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै याशाकल्यकूं इसजन्मविषे परमदुःखकीप्राप्ति भईहै ॥ और याज्ञवल्क्यकेशापतैं याशाकल्यका दक्षिणायनकेकृष्णपक्षकीअमावस्याविषे मृत्युभयाहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहशाकल्य अवश्यनरकविषे प्राप्तहोवैगा ॥ किंवा ॥ ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यकेसाथ याशाकल्यने विनाहीकारणतैं द्वेषकऱ्याथा॥ ताद्वेषरूपपापकर्मकरिकै केवलशाकल्यकूंही दुःखकी प्राप्तिनहींभई ॥ किंतु याशाकल्यने आपणेसंपूर्णबांधवोंकूंभी शोकरूपसमुद्रविषे प्राप्तकऱ्या ॥ और आपणीस्त्रीकूंभी विधवाभावकीप्राप्ति करी ॥ और आपणेकूंभी नरकविषेप्राप्तकऱ्या ॥ और आपणेकोमलशरीरकूंभी भूमिविषेप्राप्तकऱ्या ॥ और आपणेपुण्यकर्मोंकूंभी पापरूपी

अग्निविषेप्राप्तकन्या ॥ यातैं जैसे ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिके याशाकल्यकेदोनोंलोक भ्रष्टभये हैं ॥ तैसे अन्यभीजोकोईपुरुष ब्रह्मवेत्ताके साथ द्वेषकरैगा ॥ तिसकेदोनोंलोक भ्रष्टहोवैंगे ॥ हेशिष्य ॥ इत्यादिकवचनोंकरिके जनकराजा तथागार्गी तथाअन्यब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहसंपूर्णलोकयाज्ञवल्क्यकीस्तुतिकरतेभये ॥ और शाकल्यकीनिंदाकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर शाकल्यकेशिष्य शाकल्यकेशरीर कूंउठाइके संस्कारतैं रहितजोलौकिकअग्निहै ताकेविषे जलावतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेश्रद्धावान्शिष्य शाकल्यकेअस्थियोंकूंगृह विषेलेजाणेवासतैं तिनअस्थियोंकूंदुकूलविषेबांधिके गृहकूंजातेभये ॥ तहां मार्गविषे चांडालत्वजातिवालेचोर दुकूलविषेअस्थियों कूंदेखिकरिके याप्रकारकीकल्पनाकरतेभये ॥ जनकराजाकेयज्ञतैं यहब्राह्मण सुवर्णलेआयेहैं ॥ याप्रकार धनकेलोभयुक्त तेनिर्दय चोर तिनशिष्योंकूंमारिकरिके दुकूलसहिततिनअस्थियोंकूं आपणेगृहविषेलेजातेभये ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार शाकल्यकेमृत्युहुएतैं अनंतर तथाशाकल्यकेमरणेतैं जोसभाविषे हाहाकारशब्दभयाथा ताशब्दकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर याज्ञवल्क्यमुनि सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्र कारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेसर्वब्राह्मणो॥ तुमसंपूर्णविद्वान्ब्राह्मण कुरुपांचालादिक नानादेशोंतैंचलिके यासमाजवि षेएकठेहुएहो ॥ यातैं हमाराएकवचन तुमसंपूर्ण श्रवणकरो ॥ तुमसंपूर्णब्राह्मणोंविषे जोब्राह्मण हमारेप्रति प्रश्नकरणेकीइच्छाकरताहोवे ॥ सोब्राह्मण निःशंकहोइके हमारेप्रति प्रश्नकरे ॥ अथवा जोब्राह्मण हमारेप्रश्नकेउत्तरदेणेकीइच्छाकरताहोवै ॥ तिसब्राह्मणकेप्रति मैं प्रश्नकर ताहूं ॥ और जोकिसीएकब्राह्मणविषे प्रश्नकरणेका तथा उत्तरदेणेका सामर्थ्य नहींहोवै ॥तो तुमसंपूर्णब्राह्मण मिलिके हमारेप्रतिप्रश्नकरो ॥ अथवा तुमसंपूर्णब्राह्मणोंकेप्रति मैं प्रश्नकरताहूं ॥ यादोनोंवार्ताविषे जोतुमारीइच्छाहोवैहै ॥ सोकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यने सर्वब्राह्मणोंकेप्रति कह्या ॥ तभी तेसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेप्रति प्रश्नकरणेविषे तथा याज्ञवल्क्यके प्रश्नकाउत्तरदेणे विषे समर्थनहींहोतेभये ॥ किंतु शाकल्यकेमृत्युकूंदेखिकेभयभीतहुए तेब्राह्मण मौनकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्य आपणे विद्याकीउत्कृष्टताबोधनकरणेवासतैं आपही सर्वब्राह्मणों के प्रति प्रश्नकरताभया ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे लोकविषे पुष्पों तैंविनाहीं फलकूंग्रह

णकरणेहारे पिप्पलादिकवृक्ष मिथ्याप्रतीतहोवैं हैं ॥ तैसे यहमनुष्यादिकशरीरभी मिथ्याहीप्रतीतहोवै है ॥ अब मनुष्यादिकशरीरोंविषे तथापिप्पलादिकवृक्षोंविषे समानता दिखावैं हैं हेब्राह्मणो ॥ जैसे पिप्पलवृक्षकेअनेकपत्रहोवैं हैं ॥ तैसे यामनुष्यादिकशरीरकेअनेक लोमहैं ॥ और जैसे पिप्पलवृक्षकी बाह्यत्वचा कठिनहोवैहै ॥ तैसे याशरीरकीभीबाह्यत्वचाकठिनहै ॥ और जैसे कुठारकरिकैछेदनकियेहुए वृक्षकेभीतरसे रसनिकसैहै तथा श्वेतवस्त्रकेसमान त्वचाकानीचलाभागनिकसैहै तैसे शस्त्रकरिकैछेदनहुए याशरीरतैंभी रुधिर निकसैहै ॥ तथा श्वेतवस्त्रकेसमान त्वचाकानीचलाभागनिकसैहै ॥ और जैसे कुठारकरिकैछेदनकियेतैं वृक्षतैं काष्ठमयखंड बाहर निकसैं हैं ॥ तैसे शस्त्रकरिकैछेदनकियेतैं याशरीरतैंभी मांसमयखंड बाहरनिकसैं हैं ॥ और जैसे पिप्पलादिकवृक्षोंविषेस्थितनाडियां मिलिकरिकै ग्रंथीकूंकरैं हैं ॥ तैसे मनुष्यादिकशरीरोंविषेभी अनेक सूक्ष्मनाडियाँ मस्तकादिकअंगोंविषे एकठीहोइके ग्रंथिकूंकरैं हैं ॥ और जैसे वृक्षकेभीतर कठिनसारभागहोवैहै ॥ तैसे यामनुष्यादिकशरीरोंविषेभी कठिणअस्थियां हैं ॥ और जैसे वृक्षके कठिनसारभाग विषे रसहोवैहै ॥ तैसे यामनुष्यादिकशरीरोंकेअस्थियोंविषे मज्जारूपीरसहोवैहै ॥ यातैं मनुष्यादिकशरीरोंविषे तथापिप्पलादिकवृक्षों विषे सर्वप्रकारतैं समानताप्रतीतहोवैहै ॥ परंतु हेब्राह्मणो ॥ मनुष्यादिकशरीरोंविषे तथापिप्पलादिकवृक्षोंविषे एकविशेषताभी प्रतीतहो वैहै ॥ सोविशेषता जिसकारणतैं है ॥ सोकारण तुमसंपूर्णब्राह्मण हमारेप्रति कथनकरो ॥ अब ताविशेषताकूंदिखावैं हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे कुठारादिकोंकरिकै छेदनहुआवृक्ष पुनःतिसीमूलतैं नवीनहोइके उत्पन्नहोवैहै ॥ यहसर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ तैसे नाशकूंप्राप्तहुए यहशरीरादिक जिसमूलतैंनवीनहोइके उत्पन्नहोवैं हैं ॥ सोमूल प्रत्यक्षदेखीतानहीं ॥ और मूलतैंविना नवीनशरीरोंकीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ यातैं शरीरादिकोंकाभी कोईमूलहोवैगा ॥ सोमूल तुमसर्वब्राह्मण हमारेप्रतिकहो ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जोतुम पिताकावीर्य तथामाताका रक्त याशरीरकामूलकहो ॥ सोयहतुमाराकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं प्राणोंकूंधारणकरणेहारे जेदेहधारीजीवहैं ॥ तिनोंविषे अन्नादिकोंके भक्षणतैं वीर्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और हमारेपूछणेकातो यहअभिप्रायहै ॥ जिससुषुप्तिअवस्थाविषे तथाप्रलयअवस्थाविषे संपूर्णकार्यप्रपंच

चकानाशहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर किसमूल कारणतैं नवीनदेहादिक उत्पन्नहोवैं हैं ॥ और मातापितादिकोंकेशरीर प्रलयकालविषैहैंनहीं ॥
यातैं देहकामूलकारण वीर्यनहीं॥और हेब्राह्मणो जोतुमयहकहो॥जैसे पिप्पलकावृक्ष प्रसिद्धआपणेमूलतैं विनाभी अन्यवृक्षकेऊपरनवीनहो
इकेउत्पन्नहोवैहै॥ तैसे यहशरीरभी मूलतैंविनाहीं नवीनहोइकेउत्पन्नहोवैगा॥सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं॥काहेतैं अन्यवृक्षकेऊपर जो
पिप्पलकावृक्षउत्पन्नहोवैहै॥सो यद्यपि आपणेमूलतैं उत्पन्नहोवैनहीं॥तथापि तावृक्षकेऊपर पिप्पलकेबीजकूंपक्षीलेजावैं हैं ॥ ताबीजतैं तहां
पिप्पलकावृक्ष उत्पन्नहोवैहै॥बीजतैंविना अन्यवृक्षकेऊपर पिप्पलकावृक्ष उत्पन्नहोवैनहीं॥तैसे याशरीरादिकोंके मूलरूपकारणकेअभावहुएभी
बीजरूपकारण कोईतुमारेकूं कह्याचाहिये ॥ सोबीजकेसमान याशरीरादिकोंकाकौनकारणहै यहतुमकहो और हेब्राह्मणो ॥ जोतुमयहकहो
शरीरादिकप्रपंचकेमूलरूपकारणके तथाबीजरूपकारणके निश्चयकरणेकरिकै॥किसीप्रयोजनकीसिद्धिहोवैनहीं॥सोयहतुमाराकहणा संभवै
नहीं ॥ काहेतैं जैसे जिसपुरुषकूंवृक्षकेनाशकरणेकीइच्छाहोवैहै ॥ सोपुरुष तावृक्षकेमूलका कुठारकरिकैछेदनकरैहै ॥ तथा तावृक्षकेबीजकूं
अग्निविषेजलावैहै ॥ तादोनोंउपायोंकरिकै वृक्षकानाशहोवैहै ॥ तैसे याअधिकारीपुरुषकूं जभी शरीरादिकप्रपंचकेमूलका तथाबीजका ज्ञान
होवैहै ॥ तभी सोअधिकारीपुरुष असंगबुद्धिरूपशस्त्रकरिकै तथाज्ञानरूपीअग्निकरिकै तामूलबीजकानाशकरैहै ॥ मूलादिकोंकेज्ञानतैंविना
ताकानाशकरणासंभवैनहीं ॥ यातैं देहादिकप्रपंचकामूलरूपकारण तथाबीजरूपकारण अवश्यजान्याचाहिये ॥ और हेब्राह्मणो॥जोतुमयह
कहो॥जोपदार्थ एकवार उत्पन्नहोताहै ॥ सोपदार्थ पुनःदूसरीवार उत्पन्नहोतानहीं ॥ किंतु स्वभावरूप कारणतैं अपूर्वपदार्थही उत्पन्नहोवैहै ॥
यातैं मूलकेविचारकरणेका कछुप्रयोजननहीं ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जोएकवार उत्पन्नहुएपदार्थकी पुनःउत्पत्ति
नहींअंगीकारकरिये ॥ तौ करेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका भोगेतैंविनाहीनाशहोवैगा ॥ और न करेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका सुखदुःखरूपफल
भोगणाहोवैगा ॥ यहकृतनाश अकृताभ्यागमरूप दोनोंदोषोंकोप्राप्तिहोवैगी॥और जोपूर्वउत्पन्नहुएपदार्थकी पुनःउत्पत्ति अंगीकारकरिये॥
तौ यहदोनोंप्रकारकेदोष प्राप्तहोवैंनहीं ॥काहेतैं पूर्वजन्मविषे याजीवनें जोपुण्यपापरूपकर्मकरेहैं॥तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकाफल सुखदुःख

इसजन्मविषेभोगेहै ॥ और इसजन्मविषे जोजीव पुण्यपापकर्मोंकूंकरैहै ॥ तिनकर्मोंकाफल जन्मांतरविषे भोगेगा ॥ यातैं पूर्वउत्पन्नहुएप
दार्थविषेहीं पुण्यपापरूपअदृष्टरहैहै ॥ और जोपदार्थ नरशृंगकीन्याईं पूर्वकदाचित्भीउत्पन्ननहींभया ॥ तापदार्थविषे पुण्यपापरूपअदृष्ट
संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोपूर्वउत्पन्नहुएपदार्थकी पुनःउत्पत्ति नहींअंगीकारकरिये ॥ तौ माताकेगर्भतैं निकस्याहुआबालक तिसीकालविषे
स्तनपानविषे प्रवृत्तहोवैहै सो न होणाचाहिये॥काहेतैं यहपदार्थ मेरेसुखकासाधनहै याप्रकारका सुखसाधनताज्ञान जीवोंकेप्रवृत्तिविषेकार
णहै ॥ सुखसाधनताज्ञानतैंविना किसीजीवकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ और जन्मकालविषे यहस्तनपान हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकाज्ञान
ताबालककूंहैनहीं॥यातैं ताबालककी स्तनपानविषे प्रवृत्तिनहींहोणीचाहिये ॥ और उत्पन्नहुएपदार्थकी जोपुनःउत्पत्तिअंगीकारकरिये ॥तौ
यादूषणकीप्राप्तिहोवैनहीं काहेतैं जन्मकालविषे याजीवकूं यद्यपि यहस्तनपानहमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकाज्ञान अनुभवरूपनहीं ॥
तथापि पूर्वअनंतजन्मोंविषे यहजीव स्तनपानविषे सुखकीसाधनताका अनुभवकरिआयाहै ॥ ताअनुभवजन्यसंस्कारोंतैं याजीवकूं जन्म
कालविषे यहस्तनपानहमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकास्मृतिज्ञानहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर यहबालक स्तनपानविषेप्रवृत्तहोवैहै॥यातैं उत्प
न्नहुएपदार्थकीहीउत्पत्तिहोवैहै॥अपूर्वपदार्थकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥और हेब्राह्मणो॥जोतुमयहकहो जैसे बीजतैं अंकुरहोवैहै और अंकुरतैं पुनः
बीजहोवैहै ॥ तैसे पुण्यपापरूपअदृष्टतैं यहशरीरहोवैहै ॥ और याशरीरतैं पुनःपुण्यपापरूपअदृष्टहोवैहै ॥ यातैं दूसरेकिसीकारणकाविचा
रकरणा निष्फलहै ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे बीजविषे तथा अंकुरविषे पृथ्वीरूपकारण अनुगतहुआप्रतीतहो
वैहै ॥ तैसे पुण्यपापरूपअदृष्टविषे तथाशरीरविषे कोईअनुगतकारण प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं बीजअंकुररूपविषमदृष्टांतकरिकै अदृष्टशरी
रका कार्यकारणभावसिद्धहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे बीजविषे तथाअंकुरविषे पृथ्वीरूपमूलकारण अनुगतहै ॥ तैसे पुण्यपापरूप
अदृष्टविषे तथाशरीरविषेभी कोईमूलभूतकारण अनुगतहोवैगा॥सोमूलभूतकारण यद्यपि प्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाणोंकरिकै सिद्धनहींहै ॥
तथापि वेदरूपअलौकिकप्रमाणकरिकै सिद्धहै ॥ यातैं पुण्यपापरूपअदृष्टका तथाशरीरादिकप्रपंचका जोउपादानकारणहै ॥ ताका

स्वरूप तथा लक्षण तुमसर्वब्राह्मण हमारेप्रति कथनकरो॥हेशिष्य!याप्रकारकाप्रश्न जभीयाज्ञवल्क्यनें सर्वब्राह्मणोंकेप्रतिकऱ्या।तभी तेसंपूर्ण ब्राह्मण जगत्केकारणकूं नहींजाणतेभये॥यातें तेसंपूर्ण ब्राह्मणपराजयकूंप्राप्तहोतेभये॥ तिसतेंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि मुमुक्षुजनोंकेहित वासतै आपही ताप्रश्नकेउत्तरकूंकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेब्राह्मणो ॥ स्थूलसूक्ष्मरूप जितनाकीजडप्रपंचहै॥ तिसका विज्ञानआनंदरूप परमात्माहीं कारणहे ॥ केसाहैसोपरमात्मादेव सुवर्णादिकपदार्थोंकेदानकरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं सुखरूपफलकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंके करणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ इहांयहतात्पर्यहै॥परमात्माका दोप्रकारकालक्षणहोवैहै ॥ एकतो स्वरूपलक्षण ॥ और दूसरा तटस्थलक्षण ॥ तहां जोलक्षण आपणेलक्ष्यकास्वरूपहुआ इतर पदार्थोंतेंआपणेलक्ष्यकीव्यावृत्तिकरैहै ताकूं स्वरूपलक्षणकहेहैं ॥ जैसे विज्ञान आनंद ब्रह्मकेस्वरूपभूतहुए जडप्रपंचतें ब्रह्मकीव्यावृत्तिकरैहैं ॥यातें विज्ञानआनंद यह ब्रह्मका स्वरूपलक्षणहै ॥ और जोलक्षण आपणेलक्ष्यविषेसर्वदानहींरहेहै ॥ किंतु कदाचित्रहेहै कदाचित्नहींरहेहै ॥ और आपणेलक्ष्यकूं इतरपदार्थोंतेंभिन्नकरिकेजनावैहै ताकूं तटस्थलक्षणकहेहैं ॥ जैसे सुखदुःखरूपफलदातृत्व ब्रह्मविषे सर्वदारहे नहीं ॥ किंतु जगत्केस्थितिकालविषेरहैहै ॥ और आकाशादिकजडपदार्थोंतें लक्ष्यरूपब्रह्मकीव्यावृत्तिकरैहै ॥ यातें सुखदुःखरूपफलदातृत्व ब्रह्मकातटस्थलक्षणहै ॥ इसप्रकार जगत्केमूलकारणकूंनिरूपणकरिके ॥ अब पूर्वउक्तवृक्षरूपदृष्टांतकी समानता दिखावैं हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे वृक्षके मूलकेनाशहुएभी पुनःवृक्षकीउत्पत्तिविषे बीज कारणहोवैहै॥ तैसे याजीवोंके स्थूलशरीरकेनाश हुएभी पुनःस्थूलशरीरकीउत्पत्तिविषे सूक्ष्मशरीर कारणहे ॥ और जैसे तिनबीजोंकेभीनाशहुएतेंअनंतर केवलपृथिवी स्थितहोवैहे ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथाप्रलयकालविषे तासूक्ष्मशरीरकेभी लयहुएतेंअनंतर केवलअज्ञान स्थितहोवैहै ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्यअज्ञानतें तथासूक्ष्मशरीरतेंहीं सर्वजगत्कीउत्पत्ति संभवहोइसकैहै ॥ ब्रह्मकूं किसवासतेअंगीकारकरणा॥ समाधान॥ हेब्राह्मणो जैसे वृक्षकीउत्पत्तिकरणेविषे बीजकूं अदृष्टरूपनिमित्तकारणकीअपेक्षाहोवै है ॥ तैसे स्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरणेविषे सूक्ष्मशरीरकूं परमात्माकीअपेक्षाहो

वैहै ॥ चैतन्यरूपपरमात्माकीसत्तातैंविना जडसूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरिसकैनहीं ॥ यातैं परमात्माकूं अवश्यअंगीकारकऱ्या चाहिये ॥ किंवा ॥ पृथिवीविषेस्थितजे बीजहैं ॥ तिनोंका अंकुररूपकार्यद्वारा ज्ञानहोवैहै ॥ तहाँ पृथिवीविषे संस्काररूपकरिकैजोबीजों कोस्थितिहै॥सो अंकुररूपकार्यद्वारा बीजोंकिज्ञानविषेकारणहै॥काहेतैं जोसंस्काररूपकरिकै बीज पृथिवीविषेनहींहोवै ॥ तौ अंकुररूपकार्य द्वारातिनबीजोंकाज्ञान होवैगानहीं॥तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथाप्रलयकालविषेस्थितजो अज्ञानहै ॥सोअज्ञानहीं सृष्टिकालविषे सूक्ष्मशरी राकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥यातैं अज्ञानविषे जोसूक्ष्मशरीरकेसंस्कारहैं॥तेसंस्कार सूक्ष्मशरीरकीउत्पत्तिकेकारणहैं॥काहेतैं जोप्रलयका लविषे सूक्ष्मशरीरकेसंस्कार अज्ञानविषेनहींहोवैं ॥ तौ सृष्टिकालविषे अज्ञानतैं सूक्ष्मशरीरकीउत्पत्ति नहींहोणीचाहिये ॥ यातैं प्रलयका लविषे सूक्ष्मशरीरकेसंस्कार अज्ञानविषेरहैं हैं ॥ और तेसंस्कार अत्यंतसूक्ष्महैं ॥ यातैं सर्वज्ञपरमात्मातैंविना किसीजीवकरिकैजानेनहीं ॥ यातैं तिनसूक्ष्मसंस्कारोंकूंजानणेहारा सर्वज्ञपरमात्मा अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ किंवा ॥ जैसे अमूर्त्तआकाशविषे यहमूर्त्तरूपपृ थिवीस्थितहै ॥ तैसे विज्ञानरूपपरमात्माविषे यहजडअज्ञानस्थितहै ॥ चैतन्यरूपपरमात्मातैंविना अन्यकिसीपदार्थविषे अज्ञानरहैनहीं ॥ काहेतैं चैतन्यपरमात्मातैंभिन्न जितनेकजडपदार्थ हैं ॥ ते अज्ञानकाकार्यहैं ॥ यातैं तिनजडपदार्थोंविषे अज्ञानरहैनहीं ॥ किंवा ॥ अज्ञान जिसकेआश्रितरहैहै ॥ तिसीपदार्थकूं अंधकारकीन्याईं आवरणकरैहै ॥ यहअज्ञानकास्वभावहै ॥ और आकाशादिकजडपदार्थ स्वभावतैं हींआवरणरूपहैं ॥ यातैं अज्ञानकृतआवरण तिनजडपदार्थोंविषेसंभवैनहीं ॥ याकारणतैंभी जडपदार्थोंविषे अज्ञान नहींरहैहै ॥ किंवा॥ जोवादी आकाशादिकजडपदार्थोंकेआश्रित अज्ञानकूंअंगीकारकरै ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ जभी आकाशादिकजडपदार्थ नहींउत्प न्नभयेथे ॥ तभी सोअज्ञान आश्रयतैंविनारहताथा ॥ अथवा किसीदूसरेकेआश्रितरहताथा ॥ तहाँ जोप्रथम निराश्रयपक्ष अंगीकार करो सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे अज्ञानहै याप्रकारकाशब्दश्रवणकरिकै लोक यह पूछैहैं ॥ किसवस्तुकाअज्ञानहै तथाकिसविषे अज्ञानहै ॥ याप्रकारकेलोकोंकोअनुभवतैं अज्ञानविषेआश्रयकी तथाविषयकी अवश्यअपेक्षारहैहै ॥ यातैं आश्रयतैंविना अज्ञानरहैनहीं ॥

और आकाशादिकजडपदार्थोंकीउत्पत्तितैंपूर्व किसीदूसरेकेआश्रित अज्ञानरहैहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तासैं यहपूछा चाहिये॥ सोदूसरा जीवहै अथवा ईश्वरहै अथवा शुद्धपरमात्माहै ॥ तहाँ जीवईश्वरविषे तौ अज्ञानकीआश्रयतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं अज्ञान विशिष्टचैतन्यकानाम जीवईश्वरहै ॥ ताजीवईश्वरविषे जो अज्ञानकीआश्रयतामानिये ॥ तौ अज्ञानविषे अज्ञानकीआश्रयतारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं जीवईश्वरकेआश्रित अज्ञाननहीं ॥ किंतु परिशेषतैं शुद्धपरमात्माकेआश्रित अज्ञानरहैहै ॥ यह सर्ववेदांतकासिद्धांतहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे यालोकविषे निर्धनपुरुष धनीपुरुषकूंआश्रयणकरैहै ॥ तैसे दुःखरूपयहअज्ञान विज्ञानआनंदरूप आत्माकूं आश्रयणकरैहै ॥ अब विज्ञानआनंददोनोंका अभेददिखावैं हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषेभी विज्ञानतैंभिन्नआनंददेखीतानहीं ॥ काहेतैं मैंसुखीहूं याप्रकारकेज्ञानतैंविना आनंदकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं आनंद विज्ञानरूपहै ॥शंका॥ जैसे मैंसुखीहूं याप्रकारके विज्ञानतैं विना सुखकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं सुख विज्ञानरूपहै ॥ तैसे मैंदुःखीहूं याप्रकारकेज्ञानतैंविना दुःखकी भीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं दुःखभी विज्ञानरूपहोणाचाहिये ॥समाधान॥हेब्राह्मणो॥ सुख विज्ञानरूपहै याकेविषे केवललोकप्रसिद्धिप्रमाणनहीं॥किंतु विज्ञानमानंदंब्रह्म ॥यहश्रुतिभीप्रमाणहै ॥ तैसे दुःखकीविज्ञानरूपताविषे कोईश्रुति तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणहैंनहीं॥यातैं दुःख विज्ञानरूपनहीं॥शंका॥हेयाज्ञवल्क्य ॥ सर्वशास्त्रोंविषे अप्राप्तवस्तुकीप्राप्तिरूपयोग तथाप्राप्तवस्तुकापरिपालनरूपक्षेम यादोनोंरूपोंकरिकें सुखदुःखकीसमानताहीं कथनकरीहै ॥ यातैं जोसुखकूंविज्ञानरूपमानौंगे ॥ तौ दुःखकूंभीविज्ञानरूपता होणीचाहिये ॥ और जोसुखकूं विज्ञानरूपमानिकेदुःखकूं विज्ञानरूप नहींमानौंगे ॥ तौ सर्वशास्त्रोंविषेकथनकरीहुई सुखदुःखकीसमानयोगक्षेमता असंगतहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो यद्यपि सर्वशास्त्रोंविषे सुखदुःखकीसमानताकहीहै ॥ तथापि सुखदुःखविषे याप्रकारकीविलक्षणता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ संपूर्णलोक यहसुख हमारेकूं सर्वदाहोवै याप्रकार आत्मसंबंधिसुखकीइच्छाकरैं हैं ॥ और संपूर्णलोक यहदुःख हमारेकूं कदाचित्भीनहोवै याप्रकार दुःखविषेद्वेषबुद्धि करैं हैं ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया॥मेरेकूं यहपदार्थ सर्वदाहोवै याप्रकारकीइच्छाकाविषय जोपदार्थहोवैहै सोपदार्थ अनुकूलहोवैहै ॥ तथा

स्वशब्दकरिकेप्रतिपाद्यहोवैहै॥और मेरेकूं यहपदार्थ कदाचित्भीनहींहोवै याप्रकारकीइच्छाकाविषय जोपदार्थहोवैहै ॥ सोपदार्थप्रतिकूलहो वैहै तथा स्वशब्दकरिके अप्रतिपाद्यहोवैहै॥तहाँ मेरेकूंसर्वदासुखहोवै याप्रकारकीइच्छा सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ताइच्छाविषेभी सर्वदासुखहोवै इतनैअंशकरिके तो सुखविषे अनुकूलताप्रतीतहोवैहै ॥ और मेरेकूं इतनेअंशकरिके सुखविषे स्वशब्दकीप्रतिपाद्यता प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहसुखका लक्षणसिद्धभया ॥ जो सर्वदाअनुकूलहोवै तथा स्वशब्दकरिकेप्रतिपाद्यहोवै ताकूं सुखकहैहैं ॥ और मेरेकूं दुःख कदाचित्भी नहोवै याप्रकारकीइच्छाभी सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ यातैं दुःखका यहलक्षणसिद्धभया ॥ जो सर्वजीवोंकूंप्रतिकूलहोवै तथा स्वशब्दकरिकेअप्र तिपाद्यहोवै ताकूं दुःखकहैहैं ॥ तहाँ जोअनुकूलहोवै ताकूंसुखकहैहैं इतनाजो सुखकालक्षणकरिये ॥ तो वैरीपुरुषकासुखभी सुखरूपकरि केअनुकूलहीहै ॥ यातैं वैरीपुरुषकासुखभी अन्यपुरुषकूं सुखरूपहोणाचाहिये ॥ और वैरीकासुख किसीकूं सुखरूपहोइकेप्रतीतहोवैनहीं याकारणतैं स्वशब्दकरिकेप्रतिपाद्यकह्या ॥ और जोस्वशब्दकरिकेप्रतिपाद्यहोवै ताकूंसुखकहैहैं ॥ इतनाहीं जोसुखकालक्षणकरिये ॥ तो यहमेराशत्रुहै यहमेरादुःखहै याप्रकारकीप्रतीति सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ यहाँ स्वशब्दकरिकेप्रतिपाद्यता वैरिविषे तथादुःखविषेभी प्रतीतहो वैहै ॥ यातैं वैरी तथादुःखभी सुखरूपहोणाचाहिये ॥ याकारणतैं अनुकूलकह्या ॥ वैरिविषे तथादुःखविषे किसीकूंअनुकूलताज्ञानहैनहीं ॥ शंका ॥ जो अनुकूलहोवै तथास्वशब्दकरिकेप्रतिपाद्यहोवै ताकूं सुखकहैं हैं ॥ यासुखकेलक्षणविषे स्वशब्दकाअर्थ आत्माकासंबंधी लेणा ॥ अथवा स्वशब्दकाअर्थ आत्माहीलेणा ॥ तहाँ जो आत्माकासंबंधी स्वशब्दकाअर्थमानिये ॥ तो जैसे आत्माकेसंबंधीशरीरादिक आत्मारूपनहींहैं ॥ तैसे आत्माकासंबंधीसुखभी आत्मारूपनहींहोवैगा ॥ और जोस्वशब्दकाअर्थ आत्मा मानिये ॥ तो मेरेकूंसुखहोवै याप्रतीतिविषे सुखका तथाआत्माका भेदप्रतीतहोवैहै सो न होणाचाहिये ॥ किंतु मैंसुखहूं याप्रकारकीप्रतीतिहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ सुखकेलक्षणविषे जोस्वशब्दहै ॥ ताका आत्माकासंबंधी अर्थनहीं ॥ किंतु आत्माही तास्वशब्दकाअर्थहै ॥ यातैं सुख आत्मारूपहै ॥ और जैसे लोकविषे यहपुरुष आपका आपहीउपकारकरताहै याप्रकारका शब्द उच्चारणकरैहैं ॥ ताशब्दकरिके यद्यपि आपणेविषेआप

णाभेद प्रतीतहोवैहे ॥ तथापि आपणेविषेआपणाभेदहेनहीं ॥ यातें सोप्रतीति भ्रमरूपहे ॥ तैसे श्रुतिप्रमाणकरिके सुखआत्माकेअभेदकी सिद्धिहुएभी मेरेकूंसुखहोवे याप्रकारकेशब्दकरिके जोसुख आत्माका भेद प्रतीतहोवैहे सोप्रतीति भ्रांतिरूपहे ॥ यातें ताभ्रांतिज्ञानक रिके सुख आत्माकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ सुखका तथा आत्माका जोपरस्परसंबंधहे सोनित्यहे ॥ काहेतें जो सुख आत्माकासंबंध अनित्यमानिये ॥ तो जो अनित्यपदार्थहोवैहे ॥ सो किसीकालविषे होवैहे और किसीकालविषेनहींहोवैहे ॥ जैसे घटादिकअनित्यपदार्थ किसीकालविषेहैं और किसीकालविषेनहींहैं ॥ तैसे सुखआत्माकासंबंधभी जिसकालविषेनहींहोवैगा ॥ तिसकालविषे आत्मा सुखतैंभिन्नहोवैगा ॥ और जो सुखतैंभिन्नहोवैहे ॥ सोदुःखकीन्याई प्रतिकूलहीहोवैहे ॥ यातें आत्माविषेभी प्रतिकू लताहोणीचाहिये ॥ और किसीकालविषे किसीजीवकूं आपणेआत्माविषे प्रतिकूलताहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वजीवोंकूं आपणेआत्माविषे अनु कूलताहीहोवैहे ॥ यातें सुखआत्माका नित्यसंबंधहे ॥ शंका ॥ समवायसंबंधकूंही नैयायिक नित्यसंबंधमानें हैं ॥ और गुण द्रव्यविषे सम वायसंबंधकरिकेरहैहे ॥ यातें सुखरूपगुणभी आत्माविषे समवायसंबंधकरिकेरहेहे ॥ और जिनोंका समवायसंबंधहोवैहे ॥ तिनोंका परस्पर भेदहीहोवैहे ॥ यातें सुखआत्माका भेदहीसिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ सुखआत्माका परस्पर समवायसंबंधनहीं ॥ किंतु कल्पितभेदयुक्त वास्तवअभेदरूप जोतादात्म्यसंबंधहे ॥ सोतादात्म्यहीं सुखआत्माका नित्यसंबंधहे ॥ काहेतें नेतिनेति यहश्रुति आत्मातैंभिन्न सकलजगतकानिषेधकरैहे ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे सुख आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ तैसे विज्ञानभी आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ काहेतें जोविज्ञानकूं आत्मातैंभिन्न अंगीकारकरिये ॥ तो जैसे बुद्धिकीवृत्तिरूप गौणज्ञान आत्मातैंभिन्नहे यातें जडरूपहे ॥ तैसे आत्मातैंभिन्नहुआविज्ञानभी जडरूपहोवैगा ॥ और जोजोपदार्थ जडहोवैहे ॥ तिसकूं आपणीसिद्धिवासते अन्यज्ञानकीअपेक्षारहैहे ॥ जैसे घटादिकजडपदार्थ आपणी सिद्धिविषे अन्यज्ञानकीअपेक्षाकरैहैं ॥ तैसे जडविज्ञानभी आपणीसिद्धिविषे किसीअन्यविज्ञानकीअपेक्षाकरेगा ॥ और सोदूसराविज्ञानभी आपणीसिद्धिविषे किसीतीसरेविज्ञानकीअपेक्षाकरेगा ॥ याप्रकार विज्ञानोंकीअनवस्थारूपदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा ॥ जो

आपणीसिद्धिविषे अन्यविज्ञानकीअपेक्षाकरैहैं ॥ सो विज्ञानरूपहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिकपदार्थ आपणीसिद्धिविषे अन्यविज्ञानकीअपे क्षाकरैहैं ॥ यातैं घटादिक विज्ञानरूपनहीं ॥ तैसे विज्ञानभी जोआपणेप्रकाशवासतै दूसरेविज्ञानकीअपेक्षाकरैगा ॥ तौ विज्ञानभी घटा दिकोंकीन्याई अविज्ञानरूपहोवैगा और विज्ञानकूं अविज्ञानरूपकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं सुखकीन्याई विज्ञानभी स्वप्रकाशआत्मा रूपहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ संपूर्णजगत्‌विषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासतै श्रुति विज्ञानआनंदरूपआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकै कथनकरैहै ॥ तात्पर्ययह॥ देशपरिच्छेद कालपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंतैंरहितमहान्‌अर्थकूं ब्रह्मशब्द बोधनकरैहै॥तहाँ प्रपंचकूँ जोसत्य मानिये ॥ तौ ब्रह्मविषे वस्तुपरिच्छेदकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं ब्रह्मशब्द आत्मातैंभिन्न सर्वजगत्‌विषे मिथ्यात्वकूंबोधनकरताहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे एकहीआकाशविषे घटमठादिकउपाधियोंकरिकै नानाप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे एकहीअद्वितीयआत्माविषे अज्ञानादिकउपाधियोंकरिकै नानाप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं ब्रह्मविषे सजातीयभेदनहीं ॥ और हेब्राह्मणो जैसे मायावीपुरुषनैं आपणीमायाकरिकै आकाशविषे उत्पन्नकऱ्याजो मायामयशरीर ॥ ताशरीररूपउपाधिकेविद्यमानहुए मायावीपुरुषका जोआकाशादिकों विषेभेद प्रतीतहोवैहै ॥ तथा आकाशादिकोंका जोमायावीपुरुषविषेभेद प्रतीतहोवैहै ॥ सोभेद उपाधिकेमिथ्याहोणेतैं मिथ्याहीहै ॥ तैसे अज्ञानादिकउपाधियोंकेमिथ्याहोणेतैं तिनअज्ञानादिकोंकरिकैकऱ्याहुआ जोब्रह्मविषेनानाप्रकारकाभेदहै सोभी मिथ्याहीहै ॥ यातैं विजा तीयभेदभी ब्रह्मविषेनहीं ॥ और विज्ञानआनंदरूपब्रह्म सर्वदाएकरसहै तथानिरवयवहै ॥ यातैं स्वगतभेदभी ब्रह्मविषेनहीं ॥ और हेब्राह्म णो ॥ यहजोविज्ञानआनंदरूपब्रह्म हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्याहै॥सोशुद्धब्रह्म जगत्‌काकारणहोवैनहीं ॥ किंतु मायाकरिकैविशिष्टहुआ सो ब्रह्म जगत्‌काकारणहोवैहै॥याअभिप्रायकरिकैही श्रुतिनैं पुण्यपापकेफलप्रदाताकूं जगत्‌काकारण कह्याहै ॥ शुद्धब्रह्मविषे फलप्रदातृत्वसं भवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो॥मायाविषे जगत्‌कीकारणता बोधनकरणेवासतै मायाविशिष्टपरमात्माविषे जगत्‌कीकारणता पूर्वकथनकरी ॥ परंतु याअर्थविषेभी अनुपपत्तिरूपदूषणकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं चैतन्यकीसत्तातैंविना सोजडमाया आपणीस्थितिकरणेविषेभी समर्थ

नहींहोवैहै ॥ तौ संपूर्णजगत्केनिर्वाहकरणेविषे सोजडमाया किसप्रकार समर्थहोवैगी ॥ याप्रकारकेअनुपपत्तिकाविचारकरिकैसोवेदभगवान् केवलशुद्धब्रह्मकूंहीं सर्वजगत्काअधिष्ठानकथनकरताभयाहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ सोब्रह्म केवल जडअज्ञानकाअधिष्ठाननहीं ॥ किंतुब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै जिनपुरुषोंकूं मैंब्रह्महूं याप्रकारकाअभेदज्ञानभया ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकाभी सोशुद्धब्रह्महीं परमस्थानहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ मायाकरिकैविशिष्टहुआ जोब्रह्म पुण्यपापकेफलकादाताहै ॥ और मायातैंरहितहुआ जो ब्रह्मज्ञानी पुरुषोंकाआत्माहै ॥ सोईहीब्रह्म याजगत्का उपादानकारणहै ॥ याअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिने सर्वब्राह्मणों तैं जगत्काकारणपूछाथा ॥ परंतु तेसंपूर्णब्राह्मण ताजगत्केकारणकूं नहींजाणतेभये ॥ ऐसाकारणरूपब्रह्म हमअधिकारियों नैं वेदकेवचनोंतैं श्रवणकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार सूर्यभगवान्काशिष्य सोयाज्ञवल्क्यमुनि गौवोंकूंगृहविषेलेजाणारूपनिमित्तकरिकै सर्वब्राह्मणोंकापराजय करताभया ॥ और ब्रह्मवेत्ताकाद्वेषी जोशाकल्यथा ताकूं भस्मकरताभया ॥ और जोब्रह्मविद्या सूर्यभगवान्नैं याज्ञवल्क्यकेप्रति कथनकरीथी ॥ और जोब्रह्मविद्या याज्ञवल्क्यने सर्वब्राह्मणोंसेपूछीथी ॥ सोब्रह्मविद्या याज्ञवल्क्यमुनि श्रद्धावान्जनकराजाकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे बृहदारण्यक याज्ञवल्क्यकांडसारार्थप्रकाशे ऋषियाज्ञवल्क्यसंवादोनाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

॥ इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेपंचमोऽध्यायःसमाप्तः ॥
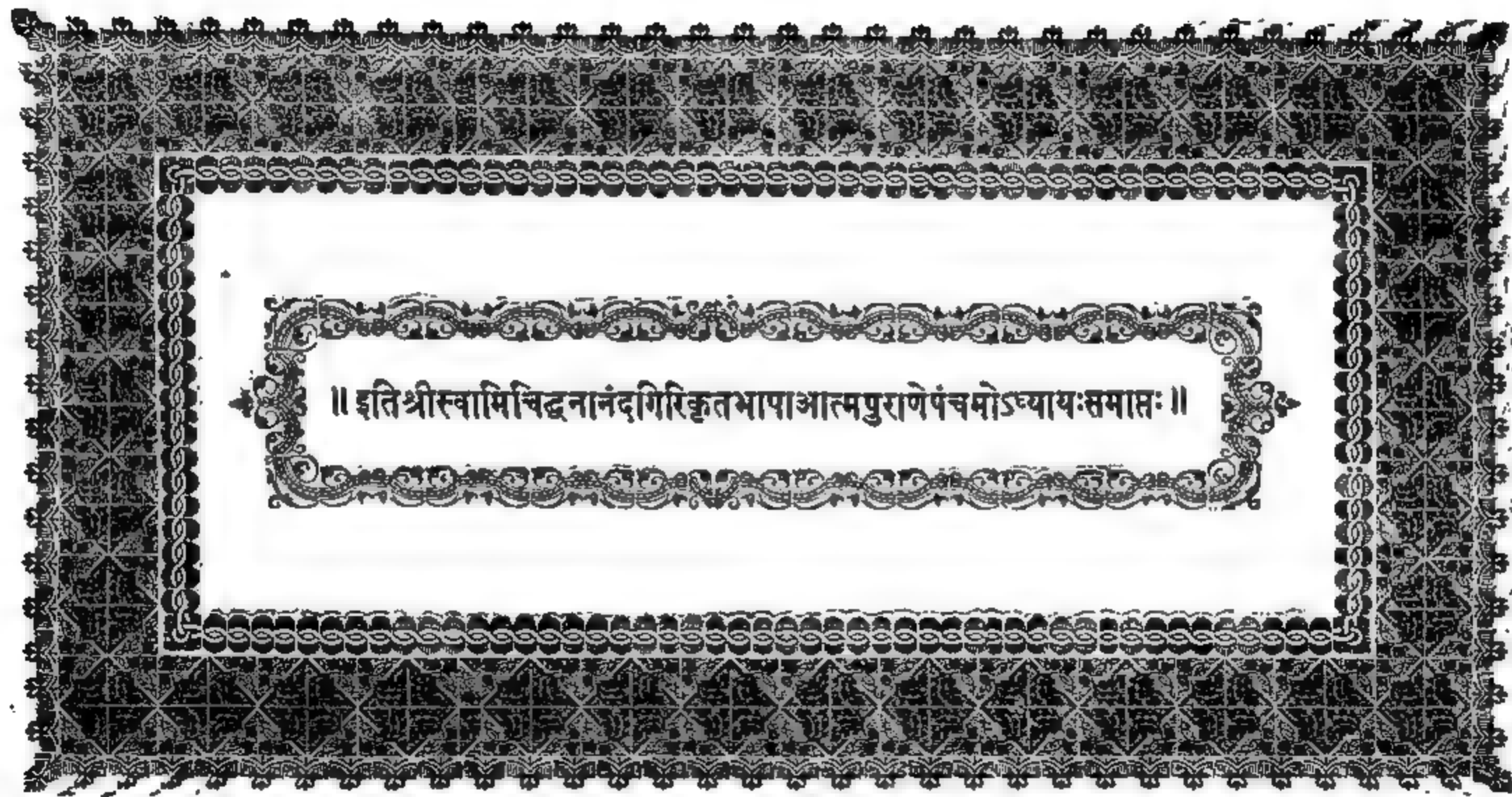
॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे षष्ठाऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ षष्ठाअध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वपंचमअध्यायविषे बृहदारण्यकउपनिषद्के याज्ञवल्क्यकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब षष्ठअध्यायविषे तिसीयाज्ञवल्क्यकांडके अर्थकूं निरूपणकरैं हैं ॥ तहां पूर्वअध्यायोंविषे ब्रह्मविद्याकरिकेंयुक्त जेनानाप्रकारकीकथाहैं ॥ तिनकथावोंकूं गुरुकेमुखतैं श्रवणकरिके सो श्रद्धावान्शिष्य पुनःआपणेगुरुसैंपूछताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् प्रथमअध्यायविषे आपने वामदेवादिकअधिकारियोंके तथा सनकादिकऋषियोंके संवादकरिके ऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और द्वितीयअध्यायविषे आपने इंद्रप्रतर्दनकेसंवादकरिके कौशीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और तृतीयअध्यायविषे आपने अजातशत्रु बालाकीकेसंवादकरिके तिसीकौशीतकीउपनि षद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और चतुर्थअध्यायविषे आपने दध्यङ्अथर्वण अश्विनीकुमार देवराजइंद्रकेसंवादकरिके बृहदारण्यकउप निषद्के मधुकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या॥ और पंचमअध्यायविषे आपने याज्ञवल्क्य आश्वलादिकऋषियोंकेसंवादकरिके बृहदारण्यकउ पनिषद्के याज्ञवल्क्यकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तिनसंपूर्णअध्यायोंविषे नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं हमारेप्रति कथनकरी ॥ और हेभगवन् ॥ पंचमअध्यायकेअंत्यविषे आपने यहकह्याथा ॥ सूर्यभगवान्काशिष्य याज्ञवल्क्यमुनिजनकराजाकेप्रति ब्रह्मविद्या उपदेशक रताभया ॥ हेभगवन् ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी मैंइच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिकेकहो ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ याज्ञवल्क्य मुनिनैं जोब्रह्मविद्या जनकराजाकेताई उपदेशकरीहै ॥ सोसंपूर्णब्रह्मविद्या मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तुमसावधानहोइकै ताविद्याकूं श्रवणकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभीशाकल्यकामृत्युहुआ ॥ तथा संपूर्णब्राह्मणोंकापराजयहुआ ॥ तभी जनकराजा तथाअन्यसभावा सीलोक आपणेआपणेगृहविषेजातेभये॥और जभी प्रातःकालहुआ तभी दुंदुभितैंआदिलेके जोमधुरस्वरवालेवादित्रहैं तथाअप्सरावोंके समानजोस्त्रियां हैं॥तिनोंकेमधुरशब्दोंकरिके राजाजनक निद्रातैंजाग्रतहोताभया॥औरप्रातःकालविषे शास्त्रनैंविधानकरेजेस्नानादिककर्म॥ तिनकर्मोंकूं सोजनकराजा करताभया॥और ब्राह्मणोंके तथाअन्यवृद्धपुरुषोंके तथाचारणवंदीजनोंके जयजयशब्दोंकूं तथा आशीर्वादोंकूं

सोजनकराजा ग्रहणकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सर्वअलंकारोंकूं धारणकरिके सोजनकराजा नानाप्रकारकेवादित्रोंकेशब्दोंकरिके तथागंधर्वोंकेशब्दकरिकेआपणीराज्यसभाविषेआवताभया ॥ कैसीहैसोसभा ॥ नानाप्रकारके मणि रत्न मोती सुवर्ण रजत करि केरचीहुईहै ॥ और सुधर्मानामा जोदेवतावोंकीसभाहै ताकेसमानहै ॥ और आपणेप्रकाशकरिकेदशदिशावोंकूंप्रकाशकरिरहीहै ॥ ऐसीसभाविषेस्थित जोमणियोंकरिकेजडित सुवर्णमयउच्चसिंहासनहै ॥ तासिंहासनऊपर राजाजनक बैठताभया ॥ और दूसरे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यभी यथायोग्य आपणेआपणेआसनऊपर बैठतेभये ॥ और हेशिष्य ॥ याज्ञवल्क्यमुनिभी प्रातःकालविषे स्नानादिकसर्वक्रियाकूंकरिके तथासूर्यभगवान्काआराधनकरिकेसर्वशिष्योंकेसहित ताजनकराजाकीसभाविषेआवताभया ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिकूं सभाविषे आयाहुआदेखिके सोधर्मात्माजनकराजा संपूर्णसभावासीजनोंसहित अभ्युत्थानकरताभया ॥ तथा अर्घ्यपाद्यादिकोंकरिके याज्ञवल्क्यमुनिकापूजनकरताभया ॥ और नानाप्रकारके मणि रत्न मोती करिकेजडित तथाअत्यंत कोमल जोसुवर्णमयआसनहै ॥ सोआसन याज्ञवल्क्यमुनिकेताई बैठणेवासते देताभया ॥ और याज्ञवल्क्यकेशिष्योंकेप्रतिभी यथायोग्य आसनदेताभया॥तिसतैंअनंतर ताआसनऊपरबैठिकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि राजाजनककूं तथा अन्यब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंकूं याप्रकारकी आज्ञाकरताभया ॥ हेराजाजनक हेसंपूर्णसभावासीजनो तुम संपूर्णआपणेआपणेआसनऊपरबैठो ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकीआज्ञा कूंपाइके राजाजनकसहित संपूर्णसभावासीलोक याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति नमस्कारकरिके आपणेआपणेआसनऊपर बैठतेभये ॥ तिसतैंअनं तर सो राजाजनक अत्यंतनम्रतापूर्वक नमस्कारकरिके याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आपसरीखेजेविद्वान्ब्राह्मणहैं ॥ तेही यालोकविषे परमदेवताहैं ॥ काहेतैं जैसे परमात्मादेव जगत्के उत्पत्ति स्थिति लय करणेविषेसमर्थहै ॥ तैसे आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मण इंद्रादिकदेवतावोंकेभीउत्पत्ति स्थिति लय करणेविषेसमर्थहैं ॥ तो हमसरीखेदेह धारिजीवोंकी उत्पत्ति स्थिति लय करणेविषे ब्राह्मणसमर्थहैं याकेविषे क्याकहणाहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मण

केसेहैं ॥ सर्वभूतप्राणियोंविषे जिनोंकीसमानदृष्टिहै ॥ तथा शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा मत्सरादिकविकारोंतैंरहितहैं ॥ तथा सर्वकामनावोंतैंरहितहैं ॥ ऐसेआपसरीखेविद्वान्ब्राह्मणोंकाजो यापृथिवीविषेविचरणाहै ॥ सो सुवर्णादिकपदार्थोंवासतेनहीं ॥ किंतु हमसरीखेअज्ञानीजीवोंके उद्धारकरणेवासतेही आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मणोंकाविचरणाहै ॥ परंतु लोकोंकरिकेपूछेहुए आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मण यानिमित्तकूंकहतेनहीं ॥ किंतु तिन लोकोंकेप्रति याप्रकारकानिमित्त कहतेहैं ॥ हम सुवर्णादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवास्तेविचरतेहैं ॥ और केईकब्राह्मण यहनिमित्त कहतेहैं ॥ हम सत्संगकरिकै आत्माकेजानणेवासते विचरतेहैं ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारकेनिमित्त आपणेविचरणेविषे तेब्राह्मण कथनकरतेहैं ॥ तथापि हेभगवन् हमतो आपणेमनविषे यहनिश्चयकरतेहैं ॥ संसाररूपसमुद्रविषे डूबेहुए जोहमसरीखे राजेहैं ॥ तिनोंकेउद्धारकरणेवासतेही आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मण पृथिवीविषेविचरतेहैं ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आप साक्षात्सूर्यभगवान्केशिष्यहो ॥ तथा आनंदस्वरूपआत्माके अपरोक्षज्ञानकरिकैयुक्तहो॥तथा पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा यातीनप्रकारकीएषणावों तैंरहितहो ॥ यातैं यालोकविषे आपकोविचरणेकायद्यपि कोईप्रयोजननहीं है ॥ तथापि आपकेआवणेका एकप्रयोजन मैं मानताहूं ॥ यासंसाररूपी गर्तविषे फँस्याहुआजोमैंहूं ॥ ताकेउद्धारणेवासते आपका यहाँ आवणाभयाहै ॥ अब संसारसंबंधीदुःखकूंदिखावैं हैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे कृमिकीटोंकरिके व्याप्तहै शरीरजिसका ॥ और छेदनहुआहै कर्ण तथापुच्छ जिसका ॥ और नानाप्रकारकीव्याधियोंकरिकै पीडितहै शरीरजिस का ॥ ऐसाजोकोईकश्वानहै ॥ सोश्वान विष्ठाकरिकैलिप्त सूकेअस्थिकूंदाँतोंविषेग्रहणकरिके ताअस्थिकी रक्षाकरणेवासते दूसरेबलवान्श्वानोंकेसाथ वैरकरैहै ॥ तावैरकरिकै सोश्वान प्राणांतदुःखकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे अस्थिरूपीस्थूणाहैजिसविषे ॥ विष्ठामूत्रादिकोंकीदुर्गंधहैजिसविषे ॥ ऐसे यानिंदितशरीरकूं अहंबुद्धितैंग्रहणकरिकै मैं अनेकप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोताहूं ॥ किंचित्मात्रभी हमारेकूं सुखकीप्राप्तिनहींहोती ॥ अब शरीरकेसर्व व्यवहारोंविषे दुःखकीकारणतादिखावैं हैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि जैसे क्षुधाकरिकै पीडितहुआराक्षस मनुष्यादिकजीवोंकूंभक्षणकरैहै॥तैसे क्षुधाकरिकैपीडितहुआमैंजनक तंडुलादिकस्थावरअन्नकूं तथामृगादिकजंगमजीवों

सुखकेदेणेहारेजेपुण्यकर्मथे तिनपुण्यकर्मोंकूं मैंपापात्माजीव नहींकरताभया ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिके यहअज्ञानीजीव परमदुःखकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मरणकालविषेभी तेपुण्यपापरूपकर्म ताअज्ञानीजीवोंके तापकाहीकारणहैं ॥ हेजनक ॥ इसप्रकार तेपुण्यपापरूपकर्म तिनकर्मोंकेकरणेहारेअज्ञानीजीवोंकूं तथा तिनकर्मोंकेनहींकरणेहारेअज्ञानीजीवोंकूं सर्वदा तापकीहीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और जिसपुरुषकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तभयाहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं तेपुण्यपापकर्म करेहुए अथवा नहींकरेहुए तपायमानकरै नहीं ॥ किंतु जैसे हनुमान् समुद्रकूंतरिगयाथा ॥ तैसे सोविद्वान्पुरुष पुण्यपापकर्मरूपसमुद्रकूं विनाहीयत्नतैंतरिजावैहै ॥ यहां आत्मज्ञानकेप्रभावतैं विद्वान्पुरुषविषे पुण्यपापकर्मोंकाजोअस्पर्श है ॥ सोईही पुण्यपापकर्मोंकातरणाहै ॥ हेजनक ॥ विद्वान्पुरुषकूंपुण्यपापकर्म तपायमाननहींकरै हैं याकेविषे यहकारणहै ॥ याप्रकारकेसंकल्पोंकरिकैयुक्त जेअज्ञानीपुरुषहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंही तेपुण्यपापरूपकर्म तपायमानकरैं हैं ॥ तेसंकल्पयहहैं ॥ इसज्योतिष्टोमनामायज्ञकरिके मेरेकूं स्वर्गलोककी प्राप्तिहोवैगी ॥ और इसब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकरिके हमारेकूंनरकादिकोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और इसपुत्रइष्टिआदिककर्मोंकरिके हमारेकूं इसीजन्मविषे पुत्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और इसअश्वमेधादिकयज्ञोंकाफल हमारेकूं इसजन्मविषेनहींहोवैगा ॥ किंतु दूसरेजन्मविषेहोवैगा ॥ और ब्राह्मणोंकेधनादिकपदार्थोंकूंहरणकरिके आपणेकुटुंबकापालनकरणेहाराजोमैंहूं ॥ तिसमेरेकूं शीघ्रही कुष्ठा दिकरोगोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तथा यालोकविषेहमारी अपकीर्तिहोवैगी ॥ हेजनक ॥ इसतैंआदिलेके नानाप्रकारकेसंकल्पोंकूंकरणेहारे जे अज्ञानीजीवहैं ॥ तिनअज्ञानीजीवोंकूंही तेपुण्यपापरूपकर्म तापकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और विद्वान्ज्ञानीपुरुषविषे तेनानाप्रकारकेसंकल्पहैं नहीं॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषकूं तेपुण्यपापरूपकर्म तापकीप्राप्तिकरैंनहीं इसप्रकार सोविद्वान्पुरुष पुण्यपापरूपकर्मोंकूं तरिजावैहै ॥हेजनक याप्रकारकेविद्वान्पुरुषकूं वेदकेमंत्र याप्रकार कथनकरैहैं ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञान जिसपुरुषकूं प्राप्तभयाहै ॥ ताविद्वान् पुरुषकी जोस्वरूपभूतमहिमाहै ॥ सोमहिमा तीनकालविषे अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुषकामहिमा नित्यहै॥हेजनक॥

जैसे यालोकविषे अज्ञानीपुरुष पुण्यकर्मकरिके वृद्धिकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और पापकर्मकरिके तेअज्ञानीजीव लघुताकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे सोविद्वान्पुरुष पुण्यकर्मकरिके वृद्धिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा पापकर्मोंकरिकेलघुताकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याप्रकारतैं ताविद्वान्पुरुषका महिमा अत्यंतअद्भुतहै॥ हेजनक ॥ जैसे पूर्वलेअधिकारीपुरुष अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिके पुण्यपापतैंरहिततारूपमहिमाकूं प्राप्त भयेहैं ॥ तैसे इदानींकालविषेभी जेअधिकारीपुरुष अस्ति भाति प्रियरूप करिके अद्वितीयआत्माकूं साक्षात्कारकरैं हैं॥तेविद्वान्पुरुषभी तामहिमाकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ आत्मसाक्षात्कारतैंविना ऐसीमहिमाकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषों नैं आत्मसाक्षात्कारकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ इतनैंकरिके आत्मसाक्षात्कारकेफलकानिरूपणकऱ्या॥ अब ताआत्मसाक्षात्कारके शमदमादिकसाधनोंकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ इसकालतैंपूर्वकालविषे जेअधिकारीपुरुषहुएहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते शमदमादिकसाधनोंकूंसंपादनकरिके संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभयेहैं॥ यातैं इदानींकालकेअधिकारीपुरुषोंनैंभी शमदमादिकसाधनोंकूंसंपादनकरिके आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते संन्यासआश्रमकाहीग्रहणकरणा ॥ हेजनक ॥ बालककीन्याई यामनकूंरागद्वेषादिकविकारोंतैंरहितकरणायाकानाम शमहै॥और वाक्आदिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयोंतैंरहितकरणा याकानाम दमहै ॥और प्रारब्धकर्मकेयोगतैं जो पदार्थप्राप्तहोवै॥ तापदार्थकरिके आपणेशरीरकानिर्वाहकरणा ॥ तथा प्रियवस्तुकीप्राप्तिकरिके हर्षकूंनहींप्राप्तहोणा ॥ और अप्रियवस्तुकी प्राप्तिकरिके द्वेषकूं नहींप्राप्तहोणा ॥ याप्रकारकेसंतोषकानाम उपरतिहै ॥ अब क्षमारूपतितिक्षाकेस्वरूपकानिरूपणकरे हैं ॥ यहअधिकारीपुरुष याप्रकारकाविचारकरिके क्षमारूपतितिक्षाकूंकरे॥ सोविचारयहहै॥शरीरकरिके तथा मनवाणीकरिके दुष्टपुरुषोंनैंकरीजोपीडाहै ॥ सोपीडा हमारेवास्तवस्वरूपविषे तीनकालनहीं हैं ॥ किंतु हमारेशरीरअंतःकरणइंद्रियादिकोंविषे सोपीडाहै ॥ और मैं तिनशरीरादिकोंतैंसर्वदाअसंगहूं ॥ याप्रकारकाविचारकरिके सोअधिकारीपुरुष तिनदुष्टपुरुषोंऊपर क्रोधनहींकरे ॥ और सोअधिकारीपुरुष आपणीनिंदाकूंश्रवणकरिके तिननिंदकपुरुषोंऊपर याप्रकारकाविचारकरिके क्षमाकरे ॥ सोविचारयहहै ॥ हमारीनिंदाकूंकरणेहारे जे

यहनिंदकपुरुषहैं ॥ तेनिंदकपुरुष हमारेशत्रुनहीं हैं ॥ किंतु तेनिंदकपुरुष हमारे परममित्रहैं ॥ काहेतें यालोकविषे जोपुरुष जिसपुरुषऊ
पर उपकारकरैहै ॥ सोउपकारकरणेहारापुरुष तिसपुरुषकामित्रहोवैहै ॥ सोयाप्रकारकामित्रकालक्षण इननिंदकपुरुषोंविषेभीघटैहै॥काहेतें
दुःखरूपफलकूंदेणेहारे जेहमारेपापकर्म हैं ॥ तिनपापकर्मोंकूं यहनिंदकपुरुष आपणेविषेलेजावैहैं ॥ इसतैंपरे कोईदूसराउपकारहैनहीं ॥
ऐसेपरमउपकारकूंकरणेहारे यहनिंदकपुरुष हमारे परममित्रहैं ॥ किंवा ॥ यानिंदकपुरुषोंकूं यद्यपि लोक शत्रुकहै हैं ॥ तथापि यहनिंदक
पुरुष हमारेतौ मित्रहीहैं ॥ काहेतें हमारेदोषोंकाचिंतनकरिकै यहनिंदकपुरुष आपणेमनकूं तथावाणीकूंपरिश्रमकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ तथा हमा
रेपापकर्मोंकूं आपणेविषेग्रहणकरिकै यहनिंदकपुरुष तिनपापकर्मोंकेदुःखरूपफलकूं आपभोगैं हैं ॥ यातैं जैसे समुद्रकेमथनकरणेतैं उत्प
न्नभया जोहलाहलविष ॥ ताहलाहलविषकरिकै सर्वजीवोंकूंदग्धहुआदेखिकै कृपाकरिकैयुक्तहुआश्रीमहादेव ताहलाहलविषकूं आपणेकं
ठविषे धारणकरताभया ॥ तैसे हमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जेहमारेपापकर्म हैं ॥ तिनपापकर्मोंकूं यहनिंदकपुरुष कृपाकरिकै आपणे
विषेधारणकरैं हैं ॥ परंतु लोकविषे तथा शास्त्रविषे श्रीमहादेवकूं सज्जनकहै हैं ॥ और यानिंदकपुरुषोंकूं दुर्जनकहैं हैं ॥
यहवार्ताश्रवणकरिकै हमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ हेजनक ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै तेअधिकारीपुरुष तिननिंदकपुरुषोंऊपरभी
क्षमाहीकरैं हैं ॥ और हेजनक ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं जभी कोईदुष्टपुरुष हननकरैहै ॥ तभी तेअधिकारीपुरुष याप्रकारकाविचारक
रिकै तिनदुष्टपुरुषोंऊपर क्षमाकरैं हैं ॥ यहपुरुष किसकारणतैं हमाराहननकरैहै ॥ हमारेदुःखरूपअनिष्टकेचिंतनकरणेकरिकै इसपुरुषकूं
चांडालयोनिकीप्राप्तिमतहोवै ॥ याप्रकारकीइच्छा मैंकरताहूं ॥ यहवार्ता मनुष्यभगवान्नेभी कहीहै तहांश्लोक ॥ परद्रव्याण्यऽभिध्या
यंस्तथाऽनिष्टानिचिंतयन् ॥ वितथाऽभिनिवेशीचजायतेंऽत्यासुयोनिषु ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष परायेधनस्त्रीआदिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छा
करैहै ॥ तथा जोपुरुष अन्यपुरुषकेदुःखरूपअनिष्टकाचिंतनकरैहै ॥ तथा जोपुरुष वेदविरुद्धपाखंडमतोंविषे दुराग्रहकरैहै ॥ सोपुरुष
मरिकै चांडालयोनियोंविषेउत्पन्नहोवैहै ॥ १ ॥ यातैं हमारेअनिष्टकेचिंतनकरणेकरिकै इनपुरुषोंकूं चांडालशरीरकीप्राप्तिमतहोवै ॥

किंवा ॥ जैसे आपणेदोनोंहस्तोंका तथादोनोंपादोंका आपहीताडनकरणा अनुचितहै ॥ तैसे मेरेशरीरकाताडनकरणाभीइनपुरुषोंकूं उचितनहीं ॥ काहेतैं हमारेशरीरविषे तथा इनपुरुषोंकेशरीरविषे तथा अन्यप्राणियोंकेशरीरविषे आत्माएकही है यातैं आपणेशरीरकेताडनकरिके जैसे हमारेकूंदुःखहोवैहै ॥ तैसे हमारेशरीरकेताडनकरिके इनजीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ याप्रकारकीइच्छा हम करैं हैं ॥ किंवा ॥ यहताडनाकरणेहारेपुरुष हमारेकूं दुःखकीप्राप्तिनहीं करते ॥ किंतु जेहमनें पूर्व पापकर्मकरेहैं ॥तेपापकर्महीं इदानींकालविषे हमारेकूं दुःखकीप्राप्तिकरेहैं ॥ यातैं इनपुरुषोंकाकोईअपराधनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे यहप्रसिद्धशरीर मैंआत्माकाहै ॥ तैसेयहसंपूर्णशरीर मैंआत्माकेहैं ॥ याप्रकार गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं हमनें अंतर्यामीआत्माकानिश्चयकऱ्याहै ॥ यातैं इसताडनकालविषे जोदुःखहमारेशरीर विषेहोवैहै ॥ सोदुःख इनताडनाकरणेहारेपुरुषोंकेशरीरविषे मतहोवै ॥ किंतु यहसंपूर्णदेहधारीजीव सर्वदा सुखीहोवैं ॥ तथा सर्वरोगतैंरहितहोवैं ॥ और मेरेताडनकरिके किसीजीवकूंपापकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ हेजनक ॥ याप्रकारकाविचारकरिके तेअधिकारीपुरुष तिनताडनाकरणेहारेपुरुषोंऊपरभी क्षमाहींकरैं हैं ॥ याकानाम तितिक्षाहै ॥ अब समाधान श्रद्धा यादोनोंकानिरूपणकरै हैं॥ हेजनक ॥ आत्माकेसाक्षात्कारवासते जोचित्तकीसावधानताहै ॥ ताकानाम समाधानहै ॥ और गुरुशास्त्रकेउपदेशविषे जोविश्वासहै ताकानाम श्रद्धाहै ॥ इसप्रकार शम दम उपरति तितिक्षा समाधान श्रद्धा याषट्साधनोंकरिकेयुक्तहुआ यहअधिकारीपुरुष गुरुमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै॥अर्थताश्रवणतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष श्रुतिअनुकूल नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिके ताश्रवणकरे अर्थकामननकरै ॥ तिसमननतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष अंतरआत्माविषे चित्तकेवृत्तियोंकानिरंतरप्रवाहरूप निदिध्यासनकूंकरै॥ तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष गुरुउपदिष्ट महावाक्यरूपप्रमाणकरिकेसहकृतजोशुद्धमनहै ताशुद्धमनकरिकेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूप आत्माकूं साक्षात्कारकरै॥शंका॥हेभगवन् ताआत्मसाक्षात्कारकरिके याअधिकारीपुरुषकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञानजिसअधिकारीपुरुषकूं प्राप्तभयाहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकी अविद्यारूपमायानिवृत्तहोइजावैहै ॥ कैसीहैसामाया ॥ आवरणशक्तिकरिके तथा विक्षेपशक्तिकरिके युक्तहै ॥ ऐसीअविद्यारूपमाया आत्मसाक्षात्कारकरिके एकवार नाशकूंप्राप्तहुई पुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ और याविधुआ

त्माविषे जोपरिच्छिन्नपणाप्रतीतहोताथा ॥ सो अविद्यारूपमायाकरिकेप्रतीतहोताथा ॥ आत्मसाक्षात्कारकरिकै तामायाकेनिवृत्तहुएतैंअ नंतर यहविद्वान्पुरुष तापरिच्छिन्नभावकापरित्यागकरिके आपणेआत्माकूं सर्वजीवोंकाआत्मारूपकरिकेदेखेहै ॥ यातें अविद्याकीनिवृत्ति पूर्वक सर्वात्मभावकीप्राप्तिही आत्मसाक्षात्कारकाफलहै ॥ और हेजनक इसप्रकार गुरुवेदांतशास्त्रकेउपदेशतें जिसअधिकारीपुरुषनें आत्माकूं साक्षात्कारकऱ्याहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकेअसंगस्वरूपकूं पुण्यपापरूपकर्म तरिसकेनहीं ॥ तथा ताविद्वान्पुरुषकूं तेपुण्यपाप कर्म तपायमानकरिसकेंनहीं ॥ किंतु जैसे नौका समुद्रकूंतरेहै ॥ तथा जैसे आकाशतेंउत्पन्नभया विद्युतरूपअग्नि तूलादिकोंकूंदग्धकरे है॥तैसे यहविद्वान्पुरुष आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतें तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकूंतरेहै ॥ तथा ज्ञानरूपअग्निकरिके यहविद्वान्पुरुष तिनपुण्य पापरूपकर्मोंकूंदग्धकरेहै॥तहां स्मृति॥ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुतेतथा॥अर्थयहहैअर्जुन॥यहज्ञानरूपअग्निविद्वान्पुरुषकेसर्वकर्मों कूंदग्धकरैहै ॥ १ ॥ हेजनक ॥ पूर्वउक्तशमदमादिकसाधनोंकरिके यहविद्वान्पुरुष जिसआनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोवैहै ॥सोआत्मादेवकै साहै ॥ वास्तवतें पुण्यपापकर्मोतेंरहितहै ॥ तथा मायारूपअविद्यातेंरहितहै ॥ तथा संशयतेंरहितहै ॥ ऐसे असंगआत्माकूं जोअधिकारी पुरुष अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकेजानेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष याशरीरकेविद्यमानहुएभी ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेजानणेहारा ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपहीहोवेहै ॥ और हेजनक ॥ पूर्व हमनें तुमारेप्रति सुषु प्तिअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोपरमात्मादेव कथनकऱ्याथा ॥ सोईहीपरमात्मादेव बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूपकरिके अभी हमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ कैसाहै सोपरमात्मादेव ॥ तुमारेहृदयविषे तथा हमारेहृदयविषे तथा अन्यप्राणियोंकेहृदयविषे आका शकीन्याई परिपूर्ण है ॥ तथा सूर्यादिकज्योतियोंकाभी जोआत्मादेव ज्योतिरूपहै ॥ ऐसास्वयंज्योतिरूपआत्मा वास्तवतें संपूर्णसंसार धर्मोतेंरहितहै॥यातें अविद्याकेसंबंधतें यहआत्मादेव जन्म मरण जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति इत्यादिकअवस्थावोंविषे भ्रमणकरताहुआभी वास्त वतें जन्ममरणादिकअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेजनक ॥ पूर्वजिसब्रह्मका अभयरूपकरिके हमनें तुमारेप्रतिकथनकऱ्याथा ॥ सोईअभ

यब्रह्म अभी हमनैं तुमाराआत्मारूपकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मरूपआत्मातैंभिन्न कोईभीस्थूलसूक्ष्मपदार्थ सिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु अधिष्ठानरूपआत्माकीसत्ताकूंपाइकेहीं यहकल्पितजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ हेजनक ॥ नानाप्रकारकेसाधनोंयुक्त आत्मसाक्षात्कारकूं बोधनकरणेहारी जोब्रह्मविद्या सूर्यभगवान्ने हमारेप्रति उपदेशकरीथी सोसंपूर्णब्रह्मविद्या मैंयाज्ञवल्क्यनैं तुमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणतैं अभी तुमारेकूं संशयविपर्ययतैंरहित आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तभयाहै ॥ यातैं अभी तुम जन्ममरणादिरूपसंसारके भयकापरित्यागकरिके आपणेचित्तविषेप्रसन्नहोवो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिने जनकराजाकेप्रति कथन कऱ्या ॥ तभी सोजनकराजा आपणेबोधकीपूर्णताजनावणेवासतै याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ राजाजनक उवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि याविदेहदेशतैंआदिलेकेजितनीकी हमारीराज्यसंपदाहै ॥ सोसंपूर्णराज्यसंपदा हमनैं पूर्व आपकेताईं दईहै ॥ तासंपूर्णराज्यसंपदासहित तथा पुत्रादिककुटुंबसहित यहमैंजनक दासकीन्याईं आपकेसन्मुखस्थितहूं ॥ यातैं हेभगवन् मैं जनककूं तथा मेरेपुत्रादिककुटुंबकूं अपणादासजानिके आपणीसेवाविषेग्रहणकरिके जिसस्थानविषे आपकीइच्छाहोवै तिसस्थानविषे हमारेकूं आपणेसाथलेजावो ॥ अथवा इसीमिथिलापुरीविषे आपनिवासकरो ॥ हेभगवन् आपतैंविना एकक्षणमात्रभीमैं स्थितनहींहो वोंगा ॥ याप्रकारकी हमारीप्रार्थनाकूं आपकृपाकरिके अंगीकारकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिके आगे अत्यंतदीनतापूर्वक प्रार्थनाकरी ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी जनकराजाकेअत्यंतप्रीतिकूंदेखिके कृपाकरिकेयुक्तहुआ ता मिथिलापुरीकेसमीपवनविषे स्थानकूंबनाइके तहाँनिवासकरताभया ॥ और तिसतैंअनंतर बहुतकालकेपीछे सोयाज्ञवल्क्यमुनि आप णीस्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिके तथा संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरिके राजाजनककेसाथ विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ यहाँ पूर्वग्रं थविषे इतिहासरूपकरिके वर्णनकऱ्याजोआत्मा ताआत्माकेदोस्वरूपहैं ॥ एकतौ सगुणरूपहै ॥ और दूसरा निर्गुणरूपहै ॥ तिनदोनों स्वरूपोंविषे प्रथम सगुणआत्माकेस्वरूपका तथा ताकेज्ञानकेफलका निरूपणकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ पूर्ववर्णनकऱ्या जोजन्ममरणादिकवि कारों तैंरहित आत्माकास्वरूप ॥ सोईहीआत्मादेव मायाकेसंबंधतैं सगुणरूपकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और तासगुणरूपकूंप्राप्तहोइके सोआत्मा

रुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं सोपापकर्म फलकीप्राप्तिकालविषेभी ताकर्त्तापुरुषकेदुःखकाहीहेतुहोवैहै ॥ इसप्रकार यहपुरुष जभी पुण्यकर्मकूंकरैहै ॥ तभी तापुण्यकर्मकेआरंभकालविषे सोकर्त्तापुरुष परमक्लेशकूंप्राप्तहोवै है॥यातैं सोपुण्यकर्म आपणेआरंभकालविषेभी ताकर्त्तापुरुषकेदुःखकाहीहेतुहोवैहै ॥और सोपुण्यकर्म जभी ताकर्त्तापुरुषकूं नाशवान्सुखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ तभीभी सोकर्त्तापुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सोपुण्यकर्म फलकीप्राप्तिकालविषेभी ताकर्त्तापुरुषके दुःखकाहीहेतुहोवैहै ॥ इतनैंकरिके पुण्यपापकर्मोंविषे अज्ञानीकर्त्तापुरुषके तापकीकारणतानिरूपणकरी ॥ अब तिनपुण्यपापकर्मोंविषे अज्ञानीअकर्त्तापुरुषके तापकीकारणतानिरूपणकरैहैं॥ हेजनक॥ जेअज्ञानीपुरुष पापकर्मोंकूं नहींकरैं हैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष दूसरेपापीजीवोंकूंदेखिके आपणेकूंतिनोंतैंउत्कृष्टमानिकेगर्वकरैहै ॥ यातैं सोपापकर्म गर्वकीउत्पत्तिद्वारा तिनअज्ञानीअकर्त्तापुरुषोंके तापकाहीकारणहोवैहै ॥ इसीप्रकार जेअज्ञानीपुरुष पुण्यकर्मकूंनहींकरैहैं ॥ तेद यावानअज्ञानीपुरुषनिर्धनलोकोंकूंदुःखीदेखिकरिके तिनोंऊपर कृपाकरिके परमदुःखकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं सोपुण्यकर्म कृपाकीउत्पत्तिद्वारा अकर्त्ताअज्ञानीपुरुषोंके तापकाहीकारणहोवै है ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ ईर्षुर्घृणीत्वसंतुष्टः क्रोधनोनित्यशंकितः॥परभाग्योपजीवीच षडेतेनित्यदुःखिनः॥अर्थयह॥ ईर्षाकरणेहारापुरुष तथा दयावान्पुरुष तथा संतोषतैंरहितपुरुष तथा क्रोधवान्पुरुष तथा संशयवान्पुरुष तथा परधनतैंजीवनकरणेहारापुरुष यहषट्प्रकारकेपुरुष यालोकविषे सर्वदादुःखीहीरहैं हैं॥१॥किंवा॥जोपुरुष पुण्यकर्मकूंनहींकरै है॥तिसपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी सोपुण्यकर्म अकर्त्ताअज्ञानीपुरुषोंके तापकाहीकारणहै ॥ किंवा इसलोकविषे तथापरलोकविषे जिसपुण्यकर्मनैं जीवोंकूं महान्सुखकीप्राप्तिकरीहै ॥ तिसपुण्यकर्मकूं जिसअज्ञानीपुरुषनैंनहींकऱ्या ॥ सोअज्ञानीपुरुष तिनजीवोंकेमहान्सुखकूंदेखिकरिके ईर्ष्याकरै है ॥ याकारणतैंभी सोपुण्यकर्म ईर्ष्याकीउत्पत्तिद्वारा ताअकर्त्ताअज्ञानीपुरुषोंके तापकाहीकारणहोवैहै ॥ किंवा मरणकालविषे यहअज्ञानीपुरुष आपणेमनविषे याप्रकारकासंकल्पकरिके तपायमानहोवैहै ॥ याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकेभी मैंदुर्बुद्धिजीव जन्मतैंलेके मरणपर्यंत केवलपापकर्मोंकूंहीकरताभया ॥ और

करिकेग्रहणकरैहै ॥ यहां पुरुषतोकर्त्ता है ॥ और चक्षुइंद्रिय करणहै ॥ और घट कर्म है॥और घटनिष्ठज्ञातता फलहै ॥ और चक्षुकाघटके साथसंयोगसंबंधहै ॥ यापाँचोंकेभेदकीअपेक्षाकरिकेही घटादिकपदार्थोंकाग्रहणहोवै है ॥ तिनोंकेभेदतैंविना किसीपदार्थकाग्रहणहोवैनहीं ॥ और यहआत्मादेव सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहितहै ॥ यातैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं वाक्‌आदिकइंद्रिय ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ तथा अग्निसूर्यादिक प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ याकारणतैं यास्वयंज्योतिआत्माकूं श्रुतिभगवती अगृह्य यानामकरिकेकथनकरै है ॥ और हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ यातैं जैसे वस्त्रादिकपदार्थ कालपाइके परिणामरूपशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेव परिणामरूपशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अशीर्य यानामकरिकेकथनकरै है॥और हेजनक ॥यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहितहै॥याकारणतैं अंतरबाहर जितनेक पदार्थ हैं ॥ तिनोंकेसाथ आत्माकासंबंधहैनहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ भेदवालाहोवै है ॥ सोईपदार्थ संयोगादिरूपसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मातो सर्वभेदतैंरहितहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव संबंधरूपसंगकूं तथाबंधकूं तथानाशकूं तथादुःखकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ हेजनक ॥ ऐसेसर्वसंगतैंरहितअसंगआत्माकूं संगवान्‌रागीपुरुष जानिसकैनहीं ॥ किंतु पूर्वउक्ततीनएषणातैं रहित तथा केवलभिक्षावृत्तिकरिके शरीरकानिर्वाहकरणेहारे जेमहात्मासंन्यासीहैं ॥ तेविरक्तसंन्यासीही तापरमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरै हैं ॥ अब आत्मज्ञानकेफलकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जिनविद्वान्‌पुरुषोंनैं तीनएषणावोंकापरित्यागकरिके याआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकर्‍याहै ॥ तिनविद्वान्‌पुरुषोंकूं यहपुण्यपापरूपकर्म अज्ञानीपुरुषकीन्याईं तपायमानकरैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिके निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ यहपुण्यपापरूपकर्म न करणेहारेअज्ञानीपुरुषकूं तथाकरणेहारेअज्ञानीपुरुषकूं सर्वदा दुःखकीहीप्राप्तिकरै है ॥ काहेतैं यहपुरुष जभी पापकर्मकूंकरै है ॥ तभी तापापकर्मकेआरंभकालविषे याअज्ञानीपुरुषकूं परमक्लेशकीप्राप्तिहोवैहै यातैं पापकर्म आरंभकालविषेभी कर्त्तापुरुषकेदुःखकाहीहेतुहै ॥ और जभी सोपापकर्म ताकर्त्तापुरुषकूं फलकीप्राप्तिकरैहै ॥ तभीभी सोकर्त्तापु

ब्रह्मादिकलोकभी आनंदकूंप्राप्तहोरहे हैं ॥ सोब्रह्मानंद हमविद्वान्पुरुषोंकूं आपणेआत्मातैंअभिन्नहुआवतैंहै ॥ यातैं हमविद्वान्पुरुषोंकूंपु त्रादिकविषयजन्यक्षुद्रसुखकीइच्छाहोवैनहीं ॥ हेजनक ॥ तिनलोकोंकेप्रति याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेहुए तेविद्वान्पुरुष संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरिके केवलभिक्षावृत्तिकरिके शरीरकानिर्वाहकरतेभये ॥ कैसेहैं तेविद्वान्पुरुष ॥ कोईविद्वान्पुरुषतो पूर्वगृहस्थआश्रमकूंकरिके प श्चात् संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभये॥ और कोईकविद्वान्पुरुषतो गृहस्थआश्रमकेग्रहणतैंविनाहीं ब्रह्मचर्य आश्रमतैं संन्यासआश्रमकूंग्रह णकरतेभये॥ और लोकएषणा पुत्रएषणा वित्तएषणा यातीनप्रकारकेएषणावोंकापरित्यागकरतेभये॥ अब यातीनोंएषणावोंकूं एकरूपमा निके दोप्रकारकीएषणाका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे जैसे गोसुवर्णादिरूपवित्त यापुरुषकेसुखकासाधनहै ॥ तैसे पुत्रभी पिताकेसुखकेसाधनहैं ॥ यातैं पुत्रएषणा वित्तएषणातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोपुत्रएषणा वित्तएषणारूपहै और जैसे पशुसुवर्णादिरूप वित्त यापुरुषकेसुखकासाधनहै ॥ तैसे स्वर्गादिकलोकभी यापुरुषकेसुखकासाधनहैं ॥ यातैं सोवित्तएषणा लोकएषणतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सो वित्तएषणा लोकएषणारूपहै ॥ यातैं यासंसारविषे दोप्रकारकीएषणाहीसिद्धहोवैहै ॥ एकतो सुखरूपफलकीएषणा और दूसरीतासुखरूपफ लकेसाधनोंकीएषणा ॥ और जिनविद्वान्पुरुषोंकूं आत्मरूपनित्यसुखकीप्राप्तिभई है ॥ तेविद्वान्पुरुष तादोनोंप्रकारकीएषणाका परित्या गकरैं हैं ॥ केवलआत्मारूपनित्यसुखकरिके तेविद्वान् तृप्तरहैं हैं अब संन्यासआश्रमकरिके प्राप्तहोणेयोग्यजोआत्माहै ताकेस्वरूपकानिरू पणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ पूर्वग्रंथविषे जोपरमात्मादेव स्वयंज्योतिरूपकरिके तथाआनंदरूपकरिके हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्याथा ॥ तिसी परमात्मादेवकूं यहविद्वान्पुरुष आपणाआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरैं हैं॥ और इसीपरमात्मादेवकास्वरूप पूर्व हमनैं शाकल्यब्राह्मणसे पूछाथा ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव मूर्त्तअमूर्त्तरूप तथाभावअभावरूप जितनाकजगत्है ॥ तिससंपूर्णजगत्तैं सोपरमात्मादेव रहितहै॥और यहपरमात्मादेव स्वयंज्योतिरूपहै ॥ याकारणतैं वाक्आदिकइंद्रियोंकरिके तथा अग्निसूर्यादिकबाह्यप्रकाशोंकरिके यहआत्मादेव ग्रहण कऱ्याजावैनहीं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे पदार्थोंकाप्रकाशरूपजोग्रहणहै सोपदार्थोंकाग्रहण कर्त्ता करण कर्म फल संबंध यापांचोंकेभेदकी अपेक्षाकरिकेहीहोवैहै ॥ तिनकर्त्तादिकोंकेभेदतैंविना सोपदार्थोंकाग्रहणसिद्धहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकूं यहपुरुष चक्षुइंद्रिय

सकूंहीं ग्रहणकरतेभयेहैं ॥ याकहणेतें यहअर्थसिद्धभया ॥ जिनपुरुषों नें अद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकूं करामलककीन्याईं साक्षात्कारकऱ्याहे ॥ तेविद्वान्पुरुषभी जभी नित्यनैमित्तिककर्मोंकूं विषयोंकीन्याईं विक्षेपकाकारणमानिके जीवन्मुक्तकेसुखवासते विद्वत्संन्यासकाग्रहणकरें हैं ॥ तभी आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकीइच्छावान् जेमुमुक्षुजनहैं ॥ तेमुमुक्षुजन कर्मोंकूंविक्षेपकाकारणमानिके विविदिषासंन्यासकूंग्रहणकरेंहैं ॥ याकेविषेक्याआश्चर्य है ॥ हेजनक ॥ ऐसेविद्वान्संन्यासियोंतें किसीलोकोंनें याप्रकारपूछा ॥ हेविद्वान्संन्यासियो॥ यालोकविषे सुखकाकारणजोपुत्रादिकप्रजाहे ताकाकारणजोस्त्रीहैं ॥ तास्त्रीकासंग्रह तुमविद्वानोंनें किसवासतेनहींकऱ्या ॥ हेजनक ॥ याप्रकार लोकोंकरिकेपूछेहुए तेविद्वान्पुरुष तिनलोकोंकेप्रति याप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ आत्मास्वरूपनित्यसुखतेंअधिक कोईलोकविषेसुखहैनहीं ॥ ऐसाआत्मास्वरूपनित्यसुख हमविद्वानोंकूं अपरोक्षरूपकरिकेप्राप्तभयाहे ॥ यातें पुत्रादिकविषयजन्यअनित्यसुखकोइच्छा हमारेकूंहैनहीं॥हेलोको॥ इसलोकविषे अथवा परलोकविषे पुत्रादिकप्रजाकरिके जोसुखउत्पन्नहोवेहै ताजन्यसुखकाही परंपरासंबंधकरिके स्त्रीकासंग्रहकारणहे ॥ ताजन्यसुखकी हमारेकूंइच्छाहैनहीं ॥ किंतु हमविद्वान्तो आपहीनित्यसुखरूपहैं ॥ यातें पुत्रादिकप्रजाकरिके हमविद्वान्पुरुष किसप्रयोजनकीसिद्धिकरेंगे॥शंका॥हेभगवन्॥अपुत्रस्यगतिर्नास्ति स्वर्गोनवचनैवच॥अर्थयह॥पुत्ररहितपुरुषकीगतिहोवेनहीं ॥ तथापुत्ररहितपुरुषकूं स्वर्गकीभीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ १ ॥ याशास्त्रविषे पुत्रादिकप्रजाकूंहीं पिताकेमोक्षका तथास्वर्गका कारणकह्याहे ॥ सो असंगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेलोको ॥ यहवचन विषयआसक्तरागीपुरुषोंकेअभिप्रायकूंकथनकरेहे ॥ यातें यहवचन अनुवादरूपअर्थवादहे ॥ यातें तावचनकरिके पुत्रादिकप्रजाविषे मोक्षकीकारणतासिद्धहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् पुत्रादिकप्रजाकरिके पिताकामोक्षहोताहोवे ॥ तो सूकरादिकपशुवोंकूं मनुष्योंतेंभी बहुत पुत्रादिकप्रजाहोवेहैं ॥ यातें तिनसूकरादिकोंकाभी मोक्षहोणाचाहिये ॥ यातें पुत्रादिकप्रजाकरिके पिताकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा तिंनपुत्रादिकप्रजाके पालनपोषणकरणेवासते सोपिता अनेकप्रकारकेपापकर्मोंकूंकरेहे ॥ तापापकर्मोंकरिके सोपिता नरककूंहींप्राप्तहोवेहै ॥ और हेलोको ॥ जिस निरतिशयब्रह्मानंदरूपसमुद्रकेलेशमात्रकूंग्रहणकरिके

गकरणाहींउचितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जेपुरुष संन्यासआश्रमकूंधारणकरे हैं ॥ तेपुरुषभी भिक्षाअटनादिककर्मोंकूंकरे हैं ॥ यातें जैसे भिक्षाअटनादिककर्मोंकरिकै संन्यासियोंकीबुद्धि बहिर्मुखनहींहोवै है ॥ तैसे अग्निहोत्रादिकनित्यनैमित्तिककर्मोंकेकरणेकरिकै अस्मदादिकगृहस्थपुरुषोंकीबुद्धिभी बहिर्मुखनहींहोवैगी ॥ यातें अग्निहोत्रादिकनित्यनैमित्तिककर्मोंकेपरित्यागकरणेका कछुप्रयोजननहीं॥समाधान॥ हेजनक ॥ अग्निहोत्रादिककर्मोंविषे जिसपुरुषकाचित्त तत्परहै ॥ सोईपुरुष अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरिसकैहै ॥ चित्तकीतत्परतातैंविना अग्निहोत्रादिककर्म सिद्धहोइसकेनहीं ॥ यातें अग्निहोत्रादिककर्म जैसे बुद्धिकूंबहिर्मुखकरें हैं ॥ तैसे भिक्षाअटनादिककर्म संन्यासीकीबुद्धिकूंबहिर्मुखकरैनहीं ॥ काहेतें जैसे भोजनकालविषे अन्यपदार्थोंकूंचिंतनकरताहुआभी यहपुरुष ताभोजनविषे चित्तकीतत्परतातैंविनाहीं आपणेहस्ततैं अन्नकूंउठाइके आपणेमुखविषेपावे हैं॥तैसे मनकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकूंचिंतनकरताहुआ यहसंन्यासी भिक्षाअटनादिककर्मोंविषे चित्तकीतत्परतातैंविनाहीं भिक्षाअटनादिककर्मोंकूंकरैहै ॥ यातें भिक्षाअटनादिककर्म तासंन्यासीकीबुद्धिकूंबहिर्मुखकरैनहीं ॥ किंवा॥अग्निहोत्रादिकनित्यकर्मोंकेनहींकरणेतें जैसे गृहस्थपुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवे है॥तैसे भिक्षाअटनादिककर्मोंकेनहींकरणेतें संन्यासीकूं पापकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी भिक्षाअटनादिकसंन्यासीकेकर्म अग्निहोत्रादिकनित्यकर्मों तें विलक्षणहैं ॥ हेजनक ॥ इसप्रकार अग्निहोत्रादिककर्मोंकू विक्षेपकाकारणमानिकै पूर्वअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै विविदिषासंन्यासकूंधारणकरिकै निरंतर वेदांतशास्त्रकादीश्रवणकरतेभयेहैं ॥ यातें इदानींकालकेअधिकारीपुरुषोंकूंभी तिसीप्रकार करणाउचितहै ॥ इतनेंकरिकै आत्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिवासतै विविदिषासंन्यासकानिरूपणकर्‍या ॥ अब जीवन्मुक्तिसुखकीप्राप्तिवासतै विद्वत्संन्यासकानिरूपणकरें हैं ॥ हेजनक ॥ पूर्व संन्यासआश्रमकेग्रहणतैंविनाहीं जिनमहात्मापुरुषोंकूं पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं गृहस्थआश्रमविषे आत्मसाक्षात्कार भयाहै ॥ अथवा ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ आश्रमविषे आत्माकासाक्षात्कारभयाहै ॥ तिनविद्वानपुरुषोंकूं यद्यपि पदार्थोंकेग्रहणत्यागतें कोई हानिलाभहोवैनहीं ॥ तथापि तेविद्वान्पुरुष अग्निहोत्रादिककर्मोंकूं विक्षेपकाकारणमानिकै जीवन्मुक्तिसुखकेवासतै विद्वत्संन्या

संन्यासकेअधिकारीका निरूपणकरैं हैं॥ हेजनक॥स्रक् चंदन स्त्री धन पुत्र इत्यादिकविषयोंविषे जिसपुरुषकाचित्त अत्यंतआसक्तहोवैहै ॥ सोविषयआसक्तरागीपुरुष आत्माकेसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं ताविषयआसक्तरागीपुरुषने नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंही अवश्यक रिकैकहणा ॥ और जिसकर्मीपुरुषकाचित्त विषयोंकीप्राप्तिकीइच्छातैंरहितहुआहै ॥ सोपुरुष पुनःकर्मरूपी भारकूंउठावैनहीं ॥ किंतु संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै सोपुरुष सर्वकर्मोंकापरित्यागहीकरै ॥ काहेतैं जिसपुरुषकूंस्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकीइच्छाहै ॥ताफलइच्छावा नूपुरुषकेप्रतिही वेदभगवान् यज्ञादिककर्मोंकाविधानकरैहै ॥ और जिसपुरुषकूं स्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकी इच्छानहीं है ॥ तिसनिष्कामपु रुषकेप्रति वेदभगवान् यज्ञादिककर्मोंकाविधानकरैनहीं ॥ यातैं विषयोंविषेरागवान्पुरुषही कर्मोंकाअधिकारीहै ॥ रागतैंरहितनिष्काम पुरुष कर्मोंकाअधिकारीनहीं ॥ किंतु सोनिष्कामपुरुष संन्यासआश्रमकाहीअधिकारीहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जबपर्यंत यापुरुष काचित्त शुद्धनहींभया ॥ तबपर्यंत सोपुरुष नित्यनैमित्तिककर्मोंकूं अवश्यकरिकैकरै ॥ और जभी नित्यनैमित्तिककर्मोंकरिकैयाअधिका रीपुरुषकाचित्तशुद्धहोवैहै तभी पुनःकर्मोंकेकरणेकाकछुप्रयोजनहैनहीं ॥ यातैं सोअधिकारीपुरुष सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासआ श्रमकूंग्रहणकरिकै निरंतर वेदांतशास्त्रकाहीविचारकरै ॥ यहवार्ताअन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ प्रत्यक्प्रवणतांबुद्धेः कर्मा ण्युत्पाद्यशुद्धितः ॥ कृतार्थान्यस्तमायांति प्रावृडंतेघनाइव ॥ अर्थयह ॥ जैसे वर्षाकालविषे मेघ जलकीवृष्टिरूपप्रयोजनकोसिद्धिकरिकै वर्षाकालकेअंतविषे तेमेघ आपहीलयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे नित्यनैमित्तिककर्मभी चित्तकीशुद्धिद्वारा बुद्धिकूंआत्मपरायणकरिकै आपहीलयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ १ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अंतर आत्माकेविचारविषे जिसपुरुषकीबुद्धि तत्परभई है ॥ तिसपुरुषकूं नित्य नैमित्तिककर्मोंकेकरणेकरिकै कौनहानिहोवै है ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ याअधिकारीपुरुषकी आत्माकेविचारविषे तत्परभईजोबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिकूं जैसे स्रक् चंदन स्त्री पुत्र इत्यादिकविषय बहिर्मुखकरैं हैं ॥ तैसे नित्यनैमित्तिककर्मभी ताबुद्धिकूं बहिर्मुखहीकरैं हैं ॥ यातैं चित्तकीशुद्धिपर्यंतही तिनकर्मोंकाउपयोगहै ॥ चित्तकीशुद्धितैंअनंतर तेकर्म आत्मविचारविषेप्रतिबंधकहैं ॥ यातैं तिनकर्मोंकापरित्या

शास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ तहां ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकानाम निषिद्धकर्म है॥और स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिवासतै शास्त्रनैंविधानकरेजे ज्यो
तिष्टोमादिकयागहैं तिनोंकानाम काम्यकर्म है ॥ और संध्याअग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम नित्यकर्म है ॥ और सूर्यग्रहणविषे स्नानश्राद्धा
दिकोंकानाम नैमित्तिककर्म है तहां स्थूलसूक्ष्मशरीरकेअध्यासकरिकेयुक्त जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं निषिद्धकाम्यकर्म भोगकेअनुकू
लहै ॥ यातैं तेबहिर्मुखपुरुषतो निषिद्धकाम्यकर्मोंकाभीत्यागकरिसकेनहीं ॥ और शास्त्रकेविचारकरिकेयुक्तजेब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ
यहतीनआश्रमवालेपुरुषहैं ॥ तेपुरुष यद्यपि शास्त्रविचारकेवलतैं निषिद्धकर्म काम्यकर्म यादोनोंप्रकारकेकर्मोंकापरित्यागकरिसकैंहैं ॥
तथापि शास्त्रनैंविधानकरेजेनित्यनैमित्तिककर्म तिनकर्मोंकापरित्याग संन्यासआश्रमतैंविनाइतरआश्रमियोंतैं होइसकैनहीं ॥ जोकदा
चित् ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ यहतीनोंआश्रमकेग्रहणतैंविनाहीं प्रमादकरिके अथवा आलस्यकरिके नित्यनैमित्तिककर्मोंकाप
रित्यागकरे हैं ॥ तौतिनोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ यातीनआश्रमोंविषेरहिके
जोपुरुष नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकरे हैं ॥ तिसपुरुषकाचित्त अंतरआत्माविषेएकाग्रहोवैनहीं ॥ और तिनआश्रमोंविषेरहिके जोपुरुष
नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंनहींकरैहै तिसपुरुषकूंपापकीप्राप्तिहोवैहै याप्रकार तिनपुरुषोंकूं दोनोंप्रकारसैं बंधनकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोपुरुष
शास्त्रउक्तरीतिसैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिके नित्यनैमित्तिकादिकसर्वकर्मोंकापरित्यागकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं तिनकर्मोंकेपरित्यागतैं पाप
कीप्राप्तिहोवैनहीं किंतु उलटा तापुरुषकूं कर्मोंकेत्यागतैं परमआनंदकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोपुरुष संन्यासआश्रमकेग्रहणतैंविनाही
नित्यनैमित्तिककर्मोंकापरित्यागकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तापापकरिके सोपुरुष अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां
स्मृति ॥ मोहात्तस्यपरित्यागस्तामसःपरिकीर्तितः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष संन्यासआश्रमकेग्रहणतैंविनाहीं प्रमादरूपमोहतैं तथाआल
स्यतैं नित्यनैमित्तिककर्मोंकापरित्यागकरैहै॥तिसपुरुषका सोकर्मोंकात्याग तामसत्यागहै ॥ तातामसत्यागकरिके तिसपुरुषकूं किंचित्मा
त्रभीफलकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा तापुरुषकूं पापकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ १ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै कर्मोंकेअधिकारीका तथा

राकरिके यज्ञदानादिकपुण्यकर्म आत्मसाक्षात्कारविषे कारणहैं ॥ यातें गुरुशास्त्रादिरूपदृष्टकारणोंकेसंपादनकरणेवासते तथा पापरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिकरणेवासते याअधिकारीपुरुषने यज्ञदानादिकपुण्यकर्मोंकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ शंका हेभगवन् ॥ यज्ञ दान तप अनशन याचारिप्रकारकेपुण्यकर्मोंकरिकेही इमअधिकारीजीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैगी॥आत्मज्ञानकाक्याप्रयोजनहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ आत्मज्ञानतैंविना केवलकर्मोंतें मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ काहेतें जभी याअधिकारीपुरुषकाचित्त बाह्यविषयोंकीतरफनहींजावैहै ॥ तभी याअधिकारीपुरुषकूं ताएकाग्रचित्तविषे संशयविपर्ययतैंरहित महावाक्यजन्य आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ ताआत्मसाक्षात्कारतें अनंतर यहअधिकारीपुरुष जीवन्मुक्तिरूपमुनिभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ यज्ञदानादिकपुण्यकर्मोंकरिके याअधिकारीपुरुषकूं जभी अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेजानणेकीदृढइच्छाहोवैहै ॥ तभी सोअधिकारीपुरुष ताअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकूं गुरुकेउपदेशतें साक्षात्कारकरिके जीवनन्मुक्तिरूपमुनिभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ आत्मज्ञानतैंविना केवलकर्मोंकरिके यहअधिकारीपुरुष जीवन्मुक्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं॥अब आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते विविदिषासंन्यासकानिरूपणकरैं हैं॥हेजनक॥संन्यासीपुरुषोंकरिकेजानणेयोग्य तथा वास्तवतैंमनवाणीकाअविषय ऐसाजोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारकीइच्छाकरतेहुए अधिकारीविरक्तपुरुष यज्ञादिकसर्वकर्मोंकापरित्यागकरिके संन्यासआश्रमकाग्रहणकरैं हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेविरक्तमहात्मापुरुष यज्ञादिककर्मोंकापरित्यागकरिके संन्यासआश्रमकूं किसवासतेग्रहणकरैं हैं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ कर्मोंकेकरणेविषे आसक्तजोकर्मीपुरुषहै ॥ तिसकर्मीपुरुषकी आत्मसाक्षात्कारविषे निष्ठाहोणी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातें आत्मज्ञानविषे निष्ठाकरणेवासते याअधिकारीपुरुषनें कर्मोंकापरित्याग अवश्यकर्‌याचाहिये ॥ शंका ॥ हेभगवन् संन्यासआश्रमतैंविनाही सर्वकर्मोंकापरित्यागकरिके आत्मज्ञानविषेनिष्ठाहोइसकै है॥यातें संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेकाकछुप्रयोजननहीं ॥समाधान॥ हेजनक ॥ संन्यासआश्रमतैंविना ब्रह्मचर्यआश्रमविषे तथागृहस्थआश्रमविषे तथा वानप्रस्थआश्रमविषे सर्वकर्मोंकात्याग कर्‌याजावैनहीं काहेतैंनिषिद्धकर्म काम्यकर्म नित्यकर्म नैमित्तिककर्म यहचारिप्रकारकाकर्म

गृहस्थादिकोंतें सर्वथाहिंसादिकोंकापरित्याग होइसकेनहीं ॥ और संन्यासियोंकातौ अहिंसारूपअभयदानकेदेणेवासतैंही संन्यासआश्रमकाग्रहणहे ॥ यातें संन्यासियोंनें अहिंसारूपअभयदानहीं विशेषकरिकैदेणा ॥ इतनैंकरिकें दानकेस्वरूपकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तपकेस्वरूपकानिरूपणकरें हैं ॥ हेजनक ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिवर्णोंके तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास याचारिआश्रमोंके जेजेधर्म शास्त्रनैंविधानकरेहैं ॥ तिनआपणेआपणेधर्मोंकूं श्रद्धापूर्वककरणेकानामतपहे ॥ अब अनशनकेस्वरूपकानिरूपण करें हैं ॥ हेजनक ॥ शास्त्रनें जिनविषयोंकानिषेधनहींकऱ्याहे ॥ तिनविषयोंकेभोगकाभी यथाशक्ति परित्यागकरणा ॥ याकानाम अनशनहे ॥ याप्रकारकाअनशनधर्म संन्यासियोंकूंछोडिके संपूर्णवर्णआश्रमवालेपुरुषोंकूं यथाशक्ति करणेयोग्यहे ॥ और संन्यासियोंकूंतौ याप्रकारकाअनशन करणेयोग्यहे ॥ इसलोकविषे तथापरलोकविषे विद्यमानजेविषयजन्यसुखहैं ॥ तथा ताविषयजन्यसुखकेसाधन जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंके प्राप्तिकीइच्छामात्रभीनहींकरणी ॥ किंतु प्रारब्धकर्मकेयोगतें जिसप्रकारकाभिक्षाकाअन्न प्राप्तहोवे तथा जिसप्रकारकावस्त्रप्राप्तहोवे ॥ ताअन्नवस्त्रकरिकें संन्यासियोंनें आपणेशरीरकानिर्वाहकरणा ॥ याप्रकारकाअनशन सन्यासियोंकूं अवश्यकरणेयोग्यहे ॥ हेजनक ॥ याप्रकार श्रुतिभगवतीनें विधानकरेजे यज्ञ दान तप अनशन यहचारिप्रकार केपुण्यकर्म ॥ तापुण्यरूपअदृष्टकारणकरिके तथा गुरु शास्त्र अधिकारीशरीर इत्यादिकदृष्टकारणोंकरिकें याअधिकारीपुरुषकूं जभी अद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्मकाज्ञानहोवैहे तभी ताअद्वितीयब्रह्मकेसाक्षात्कारविषे याअधिकारीपुरुषकी आपहीइच्छाहोवैहे ॥ याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ यज्ञ दान तप अनशन याशुभकर्मोंकेकरणेतें यापुरुषविषे पुण्यरूपअदृष्टकीउत्पत्तिहोवैहे ॥ और तापुण्यरूपअदृष्टतें यापुरुषकूं गुरु शास्त्र अधिकारीशरीर शुद्धबुद्धि इत्यादिकदृष्टकारणोंकीप्राप्तिहोवै हैं ॥ और तागुरुशास्त्रादिकदृष्टकारणों तें याअधिकारीपुरुषकूं प्रथम आत्माकापरोक्षज्ञानहोवैहे ॥ और तिसपरोक्षज्ञानतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकूं आत्माकेअपरोक्षज्ञानकीइच्छाहोवै है ॥ और ताइच्छातैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकेचित्तकी आनंदस्वरूपआत्माविषे एकाग्रताहोवैहे ॥ याप्रकार परंप

काम मोक्ष यहचारिप्रकारकापुरुषार्थ स्थितहोवैहै ॥ यातैं अहिंसाधर्महीं सर्वफलकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ याकारणतैंही पतंजलिभगवान्नैं अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः ॥ यायोगसूत्रविषे अहिंसाधर्मकूं सर्वतैंप्रथम कथनकऱ्याहै ॥अब योगसूत्रविषे कथनकरेजे अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंचप्रकारकेयम तिनोंविषे ब्रह्मचर्य सत्य अस्तेय अपरिग्रह याचारोंका अहिंसाविषेअंतर्भाव दिखावैं हैं ॥ हेजनक ॥ स्त्रीकेसंभोगकाअभावरूपजोब्रह्मचर्य है ॥ ताब्रह्मचर्यकाभी अहिंसाविषेहीअंतर्भावहै ॥ काहेतैं ब्रह्मचर्यतैंरहितकामीपुरुषोंकूं स्त्रीसंभोगकेउत्तरकालविषे परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं यौवनअवस्थाविषे स्त्रीकेसंभोगकरणेतैं स्त्रीविषेगर्भकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तागर्भकीउत्पत्तिकरिकै गर्भिणीस्त्रीकूं तथा तागर्भकूं मरणकेसमानदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और कदाचित् तास्त्रीकूं तथागर्भकूं मरणरूपदुःखकीभीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं स्त्रीकासंभोगभी हिंसारूपही है ॥ किंवा ॥ यहकामीपुरुष जभी स्त्रीकासंभोगकरैहै ॥ तभी याकामीपुरुषका सप्तमधातुरूपवीर्य स्त्रीकेउदरविषे जीवोंकेशरीरकीउत्पत्तिकरैहै ॥ ताशरीरकेसंबंधतैं तिनजीवोंकूं अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यहतीनप्रकारकेदुःख प्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसकरिकै तास्त्रीकेसंभोगकरणेहारेकामीपुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तापापकरिकै सोकामीपुरुष इसलोकविषे अथवा परलोकविषे दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सोस्त्रीकासंभोग स्त्री बालक पुरुष यातीनोंकेदुःखकाकारणहोणेतैं हिंसारूपही है ॥ और जोपुरुष ब्रह्मचर्यकर्मकूंधारणकरे है ॥ तिसपुरुषकूं सोहिंसा प्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोब्रह्मचर्य अहिंसारूपकर्मविषेही अंतर्भूतहै ॥ और शरीर मन वाणी करिकै जोपुरुष किसीप्राणीकीहिंसानहींकरैहै ॥ सोमहात्मापुरुष असत्यवचनकाभी उच्चारणकरैनहीं ॥ तथा सोपुरुष अन्यपुरुषोंकेधनादिकपदार्थोंकीचोरीभीकरैनहीं ॥ तथा सोपुरुष धनादिकपदार्थोंकासंग्रहभीकरैनहीं ॥ याकारणतैं सत्य अस्तेय अपरिग्रह यातीनोंकाभी अहिंसाधर्मविषेही अंतर्भावहै ॥ यातैं अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यापांचप्रकारकेयमोंविषे अहिंसा सत्यादिकसर्वयमोंकीजननीहै ॥ ताअहिंसाधर्मकरिकैयुक्तजोपुरुषहै ॥ सोपुरुष सर्वपुरुषोंतैंउत्तमहै ॥ याकारणतैं संन्यासीनैं अहिंसारूप अभयदानकूंहीं सर्वदाकरणा ॥ यद्यपि गृहस्थ वानप्रस्थ ब्रह्मचारी यातीनआश्रमोंकूंभी अहिंसारूपअभयदान करणेयोग्यहै ॥ तथापि

विद्यादिकोंकरिकेउत्पन्नभये जेकीर्तिआदिकगुणहैं ॥ तिनगुणोंकूंनहींसहनकरणा ॥ जिसकूं शास्त्रविषेमत्सरकहैं हैं ॥ तथा अन्यपुरुषोंके जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकीप्राप्तिवासते नानाप्रकारकेउपायोंकाचिंतनकरणा ॥ तथा अन्यप्राणियोंकेमारणेकेउपायोंका चिंतनकरणा ॥ इसतैंआदिलेके जोअनेकप्रकारका मनकरिके जीवोंकेदुःखकेउपायकाचिंतनहै याकानाममनकृतहिंसाहै ॥ और हेजनक ॥ यालोकविषे देवदत्तनामापुरुषका जोयज्ञदत्तनामापुरुषशत्रुहै ॥ तायज्ञदत्तनामापुरुषकेप्रति जोपुरुषतादेवदत्तनामापुरुषकेमारणेकीबुद्धि देवैहै ॥ तथा धनादिकपदार्थदेवैहै ॥ याकानाम उपायहिंसाहै ॥ सोउपायहिंसा यालोकविषे नानाप्रकारकीहोवैहै॥और इसलोकविषे तथा परलोकविषे अन्यप्राणियोंके तथाआपणे दुःखकेकरणेहारा जोमिथ्यावचनहै ॥ सोमिथ्यावचनभी हिंसाहीहै ॥ और यज्ञदानादिकशुभकर्मोंकेकरणेविषे प्रवृत्तभयाजोकोईपुरुषहै ॥ तापुरुषकूं नानाप्रकारकीकुतर्ककेकरिके जोपुरुष ताशुभकर्मतैंनिवृत्तकरैहै ॥ तथा जोपुरुष आपभीशुभकर्मोंकूंकरतानहीं याकानाम नास्तिकपणाहै ॥ सोनास्तिकपणाभी हिंसाहीहै और शास्त्रनैंविधानकरेजे संध्यागायत्रीआदिकनित्यनैमित्तिककर्म तिनोंकापरित्यागकरिदेणा ॥ और शास्त्रनेंनिषेधकरेजेपरस्त्रीगमनादिकपापकर्म तिनोंकूंकरणा यहदोनों करणेहारेपुरुषकूं तथाताकेकुलकूं तथादेशादिककूं अनर्थकीहीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ यातैं यहदोनोंभी हिंसाहीहै ॥ और जेपुरुषथाभारतखंडविषे अधिकारी मनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइके निद्रातंद्रादिकतामसीवृत्तियोंकरिके आपणेआयुष्कूं व्यर्थवितीतकरै हैं ॥ तिन पुरुषोंकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं निद्रातंद्रादिकोंकरिके जोव्यर्थ आयुष्काविततीतकरणाहै सोभीहिंसा हीहै ॥ हेजनक इसतैंआदिलेके हिंसावोंके नानाप्रकारकेस्वरूप शास्त्रविषेकथनकरैहैं ॥ तिनहिंसावोंतैंजोविपरीतहोवे तथा शास्त्रनैंजिसकाविधानकऱ्याहोवे ताकानामधर्म है ॥ सोसंपूर्णधर्म अहिंसाविषे अंतर्भूतहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे अहिंसाधर्मकूं परमधर्मकह्याहै ॥ जिसधर्मतैंकोईअधिकधर्मनहींहोवै ताकानाम परमधर्म है ॥ यातैं संपूर्णविवेकीपुरुषोंने अहिंसाधर्मकूं अवश्यसंपादनकरणा॥अब अहिंसाधर्मकेफलकानिरूपणकरैहैं॥हेजनक॥यालोकविषे जोपुरुष अहिंसाधर्मकूंसंपादनकरैहै॥तापुरुषकेहस्तविषे धर्म अर्थ

धिकपुण्यकर्मनहीं है याकेविषेक्याकहणाहे यातें जोसंन्यासी सर्वप्राणियोंकेताई अभयरूपदानदेकरिके आत्मसाक्षात्कार कीप्राप्तिवासते प्रयत्नकरैहै ॥ सोसंन्यासी इसशरीरविषे अथवा अन्यशरीरविषे द्वैतदर्शनजन्यभयकूंप्राप्तहोवैनहीं॥किंतु सर्वभयतैंरहितअ द्वितीयब्रह्मकूंहीं सोसंन्यासी प्राप्तहोवैहै ॥ यातेंअभयरूपदानतैंपरे दूसराकोईदानहैनहीं ॥ अब अभयरूपदानकीउत्कृष्टताबोधनकरणे वासते ताअभयरूपदानकालक्षणरूपजोअहिंसाधर्म है ताकेविषे सर्वधर्मोंकाअंतर्भावकरिके ताअहिंसाकीउत्कृष्टताकानिरूपणकरे हैं ॥ हेजनक ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज याचारिप्रकारकेजीवोंकूं शरीरकरिके तथावाणीकरिके तथामनकरिके जोदुःखकीप्राप्तिनहीं करणी याकानाम अहिंसाहे ॥ ताअहिंसाविषेही ॥ सत्य दया तप दान याचारिपादोंवालाधर्म सर्वदानिवासकरैहे ॥ अब याहीअर्थकेस्प ष्टकरणेवासते प्रथम हिंसाकेस्वरूपकानिरूपणकरे हैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे तीनप्रकारकीहिंसाहोवैहे ॥ एकतो शरीरकृतहिंसाहोवै हे ॥ और दूसरी वाणीकृतहिंसाहोवैहे ॥ और तीसरी मनकृतहिंसाहोवेहे ॥ तहाँ शरीरकृतहिंसाकायहस्वरूपहे ॥ जरायुनामाचर्मतैंउत्प न्नहोणेहारे जेमनुष्य गौ अश्वादिकहैं तिनोंकानाम जरायुजहे ॥ और अंडतैंउत्पन्नहोणेहारे जेपक्षीसर्पादिकहैं तिनोंकानाम अंडजहे ॥ और स्वेदतैंउत्पन्नहोणेहारे जेमत्कुणयूकादिकहैं ॥ तिनोंकानाम स्वेदजहे ॥ और भूमिकूंभेदनकरिकेउत्पन्नहोणेहारे जेवृक्षादिकहैं तिनों कानाम उद्भिज्जहे ॥ याचारिप्रकारकेजीवोंकेशरीरविषे जोशस्त्रादिकोंकाप्रहारकरणा ॥ तथा मंत्रऔषधिआदिकोंकरिके तिनजीवोंकेशरी रविषे रोगादिकोंकीउत्पत्तिकरणी ॥ तथा तिनजीवोंके स्त्री धन अन्न पशु आदिकपदार्थोंकाहरणकरणा ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारके जेजीवोंकेमरणकेउपायहैं ॥ तिनोंकानाम शरीरकृतहिंसाहे अब वाणीकृतहिंसाकेस्वरूपकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे चोरी आदिकपापकर्मोंकूंकरणेहारे जेपापात्माजीवहैं ॥ तिनजीवोंके चोरीआदिकपापकर्मोंका राजाकेसमीप तथाराजाकेभृत्योंकेसमीप कथनक रणा ॥ तथा अन्यप्राणियोंकीनिंदाकरणी ॥ तथा गुणवान्पुरुषोंविषे दोषोंकाकथनकरणा ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकीवाणीकरिके जोजीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरणी याकानाम वाणीकृतहिंसाहे ॥ अब मनकृतहिंसाकेस्वरूपकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ अन्यपुरुषोंविषे

न्यासियों नैंहींकरणा ॥ दूसरेआश्रमवालेपुरुषने नहींकरणा ॥ याप्रकारकेअर्थविषे शास्त्रकातात्पर्यनहीं ॥ किंतु ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिवर्णोंनैं तथा ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासीयाचारिआश्रमोंनैं यहअभयरूपदान अवश्यकरणा ॥ परंतु संन्यासियोंने याअभयरूपदानकूंहीं विशेषकरिकेकरणा काहेतैं कुटीचक बहूदक हंस परमहंस याचारिप्रकारकेसंन्यासविषे किसीभीसंन्यासआश्रमके धारणकरणेकीइच्छा जभी यहअधिकारीपुरुषकरैहे ॥ तभी सो अधिकारीपुरुष मैं सर्वभूतप्राणियोंकेताईं अभयरूपदानदेताहूं याप्रकारकामंत्रउच्चारणकरिकै पूर्वगृहस्थादिकआश्रमकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकाग्रहणकरैहे ॥ याकारणतैं संन्यासीने जरायुजादिकचारिप्रकारकेजीवोंकेताईं अभयरूपदान अवश्यदेणा ॥ जोपुरुष संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै शरीरमनवाणी करिकै किसीजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ तापुरुषका संन्यासआश्रमही निष्फलहोवैहे ॥ यातैं आपणेसंन्यासआश्रमकेस फलकरणेवासते यासंन्यासीनैं सर्वप्राणियोंकेताईं अभयरूपदान अवश्यदेणा ॥ और अधिकारीपुरुषोंकेताईं यहसंन्यासी ब्रह्मविद्याका तथा ब्रह्मविद्याकेसाधनोंका दानकरै ॥ याप्रकारकावचन जोशास्त्रोंविषेकथनकऱ्याहे सोभी आपणीप्रतिष्ठावासतै तथाधनादिकपदार्थोंकी प्राप्तिवासते संन्यासी अधिकारीपुरुषोंकेताईं ब्रह्मविद्याकादानकरै याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै सोवचन शास्त्रविषेनहींकह्या॥ किंतु मेरेशरणकूं प्राप्तहुए जेयहअधिकारीशिष्यहैं ॥ तिनोंकूं अभयब्रह्मकीप्राप्तिहोवै याप्रकारकाउद्देशकरिकै यहसंन्यासी तिनअधिकारीपुरुषोंकेताईं ब्रह्म विद्याकादानदेवै यातैं ब्रह्मविद्याकादानभी अभयदानरूपही है ॥ अब अभयरूपदानविषे सर्वदानोंतैंउत्कृष्टताकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ कुरुक्षेत्रभूमिविषे सूर्यकेग्रहणकालविषे जोपुरुष सुवर्णादिकपदार्थोंकरिकैपूर्ण संपूर्णपृथिवीकूं ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकेताईं श्रद्धापूर्वक दानकरिदेवै॥तिसदानतैंभीस्थावरजंगमप्राणियोंविषे किसीएकप्राणीकूंभी अभयकीप्राप्तिकरणी अधिकदानहै॥तात्पर्ययह ॥ स्थावरजंगमप्रा णियोंविषे किसीएकप्राणीकेताईभी जोपुरुष अभयदानदेवैहे ताअभयदानतैंपरेभी जभी कोईपुण्यकर्म अधिकनहींभया ॥ तभी जो कोई पुरुष सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे स्थावरजंगमरूपसर्वप्राणियोंकेताईं अभयरूपदानदेवैहे ॥ ताअभयदानतैंपरे यालोकविषे कोईअ

हमअधिकारीजीवोंके स्वर्गादिकफलकासाधनहैं ॥ तथापि तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेन ॥ अर्थयह ॥ अधिकारीब्राह्मण वेदाध्ययन यज्ञ दान तप अनाशक इत्यादिककर्मोंकरिके याआनंदस्वरूपआत्माकेजानणेकीइच्छाकरैहै ॥ १ ॥ याश्रुतिवचननें तिनयज्ञादिककर्मोंविषे पूर्वउक्तरीतिसें आत्मज्ञानकीकारणताभीसिद्धहोवैहै ॥ अब याहीश्रुतिकेअर्थकूं विस्तारकरिके निरूपण करैहैं ॥ हेजनक ॥ याश्रुतिभगवतीनेंकथनकरेजेयज्ञ दान तप अनशन यहचारिप्रकारकेकर्म ॥ तिनचारिप्रकारकेकर्मोंके वर्णआश्रमकेभेदकीअपेक्षाकरिके नानाप्रकारकेस्वरूपहैं ॥ तहाँ प्रथम यज्ञोंकेस्वरूपकीव्यवस्थाकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ दर्शपौर्णमासयज्ञतेंआदिलेके जितनेक द्रव्यादिकपदार्थोंकरिकेसाध्ययज्ञहैं ॥ तिनयज्ञोंविषे गृहस्थआश्रमवालेपुरुषकाही अधिकारहै ॥ ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी यातीनोंका तिनयज्ञादिककर्मोंविषेअधिकारनहीं॥और विनाहीद्रव्यतेंजिसकीसिद्धिहोवै ऐसाजे मंत्रकाजपरूपयज्ञहै तथा समाधिरूपयज्ञहै ॥ तिनयज्ञोंविषे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी याचारिआश्रमोंकाअधिकारहै ॥ परंतु याकेविषेइतनोविशेषताहै ॥ ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी इनतीनोंकूंतो मुख्यअधिकारहै ॥ और गृहस्थकूं गौणअधिकारहै ॥ और धनतैंविनाहीं सिद्धहोणेहारे जेज्ञान अभ्यासरूपयज्ञहैं ॥ तिनोंविषेभी ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी याचारिआश्रमोंकाअधिकारहै ॥ परंतु याकेविषेभी इतनीविशेषताहै ॥ ज्ञानअभ्यासरूपयज्ञोंविषे संन्यासीका मुख्यअधिकारहै ॥ और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ इनतीनोंका गौणअधिकारहै ॥ अब दानरूपकर्मकेस्वरूपकीव्यवस्थाकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक पक्वअन्न काचाअन्न सुवर्ण गौ अश्व पृथिवी इसतेंआदिलेके अनेक प्रकारकेपदार्थोंकादान शास्त्रनेविधानकऱ्याहै ॥ सोदान संन्यासआश्रमतैंभिन्न ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ इनतीनोंआश्रमवालेपुरुषों ने यथाशक्ति अवश्यकरणा ॥ और संन्यासियोंनेंतो सर्वप्राणियोंकिताईं अभयरूपदानकरणा ॥ यहाँ शरीरकरिके तथावाणीकरिके तथा मनकरिके जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेजीवोंकूं दुःखकोप्राप्तिनहीं करणी याकानाम अभयदानहै ॥ याअभयरूपदानतैंपरे दूसराकोईदान अधिकनहीं ॥ किंतु यहअभयरूपदानहीं सर्वदानोंतेंउत्कृष्टदानहै ॥ हेजनक ॥ यहअभयरूपदान केवलसें

उपाय जोविद्वान्पुरुषोंनैं कथनकऱ्याहै ॥ ताउपायकूं तूं श्रवणकर ॥ हेजनक जैसे यहबहिर्मुखमन बाह्यविषयोंकीइच्छाकरिकै तिनविषयोंविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ तैसे अंतरआत्माकीइच्छाकरिकै यहमन अंतरआत्माविषेभीप्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ अंतर अथवा बाहर जोजोमनकीप्रवृत्तिहै ॥ ताप्रवृत्तिका इच्छाहीकारणहै ॥ और यहपदार्थ सर्वदोषतैंरहित सुंदरहै ॥ याप्रकार सुंदरतारूपकरिकै जिसजिसपदार्थकूं यहमन जानैहै ॥ तिसतिसपदार्थकीप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै पदार्थोंकेसौंदर्यकाज्ञान तिनपदार्थोंकीइच्छाकाकारणहै ॥ और यालोकविषे पापीजीवोंकूं सिंहसर्पादिकअप्रियपदार्थोंका जोज्ञानहोवैहै ॥ सोपूर्वलेपापकर्मोंकरिकेहोवैहै ॥ यातैं पापकर्म अप्रियपदार्थोंकेज्ञानकाकारणहै ॥ और यालोकविषे पुण्यवान्पुरुषोंकूं धनादिकप्रियपदार्थोंकाजोज्ञानहोवैहै ॥ सोपूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैंहोवैहै ॥ यातैं पुण्यकर्म प्रियपदार्थोंकेज्ञानविषेकारणहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष यज्ञ दान तप अनाशक इत्यादिकपुण्यकर्मोंकूंकरै ॥ तिनयज्ञादिकपुण्यकर्मोंकरिकै ताअधिकारीपुरुषकूं आत्माकेसौंदर्यताकाज्ञानहोवैहै ॥ और तासौंदर्यताज्ञानतैंअनंतर ताअधिकारीपुरुषकूं आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिकीइच्छा होवैहै ॥ और ताइच्छातैंअनंतर ताअधिकारीपुरुषकामन आनंदस्वरूपआत्माविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ याप्रकार तिनयज्ञादिककर्मोंका आत्मज्ञानविषेपरंपराकरिकै उपयोगहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ज्योतिष्टोमेनयजेतस्वर्गकामः ॥ इत्यादिकवेदवाक्योंविषे यज्ञादिककर्मोंकूं स्वर्गादिकफलकासाधनकह्याहै ॥ यातैं तिनयज्ञादिककर्मोंविषे आत्मज्ञानकीसाधनता किसप्रकारसंभवैगी ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यद्यपि यज्ञादिककर्मोंकूं स्वर्गादिकफलकासाधनकह्याहै ॥ तथापि तेयज्ञादिककर्म आत्मज्ञानकेभीसाधनहैं ॥ काहेतैं जैसे ॥ यावज्जीवंदर्शपूर्णमासाभ्यांयजेत ॥ यावचनतैं दर्शपौर्णमास्यनामायज्ञोंविषे नित्यकर्मरूपता सिद्धहोवैहै ॥ और ॥ दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गकामोयजेत ॥ यावचनकरिकै उत्पन्नभईजोइसअधिकारीजीवोंकीइच्छा ॥ ताइच्छाकेवशतैं तिनदर्शपौर्णमासनामायज्ञोंविषे काम्यकर्मरूपताभीसंभवैहै ॥ तैसे दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गकामोयजेत ॥ यावचनतैंउत्पन्नभईजोइच्छा ॥ ताइच्छाकेवशतैं तेयज्ञादिककर्म यद्यपि

वही तिनब्राह्मणोंकूं आपणीमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहे ॥ और हेजनक ॥ यालोकविषे सर्पकीन्याई क्रोधवानजोंसिंहादिकतामसीजीवहैं॥ तेतामसीजीव जोकदाचित् आपणेमर्यादाकापरित्यागकरिके सर्वप्राणियोंके हिंसाकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तो सर्वज्ञपरमात्मादेवतैंविना दूसरा कोनपुरुष तिनसिंहादिकोंकूंनिवारणकरेगा॥ किंतु यहपरमात्मादेवही तिनसिंहादिकतामसीजीवोंकूं आपणीरमर्यादाविषेस्थापनकरिरह्या हे ॥ और हेजनक ॥ अगाधहेजलजिनोंविषे ऐसेजेक्षारसमुद्रतेंआदिलेकेसप्तसमुद्रहैं ॥ तेसमुद्र आपणेआपणेमर्यादाकापरित्यागकरिके जोकदाचित् संपूर्णजगत्केप्रलयकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तो यापरमात्मादेवतैंविना तिनसमुद्रोंकूं दूसराकोनपुरुष निवारणकरेगा किंतु यहपर मात्मादेवहीतिनसमुद्रोंकूं आपणोआपणीमर्यादाविषेस्थापनकरिरह्याहे॥ और हेजनक श्रीगंगातैंआदिलेकेजेनदियोंकेजलहैं तेजल आपणे मर्यादाकापरित्यागकरिके जो कदाचित् उलटाहीगमनकरें तो तिनजलोंकूं सर्वज्ञपरमात्मातैंविना दूसराकोनपुरुष निवारणकरेगा किंतु यहपरमात्मादेवही तिनजलोंकूं आपणेआपणेमर्यादाविषेचलावेहे ॥ और हेजनक ब्रह्मांडकेभारकरिकेयुक्त जोयहपृथिवीहे सोपृथिवी जलकेऊपरस्थितहे ॥ जोकदाचित् सोपृथिवी आपणेमर्यादाकापरित्यागकरिके ताजलविषेप्रवेशकरणेकीइच्छाकरे तो तापृथिवीकूं सर्व ज्ञपरमात्मादेवतैंविना दूसराकोनपुरुष निवारणकरेगा ॥ किंतु यहपरमात्मादेवही तापृथिवीकूं आपणेमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहे ॥ और हेजनक ॥ आकाशविषेस्थित जेसूर्यचंद्रादिकहैं तेसूर्यादिक आपणेमर्यादाकापरित्यागकरिके जोकदाचित् नीचेपृथिवीविषे पतन होवैं तो तिनसूर्यादिकोंकूं यापरमात्मादेवतैंविना दूसराकोनपुरुष निवारणकरेगा किंतु यहपरमात्मादेवही तिनसूर्यादिकोंकूं आपणीआ पणीमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहे ॥ हेजनक याप्रकार सेतुकीन्याई जोपरमात्मादेव सर्वजगत्कीमर्यादाकूं व्यवस्थापनकरैहे ॥ तापर मात्मादेवकूं तूं आपणाआत्मारूपकरिके निश्चयकर ॥ इतनैंकरिके मायाविशिष्टसगुणब्रह्मकेअभेदचिंतनकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥अब बहिर्मुखपुरुषोंऊपर अनुग्रहकरिके दूसरेउपायकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ सर्वजगत्कूं आपणीआपणीमर्यादाविषे स्थापनकरणेहारा जोमायाविशिष्टसगुणब्रह्महे सोसगुणब्रह्मभी बहिर्मुखपुरुषोंकरिकेजान्याजावेनहीं ॥ याप्रकारकावचन जोतूं कहे तो तामनकेअंतर्मुखताका

त्मादेव पापकर्मकरिके लघुताकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ हेजनक ॥ वास्तवतें पुण्यपापतैंरहित तथाविषमतातैंरहित जोयहपरमात्मादेवहै ॥ सोप
रमात्मादेवही महाराजाकीन्याईं संपूर्णजगत्कूं आपणेआज्ञाविषेचलावैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं सर्वेश्वर यानामक
रिकेकथनकरैहै ॥ और सूर्यभगवान्कीन्याईं यहपरमात्मादेवही सर्वभूतोंकाराजाहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं भूताधि
पति यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ और जैसे माताआपणेपुत्रोंकापालनकरैहै॥ तैसे यहपरमात्मादेवही सर्वभूतप्राणियोंकापालनकरैहै॥याका
रणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं भूतपाल यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ और जैसे यालोकविषे नदीकेपारलेकिनारेके तथाओरलेकिना
रेके मध्यविषेस्थित जोकाष्ठमृत्तिकादिकोंकरिकेरचाहुआसेतुहै ॥ सोसेतु नदीकेजलोंकीमर्यादाकूंधारणकरैहै ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिपरमा
त्मादेवही भूरादिकलोकोंकी तथावर्णआश्रमकेधर्मोंकी मर्यादाकूंधारणकरैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं सेतु यानामक
रिकेकथनकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक॥ यालोकविषे यहपरमात्मादेव जोकदाचित् जगत्कीमर्यादाकूं
व्यवस्थापननहींकरै ॥ तौ पृथिवी जल तेज वायु आकाश यहपंचभूत आपणेआपणेमर्यादाकापरित्यागकरिके संपूर्णजगत्केप्रलयकरणे
विषेजोकदाचित् प्रवृत्तहोवैं तौ तापरमात्मादेवतैंविना दूसराकौनपुरुष तिनपृथिवीआदिकभूतोंकूं निवारणकरैगा॥किंतु यहपरमात्मादेवही
तिनभूतोंकूं आपणीआपणीमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै॥और हेजनक यापृथिवीलोकविषे जेप्रियव्रतादिकक्षत्रियराजेहैं ॥ कैसेहैंतेराजे ॥
महान्हैप्राक्कर्मजिनोंका ॥ तथा अग्निकेसमानहैतेजजिनोंका ॥ तथा शस्त्रअस्त्रविद्याविषे जेराजे अत्यंतकुशलहैं॥तथा यापृथिवीलोकविषे
जिनराजोंतैंकोईअधिकबलवान्नहीं है ॥ ऐसे महाबलवान्प्रियव्रतादिकराजे जोकदाचित् आपणेधर्ममर्यादाकापरित्यागकरिके प्रजाकेअन
र्थकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तौ सर्वज्ञपरमात्मादेवतैंविना दूसराकौन पुरुष तिन राजोंकूं निवारणकरैगा ॥ किंतु यहपरमात्मादेवही तिनराजोंकूं
आपणेधर्ममर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै॥और हेजनक॥वरशापदेणेविषेसमर्थ जेदुर्वासादिकक्रोधीब्राह्मणहैं॥तेब्राह्मण जोकदाचित् शापदेके
तीनलोकोंकेभस्मकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तौ यापरमात्मादेवतैंविना दूसराकौनपुरुष तिनब्राह्मणोंकूं निवारणकरिसकैगा किंतु यहपरमात्मादे

अब सगुणब्रह्मविषेमनकीएकाग्रताकाप्रकार निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यहमन अत्यंतचंचलहै ॥ यातैं निर्गुणब्रह्मविषे ताचंचलमन
कालयरूपनिग्रहकरणेविषे जोतूं समर्थनहींहोइसकै तौ तुमारेताई सगुणब्रह्मकाअभेदचिंतनरूप दूसराउपाय मैंकथनकरताहूं ॥ ताउपा
यकूं तूं सावधानहोइकेश्रवणकर ॥ हेजनक ॥ पूर्व हमनैं तुमारेप्रति प्राणइंद्रियोंकासाक्षीरूपकरिकै जोपरमात्मादेव कथनकर्‍याथा॥जोपर
मात्मादेव बुद्धिकेतादात्म्यसंबंधकरिकै ॥ विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपरमात्मादेव सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थितहै ॥ और
जिसपरमात्मादेवविषे यहविज्ञानमयजीव सुषुप्तिअवस्थामें अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोपरमात्मादेव सर्वत्रपरिपूर्ण है ॥ याकारणतैं श्रुति
भगवती तापरमात्मादेवकूं महान् यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेव जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं
श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अज यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और जैसे यालोकविषे मंत्रसिद्धिवालेपुरुषके संपूर्णप्राणी वशवर्ती
होवैं हैं ॥ तैसे तामायाविशिष्टपरमात्मादेवके संपूर्णभूतभौतिकजगत् वशवर्तीरहैहै याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं
वशी यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ अथवा ॥ जैसे पुत्रोंविषेस्नेहवानजोमाताहै ॥ तामाताकूं तेपुत्र आपणेवशकरिलेवैं हैं ॥ तैसे यहपरमात्मा
देवभी सर्वजीवोंकेहृदयदेशकापरित्यागकरिकै कहांजावैनहीं ॥ यातैं संपूर्णजीवोंनैं तापरमात्मादेवकूं आपणेवशकर्‍याहै ॥ याकारणतैं
श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं वशी यानामकरिकैकथनकरैहै॥ और जैसे यालोकविषे कोईगृहीपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रादिककुटुंबकूं आपणी
आज्ञाविषे चलावैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी संपूर्णजगत्कूं आपणीआज्ञाविषेचलावैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं
ईशान यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और जैसे सूर्यभगवान् यासर्वजगत्कापालनकरैहै॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी फलप्रदातारूपकरिकै सर्व
जगत्कापालनकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अधिपति यानामकरिकैकथनकरैहै॥ और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे
पुण्यवान्पुरुष तापुण्यकर्मोंकरिकै यशआदिकोंकूंप्राप्तहोइकै वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपपरमात्मादेव पुण्यकर्मकरिकै वृद्धि
कूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे पापीपुरुष तिनपापकर्मोंकरिकै अयशआदिकोंकूंप्राप्तहोइकै लघुताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहपरमा

निवृत्तिहोवैहै ॥ ऐसे अन्नरूपभारकापरित्यागकरिकै पाषाणकाभार आपणेमस्तकऊपरउठावै सोभारवाहीपुरुष अत्यंतमूढबुद्धिहै ॥ तैसे सुखकेसाधन जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हैं तिनोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकैभी जेपुरुष विद्याआश्रमादिकोंकेअभिमानरूपभारकूंउठावैं हैं तेपुरुषभी अत्यंतमूढबुद्धिजानणे यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकीइच्छाहोवै सोअधिकारी पुरुष वेदांतशास्त्रकेविचारकूंछोड़िकै दूसरेअनात्मशास्त्रोंकाविचार कदाचितभीनहींकरै काहेतैं सोअनात्मपदार्थोंकाविचार यापुरुषके वाक्आदिकइंद्रियोंकूं केवलपरिश्रमकीहीप्राप्तिकरणेहाराहै तथाअभिमानकीउत्पत्तिकरणेहाराहै ॥ तहाँश्रुति ॥ नानुध्यायाद्बहूञ्छब्दान्वाचोविग्लापनंहितत् ॥ अर्थयह ॥ बहुतअनात्मपदार्थोंकाचिंतन यापुरुषकेवाक्आदिकइंद्रियोंकूं परिश्रमकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ याकारणतैं यहअधिकारीपुरुष तिनअनात्मपदार्थोंकाचिंतन नहींकरै ॥ किंतु यहअधिकारीपुरुष निरंतर वेदांतशास्त्रकाहीचिंतनकरै ॥ हेजनक ॥ जैसे लोकप्रसिद्धगौ आपणेचारिस्तनोंकरिकै वत्सकोतृप्तिकरै है ॥ तैसे स्वाहाकार वषट्कार स्वधाकार हंतकार याचारिस्तनोंकरिकै देवताऋषि पितर मनुष्यादिक यासंपूर्णोंकोतृप्तिकरणेहारो जोयहवेदकीवाणीरूपकामधेनुगौहै तावाणीरूपधेनुकूं जेपुरुष अभिमानादिकविकारोंतैंरहितहोइकै प्रसन्नकरैहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकेताईहीं सोवाणीरूपकामधेनु मोक्षरूपदुग्धकीप्राप्तिकरैहै ॥ और अभिमानादिकविकारोंकरिकैयुक्तहुए जेपुरुष तावेदवाणीरूपकामधेनुकूं ग्लानिकीप्राप्तिकरै हैं ॥ तिनअभिमानीपुरुषोंकेताई सोवेदवाणीरूपकामधेनु मोक्षरूपअमृतकोप्राप्तिकरैनहीं ॥ यातैं यामनुष्यलोकविषे ऐसाकौनविवेकीपुरुषहै जो वेदवाणीरूपकामधेनुकूंग्लानिकीप्राप्तिकरै ॥ किंतु आत्मविचारतैंरहित बहिर्मुखपुरुषही तावेदवाणीरूपकामधेनुकूं ग्लानिकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तावेदवाणीरूपकामधेनुकीप्रसन्नताकरणेवासतै याप्रकारकाउपायकरै कि अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माविषे आपणे मनकूंएकाग्रकरिकै नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकेसंपूर्णव्यापारोंकापरित्यागकरै ॥ याप्रकारकाउपायकरिकै प्रसन्नताकूंप्राप्तहुई सोवेदवाणीरूप कामधेनु याअधिकारीपुरुषकेताई मोक्षरूपअमृतकोप्राप्तिकरैहै ॥ इतनैंकरिकै निर्गुणब्रह्मविषे मनकीएकाग्रताकाप्रकार निरूपणकर्या

यहजोसूत्ररचाहै सोविचारतैंविनाहींरचाहै ॥ और व्यासभगवान्नैं यहजोसूत्ररचाहै सो विचारतैंविनाहीं रचाहै ॥ काहे तैं पूर्वसूत्रकरिकै अथवा उत्तरसूत्रकरिकै याअर्थकीसिद्धिहोइसकै है ॥ यातैं यहसूत्रव्यर्थहीहै ॥ और यहवेदकावचन उन्मत्तपुरुषके वचनकीन्याई असंगतप्रतीतहोवै है ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहवचन परमेश्वरकरिकैरचितनहीं किंतु यहवचन किसी धूर्तपुरुषनैं वेदविषेपायाहै ॥ यातैं यहवचन व्यर्थ है अथवा यहवचन परमेश्वरकरिकैरचितहै यातैंव्यर्थनहीं किंतु सार्थकहै ॥ परंतु यावचनकेअर्थकूं एकमैंहीं जाणताहूं मेरेतैंविना दूसराकोईपुरुष यावचनकेअर्थकूंजाणतानहीं ॥ याप्रकार तेवहिर्मुखपुरुष जिनऋषियोंके शास्त्रोंकूंपढिके बुद्धिमान्होवे हैं ॥ तिनऋषियोंविषेही नानाप्रकारकेदूषणोंकाआरोपणकरे हैं ॥ और वेदकेपाठकूंश्रवणकरिकै तेवहिर्मुखपुरुष याप्रकारकेवचनकहैहैं ॥ यहां यहस्वर चाहीताथा ॥ यहां यहवर्ण चाहीताथा ॥ और यहाँयहपद चाहीताथा ॥ और यहाँ यहक्रम चाहीताथा ॥ तेस्वरवर्णादिक इनब्राह्मणोंनैं उच्चारणकरेनहीं यातैं इनब्राह्मणोंनैं वेदोंकूंही नष्टकरिदियाहै ॥ याप्रकारतेवहिर्मुखपुरुष वेदपाठकसाधुब्राह्मणोंकीभीनिंदाहीकरैहैं॥और तेवहिर्मुखपुरुष पुनःयाप्रकारकेवचनकहैहैंकि शास्त्रकेविचारविषे जैसीहमारीबुद्धि तीक्ष्णहैतैसी तीक्ष्णबुद्धि हमारेगुरुकीभीनहीं॥और ब्रह्माकोभी ऐसीतीक्ष्णबुद्धिनहीं है॥तथा अन्यविद्वान्पुरुषोंकीभी ऐसीतीक्ष्णबुद्धि नपूर्व भई है नअभीवर्तमानहै नआगेहोवेगी॥ और जैसे समुद्रतैं नानाप्रकारकीलहरियां उत्पन्नहोवैं हैं॥तैसे मेरेमुखरूपीसमुद्रतैं व्याकरणमीमांसा न्यायशास्त्रकेअनुसार नानाप्रकारकीविचित्रवाणियां निकसैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे भारकरिकैआतुरहुआगर्दभ नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरैहै ॥ तैसे अनात्मशास्त्ररूपभारकरिकैआतुरहुए तेवहिर्मुखपुरुष नानाप्रकारकेशब्दोंकूंउच्चारणकरैं हैं॥याकारणतैं तेवहिर्मुखपुरुष अत्यंतदुर्जन हैं ॥ और हेजनक ॥ यालोकविषे स्त्री पुत्र धन इत्यादिकपदार्थोंकात्यागकरणा यद्यपि अत्यंतकठिनहै ॥ तथापि कोईपुरुष तिनस्त्रीपुत्र धनादिकपदार्थोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकैभी विद्यादिकोंकेअभिमानकापरित्यागकरतेनहीं ॥ हेजनक ॥ जैसे या लोकविषे कोईभारवाहीपुरुष आपणेमस्तकऊपरस्थित जोदधिओदनादिकअन्नकाभारहै ॥ जिनअन्नादिकोंकेभक्षणकरिकै क्षुधादिकोंकी

यातैंअप्रयोजकहै ॥ और यहतुम्हाराहेतु व्याप्तिपक्षधर्मतातैंरहितहै यातैं हेत्वाभासहै ॥ और यहतुम्हारासाध्य आश्रयतरहितहै तथा प्रसिद्धितैंरहितहै और यातुम्हारेअनुमानविषे कोईदृष्टांतसमीचीननहीं ॥ और याअनुमानविषे तुमने उदाहरण व्यर्थकह्याहै ॥ और याअनुमानविषे तुमने निगमन व्यर्थकह्याहै ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेअनात्मपदार्थ न्यायशास्त्रविषे कथनकरे हैं ॥ हेजनक इसप्रकार व्याकरणशास्त्रविषे तथा पूर्वमीमांसाविषे तथा न्यायशास्त्रविषे अनेकप्रकारकेअनात्मपदार्थोंकाकथनकऱ्याहै ॥ तिनअनात्मपदार्थोंविषे आसक्तिकरिकै इदानींकालकेबहिर्मुखपुरुष याप्रकारकेवचनकहे हैं ॥ यासंपूर्णअर्थकूं हमहींजाणतेहैं ॥ हमारेतैंविना दूसराकोईपुरुष याअर्थकूंजाणतानहीं ॥ याप्रकार आपणेकूंसर्वतैंउत्कृष्टमानिके तेबहिर्मुखपुरुषव्यर्थहींक्रोधकूंप्राप्तहो वैं हैं ॥ जैसे अनेकश्वानोंकरिकैवेष्टितहुआ श्वान क्रोधकरिकै आपणेदांतोंकूंदिखावैहै॥तैसे क्रोधकरिकेयुक्तहुए तेबहिर्मुखपुरुषभी आपणेदांतोंकूंदिखावैं हैं॥और हेजनक ॥ वेदांतशास्त्रकेविचारकापरित्यागकरिकै जेपुरुष पूर्वउक्तअनात्मशास्त्रोंकाविचारकरैं हैं तेपुरुष यद्यपि लोकविषे शास्त्र वेत्ताकहेजावैं हैं तथापि तिनपुरुषोंविषे इतरजीवोंतैं किंचित्मात्रभीविशेषतानहीं॥काहेतैं यालोकविषे जितनेक देहधारी जीवहैं तिनोंविषे क्षुधा पिपासा निद्रा भय इत्यादिकधर्मसमानहीं हैं॥और जोतुमयहकहो॥अनात्मशास्त्रोंकेविचारकरणेहारेपुरुष दूसरेजीवोंतैं अधिकसंभाषणकरैहैं याकारणतैं दूसरेजीवों तैं तिनोंविषेविशेषताहै॥सोयहतुम्हाराकहणाभीसंभवेनहीं॥काहेतैं बहुतबोलणेकरिकै क्रोष्टुनामकूंप्राप्तभयेजे शृगालहैं तिन शृगालों तैं तिनबहिर्मुखपुरुषोंविषे विशेषतासंभवेनहीं ॥ किंतु बहुतभाषणकरणेहारे तेबहिर्मुखपुरुष शृगालोंकेहीसमानहैं ॥ और हेजनक ॥ अनात्मपदार्थोंकाविचारकरणेहारे जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तेबहिर्मुखपुरुष ब्रह्मचिंतनकरणेहारेविद्वान्पुरुषोंका विनाहींप्रयोजनतैं निरादरकरे हैं ॥ तथा शास्त्रकेव्याख्यानकरणेहारे महात्मापुरुषोंकाउपहासकरे हैं ॥ और जैसे यालोकविषे कोईदुर्जनपिशुनपुरुष दोषतैंरहितमहात्मापुरुषोंविषे दोषोंकाआरोपणकरिकै तिनदोषोंकाकथनकरैं हैं ॥ तैसे अनात्मपदार्थोंकेविचारकरिकै अत्यंतअभिमानकूंप्राप्तहुएतेबहिर्मुखपुरुष ऋषियोंविषेभी याप्रकारकेदोष आरोपणकरैं हैं कि पाणिनिऋषिनैं यहजोसूत्ररचाहै सो विचारतैंविनाहींरचाहै ॥ और जैमिनिऋषिनैं

कार यज्ञादिककर्मोंका परस्पर प्रकृति विकृतिभाव निश्चयकरणा॥और विकृतियज्ञोंविषे बुद्धिमान्पुरुषोंनै पदादिकोंकीऊहाकरणी ॥ और सर्वकर्मोंकेपूर्णहुए तांविकृतिकर्मोंविषे प्रकृतिकर्मोंकेअंगोंका निवृत्तिरूपबाध जानणा और जहाँ अन्यकिसीवासतेकन्याजोअंग ताअंग करिके किसीअन्यकाहीउपकारहोवै ताकानामप्रसंगहै ॥ और एकवारकन्याहुआजोकर्म नानाकर्मोंकाअंगरूपहोवैहै ताकानाम तंत्रहै ॥ इस तैंआदिलेके अनेकप्रकारकेपदार्थ पूर्वमीमांसाविषे जैमिनिऋषिनैं कथनकरेहैं॥तिनपदार्थोंकाअभ्यासकरिके इदानींकालकेपुरुष आपणेकूंपं डितमानैहैं ॥ और विद्वानोंकीसभाविषेस्थितहोइके तेपुरुष तिनपूर्वमीमांसाकेपदार्थोंकाकथनकरैहैं ॥ और तेपुरुष अभिमानकरिके याप्र कारकेवचन कहैहैं ॥ उत्तरमीमांसाकूंभी हमहीं जाणतेहैं॥उत्तरमीमांसाविषे ब्रह्मकेज्ञानतैं मोक्षकीप्राप्तिकहीहै॥और ताब्रह्मज्ञानकेप्राप्तिविषे यज्ञादिककर्मोंतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेसाधनकहेहैं॥तिनसंपूर्णोंकूं हम भलीप्रकारजाणतेहैं ॥ याप्रकार मीमांसाशास्त्रकेअनात्मपदार्थोंका चिंतनकरिके तेबहिर्मुखपुरुष नानाप्रकारकेव्यामोहकूंप्राप्तहोवैहैं अब गौतमऋषिकृत न्यायशास्त्रकेपदार्थोंकानिरूपणकरैहैं ॥ तहाँ प्रतिज्ञा हेतु उदाहरण यातीनअवयवोंकासमुदायरूपजोवाक्यहै॥ताकरिके परार्थअनुमानहोवैहै॥याप्रकार मीमांसकमानैहैं॥ और उदाहरण उपनय यादोअवयवोंकासमुदायरूपजोवाक्यहै ॥ ताकरिके परार्थअनुमानहोवैहै ॥ याप्रकार बौद्धमानैं हैं ॥ यहदोनोंमतअसंगतहैं ॥ किंतु प्रति ज्ञा हेतु उदाहरण उपनय निगमन यापंचअवयवोंका समुदायरूपजोवाक्यहै ताकरिकेही परार्थअनुमानहोवैहै ॥ और तेनैयायिक दूसरे शास्त्रवालेपुरुषोंकेमतविषे याप्रकारकेदूषणकहैं हैं कि तुम्हारेमत विषे यहआत्माश्रयरूपतर्क प्राप्तहोवैहै ॥ और तुम्हारेमतविषे यहअ न्योन्याश्रयरूपतर्क प्राप्तहोवैहै ॥ और तुम्हारेमतविषे यहचक्रिकारूपतर्क प्राप्तहोवैहै ॥ और तुम्हारेमतविषे यहअनवस्थारूपतर्क प्रा प्तहोवैहै ॥ और तुम्हारेमतविषे यहव्याघातरूपतर्क प्राप्तहोवैहै ॥ और तुम्हारेमतविषे यहप्रतिबंदीरूपतर्क प्राप्तहोवैहै ॥ और यहतुम्हारा तर्क इष्टापत्तिरूपदूषणकरिकेग्रस्तहै यातैंअसत्यहै ॥ और यहतुमारातर्क प्रतिवादीकेअनिष्टकूंकरतानहीं यातैंअसत्यहै ॥ और यहतुम्हा रातर्क व्याप्तितैंरहितहै यातैंअसत्यहै ॥ और यहतुम्हारातर्क विपरीतहै यातैंअसत्यहै ॥ और यहतुम्हारातर्क अनुग्राहकप्रमाणतैंरहितहै

संबंधहै ॥ सो लोकविषे वृद्धपुरुषोंकेव्यवहारकरिके जान्याजावे है ॥ यातें जेलौकिकशब्दहैं ॥ तेही वैदिकशब्दहैं ॥ और यद्यपि लोक
विषे तथावेदविषे पदोंकी तथापदार्थोंको समानताही है ॥ तथापि वेदविषे वाक्योंकाअर्थअपूर्वहीहोवे है ॥ तहाँ पूर्वकांडकेवाक्योंका धर्म
रूपअर्थ है ॥ और उपनिषद्रूपउत्तरकांडकेवाक्योंका अद्वितीयब्रह्मरूपअर्थ है ॥ तेदोनों प्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाणोंकरिकेज्ञातनहीं हैं॥
यातें तेदोनोंअपूर्व हैं ॥ और विधिवाक्योंका जोयज्ञादिरूपअर्थ है ॥ ताअर्थकोस्तुतिकरिके॥तथातिसअर्थतैंभिन्न अर्थकीनिंदाकरिके अर्थ
वादरूपवचन ताअर्थविषे अधिकारीपुरुषोंकीप्रवृत्तिकरावैं हैं ॥ और मंत्ररूपवचन देवतादिकोंकास्मरणकरावैं हैं ॥ यातें तेअर्थवाद
तथामंत्र विधिवाक्यकेअर्थविषेही प्रमाणहैं ॥ और ते विधिवाक्यभी चारप्रकारकेहो वैं हैं ॥ एकतौ विनियोगविधिहोवैहै ॥ और दूसरा
प्रयोगविधिहोवे है॥और तीसरा उत्पत्तिविधिहो वे है और चतुर्थ अधिक्रियाविधिहोवे है॥और भावनाकूंप्रतिपादनकरणेहारा जोविधिवाक्य
हो वे है ॥ तावाक्यकेअर्थविषे साधन साध्य इतिकर्तव्यता यहतीनों उपयोगीहोवैं हैं ॥ और स्वर्गकामोयजेत ॥ यावाक्यकेअर्थज्ञानतैंअनं
तर तिनयज्ञादिककर्मोंकेअनुष्ठानतैं धर्मरूपअपूर्व उत्पन्नहोवे है ॥ जिसधर्मरूपअपूर्वकरिके यापुरुषकूं स्वर्गकोप्राप्तिहो वे है ॥ और
तेवेदप्रतिपादितकर्मभी दोप्रकारकेहो वैं हैं ॥ एकतौ प्राकृतकर्महोवैं हैं ॥ और दूसरे वैकृतकर्महोवैं हैं ॥ तहाँ यहकर्म इसीप्रकारकरणा
याप्रकार विधानकरयाहुआकर्म प्राकृतकर्मेहो वे है ॥ और यहकर्म इसकर्मकोन्याईकरणा याप्रकार विधानकरयाहुआकर्म वैकृतकर्म
होवैहै ॥ और शब्दांतर अभ्यास संज्ञा संख्या गुण प्रकरणांतर इनोंकरिके तेकर्म भिन्नभिन्नहो वैं हैं तिनकर्मोंविषेभीकोईकर्मअंगरूपहैं ॥
और कोईकर्म अंगीरूपहैं ॥ तिनकर्मोंकेअंगअंगीभावविषे श्रुति लिंग वाक्य प्रकरण स्थान समाख्या यहषट्प्रमाणहैं ॥ और तिनकर्मों
केअंगअंगीभावकेनिश्चयतैंअनंतर इयत्तारूपपरिमाण श्रुति अर्थ पाठ स्थान मुख्य प्रवृत्ति याषट्प्रमाणोंकरिकेजान्याजावैहै ॥ केसाहै
सोकर्मोंकापरिमाण ॥ पत्नीकरिकेयुक्तजे त्रैवर्णिकअधिकारीपुरुषहैं ॥ तिनोंविषे एककरिके तथाअनेकोंकरिके व्यवस्थापूर्वक करणेयो
ग्यहै ॥ और यज्ञादिककर्मोंविषे उपयोगीजेद्रव्यहैं तथादेवताहैं ॥ तिनोंकूंदेखिकरिके विवेकीपुरुषनें यहकर्म इसकर्मकाविकृतिहै याप्र

आक्षेपतैंहोवैहै ॥ और ज्योतिष्टोमेनयजेतस्वर्गकामः ॥ इत्यादिकवाक्योंविषेस्थितजेपदहैं तेपद आपणेआपणेअर्थोंका स्मरणकरावैहैं ॥ याकारणतें तेपद अभिधायकहैं ॥ यद्यपि वाक्यार्थकेज्ञानवासतैही तिनपदोंकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तथापि पदार्थोंकेज्ञानतैंविना वाक्यार्थकाज्ञा नहोवैनहीं ॥ यातैं तेपद आपणेआपणेअर्थकाभी अवश्यबोधनकरैं हैं ॥ और सत्चित्आनंदरूपआत्माहै ॥ इत्यादिकवाक्योंविषेस्थित जेपदहैं ॥ तिनपदोंनैं स्मरणकरायेजेआपणेआपणेअर्थ हैं ॥ तेअर्थही परस्परसंबंधरूपवाक्यार्थकूं बोधनकरैं हैं ॥ और जितनेकपदार्थोंकी परस्परआकांक्षाहोवैहै ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंका तिसवाक्यार्थविषेसंबंधहोवैहै ॥ और कर्त्ता कर्म इत्यादिकपदार्थोंकेविद्यमानहुएभी क्रियाप दार्थतैंविना वाक्यार्थकोपूर्णताहोवैनहीं ॥ यातैं क्रियापदार्थही वाक्यार्थकीपूर्णताकरैहै॥और जोवाक्य दूसरेवाक्यकीअपेक्षानहींकरैहै ताका नाम वाक्यहै॥याकारणतें एकवाक्यविषेएकहीक्रियापदहोवैहै॥एकवाक्यविषे अनेकक्रियापदहोवैंनहीं॥और जहां एकवाक्य दूसरेवाक्यकी अपेक्षाकरैहै ॥ तहां प्रकरणरूपप्रमाणहोवैहै ॥ और तिनक्रियापदघटितवाक्योंविषेभी लिङ् लोट् लेट् तव्यादिककृत्यप्रत्यय यह संपूर्ण प्रत्यय विधिकाबोधनकरैं हैं ॥ और लोकविषे तथावेदविषे जोपदार्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकेज्ञातनहींहोवैहै ॥ सोअज्ञातपदार्थही लिङा दिकविधिप्रत्ययोंकाअर्थहोवैहै ॥ और अपौरुषेयवाक्योंकेसमूहकानाम वेदहै॥सोवेदभी दोप्रकारकाहोवैहै॥एकतो मंत्रभागरूप वेदहोवैहै॥ और दूसरा ब्राह्मणभागरूप वेदहोवैहै ॥ और विधिवाक्योंकेयज्ञादिरूपअर्थकीस्तुतिकरके जेवेदवाक्य अधिकारीपुरुषोंकूंतिनयज्ञादिकक र्मोंविषे प्रवृत्तकरैं हैं ॥ तेवेदकेवाक्य अर्थवादरूपहोवैं हैं ॥ सोअर्थवादभी तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतो गुणवाद ॥ दूसराअनुवाद ॥ तीसरा भूतार्थवाद ॥ और जिसवाक्यविषे क्रियापदनहींहोवै ॥ तिसवाक्यविषे पूर्ववाक्यतैं अथवा उत्तरवाक्यतैं क्रियापदकाअनुषंग करणा ॥ इसप्रकार जिसवाक्यविषे कर्त्ताकर्मादिककारकोंकेवाचकपद नहींहोवैं ॥ तिसवाक्यविषेभी पूर्वउत्तरवाक्योंतैंतिनपदोंकाअनु षंगकरणा ॥ और जिसवाक्यविषे जोपद अपेक्षितहोवै ॥ और जोपदकदाचित् पूर्वउत्तरवाक्योंविषेहोवैंनहीं ॥ तौ तिसवाक्यविषे तापदका अध्याहारकरणा ॥ और आकांक्षायोग्यतादिकोंकेवशतें पदोंका तथावाक्योंका परस्पर व्यत्ययभावकरणा ॥ और पदोंका जोअर्थकेसाथ

और तिनपदोंकेसमुदायकानाम वाक्यहै ॥ और ज्योतिष्टोमेनयजेतस्वर्गकामः ॥ इत्यादिकवाक्योंविषेस्थितजोपदहैं ॥ तेपद एकदूसरे कापरित्यागकरिके शाब्दबोधकूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ याकारणतैं तेपद परस्पर आकांक्षावालेहैं ॥ और ॥ ज्योतिष्टोमेनयजेतस्वर्गकामः ॥ यावाक्यविषेस्थितजोपदोंकासमूहहै ॥ तथा ॥ उद्भिदायजेत ॥ यावाक्यविषेस्थित जोपदोंकासमूहहै ॥ तिनदोनोंसमूहोंकूं परस्परआ कांक्षाहैनहीं ॥ यातैं तेदोनोंवाक्य परस्परभिन्नहैं ॥ और एकवारउच्चारणकऱ्याहुआपद तथावाक्य एकहीअर्थकूंबोधनकरैहै ॥ और जिस स्थलविषे सोपद तथावाक्य दूसरेभीअर्थकूंबोधनकरैहै ॥ तहां वाक्यभेदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जैसे मायाविशिष्टपरमात्मातैं आकाशा दिकभूत उत्पन्नहोवै है ॥ तैसे ककारखकारादिकवर्णभी उत्पन्नहोवैं हैं ॥ याप्रकार उत्तरमीमांसावालेकथनकरैहैं ॥ और पूर्वमीमांसावाले तौ याप्रकारका कथनकरैहैं ॥ ककारादिकवर्ण विभुहैं तथानित्यहैं ॥ यातैं तिनोंका उत्पत्तिनाश संभवैनहीं ॥ शंका ॥ ककारादिक वर्ण जोनित्यहोवैं ॥ तौ तिनककारादिकवर्णोंकी सर्वदाप्रतीतिहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ जैसे आकाशविषेविद्यमानहुएभीनक्षत्र दिनविषेप्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु रात्रिविषे तेनक्षत्रप्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं रात्रि तानक्षत्रोंकाअभिव्यंजकहै ॥ तैसे सर्वदाविद्यमानहुएभी ककारादिकवर्ण कंठतालुआदिकोंकेसंबंधतैंविना प्रतीतहोवैंनहीं ॥ किंतु कंठतालुआदिकोंकेसंबंधतैं अनंतरही तेककारादिकवर्ण प्रतीत होवैहैं ॥ यातैं अंतरवायुकरिकेसंबंधजे उर कंठ शिर जिह्वामूल दंत नासिका ओष्ठ तालु यहअष्टस्थानहैं ॥ तथा स्पष्टादिकजेप्रयत्नहैं ॥ तेसंपूर्ण तिनककारादिकवर्णोंकेअभिव्यंजकहैं ॥ याप्रकार तिनस्थानोंकरिके अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुए तेककारादिकवर्ण जभी श्रोतापुरुषके श्रवणविषेप्राप्तहोवैहैं ॥ तभी तेककारादिकवर्ण पदसंज्ञाकूं तथावाक्यसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और तिनपदोंके तथावाक्योंके अंत्यविषेस्थित जोवर्णहै ॥ सोवर्णहीं पूर्ववर्णोंकेअनुभवजन्यसंस्कारोंकरिके सहकृतहुआ पदार्थज्ञानका तथावाक्यार्थज्ञानका कारणहोवैहै ॥ और पदोंके साथ तथावाक्योंकेसाथ जोअर्थका बोध्यबोधकभावसंबंधहै सोसंबंध नित्यहै ॥ और सोबोध्यबोधकभावसंबंध घटादिकपदोंका घटत्वादि कजातियोंविषेहीहै ॥ यातैं घटादिकशब्दोंतैं घटत्वादिकजातियोंकाही शाब्दबोधहोवैहै ॥ और घटादिकव्यक्तियोंकाज्ञान अर्थापत्तिरूप

रासंबंधहै ताकानाम उक्षितलक्षणाहै ॥ जैसे किसीपुरुषने द्विरेफ शब्दकरैहै याप्रकारकावचन उच्चारणकऱ्या ॥ यावचनविषे द्विरेफपदकावाच्यअर्थ दोरकारहैं ॥ तिसवर्णरूपदोरकारोंविषे शब्दकीकारणतासंभवैनहीं॥ यातैं द्विरेफपदकी मधुकरव्यक्तिविषेलक्षणाहोवैहै ॥ तहाँ द्विरेफपदकेवाच्यअर्थरूप दोरकारोंका मधुकरव्यक्तिकेसाथ साक्षात्संबंधसंभवैनहीं ॥ किंतु स्वघटितपदवाच्यत्वरूप परंपरासंबंधसंभवैहै ॥ यहाँ स्वशब्दकरिकै दोरकारोंकाग्रहणकरणा ॥ तादोरकारोंकरिकैघटितजोभ्रमरपदहै ॥ ताभ्रमरपदकावाच्यअर्थ मधुकरव्यक्तिहै ॥ इसप्रकार व्याकरणशास्त्रविषे पाचकादिकपदोंविषे शक्तिआदिकवृत्तियां कथनकरियांहैं ॥ और तेव्याकरणशास्त्रकेकर्त्तापुरुष पुनःयाप्रकारकेपदार्थोंकाकथनकरैहैं ॥ पचकः इत्यादिकपदोंविषे प्रकृतिअर्थ प्रधानहोवैहै ॥ और पाचकः इत्यादिकपदोंविषे प्रत्ययकाअर्थ प्रधानहोवैहै ॥ और कर्त्ता कर्म करण संप्रदान अपादान अधिकरण यहषट्प्रकारकेकारकहोवैहैं॥और पचादिकधातुवोंकेअर्थकानाम क्रियाहै ॥ और तंडुलादिकपदार्थोंकानाम कर्महै ॥ और पचादिकधातु सकर्मकधातुहैं ॥ और भूवादिकधातु अकर्मकधातुहैं ॥ और यहणिच्प्रत्यय प्रयोजकपुरुषकेव्यापारकाकथनकरैहै॥ और यहप्रत्यय प्रयोज्यपुरुषकेव्यापारकाकथनकरैहै ॥ और यहप्रकृतिप्रत्ययदोनों एकठेहीउच्चारणकरेजावै हैं ॥ और सु औ जस इत्यादिकप्रत्ययोंकानाम सुप्प्रत्ययहै ॥ तेसुप्प्रत्यय जिसपदकेअंतविषेहोवैहै ताकानाम सुबंतपदहै ॥ और तिप् तस झि इत्यादिकप्रत्ययोंकानाम तिङ् प्रत्ययहै ॥ तेतिङ्प्रत्यय जिसपदकेअंतविषेहोवैहैं ताकानाम तिङंतपदहै ॥ और यहसुप्तिङ्प्रत्यय जहाँविद्यमानहोवैहै ॥ तहाँ दूसराकोईप्रत्यय प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ और यहतद्धितप्रत्ययहै ॥ और यहकृदंतप्रत्ययहै ॥ और यहकृत्यप्रत्ययहैं ॥ और अव्ययीभाव तत्पुरुष द्विगु द्वंद्व कर्मधारय बहुव्रीहि यहषट्प्रकारकासमासहै ॥ और यहनामधातुहैं ॥ और यहस्त्रीप्रत्ययहै ॥ और यहप्रत्यय भावविषेहै ॥ और यहप्रत्यय कर्त्ताविषेहै ॥ इसतैंआदिलेके व्याकरणशास्त्रविषे अनेकप्रकारकेशब्द कथनकरेहैं ॥ तेसंपूर्णशब्द अनात्मपदार्थोंकाबोधनकरैहैं ॥ याकारणतैं तिनशब्दोंकोचिंतनकरणेतैं यहअधिकारीपुरुष परममोहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब जैमिनिऋषिकृत पूर्वमीमांसाशास्त्रकेपदार्थोंकानिरूपणकरैहैं ॥ तहाँ ककारादिकवर्णोंकिसमुदायकानामपदहै ॥

एकतौ योगशक्तिहोवैहै ॥ और दूसरी रूढीशक्तिहोवैहै ॥ तहां पदकेअवयवोंविषेरहणेहारी जाशक्तिहै ताकानाम योगशक्तिहै ॥ तायोग शक्तिवालेपदकानाम यौगिकहै ॥ जैसे पाचक यापदविषे दोअवयवहैं ॥ एकतौ पचधातुरूपअवयवहै ॥ और दूसरा अकप्रत्ययरूपअव यवहैं ॥ तहां पचधातुरूपअवयवको पाकरूपअर्थविषेशक्तिहै ॥ और अकप्रत्ययरूपअवयवकी कर्त्तारूपअर्थविषेशक्तिहै ॥ तेदोनोंअव यव मिलिके पाककर्त्तापुरुषकाबोधनकरैहैं ॥ और पदकेअवयवोंकाजोसमुदायहै ॥ तासमुदायविषेरहणेहारीजोशक्तिहै ॥ ताकानाम रू ढीशक्तिहै ॥ तारूढीशक्तिवालेपदकानाम रूढहै ॥ जैसे विप्र गौ घट इत्यादिकपदोंकेजेअवयवहैं ॥ तिनअवयवोंकेसमुदायकविषेहीं ब्राह्म णादिकअर्थकेबोधनकरनेकीशक्तिरहैहै॥शक्तिवालेपदकानाम शक्तपदहै ॥ और पदकेवाच्यअर्थविषेवर्तमानजोगुणहै तागुणद्वारातापदका अवाच्यअर्थकेसाथ जोसंबंधहै ताकानाम गौणीवृत्तिहै॥तागौणीवृत्तिवालेपदकानाम गौणहै॥जैसे किसीपुरुषनैंकह्या यहबालकअग्निहै ॥ या वचनविषे अग्निशब्दकावाच्यअर्थ लोकप्रसिद्धअग्निहै॥ताअग्निविषे तेजस्वीपणागुणरहैहै॥सोतेजस्वीपणागुण ताबालकविषेभीरहैहै ॥ यातैं अग्निपदकीताबालकविषेगौणीवृत्तिहै ॥ और पदकेवाच्यअर्थकाजोअवाच्यअर्थकेसाथ संबंधहै ताकानाम लक्षणावृत्तिहै॥तालक्षणावालेपद कानाम लाक्षणिकपदहै॥सोलक्षणाभी तीनप्रकारकीहोवैहै॥एक तौ जहत्लक्षणाहोवैहै॥और दूसरी अजहत्लक्षणाहोवैहै ॥ और तीसरी ल क्षितलक्षणाहोवैहै॥तहाँ जिसस्थलविषे पदकेवाच्यअर्थकापरित्यागकरिकै अवाच्यअर्थकाग्रहणहोवैहै॥तहाँ जहत्लक्षणाहोवैहै॥जैसे किसी पुरुषने गंगाविषेग्रामहै ॥ याप्रकारकावचन उच्चारणकऱ्या॥यावचनविषे गंगापदकावाच्यअर्थ जोजलकाप्रवाहहै ॥ ताकेविषे ग्रामकीस्थिति संभवैनहीं ॥ याकारणतैंजलकाप्रवाहरूपवाच्यअर्थकापरित्यागकरिकै ताप्रवाहकासंबंधीजोतीरहै ताकेविषे गंगापदकीलक्षणाहोवैहै ॥ और जिसस्थलविषे पदकेवाच्यअर्थका नपरित्यागकरिकै अवाच्यअर्थकाग्रहणहोवैहै ॥ तहाँ अजहत्लक्षणाहोवैहै ॥ जैसे किसीपुरुषने काकों तैंदधिकीरक्षाकरणी याप्रकारकावचन किसीअन्यपुरुषकेप्रतिकह्या ॥ तहाँ सोपुरुष तावचनकूंश्रवणकरिकै काकतैंआदिलेके जितनेकद धिकेनाशकरणेहारेश्वानादिकपशुहैं ॥ तिनसंपूर्णोंविषे काकशब्दकीलक्षणाकरैहै ॥ और पदकेवाच्यअर्थका अवाच्यअर्थकेसाथ जो परंप

तिनअनात्मपदार्थोंकेप्रतिपादनकरणेहारेशास्त्रोंका यामुमुक्षुजननें परित्यागहीकरणा ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषेभारकूं उठावणेहारे गर्दभ परमदुःखकूंप्राप्तहोवें हैं ॥ तैसे वर्तमानविषयोंकी चिंताकरिकेंव्याकुलहुआ ॥ यहपुरुषपरमदुःखकूंप्राप्तहोवे है ॥ तात्पर्ययह ॥ वर्तमानविषयोंकीचिंताकरिकेभी यहपुरुष जभीपरमदुःखकूंप्राप्तहोवेहे ॥ तभीभूतभविष्यत्विषयोंकीचिंताकरिके यहपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवेहे याकेविषे क्याकहणाहे ॥ और हेजनक ॥ आनंदस्वरूपआत्माकेचिंतनकापरित्यागकरिके यहपुरुष जिनजिनविषयोंकाचिंतनकरेहे ॥ तेविषय जोकदाचित् शास्त्रकरिकेनिषिद्धनहींभीहोवें ॥ तोभी तेविषय तापुरुषकीप्रवृत्तिद्वारा तापुरुषके वाकादिकइंद्रियोंकूं केवलपरिश्रमरूपदुःखकीहीप्राप्तिकरें हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ शास्त्रनेविधानकरेजेपाणिग्रहीतस्त्रीकेसंभोगादिकविषयहैं ॥ तेविषयभी जभी यापुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरें हैं ॥ तभी शास्त्रने निषेधकरेजेपरस्त्रीगमनादिकविषयहैं ॥ तेनिषिद्धविषय यापुरुषकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरें हैं याकेविषे क्याकहणाहे ॥ यातें यहमन जैसे पुनःदुःखकूंनहींप्राप्तहोवे ॥ तैसे यहपुरुष सर्वविषयोंकापरित्याग करिके तामनकूं अंतरआत्माविषेएकाग्रकरे ॥ यहही सर्वदुःखोंकेनिवृत्तिकासाधनहे ॥ हेजनक याप्रकार शमदमादिकसाधनोंकरिके तथाश्रवणादिकसाधनोंकरिके तथा अन्नमयादिकपंचकोशोंकेविचारकरिके जिनअधिकारीपुरुषोंनें अद्वितीयआत्माविषेमनकूंएकाग्रकऱ्या है ॥ तेअधिकारी पुरुषही अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवेंहे ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ अनात्मपदार्थोंकेचिंतनकापरित्यागकरिके अंतरआत्माविषे जोचित्तकीएकाग्रताहे॥सो एकाग्रताही आत्मसाक्षात्कारकासाधनहे ॥ अब व्याकरणादिकशास्त्रोंनें कथनकरेजेअनात्मपदार्थहैं तिनोंकानिरूपणकरें हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे रोगीपुरुषकूं कुपथ्यअन्नकाभक्षण दोषकाहीकारणहोवेहे ॥ तैसे अधिकारीपुरुषोंकूं व्याकरणादिकअनात्मशास्त्रोंकाअध्ययनभी बहिर्मुखताकाहीकारणहोवेहे ॥ तहां प्रथम व्याकरणशास्त्रकेपदार्थोंकानिरूपणकरेंहैं ॥ पाणिनिऋषिकृत अष्टाध्यायीतें आदिलेके जेव्याकरणकेग्रंथहैं ॥ तिनोंविषे याप्रकारकेपदार्थोंकानिरूपणकऱ्याहे ॥ तहां शक्ति गौणी लक्षणा यहतीनप्रकारकीवृत्तिहोवेहे ॥ पदोंका जोआपणेआपणेअर्थकेसाथसंबंधहे तासंबंधकानामवृत्तिहै ॥ तहां शक्तिवृत्ति दोप्रकारकीहोवे है ॥

अद्वितीयब्रह्मविषे प्रमाणजन्यज्ञानकीविषयताकहीथी ॥ सो वृत्तिकीविषयताकूंअंगीकारकरिकै कहीथी ॥ और अभीजो हमनैं अद्विती यब्रह्मविषे ज्ञानकीअविषयता कथनकरीहै ॥ सो चिदाभासरूपफलकीअविषयताकूंअंगीकारकरिकै कथनकरीहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथका विरोधहोवैनहीं ॥ ऐसेसर्वभेदतैंरहितअद्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष भेदकूंदेखैहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ भेददर्शीपुरुषोंकूं नानाप्रकारकेदुःखकीप्राप्तिकरणेहाराजोभेदहै॥ ताभेदकूंउत्पन्नकरणेहारीजोअविद्याहै ॥ ताअविद्यातैंभी जोअद्वितीयब्रह्म परेहै और सोअद्वितीयब्रह्म जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं ताअद्वितीयब्रह्मकूं श्रुतिभगवती अज यानामकरिकैकथनक रैहै ॥ और सोअद्वितीयब्रह्म गमनआगमनादिकक्रियातैंरहितहै याकारणतैं श्रुतिभगवती ताअद्वितीयब्रह्मकूं ध्रुव यानामकरिकैकथन करैहै ॥ और सो अद्वितीयब्रह्म देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताअद्वितीयब्रह्मकूं महान् यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ हेजनक ॥ ऐसे अद्वितीयब्रह्मकेसाक्षात्कारकी जिसपुरुषकूंइच्छाहोवै ॥ सोपुरुष याप्रकारकाउपायकरे ॥ अनात्मपदार्थों कूंप्रतिपादनकरणेहारे जितनेकव्याकरणादिकशास्त्रहैं ॥ तिनोंकापरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं केवल वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरे ॥ और एकांतदेशविषेस्थितहोइके ताश्रवणकरेहुएअर्थकामननकरे ॥ और मननकरिकैनिश्चयकऱ्याजोअ द्वितीयब्रह्मरूपअर्थ ताकेविषे चित्तकीवृत्तियोंकानिरंतरप्रवाहरूपनिदिध्यासनकरे ॥ तथा बालककीन्याई रागद्वेषादिकोंतैंरहितहोवै ॥ तथा ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ याप्रकार श्रवणादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहुआ यहअधिकारीपुरुष आपणेमनका अंतरात्मा विषेलयकरे ॥ याप्रकारका मनकालयही सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिकाकारणहै ॥ अब अनात्मपदार्थोंकीनिवृत्तिका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक याअद्वितीयआत्मातैंभिन्न जितनेकलोकप्रसिद्धअनात्मपदार्थ हैं ॥ तथा तिनअनात्मपदार्थोंकूं प्रतिपादनकरणेहारे जितनेकशास्त्रहैं ॥ तथा तिनअनात्मपदार्थोंकीप्राप्तिकेजितनेकसाधनहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ जोकदाचित् शास्त्रकरिकैनिषिद्ध नहींभीहोवैं तोभी तेअनात्मप दार्थ चिंतनकरणेहारेपुरुषके वाकादिकइंद्रियोंकूं परिश्रमरूपदुःखकीहीप्राप्तिकरैं हैं ॥ याकारणतैं तिनअनात्मपदार्थोंका तथा

कारणनहीं ॥ यातैं भेद याप्रकारकेशब्दज्ञानकेप्रभावतैं प्रतीतहुआभीसोभेद ताअद्वितीयब्रह्मविषे वास्तवतैंहैनहीं ॥ इतनैंकरिकै अद्वितीय ब्रह्मविषे संपूर्णभेदरूपप्रपंचकाअभाव निरूपणकऱ्या ॥ अब भेददर्शनविषे अनर्थकीकारणताकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ मनवाणीका अविषय जोस्वयंप्रकाशअद्वितीयब्रह्महै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष नानाप्रकारकेभेदकूंदेखैहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष पुनः पुनःमृत्युकूंप्राप्त होवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ मृत्योःसमृत्युमाप्नोति यइहनानेवपश्यति अर्थयह ॥ जोपुरुष अद्वितीयब्रह्मविषे नानाप्रकारकेभेदप्रपंचकूंदेखैहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ॥ अद्वितीयब्रह्मविषे ॥ जोभेदबुद्धिहै ॥ सोभेदबुद्धिहीं अज्ञानीजीवोंकूंसंसारकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं मुमुक्षुजननैं अद्वितीयब्रह्मविषे भेदबुद्धिकदाचित्भीनहींकरणी ॥ और जोपुरुष अद्वितीयब्रह्मविषेभेदबुद्धिकरैहै ॥ सोपुरुष नरकादिकोंविषे अनेकप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोइके अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं मुमुक्षुजननैं ताभेदबुद्धिकापरित्यागकरिकै ताब्रह्मकूं एकअद्वितीयरूपकरिकैनिश्चयकरणा ॥ कैसाहैसोअद्वितीयब्रह्म ॥ सूर्यादिकज्योतियोंकाभी ज्योतिरूपहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ याकारणतैंहीं सो अद्वितीयब्रह्म अप्रमेयहै ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाणजन्यज्ञानकाजोअविषयहोवैहै ॥ ताकानाम अप्रमेयहै॥शंका॥हेभगवन्॥ मनसैवानुद्रष्टव्यम् ॥ याश्रुतिकेव्याख्यानविषे पूर्व आपणैं शुद्धमनजन्यज्ञानकीविषयता अद्वितीयब्रह्मविषे कथनकरीथी॥और अभी आपनैं अद्वितीयब्रह्मविषे प्रमाणजन्यज्ञानकीअविषयता कथनकरी॥याकारणतैं पूर्वउत्तरग्रंथका विरोधहोवैहै॥समाधान॥ हेजनक ॥ चेतनका आभासयुक्त जोअंतःकरणकीवृत्तिहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ तहाँ घटादिकजडपदार्थोंविषे अंतःकरणकीवृत्तितौआवर्णकीनिवृत्तिकरैहै ॥ और तावृत्तिविषेस्थित जोचिदाभासहै ॥ सोचिदाभास तिनघटादिकजडपदार्थोंकाप्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं घटादिकजडपदार्थोंविषे वृत्तिकीविषयता तथा चिदाभासरूपफलकीविषयता दोनोंविद्यमानहैं ॥ और चेतनरूपअद्वितीयब्रह्म स्वयंज्योतिरूपहै॥ याकारणतैं ताअद्वितीयब्रह्मविषे चिदाभासरूपफलकीविषयतातो संभवैनहीं॥और महावाक्यतैं उत्पन्नभईजोअंतःकरणकीवृत्तिहै॥ सोवृत्ति अद्वितीयब्रह्मकेअज्ञानरूपआवरणकीनिवृत्तिकरैहै॥यातैं तावृत्तिकीविषयता अद्वितीयब्रह्मविषेजोहै॥यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पूर्वजोहमनैं

है जनक ॥ जोपदार्थ जिसपदार्थविषे स्थितहुआप्रतीतहोवैहै ॥ सोपदार्थ तिसपदार्थविषे वास्तवतैंहींहोवैहै ॥ याप्रकारकानियमसंभवैनहीं॥ काहेतें जैसे प्रकाशमानसूर्यविषे घूकादिकनिशाचरजीव अंधकारकूंदेखैं हैं ॥ परंतु सोअंधकार प्रकाशमानसूर्यविषे वास्तवतें हैनहीं ॥ जो सोअंधकार सूर्यविषेवास्तवतैंहोवैतौ अस्मदादिकजीवोंकूंभी सोअंधकार प्रतीतहोणाचाहिये॥ और अस्मदादिकजीवोंकूं सूर्यविषे अंधकारप्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ घूकादिकोंनैं आपणेअज्ञानकरिके सूर्यविषे अंधकार कल्पनाकऱ्याहै ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे अज्ञानीजीव भेदकूंदेखैहै ॥ परंतु सोभेद अद्वितीयब्रह्मविषे वास्तवतें हैनहीं ॥ जोकदाचित् अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतें होता तो अस्मदादिकविद्वान्पुरुषोंकूंभी सोभेद प्रतीतहोता ॥ और अस्मदादिकविद्वान्पुरुषोंकूं अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद प्रतीतहोवै नहीं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ अविवेकीपुरुषोंनैं आपणेवास्तवरूपकेअज्ञानकरिके अद्वितीयब्रह्मविषे भेदकल्पनाकऱ्याहै॥ और जोपदार्थ अज्ञानकरिकेकल्पितहोवैहै ॥ सोपदार्थ वास्तवतैंहोवैनहीं ॥ यातें भेद याप्रकारकेशब्दतें तथा भेद याप्रकारकेज्ञानतें भिन्न कोईताभेदकावास्तवस्वरूपनहीं किंतु भेद याप्रकारकाशब्दरूप तथा भेद याप्रकारकाज्ञानरूपही सोभेदहै ॥ जैसे वंध्यापुत्र याप्रकारकेशब्दतें तथा वंध्यापुत्र याप्रकारकेज्ञानतें भिन्न तावंध्यापुत्रकाकोईवास्तवस्वरूपनहीं ॥ किंतु वंध्यापुत्र याप्रकारकाशब्दरूप तथा वंध्यापुत्र याप्रकारकाज्ञानरूपही सोवंध्यापुत्रहै ॥ याकारणतें सोवंध्यापुत्र अत्यंतअसत्यहै ॥ तैसे सोभेदभी अत्यंतअसत्यहीहै ॥ हे जनक ॥ यासंसारविषे अद्वितीयब्रह्मतैंभिन्नजोकोईपदार्थहोवै ॥ तो तिसपदार्थकाभेद अद्वितीयब्रह्मविषेरहै ॥ परंतु यासंसारविषे अद्वितीयब्रह्मतैंभिन्न कोईस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैनहीं ॥ किंतु यहसंपूर्णजगत् ॥ तो अद्वितीयब्रह्मरूपही है ॥ यातें ताअद्वितीयब्रह्मविषे भेदकीसंभावनाभीहोवैनहीं ॥ हे जनक॥ जैसे शशशृंग वंध्यापुत्र याप्रकारकेशब्दकेबलतें तथा याप्रकारकेज्ञानकेबलतैंहीं सोशशशृंग तथा वंध्यापुत्र स्थितहोवे है ॥ ताशब्दज्ञानतैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ शशशृंगके तथावंध्यापुत्रके स्थितिकाकारणनहीं ॥ तैसे भेद याप्रकारके शब्दकेबलतें तथा याप्रकारकेज्ञानकेबलतैंहीं सोभेद स्थितहोवैहै ॥ भेद याप्रकारकेशब्दज्ञानतैंविना दूसराकोईपदार्थ ताभेदकेस्थितिका

एकचेतनहै और आत्मातैंभिन्नजितनेकअनात्मपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णअनात्मपदार्थ जडरूपहैं तिनजडरूपसाक्ष्यपदार्थोंकीचेतनरूपसाक्षी आत्मातैंविना किसीप्रकारसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं आत्माकेनाशकाअंगीकारकरणेतैं तिनजडपदार्थोंकानाशभी अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ शंका ॥ अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकीरक्षाकरणेवासते सर्वजडपदार्थोंकानाश अंगीकारकरणाउचितहै ॥ यहजोआपनैकह्या सोयद्यपिसत्यहै तथापि संपूर्णजडपदार्थोंकेनाशहुएतैंअनंतर तिनसर्वपदार्थोंकोसिद्धिकरणेहारा अद्वितीयब्रह्मरूपसाक्षी किसप्रकारस्थितहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे साक्षीआत्माकासाक्ष्यरूपजेअंतःकरणकीवृत्तियाँहैं तिनवृत्तियोंका सुषुप्तिअवस्थाविषेनाशहुएभी तासुषुप्तिअवस्था विषे साक्षीआत्माकानाशहोवैनहीं ॥ तैसे संपूर्णजडजगत्केनाशहुएभी अद्वितीयब्रह्मकानाशहोवैनहीं ॥ याकारणतैं हमअधिकारीपुरुषोंनैं अद्वितीयब्रह्मकीरक्षाकरणेवासते जडप्रपंचकाहीपरित्यागकर्‍याचाहिये ॥ हेजनक ॥ जैसे उष्णस्वभाववान्‌अग्निविषे शीतलता किसीप्रमाणकरिकै ग्रहणकरीजावैनहीं ॥ तैसे अद्वितीयस्वभाववालेब्रह्मविषे भेद किसीप्रमाणकरिकैग्रहणकर्‍याजावैनहीं ॥ और लोकविषे जिस पदार्थका किसीप्रमाणकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ तिसपदार्थकीहीसिद्धिहोवैहै ॥ याकारणतैं ताभेदकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ हेजनक ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे जोसर्प प्रतीतहोवैहै ॥ सोसर्प वास्तवतैंरज्जुरूपअधिष्ठानविषेहैनहीं ॥ काहेतैं जोरज्जुरूपअधिष्ठानविषे सोसर्पवास्तवतैंहोवे ॥ तो रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुएतैंअनंतरभी सोसर्प प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैंअनंतर सोसर्प प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सोसर्प रज्जुविषे वास्तवतैंनहीं ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे जोभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सोभेद अद्वितीयब्रह्मविषे वास्तवतैंनहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंहोता तौसमाधिअवस्थाविषे विद्वान्‌पुरुषकूं जैसे ब्रह्मविषे सत्‌चित्‌आनंदरूपताप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे ताअद्वितीयब्रह्मविषे विद्वान्‌पुरुषकूं भेदभीप्रतीतहोता परंतु विद्वान्‌पुरुषकूं अद्वितीयब्रह्मविषे भेद प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंनहींहोवे ॥ तौसोभेद अद्वितीयब्रह्मविषेस्थितहुआ किसवासतेप्रतीतहोवैहै ॥ समाधान ॥

आनंदस्वरूपआत्माकीरक्षाकरणेवासते ताभेदकाहीनाश अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ अब याहोअर्थकूंस्पष्टकरिके निरूपणकरें हैं ॥ हेजनक ॥ जेकेवलनीतिशास्त्रकूंजानणेहारेपुरुष अर्थकूं तथाकामकूंहीं परमपुरुषार्थकहें हैं ॥ तेनीतिशास्त्रकेजानणेहारेपुरुषभी याप्रकारका वचनकहें हैं ॥ जिसस्थानविषे आपणेआत्माकेनाशकीप्राप्तिहोवे तिसस्थानविषे यहबुद्धिमान्पुरुष आपणेआत्माकीरक्षाकरणेवासतै सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिदेवे ॥ याप्रकारकावचन तेनीतिशास्त्रकेजानणेहारेपुरुष कथनकरैंहैं ॥ तिनोंकेवचनतेंभी आत्माकीरक्षाकरणेवासते सर्वभेदकापरित्यागकरणाउचितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यास्थूलशरीरकूंहीजिनोंनें आत्मामान्याहै ॥ ऐसेजेबहिर्मुख तथासकाम नीतिशास्त्रकेजानणेहारेपुरुषहैं ॥ तेसकामपुरुषभी जभी शरीररूपमिथ्याआत्माकीरक्षाकरणेवासतें सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरे हैं ॥ तभी अंतरसुख तथानिष्काम जेहमअधिकारीपुरुषहैं ॥ तेहमअधिकारीपुरुष परमपुरुषार्थरूपशुद्धआत्माकीरक्षाकरणेवासते दुःखरूप जडभेदकूं किसवासतेनहींपरित्यागकरेंगे ॥ किंतु शुद्धआत्माकीरक्षाकरणेवासते हमअधिकारियोंने जडभेदकापरित्याग अवश्यकऱ्याचाहिये ॥ हेजनक ॥ जेपुरुष जडपदार्थोंविषे अभिनिवेशकरिके आपणेआत्मरूपताका परित्यागकरें हैं ॥ तिनपुरुषोंकेअनात्मजडपदार्थोंके विनाहींपरित्यागतें नाशहोइजावेहै ॥ जैसे कृपणपुरुष जीवितकालविषे धनकापरित्यागकरेनहीं ॥ परंतु ताकृपणपुरुषके मरणतेंअनंतर ताकाधनभी विनाहींत्यागेतें नाशहोइजावेहै ॥ तैसे आत्माकेनाशहुए तिनजडपदार्थोंकाभी अवश्यनाशहोवेहै ॥ यातें आनंदस्वरूपआत्माकीरक्षाकरणेवासते हमअधिकारीपुरुषोंनें जडभेदकापरित्याग अवश्यकरणा ॥ हेजनक ॥ बृहस्पतिकेशिष्यजेचार्वाकनास्तिकहैं तथा शास्त्रकेविचारतेंरहित जेपामरपुरुषहैं ॥ तेचार्वाक तथापामरपुरुष यास्थूलशरीरकूंहीआत्मामाने हैं ॥ और ते चार्वाक तथापामरपुरुष यास्थूलशरीररूपमिथ्याआत्माकेनाशतेंअनंतर सर्वजगत्कानाश अंगीकारकरें हैं ॥ जभी चार्वाक तथापामरपुरुषभी शरीररूपआत्माकेनाशहुएतेंअनंतर सर्वजगत्केनाशकूंकथनकरें हैं ॥ तभीशास्त्रकूंजानणेहारबुद्धिमान्पुरुष साक्षीआत्माकेनाशतेंअनंतर सर्वजगत्केनाशकूं किसवासतेंनहींकथनकरेंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ सूर्यादिकज्योतियोंकाभीज्योतिरूपजोआत्माहै ॥ सोआत्माही

नतैं तेसर्पादिक तीनकालविषेभिन्ननहीं ॥ तैसे देशकालतैंआदिलेके संपूर्णजगत् अधिष्ठानरूपब्रह्मविषेहीस्थितहै ॥ अधिष्ठानब्रह्मतैं सोजगत् तीनकालविषे भिन्ननहीं ॥ और हेजनक ॥ संपूर्णदेहधारीजीवोंकाजोआत्माहै ॥ सोआत्मा पूर्वउक्तसर्वभेदोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेवही परब्रह्मरूपहै ॥ और याआनंदस्वरूपआत्मातैंपरे दूसराकोईअधिकपदार्थ हैनहीं ॥ किंतु यहआत्मादेवही सर्वपदार्थोंतैंअधिकहै याकारणतैं अयमात्माब्रह्म ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे याआनंदस्वरूपआत्माकूंही ब्रह्मरूपकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ यातैं ब्रह्मविषे तथा आत्माविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं॥हेजनक॥जोकदाचित् याआनंदस्वरूपआत्माविषे भेदहोवैगा तो अयमात्माब्रह्म याश्रुतिनैं कथनकरी जोआत्माकीब्रह्मरूपता सोनहींसंभवैगी ॥ और याआनंदस्वरूपआत्माविषे जोब्रह्मरूपताहोवैगी ॥ तो याआनंदस्वरूपआत्माविषे भेदन हींरहैगा ॥ काहेतैं ब्रह्मरूपता तथाभेद यहदोनोंधर्म परस्परविरोधी हैं और जेधर्म परस्परविरोधीहोवैहैं॥तेधर्म एकअधिकरणविषेरहैंनहीं॥ जैसे उष्णता तथाशीतलता यहदोनोंधर्म परस्परविरोधीहैं ॥ यातैं तेदोनोंधर्म एकअधिकरणविषेरहैंनहीं ॥ तैसे ब्रह्मरूपता तथाभेद यह दोनोंधर्मभी परस्पर विरोधीहोणेतैं एकअधिकरणविषेरहैंनहीं ॥ यातैं तिनदोनोंधर्मोंविषे एकधर्मका परित्यागकऱ्याचाहिये ॥ तहाँ अन्योन्याभावरूपभेद आपणेप्रतियोगीकीअपेक्षाकरैहै ॥ यातैं सोभेद बहिरंगहै ॥ और ब्रह्मरूपता किसीकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ याकारणतैं सोब्रह्मरूपता अंतरंगहै और बहिरंगधर्मोंकी तथाअंतरंगधर्मोंकी जहाँ एकअधिकरणविषे प्राप्तिहोवै तहाँ विरोधकीनिवृत्तिवासतै बहिरंगधर्मोंकाहीपरित्यागकरणाउचितहै ॥ यहवार्ता सर्ववादियोंकूंसंमतहै ॥ याकारणतैं बहिरंगभेदकापरित्यागकरिके आत्माविषे ब्रह्मरूपताही अंगीकारकरीचाहिये ॥ हेजनक ॥ सर्वकेअंतर व्यापकजोवस्तुहै ॥ सोवस्तुहीआत्मशब्दकाअर्थ है ॥ याकारणतैं सो ब्रह्मरूपता आत्मरूपतातैं भिन्ननहीं॥किंतु सोब्रह्मरूपता आत्मरूपतातैंअभिन्नहै॥तहाँ आत्माविषे जोकदाचित् भेदकापरित्याग नहींकरिये तो आत्माविषे ब्रह्मरूपताकानाशहोवैगा और ब्रह्मरूपताकेनाशहुएतैंअनंतर ताब्रह्मरूपतातैंअभिन्न जोआत्मारूपताहै ॥ सोआत्मारूपताभीनाशकूंप्राप्तहोवैगी ॥ और ताआत्मरूपताकेनाशहुएतैंअनंतर आत्माकाभीनाशहोवैगा ॥ सोआत्माकानाश किसीभीआस्तिकवादीकूंअंगीकारनहीं ॥ यातैं

स्वरूपभेदहै ॥ जैसे एकहीवृक्षविषे स्कंध शाखा पत्र पुष्प फल इत्यादिकोंका जोपरस्परभेदहै ॥ सोभेद स्वरूपभेदहै ॥ यास्वरूपभेदकूंहीं शास्त्रविषे स्वगतभेदकहें हैं ॥ सोस्वरूपभेद सावयवपदार्थोविषे होवैहै ॥ और यह अद्वितीयब्रह्म निरवयवहै ॥ याकारणतैं ताअद्वितीयब्रह्मविषे स्वरूपभेदसंभवैनहीं ॥ और समानजातिवालेपदार्थोका जोपरस्परभेदहोवैहै ॥ ताभेदकानाम सजातीयभेदहै ॥ जैसे गोत्वरूपजातिवालियां जेसर्वगौवांहैं ॥ तिनोंविषे शुक्लवर्णवालीगौविषे कृष्णवर्णवालीगौकाभेदरहैहै ॥ अथवा सर्वअंगोंकरिकैसंपन्नगौविषे शृंगादिकअंगहीनगौकाभेदरहैहै ॥ याकानाम सजातीयभेदहै ॥ सोसजातीयभेदभी अद्वितीय ब्रह्मविषेहैनहीं ॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थोकाजोपरस्पर भेदहोवैहै ॥ ताभेदकानाम विजातीयभेदहै ॥ जैसे मनुष्यत्वजातिवालेमनुष्योंविषे घटत्वजातिवालेघटोंकाभेदहोवैहै ॥ ता भेदकानाम विजातीयभेदहै ॥ सोविजातीयभेदभी अद्वितीयब्रह्मविषेसंभवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे आकाशविषे जोमहान्गंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै ॥ सोगंधर्वनगर अधिष्ठान रूप आकाशतैं तीनकालविषेभिन्ननहीं ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे जोयहस्थूलसूक्ष्मरूप संपूर्णजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ सोजगत् अधिष्ठानब्रह्मतैंतीनकालविषेभिन्ननहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे संपूर्णपदार्थोसहितदेशकाल स्वप्नद्रष्टापुरुषविषेहीउत्पन्न होवैहै ॥ तैसे देशकालतैंआदिलेकेयहसंपूर्णजगत्‌भी ब्रह्मविषेहीउत्पन्नहोवैहै ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ परमानंदस्वरूपहै ॥ तथा सूर्यादिकज्योतियोंकाभीज्योतिहै ॥ तथानाशतैंरहितहै तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे घटादिकउपाधियोंतैंरहित शुद्धआकाशकाआपणेस्वरूपकेसाथभेदनहीं है॥तैसे मायादिकउपाधियोंतैंरहितशुद्धब्रह्मकाअंतःकरणादिकउपाधियोंतैंरहितशुद्धआत्माके साथभेदनहीं है॥काहेतैं जैसे मशकशरीरविषे तथा हस्तीशरीरविषे आकाश अंतरबाहर समानव्यापकहै॥तैसे यहआत्मादेवभी सर्वजगत् विषेअंतरबाहर समानव्यापकहै ॥ ऐसेआत्माकी ब्रह्मकेसाथएकतासंभवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे प्रतीतभयेजे सर्प दंड माला जलधारा इत्यादिककल्पितपदार्थ हैं ॥ तेसर्पादिककल्पितपदार्थ रज्जुरूपअधिष्ठानविषेही स्थितहैं ॥ रज्जुरूपअधिष्ठा

आदिकअनात्मपदार्थ हैं ॥ तिनहस्तीआदिकोंविषे यद्यपि अश्वादिकोंकीअपेक्षाकरिके अधिकताहै ॥ तथापि पर्वतादिकोंकीअपेक्षाकरि के तिनहस्तीआदिकोंविषे अधिकताहैनहीं ॥ तैसे पर्वतादिकोंविषेभी यद्यपि हस्तीआदिकोंकीअपेक्षाकरिके अधिकताहै ॥ तथापि आकाशादिकोंकीअपेक्षाकरिके तिनपर्वतादिकोंविषे अधिकताहैनहीं ॥ इसप्रकार सर्वअनात्मपदार्थोंविषे सापेक्षअधिकताहै ॥ याकारणतें तेहस्तीआदिकअनात्मपदार्थ ब्रह्मशब्दकामुख्यअर्थनहीं ॥ किंतु तेहस्तीआदिकअनात्मपदार्थ ब्रह्मशब्दकागौणअर्थ हैं ॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदतेंरहितजोपरमात्मादेवहै ताकेविषे किसीपदार्थकीअपेक्षाकरिके अधिकतानहीं ॥ किंतु ताकेविषे निरपक्षेअधिकताहै ॥ याकारणतें सोपरमात्मादेवही ब्रह्मशब्दकामुख्यअर्थ है ॥ हेजनक ॥ जोपदार्थ किसीदेशविषेहोवे है ॥ और किसीदेशविषेनहींहोवेहै ॥ सोपदार्थ देशपरिच्छेदवालाहोवेहै ॥ और जोपदार्थ किसीकालविषेहोवेहै ॥ और किसीकालविषेनहींहोवेहै ॥ सोपदार्थ कालपरिच्छेदवालाहोवेहै ॥ और जोपदार्थ दूसरेकिसीपदार्थतेंभिन्नहोवेहै ॥ सोपदार्थ वस्तुपरिच्छेदवालाहोवेहै ॥ और जोपदार्थ देशकालवस्तुपरिच्छेद वालाहोवेहै ॥ सोपदार्थ अल्पहोवेहै ॥ जैसे पुरुषकेहस्तविषेस्थित जोआमलकफलहै ॥ सो देशकालवस्तुपरिच्छेदवालाहै याकारणतें सो आमलकफल अल्पहै ॥ तैसे परमात्मादेवतेंभिन्न जितनेकअनात्मपदार्थ हैं ॥ ते देशकालवस्तुपरिच्छेदवालेहैं यातें तेसंपूर्णअनात्मपदार्थ अल्पहैं ॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदतेंरहित जोसर्वतेंअधिकवस्तुहै ॥ सो ब्रह्मशब्दकाअर्थ है ॥और सर्वतेंअधिकता तथाअल्पता यह दोनोंधर्म परस्पर विरोधीहैं ॥ यातें एकपदार्थविषे तेदोनों धर्मरहैंनहीं ॥ किंतु जिसपदार्थविषे अधिकताधर्म रहेहै तिसपदार्थविषे अल्पताधर्मरहैनहीं ॥ और जिसपदार्थविषे अल्पताधर्मरहेहै ॥ तिसपदार्थविषे अधिकताधर्मरहैनहीं ॥ याकारणतें परमात्मादेवतें भिन्नसर्वअनात्मपदार्थ ब्रह्मशब्दकागौणअर्थ है ॥ एकपरमात्मादेवही ब्रह्मशब्दकामुख्यअर्थ है ॥ और हेजनक ॥ सोभेदरूपवस्तुपरिच्छेदभी तीनप्रकारकाहोवेहै ॥ एकतो स्वरूपभेद रूप वस्तुपरिच्छेदहोवे है ॥ और दूसरा सजातीयभेदरूप वस्तुपरिच्छेदहोवेहै ॥ और तीसरा विजातीयभेदरूप वस्तु परिच्छेदहोवे है ॥ तहां आपणेस्वरूपविषेस्थितजोभेदहै ताकानाम

याश्रुतिविषे अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे उपनिषद्रूपशब्दकूंही करणताकहीहै ॥ और मनसैवानुद्रष्टव्यम् ॥ याश्रुतिविषे अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारविषे मनकूंहीकरणताकहीहै यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्पर विरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक उपनिषद्रूपशब्दप्रमाणकीसहायतातैंविना यहमन आत्मसाक्षात्कारकूं उत्पन्नकरैनहीं किंतु उपनिषद्रूपशब्दप्रमाणकीसहायताकरिकेही यहशुद्धमन आत्माकेसाक्षात्कारकूंउत्पन्नकरैहै॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंकाभी परस्पर विरोधसंभवैनहीं॥तात्पर्ययह॥कोईकविद्वान्पुरुषतौ आत्मसाक्षात्कारविषे उपनिषद्रूपशब्दकूंकरणमानैहैं ॥ और मनकूंसहकारीकारणमानैहैं ॥ और कोईकविद्वान्पुरुषतो आत्मसाक्षात्कारविषे मनकूंकरणमानैहैं ॥ और उपनिषद्रूपशब्दप्रमाणकूं सहकारीकारणमानैहैं ॥ यहदोनोंप्रकारकोप्रक्रिया श्रुतिप्रमाणकरिकेसिद्ध हैं ॥ इतनैंकरिकै अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे प्रमाणकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीअद्वितीयब्रह्मविषे सर्वद्वैतकेनिषेधकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ अद्वितीयब्रह्मरूपजोयहआत्मादेवहै ॥ ताकेविषे नानाप्रकारकेभेदवाला यहप्रपंच किंचित्मात्रभी नहीं ॥ काहेतैं व्याकरणकीरीतिसैं देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितजोसर्वतैंअधिकवस्तुहै ॥ सोवस्तुही ब्रह्मशब्दकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जोकदाचित् ब्रह्मविषे किसीपदार्थकाभेद अंगीकारकरिये ॥ तौ जोपदार्थ भेदवालाहोवैहै ॥ सोपदार्थ वस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ और जोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ सोपदार्थ अल्पहोवैहै ॥ और जोपदार्थ अल्पहोवैहै ॥ सोपदार्थ सर्वतैंअधिकहोवैनहीं ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ हैं ॥ यातैं भेदकेअंगीकारकरणेतैं सर्वतैंअधिकतारूपब्रह्मशब्दकाअर्थ तापरमात्मादेवविषेनहींघटेगा ॥ अब याही अर्थकूं स्पष्टकरिकेदिखावैं हैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे शास्त्रवेत्तापुरुष शब्दोंका दोप्रकारकाअर्थ अंगीकारकरैं हैं ॥ तहां एकतौ शब्दका मुख्यअर्थहोवैहै ॥ और दूसरा शब्दका गौणअर्थहोवैहै ॥ जैसे देवदत्तनामापुरुष सिंहहै ॥ यास्थलविषे मृगराजपशुविषे सिंहशब्दकामुख्यअर्थ है ॥ और देवदत्त नामापुरुष सिंहशब्दकागौणअर्थहै ॥ और जिसस्थलविषे शब्दकामुख्यअर्थ संभवहोइसकै तिसस्थलविषे ताशब्दकागौण अर्थ नहींअंगीकारकरणा ॥ याप्रकारकाभी शास्त्रवेत्तापुरुषोंकासंकेतहै ॥ यातैं एकअद्वितीयपरमात्मादेवकूंछोडिके जितनेकीहस्ती

काहेतें यालोकविषे नेत्रइंद्रियसहितमनवाला जोपुरुषहै ॥ सोपुरुष जैसे नीलपीतादिकरूपोंकूंदेखेहै ॥ तैसे श्रोत्रइंद्रियसहितमनवाला जोअंधपुरुषहै ॥ सोअंधपुरुष नीलपीतादिकरूपोंकूंदेखेनहीं ॥ और सोनेत्रइंद्रियतैंरहितअंधपुरुष नीलपीतादिकरूपकूं नहींजाणताहुआ जैसे अपराधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे नेत्रादिकप्रमाणोंतैं विना नीलपीतादिकरूपोंकूं नहींजाणताहुआ यहमनभी अपराधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहजीवात्मापुरुष मनकरिकैही सर्वअंतरबाह्यपदार्थोंकूंजाणेहै ॥ तहां भेदकूंग्रहणकरणेहारे जेनेत्रादिकप्रमाणहैं ॥ तिनोंकरिकैसहकृतजोमनहै ॥ तामनकरिकै यहपुरुष नानाप्रकारकेभेदकूंग्रहणकरैहै ॥ और जीवईश्वरकेअभेदकूंबोधनकरणेहारा जोमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणहै ॥ ताशब्दकरिकैसहकृतजोमनहै ॥ तामनकरिकै यहअधिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ यातैं हेजनक सर्वभेदतैंरहित तथासर्वजीवोंकाआत्मारूप जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ ताकासाक्षात्कार शुद्धमनकरिकैही होवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ मनसेवानुद्रष्टव्यम् ॥ अर्थयह ॥ श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकैयुक्तजोशुद्धमनहै ॥ तामनकरिकैही अधिकारीपुरुषोंनैं अद्वितीयआत्मा देखणेयोग्यहै ॥ १ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यतोवाचोनिवर्त्ततअप्राप्यमनसासह ॥ अर्थयह ॥ जैसे मध्याह्नकेसूर्यकूं विषयकरणेवासतै प्रवृत्तभयाचक्षुइंद्रिय तासूर्यकेतेजकूंनसहारताहुआ तासूर्यतैंनिवृत्तहोइआवैहै ॥ तैसे अद्वितीयआत्माकूं विषयकरणेवासतेप्रवृत्तहुआ मन तथावाणी ताअद्वितीयआत्माकूंनप्राप्तहोइके ताअद्वितीयआत्मातैं निवृत्तहोइआवैहैं ॥ १ ॥ याश्रुतिविषे अद्वितीयब्रह्मकूं मनसहितवाणीका अविषयकह्याहै ॥ और मनसेवानुद्रष्टव्यम् ॥ याश्रुतिविषे अद्वितीयआत्माकूं मनकाविषयकह्याहै ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्पर विरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥हेजनक॥ यतोवाचोनिवर्त्तते ॥ याश्रुतिविषे जोमनकानिषेधकऱ्याहै॥सो अशुद्धमनकानिषेधकऱ्याहै शुद्धमनकानिषेधकऱ्यानहीं ॥ और मनसैवानुद्रष्टव्यम् ॥ याश्रुतिविषे जोअद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारविषे मनकूंकरणताकहीहै ॥ सो श्रवणादिकसाधनोंकरिकै युक्तशुद्धमनकूं करणताकहीहै ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्पर विरोधसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि ॥ अर्थयह ॥ उपनिषद्रूपशब्दप्रमाणकरिकै जानणेयोग्यजोअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माहै ॥ ताआत्माकास्वरूप मैं तुम्हारेसैंपूछताहूं॥

द्वितीयब्रह्मरूपअक्षरहृदयनामामंत्रकूंजानैं हैं॥कैसाहैसोअंतर्यामीआत्मा॥याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व तथा याजगत्केनाशतैंअनंतर एकअद्विती यरूपकरिकेस्थितहोवैहै ॥ और जगत्कीस्थितिकालविषे सोआत्मादेव शरीरादिरूपकल्पितउपाधियोंकेसंबंधतैं नानारूपहुएकीन्याई प्रतीतहोवैहै ॥ याप्रकार आत्माकेवास्तवस्वरूपकेजानणेहारेपुरुषोंकूं विषयरूपशत्रुवोंतैं किंचित्मात्रभीभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ऐसेअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार अधिकारीपुरुषोंकूं किसप्रमाणतैंहोवै है ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ सर्वभेदतैंरहितजोअ द्वितीयआत्माहै ॥ सोअद्वितीयआत्मा रूपस्पर्शादिकगुणोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकरिके ताअद्वितीयआत्माका साक्षात्कारहोवैनहीं ॥ किंतु मनकरिकेही ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोमनकरिकेही अद्वितीयआ त्माकासाक्षात्कारहोताहोवै ॥ तो सर्वजीवोंकेमन विद्यमान हैं ॥ यातैं तिनजीवोंकूं साधनोंतैंविनाही अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार किस वासतैनहींहोता॥समाधान॥हेजनक॥वेदांतशास्त्रकेश्रवणमननादिकजेसाधनहैं ॥ तिनसाधनोंकरिकेसंस्कृतजोशुद्धमनहैताशुद्धमनकरिकेही आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ याप्रकारकामन सर्वजीवोंकाहैनहीं॥ याकारणतैं साधनहीनपुरुषोंकूं अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते मनविषे सर्वपदार्थोंकेज्ञानकीकारणताका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यद्यपि पराञ्चिखानिव्यतृणत्स्व यंभूः ॥ याश्रुतिविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरात्माकेदर्शनकीअयोग्यताकथनकरीहै ॥ तथापि ब्रह्मानैं मनकूं अंतरबाहरसर्वपदार्थोंके दर्शनवासते उत्पन्नकर्याहै ॥ याकारणतैं भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेवर्तमान जेबाह्यपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकूं यहजीव मनकरिकेहीजानैं है ॥ और तीनकालोंतैंरहित जोअंतरअद्वितीयआत्माहै ॥ तिसकूंभी यहअधिकारीपुरुष मनकरिकेही जानैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोमनकरिकेही सर्वपदार्थोंकाज्ञानहोताहोवै तो नेत्रइंद्रियतैंरहितजोअंधपुरुषहै ॥ तिसकामनतो विद्यमानहै ॥ यातैं तामनकरिके तिसअंधपुरुषकूं रूपादिकोंकानिश्चय होणाचाहिये ॥ समाधान ॥ हेजनक रूपादिकपदार्थोंकेदर्शन विषे नेत्रादिकइंद्रिय मनकेसहकारीकारणहैं ॥ तानेत्रादिकसहकारीकारणोंकेअभावतैं सोमन रूपादिकोंकेनिश्चयकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥

जुवारियोंकेसाथ जूवाखेलताभया ॥ याकारणतैं तिनविषयरूपजुवारियोंने हमाराविद्यारूपधन तथापुण्यरूपधन संपूर्णहरणकरिलिया ॥ एकपापरूपकोपीनमेरेपासरहीहै ॥ जिसपापरूपकौपीनकरिकै मैंमूढबुद्धिजीव अनेकजन्मोंविषेदुःखकूंप्राप्तहोवोंगा ॥ हेजनक ॥ याप्रकार कापश्चात्तापकरिकै ॥ जैसे अज्ञानीपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरैहै ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मरूप अक्षरहृदयनामामंत्रकूंजानणेहाराविद्वान्पुरुष ताप श्चात्तापकूंकरिकै आपणेकूंधिक्कारकरैनहीं ॥ हेजनक॥जिसअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकूंनिश्चयकरिकै सोविद्वान्पुरुष तापश्चात्तापतैंरहितहोवै है ॥ सोअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकैसाहै ॥ जन्ममरणादिकजेशरीरकेधर्म हैं ॥ तथा क्षुधापिपासादिकजेप्राणोंकेधर्म हैं॥तथा कर्तृत्वभोक्तृत्वा दिकजेअंतःकरणकेधर्म हैं ॥ तिनसंपूर्णधर्मोंतैंरहितहै॥तथा अंतःकरणादिकसर्वसंघातकासाक्षीरूपहै ॥ और ब्रह्मादिकदेवतावोंकेजोदिनहैं ॥ तिनदिनोंकरिकैघटित जोसंवत्सररूपनानाप्रकारकाकालहै ॥ सोकालभी आकाशादिकपदार्थोंकेभेदकरणेवासते तिसआत्मादेवतैंहीं उत्पन्न होवैहै॥ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा आपणेप्रकाशविषे दूसरे सूर्य चंद्रमा विद्युत् वाक् इत्यादिकज्योतियोंकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंतु सोस्वयंज्यो तिआत्माही सूर्यादिकजडज्योतियोंकूंप्रकाशकरै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूंज्योतियोंकाभीज्योतिकहै हैं ॥ और हेजनक ॥ यादेहधारीप्राणियोंकूं प्राणरूपवायु तथा अपानरूपवायु जीवनकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु यहस्वयंज्योतिआत्माही सर्वप्राणियोंकूं जीवनकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तास्वयंज्योतिआत्माकूं आयुष् यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक ॥ जिसअधिष्ठा नरूप आत्मादेवविषे प्राण चक्षु श्रोत्र मन सूर्यादिक यहपांचोंस्थितहैं॥तथा जिसआत्मादेवविषे पृथिवीआदिकचारिभूतोंसहितआकाशस्थि तहै॥ ऐसे अधिष्ठानआत्माकूं मैं आपणाआत्मारूपकरिकै जानताहूं॥याकारणतैं मैंभी जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित सर्वजगत्काअधिष्ठा नरूपहूं ॥और प्राण चक्षु श्रोत्र मन सूर्यादिक यहजेपंचप्रकारकेज्योतिहैं॥तिनोंविषे यहआत्मादेव प्राणकाभीप्राणहै ॥ और यहआत्मादेव चक्षुकाभीचक्षुहै॥और यहआत्मादेव श्रोत्रकाभीश्रोत्रहै॥और यहआत्मादेव मनकाभीमनहै ॥ और यहआत्मादेव सूर्यादिकोंकाभीसूर्य है याप्रकार सर्वप्राणादिकज्योतियोंकाभीज्योतिरूपकरिकै ताअंतर्यामीआत्माकूं जेअधिकारीपुरुष निश्चयकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषहीताअ

रिके अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं॥हेजनक जैसे लोकप्रसिद्धजुवाविषे जिनपुरुषोंकापराजयहोवैहै ॥ तिनपुरुषोंकीमंडली ताजुवाके गृहविषे भिन्नदेखणेमेंआवैहै ॥ तैसेयासंसारविषे जेमूढपुरुष विषयरूपजुवारियोंतैं पराजयकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिनोंविषेकोईकजीवतोपक्षीशरीरकूं प्राप्तहुएहैं ॥ और कोईकजीवतो वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकूंप्राप्तहुएहैं ॥ और कोईकजीवतो ग्रामकेरहणेहारे तथावनकेरहणेहारे पशुशरी रोंकूंप्राप्तहुएहैं ॥ और कोईकजीवतो सर्पादिकशरीरोंकूंप्राप्तहुएहैं ॥ इनोंतैंआदिलेके जितनेकिचौरासीलक्षशरीरप्रतीतहोवैहैं ॥ तेसंपूर्ण पराजयकूंप्राप्तहुएजीवोंकीमंडलीजानणी ॥ और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे कृत द्वापर त्रेता कलि याप्रकारकेनाम कल्पनाकरेहैं जिनोंके ऐसेजे जुवाखेलणेकेसाधनरूप पाशकहैं ॥ तिनपाशकोंकरिके तेजुवारीपुरुष तिनपुरुषोंकापराजयकरैहैं ॥ जिनपुरुषोंकूंतिनपा शकोंकेअनुकूलपावणेकासाधनरूप अक्षहृदयनामामंत्रकाज्ञाननहींहैं ॥ और जिनपुरुषोंकूं ताअक्षहृदयनामामंत्रकाज्ञानहै ॥ तिनपुरुषोंकूं तेकपटीजुवारीपुरुष पराजयकरिसकैंनहीं ॥ उलटा तेकपटीजुवारी आपहीपराजयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यहविषयरूपकपटीजुवारीभ तिसपुरुषका पराजयकरैहैं ॥ जिसपुरुषकूं अद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयनामामंत्रकाज्ञाननहीं है॥ और जिसपुरुषकूं अद्वितीयब्रह्मरूप अक्ष हृदयनामामंत्रकाज्ञानहै ॥ तिसपुरुषकूं यहविषयरूपजुवारी पराजयकरिसकैनहीं ॥ किंतु तेविषयरूपजुवारी आपहीपराजयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेजनक ॥ सोअद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयनामामंत्र हमअधिकारी पुरुषोंनें अभी जान्याहै ॥ यातें यहविषयरूपजुवारी अभी हमअधि कारीजीवोंका पराजयनहींकरिसकैंगे ॥ किंतु हमअधिकारीजीवही तिनविषयरूपजुवारियोंका पराजयकरैंगे ॥ हेजनक ॥ संपूर्णजगत्का अधिष्ठानरूप जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ सोअद्वितीयब्रह्म मेरेआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोअद्वितीयब्रह्म मैंहूं याप्रकार जभी यह अधिकारी पुरुष अद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयनामामंत्रकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंनिश्चयकरैहै ॥ तभी सो अधिकारीपुरुष अज्ञानीजीवकीन्याई पश्चा त्तापकूंकरैनहीं ॥ अब ता पश्चात्तापकूंनिरूपणकरैहैं ॥ याभारतखंडविषे पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं हमारेकूं अधिकारीमनु ष्यशरीरकीप्राप्तिहोतीभई ॥ तामनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकेभी मैंमूढबुद्धिजीव वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकीसहायतातैंविनाहीं विषयरूप

अर्थयह ॥ आदित्य चंद्रमा पवन अग्नि स्वर्गलोक भूमि जल साक्षीआत्मा मन दिन रात्रि दोनोंसंध्या धर्मराज यहसंपूर्णयाजी वोंकेशुभअशुभवृत्तांतकूंजानैहैं ॥ १ ॥ हेजनक जोहमअधिकारीजीव पूर्वपूर्वजन्मोंविषे विषयरूपजुवारियोंतैं पराजयकूंप्राप्तभयेथे ॥ सोईहमअधिकारीजीव अभी वेदांतशास्त्ररूपसाक्षिकेबलतैं इंद्रियरूपपाशकोंकरिकै तथायज्ञदानादिरूपबाणोंकरिकै तिन विषयरूपकपटीजुवारियोंकूं अवश्यजीतैंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकप्रसिद्धजुवारीपुरुषोंका पाशकोंकीप्रवृत्तिकरिकैजयहोवैहै ॥ तैसे रागद्वेषतैंरहित जाइंद्रियरूपपाशकोंकीप्रवृत्तिहै ॥ ताकरिकै हमअधिकारीजीवोंकाभी विषयरूपजुवारियोंतैंजयसंभवैहै ॥ यह वार्त्ता गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नैंभी अर्ज्जुनकेप्रति कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिंद्रियैश्चरन् ॥ आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ रागद्वेषतैंरहित तथाआपणेवशवर्ती ऐसेजेनेत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकूंग्रहणकरताहुआ यहविद्वान्पुरुष बंधनकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु परम आनंदकूंप्राप्तहोवैहै॥१॥और हेजनक॥ जैसे युधिष्ठिरादिकपंचपांडव श्रीकृष्णभगवान्रूपसाक्षीकेबलतैं दुर्योधनादिककपटीजुवारियोंकूं पराजयकरतेभयेहैं॥तैसे हमअधिकारीजीवभी वेदांतशास्त्र रूप साक्षीकेबलतैं इनविषयरूप कपटीजुवारियोंकूं अवश्यपराजयकरैंगे॥हेजनक॥जेपुरुष वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीतैंविना विषयरूपजुवारियोंकेसाथ जुवाखेलेहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकी महान्हानिहोवैगी ॥ और हमअधिकारीजीव अभी वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकीसहायतातैं विषयरूपजुवारियोंकेसाथजुवाखेलतेहैं॥याकारणतैं हमअधिकारीजीव तामहान्हानिकूं नहींप्राप्तहोवैंगे॥किंतु अभी हमाराहीजयहोवैगा॥हेजनक॥जैसे पूर्वशुकवामदेवादिकअधिकारीपुरुष वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेबलतैं विषयरूप जुवारियोंकूंजीतिकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपस्वाराज्यकूं प्राप्तभयेहैं ॥ तैसे हमअधिकारीजीवभी अभी वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेबलतैं विषयरूपकपटीजुवारियोंकूंजीतिकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपस्वाराज्य कूंप्राप्तहोवैं ॥ याकार्यकेकरणेविषे हमअधिकारीजीवोंकूं विलंब नहींकर्याचाहिये ॥ हेजनक ॥ जेमूढबुद्धिपुरुषवेदांतशास्त्ररूपसाक्षीतैं विनाहीं विषयरूपजुवारियोंकेसाथ जुवाखेलणेकाआरंभकरैहैं ॥ तेमूढबुद्धिपुरुष पुण्यरूपधनतैं रहितहोइकै एकपापरूपीकौपीनकोग्रहणक

कारीपुरुष शास्त्र विहित यज्ञदानादिकबहिरंगसाधनरूपीबाणोंकरिके हननकरैंगे ॥ और जिनविषयोंका शास्त्रविषेनिषेधनहींकऱ्या ॥ तिनविषयरूपशत्रुवोंकूं हमअधिकारीपुरुष शमदमादिकअंतरंगसाधनरूपपाशोंकरिके बांधेंगे॥ और ब्रह्माकारवृत्तिकेउत्थानकालविषेकदाचित्प्रतीतहोणेहारे जेअल्पविषयहैं ॥ तिनविषयरूपशत्रुवोंकूं हमअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यादिरूपधनकूं मध्यविषेराखिके जुवाविषेजीतेंगे ॥ हेजनक ॥ वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणतैं उत्पन्नभयाजो हमब्रह्मरूपहैंयाप्रकारकाअभेदज्ञान ॥ ताब्रह्मज्ञानरूपअग्निकरिकै हमअधिकारीपुरुष तिनविषयरूपप्रमत्तशत्रुवोंकूं तथा तिनोंकेमातापिताकूं तथा तिनोंकेबांधवोंकूं दग्धकरैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनविषयरूपशत्रुवोंके माता पिता बांधव कोनहैं॥समाधान॥ हेजनक ॥ अनित्यपदार्थोंविषे नित्यबुद्धि तथा अशुचपदार्थोंविषे शुचबुद्धि इसतैंआदिलेके अन्यपदार्थोंविषे अन्यबुद्धिरूपजाविक्षेपशक्तिहै ॥ तथा आत्माकूंआच्छादनकरणेहारी जाआवरणशक्तिहै ॥ यादोनोंप्रकारकीशक्तिवालीजाअविद्याहै ॥ साअविद्याही याविषयरूपजुवारियोंकीमाताहै॥ और शास्त्रकेसंस्कारोंतैंरहित जोअशुद्धमनहै ॥ सोमन तिनविषयरूपजुवारियोंकापिताहै ॥ और नानाप्रकारकीजेवासनाहैं ॥ तेवासना तिनविषयरूपीजुवारियोंकेसंबंधीहैं ॥ ऐसेमातापितावांधवोंसहित तिनविषयरूपशत्रुवोंकूं ब्रह्मज्ञानरूपअग्निसैं दग्धकरिके हमअधिकारीजीव तिनविषयरूपशत्रुवोंका पराजयकरैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् याविषयरूपशत्रुवोंनैं ऐसाकोनअपराधकऱ्याहै॥जिसअपराधकरिके आपने तिनविषयरूपशत्रुवोंका कुटंबसहित नाशकरणेकाउद्यमकऱ्याहै॥समाधान॥ हेजनक याविषयरूपकपटीजुवारियोंनैं हमअधिकारीजीवोंकूं पूर्वजन्मोंविषे बहुतवार पराजयकऱ्याहै ॥ यातैं इनविषयरूपशत्रुवोंका यहमहानअपराधहै ॥ ताअपराधकेअनुसारही तिनोंकूंदंडदियाचाहिये ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विषयरूपकपटीजुवारियों नैं हमअधिकारीजीवोंका पूर्व बहुतवार पराजयकऱ्याहै ॥ याअर्थविषे कौनप्रमाणहै ॥ समाधान ॥ हेजनक याअर्थविषे पृथिवीआदिकलोक तथाधर्मराजादिकलोकपाल तथा अंतर्यामीईश्वर यहसंपूर्ण साक्षीरूपकरिकेप्रमाणहैं ॥ यहवार्ता मनुस्मृतिविषेमनुभगवान्नैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ आदित्यचंद्रावनिलोनलश्च द्यौर्भूमिरापोहृदयंमनश्च ॥ अहश्चरात्रिश्चउभेचसंध्ये धर्मश्चजानातिनरस्यवृत्तम् ॥

जीवोंने वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकूंस्थापनकरिके तिनविषयरूपजुवारियोंकेसाथ जुवाखेलणेकाआरंभकऱ्याहै ॥ याकारणतें तिनविषयरूपजु
वारीपुरुषोंकूं हमअधिकारीजीव अभी अवश्यपराजयकरैं गे ॥ हेजनक ॥ हमारेन्याई तूंभी वेदांतशास्त्रकूंसाक्षीराखिके तिनविषयरूपजु
वारियोंकेजीतणेकाउद्यमकर ॥ वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेविद्यमानहुए यहविषयरूपकपटीजुवारी तुमारेकूंजीतनहींसकैंगे ॥ किंतु तुमहीं
तिनोंकूंजीतौगे ॥ हेजनक ॥ वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीतैंपूर्व जोहमनें विषयरूपजुवारियोंकेसाथ जूवाखेलणेकाआरंभकऱ्याथा ॥ सोमनुष्यश
रीररूपधनकूं मध्यविषेराखिके जुवाकऱ्याथा ॥ सोमनुष्यशरीररूपधन विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेभी भोगकाउपयोगीहै ॥ याकारणतें पूर्व
हमअधिकारीजीवोंका जयभयानहीं ॥ और अभी हमअधिकारीजीवोंनें वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकूं मध्यविषेस्थापनकऱ्याहै ॥ और सोवेदांत
शास्त्ररूपसाक्षी हमअधिकारीजीवोंकेअनुकूलहै॥ याकारणतें तावेदांतशास्त्ररूपसाक्षीनें हमअधिकारीजीवोंकूं याप्रकारकाउपदेशकऱ्याहै॥
हेअधिकारीजीवो ॥ यहमनुष्यशरीररूपधन विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेअनुकूलहै॥ यातें तामनुष्यशरीररूपधनकूं मध्यविषेराखिके जोतुम
विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेसाथ जूवाखेलोगे तो तुमारा कदाचित्भी जयनहींहोवैगा ॥ किंतु पराजयही तुमाराहोवैगा॥ यातें विषयरूपजुवा
रीपुरुषोंकेजीतणेकी जोतुमारेकूंइच्छाहै ॥ तो तुमअधिकारीजीव ब्रह्मचर्यादिकसाधनरूपधनकूं मध्यविषेराखिके विषयरूपजुवारीपुरु
षोंकेसाथ जूवाखेलो ॥ तेब्रह्मचर्यादिकसाधनरूपधन विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेप्रतिकूलहैं यातें तिनब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकूंदेखिके तेविष
यरूपजुवारी शीघ्रहीभागिजावैंगे हेजनक याप्रकारके वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेवचनकूं श्रद्धापूर्वकअंगीकारकरिके हमअधिकारीपुरुष इस
कालविषे तिनविषयरूपजुवारीपुरुषोंकूंअवश्यजीतैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ याजीवोंके विषयरूपशत्रु बहुतहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका जुवा
मात्रकरिके पराजयहोइसकेनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे जीवोंकेअनेकशत्रुहैं ॥ तिनशत्रुवोंविषे जेशत्रु दूरदेशविषे
स्थितहैं ॥ ॥ तिनशत्रुवोंका बाणोंकरिकेहननहोवैहै ॥ और समीपदेशविषेवर्तमानजेशत्रुहैं ॥ तिनशत्रुवोंका पाशोंकरिकेबंधनहोवैहै ॥
और अत्यंतअल्पशत्रुवोंका जुवाकरिकेपराजयहोवैहै ॥ तैसे जिनविषयोंकाशास्त्रविषेनिषेधकऱ्याहै ॥ तिनविषयरूपशत्रुवोंकूं हमअधि

जूवाविषेएकवारजीतैं हैं ॥ सोमूढपुरुष जहाँजहाँ जावैहे ॥ तहाँतहाँ तेजुवारीपुरुषजाइके ताकेजीतणेकाउद्यमकरैं हैं ॥ जबपर्यंत तामूढपुरुषकेपास किंचित्मात्रभीधनरहेहे ॥ तबपर्यंत तेजुवारीपुरुष ताकापीछाछोडेनहीं ॥ जभी तापुरुषकेपास एककौपीनमात्ररहैहे ॥ तभी तेजुवारीपुरुष तामूढपुरुषकापीछाछोडैं हैं ॥ तैसे तेविषयरूपजुवारीपुरुष याभारतखंडविषे जिसमूढजीवकामनुष्यशरीररूपधन जीतिलेवैं हैं॥सोमूढजीव यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके जिसजिसलोकविषेजावैहे॥तिसतिसलोकविषे यहविषयरूपजुवारीपुरुष तामूढजीवकेजीतणे वासतेजावैं हैं॥जबपर्यंत तामूढजीवकेपास पुण्यरूपधनरहैहे तबपर्यंत तेविषयरूपजुवारीपुरुष तामूढजीवकापीछाछोडेनहीं॥किंतु सर्वपुण्यरूपीधनकूंजीतिकरिके जभी तामूढजीवकेपास पापरूपीकौपीनमात्ररहैहे॥तभी तेविषयरूपजुवारीपुरुष तामूढजीवकापीछाछोडैं हैं ॥ हेजनक याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकेजेपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकूं नहींप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकी यामनुष्यशरीरकेनाशतैं अनंतर याप्रकारकीमहान्हानिहोवैहे ॥ सोमहान्हानि जैसे हमअधिकारीजीवोंकूं नहींप्राप्तहोवै ॥ ऐसाकोईउपाय हमअधिकारीजीवकरैं ॥ सोऐसाउपाय ब्रह्मज्ञानतैंविना दूसराकोईहैनहीं ॥ यातैं याभारतखंडविषेही हमअधिकारीजीव ब्रह्मज्ञानकूंसंपादनकरैं ॥ जाब्रह्मज्ञानकरिके सोमहान्हानि हमअधिकारीजीवोंकूं पुनःनहींप्राप्तहोवै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरिके अधिकारीपुरुषोंकूं विषयरूपजुवारियोंतैं भयकीनिवृत्ति किसप्रकारहोवैहे ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे जूवाखेलणेहारेजुवारीपुरुष कपटकेपाशकोंकरिके अन्यकिसीमूढपुरुषकूं तभी पराजयकरैहैं ॥ जभी ताजूवाविषे यथार्थवक्तासाक्षीपुरुषनहींहोवैहे ॥ और जभी यथार्थवक्ताकोईसाक्षीपुरुष विद्यमानहोवैहे ॥ तभी तेजुवारीपुरुष कपटकेपाशकोंकरिके अन्यकिसीपुरुषकापराजयकरैनहीं ॥ उलटा तेकपटीजुवारीपुरुषही पराजयकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तैसे हमअधिकारीजीवोंनें पूर्वअनेकजन्मोंविषे विषयरूपजुवारी पुरुषोंकेसाथ जोजुवाखेलीहै ॥ सोवेदांतशास्त्ररूपसाक्षीपुरुषतैंविनाही खेलीहै ॥ याकारणतैं तिनविषयरूपजुवारीपुरुषोंने कपटकेपाशकोंकरिके हम अधिकारी जीवोंका पराजयकऱ्याहै ॥ और अभीइसकालविषे हम अधिकारी

प्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं विद्वान्महात्मापुरुष मूढबालकमानेहैं ॥ काहेतें याअनादिसंसारविषे याजीवनें पूर्वअनेकजन्मोंविषे
जेजेपुण्यपापरूप अनेककर्मकरैहैं ॥ तेसंपूर्णपुण्यपापरूपकर्म सूक्ष्मरूपकरिकै याजीवोंकेअंतःकरणविषेरहैहैं ॥ तिनकर्मोंविषेकौनकर्म
मरणकालविषे याजीवकूं भावीफलकेदेणेवासते सन्मुखहोवैगा ॥ यहवार्ता सर्वज्ञईश्वरतैंविना दूसराकोईजीव जाणिसकतानहीं॥ किंतु सर्व
ज्ञईश्वरही तिनकर्मोंकीगतिकूंजाणेहै॥ यातैं स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकीइच्छावान्जोपुरुषहै ॥ तिसका जोकदाचित् मरणका
लविषे पापकर्महीनरकादिकफलदेणेवासते सन्मुखहोवैगा ॥ तौ सोमूढबुद्धिपुरुष तिसकालविषे कौनउपायकरैगा ॥ अब याहीअर्थकूं जूवा
खेलणेहारेपुरुषोंकेदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे जूवाखेलणेहारेजुवारीपुरुषोंविषे कोईएकजुवारीपुरुष पूर्वलेकिसी
पुण्यकर्मकेप्रभावतें ताजूवाविषे किसीमहान्पदार्थकूं प्राप्तहोवै ॥ और ताजुवारीपुरुषका सोमहान्पदार्थ तिसीजूवाविषे पुनःनष्टहो
इजावै ॥ तिसतैंअनंतर सोजुवारीपुरुष वारंवार जूवाकूंखेलताहुआभी तामहान्पदार्थकूं पुनःप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहजीवरूपजुवारीपुरुष
विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेसाथ संसाररूपजुवाखेलैहै ॥ तासंसाररूपजूवाकेखेलतेहुए याजीवात्मारूपजुवारीपुरुषकूं पूर्वलेकिसी
पुण्यकर्मके प्रभावतें यहअधिकारीमनुष्य शरीररूपमहान्पदार्थ प्राप्तभयाहै ॥ तामनुष्यशरीररूपमहान्पदार्थकूं यहजीवात्मा
रूपजुवारी जभी संसाररूपजूवाविषे नष्टकरिदेवैगा ॥ तभी सोमनुष्यशरीररूपमहान्पदार्थ याजीवात्मारूपजुवारीकूं पुनःप्राप्तहोणादुर्ल
भहै ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे जोजुवारीपुरुष जूवाविषे पराजयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोजुवारीपुरुष सर्वलोकप्रसिद्धदुःखका तथागुह्यदुः
खका अनुभवकरैहै ॥ तैसे याभारतखंडविषे विषयरूपजुवारीपुरुषोंतैं पराजयकूंप्राप्तहुआ यहजीवात्मारूपजुवारी यामनुष्यशरीरकाप
रित्यागकरिकै जभी पाताललोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे तथाभूमिलोकविषे तथानरकलोकविषे नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी
सोजीवात्मारूपजुवारी तिनपातालादिकलोकोंविषे विषयजन्यपराधीनसुखकेलेशकरिकैआवृतदुःखकूंहीभोगैहै ॥ और नरकादिकोंविषेतौ
प्रसिद्धदुःखकूंहीभोगैहै ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे जूवाखेलणेहारेजुवारीपुरुषोंका यहस्वभावप्रसिद्धहै ॥ तेजुवारीपुरुष जिसमूढपुरुषकूं

करिकैप्राप्तहोणेयोग्यजोमुक्तिहै तामुक्तिकूंभी यहअधिकारीपुरुष भारतखंडकेमनुष्यशरीरकेसाधनोंकरिकेहीप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे क्षेत्रोंविषे धान्यादिकअन्न उत्पन्नहोवै हैं ॥ ताअन्नकूं लोक गृहोंविषेभोजनकरैहैं ॥ तैसे याभारतखंडविषे पुण्यपापरूपकर्म उत्पन्नहोवै हैं ॥ तापुण्यपापरूपकर्मोंकेफलकूं यहजीव स्वर्गादिकलोकोंविषेभोगैहै ॥ यातैं यहभारतखंडही स्वर्गादिकसुखोंके तथाब्रह्मज्ञानके उत्पत्तिकाक्षेत्ररूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ व्यासभगवान्नैं ॥ तदुपर्यपि ॥ यासूत्रविषे देवताशरीरोंविषेभी ब्रह्मविद्याकाअधिकार सिद्धकऱ्या है यातैं भारतखंडविषेही ब्रह्मज्ञानकोप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकानियमसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यद्यपि व्यासभगवान्नैं देवताशरीरोंविषेभी ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति कथनकरीहै तथापि तिनदेवताशरीरोंविषे हमअधिकारीजीवोंकूं अवश्यब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैगी याप्रकारकानिश्चय होइसकैनहीं ॥ किंतु तिनदेवताशरीरोंविषे ब्रह्मज्ञानकोप्राप्तिहोवैगी अथवा नहींहोवैगी याप्रकारकासंशयहोवै है ॥ और याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरके श्रवणादिकसाधनोंकरिके ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिविषे संशयनहीं किंतु निश्चयही है ॥ यातैं याभारतखंडविषेही ब्रह्मज्ञानकोप्राप्तिवासते हमअधिकारीजीव प्रयत्नकरैं ॥ हेजनक ॥ याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइके जोपुरुष ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासते प्रयत्ननहींकरैहै ॥ किंतु स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ सोमूढबुद्धि पुरुष ॥ पिंडत्यक्त्वाकरंलेढि याप्रकारकेन्यायकाविषयहोवैहै ॥ तान्यायका यहअर्थहै ॥ जैसे किसीक्षुधातुरपुरुषकूं दधिकरिकैयुक्त ओदनकापिंड हस्तविषेप्राप्तभया ॥ ताओदनकेपिंडकापरित्यागकरिके सोक्षुधातुरपुरुष क्षुधाकोनिवृत्तिवासते आपणेहस्तोंकूंचाटणेलागा ॥ सो पुरुष अत्यंतमूढबुद्धिहै ॥ तैसे याभारतखंडके अधिकारीमनुष्यशरीरकापरित्यागकरिके जोपुरुष स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति कीइच्छाकरैहै ॥ ॥ सोपुरुषभी तिसपुरुषकीन्याईं अत्यंतमूढबुद्धिजानणा ॥ यातैं बुद्धिमान्पुरुषने याभारतखंडविषेही ब्रह्मज्ञानकेप्राप्तिकायत्नकरणा ॥ अब स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकोप्राप्तिकासंशय निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ याभारतखंडविषे अधिकारी मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके जोपुरुष ब्रह्मज्ञानकोप्राप्तिकासाधननहींकरता ॥ किंतु स्वर्गादिकलोकोंविषेब्रह्मज्ञानके

पश्य यहशब्द मुख्यवृत्तिकरिकै तिनराजाकीस्त्रियोंकूं बोधनकरैनहीं किंतु गौणवृत्तिकरिकै सोअसूर्यंपश्यशब्द तिनस्त्रियोंकूंबोधनंक रैहै ॥ और पातालविषेरहणेहारेजेजीवहैं ॥ तिनोंकूं कदाचित्भी सूर्यकादर्शनहोवैनहीं ॥ किंतु मणियोंकेप्रकाशकरिकै तिनपातालवासी जीवोंके गमनआगमनादिकव्यवहारहोवैं हैं ॥ यातैं असूर्यंपश्य यहशब्द मुख्यवृत्तिकरिकै पातालवासीलोकोंकूंहीं बोधनकरैहै ॥ हेजनक ॥ जिसपाताललोकविषे नानाप्रकारकेऐश्वर्यंकूंभोगतेहुएअसुर तथानाग निवासकरैं हैं ॥ याकारणतैंहीं तिनपातालवासीनागोंकूं शा स्त्रवेतापुरुष भोगी यानामकरिकैकथनकरैं हैं ॥ अब तिननागोंके तथाअसुरोंके प्रसिद्धनामोंका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ महादेवकेकं ठकाभूषण जोवासुकिनागहै ॥ सोवासुकिभीपाताललोकविषेहीरहैहै ॥ और विष्णुभगवान्का शय्यारूपजोशेषनागहै ॥ सोभी पातालली कविषेहीरहैहै ॥ और सूर्यभगवान्के रथविषेस्थित जोतक्षकनागहै ॥ जिसतक्षककेविषकीनिवृत्तिकरणेहारा कोईलोकविषेउपायनहीं ॥ ऐसातक्षकनागभी पाताललोकविषेही निवासकरैहै ॥ और नलराजाकामित्र जोकर्कोटकनामानागहै ॥ तथा पद्म महापद्म सशंख कुलिक एलापत्रक इननामोंवाले जेअनेकविषधारीनागहैं ॥ जेनाग महादेव देवी गरुडादिकदेवतावोंके कुंडलादिकभूषण रूपहैं ॥ ऐसेसंपूर्णनाग आपणेस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंसहित तथाभृत्योंसहित जिसपाताललोकविषेनिवासकरैं हैं और हेजनक ॥ विश्वकर्माके समान तथा मायाविषेअत्यंतकुशल जोमयनामादैत्यहै ॥ तथा विप्रचित्ति बलितैंआदिलेकेजेअनेकअसुरहैं ॥ जिनअसुरोंतैं इंद्रादिकदेव ताभी भयकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ ऐसेअसुरभी जिसपाताललोकविषे निवासकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ ऐसेपाताललोकविषे नारदादिकमुनिआइकै तापातालकेप्रभावकूंदेखिकै तेनारदादिकमुनि स्वर्गलोकविषेजाइकै देवराजइंद्रकेसमीप तापाताललोककेप्रभावकावर्णनकरैं हैं ॥ हेजनक ऐसेपाताललोकविषे जोसुख जीवोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा ब्रह्मलोकविषे जोसुखप्राप्तहोवैहै ॥ तथा स्वर्गलोकविषे जोसुख प्राप्तहोवैहै ॥ तथा यामनुष्यलोकविषे जोसुख प्राप्तहोवैहै ॥ तिनसंपूर्णसुखोंकूं जोयहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ सो भारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकेपुण्यक र्मोंकरिकैही प्राप्तहोवैहै ॥ और ताभारतखंडविषे मनुष्यशरीरकेपापकर्मोंकरिकै यहजीव नरककूंभीप्राप्तहोवै है ॥ और आत्मसाक्षात्कार

नरकविषे तथा चौरासीलक्षशरीरोंविषे जहाँ जहाँ हमजीव प्राप्तहोवैंगे ॥ तिसतिसशरीरविषे तिसतिसशरीरकेसमानजातिवाले स्त्रीपुत्रादिकपदार्थ हमजीवोंकूं पुण्यपापकर्मकेवशतैं विनाहींयत्नतैं प्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ दुर्लभनहीं ॥ और यहअधिकारी मनुष्यशरीरतो एकवारप्राप्तहुआ पुनःप्राप्तहोणाकठिनहै ॥ यातैं यहअधिकारीमनुष्यशरीरही सर्वपदार्थोंतैंदुर्लभहै ॥ अब याअधिकारी मनुष्यशरीरविषे सर्वलोकोंकीप्राप्तिकीसाधनतादिखाइकै ताकीदुर्लभतासिद्धकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ याभारतखंडकूं परमेश्वरनैं मनुष्योंके करणेवासतैंरचाहै ॥ ताभारतखंडविषे यहजीव मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके जोकदाचित् पुण्यकर्मोंकूंकरेहै ॥ तो सोजीव स्वर्गादिकउत्तम लोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपापकर्मकरेहै ॥ तौ नरकादिकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं भारतखंडविषे जोमनुष्यशरीरहै ॥सोमनुष्यशरीरही पुण्यपापकर्मकोउत्पत्तिद्वारा याजीवोंकूं सर्वलोकोकोप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और हेजनक ॥ याभारतखंडकेपुण्यकर्मोंकरिकैही यहजीव पाताललोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपाताललोक ॥ स्वर्गलोकतैंभी अधिकशोभावालाहै ॥ और अतल वितल सुतल तलातल महातल रसातल पाताल यासप्तरूपकरिकैविराजमानहै ॥ और नानाप्रकारकेभोगकेसाधनोंकरिकैपरिपूर्ण है ॥ और जिसपाताललोकविषे नागोंकीसुंदरकन्या नानाप्रकारकोनृत्यकरै हैं ॥ कैसीहैंतेनागोंकोकन्या ॥ हरीचंदनादिकोंकेलेपकरिकैयुक्तहैं पीन उन्नतस्तनजिनोंके ॥ और नानाप्रकारकेमणियोंकीकांतिकरिकै शोभायमानहै मुखरूपीचंद्रमा जिनोंका ॥ और चित्रकीलिखीहुईजोमूर्तिहै ताकेसमानहैशरीरजिनोंका ॥ पुनःकैसीहैंतेनागोंकोकन्या ॥ यौवनअवस्थायुक्तपुरुषोंके धैर्यरूपधनकूंहरणेहारियां हैं ॥ और जिन नागकन्यावोंकेसमान स्वर्गविषेभी कोईस्त्रीनहीं ॥ और जिनकन्यावोंकेमस्तकविषे सूर्यकेसमानप्रकाशवान् मणियां विराजमानहैं ॥ और बिल्वफलकेसमान जेमोतियोंकेगुच्छेहैं तिनोंकरिकैयुक्तनानाप्रकारकेहार जिनकन्यावोंकेअंगोंविषे विराजमानहैं ॥ ऐसे सर्वगुणोंकरिकैसंपन्न नागोंकीसुंदरकन्या जिसपाताललोकविषेविराजमानहैं ॥ हेजनक ॥ पाताललोकविषेरहणेहारेजेजीवहैं ॥ तिनोंकेसंपूर्णपुण्यकर्म एकठे होइके पातालभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ और हेजनक ॥ सूर्यभगवान्कूंजेनहींदेखेहैं तिनोंकानाम असूर्यपश्यहै ॥ याप्रकारका असूर्यपश्यशब्दकाअर्थ यद्यपि पाणिनिऋषिनैं राजाकीस्त्रियोंविषेघटायाहै ॥ तथापि तिनराजाकीस्त्रियोंकूं कदाचित् सूर्यकादर्शनहोवैभीहै ॥यातैं असूर्य

प्राप्तिका निरूपणकरैहैं॥हेजनक॥ देवयान पितृयाण तृतीयस्थान यहतीनोंमार्ग संसाररूपीघोरवनविषे याजीवकूंप्राप्तकरणेहारेहैं॥याकारण तैं तिनतीनोंमार्गोंकापरित्यागकरिके जबपर्यंत मृत्युसन्मुखनहींभया तबपर्यंत यहमुमुक्षुजन शीघ्रही आत्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गविषेप्राप्त होवै ॥ और ताज्ञानरूपमार्गविषेप्राप्तहोइके हमअधिकारीजन जीवितअवस्थाविषेही ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवैं ॥ तथा आत्म साक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै हमअधिकारीजन वेदांतशास्त्रके श्रवण मनन निदिध्यासनकूं यत्नकरिकेसंपादनकरैं ॥ जिसआत्मसाक्षात्कार करिके हमअधिकारीजन सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैं ॥ हेजनक ॥ याब्राह्मणशरीरविषे तथाक्षत्रियशरीरविषे तथावैश्यशरीरविषे जोकदाचित् हमअधिकारीजनोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिनहींहोवैगी ॥ तौ हमअधिकारीजीवोंकी महान्हानिहोवैगी ॥ यातैं विद्युत्कीन्याईचंचल तथाअत्यंतदुर्लभ जोयहअधिकारीमनुष्यशरीरहै ॥ तिसकूंप्राप्तहोइके हमअधिकारीजीव ऐसाकोईउपायकरैं ॥ जिसउपायकरिके हमअ धिकारीजीवोंकूं पुनःजन्ममरणादिकदुःखोंकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ सोऐसाउपाय आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईहैनहीं ॥ यातैं जन्ममरणादिकदुः खोंकोनिवृत्तिवासतै आत्मज्ञानकूंही हमअधिकारीजीव संपादनकरैं ॥ अब मनुष्यशरीरकीदुर्लभताकूं निरूपणकरैहैं॥हेजनक॥जैसेग्रीष्मी ऋतुकेमध्यानकालकेसूर्यकरिके तपायमानजोरेतीहै ॥ तातप्तरेतीविषे किसीपुरुषकेहस्ततैं पतनभयाजोघृतहै॥ ताघृतकूं बुद्धिमान्पुरुषभी पुनःप्राप्तहोइसकैनहीं ॥ तैसे याअधिकारीमनुष्यशरीरकेनष्टहुएतैंअनंतर हमजीवोंकूं पुनःतिसोअधिकारीमनुष्यशरीरकीप्राप्तिहोणी अत्यं तदुर्लभहै ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यशरीरकूँ छोडिके दूसरेजितनेकऊंचनीचशरीरहैं ॥ तेशरीर कोईदुर्लभनहीं ॥ किंतु सर्वयोनियोंविषे तेशरीरसुलभहैं ॥ एकमनुष्यशरीरही दुर्लभहै ॥ हेजनक ॥ तिनमनुष्यशरीरोंविषेभी याभारतखंडविषे मनुष्यशरीरकीप्राप्तिहोणी अत्यं तदुर्लभहै ॥ और तिसभारतखंडविषेभी ब्राह्मणशरीरकीप्राप्तिहोणी तथाक्षत्रियशरीरकीप्राप्तिहोणी तथावैश्यशरीरकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्ल भहै ॥ यातैं भारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकीप्राप्तिरूपलाभतैंपरे दूसराकोईअधिकलाभनहीं ॥ हेजनक ॥ जिन स्त्रीपुत्रधनादिक पदार्थोंकेमोहकरिके हमअधिकारीजीव यामनुष्यशरीरकूं व्यर्थगवांवतेहैं ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ कोईदुर्लभनहीं हैं ॥ किंतु स्वर्गविषे तथा

करिकै तपायमानहोवैहै ॥ और जभी ताविद्वान्‌पुरुषका शरीरकेसाथ तादात्म्यअध्यास निवृत्तहोवैहै ॥ तभी सोविद्वान्‌पुरुष शरीरके सुखदुःखादिकधर्मोंकरिकै तपायमानहोवैनहीं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषेभी तादात्म्यअध्यासही जीवोंकेदुःखकाकारणदेख्याहै ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैमानैहै ॥ सोपुरुष तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेदुःखकरिकै परम दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके अहंममअभिमानका परित्यागकरैहै ॥ सोपुरुष उदासीनपुरुषकीन्याईं तिनस्त्री पुत्रादिकबांधवोंकेदुःखकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहविद्वान्‌पुरुषभी जभी शरीरविषेअहंममअभिमानकरैहै ॥ तभी ताशरीरकेदुः खकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जभी यहविद्वान्‌पुरुष ताशरीरकेअहंममअभिमानकापरित्यागकरैहै ॥ तभी सोविद्वान्‌पुरुष ताशरीरकेदुः खकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैहैनहीं यातैं आनंदस्वरूपआत्माकासाक्षात्कारहीं कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिद्वारा परमानंदकेप्राप्तिका तथासर्वदुः खोंकीनिवृत्तिका कारणहै इतनैंकरिकै सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिरूप आत्मज्ञानकाफल निरूपणकर्‍या ॥ अबतिसीआत्मसाक्षात्कारके जगत्‌क र्तृत्वरूपफलका तथा सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ हृदयकमलविषेस्थित जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सो स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथा बुद्धिआदिकसंघाततैंविलक्षणहै॥ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकूंजिसअधिकारीपुरुषनैं गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै निश्चयकर्‍याहै ॥ सोविद्वान्‌पुरुषही यासंपूर्णविश्वकाकर्त्ताहै॥और हेजनक ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषेकल्पित जेसर्प दंड माला जलधारा इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तिनसर्पादिककल्पितपदार्थोंका एकरज्जुही अधिष्ठानहै ॥ तैसे मनुष्यलोक तैं आदि लेके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकसुखदुःखकेदेणहारेलोकहैं॥ तिनसंपूर्णलोकोंका सोविद्वान्‌पुरुषही अधिष्ठानहै॥और जैसे कल्पितसर्पदंडादिक रज्जुरूप अधिष्ठानतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु तेकल्पितसर्पादिक रज्जुरूपहीहैं ॥ तैसे पूर्वउक्ततीनमार्गोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जेब्रह्मलोकादिकहैं॥ तथा अध्यात्म अधिदैव अधिभूत इसतैंआदिलेके जितनाकस्थूलसूक्ष्मजगतहै ॥ सोसंपूर्णजगत् ताविद्वान्‌पुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु संपूर्ण जगत् ताविद्वान्‌पुरुषकाआत्मारूपहीहै॥इतनैंकरिकै आत्मज्ञानकेफलकानिरूपणकर्‍या॥अब ताआत्मज्ञानतैंविना जीवोंकूं महान्‌हानिकी

रूपचतुर्थमार्गहै ॥ तिसमार्गविषेविचरणेकीजिसपुरुषकूंइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषने यातीनोंमार्गोंकापरित्यागकरिके केवल आत्मज्ञानरूपमार्ग विषेहीविचरणा॥ इतनेंकरिके आत्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गकीउत्कृष्टता निरूपणकरी ॥ अब ताआत्मज्ञानकरिकेजोफल प्राप्तहोवैहै ताका निरूपणकरें हैं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा शरीरादिकोंतैंभिन्नहै ॥ यातैं सुखदुःखतैंआदिलेके जितनेकीशरी रादिकोंकेधर्म हैं तेधर्म असंगआत्माकूंस्पर्शकरैंनहीं ॥ ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतें जभी शरीरकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोआत्मादेव आपणेसर्वात्मभावकूंविस्मरणकरिके मूढताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सुखदुःखादिकसंसार धर्मोंकरिके तपायमानजोयहशरीरहै ॥ ताकेतादात्म्यसंबंधकरिके सोआत्मादेवभी तपायमानहोवैहै ॥ और मेरेकूंसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकीइच्छाकरिके परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जिसपुरुषकूंयाप्रकारकाज्ञानभयाहै ॥ सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थित तथा सर्वसुखोंकासमुद्र ऐसाजोस्वयंज्योतिपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव मेरेस्वरूपतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु मैंही परमात्मारूपहूं ॥ याप्रकार आत्माकूंजानणेहाराजोपुरुषहै सोविद्वान्पुरुष शरीरादिकोंतैं आपणेकूंभिन्नमानैहै ॥ तथा सर्वविषयजन्यसुखकीइच्छातैंरहित होवैहै ॥ याकारणतें सोविद्वान्पुरुष विषयजन्यसुखकीइच्छा करिके तथा शरीरकेसुखदुःखादिकधर्मोंकरिके तपायमानहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टान्तकरिकेनिरूपणकरें हैं ॥ हेजनक ॥ जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तिसपुरुषकी कारणअविद्या निवृत्तहो इजावैहै ॥ और ताकारणअविद्याकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर ताविद्वान्पुरुषकी शरीरादिकोंविषेतादात्म्यअध्यासरूपकार्यअविद्या निवृत्तहोइ जावैहै ॥ और ताकार्यअविद्याकेनिवृत्तितैंअनंतर ताविद्वान्पुरुषकूं शरीरकेसुखदुःखादिकधर्म तपायमानकरैंनहीं ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे लोहकेपिंडका जबपर्यंत अग्निकेसाथ तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ तबपर्यंत सोलोहकापिंड प्रकाशमानहोवैहै ॥ तथा तपायमानहोवैहै ॥ और जभी तालोहकेपिंडका अग्निकेसाथ तादात्म्यसंबंध निवृत्तहोवैहै ॥ तभी सोलोहकापिंड प्रकाशमानहोवैनहीं तथा तपायमानहो वैनहीं ॥ तैसे जबपर्यंत याविद्वान्पुरुषका शरीरकेसाथ तादात्म्यअध्यासहोवैहै ॥ तबपर्यंत यहविद्वान्पुरुष शरीरकेसुखदुःखादिकधर्मों

तथाउपासकपुरुष तिनलोकोंविषे किंचित्मात्रसुखकूंभोगिके तिनपुण्यकर्मोंकेनाशतैंअनंतर तेसकामपुरुष पुनःजन्ममरणरूपदुःखकूं प्राप्तहोवैंहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आत्मसाक्षात्कारतैंरहित जेकर्मीपुरुषहैं तथाउपासकपुरुषहैं ॥ तेकर्मीउपासकपुरुष मृत्युकूंप्राप्तहोइके ताकमेंउपासनाकेफलकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ कैसाहैसोफल अतिशयतादोषवालाहै ॥ तथा नाशवानहै ॥ याकारणतैं सोफल सुखतैंरहितहै ॥ तथा देहअभिमानरूपअंधतमकरिकेआवृतहै ॥ याप्रकारकेफलकूं तेकर्मीउपासकपुरुष प्राप्तहोवैंहैं ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जितनेकसात्विक राजस तामसजीवहैं ॥ तेसंपूर्णजीव मरणतैंअनंतर तिनमार्गोंकरिके परलोकविषेजावैंहैं ॥ तहाँ एकतौ उपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककोप्राप्तिकरणेहारा देवयाननामामार्गहै ॥ जिसमार्गकूं शास्त्रविषे अर्चिषनामकरिकेकथनकरैंहैं ॥ और दूसरा कर्मीपुरुषोंकूं स्वर्गलोककीप्राप्तिकरणेहारा पितृयाणनामा मार्गहै जिसमार्गकूं शास्त्रविषे धूममार्ग यानामकरिकेकथनकरैंहैं ॥ और तीसरा कीटपतंगादिकशरीरोंकी तथानरककीप्राप्तिकरणेहारा तृतीयस्थान नामामार्गहै ॥ यहतीनोंमार्ग यद्यपि पूर्वउक्तरीतिसैं दुःखरूपफलकीहीप्राप्तिकरैंहैं ॥ तथापि तिनतीनोंमार्गोंविषे परस्पर इतनीविलक्षणताहै ॥ तहाँ कीटपतंगादिकशरीरोंकी प्राप्तिकरणेहारा तथा नरककीप्राप्तिकरणेहारा जोतृतीयस्थाननामा तीसरामार्गहै ॥ तातीसरेमार्गका ब्रह्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गकेसाथ परंपराकरिकेभी संबंधनहीं ॥ यहवार्ता गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नेभीअर्जुनकेप्रतिकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ तानहंद्विषतःक्रूरान्संसारेषुनराधमान् ॥ क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेवयोनिषु ॥ अर्थयह ॥ द्वेषादिकपापकर्मोंकूंकरणेहारे जेअधमजीवहैं ॥ तिनोंकूं मैंकृष्णभगवान् यासंसार विषे कीटपतंगादिकतामसीयोनियोंविषे प्राप्तकरूंहूं ॥१॥ याभगवत्गीताकेवचनतैंभी तातृतीयस्थाननामातीसरेमार्गका आत्मसाक्षात्कारूपचतुर्थमार्गकेसाथ संबंधसंभवैनहीं ॥ और उपासकपुरुषोंका जोदेवयाननामा मार्गहै ॥ तथा कर्मीपुरुषोंका जोपितृयाणनामा मार्गहै ॥ तेदोनोंमार्ग कदाचित्चित्तकीशुद्धिद्वारा किसीभाग्यवान्पुरुषकूं आत्मज्ञानकीभीप्राप्तिकरैं हैं ॥ यातैं देवयानपितृयाण या दोनोंमार्गोंका चित्त कीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गविषे संबंधसंभवैहै ॥ हेजनक ॥ जन्ममरणादिकसर्वदुःखों तैंरहित जोब्रह्मज्ञान

दूसराकोईपुरुष तामार्गकूंजानिसकैनहीं ॥ और जेअधिकारीपुरुष तासगुणब्रह्मकी अहंग्रहउपासनाकरैं हैं ॥ तेउपासकपुरुष ता
नाडीरूपमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तथा पूर्वउक्तपंचाग्निविद्याकूंजानणेहारे जेअग्निहोत्रीगृहस्थहैं ॥ तेगृहस्थभी तानाडीरूपमार्ग
द्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तथा गृहस्थतैंभिन्न जेऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी यहतीनआश्रमवालेहैं ॥ तेभीआपणेआपणे
आश्रमकेपुण्यकर्मोंकूंकरिके तानाडीरूपमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ ताब्रह्मलोकविषेजाइके तेउपासकपुरुष ब्रह्माकेसाथ मोक्षकूं
प्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं सुषुम्नानामानाडीही मोक्षकामार्गहै ॥ हेजनक याप्रकार केईउपासकपुरुष सुषुम्नानामानाडीकूंहीं मोक्षकामार्गकहै
हैं ॥ अब आत्मज्ञानरूपमार्गविषे मुमुक्षुजनोंकीश्रद्धाकरावणेवासतैं तिसतैंभिन्न दूसरेसर्वमार्गोंकीनिंदाकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥
जेपुरुष स्वर्गलोककीप्राप्तिवासतै यज्ञदानादिककर्मोंकूंकरैं हैं ॥ तेसकामपुरुष धूमादिरूपदक्षिणमार्गकरिके स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ ता
स्वर्गलोकविषेप्राप्तहोइके तेकर्मीपुरुष देहाभिमानरूपअंधतमकूंहीप्राप्तहोवैं हैं ॥ कैसाहैसोदेहाभिमानरूपअंधतम ॥ स्त्रीपुत्रादिकपदार्थों
विषे आसक्तिद्वारा तिनपुरुषोंकेविचाररूपीनेत्रोंकूंआच्छादनकरणेहाराहै ॥ इतनेकरिकैयहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ यज्ञदानादिक
पुण्यकर्मोंकरिके दक्षिणमार्गविषेगमनकरणेहारेजेकर्मीपुरुषहैं तेकर्मीपुरुषभीजभीअंधतमकूंप्राप्तहोवैंहैं तभीकेवलपापकर्मकरिके
कीटपतंगादिकभावकोप्राप्तिरूप तीसरेमार्गविषे गमनकरणेहारे जेपापात्मापुरुषहैं तेपापात्मापुरुष अंधतमविषेप्राप्तहोवैंहैं याकेविषे क्याक
हणाहै ॥ अब ब्रह्मलोककेमार्गकीनिंदाका निरूपणकरैहैं हेजनक जेपुरुष ब्रह्मलोककीप्राप्तिवासतै ब्रह्मादिकदेवतावोंकीउपासनाकरैहैं तेउ
पासकपुरुष कर्मीपुरुषोंतैंभी अधिकअंधतमकूंप्राप्तहोवैहैं काहेतैं ब्रह्मादिकदेवतावोंकीउपासनाकरिके तेउपासकपुरुष जभी ब्रह्मलोकविषे
जावैहैं तभी तिनउपासकपुरुषोंकूं तहाँ परमऐश्वर्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और स्वर्गलोकविषेकर्मीपुरुषोंकूं स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे जितनीआ
सक्तिहोवैहै तिसतैंभीकोटिगुणाअधिकआसक्ति ब्रह्मलोकविषे उपासकपुरुषोंकूं स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषेहोवैहै ॥ यातैं ब्रह्मलोककेप्राप्तिकामा
र्गभी तिनउपासकपुरुषोंकूं देहाभिमानरूपअंधतमकोहीप्राप्तिकरैहै ॥ हेजनक याप्रकार स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषेआसक्तहुए तेकर्मीपुरुष

मार्गकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तथा तामार्गद्वारा मोक्षकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तैसे दूसरेभी अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिके तथागुरुकीकृपाक रिके ताआत्मज्ञानरूपमार्गकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तथा ताज्ञानरूपमार्गद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और जेपुरुष ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंतैंरहित बहिर्मु खहें ॥ तेबहिर्मुखपुरुष ताआत्मज्ञानरूपमार्गकूंजाणिसकेनहीं ॥ याअभिप्रायकरिके हमनें सोवचनकह्याहे ॥ और हेजनक ॥ जैसे लवणका पिंड समुद्रकूंप्राप्तहोइके समुद्ररूपहोइजावैहे॥तैसे तेविद्वान्पुरुष ज्ञानरूपमार्गद्वारा आनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोइके आत्मारूपहुएस्थित होवैं हैं ॥ और ऐसेआनंदस्वरूपआत्माविषेस्थितहोइके तेविद्वान्पुरुष जन्ममरणादिकदुःखोंतें तथा रागद्वेषतें तथाअज्ञानतें रहितहो वैं हैं ॥ और देहादिकउपाधियोंतें आपणेकूंभिन्नमानिके तेविद्वान्पुरुष देहादिकोंकेसर्वधर्मोंतैंरहितहोवैं हैं ॥ यातें हेजनक ॥ कार्यसहि तअज्ञानकीनिवृत्ति तथाब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपजोमोक्षहे ॥ ताकेप्राप्तिकरणेहारा आत्माकाज्ञानहीमार्ग हे ॥ तहाँश्रुति ॥ नान्यःपंथाविद्यते अयनाय ॥ अर्थयह ॥ मोक्षकीप्राप्तिवासते ज्ञानतैंभिन्न दूसराकोईमार्गनहीं हे ॥ किंतु आत्मज्ञानही मोक्षकीप्राप्तिकामार्ग हे ॥ १ ॥ अब जैसे कोईपुरुष मणिकीप्रभाविषे मणिबुद्धिकरैहे ॥ तैसे केईकउपासकपुरुष सुषुम्नानामानाडीकूंही मोक्षकामार्गकहैं हैं ॥ तिनोंकेम तका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ केईकउपासकपुरुष याप्रकार कथनकरैं हैं ॥ हृदयकमलविषेस्थितजोसूर्यभगवान्हे ॥ तथाबाह्यआका शविषेस्थितजोसूर्यभगवान्हे ॥ तिनदोनोंकेसाथ संबंधहेजिसका ऐसीजोसुषुम्नानामानाडीहे ॥ तानाडीरूपमार्गकरिके यहउपासकपुरुष जभी ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहे ॥ तभी सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेसाथ मोक्षकूंप्राप्तहोवैहे॥यातें जैसे आत्मसाक्षात्काररूपमार्गकरिके यहअधिका रीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तैसे सुषुम्नानाडीरूपमार्गकरिकेभी यहउपासकपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहे ॥ यातें सुषुम्नानामानाडीभी मोक्षकेप्रा प्तिकामार्ग हे ॥ कैसाहेसोब्रह्मलोककामार्ग ॥ सूर्यतैंनिकसेजेकिरणहैं ॥ तथा हृदयकमलतैंनिकसियांजेनाडियाँहैं ॥ तिनदोनोंकरिकेर चितहे ॥ और नानाप्रकारके अन्नकेरसोंकरिके तेनाडियांपूर्ण हैं ॥ याकारणतें तेउपासकपुरुष ताब्रह्मलोककेमार्गकूं शुक्ल नील पिंगल हरित लोहित इत्यादिकअनेकवर्णवालामानैं हैं ॥ ऐसेविचित्रमार्गकूं तेउपासकपुरुषही आपणेसाक्षीरूपप्रत्यक्षकरिकेजानैं हैं ॥

पुरुष स्वप्रकाशचैतन्यरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं तेज यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या ॥ तभी सोजनकराजा ताब्रह्मविद्याकूं जाणताभया ॥ परंतु ताब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकेजेसाधनहैं ॥ तिनसाधनोंकूं सोजनकराजा नहींजाणताभया ॥ याकारणतैं सोजनकराजा आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ साधनोंतैंरहितजोपुरुषहै ताकामन शुद्धहोवैनहीं॥और अशुद्धमनवालेपुरुषकूं वेदांतकेश्रवणतैंभी यथार्थज्ञानहोवैनहीं॥ यातैं मनकेशुद्धिकूंकरणेहारेजेसाधनहैं ॥ तिनोंकाश्रवण अवश्यकऱ्याचाहिये ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोजनकराजा पूर्वकीन्याई पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति यहवचनकहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि आपकेउपदेशतैं मैंजनक विद्याकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यातैं ताविद्याकीगुरुदक्षिणा एकसहस्रगौवां मैं आपकेताईदेताहूं ॥ तागुरुदक्षिणाकूं आप अंगीकारकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताजनकराजाकेअभिप्रायकूंजाणिकरिकै नानाप्रकारकेसाधनोंसहित ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं अंत्यजन्मविषे जोआत्माकासाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ सोआत्मसाक्षात्कारही ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकामार्गहै ॥ कैसाहैसोआत्मसाक्षात्काररूपमार्ग ॥ अत्यंततर्कविषेकुशलजेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूंभी दुर्विज्ञेयहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताज्ञानरूपमार्गकूं सूक्ष्मयानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहआत्मज्ञान परिपूर्णनित्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मज्ञानरूपमार्गकूं वितत पुराणयानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेजनक ॥ ऐसे आत्मसाक्षात्काररूपमार्गकूं मैंसर्वज्ञयाज्ञवल्क्यही जाणताहूं ॥ मेरेतैंभिन्न अल्पज्ञप्राणी ताज्ञानरूपमार्गकूं जानिसकैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोआपतैंविना दूसराकोईप्राणी तिसज्ञानरूपमार्गकूंनहींजाणिसकता ॥ तौ अस्मदादिकजीवोंकूं ताज्ञानरूपमार्गकेजानणेविषे क्याआशाहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ मैंयाज्ञवल्क्यनेहीं तिसज्ञानरूपमार्गकूंजान्याहै ॥ याहमारेकहणेका यहअभिप्रायहै ॥ जैसे मैंयाज्ञवल्क्यमुनि ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै तथागुरुकीकृपाकरिकै आत्मज्ञानरूप

जेजीव विद्वान्पुरुषकेशरीरविषेप्रीतिकरैं हैं ॥ तिनजीवोंकूं सोविद्वान्पुरुष आपणेपुण्यकर्मदेके सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जेजीव ताविद्वान्पुरुषकेशरीरविषेद्वेषकरैं हैं ॥ तिनजीवोंकूं सोविद्वान्पुरुष आपणेपापकर्मदेके दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तहाँश्रुति तस्यपुत्रादायमुपयांति सुहृदःसाधुकृत्यं द्विषंतःपापकृत्यं ॥ अर्थयह ॥ तिसविद्वान्पुरुषकेधनादिकपदार्थोंकूं पुत्रादिकबांधव लेजावैं हैं ॥ और ताविद्वान्पुरुषके पुण्यकर्मोंकूं सुहृद्भक्तजन लेजावैं हैं ॥ और ताविद्वान्केपापकर्मोंकूं द्वेषकरणेहारेदुष्टपुरुष लेजावैं हैं ॥ १ ॥ अब मनकेव्यापारतैंविनाहीं विद्वान्पुरुषकेशरीरकीप्रवृत्तिका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसेकोईपुरुष धनुषतैं बाणकूंछोडैहै ॥ सोबाण जबपर्यंत भूमिविषेनहीं पडैहै ॥ तबपर्यंत सोबाण पूर्वलेवेगकेवशतैं आकाशविषे भ्रमणकरैहै तैसे जबपर्यंत याविद्वान्पुरुषकेशरीरकापातनहींहोता ॥ तबपर्यंतसो विद्वान्पुरुषकाशरीर प्रारब्धकर्मकेवेगकरिकै गमनआगमनकरैहै ॥ अब ब्रह्मनिष्ठाकेआवेशतैं विद्वान्पुरुषविषे सर्वव्यवहारोंकेविस्मरणका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषेजिसपुरुषकेशरीरविषे भूतप्रवेशकरैहै ॥ सोपुरुष ताकालविषे नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूंकर ताहुआभीविशेषकरिकै तिनव्यवहारोंकूंजाणतानहीं ॥ तैसे ब्रह्मनिष्ठाकेआवेशतैंअनंतर यहविद्वान्पुरुष नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूंकरता हुआभी तिनव्यवहारोंकूं विशेषकरिकैजाणतानहीं ॥ हेजनक ॥ याप्रकारकेअवस्थाकूं जभी यहविद्वान्पुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ तभीयहविद्वान् पुरुष स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकेविद्यमानहुएभी तिनशरीरोंतैंरहितहोवैहै ॥ तथा तिनशरीरोंकेजन्ममरणादिकधर्मोंतैं रहितहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं अशरीर यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और शरीरादिकोंकेनाशहुएभी ताविद्वान्पुरुषका वास्तवस्वरूप नाशहोवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीताविद्वान्पुरुषकूं अमृत यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक ॥ यहविद्वान् पुरुष यद्यपि वास्तवतैंप्राणअपानादिकोंतैंरहितहै॥तथापि यहविद्वान्पुरुष आपणीसमीपताकरिकै तिनप्राणोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्त्तकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं प्राण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सोविद्वान्पुरुष सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्म यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सोविद्वान्

दुःखकूंप्राप्तहोवैहे ॥ अब अनात्मपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै तथातिनोंकेवियोगकरिकै विद्वान्पुरुषकूं हर्षशोकहोवैनहीं याअर्थकूंनिरूपणकरैं हैं हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे बहुतधनकरिकै तथाअन्नकरिकै युक्तजोकोइधनीपुरुषहे ॥ सोधनीपुरुष किसीनिमित्तपाइकै आपणेक्षेत्रविषेजावै हे ॥ तहां क्षेत्रतैं अन्नादिकोंकीअप्राप्तिदेखिकरिकै सोधनीपुरुष शोककूंप्राप्तहोवैनहीं॥और ताक्षेत्रतैं बहुतअन्नादिकोंकीप्राप्तिदेखिकै सोधनी पुरुष हर्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मानंदकरिकैतृप्तहुआ यहविद्वान्पुरुषभी धनपुत्रादिकलौकिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै हर्षकूंप्राप्तहोवैनहीं तथा धनपुत्रादिकपदार्थोंकेवियोगतैं ॥ सोविद्वान्पुरुष शोककूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ अब ताविद्वान्पुरुषकेचित्तकीआत्माविषे तत्परता तथा व्यवहारविषेउदासीनता निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे कोईगृहवालापुरुष किसीकार्यकेकरावणेवासतैं किसीमजूरकूंराखै हे ॥ तामजूरकेसाथ सोगृहीपुरुष याप्रकारकाठहरावकरैहे ॥ प्रातःकालतैंलेके सायंकालपर्यंत याकार्यकूं जोतूंकरैगा ॥ तौ तुम्हारेताई मैं इतनेपैसेमजूरीकेदेवोंगा ॥ याप्रकारकाठहरावकरिकै सोमजूर आपणेमजूरीकेपैसोंकूंचिंतनकरताहुआ तथासायंकालकूंदेखताहुआ ता कार्यविषेप्रवृत्तहोवैहे ॥ परंतु ताकार्यविषे तिसमजूरकारागहैनहीं ॥ यातैं गृहवालेपुरुषकीन्याईं अधिककार्यकूं तथान्यूनकार्यकूं सोमजूर करैनहीं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी आनंदस्वरूपआत्माकूंचिंतनकरताहुआ तथा प्रारब्धकर्मकेसमाप्तिकालकूंदेखताहुआ खानपा नादिकव्यवहारोंकूंकरै हे परंतु ताखानपानादिकव्यवहारोंविषे ताविद्वान्पुरुषकारागहैनहीं यातैं सोविद्वान्पुरुष अज्ञानीपुरुषोंकी न्याईं तिनव्यवहारोंकीवृद्धिकरैनहीं॥अब प्रारब्धकर्मकेवशतैं ताविद्वान्पुरुषकेगमनआगमनादिकोंका निरूपणकरैं हैं॥ हे जनक जैसे सूत्रकेका तणेकासाधन जोकाष्ठकायंत्रहे॥ सोयंत्र सूत्रकेडोरेकरिकैभ्रमणकरैहे॥तैसे विद्वान्पुरुषकाशरीरभी प्रारब्धकर्मकेवशतैं तीर्थादिकोंविषे गम नआगमनकरैहे ॥ अब जीवोंकेभावनाकेअनुसार विद्वान्पुरुषकेशरीरविषे सुखदुःखकीकारणताका निरूपणकरैं हैं ॥हेजनक॥ जैसे किसी पुरुषनैं कौतुककेवासतै चर्मका अथवा काष्ठका हस्तीरच्या ॥ सोकाष्ठकाहस्ति जीवोंकेभावनाकेअनुसार किनोंकूंसुखकीप्राप्तिकरैहे॥तथा किन स्त्रीबालकादिकमूढोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहे ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषकाशरीरभी जीवोंकेभावनाकेअनुसार सुखदुःखकीप्राप्तिकरैहे॥तहां

क्तजोशरीरहै ॥ सोशरीर ताभूतकेपूजनताडनकरिके सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताशरीरविषेस्थितजोभूतहै ॥ ताभूतकातिसमनुष्यश रीरविषे अहंममअभिमानहैनहीं ॥ याकारणतें सोभूत ताशरीरकेपूजनताडनादिकोंकरिके सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे पुण्यपापरूप प्रारब्धकर्मकेवशतें याविद्वान्पुरुषकाशरीर पूजनादिकोंकरिके सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा ताडनादिकोंकरिके दुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥औरताश रीरकेअहंममअभिमानतेंरहित तथापुण्यपापरूपकर्मतेंरहित जोविद्वान्पुरुषकावास्तवस्वरूपहै ॥ सोसुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इतनेंकरिके समाधिअवस्थाविषेस्थितजोविद्वान्पुरुषहै ताकेविषे सुखदुःखकेअनुभवकाअभाव दिखाया ॥ अब समाधितेंउत्थानकालविषे याविद्वान्पु रुषकूं जोसुखदुःखकाअनुभवहोवैहै ॥ ताकेविषे अज्ञानीपुरुषोंतेंविलक्षणता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक जैसे यालोकविषे बालककूं प्रियव स्तुकीप्राप्तितें सुखकाअनुभवहोवैहै ॥ तथा अप्रियवस्तुकीप्राप्तितें दुःखकाअनुभवहोवैहै ॥ परंतु सोसुखदुःखकाअनुभव ताबालकविषे रागद्वेषकीउत्पत्तिकरैनहींतैसेसमाधितेंउत्थानकालविषेयाविद्वान्पुरुषकूंप्रियवस्तुकीप्राप्तितेंसुखकाअनुभवहोवैहै तथाअप्रियवस्तुकोप्राप्तितें दुःखकाअनुभवहोवैहै ॥ परंतु सोसुखदुःखकाअनुभव ताविद्वान्पुरुषविषे अज्ञानीपुरुषकीन्याईं रागद्वेषकीउत्पत्तिकरैनहीं॥यातें अज्ञानीपु रुषके सुखदुःखकेअनुभवतें विद्वान्पुरुषके सुखदुःखकेअनुभवविषे महान्विषमताहै॥अबताविद्वान्पुरुषविषे परइच्छाअधीन सुखदुःखकी प्राप्तिका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! यालोकविषे जोपुरुष वृद्धअवस्थाकरिकेयुक्तहै ॥ तथा रोगादिकोंकरिके जिसकीशक्तिनष्टहुईहै ॥ ऐसाशक्तिहीनवृद्धपुरुष आपणीइच्छातें सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोवृद्धपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकीइच्छाकेअधीनहीं सुख दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहाँ स्त्रीपुत्रादिकबांधव तावृद्धपुरुषकेताईं जोप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ तो सोवृद्धपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ते स्त्रीपुत्रादिकबांधव तावृद्धपुरुषकेताईं जोअप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिकरैहैं तो सोवृद्धपुरुष दुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी आपणी इच्छातें सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु अन्यपुरुषोंकीइच्छाकेअधीन सोविद्वान्पुरुष सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहाँ जोकोईभक्तजन ताविद्वान्कापूजनकरैहै ॥ तो सोविद्वान्पुरुष सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोकोईदुष्टजन ताविद्वान्पुरुषकाताडनकरैहै ॥ तो सोविद्वान्पुरुष

स्थाविषेकोनविशेषताहै ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे यालोकविषे सर्प जबपर्यंत आपणेकंचुककापरित्यागनहींकरैहै ॥ तबपर्यंत सोसर्प ताकंचुककेछेदनादिकोंकरिके दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जभी सोसर्प आपणेकंचुककापरित्यागकरैहै ॥ तभी सोसर्प ताकंचुककेछेदनादिकोंकरिके दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और आपणेबिलकेद्वारऊपरस्थितजोकंचुकहै ॥ ताकूं दिनदिनविषे देखताहुआभी सोसर्प ताकंचुकविषेआसक्तिकरैनहीं ॥ तथा ताकंचुककेधर्मोंकूं आपणेविषेमानैनहीं ॥ तैसे यह विद्वान्पुरुष जबपर्यंत देहकेअभिमानकापरित्याग नहींकरैहै, तबपर्यंतही तादेहकेछेदनादिकोंकरिके दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा तादेहकेजन्ममरणादिकधर्मोंकूंआपणेविषेमानैहै ॥ और आत्माकेसाक्षात्कारकरिके सोविद्वान्पुरुष जभी देहादिकोंतैं आपणेकूंभिन्नकरिकैजानैहै ॥ तभी सोविद्वान्पुरुष देहादिकोंकेदाहछेदनादिकोंकरिकेदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और दिनदिनविषे आपणेदेहादिकोंकूंदेखताहुआभी सोविद्वान्पुरुष तिनदेहादिकोंविषे आसक्तिकरैनहीं ॥ तथा तिनदेहादिकोंकेजन्ममरणादिकधर्मोंकूं आपणेस्वरूपविषेमानैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ विचारतैंरहित जेतामसीसर्पादिकजंतुहैं ॥ तेसर्पादिकभी जभी कंचुककेपरित्यागतैं अनंतर ताकंचुककेछेदनादिकधर्मोंकूं आपणेस्वरूपविषेनहीं मानते ॥ तभी विचारादिकसाधनोंयुक्त जोसात्विकीविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुष शरीरादिकोंकेअभिमानत्यागतैंअनंतर तिनशरीरादिकोंकेजन्ममरणादिकधर्मोंकूं आपणेस्वरूपविषेनहींमानैहै ॥ याकेविषेक्याकहणाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् कंचुककेपरित्यागतैंअनंतर तासर्पका कंचुककेसाथ कोईसंबंधहैनहीं ॥ याकारणतैं सोसर्प ताकंचुककेछेदनादिकोंकरिके दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यहवार्ता यद्यपि संभवैहै॥तथापि विद्वान्पुरुषका जीवन्मुक्तअवस्थाविषे शरीरादिकोंकेसाथ संबंधप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं शरीरादिकोंकेछेदनादिकोंकरिके ताविद्वान्पुरुषकूं अवश्यदुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हे जनक ॥ सामान्यतैंशरीरकासंबंध सुखदुःखकाहेतुहोवैनहीं ॥ किंतु मैं शरीररूपहूं अथवा यहमेराशरीरहै याप्रकारकेअहंममअभिमानरूपसंबंधकरिके शरीरविशिष्टजोपुरुषहै ॥ तिसकूंहीं शरीरकेपूजनदाहादिकोंकरिके सुखदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोपुरुष शरीरकेअहंममअभिमानतैंरहितहै ॥ तिसपुरुषकूं शरीरकेपूजनताडनादिकोंकरिके सुखदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे भूतकेआवेशकरिकेसु

होइजावैहै ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष यहशिष्य उपदेशकाअधिकारीहै और यहशिष्य उपदेशकाअधिकारीनहीं है ॥ याप्रकारकीभेददृष्टिकूं अंगीकारकरिके किसप्रकार उपदेशकरैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे सर्वशास्त्रोंकूंजानणेहारा जोकोईमायावीपुरुषहै ॥ सोमायावी पुरुष आपणेमायाकेप्रभावतैं नानाप्रकारकेरूपोंकूंधारणकरिके आपणेएकअद्वितीयस्वरूपकूंविस्मरणकरिदेवै ॥ और तिनआपणे रूपोंकूंआपणेतैंभिन्नमानिके सोमायावीपुरुष तिनोंकेप्रति शास्त्रकाउपदेशकरैहै ॥ तहाँवास्तवतैंभेदतैंरहितहुआभी सोमायावीपुरुष भेदवालेकीन्याईं प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिके सर्वभेददर्शनतैंरहितहुआभी यहविद्वान्पुरुष प्रारब्धकर्मके वशतैं भेदकूंदेखताहुआ शिष्योंकेप्रति उपदेशकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् द्वितीयाद्वैभयंभवति ॥ अर्थयह ॥ द्वैतरूपभेदकेदर्शनतैं जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याश्रुतिविषे भेददर्शीपुरुषकूंभयकीप्राप्तिकहीहै ॥ यातैं गुरुशिष्यादिकोंकेभेदकूंदेखणेहारा जोविद्वान् पुरुषहै ॥ तिसकूंभी भयकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे स्थूलशरीरकेअभिमानकापरित्यागकरिके स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहुआ कोईकपुरुष तास्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेजडचेतनपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ और कदाचित् सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तिसीस्वप्नअवस्था विषे यहसंपूर्णपदार्थ स्वप्नरूपहोणेतैं मिथ्याहैं याप्रकारकानिश्चयकरैहै ॥ तानिश्चयतैंअनंतर सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तिनमिथ्यापदार्थोंविषे बंधायमानहोवैनहीं ॥ और शास्त्रकेअभ्यासजन्यजेसंस्कारहैं ॥ तिनसंस्कारोंकेवशतैं सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तिनमिथ्यापदार्थोंकेउपदेशा दिकोंविषेभी प्रवर्त्तहोवैहै ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी अज्ञानसहितस्थूलसूक्ष्मशरीरादिरूपसर्वप्रपंचकूं मिथ्याजाणिके ताकेविषेबं धायमानहोवैनहीं ॥ तथा अधिकारीशिष्योंकेताईं उपदेशादिकभीकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिके सर्वजगत्कूं मिथ्यारूपकरिकेजानणेहाराजोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं जीवन्मात्रकाउपयोगीभेददर्शन बंधकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ सत्यरूपकरिकेभेदकादर्शनहीं बंधनकाहेतुहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे जीवन्मुक्तअवस्थातैंपूर्व बंधअवस्थाविषे यहविद्वान्पुरुष शरीरसहितप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे जीवन्मुक्तअवस्थाविषेभी यहविद्वान्पुरुष शरीरसहितप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं बंधअवस्थातैं जीवन्मुक्तअव

रागद्वेषकाकारणहोवै है ॥ सोपदार्थोंकाविशेषज्ञान विद्वान्पुरुषकूंहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे नवममासतैंपूर्व माताकेगर्भविषेस्थितहुआबालक मातानैंभोजनकरयाजेनानाप्रकारकेरस तिनरसोंकूंभोजनकरताहुआभी विशेषकरिकै तिनरसोंकूंजाणतानहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माकूं चिंतनकरताहुआ यहविद्वान्पुरुष खानपानादिकव्यवहारोंकूंकरताहुआभी विशेषकरिकै तिनव्यवहारोंकूंजाणतानहीं ॥ याकारणतैं ताविद्वान्पुरुषका किसीपदार्थविषेरागद्वेषहोवैनहीं ॥ और हेजनक जैसे अशोकवनिकान्यायकरिकै उन्मत्तपुरुषोंकाचित्त किसीएकविषयविषे अवश्यलगनहोवैहै ॥ तैसे ताजीवन्मुक्तपुरुषकाचित्त आत्माकेविचारविषेहीलगनहोवैहै ॥ अशोकवनिकान्यायकायहअर्थ है ॥ जैसे सीताकूंहरणकरिकै रावणनैं तासीताकूं किसीएकवचनविषे अवश्यराखणाथा ॥ परंतु दैवयोगतैं तारावणनैं सीताकूं अशोकवनविषेहीराख्या ॥ याकानाम अशोकवनिकान्यायहै ॥ तैसे यहचित्तभी किसीनकिसीविषयविषे अवश्यलागैहै ॥ याकारणतैं तेविद्वान्पुरुष आत्माकेविचारविषेहीताचित्तकूंलगावैहैं ॥ शंका हेभगवन् आनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वदाचिंतनकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष जोकदाचित् बाह्यपदार्थोंकूंविशेषरूपकरिकैनहींजानताहोवै ॥ तो जैसे ताविद्वान्पुरुषकी शास्त्रविचारादिकशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे परद्रोहादिकनिषिद्धकर्मोंविषे ताविद्वान्पुरुषकीप्रवृत्ति किसवास्तैनहींहोती ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे यालोकविषे जिसपुरुषनैं बहुतकालपर्यंत शास्त्रकाअभ्यासकर्याहै ॥ तथा शास्त्रकेअनुसार शुभकर्मकरेहैं ॥ सोपुरुष जोकदाचित् किसीरोगादिकनिमित्तकरिकै उन्मत्तदशाकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ तोभी सोपुरुष पूर्वशुभकर्मोंकेअभ्यासकेवशतैं शास्त्रनिषिद्धकर्मोंकूंकरैनहीं ॥ किंतु ताउन्मत्तदशाविषेभी सोपुरुष यथार्थ अथवा अयथार्थ शुभकर्मोंकूंहीकरैहै तथा पूर्वअभ्यासकरेहुएशास्त्रकाही वारंवारउच्चारणकरैहै ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषनैं आत्मसाक्षात्कारतैं पूर्व मुमुक्षुदशाविषे बहुतकालपर्यंत शमदमादिकसाधनकरेहैं॥ तथा निरंतरवेदांतशास्त्रकाविचारकर्याहै ॥ तिनसंस्कारोंकेवशतैं सोविद्वान्पुरुष जीवन्मुक्तअवस्थाविषे परद्रोहादिकनिषिद्धकर्मोंविषेप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं सोविद्वान्पुरुष शुभकर्मोंविषे तथा वेदांतशास्त्रकेविचारविषेहीं प्रवृत्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै याविद्वान्पुरुषकीभेददृष्टि निवृत्त

प्रकरणेहारी विक्षेपशक्ति होवैहै ॥ और दूसरी प्रपंचकीप्रतीतिकरावणेहारी विक्षेपशक्तिहोवैहै ॥ इनसंपूर्णोंकानामबंधहै ॥ तहां आत्मसाक्षात्कारकरिके याविद्वान्पुरुषका जभी आवरणशक्ति तथा रागकाकारणविक्षेपशक्ति यहदोनोंप्रकारकाबंध निवृत्तहोवैहै ॥ तभीयह विद्वान् पुरुष जीवन्मुक्तअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जभी प्रपंचकीप्रतीतिकरावणेहारीविक्षेपशक्तिकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तभी यहविद्वान्पुरुष विदेहमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनीही जीवन्मुक्तितैं विदेहमुक्तिविषेविशेषताहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जिसकालविषे आत्मसाक्षात्कार आवरणशक्तिकूं तथा रागकाकारणरूपविक्षेपशक्तिकूं नाशकरैहै ॥ तिसकालविषे सोआत्मसाक्षात्कार प्रपंचकीप्रतीतिकरावणेहारीविक्षेपशक्तिकूं किसवासतैनहींनाशकरता ॥ समाधान ॥ हेजनक ! जिनपुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मोंनें विद्वान्पुरुषकेशरीरकाआरंभकऱ्याहै ॥ तेप्रारब्धकर्म ताविद्वान्पुरुषकूं सुखदुःखकेभोगदेणेवासते ताविक्षेपअंशकूंनिवृत्तहोणेदेवैनहीं ॥ जभी भोगकरिके ताप्रारब्धकर्मकाक्षयहोवैहै ॥ तभी ताविद्वान्पुरुषकेशरीरका तथा ताविक्षेपशक्तिका नाशहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोविद्वान्पुरुष विदेहमुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जीवितअवस्थाविषे ताविक्षेपशक्तिकरिके प्रपंचकूंदेखताहुआ सोविद्वान्पुरुष अज्ञानीपुरुषकीन्याई बंधकूंकिसवासते नहींप्राप्तहोता ॥ समाधान ॥ हेजनक ! अज्ञानीजीव आपणेआत्माकेतादात्म्यसंबंधकरिके यास्थूल सूक्ष्म कारण शरीरादिकोंकूंदेखैहै ॥ आत्माकूं असंगजानतानहीं ॥ याकारणतैं सोअज्ञानीजीव संसारविषेबंधायमानहोवैहै ॥ और यहविद्वान्पुरुष आपणेआत्माकूंअसंगजानिकरिके शरीरादिकप्रपंचकूंदेखैहै ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष संसारविषे बंधायमानहोवैनहीं ॥ याकारणतैंही सोविद्वान्पुरुष जीवन्मुक्तहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! रागादिकोंतैंरहित जोजीवन्मुक्तविद्वान्पुरुषहै ॥ ताके खानपानादिकलौकिकव्यवहार किस प्रकार होवैंगे ॥ समाधान ॥ हेजनक ! जैसे प्रारब्धकर्मकेवशतैं उन्मत्तपुरुषके तथाबालकके खानपानादिकव्यवहारहोवैहैं ॥ तैसे प्रारब्धकर्मकेवशतैं ताजीवन्मुक्तविद्वान्पुरुषकेभी खानपानादिकव्यवहारहोवैहैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् ! खानपानादिकव्यवहारोंकूंकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष तिनपदार्थोंविषेरागवान् क्यूंनहींहोवैहै ॥ समाधान हेजनक ॥ पदार्थोंका विशेषरूपकरिके ज्ञानही

क्षेत्रकाभीनाशहोइजावैहै ॥ यद्यपि आत्मा नित्यहै यातैं आत्माकानाशसंभवैनहीं ॥ तथापि शुद्धआत्माविषेतौ संसाररूपवृक्षकीक्षेत्ररूप ताहैनहीं॥किंतु अज्ञानविशिष्टआत्माविषे क्षेत्ररूपताहै ॥ ताअज्ञानरूपविशेषणकेनाशहुए आत्माविषे संसाररूपवृक्षकीक्षेत्ररूपतारहैनहीं ॥ और ताक्षेत्रकेनाशहुए कामरूपबीजकाभीनाशहोइजावैहै ॥ और ताकामरूपबीजकेनाशहुए संसाररूपवृक्षकाभीनाशहोइजावैहै ॥ इस प्रकार आत्मसाक्षात्कारकरिकेनाशकूंप्राप्तहुआ सोसंसाररूपवृक्ष पुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेनिरूपणकरैहैं॥हेजनक ! पुत्रेषणा वित्तेषणा लोकेषणा यहतीनप्रकारकीएषणा जभी यापुरुषकीनिवृत्तहोवैहै ॥ तभी यहपुरुष इसीशरीरविषे अद्वितीयब्रह्मकूंप्राप्तहो इके मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक! देहादिकोंविषेजोअहंअभिमानरूपअध्यासहै ॥ तथा देहकेसंबंधीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे जोममअभिमा नरूपअध्यासहै, सोअहंममअभिमानहीं ॥ सर्वकामनाओंकाकारणहै ॥ ताअहंममअभिमानकूं यद्यपि मरणतैंअनंतर सर्वअज्ञानीजीवभी परित्यागकरैहैं ॥ तथापि जोपुरुष जीवतअवस्थाविषेही ताअहंममअभिमानकापरित्यागकरैहै ॥ सोपुरुष याशरीरविषेस्थितहुआभी मुक्तहीजानणा ॥ काहेतैं इच्छारूपकामका जोहृदयविषेनिवासहै ॥ ताकूं बुद्धिमान्पुरुष संसाररूपबंधकहैहैं ॥ और तिसइच्छा रूपकामका जोहृदयदेशविषेअभावहै ॥ ताकूं बुद्धिमानपुरुष मोक्षकहैहैं ॥ और सोइच्छारूपकामकानाश ब्रह्मज्ञानतैं विनाहोवै नहीं ॥ किंतु ब्रह्मज्ञानकरिकेही अविद्याकीनिवृत्तिद्वारा ताइच्छारूपकामकानाशहोवैहै ॥ और सोब्रह्मज्ञान जभी यापुरुषकूं जी वतअवस्थाविषेप्राप्तहोवैहै ॥ तभी याशरीरकेविद्यमानहुएभीसोपुरुष जीवन्मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं हेजनक ! जभी आत्मसाक्षात्कारके प्रभावतैं यहविद्वान्पुरुष शरीरादिकउपाधियोंकेविद्यमानहुएभी जीवन्मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी शरीरादिकउपाधियोंकेनाशतैंअनंतर सोविद्वान्पुरुष विदेहमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जीवन्मुक्तितैं विदेहमुक्तिविषे कितनीविशेषताहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! आत्माकेआश्रितजोमायारूपअविद्याहै ताअविद्याकीदोप्रकारकोशक्तिहोवैहै ॥ एकतौआवरणशक्तिहोवैहै ॥ और दूसरीविक्षेपशक्तिहोवैहै ॥ तहां साविक्षेपशक्तिभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ शरीरविषे तथा शरीरकेसंबंधीधनपुत्रादिकोंविषे रागकूंउत्प

लोकांतरविषेजावेनहीं ॥ किंतु जैसे गृहविषेस्थितदीपकका गृहविषेहीलयहोवैहै ॥ तैसे प्रारब्धकर्मकीसमाप्तितैंअनंतर ताविद्वान्‌पुरुषके मनइंद्रियसहितप्राण शरीरकेभीतरहीं अधिष्ठानआत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तहाँश्रुति ॥ नतस्यप्राणाउत्क्रामंति ॥ अर्थयह ॥ जैसे मरणतैंअनंतर अज्ञानीजीवोंकेप्राण वासनाकेअनुसार लोकांतरविषेगमनकरैं हैं ॥ तैसेवासनारहितविद्वान्‌पुरुषकेप्राण किसीलोकांतरविषेगमनकरैनहीं ॥ किंतु शरीरकेभीतरहीं लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मरणकालविषे ताविद्वान्‌पुरुषके प्राणादिकोंकेलयहुएभी ताविद्वान्‌पुरुषकाचैतन्यभाग कहांजावैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ सोविद्वान्‌पुरुष आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्वभी ब्रह्मरूपहीथा ॥ परंतु आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्व सोविद्वान्‌पुरुष अज्ञानकरिकेआवृतब्रह्मरूपथा ॥ और आत्मसाक्षात्कारतैंअनंतर सोविद्वान्‌पुरुष अज्ञानरूपआवरणतैंरहित शुद्धब्रह्मरूपहोवैहै ॥ सोशुद्धब्रह्म सर्वत्रपरिपूर्ण है ॥ यातैं ताब्रह्मका कहीं गमनआगमन होवैनहीं ॥ अब याही अर्थकूं दृष्टांतकरिकेस्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसेघटविषेस्थितजोआकाशहै ॥ सोआकाश घटकेनाशतैंपूर्वभी महाकाशरूपहीहै ॥ परंतु घटरूपउपाधिकेसंबंधतैं सोआकाश घटाकाशसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और घटरूपउपाधिकेनाशतैंअनंतर सोईहीआकाश घटाकाशसंज्ञाकापरित्यागकरिके महाकाशरूपहीहोवैहै ॥ तैसे विद्वान्‌पुरुषकाआत्मा शरीरादिकउपाधियोंकेविद्यमानहुएभी ब्रह्मरूपही है ॥ और शरीरादिकउपाधियोंकीनिवृत्तितैंअनंतर सोविद्वान्‌पुरुषकाआत्मा ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे अज्ञानकाविषयहुआ शुद्धआकाश गंधर्वनगररूपवृक्षकेउत्पत्तिकाक्षेत्रहोवैहै ॥ तैसे अज्ञानकाविषयहुआ यहआत्मादेव कामरूपबीजसहित यासंसाररूप वृक्षकेउत्पत्तिकाक्षेत्रहोवैहै ॥ और जैसे आकाशरूपअधिष्ठानकेवास्तवज्ञानकरिके ताकल्पितगंधर्वनगरकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ तैसे अधिष्ठानरूपशुद्धआत्माके साक्षात्कारकरिके यहसंसाररूपवृक्ष नाशहोइजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आत्माकेअज्ञानतैं इच्छारूपकामकीउत्पत्ति होवैहै ॥ और ताइच्छारूपकामतैं संपूर्णजगत्‌कीउत्पत्तिहोवैहै॥यातैं अज्ञानविशिष्टआत्मा यासंसाररूपवृक्षकेउत्पत्तिकाक्षेत्रहै॥और इच्छारूपकाम यासंसाररूपवृक्षकाबीजहै ॥ और आत्मसाक्षात्काररूपअग्निकरिके जभी अज्ञानकानाशहोवैहै ॥ तभी अज्ञानविशिष्टआत्मारूप

इच्छारूपकामकेअभावविषे श्रुतिप्रमाणतैं परमआनंदकीप्राप्तिकीकारणतानिरूपणकरी ॥ अब लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकेभी ताअर्थका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे जेपुरुष धनादिकपदार्थोंकीइच्छाकरिकैयुक्तहैं ॥तिनपुरुषोंकूं ताधनादिकपदार्थोंकीइच्छा करिके परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतें यालोकविषे धनादिकपदार्थोंकीइच्छातैंरहित संतोषवान्हैं ॥ तिनसंतोषवान्पुरुषोंकूं परमसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतें यालोकविषे धनादिकपदार्थोंकी तृष्णाकरिकेयुक्त जेधनीपुरुषहैं ॥तेधनीपुरुष धनकी प्राप्तिवासते राजादिकोंकीसेवाकरैहैं ॥ तासेवादिकोंकरिके परमदुःखकूंप्राप्तहोइके कदाचित् यत्किंचित्मात्र राजससुखकूं प्राप्तहोवैहै ॥और सर्वकामनावोंतैंरहित तथा यथालाभविषेसंतुष्ट ऐसाजोसंतोषवान्पुरुषहै ॥ सो यद्यपि दरिद्री है ॥ तथापि सोसंतोषवान्पुरुष परमसात्विकसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥यातैं सर्वकामनावोंकाअभावरूपसंतोषही जीवोंके सुखकाकारणहै ॥ किंवा यालोकविषे तृष्णाकरिकेयुक्त जेधनीपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं चोर अग्नि राजा आदिकोंतैं सर्वदाभयप्राप्ति होवैहै ॥ और संतोषवान्दरिद्रीपुरुषकूं चौरादिकोंतैंभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी संतोषवान्पुरुष परमसुखीहै ॥ किंवा ॥ सर्वकामनावोंकाअभावरूपसंतोष थोडेउद्यमकरिकेभी पुरुषकूं सुखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं संतोषविषे सुखकीकारणताकानिश्चयहै ॥ औरइच्छारूपकाम महानुद्यमकरिकेभी पुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्ति करैहै ॥ यातैं इच्छारूपकामविषे सुखकीकारणताका संशयहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे कंटकादिकोंतैं पादोंकीरक्षाकरणेहारा जोचर्मकाउपानहहै ॥ सोउपानह मार्गविषे चलणेहारेपुरुषों के सुखकाकारणहोवैहै ॥ तैसे सर्वकामनावोंकाअभावरूप यहसंतोषभी जीवोंकेपरमसुखकाकारणहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे मार्गविषेचलणेहाराकोईपुरुष याप्रकारकासंकल्पकरै ॥ मैं संपूर्णपृथिवीकूं कंटकोंतैंरहितकरौं तथाकोमलकरौं ॥ जाकरिकै हमारे कूं पादोंविषे कंटकादिकनहींलागे ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिके जोपुरुष तिसकेउपायविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें संपूर्णपृथिवी कंटकोंतैंरहितहोंहोणी तथा कोमलहोणी अत्यंतदुर्घटहै ॥ तैसे इच्छारूपकामकेविषय जितनेकपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं मैं प्राप्तहोवों ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिकै जोपुरुष तिनपदार्थोंकीप्राप्तिवासते प्रयत्नकरैहै ॥

सोमूढबुद्धिपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें पुरुषोंकीइच्छारूपकामकेविषय जितनेकपदार्थ हैं ॥तिनसर्वपदार्थोंकीप्राप्तिहोणी अत्यंत दुर्घटहै ॥ याकारणतें सकामपुरुषकूं दुःखकोहीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ सर्वकामनावोंकेपरित्यागतें जोसुख निष्कामपुरुषकूंहोवैहै सोसुख चक्रवर्तीराजाकूंभीनहींहोवैहै ॥ तथा सोसुख स्वर्गविषे देवराजइंद्रकूंभी नहींहोवैहै ॥ तथा सोसुख ब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकूंभीनहीं होवैहै ॥ काहेतें चक्रवर्तीराजातेंआदिलेके ब्रह्मापर्यंत जितनेकविषयजन्यसुखहैं ॥ तेसुख कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकेजन्यहैं ॥ याका रणतें तेसुख नाशवान्‌हैं ॥ तहांश्रुति ॥ यथेहकर्मचितोलोकःक्षीयते एवमेवामुत्रपुण्यचितोलोकःक्षीयते ॥ अर्थयह ॥ जैसे यामनुष्यलोक विषे गृहादिकपदार्थ शरीरकेव्यापाररूपकर्मकरिकेरचितहैं ॥ यातें तेगृहादिकपदार्थ किसीकालपाइके क्षयकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे स्वर्गलोकतें आदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकलोकहैं ॥ तेलोक जीवोंकेपुण्यउपासनारूपकर्मकरिकेरचितहैं ॥ यातें तेलोकभी किसीकालपाइकेक्षयकूं प्राप्तहोवैं हैं॥१॥याश्रुतिप्रमाणकरिके तथा जोजोपदार्थ उत्पत्तिवालाहोवैहै सोसोपदार्थ नाशवान्‌होवैहै जैसेघटादिकपदार्थ हैं याअनुमान प्रमाणकरिके तिनस्वर्गादिकलोकोंविषे अनित्यताहीसिद्धहोवैहै॥और जोपदार्थ नाशवान्‌होवैहै॥सोपदार्थ वियोगकालविषे अवश्यदुःखकी प्राप्तिकरैहै ॥ यातें चक्रवर्तीराजातेंआदिलेकेब्रह्मापर्यंत जितनेकविषयजन्यसुखहैं तेसुख परिणामकालविषेदुःखकाहेतुहोणेतेंदुःखरूपहीहैं ॥ तहांमूलश्लोक ॥ नसुखंसार्वभौमस्य विद्यतेनबिडोजसः ॥ ब्रह्मणोनसुखंयत्स्यात् पुंसःकामविवर्जनात् ॥ अर्थयह ॥ सर्वकामनावोंकेअभावतें यानिष्कामपुरुषकूं जोसुखहोवैहै ॥ सोसुख चक्रवर्तीराजाकूं तथाइंद्रकूं तथाब्रह्माकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ १ ॥ और हेजनक ॥ विषयजन्यसु खकीइच्छारूपकामहीं याजीवोंकेआत्मसाक्षात्कारविषेप्रतिबंधकहै ॥ सोइच्छारूपकाम जिसपुरुषकानिवृत्तभयाहै ॥ तिसीनिष्कामपुरु षकूं गुरुउपदिष्टमहावाक्यतें मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै॥और ताआत्मसाक्षात्कारकरिके तिसनिष्कामपुरुषके पुण्यपापरूपसंचितकर्मोंका नाशहोइजावैहै ॥ और तेपुण्यपापरूपकर्महीं वासनाकीउत्पत्तिद्वारा लोकांतरकेप्राप्तिकाकारणहोवैहैं ॥ यातें तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकेनाशहुए ताविद्वान्‌पुरुषकी किसीलोकविषेवासनाहोवैनहीं ॥ याकारणतें ताविद्वान्‌पुरुषकालिंगशरीर

इच्छारूपकामकेअभावविषे श्रुतिप्रमाणतैं परमआनंदकीप्राप्तिकीकारणतानिरूपणकरी ॥ अब लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकेभी ताअर्थका निरूपणकरेहैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे जेपुरुष धनादिकपदार्थोंकीइच्छाकरिकेयुक्तहैं ॥तिनपुरुषोंकूं ताधनादिकपदार्थोंकीइच्छा करिके परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं यालोकविषे धनादिकपदार्थोंकीइच्छातैंरहित संतोषवान्हैं ॥ तिनसंतोषवान्पुरुषोंकूं परमसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं यालोकविषे धनादिकपदार्थोंकी तृष्णाकरिकेयुक्त जेधनीपुरुषहैं ॥ तेधनीपुरुष धनकी प्राप्तिवासते राजादिकोंकीसेवाकरैहैं ॥ तासेवादिकोंकरिके परमदुःखकूंप्राप्तहोइके कदाचित् यत्किंचितमात्र राजससुखकूं प्राप्तहोवैहैं ॥और सर्वकामनावोंतैंरहित तथा यथालाभविषेसंतुष्ट ऐसाजोसंतोषवान्पुरुषहै ॥ सो यद्यपि दरिद्री है ॥ तथापि सोसंतोषवान्पुरुष परमसात्विकसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥यातैं सर्वकामनावोंकाअभावरूपसंतोषही जीवोंके सुखकाकारणहै ॥ किंवा यालोकविषे तृष्णाकरिकेयुक्त जेधनीपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं चोर अग्नि राजा आदिकोंतैं सर्वदाभयप्राप्ति होवैहै ॥ और संतोषवान्दरिद्रीपुरुषकूं चोरादिकोंतैंभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी संतोषवान्पुरुष परमसुखीहै ॥ किंवा ॥ सर्वकामनावोंकाअभावरूपसंतोष थोडेउद्यमकरिकेभी पुरुषकूं सुखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं संतोषविषे सुखकीकारणताकानिश्चयहै ॥ औरइच्छारूपकाम महान्उद्यमकरिकेभी पुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्ति करैहै ॥ यातैं इच्छारूपकामविषे सुखकीकारणताका संशयहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे कंटकादिकोंतैं पादोंकीरक्षाकरणेहारा जोचर्मकाउपानहहै ॥ सोउपानह मार्गविषे चलणेहारेपुरुषों के सुखकाकारणहोवैहै ॥ तैसे सर्वकामनावोंकाअभावरूप यहसंतोषभी जीवोंकेपरमसुखकाकारणहोवैहै ॥ और हे जनक ॥ जैसे मार्गविषेचलणेहाराकोईपुरुष याप्रकारकासंकल्पकरै ॥ मैं संपूर्णपृथिवीकूं कंटकोंतैंरहितकरौं तथाकोमलकरौं ॥ जाकरिके हमारे कूं पादोंविषे कंटकादिकनहींलागे ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिके जोपुरुष तिसकेउपायविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं संपूर्णपृथिवी कंटकोंतैंरहितहोंहोणी तथा कोमलहोणी अत्यंतदुर्घटहै ॥ तैसे इच्छारूपकामकेविषय जितनेकपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं मैं प्राप्तहोवों ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिके जोपुरुष तिनपदार्थोंकीप्राप्तिवासते प्रयत्नकरैहै ॥

जन्मोंकूंपाइकेभी जिनधनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थोंकूं नहींप्राप्तहोइसकैहैं ॥ तिनधनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थोंकूं यहविद्वान्पुरुष एकही कालविषे प्राप्तहोवैहै ॥याकारणतैं सोआप्तकामविद्वान्पुरुष निष्कामहै ॥तात्पर्ययह ॥ अप्राप्तवस्तुविषेही जीवोंकीइच्छाहोवैहै॥प्राप्तवस्तुविषे किसी जीवकीइच्छाहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ताविद्वान्पुरुषके धनपुत्रादिक सर्वपदार्थोंकीप्राप्तिरूप आप्तकामताविषे कौनहेतुहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे सुवर्णरूपकारणकेप्राप्तहुए ॥ तासुवर्णविषेकल्पित जेकुंडलादिकभूषणहैं तेभी अवश्यप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे धनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थोंकाउपादानकारणरूप जोआनंदस्वरूपपरमात्माहै ॥ तापरमात्मादेवकीप्राप्तिकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं धनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थ प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सोआत्मकामरूपविद्वान् आप्तकामताविषेहेतुहै ॥ याकहणेतैंयह अर्थ सिद्धभया ॥ जोपुरुष आत्मकामहोवैहै ॥ सोईपुरुष आत्मकामहोवैहै ॥ यातैं आत्मकामता आत्मकामताविषेहेतुहै ॥ और जोपुरुष आप्तकाम होवैहै ॥ सोईपुरुष निष्कामहोवैहै॥ यातैं आप्तकामता निष्कामता विषेहेतुहै ॥ और जोपुरुष निष्कामहोवै है॥सोईपुरुष सर्वकामनावोंतैंरहित अकामहोवैहै॥यातैं निष्कामता अकामताविषेहेतुहै ॥ यातैं तिसैं आत्मकामताही परंपरा करिकै सर्वकामनाकेअभावरूपअकामताविषे कारणहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्ट करिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे इच्छारूपकामकरिकैयुक्त जेअज्ञानीपुरुषहैं॥ तेअज्ञानीपुरुष जिनजिन स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ते स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ नाशवान्हैं ॥ यातैं ते स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ तिनअज्ञानीपुरुषोंकी तृष्णाकीनिवृत्तिकरैंनहीं ॥ किंतु जैसे घृतादिकोंकरिकै अग्निकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ तैसे तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकरिकै तिनअज्ञानीजीवोंकाकामरूपअग्नि दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोता जावैहै ॥ और आत्मकामविद्वान्पुरुष जोतिनस्त्रीपुत्रधनादिकसर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सो अज्ञानीपुरुषकी न्याई नानाप्रकारके यत्नकरिकै तथा बाह्यरूपकरिकै तिनपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु स्त्री पुत्र धन इसतैंआदिलेकेसंपूर्णजगत्मेराही आत्माहै ॥याप्रकार सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपब्रह्मविद्याकरिकै सोआत्मकामविद्वान्पुरुष सर्वजगत्कूंआपणाआत्मारूपमानिकै प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञानहीं इच्छारूपकामकोनिवृत्तिद्वारा परमआनंदकीप्राप्तिकाहेतुहै ॥ इतनैकरिकै

दुःखकीप्राप्ति करिसकेनहीं॥और ताइच्छारहितपुरुषकामनभी यहकार्य हमारेकूंअवश्यकरणेयोग्यहै याप्रकारकेनिश्चयकूं उत्पन्नकरैनहीं॥ और श्वासप्रश्वासादिकव्यापारोंवालेजेपंचप्राणहैं ॥ तथा आपणेआपणेव्यापारयुक्त जेवाक्आदिकदशइंद्रियेंहैं ॥ तथा आकाशतैंआदिलेकेजेपंचभूतहैं ॥ तथा तिनभूतोंकाकार्य जोयहस्थूलशरीरहै ॥ इसतैंआदिलेके संपूर्णपदार्थ वियमानहुएभी इच्छारहितपुरुषकूं दुःखकी प्राप्तिकरिसकेनहीं ॥ याकारणतैं ताइच्छारहितपुरुषका प्राणादिकसंघात विद्यमानहुआभी नहींविद्यमानहुएकेसमानहै ॥ और हेजनक॥ यौवनरूपअग्निकरिकेतपायमान जेसुंदरस्त्रियाँहैं ॥ तथा शरीर मन वाणीकरिकेहिंसाकरणेहारेजेशत्रुहैं ॥ तथा सुखकीप्राप्तिकरणेहारा जो धर्महै ॥ तथादुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोअधर्महै ॥ इसतैंआदिलेकेसंपूर्णप्रियअप्रियपदार्थ इच्छारहितपुरुषकूं किंचित्मात्रभी सुखदुःखकीप्राप्ति करिसकेनहीं ॥ और जिसपुरुषविषे इच्छारूपकामहोवैहै ॥ तिसपुरुषविषेही तेस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थ सुखकीउत्पत्तिकरैहैं ॥ और शत्रुआदिकअप्रियपदार्थ दुःखकीउत्पत्तिकरैहैं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिके इच्छारूपकामही याजीवोंके संसारदुःखकाकारणहै ॥ और जोपुरुष ताइच्छारूपकामतैंरहितहै सोपुरुष जीवन्मुक्तपुरुषकेसमानहै ॥ हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे इच्छाकरिकेयह जीव जिसप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकेदुःखोंकूं यहजीवात्मा आगेहोणेहारेऊँचनीचशरीरोंविषेभी प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं संपूर्णशरीरोंविषे यहइच्छारूपकामही जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै॥ इतनेग्रंथकरिके इच्छारूपकामविषे सर्वदुःखोंकीकारणतादिखाई ॥ अब पूर्वउक्तसुषुप्तिकेदृष्टांतकरिके मोक्षकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं यहपुरुष जभी इच्छारूपकामतैंरहितहोवैहै ॥ तभी यहपुरुषकिंचित्मात्रभी संसारदुःखकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ किंतु इच्छातैंरहितहुआयहपुरुष मोक्षकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वकामनावोंकेनाशहुएतैं यहपुरुष निष्कामभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं उत्पन्नभया जोतीव्रवैराग्य ॥ तावैराग्यकरिके जभी यापुरुषकीसर्वकामना निवृत्तहोवैहै ॥ तभी यहपुरुष निष्कामभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ विद्वानपुरुषविषे सर्वकामनावोंकाअभावरूपनिष्कामता किसहेतुतैंहोवैहै ॥ समाधान हेजनक ॥ यहसकामपुरुष अनेक

सीलक्षशरीरोंविषेविचेरैहे ॥ और हेजनक॥जैसे यालोकविषे तंतुरूपसूत्र पटकाकारणहे॥ तैसेयहइच्छारूपसूत्रही जगत्‌रूपपटकामुख्यकारणहे ॥ याकारणतैंहीं "कामःसंकल्पोविचिकित्साश्रद्धाअश्रद्धा" याश्रुतिभगवतीने संपूर्णमनकीवृत्तियोंविषे इच्छारूपकामकूं सर्वतैंप्रथमकथनकऱ्याहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जन्ममरणादिरूपसंसारदुःखके जितनेककारणहैं ॥ तिनकारणोंविषे अविद्या मन यहदोनोंकारणप्रधानहैं ॥ यहवार्ता बहुतशास्त्रोंविषे महात्मापुरुषोंने कथनकरीहे ॥ और आपनेतो यहाँकामकूंही संसारदुःखकाप्रधानकारणकह्याहे ॥ याकेविषेकौनहेतुहे ॥ समाधान हेजनक ॥ जिसअभिप्रायकरिकै कामकोप्रधानता हमनेकथनकरीहे ॥ ताअभिप्राय तूं श्रवणकर ॥ यासंसारकेजितनेककारणहैं ॥ तिनसंपूर्णकारणोंविषे जो अविद्याकोप्रधानताहे ॥ सो मनकूंअंगीकारकरिकेही अविद्याविषे प्रधानताहे ॥ और मनरूपकारणविषेजोप्रधानताहे ॥ सो इच्छारूपकामकूंअंगीकारकरिकेही प्रधानताहे ॥ इच्छारूपकामकूंआश्रयणकरिकेही यहमन संपूर्णजगत्‌काजयकरैहे ॥ याकारणतैं इच्छारूपकामही संसारदुःखकाप्रधानकारणहे ॥ इतनेकरिके इच्छारूपकामकेविद्यमानहुए संसारदुःखकीविद्यमानतारूपअन्वयका निरूपणकऱ्या ॥ अब इच्छारूपकामकेअविद्यमानहुए संसारदुःखकोअविद्यमानतारूपव्यतिरेकका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जोपुरुष इच्छारूपकामतैंरहितहे ॥ तिसपुरुषकूं संकल्पादिकवृत्तियोंसहितमन तथा जगत्‌कीजननीअविद्या यहदोनों किंचित्‌मात्रभी दुःखकीप्राप्तिकरिसकैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे याजीवमें इच्छारूपकामहैनहीं ॥ याकारणतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे विद्यमानहुईभीअविद्या सुषुप्तपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ और समाधिअवस्थाविषे मुक्तपुरुषमें इच्छारूपकामहैनहीं ॥ याकारणतैं समाधिअवस्थाविषे विद्यमानहुआभीमन तामुक्तपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ जोकदाचित् इच्छारूपकामतैंविना स्वतंत्रही अविद्या मन दुःखकेकारणहोते तो सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषेभी यापुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे यापुरुषकूं दुःखकोप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहे ॥ इच्छारूपकामही याजीवोंके संसारदुःखकाकारणहे॥किंवा॥इच्छारूपकामतैंरहितहुआयहपुरुषजिनविषयोंकूंदेखैहे॥तेविषयभीताइच्छारहितपुरुषकूं सुखकीप्राप्ति अथवा

प्राप्तिही ताइच्छारूपकामकेशांतिकाउपायहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ विषयोंकीप्राप्तिकरिकै इच्छारूपकामकीनिवृत्तिहोइसकैनहीं ॥ काहेतें जोपुरुष कामरूपअग्निकरिकैयुक्तहै ॥ तापुरुषकूं जोकदाचित् संपूर्णपृथिवीकेसुवर्णादिकपदार्थोंकीभीप्राप्तिहोवै ॥ तोभी तापुरुषके इच्छारूपकामकीशांतिहोवैनहीं ॥ उलटा पदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै दिनदिनविषे यापुरुषकेइच्छारूपकामकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ हेजनक ॥ जोकदाचित् नानाप्रकारकेविषयोंकीप्राप्तिकरिकै यापुरुषके इच्छारूपकामकीनिवृत्तिहोती ॥ तौदेवराजइंद्रकूं अस्मदादिकसर्वलोकोंतैं अधिकाविषयोंकीप्राप्तिहै ॥ यातैं देवराजइंद्रकेइच्छारूपकामकीनिवृत्तिहोणीचाहिये ॥ और देवराजइंद्रकेइच्छारूपकामकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मलोककेविषयजन्यसुखकीकामनाकरिकै सोदेवराजइंद्र सदैवही तपायमानहोतारहैहै ॥ और इंद्र पदवीकीप्राप्तिवासते जोपुरुष अश्वमेधादिकयज्ञकरैहैं॥तिसपुरुषकेयज्ञादिककर्मोंविषे सोदेवराजइंद्र नानाप्रकारकेविघ्नकरैहै॥औरजभीकोइदैत्य बलात्कारसे स्वर्गकूंलेलेवैहै॥तभीसोइंद्र तास्वर्गकीप्राप्तिवासते ब्रह्मादिकदेवतावोंकेसमीपजाइकै नाना प्रकारकीदीनताकूंकरैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै॥स्वर्गकेभोगोंकरिकै देवराजइंद्रके इच्छारूपकामकीनिवृत्तिनहींभई॥हे जनक॥बहुतआयुषवाले तथा बहुतभोगोंवाले जेइंद्रादिकदेवताहैं॥तिनइंद्रादिकदेवतावोंकेकामकीभी जभी विषयोंकी प्राप्तिकरिकैनिवृत्तिनहींहोवैहै॥तभीअल्पआयुषवाले तथा अल्पभोगोंवाले तथा रोगादिकोंकरिकैग्रस्त जेअस्मदादिकजीवहैं ॥ तिनोंकेइच्छारूपकामकी विषयोंकीप्राप्तिकरिकै किसप्रकार निवृत्तिहोवैगी ॥ और हेजनक॥यद्यपि यहलोकप्रसिद्धअग्नि घृतादिरूपइंधनोंकीप्राप्तिकरिकै शांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तथापि अत्यंतघृतादिकोंकेपावणेकरिकै ताअग्निकीशांतिहोइसकैहै॥परंतु भूमि लोक स्वर्गलोक ब्रह्मलोक यातीनलोकोंकूंदाहकरणेहारा जोकामरूपअग्निहै ॥ताके शांतिकरणेहारा कोई विषयरूपइंधनहैनहीं ॥ उलटा विषयोंकीप्राप्तिकरिकै ताइच्छारूपकामकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे कोईबलवानपुरुष लोहादिकोंकेकंचुककूंपहिरिकरिकै तथा शिविकाविषेआरूढहोइकै शत्रुवोंकीभयतैंरहितहुआ विचरैहै ॥ तैसे यहजीवात्मा कामरूपीकंचुककूंपहिरिकै तथा सूक्ष्मशरीररूपीशिविकाविषेआरूढहोइकै विवेकरूपराजाके तथा शमदमादिरूपसेनाके भयतैंरहितहुआ चौरा

वांछितशरीरकेप्राप्तिविषे प्रतिबंधकहैं ॥ और तेदोनोंप्रतिबंधक जीवितअवस्थाविषे विद्यमानहैं ॥ याकारणतें जीवितअवस्थाविषे याजीवात्माकूं इच्छापूर्वकशरीरकोप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और मरणकालविषे तिनदोनोंप्रतिबंधकोंकोनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातें मरणकालविषे यहजीवात्मा जिसजिसशरीरकोप्राप्तिकोइच्छाकरैहै ॥ मरणतेंअनंतर यहजीवात्मा तिसतिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक॥जैसे यालोकविषेकोईनटपुरुष लोकोंकेप्रसन्नकरणेवासते नानाप्रकारकेशरीरोंकूंधारणकरैहै ॥ तैसे यहजीवात्मा कर्मकेफल भोगणेवासते नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें यासंसाररूपचक्रका इच्छारूपकामही मूलकारणहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यहजीवात्मा प्रथम शुभकर्मविषे अथवा अशुभकर्मविषे इच्छाकरैहै ॥ तिसतेंअनंतर यहजीवात्माताशुभअशुभकर्मोंकेकरणेका निश्चयकरैहै ॥ तानिश्चयतेंअनंतर यहजीवात्मा ताशुभअशुभकर्मविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ तिसतेंअनंतर यहजीवात्मा पूर्वलेशुभअशुभकर्मोंकेअनुसार पुनःशुभअशुभकर्मकीइच्छाकरैहै ॥ इसप्रकार कामरूपमूलकारणकरिकै यहसंसाररूपचक्र सर्वदा भ्रमणकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ चित्तरूपीभूमिविषे दोप्रकारकेसंस्कारहोवैहैं ॥ तहां एकतो कर्मजन्यसंस्कार रहे है और दूसरे ज्ञानजन्यसंस्काररहेहैं ॥ तहां कर्मजन्यसंस्कारतो आपणेफलकेआरंभकीसिद्धिवासते तापुरुषकीइच्छाकूंउत्पन्न करैहैं ॥ और दूसरे ज्ञानजन्यसंस्कारतो जिसकर्मविषेइच्छाहोवैहै तिसकर्मविषे यहकर्म हमारेकूंअवश्यकर्तव्यहै याप्रकारकेज्ञानकूं उत्पन्नकरैहैं ॥ और ताकर्तव्यताज्ञानकेअनुसार यहजीवात्मा ताशुभअशुभकर्मविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ और ताशुभअशुभकर्मोंकेसंस्कारकरिकै यहजीवात्मा पुनःताशुभअशुभकर्मकीइच्छाकरैहै ॥ और पूर्वलेकर्तव्यताज्ञानकेसंस्कारोंकरिकै यहजीवात्मा तिनशुभ अशुभकर्मोंविषे यहकर्म हमारेकूंअवश्यकर्तव्यहै याप्रकारकानिश्चयकरैहै ॥ तिसतेअनंतर यहजीवात्मा पुनःतिनशुभअशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥यातें यहअर्थसिद्धभया॥ याजीवकूं शुभअशुभकर्मविषेप्रवृत्तकरणेहाराजोकर्तव्यपदार्थकानिश्चयहै॥ तानिश्चयका इच्छारूपकामही मुख्यकारणहै याकारणतें सोइच्छारूपकामही याजीवके जन्ममरणादिरूपसंसारविषे कारणहै॥केसाहैसोइच्छारूपकाम॥जिसकामकेशांतिकरणेहारा कोईलोकविषेपदार्थहैनहीं॥शंका॥हेभगवन्॥नानाप्रकारकेविषयोंकी

सोकर्मीपुरुष भूमिलोकतैं स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्वर्गलोकतैंपुनःभूमिलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और भूमिलोकतैंपुनःस्वर्गकूं प्राप्तहोवैहै॥ याप्रकार घटीयंत्रकीन्याई सोसकामकर्मीपुरुष निरंतर संसारविषेभ्रमणकरैहै ॥ और याजीवके जभी पापकर्मअधिकहोवैहैं ॥ तभी यह जीव भूमिलोकतैं नरकविषेप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे धान्यादिकबीज जलकेसंबंधकूंप्राप्तहोइकेही अंकुरादिरूपकार्य केकरणेविषेसमर्थहोवैहैं ॥ तैसे पुण्यपापकर्मरूपबीज इच्छारूपजलकेसंबंधकूंपाइकेही शरीररूपअंकुरकूंउत्पन्नकरैहै ॥ यातैं ब्रह्मलोक स्वर्गलोक भूमिलोक पाताल नरक इत्यादिकलोकोंविषे जोयहजीवात्मा नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोइच्छारूपकामकरिकैही प्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ इच्छारूपकामकेअनुसारही यापुरुषकूं मरणतैं अनंतर दूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्ता कैसेजा नीजावैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यापुरुषका जिसजिसपदार्थविषे उत्कटरागहोवैहै ॥ सोपुरुषजभी जाग्रत्अ वस्थाकापरित्यागकरिकै स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोपुरुष जाग्रत्केसंस्कारोंकेवशतैं स्वप्नअवस्थाविषेतिसतिसपदार्थकूं प्राप्तहो वैहै ॥ तैसे मरणकालविषेयापुरुषकूं जिसजिसशरीरविषेरागहोवैहै ॥ मरणतैंअनंतर तिसतिसशरीरकूं यहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मरणकालकीइच्छाकेअनुसारहीयहजीवात्मा जोशरीरकूंप्राप्तहोताहोवै ॥ तौ संपूर्णपापीजीव मरणकालविषे स्वर्गकीप्राप्तिकी इच्छा किसवास्तेनहींकरते ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ मरणकालविषे यहजीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकीइच्छाकरणेविषे स्वतंत्र होवैनहीं ॥ किंतुमरणकालविषे पुण्यपापरूपकर्मकरिकै प्रेरणाकन्याहुआयहजीव जिसजिसऊँचनीचशरीरकीप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ मरणतैं अनंतरयहजीवात्मा तिसीतिसीशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥यातैं पुर्वलेपुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसारही मरणकालविषे यापुरुषकीइच्छाहो वैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे मरणकालविषे यहजीवात्मा जिसजिसशरीरकीइच्छाकरैहै ॥ तिसतिसशरीरकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मरण तैंपूर्वजीवितअवस्थाविषे यापुरुषकूं इच्छाकरेहुयेपदार्थकीप्राप्ति क्योंनहींहोती ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यावर्तमानशरीरकेभोगदेणे हारेजप्रारब्धकर्महैं तिन प्रारब्धकर्मोंकीविद्यमानता ॥ तथा भावीशरीरकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंविषे फलकीअजनकता ॥ यहदोनों

वासतैं तथादुःखकीनिवृत्तिवासतैं यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामपुरुषहैं ॥ तिनोंकूंदुःखकोप्राप्ति किसप्रकारहोवैहै ॥ समाधान॥ हेज नक ॥ यद्यपि यहसकामपुरुष सुखकोप्राप्तिवासते तथादुःखकीनिवृत्तिवासते यज्ञादिककर्मोंकूंकरैहै ॥ तथापि तिनसकामपुरुषोंकूं सुख कीप्राप्तिरूपफल तथादुःखकीनिवृत्तिरूपफल प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं स्वर्गादिकफलकेप्राप्ति कीइच्छाकूं मनविषेराखिके यज्ञादिककर्मों कूंकरणेहारे जेसकामपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं किंचित्साधनकीन्यूनतारूप वैगुण्यदोष अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ और वैगुण्यरूपदोषकरिकेयुक्त हुआ काम्यकर्म फलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ उलटा पश्चात्तापद्वारा दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं सकामपुरुषकूं किंचित्मात्रभीसुख कीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोकदाचित् सकामपुरुष वैगुण्यदोषतैंरहित यज्ञादिककर्मोंकीसमाप्तिकरैहै ॥ तोभी तिनयज्ञादिककाम्य कर्मोंकरिके जोजोविषयजन्यसुख प्राप्तहोवैहै ॥ सोविषयजन्यसुख नानाप्रकारकेदुःखोंकरिके मिश्रितहै ॥ याकारणतैंभी सकामपुरुषकूं किंचित्मात्रसुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं हेजनक ॥ मनकाधर्म जो इच्छारूपकामहै ॥ ताकामकरिकेही यहजीव जन्ममरणादिरूपसंसा रकूंप्राप्तहोवैहै अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिके निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ मरणकालविषे भावीकर्मोंकरिकेप्रेरणकऱ्याहुआ यहजीवात्मा ब्रह्मलोक स्वर्गलोक भूमिलोक नरक इसतैंआदिलेके जिसाजिसलोककीप्राप्तिकीइच्छाकरै है ॥ तिसातिसलोकाविषे सोजीवात्मा स्थूलश रीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां मरणकालविषे पूर्वले पुण्यकर्मोंकरिकेप्रेरणाकऱ्याहुआ यहजीवात्मा जभी स्वर्गादिकउत्तमलोकोंकीइच्छाकरैहै तभी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके सो जीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंविषे देवताशरीरकूंप्राप्तहोइके तहांनानाप्रकारकेभोगोंकूंभोगैहै ॥और जिनपुण्यकर्मोंने स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरीथी ॥ तिनपुण्यकर्मोंका जभी भोगकरिकेक्षयहोवैहै ॥ तभीसोजीवात्मा तास्वर्गादिकलोकों कापरित्यागकरिके पूर्वलेकर्मोंकेअनुसार भूमिलोकविषे स्थूलशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और भूमिलोकविषेप्राप्तहुआ सोजीवात्मा जबी याभा रतखंडविषे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥तभीसोजीवात्मा पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं पुनःस्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिवासते यज्ञादिककर्मोंकूंकरैहै ॥ तिनयज्ञादिककर्मोंकरिके सोपुरुष पुनःस्वर्गादिकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार इच्छारूपकामकरिकेयुक्तहुआ

होवों ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिकै सोपरमात्मादेव स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णजगत्कूं उत्पन्नकरताभया ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे अविद्याजन्य कामविषेही सर्वजगत्कीकारणता कथनकरीहै ॥ हेजनक ॥ केवलश्रुतिप्रमाणतेंही कामविषे जगत्कीकारणतासिद्धनहीं ॥ किंतु लोकोंकेव्यवहारकरिकैभी कामविषेही संसारकीकारणतासिद्धहोवेहै ॥ काहेतें यालोकविषे जितनेकचेतनप्राणीहैं ॥ तेप्राणी प्रथम यहवस्तु हमारेकूं प्राप्तहोवै यहवस्तु हमारेकूं नहींप्राप्तहोवै याप्रकारकीकामनाकरैहैं ॥ ताकामनातेंअनंतर तिसतिसकार्यविषेप्रवृत्तिद्वारा तेप्राणी नानाप्रकारकेसंसारकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ यातें यालोकोंकेव्यवहारकरिकैभी कामविषेही संसारकीकारणता सिद्धहोवेहै ॥ अब कामशब्दकेअर्थकूं निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारेजेबुद्धिमान्पुरुषहैं ॥ तेबुद्धिमान्पुरुष काम इच्छा राग स्पृहा याचारिशब्दोंका भिन्नभिन्नअर्थ मानैंनहीं ॥ किंतु तिनचारोंशब्दोंका एकहीअर्थ अंगीकारकरैहैं ॥ और जेबुद्धिमान्पुरुष स्त्रीकेसंगकूं कामकहैहैं ॥ तेबुद्धिमान्पुरुषभी कामशब्दकरिकै स्त्रीकेसंगकीइच्छाकूंही कथनकरैहैं ॥ यातें इच्छाही कामशब्दकामुख्यअर्थहै ॥ और सोइच्छारूपकामही संसाररूप कुचलेकेवृक्षकाबीजहै ॥ और विज्ञानमय मनोमय प्राणमय इत्यादिकशब्दोंकरिकेकथनकरी जेनानाप्रकारकीअवस्थाहैं ॥ तिनअवस्थावोंवाला यहसंसारीजीवात्मा तासंसाररूपवृक्षकाफलरूपहै॥ और गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकेजानणेयोग्य जोशुद्धब्रह्महै सो नित्यसिद्धहै ॥ यातें सोशुद्धब्रह्म तासंसाररूपवृक्षकाफलरूपनहीं ॥ और हेजनक॥कर्त्ताभोक्तारूपसंसारीजीवविषे इच्छारूपकामहीप्रधानहै ॥ याप्रकारकेअर्थविषे तेबुद्धिमान्पुरुष याप्रकारकीयुक्तिकूं कथनकरैहैं॥यालोकविषे यहदेहधारीजीव प्रथम याप्रियपदार्थकूं मैं प्राप्तहोवोंगा याअप्रियपदार्थकूं मैं परित्यागकरोंगा याप्रकारकीइच्छाकरैहै ॥ और ताइच्छातेंअनंतर सोपुरुष तिसपदार्थकी प्राप्तिका तथातिसपदार्थकेपरित्यागकानिश्चयकरैहै ॥और तानिश्चयसेअनंतर सोपुरुष ताप्रियपदार्थकेप्राप्तिवासतै तथा ताअप्रियपदार्थके परित्यागवासतै शुभकर्मविषे अथवा अशुभकर्मविषे प्रवृत्तहोवेहै ॥ और ताशुभअशुभकर्मकेकरणेतें अनंतर सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यातेंइच्छारूपकामही पुरुषोंकेदुःखकाकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सुखकीप्राप्ति

आत्मादेव जभी धर्ममयसंज्ञाकूं तथाअधर्ममयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहआत्मादेव नानाप्रकारके सुखदुःखका कारणहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारके ऊंचनीचशरीरोंका कारणहोवैहै ॥ अब संक्षेपतैं सर्वपदार्थोंकेतादात्म्यअध्यासकाफलनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ परोक्षरूपकरिकै तथाप्रत्यक्षरूपकरिकैयुक्त जितनेकजगत्विषेपदार्थ हैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव जभी सर्वमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहआत्मादेव सर्वपदार्थोंकेधर्मोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे एकहीपुरुष पाकरूपक्रिया करिकै पाचकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पाठरूपक्रियाकरिकै पाठकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेवभी जिसजिस कर्मकूं तथाआचारकूं करैहै ॥ तिसतिससंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और वास्तवतैंतौ यह आत्मादेव साधु असाधु पुण्य पाप इत्यादिकसर्व नामोंतैंरहितहै ॥ तथा आकाशकीन्याई सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ ऐसाआत्मादेव अविद्याकेसंबंधतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइकै जभी पुण्यकर्मोंकूंकरैहै॥ तभी यहआत्मादेव साधुकारी यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा यालोकविषे यशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव जभी पापकर्मोंकूंकरैहै ॥ तभी यहआत्मादेव असाधुकारीयासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा यालोकविषे निंदाकूंप्राप्तहो वैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै पुण्यपापरूपकर्मोंकीप्रधानताकूंअंगीकारकरिकै पुण्यपापरूपकर्मोंविषे संसा रकीकारणता निरूपणकरी ॥ अब अविद्याजन्यकामहीं यासंसारकामुख्यकारणहै यासिद्धांतपक्षकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ याजन्म मरणादिरूपसंसारकेविचारविषे कोईबुद्धिमान्महात्मापुरुष याप्रकार कथनकरैं हैं ॥ यहपरमात्मादेव निर्गुणहै तथाअसंगहै तथासर्वभेद तैंरहितहै ॥ ऐसानिर्गुणपरमात्मादेव स्वभावतैं किसीस्थूलसूक्ष्मपदार्थकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ किंतु सोपरमात्मादेव अनिर्वचनीय अविद्या केसंबंधकूंप्राप्तहोइकै प्रथम कामकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तिसकामकीउत्पत्तितैंअनंतर सोपरमात्मादेव आकाशादिकसर्वजगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकैहीश्रुतियोंविषे कामपूर्वक सर्वजगत्कीउत्पत्ति कथनकरी है ॥ तहांश्रुति ॥ "सोऽकामयत एकोऽहंबहुस्याम्" ॥ अर्थयह ॥ सोमायाविशिष्टपरमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषे याप्रकारकीइच्छाकरताभया ॥ एकहीमैंपरमात्मादेव बहुतरूपकरिकेउत्पन्न

पंचज्ञानइंद्रियोंके तथावाक्आदिकपंचकर्मइंद्रियोंके तादात्म्यअध्यासकरिके यहआत्मादेव तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेधर्मोंकूं आपणे विषेमानेहै ॥ अब आकाशादिकपंचभूतोंकि तादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरेहैं ॥ हेजनक ॥ आकाश वायु तेज जल पृथिवी या पंचभूतोंकेतादात्म्यअध्यासतैं यहआत्मादेव जभी भूतमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहआत्मादेव जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकूंउत्पन्नकरेहै ॥ तथा श्रोत्रादिकदशइंद्रियोंकेविषयजे शब्दस्पर्शादिकहैं ॥ तिनोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ अब अतेजकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरेहैं ॥ हेजनक ॥ अतेजरूपजाअविद्याहै ॥ ताअविद्याकेतादात्म्यअध्यास करिके यह आत्मादेव जभी अतेजोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यह आत्मादेव आपणेस्वरूपकेआवरणका तथा उत्पत्तिरूपविक्षेपका कारणहोवैहै ॥ अथवा ॥ अतेजरूपजोअंधकारहै ॥ ताअंधकारकेतादात्म्यअध्यासकरिके यहआत्मादेव जभी अतेजोमय संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहआत्मादेव निद्रास्वप्नादिकोंकाकारणहोवैहै ॥ अब कामकेतादात्म्यअध्यासकाफलनिरूपणकरेहैं ॥ हेजनक ॥ कामकेतादात्म्यअध्यासकरिके यहआत्मादेव जभी काममयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै॥ तभी यहआत्मादेव पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकाकारणहोवैहै॥तथा परिणामकालविषे दुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोविषयजन्यसुखहै तासुखका कारणहोवैहै ॥ तथा क्रीडाकेमर्कटकीन्याई स्त्रीजनोंके अधीनहोवैहै ॥ तथा पुण्य पाप कर्मकाकर्त्ताहोवैहै॥ तथा यहशुभहै यहअशुभहै याप्रकारकेज्ञानकाभी कारण होवैहै अब क्रोधकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरेहैं॥ हेजनक ॥ क्रोधकेतादात्म्यअध्यासकरिके यहआत्मादेव जभी क्रोधमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै तभी यहआत्मादेव नानाप्रकारके ब्रह्महत्यादिक पापकर्मोंकूंहीकरेहै ॥ और जैसे अग्निकेकुंडविषेस्थितहुआपुरुष॥ परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥ तैसे ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकरिके सोक्रोधवान् पुरुष कुंभीपाकादिनरकोंविषे दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ॥ यहकामक्रोधदोनों संसारकेकारणहैं ॥ यातैं तिसकामक्रोधकापरित्याग करिके यहआत्मादेव जभी अकाममय तथाअक्रोधमय संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहआत्मादेव जीवन्मुक्तअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब धर्मअधर्मरूपअदृष्टके तादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरेहैं ॥ हेजनक॥ धर्मअधर्मरूपअदृष्टकेतादात्म्यसंबंधतैं यह

चिंता भय इत्यादिकअनेकधर्मवालाहोवैहै॥तात्पर्ययह ॥ इच्छा संकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा चिंता भय इत्यादिकसंपूर्ण धर्म श्रुतिनें मनकेकहेहैं ॥ यातें जैसे यालोकमें स्त्रीविषेआसक्तजोकामीपुरुषहै ॥ सोकामीपुरुषतास्त्रीकेसुखदुःखादिकधर्मोंकूं आपणेविषे मानैहै ॥ तैसे मनकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिके यहआत्मादेव मनकेइच्छादिकधर्मोंकूं आपणेविषेमानैहै ॥ याप्रकारकीरीति आगेप्राणादिकोंकेअध्यासविषेभी जानिलेणी ॥ अब प्राणकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ प्राणकेतादात्म्यअध्यासकरिके यहआत्मादेव जबी प्राणमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तबी यहआत्मादेव प्राण अपान समान व्यान उदान नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय यादशप्रकारकेभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा अनेकनाडियोंविषेविचरणेहारेजेअनेकप्राणहैं ॥ तिनोंकेभेदकरिके सोआत्मादेवभी अनेकभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और प्राणकेसंबंधतें सोआत्मादेव ऊर्ध्वश्वासादिकव्यापारोंका तथाजीवनव्यवहारका कारणहोवैहै ॥ और प्राणकेसंबंधतें सोआत्मादेव अन्नादिकोंकाभोक्ताहोवै है ॥ तथा बलकरिकेसाध्य जेअनेककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकाकर्ताहोवैहै ॥ इसप्रकार प्राणकेतादात्म्यअध्यासतें प्राणमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोइके सोआत्मादेव संपूर्णप्राणोंकेधर्मोंकूं आपणेविषेमानैहै ॥ अब इंद्रियों के तादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यापंचज्ञानइंद्रियों केतादात्म्यसंबंधकरिके यहआत्मादेव जबी श्रोत्रमय त्वक्मय चक्षुमय रसनमय घ्राणमय याप्रकारकीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव नानाप्रकारकेशब्दोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारके कोमलकठिनादिकस्पर्शोंकूं ग्रहणकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारके नीलपीतादिकरूपोंकूं ग्रहणकरै है ॥ तथा नानाप्रकारके मधुरअम्लादिकरसोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेगंधकूंग्रहणकरैहै ॥ इसप्रकार वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यापंचकर्मइंद्रियों के तादात्म्यअध्यासकरिके यहआत्मादेव जबी वाक्मय पाणिमय पादमय पायुमय उपस्थमय याप्रकार के संज्ञाकूं प्राप्तहोवै है ॥ तभी यहआत्मादेव नानाप्रकारकेशब्दोंकाउच्चारणकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेपदार्थोंकाग्रहणकरै है ॥ तथा नानाप्रकारका गमनआगमनकरै है ॥ तथा मलादिकोंकापरित्यागकरैहै ॥ तथा स्त्रीसंभोगतें आनंदकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार श्रोत्रादिक

विभूतियां आपणेआपणेलोकोंविषे निवासकरैहैं ॥ और जोब्रह्मा प्राणरूपीपर्यंकऊपर आपणीभार्याकेसहितस्थितहुआ सर्वदा ब्रह्मलोक विषे निवासकरैहै ॥ और जोदेवराजइंद्र स्वर्गलोकविषे इंद्राणीकेसहित निवासकरैहै ॥ और जोइंद्र अग्निआदिकसर्वदेवतावोंकास्वामीहै ॥ तथा तीनलोकोंकापतिहै ॥ और पूर्वादिकदिशावोंकेअधिपति जेअष्टलोकपालहैं ॥ और पाताललोकविषेस्थित जेवासुकि तक्षक पद्मक इत्यादिकनागहैं ॥ और यामनुष्यलोकविषेस्थित जितनेकी मनुष्य पशु पक्षी कृमि आदिकजीवहैं ॥ हेजनक ॥ ब्रह्मातैंआ दिलेके कृमिपर्यंत जितनेक देहधारीजीवहैं ॥ तिनोंविषे जोसुख प्रतीतहोवैहै ॥ सोअविचारकरिकेप्रतीतहोवैहै ॥ विचारदृष्टिकरिकेदे खियेतो तिनदेहधारीजीवोंविषे किंचित्मात्रभी सुखनहीं ॥ हेजनक ॥ ब्रह्मातैंआदिलेके कृमिपर्यंत सर्वजीवोंविषे जन्ममरण तथासुखदुःख तथासुखदुःखकेसाधन तथापांचभौतिकशरीर यहसंपूर्णपदार्थ समानहीं हैं यातैं ब्रह्मातैंआदिलेके कृमिपर्यंत सर्वदेहधारी जीवोंविषेकिंचित्मात्रभी विषमतानहीं ॥ यहाँयहतात्पर्य है ॥ हिरण्यगर्भरूपब्रह्मा तथादेवराजइंद्र तथाअष्टलोकपाल तथा वासुकीआदि कनाग इसतैंआदिलेके जेमहान्पुरुषहैं ॥ तेभी शरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं जभी जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं तभी अस्मदादिकजीवों कूं शरीरकेसंबंधकरिके दुःखकीप्राप्तिहोवैगी याकेविषे क्याकहणाहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोजो विज्ञानमयआत्माहै सोसो शरीर तैंरहितहोवैनहीं ॥ और जोजो शरीरवालाहोवैहै ॥ सोसो सुखदुःखतैंरहितहोवैनहीं ॥ तहाँश्रुति ॥ नहवैसशरीरस्यसतःप्रियाऽप्रिययो रपहतिरस्ति ॥ अर्थयह ॥ जोजोशरीरधारीजीवहै ॥ ताके सुखदुःखकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ १ ॥ हेजनक ॥ याप्रकार बुद्धिकेसाथ तादात्म्य संबंधकरिके विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहआत्मादेव नानाप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनेंग्रंथकरिके बुद्धिकेतादात्म्यअध्या सकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब मनकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा मनकेतादात्म्यअ ध्यासतैं जभी मनोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहआत्मादेव नानाप्रकारकीइच्छावालाहोवैहै ॥ तथा ताइच्छाकाकारणरूप जोशुभ अशुभवस्तुकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानवालाहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेसंशयवालाहोवैहै ॥ तथा श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा

होवैहै ॥ सोपदार्थ घटादिकोंकीन्याईं नाशवान्होवैहै ॥ याकारणतैं सोविषयजन्यसुख नाशकेचिंताकीउत्पत्तिद्वारा जीवोंकिदुःखकाहीकारणहै ॥ याप्रकार ब्रह्मलोकतैंआदिलेके पातालपर्यंत सर्वलोकोंविषे याजीवोंकूं शरीरकोस्थितिकालविषे समानहींदुःखहोवैहै ॥ अब सर्वलोकोंविषे मरणकालकेदुःखकीसमानताकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ ब्रह्मलोकतैंआदिलेके पातालपर्यंत जितनेकीलोकहैं ॥ तिनलोकोंविषेस्थित जितनेकदेहधारीजीवहैं ॥ तिनजीवोंकूं आपणेआपणेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे अत्यंतआसक्तिहोवैहै ॥ और जिसजिस पदार्थविषे याजीवोंकीअत्यंतआसक्तिहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थकेवियोगतैं तिनजीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और सोप्रियपदार्थोंका वियोग दोप्रकारसैंहोवैहै ॥ एकतौ स्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेविद्यमानहुए ताभोक्तापुरुषकेमृत्युहुएतैंवियोगहोवै है ॥ और दूसरा ताभोक्तापुरुषकेविद्यमानहुएभी तिनस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेमरणतैं वियोगहोवैहै ॥ याकहणतैं यहअर्थसिद्धभया यामनुष्यलोकविषे आपणेमरणेकरिके तथास्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेमरणेकरिके याजीवोंकूं जिसप्रकारकादुःख प्राप्तहोवैहै ॥ तिसदुःखतैंअनेककोटिगुणाअधिकदुःख ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथापाताललोकविषे आपणेमरणेकरिके तथास्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेमरणेकरिके प्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ॥ जैसे यामनुष्यलोकविषे यादेहधारीजीवोंका कोईपिताहै ॥ तथा कोईमाताहै ॥ तथा कोईस्त्रीहै ॥ तथा कोईपुत्रहै ॥ तथा कोईबांधवहै ॥ तथा कोईमित्रहै तथा कोईशत्रुहै तथा कोईउदासीनहै ॥ तैसे ब्रह्मलोकादिकोंविषेभी याजीवोंके मातापितादिकअनेक संबंधीहोवैहैं ॥ तिनसंबंधियोंकेवियोगकरिके याजीवोंकूं सर्वलोकोंविषेदुःखहोवैहै ॥ अब शरीरकेतादात्म्यसंबंधविषे सर्वदुःखोंकीकारणताकूं बोधनकरणेवासते प्रथम ब्रह्मादिकदेवतावोंके महान्पणेकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यहजोहिरण्यगर्भरूपब्रह्माहै ॥ सोब्रह्मा अस्मदादिकसर्वजीवोंतैं प्रथमउत्पन्नभयाहै ॥ और मनुष्यलोकतैंआदिलेके विराट्लोकपर्यंत जितनाकीविषयजन्यसुखजीवोंकूंहोवैहै ॥ तिनजीवोंतैं सोब्रह्मा अधिकसुखवालाहै ॥ और जोब्रह्मा ऋग् यजुष् साम अथर्वण याचारिवेदोंकेसंप्रदायका प्रवर्तकहै ॥ और जोब्रह्मा याजगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकूं करणेहाराहै ॥ तथा स्वभावसिद्धब्रह्मविद्याकरिके द्वैतभावतैंरहितहै ॥ और जिसब्रह्मारूपवृक्षतैं अनेकब्रह्मांडरूप उदंबरके फल उत्पन्नहोवैहैं ॥ और जिसब्रह्माविषे तेब्रह्मांडलयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जिसब्रह्माके प्रजापतिआदिक

महान्‌उपायहै ॥ तिसमहान्‌उपायकूं मैं सिद्धकरौंगा ॥ ताउपायकरिके याशत्रुकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ अथवा ॥ याशत्रुकेसाथ मैं प्रथम मित्रताकरौंगा ॥ तामित्रताकरिके याशत्रुका जभी हमारे ऊपरविश्वासहोवैगा ॥ तभी याशत्रुकूं मैं परमदुःखकीप्राप्तिकरौंगा ॥ हे पापीजीव ॥ इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेउपायोंकूं आपणेमनविषैचिंतनकरिके तूंपरमात्मा अन्यप्राणियोंकूं शरीरकरिके तथा वाणीकरिके नानाप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरताभया ॥ याकारणतैं तेरेकूंधिकारहै ॥ हेजनक ॥ इसतैंआदिलेके नानाप्रकारकेकठोरवचनोंकरिके ते यमकिंकर तापापीजीवकानिरादरकरैहैं ॥ तिसतैंअनंतर तेयमकिंकर तिनपापीजीवोंकूं नानाप्रकारकेनरकोंविषेपावैहैं ॥ तिननरकोंविषे प्राप्तहुए तेपापीजीव अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेजनक ॥ तिनपापीजीवोंकूं केवलनरकविषेहीदुःखहोवैहै ॥ अन्यत्रतिनपापीजीवोंकूं दुःखनहींहोवैहै ॥ याप्रकारकाअर्थ तुमने निश्चयनहींकरणा किंतु तिनपापीजीवोंकूं नरकविषे जैसादुःखहोवैहै ॥ तैसाहीदुःख याशरीरकेजन्मकालविषेहोवैहै ॥ और तैसाहीदुःख याशरीरकोस्थितिकालविषेहोवै है ॥और तैसाहीदुःख याशरीरकेमरणकालविषेहोवैहै ॥ अब सर्वेलोकोंविषे जन्मकेदुःखकीसमानताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथामनुष्यलोकविषे तथापाताललोकविषे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकी समानहींउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं तिनशरीरोंकेजन्मकालका दुःखभी सर्वेलोकोंविषे समानहींहोवैहै ॥ यहां जैसे वृक्षादिकशरीर भूमिकूंउद्भेदनकरिके उत्पन्नहोवै हैं याकारणतैं तेवृक्षादिकशरीर उद्भिज्जहैं ॥ तैसे देवतावोंकेशरीरभी सूक्ष्मभूतोंकूं उद्भेदनकरिकेउत्पन्नहोवैहैं ॥ याकारणतैं तेदेवताशरीरभी उद्भिज्जहैं ॥ अब सर्वेलोकोंविषे स्थितिकालकेदुःखकीसमानताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ ब्रह्मलोकतैंआदिलेके पातालपर्यंत जितनेकीलोकहैंतिनलोकोंविषे याजीवोंकूंजोजोविषयजन्यसुखहोवैहै ॥ सोसोसुख अतिशयतादोषवालाहोवैहै ॥ याकारणतैं सोविषयजन्यसुख सर्वेलोकोंविषे ईर्ष्याकीउत्पत्तिद्वारा जीवोंकेदुःखकाहीकारणहोवै है ॥ और सोविषयजन्यसुख पराधीनहै ॥ याकारणतैं सोविषयजन्यसुखभयकी उत्पत्तिद्वारायाजीवोंकेदुःखकाहीकारणहै ॥ और सोविषयजन्यसुख कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकेजन्यहै और जोपदार्थ जन्य

जोपरपुरुषकेसमीप नहींजावैहैं ॥ याकेविषे यहचारिकारणहैं ॥ एकतोआपणामान ॥ और दूसरा लोकोंकीलज्जा ॥ और तीसरा पति आदिकोंकाभय ॥ और चतुर्थ एकांतस्थानकाअभाव ॥ याचारिप्रकारकेनिमित्तकरिके यहस्त्रियां परपुरुषकेसमीपनहींजावैहैं ॥ परंतु आपणेमनविषे यहस्त्रियां सदैवही परपुरुषोंकाचिंतनकरैहैं ॥ किंवा ॥ परपुरुषोंकूंदेखिकरिके जास्त्रीनीचे मुखकरैहै ॥ तास्त्रीकूं लोक पतिव्रताकहैहैं ॥ सो याप्रकारका पतिव्रतास्त्रीकालक्षणभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जास्त्री परपुरुषकूंदेखिके नीचेमुखकरैहै ॥ सास्त्री कामकरिके आतुरहुई आपणेमनकरिके तीनलोकवर्त्तिपुरुषोंकाध्यानकरैहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जास्त्री पतिव्रतारूपकरिके प्रसिद्धहै ॥ सास्त्री गणिकातैंभी अत्यंतव्यभिचारिणीजानणी ॥ काहेतें गणिकास्त्री आपणेसंबंधियोंसैं व्यभिचारकरैनहीं ॥ और यहस्त्रीतो आपणेसंबंधियोंसैंभीव्यभिचारकरैहै ॥ यातैं सास्त्री गणिकातैंभी अधिकव्यभिचारिणीजानणी ॥ किंवा ॥ विवेकादिकसाधनोंकरिकेयुक्तजेइंद्रादिकमहान्पुरुषहैं ॥ तिनोंकेधैर्यकूंभी जभी यहकामदेव हरणकरैहै॥तभी यामूढस्त्रियोंकेधैर्यकूं यहकामदेव हरणकरैहै याकेविषे क्याकहणाहै॥हेपापीजीव॥इसतैं आदिलेके अनेकप्रकारकीदुर्भावनावोंकरिके तूंपापात्मा तिनपतिव्रतास्त्रियोंविषे नानाप्रकारकेदूषण आरोपणकरताभया और हेपापीजीव जैसे तैलकेसंबंधकरिके वस्त्र दूषितहोवैहै ॥ तैसे यालोकविषे जितनाकी शास्त्रकरिकेप्रतिपादितधर्महै ॥ तिसधर्मविषे तूंपापात्माजीव नानाप्रकारकीकुतर्ककरिके नानाप्रकारकेदूषण आरोपणकरताभया ॥ कैसाहैसोधर्म ॥ जैसे मालाकेपुष्पोंकूं सूत्र धारणकरैहै ॥ तैसे यह धर्मरूपसूत्र जगत्रूपपुष्पोंकूंधारणकरैहै ॥ और हेपापीजीव ॥ यामनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके तूंपापात्मा ब्रह्मादिकदेवतावोंकी तथाआपणे गुरुवोंकीभी निंदाहीकरताभया ॥ और पितामातातैंआदिलेकेसंपूर्णबांधवोंका तूंपापात्मा निरादरहीकरताभया ॥ और लोभकेवशहुआ तूंपापात्मा अन्यपुरुषोंकेधनादिकपदार्थोंकूं हरणकरताभया ॥ और कामकेवशहुआ तूंपापात्मा अन्यपुरुषोंकेस्त्रियोंकूं हरणकरताभया ॥ और हेपापीजीव ॥ यामनुष्यलोकविषे तूंदुर्बुद्धि अन्यप्राणियोंकेदुःखदेणेवासते याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ इसशत्रुकूं अल्पदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोयहसुगमउपायहै ॥ तिसउपायकूं मैं प्रथमसिद्धकरिके तिसतैंअनंतर याशत्रुकूं महान्दुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोयह

तथानिद्रा यादोनोंकूंतोकरे हैं ॥ यातें तीसरेमैथुनकूंभी यहसंन्यासी अवश्यकरतेहोवेंगे ॥ किंवा ॥ यामनुष्यलोकविषे वाकइंद्रियतेंआदि लेके कोईभीइंद्रिय आपणेव्यापारतेंरहितहोवेनहीं ॥ किंतु संपूर्णवाकादिकइंद्रिय आपणेव्यापारविषे प्रवर्त्तहोवेहै ॥ यातें इनसंन्यासियों का उपस्थइंद्रिय आपणेमैथुनरूपव्यापारतेंरहितहोवे है यहवार्त्ता अत्यंतअसंभवहै ॥ किंवा ॥ वनविषे तृणोंकूंभक्षणकरणेहारे जेमृगादि कपशुहैं ॥ तिनोंकूंभी यहकामदेव आपणेवशकरिलेवेहै ॥ और जलविषेविचरणेहारेतथाजलकूंभक्षणकरणेहारे जेमत्स्यादिकहैं ॥ तिनों कूंभी यहकामदेव आपणेवशकरिलेवेहै ॥ और मृत्तिकाकूं तथापवनकूं भक्षणकरणेहारे जेसर्पादिकहैं ॥ तिनोंकूंभी यहकामदेव आपणेव शकरिलेवेहै ॥ यातें तृणादिकोंकूंभक्षणकरणेहारेमृगादिकपशुभी जभी कामतेंरहितनहींहोइसकते ॥ तभी नानाप्रकारकेअन्नादिकोंकूंभ क्षणकरणेहारे यहयुवानसंन्यासीकिसप्रकार कामतेंरहितहोवेंगे ॥ यातें यहजान्याजावेहै ॥ जैसे मार्जार मूषकोंकेपकडनेवासते ध्यानक रे है ॥ तैसे यहसंन्यासी लोकोंकेस्त्रीधनादिकपदार्थोंकेहरणकरणेवासते ध्यानलगाइकेबैठेहैं ॥ याकारणतें यहसंन्यासीदंभीहैं ॥ और यहसंन्यासी नासिकाकेअग्रभागविषे जोदृष्टिलगाइकेबैठेहैं ॥ सोभी लोकोंकेमोहकरणेवासतेंबैठेहैं ॥ मनकरिकेतो यहसंन्यासी परध नकूं तथापरस्त्रीकूं चिंतनकरतेहोवेंगे ॥ हेपापीजीव ॥ इसतेंआदिलेकेअनेकप्रकारकीदुर्भावनावोंकरिकेतुमने धर्मात्मासंन्यासियोंविषे तथानैष्ठिकब्रह्मचारियोंविषे तथावानप्रस्थोंविषे नानाप्रकारकेदूषण आरोपणकरेहैं ॥ तिनपापकर्मोंका दुःखरूपफल अभी नरकविषे तुम्हा रेकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और हेपापीजीव ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपतिव्रतास्त्रियां हैं तिनोंविषे जिसदुर्भावनाकरिकै तुमने दूषणआरोपणकरेहैं ॥ तिनआपणेदुर्भावनावोंकूं तूं श्रवणकर ॥ हेपापीजीव ॥ पतिव्रतास्त्रियोंकूंदेखिकरिकै तूंपापात्मा याप्रकारकेवचनकहताभया ॥ यामनुष्य लोकविषे यौवनअवस्थाकरिकेयुक्त ऐसीस्त्रीकौनहै ॥ जास्त्री रूपवान्परपुरुषकीइच्छानहींकरेहै ॥ किंतु संपूर्णस्त्रियां रूपवान्परपुरुषको इच्छाकरेहैं॥काहेतें यहस्त्रियां आपणेपिताकूं तथाआपणेभ्राताकूं तथाआपणेपुत्रकूंभी रूपवान्देखिके जभी कामातुरहोवेहैं॥तभीपरपुरुषकूं रूपवान्देखिके तेस्त्रियां क्योंनहींकामातुरहोवेंगी ॥ किंतु परपुरुषकूंरूपवान्देखिके यहस्त्रियां कामातुर अवश्यहोवेहैं ॥ और यहस्त्रियां

खोदे॥सोकूपकाखोदणारूप तापुरुषकाव्यापार निष्फलहै॥तैसे इसकालविषे मैं पूर्व पापकर्मोंकूंकिसवासतेकरताभया और पुण्यकर्मोंकूं मैं क्योंनहींकरताभया याप्रकारकातुमारापश्चात्ताप निष्फलहै ॥ और हेपापीजीव ॥ हमयमकिंकरभी तुमारेदुःखकेकरणेहारेनहीं हैं ॥ और सूर्यकापुत्रधर्मराजभी तुमारेदुःखकेकरणेहारानहीं है ॥ और यहश्वानगृध्रादिकभी तुमारेदुःखकेकरणेहारेनहीं हैं ॥ किंतु यामनुष्यशरीरकूंपाइके जोतुमने शरीरकरिके तथामनवाणीकरिके अन्यप्राणियोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरीहै ॥ सोतुमारापापकर्मही इहांनरकविषे तुमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरे है ॥ अब तापापीजीवकेपश्चात्तापकरावणेवासते तापापीजीवकेपूर्वलेपापकर्मोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेपापीजीव ॥ यामनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके तुमने सर्वजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरीहै ॥ तिनजीवोंविषेभी जेसाधुस्वभाववालेमहात्मापुरुषहैं तिनोंकूंविशेषकरिके तुमने दुःखकीप्राप्तिकरीहै ॥ हेपापीजीव ॥ जिनदुर्भावनावोंकरिके तुमने महात्मापुरुषोंकानिरादरकऱ्याहै ॥ तिनआपणीदुर्भावनावोंकूं तूंश्रवणकर ॥ जैसे पित्तदोषवालापुरुष श्वेतशंखकूंपीतदेखेहै ॥ तैसे कामरूपदोषकरिके दूषितहुआतूंपापात्मा सर्वजगतकूं कामीमानताभया ॥ तहां एकांतदेशविषेस्थित जेमहात्मासंन्यासीहैं तथानैष्ठिकब्रह्मचारीहैं ॥ तथा वनविषेस्थित जेवानप्रस्थहैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकूंदेखिकरिके तूंपापात्मा याप्रकारकेवचनोंकूं कहताभया ॥ जैसे मैं दिनदिनविषे अन्नपानादिकोंकाभक्षणकरताहूं ॥ याकारणतें मैं मैथुनकापरित्यागरूपब्रह्मचर्यतैंरहितहूं ॥ जैसे यहसंन्यासी तथा ब्रह्मचारी तथावानप्रस्थभी दिनदिनविषे अन्नपानादिकोंकूंभक्षणकरतेहैं ॥ याकारणतें यहसंन्यासीआदिकभी ब्रह्मचर्यतैंरहितहोहोवैंगे ॥ किंवा यहसंन्यासी एकांतदेशविषेस्थितहैं ॥ तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचविषयोंकूं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकरिकेग्रहणकरेहैं ॥ तथा यहसंन्यासी वाकादिककर्मइंद्रियोंकरिके शब्दउच्चारणादिकव्यापारोंकूंकरेहैं ॥ तथा मनकरिकैसुखदुःखकाग्रहणकरेहैं ॥ याप्रकार श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंकूंकरतेहुए यहसंन्यासी उपस्थइंद्रियकेमैथुनरूपव्यापारकूं क्योंनहींकरतेहोवैंगे ॥ किंतु मैथुनभी अवश्यकरतेहोवैंगे ॥ किंवा यालोकविषे जिसपुरुषकीवाकादिकइंद्रिय भोगभोगणेविषेसमर्थहैं ॥ सोपुरुष जबपर्यंतजीवे है तबपर्यंत आहार निद्रा मैथुन यातीनोंकापरित्यागकरेनहीं ॥ और यहसंन्यासी आहार

वासकरणेकरिकै तापापीपुरुषकूं जिसप्रकारकादुःखप्राप्तहोवैहै ॥ तैसाहीदुःख माताकेगर्भविषेनिवासकरणेतैं याजीवकूंहोवैहै ॥ और हेपापीजीव ॥ गर्भकेधारणेतैंअनंतर जोस्त्रीयोंका आपणेपुरुषकेसाथसुरतहै ॥ सोसुरत गर्भविषेस्थितबालकका तथागर्भिणीस्त्रीका तथापुरुषका यातीनोंका दुरंतहै ॥ परंतु सोदुरंत परोक्षकालविषेहोवैहै ॥ याकारणतैं लोक ताकूं दुरंतकहैनहीं ॥ किंतु सुरतकहैहैं ॥ यहाँ विषयसंभोगकानाम सुरतहै ॥ और परिणामकालविषे जोदुःखकाहेतुहोवे ताकानामदुरंतहैं ॥ और ताविषयसंभोगरूपदुरंतकूं सुरतनामकरिकेजोबुद्धिमान्पुरुष कथनकरैहैं याकेविषे यहकारणहै ॥ यालोकविषे जेशिष्टमहात्मापुरुषहैं ॥ तेमहात्मापुरुष आपणेतैंभिन्नपदार्थोंकूं किसीउत्कृष्टनामकरिकेहीकथनकरैहैं ॥ निकृष्टनामकरिकै किसीवस्तुका कथनकरैनहीं ॥ याप्रकारकेशिष्टपुरुषोंकेआचरणकूं अंगीकारकरिकै तेबुद्धिमान्पुरुष विषयसंभोगरूपदुरंतकर्मकूं सुरतनामकरिकेकथनकरैहैं ॥ अब विषयसंभोगविषे दुरंतपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं जोपुरुष गर्भिणीस्त्रीकेसाथ विषयसंभोगकरैहै ॥ तापुरुषकूं स्त्रीकेहत्याकादोष तथा बालककेहत्याकादोष प्राप्तहोवैहै ॥ और जागर्भिणीस्त्री पुरुषकेसाथ विषयसंभोगकरैहै ॥ तिसगर्भिणीस्त्रीकूं आत्महत्याकादोष तथा बालहत्याकादोष प्राप्तहोवैहै याकारणतैं गर्भिणीस्त्रीकेसाथ विषयसंभोगस्त्री पुरुष बालक यातीनोंकेदुःखकाहेतुहै ॥ और हेपापीजीव ॥ यासंसारचक्रविषेप्राप्तहोइके यद्यपि तुमने अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकऱ्याहै ॥ तथापि तिनसंपूर्णदुःखोंकूंविस्मरणकरिकै यामनुष्यशरीरविषे तूं पुनःपापकर्मोंकूंकरताभया ॥ और हेपापीजीव॥जिसशरीरकेअभिमानकरिकै तुमने पापकर्मकरैहैं सोशरीरकैसाहै॥जैसे पितामाताका विष्ठामूत्रादिकमलहोवैहै॥तैसेही तापितामाताके शुक्रशोणितरूपमल हैं ताशुक्रशोणितरूपमलतैं याशरीरकीउत्पत्तिभई है॥याकारणतैं यहशरीर पितामाताके विष्ठामूत्रादिकोंकेसमानहै॥और वर्तमानकालविषेभी यहशरीर विष्ठामूत्रादिकमलोंकरिकेपूर्ण है॥और मरणतैंअनंतर यहशरीर श्वानशृगालादिकोंकाभक्ष्यहै॥ ऐसेंनिंदितशरीरकूं तुमने आत्मारूपमानिकै लोकशास्त्रकरिकैनिषिद्धकर्मोंकूंकऱ्याहै तिनपापकर्मोंकादुःखरूपफल अभी नरकविषेतुमारेकूं प्राप्तभयाहै॥हेपापीजीव॥जैसे यालोकविषे किसीपुरुषकेगृहविषेअग्निलागे॥ और सोपुरुष ताअग्निके शांतिकरणेवासतै तिसकालविषेकूपकूं

नहीं है ॥ हेपापीजीव ॥ याप्रकारकेदारुणदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा ॥ जोमाताकेउदरकानिवासहे ॥ तानिवासकूं तुमारेसरीखेजडतैंविना दूसराकौनचेतनप्राणी सहनकरिसकेगा ॥ किंतु तुमनेहीं तागर्भकेनिवासकूं सहनकऱ्याहे ॥ हेपापीजीव ॥ जिसमाताकेउदरविषे तूं अनेक वारनिवासकरिआयाहे ॥ सोमाताकाउदर केसाहे ॥ विष्ठाकरिकै तथामूत्रकरिकै पूर्ण है ॥ याकारणतैं अत्यंतदुर्गंधहे ॥ तथा कृमिगणोंक रिकैपूर्ण है ॥ याप्रकारके माताकेउदरविषे तूंपापात्माजीव जरायुनामापटकरिकैआवृतहुआ निवासकरताभया ॥ और तामाताकेउदरविषे तूंपापात्माजीव श्वासोंकूं तथाहस्तपादादिकअवयवोंकूं चलावणेविषेभी समर्थनहींहोताभया ॥ और तामाताकेउदरविषे माताकाजठराग्नि तुमारेकूं जिसप्रकारका तापकरताभयाहे ॥ तिसतापकालेशमात्रभी यानरकविषेतापनहीं है ॥ और हेपापीजीव ॥ तामाताकेउदर विषे प्राणरूपवायुकरिकै ॥ तूंपापात्मा दशदिशावोंविषे भ्रमणकरताभया ॥ ताभ्रमणकरिकै जोजोदुःख तुमारेकूं प्राप्तभयाहे ॥ तादुःखका लेशमात्रभी यानरकविषेदुःखनहीं ॥ और हेपापीजीव माताकेउदरविषे प्रवेशकरणेतैं ॥ तथाप्रसूतिवायुकरिकै माताकेउदरसेबाहरनिकसणे तैं जोजोदुःख तुमारेकूंप्राप्तभयाहे ॥ तिसतुमारेदुःखकूं हमयमकिंकरभी कहणेकूंसमर्थनहीं हैं ॥ और हेपापीजीव जिसजिसअन्नकूं माताभो जनकरेहे ॥ तिसतिसअन्नकासूक्ष्मरस गर्भविषेस्थितबालककूंप्राप्तहोवैहे ॥ यातैं तुमारीमाताने भोजनकरेजे कटु अमल लवण कषाय तिक्त उष्ण इत्यादिकअनेकपदार्थ ॥ तिनोंकरिकै दाहकूंप्राप्तहुआतूंपापात्मा तामाताकेउदरविषे दशमासपर्यंत किसप्रकारस्थितहोता भया ॥ और हेपापीजीव ॥ जैसे किसीगृहविषे अग्नियोंकाएकशत प्रज्वलितकरिये ॥ ताअग्नियोंकरिकै सोगृह अत्यंत तपायमानहोवैहे ॥ तागृहकेसमान तपायमान जोमाताकाउदरहे ॥ ताउदरविषे सर्पोंकेसमान जेअनेककृमिहैं ॥ ताकृमियोंकरिकैभक्षणकऱ्याहुआ तूंपापात्मा दशमासपर्यंत किसप्रकार स्थितहोताभया ॥ और हेपापीजीव ॥ माताकेउदरविषे जेजेदुर्दशा तुमारेकूंप्राप्तभई हैं ॥ तिन तुमारेदुर्दशावों केकहणेविषे भयकरिकै हमाराशरीर कंपायमानहोवैहे ॥ याकारणतैं तिन तुमारेदुर्दशावोंकेकहणेकूं हमयमकिंकरभी समर्थनहीं हैं ॥ हेपापीजीव ॥ सोगर्भनिवासकादुःखकेसाहे जोकदाचित् कोईमहापापीजीव अनेकशतकोटिकल्पपर्यंतनिरंतर नरकविषेनिवासकरैहे॥तानि

तारागणरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ याकारणतैं नक्षत्ररूपतारागण मनुष्यलोकरूपअग्निकेविस्फुलिंगहैं ॥ ३ ॥ और श्रोत्रइंद्रिय जन्य जेशब्दाकारवृत्तियां हैं ॥ तेवृत्तियां पुरुषरूपअग्निकेविस्फुलिंगहैं ॥ ४ ॥ और आलिंगनादिकों तैं उत्पन्नभयेजेआनंदहैं ॥ तेआनंद योषित्‌रूपअग्निकेविस्फुलिंगहैं ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके आहुतिरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंका निरूपणकरें हैं ॥ तहां जैसे प्रसिद्धअग्निकेयवघृतादिकपदार्थ आहुति होवैं हैं ॥ तैसे श्रद्धा स्वर्गरूपअग्निको आहुतिहै ॥ यहां श्रद्धाशब्द करिकै श्रद्धाकरिकैकरेहुए जेअग्निहोत्रादिककर्म हैं ॥ तिनकर्मोंतैं उत्पन्नभया जोधर्मरूपअपूर्व है ॥ जोधर्मरूपअपूर्व याजीवात्माकेसाथ परलोकविषेजावैहै ॥ ताधर्मरूपअपूर्वका ग्रहणकरणा ॥ १ ॥ और सोधर्मरूपश्रद्धा स्वर्गविषेजाइकै ताकर्मीपुरुषके सोममयशरीर कूंरचैहै ॥ तहां भोगकीसमाप्तिकालविषेशोकरूपअग्निकरिकै सो सोममयशरीर द्रवीभावकूंप्राप्तहोइकै मेघोंविषेप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं सोजीवमिश्रितसोम मेघरूपअग्निकीआहुतिहै ॥ २ ॥ और तामेघोंतैंअनंतर सो वृष्टिरूपकरिकै यामनुष्यलोकविषेप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं सो जीवमिश्रितवृष्टि मनुष्यलोकरूपअग्निकीआहुतिहै ॥ ३ ॥ और तावृष्टितैंअनंतरअन्नरूपकरिकै सो पुरुषविषेप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं सोजीवमिश्रितअन्न पुरुषरूपअग्निकीआहुतिहै ॥ ४ ॥ और तिसपुरुषतैंअनंतर सो रेतरूपकरिकै योषित्‌विषेप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं सोजीवमिश्रितरेत योषित्‌रूपअग्निकीआहुतिहै ॥ ५ ॥ और यजमानपुरुषके इंद्रियादिककरणोंके अधिष्ठातारूपजेइंद्रादिकदेवता हैं ॥ तेइंद्रादिकदेवता स्वर्गादिकपंचअग्नियोंविषे श्रद्धादिकपंचआहुतियोंकूं हवनकरणेहारे हैं ॥ याप्रकार स्वर्गादिकपांचोंकूं अग्निरूपकरिकैध्यानकरणेहारापुरुषभी ब्रह्मलोकविषेजावैहै ॥ हेपापीजीव ॥ सोपंचाग्निविद्यारूपउपासनाभीतुमनेकरीनहीं ॥ याकारणतैंभी तुम्हारेकूं धिक्कारहै ॥ और हेपापीजीव ॥ पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं तुम्हारेकूंस्वर्गकीप्राप्तिभईथी ॥ तापुण्यकर्मका जभीभोगकरिकैनाशहुआ ॥ तभी आकाश वायु मेघ इत्यादिकमार्गकरिकै तूं भूमिलोकविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोताभया ॥ अब गर्भकेदुःखोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेपापीजीव॥माताकेउदरविषे कलिल बुद्बुद इत्यादिकअवस्थावोंकरिकै जोजोदुःख तुम्हारेकूंप्राप्तभयाहै ॥ तादुःखकालेशमात्रभी यानरकविषे

जो समिधकरिकेजन्यहोवे तथाप्रकाशकहोवे ताकानामज्वालाहे ॥ जैसे प्रसिद्धअग्निकीज्वाला काष्ठरूपसमिधकरिकेजन्यहे ॥ तथा प्रकाशकहे ॥ तैसे दिन आदित्यरूपसमिधकरिकेजन्यहे तथाप्रकाशकहे ॥ याकारणतें सोदिन स्वर्गरूपअग्निकीज्वालाहे ॥ १ ॥ और विद्युत् संवत्सररूपसमिधकरिकेजन्यहे तथाप्रकाशकहे ॥ याकारणतें सोविद्युत मेघरूपअग्निकीज्वालाहे ॥ २ ॥ और अंधकारमयरात्रि कृष्णवर्णवालीपृथ्वीरूपसमिधकरिकेजन्यहे ॥ तथा निशाचरजीवोंकूं प्रकाशकरणेहारीहे ॥ याकारणतें सोरात्रि मनुष्यलोकरूपअग्निकीज्वालाहे ॥ ३ ॥ और वाक्इंद्रिय प्रसारितमुखरूपसमिधकरिकेजन्यहे ॥ तथा अर्थकाप्रकाशकहे ॥ याकारणतें सोवाक्इंद्रिय पुरुषरूपअग्निकीज्वालाहे ॥ ४ ॥ और गोलकरूपयोनि उपस्थइंद्रियरूपसमिधकरिकेजन्यहे ॥ तथा अग्निकेज्वालासमान रक्तवर्णकरिकेप्रकाशमानहे ॥ याकारणतें सोयोनि योषितरूपअग्निकीज्वालाहे ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके अंगाररूपकरिके ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थ हैं तिनोंका निरूपणकरेहैं ॥ तहां जैसे लोकप्रसिद्धअग्निकीज्वालाकेउपशमकालविषे अंगार प्रकाशमानहोवेहैं ॥ तैसे दिनरूपज्वालाकेउपशमरूपसंध्याकालविषे पूर्वादिकचारिदिशा नानारूपकरिकेप्रकाशमानहोवें हैं ॥ याकारणतें पूर्वादिकदिशा स्वर्गरूपअग्निकेअंगारहैं ॥ १ ॥ और विद्युतरूपज्वालाकेउपशमकालविषे वज्ररूपअशनि प्रकाशमानहोवें हैं ॥ याकारणतें तेअशनि मेघरूपअग्निकेअंगारहैं ॥ २ ॥ और रात्रिरूपज्वालाकेउपशमकालविषे मंदप्रभावालाचंद्रमा प्रकाशमानहोवेहे ॥ याकारणतें सोचंद्रमा मनुष्यलोकरूप अग्निकेअंगारहैं ॥ ३ ॥ और वाक्इंद्रियरूपज्वालाकेउपशमकालविषे चक्षुइंद्रियप्रकाशकरेहे ॥ याकारणतें सोचक्षुइंद्रिय पुरुषरूपअग्निकेअंगारहैं ॥ ४ ॥ और योनिरूपज्वालाकेउपशमकालविषे मैथुनकेमध्यकालमें जोआनंदहोवे है ॥ सोआनंद योषितरूपअग्निकेअंगारहैं ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके विस्फुलिंगरूपकरिके ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थ हैं तिनपदार्थोंका निरूपणकरें हैं ॥ तहां जैसे लोकप्रसिद्धअग्निके विस्फुलिंग होवें हैं ॥ तैसे ईशानकोणतेंआदिलेके जेचारिउपदिशाहैं ॥ तेउपदिशा स्वर्गरूपअग्निके विस्फुलिंगहैं ॥ १ ॥ और मेघोंकेगर्जनारूपजेशब्दहैं ॥ तेशब्द मेघरूपअग्निकेविस्फुलिंगहैं ॥ २ ॥ और यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारेजेकर्मीपुरुषहैं ॥ तेकर्मीपुरुषही यामनुष्यलोकविषे

प्राप्तहुआ यहउपासकपुरुष पुनःभूमिलोकविषेआवैहै ॥ सोपंचाग्निविद्यारूपउपासनाभीतुमनेकरीनहीं ॥ अब पंचाग्निविद्याकूंनिरूपणकरैं हैं ब्रह्मलोककीप्राप्तिकीइच्छा जिसपुरुषकूंहोवे॥तथा अग्निहोत्र जिसपुरुषकेगृहविषेहोवे॥ऐसापुरुष पंचाग्निविद्याकाअधिकारीहै॥सोअधिकारी पुरुष स्वर्ग१मेघ२मनुष्यलोक३पुरुष४योषित्५यापांचोंका अग्निरूपकरिकेध्यानकरै॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंविषे लोकप्रसिद्धअग्निके समानधर्मोंका निरूपणकरैं हैं॥ जैसे लोकप्रसिद्धअग्निकूं काष्ठादिकप्रज्वलितकरैं हैं॥यातैं काष्ठादिक लोकप्रसिद्धअग्निकेसमिध्रहैं॥तैसेस्वर्गलोककेप्राप्तिकेसाधन जेपुण्यकर्म हैं॥तिनपुण्यकर्मोंविषे आदित्यभगवान्ही सर्वजीवोंकूंप्रवर्तकरैहैं ॥ याकारणतैंसोआदित्यभगवान्स्वर्गरूप अग्निका समिध्रहै ॥ १ ॥ और संवत्सरकरिके जलकासंग्रहकरणेहारेजेमेघहैं ॥ तेमेघ वर्षाकालविषे वृष्टिकरणेविषे समर्थहोवे हैं याकारणतैं संवत्सर मेघरूपअग्निकासमिध्रहै ॥२॥ और संपूर्णलोकोंकाआधाररूप जोयहपृथिवीहै॥ तापृथिवीकरिके यहमनुष्यलोक शोभायमानहै॥ याकारणतैं सोपृथिवी मनुष्यलोकरूपअग्निकासमिध्रहै ॥ ३ ॥ और यहपुरुष संभाषणकालविषे प्रसारितमुखकरिके शोभायमानहोवैहै ॥ याकारणतैं सोप्रसारितमुख पुरुषरूपअग्निकासमिध्रहै ॥ ४ ॥ और पुत्रादिकसंतानका जिसतैंनिर्गमनहोवैहै ॥ ऐसाजो योषित्का उपस्थ इंद्रियहै ॥ ताउपस्थइंद्रियकरिके योषित् शोभायमानहोवैहै ॥ याकारणतैं सोउपस्थइंद्रिय योषित्रूपअग्निकासमिध्रहै ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके धूमरूपकरिके ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थ हैं तिनोंका निरूपणकरैं हैं॥ जैसे लोकप्रसिद्धअग्निविषे काष्ठरूपसमिध्रतैं धूम कीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे आदित्यरूपसमिध्रतैं किरणोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं तेकिरण स्वर्गरूपअग्निका धूमहैं ॥ १ ॥ और संवत्सररूपसमिध्रतैं श्वेतमेघोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं तेश्वेतमेघ मेघरूपअग्निका धूमहैं ॥ २ ॥ और काष्ठमयपृथिवीरूपसमिध्रतैं लोकप्रसिद्धअग्निउत्पन्नहोवैहै ॥ याकारणतैं सोअग्नि मनुष्यलोकरूपअग्निका धूमहै ॥ ३ ॥ और प्रसारितमुखरूपसमिध्रतैं प्राणरूपवायुकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं सोप्राणरूपवायु पुरुषरूपअग्निका धूमहै ॥ ४ ॥ और उपस्थरूपसमिध्रतैं लोमोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं तेलोम योषित्रूपअग्निकाधूमहैं॥५॥अबस्वर्गादिकपंचअग्नियोंकेज्वालारूपकरिकेध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थ हैं तिनपदार्थोंकूंनिरूपणकरैं हैं

दक्षिण पश्चिम उत्तर याचारिदिशावोंकीतरफ ताहृदयकमलविषे चारिछिद्रहैं ॥ और पंचमछिद्र ताहृदयकमलके ऊर्ध्वभागविषेहै॥तहाँ अधिदैवरूपआदित्यकरिकेयुक्त जोचक्षुइंद्रियहैताचक्षुइंद्रियका अध्यात्मरूपप्राणआश्रयहै॥और ताअध्यात्मरूपप्राणका हृदयकमलकेपूर्व दिशाकाछिद्र आश्रयहै ॥१॥ और अग्निरूपअधिदैवकरिकेयुक्त जोवाक्इंद्रियहै ॥तावाक्इंद्रियका अध्यात्मरूपअपान आश्रयहै॥और ता अध्यात्मरूपअपानका हृदयकमलकेदक्षिणदिशाकाछिद्र आश्रयहै॥२॥ और अधिदैवरूपदिक्करिकेयुक्त जोश्रोत्रइंद्रियहैताश्रोत्रइंद्रियका अध्यात्मरूपव्यान आश्रयहै॥और ताअध्यात्मरूपव्यानका हृदयकमलकेपश्चिमदिशाकाछिद्रआश्रयहै॥३॥औरअधिदैवरूपपर्जन्यकरिके युक्तजोमनहै ॥ तामनका अध्यात्मरूपसमान आश्रयहै ॥ और ताअध्यात्मरूपसमानका हृदयकमलकेउत्तरदिशाकाछिद्र आश्रयहै॥४॥ और अधिदैवरूपआकाशकरिकेयुक्तजोवायुहै ॥ तावायुका अध्यात्मरूपउदान आश्रयहै ॥ और ताअध्यात्मरूपउदानका हृदयकमलका ऊर्ध्वछिद्र आश्रयहै ॥५॥ याप्रकारके पंचछिद्रोंकरिकेयुक्त जोहृदयकमलहै ॥ ताहृदयकमलविषे सत्यकाम सत्यसंकल्प इत्यादिकगुणों करिकेविशिष्ट जोसगुणब्रह्महै ताका जेपुरुष ध्यानकरेंहैं॥ तेपुरुषभी ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैंहैं॥ हेपापीजीव ॥ सो हृदयकमलविषे सगुणब्रह्म काध्यानभी तुमनेकर्‍यानहीं॥याकारणतैं तुम्हारेकूंधिक्कारहै॥और हेपापीजीव॥निर्गुणब्रह्मकेध्यानकीअपेक्षाकरिके सगुणब्रह्मकाध्यान अत्यं तसुगमहै ॥ सोसगुणब्रह्मकाध्यानभी जभी तुम्हारेसेनहींहोइसक्या॥ तभी निर्गुणब्रह्मकाध्यान तुम्हारेसे किसप्रकारहोवैगा॥ कैसाहैसोनिर्गु णब्रह्मजिसनिर्गुणब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं जन्ममरणादिकसंसारकेदुःख किंचित्मात्रभी प्राप्तहोवैंनहीं और हेपापीजीव पर्यंकविद्यारूपउपासनातैंआदिलेके जितनीकअहंग्रहउपासनाहैं ॥ तेअहंग्रहउपासना अंतर्मुखदृष्टिकरिके सिद्धहोवैंहैं ॥ यातैं अत्यंतक ठिनहैं ॥ याकारणतैंही तिनअहंग्रहउपासनावोंकरिके ब्रह्मलोककूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष पुनःभूमिलोकविषेआवैनहीं ॥ किंतु ताब्रह्म लोकविषेहीमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥ याप्रकारकीअहंग्रहउपासनाकूं यद्यपि तुमने कठिनजाणिकरिके नहींकर्‍या ॥ तथापि बाह्यदृष्टिकरिकेसिद्ध होनेहारी जोपंचाग्निविद्यारूपउपासनाहै ॥ सोउपासना अत्यंतसुगमहै ॥ याकारणतैंही तापंचाग्निविद्यारूपउपासनाकरिके ब्रह्मलोककूं

और संपूर्णजगत्‌काकारणरूप जेवेदकीश्रुतियाँहैंतथातिनश्रुतियोंकरिकेजन्य जेशाब्दबोधरूपज्ञानहैं।तिसंपूर्ण ताब्रह्माकेसमीप अप्सराहृप करिकेनिवासकरैहैं ॥ यहाँ वेदरूपश्रुतियोंकूंजगत्‌काकारणकह्या ॥ ताकायहअभिप्रायहै ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे सोपरमात्मादेवतिसतिस पदार्थकेनामकूंउच्चारणकरिके तिसतिसपदार्थकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तहांश्रुति सभूरित्युक्त्वाभुवमसृजत् ॥ अर्थयह ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे सोपर मात्मादेव भूःयाप्रकारकेनामकूं उच्चारणकरिके पृथिवीरूपअर्थकूंउत्पन्नकरताभया ॥ याप्रकार वेदकेशब्दोंकाउच्चारणकरिके आकाशा दिकसर्वपदार्थोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तहाँस्मृति ॥ वेदशब्देभ्यएवादौ निर्ममेसमहेश्वरः ॥ अर्थयह ॥ सोमहेश्वररूप परमात्मादेव सृष्टिके आदिकालविषे वेदकेशब्दोंतैंहीं संपूर्णजगत्‌कूंउत्पन्नकरताभया ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिप्रमाणकरिके वेदभगवान्‌विषेभी जगत्‌की कारणतासिद्धहोवैहै ॥ और ताहिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेदेशविषे नानाप्रकारकीउपासनारूपनदियां सगुणनिर्गुणब्रह्मकाज्ञानरूपजलकूंधारण करिके वहैहैं ॥ और स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णजगत् ताब्रह्माकेपुष्पहैं अथवा वस्त्रहैं ॥ इसप्रकार देवयानमार्गतैंआदिलेके ब्रह्मपर्यंत जित नीकब्रह्माकीविभूति कथनकरीहै ॥ ताविभूतिविशिष्टब्रह्माकी अहंग्रहउपासनाकरिके सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेआसनऊपरपुत्रकीन्याई शंकातैंरहितहोइके स्थितहोवैहै ॥ और ताउपासकपुरुषतैं सोब्रह्मा याप्रकारपूछैहै ॥ हेपुत्र तूकौनहै ॥ और तेरेभोगकेसाधनकौनहैं ॥ याप्रकारके ब्रह्माकेवचनकूंश्रवणकरिके सोउपासकपुरुष याप्रकारकाउत्तरकहैहै ॥ हेभगवन् जोतूं है सोईमैंहूं ॥ और जोतुमारेभोगकेसा धनहैं ॥ सोई हमारेभोगकेसाधनहैं ॥ याप्रकारकासंवाद ब्रह्माकेसाथकरिके सोउपासकपुरुष ब्रह्माकीआज्ञाकूंपाइके ब्रह्माकेसमान भोगों कूंभोगैहै ॥ और जभी ब्रह्माकीआयुष् समाप्तहोवैहै ॥ तभी सोउपासकपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकी पर्यंकविद्यारूपअहंग्रहउ पासना कौषीतकीउपनिषद्‌केप्रथमअध्यायविषेकहीहै ॥ तथा अन्यउपनिषदोंविषेभी नानाप्रकारकीअहंग्रहउपासनाकहियां हैं ॥ हेपापी जीव ॥ तुमनैं अधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइके तिनउपासनावोंकूंभीनहींकर्‍या ॥ याकारणतैं तुमारेकूंधिक्कारहै ॥ अब छांदोग्यउपनिष द्‌के तृतीयअध्यायविषे जोहृदयकमलकाध्यान कथनकर्‍याहै ताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ यापुरुषकेहृदयकमलविषे पंचछिद्रहैं ॥ तहाँ पूर्व

तैंअनंतर सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेपर्यंककूंप्राप्तहोवैहे ॥ केसाहैसोपर्यंक ॥ तावेदिकाकेऊपरस्थितहे ॥ तथा नानाप्रकारकीविचि त्रताकरिकेयुक्तहे ॥ तथा प्राणरूपहे ॥ और जिसपर्यंककूं अमितओजसनामकरिकेकथनकऱ्याहे ॥ पुनःकेसाहैसोपर्यंक ॥ भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनिकालविषेस्थित जितनाकीजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् जिसपर्यंककेपूर्वदिशाकेदोपादहैं ॥ और पृथिवी तथालक्ष्मी यहदोनों जिसपर्यंकके पश्चिमदिशाकेदोपादहैं ॥ और बृहत्नामासामवेद जिसपर्यंकके दक्षिणदिशाकेतरफकी काष्ठमयदीर्घपटिकाहे ॥ और रथं तरनामासामवेद जिसपर्यंकके उत्तरदिशाकेतरफकी काष्ठमयदीर्घपटिकाहे ॥ और भद्रनामासामवेद जिसपर्यंकके पूर्वदिशाकेतरफकी काष्ठमयलघुपटिकाहे ॥ और यज्ञायज्ञीयनामासामवेद जिसपर्यंकके पश्चिमकेतरफकी काष्ठमयलघुपटिकाहे ॥ और गीतिरूपसामकरिके युक्त जेछंदोवद्धमंत्ररूपऋचाहैं ॥ तेऋचा जिसपर्यंकके पूर्वपश्चिमकेतरफकी सूत्रमयदीर्घपटियां हैं ॥ और मंत्ररूपयजुर्वेद जिसपर्यंकके दक्षिण उत्तरकेतरफकी सूत्रमयलघुपटियां हैं ॥ और ताब्रह्माकेपर्यंकऊपर तूलकरिकेयुक्तजोउपस्तरणहे ॥ जिसकूंलोकविषेगदेलाक हैं हैं ॥ सोउपस्तरण चंद्रमाकीकिरणरूपहे ॥ और ताउपस्तरणऊपर जोश्वेतवस्त्रपाईताहे सोश्वेतवस्त्र उद्गीथनामासामवेदरूपहे ॥ और तापर्यंकऊपर मस्तकराखणेकाजोसिराणाहे॥सोसिराणा लक्ष्मीरूपहे॥यद्यपि पूर्व तापर्यंककापादरूपकरिके लक्ष्मीकाकथनकऱ्याथा॥ और अभी तापर्यंककासिराणारूपकरिके लक्ष्मीकावर्णनकऱ्याहे ॥ तथापि पूर्व लौकिकलक्ष्मीकाकथनकऱ्याहे ॥ और अभी वैदिकलक्ष्मी काकथनकऱ्याहे ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधहोवैनहीं ॥ ऐसीपर्यंकऊपर हिरण्यगर्भरूपब्रह्मा स्थितहोवैहे ॥ कैसाहैसोब्रह्मा ॥ जिसब्र ह्माके विषयजन्यआनंदतैंपरे किसीलोकविषेअधिकआनंद नहीं ॥ ऐसेब्रह्माकेलोकविषे ताब्रह्माकेप्रीतिकूंकरणेहारा सोमसवननामा अश्व त्थकावृक्षहे ॥ जिसवृक्षतैंसर्वदा अमृतस्रवताहे ॥ याकारणतैंहीं तावृक्षकानाम सोमसवनहे ॥ और ताब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकेप्रीतिकूंकरणेहारे अरनामासमुद्र तथाण्यनामासमुद्र यहदोनोंसमुद्र अमृतकरिकेपूर्णहैं॥और मनकीजननी तथासर्वजगत्काकारण जोअविद्याशक्तिहे ॥ सो अविद्याशक्ति ताब्रह्माकीप्रियभार्याहै॥और चक्षुइंद्रियकाउपादानकारणरूप जोसत्वगुणप्रधानतेजहै॥सोतेजताब्रह्माकाप्रतिबिंबरूपछायाहै॥

रलेकिनारेऊपरस्थितहुआ सोउपासकपुरुष आपणेपूर्वलेपापकर्मोंकूं द्वेषीपुरुषोंकेताई देवै है ॥ और आपणे पुण्यकर्मोंकूं सुहृद्पुरुषोंके ताई देवैहै ॥ और आपणेधनादिकपदार्थोंकूं पुत्रोंकेताई देवैहै ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मके लयहुएतैं अनंतर सोउपासकपुरुष जरामरणतैंर हितहोइकेताविजरानामानदीकूं एकक्षणमात्रविषेमनकेसंकल्पकरिकै तरिजावैहै ॥ और तिसविजरानामानदीतैंअनंतर सोउपासकपुरुष इल्यनामावृक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां ब्रह्माकेप्राप्तहोणेयोग्यजोदिव्यसुगंधहै ॥ सोसुगंध ताउपासकपुरुषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताइल्यनामावृक्ष तैंअनंतर सोउपासकपुरुष शालज्यनामास्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहांब्रह्माकेप्राप्तहोणेयोग्य जोदिव्यरसहै ॥ सोरस ताउपासकपुरुषकूंप्राप्तहो वैहै ॥ और ताशालज्यनामास्थानतैंअनंतर सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेअपराजितनामामंदिरकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां ताउपासकपुरुषविषे ब्रह्माकातेज प्रवेशकरै है ॥ तातेजकेप्रवेशकरणेतैं सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेसमान तेजवालाहोवैहै ॥ और ताअपराजितनामा मंदिरकेद्वार ऊपर इंद्रनामा तथा प्रजापतिनामा यहदोनोंद्वारपालस्थितहैं ॥ तेदोनोंद्वारपाल ताउपासकपुरुषकेताई भीतरजाणेकामार्ग देके भययुक्तपुरुषकीन्याई स्थितहोवैं हैं और तिसतैंअनंतर सोउपासकपुरुष ब्रह्माके विभुप्रमितनामा सभामंडपकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां ताउपासकपुरुषविषे ब्रह्माकायश प्रवेशकरै है ॥ तायशकेप्रवेशकरणेतैं सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेसमानयशवालाहोवै है ॥ और तासभामं डपतैंअनंतर सोउपासकपुरुष ब्रह्माके बुद्धिमयवेदिकाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जिसवेदिकाकूं श्रुतिविषे आसंदीनामकरिकेकथनकर्‍याहै ॥ यहां काष्ठादिकोंकरिकेरचित चारिपादोंवालाजोऊंचाआसनहै ताकानाम वेदिकाहै ॥ तावेदिकाकूंप्राप्तहोइके सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेसमानबु द्धिवालाहोवैहै ॥ कैसीहैसोवेदिका ॥ बृहत्नामासामवेद तथा रथंतरनामासामवेद यहदोनों जिसवेदिकाकेपूर्वदिशाकीतरफकेदोपादहैं और श्यैतनामासामवेद तथा नोधसनामासामवेद यहदोनों जिसवेदिकाकेपश्चिमदिशाकीतरफकेदोपादहैं ॥ और तावेदिकाके जोऊप रकेचारकोणहैं ॥ तिनोंविषे वैरूपनामासामवेद दक्षिणकीकोणरूपहै ॥ और वैराजनामासामवेद उत्तरकोणरूपहै ॥ और शाक्वरनामा सामवेद पूर्वकोणरूपहै ॥ और रैवतनामासामवेद पश्चिमकोणरूपहै याप्रकारकीवेदिका तासभामंडपविषेस्थितहै और तावेदिका

वोंकाग्रहणकरणा ॥ और मनुकीसृष्टिविषे जिसकीउत्पत्तिनहींहोवैहे ॥ ताकानाम अमानवपुरुषहे ॥ जिसब्रह्मलोकविषे सोउपासकपुरुष जावैहे ॥ सोब्रह्मलोककेसाहे ॥ वरुणलोक इंद्रलोकविराट्लोक यातीनोंलोकोंतैंपरेस्थितहे ॥ पुनःकैसाहैसोब्रह्मलोक ॥ आरनामा ह्रदक रिके तथा विजरानामानदीकरिके युक्तहे ॥ ऐसे ब्रह्मलोकविषे सोअमानवपुरुष ताउपासकपुरुषकूंलेजावैहे ॥ तहाँ विद्युत्लोकतैंअनंतर सोउपासकपुरुष जभी आरनामाह्रदके ओरलेकिनारेऊपरजावैहे ॥ तभी ब्रह्माकीआज्ञाकूंपाइके पंचशत ५०० दिव्यअप्सरा नानाप्रका रकेपदार्थोंकूंहस्तोंविषेलेके ताउपासकपुरुषकेसमीपआवैं हैं ॥ और तिनपंचशतअप्सरावोंविषे एकशतअप्सरावोंकातो ताउपासकपुरुष केपहरावणेवासते सुगंधीवालेपुष्पोंकीमाला हस्तविषेलेआवैं हैं॥और दूसराअप्सरावोंकाशततो ताउपासकपुरुषकेमर्दनकरणेवासते कस्तु रीकपूरादिकोंकरिकेयुक्तनानाप्रकारकातेल हस्तोंविषेलेआवैं हैं ॥ और तीसराअप्सरावोंकाशततो ताउपासकपुरुषकेभोजनकरावणेवा सते नानाप्रकारकेदिव्यफलोंकूं हस्तोंविषेलेआवैं हैं ॥ और चतुर्थअपसरावोंकाशततो ताउपासकपुरुषकेशरीरविषेलगावणेवासते नानाप्रकारकेसुगंधिवालेचूर्ण हस्तोंविषेलेआवैं हैं ॥ और पंचम अप्सरावोंकाशततो ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवासते नानाप्रकार केवस्त्र तथानानाप्रकारकेभूषण हस्तोंविषेलेआवैंहैं ॥ और तेअप्सरा जैसे दिनदिनविषे ताअलंकारोंकरिके ब्रह्माकूंशोभायमानकरैं हैं ॥ तिसीप्रकार तेअप्सरा पुष्पादिकअलंकारोंकरिके ताउपासकपुरुषकूंशोभायमानकरैं हैं ॥ इसप्रकार तिनअप्सरावोंकरिकेअलंकार युक्तकन्याहुआ सोउपासकपुरुष एकक्षणमात्रविषे मनकेसंकल्पकरिकेही ताआरनामाह्रदके पारलेकिनारेकूंप्राप्तहोवैहे ॥ ताआरनामाह्रद केपारलेकिनारेउपरिस्थित जेतीसमुहूर्तहैं ॥ जिनमुहूर्तोंकूं श्रुतिविषे येष्टिह यानामकरिकेकथनकऱ्याहे ॥ तिनतीसमुहूर्तोंकेसमीप सोउपा सकपुरुषजावैहे ॥ ताउपासकपुरुषकूं तहांआयाहुआदेखिके तेयेष्टिहनामातीसमुहूर्त तहां तैंभागिजावैं हैं ॥ यहां येष्टिह यानामकायहअर्थ है ॥ ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छावाले जेउपासकपुरुषहैं ॥ तिनोंकेउपासनाकूं नानाप्रकारकेसंकल्पकीउत्पत्तिकरिके जेहननकरैं तिनों कानाम येष्टिहहे ॥ और ताआरनामाह्रदतैंअनंतर सोउपासकपुरुष विजरानामानदीकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताविजरानामानदीकेओ

कठिनहोवैहै ॥ हेपापीजीव तायज्ञादिरूपशारीरककर्मोंकरिकैभी जभीतूं स्वर्गकूंनहींप्राप्तभया ॥ तभी उपासनारूपमानसकर्मकरिके तूंब्रह्मलोकविषेजावेगा याकेविषेक्याआशाहै ॥ अब ब्रह्मलोकके अधिकारीकानिरूपणकरैहैं ॥ हेपापीजीव ॥ याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके जेपुरुष विषयसुखतैंविरक्तहोवैहैं ॥ तथा जितइंद्रियहोवैहैं ॥ तथा यमनियमादिकसाधनोंक रिकै संपन्नहोवैहैं ॥ ऐसेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं नानाप्रकारकेउपासनावोंकूंजाणिकरिकै तिनउपासनावोंविषे पर्यंक विद्यारूपउपासनाकरिकै अथवा पंचाग्निविद्यारूपउपासनाकरिकै अथवा किसीअन्यउपासनाकरिकै तेउपासकपुरुष ब्रह्मलोककूंप्राप्त होवै हैं ॥ अब ब्रह्मलोककेस्वरूपकूं तथा ब्रह्मलोकके देवयाननामामार्गकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेपापीजीव यामनुष्यलो कविषे जेपुरुष पंचाग्नीआदिकउपासनावोंकूंकरैहैं ॥ तेउपासकपुरुष सुषुम्नानाडीरूपमार्गद्वारा दशमद्वारतैंबाहरनिकसिके प्रथम अर्चिषकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताअर्चिषतैंअनंतर तेउपासकपुरुष दिनकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और तादिनतैंअनंतर तेउपासकपुरुष शुक्ल पक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताशुक्लपक्षतैंअनंतर तेउपासकपुरुष षट्मासरूपउत्तरायणकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताउत्तरायणतैंअनंतर तेउपासकपुरुष संवत्सरकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तासंवत्सरतैंअनंतर तेउपासकपुरुष देवलोककूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और तिसदेवलोकतैंअनंतर तेउ पासकपुरुष वायुकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ कैसाहैसोवायु ॥ जैसे रथकेचक्रविषेछिद्रहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकाछिद्र उपासकपुरुषकेताईं आपणेशरीर विषेदेवैहै ॥ और तावायुतैंअनंतर तेउपासकपुरुष आदित्यकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ कैसाहैसोआदित्य ॥ जैसे डंबरनामावादित्रविशेषका मध्यका छिद्रहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकाछिद्र सोआदित्य आपणेविषे उपासकपुरुषकेताईदेवैहै ॥ और ताआदित्यतैंअनंतर तेउपासकपुरुष चंद्रमाकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ कैसाहैसोचंद्रमा ॥ जैसे दुंदुभिनामावादित्रविशेषका मध्यछिद्रहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकाछिद्र सोचंद्रमा आपणेविषेउपास कपुरुषकेताईं देवैहै ॥ और ताचंद्रमातैंअनंतर तेउपासकपुरुष विद्युतकूं प्राप्तहोवैं हैं ताविद्युतलोकविषे अमानवनामापुरुष आइके ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्मलोकविषेलेजावैहै ॥ यहाँ अर्चिष दिन शुक्लपक्ष इत्यादिकशब्दोंकरिकै अर्चिआदिकोंकेअभिमानीदेवता

जोतू बलवान्था ॥ तिसतुमारेतैं तेजीव भयकूंप्राप्तहोतेभये ॥ और हेपापीजीव ॥ यामनुष्यलोकविषे जिसजिसपुरुषकेपास सुंदरस्त्रीथी ॥ तथा गो अश्वादिकसुंदरपशुथे ॥ तथा नानाप्रकारकाधनथा ॥ तिनपुरुषोंकेस्त्रीआदिकसुंदरपदार्थोंकूं तूंपापात्मा बलात्कारसें हरणकरता भया ॥ तापापकर्मकरिकै अबी तुमारेनेत्रोंकूं तथाहृदयकूं यहगृध्रादिकपक्षी छेदनकरें हैं ॥ और हेपापीजीव ॥ यामनुष्यलोकविषे जो तुमनैं शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै दूसरेप्राणियोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरीहै ॥ सोईतुमारापापकर्म अबी तुमारेकूंदुःखदेणेवासतै तुमारेसन्मुखभयाहै ॥ और हेपापीजीव ॥ जैसे यामनुष्यलोकविषे कोईभाग्यहीनपुरुष पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं राज्यपदवीकूंप्राप्त होइकेभी ततकाल नष्टहोइजावैहै ॥ तैसे पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं याभारतखंडविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकेभी तूभाग्यहीन जीव पापकर्मकरिकै नरककूंहींप्राप्तभयाहै ॥ याकारणतैं तेरेकूंधिक्कारहै ॥ अब पापीजीवकेउद्वेगकरणेवासतै पितृलोकके पितृयाणना मामार्गकूं निरूपणकरें हैं ॥ हेपापीजीव ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष यज्ञादिकपुण्यकर्मोंकूंकरें हैं ॥ सोपुरुष यामनुष्यशरीरका परित्यागकरिकै प्रथम धूमकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताधूमतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष रात्रिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तारात्रितैंअनंतर सोकर्मीपुरुष कृष्णपक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कृष्णपक्षतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष षट्मासरूपदक्षिणायनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तादक्षिणायनतैंअनंतर सोकर्मी पुरुष पितृलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तापितृलोकतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष अंतरिक्षलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताअंतरिक्षलोकतैंअनंतर सोक र्मीपुरुष चंद्रलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताचंद्रलोकविषे देवतावोंनैं प्राप्तकरेजेनानाप्रकारकेभोग ॥ तिनभोगोंकूं सोकर्मीपुरुष चिरकालपर्यंतभो गेहै ॥ यहाँ धूम रात्रि कृष्णपक्ष इत्यादिकशब्दोंकरिकै धूमादिकोंकेअभिमानीरूपदेवतावोंकाग्रहणकरणा ॥ हेपापीजीव ॥ यामनुष्यलोक विषे तेयज्ञादिककर्म तुमनेकरेनहीं ॥ याकारणतैं तुम्हारेकूं पितृलोककीप्राप्तिभीनहींभई ॥ हेपापीजीव ॥ स्वर्गादिकलोकोंकेप्राप्तिकासा धन जेयज्ञादिककर्महैं ॥ तेकर्म यास्थूलशरीरकरिकैसिद्धहोवैहैं ॥ यातैं तेयज्ञादिक शारीरककर्महैं ॥ और ब्रह्मलोककेप्राप्तिकासाधन जेउ पासनाहैं ॥ तेउपासना मनकरिकैसिद्धहोवैहैं ॥ यातैं तेउपासना मानसकर्महैं ॥ और शारीरककर्मोंकीअपेक्षाकरिकै मानसकर्म अत्यंत

कुटंबकेपालनकरणेवासते नानाप्रकारकेपापकर्मोंकूं करणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसपापीपुरुषकूं दृढपाशोंसेबांधिकरिकै यमकिंकर नरककेमार्गविषेलेजावैहैं ॥ और तामार्गविषे तेयमकिंकर नानाप्रकारकेशस्त्रोंकरिकै तापापीजीवकूंहननकरैं हैं ॥ और यापुरुषनैं कुटंबकेपालनकरणेवासते जेजेपूर्वपापकर्मकरेथे ॥ तिनपापकर्मोंकूं वारंवार कथनकरतेहुए तेयमकिंकर नानाप्रकारकेकठोरवचनोंकरिकै तापापीजीवकूंताडनकरैं हैं अब जिनकठोरवचनोंकरिकै तेयमकिंकर तापापीजीवकानिरादरकरैं हैं ॥ तिनवचनोंकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ तापापीजीवकेप्रति तेयमकिंकर याप्रकारकेकठोरवचनकहैं हैं ॥ हेपापीजीव ॥ अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै स्वर्गकीप्राप्तिकरणेहारा तथा श्रवणादिकसाधनोंकरिकै मोक्षकोप्राप्तिकरणेहारा जोयहमनुष्यशरीरहै ॥ सो अत्यंतदुर्लभहै तिसविषेभी भारतखंडविषे मनुष्यशरीरकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै ॥ ऐसेदुर्लभमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकेभी तुमनैं किंचित्मात्रभी पुण्यकर्मकऱ्यानहीं ॥ उलटा कुटुंबकीपालनाकरणेवासतै तुमनैं नानाप्रकारकेपापकर्महीं संपादनकरे ॥ यातैं तेरेकूंधिक्कारहै ॥ और हेपापीजीव यामनुष्यशरीरकूंपाइके जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके मोहकरिकै तुमनैं पुण्यकर्मकूंसंपादननहींकऱ्या ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव कोईदुर्लभनहीं हैं ॥ किंतु यानरकशरीरविषेभी तथाश्वानादिकोंके शरीरोंविषेभी तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तुमारेकूं बहुतप्राप्तहोवैंगे परंतु सुखकेदेणेहारेजेपुण्यकर्म हैं ॥ तेपुण्यकर्म तुमारेकूं यामनुष्यशरीरतैंविना किसीभीशरीरविषे प्राप्तनहींहोवैंगे ॥ और हेपापीजीव जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके पालनकरणेवासते तुमनैं नानाप्रकारकेपापकर्मकरेथे ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव कैसेकृतघ्नहैं ॥ जोश्मशानभूमिविषे तेरेकूंएकलाछोडिकै आपणेगृहकूंजातेभयेहैं ॥ ऐसेकृतघ्नस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके पालनकरणेवासते तुमनैं अनेकप्रकारकेपापकर्मकरे हैं ॥ याकारणतैं तेरेकूंधिक्कारहै ॥ और हेपापीजीव ॥ यामनुष्यशरीरविषे कुटुंबकेपालनकरणेवासते जोजोपापकर्म तुमनैं करेथे ॥ तेपापकर्म जैसे दुःखदेणेवासते तुमारेसाथआयेहैं॥ तैसे यामनुष्यशरीरविषे जोतूं पुण्यकर्मोंकूंकरता॥ तो तेपुण्यकर्मभी सुखकेदेणेवासते तुमारेसाथआवते ॥ परंतु यामनुष्यशरीरविषे तुमनैं पुण्यकर्मकरेनहीं ॥ यातैं केवलपापकर्मके दुःखरूपफलकूं तूं अभीभोग ॥ और हेपापीजीव ॥ जैसे व्याघ्रतैं जीवोंकूंभयकीप्राप्तिहोवैहै॥ तैसे दूसरेप्राणियोंकेधनादिकपदार्थोंकूं हरणकरणेहारा

दुःखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और हेजनक ॥ अधर्मकरिकेकुटुंबकूंपालनकरणेहाराजोपुरुषहै तिसकूं तथा ताकेस्त्रीपुत्रादिककुटुंबकूं गृध्रादिकपक्षी आपणेमुखमेंलेके आकाशविषेउडें हैं ॥ तहाँ दूरआकाशविषेजाइके तिनपापीजीवोंकूं नीचेगेडहैं ॥ इसप्रकार दूरआकाशतैंनीचेगिरेहुए तेपापीजीव कभीतौ अग्निकेकुंडविषेपडें हैं ॥ और कभी मूषकादिकजीवोंकरिकेपूर्ण जेजलकेस्थानहैं तिनोंविषेपडें हैं ॥ और कभी पाषाणकीभूमिविषेपडें हैं ॥ और कभी अगाधजलविषे पडें हैं ॥ और कभी महान्वायुकेकुंडविषेपडें हैं ॥ और कभी विष्ठामूत्रादिकोंकेकुंड विषेपडें हैं ॥ इसतेंआदिलेके अनेकमलिनस्थानोंविषेपडें हैं ॥ और भूमिविषेपडेहुए तिनपापीजीवोंकूंभक्षणकरणेवासते तेश्वानगृध्रादिक जंतु परस्पर आकर्षणकरें हैं ॥ कभी तिनपापीजीवोंकूं तेश्वानादिक समानभूमिविषेलेजावें हैं ॥ और कभी विषमभूमिविषेलेजावें हैं ॥ याप्रकारकोदुर्गतिकूंप्राप्तहुए तेपापीजीव शरीरकरिके तथामनकरिके परमदुःखकूंप्राप्तहोवें हैं ॥ और जैसे कृमियुक्तश्वानका लोक निरादर करें हैं ॥ तैसे नरकविषे तिनपापीजीवोंका संपूर्णप्राणी निरादरकरें हैं ॥ हेजनक अधर्मकरिके कुटंबकूंपालनकरणेहारापुरुष इसतें आदि लेके अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं सहनकरताहुआ कुटंबसहित अथवा एकलाही यमलोककेमार्गकूंप्राप्तहोवेहै ॥ कैसाहैसोयमलोककामार्ग ॥ यहसूर्यभगवान् द्वादशमूर्तिकूंधारणकरिके जिनमार्गोंविषे तप्तकरेहै ॥ और अग्निकरिकेतपायेहुए जेलोहादिकधातुहैं तिनोंकरिके तेमार्ग जडेहुएहैं ॥ और अग्निकोज्वालाकरिके तेमार्गव्याप्तहैं ॥ और जिनमार्गोंविषे कोईजलनहीं है ॥ तथा कोईवृक्षनहीं है ॥ हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जेपुरुष शरीरकरिके तथामनकरिके तथावाणीकरिकेजीवोंकूं दुःखकोप्राप्तिकरेहैं ॥ तेपापीपुरुष यमकिंकरोंकरिकेताडनकरेहुए याप्रकारकेभयानकमार्गोंकूं प्राप्तहोवें हैं ॥ तामार्गकेचलनेकरिके तेपापीजीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवें हैं ॥ और हेजनक॥ जैसे यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष चोरीआदिकपापकर्मोंकूंकरेहै॥तापुरुषकूं राजाकेभृत्य दारुणपाशोंसे बांधिके राजद्वारविषेलेजावें हैं॥और तेराजाकेभृत्य तापापीपुरुषकेशरीरविषे नानाप्रकारकेशस्त्रोंकाप्रहारकरेंहैं और तापापीपुरुषनें महाराजाका तथाअन्यलोकोंका जोजोअपराधकऱ्याहै ॥ ताअपराधकूं वारंवार कथनकरतेहुए तेराजाकेभृत्य तापापीपुरुषकूं कठोरवचनोंकरिकेताडनकरें हैं तैसे यामनुष्यलोकविषे स्त्रीपुत्रादिक

के पुनःतिसीपापकर्मकूंकरैहै ॥ तापुरुषका सोपापकर्म प्रायश्चित्तकरिकैनिवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे हस्ती जलविषेस्नानकरिकै पुनः आपणेमस्तकविषेमृत्तिकापावैहै ॥ यातैं सोहस्तीकास्नान निष्फलहै ॥ तैसे जोपुरुष किसोपापकर्मकोनिवृत्तिवास्तै प्रायश्चित्तकूंकरिकै पुनःतिसीपापकर्मकूंकरैहै ॥ तापुरुषका सोप्रायश्चितभी निष्फलहीहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ पापकर्मके प्रायश्चित्ततैंरहित जेपापीपुरुषहैं तथा स्त्रियांहैं तथानपुंसकहैं ॥ तेसंपूर्णपापीजीव मरिकैनरकविषे अवश्यदुःखकूंभोगैंहैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ नाऽभुक्तं क्षीयतेकर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥ अर्थयह ॥ आत्मज्ञानतैं तथाप्रायश्चित्ततैं रहितजोपुरुषहै ॥ ताअज्ञानीपुरुषके पुण्यपापरूपकर्म अनेककोटिकल्पोंकरिकैभी भोगतैंविना क्षयहोवैंनहीं ॥ किंतु भोगकरिकैही तिनपुरुषोंकेकर्मोंकाक्षयहोवैहै ॥ १ ॥ और हेजनक ॥ ब्रह्महत्यादिक पापकर्मोंकूंकरणेहारामहापातकीपुरुष तथाकरावणेहारापुरुष जिसप्रकारकेनरकदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनमहापातकीपुरुषोंकेसाथ एकवर्षपर्यंत जोपुरुषसंगकरैहै॥सोपुरुषभी मरिकैनरकविषे तिसीप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे वादविवादतैंरहितजे स्वभाववालेप्राणीहैं ॥ तिनप्राणियोंकूं जोनिर्दयपुरुष हननकरैहै ॥ सोनिर्दयपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी जिसप्रकारकेजीवोंकूं तानिर्दयपुरुषनैं पूर्व हननकन्याथा ॥ तिसीप्रकारकेजीव नरकके मार्गविषे तापापीजीवके प्राणोंकारोधनकरैं हैं ॥ तथा नानाप्रकारकेशस्त्रोंकरिकै तापापीजीवकेशरीरकाछेदनकरैं हैं ॥ तथा तीक्ष्णदांतोंकरिकै तापापीजीवकाछेदनकरैं हैं ॥ तथा तीक्ष्णखुरोंकरिकै तथा तीक्ष्णशृंगोंकरिकै तापापीजीवकेशरीरकाछेदनकरैहैं तथा लोहकेमुद्गरोंकरिकै तापापीजीवकेमस्तककूंभेदनकरैं हैं ॥ ताकरिकै सोपापीजीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष मांसकूंभक्षणकरैहै सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी तापापीपुरुषकेमांसकूं श्वानगृध्रादिकजंतु भक्षणकरै हैं ॥ताकरिकै सोपापीजीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥और हेजनक॥यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष छलकपटसैं परायेधनकाहरणकरिकै आपणे स्त्रीपुत्रादिककुटुंबकापालनकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहैतभी तापुरुषकेसन्मुख ताकेस्त्रीपुत्रादिकप्रियबांधवोंकूं श्वानगृध्रादिकजंतु भक्षणकरैंहैं ॥ तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेभक्षणकूंदेखिकैसोपुरुष परम

तबपर्यंत यहपुरुष आपणीइच्छाकरिकै किसीपापकर्मकूंनहींकरै ॥ याप्रकारकेअर्थविषेहीं तिनवचनोंकातात्पर्य है ॥ यातैं पापकर्मकेभय तैं यापुरुषनैं आत्महत्याकदाचित्भीनहींकरणी ॥ और जोपुरुष पापकर्मकोभयतैं आत्महत्याकरैहै ॥ तापुरुषकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहाँश्रुति ॥ असुर्यानामतेलोका अंधेनतमसावृताः ॥ मृत्वातानभिगच्छंति येकेचात्महनोजनाः ॥ अर्थयह ॥ जेपुरुष आपणेआत्माकाहननकरैहैं ॥ तेपुरुष मरिकरिकै अविवेकीपामरपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य तथाअंधकारकरिकै आवृत जेतामसीलोकहैं ॥ तिनलोकोंकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ १ ॥ याश्रुतिनैं आत्महत्यारेपुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिकथनकरीहै॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥प्रयोजकपुरुष तथाप्रयोज्यपुरुष तथाअनुमंतापुरुष यातीनोंकूं पापकर्मकादुःखरूपफल अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ परंतु सोदुःखरूपफल रोगादिकआपदावोंकीन्यूनअधिकताकरिकै तिनप्रयोजकादिकपुरुषोंविषे न्यूनअधिकभीहोवैहै॥यहाँ दूसरेपुरुषकूं पापकर्मविषे प्रवर्त्तकरणेहाराजोपुरुषहै ॥ तापुरुषकानाम प्रयोजकहै ॥ और दूसरेकिसीबलवान्पुरुषनैं प्रवर्त्तकऱ्याहुआजोपुरुष रागपूर्वकतापापकर्मविषे प्रवर्त्तहोवै है ॥ तापुरुषकानाम प्रयोज्यहै ॥ और जोपुरुष दूसरेपुरुषकूं पापकर्मतैंनिवृत्तकरणेविषेसमर्थहोवै ॥ और तापुरुषकूं पापकर्मतैंनिवारणनहींकरै है ॥ तापुरुषकानाम अनुमंताहै ॥ यातीनोंकूं पापकर्मकेफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं जिसपुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकीइच्छाहोवै ॥ तिसपुरुषनैं आप पापकर्मकूंकरणानहीं ॥ और दूसरेपुरुषकूंप्रेरणाकरिकै पापकर्मकूंकरावणानहीं ॥ और जोआपणासामर्थ्यहोवै ॥ तोदूसरेपुरुषकूंभी पापकर्मतैंनिवारणकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पापकर्मकेकरणेहारापुरुष नरकविषेजाइकै तिनपापकर्मोंकेदुःखरूपफलकूं अवश्यभोगैहै ॥ याप्रकारकानियम पूर्व आपनैंकथनकऱ्या ॥ सोनियम संभवैनहीं ॥ काहेतैं धर्मशास्त्रविषे दुःखरूपफलकेभोगतैंविनाहीं प्रायश्चित्तकरिकै पापकर्मकीनिवृत्ति कथनकरीहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जोपुरुष व्यामोहकरिकै अथवा भ्रमकरिकै अथवा आपदाकरिकै किसीपापकर्मकूंकरैहै ॥ तापुरुषकेपापकर्मकीनिवृत्तिवासते धर्मशास्त्रनैं प्रायश्चित्तोंकाविधानकऱ्याहै ॥ और ताप्रायश्चित्तकरिकैभी तापुरुषकापापकर्म तबी निवृत्तहोवैहै ॥ जबी सोपुरुष तिसपापकर्मकूं पुनःकदाचित्नहींकरैहै ॥ और जोपुरुष तिसपापकर्मकीनिवृत्तिवासते प्रायश्चित्तकूंकरि

ब्रह्महत्यातैंआदिलेके जितनेकीपापकर्म हैं ॥ तिनसंपूर्णोंतैं आत्महत्या अधिकहै॥यातैं जोपुरुष व्यभिचारादिकअल्पपापकर्मोंकेभयतैं आत्महत्यारूप महान्पापकर्मकूंकरे है ॥ सोपुरुष केसामूढहै ॥ जैसे यालोकविषे कोईमूढपुरुष वृश्चिककेदंशकीभयतैं भागिके सर्पकेदंशकूं प्राप्तहोवै ॥ तापुरुषकेसमानहै ॥ यातैं आपणेशरीरकानाशकरिकेभी यहपुरुष पापकर्मतैंनिवृत्तहोवे ॥ याप्रकारकाकहणा अत्यंतअसंगतहै ॥ उलटा जिसस्थलविषे किसीपापकर्मकेनकरणेकरिकें आपणामृत्युहीनिश्चयहोताहोवे ॥ तिसस्थलविषे सोपुरुष आपणेशरीरकीरक्षाकरणेवासते निःशंकहोइके तापापकर्मकूंकरे ॥ हेजनक ॥ यासिद्धांतपक्षविषे तेशास्त्रवेत्तामुनि याप्रकारकीयुक्तिभीकहैं हैं ॥ जिसपुरुषकी जापापकर्मकेकरणेविषे आपणीइच्छाहैनहीं ॥ और कोईबलवान्पुरुष बलात्कारसें तापुरुषकूं तिसपापकर्मविषेप्रवर्त्तकरैहै ॥ तापापकर्मकाफल करणेहारेपुरुषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु करावणेहारेपुरुषकूंहीं तापापकर्मकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ और सोपापकरणेहारापुरुष जभी तापापकर्मकेकरणेतैंभयकूंप्राप्तहोइके आपणेमरणकूंसंपादनकरैहै ॥ तभी ताआत्महत्याकाफल करणेहारेपुरुषकूंहीं प्राप्त होवैहै ॥ पापकर्मकेकरावणेहारेपुरुषकूं ताआत्महत्याकाफल प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं तापापकर्मकेकरावणेहारेपुरुषनेतो तापुरुषकूं तापापकर्मकेकरणेविषे प्रेरणाकरीहै ॥ आत्महत्याकरणेविषे प्रेरणाकरीनहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ पापकर्मकीनिवृत्तिवासते यापुरुषनें आपणेमरणकूंछोडिके दूसरेसर्वउपायकरणे ॥ आपणेमरणकूंकदाचित्नहींकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ शास्त्रविषेतो पापकर्मका सर्वथा निषेधकऱ्याहै ॥तहांश्लोक॥ अकर्त्तव्यं नकर्तव्यं प्राणैःकंठगतैरपि ॥ कर्त्तव्यमेव कर्त्तव्यं प्राणैःकंठगतैरपि ॥अर्थयह॥ जबपर्यंत यापुरुषोंके कंठविषेप्राणस्थितहै ॥ तबपर्यंत यापुरुषोंनें नकरणेयोग्यपापकर्म कदाचित्नहींकरणा ॥ और करणेयोग्यजोपुण्यकर्म है तिसकूं तबपर्यंत करणा ॥ १ ॥ इत्यादिकशास्त्रोंविषे सर्वथापापकर्मकानिषेधकह्याहै ॥ यातैं मरणतैं याशरीरकीरक्षाकरणेवासतै यापुरुषनें पापकर्मकूंभी करणा॥याप्रकारकाकहणा शास्त्रसैंविरुद्धहोवैहै॥समाधान॥हेजनक॥किसीबलीपुरुषनें पापकर्मविषेप्रवर्त्तकऱ्याहुआ यहपुरुष आपणेमरणकूं संपादनकरिकेभीतापापकर्मतैंनिवृत्तहोवे ॥ याप्रकारकेअर्थविषे तिनवचनोंकातात्पर्यनहीं ॥ किंतु जबपर्यंत यापुरुषकेकंठविषेप्राणस्थितहै

कर्मकेकरणेहारेस्त्रीपुरुषकूं तथा पापकर्मविषेप्रवर्त्तकरणेहारेस्त्रीपुरुषकूं समानहीहोवैहै ॥ और जभी किसीस्त्रीकी तथाकिसीपुरुषकी व्यभि
चारकरणेविषे आपणीइच्छाहोवैनहीं ॥ और दूसराकोईबलवान्पुरुष बलात्कारसैं तिनोंकूं व्यभिचारकर्मविषेप्रवर्त्तकरै ॥ तभी तास्त्रीकूंत
थापुरुषकूं ताव्यभिचारकर्मकाफल प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु बलात्कारसैं तापापकर्मकूंकरावणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसीकूंहीं ताव्यभिचाररूप
कर्मकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ परंतु याकेविषेभीइतनीविशेषताहै॥जास्त्रीकी तथापुरुषकी व्यभिचारकर्मकरणेविषे आपणीइच्छाहोवैनहीं॥ और
किसीबलवान्पुरुषने तिनोंकूं व्यभिचारकर्मविषे प्रवर्त्तकऱ्या॥तहाँ॥सोस्त्री तथापुरुष ताव्यभिचारकर्मके निवृत्तिकेउपायकूंनकरिके ताव्य
भिचारकर्मविषे जोकदाचित्प्रवर्त्तहोवै॥तो तिसस्त्रीकूंतथापुरुषकूं ताव्यभिचारकर्मकाफल प्राप्तहोवैहै॥परंतु ताव्यभिचारकर्मकेकरावणेहारे
पुरुषकूं अधिकफलहोवैहै॥और करणेहारेकूंअल्पफलहोवैहै ॥ यालोकविषे व्यभिचाररूपपापकर्मविषे विशेषकरिकेलोकोंकी प्रवृत्तिदेखने
मेंआवैहै ॥ याकारणतैं व्यभिचाररूपपापकर्मविषे दुःखरूपफलकीव्यवस्थादिखाई है यातैं याप्रकार कर्मकेफलकीव्यवस्था हिंसादिकसर्व
पापकर्मोंविषे बुद्धिमान्पुरुषोंनैंजानिलेणी ॥ अब पापकर्मतैंनिवृत्तिकेउपायकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ कोईकशास्त्रवेत्तामुनितो याप्र
कारका कथनकरैं हैं ॥ किसीबलवान्पुरुषनैं अन्यकिसीपुरुषकूं अथवा किसीस्त्रीकूं बलात्कारसैंकिसीपापकर्मविषे प्रवर्त्तकऱ्या ॥ तापाप
कर्मकीनिवृत्ति जोकिसीदूसरेउपायतैंनहींहोतीहोवै ॥ तो सोपुरुष अथवा सोस्त्री तापापकर्मतैंनिवृत्तहोणेवासतै आपणेशरीरकाभी परित्या
गकरिदेवै ॥ परंतु तापापकर्मकूंनहींकरै ॥ और जोकदाचित् सोपापकर्मकेकरावणेहारापुरुष तिनोंकूंमरणेकाउपायभी नहींकरणेदेवै ॥ तो
तापापकर्मकाफल करणेहारेपुरुषकूं तथास्त्रीकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु बलात्कारसैं तापापकर्मकूंकरावणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसकूंहीं तापाप
कर्मकाफलप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मरणपर्यंत पापकर्मकेनिवृत्तिकाउपाय जीवोंनैंकरणा ॥ याप्रकार कोईशास्त्रवेत्तामुनि कथन करैं हैं ॥ और
हेजनक॥ शास्त्रकेयथार्थतात्पर्यकूंजानणेहारेजोकोईमुनिहैं ॥तेतो याप्रकारका कथनकरैं हैं ॥ बलात्कारसैं प्राप्तभयाजोपापकर्म है ॥ ताके
निवृत्तिकरणेवासतै यापुरुषनैं मरणरूपउपायकूंछोडिके दूसरेसर्वउपायकरणे॥ मरणरूपउपायकूं यापुरुषनैं कदाचित्नहींकरणा ॥ काहेतैं

केफलकीप्राप्ति अंगीकारकरैं हैं ॥ यातैं पशुपक्षियोंकूंभी जभी पुण्यपापकर्मकाफलहोवै है॥ तभीपत्नीरूपकरिकै यज्ञादिककर्मोंकेअधिकारीजेस्त्रियां हैं ॥ तिनस्त्रियोंकूं पुण्यपापरूपकर्मकाफलहोवैहै ॥ याकेविषे क्याकहणाहै॥शंका हेभगवन् ॥ पत्नीरूपकरिकै यज्ञकाअधिकारी जोस्त्रीहै ॥ तास्त्रीकूं यद्यपि यज्ञादिकपुण्यकर्मोंकेफलकीप्राप्तिसंभवैहै ॥ तथापि तास्त्रीकूं पापकर्मकेफलकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जोकदाचित् स्त्री केवलपुण्यकर्मकेफलकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ और पापकर्मकेफलकूंनहींप्राप्तहोतीहोवै ॥ तौस्त्रीकापाणिग्रहणकरणा व्यर्थहोवैगा ॥ काहेतैं विवाहकालविषे पुरुष याप्रकारकावचनउच्चारणकरिकै स्त्रीकेपाणिकूंग्रहणकरैहै ॥ त्वंममधर्मार्थोसहायनस्याः ॥ अर्थ यह॥हेपत्नी तूं मेरेधर्मविषे तथा अधर्मविषे तथाअर्थविषे तथाकामविषे हमारेसमान फलकाभागीहोव ॥ याप्रकारकावचनउच्चारणकरिकै सोपुरुष तास्त्रीकापाणिग्रहणकरैहै ॥ सो व्यर्थहोवैगा ॥ यातैं पुण्यकर्मकेफलकीन्याईं सोस्त्री पापकर्मकेफलकूंभी अवश्यभोगैहै ॥किंवा॥या लोकविषे जोपुरुष जिसपुरुषकेशुभकर्मकेफलकूंभोगैहै ॥ सोपुरुष तापुरुषके अशुभकर्मकेफलकूंभी अवश्यभोगैहै ॥ जैसे यालोकविषे महाराजाकेपुण्यकर्मकाफलजोराज्यसंपदाहै ॥ तासंपदाकूं जेपुरुष भोगैहैं ॥ तेपुरुष महाराजाकेपापकर्मकाफल जोआपदाहै ताकूंभी अवश्यभोगैं हैं ॥ पापकर्मकेफलकापरित्यागकरिकै केवलपुण्यकर्मकाफल कोईप्राणी भोगैनहीं ॥ तैसे जोस्त्री पतिकेपुण्यकर्मकेफलकूंभोगैहै ॥ सोस्त्री पतिकेपापकर्मकेफलकूंभी अवश्यभोगैगी ॥ इतनैंकरिकै यहअर्थसिद्धभया ॥ पुरुष अथवास्त्री अथवा नपुंसक जोजोप्राणी पापकर्मकूंकरैहै ॥ सोसोप्राणी मरिकैनरकविषे दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब पापकर्मविषे दूसरेकूंप्रेरणाकरणेहारे जेजीवहैं ॥ तिनोंकेदुःखोंकानिरूपण करैं हैं ॥ हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोस्त्री अथवा पुरुष अन्यकिसीस्त्रीकूं अथवा अन्यकिसीपुरुषकूं बलात्कारसैं पापकर्मविषेप्रवर्त्त करैं हैं ॥ तापापकर्मकाफल करणेहारीस्त्रीकूं तथापुरुषकूं होवैनहीं ॥ किंतु तापापकर्मविषे प्रवर्त्तकरणेहारीजोस्त्रीहै अथवा पुरुषहै ॥ तिनोंकूंहीं तापापकर्मकाफलहोवैहै ॥ और जहां किसीस्त्रीनैं अथवाकिसीपुरुषनैं अन्यकिसीस्त्रीकूं अथवा अन्यकिसीपुरुषकूं किसीपापकर्मविषेप्रवर्त्तकर्‍याहोवै ॥ और तापापकर्मविषे तास्त्रीकी तथापुरुषकी आपणीभी इच्छाहोवै ॥ तास्थलविषे तापापकर्मकाफल तापाप

हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष एकतिलप्रमाणभी ब्राह्मणकेसुवर्णकीचोरीकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यमकिंकर तापुरुषकी सुवर्णकेसमानउज्ज्वल तथासघन ऐसीत्वचावनाइकै ॥ तात्वचाकूं तिलतिलप्रमाणकरिकैछेदनकरैं हैं ॥ ताकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष आपणेगुरुकीस्त्रीकेसाथ तथाआपणीमाताकेसाथ मैथुनकरै है ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी यमकिंकर तापुरुषकेउपस्थकूंछेदनकरै हैं ॥ और ताउपस्थकूं तापुरुषकेमुखविषे देकै ताकेप्राणोंकानिरोधकरैं हैं ॥ और जिसप्रकार तादुष्टपुरुषनें पूर्व गुरुकीस्त्रीकेसाथ आलिंगनकराथा तिसप्रकार यमकिंकर लोहेकी स्त्रीकूंअग्निविषेतपाइकै तालोहेकीस्त्रीकेसाथ तादुष्टपुरुषकूं आलिंगनकरावैं हैं ॥ ताकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष परस्त्रीकेसाथ मैथुनकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै॥ तभी तापुरुषकूं गुरुकीस्त्रीगामीपुरुषतैं किंचित्न्यूनदुःखकीप्राप्तिहोवैहै॥ तात्पर्ययह॥परस्त्रीगामीपुरुषके उपस्थकाछेदन यमकिंकरकरैंनहीं॥किंतु तापरस्त्रीकेसमान लोहेकीस्त्रीकूं अग्निविषेतपाइकै तालोहेकीस्त्रीकेसाथ तापुरुषकूंआलिंगनकरावैहै ॥ ताकरिकै सोपरस्त्रीगामीपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक॥ जैसे परस्त्रीकेगमनतैं सोव्यभिचारीपुरुष नरकविषेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे साव्यभिचारिणीस्त्रीभी परपुरुषकेगमनतैं नरकविषेदुःखकूं प्राप्तहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पुण्यपापकर्मकेफलकूंबोधनकरणेहारे जेश्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रहैं ॥ तिनशास्त्रोंविषे पुरुषकानामलेकेहीं पुण्यपापकर्मकेफलकाकथनकरयाहै ॥ स्त्रीकानामलेके पुण्यपापकर्मकाफल किसीशास्त्रविषेकथनकर्‍यानहीं॥ यातैं यहजान्याजावैहै॥ स्त्रीकूं पुण्यपापकर्मकाफलहोवैगानहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ स्त्रीकूं तथानपुंसककूं पुण्यपापकर्मकाफलनहींहोवैहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै शास्त्रविषे पुरुषनामकाग्रहणनहींकर्‍या ॥ किंतु पुरुष स्त्री नपुंसक यातीनोंशरीरोंविषे पुरुषशरीर प्रधानहै ॥ यातैं पुरुषनामके ग्रहणतैं स्त्रीनपुंसककाभी अर्थतैंग्रहणहोइसकैहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै शास्त्रविषेपुरुषनामकाग्रहणकर्‍याहै ॥ यातैं पूर्वउक्तपापकर्मोंकाफल जैसेपुरुषभोगैहै ॥ तैसे स्त्री तथानपुंसक दोनोंभोगैं हैं ॥ हेजनक ॥ कोईशास्त्रवेत्तामुनितो पशुपक्षीआदिकोंकूंभी पुण्यपापकर्म

प्राप्तिकरणीहै ॥ तेपापकर्म ताशरीरकूंनाशहोणेदेवैंनहीं ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे यापुरुषनैं अन्यकिसीप्राणीकूं जिसशरीरकरिके जिसमनकरिकै जिसवाणीकरिके जैसेदुःखकीप्राप्तिकरीहै ॥ सोपुरुष जभी नरकविषेजावैहै॥तभी तापुरुषकूं सोअन्यप्राणी तिसीशरीरकरिके तिसीमनकरिके तिसीवाणीकरिके तिसदुःखतैंकोटिगुणाअधिकदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ इतनेंकरिके सामान्यतैंनरकदुःखोंकानिरूपणकरा अब विशेषकरिके तिनदुःखोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष मार्गविषे चोरीआदिकउपद्रवोंकूंकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी तापुरुषकाअत्यंतसमीपमार्गभी कोटियोजनपरिमाणविस्तारवालाहोवैहै ॥ तिसमार्गविषेचलताहुआयहपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष पादत्राणकीचोरीकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी तापुरुषकेपादोंविषे विषयुक्तलोहेकेतीक्ष्णकंटकलागैहैं॥ ताकरिके यहपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष अन्नकी तथाजलकी चोरीकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोपुरुष क्षुधाकरिके तथातृषाकरिके परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष वस्त्रोंकीचोरीकरैहै ॥ अथवा जोपुरुष आपणेमातापितादिकवृद्धोंकेसमीप बालकभावसैंनहींरहैहै ॥ किंतु अहंकारीहोइकैरहैहै॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै॥तभी तापुरुषकेवस्त्रोंकूं यमकेदूत हरणकरैहैं ॥ ताकरिके सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष सुवर्णकीचोरीकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी तापुरुषकीसुवर्णकीत्वचावनाइके यमकिंकर तापुरुषकेत्वचाकाछेदनकरैं हैं ॥ ताकरिके सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष ब्राह्मणकूं हननकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी जैसेलोहकारपुरुष लोहेकेमुदगरकरिके तप्तलोहेकूं ताडनकरैहै ॥ तैसे यमकिंकर लोहेकेमुदगरोंकरिकेताब्रह्महत्यारेपुरुषकेमस्तककूं ताडनकरैं हैं ताकरिके सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष मदिरापानकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यमकिंकर तापुरुषकेमुखविषे मदिराकूंतपाइकेपावैं हैं ॥ कैसाहै सोमदिरा अग्निकेसंबंधतैं द्रवीभावकूंप्राप्तहुएलोहेकेसमानहै ऐसेमदिराकेपडनेकरिके सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और

अत्यंतनिकृष्टमानैहै ॥ और यहजीवात्मा पापकर्मकेक्षयहुए जभी ताश्वानशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तभी यहजीवात्मा ताश्वानशरीरकूंभी अत्यंतनिकृष्टमानैहै ॥ इसप्रकार जिसजिसशरीरकूं यहजीवात्मापरित्यागकरैहै ॥ तिसतिसशरीरकूं यहजीवात्मा श्वानकेविष्ठासमान अत्यंतनिकृष्टमानैहै ॥ और हेजनक ॥ यहविज्ञानमयआत्मायास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै ब्रह्मातैंआदिलेकै श्वानपर्यंत जिसजिसशरी रकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसशरीरकेआहारोंकूं तथा स्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूं सर्वतैं अधिककरिकैमानैहै ॥ और हेजनक॥यहविज्ञानमयआत्मा जभी यास्थूलशरीरविषे आत्माबुद्धिकरैहै ॥ तभी तास्थूलशरीरकेदाहतैं आपणादाहमानैहै ॥ और स्थूलशरीरकेचंदनादिकपूजनतैं आप णापूजनमानैहै ॥ और स्थूलशरीरकेजन्ममरणतैं आपणाजन्ममरणमानैहै ॥ इसप्रकार शरीरादिकोंविषे आत्मबुद्धिकरिकै यहविज्ञानमय आत्माअनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब नरककेदुःखोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यद्यपि यासंसारविषेदुःखरूपता तुमनैंअनंत वार अनुभवकरीहै ॥ तथापि तिनदुःखोंकिस्मरणकरावणेवासते यत्किंचित्दुःखोंकूं मैं तुम्हारेप्रतिकथनकरताहूं ॥ तिनदुःखोंकूं तूं सावधा नहोइकेश्रवणकर ॥ हेजनक ॥ यहविज्ञानमयआत्मा जभी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तभी अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनदुःखोंकाकथन पूर्व मैंने तुम्हारेप्रतिकराहै ॥ यातैं तिनमरणकालकेदुःखोंका पुनःहम कथनकरतेनहीं ॥ याकारणतैं अभी नरककेदुः खोंकूं कथनकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यहविज्ञानमयआत्मा एकशरीरकापरित्यागकरिकै दूसरेशरीरकूं अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ तहां पूर्वलेपापकर्म केवशतैं यहजीवात्मा जभी नरककेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी तानरकविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं यहजीवप्राप्तहोवैहै ॥ जिननरककेदुःखों कूंस्मरणकरणेतैंभी हमारेकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे यालोकविषे जिसजीवकूं बहुतदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसजीव काशरीर नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे नरकविषे बहुतदुःखकरिकै याजीवकाशरीर नाशकूं क्योंनहीं प्राप्तहोता ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवकूंनानाप्रकारकेदुःखप्राप्तहोवैहैं ॥ तोभी ताजीवकेस्थूलशरीरकानाशहोवैनहीं ॥ तैसे नरकविषे नानाप्रकारकेदुः खोंकीप्राप्तिहुएभी याजीवका यमयातनाकाशरीर नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनपापकर्मोंने नरकविषे याजीवकूंदुःखकी

रकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब बुद्धिकेतादात्म्यसंबंधकरिके विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहआत्मादेव जिनदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनदुःखों कानिरूपणकरे हैं ॥ हेजनक॥यहआनंदस्वरूपआत्मादेव यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै॥ तथापि परिच्छिन्नबुद्धिकेसाथ तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्त होइके यहआत्मादेव शुष्कतुंबीकीन्याई अत्यंतलघुताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जन्ममरणादिरूपसंसारकेकारण जेअविद्याकामकर्महैं॥ तिनों केसंबंधकूं यहविज्ञानमयआत्मा प्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे क्रीडाकरतेहुएबालक हस्तविषेदंडकूंग्रहणकरिके कंदुक कूं दशोदिशाविषेभ्रमणकरावैहैं ॥ एकक्षणमात्रभीताकंदुककूं भूमिविषेठहरणेदेवेनहीं ॥ तैसे पुण्यपापरूपकर्म याजीवकूं नानाप्रकारकी योनियोंविषेप्राप्तकरैं हैं॥और हेजनक॥जैसे यालोकविषे कूपादिकोंतैंजलकेनिकासनेकासाधन जोअरघटनामायंत्रहै ॥ तायंत्रकेऊपरस्थित जोदीर्घरज्जुहै ॥ तारज्जुकेसाथबांधीहुई जेमृत्तिकाकीघटियां हैं ॥ तेघटियां कूपादिकोंतैंजलकाग्रहणकरिके ऊपरआइके ताजलकापरि त्यागकरैंहैं ॥ पुनःतेघटियां नीचेजाइके कूपादिकोंतैंजलकाग्रहणकरिके ऊपरआइके ताजलकापरित्यागकरैं हैं ॥ इसप्रकार तेघटियांअ नेकवारजलकाग्रहणकरैं हैं ॥ और अनेकवार ताजलकापरित्यागकरैं हैं ॥ तैसे यहजीवात्माभी पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं अनेकप्रकारके ऊंचनीचशरीरोंकूंग्रहणकरिके पुनःतिनशरीरोंकापरित्यागकरैहै ॥ कदाचित् यहजीवात्मा पातालकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कदाचित् यहजीवा त्मा नरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कदाचित् यहजीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै और कदाचित् यहजीवात्माब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा अनेकप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ किसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं यहजीवा त्मा जभी ब्रह्माकेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै तभी ताब्रह्माकेशरीरकूंहीं आपणाआत्मारूपकरिकैमानैहै ॥ और किसी पापकर्मकेप्रभावतैं यहजी वात्मा जभी श्वानकेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी ताश्वानकेशरीरकूंहीं आपणाआत्मारूपकरिकैमानैहै इसप्रकार पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहविज्ञानमयआत्मा जिसजिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसशरीरकूं आपणाआत्मारूपकरिकेहींमानैहै ॥ और हेजनक ॥ यहविज्ञान मयआत्मा जभी पुण्यकर्मकेक्षयहुए ताब्रह्माकेशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तभी यहजीवात्मा ताब्रह्माकेशरीरकूंश्वानकेविष्ठासमान

यहआनंदस्वरूपआत्मा असंगहै ॥ यातैं याआत्मादेवविषे वास्तवतैं पुण्यपापदोनोंनहीं हैं ॥ और याआनंदस्वरूप आत्माविषे लौकिकआचारभीनहीं हैं ॥ तथा धर्मभी आत्माविषेनहीं है ॥ और धर्मकाअभावरूप तथाधर्मकाभेदरूप तथाधर्मकाविरोधरूप जोअधर्म है सोअधर्मभी याआनंदस्वरूपआत्माविषेनहीं है ॥ और अज्ञानरूपजोअंतरतमहै ॥ तथा अंधकाररूपजोबाह्यतमहै ॥ यहदोनोंप्रकारकातमभी आत्माविषेनहीं है ॥ और आकाशादिकपंचभूतभी आत्माविषेनहीं हैं और वाक्आदिकदशइंद्रियभी आत्माविषे नहीं हैं ॥ और क्रियाशक्तिवालाजोप्राणहै सोप्राणभी आत्माविषेनहीं है ॥ और ज्ञानशक्तिवालीजोबुद्धिहै तथा मनहै यहदोनोंभी आत्मा विषेनहीं हैं ॥ और प्राप्तिकालविषेतथाअप्राप्तिकालविषेदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे सुखकीप्राप्तिकरणेहारे जेशब्दस्पर्शादिकविषयहैं ॥ तेविष यभी आत्माविषेनहीं हैं ॥ इसतैंआदिलेके जितनाकस्थूलसूक्ष्मजगत्है ॥ सोजगत् अधिष्ठानआत्माविषे वास्तवतैंनहीं है ॥ और हेजनक ॥ जोपदार्थ जिसअधिष्ठानविषे वास्तवतैंहोवेनहीं ॥ और तिसीअधिष्ठानविषे जोकदाचित् सोपदार्थ प्रतीतहोवे ॥ तो सोपदार्थ मिथ्याहीहोवैहै जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे सर्प वास्तवतैं हैनहीं और तिसीरज्जुरूपअधिष्ठानविषे दोषकेप्रभावतैं सोसर्प प्रतीतहोवैहै॥यातैं सोसर्पमिथ्याहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यहजगतवास्तवतैंहैनहीं ॥ और आत्माविषे यहजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैं यहजग त्भी मिथ्याही है ॥ हेजनक ॥ जिसअधिष्ठानआत्माविषे यहसंपूर्णजगत्कल्पितहै सोअधिष्ठानआत्मा कैसाहै ॥ आनंदस्वरूपहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै तथा सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहितहै हेजनक ॥ ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रसमानव्यापकहै ॥ तथापि जैसे सर्वत्रव्यापकसूर्यकाप्रकाश सूर्यकांतमणिविषे विशेषकरिकेस्फुरण होवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेवभी तुमारेहृदयविषे तथाहमारेहृदयविषे तथाअन्यप्राणियोंकेहृदयविषे विशेषकरिकेस्फुरणहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे वास्तवतैंसंगतैंरहितजोआकाशहै ॥ सोआकाश गंधर्वनगरकाकारणहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैंसंगतैंरहितजोअद्वितीयआत्मा है ॥ सोआत्मा याकल्पितजगत्काकारणहोवैहै॥हेजनक॥ऐसाअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्मा आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं नानाप्रका

संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ यहआत्मादेव नानाप्रकारके वेदविहितकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथा निषिद्धकर्मोंकूंकरैहै ॥ याकारणतें यहआत्मादेव यथाकारिसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव नानाप्रकारकेआचारोंकूंकरैहै ॥ याकारणतें यहआत्मादेव यथाचारीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ धर्मअधर्मरूपकर्मतें आचार भिन्नहैनहीं ॥ किंतु कर्मोंकानामहीआचारहै ॥ यातें यथाचारी यहआत्माकानाम संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यद्यपि धर्मअधर्मरूपकर्मतें आचार भिन्ननहीं है ॥ तथापि कर्मतें आचारविषेइतनीविशेषताहै ॥ जिसकर्मकूं वेदभगवान् पुरुषोंकेसुखकासाधनरूपकरिकै कथनकरैहै ॥ ताकर्मकानाम धर्महै ॥ जैसे अग्निहोत्रादिकहैं ॥ और जिसकर्मकूं वेदभगवान् पुरुषोंकेदुखकासाधनरूपकरिकै कथनकरैहै ॥ ताकर्मकानाम अधर्महै ॥ जैसे ब्रह्महत्यादिकहैं ॥ और जोकर्म शास्त्रकरिकैप्रतिपादितनहींहोवैहै ॥ किंतु देशकीपरंपरातें तथाआपणेकुलकीपरंपरातें प्राप्तहोवैहै ॥ ताकर्मकानाम आचारहै ॥ सोआचारभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतो विहितआचारहोवैहै ॥ और दूसरा निषिद्धआचारहोवैहै ॥ तहां जिसआचारकूं पितापितामहादिकवृद्धपुरुष सुखकासाधनरूपकरिकै कथनकरैहैं ॥ सोआचार विहितहोवैहै ॥ और जिसआचारकूं पितापितामहादिकवृद्धपुरुष दुःखकासाधनरूप करिकै कथनकरैं हैं ॥ सोआचार निषिद्धहोवैहै ॥ हेजनक ॥ यहआत्मादेव जभी लोकविहितशुभकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथा शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंकरैहै ॥ तभीयहआत्मादेव साधुकारीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और लोककरिकै तथाशास्त्रकरिकै निषिद्धजेकर्म हैं ॥ तिननिषिद्धकर्मोंकूं जभीयहआत्मादेवकरैहै ॥ तभीयहआत्मादेव असाधुकारीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहां संज्ञाशब्दकरिकै नामकाग्रहणकरणा ॥ और हेजनक ॥ जभी यहआत्मादेव शास्त्रकरिकैविधानकरेशुभकर्मोंकूंकरैहै ॥ तभी देवतादिकउत्कृष्टशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जभी यहआत्मादेव शास्त्रकरिकैनिषिद्धअशुभकर्मोंकूंकरैहै ॥ तभी श्वानादिकनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेवशतें यहजीवात्मा निरंतर संसारविषेभ्रमणकरैहै ॥ इतनैंकरिकै बुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतें आत्माके विज्ञानमयादिकअनेकरूपोंकानिरूपणकरा ॥ अब तिनविज्ञानमयादिकरूपोंविषे कल्पितरूपताके स्पष्टकरणेवासते ॥ अधिष्ठानआत्माविषे तिनविज्ञानमयादिकरूपोंकेअभावकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥

जोहिरण्यगर्भकीउत्कृष्टताकहीहै ॥ तथा श्वानादिकोंकीनिकृष्टताकहीहै ॥ सोशास्त्र असंगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ सुखदुःखरूप फलकूंलेके तथाअदृष्टदोषरूपसाधनोंकूंलेके तथापांचभौतिकशरीरकूंलेके शास्त्रनें हिरण्यगर्भकीउत्कृष्टतानहीं कही॥ किंतु ब्रह्मविद्याकूंलेके शास्त्रनें हिरण्यगर्भकीउत्कृष्टताकहीहै ॥ साब्रह्मविद्या श्वानादिकोंविषैहैनहीं ॥ यातें श्वानादिकनिकृष्टहैं ॥ यातेंयहअर्थसिद्धभया ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञान जिसपुरुषकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोईहींपुरुष सर्वतें उत्कृष्टहै और जिसपुरुषकूं सोअभेदज्ञान नहींप्राप्तभया ॥ सो पुरुष श्वानतैंभीनिकृष्टहै ॥ और हेजनक ॥ जिसआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतें जीवोंकूं उत्कृष्टताप्राप्तहोवैहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा हिरण्यगर्भविषे तथा श्वानविषे तथातुमारेविषे तथाहमारेविषे तथाअन्यप्राणियोंविपे सर्वत्र समानव्यापकहै ॥ और सोआनंदस्वरूपआत्माहीं ब्रह्मरूपहै ॥ इतनैंकरिके सर्वकाअधिष्ठानरूपजोशुद्धआत्माहै ॥ ताकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ अब बुद्धिआदिकउपाधियोंके तादात्म्यसंबंधतें जोआत्माके कल्पितनानारूपहैं तिनोंकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक ॥ बुद्धिरूपउपाधिकेतादात्म्यसंबंधतें यहआत्मादेव विज्ञानमयसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और मनरूपउपाधिकेसंबंधतें यहआत्मादेव मनोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और प्राणरूपउपाधिकेसंबंधतें यहआत्मादेव प्राणमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और श्रोत्र त्वक चक्षु रसन घ्राण यापंचइंद्रियरूपउपाधिकेसंबंधतें यहआत्मादेव क्रमतें श्रोत्रमय त्वग्मय चक्षुमय रसनमय घ्राणमय इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और आकाश वायु तेज अप् पृथिवी यापंचभूतरूपउपाधिकेसंबंधतें यहआत्मादेव क्रमतें आकाशमय वायुमय तेजोमय अप्मय पृथिवीमय इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अज्ञानरूपतमकेसंबंधतें यहआत्मादेव तमोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कामक्रोधरूपउपाधिकेसंबंधतें यहआत्मादेव काममयसंज्ञा कूं तथाक्रोधमयसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै॥और धर्मरूपउपाधिकेसंबंधतें यहआत्मादेव धर्ममयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सुषुप्तिविषेस्थितजोधर्मकाअभावहै ॥ तथा जलताडनादिकनिष्फलक्रियाविषेस्थित जोधर्मकाभेदहै ॥ तथा हिंसादिकनिषिद्धक्रियाविषेस्थित जोधर्मकाविरोधहै ॥ तिनतीनोंकेसंबंधतें यहआत्मादेव अधर्ममयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ॥ बहुतक्याकहैं ॥ जितनेकस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकेतादात्म्यसंबंधतें यहआत्मादेव सर्वमय

गर्भकूंहै ॥ याकारणतैंभी सोहिरण्यगर्भ श्वानादिकोंतैंनिकृष्टहै ॥ और हेजनक श्वानके जोभषणादिरूपव्यापारहैं ॥ तेव्यापार चौरादिकों कीनिवृत्तिकरैहैं ॥ यातैं तेश्वानकेभषणादिकव्यापार गृहवालेपुरुषके सुखकेसाधनहैं ॥ और याहिरण्यगर्भके जे जगत्कीउत्पत्तिआदिक व्यापारहैं ॥ तेव्यापार किसीप्राणीकेसुखकेसाधननहीं ॥ याकारणतैंभी सोहिरण्यगर्भ श्वानादिकोंतैंनिकृष्टहै ॥ हेजनक ॥ जोवादी हिरण्य गर्भकेव्यापारोंकूं जीवोंकेसुखकासाधन मानैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जगतकीउत्पत्तिआदिक जेहिरण्यगर्भकेव्यापारहैं ॥ तेव्या पार कर्मीपुरुषोंके सुखकासाधनहैं ॥ अथवा उपासकपुरुषोंके सुखकासाधनहैं ॥ अथवा ज्ञानीपुरुषोंके सुखकासाधनहैं ॥ तहाँ हिरण्यग र्भकेव्यापार कर्मीपुरुषोंकेसुखकासाधनहैं यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं रात्रिविषे जभी हिरण्यगर्भ निद्राकरैहै तभी स्वर्गादिकतीनलोकोंकाप्रलयहोइजावैहै ॥ जोप्रलयकूं शास्त्रविषे नैमित्तिकप्रलयकहैहैं॥यातैं ताहिरण्यगर्भका निद्रारूपव्यापार कर्मी पुरुषोंकेसुखकाहेतुनहीं ॥ उलटा कर्मीपुरुषोंकेभयकाहेतुहै ॥ और ताहिरण्यगर्भकाव्यापारउपासकपुरुषोंकेसुखकासाधनहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं उपासनाकेप्रभावतैं जेपुरुषहिरण्यगर्भलोकविषेजावै हैं ॥ तिनपुरुषोंकूं हिरण्यगर्भकेसमान ऐश्वर्यहोवैनहीं ॥ यातैं हिरण्यगर्भकेऐश्वर्यकूंदेखिके तेउपासकपुरुष ईर्ष्याकरिके परमदुःखकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं हिरण्यगर्भकाऐश्वर्यरूपव्यापार उपासकपुरुषोंकेसुखकाहेतुनहीं ॥ उलटा उपासकपुरुषोंकेदुःखकाहेतुहै ॥ और हिरण्यगर्भकाऐश्वर्यरूप व्यापार ज्ञानीपुरुषोंकेसुखकासाधनहै ॥ यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जबपर्यंत यापुरुषकूं ब्रह्मलो ककीप्राप्तिकीइच्छाहोवै है ॥ तबपर्यंत यापुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ यातैं ब्रह्मलोकविषयकइच्छाकीउत्पत्तिद्वारा सोहिरण्य गर्भकाऐश्वर्यरूपव्यापार ज्ञानीपुरुषोंकेभयकाहीकारणहै ॥ यातैं हिरण्यगर्भकाव्यापार किसीप्राणीकेसुखकासाधननहीं ॥ उलटा जीवोंकेदुःखकासाधनहै ॥ अथवा ॥ संपूर्णस्थूलप्रपंचकाकारण जोविराट्भगवान्है ॥ ताकेभक्षणकरणेवासते हिरण्यगर्भकाजो प्रवृत्तिरूपव्यापारहै ॥ सोव्यापार किसीप्राणीकेसुखकासाधननहीं ॥ किंतु सर्वजीवोंकेदुःखकाहीसाधनहै ॥ याकारणतैं श्वानादिकों तैंभी सोहिरण्यगर्भ निकृष्टहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् हिरण्यगर्भ तथाश्वानादिकपशु दोनोंसमानहोवैं ॥ तौशास्त्रविषे

कल्पितविषमतासंभवैहै ॥ तथापि रागद्वेषादिकअंतरसाधनोंविषे किंचित्मात्रभी विषमतासंभवैनहीं ॥ काहेतें क्षुधा १ पिपासा २ भय ३ निद्रा ४ प्रियवस्तुविषेराग ५ अप्रियवस्तुविषेद्वेष ६ आत्माकूंआवरणकरणेहारामोह ७ विष्ठामूत्रकेपरित्यागतैंपूर्व विषमदशाकीप्राप्ति ८ यहअष्टप्रकारकेदोष जीवोंके सुखका तथादुःखका कारणहोवैं हैं ॥ तहाँ निवृत्तिकूंप्राप्तहुए यहअष्टदोष जीवोंके सुखकाकारणहोवैं हैं ॥ और विद्यमानहुएयहअष्टदोष जीवोंके दुःखकाकारणहोवैं हैं ॥ तेअष्टदोष सर्वप्राणियोंविषेसमानहैं ॥ यातैं सुखदुःखरूपफलभी सर्वप्राणियोंविषेसमानहै ॥ और हेजनक ॥ दरिद्रीपुरुषोंविषे तथामहाराजाविषे तथाश्वानादिकोंविषे यद्यपि लोकोंकीदृष्टिकरिके महान्विषमता प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि अष्टदोषरूपकारणोंविषे तथासुखदुःखरूपफलविषे किंचित्मात्रभीविषमतानहीं ॥ यातैं सर्वशरीरोंतैंउत्कृष्ट जोब्रह्माकाशरीरहै ॥ तथा सर्वशरीरोंतैंनिकृष्ट जोश्वानकाशरीरहै ॥ तिनदोनोंविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहीं ॥ अब सर्वशरीरोंकीसमानता सिद्धकरणेवासते सर्वशरीरोंविषे अष्टदोषोंकाअनुगतपणा निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे श्वानशरीरविषे कामक्रोधादिकदोष विद्यमानहैं ॥ तैसे हिरण्यगर्भशरीरविषेभी कामक्रोधादिकदोष विद्यमानहैं ॥ यातैं कामक्रोधादिकदोष सर्वशरीरोंविषेअनुगतहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्सर्वजगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकूंकरणेहारा जो सूत्रात्मारूपहिरण्यगर्भहै ॥ ताकेविषे यद्यपि कामक्रोधादिकसंभवैं हैं ॥ तथापि क्षुधापिपासादिकदोष हिरण्यगर्भविषेसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जगत्काईश्वरजोहिरण्यगर्भहै ॥ सो श्वानतैंभीनिकृष्टहै ॥ काहेतैं क्षुधाकरिकेआतुरहुएभी श्वानादिक आपणेपुत्रोंकूंभक्षणकरैनहीं ॥ और यहहिरण्यगर्भतो विराट्रूपपुत्रकूंउत्पन्नकरिके तिसीविराट्रूपपुत्रकूं भक्षणकरणेवासते प्रवृत्तहोताभया ॥ यहवार्त्ता चतुर्थअध्यायविषे विस्तारतैंकहिआयेहैं ॥ यातैं हिरण्यगर्भविषेभी क्षुधापिपासादिकदोषहैं ॥ और हेजनक श्वानादिकपशु जोकदाचित् आपणेपुत्रोंकूंभक्षणकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं ॥ तो तिनश्वानादिकोंकीनिंदा कोईप्राणीकरैनहीं ॥ यातैं श्वानादिकपशुवोंकूं पापकर्मकेकरणेविषे लोकोंकेनिंदाकाभयनहीं ॥ और संपूर्णजगत्कागुरु जोहिरण्यगर्भ है ॥ सोहिरण्यगर्भ जोकदाचित् पुत्रभक्षणादिकपापकर्मविषे प्रवृत्तहोवैगा ॥ तो सर्वलोक ताहिरण्यगर्भकीनिंदाकरैंगे ॥ तालोकनिंदाकाभय हिरण्य

प्रतीतहोवैहै ॥ सोन्यूनअधिकता वास्तवतैं आत्मास्वरूपआनंदविषैहैनहीं ॥ किंतु बुद्धिरूपउपाधिविषैही सो न्यूनअधिकताहै ॥ याकारणतैंहो शास्त्रविषे उपाधिशब्दका याप्रकारकाअर्थकह्याहै ॥ उपहितपदार्थकेसमीपस्थितहोइकेजोवस्तु आपणेधर्मोंका ताउपहितपदार्थविषे आरोपणकरैहै ॥ तावस्तुकानाम उपाधिहै ॥ सोयहांप्रसंगविषे आत्मास्वरूपआनंदकेसमीपस्थितहोइके सोबुद्धि आपणेन्यूनअधिकताकूं आत्मास्वरूपआनंदविषेआरोपणकरैहै ॥ याकारणतैं सोबुद्धि उपाधिरूपहै ॥ उपाधिवालेपदार्थकानाम उपहितहै ॥ यातैं हेजनक ॥ ब्रह्मलोकविषे स्थित जोसर्वतैंउत्कृष्टब्रह्माकाशरीरहै ॥ तथा भूमिलोकविषेस्थित जोसर्वशरीरोंतैंनिकृष्टश्वानकाशरीरहै इसतैंआदिलेके सर्वशरीरोंविषे अंतःकरणविशिष्टभोक्ताआत्माकी तथासुखदुःखरूपभोग्यकी किंचित्मात्रभी विषमतानहीं ॥ किंतु सर्वशरीरोंविषे समानहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जभी अंतःकरणविशिष्टभोक्ताआत्माकी तथासुखदुःखरूपभोग्यकीभी सर्वशरीरोंविषे विषमतासिद्धनहींभई ॥ तभी आनंदस्वरूपशुद्धआत्माकीविषमता किसप्रकारसंभवैगी ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरें हैं॥हेजनक ॥ जैसे कोद्रवादिकनिकृष्टअन्नकेभक्षणकरिके निर्धनदरिद्रीपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसेभक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य याचारिप्रकारकेअन्नकेभक्षण करिके महाराजा तथाधनीपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सुखकेभोक्ताविषे तथासुखरूपभोगविषे किंचित्मात्रभीविषमतानहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे क्षुधापिपासादिकोंकरिके निर्धनदरिद्रीपुरुष दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे क्षुधापिपासादिकोंकरिकेमहाराजा तथाधनीपुरुषभी दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं दुःखकेभोक्ताविषे तथादुःखरूपभोगविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ महाराजाविषे तथादरिद्रीपुरुषविषे यद्यपि सुखदुःखरूपफलकीविषमतानहीं है तथापि तासुखदुःखरूपफलकोउत्पत्तिके जेअन्नपानादिकसाधनहैं ॥ तिनोंकी परस्परविषमता प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं ताअन्नपानादिकसाधनोंकोविषमतातैं सुखदुःखरूपफलकीभीविषमताहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ सुखदुःखरूपफलकीउत्पत्तिके दोप्रकारकेसाधनहोवे हैं ॥ एकतो बाह्यसाधनहोवे हैं ॥ और दूसरे अंतरसाधनहोवैहैं ॥ तहाँ अन्नपानादिक बाह्यसाधनहैं ॥ और रागद्वेषादिक अंतरसाधनहैं ॥ तहाँ यद्यपि अन्नपानादिकबाह्यसाधनोंविषे किंचित्मात्र

तैं तथापूर्वलेशुभसंस्कारोंकेप्रभावतैं पितरलोकविषे तथागंधर्वलोकविषे तथादेवलोकविषे तथाप्रजापतिलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे उत्कृष्ट देवताशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ और मरणकालविषे जभीयाजीवकेपुण्यपापदोनों फलदेणेकूंसन्मुखहोवैं हैं ॥ तभी यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मरणकालविषे जभी याजीवात्माकाकोईपापकर्म फलदेणेकूंसन्मुखहोवैहै ॥ तभी यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै तापापकर्मकेवशतैं श्वानादिकनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार ब्रह्मातैंआदिलेके कीटपर्यंत जितनेकआत्मज्ञानतैंरहितप्राणीहैं ॥ तेअज्ञानीजीव पुण्यपापकर्मकेवशतैं निरंतर संसाररूपशूलविषे भ्रमणकरैं हैं ॥ अब जिसशुद्ध आत्माकेज्ञानतैं जीवोंकेसंसारकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तिसशुद्धआत्माकेस्वरूपका कथनकरणेवासतै प्रथम आत्माकेआनंदरूपताकूंनिरूपण करैं हैं ॥ हेजनक ॥ आत्माकाजोआनंदस्वरूपहै ॥ सो सर्वत्रसमानहीहै ॥ ताआत्मास्वरूपआनंदविषे किंचित्मात्रभी न्यूनअधिकता नहीं ॥ और पूर्व मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जोआनंदकीन्यूनअधिकताहमनेंकथनकरीथी ॥ सोन्यूनअधिकता स्वभावतैं आत्मास्वरूपआनंदविषेनहीं ॥ किंतु चेतनकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरणेहारी तथा चेतनकेआवरणकूंनिवृत्तकरणेहारी जोबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिके संबंधकीअपेक्षाकरिकै आत्मास्वरूपआनंदकेअभिव्यक्तिकी न्यूनअधिकताहोवैहै ॥ तहां अधिकसत्वगुणवालीबुद्धिकेसंबंधतैं आत्मास्वरूपआनंदकी अधिकअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ और न्यूनसत्वगुणवालीबुद्धिकेसंबंधतैं आत्मास्वरूपआनंदकी न्यूनअभिव्यक्तिहोवैहै॥ अब याहीअर्थकूंदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे भेदतैंरहित एकहीआकाश सूचिविषे तथाघटविषे तथागृहविषे तथानगरविषे स्थितहोइके न्यूनअधिकताभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे एकहीआत्मास्वरूपआनंद बुद्धिकेसंबंधतैं न्यूनअधिकताभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और उपाधिकेसंबंधतैं जोउपहितपदार्थविषेधर्मप्रतीतहोवैहै ॥ सोधर्म वास्तवतैंउपहितपदार्थविषे होवैनहीं ॥ किंतु उपाधिविषेहीसोधर्महोवैहै ॥ जैसे घटमठादिकउपाधियोंकेसंबंधतैं जोआकाशविषे न्यूनअधिकताप्रतीतहोवैहै ॥ सोन्यूनअधिकता आकाशविषे वास्तवतैंहोवैनहीं ॥ किंतु घटमठादिकउपाधियोंविषेहीं सोन्यूनअधिकताहै ॥ तैसे बुद्धिरूपउपाधिकेसंबंधतैं जोआत्मास्वरूपआनंदविषे न्यूनअधिकता

क्षणताहोवैहै ॥ कारणोंकीविलक्षणतातैंविना कार्यकीविलक्षणताहोवैनहीं ॥ और यहांप्रसंगविषे मनुष्यादिकशरीरोंकापरिणामी उपादानकारणजोअविद्याहै सोएकहीहै ॥ तथामनुष्यादिकशरीरोंका विवर्तउपादानकारणजोचेतनहै सोभीएकहीहै ॥ यातैं मनुष्यादिकशरीरोंविषेविलक्षणता नहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यद्यपि चेतनआत्मा तथाअविद्यारूपकारणएकहीहै ॥ तथापि जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मविलक्षणहैं ॥ यातैं तापुण्यपापरूपकारणकीविलक्षणताकरिकै शरीररूपकार्यभी विलक्षणहीहोवैं हैं ॥ और हेजनक ॥ जिसमरणकालविषे याशरीरकेभोगदेणहारेकर्मोंकाक्षयहोवैहै ॥ तथा भावीशरीरकेभोगदेणहारेकर्मोंकाप्रादुर्भावहोवैहै ॥ तिसमरणकालविषे यहजीवात्मा पूर्वलेउत्कृष्टशरीरकूंभी निकृष्टजानैहै ॥ और भावीनिकृष्टशरीरकूंभी उत्कृष्टमानैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् मरणकालविषे यहजीवात्मा पूर्वलेउत्कृष्टशरीरकूं निकृष्टजानैहै ॥ और भावीनिकृष्टशरीरकूं उत्कृष्टजानैहै॥यहजोवचन आपनैं हमारेप्रतिकह्या॥ सोआपकाकहणा हमारेकूंआश्चर्यजैसालागैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यावार्ताविषे तूं आश्चर्यमतकर ॥ मरणकालविषे पापकर्मरूपदोषकेप्रभावतैं याजीवकीबुद्धि विपरीतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मरणकालविषे यहजीवात्मा वर्तमानउत्कृष्टशरीरकूं निकृष्टमानैहै ॥ और भावीनिकृष्टशरीरकूं उत्कृष्टमानैहै ॥ तहांदृष्टांत॥ जैसे यालोकविषे कोईव्यभिचारिणीस्त्री किसीधनीपुरुषकूं किसीमंत्रकेप्रभावतैं तथा किसीऔषधिकेप्रभावतैं आपणेवशकरिलेवैहै ॥ कैसीहै सोव्यभिचारिणीस्त्री कुष्टरोगकरिकैयुक्तहै ॥ तथा मृत्तिकाकरिकैजिसकाशरीर आवृतहै ॥ तथा कर्णनासिकातेंरहितहै ॥ ऐसीकुरूपव्यभिचारिणीस्त्रीकेवशकूंप्राप्तहुआ सोधनीपुरुष ताव्यभिचारिणीस्त्रीकूं इंद्राणीकेसमान सुंदरमानैहै ॥ और ताधनीपुरुषकेगृहविषेस्थित जोआपणीस्त्रीहै सोइंद्राणीकेसमान सुंदरहै ॥ तथा सर्वगुणोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा पतिव्रताहै ॥ तथा कुलीनगृहकीहै ॥ ऐसीपतिव्रतासुंदरस्त्रीकूं सोधनीपुरुष निकृष्टमानिकै ताका परित्यागकरिदेवैहै ॥ यहवार्ता लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे मरणकालविषे पापकर्मकरिकै मोहितहुआ यहजीवात्मा सर्वसुखोंकरिकैसंपन्नदेवताशरीरकूं तथाचक्रवर्तीराजाशरीरकूं अत्यंतनिकृष्टमानैहै ॥ और भावीहोणेहारेश्वानादिकनीचशरीरोंकूं यहजीवात्मा तामरणकालविषे अत्यंतउत्कृष्टकरिकैमानैहै ॥ हेजनक ॥ मरणकालविषे जभी याजीवात्माका कोईपूर्वलापुण्यकर्म फलदेणेकूंसन्मुखहोवैहै॥तभी यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै तापुण्यकर्मकेप्रभाव

जोभावीशरीरकाज्ञानहोवैहे ॥ सोभावीशरीरकाज्ञानहीं याजीवात्माकूं मरणकालविषे भावीशरीरकीप्राप्तिहे ॥ और हेजनक ॥ जैसे दाहकरणेहारा तथाप्रकाशकरणेहारा जोप्रज्वलितअग्निहे ॥ सोअग्नि आपणेतादात्म्यसंबंधकरिके लोहपिंडकूंभी आपणे समान प्रकाशवाला तथादाहशक्तिवालाकरैहे ॥ और सोअग्नि जभी तालोहकेपिंडकापरित्यागकरैहे ॥ तभी प्रकाशतैंरहित तथादाहशक्तितैंरहित जोलोहकापूर्वलास्वभावथा ॥ तिसीपूर्वलेस्वभावकूं सोलोहकापिंड प्राप्तहोवैहे ॥ तैसे यह आत्मादेवभी अपणेतादात्म्य संबंधकरिके याजडशरीरविषे चैतन्यभावकीप्राप्तिकरैहे ॥ और मरणकालविषे यहचेतनआत्मा जभी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरैहे ॥ तभी यास्थूलशरीरका जैसा पूर्वलाजडस्वभावथा ॥ तिसीजडस्वभावकूं यहस्थूलशरीरप्राप्तहोवैहे ॥ और हेजनक ॥ जैसे अग्नि लोहके पिंडकाजोपरित्यागकरैहे ॥ सोपरित्यागही लोहकेपिंडकाहननहे ॥ तैसे यहचैतन्यआत्मा यास्थूलशरीरकाजोपरित्यागकरैहे ॥ सोपरित्यागही यास्थूलशरीरकाहननहे ॥ और हेजनक ॥ जैसे प्रज्वलितअग्निप्रथमलोहपिंडकापरित्यागकरिके दूसरेनवीनलोहपिंडकूंप्राप्त होवैहे॥तिसदूसरेलोहपिंडकूंभी सोअग्नि आपणेतादात्म्यसंबंधकरिके आपणेसमानहीरूपवानकरैहे॥तैसे यहजीवात्माभी यास्थूलशरीरका परित्यागकरिके दूसरेनवीनशरीरकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और यहआनंदस्वरूपजीवात्मा आपणेतादात्म्यसंबंधकरिके जैसेपूर्वलेशरीरकूंचैतन्यरूप करताभया॥ तथा आपणेसुखकासाधनमानताभया॥तैसे दूसरेशरीरकूंभी यहआत्मादेव आपणेतादात्म्यसंबंधतैं चैतन्यरूपकरैहे॥तथासुख कासाधनमानैहे ॥ और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे सुवर्णकारपुरुष एकहीसुवर्णकेपिंडतैं कभी कंकणकूंउत्पन्नकरैहे ॥ और कभी कुंडलकूंउत्पन्नकरै हे ॥ इसप्रकार सोसुवर्णकारपुरुष एकहीसुवर्णकेपिंडकूं क्रमतैं नानाभावकीप्राप्तिकरैहे ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी एकहीअविद्यातैं कभी मनुष्यशरीरकीउत्पत्तिकरैहे ॥ और कभी देवताशरीरकूंउत्पन्नकरैहे ॥ और कभी पशुशरीरकूंउत्पन्नकरैहे ॥ इसप्रकार सोपरमात्मादेव एकहीअविद्याकूंअनेकशरीरभावकीप्राप्तिकरैहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ लोकविषे कारणकीविलक्षणतातैं कार्यकीविलक्षणताहोवैहे ॥ जैसे मृत्तिकारूपकारणकीविलक्षणतातैं तथातंतुरूपकारणकीविलक्षणतातैं घटरूपकार्यकी तथापटरूपकार्यकी परस्परविल

होणेतैंजडहै तथाअत्यंतवेगवालीहै ॥ यातैं मरणकालविषे सोबुद्धि वृत्तिद्वारा भावीशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी मैंभावीशरीरकूंप्राप्तभईहूं याप्रकारकाअनुभवकरैनहीं ॥ और हेजनक ॥ पूर्वतृणजलौकाकेदृष्टांतकरिके याजीवात्माकूं दूसरेशरीरकीप्राप्ति जोहमनैं तुमारेप्रति कथनकरीथी ॥ ताकहणेकायहअभिप्रायहै ॥ जैसे कोईमहाराजा जभी जीर्णगृहकापरित्यागकरिके नवीनगृहविषेनिवासकरणेकीइच्छा करैहै ॥ तभीतामहाराजाकेभृत्य तामहाराजाकेअभिप्रायकूंजाणिके दूसरेनवीनगृहकूंत्यारकरैं हैं ॥ और तामहाराजाकेआगमनतैंपूर्वही तेराजाकेभृत्य प्रथम तानवीनगृहविषे हस्तीअश्वादिकराज्यसामग्रीकूंलेजावैं हैं ॥ ताअश्वादिकराज्यसामग्रीकूंदेखिकरिके नगरवासीलोक परस्पर याप्रकारकथनकरैं हैं ॥ यहराजाआयाहै यहराजाआयाहै ॥ तहां सोमहाराजायद्यपि ताकालविषे पूर्वलेजीर्णगृहमेंस्थितहै अथवा मार्गविषेहै ॥ तथापि अश्वादिकराज्यसामग्रीकूंदेखिके तेनगरवासीलोक यहराजा नवीनगृहविषेआयाहै याप्रकारकाकथन करैं हैं तैसे यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीररूपजीर्णगृहकापरित्यागकरिके मरणतैंअनंतर जिसदूसरेशरीररूपनवीन गृहकूंप्राप्तहोवैगा ॥ तिसदूसरेशरीररूपगृहकूं पुण्यपापकर्मरूपभृत्य पंचभूतोंकरिकेत्यारकरैहैं ॥ तहां जीवात्मारूपमहाराजाके पूर्वशरीर विषेस्थितहुएहीं तेपुण्यपापकर्मरूपभृत्य प्रथम बुद्धिकीवृत्तिरूपराज्यसामग्रीकूं ताभावीशरीरविषेप्राप्तकरैहैं॥याप्रकारकेअभिप्रायकरिकेही पूर्वतृणजलौकाकेदृष्टांतसैं याजीवात्माकूं भावीशरीरकीप्राप्तिकहीहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरैहैं हेजनक ॥ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके जिसभावीशरीरकरिके सुखदुःखरूपफलकूंभोगैगा ॥ सोभावीशरीर याजीवात्माकेभविष्यत्भोगका साधनहै ॥ और यहजीवात्मामरणकालविषे जिसशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ सोशरीर याजीवात्माकेपूर्वभोगकासाधनहै ॥ यातैं याजीवा त्माका दोनोंशरीरोंकेसाथसंबंध संभवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे कोईपुरुष आपणेशरीरविषे पुष्पोंकीमालाकूंधारणकरै है ॥ अथवा वस्त्रोंकूंधारणकरैहै ॥ सोमाला तथावस्त्र जभी जीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोपुरुष तामालाके तथावस्त्रके परित्यागकरणे कीइच्छाकरताहुआ दूसरेनवीनमालाकूं तथानवीनवस्त्रकूं वारंवारदेखै है ॥ तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरीरकेपरित्यागकरणेकीइच्छा करताहुआ यहजीवात्मा पुण्यपापकर्मकेअनुसार भावीशरीरकूंदेखैहै ॥ तात्पर्ययह॥मरणकालविषे याजीवात्माकूं पुण्यपापकर्मकेअनुसार

किंतु बुद्धिरूपउपाधिविषेही सोगमनआगमनरूपक्रियासंभवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तृणजलौकाकीन्याईं इसशरीरविषेस्थितहुईबुद्धि दूस रेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहजोआपनैंकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं परिछिन्नमूर्त्तपदार्थका जोदूसरेदेशकेसाथ क्रियाजन्यसंबंधहोवैहै ॥ सो पूर्वदेशकेसाथ विभागहुएतैंविना संभवैनहीं ॥ किंतु प्रथमक्षणविषे मूर्त्तपदार्थमें क्रियाहोवै है ॥ और द्वितीयक्षणविषे तामूर्त्त पदार्थका पूर्वदेशकेसाथ विभागहोवै है ॥ और तृतीयक्षणविषे तामूर्त्तपदार्थका पूर्वदेशकेसाथजोसंयोगसंबंधहै तासंयोगकानाश होवैहै ॥ और चतुर्थ क्षणविषे तामूर्त्तपदार्थका उत्तरदेशकेसाथ संयोगहोवैहै ॥ और पंचमक्षणविषे तामूर्त्तपदार्थकेक्रियाकानाशहोवैहै ॥ इसप्रकार पूर्वदेशकेसाथविभागहुएतैंअनंतरही मूर्तपदार्थका उत्तरदेशकेसाथसंबंधहोवैहै ॥ यातैं मरणकालविषे इसशरीरविषेस्थितहुई बुद्धिका दूसरेशरीरकेसाथ संबंधसंभवैनहीं ॥ समाधान॥हेजनक॥ जैसे तेजरूपचक्षुइंद्रिय आपणेगोलकविषेस्थितहुआही वृत्तिद्वारा सूर्यचं द्रमादिकदूरदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जोकदाचित्‌चक्षुइंद्रिय आपणेगोलकरूपस्थानकापरित्यागकरिकैही सूर्यमंडलादिकदेशकूं प्राप्तहोताहोवै ॥ तो ताचक्षुइंद्रियकेगयेतैंअनंतर यहपुरुष अंधहोणाचाहिये ॥ इसप्रकार मरणकालविषे पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं तथा पूर्वलेसंस्का रोंकेप्रभावतैं तथापरमेश्वरकीइच्छाके प्रभावतैं यहबुद्धिभी यास्थूलशरीरविषेस्थितहुईही आपणीवृत्तिद्वारा दूसरेभावीशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे मरणकालविषे सोबुद्धि वृत्तिद्वारा दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मरणतैंपूर्व जीवतअवस्थाविषेभी सोबुद्धि वृत्तिद्वारा दूसरेभावीशरीरकूं किसवासतै नहींप्राप्तहोती ॥ समाधान हेजनक ॥ जिसकालविषे यावर्तमानशरीरकेभोगदेणेहारेप्रारब्धकर्मों काक्षयहोवैहै ॥ और भावीशरीरकेभोगदेणेहारेकर्मोंकाप्रादुर्भावहोवैहै ॥ तिसीकालविषे अंतर्यामीपरमात्माकरिकैप्रेरणाकरीहुई सोबुद्धि आपणी वृत्तिद्वारा भावीशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अन्यकालविषे सोबुद्धि भावीशरीरकूंप्राप्तहोवैनहीं शंका ॥ हेभगवन् ॥ मरणकाल विषे याजीवकीबुद्धि जोकदाचित् भावीशरीरकूंप्राप्तहोतीहोवै ॥ तोमरणकालविषे सोबुद्धि मैं दूसरेशरीरकूंप्राप्तभईहूं याप्रकारका अनुभव किसवासतैनहींकरती समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे चक्षुइंद्रिय जडहै तथा अत्यंतवेगवालाहै ॥ याकारणतैं सोचक्षुइंद्रिय आप णीवृत्तिद्वारा सूर्यादिकदेशकूंप्राप्तहोइकैभी मैंसूर्यमंडलकूंप्राप्तभयाहूं याप्रकारकाअनुभव करैनहीं ॥ तैसे यहबुद्धिभी पंचभूतोंकाकार्य

रकापरित्यागकरैहै ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे तृणजलौकानामा कोईकृमिविशेष तृणोंविषेभ्रमणकरैहै ॥ तहाँ सोतृणजलौकाकृमि दूसरेतृणकूं आलंबनकरिकैही प्रथमतृणकापरित्यागकरैहै ॥ दूसरेतृणकेआलंबनतैंविना प्रथमतृणकापरित्यागकरैनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकोंकूंअनुभव सिद्धहै ॥ तैसे यहजीवात्माभी दूसरेभावीशरीरकूंआलंबनकरिकैही यास्थूलशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ दूसरेशरीरकेआलंबनतैंविना यहजीवात्मा प्रथमशरीरकापरित्यागकरैहैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं अन्यदृष्टांतकरिकैभी स्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे कोईमहाराजा अथवा कोईधनीपुरुष जो आपणेपूर्वजीर्णगृहकापरित्यागकरैं हैं ॥ सो दूसरेनवीनगृहकेसंपादनतैंविना परित्यागकरैंनहीं ॥ किंतु दूसरेनवीनगृहकूं संपादनकरिकैही सोमहाराजा तथाधनीपुरुष पूर्वलेजीर्णगृहकापरित्यागकरैं हैं ॥ तैसे यहजीवात्माभी दूसरेभावीशरीरके आलंबनतैंविना प्रथमशरीरकापरित्यागकरैनहीं ॥किंतु दूसरेशरीरकूंआलंबनकरिकैही यहजीवात्मा प्रथमशरीरकापरित्यागकरैहै ॥शंका॥ हेभगवन् ॥ जोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै ॥ सोईहीपदार्थ एकस्थानकापरित्यागकरिकै दूसरेस्थानविषेजावैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ परिछिन्नहै ॥ यातैं एकदेशकापरित्यागकरिकै दूसरेदेशकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे यहआत्मादेव परिच्छिन्नहैनहीं ॥ किंतु यहआत्मासर्वत्रपूर्णहै ॥ यातैं इसशरीरकापरित्यागकरिकै आत्माका दूसरेशरीरविषे गमनसंभवैनहीं ॥ और जोकदाचित्इसशरीरकापरित्यागकरिकै आत्मा दूसरेशरीरविषेजावैगा ॥ तौघटादिकोंकीन्याई आत्माभी परिच्छिन्नहीहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैं सर्वत्रपरिपूर्ण है ॥ तथासर्वभेदतैंरहितहै ॥यातैं पुण्यपापकेफलभोगणेवासतैं आत्माका परलोकविषेगमनसंभवैनहीं॥तथापि जैसे परिपूर्णआकाश घटरूपउपाधिकेसम्बन्धतैं गमनआगमनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे बुद्धिरूपउपाधिकेतादात्म्यसंबंधतैं यहपरिपूर्णआत्माभीलोकांतरविषे गमनआगमनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ घटरूपउपाधिकेसंबंधतैं जोघटाकाशविषे गमनआगमनप्रतीतहोवैहै ॥ सोगमनआगमन वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ आकाशविषेसंभवैनहीं ॥ किंतु घटरूपउपाधिविषेही सोगमनआगमनरूपक्रियासंभवैहै ॥ तैसे बुद्धिउपहितआत्माविषे जोगमनआगमनरूपक्रिया प्रतीतहोवैहै ॥ सोगमनआगमनरूपक्रिया वास्तवतैंविचारकरियेतौ आत्माविषेसंभवैनहीं ॥

यहजीवात्मा सूर्यलोककूं तथाचंद्रलोककूं तथाअग्निलोककूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जबी यहजीवात्मा मूर्द्धद्वारतैंबाहरनिकसैहै ॥ तबी यह जीवात्मा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार यहजीवात्मा आपणेपुण्यपापकर्मकेअनुसार तिसतिसद्वारतैंबाहरनिकसिके तिसतिसशरीरकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ॥ याएकादशद्वारों विषे निकृष्टफलकेदेणहारेजेद्वारहैं ॥ तिनोंविषे पायुद्वारतैंपरेकोईनिकृष्टद्वारनहीं ॥ और उत्कृष्ट फलकूंदेणहारेजेद्वारहैं ॥ तिनोंविषे मूर्द्धद्वारतैं परेकोईउत्कृष्टद्वारनहीं ॥ और मूर्द्धद्वार तथापायुद्वार इनदोनों द्वारोंकूंछोडिके दूसरेद्वारों विषे किसीद्वारकीअपेक्षाकरिके उत्कृष्टताहै ॥ और किसीद्वारकी अपेक्षाकरिके निकृष्टताहै ॥ और हेजनक ॥ बुद्धिरूपज्ञानशक्तिवाला यह जीवात्मापुरुष जभी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके बाहरनिकसैहै ॥ तभी क्रियाशक्तिवालाप्राणभी तिसजीवात्माकेसाथहीबाहरनि कसैहै ॥ और जभी क्रियाशक्तिवालाप्राण याशरीरतैंबाहरनिकसै है ॥ तभी वाक्आदिकइंद्रियभी ताप्राणकेसाथहीबाहरनिकसै हैं ॥ और हेजनक ॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा हृदयदेशविषे परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहो वैहै ॥ तैसे मरणकालविषे यहजीवात्मा हृदयदेशविषे परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआभी पुनः विशेषज्ञानकूंप्राप्तहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेतो सर्वविशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहै ॥ और मरणअवस्थाविषे दोप्रकारकाज्ञान याजीवकूंहोवैहै ॥ एकतो हृदयकाअग्रभागरूपजोमार्ग है ॥ तामार्गकूंविषयकरणेहाराज्ञानहोवैहै ॥ और दूसरा याशरीरकेत्यागतैंअनंतर जोभावीशरीर प्राप्तहोणेहाराहै ॥ तिसकूंविषयकरणेहाराज्ञानहोवैहै ॥ यादोप्रकारकेज्ञानकूंछोडिके दूसरेसर्वविशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहै ॥ इतनीही सुषुप्तिअवस्थातै मरणअवस्थाविषे विशेषताहै ॥ और हेजनक ॥ पुण्यपापके सुखदुःखरूपफलकूं भोगणेहाराजोयहजीवात्माहै ॥ सोजीवात्मा जभी याशरीरतैंबाहरनिकसैहै ॥ तभी पूर्वपूर्वशरीरोंविषेअनुभवकरेजेपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकेसंस्कार तथा पुण्यपापरूप कर्म यहदोनों ताजीवात्माकेसाथजावैं हैं ॥ तहांजाइके सोपुण्यपापरूपकर्मतो याजीवकूं सुखदुःखभोगणेकेअनुकूलशरीरकीप्राप्तिकरैहै ॥ और पूर्वलेसंस्कार याजीवकूं तिसतिसजातिवालेशरीरकेव्यवहारोंविषे प्रवृत्तकरैं हैं ॥ और हेजनक ॥ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरि त्यागकरिके दूसरेस्थूलशरीरकेआलंबनतैंविना स्थितहोवैनहीं ॥ किंतु दूसरेस्थूलशरीरकूंआलंबनकरिकेही यहजीवात्मा पूर्वलेस्थूलशरी

रहितहोवै हैं ॥ तैसे यामरणकालविषे यहहमारापिताभी वाक्आदिकसर्वइंद्रियोंकेव्यापारतैंरहितहुआहे ॥ और इसकालविषे याहमारेपिताकीवाक्आदिकइंद्रिय आपणेआपणेस्थानोंकूंछोडिके हृदयदेशविषेजाइके एकठीभयां हैं ॥ याकारणतैं यहहमारापिता किसीइंद्रियकेव्यापारकूंकरतानहीं ॥ हेजनक ॥ याप्रकारके लोकोंकेवचनतैंभी मरणकालविषे सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकाअभाव तथाहृदयदेशविषे तिनइंद्रियोंकीएकता सिद्धहोवैहे ॥ और हेजनक ॥ जिसमरणकालविषे यहजीवात्मापुरुषहृदयदेशविषे परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्त होवैहे ॥ तिसकालविषे यद्यपि दूसरेसंपूर्ण विशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहे ॥ तथापि परलोकगमनकेअनुकूलजोज्ञानहै ताकाअभावहोवैनहीं ॥ किंतु परलोककेमार्गदिखावणेवासतै चिदाभासयुक्तवृत्तिकरिकै हृदयकाअग्रभाग प्रकाशमानहोवैहे ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकै स्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसेमहाराजा आपणीपुरीकापरित्यागकरिकै ॥ जभी किसीदूसरीपुरीविषे जाणेकीइच्छाकरैहे ॥ तभी तामहाराजाकेचलणेकाजोराजमार्गविषे नानाप्रकारकेदीपक प्रकाशकरैं हैं ॥ तैसे यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीररूपपुरीका परित्यागकरिकै जभी परलोकजाणेकीइच्छाकरैहे ॥ तभी हृदयकाअग्रभागरूप जोराजमार्ग है ॥ तिनमार्गोंकूं चिदाभासयुक्तवृत्तिरूपदीपक प्रकाश करैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीररूपपुरीतैं एकादशद्वारोंसैं बाहरनिकसैहे ॥तिएकादशद्वार यहहैं ॥ दोचक्षु २ दोश्रोत्र ४ दोनासिका ६ मूर्द्धद्वार ७ मुख ८ नाभि ९ उपस्थ १० पायु ११ याएकादशद्वारोंविषे किसीएकद्वारतैं यहजीवात्माबाहरनिकसैहे ॥ अब तिनएकादशद्वारोंतैंबाहरनिकसिकै यहजीवात्मा जिसजिसस्थानकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तिनस्थानोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ मरणकालविषे यहजीवात्मापुरुष जभी पायुद्वारतैंबाहरनिकसैहे ॥ तभी यहजीवात्मा नरककूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जभी यहजीवात्मा उपस्थद्वारतैंबाहरनिकसैहे ॥ तभी अत्यंतकामातुर जेकपोतादिकहैं ॥ तिनोंकेशरीरकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जभी यहजीवात्मा नाभीद्वारतैंबाहरनिकसैहे ॥ तभी प्रेतशरीरकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जभी यहजीवात्मा मुखद्वारतैं बाहरनिकसैहे ॥ तभी अन्नविषेअत्यंतआसक्तजेप्राणीहैं तिनोंकेशरीरकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जबी यहजीवात्मा नासिकाद्वारतैंबाहरनिकसैहे ॥ तबी गंधविषेआसक्तजेप्राणी हैं तिनोंकेशरीरकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जबीयहजीवात्मा श्रोत्रद्वारतैंबाहरनिकसैहे तबी गंधर्वलोककूंप्राप्तहोवैहे और जबी यहजीवात्मा चक्षुद्वारतैंबाहरनिकसैहे ॥ तबी

प्रायकूंजाणिकरिके तेउआदिकभृत्य महाराजाकेसाथजावैहैं ॥ तैसे यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीररूपपुरीकापरित्यागकरिके जभी परलोकविषेजाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तभीवाकादिकदशइंद्रिय तथापंचप्राण तथाअंतःकरण यहसंपूर्ण ताजीवात्मारूपमहाराजाकेसाथ जावैहैं॥अब यापष्ठअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत साधनोंसहित संसारकूं तथासाधनोंसहितमोक्षकूं विस्तारकरिकेनिरूपणकरैहैं॥तहाँ प्रथम संसार कानिरूपणकरैहैं॥हेजनक॥जिसमरणकालविषेअत्यंतनिर्बलताकूंप्राप्तहोइके यहजीवात्मा वाकादिकइंद्रियोंकरिके किसीपदार्थकूं नहींजाण ता ॥ तिसकालविषे यहजीवात्मा वाक्आदिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेस्थानोंतैंग्रहणकरिके हृदयआकाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा वाक्आदिकइंद्रियोंकूं ग्रहणकरिके हृदयदेशविषे मायाविशिष्टपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मरणकालविषेभी यहजीवात्मा वाक्आदिकइंद्रियोंकूंग्रहणकरिके हृदयदेशविषे परमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकाल विषे यहजीवात्मा किसीइंद्रियकरिके किसीविषयकाग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे यहजीवात्मापुरुष वाक्आदिकसर्वइंद्रियोंकेव्या पारतैंरहितहोवैहै ॥ हेजनक ॥ मरणकालविषे यहजीवात्मापुरुष परमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोइके सर्वइंद्रियोंकेव्यापारतैंरहितहोवैहै यहवार्ता जोहमनैं तुमारेप्रतिकथनकरीहै ॥ सोकेवलशास्त्रविषेप्रसिद्धनहीं ॥ किंतु सर्वलोकविषेभी यहवार्ताप्रसिद्धहै ॥ काहेतैं जिसका लविषे यहपुरुष मरणअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे पुत्रस्त्रीआदिकसंपूर्णबांधव यापुरुषकूं भूमिविषेशयनकराइके याप्रकारके वचन परस्परकहैहैं ॥ इसकालविषेयहहमारापिता हमपुत्रोंकीतरफदेखतानहीं ॥ और यहपिता हमपुत्रोंकेवचनकूंभी नहींश्रवणकरता ॥ और आपणेकंठविषेस्थितजोपुष्पोंकीमालाहै ॥ तिसकेसुगंधकूंभी यहपितालेतानहीं ॥ और इसकालविषे यहहमारापिता मुखविषेदई हुईदधिकेरसकूंभी ग्रहणकरतानहीं ॥ और इसकालविषे यहपिता हमप्रियपुत्रोंकेसाथ बोलताभीनहीं ॥ और इसकालविषे यहपिता हम प्रियपुत्रोंकास्पर्शभीनहींकरता ॥ और यहहमारापिता वाक्आदिकसंपूर्णइंद्रियोंकेव्यापारतैंरहितहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहपिता मनकरिके तथाबुद्धिकरिकेभी किसीपदार्थकूंजाणतानहीं ॥ और जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे हमलोकवाक्आदिकसर्वइंद्रियोंकेव्यापारतैं

करैं हैं ॥ कैसेहैंतेउग्रादिकपुरुष तूर्यतैंआदिलेकेजेनानाप्रकारकेवादित्रहैं ॥ तिनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा कर्णोंकूंआनंदकीप्राप्तिकरणेहारे जेनानाप्रकारकेमधुरगायनहैं तिनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा नानाप्रकारकीवारांगनावोंके हस्तकमलविषेस्थितजेआर्तिदीपकहैं तिनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेकौतुकोंकूंकरतेहुए तेउग्रादिकपुरुष आपणेमहाराजाकेसन्मुखजावैं हैं ॥ और तामहाराजाकेआगमनतैंपूर्वहीं तेउग्रादिकपुरुष याप्रकारकीव्यवस्थाकरिराखैं हैं ॥ इसगृहविषे महाराजा निवासकरैगा ॥ और इसगृहविषे महाराजाकेप्रधानमंत्री निवासकरैंगे ॥ और इसगृहविषे महाराजाकीसेना निवासकरैगी ॥ याप्रकार राजाकेनिवासवासते नानाप्रकारकेगृहोंकीकल्पनाकरिके पुनःतेउग्रादिकपुरुष तिनगृहोंविषे शरीरकूं तथामनकूं तथानेत्रादिकइंद्रियोंकूं सुखकेदेणेहारे जेनानाप्रकारके अन्नवस्त्रादिकपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकूं यथायोग्यराखै हैं ॥ इसप्रकार नानाप्रकारकेसामग्रीकूंत्यारकरिकै तेउग्रादिकपुरुष तानगरकापरित्यागकरिके महाराजाकेसन्मुखहोणेवासते दूरजावैं हैं ॥ और तेउग्रादिकपुरुष महाराजाकहांगया महाराजाअभीआवताहै इसतैंआदिलेके तिसीमहाराजाके वार्ताकूंहीं परस्परकरैं हैं हेजनक ॥ इसीप्रकार यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके जिसकालविषे दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे याजीवकेकर्मोंकेअनुसारभोगदेणेहारे जेआदित्यादिकदेवताहैं ॥ तथादूसरेशरीरकेआरंभकरणेहारे जेआकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तेआदित्यादिकदेवता याजीवकेपुण्यपापरूपकर्मकेअनुसार संपूर्णभोगसामग्रीकूंत्यारकरिके याजीवात्मारूपमहाराजाकेआगमनकूंदेखैहैं ॥ और तेआदित्यादिकदेवता परस्पर याप्रकारकीवार्ताकरैं हैं ॥ हमाराकर्ता तथाभोक्ता जोयहजीवात्मारूपमहाराजाहै ॥ सोजीवात्मा यादेवदत्तनामापुरुषकापुत्रहोणेवासते यादेवदत्तकीऋतुस्नातपत्नीविषे जन्मलेणेवासते अभीआवताहै ॥ याप्रकार तेआदित्यादिकदेवता याजीवात्मारूपमहाराजाकेआगमनकूं उडीकेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके एकलाही दूसरेशरीरविषेजावैहै ॥ अथवा कोईवस्तु याजीवात्माकेसाथजावैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे महाराजा आपणीपुरीकूंछोडिके जभी किसीदूसरीपुरीविषे जाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तभी तामहाराजाकेअभि

शरीरकेसमानजातिवालाहोवैहे ॥ कदाचित् विलक्षणहोवै है ॥ याकेविषे कोईनियमनहीं ॥ अब यहजीवात्मा याशरीरकापरित्यागकरिके पुण्यपापकेवशतैं जिसप्रकार दूसरेस्थूलशरीरकूंप्राप्तहोवे है ॥ तिसअर्थकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिके निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ क्षत्रियाणीमाताविषे वैश्यपितातैं जेपुत्रउत्पन्नहोवे हैं तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष उग्र नामकरिकेकथनकरैं हैं ॥ अथवा हिंसादिकउग्रक र्मोंकूंकरणेहारेजेपुरुषहैं तिनोंकानाम उग्रहे ॥ अथवा हीनजातिवालीमाताविषे उत्कृष्टजातिवालेपितातैं जेपुत्र उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अनुलोम नामकरिकेकथनकरैं हैं ॥ और उत्कृष्टजातिवालीमाताविषे निकृष्टजातिवालेपितातैं जेपुत्र उत्पन्नहोवैहें ॥ तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष प्रतिलोम नामकरिकेकथनकरैंहे ॥ तिसीअनुलोमनामापुरुषोंकूं तथाप्रतिलोमनामापुरुषोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष उग्र नामकरिकेकथनकरैहैं और ब्राह्मणीमाताविषे क्षत्रियपितातैं उत्पन्नभयेजेपुत्रहैं ॥ तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष सूत नामकरिकेकथनकरैहैं ॥ तिनसूतनामापुरुषोंकी दोप्रकारकी आजीवकाहोवैहे ॥ कोईकसूततो रथोंविषेसारथिहोवैहे ॥ और कोईकसूत भा गवतादिकपुराणोंकेज्ञाताहोवैहैं ॥ अथवा राजाकेधनकरिके आपणेकुटुंबकूंपालनकरणेहारे जेब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहचारिवर्ण हैं ॥ तथा अनुलोमनामा प्रतिलोमनामा जेपुरुषहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष सूत नामकरिकेकथनकरैहैं ॥ अथवा माताकेउदरतैं जेप्रा णीबाहरनिकसैहैं तिनोंकानाम सूतहे ॥ यहसूतशब्दकाअर्थ सर्वदेहधारीजीवोंविषेघटैहे ॥ और पापीपुरुषोंकूंदंडदेणेहारे जेराजाकेभृत्यहैं॥ तथा पुरीकेलोकोंकूंनीतिमार्गविषेचलावणेहारेजेप्रधानपुरुषहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष प्रत्येनस नामकरिकेकथनकरैहै ॥ और ग्रामकेलोकोंकूं नीतिमार्गविषेचलावणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष ग्रामणी नामकरिकेकथनकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ याप्रका रके उग्रनामवालेजेपुरुषहैं ॥ तथा सूतनामवालेजेपुरुषहैं ॥ तथा प्रत्येनसनामवालेजेपुरुषहैं ॥ तथा ग्रामणीनामवालेजेपुरुषहैं ॥ इनोंतैं आदिलैकेदूसरेभी जितनेकराजाकेधनतैं कुटुंबकीपालनाकरणेहारेपुरुषहैं ॥ तेसंपूर्णउग्रादिकपुरुष तादेशकेराजाकाआगमनश्रवणकरिके ताराजाकेसन्मुखजावैं हैं ॥ और तेउग्रादिकपुरुष महाराजाकीप्रसन्नताकरणेवासते नानाप्रकारकेकौतुककरैं हैं ॥ तथानानाप्रकारकेमंगल

इसशरीरतैंपूर्व हमारेकूं कोईदूसराशरीरप्राप्तनहींभया ॥ यहाँ अनुमानकाआकार यहहै ॥ मैंचार्वाक पूर्वशरीरोंकेअत्यंताभाववालाहूं ॥ काहेतैं पूर्वशरीरोंकीस्मृतिकेअभाववालाहोणेतैं ॥ अन्यपुरुषकीन्याईं ॥ सो यह चार्वाकवादीकाअनुमानप्रमाण संभवैनहीं॥काहेतैं याल्लोक विषे जितनेकपदार्थोंकूं अनुभवकरीताहै ॥ तिनसर्वपदार्थोंकीस्मृति जोनियमकरिकेजीवोंकूंहोती ॥ तो यहवादीकाअनुमानप्रमाण पूर्वशरीरोंकेअत्यंताभावकूं सिद्धकरता ॥ परंतु इसीजन्मविषेअनुभवकरेहुएपदार्थोंकाइसीजन्मविषेभी नियमकरिकेस्मरणहोवैनहीं ॥ तोजन्मांतरोंकेशरीरकास्मरण किसप्रकारवादीकूंहोवैगा ॥ यातैं सोवादीकाअनुमान व्यभिचारीहै ॥ व्यभिचारीअनुमानतैं किसीअर्थकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेदूषणसंसारकूंसादिमानणेविषे प्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं चार्वाकतैंआदिलेके संपूर्णवादियों नैं यासं सारकूं प्रवाहरूपकरिके अनादिमान्याचाहिये ॥ और संसारकूंअनादिमानणेविषे पुण्यवान्पुरुष सुखरूपफलकूंप्राप्तहोवैगा और पापी पुरुष दुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवैगा याप्रकारकी शास्त्रकीव्यवस्थाभीसुखेनहीं सिद्धहोइसकैहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके तिसीजातिवालेदूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्यनहीं ॥ किंतु याप्रकारकेअर्थविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्य है ॥ यहसंसार अनादिहै ॥ ताअनादिसंसारविषे यहजीवात्मा जैसे अभीशरीरकूंप्राप्तभ याहै ॥ तैसे पूर्वभी यहजीवात्मा जिसजिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसजातिवालेशरीरकूं पुनःभीकदाचित्प्राप्तहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ यहजीवात्मा पशुपक्षीतैंआदिलेके जिसजिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसजातिवालेशरीरके खान पान मैथुन इसतैंआदिलेके जितनेकीव्यवहारहैं ॥ तिनसंपूर्णव्यवहारोंकूं यहजीवात्मा उपदेशतैंविनाहींकरैहै ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ याजीवात्माकूं इसजातीवालाशरीर पूर्वभीकभीप्राप्तभयाहै ॥ तिसशरीरकेसंस्कारोंतैं यहजीवात्मा उपदेशतैंविनाहीं खानपानादिकसर्व व्यवहारोंकूंकरैहै ॥ इतनेग्रंथकरिके यहअर्थकथनकर्‍या ॥ जबपर्यंत याजीवकूं आत्माकेवास्तवस्वरूपकासाक्षात्कार नहींभया ॥ तबपर्यं तयहजीव एकस्थूलशरीरकापरित्यागकरिके पुण्यपापकेवशतैं दूसरेस्थूलशरीरकूं अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ सो दूसराशरीर कदाचित् पूर्वले

यहजोतूं कहताहै ॥ तिसका हम खंडनकरतेनहीं ॥ किंतु यास्थूलशरीरविषे हमभी सादिपणा अंगीकारकरतेहैं ॥ परंतु यहशरीर सर्वशरीरोंतैंप्रथमहै याप्रकार हमअंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु याशरीरतैंपूर्वभी अनेकशरीर होतेभयेहैं ॥ याप्रकार हम अंगीकारकरतेहैं ॥ तिस हमारेसिद्धांतकूं तुमनैं खंडनकर्‌यानहीं ॥ किंवा ॥ सोचार्वाकवादी यहहमाराशरीर सर्वशरीरोंतैंप्रथमहै याप्रकारजोकथनकरै ॥ तावादीतैं यहपूछाचाहिये ॥ हेवादी तूं देहस्वरूपहै ॥ अथवा देहतैंभिन्नहै ॥ तहाँ देहस्वरूप मैंहूं यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवै नहीं ॥ काहेतें जैसे लोकविषे कोईपुरुष याप्रकारकावचनकहै ॥ यहहमारागृह इसगृहतैं प्रथमहै ॥ याप्रकारकेवचनतैं गृहवाले पुरुषका गृहतैंभेदहीप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे यहहमाराशरीर सर्वशरीरोंतैंप्रथमहै याप्रकारकेवादीकेवचनतैं शरीरतैंवादी कस्वरूपक भेदहीसिद्धहोवैहै ॥ यातैं मैं शरीररूपहूं यहवादीकाकहणा अत्यंत विरुद्धहै ॥ और याशरीरतैं मैं भिन्नहूं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकार करै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जभी यहतुमाराशरीर नहीं उत्पन्नभयाथा ॥ तभी तूं किसस्थानविषेस्थितथा ॥ और याशरीरकी उत्पत्तितैंअनंतर याशरीरविषे किसप्रयोजनवास्तैं तू आयाथा॥तहाँ सोचार्वाकवादी जोयाप्रकारकहै ॥ याशरीरकीउत्पत्तितैंपूर्व मैं किसी दूसरेशरीरविषेस्थितनहींथा किंतु आपणेआत्माविषेस्थितथा ॥ और याशरीरकीउत्पत्तितैंअनंतर मैं याशरीरविषे यदृच्छाकरिकेआयाहूं ॥ यहाँ नहींचिंतनकरेहुएपदार्थकीप्राप्तिकरणेहाराजोस्वभावहै ताकानाम यदृच्छाहै ॥ याप्रकार कथनकरणेहारा जोचार्वाकवादीहै ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ इसशरीरकीप्राप्तितैंपूर्व तू दूसरेशरीरकूं किसवासतेनहींप्राप्तभया ॥ और जिसयदृच्छाकरिके तूं इसशरीरकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोयदृच्छाइसशरीरतैंपूर्व तुमारेविषे किसवासतैनहींहुई ॥ यहदोनोंप्रश्नोंकाउत्तर तूं हमारेप्रतिकहु ॥ याप्रकार सिद्धांतीकरिकेपूछाहुआ सोचार्वाक किंचित्मात्रभी उत्तरकहणेविषे समर्थनहींहोवैगा ॥ किंवा ॥ सोचार्वाकवादी पूर्वशरीरोंकेअभावकीसिद्धिकरणेवासते जोयाप्रकारकाअनुमानप्रमाण अंगीकारकरै ॥ जोकदाचित् इसशरीरतैंपूर्व हमारेकूं दूसरेशरीरोंकीप्राप्तिहुईहोती ॥ तौ इसवर्तमानशरीरविषे तिनपूर्वशरीरोंकास्मरण हमारेकूंहोता ॥ परंतु इसवर्तमानशरीरविषे हमारेकूं पूर्वशरीरोंकास्मरणहोतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥

स्थिति लय यहतीनों घटीयंत्रकीन्याई प्रवाहरूपकरिकेअनादिहैं ॥ किंवा जोचार्वाकनास्तिक संसारकूंसादिमानेहै ॥ ताचार्वाकवादीसें यहपूछाचाहिये ॥ जिसकालविषे संसारकासादिपणाहै ॥ तिसकालकूं जोतूंजाणताहोवै ॥ तो सोकाल हमारेप्रतिकहो ॥तहां सोचार्वाकवादी जोयाप्रकारकाउत्तरकहै ॥ जिसकालविषे यासंसारमें सादिपणाहै ॥ तिसकालकूं हम जाणतेनहीं ॥ तो सोचार्वाकवादी यासंसारविषे सादिपणा किसप्रकार सिद्धकरिसकैगा ॥ यातें यहसंसार सादिहै याप्रकारकी तावादीकीप्रतिज्ञा मिथ्याहोवेगी ॥ और सोचार्वाकवादी जो अत्यंतदुराग्रहकरिके याप्रकारकावचनकहै ॥ जिसकालविषे यहहमाराशरीर उत्पन्नभयाथा॥तिसकालविषे यासंसारमें सादिपणाहै॥सोयह वादीकाकहणा संभवेनहीं ॥ काहेतें ॥ ताचार्वाकवादीसें यहपूछाचाहिये ॥ यहतुमारास्थूलशरीर पितामातादिककारणोंतेंविनाहीं उत्पन्न भयाथा ॥ अथवा पितामातादिककारणोंकरिके उत्पन्नभयाथा ॥ तहां जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें याLोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवेहै सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकेही जन्यहोवेहै ॥ जैसे कार्यरूपघटादिकपदार्थ मृत्तिकाकुलालादिककारणोंकरिकेजन्यहैं ॥ तैसे कार्यरूपयहस्थूलशरीरभी किसीकारणकरिकेहीजन्यहोवेगा ॥ यातें मातापितादिककारणोंतेंविनाहीं यहहमाराशरीर उत्पन्नभयाहै यहवादीकाकहिणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और यहहमाराशरीर मातापितादिककारणोंतें उत्पन्नभयाहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ तौभी वादीकेप्रतिज्ञाकीहानीहोवेगी ॥ काहेतें कार्यकीउत्पत्तितें नियमकरिकेजोपूर्वहोवेहै ॥ ताकूंबुद्धिमान्पुरुष कारणकहेहैं ॥ यातें ताचार्वाकवादीनें आपणेशरीरकीउत्पत्तितेंपूर्वमातापितादिककारणोंकीविद्यमानता अवश्यअंगीकारकरणीहोवेगी ॥ यातें हमारेशरीरकीउत्पत्तिकालविषे संसारमेंसादिपणाहै यहवादीकीप्रतिज्ञा मिथ्याहोवेगी ॥ और सोचार्वाकवादी जोयाप्रकारकहै ॥ हमारीअपेक्षाकरिके यहसंसारसादिहै ॥ हमारे पितापितामहादिकोंकीअपेक्षाकरिके यहसंसार सादिनहीं ॥ सो याप्रकारकाकहणाभी तावादीकासंभवेनहीं काहेतें ताचार्वाकवादीसें यहपूछाचाहिये ॥ तेरेमतविषे संसारकाक्यास्वरूपहै ॥ तहां सोचार्वाकवादी जोयहउत्तरकहै ॥ यहस्थूलशरीरहीसंसारहै ताचार्वाकवादीकेप्रति यहकह्याचाहिये ॥ हेवादी यहस्थूलशरीररूपसंसार सादीहै

कारकरिये ॥ तौ संसारविषेअनादिपणानहींरहेगा ॥ अब संसारकूंसादिमानणेहारे जेचार्वाकनास्तिकहैं ॥ तिनोंकेमतकूं खंडनकरणेवासतै नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै संसारविषेअनादिपणा सिद्धकरेहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंविषे यहजाग्रत् अवस्था सर्वजाग्रतअवस्थावों तैं प्रथमहै ॥ और यहस्वप्नअवस्था सर्वस्वप्नअवस्थावोंतैं प्रथमहै ॥ और यहसुषुप्तिअवस्था सर्वसुषुप्तिअवस्थावों तैं प्रथमहै ॥ याप्रकारकानियम कऱ्याजावैनहीं ॥ तैसे याजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय यातीनोंविषेभी यहजगत्कीउत्पत्तिसर्व उत्पत्तियों तैं प्रथमहै ॥ और यह जगत्कीस्थिति सर्वस्थितियों तैं प्रथमहै ॥ और यहजगत्कालय सर्वलयों तैं प्रथमहै ॥ याप्रकारका नियम कऱ्याजावैनहीं ॥ यातैं जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय यहतीनों प्रवाहरूपकरिकैअनादिहैं ॥ तहांदृष्टांत जैसे कूपादिकों तैं जलकेनिकासणेकासाधन जोघटीयंत्रहै ॥ ताकेविषेस्थितजोदीर्घरज्जुहै॥ तारज्जुकेसाथ बांधेहुए जेमृत्तिकाकेघटीनामापात्रविशेषहैं ॥ तिनपात्रोंविषे यहमृत्तिकाकापात्र सर्वपात्रों तैं प्रथमहै ॥ याप्रकारकानियम कऱ्याजावैनहीं तैसे यहसंसार संपूर्णसंसारोंतैं प्रथमहै याप्रकारकानियम किसीसैंकऱ्याजावैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं सत्कार्यवादकीरीतिसैं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ हेजनक॥ यालोकविषे जितनेकीकार्यरूपघटादिकपदार्थ हैं ॥ तेघटादिकपदार्थ प्रथम उत्पत्तिकूंप्राप्तहोइकेही पश्चात् वर्तमानतारूपस्थितिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ काहेतैं उत्पत्तितैंपूर्व अत्यंतअसत्घटादिकपदार्थोंकी जोउत्पत्ति अंगीकारकरिये ॥ तो अत्यंतअसत्वंध्यापुत्रकी तथानरशृंगकीभीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ यातैं उत्पत्तितैंपूर्व घटादिकपदार्थ अत्यंतअसत्नहीं॥ किंतु आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तेघटादिकपदार्थ आपणेमृत्तिकादिक उपादानकारणोंविषे सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ यातैं यहसिद्धभया स्थितिकूंप्राप्तहुएतेघटादिकपदार्थ उत्पत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और उत्पत्तिकूंप्राप्तहुए तेघटादिकपदार्थ पुनःस्थितिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और उत्पत्तिस्थितितैंअनंतर तेघटादिकपदार्थ नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और नाशतैंअनंतर तेघटादिकपदार्थ पुनः कारणरूपकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ और कारणरूपकरिकैस्थितहुए तेघटादिकपदार्थ पुनःउत्पत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकार घटादिकपदार्थोंके उत्पत्तिका तथास्थितिका तथालयका पुनःपुनःव्यवहारहोवैहै ॥ यातैं घटादिकपदार्थोंकी उत्पत्ति

जातिवालेदूसरेशरीरकीप्राप्ति किसवासतैंकथनकरीहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकूंही यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्यनहीं ॥ किंतु यहजीवात्मा जिसकालविषे यास्थूलशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तिसकालविषे जोकदाचित् तिसीशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंकाउद्भवहोवैहै ॥ तौ यहजीवात्मा पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं तिसीजातिवालेशरीरकूंपुनःप्राप्तहोवैहै ॥ और जभी पूर्वशरीरतैंविलक्षणशरीरकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंकाउद्भवहोवैहै ॥ तभी यहजीवात्मा पूर्वलेशरीरतैं विलक्षणशरीरकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ परंतु एकशरीरकापरित्यागकरिके यहजीवात्मा दूसरेशरीरकूंअवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्य है ॥ और हेजनक ॥ जोकदाचित् याजीवकूं नियमकरिके पूर्वलेशरीरकेसमान जातिवालाही दूसराशरीर प्राप्तहोताहोवै ॥ तौ पुण्यकेसुखरूपफलकूं तथापापकेदुःखरूपफलकूं बोधनकरणेहाराजोशास्त्रहै सोशास्त्र अप्रमाणरूपहोवैगा ॥ काहेतैं अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणेहारा जोपुरुषहै ॥ तिसकूं स्वर्गविषे देवताशरीरकीप्राप्ति शास्त्रनैंकथनकरीहै ॥ और उपासनाकूंकरणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसकूं ब्रह्मलोककीप्राप्ति शास्त्रनैंकथनकरीहै ॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकूंकरणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसकूं श्वानादिकनीचशरीरोंकीप्राप्ति शास्त्रनैंकथनकरीहै ॥ इसतैंआदिलेकेसंपूर्ण विधिनिषेधरूपशास्त्र अप्रमाणरूपहोवैंगे ॥ किंवा ॥ यहसंसार प्रवाहरूपकरिकेअनादिहै ॥ ताअनादिसंसारविषे कोईभीपदार्थ सर्वतैंप्रथमहैनहीं ॥ यातैं याजीवका सर्वशरीरोंतैं प्रथम किस जातिवालाशरीरथा याप्रकार वादीकीआशंकाहुए॥याजीवका सर्वशरीरोंतैंप्रथम इसजातिवालाशरीरथा याप्रकारकेउत्तरदेणेविषे कोईभी विद्वान्समर्थनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी वर्तमानशरीरोंकूंदेखिकरिके याप्रकारकानियमकरै ॥ याजीवका मनुष्यत्वजातिवालाशरीरहीयोग्यहै ॥ और याजीवका पशुत्वजातिवालाशरीरहीयोग्यहै ॥ तौ पूर्वशरीरोंकेअज्ञानतैं यासंसारविषे सादिपणाही प्राप्तहोवैगा ॥ और संसारविषेसादिपणा कोईभीआस्तिकवादी अंगीकारकरैनहीं ॥ किंतु चार्वाकनास्तिकतैंभिन्न संपूर्णआस्तिकवादी संसारकूं प्रवाहरूपकरिके अनादिहीमानै हैं ॥ यातैं याजीवकूं नियमकरिके पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालाहीदूसराशरीर प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकाजोनियमअंगी

याळोकविषे दीर्घकाष्ठकेसाथ सूत्रकरिकैबांधेहुए जेकाष्ठकेमर्कटहैं ॥ तिनमर्कटोंकेसाथ बालकक्रीडाकरैहै ॥ तहां सोबालक जिसमर्कटके क्रीडाकरावणेकीइच्छाकरैहै ॥ तिसमर्कटकेसूत्रकूंआकर्षणकरैहै ॥ तासूत्रकेआकर्षणकरिके तेमर्कट नानाप्रकारकीक्रीडाकरैं हैं ॥ तैसे यहअनादिसंसार दीर्घकाष्ठकेसमानहै ॥ और स्थावरजंगमरूपसर्वप्राणी मर्कटकेसमानहैं ॥ और जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्म सूत्रकेसमानहैं ॥ और मायाविशिष्टअंतर्यामीपरमात्मा बालककेसमानहै ॥ यातें सोपरमात्मारूपबालक क्रीडाकरणेवासतै जिसजिसप्राणीरूपमर्कटके पुण्य पापकर्मरूपसूत्रकूंआकर्षणकरैहै ॥ सोसोजीवरूपमर्कट यासंसार विषे नानाप्रकारकीचेष्टाकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ याजीवनें पूर्वजन्मोंविषे अनेकपुण्यपापरूपकर्मकरे हैं ॥ तिनकर्मोंकाज्ञान याअल्पज्ञजीवकूंहैनहीं ॥ किंतु सर्वज्ञपरमात्माकूंहीं जीवकेपुण्यपापकाज्ञानहै ॥ और यहजीव जिसकालविषे यास्थूलशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तिसकालविषे सोपरमात्मादेव ताजीवकेजिसपुण्यपापरूपकर्मोंकूं सुखदुःखरूप फलकेदेणेवासते सन्मुखकरैहै ॥ तिसीपुण्यपापरूपकर्मकेअनुसार यहपराधीनजीव दूसरेजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें पुण्यपापरूपकर्मकेकरणे विषे तथापुण्यपापकर्मकेसुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे तथा दूसरेशरीरकीप्राप्तिविषे यहजीव स्वतंत्रनहीं ॥ किंतु अंतर्यामीपरमात्माही ताकेविषेकारणहै ॥ सोपरमात्मादेव याजीवके पुण्यपापकर्मकेअनुसार जैसेजैसेशरीरकूंरचैहै ॥ तिसीतिसीशरीरकूंयहजीव प्राप्त होवैहै ॥ यातें पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ किंवा अत्यंतअल्पतृणशरीर विषेस्थितहुआयहजीवपूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतें ब्रह्माकेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अत्यंतउत्कृष्टब्रह्माकेशरीरविषे स्थितहुआयहजीव पूर्वलेकिसीपापकर्मकेप्रभावतें तृणशरीरकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातें यहसिद्धभया ॥ जैसे पिशाचशरीरोंका तथामेघोंका वायुकेअधीन गमन होवैहै ॥ स्वतंत्रगमनहोवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथाभूमिलोकविषे याजीवकाजोगमनहोवैहै सो स्वतंत्रहोवैनहीं ॥ किंतु परमेश्वरनें सुखदुःखरूपफलकेदेणेवासते सन्मुखकरेजेपुण्यपापरूपकर्म तिनकर्मोंकेअनुसारहीं याजीवका परलोकविषेगमनहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहजीव पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकूं जोनप्राप्तहोताहोवे ॥ तो श्रुतिनें याजीवकूं पूर्वलेशरीरके समान

पर्यंत मध्यकालविषे यहसूक्ष्मशरीर किसीसुखदुःखकूंभोगतानहीं ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे गृध्रपक्षी मांसकूंमुखविषेग्रहणकरिके आकाश विषेउडेहै ॥ सोगृध्रपक्षी यद्यपि ताकालविषेभी मांसकेभक्षणकरणेविषेसमर्थ है ॥ तथापि आकाशविषे चलताहुआ सोगृध्र तामांसकूंभक्षणकरैनहीं ॥ किंतु किसीवृक्षादिकोंविषेस्थितहोइके सोगृध्र तामांसकूंभक्षणकरैहै ॥ तैसे यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके यहसूक्ष्मशरीर जबपर्यंत दूसरेस्थूलशरीरकूं नहींग्रहणकरता ॥ तबपर्यंत यहसूक्ष्मशरीर किसीपदार्थकेभोगणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ याकारणतें सोसूक्ष्मशरीर यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके सुखदुःखकेभोगणेवासते दूसरेस्थूलशरीरकूं अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ सोदूसराशरीर पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालाहोवै ॥ अथवा पूर्वलेशरीरतैंविलक्षणहोवै ॥ याकेविषेकोईनियमनहीं ॥ काहेतें नरकविषे केवलपापकर्मकेदुःखरूपफलकूंभोगताहुआ जोजीवहै ॥ ताजीवका जभीकोई पूर्वलापुण्यपापरूपमिश्रितकर्म उदयहोवैहै॥ तभी सोनरकवासीजीव नरककेस्थूलशरीरकापरित्यागकरिके यापृथिवीलोकविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ता नरकवासीजीवका जभीकोईपूर्वला केवलपुण्यकर्मउदयहोवैहै ॥ तभी सोनरकवासीजीव तानरककेस्थूलशरीरकापरित्यागकरिके स्वर्गविषे देवताशरीरकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ और स्वर्गविषेस्थित जेकर्मदेवताहैं ॥ तिनदेवतावोंका जभी कोईपूर्वलापुण्यपापरूपमिश्रितकर्मउदयहोवैहै ॥ तभी तेदेवता स्वर्गकेस्थूलशरीरकापरित्यागकरिके याभूमिलोकविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और तामनुष्यशरीरकेपरित्यागकालविषे जभीकोईपूर्वलापापकर्मउदयहोवैहै ॥ तभी तेदेवता तामनुष्यशरीरकापरित्यागकरिके नरककेशरीरकूंभीप्राप्तहोवैं हैं ॥ याप्रकार स्थूलशरीरकेपरित्यागकालविषे जोजोपुण्यकर्म अथवा पापकर्म याजीवकाउदयहोवैहै ॥ तिसपुण्यपापकर्मकेअनुसार याजीवकूंदूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें याजीवकूं पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालाहीदूसराशरीर प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहजीव अल्पज्ञहै ॥ यातें यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके इसजातिवालेशरीरकूं मैं प्राप्तहोवोंगा ॥ याप्रकारकाज्ञान जीवविषे संभवैनहीं ॥ और पुण्यपापरूपकर्म जडहैं ॥ यातें तिनोंविषेभी उत्तरशरीरकाज्ञानसंभवैनहीं ॥ यातें याजीवकूं दूसरेशरीरकीप्राप्ति कौनकरावताहै ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे

होवैहै ॥ और सोसूक्ष्मशरीरस्थूलशरीरतैंविना स्थितहोवैनहीं ॥ किंतु स्थूलशरीरकूंआश्रयणकरिकेही यासूक्ष्मशरीरकीस्थितिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आत्मज्ञानतैंपूर्व संसारदशाविषे यासूक्ष्मशरीरकी दोप्रकारकीअवस्थाहोवैहै ॥ एकतो कारणअज्ञानविषे संस्काररूपकरिकै स्थितिरूपअवस्थाहोवैहै ॥ और दूसरी स्थूलशरीरकूंआश्रयणकरिकेस्थितिरूपअवस्थाहोवैहै ॥ तहाँ सुषुप्तिकालविषे यहसूक्ष्मशरीर कारणअज्ञानविषे संस्काररूपकरिकैरहैहै ॥ और सुषुप्तितैंभिन्नकालविषे यहसूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरकूंआश्रयणकरिकैरहैहै ॥ यादोनों प्रकारकीअवस्थाविषे किसीएकअवस्थाकूंआश्रयणकरिकेही यहसूक्ष्मशरीररहै हैं ॥ और हेजनक ॥ पापकर्मकेवशतैं यहसूक्ष्मशरीर नरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तानरकविषे यहसूक्ष्मशरीर नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पुण्यकर्मकेवशतैं यहसूक्ष्मशरीर स्वर्गादिक लोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा उपासनाकेबलतैं यहसूक्ष्मशरीर ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तास्वर्गादिकलोकोंविषे तथाब्रह्मलोकविषे यहसूक्ष्म शरीर नानाप्रकारकेसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोनरकविषेदुःखकाभोग तथास्वर्गविषे ॥ सुखकाभोग तथाब्रह्मलोकविषेसुखकाभोग स्थूलशरी रतैंविना संभवैनहीं ॥ यातैं स्वर्गविषे तथाब्रह्मलोकविषे तथानरकविषे यहसूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरकूंआश्रयणकरिकेही सुखदुःखकूंभो गैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आपने सूक्ष्मशरीरकी दोअवस्थाकही सोसंभवैनहीं ॥ किंतु सूक्ष्मशरीरकीतीनअवस्थासंभवैहैं ॥ काहेतैं जभी यहसूक्ष्मशरीर यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै परलोकविषेजावैहै॥तिसकालविषे यहसूक्ष्मशरीर संस्काररूपकरिकेकारणअज्ञान विषेरहैनहीं ॥ तथा तिसकालविषे यहसूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरकूंभीआश्रयणकरैनहीं॥यातैं तिसकालविषे यासूक्ष्मशरीरकीतीसरीअवस्था अंगीकारकरीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै यहसूक्ष्मशरीर जबपर्यंत दूसरेस्थूलशरीरकूंनहींप्राप्त भया ॥ तबपर्यंत यासूक्ष्मशरीरकी जोकदाचित् तीसरीअवस्थासंभवतीहोवे ॥ तो सातीसरीअवस्था निःशंकहोवे ॥ याकेविषे हमारा कोईआग्रहनहीं ॥ परंतु सुखदुःखकेभोगकेवास्ते जोसूक्ष्मशरीरकीस्थितिहै ॥ सास्थिति स्थूलशरीरतैं विनाहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थ विषे हमारातात्पर्यहै ॥ और हेजनक ॥ यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै यहसूक्ष्मशरीर जबपर्यंत दूसरेस्थूलशरीरकूंनहींप्राप्तहोता ॥ तब

शरीरकाशीघ्रही परित्यागकरैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे नीचेपतनतैंपूर्वआम्रादिकफलोंका वृक्षकेसाथ तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ तैसे मरणतैं पूर्व याजीवात्माकाभी यास्थूलशरीरकेसाथ तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं मैंब्राह्मणहूं मैंक्षत्रियहूं मैंस्थूलहूं याप्रकारकीप्रतीतिलोकोंकूंहोवैहै ॥ और जैसे नीचेपतनतैंपूर्व वृक्षकेसाथ फलोंकातादात्म्यहुएभी परिपक्कअवस्थाविषे तिनफलोंका वृक्षकेसाथ अवश्यवियोगहोवैहै ॥ तैसे मरणतैंपूर्व याजीवात्माका स्थूलशरीरकेसाथ तादात्म्यसंबंधहुएभी मरणकालविषे याजीवात्माका तास्थूलशरीरकेसाथ अवश्यवियोगहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ आम्रादिकवृक्षकीशाखातैं नीचेपतनहुआ आम्रादिकफल किसीआधारतैंविना रहैनहीं ॥ किंतु नीचेपतनतैंपूर्व तेआम्रादिकफल वृक्षकेआश्रितरहैं हैं ॥ और नीचेपतनतैंपश्चात् तेआम्रादिकफल भूमिआदिकोंकेआश्रितरहैं हैं तैसे यहसूक्ष्मशरीरभी यास्थूलशरीरकेत्यागतैंअनंतर किसीआधारतैंविनारहैनहीं ॥ किंतु मरणतैंपूर्व सोसूक्ष्मशरीर यास्थूलशरीरकेआश्रितरहैहै ॥ और यास्थूलशरीरकेत्यागतैंअनंतर सोसूक्ष्मशरीर किसीदूसरेस्थूलशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहाँ यहसूक्ष्मशरीरविशिष्टजीवात्मा जिसप्रकार पूर्वलेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथाजिसजातिवालेपूर्वशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसोप्रकार तथातिसीजातिवालेदूसरेशरीरकूं यहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ॥ जिसजातिवालापूर्वशरीरहोवैहै ॥ तिसीजातिवाले दूसरेशरीरकूं यहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ यहअर्थ जोश्रुतिभगवतीनैंकथनकर्‍याहै ताका यहअभिप्रायहै॥पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा कदाचित् पूर्वलेशरीरकेसमान जातिवालेशरीरकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ परंतु यहजीवात्मा पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेशरीरकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्यनहीं ॥ किंतु एकशरीरकापरित्यागकरिके यहजीवात्मा दूसरेशरीरकूंअवश्यप्राप्तहोवैहै॥याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्य है सोदूसराशरीर पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालाहोवै ॥ अथवा पूर्वलेशरीरतैंविलक्षणहोवै ॥ याकेविषे कोईनियमनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिके निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक प्रारब्धकर्मकेक्षयहुएतैंअनंतर यद्यपि यास्थूलशरीरकानाशहोवैहै ॥ तथापि जबपर्यंत याजीवकूं अद्वितीयब्रह्मकासाक्षात्कारनहींभया तबपर्यंत सूक्ष्मशरीरकानाशहोवैनहीं॥ एकब्रह्मज्ञानकरिकेही सूक्ष्मशरीरकानाश

कारकेशब्दोंकूंकरैहै॥याप्रकारकेअनेकशब्दोंकूंकरताहुआ यहसूक्ष्मशरीररूपरथ यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै परलोककूं गमनकरैहै॥ और यास्थूलशरीररूपपुरीतैं एकवारबाहरनिकस्याहुआ यहसूक्ष्मशरीररूपरथ पुनःतास्थूलशरीरविषेआवैनहीं॥और हेजनक॥जैसेसुषुप्ति अवस्थाविषे यहजीवात्मा हृदयदेशविषे स्थितपरमात्मादेवकेसाथ तादात्म्यभावकूं प्राप्तहोवैहै॥तैसे मरणकालविषेभी यहजीवात्माहृदयदे शविषेस्थितपरमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूं प्राप्तहोवैहै॥और हेजनक ॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थितहुआ यहजीवात्माजाग्रत्स्वप्नकेसं पूर्णविशेषज्ञानोंतैं रहितहोवैहै ॥ तैसे मरणकालविषेभी यहजीवात्मा संपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं यहजीवात्मा मरणका लविषे परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोवैहै और जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहो इके जाग्रत्स्वप्नकेसर्वविक्षेपोंतैं रहितहोवैहै॥तैसे मरणकालविषेभी यहजीवात्मा परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके पूर्वउक्तसंपूर्ण शब्दोंका परित्यागकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर ऊर्ध्वश्वासोंकरिकै आपणेदीनभावकूंबोधनकरताहुआ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्याग करिकै पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसार दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब पूर्वशरीरकापरित्यागकरिकै याजीवात्माकूं जिसप्रकारतैं दूसरे शरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताप्रकारका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ मरणकालविषे बहुतअस्थानोंविषेतो यहरीतिहै ॥ प्रथम यहजीवात्मा दुर्बल ताकूंप्राप्तहोइके पश्चात् ऊर्ध्वश्वासोंकरिकेउपलक्षितजोदीनदशाहै तादीनदशाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और सोदुर्बलता याजीवकूं दोप्रकारकेकार णोंतैंहोवैहै ॥ एकतौ जरावस्थाकरिकै सोदुर्बलताहोवैहै ॥ और दूसरा व्याधिकरिकै सादुर्बलताहोवैहै ॥ तादुर्बलताकरिकै दीनदशाकूं प्राप्तहुआयहजीव मरणकालविषेऊर्ध्वश्वासलेवैहै ॥ हेजनक ॥ याप्रकारकीदशाकूंप्राप्तहुआ यहजीवात्मा जिसप्रकार यास्थूलशरीरका परित्यागकरैहै ताप्रकारकूं तूं श्रवणकर ॥ जैसे यालोकविषे आम्रकाफल तथा उदुंबरकाफल तथा पिप्पलकाफल जभी परिपक्वहोवैहै ॥ तभी तत्कालहीं तावृक्षकीशाखातैंटूटिके भूमिविषेपड़ैहै ॥ अनेकप्रकारकेउपायोंकरिकैभी परिपक्वफलकी वृक्षविषेस्थितिहोइसकैनहीं ॥ तैसे यास्थूलशरीरकेआरंभकरणेहारे जेपुण्यपापरूपप्रारब्धकर्म हैं ॥ तिनोंका जभी भोगकरिकैक्षयहोवैहै ॥ तभी यहजीवात्मा यास्थूल

हमनैं संपादनकर्‍यानहीं ॥ किंतु बाल्यअवस्थातैंलेके मरणपर्यंत आपणेशरीरकेपालनकरणेवासते तथास्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेपालनकरणे वासते अनेकप्रकारकेपापकर्मोंकूं मैंदुरात्माकरताभया ॥ यातैं हमारेकूंधिक्कारहै ॥ हेजनक ॥ याप्रकार मरणकालविषे वृद्धअवस्थाकेनिंदितकर्मोंकूंस्मरणकरिकै यहजीवात्मा अनेकप्रकारकेशब्दोंकूं उच्चारणकरैहै ॥ अब मरणकालकेदुःखकाअनुभवकरिकै यहजीवात्मा जिन शब्दोंकूंउच्चारणकरैहै तिनशब्दोंका निरूपणकरैहैं ॥ जैसे मलीनजलकरिकैपूर्णजोतलावहै॥तातलावविषेस्थितजोमत्स्यहै॥सोमत्स्य मृत्तिकाकरिकैआवृतहोवैहै ॥ तथा सूर्यकीतप्तकरिकै तपायमानहोवैहै ॥ऐसीमत्स्यकूं जैसे धीवरपुरुष लेणेवासतेआवैहै तैसेस्त्रीपुत्रादिरूपमलीनजलकरिकैपूर्ण जोयहगृहरूपतलावहै ॥ तिसविषे मैंदुरात्मारूपमत्स्य स्थितहूंमैं॥कैसाहूंमैं॥अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यातीनप्रकारके दुःखरूपसूर्यकरिकै तपायमानहूं॥तथा कामक्रोधादिरूपमृत्तिकाकरिकैआवृतहूं॥याप्रकारके मत्स्यरूपमैंदीनकूं मृत्युरूपधीवर लेणेवासते आयाहै ॥ और जैसे पशुवोंकीहिंसास्थानविषे कोईनिर्दयपुरुष लोहकेक्रकचकरिकै पशुकेअंगोंकूंछेदनकरैहै॥तैसे दयातैंरहितयहमृत्यु हमारेअंगोंकाछेदनकरैहै ॥ ताकरिकै हमारेकूंबहुतकष्टहोवैहै ॥ और यामरणकालविषे अनेकतीक्ष्णसूचियोंकरिकै हमारेसर्वअंगोंकूं कोनवेधन करताहै ॥ तिसपुरुषकूं मैं जाणिसकतानहीं ॥ और यामरणकालविषे हमारेहस्तपादभी काष्ठकेसमानजडहोइगयेहैं ॥ और जैसे दुष्टअश्व रथवाहीपुरुषके वशवर्तीहोवैनहीं ॥ तैसे इसकालविषे मनसहितनेत्रादिकसंपूर्णइंद्रिय हमारे वशवर्तीहैंनहीं ॥याकारणतैं अंधपुरुषकीन्याई किसीपदार्थकूं मैं देखतानहीं ॥ तथा बधिरपुरुषकीन्याई किसीशब्दकूं मैं श्रवणकरतानहीं॥और इसकालविषे हमाराकंठ कफधातुनैं निरोधकरिलियाहै ॥ और जठराग्निभी आपणेस्थानकूंछोडिकै हमारेशरीरकूंदाहकरताहुआ ऊपरचल्याआवैहै ॥ और प्राणवायुभी आपणेस्थानकूंछोडिकै हमारेशरीरकूं शोषणकरताहुआ ऊपरचल्याआवैहै ॥ और जैसे यालोकविषे कोटीवृश्चिक क्रोधवान्होइकै किसीपुरुषकेशरीरविषे वारंवार दंशकरै ॥ ताकरिकै जैसीपीडा तापुरुषकूंहोवैहै ॥ तैसीहीपीडा इसकालविषे हमारेकूंहोतीहै ॥ हेजनक ॥ इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेशब्दोंकूं यहजीवात्मा मरणकालविषेकरैहै ॥ और तामरणकालविषे वाणीकेनिरोधहुएभी यहजीवात्मा घुरघुर याप्र

कपापकर्मोंकूं करताभया॥जेब्रह्महत्यादिकपापकर्म अनेकजन्मोंविषे हमारेकूं दुःखकीप्राप्तिकरैंगे॥और ता यौवनअवस्थाविषे मैंदुरात्माकृतघ्न स्त्रीकेअधीनहोइके आपणेमातापिताकाभी परित्यागकरताभया और तायौवनअवस्थाविषे अहंकारकरिकेयुक्तहुआ मैंदुरात्माजीव आपणे पितादिकवृद्धपुरुषोंकाभी उपहासकरताभया॥ इसतेंआदिलेके अनेकप्रकारकेनिंदितकर्मोंकूं मैंपापात्मा यौवनअवस्थाविषेकरताभया॥ याकारणतें हमारेकूं धिक्कारहै॥ हेजनक॥ याप्रकारमरणकालविषे यहजीवात्मा यौवनअवस्थाके निंदितकर्मोंका स्मरणकरिके नानाप्रकार केशब्दोंकूंकरैहै॥ अब मरणकालविषे यहजीवात्मा वृद्धअवस्थाकेनिंदितकर्मोंका स्मरणकरिके जिनशब्दोंकूंउच्चारणकरै है तिनशब्दोंका निरूपणकरें हैं॥ वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोइके मैंदुरात्माजीव आपणेहस्तपादादिकअंगोंकेचलावणेविषेभीनहींसमर्थहोताभया और तावृद्धअवस्थाविषे काम क्रोध लोभ मोह यहचारों वृद्धिकूंप्राप्तहोतेभये॥और तावृद्धअवस्थाविषे कामकरिकेआतुरहुआ मैंमूढबुद्धि स्त्रीकी अप्राप्तिकरिकेभीमैंदुःखीहोताभया॥ और स्त्रीकेप्राप्तहुएभीताकेभोगणेकीअसामर्थ्यकरिके दुःखकूंप्राप्तहोताभया॥और तावृद्धअवस्थाविषे मैंदुरात्माजीवकूं क्रोधरूपीअग्निकरिके तथालोभादिकविकारोंकरिके जोजोदुःखप्राप्तभयाहै॥ तादुःखकूं मुझ जडतेंविना कौनचेतनपुरुष सहनकरिसकेगा॥कैसेहैंतेदुःख॥ जिनदुःखोंविषे एकएकदुःखभीब्रह्महत्याजन्यदुःखकेसमानहै॥ याप्रकारकेअनेकदुःखोंकूं मैंपापात्मा वृद्ध अवस्थाविषे प्राप्तभयाहूं॥और तावृद्धअवस्थाविषे हमारेहृदयकमलविषे काम क्रोध लोभ मोह यहचारों अत्यंतवृद्धिकूंप्राप्तहोतेभये॥तिन कामक्रोधादिकोंकरिके यहहमाराहृदयकमल कर्कटीफलकीन्याई भेदनकूं नहींप्राप्तहोताभया॥यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै॥और जेस्त्री पुत्रादिकबांधव हमारेकूं प्राणोंकेसमान प्रियजाणतेथे॥तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव हमारेकूं वृद्धहुआदेखिके श्वानकीन्याई हमारानिरादरकरतेभये॥ और काम क्रोध लोभ मोह यहचारों बाल्यअवस्थातेंलेके वृद्धअवस्थापर्यंत हमारेविषेवर्तमानहैं॥ और जैसे घृतकेपावणेकरिके प्रज्वलित अग्निकीशांतिहोवैनहीं उलटा घृतकेपावणेतें अग्निकीवृद्धिहोतीजावैहै॥ तैसे विषयोंकीप्राप्तिकरिके कामादिकोंकीशांतिहोवैनहीं॥ उलटा विषयोंकीप्राप्तितें दिनदिनविषे कामादिकोंकीवृद्धिहोतीजावैहै॥ एकआत्माकाविचार कामादिकोंकेशांतिकाउपायया॥तिसआत्मविचारकूं

रउठाइकेडारतीभई ॥ और तिसबाल्यअवस्थाविषे अन्नादिकोंकिभक्षणकरणेविषे हमारेकूंअसमर्थदेखिके आपणेस्तनोंकादुग्ध पानकराव तीभई ॥ और भक्षणकरणेयोग्यजेउत्तमपदार्थ हैं ॥ तिनोंकूं आपणेउदरविषेनपाइकेभी जोमाता तिनउत्तमपदार्थोंकूं हमारेताईदेतीभई ॥ और बाल्यअवस्थाविषे आपणेहितअहितकेज्ञानतेंरहित जोमैंमूढथा ॥ ताकी नानाप्रकारकेउपायोंकरिके जोमाता जलअग्निआदिकोंतेंर क्षाकरतीभई ॥ ऐसीहितकारीमाताका मैंदुर्बुद्धिकृतघ्न बाल्यअवस्थाविषे राक्षसीकीन्याई अनादरकरताभया ॥ तथा कठोरवचनरूपबाणों करिके तामाताकेकर्णोंकूंभेदनकरताभया ॥ और शत्रुकेवचनकीन्याई तामाताकेहितकारीवचनोंकूंभी मैंपापात्मा नहींमानताभया ॥ और ताबाल्यअवस्थाविषे मैंदुर्बुद्धिजीव पितापितामहादिकवृद्धपुरुषोंकूं तथाशास्त्रवेत्ताब्राह्मणोंकूं तथासुहृदमित्रोंकूं नानाप्रकारकेकठोरवचनों करिके ताडनकरताभया और ताबाल्यअवस्थाविषे मैंमूढबुद्धिजीव नहींभक्षणकरणेयोग्यपदार्थोंकूंभी भक्षणकरताभया ॥ और लोक वेदविषेंनिंदितजेकर्म हैं तिनोंकूंभी करताभया ॥ इसतेंआदिलेके अनेकप्रकारकेनिंदितकर्मोंकूं मैंपापात्माजीव बाल्यअवस्थाविषेकरता भया ॥ याकारणतें हमारेकूंधिकारहै ॥ हेजनक ॥ इसप्रकार मरणकालविषे बाल्यअवस्थाकेकर्मोंकूं स्मरणकरताहुआ यहजीवात्मा नाना प्रकारकेशब्दोंकूंकरेहै ॥ अब मरणकालविषे यौवनअवस्थाकेनिषिद्धकर्मोंकास्मरणकरिके जिनशब्दोंकाउच्चारण यहजीवात्माकरैहै ॥ तिनशब्दोंकानिरूपणकरैं हैं ॥ जैसे कोईपुरुष चित्तकूंएकाग्रकरिके विष्णुआदिकदेवतावोंका निरंतरध्यानकरैहै ॥ तैसे यौवनअवस्था विषे मैंमूढबुद्धिजीव आपणेहृदयरूपीमंदिरविषे आपणीस्त्रीकूं अथवा परस्त्रीकूं स्थापनकरिके तिनस्त्रियोंका निरंतरध्यानकरताभया ॥ एकक्षणमात्रभी हमनें परमेश्वरकाध्यान नहींकऱ्या ॥ और तायौवनअवस्थाविषे हमारेकूं धनादिकपदार्थोंकेएकठेकरणेका अत्यंत लोभहोताभया ॥ तालोभकेवशहुआ मैंदुर्बुद्धि ब्राह्मणादिकमहान्पुरुषोंके सुवर्ण पशु गृह क्षेत्र अन्न स्त्री इसतेंआदिलेके अनेकपदार्थोंकूं हरणकरताभया ॥ और तायौवनअवस्थाविषे मैंमूढबुद्धिजीव धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरिके संपूर्णदिवसोंकूं वितीतकरताभया ॥ और स्त्रियोंकेसाथक्रीडाकरिके संपूर्णरात्रियोंकूं वितीतकरताभया ॥ और तायौवनअवस्थाविषे मैंदुरात्माजीव धनकेलोभकरिके ब्रह्महत्यादि

यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहे ॥ हेजनक ॥ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके जोपर लोकविषेजावैहे ॥ याकेविषे तूं दृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ जैसे कोईधनीपुरुष आपणेग्रामकापरित्यागकरिके दूसरेकिसीग्रामविषेजाणेकाउद्यम करैहे॥सोधनीपुरुष आपणेशकटकूंतयारकरैहे॥ताशकटऊपर नानाप्रकारका अन्न तथाधन तथास्त्री तथापुत्र इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकी सामग्रीराखैहे॥ सोधनीपुरुषकाशकट नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरताहुआ शनैःशनैःकरिके मार्गविषेचालैहै॥तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके परलोककूंजाणेहारा जोयहजीवात्मारूपधनीपुरुषहे ॥ ताजीवात्माका परलोककेजाणेकासाधन यहसूक्ष्मशरीररूपरथहे॥ कैसाहेसोसूक्ष्मशरीररूपरथ॥पुण्यपापरूपसामग्रीकरिकेपूर्ण हे॥ऐसासूक्ष्मशरीररूपीरथ मरणकालविषेनानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरताहुआपरलोकविषेजावैहे ॥ अव सूक्ष्मशरीररूपरथकेशब्दोंकानिरूपणकरैं हैं ॥हेजनक॥ जिसकालविषे यहपुरुष मरणकेसमीपप्राप्तहोवैहे ॥ तिसकालविषे याप्रकारकेशब्दोंकूंउच्चारणकरैहे ॥ हे हमारे गुणवान्पुत्र ॥ हे हमारी प्राणोंकेसमानप्रिय नवीनयौवनवालीस्त्री ॥ हे हमारे धन तेरेकूंबहुतयत्नकरिके मैंनें एकत्रकऱ्याथा ॥ हे हमारे हितकारीबांधव ॥ तुमसंपूर्णोंकापरित्यागकरिके मैंभाग्यहीन अकेलाही दूरमार्गविषेजाताहूं ॥ यातैं हमारेकूं धिक्कारहे ॥ हेजनक ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेशब्दोंकूं यहजीवात्मा मरणकालविषे स्त्रीपुत्रादिकोंके वियोगतैं करैहे ॥ अव बाल्यअवस्थाविषे जेपापकर्मकरैं हैं ॥ तिनोंकास्मरणकरिके यहजीवात्मा मरणकालविषे जिनशब्दोंकूंउच्चारणकरैहे तिनशब्दोंकानिरूपणकरैं हैं ॥ बाल्यअवस्थाविषे मैंपापात्माजीव दुर्बलबालकोंका वाणीकरिके निरादरकरताभया ॥ तथा तिनबालकोंकूं ताडनकरताभया ॥ और जेदेवता पूजनकरणेकूंयोग्यहैं ॥ तिनदेवतावोंकेमस्तकऊपर मैंपापात्माजीव पादोंकूंरखताभया ॥ और हमारेहितकीकरणेहारी जोहमारीमाताथी ॥ जिसमातानैं पाषाणकीन्याई नवमासपर्यंत उदरविषेराख्याथा ॥ ऐसीहितकारीमाताकूंभी मैंकृतघ्न नानाप्रकारके क्लेश देताभया ॥ जैसे लोहेकाक्रकच काष्ठकूंविदारणकरैहे ॥ तैसे ताहितकारीमाताके योनियंत्रकाविदारणकरिके मैंदुरात्माजीव माताकेउदरतैंबाहरनिकसताभया ॥ तिसतैंअनंतर बाल्यअवस्थाविषे हमारेविष्ठाकूं तथामूत्रकूं जोमाता आपणेहस्तोंऊप

याज्ञवल्क्यमुनि भयकूंप्राप्तभयाहे ॥ सोविचार तूं श्रवणकर ॥ चारिवेदोंकूंअध्ययनकरणेहारे अनेकबुद्धिमान्‌शिष्य हमारेहैं ॥ तिनशिष्यों विषे कोईभी हमाराशिष्य जनकराजाकेसमान बुद्धिमान्‌नहीं ॥ काहेतें जोविद्या अनेकवर्षपर्यंत अध्ययनकरीहुईभी प्राप्तहोइसकेनहीं ॥ तासंपूर्णविद्याकूं यहजनकराजा कामप्रश्नरूपवरकरिके थोडेकालविषेहीलियाचाहैहे ॥ यातें यहजनकराजा अत्यंतबुद्धिमान्‌हे॥ और याज नकराजानें पूर्वकामप्रश्नरूपवर हमारेतैंलियाथा॥ यातें तासत्यवचनरूपपाशकरिके याजनकराजानें हमारेकूंबांध्याहै॥यातें सूर्यभगवान्‌की आराधनाकरिके जोविद्या हमारेकूंप्राप्तभई हे ॥ सोसंपूर्णब्रह्मविद्या आपणेवचनकेसत्यकरणेवासतै याजनकराजाकेप्रति उपदेशकरणीहो वेगी ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ बुद्धिआदिकसर्वसंघातकासाक्षी जोस्वयंज्योतिआत्मा हमनें पूर्व तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ सोस्वयंज्योतिआत्मा कदाचित् जाग्रत्‌अवस्थातैंअनंतर प्रथम सुषुप्तिअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहे ॥ सुषुप्तितैंप श्चात् स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और कदाचित् सोस्वयंज्योतिआत्मा सुषुप्तिकोप्राप्तितैंविनाहीं प्रथम स्वप्नअवस्थाकूंहीं प्राप्तहोवैहे ॥ तास्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा स्त्रीआदिकोंकेसाथ नानाप्रकारका व्यवहारकरैहे ॥ तथा अनेकनाडीरूपमार्गोंविषे भ्रमण करैहे ॥ तथा पुण्यपापरूपकर्मोंकाफल जोसुखदुःखहे तिसकूं देखैहे ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेव्यवहार स्वप्नविषेकरैहे ॥ तिसतैंअनंतर सोस्वयंज्योतिआत्मा तास्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिके तिसीनाडीरूपमार्गद्वारा जाग्रत्‌अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहे॥ताजाग्रत्‌अव स्थाविषेभी यहस्वयंज्योतिआत्मा पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं अनेकप्रकारकेसुखदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्था विषे सुखदुःखरूपफलकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंका जभीक्षयहोवैहे॥ तथा जाग्रत्‌केभोगदेणेहारेकर्मोंकाप्रादुर्भावहोवैहे॥ तभी यहजीवात्मा स्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिके जाग्रत्‌अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तैसे यास्थूलशरीरविषे सुखदुःखरूपभोगकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तिनोंकाजभीक्षयहोवैहे ॥ तथा जन्मांतरविषे सुखदुःखरूपभोगकेदेणेहारेकर्मोंका जभीप्रादुर्भावहोवैहे ॥ तभी

सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंविषे निरंतर भ्रमणकरैहै ॥ तिनअवस्थावोंविषेभी पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहस्वयंज्योतिआत्मा कभी जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कभी स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताजाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे पूर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं यहस्वयंज्योतिआत्मा सुखकूंभोगैहै॥और पूर्वलेपापकर्मकेवशतैं दुःखकूंभोगैहै ॥ और जाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तेकर्म जभी नाशकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तभी जैसे आकाशविषेभ्रमणकरिकै परिश्रमकूंप्राप्तहुआपक्षी ताआकाश कापरित्यागकरिकै आपणेगृहविषेआवैहै ॥ तैसे जाग्रत्स्वप्नअवस्थाकेव्यापारोंकरिकै परिश्रमकूंप्राप्तहुआ यहस्वयंज्योतिआत्मा सुषुप्ति अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेभगवन् ॥ याप्रकार जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंतैं भिन्नकरिकै आत्माकास्वरूप आपने पूर्व हमारे प्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ सोइतनेज्ञानमात्रकरिकै मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ काहेतैं दूसरेशरीरकीप्राप्तिरूप जोजन्महै ॥ तथा यास्थूलशरीर कापरित्यागरूपजोमरणहै ॥ तथा तिसजन्ममरणकाकारण जेनानाप्रकारकीकामनाहैं ॥ तिनजन्मादिकविकारोंका जोआत्माविषेसंबंध प्रतीतहोवैहै ॥ तिसका नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै आपने खंडनकऱ्यानहीं ॥ यातैं जन्ममरणादिकविकारवान् यहसंसारीआत्मा परमआनंदरूप किसप्रकारहोवैगा ॥ हेभगवन् ॥ जन्ममरणादिकसंसारधर्मोंकूंनविषयकरणेहारा जोआत्माकायथार्थज्ञानहै ॥ सोज्ञान जब पर्यंतअधिकारीपुरुषोंकूं नहींप्राप्तहोता ॥ तबपर्यंत अनेकजन्मोंकरिकैभी मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं हेभगवन् ॥ मोक्षकीप्राप्तिवासते जन्ममरणादिकविकारोंतैंभिन्नकरिकै आत्माकायथार्थस्वरूप हमारेप्रति आप उपदेशकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेरा खिकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी ताजनकराजाकेअभिप्रायकूंजाणिकै भयकूंप्रा प्तहोताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जनकराजाकेप्रश्नकेउत्तरदेणेविषे याज्ञवल्क्यमुनिकासामर्थ्यनहींथा ॥ याकारणतैं सोयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ अथवा किसीदूसरेनिमित्तकरिकै भयकूंप्राप्तहोताभया॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सूर्यभगवान् कीन्याई सर्वज्ञजोयाज्ञवल्क्यमुनिहै ॥ ताकेविषे जनकराजाकेप्रश्नकेउत्तरदेणेकीअसमर्थता संभवैनहीं ॥ किंतु जिसविचारकरिकै सो

आनंदकीप्राप्तिहोवैहै॥गंधर्वलोकादिकोंकेआनंदकीप्राप्तिहोवैनहीं॥याप्रकारऊपरकेलोकोंविषेभीजिसजिसलोककेआनंदकूं यहवेदवेत्तानिष्पापपुरुष काकविष्ठाकीन्याई असारजानिके ताकीप्राप्तिकीइच्छानहींकरैहै ॥ तिसतिसलोककेआनंदकूं यहवेदवेत्तानिष्पापपुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ और जोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष ब्रह्मलोककेआनंदकूंभी काकविष्ठाकीन्याई असारजानिके ताकीप्राप्तिकीइच्छानहींकरैहै ॥ सोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष ब्रह्मलोककेआनंदकूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार कर्मउपासनादिकसाधनोंतैंविनाहीं सोवेदवेत्तानिष्कामपुरुष संपूर्णआनंदोंकूंप्राप्तहोवैहै॥और हेजनक॥मनुष्यलोकतैंआदिलेकें जितनेकविषयजन्यआनन्दहैं॥तिनसंपूर्णआनंदोंतैं ब्रह्मलोकका आनंद अधिकहै॥सोब्रह्मलोकका आनंदभी जिसआत्मास्वरूपआनन्दका एकलेशमात्रहै ॥ऐसाआनंदकासमुद्र जोपरमात्मादेवहै ॥ सोआनंदस्वरूपपरमात्मादेवसर्वजीवोंकूं सुषुप्तिअवस्थाविषेप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्माकास्वरूपभूतआनंद॥मनका तथावाणीका अविषयहै ॥ तथा न्यूनअधिकतातैंरहितहै ॥ याकारणतैंहीं सोआत्मारूपआनंद ब्रह्मलोककेआनंदतैंभी अधिकहै॥याहीअर्थकेबोधनकरणेवासतै श्रुतिभगवतीनैंनिष्कामपुरुषकूं ब्रह्मलोकके आनंदकीप्राप्तिकहीहै॥यातैं हेजनक॥सुषुप्तिअवस्थाविषे जोआत्माकास्वरूप हमनैं तुम्हारेप्रतिकथनकऱ्याहै॥सोमनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत संपूर्णआनंदोंतैंअधिकहै॥यातैं सोपरमात्मादेवही परमआनंदरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाउपदेश जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकऱ्या॥तभी सोजनकराजा आपणेज्ञानकीअपूर्णताकूंबोधनकरताहुआ पूर्वकीन्याई पुनःयाप्रकारकावचन कहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ यहजोसाधारणविद्या आपनें हमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ ताविद्याकी गुरुदक्षिणा एक सहस्रगौवां मैं आपकेताईदेताहूं ॥ तागुरुदक्षिणाकूं आप अंगीकारकरो ॥ तिसतैंअनंतर जिसविद्याकरिके हमारेकूं मोक्षकीप्राप्ति होवैहै ॥ तिसविद्याकाउपदेश आप हमारेप्रतिकरो ॥ हेशिष्य ॥ जिसअभिप्रायकरिके जनकराजानें याप्रकारकावचन याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति कह्याहै ॥ ताजनकराजाकेअभिप्रायकूं तूं श्रवणकर राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ पूर्वआपनें हमारेप्रति यहउपदेशकऱ्या ॥ वास्तवतैंसंगतैंरहित जोस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ सोएकहीस्वयंज्योतिआत्मा अविद्याकेसंबंधतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइके जाग्रत् स्वप्न

विषयजन्यआनंदहै ॥ तिनसंपूर्णआनंदोंका हिरण्यगर्भकाआनंद अवधिरूपहै ॥ हेजनक मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जोविषयजन्यआनंदोंकीन्यूनअधिकता श्रुतिनैंकथनकरीहै ॥ ताश्रुती भगवतीका यहअभिप्रायहै ॥ विषयजन्यसर्वआनंदोंतैंअधिक जोहिरण्यगर्भकाआनंदहै ॥ ताआनंदकीभी जबपर्यंत यापुरुषकूं इच्छारहैहै ॥ तबपर्यंत तापुरुषकूं आत्मारूपआनंदकाभानहोवैनहीं॥ यातैं आत्मारूपआनंदकीप्राप्तिकी जिसपुरुषकूंइच्छाहोवै ॥ तिसपुरुषनैं हिरण्यगर्भकेआनंदकीभीइच्छानहींकरणी ॥ याप्रकारकेपरम वैराग्यविषे ताश्रुतीकातात्पर्यहै ॥ यहां मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेक विषयजन्यआनंदहैं ॥ तथा तिनआनन्दोंके साधन जेधन स्त्री पुत्र शरीरादिकहैं॥तिनसंपूर्णोंकूं काकविष्टाकीन्याई असारजाणिके तिनोंकीप्राप्तिकीइच्छानहींकरणी याकानाम परमवैराग्यहै ॥ याप्रकारकापरमवैराग्य जिसपुरुषकूंहोवैहै ॥ तिसीपुरुषकूं आनंदस्वरूपआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ इतनैंकरिके परमवैराग्य काफल दिखाया ॥ अब तावैराग्यकीन्यूनअधिकताकरिके जोजोफलहोवैहै ताकूं निरूपणकरें हैं ॥ हेजनक ॥ मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जोजोविषयजन्यआनंदहमनैं तुमारेप्रति कथनकरेहैं ॥ तिनआनंदोंकीप्राप्तिके दोप्रकारकेसाधनहैं ॥ एकतो कालांतरविषे ताआनंदरूपफलकूंदेणेहारे कर्मउपासनारूपसाधनहैं ॥ और दूसरा शीघ्रही ताआनंदरूपफलकूंदेणेहारा साधनहै सोदूसरासाधनयहहै ॥ जिसपुरुषनैंविधिपूर्वक गुरुमुखद्वारा वेदोंकेपाठकूं तथावेदोंकेअर्थकूं अध्ययनकऱ्याहै ॥ तथा सर्वपापकर्मोंतैंरहितहै ॥ तथा संपूर्णविषयजन्यसुखकीकामनातैंरहितहै ॥ ऐसे वेदवेत्तानिष्कामपुरुषकूं मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत संपूर्णआनंद प्राप्तहोवै हैं॥ परंतु याकेविषे इतनीविशेषताहै ॥ जोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष चक्रवर्तीराजाकेविषयजन्यआनंदकूं काकविष्टाकीन्याई असारजानिके ताकी प्राप्तिकीइच्छानहींकरैहै ॥ परंतु पितृलोकादिकोंकेआनंदकीइच्छाकरैहै ॥ तिसवेदवेत्तानिष्पापपुरुषकूं केवल चक्रवर्तीराजाकेआनंदकीही प्राप्तिहोवैहै॥पितृलोकादिकोंकेआनंदकीप्राप्तिहोवैनहीं॥इसीप्रकार जोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष पितृलोककेआनंदकूं काकविष्टाकीन्याई असार जानिके ताआनंदकीप्राप्तिकीइच्छाकरतानहीं ॥ परंतु गंधर्वलोकादिकोंकेआनंदकीइच्छाकरैहै ॥ तिसवेदवेत्तानिष्पापपुरुषकूं पितृलोकके

नहींहोवै ॥ तथा तिनपदार्थोंकेभोगणेकीशक्तिकरिकेसंपन्नहोवै ॥ तथा बहुतजिसकीआयुषहोवै ॥ इसतैंआदिलेके सर्वभोगोंकीसामग्रीकरिके संपन्न जोचक्रवर्तीराजाहै ॥ तिसकूंजो आनंदहोवैहै ॥ ताआनंदकेसमान यामनुष्यलोकविषे किसीप्राणीकूंआनंदहोवैनहीं ॥ यातैंअस्मदादिकमनुष्योंकेआनंदकीअपेक्षाकरिके सोचक्रवर्तीराजाकाआनंदपरमानन्दहै ॥ और ताचक्रवर्तीराजाकूं जोविषयजन्यआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंदपितृलोकविषे पितरोंकूंहोवैहै ॥ यातैं चक्रवर्तीराजाकेआनंदकीअपेक्षाकरिके सोपितरोंकाआनंद परमआनंदहै॥और पितरोंकूंजोआनंदहोवैहै॥तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद गंधर्वलोकविषे गंधर्वोंकूंहोवैहै॥ यातैं पितरोंकेआनंदकीअपेक्षाकरिके सोगंधर्वोंकाआनंद परमआनंदहै॥और गंधर्वोंकूंजोआनंदहोवैहै तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद कर्मदेवतावोंकूंहोवैहै॥ यातैं गंधर्वोंकेआनंदकीअपेक्षाकरिके कर्मदेवतावोंकाआनंदपरमआनंदहै ॥ अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिके जिनपुरुषोंकूं देवभावप्राप्तहोवैहै ॥ तिनोंकानामकर्मदेवताहै ॥ और तिनकर्मदेवतावोंकूं जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद आजानजदेवतावोंकूंहोवैहै ॥ यातैं कर्मदेवतावोंकेआनंदकीअपेक्षाकरिके आजानजदेवतावोंकाआनंदपरमआनंदहै ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहुएजेअग्निआदिकदेवताहैं ॥ तिनोंकानाम आजानजदेवताहै ॥ और आजानजदेवतावोंकूं जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद प्रजापतिकेलोकविषेहोवैहै ॥ यातैं आजानजदेवतावोंके आनंदकीअपेक्षाकरिके प्रजापतिलोककाआनंद परमआनंदहै ॥ और प्रजापतिलोकविषे जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद विराट्भगवानकेलोकविषेहोवैहै ॥ यातैं प्रजापतिलोकके आनंदकीअपेक्षाकरिके विराट्भगवान्केलोककाआनंद परमआनंदहै ॥ और विराट्भगवान्केलोकविषे जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद ब्रह्मलोकविषेहोवैहै ॥ यातैं विराट्लोककेआनंदकीअपेक्षाकरिके ब्रह्मलोककाआनंद परमआनंदहै ॥ कैसाहैसोब्रह्मलोक ॥ स्थूलजगत्काकारण जोसूत्रआत्मारूपहिरण्यगर्भ है ताके निवासकास्थानहै ॥ ऐसेब्रह्मलोकविषेस्थित उपासकपुरुषोंकूं जोविषयजन्यआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंपरे कोईविषयजन्यआनंदनहीं ॥ किंतु मनुष्यलोकतैंआदिलेकेविराट्लोकपर्यंत जितनाक

दुःखकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और विक्षेपरूपदुःखकेनिवृत्तहुए आत्मारूपसुखकीप्रतीतिहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम जोआपनेंकह्या ॥ सोनियमा यद्यपि स्त्रीपुत्रादिकविषयजन्यसुखविषेघटैहै ॥ तथापि पीनसरोगवालेपुरुषकूं छिक्काकीप्राप्तिकरिके जोसुखहोवैहै ॥ तथा उद्गारकी प्राप्तिकरिकेजोसुखहोवैहै ॥ तासुखविषेसोनियमघटैनहीं ॥ काहेतें आपने विषयकेइच्छाकीनिवृत्ति आत्मरूपसुखकेप्रतीतिविषे कारणकही है ॥ और छिक्काविषे तथाउद्गारविषे किसीपुरुषकूंइच्छाहोवैनहीं ॥ यातें इच्छाकीनिवृत्ति तहाँसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ किसीनिमित्तकरिके जभी छिक्कातथाउद्गारका निरोधहोवैहै ॥ तभी ताछिक्काविषे तथाउद्गारविषे लोकोंकीइच्छा प्रसिद्धदेखीतीहै ॥ यातें छिक्काकीप्राप्तितें तथाउद्गारकीप्राप्तितें जोजीवोंकूं सुखहोवैहै ॥ सोसुखभी इच्छाकीनिवृत्तितेंहीहोवैहै ॥ यातें पूर्वउक्तनियमका किसी स्थलविषेविरोधनहीं ॥ यातें हेजनक ॥ यालोकविषे न्यूनअधिकभावकरिकेस्थित जितनाकवैषयिकसुखहै॥सोसुख आत्मास्वरूपआनन्दतें भिन्ननहीं ॥ किंतु सोसुख आत्मानंदरूपहै ॥ याकारणतेंहीं स्त्रीपुत्रादिकविषयोंकीप्राप्ति ताआत्मारूपसुखकीउत्पत्तिकाकारणनहीं ॥ किंतु सोविषयोंकीप्राप्ति इच्छाकीनिवृत्तिद्वारा तासुखकेअभिव्यक्तिकाकारणहै ॥ इतनेंकरिके विषयजन्यसुखविषे आत्मानंदरूपता दिखाई ॥ अब विषयजन्यलौकिकसुखोंविषे सापेक्षअधिकता निरूपणकरिके आत्मानंदविषे निरपेक्षअधिकता निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यामनु ष्यलोकविषे जोपुरुष यौवनअवस्थाकरिकेयुक्तहोवै ॥ तथा वज्रकेसमान जिसकाशरीर दृढहोवै ॥ तथा भीमअर्जुनकेसमान जोबलवान् होवै ॥ तथा व्यासभगवान्केसमान जोसर्वशास्त्रकावेत्ताहोवे ॥ तथा नानाप्रकारकेअस्त्रोंकेचलावणेविषे जोमहादेवकेसमानहोवे ॥ तथा अश्विनीकुमारोंकेसमान जोरोगतेंरहितहोवे ॥ तथा अणिमादिकअष्टसिद्धियोंकरिकेयुक्तहोवे ॥ और श्रीकृष्णभगवान्कीसहायतातें जैसे राजायुधिष्ठिर तथाअर्जुन समृद्धिकूंप्राप्तभयेथे ॥ तैसे शूरवीरोंकीसहायताकरिके जोसमृद्धिकूं प्राप्तहुआहोवे ॥ तथा सप्तद्वीपोंविषेस्थित जितनेकमनुष्यादिकप्राणीहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका जोचक्रवर्तीराजाहोवे ॥ तथा लोकविषे जिसका महान्यशहोवे ॥ तथा मनुष्योंकेभोगके साधन जे अन्न पान स्त्री पुत्र इत्यादिकपदार्थ हैं ॥ तिनसंपूर्णसाधनोंकरिकेयुक्तहोवे ॥ तथा मनुष्यलोककाकोईभीविषय जिसकूं अप्राप्त

कैसेजानीजावे ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ विषयकीप्राप्तिकालविषे अज्ञानीजीवोंकूं जोकदाचित् आवरणरहितआत्मानंदकाभानहोता ॥ तो जैसे मुक्तिअवस्थाविषे ज्ञानीपुरुषोंकूं मैंसुखरूपहूं याप्रकारका सुखकाअनुभवहोवैहै ॥ तैसे अज्ञानीजीवोंकूं विषयकीप्राप्तिकालविषे मैंसुखरूपहूं याप्रकारकाअनुभव होणाचाहिये ॥ और मैंसुखरूपहूं याप्रकारकाअनुभव अज्ञानीपुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ किंतु मैंसुखवालाहूं याप्रकारकाअनुभव अज्ञानीजीवोंकूंहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ विषयकीप्राप्तिकालविषे जोआत्मानंदप्रतीतहोवैहै ॥ सोअज्ञानकरिकै आवृत्तहुआही प्रतीतहोवैहै ॥ एकमुक्तिअवस्थाविषेही आवरणरहितआत्माकाभानहोवैहै ॥ अब ताविषयजन्यसुखके न्यूनअधिकताकूं दृष्टांतकरिकै स्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे अंधकारकरिकैयुक्त जोआकाशहै॥ताआकाशकेकिसीअंशविषेस्थितहोइकै खद्योतजंतु अथवा मणि ताआकाशकेजितनेदेशकाअंधकार निवृत्तकरैहैं ॥ तितनेदेशविषेही आकाशकास्फुरणहोवैहै ॥ तिसतैं अधिकआकाशकास्फुरणहोवै नहीं ॥ तैसे आत्मारूपआकाशविषेस्थित जोइच्छाजन्यदुःखरूपअंधकारहै ॥ तिसदुःखरूपअंधकारके जितनेअंशकूं विषयकीप्राप्तिरूप खद्योतादिक निवृत्तकरैहैं॥तितनेपरिमाणहीं आत्मारूपसुख विक्षेपतैंरहितहुआप्रतीतहोवैहै ॥ तिसतैंअधिकसुख प्रतीतहोवैनहीं॥याप्रकार एकहीआत्मारूपसुखको न्यूनअधिकता प्रतीतहोवैहै ॥ इतनैंकरिकै इच्छाजन्यदुःखरूपप्रतिबंधकके अभावकेविद्यमानहुए आत्मानंदके प्रतीतिकीविद्यमानतारूप अन्वयदिखाया॥ अब तादुःखरूपप्रतिबंधककेअभावकेअविद्यमानहुए आत्मानंदकेप्रतीतिकीअविद्यमानतारूप व्यतिरेकका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे अंधकारयुक्तआकाशविषे खद्योतके तथामणिके विद्यमानहुए जोआकाशकादेश स्फुरणहोताथा ॥ सोईहीआकाशकादेश खद्योतके तथामणिके निवृत्तहुएतैंअनंतर पुनःअंधकारकरिकैआवृत्तहुआ प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे विषयकीप्राप्तिकालविषे ताविषयकीइच्छाजन्यदुःखकेनिवृत्तहुए जोआत्मारूपआनंद प्रतीतहोताथा ॥ सोआत्मारूपआनंद दूसरेविषय कीइच्छाकेउत्पन्नहुए प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ विषयकीप्राप्तिकरिकैजन्य जोदुःखाभावहै ॥ सोदुःखाभावही अन्वयव्यतिरे ककरिकै आत्मरूपसुखकेप्रतीतिकाकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विषयकीप्राप्तितैं इच्छाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और इच्छाकेनिवृत्तहुए

पानकरणेजावेंहै ॥ तैसे सुखप्राप्तिकीइच्छावाले जेयहअज्ञानीजीवहैं ॥ तेजीव अज्ञानकरिकेआवृत्त जोअत्यंतसमीपवर्त्तिआनंदरूपआ त्माहै ताकापरित्यागकरिकें बाह्यविषयोंकूंदेखिके तिनविषयोंकीप्राप्तिकीइच्छाकरैंहै ॥ और तिनविषयोंकीइच्छाकरिके तिनजीवोंविषे दुःखकीउत्पत्तिहोवेंहै ॥ और सोइच्छाजन्यदुःख आत्मारूपआनंदका प्रतिबंधकहै ॥ जैसे मणिमंत्रादिकप्रतिबंधक जबपर्यंत अग्निकेस मीपरहैं है॥तबपर्यंत अग्नि दाहकूंकरैनहीं॥तैसे जबपर्यंत सोइच्छाजन्यदुःख अंतःकरणविषेविद्यमानहै॥तबपर्यंत आत्मस्वरूपआनंदकाभान जीवोंकूंहोवैनहीं ॥ और जैसे मणिमंत्रादिरूपप्रतिबंधककेनिवृत्तहुएतेंअनंतर सोअग्नि दाहकूंकरैहै ॥ तैसे याजीवकूं जिसजिसविषयकी इच्छाहोवेंहै ॥ सोसोविषय याजीवकूं जभीप्राप्तहोवेंहै ॥ तभी ताविषयकीइच्छा निवृत्तहोइजावेंहै ॥ परंतु सोविषयइच्छाकीनिवृत्ति तबपर्यं तरहैहै ॥ जबपर्यंत तिसीविषयविषे अथवा किसीअन्यविषयविषे याजीवकी पुनःइच्छाउत्पन्ननहींभई॥पुनःइच्छाकेउत्पन्नहुए सोपूर्वइच्छा कीनिवृत्तिरहैनहीं ॥ और विषयकीइच्छारूपकारणकेनाशहुए ताइच्छाजन्यदुःखभी नाशहोइजावेंहै ॥ और जबपर्यंत सोदुःखकाअभाव अंतःकरणविषेरहैहै ॥ तबपर्यंत विक्षेपतेंरहित तथाअज्ञानकरिकेआवृत्तजोआत्मास्वरूपआनंदहै ताआनंदकीप्रतीति जीवोंकूं होवैहै ॥ तिसीआत्मस्वरूपआनंदकूं अज्ञानीजीव सुखनामकरिकेकथनकरैं हैं तात्पर्ययह ॥ लोकविषे दोप्रकारकाप्रतिबंधहोवेंहै ॥ एकतो आवरण रूपप्रतिबंधकहोवेंहै ॥ जैसे सूर्यकेदर्शनविषे मेघ आवरणरूपप्रतिबंधकहै ॥ और दूसरा विक्षेपरूपप्रतिबंधकहोवेंहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंके दर्शनविषे नेत्रोंकीअत्यंतचंचलता विक्षेपरूपप्रतिबंधकहै॥तैसे यहांप्रसंगविषे विषयकीइच्छारूपकरिके जोबुद्धिकीचंचलताहै॥सोबुद्धिकीचं चलतारूपविक्षेप आत्मास्वरूपआनंदकेभानका प्रतिबंधकहै॥औरजिसविषयकीइच्छाकरिके बुद्धि चंचलहोवैहै ताविषयकी जभीप्राप्तिहोवेंहै तभी चंचलतारूपविक्षेपकापरित्यागकरिकें सोबुद्धि जबपर्यंत दूसरेविषयकीइच्छानहींभई तबपर्यंत स्थिरहोवैहै ॥ तास्थिरबुद्धिविषे अ ज्ञानकरिकेआवृतजोआनंदस्वरूपआत्माहै ताका स्पष्टरूपकरिके भानहोवेंहै ॥ तिसी अज्ञानकरिकेआवृतआत्मारूपआनंदकूं अज्ञानीमू ढपुरुष विषयजन्यसुखकहैं हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विषयकीप्राप्तिकालविषे अज्ञानकरिकेआवृत आत्मानंदकाभानहोवेंहै यहवार्ता

नहीं ॥ और ताराज्यकेभोगणेकरिके याजीवकूं जोसुखहोवैहै ॥ सोसुखभी याजीवका परमलोकनहीं ॥ किंतु सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राप्तहोणेयोग्यजो अद्वितीयआत्माहै ॥ सोईही याजीवकापरमलोकहै ॥ और हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसआनंदस्वरूपआत्माकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ सोआत्मारूपआनंद सर्वलौकिकआनंदोंतैंअधिकहै याकारणतैं श्रुतिभगवती ताअद्वितीयआत्माकूं परमआनंद यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वलौकिकआनंदोंतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा किसप्रकारअधिकहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ आनंदकासमुद्रजोयहआत्मादेवहै ॥ ताके लेशमात्रआनंदकूंआश्रयणकरिके संपूर्णस्थावरजंगमप्राणी जीवनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यहां लेशशब्दकायहअर्थहै ॥ स्निग्धजेघृतादिकअर्थहैं तिनोंकूं हस्तविषेग्रहणकरिके पुनःताघृतादिकोंकेपरित्यागकियेतैंअनंतर जोहस्तविषे घृतादिकोंकाअंशरहैहै ताकानामलेशहै ॥ याप्रकारके आत्मानंदकेलेशकूं आश्रयणकरिके सर्वप्राणीजीवनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेजनक ॥ जैसेसर्वजलोंकानिधिजोसमुद्रहै ताके लेशमात्रजलकूंग्रहणकरिके वर्षाकालविषे मेघ अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे आनंदसमुद्रआत्माके लेशमात्रआनंदकूंआश्रयणकरिके ब्रह्मातैंआदिलेकेकीटपर्यंत सर्वप्राणी जीवनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैंही श्रुतिभगवती ताआत्माकूं परमआनंदरूपकहैहै ॥ अब आत्माविषे परमानंदरूपता स्पष्टकरणेवासतै प्रथम संसारदशाविषे तापरमानंदकीअप्रतीति विषे कारणकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ विषयोंकीप्राप्तिकरिके मनुष्यादिकप्राणियोंकूं जोसुखहोवैहै तासुखकूंही लोक आनंदकहैहैं॥ और स्त्री पुत्र धन अन्न इसतैंआदिलेके जेनानाप्रकारकेविषयहैं ॥ तिनविषयोंकूं लोक तासुखकाकारणमानैहै ॥ याकेविषे यहविचार कऱ्याचाहिये ॥ तास्त्रीपुत्रादिकविषयोंविषे तासुखकीउत्पादकतारूपकारणताहै ॥ अथवा प्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा तासुखकीअभिव्यंजकतारूपकारणताहै ॥ तहां आत्मास्वरूपजोनित्यसुखहै ताकी विषयोंकरिकेउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ यातैं सुखकीउत्पादकतारूप प्रथमकारणता यद्यपि विषयोंविषेसंभवैनहीं॥ तथापि स्त्रीपुत्रादिकविषयोंविषे प्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा सुखकीअभिव्यंजकतारूप दूसरीकारणतासंभवैहै ॥ काहेतैं जैसे तृषाकरिके आतुरकोईमूढपुरुष तृणोंकरिकेआच्छादितजोसमीपवर्त्तिजलहै ॥ ताकापरित्यागकरिके मृगतृष्णाकेजलकूं

मुमुक्षुता श्रवण मनन निदिध्यासन तत्त्वंपदार्थकाशोधन याअष्टअंतरंगसाधनोंकरिके प्राप्तहोणेयोग्यहे ॥ आत्मातैंभिन्न संपूर्णपदार्थ नाशवान्हे ॥ यातें तेअनात्मपदार्थ अधिकारीपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्यनहीं ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआनं दस्वरूपआत्माकूं परमगति यानामकरिकेकथनकरैहे ॥ यहां चित्तकीशुद्धिविषे जिनसाधनोंकाउपयोगहोवैहे तिनसाधनोंका नाम बहिरंगसाधनहे ॥ और श्रवणविषे तथा आत्मज्ञानविषे जिनसाधनोंकाउपयोगहोवैहे ॥ तिनसाधनोंकानाम अंतरंगसाधनहे और हेजनक ॥ यालोकविषे जितनीकसंपदाहैं ॥ तिसतें कुबेरकीसंपदा अधिकहे ॥ याकारणतें कुबेरकीसंपदाकूं लोक परमसंपदा कहें हैं ॥ तैसे सुषुप्तिविषेस्थित जो आनंदस्वरूपआत्माहे ॥ तिसतें परेकोई अधिकसंपदानहीं ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआनंद स्वरूपआत्माकूं परमसंपदा यानामकरिकेकथनकरैहे ॥ और हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसआनंदस्वरूपआत्माकूं यहजीव नित्य हींप्राप्तहोवैहे ॥ तिसआनंदस्वरूपआत्मातैंपरे कोईअनात्मपदार्थ दर्शनकरणेयोग्यनहीं ॥ किंतु यहआनंदस्वरूपआत्माही अधिकारी पुरुषोंनैं देखणेयोग्यहे ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआनंदस्वरूपआत्माकूं परमलोक यानामकरिकेकथनकरैहे ॥ हेजनक ॥ याआनंद स्वरूपआत्मातैंभिन्न रूपादिकगुणोंकरिकेयुक्तजेसुंदरस्त्रियां हैं ॥ तेस्त्रियांभी याजीवका परमलोकरूपनहीं ॥ और सर्वगुणोंकरिकेसंपन्न जेआज्ञाकारीपुत्रहैं ॥ तेपुत्रभी याजीवका परमलोकनहीं ॥ और सुंदररूपकरिकेयुक्त तथाअत्यंतकोमळ जोआपणाशरीरहे सोभी परम लोकनहीं ॥ और हेजनक ॥ पर्वतकेसमानहैआकारजिनोंका ऐसेजेहस्तीहैं ॥ तथा वायुकीन्याईं आकाशमार्गविषेगमनकरणेहारेजेअश्वहैं॥ तथा मेघकीगर्जनाकेसमानहैशब्दजिनोंका ऐसेजेरथहैं ॥ तथाभयतैंरहित अत्यंतशूरवीरजेपदातिपुरुषहैं ॥ तथा शंखपदम संख्याहैधनजिनोंविषे ऐसेजेधनकेकोशहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेअन्नकरिकेपूर्ण जेअनेककोठियां हैं ॥ तथा स्वर्गकीअपसरावोंकेसमान जेअनेकवारांगनाहैं ॥ तथा इंद्रकेवैजयंतनामागृहकेसमान जेअनेकगृहहैं ॥ तथा इंद्राणीकेसमानसुंदर जेअनेकस्त्रियां हैं ॥ तथा धनधान्य करिकेपूर्ण जेआज्ञाकारीप्रजाहैं ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेभोगसाधनोंकरिके युक्तजोराज्यहे ॥ सोराज्यभी याजीवका परमलोक

करिके जन्मांतरविषे तिनोंकूं सुखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ याप्रकारकोरीतिसैं भावीजन्मविषेभी आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोवैहै॥इतनेग्रंथक रिकै नानाप्रकारकीयुक्तियों सैं आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धकऱ्या ॥ अब पूर्वलेप्रसंगकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं यह द्रष्टाआत्मा अविनाशीहै ॥ यातैं ताअविनाशीआत्माका स्वरूपभूत जोज्ञानरूपदृष्टिहै ॥ सोभी नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वदारहैहै॥ जैसे अग्निकेविद्यमानहुए ताअग्निकास्वरूपभूतउष्णता निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु अग्निकेनाशहुएही सोउष्णतानाशहोवैहै ॥ तैसे यहआनं दस्वरूपआत्मा विनाशतैंरहितहै ॥ यातैं ताआत्माकास्वरूपभूतजोज्ञानरूपदृष्टिहै ॥ ताकाभी नाशहोवैनहीं ॥ याकहणेकरिकै यहअर्थ सिद्धभया ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव द्वैतप्रपंचकूं जोनहींदेखता ॥ याकेविषे आत्माकेस्वरूपभूतज्ञानकाअभाव कारणनहीं किंतु सर्वद्वैतप्रपंचकाअभावही ताकेविषे कारणहै ॥ और हेजनक ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे भेदरूप कार्यअविद्या विद्यमान है ॥ याकारणतैं जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे यहद्रष्टापुरुष रूपादिकदृश्यपदार्थोंकूं आपणेतैंभिन्नमानैहै ॥ तथा नेत्रादिक इंद्रियोंकूं आपणेतैंभिन्नमानैहै ॥ और आपणेतैंभिन्नरूपकरिकेकल्पनाकरे जेनेत्रादिकइंद्रिय ॥ तिनोंकरिकै भिन्नरूपादिकविषयोंकूंदेखैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे भेदरूपकार्यअविद्याका तथाकामकर्मका अभावहोवैहै ॥ यातैं यहद्रष्टापुरुष सुषुप्तिअवस्थाविषे आपणेस्वरूप तैंभिन्नरूपकरिकै कल्पितप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे यहसंपूर्णभूतभौतिकप्रपंच जोकदाचित्आत्मातैं भिन्नहोवै ॥ तौ ताप्रपंचकूंआत्मादेखै ॥ परंतु सुषुप्तिअवस्थाविषे यहसंपूर्णजगत् आत्मातैंभिन्नहोवैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे यहद्रष्टापुरुष ताजगत्कूं आपणेतैंभिन्नरूपकरिकै नहींदेखता ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सो सजातीयभेदतैं तथाविजातीयभेदतैं तथास्वगतभेदतैं रहितहै ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव एकअद्वितीयरूपहै ॥ और सोईहीआत्मादेव ब्रह्मरूपहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथापरमलोकरूपहै ॥ और हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जोहमने तुम्हारेप्रति आत्माकास्वरूपकथनकऱ्याहै ॥ सो आत्माकास्वरूपहीं अधिकारीपुरुषोंकूं यज्ञादिकबहिरंगसाधनोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ तथा विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत्ति

ताअनुभवकरिके बाल्य यौवन वृद्ध यातीनोंअवस्थाविषे आत्माकी नित्यताहीसिद्धहोवे है ॥ शंका ॥ याप्रकारके प्रत्यभिज्ञारूपअनुभव करिके इसजन्मविषे यद्यपि आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोवेहै॥तथापिपूर्वजन्मोंविषे तथाआगेहोणेहारेजन्मोंविषेआत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोइसकेनहीं॥समाधान ॥बाल्यअवस्थातेंआदिलेके वृद्धअवस्थापर्यंत जैसे आत्माकाअविनाशीपणाहे॥ तैसे पूर्वजन्मोंविषे तथाभाविज न्मोंविषेभीआत्माअविनाशीहै॥काहेतें यालोकविषे माताकेउदरतेंबाहरनिकस्याहुआबालक उसीक्षणविषेमाताकेस्तन्यपानविषेप्रवृत्तहोवेहै यहवार्त्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ और लोकविषे चेतनपुरुषकी जोजोप्रवृत्तिहोवैहै ॥ सोसोप्रवृत्ति यहपदार्थ हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकेइष्टसाधनताज्ञानकरिकेजन्यहोवेहै ॥ इष्टसाधनताज्ञानतेंबिना किसीचेतनपुरुषकी प्रवृत्तिहोवेनहीं ॥ यहवार्त्ताभी सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ यातें जन्मकालविषे माताकेस्तन्यपानविषेजोबालककीप्रवृत्तिहै ॥ सोप्रवृत्तिभी यहस्तन्यपान हमारेसुखकासाधनहै याप्र कारके इष्टसाधनताज्ञानतेंबिना संभवैनहीं ॥ यातें ताबालककेप्रवृत्तिरूपहेतुतें ताबालककेइष्टसाधनताज्ञानकाअनुमानहोवेहै ॥ और जन्मकालविषे यहस्तन्यपान हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकाइष्टसाधनताज्ञान जोबालककूंभयाहै ॥ सोज्ञान अनुभवरूपसंभवैनहीं ॥ यातें सोइष्टसाधनताज्ञान स्मृतिरूपमानणाहोवेगा ॥ और लोकविषे जोजोस्मृतिज्ञानहोवैहै ॥ सोसोपूर्वअनुभवजन्यसंस्कारोतेंहोवैहै ॥ पूर्व संस्कारों तेंबिना स्मृतिज्ञानहोवेनहीं ॥ यहवार्त्ताभी सर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्धहै ॥ यातें ताबालकके स्मृतिरूपइष्टसाधनताकेज्ञानतें पूर्व लेजन्मकेसंस्कारोंका अनुमानहोवेहै ॥ और तेसंस्कार रूपादिकोंकीन्याई आश्रयतेंबिना स्वतंत्ररहैंनहीं ॥ यातें तिनपूर्वजन्मोंके संस्कारों तें आश्रयरूपआत्माकाअनुमानहोवेहै ॥ याप्रकारकीरीतिसैं पूर्वलेजन्मविषेभी आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोवैहै ॥ अब भावीजन्म विषे आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धकरें हैं ॥ यालोकविषे शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे जेबुद्धिमान्पुरुषहैं ॥ तिनोंकी यज्ञादिकपुण्यकर्मों विषे प्रवृत्तिहोवेहै ॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मों तें निवृत्तिहोवेहै ॥ तहां यज्ञादिककर्मोंके करणेकरिके इसलोकविषेतो तिनोंकूं किंचित् मात्रभी सुखकीप्राप्तिनहीं होती ॥ उलटा कर्मोंके करणेतें तिनोंकूं क्लेशकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ तिनयज्ञादिकपुण्यकर्मों

किसीपदार्थकीसिद्धिकरैहै ॥ जैसे जिसपुरुषनें आपणेगृहविषे बहुतवार धूमकाअग्निकेसाथ सहचारदेख्याहे ॥ सोईपुरुष ॥ कालपाइके पर्वतविषेधूमकूंदेखिके अग्निकाअनुमानकरैहै ॥ और जिसपुरुषनें धूमकूं तथाअग्निकूं कभीदेख्याईनहीं ॥ तापुरुषकूं धूमकेदर्शनतें अग्निकाअनुमानहोवैनहीं ॥ यारीतिसें अनुमानप्रमाणकूं प्रत्यक्षप्रमाणकीअपेक्षाहे ॥ और पूर्वउक्तरीतिसें आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाण संभवैनहीं ॥ यातें अनुमानप्रमाणकरिकेभी आत्माकेनाशकीसिद्धि होइसकेनहीं ॥ और आत्माकेनाशविषे शब्दप्रमाणहे यहतीसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरे सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें श्रुति स्मृति इतिहास पुराण इसतैंआदिलेके जितनाकशब्दप्रमाणहे ॥ तिसविषे कहांभी आत्माकानाश कथनकर्‍यानहीं ॥ उलटा ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे तथा ॥ अजोनित्यःशाश्वतोयंपुराणो नहन्यते हन्यमानेशरीरे ॥ इत्यादिकस्मृतिवचनोंविषे आत्माकूं अविनाशीरूपकरिकेही कथनकर्‍याहे ॥ यातें आत्माकेनाशविषे शब्दप्रमाणभी संभवैनहीं ॥ इतनेंग्रंथकरिके आत्माकेनाशविषे तथातानाशकेकारणविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाखंडनकर्‍या ॥ अबसर्वलोकोंकेअनुभवकरिकेभी आत्माकेअविनाशीपणेकूं सिद्धकरैहैं ॥ हेवादी सर्वलोकोंकूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहे ॥ जोमैं स्वप्नअवस्थाविषे हस्तीकूंदेखताभया ॥ सोईमैं अभी जाग्रत्अवस्थाविषे नीलकमलोंकूंदेखताहूं ॥ तथा नानाप्रकारकेशब्दोंकूंश्रवणकरताहूं ॥ और जोमैं जाग्रत् अवस्थाविषे नीलकमलोंकूंदेखताभया ॥ तथानानाप्रकारकेशब्दोंकूंश्रवणकरताभया ॥ सोईमैं सुषुप्तिअवस्थाविषे किंचित्मात्रभी नहींजाणताभया ॥ याप्रकारका प्रत्यभिज्ञारूपअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहे ॥ ताअनुभवकरिके जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थाविषे आत्माकीनित्यताही सिद्धहोवे हे ॥ इतनेकरिके जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंविषे आत्माकीनित्यता सिद्धकरी ॥ अब बाल्य यौवन वृद्ध यातीनअवस्थावोंविषे आत्माकीनित्यता सिद्धकरैं हैं ॥ जोमैं बाल्यअवस्थाविषे आपणेमातापिताकूंदेखताभया ॥ सोईमैं अभी यौवनअवस्थाविषे आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकूंदेखताहूं ॥ और जोमैं यौवनअवस्थाविषे आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकूंदेखताभया॥सोईमैं अभीवृद्धअवस्थाविषे आपणेपौत्रोंकूं तथादौहित्रोंकूं देखताहूं ॥ याप्रकारका प्रत्यभिज्ञारूपअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहे ॥

और वंध्याकापुत्र मिथिलापुरीविषे राज्यकरैगा याप्रकारकेवाक्यविषे अर्थकीअबोधकता तथा संशयकीजनकता यहदोनोंप्रकारके दूषणहैंनहीं ॥ यातें सोवचनभी तुमारेमतविषे प्रमाणहींहोवैहै ॥ तावचनकरिकै वंध्यापुत्रकोसिद्धिहोणीचाहिये ॥ और तावचनकरिकै वंध्याकेपुत्रकीसत्ता सिद्धहोवैनहीं ॥ यातें प्रमाणकेवलतैं प्रमेयपदार्थकीसिद्धिमानणी वादीकूंउचितनहीं ॥ किंतु प्रमेयपदार्थ केवलतैंहीं प्रमाणकीसत्तामानणी उचितहै॥यातें जिसप्रमाणकरिकै वादीआत्माकेनाशकूं तथातानाशकेकारणकूं सिद्ध करैहै॥ताप्रमाणकी सत्ताभी तभी सिद्धहोवैगी ॥ जभो आत्माकेनाशरूपप्रमेयकोसत्ता तथा तानाशकेकारणकीसत्ता सिद्धहोवैगी ॥ और सोआत्माकानाश तथा तानाशकाकारण लोकविषे कहाँदेख्यानहीं ॥ यातें आत्माकेनाशकूं तथा तानाशकेकारणकूं सिद्धकरणेहारा वादीकाप्रमाण निष्फलहै ॥ इतनैंग्रंथकरिकै आत्माकेनाशविषे सामान्यतैंप्रमाणकीअविषयता दिखाई ॥ अब विशेषकरिकै प्रमाणकीअविषयताकूं निरूपण करैं हैं ॥ जोवादी आत्माकेनाशविषे तथा तानाशकेकारणविषे प्रमाण अंगीकारकरैहै तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ अथवा अनुमानप्रमाणहै ॥ अथवा शब्दप्रमाणहै ॥ तहाँ आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें प्रतियोगीकेज्ञानतैंविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं जैसे घटरूपप्रतियोगीकेज्ञानतैंविना घटाभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ और यहांप्रसंगविषे आत्माकानाशरूपजोअभावहै ॥ ताअभावकाप्रतियोगी आत्माहै ॥ सोआत्मा रूपादिकगुणोंतैंरहितहै॥यातें नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै आत्माकाप्रत्यक्षज्ञान होइसकैनहीं॥और आत्मारूपप्रतियोगीकेअप्रत्यक्षहुए ताकेअभावकाभीप्रत्यक्षहोवैनहीं॥काहेतें जोपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोवैहै ॥ तापदार्थकेहीअभावकाप्रत्यक्षहोवैहै ॥ और जोपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषय नहींहोवैहै ॥ तापदार्थकेअभावकाप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ याकारणतैंहीं शून्यस्थानविषे पिशाचकीशंकाकरिकै लोक निवासकरतेनहीं ॥ यातें आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाण संभवैनहीं ॥ और आत्माकेनाशविषे अनुमानप्रमाणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें प्रत्यक्षप्रमाणकीसहायतातैंविना अनुमानप्रमाण किसीअर्थकीसिद्धिकरिसकैनहीं ॥ किंतु प्रत्यक्षप्रमाणकीसहायतातैंहीं अनुमानप्रमाण

कासत्व तथातानाशकेकारणकासत्व अवश्यतुमारेकूंअंगीकारकरणाहोवेगा ॥ ताकेविषेभी यहविचारकन्याचाहिये ॥ ताअनुमानरूपप्रमाणकीप्रवृत्तितैंपूर्वकालविषे आत्माकानाशरूपप्रमेयकेअविद्यमानहुएभी ताप्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवैहै ॥ अथवा ताप्रमाणकी प्रवृत्तितैंपूर्वकालविषे ताप्रमेयकेविद्यमानहुएही ताप्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवैहै ॥ तहाँप्रमेयकेअविद्यमानहुएभी प्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवैहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रमेयपदार्थतैंविनाभी जोकदाचित् प्रमाणविषे प्रमाणताकी सिद्धिहोवैगी ॥ तो प्रमेयपदार्थकाअंगीकारकरणा व्यर्थहोवैगा॥ और प्रमेयपदार्थकेविद्यमानहुएही प्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवैहैयहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताप्रमेयपदार्थकीसत्ता प्रमेयपदार्थकेस्वभावतैंसिद्धहै ॥ अथवा ताप्रमेयपदार्थकीसत्ता प्रमाणकेबलतैंसिद्धहै ॥ तहाँ प्रमेयपदार्थकी स्वभावतैंहीसत्ताहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रमाणतैंविनाहीं जोप्रमेयकीस्वभावतैंसत्तासिद्धहोवैगी तो तुमारेमतविषे प्रमाणकाअंगीकारकरणानिष्फलहोवैगा ॥ काहेतैं प्रमेयपदार्थकीसिद्धिवासतेही प्रमाणकाअंगीकारहोवैहै ॥ सोप्रमेयपदार्थ स्वभावतैंहीसिद्धहै ॥ यातैं ताप्रमेयपदार्थकीसिद्धिवासते प्रमाणकाअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥ और प्रमाणकेबलतैं प्रमेयपदार्थकेसत्ताकीसिद्धिहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् प्रमाणकेबलतैंहीं प्रमेयपदार्थकीसिद्धिहोतीहोवे ॥ तो मिथिलापुरीविषे वंध्याकापुत्र राज्यकरेगा काहेतैं जनककादौहित्रहोणेतैं ॥ प्रसिद्ध जनककेदौहित्रकीन्याई याअनुमानरूपशब्दप्रमाणतैं वंध्यापुत्रकीभीसिद्धिहोणीचाहिये ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ वंध्यापुत्र मिथिलापुरीविषेराज्यकरेगा यहवचन जोप्रमाणरूपहोवे ॥ तो तावचनकेबलतैं वंध्यापुत्रकीसत्तासिद्धिहोवे ॥ परंतु सोवचन प्रमाणरूपहीनहीं ॥ यातैं तावचनकरिके वंध्यापुत्रकोसिद्धिहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी शब्दप्रमाणविषे तीनदोषोंकरिके अप्रमाणता प्राप्तहोवैहै ॥ एकतौ मिथ्याअर्थकीबोधकता ॥ और दूसरा किसीअर्थकूंबोधननहींकरणा ॥ और तीसरा संशयकूंउत्पन्नकरणा ॥ तहाँ जोवादी प्रमाणकेबलतैं प्रमेयपदार्थकीसत्ता अंगीकारकरैहै ॥ तावादीकेमतविषे मिथ्याअर्थकीबोधकतारूप प्रथमदूषण संभवैनहीं ॥

रूपकरेथे ॥ तथा तिनविकल्पोंविषे जेपूर्वदूषणकहेथे ॥ तेसंपूर्णविकल्प तथादूषण याद्वितीयपक्षविषेभीप्राप्तहोइसकैंहैं ॥ याकारणतैंभी यह द्वितीयपक्ष असंगतहै ॥ किंवा ॥ जैसे सिंह मृगकूंमारिकै दूरिजाइकै पुनःतामृगकीतरफदेखैहै ॥ जोकदाचित् तहांदूसरामृगभीआयाहोवै ॥ तौ तामृगकूंभी हननकरौं ॥ याकानाम सिंहावलोकनन्यायहै ॥ तासिंहावलोकनन्यायकरिकै पुनःप्रथमपक्षविषे दूषणोंकूं निरूपणकरैं हैं ॥ सो आत्माकानाश जिसकारणकरिकैजन्यहै ॥ सोकारण किसीदूसरेकारणकरिकैजन्यहै अथवाहै अजन्यहै ॥ तहाँ सोआत्माकेनाशकाकारण किसीदूसरेकारणकरिकैजन्यहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे आत्माकेनाशकाकारण दूसरेकारणकरिकैजन्यहै ॥ तैसे सोदूसराकारणभी किसीतीसरेकारणकरिकैजन्यहोवैगा ॥ और सोतीसराकारण किसीचतुर्थकारणकरिकैजन्यहोवैगा ॥ याप्रकार उत्तरउत्तर कारणोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादूषणकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोआत्माकेनाशकाकारण किसीकारणकरिकैजन्य नहीं है यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोआत्माकेनाशकाकारण जोकिसीकारणकरिकैजन्यनहींहोवैगा ॥ तो सोआत्माकेनाशकाकारण नित्यहीहोवैगा ॥ और आत्मातैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ नित्यहैनहीं ॥ यातैं सोआत्माकेनाशकाकारणभी आत्मास्वरूपहीहोवैगा ॥ और लोकविषे कोईभीजीव आपणेआत्माकानाश करतानहीं ॥ यातैं सोआत्माकेनाशकाकारण आपणे आत्माकूंकिसप्रकारनाशकरैगा किंतु नहींनाशकरैगा ॥ यातैं सोआत्माकेनाशकाकारण किसीकारणकरिकैजन्यनहीं है यहवादीकाकहणा अत्यंतअसंगतहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकै यद्यपि आत्माकानाशसंभवैनहीं ॥ तथापि जोजोपदार्थ सत्होवैहै ॥ सोसोपदार्थ क्षणिकहोवैहै ॥ जैसे विद्युत् सत्पदार्थ है यातैं क्षणिकहै ॥ तैसे आत्माभी सत्पदार्थहै यातैं क्षणिकहै ॥ याअनुमानप्रमाणकरिकै आत्माकेनाशकीसिद्धिहोइसकैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ आत्माकेनाशकूंसिद्धकरणेहारा तथा तानाशकेकारणकूंसिद्धकरणेहारा जोअनुमानप्रमाण तुमनें कथनकऱ्याहै ॥ ताअनुमानकी प्रमाणताकालाभरूपसिद्धि तभीहोवै ॥ जभी आत्माकेनाशका तथातानाशके कारणका सत्वहोवै ॥ प्रमेयपदार्थकीसत्तातैंविना प्रमाणकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं ताअनुमानविषे प्रमाणताकीसिद्धिवासतैं आत्माकेनाश

नहीं ॥ काहेतें सोआत्माकानाश प्रध्वंसाभावरूपहे ॥ याचतुर्थपक्षविषे आत्माकीसत्तातेंविना तानाशकीसत्ता दुर्लभहे इसतेंआदिले केजेपूर्वदूषणकहेहें ॥ तेसंपूर्णदूषण प्राप्तहोवैहें ॥ शंका ॥ सोआत्माकानाश अभावरूपहे यापक्षविषे जेपूर्वदूषणकहेहें ॥ तेदूषणयद्यपि इसचतुर्थपक्षविषेसंभवैहें ॥ तथापि सोआत्माकानाश भावरूपहे यापक्षविषे जेपूर्वदूषणकहेहें तेदूषण याचतुर्थपक्षविषे संभवहोइसकेनहीं ॥ समाधान ॥ सोआत्माकानाश भावरूपहे यापक्षविषे जेपूर्वदूषणकहेहें ॥ तेसंपूर्णदूषण याचतुर्थपक्षविषे संभवैहें ॥ काहेतें यालोकविषे भावपदार्थतेंभिन्न कोईअभावपदार्थ हे नहीं ॥ किंतु अभावपदार्थ भावपदार्थरूपहे ॥ यहवार्त्ताइसीअध्यायविषे पूर्व विस्तारतेंकहिआयेहें ॥ जैसे घटकाप्रध्वंसाभाव घटकेउपादानकारणरूपकपालोंतें भिन्ननहीं ॥ किंतु सोघटकाध्वंस कपालरूपहे ॥ तैसे तिनकपालोंकाध्वंसभी ताकपालकाउपादानकारणरूपजेकपालिकाहें तिनोंतेंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोकपालकाध्वंस कपालिकारूपहे ॥ यहवार्त्ता केवलयुक्तिकरिकै सिद्धनहीं ॥ किंतु विष्णुपुराणविषे व्यासभगवान्नेंभी यहवार्त्ताकहीहे ॥ तहाँ श्लोक ॥ महीघटत्वंघटतःकपालिका कपालिकाचूर्णरजस्ततोऽणुः ॥ अर्थयह ॥ मृत्तिकाकाप्रध्वंसाभाव घटरूपहे ॥ और घटकाप्रध्वंसाभाव कपालरूपहे और कपालोंकाप्रध्वंसाभाव कपालिकारूपहे ॥ और कपालिकाकाप्रध्वंसाभाव चूर्णरूपहे ॥ और चूर्णकाप्रध्वंसाभाव रजरूपहे ॥ और रजकाप्रध्वंसाभाव अणुरूपहे ॥ १ ॥ यातें सोआत्माकानाश भावरूपहे यापक्षविषे जेपूर्व दूषणकहेहें ॥ तेसंपूर्णदूषण याचतुर्थपक्षविषेभी प्राप्तहोइसकेहें ॥ इतनेग्रंथकरिकै आत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्यहे ॥ याप्रथमपक्षकाखंडनकऱ्या ॥ अब सोआत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्य नहीं हे यादूसरेपक्षका खंडनकरें हें ॥ सोआत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्य नहीं हे यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवै नहीं ॥ काहेतें लोकविषे जिसजिसघटादिकपदार्थोंकानाशहोवैहे ॥ सोनाश मुद्गरप्रहारादिककारणोंकरिकैहीहोवैहे ॥ कारणतेंविना किसीपदार्थकानाशहोवैनहीं ॥ यातें आत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्य नहींहोवैहे ॥ यहवादीकाकहणा अत्यंतविरुद्धहे ॥ किंवा ॥ सोआत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्यहे ॥ याप्रथमपक्षविषे सोआत्माकानाश आत्मातेंभिन्नहे अथवा अभिन्नहे इत्यादिकजेपूर्वविक

नाश मानैंहै ॥ जैसे पटकीउत्पत्तितैंपूर्व तंतुरूपकारणविषे तापटकाप्रागभावरहैहै ॥ और तंतुकीन्याई सोप्रागभावभी पटकाकारणहोवैहै ॥ और जभी पटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै॥ तभी सोप्रागभाव नाशहोइजावैहै॥यातैं कार्यकीउत्पत्तिकाकारण जोप्रागभावहै ॥ सोकार्यकाविरोधीहोवैनहीं ॥ उलटा कार्यही प्रागभावकाविरोधीहोवैहै ॥ किंवा ॥ जिसजिसपदार्थका प्रागभावहोवैहै॥तिसतिसपदार्थका जन्महोवैहै ॥ और जोपदार्थ जन्मतैंरहितहै ॥ तापदार्थका प्रागभावहोवैनहीं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा जन्मतैंरहितहै॥यातैं ता आत्माकाप्रागभावसंभवैनहीं ॥ और जिसपदार्थकानाशहोवैहै ॥ तिसपदार्थकाही जन्महोवैहै ॥ यातैं जैसे दिनविषेनहींभोजनकरणेहारा जोस्थूलपुरुषहै ॥ ताकी स्थूलता भोजनतैंविना अनुपपन्नहुई ॥ तापुरुषकेरात्रिभोजनकी कल्पनाकरावैहै ॥ तैसे तापदार्थकानाशभी तापदार्थकेजन्मतैंविना अनुपपन्नहुआ ता पदार्थकेजन्मकी कल्पनाकरावैहै ॥ और आत्माकानाश किसीप्रमाणकरिकेसिद्ध हैनहीं ॥ यातैं तानाशकरिके आत्माके जन्मकी कल्पनाहोइसकैनहीं ॥ यातैं आत्माकानाश प्रागभावरूपनहीं ॥ किंवा ॥ सोआत्माकानाश अन्योन्याभावरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोआत्माकानाश जोअन्योन्याभावरूपहोवैगा ॥ तो सोअन्योन्याभाव आश्रयरूपआत्माका विरोधीनहींहोवैगा ॥ जैसे घट पटरूपनहीं है ॥ और पट घटरूपनहीं है ॥ याप्रतीतिकाविषय जोअन्योन्याभावहै ॥ सोअन्योन्याभाव घटपटरूपप्रतियोगीअनुयोगीके आश्रितरहैहै ॥ घटपटरूपआश्रयकेअविद्यमानहुए ताअन्योन्याभावकीस्थितिसंभवैनहीं ॥ तैसे आत्मारूपआश्रयकेअविद्यमानहुए ताअन्योन्याभावकीस्थितिसंभवैनहीं ॥ यातैं सोअन्योन्याभावरूपआत्माकानाश आत्माकी किंचित्मात्रभीहानिकरिसकैनहीं ॥ किंवा ॥ सोआत्माकानाश अत्यंताभावरूपहै यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोआत्माकानाश जोअत्यंताभावरूपहोवैगा ॥ तो नरशृंगकीन्याई आत्माभी नास्तिरूपकरिकेप्रतीतहोवैगा॥और नरशृंगकीन्याई नास्तिरूपकरिके आत्माकीप्रतीतिहोतीनहीं ॥ किंतु अहंअस्मि याप्रकार अस्तिरूपकरिके आत्माकाभान सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ यातैं सोआत्माकानाश अत्यंताभावरूपनहीं ॥ किंवा ॥ सोआत्माकानाश प्रध्वंसाभावरूपहै यहचतुर्थपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवै

ववालाभूतलहै याप्रकारकी सामान्यप्रतीतिहोवैहै ॥ तैसे एकआत्माकेभीविद्यमानहुए सामान्यतैंआत्माकाअभावरूपनाश संभवैनहीं ॥ इतनैंकरिके आत्माकेनाशविषे सामान्यतैं अभावरूपकाखंडनकऱ्या ॥ अब प्रागभावादिकविशेषरूपकरिकैभी ताकाखंडनकरैं हैं ॥ जोवादी आत्माकेनाशकूं अभावरूपमानै हैं ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोअभावरूपआत्माकानाश प्रागभावरूपहै ॥ अथवा अन्योन्याभावरूपहै ॥ अथवा अत्यंताभावरूपहै ॥ अथवा प्रध्वंसाभावरूपहै ॥ तहाँ सोआत्माकाअभावरूपनाश प्रागभावरूपहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जिसकालविषे सोआत्माकाप्रागभावरूपनाश विद्यमानहै ॥ तिसकालविषे सोआत्मा विद्यमानहै ॥ अथवा नहींविद्यमानहै ॥ तहाँ प्रथमपक्षकूं जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं आत्माकाप्रागभावरूपजोनाशहै ॥ ताप्रागभावकालविषे जो आत्माकास्वरूपविद्यमानहै ॥ तो सोआत्माहीं आपणप्रागभावरूपनाशकूं निवृत्तकरैगा॥ यातैं ताप्रागभावरूपनाशकरिके आत्माकीकिंचित्मात्रभी हानिहोइसकैनहीं ॥ और सोप्रागभावरूपनाश जिसकालविषेहै ॥ तिसकालविषे आत्मा विद्यमाननहींहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे लोकविषे परोक्षगालीप्रदानतैं किसीपुरुषकीहानिहोवैनहीं ॥ तैसे भिन्नकालविषेस्थित जोप्रागभावहै ॥ ताकरिके आत्माकोहानिहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ एककालविषे तथाएकदेशविषे वर्तमानजेपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकाही परस्पर साधकबाधकभावहोवैहै ॥ भिन्नकालविषे तथाभिन्नदेशविषे वर्तमानजेपदार्थ हैं ॥ तिनोंका परस्पर साधकबाधकभावहोवैनहीं ॥ जैसे भिन्नदेशविषे तथाभिन्नकालविषेस्थित जे कुलाल दण्ड चक्रादिककारणहैं ॥ तिनोंतैं भिन्नदेशकालविषेस्थितघटकी उत्पत्ति होवैनहीं ॥ तथा भिन्नदेशकालविषेस्थितजोअग्निहै ॥ ताअग्निकरिके भिन्नदेशकालविषेस्थिततृणादिकोंकादाहहोवैनहीं ॥ तैसे भिन्नकालविषेस्थित जोप्रागभावरूपनाशहै ॥ ताकरिके भिन्नकालविषेस्थितआत्माकी हानिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादीकार्यकीउत्पत्तितैंपूर्व ताकार्यकाउपादानकारणविषे प्रागभाव अंगीकारकरैहै ॥ सोवादीभी प्रागभावकूं कार्यकी उत्पत्तिविषेहीकारणमानैहै ॥ परंतु प्रागभावविषे कार्यकीनाशरूपता सोवादीअंगीकारकरतानहीं ॥ उलटा कार्यकरिके ताप्रागभावका

नहीं ॥ यातें घटाभाववालाभूतलहै याप्रकारकीप्रतीतिकरिकै भूतलविषेपटाभावसिद्धहुएभी ताप्रतीतिकरिकै पटादिकोंकाअभाव सिद्धहो वैनहीं ॥ तैसे आत्मातैंभिन्न जेअनात्मापदार्थ हैं ॥ तिनोंकेअभावसिद्धहुएभी आत्माकाअभाव सिद्धहोवैनहीं ॥ यातें ताअभावरूपना शका अनात्मापदार्थ प्रतियोगीहै यहवादीकाकहणा असंगतहै ॥ किंवा॥ताअभावनाशका आत्मा प्रतियोगीहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगी कारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताअभावरूपनाशका प्रतियोगीजोआत्माहै ॥ सोआत्मा एकहै अथवा अनेकहै ॥ तहाँ सोअभाव रूपनाशकाप्रतियोगीआत्मा एकहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जोआत्मा अभावरूपनाशकाप्रतियोगीहै॥ सोईहीआत्मा ताअभावरूपनाशकाभी आत्माहै ॥ यातें आपणेआत्माकेसाथ सोअभावरूपनाश किसप्रकारविरोधकरैगा ॥ किंतु सोअ भावरूपनाश आपणेआत्माकेसाथ विरोधनहींकरैगा ॥ काहेतें यालोकविषे कोईभीपुरुष आपणेआत्माकेसाथ विरोधकरतानहीं ॥ किंतु आपणेतैंभिन्न जेप्रतिकूलपदार्थ हैं तिनोंकेसाथ सर्वलोकविरोधकरै हैं ॥ यातें सोअभावरूपनाश आपणेआत्माकेसाथ विरोधकरैनहीं ॥ और ताअभावरूपनाशका प्रतियोगीजोआत्माहै सोअनेकहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ताअभावरूप नाशकाजोआत्माहै ॥ ताआत्माकूं सोअभावरूपनाश निवृत्तकरैनहीं ॥ यातें ताआत्माकेनाशकरणेवासते कोईदूसराअभावरूपनाश अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ और सोदूसरा अभावरूपनाशभी आपणेआत्माकानाश करिसकैनहीं ॥ यातें तादूसरे अभावरूपनाशके आत्माकेनाशकरणेवासते कोईतीसरा अभावरूपनाश अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ याप्रकार उत्तर उत्तर अभावरूपनाशोंकीकल्पनाकरणेतें अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी ताअनवस्थादूषणकेनिवारणवासते उत्तर उत्तर अभावरूपनाशोंकी कल्पनानहींकरैगा ॥ तो आत्माका अभावरूपनाश सिद्धनहींहोवैगा ॥ काहेतें जैसे नीलपीतादिकरूपवाले जेअनेकघटहैं ॥ तिनघटोंविषे एकघटभी जिसभूत लविषेरहैहै ॥ तिसभूतलविषे घटाभाववालाभूतलहै याप्रकारकी सामान्यप्रतीति होवैनहीं ॥ किंतु नीलघटकेअभाववालाभूतलहै ॥ तथा पीतघटकेअभाववालाभूतलहै ॥ याप्रकारकी विशेषप्रतीतियां तहाँहोवैहैं ॥ जभी ताभूतलविषे संपूर्णघटोंकाअभावहोवैहै ॥ तभी घटाभा

योग्यजो तानाशकाकारणहै सोभी असत्यहीहोवैगा ॥ और आत्माकानाश तथातानाशकाकारण यादोनोंकेअसत्यहुए ॥ तिनदोनोंकूं सिद्धकरणेहारा जोप्रमाणहै ॥ सोभी असत्यहीहोवैगा ॥ काहेतें प्रमेयरूपवस्तुकीजोसत्ताहै ॥ ताकेअधीनहीं प्रमाणकीसत्ताहोवैहै ॥ प्रमेयरूपवस्तुकेअसत्यहुए ताकाप्रमाणभीअसत्यहोइवैहै ॥ जैसे वंध्यापुत्रकेअसत्यहुए ताकाप्रमाणभी असत्यहीहोवैहै ॥ किंवा ॥ वादीनें अंगीकारकराजोआत्माकानाश ॥ सोनाश भावरूपहै ॥ अथवा सोनाश अभावरूपहै ॥ तहाँ सोनाश भावरूपहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोभावरूप आत्माकानाश घटादिकपदार्थोंकीन्याई अनित्यहै ॥ अथवा आत्माकीन्याई नित्यहै ॥ तहाँ सोभावरूप आत्माकानाश घटादिकोंकीन्याई अनित्यहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें घटादिकोंकीन्याई नाशवान् जोआत्माकानाशहै ॥ सोनाश नित्यआत्माकीहानिकरिसकैनहीं ॥ और सोआत्माकानाश आत्माकीन्याई नित्यहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जैसे आत्मा भावरूपहै तथाचैतन्यरूपहै तथानित्यहै ॥ तैसे सोआत्माकानाशभी भावरूपहै तथाचैतन्यरूपहै तथानित्यहै ॥ यातें ताचैतन्यरूपनाशकरिकै चैतन्यरूपआत्माकीहानिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ आत्माकीन्याई चैतन्यरूपजोआत्माकानाशहै ॥ सोनाश जोकदाचित् चैतन्यरूपआत्माकेनाशकूंकरैगा ॥ तो चैतन्यरूपकरिकै तानाशकेसमानजोआत्माहै ॥ सोआत्माभी तानाशकूं अवश्यनाशकरैगा ॥ आत्माकीन्याई चैतन्यरूप सोनाश आत्माकानाश करैहै ॥ और चैतन्यरूपआत्मा तानाशकूं नाशनहींकरैहै ॥ याप्रकारकेअर्थकासाधक कोईयुक्तिहैनहीं ॥ यातें सोआत्माकानाश भावरूपहै यहवादीकाकहणा अत्यंतअसंगतहै ॥ किंवा सोआत्माकानाशअभावरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताअभावरूपनाशका अनात्मपदार्थ प्रतियोगीहै ॥ अथवा ताअभावरूपनाशका आत्मा प्रतियोगीहै ॥ तहाँ ताअभावरूपनाशका अनात्मपदार्थ प्रतियोगीहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जैसे घटकेअभाववालाभूतलहै ॥ याप्रकारकीप्रतीतिकरिकै भूतलविषेस्थितघटाभावकीसिद्धिहोवैहै ॥ ताघटाभावका प्रतियोगीघटहै ॥ घटादिकपदार्थ ताअभावकेप्रतियोगीहैं

नहीं ॥ इतनेंकरिके श्रुतिप्रमाणतें आत्माकाअविनाशीपणासिद्धकरा ॥ अब तिसीअर्थकूं युक्तिकरिके स्पष्टकरेहैं ॥ हेजनक जोवादी आत्माकाभीनाशमानैहै तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ द्रष्टाआत्माकानाश किसीकारणकरिकेहोवैहै ॥ अथवा किसीकारणतैंविनाहीं द्रष्टा आत्माकानाशहोवैहै ॥ तहाँ आत्माकानाश किसीकारणकरिकेजानैहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ तावादीसें यहपूछाचाहि ये ॥ सोआत्माकानाश आत्मातैंभिन्नहै ॥ अथवा सोआत्माकानाश आत्मास्वरूपहै ॥ तहाँ सोआत्माकानाश आत्मास्वरूपहै यहदूसरा पक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें आत्माकानाश आत्मारूपहै याकहणेकरिके यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ जिसआनंदस्वरूप चेतनआत्माकूं वादी आत्माकानाश यानामकरिके कथनकरैहै ॥ तिसीचेतनआत्माकूं हमसिद्धांती आत्मा यानामकरिकेकथनकरें हैं ॥ यातें वादीका तथाहमाराआत्माकेनाममात्रविषे विवादसिद्धहोवैहै॥तिननामोंकेअर्थविषे विवादसिद्धहोवेनहीं ॥और नाममात्रकेविवादकरिके अर्थकीहानिहोवेनहीं ॥ जैसे एकहीघटव्यक्तिकूं कोईपुरुष घट यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ और कोईपुरुष ताघटव्यक्तिकूं कलश यानाम करिके कथनकरैहै ॥ तहाँ घट कलश यादोनोंनामोंकेभेदहुएभी घटव्यक्तिकाभेदहोवैनहीं ॥ तैसे आत्माकानाश तथाआत्मा यादोनोंनामों केभेदहुएभी आत्मारूपव्यक्तिकाभेदसंभवेनहीं ॥ और सोआत्माकानाश आत्मातैंभिन्नहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवे नहीं ॥ काहेतें सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मरूपआत्मा सत्यरूपहै तथाज्ञानरूपहै तथाअनंतहै ॥ याश्रुतिविषे आत्माकूंहीं सत्यकह्याहै ॥ तासत्यरूपआत्मातें जोआत्माकानाश तथातानाशकेकारण भिन्नहोवैंगे ॥ तो वंध्यापुत्रकीन्याईं सोआत्माकानाश तथा तानाशकाकारण दोनोंअसत्यहोवैंगे ॥ और जोपदार्थअसत्यहोवैहै ॥ तापदार्थकी किसीप्रमाणकरिके सिद्धिहोवैनहीं ॥ जैसे असत्यवं ध्यापुत्रकी किसीप्रमाणकरिकेसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे असत्यरूप जोआत्माकानाशहै ॥ तथा तानाशकाजोकारणहै ॥ तिनदोनोंकीभी किसीप्रमाणकरिके सिद्धिहोइसकैनहीं किंवा ॥ सजातीयभेद तथास्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहित जोअद्वितीयआत्माहै ॥ तासत्य स्वरूपआत्मातैंभिन्नहुआ सोआत्माकानाश असत्यरूपहीहोवैगा॥और आत्माकेनाशकेअसत्यहुए तानाशरूपकार्यकरिके अनुमानकरणे

करैहै ॥ और हस्तइंद्रियकरिके पदार्थोंकाग्रहणकरैहै ॥ और पादइंद्रियकरिके गमनआगमनकरैहै ॥ और उपस्थइंद्रियकरिके आनंदकूं प्राप्तहोवैहै॥और पायुइंद्रियकरिके मलादिकोंकापरित्यागकरैहै ॥ और मनकरिके संकल्पविकल्पकरैहै ॥ और बुद्धिकरिके निश्चयकरैहै ॥ और चित्तकरिके स्मरणकरैहै ॥ और अहंकारकरिके अभिमानकरैहै ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेव्यापारोंकूंयहजीवात्मा जाग्रत् विषेकरैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोइके सोआत्मादेव तिनव्यापारोंकूंकरतानहीं ॥ याकेविषे यहकारणहै॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैंआदिलेके तथाशब्दादिकविषयोंतैंआदिलेके संपूर्णद्वैतप्रपंचकाअभावहोवैहै ॥ याकारणतैं सुषुप्तिविषे कोईव्यापार होतानहीं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माकाचैतन्यरूपज्ञाननहीं है ॥ याकारणतैं सुषुप्तिविषे कोईव्यापारनहींहोता ॥याप्रकारकेअर्थविषे श्रुतिकातात्पर्यनहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे काष्ठरूपउपाधिकरिकेयुक्तजोअग्निहै ॥ सोअग्नि दाहकूंकरैहै तथा अन्नादिकोंकूंपकावैहै ॥ तथाप्रकाशकरैहै और सोईअग्नि काष्ठरूपउपाधितैंरहितहुआ तथाभस्मकरिकेआवृतहुआ दाहादिककार्योंकूंकरैनहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषे इंद्रियादिकउपाधियोंकरिकेयुक्तहुआ यहजीवात्मा नानाप्रकारकेव्यापारोंकूंकरैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका तथाशब्दादिकविषयोंका कारणअज्ञानविषेलयहोवै है ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे विद्यमानहुआभीसोआत्मादेव किसी व्यापारकूंकरैनहीं ॥ और हेजनक जैसे अग्निकास्वरूप भूतजोप्रकाशहै ॥ सोप्रकाश काष्ठोंकेनष्टहुएभी नाशहोवैनहीं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे विषयइंद्रियरूपउपाधिकेलयहुएभी आत्माकास्वरूपभूतज्ञान नाशहोवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषेजितनेकपदार्थ हैं तिनपदार्थोंका जोस्वरूपहै ॥ सोस्वरूपतिनपदार्थोंकेविद्यमानहुए कभीभीनाशहोवैनहीं किंतु तिनपदार्थोंकेनाशहुएही तिनोंकेस्वरूपका नाशहोवैहै ॥ जैसे अग्निकास्वरूपभूत जोउष्णताहै तथाप्रकाशरूपताहै ॥ तास्वरूपका अग्निकेनाशतैंविना किसीउपायकरिकेनाशहोइसकैनहीं ॥ किंतु अग्निकेनाशतैंही ताकेस्वरूपकानाशहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोद्रष्टाआत्माहै सो अविनाशीहै यातैं ताद्रष्टा आत्माका नाशहोवैनहीं ॥ द्रष्टाआत्माकेनहींनाशहुए ताद्रष्टाआत्माकीस्वरूपभूत जोस्वप्रकाशज्ञानरूपदृष्टिहै ॥ ताकाभी नाशहोवै

रहितहोवैहै ॥ और जाग्रत्‌अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे याजीवात्माविषे अहंममअध्यासविद्यमानहै ॥ तथा पुण्यपापरूपकर्मभी विद्यमानहैं ॥ यातैं जाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे यहजीवात्मा पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेवियोगतैं तथासिंहसर्पादिकअप्रियपदार्थोंकेसंयोगतैं अनेकप्रकारकेशोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसेहैंतेशोक ॥ अग्निकेसमान दाहकरणेहारेहैं ॥ ऐसेशोकरूपसमुद्रकूं यहजीवात्मा जाग्रत्स्वप्नविषे तरिसकैनहीं ॥ किंतु सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वविशेषज्ञानोंतैं रहितहुआ यहजीवात्मा ताशोकरूपसमुद्रकूंतरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा संपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवैहै ॥ यहजोआपनैंकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ ज्ञानतैंरहितहोवैहै ॥ सोपदार्थ जडहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ ज्ञानतैंरहितहैं यातैंजडहैं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे ज्ञानतैंरहितहोणेतैं आत्माभी जडहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेजनक सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवैहै ॥ यहजोहमनैंकथनकर्‍याहै ॥ तावचनका तुमनैं यहअभिप्राय नहींजानणा ॥ जोसुषुप्तिअवस्थाविषे आत्मा प्रकाशरूपनहींहै ॥ याकारणतैं किसी पदार्थकूंजाणतानहीं ॥ किंतु तावचनका तुमनैं यहअभिप्रायजानणा सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव यद्यपि आपणेस्वरूपभूतज्ञानकरिकेयुक्तहै ॥ तथापि सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्मातैंभिन्न कोईद्वैतप्रपंचहैनहीं जिसकूंआत्मादेखै ॥ याअभिप्रायकरिकै सुषुप्तिविषे सर्वविशेषज्ञानोंकाअभाव कथनकर्‍याहै ॥ हेजनक ॥ जैसे आकाश सर्वपदार्थोंविषेव्यापकहै ॥ तैसे श्रोत्र त्वक् चक्षु रसनघ्राण यापंचज्ञानइंद्रियोंकरिकै उत्पन्नभईजेअंतःकरणकीवृत्तियां ॥ तिनवृत्तियोंविषे प्रतिबिंबरूपकरिकै आत्माकीचैतन्यशक्तिव्यापकहै ॥ तथा वाक् आदिककर्मइंद्रियोंकेव्यापारोंविषे सोचैतन्यशक्ति व्यापकहै ॥ ऐसी आत्माकीचैतन्यशक्ति सुषुप्तिअवस्थाविषेभी विद्यमानहै ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे सोस्वप्रकाशआत्मा घटादिकोंकीन्याई अज्ञानीरूप तथाजडरूप तथाअसत्‌रूप होइसकैनहीं ॥ और ॥ हेजनक ॥ जाग्रत्‌अवस्थाविषे यहआत्मादेव श्रोत्रइंद्रियकरिकै शब्दकूंजानैहै ॥ और त्वक्इंद्रियकरिकै स्पर्शकूंजानैहै ॥ और चक्षुइंद्रियकरिकै रूपकूंजानैहै ॥ और रसनइंद्रियकरिकै रसकूंजानैहै ॥ और घ्राणइंद्रियकरिकै गंधकूंजानैहै ॥ और वाक्इंद्रियकरिकै शब्दकाउच्चारण

अदेवताभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और ऋग्वेदतैंआदिलेकेजेचारिवेदहैं ॥ तेवेद अवेदभावकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ इतनैंकरिके सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माविषे ममत्वअध्यासकाअभाव दिखाया ॥ अब सुषुप्तिअवस्थाविषे अहंतारूपअध्यासकेअभावकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ सुवर्णादिकपदार्थोंकीचोरीकरणेहारा जोस्तेनपुरुषहै ॥ सोस्तेनपुरुष सुषुप्तिअवस्थाविषे स्तेनभावतैंरहितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मैं स्तेन हूं याप्रकारकाअहंअध्यास सुषुप्तिविषेहोवैनहीं ॥ यहरीति आगेभीजानिलेणी ॥ और हेजनक ॥ यज्ञ तथायज्ञकेकरणेहारे जेब्राह्मणक्षत्रियवैश्यहैं ॥ तथा शास्त्रकावेत्ताजोब्राह्मणहै ॥ तथाब्राह्मणभावकूंप्राप्तहोणेहारा जोगर्भहै ॥ इनचारोंकूं शास्त्रविषे भ्रूणनामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ ताभ्रूणकूं जोपुरुष हननकरैहै ॥ तापुरुषकानाम भ्रूणहाहै ॥ सोभ्रूणहापुरुष सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोइके भ्रूणहा भावतैं रहितहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ ब्राह्मणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैं उत्पन्नभयाजोपुत्रहै ताकूं शास्त्रविषेचांडालकहैं हैं सोचांडालभी सुषुप्तिकूंप्राप्तहोइके चांडालभावतैंरहितहोवैहै ॥ और क्षत्रियाणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैं जोपुत्रउत्पन्नहोवैहै॥ ताकूं शास्त्रविषे पुल्कसकहैं हैं ॥ अथवा किसीनीचजातिवालेपुरुषकानाम पुल्कसहै ॥ सोपुल्कसभी सुषुप्तिकूंप्राप्तहोइके पुल्कसभावतैंरहितहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ चतुर्थआश्रमकरिकेयुक्त जोसंन्यासीपुरुषहै ॥ सोसंन्यासीसुषुप्तिकूंप्राप्तहोइके संन्यासीभावतैंरहितहोवैहै ॥ और वानप्रस्थआश्रमकरिके युक्त जोपुरुषहै ॥ सोसुषुप्तिकूंप्राप्तहोइके वानप्रस्थभावतैंरहितहोवैहै ॥ हेजनक ॥ यहां बहुतविस्तारकरिकेकहणेका कछुप्रयोजननहीं ॥ किंतु यहपितामाता मेरेहैं ॥ इसतैंआदिलेके जितनेक ममताकूंविषयकरणेहारेअध्यासहैं ॥ तथा मैंस्तेनहूं मैंब्राह्मणहूं मैंसंन्यासीहूं इसतैं आदिलेके जितनेकी अहंताकूंविषयकरणेहारेअध्यासहैं तेसंपूर्णअहंममअध्यास सुषुप्तिविषे आत्मामें हैंनहीं ॥ अब अध्यासरूपकार्यअविद्याविषे तथापुण्यपापरूपकर्मोंविषे अन्वयव्यतिरेककरिके शोकादिकविकारोंकीकारणताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे परमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तभया जो यहजीवात्माहै ॥ ताकेविषे अहंअध्यास तथाममअध्यास यहदोनोंप्रकारकाअध्यास हैंनहीं ॥ तथा पुण्यपापरूपकर्मभीनहीं ॥ याकारणतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे सोपरमात्मादेव शोकतैंआदिलेके सर्वअंतःकरणकेधर्मोंतैं

कामनाहोवैनहीं ॥ किंतु आनंदस्वरूपआत्माविषेहीं सर्वजीवोंकीकामना होवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं आत्मकाम यानामकरिके कथनकरैहै ॥ और हेजनक ॥ वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो आत्माविषे कामनासंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपदार्थ जीवोंकूं अप्राप्तहोवैहै ॥ तापदार्थविषे जीवोंकीकामनाहोवैहै ॥ प्राप्तपदार्थविषे किसीजीवकीकामनाहोवै नहीं ॥ और यहआनंदस्वरूप परमात्मादेव सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै ॥ यातैं सर्वजीवोंकूं नित्यहींप्राप्तहै ॥ ता नित्यप्राप्तपरमात्मादेवविषे कामनासंभवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अकाम यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ और हेजनक ॥ सर्वदुःखोंकाकारण जोकामनाहै ॥ सोकामना जिसपुरुषविषे होवैहै ॥ तिसीपुरुषविषे ताकानामकरिके शोकादिकविचार उत्पन्नहोवैं हैं ॥ और जिसपुरुष विषे किसीपदार्थकीकामनानहीं है ॥ तिसपुरुषविषे शोकादिकविचार उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव सर्वकाम नावोंतैंरहितहोवैहै ॥ यातैं तापरमात्मादेवविषे शोकादिकविकार संभवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अशोक याना मकरिके कथनकरैहै ॥ इतनैंकरिकेसुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोपरमात्मादेवहै ताकेस्वरूपकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीपरमात्मादेव विषे संपूर्णअध्यासकेअभावकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिकरिकेप्राप्तहोणेयोग्यजोपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव अहंमम अध्यासतैंरहितहै ॥ तथा पुण्यपापरूपकर्मतैं रहितहै॥ याकारणतैं तापरमात्मादेवविषे यास्थूलशरीरकाजनक जोपिताहै सोपिता अपिता भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और माता अमाताभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्त्रीतैंआदिलेकेजेपुत्रादिकबांधवहैं तेबांधव अबांधवभावकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहमेरापिताहै यहमेरीमाताहै यहमेरेबांधवहैं याप्रकारका ममताअध्यासहोवैनहीं ॥ इतनैंकरिके सुषुप्ति अवस्थाविषे स्थूलशरीरकेसंबंधीजेमातापितादिकपदार्थ हैं तिनोंकेअध्यासकाअभावनिरूपणकऱ्या ॥ अब सूक्ष्मशरीरकेसंबंधी जेपदार्थ हैं तिनोंकेअध्यासकेअभावकूं आत्माविषे निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थामें तापरमात्मादेवविषे शब्दस्पर्शादिकविषय अविष यभावकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और वाक्आदिकइंद्रिय अनिंद्रियभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और वाक्आदिकइंद्रियोंके जेअग्निआदिकदेवताहैं ॥ तेदेवता

धारीजीवोंकूं जोदुःखहोवैहै ॥ सो अप्रियपदार्थके विशेषज्ञानतैंहोवैहै ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे सिंहसर्पादिकअप्रियपदार्थोंकेअज्ञानतैं जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं अप्रियपदार्थोंकाविशेषज्ञान जीवोंकिदुःखकाकारण सिद्धहोवैहै॥सोविशेषज्ञान सुषुप्तिअवस्थाविषेहैनहीं॥ यातैं विशेषज्ञानरूपकारणकेअभावहुए कार्यरूपदुःखभी तहाँ परमात्माविषेसंभवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे लोकविषे अत्यंतप्रियस्त्रीकरिकै आलिंगनकराहुआ जोकामीपुरुषहै ॥ सोकामीपुरुष तिसकालविषे संपूर्णविशेषज्ञानोंतैं रहितहोवैहै ॥ काहेतैं ताकालविषे सोकामीपुरुष धनपुत्रादिकबाह्यपदार्थोंकूंभी जानतानहीं ॥ तथा अंतरकेपदार्थों कूंभी जाणतानहीं ॥ तथा आपणेकूं तथाआपणीप्रियस्त्रीकूंभी विशेषकरिकैजानतानहीं ॥ ताकालविषे सर्वदुःखोंकाअभाव जैसे तुम्हारेकूं तथाअन्यलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेभी स्वप्रकाशपरमात्मादेवकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोइके यहजीवात्मा संपूर्ण विशेषज्ञानोंतैंरहितहोवैहै ॥ काहेतैं ताकालविषे यहजीवात्माबाहरकेभूतभौतिकपदार्थोंकूंभी जानतानहीं ॥ तथा अंतरकेइंद्रियादिकपदा र्थोंकूंभीजाणतानहीं ॥ तथा सुषुप्तिविषेविद्यमान जोमायारूपअज्ञानहै ताकूंभी जानतानहीं ॥ तथा इंद्राणीसहित सोआत्मारूपइंद्र हृदयाकाशकूंप्राप्तहोइके जिससुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तासुखकूंभी विशेषकरिकैजाणतानहीं ॥ इसतैंआदिलैके सर्वविशेषज्ञानोंकाअभाव सुषुप्तिविषेहोवैहै ॥ याकारणतैं तहाँ किंचित्मात्रभी दुःखकीप्राप्ति जीवकूंहोवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामुक्तिअव स्थाविषे प्राप्तहोणेयोग्य जोआनंदस्वरूप परमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेवही सर्वजगत्काउपादानकारणहै ॥ और लोक विषे उपादानकारणकीप्राप्तितैं ताकेकार्यकीभी अवश्य प्राप्तिहोवैहै ॥ जैसे सुवर्णकेप्राप्तहुए ताकेकार्यकुंडलादिकभूषणों कीभी अवश्यप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे सर्वजगत्का उपादानकारणजोपरमात्मादेवहै ॥ ताकीप्राप्तिहुए संपूर्णपुत्रधनादिकपदार्थ प्राप्त होवैहैं याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं आप्तकाम यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे सुवर्णकापरित्याग करिकै कुंडलादिकभूषण रहैंनहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूप परमात्माकूंपरित्यागकरिकै याजीवोंकी धनपुत्रादिकअनात्मापदार्थोंविषे

परमलोक यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ अब लोकशब्दकेअर्थकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै अधिकारीपुरुष जिसपदार्थकूंजानैहै तापदार्थकानाम लोकहै ॥ याप्रकारका लोकशब्दकाअर्थ आनंदस्वरूपआत्माविषेहींघटैहै ॥ काहेतें विषयवास नातैंरहित जेउत्तमअधिकारीहैं ॥ ते इसीजन्मविषे गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकूं जानैं हैं ॥ और उपासकपुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइकै ताआनंदस्वरूपआत्माकूं जानैहैं ॥ यातैं यहआनंदस्वरूपआत्माहीं परमलोकहै॥ याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जित नेकस्वर्गादिकलोकहैं ते मिथ्यारूपहैं ॥ यातैं तिनलोकोंकूं गुरुशास्त्र बोधनकरैनहीं ॥ और हेजनक ॥ सोआनंदस्वरूपपरमात्मादेव जाति गुण क्रिया संबंध इत्यादिकसर्वधर्मोंतैं रहितहै ॥ यातैं वेदकेगायत्रीआदिकछंदोंका सोपरमात्मादेव विषयनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआनंदस्वरूपपरमात्माकूं अतिछंद यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक ॥ ताआनंदस्वरूप परमात्मादेवविषे भूत भविष्यत वर्त्त मान यातीनकालविषे पापकर्मोंकासंबंधनहीं याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआनंदस्वरूपपरमात्मादेवकूं अपहतपाप्मा यानामकरिकैकथन करैहै ॥ और हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहै सो सर्वभेदतैंरहितहै ॥ यातैं तापरमात्माविषे किंचित्मा त्रभी तहाँभयनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अभय यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोपरमात्मादेवहै ॥ ताकूं भयनहींहोवैहै याकेविषेयहकारणहै ॥ भेदज्ञानतैंहीं जीवोंकूंभयहोवैहै ॥ सो भेदज्ञानरूपभयकाकारण सुषुप्तिअव स्थाविषैहैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तिविषे भयरूपकार्यकोभी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तहाँश्रुति ॥ द्वितीयाद्वैभयंभवति ॥ अर्थयह ॥ द्वितीयपदार्थतैं जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ आपणेतैंभिन्न जोपदार्थ भयकाकारणहोवैहै ॥ सोपदार्थभी स्वरूपतैंभयकाकारणहोवैनहीं ॥ किंतु दुःखकाकारणरूपकरिकै जान्याहुआसोपदार्थ भयकाकारणहोवैहै ॥ जैसे दुःखकेकारणरूपकरिकैजानेहुए सिंहसर्पादिकपदार्थ लोकों कूंभयकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं दुःखही भयकाकारणहै ॥ सोभयकाकारणदुःख स्वप्रकाशपरमात्मादेवविषैहैनहीं ॥ यातैं दुःखरूपकारणकेअ भावहुए तापरमात्मादेवविषे भयकीप्राप्ति संभवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ सुषुप्तिविषेदुःखनहींहै ॥ याकेविषे यहकारणहै ॥ लोकविषे देह

समानहोवैहै ॥ काहेतैं जोपुरुष सर्वजगत्कूं आत्मारूपकरिकैजानैहै ॥ तापुरुषकूं शास्त्रविषे मुक्तकहैहैं ॥ याप्रकारका मुक्तपुरुषकालक्षण सुषुप्तजीवात्माविषेभीघटे है ॥ काहेतैं संपूर्णजगत्का आत्मारूप जोपरमात्मादेवहै ॥ ताकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोइके यहजीवात्माभी सर्वजगत्कूंआत्मारूपकरिकै जानैहै ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तभया यहजीवात्मा मुक्तपुरुषकेसमानहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सुषुप्तिकूंप्राप्तभयाजोयहजीवात्माहै ॥ ताकूं मुक्तपुरुषकी समानतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं मुक्तपुरुषका ज्ञानरूप अग्निकरिकै अज्ञान तथाअज्ञान काकार्यप्रपंच नष्टहोइजावैहै ॥ और सुषुप्तजीवका यद्यपि कार्यप्रपंच निवृत्तहोवैहै ॥ तथापि कारणरूपअज्ञान निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तजीवात्माकी मुक्तपुरुषकेसाथ समानतासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ मुक्तपुरुषकी तथासुषुप्तपुरुषकी सर्वअंशतैंसमानता हम अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु जैसे सर्वदुःखतैंरहितभूमाआनंदविषे मुक्तपुरुषकीस्थितिहोवैहै ॥ तैसे सर्वदुःखतैंरहितभूमाआनंदविषे सुषुप्तपुरुषकीभीस्थितिहोवैहै ॥ इतनोअंशकूंग्रहणकरिकै सुषुप्तपुरुषकूं मुक्तपुरुषकेसमान हमनैं कह्याहै ॥ हेशिष्य इतनैकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं यहअर्थ बोधनकर्या ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माकेविद्यमानहुएभी तहाँ सर्वकार्यप्रपंचका अभावहोवैहै ॥ याकारणतैं सोकार्यप्रपंच आत्माकास्वभावनहीं ॥ जोकार्यप्रपंच आत्माकास्वभावहोता ॥ तौ सुषुप्तिअवस्थाविषेभी आत्माके सत्‌चित्‌आनंदस्वभाव कीन्याई सोकार्यप्रपंचभी आत्माविषेरहता ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे कार्यप्रपंचकी प्रतीतिहोवैनहीं ॥ यातैं सोकार्यप्रपंच आत्माकास्वभावनहीं ॥ इसीप्रकारसुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माकेविद्यमानहुएभी कारणरूपअज्ञानरहैनहीं ॥ यातैं कारणअज्ञानभी आत्माकास्वभावनहीं ॥ जोकारण अज्ञान आत्माकास्वभावहोता ॥ तौ जैसे मुक्तिअवस्थाविषे सत्‌चित्‌आनंदादिक आत्माकेस्वभाव प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे कारणअज्ञानभी प्रतीतहोता ॥ परंतु मुक्तिअवस्थाविषे विद्वान्‌पुरुषोंकूं कारणअज्ञान प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं सो कारणअज्ञानभी आत्माकास्वभावनहीं ॥ और हेजनक ॥ मुक्तपुरुषोंकरिकै तथासुषुप्तपुरुषोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जो स्वप्रकाशआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव स्वर्गादिकसर्वअनात्मलोकोंतैं उत्कृष्टहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं

जोआपणेविषेमानैहै ॥ सो अविद्याकरिकेही आपणेविषेमानैहै ॥ इतनैंकरिकै स्वप्नअवस्थाविषे भेददर्शनरूपकार्यद्वारा अविद्याकास्वरूप निरूपणकऱ्या अब जिसआत्माकेस्वरूपकूंआच्छादनकरिके अविद्या पूर्वउक्तनानाप्रकारकेदुर्घटकार्यांकूंकरैहै तिसआत्माकेस्वरूपकूं सुषुप्तिअवस्थाविषे निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यहजीवात्मा नाडीरूपमार्गकरिकै स्वप्नकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहअर्थ पूर्व हमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ तिसविषे नाडीरूपमार्गकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जोस्वप्नहै ॥ तास्वप्नकाविस्तार अबपर्यंत हमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ अब तिसीनाडीरूपमार्गकरिकै यहआत्मादेव जिससंप्रसादनामासुषुप्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिससुषुप्तिकेस्वरूपकूं हम तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तूं सावधानहोइके श्रवणकर ॥ हेजनक ॥ पुरीततकरिकैवेष्टित जोहृदयाकाशहै ॥ ताकेविषे यहइंद्ररूप आत्मा नाडीरूपमार्गकरिकैजावैहै ॥ कैसाहैसोआत्मा ॥ आपणास्वरूपभूत जोस्वप्रकाशबोधहै ॥ तास्वप्रकाशबोधकरिकै आपही बोध कूंप्राप्तहोवै है ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताइंद्ररूपआत्माकूं देवशब्दकरिकै कथनकरैहै ॥ और यहआत्मादेव दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाका परित्यागकरिके आपणेस्वयंज्योतिरूपकरिकै प्रकाशमानहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवतीताआत्मादेवकूं राजाशब्दकरिकै कथनकरैहै ॥ ऐसापरमात्मादेव तिसनाडीरूपमार्गकरिकै सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तासुषुप्तिविषे मनतैंआदिलेके जितनेक जाग्रतस्वप्नकेपदार्थ हैं ॥ तेसं पूर्णपदार्थ लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और अंधकारकीन्याई आवरणकरणेहारा जोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञानभी सुषुप्तिअवस्थाविषे स्पष्टप्रती तहोवैनहीं ॥ यद्यपि सुषुप्तिअवस्थाविषे अज्ञानकूंविषयकरणेहारी तथा सुखकूंविषयकरणेहारी अज्ञानकीवृत्ति सिद्धांतविषे अंगीकारक रीहै ॥ तथापि ताअज्ञानकीसूक्ष्मवृत्तिविषे अज्ञानका स्पष्टरूपकरिकै भानहोवैनहीं ॥ किंतु जाग्रत्स्वप्नविषेहीं मैं अज्ञानीहूं याप्रकारकीअंतःकरणकीवृत्तिविषे अज्ञानका स्पष्टरूपकरिकैभानहोवैहै ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे अज्ञानका स्पष्टरूपकरिकै भानहोवैनहीं ॥ याप्रकारकीसुषुप्तिअवस्थाकूं यहजीवात्मा नाडीरूपमार्गकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ और ताहृदयाकाशविषेस्थित जोसत्यस्वरूप परमात्मादेवहै ॥ ताकेसाथ यहजीवात्मा जभी अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहजीवात्मा मुक्तपुरुषके

और सहस्रयोजनपरिमाणहैविस्तारजिसका तथाअनेकलहरियोंकरिकेशोभायमान ऐसाजोमहान्समुद्रहै ॥ तिससमुद्रकूं कदाचित्यहस्वप्न द्रष्टापुरुष आपणेगृहकेद्वारविषेदेखैहै ॥ और लक्षयोजनहैपरिमाणजिसका तथागंगादिकसर्वनदियोंकापति ऐसाजोअगाधसमुद्रहै ॥ तास मुद्रकूं कदाचित् यहस्वप्नद्रष्टापुरुष गुल्फमात्रमानिके यामनुषशरीरकरिकेही ताका उल्लंघनकरैहै ॥ और कदाचित् यहस्वप्नद्रष्टापुरुष तासमुद्रकेपारजाइके भगवान्नरसिंहकेनिवासकास्थान जोनीलपर्वतहै ताकूं देखैहै ॥ और कदाचित् काशीपुरीविषे रात्रिकालमें सोया हुआ यहस्वप्नद्रष्टापुरुष कुरुक्षेत्रविषे सूर्यकेग्रहणकूंदेखैहै ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेमिथ्यापदार्थोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषेदे खैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ स्वप्नद्रष्टापुरुषके शरीरतैंआदिलेके जितनेकसुखदुःखकेदेणेहारे जडचेतनपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णस्वप्नकेप दार्थ मायामयहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मायामय जेस्वप्नकेपदार्थ हैं ॥ तिनोंकाउपादानकारण तथाआश्रयकौनहै ॥ समाधान ॥हेजनक॥ सहिसर्वस्यकर्त्ता ॥ अर्थयह ॥ स्वप्नद्रष्टापुरुषहीं स्वप्नकेपदार्थोंकाकर्त्ता है ॥ याश्रुतिनें मायाविशिष्टस्वप्नद्रष्टापुरुषकूंहीं स्वप्नकेसर्वपदार्थों का कर्त्ताकह्याहै ॥ यातैं मायामयजेस्वप्नकेपदार्थ हैं ॥ तिनोंका मायाविशिष्टस्वप्नद्रष्टापुरुषहीं उपादानकारणहै तथाआश्रयहै ॥ याप्रकार कासिद्धांत श्रुतिप्रमाणकरिके तथायुक्तियोंकरिके सिद्धहोवैहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे जाग्रत्काप्रपंच भीतरआवैहै ॥ अथवा स्वप्नद्रष्टा पुरुष बाहरजाइके जाग्रत्केप्रपंचकूंदेखैहै ॥ यहदोनोंप्रकारकी वादियोंकीप्रक्रिया निष्फलहै ॥ यातैं हेजनक ॥ स्वप्नप्रपंचकेउत्पत्तिस्थि तिलयकूंकरणेहारा जो स्वप्नद्रष्टापुरुषकाअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकूंहीं शास्त्रवेत्तापुरुष मायाशब्दकरिके तथाअविद्याशब्दकरिके कथनकरैं हैं ॥ और हेजनक ॥ जैसेस्वप्नअवस्थाविषे यहपुरुष अविद्याकरिके जडचेतनरूपजगत्कूंदेखताहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी यहआ त्मादेव अविद्याकरिकेहीं जडचेतन्यरूपजगत्कूंदेखताहै ॥ यातैं जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे द्रष्टारूपकरिके आत्माकाभी भेदनहीं॥और दृश्यरूपकरिके अनात्मपदार्थोंकाभी भेदनहीं॥यातैं जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं ॥किंतु दोनों समानहैं याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया॥वास्तवतैं भयदुःखतैंरहित जोअद्वितीयआत्माहै ॥ सो जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे दुःखकूंतथाभयकूं

विशेषणोंकरिकेविशिष्ट स्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूं यहपुरुषदेखैहै॥तिनभूषणादिकविशेषणोंकरिकेविशिष्ट स्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूं यापुरुषनें स्वप्नअवस्थाविषे नहींदेख्याथा॥किंतु जाग्रतसें विलक्षणहीं स्वप्नविषेदेखेथे॥यातें जाग्रत्केस्थूलशरीरकरिकेविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकबांधवहैं तिनोंका स्वप्नविषे दर्शनहोवेंहै ॥ यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं॥किंवा॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ हैं तिनोंकूं आपणेहृदयदेशविषेदेखैहै ॥ अथवा बाहरजाइकेदेखैहै ॥ याप्रथमपक्षविषे यहदूसरादूषणभी संभवैहै ॥ काहेतें जिसकालविषे देवदत्तनामापुरुषकूं स्वप्नविषे यज्ञदत्तनामापुरुषकादर्शनभयाहै ॥ तिसीकालविषे तायज्ञदत्तनामापुरुषकूंभी दैवयोगतें स्वप्नविषे देवदत्तनामापुरुषका दर्शनभयाहै ॥ तहाँ जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोइके तिनदोनोंकापरस्पर याप्रकारकाविवाद होणा चाहिये ॥ हेयज्ञदत्त रात्रिविषे तूं हमारेहृदयदेशविषे आयाथा ॥ हेदेवदत्त यहवार्ता तूं मिथ्याकहताहै ॥ रात्रिविषे तूं हमारेहृदयदेशविषे आयाथा ॥ याप्रकार तिनदोनोंका परस्पर विवादहोणाचाहिये ॥ और याप्रकारकाविवादकोई लोकविषेकरतानहीं ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे जाग्रत्केपदार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेहृदयदेशविषे आवैं हैं ॥ अथवा स्वप्नद्रष्टापुरुषशरीरतैंबाहरजाइके जाग्रत्केपदार्थोंकूंपेखेहै ॥ यहदोनोंप्रकारकीप्रक्रिया श्रुतिप्रमाणतें तथालोकोंकेअनुभवतें विरुद्धहैं ॥ यातें यहदोनोंप्रक्रिया परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनदोनोंप्रक्रियाकापरित्यागकरिके किसप्रक्रियाकूं हम अंगीकारकरें ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष आपणेहृदयदेशविषे जितनेकीस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूं देखताहै ॥ तथा जितनेकी रथादिकअचेतनपदार्थोंकूं देखताहै ॥ तेसंपूर्णचेतनअचेतनपदार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेमायाशक्तिकरिके शरीरकेभीतरहीउत्पन्नहोवैं हैं ॥ याकारणतें तेस्वप्नकेपदार्थ मायामयहैं ॥ यहप्रक्रिया श्रुतिप्रमाणकरिकेसिद्धहै ॥ तथा लोकोंकेअनुभवसैंभी विरुद्धनहीं ॥ यातें यहप्रक्रियाहीं सर्ववादियोंकूं अंगीकारकरणेयोग्यहै॥ अब स्वप्नकेपदार्थोंविषे मायामयत्वकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम स्वप्नकेपदार्थोंविषे योग्यदेशकालादिककारणोंकाअभाव दिखावैं हैं ॥ हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष कदाचित् दूसरेदेशविषेस्थित जोराजाकामहान्गृहहै तागृहकूं आपणेअल्पकुटीविषेदेखैहै ॥

स्वप्नअवस्थाविषे बाहरलेपदार्थोंका भीतरहृदयदेशविषे ॥ आगमन मानैहै ॥ अथवा स्वप्नद्रष्टापुरुषका बाहरगमन मानैहै ॥ तावादी सें यहपूछाचाहिये ॥ स्वप्नद्रष्टापुरुषके हृदयदेशविषे जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ आवैं हैं ॥ तेचेतनपदार्थ स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरिकेविशिष्टहुए आवैं हैं ॥ ॥ अथवा जाग्रत्केस्थूलशरीरकरिकेविशिष्टहुए आवैं हैं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष बाहरजाइके स्वप्नके सूक्ष्मशरीरकरिकेविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं तिनोंकूंदेखैहै ॥ अथवा जाग्रत्केस्थूलशरीरकरिकेविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं तिनोंकूंदेखैहै ॥ यादोनोंपक्षोंविषे स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरिके विशिष्टहुए तेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेहृदयदेशविषेआवैहैं ॥ अथवा सोस्वप्नद्रष्टापुरुष बाहरजाइके स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरिकेविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं तिनोंकूंदेखैहै ॥ यहप्रथमपक्षजोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जिसकालविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नकूंप्राप्तभयाहै ॥ तिसीकालविषे जोकदाचित्तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूंभीस्वप्नकीप्राप्तिहुईहोवै ॥ तो यह तुमाराकहणासंभवै ॥ परंतु स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष जिनस्त्रीपुत्रादिक बांधवोंकूंदेखैहै ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तिसीकालविषे स्वप्नकूंहींप्राप्तहुएहोवैहैं ॥ याप्रकारकानियम लोकविषेदेखीतानहीं ॥ किंतु जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषेदेखैहै ॥ तेस्त्रीपुत्रादिबांधव तिसीकालविषे कोई जाग्रत्अवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और कोई सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कोई स्वप्नकूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ नियमकरिके तिनसंपूर्णोंकूं एककालविषे स्वप्नहोवैनहीं ॥ यातें स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरिकेविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ हैं ॥ तिनोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषे बाहरजाइके देखैहै ॥ अथवा तिनोंकूंहृदयदेशविषेलेआइके देखै है ॥ यहप्रथमपक्ष संभवैनहीं ॥ किंवा जाग्रत्केस्थूलशरीरकरिकेविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं ॥ तिनोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष बाहरजाइकेदेखैहै ॥ अथवा तेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेहृदयदेशविषे आवैहैं ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकार करे सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष हृदयदेशकेभीतर अथवा बाहरजाइके जिनस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ सोईहीस्वप्नद्रष्टापुरुष जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोइके तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ परंतु जाग्रत्अवस्थाविषे जिनभूषणादिक

करें हैं ॥ हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष आपणीमायाशक्तिकेप्रभावतैं जाग्रत्केबाह्यप्रपंचकूं भीतरचित्तविषेले आवैहै ॥ अथवा ॥ तिसमायारूपशक्तिकेप्रभावतैं यहजीवात्मा बाहरजाइके जाग्रत्केपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ या दोनोंप्रक्रियाविषे कोईश्रुतिप्रमाणनहीं ॥ किंतु श्रुतिभगवतीतौ स्वप्नअवस्थाविषे हृदयदेशकेभीतरहीं रथादिकसंपूर्णजगत्कीउत्पत्तिकूं कथनकरैहै ॥ यातैं तेदोनोंप्रक्रिया श्रुतितैंविरुद्धहैं ॥ इतनेकरिके तिनदोनोंप्रक्रियाविषे श्रुतिप्रमाणकाविरोध दिखाया ॥ अब लोकोंकेअनुभव करिकेभीतिनदोनोंप्रक्रियाविषे विरुद्धपणा दिखावैं हैं ॥ हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषेयहस्वप्नद्रष्टापुरुष मायाशक्तिकेप्रभावतैं जो कदाचित् जाग्रत्केपदार्थोंकूं भीतरहृदयदेशविषेलेआवताहोवे ॥ तौ जिनस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूंयहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषेदेखता है ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव जाग्रत्कालविषे तास्वप्नद्रष्टापुरुषकेप्रति याप्रकारकावचन क्योंनहींकहते ॥ हेमित्र आजस्वप्नविषे तूं हमारेकूं हृदयदेशविषेलेगयाथा ॥ अथवा सोस्वप्नपुरुष जाग्रत्अवस्थाविषे तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेप्रति याप्रकारकावचन क्योंनहींकहता ॥ हे मित्रो आजस्वप्नविषे मैं तुम्हारेकूं हृदयदेशविषेलेगयाथा ॥ सोयाप्रकारकावचन लोकविषेकोईपुरुष कहतानहीं ॥ और याप्रकारकेवचन कूं कोईमानताभीनहीं ॥ यातैं जाग्रत्केपदार्थ स्वप्नविषेआवैं हैं यहप्रक्रिया सर्वलोकोंके अनुभवकरिकेविरुद्धहै ॥ किंवा ॥ स्वप्नअवस्था विषे यहजीवात्मा बाहरजाइके जाग्रत्केपदार्थोंकूंदेखैहै यहदूसरीप्रक्रियाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं स्वप्नअवस्थाविषे यहजीवात्मा जोकदा चित्बाहरजाइके पदार्थोंकूंदेखताहोवे ॥ तौ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूंदेखैहै ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव जाग्रत्अवस्थाविषे तास्वप्नद्रष्टापुरुषकेप्रति याप्रकारकावचन क्योंनहींकहते ॥ हेमित्र ! आजतुमनेहमारेकूं गृहविषेदेख्याथा ॥ अथवा सो स्वप्नद्रष्टापुरुष जाग्रत्अवस्थाविषे तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेप्रति याप्रकारकावचन क्योंनहींकहता ॥ हेमित्रो आजरात्रिविषे मैं तुम्हारेगृह विषेआयाथा ॥ सोयाप्रकारकावचन लोकविषे कोईपुरुष किसीकेप्रतिकहतानहीं ॥ और याप्रकारकावचन कोईमानताभीनहीं॥यातैं स्वप्न अवस्थाविषे यहजीवात्मा बाहरजाइके जाग्रत्केपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ यहद्वितीयप्रक्रियाभी लोकोंकेअनुभवतैंविरुद्धहै ॥ किंवा ॥ जोवादी

अब शक्तिका तथाअविद्याका अभेद निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकजगत्कूंउत्पन्नकरणेहारी जोस्वप्नद्रष्टाआत्माकीशक्तिहे ॥ सोशक्ति अविद्यातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु ताशक्तिकूंहीं शास्त्रवेत्तापुरुष अविद्याकहैं हैं ॥ किंवा ॥ जोवादी ताशक्तिकूं अविद्यातैंभिन्न अंगीकारकरैहे तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ अविद्यातैंभिन्न सोशक्ति किसकार्यकरणेविषे समर्थ हे ॥ तात्पर्ययह ॥ ताशक्तिकरिकै यहजीवात्मा जाग्रत्केप्रपंचकूं आपणेस्वप्नविषेलेआवैहे अथवा ताशक्तिकरिकै यहजीवात्मा बाहरजाइकै जाग्रत्केरथादिकपदार्थोंकूंदेखैहे ॥ यादोनोंपक्षविषे ताशक्तिका अविद्यातैंभेदसिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे स्थूणाकेसमान अत्यंतस्थूलजोकोईसर्प हे ॥ तासर्पकूं जोकोईपुरुष आपणेकर्णके सूक्ष्मछिद्रविषेस्थापनकरैहे ॥ सोपुरुष मायारूपअविद्याकेबलतैंहीकरैहे ॥ मायारूप अविद्यातैंविना ऐसेदुर्घटकार्यकरणेविषे कोईपुरुष समर्थहोइसकैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे अंगुष्ठमात्रपरिमाण जोहृदयाकाशहे ॥ ताहृदयाकाशविषे जडचेतनरूप सर्वबाह्यजगत्कूं मायारूपअविद्यातैंविना कौनस्थापनकरेगा ॥ किंतु मायारूपअविद्याविषेही ऐसासामर्थ्य हे ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे बाहरलेप्रपंचकूं भीतरलेआवणेहारी साशक्तिमायारूपअविद्यातैं भिन्ननहीं ॥ किंवा ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे जोकोईपुरुष भूमिलोकविषेस्थितहोइकै क्षणमात्रविषे सूर्यलोककूंप्राप्तहोइकै पुनःभूमिलोकविषेआवैहे ॥ सोपुरुष मायारूपअविद्याकेबलतैंहीं सूर्यलोककूंदेखिकैआवै हे ॥ मायारूपअविद्यातैंविना ऐसेदुर्घटकार्यकूंकोईकरिसकैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे याशरीरमेंप्राणोंकेविद्यमानहुएभी याजीवका जोक्षणमात्रविषे दूसरेद्वीपविषेगमनहोवैहे ॥ तथा क्षणमात्रविषे स्वर्गलोककूंदेखिकै जोपुनःयाभूमिलोकविषे आगमनहोवैहे ॥ ॥ इसतैंआदिलेकै जे अनेकप्रकारकेदुर्घटकार्य हैं ॥ तेकार्य मायारूपअविद्यातैंविना संभवैनहीं ॥ किंतु मायारूपअविद्याकेबलतैंहीं याप्रकारकेदुर्घटकार्योंकूं यहजीवात्मा स्वप्नविषेकरैहे ॥ यातैं सोस्वप्नद्रष्टापुरुषकीशक्ति मायारूपअविद्यातैंभिन्ननहीं ॥ इतनैंकरिकै स्वप्नअवस्थाविषे जाग्रत्केबाह्यपदार्थोंकाआगमन तथाजीवात्माका बाहरगमन ॥ यादोनोंपक्षोंकूंअंगीकारकरिकै ताशक्तिकूं अविद्यारूपता सिद्धकरी ॥ अब तिनदोनोंपक्षोंकाखंडन

याप्रकारकाजोअनुभवकरैहै ॥ ताअनुभवकाविषय जोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञानहीं अविद्याकास्वरूपहै ॥ इतनेकरिकै अविद्याकास्वरूप दिखाया ॥ अब स्वप्नविषे ताअविद्याकीस्पष्टताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ इसीअविद्याकेप्रभावतैं यहपरमात्मादेव स्वप्नअवस्थाविषे शस्त्रादिकोंकरिकै आपणेकूं छेदनहुआमानैहै ॥ तथा दुष्टपुरुषोंकेवशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सिंहसर्पादिकोंकूंदेखिकैभयकूंप्राप्तहोवैहै तथा भागैहै ॥ तथा महान्‌गर्तविषेपड़ैहै ॥ तथा स्त्रीआदिकप्रियपदार्थोंकेवियोगतैं परमदुखःकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारके दुःखोंकूं जोयहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ सो अविद्याकरिकेही प्राप्तहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥हेजनक॥ श्रुतिभगवतीनैं स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकसर्वपदार्थोंकाअभाव कथनकर्‍याहै ॥ काहेतैं सुखदुःखकेकारणजेरथादिकपदार्थ हैं तेमहान्‌हैं ॥ और जिसहृदय देशविषेस्वप्नहोवैहै सोहृदयदेश अत्यंतअल्पहै ॥ ताअल्पदेशविषे महान्‌रथादिकपदार्थोंकी स्थितिहोणीसंभवैनहीं ॥ और जाग्रत्‌अव स्थाविषे रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्तिकेकारण जेदीर्घदेश तथादीर्घकाल तथाकाष्टादिक इसतैंआदिलेकेनानाप्रकारकेकारणहैं ॥ तिनका रणोंकाभी स्वप्नअवस्थाविषेअभावहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे अल्पहृदयदेशविषे तथाअल्पकालविषे वास्तवतैं रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकपदार्थोंकेअभावहुए तिनरथादिकपदार्थोंकरिकैजन्य जोसुखदुःखहै ॥ सोभी वास्तवतैंसंभवै नहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूं रथादिकपदार्थोंकाअनुभवहोवैहै ॥ तथा पुण्यपापकेवशतैं सुखदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और कारणतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्ताभी सर्व लोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ यातैं स्वप्नकेपदार्थोंकाभी कोईकारणमान्याचाहिये ॥ और लोकप्रसिद्धदेशकालादिककारणों तैंविना जोपदार्थउत्पन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थ साक्षात्‌मायाकाहीकार्यहोवैहै ॥ जैसे योग्यदेशकाला दिककारणों तैंविना आकाशविषेगंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोगंधर्वनगर साक्षात्‌मायाकाहीकार्य है तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी लोक प्रसिद्धदेशकालादिककारणों तैंविनाहीं रथादिकपदार्थ उत्पन्नहोवैं हैं ॥ यातैं तेरथादिकपदार्थ साक्षात्‌मायाकेहीकार्य हैं ॥ और सोमाया अज्ञानरूपअविद्यातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोमाया अज्ञानअविद्यारूपहै इतनैंकरिकै अविद्या अज्ञान माया इनतीनोंका अभेदनिरूपणकर्‍या॥

समानभूमिविषेस्थित जोकोईविचित्रसभाहै ॥ तासभाकूं गर्तरूपजाणिके दुर्योधनराजाकीन्याई कोईमूढपुरुष तागर्तविषेपतन होवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी यहजीवात्मा समानभूमिकूं गर्तरूपमनिके तागर्तविषे पतनहोवैहै ॥ तागर्तकेपतनकरिकैभी याजीवात्माकूँ परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे यहपुरुष जिसजिस अप्रियपदार्थकूंदेखिके भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ स्वप्नअवस्थाविषेभी तिसतिसअप्रियपदार्थकूंदेखिके यहजीवात्मा भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसतैं आदिलेके अनेकप्रकारकेदुष्टस्वप्नोंकूं पापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ इतनैंकरिकै पापकर्मसहकृतजोअविद्याहै ताअविद्याजन्य दुष्टस्वप्नकानिरूपणकऱ्या ॥ अब अविद्याकेस्वरूपकहणेवासतै प्रथम अविद्याकाविरोधीजोविद्याहै ताकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यहब्रह्मकैसाहै ॥ देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै तथासर्वजीवोंका आत्मारूपहै तथा स्वयंप्रकाशरूपहै॥ तथा सत्चित्आनंदस्वरूपहै ॥ तथा अद्वितीयरूपहै॥ऐसे अद्वितीयब्रह्मकेविशेषस्वरूपकूं करामलककीन्याई अधिकारीपुरुषोंके जोसमीपकरिकै देवै ॥ अथवा ऐसेअद्वितीयब्रह्मकेविशेषरूपकूं अधिकारीपुरुषोंका आत्मारूपकरिकै जोप्रकाशकरै ताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विद्याकहैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ महावाक्यकेश्रवणतैं उत्पन्नभई जो जीवईश्वरकेभेदकूंविषयकरणेहारी अन्तःकरणकीवृत्ति ॥ तावृत्तिकरिकैउपलक्षितजोचैतन्यहै ॥ ताकानामविद्याहै ॥ इतनैंकरिकै विद्याकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ अब ताविद्याकरिकैनिवृत्तहोणेयोग्य जोअविद्याहै ताअविद्याकेस्वरूपकूं निरूपणकरैं हैं॥ हेजनक ॥ तिसविद्यातैंभिन्न जोपरिच्छिन्न अनात्मा असत् जड दुःखरूपहै ॥ ताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अविद्याकहैं हैं ॥ सोअविद्या अज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोअविद्या अज्ञानरूपहै ॥ अबयाहीअर्थकूं सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकै स्पष्टकरैं हैं॥ हेजनक॥ यहआनंदस्वरूपपरमात्मा वास्तवतैं सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहितहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥तथा स्वप्रकाशचैतन्यरूपहै ॥ ऐसा निर्विकारआत्मा नानारूपकूं किसप्रकारप्राप्तहोवै है॥ और ऐसे निर्विकारचैतन्यपरमात्मातैं असत्जड दुःखरूप यहजगत् किसप्रकार उत्पन्न होवैहै ॥ याप्रकारकाप्रश्न किसीपुरुषने अन्यपुरुषकेप्रतिकऱ्या ॥ ताप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोअन्यपुरुष आपणेचित्तविषे मैंनहींजाणता

और हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्‌अवस्थाविषे प्रतिकूलरूपकरिकेजानेहुए चौरादिकपदार्थ जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और अनुकूलरूपकरिकेजानेहुए स्रकचंदनादिकपदार्थ जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी प्रतिकूलरूपकरिकेजानेहुए चौरादिकपदार्थ जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और अनुकूलरूपकरिकेजानेहुए स्रकचंदनादिकपदार्थ जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ यातैंजाग्रत्‌केपदार्थोंविषे तथास्वप्नकेपदार्थोंविषे स्वरूपतैंविशेषतानहीं ॥ तथा सुखदुःखकीउत्पत्ति रूपकार्यतैंभी विशेषतानहीं ॥ यातैं जाग्रत्‌केपदार्थ तथा स्वप्नकेपदार्थदोनोंसमानहैं ॥ अब दुःखकेदेणेहारेस्वप्नकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे आकाश शस्त्रादिकोंकरिके छेदनकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी वास्तवतैं शस्त्रादिकोंकरिके छेदनकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ ऐसाआनंदस्वरूपनिर्विकारआत्मा जभी अंतःकरणादिकउपाधियोंकेसंबंधतैं स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तभी पूर्वलेपापकर्मकेवशतैं यास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं धनकीप्राप्तिवासते चौर शस्त्रोंकरिकेहननकरैहैं ॥ और मांसकेभक्षणकरणेहारे जेव्याघ्रवृकादिकजंतुहैं ॥ तेव्याघ्रादिकजंतु यास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तीक्ष्णनखोंकरिके तथादंतोंकरिके छेदनकरैहैं ॥ तथा तीक्ष्णखुरोंकरिके ताडनकरैहैं ॥ और हेजनक ॥ जैसे आयुष्केक्षयहुए यापुरुषकूं जराअवस्था वशकरिलेवैहै ॥ तैसेवास्तवतैं सर्वजगत्‌कूं वशकरणेहारा जोयहआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसकूं स्वप्नअवस्थाविषे कोईदुर्बुद्धिधूर्तपुरुष आपणेवशकरिलेवैहै ॥ तिनधूर्तपुरुषोंकेवशहुआ यहआत्मादेव स्वप्नविषे परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे लोकविषे दुर्बुद्धिजोराजाहै ॥ ताराजाकेभृत्य धनकेलेनेवासतै बलात्कारसैं धनीपुरुषोंकूं आपणेवशकरैहैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवात्माकूं कोईधूर्तपुरुष बलात्कारसैं आपणेवशकरै हैं ॥ तिनोंकेवशहुआ यहजीवात्मा परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्‌अवस्थाविषे राजाकेद्वारविषेस्थित जोहस्तीहै ताहस्तीकेसमानहै आकारजिसका ऐसाजोकाष्ठकाहस्तीहै ॥ ताहस्तीकूंदेखिकरिके मूढबालक भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा आपणेगृहकीओरभागैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी यहजीवात्मा हस्तिकूंदेखिकरिके भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथाआपणेगृहकीतरफभागैहै ॥ ताकरिके याजीवात्माकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्‌अवस्थाविषे

अतिसूक्ष्महैं ॥ ऐसीनाडियोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष हितानामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ काहेतें जैसे माताकेस्तनविषेस्थित जेनाडियां हैं तेनाडियाँ ॥ बालककूं दुग्धकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ यातें तेनाडियां बालककेहितकरणेहारियां हैं॥तैसे सर्वशरीरविषेस्थितजेनाडियां हैं ॥ तेनाडियां पादतैंलेके मस्तकपर्यंत सर्वशरीरविषे अन्नकेसूक्ष्मरसकूं प्राप्तकरैं हैं ॥ यातैं तेनाडियां याजीवके अत्यंतहितकारीहैं ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तिननाडियोंकूं हितानामकरिकै कथनकरैंहैं ॥ पुनःकैसियां हैं ॥ तेनाडियां ॥ जैसे लोकविषेनदियां जलकरिकैपूर्णहोवैहैं ॥ तैसे अन्नपानके जेविचित्रवर्णवालेरसहैं तिनोंकरिकैपूर्ण हैं ॥ पुनःकैसियां हैं तेनाडियां ॥ जैसे चित्रकारपुरुषकेगृहविषे शुक्ल नील पीत इत्यादिकअनेकवर्णोंकरिकैपूर्ण अनेकपात्रहोवैं हैं ॥ तैसे याशरीरविषे कफकूंधारणकरणेहारियांनाडियां शुक्लरसकरिकै पूर्णहोवैं हैं ॥ और वातकूंधारणकरणेहारियां जेनाडियां हैं ॥ ते नीलरसकरिकै पूर्णहोवैहैं ॥ और पित्तकूंधारणकरणेहारी जेनाडियां हैं ॥ तेनाडियां पिंगलरसकरिकैपूर्णहोवैं हैं ॥ और अल्पपित्तकूंधारणकरणेहारी जेनाडियां हैं ॥ तेनाडियां हरितरसकरिकैपूर्णहोवैहैं ॥ और रुधिरकूंधारणकरणेहारी जेनाडियांहैंतेनाडियां लोहितरसकरिकैपूर्णहोवैं हैं॥यहां नीलशब्दकरिकै अंजनकेसमान श्यामवर्णवालेपदार्थका ग्रहणकरणा॥और हरितशब्दकरिकै दूर्वादलकेसमानवर्णवालेपदार्थका ग्रहणकरणा ॥ और पिंगलशब्दकरिकै सुवर्णकेसमान पीतवर्णवालेपदार्थकाग्रहणकरणा ॥ पुनःकैसियां हैं तेनाडियां ॥ जैसे चित्रकारपुरुष नीलपीतादिक दोतीनवर्णोंकूंएकठाकरिकै अपूर्ववर्णकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तैसे वातपित्तादिक धातुवोंकेसन्निपाततैं नानाप्रकारकेवर्ण उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तिननानाप्रकारकेवर्णोंकरिकै जेनाडियांपूर्ण हैं ॥ ऐसेनाडीरूपमार्गकरिकै यहजीवात्मा स्वप्नकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथासुषुप्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब स्वप्नअवस्थाविषे कार्यद्वारा अविद्याकेस्वरूपकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ तिसनाडीरूपमार्गकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजोस्वप्नहै ॥ सोस्वप्न दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकस्वप्न सुखकेदेणेहारा होवैहै ॥ और दूसरास्वप्न दुःखकेदेणेहाराहोवैहै ॥ तहाँ जाग्रत्अवस्थाकीन्याई पुण्यकरिकैसहकृतजोअविद्याहै ॥ ताअविद्याकरिकैजन्यजोस्वप्नहै ॥ सोस्वप्न जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और पापकर्मकरिकैसहकृतजोअविद्याहै ॥ ताअविद्याकरिकैजन्यजोस्वप्नहै ॥ सोस्वप्न जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥

तौसरीकीप्राप्ति॥और दूसराभक्षणकरणेयोग्य पदार्थकीप्राप्ति॥और तीसरा अन्यकिसीपक्षीकाहननकरणा ॥ और चतुर्थआपणेइच्छाकीपूर्णता करणो॥याचारिप्रकारकेप्रयोजनोंविषे किसीएकप्रयोजनकूं ग्रहणकरिकेही सोपक्षी आपणेगृहकापरित्यागकरिके दूर आकाशविषे जावैहे॥ तहाँजाइके सोपक्षी जभी अत्यंतश्रमकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तभी सोपक्षी विश्रामकरणेवासते आपणेदोनोंपक्षोंका आपणेशरीरविषेसंकोचकरिके आपणेगृहकूं प्राप्तहोवैहे ॥ तागृहविषेस्थितहोइके सोपक्षी विश्रामकूं प्राप्तहोवैहे ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मारूपपक्षीभी सुषुप्तिरूपगृहकापरित्यागकरिके पुण्यपापरूपदोनोंपक्षोंकेबलतैं जाग्रत्स्वप्नरूप दूरआकाशविषेजावैहे ॥ ताजाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारके विषयभोगरूपव्यापारोंकूंकरिके जभी यहआत्मारूपपक्षी अत्यंतश्रमकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तभी पुण्यपापरूपदोनोंपक्षोंकासंकोचकरिके विश्रामकीप्राप्तिवासते सुषुप्तिरूपगृहकूं प्राप्तहोवैहे ॥ तासुषुप्तिविषेस्थितहुआ यहस्वयंज्योतिआत्मा किसीविषयकीइच्छाकरतानहीं ॥ और किसीविषयकूंदेखतानहीं ॥ इतनैंकरिके यह अर्थ बोधनकरया ॥ स्थूलसूक्ष्मशरीरकेसाथ तथा स्थूलसूक्ष्मशरीरकेधर्मोंकेसाथ आत्माकावास्तवतैंसंबंधनहीं ॥ जोतिनोंकेसाथ आत्माका वास्तवतैं संबंधहोता ॥ तो सुषुप्तिअवस्थाविषेभी आत्माविषे तेस्थूलसूक्ष्मादिकपदार्थ प्रतीतहोते ॥ और सुषुप्तिविषे तिनपदार्थोंकेलयहुएभी आत्मा साक्षीरूपकरिके विद्यमानहे ॥ यातैं तिनस्थूलसूक्ष्मपदार्थोंकेसाथ आत्माका वास्तवतैंसंबंधनहीं ॥ अब अज्ञानरूपकारणशरीरतैं आत्माकूं भिन्नकरणेवासते अविद्यारूपअज्ञानकेस्वरूपकूं तथा आत्माकेस्वरूपकूं निरूपणकरैं हैं ॥ याअर्थकीसिद्धिवासते प्रथम स्वप्नसुषुप्तिकेप्राप्तिका मार्गरूपजेनाडियां हैं तिनोंकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकी प्राप्तिवासते तथातिनअवस्थावोंतैंबाहरआवणेवासते जोस्वयंज्योतिआत्माकामार्ग हमनैं तुमारेप्रति पूर्व कथनकऱ्याथा ॥ सोमार्ग नाडीरूपहे ॥ कैसियां हैं तेमार्गरूपनाडियां ॥ हृदयस्थानतैं जिनोंकानिर्गमनभयाहे ॥ तिननाडियोंविषेभी एकऊपरएकशतनाडी प्रधानहैं ॥ और ॥ तिनप्रधाननाडियोंकी शाखारूपदूसरीनाडियां अनेककोटी हैं॥ कैसी हैं तेनाडियां ॥ एककेशकेजोसहस्रविभागकरिये ॥ ताकेएकविभागकेसमान जिननाडियोंकीसूक्ष्मताहे ॥ अथवा तिसकेशकेविभागतैंभी

काहेतें आत्मा आकाशकीन्याईं अमूर्त है तथाविभुहै ॥ अमूर्तविभुपदार्थविषे कोईभीवादी क्रिया अंगीकारकरतानहीं ॥ यातें विभुआत्मा का क्रियाजन्यसंयोगरूपसंग किसीपदार्थकेसाथसंभवैनहीं ॥ यातें स्वप्नअवस्थाकीन्याईं जाग्रत्अवस्थाविषेभी आत्मा असंगहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनें जनकराजाकेप्रति द्वितीयप्रश्नकाउत्तर कथनकऱ्या ॥ तभी सोजनकराजा ताउत्तरकूं अंगीकारकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति तृतीयप्रश्नकेउत्तरकूं कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक॥जाग्रत्अवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा स्वप्नकीन्याईं प्रियस्त्रियोंकेसाथ क्रीडाकरिकै तथानानाप्रकारकेमार्गोंविषेगमनकरिकै तथा पुण्यपापरूपकर्मोंकरिकैउत्पन्नभईजो सुखदुःखाकारबुद्धि ताबुद्धिकूंदेखिकरिकै स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै॥तहाँ स्वप्नअवस्थाविषेनाना प्रकारकेपदार्थोंकूंदेखिकरिकै यहस्वयंज्योतिआत्मा पुनःजाग्रत्अवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार एकहीस्वयंज्योतिआत्मा क्रमतैंजाग्रत्अवस्थाकूं तथास्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे जलकरिकेपूर्ण जोमहान्नदीहै ॥ तानदीविषेस्थितजोमहान् मत्स्य है॥सोएकहीमत्स्य कभी नदीकेओरलेकिनारेआवैहै ॥और कभीनदीकेपारलेकिनारेजावैहै ॥तैसे एकहीस्वयंज्योतिआत्मा कभी जाग्रत्अवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै॥और कभी स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवै है॥यातें स्वप्नकेद्रष्टाआत्मातें जाग्रत्काद्रष्टाआत्मा भिन्ननहीं॥किंतु एकहीआत्मा क्रमतें जाग्रत्कूं तथास्वप्नकूं प्राप्तहोवैहै ॥ एकहीकालविषे आत्माकूं जाग्रत्स्वप्नदोनोंअवस्थाकीप्राप्ति हम अंगीकारकरतेनहीं ॥ यातें उज्जयिनीपुरीके तथाकाशीपुरीके राजाकेदृष्टांततैं जाग्रत्स्वप्नकेआत्माका भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे एकहीतीर्थयात्रीपुरुष कभी काशीपुरीविषे प्राप्तहोवैहै ॥ और कभी उज्जयिनीपुरीविषे प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे एकहीआत्मा कभीजाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कभी स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनैंकरिकै तृतीयप्रश्नकाउत्तरकह्या ॥ अब सुषुप्तिअवस्थाविषेभी आत्माके असंगरूपताकूं निरूपण करै हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे श्येनपक्षी अथवा गरुडपक्षी भूमिकेसमीपआकाशदेशविषेस्थित जोआपणागृहहै ॥ तागृहकापरित्यागकरिकै अत्यंतदूर आकाशविषेजावैहै॥तहाँ आपणेगृहकापरित्यागकरिकै अत्यंतदूरआकाशविषेजाणेमें तापक्षीके चारिप्रकारकेप्रयोजनहोवैहैं॥एक

संबंधहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकूंदेखणेहारा जोद्रष्टापुरुषहै ताका द्रष्टापुरुष घटपटादिकदृश्यपदार्थोंकेसाथ तीनकालसंबंधनहीं तैसे स्वप्नअवस्थाविषे स्वप्नद्रष्टापुरुषका स्वप्नकेदृश्यपदार्थोंकेसाथ तीनकाल संबंधनहीं॥यातैं हेजनक ॥ याप्रकार स्वप्नअवस्थाविषेसर्वसंगतैं रहित जोअसंगआत्माहै ॥ सोआत्मा स्वप्रकाशरूपकरिकेजान्याहुआ अधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरे है ॥ हेशिष्य॥याप्रकारप्रथमप्रश्नकाउत्तर जभी याज्ञवल्क्यमुनिनें जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेउत्तरकूं अंगीकारकरताभया॥तिसतैं अनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति द्वितीयप्रश्नकाउत्तर कहताभया॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच॥हेजनक जैसेद्रष्टाआत्माकूंस्वप्नके पदार्थ लिपायमानकरेनहीं ॥ तैसे द्रष्टाआत्माकूं जाग्रत्केपदार्थभी लिपायमानकरेनहीं॥यातैं स्वप्नअवस्थाकीन्याईजाग्रत्अवस्थाविषेभी आत्माअसंगहै अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै जाग्रत्अवस्थाके तथास्वप्नअवस्थाके तुल्यताकूंनिरूपणकरैं हैं॥ हेजनक॥जैसे यहस्वयंज्योतिआत्मा जाग्रत्केपदार्थोंकूं देखिकरिकेस्वप्नअवस्थाविषेजावैहै तैसेस्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा नाडीरूपमार्गकूंतथापुण्यपापरूपकर्मोंकूं तथाबुद्धिकूं देखिकरिकेही जाग्रत्अवस्थाविषे आवैहै ॥ और जिसनाडीरूपमार्गकरिके यहजीवात्मा स्वप्नअवस्थाविषेप्राप्त होवैहै ॥ तिसीनाडीरूपमार्गकरिके यहजीवात्मा जाग्रत्अवस्थाविषेआवैहै ॥ यातैं जाग्रत्स्वप्नदोनोंसमानहैं ॥ यहाँ स्वप्नअवस्थातैं जाग्रत्अवस्थाविषे इतनीविशेषताहै ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे केवलबाह्यपणाहै ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे बाह्यपणा तथाअंतरपणा दोनों हैं॥ तहाँ जाग्रत्अवस्थाकोअपेक्षाकरिकेतो स्वप्नअवस्थाविषे अंतरपणाहै और सुषुप्तिअवस्थाकोअपेक्षाकरिके तास्वप्नअवस्थाविषे बाह्यपणाहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहद्रष्टापुरुष दृश्यपदार्थोंकेसंगतैं रहितहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्अस्थाविषेभी यहद्रष्टापुरुष दृश्यपदार्थोंकेसंगतैं रहितहोवैहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाकीन्याई जाग्रत्अवस्थाविषेभी यहद्रष्टाआत्मा असंगहै ॥ तात्पर्ययह॥एकमूर्तपदार्थका दूसरे मूर्तपदार्थकेसाथ जोक्रियाजन्यसंयोगसंबंधहै ॥ तासंयोगसंबंधकूं शास्त्रवेत्तापुरुष संगकहैं हैं ॥ जैसे घटरूपमूर्त्तपदार्थका भूतलरूपमूर्तपदार्थकेसाथ जोक्रियाजन्यसंयोगसंबंधहै ॥ तासंयोगसंबंधकानाम संगहै ॥ याप्रकारकासंग किसीपदार्थकेसाथ आत्माकासंभवेनहीं ॥

ज्ञान तथातिनोंकेसंबंधकाज्ञान यहतीनोंज्ञान कारणहैं ॥ जैसे दंडविशिष्टपुरुषकूं विषयकरणेहारा जोदंडोपुरुषहै याप्रकारकाविशिष्ट ज्ञानहै ॥ सोविशिष्टज्ञान दंडरूपविशेषणकेज्ञानतैंविना तथापुरुषरूपविशेष्यकेज्ञानतैंविना तथा दंडपुरुषकेसंयोगसंबंधकेज्ञानतैंविना कदाचित्होवैनहीं ॥ किंतु दंड पुरुष संयोग यातीनोंकेज्ञानकरिकैहीदंडीपुरुषहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञान होवैहै ॥ इसीप्रकार जोज्ञान आत्माविशिष्टपदार्थकूंविषयकरैगा ॥ सोज्ञान विशेषणरूपआत्माकूंभी अवश्य विषयकरैगा ॥ यातैं आत्माविषेभी ज्ञानकीविषयता प्राप्तहोवैगी ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आत्माविषे ज्ञानकीविषयता मानणेमेंक्याहानिहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे दक्षिणहस्तकी मुष्टिकरिकै दक्षिणहस्तकेमुष्टिकाग्रहणहोइसकैनहीं ॥ तैसे आत्माकरिकै आत्माकाग्रहण किसीप्रकारकरिकैसंभवैनहीं ॥ और जोआत्मा विषेभी ज्ञानकीविषयता अंगीकारकरिये ॥ तो जोजोपदार्थ ज्ञानकाविषयहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ जडहोवैहै ॥ जैसे ज्ञानकेविषयहोणेतैं घटादिकपदार्थ जडहैं ॥ तैसे ज्ञानकाविषयहोणेतैं आत्माभी जडहोवैगा ॥ और जो जो पदार्थ जडरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ अनात्मारूप होवैहै ॥ जैसे जडरूपहोणेतैं घटादिकपदार्थ अनात्मारूपहैं ॥ तैसे जडरूपहोणेतैं आत्माभी अनात्मारूपहोवैगा ॥ और आत्माविषे अनात्मरूपता कोईभीवादी अंगीकारकरता नहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी जडपदार्थोंकूंभी आत्मारूपअंगीकारकरै ॥ तो जैसे जडआत्माविषे आत्मरूपताहै ॥ तैसे जडघटादिकोंविषेभी आत्मरूपता अवश्यमानणीहोवैगी॥और जडघटादिकोंकूं कोईवादी आत्मरूपमानतानहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥आकाशादिकविभुपदार्थोंविषे तथाघटादिकपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे जहांजहां जडपणारहे है ॥ तहांतहां अनात्मरूपतानहींदेखीतीहै॥यातैं आत्माविषे किसीज्ञानकीविषयतानहीं ॥ और जेवादी अहंसुखी अहंदुःखी याप्रकारकेज्ञानकीविषयता आत्माविषे मानैहैं ॥ तेवादी भ्रांतिकरिकैमानैहैं ॥ काहेतैं अहं याज्ञानकीविषयता अंतःकरणकीविषयताकूं शुद्धआत्माविषे आरोपणकरिकैतेवादी आत्माकूं अहं याज्ञानकाविषयमानैहैं॥यातैं आत्मा किसीज्ञानकाविषयनहीं ॥ और हेजनक॥स्वप्नअवस्थाविषेस्त्रीसंभोगतैंआदिलेके जितने कअन्नपानादिकदृश्यपदार्थ हैं॥तिनोंकेसाथ द्रष्टाआत्माकासंबंधहैनहीं॥काहेतैं यालोकविषेभीजोपुरुष द्रष्टाहोवैहै॥ताका दृश्यपदार्थकेसाथ

हैनहीं ॥ किंतु सुषुप्तितैंअनंतर कदाचित् जाग्रत्होवैहै ॥ और कदाचित् स्वप्नहोवैहै ॥ हेजनक ॥ यहजीवात्मा स्वप्न कोप्राप्तिवासते सुषुप्तितैंबाहरआवैहै ॥ यहजोश्रुतिनैंकथनकर्‍याहै सोअसंगतनहीं किंतु यथार्थहीहै ॥ काहेतैं यहां स्वप्नशब्दकरिकै केवलस्वप्नअवस्थाका ग्रहणनहींकरणा ॥ किंतु स्वप्नशब्दकरिकै विपर्ययज्ञानरूपविक्षेपकाग्रहणकरणा ॥ सो विक्षेपरूपता जैसे स्वप्नविषे है तैसे जाग्रत्विषेभीहै ॥ यातैं श्रुतिविषे जोस्वप्नपदहै ॥ तास्वप्नशब्दकरिकै जाग्रत्स्वप्नदोनोंकाग्रहणकरणा ॥ अब आत्माविषे असंग रूपताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा सुषुप्तितैंबाहरआइकै विक्षेपरूपस्वप्नविषे स्थितहोवैहै ॥ और तास्वप्नविषे स्थितहुआ यह आनंदस्वरूप आत्मा स्त्रीसंभोगतैंआदिलैकै नानाप्रकारकेविषयोंकूंदेखैहै ॥ परंतु जैसे घटकाद्रष्टापुरुष घटादिक दृश्यपदार्थोंकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेविषयोंकाद्रष्टाआत्मा तिनदृश्यरूपविषयोंकेसाथ संबं धकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहद्रष्टापुरुष जैसे रूपादिकविषयोंकूंदेखैहै ॥ तैसे अहंसुखी अहंदुःखी याप्रती तिकरिकै अहंशब्दकाअर्थजोआत्माहै ताकूंभी यहद्रष्टापुरुष जानैहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे जैसे रूपादिकपदार्थ ज्ञानकेविषयहैं ॥ तैसे आत्माभी अहं याज्ञानकाविषयहै ॥ यातैं रूपादिकदृश्यपदार्थोंकेसाथ यद्यपि द्रष्टापुरुषकासंबंधनहींहै ॥ तथापि आत्मारूपदृश्य पदार्थकेसाथ द्रष्टापुरुषकासंबंध संभवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ आत्माकरिकैविशिष्टजोकोईपदार्थहै ॥ तिसकूं कोईभीपुरुष देखणेवि षेसमर्थनहीं ॥ काहेतैं जोवादी आत्माविशिष्टपदार्थविषे ज्ञानकीविषयता अंगीकारकरैहै ॥ तिसवादीकूं आत्माविषेभीविषयता बलात्कार सैंअंगीकारकरणीहोवैगी ॥ काहेतैं जोधर्मविशेषणविशिष्टपदार्थविषेरहैहै ॥ सोधर्म विशेषणविषेभी अवश्यरहैहै ॥ जैसेनीलघटहै याप्रकार केज्ञानकीविषयता नीलगुणविशिष्टघटविषेरहैहै ॥ और साविषयता नीलगुणरूपविशेषणविषेभीरहैहै ॥ तैसे आत्माविशिष्टपदार्थविषें जोज्ञानकीविषयताहै ॥ सोविषयता विशेषणरूपआत्माविषेभी अवश्यरहैगी ॥ किंवा ॥ जोपुरुष विशेषणकूं तथाविशेष्यकूं तथा तिनदो नोंकेसंबंधकूं नहींजाणता ॥ सोपुरुष विशिष्टपदार्थकूं जाणिसकैनहीं ॥ यातैं विशिष्टपदार्थकेज्ञानविषे विशेषणकाज्ञान तथाविशेष्यका

विक्षेपरहैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि रति गति दोनोंनहीं हैं ॥ तथापि सुषुप्तिकीप्राप्तितैंपूर्वे तथा पश्चात् सो रति गति दोनोंविद्यमानहैं ॥ तिनोंकूंग्रहणकरिके सुषुप्तिअवस्थाविषे श्रुतिभगवती आत्माविषे रति गति कथनकरैहै इसीप्रकार सुखदुःख रूपफलकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तेपुण्यपापरूपकर्म यद्यपि सुषुप्तिअवस्थाविषेहैंनहीं ॥ तथापि तेपुण्यपापरूपकर्म सुषुप्तिअव स्थाविषे कारणअज्ञानरूपहोइकेरहे हैं ॥ जोसुषुप्तिअवस्थाविषे पुण्यपापरूपकर्मोंका सर्वथाअभावहोवे ॥ तो सुषुप्तितैंअनंतर जाग्रत् अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकीप्राप्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और जाग्रत्स्वप्नविषे सुखदुःखरूपफलकीप्राप्ति सर्वजी वोंकूंदेखीतीहै ॥ यातैं यहजान्याजावेहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे पुण्यपापरूपकर्म कारणअज्ञानरूपहोइकेरहैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्था विषे यहस्वयंज्योतिआत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपकरिके ताकारणअज्ञानकूं प्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीनैं यहकह्याहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे सोआत्मा पुण्यपापरूपकर्मोंकूंदेखे है ॥ और हेजनक ॥ याअनादिसंसारविषे यहजीवात्मा जैसे पूर्वपूर्व संप्रसाद रूपअनेकसुषुप्तिअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसीप्रकार यहजीवात्मा पुनः सुषुप्तिरूपसंप्रसादकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहजीवात्मा सुषुप्तिरूप संप्रसादविषे जिसमार्गकरिकेजावैहै ॥ तिसीमार्गकरिके यहजीवात्मा तासुषुप्तिरूपसंप्रसादतैं बाहरआवैहै ॥ और हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्था तैंपूर्व जिसजातिवालेशरीरकरिकेयुक्त यहजीवात्माहोवैहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोइकेयहजीवात्मा तिसोजातिवालेशरीरकूंग्रहणकरिके तासुषुप्तितैंबाहरआवैहै ॥ पूर्वशरीरतैंविलक्षण दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तहाँव्याघ्रशरीरकरिकेयुक्तहुआ यहजीवात्मा जभीसुषुप्तिअव स्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी व्याघ्रशरीरकूंग्रहणकरिकेही तासुषुप्तितैं बाहरआवैहै ॥ इसप्रकार सिंह [illegible] वराह कीट मनुष्य इसतैंआदिलेके जितनेकप्राणीहैं ॥ तेसंपूर्णप्राणी जिसजिसजातिवालेशरीरकरिके युक्तहुए सुषुप्तिरूपसंप्रसादकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसीतिसीजातिवालेशरीरकूं ग्रहणकरिके पुनःसुषुप्तितैंबाहरआवैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहजीवात्मा सुषुप्तिरूपसंप्रसादतैंजोबाहरआवैहै ॥ सोस्वप्नकी प्राप्तिवासतैंहीआवै है ॥ यहजोश्रुतिनैंकथनकऱ्याहै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तितैंअनंतर स्वप्नहीहोवैहै याप्रकारकानियम

होवैहै॥यातैं स्वप्नअवस्थाविषे सोस्वयंज्योतिआत्मा असंगनहीं॥इतिप्रथमप्रश्न॥अब द्वितीयप्रश्नकूं निरूपणकरैहैं॥हेयाज्ञवल्क्यमुनि॥आपनैं स्वप्नअवस्थाविषे जोआत्माकूंअसंगकह्या ॥ सोयद्यपिसंभवैहै ॥ काहेतैं स्वप्नअवस्थाविषेविद्यमान जोसूक्ष्मशरीरहै सो असंगहै ॥ याका रणतैंहीं तासूक्ष्मशरीरका पर्वतादिकोंविषेभीप्रवेशहोवे है ॥ ऐसे असंगसूक्ष्मशरीरकरिकैयुक्त जोस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ ताकूंभी असंगरू पता संभवैहै ॥ तथापि जाग्रत्अवस्थाविषेविद्यमान जोस्थूलशरीरहै ॥ सो सर्वलोकोंकूं संगवान्प्रतीतहोवैहै ॥ ता संगवान्स्थूलशरीर विषेस्थित जोस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ ताकूं असंगरूपतासंभवैनहीं ॥ इतिद्वितीयप्रश्न ॥ अब तृतीयप्रश्नकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्य मुनि ॥ जाग्रत्अवस्थाकूं तथास्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोणेहारा जोएकआत्माहै ॥ तिसएकआत्माकी दोनोंस्थानोंविषेस्थितिहोणी अत्यंतदु घटहै ॥ काहेतैं जैसे उज्जयिनीपुरीविषेस्थितजोराजाहै ॥ सोराजा ॥ काशीपुरीविषे स्थितहोइसकैनहीं ॥ किंतु काशीपुरीकाराजा उज्जयि नीपुरीकेराजातैं भिन्नहींहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेस्थित जोआत्माहै ॥ सोआत्मा स्वप्नअवस्थाविषे स्थितहोइसकैनहीं॥ किंतु जाग्र त्अवस्थाकेआत्मातैं स्वप्नअवस्थाकाआत्मा भिन्नहीहोवैगा ॥ इतितृतीयप्रश्न ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेतीनप्रश्न जभी जनकराजाने याज्ञ वल्क्यमुनिकेप्रतिकरे ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि तिसराजाकेतीनप्रश्नोंकाउत्तर क्रमतैंकहताभया ॥ अब प्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं निरूपण करै हैं ॥ हेजनक ॥ पूर्वहमनें स्वप्नअवस्थाविषे जोआत्मा स्वयंज्योतिरूपकरिके तुम्हारेप्रति उपदेशकऱ्याहै॥ सोईहीस्वयंज्योतिआत्मा कदाचित् संप्रसादनामास्थानविषे स्थितहोवैहै ॥ अब संप्रसादशब्दकेअर्थकूं निरूपणकरैहैं॥ हेजनक ॥ जैसे शरदृऋतुविषे जल कालुष्य कापरित्यागकरिके निर्मलहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मा स्थूलसूक्ष्मशरीरके अभिमानकूंपरित्याग करिके स्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तासुषुप्तिकूं संप्रसादनामकरिके कथनकरैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेभी श्रुतिनें आत्माविषे रति तथागति कथनकरीहै ॥ तहाँ नानाप्रकारकीक्रीडाकानामरतिहै ॥ और नानाप्रकारकेविषयोंकीप्राप्तिवासतै जोप रिअटनहै ताकूं गतिकहैहैं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषेभी विक्षेपकाअभावनहीं ॥ किंतु जाग्रत्स्वप्नकीन्याई सुषुप्तिविषेभी रति गति रूप

गौवोंकेलक्षणलिखेहैं तिनलक्षणोंकरिकेयुक्तहैं ॥ याप्रकारकीगौवां शास्त्रकीरीतिसें मैं तिसब्राह्मणकेताईदेताहूं ॥ याप्रकारका हमारानियम सर्वलोकजाणतेहैं ॥ यातें हेभगवन् आपनैं हमारेप्रति जोसाधारणविद्याउपदेशकरीहै ॥ तासाधारणविद्याकोगुरुदक्षिणा एकसहस्त्रगौवाँ मैं आपकेताईदेताहूं ॥ तिसगुरुदक्षिणाकूंआप अंगीकारकरो ॥ तिसतैंअनंतर आत्माकेवास्तवस्वरूपकाउपदेश हमारेप्रति करो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन तीनवार जभी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ हमनैं जनकराजाकेताईं संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तोभी यहजनकराजा ताब्रह्मविद्याकूं यथार्थ नहींजाणताभया है ॥ किंतु अन्यविद्याकेसमान यहभीकोई साधारणविद्याहै याप्रकार जनकराजानैं जान्याहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारका मनविषेविचारकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ यहजोतुमनैं वचनकह्या ॥ साधारणविद्याकीगुरुदक्षिणा एकसहस्त्रगौवां मैं आपकेताईदेताहूं ॥ तिसतैंअनंतर आत्माके यथार्थस्वरूपकाउपदेश हमारेप्रतिकरो ॥ सोयहतुमारावचन श्रवणकरिके हमारेकूं यहसंशयहोवैहै ॥ जोहमनैं पूर्वस्वयंज्योतिआत्मा तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ तिसस्वयंज्योतिआत्माकूं तुमनैं यथार्थजान्याहै अथवा नहींजान्याहै ॥ यहवृत्तांत तूं हमारेप्रतिकहु ॥ हेशिष्य याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आपनैं जोहमारेप्रति स्वयंज्योतिआत्माकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तिसकूं हमनैं अबपर्यंत जान्यानहीं॥ यातें तिसस्वयंज्योतिआत्माकेज्ञानवासते अभी हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ अब पूर्वकथनकरेअर्थविषे जनकराजाकेतीनप्रश्नोंकूं निरूपणकरें हैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ पूर्वआपनैं हमारेप्रति स्वप्नअवस्थाविषेस्थित स्वयंज्योतिआत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ ताकेविषे मैं याप्रकारकेदोषकूंदेखताहूं ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा सुंदरस्त्रियोंकेसाथ क्रीडाकरैहै ॥ तथा हँसैहै ॥ तथानानाप्रकारकेअन्नकूं भक्षणकरैहै ॥ तथा अप्रियपदार्थोंकेदेखणेवासते प्रवृत्तहोवैहै ॥ तथा अप्रियपदार्थोंतैं निवृत्तहोवैहै ॥यातें यहजान्याजावैहै॥सोस्वयंज्योतिआत्मा भोक्ताहै॥और जोभोक्ताहोवैहै॥सोसंगवान्

त्मा आश्रयहै ॥ और नेत्रादिकइंद्रियद्वारा वृत्तिरूपकरिकै घटादिकपदार्थोंकूंविषयकरणेहारा जोअंतःकरणरूप गौणज्ञानहै सोभी एकहीहै ॥ तथा तिनवृत्तियोंविषेआरूढ जोचैतन्यरूप मुख्यज्ञानहै सोभी एकहीहै ॥ यातैं एकआश्रयवाला तथाएकज्ञानकाविषय जो जगत्है ताकापरस्परभेदसंभवैनहीं ॥ और उपाधिकेभेदतैंहीं आत्माकाभेदहोवैहै ॥ ताजगत्रूपउपाधियोंकेभेदकेनिवृत्तहुए आत्माकाभी भेदसंभवैनहीं ॥ यातैं जाग्रत्स्वप्नप्रपंचका एकहीआत्मा अधिष्ठानहै ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे आकाशविषे प्रतीतभये जेमेघविद्युत्आदिकप दार्थ ॥ तिनमेघविद्युत्आदिकपदार्थोंकेभेदकरिकै अधिष्ठानआकाशका भेदहोवैनहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्माविषे प्रतीतभयेजे देशकाला दिकपदार्थ ॥ तिनदेशकालादिकोंकेभेदकरिकै अधिष्ठानआत्माकाभेदहोवैनहीं ॥ इतनेकरिकै आधेयपदार्थोंकेभेदकूं अंगीकारकरिकैभी आत्मारूपआधारकी एकता निरूपणकरी अब कल्पितआधारोंके भेदकूंअंगीकारकरिकैभी आधेयपदार्थोंकीएकताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे एकहीघट मृत्तिकारूपअवयवोंविषेस्थितहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ और सोईघट गृहविषे तथागृहकेअंगणविषे स्थितहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तहाँ मृत्तिका गृह गृहकाअंगण इत्यादिकजोघटकेआधारहैं ॥ तिनआधारोंकेभेदहुएभी आधेयरूपघटकाभेदहोवैनहीं ॥ तैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति इत्यादिकअवस्थावोंकेभेदहुएभी स्वयंज्योतिआत्माकाभेदहोवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ जोस्वयंज्योतिआत्मा जाग्रत्केपदार्थोंकाअधिष्ठानहै ॥ सोईस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नकेपदार्थोंकाअधिष्ठानहै ॥ यातैं जाग्रत्प्रपंचकी तथास्वप्नप्रपंचकी किंचित् मात्रभीविलक्षणतानहीं ॥ कल्पितरूपकरिकै दोनोंसमानहैं ॥ यातैं हेजनक ॥ ऐसाभेदतैंरहितस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नअवस्थाविषे स्वयं ज्योतिरूपकरिकै हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ अब जिसअर्थकेपूछणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तूं हमारेसैंपूछ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या॥तभी सोबुद्धिमान्जनक याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचनकहता भया॥राजाजनकउवाच॥हेयाज्ञवल्क्यमुनि॥जोकोईब्राह्मण हमारेप्रति किसीसाधारणविद्याकाभी उपदेशकरताहै॥तिसब्राह्मणकेताईं मैंजनक राजा एकसहस्रगौवां दक्षिणादेताहूं॥कैसीहैं तेगौवां॥हस्तीकेसमानहैंवृषभजिनोंविषे॥तथा यौवनअवस्थाकरिकैयुक्तहैं॥और शास्त्रविषे जेश्रेष्ठ

अग्निकूं शीतरूपताहोणीचाहिये ॥ और शीतलजलकूं उष्णरूपताहोणीचाहिये ॥ याप्रकारकीअव्यवस्था वादीकूं प्राप्तहोगी और लोकविषे याप्रकारकी अव्यवस्थाहैनहीं ॥ किंतु जीवोंके सुखदुःखभोगवासते देशकालादिकसर्वपदार्थोंकी व्यवस्थाहीहै ॥ शंका ॥ जैसे वादीकेमतविषे व्यवस्थासंभवैनहीं ॥ तैसे तुम अद्वैतवादियोंकेमतविषेभी जगत्कीव्यवस्थासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हम अद्वैतवादियोंकेमतविषे आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्वपूर्व संपूर्णपदार्थोंकीव्यवस्थासंभवैहै ॥ परंतु सो जगत्कीव्यवस्था किसीप्रमाणकरिकै सिद्धनहीं ॥ किंतु जैसे स्वप्नकेपदार्थ भ्रमकरिकैसिद्धहैं ॥ तैसे जाग्रत्प्रपंचकीव्यवस्थाभी भ्रमकरिकैसिद्धहै ॥ यातैं जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे विद्यमानजोदेशकालहै ॥ तथा तादेशकालविषेस्थित जितनेकस्थूल सूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्ण अद्वितीयआत्माविषेकल्पितहैं ॥ और अधिष्ठान आत्माकीसत्ताकूंपाइकैही तेजाग्रत्स्वप्नकेपदार्थ आपणेआपणे कार्यकरणेविषे समर्थहोवैं हैं ॥ यातैं जाग्रत्केपदार्थ तथास्वप्नकेपदार्थ दोनोंसमानहैं ॥ और हेजनक ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे सर्प दंड माला जलधारा यहसंपूर्ण कल्पितहैं ॥ तैसे अधिष्ठानसाक्षीआत्माविषे देशकालतैंआदिलेके संपूर्णजगत् कल्पितहै ॥ यातैं देशकालादिकसंपूर्णजगत् अधिष्ठान आत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्प दंड माला जलधाराहैं ॥ तिनसर्पादिकोंका परस्परभेद रज्जुरूपअधिष्ठानकेभेदतैंविना संभवै नहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्माकेभेदतैंविना जाग्रत्स्वप्नकेप्रपंचका परस्परभेदसंभवैनहीं ॥ और पूर्वउक्तयुक्तिसैं जाग्रत्स्वप्नविषे आत्माका भेदसंभवैनहीं ॥ यातैं आत्माविषेकल्पित देशकालादिकपदार्थोंकाभी परस्परभेद संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ परमार्थदृष्टिकरिकैतौ अभेदहै ॥ परंतु कार्यकीदृष्टिकरिकै मेरेकूं भेदभ्रमहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ लोकविषे आश्रयकेभेदतैं तथाज्ञानोंकेभेदतैं पदार्थोंका भेदहोवैहै ॥ जैसे यहघटहै ॥ याज्ञानकाविषयघटहै ॥ औरताघटकाआश्रय मृत्तिकाहै ॥ और यहपटहै याज्ञानकाविषय पटहै ॥ और तापटकाआश्रय तंतुहै ॥ याप्रकार ज्ञानोंकेभेदतैं तथाआश्रयकेभेदतैं घटपटादिकपदार्थोंका परस्परभेद लोकविषेदेख्याहै ॥ सो आश्रयकाभेद तथाज्ञानोंकाभेद जगत्विषेहैनहीं ॥काहेतैं देशकालतैंआदिलेके जितनाकस्थूलसूक्ष्मजगत्है ॥ ताका एकहीमायाविशिष्टपरमा

शंका॥ देशकालादिकोंकेभेदव्यवहारकाजनक जोभेदहै॥ताकूं असत्यरूपता संभवैनहीं॥काहेतें जोअसत्यपदार्थहोवैहै॥सो किसीव्यवहार काकारणहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ सत्यवस्तुही व्यवहारकाजनकहोवैहै ॥ याप्रकार जोवादी अंगीकारकरैहै ॥ तासें यहपूछाचाहिये ॥ जहाँजहाँ व्यवहारहोवैहै ॥ तहाँतहाँ सत्यवस्तुहीहोवैहै याप्रकारकानियमहै ॥ अथवा जहाँजहाँ सत्यवस्तुहोवैहै ॥ तहाँतहाँ व्यवहारहोवैहै याप्रकारकानियमहै ॥ तहाँ जोवादी प्रथमपक्षअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जभी कोईपुरुष अन्यकिसीपुरुषकेप्रति गालीदेवैहै॥ तभी सोपुरुष ताकीगालीकूं श्रवणकरिकै क्रोधवान्होवैहै ॥ तहाँ गालीरूपवचनकाअर्थ असत्यहै ॥ परंतु सोअसत्यअर्थ क्रोधरूपव्यवहारकूंउत्पन्नकरैहै ॥ जैसे पतिव्रतास्त्रीकूं किसीने व्यभिचारिणीकह्या ॥ तहाँ व्यभिचारशब्दकाअर्थ जोपरपुरुषकागमनहै ॥ सोतापतिव्रतास्त्रीविषैहैनहीं ॥ तोभी तावचनकूंश्रवणकरिकै सोपतिव्रतास्त्री क्रोधवानहोवैहै ॥ यातें जहाँजहाँ व्यवहारहोवैहै ॥ तहाँतहाँ सत्यअर्थहोवैहै ॥ यहवादीकानियम संभवैनहीं ॥ और जहाँजहाँ सत्यअर्थहोवैहै ॥ तहाँतहाँ व्यवहारहोवैहै ॥ यहदूसरा नियम जोवादीअंगीकारकरै॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें सत्यरूपजोब्रह्मानंदहै ॥ सो सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषै विराजमानहै ॥ परंतु ताब्रह्मानंदका ज्ञानरूपव्यवहार तथाशब्दरूपव्यवहार किसी अज्ञानीजीवकूंहोतानहीं ॥ यातें व्यवहारतें वस्तुकासत्यपणासिद्धहोइसकैनहीं ॥ और जैमीमांसकवादी सर्वव्यावहारिक पदार्थोंकूं सत्यमानैहैं ॥ तिनोंकेमतविषैभी तीनकालविषैजाकानाशनहींहोवै सोसत्यकहियेहै ॥ याप्रकारका सत्यशब्दकामुख्यअर्थ व्यावहारिकजगतविषैसंभवैनहीं ॥ किंतु बहुतकालपर्यंतस्थायीतारूप गौणसत्यता तिनोंकूंअंगीकारकरणीहोवैगी ॥ किंवा ॥ जोवादी भेदविषैअभिनिवेशकरिकै देशकालकेविभुत्वकी तथानित्यत्वकी सिद्धिवासतै एकदेशविषै दूसरादेश अंगीकारकरैहै ॥ तथा एककालविषै दूसराकाल अंगीकारकरैहै ॥ तथा एकघटविषै दूसराघट अंगीकारकरैहै ॥ तिसवादीकूं बलात्कारसें अनवस्थादोषकीप्राप्ति होवैगी ॥ काहेतें जैसेप्रथमदेशकाल दूसरेदेशकालविषै रहैहै ॥ तैसे सोदूसरादेशकालभी किसीतीसरे देशकालविषैरहैगा तीसराचतुर्थविषै रहैगा ॥ याप्रकार अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी आर्हतकीन्याई एकहीवस्तुकूं अनेकरूपअंगीकारकरै ॥ तो उष्ण

स्परभेदहोवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्प दंड जलधारा आदिकअसत्यपदार्थ हैं ॥ तिनोंका रज्जुरूपअधिष्ठानतैं तथापरस्पर भेद संभवैनहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्माविषेकल्पित जेजाग्रत्स्वप्नकेपदार्थ हैं ॥ तिनोंका अधिष्ठानआत्मातैं तथापरस्पर भेदसंभवैनहीं ॥ और उपाधिकेभेदतैंहीं आत्माकाभेदहोवैहै ॥ तिनउपाधियोंके भेदकेनिवृत्तहुए आत्माकाभेदसंभवैनहीं ॥ यातैं सर्वअवस्थावोंविषे आत्माका अभेदहै ॥ अब याहीअर्थकूं आगेस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे जाग्रतअवस्थाविषे संपूर्णभूतभौतिकरूप दृश्यपदार्थोंकरिकैयुक्त जोदेशकालहै ॥ सोदेशकाल अध्यस्तरूपकरिके अधिष्ठानआत्माविषे स्थितहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी भूतभौतिकरूप दृश्यप्रपंचक रिकैयुक्त जोदेशकालहै ॥ सो देशकाल अध्यस्तरूपकरिके अधिष्ठानआत्माविषेहीस्थितहै ॥ यातैं आत्मारूपअधिष्ठानकीदृष्टिकरिके तथा स्वभावतैं तिनजाग्रत्स्वप्नके देशकालादिकोंका परस्पर भेदसंभवैनहीं॥ किंवा॥ तर्कविषेकुशल जेनैयायिकहैं ॥ तेभी दिशाविषे दूसरीदि शाकूं तथा कालविषे दूसरे कालकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ और या अर्थविषे जोनैयायिक याप्रकारकीयुक्तिकहैं हैं ॥ सोदेशकालरूपवस्तु दूसरेकिसीदेशकालविषेरहेनहीं ॥ किंतु आपणेव्यवहारकीसिद्धिवासते सोदेशकालरूपवस्तु तादात्म्यसंबंधकरिके आपणेस्वरूपविषेहीं रहें हैं ॥ सो याप्रकारकी तिनोंकीयुक्तिभी हमारेसिद्धांतकेअनुकूलही हैं ॥ शंका ॥ नैयायिकोंकेमतविषे दिशा तथाकाल दोनोंविभुहैं तथा नित्यहैं ॥ तहां सर्वदेशविषे जोपदार्थरहैहै ॥ ताकूं नैयायिक विभुकहैं हैं ॥ और सर्वकालविषे जोपदार्थरहैहै॥ताकूं नैयायिक नित्यकहैं हैं॥ याप्रकारकेलक्षणविषे देशकी देशविषेआधारता प्रतीतहोवैहै॥और कालविषे कालकीआधारता प्रतीतहोवैहै ॥ और अभिन्नपदार्थोंका पर स्पर आधार आधेयभावहोवैनहीं ॥ यातैं देशका कोईदूसरादेश आधार मान्याचाहिये ॥ तथाकालका कोईदूसराकाल आधार मान्याचा हिये ॥ समाधान ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे घटकेअभावविषे जोपटकाअभावहै ॥ सोपटकाअभाव घटकेअभावतैंभिन्ननहीं॥ किंतु सोप टाभाव घटाभावरूपहै ॥ तौभी घटाभावविषे पटाभावहै याप्रकारका आधारआधेयभावप्रतीतहोवैहै॥तैसे देशविषे देशहै॥तथा कालविषे कालहै॥तथा घटविषे घटहै॥याप्रकारकेव्यवहारभी तिनोंकेभेदतैंविनाहीं संभवहोइसकैं हैं॥यातैं देशकालादिकोंका वास्तवतैं भेदहैनहीं ॥

किंकरभी नाडीरूपमार्गकूंछोडिकरिके शीघ्रहीं बाहरगमनकरैं हैं ॥ ताकरिके तिसपुरुषविषे अंगमोटनरूप असाध्यरोगकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैंभी सोयेहुएपुरुषकूं किसीनैं शीघ्रनहींजगावणा ॥किंवा॥ सोयेहुएपुरुषका तथा जगावणेहारेपुरुषका जोकदाचित्प्राणोंकेसमान कोईप्रियकार्य सिद्धहोताहोवै ॥ तौभी सोयेहुएपुरुषकूं बुद्धिमान्पुरुषनैं शीघ्रनहींजगावणा किंवा ॥ सोयेहुएपुरुषका तथाजगावणेहारेपुरुषका जबी कोईमहान्कार्य होताहोवै ॥ तभी सोयेहुएपुरुषकूं यहपुरुष कोमलस्पर्शादिकउपायोंकरिके शनैः शनैः जगावै ॥ जो तासोयेहुएपुरुषकूं शीघ्रहींजगावैगा ॥ तौ तासोयेहुएपुरुषविषे असाध्यरोगकीउत्पत्तिहोवैगी ॥ किंवा ॥ सोयेहुएपुरुषकेजगावणेकरिके उत्पन्नभयाजो परमात्मारूपइंद्रइंद्राणीकावियोग ॥ सोवियोग सोयेहुएपुरुषकेभी दुःखकाहेतुहै ॥ तथा जगावणेहारेपुरुषकेभी दुःखकाहेतुहै ॥ काहेतैं जो पुरुषजगावैहै ॥ ताकूं भावीसुखकेनाशकरणेहारा पापहोवैहै ॥ और जागणेहारेपुरुषकूं वर्तमान सुखकेनाशकरणेहारा पाप होवैहै ॥ याकारणतैं सोयेहुएकिसीप्राणीकूं बुद्धिमान्पुरुषनैं शीघ्रनहींजगावणा ॥ किंतु शनैः शनैः करिकेजगावणा ॥ अब अधिष्ठानआत्माविषे प्रपंचकेलयकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जोस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोईहीस्वयंज्योतिआत्मा जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे तथाजाग्रत्अवस्थाविषे तास्वयंज्योतिआत्माकाभेदनहीं ॥ जोजाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे आत्माका भेदहोवै ॥ तो जोमैं स्वप्नकेपदार्थोंकूं अनुभवकरताभया सोईमैं अभी जाग्रत्अवस्थाविषे तिनपदार्थोंकास्मरणकरताहूं ॥ याप्रकारका सर्वलोकोंकाअनुभव व्यर्थहोवैगा ॥ काहेतैं जोपुरुष जिसपदार्थकूं अनुभवकरैहै ॥ सोईपुरुष तिसपदार्थकूं कालांतरविषेस्मरणकरैहै ॥ अन्यपुरुषकेअनुभवकियेपदार्थकूं अन्यपुरुष स्मरणकरैनहीं॥यातैं यालोकोंकेअनुभवतैंभी जाग्रत्स्वप्नकेआत्माका अभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे केईमहात्मापुरुष याप्रकार कथनकरैं हैं ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे देशकालतैंआदिलेके जितने कोदृश्यपदार्थ हैं ॥ तथास्वप्नअवस्थाविषे देशकालतैंआदिलेके जितनेकदृश्यपदार्थ हैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेदृश्यपदार्थोंकी अधिष्ठान आत्मातैंभिन्नसत्तानहीं ॥ याकारणतैं तेजाग्रत्स्वप्नकेदृश्यपदार्थ असत्यहैं ॥ और जेअसत्यपदार्थहोवैहैं ॥ तिनोंका अधिष्ठानतैं तथापर

तिकूलपदार्थोंकूंदेखिके तथा आपणेहस्तपादादिकअवयवोंकूं असुंदरदेखिके दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योति आत्मा पुण्यपापकेवशतैं अनुकूलप्रतिकूलवस्तुवोंकूंदेखताहुआ सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब केवलपापकर्मकाफलजोस्वप्नहै ताकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे केवलपापरूपकर्मकेवशतैं यहपुरुष चौर व्याघ्रादिकप्रतिकूलपदार्थोंकूंदेखिके परमदुःखकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी केवलपापकर्मकेवशतैं यहजीव चोरव्याघ्रादिकपदार्थोंकूंदेखिके परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जोस्वयंज्योतिआत्मा हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्या ॥ तिसस्वयंज्योतिआत्माकूं भाग्यहीनपुरुष देखतेनहीं ॥ किंतु तिसआत्माके क्रीडाकेसाधनजेरथादिकपदार्थ हैं तिनरथादिकपदार्थोंकूंहीं तेभाग्यहीनपुरुष देखतेहैं ॥ और हेजनक ॥ जिसकालविषे यहइंद्ररूपआत्मा स्वप्नअवस्थाविषे तथासुषुप्तिअवस्थाविषे इंद्राणीकेसाथ आलिंगनकरिके शयनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे याआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माकूं किसीपुरुषनैं निद्रातैंजगावणानहीं ॥ काहेतैं जैसेलोकविषे एकांतदेशमेंस्थित जोस्त्रीपुरुषहैं ॥ जिसस्त्रीपुरुषकी विषयभोगकरिके अभिलाषानिवृत्तनहींभई ॥ ऐसे स्त्रीपुरुषकूं जभी कोईपुरुष शीघ्रहीं तिसगृहतैं बाहरनिकासेहै ॥ तभी ते स्त्रीपुरुषदोनों अत्यंतक्षोभकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे स्वप्नरूपएकांतदेशविषे तथासुषुप्तिरूपएकांतदेशविषे स्थित जोआत्मारूप इंद्रइंद्राणीहै ॥ तिनोंकूं जभीकोईपुरुष निद्रातैं जगावताहै ॥ तभी सोआत्मारूपइंद्रइंद्राणी दोनों परमक्षोभकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सोयेहुएपुरुषकूं कदाचित् नहींजगावणा ॥ किंवा ॥ सोयेहुएपुरुषके शीघ्रजागणेकरिके तापुरुषकेप्राण शरीरकेनाडियोंविषे नियमकरिके प्रवेशकरेनहीं ॥ याकारणतैंभी सोयेहुएपुरुषकूं शीघ्रनहींजगावणा ॥ किंवा ॥ जैसे महाराजा किसीअवश्यकार्यकेकरणेवासतैं रात्रिकालविषे आपणीअंतःपुरतैं शीघ्रही बाहरगमनकरैहै ॥ और ताराजाकेगमनकूंदेखिकरिके ताराजाके सेनापति भृत्य शीघ्रहीं किसीमार्गकरिके अथवाकुमार्गकरिके ताराजाकेसन्मुखहोवैं हैं ॥ और जभी तेराजाकेभृत्य राजाकेआगेचलणेवासतै मार्गकूंछोडिके कुमार्गविषेचालेहैं ॥ तभी लोकोंकेगृहादिकपदार्थोंकाभी भेदनकरैं हैं ॥ तैसे स्वप्नसुषुप्तिरूपनिद्रातैं याजीवात्मारूपराजाकेशीघ्रआगमनहुए तेप्राणरूप

और हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा जिसजिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तिसतिसशरीरके जेजेअन्नपानादिकभोग केसाधनहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं तहांरचैहे ॥ और हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा पितामातारूपभी आपहीहोवै हे ॥ तथा गुरुरूपभी आपहींहोवैहे ॥ तथा स्त्री पुत्र शत्रु मित्र इत्यादिकसंपूर्णपदार्थ आपहींहोवैहे ॥ याप्रकार सोस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नअवस्था विषे नानाप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंकल्पनाकरैहे ॥ और हेजनक ॥ यहस्वयंज्योतिआत्मा यद्यपि वास्तवतैंसुखदुःखकाभोक्तानहीं हे ॥ तथापि स्वप्नअवस्थाविषे आपणेमें भोक्तापणेकीसिद्धिवासते अंतःकरणकीवृत्तिरूपभोगकीकल्पनाकरैहे ॥ तथा तिसतिसदेवतादिकश रीरोंके भोगणेयोग्य जेनानाप्रकारकेभोग्यपदार्थहैं ॥ तिनोंकूं कल्पनाकरै हे ॥ और हेजनक ॥ यहस्वयंज्योति आत्मा यद्यपि वास्तवतैं कामादिकविकारोंतैंरहितहे ॥ तथापि यहस्वयंज्योतिआत्मा जभी आपणेविषे कामोपणा कल्पनाकरैहै॥ तभी स्वप्नविषे सुंदरस्त्रियोंकेआ लिंगनतैं परमआनंदकूं प्राप्तहोवैहे केसियाहैंतेस्त्रियां ॥ स्वर्गकीअपसरावोंकेसमानसुंदरहैं ॥ तथा षोडशवर्षकी जिनोंकीअवस्थाहे ॥ तथा कमलकेसमान जिनोंकेविशालनेत्रहैं ॥ तथा पुरुषकेप्राप्तिकी जिनोंकूं उत्कंठाहे ॥ तथा स्तनोंकेभारकरिके तथाजघनोंकेभारकरिके जिनोंकी मंदमंदगतिहे ॥ और पुष्पोंकरिकेरचाजोवेशहे तथाभूषणहे ॥ ते विह्वलताकरिके जिनोंके भूमिविषेपतनहोवैहै ॥ और मस्तक विषेविद्यमानजोसिंदूरतासिंदूरकरिके गेरुमयभूमिकूंभी जिनोंने तिरस्कारकर्‍याहे॥और आपणेशरीरकीकांतिकरिके हरितालमयभूमिकूंभी जिनोंने तिरस्कारकर्‍याहे ॥ और देवतावोंकेनंदनवनकेसमान जोवनहे ॥ तावनविषे जेस्त्रियां विचरिरही हैं ॥ और तुर्यवीणादिकवा दित्रोंके मधुरशब्दोंकरिके जिनोंनें भूमिकूंपूर्णकर्‍याहे ॥ और गानविद्याविषे तथाकंठकीसुंदरताविषे तथा मनोहरताविषे जेस्त्रियां देवां गनावोंकेसमानहैं ॥ याप्रकारकीस्त्रियोंकेसाथ रमणकरताहुआ यहपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोवैहे ॥ इतनैंकरिके केवलपु ण्यकर्मकाफल जोस्वप्नहे ताकूं निरूपणकर्‍या ॥ अब मिश्रितपुण्यपापरूपकर्मकाफल जोस्वप्नहे ताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यहपुरुष किसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं स्त्रीआदिकअनुकूलपदार्थोंकूं देखताहुआ सुखकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और दुर्गंधादिकप्र

पदार्थोंकाकारण जो अज्ञानहै तिसकूं प्रकाशकरैहै ॥ और हेजनक ॥ तास्वप्नअवस्थाके भोगकूंदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तिनकर्मो काभोगकरिके जभी क्षयहोवैहै ॥ तथा जाग्रत्केभोगदेणेहारेकर्मोका प्रादुर्भावहोवैहै ॥ तभी यहस्वयंज्योतिआत्मा तास्वप्नअवस्थाका परित्यागकरिके जाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताजाग्रत्अवस्थाकेभोगदेणेहारेकर्मोका जभी क्षयहोवैहै ॥ तथा स्वप्नकेभोगदेणेहारेक र्मोका प्रादुर्भावहोवैहै ॥ तभी यहस्वयंज्योतिआत्मा ता जाग्रत्अवस्थाकापरित्यागकरिके पुनःस्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक जैसे क्रीडाकूंकरताहुआबालक एकपदार्थका परित्यागकरिके दूसरेपदार्थकूं ग्रहणकरैहै ॥ तैसे एकहीस्वयंज्योतिआत्मा पूर्वपूर्वअवस्था कापरित्यागकरिके उत्तरउत्तरअवस्थाकूं ग्रहणकरैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तास्वयंज्योतिआत्माकूं एकहंस नामकरिकेकथनकरैहै॥ और हेजनक ॥ यालोकविषे जितनेक वृक्षादिकस्थावरशरीरहैं ॥ तथा जितनेकमनुष्यादिकजंगमशरीरहैं॥तिनशरीरोंकूं अन्नकरिके तथा जलकरिके निरंतर यह जीव पूर्णकरैहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तिनशरीरोंकूं पुरी यानामकरिकेकथनकरैहैं ॥ और तिनशरीररूपीपु रियोंविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा निवासकरैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तास्वयंज्योतिआत्माकूं पुरुषनामकरिकेकथनकरैहै ॥ और हेज नक ॥ जैसे महाराजा आपणेपुरीकूंछोडिके जभी किसीअन्यदेशकूं जावैहै ॥ तभी आपणीपुरीकीरक्षाकरणेवासते किसीप्रधानमंत्रीकूं ता पुरीविषे स्थापनकरिके जावैहै ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिपुरुष यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिके जभी स्वप्नकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यास्थूलश रीरकीरक्षावासतें प्राणकूंस्थापनकरिके जावैहै ॥ और जभी यहस्वयंज्योतिपुरुष मरणअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी प्राणकूंभीसाथ लेके परलोककूं जावैहै ॥ और हेजनक ॥ यास्थूलशरीरकेअभिमानका परित्यागकरिके यहस्वयंज्योतिपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे हितानामानाडियोंविषे आपणीइच्छापूर्वकविचरैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेपदार्थोंकूं कल्पनाकरैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे मायावी राक्षसोंकाबालक नानाप्रकारकेपदार्थोंकूंरचैहै ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिआत्माभी स्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखकेभोगकीप्राप्तिवास तेकभी ब्रह्मादिकऊँचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कभी वृक्षादिकनीचशरीरोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा तिनशरीरोंका परित्यागकरैहै ॥

तथा विंध्याचलादिकजेपर्वतहैं ॥ तथाइंद्रकेनंदनवनकेसमान जेनानाप्रकारकेवनहैं ॥ तथा श्रीगंगातैंआदिलेके जेनानाप्रकार कीनदियांहैं ॥ तथा क्षारसमुद्रतैंआदिलेके जेनानाप्रकारकेसमुद्रहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे विद्यमान जेभूरादिकचतुर्दशलोकहैं ॥ तथा तिनलोकोंकूंपालनकरणेहारे जेलोकपालहैं ॥ तथा पूर्वादिकजेदशदिशाहैं ॥ तथा आकाशा दिकजेपंचभूतहैं ॥ तथा अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेजेप्राणीहैं॥तथा ब्रह्मांडविषेस्थित जितनेकस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं॥ तथा ब्रह्मांडतैंबाह्य जितनेकस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ इसतैंआदिलेके सर्वपदार्थोंका स्वप्नविषेअभावहै ॥ एकमन स्वप्नअवस्थाविषेरहैहै॥और जैसे जगत्केउत्पत्तिकालविषे मायाविशिष्टईश्वर संपूर्णजगत्कीउत्पत्तिकरैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा पूर्वउक्तरथोंकूं तथाअश्वोंकूं तथातिनोंकेमार्गोंकूं तथाअन्यसर्वपदार्थोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेदिखावैहैं॥हेजनक॥ जैसे लोकविषे चित्र कारपुरुष भित्तिऊपर नानाप्रकारकेचित्रोंकूंलिखैहै॥तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा मनरूपीभित्तिविषे जगत्रूपचित्रोंकूंलिखै है॥याकारणतैंही यहस्वयंज्योतिआत्मा जगत्काकर्त्ताईश्वररूपहै॥शंका॥हेभगवन्॥स्वयंज्योतिआत्माही जोसर्वजगत्काकारणहोवैगा॥तौ माया निष्फलहोवैगी॥समाधान॥हेजनक॥देशकालादिकोंतैंरहित जोनिर्गुणआत्माहैतिसकूंजोहम जगत्काकारणअंगीकारकरैं ॥ तौ माया निष्फलहोवै॥परंतु निर्गुणआत्माकूं हम जगत्काकारण माननेनहीं ॥ किंतु मायाविशिष्टपरमात्माकूंही हम जगत्काकारण मानतेहैं॥यातैं मायाकीव्यर्थतानहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे सृष्टिकेआदिकालविषे मायाविशिष्टपरमात्मादेव देशकालादिककारणोंकूंरचिके संपूर्णजगत् कूंरचैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्माभी देशकालादिककारणोंकूंरचिके रथादिकपदार्थोंकूंरचैहै ॥ और हेजनक ॥ जाग्र त्अवस्थाविषे विद्यमान जोयहस्थूलशरीरहै ॥ तथा तास्थूलशरीरकेसंबंधी जेनेत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तथा तिननेत्रादिकइंद्रियोंकेविषय जेरू पादिकपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकापरित्यागकरिके यहस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तास्वप्नअवस्थाविषेस्थितहोइके यहस्वयंज्योति आत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपकरिके मनकूं प्रकाशकरैहै तथा मनकेपरिणाम जेरथादिकपदार्थ हैं तिनोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ तथा मनादिकसर्व

कीअल्पपताकावोंनैं जिनरथोंविषे चमत्कारकऱ्याहे ॥ और मेघकीन्याई जिनरथोंकीध्वनिहे ॥ और नानाप्रकारकीसामग्रीकरिके जेरथ पूर्णहैं ॥ याप्रकारकेअद्भुतरथ स्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और तिनरथोंविषे जोडनेयोग्यजेअश्वहैं ॥ तेअश्वभी स्वप्नअवस्थाविषेहैंनहीं ॥ कैसेहैंते अश्व ॥ विचित्रहे गतिजिन्होंकी ॥ तथा विचित्रहैं कर्णकेभूषण जिनोंके ॥ और वायुकेसमानहे वेगजिनोंका ॥ याकारणतैंहीं सन्मुखभूमिकूं देखिके लज्जाकूंप्राप्तहुए तेअश्वभूमिकूंछोडिके आकाशविषेगमनकरें हें ॥ और कुदालकेसमान जेआपणेपादहैं ॥ तिनोंकरिके भूमिकूं विदारणकरेहे ॥ और जिनअश्वोंके पादोंकेभयकरिके भूमिभी व्याकुलहोइरहीहै ॥ याप्रकारकेअश्वभी तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और तिनअश्वोंयुक्तरथोंके चलणेकेजेमार्गहैं ॥ तेमार्गभी तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ कैसेहैंतेमार्ग विचित्रहैं ॥ तथा लोकोंकेमनकीप्रसन्नता करणेहारेहैं॥ और चंदनकरिके तथाजलकरिके सिंचनकरेहुएहैं ॥ याकारणतैं तेमार्ग कोमलहैं तथाशीतलहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेमार्ग ॥ अत्यंतसघन जेआपणहैं तथागृहहैं तिनोंकेमध्यविषेस्थितहैं॥और मंगलीकघटोंऊपरिस्थित तथागृहोंकेचित्रोंकूंप्रकाशकरणेहारे जेदीपकहैं॥तिनदीपकों करिकेप्रकाशितहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेमार्ग ॥ अप्सरावोंकेसमान जेअनेकस्त्रियांहैं ॥ तिनस्त्रियोंकरिकेशोभायमानहैं ॥ कैसियांहैं तेस्त्रियां ॥ मणिरत्नोंकरिकेजडित जेसुवर्णकेभूषणहैं ॥ तिनोंकरिकेभूषितहैं ॥ तथा दधिलाजादिकमंगलीकपदार्थोंकरिकेपूर्ण जेसुवर्णकेकलशहैं ॥ तेकलश हैंहस्तकमलोंविषेजिनोंके ॥ ऐसीस्त्रियोंकरिके तेमार्ग शोभायमानहैं ॥ याप्रकारकेमार्गभी तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे प्रियस्त्रियोंकेभोगतैं जो आनंदहोवेहे ॥ तथा अन्न पान वस्त्र भूषण इत्यादिकप्रियपदार्थोंकेभोगतैं जो आनंद होवेहे ॥ सो आनंदभी तास्वप्नविषेहैनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे प्रियवस्तुकेसमागमतैं तथाअप्रियवस्तुकेवियोगतैं जीवोंकूं जो हर्षहोवेहे ॥ सोहर्षभी तास्वप्नअवस्थाविषेहैनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे पुत्रादिकपदार्थोंतैंरहितपुरुषकूं पुत्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तितैं जोअत्यंतहर्षहोवेहे ॥ सोहर्षभी तास्वप्नविषेहैनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे जलकरिकेपूर्ण जे अल्पतलावहैं ॥ तथा कूपादिकहैं ॥ तथा जिनोंतैंसर्वदाजलस्रवताहे ऐसेजेबृहत्तलावहैं ॥ तेसंपूर्ण तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे विद्यमान जेविचित्रगृहहैं ॥

त्माकीअनात्मरूपता कोईभीवादी अंगीकारकरैनहीं॥यातैं स्वप्रकाशज्ञानका तथाआत्माका परस्परभेदनहीं है किंतुअभेदहीहै॥ और ज्ञान विषे स्वप्रकाशता सर्ववादियोंकूंसंमतहै॥यातैं स्वप्रकाशज्ञानकेसाथअभिन्न जोआत्माहै ॥सोभी स्वप्रकाशहीहोवैगा॥याप्रकारकीयुक्तिकरिकै यद्यपि आत्माविषे स्वयंज्योतिरूपता सिद्धहोइसकैहै ॥ तथापि स्वप्नअवस्थाविषे जो आदित्यादिकज्योतियोंकाअभावरूपव्यतिरेकहै ॥ तथा आत्माका साक्षीरूपकरिकै जोअन्वयहै ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै सुखेनहीं मुमुक्षुजनकूं आत्माकाबोधहोइसकैहै ॥ याप्र कारकेअभिप्रायकरिकै श्रुतिभगवतीनैं स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूं स्वयंज्योतिकह्याहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे लोकविषे काष्ठोंकेसमूहकूं दाहकर्त्ताजोअग्निहै ॥ ताकूं लोक स्वयंज्योतिकहैहैं ॥ और काष्ठोंविषेस्थित जोसामान्यअग्निहै ॥ तथा भस्मकरिकैआवृत जोअग्निहै ॥ ताकूं कोईपुरुष स्वयंज्योतिकहैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे सर्वव्यवहारोंकासाधक जोआत्माहै ॥ताकूंश्रुतिभगवती स्वयंज्योतिकहैहै ॥ और हेजनक॥प्रलयकालविषे नहींहैस्पष्टनामरूपजिसका ऐसाजोयहजगत्है ॥ ताजगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानकारण तथा वास्तवतैं नामरूपतैंरहित तथासर्वशरीरोंविषे व्यापक ऐसाजोसर्वज्ञब्रह्महै ॥ सोईहीं वेदांतशास्त्रविषे स्वयंज्योतिहै ऐसे स्वयंज्योतिब्रह्मकूंहीं स्वप्न अवस्थाविषेश्रुति जीवकाआत्मारूपकरिकै कथनकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयका कारणजोस्वयंज्योतिब्रह्म है॥सोईहींस्वप्नअवस्थाविषे जीवकाआत्माहै यहवार्ता कैसेजानीजावै॥समाधान ॥ हेजनक॥जैसे स्वयंज्योतिब्रह्म जगत्की उत्पत्ति स्थिति लयकूं करैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्माभी जगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरै है ॥ और जैसे स्वयंज्योतिब्रह्म सत्चि त्आनंदस्वरूपहै ॥ तैसे यहआत्माभी सत्चित्आनंदस्वरूपहै॥ याप्रकार जगत्कीकारणतारूपतटस्थलक्षण तथा सत् चित् आनंदस्व रूपता यहस्वरूपलक्षण स्वयंज्योतिब्रह्मका तथाआत्माका समानहीं है ॥ याकारणतैं यहआत्मा स्वयंज्योतिब्रह्मरूपहै ॥ अब स्वप्नअव स्थाविषे जगत्कीकारणतारूप आत्माकेतटस्थलक्षणकूं स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेजनक स्वप्नविषे जेरथ प्रतीतहोवैं हैं ॥ तेरथ स्वप्नविषेहैं नहीं ॥ कैसेहैं तेरथ ॥ सुवर्णकरिकै तथामणियोंकरिकै भूषितहैं ॥ और जिनरथोंकीध्वजा आकाशकूंस्पर्शकरिरहीहै ॥ और नानाप्रकार

करैं हैं ॥ तिसी विभुचेतनकूं सोवादी मननामकरिकै कथनकरैहै ॥ यातैं हेवादी चेतनमन विभुहै याप्रकारकेपक्षविषे तुमाराहमारा किंचित मात्रभी विवादनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ तुमाराहमारा विवाद संभवैहै ॥ काहेतैं तुमारेमतविषे आत्मादिकशब्द शक्तिवृत्तिकरिकै विभुचेतनकूं बोधनकरैं हैं ॥ और मनशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै ताविभुचेतनकूं बोधनकरैहै ॥ और हमारेमतविषेतो मनशब्द शक्तिवृत्तिक रिकै विभुचेतनकूं बोधनकरैहै ॥ और आत्मादिकशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै ताविभुचेतनकूं बोधनकरैं हैं याप्रकारका तुमाराहमाराविवाद संभवैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ याप्रकारका तुमाराहमाराविवाद तभीसंभवै ॥ जभी हम आत्मादिकशब्दोंकी शक्तिवृत्तिकरिकै विभुआ त्माविषे प्रवृत्तिअंगीकारकरै ॥ परंतु याप्रकार हम अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु जैसे मनशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै आत्माकूं बोधनकरैहै ॥ तैसे आत्मा चेतन इत्यादिकनामभी भागत्याग लक्षणावृत्तिकरिकैहीं ॥ आत्माकूंबोधनकरैं हैं॥शक्तिवृत्तिकरिकै कोईभीशब्द आत्माकूंबोधन करैनहीं ॥ याकारणतैंहीं यतोवाचोनिवर्ततअप्राप्यमनसासह ॥अर्थयह॥ जिसअद्वितीयआत्माकूं न प्राप्तहोइकै मनसहितवाणी निवृत्तहोवैहै॥ याश्रुतिनैं आत्माविषे शब्दकीशक्तिवृत्तिकीअविषयता दिखाई है ॥ और हेवादी ॥ आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजानणेहारे जेविद्वान्पुरुषहैं॥ तिनों नैं जैसे आत्मादिकनाम चेतनआत्माविषेआरोपणकरीतेहैं ॥ तैसे तुमनैंभी एकमननाम चेतनआत्माविषे आरोपणकऱ्या ॥ याके विषे हमारी किंचित्मात्रभीहानिहोवैनहीं ॥ पूर्व किसीवादीने स्वप्नविषे मनकूंहींस्वयंज्योतिमान्याथा ॥ तावादीका इतनेंपर्यंत खंडनक ऱ्या ॥ अब तिसीपूर्वप्रसंगकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ तास्वप्नअवस्थाविषे सूर्य चंद्रमा अग्नि वाक् अविद्या मन इत्यादिकसंपूर्णोंकूं पूर्व उक्तरीतिसैं ज्योतिरूपता संभवैनहीं ॥ यातैं परिशेषतैं आत्माहीं स्वप्नविषे स्वयंज्योतिहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे मीमांसकोंकेमतविषे आत्मा काधर्महोणेतैं स्वप्रकाशज्ञान आत्मातैंभिन्नहै ॥ तैसे सिद्धांतमतविषे स्वप्रकाशज्ञान आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जोस्वप्रकाशज्ञानकूं आत्मा तैंभिन्न अंगीकारकरिये ॥ तौ जोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै सोपदार्थ अनात्मरूपहींहोवैहै॥ जैसे घटादिकपदार्थ भेदरूपवस्तुप रिच्छेदवालेहैं ॥ यातैं अनात्मरूपहै ॥ तैसे भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालेहोणेतैं आत्मा तथास्वप्रकाशज्ञान दोनों अनात्माहींहोवैंगे ॥ और आ

हैं ॥ तिनोंकूंचेतनरूप नमानिके केवलमनकूंहीं जोतूं चेतनरूपमानताहै यह तुमारा अत्यंतदुर्व्यसनहै ॥ इतनैंकरिके चेतनरूपमनअनात्मारूपहैयाद्वितीयपक्षकाखंडनकऱ्या॥अब सोचेतनरूपमन आत्मारूपहै याप्रथमपक्षका खंडनकरैंहैं ॥ चेतनरूपमनआत्मारूपहैयाप्रकारकापक्ष जोवादी अंगीकारकरैहै॥तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सो चेतनआत्मारूपमन परिच्छिन्नहै॥ अथवा विभुहै तहाँ प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थ भेदवालाहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ परिच्छिन्नहोणेतैं भेदवालेहैं ॥ तैसे मनभी परिच्छिन्नहोणेतैं भेदवालाहीहोवैगा ॥ और जोपदार्थ भेदवालाहोवै है ॥ सोपदार्थ कार्यहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ भेदवालेहोणेतैं कार्य हैं ॥ तैसे भेदवालाहोणेतैं सोमनभी कार्यहीहोवैगा ॥ और जोपदार्थ कार्यहोवै है ॥ सोपदार्थ किसीकारणकरिके जन्यहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ कार्यरूपहोणेतैं मृत्तिकारूपकारणकरिकेजन्यहैं॥तैसे कार्यरूपहोणेतैं सोमनभी भूतभौतिकरूपकारणकरिके जन्यहोवैगा ॥ यहां भूतशब्दकरिके सत्वगुणप्रधान आकाशादिकपंचभूतोंकाग्रहणकरणा ॥ और भौतिकशब्दकरिके भुक्तअन्नकाग्रहणकरणा ॥ और जोपदार्थ किसीकारणकरिकेजन्यहोवैहै ॥ सोपदार्थ जडहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकारूपकारणकरिके जन्यहोणेतैं घटादिकपदार्थ जडहैं ॥ तैसे भूतभौतिकरूपकारणकरिकेजन्यहोणेतैं सोमनभी जडहीहोवैगा ॥ यातैं कार्यरूपजडमनकूं चेतनरूपकहणा तथा आत्मरूपकहणा अत्यंत विरुद्धहोवैगा ॥ और सोचेतनआत्मारूपमन विभुहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जोपदार्थ विभुहोवैहै ॥ सो किसीदेशविषे तथाकिसीकालविषे तथाकिसीवस्तुविषे रहैनहीं ॥ किंतु देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित होवै है ॥ याप्रकारका वादीनैं अंगीकारकऱ्याजोविभुमन ॥ सो मनरूपहीहोवैगा ॥ किंतु स्वयंज्योतिआत्मारूपहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे अनेकप्रकारकेसंकल्पोंका जोकारणहोवै ॥ तथा सत्वगुण जिसविषेप्रधानहोवै ॥ ताकूं संपूर्णलोक मन कहैं हैं ॥ याप्रकारकामन तावादीनैं कथनकऱ्यानहीं ॥ किंतु स्वयंज्योतिआत्माकाही वादीनैं मननाम राख्याहै ॥ और सर्वशास्त्रवेत्तापुरुषोंका नाममात्रविषे विवाद होवैनहीं ॥ किंतु पदार्थविषे विवादहोवैहै ॥ सोपदार्थकाभेद यहां हैनहीं ॥ किंतु जिसविभुचेतनकूं हम आत्मानामकरिके कथन

रुषोंविषे किसीभीपुरुषकूं जगत्केचैतन्यरूपताकाप्रत्यक्षहोतानहीं ॥ यातें अस्मदादिकपुरुषोंकेप्रत्यक्षकरिके जगत्विषेचैतन्यरूपतासिद्ध होइसकैनहीं ॥ और अस्मदादिकपुरुषोंतैंविलक्षणकिसीपुरुषकेप्रत्यक्षकरिके जगत्कीचैतन्यरूपतासिद्धहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकार करे सोभी संभवैनहीं॥काहेतें अस्मदादिकपुरुषोंतें विलक्षण किसीपुरुषविषे जगत्केचैतन्यरूपताका प्रत्यक्षहै ॥ यहवार्त्ता हम कैसेजाणें तात्पर्ययह ॥ जैसे नरशृंगकासाधक कोईप्रमाणनहीं ॥ तैसे ताविलक्षणपुरुषकेप्रत्यक्षकासाधक कोईप्रमाणनहीं शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ जगत् केचैतन्यरूपताकूंविषयकरणेहारा जोविलक्षणपुरुषकाप्रत्यक्षहै ॥ सोप्रत्यक्ष यद्यपि प्रमाणोंकरिकेसिद्धहै ॥ तथापि तेप्रमाण अस्मदादिक पुरुषोंविषेहैंनहीं ॥ समाधान हेवादी ॥ ताविलक्षणपुरुषकेप्रत्यक्षकासाधक जोप्रमाणहै ॥ तौ अस्मदादिकपुरुषोंकूं ते प्रमाण किसवासते नहींप्रतीतहोते ॥ तात्पर्ययह ॥ सर्वकारणोंकरिकेयुक्त जेअस्मदादिकपुरुषहैं ॥ तिनोंविषे जभी तेप्रमाण अप्रसिद्ध भये ॥ तभी तेप्रमाण किसीभीपुरुषविषे नहींहोवैंगे ॥ और जो अप्रसिद्धप्रमाणोंकोभी सिद्धिअंगीकारकरौगे ॥ तौ लोकविषेप्रसिद्धजो मधुर अम्ल लवण कटु कषाय तिक्त यहषट्रसहैं ॥ तिनोंतैंभिन्न किसीसप्तमरसकीभी सिद्धि होणीचाहिये ॥ यातें तेप्रमाण अस्मदादिकपुरुषोंविषेनहींहैं॥याप्रकारके वादीकेअर्थविषे दैवकी कोईविचित्रघटनाहै॥किंवा॥जगत्विषे चैतन्यरूपताकूंविषयकरणेहारा जोप्रत्यक्षहै सो किसीपुरुषविशेषविषेरहे है ॥ और किसीपुरुषविषे नहींरहैहै ॥ याप्रकारकेअर्थकूं जोवादी अंगीकारकरेगा ॥ तो तावादीकूं व्याघातदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें जोजगत् चैतन्यरूपकरिकेविषयहोणेयोग्यनहीं है ॥ सोईहीजगत् चैतन्यरूपकरिके किसीपुरुषकेज्ञानका विषयहोवैहै ॥ और सोईहीजगत् चैतन्यरूपकरिके अस्मदादिकपुरुषोंकेज्ञानका अविषयहोवैहै॥याप्रकार एकहीजडजगत्विषे चैतन्यरूप करिके स्वभावतें विषयता॥ तथाचैतन्यरूपकरिके स्वभावतें अविषयता जोअंगीकारकरौगे ॥ तौ आपणेवचनकरिकेही आपणेवचनका बाधरूप व्याघातदोष प्राप्तिहोवैगा ॥ और हेवादी ॥ मनकूंअनात्मारूपमानिके जोतूं तामनकूंचेतनरूपमानैंगा ॥ तौ अनात्मरूपकरिके मनकेसमान जेघटपटादिकपदार्थ हैं॥ तेभी तुमारेमतविषे चेतनरूपहोवैंगे ॥ और अनात्मरूपकरिके मनकेसमान जेघटादिकजडपदार्थ

दस्वरूपआत्माहै ॥ यातैं अद्वितीयआत्माकेबोधनविषेही वेदभगवान्कातात्पर्यहै ॥ कैसाहैसोअद्वितीयआत्मा ॥ प्रपंचरूपद्वैतकूंदेखणे
हारे जेकुतर्कीपुरुषहैं ॥ तेकुतर्कीपुरुष अनंतजन्मोंकूंप्राप्तहोइकैभी जिसआत्माकूं जाणिनहींसकते ॥ जोकदाचित् वेदप्रमाणतैंभिन्न किसी
प्रमाणकरिकै आत्माकेयथार्थस्वरूपकाज्ञानहोता॥ तो तर्कविषेकुशल जेनैयायिकादिकहैं ॥ तेभी आत्माकेयथार्थस्वरूपकूंजाणते ॥ परंतु
तेनैयायिकादिक आत्माकेयथार्थस्वरूपकूंजाणतेनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ श्रुतिप्रमाणतैंभिन्न केवलतर्ककरिकैआत्माका यथार्थस्व
रूप जान्याजावैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ यहसंपूर्णजगत् चेतनआत्मारूपहै याप्रकारकेश्रुतिवचनोंका जोजडचेतनकाअभेदरूप अर्थ
नहींहै ॥ तो तावचनोंका कोनअर्थहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ मुमुक्षुजनोंकिबुद्धिविषेप्रपंचकेअभावकूं आरूढकरावणेवासतैं सोश्रुतिभगवती
माताकीन्याई कृपाकरिकै मुमुक्षुजनोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरैहै ॥ हेमुमुक्षुजनो ॥ जैसे रज्जुविषे अज्ञानकरिकैप्रतीतभयाजो सर्प
दंड जलधारा माला इत्यादिकद्वैतहै ॥ सोसर्पादिकद्वैत रज्जुमात्रहीहैं ॥ सर्पादिकद्वैत तीनकालविषेनहीं ॥ तैसे यहसंपूर्णदृश्यप्रपंच
तुमाराआत्माहीहै ॥ आत्मातैंभिन्नद्वैत तीनकालविषेनहीं ॥ याप्रकार सोश्रुति द्वैतप्रपंचकानिषेधकरिकै मुमुक्षुजनोंकेप्रति अद्वितीयआ
त्माकाबोधनकरैहै ॥ यातैं अद्वितीयआत्माविषेहीं तिनश्रुतिवचनोंका तात्पर्यहै॥शंका॥हेसिद्धांती॥ जडजगत्कीचैतन्यरूपताविषे यद्यपि
श्रुतिप्रमाण नहींसंभवैहै।तथापि अनुमानप्रमाणकरिकै जडजगत्विषे चैतन्यरूपतासिद्धहोवैगी।समाधान।हेवादी।जैसेधूमरूपलिंगतैंपर्वतवि
षेअग्निकाअनुमान होवैहै।तैसे जगत्के चैतन्यरूपताविषे कोईलिंगहैनहीं॥यातैं अनुमानप्रमाणतैंभी जगत्विषे चैतन्यरूपतासिद्धहोवैनहीं॥
उलटा प्रत्यक्षप्रमाणसहकृत अनुमानप्रमाणकरिकै दृश्यत्वरूपलिंगतैं जगत्विषे जडताहीसिद्धहोवैहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ श्रुतिप्रमाण
तथाअनुमानप्रमाण यद्यपिजगत्केचैतन्यरूपताकूं सिद्धकरैनहीं ॥ तथापि किसीपुरुषकाप्रत्यक्षप्रमाण जगत्केचैतन्यरूपताकूं सिद्धकरैगा
समाधान ॥ हेवादी ॥ जिसपुरुषकाप्रत्यक्षप्रमाण जगत्विषे चैतन्यरूपता सिद्धकरै है ॥ सोपुरुष अस्मदादिकपुरुषोंकेसमानजातीवा
लाहै ॥ अथवा अस्मदादिकपुरुषोंतैं सोपुरुष विलक्षणहै ॥ तहां जोतूं प्रथमपक्ष अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं अस्मदादिकपु

एकतो मुख्यप्रयोजकहोवैहै ॥ और दूसरा गौणप्रयोजकहोवै है ॥ तहां प्रेरणाकाविषय जो प्रयोज्यपुरुषहै ॥ ताका जिसक्रियाविषे राग होवैहै ॥ तिसक्रियाविषे ताप्रयोज्यपुरुषकूं जोपुरुष प्रेरणाकरैहै ॥ ताकूं मुख्यप्रयोजककहैहैं ॥ जैसे भोजनरूपक्रियाकीइच्छावान् जो क्षुधार्थीपुरुषहै ॥ ताकूं ताभोजनरूपक्रियाविषे जोपुरुष प्रेरणाकरैहै ॥ ताकूंशास्त्रवेत्तापुरुष मुख्यप्रयोजककहैं हैं ॥ और जहां प्रयोज्यपुरुषका जिसक्रियाविषे राग नहींहोवैहै ॥ तिसीक्रियाविषे प्रयोज्यपुरुषकूं जोपुरुष प्रेरणाकरैहै ॥ ताकूं गौणप्रयोजक कहैहैं ॥ जैसे मरण रूपक्रियाविषे जोजीवोंकूंप्रेरणाकरैहैं ॥ ताकूं मारी कहैहैं ॥ यहां मरणरूपक्रियाविषे जीवोंकाराग हैनहीं ॥ और कालभगवान् जीवोंकूं मरणरूपक्रियाविषे प्रेरणाकरैहै ॥ यातैं कालरूपमारी गौणप्रयोजकहै ॥ और जोपदार्थ पुरुषार्थरूपहोवैहै ॥ तिसीपदार्थविषे प्रयोज्यपुरुषकारागहोवैहै ॥ पुरुषार्थतैंभिन्नपदार्थविषे प्रयोज्यपुरुषकारागहोवैनहीं ॥ और सोपुरुषार्थभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतो मुख्यपुरुषार्थहोवैहै ॥ और दूसरागौणपुरुषार्थहोवैहै ॥ तहां सुखरूपफल मुख्यपुरुषार्थहै ॥ और तासुखकेसाधन गौणपुरुषार्थहै॥और आत्माविषे जडजगत्‌रूपता तथा जडजगत्‌विषे चेतनआत्मारूपता यहदोनोंप्रकारकेअर्थ सुखरूपनहींहैं ॥ तथा किसीसुखकेसाधन नहींहै ॥ उलटा जन्ममरणादिकदुःखकेसाधनहैं ॥ ऐसे अपुरुषार्थरूपअर्थविषे अधिकारीपुरुषोंकूं वेदभगवान् किसवासतै प्रेरणाकरैगा ॥ किंतु नहींप्रेरणा करैगा ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे पुत्रकेहितकीइच्छाकरणेहारा जोपिताहै ॥ सोपिता पुत्रकूं अपुरुषार्थरूपअर्थविषे प्रेरणाकरतानहीं ॥ तैसे सर्वजीवोंकेकल्याणकाइच्छावान् जोवेदभगवान्‌है ॥ सोवेदभगवान् जीवोंकूं अपुरुषार्थरूपअर्थविषे प्रेरणाकरैगानहीं ॥ जो वेदभगवान् ता अपुरुषार्थरूपअर्थकूं बोधनकरैगा ॥ तौ सोवेदभगवान् अप्रमाणरूपहोवैगा ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ यहसंपूर्णजगत् चैतन्यआत्मा रूपहै याप्रकारकेश्रुतिवचनका जभी जडचेतनकेअभेदविषे तात्पर्यनहींहै ॥ तभी किसअर्थविषे तावचनका तात्पर्य है ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ जोअर्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै पूर्वज्ञातनहींहोवैहै ॥ तथा जिसअर्थका अन्यकिसीप्रमाणकरिकै बाधनहींहोवैहै ॥ तथा जिसअर्थतैं फलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसेअर्थकेबोधनविषे वेदभगवान्‌का तात्पर्यहोवैहै ॥ सो याप्रकारकाअर्थ स्वप्रकाश अद्वितीयआनं

तात्पर्यहोवे ॥ तो आदित्योयूपः अर्थयह यज्ञभूमिविषेस्थित जोकाष्ठकास्तंभरूपयूपहै सो आदित्यहै ॥ याप्रकारकेवेदवचनकरिके आकाशविषेस्थित प्रकाशरूपसूर्यका अप्रकाशरूपयूपकेसाथ तादात्म्य सिद्धहोणाचाहिये ॥ और सूर्यकाकाष्ठमययूपकेसाथ तादात्म्य सर्वलोकोंकेअनुभवविरुद्धहै ॥ यातें ताविरुद्धअर्थविषे तावचनका तात्पर्यनहीं ॥ किंतु ता यूपकेस्तुतिविषे तावचनका तात्पर्य है ॥ इसीप्रकार यजमानःप्रस्तरः ॥ अर्थयह दर्भोंकीमुष्टिरूप जोप्रस्तरहै सो यज्ञकर्तायजमानरूपहै ॥ याप्रकारकेवेदवचनकरिके यजमान पुरुषका प्रस्तरकेसाथ तादात्म्य सिद्धहोणाचाहिये ॥ और यजमानपुरुषकाप्रस्तरकेसाथ तादात्म्य सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकेविरुद्धहै ॥ यातें ताविरुद्धअर्थविषे तावचनका तात्पर्यनहीं ॥ किंतु ताप्रस्तरकी स्तुतिविषे तावचनका तात्पर्य है ॥ जो प्रस्तर यजमानकेअभेद विषे तावचनकातात्पर्यहोवे ॥ तो ताप्रस्तरका अग्निविषेदाहकियेतें यजमानकाभी दाहहोवेगा ॥ यजमानकेदाहहुएतें संपूर्णयज्ञादिकक र्मोंकालोपहोवेगा ॥ यातें यह अर्थ सिद्धभया ॥ बुद्धिमान्पुरुषोंके अनुभवकरिकेअविरुद्धजोअर्थ है ॥ ताकेविषे वेदका तात्पर्यहोवेहै ॥ और जडजगत्विषे चैतन्यरूपता सर्वलोकोंकेअनुभव करिके विरुद्धहै ॥ यातें ताअनुभवविरुद्धअर्थविषे वेदकातात्पर्यनहीं ॥ किंवा ॥ जोअर्थ अधिकारीपुरुषोंके पुरुषार्थकाकारणहोवेहै ॥ ताअर्थकूंहीं वेदकावचन बोधनकरैहै ॥ यह वेदवेत्तापुरुषोंका सिद्धांतहै ॥ और चेतनआत्मा जडजगत्रूपहै ॥ तथाजडजगत् चेतनआत्मारूपहै ॥ याप्रकारकेअर्थज्ञानतें जीवोंकूं किंचित्मात्रभी पुरुषार्थकीप्राप्तिहोवे नहीं ॥ यातें तानिष्फलअर्थकेबोधनविषे वेदभगवान्का तात्पर्यनहीं॥किंवा ॥ जैसे प्रियपदार्थकेदर्शनवासते उन्मीलनकराहुआचक्षु अप्रि यपदार्थकूंभी प्रकाशकरैहै ॥ तैसे पुरुषार्थतेंरहितअर्थकूं वेदभगवान् कदाचित्भी कथनकरतानहीं ॥ काहेतें जोपुरुषार्थतेंरहितअर्थकूं वेदभगवान् बोधनकरैगा ॥ तो वेद याप्रकारकेशब्दकाअर्थ वेदभगवान्विषे घटेगानहीं ॥ काहेतें अधिकारीपुरुषोंकेप्रति जो पुरुषार्थकूं जनावे ताकूं बुद्धिमान्पुरुष वेदकहै हैं ॥ किंवा ॥ व्याकरणकीरीतिसें विद्धातुकरिके वेदशब्दकीसिद्धिहोवे है ॥ ता विद्धातुका ज्ञान अर्थहै ॥ ताज्ञानविषेजो अधिकारीपुरुषोंकूं प्रेरणाकरे ताकूं वेदकहै हैं ॥ और प्रेरणाकरणेहारा प्रयोजक लोकविषे दोप्रकारकाहोवे है ॥

करैनहीं ॥ किंतु जैसे यहरज्जुहै याप्रकारकावचन सर्पत्वभ्रमकीनिवृत्तिकरिकै रज्जुत्वकूंबोधनकरैहै ॥ तैसे यहसंपूर्णजगत् चेतनआत्मारूपहै याप्रकारकाश्रुतिवचनभी द्वैतभ्रमकीनिवृत्तिकरिकै अद्वितीयआत्माकूंहीं बोधनकरैहै ॥ तहां यहसंपूर्णजगत् अद्वितीयब्रह्मस्वरूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारीजोश्रुतिहै ॥ साश्रुति तत्पदार्थकेशोधनकूं बोधन करैहै ॥ और यह चराचररूप संपूर्णजगत् चेतनरूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारीजोश्रुतिहै ॥ सोश्रुति तिसीतत्पदार्थरूपपरमात्माविषे चैतन्यरूपताका विधानकरैहै ॥ और यहसंपूर्णजगत् आत्मारूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारीजोश्रुतिहै ॥ सोश्रुति आत्माविषे सर्वरूपताबोधनद्वारा त्वंपदार्थकेशोधनकूं विधानकरैहै ॥ और तत्पदकाअर्थ परमात्मा आत्मारूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारीजोश्रुतिहै ॥ सोश्रुति जीवईश्वरकेअभेदकूं बोधनकरैहै ॥ इसतैंआदिलेके संपूर्णश्रुतिवचनोंविषे कोईश्रुतिवचन तत्पदार्थकेशोधनकाप्रकार बोधनकरैहै ॥ और कोईश्रुतिवचन त्वंपदार्थकेशोधनकाप्रकार बोधनकरैहै ॥ और कोईश्रुतिवचन तत्त्वंपदार्थकेअभेदकूं बोधनकरै हैं ॥ अज्ञान तथाअज्ञानकाकार्यरूपउपाधिका परित्यागकरिकै ताउपाधितैंचेतनकूंभिन्नकरिकै जोजानणाहैताकूं तत्त्वंपदार्थकाशोधनकहैंहैं ॥याप्रकारकेश्रुतिकेअभिप्रायकूंनअंगीकारकरिकै जोवादी पूर्वउक्तश्रुतिवचनोंकाजडचेतनकेतादात्म्यबोधनविषेतात्पर्यकल्पनाकरैहै॥और ताचेतनआत्माकेतादात्म्यतैंसंपूर्णजडजगत्कूंचेतनरूपमानैं हैं॥तावादीसे यहपूछाचाहिये॥चेतनआत्माका तथाजडजगत्का जोतादात्म्यसंबंधहै॥तिस तादात्म्यसंबंधका संबंधीपणाचेतनआत्माविषे तथाजडजगत्विषे समानहीं है॥यातैं जैसे चेतनआत्माकेतादात्म्यसंबंधतैं वादी जड जगत्कूंचेतनरूपमानैहै ॥ तैसे जडजगत्केतादात्म्यसंबंधतैं सोवादी चेतन आत्माकूंभी जडजगत्रूपता किसवासतैनहीं अंगीकारकरता ॥ किंतु तावादीनैं चेतनआत्माविषेभी जडजगत्रूपता अवश्य अंगीकारकरीचाहिये ॥ यातैं जडप्रपंचकीचैतन्यरूपताबोधनविषे श्रुतिकातात्पर्यनहीं ॥ किंवा ॥ जडजगत्विषे चैतन्यरूपताहै याप्रकारकेअर्थविषे श्रुतिका तात्पर्यसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जिसजिसअर्थविषे बुद्धिमान्पुरुषोंके अनुभवकाविरोध नहींहोवै है ॥ तिसीअर्थविषे वेदका तात्पर्यहोवैहै ॥ अनुभवविरुद्धअर्थविषे वेदका तात्पर्यहोवैनहीं ॥ जोअनुभवविरुद्धअर्थविषेभी वेदका

काहेतैं मनकूंअनात्मरूपमानिके जोवादी मनकूंचेतनरूपअंगीकारकरे ॥ तौ मनकीन्याईं अनात्मारूप जेघटपटादिकजडपदार्थ हैं तेभी चेतनरूपहोणेचाहिये ॥ और घटपटादिकजडपदार्थोंकी चेतनरूपताविषे जोवादी इष्टापत्तिकरे॥ तौ मनविषे चेतनरूपता अंगीकारकरणी व्यर्थ होवैगी ॥ काहेतैं घटपटादिकसंपूर्णअनात्मपदार्थ मनकीन्याईं चेतनरूपहैं ॥ तिनघटादिकचेतनोंकरिकैभी व्यवहारकीसिद्धि होइसकेहै ॥ मनकूंचेतनमानणा व्यर्थहै ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे एकदीपकरिकैहीं घटादिकपदार्थोंकाप्रकाश संभवहोइसकेहै ॥ तिनघटादिकपदार्थोंके प्रकाशवासतै दूसरेदीपककूं कोईपुरुष जगावतानहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती श्रुतिविषे सर्वजगत्कूं चेतन्यरूपकह्यादे ॥ यातैं हमभी सर्वजगत्कूं चेतनरूपमानैं हैं ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ संपूर्णजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरणेहारीजो श्रुतिहै ॥ सोश्रुति अनुवादरूपहुई सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरैहै ॥ अथवा विधिरूपहुई सोश्रुति सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरैहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिके सर्वलोकोंकूंज्ञात जो अर्थहै॥ ताअर्थकूं कथनकरणेहाराजोवचनहै ॥ तावचनकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अनुवादकहै हैं ॥ जैसे अग्नि हिमका भेषजहै ॥ याप्रकारकावचन सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्ष जो अग्निविषे हिमकेनिवृत्तिकीकारणताहै ताकूं कथनकरैहै ॥ याकारणतैं सोवचन अनुवादरूपहै॥ तैसे संपूर्णजगत् चेतनरूपहै याप्रकारकाश्रुतिवचनभी तभीअनुवादरूपहोवै॥जभी संपूर्णजगत्विषे अस्मदादिकजीवोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिके चैतन्यरूपतासिद्धहोवे सो सर्व जगत्विषे चैतन्यरूपता प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिके अस्मदादिकजीवोंकूं सिद्धहैनहीं ॥ यातैं सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरणेहारीश्रुतिअनुवादरूपनहीं॥और सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरणेहारीश्रुति विधिरूपहै यहदूसरापक्षजोवादी अंगीकारकरे सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जोअर्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिके पूर्वज्ञातनहींहोवे ॥ तथा जिसअर्थकेज्ञानतैं फलकीप्राप्तिहोवै॥ तथाजिसअर्थका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिके बाध नहींहोवे ॥ ऐसे अर्थकूं विधिरूपश्रुति बोधनकरैहै ॥ याप्रकारकाअर्थ अद्वितीयआत्माहीहै ॥ यातैं संपूर्णजगत् चेतनआत्मारूपहै याप्रकारकेअर्थकूंबोधनकरणेहारीजोश्रुतिहै ॥ सो श्रुति जडजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं बोधन

र्थोंका परिणामीउपादानकारणहोणेतैं जडहै ॥ तैसे मनभी स्वप्नपदार्थोंका परिणामीउपादानकारणहोणेतैं जडहै ॥ और जोपदार्थ जड होवैहै ॥ सोपदार्थ मृत्तिकाकीन्याईं स्वयंप्रकाशहोवैनहीं ॥ किंतु परप्रकाशहोवैहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे जडमनकूं ज्योतिपणा संभवै नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ स्वप्नअवस्थाविषे मनकूंज्योतिरूपता मतहोवै॥तथापि स्वप्नअवस्थाविषे अविद्याकूं ज्योतिरूपता किसवासतै नहींहोवै समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे साक्षीआत्माकरिकै प्रकाश्यहोणेतैं जडमन स्वयंज्योतिरूपनहींहै ॥ तैसे साक्षी आत्माकरिकै प्रकाश्यहोणेतैं तथाआवरणरूपहोणेतैं जडअविद्याभी स्वयंज्योतिरूपनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादीआवरणरूपअविद्याकूं स्वयं ज्योतिरूपता अंगीकारकरै ॥ तो आवरणरूपअंधकारकूंभीस्वयंज्योतिरूपता अंगीकारकरीचाहिये ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे अविद्याभी स्वयंज्योतिरूपनहीं ॥ और जाग्रतअवस्थाविषे प्रकाशकरूपकरिकैप्रसिद्ध जेनेत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तेइंद्रियभी स्वप्नअवस्थाविषेहैंनहीं ॥ तथा आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् यहचारिप्रकारकेज्योतिभी स्वप्नअवस्थाविषेहैंनहीं ॥ यातैं परिशेषतैं आत्मारूपज्योतिकरिकैही स्वप्नके पदार्थोंकाप्रकाशहोवैहै ॥ याअभिप्रायकरिकैही श्रुतिभगवतीनें स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूंहीं स्वयंज्योतिरूप कह्याहै ॥ अब याहीअर्थके स्पष्टकरणेवासतै सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकै मनविषे दृश्यपणानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जाग्रतअवस्थाविषे किसीपुरुषकेप्रति जभीकोई अन्यपुरुष वचनकहैहै ॥ तभी सोपुरुष याप्रकार ताकेप्रतिकहैहै तुमनैंजोहमारेप्रति वचनकह्या॥तावचनकेअर्थकूं छोडिकरिकै हमारामन अन्यत्रगयाथा ॥ याकारणतैं तुम्हारेवचनकाअर्थ हमनैं जान्यानहीं तुम फेरिदूसरीवार तावचनकूंकहो ॥ याप्रकारकेअनुभवकरिकै संपूर्ण लोकोंनैं आपणेमनकूं विषयकरीताहै ॥ याकारणतैं घटादिकपदार्थोंकीन्याईं मनभी दृश्यहै ॥ अब युक्तियोंकरिकै मनविषे जडपणा निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ वेदकूंनहींमानणेहारेजेनास्तिकहैं ॥ तिनोंकूंछोडिकरिकै कोईभीआस्तिकवादी मनकूंचेतन मानतानहीं ॥ किंतु सर्वआस्तिकवादी मनकूंजडमानैहैं ॥ और जोनास्तिकवादी मनकूंचेतनमानैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जिसमनकूं तुम चेतनरूप मानतेहो ॥ सोमन आत्मारूपहै अथवा अनात्मारूपहै ॥ तहांमन अनात्मारूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥

रूपलोकका परित्यागकरिके दोनोंलोकोंकेदर्शनवासते स्वप्नरूपसांध्यस्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी स्थूलशरीरकेसंबंधी नेत्रादिक इंद्रियां हैं तथारूपादिकजेविषयहैं ॥ तिनोंकेसूक्ष्मवासनावोंकूं तथातिनवासनावोंकाआधारजोमनहै तिसकूं साथलेकेही यहआत्मादेव स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे महाराजा आपणेअनुचरोंकूंसाथलेकेही जावैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूप आत्मा विषयइंद्रियोंकेवासनायुक्तमनकूं साथलेकेही स्वप्नकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे रेतिविषेक्रीडाकरताहुआबालक ताक्री डाकेसाधन जेनानाप्रकारकेगृहादिकपदार्थहै ॥ तेपदार्थ तारेतिकेहीरचैहै ॥ और क्षणपीछे सोबालक तिनसर्व रेतिमय पदार्थोंकूं नाशकरै हैं ॥ इसप्रकार गृहादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरिके तथातिनोंकानाशकरिके निरंतर सोबालक क्रीडाकरैहै ॥ तैसे यह आनंदस्व रूपआत्माभी स्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेरथादिकपदार्थोंकूंउत्पन्नकरिकैतथा तिनपदार्थोंकानाशकरिके निरंतर क्रीडाकरैहै ॥ और हेजनक ॥ तास्वप्नअवस्थाविषे स्वप्रकाशज्ञानरूपआत्मातैंविना दूसराकोई सूर्यादिकज्योतिहैनहीं॥याकारणतैं स्वप्नअवस्थाविषे आ त्मास्वयंज्योतिहै तात्पर्ययह ॥ जैसे स्वयंदासास्तपस्विनः ॥ अर्थयह ॥ तपस्वीपुरुष आपहीदासहैं ॥ याप्रकारकेवचनतैं तपस्वीपुरुषों तैंभिन्न दूसरेदासकाअभाव जान्याजावैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे आत्मा स्वयंज्योतिहै ॥ याप्रकारकेवचनतैंभी आत्मातैंभिन्न दूसरेज्यो तिकाअभाव जान्याजावैहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे आत्माही स्वयंज्योतिहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ स्वप्नअवस्थाविषे आदित्यादिकज्यो तियोंकालयहोवैहै ॥ यातैं आदित्यादिकोंकूं यद्यपि ज्योतिरूपता संभवैनहीं ॥ तथापि मनका स्वप्नअवस्थाविषेलयहोवैनहीं ॥ यातैं स्वप्न अवस्थाविषे मनकूं ज्योतिरूपता किसवासतेनहींहोवै ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे बालककेक्रीडाकेसाधन जेगृहादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकाउ पादानकारण मृत्तिकाजडहै तैसे स्वप्नद्रष्टापुरुषके क्रीडाकेसाधनजेस्वप्नकेपदार्थहैं ॥ तिनोंकाउपादानकारणमनभी जडहै ॥ और जैसे क्रीडाकेसाधनगृहादिकपदार्थोंका परिणामीउपादानकारण जोमृत्तिकाहै ॥ तिसकूं सोबालक पूर्वदेखैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे रथादि कपदार्थोंका परिणामीउपादानकारणजोमनहै ॥ तिसमनकूं यहस्वप्रकाशसाक्षीआत्मा देखैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे मृत्तिका गृहादिकपदा

स्वप्नविषेघटेहै ॥ और स्थूलशरीरके अहंममअभिमानका परित्यागकरणा यह परलोककालक्षणहै ॥ सोभी स्वप्नविषे घटेहै ॥ यातें दोनोंलोकोंकेसंधिविषे स्वप्न उत्पन्नहोवे है ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती स्वप्नकूंसांध्यकहेहै ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकेस्पष्टकरें हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे मेघादिकोंतेंरहित निर्मलआकाशविषे तारागणका न दर्शनहोणा यह दिनकालक्षणहै ॥ और निर्मलआकाशविषे सूर्यमंडलका न दर्शनहोणा यह रात्रिकालक्षणहै ॥ यहदोनोंप्रकारकेलक्षण सायंकालविषेघटें हैं ॥ याकारणतें सायंकालकूं बुद्धिमान्पुरुष रात्रि दिन यादोनोंकीसंधिकहें हैं ॥ तिस संधिविषेजोपदार्थ उत्पन्नहोवेहै ताकूं सांध्यकहें हैं ॥ तैसे स्वप्नभी इसलोकके तथापरलोकके संधिविषे उत्पन्नहोवेहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती स्वप्नकूं सांध्यकहेहै ॥ इतनेंकरिके स्वप्नविषेसांध्यपणा निरूपणकऱ्या ॥ अब स्वप्नके प्रत्यक्षकरिके परलोककोसिद्धिकरें हैं ॥ हेजनक ॥ तिसस्वप्नरूपसांध्यस्थानविषेस्थितहुआ यहआत्मादेव इसलोककूं तथापरलोककूं देखे है ॥ तात्पर्ययह ॥ इसशरीरकरिके जेजेपदार्थ अनुभवकरें हैं ॥ तथा पूर्वशरीरोंकरिके जेजेपदार्थ अनुभवकरें हैं ॥ तथा भावीशरीरोंकरिके जेजेपदार्थ आगेअनुभवकरणेहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं यहजीव स्वप्नविषेदेखेहै तहांदृष्टांत ॥ जसे गृहका तथागृहकेबाहरअंगणका संधिरूपजोद्वारहै ॥ ताद्वाररूपसंधिविषेस्थितहुआ यहपुरुष गृहकेपदार्थोंकूं तथाबाहरअंगणकेपदार्थोंकूं देखेहै ॥ तैसे यहआत्मादेव स्वप्नरूपसंधिविषेस्थितहोइके इसलोककेपदार्थोंकूं तथा परलोकके पदार्थोंकूं देखेहै ॥ और हेजनक ॥ यास्थूलशरीरकेत्यागतेंअनंतर पुण्यपापरूपकर्मके अनुसार यहजीव जिसप्रकारकेउत्कृष्टशरीरकूं अथवा निकृष्टशरीरकूं प्राप्तहोवेगा ॥ तिसीप्रकारकेशरीरकूं स्वप्नविषेग्रहणकरिके यहजीवात्मा पुण्यपापकर्मकेप्रभावतें सुखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और पापकर्मकेप्रभावतें दुःखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ इसप्रकार स्वप्नअवस्थाविषे पुण्यपापकेवशतें सुखदुःखरूपफलकूंभोगताहुआ यहआत्मादेव इसलोककूं तथापरलोककूं दोनोंकूंदेखे है ॥ यातें स्वप्नद्रष्टापुरुषका प्रत्यक्ष परलोकविषे प्रमाणहै ॥ तथा अन्यभी श्रुति स्मृति इतिहास पुराण आदिक परलोकविषेप्रमाणहैं इतनेंकरिके परलोककी सिद्धिकरी ॥ अब स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकीस्वयंप्रकाशरूपता सिद्धकरें हैं ॥ हेजनक ॥ जभी यहआनंदस्वरूपआत्मा यास्थूलशरीर

भोगकास्थानहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाभी जीवके सुखदुःखकेभोगकास्थानहै॥याअभिप्रायतें केईकविवेकीपुरुष स्वप्नकूं तृतीयस्थान मानें हैं॥
और जेअत्यंतसूक्ष्मदर्शीपुरुषहैं॥ते स्वप्नकूं तृतीयस्थानमानेनहीं॥किंतु यहलोक तथा परलोक यहदोनोंस्थानमानेंहैं॥और स्वप्नदोनोंलोकों
कीसंधिविषेउत्पन्नहोवै है याकारणतें स्वप्नकूं सांध्य मानें हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे दोनोंग्रामोंकीजोसंधिहै ॥ तासंधिकूं कोइंपुरुष तीसरा
ग्राम कहेनहीं ॥ तैसे दोनोंलोकोंकीसंधिविषेस्थित जोस्वप्नहै ॥ सोतीसरास्थान होइसकेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोस्वप्न तीसरास्थान
नहीं है॥तोइसलोकविषेतथापरलोकविषे स्वप्नकाअंतरभाव मान्याचाहिये ॥ स्वप्नकूं सांध्यरूपता किसवासते अंगीकारकरतेहो॥समाधान॥
हेजनक॥दोनोंलोकोंविषे स्वप्नकाअंतरभाव होइसकेनहीं॥याकारणतें स्वप्नकूं सांध्यमानें हैं॥तहां शुक्रशोणितकरिकेउत्पत्तिहैजिसकी ऐसा
जोस्थूलशरीररूप यहलोकहै॥ताकेविषेभी स्वप्नकाअंतरभाव होइसकैनहीं॥काहेतें जभी यहजीव स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है॥तभी जाग्रत्
कीन्याई यास्थूलशरीरकाअभिमानता जीवकूंहोवैनहीं॥याकारणतेंहीं मृतकशरीरकीन्याई भूमिविषेपडेहुएयास्थूलशरीरकूंस्वप्नद्रष्टापुरुष
देखतानहीं ॥ जोइसलोकविषे स्वप्नकाअंतरभावहोता॥तो जैसे जाग्रतअवस्थाविषे याजीवकूं स्थूलशरीरकाअभिमानहोवैहै ॥तैसेस्वप्नअव
स्थाविषेभी यास्थूलशरीरकाअभिमानहोणाचाहिये॥और ॥स्वप्नअवस्थाविषे यास्थूलशरीरकाअभिमान होतानहीं ॥ यातेंइसलोकविषेभी
स्वप्नकाअंतरभाव होइसकेनहीं ॥ याप्रकार परलोकविषेभी स्वप्नकाअंतरभाव होइसकेनहीं ॥ काहेतें जैसे मरणतेंअनंतरयहजीव स्थूलश
रीरकेदाहादिकोंकरिके दुःखकूं नहींप्राप्तहोवै है ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेहैनहीं किन्तुस्वप्नअवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेदाहादिकोंकरिकेजी
वकूंदुःखहोवैहै॥तथा श्वासोंकरिकेयुक्तहोवै है॥यातें यहजान्याजावैहै॥जैसे मरणतेंअनंतरयास्थूलशरीरकेअभिमानकीअत्यंतनिवृत्तिहोवैहै ॥
तैसेस्वप्नअवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेअभिमानकी अत्यंतनिवृत्तिहोवैनहीं॥जोस्वप्नकापरलोकविषे अंतरभाव अंगीकारकरिये ॥ तौ स्वप्न
विषे यास्थूलशरीरकेदाहादिकों तें जीवकूं पीडानहींहोणीचाहिये ॥ तथाश्वासोंकाभी अभावहोणाचाहिये ॥ यातें परलोकविषेभी स्वप्न
काअंतरभाव होइसकेनहीं ॥ याकहणेतें यहसिद्धभया ॥ स्थूलशरीरकेअभिमानकूं न परित्यागकरणा ॥ यह इसलोककालक्षणहै ॥ सोभी

विषे कुछप्रयोजननहीं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा जबपर्यंत स्थूलशरीरकेअभिमानकूं नहींपरित्यागकरता ॥ तबपर्यंत तास्थू
लशरीरकेअभिमानकरिके अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे स्थूलशरीरकेअभिमानकूं परित्यागकरिके स्वप्नअव
स्थाकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष स्थूलशरीरकेअभिमानजन्यदुःखोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरीरकेअभिमानकापरित्याग
करिके जभी यहपुरुष लोकांतरविषेजावैहै ॥ तभीयास्थूलशरीरकेअभिमानजन्य नानाप्रकारकेदुःखोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं
दृष्टांतकरिके स्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे दुर्भिक्षादिकउपद्रवोंकरिकेयुक्तजोदेशहैं ॥ तादेशविषे मोहकरिके जोपुरुष निवासकरैहै ॥
सोपुरुष तादेशविषे नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे या स्थूलशरीरविषे अहंममअभिमानकरिके स्थितहुआ यहआत्मादेव नानाप्र
कारके दुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे दुर्भिक्षादिकउपद्रवोंकरिके युक्तजोदेशहै ॥ ताकापरित्यागकरिके जभी सोपुरुष अन्य
किसीदेशविषे चलाजावैहै ॥ तभी सोपुरुष तादेशजन्यदुःखोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरीरका परित्यागकरिके
जभीयहआत्मादेव परलोककूंजावैहै ॥ तभी तास्थूलशरीरकेअभिमानजन्य नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इतनेग्रंथकरिके अन्वय
व्यतिरेकतैं स्थूलशरीरकेअभिमानविषे अनर्थकीकारणतादिखाई ॥ अब परलोककूं नहींमानणेहारेजेनास्तिकहैं ॥ तिनोंकेखंडनकरणेवा
सते परलोककीसिद्धिकरैहैं ॥ हेजनक ॥ वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित जोयहपरमात्मादेवहै ॥ सो अनिर्वचनीयअविद्याकेसंबं
धतैं जीवभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और नानाप्रकारके पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरैहै ॥ तापुण्यपापरूपकर्मोकेवशतैं नानाप्रकारकेशरीरोंकूं ग्रहण
करैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेशरीरोंका परित्यागकरैहै ॥ याप्रकार सर्वदासंसारविषे विचरणेहारे याआत्मादेवके दोस्थान अनुगतहैं॥ एकतौ
यहलोक और दूसरा परलोक तहां प्रत्यक्षप्रमाणकरिकेसिद्ध जोयहस्थूलशरीरहै ताकूं यहलोककहैहैं ॥ और यास्थूलशरीरकेत्यागतैं अनं
तर आगेहोणेहारेजेशरीरहैं ताकूंपरलोककहैहैं॥यहदोनोंलोक आत्माकेविचरणेके स्थानहैं॥ अब स्वप्नकेप्रत्यक्षप्रमाणकरिके परलोककीसि
द्धिकरणेवासते प्रथम स्वप्नअवस्था विषे दोनोंलोकोंकीसंधिरूपताकूं निरूपणकरैहैं॥हेजनक॥जैसे यहलोक तथा परलोक जीवके सुखदुःखके

अध्यासतैं अनेकप्रकारकेविकारोंकूं यहआनंदस्वरूपआत्मा प्राप्तहोवैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै बुद्धिकेसाथ जोआत्माका तादात्म्यअध्यासहै ताकेविषे अनर्थकीकारणतादिखाई ॥ अब स्थूलशरीरकेसाथ जोआत्माका तादात्म्यअध्यासहै ताकेविषे अन्वयव्यतिरेककरिकै अनर्थकी कारणताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ तहाँ प्रथम व्यतिरेककूं निरूपणकरैं हैं ॥हेजनक॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा बुद्धिकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूं प्राप्तहोइकै स्वप्नअवस्थाविषे तैजससंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां स्वप्नविषे आपणीमायाशक्तिकरिकै उत्पन्नकरेजेनानाप्रकारकेपदार्थ तिनों कूंदेखैहै ॥ ऐसीस्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै यहआत्मादेव सुखेनहीं जाग्रत्लोककूं उल्लंघनकरैहैं॥कैसाहैसोजाग्रत्लोक ॥ स्थूलशरीरहैप्रधान जिसविषे ॥ तथा ग्रहरूप जेवाकूआदिकइंद्रियहैं तथाअतिग्रहरूपजेशब्दादिकविषयहैं तिनोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा अविद्या काम कर्मरूप जो मृत्युहै ताकाकार्यहै ॥ तथा जलकेबुदबुदकीन्याई शीघ्रहीनाशवान्है ॥ तथा नानाप्रकारकेदुःखोंकाकारणहै ॥ तथा नानाप्रकारकीव्याधियों करिकैयुक्तहै ॥ याप्रकारकेजाग्रत्लोककूं यहपुरुष स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै सुखेनहींपरित्यागकरैहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे महाराजा नौकारूपसाधनकरिकै सुखेनहीं अगाधनदीकूंउल्लंघनकरैहै ॥ तैसे यहपुरुष स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोणेहारी बुद्धिरूपनौकाकरिकै सुखेनहीं जाग्रत्लोकरूपीनदीका उल्लंघनकरैहै ॥ इतनैंकरिकै स्वप्नअवस्थाविषे स्थूलशरीरकेअध्यासके अभावहुए स्थूलशरीरके अध्यासजन्य दुःखोंकाअभावरूप व्यतिरेक दिखाया ॥ अब जाग्रत्अवस्थाविषे स्थूलशरीरके तादात्म्यअध्यासकेविद्यमानहुए नानाप्रकारकेदुःखोंकी विद्यमानतारूप अन्वयकूं निरूपणकरैहैं॥हेजनक जैसे माताकेउदरतैं बालक बाहरनिकसैहै॥तैसे स्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकूंदेणे हारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तिनोंकेक्षयहुएतैंअनंतर जाग्रत्अवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकूंदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तिनोंकरिकै जगायाहुआ यहपुरुष जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोइकै जभी स्थूलशरीरविषे अहंअभिमानकरैहै ॥ तभी यहपुरुष नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्त होवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जाग्रत्अवस्थाविषे स्थूलशरीरकेअभिमानतैं यहपुरुष कौनकौनदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेअभिमानतैं जीवोंकूं जेदुःखहोवैं हैं ॥ तेदुःख सर्वजीवोंकूंप्रत्यक्षसिद्धहैं ॥ यातैं तिनोंकेनिरूपणकरणे

करैहै ॥ याकारणतैं ॥ श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं पुरुषकहैहै अब अंतःकरणादिकउपाधियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिकै याआत्मापुरुषविषे जन्ममरणादिकविकारोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक जैसे ॥ जाग्रतअवस्थाकूं तथा स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोइके यहआत्मापुरुष सुखकूं तथादुःखकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे इसजन्मकूं तथाजन्मांतरकूं प्राप्तहोइके यहआत्मापुरुष सुखकूं तथा दुःखकूं प्राप्तहोवै है ॥ और जैसे रज्जुकरिकैबांध्याहुआघटीयंत्र नीचेऊपरभ्रमणकरैहै ॥ तैसे कर्मरूपीरज्जुकरिकै बांध्याहुआयहपुरुष कभीजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कभी मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार अनेकशरीरोंकाग्रहणकरताहुआ तथाअनेकशरीरोंकापरित्यागकरताहुआ यहपुरुष निरंतर संसारविषेभ्रमणकरै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ यातैं ताका लोकांतरविषे गमन आगमन संभवैनहीं॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा कर्तृत्व भोक्तृत्व तैंआदिलेके सर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ यातैं आत्माविषे पुण्यपापकासंबंधभी संभवैनहीं॥समाधान ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैं जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ तथापि आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैंअंतःकरणादिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूं प्राप्तहोइके यहआत्मा पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरै है ॥ तथा तापुण्यपापरूपकर्मके सुखदुःखरूपफलकेभोगवासतै लोकांतर विषे गमनआगमनकरैहै ॥ यातैं अंतःकरणरूपउपाधिकेसंबंधतैंही आत्माविषेकर्तृत्व भोक्तृत्वादिकविकार प्रतीतहोवैहैं वास्तवतैंनहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे वास्तवतैं उष्णस्पर्शतैंरहितजोआकाशहै ॥ सो उष्णजलकरिकै युक्तहुआ अथवा उष्णजलकेऊपरकेदेशकरिकैयुक्तहुआ उष्णकीन्याई प्रतीतहोवै है ॥ तैसे वास्तवतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकविकारोंतैंरहित यहआनंदस्वरूपआत्मा कर्त्ताभोक्ताअंतःकरणकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोइके कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे स्त्रीकेअधीनजोकामीपुरुषहै सो ॥ स्त्रीकेसुखीहुए सुखीहोवैहै ॥ और स्त्रीकेदुःखीहुए दुःखीहोवैहै ॥ तैसे बुद्धिकेसाथ तादात्म्य अध्यासकूंप्राप्तहुआ यहआत्मादेवभी बुद्धिकेअनुसारही प्रतीतहोवैहै ॥ तहां जोबुद्धि किसीपदार्थकाध्यानकरैहै ॥ तौ आत्माभी ध्यानकरताकीन्याई प्रतीतहोवैहै ॥ और बुद्धिकेचलायमानहुए आत्माभी चलायमानकीन्याई प्रतीतहोवै है ॥ इसप्रकार अंतःकरणकेतादात्म्य

याप्रकारकाकथनकरैहै ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मायद्यपिसर्वत्र व्यापकहै ॥ तथापि हृदयदेशविषे आत्माकी विशेषकरिकेअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषेस्थितकहैहै ॥ अब चैतन्यरूपताकोसिद्धिवासतै आत्माकूं ज्योतिरूपकरिके वर्णनकरैं हैं॥हेजनक॥जैसे बाह्यघटादिकपदार्थोंके प्रकाशकरणेहारे जेतेजरूपसूर्यादिकहैं॥ते सूर्यादिक ज्योतिरूपकरिके सर्वलोकोंकूं प्रसिद्धहैं ॥ और सूर्यादिकप्रकाशोंतैंभिन्न जेघटादिकपदार्थ हैं॥ तेघटादिकपदार्थ अज्योतिरूपकरिके सर्वलोकोंकूं प्रसिद्धहैं॥तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा सूर्यादिकज्योतियोंकूं तथाघटादिकअज्योतियोंकूं प्रकाशकरैहै॥ तथा चैतन्यरूपकरिके तिनोंतैंविलक्षणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं ज्योतिकहैहै॥और हेजनक॥शरीरतैंबाह्यवर्त्तमान जेसूर्यादिकज्योतिहैं तेसूर्यादिकज्योति आपणेतैंभिन्नसत्तावालेजे घटपटादिकपदार्थ हैं तिनोंकूं प्रकाशकरैं हैं ॥ तिसप्रकार आत्मारूपज्योति जगत्कूं प्रकाशकरैनहीं ॥ किंतु आपणेतैंअभिन्नसत्तावाले जेघटादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकूं यहआत्मारूपज्योति प्रकाशकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक रज्जुरूपअधिष्ठानतैं भिन्नसत्तावालेनहीं ॥ तैसे आत्माविषे कल्पितजगत्भी अधिष्ठानआत्माकीसत्तातैंभिन्नसत्तावालानहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं अंतरज्योतिकहैहै ॥ अथवा ॥ दूसरेप्रकाशकी न अपेक्षाकरिके जोप्रकाश आपणेकूं तथाअन्यपदार्थोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ ताकूं अंतरज्योतिकहैं हैं ॥ ऐसाअंतरज्योतिपणा आत्माविषेहीसंभवैहै ॥ सूर्यादिकबाह्य ज्योतियोंविषे संभवैनहीं ॥ काहेतैं सूर्यादिकज्योति यद्यपि घटादिकपदार्थोंकेप्रकाशविषे दूसरेकिसीज्योतिकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तथापि आपणेप्रकाशविषे तेसूर्यादिकजडज्योति चैतन्यआत्माकीअपेक्षाकरैहै ॥ यातैं तिनसूर्यादिकोंविषे अंतरज्योतिपणा संभवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे परीक्षाकरणेवासतैं दुग्धविषेपाईहुई मरकतमणि आपणेप्रकाशकरिके सर्वदुग्धकूं पूर्णकरैहै ॥ तैसे यहज्योतिरूपआत्माभी आपणेप्रकाशकरिके सर्वजगत्कूं पूर्णकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती यास्वयंज्योतिआत्माकूं पुरुषकहैहै ॥ अथवा जैसे पक्षि आपणेगृहविषे शयनकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा स्थावरजंगमशरीरोंकूं पुरीरूपमानिके तिनशरीररूपपुरियोंविषे तादात्म्यअध्यासकरिकेस्थितिरूपशयनकूं

न्यूनअधिकभावकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रसमानव्यापकहै॥तथापि घटादिकोंविषे जोआत्माकाप्रकाशहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिके शरीरविषे अधिकहै ॥ और शरीरविषेजोआत्माकाप्रकाशहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिके हृदयविषे आत्माकाप्रकाशअधिकहै इसप्रकार उपाधिकीअस्वच्छतातें तथास्वच्छतातें एकहीआत्माकाप्रकाश न्यूनअधिकभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहाँ जैसे सूर्यकाप्रकाश घटादिकपदार्थोंविषे विद्यमानहुआभी स्पष्टरूपकरिके प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे शरीरतैंबाहर घटादिकपदार्थोंविषे विद्यमानहुआभी आत्मा स्पष्टरूपकरिकेप्रतीतहोवैनहीं ॥ और जैसे सूर्यकाप्रकाश यद्यपि स्फटिकादिकमणियोंविषे प्रतिबिंबरूपकरिके स्पष्टप्रतीतहोवैहै॥ तथापि सोसूर्यकाप्रकाश दाहरूपकार्यकूं करैनहीं ॥ तैसे शरीरविषे सामान्यतैं सुखदुःखकेज्ञानहुएभी विशेषतैं सुखदुःखकाज्ञानहोवै नहीं॥और जैसे सूर्यकांतमणिविषे सूर्यका स्पष्टरूपकरिकेप्रकाश तथादाहरूपकार्य दोनोंप्रतीतहोवैं हैं ॥ तैसे हृदयदेशविषे सुखदुःख तथा तिनोंकाविशेषकरिकेअनुभव यहदोनोंप्रतीतहोवैं हैं॥याकारणतें श्रुतिभगवती हृदयविषेआत्माकीस्थिति कथनकरैहै ॥अथवा॥वाक्आदिकसर्वइंद्रियोंका तथा जगत्‌रूपचित्रकूंधारणकरणेहारेअंतःकरणका हृदयकमलहीआधारहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषे स्थितकहैहै॥तात्पर्ययह॥अंतःकरणरूपउपाधिद्वारा आत्माका हृदयआधारहैअथवा॥यहआनंदस्वरूपआत्माअंतःकरणादिकसर्वउपाधियोंतैंरहितहोइके हृदयविषे सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती आत्माकूंहृदयविषेस्थितकहैहै ॥ अथवा ॥ अष्टांगयोगकरिकेयुक्त तथा ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकेयुक्त जेमुमुक्षुजनहैं ॥ तिनोंनैं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा हृदयविषेहीजाणीताहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयदेशविषेस्थितकहैहै ॥ अथवा ॥ मरणकालविषे ब्रह्मलोककूं तथापितृलोककूं तथा कीटपतंगादिकयोनियोंकूं प्राप्तहोणेकीइच्छावान्‌जोजीवहै॥ तिसकूं तिसतिसलोकप्राप्तिकामार्गरूपजोनाडियां हैं॥तिनोंकाप्रकाश सविज्ञानहृदयतैंहीं होवैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषे स्थितकहैहै ॥ याकारणतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे सूर्यकाप्रकाश यद्यपि सर्वत्रविद्यमानहै ॥ तथापि सूर्यमंडलविषे ताप्रकाशकोविशेषकरिके प्रतीतिहोवैहै ॥ याकारणतें सर्वलोक सूर्यमंडलविषे प्रकाश स्थितहै

इत्यादिकविशेषज्ञानोंकाआश्रयहोवैहै ॥ अंतःकरणकेतादात्म्यसंबंधतैंविना केवलआत्मा चित्स्वरूपही है ॥ इतनेंकरिके स्थूलशरीरतैं आत्माकाभेददिखाया ॥ अब वाक्आदिकइंद्रियोंतैं तथाप्राणोंतैं भिन्नकरिके आत्माकानिरूपण करैहैं॥हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा वायुरूपमुख्यप्राणकेसाथ तथाइंद्रियरूपगौणप्राणकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोइके प्राणोंके तथावाक्आदिकइंद्रियोंके नानाप्रकार केव्यापारोंकाकारणहोवै है॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष आत्माकूं प्राणोंविषेस्थितकहैहैं॥शंका॥हेभगवन्॥आत्मा सर्वत्रव्यापकविभुहै ॥और प्राण परिच्छिन्नहै ॥ तापरिच्छिन्नप्राणविषे विभुआत्माकीस्थिति संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे सर्वत्र व्यापकजोआकाशहै ॥ ताकूं लोक घटविषेस्थित कहैहैं ॥ और जैसे सर्वत्रव्यापकजोवायुहै ॥ सो वृक्षकेचलावणेकरिके अभिव्यक्तहोवै है ॥ याकारणतैं लोक याप्रकारकहै हैं ॥ यावृक्षविषेवायुस्थितहै ॥ तैसे आत्मा यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि जहाँ प्राणहोवैं हैं॥ तहाँ आत्माकीविशेषकरिके अभिव्यक्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष प्राणोंविषेआत्माकीस्थितिकहै हैं ॥ अब अंतः करणतैं भिन्नकरिके आत्माकानिरूपण करैहैं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि हृदयकमलविषेस्थितजोबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिविषे विशेषक रिके आत्माकीअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषेस्थितकहैहै ॥ अब याहीअर्थकूं सर्वलोकोंकेअनुभवक रिके स्पष्टकरैहैं॥हेजनक ॥पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत सर्वशरीरविषे यहजीवसुखकूंतथादुःखकूं अनुभवकरैहै॥तथापि सोसुखदुःखकाअनुभव विशेषकरिकेहृदयदेशविषेहीं प्रतीतहोवैहै ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे धूपकरिकेतपायमानहुआपुरुष जभी शीतलगंगाजलविषेप्रवेशकरे है ॥ तभी ताशीतलजलकेस्पर्शकरिके सर्वअंगोंविषे सुखकाअनुभवकरैहै ॥ परंतु सोसुखकाअनुभव विशेषकरिके हृदयदेशविषेहीं प्रतीतहो वैहै ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकेस्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे सूर्यकातेज यद्यपि सर्वब्रह्मांडविषे समानहै ॥ तथापि घटादिकअस्व च्छपदार्थोंविषे जोसूर्यकातेजहै॥ताकीअपेक्षाकरिके स्फटिकादिकमणियोंविषे सूर्यकातेज अधिकहै ॥ और स्फटिकमणिविषेस्थिततेजकी अपेक्षाकरिके सूर्यकांतमणिविषेस्थितजो सूर्यकातेजहै सोअधिकहै इसप्रकार उपाधिकी अस्वच्छतातैं तथास्वच्छतातैं एकहीसूर्यकाते

जैसे घटादिकपदार्थ दृश्यहोणेतैं आत्मानहींहैं ॥ तैसे देह इंद्रिय प्राण अंतःकरण इत्यादिकसंघातभी दृश्यहोणेतैं आत्मानहीं ॥ किंतु सर्व संघाततैंभिन्न तथासर्वसंघातकाअधिष्ठान जोचेतनहे ॥ सोईही स्वयंज्योतिआत्माहे ॥ और हेजनक ॥ आत्माकेज्ञानवासते तुं दूरदृष्टिमत कर ॥ किंतु जिसज्ञानकरिके तुमनें यहप्रश्नकन्याहे ॥ ताज्ञानविषेही आत्माकापरिचय होइसकैहे ॥ काहेतें जैसे लोकविषे विवादकेकरणे हारेपुरुषरूपसाक्ष्यतैं साक्षीपुरुष भिन्नहोवैहे ॥ तैसे देहइंद्रिय प्राण अंतःकरण इत्यादिकसंघातरूपसाक्ष्यतैं भिन्नहोइकेजोस्थितहे ॥ और सर्वसंघातकाजोसाक्षीहे ॥ सोईही तुमारा अद्वितीयआत्माहे॥हेशिष्य॥ याप्रकार॥याज्ञवल्क्यमुनिनें जनकराजाकेप्रति सामान्यतैं संघाततैं भिन्नकरिके आत्माकाउपदेशकन्या ॥ अब संघातकेघटक जेदेहादिकपदार्थहैं तिनोंतैंभिन्नकरिके आत्माकानिरूपणकरैंहैं ॥ तहां प्रथम स्थूलशरीरतैंभिन्नकरिके आत्माकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे अग्निविषेतपायाहुआ जो लोहेकापिंडहे ॥ तालोहपिंडविषे अग्नि तादात्म्यसंबंधकरिके रहैहे ॥ तैसे विज्ञानरूपजे नानाअंतःकरणहैं ॥ तिनोंविषे यहचेतनआत्मा कल्पिततादात्म्यसंबंधकरिकेस्थितहे ॥ और जैसे लोहविषेस्थितहुएअग्निकूं लोकविषे लोहमय कहैहैं ॥ तैसे विज्ञानरूपअंतःकरणविषेस्थितहुएआत्माकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विज्ञानमय कहैहैं ॥ और हेजनक ॥ जैसे लोहेकापिंड स्वभावतैं किसीपदार्थकादाहकरैनहीं ॥ तथा प्रकाशभीकरैनहीं ॥ तैसे अंतकरण तथा अंतःकरणकी स्मृति अनुभवरूपवृत्तियां जडहैं ॥ यातैं स्वभावतैं प्रकाशरूपनहीं ॥ तथा किसीअन्यपदार्थकाप्रकाश करतेनहीं ॥ और जैसे अग्निकेतादात्म्यसंबंधकूंपाइके लोहेकापिंड प्रकाशकरैहे ॥ तथादाहकरे हे ॥ तैसे स्वप्रकाशआत्माके तादात्म्यसंबंधकूंपाइके अंतःकरण तथाअंतःकरणकीवृत्तियां प्रकाशमानहोवैंहैं ॥ तथा स्थूलसुक्ष्मरूपसर्वजगत्कूं प्रकाशकरैहैं॥इतनेकरिके अंतःकरणकीवृत्तियोंविषे आत्मकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकन्या॥अब आत्माविषेभी ता तादात्म्यअध्यासकेफलकूं निरूपणकरैहैं ॥हेजनक॥जैसे लोहके पिंडकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिके लोहमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआअग्नि प्रकाशकूंकरैहे तथा दाहकूंकरे हे ॥लोहमयसंज्ञातैंविना केवलअग्नि प्रकाशमात्रकूंहींकरैहे॥तैसे वृत्तिसहितअंतःकरणकेसाथ तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइके विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहआत्मा यहघटहे यहपटहे

विषे प्राप्तभयाजोराजापणा ताकाजाग्रत्‌विषेनाशहुए ताराजापणेकरिकैनिरूपित जोराज्यसामग्रीहै सोभी नष्टहोइजावैहै ॥ तैसे विचारका लविषे ज्ञानोंकेभेदकेनिवृत्तहुए ताज्ञानोंकेभेदनिरूपित जोविषयोंकाभेदहै सोभी निवृत्तहोइजावैहै ॥ एकअद्वितीयआत्मा परिशेषतैंरहैहै इतनैंग्रंथकरिकैज्ञानोंकूंस्वप्रकाशमानिके अद्वितीयआत्माकीसिद्धिकरी ॥ अब ज्ञानोंकूंपरप्रकाश अंगीकारकरिकैभी अद्वितीयआत्माकी सिद्धिकरैहैं ॥ घटादिकविषयोंकरिकैं तथानेत्रादिककरणोंकरिकै भेदवालेजेज्ञानहैं तेज्ञानपरप्रकाशहैं यहद्वितीयपक्षजोअंगीकारकरिये ॥ तोभी जैसे परप्रकाश्यघटादिकपदार्थोंका सुर्यादिकप्रकाशोंकरिकैं प्रकाशहोवैहै ॥ तैसे तिनपरप्रकाश्यज्ञानोंकाभी किसीअन्यप्रकाशकरि केही प्रकाश अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ सो ज्ञानोंकेप्रकाशकरणेहारा स्वयंप्रकाशसाक्षीआत्माहीं है ॥ हेशिष्य ॥ याअभिप्रायकरिकै सोया ज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति स्वप्न अवस्थाविषे एकआत्माकूंहीं स्वयंज्योतिकहताभया ॥ काहेतें स्वप्नअवस्थाविषे सूर्य चंद्रमा अग्नि वाक्‌ यहचारिप्रकारकेज्योति लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और आत्मारूपज्योति किसीअवस्थाविषे लयहोतानहीं ॥ किंतु सर्व अवस्थाविषे साक्षीरूपकरिकै विद्यमानहै ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे आत्मारूपज्योतिकरिकैहीं गमनआगमनादिकसर्वव्यवहारोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ यासंघातका आत्माहींज्योतिहै ॥ यावचनकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति संघाततैंभिन्न स्वयंज्योतिआत्माकाउप देशकऱ्या ॥ परंतु तायाज्ञवल्क्यमुनिकेअभिप्रायकूं जनकराजानैं जान्यानहीं ॥ किंतु जनकराजानैंयाप्रकार विपरीतअर्थकूंजान्या ॥ आत्मानाम स्वरूपकाहै ॥ यातें संघातकाजोस्वरूपहै सोई स्वयंज्योतिहै॥ याप्रकारविपरीतअर्थकूं जाणिकरिकै सोजनकराजा पुनः याज्ञ वल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेभगवन् ॥ यासंघातविषेवर्तमान जे देह इंद्रिय प्राण अंतःकरण इत्यादिकपदा र्थहैं ॥ तिनोंविषे कौनआत्माहै ॥ तात्पर्ययह ॥ स्थूलदेह आत्माहै ॥ अथवा वाक्‌आदिकइंद्रिय आत्माहै ॥ अथवा प्राण आत्माहै॥अथवा अंतःकरण आत्माहै ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ आत्मा चेतन पुरुष इत्यादिकशब्दोंकरिकै जिसकूं सर्वलोक कथनकरैहैं ॥ तथा तिनशब्दोंकरिकैजन्यवृत्तिज्ञान जिसकूं विषयकरैहैं ॥ और जो तिनशब्दज्ञानोंतैंभिन्नहै ॥ ऐसाआत्मा सर्वजीवोंकूंप्रसिद्धहै ॥ और

वान् गमन करैहै ॥ याप्रकारका एकहीविशिष्टज्ञान जाति गुण क्रिया संज्ञा संबंध यापंचविशेषणोंकरिकैयुक्तचैत्रव्यक्तिकूं विषयकरैहै ॥ तहां मनुष्य इतनीअंशकरिके मनुष्यत्वजातिकूं विषयकरैहै॥और रूपवान् इतनैअंशकरिके रूपगुणकूंविषयकरैहै॥और गमनकरैहै इतनैं अंशकरिके गमनरूपक्रियाकूं विषयकरैहै ॥ और चैत्र इतनैंअंशकरिके चैत्रसंज्ञाकूंविषयकरैहै ॥ और मैत्रकापुत्र इतनैंअंशकरिके जन्यजनकभावसंबंधकूंविषयकरैहै ॥ इसतैंआदिलेकेअन्यभीविशिष्टज्ञान अनेकपदार्थोंकूंविषयकरैहै ॥ तहांज्ञानकीएकताहुएभी विषयोंकाभेद सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ यातैं ज्ञानोंकेभेदतैंहीं विषयोंकाभेदहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी जोतुमनैं पूर्व विशिष्टज्ञानकहै ॥ तहांभी ज्ञानोंकेभेदतैंविना विषयोंकाभेदहोवैनहीं ॥ किंतु ज्ञानोंकेभेदतैंहीं तहां विषयोंकाभेदहोवैहै ॥ काहेतैं यहतुमारानियमहै विशेषणज्ञानतैंविना विशेष्यकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं विशिष्टज्ञानतैंपूर्ववर्ति जेविशेषणज्ञानहैं ॥ तिनोंकेभेदकूंअंगोकार करिकैहीं विषयोंकाभेदहोवैहै ॥ यातैं पूर्वउक्तनियमकाभंगहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ पूर्व तुमने ज्ञानोंकाअभेद सिद्धकऱ्याहै ॥ और अभी ज्ञानोंकाभेदअंगीकारकरिके समाधानकऱ्या ॥ यातैं पूर्व उत्तर कथनकाविरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ यहघट शुक्लहै इत्यादिकविशिष्टज्ञान जहां होवैहैं ॥ तहां प्रथम अंतःकरणकीवृत्तियोंकरिके शुक्लरूपविशेषणकूं तथाघटरूपविशेष्यकूं तथातिनदोनोंके संबंधकूं विषयकरैहै ॥ पश्चात् तिनतीनवृत्तियोंविषेआरूढजो फलचैतन्यहैं ॥ ताकरिके घट शुक्लरूप संबंध यातीनोंकूं विषयकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वजोज्ञानोंकीएकताकहीहै ॥ सो अंतःकरणकीवृत्तियोंविषे आरूढजोचैतन्यरूपज्ञानहै ॥ ताकेअभिप्रायतैंकहीहै ॥ और अभीजोज्ञानोंकाभेदकह्या ॥ सो अंतःकरणकीवृत्तिउपाधिकेभेदतैं कह्याहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधहोवैनहीं ॥ याकहणेकरिके यहअर्थसिद्धभया ॥ ज्ञानोंकेभेदकीअपेक्षाकरिकैहीं विषयोंकाभेद सिद्धहोवैहै ॥ और सोज्ञानोंकाभेद वास्तवतैंहैनहीं ॥ किंतु अंतःकरणकीवृत्तिरूपउपाधिकेभेदतैं ज्ञानोंकाभेद अज्ञानकालविषेप्रतीतहोवैहै ॥ और जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोकल्पितज्ञानोंकाभेद निवृत्तहोइजावैहै ॥ ताके निवृत्तहुए विषयोंकाभेदभी स्थितहोवैनहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे स्वप्न

तवस्तुनः ॥ अर्थयह ॥ कल्पितवस्तुकाजोअभावहै ॥ सो अधिष्ठानतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ किंतु अधिष्ठानरूपहीहोवे है ॥ १ ॥ तहाँ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे कल्पितजोसर्पहै ॥ ताकल्पितसर्पकाअभाव रज्जुरूपअधिष्ठानतैंभिन्ननहीं किंतु रज्जुरूपहै ॥ तैसे नेहनानास्तिकिंचन ॥ अर्थयह ॥ अधिष्ठानआत्माविषे किंचित्मात्रभीद्वैतप्रपंच नहीं है ॥ याश्रुतिनैं अधिष्ठानआत्माविषे बोधनक न्याजो कल्पितप्रपंचकाअभाव ॥ सोअभाव अधिष्ठानआत्मातैंभिन्ननहीं॥ किंतु अधिष्ठानआत्मारूपहै॥इसप्रकार सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोसर्वदुःखोंकाअभावहै ॥ सोदुःखाभाव अधिष्ठानपरमात्मातैंभिन्ननहीं किंतु परमात्मारूपहै ॥ इतनेग्रंथकरिके यहअर्थ सिद्धभया ॥ जैसे परमात्मा स्वप्रकाशहै तथा आनंदरूपहै तथा भेदतैंरहितहै ॥ तैसे पूर्वउक्तरीतिसैं यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञानभी स्वप्रकाशरूपहैं तथाआनंदरूपहैं तथाभेदतैंरहितहैं॥यातैं परमात्माकेसमानलक्षणवालेहोणेतैं तेज्ञान परमात्मातैंभिन्ननहीं॥किंतु परमात्मारूपहैं॥शंका ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं ज्ञानोंविषे यद्यपि सजातीयभेद तथास्वगतभेद संभवैनहीं॥तथापि विजातीयघटादिकविषयोंकाभेद संभवैहै ॥ समाधान ॥ जहांजहां विषयोंकाभेदहोवेहै ॥ तहांतहां ज्ञानोंकाभेदअवश्यहोवेहै॥ज्ञानोंकेभेदतैंविना विषयोंकाभेद होवेनहीं ॥ याकारणतैंहीं यहघटहै याएकज्ञानकाविषयजोघटहै ॥ ताघटविषे कोईभीशास्त्रवाला भेदअंगीकारकरतानहीं ॥ यातैं ज्ञानोंकेभेदतैंहींविषयकाभेदहोवैहै ॥ सोज्ञा नोंकाभेद यद्यपि अविचारकालविषे प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि विचारकालविषे सोज्ञानोंकाभेद प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं विषयोंकाभेदभीसंभ वैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे कारणकेभेदतैंहीं कार्यकाभेद देख्याहै ॥ जैसे मृत्तिकातंतुरूपकारणकेभेदतैं घटपटरूपकार्यकाभेदहो वैहै ॥ और यहां प्रसंगविषे दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं ज्ञानरूपदृष्टिहीं घटादिकविषयोंकाकारणहै ॥ ता कारणरूपदृष्टिकेअभेदसिद्धहुए घटा दिकविषयरूपकार्यकाभेदसिद्धहोवैनहीं ॥ शंका ॥ ज्ञानोंकेभेदतैंहीं विषयोंकाभेदहोवैहै याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे विशिष्टज्ञानकीएकताहुएभी ताकेविषयोंकाभेदहीदेख्याहै ॥ जैसे दशघटहैं याप्रकारका एकविशिष्टज्ञान दशत्वसंख्याविशिष्ट दशघटों कूंविषयकरैहै ॥ और यहघट शुक्लहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञान शुक्लगुणविशिष्टघटकूं विषयकरैहै ॥ और मैत्रकापुत्र चैत्रनामामनुष्य रूप

अधिकरणरूपभावपदार्थतैं जोअभाव भिन्नहोवैगा॥तो ताअभावविषे पदार्थपणाहीं नहींसंभवैगा॥ काहेतैं अस्तिपदकेतादात्म्यसंबंधवाला जोवस्तुहोवैहै ॥ तावस्तुकूं बुद्धिमान्पुरुष पदार्थकहैं हैं ॥ जैसे घटोअस्ति पटोअस्ति यास्थानविषे अस्तिशब्दका घटपटरूपअर्थके साथ तादात्म्यसंबंधहै ॥ सोअस्तिशब्दकातादात्म्य अभावकेसाथ संभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे तथाशास्त्रविषे जितनेकवृक्षादि कशब्दहैं ॥ तिनोंकाभी सत्यतैंभिन्न अभावरूप अर्थहोवैनहीं ॥ तो अस्तिशब्दका सत्यतैंभिन्न अभावरूपअर्थ किसप्रकारहोवैगा ॥याका रणतैंभी संपूर्णपदार्थ सत्यहैं ॥ शंका ॥ प्रतिसंख्यानिरोध अप्रतिसंख्यानिरोध आकाश यातीनोंकूं नास्तिक असत्यमानैं हैं ॥ तहां बुद्धि पूर्वक पदार्थकेनाशकूं प्रतिसंख्यानिरोधकहैं हैं ॥ और अबुद्धिपूर्वक पदार्थकेनाशकूं अप्रतिसंख्यानिरोधकहैं हैं॥ और आवरणकेअभावकूं आकाशकहैं हैं ॥ यातैं नास्तिकोंकेमतविषे यहतीनों अभावरूपहोणेतैं जैसे असत्यहैं ॥ तैसे अभावरूपहोणेतैं घटादिकसर्वपदार्थों कूंभी असत्यरूपता क्योंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ आकाशविषे जोअभावरूपतासिद्धहोवै ॥ तो आकाशकेदृष्टांतकरिके घटा दिकपदार्थोंविषे असत्यरूपता सिद्धहोवै ॥ सो आकाशविषे अभावरूपता संभवैनहीं ॥ काहेतैं आकाशोअस्ति याप्रतीति विषे आकाशशब्दका तथाअस्तिशब्दका आकाशकेसाथ तादात्म्यसंबंध सर्वलोकोंकूंप्रतीतहोवैहै ॥ और सत्यपदार्थका अस त्यपदार्थकेसाथ तादात्म्यसंबंधसंभवैनहीं ॥ यातैं आकाश असत्यनहीं ॥ किंवा ॥ आकाशकूं जोवंध्यापुत्रकीन्याई तथानर शृंगकीन्याई अत्यंतअसत्यमानोगे ॥ तो जैसे वंध्यापुत्रविषे तथानरशृंगविषे किसीपदार्थकीआधारतानहीं है॥ तैसे आकाश विषेभी शब्दगुणकीआधारता नहींहोवैगी ॥ और संपूर्णशास्त्रवालेपुरुष शब्दगुणकाआकाशही आधारमानैं हैं ॥ याकारणतैंभी आकाश अभावरूपनहीं ॥ याप्रकार सत्ख्यातिवादी सर्वपदार्थोंकूं सत्यरूपमानैं हैं ॥ और घटविषेस्थित जोपटादिकपदार्थों काअभावहै ॥ ताअभावकूं अधिकरणरूपघटतैं भिन्नमानेनहीं ॥ किंतु ताअभावकूं घटस्वरूपमानैं हैं ॥ याप्रकारका सत्ख्यातिवादी कामत अद्वैतसिद्धांतविषे अनुकूलहै ॥ काहेतैं वेदांतशास्त्रविषे वृद्धपुरुषोंनैं यहकह्याहै ॥ श्लोक ॥ अधिष्ठानावशेषोहि नाशःकल्पि

मतकूं अंगीकारकरिके दुःखाभावविषे स्वप्रकाशज्ञानरूपता सिद्धकरैं हैं ॥ जैसे सत्ख्यातिवादीकेमतविषे घटविषेस्थित जोप टादिकसर्वपदार्थोंकाअभावहै ॥ सोपटादिकोंकाअभाव अधिकरणरूपघटतैंभिन्ननहीं किंतु घटरूपहीहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे अधि ष्ठानरूपचैतन्यविषे स्थितजोदुःखाभावहै ॥ सोभी अधिष्ठानरूपचैतन्यतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोदुःखाभाव अधिष्ठानचैतन्यरूपहै ॥ शंका॥ सत्ख्यातिवादीकीन्याईं जो अभावकूं अधिकरणरूपमानोंगे ॥ तौ संपूर्णजगत्कूं अभावरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ समाधान ॥ अभावकूं अधिकरणरूपमाननेविषे जोसंपूर्णजगत्कूं अभावरूपताप्राप्तहोवै ॥ तौ होणेदेवो ॥ याकेविषे हमअद्वैतवादियोंकी किंचित्मात्रभी हानिहोवैनहीं ॥ उलटा अद्वितीयआत्माका दृढनिश्चयहोवैहै ॥ शंका ॥ सत्ख्यातिवादीकेमतकूंअंगीकारकरिके ॥ जोदुःखाभावकूं अधिष्ठानचैतन्यरूप अंगीकारकरोगे ॥ तौ तुमारेसिद्धांतकीहानिहोवैगी ॥ समाधान ॥ सर्वअंशतैं जोपरमतकाअंगीकारकरिये ॥ तौ हमारेसिद्धांतकीहानिहोवै ॥ परंतु सर्वअंशतैं हम परमतकाअंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु परमतकी जितनोअंश श्रुतिअर्थविषे अनुकू लहै ॥ तितनीअंशका हम अंगीकारकरैं हैं ॥ यातैं आपणेसिद्धांतकीहानि होवैनहीं ॥ तहाँ दृष्टांत ॥ जैसे केवलदधिकेभक्षणतैं यद्यपि ज्वरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तथापि शर्करायुक्तदधिकेभक्षणतैं ताज्वरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे श्रुतिविरुद्धपरमतके अंगीकारकरणेतैं यद्यपि सिद्धांतकीहानिहोवैहै ॥ तथापि श्रुतिअर्थकेअनुकूलजोयुक्तिहै ॥ तायुक्तिरूपशर्कराकरिकेयुक्त परमतरूपीदधिकेग्रहणकरणेविषे किंचित् मात्रभी सिद्धांतकीहानिहोवैनहीं ॥ यातैं सत्ख्यातिवादी जिसघटकूं पटादिकसर्वपदार्थोंकाअभावरूपमानेहै ॥ ताघटकूंहीं हमअद्वैतवादी ब्रह्मरूपमानैं हैं॥तात्पर्ययह॥अस्तिभाति प्रिय नाम रूप यापंचअंशोंकरिके सर्वजगत् व्याप्तहै॥तहाँ घटका नामरूप यहदोनोंअंश कल्पि तहैं ॥ यातैं अधिष्ठानचैतन्यतैंभिन्ननहीं ॥ और अस्ति भाति प्रिय यह तीनोंअंश ब्रह्मरूपहैं ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥श्लोक॥ अस्तिभातिप्रियंरूपं नामचेत्यंशपंचकम्॥आद्यंत्रयंब्रह्मरूपं जगद्रूपंततोद्वयम्॥अर्थयह॥संपूर्णजगत् अस्ति भाति प्रिय नाम रूप यापंचअं शोंकरिकेयुक्तहै ॥ तहाँ अस्ति भाति प्रिय यह आदिकेतीनअंशतो ब्रह्मरूपहैं ॥ और नाम रूप यहदोनोंअंश जगत्रूपहैं ॥ १ ॥ किंवा ॥

स्वप्रकाशरूपकरिके पूर्व वर्णनकरेजेज्ञान ॥ तेज्ञान जोसुखरूपनहींहोवैं ॥ तो जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे जीवों कूं दुःखका अनुभव नहींहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिसमाधिविषे जीवोंकूं सुखकाअनुभवभी नहींहोणाचाहिये ॥ और सर्वजीवोंकूं सुषुप्तिअव स्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे सुखकाअनुभवहोवैहै ॥ यातैं स्वप्रकाशज्ञानहीं सुखरूपहै ॥ याकारणतैंहीं सर्वजीवोंकूं सुषुप्तिकेस्वप्र काशज्ञानरूपआनंदविषे इच्छाहोवैहै ॥ शंका ॥ सुषुप्तिविषे जोसर्वजीवोंकीइच्छाहोवैहै ॥ सोइच्छा सुखकीप्राप्तिवासते होवैनहीं ॥ किंतु सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वदुःखोंकाअभावहोवैहै ॥ ता दुःखाभावकीप्राप्तिवासते जीवोंकूं सुषुप्तिविषेइच्छाहोवैहै ॥ यातैं सुषुप्तिअव स्थाविषे स्वप्रकाशज्ञानकेसाथ सुखकाअभेदअंगीकारकरणानिष्फलहै ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जैसे स्वप्रकाशज्ञान सुखरू पहै ॥ तैसे दुःखकाअभावरूपभीहै ॥ स्वप्रकाशज्ञानतैंभिन्नदुःखाभावनहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिविषेस्थितजो सर्वदुःखोंकाअभावहै ॥ सोदुःखाभाव जोस्वप्रकाशज्ञानतैंभिन्नहोवैगा ॥ तो तादुःखाभावकीसिद्धिही नहींहोवैगी ॥ और जोवादी सुषुप्तिअवस्थाविषे दुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञानतैंभिन्नमानिके तादुःखाभावकाप्रकाशअंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तादुःखाभावकूं सूर्यादिक प्रकाशकरैं हैं ॥ अथवा स्वप्रकाशज्ञान तादुःखाभावकूं प्रकाशकरैहै ॥ तहाँ प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वकार्यप्रपंचकालयहोवैहै ॥ यातैं सूर्यादिकप्रकाशोंकाभी सुषुप्तिविषेलयहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे स्वप्रकाशज्ञानकरिके दुःखाभावकाप्रकाशहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे स्थित जोदुःखाभावहै ॥ तादुःखाभावकूं वादी स्वप्रकाशज्ञानतैंअत्यंतभिन्नमानैहै यातैं ताअत्यंतभिन्नदुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञान प्रकाश करैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ चैतन्यरूपस्वप्रकाशज्ञान दोपदार्थकूं प्रकाशकरैहै ॥ एकतो आपणेस्वरूपकूं प्रकाशकरैहै ॥ और दूसरा आपणेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तभयाजोपदार्थ है ताकूं प्रकाशकरैहै ॥ अत्यंतभिन्नदुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञान प्रकाशकरैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे दुःखाभावकीसिद्धिवासते वादीनैं तादुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञानरूप मान्याचाहिये ॥ अब सत्ख्यातिवादीके

चंद्रमाकाभी परस्पर प्रकाश्यप्रकाशकभावहोणाचाहिये ॥ किंवा जोवादी स्वप्रकाशज्ञानकरिकै स्वप्रकाशज्ञानकाप्रकाश अंगीकारकरैहै॥ सोवादी तिनज्ञानोंके परस्परन्यूनअधिकतारूपभेदकूंभी अवश्यअंगीकारकरैगा ॥ तहाँ प्रकाश्यज्ञानविषे न्यूनता मानणीहोवैगी ॥ और प्रकाशक ज्ञानविषे अधिकतामानणीहोवैगी यातैं जैसे यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञानोंकरिकै प्रकाश्य जेघटपटादिकपदार्थहैं॥ तिनोंविषे स्वप्रकाशतानहीं है ॥ तैसेज्ञानकरिकैप्रकाश्य ज्ञानोंविषेभी स्वप्रकाशता नहींरहैगी ॥ यातैं ज्ञानकूंस्वप्रकाशमानिकै ताज्ञानकादूसरेज्ञानकरिकै प्रकाशमानणा यहवादीकाकहणाकैसाहै ॥ जैसे कोईपुरुषकहै मेरीमातावंध्याथी यावचनकीन्याई व्याघातदोषवालाहै ॥ किंवा॥ जोवादीस्वप्रकाशज्ञानोंविषे न्यूनअधिकतारूपभेद नहींअंगीकारकरै ॥ तौभी तिनज्ञानोंका परस्पर प्रकाश्यप्रकाशकभाव सिद्धहोइसकै नहीं ॥ काहेतैं समानजातिवालेपदार्थोंका परस्पर प्रकाश्यप्रकाशकभाव कहाँलोकविषेदेख्यानहीं ॥ जैसे दीपकआपणेतैंविजातीयजेघटादिकपदार्थ हैं तिनोंका प्रकाशकरैहै ॥ परंतु प्रकाशरूपकरिकैसमानजातिवाले जे खद्योतादिकहैं तिनोंकूंसोदीपक प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ तैसे स्वप्रकाशरूपकरिकै समानस्वभाववाले जेज्ञानहैं ॥ तिनोंकाभी परस्पर प्रकाश्यप्रकाशकभावसंभवैनहीं ॥ यातैं किसीप्रकारकरिकैभी ज्ञानोंकाभेदसिद्धहोइसकैनहीं यहसिद्धभया ॥ अब भेदरहितज्ञानोंकूं आत्मरूपता कथनकरणेवासते प्रथम ज्ञानविषे सुखरूपता निरूपणकरैं हैं ॥ ते भेदतैंरहितज्ञान सुखरूपहैं ॥ काहेतैं योवैभूमातत्सुखं ॥ अर्थयह ॥ जोपदार्थ भेदतैंरहितहै सोईपदार्थ सुखरूपहै ॥ याश्रुतिविषेकथनकऱ्या जोभेदशून्यत्वरूप सुखकालक्षण ॥ सोसुखकालक्षण भेदशून्यज्ञानोंविषेभीघटैहै ॥ यातैं भेदरहितज्ञान सुखरूपहै ॥ शंका ॥ श्रुतिनैंकथनकऱ्या जोभेदशून्यत्वरूपसुखकालक्षण ॥ सोलक्षण सुखविषे कहाँघटैहै ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे भेददर्शनकाअभावहोवैहै ॥ याकारणतैं यहजीव सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे दुःखकूंअनुभवकरतेनहीं ॥ किंतु सुखकूंहीं तहाँ अनुभवकरतेहैं ॥ शंका ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे विद्यमानजोसुखहै ॥ ताकेविषे भेदशून्यत्वरूपसुखकालक्षण यद्यपि संभवैहै ॥ तथापि सोसुख स्वप्रकाशज्ञानस्वरूपहै याअर्थविषे कौनप्रमाणहै ॥ समाधान ॥

प्रकाशज्ञानोंकेभेदकूं विषयकरीताहै॥यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभी संभवैनहीं॥
न्नहै ॥ याप्रकारकाज्ञान घटपटकूं तथातिनोंकेभेदकूं विषयकरैहै॥याकारणतैं घटपट परप्रव
है याप्रकारकेज्ञानतैंभिन्नहै ॥ याप्रकारकाज्ञान तिनज्ञानोंकूं तथातिनोंकेभेदकूं विषयकरैहै
शहोणेचाहिये॥ किंवा ॥ स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद किसीज्ञानकरिके सिद्धनहींहै यहदूसरापक्ष
तैं जैसे मनुष्यका शृंग तथावंध्याकापुत्र किसीप्रमाणजन्यज्ञानकाविषयनहींहै ॥ याकारण
अविषयहोणेतैं स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेदभी अत्यंतअसत्यहोवैगा ॥ और प्रमाणजन्यज्ञानकाअ
तौ प्रमाणजन्यज्ञानकाअविषय जोमनुष्यकाशृंगहै तथावंध्यापुत्रहै ॥ सोभी सत्यहोणाचाहि
सराज्ञानहै ॥ सो परप्रकाशहै अथवा स्वप्रकाशहै ॥ तहाँ जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरे सं
ग्रहणकऱ्याहै ॥ सोज्ञान परप्रकाशहै यातैं ताज्ञानका किसीदूसरेज्ञानकरिके प्रकाशहोवै
तीसरेका चतुर्थज्ञानकरिके प्रकाशहोवैगा ॥ याप्रकार ज्ञानोंकीधारामानणेविषे अनवस्थ
करणेहारा सोदूसराज्ञान स्वप्रकाशहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभी संभवैनह
भावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता पूर्वकहिआयेहैं ॥ यातैं जोस्वप्रकाशज्ञान स्वप्रकाशज्ञा
दकेप्रतियोगीअनुयोगीरूप स्वप्रकाशज्ञानोंकूंभी अवश्यग्रहणकरैगा ॥ सो यहवार्त्ता संभ
काशकता समानहै ॥ यातैं सूर्य चंद्रमाकूं प्रकाशनहींकरता ॥ और चंद्रमा सूर्यकूं प्रका
स्वप्रकाशरूपहै ॥ और ता भेदकूंग्रहणकरणेहाराज्ञानभी स्वप्रकाशरूपहै ॥ यातैं
करिके ग्रहणसंभवैनहीं ॥ और जोप्रकाशरूपज्ञानकाभी दूसरेप्रकाशरूपज्ञानकरिके प्रका

करिकै ताभेदकीसिद्धिहोवैहै ॥ तहाँ ताभेदकरिकै ताभेदकीसिद्धिहोवैहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे कोईमूढपुरुष याप्रकारकावचनकहै ॥ मेरेमुखविषेजिह्वानहींहै ॥ सोयहताकावचन व्याघातदोषवालाहै ॥ काहेतैं जिह्वातैंविना याप्रकार कावचन कह्याजावैनहीं ॥ तैसेजडभेद आपणीसिद्धिकरैहै याप्रकारका वादीकावचनभी व्याघातदोष वालाहै ॥ काहेतैं जडपदार्थकरिकै आपणीसिद्धि तथाअन्यपदार्थकीसिद्धि कहाँदेखीतीनहीं ॥ और ताभेदकाआश्रयजोज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकै स्वनिष्ठभेदकीसिद्धिहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं अभावके प्रतियोगीअनुयोगीकेज्ञानतैंविना अभावकाज्ञानहोवै नहीं ॥ जैसे घटके अभाववालाभूतलहै ॥ याप्रतीतिविषे घटाभावकाप्रतियोगी घटहै ॥ और अनुयोगीभूतलहै ॥ तहाँ घटरूपप्रतियोगी केज्ञानतैंविना तथा भूतलरूपअनुयोगीकेज्ञानतैंविना घटाभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसे ज्ञानोंकाजोपरस्परभेदहै सोभी अभावरूपहै ॥ यातैं ताभेदका प्रतियोगीरूपजोज्ञानहै ॥ तथा अनुयोगीरूपजोज्ञानहै ॥ तिनोंकेज्ञानतैंविना ताभेदकाज्ञान होवैनहीं ॥ और सोप्रति योगीअनुयोगीरूपज्ञान स्वप्रकाशहै ॥ यातैं तिनज्ञानोंकूं विषयकरणेहाराज्ञान संभवैनहीं ॥ और जोतिनज्ञानोंकूं विषयकरणेहारा कोई ज्ञान अंगीकारकरोगे ॥ तो घटादिकोंकीन्याई तिनज्ञानोंविषे स्वप्रकाशता नहींरहेगी ॥ किंतु तेज्ञान परप्रकाशहोवैंगे ॥ किंवा ॥ स्वप्रका शज्ञानोंविषेस्थितजोभेदहै ॥ सोभेद किसीअन्यज्ञानकरिकैसिद्धहै यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ सो स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद तुमनैं किसीअन्यज्ञानकरिकैग्रहणकरीताहै ॥ अथवा नहींग्रहणकरीताहै ॥ तहाँ जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरै ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ भेदहै याप्रकारकेज्ञाननैं ताभेदकूंविषयकरीताहै ॥ अथवा इनज्ञानोंकाभेदहै याप्रकारकेज्ञाननैं ताभेदकूंविषयक रीताहै ॥ तहाँ प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं भेदहै याप्रकारकाज्ञान भेदमात्रकूंविषयकरैहै ॥ ज्ञानोंकेभेदकूं विषयकरैनहीं ॥ यातैं भेदहै याप्रकारकेज्ञानकरिकै स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे भेदहै याप्रकारकेज्ञानकरिकै आकाशका आकाशतैंभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे भेदहै याप्रकारकेज्ञानकरिकै स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ और इनज्ञानोंकाभे

यहआत्मा मनकरिकेजाणैहै ॥ तैसे मनकूं तथामनकीवृत्तियोंकूं यहआत्मा अन्यकिसीसाधनकरिके प्रकाशकरैनहीं ॥ किंतु आपणेस्वप्र काशरूपकरिके यहआत्मा मनकूंप्रकाशैहै ॥ और हेजनक ॥ आत्माकेआश्रितरहणेहारा तथा आत्माकूंविषयकरणेहारा जोअव्याकृतरू पअज्ञानहै सोई मनकाकारणहै ॥ ताकारणअज्ञानकूंभी जभी यहस्वप्रकाशआत्माहींप्रकाशकरैहै ॥ तभी ताअज्ञानकेकार्यमनकूं यह आत्मा प्रकाशकरैहै याकेविषे क्याकहणाहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे यहस्वयंज्योतिआत्मा अज्ञानसहितमनकूं प्रकाशकरैहै ॥ तैसे नेत्रादि कइंद्रिय तारागण मणियां रत्न सूर्य चंद्रमा अग्नि इनोंतैंआदिलेके जितनेकीलोकविषे प्रकाशकपदार्थ हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं यहस्वप्रकाश आत्माहीं प्रकाशकरैहै ॥ चैतन्यआत्मातैंविना जड़पदार्थोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ इतनेंग्रंथकरिके आत्माविषे श्रुतिप्रमाणकरिकेसिद्धजो सर्व जगत्कीप्रकाशकताहै सोनिरूपणकरी ॥ अब युक्तियोंकरिके आत्माविषे सर्वजगत्कीप्रकाशकता निरूपणकरैं हैं ॥ यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञानोंके जितनेक ज्ञानतैंभिन्ननेत्रादिककरण तथाघटपटादिकविषयरूपकारणहैं॥तिनकारणोंविषे सर्वशास्त्रवाले जडताअंगीकार करैं हैं ॥ एकबृहस्पतिकेशिष्य चार्वाकनास्तिक ज्ञानकेकारणोंविषे जडताअंगीकारकरतेनहीं ॥ काहेतें चार्वाकनास्तिककेमतविषे शरी राकारपरिणामकूंप्राप्तभये जे पृथिवी जल तेज वायु यहचारिभूतहैं तिनोंविषेहीं चैतन्यताहै ॥ सोतिनचार्वाकोंकेमतकूं करेहुएकर्मोंकाभो गतैंविनानाश तथानकरेहुएकर्मोंकेफलकाभोग याप्रकारके कृतनाश अकृताभ्यागम रूपदोषकरिके बालकभी खंडनकरिसकै हैं ॥ याका रणतैं तिनोंकेमतका यहांखंडनकरतेनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञानोंतैं भिन्न जितनेकपदार्थ हैं तेसं पूर्ण जडहैं ॥ तेज्ञानहीं प्रकाशरूपहैं ॥ अब याअर्थविषे यहविचारकऱ्याचाहिये यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञान चैतन्यरूपहोणेतैं स्वप्र काशहैं ॥ अथवा अंतःकरणकीवृत्तिरूपहोणेतैं परप्रकाशहैं ॥ अब प्रथमस्वप्रकाशपक्षविषे तिनज्ञानोंकूं आत्मरूपतासिद्धकरणेवासतै तिन ज्ञानोंकेभेदकाखंडनकरैं हैं॥यहघटहै यहपटहै इत्यादिकजेस्वप्रकाशज्ञानहैं ॥ तिनज्ञानोंकाभेद किसकरिकेसिद्धहोवैहै ॥ ताभेदकरिकेहीं ताभेदकीसिद्धिहोवैहै ॥ अथवा ताभेदकाआश्रयजोज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिके ताभेदकीसिद्धिहोवैहै ॥ अथवा किसीअन्यज्ञान

जगत्भावकीप्राप्ति यद्यपिसंभवेहै ॥ तथापि अज्ञानकेवशतैं आत्माविषे जन्ममरण संभवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे इदानींकाल विषे जन्ममरणतैंरहितयहपुरुष आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैंस्वप्नअवस्थाविषे जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी वास्तवतैं जन्ममरणतैंरहित यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वरूपकेअज्ञानकरिकै जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं आपणेस्वरूपका अज्ञानहीं जन्ममरणकाकारणहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे घटादिकजडपदार्थोंकाद्रष्टा जोपुरुषहै ॥ ताद्रष्टापुरुषकूं घटादिकदृश्यपदार्थ प्रकाशकरिसकैंनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकदृश्यपदार्थोंकेआकारकूंप्राप्तहुआ जोमनहै ॥ सोमन स्वप्नद्रष्टासाक्षीआत्माकूं प्रकाशकरिसकैनहीं॥किंतु साक्षीआत्मा तामनकाप्रकाशकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे श्रुतिने आत्माकूं ज्योतिकह्याहै ॥ तैसे मनकूंभी ज्योतिकह्याहै ॥ यातैं आत्माकीन्याईं मनभी स्वप्रकाशहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ मन आत्माका प्रकाशकरैहै यातैं ज्योतिहै ॥ याअभिप्रायकरिकै श्रुतिने मनकूं ज्योतिनहींकह्या ॥ किंतु आत्मातैंभिन्न जोघटपटादिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकूं मनकीवृत्तिद्वारा आत्मा प्रकाशकरैहै ॥ यातैं घटादिकबाह्यपदार्थोंकेप्रकाशविषेमन आत्माकासहकारीहै ॥ याअभि प्रायकरिकै श्रुतिने मनकूं ज्योतिकह्याहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे घटपटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषे सहकारीजोचक्षुइंद्रियहै ताकूं ज्योति कहै हैं ॥ तैसे घटादिकपदार्थोकारवृत्तियोंका उपादानकारणजोमनहै ताकूं श्रुति ज्योतिकहै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे यहआत्मा बाह्य स्थूलसूक्ष्मपदार्थोंकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकेजाणैहै ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंकेअविषय जेपरोक्षपदार्थ हैं ॥ तिनोंकूं तथानेत्रादिकइंद्रियोंकूं

तिनआपणेविक्रियावोंकूं समीपवर्त्तिस्वप्रकाशआत्माविषेदेखेहै ॥ परंतु वास्तवतें तेविक्रया मनविषेहीहै आत्माविषेनहीं ॥ भ्रांतिकरिकेमन कीविक्रिया आत्माविषेप्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जडमनविषे नानाप्रकारकेविक्रियावोंकीकारणता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेज नक ॥ जैसे अम्लरसवाले जेनिंबुआदिकपदार्थहैं ॥ ते समीपदेखेहुए पुरुषोंकेमुखविषे जलकीउत्पत्तिकरैहैं ॥ तथा पुरुषोंकेमनकूंक्षोभकरै हैं ॥ तैसे स्वप्रकाशचैतन्यआत्माभी आपणीसमीपतामात्रकरिकै जडमनकूं नानाप्रकारकीविक्रियाविषे प्रवृत्तकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ असंगआत्माविषे मनकेक्षोभकीकारणता किसप्रकारसंभवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ असंगआत्माविषे यद्यपि मनकेक्षोभकीकारणतासंभ वैनहीं ॥ तथापि अचिंत्यशक्तिअज्ञानकरिकै असंगआत्माविषेभी मनकेक्षोभकीकारणता संभवैहै ॥ और हेजनक जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा जीवोंकेमनोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे जिसमनकरिकैविशिष्टहुआ यहआत्मा स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसमन कूंभी सोआत्माहींउत्पन्नकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ स्वप्नअवस्था विषे जिसमनकरिकै आत्मा अनेकमनोंकीउत्पत्तिकरैहै ॥ तिस प्रधानमनकीभीकिसीअन्यमनकरिकै उत्पत्ति अंगीकारकरणीहोवैगी ॥ याप्रकारअनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी॥समाधान हेजनक ॥ मनक रिकैजोमनकीउत्पत्ति हम अंगीकारकरैं ॥ तोअनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवै ॥ परंतु मनकरिकै मनकीउत्पत्ति हम अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु जैसे लोकविषे बीजोंकूंनष्टहुआदेखिकरिकै पृथुराजा पृथ्वीकूंप्रेरणाकरताभया ॥ तापृथुराजाकीप्रेरणाकरिकै सोपृथ्वी बीजोंकूंउत्पन्नकर तीभई ॥ तहां बीजोंकेप्रति बीजोंकूंकारणथानहीं ॥ किंतु जिसपृथ्वीनैं बीजोंकूंआपणेविषे लयकऱ्याथा ॥ तिसपृथ्वीकूंहीं बीजोंकेप्रति कारणताहै ॥ तैसे मनकीउत्पत्तिविषे मनकूंकारणतानहीं ॥ किंतु मूलाज्ञानकरिकै विशिष्टआत्माहीं मनकाकारणहै ॥ और सोमू लाज्ञान अनादिहै ॥ यातैं ताकीउत्पत्तिविषे अन्यअज्ञानकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे मेघविद्युतादिकोंतैंरहित अत्यंतनिर्मलजोआकाशहै ॥ सो आपणीअचिंत्यशक्तिकरिकै मेघविद्युतादिकोंके उत्पत्ति स्थिति लयका कारणहोवैहै ॥ मेघा दिकोंकरिकैविशिष्टहुआआकाश मेघादिकोंकाकारणहोवैनहीं ॥ तैसे अज्ञानकरिकैविशिष्टहुआ यहआत्मा मनादिकजगतके

होवैहै॥और हेजनक जैसे दशरज्जुवोंकरिकैबांध्याहुआ जोअत्यंतचंचलमर्कटहै ॥ सो दशोंदिशावोंविषे भ्रमणकरताहुआ परमदुःखकूंप्राप्त होवैहै॥तैसे वाक्आदिकदशइंद्रियरूपरज्जुकरिके बांध्याहुआयहमनरूपीमर्कटभी विषयोंकीतरफधावताहुआ परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥और हेजनक ॥ जैसे अत्यंतदूरआकाशविषेस्थित जोकपोतपक्षीहै ॥ ताकूं तहाँ किंचित्मात्रभीभयनहीं ॥ परंतु सोकपोत जभी पृथिवीविषेक पोतनीस्त्रीकूंदेखेहै ॥ तभी रागकरिकेअंधहुआसोकपोत ताआकाशकूंछोडिके तत्कालभूमिविषेआवैहै ॥ ताभूमिविषे सोकपोत नानाप्रका रकेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे चिदाकाशविषेस्थितहुआयहमन किंचित्मात्रभी दुःखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ और जभीसोमन बाह्यशब्दस्पर्शा दिकविषयोंकूंदेखिकरिके रागकरिकेअंधहोवैहै ॥ और ताचिदाकाशकापरित्यागकरिके तत्कालबाह्यविषयकीतरफआवैहै ॥ तभी सोमन अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे रज्जुकरिकेबांध्याहुआपशु पराधीनताकरिके उत्तरउत्तर दुःखकेदेणेहारेस्थानोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे पुण्यपापरूपीरज्जुकरिकेबांध्याहुआ यहसकाममनभी उत्तरउत्तर दुःखकीदेणेहारी विषयरूपीभूमिकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे मृत्यु सर्वलोकविषेविचरैहै ॥ परंतु ताकेविचरणेकाकारण कोईजाणिसकतानहीं ॥ तैसे मनभी सर्वदाविषयोंकीतरफजावै है ॥ परंतु ताकेजाणेकाकारण कोईजाणिसकतानहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे मूढबालक व्यर्थहीं नानाप्रकारकीचेष्टाकरैहै ॥ तैसे यहमनभी व्यर्थहीं नानाप्रकारकीचेष्टाकरैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे पादजिसकेबांधेहुएहैं और रथविषेजिसकाअत्यंतरागहै ऐसाजोकोई रथवाहीपुरु षहै ताकेरथविषे जीर्णरज्जुकरिकेबांधेहुए अत्यंतदुष्टअश्वजुडेहोवैं ॥ ऐसारथवाहीपुरुष अश्वोंसहित गर्त्तविषेपडिकेनष्टहोवैहै ॥ तैसे मनरू पीशिथिलरज्जुकरिकेबांधेहुए जेदशइंद्रियरूपीदुष्टअश्वहैं ॥ तिनोंकरिकेयुक्त जोयहसंघातरूपीरथहै ॥ तारथविषेस्थितहुआ यहजीवात्मा पुरुष वारंवार संसाररूपीगर्त्तविषेप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे मूढबालक जभी प्रथम आपणेमुखविषे नानाप्रकारकीविक्रियाकरैहै ॥ तभीहीं सन्मुखशुद्धदर्पणविषे नानाप्रकारकी विक्रियादेखैहै ॥ परंतु सोनानाप्रकारकीविक्रिया वास्तवतैंदर्पणविषेनहीं ॥ किंतु बालककेमु खविषेहीहै ॥ भ्रांतिकरिके ताबालककूं दर्पणविषे विक्रियाप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे यहमनभी संसारसंबंधी अनेकप्रकारकीविक्रियाकरैहै ॥ और

भ्राता इत्यादिकअनेकप्रकारकेपदार्थ विद्यमानहैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी पिता माता पुत्र भ्राता इत्यादिकअनेकप्रकारकेपदार्थ विद्यमानहैं ॥ यातैं जाग्रत्को तथास्वप्नकी किसीप्रकारतैं विलक्षणता संभवैनहीं ॥ यातैं हेजनक जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे जितनेकस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंका मनहींकारणहै ॥ और यहजीव ईश्वरतैंभिन्नहै ॥ और ईश्वर जीवतैंभिन्नहै ॥ याप्रकारका जीवईश्वरकाभेदभी इसमननेहींकल्पनाकऱ्याहै॥जिसजीवईश्वरकेभेदकूंनिश्चयकरिकै अज्ञानीजीव वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै॥ तहाँश्रुति ॥ मृत्योःसमृत्युमाप्नोति यइहनानेवपश्यति ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष अद्वितीयब्रह्मविषे नानाभावकूंदेखताहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष अनंतवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ और हेजनक ॥ यहमन केवलजगत्काहीकारणनहीं ॥ किंतु जीवोंकेबंधका तथामोक्षकाभी यह मनहींकारणहै ॥ तहाँ आत्माकूंआच्छादनकरणेहारा जोआवरणशक्तिरूपअज्ञानहै ॥ ताकूं आपणेविषेमानताहुआ अशुद्धमन जीवोंकेबंधकाकारणहै ॥ और भेदकादर्शनरूपजोविक्षेपशक्तिहै ताविक्षेपशक्तिरूपअज्ञानकूं आपणेविषेमानताहुआ यहमन अध्यात्मअधिदैव अधिभूत यातीनप्रकारकेदुःखका कारणहोवैहै॥और श्रुतिनैंकथनकऱ्याजोआत्माका स्वप्रकाशआनंदस्वरूप ताकूं गुरुशास्त्रकेप्रसादतैं जाणताहुआ शुद्धमन जीवोंकेमोक्षका कारणहोवैहै॥काहेतैं मनका तथा मनकरिकैरचितप्रपंचका साक्षीरूपजोशुद्धआत्माहै॥ताकेविषे बंधमोक्ष भेददर्शन यहतीनोंसंभवैनहीं॥किंतु बंधमोक्षादिक संपूर्णजगत् मननैंउत्पन्नकऱ्याहै॥यातैं मनविषेही बंधमोक्षादिकहैं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं॥हेजनक॥जैसे लोकविषे अत्यंतचंचलजोमर्कटहै॥सो नानाप्रकारकीचेष्टाकरिकै आपेही आपणेकूं मरणांतदुःखकीप्राप्तिकरैहै तैसे अत्यंतचंचल यहमनभी विषयवासनाकरिकैआपेहीआपणेकूं संसारदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और हेजनक॥जैसे अगाधजलविषे स्थितजो मत्स्यहै ॥ ताकूं किंचित्मात्रभी तहाँभयनहीं ॥ परंतु सोमत्स्य जभी कुंढीमिलितमांसकेभक्षणकरणेवासते ताअगाधजलकूंछोडिकै बाहर आवैहै॥तभी सोमत्स्यप्राणांतदुःखकूं प्राप्तहोवैहै॥तैसे स्वप्रकाशआनंदस्वरूपआत्माविषे स्थितहुआयहमन किंचित्मात्रभी दुःखकूं प्राप्त होवै नहीं और जभी सोमन विषयभोगकेवासते आनंदस्वरूपआत्माकूंछोडिकरिकै बाहरआवैहै॥तभी सोमन नानाप्रकारकेदुःखोंकूं प्राप्त

कह्या ॥ यहाँ स्थिरशब्दका क्याअर्थहै॥तहां जोपदार्थ कदाचित्भी अन्यथाभावकूं नहींप्राप्तहोवैहै सोपदार्थ स्थिरशब्दकाअर्थ है॥अथवा जोपदार्थ नियमकरिकै तिसीकार्यकीउत्पत्तिकरैहै सोपदार्थ स्थिरशब्दकाअर्थहै॥ तहां प्रथमपक्षतौसंभवैनहीं॥काहेतैं आत्मातैंभिन्न जितने कोजडपदार्थहैं॥ते क्षणक्षणविषे अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥यातैं अन्यथाभावतैंरहिततारूप स्थिरता जाग्रत्पदार्थोंविषेसंभवैनहीं॥तैसे दूसरा पक्षभीसंभवैनहीं॥काहेतैं जोपदार्थ स्वप्नविषे जीवकूंसुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोईहींपदार्थ जाग्रत्अवस्थाविषे तिसीजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै॥ और जोपदार्थ स्वप्नअवस्थाविषे याजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोईहींपदार्थ जाग्रत्अवस्थाविषे ताजीवकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै॥ इसीप्रकार जाग्रत्अवस्थाविषे जोपदार्थजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै॥सोईहींपदार्थ स्वप्नअवस्थाविषे ताजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै॥और जोपदार्थ जाग्रत् अवस्थाविषे याजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै॥सोईहीपदार्थ स्वप्नअवस्थाविषे ताजीवकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं कोईभीपदार्थ नियमकरिकै किसीकार्यकीउत्पत्तिकरैनहीं॥याकहणेकरिकै जाग्रत्अवस्थामें स्वप्नकेपदार्थोंविषे विपरीतकार्यकीकारणता दिखाई ॥तथा स्वप्नअवस्थामें जाग्रत्केपदार्थोंविषे विपरीतकार्यकीकारणता दिखाई अब जाग्रत्अवस्थामेंहीं जाग्रत्केपदार्थोंविषे विपरीतकार्यकीकारणता निरूपणकरैहैं॥ हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे जोप्रियपदार्थ सुखकाकारणहोवैहै॥सोईहींप्रियपदार्थ वियोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी जेस्त्री पुत्र धनादिकपदार्थ जीवोंकेसुखकेकारणहैं ॥ तेहीं स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ वियोगकालविषे जीवोंके दुःखके कारणहोवैहैं ॥ नियमकरिकै किसीभीपदार्थविषे सुखकीकारणता तथादुःखकीकारणता हैनहीं ॥ यातैं स्वप्नकेपदार्थोंतैं जाग्रत्केपदार्थोंविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहीं ॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ स्वप्नपदार्थोंकेजेकारणहैं॥तिनोंतैं जाग्रत्पदार्थोंकेकारण विलक्षणहैं॥ यातैं जाग्रत्पदार्थोंविषे स्वप्नकेपदार्थोंकीतुल्यता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे जीवोंकेस्थूलशरीर शुक्रशोणिततैं उत्पन्नहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी जीवोंकेस्थूलशरीर शुक्रशोणिततैं उत्पन्नहुए प्रतीतहोवैं हैं ॥ और जैसे स्वप्नअवस्थाकेशुक्रशोणित असत्यहैं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाकेशुक्रशोणितभी असत्यही हैं ॥ और जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे पिता माता पुत्र

है ॥ काष्ठोंतेंविना सोअग्नि शीतकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यहमनविशिष्टआत्मा देशकालादिकलौकिकसाधनोंकूं आश्रयणकरिकेहीं स्थूलपदार्थोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ अब स्वप्नकेदृष्टांतकरिके जाग्रत्विषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासते प्रथम जाग्रत्स्वप्नकी समानताकूं निरूपणकरैहै ॥ हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहमनहीं स्थूलसूक्ष्मजगत्भावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतें संपूर्णस्वप्नके पदार्थ मनोमात्रहैं ॥ तैसे जाग्रत् अवस्थाविषेभी यहमनहीं सर्वजगत्भावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातें जाग्रत्केपदार्थभी मनोमात्रहैं ॥ और जैसे स्वप्नअवस्थाविषे मनके निरोधहुए द्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी मनकेनिरोधहुए द्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैनहीं ॥ और जैसे स्वप्नअवस्थाविषे मनहीं शत्रुकूं तथामित्रकूं तथाउदासीनपुरुषकूं उत्पन्नकरिके शत्रुविषे द्वेषकरैहै ॥ और मित्रविषे रागकरैहै ॥ और उदासीनपुरुषविषे उपेक्षाबुद्धिकरैहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी यहमनहीं शत्रुकूं तथामित्रकूं तथाउदासीनपुरुषकूं उत्पन्नकरिके शत्रुविषे द्वेषकरैहै ॥ और मित्रविषे रागकरैहै ॥ और उदासीनपुरुषविषे उपेक्षाबुद्धिकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे बहुतकालकरिके तथाबहुतदेशकरिके तथाकाष्ठादिक नानाप्रकारकीसामग्रीकरिके रथादिकपदार्थोंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ और स्वप्नविषे काष्ठादिकसामग्रीतेंविनाहीं रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातें स्वप्नकेपदार्थोंकीन्याई जाग्रत्केपदार्थ मिथ्यानहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ रथादिककार्योंकूं आपणीउत्पत्तिविषे देश काल काष्ठादिक साधनमात्रकीअपेक्षाहै ॥ सत्यसाधनोंकीअपेक्षाहैनहीं ॥ यातें जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे कल्पित देशकालादिकसाधनोंकरिके रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी कल्पित देशकालादिकसाधनोंकरिके रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्तिहोवैहै और जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे जीवोंकूं केईपदार्थ सुखकेकारण प्रतीतहोवैहैं॥और केईपदार्थ दुःखकेकारण प्रतीतहोवैहैं॥तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी जीवोंकूंकेईपदार्थ सुखकेकारण प्रतीतहोवैहैं॥और केईपदार्थ दुःखकेकारण प्रतीतहोवैहैं यातें जाग्रत्केपदार्थ तथास्वप्नकेपदार्थ दोनोंसमानहैं॥शंका॥हेभगवन्॥स्वप्नकेपदार्थ अल्पकालपर्यंतरहैहैं॥और जाग्रत्केपदार्थ बहुतकालपर्यंत स्थिररहैहैं ॥ यातें स्वप्नकेपदार्थोंसें जाग्रत्केपदार्थोंविषे विशेषताहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जाग्रत्केपदार्थ स्थिरहैं यहजोतुमनें

कार्यकूं करैनहीं ॥ और भस्मकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोईअग्नि दाहरूपकार्यकूं तथा प्रकाशरूपकार्यकूं करैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे
तथा मरणअवस्थाविषे जीवोंकेमनरूपअग्नि भोगप्रदकर्मोंकेअभावरूपभस्मकरिकै आच्छादितरहैहैं ॥ याकारणतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे
तथा मरणअवस्थाविषे जीवोंकेमन जगत्कोउत्पत्ति स्थिति लय रूपकार्यकूंनहींकरैं हैं ॥ और जभी सुखदुःखरूपफलकेदेणेहारे पुण्यपा
परूपप्रारब्धकर्मका उद्भवहोवै है ॥ तभी सोईहीमन जाग्रत्स्वप्नविषे जगत्के उत्पत्ति स्थिति लय रूपकार्यकूंकरे है ॥ अब अधिष्ठान
विषे मनकालयरूपव्यतिरेक निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे सर्वकाष्ठोंकूंभस्मकरिकै जोअग्नि नाशकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोअग्नि पुनः कदा
चित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और दोकाष्ठोंके मथनकरिकै जोअग्निउत्पन्नहोवैहै ॥ सोभी दूसराहीअग्नि उत्पन्नहोवैहै ॥ पूर्वनष्टहुआअग्नि पुनः
उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे श्रवणादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जोशुद्धमनहै ॥ सो आत्मसाक्षात्काररूपीअग्निकरिकै अज्ञानकूं तथा अज्ञानकेकार्य
जगत्कूं दग्धकरैहै ॥ और सोमनभी अज्ञानकाकार्यहै ॥ यातैं अज्ञानरूपकारणकेदग्धहुएतैंअनंतर सोमनभी दग्धहोइजावैहै ॥ और
एकवार आत्मज्ञानकरिकैनाशकूंप्राप्तहुआमन पुनःकदाचित्उत्पन्नहोवैनहीं ॥ याकारणतैं अज्ञानीजीवोंकीन्याईं मुक्तपुरुषका वारंवार
जन्महोवैनहीं ॥ इतनैंकरिकै मनकेअभावहुए संसारका अभावरूप व्यतिरेकदिखाया ॥ अब मनकेविद्यमानहुएसंसारकीविद्यमानतारूप
अन्वय दिखावैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे ग्रीष्मऋतुकेरात्रिकालयविषे प्रकाशतैंरहित जोउष्णतारूपतेजहै ॥ सोतेज काष्ठादिकइंधनोंतैंविनाहीं
संतापरूपकार्यकूं उत्पन्नकरै है ॥ तैसे स्वप्न अवस्थाविषे मनविशिष्टआत्मादेशकालादिकलौकिकसामग्रीतैंविनाहीं सूक्ष्मरथादिकपदा
र्थोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे शीतकालविषे अग्निकाष्ठरूपीइंधनोंकूं आश्रयणकरिकैहीं जीवोंकेशीतकीनिवृत्तिरूपकार्यकूंकरै

त्माविषे तथा जीवोंके व्यष्टिमनविषे सूक्ष्मरूपता समानहीं है ॥ याकहणेकरिके समष्टिसूक्ष्मसूत्रात्माविषे तथाव्यष्टिसूक्ष्ममनविषे समान धर्मता दिखाई ॥ अब दोनोंकेअभेदकूं निरूपणकरें हैं ॥ हेजनक जैसे प्रज्वलितमहानअग्नि तथा विस्फुलिंग यहदोनों तेजरूपकरिके समानहीं हैं ॥ यातें वास्तवतें तिनोंकाभेदनहीं ॥ किंतु काष्ठरूपउपाधिकरिके तिनोंकाभेदहै ॥ तैसे समष्टिसूत्रात्माविषे तथाव्यष्टि मनविषे वास्तवतें भेदनहीं ॥ किंतु समष्टिस्थूलविराट्शरीररूपउपाधिकरिके सूत्रआत्माविषेभेदहै ॥ तथाव्यष्टिस्थूलशरीररूपउ पाधिकरिके मनविषेभेदहै ॥ इतनेंकरिके समष्टिव्यष्टिउपाधियोंका अभेददिखाया ॥ अब संपूर्णजडजगत्विषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासते प्रथम संपूर्णजडजगत्विषे चैतन्यआत्माकरिके प्रकाश्यता निरूपणकरें हैं ॥हेजनक॥ जैसे लोकविषे भित्ति नानाप्रकारकेचित्रोंकाआधार होवेहै तैसे समष्टिसूक्ष्मरूपसूत्रात्मा समष्टिस्थूलरूपचित्रोंकाआधारहै॥इसीप्रकार व्यष्टिसूक्ष्ममनरूपीभित्तिभी व्यष्टिस्थूलशरीररूपचित्रों काआधारहै ॥ और हेजनक जैसे दीपक प्रथम भित्तिकूंप्रकाशकरैहै ॥ ताभित्तिद्वारा तिनचित्रोंकूंप्रकाशकरैहै तैसे समष्टिअज्ञानउपहित ईश्वरसाक्षी प्रथम सूत्रात्मारूपभित्तिकूंहीं प्रकाशकरैहै ॥ तासूत्रआत्माद्वारा समष्टिस्थूलविराट्रूपचित्रोंकूंप्रकाशकरैहै इसीप्रकार व्यष्टि अज्ञानउपहितजीवसाक्षी प्रथम व्यष्टिसूक्ष्मशरीररूपभित्तिकूंप्रकाशकरैहै ॥ तासूक्ष्ममनद्वारा व्यष्टिस्थूलशरीररूपीचित्रोंकूं प्रकाश करे है॥और जैसे भित्ति तथाचित्र दीपककूंप्रकाशकरिसकेनहीं ॥ तैसे समष्टिव्यष्टिसूक्ष्मस्थूलरूपउपाधि साक्षीआत्माकूंप्रकाशकरिसके नहीं॥इतनेंकरिके तत्त्वमसि याश्रुतिविषे तत्पदकालक्ष्यार्थ जो ईश्वरसाक्षीहै तथात्वंपदकालक्ष्यार्थ जोजीवसाक्षीहै॥ तिनदोनोंके अभेदकी योग्यतादिखाई ॥ अब मनकेविद्यमानहुएआत्माविषे जगत्कीप्रतीति ॥ और मनकेलयहुए आत्माविषेजगत्कीअप्रतीति ॥ याप्रकारके अर्थकेबोधनकरणेवासते ॥ समष्टिविषेमनकालय ॥ तथाकारणअज्ञानविषे मनकालय॥तथा अधिष्ठानविषे मनकालय ॥ यहतीनप्रकारका मनकालयरूपव्यतिरेक निरूपणकरें हैं ॥ तहां प्रथम समष्टिविषे मनकालयरूपव्यतिरेक निरूपणकरें हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे काष्ठोंकेअभा वहुए अग्नि सामान्यतेजविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे जेअधिकारीपुरुष हिरण्यगर्भकीउपासनाकरिके अध्यात्मपरिच्छिन्नभावकीनिवृ

तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्माभी एकमनरूपीसाधनकरिकै सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे लोकविषे एकही आकाशविषे घटाकाश मठाकाशयाप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै॥परंतु सोभेद वास्तवतैंनहीं ॥किंतु घटरूपसूक्ष्मउपाधिकरिकै तथा मठरूप स्थूलउपाधिकरिकै सोभेद प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मतैं जोजीवोंकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ सोभेदभी वास्तवतैंनहीं ॥ किंतु स्थूलसूक्ष्म शरीररूपउपाधिकरिकै सोभेद प्रतीतहोवैहै ॥ और हेजनक॥जैसे एकहीआकाश घटरूपउपाधिविषे तथामठरूपउपाधिविषे एकरूपकरिकै विद्यमानहै ॥ आकाशविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहीं॥और घटाकाश मठाकाश इत्यादिकजोविलक्षणता प्रतीतहोवैहै॥सोविलक्षणता आकाशविषे अनुपपन्नहुई घटमठादिकउपाधियोंकूंहीं आश्रयणकरैहै तैसे ब्रह्मभी स्थूलसूक्ष्मशरीरोंविषे समानरूपकरिकेहीं स्थितहोवैहै ॥ ब्रह्मविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहीं॥और लोकोंकूं जोविलक्षणता प्रतीतहोवैहै सोविलक्षणता अद्वितीयब्रह्मविषे अनुपपन्नहुई परिशेषतैं स्थूलसूक्ष्मरूपउपाधियोंकूंहीं आश्रयणकरैहै ॥ याकहणेकरिकै आत्माका सर्वत्रअभेदनिरूपणकऱ्या॥ अब उपाधियोंकेअभेदकहणेवासतै प्रथम सूक्ष्मउपाधिके स्वरूपकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे समष्टिअज्ञानविशिष्टईश्वरका हिरण्यगर्भरूपसूत्रआत्मासूक्ष्मशरीरहै तैसे व्यष्टिअज्ञानविशिष्टजीवोंका मनहीं सूक्ष्मशरीरहै यहां मनशब्दकरिकै पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण मन बुद्धि यासत्तदशतत्वोंका ग्रहणकरणा ॥ और हेजनक ॥ जैसे समष्टिमाया विशिष्टईश्वर हिरण्यगर्भरूपसूत्रकरिकै स्थूलजगत्रूपपटकूंरचैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्था विषे यहजीवात्मा मनरूपसूत्रकरिकै जगत्रूपपटकूं रचैहै ॥ अब व्यष्टिसमष्टिकेअभेदकहणेवासतै प्रथम तिनोंकेसमानधर्मोंकूंदिखावैं हैं॥ हेजनक ॥ जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नितैं अनेकविस्फुलिंग उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तैसे सूत्रआत्मारूपहिरण्यगर्भतैं अनेकमन उत्पन्नहोवैं हैं ॥और जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नि दाहकरैहै तथाप्रकाशकरैहै ॥ तैसे अग्नितैंउत्पन्नहुएविस्फुलिंगभी दाहकरैं हैं तथाप्रकाशकरैं हैं ॥ इसीप्रकार जैसे हिरण्यगर्भरूपसूत्रात्मा जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे सर्वदेहधारीजीवोंकेमनभी जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करैं हैं ॥ और जैसे प्रज्वलितअग्निविषे तथा विस्फुलिंगोंविषे तेजरूपता तथारक्तरूपता समानहीं है तैसे समष्टिसूक्ष्मसूत्रआ

उत्पन्नकरैहै ॥ तथा ऊपरकेसप्तलोकोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा तिनचतुर्दशलोकोंके अधिपतियोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा इंद्र अग्नि यम रक्ष वरुण पवन धनद महेशान ब्रह्मा शेष यादशदिकपालोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा ब्रह्मा विष्णु शिव इत्यादिकजेपरमेश्वरकेलीलाविग्रहहैं तिनों कूंउत्पन्नकरैहै॥तथा नानाप्रकारके भूमिकेराजोंकूं उत्पन्नकरैहै॥इसतैंआदिलेके जितनाकोस्थूलसूक्ष्मजगत्है॥ तथा परोक्ष अपरोक्षरूपजग त्है॥तिससंपूर्णजगत्कूं स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा उत्पन्नकरैहै ॥और हेजनक॥यहजीव अल्पज्ञहै यातैं सर्वज्ञब्रह्मकेसाथ ता काअभेदसंभवैनहीं ॥ याप्रकारकीकुतर्ककरिकै दूषितहैचित्तजिनोंका ऐसेजे भेदवादीपुरुषहैं॥ते अहंब्रह्मास्मि ॥अर्थयह मैंब्रह्महूं याश्रुतिकूं अप्रमाणरूपमानैहैं ॥ तथापि स्वप्नअवस्थाविषे तिनभेदवादियोंकूं बलात्कारसैं ताश्रुतिकीप्रमाणता सिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं जैसे ब्रह्म आप णोमायाशक्तिकरिकै जगत्कीउत्पत्ति स्थिति लय करैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्माभी आपणीमायाशक्तिकरिकै जग त्को उत्पत्ति स्थिति लय करैहै ॥ यातैं जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकीकारणता जैसेब्रह्मविषेहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवात्मावि षेभी जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकीकारणताहै॥याकारणतैं यहजीवात्मा ब्रह्मतैंभिन्ननहीं किंतु अभिन्नहै ॥ और हेजनक ॥जैसे प्रज्वलित महान्अग्नितैं अग्निकेसमानरूपवाले विस्फुलिंग उत्पन्नहोवै हैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यास्वयंज्योतिआत्मातैं आपणेसमानरूपवाले अने कजीव उत्पन्नहोवैहैं ॥ और हेजनक॥जैसे मायाविशिष्टपरमेश्वर प्रथम समष्टिसूक्ष्महिरण्यगर्भरूपमनकूं उत्पन्नकरैहै ॥ कैसाहैसोहिरण्यगर्भ रूपमन उत्पन्नहोणेहारा स्थूल भूत भौतिक प्रपंचरूपगर्भकरिकैयुक्तहै ॥ऐसेहिरण्यगर्भरूपमनकरिकै सोपरमात्मादेव नामरूपात्मक संपूर्ण स्थूलसूक्ष्मजगत्कूं उत्पन्नकरैहै॥कैसाहैसोजगत् ॥ हिरण्यगर्भरूपमनकीउत्पत्तितैंपूर्व मायाविशिष्टपरमात्माविषे संस्काररूपकरिकेरहैहै ॥

जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थावोंविषे स्वयंप्रकाशआत्मा विद्यमानहै ॥ यातें जाग्रत्अवस्थाविषेभी आत्माकूं ज्योतिपणासंभवैहै ॥ जाग्रत्अवस्थाकूंछोडिकै श्रुतिनें स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूंज्योतिरूपकरिकै किसवासतैकथनकऱ्या ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यद्यपि जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थावोंविषे आत्माकास्वयंज्योतिपणा समानहींहै ॥ तथापि जाग्रत्अवस्थाविषे आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् यहचारिज्योतिभी विद्यमानहैं ॥ यातें जाग्रत्अवस्थाविषे आदित्यादिकज्योतियोंकरिकै गमनआगमनादिकव्यवहारहोवैहै ॥अथवा आत्मा रूपज्योतिकरिकै सोगमनआगमनादिकव्यवहारहोवैहै ॥ याप्रकारकानिर्णय अल्पबुद्धि पुरुषोंकूं होइसकैनहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे आदित्यादिकचारोंज्योतियोंकालय होवैहै ॥ एकआत्माहीरहैहै ॥ यातें अल्पबुद्धिपुरुषोंकूं स्वयंज्योतिरूपआत्माके निश्चयकरावणेवासतै श्रुतिनें स्वप्नअवस्थाविषेही आत्माकूं स्वयंज्योतिकह्याहै ॥ जभी यहअधिकारीपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूं स्वयंज्योतिरूपकरिकै निश्चयकरैगा ॥ तभी जाग्रत्अवस्थाविषेभी आत्माकेस्वयंज्योतिपणेकूं जाणिसकैगा ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै स्वप्नअवस्था विषे आत्माकूं स्वप्नपदार्थोंकाकर्तारूपकरिकै निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे सृष्टिकालविषे एकहीमायाविशिष्टईश्वर संपूर्णजगत्कूं उत्प न्नकरैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे एकहीस्वयंज्योतिआत्मा आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् याचारिज्योतिरूप प्रकाशकोंकूं तथा रथअश्वादि रूप प्रकाश्यपदार्थोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा आदित्यादिकप्रकाशोंकरिकैअनुगृहीत जेनेत्रादिककरणहैं तिनोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और तास्व प्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योति आत्मा आकाशादिकपंचभूतोंकूं तथाभौतिकजगत्कूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्तमान यातीन

विषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् यहचारिप्रकारकेज्योतिकहे ॥ तिनोंकूं सोजनकराजा अंगीकारकरताभया ॥ तिसतैंअ
नंतर सोजनकराजा पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिसैंपूछताभया॥राजाजनकउवाच॥हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आपनैं जाग्रत्अवस्थाविषे आदित्य चंद्रमा
अग्नि वाक् यहचारिप्रकारकेज्योतिकहे॥तिनचारोंका स्वप्नअवस्थाविषेलयहोवैहे ॥ तास्वप्नअवस्थाविषे यासूक्ष्मसंघातरूपपुरुषका कौनज्यो
तिहे॥जिसज्योतिकरिके स्वप्नअवस्थाविषेसर्वव्यवहार सिद्धहोवैं हैं॥हेयाज्ञवल्क्यमुनि जोआप यहकहो॥स्वप्नअवस्थाविषे यद्यपि आदित्या
दिकज्योतियोंकालयहोवैहे॥तथापि स्वप्नअवस्थाविषे मनकालयहोवैनहीं॥यातैं स्वप्नअवस्थाविषे यापुरुषका मनहीं ज्योतिहे ॥सोयहकहणा
संभवैनहीं ॥काहेतैं जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे नेत्रइंद्रियकेविद्यमानहुएभी आदित्यादिकज्योतियोंकेप्रकाशतैंविना सोनेत्रइंद्रिय किसीपदार्थका
प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ यातैं घटादिकपदार्थोंकेग्रहणविषे नेत्रइंद्रियकूं आदित्यादिकप्रकाशोंकीअपेक्षाहे ॥ तैसे घटादिकपदार्थों
केग्रहणविषे मनकूंभी नेत्रादिकइंद्रियोंकीअपेक्षाहे ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंतैं विना मन किसीपदार्थकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ और नेत्रा
दिकइंद्रिय स्वप्नविषेलयकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे मनकूं ज्योतिरूपता संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे मृत्तिका घटशरावा
दिककार्योंका उपादान कारणहोवै हे ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे मनहीं रथादिकपदार्थोंका तथारथादिआकार वृत्तिज्ञानोंका उपादानकारण
होवैहे ॥ याकारणतैं मनतैंभिन्नहींकोई स्वप्नकेपदार्थोंकाप्रकाशक चाहिये ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे अविद्याकूंहीं जोरथादिकपदार्थोंका
उपादानकारण अंगीकारकरिये ॥ और जाग्रत्केसंस्कारविशिष्टमनकूं करण अंगीकारकरिये ॥ तौभी जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे नेत्रादिक
करणोंकूं आदित्यादिकप्रकाशोंकी अपेक्षाहोवैहे ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे मनरूपकरणकूंभी किसी प्रकाशकी अपेक्षा अवश्यहोवैगी॥और
स्वप्नविषे आदित्यादिकज्योति तथानेत्रादिकइंद्रिय तौहैंनहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषेभी जाग्रत्अवस्थाकीन्याईं गमनआगमनादिक सर्व
व्यवहारहोवैहैं ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे विद्यमान्हुआभीमन जिसज्योतिकीसहायतातैंविना स्वप्नअवस्थाकेपदार्थोंकूंग्रहणकरतानहीं ॥
सो मनऊपर अनुग्रहकरणेहारा स्वप्नअवस्थाविषे कौनज्योतिहे ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक स्वप्नअवस्थाविषे यापुरुषका

होवैहै ॥ तभी यापुरुषका कौनज्योतिहै ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ अग्निकेअस्तहुएतैंअनंतर यापुरुषका वाकही ज्योतिहै ॥ अब आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् याचारोंविषे स्पष्टकरिकै ज्योतिरूपता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ आदित्य चंद्रमा अग्नि यातीनोंज्योतियोंविषे आदित्यरूपज्योतिकरिकै अथवा चंद्रमारूपज्योतिकरिकै अथवा अग्निरूपज्योतिकरिकै यहपुरुष सर्पकंटकादिकोंतैंरहित अनुकूलदेशकूं देखिकरिकै तादेशविषेस्थितिकरैहै ॥ तथा गृहविषे जावैहै ॥ तथा क्षेत्रादिकोंविषेजावैहै ॥ तहां क्षेत्रविषे जाइकै इसलोकके सुखकेसाधन जेकृषिआदिककर्महैं तिनोंकूं यहपुरुष करैहै ॥ और गृहविषेजाइकै यहपुरुष परलोकके सुखकेसाधनजे दानादिककर्महैं तिनोंकूं करैहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेव्यवहारोंकूं यहपुरुष आदित्यादिकज्योतियोंकेप्रकाशकरिकैहींकरैहै ॥ आदित्यादिकज्योतियोंकप्रकाशतैंविना अंधकारविषे किसीव्यवहारकोसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं आदित्यविषे तथाचंद्रमाविषे तथाअग्निविषे ज्योतिपणासंभवैहै ॥ अब वाक्‌विषे ज्योतिपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जिसस्थानविषे आदित्य चंद्रमा अग्नि यातीनोंज्योतियोंकाप्रकाश नहींहोवैहै ॥ तहां अत्यंतगाढअंधकार होवैहै ॥ जहां आपणाहस्तभी दिखाईनहींदेता ॥ ऐसेगाढअंधकारविषे आसनादिकसंपूर्णव्यवहार वाक्‌रूपज्योतिकरिकैहोवै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ अंधकारविषेस्थितहुआपुरुष अन्यकिसीपुरुषकूं जभी याप्रकारकावचनकहैहै ॥ यापूर्वदिशाविषे बहुतसमीचीनस्थानहै ॥ तहांआइकेतुम आसनकरो ॥ तभी सोपुरुष ताकीवाणीकूंश्रवणकरिकै तहां आसनादिकव्यवहारकरैहै ॥ यातैं जैसे आदित्य चंद्रमा अग्नि यहतीनों लोकोंकेगमनआगमनादिकव्यवहारोंकेसाधकहैं ॥ यातैं आदित्यादिकतीनों ज्योतिरूपहैं ॥ तैसे अंधकारविषे वाक्‌भी गमनआगमनादिरूपव्यवहारकासाधकहै ॥ यातैं वाक्‌भीज्योतिरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जाग्रत्अवस्था

याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिने जनकराजाकेताईं कामप्रश्नरूपवरदिया ॥ तभी सोजनकराजा बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और याप्रकार काविचार आपणेमनविषेकरिके निःशंकहोइके प्रश्नकरताभया ॥ अब ताजनकराजाकेविचारकूं निरूपणकरैं हैं ॥ यद्यपि यहयाज्ञवल्क्य मुनि क्षमावान्है ॥ यातैं चंदनकोन्याईं शीतलस्वभाववालाहै ॥ तथापि जैसे चंदनविषे अत्यंतमथनकरिके अग्निउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे मेरे वारंवार प्रश्नकरिके जोकदाचित याज्ञवल्क्यमुनिकूं क्रोधउत्पन्नहोवै तौ जैसे वारंवारप्रश्नकरणेतैं शाकल्यब्राह्मणीदुर्गतिभईथी ॥ तैसे वारं वारप्रश्नकरणेतैं मेरीभी दुर्गति होवैगी ॥ याप्रकारकीशंकाकरिकै मैं याज्ञवल्क्यमुनिसैं पूछतानहीं ॥ सोशंका अबीहमारेकूं हैनहीं ॥ काहे तैं हमनैं याज्ञवल्क्यमुनिसैं कामप्रश्नरूपवर लियाहै ॥ यातैं जोमैं पुनःपुनःतिसीप्रश्नकूंकरोंगा ॥ तथा असंगतपूछोंगा ॥ तौभी याज्ञवल्क्य मुनि हमारेऊपर क्रोधवान् नहींहोवैगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोजनकराजा आपणेमनविषे निःशंकहोइके प्रश्नकरता भया ॥ तहाँ प्रथम देहादिकसंघाततैंविलक्षणकरिकै तथास्वयंज्योतिरूपकरिकै त्वंपदार्थरूपआत्माकूं निरूपणकरैं हैं ॥ राजाजनक उवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ दिनविषेजाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहुआ जोस्थूलसूक्ष्मसंघातरूप यहपुरुषहै ॥ सोपुरुष किसज्योतिकरिकै भास्यमानहै ॥ तात्पर्ययह ॥ संघातकेअंतरवर्ति किसीज्योतिकरिकै भास्यमानहै ॥ अथवा संघाततैंभिन्नकिसीस्थानविषेवर्तमान ज्योतिकरिकै भास्यमानहै ॥ यह आप कृपाकरिकै हमारेप्रतिकहो ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे यापुरु षका आदित्यज्योतिहै ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जगत्काप्राणरूप जो आदित्यरूपज्योतिहै ॥ सो जभी अस्तभावकूं

कथनकऱ्या ॥ तभी सो याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेबुद्धिकीकुशलतादेखिके जनकराजाऊपर बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और जनकराजा केप्रति कहताभया॥हेजनक॥जोतुमारेकूंइच्छाहोवै॥ सो हमारेसैंवरमाँगो॥हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिने जनककेप्रतिकह्या ॥ तभी सोजनकराजा आपणेकूं कृतार्थमानताभया ॥ और याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्य मुनिसैं कामप्रश्नरूपवरकूंमाँगताभया ॥ अनेकप्रश्नोंकानाम कामप्रश्नहै ॥ अब जिसविचारकरिकै जनकराजानैं कामप्रश्नरूप वरकूंमाँग्याहै ताविचारकूं निरूपणकरैं हैं ॥ इसमहात्मायाज्ञवल्क्यमुनिने कृपाकरिके पूर्व हमारेताई आत्मज्ञानकाउपदेशकऱ्याथा ॥ ता याज्ञवल्क्यमुनिकेउपदेशकूं मैंमंदबुद्धिजनक विस्मरणकरताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं प्राप्तहुईचिंतामणिकूं मंदबुद्धिभाग्यहीनपुरुष परित्यागकरैहै ॥ तैसे मैंपापात्माजनक याज्ञवल्क्यमुनिकेउपदेशकापरित्यागकरताभया ॥ यातैं यहहमारा महान्अपराधहै ॥ ताअपराधकेनिवृत्तिकाउपाय दुर्लभहै ॥ परंतु पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ताअपराधकेनिवृत्तिकाउपाय यहकामप्रश्नरूपवर हमारेकूं प्राप्तभयाहै ॥ किंवा ॥ हस्ति अश्व सुवर्ण स्त्री पुत्र इत्यादिक जोमनुष्यलोककाधनहै सोभी हमारेकूं प्राप्तहै ॥ और कर्मउपासनारूप जोदेवलोककाधनहै सोभी हमारेकूंप्राप्तहै ॥ यातैं तिसमनुष्यधनविषे तथादेवधनविषे हमारीइच्छाहैनहीं ॥ एकआत्मज्ञानविषे हमारीइच्छाथी ॥ सो आत्मज्ञानभी पूर्व हमारेकूंप्राप्तभयाथा ॥ परंतु हमने आपणीमूर्खताकरिके ताआत्मज्ञानकूं विस्मरणकरिदिया ॥ और अभी हमारा कोईपूर्वलापुण्यकर्म उदयभयाहै ॥ जापुण्यकर्मकेप्रभावतैं यहयाज्ञवल्क्यमुनि हमारेऊपर प्रसन्नहोइके कामप्रश्नरूपवरकूंदेताभयाहै ॥

जनकराजाकेसाथ मैं संभाषणकरोंगा ॥ तांभी जिसनिर्गुणब्रह्मकाउपदेश मैं ने पूर्वे जनकके प्रतिकऱ्याथा ॥ तिसोनिर्गुणब्रह्मकाउपदेश मैं पुनःजनकके प्रतिकरोंगा ॥ परन्तु आपणेआगमनकाप्रयोजन जेयोगक्षेमादिक हैं ॥ तिनोंकूं जनककेप्रति नहींकहोंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषेकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकीसभाविषे जाताभया ॥ और आगेतैं सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकूं सभाविषे आयाहुआदेखिकै संपूर्णसभासहित अभ्युत्थान करताभया ॥ और अर्घ्यपाद्यादिकोंकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिका पूजनकरताभया ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिकूं सिंहासनऊपरबैठावताभया ॥ तिसतैंअनंतर राजाकीसभाविषेरहणेहारे जेबुद्धिमान्ब्राह्मणहैं तथाअन्य क्षत्रिय वैश्यहैं ॥ तेसंपूर्ण आपणीबुद्धिकेअनुसार नानाप्रकारकेविचित्रकथावोंकूं कहतेभये ॥ तिनोंविषे केईकविद्वान्ब्राह्मण वैश्वानरीविद्याकाप्रसंग चलावतेभये ॥ और तावैश्वानरीविद्याविषे जनकराजा अत्यंतकुशलथा ॥ याकारणतैं सभावासीसर्वब्राह्मणोंकेप्रति तथा अन्यक्षत्रियवैश्योंकेप्रति सोजनकराजा याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हे संपूर्णसभावासीजनो ॥ नानाप्रकारकेफलोंकरिकेयुक्त तथा ब्रह्मलोककीदेणेहारी जोवैश्वानरीविद्या है ॥ तिसकूं मैं भलीप्रकार जाणताहूं ॥ यातैं यासभाविषेस्थित जितनेक विद्वान् ब्राह्मणहैं तथाक्षत्रियवैश्यहैं ॥ तिनोंविषे जोपुरुष यावैश्वानरीविद्याविषे कुशलहोवै॥सो पुरुष हमारेप्रति निःशंकहोइकेप्रश्नकरे हम ताकाउत्तरदेवैंगे॥अथवा॥हम तिसपुरुषकेप्रति प्रश्नकरतेहैं ॥ सो पुरुष हमारे प्रश्नकाउत्तरदेवै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जबी जनकराजानैं सर्वविद्वानोंकेप्रतिकह्या ॥ तबी तेसभावासीविद्वान्ब्राह्मण तथाक्षत्रियवैश्य तावैश्वानरीविद्याविषे राजाजनककेप्रति प्रश्नकरणेमैं तथाराजाकेप्रश्नकाउत्तरदेणेमैं समर्थ नहींहोतेभये

तिस आपकेताईं हमारावारंवार नमस्कारहै॥कैसेहोआप॥सर्वमुनियोंविषेश्रेष्ठहो॥और वेदकेमंत्रोंकूं प्रगटकरणेहारेहो॥और साक्षात्सूर्य भगवान्केशिष्यहो ॥ औरसाक्षात्परमेश्वररूपहो ॥ ऐसेआपकेताईं हमारा वारंवार नमस्कारहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी आशीर्वाद तथा सर्वस्व तथा नमस्कार यहतीनप्रकारकीगुरुदक्षिणा जनकने याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति दई॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि बहुतप्रसन्नहोताभया॥ और जनकराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ विदेहदेशतैंआदिलेके तुम्हारे शरीरपर्यंत जितनेकराज्यादिकपदार्थहैं ॥ ते संपूर्ण हमारेहीहैं ॥ याकेविषे तुम किंचित्मात्रभीसंशयनहींकरो ॥ परंतु एकगुरुदक्षिणा हम तुम्हारेसे मागतेहैं ॥ सोगुरुदक्षिणा तुम हमारेप्रतिदेवो ॥ हेराजन् ॥ तुम्हाराचित्त अग्निआदिकोंकीउपासनाविषे अत्यंत तत्परहै ॥ तथा तुम्हाराचित्त राज्यकेव्यवहारविषे अत्यंत संलग्नहै ॥ याकारणतैं हमारेकूंमनविषे ऐसीसंभावनाहोवैहै ॥ जो हमने तुम्हारेताईं आत्माकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तिसउपदेशकूं तूं किसीकालपाइके विस्मरणकरिदेवैगा ॥ इतनेकरिके याज्ञवल्क्यमुनिने यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ अग्निआदिकोंकीउपासनाकरिके ब्रह्मलोककीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं ब्रह्मलोककीइच्छा आत्मज्ञानका भावीप्रतिबंधकहै ॥ और राज्यादिकपदार्थोंविषे आसक्ति आत्मज्ञानका वर्तमानप्रतिबंधकहै ॥ प्रतिबंधककेविद्यमानहुए कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं हेजनक ॥ जोहमनें तुम्हारेताईं आत्माकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तिसउपदेशकूं तुमने कदाचित् विस्मरण नहींकरणा ॥ याप्रकारकीगुरुदक्षिणा तुम हमारेप्रतिदेवो ॥ और हेजनक ॥ यहविदेहनामादेश तथा मिथिलापुरी तथासंपूर्णराज्यादिकपदार्थ हमारेहीहैं ॥ और तूंभी हमाराहीदासहै॥यातैं यहहमारे राज्यादिकपदार्थ तैंदासकेपासहीरहैं ॥ हेजनक ॥ अबी हम आपणेआश्रमकूंजातेहैं ॥ किसीकालकेपीछे पुनःतुम्हारेसमीप आवैंगे ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनें जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तबी जनकराजा तथा अन्यब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहसंपूर्ण याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति तहांरहणेवासते बहुतप्रकारकीप्रार्थनाकरतेभये ॥ परंतु सोयाज्ञवल्क्यमुनि एकांतकेसुखकीइच्छाकरताहुआ आपणे आश्रमकूं जाताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेगयेतैं अनंतर किंचित्कालपाइके सोजनकराजा राज्यकेकार्योंविषे चित्तकी

प्राप्तहोवैहै ॥ हेभगवन् तिससूर्यभगवान्केआप शिष्यहो ॥ और जैसे सूर्यभगवान् जीवोंकेअंधकारकीनिवृत्तिकरैहै ॥ तैसे आपभी आत्म ज्ञानकीप्राप्तिकरिके शिष्योंके अज्ञानरूपअंधकारकीनिवृत्ति करतेहो ॥ यातैं आपभी सूर्य भगवान्केसमानहो ॥ तथा सर्वकामना वोंतेंरहितहो ॥ यातैं हेभगवन् जैसेआपकागुरु सूर्यभगवान् दीपकमात्रकरिके जीवोंऊपरप्रसन्नहोवैहै ॥ तैसे आपभी हमारीस्वल्पद क्षिणाकरिके प्रसन्नहोवो ॥ अब आशीर्वाद सर्वस्व नमस्कार यहतीनप्रकारकीअल्पदक्षिणा निरूपणकरैहैं ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनें स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकापरित्यागकरिके तुरीयअभयब्रह्मकाउपदेशहमारेप्रतिकऱ्या ॥ ताआपकेउपदेशकरिके अभय ब्रह्मकीप्राप्ति हमारेकूंभईहै ॥ यातैं हेभगवन् जिसअभयब्रह्मकीप्राप्ति आपनें हमारेप्रतिकरीहै ॥ सोअभयब्रह्म आपकूंभीप्राप्तहोवै ॥ यह आशीर्वादरूपदक्षिणा मैं आपकेताईं देताहूं ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ कालभगवान्ने जीवरूपीपक्षियोंकेबंधनकरणेवासतै अज्ञानरूप सूत्रकरिके कामक्रोधादिरूपग्रंथियोंकरिकेयुक्त अहममअभिमानरूपीजाल रचैं हैं ॥ तिनजालरूपीपाशों तैं मैंदुःखीदीनकूं आपने कृपाक रिके मुक्तकऱ्याहै ॥ यातैं आपकेउपकारकेसमान मैं कौन दक्षिणादेवों ॥ अब सर्वस्वरूपदक्षिणाकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ सर्वलोकविषेप्रसिद्ध जोयहविदेहनामा हमारादेशहै ॥ तथा हमारेनिवासकास्थान जोयहमिथिलापुरीहै ॥ तथा हमारीजेस्त्रियां हैं तथा हमा रेजेपुत्रहैं ॥ इत्यादिकसर्वपदार्थोंसहित मैं जनक आपकादासहूं ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ श्रुतिविषे तथा स्मृतिविषे ब्रह्मविद्याकेउपदेश करणेहारेगुरुकूं पिताकह्याहै ॥ और शिष्यकूंपुत्रकह्याहै ॥ और जबपर्यंत पिताविद्यमानहोवैहै ॥ तबपर्यंत पुत्रका धनविषेअभिमानहोवै नहीं ॥ यातैं शास्त्रकीरीतिसें विचारकरिके देखियेतो ॥ यहराज्यादिकसर्वपदार्थ हमने आपकेताईंदियेहैं ॥ याप्रकारकेवचनकहणेविषेभी मैं समर्थनहींहूं ॥ किंतु मेरेसैं आदिलेके संपूर्णराज्यादिकपदार्थ आपकेहीहैं ॥ हेभगवन् ॥ आपकीआज्ञातैंविना जभी अन्नमात्रकेभोजन करणेविषेभी मैं स्वतंत्र नहींहूं ॥ तभीराज्यादिकसंपूर्णपदार्थ हमने आपकेताईं दानकरे हैं ॥ याप्रकारकाहमाराकहणा कैसेसंभवैगा ॥ यातैं यहराज्यादिकसर्वस्वआपकाहीहै ॥ अब नमस्काररूपदक्षिणाकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि॥ब्रह्मकाउपदेशकरणेहारे जोआपगुरुहो

ताई आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरीहै यातैं इसयाज्ञवल्क्यमुनिकेताईं मैं कौनपदार्थ गुरुदक्षिणादेवौं ॥ तहाँ जोमैं स्त्री पुत्र धन राज्य सेना सहित आपणाशरीर गुरुदक्षिणादेवौं ॥ तोभी सोदक्षिणा आत्मज्ञानकेसमानहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै शिष्यकूं आत्मज्ञान कीप्राप्तिकरणेहारा जोगुरुहै ॥ तिसगुरुकेताईं जोशिष्य समुद्रपर्यंत सुवर्णकरिकैपूर्ण संपूर्णपृथिवी गुरुदक्षिणादेवै ॥ तोभी सोदक्षिणा आत्मज्ञानकेसमानहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ अनेकजन्मोंविषे करेहैंब्रह्मचर्यादिकसाधन जिनोंनैं ऐसेजे देहधारीजीवहैं ॥ तिनोंकरिकैभी यहआ नंदस्वरूपआत्मा दुर्लभहै ॥ और तीनलोकोंविषे आत्माकेलाभतैंपरे दूसराकोईलाभहैनहीं ॥ तहाँश्रुति ॥ आत्मलाभान्नपरंविद्यते ॥ अर्थयह ॥ आनंदस्वरूपआत्माकेलाभतैंपरे कोईसंसारविषेलाभहैनहीं ॥ आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिही परमलाभहै ॥ १ ॥ ऐसे दुर्लभआ त्माकीप्राप्ति जिसगुरुनेकरीहै ॥ तिसगुरुकेताईं पुत्र स्त्री धन राज्य पृथिवी इत्यादिकअनात्मपदार्थोंकीदक्षिणादेणी हमारेकूं उचितनहीं ॥ किंवा ॥ स्वर्गविषेदेवतावोंकूंजीतिकरिकै तथा पातालविषे नागोंकूंजीतिकरिकैस्वर्ग भूमि पाताल यहतीनलोक जोमैं याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं गुरुदक्षिणादेवौं॥तोभी आत्मज्ञानकेसमान सोदक्षिणानहीं॥तात्पर्ययह॥याज्ञवल्क्यमुनिने हमारेकूंआत्माकीप्राप्तिकरीहै॥सोकैसाहैआत्मा॥ अपरिच्छिन्न है तथानित्यहै तथा आनंदस्वरूपहै तथा दुर्लभहै ॥ ऐसे आत्माकेसमान कोईसंसारविषेपदार्थहैनहीं ॥ किंतु पुत्र स्त्री धन राज्यतीनलोक इत्यादिकसंपूर्णपदार्थ परिच्छिन्नहैं तथाअनित्यहैं तथादुःखरूपहैं तथासुलभहैं ॥ यातैं आत्माकीप्राप्तिकेसमान यहदक्षिणा होवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं गुरुदक्षिणादेणेयोग्य कोईपदार्थ नहींदेखता भया ॥ तिसतैंअनंतर अत्यंतहर्षवान्होइकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेभग वन् ॥ आपकागुरुजो सूर्यभगवान्है ॥ सो सर्वदेहधारीजीवोंका बाहरविचरणेहाराप्राणहै ॥ तथा सर्वजीवोंकेनेत्रोंकूंनिरोधकरणेहारा जो अंधकारहै ॥ ताअंधकारकीनिवृत्तिकरिकै सर्वजीवोंकेव्यवहारकीसिद्धिकरैहै ॥ ऐसेसूर्यभगवान्केउपकारकेसमान कोईपदार्थकूं नहींदेखते हुए तेदेहधारीजीव तासूर्यभगवान्केताईं दीपकमात्र अर्पणकरैहैं ॥ और सोसूर्यभगवान् आपकागुरु तादीपकमात्रकरिकैही प्रसन्नताकूं

याकारणतैं भेदरहितअद्वितीयब्रह्मकूं श्रुतिनैं अभयकह्याहे ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिके स्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे गंधर्वनगर आकाशतैं भिन्ननहीं है॥ तैसे यहसंपूर्णजगत् आनंदस्वरूपआत्मातैं भिन्ननहीं है ॥ और जैसे आकाशविषे जोगंधर्वनगरकीस्थितिहै ॥ सो वास्तवतैंनहीं ॥ किंतु मायाकरिकेहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे जोजगत्कीस्थितिहै ॥ सोभीवास्तवतैंनहीं ॥ किंतु मायाकरिकेहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे आकाशरूपअधिष्ठानविषे गंधर्वनगर पूर्वहुआनहीं ॥ और आगेहोवेगानहीं ॥ और अभीहैनहीं ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे जगत् पूर्वहुआनहीं ॥ और आगेहोवेगानहीं ॥ और अभीहैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोआनंदस्वरूपआत्माविषे तीनकाल जगतनहींभयाहे ॥ तो लोकोंकूं भिन्नभिन्नरूपकरिके यहजगत् किसवासते प्रतीतहोताहे ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे आकाशविषे यद्यपि तीनकालविषे गंधर्वनगरनहीं है॥तथापि भ्रांतपुरुषोंकूं सोगंधर्वनगर स्थूलसूक्ष्मरूपकरिके तथाजडचेतन्यरूपकरिके प्रतीतहोवेहै॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यद्यपि तीनकालमें जगत्नहीं है॥तथापि अज्ञानीजीवोंकूं भ्रांतिकरिके सोजगत् स्थूलसूक्ष्मरूपकरिके तथा जडचेतन्यरूपकरिके प्रतीतहोवेहै ॥ अबयाहीअर्थकूं स्वप्नके दृष्टांतकरिके निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक जाग्रत्अवस्थाविषे रथ अश्व हस्ति आदिकपदार्थोंकेउत्पत्तिकेसाधन जेदेशकालादिकहैं ॥ तिन देशकालादिकसाधनोंका स्वप्नअवस्थाविषे अभावहुएभी ॥ जैसे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष अज्ञानकेवशतैं रथ अश्व हस्ति इत्यादिकअनेकभावकूंप्राप्तहोवें हैं ॥ तैसे देशकालादिकसाधनोंतैंरहित एकहीपरमात्मादेव नानाप्रकारकेजगत्भावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे स्वप्नतैंजाग्रत्कूंप्राप्तहुआसोपुरुष स्वप्नकेपदार्थोंकूं देखतानहीं ॥ यातैं जाग्रत्अवस्थास्वप्नपदार्थोंकानाश करणेहारीहै ॥ तैसे आत्माकेसाक्षात्कारकरिके यह संपूर्णजगत् नाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेजनक ॥ ऐसाअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार तुमारेकूंप्राप्तभयाहे ॥ यातैं संसाररूपशूलतैं तूं अभीभयमतकर ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या ॥ तभी सोजनकराजा आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरिके याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं देणेयोग्यगुरुदक्षिणाकूं नहींदेखताभया ॥ अब ता जनकराजाकेविचारकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेसयाज्ञवल्क्यमुनिनैं हमारे

यातेंहोवैनहीं ॥ किंतु आत्मारूपकरिकै जोब्रह्मकाज्ञानहै सोईही ब्रह्मकीप्राप्तिहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् आत्माकेज्ञानहुएभी जीवोंकूं संसार रूपशूलतैंभय काहेतैंनहींहोता ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ संपूर्णजीवोंकूं द्वितीयपदार्थकेज्ञानतैंभयहोवैहै ॥ यातैं द्वितीयपदार्थकाज्ञान भयकाकारणहै यहसिद्धभया ॥ और जबपर्यंत किंचित्मात्रभी द्वितीयपदार्थकाज्ञानहोवैहै ॥ तबपर्यंत अद्वितीयआत्माकाज्ञानहोवैनहीं ॥ और विद्वान्पुरुषकूं अद्वितीयआत्माकेअज्ञानकरिकै द्वितीयपदार्थकाज्ञान निवृत्तभयाहै ॥ यातैं द्वैतज्ञानरूपकारणकेअभावहुए विद्वान् पुरुषकूं भयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ द्वितीयाद्वैभयंभवति ॥ अर्थयह ॥ द्वितीयपदार्थकेज्ञानतैं जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ १ ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेजनक जिसपदार्थविषे यहपदार्थ हमारेदुःखकासाधनहै याप्रकारका प्रतिकूलताज्ञानहोवैहै॥तिसी पदार्थतैं जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ जैसे सिंहसर्पादिकोंविषे जभी जीवोंकूं प्रतिकूलताज्ञानहोवैहै॥तभी तासिंहसर्पादिकोंतैं जीवोंकूं भय कीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ द्वैतज्ञानजन्य जोप्रतिकूलताज्ञानहै ॥ सोईही जीवोंकेभयकाकारणहै ॥ और आनंदस्वरूपआत्मा विषे किसीजीवकूंप्रतिकूलताज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वजीवोंकूं आत्माविषे अनुकूलताज्ञानहै ॥ ऐसेअनुकूलआत्माका सर्वत्रव्यापकरूपक रिकैज्ञानजिसपुरुषकूंभयाहै ॥ तिसपुरुषकूं किसीपदार्थतैंभयहोतानहीं ॥ और हेजनक ॥ सोप्रतिकूलताज्ञान द्वैतज्ञानतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं द्वैतपणाहीं प्रतिकूलताज्ञानकाकारणहै ॥ सोद्वैतपणा अद्वितीयब्रह्मविषेहैनहीं ॥ याकारणतैं सोअद्वितीयब्रह्म अभयहै ॥ तथा विज्ञानआनंदरूपहै ॥ तथा संपूर्णभेदतैंरहितहै ॥ हेजनक ॥ ऐसा अद्वितीयअभयब्रह्म तेरेतैंभिन्ननहीं किंतु तेरास्वरूपहै॥और हेजनक॥ मैं तथातूं तथासंपूर्णभूतप्राणी तथास्थूलसूक्ष्मशरीर इसतैंआदिलेकेजितनाकीजगत्है सोसंपूर्णजगत् ब्रह्मतैंभिन्ननहीं किंतु ब्रह्मरूपही है ॥

यातैं यहआनंदस्वरूपआत्मा शीर्णताभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं श्रुति अशीर्यकहैहै ॥ अब आत्माविषे असंगपणानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे जेपदार्थ संगवान्होवैं हैं ॥ तिनपदार्थोंकूं इतरपदार्थोंकेसंगतैं दोषोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ जैसे स्वभावतैंशीतलस्पर्शवाला जोजलहै ॥ तिसजलविषे अग्निकेसंगतैं उष्णता प्राप्तहोवैहै ॥ और स्वभावतैं उष्णशीतस्पर्शतैंरहित जो वायुहै ॥ तिसवायुविषे अग्निकेसंगतैं उष्णता प्राप्तहोवैहै ॥ और जलकेसंगतैं शीतलता प्राप्तहोवैहै ॥ और जोपदार्थ असंगहै ॥ तिसपदार्थ विषे किसीदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ जैसे असंगआकाशविषे मेघविद्युत्आदिकृतदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और जोपदार्थ मूर्त्तिमान्होवैहै तथापरिच्छिन्नहोवैहै ॥ सोईहीपदार्थ संगवान्होवैहै ॥ जैसे मूर्त्तिमान् तथापरिच्छिन्न जलादिकपदार्थ अग्निआदिकोंकेसाथ संगकूंप्राप्त होवैं हैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा मूर्त्तिमान्नहीं तथा परिच्छिन्ननहीं ॥ यातैं आत्माका किसीपदार्थकेसाथ संगहोवैनहीं ॥ और संगकेअभावहुए यहआत्मा किसीपदार्थकेदोषकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ संयोगादिकसंबंधोंकानाम संगहै ॥ और किंचित् कालपर्यंत इतरपदार्थकेस्वरूपकीन्याई जोस्थितिहै यहसंगकाफलहै ॥ जैसे उष्णस्पर्शवान्अग्निकेसाथ जभी जलकासंयोग संबंधहोवैहै॥तभी सोजल किंचित्कालपर्यंत अग्निकेसमान उष्णस्पर्शवालाहुआ स्थितहोवैहै॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा सजातीयभेद तथाविजातीयभेद तथा स्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहितहै॥यातैं यहआत्मा संयोगादिसंबंधरूपसंगकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा इतरपदार्थकेसाथ तादात्म्यरूप जोसंगकाफलहै॥ताफलकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥किंवा॥यालोकविषे संगवान् जेवस्त्रादिकपदार्थहैं ॥ते बंधनरूपफलकूं तथा परिणामरूपफलकूं अवश्यप्राप्तहोवैहैं॥और वस्त्रादिकपदार्थोंकाउपादानकारण जेतंतुआदिकहैं ॥ तिनोंकेपरस्परविभागतैं तथा तिनतंतुवोंकेनाशतैं पटादिकपदार्थोंकानाशभी अवश्यहोवैहै॥कहांतौपटादिकपदार्थोंका शीघ्रहीनाशहोवैहै॥और कहांशनैःशनैःकरिकैनाशहोवैहै॥और यह आनंदस्वरूपआत्मा संगतैंरहितहै ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा बंधनकूं तथापरिणामकूं तथा विनाशकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वविशेषभावतैंरहितहै॥तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ हेजनक ॥ ऐसा तुरीयआत्माही तुम्हारेकूं ज्ञानकरि

त्माविषे कर्त्तापणा सिद्धहै ॥ सो यहवादीकाकहणाभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता यहश्रुति आत्माकूंकर्त्तारूप करिकै बोधनकरैहै ॥ तैसे अद्रष्टा अश्रोता अमंता अविज्ञाता यहश्रुति आत्माविषे कर्त्तापणेकानिषेधभीकरैहै ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंविषे आत्माकूं अकर्त्तारूपकरिकैबोधनकरणेहारीश्रुतिही मुख्यप्रमाणहै ॥ और आत्माकूंकर्त्तारूपकरिकै बोधनकरणेहारीजोश्रुतिहै ॥ सो भ्रांतपुरुषोंकरिकैसिद्ध जोआत्माविषेकर्त्तापणाहै ताका अनुवादकरैहै ॥ यातैं सो श्रुतिआपणेअर्थपर नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ फलवान् तथालौकिकप्रमाणोंकरिकै अज्ञात जोअर्थ है ॥ ताकेबोधनकरणेकरिकैहीश्रुतिकूं प्रामाण्यताहोवैहै ॥ और कर्त्ताभोक्तारूपकरिकैआत्मा सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥ तथा कर्त्ताभोक्तारूपकरिकैआत्माकेज्ञानतैं किसीफलकीभी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा जन्ममरणादिरूपअनर्थकीप्राप्ति होवैहै ॥ यातैं कर्त्ताभोक्तारूपकरिकै आत्माकेबोधनविषे श्रुतिकातात्पर्यनहीं ॥ और अकर्त्ताअभोक्तारूपकरिकै आत्मा लोकसिद्धहैनहीं॥ तथा अकर्त्ताअभोक्तारूपकरिकै आत्माकेज्ञानतैं अज्ञानसहितसर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिरूपफलकीभीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं अकर्त्ताअभोक्तारूपकरिकै आत्माकेबोधनकरणेविषेही श्रुतिकातात्पर्य है ॥ यातैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै आत्माकाज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेस्वयंप्रकाशरूपकरिकै आत्माकाज्ञानहोवैहै ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतो पूर्वउक्तयुक्तियोंसैं किसीअनात्मपदार्थकाभी प्रत्यक्षादिकप्रमाणों करिकै ज्ञानसंभवैनहीं ॥ तो निर्गुणपरमात्माकेज्ञानविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं किसप्रकार कारणता होवैगी ॥ याकारणतैंही श्रुतिभगवती आत्माकूं अगृह्यकहैहै ॥ इतनैंग्रंथकरिकै आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकी अविषयतादिखाई ॥ अब आत्माविषे अशीर्यता निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्राणियोंका आत्माहै ॥ यातैं हननक्रियाकी कर्मतारूप जोशीर्णताहै ताकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ लोकविषे जोजोपदार्थ मूर्त्तिमान्होवैहै तथा भेदवान्होवैहै ॥ सोईही पदार्थ अवयवोंकीशिथिलतारूप शीर्णताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ जैसे वस्त्रादिकपदार्थ मूर्त्तिमान्हैं तथा भेदवालेहैं ॥ यातैं किंचितकाल पाइके तंतुआदिकअवयवोंकीशिथिलतारूप शीर्णताकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और आत्माविषे मूर्त्तिमान्ता तथाभेद यहदोनोंधर्म हैनहीं ॥

नेत्रादिकइंद्रियोंकूं बहिर्मुखकरताभया ॥ याकारणतैं तेनेत्रादिकइंद्रिय घटपटादिकबाह्यपदार्थोंकूंहीं देखैहैं ॥ अंतरआत्माकूं तेनेत्रादिकइंद्रिय देखतेनहीं ॥ १ ॥ याश्रुतिविषे यहनियम कथनकऱ्या ॥ जिसजिसपदार्थविषे बाह्यपणा होवैहै ॥ तिसतिसपदार्थविषेही नेत्रादिकइंद्रियोंकासंबंधहोवैहै ॥ बाह्यपणेतैंविना नेत्रादिकइंद्रियोंकासंबंधसंभवैनहीं ॥ और अंतरआत्माविषे बाह्यपणाहैनहीं ॥ यातैं आत्माविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकासंबंधभीसंभवैनहीं ॥ और संयोगादिकसंबंधतैंविना नेत्रादिकइंद्रिय किसीपदार्थकेज्ञानकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥यातैं आत्मा कर्त्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ आत्मा कर्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान मनरूपअंतरप्रत्यक्षप्रमाणकरिकै जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं कामःसंकल्पोविचिकित्सा याश्रुतिविषे इच्छा संकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा अधैर्य लज्जा भय वृत्तिज्ञान इनसंपूर्णोंका मनहीं उपादानकारणकह्याहै ॥ और जोउपादानकारणहोवैहै ॥ सो करणहोवैनहीं ॥ जैसे घटकाउपादानकारणमृत्तिका घटकाकरणहोवैनहीं ॥ तैसे वृत्तिज्ञानकाउपादानकारण जोमनहै ॥ सोमन ताज्ञानका करणहोइसकैनहीं ॥ यातैं आत्मा कर्त्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान मनकरिकैभी संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ आत्मा कर्ताभोक्ताहै याप्रकारकेज्ञानकीउत्पत्ति नेत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधतैं जोवादी अंगीकारकरै ॥ तो नेत्रादिकइंद्रियोंकासंबंध स्थूलशरीरकेसाथहै ॥ यातैं स्थूलशरीरविषेहीं सोज्ञान होवैगा और असुरोंकेमोहकरणेवासतै देहात्मवादीचार्वाकोंकेमतकाकर्त्ता जोबृहस्पतिहै ॥ ताकेमतकोप्राप्ति वादीकूं बलात्कारसैंहोवैगी ॥ यातैं आत्मा कर्त्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै संभवैनहीं यहसिद्धभया ॥ किंवा ॥ आत्मा कर्त्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान अनुमानादिकप्रमाणोंकरिकैहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं अनुमान उपमान शब्द यातीनप्रमाणोंका प्रत्यक्षप्रमाणहीं मूलकारणहै॥सोप्रत्यक्ष प्रमाण जभी आत्माकेज्ञानविषे कारणनहींभया॥तभी अनुमानादिकप्रमाण किसप्रकार कारणहोवैंगे यातैं आत्मा कर्त्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान अनुमानादिकप्रमाणोंकरिकैभी संभवैनहीं॥किंवा॥जोवादी याप्रकारकहै ॥ऐतरेयउपनिषद्विषे आत्माकूंद्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता कह्याहै॥तहाँ दर्शनकर्त्ताकानाम द्रष्टाहै ॥ और श्रवणकर्त्ताकानाम श्रोताहै ॥यातैं याश्रुतिकरिकैही आ

दूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जो सोदृष्टि सर्वपदार्थोंकाप्रकाशकहोवे ॥ तो एकपदार्थकेज्ञानकालविषे सर्व पदार्थोंकाज्ञानहोणाचाहिये ॥ और एकपदार्थकेज्ञानकालविषे सर्वपदार्थोंकाज्ञान किसीजीवकूंहोतानहीं ॥ यातैं सोदृष्टि सर्वपदार्थोंकाप्रकाशकनहीं॥इतनैंग्रंथकरिकै चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणताकाखंडनकरिकै आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकी अविषयता निरूपणकरी ॥ अब चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणताकाअंगीकारकरिकैभी आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीअविषयता निरूपणकरेंहैं ॥ किंवा ॥ लोकविषे जीवोंकूं जोघटादिकपदार्थोंकाज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ सो घटादिकपदार्थोंकाज्ञान किसीकारणतैंविना आपहीउत्पन्नहोवेनहीं किंतु चक्षुआदिकप्रमाणोंका घटादिकपदार्थोंकेसाथ जोसंयोगादिकसंबंधहै ॥ ता संयोगादिकसंबंधरूप कारणकीअपेक्षाकरिकैहीं सो घटादिक पदार्थोंकाज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ याप्रकारकीप्रक्रिया वादी अंगीकारकरैहै ता वादीसैं यहपूछाचाहिये॥आत्मा कर्ता भोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान तुमारेकूं किसप्रमाणकरिकैभयाहै ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैभयाहै ॥ अथवा अनुमानादिकप्रमाणोंकरिकैभयाहै ॥ तहाँ जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरे सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं वादीकेमतविषे प्रत्यक्ष प्रमाण दोप्रकारका होवैहै ॥ एक बाह्यप्रत्यक्षप्रमाण ॥ और दूसरा अंतरप्रत्यक्षप्रमाण ॥ तहाँ मन अंतरप्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ और बाह्यप्रत्यक्षप्रमाण पंचप्रकारकाहोवैहै ॥ श्रोत्र १ त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ घ्राण ५ इनपांचोंविषेभी श्रोत्र रसन घ्राण यहतीनइंद्रियतौ द्रव्यकूंविषयकरैनहीं ॥ किंतु क्रमतैं शब्द रस गंध यातीनगुणोंकूंही विषयकरैहै ॥और वादी आत्माकूंभी द्रव्यमानैहै ॥यातैं श्रोत्र रसन घ्राण यातीनप्रमाणोंकरिकैतौ आत्माका कर्त्ताभोक्तारूपकरिकैज्ञान होइसकैनहीं॥और चक्षु त्वक् यहदोनोंइंद्रिय द्रव्यकूंग्रहणकरैहैं ॥ परंतु जिसद्रव्यविषे उद्भूतरूप तथा उद्भूतस्पर्श होवैहै ॥ तिसद्रव्यकाग्रहणकरैहै॥अन्य द्रव्यकाग्रहणकरैनहीं ॥ और आत्माविषे उद्भूतरूप तथाउद्भूतस्पर्श हैनहीं॥यातैं चक्षु त्वक् यादोनोंइंद्रियोंकरिकैभी आत्माका कर्त्ताभोक्तारूपकरिकैज्ञान संभवैनहीं॥किंवा आत्माविषे इंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतानहींहै॥यहवार्त्ता केवलयुक्तियोंकरिकैसिद्धनहीं ॥किंतु श्रुतिप्रमाणकरिकैभी यहवार्त्ता सिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ पराञ्चिखानिव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ्पश्यतिनांतरात्मन् ॥ अर्थयह॥स्वयंभूपरमात्मा

नहीं ॥ किंवा ॥ ज्ञानरूपहुई सोदृष्टि प्रमाणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ सो प्रमाणरूपदृष्टि प्रकाशतैंरहितहै अथवा परप्रकाश्यहै अथवा स्वयंप्रकाश्यहै ॥ तहाँ प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे प्रकाशतैंरहितघट प्रमाणरूपहैनहीं ॥ तैसे प्रकाशतैंरहित सोदृष्टिभी प्रमाणरूप नहींहोवैगी ॥ और प्रकाशतैंरहितदृष्टिकूं जोप्रमाणरूप अंगीकारकरौगे ॥ तौ प्रकाशतैंरहितघटभी प्रमाणरूप होणाचाहिये ॥ और सोदृष्टि परप्रकाश्यहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे घट परप्रकाश्यहै यातैं प्रमाणरूपनहीं ॥ तैसे परप्रकाश्यहोणेतैं सोदृष्टिभी प्रमाणरूपनहींहोवैगी ॥किंवा॥ताप्रमाणरूपदृष्टिकूं परप्रकाश्यमानणेविषे अनवस्थादोषकीभी प्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं सोप्रमाणरूपदृष्टि जिसदूसरीप्रमाणरूपदृष्टिकरिकै प्रकाश्यहै ॥सो दूसरीप्रमाणरूप दृष्टिभी किसीतीसरेप्रमाणरूपदृष्टिकरिकै प्रकाश्यहोवैगी ॥ तीसरीचतुर्थकरिकैहोवैगी ॥ याप्रकार प्रमाणरूपदृष्टियोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं सोप्रमाणरूपदृष्टि परप्रकाश्य संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ सो प्रमाणरूपदृष्टि स्वयंप्रकाश्यहै यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिप्रमाणतैंरहित जे केवलशुष्कतर्कहैं ॥ तिनतर्कोंकूंग्रहणकरिकेही वादी अर्थकीसिद्धिकरैहै ॥ और सोतर्क लौकिकदृष्टांततैंविना किसीअर्थकूं सिद्धकरैनहीं ॥ यातैं प्रमाणरूपदृष्टि स्वयंप्रकाश्यहै याअर्थकी सिद्धिविषेभी वादीनैं कोईलौकिकदृष्टांत कह्याचाहिये ॥ और लोकविषे ऐसाकोईपदार्थहैनहीं ॥ जो आपही प्रकाशनरूपक्रियाकाकर्ताहोवे ॥ और आपही प्रकाशरूपक्रियाकाकर्महोवे ॥ यातैं प्रमाणरूपदृष्टिकूं स्वयंप्रकाशतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ प्रमाणरूपदृष्टिकूं आत्मातैं भिन्नमानिकै जोवादी तादृष्टिकूं स्वयंप्रकाशमानैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सो स्वयंप्रकाशदृष्टि खद्योतजंतुकीन्याई आपणेस्वरूपमात्रकाहीं प्रकाशकरैहै ॥ अथवा सूर्यकीन्याई सर्वपदार्थोंकाप्रकाशकरैहै ॥ तहाँ प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे खद्योतनामाजंतु किसीपदार्थकाप्रकाशकरैनहीं ॥ केवल आपणाहीं प्रकाशकरैहै ॥ तैसे सोदृष्टिभी आपणेतैंभिन्न किसीपदार्थका प्रकाश नहींकरैगी ॥ यातैं लोकविषे किसीभीपदार्थकीसिद्धि नहींहोणीचाहिये ॥ और सूर्यकीन्याई सोदृष्टि सर्वपदार्थोंका प्रकाशकरै यह

काकहणाभी संभवेनहीं ॥ काहेतें आत्माविषे कर्ताभोक्तापणेकीसिद्धिवासते तुमने अंगीकारकरीजोदृष्टि॥सोदृष्टि आत्माकास्वरूपभूतहै॥ अथवा आत्माकाधर्म है तहाँ जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरे ॥ तौ हमारेकूंइष्टापत्तिहै ॥ काहेतें ज्ञानरूपदृष्टिकूं आत्मरूपता हमभीअं गीकारकरतेहैं ॥ और सोदृष्टि आत्माकाधर्म यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सो संभवेनहीं ॥ काहेतें वादीकेमतविषे धर्मका तथा धर्मीका परस्पर भेदहीहोवैहै ॥ यातें दृष्टिरूपधर्मकूं प्रकाशरूपताहुएभी धर्मीरूपजडआत्माकूं प्रकाशरूपतासंभवेनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पुत्रकेपंडितहुएभीपिता पंडितहोवैनहीं॥किंवा॥ वादीनें आत्माविषे अंगीकारकरीजोदृष्टि सोदृष्टि धर्मीरूपआत्मातैंभिन्नहै॥यातें सोदृष्टिआ त्माकीसिद्धिकरिसकेनहीं ॥ और आत्मारूपधर्मीकेअसिद्धहुए ज्ञानरूपदृष्टिकीभी सिद्धिसंभवेनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी याप्रकारकहे ॥ ता धर्मरूपदृष्टिकरिके आत्माकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु स्वप्रकाशरूपकरिके अथवा अन्यकिसीप्रमाणकरिके आत्माकीसिद्धिहोवैहै ॥ यातें आत्माकीधर्मरूपदृष्टिभी सिद्धहोइसकैहै ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवेनहीं ॥ काहेतें जभी स्वप्रकाशरूपकरिके अथवा अन्य किसीप्रमाणकरिकेभी आत्माकीसिद्धिहोइसकैहै ॥ तभी आत्माविषे दृष्टिकाअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥ किंवा ॥ जोवादी आत्माविषे दृष्टिकूं अंगीकारकरैहै ॥ तासें यहपूछाचाहिये ॥ पदार्थोंकाज्ञानहोवै जिसकरिके ताकूंदृष्टिकहैं हैं ॥ याप्रकारकेअर्थकूंअंगीकारकरिके चक्षुआदिकोंकीन्याई करणरूपहुई सोदृष्टि प्रमाणहै ॥ अथवा ज्ञानरूपहुई सोदृष्टि प्रमाणहै ॥ तहां प्रथमपक्षतो संभवेनहीं ॥ काहेतें प्रत्य क्षादिकप्रमाणोंकी अबपर्यंत सिद्धिभईनहीं ॥ यातें ताप्रमाणरूपदृष्टिकरिके आत्माकीसिद्धि तुमारेसेंहोइसकेनहीं ॥ किंवा ॥ वादीनें अंगी कारकरी जोप्रमाणरूपदृष्टि तादृष्टिविषे प्रमाणरूपता तभी सिद्धहोवै ॥ जभी तादृष्टिजन्यज्ञानविषे प्रमापणासिद्धहोवै ॥ काहेतें प्रमाज्ञान काजोकरणहोवैहै ताकूंप्रमाणकहैं हैं ॥ यातें सोदृष्टि आपणेविषे प्रमाणताकीसिद्धिवासते स्वजन्यज्ञानविषे प्रमात्वकूंग्रहणकरणेहारे किसी दूसरेप्रमाणकीअपेक्षाकरैहै ॥ और सोदूसराप्रमाणभी आपणेप्रमाणताकीसिद्धिवासते स्वजन्यज्ञानविषे प्रमात्वकूंग्रहणकरणेहारे किसीती सरेप्रमाणकीअपेक्षाकरैहै ॥ याप्रकार प्रमाणोंकीवारामानणेविषे अनवस्थादूषणकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें करणरूपहुई सोदृष्टि प्रमाणहोवै

संभवैनहीं ॥ तथापि पूर्वमुक्तपुरुषोंकेमनकासंबंध घटादिकोंविषेसंभवैहै ॥ यातें घटादिकोंकूंभी आपणाज्ञान होणाचाहिये ॥ किंवा ॥ जोवादी आत्माकूं स्वभावतैंजडमानेहै ॥ तावादीकेमतविषे घटादिकजडपदार्थोंकी तथा आत्माको किंचित्मात्रभी विशेषतासिद्धनहीं होवैगी ॥ यातें वादीकेमतविषे घटादिकजडपदार्थभी आत्माहोणेचाहिये ॥ किंवा ॥जोवादी याप्रकारकहै॥ घटादिकोंविषे तथाआत्माविषे जडपणा तौसमानहै ॥ परंतु घटादिक परिच्छिन्नहैं तथा मूर्त्तहैं ॥ और आत्मा विभुहै तथा अमूर्त्तहै ॥ यातें घटादिकोंकूं आत्मरूपता संभवैनहीं ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें नैयायिकोंकेमतविषे जैसे आत्मा विभुहै तथा अमूर्त्तद्रव्यहै ॥ तैसे आकाश काल दिक् यहतीनोंभी विभुहैं तथा अमूर्त्तद्रव्यहैं॥यातें आत्मातैंविलक्षण घटादिकपदार्थोंविषे यद्यपि आत्मरूपता संभवैनहीं तथापिआकाश काल दिक् यातीनोंविषे आत्मरूपता होणीचाहिये ॥किंवा ॥ जोवादी याप्रकारकहै जैसे आत्माकेसाथ मनकासंबंध ज्ञानकाकारणहै तैसे शरीरकासंबंधभी ज्ञानकाकारणहै॥ यातें शरीरकासंबंधही आत्माविषे आकाशादिकोंतैं विशेषताहै ॥ सो यहवादीकाकहणाभीसंभवै नहीं॥काहेतें नैयायिकोंकेमतविषे आकाश काल दिक् आत्मा यहचारोंद्रव्य विभुहैं॥ और सर्वमूर्त्तद्रव्योंकेसाथ जाकासंयोगसंबंधहोवैताकूं नैयायिक विभुकहै हैं॥यातें जैसे मूर्त्तद्रव्यरूपशरीरकेसाथ आत्माकासंबंधहै॥तैसे आकाश काल दिक् यातीनोंकाभीशरीरकेसाथ संबंधहै यातें आकाशादिकोंविषेभी आत्मरूपता होणीचाहिये ॥ किंवा ॥जोवादी आत्माकूं स्वभावतें जडमानैहै ॥ तावादीकेमतविषे आत्माकातथा घटादिकविषयोंकापरस्पर भोक्ताभोग्यभावसंबंध तथा उपकार्यउपकारकभावसंबंध नहींसंभवैगा ॥ काहेतें जैसे घटादिकपदार्थ स्वभावतें जडहैं ॥ तैसे आत्माभी वादीकेमतविषे स्वभावतैंजडहै॥और आगंतुकज्ञानकेकारणमनःसंयोगादिक पूर्वउक्तरीतिसैं घटादिकोंविषेभीहैं ॥ यातें जैसे आत्मा कर्ताभोक्ताहै॥तैसे घटादिकसंपूर्णजडपदार्थभी कर्ताभोक्ताहोणेचाहिये ॥ और घटादिकजडपदार्थोंकूं कोईभीवादी कर्ता भोक्ता मानतानहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी याप्रकारकहै ॥ प्रत्यक्षरूपदृष्टि तथाअनुमितिरूपदृष्टि जिसविषेहोवै है॥सोईही कर्ताभोक्ताहोवैहै ॥ सोदृष्टि आत्माविषेहीहोवैहै ॥ घटादिकोंविषेहोवैनहीं ॥ यातें आत्माही कर्ताभोक्ताहै ॥ घटादिकपदार्थकर्ताभोक्ताहोवैनहीं ॥ सोयहवादी

अहंअस्मियाप्रकारकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिके तिसीप्रमाताकीसिद्धिहोवैहै ॥ अथवा ॥ अन्यकिसीप्रमाताकेआश्रित जोअहंअस्मि यहज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिके तिसप्रमाताकीसिद्धिहोवैहै ॥ तहाँ जोवादी अंत्यपक्षकूंअंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जैसे देवदत्तनामापुरुष आपणेतैंभिन्न यज्ञदत्तनामापुरुषकूंजाणताहुआ याप्रकारकाअनुभवकरैहै ॥ मैं इसयज्ञदत्तकूं जाणताहूं ॥ तैसे मैं इसप्रमाताकूं जाणताहूं याप्रकारकाअनुभव जीवोंकूंहोणाचाहिये ॥ और ऐसाअनुभव किसीजीवकूंहोतानहीं ॥ किंतु मैं आत्माकूं जाणताहूं याप्रकारकाअनुभव सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ यातैं अन्यप्रमाताकेआश्रितज्ञानकरिके अन्यप्रमाताकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ और तिसप्रमाताकेआश्रित जोअहंअस्मि याप्रकारकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिके तिसीप्रमाताकी सिद्धिहोवैहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें लोकविषे जोजो क्रियाहोवैहै ॥ ताका कर्त्ता भिन्नहोवैहै और कर्म भिन्नहोवैहै ॥ जैसे छेदनरूपक्रियाका पुरुष कर्त्ताहै ॥ और काष्ठादिक कर्महै ॥ तैसे अहंअस्मि याज्ञानरूपक्रियाकाभी कर्त्ता तथाकर्म भिन्नभिन्न होणेचाहिये ॥ एकहीप्रमाता ज्ञानरूपक्रियाकाकर्त्ता तथाकर्म यहवार्त्तासंभवैनहीं ॥ यातैं स्वाश्रितज्ञानकरिके प्रमाताकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी याप्रकारकहै ॥ आत्मा स्वभावतैंतो ज्ञानरहितजडहै ॥ यातैं आपणेकूंजानिसकैनहीं ॥ परंतु मनकेसंबंधकरिके आत्माविषेउत्पन्नभयाजो ज्ञानगुण ॥ ताज्ञानगुणकूंप्राप्तहोइके चेतनभावकूंप्राप्तहुआआत्मा आपणेकूंआपेहीजानैहै ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें तावादीकेमतविषे जैसे घट स्वभावतैंजडहै ॥ तैसे आत्माभी स्वभावतैंजडहै ॥ यातैं जैसे मनकेसंबंधतैं ज्ञानगुणवालाहुआ आत्मा आपणेकूंजानैहै ॥ तैसे मनकेसंबंधतैं ज्ञानगुणवालाहुआघटभी आपणेकूंक्यानहींजाणता ॥ और घट आपणेकूंजाणतानहीं ॥ यातैं यहवादीकाकहणा असंगतहै ॥ किंवा ॥ जोवादी याप्रकारकहै ॥ जैसे आत्माकेसाथ मनकासंयोगसंबंधहै ॥ तैसे घटकेसाथ मनकासंयोगसंबंधहैनहीं ॥ यातैं घट आपणेकूंजाणतानहीं ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें नैयायिकोंकेमतविषे मन परमअणुपरिमाण वालाहै तथा नित्यहै ॥ और जेमुक्तपुरुषहैं तिनोंकेशरीरादिक नष्टहोइजावैहै ॥ परंतु तिनोंकामन नष्टहोवैनहीं ॥ यातैं बद्धअज्ञानीजीवोंकेमनकासंबंध यद्यपि घटादिकोंसैं

अप्रमाण प्रमा अप्रमा इत्यादिकसंपूर्ण जडजगत् साक्षी आत्माकाविषयहै ॥ और जैसे दीपककरिकै प्रकाश्यजेघटादिकपदार्थहैं।ते प्रकाशकदीपककूं विषयकरिसकैंनहीं ॥ तैसे साक्षीआत्माकरिकेंप्रकाश्य जेप्रमाणादिकहैं।ते प्रकाशकसाक्षीआत्माकूंविषयकरिसकैंनहीं॥शंका॥ यद्यपि प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाविषय आत्मानहींहै ॥ तथापि श्रुतिप्रमाणकाविषय आत्माहै ॥ काहेतें तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि॥अर्थ यह॥उपनिषद्प्रमाणकरिकै जानणेयोग्यजोआत्माहै ॥ ताकास्वरूप मैं तुम्हारेसैंपूछताहूं ॥१॥ याश्रुतिविषे उपनिषद्प्रमाणजन्यज्ञानकीविषयता आत्माविषेकहीहै॥यातैं आत्मा प्रमाणकाअविषयनहीं किंतु विषयहीहै॥समाधान॥आत्मातें भिन्न संपूर्णजडजगत् मिथ्याहै यातैंसो जड़ जगत् श्रुतिरूपप्रमाणकाविषयनहीं॥और आत्मास्वप्रकाशहै॥यातैं आत्माभी श्रुतिरूपप्रमाणकाविषयनहीं॥किंतु माताकीन्याई मुमुक्षुजनोंके अत्यंतहितकारि श्रुतिभगवती आत्माविषे स्थूलसूक्ष्मजगत्काआरोपणकरिकै ताजगत्कानिषेधकरतीहुई अर्थतैंआत्माकाबोधनकरैहै॥तात्पर्ययह ॥ श्रुतिप्रमाणजन्य अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानकरिकै आत्माका प्रकाशहोवैनहीं॥किंतु तावृत्तिज्ञानकरिकै आत्माकेआवरणकीनिवृत्तिहोवैहै॥ ताआवरणकीनिवृत्तिमात्रकूंग्रहणकरिकेहीं श्रुतिविषे आत्माकूंउपनिषद्प्रमाणकाविषयकह्याहै ॥यातैं स्वप्रकाशसाक्षी किसीप्रकार करिकेसिद्धहोवैनहींकिंतु स्वतःहींसिद्धहै ॥ अब आत्माविषेस्वप्रकाशताकीदृढताकरणेवासतै पुनःपूर्वविचारकूं कथनकरैंहैं॥किंवा॥प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै मैं याअर्थकूंनिश्चयकरताहूं ॥ याप्रकारकेज्ञानकाआश्रय जोप्रमाताहै ॥ ताप्रमाताकूंआश्रयणकरिकेहीप्रमाण अप्रमाण प्रमाअप्रमा फल प्रमेय इत्यादिकभेद सिद्धहोवैं हैं ॥ आश्रयरूप प्रमाताकीसिद्धितैंविना प्रमाणादिकोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं प्रमाणादिकोंकीसिद्धिवासतै प्रमाताकीसिद्धि अवश्यचाहिये ॥ तहां वेदांतसिद्धांतविषे प्रमाताकास्वरूपभूत जोस्वप्रकाशचैतन्यहै ॥ ताकरिकेहीं प्रमाताकीसिद्धिहोवैहै ॥ काहेतें वेदांतसिद्धांतविषे अंतःकरणविशिष्टचैतन्यकानाम प्रमाताहै ॥ सोविशिष्टचैतन्यशुद्धचैतन्य तैंभिन्नहैनहीं ॥ यातैं स्वप्रकाशचैतन्यहीं प्रमाताकास्वरूपहै॥ताकरिकै प्रमाताकीसिद्धि संभवैहै ॥ और जो वादी अहंअस्मि ॥ अर्थयह जो॥ मैंहूंयाप्रकारकेज्ञानकरिकै प्रमाताकीसिद्धि अंगीकारकरैहै॥तावादीसैं यहपूछाचाहियेप्रमाताके आश्रितजो

सिद्धिहोइसकैनहीं ॥ किंवा ॥ प्रमाण प्रमा फल यातीनोंकीसिद्धिविषे कोईप्रमाणहै अथवा नहीं है ॥ तहां जोवादीकहै तिनोंविषेप्रमाण
नहीं है॥तो नरशृंगकीन्याईते प्रमाणादिक अत्यंतअसत्होवैंगे॥और जोवादीकहै॥प्रमाण प्रमा फल यातीनोंकीसिद्धिविषे कोईप्रमाणहैतोजो
पदार्थप्रमाणकाविषयहोवैहै ॥ सो पदार्थ प्रमेयहीहोवैहै॥यातैं प्रमाण प्रमा फल यातीनोंविषेभी घटादिकपदार्थोंकीन्याई प्रमेयरूपताहीप्रा
प्तहोवैगी ॥ और जोवादी याकेविषे इष्टापत्तिकरै॥तो यहप्रमाणहै यहप्रमाहै यहफलहै यहप्रमेयहै यहचारिप्रकारकाभेद वादीकेमतविषे
असंगतहोवैगा ॥ याकारणतैंभी प्रमाणादिकोंकोसिद्धिसंभवैनहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ जैसे आकाशविषे मूढपुरुषोंकूं गंधर्वनगर प्रती
तहोवैहै ॥ परंतु सोगंधर्वनगर वास्तवतैं आकाशविषैहैनहीं ॥ किंतु तिनमूढपुरुषोंकेकल्पनाकरिकै सिद्धहै ॥ तैसे यहप्रमाणहै यहप्रमाहै
यहफलहै यहप्रमेयहै यहचारिप्रकारकाभेद केवलवादियोंकीकल्पनाकरिकैसिद्धहै ॥ और जो कल्पितपदार्थहोवैहै ॥सो साक्षी आत्माक
रिकैही प्रकाश्यहोवैहै ॥ जैसे कल्पितस्वप्नकेपदार्थ साक्षीआत्माकरिकैप्रकाश्यहैं ॥ तैसे कल्पितप्रमाणादिकभी साक्षीआत्मा क
रिकैही सिद्धहैं ॥ किंवा ॥ दोषजन्यदृष्टिकरिकै जिसअधिष्ठानविषे जोपदार्थ प्रतीतहोवैहै ॥ ताअधिष्ठानविषे सोपदार्थ वास्तव
तैंहोवैनहीं ॥ जैसे पुरुषकेवेषकूंधारणकरणेहारीस्त्रीविषे दोषजन्यदृष्टिकरिकै जोपुरुषपणा प्रतीतहोवैहै ॥ सोपुरुषपणा ता स्त्रीविषेवा
स्तवतैंहैनहीं ॥ और जैसे दोषजन्यदृष्टिकरिकै रज्जुविषे जोसर्पप्रतीतहोवैहै ॥ सोसर्प तारज्जुविषे वास्तवतैंहैनहीं ॥ तैसे दोषजन्य
दृष्टिकरिकैवादियोंकूं जो प्रमाण प्रमा फल विषय यहचारिप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ सोभेदभी वास्तवतैं है नहीं ॥ शंका ॥ प्रमाण
प्रमा फल विषय इनचारोंकूं जोकल्पितअंगीकारकरौगे ॥ तौ तिनप्रमाणादिकोंकरिकै लोकोंकाव्यवहार सिद्धनहींहोवैगा ॥ यातैं प्रमाणा
दिकोंकूं वास्तवमानणाही उचितहै ॥समाधान॥ कल्पितअर्थकरिकै जोव्यवहारकीसिद्धिनहींहोती ॥ तौ प्रमाणादिकोंकूं हम सत्यअंगीका
रकरते ॥ परंतु लौकिकव्यवहार मिथ्याअर्थकरिकैभी सिद्धहोइसकैहैं ॥ जैसे कल्पितरज्जुसर्पकूंविषयकरणेहारा जोयहसर्पहै याप्रकारका
ज्ञानहै ॥ तामिथ्याज्ञानकरिकै भयकंपादिकव्यवहार होवैहै ॥ तैसे कल्पितप्रमाणादिकोंकरिकैभी लोकोंकाव्यवहार संभवैहै ॥यातैं प्रमाण

अनुपलब्धि यहलौकिकषट्प्रमाणहै ॥ ते दोषकीशंकाकरिकै युक्तहै यातें स्वभावतैंतौ तिनप्रत्यक्षादिकोंविषे प्रमाणताहैनहीं ॥ किंतु जिसकालविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंविषे दोषकेअभावकाज्ञानहोवैहै ॥ तिसीकालविषे प्रत्यक्षादिकोंकूंप्रमाणताहै ॥ यातें दोषग्राहकप्रमाण विषे दोषाभावकूं ग्रहणकरणेहारा जोअनुपलब्धिप्रमाणहै ॥ ताकेप्रमाणताकोसिद्धिवासतै ताअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकूंग्रहण करणेहारा कोईअनुपलब्धिप्रमाण अंगीकारकऱ्याचाहिये॥और सोअनुपलब्धिप्रमाण प्रथमअनुपलब्धिप्रमाणतैं अभिन्नहै अथवा भिन्नहै ॥ जोवादी अभिन्नकहै ॥ तौ आत्माश्रयदोषकोप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी ताअनुपलब्धिप्रमाणकूंभिन्नकहै ॥ तौ तादूसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकूं कौनअनुपलब्धिप्रमाण ग्रहणकरैहै ॥ तहाँ जोवादी प्रथमअनुपलब्धिप्रमाणकरिकै दूसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकाग्रहणमानैं ॥ तौ अन्योन्याश्रयदोषकोप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी तादूसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकेग्रहणवासतै तीसरा अनुपलब्धिप्रमाण अंगीकारकरै ॥ तौ तातीसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावका किसअनुपलब्धिप्रमाणकरिकै ग्रहणहोवै है ॥ तहाँ जोवादीकहै तीसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे प्रथमअनुपलब्धिप्रमाणकरिकै दोषाभावकाग्रहणहोवैहै ॥ तौ चक्रिकादोषकोप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी तीसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकग्रहणवासतै चतुर्थअनुपलब्धिप्रमाण और चतुर्थवासतेपंचम याप्रकार अनुपलब्धिप्रमाणोंकोधारा अंगीकारकरै ॥ तौ अनवस्थादोषकोप्राप्तिहोवैगी ॥ यातें प्रमाणरूपहुई अनुपलब्धि दोषाभावकूं ग्रहणकरैहै यहप्रथमपक्ष संभवैनहीं ॥ और अप्रमाणरूपहुआ सोअनुपलब्धिप्रमाण दोषग्राहकप्रमाणविषे दोषाभावकूं ग्रहणकरैहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरैहै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जो अप्रमाणकाविषयहोवैहै ॥ सोभी अप्रमाणही होवै है ॥ यातें अप्रमाणरूपअनुपलब्धिकाविषय जो दोषाभावविशिष्टप्रमाणहै ॥ सोभी अप्रमाणरूपहीहोवैगा ॥ याकहणेकरिकै यहअर्थसिद्ध भया ॥ जोवादी आत्माकूंप्रकाशरूप नहीं अंगीकारकरैहै ॥ तिसवादीकेमतविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैही घटादिकविषयोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ ते प्रत्यक्षादिकप्रमाण पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकै सिद्धहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं घटादिकविषयोंकी तथा प्रमाअप्रमारूपज्ञानकीभी

करे ॥ तो चक्षुआदिकप्रमाणोंकरिकै घटादिकविषयोंकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ काहेतें प्रथम घटादिकविषयसिद्धहोवै ॥ तो पश्चात् चक्षुआदिक प्रमाणोंविषे प्रमाणतासिद्धहोवै ॥ और प्रथम चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणतासिद्धहोवै॥ तो पश्चात् घटादिकविषयोंकीसिद्धिहोवै॥ याप्रकारकेअन्योन्याश्रय दोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जहां अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहां किसीकार्यकीसिद्धिहोतीनहीं ॥ और चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे स्वभावतैंहीं प्रमाणताहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तो जैसे चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे स्वभावतैं प्रमाणताहै ॥ तैसे अप्रमाणोंविषेभीस्वभावतैं प्रमणता काहेतैंनहींहोवै ॥ और जोवादी यहकहै ॥ चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे जोप्रमाणताहै सो स्वभावतैंहीं है ॥ और अप्रमाणोंविषे स्वभावतैं प्रमाणता संभवैनहीं ॥ काहेतैं काचकामलादिकदोषकरिकेयुक्त चक्षुआदिकोंकूं अप्रमाणकहैं हैं ॥ तिनअप्रमाणोंविषे दोषकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रमाणहै ॥ ताप्रमाणकरिकै तिनअप्रमाणोंविषे अप्रमाणताहींसिद्धहोवैहै ॥ यातैं अप्रमाणोंविषे स्वभावतैं प्रमाणता सिद्धहोइसकैनहीं ॥ सोयहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे अप्रमाणविषे दोषकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रमाणहै ॥ तिसप्रमाणकरिकै ताअप्रमाणविषे अप्रमाणतासिद्धहोवैहै ॥ तैसे दोषग्राहकप्रमाणविषेभी दोषकूंग्रहणकरणेहारा जोदूसराप्रमाणहै ॥ तादूसरेप्रमाणकरिकै दोषग्राहकप्रमाणविषेभी अप्रमाणता क्योंनहींसिद्धहोवै ॥ और जोवादी यहकहै ॥ अप्रमाणविषे दोषकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रमाणहै ॥ ताकेविषे अप्रमाणता तभी सिद्धहोवै ॥ जभी ताकेविषे दोषकीप्रतीतिहोवै ॥ और तादोषग्राहक प्रमाणविषे किसीप्रमाणकरिकै दोषकीप्रतीतिहोतीनहीं ॥ उलटा अनुपलब्धिरूपप्रमाणकरिकै तादोषग्राहकप्रमाणविषे दोषकेअभावकीही प्रतीतिहोवैहै ॥ यातैं अप्रमाणकेदोषग्राहकप्रमाणविषे अप्रमाणता संभवैनहीं ॥ सोयहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं अप्रमाणविषेदोषकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रथमप्रमाणहै॥ताकेविषे दोषकेअभावकूंग्रहणकरणेहारा जोअनुपलब्धिप्रमाणहै॥सोअनुपलब्धिप्रमाण प्रमाणरूपहुआ दोषकेअभावकूंग्रहणकरैहै ॥ अथवा सो अनुपलब्धिप्रमाण अप्रमाणरूपहुआ दोषकेअभावकूंग्रहणकरैहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिरूपअलौकिकप्रमाणकूंछोडिके जितनेकी प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति

दूसरेप्रमाणकरिकैसिद्धि ॥ और दूसरेप्रमाणकी तीसरेप्रमाणकरिकैसिद्धि ॥ और तीसरेप्रमाणकी पुनःप्रथमप्रमाणकरिकैसिद्धि ॥ याप्रकार चक्रकोन्याईं भ्रमणरूप चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोतीसरेप्रमाणकीसिद्धिवासतै चतुर्थप्रमाणकाअंगीकार ॥ और चतुर्थप्रमाण कीसिद्धिवासते पंचमप्रमाणका अंगीकार ॥ याप्रकार प्रमाणोंकीधारा अंगीकारकरोंगे ॥ तो अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं प्रमा णकरिके प्रमाणकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ और अप्रमाणकरिके प्रमाणकीसिद्धिहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरोंगे ॥ तो अप्रमाणकाविषयहु आप्रमाणभी अप्रमाणरूपहीहोवैगा ॥ यातैं अप्रमाणकरिकेभी प्रमाणकीसिद्धि संभवैनहीं ॥ किंवा जैसे प्रमाणके तथाअप्रमाणके स्वरूप कीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे प्रमाके तथाअप्रमाके स्वरूपकीसिद्धिभी संभवैनहीं ॥ काहेतें सोप्रमाज्ञान प्रमाज्ञानकरिकैसिद्धहै ॥ अथवा अप्र माज्ञानकरिकैसिद्धहै ॥ और सोअप्रमाज्ञान अप्रमाज्ञानकरिकैसिद्धहै ॥ अथवा प्रमाज्ञानकरिकैसिद्धहै ॥ इत्यादिकविकल्पोंविषे जेपूर्व दूषणकहे हैं तेसर्व संभवहोइसकें हैं ॥ यातैं प्रमाज्ञानका तथा अप्रमाज्ञानकाभीस्वरूप सिद्धहोइसकेनहीं॥किंवा ॥ प्रमाणअप्रमाणकेभेदक रिके तथाप्रमाज्ञानअप्रमाज्ञानकेभेदकरिके ज्ञाततारूपफलकाभेदहोवैहै ॥ सोप्रमाणअप्रमाणकाभेद तथा प्रमाअप्रमाकाभेद पूर्वउक्तयुक्ति योंकरिके संभवैनहीं ॥ यातैं प्रमाअप्रमाजन्य ज्ञाततारूपफलकाभी भेदसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ प्रमाणकरिके तथाप्रमाज्ञानकरिके घटादिक विषयोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ यातैं प्रमाणका तथाप्रमाज्ञानका भेदहीं घटादिकविषयोंकेभेदकासाधकहै ॥सोप्रमाण तथाप्रमाज्ञान पूर्वउक्तयुक्ति योंकरिके अप्रमाणरूपहै ॥ यातैं ताअप्रमारूपज्ञानकरिके घटादिकविषयोंकेभेदकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ जोअप्रमाज्ञानकरिकेभी विषयकी सिद्धिहोतीहोवै ॥ तो यहसर्प है याप्रकारके अप्रमाज्ञानकरिके रज्जुसर्पकोभी सिद्धिहोणीचाहिये ॥ और यहसर्प है याप्रकारकेअप्रमाज्ञा नकरिके रज्जुसर्पकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं प्रमाणादिकोंकीन्याईं घटादिकविषयोंकाभेदभी संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी चक्षुआदिक प्रमाणोंकरिके विषयकी सिद्धिमानैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ चक्षुआदिकप्रमाण जिसकालविषे घटादिकविषयोंकूं ग्रहणकरै हैं ॥ तिसीकालविषे चक्षुआदिकोंविषे प्रमाणताहै ॥ अथवा स्वभावतैंही चक्षुआदिकोंविषे प्रमाणताहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकार

व्यर्थहोवैगा ॥ किंवा ॥ चक्षुइंद्रिय रूपकूंग्रहणकरैहै गंधकूंग्रहणकरैनहीं ॥ यातैं रूपकीअपेक्षाकरिकैतो चक्षुइंद्रियविषै प्रमाणताहै ॥ और गंधकीअपेक्षाकरिकै तिसीचक्षुइंद्रियविषै अप्रमाणताहै ॥ तैसे घ्राणइंद्रियविषै गंधकीअपेक्षाकरिकैतो प्रमाणताहै ॥ और रूपकीअपेक्षाकरिकै तिसीघ्राणइंद्रियविषै अप्रमाणताहै ॥ इसप्रकार सर्वप्रमाणोंविषै किसीअर्थकीअपेक्षाकरिकै प्रमाणताहै और किसीअर्थकीअपेक्षाकरिकै अप्रमाणताहै ॥ नियमकरिकै प्रमाणता तथाअप्रमाणता किसीप्रमाणविषैहैनहीं ॥ याकारणतैंभी यहप्रमाणहै यहअप्रमाणहै याप्रकारका वादियोंकाकथन व्यर्थहै ॥ किंवा ॥ प्रमाणकरिकै जोअप्रमाणकीसिद्धिअंगीकारकरोगे ॥ तौ जैसे मिथ्या रज्जुसर्पकूं तथाशुक्तिरजतकूं विषयकरणेहाराज्ञान अप्रमाणहीहोवैहै ॥ तैसे अप्रमाणकूंविषयकरणेहारा प्रमाणभी अप्रमाणहीहोवैगा ॥ यातैं प्रमाणकरिकै अप्रमाणकीसिद्धि संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे अप्रमाण अप्रमाणकरिकै तथाप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे प्रमाणभी प्रमाणकरिकै तथाअप्रमाणकरिकै सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोप्रमाणकाप्रमाणकरिकैहीग्रहणहोवै ॥ तौ सोग्राहकप्रमाण प्रथमग्राह्यप्रमाणतैं अभिन्नहै अथवा भिन्नहै ॥ जोकहो सोग्राहकप्रमाण ग्राह्यप्रमाणतैंअभिन्नहै ॥ तौ आपणेग्रहणविषै आपणीअपेक्षारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी और जोकहो सोग्राहकप्रमाण ग्राह्यप्रमाणतैंभिन्नहै ॥ तौ तिसग्राहकप्रमाणकी किसप्रमाणकरिकै सिद्धिहोवैहै ॥ जोकहो आपणेकरिकैहीं तिसग्राहकप्रमाणकीसिद्धिहोवैहै ॥ तौ आपणीसिद्धिविषैआपणीअपेक्षारूपआत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी॥ और जोकहो प्रथमग्राह्यप्रमाणकरिकै ताग्राहकप्रमाणकीसिद्धिहोवैहै ॥ तौ प्रथमप्रमाणकूं आपणीसिद्धिविषै दूसरेप्रमाणकीअपेक्षा ॥ और दूसरेप्रमाणकूंआपणीसिद्धिविषै प्रथमप्रमाणकीअपेक्षा ॥ याप्रकार अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोकहो सोदूसराप्रमाण आपणीसिद्धिवासतै तीसरेप्रमाणकीअपेक्षाकरैहै ॥ तौ ता तीसरेप्रमाणकी आपणेकरिकैसिद्धिहै ॥ अथवा दूसरेप्रमाणकरिकैसिद्धिहै ॥ अथवा प्रथमप्रमाणकरिकैसिद्धिहै ॥ जोकहो ता तीसरेप्रमाणकीआपणेकरिकैहीसिद्धिहै ॥ तौ आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोदूसरेप्रमाणकरिकै तीसरेप्रमाणकीसिद्धिमानोंगे ॥ तौ अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जो प्रथमप्रमाणकरिकै तीसरेप्रमाणकीसिद्धिमानोंगे ॥ तौ प्रथमप्रमाणकी

न्यज्ञाततारूपफल ५ अप्रमाजन्यज्ञातताारूपफल ६ प्रमाज्ञानकाविषय ७ अप्रमाज्ञानकाविषय ८ ॥ यहअष्ट साक्षीआत्माकेविषयहैं ॥ यातें विषयरूपकरिके यहअष्ट समानहींहैं ॥ और जेवादीपुरुष तिन प्रमाणादिकअष्टोंकी परस्पर विलक्षणता अंगीकारकरेहैं ॥ ते वादी पुरुष प्रमाणादिकोंविषे साक्षीआत्माकीविषयताकूं नजाणिकरिके तिनप्रमाणादिकोंकी परस्पर विलक्षणता कथनकरें हैं ॥ यातें यह सिद्धभया ॥ जैसे नेत्रवान्पुरुषकेसमीपस्थितहुआ दुग्ध एकशुक्लवर्णवालाहीहोवैहे ॥ और अंधपुरुषोंकीसभाविषेस्थितहुआ सोदुग्ध नीलपीतादिकनानावर्णवालाहोवैहे ॥ तैसे भेदवादीभ्रांतपुरुषोंकीदृष्टिकरिकेतो प्रमाणादिकोंविषे नानाप्रकारकीविलक्षणताहे ॥ और वेदांतशास्त्रकेतात्पर्यजाननेहारे जेअद्वैतवादीहैं॥तिनोंकीदृष्टिकरिकेतो संपूर्णप्रमाणादिक साक्षीआत्माकेविषयहैं ॥ यातें साक्षीआत्माकीविषयतारूपकरिके संपूर्णप्रमाणादिकसमानहीहैं॥अब प्रमाणादिकअष्टोंविषे साक्षीआत्माकीविषयताकूं न अंगीकारकरिके जेभेदवादीपुरुष प्रमाणादिकोंविषे विलक्षणता मानैहैं तिनोंकाखंडनकरेहैं॥तहाँ जोवादी अप्रमाणकूंअंगीकारकरेहै तासैं यहपूछाचाहिये॥सोअप्रमाण किसी अप्रमाणकरिकेसिद्धहे॥अथवा किसीप्रमाणकरिके सिद्धहे॥तहां जोवादी अप्रमाणकरिके अप्रमाणकीसिद्धि यहप्रथमपक्षअंगीकारकरे॥तो जैसे अप्रमाणकरिकेसिद्ध शुक्तिरजतकूं कथनकरणेहारापुरुष भ्रांतहोवैहे ॥ तैसे अप्रमाणकरिकेसिद्ध अप्रमाणकूं कथनकरणेहारावादीभी भ्रांतहोवेगा॥यातें अप्रमाणकरिके अप्रमाणकीसिद्धि संभवेनहीं ॥ और जोवादी प्रमाणकरिकेअप्रमाणकीसिद्धि यहदूसरापक्ष अंगीकारकरे ॥ सोभी संभवेनहीं ॥ काहेतें मिथ्याअर्थकूं जोविषयकरेहै ताकूं अप्रमाणकहें हैं ॥ ताअप्रमाणरूपमिथ्याअर्थकूं जोप्रमाणविषयकरेगा ॥ तो सोप्रमाणभी अप्रमाणहीहोवेगा ॥ और जोवादीयहकहे ॥ जोजिसअर्थकूं विषयकरेहे ॥ सो तिसअर्थकीसिद्धिविषे प्रमाणहीहोवेहे ॥ यातें अप्रमाणकूंविषयकरणेहाराप्रमाणभी ताअप्रमाणकीसिद्धिविषे प्रमाणहीं हे ॥ सोयहवादीकाकहणा संभवेनहीं ॥ काहेतें जो जिसअर्थकूं विषयकरेहे ॥ सो तिसअर्थकी सिद्धिविषे प्रमाणहीहोवेहे ॥ याप्रकारकानियम जोअंगीकारकरोगे ॥ तो शुक्तिरजतकूंविषयकरणेहारा अप्रमाणभी प्रमाणहोणाचाहिये ॥ और याकेविषेभी जोवादी इष्टापत्तिकरे ॥ तो यहप्रमाणहे यहअप्रमाणहे याप्रकारका तुमाराकथन

आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकी अविषयता निरूपणकरेहैं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा नेत्रादिकबाह्यकरणोंकरिकै तथा मन बुद्धि चित्त अहंकार याअंतःकरणोंकरिकै जान्याजावैनहीं ॥ यातें यहआनंदस्वरूपआत्मा अग्राह्यहे ॥ और हेजनक॥जिसपदार्थकूं नेत्रादिककरणग्रहणकरैहे सोईहीपदार्थ प्रमाणकाविषय होवैहे॥और जिसपदार्थकूं नेत्रादिककरण ग्रहणकरतेनहीं॥सोपदार्थ प्रमाणकाविषय होवै नहीं ॥ जैसेघटादिकपदार्थोंकूं नेत्रादिककरणग्रहणकरैं हैं॥ यातें घटादिकपदार्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणों केविषयहैं॥ और जोपदार्थ प्रमाणका विषयहोवैहे॥सोईहीपदार्थ प्रमेयहोवैहे॥और याआनंदस्वरूपआत्माकूं नेत्रादिककरण ग्रहणकरिसकैनहीं॥यातें यहआत्मा प्रमाणकाविषय होवैनहीं ॥ याकारणतें यहआनंदस्वरूपआत्मा अप्रमेयहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोपदार्थ नेत्रादिककरणोंकाविषयहोवैहे ॥ सोईपदार्थ प्रमाणकाविषय होवैहे ॥ याप्रकारकानियम आपनेकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ॥ स्वर्ग तथा इंद्रादिकदेवता तथा धर्म अधर्म इत्यादिक अतिइंद्रियपदार्थ नेत्रादिकरणों केविषय तौहैंनहीं ॥ तथापि शब्दादिकप्रमाणोंकेविषयहैं ॥ समाधान ॥ स्वर्गादिक अतिइंद्रियपदार्थ यद्यपि नेत्रादिकबाह्यकरणोंकेविषयहैनहीं ॥ तथापि मनरूपकरणके विषयहैं ॥ जोस्वर्गादिकअतिइंद्रियपदार्थोंविषे मनरूपकरणकीविषयता नहींअंगीकारकरिये ॥ तो स्वर्गादिकपदार्थ अतिइंद्रियहैं याप्रकारकाज्ञान जोमनविषेहोवैहे सोनहोणाचाहिये ॥ यातें अनुमानकी तथाशब्दकी सहायतातें मन स्वर्गादिकअतिइंद्रियपदार्थोंकूंभी विषयकरैहे ॥ इतनेग्रंथकरिकै आत्माविषे प्रमाणकीअविषयतादिखाई ॥ अब आत्मातैंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थोंविषे विषयता निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ अबाधितअर्थकूं विषयकरणेहारा जोप्रमाज्ञानहे ॥ तथा बाधितअर्थकूंविषयकरणेहारा जो अप्रमाज्ञानहे ॥ और प्रमाज्ञानकेकरण जेप्रत्यक्षादिकप्रमाणहैं तथा अप्रमाज्ञानकेकरण जेदुष्टचक्षुआदिकअप्रमाणहैं ॥ और प्रमाज्ञानजन्य तथा अप्रमाज्ञानजन्य जेविषयनिष्ठ ज्ञाततारूपफलहैं ॥ और प्रमाज्ञानकेविषय जेघटादिकपदार्थहैं ॥ तथा अप्रमाज्ञानकेविषय जेशुक्तिरजतादिकहैं ॥ यहअष्ट जडहैं ॥ यातें आपणीसिद्धिवासते स्वप्रकाशचैतन्यरूपसाक्षीआत्माकूं आश्रयणकरैहैं ॥ स्वप्रकाश साक्षीआत्मातैंविना जडप्रमाआदिकोंकीसिद्धिहोवैनहीं यातें प्रमाण१अप्रमाण २ प्रमा ३ अप्रमा ४ प्रमाज

वैहै॥तथासर्वभूतभौतिकप्रपंचकीउत्पत्तिकरैहै॥सोपरमात्मादेवहीं तुमारेकूं॥तथा अन्यअधिकारियोंकूं गंतव्यहै॥और हेजनक॥सोपरमात्मा देवहीतुमारातथा हमारा तथाअन्यप्राणियोंका आत्माहै॥शंका॥हेभगवन्॥जोएकहीपरमात्मादेव सर्वत्रअनुगतहोवै ॥ तौ विश्व तैजस प्राज्ञ इत्यादिरूपकरिकै तथा मैं तूं अन्य इत्यादिरूपकरिकै भिन्नभिन्न किसवासतेप्रतीतहोवैहै॥समाधान॥हेजनक॥ जैसे एकहींमहाकाश घटम ठादिरूपउपाधियोंकेभेदतैं घटाकाश मठाकाश इत्यादिकभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव शरीरादिकउपाधियोंकेभेदतैं भिन्न भिन्न प्रतीतहोवैहै॥और जैसे उपाधिकृतभेदकरिकै आकाशका वास्तव एकपणा निवृत्तहोवैनहीं॥तैसे उपाधिकृतभेदकरिकै आत्माकाभी वास्तवएकपणा निवृत्तहोवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ जिनपुरुषोंकूं यासंसाररूपीघोरवनतैं भयहोवैहै ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषोंकूं यहअद्विती यआत्माहीं जानणेयोग्यहै ॥ और याअद्वितीयआत्माका जोसाक्षात्कारहै ॥ सोईही गंतव्यआत्माकोप्राप्तिका राजमार्ग है ॥ हेजनक ॥ ऐसेआत्मज्ञानरूपीमार्गविषे जभी तुमअधिकारी चलोगे ॥ तभी तुम्हारेकूं आत्मारूपगंतव्यस्थानकी प्राप्तिहोवैगी ॥ और हेजनक॥ यहअद्वितीयआत्मा मनवाणीका अविषयहै ॥ यातैं याअद्वितीयआत्माकूं हम साक्षात्कथनकरणेविषे समर्थनहीं ॥ और तूंभीसाक्षात्जानणेविषेसमर्थनहीं ॥ यातैं अनात्मपदार्थोंके निषेधद्वारा याआत्माकूंविद्वान्पुरुष कथनकरैहैं ॥अब निषेधमुखकरिकेआत्मा कानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक यहआनंदस्वरूपआत्मा भावत्व अभावत्व धर्मतैंरहितहै॥यातैं याआत्माकूं घटादिकपदार्थोंकीन्याई भावरू पकरिकै तथाघटाभावकीन्याई अभावरूपकरिकै तुमनैं नहींजानणा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आकाश मेघविद्युतादिकभावपदार्थरूपनहीं ॥ तथा मेघविद्युतादिकोंकाअभावरूपनहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रपंचरूपनहीं ॥ तथा प्रपंचकाअभावरूपनहीं ॥ किंतु भावअभावप दार्थोंसें विलक्षणहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानके अज्ञानतैं तारज्जुविषेसर्प प्रतीतहोवैहै ॥ और जभी रज्जुरूपअधिष्ठानका ज्ञानहोवैहै॥तभी कारणअज्ञानसहित सोसर्प रज्जुरूपअधिष्ठानविषे लयहोवैहै ॥ तैसे आत्मारूपअधिष्ठानकेअज्ञानतैं यहअभावरूपजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ और जभी अधिष्ठान आत्माका साक्षात्कारहोवैहै ॥ तभी संपूर्णजगत् आत्मारूपअधिष्ठानविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब

पूर्वादिकदशदिशावोंकेसाथ अभिन्नहोवैहै॥तहाँ इतनीविशेषताहै॥दृष्टांतविषे देवराजइंद्रका जोपूर्वादिकदिशावोंकेसाथअभेदहै सोवास्तवतैं
नहीं ॥ किंतु अभिमानमात्रतैं है ॥ और यहपरमात्मारूपइंद्र सर्वजगत्काउपादानकारणहै ॥ यातैं जैसेमृत्तिकारूपकारण घटरूपकार्यके
अंतरव्यापकहै॥तथा घटरूपकार्यसैंअभिन्नहै॥तैसे यहपरमात्मारूपइंद्र दिशादिकसर्वप्रपंचकेअंतरव्यापकहै॥तथा सर्व जगत्सैंभिन्नहै अब
सुषुप्तिविषेस्थितमायाविशिष्टईश्वरविषे सर्वजगत्कीकारणता निरूपणकरैहै॥हेजनक॥सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोमायाविशिष्टपरमेश्वरहै॥
सोमायाविशिष्टईश्वरही आकाशादिकपंचभूतोंकाकारणहै॥तथा जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकाकारणहै॥तथा दि
क्कालादिक संपूर्णस्थूलसूक्ष्मप्रपंचकाकारणहै॥शंका॥हेभगवन्॥सत्चित्आनंदस्वरूपपरमात्माविषेअसत्जडदुःखरूपजगत्कीकारणता
संभवैनहीं ॥ काहेतैं समानस्वभाववालेपदार्थोंकाही परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ समानस्वभाववालेपदार्थोंका
परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ यहनियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे निरवयव तथारूपादिकोंतैंरहितजोआकाशहै ॥ ताकेविषे साव
यव तथारूपादिमान मेघविद्युतादिकोंकीकारणताहै॥तैसे सत्चित्आनंदस्वरूप परमात्माविषेभीअसत्जडदुःखरूपप्रपंचकीकारणतासंभ
वैहै और समानस्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै॥याप्रकारकानियम परिणामीउपादानकारणविषेहै ॥ विवर्त्तउपादान
कारणविषे यहनियमहैनहीं॥और यहपरमात्मादेवसर्वजगत्काविवर्त्तउपादानकारणहै॥अथवा॥शुद्धआत्माविषेतौजगत्कीकारणताहैनहीं॥
किंतु मायाविशिष्टपरमात्माविषे जगत्कीकारणताहै ॥ सोमाया असत्जडदुःखरूपहै ॥ यातैं मायाकीअसत्जडदुःखरूपता कार्यप्रपंचविषे
प्रतीतहोवैहै॥इतनेग्रंथकरिकै व्यष्टि स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरकेअभिमानीजे विश्व तैजस प्राज्ञ हैं तिनोंकास्वरूपदिखाया॥अब तुरीयशुद्ध
आत्माकानिरूपणकरैहैं॥हेजनक ॥जोतुमनैं पूर्व गंतव्यस्थान हमारेसैंपूछाथा सोगंतव्यस्थान तूं श्रवणकर॥जोपरमात्मादेवजाग्रतअवस्था
विषे दक्षिणनेत्रविषेस्थितहोइके आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै सूर्यादिकसकलजगत्कूं प्रकाशकरै है ॥ और जोपरमात्मादेव स्वप्नकेसर्वपदा
र्थोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ और जोपरमात्मादेव सुषुप्तिअवस्थाविषे हृदयाकाशविषेस्थितहोइके दिशादिकसर्वजगत्केसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहो

करिके स्वप्नअवस्थाविषे नाडीरूपस्थानविषेस्थितहोइके मनोमयसूक्ष्मविषयोंकूं भोगैहै ॥ याकारणतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं विद्वान्पुरुष सूक्ष्मभुक्कहैं हैं ॥ और व्यष्टिसूक्ष्मशरीरकेअभिमानतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं तैजसकहैं हैं ॥ और इंद्राणीसहित सोपरमात्मारूपइंद्र स्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिकै सुषुप्तिअवस्थाविषे हृदयआकाशविषे प्राप्तहोवैहै ॥ तहाँ वासनामय अत्यंतसूक्ष्मभोगोंकूं भोगैहै ॥ याकारणतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं विद्वान्पुरुष अत्यंतसूक्ष्मभुक्कहैं हैं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मारूपइंद्र आनंदस्वरूपअंतर्यामीके साथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं ताकूं आनंदभुक् कहैं हैं ॥ और व्यष्टिकारणशरीरकेअभिमानतैं ताकूं प्राज्ञकहैं हैं ॥ और हेजनक ॥ वास्तवतैंविचारकरिकैदेखिये तौ सुषुप्तिअवस्थाविषे सोपरमात्मारूपइंद्र अभोक्ताहीहै ॥ काहेतैं सुखदुःखकेज्ञानकानाम भोगहै ॥ सोसुखदुःखकाज्ञान सुषुप्तिविषेबुद्धिकेलयहुए संभवैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तिविषे आत्मा अभोक्ताहीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जोआत्मा अभोक्ताहीहोवै ॥ तौ पूर्वआपनें यहकह्याथा ॥ हृदयाकाशविषेस्थित इंद्राणीसहित परमात्मारूपइंद्रका रक्तवर्णवालामांसपिंड अन्नहै ॥ और नाडियोंकासमूहवस्त्रहै ॥ यहआपकाकहणा विरुद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे परमात्मारूपइंद्र तामांसपिंडरूपअन्नकूं भक्षणकरैहै ॥ तथानाडीरूपवस्त्रोंकूं धारणकरैहै ॥ याप्रकारका हमाराअभिप्रायनहीं ॥ किंतु तावचनविषे हमारायहअभिप्रायहै ॥ जिसपुरुषकामन बाह्यविषयोंकीवासनाकरिकै अत्यंतचंचलहै ॥ सोपुरुष मनकीएकाग्रताकरणेवासतै अन्नवस्त्रादिकसामग्रीसहित परमात्मारूपइंद्रका ध्यानकरे ताध्यानकरिकै तापुरुषकामन एकाग्रहोवैगा ॥ यातैं आत्माकेध्यानविषे तावचनकातात्पर्य है भोगविषेनहीं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव आपणेसाक्षीस्वरूपकरिकै सर्वदुःखोंकेअभावकूं अनुभवकरैहै ॥ याकारणतैं ताकूं आनंदभुक्कहैं हैं ॥ तथा अत्यंतसूक्ष्मभुक्कहैं हैं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माविषे आनंदभुक्पणा तथा अत्यंतसूक्ष्मभुक्पणा मुख्यनहीं किंतु गौणहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे स्वर्गविषेस्थितदेवराजइंद्र पूर्वादिकदशदिशावोंकाअधिपतिहै ॥ यातैं पूर्वादिकदशदिशावोंकूं आपणेतैं अभिन्नकरिकैमानैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मा अंतर्यामीईश्वरकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोइके

कास्वरूपहै ॥ अब तैजसकी तथाप्राज्ञकी परस्परविलक्षणता निरूपणकरें हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे स्वर्गलोकवासी देवराज इंद्र तथा ताकीस्त्रीइंद्राणी वैजयंतनामागृहका परित्यागकरिके परस्पर संभोगकरणेवासते किसीएकांतस्थानविषेजावैहै ॥ तैसे यह परमात्मारूप इन्द्र तथा इंद्राणी दक्षिणवामनेत्रकापरित्यागकरिकै परस्परसंभोगकरणेवासतै हृदयरूप एकांतस्थानविषेजावें हैं ॥ जिसहृदयकूं दहरविद्याविषे ईश्वररूपकरिकै कथनकर्‍याहै ॥ और बालाकिअजातशत्रुकेसंवादविषे सुषुप्तिकास्थानरूपकरिकेकथनकर्‍याहै ॥ और हेजनक ॥ ताहृदयरूपीकमलके कर्णिकाकेसमान रक्तवर्णवाला जोमांसकापिंडहै ॥ सो परमात्मारूपइंद्राणीकाभक्षणकरणेयोग्यअन्नहै ॥ और हृदयकमलके केसरसमान जेनाडियांहैं ॥ तिननाडियोंका जालकेसमान जोपरस्परग्रंथनहै ॥ सो तापरमात्मारूपइंद्रइंद्राणीका वस्त्रहै ॥ और जोसुषुम्नानामानाडी हृदयदेशतैंनिकसिकै मूर्द्धस्थानकूंप्राप्तभईहै ॥ और तामूर्द्धस्थानतैंभीऊपर ब्रह्मलोकपर्यंत प्राप्तभई है ॥ सो सुषुम्नानामानाडी यापरमात्मारूपइंद्रइंद्राणीका गमनआगमनविषे राजमार्ग है ॥ और हेजनक ॥ जभी यहपरमात्मारूपइंद्र यासुषुम्नानाडीरूपमार्गकरिकै याशरीरतैं बाहरनिकसैहै॥तभी देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ और जभी यहपरमात्मारूपइंद्र शरीरकेभीतरही विचरैहै ॥ तभी सुषुम्नानाडीकेशाखारूप जोदूसरीनाडियांहैं ॥ तिननाडीरूपमार्गकरिकै हृदयदेशतैं दक्षिणनेत्रविषेआवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे एकवृक्षकी अनेकशाखाहोवैं हैं ॥ तैसे तासुषुम्नानाडीवृक्षकी दूसरीअनेकनाडियां शाखाकेसमानहैं ॥ केशियांहैंतेनाडियां ॥ एककेशके सहस्रभागकरिये ताकेएकभागकेसमान सूक्ष्महैं ॥ और हेजनक ॥ इंद्राणीसहित सोपरमात्मारूपइंद्र तानाडीरूप मार्गकरिकै जभी हृदयाकाशविषे जावैहै ॥ तभी सुषुप्तिअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और इंद्राणीसहित सोपरमात्मारूपइंद्र जभी तानाडीरूप मार्गविषेहीं स्थितहोवैहै ॥ तभी स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ इंद्राणीसहित ॥ सोपरमात्मारूपइंद्र जाग्रत्अवस्थाविषे वामदक्षिणनेत्रविषेस्थितहोइकै शब्दस्पर्शादिकस्थूलविषयोंकूं भोगे है ॥ याकारणतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं विद्वान्पुरुष स्थूलभुककहैं हैं॥ और व्यष्टिस्थूलशरीरकेअभिमानतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं विश्वनामा कहैं हैं ॥ और सोइंद्रहीपरमात्मारूपइंद्र जाग्रत्अवस्थाकापरित्याग

स्थितजोइंद्रहै॥ताकीस्त्रीइंद्राणी तावैजयंतनामागृहविषेरहैनहीं॥किंतु तावैजयंतनामागृहकेसमीपवर्तिजोकोईअन्यगृहहै ताकेविषे सोइंद्राणी रहैहै और सोइंद्राणीभी इंद्रकेसमानहीं संपदावालीहै तैसे॥जाग्रत्अवस्थाविषे दक्षिणनेत्रविषेस्थित जोपरमात्मारूपइंद्रहै॥ताकीस्त्रीइंद्राणी वामनेत्रविषेरहैहै॥औरजाग्रत्अवस्थाविषे नानाप्रकारकेस्थूलभोगोंकूंभोगणेहारा जोपरमात्मारूपइंद्रहै॥ताइंद्ररूपभर्ताकेसाथ विविधप्रकार करिके सोइंद्राणीविराजमानहै ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताइंद्राणीकूं विराट्नामकरिके कथनकरैं हैं॥अथवा ॥ जैसे दक्षिणनेत्रविषेस्थित इंद्रनामा पुरुष वाक्आदिकदशइंद्रियोंकाअधिष्ठाताहै ॥ तैसे वामनेत्रविषेस्थित इंद्राणीभी वाक्आदिकदशइंद्रियोंकाअधिष्ठाताहै ॥ याकारणतैंविद्वान्पुरुष ताइंद्राणीकूं विराट्नामकरिके कथनकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ दशअक्षरोंवालाजोछंदहै ताकूंविराट्कहैं हैं ॥ और यहइंद्राणीभी वाक्आदिकदशइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिके दशप्रकारहोवैहै ॥ यातैं बुद्धिमान्पुरुष ताइंद्राणीकूं विराट्नामकरिके कथनकरैं हैं ॥ अथवा ॥ अन्नंविराट् याश्रुतिविषे भोग्यअन्नकूं विराट्नामकरिके कथनकऱ्याहै ॥ और यहइंद्राणीभी परमात्मारूप इंद्रकाभोग्यहै ॥ याकारणतैं ताइंद्राणीकूं विद्वान्पुरुष विराट्नामकरिके कथनकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ याप्रकार जाग्रतअवस्था विषे यहपरमात्मादेव इंद्राणीरूपकरिके तथाइंद्ररूपकरिके सर्वजीवोंके वामदक्षिणनेत्रविषेस्थितहोवै है ॥ कैसाहैसोपरमात्मारूप इंद्र ॥ समष्टिरूपकरिकेतो एकहै ॥ और व्यष्टिउपाधिकरिके भ्रांतपुरुषोंकूं नानाकीन्याई प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं हेजनक ॥ इंद्रियोंकरिके नानाप्रकारकेस्थूलभोगोंकूंभोगताहुआ तूं इदानींकालविषे जिसअवस्थाविषेवर्तमानहै ॥ ताअवस्थाकानाम जाग्रत् अवस्थाहै ॥ ताजाग्रतअवस्थाविषे तूं परमात्मादेव भोक्ताइंद्ररूपकरिके तथाभोग्यइंद्राणीरूपकरिके सर्वशरीरोंविषेस्थितहो इके सर्वव्यवहारकोसिद्धिकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ याकहणेकरिके याज्ञवल्क्यमुनिनें यहअर्थबोधनकऱ्या जिसअवस्थाविषे परमात्माके इंद्ररूपका तथाइंद्राणीरूपका भिन्नभिन्नस्थानविषेनिवासहोवैहै ॥ सो वैश्वानररूपविश्वकास्वरूपहै ॥ और जिसअवस्थाविषे परमा त्माकेइंद्ररूपका तथाइंद्राणीरूपका एकस्थानविषे निवासहोवैहै ॥ सोहिरण्यगर्भसूत्रात्मारूप तैजसकास्वरूपहै ॥ तथा ईश्वररूपप्राज्ञ

प्रकाशकरिसकैंनहीं ॥ तैसे सूर्यचंद्रमादिकोंका प्रकाशकजोआत्माहै ॥ ताआत्माकूं सूर्यचंद्रमादिक प्रकाशकरिसकैंनहीं ॥ किंतु आपणे प्रकाशकरिकैही यहआत्मा प्रकाशमानहै ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष याआत्माकूं स्वप्रकाशकहैं हैं ॥ जोप्रकाश आपणेप्रकाशविषे तथाअन्यपदार्थोंकेप्रकाशविषे अन्यकिसीप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैहै ताकूं स्वप्रकाशकहैं हैं ॥ ऐसास्वप्रकाशआत्मा यद्यपि इंधयाप्रकारकेअपरोक्षनामकरिकैही कथनकरणेयोग्यथा ॥ तथापि अग्निआदिकसात्विकदेवता याआत्माकूं इंध याअपरोक्षनामकरिकै कथनकरतेनहीं ॥ किंतु इंद्र यापरोक्षनामकरिकैही आत्माकाकथनकरैं हैं ॥ काहेतें यामनुष्यलोकविषेभी जेसात्विकपुरुषहैं ॥ ते तामसीपुरुषोंकीन्याईं आपणे गुरुके तथा पितामातादिकवृद्धोंके साक्षात् देवदत्तादिकनामोंकूं कथनकरतेनहीं ॥ किंतु आचार्यादिकपरोक्षनामकरिकै तेसात्विकपुरुष व्यवहारकरैं हैं ॥ और यालोकविषे जेसात्विकस्वभाववान्स्त्रियेंहैं ॥ तेभी आपणेपतिके तथाश्वशुरादिकवृद्धोंके साक्षात् देवदत्तादिकनामोंकूं उच्चारणकरैंनहीं ॥किंतु स्वामीआदिकपरोक्षनामकरिकै ते सात्विकस्त्रियां व्यवहारकरैं हैं और तिनसात्विकपुरुषोंकेपितामातागुरुका साक्षात् देवदत्तादिकनाम जोकोईदूसरापुरुष उच्चारणकरै है ॥ तिसपुरुषऊपरभी तेसात्विकपुरुष क्रोधवान्होवैं हैं ॥ हेजनक ॥ जभी मनुष्यलोककेसात्विकपुरुषोंकूंभी पितामातागुरुआदिकोंका परोक्षनामहीप्रियलागैहै ॥ तभी परमसात्विकजे अग्निआदिकदेवताहैं ॥ तिनोंकूंआत्माका परोक्षनामहीप्रियहै याकेविषेक्याआश्चर्य है॥याकारणतैं परोक्षप्रिय तेअग्निआदिकदेवता याआनंदस्वरूपआत्माकूं इदंद्र तथा इंध याप्रकारकेअपरोक्षनामकरिकैकथनकरैंनहीं॥किंतु इंद्र यापरोक्षनामकरिकै कथनकरैं हैं॥हेजनक॥ऐसाइंद्रनामापरमात्मादेव जाग्रतअवस्थाविषे वाक्आदिकइंद्रियोंकूं आपणेअधीनकरिकै दक्षिणनेत्रविषे स्थितहोवैहै ॥ अत्र इंद्रनामा परमात्माविषे प्रसिद्धदेवराजइंद्रकी समानतादिखावैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे लोकप्रसिद्धइंद्र स्वर्गविषे वैजयंतनामागृहविषेस्थितहोवैहै ॥ और देवतावोंनैं अर्पणकरेजेनानाप्रकारकेभोग तिनभोगोंकूं भोगैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी जाग्रत्अवस्थाविषे दक्षिणनेत्ररूपगृहविषे निवासकरैहै ॥ और ॥ अग्निआदिक देवतावोंनैं अर्पणकरेजे रूपरसादिकनानाप्रकारकेविषय तिनोंकूंभोगैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे वैजयंतनामागृहविषे देवतावोंकीसभाविषे

याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ सूर्यभगवान्नैं जिसज्ञानका हमारेप्रति उपदेशकर्‍याहै ॥ सोज्ञान मैं तुमारेप्रति उपदेशकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइके श्रवणकर ॥ कैसाहैसोज्ञान ॥ आत्मसाक्षात्कारकाकारणहै ॥और यज्ञादिकबहिरंगसाधनोंकरिकै तथा विवेकादिकअंतरंगसाधनोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ अब तुरीयरूपशुद्धब्रह्मकेबोधनकरणेवासतै जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकेअभिमानी जे विश्व तैजस प्राज्ञहैं तिनोंकेस्वरूपकूंदिखावैं हैं ॥ तहाँ प्रथम वैश्वानररूप जोविश्वहैताकेस्वरूपकूंनिरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक ॥ अविद्याकरिकै देहादिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहुआ यहपरमात्मादेव जिसकालविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकाग्रहणकरैहै ॥ तिसकालविषे यहपरमात्मादेव जाग्रतअवस्थावान् होवैहै ॥ और तिसजाग्रतअवस्थाविषे यहपरमात्मादेव दोरूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तहाँ भोक्ताइंद्ररूपकरिकै दक्षिणनेत्रविषेरहैहै ॥ और भोग्यइंद्राणीरूपकरिकै वामनेत्रविषेरहैहै ॥ याप्रकार वैश्वानरके उपासकपुरुष विश्वात्माकूं इंद्रइंद्राणीरूपकरिकै ध्यानकरैहैं ॥ अब आत्माविषे इंद्ररूपता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यहआत्मादेव आकाशादिकभूतभौतिकप्रपंचकूं उत्पन्नकरिकै ताप्रपंचकूं इदंरूपकरिकै देखताभया ॥ याकारणतैं यहपरमात्मादेव यद्यपि इदंद्रनामकरिकै कथनकरणेयोग्यथा ॥ तथापि परोक्षप्रिय अग्निआदिकदेवता इदंद्र याअपरोक्षनामकरिकै तापरमात्माका कथनकरैं नहीं॥किंतु इंद्र यापरोक्षनामकरिकै तेअग्निआदिकदेवता परमात्माका कथनकरैंहैं॥और यहआनंदस्वरूपपरमात्मादेवस्वप्रकाशस्वरूपहै॥ याकारणतैं यहआत्मादेव यद्यपि इंध यानामकरिकै कथनकरणेयोग्यथा ॥ तथापि परोक्षप्रिय अग्निआदिकदेवता इंध याअपरोक्षनाम करिकै आत्माकाकथनकरैंनहीं ॥ किंतु इंद्र यापरोक्षनामकरिकै आत्माकाकथनकरैं हैं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम आत्माविषे प्रकाशरूपतादिखावैं हैं ॥ हेजनक ॥ या आनंदस्वरूपआत्माकेप्रकाशकरिकैही यहसंपूर्णचराचररूपजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ और जिस आनंदस्वरूपआत्माकूं सूर्यचंद्रमाभी नहीं प्रकाशकरिसकते ॥ तथा तारागण अग्नि ज्ञानइंद्रिय कर्मइंद्रिय मन शब्द यहसंपूर्ण जिस आत्माकूं नहींप्रकाशकरिसकते ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थोंकूं प्रकाशकरणेहाराजोदीपकहै ॥ तादीपककूं घटपटादिकपदार्थ

विषेप्राप्तहोवैगा ॥ याप्रकारकाजोप्रश्न हमनैं पूर्व तुमारेताई कऱ्याथा ॥ ताप्रश्नकेकरणेविषे यहकारणहै ॥ लोकविषे वादियोंके दोप्रकार केप्रश्न होवैं हैं ॥ एकतौ प्रतिपादनकरणेयोग्यवस्तुकूं न जाणिकरिकै वादीकाप्रश्नहोवैहै ॥ और दूसरा प्रतिपादनकरणेयोग्यवस्तुकूं जाणिकरिकै वादीकाप्रश्न होवैहै ॥ तहां प्रतिपादनकरणेयोग्यवस्तुकूं जाणिकरिकै जोवादीकाप्रश्न होवैहै ॥ सोभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ वस्तुकेयथार्थज्ञानपूर्वक वादीका प्रश्नहोवैहै ॥ और दूसरा वस्तुकेअयथार्थज्ञानपूर्वक वादीका प्रश्नहोवैहै ॥ तहां वादीकेज्ञानका विषयजोपदार्थ है ॥ तथाप्रतिवादीकेज्ञानकाविषय जोपदार्थ है ॥ तिनदोनोंकेसमानताकानिर्णय वस्तुकेयथार्थज्ञानपूर्वकप्रश्नकाफलहै ॥ और संशयविपर्यकीनिवृत्ति वस्तुकेअयथार्थज्ञानपूर्वकप्रश्नकाफलहै और सोवस्तुकेयथार्थज्ञानपूर्वकप्रश्नभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ आपणेबुद्धिकोनिर्मलता जनावणेवासतै वादीकाप्रश्नहोवैहै ॥ और दूसरा प्रतिवादीकेबुद्धिकोनिर्मलता जानणेवासतै वादीकाप्रश्नहोवैहै ॥ हेजनक ॥ इसप्रकार वस्तुकेज्ञानपूर्वकप्रश्नके अनेकप्रकारकेभेदहैं ॥ तिनप्रश्नोंविषे जोकोईवादी गंतव्यस्थानकूंजाणिकरिकै ताकेमार्गका प्रश्नकरैहै ॥ तावादीकेप्रति बुद्धिमान्पुरुष गंतव्यस्थानकूं जाणिकरिकेही ताकेमार्गकाउपदेशकरैं हैं ॥ गंतव्यस्थानकेज्ञान तैंविना कोईभीबुद्धिमान्पुरुष ताकेमार्गकाउपदेशकरतानहीं ॥ और हेजनक ॥ जोपुरुष गंतव्यस्थानकूंनजाणिकरिकै ताकेमार्गकूंपुछैहै ॥ ता श्रद्धावान्पुरुषकेताईबुद्धिमान्दयालुपुरुष गंतव्यस्थानका तथा ताकेमार्गकादोनोंकाउपदेशकरैहै ॥ केवलमार्गमात्रकाउपदेश करै नहीं ॥ तैसे तूंभी गंतव्यस्थानकूंनजाणिकरिकै हमारेसैं मार्गकूंपुछताहै ॥ यातैं तुझश्रद्धावान्केताईं मैं प्रथम गंतव्यस्थानकाउपदेशकर ताहूं ॥ ता गंतव्यस्थानविषे जोचित्तकीएकाग्रताहै यहही ताकामार्गहै ॥ यातैं हेजनक ॥ तूं संशयतैं रहितहोइकै मनकूंसावधानकरिकै ता गंतव्यस्थानकूंश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोजनकराजा प्रस न्नहोइकै कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आप कृपाकरिकै हमारेप्रति गंतव्यस्थानकाउपदेशकरो ॥ मैं सावधानहुआस्थितहूं ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति उपदेशकरताभया॥

तथा तादुःखकेकारणोंकूं तथा तादुःखकेविशेषस्वरूपकूं मैं किंचित्मात्रभीजाणतानहीं ॥ हेभगवन् ॥ जैसे वायुकरिकेप्रमायाहुआपतंग महान्अग्निविषे प्राप्तहोवैहे ॥ सोपतंग जबपर्यंत मृत्युकूंनहींप्राप्तहोवैहै॥तबपर्यंत सोपतंग आपणेआत्माकूं तथापरकूं तथादुःखकेकारणोंकूं तथाअन्यकिसीपदार्थकूं अनुभवकरतानहीं ॥ किंतु एकदुःखकूंहीं सोपतंग अनुभवकरताहै॥ तैसे कर्मरूपवायुकेवशतें यासंसाररूपीअग्नि विषें प्राप्तहुआ मैंजनक आपणेआत्माकूं तथादुःखकेकारणोंकूं तथाअन्यकिसीपदार्थकूं जाणतानहीं ॥ केवल एकदुःखकूंहीं मैं निरंतर अनु भवकरताहूं ॥ हेभगवन् ॥ ऐसामूढबुद्धिमैंजनक कर्मउपासनाकरिकै गंतव्यस्थानकूं कैसेजाणिसकोंगा ॥ और हेभगवन् ॥ जैसे लोकविषे जोपुरुष गंतव्यग्रामादिकोंकूं जाणताहै॥सोपुरुष ताग्रामकेमार्गकूंभी जाणताहै ॥ तैसे जोमैं कर्मउपासनारूपसाधनकरिके गंतव्यस्थानकूं जाणताहोता तो तागंतव्यस्थानकामार्ग मैं तुम्हारेसैं नहींपूछता ॥ परंतु तागंतव्यस्थानकूं मैं जाणतानहीं ॥ याकारणतेंहीं तागंतव्यस्था नकेज्ञानवासते हमनें आपसें मार्गपूछ्याहै ॥ और हेभगवन् ॥ अधिकारीपुरुषोंकरिकै गंतव्यजोस्थानहै ॥ सो दुर्विज्ञेयहै ॥ यहवार्ता कोई आश्चर्यरूपनहीं ॥ काहेतें यहजीव जभी यास्थूलशरीरतें बाहरनिकसैहै ॥ तभी ताजीवका क्यास्वरूपहोवैहै ॥ और सोजीव किसप्रकारकरिकै परलोकविषेजावैहै ॥ और सोजीव किसफलकूं तहांभोगैहै ॥ याप्रकारकेअर्थकूंभी कोईलोक जाणता नहीं ॥ तौ अधिकारीपुरुषकरिकै गंतव्यस्थानकूं ॥ हम नहींजाणिसकते ॥ यावार्ताविषे कोईआश्चर्यनहीं ॥ यातें हेभगवन् ॥ कर्मउपा सनादिकसाधनोंकरिकै गंतव्यजोस्थानहै ॥ ताकूं मैं जाणतानहीं ॥ याकारणतेंहीं तागंतव्यस्थानकामार्ग मैं आपसैंपूछताहूं ॥ आप कृपा करिकै तागंतव्यस्थानकूं तथाताकेमार्गकूं हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी जनकराजानें याज्ञवल्क्यमुनिके प्रतिकर्‍या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकूं ब्रह्मविद्याकाअधिकारीजाणिकै कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ अधिकारीपुरुष कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकै चित्तकीशुद्धिद्वारा जिसगंतव्यस्थानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ सोगंतव्यस्थान मैं तुमारेताईं उपदे शकरताहूं ॥ तागंतव्यस्थानकेज्ञानकरिकै तुमारा संपूर्णभय निवृत्तहोवैगा ॥ हेजनक ॥ कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकै तूं किसस्थान

उपासनारूपसाधनोंकरिके गंतव्यजोस्थानहै ॥ तिसकूं तुम प्रथमहमारेप्रतिकथनकरो ॥ पश्चात् में तुमारेताईं तागंतव्यस्थानकेमार्गकाउप देशकरोंगा ॥ हेशिष्य ॥ जनकराजाकेप्रति याज्ञवल्क्यमुनिकेपूछणेका यहअभिप्रायहै ॥ जोयहजनकराजा तागंतव्यस्थानकूं जाणिकरिके कुतर्ककरिके हमारेसैंपूछताहै ॥ तो यहजनक श्रद्धावान्नहीं ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकेउपदेशकाअधिकारीनहीं ॥ और जोयहज नक तागंतव्यस्थानकूं नजाणिकरिके हमारेसैं पूछताहै ॥ तो यहजनक श्रद्धावान्है ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकाअधिकारीहै ॥ याअभिप्रायकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेअधिकारकीपरीक्षाकरणेवासतै जनकराजासैं पूछताभया ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजासैंपूछा ॥ तभी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ जनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ हमारेकूं तथाअन्यपुरुषोंकूं कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिके गंतव्यजोस्थानहै तास्थानकूं में जाणतानहीं ॥ और हेभगवन् ॥ जैसे सिंहसर्पादिकोंकरिकेयुक्तवनविषे कोईविदेशीअंधपुरुष आइकेप्राप्तहोवे ॥ और वृद्धअवस्थाकरिकेयुक्तहोवे ॥ और क्षुधापिपासादिक नानाप्रकारकीव्याधियोंकरिके जिसअंधपुरुषकूं आपणेदेशकाभी विस्मरणहुआहोवे ॥ ऐसाअंधपुरुष जैसे तादेशकेमार्गकेजानणेहारे किसोदयालुपुरुषतैं मार्गपूछेहै ॥ तैसे हेमुनीश्वर मैंजनक गंतव्यस्थानकूंनजाणिकरिके आपसैं तास्थानकेमार्गकूंपूछताहूं ॥ अब आपणेअ ज्ञानकूं जनकराजा निरूपणकरेहै ॥ हेभगवन् ॥ जैसे समुद्रतैं लवणकापिंड आवेहै ॥ तैसे जिसस्थानतैं मैं आयाहूं ॥ तिसस्थानकूंभी मैं जाणतानहीं ॥ तो गंतव्यस्थानकूं मैं कैसेजाणोंगा ॥ और हेभगवन्॥ भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनप्रकारकेपदार्थोंकूं आत्माकेकिसीधर्म करिके मैं जाणताहूं ॥ अथवा आत्माकेस्वरूपकरिके मैं जाणताहूं ॥ याप्रकारकेअर्थकूंभी मैंजाणतानहीं ॥ तो गंतव्यस्थानकूं मैं कैसेजा णोंगा ॥ और हेभगवन् ॥ मेराक्यास्वरूपहै याप्रकारकेअर्थकूंभी मैं जाणतानहीं ॥ तो गंतव्यस्थानकूं मैं कैसेजाणोंगा ॥और हेभगवन् ॥ रात्रिदिनविषे मैं सुखदुःखकूंभोगताहूं ॥ परंतु तासुखदुःखका कौनकारणहै याअर्थकूंभी मैं जाणिसकतानहीं ॥ तो गंतव्यस्थानकूं मैं कैसे जाणिसकोंगा ॥ हेभगवन् ॥ बाल्यअवस्थातैंलेके अबपर्यंत सर्वअवस्थाविषे एकदुखकूंहीं मैं अनुभवकरताहूं ॥ परंतु तादुःखकेभोक्ताकूं

हननकरैहै ॥ यातैं हेभगवन् ॥ तामृत्युरूपव्याधका जराव्याधिरूपबाण जबपर्यंत हमारेसन्मुखनहींभया ॥ तबपर्यंत शीघ्रही हमारेकूं मार्गकाउपदेशकरो ॥ विलंबकरणेका यहकालनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभीजनकराजानैं दीनहोइके याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रार्थना करी ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनिजनकराजाकेअधिकारकी परीक्षाकरणेवासते याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ तुमनैं जोहमारेसैंमार्गपूछाहे ॥ सोतुमारेअभिप्रायकाविषय जोगंतव्यपदार्थ हे ताकेजाणेतैंविना हम तामार्गकूंकहनहीं सकते ॥ यातैं प्रथम तूं गंतव्यपदार्थकूंकथनकर ॥ पश्चात् मैं तिसकेमार्गकाउपदेश तुमारेताई करोंगा ॥ यहां मार्गकेचलनेकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजोग्रामादिकहैं ताकूंगंतव्यकहैं हैं ॥ और हेजनक ॥ जैसे लोकविषे जोपुरुष जभीदूरदेशविषेचालैहै ॥ तभी सोपुरुष पृथिवीकेमार्गविषेतो रथकूं तथाअश्वादिकोंकूं ग्रहणकरिकेचालैहै ॥ और जोपुरुष जलकेमार्गविषेचालैहै तो नौकाकूंग्रहणकरिकेचालैहै ॥ तैसे तुमनैंभी प्रज्ञा प्रिय सत्य अनंत आनंद स्थिति याषट्नामोंकरिकेयुक्त जे अग्नि वायु सूर्य दिक् चंद्रमा प्रजापति यहषट्देवताहैं तिनोंकी ब्रह्मरूप करिके उपासनाकरीहै ॥ और अहिंसासत्यादिकदैवीसंपद्केगुणोंकरिकै तूं युक्तहै यातैं देवताकीन्याई सर्वलोकोंकरिके तूं पूजणेयोग्यहै ॥ और वेदोंकेपूर्वकांडकूंभी तुमनैं अध्ययनकऱ्याहै ॥ तथा अनेकऋषियोंतैं तुमनैं उपासनाकेरहस्यकूंभीजान्याहै ॥ और सर्वलोकविषे तुमाराबुद्धिमान्पणाभी प्रसिद्धहै ॥ यातैं हेजनक ॥ याशरीरकापरित्यागकरिकै तिन कर्मउपासनारूपसाधनोंकरिके तूं किसस्थानविषेजावैगा ॥ सो गंतव्यस्थान जोतूं जाणताहोवै ॥ तो हमारेप्रति कथनकरो ॥ पश्चात् मैं तुमारेताईं तागंतव्यस्थानकेमार्गकाउपदेश करोंगा ॥ हेजनक ॥ जैसेगंतव्यरूप जोविदेहदेश तथाकोशलदेश तथाकुरुदेश तथापांचालदेश इत्यादिकदेशहैं ॥ तिनगंतव्यदेशोंकूं नजाणिकरिके जोपुरुष अन्यपथिकपुरुषकेप्रति याप्रकार मार्गकाउपदेशकरे है ॥ यहमार्ग विदेहदेशकाहै ॥ यहमार्ग कोशलदेशकाहै ॥ यह मार्ग कुरुदेशकाहै ॥ यहमार्ग पांचालदेशकाहै ॥ याप्रकार दिशामात्रकरिके जोपुरुष मार्गकाउपदेशकरे है ॥ सोपुरुष मार्गकाउपदेशकरताहुआभी नहींउपदेशकरता ॥ तैसे गंतव्यस्थानकेजाणेतैंविना मार्गकाउपदेशकरणा हमाराव्यर्थमतहोवै ॥ यातैं हेराजन् ॥ चित्तशुद्धिद्वारा कर्म

रेकूं पितानैंकन्याहे ॥ यातें जवपर्यंत तुमारेकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिनहींहोती ॥ तवपर्यंत मैं तुमारेसैं गुरुदक्षिणा नहींलेवोंगा ॥ याक हणेकरिके याज्ञवल्क्यमुनिने जनकराजाकेप्रति यहअर्थ वोधनकऱ्या ॥ अग्निआदिकचारिपादोंकरिकेयुक्त सगुणब्रह्मकेउपासनामात्रकरिके शिष्य कृतार्थहोतानहीं ॥ किंतु निर्गुणब्रह्मकेअपरोक्षज्ञानकरिके शिष्यकृतार्थहोवैहै सो निर्गुणब्रह्मसाक्षात्कार अवपर्यंत तुमारेकूंभया नहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनककेप्रतिकह्या ॥ तभी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकूंलोभतेंरहित देखिके अत्यंतआश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और जिसवस्तुकेज्ञानकरिके शिष्य कृतार्थहोवैहै ॥ तिसवस्तुकेजानणेकीइच्छाकरताहुआ सो जनकराजा आपणेसिंहासनकापरित्यागकरिके भूमिविषे स्थितहोताभया ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं दंडवत्प्रणामकरिके याप्रकार कावचन कहताभया ॥ जनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आपकेताईं हमारा वारंवार नमस्कारहे ॥ हेभगवन् ॥ जैसे कोईअंधपुरुष महान्वनविषेप्राप्तहोइके अनेकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताअंधपुरुषकूंदुःखीदेखिके कोईदयालुपुरुष मार्गकाउपदेशकरिके ताअंधपुरुषकूं वनतेंबाहरनिकासेहै ॥ तैसे संसाररूपीमहान्वनविषे प्राप्तहोइके मैंअज्ञानीजीव अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं अनुभवकरताहूं ॥ और आपकाद यालुस्वभावदेखिके तासंसाररूपीवनतें बाहरनिकसणेकामार्ग मैं आपसैंपूछताहूं॥आप कृपाकरिके तामार्गकाउपदेशकरो॥ अब संसारविषे वनकीसमानता निरूपणकरै हैं ॥ हेभगवन् ॥ जैसे लोकप्रसिद्धवन भयानकसर्पोंकरिकेयुक्तहोवैहै॥ तथा अनेकगर्तोंकरिकेयुक्तहोवैहै॥तथा अनेकवृक्षोंकरिकेयुक्तहोवैहै ॥ तथा अनेकसिंहोंकेशब्दोंकरिके पूर्णहोवैहै ॥तथा अग्निकरिके दग्धहोवैहै तैसे यहसंसाररूपीवनभीकामरूपी सर्पोंकरिकेयुक्तहै॥तथा नारीरूपीमहान्गर्तोंकरिकेयुक्तहै॥तथा नेत्रादिकइंद्रियरूपवृक्षोंकरिकेयुक्तहै॥तथा अहंकाररूपसिंहकेशब्दोंकरिके पूर्णहै॥तथा क्रोधरूपीअग्निकरिके चित्तरूपीभूमि तथाशुभगुणरूपवृक्ष जिसकेदग्धभयेहैं ॥ और हेभगवन्॥जैसे लोकप्रसिद्धवनविषे व्याध पुरुषश्वानोंकूंहाथविषेलेके तथाधनुष्वाणकूंहाथविषेलेके ताश्वानोंकरिके तथाधनुषवाणकरिके मृगोंकूं हननकरैहैं ॥ तैसे यासंसाररूपवन विषेकालरूपव्याध मनरूपश्वानकूंलेके तथा क्षणलवादिकालरूपधनुषविषे जराव्याधिरूपवाणोंकासंधानकरिके अस्मदादिकजीवरूपमृगोंकूं

परंतु इतनेज्ञानमात्रकरिके मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं और हेजनक पूर्वऋषियोंनें जो तुमारेताई अग्निआदिकदेवतावोंकाउपदेशकऱ्याहै सोभी संपूर्णनहींकऱ्या ॥ किंतु एकपादकाउपदेश तुमारेताई कऱ्याहे ॥ तीनपाद बाकीरहतेहैं यातें तिनऋषियोंकेउपदेशविषे न्यूनताहे ॥ हेजनक तिन तीनपादोंकूं तुमश्रवणकरो ॥ अधिदेवरूपअग्नि प्रथमपादहे ॥ और अध्यात्मरूपवाक्इंद्रिय द्वितीयपादहे ॥ और अव्याकृतरूप आकाश तृतीयपादहे ॥ और प्रज्ञानाम चतुर्थपादहे ॥ १ ॥ तथा अधिदेवरूपवायु प्रथमपादहे ॥ और अध्यात्मरूपप्राण द्वितीयपादहे ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहे ॥ और प्रियनाम चतुर्थपादहे ॥ २ ॥ तथा अधिदेवरूपसूर्य प्रथमपादहे ॥ और अध्यात्मरूप चक्षुइंद्रिय द्वितीयपादहे ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहे ॥ और सत्यनाम चतुर्थपादहे ॥ ३ ॥ तथा अधिदेवरूपदिशाप्रथम पादहे ॥ और अध्यात्मरूपश्रोत्रइंद्रिय द्वितीयपादहे ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहे ॥ और अनंतनाम चतुर्थपादहे ॥४॥ तथा अधिदेवरूपचंद्रमा प्रथमपादहे और अध्यात्मरूपमन द्वितीयपादहे ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहे ॥ और आनंदनाम चतुर्थ पादहे ॥५॥ तथा अधिदेवरूपप्रजापति प्रथमपादहे ॥ और हृदय द्वितीयपादहे ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहे॥ और स्थिति नाम चतुर्थपादहे ॥६॥ यहां अग्निआदिकचारिचारिपादोंविषे प्रथमपादकेचिंतनकरणेंतें हिरण्यगर्भकीस्मृतिहोवैहै॥ और दूसरेपादकेचिंतन करणेंतें विराट्भगवान्कीस्मृतिहोवैहै ॥ और तृतीयपादकेचिंतनकरणेंतें अंतर्यामीईश्वरकीस्मृतिहोवैहै ॥ और चतुर्थपादकेचिंतनकरणेंतें तुरीयकीस्मृतिहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति अग्निआदिकचारिपादोंकरिकेयुक्त सगुणब्रह्मकीउपासना षट्वार कहताभया ॥ और जनकराजाभी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति षट्वार याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेभगवन् ॥ हस्तिकेसमानहे वृषभ जिनोंविषे ऐसीजेयौवनअवस्थाकरिकेयुक्तगौवां हैं ॥ तिनगौवोंका एकसहस्रमें तुमारेताई गुरुदक्षिणादेताहूं ॥ आप तिनगौवोंकूंअंगी कारकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारका जनकराजाकावचन षट्वार श्रवणकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी जनकराजाकेप्रति याप्रकारकावचन षट्वार कहताभया ॥ हेजनक ॥ जबपर्यंत शिष्य कृतार्थनहींहोवैहै ॥तबपर्यंत गुरुदक्षिणा ग्रहणकरणेयोग्यनहीं॥याप्रकारकाउपदेश हमा

हेभगवन् ॥ ब्राह्मणोंकेआगमनविषे दोप्रकारकेनिमित्त प्रसिद्धहैं ॥ एकतो जनकराजाकीसभाविषेजाइके सुवर्णसहितगौवोंकूं हम प्राप्तहोवैंगे यहनिमित्तहै ॥ और दूसरा जनकराजाकीसभाविषेजाइके सर्वब्राह्मणों सैं आत्माकेस्वरूपका हम निर्णयकरैं गे यहनिमित्तहै ॥ हेभगवन् ॥ दोनोंनिमित्तोंविषे जिसनिमित्तकरिकै आपका यहां आगमनहुआहै ॥ सोनिमित्त आप कृपाकरिकैकहो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी जनकराजाने याज्ञवल्क्यमुनिसैंपूछा ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेजनक ॥ गौवोंकीप्राप्ति तथा आत्माकानिर्णय यादोनोंनिमित्तकरिकै हमारा यहांआगमनभयाहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार आपणेआगमनविषे दोनिमित्तकहिके सो याज्ञवल्क्यमुनि पुनःजनककेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेजनक ॥ आजदिनतैंलेके पूर्वपूर्व तुम्हारेताईं जोजोब्राह्मण जिसजिस ज्ञानकाउपदेशकरताभयाहै ॥ तिसतिसज्ञानकेश्रवणकरणेकी हमारेकूंइच्छाहै ॥ सोज्ञान जोगोप्यनहींहोवै ॥ तो हमारेप्रति तुमकथन करो ॥ तो तुम्हारेज्ञानकूं श्रवणकरिकै पश्चात् मैं तुम्हारेप्रति उपदेशकरोंगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजा सैंपूछा ॥ तभी सो जनकराजा पूर्वमुनियों नैं जोअनेकप्रकारकाज्ञान उपदेशकऱ्याथा ॥ सोसंपूर्णज्ञान याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं श्रवणकरावताभया ॥ जनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ शिलिननामाऋषिकापुत्र जित्वानामाऋषि अग्निदेवताकूंहीं ब्रह्मरूपकहताभया ॥ १ ॥ और शुल्वनामाऋषिकापुत्र उदंकनामाऋषि वायुदेवताकूंहीं ब्रह्मरूपकहताभया ॥ २ ॥ और वृष्णुनामाऋषिकापुत्र वकुंनामाऋषि सूर्यकूंहीं ब्रह्मरूपकहताभया ॥ ३ ॥ और भारद्वाजगोत्रविषेहैउत्पत्तिजिसकी ऐसाजो गर्दभीविपीतनामाऋषिहै ॥ सो दिशावोंकूंहीं ब्रह्मरूप कहताभया ॥ ४ ॥ और जाबालाकापुत्र ॥ सत्यकामनामाऋषि चंद्रमादेवताकूंहीं ब्रह्मरूपकहताभया ॥ ५ ॥ और अभीमृत्युकूंप्राप्तभया जोविदग्धनामाशाकल्यऋषि ॥ सो प्रजापतिदेवताकूंहीं ब्रह्मरूपकहताभया ॥ ६ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार पूर्वऋषियोंनैं उपदेशकऱ्याजो ब्रह्मकास्वरूप ॥ सो जभी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यकेप्रतिकह्या ॥ तभी सो याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ अग्निआदिकदेवता सर्वजगत्केनिर्वाहकूं चलावणेहारेहैं ॥ यातैं ब्रह्मरूपकरिकैतिनोंकीउपासनाकरणीश्रेष्ठहै॥

काहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे स्कंधदेशविषे तथापृष्ठदेशविषे उत्पन्नभयाजोगडूरोग ॥ सो मनुष्योंकूं तथापशुवोंकूं दुःख कीप्राप्तिकरेहै ॥ तैसे मैंजनक पुरुषोंकेस्कंधोंऊपर आरूढहोइके तथा हस्ति अश्वउष्ट्रोंकेपृष्ठऊपर आरूढहोइके तिनोंकूं दुःखकीप्राप्ति करताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं अश्वादिकोंऊपर नहींआरूढहोताहूं ॥ तो आरूढहोणेकीइच्छाकरिके मेरेकूंदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं अश्वादिकोंऊपर आरूढहोताहूं ॥ तो गडूरोगकीतुल्यता प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं अश्वादिकोंऊपर आरोहणरूपव्यवहारभी सर्वथादुःख काहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे काक गृहकेशिखरऊपरबैठिके अप्रियशब्दोंकूं उच्चारणकरेहै ॥ तैसे मानकरिकेयुक्तहुआ मैंजनक सर्वलोकोंसें ऊंचेआसनऊपरबैठताहूं ॥ और नानाप्रकारकेअप्रियशब्दोंकूं उच्चारणकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं ऊंचेसिंहासनऊ पर नहींबैठताहूं ॥ तो मानकेभंगतैं दुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ और जोमैं ऊंचेसिंहासनऊपरबैठताहूं ॥ तो काककीतुल्यताप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ऊंचेसिंहासनऊपरस्थितिरूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे आसक्तिकरिकेयुक्तहुआ सर्प पृथिवीविषेस्थितधनकीरक्षाकरेहै ॥ तैसे धनकीआसक्तिकरिकेयुक्तहुआ मैंजनक सर्वदाधनकीरक्षाकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैंधनकीरक्षानहींकरता ॥ तो धनकेवियोगकरिके मेरेकूंदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं धनकीरक्षाकरताहूं ॥ तो सर्पकीतुल्यता प्राप्तहोवै है ॥ यातैं धनकीरक्षारूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे ग्रामकाशूकर आपणेस्त्री पुत्रादिककुटुंबविषे अत्यंतआसक्तहोवैहै ॥ तैसे मैंजनकभी स्त्रीपुत्रादिककुटुंबविषे अत्यंतआसक्तहूं ॥ याकारणतैंहीं यहअज्ञानीजनक किस गतिकूंप्राप्तहोवैगा याप्रकारके विद्वान्पुरुषोंकेशोकका मैंविषयहूं ॥ यातैं हेभगवन् ॥ अध्यात्म अधिभूत अधिदैव यहतीनप्रकारकेदुःखहैं तीनशाखा जिसकी ॥ तथा अज्ञानरूपलोहतैंहै उत्पत्तिजिसकी ॥ ऐसाजोयहसंसाररूपशूलहै ॥ ताकेविषेप्राप्तहुआ जोमैंअज्ञानीजीवहूं ॥ ताके उद्धारकरणेवासतेही आपका यहां आगमनभयाहै ॥ हेभगवन् ॥ आपके यहां आगमनका जोप्रयोजन हमनैंजान्याथा ॥ सो आपके आगेकथनकर्‍या ॥ अब जिसनिमित्तकरिके आपका यहां आगमनभयाहै ॥ सोनिमित्त आप कृपाकरिकेहमारेप्रति कहो ॥

कूंभक्षणकरताहूं तात्पर्ययहजोमैंअन्नादिकोंकूंनहींभक्षणकरताहूं ॥ तौ क्षुधाकरिकैमेरेकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं अन्नादिकोंकूं भक्षणकरताहूं तो राक्षसोंकीतुल्यता प्राप्तहोवै है ॥ और ताभोजनकेपरिणामकालविषेभी दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं भोजनरूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे श्मशानभूमिविषेस्थित मृतकशरीरकूं पिशाच ग्रहणकरैहै ॥ तैसे कामरूपीपिशाचकेआवेशकरिकैयुक्तहुआ मैंजनकसर्वदाअशुचस्त्रीकेशरीरकूं आलिंगनकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं स्त्रीकाआलिंगन नहींकरताहूं ॥ तो कामकरिके दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं स्त्रीकाआलिंगनकरताहूं ॥ तो पिशाचकीतुल्यताप्राप्तहोवैहै ॥ और स्त्रीसंभोगकेपरिणामकालविषेभी अनेकदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहैयातैं स्त्रियोंकासंभोगरूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे कोई निर्दयराक्षस मनुष्यादिकशरीरोंकूंहननकरैहै ॥ तैसे गंधकेलोभकरिकैयुक्तहुआ मैंजनक चंदनादिकसुगंधपदार्थोंकूं घर्षणकरिके यादुर्गंधशरीरविषेलगावताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं चंदनादिकोंकूं नहींलगावताहूं ॥ तौ तिनोंकी इच्छाकरिके दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं चंदनादिकोंकूं शरीरविषेलगावताहूं ॥ तौ राक्षसकीतुल्यताप्राप्तहोवै है ॥ यातैं चंदनादिकोंकालेपरूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे शांतस्वभाववालेमुनियोंकूं विनाहीअपराधतैं राक्षस हननकरैहै ॥ तैसे मृगयारूपीव्यसनकरिकैयुक्तहुआ मैंजनक तृणपर्णोंकूंभोजनकरणेहारे मृगोंकूं विनाहीअपराधतैं हननकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं मृगोंकूंनहींहननकरता तौ मृगयारूपव्यसनकरिके हमारेकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं मृगोंकूंमारताहूं ॥ तौ राक्षसोंकीतुल्यताप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यहमृगयारूपव्यवहारभी सर्वथा दुःखकाही कारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे तेलकारपुरुष तिलोंकूंयंत्रविषेपीडिके तेल निकासैहै ॥ तैसे द्रव्यकेलोभकरिकैयुक्तहुआमैंजनकप्रजाकूं नानाप्रकारकीपीडादेकरिके तिनोंतैंद्रव्यकूंलेताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं प्रजातैंद्रव्यकूंनहींलेताहूं ॥ तौ द्रव्यकीइच्छाकरिकेदुःख होवैहै ॥ और जोमैं प्रजातैंद्रव्यलेताहूं ॥ तौ तेलकारपुरुषकीतुल्यता प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं प्रजातैंद्रव्यकाग्रहणरूपव्यवहारभी सर्वथादुःख

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे सप्तमाऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ सप्तमअध्यायप्रारंभः ॥ तहां षष्ठेअध्यायविषे यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब सप्तमअध्यायविषे तिसीबृहदारण्यकउपनिषद्केअर्थकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां षष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिनें जनकराजाकेप्रति उपदेशकरीजाब्रह्मविद्या ॥ ताब्रह्मविद्याकूं गुरुकेमुखतेंश्रवणकरिकै सोशिष्य पुनः ब्रह्मविद्यायुक्तकथाकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहुआ आपणेगुरुसें याप्रकारपूछताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनें ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंका तथा वामदेवादिकअधिकारीप्रजाका जोपरस्परसंवादहै ॥ तासंवादकरिकै नानाप्रकारकेवैराग्यादिकसाधन आपनें निरूपणकरे ॥ और याआत्मपुराणकेदूसरेअध्यायविषे आपनें तिसीऋग्वेदकेकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ ताद्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्र प्रतर्दनकेसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें निरूपणकरी ॥ और ॥ याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे आपनें तिसीकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तातृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रु बालाकीब्राह्मणकेसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें निरूपणकरी ॥ और याआत्मपुराणकेचतुर्थअध्यायविषे आपनें यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ ताचतुर्थअध्यायविषे दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषे स्थितऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद आपनें निरूपणकऱ्या ॥ तथा सर्वज्ञदध्यङ्अथर्वणऋषिकेसाथ अश्विनीकुमारोंकासंवाद आपनें निरूपणकऱ्या ॥ तथा दध्यङ्अथर्वणकेउपदेशतें जाब्रह्मविद्या अश्विनीकुमारोंकूंप्राप्तभईथी ॥ तथा जाब्रह्मविद्या देवराजइंद्रकूं प्राप्तभईथी साब्रह्मविद्याभी आपनें निरूपणकरी ॥ तथा परउपकारविषेहैप्रीतिजिसकी ऐसाजोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषिहै ॥ सो देवराजइंद्रतें तथाअश्विनीकुमारों तें जिस मस्तककाछेदनरूपआपदाकूंप्राप्तभयाथा ॥ ताआपदाकाभी आपनें निरूपणकऱ्या और याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे आपनें तिसीबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या॥तापंचमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ आश्वलादिकब्राह्मणोंकासंवाद आपनेंनिरूपणकऱ्या ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकाजय

तथा शाकल्यब्राह्मणकामृत्यु आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ और याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं तिसीबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ ताषष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति जाब्रह्मविद्याउपदेशकरीथी तासंपूर्णब्रह्मविद्या आपनैं निरूपण करी ॥ तथाजिसकामवरकरिकै जनकराजा कृतकृत्यभावकूंप्राप्तभयाथा ॥ सोकामवरभीआपनैं निरूपणकऱ्या ॥ हेभगवन् ताषष्ठेअ ध्यायकेअंत्यविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीस्त्रीकेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेशदेकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणक रताभया ॥ हेभगवन् सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीस्त्रीकेप्रति जाब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरताभयाहै ॥ ताब्रह्मवि द्याकेश्रवणकरणेकी हमारेकूंइच्छाहै ॥ आप कृपाकरिकै ताब्रह्मविद्याकाउपदेश हमारेप्रतिकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोश्रीगुरु परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया ॥ और बृहदारण्यकउपनिषद्के मधुकांडविषे तथा याज्ञवल्क्यकांडविषे कथनकरीजाकथाहै ॥ साकथा सोगुरु शिष्यकेप्रति कहताभया॥कैसीहैसाकथा॥अधिकारीपुरुषोंकेमनकूं तथाश्रवणकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहारीहै॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ जिसयाज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि बाल्यअवस्थातैंलेके वृद्धअवस्थापर्यंत विषयोंकीइच्छातैंरहितहोताभया ॥ यद्यपि सोयाज्ञवल्क्यमुनि बाहरतैं विकारीपुरुषोंकीन्याईं लोकोंकूंप्रतीतहोताभया ॥ तथापि सोयाज्ञ वल्क्यमुनि आपणेचित्तविषे सर्वविकारोंतैंरहितहोताभया ॥ तथा सर्वलोकोंकेउपकारविषे जिसयाज्ञवल्क्यमुनिकी सर्वदा प्रीतिहोती भई ॥ ऐसायाज्ञवल्क्यमुनि विद्याकीप्राप्तिवासते बाल्यअवस्थाविषेही तपकाआरंभकरताभया ॥ तायाज्ञवल्क्यमुनिकेतपकूंदेखिकै भय युक्तहुआदेवराजइंद्र तायाज्ञवल्क्यमुनिकेतपविषे विघ्नकरणेवासते अनेकअप्सरावोंकूं तहाँ भेजताभया ॥ ताअप्सरारूपवधूकोंकरिकेयुक्त जोमहान्वनहै ॥ तावनविषेस्थितहुआसोयाज्ञवल्क्यमुनि तिनअप्सरावोंकेहावभावकूंदेखिकरिकैभी आपणेधैर्यतैंनहींचलायमानहोता भया ॥ अब याज्ञवल्क्यमुनिकेतपकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ जभी वर्षाकालआवै ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि वृक्षकीन्याईं तथापर्वत कीन्याईं छत्रादिकआवरणतैंविनाही समानभूमिविषेस्थितहोताभया ॥ और मेघोंकेजलकीधाराकूं आपणेशरीरऊपरसहनकरताभया ॥

और जभी उष्णकालआवे॥तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि मध्याह्नकेसूर्यकरिके तपायमानकरीजापाषाणकीशिलाहै ताशिलाऊपर चारोंओरतें अग्निजगाइके तिनअग्नियोंकेमध्यविषेस्थितहोताभया॥और जभी शीतकालआवे॥तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि हिमयुक्तदेशविषेस्थित जोस्थिर जलहै ताजलविषे स्थितहोताभया॥और ऋग् यजुष् साम यहतीनवेदहैंस्वरूपजिसका ऐसाजोआदित्यमंडलविषेस्थित सूर्यभगवान्हैतासूर्यभगवान्विषे आपणेनेत्रोंकीदृष्टिकूंएकाग्रकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि मनकरिके तासूर्यभगवान्काध्यानकरताभया॥और आपणेप्राणोंकी रक्षाकरणेवासते ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि वृक्षोंकेपत्रोंकूं तथामूलफलोंकूं भक्षणकरताभया ॥ सोपत्रादिकोंकाभक्षणभी दिनदिनविषे नहीं करताभया ॥ किंतु कभीतो सोयाज्ञवल्क्यमुनि तीसरेदिनविषे पत्रादिकोंकाभक्षणकरताभया ॥ और कभीतो सोयाज्ञवल्क्यमुनि षष्टे दिनविषे पत्रादिकोंकाभक्षणकरताभया ॥ और कभीतो सोयाज्ञवल्क्यमुनि द्वादशदिनविषे पत्रादिकोंकाभक्षणकरताभया ॥ इसप्रकार पत्रादिकोंकाभक्षणकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेशरीरकूंसुखावताभया ॥ और निद्रातें तथाश्रमतें रहितहोताभया ॥ और पूर्व उपनयनकालविषे पितानेंउपदेशकऱ्याजोगायत्रीमंत्र ॥ तागायत्रीमंत्रकूं वाणीकरिकेजपताहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमनकरिके निरंतर सूर्यभगवान्काध्यानकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिनें जभी बहुतकालपर्यंत तपकऱ्या ॥ तभी याज्ञवल्क्यमुनिकेतपकरिके प्रसन्नहुआसोसूर्यभगवान् पुरुषकेरूपकूंधारणकरिके तायाज्ञवल्क्यमुनिकेसन्मुख स्थितहोताभया ॥ तासूर्यभगवान्कूंदेखिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि तासूर्यभगवान्केप्रति दंडवत्प्रणामकरताभया ॥ और संपूर्णजगत्काबाह्यप्राणरूप तथा महान्तपकाफलरूप जोसूर्यभगवान्है ॥ ताकूंदेखिकरिके प्रसन्नमनहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि तासूर्यभगवान्कीस्तुतिकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रेमकूंदेखिके सोसूर्यभगवान्भी बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और तासूर्यभगवान्केनेत्र आनंदकेअश्रुवोंकरिके पूर्णहोतेभये ॥ और प्रेमकरिके ॥ तासूर्यभगवान्केरोमांच खडेहोतेभये ॥ इसप्रकार प्रेमकरिकेपूर्णहुआ सोसूर्यभगवान् आपणेदोनोंहस्तोंकूं याज्ञवल्क्यमुनिकेमस्तकऊपरराखताभया ॥ और सोसूर्यभगवान् तायाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेपुत्र ॥ तूं बाल्यअवस्था

विषे यावनविषेस्थितहोइके महान्तपकरिके बहुतक्लेशकूंप्राप्तभयाहै ॥ तातुमारेतपकरिकै मैंसूर्यभगवान् बहुतप्रसन्नभयाहूं ॥ यातें जिसपदार्थकेप्राप्तिकीइच्छा तुमारेकूंहोवे ॥ तिसपदार्थकेप्राप्तिकावर तूं हमारेसैंमांग ॥ मैंसूर्यभगवान् तुमारेप्रति तिसीपदार्थकीप्राप्तिकरौंगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी सूर्यभगवान्नें याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमस्तकऊपर दोनोंहाथोंकूंजोडिकरिके तथा नीचेमुखकरिकै सूर्यभगवान्केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेसूर्यभगवान् आप सर्वजगत्केप्राणहो ॥ तथा संपूर्णशुभअशुभकर्मकेसाक्षीहो ॥ यातें याजगत्विषे यद्यपि आपकूंकोईपदार्थअज्ञातनहीं है तथापि आपकेसमीप मैंबालक आपणेवृत्तांतकूंकथनकरताहूं ॥ हेभगवन् व्यासभगवान्काशिष्यजोवैशंपायननामाऋषिहै॥ तावैशंपायननें मैंयाज्ञवल्क्य पूर्व विद्याअध्ययनकरताभया॥और मैंयाज्ञवल्क्य शरीरमनवाणीकरिकै देवताकीन्याई तावैशंपायननामागुरुकीसेवाकरताभया ॥ और किसीकालपाइके सर्वऋषिमिलिकै परस्पर याप्रकारकासंकेत आपसमें करतेभये ॥ जोऋषि आजदिनविषे महामेरुऊपर समाजविषेनहींआवेगा ॥ तिसऋषिकूं सप्तरात्रितैंअनंतर ब्रह्महत्याकीप्राप्तिहोवैगी ॥ याप्रकारका जो तिनऋषियोंकासंकेतथा ॥ तासंकेतकूं हमारागुरुवैशंपायन भेदनकरताभया ॥ तासंकेतकेभेदनकरणेकरिके तावैशंपायनकूं किंचित्निमित्तकरिके ब्रह्महत्याकीप्राप्तिहोतीभई ॥ ताब्रह्महत्याकरिके ग्लानिकूंप्राप्तभयाहैमुखजिसका ऐसावैशंपायननामाहमारागुरु ताब्रह्महत्याकेनिवृत्तिवासते हमसर्वशिष्योंकेप्रति प्रायश्चित्तकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य तिनसर्वब्रह्मचारियोंऊपरअनुग्रहकरिके भक्तिपूर्वक तावैशंपायननामागुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेगुरो ॥ आपकाशरीर वृद्धअवस्थाकरिकै युक्तहै ॥ यातें ताप्रायश्चित्तकरणेविषे आपकातोसामर्थ्य हैनहीं ॥ और यहजेआपकेशिष्यहैं ॥ ते बाल्यअवस्थाकरिकेयुक्तहैं ॥ यातें इनशिष्योंकाभी ताप्रायश्चित्तकरणेविषे सामर्थ्यनहीं ॥ और मैंयाज्ञवल्क्य दृढशरीरवालाहूं ॥ तथा यौवनअवस्थाकेसन्मुख प्राप्तभयाहूं ॥ यातें आपकेब्रह्महत्याकी निवृत्तिवासते मैंही ताप्रायश्चित्तकूंकरोंगा ॥ हेभगवन् ॥ याप्रकारकावचन जभी हमनें वैशंपायननामागुरुकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोवैशंपा

यननामा हमारागुरु ब्रह्महत्याकेप्रभावतें विपरीतभावकूंप्राप्तहोइके हमारेऊपर उलटाकोधवान्होताभया ॥ इसप्रकार क्रोधकूंप्राप्तहुआ सोवैशंपायननामाहमारागुरु निर्दयपुरुषकीन्याई याप्रकारकावचन हमारेप्रति कहताभया॥हेब्राह्मणोंकेनिंदकयाज्ञवल्क्य तुमारेताई जावि द्या हमनेंदई है ॥ तिसविद्याकूं शीघ्रहीं तुम परित्यागकरो ॥ हेभगवन् ॥ याप्रकारकावचन जभी तावैशंपायनगुरुनें हमारेप्रतिकह्या ॥ तभी मैंयाज्ञवल्क्य आपणेअपराधकेक्षमाकरावणेवासतै आपणेशरीरमनवाणीकरिकें नानाप्रकारकेनमस्कारादिकउपायोंकूंकरताभया ॥ परंतु सोवैशंपायननामा हमारागुरु हमारेऊपर प्रसन्ननहींहोताभया॥किंतु उलटा हमारीप्रार्थनाकूंदेखिकरिकें सोवैशंपायननामा हमारागुरु अधिकक्रोधवान्होइके याप्रकारकावचन हमारेप्रति कहताभया॥हेब्राह्मणोंकेनिंदकयाज्ञवल्क्य जोतूं हमारेप्रसन्नकरणेवासतै उद्यमकरैगा॥ तौ तेरेशरीरप्राणादिकोंकूंनाशकरणेहाराशाप मैंतुमारेताई देवोंगा॥ताशापकरिकें इसलोकविषे तथा परलोकविषे तूं दुःखकूंहींप्राप्तहोवैगा॥ यातें जोतुमारेकूं इसलोकके तथापरलोकके सुखकीइच्छाहोवै॥तौ हमारेप्रसन्नकरणेकेउपायोंकापरित्यागकरिकें शीघ्रही हमारीविद्याकाप रित्यागकरो॥जोतूंहमारीविद्याका शीघ्रहींपरित्याग नहींकरेगा॥तौइसीकालविषे मैंतुमारेकूंशापदेकेनष्टकरोंगा॥हेभगवन्॥याप्रकारकावचन जभीतावैशंपायननामागुरुनें हमारेप्रतिकह्या॥तभी मैंयाज्ञवल्क्य तागुरुतैंभयकूंप्राप्तहोइके तागुरुकेप्रसन्नकरणेकेउपायोंतैंनिवृत्तहोताभया ओर जैसे कोईपुरुष अन्नकावमनकरैहै ॥ तैसे मैंयाज्ञवल्क्य तासंपूर्णविद्याकावमनकरताभया ॥ इसप्रकार संपूर्णविद्याकापरित्यागकरि के सोमैंयाज्ञवल्क्य विद्यातैंरहितहोताभयाहूं ॥ ओर मनुष्यगुरुतैंविद्याअध्ययनकरिकें हमनें पूर्व दुःखकाअनुभवकऱ्याहै ॥ यातें पुनःकिसीमनुष्यगुरुकेआगे विद्याकीप्राप्तिवासतै में प्रार्थनाकरतानहीं ॥ याकारणतें पुनःविद्याकीप्राप्तिवासतै मैंयाज्ञवल्क्य आपई श्वरकेशरणकूंप्राप्तभयाहूं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकीप्रार्थना जभी याज्ञवल्क्यमुनिनें सूर्यभगवान्केआगेकरी ॥ तभी सोसूर्यभग वान् याज्ञवल्क्यमुनिकूं आपणेरथविषेस्थापनकरिकें व्याकरणादिकषट्अंगोंयुक्त चारिवेदोंकाअध्ययन याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति करावताभया ॥ ओर जैसे पूर्व अंभिणीनामादेवता सूर्यभगवान्काशिष्यहोताभया॥ तैसे सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी सूर्यभगवान्काशिष्यहो

ताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सूर्यभगवान्नैं संपूर्णवेदोंकियथार्थअर्थकूंजाणिकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि गृहस्थआश्रमकरणेतैंविरक्तहोताभ
या ॥ और तिसीब्रह्मचर्यआश्रमतैंहीं सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेका उद्यमकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार
तायाज्ञवल्क्यमुनिकूंविरक्तहुआदेखिके सोसूर्यभगवान् तायाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ सूर्यभगवानुवाच ॥
हेयाज्ञवल्क्य ॥ विद्याकेअध्ययनतैंअनंतर शिष्यनैं गुरुकेप्रति गुरुदक्षिणा अवश्यदेणी यहशास्त्रकीआज्ञाहै ॥ यातैं हमनैं जोतुमारेप्रति
विद्यादई है ताविद्याकीगुरुदक्षिणा तुमहमारेप्रतिदेवो याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेभगवन् ॥ जागुरुदक्षिणा आप हमारेप्रतिकहो ॥ सागु
रुदक्षिणा मैं आपकेताईदेवों ॥ सूर्यभगवानुवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य याप्रकारकीगुरुदक्षिणा हम तुमारेसैंमांगतेहैं ॥ तूं अभी संन्यासआश्र
मकूंग्रहणमतकर ॥ किंतु अभीतुम गृहस्थआश्रमकाग्रहणकरो ॥ और हमनैं जोतुमारेप्रति वेदविद्याउपदेशकरीहै ॥ तावेद विद्याका
अधिकारी ब्राह्मणोंकेप्रति तथा अधिकारीक्षत्रियवैश्योंकेप्रति उपदेशकरो ॥ इसप्रकार हमारेविद्याकीसंप्रदायकूंप्रवर्त्तकरिके पश्चात् आपनैं
संन्यास आश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ याप्रकारकी हमारीआज्ञाकूं तुमअंगीकारकरो यहही हमारीगुरुदक्षिणाहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य तिनचा
रिवेदोंविषे जाउपनिषद्भागरूपब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या तुमनैं संन्यासआश्रमतैंपूर्व अथवा संन्यास
आश्रमतैंउत्तर विषयवासनातैंरहित अधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही उपदेशकरणी ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी सूर्यभगवान्नैं याज्ञवल्क्यमुनि
केप्रति आज्ञाकरी ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि तासूर्यभगवान्केआज्ञाकूं आपणेमस्तकऊपरराखिके तथा सूर्यभगवान्केताईं दंडवत्प्रणा
मकरिके भूमिलोकविषेआवताभया ॥ तहांभूमिलोकविषेजाइके सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेयज्ञवल्कनामापितातैं गृहस्थआश्रमकरणेकी
आज्ञामांगताभया ॥ तापिताकीआज्ञाकूंपाइके सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजातैंधनकूंलैके दोस्त्रियोंकूं विवाहताभया ॥ तहां एकतो का
त्यायननामाऋषिकीपुत्री कात्यायनीनामास्त्री ॥ और दूसरी मित्रयुनामाऋषिकीपुत्री मैत्रेयीनामास्त्री ॥ इसप्रकार गृहस्थआश्रमकूंधारण
करिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि जैसे पूर्व ब्रह्मचर्यआश्रमविषे वेदोंकेअध्ययनकरिके ऋषियोंकेऋणकूं निवृत्तकरताभया ॥ तैसे देवतावोंकेऋ

णकूं तथा पितरोंकेऋणकूंभी निवृत्तकरताभया ॥ तहाँ बहुतदक्षिणाकरिकैयुक्त जेअग्निष्टोमादिकयज्ञहैं॥तिनयज्ञोंकूंकरिकै सोयाज्ञवल्क्य मुनि देवतावोंकेऋणकीनिवृत्तिकरताभया ॥ और आपणेसमानगुणवालेजेश्रद्धावान्पुत्रहैं तथापुत्रियांहैं ॥ तिनोंकूंउत्पन्नकरिकै सोयाज्ञव ल्क्यमुनि पितरोंकेऋणकीनिवृत्तिकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पूर्व आपनैं याज्ञवल्क्यमुनिकूंविरक्तकह्या ॥ और अभीआपनैं याज्ञ वल्क्यमुनिकूंऋणकीप्राप्तिकही सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जोपुरुष विरक्तहोवैहै ॥ ताकूं ऋणकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ और जोपुरुष ऋणवानहो वैहै ॥ ताकेविषे विरक्ततासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य यहयाज्ञवल्क्यमुनि विरक्तहै॥ यातें ताकेविषे यद्यपि ऋणकीप्राप्तिसंभवैनहीं॥ तथापि ब्रह्मचर्यआश्रमकेसंबंधतैं तथा गृहस्थआश्रमकेसंबंधतैं तायाज्ञवल्क्यमुनिविषे ऋणकीप्राप्तिसंभवैहै॥तहाँश्रुति॥जायमानोवैब्राह्मण स्त्रिभिर्ऋणैर्ऋणवान्जायते ॥ अर्थयह ॥ उपनयनसंस्कारकरिकैयुक्तजोब्राह्मणहै ॥ सोब्राह्मण ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणोंक रिकैयुक्तहोवैहै ॥ १ ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे ब्रह्मचर्यआश्रमवालापुरुष ऋषियोंकाऋणीहोवैहै ॥ तैसे गृहस्थआश्रमवालापुरुषभी देवतावोंका तथापितरोंकाऋणीहोवैहै ॥ और जोपुरुष तीव्रवैराग्यकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरेहै ॥ तिससंन्यासीपुरुषकूं जैसे लौकिकपुरुषोंकाऋण प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यहतीनप्रकारकावैदिकऋणभी तासं न्यासीकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें संन्यासआश्रमतैंपूर्व विद्वान्पुरुषकूंभीतितेतीनऋण अवश्यप्राप्तहोवैहैं ॥ किंवा जैसे यालोकविषे पुत्रकेजन्मा दिकनिमित्तोंकेप्राप्तहुए यहपुरुष पुत्रइष्टिआदिककर्मोंकूंअवश्यकरेहै ॥ यातें तेपुत्रकेजन्मादिक पुत्रइष्टिआदिककर्मोंकेकरणेविषे निमित्त कारणहैं ॥ तैसे ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणोंकीनिवृत्तिवासते शास्त्रनैं विधानकरेजेकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंकेकरणेविषे ब्रह्मच र्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम यहदोनोंआश्रम निमित्तकारणहैं ॥ याकारणतें संन्यासआश्रमतैंपूर्व विद्वान्पुरुषनैंभी तिनतीनऋणोंकी निवृत्तिवासतै तिनकर्मोंकूंअवश्यकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ब्रह्मचर्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम यहदोनोंआश्रमहीं याअधिकारी पुरुषकूं जोतीनऋणोंकीप्राप्तिकरतेहोवैं ॥ तो यहअधिकारीपुरुष तिनदोनोंआश्रमोंकूंकिसवासते ग्रहणकरताहै ॥ किंतु तिनदोनों

आश्रमोंकापरित्यागकरिके यहअधिकारीपुरुष प्रथम वानप्रस्थआश्रमकूंहींग्रहणकरे ॥ जाकरिके यहअधिकारीपुरुष तिनतीनोंऋणोंतैंमुक्त होवै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मचर्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम यादोनोंआश्रमोंकेग्रहणतैंविना प्रथमहीं वानप्रस्थआश्रमकाग्रहण करणा योग्यनहीं ॥ काहेतैं स्मृतिविषे यहकह्याहै ॥ अनाश्रमीनतिष्ठेत क्षणमेकमपिद्विजः ॥ अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या तीनवर्णोंकानामद्विजहै ॥ तेद्विज किसीआश्रमतैंविना एकक्षणमात्रभी नहींस्थितहोवैं ॥ किंतु ब्रह्मचर्यादिकचारिआश्रमोंविषे किसीएक आश्रमकूंग्रहणकरिकेही यहद्विज यामनुष्यलोकविषेस्थितहोवैं ॥ जोपुरुष किसीआश्रमतैं बिनाअनाश्रमीरहैहै ॥ तापुरुषकूं पापकीप्रा प्तिहोवैहै ॥ १ ॥ यास्मृतिविषे आश्रमतैंविना द्विजकेस्थितिका निषेधकर्‍याहै ॥ यातैं ब्रह्मचर्यादिकचारिआश्रमोंविषे किसीएकआश्रमकूं ग्रहणकरिकेही द्विजनैं यामनुष्यलोकविषे स्थितहोणा ॥ और शास्त्रविषे तो वानप्रस्थआश्रमग्रहणकरणेकेकालकानियमकथनकर्‍याहै ॥ यातैं ब्रह्मचर्य गृहस्थ यादोनोंआश्रमोंके ग्रहणतैंविना प्रथमहीं वानप्रस्थआश्रमकाग्रहणसंभवैनहीं ॥ अब वानप्रस्थआश्रमकेग्रहण करनेकेकालकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ मनुस्मृतितैंआदिलेके जेधर्मशास्त्रहैं ॥ तिनोंविषे यहकह्याहै ॥ यहगृहस्थाश्रमवाला पुरुष जिसकालविषे आपणेशरीरमैं चर्मकीशिथिलतादेखे॥तथा आपणेकेशोंविषे शुक्लवर्णदेखे॥तथा आपणेपुत्रोंकेपुत्रोंकूंउत्पन्नहुआदेखे॥ तिसीकालविषे सोगृहस्थपुरुष पूर्वगृहस्थआश्रमकापरित्यागकरिके वनविषेनिवासरूप वानप्रस्थआश्रमकाग्रहणकरे ॥ याप्रकार शास्त्रों विषे वानप्रस्थआश्रमग्रहणकरणेकाकाल कथनकर्‍याहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ ब्रह्मचर्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम यादोनोंआश्रमोंकूं न ग्रहणकरिके यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् बाल्यअवस्थाविषे तथायौवनअवस्थाविषे वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरेगा ॥ तो वानप्र स्थआश्रमकेकालकूंबोधनकरणेहारेशास्त्रकाविरोधहोवैगा ॥ और जोयहअधिकारीपुरुष तावानप्रस्थआश्रमकेकालपर्यंत किसीआश्रमतैं विनाहीं स्थितहोवैगा ॥ तो अनाश्रमीनतिष्ठेत क्षणमेकमपिद्विजः ॥ यावचनकाविरोधहोवैगा ॥ यातैं ब्रह्मचर्यआश्रमतैं तथागृहस्थआश्रम तैं प्रथमहीं वानप्रस्थआश्रमकाग्रहण श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रतैंविरुद्धहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे गृहस्थआश्रमतैंविनाहीं ब्रह्मचर्यआश्रमतैं

अनंतर संन्यासआश्रमकाग्रहणहोवैहै ॥ तैसे गृहस्थआश्रमतैंविनाहीं ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकेग्रहणकरणेविषे कोनबा
धकहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य जैसे तीव्रवैराग्यकेउत्पन्नहुए श्रुतिनैं ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर तथागृहस्थआश्रमतैंअनंतर संन्यासआश्रमका
विधानकऱ्याहै॥तैसे ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकाविधान किसीश्रुतिस्मृतिनैंकऱ्यानहीं यातैं याअधिकारीपुरुषनैं गृहस्थआ
श्रमतैंअनंतरहीं वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषनैं गृहस्थआश्रमकूंग्रह
णकरणा ॥ और तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषनैं वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ याप्रकारकाजोआपनैंनियमकह्या सोसं
भवेनहीं ॥ काहेतैं ॥ ब्रह्मचर्यपरिचरेदाशरीरविमोक्षणात् ॥ अर्थयह ॥यास्थूलशरीरकेनाशपर्यंत यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमकूंसेव
नकरे ॥ १ ॥ यावसिष्ठभगवान्केवचनसैं तानियमकाविरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ मरणपर्यंत यहअधिकारीपुरुष एकआश्रम
कासेवनकरे ॥ याप्रकारकेअर्थकूंबोधनकरणेहारा जोवसिष्ठभगवान्कावचनहै ॥ सोवचन पूर्वउक्तक्रमकानिवारणकरैनहीं ॥ किंतु उलटा
ताक्रमकूं सोवचन दृढकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य तावसिष्ठभगवान्केवचनका यहअभिप्रायहै॥ब्रह्मचर्य
आश्रमविषे तथा गृहस्थआश्रमविषे तथा वानप्रस्थआश्रमविषे याअधिकारीपुरुषका जोअत्यंतरागहोवे ॥ तो ताअधिकारीपुरुषनैं मरण
पर्यंत ताआश्रमकेनहींपरित्यागकरणेकासंकल्पकरिके मरणपर्यंत ताआश्रमविषेहीस्थितहोणा ॥ इसप्रकारकादृढसंकल्पकरिके जोपुरुष
एकआश्रमविषेहीस्थितहोवैहै ॥ सोपुरुष उत्तरउत्तरआश्रमकेनहींग्रहणकरणेकरिके पापरूपदोषकूंप्राप्तहोवैनहीं तात्पर्ययह ॥ जैसे राग
पूर्वक एकआश्रमकेसेवनकरणेहारेपुरुषकूं पापरूपदोषकीप्राप्तिहोवे है ॥ तैसे दृढसंकल्पपूर्वक एकआश्रमकेसेवनकरणेहारेपुरुषकूं तापा
परूपदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जिसकूंगृहस्थआश्रमकरणेकीइच्छानहीं है ऐसाजोनैष्ठिकब्रह्मचारीहै ॥ सोनैष्ठिकब्रह्मचा
री वनविषेनिवासादिरूप वानप्रस्थकेकर्मोंकूंकरिके आपणेविषे वानप्रस्थभावकूंसिद्धकरेगा॥ यातैं गृहस्थआश्रमतैंउत्तरहीं वानप्रस्थआश्र
महोवैहै याप्रकारकीव्यवस्थासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे कोईगृहस्थपुरुष आपतकालकेप्राप्तहुए वनविषेनिवास
करैहै ॥ तथाभिक्षाअटन काषायवस्त्रोंकूंधारणकरैहै ॥ परंतु वनविषेनिवासादिरूप वानप्रस्थकेकर्मोंकेकरणेकरिके सोगृहस्थपुरुष

वानप्रस्थहोइसकेनहीं ॥ तथा भिक्षाअटनादिरूप संन्यासीकेकर्मकरणेकरिके सोगृहस्थपुरुष संन्यासीहोइसकेनहीं ॥ तैसे सोनैष्ठिकब्रह्म चारीभी वनविषेनिवासकरणेकरिके वानप्रस्थहोइसकेनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे गृहस्थपुरुष देवतावोंका तथा पितरोंका ऋणीहोवैहै ॥ तैसे यहब्रह्मचारी यद्यपि देवतावोंका तथा पितरोंका ऋणीनहीं है॥तथापि सोब्रह्मचारी ऋषियोंकाऋणीहै ॥ और जोअधिकारी पुरुषवानप्रस्थ आश्रमकूंग्रहणकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणोंकीनिवृत्तितैंविना ॥ वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहण करैनहीं ॥ किंतु तिनतीनऋणोंकूंनिवृत्तकरिकेही सोअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरे है ॥ याकारणतैंभी वनकेसेव नकरिके सोनैष्ठिकब्रह्मचारी वानप्रस्थभावकूं प्राप्तहोइसकेनहीं ॥ किंवा जैसे यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमतैंविना गृहस्थ आश्रमकूंग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मचर्यआश्रमकूंप्रथमग्रहणकरिकेहीं पश्चात् यहअधिकारीपुरुष गृहस्थआश्रमकाग्रहणकरैहै ॥ तैसे यह अधिकारीपुरुष गृहस्थआश्रमतैंविना वानप्रस्थआश्रमका ग्रहणकरैनहीं॥किंतु प्रथमगृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरिकेही पश्चात् यहअधिकारी पुरुष वानप्रस्थआश्रमकाग्रहणकरे ॥ यातैं यहक्रमसिद्धभया ॥ यहअधिकारीपुरुष प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रमकूंग्रहणकरे॥ताब्रह्मचर्यआश्रमतैं अनंतर यहअधिकारीपुरुष गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरे ॥ तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरे ॥ याप्र कारकाक्रम अनेकश्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ ब्रह्मचर्यादगृहीभवेद्गृहाद्वनीभवेत् ॥ अर्थयह ॥ यहअ धिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरे ॥ और गृहस्थआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरे ॥१॥ तहांदक्ष प्रजापतिकीस्मृति॥श्लोक॥त्रयाणामानुलोम्यंस्यात्प्रातिलोम्यंनविद्यते॥प्रातिलोम्येनयोयाति नतस्मात्पापकृत्तमः॥अर्थयह ॥ प्रथमब्रह्मचर्य आश्रम तिसतैंअनंतर गृहस्थआश्रम तिसतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रम याप्रकारकेक्रमकानाम अनुलोमहै ॥और प्रथमगृहस्थआश्रम तिसतैं अनंतर ब्रह्मचर्यआश्रम तिसतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रम ॥ अथवा प्रथमब्रह्मचर्यआश्रम तिसतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रम तिसतैंअनंतर गृहस्थआश्रम ॥ याप्रकारकेविपरीतक्रमकानाम प्रतिलोमहै ॥ तहां जोअधिकारीपुरुष अनुलोमकरिके ब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंकूंग्रहण

करैहै ॥ तिसपुरुषकूं महान्पुण्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोपुरुष प्रतिलोमकरिकै तिनब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं महान्पापकीप्राप्तिहोवैहै यातैं अनुलोमकरिकैही याअधिकारीपुरुषनैं तिनआश्रमोंकूंग्रहणकरणा ॥ शंका ॥ जैसे ब्रह्मचर्यादिकतीन आश्रमोंविषे आपनैं क्रमकह्या ॥ तैसे चतुर्थसंन्यासआश्रमविषे आपनैं सोक्रम किसवासतैनहींकह्या ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंविषे जिसप्रकारकाक्रम श्रुतिस्मृतिनैं कथनकर्‌याहै ॥ तिसप्रकारकाक्रम संन्यासआश्रमविषे किसीश्रुतिस्मृतिनैं कथनकर्‌यानहीं ॥ यातैं संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेविषे कोईक्रमनहीं किंतु जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषकूं तीव्रवैराग्य प्राप्तहोवै ॥ तिसीकालविषे यहअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकाग्रहणकरै ॥ तहाँश्रुति ॥ यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत् यदिवेतरथाब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेद्गृहाद्वावनाद्वा ॥ अर्थयह ॥ याअधिकारीपुरुषकूं जिसदिनविषे तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तिसीदिनविषे सोअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ तहाँ याअधिकारीपुरुषकूं पूर्वलेपुण्यकर्मों केवशतैं जोकदाचित् ब्रह्मचर्यआश्रमविषेहीतीव्रवैराग्यकी प्राप्तिहोवै ॥ तो यह अधिकारीपुरुष ताब्रह्मचर्यआश्रमतैंही संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ और याअधिकारीपुरुषकूं गृहस्थआश्रमविषे जोकदाचित् तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तो यह अधिकारीपुरुष तागृहस्थआश्रमतैंही संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ और याअधिकारीपुरुषकूं जोकदाचित् वानप्रस्थआश्रमविषे तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तो यहअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमतैंही संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ १ ॥ तहांस्मृति ॥ श्लोक ॥ यदेववास्यवैराग्यं जायतेसर्ववस्तुषु ॥ तदेवसंन्यसेद्विद्वान् अन्यथापतितोभवेत् ॥ अर्थयह ॥ याअधिकारीपुरुषकूं जिसकालमैं सर्वपदार्थोंविषे तीव्रवैराग्यउत्पन्नहोवै ॥ तिसीकालविषे सोअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ याकेविषेकोईक्रमहैनहीं ॥ परंतु तावैराग्यतैंविना संन्यासकूंकरताहुआ यहपुरुष पतितहोवैहै॥ १॥हेशिष्य ॥इसतैंआदिलेके अनेक श्रुतिस्मृतियोंविषे संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेविषे तीव्रवैराग्यकूंही मुख्यकारणकह्याहै ॥ सोतीव्रवैराग्य जिसआश्रमविषे यापुरुषकूंप्राप्तहोवै॥तिसीआश्रमतैं यहपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे श्रुतिस्मृतियों नैं ब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंकाक्रम

निरूपणकऱ्याहे ॥ तैसे कितनीकश्रुतिस्मृतियोंनें संन्यासआश्रमकाभीक्रमहीं कथनकऱ्याहे ॥ तहाँश्रुति ॥ ब्रह्मचर्यादगृहीभवेदगृहाद्वनी भवेद्वनात्प्रव्रजेत् ॥ याश्रुतिविषे वानप्रस्थआश्रमतैंअनंतरहीं संन्यासआश्रमकाविधानकऱ्याहे ॥ तहाँ स्मृति ॥ श्लोक ॥ ऋणत्रयमपाकृत्य निर्ममोनिरहंकृतः ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवाथ वैश्योवाप्रव्रजेद्गृहात् ॥ अर्थयह ॥ ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणोंकीनिवृत्तिकरिके अहंममअभिमानतैंरहित जोब्राह्मणहै अथवा क्षत्रियहै अथवा वैश्यहै ॥ यहतीनोंवर्ण संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरैं ॥ १ ॥ यास्मृतिविषेभी तीनऋणोंकीवृत्तितैंअनंतरही संन्यासआश्रमकाविधानकऱ्याहे॥ यातैं संन्यासकेअक्रमकूंबोधनकरणेहारी श्रुतिस्मृतियोंका तथा संन्यासके क्रमकूंबोधनकरणेहारी श्रुतिस्मृतियोंका परस्परविरोधप्राप्तहोवे हे ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ विषयभोगोंतैं जिसपुरुषकूंतीव्रवैराग्य नहींप्रा प्तभयाहे ॥ किंतु मंदवैराग्य प्राप्तभयाहे ॥ तामंदवैराग्यवान्पुरुषकेप्रति तेश्रुतिस्मृतियां वानप्रस्थआश्रमतैंअनंतर चतुर्थअवस्थाविषे संन्यासआश्रमकाविधानकरेंहैं ॥ और जिसपुरुषकूं विषयभोगोंतैं तीव्रवैराग्य प्राप्तभयाहे ॥ तातीव्रवैराग्यवान्पुरुषकेप्रति तेश्रुतिस्मृतियां ब्रह्मचर्यादिकआश्रमोंविषेभी संन्यासआश्रमकाविधानकरेंहैं॥यातैं संन्यासआश्रमकेअधिकारीपुरुषोंकेभेदहोणेतैं तिनश्रुतिस्मृतियोंका पर स्परविरोधहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ न्यासोहिब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे संन्यासआश्रमकूं ब्रह्मरूपकह्याहे ॥ और तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरं ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मकूं पूर्वउत्तरभावतैंरहितकह्याहे ॥ यातैं जैसे ब्रह्मविषे पूर्वउत्तरभावनहीं हे ॥ तैसे ब्रह्मरूपसंन्यासविषेभी पूर्वउत्तरभावसंभवेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे ब्रह्मचर्यआश्रमतैंउत्तर गृहस्थआश्रमहोवे हे ॥ तैसे संन्यासआश्रमतैंउत्तरभी कोईआश्रमहोवे हे अथवा नहींहो वे हे ॥ समाधान ॥ हेशिष्य जैसे ब्रह्मचर्यआश्रमतैंउत्तर गृहस्थआश्रमहोवैहे ॥ तथा गृहस्थआश्रमतैंउत्तर वानप्रस्थआश्रमहोवे हे ॥ तैसे संन्यासआश्रमतैंउत्तर कोईदूसराआश्रमहोवैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मचर्यादिकसर्वआश्रमोंका यहसंन्यासआश्रमहीं अवधिरूपहे ॥ यह वार्ता शारीरिकभाष्यकेतृतीयअध्यायकेचतुर्थपादविषे ॥ तद्भूतस्यतुनातद्भावोजैमिनेरपिनियमात्तद्रूपाभावेभ्यः याचालीसमेंसूत्रविषे श्रीव्यासभगवान्नें तथा ॥ तासूत्रकेव्याख्यानकरता श्रीभाष्यकारों नें विस्तारतैंनिरूपणकरीहे ॥ तासूत्रकासंक्षेपतैं यहअर्थ हे ॥ संन्यास

आश्रमतैंऊपर किसीआश्रमकेग्रहणकरणेका बोधनकरणेहारीकोईश्रुतिस्मृतिहैनहीं ॥ तथा शिष्टपुरुषोंका ऐसाआचारभीदेखणेविषे आवतानहीं ॥ याकारणतैं चतुर्थ संन्यासआश्रमकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै ॥ तापुरुषका शरीरकेनाशपर्यंत ताचतुर्थआश्रमतैंऊपरअवरोह होवैनहीं ॥ १ ॥ हेशिष्य चतुर्थसंन्यासआश्रमतैंऊपर किसीआश्रमकाग्रहणहोवैनहीं ॥ यहवार्ता जैसे सर्वशास्त्रोंविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे द्विज नैं किसीआश्रमतैंविना नहींस्थितहोणा यहवार्ताभी श्रुतिस्मृतिआदिकसर्वशास्त्रोंविषेप्रसिद्धहै ॥ तहां दक्षप्रजापतिकीस्मृति ॥ श्लोक ॥ अनाश्रमीनैवतिष्ठेदब्दमेकमपिद्विजः ॥ आश्रमेणविनातिष्ठन् प्रायश्चित्तीयतेहिसः ॥ अर्थयह ॥ यालोकविषे द्विज आश्रमतैंविना एकवर्ष पर्यंतभीनहींस्थितहोवे ॥ किंतु किसीएकआश्रमकूंअंगीकारकरिकेही यहद्विज स्थितहोवे ॥ और जोद्विज एकवर्षपर्यंतभी आश्रमतैंविना रहैहै ॥ताद्विजकूं प्रायश्चित्तकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जबपर्यंत याद्विजकीस्त्रीजीवैहै ॥ तबपर्यंत गृहस्थआश्रमहोवैहै ॥ और स्त्रीकीमृ त्युतैं अनंतर सोगृहस्थआश्रम निवृत्तहोइजावैहै॥यातैं याद्विजनैं स्त्रीकेमृत्युतैंअनंतर एकवर्षकेभीतरहीकेतोपुनःस्त्रीकाविवाहकरणा॥अथवा वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ अथवा संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरणा॥ परंतु किसीआश्रमग्रहणतैंविना अनाश्रमीहोइके द्विजनैं कदा चित्भीनहींरहणा॥ १ ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ ब्रह्मचर्यआश्रमविषे ऋषियोंकेऋणकीनिवृत्तिकरिके तथागृहस्थआश्रमविषे देवतापि तरोंकेऋणकीनिवृत्तिकरिके यहअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरे ॥ तावानप्रस्थआश्रमविषे यहअधिकारीपुरुष तीनोंऋणोंतैंर हितहोवैहै ॥ और जैसे ब्रह्मचारी देवताऋण पितृऋण यादोनोंऋणोंतैंरहितहोवैहै ॥ तथा गृहस्थ ऋषियोंकेऋणतैंरहितहोवैहै ॥ तथा वान प्रस्थ ऋषिऋणदेवऋण पितृऋण यातीनोंऋणोंतैंरहितहोवैहै ॥ तैसे यहचतुर्थआश्रमवालासंन्यासी लौकिकवैदिकसर्वऋणोंतैंरहितहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारशास्त्रकीव्यवस्थाकूंजानणेहारा सोयाज्ञवल्क्यमुनि मनकरिके सर्वऋणोंतैंमुक्तहुआभी तागृहस्थआश्रमकेसंबंधतैं तिनऋणोंकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ गृहस्थआश्रमकूंअंगीकारकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि जिसविचारकरिके देवतापितरोंकी प्रसन्नताकरणेवासते गोसुवर्णअन्नादिकपदार्थोंकादानकरताभया ॥ ताविचारकूं तूंश्रवणकर ॥ मैंयाज्ञवल्क्यनैं ब्रह्मचर्यआश्रमविषे वेदों

काअध्ययनकरिके जिसप्रकारऋषियोंकाऋणदियाहे ॥ तिसीप्रकार देवतावोंकाऋण तथापितरोंकाऋण देकरिके पश्चात् में संन्यासआश्र
मकूंग्रहणकरोंगा ॥ जोकदाचित् ऋषियोंकीन्याई देवतापितरोंकाऋण में नहींदेवोंगा ॥ तो ऋषि देवता पितर यातीनोंकाविषमअर्चनरूप
पंक्तिभेदहोवेगा ॥ यातैंऋषियोंकीन्याई देवतापितरोंकेताईभी में भलीप्रकार ऋणदेवों॥इसप्रकार तीनऋणोंकीनिवृत्तिकरिके मैंयाज्ञवल्क्य
जभी संन्यासआश्रमकाग्रहणकरोंगा तभी हमारेगुरुसूर्यभगवान्नें जोहमारेप्रति आज्ञाकरीथी ॥ ताआज्ञाकापालन हमारेसैं भलीप्रकारहो
वेगा ॥ यातैं सूर्यभगवान्केवचनकूंसत्यकरणेवासते मैंयाज्ञवल्क्य स्वर्गादिकलोकोंकोप्राप्तिकरणेहारा जोयज्ञादिरूपप्रवृत्तिमार्ग हे॥तथामो
क्षकीप्राप्तिकरणेहाराजोआत्मज्ञानरूपनिवृत्तिमार्ग हे ॥ तिनदोनोंमार्गोंका पालनकरों ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिके सोयाज्ञव
ल्क्यमुनि देवतापितरोंकीप्रसन्नताकरणेवासते नानाप्रकारकादानकरताभया ॥ अब तायाज्ञवल्क्यमुनिकेगृहस्थआश्रमकावर्णनकरेहें ॥
हेशिष्य ॥ रात्रिदिनविषेसर्वजीवोंकेउपकारकरणेहारा जोयाज्ञवल्क्यमुनिकागृहस्थआश्रमहे ॥ ताकूंदेखिकरिके सर्वलोक आश्चर्यकूंप्राप्तहो
तेभये ॥ तहाँ कात्यायनी मैत्रेयीयादोनोंभार्यासहित तथाआज्ञाकारीपुत्रोंसहित सोयाज्ञवल्क्यमुनि यज्ञहोमादिककर्मोंकूंकरिके इंद्रादिकदेव
तावोंकापालनकरताभया॥औरदिनदिनविषे वेदकेपाठादिकोंकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि ऋषियोंकापालनकरताभयाओर पुत्रादिकोंकीउत्प
त्तिकरिके तथा पिंडदानादिकोंकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि स्वर्गवासी पितरोंकापालनकरताभया ॥ और रात्रिविषेनिवासकरणेकेस्थान
तथानानाप्रकारके अन्न तथा नानाप्रकारकेवस्त्र तथा सुवर्णादिकधन इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेपदार्थोंकादानकरणेकरिके सोयाज्ञ
वल्क्यमुनि अर्थिमनुष्योंकापालनकरताभया ॥ औरतृणादिकोंकेदानकरणेकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि गो अश्वादिकपशुवोंकापालनकरता
भया ॥ और अन्नकेपकावणेकेजेपात्रहें ॥ तथा भोजनकरणेकेजेपात्रहें ॥ तिनपात्रोंविषे परिशेषतैंरह्याजोअन्नहे ॥ ता अन्नके पावणेकरिके
तथा बलिदानादिकोंकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि काक श्वानकीटादिकजंतुवोंका पालनकरताभया ॥ और जैसे यालोकविषे किसीउदार
धनीपुरुषकेगृहविषे दुंदुभिकेशब्दोंकरिके अन्नार्थिजीवोंकूंबुलावेहें ॥ तैसे तायाज्ञवल्क्यमुनिकेगृहविषे वेदवाणीरूपधेनुके स्वाहा वषट्

स्वधा हंत याचारिस्तनरूपशब्दोंकरिके देवतादिकोंका आवाहनकरतेभये ॥ तहां स्वाहा वषट् यादोनोंशब्दोंकरिके इंद्रादिकदेवतावोंका आवाहनकरतेभये ॥ और स्वधा याशब्दकरिके पितरोंका आवाहनकरतेभये ॥ और हर्षकाबोधनकरणेहाराजोहंतशब्दहै ताहंतशब्दकरिके अन्नार्थिमनुष्योंकूंबुलावतेभये ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारका अद्भुतगृहस्थआश्रम तायाज्ञवल्क्यमुनिकाहोताभया ॥ अब याज्ञवल्क्यमुनिके कात्यायनीस्त्रीकावृत्तांत निरूपणकरे हैं ॥ हे शिष्य साकात्यायनीनामास्त्री गृहकेकार्योंविषे अत्यंतकुशलहोतीभई ॥ तहां आपणेगृहकीजेभित्तियां हैं तथागृहकीजाभूमिहै तथागृहकेजेद्वारहैं तथायज्ञशालाकीजाभूमिहै ॥ इत्यादिकसंपूर्णस्थानोंकूं साकात्यायनी दिनदिनविषे मार्जनकरिकेशुद्धकरतीभई और साकात्यायनी चूनादिकशुक्लमृत्तिकाकरिकेसंपूर्णगृहकूं दुग्धकीन्याई शुक्लकरतीभई और तागृहकीशोभावासते साकात्यायनी कहांकहां तागृहकूं संधुरादिकोंकरिके रक्तवर्णयुक्तकरतीभई ॥ और साकात्यायनी तागृहकूं कहांकहां रक्तपीतादिकवर्णोंकरिकेविचित्ररूपवालाकरतीभई ॥ और साकात्यायनी अन्नपकावणेकेपात्रोंकूं तथा जलकेघटोंकूं तथा कमंडलुवोंकूं तथा तिनोंकेढाकणेकेअल्पपात्रोंकूं भस्मादिकोंसेमार्जनकरिके सर्वदाशुद्धराखतीभई ॥ और जैसे भीमसेननलादिक पाकविद्याविषेकुशलहैं॥तैसे साकात्यायनीभी सूर्यकेतेजकरिके तथाप्रसिद्धअग्निकेतेजकरिके भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य याचारिप्रकारकेअन्नकूं पकावतीभई ॥ और साकात्यायनी प्रातःकालविषे उठिके स्नानादिकनित्यकर्मोंकूंकरिके आपणेपतिकापूजनकरतीभई ॥ तथा आपणेपतिकेजेमातापिताहैं तथापतिकेजेज्येष्ठकनिष्ठभ्राताहैं तथा भगिनियां हैं ॥ तिनसंपूर्णबांधवोंका साकात्यायनी यथायोग्यपूजनकरतीभई ॥ हेशिष्य इसप्रकार गृहकेव्यवहारोंविषे अत्यंतकुशलबुद्धिकरिके साकात्यायनी सर्वस्त्रियोंविषेप्रधानहोतीभई ॥ ताकात्यायनीके समान व्यवहारविषेकुशल कोईस्त्री पूर्वहुईनहीं और आगेहोवेगीनहीं और अभीवर्तमानकालविषेहैनहीं अब याज्ञवल्क्यमुनिके दूसरीमैत्रेयीस्त्रीकावृत्तांत निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य तायाज्ञवल्क्यमुनिकी दूसरीमैत्रेयीनामास्त्रीहोतीभई ॥ सामैत्रेयी संसारसंबंधिजन्ममरणादिकदुःखोंकूंदेखिके उन्मत्तपुरुषकीन्याईविचरतीभई ॥ और जैसे वत्सकेमरणेकरिके गौ सर्वदाशोकातुररहेहै ॥ तैसे सामैत्रेयी

याप्रकारकाविचारकरिके सर्वदाशोकातुर रहतीभई ॥ अब ताकेविचारकानिरूपणकरेहैं ॥ मैं मैत्रेयी कौनहूं ॥ देहादिकसंघातरूपमेंहूं ॥ अथवा देहादिकसंघाततैं मैं भिन्नहूं ॥ तहाँ देहादिकसंघाततैंभिन्नहुईभीमैं क्याजडरूपहूं अथवा चैतन्यरूपहूं ॥ और इसमनुष्यलोकविषे मैं किसप्रयोजनवासतेआईहूं ॥ और इसशरीरकोउत्पत्तितैंपूर्व मैं किसस्थानविषेस्थितथी ॥ और अभीवर्तमानकालविषे मैं किसविषेस्थितहूं ॥ और मरणतैंअनंतर मैं किसस्थानकूंप्राप्तहोवोंगी ॥ और यामेरेपतिकाक्यास्वरूपहे ॥ और यामेरेपुत्रपुत्रियोंकाक्यास्वरूपहे ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकेसिद्धजेयहस्थूलशरीरहैं तिनोंकेही पतिपुत्रादिकनामहैं ॥ अथवा तिनशरीरोंतैंभिन्नकिसीवस्तुके पतिपुत्रादिकनामहैं ॥ सोभिन्नवस्तुभी जडहै अथवा चेतनहे ॥ यहरीतिआगेभीजानिलेणी ॥और दिनदिनविषे जोमेरेकूंदुःखहोवेहै॥ तादुःखका क्यास्वरूपहे ॥ और विषयसंबंधतैं जोमेरेकूंसुखहोवे है ॥ तासुखका क्यास्वरूपहे ॥ और जिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकरिके मैं रूपादिकविषयोंकूंदेखतीहूं ॥ तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंका क्यास्वरूपहे ॥ और जिनस्थावरजंगमजीवोंकूं मैं आपणेनेत्रोंकरिकेदेखतीहूं ॥ तिनजीवोंका क्यास्वरूपहे ॥ हेशिष्य याप्रकारकाविचारआपणेमनविषे सदैवकरतीहुई सामैत्रेयी परमशोकातुरहोतीभई ॥ और तामैत्रेयीस्त्रीकेचित्तकेसर्ववृत्तांतकूं जाणताहुआभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेगृहस्थआश्रमकीसिद्धिवासतैं पूर्व तामैत्रेयीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरताभया ॥ किंतु सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीस्त्रीकूं गृहकेकार्योंविषे प्रवृत्तकरताभया ॥ अब याज्ञवल्क्यमुनिकेवृत्तांतकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकूं गृहस्थआश्रमविषेरहतेहुए जभी बहुतकालवितीतभया ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि एककालविषे एकांतस्थानविषेबैठिके याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ यहबडाआश्चर्य है ॥ यालोकविषे सर्वदेहधारीजीवोंकूं अत्यंतप्रियजोप्राणोंकाधारणहे ॥ सोप्राणोंकाधारणहीं परमदुःखरूपहे॥काहेतैं यहजीव शरीररूपबंधनगृहकूं जोग्रहणकरे हैं ॥ सोप्राणोंकेधारणवासतैंहीं ग्रहणकरेहैं ॥ कैसाहैयहशरीर त्वक् रुधिर मांस मेद मज्जा अस्थि वीर्य यासप्तधातुवोंकरिकेपूर्ण है॥ तथा वात पित्त कफ यातीनदोषोंवालाहे ॥तथा पूय विष्ठा मूत्र इत्यादिकमलोंकरिकेपूर्ण है॥याकारणतैंहीं यहशरीर अत्यंतदुर्गंधवालाहै॥तथा नानाप्रकारकेभयकीप्राप्तिकरणेहाराहे ॥ पुनःयह

शरीरकेसाहै॥आध्यात्मिकदुःख तथा आधिभौतिकदुःख तथा आधिदैविकदुःख यातीनप्रकारकेदुःखोंकरिकेयुक्तहै ॥तहाँ शिरोरोग अक्षिरोगअतीसार प्लीह गुल्म भगंदर गुदावर्त्त गंडमाला इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकीव्याधियोंकरिके उत्पन्नभयेजेनानाप्रकारकेदुःखहैं ॥ तथा काम क्रोध द्वेष लोभ मोहादिरूपआधियोंकरिके उत्पन्नभयेजेनानाप्रकारकेदुःखहैं॥ यादोनोंप्रकारकेदुःखोंकानाम आध्यात्मिकदुःखहै॥और सिंहसर्पवृश्चिक शत्रु इत्यादिकभूतोंकरिकेजन्य जेनानाप्रकारकेदुःखहैं ॥ तिनदुःखोंकानाम आधिभौतिकदुःखहै ॥ और शीत आतप वर्षा अग्निजल वायु इत्यादिकदेवतावोंकरिकेजन्य जेनानाप्रकारकेदुःखहैं ॥ तिनदुःखोंकानाम आधिदैविकदुःखहै ॥ पुनःयहशरीरकैसाहै ॥ बाल्य यौवन वृद्ध यातीनअवस्थावोंविषे राग द्वेष मोह शोक अशक्ति इत्यादिकविकारोंकरिके नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और याशरीरविषेजोप्राणोंकाप्रवेशहै ॥ तथा याशरीरतैंजोप्राणोंकानिर्गमनहै ॥ यादोनोंकेस्मरणकरिके उत्पन्नभयाजोभयहै ॥ सोभय सर्वअवस्थावोंविषे अस्मदादिकजीवोंकूं दुःखकोहीप्राप्तिकरे हैं ॥ ताभयजन्यदुःखतैंअधिकदुःख माताकेगर्भविषे तथामरणकालविषेभी होवैनहीं ॥ इसतैंआदिलेके जोअनेकप्रकारकेदुःख इसलोकविषे तथापरलोकविषे जीवोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ सो शरीरकेसंबंधतैंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ शरीरकेसंबंधतैंविना याजीवोंकूं कदाचित्भी दुःखकोप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं यहशरीरकासंबंधही सर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ किंवा ॥ एकांतदेशविषेनिवासकरणेहारे जेजीवन्मुक्तविद्वान्पुरुषहैं ॥ तिनमुक्तपुरुषोंकूंभी जभीयहशरीर दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ तभी संसारविषेआसक्त जे अस्मदादिकजीवहैं ॥ तिनोंकूं यहशरीर दुःखकोप्राप्तिकरैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ किंवा ॥ आपणेएकशरीरविषे जोअहममअभिमानरूपसंगहै ॥ सोसंगभी जभीयाजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखकोप्राप्तिकरैहै ॥ तभी याशरीरकेसंबंधी जेस्त्रीपुत्रादिकअनेकबांधवहैं ॥ तिनोंविषे अहंममअभिमानरूपसंग याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकेविषेक्याकहणाहै अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै अनेक दृष्टांतोंकरिके संगविषे दुःखकीकारणताकानिरूपणकरे हैं ॥ तहां वास्तवतैंसर्वसंगतैंरहित जोनिर्गुणआत्माहै ॥ सोआत्माभी अविद्यादिकोंकेकल्पितसंगकरिके नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवे है यातैं यहसंगही सर्वजीवोंके अनर्थकाकारणहै ॥ किंवा ॥ स्वभावतैंशीतस्पर्शवालाजोजलहै ॥ सोजल जभी अग्निकेसाथसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोजल उष्णभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्व

भावतें छेदनभावतेंरहितजोवृक्षहै ॥ सोवृक्ष जभी कुठारकेसंगकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी सोवृक्ष छेदनभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्वभावतें छेदन भावतेंरहितजोयहशरीरहै ॥ सोशरीर जभी शस्त्रकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोशरीर छेदनभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्वभावतेंअंतर्मुखजो मनहै ॥ सोमन जभी विषयोंकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोमन बहिर्मुखताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पूर्वलेपापकर्मोंकरिकैयुक्तजोपापीपुरुषहै ॥ सोपापीपुरुष जभी दुष्टपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभीहीसोपापीपुरुष तापापकेदुःखरूपफलकूंअनुभवकरैहै ॥ और स्वभावतें दुःखतें रहितजोधर्मात्मापुरुषहै ॥ सोधर्मात्मापुरुष जभी दुःखीपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोधर्मात्मापुरुष अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ औरस्वभावतें कामदोषतेंरहितजोपुरुषहै॥ सोपुरुष जभी कामीपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोपुरुष कामदोषकूंप्राप्तहोवैहै इसप्रकार स्वभावतें चोरीआदिकविकारोंतेंरहित जोपुरुषहै ॥ सोपुरुष जभी चौरादिकपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोपुरुष चोरीआदिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अम्लरसवालेजेदाडिमनिंबुआदिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकेदर्शनरूपसंगतें यापुरुषकेमुखकाजल द्रवीभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्वभावतें क्रियातेंरहितजोलोहहै ॥ सोलोह जभी चुंबकपाषाणकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोलोह नानाप्रकारकी गमनआगमनादिरूपक्रियाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार यहजीव स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेसंगकूं प्राप्तहोइके नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ यालोकविषे जडरूपकरिकेप्रसिद्धजेलोहादिकपदार्थ हैं ॥ तेलोहादिकजडपदार्थभी चुंबकादिकजडपदार्थोंकेसंगकरिके जभी नानाप्रकारकेविकारोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तभी यहचेतनजीव स्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकेसंगकरिके नानाप्रकारके विकारोंकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ यातें अहंमम अभिमानरूपसंगकरिकेयुक्तहुआ यहशरीरही सर्वजीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ याअर्थविषे मैंयाज्ञवल्क्यहीदृष्टांतहूं ॥ काहेतें पूर्व ब्रह्मचर्य अवस्थाविषे मैंयाज्ञवल्क्य सर्वसंगतेंरहितहोताभया ॥ यातें मेरेकूं किंचित् मात्रभीविक्षेपकीप्राप्तिनहींहोतीभई ॥ सोईमैंयाज्ञवल्क्य अभी स्त्रीपुत्रादिकोंकेसंगकरिके नानाप्रकारकेविक्षेपकूंप्राप्तहोताहूं ॥ यातें यह जान्याजावैहै ॥ यहसंगही परमदुःखकाकारणहै अब स्त्रीपुत्रादिकोंकेसंगविषे अन्वयव्यतिरेककरिके विक्षेपकीकारणताकानिरूपणकरैहैं ॥

पूर्व ब्रह्मचर्यअवस्थाविषे मैंयाज्ञवल्क्य आपणेशरीरकूंभी विष्ठाकेसमानमलिनजाणिके परमवैराग्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और परमधैर्यकूंधारणकरिके मैंयाज्ञवल्क्य वनविषेतपकरताभया तावनविषे स्वर्गलोककीअप्सराआइके नानाप्रकारकेहावभावकरिके हमारेधैर्यकूंचलायमानकरतीयांभयां ॥ परंतु तिनअप्सरावोंकेहावभावकरिके हमाराधैर्य नहीं चलायमानहोताभया ॥ कैसीथींतेअप्सरा ॥ बहुतकामरूपीभारकरिके मंदमंदहैगतिजिनोंकी ॥ तथा आपणेशरीरकीसुगंधिकरिके केतकीचंपकादिकपुष्पोंकेसुगंधकूं तिरस्कारकऱ्याहैजिनोंनें ॥ तथा सुवर्णकेपुष्पोंसमानहै शरीरकीकांतिजिनोंकी ॥ तथा पीनउन्नतजेस्तनहैंतथाजघनस्थानहै तिनोंतें वायुनेहरणकरेहैंवस्त्रजिनोंके तथा पौर्णमासीकेचंद्रमासमानहैं मुखजिनोंके ॥ तथा चंद्रमाकेसमानउज्वलजेवस्त्रभूषणहैं तिनवस्त्रभूषणोंकरिकेशोभायमानहैंशरीरजिनोंके ॥ ऐसीस्वर्गकी अप्सरा आपणेकटाक्षोंकरिके मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीयांभयां ॥ कैसेहैंतिनअप्सरावोंकेकटाक्ष ॥ कामीपुरुषोंकेधैर्यकूं नष्टकरणेहारेहैं ॥ तथा संभोगकीइच्छारूपउत्कृष्टअभिप्रायकूंबोधनकरणेहारेहैं ॥ और तेअप्सरा आपणेमधुरवचनोंकरिकेभी मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीयांभयां ॥ कैसेहैंतिनोंकेवचन ॥ अत्यंतकोमलहैं ॥ तथा मंदमंदहासयुक्तहैं ॥ तथा कामीपुरुषोंकेमनकूंहरणकरणेहारेहैं॥ तथा प्रसिद्धजिनोंकाअर्थ है ॥ तथा गंभीरजिनोंकाअभिप्रायहै ॥ तथा घृतकीन्याई कामरूपअग्निकूंप्रज्वलितकरणेहारे हैं ॥ तथा दीर्घललितस्वरकरिके जिनोंकाउच्चारणहै ॥ ऐसेमधुरशब्दोंकरिके तथा पादोंविषेस्थितनूपुरादिकभूषणोंकेशब्दोंकरिके तेअप्सरा हमारेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीयांभयां और तेअप्सरा आपणेहस्तपादादिकअंगोंकरिकेभी मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीयांभयां ॥ कैसेहैंतिनअप्सरावोंकेअंग ॥ वायुकरिके तथाचलनेकरिके शिथिलभावकूंप्राप्तभये जेदुकूलादिकवस्त्रहैं तथा कांची कंकण अंगद आदिक भूषणहैं तिनोंकरिकेयुक्तहैं ॥ तथा रोमांचरूपीकंचुककरिकेविशिष्टहैं ॥ तथा चलनेकरिकेउत्पन्नभयाजोश्रम ताश्रमरूपभारकरिके विह्वलहैं ॥ तथा द्रवीभावकूंप्राप्तभया जोमस्तककासिंदूर तथानेत्रोंकाअंजन ताकरिकेयुक्तहैं ॥ तथा ललाटउरस्थानादिकोंविषेस्थितजे कुंकुमचंदनादिकपदार्थ हैं तिनोंकरिकेयुक्तहैं ॥ और सुगंधिवालेपुष्पोंकरिके ग्रंथनकरेजेकेशहैं ॥ तिनकेशोंकेग्रंथीके

पोसितकरतीथीभया ॥ परंतु तिनअंगुलीयोंकेऊपरीकेअनेक हमारीविषे नहींनिवृत्तहोतीभयी॥ सोहमारेविषे अभी वृद्धअवस्थाविषे केवल भ्रांतिकरिके नष्टहोताभया ॥ अब ताभ्रांतिकानिरूपणकरेहैं ॥ अभी वृद्धअवस्थाविषे जिनस्त्रियोंनें हमारेधैर्यकूं निवृत्तकऱ्याहै ॥ तिनस्त्रियोंकाशरीर हमारेशरीरतैं किंचित्मात्रभीविलक्षणनहीं ॥ किंतु जैसे रुधिर मांसपूय विष्ठा मूत्र नाडी मज्जाअस्थि इत्यादिकमलिनवस्तुवोंकासमुदायरूप हमाराशरीरहै तैसे इनस्त्रियोंकाशरीरभी रुधिरमांसादिकमलिनवस्तुवोंकासमुदायरूपहै ॥ यातैं ऐसेमलिनस्त्रियोंकेशरीरकूं जोहमनैं सुखकासाधनमान्याहै ॥ सो केवलभ्रांतिकरिकेमान्याहै ॥ किंवा ॥ मैंयाज्ञवल्क्य याआपणेशरीरकूं वारंवार मृत्तिकाजलादिकोंकरिके प्रक्षालनकरताहूं ॥ तौभी यहहमाराशरीर शुद्धहोतानहीं ॥ किंतु सर्वदादुर्गंधिकरिके अशुद्धहीरहैहै ॥ और यहस्त्रियां तौहमारेन्याई मृत्तिकाजलादिकोंकरिके आपणेशरीरकूं प्रक्षालनकरतीयांनहीं ॥ तो इनस्त्रियोंकाशरीर किसप्रकारशुद्धहोवैगा ॥ किंतु इनस्त्रियोंकाशरीर सर्वदाअशुद्धहीरहैहै ॥ ऐसे अशुद्धस्त्रियोंकेशरीरविषे जोहमनैं सुखकीकारणतामानीहै सोकेवलभ्रांतिकरिकेमानी है ॥ जोविवेकीविरक्तपुरुषहैं ते आपणेशरीरकूं तथा स्त्रीआदिकोंकेशरीरकूं सर्वदाअशुद्धहीजानैहैं ॥ तहां श्लोक ॥ स्थानाद्बीजादुपष्टंभान्निष्यंदान्निधनादपि ॥ कायमाधेयशौचत्वात्पंडिताह्यशुचिंविदुः ॥ अर्थयह ॥ यहशरीर माताकेउदररूपस्थानविषेस्थितहोवैहै ॥ तथा पितामाताकेशुक्रशोणितरूपबीजतैं उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा अन्नपानादिकोंकेरसकापरिणामरूपहै ॥ तथा नेत्रादिकनवद्वारोंतैं जिसकामलनिकसैहै ॥ तथा अशुचिपणेकाकारणहै ॥ तथा स्वभावतैंशुद्धपणेतैंरहितहै ॥ इतनैंकारणोंतैं विवेकीमहात्मापुरुष याशरीरोंकूं अशुचहीजाणैहैं ॥ १ ॥ किंवा ॥ यौवनअवस्थाकेप्राप्तहुए जेस्त्रियोंकेपीनउन्नतस्तनहोवैहैं ॥ जिनस्तनोंकूं मैंयाज्ञवल्क्य सुवर्णकेकलशोंकीउपमादेताभया ॥

तिस्तनकैसेहैं ॥ जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकूं किसीरोगकेवशतैं हृदयदेशविषे मांसकीग्रंथीहोवे हैं ॥ तिनमांसकीग्रंथियोंकेसमान तेस्त्रियोंके स्तनहैं ॥ ऐसे मांसकीग्रंथीरूपस्तनोंविषे जोहमारेकूं सुखकीकारणताकाज्ञानभयाहै ॥ सोज्ञान केवलभ्रमरूपहै ॥ किंवा ॥ एकस्तनोंकूंछोडिके दूसरा स्त्रीकाशरीर तथा पुरुषकाशरीर समानहीं है ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो तिनस्तनोंकरिकेभी तास्त्रीकेशरीरविषे विलक्षणतासंभवेनहीं ॥ काहेतैं पुरुषोंकेकटिस्थानकेनीचेस्थित जेमांसकीग्रंथीरूपस्फिजहैं ॥ तिनस्फिजोंविषे ॥ तथास्त्रीकेस्तनोंविषे किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं ॥ किंवा ॥ पुरुषकाजोपायुछिद्रहै ॥ तथास्त्रीकाजो योनिछिद्रहै तेदोनोंछिद्रमलनिकसणेकेद्वारहैं ॥ यातैं तिनदोनोंछिद्रोंविषे किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया॥स्त्रीकाशरीर दोपायुद्वारवालाहै और पुरुषकाशरीर एकपायुद्वारवालाहै ॥ ऐसेस्त्रीकेशरीरविषे यहस्त्रियां हमारेसुखकासाधनहैं याप्रकारका सुखसाधनताज्ञान जो हमारेकूंभयाहै ॥ सोज्ञान भ्रांतिरूपहै ॥ काहेतैं ॥ विचारदृष्टिकरिकेदेखियेतो यहस्त्रियोंकाशरीर ग्लानिकोउत्पत्तिद्वारा विवेकीपुरुषोंके पश्चात्तापकाहोकारणहै ॥ ऐसेदुःखकेसाधनरूपस्त्रीकेशरीरविषे ॥ सुखसाधनताबुद्धि भ्रांतिरूपहीसिद्धहोवेहै ॥ जैसे सर्पभावतैं रहितरज्जुविषे सर्पबुद्धि भ्रांतिरूपहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जेअविवेकीपामरपुरुषहैं ॥ तेभी अन्यपुरुषकेसमीपविद्यमानहुए आपणेस्त्रीकेसाथ संभोगकरैनहीं ॥ और मैंयाज्ञवल्क्यतो तिनस्त्रियोंकेहृदयदेशविषेस्थितजो अंतर्यामीआत्मारूपपुरुषहै ताकेअत्यंतसमीपविद्यमानहुएभी निर्लज्ज होइके स्त्रियोंकेसाथ संभोगकरताभया ॥ यातैं तिनपामरपुरुषों तैंभी मैंयाज्ञवल्क्य निकृष्टहूं ॥ अब विषयसुखके कारणका विचारकरे हैं ॥ किंवा ॥ स्त्रीपुरुषका जोपरस्परसंयोगसंबंधहै ॥सोसंयोगसंबंध याजीवोंकेविषयजन्यसुखका कारणनहीं ॥ किंतु यहस्त्री हमारेविषयसुखकासाधनहै ॥ तथा यहपुरुष हमारेविषयसुखकासाधनहै ॥ याप्रकारकी जापुरुषकी तथास्त्रीकी भावनाहै ॥ साभावनाहीं तिनपुरुषोंके तथा स्त्रियोंके विषयसुखकासाधनहै ॥ काहेतैं जोकदाचित् स्त्रीपुरुषकासंयोगसंबंधही ताविषयसुखकाकारणहोवे ॥ तो स्नेहकरिके आपणीयुवानमाताकूंआलिंगनकरताहुआ जोयुवानपुत्रहै ॥ तथा स्नेहकरिके आपणेयुवानपुत्रकूंआलिंगनकरतीहुई जा

युवानमाताहै॥तिनदोनोंकूं सोविषयसुखहोणाचाहिये॥तथा स्नेहकरिकै आपणेयुवानपिताकूंआलिंगनकरतीहुई जायुवानपुत्रीहै ॥ तिसकूंभी सोविषयसुखप्राप्तहोणाचाहिये ॥ तथा स्नेहकरिकैपरस्परआलिंगनकरतेहुए जेयुवानभगिनी तथायुवानभ्राताहैं ॥ तिनदोनोंकूंभी सोविषय जन्यसुखहोणाचाहिये ॥ तथा परस्परद्वेषकरिकैयुक्तजेयुवानस्त्रीपुरुषहैं ॥ तेदोनों किसीदैवयोगतें परस्परआलिंगनकूंप्राप्तहुएभी ताविषय सुखकूंप्राप्तहोणेचाहिये ॥ और तिनपुत्रादिकपुरुषोंकूं आपणीमातादिकस्त्रियोंकेआलिंगनतें सोविषयसुखप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें यहजान्या जावैहै ॥ स्त्रीशरीरका तथापुरुषशरीरका परस्परसंयोगसंबंध ताविषयसुखकाकारणनहीं ॥ किंतुपूर्वकथनकरीहुईभावनाहीं ताविषयसुखका कारणहै॥स्त्रीकाशरीर तथापुरुषकाशरीर तथा तिनदोनोंका परस्परसंयोगसंबंध यहतीनों ताविषयसुखकेकारणनहीं ॥ किंवा जिसआत्मस्व रूपआनंदके लेशमात्रआनंदकरिकै ब्रह्मादिकलोक आनंदकूंप्राप्तहोइरहेहैं ॥ ऐसाआनंदकासमुद्र स्वयंज्योतिआत्मा सर्वदा हमारेहृदयदे शविषे विराजमानहै ॥ ताआनंदस्वरूपआत्माकीउपेक्षाकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य जैसे भूताविष्टपुरुष याभूमिविषे नानाप्रकारकीनृत्यकरैहै तैसे यानारीरूपीनरकभूमिविषे नानाप्रकारकीनृत्यकरताभयाहूं ॥ यातें आत्मरूपनित्यसुखकीउपेक्षाकरिकै स्त्रीरूपनरकविषे जाहमारी सुखबुद्धिहै ॥ सासुखबुद्धिही हमारेमूर्खताकूंजनावैहै ॥ काहेतें यालोकविषेभी जोपुरुष उत्कृष्टपदार्थकापरित्यागकरिकै निकृष्टपदार्थका ग्रहणकरैहै ॥ तापुरुषकूं सर्वलोक मूर्खहीकहैहैं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे महान्पुरुषोंकीजाअवज्ञाहै ॥ साअवज्ञाही तिनमहान्पुरुषोंकाह ननहै ॥ और सूर्यचंद्रमादिकोंकूंभी आपणीआज्ञाविषे चलावणेहारा जोयहआनंदस्वरूपअंतर्यामीआत्माहै सोसर्वतैंमहानहै ॥ तामहान् आत्माकी मैंयाज्ञवल्क्यनैं विषयसुखकीप्राप्तिवासतै उपेक्षाकरिदईहै ॥ साउपेक्षारूपअवज्ञाही ताआत्माकाहननहै॥ और आत्महत्यारेके समान यालोकविषेकोईपापात्माहोवैनहीं ॥ यातें आपणेआत्माकाहननकरणेहारा मैंयाज्ञवल्क्य अत्यंतपापात्माहूं ॥ किंवा ॥ यालोक विषे जेअविवेकी पामरपुरुषहैं ॥ तेपामरपुरुष आनंदस्वरूपआत्माकूंजाणतेनहीं ॥ याकारणतें तेपामरपुरुष स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे आसक्तिकरिकै बहिर्मुखहोवैहैं ॥ और मैंयाज्ञवल्क्यतो गुरुशास्त्रकेउपदेशतें आनंदस्वरूपआत्माकूंजाणताहुआभी इनस्त्रीपुत्रधनादि

कपदार्थोंविषे आसक्तिकरिकेबहिर्मुखहुआहूं ॥ यातें मैंयाज्ञवल्क्य अविवेकीपामरपुरुषोंतैंभी निकृष्टहूं ॥ किंवा ॥ यालोकविषेवृद्धअवस्था करिकेयुक्तजेपामरपुरुषहैं ॥ तेपामरपुरुषभी आपणीस्त्रीकूंवृद्धदेखिके तावृद्धस्त्रीकेसंभोगकीइच्छाकरैनहीं ॥और मैंयाज्ञवल्क्यतो वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोइके इनवृद्धस्त्रियोंकेसंगभोगकीइच्छाकरताहूं॥याकारणतैं मैंभीयाज्ञवल्क्यतिनपामरपुरुषोंतैंभीनिकृष्टहूं॥किंवा॥वृद्धअवस्थाविषे जिनस्त्रियोंमें हमारीआसक्तिभईहै ॥ तेस्त्रियांकेसीहैं ॥शुष्ककाष्ठकेसमान जिनोंकाशरीरहै ॥ तथा भेरीकेसमानजिनोंकाउदरहै तथा पुत्रोंकेप्रति स्तन्यपानकरावणेकरिके जिनस्त्रियोंकेस्तन शुष्कहोइगयेहैं॥ ऐसेकुरूपवृद्धस्त्रियोंविषे हमारामन अबपर्यंत प्रवर्त्तहोवैहै ॥यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ किंवा ॥ पूर्व सूर्यभगवाननैं जोहमारेप्रति गृहस्थआश्रमकेकरणेकीआज्ञाकरीथी ॥ सो पुत्रोंकीउत्पत्तिवासते तथावेदविद्याकेसंप्रदायकीप्रवृत्तिवासते आज्ञाकरीथी ॥ताआज्ञाकीपूर्णतातैंअनंतर जोहमनैं गृहस्थआश्रमविषे कालवितीतकरयाहै ॥ सो आपणीआसक्तिकरिके कालवितीतकरयाहै ॥ इतनेकालपर्यंत गृहस्थआश्रमविषेरहणेमैं कोईसूर्य भगवान्‌कीआज्ञानहींथी॥ किंतु आपणे विद्याकीसंप्रदायकेप्रवृत्तिकरणेविषे सूर्यभगवाननैं हमारेप्रति अज्ञाकरीथी ॥ सोविद्याकासंप्रदाय मैंयाज्ञवल्क्यनैं बहुतप्रवर्त्तकरया ॥ काहेतैं चारिवेदोंकूंजानणेहारे कितनेब्राह्मणतौ हमारे शिष्यहैं ॥ और कितनेब्राह्मणतो हमारेशिष्योंकेभीशिष्यहैं ॥ और कितनेब्राह्मणतो तिन हमारेप्रशिष्योंकेभीशिष्यहैं ॥ इसप्रकारसंपूर्णब्राह्मणमिलिके अनेककोटिब्राह्मण हमारेशिष्यहोतेभयेहैं ॥ ऐसेमहानसंप्रदायकेप्रवर्त्तहुएभी मैंयाज्ञवल्क्य याप्रकारकी आसक्तिकरिके तागृहस्थआश्रमकापरित्याग नहींकरताभया॥ अबताआसक्तिकानिरूपणकरैहैं ॥ मैंयाज्ञवल्क्य विषेहैअत्यंतस्नेहजिनोंका ऐसीजेयहकात्यायनी तथामैत्रेयी मेरीदोभार्या हैं ॥ तिनों कूं एकलावनविषेपरित्यागकरिके जोमैं अभीसंन्यास आश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ तौ यहदोनोंहमारी स्त्रियां मेरेवियोगकरिके परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंगी॥ यातैं इसकालविषे हमारेकूं संन्यासकरणाउचितनहीं॥किंतु इनस्त्रियोंकूं कोईकालपर्यंत संसारसुखकीप्राप्तिकरिके पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिके मैंयाज्ञवल्क्य तिनस्त्रियोंकूं संसारसुखकीप्राप्तिकरणेविषे कोईकालवितीतकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य पुनः या

प्रकारकाविचारकरताभया॥इनस्त्रियोंकूं संसारसुखकीप्राप्तितौभई॥परंतु इनस्त्रियोंकूं पुत्रकीप्राप्तिनहींभई ॥ यातें पुत्रोंकीउत्पत्तिकरेतैंविना जोमैं इनस्त्रियोंकापरित्यागकरौंगा॥तोपुत्रोंतैंरहितहुईयहदोनोंस्त्रियां मेरेवियोगकरिके परमदुःखकूंप्राप्तहोवेंगी॥या तैं अभीगृहस्थआश्रमका परित्यागकरणा हमारेकूं योग्यनहीं॥किंतुइनस्त्रियोंविषे पुत्रोंकीउत्पत्तिकरिके पश्चात्मैं संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरौंगा॥याप्रकारकाविचार करिके मैंयाज्ञवल्क्य पुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे कोईकालवितीतकरताभया ॥ और तिनपुत्रोंके उत्पन्नहुएतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य पुनःया प्रकारकाविचारकरताभया ॥ इनस्त्रियोंकूं पुत्रोंकीप्राप्तितौभई ॥ परंतु इनपुत्रोंकेजातकर्मादिकसंस्कारभयेनहीं ॥ जोमैं इनबालकोंकाप रित्यागकरिके अभीसंन्यासआश्रमकूंगृहणकरौंगा ॥ तो जातकर्मादिकसंस्कारोंतैंरहितहुए यहबालक परमदुःखकूंप्राप्तहोवेंगे ॥ यातैंअभी हमारेकूं संन्यासकरणायोग्यनहीं ॥ किंतु जातकर्मतैंआदिलेके उपनयनपर्यंत इन बालकोंकेसंस्कारकरिके पश्चात्मैं संन्यासआश्रमकूंग्रह णकरौंगा॥याप्रकारकाविचारकरिके मैंयाज्ञवल्क्य तिनबालकोंके जातकर्मादिकसंस्कारकरणेविषेभी कोईकालवितीतकरताभया ॥ और तिनपुत्रोंकेउपनयनपर्यंत संस्कारोंकेकरणेतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ इनपुत्रोंके उपनयनपर्यंत संस्कारतौ हुए ॥ परंतु इनहमारेपुत्रोंकूं विद्याकीप्राप्तिभईनहीं ॥ जोमैं इनपुत्रोंकापरित्यागकरिके अभीसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ तो यहहमा रेपुत्र विद्यातैंरहितहुए परमदुःखकूंप्राप्तहोवेंगे ॥ यातैं अभीहमारेकूं संन्यासकरणायोग्यनहीं ॥ किंतु इनपुत्रोंकिताई आपणीसंपूर्णविद्यादेके पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिके मैंयाज्ञवल्क्य तिनपुत्रोंकेविद्यापढ़ावणेविषे कोईकालवितीतकरता भया ॥ और तिनपुत्रोंकूं विद्याकीप्राप्तिहुएतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य पुनःयाप्रकारकाविचारकरताभया ॥ इनहमारेपुत्रोंकूं विद्याकीतोप्राप्ति भईहै ॥ परंतु इन हमारेपुत्रोंकूं स्त्रीकीप्राप्तिभईनहीं ॥ जोमैं इनपुत्रोंकापरित्यागकरिके अभीसंन्यासकरौंगा ॥ तो स्त्रीतैंरहितहुए यहह मारेपुत्र परमदुःखकूंप्राप्तहोवेंगे ॥ यातैं अभीहमारेकूं संन्यासग्रहणकरणायोग्यनहीं ॥ किंतु इनपुत्रोंकाविवाहकरिके पश्चात् मैं संन्या सआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिके मैंयाज्ञवल्क्य तिनपुत्रोंकेविवाहकरणेविषे कोईकालवितीतकरताभया ॥ और ति

नपुत्रोंकेतथापुत्रियोंकेविवाहहुएतैंअनंतरमैंयाज्ञवल्क्यपुनःतिनपुत्रोंकेभीपुत्रोंकेदखणेवासतैंकोईकालवितीतकरताभया।औरतिनपौत्रोंकेउ त्पन्नहुएतैंअनंतरमैंयाज्ञवल्क्यतिनपौत्रोंकेभीविवाहकरणेवासतैंकोईकालवितीतकरताभया॥याप्रकारकाविचारकरताहुआसोमैंयाज्ञवल्क्य अत्यंतजीर्णअवस्थाकूंप्राप्तभयाहूं॥तौभीहमाराचित्तयासंसारतैंउपरामनहींहोता ॥किंतु अवपर्यंतभी सोहमाराचित्त संसारविषेही धावनकरै है॥यातैं यहजान्याजावैहै॥इनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकाजोसंगहैसोसंगही याजीवोंकेअनर्थकाकारणहै ॥तिनजीवोंविषेभीचतुर्थआश्रमवालेजे संन्यासीहैं॥तिनसंन्यासियोंकातौयहसंगविशेषकरिकेअनर्थकाकारणहै॥तहांश्लोक॥निःसंगतामुक्तिपदंयतीनां संगादशेषाःप्रभवन्तिदोषाः ॥ आरूढयोगोपिनिपात्यतेऽधः संगेनयोगीकिमुताल्पसिद्धिः॥अर्थयह॥स्त्रीधनादिकपदार्थोंकेसंगकापरित्यागरूपजोनिःसंगताहैसानिःसंगताही संन्यासियोंकूं मोक्षकामार्गहै॥काहेतैं स्त्रीआदिकोंकेसंगतैं यापुरुषकूं संपूर्णदोषप्राप्तहोवैहैं॥जोपुरुष योगविषेआरूढहै॥तिसपुरुषकूं भीजभी यहस्त्रीआदिकोंकासंग नीचेपतनकरैहै ॥ तभी योगविषेआरूढहोणेकीइच्छावानपुरुषकूं यहस्त्रियोंकासंग नीचेपतनकरैहै याकेविषेक्याकह णाहै ॥ यातैं संन्यासियोंनैं तिनस्त्रीधनादिकपदार्थोंकेसंगका विशेषकरिकेपरित्यागकरणा ॥१॥ तात्पर्ययह ॥ विद्यादिकसर्वगुणोंकरिके युक्त जोमैंयाज्ञवल्क्यहूं ॥ सोमैंभी यास्त्री पुत्रादिकोंकेसंगतैं जभी याप्रकारकेदुर्दशाकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तौ अल्पविचारवालेइतरजीव स्त्रीपुत्रा दिकपदार्थोंकेसंगकरिकै तादुर्दशाकूं प्राप्तहोवैंगे याकेविषेक्याकहणाहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ यास्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकासंगही आस क्तिद्वारा याजीवोंकेसर्वअनर्थोंका कारणहै यातैं जिसपुरुषकूं करामलककीन्याई संशयविपर्ययतैंरहित आत्माकासाक्षात्कारहोवै ॥ तिसवि द्वान्पुरुषनैंभी स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकासंग कदाचित्भीनहींकरणा ॥ तिनपदार्थोंविषेभी स्त्रीकासंग यापुरुषनैं कदाचित्नहींकरणा ॥ तिनस्त्रियोंविषेभी युवानस्त्रियोंकासंग यापुरुषनैं कदाचित्भी नहींकरणा ॥ काहेतैं मरणतैंअनंतर पापीजीवोंकूं जोनरकप्राप्तहो वह ॥ सोनरक स्थावरहै ॥ यातैं सोनरक त्यागकियेतैंअनंतर तिनपापीजीवोंकेपीछेआवैनहीं ॥ और यहस्त्रीतौ दोपादोंसैंचलणेहारा मूर्तिमान्नरकहै ॥ यातैं सोस्त्रीरूपनरक त्यागकियेतैंअनंतरभी यापुरुषकेपीछेआवैहै ॥ ऐसेस्त्रीरूपबलवान्नरकविषे जोकदाचित् सर्वशा

स्त्रीकावेत्ताविद्वान्पुरुषभीपडेहै॥तौ सोविद्वानपुरुषभी तास्त्रीरूपनरकतैं आपणेकूंनिकासणेविषे समर्थहोइसकेनहीं॥तिनविद्वान्पुरुषोंविषे
मैंयाज्ञल्क्यहीदृष्टांतरूपहूं॥काहेतैं सर्वविद्वान्पुरुषोंविषेमुख्य तथा संपूर्णविद्याकूंजानणेहारा तथा आत्मसाक्षात्कारकरिकेयुक्त ऐसाजोमैं
याज्ञवल्क्यहूं॥ सोभी यास्त्रीरूपनरकतैं आपणेकूंनिकासणेविषे समर्थनहींहोइसकता॥यातैं योगारूढपुरुषभी स्त्रीकेसंगकरिके अधःपतन
होवैहै॥ यहजोवार्ता सर्वशास्त्रोंविषेकहीहै सोयथार्थहै ॥किंवा॥ जैसे यालोकविषे ग्रामकेप्राप्तिकरणेहारामार्गहोवैहै ॥ तैसे नरकरूपग्रामके
प्राप्तिकरणेहारा यहस्त्रीकाशरीररूपहीमार्ग है ॥ यातैं मोक्षकीप्राप्तिकरणेहारा जो आत्मज्ञानरूपमार्ग है ॥ ताज्ञानरूपमार्गकेप्राप्तिकोइच्छा
जिसपुरुषकूंहोवै ॥ तिसमुमुक्षुजननें यहस्त्रीरूपनरककामार्ग अवश्यपरित्यागकरणा ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जेअधिकारीपुरुष संन्यासआ
श्रमरूपमार्गकरिके मोक्षकेप्राप्तिकोइच्छाकरैहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूंतासंन्यासरूपमार्गविषे एकस्त्रियोंतैंहीभयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिनस्त्रि
योंकूंछोडिके दूसरेकिसी सिंह सर्प चोर राजा जल अग्नि विष आधि व्याधि देव भूत इत्यादिकोंतैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूं भयकोप्राप्तिहो
वैनहीं ॥ तहां स्त्रियोंतैं जो तिनसंन्यासियोंकूंभयहोवैहै ॥ याकेविषेयहकारणहै ॥ बहिर्मुखपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ यहशा
स्त्रकासिद्धांतहै ॥ सा बहिर्मुखता जैसेस्त्रीकेसंगतैंहोवैहै ॥ तैसे दूसरेकिसीपदार्थकेसंगतैंहोवैनहीं ॥ काहेतैं यास्त्रियोंका जोमनकरिकेस्मर
णहै ॥ सोस्मरणभी यापुरुषोंकेचित्तविषेकामकीउत्पत्तिकरैहै ॥ जभी तिनस्त्रियोंकेस्मरणतैंभी यापुरुषविषे कामउत्पन्नहोवैहै ॥ तभी
तिनस्त्रियोंकेदर्शनतैं तथा तिनस्त्रियोंकेवचनतैं तथा तिनस्त्रियोंकेस्पर्शतैं यापुरुषोंकेचित्तविषे कामकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकेविषेक्याक
हणाहै ॥ यातैं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतैं जिनअधिकारीपुरुषोंनें संन्यासआश्रमकूंग्रहणकऱ्याहै ॥ तेअधिकारीपुरुष शरीरकरिके
तथा मनकरिके तथा वाकादिकइंद्रियोंकरिके कदाचित्भी तिनस्त्रियोंकासंगनहींकरैं ॥ जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रम
कूंधारणकरिके स्त्रियोंकासंगकरेगा ॥ तो जैसे अग्निकेसंबंधतैं घृत द्रवीभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यासंन्यासियोंकाचित्तभी आपणेधैर्यकाप
रित्यागकरिकेद्रवोभावकूंप्राप्तहोवैगा॥ताकरिके सोसंन्यासी मोक्षमार्गतैंपतितहोवैगा ॥यातैं संन्यासियोंनैं सर्वप्रकारतैं स्त्रियोंकासंगनहींकर

णा ॥ किंवा ॥ यालोकविषेप्रसिद्धजोसर्पादिकोंकाविषहै ॥ ताविषकेनिवृत्तिकरणेवास्तैं यद्यपि शास्त्रनें नानाप्रकारकेउपाय कथनकरेहैं ॥ तथापि यास्त्रीरूपसर्पकेविषकीनिवृत्तिकरणेका एकहीउपाय शास्त्रनें कथनकऱ्याहै ॥सोएकउपाययहहै ॥ शरीरकरिकेतिनस्त्रियोंकास्पर्श नहींकरणा ॥ और मनकरिके तिनस्त्रियोंकास्मरणनहींकरणा ॥ और वाकादिकइंद्रियोंकरिके तिनस्त्रियोंकेसाथसंभाषणादिकनहींकरणे ॥ याप्रकारकेउपायकूंछोडिकरिके दूसराकोईउपाय तास्त्रीरूपसर्पकेविषकीनिवृत्तिकरणेहारादैनहीं ॥ सोयाप्रकारकाउपाय गृहस्थआश्रमविषेरहिकरिके मैंयाज्ञवल्क्यसैं होइसकेगानहीं ॥ यातें यास्त्रीपुत्रधनादिकसर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिके मैंयाज्ञवल्क्य संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरोंगा ॥ जोमैं इनस्त्रीपुत्रादिकोंकेसंगकापरित्याग नहींकरोंगा ॥ तौ इनस्त्रीपुत्रादिकोंकेसंगतें हमारेकूं दूसरेजन्मकीप्राप्ति अवश्यहोवैगी ॥ काहेतें वासनाकरिकेही याजीवोंकूंजन्मकोप्राप्तिहोवैहै ॥ जैसे जाग्रत्‌अवस्थाविषे यापुरुषकी जिसपदार्थविषेदृढवासनाहोवैहै ॥ तिसीपदार्थकूं यहपुरुष स्वप्नविषेदेखैहै ॥ तैसे मरणकालविषेभी यापुरुषकूं जैसीदृढवासनाहोवैहै ॥ तावासनाकेअनुसारही सोपुरुष दूसरेशरीरको प्राप्तहोवैहै और ता दूसरे शरीरविषेभी यहजीव पूर्वलेकामक्रोधलोभमोहादिकोंकेसंस्काररूपवासनाकरिके पुनःकामक्रोधादिकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनकामक्रोधादिकोंके संस्काररूपवासनाकरिके यहजीव पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार यहजीव स्त्रीआदिकोंकेसंगकरिके अनेकप्रकारकेजन्मोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा ॥ स्त्री आदिकोंकेसंगतें यापुरुषोंकेचित्तविषे कामक्रोधादिकविकार उत्पन्नहोवैहैं ॥और तिनकामक्रोधादिकविकारोंकरिके यापुरुषकाचित्त अशुद्धभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ता अशुद्धचित्तविषे पूर्वउत्पन्नहुआभीआत्मज्ञान शिथिलहोइजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वउत्पन्नहुआआत्मज्ञानभी जभी ताअशुद्धचित्तविषे शिथिलहोइजावैहै ॥ तभी ताअशुद्धचित्तविषे नवीनज्ञानकेउत्पत्तिकी क्याआशाहै ॥ यातें यहसिद्धभया ॥ स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेसंगतें यापुरुषविषे कामक्रोधादिकविकार उत्पन्नहोवैहैं ॥ ताकामक्रोधादिकविकारोंकरिके यहपुरुष ब्रह्मज्ञानतें तथा कर्मउपासनारूपदोनोंमार्गतें भ्रष्टहोइके वारंवार कीटपतंगादिकशरीरोंकीप्राप्तिरूप तथा नरककीप्राप्तिरूप तृतीयमार्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार स्त्रियोंकेसंगतें यहपुरुष कोटिकल्पपर्यंत नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥

किंवा॥जैसे यहपुरुष स्त्रियोंकेसंगतैं कामादिकोंकीउत्पत्तिद्वारा अनेकजन्मोंविषेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥तैसे विषयासक्तकामीपुरुषोंकेसंगतैंभी यहजीव तिसीप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं तेविषयासक्तकामीपुरुष सर्वदा स्त्रीसंबंधीकामकाहीवर्णनकरेहैं ॥ तिनकामीपुरुषोंकेव चनोंतैंतिसपुरुषकूं अवश्यकरिकै स्त्रीकामस्मरणरूपअज्ञानहोवैगा ॥ और तास्मरणकरिकै सास्त्रीरूपअग्नितापुरुषकेचित्तकूं अवश्यदग्ध करैगी ॥ तादग्धचित्तविषे आत्माकाविचारहोइसकेनहीं ॥ यातैं मोक्षकीप्राप्तिवासतै जिसपुरुषनैं संन्यासआश्रमकाग्रहणकर्‍याहै ॥ सोसं न्यासीपुरुष स्त्रियोंकेसंगका तथा स्त्रियोंविषेआसक्तकामीपुरुषोंकेसंगका अवश्यकरिकै परित्यागकरै ॥ किंवा ॥ जैसे महान्वायु विषेस्थितजोदीपकहै ॥ सोदीपक मार्गादिकपदार्थोंकाप्रकाशरूपकार्यकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥तैसे गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंउत्पन्नभयाभीब्रह्मज्ञान स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेसंगरूपप्रतिबंधकेवशतैं अज्ञानकीनिवृत्तिरूपकार्यकूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ यातैं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छा जिसपुरुषकूं होवै ॥ तिसपुरुषनैं स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेसंगका अवश्यपरित्यागकरणा ॥हेशिष्य ॥ याप्रकार स्त्रीआदिकपदार्थोंकेसंगविषे नाना प्रकारकेदोषोंकाविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेसंगकापरित्यागकरणेवासतै संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेका दृढनिश्चयकरताभया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनि अत्यंतकृपालुहै ॥ यातैं सोयाज्ञवल्क्यमुनि पुनःयाप्रकारकाविचारकरताभया ॥ याभू मिविषे सप्तपादोंकेउठावणेकरिकै जितनाकाल वितीतहोवैहै ॥ तितनेंकालपर्यंतभी जोपुरुष किसीपुरुषकेसाथ सहवासकरैहै ॥ सोपुरुष तिसपुरुषकामित्रहोवैहै ॥ यहवार्ता शास्त्रोंविषे महात्मापुरुषों नैं कथनकरीहै ॥ और मैंयाज्ञवल्क्यतौ इनस्त्रियोंकेसाथ चिरकालपर्यंत रह्याहूं ॥ यातैं शास्त्रकीरीतिसैं यहस्त्रियां हमारेमित्रहोवैहैं ॥ और यालोकविषे उपकारकरणेहारेकानाम मित्रहोवैहै ॥ यातैं इनस्त्रियोंऊप रभीहमारेकूं उपकारकर्‍याचाहिये ॥ तहाँ यहहमारीकात्यायनीनामास्त्रीतौ केवलगृहकेकार्योंविषेहीकुशलहै ॥ दूसरेकिसीअर्थकूं तथामो क्षकूं यहकात्यायनीजाणतीनहीं ॥ यातैं याकात्यायनीकूं ब्रह्मविद्याकाअधिकारनहीं ॥ और यहहमारी मैत्रेयीनामाजोदूसरीस्त्रीहै ॥सामैत्रेयी संसारकेजन्ममरणादिकदुःखोंकूंदेखिकरिकै सर्वदा शोकातुररहे है ॥ और यहमैत्रेयी सर्वदा मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ और यामैत्रे

यीकूं यौवनअवस्याविषेभी कामादिकविकार नहींप्राप्तभयेहैं॥और यामैत्रेयीका आपणेशरीरविषेभी स्नेहनहींहै ॥ जभी आपणेशरीरविषेभी
यामैत्रेयीकास्नेहनहींभया तभी पतिपुत्रादिकोंविषे यामैत्रेयीकास्नेह किसप्रकारहोवैगा॥और यहमैत्रेयीस्त्री पूर्वजोहमारीसेवाकरतीभईहै॥सो
भी लौकिकस्त्रियोंकीन्याई कामभावनाकरिकैयामैत्रेयीनैं हमारीसेवानहींकरी॥किंतु पतिव्रतास्त्रीनेपतिकीसेवाकरणीयाप्रकारकेशास्त्रनैंबोध
नकन्याजोपतिव्रतास्त्रियोंकाधर्म॥ताधर्मकेभंगकीभयतैं यहमैत्रेयी हमारीसेवाकरतीभईहै॥यातैं यहमैत्रेयी ब्रह्मविद्याकाअधिकारीहै ॥जोमैं
यामैत्रेयीकेप्रतिब्रह्मविद्याकेउपदेशकियेतैंविनाहीं ॥ संन्यासआश्रमकूंधारणकरौंगा तौ कात्यायनीकीन्याई यामैत्रेयीकूं धनादिकपदार्थोंकी
प्राप्तिकरिकैतो संतोषहोवैगानहीं ॥ यातैं यहमैत्रेयी चिंताकरिके परमदुःखकूंप्राप्तहोवैगो॥ यातैं यामैत्रेयीकेप्रति प्रथम ब्रह्मविद्याकाउप
देशकरिके पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौं ॥हेशिष्य ॥याप्रकारकाविचार आपणे मनविषेकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीस्त्रीके
प्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेमैत्रेयी ॥मैंयाज्ञवल्क्य अभी यागृहस्थआश्रमकापरित्यागकरिकैचतुर्थ
संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरताहूं॥यावार्ताकूंतुमअंगीकारकरो॥हेमैत्रेयी हमारे गृहविषे जितनाकोसुवर्णगोआदिकधनहै॥ताधनकेदोविभागक
रिकैएकधनकाभाग मैं तुमारेताईदेताहूं॥और दूसराधनकाभाग मैं कात्यायनीकेताईदेताहूं ॥ ताधनकरिके हमारेगयेतैंअनंतर तुमदोनोंस्त्रि
योंकूं सुखकीप्राप्तिहोवैगी॥हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभीयाज्ञवल्क्यमुनिनैं मैत्रेयीस्त्रीकेप्रतिकह्या ॥ तभी संसाररूपभारकरिकेअत्यं
तखेदकूंप्राप्तहुई सामैत्रेयी याप्रकारकेअवसरकूंपाइकैयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई॥मैत्रेय्युवाच॥हेभगवन्॥ जिसधन
कीप्राप्तिकरिके मैंमैत्रेयी मरणतैंरहितहोवो॥ऐसेधनकेप्राप्तिकी मैं इच्छाकरतीहूं॥और जिसधनकीप्राप्तिकरिके यालोकविषे मरणकीप्राप्तिहो
वैहै ॥ ताधनकेप्राप्तिकीमैं इच्छाकरतीनहीं ॥ हेभगवन् ॥ सुवर्णादिकधनकरिकेपूर्ण यहसंपूर्णपृथिवी जोकदाचित् आप हमारेताईदेवो ॥
तो ताधनकीप्राप्तिकरिके मैंमैत्रेयी अमृतभावकूंप्राप्तहोवोंगी ॥ अथवा ताधनकरिके मैं अमृतभावकूंनहींप्राप्तहोवोंगी ॥ यादोनोंपक्षोंविषे
एकपक्षकूं आप निश्चयकरिके हमारेप्रतिकथनकरो ॥ तिसतैंअनंतर विचारकरिके मैं आपसेधनलेवोंगी ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन

जभी मैत्रेयीनें याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि सुवर्णादिकधनकरिके याजीवोंकूं अमृतभावकीप्राप्तिनहींहोवे है ॥ यादूसरेपक्षकूंअंगीकारकरिके तामैत्रेयीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेमैत्रेयी यासुवर्णादिरूपनाशवान धनकरिके कोईभीदेहधारीजीव मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोइसकैनहीं ॥ उलटा यासुवर्णादिरूपधनकरिके यहजीव मरणकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ अब सुवर्णादिकधनविषे अन्वयव्यतिरेककरिके मरणकीकारणता निरूपणकरेहैं ॥ यालोकविषे जितनेकीधनवान्पुरुषहैं ॥ तेधनीपुरुष महाराजातें तथा चौरपुरुषों तें तथा अन्यदुष्टपुरुषोंतें अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोइके मृत्युकूंहीप्राप्तहोवे हैं ॥ हेमैत्रेयी यालोकविषे ऐसा कोईधनवानपुरुषहैनहीं ॥ जो चिंतातेंरहितहोइकेनिवासकरेहै ॥ किंतु याधनवान्पुरुषोंकूं स्वप्नअवस्थाविषेभी राजाचोरअग्निआदिकोंका भय बन्यारहेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जभी स्वप्नअवस्थाविषेभी यहधनवान्पुरुषराजादिकोंकीभयतेंरहितनहींहोवे हैं ॥ तभी जाग्रत्अवस्थाविषे यहधनवान्पुरुष राजादिकोंकेभयतेंरहित किसप्रकारहोवेंगे ॥ और हेमैत्रेयी यालोकविषे धनतेंरहितजेनिर्धनपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं विशेष करिकेरोगादिकभीहोवेनहीं ॥ तथा तिननिर्धनपुरुषों केशरीरविषे बलभीअधिकहोवेहै ॥ तथा तिननिर्धनपुरुषोंकीजठराग्निभी प्रज्वलित रहेहै ॥ यातेंयहजान्याजावेहै ॥ तिननिर्धनपुरुषोंऊपर देवभीअनुकूलहीरहेहै ॥ अब धनीपुरुषोंऊपरदेवकीप्रतिकूलता दिखावेहैं ॥ हेमैत्रेयी यालोकविषे जेधनवान्पुरुषहैं तिनोंऊपर विशेषकरिकेतो देव प्रतिकूलहीरहेहै ॥ काहेतें यालोकविषे विशेषकरिकेतो धनवान्पुरुष रोगी हीरहेहैं ॥ तथा तिनधनवान्पुरुषोंकूं क्षुधाभीनहींलागेहै ॥ तथा तिनधनवान्पुरुषोंका आयुष्भीअल्पहीहोवे है ॥ तथा बहुतधनकेप्राप्त हुएभी तिनधनीपुरुषोंकेतृष्णाकीनिवृत्तिहोवेनहीं ॥ और तेधनीपुरुष आपणेपुत्रादिकबांधवोंकेसाथभी मनविषेद्वेषहीराखेहैं ॥ और कोई कधनवान्पुरुषतो श्वानोंकीन्याई प्रसिद्धही पुत्रादिकबांधवोंकेसाथ द्वेषकरेहैं ॥ और याकार्यकूं मैंकरों तथायाकार्यकूं मैंनहींकरों याप्रका रकीचिंताकरिके तेधनवान्पुरुष सर्वदा व्याकुलहीरहे हैं ॥ ताचिंताकरिके तेधनवान्पुरुष किंचित्मात्रभी सुखकूंप्राप्तहोवेंनहीं ॥ और यालोकविषे महात्मादयालुपुरुष निर्धनपुरुषोंऊपर कृपाकरिके जैसास्नेहकरे हैं तैसास्नेह तेमहात्मादयालुपुरुष धनवान्पुरुषऊपरकरेनहीं॥

और यालोकविषे धनकेमदकरिकै यहधनीपुरुष जिसप्रकारकेपापकर्मोंकूंकरैहैं ॥ तिनपापकर्मोंकूं यहनिर्धनपुरुषराजादिकों केभयतैं करैनहीं ॥ और यालोकविषे धनवान्पुरुष धनकेमदकरिकै देवतावोंकीभीअवज्ञाकरैहैं ॥ तथा तेधनीपुरुष गुरुवोंकीभीअवज्ञाकरैहैं ॥तथा तेधनीपुरुष अतिथीपुरुषोंकीभीअवज्ञाकरैहैं ॥ तथा तेधनीपुरुष वेदवेत्ताब्राह्मणोंकीभीअवज्ञाकरै हैं ॥ तथा तेधनीपुरुष ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषोंकीभीअवज्ञाकरै हैं ॥ और यहधनवानपुरुष आपणेपक्षविषेस्थितजीवों के तथापरपक्षविषेस्थितजीवोंके सर्वदा उपद्रवकूंहीकरैहैं ॥ याकारणतैं तेधनवान्पुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ और यालोकविषे जेनिर्धनदरिद्रीपुरुषहैं॥ तेनिर्धनपुरुष परजीवोंकेपीडाकरणेविषे समर्थ हैंनहीं ॥ यातैं तेनिर्धनपुरुष तिनदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं तिनधनवान्पुरुषों तैं तेनिर्धनपुरुष अत्यंतउत्कृष्टहैं ॥ हेमैत्रेयी जभीतूं यासुवर्णादिरूपधनकूं अंगीकारकरैगी ॥ तभी यालोकविषे जैसे प्रसिद्धधनीपुरुषोंका जीवनहोवैहै ॥ तैसे ताधनकरिकै तुम्हाराभीजीवनहोवैगा ॥ और जैसे यालोकविषे धनकीआसक्तिकरिकै चलायमानहैंचित्तजिनोंके ऐसेधनवान्पुरुषोंकूं मोक्षरूपअमृतभावकेप्राप्तिकीआशानहींहै ॥ तैसे धनकीआसक्तिकरिकै तुम्हारेकूंभी मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकी आशा नहींहोवैगी ॥ हेमैत्रेयी धनवान्पुरुषोंकूं अमृतभावकीप्राप्तिनहींहोवैहै ॥ याकेविषेयहकारणहै॥ ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपजोमोक्षहै ताकानामअमृतहै॥सोमोक्षरूपअमृत देहादिकोंविषेअहंमम अभिमानकीनिवृत्तितैंविना होवैनहीं ॥ यातैं देहादिकोंविषेअहंममअभिमानकीनिवृत्ति तामोक्षरूपअमृतकाकारणहै ॥ और साअहंममअभिमानकीनिवृत्ति अज्ञानकीनिवृत्तितैंविनाहोवैनहीं॥यातैं साअज्ञानकीनिवृत्ति अहंमम अभिमानकेनिवृत्तिकाकारण है ॥और साअज्ञानकीनिवृत्ति आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतैंविनाहोवैनहीं॥यातैं सोआत्माकाज्ञान अज्ञानके निवृत्तिकाकारणहै॥और धनकीआसक्तिकरिकै विक्षिप्तहैचित्तजिनोंका ऐसेधनवान्पुरुषोंकेचित्तविषे सोआत्मज्ञानउत्पन्नहोवैनहीं ॥ और ताआत्मज्ञानकेअभावहुए तिनधनीपुरुषोंके अज्ञानकीभीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और ताअज्ञानकेस्थितहुए ताअज्ञानकाकार्यरूपसूक्ष्मशरीर भीनिवृत्तहोवैनहीं ॥ और तासूक्ष्मशरीरकेस्थितहुए तासूक्ष्मशरीरकेआश्रित पुण्यपापकर्मभी नाशहोवैनहीं ॥ और तापुण्यपापक

मोंकेस्थितहुए पुनःस्थूलशरीरकीप्राप्ति अवश्यहोवैहै ॥ और तास्थूलशरीरकेप्राप्तहुए यहजीव पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार सुखदुःख कूंभोगैहैं ॥तथा पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतें यह जीव पुनःपुण्यपापकर्मोंकूंकरैहैं ॥ तथा प्रारब्धकर्मकूंभोगिके तेजीव मरणकूं प्राप्तहोवे हैं॥और मरणतेंअनंतर तेअज्ञानीजीव पुनःजन्मकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार आत्मज्ञानतेंरहित तेधनवान्पुरुष घटीयंत्रकीन्याईं निरंतर संसारविषे भ्रमणकरैहैं ॥ ऐसेधनवान्पुरुषोंविषे मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकीआशाहैनहीं ॥ यातें सुवर्णादिरूपधनकरिके मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिहोवैनहीं यहअर्थसिद्धभया ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेवचन। जभी याज्ञवल्क्यमुनिनें मैत्रेयीकेप्रतिकहे ॥ तभी सामैत्रेयी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ मैत्रेयीउवाच ॥ हेभगवन् यासुवर्णादिरूपधनकी प्राप्तिकरिके जभी मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकीआशान हीं है ॥ उलटा मरणकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तभी मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकीइच्छावाली मैं मैत्रेयी यासुवर्णादिरूपधनकूंलेके किसप्रयोजनकोसि द्धिकरोंगी ॥ किंतु याधनकरिके हमारा किंचित्मात्रभी प्रयोजनसिद्धनहींहोवैगा ॥ यातें हेभगवन् ॥ यहआपकासंपूर्णधन कात्यायनी कूंप्राप्तहोवे ॥ हमारेकूं इसधनकेप्राप्तिकीइच्छानहीं ॥ शंका॥ हेमैत्रेयी॥ यासुवर्णादिरूपधनकूं जोतूं नहींअंगीकारकरैगी ॥ तौ तुम्हारेशरीर केखानपानादिकव्यवहार किसप्रकारहोवैंगे ॥ समाधान ॥ हेभगवन् ॥ जैसे संन्यासआश्रमकूंधारणकरिके आप शरीरकेनाशपर्यंत भिक्षा अन्नकरिके आपणेशरीरकानिर्वाहकरैंगे ॥ तैसे मैंमैत्रेयीभी याशरीरकेनाशपर्यंतभिक्षाअन्नकरिके आपणेशरीरकानिर्वाहकरोंगी ॥ यातें हमारेजीवनकी आप किंचित्मात्रभीचिंतामतकरो ॥ हेभगवन् ॥ पूर्व माताकेउदरविषे दशमासपर्यंत जिसविश्वंभरदेवनें हमारी रक्षाकरीहै ॥ सोविश्वंभरदेव अभीभी हमारीरक्षाकरैगा॥यातें ऐसेविश्वंभरपरमात्मादेवकेविद्यमानहुए आपणेशरीरकेजीवनकीचिंताकरणी हमारेकूंउचितनहींहै ॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् भिक्षाअन्नकेअप्राप्तिकरिके हमाराशरीर नष्टहोइजावैगा ॥ तौभी हमारेकूंभयनहीं ॥ उलटा या शरीरकेनाशहुए मैं परमेश्वरका उपकारमानोंगी ॥ काहेतें यहशरीर विष्ठामूत्रादिकमलोंकरिकेपूर्णहै ॥ यातें यहशरीर अत्यंत दुर्गंधवालाहै ॥ तथा यहशरीर अनेकप्रकारकीव्याधियोंकरिकेग्रस्तहै ॥ तथा नानाप्रकारकेदुःखोंकाकारणहै ॥ तथा यहशरीर अ

शुभप्रवृत्तिद्वारा अनेकपापोंकाकारणहै ॥ ऐसेनिंदितशरीरविषे मेरीकिंचित्मात्रभीआसक्तिनहीं ॥ शंका ॥ हेमैत्रेयी आपणेशरीर विषे जोतुम्हारीआसक्तिनहींहै ॥ तो याशरीरकेरक्षणकरणेवासते तूं अन्नादिकोंकाभक्षण किसवासतेकरतीहै ॥ समाधान ॥ हेभगवन् ॥ जैसे यालोकविषे राजाकेभृत्य किसीपुरुषकूं बलात्कारसें किसीकार्यविषे प्रवृत्तकरैहै ॥ तैसे मैंमैत्रेयीभी पराधीनताकरिकै भोजनादिकव्यवहारोंविषे प्रवृत्तहोतीहूं ॥ शरीरविषेरागकरिकै मैं भोजनादिकोंविषेप्रवृत्तहोतीनहीं ॥अब अन्नकेभोजनविषे दोषोंकानिरूपणकरैहैं॥हेभगवन्॥ अन्नकेभोजनकरणेतैं याजीवोंकेचित्तविषे काम क्रोध लोभ मोह उत्पन्नहोवैहैं ॥ तथा अन्नकेभोजनतैंहीं याजीवोंविषे निद्रातंद्रादिकदोष उत्पन्नहोवैहैं ॥ तथा विष्ठामूत्रादिकमलकीवृद्धिभी अन्नकेभोजनकरिकेहीहोवैहै ॥ तथा अन्नकेभोजनकरिकेही याजीवोंके नेत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय तथामन शरीर आपणेआपणेव्यापारोंविशे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ तानेत्रादिकोंकीप्रवृत्तितैं याजीवविषे अनेकप्रकारकेपापउत्पन्नहोवैहैं ॥ और जेप्राणी आहारतैंरहितक्षुधातुरहैं ॥ तिनप्राणियोंकेनेत्रादिकइंद्रिय किसीविषयविषेप्रवृत्तहोवैंनहीं ॥हेभगवन् ॥ अन्नकेनहींभोजनकरणेतैं याजीवकूं एकक्षुधा पीडाकरैहै ॥ और अन्नकेभोजनकरणेतैं याजीवोंकूं कामक्रोधादिकअनेकशत्रु पीडाकरैहैं॥ हेभगवन् पूर्वकामरूपदोषनें जोजोहमारेकूं दीनदशाकीप्राप्तिकरीहै ॥ तिसहमारीदीनदशाकूं आप जाणतेहो ॥ यातैं आपकेआगे मैंताआपणेदीनदशाका कथनकरतीनहीं ॥ हेभगवन् ॥ ताकामरूपदुःखका गर्भरूपफल हमस्त्रियोंकूं शीघ्रहीप्राप्तहोवैहै ॥ तागर्भकेधारणकरणेतैं तथा तागर्भकेपरित्यागकरणेतैं हमस्त्रियोंकूं जोदुःख प्राप्तहोवैहै ॥ सोदुःख नरककेदुःखतैं तथामरणकेदुःखतैंभी कोटिगुणाअधिकहै ॥ हेभगवन् ॥ जैसे यालोकविषेकुचलेकावृक्ष जीवोंकूं विषरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे यहकामरूपवृक्ष हमस्त्रियोंकूं नानाप्रकारकेदुःखरूपफलोंकी प्राप्तिकरैहै ॥ तिनदुःखोंकाअनुभव जैसे हमस्त्रीजनोंकूंहै ॥ तैसे पुरुषोंकूं तिनदुःखोंकाअनुभवहैनहीं ॥ हेभगवन् ऐसेदारुणदुःखोंकूंसहनकरिकेभी हमस्त्रियोंका यहशरीर नाशकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ ब्रह्मानें हमस्त्रीजनोंकाशरीर कोईवज्ररूपउत्पन्नकर्याहै ॥ हेभगवन् याकामकरिके जिसप्रकारकेदुःख हमारेकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिसीप्रकारके

दुःख क्रोधलोभमोहादिकोंकरिकैभी हमारेकूंप्राप्तभये हैं ॥ तिनसंपूर्णदुःखोंकूं मैं आपणेचित्तविषेअनुभवकरतीहूं ॥ आपसर्वज्ञहो ॥ याकारणतें आपकेसमीप मैं तिनदुःखोंकावर्णनकरतीनहीं ॥ और हेभगवन् अन्नकेभोजनकरणेतें उत्पन्नभये जेकामक्रोधादिकअनेक विकारहैं ॥ तिनकामक्रोधादिकअनेकविकारोंकरिके जोकदाचित् हमारामृत्युहोवे ॥ तामृत्युतें क्षुधाजन्यमृत्युकूं मैं श्रेष्ठमानतीहूं ॥ काहेतें जैसे यालोकविषे एकशूरवीरपुरुष एकहीशूरवीरपुरुषकेसाथ युद्धकरणेविषे समर्थहोवे है॥एकशूरवीरपुरुषका अनेकशूरवीरपुरुषोंके साथ युद्धकरणासंभवेनहीं ॥ जोकदाचित् सोएकशूरवीरपुरुष अनेकशूरवीरपुरुषोंकेसाथभीयुद्धकरैहै ॥ तो सोशूरवीरपुरुषभीअनेकोंकेसाथ युद्धकरिके क्लेशकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे कामक्रोधादिकअनेकविकारोंविषे प्रबल जोयहक्षुधारूपविकारहै ताएकक्षुधाकेसाथ युद्धकरणेविषे यद्यपि मैं समर्थहूं ॥ तथापि अनेककामक्रोधादिकविकारोंकेसाथ युद्धकरणेविषे मैं समर्थनहींहूं ॥ यातें हेभगवन् धनकेग्रहणकरणेतैंविना जोकदाचित् यहहमाराशरीर नष्टहोइजावेगा ॥ तो हमारेऊपरसें दुर्गंधशरीररूपभारउतरेगा॥याशरीरकेरक्षणकरणेविषे हमारा किंचित्मात्रभीरागनहीं ॥ परंतु हेभगवन् याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइके आत्मज्ञानतैंरहितहुईमैंमैत्रेयी याशरीरकेपरित्यागकरणेकीइच्छानहींकरती ॥ किंतु जैसे आप आत्मज्ञानकरिकेसंतोषकूंप्राप्तभयेहो ॥ तैसे मैंभी आत्मज्ञानकूंसंपादनकरिके पश्चात् जोशरीरका परित्यागकरौं तौश्रेष्ठवार्ता है यातें हेभगवन् जोआपकीहमारेऊपरकृपाहै॥तथा जोआपमोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकाउपायजाणते होवो ॥ तो सोमोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकाउपाय आपकृपाकरिके हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ जिसकरिके मैं मोक्षरूपअमृतकूं प्राप्तहोवौं ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकार धनकेनहींअंगीकारकरणेकावचन जभी मैत्रेयीनैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनिआपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरिके तामैत्रेयीकेवचनकूंअंगीकारकरताभया ॥ अब ताविचारकानिरूपणकरे हैं ॥ यालोकविषेयद्यपि यहजीव धनकरिकेकामरूपपुरुषार्थकूं तथाधर्मरूपपुरुषार्थकूं प्राप्तहोवे है ॥ तथापि ताधनकरिके यहजीवमोक्षरूपअमृतकूं कदाचित्भीप्राप्तहोइसके नहीं ॥ और धनकरिके याजीवोंकूं जोस्त्रीआदिकविषयोंकासंबंधरूपकाम प्राप्तहोवैहै ॥ सोकाम वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो जीवोंकेदुः

खकाहीसाधनहै ॥ परंतु जैसे मार्गकेचलणेकरिकेपरिश्रमकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै॥तिसपुरुषकूं दुःखकाकारणभीपादोंकाप्रहार सुखकाकारण प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे विषयासक्तभ्रांतपुरुषोंकूं दुःखकाकारणभीसोकाम सुखकाहीकारणप्रतीतहोवैहै ॥ किंवा ॥ वास्तवतैंविचारकरिकेदे खियेतो विषयजन्यसुखविषे सुखरूपतासंभवैनहीं ॥ किंतु ताविषयजन्यसुखविषे दुःखरूपताहीहै ॥ परंतु विषयासक्तलोकोंकीदृष्टिकूंलेके जोकदाचित् ताविषयजन्यसुखविषे सुखरूपता अंगीकारभीकरिये ॥ तोभी ताविषय जन्यसुखविषेधनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं धनतैंरहित जेश्वानादिकपशुहैं ॥ तेभी आपणीस्त्रीकेसंभोगतैं विषयसुखकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं स्त्रीरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारण तासंभवैनहीं ॥ और धनतैंरहितजेभ्रमरहैं ॥ तेभी नानाप्रकारकेपुष्पोंकीसुगंधकूंग्रहणकरिकेसुखकूंप्राप्तहोवै हैं॥ यातैं गंधरूपविषयजन्य सुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ और धनतैंरहितजेशुककोकिलादिकपक्षीहैं ॥ तेभीआम्रादिकफलोंकेरसकूंग्रहणकरिकेसुखकूं प्राप्तहोवै हैं॥यातैं रसरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं॥और विष्णुआदिकदेवतावोंकेमंदिरविषे स्थितजेगौआदिकपशुहैं तथा अन्यनिर्धनपुरुषहैं ॥ तेभी नानाप्रकारकेगीतवादित्रोंकेशब्दकूंश्रवणकरिके सुखकूंप्राप्तहोवैहैं॥ यातैं शब्दरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ और यालोकविषे धनतैंरहितजेदरिद्रीपुरुषहैं ॥ तेभी वारांगनादिकसुंदरस्त्रियोंकेरूपकूंदेखिके आनंदकूंप्राप्त होवैहैं ॥ यातैं रूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ और धनतैंरहितजेमक्षिकादिकजीवहैं ॥ तेभीदुर्लभराजोंकीस्त्रियों केस्पर्शकूंप्राप्तहोइके सुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं स्पर्शरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ यद्यपि यालोकविषे किसीकि सीमनुष्यकूं धनकरिके विषयसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं धनविषे यत्किंचित्विषयसुखकीकारणतासंभवैहै ॥ तथापि संपूर्णकार्यव्यक्ति योंका जोवस्तु नियमकरिकेजनकहोवैहै ॥ ताकूं शास्त्रविषेकारणकहैहैं ॥ और जोवस्तु किसीकार्यव्यक्तिकाजनकहोवै और किसीकार्यव्य क्तिकाजनकनहींहोवै॥तावस्तुकूं शास्त्रविषेकारणकहैंनहीं॥जैसे मृत्तिका दंड चक्र कुलाल यहचारों नियमकरिके संपूर्णघटोंकेजनकहैं॥ यातैं तेचारों घटकेकारणहैं॥और ताकुलालकेगृहविषेस्थितजोरासभहै ॥ सो यद्यपि यत्किंचित्घटकाजनकहै ॥ तथापि सोरासभ संपूर्णघटों

दुःख क्रोधलोभमोहादिकोंकरिकेभी हमारेकूंप्राप्तभये हैं ॥ तिनसंपूर्णदुःखोंकूं मैं आपणेचित्तविषेअनुभवकरतीहूं ॥ आपसर्वज्ञहो ॥ याकारणतें आपकेसमीप मैं तिनदुःखोंकावर्णनकरतीनहीं ॥ और हेभगवन् अन्नकेभोजनकरणेतें उत्पन्नभये जेकामक्रोधादिकअनेक विकारहैं ॥ तिनकामक्रोधादिकअनेकविकारोंकरिके जोकदाचित् हमारामृत्युहोवे ॥ तामृत्युतें क्षुधाजन्यमृत्युकूं मैं श्रेष्ठमानतीहूं ॥ काहेतें जैसे यालोकविषे एकशूरवीरपुरुष एकहीशूरवीरपुरुषकेसाथ युद्धकरणेविषे समर्थहोवे है॥एकशूरवीरपुरुषका अनेकशूरवीरपुरुषोंके साथ युद्धकरणासंभवेनहीं ॥ जोकदाचित् सोएकशूरवीरपुरुष अनेकशूरवीरपुरुषोंकेसाथभीयुद्धकरेहे ॥ तो सोशूरवीरपुरुषभीअनेकोंकेसाथ युद्धकरिके क्लेशकूंहींप्राप्तहोवैहे ॥ तैसे कामक्रोधादिकअनेकविकारोंविषे प्रबल जोयहक्षुधारूपविकारहै ताएकक्षुधाकेसाथ युद्धकरणेविषे यद्यपि मैं समर्थहूं ॥ तथापि अनेककामक्रोधादिकविकारोंकेसाथ युद्धकरणेविषे मैं समर्थनहींहूं ॥ यातें हेभगवन् धनकेग्रहणकरणेतेंविना जोकदाचित् यहहमाराशरीर नष्टहोइजावेगा ॥ तो हमारेऊपरसें दुर्गंधशरीररूपभारउतरेगा॥याशरीरकेरक्षणकरणेविषे हमारा किंचित्मात्रभीरागनहीं ॥ परंतु हेभगवन् याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइके आत्मज्ञानतेंरहितहुईमैंमैत्रेयी याशरीरकेपरित्यागकरणेकीइच्छानहींकरती ॥ किंतु जैसे आप आत्मज्ञानकरिकेसंतोषकूंप्राप्तभयेहो ॥ तैसे मैंभी आत्मज्ञानकूंसंपादनकरिके पश्चात् जोशरीरका परित्यागकरों तोश्रेष्ठवार्ता है यातें हेभगवन् जोआपकीहमारेऊपरकृपाहै॥तथा जोआपमोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकाउपायजाणते होवो ॥ तो सोमोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकाउपाय आपकृपाकरिके हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ जिसकरिके मैं मोक्षरूपअमृतकूं प्राप्तहोवों ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकार धनकेनहींअंगीकारकरणेकावचन जभी मैत्रेयीनैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनिआपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरिके तामैत्रेयीकेवचनकूंअंगीकारकरताभया ॥ अब ताविचारकानिरूपणकरे हैं ॥ यालोकविषेयद्यपि यहजीव धनकरिकेकामरूपपुरुषार्थकूं तथाधर्मरूपपुरुषार्थकूं प्राप्तहोवे है ॥ तथापि ताधनकरिके यहजीवमोक्षरूपअमृतकूं कदाचित्भीप्राप्तहोइसके नहीं ॥ और धनकरिके याजीवोंकूं जोस्त्रीआदिकविषयोंकासंबंधरूपकाम प्राप्तहोवैहे ॥ सोकाम वास्तवतेंविचारकरिकेदेखियेतो जीवोंकेदुः

काजनकहैनहीं ॥ यातैं सोरासभ घटकाकारणनहीं ॥ किंतु अन्यथासिद्धहै ॥ तैसे यहधन यद्यपि यत्किंचितपुरुषकेविषयसुखकाजनकहै॥
तथापि यहधन पशुआदिकसर्वजीवोंकेविषयसुखकाजनकहैनहीं ॥ यातैं यहधन विषयसुखकाकारणनहीं ॥ किंतु रासभकीन्याई अन्यथा
सिद्धहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जेधनवान्पुरुषहैं तेभी ताधनकरिकै संपूर्णविषयसुखोंकूंप्राप्तहोइसकैनहीं ॥ किंतु तेधनवान्पुरुष यत्किंचि
त्विषयसुखकूंही प्राप्तहोवैहैं ॥ सोयत्किंचित्विषयसुख निर्धनपुरुषोंकूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं विषयजन्यसुखविषे धनकूंकारणतासंभवैनहीं॥
किंवा ॥ जैसे विषयजन्यसुखविषे धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ तैसे स्वर्गादिकसुखकाहेतुजोधर्म है ॥ ताधर्मविषेभी धनकूंकारणतासंभवै
नहीं ॥ काहेतैं मुद्गलब्राह्मणतैंआदिलेकेजेनिर्धनपुरुषहुएहैं ॥ तेभी अतिथिकीसेवादिककर्मोंकरिकै स्वर्गकूंप्राप्तहुए शास्त्रविषेश्रवणकर
तेहैं ॥ यातैं धनकरिकैही यापुरुषकूं धर्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम संभवैनहीं॥ उलटा कितनेकधनवान्पुरुषतो धनकेमदकरिकै
नरककूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ स्वर्गकीप्राप्तिकेसाधन जेअश्वमेधादिकयज्ञहैं ॥ तेयज्ञ धनतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं धनही स्वर्गकेप्राप्तिकासा
धनहै ॥ समाधान ॥ अश्वमेधादिकयज्ञोंतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिकै जोकदाचित् याजीवोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिनहींहोती ॥ तौंधनविषे स्वर्ग
कीकारणतासंभवती ॥ परंतु स्वर्गकीप्राप्तिवासतै शास्त्रनैं जप व्रत तप आदिकअनेकप्रकारकेसाधन कथनकरेहैं ॥ तिनजपादिकसाध
नोंकरिकैभी याजीवोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिहोइसकैहै ॥ यातैं धनही स्वर्गादिकोंकाकारणहै याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी
धनकूं मोक्षविषेकारणमानैहै ॥ सोवादीभी मोक्षविषे धनकूं साक्षात्कारणमानैंनहीं ॥ किंतु यज्ञादिककर्मोंद्वारा ताधनकूं मोक्षविषेकार
णमानैहै ॥ तिनयज्ञादिककर्मोंविषेही जभी मोक्षकीकारणतासंभवैनहीं ॥ तभी धनविषे मोक्षकीकारणता किसप्रकारसंभवैगो ॥ और
स्वर्गादिकोंकीप्राप्तिविषे जैसे यज्ञादिककर्मोंकूंकारणताहै ॥ तैसे जपव्रतादिककर्मोंकूंभीकारणताहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अश्वमे
धादिकयज्ञ यद्यपि धनकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ तथापि धनकरिकै मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणे
मनविषेकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेप्रियमैत्रेयी ॥ धनकेपरि

त्यागकरणेका जोतुमनें हमारेप्रति वचनकह्याहे ॥ तथा मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधन जोतुमनें हमारेसेंपूछ्याहे ॥ तातुमारेवचनकूंश्रवण करिके हमारेमनविषे बहुतप्रसन्नताभई हे ॥ हेमैत्रेयी ॥ याळोकविषे यहपुरुष पुत्ररूपकरिकेप्रीतियुक्तहुआ जिसस्त्रीतेंउत्पन्नहोवेहे ॥ तास्त्रीकानाम जायाहे ॥ सोयाप्रकारकी हमारीजाया एकतुहीहे ॥ काहेतें यातुमारेवचनकूंश्रवणकरिके प्रीतिविशिष्टहुआमेंयाज्ञवल्क्य तुमारेतेंउत्पन्नभयाहूं ॥ यातें तेरेसरीखीजेविचारवानस्त्रियां हैं ॥ तेही जाया यानामकरिकेकहणेयोग्यहैं ॥ ओर तुमारेसरीखीविचारवान स्त्रियोंतेंभिन्न जितनीकिलौकिकस्त्रियां हैं ॥ तेस्त्रियां अन्नवस्त्रभूषणादिकपदार्थोंकीयाचनाकरिके आपणेपतियोंकूं अनेकप्रकारकेक्लेशोंकी प्राप्तिकरेहैं ॥ यातें तेस्त्रियां जाया यानामकरिकेकथनकरणेयोग्यनहीं हैं ॥ किंतु तेस्त्रियां ललना भार्या इत्यादिकनामोंकरिके कथनक रणेयोग्यहैं ॥ हेमैत्रेयी याकाळविषे मैंयाज्ञवल्क्य जैसे धनादिकपदार्थोंकीकामनातें रहितहुआहूं ॥ तैसे तुमनेंभी धनादिकपदार्थोंकीका मनाकापरित्यागकरिके हमारेसें आत्माकास्वरूपपूछ्याहे ॥ तातुमारेनिष्कामवचनकूं श्रवणकरिके मैंपरमआनंदकूंप्राप्तभयाहूं॥यातें स्त्रियों काजोस्वभावतेंलज्जाधर्महे ताळज्जाकापरित्यागकरिके तुम हमारेसन्मुखस्थितहोवो ॥ हेमैत्रेयी ॥ जोतुमनें मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधन पूछ्याहे ॥ सोसाधन मैंयाज्ञवल्क्य तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तूं आपणेमनकूं तथा नेत्रोंकूं तथाकरणोंकूं सावधानकरिके श्रवणकर॥ अब अन्वयव्यतिरेककरिके आत्माकेपरमानंदरूपताका निरूपणकरेहे ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेमैत्रेयी ॥ तेरेकूं मैंपतिप्रियहूं॥ओर मेरेकूं तूजायाप्रियहे ॥ यहवार्ता तुमारेहमारेकूं अनुभवसिद्धहे ॥ परंतु याकेविषेयह विशेषताहे ॥ हमारीजातुमारेशरीरविषेप्रीतिहे ॥ साप्रीति तुमारेसुखवासतेनहीं हे ॥ किंतु आपणेआत्माकेसुखवासतेंही हमारी तुमारेशरीरविषेप्रीतिहे ॥ और हेमैत्रेयी ॥ तुमारीजाहमारेशरीरविषे प्रीतिहे ॥ साप्रीतिभी हमारेसुखवासतेनहीं हे॥किंतु आपणेआत्माकेसुखवासतेंही तुमारी हमारेशरीरविषेप्रीतिहे॥अब याहीअर्थकूं स्पष्टक रिकेनिरूपणकरेहैं॥हेमैत्रेयी॥ यहजाया आपणेपतिसें जोप्रीतिकरेहे॥सोपतिकेसुखवासतेंनहींकरेहे ॥किंतु कामरूपअग्निकरिकेतपायमानहुई साजाया ताकामरूपअग्निकीशांतिद्वारा आपणेविषयसुखवासते तथा वस्त्रभूषणादिकोंकीप्राप्तिजन्यसुखवासते आपणेपतिविषेप्रीतिकरेहे

काजनकहैनहीं ॥ यातैं सोरासभ घटकाकारणनहीं॥ किंतु अन्यथासिद्धहै ॥ तैसे यहधन यद्यपि यत्किंचित्पुरुषकेविषयसुखकाजनकहै॥ तथापि यहधन पशुआदिकसर्वजीवोंकेविषयसुखकाजनकहैनहीं ॥ यातैं यहधन विषयसुखकाकारणनहीं ॥ किंतु रासभकीन्याई अन्यथा सिद्धहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जेधनवान्पुरुषहैं तेभी ताधनकरिके संपूर्णविषयसुखोंकूंप्राप्तहोइसकेनहीं ॥ किंतु तेधनवान्पुरुष यत्किंचि त्विषयसुखकूंही प्राप्तहोवैहैं ॥ सोयत्किंचित्विषयसुख निर्धनपुरुषोंकूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं विषयजन्यसुखविषे धनकूंकारणतासंभवेनहीं॥ किंवा ॥ जैसे विषयजन्यसुखविषे धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ तैसे स्वर्गादिकसुखकाहेतुजोधर्म है ॥ ताधर्मविषेभी धनकूंकारणतासंभवे नहीं ॥ काहेतैं मुद्गलब्राह्मणतैंआदिलैकेजेनिर्धनपुरुषहुएहैं ॥ तेभी अतिथिकीसेवादिककर्मोंकरिके स्वर्गकूंप्राप्तहुए शास्त्रविषेश्रवणकर तेहैं ॥ यातैं धनकरिकैही यापुरुषकूं धर्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम संभवैनहीं॥ उलटा कितनेकधनवान्पुरुषतो धनकेमदकरिके नरककूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ स्वर्गकीप्राप्तिकेसाधन जेअश्वमेधादिकयज्ञहैं॥ तेयज्ञ धनतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं धनही स्वर्गकेप्राप्तिकासा धनहै ॥ समाधान ॥ अश्वमेधादिकयज्ञोंतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिके जोकदाचित् याजीवोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिनहींहोती ॥ तौंधनविषे स्वर्ग कीकारणतासंभवती ॥ परंतु स्वर्गकीप्राप्तिवासते शास्त्रनें जप व्रत तप आदिकअनेकप्रकारकेसाधन कथनकरेहैं ॥ तिनजपादिकसाध नोंकरिकेभी याजीवोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिहोइसकेहै ॥ यातैं धनही स्वर्गादिकोंकाकारणहै याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी धनकूं मोक्षविषेकारणमानैहै ॥ सोवादीभी मोक्षविषे धनकूं साक्षात्कारणमानैंनहीं ॥ किंतु यज्ञादिककर्मोद्वारा ताधनकूं मोक्षविषेकार णमानैहै ॥ तिनयज्ञादिककर्मोंविषेही जभी मोक्षकीकारणतासंभवैनहीं ॥ तभी धनविषे मोक्षकीकारणता किसप्रकारसंभवैगी ॥ और स्वर्गादिकोंकीप्राप्तिविषे जैसे यज्ञादिककर्मोंकूंकारणताहै ॥ तैसे जपव्रतादिककर्मोंकूंभीकारणताहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अश्वमे धादिकयज्ञ यद्यपि धनकरिकेप्राप्तहोवैहैं ॥ तथापि धनकरिके मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणे मनविषेकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेप्रियमैत्रेयी ॥ धनकेपरि

शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहजाया आपणेसुखवासते पतिविषेप्रीतिकरेहै ॥ यहवार्ता केसेजाणीजावे ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी जोकदाचित् पति केसुखवासते यहजाया पतिविषेप्रीतिकरतीहोवे ॥ तोजिसकालविषे सोपति किसीपरस्त्रीकीआसक्तिकरिके ताजायाकेप्रतिकूलहोवेहै ॥ तिसकालविषेभी ताजायाकीआपणेपतिविषेप्रीतिहोणीचाहिये ॥ और आपणेतैंप्रतिकूलजोपतिहै ॥ तापतिविषेकोईभीजाया प्रीतिकरती नहीं ॥ किंतु अनुकूलपतिविषेही संपूर्णजाया प्रीतिकरेहै ॥ यातें यहजान्याजावेहै ॥ यहजाया आपणेसुखवासतेंही पतिविषेप्रीतिकरेहैं ॥ पतिकेसुखवासते कोईजाया पतिविषेप्रीतिकरतीनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ॥ जैसे यहजाया पतिकेसुखवासते पतिविषेप्रीतिकरेनहीं ॥ तैसे यहपतिभी ताजायाकेसुखवासते ताजायाविषेप्रीतिकरेनहीं ॥ किंतु कामरूपअग्निकीशांतिद्वारा आपणेविषयसुखवासते तथा अन्नपाकादिकगृहकेव्यवहारजन्यसुखवासते सोपति आपणीजायाविषेप्रीतिकरेहै ॥ जोकदाचित् ताजायाकेसुखवासते सोपति ताजायाविषेप्रीतिकरताहोवे ॥ तोजिसकालविषे साजाया ऋतुधर्मकरिके अथवा किसीव्यभिचारादिककर्मोंकरिके तापतिकेप्रतिकूलहोवेहै ॥ तिसकालविषेभी तापतिकी तिसजायाविषेप्रीतिहोणीचाहिये ॥ और आपणेतैंप्रतिकूलजायाविषे किसीभीपतिकीप्रीतिहोवेनहीं ॥ किंतु अनुकूलजायाविषेही सर्व पतियोंकीप्रीतिहोवेहै ॥ यातें यहजान्याजावेहै ॥ ताजायाकेसुखवासते तिसपतिकी जायाविषेप्रीतिनहीं ॥ किंतु आपणे सुखवासतेही तापतिकी तिसजायाविषेप्रीतिहै॥यातें हेमैत्रेयी जैसे यालोकविषे शर्करा स्वभावतैंमधुरहै॥तथा आपणेसंबंधकरिकेसाशर्करा अमधुरपदार्थोंकूंभी मधुरकरेहै॥यातें साशर्करा मधुरतमहै॥तैसे यास्त्रियोंका तथापुरुषोंका जोस्वयंज्योति आनंदस्वरूपआत्माहै॥ सोआत्माहीं स्वभावतैंप्रियरूपहै॥और सोआनंदस्वरूपआत्मा आपणेतादात्म्यसंबंधकरिके शरीरादिकअप्रियपदार्थोंकूंभी प्रियरूपकरेहै॥याकारणतैं सोआत्मादेवप्रियतमहै ॥ और हेमैत्रेयी ॥ जैसे जायाकूं आपणेसुखवासते पतिप्रियहै ॥ तथा पतिकूं आपणेसुखवासते जायाप्रियहै॥ तैसे पुत्र सुवर्णादिकधन गवादिकपशु ब्राह्मणत्वजातिक्षत्रियत्वजाति भूरादिकसप्तलोक इंद्रादिकदेवता ऋगादिकवेद स्थावरजंगमप्राणी इसतैं आदिलेके जितनेकीजगत्‌विषेपदार्थ हैं तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे जोजीवोंकीप्रीतिहोवेहै ॥ सोतिनपुत्रादिकपदार्थोंकेसुखवासतेनहीं

होवैहै ॥ किंतु आपणेसुखवासतैंहीं तिनजीवोंकी पुत्रादिकपदार्थोंविषेप्रीतिहोवैहै ॥ जोकदाचित् तिनपुत्रादिकपदार्थोंकेसुखवासतैंहीं तिनजीवोंकी पुत्रादिकपदार्थोंविषेप्रीतिहोतीहोवे ॥ तौ जिसकालविषे तेपुत्रादिकपदार्थ याजीवोंकेप्रतिकूलहोवैहैं॥तिसकालविषेभी तिनजीवोंकी तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे प्रीतिहोणीचाहिये ॥ और आपणेतैंप्रतिकूलपुत्रादिकपदार्थोंविषे कोईभीजीव प्रीतिकरतानहीं ॥ किंतु अनुकूलपुत्रादिकपदार्थोंविषेही सर्वजीव प्रीतिकरैहैं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ यहजीव आपणेसुखवासतैंहीं तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषेप्रीति करैहैं ॥ तिनपुत्रादिकपदार्थोंकेसुखवासते कोईजीव तिनपुत्रादिकोंविषे प्रीतिकरतानहीं ॥ यातैं सर्वजीवोंकूं आपणाआत्माहीं स्वभावतैं प्रियहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पति जाया पुत्र इसतैंआदिलेकेजितनाकोजगत्है ॥ सोजगत् यद्यपि प्रतिकूलहुआ जीवोंकेसुखकाहेतुनहीं है ॥ तथापि अनुकूलहुआसोजगत् जीवोंकेसुखकाहेतुहै ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्माकेसंबंधकूंपाइके यहजगत् प्रियरूपनहीं ॥ किंतु स्वभावतैंहीं ॥ यहजगत् प्रियरूपहै ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयो ॥ एकआनंदस्वरूपआत्माकूंछोडिके जितनेकीपतिजायापुत्रादिकअनात्मपदार्थ हैं ॥ तेपदार्थ स्वभावतैंप्रियरूपनहीं तथाअप्रियरूपनहीं ॥ किंतु यहपदार्थ हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकाअनुकूलताज्ञान जिसजीवकूं जिसपदार्थविषेहोवैहै ॥ तिसजीवकूं सोपदार्थ प्रियहोवैहै ॥ और यहपदार्थ हमारेदुःखकासाधनहै याप्रकारकाप्रतिकूलताज्ञान जिसजीवकूं जिसपदार्थविषेहोवैहै॥तिसजीवकूं सोपदार्थ अप्रियहोवै है ॥ याकारणतैंहीं यालोकविषे जिसपुरुषकूं भ्रांतिकरिके आपणेप्रिय मित्रविषे प्रतिकूलताज्ञानहोवैहै॥और आपणेशत्रुविषे अनुकूलताज्ञानहोवैहै ॥ सोभ्रांतपुरुष आपणेमित्रकूंतो अप्रियमानैहै ॥ और आपणे शत्रुकूंप्रियमानैहै॥यातैं यहसिद्धभया॥अनात्मपदार्थोंकोप्रियताविषे अनुकूलताज्ञान कारणहै ॥ और अनात्मपदार्थोंकीअप्रियताविषे प्रतिकूलताज्ञान कारणहै ॥स्वभावतैं कोईभीअनात्मपदार्थ प्रियअप्रियरूपनहीं ॥ तहाँदृष्टांत॥ जैसे वायु स्वभावतैं नउष्णहै नशीतलहै॥परंतु सोवायु अग्निकेसंबंधकरिके उष्णप्रतीतहोवैहै ॥ और जलकेसंबंधकरिके सोवायु शीतलप्रतीतहोवै है ॥ तैसे यहअनात्मपदार्थ स्वभावतैं नप्रियरूपहै नअप्रियरूपहै॥परंतु अनुकूलताज्ञानकरिके तेअनात्मपदार्थ जीवोंकूं प्रियरूपहुएप्रतीतहोवैहैं ॥ और प्रतिकूलताज्ञानकरिके

ते अनात्मपदार्थ जीवोंकूं अप्रियरूपहुएप्रतीतहोवेहैं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जिसपदार्थका जोस्वभावहोवैहै ॥ तिसपदार्थका सोस्वभाव किसीकालविषेभी निवृत्तहोवेनहीं ॥ जैसे अग्निकाजोउष्णतास्वभावहै ॥ सोउष्णतास्वभाव ताअग्नितें किसीकालविषेनिवृत्तहोवैनहीं ॥ तैसे पतिजायादिक अनात्मपदार्थोंविषे जोस्वभावतैंहीं प्रियताहोवै ॥ तौसर्वदा तिनपदार्थोंविषे प्रियताप्रतीतहोणीचाहिये ॥ और सर्वदा तिनअनात्मपदार्थोंविषे प्रियताप्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेस्थितिकालविषे जेपतिजायादिकअनात्मपदार्थ याजोवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ तेहीपतिजायादिकअनात्मपदार्थ आपणेवियोगकालविषे तथा प्रतिकूलताज्ञानकालविषे तिनजीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेकीपतिजायादिकअनात्मपदार्थहैं ॥ तिनोंविषे स्वभावतैंप्रियरूपतानहीं ॥ किंतु जिसकालविषे याजीवोंकूं तिनपतिजायादिकपदार्थोंविषे अनुकूलताज्ञानहोवैहै ॥ तिसीकालविषे तेपतिजायादिकपदार्थ ताजीवोंकूं प्रियलागेहैं ॥ यातैं यह सिद्धभया ॥ जोआनंदस्वरूपआत्मा आपणेसंबंधकरिके अप्रियपदार्थोंकूंभी प्रियकरैहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्माहीं सर्वजीवोंकाप्रियतमहै ॥ अब आनंदस्वरूपआत्माविषे प्रियतमताकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम अप्रिय प्रिय प्रियतरयातीनोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ यहपदार्थ हमारेकूं कदाचित्भी नहींप्राप्तहोवे ॥ याप्रकार जीवोंकेद्वेषकाविषयजोदुःखहै ॥ तथा तादुःखकेसाधनजेसिंहसर्पादिकहैं ॥ तिनदोनोंकानाम अप्रियहै ॥ और यहपदार्थ हमारेसुखकेसाधनहैं याप्रकार जीवोंकेज्ञानकाविषय जेपतिजायादिकपदार्थ हैं ॥तिनोंकानाम प्रियहै ॥ और तिनपतिजायादिकप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिकरिके जोसात्विकअंतःकरणकापरिणाम रूपसुखहोवैहै ॥ तासुखकानाम प्रियतरहै ॥ और जैसे पतिजायादिक प्रियपदार्थोंविषे जोजीवोंकीप्रीतिहोवैहै ॥ सो तिनपतिजायादिकपदार्थोंकेसुखवासतेहोवेनहीं ॥ किंतु आपणेसुखवासतेहीं तिनजीवोंकी तिनपतिजायादिकपदार्थोंविषेप्रीतिहोवैहै ॥ तैसे ताप्रियतरसुखविषे जोजीवोंकीप्रीतिहोवैहै ॥ सो तासुखवासतेनहींहोवैहै ॥ किंतु आपणेआत्मावासतैंहीं तिनजीवोंकी तासुखविषेप्रीतिहोवैहै ॥ जोकदाचित् तासुखकेवासतेहींजीवोंकी तासुखविषेप्रीतिहोवै ॥ तो वैरीपुरुषकेसुखविषेभी तिनजीवोंकीप्रीतिहोणीचाहिये ॥

और वैरीपुरुषकेसुखविषे किसीजीवकीप्रीतिहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ आपणेआत्मावास्तेहीं याजीवोंकूं सोसुखप्रियतरहै ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्माहीं सर्वजीवोंकूं प्रियतमहै ॥ इहां प्रियतैंजोअधिकहोवै ताकानाम प्रियतरहै ॥ और प्रियतरतैंभीजोअधिकप्रियहोवै ताकानाम प्रियतमहै ॥ हेमैत्रेयी ऐसेप्रियतमआत्माके लेशमात्रआनंदकूंआश्रयणकरिके ब्रह्मादिकलोकभी आनंदकूंप्राप्तहोइरहेहैं ॥ याकारणतैं सोआत्मास्वरूपआनंद ब्रह्माकेआनंदतैंभी उत्कृष्टहै ॥ हेमैत्रेयी स्वर्गलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकीविषयजन्यआनंदहैं ॥ तिनसंपूर्णआनंदों तैंअधिक तथाद्वैतभावतैंरहित जोब्रह्मानंदहै ॥ सोब्रह्मानंद याजीवोंकेआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोब्रह्मानंद याजीवोंकाआत्मारूपहीहै ॥ याकारणतैं यहआत्मास्वरूपआनंदही याजीवोंकापरमपुरुषार्थरूपहै ॥ इतनैंकरिके आनंदस्वरूपआत्माविषे परमपुरुषार्थरूपता निरूपणकरी ॥ अब ता आनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारवास्ते श्रवणादिकसाधनोंका निरूपणकरेहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जिनअधिकारीपुरुषोंकूंकरामलककीन्याई संशयविपर्ययतैंरहित आत्माकेसाक्षात्कारकीइच्छाहोवै ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनैं प्रथम विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकूंसंपादनकरणा ॥ तिसतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषनैं श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाणा॥तहांजाइके याअधिकारीपुरुषनैं तागुरुकेमुखतैं॥अयमात्माब्रह्म ब्रह्माहमस्मि ॥ इसतैंआदिलेके अनेकश्रुतिवचनोंका वारंवारश्रवणकरणा॥औरउपक्रमउपसंहारादिकषट्लिंगोंकरिके या अधिकारीपुरुषनैं तिनवेदांतवचनोंका अद्वितीयब्रह्मविषे तात्पर्यनिश्चयकरणा याकानाम श्रवणहै॥याश्रवणकरिके अधिकारीपुरुषकी प्रमाणगतअसंभावना निवृत्तहोवैहै॥तहां वेदांतशास्त्रजीवब्रह्मकेअभेदकाप्रतिपादकहै अथवा भेदकाप्रतिपादकहै॥याप्रकारकेसंशयकानाम प्रमाणगतअसंभावनाहै॥अब मननकानिरूपणकरैहैं हेमैत्रेयी॥याप्रकार गुरुकेमुखतैं वेदांतवचनोंकूंश्रवणकरिके यह अधिकारीपुरुष एकांतदेशविषेस्थितहोइके श्रुतितैंअविरुद्धतर्ककरिके तिनवचनोंकेअर्थकामननकरै सोतर्कयहहै॥जैसे यालोकविषे एकहीमृत्तिकादिककारण घटशरावादिकअनेककार्यरूपकरिके स्थितहोवैहै ॥ तैसे एकहीअद्वितीयपरमात्मादेव अज्ञानकेसंबंधतैं नानाजगत्‌रूपहोइके प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे घटशरावादिककार्य

मृत्तिकादिककारणोंविषेलयहोवैहैं ॥ तैसे यहसंपूर्णजगत् अधिष्ठानपरमात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे मालाकेपुष्पोंविषे सूत्रकातोअन्वयहै ॥ और पुष्पोंका परस्परव्यतिरेकहै॥ तैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति बाल्य यौवन वृद्ध इत्यादिकअवस्थावोंविषे आत्माका तोअन्वयहै ॥ और तिनअवस्थावोंका परस्परव्यतिरेकहै ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकीतर्कोंकरिकै यहअधिकारीपुरुष वेदवचनोंकेअर्थकामननकरैं ॥ तामननकरिकै याअधिकारीपुरुषकी प्रमेयगतअसंभावना निवृत्तहोवैहै ॥ यहाँ आत्मा व्यापकहै अथवा परिच्छिन्नहै ॥ इत्यादिकसंशयोंकानाम प्रमेयगतअसंभावनाहै ॥ अब निदिध्यासनकानिरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी॥यह मन अत्यंतचंचलहै ॥ यातैं तामनकूं यहअधिकारीपुरुष प्रथम किसीबाह्यप्रियपदार्थविषे एकाग्रकरै॥तिसतैं अनंतर यहअधिकारीपुरुष ताशिक्षितमनकूं अंतरआत्मा विषेएकाग्रकरै ॥ जाआत्माविषे एकाग्रताकूंप्राप्तहुआ यहमन पुनःबहिर्मुखताकूं नहींप्राप्तहोवै ॥ याकानाम निदिध्यासनहै ॥ तानिदिध्यासनकरिकै याअधिकारीपुरुषकी विपरीतभावना निवृत्तहोवै है ॥ अन्यवस्तुविषे अन्यबुद्धिकानाम विपरीतभावनाहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ इसप्रकार श्रवणमनननिदिध्यासनकरिकै असंभावनाविपरीतभावनातैंरहितहोइके अंतरआत्माविषेएकाग्रताकूंप्राप्तहुआ यहशुद्धमन गुरुउपदिष्टमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं ॥ आत्माकेसाक्षात्कारकूंउत्पन्नकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ महावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैंविनाहीं स्वतंत्र मन आत्मसाक्षात्कारकूं किसवास्तेनहींउत्पन्नकरता ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे नेत्रादिकबाह्यइंद्रिय कदाचित् यथार्थज्ञानरूपप्रमाकूंउत्पन्नकरैहैं ॥ और कदाचित् तेनेत्रादिकइंद्रिय दोषकेवशतैं अयथार्थज्ञानरूपअप्रमाकूंभीउत्पन्नकरैहैं यथार्थज्ञानकूंहीं हम उत्पन्नकरैं ॥ अयथार्थज्ञानकूं हम नहींउत्पन्नकरैं ॥ याप्रकारकाआग्रह तिननेत्रादिकइंद्रियोंविषेहोवैनहीं ॥ तैसे सर्ववृत्तियोंकाउपादानकारणजोयहमनहै॥ सोमनभी कदाचित् यथार्थज्ञानरूपप्रमाकूंउत्पन्नकरैहै॥और कदाचित् सोमन दोषकेवशतैं अयथार्थज्ञानरूपअप्रमाकूंभी उत्पन्नकरैहै ॥ यथार्थज्ञानकूंहीं मैं उत्पन्नकरौं अयथार्थज्ञानकूं मैं नहींउत्पन्नकरौं याप्रकारकाआग्रह तामनविषेहोवैनहीं ॥ और सर्व दोषोंतैंरहित यहमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणतौ केवलयथार्थज्ञानरूपप्रमाकूंहींउत्पन्नकरैहै ॥ यातैं आत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे महावा

क्यरूपशब्दप्रमाणहीं प्रधानकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आत्माकेसाक्षात्कारविषे जोमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणकूंहीं प्रधानताहोवै॥तौ
मनकीसहायतातैंविनाहीं सोमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणआत्मसाक्षात्कारकूंकिसवासतैंनहींउत्पन्नकरता ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे नेत्रा
दिकबाह्यइंद्रियोंकरिकेजन्य जोघटपटादिकपदार्थोंकाप्रत्यक्षज्ञानहै॥ ताप्रत्यक्षज्ञानविषे नेत्रादिकइंद्रियोंका घटादिकविषयोंकेसाथ संयोगा
दिकसंबंध कारणहै ॥ विषयइंद्रियकेसंबंधतैंविना प्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसे महावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं मनविषेउत्पन्नभईजोआत्मा
कारवृत्तिहै ॥ तावृत्तिज्ञानविषे साक्षात्काररूपता तभीसिद्धहोवै ॥ जभी आत्माकेसाथ मनकासंयोगसंबंधहोवै आत्माकेसाथ मनकेसंबं
धतैंविना तावृत्तिज्ञानविषे साक्षात्काररूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ याकारणतैंमहावाक्यजन्यआत्मसाक्षात्कारविषे आत्माकेसाथ शुद्धमनका
संबंधभी अवश्यअपेक्षितहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ श्रवण मनन निदिध्यासन यातीनसाधनोंकरिकेयुक्त जोशुद्धमनहै ॥ सोमन
गुरुउपदिष्टमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकूंउत्पन्नकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आत्मसाक्षात्कारकेउत्पन्न
हुएयाअधिकारीपुरुषोंकूं कौनफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं जभी श्रवणादिकसाधनोंकरिकै
आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तभी याअधिकारीपुरुषोंके अज्ञानरूपअविद्याकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और ताअविद्यारूपकारणकेनाशहुएतैं
अनंतर याअधिकारीपुरुषोंके कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकसंपूर्णदुःखोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार कार्यसहितअविद्याकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर याअ
धिकारीपुरुषोंकेहृदयविषे स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्मा प्रादुर्भावहोवैहै ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे मेघादिकोंकेनिवृत्तहुए केवल
शुद्धआकाश प्रतीतहोवै है ॥ तैसे कार्यसहितअविद्याकेनाशहुए याअधिकारीपुरुषोंकूं आनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माप्रतीतहोवै है ॥
हेमैत्रेयी ॥ जैसे स्वप्नअवस्थातैं जाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहुआयहपुरुष तास्वप्नकेदुःखोंकूंमिथ्यामाने है ॥ तैसे आत्मसाक्षात्कारकरिके अवि
द्यारूपनिद्रातैंजाग्रतहुआ यहविद्वान्पुरुष संपूर्णदृश्यप्रपंचकूं मिथ्यामाने है ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे भयतैंरहित चक्रवर्तीमहाराजा स्वप्नविषे
जाइके नानाप्रकारकेभयकूंप्राप्तहोवै है ॥ और तास्वप्नतैंजाग्रतहुआ सोमहाराजा तास्वप्नकेभयकूंआपणेविषेमानैंनहीं ॥ तैसे

वास्तवतैं सर्वदुःखोंतैंरहितहुआभीयहपुरुष आपणेआत्मास्वरूपकेअज्ञानतैं आपणेविषे नानाप्रकारकेदुःखोंकूंमाने है ॥ और आत्माकेसाक्षात्कारहुएतैंअनंतर यहविद्वान्पुरुष आपणेस्वरूपविषे तिनसंपूर्ण दुःखोंकूंमिथ्यामानेहै ॥ अब आत्माकेज्ञानतैं सर्वप्रपंचके ज्ञानकीसिद्धिकरणेवासते प्रथम अनेकदृष्टांतोंकरिके प्रपंचविषे मिथ्यापणानिरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे शुद्धआकाशविषे अविद्या करिके गंधर्वनगर उत्पन्नहोवे है ॥ तैसे याशुद्धआत्माविषेभी अविद्याकरिकेही जगत् उत्पन्नहोवेहै ॥ और जैसे वास्तवतैंविचारकरिके देखियेतो ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर तीनकालमें उत्पन्न नहींभया ॥ तैसे वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो याअद्वितीयआत्माविषेभी यहदुःखरूपजगत् तीनकालमें उत्पन्ननहींभया ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे नेत्रकेतिमिररोगकरिके यहपुरुष एकचन्द्रमाकूं अनेकदेखेहै ॥ तैसे अविद्यारूपदोषकरिके यह अज्ञानीजीव एकअद्वितीयआत्माकूं अनेकरूपदेखेहै ॥ और जैसे मूढबालक आपणोअंगुलीसैं नेत्रोंकानिरोधकरिके निर्मलआकाशविषे मयूरकेपुच्छसमान विचित्ररूपकूंदेखेहै ॥ तैसे यहमूढअज्ञानीजीवभी अविद्यारूपदोषकरिके आनंदस्वरूपआत्माविषे यहदुःखरूपजगत्देखैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिनपुरुषोंकूं आत्माकासाक्षात्कारनहींभया ॥ ऐसेअज्ञानीजीव जोकदाचित् याजगत्कूंदेखैं ॥ तौयाके विषे कोई आश्चर्यनहीं ॥ परंतु आत्मसाक्षात्कारकरिकेजिनविद्वान्पुरुषोंकी कार्यसहितअविद्यानिवृत्तभई है ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषभी याप्रपंचकूंदेखैहैं ॥ यहहमारेकूंबहुतआश्चर्यहोवेहै ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे यालोकविषे पूर्वादिकदिशावोंविषे पश्चिमादिकदिशावोंकाभ्रम अज्ञानीपुरुषोंकूंहोवेहै ॥ तैसे शास्त्रवेत्तापुरुषोंकूंभी सोदिशाभ्रमहोवेहै ॥ इसप्रकार जैसे याअज्ञानीपुरुषोंकूं अद्वितीयआत्माविषे नानाप्रकारकाजगत्प्रतीतहोवेहै ॥ तैसे प्रारब्धकर्मोंकरिरक्षित जो अविद्यालेशहै ॥ ताकरिके तिनविद्वान्पुरुषोंकूंभी शरीरकेनाशपर्यंत कल्पितरूपकरिके जगत्काभानहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे यालोकविषे जिसपुरुषनें शंखकूंशुक्लरूपवालाजान्याहै ॥ तिसपुरुषकूंभी नेत्रोंकेपित्तदोषकरिके सोशंख पीतरूपवालाप्रतीतहोवेहै ॥ तथा जिसपुरुषनें गुडकूंमधुररसवालाजान्याहै ॥ तिपुरुषकूंभी जिह्वादोषकेवशतैं सोगुड तिक्तरसवालाप्रतीतहोवेहै ॥ तैसे जिसविद्वान्पुरुषनैं

अद्वितीयआत्माकानिश्चयकऱ्याहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूंभी अविद्यालेशकेवशतैं प्रारब्धकर्मकेनाशपर्यंत यहजगत् कल्पितरूपकरिकेप्रतीतहोवैहै ॥ अब विद्वान्पुरुषोंविषे अज्ञानीजीवोंतैंविलक्षणता बोधनकरणेवासते अज्ञानीजीवोंकेप्रपंचदर्शनका अनेकदृष्टांतोंकरिकेनिरूपण करैहैं ॥ हेमैत्रेयी जैसे वास्तवतैंजलतैंरहितजोऊषरभूमिहै ॥ ताऊषरभूमिविषे तृषातुरमृगादिकजीवोंकूं नानाप्रकारकोलहरियोंयुक्तजल प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं भेदप्रपंचतैंरहित जोयहअद्वितीयआत्माहै ताकेविषे विषयासक्तअज्ञानीपुरुषोंकूं यहभेदप्रपंच प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे वास्तवतैं रजतभावतैंरहित जोशुक्तिहै ताशुक्तिविषे लोभीपुरुषोंकूं रजतप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं प्रपंचभावतैंरहित जोयह अद्वितीयआत्माहै ॥ ताकेविषे अज्ञानीपुरुषोंकूं यहजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे मंदअंधकारविषे यहपुरुष भयरूपदोषकेवशतैं सर्पभावतैंरहितरज्जुविषे सर्पकूंदेखेहै ॥ तथा चोरभावतैंरहितस्थाणुविषे चोरकूंदेखेहै तैसे यहअज्ञानीजीव अविद्यारूपदोषकेवशतैं निर्दुःखचेतनआत्माविषे दुःखजडअनात्मरूपजगतकूंदेखेहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं जितनाकी पतिजायादिकजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ सोजगत् तास्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी जितनाकी पतिजायादिकजगत्प्रतीतहोवैहै ॥ सोजगत् आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोजगत् आत्मारूपहीहै ॥ यातैं हेमैत्रेयी ॥ ऐसे अद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारकूं तुम श्रवणादिकसाधनोंयुक्तशुद्धमनकरिके तथा महावाक्यरूपशब्दप्रमाणकरिके सिद्धकरो ॥ ऐसेआत्मसाक्षात्कारकोप्राप्तितैं अनंतर तूं पुनः संसारदुःखोंकूंनहींप्राप्तहोवैगी ॥ हेमैत्रेयी जैसे आकाशविषेकल्पितजोगंधर्वनगरहै ॥ सोगंधर्वनगर आकाशरूपहीहै ॥ आकाशतैंभिन्न तागंधर्वनगरकीसत्तानहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषेकल्पितजोयहजगत्है ॥ सोजगत्भी आत्मास्वरूपहीहै ॥ आत्मातैंभिन्न ताजगत्कीसत्तानहीं है॥याकारणतैं ताअधिष्ठानआत्माकेश्रवणतैं यासंपूर्णजगत्काश्रवणहोवैहै ॥ तथा ताअधिष्ठानआत्माकेमननतैं यासंपूर्णजगत्कामननहोवैहै ॥ तथा ताअधिष्ठानआत्माकेध्यानतैं यासंपूर्णजगत्काध्यानहोवैहै ॥ तथा ताअधिष्ठानआत्माके ज्ञानतैं यासंपूर्णजगत्काज्ञानहोवै है ॥ हेमैत्रेयी ॥ अधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैं याविद्वान्पुरुषकूं सर्वजगत्काज्ञानहोवैहै ॥ याप्रकारकावचन जोहमनैं तु

मारेप्रतिकह्याहै ॥ तावचनकायहअभिप्रायहै अधिष्ठानआत्मातें याकल्पितजगत्कीभिन्नसत्ताहैनहीं ॥ यातें ताअधिष्ठानआत्माकेज्ञान हुएतेंअनंतर याविद्वान्पुरुषकूं ताकल्पितजगतकाभी अर्थतेंज्ञानहोवैहै ॥ परंतु यादेशविषे इतनेपदार्थ हैं ॥ तथा तिनपदार्थोंका याप्रका रकास्वरूपहै याप्रकार विशेषरूपकरिके तासंपूर्णजगत्काज्ञान ताविद्वान्पुरुषकूंहोवैनहीं ॥ काहे तें यहविद्वान्पुरुष विशेषरूपकरिके जगत्कूंजाने याअर्थकूंबोधनकरणेहारा कोईश्रुतिवचन देखीतानहीं ॥ और यहसंपूर्णजगत् सुखरूपपुरुषार्थनहीं है ॥ तथादुःखाभावरू पपुरुषार्थनहीं है ॥ तथा तिनदोनोंपुरुषार्थोंकासाधनरूपनहीं है ॥ ऐसेअपुरुषार्थरूपजगत्के विशेषज्ञानकरिके ताविद्वान्पुरुषकूं किंचि त्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा ताजगत्केविशेषज्ञानकरिके ताविद्वान्पुरुषकूं परिश्रमकीहीप्राप्ति होवै है ॥ हेमैत्रेयी ॥ जोक दाचित् यहसंपूर्णजगत् याजीवोंकेसुखकाभीहेतुहोवै तोभी यासंपूर्णजगत्का विशेषरूपकरिकेज्ञानहोणा अत्यंतदुर्घटहै ॥ यातें याविद्वा न्पुरुषनें ताजगत्कूं विशेषरूपकरिकेनहींजानणा ॥ हेमैत्रेयी ॥ यद्यपि याअनात्मप्रपंचकेज्ञानकरिके अधिकारीपुरुषोंकूंकिंचित्मात्रभी पुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथापि तुमाराऐसास्वभावहै ॥ यातें जोकदाचित् कौतुकवासतै तूं यासंपूर्णजगत्केदेखणेकीइच्छाकरतीहोवै ॥ तो अधिष्ठानआत्माकाज्ञानही याकल्पितजगत्केज्ञानकाहेतुहै ॥ अधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैंविना दूसराकोईउपाय जगत्केज्ञानकानहीं ॥ हेमैत्रेयी॥जैसे घटशरावादिकजितनेकीमृत्तिकाकेकार्यहैं ॥ तिनघटादिकोंकावास्तवस्वरूप मृत्तिकारूपउपादानकारणहै॥यातें तामृत्तिका रूपउपादानकारणके ज्ञानहुएतेंअनंतर यापुरुषकूं भिन्नदेशविषेस्थित तथाभिन्नकालविषेस्थित संपूर्णघटशरावादिककार्योंका ज्ञानहोवैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकाकार्यरूपजितनाकीजगत्है ताजगत्का सोआत्मारूपकारणही वास्तवस्वरूपहै ॥ यातें श्रवणादि कसाधनोंकरिके याअधिकारीपुरुषकूं जभी आत्मारूपकारणकाज्ञानहोवैहै ॥ तभी ताअधिकारीपुरुषकूं जगत्रूपकार्यकाभी अर्थतेंही ज्ञानहोवैहै ॥ अबभेदज्ञानविषेअनर्थकीकारणताकानिरूपणकरे हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जोपुरुष अद्वितीयआत्माविषे नानाभेदकूंदेखेहैं ॥ सोभेद दर्शीपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे विषयसंबंधीसुखकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तो सोभेददर्शीपुरुष मोक्षरूपसुखकूंप्राप्तहोवैगा याके

विषेक्याआशाहै ॥ अबभेददर्शीपुरुषविषे इसलोककेसुखकाअभाव निरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषे जानारी आपणेपतिकूं तथा पुत्रादिकबांधवोंकूं जभी आपणेआत्माकीन्याईं प्रियरूपकरिके नहींदेखैहैं ॥ किंतु आपणेतैंभिन्नकरिकै तिनपतिपुत्रादिकबांधवोंकूंदेखैहै तभीतानारीकीआपणेविषे भेददृष्टिरूपविषमताकूं देखिकै सोपति तथा पुत्रादिकबांधव तानारीकापरित्यागकरिदेवैहैं ॥ अथवा आपणे चित्तविषे तानारीकीउपेक्षाकरिदेवैहैं इसी प्रकार जोपति तथापुत्रादिकबांधव तानारीकूं आपणेआत्माकीन्याईं जभी प्रियरूपकरिकैनहीं देखैहैं ॥ किंतु आपणेतैंभिन्नकरिकैतानारीकूंदेखैहैं तभी तापतिपुत्रादिकबांधवोंकी आपणेविषेभेददृष्टिरूपविषमताकूंदेखिके सानारी तापतिका तथापुत्रादिकबांधवोंकापरित्यागकरिदेवैहैं ॥ अथवा सानारी आपणेचित्तविषे तिनपतिपुत्रादिकोंकीउपेक्षाकरिदेवैहैं ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ यालोकविषेजानारी जोपुरुष जबपर्यंत याजडचेतनपदार्थोंकूं आपणेआत्माकीन्याईं प्रियजाणिकै तिनपदार्थोंका पालनकरैहै ॥ तबपर्यंतही तेजडचेतनपदार्थतानारीकूं तथातापुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और जभी यहदेहधारीजीव तिनपदार्थोंकूं आपणेतैंभिन्नकरिकैजानैहैं॥तभी तेपदार्थ तिनजीवोंकापरित्यागकरिजावैहैं ॥ तिनपदार्थोंकेवियोगकरिकै तिनजीवोंकूंपरमदुःखकीप्राप्तिहो वैहै ॥ हेमैत्रेयी भेददर्शनकरिकै यहजीव दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकेविषे यहकारणहै ॥ जैसे यालोकविषे जोपुरुष महाराजाकूंमहाराजा रूपकरिकेदेखैहै ॥ तिसपुरुषऊपर सोमहाराजा प्रसन्नहोवैहै ॥ और जोपुरुष तामहाराजाकूंदरिद्रीरूपकरिकेदेखैहै ॥ तिसपुरुषऊपर सो महाराजा क्रोधवान्होवैहै ॥ तैसे जोदेहधारीजीव पतिजायादिकपदार्थोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकेदेखैहै ॥ तिसजीवकूंतेपतिजायादिक पदार्थ सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और जोदेहधारीजीव तिनपतिजायादिकपदार्थोंकूं आपणेतैंभिन्नकरिकेदेखैहै ॥ तिसजीवकूं तेपतिजायादिक पदार्थ दुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ जोकदाचित् तेपतिजायादिकपदार्थ याजीवकाआत्मारूपनहींहोते ॥ तो आपणेतैंभिन्नरूपकरिकेदेखेहुए तेपतिजायादिकपदार्थ याजीवकूंदुःखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ यातैं यासर्वलोकोंकेअनुभवतैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ यालोकविषे जितनेकीपति जायापुत्रादिकपदार्थ हैं तिनपदार्थोंका एकआत्माहीवास्तवस्वरूपहै ॥ ताभेदरहितअद्वितीयआत्माकूं जोपुरुष भेदवालादेखैहै ॥ सोभेद

दर्शीपुरुष दुःखकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ पतिजायादिकपदार्थोंकूं आपणेतैंभिन्नदेखणेहारायहजीव जैसे दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे जोपुरुष ब्राह्मणत्वजातिकूं तथाक्षत्रियत्वजातिकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकेदेखैहै ॥ ताभेददर्शीपुरुषकूं साब्राह्मणत्वजाति तथाक्षत्रियत्व जाति दोनोंलोकविषे दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ तहाँ इसजन्मविषेतो साब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति ताभेददर्शीपुरुषकूं पापकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा तापापजन्य अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यापंचक्लेशोंकीप्राप्तिकरैहै॥और परलोकविषे साब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति ताभेद दर्शीजीवकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं नीचजातिकीप्राप्तिद्वारा साब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति परलोकविषेभी ताभेददर्शीजीवकूं दुःखकीहीप्राप्ति करैहै ॥ और हेमैत्रेयी जैसे ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति ताभेददर्शीपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे स्वर्गादिकलोक तथा इंद्रादिकदेवता तथा ऋगादिकवेद इत्यादिकसंपूर्ण ताभेददर्शीपुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ तहाँ यहपुरुष जभी स्वर्गादिक लोकोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकेमानेहै ॥ तभी तेस्वर्गादिकलोक ताभेददर्शीपुरुषकूं इसजन्मविषे नानाप्रकारकारकाभ्रमणकरावैहैं ॥ और मरणतैंअनंतर ताभेददर्शीपुरुषकूं नानाप्रकारकेनरकोंकीप्राप्तिकरैहैं॥ और यहपुरुष जभी इंद्रादिकदेवतावोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्न करिकेदेखैहै ॥ तभी तेइंद्रादिकदेवता ताभेददर्शीपुरुषकूं नानाप्रकारकेनरकदुःखोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और यहपुरुष जभी ऋगादिकवेदोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकेदेखैहै ॥ तभी तेऋगादिकवेद ताभेददर्शीपुरुषकूं शूद्रादिकनीचजातियोंकीप्राप्तिकरे हैं ॥ अथवा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकशरीरकेप्राप्तहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद यज्ञोपवीतादिकसंस्कारोंतैंरहितकरैहैं ॥ अथवा ताभेददर्शीपुरु षकूंपतितकरैहैं ॥ अथवा यज्ञोपवीतादिकसंस्कारकेहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद वेदकेपदवाक्यस्वरोंकेउच्चारणकरणेविषे असमर्थकरैहै ॥ अथवा तावेदोंकेअध्ययनहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद वेदकेअर्थज्ञानतैंरहितकरे हैं ॥ अथवा तिनवेदोंकेअ र्थज्ञानहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद तावेदोंकेअर्थकी तथातावेदोंकेपाठकीशीघ्रहीविस्मृतिकीप्राप्तिकरे हैं॥अथवा तिनवेदोंके अर्थकास्मरणहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद वेदविहितकर्मोंकेकरणेविषे अरुचिकीप्राप्तिकरैहैं ॥ इसतैंआदिलैके ताभेददर्शी

पुरुषकूं तेऋगादिकवेद अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और यहपुरुष जभी संपूर्णदेहधारीजीवोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकेदेखेहै तभी तेसंपूर्णदेहधारीजीव ताभेददर्शीपुरुषकूं इसजन्मविषे तथाजन्मांतरविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी बहुतविस्तार करिकेक्याकहैं ॥ आकाशादिपंचभूतोंसहित जितनाकजडचेतनरूपजगत्है ॥ ताजगत्कूं यहपुरुष जभी आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकेदेखेहै ॥ तभी सोसंपूर्णजगत् ताभेददर्शीपुरुषकूं अनेकदुःखोंकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ हेमैत्रेयो ॥ इसलोकविषे तथापरलोकविषे जितनेकोस्त्रीपुत्र धनादिकप्रियपदार्थ हैं ॥ तेप्रियपदार्थ जभी याजीवोंकूंनहींप्राप्तहोवे हैं ॥ तभी यहअज्ञानीजीव तिनपदार्थोंकोअप्राप्तिकरिके दुःखोंकूंप्राप्त होवैहै ॥ और जोकदाचित् दैवयोगतैं तिनअज्ञानीजीवोंकूं तिनपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तौभी किसीरोगादिकनिमित्तकरिके तेअज्ञानीजीव जभी तिनप्रियपदार्थोंकेभोगणेविषे असमर्थहोवैं हैं ॥ अथवा अन्यदेशविषेजाणेकरिके जभी तिनपदार्थोंकावियोगहोवैहै ॥ अथवा तिन प्रियपदार्थोंका जभी नाशहोवैहै ॥ तभी तेअज्ञानीजीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यहस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ आपणेअप्राप्तिकालविषे तथा आपणेप्राप्तिकालविषे तिनअज्ञानीजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ हेमैत्रेयो ॥ इसप्रकार संपूर्णस्थावरजंगमपदार्थ ताभेददर्शी अज्ञानीजीवोंकूं दुःखकोहीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं तुमनें तिनपदार्थोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिके कदाचित्भी नहींदेखणा॥किंतु तुमनें यासंपूर्णजगत्कूंआपणाआत्मारूपकरिकेदेखणा ॥ हेमैत्रेयो ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहितहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा जन्मादिकविकारोंतैंरहितहै याप्रकारका जोआत्माकाज्ञानहै ॥ सोईहो यथार्थज्ञानहै ॥और याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेकोअनात्मपदार्थ हैं तिनअनात्मपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे जितनेकोज्ञानहैं ॥ तेसंपूर्णज्ञान भ्रांतिरूप हैं ॥ यातैं हेमैत्रेयी ॥ ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति तथा स्वर्गादिकलोक तथाऋगादिकवेद तथाआकाशादिकपंचभूत इसतैंआदिलेके जितनाकजडचेतनरूपजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोजगत् आत्मारूपहोहै ॥ इतनेंकरिकेश्रवणकीरीतिदिखाई॥ अब मननकीरीतिदिखावैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जडचेतनरूपकरिके प्रसिद्धजितनाकयहजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् ताआनंदस्वरूप

आत्मा विषेही स्थितहै ॥ और ताआनंदस्वरूपआत्मातैंही सोजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताआनंदस्वरूपआत्माविषेही सोजगत् लयहो वैहै ॥ औरसर्वजगत्काकारणजोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञानभी आत्मसाक्षात्कारकेउत्पन्नहुए ताआनंदस्वरूपआत्माविषेहीलयहोवैहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव अद्वितीयरूपहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ ऐसे अद्वितीयआत्माविषे मनकोस्थिरताकरणेहारेजेदृष्टांतहैं ॥ तिनोंका हम कथ नकरैहैं ॥ तूं सावधानहोइके श्रवणकर ॥ अब प्रपंचकोस्थितिकालविषे आत्माकीअद्वितीयरूपतासिद्धकरणेवासतैं दृष्टांतकानिरूपणक रैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषे तामस राजस सात्विक यहतीनप्रकारकेपदार्थ स्थितहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ आपणीस्थितिकालविषे याआनंद स्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं हैं ॥ याप्रकारकेअर्थविषे तुमारीसंभावनाकरावणेवासतै मैंयाज्ञवल्क्य भेरी शंख वीणा यातीनदृष्टांतोंकाकथन करताहूं ॥ तूं सावधानहोइकेश्रवणकर ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे यालोकविषेप्रसिद्धजे भेरी शंख वीणा यहतीनप्रकारकेवादित्रहैं ॥ तेभेरीआदि कवादित्र दंडरूपनिमित्तकरिके तथामुखकावायुआदिकनिमित्तकरिके क्रूर मध्यम मंजुल यातीनप्रकारकेशब्दोंकूंकरैहैं ॥ तहां वीररसकूं बोधनकरणेहारा जोभेरीआदिकोंकाशब्दहै ताकानाम क्रूरशब्दहै ॥ और भयानकरसकूंबोधनकरणेहारा जोभेरीआदिकोंकाशब्दहै ताका नाम मध्यमशब्दहै ॥ और शृंगाररसकूंबोधनकरणेहारा जोभेरीआदिकोंकाशब्दहै ताकानाम मंजुलशब्दहै ॥ यहतीनप्रकारकेशब्दभी ऊंचनीचभेदकरिकेअनेकप्रकारकेहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ भेरी शंक वीणा यातीनोंकेविशेषशब्द क्रमतैं भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यातीनधर्मोंवालेहोणेतैं तीनप्रकारकेहैं ॥ तहां भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यहतीनोंधर्म यद्यपि क्रमतैं ॥ क्रूरभेरीशब्दत्व ॥ मध्यमभेरीशब्दत्व मंजुलभेरीशब्दत्व ॥ क्रूरशंखशब्दत्व मध्यमशंखशब्दत्व मंजुलशंखशब्दत्व ॥ क्रूरवीणाशब्दत्व मध्यमवीणाशब्दत्व मंजुलवीणाशब्दत्व ॥ इनधर्मोंकीअपेक्षाकरिके सामान्यधर्म हैं ॥ तथापि सर्वशब्दोंविषेवर्त्तणेहारा जोशब्दत्वरूपसामान्यधर्म है ॥ ताश ब्दत्वरूपसामान्यधर्मकीअपेक्षाकरिके भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यहतीनोंविशेषधर्म हैं ॥ तिनभेरीशब्दत्वादिकतीनविशेषध र्मोंकाज्ञान शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेज्ञानतैंविना होइसकैनहीं ॥ किंतु याजीवोंकूं जभी प्रथम शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकाज्ञानहोवैहै ॥

तिसतैंअनंतरही भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यातीनविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवैहै ॥ इहाँ अधिकदेशविषेरहणेहारेधर्मकानाम सामा न्यधर्म है ॥ और अल्पदेशविषेरहणेहारेधर्मकानाम विशेषधर्म है ॥ तहाँ भेरीशब्द शंखशब्द वीणाशब्द यातीनप्रकारकेशब्दोंविषेशब्द त्वधर्मरहैहै ॥ और भेरीशब्दत्वरूपधर्म केवलभेरीशब्दविषेरहैहै ॥ शंखवीणाकेशब्दविषेरहेनहीं ॥ तथा शंखशब्दत्वरूपधर्मभी केवल शंखशब्दविषेहीरहैहै ॥ भेरीवीणाकेशब्दविषेरहेनहीं ॥ तथा वीणाशब्दत्वरूपधर्मभी केवलवीणाशब्दविषेरहैहै ॥ भेरीशंखकेशब्दविषेहो रहैंनहीं ॥ यातैं शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेदेशकीअपेक्षाकरिके भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यहतीनोंधर्म न्यूनदेशविषेवर्ते हैं ॥ याकारणतैं ते तीनोंधर्म शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकीअपेक्षाकरिके विशेषधर्म हैं ॥ इसप्रकार क्रूरभेरीशब्द मध्यमभेरीशब्द मंजुलभेरीशब्द यातीनोंशब्दोंविषे भेरीशब्दत्वरूपसामान्यधर्म अनुगतहोइकेरहैहै ॥ और क्रूरभेरीशब्दत्वरूपधर्म केवल क्रूरभेरीशब्दविषेरहैहै ॥ मध्यम मंजुलभेरीशब्दविषेरहेनहीं ॥ तथा मध्यमभेरीशब्दत्वरूपधर्मभी केवल मध्यमभेरीशब्दविषेरहैहै ॥ क्रूरमंजुलभेरीशब्दविषेरहेनहीं ॥ तथा मंजुलभेरीशब्दत्वरूपधर्मभी केवलमंजुलभेरीशब्दविषेरहैहै ॥ क्रूरमध्यमभेरीशब्दविषेरहेनहीं ॥ यातैं भेरीशब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेअधि करणकीअपेक्षाकरिके क्रूरभेरीशब्दत्व मध्यमभेरीशब्दत्व मंजुलभेरीशब्दत्व यहतीनोंधर्म न्यूनदेशविषेवर्ते हैं ॥ याकारणतैं भेरीशब्दत्व रूपसामान्यधर्मकीअपेक्षाकरिके क्रूरभेरीशब्दत्वादिकतीनधर्म विशेषधर्म हैं ॥ याप्रकारकीरीति शंखशब्दविषे तथावीणाशब्दविषेभी जा निलेणी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेज्ञानतैंविना भेरीशब्दत्वादिकविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवैनहीं॥ तैसे यास्व यंज्योतिआत्माके अस्ति भाति प्रिय रूपसामान्यधर्मोंकेज्ञानतैंविना यालोकविषे किसीविशेषपदार्थकाज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु अस्ति भाति प्रियरूपसामान्यधर्मोंकेज्ञानतैंअनंतरही याजीवोंकूं घटादिकविशेषपदार्थोंकाज्ञानहोवैहै ॥ अब अस्ति भाति प्रिय रूपआत्माविषे सामा न्यरूपता स्पष्टकरणेवासतै प्रथमसर्वत्र आत्माकाअनुगतपणा निरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषे जिनपदार्थोंका प्रत्यक्षरूप करिके ग्रहणहोवे है ॥ तथा जिनपदार्थोंका परोक्षरूपकरिकेग्रहणहोवैहै ॥ तथा जिनपदार्थोंका सत्यरूपकरिकेग्रहणहोवैहै ॥ तथा

जिनपदार्थोंका असत्यरूपकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ तथा जिनपदार्थोंका अहंरूपकरिकैग्रहणहोवै है ॥ तथा जिनपदार्थोंका ममरूपक रिकैग्रहणहोवैहै ॥ तेसंपूर्ण पदार्थ चेतनआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु तेसंपूर्णपदार्थ चेतनआत्मारूपही हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषेप्रतीतभयेजेसर्प दंड माला जलधारादिकपदार्थ ॥ तेकल्पितसर्पादिक रज्जुरूपअधिष्ठानतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोरज्जुरूपअधिष्ठानहीं अज्ञानकेवशतैं सर्पदंडमालाजलधाराआदिकअनेकरूपोंकरिकेस्थितहोवैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे प्रतीतभयाजोआकाशादिकप्रपंच॥सोप्रपंच ताअधिष्ठानआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोअधिष्ठानआत्माहीं अज्ञानकेवशतैं आकाशादिकज गत्‌रूपहोइकेस्थितहोवैहै ॥ यातैं अस्तिभातिप्रियरूप सामान्यधर्मोंकी अपेक्षाकरिके तेआकाशादिकपदार्थ आत्माकेविशेषधर्म हैं ॥ तिनविशेषधर्मोंकाज्ञान अस्तिभातिप्रियरूपसामान्यधर्मों के ज्ञानकरिकेहीहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ तेचेतनआत्माकेविशेषरूप यद्यपि बहुत प्रकारकेहैं ॥ तथापि संक्षेपतैं तेआत्माके विशेषरूप दोप्रकारकेहैं ॥ एकतो युष्मद्‌शब्दकाअर्थरूपहै ॥ और दूसरे अस्मद्‌शब्दकेअर्थरू पहैं ॥ तहां इदं एतत् इत्यादिकशब्दोंकरिके जिनपदार्थोंकाकथनहोवैहै ॥ तेपदार्थ युष्मद्‌शब्दकाअर्थरूपहोवैहैं ॥ और अहं ममअनिदं इत्यादिकशब्दोंकरिके जिनपदार्थोंकाकथनहोवैहै ॥ तेपदार्थ अस्मद्‌शब्दकाअर्थरूप होवैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ अंतःकरणादिकसंघात विशिष्टचेतन अस्मदशब्दका वाच्यअर्थ है ॥ और बाह्यघटादिकपदार्थविशिष्टचेतन युष्मद्‌शब्दका वाच्यअर्थ है ॥ तहां युष्मदअस्मद् शब्दकेवाच्यअर्थका यद्यपि परस्परभेदहै ॥ तथापि तिनदोनोंशब्दोंकीभागत्यागलक्षणाकरिके प्रतीतभयाजोचेतनमात्ररूपलक्ष्यअर्थ है ॥ सोचेतनमात्ररूपलक्ष्यअर्थ तिनदोनोंशब्दोंकाएकही है ॥ यातैं जिसअर्थकूं युष्मद्‌शब्दकथनकरैहै ॥ तिसीअर्थकूं अस्मद्‌शब्दकथन करैहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम युष्मद्‌शब्दकेअर्थविषे अस्मद्‌शब्दकीअर्थरूपता निरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी॥अस्मद्‌शब्द काअर्थरूप जोअंतरआत्माहै ॥ तिसतैंभिन्न जितनेकीबाह्यशंखादिकजडपदार्थ हैं ॥ तथा पुरुषादिकचेतनपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णजडचेतनप दार्थ युष्मद्‌शब्दकाअर्थरूपहैं ॥ परंतु तेशंखादिकजडपदार्थ जभी चेतनपुरुषोंकेवाकादिकइंद्रियोंकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तभी तेशं

त्वादिकजडपदार्थ नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरतेहुए चेतनव्यवहारके योग्य होवें हैं ॥ तथा चेतनपुरुषोंकेशरीरसाथ तादात्म्यअभिमानकूंप्रा
प्तहुएतेशंखादिक अस्मद्शब्दकेअर्थरूपआपणेआत्माकूं युष्मद्शब्दकेअर्थरूप बाह्यपदार्थोंतें भिन्नकरिकेमानैहैं ॥ इसप्रकार युष्मद्शब्द
काअर्थरूपकरिकेप्रसिद्ध जेपुरुषादिकचेतनपदार्थ हैं ॥ तेभी अस्मद्शब्दकेअर्थरूपआपणेआत्माकूं युष्मद्शब्दकेअर्थरूप अन्यपदार्थोंतें
भिन्नकरिकेमानैहैं॥यातेंयुष्मद्शब्दकेअर्थरूप जेशंखादिकजडपदार्थ हैं ॥ तथा पुरुषादिकचेतनपदार्थ हैं ॥ तिनोंविषेभी अस्मद्शब्दकी
अर्थरूपतासंभवहोइसकैहै॥शंका॥हेभगवन्॥शंखादिकजडपदार्थोंका चेतनपुरुषोंकेसाथ तादात्म्यसंबंध किसप्रकारसंभवैहै॥समाधान॥हेमै
त्रेयी॥यालोकविषे ऐसाकोईपदार्थ हैनहीं ॥ जिसपदार्थकूं चेतनपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेनहींग्रहणकरैहै॥किंतु यासंपूर्णजडपदार्थोंकूं
चेतनपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेहीग्रहणकरैहै ॥ तहां सर्वपदार्थोंकामूलकारणजोअविद्याहैताअविद्याकूं यहपरमात्मादेव आपणाशरीर
रूपकरिकेग्रहणकरैहै ॥ और ताअविद्याकाकार्य जितनाकीसूक्ष्मप्रपंचहै तासमष्टिसूक्ष्मप्रपंचकूं यहहिरण्यगर्भभगवान् आपणाशरीररूप
करिकेग्रहणकरैहै ॥ और ताअविद्याकाकार्यरूप जितनाकोस्थूलप्रपंचहै ॥ तासमष्टिस्थूलप्रपंचकूं यहविराट्भगवान् आपणाशरीररू
पकरिकेग्रहणकरैहै ॥ और व्यष्टिरूपकरिकेप्रसिद्धजेजडपदार्थ हैं ॥ तिनजडपदार्थोंकूं यहअनेकमनुष्यादिकचेतनपुरुष आपणाशरीररू
पकरिकेग्रहणकरैहैं ॥ यारीतिसैं संपूर्णजडपदार्थ चेतनकेहीआश्रितहैं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ यालोकविषे नियमकरिके किसीपदार्थ
विषे युष्मद्शब्दकीअर्थरूपतानहीं ॥ तथा नियमकरिके किसीपदार्थविषे ॥ अस्मद्शब्दकीअर्थरूपतानहीं ॥ किंतु एकदूसरेकीअपेक्षा
करिकेही याजडचेतनपदार्थोंविषे युष्मद्अस्मद्शब्दकीअर्थरूपताहै ॥ जिसपदार्थकूं यहपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेमानैहै ॥ तिसप
दार्थविषे अस्मद्शब्दकीअर्थरूपताहै ॥ और जिनपदार्थोंकूं यहपुरुष आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकेमानैहै ॥ तिनपदार्थोंविषे युष्मद्शब्दकीअ
र्थरूपताहै॥जैसे देवदत्तनामापुरुषकीअपेक्षाकरिके यज्ञदत्तनामापुरुषविषे युष्मद्शब्दकीअर्थरूपताहै॥और यज्ञदत्तनामापुरुषकीअपेक्षाक
रिके तादेवदत्तनामापुरुषविषे युष्मद्शब्दकीअर्थरूपताहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ मनवाणीकाअविषयरूपजोयहआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोआत्मादे

वं आपणेअस्तिभाति प्रियरूपकरिके सर्वअनात्मपदार्थोंकाअधिष्ठानरूपहै॥ याकारणतें सोआत्मादेव किसीशब्दकावाच्यअर्थनहीं॥किंतुसो आत्मादेवतिनयुष्मद्अस्मदादिकसर्वशब्दोंका लक्ष्यअर्थरूपहै॥यातें चेतनआत्मारूपलक्ष्यअर्थकूंग्रहणकरिके तेयुष्मद्अस्मद्शब्दएकही अर्थकाबोधनकरे हैं ॥ इसप्रकार युष्मद्अस्मद् यादोनोंशब्दोंकाभागत्यागलक्षणाकरिके जभी एकचेतनआत्मारूपअर्थ सिद्धभया॥तभी तायुष्मदअस्मदशब्दकेअर्थकाव्याप्यरूपजेअर्थ हैं ॥ तिनअर्थोंकूंबोधनकरणेहारेजेइदमादिकशब्दहैं ॥ तिनइदमादिकशब्दोंकाभी लक्ष णावृत्तिकरिके एकचेतनआत्माहीं अर्थसिद्धहोवैहै ॥ कैसाहैसोचेतनआत्मा ॥ आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिके सर्वपदार्थोंविषे स्फुरणहो वैहै॥तथा सूर्यादिकज्योतियोंकाभी सोआत्मादेव ज्योतिरूपहै॥ऐसेआनंदस्वरूपआत्माविषे यहआकाशादिकविशेषपदार्थ अज्ञानीजीवोंनें आरोपणकरीतेहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ याकहणेतेंयहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे शब्दत्वरूपसामान्यधर्मके ज्ञानहुएतेंअनंतरहीं भेरीशब्दत्वशंखशब्द त्ववीणाशब्दत्व इत्यादिकविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवैहै॥ तथा भेरीशब्दत्वादिकसामान्यधर्मोंकेज्ञानहुएतेंअनंतरहीं याजीवोंकूं क्रूरभेरीशब्दत्व क्रूरशंखशब्दत्व आदिकविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवैहै ॥ तैसे अस्तिभातिप्रियरूपआत्माकेस्फुरणहुएतेंअनंतरही याजीवोंके अहंत्वंआदिक विशेषव्यवहार सिद्धहोवैहैं ॥ आनंदस्वरूपआत्माकेस्फुरणतेंविना यालोकविषे कोईभीव्यवहार सिद्धहोइसकेनहीं ॥ यातें आपणी स्थितिकालविषे यहसम्पूर्ण जडचेतनरूपजगत् अद्वितीयआत्मारूपहीहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ यहहीअद्वितीयआत्मा पूर्व हमनें प्रियतम रूपकरि के तुम्हारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ इतनें ग्रंथकरिके जगत्कीस्थितिकालविषे आत्माकीअद्वितीयरूपता सिद्धकरी॥ अब जगत्की उत्पत्ति तैंपूर्वभी आत्माकी अद्वितीयरूपतासिद्धकरेहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे जगत्कीस्थितिकालविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतेंरहितअद्विती यरूपहै ॥ तैसे जगत्कीउत्पत्तिकालविषेभी यह आनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतेंरहित अद्वितीयरूपही है ॥ याअर्थ विषेभी तूंदृष्टांतकूं श्रवणकर ॥ जैसे विस्फुलिंगादिककार्यकीउत्पत्तितेंपूर्वसर्वभेदतेंरहित जोप्रज्वलितअग्निहै ॥ ताप्रज्वलितअग्नितें ताअग्निकेसमानस्वभाव वालेविस्फुलिंग तथाअंगार रूपकार्य उत्पन्नहोवै हैं॥तैसे प्रपंचरूपकार्यकीउत्पत्तितेंपूर्व सर्वभेदतेंरहित जोअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माहै ॥

ताआत्मातैं यहजडचेतनरूपसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ तापरमात्मादेवतैं हिरण्यगर्भद्वारा जिसप्रकार यास्थूलजगत्कीउत्पत्तिभई है ॥ सोप्रकार बहुतश्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकऱ्याहे ॥ तहांश्रुति ॥ सूर्यचंद्रमसौधाता यथापूर्वमकल्पयत् ॥ अर्थयह ॥ सोमायाविशिष्टपरमात्मादेव जगत्कीउत्पत्तिकालविषे सूर्यचंद्रमातैंआदिलेके संपूर्णजगत्कूं पूर्वकल्पकीन्याई रचताभया ॥ तहांस्मृति ॥ तेषांच नामरूपाणि कर्माणिचपृथक्पृथक ॥ वेदशब्देभ्यएवादौ निर्ममेसमहेश्वरः ॥ अर्थयह ॥ जगत्कीउत्पत्तिकालविषे सोपरमात्मादेव आकाशादिकपदार्थोंके भिन्नभिन्ननामोंकूं तथा भिन्नभिन्नरूपोंकूं तथा भिन्नभिन्नकर्मोंकूं वेदकेशब्दोंतैंउत्पन्नकरताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ भू यावेदकेशब्दकाउच्चारणकरिके सोपरमात्मादेव पृथिवीकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तथा आकाश यावेदकेशब्दकाउच्चारणकरिके सोपरमात्मादेव आकाशकूंउत्पन्नकरताभया॥ याप्रकार सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरताभया॥१॥हेमैत्रेयी॥इसतैं आदिलेकेअनेकश्रुतिस्मृतिवचनोंतैं याआकाशादिकजगत्कीउत्पत्तिकूं तूं आपहीजाणेगी॥यातैं ताकेकहणेकी अभी आवश्यकतानहीं है ॥ परंतु ऋगवेदादिकशब्दप्रपंचकेउत्पत्तिकूं तूं आपेजाणिसकेगीनहीं॥यातैं ऋगवेदादिरूपशब्दप्रपंचकीउत्पत्ति जिसप्रकार आत्मादेवतैंभई है॥ताप्रकारकूं तूं श्रवणकर॥हेमैत्रेयी ॥ जैसे यालोकविषेशुष्ककाष्ठोंकरिके तथा आर्द्रकाष्ठोंकरिके युक्तजोप्रज्वलितअग्निहै॥ताअग्नितैं विलक्षणधूमकीउत्पत्तिहोवैहै॥तैसे यासर्वज्ञपरमात्मादेवतैं यहविलक्षणशब्दरूपवेद उत्पन्नहोवे हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ऋगादिकवेदोंकी जोईश्वरतैंउत्पत्तिअंगीकारकरोगे ॥ तौ सोवेदरूपशब्द लौकिकशब्दोंकीन्याई पौरुषेयशब्दहोवेगा ॥ ओर शास्त्रविषेतो वेदरूपशब्दोंकूं अपौरुषेयकथनकऱ्याहे ॥ यातैं ताशास्त्रकाविरोध होवेगा ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जिसशब्दकेउच्चारणहुएतैंअनंतर ताशब्दकेअर्थकानिश्चयकरणेवासते प्रत्यक्षअनुमानादिकप्रमाणोंकीअपेक्षाहोवैहै ॥ सोशब्द ताअर्थकेविचारपूर्वकहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ अर्थकेविचारतैंविना सोशब्द उत्पन्नहोवेनहीं ॥ जैसे इदानींकालकेलोकोंकेशब्द अर्थकेविचारपूर्वकही उत्पन्नहोवैहैं ॥ और यहवेदरूपशब्द जोपरमात्मादेवतैं उत्पन्नहोवैहै॥ सोअर्थकेविचारपूर्वक उत्पन्नहोवेनहीं॥ किंतु जैसे यत्नतैंविनाहीं यापुरुषोंतैं श्वास उत्पन्नहोवैहैं॥ तैसे विनाहींप्रयत्नतैं तापरमात्मादेवतैं तेवेदरूपशब्द उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातैंयहअर्थ

सिद्धभया ॥ पुरुषकरिकैउच्चारणकऱ्याजोवचनहै ॥ तावचनकानाम पौरुषेयवचननहीं ॥ किंतु यहपुरुष आपणेमनविषे अर्थका
विचारकरिके जिसवचनकाउच्चारणकरैहै ॥ सोवचन पौरुषेयहोवैहै ॥ ऐसापौरुषेयपणा वेदवचनोंविषेहैनहीं ॥ याकारणतैं तेवेद
अपौरुषेयहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अर्थविचारतैंविनाहीं पुरुषनैंउच्चारणकरेजेवचनहैं ॥ तेवचन जोकदाचित् अपौरुषेयहोतेहोवैं ॥ तौ
इदानींकालविषे लौकिकपुरुषोंनैं अर्थकेविचारतैंविनाहींउच्चारणकरेजेवचनहैं ॥ तेवचनभी वेदवचनोंकीन्याई अपौरुषेयहोणेचाहिये ॥
समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ यहजीव भ्रमप्रमादादिकदोषोंकरिकैयुक्तहै ॥ यातैं यहजीव अर्थकेविचारतैंविना जिसजिसवचनकाउच्चारणकरैहै ॥
तेवचन उन्मत्तपुरुषकेवचनकीन्याई आपणेअर्थतैं व्यभिचारीहीहोवैहै ॥ इहाँ जिसवचनकेअर्थका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै बाधहोवै ॥
सोवचन आपणेअर्थतैंव्यभिचारीहोवैहै ॥ जैसे किसीपुरुषनैं अग्नि शीतलहै याप्रकारकावचन उच्चारणकऱ्या ॥ तावचनकाअर्थरूप जोअ
ग्निविषेशीतलताहै ॥ सो प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैबाधितहै ॥ यातैं अग्निशीतलहै यहवचन आपणेअर्थतैं व्यभिचारीहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ यामनुष्य
लोककीक्यावार्ता है ॥ जोकदाचित् यहजीव ब्रह्मलोकविषेस्थितहोइकैभी अर्थविचारतैंविनाहीं किसीवचनकाउच्चारणकरैहै ॥ सोताकावच
नभी उन्मत्तपुरुषकेवचनकीन्याई आपणेअर्थतैंव्यभिचारीहीहोवैहै॥और सर्वज्ञपरमात्मादेव भ्रमप्रमादादिकदोषोंतैंरहितहै॥यातैं तासर्वज्ञई
श्वरनै अर्थकेविचारतैंविनाहीं उच्चारणकरेजेवेदकेवचनहैं॥तेवेदवचन आपणेअर्थतैं व्यभिचारीहोवैनहीं॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ वेदवचनों
कूंआपणेअर्थकीसिद्धिवासतै किसीप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीअपेक्षाहैनहीं॥ तथा तिनवेदवचनोंकाआपणेअर्थतैंव्यभिचारभीहैनहीं॥यातैं तेवेद
केवचन प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंविषे राजाहैं ॥ अब वेदवचनोंविषे प्रमाणताकीसिद्धिकरणेवासतै प्रथम मीमांसाशास्त्रकीरीतिसैं लौकिकश
ब्दोंविषेभी सामान्यतैंप्रमाणताका निरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषे अयथार्थवचनकूंकथनकरणेहारेजोअनाप्तपुरुषहैं ॥ तिसअनाप्त
पुरुषनैं किसीमार्गकेचलणेहारेपथिकपुरुषकेप्रति याप्रकारकावचनकह्या ॥ यानदीकेतीरऊपर तुमारेभक्षणकरणेयोग्य नानाप्रकारकेफल
स्थितहैं ॥ सोयाप्रकारकावचन तिसकालविषे श्रोतापुरुषकूं नदीकेतीरविषे फलोंकोस्थितिरूपअर्थकाबोधनकरैहै ॥ यातैं सोवचनभी

सामान्यतैंप्रमाणरूपहोहे ॥ तात्पर्ययह ॥ नदीतीरविषे फलोंकोस्थितिरूपअर्थ तिसकालविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके दिखाईदेतानहीं ॥ यातैं ताअर्थविषे प्रत्यक्षप्रमाणतौहैनहीं॥और तिसकालविषे ताशब्दकरिके तिसअर्थकाबोधहोवे हे ॥ यातैं ताअर्थविषेशब्दकूंहीप्रमाणताहे ॥ याकारणतैंही तेमीमांसाशास्त्रवाले याप्रकारकीप्रमाणअप्रमाणकी व्यवस्थाकरेंहैं ॥ जोकिसीअर्थकाबोधनकरेहे ताकानाम प्रमाणहे ॥ और जोकिसोभीअर्थकाबोधननहींकरेहे ताकानाम अप्रमाणहे ॥ सोअर्थकीबोधकता तावचनविषेभीहे॥यातैं सोवचनभी सामान्यतैंप्रमाणरूपहींहे ॥ किंवा ॥ जेनैयायिकवादी अर्थकीबोधकता रूपकरिके तिनप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपता नहींअंगीकारकरेंहैं ॥ तिननैयायिकोंकेमतविषे तिनप्रमाणोंमें प्रमाणरूपता किसकरिकेसिद्धहोवेगी ॥ तहां सोनैयायिक जोयाप्रकारकावचनकहे ॥ अर्थकीबोधकतारूपकरिके तिनप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपतासिद्ध होवेनहीं ॥ किंतु जिसप्रमाणजन्यज्ञानतैं याजीवोंकी समर्थप्रवृत्तिहोवेहे ॥ तासमर्थप्रवृत्तिरूपहेतुतैं ताप्रमाणविषे तथा ताप्रमाणजन्य ज्ञानविषे प्रमाणरूपताकाअनुमानहोवेहे ॥ जैसे पूर्वअज्ञातस्थलविषे जलकूंदेखिके यहपुरुषताजलकेलेनेवासतेजावेहे॥जभीतास्थलविषे यापुरुषकूं जलकीप्राप्तिहोवेहे॥ तभी सोपुरुष याप्रकारका अनुमानकरेहै॥पूर्वजोमेरेकूंजलकाज्ञानभयाथा सो ज्ञान प्रमारूपथा ॥ काहेतैं हमारेसमर्थप्रवृत्तिकाजनकहोणेतैं ॥ याप्रकार जेनैयायिक अंगीकारकरेहैं॥ तिननैयायिकों तैं यहपूछाचाहिये॥जिससमर्थप्रवृत्तिरूपहेतुतैं ताज्ञानकेप्रमाणताकाअनुमानहोवेहे॥ताप्रवृत्तिविषे समर्थता क्यावस्तुहे॥तहां जोपदार्थ ताज्ञानकाविषयहे ॥ सोईहीपदार्थ ताप्रवृत्तिकाविषयहे ॥ याप्रकारकीजोसमानविषयताहे ॥ तासमानविषयताकानाम समर्थताहे ॥ अथवा॥फलकीजनकताकानाम समर्थताहे ॥ तहां प्रथमपक्षकूं जोनैयायिकअंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे चेतनपुरुषोंकी जाजाप्रवृत्तिहोवेहे ॥ साप्रवृत्ति यहपदार्थ हमारेसुखकासाधनहे याप्रकारकेइष्टसाधनताज्ञानतैंविनाहोवेनहीं ॥ किंतु इष्टसाधनताज्ञानतैंअनंतरहीं चेतनजीवोंकी प्रवृत्तिहोवेहे ॥ यातैं ताप्रवृत्तिकूं तथाप्रवृत्तिकेसमर्थताकूं ताज्ञानकीअवश्यअपेक्षाहे ॥ ताज्ञानतैंविना ताप्रवृत्तिविषेसमर्थरूपतासंभवेनहीं ॥ यातैं तासमर्थप्रवृत्तितैं ज्ञानमात्रकाहीअनुमानहोवेगा ॥ ताज्ञानकेप्रमाणताकाअनुमानसंभवेनहीं ॥ और ताप्रवृत्ति

तालौकिकवचनतैं बलवानहै ॥ तावलवानवैदिकवचनकरिकैही तालौकिकवचनकाबाधहोवे है ॥ किंवा ॥ ककारादिकशब्दोंकेस्वरूप कूंबोधनकरणेहारे जेकखगघङ इत्यादिकवचनहैं॥तिनवचनोंविषेभी शब्दरूपअर्थकोबोधकतारूपकरिकै जभी प्रमाणरूपतासिद्धहोवे है ॥ तभी नानाप्रकारकेअर्थोंकूंबोधनकरणेहारेजेवचनहैं ॥ तिनवचनोंविषे अर्थकोबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपतासिद्धहोवैहै ॥ याकेविषे क्याकहणाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अर्थकोबोधकतारूपकरिकै जोकदाचित् तावचनोंविषे प्रमाणरूपताहोवे ॥ तो जिसवचनतैं किसी भीअर्थकाबोधनहींहोवैहै ॥ सोवचन अप्रमाणरूपहोणाचाहिये ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जोवचन किसीभीअर्थकेबोधकूं नहींउत्पन्नक रै है ॥ तावचनविषे जोप्रमाणरूपता नहींसिद्धहोवे तौमतहोवे ॥ याकेविषेहमारी किंचित्मात्रभीहानिहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोवचन किसी अर्थकाबोधकहोवैहै ॥ ॥ तिसीवचनकूं हम प्रमाणरूपमानैहैं ॥ अबोधकवचनकूं हमभी प्रमाणरूपमानतेनहीं ॥ किंवा ॥ परस्परविरोध वालेजेप्रत्यक्षादिकप्रमाणहैं ॥ तिनोंकूंजीतणेवासते जोअविरुद्धप्रमाण समर्थहोवैहै ॥ सो अभावकूंकथनकरणेहारेनकारकोसहायतातैंहीं समर्थहोवे है याकारणतैं सोनकार ककारादिकसर्ववर्णोंविषेबलवानहै ॥ सोबलवाननकार जोकदाचित् अभावरूपअर्थकूंविषयकरणेहारे बोधकूं उत्पन्नकरे है ॥ तो नेतिनेति याश्रुतिकेनकारजन्यसर्वजगत्केअभावकाबोध हमअधिकारीजीवोंकूं सर्वदाहोवे ॥ यातैं जैसे नि षेधकवचनों विषे अर्थकोबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपता सिद्धहोवैहै ॥ तैसे सर्ववचनोंविषे अर्थकोबोधकतारूपकरिकैही प्रमाणरूप ताहै ॥ पुरुषोंकिप्रवृत्तिकोजनकतारूपकरिकै किसीभीवचनविषे प्रमाणरूपतानहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ भ्रमप्रमादादिकदोषोंक रिकेदूषित जेलौकिकवचनहैं ॥ तेलौकिकवचनभी जभी पूर्वउक्तयुक्तियों सैं अर्थकोबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तभी भ्रमादिकसर्वदोषों तैंरहित जेवेदकेवचनहैं ॥ तेवेदकेवचन अर्थकोबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकेविषेक्याकहणा है ॥ इतनेंकरिकै ईश्वरउच्चारितअपौरुषेयवेदविषे स्वतःप्रमाणताकानिरूपणकऱ्या॥अब तावेदकेविभागकानिरूपणकरे हैं ॥ हे मैत्रेयी ॥ प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंविषे राजारूपजोवेदप्रमाणहै ॥ सोवेद प्रथम दोप्रकारकाहै॥एकतौ मंत्ररूपवेदहै॥और दूसरा ब्राह्मणरूपवेदहै॥तहाँ

प्रथम मंत्ररूपसोवेद ऋग् यजुष् साम अथर्वण याभेदकरिकेचारिप्रकारकाहै ॥ और दूसरा ब्राह्मणरूपवेदभी इतिहास १ पुराण २ विद्या ३ उपनिषद् ४ श्लोक ५ सूत्र ६ व्याख्यान ७ अनुव्याख्यान ८ याभेदकरिकेअष्टप्रकारकाहै ॥ तहाँ जेवेदकेवचन जनकराजादिकोंकेकथा प्रसंगकूं बोधनकरे हैं ॥ तिनवेदवचनोंकानाम इतिहासहै ॥१॥ और जेवेदकेवचन मायाविशिष्टपरमात्मातें जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकूं कथनकरेहैं ॥ तथा पौतीमाष्यादिकऋषियोंकेवंशकूंकथनकरे हैं ॥ तथा विराट्भगवान्कापुत्र जोस्वायंभुवमनुहै ताकेउत्पत्तिकाकथनकरे हैं ॥ तथा मनुकीसृष्टिविषे उत्पन्नभये जेब्राह्मणादिकचारिवर्ण हैं ॥ तथा ब्रह्मचर्यादिकचारिआश्रमहैं ॥ तिनसंपूर्णोंके भिन्नभिन्नकर्मोंका कथनकरेहैं ॥ तिनवेदवचनोंकानाम पुराणहै ॥ २ ॥ और जेवेदकेवचन उपासीत इत्यादिकशब्दोंकरिके ब्रह्मादिकदेवतावोंकेउपासनाकाकथन करेहैं ॥ तिनवेदवचनोंकानाम विद्याहै ॥३॥ और जेवेदकेवचन सत्यकाभीसत्यहै इत्यादिकब्रह्मकेरहस्यनामोंकूंकथनकरेहैं ॥ तिनवेदवचनोंकानाम उपनिषद्है ॥ ४ ॥ और वेदकेब्राह्मणभागविषे कथनकरेजेमंत्रहैं तिनमंत्रोंकानाम श्लोकहै ॥ ५ ॥ और संक्षेपकरिके अनेकअर्थोंकूंकथनकरणेहारे जे आत्मानमुपासीत इत्यादिकवेदकेवचनहैं ॥ तिनोंकानाम सूत्रहै ॥ ६ ॥ और मंत्रोंकेअर्थकूंकथनकरणेहारा जोब्राह्मणरूपवेदकाभागहै ताकानाम व्याख्यानहै ॥ ७ ॥ और जेवेदकेवचन सूत्रकेअर्थकूं मंत्रअर्थवादादिकोंसहित विस्तारतैंकथनकरेहैं ॥ तिनवेदवचनोंकानाम अनुव्याख्यानहै ॥ ८ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अनेकअर्थोंकूं जोवचन बोधनकरेहै तावचनकानाम सूत्रहै ॥ यहजो आपनें सूत्रकालक्षणकह्या सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें एकवारउच्चारणकऱ्याहुआशब्द एकहीअर्थकूंबोधन करेहै ॥ याप्रकारकानियम शास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ तानियमका विरोधहोवेगा ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे लौकिकवाक्योंविषे पुनःपुनःआवृत्तिकरिके अनेकअर्थोंकोबोधकता दूषणरूपहोवैहै ॥ तैसे सूत्ररूपवेदवाक्योंविषेपुनःपुनःआवृत्तिकरिके अनेकअर्थोंकोबोधकता दूषणरूपनहींहै ॥ किंतु उलटा अनेकअर्थोंकीबोधकता सूत्रवाक्योंकाभूषणरूपहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे भूमिरूपक्षेत्रतें वृक्षकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मरूपक्षेत्रतें यहवेदरूपी कल्पवृक्ष उत्पन्नहोवैहै ॥ कैसाहैसोवेदरूपवृक्ष ॥ ऋग् यजुष् साम अथर्वण

विषेफलकीजनकतारूप समर्थताहै ॥ यादूसरेपक्षकूं जोनैयायिकअंगीकारकरे ॥ सोभी संभवैनहीं॥ काहेतें सुखदुःखयादोनोंकानामफलहै तासुखदुःखरूपफलकीसिद्धिविषे उपयोगीजोज्ञानहै॥ताज्ञानमात्रकोही साप्रवृत्ति अपेक्षाकरैहै ॥ प्रमाणज्ञानकीअपेक्षा साप्रवृत्तिकरैनहीं॥ सा सुखदुःखरूपफलकीजनकतारूपसमर्थता अनाप्तपुरुषकेवचनजन्यप्रवृत्तिविषेभीहै ॥ काहेतें नदीकेतीरविषेफलहैं याप्रकारका ता अनाप्तपुरुषकावचनश्रवणकरिके तहांप्रवृत्तभयाजोपथिकपुरुषहै ॥ तापथिकपुरुषकूं तानदीतीरकेदर्शनतें सुखदुःखरूपफलकीअवश्य प्राप्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तानदीतीरविषे फलोंकोप्राप्तिकरिके तापथिकपुरुषकूं यद्यपि सुखरूपफलकीप्राप्तितौसंभवैहै ॥ तथापि तापथिकपुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी इसलोकविषे तथापरलोकविषे ऐसीकोईपुरुषकीप्रवृ त्तिहैनहीं ॥ जाप्रवृत्ति दुःखतैंरहित केवलसुखकूंही उत्पन्नकरे ॥ किंतु जोजोजीवोंकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्ति सुखदुःखदोनोंउत्पन्न करैहै ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो जोजोपुरुषकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्ति केवलदुःखकाहीकारणहै ॥ ताप्रवृत्तिविषे जो लोकोंकूं सुखसाधनताबुद्धिहोवैहै ॥ सोकेवलभ्रांतिकरिकेहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ यालोकोंकीप्रवृत्ति दुःखतैंरहितकेवलसुखकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ याअर्थविषे नैयायिकोंकासिद्धांतभी अनुकूलहै ॥ काहेतें तेनैयायिक दुःखतैंरहितकेवलसुखकूं किसीपदार्थविषे अंगीकारकरैनहीं ॥ याका रणतैंही तेनैयायिकतानियमकीरक्षाकरणेवासते श्रुतिप्रसिद्धपरमानंदरूपमोक्षविषेभी आनंदरूपता अंगीकारकरैनहीं ॥ किंतु दुःखाभाव विषेही तेनैयायिक मोक्षरूपताअंगीकारकरैहैं ॥ यातें पुरुषोंकीप्रवृत्ति केवलसुखकाहीकारणहै ॥ यहतुमाराकहणासंभवैनहीं ॥ यातें यह अर्थसिद्धभया ॥ प्रमाणोंविषे जाअर्थकीबोधकताहै ॥ साअर्थकीबोधकताही तिनप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपताकीसिद्धिकरैहै ॥ साअर्थकीबोध कता जैसे शब्दप्रमाणविषेहै ॥ तैसे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंविषेहैनहीं यातैंनदीकेतीरविषेफलहैं याप्रकारका जोअनाप्तपुरुषकावचनहै ॥ सोभी अर्थकाबोधकहोणेतैं प्रमाणरूपहीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यानदीकेतीरविषेफलहैं यावचनविषेप्रमाणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतें यानदी केतीरविषेफलनहीं हैं यानिषेधकवचनकरिके तावचनकेप्रमाणरूपताका बाधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ तानिषेधकवचनकरिके यद्यपि

तावचनकेप्रमाणरूपताकावाधहोवैहै ॥ तथापि तानिषेधकवचनकी जवपर्यंत प्रवृत्तिनहींभई ॥ तवपर्यंत तावचनकेप्रमाणरूपताकोनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तानिषेधकवचनकेप्रवृत्तितेंअनंतरहीं तावचनकेप्रमाणरूपताकावाधहोवैहै ॥ याकारणतेंहीं भाष्यकारभगवान्नें आत्मसाक्षात्कारपर्यंतहीं संपूर्णलौकिकवैदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपताअंगीकारकरीहै ॥ यातें जैसे सर्वमृगोंविषे सिंह वलवानहै ॥ तैसे आपणे संवंधकरिके सर्वपदार्थोंकेअभावकूंवोधनकरणेहारा जोयहनकारहै ॥ सोनकार यासंपूर्णककारादिकवर्णोंविषे वलवानहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जहांनकारकरिकेयुक्त दोनिषेधकवचनहोवैहैं ॥ तहां परस्पर प्रतिवंधकताकरिके किसीअर्थकीभी सिद्धिनहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जहां एकहीपदार्थविषे दोनिषेधकवचनोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहां एकअर्थकेनिश्चयकरणेवासते कोईतीसराप्रमाण अवश्यअंगीकार कन्याचाहिये ॥ परंतु सोतीसराप्रमाणभी तभी ताअर्थकीसिद्धिकरैहै ॥ जभी तातीसरेप्रमाणकेअर्थकावाधकरणेहारा कोईचतुर्थप्रमाणन हींहोवैहै ॥ किंवा ॥ तिनदोनोंनिषेधकवचनोंविषेभी जहां एकनिषेधकवचन लौकिकहोवैहै ॥ और दूसरानिषेधकवचन वैदिकहोवैहै ॥ तहां एकवचनकेअर्थकानिश्चयकरणेवासते किसीतीसरेप्रमाणकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ किंतु भ्रमप्रमादादिकदोषोंकीशंकाकरिकेयुक्त जोलौकिकनिषेधकवचनहै ॥ सो दुर्वलहोवैहै ॥ और भ्रमादिकदोषोंकीशंकातेंरहित जोवैदिकनिषेधकवचनहै ॥ सो वलवानहोवैहै ॥ तावलवानवैदिकप्रमाणकरिके दुर्वललौकिकप्रमाणकावाधहोइजावे है ॥ किंवा ॥ जैसे नदीकेतीरविषे फलोंकीविद्यमानताकूं बोधनकरणेहारा जोनदीकेतीरविषेफलहैं याप्रकारकालौकिकवचनहै ॥ तथा तानदीकेतीरविषे फलोंकेअभावकूंवोधनकरणेहारा जो नदीकेतीरविषेफल नहीं हैं याप्रकारकालौकिकनिषेधकवचनहै ॥ तिनदोनोंलौकिकवचनोंका जैसे परस्परविरोधहै ॥ तैसे परलोकनहीं है याप्रकारकाजोलौकिकनिषेधकवचनहै ॥ तथा परलोकहै याप्रकारकाजोवैदिकवचनहै ॥ तिनदोनोंवचनोंकाभी परस्परविरोधहै ॥ तहां परलोकनहीं है यहलौकिकवचन यद्यपि निषेधकवचनहोणेतेंप्रवलहै ॥ तथापि तालौकिकवचनविषे भ्रमप्रमादादिकदोषोंकीसंभावनाहोवैहै ॥ यातें सोलौकिकवचन दुर्वलहै ॥ और परलोकहै ॥ याप्रकारकेवैदिकवचनोंविषे भ्रमादिकदोषोंकीसंभावनाहोवैनहीं ॥ यातें सोवैदिकवचन

याचारिस्कंधोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथानानाप्रकारकोशाखावोंकरिकेयुक्तहै ॥ ऐसेवेदभगवान्को ब्रह्मतैंउत्पत्तिभई है ॥ याकारणतें तावेद भगवान्कूं शास्त्रविषे ब्रह्मरूपकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ तामायाविशिष्टब्रह्मतैंजैसेयह शब्दरूपवेद उत्पन्नभयाहै ॥ तैसे तिनवेदोंकेअर्थभी तिसीब्रह्मतैंउत्पन्नभयेहैं॥अब संक्षेपतैंतिनपदार्थोंकानिरूपणकरैहैं।हेमैत्रेयी ॥ ज्ञानयोग कर्मयोग यहदोनोंप्रकारका जोयोगहै ॥ तथा यज्ञभूमितैंबाहरकरणेयोग्य जोनानाप्रकारकादानहै ॥ तथा इसलोकविषे तथापरलोकविषे जीवोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोसुख दुःखरूपफलहै तथा तासुखदुःखरूपफलकेभोगणेकासाधनरूप जेस्थावरजंगमशरीरहैं ॥ तथा आकाशादिकजेपंचभूतहैं ॥ तथावाका दिकजेएकादशइंद्रियहैं ॥ तथा पंचप्राणजेहैं ॥ तथा तिनवाकादिकइंद्रियोंके जेअभिमानीदेवताहैं ॥ इसतैंआदिलेके यहसंपूर्णजगत् तापर मात्मादेवतैंहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ इतनेंकरिके जगत्कोउत्पत्तितैंपूर्व ब्रह्मविषे अद्वितीयरूपतासिद्धकरी ॥ अब जगत्केप्रलयकालविषेभी ताब्रह्मविषे अद्वितीयरूपता सिद्धकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे जगतकीउत्पत्तिस्थितिकालविषे ब्रह्ममें अद्वितीयरूपताहै ॥ तैसे याजगतकेप्रल यकालविषे ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताविषे तूं दृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे श्रीगंगादिक नदियोंविषेस्थितजेजलहैं ॥ तथा मेघा दिकोंविषेस्थितजेजलहैं ॥ तेसंपूर्णजल साक्षात्संबंधकरिके अथवा परंपरासंबंधकरिके महान्समुद्रकूंहींप्राप्तहोवे हैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे यह संपूर्णस्थावरजंगमरूपजगत् साक्षात्संबंधकरिके अथवा परंपरासंबंधकरिके परमात्मादेवकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टक रिकेनिरूपण करैहैं ॥ हे मैत्रेयी ॥ प्रलयकालविषे यहशब्दस्पर्शादिकविषय श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥और तेश्रोत्रादि कइंद्रिय आकाशादिकभूतोंविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥और तेआकाशादिकपंचभूत मायाविशिष्टपरमात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तहां स्पर्शरूपविषय त्वक्इंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥और संपूर्णमधुरादिकरस रसन इंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्ण गंध घ्राणइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥और संपूर्णनीलपीतादिकरूप चक्षुइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और संपूर्णलौकिकशब्द श्रोत्रइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और संपूर्णसंकल्प मनविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्ण निश्चयरूपवृत्तियां बुद्धिविषे

लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णग्रहणादिकव्यापार हस्तइंद्रियविषे लयभावकूं प्राप्त होवै हैं ॥ और संपूर्ण विषयजन्यआनंद उपस्थ इंद्रियोंविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णमलादिकोंकेविसर्ग पायुइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्त होवै हैं ॥ और संपूर्णगमन आगमनादि कव्यापार पादइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और संपूर्ण वैदिकशब्द वाक्इंद्रियविषे लयभावकूं प्राप्त होवैहैं॥इसप्रकार जो जो इंद्रिय जिस जिस भूतका कार्य है ॥ सो सो इंद्रिय तिसीतिसीभूतविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ हे मैत्रेयी ॥ जैसेयालोकविषे अल्पनदियोंके जल प्रथम श्रीगंगादिकमहान् नदियोंकूं प्राप्त होइके तागंगादिक नदियोंकेसाथ ते अल्पनदियोंके जल महान्समुद्रकूं प्राप्त होवैहैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे यहसंपूर्णकार्य प्रथम आपणे आपणेकारणकूं प्राप्तहोइके ताकारणकेसहित तेकार्य परमकारणरूपपरमात्मा विषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं प्रलयकालविषे सोपरमात्मादेव अद्वितीयरूपहीहै ॥ इतनैंकरिके प्रलयकालविषे आनंदस्वरूप आत्माकी अद्वितीयरूपतासिद्धकरी॥अब मोक्षअवस्थाविषेभी ताआनंदस्वरूपआत्माकी अद्वितीयरूपता सिद्धकरैहैं॥हेमैत्रेयी ॥ ब्रह्मज्ञानकेउत्पन्नहुएतैं अनंतर यहकार्यसहितअविद्या जिसप्रकार लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताके विषे तूं दृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ जैसे यालोकविषे स्वभावतैंद्रवीभूतजेसमुद्रादिकोंकेजलहैं ॥ तेजल जभी आतपवायु आदिकदृष्टनिमित्तकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तथा जीवोंके पुण्य पापरूपअदृष्ट निमित्तकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तभी तेसमुद्रादिकोंकेजल लवणादिकरूपघनाभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे वास्तवतैंजीवईश्वरादिकभेदतैंरहित यहशुद्धआत्मादेवभी जभी अविद्याकेसंबंधरूपनिमित्तकूंप्राप्तहोवैहै॥तभी सोआत्मादेव जीवभावकूंप्राप्तहोवैहै॥और हेमैत्रेयी जैसे तालवणपिंडके दशोदिशाविषे तथामध्यविषे तासमुद्रकेजलतैंभेदनहीं है ॥ किंतु क्षाररसकरिके सोलवणकापिंड समुद्रजलरूपही है ॥ तैसे याजीवात्मा विषे तापरमात्मातैंभेदनहीं है ॥ किंतु सत्चित्आनंदरूपकरिके यहजीवात्मा तापरमात्मातैंअभिन्नहीं है॥और हेमैत्रेयी ॥ जैसे सोलवणकापिंड जभी तासमुद्रकेजलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहजीव ताब्रह्मविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेमैत्रेयी॥तालवणकेपिंडविषे जोजीवकूं घनीभावताप्रतीतहोवैहै॥सो तासमुद्रकेजलकेभेददर्शनकालविषेही प्रतीतहोवैहै॥तैसे हमजीवोंकूं अद्वितीयब्रह्मविषे जोयहसंसारप्रतीत

होवैहै॥सो ताअद्वितीयब्रह्मकेभेददर्शनकालविषेही प्रतीतहोवैहै॥और जैसे सोलवणकापिंड वास्तवतैं तीनकालविषे समुद्रकेजलतैंभिन्ननहींहै तैसे यहजीवात्मावास्तवतैं तीनकालविषे ताब्रह्मतैंभिन्ननहीं है ॥ और हेमैत्रेयी ॥ जैसे तालवणपिंडविषे जोघनीभावताहै ॥ साघनीभावता नाशवानहै ॥ और तालवणपिंडविषे जासमुद्रजलरूपताहै ॥ साजलरूपता नाशतैंरहितहै ॥ तैसे याआत्मादेवविषे जाजीवरूपताहै ॥ साजीवरूपता नाशवानहै ॥ और याआत्मादेवविषे जाब्रह्मरूपताहै ॥ साब्रह्मरूपता नाशतैंरहितहै ॥ और हेमैत्रेयी ॥ जैसे तालवणपिंडके घनीभावताका जभी नाशहोवैहै ॥ तभी तालवणपिंडकाभीनाशहोवैहै ॥ तैसे मोक्षअवस्थाविषे अविद्याकेनाशहुए ताजीवपणेकाभीनाश होवैहै ॥ और हेमैत्रेयी ॥ जैसे सोलवणकापिंड आपणीउत्पत्तिस्थितिलयकालविषे सर्वओरतैंक्षाररसवालाहै ॥ तैसे यहजीवात्माभी तीन कालविषे स्वयंप्रकाशचेतनरूपही है ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहआनंदस्वरूपआत्मा जो स्वयंप्रकाशरूपहै ॥ तौ सर्वजीवोंकूं सोआत्मादेव किसवासतैनहींप्रतीतहोता ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे अत्यंतसमीपवर्तमान जोसूर्यादिकोंकाप्रकाशहै ॥ ताप्रकाशकूं नेत्रोंतैंअंधपुरुष देखिसकैनहीं ॥ तैसे अज्ञानरूपअंधकारकरिकै आवृत्तहैंबुद्धिरूपनेत्रजिनोंके ऐसेजेअज्ञानीजीवहैं ॥ तेअज्ञानीजीव अत्यंतसमीपवर्तमान स्वयंज्योतिआत्माकूं देखिसकैनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ॥ जैसे यालोकविषे जिसपुरुषकामन स्त्रीआदिकविषयोंविषेजावैहै ॥ सोपुरुष अत्यंत समीपस्थितपदार्थकूंभी देखतानहीं॥ तैसे जिनपुरुषोंकामन स्त्रीधनपुत्रादिकपदार्थोंविषेआसक्तहै॥तेपुरुष अत्यंतसमीपस्थितआत्माकूंभी देखिसकतेनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ॥ जैसे समुद्रकेलवणपिंडविषे घनीभावताहोवैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इत्यादिकविशेषज्ञानहीं घनीभावतारूपहै ॥ और ताविशेषज्ञानरूप घनीभावताकाकारण यहस्थूलशरीरहै ॥ यातैं तास्थूलशरीरका जभी नाशहोवै है ॥ तभी ताविशेषज्ञानरूप घनीभावताविशिष्टआत्माकाभीनाशहोवैहै ॥ हेशिष्य यास्थूलशरीरकेनाशतैंअनंतर आत्मा काभीनाशहोवैहै याप्रकारकावचन जिसअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं मैत्रेयीकेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ तायाज्ञवल्क्यमुनिकेअभिप्रा यकूं तूं श्रवणकर ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैंनाशरहितहै ॥ तथापि जैसे चारिकोणवालेलोहकेपिंडसाथ तादात्म्यभा

वकूंप्राप्तहुआअग्निभी चारिकोणवालाप्रतीतहोवैहै ॥ तहां चारिकोणवालेलोहपिंडकेनाशहुएतैंअनंतर ताचारिकोणवालेअग्निकाभीनाश होवैहै॥तैसे जीवतअवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेतादात्म्यअध्यासकरिके यहआत्मादेव मैंमनुष्यहूं इत्यादिकविशेषज्ञानोंकरिकेविशिष्टहुआ प्रतीतहोवैहै॥और मरणकालविषे यास्थूलशरीरका जभी नाशहोवैहै॥तभी ताविशेषज्ञानविशिष्टआत्माकाभी नाशहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे पुरुषकेविद्यमानहुएभी दंडरूपविशेषणकेनाशकरिके इहांदंडीपुरुषनहीं है याप्रकार दंडविशिष्टपुरुषकेअभावकानिश्चयहोवैहै ॥ तैसे मरणकालविषे आत्माकेविद्यमानहुएभी मैंमनुष्यहूं इत्यादिकविशेषज्ञानरूपविशेषणकेनाशकरिके ताविशेषणविशिष्टआत्माकेनाशकाव्य वहारहोवैहै॥ और जैसे मरणकालविषे यहजीव मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इत्यादिकसर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवैहै॥याकारणतैं सोजीव तामरण कालविषे यास्थूलशरीरकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे मोक्षअवस्थाविषेभी यहजीव मैंमनुष्यहूं इत्यादिकसंपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवैहै ॥ याकारणतैं यहजीव तामोक्षअवस्थाविषे किंचित्मात्रभीदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे मरणकालविषे मैंमनुष्यहूं इत्या दिकसर्वविशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेभी तिनसर्वविशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहै ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाकेदृष्टांतक रिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं मोक्षअवस्थाविषे सर्वदुःखोंकाअभाव किसवास्तैनहींकथनकर्‍या ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यद्यपि सुषुप्तिअवस्था विषे याजीवके तासंपूर्णविशेषज्ञानोंकाअभावहोवै है ॥ तथापि यहजीव तासुषुप्तिअवस्थाकापरित्यागकरिके जभी जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहो वैहै ॥ तभी सोजीव इसीशरीरविषे नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मरणकालविषे यहजीवात्मा तथा यास्थूलशरीरसंबंधीदुः खोंकूं पुनःप्राप्तहोवैनहीं याकारणतैं सुषुप्तिअवस्थाकापरित्यागकरिके तायाज्ञवल्क्यमुनिनैं मोक्षअवस्थाविषे मरणअवस्थाका दृष्टांत कथनकर्‍याहै ॥ यातैं जैसे यास्थूलशरीरकेनाशतैंअनंतर संपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआ यहजीव पुनःताशरीरजन्यदुःखोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मसाक्षात्कारकरिके अविद्याकेनाशहुएतैंअनंतर सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआ यहस्वयंज्योतिआत्मा पुनःताशरी रसंबंधीदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मोक्षअवस्थाकीन्याई मरणकालविषेभी जोकदाचित् सर्वदुःखोंकाअभावहोताहोवे ॥

तौ मरणअवस्थाकूंप्राप्तहुए अज्ञानीजीवों तैं तिनमुक्तपुरुषोंविषे विलक्षणता सिद्धनहींहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ मरणकालविषे संपूर्णविशेषज्ञानोंकेअभावहुए यह अज्ञानीजीव यद्यपि पूर्वशरीरजन्यदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ तथापि भावीशरीरोंकेप्राप्तिकरणे हारे जेपुण्य पापरूपअदृष्टहैं ॥ तथा सर्वशरीरोंकाकारणजाअविद्याहै ॥ तेदोनों अज्ञानीजीवोंकेमरणकालविषे विद्यमानहैं ॥ यातैंतापुण्यपापरूपकर्मों केवशतैं तेअज्ञानीजीव दूसरेजन्मोंकूंप्राप्तहोइके तहां अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और मुक्तपुरुषकेआत्मज्ञानकरिके अविद्या तथापुण्यपापरूपअदृष्ट यहदोनोंनाशहोइजावैहैं ॥ यातैं तामुक्तपुरुषकूं पुनःशरीरकोप्राप्तिकरिके दुःखोंकोप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ या प्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीकेप्रति शरीरकेनाशतैंअनंतर आत्माकानाश कथनकरताभया ॥ ता याज्ञवल्क्यमुनिकेअभिप्रायकूंनजाणिकरिके सामैत्रेयी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरतीभई ॥ मैत्रेयीउवाच ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं सत्‌चित्‌आनंदरूपकरिके कथनकर्‍याथा ॥ और अभीआपनैं यास्थूलशरीरकेनाशतैं अनंतर ता आत्माका नाश कथनकर्‍या ॥ यातैं आपकेपूर्वउत्तरवचनोंका परस्पर विरोधहोवैहै॥ हे भगवन् ॥ जैसे पवन तूलकूं दशोदिशाविषे भ्रमणकरावैहै ॥ तैसे यहआपकावचनरूपीपवनहमारेमनरूपतूलकूंसर्वओरतैंभ्रमणकरावैहै ॥ हेभगवन् ॥ जैसे राजाकेवचनकेअभिप्राय कूंनजाणिकरिके सेवककामन व्यामोहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे आपकेवचनकेअभिप्रायकूंनजाणिकरिके हमारामन व्यामोहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेभगवन् ॥ जैसे विचारतैंरहितगौ तृणोंकेलोभकरिके दूरदेशविषेजावैहै ॥ तहांतृणोंकरिकेआच्छादितजोपंकहै तापंकविषे सागौ फँसि जावैहै ॥ तैसे आत्मज्ञानकेलोभकरिके आपसैंपूछतीहुई मैं मैत्रेयी आपकेवचनरूपीपंकविषे फँसिगईहूं ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वहमनैं आत्मा कानाशनहींहोवैहै याप्रकारकावचन बहुतविद्वान्ब्राह्मणोंकेमुखतैंश्रवणकर्‍याहै ॥ और आत्माकानाशनहींहोवै है याप्रकारकावचन किसी प्रसंगपाइके आपकेमुखतैंभी हमनैंबहुतवारश्रवणकर्‍याहै ॥ और अभीआपनैं यास्थूलशरीरकेनाशतैंअनंतर साआत्माकानाश कथन कर्‍याहै ॥ यातैं ताआपकेवचनकूंश्रवणकरिके सोआत्माकेनित्यरूपताकानिश्चय हमारा निवृत्तहोताभयाहै ॥ हेभगवन् ॥ जैसे कोईपुरुष

आपणेधनकीवृद्धिकरणेवासते ॥ किसीव्यापारविषेप्रवृत्तहोवे ॥ ताव्यापारविषे सोपुरुष आपणेपूर्वमूलधनकूंभीनष्टकरिदेवे ॥ याप्रकार कान्याय हमारेविषेप्राप्तभयाहै ॥ काहेतें आत्माकेवास्तवस्वरूपकेजानणेवासते हमनें आपकेप्रतिप्रश्नकऱ्याथा ॥ सोआपकेवचनतें आत्मा केवास्तवस्वरूपकाज्ञानतौनहींभया ॥ उलटा हमनें पूर्व जोआत्माकीनित्यरूपता निश्चयकरीथी ॥ साआत्माकीनित्यरूपताभी आपके वचनतें निवृत्तहोइगई ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी मैत्रेयीनें याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति कथनकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि कृपाकरिके तामैत्रेयीकेप्रति आपणेहृदयकाअभिप्राय कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेमैत्रेयी याशरीरकेनाशतेंअनंतर आत्मा काभीनाशहोवैहै ॥ याप्रकारकेहमारेवचनतें तुम्हारेकूं ताव्यामोहकीप्राप्ति मतहोवे ॥ तथा पूर्वनिश्चयकरीजाआत्माकीनित्यरूपता ताके हानिकीचिंताकरिके तुम्हारेकूं खेदकीप्राप्तिभीमतहोवे ॥ हेमैत्रेयी ॥ हमारेवचनकूंश्रवणकरिके तूंजिसमोहकूंप्राप्तभई है ॥ तातुम्हारेमोह करणेवासते हमनें सोवचन नहींकह्याहै ॥ किंतु हमारेपूर्वउत्तरवचनोंकेतात्पर्यकूंनजाणिकरिके तूं व्यर्थहींमोहकूंप्राप्तभईहै ॥ हेमैत्रेयी यास्थूलशरीरकेनाशतेंअनंतर आत्माकाभीनाशहोवैहै याप्रकारकावचन जिसअभिप्रायकरिके हमने तुमारेप्रति कथन कऱ्याहै ॥ ताअभिप्रायकूं तूंश्रवणकर ॥ हे मैत्रेयी ॥ यह आनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतें जीवईश्वरभावतेंरहितहै ॥ तथापि अविद्याकेसंबंधतें सोआत्मादेव जीवरूपधनीभावताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जभी आत्मसाक्षात्कारकरिके ताअविद्याकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तभी यहआनंदस्वरूपआत्मा ताजीवरूपधनीभावताकापरित्यागकरिके आपणेवास्तवस्वरूपविषे स्थित होवैहै तामोक्षअवस्थाविषे मैंमनुष्यहूं ब्राह्मणहूं इत्यादिकसंपूर्णविशेषज्ञानोंकेनाशहुएभी ताआनंदस्वरूपआत्माकानाशहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे मरणकालविषे सर्व विशेष ज्ञानोंकेनाशहुए यहपुरुष यास्थूलशरीरजन्यदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे तामोक्षअवस्थाविषेभी सर्वविशेषज्ञानोंकेअभाव हुए यह आत्मादेव ताशरीरजन्यदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हे मैत्रेयी ॥ तुमारेप्रति याप्रकारकेअर्थकाबोधकरणेवासते मैंयाज्ञवल्क्यनें याशरी रकेनाशतेंअनंतर आत्माकानाशकथनकऱ्याहै ॥ परंतु वास्तवतें आत्माकेनाशविषे हमारातात्पर्यनहीं है ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतक

रिकेस्पष्टकरेहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे घटविषेस्थितजोआकाशहै ॥ ताआकाशका स्वभावतैंनाशहोवैनहीं ॥ किंतु घटरूपउपाधिकेनाश तैंअनंतर ताघटकेनाशका घटाकाशविषेआरोपणकरिके मूढपुरुष घटाकाशकानाशमानैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकाभीस्वभावतैं नाशहोवैनहीं ॥ किंतु यास्थूलशरीररूपउपाधिकेनाशतैंअनंतर ताशरीरकेनाशकूं आत्माविषेआरोपणकरिके अविवेकीपुरुषयाआत्माका नाशमाने हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जोकदाचित् स्वभावतैंहीं आत्माकानाश अंगीकारकरिये ॥ तौ यालोकविषेकरेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका सुखदुःखरूपफलकेभोगतैंविनाहींनाशरूपजोकृतनाशरूपदोषहै ॥तथा नकरेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकाभोगरूप जोअकृ ताभ्यागमरूपदोषहै ॥ यादोनोंप्रकारकेदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं बुद्धिमान्पुरुषोंकूं आत्माकानाश अंगीकारकरणायोग्यनहीं ॥ हेमैत्रे यी ॥ मरणकालविषे यापुरुषके देहइंद्रियादिकसर्वसंघातकालयहोवै है ॥ याकारणतैं तामरणकालविषे मैंमनुष्यहूं इत्यादिकविशेषज्ञान तापुरुषविषेउत्पन्नहोवैनहीं ॥ तासर्वविशेषज्ञानोंकेअभावहुए यहआत्मादेव जभी मरणअवस्थाविषेभी संसारदुःखोंकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ तभी आत्मसाक्षात्कारकरिके कार्यसहितअविद्यातैंरहितहुआ यहआत्मादेव मोक्षअवस्थाविषे तासंसारदुःखोंकूंनहीं प्राप्तहोवैहै याकेविषे क्याकहणाहै ॥ यातैं हेमैत्रेयी ॥ तामोक्षअवस्थाविषे मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इत्यादिकसर्वविशेषज्ञानोंकेनाशहुएभीयास्वयं ज्योतिआत्माकानाशहोवैनहीं ॥ याकारणतैं यहस्वयंज्योतिआत्मा अविनाशीरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मोक्षअवस्थाविषे यह आत्मादेव जोस्वप्रकाशहोवैहै ॥ तौ तामोक्षअवस्थाविषे यहआत्मादेव शरीरादिकद्वैतप्रपंचकूं किसवासतैनहींदेखता ॥ और मोक्षअवस्था विषे यहआत्मादेव द्वैतप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तामोक्षअवस्थाविषे यहआत्मादेव स्वप्रकाशरूपनहींहै ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिके विद्यमानहुआभीयहआत्मादेव जोपुत्र स्त्रीधनादिकपदार्थोंकूंनहींदेखैहै ॥ तानदेखणेविषे आत्माकेस्वप्रकाशरूपताकाअभाव कारणनहीं है ॥ किंतु तासुषुप्तिअवस्थाविषे तथा मरणअवस्थाविषे तिनपुत्रधनादिकपदार्थोंकाअभावहोवैहै ॥ तथा नेत्रादिककरणोंकाभीअभावहोवैहै ॥ याकारणतैं तासुषुप्तिअवस्थाविषे

तथा मरणअवस्थाविषे स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै विद्यमानहुआभी यहआत्मादेव ताद्वैतप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ तैसे मोक्षअवस्थाविषेभी यहआत्मादेव जोद्वैतप्रपंचकूंनहींदेखताहै ॥ तानदेखणेविषे आत्माकेस्वप्रकाशरूपताकाअभाव कारणनहीं ॥ किंतु तामोक्षअवस्थाविषे सर्वद्वैतप्रपंचकाअभावहोवैहै ॥ याकारणतैं तामोक्षअवस्थाविषे स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै विद्यमानहुआभी यहआत्मादेव ताद्वैतप्रपंच कूंदेखतानहीं ॥ और हेमैत्रेयी ॥ यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मा अविनाशीरूपहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव सुषुप्ति मरण मोक्षयातीनोंअवस्थावोंविषे आपणेवास्तवस्वरूपकापरित्यागकरैनहीं ॥ यातैं जोआत्माकावास्तवस्वरूप मोक्षअवस्थाविषेहै ॥ सोईहीआत्माकावास्तवस्वरूप संसारदशाविषेहै ॥ परंतु संसारदशाविषे देहादिकोंकेतादात्म्यसंबंधकरिकै सोआत्माकावास्तवस्वरूप प्रतीतहोतानहीं ॥ और मोक्षअवस्थाविषे देहादिकोंकेतादात्म्यसंबंधकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ याकारणतैंमोक्षअवस्थाविषे सोआत्माकावास्तवस्वरूप विद्वान्पुरुषोंकूं करामलककीन्याई स्पष्टप्रतीतहोवै है ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे अग्निकाउष्णस्वभाव कदाचित्भी अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे सुषुप्ति मरण मोक्ष यातीनोंअवस्थावोंविषे याआनंदस्वरूपआत्माका स्वप्रकाशअद्वितीयचैतन्यस्वरूप कदाचित्भी अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव सर्वभेदतैंरहितहै ॥ इतनैंकरिकै त्वंपदार्थरूपजीवकाशोधनकऱ्या ॥ अब ताजीवका परिपूर्णब्रह्मकेसाथ अभेदबोधनकरणेवासतै प्रथम भेददर्शनविषे अविद्याकी व्याप्यता निरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ याआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माविषे वास्तवतैं यहद्वैतप्रपंच कदाचित्भीनहीं है ॥ ऐसेअद्वितीय आत्माविषे जीवोंकूं जोद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैहै ॥ सो जैसे नेत्रदोषकरिकै मूढबालकोंकूं आकाशविषे दोचंद्रमाप्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे अविद्यारूपीदोषकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं अद्वितीयआत्माविषे यहद्वैतप्रपंचप्रतीतहोवैहै याकारणतैं यहसंपूर्णद्वैतप्रपंच मायामात्रहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ ऐसाआत्माकाअद्वितीयस्वरूप जिसकालविषे द्वैतप्रपंचकीन्याई प्रतीतहोवैहै ॥ तिसकालविषे यहअज्ञानीजीव आपणेकूं ब्रह्मतैंभिन्नहुआ देखैहै ॥ तथा विश्व तैजस प्राज्ञ इत्यादिकअनेकभेदवाला आपणेकूंदेखै है ॥ तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध इसतैंआदिलेके संपूर्णजगत्कूं

यहअज्ञानीजीव श्रोत्रादिकएकादशइंद्रियोंकरिके भिन्नभिन्नदेखेहै ॥ इतनैंकरिकै अविद्याकेविद्यमानहुए द्वैतदर्शनकीविद्यमानतारूप अन्वय कानिरूपणकऱ्या॥अब अविद्याकेअभावहुए द्वैतदर्शनकाअभावरूपव्यतिरेककानिरूपणकरैहैं॥हेमैत्रेयी॥याअधिकारीपुरुषोंकूं जभीगुरुशास्त्रकेउपदेशकरिके अद्वितीयब्रह्मकाज्ञानहोवे है॥तभी ताअधिकारीपुरुषों के मायारूपअज्ञानकानाशहोइजावैहै॥ ताअज्ञानरूपकारणकेनाशहुएतैंअनंतर स्थावरजंगमशरीर तथा शब्दादिकविषयोंसहित श्रोत्रादिकइंद्रिय तथा सुखदुःखादिकोंसहित अंतःकरण इसतैंआदिलेकेसंपूर्णकार्यप्रपंच लयभावकूंप्राप्तहोवे है॥इसप्रकार संपूर्णकार्यप्रपंचसहित अज्ञानकेनाशहुएतैंअनंतर परिशेषतैं स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्मादी स्थितहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ ऐसीमोक्षअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहविद्वान्पुरुष संपूर्णजगत्कूं आपणाआत्मारूपहीदेखेहै ॥ यातैं तामोक्षअवस्थाविषे यहविद्वान्पुरुष आपणेतैंभिन्न नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकपदार्थोंकूं देखतानहीं ॥ तथा रूपादिकपदार्थों केदर्शनतैं जो आवरणकीनिवृत्तिरूपफलहोवैहै ॥ सोफलभी पूर्वआत्मसाक्षात्कारकरिकेसिद्धभयाहै ॥ यातैं तामोक्षअवस्थाविषे सोआवरणकीनिवृत्तिरूपफलभीहोवेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तामोक्षअवस्थाविषे यहविद्वान्पुरुष आपणेतैंभिन्नजगत्कूं मतदेखे ॥ परंतु सोविद्वान्पुरुष तामोक्षअवस्थाविषे आपणेआत्माकूं किसवासतैंनहींदेखता ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जिसअविद्याकालविषे यहआत्मादेव द्वैतकीन्याई प्रतीतहोवैहै ॥ तिसअविद्याकालविषेभी यहस्वयंज्योतिआत्मा किसीज्ञानकाविषयहोवैनहीं ॥ जभी अविद्याकालविषेभी यहस्वयंज्योतिआत्मा किसीज्ञानकाविषयनहींभया ॥ तभी मोक्षअवस्थाविषे सर्वद्वैतप्रपंचकेअभावहुए यहस्वयंज्योतिआत्मा किसीज्ञानकाविषयनहींहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ आपणेस्वप्रकाशरूपकरिके सर्वजगत्कूंजानणेहारा जो विज्ञाताआत्माहै ॥ ताविज्ञाताअद्वितीयआत्माकूं मैं जानताहूं याप्रकारकावचन जोपुरुष कथनकरे है ॥ तामूढपुरुषतैं यहपूछाचाहिये ॥ यालोकविषे याजीवोंकूं जिसजिसपदार्थका जोजोज्ञानहोवे है ॥ सोसोज्ञान किसीनेत्रादिककरणोंकरिकेजन्यहीहोवैहै ॥ नेत्रादिककरणों तैं विना कोईभीज्ञानउत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं अद्वितीयआत्माकूंविषयकरणेहारा जोतुमारेकूंज्ञानभयाहै ॥ सोज्ञान किसकारणकरिकेउत्पन्नभ

याहै ॥ याप्रश्नकाउत्तर तूं हमारेप्रतिकह ॥ तहां सोवादीजोमूर्तअमूर्तरूपजगत्कूं तथा ताजगत्केअभावकूं आत्माकेज्ञानविषे करणमाने सोवादीकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतें अविद्यातें रहित ताशुद्धआत्माविषे मूर्तअमूर्तरूपजगत् तथा ताजगत्काअभाव वास्तवतें है नहीं ॥ यातें यहस्वयंज्योतिआत्मादेव मनबुद्धिआदिकअंतरकरणोंकरिकै तथा नेत्रादिकबाह्यकरणोंकरिकै ग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ किंवा यालोकविषे जोजोपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ शनैःशनैःकरिकै आपणेअवयवोंकीशिथिलतारूप शीर्यताकूं अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे इंद्रियजन्यज्ञानकेविषय जेवस्त्रादिकपदार्थ हैं ॥ तेवस्त्रादिक शनैःशनैःकरिकै ताशीर्यताकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तैसे इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोणेतैं यहआत्मादेवभी ताशीर्यताकूं अवश्यप्राप्तहोवैगा ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा अशीर्य है ॥ यातें यहआत्मादेव किसीइंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोवैनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषेजोजोपदार्थ शीर्यताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ संयोगादिक संबंधरूपसंगवालाहोवैहै ॥ जैसे वस्त्रादिकपदार्थ शीर्यताधर्मवाले हैं यातें तेवस्त्रादिकपदार्थ जलादिकपदार्थोंकेसंगवालेभी हैं ॥ और यहस्वयंज्योतिआत्मा संयोगादिकसंबंधरूप सर्वसंगतेंरहितहै ॥ यातें यह आत्मादेव शीर्यताकूं प्राप्त होवैनहीं ॥ और हेमैत्रेयी यालोकविषे जोजोपदार्थ संयोगादिरूपसंगवालाहोवैहै सोसोपदार्थभयवालाभीअवश्यहोवैहै जैसे यहमनुष्यादिकशरीरसंयोगादिरूपसंगवालेहैं ॥ यातें यहमनुष्यादिकशरीर सिंहसर्पादिकोंतें भयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और यहआत्मादेव सर्वभयतेंरहितहै ॥ यातें यहआत्मादेव किसीपदार्थकेसंगवालाभीनहीं है ॥ और हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ भयवालाहोवै है ॥ सोसोपदार्थ व्यथावालाहोवैहै ॥ जैसे यहमनुष्यादिकशरीर भयवालेहैं ॥ यातें यहमनुष्यादिकशरीर व्यथावालेभीहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वव्यथातेंरहितहै ॥ यातें यहआत्मादेव भयतेंभीरहितहै ॥ और हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ व्यथावालाहोवै है सोसोपदार्थ विनाशकेकारणोंकरिकै युक्तहोवैहै ॥ जैसे यहमनुष्यादिकशरीर व्यथावालेहैं ॥ यातें यहमनुष्यादिकशरीर विनाशकेकारणोंकरिकैभीयुक्तहैं॥और यहआत्मादेव विनाशकेकारणोंतेंरहितहै ॥ यातें यहआत्मादेव व्यथातेंभीरहितहै॥तात्पर्ययह ॥ जैसे जहांजहांधूम

रहैहै ॥ तहांतहां अग्निअवश्यरहैहै ॥ अग्नितैंविना धूम रहैनहीं ॥ यातैं धूम व्याप्यहै और अग्निव्यापकहै ॥ व्यापकअग्निका जहां अभावहोवै है ॥ तहांव्याप्यधूमकाभीअभावहोवैहै ॥ जैसे जलकरिकैपूर्णतलावविषे व्यापकअग्निकाअभावहै ॥ यातैं तातलावविषे व्याप्यधूमकाभीअ भावहै ॥ तैसे यहांप्रसंगविषे इंद्रियजन्यज्ञानकीविषयता १ शीर्यता २ संयोगादिकसंबंधरूपसंग ३ भय ४ व्यथा ५ विनाशकाकारण ६ याषट्पदार्थोंविषे पूर्वपूर्वपदार्थकीअपेक्षाकरिके उत्तरउत्तरपदार्थ व्यापकहैं ॥ और उत्तरउत्तरपदार्थकीअपेक्षाकरिके पूर्वपूर्वपदार्थ व्या प्यहैं ॥ तिनउत्तरउत्तर व्यापकपदार्थोंका आत्माविषे अभावहै ॥ यातैं पूर्वपूर्वव्याप्यपदार्थोंकाभी आत्माविषे अभावहीसिद्धहोवैहै ॥ जैसे यहआत्मादेव नाशकेकारणोंतैंरहितहै ॥ यातैं व्यथातैंरहितहै ॥ और यहआत्मादेव व्यथातैंरहितहै यातैं भयतैंरहितहै ॥ और यहआत्मादेव भयतैंरहितहै ॥ यातैं संगतैंरहितहै ॥ और यहआत्मादेव संगतैंरहितहै ॥ यातैंशीर्यतातैंरहितहै ॥ और यहआत्मादेव शीर्यतातैंरहितहै ॥ यातैं इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयनहीं ॥ याअभिप्रायकरिकेही श्रुतिभगवती यास्वयंज्योतिआत्माकूं अगृह्य यानामक रिकेकथनकरेहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ इसप्रकार भावअभावरूपसर्वजगत्तैंरहित तथामायातैंरहित जोस्वप्रकाशआत्माहै ॥ तास्वप्रकाशआत्मा विषे नेत्रादिककरणजन्यज्ञानकीविषयता कदाचित्भीसंभवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ वेदांतशास्त्रकेमतविषे तथायोगशास्त्रकेम तविषे आत्माकेसाक्षात्कारमें नेत्रादिकोंकूंकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ अब अन्यशास्त्रोंकेमतविषेभी आत्मसाक्षात्कारमें नेत्रादिककरणोंका अभाव निरूपणकरे हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ बृहस्पतिकेशिष्य जेचार्वाकहैं ॥ तिनचार्वाकोंविषे कोईकचार्वाकतो यास्थूलशरीरकूंही आत्मामा नेहैं ॥ और कोईकचार्वाकतो नेत्रादिकइंद्रियोंकूंही आत्मामाने हैं ॥ और कोईकचार्वाकतो प्राणकूंहीआत्मामानेहैं ॥ और कोईकचार्वा कतो मनकूंहीआत्मामाने हैं ॥ और न्यायशास्त्रवालेतो देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्न कर्त्ताभोक्ताकूंहीआत्मामानेहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकेमतविषे आत्मसाक्षात्कारमें नेत्रादिकोंकूंकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जेचार्वाक यास्थूलसं घातकूंही आत्मामाने हैं ॥ तिनचार्वाकोंकेमतविषेभी यासंघातरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकोंकू करणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं यासंघातरूपआत्मातैं यहनेत्रादिककरण भिन्नहैनहीं ॥ किंतु यहनेत्रादिककरण संघातरूपहीहैं ॥ और सोसंघातरूपआत्मा ताज्ञानरूप

क्रियाकाकर्त्ता है ॥ यातैं तासंघाततैंअभिन्न नेत्रादिकभी कर्त्तारूपहीहोवैंगे॥ तिनकर्त्तारूपनेत्रादिकोंविषे करणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे कर्त्तापुरुषतैंभिन्नहीं करणदेख्याहै ॥ जैसे छेदनरूपक्रियाकाकर्त्ताजोपुरुषहै ॥ तातैं कुठाररूपकरण भिन्नहींहोवैहै ॥ यातैं तिनचार्वाकोंकेमतविषे तासंघातरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ और दूसरेचार्वाक नेत्रादिक इंद्रियोंकेसमुदायकूंहीं आत्मामानैं हैं॥तिनचार्वाकोंकेमतविषेभी इंद्रियरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे कोईकरणसंभवैनहीं॥काहेतैं नेत्रादिक इंद्रियरूपआत्मातो ताज्ञानरूपक्रियाकाकर्त्ता है॥यातैं ताइंद्रियरूपकर्त्ताआत्माविषेभी ताज्ञानरूपक्रियाकी करणरूपतासंभवैनहीं॥और यहस्थूलशरीर तथा बाह्यघटादिकपदार्थ यहसंपूर्ण ताज्ञानरूपक्रियाकेकर्मरूपहैं॥यातैं तिनदेहादिकपदार्थोंविषेभी ताज्ञानरूपक्रियाकीकरणरूपतासंभवैनहीं॥यातैंतिनचार्वाकोंकेमतविषेभी इंद्रियरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे कोईकरणसंभवैनहीं॥और जेदूसरेचार्वाक प्राणकूंहीं आत्मामानेहैं॥तथा मनकोंहींआत्मामानेहैं और जेनैयायिकदेहादिकोंतैंभिन्न कर्त्ताभोक्ताकूंहींआत्मामानेहैं॥तिनतीनोंवादियोंकेमतविषेभी ताआत्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं तिनतीनोंवादियोंसैंयहपूछाचाहिये॥तुमोनैं प्राणरूप तथा मनरूप तथा कर्त्ताभोक्तारूप जोआत्माअंगीकारकऱ्याहै॥सोतुमाराआत्मा नीलपीतादिकरूपवालाहै॥अथवा नीलपीतादिकरूपोंतैंरहितहै॥ तहाँ सोआत्मा रूपवालाहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोघटपटादिकपदार्थोंकीन्याईं आत्मा रूपवालाहोवै ॥ तो जैसे रूपवालेघटपटादिकपदार्थ हमजीवोंकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके प्रतीतहोवै हैं ॥ तैसे सोरूपवान् तुमाराआत्माभी हमजीवोंकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और घटादिकोंकीन्याईं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके सोआत्मा प्रतीतहोता नहीं ॥ यातैं नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंविषेतो ताआत्माकेसाक्षात्कारकीकरणरूपता संभवैनहीं ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंकीसहायतातैंविना रूपवानपदार्थोंकूं मन ग्रहणकरैनहीं ॥ यातैं ताआत्माकेसाक्षात्कारविषे मनकूंभी करणरूपतासंभवैनहीं ॥ और सोआत्मा नीलपीतादिकरूपोंतैंरहितहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै ॥ तोभी तारूपरहितआत्माकेसाक्षात्कारविषे कोईकरणसंभवैनहीं ॥

काहेतैं नेत्रादिकबाह्यइंद्रियतो रूपवान्घटादिकपदार्थोंकूंहीं ग्रहणकरैंहैं ॥ यातैं तारूपरहितअंतरआत्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिक
बाह्यइंद्रियोंकूंतो करणरूपतासंभवैनहीं ॥ तहां जोवादी तासाक्षात्कारविषे मनकूंहीं करणमानैंहै ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ मनरूप
करणकरिके जोआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै॥ताज्ञानरूपक्रियाका सोआत्मा कर्महै अथवाकर्ताहै॥तहां सोआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाका कर्म
रूपहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं सोआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाकाजोकर्महोवै ॥ तो जोपदार्थ जाक्रियाका
कर्मरूपहोवैहै ॥ सोपदार्थ ताक्रियाकाकर्त्तारूपहोवैनहीं ॥ यातैं ताज्ञानरूपक्रियाका ताआत्मातैंभिन्न कोईदूसरापदार्थ कर्त्तामान्याचा
हिये ॥ और आत्मातैंभिन्न कोई दूसरापदार्थ ताज्ञानरूपक्रियाकाकर्त्ताहैनहीं ॥ यातैंकर्त्ताकेअभावहुए ताज्ञानरूपक्रियाविषे मनकूंक
रणरूपतासंभवैनहीं ॥ और सोआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाका कर्त्ताहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं आत्मा
कूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ ताज्ञानरूपक्रियाका आत्मातैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ कर्मरूपहोवैनहीं ॥ यातैं कर्मकेअभावहुए ताज्ञान
रूपक्रियाविषे मनकूंकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोकरणहोवैहै ॥ सो कर्त्ताकी तथाकर्मकी अवश्यअपेक्षाकरैहै ॥
कर्तातैंविना तथाकर्मतैंविना करणकास्वरूप सिद्धहोवैनहीं ॥ जैसे छेदनरूपक्रियाकाकर्ताजोपुरुषहै ॥ तथा ताछेदनरूपक्रियाकाकर्म
रूप जोकाष्ठहै ॥ तिनदोनोंकेविद्यमानहुएही कुठारविषे करणरूपतासिद्धहोवैहै ॥ तिसकर्त्ताकर्मतैंविना ताकुठारविषे करणरूपतासिद्धहो
वैनहीं ॥ याकारणतैंही शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं ताकरणका यहलक्षणकह्याहै॥ कर्तापुरुष जिसपदार्थकरिके कर्मविषे किंचित्फलकीउत्पत्तिक
रैहै ॥ तापदार्थकानाम करणहै ॥ जैसे यहकर्तापुरुष कुठारकरिके काष्ठरूपकर्मविषे दोविभागरूपफलकीउत्पत्तिकरैहै ॥ यातैं सोकुठार
करणरूपहै ॥ याप्रकारकीकरणरूपता तामनविषेसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ आत्मातैंभिन्नदूसराकोईपदार्थ ताज्ञानरूपक्रियाकाकर्तारूप तथा
कर्मरूप यद्यपि नहींहै ॥ तथापि सोएकआत्माही ताज्ञानरूपक्रियाका कर्तारूपहै तथाकर्मरूपहै ॥ यातैं कर्ताकर्मकेविद्यमानहुए ताज्ञा
नरूपक्रियाविषे तामनकूं करणरूपता संभवहोइसकैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ एककालविषे एकहीक्रियाविषे एकहीपदार्थकूं कर्तारूप

तातथाकर्मरूपता कहांलोकविषेदेखीतीनहीं ॥ और युक्तियोंकरिकभी संभवैनहीं ॥ यातें एकहीज्ञानरूपक्रियाविषे एकहीआत्माकूंकर्ता रूपता तथाकर्मरूपता अत्यंतविरुद्धहै ॥ और याविरुद्धअर्थकूंअंगीकारकरिकेभी जोवादी ताआत्मसाक्षात्कारविषे मनकूंकरणरूपता मानें ॥ तो तावादीकेप्रति यहवचनकह्याचाहिये हेवादी ॥ यालोकविषे कर्ताकर्मकाअभेद अत्यंतविरुद्धहै ॥ ताविरुद्धअर्थकूंअंगीकार करिकेभी जोतूं आत्मसाक्षात्कारविषे मनकूंकरणरूपतामानताहैं ॥ तौश्रुतिकरिकेसिद्ध तथा विद्वान्पुरुषोंके अनुभवकरिकेसिद्ध जो आत्माकीस्वप्रकाशरूपताहै ॥ तास्वप्रकाशरूपताकेअंगीकारकरणेविषे तुमारेकूं कौनभारहोवैहै ॥ यातें श्रुतिअनुभवसिद्ध आत्माकेस्व प्रकाशरूपताकापरित्यागकरिके आत्माविषे नेत्रादिककरणजन्यज्ञानकीविषयता अंगीकारकरणी अत्यंतअनुचितहै ॥ शंका ॥ हेभग वन् ॥ पूर्वआपनें आत्माकेसाक्षात्कारविषे महावाक्यरूपशब्दकूं करणरूपता कथनकरीथो ॥ और अभीआपनें आत्मसाक्षात्कारविषे करणकाखंडनकऱ्याहै ॥ यातें आपके पूर्वउत्तरवचनोंकापरस्पर विरोध प्राप्तहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे घटादिकजडपदा र्थोंकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं करणरूपताहै ॥ तैसे आत्मसाक्षात्कारविषे महावाक्यरूपश्रुतिकूं करणरूपतानहीं है ॥ किंतु आत्माकेआश्रित तथा आत्माकूंविषयकरणेहारा जोअज्ञानरूपआवरणहै ॥ सोअज्ञानरूपआवरण आत्माकेसाक्षात्कारका प्रतिबंधकहै ॥ ताआवरणरूपप्रतिबंधककीनिवृत्ति महावाक्यजन्यवृत्तिकरिकेहोवैहै ॥ ताआवरणकेनिवृत्तहुएतेंअनंतर यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणे स्वप्रकाशरूपकरिके स्फुरणहोवैहै ॥ यातें आत्माकेसाक्षात्कारविषे महावाक्यरूपश्रुतिकूंभी वास्तवतेंकरणरूपतानहीं ॥ किंतु तामहा वाक्यरूपश्रुतिजन्यअंतःकरणकीवृत्ति आवरणरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिकरैहै ॥ यातें इतनीअंशकूंअंगीकारकरिके पूर्वहमनें आत्म साक्षात्कारविषे महावाक्यरूपश्रुतिकूं करणरूपताकहीहै ॥ यातें पूर्वउत्तरवचनोंका विरोधहोवैनहीं ॥ हेमैत्रेयी जेमंदबुद्धिचार्वा कादिक शरीरादिकोंकूंहीं आत्मामानेहैं ॥ तिनचार्वाकादिकोंकेमतविषेभी जभी शरीरादिरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे पूर्वउक्तरीतिसें कोईकरणसिद्धनहींभया ॥ तभी आत्माकूंस्वप्रकाशरूपमानणेहारे जेहमअद्वैतवादीहैं ॥ तिनोंकेमतविषे तास्वप्रकाशआत्माकेसाक्षा

त्कारविषे कोईकरणनहीं है याअर्थविषे क्याकहणाहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ यातैं तेघटादिकपदार्थअना त्मारूपहैं ॥ तैसे देह इंद्रिय प्राण मन इसतैंआदिलेके यहसंपूर्णसंघातभी जडरूपहै ॥ यातैं सोसंघात अनात्मारूपहीहै ॥ सोअनात्मारूप संघात अधिष्ठानआत्माकेसंबंधकूंपाइकेही प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं मिथ्यारूपहै ॥ तामिथ्याजगत्काअधिष्ठानरूपआत्मासर्वभेदतैंरहित अद्वि तीयरूपहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ सोअद्वितीयरूपआत्माही याबुद्धिआदिकसंघातकासाक्षीरूपहै ॥ ऐसे साक्षीरूपस्वप्रकाशआत्माकूं यहअधि कारीपुरुष नेत्रादिककरणोंकरिकै जाणिसकैनहीं ॥ यातैं हेमैत्रेयी ॥ दुःखकेदेणेहारे जेपतिपुत्र धनादिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकापरित्यागक रिकै तूं आपणेहृदयविषे ऐसे स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं निश्चयकर ॥ हेमैत्रेयी ॥ जोतुमनैंपूर्व हमारेसैं मोक्षरूपअमृतकासाधन पूछाथा ॥ सो हमने जातुम्हारेप्रति यहब्रह्मविद्याउपदेशकरीहै ॥ साब्रह्मविद्याही तामोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषे विराजमान जोपरब्रह्महै सोब्रह्म हमाराआत्मारूपहै ॥ याप्रकारका जोआत्माकासाक्षात्कारहै ॥ ताआत्मसाक्षा त्कारतैंविना दूसराकोई मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधनहैंनहीं ॥ किंतु यहआत्मसाक्षात्कारही तामोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ यादेहादिकअनात्मपदार्थोंके अहंममअभिमानकापरित्यागकरिकै जभीतूं याआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरैगी ॥ तभी ताआत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं तूं याशरीरकेपरित्यागतैंअनंतर पुनःमृत्युकूंतथाजन्मकूं कदाचित्भीनहींप्राप्तहोवैगी ॥ यातैं देहादिकसर्व अनात्मपदार्थोंकेअभिमानकापरित्यागकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माविषे तुम चित्तकूंएकाग्रकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार सोयाज्ञव ल्क्यमुनि आपणेमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै पश्चात् तागृहस्थआश्रमकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरता भया ॥हेशिष्य॥ जिसविचारकूंकरताहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकाग्रहणकरताभया॥ताविचारकूं तूं श्रवणकर ॥सत्चित्आनं दस्वरूपआत्मातैंविलक्षण जाअसत्जडदुःखरूपमायाशक्तिहै ॥जामायाशक्तिसत्व रज तम यातीनगुणोंकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसी आत्माकेमाया रूपशक्तिकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि मिथ्यारूपकरिकैदेखताभया ॥ जिसमायारूपशक्तिकूं पूर्वमुनीश्वरभी जगत्केकारणोंकाविचारकरिकैयाप्र

कार निश्चयकरतेभयेहैं ॥ यहआनंदस्वरूपआत्माही याजगत्काप्रधानकारणहै ॥ और यहमायारूपशक्तितो याजगत्का सहकारीकारण है ॥ याप्रकारकाविचारकरिके तेमुनीश्वर तामायारूपशक्तिकूंनिश्चयकरतेभये ॥ तिसीमायारूपशक्तिकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि मिथ्यारूपकरिकेनिश्चयकरताभया ॥ और शीत उष्ण सुख दुःख मान अपमान शत्रु मित्र आपणाशरीर परशरीर धर्मात्मा पापात्मा इसतेंआदिलेके जितनेकअनुकूलप्रतिकूलपदार्थ हैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि समानदृष्टिकरताभया ॥ और रूपादिकविषयोंविषे जानेत्रादिकइंद्रियोंकी प्रवृत्तिहै ॥ ताप्रवृत्तिविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि द्वेषबुद्धि नहींकरताभया ॥ और तिनरूपादिकविषयोंतें जानेत्रादिकइंद्रियोंकी निवृत्तिहै ॥ तानिवृत्तिविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि इच्छानहींकरताभया॥ किंतु विषयोंविषेप्रवृत्ति तथाविषयोंतैंनिवृत्ति यहदोनों नेत्रादिकइंद्रियोंकेहीधर्म हैं ॥ मैंआनंदस्वरूपआत्मातो सर्वदानिर्विकारहूं ॥ याप्रकारकाविचारकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि इंद्रियोंकीप्रवृत्तिविषे तथानिवृत्तिविषे उदासीनहोताभया ॥ तथा शरीर मन वाणीकरिके सर्वप्राणियोंकूंअभयकीप्राप्तिकरताहुआ ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि सूर्यचंद्रमाकीन्याई रागद्वेषादिकविकारोंतेंरहितहोइके यापृथिवीविषे विचरताभया ॥ इतनेंकरिके याज्ञवल्क्यमुनिका वृत्तांतकह्या ॥ अब मैत्रेयीकेवृत्तांतका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य॥ जैसे सोयाज्ञवल्क्यमुनि चतुर्थसंन्यासआश्रमकूंधारणकरिके यालोकविषे विचरताभया॥तैसे साब्रह्मवेत्तामैत्रेयीभी चतुर्थसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिके यालोकविषे विचरतीभई ॥ परंतु याकेविषेइतनीविशेषताहै ॥ याज्ञवल्क्यमुनितो लिंगसंन्यासकूंधारण करताभया ॥ और मैत्रेयी अलिंगसंन्यासकूंधारणकरतीभई ॥ तहाँ दंडग्रहणपूर्वक जोसंन्यासहै ॥ ताकानाम लिंगसंन्यासहै ॥ और दंडग्रहणतैंविना जोसंन्यासहै ॥ ताकानाम अलिंगसंन्यासहै ॥ इतनीविशेषताकूंछोडिके दूसरेभिक्षाअटनादिकबाह्यधर्म तथा शम दमादिकअंतरधर्म लिंगसंन्यासियोंके तथा अलिंगसंन्यासियोंके समानहीहोवैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ याज्ञवल्क्यमुनिकीन्याई सामैत्रेयीभीदंडग्रहणपूर्वक लिंगसंन्यासकूं किसवासते नहींधारणकरतीभई ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ दंडग्रहणपूर्वकजोलिंगसंन्यासहै ॥ ताकेविषे एकब्राह्मणकाही अधिकारहै ॥ ब्राह्मणतैंभिन्न क्षत्रियका तथावैश्यका तालिंगसंन्यासविषे अधिकारनहीं ॥

जभी क्षत्रियवैश्यकाभी तालिंगसंन्यासविषे अधिकारनहींभया ॥ तभी तालिंगसंन्यासविषे स्त्रीकाअधिकार किसप्रकारहोवैगा ॥
यहवार्ता स्मृतिविषेभीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ मुखजानामयंधर्मो यद्विष्णोर्लिंगधारणं ॥ बाहुजातोरुजातानां नायंधर्मो विधीयते ॥
अर्थयह ॥ परमेश्वरकेमुखतैंउत्पन्नभयेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनब्राह्मणोंकाही दंडग्रहणपूर्वकलिंगसंन्यासविषे अधिकारहै ॥ और परमेश्वरके
बाहुतैंउत्पन्नभयेजेक्षत्रियहैं ॥ तथा परमेश्वरके उरुस्थानतैंउत्पन्नभयेजेवैश्यहैं ॥ तिनदोनोंका ता लिंगसंन्यासविषे अधिकार नहीं ॥ १ ॥
हेशिष्य ॥ पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं जिनक्षत्रियपुरुषोंकूं तथावैश्यपुरुषोंकूं तथा त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं यासंसारतैं उत्कटवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥
तो तेक्षत्रिय वैश्य स्त्रियां अलिंगसंन्यासकूंधारणकरिके जेलिंगसंन्यासियोंके अहिंसा ब्रह्मचर्य सत्य इत्यादिकधर्म शास्त्रविषेकथनकरेहैं ॥
तिनसंपूर्णधर्मोंकूं संपादनकरैं ॥ अहिंसादिकधर्मोंकेकरणेविषेसर्वप्राणियोंकाअधिकारहै ॥ अब चतुष्टयसाधनसंपन्नअधिकारियोंकेप्रति
ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतैं गुरुशिष्यभावकीव्यवस्थाकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके
जेपुरुष आत्मसाक्षात्कारकूं नहींप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं महान्हानिकीप्राप्ति श्रुतिकहैहै ॥ तहांश्रुति ॥ नचेदवेदिर्महतिविनष्टि
येतद्विदुरमृतास्तेभवंति ॥ अर्थयह ॥ याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके जेपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूंनहींजाणते॥
तिनअज्ञानीपुरुषोंकूं जन्ममरणादिकअनेकदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जेपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूंजाणेहैं तेपुरुष मोक्षरू
पअमृतकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ १ ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषों नैं आत्मसाक्षात्कारकूंअवश्यसंपादनकरणा ॥ और स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्ते
पियांतिपरांगतिं ॥ अर्थयह ॥ स्त्रियां तथावैश्य तथाशूद्र यहसंपूर्ण मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ १ ॥ याभगवत्गीताकेवचनतैं स्त्री वैश्य शूद्र
यातीनोंकूंभी मोक्षविषे अधिकारसिद्धहोवैहै ॥ और सोमोक्ष आत्मज्ञानतैंविनाहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः नान्यःपंथा
विद्यतेअयनाय ॥ अर्थयह ॥ आत्मज्ञानतैंविना मुक्तिहोवैनहीं ॥ और आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्ग मोक्षकीप्राप्तिवासतैहैनहीं ॥
किंतु एकआत्मज्ञानहीं मोक्षकेप्राप्तिकामार्गहै॥ १ ॥ और सोआत्माकाज्ञान श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेउपदेशतैंहींप्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥

आचार्यवान्पुरुषोवेद ॥ अर्थयह ॥ श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठआचार्यवालापुरुषही आत्माकूंजाणेहै ॥ १ ॥ यातैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिव र्णोंकेपुरुषों नैं तथा तिनचारिवर्णोंवालीस्त्रियोंनैं श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं ब्रह्मविद्याकाश्रवणकरिकै आत्मज्ञानकूं अवश्यसंपादनक रणा ॥ तहाँ किसवर्णवालेअधिकारीनैं किसवर्णवालेविद्वान्कूं गुरुकरणा ॥ याप्रकारकीव्यवस्थाकूं तूंश्रवणकर ॥ संपूर्णवर्णोंविषे ब्राह्मणउत्त महै ॥ यातैं सोब्रह्मवेत्ताब्राह्मण चतुष्टयसाधनसंपन्न अधिकारीब्राह्मणोंकूं तथाक्षत्रियोंकूं तथावैश्योंकूं तथात्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूप वेदकेवचनोंकाउपदेशकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै॥ काहेतैं जैसे शास्त्रविषे शूद्रोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंकेश्रवणकरणेका निषेध कथनकऱ्याहै ॥ तैसे अधिकारीक्षत्रियवैश्योंकूं तथात्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंकेश्रवणकरणेकानिषेध किसीशास्त्रविषे कथन कऱ्यानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ श्रुतिविषेस्त्रियोंकूं वेदकेअध्ययनकरणेका निषेध कथनकराहै ॥ तहांश्रुति ॥ स्त्रीशूद्रौनाधीयाताम् ॥ अर्थयह ॥ स्त्री शूद्र यादोनोंकूं वेदकाअध्ययन नहींकरावे ॥ याश्रुतिवचनका विरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य जिसवेदकेवचनकूं गुरु उच्चारणकरै ॥ तिसीवेदकेवचनकूं शिष्यभी उच्चारणकरै याकानाम अध्ययनहै ॥ याप्रकारकेवेदअध्ययनका यद्यपि त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं निषेधहै ॥ तथापि ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदवचनोंकेश्रवणकरणेका त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं निषेधनहीं ॥ जोकदाचित् त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं वेदवच नोंकेश्रवणकाभी निषेधहोवै तौ तावेदविषेही मैत्रेयीगार्गीआदिकस्त्रियोंकेप्रति जोब्रह्मविद्याकेउपदेशकाप्रकार कथनकऱ्याहै सोसंपूर्ण असंगतहोवैगा ॥ यातैं मुमुक्षुत्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंके श्रवणकरणेकाअधिकारहै ॥ और क्षत्रियपुरुषोंकूं तथा वैश्यपुरुषोंकूंतौ वेदकेअध्ययनकरणेविषेभी अधिकारहै ॥ यातैं सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष अधिकारीक्षत्रियवैश्योंकूं तथात्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंकेउपदेशकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै ॥ परंतु सोविद्वान्पुरुष तिनक्षत्रियवैश्योंकूं तथा त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं दंडग्रहणपूर्वकालिंगसन्यास कदाचित् नहींकरावै ॥ और जोकदाचित् तिनक्षत्रियवैश्यपुरुषोंकूं तथा त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं यासंसारतैं उत्कट वैराग्यहोवै तौ सोविद्वान्पुरुष तिनक्षत्रियवैश्यस्त्रीजनोंकूं दंडकेग्रहणतैंविना अलिंगसन्यास करावै ॥ काहेतैं जैसे शास्त्रविषे यद्यपि शूद्रोंकूं

यज्ञादिकविशेषकर्मोंकेकरणेकानिषेधकथनकऱ्याहै॥तथापि तायज्ञविषे ब्राह्मणादिकअधिकारियोंकरिके करणेयोग्य जेदान तप सत्य नम स्कारादिक शुभकर्म हैं ॥ तिन दानादिकशुभकर्मोंकेकरणेविषे शूद्रोंकूंभी अधिकार शास्त्र विधानकरैहै ॥ तैसे दंडग्रहणपूर्वकलिंगसंन्यास विषे यद्यपि केवलब्राह्मणकूंहीं अधिकारहै ॥ तथापि तिनलिंगसंन्यासियोंकरिके करणेयोग्य जे अहिंसा ब्रह्मचर्य सत्यादिकधर्म हैं ॥ तिन अहिंसादिकधर्मपूर्वक अलिंगसंन्यासकेग्रहणकरणेविषे क्षत्रियवैश्यपुरुषोंकूं तथात्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं दोषकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा तिनोंकूं महान् पुण्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे क्षत्रिय वैश्य त्रैवर्णिकस्त्रियां यहसंपूर्ण जो कदाचित् ब्रह्मविद्याविषेकुशलभीहोवैं ॥ तौभी ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकेविद्यमानहुए तेक्षत्रियादिक गुरुरूपहोइकै दूसरे अधिकारीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरैं ॥ किंतु ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणहीं तिन अधिकारियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै ॥ और जभीकोईब्रह्मवेत्ताब्राह्मण नहींविद्यमानहोवे ॥ तभी सोब्रह्मवेत्ताक्षत्रिय पुरुष गुरुरूपहोइकै आपणेसमानजातिवालेक्षत्रियपुरुषोंकूं तथा क्षत्रियाणीस्त्रियोंकूं तथावैश्यपुरुषोंकूं तथावैश्याणीस्त्रियोंकूं ब्रह्मविद्याका उपदेशकरै ॥ परंतु सोक्षत्रिय गुरुरूपहोइकै ब्राह्मणोंकेप्रति तथाब्राह्मणीस्त्रियोंकेप्रतिब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरै ॥ इसीप्रकार ब्रह्मवेत्ता वैश्यपुरुषभी ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणके तथाब्रह्मवेत्ताक्षत्रियकेअभावहुए आपणेसमानजातिवालेवैश्योंकेप्रति तथावैश्याणीस्त्रियोंकेप्रति ब्रह्मविद्या काउपदेशकरै ॥ परंतु सोब्रह्मवेत्तावैश्यगुरुरूपहोइकै आपणेतैंउत्तमवर्णवालेक्षत्रियोंकेप्रति तथाब्राह्मणोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहीं करै ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकीजेस्त्रियां हैं ॥ तिनस्त्रियोंकूं शास्त्रविषे वेदकेअध्ययनकानिषेधकऱ्याहै ॥ यातैं तेत्रैवर्णिक स्त्रियांभी गुरुरूपहोइकै त्रैवर्णिकपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरैं ॥ और जभीकोई त्रैवर्णिकपुरुष ब्रह्मविद्यावालानहींहोवे ॥तभी तेत्रैवर्णिकस्त्रियांभी गुरुरूपहोइकै ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैं ॥ परंतु तेत्रैवर्णिकस्त्रियां आपनेसमानजातिवालेपुरुषोंकेप्रति तथा आपणेतैं निकृष्टजातिवालेपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैं ॥ आपणेतैंउत्तमजातिवालेपुरुषोंकेप्रति तेस्त्रियां ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरैं ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंवालेपुरुषोंकूंभी जभी आपणेतैंउत्तमजातिवालेगुरुकीतथा आपणेसमानजातिवालेगुरुकीनहीं

प्राप्तिहोवै ॥ तभी तेब्राह्मणादिकपुरुषभी आपणेतैंनीचजातिवालेब्रह्मवेत्तागुरुतैं शास्त्रकेमर्यादाकूंजाणिकरिके वेदकेवचनोंतैं आपही आत्मसाक्षात्कारकूं संपादनकरैं ॥ और जोब्राह्मण कुलीनहोवै ॥ तथा बाल्यअवस्थाविषै माताकरिकेशिक्षितहोवै ॥ तिसतैंअनंतर पिताकरिकेशिक्षितहोवै ॥ तिसतैंअनंतर आचार्यकरिकेशिक्षितहोवै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकूंही ॥ ब्राह्मणीस्त्रीनैं गुरुकरणा ॥ तथा अन्यक्षत्रियादिकोंनैंभी ऐसेब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकूंही गुरुकरणा ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकीस्त्रियोंकातो आपणापतिहीगुरुहोवै है ॥ जोकदाचित् सोपति ब्रह्मविद्यावालानहींहोवै ॥ तौतिनस्त्रीयोंनैं आपणेतैंउत्तमजातिवाले किसीब्रह्मवेत्तापुरुषकूंगुरुकरणा ॥ और जोआपणेतैंउत्तमजातिवाला कोईब्रह्मवेत्तापुरुषनहींहोवै ॥ तौतिनस्त्रियोंनैं आपणेसमानजातिवाले किसीब्रह्मवेत्तापुरुषकूंगुरुकरणा ॥ और ब्राह्मणोंकीअपेक्षाकरिके अधमजातिवाले जेक्षत्रियवैश्यहैं ॥ तथा क्षत्रियवैश्योंकीअपेक्षाकरिकेभी अधमजातिवालेजेशूद्रहैं ॥ तेशूद्र किसीअपदाकालविषैभी ब्राह्मणादिकउत्तमवर्णोंके गुरुहोवैंनहीं ॥ और शूद्रपुरुषोंकूं तथा शूद्रस्त्रियों तथा अन्यकिसीसंकरजातिवालेपुरुषोंकूं पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं जोआत्मसाक्षात्कारकोइच्छाहोवै ॥ तौयहविद्वान्पुरुष तिनशूद्रादिकोंकेप्रतिभी ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै ॥ परंतु यहविद्वान्पुरुष तिनशूद्रादिकोंकेप्रति साक्षात् उपनिषद्रूपवेदकाउपदेशनहींकरै ॥ किंतु उपनिषदोंकेअर्थकानिरूपणकरणेहारे जेभागवतादिकपुराणहैं तथा पंचदशीआदिकप्रकरणग्रंथहैं ॥ तिनोंकाउपदेशकरिके सोविद्वान्पुरुष मुमुक्षुशूद्रादिकोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै ॥ और जभीकोई उत्तमजातिवालाब्रह्मवेत्तागुरु नहींप्राप्तहोवै ॥ और अधमजातिवालाकोईब्रह्मवेत्तागुरुप्राप्तहोवै ॥ तभी उत्तमजातिवालेब्राह्मणादिकोंनैंताअधमजातिवालेक्षत्रियादिकोंतैं धनादिकपदार्थदेके ब्रह्मविद्यालेणी ॥ और जोकदाचित् तेअधमजातिवालेगुरु धनादिकपदार्थोंकीइच्छातैंरहित निष्कामहोवैं ॥ तो ताअधमजातिवालेगुरुवोंकेताईं तिनउत्तमजातिवालेशिष्योंनैंकोईआपणीविद्यादेके ब्रह्मविद्यालेणी ॥ और सोअधमजातिवालापुरुष जोकदाचित् ताउत्तमजातिवालेपुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्यादेवै ॥ तौभी ताउत्तमजातिवालेशिष्यतैं सोअधमजातिवालागुरु पादसंवाहनादिकनिकृष्टसेवानहींकरावै ॥ हेशिष्य ॥ वेदविषै अश्वपति

नामा क्षत्रियराजानें उद्दालकादिकब्राह्मणोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकर्‍याहै ॥ तथा अजातशत्रुनामा क्षत्रियराजानें बालाकी ब्राह्मणकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकर्‍याहै ॥ याप्रकारकी वेदप्रतिपादितकथावोंकूंदेखिके धर्मशास्त्रकेवक्तामनुआदिकऋषियोंनें क्षत्रियादिकअधमवर्णोंतें ब्राह्मणादिकउत्तमवर्णोंकूं ब्रह्मविद्यालेणेकाप्रकार कथनकर्‍याहै ॥ परंतु यहसंपूर्णप्रकार तबपर्यंतहोवेहै ॥ जबपर्यंत किसी ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकाअभावहोवेहै ॥ और जोब्रह्मवेत्ताब्राह्मणगुरुकालाभहोवे ॥ तो क्षत्रियादिकोंतें ब्राह्मणनेंब्रह्मविद्याकाअध्ययननहींकरणा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकी जोशास्त्रविषेमर्यादाकथनकरीहै ॥ तासंपूर्णमर्यादाकूंजाणतीहुईसाब्रह्मवेत्तामैत्रेयी दंडग्रहणपूर्वक लिंगसंन्यासकूं नहींधारणकरतीभई ॥ किंतु ब्रह्मचर्यादिकसाधनपूर्वक अलिंगसंन्यासकूंधारनकरिके सामैत्रेयी याज्ञवल्क्यमुनिकीन्याई याळोकविषेविचरतीभई ॥ तहां तामैत्रेयीतें याज्ञवल्क्यमुनिविषे एकदंडग्रहणमात्रकीविशेषताहोतीभई ॥ तादंडग्रहणरूपविशेषताकूंछोडिके दूसरेशमदमादिकधर्म जैसेयाज्ञवल्क्यमुनिविषेहोतेभये ॥ तैसेहीधर्म मैत्रेयीविषेभीहोतेभये ॥ हेशिष्य ॥ याज्ञवल्क्यमुनिनें आपणीमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति जाब्रह्मविद्याउपदेशकरीथी ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनें तुमारेप्रति कथनकरीहै ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवे ॥ सोहमारेप्रति तुम कथनकरो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतात्मपुराणे बृहदारण्यकयाज्ञवल्क्यमैत्रेयीसंवादोनाम सप्तमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ७ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
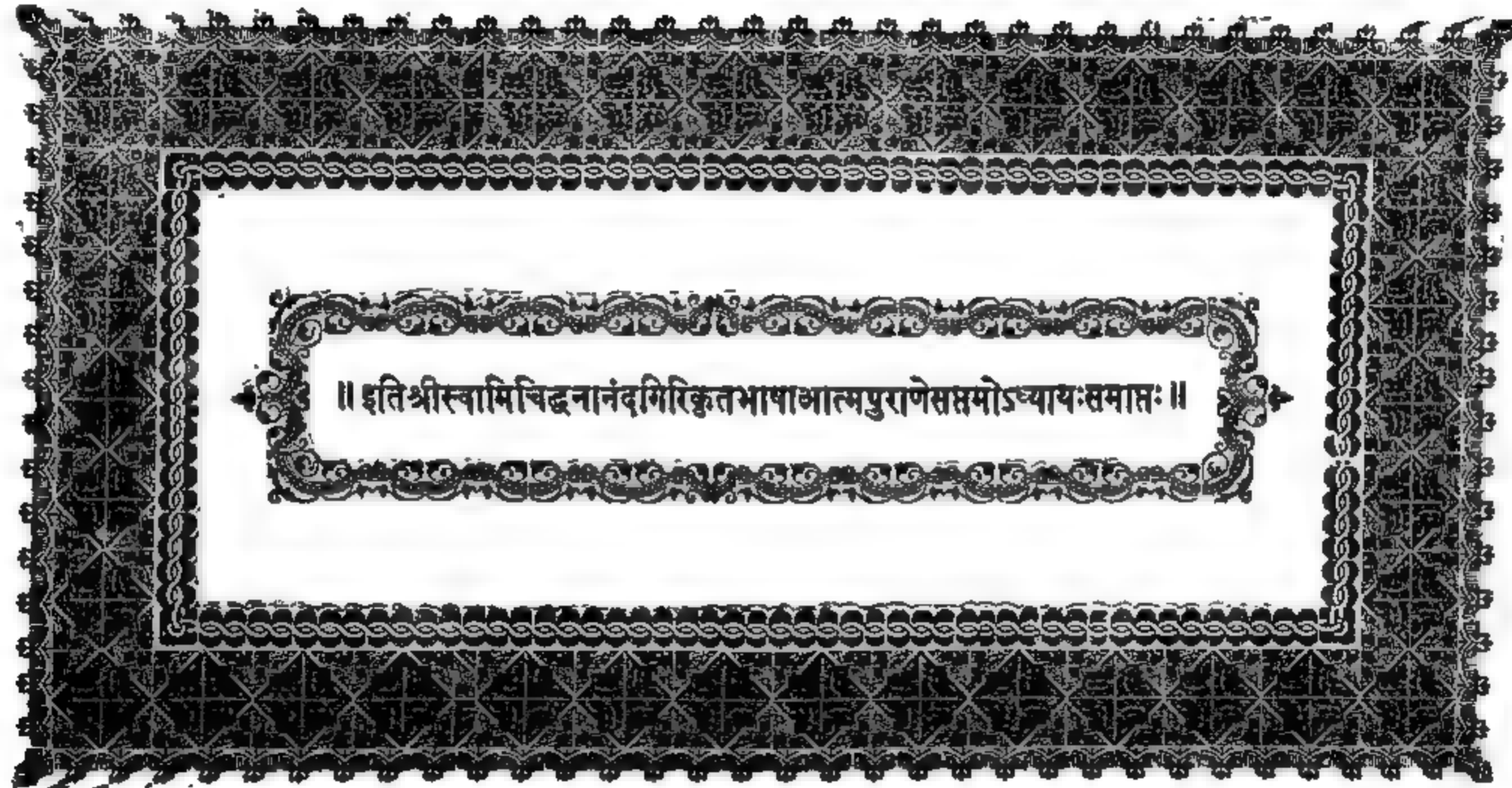
॥ इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेसप्तमोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे अष्टमाऽध्यायप्रारंभः ॥
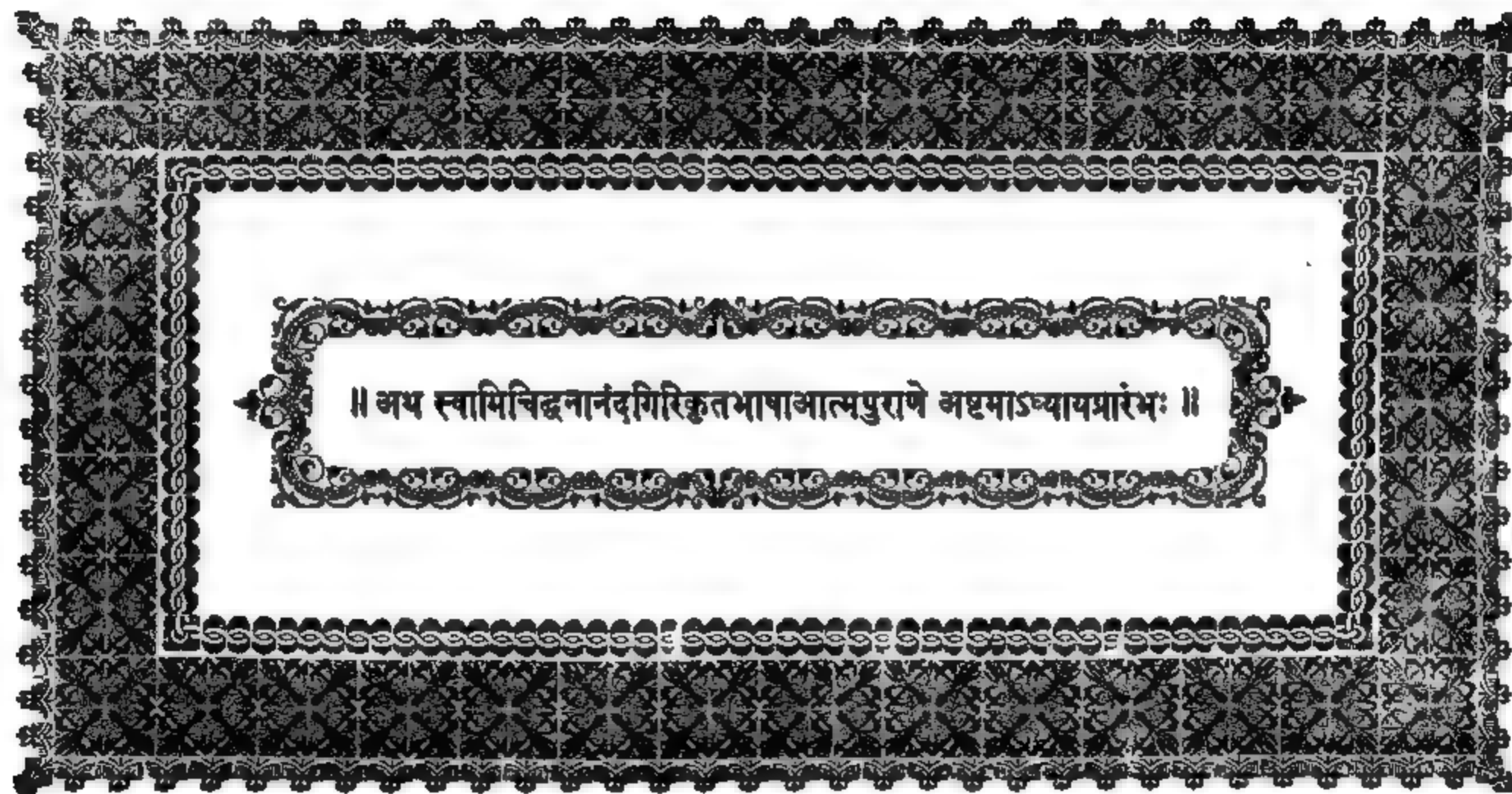
ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ अष्टमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब अष्टम अध्यायविषे तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरेंहैं ॥ तहां पूर्वअध्यायोंविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं कथनकरीजाब्रह्मविद्या ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिके परमआश्चर्यकूंप्राप्तहुआ सोशिष्य आपणेगुरुकेप्रति पुनःयाप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥शिष्यउवाच॥ हेभगवन् याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे ऋगवेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ आपनैं निरूपणकऱ्या॥ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषि योंके तथा वामदेवादिकअधिकारीप्रजाके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं निरूपणकरी॥और या आत्मपुराणके दूसरेअध्यायविषे तथातीसरेअध्यायविषे तिसीऋग्वेदकेकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रकेतथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरी॥और तीसरे अध्यायविषे राजाअजातशत्रुकेतथाबालाकी ब्राह्मणकेसम्वादकरिके नानाप्रकारकी ब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरी॥और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषेयजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्का अर्थ आपने निरूपणकऱ्या ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषे एकब्रह्मवंश दोपुरुषवंश यातीनवंशोंकेऋषियोंका परस्पर भेद तथा अभेद आपनैं निरूपणकऱ्या॥और दध्यङ्ङ अथर्वणऋषिके तथाअश्विनीकुमारोंके तथा देवराजइंद्रके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरी॥तथा अश्विनीकुमारोंके प्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकरिके तादध्यङ्ङ्मुनिकूं मस्तककाछेदनरूपक्लेशकीप्राप्ति आपनैं कथनकरी ॥ और याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाआश्वलादिकऋषियोंके परस्परसंवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं निरूपणकरी॥तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिके शाकल्यब्राह्मणकामरण आपनैं कथनकऱ्या ॥ और याआत्मपुराणके षष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथन करी ॥ और याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथामैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं

कथनकरो ॥ हेभगवन् ॥ तासप्तमअध्यायकेअंतविषे आपनें यहवार्ता कथनकरीथी ॥ पूर्व शास्त्रवेत्तामुनीश्वर जगत्केकारणकाविचार करिके जिसअविद्यारूपशक्तिकूंदेखतेभयेहैं ॥ तिसीअविद्यारूपशक्तिकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूंधारणकरिके मिथ्यारूपक रिकेदेखताभया ॥ हेभगवन् ॥ यहवार्त्ता सप्तमअध्यायकेअंतविषे आपनें कथनकरीथी ॥ याकेविषे हमारेकूं ऐसीजिज्ञासाहोवैहै ॥ तिनमुनीश्वरोंका किसप्रकारकाविचार होताभया ॥ तथा तिनमुनीश्वरोंकी किसप्रकारकीसभा होतीभई ॥ तथा तेमुनीश्वर किसप्रका रका आपणाआपणाअभिप्राय प्रगटकरतेभये ॥ तथा तेमुनीश्वर जगत्केकारणकाविचारकरिके ब्रह्मकूंहीं जगत्काकारणरूप निश्चय करतेभये ॥ अथवा किसीअन्यपदार्थकूं जगत्काकारणरूप ॥ निश्चयकरतेभये ॥ तथा तेसंपूर्णमुनीश्वर किससिद्धांतकूं निश्चयकरतेभये हेभगवन् ॥ यहसंपूर्णवार्ता आप कृपाकरिके हमारेप्रति कथनकरो ॥ हमारेतैंगुह्यराखणेकी कोईवार्ता आपकूंहैनहीं ॥ इसप्रकार जभी शिष्यनें गुरुकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोश्रीगुरु कृपाकरिके ताशिष्यकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य तपकरिके नष्टहोइगयेहैंपापकर्मजिसके ऐसा श्वेताश्वतरनामाऋषिपूर्वहोताभया ॥ औरएककालविषे ताश्वेताश्वतरनामाऋषिकेआश्रम विषे बहुतमहात्मासंन्यासी एकठेहोइके आवतेभये ॥ तहां श्वेताश्वतरनामाऋषिकूं देखिके तेमहात्मा संन्यासी ताश्वेताश्वतरनामाऋषि केप्रति याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हेवेदकोशाखाकेप्रवर्तकरणेहारे श्वेताश्वतरमुनि तुमारेकल्याणहोवैं ॥ हेश्वेताश्वतरमुनि हमअतिथि संन्यासी तुमारेआश्रमविषेआयेहैं ॥ यातें आप ब्रह्मविद्यारूपभिक्षा हमसंन्यासियोंकेताईदेवो ॥ हेभगवन् ॥ जोब्रह्मविद्या आपकूं ब्रह्माके उपदेशतें प्राप्तभई है ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेवासते हमसर्वसंन्यासी आपकेआश्रमविषेआयेहैं ॥ यातें आप कृपाकरिके सोब्रह्मविद्या हमा रेप्रति श्रवणकरावो ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरिकेही हमारेसंशयकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ हेभगवन् ॥ शास्त्रोंके भिन्नभिन्नसंप्रदायोंकूं अंगीका रकरिके हमसंपूर्णसंन्यासी जगत्केकारणोंकूं भिन्नभिन्न अंगीकारकरतेहैं॥याकारणतें हमसंन्यासियोंका जगत्केकारणविषे बहुतकालपर्यंत विवादहुआहै ॥ परंतु यहपदार्थही सर्वजगत्काकारणहै याप्रकारकानिश्चय अबपर्यंत हमसंन्यासियोंकूंहुआनहीं ॥ याकारणतेंहमसंपूर्णसं

न्यासियोंनें याजगत्के कारणकानिश्चयकरणेवासते परस्पर याप्रकारकासंकेतकऱ्याहे ॥ यालोकविषे यजुर्वेदकेशाखाकाप्रवर्त्तक जोश्वेताश्वतरनामाऋषिहे सोऋषि पक्षपाततेंरहितहे ॥ तथा ब्रह्माकीन्याई सर्वशास्त्रोंकेजानणेहाराहे ॥ और शत्रुविषे तथाआपणेपुत्रविषे तथा आपणेशरीरविषे जिसकीसमानबुद्धिह ॥ ऐसा श्वेताश्वतरनामामुनि याजगत्का जोकारणकहे सोजगत्काकारण हमसर्वसंन्यासियोंनें अंगीकारकरणा ॥ हेभगवन् ॥ याप्रकारका परस्पर संकेतकरिके हमसंपूर्णसंन्यासो आपकेसमोपआयेहें ॥ यातें आप ब्रह्मविद्याका उपदेशकरिके हमारेसंशयकीनिवृत्तिकरो ॥ हेशिष्य ॥ तिनमहात्मासंन्यासियोंनें जभी याप्रकारकाप्रश्न श्वेताश्वतरनामाऋषिकेप्रति कऱ्या तभी सोश्वेताश्वतरमुनि तिनसंन्यासियोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्वेताश्वतरमुनिरुवाच ॥ हेसंन्यासियो ॥ जेसे इदानोंकालविषे जगतकेकारणकाविचारकरणेवासतै तुमसंन्यासो एकठेहुएहो ॥ तैंसेपूर्वभी किसीकालविषे तथाकिसोदेशविषे किसीनिमित्त कोपाइके संपूर्णवेदवेत्ताब्राह्मण एकठेहोतेभये ॥ केसेथे तेब्राह्मण॥वेदोंविषे तथावेदकेषट्अंगोंविषे अत्यंतकुशलथे ॥ तथा शास्त्रोंकअर्थकी कल्पनाकरणेविषे जिनोंकीबुद्धि अत्यंतकुशलथी ॥ तिनब्राह्मणोंविषेभीकोईब्राह्मणतो ब्रह्मविद्याविषेकुशलथे ॥ और कोईकब्राह्मण अन्य विद्यावोंविषेकुशलथे ॥ याप्रकारके संपूर्णब्राह्मण एकठेहोतेभये ॥ तिनब्राह्मणोंविषेभी जोब्रह्मवेत्ताब्राह्मणथे ॥ तेब्रह्मवेत्ताब्राह्मण सर्वअज्ञानीजीवोंकेउद्धारकरणेवासतें तिनसर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेब्राह्मणो वेदवेदांगविद्याविषेकुशल तथालोकोंकेअनुग्रहकरणेहारे जेतुमविद्वान्ब्राह्मणहो ॥ तिनतुमविद्वान् ब्राह्मणोंकायहसमाज जिसप्रकार लोकोंकेउपकारवासतेहोवे ॥ ऐसाकोईविचार तुमकरो ॥ सोअज्ञानीलोकोंऊपरउपकार तभीसिद्धहोवेगा ॥ जभी तुमसंपूर्णब्राह्मण ग्लानिकेकरणेहारीलौकिककथावोंकापरित्याग करिके वेदकेवचनोंकाविचारकरोगे ॥ वेदवचनोंकेविचारतेंविना अज्ञानोजीवोंकाकल्याणनहींहोवेगा ॥ यातेंहेब्राह्मणो ॥ जोतुमारेकूं इसलोकोंकेउपकारकरणेविषेप्रोतिहे तोसंपूर्णब्राह्मण लौकिककथावोंकापरित्यागकरिके याजगत्केकारणकाविचारकरो ॥ हेसंन्यासियो ॥ याप्रकारकावचन जभी तिनब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणोंनें तासभावासी सर्वब्राह्मणोंकेप्रतिकह्या ॥ तभीतेसंपूर्णब्राह्मण

तिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेवचनकूंश्रवणकरिके बहुतप्रसन्नहोतेभये ॥ और तेसंपूर्णसभावासीब्राह्मण याजगत्केकारणकाश्रवणकरणेवासते
तिनब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणो ॥ याजगत्काजोकारण आपनें निश्चयकऱ्याहोवे ॥
सोकारण आप कृपाकरिके हमसर्वब्राह्मणोंकेप्रति कथनकरो हमसंपूर्णब्राह्मण ताजगत्केकारणकाश्रवणकरैंगे ॥ हेसंन्यासियो ॥ याप्रका
रकावचन जभी तिनसर्वब्राह्मणोंनें कह्या ॥ तभी तेब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मण तिनसर्वब्राह्मणोंकूं तर्कविषेकुशलदेखिके नानाप्रकारकोयुक्तियोंक
रिके तिनब्राह्मणोंकेप्रति जगत्काकारण कहतेभये ॥ हेसर्वब्राह्मणो ॥ जोतुमकहो यहजगत् किसीकारणतैंविनाहींउत्पन्नहोवैहै सोयहतुमा
राकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे जैसे पटादिककार्य तंतुआदिककारणोंतैंविना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे यहकार्यरूपजगत्भी
किसीकारणतैंविना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणों ॥ जोतुम कारणतैंविनाहीं कार्यकोउत्पत्ति अंगीकारकरो ॥ तो तंतुरूपकारणतैं
विनाहीं पटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोणोचाहिये ॥ किंवा ॥ कारणतैंविनाहीं जोकदाचित् कार्यकीउत्पत्तिहोतीहोवे ॥ तो पुत्ररूपकार्यकीप्रा
प्तिवासतै स्त्रीका पुरुषकेसमीप गमन नहींहोणाचाहिये ॥ तथा पुरुषका स्त्रीकेसमीप गमन नहींहोणाचाहिये ॥ तथा धनकीप्राप्तिवासतै
निर्धनपुरुषकूं धनीपुरुषकीसेवा नहींकरीचाहिये ॥ तथा क्षुधापिपासाकीनिवृत्ति करणेवासते याजीवोंका अन्नजलकीप्राप्तिवासतै भ्रमण
नहींहोणाचाहिये ॥ तथा अन्नजलकेभक्षणतैंविनाहीं ॥ याजीवोंके क्षुधातृषाकीनिवृत्तिहोणीचाहिये ॥ तथा शीतआतपकीनिवृत्तिवासतै
किसीपुरुषको वस्त्रगृहादिकोंकेसंपादनविषे प्रवृत्तिनहींहोणीचाहिये ॥ इसतैंआदिलेके सर्वव्यवहारोंकाअभावहोवैगा ॥ जोकारणतैंविनाहीं
कार्यकीउत्पत्तिअंगीकारकरोगे ॥ यातैं कारणतैंविना किसीभीकार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैं याजगत्रूपकार्यकाभी कोईकारण
अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ अब जेबहिर्मुखवादी कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकेअभावकूंहीं कारणमानें हैं ॥ तिनोंकेमतकाखंडनकरें हैं ॥
हेब्राह्मणो॥जेबहिर्मुखवादी बीजादिककारणोंके अभावकूंहीं अंकुरादिककार्योंकेप्रति कारणमानें हैं ॥ तिनवादियोंकेमतविषे यहपूर्वउक्तसर्व
व्यवहारोंकेअभावकीप्राप्तिरूपमहान्दूषण प्राप्तहोवैहै॥यातैं तिनवादियोंकामत अत्यंतविरुद्धहै॥किंवा ॥जेवादी कारणकेअभावकूंहीं कारण

मानें हैं तिनवादियों सैं यहपूछाचाहिये ॥ कार्यकीउत्पत्तिविषे जिसकारणकेअभावकूं तुमनेंकारणमान्याहै सोकारणकाअभाव अत्यंताभाव रूपहै अथवा प्रागभावरूपहै अथवा प्रध्वंसाभावरूपहै अथवा अन्योन्याभावरूपहै ॥ तहाँ कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकाअत्यंताभाव कारणहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें यहजगत् विनाहीकारणतैंउत्पन्नहोवैहै याप्रकारकीप्रतिज्ञा तावादीनें करीहै ॥ ताआपणीप्रतिज्ञाकेसिद्धकरणेवासते तावादीनें कारणकेअभावकूं जगत्काकारणमान्याहै ॥ सोकारणकेअभावकूं जभी वादीनें जगत्काकारण अंगीकारकऱ्या ॥ तभी विनाहीकारणतें यहजगत् उत्पन्नहोवैहै यहवादीकी प्रतिज्ञा मिथ्याहोवैगी ॥ किंवा ॥ जोकारणका अत्यंताभाव कार्यकीउत्पत्तिविषे हेतुहोवे ॥ तो कारणकाअत्यंताभाव सर्वत्रसुलभहै ॥ यातें सर्वत्र ताकार्यकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और सर्वत्र सर्वकार्योंकीउत्पत्ति देखणेमेंआवतीनहीं ॥ यातें सर्वत्र कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकेअत्यंताभावकूं कारणरूपतासंभवेनहीं ॥ इसप्रकार कारणतैंविनाहीं यहजगत्रूपकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ याप्रतिज्ञाकी हानिरूपदोष आगेप्रागभावादिकोंविषेभीजानिलेणा और जगत्रूपकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकाप्रागभाव कारणहै यहदूसरा पक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवेनहीं ॥ काहेतें जोवादी प्रागभावतैंही कार्यकीउत्पत्ति अंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जिसकालविषे घटादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिसकाल विषे सोप्रागभाव नाशहोइजावैहै ॥ अथवा ताकालविषे सोप्रागभाव विद्यमानहोवैहै ॥ तहाँ घटादिकरूपकार्यकीउत्पत्तिकालविषे सोप्राग भाव नाशहोइजावैहै यहप्रथमपक्षजोवादीअंगीकारकरे ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये सोप्रागभाव घटादिककार्योंकोउत्पत्तितैंपूर्व नाश होवैहै ॥ अथवा घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभाव नाशहोवैहै ॥ तहाँ घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्व सोप्रागभाव नाशहो वैहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें जैसे यालोकविषे घटरूपकार्यकीउत्पत्तितैंपूर्व नाशकूंप्राप्तहुआकुलाल ताघटकाकारणहोवैनहीं ॥ तैसे घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्वही नाशकूंप्राप्तहुआ सोप्रागभाव तिनघटादिकोंकीउत्पत्तिविषे कारण होइसकेनहीं॥जोकदाचित् पूर्वनष्टहुए ताप्रागभावतैंघटादिककार्योंकीउत्पत्ति अंगीकारकरौगे तो पूर्वनष्टहुएकुलालतैंभी घटकीउत्पत्तिहोणी

उत्पत्तिकिसवासतेनहींहोती ॥ इसकालविषे तंतुआदिककारणोंतैंविना पटादिककार्योंकोउत्पत्तिनहींहोती ॥ और आगे प्रागभावरूप कारणतैंविना जगत्‌रूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैगी ॥ याअर्थकोसिद्धिकरणेवासते वादीनैंकोईयुक्तिकहीचाहिये ॥ सोयाअर्थकेसिद्धकरणे हारी कोईयुक्तिहैनहीं ॥ यातैं ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैंअनंतर यहजगत्‌रूपकार्य उत्पन्नहोवैगा ॥ यहवादीकाकहणा अत्यंतविरुद्ध है ॥ और ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैंअनंतर सोकार्यरूपजगत नहींउत्पन्नहोवैगा ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवै नहीं ॥ काहेतें ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैंअनंतर जोकदाचित् यहजगत्‌रूपकार्य नहींउत्पन्नहोताहोवे तो श्रवणादिकसाधनोंतैंविनाहीं जीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं मोक्षकीप्राप्तिवासते नानाप्रकारकेब्रह्मचर्यादिकसाधनकरणेनिष्फलहोवैंगे ॥ किंवा ॥ ताप्रागभावरूप कारणकेनाशतैंअनंतर जोकदाचित् पुनःसंसारकीउत्पत्तिनहींहोतीहोवे तो कितनेंवादियोंकेप्रति अनादिरूपकरिके तथा अनंतरूपक रिके प्रसिद्धजोयहजगत्‌है ॥ ताजगत्‌विषे सांतरूपतासिद्धहोवैगी ॥ सांतरूपताकेसिद्धहुए ताजगत्‌विषे सादिपणाभी अवश्यसिद्धहोवै गा ॥ काहेतें यालोकविषे जोजोपदार्थ नाशरूपअंतवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ उत्पत्तिवालाभीहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थनाश वालेहैं ॥ यातैं तेघटादिकपदार्थ उत्पत्तिवालेभीहैं ॥ और जोवादी याजगत्‌कूंउत्पत्तिवाला तथानाशवाला अंगीकारकरे तो तिसवादीनैं जिनपुरुषोंकूंमुक्तमान्याहै तिनमुक्तपुरुषोंकूंभी पुनःसंसारकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ और तिनमुक्तपुरुषोंकूंभी जोकदाचित् पुनःसंसारकी प्राप्तिहोवैगी तो तावादीनैं जितनेकमुक्तिके साधनमानेहैं तेसंपूर्णसाधन ॥ व्यर्थताकूंप्राप्तहोवैं गे॥इतनेंकरिके सोजगत्‌काकारणरूपप्रागभाव एकहै याप्रथमपक्षकाखंडनकऱ्या॥अब सो जगत्‌काकारणरूपप्रागभाव अनेकहैं याद्वितीयपक्षकाखंडनकरैहैं सोकारणरूपप्रागभाव अनेकहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे तावादीसैंयहपूछाचाहियेकि यालोकविषे कोईभीवादीस्वरूपतैंअभावकाभेद अंगीकारकरतानहीं॥ किंतु प्रतियोगीकेभेदतैंहीं ताअभावकाभेद सर्ववादी अंगीकारकरैहैं ॥ जैसे घटपटरूपप्रतियोगीकेभेदतैं घटाभाव पटाभावका परस्परभेद होवैहै तैसे ताप्रागभावकाभेदभी प्रतियोगीकेभेदतैंहीं अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ सोतिसप्रागभावकाप्रतियोगीपणा किसविषेहै ॥ कार

चाहिये ॥ और नष्टहुआकुलाल घटकाकारणहोवैनहीं॥यातैं घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्व नाशकूंप्राप्तहुआ सोप्रागभाव तिनघटादिकोंका कारणहोवैहै यहकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और सोप्रागभाव घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंअनंतर नाशहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकार करे तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंअनंतर नाशहोणेहारा सोप्रागभाव एकहै अथवा अनेकहैं ॥ तहां सोप्राग भाव एकहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोएकप्रागभाव इसवर्तमानकालविषे नष्टहुआहै अथवा विद्य मानहै ॥ तहां इसवर्तमानकालविषे सोएकप्रागभाव नष्टहुआहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं घटादिकसर्व कार्योंका कारणरूपजोएकप्रागभावहै ॥ सोप्रागभाव जोकदाचित् इसकालविषे नष्टहुआहोवै तो कारणतैंविनाकार्यकीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ यातैं इदानींकालविषे घटादिककार्योंकीउत्पत्तिनहींहोणीचाहिये ॥ और इदानींकालविषेभी घटादिककार्योंकीउत्पत्ति सर्वलोकोंकूंदेखणेविषे आवैहै ॥ यातैं इदानींकालविषे ताप्रागभावकानाश संभवैनहीं ॥ और अभीवर्तमानकालविषे सोएकप्राग भाव विद्यमानहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं कार्यकीउत्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभाव नाशहोइजावैहै यहवार्ता संपूर्णवादीअंगीकारकरैहैं ॥ सोअबपर्यंतअनेककार्योंकेउत्पन्नहुएभी सोतुमाराप्रागभाव जभी नष्टनहींभया ॥ तभी सोतुमाराप्रा गभाव कभीनष्टहोवैगा ॥ किंवा याजगत्काकारणरूप सोएकप्रागभाव जभी नष्टहोवैगा तभी यहजगत्रूपकार्य पुनःउत्पन्नहोवैगा अथवा नहींउत्पन्नहोवैगा ॥ तहांताप्रागभावकेनाशतैंअनंतरभी यहजगत् उत्पन्नहोवैगा यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तावादीनैंप्रागभावकूंहीं जगत्काकारणमान्याहै ॥ ताप्रागभावरूपकारणकेनाशहुएतैंअनंतरभी जोवादी जगत्कीउत्पत्ति अंगीकारकरैगा तो कारणतैंविनाहीं कार्यकीउत्पत्ति मानणीहोवैगी ॥ यातैं तावादीकेमतविषे तंतुतैंविनाहीं पटकीउत्पत्ति तथा अन्नजलकेभक्षणतैंविना क्षुधापिपासाकीनिवृत्ति इत्यादिकपूर्वउक्तसर्वदूषणोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा ॥ ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैं अनंतरजैसे विनाहींकारणतैं जगत्रूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैगी ॥ तैसे इदानींकालविषेभी तंतुआदिककारणोंतैंविनाहीं पटादिककार्योंकी

काज्ञानहोवे ॥ काहेतैं याळोकविषे जोजोविशिष्टज्ञानहोवैहै ॥ सोसोविशिष्टज्ञान विशेषणकेज्ञानकरिकेजन्यहोवैहै ॥ विशेषणकेज्ञानतैंविना विशिष्टज्ञानहोवैनहीं ॥ जैसे दंडरूपविशेषणकेज्ञानहुएतैंअनंतरहीं यहदंडवाळापुरुषहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञानहोवैहै ॥ दंडरूपविशेषणके ज्ञानतैंविना यहदंडवाळापुरुषहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं घटविशिष्टप्रागभावकेज्ञानविषेभी घटरूपविशेषणकाज्ञानअवश्य चाहिये ॥ और जिसकालविषे घटकाप्रागभावहै ॥ तिसकालविषे घटरूपविशेषण उत्पन्नभयानहीं॥ यातैं ताघटविषे ताप्रागभावकीविशेषण रूपतासंभवैनहीं॥वर्तमानपदार्थहोविशेषणरूपहोवैहै ॥ यातैं घटप्रागभावत्वरूपकरिके तथापटप्रागभावत्वरूपकरिके ताप्रागभावविषे कारणरूपतासैंभवैनहीं॥शंका॥ हेसिद्धांती॥हमारेमतविषे तुमनैं यहजोदूषणदिया॥सोदूषणहमारे मतविषे तभीप्राप्तहोवै॥जभी हमवादि विशिष्टज्ञानविषे विशेषणज्ञानकूंकारणमानतेहोवैं ॥ सोहम विशिष्टज्ञानविषे विशेणज्ञानकूं कारणमानतेनहीं ॥ किंतु हमवादीतो कारणकेअभावकूंहीं सर्वत्र कारणमानतेहैं यातैं सोतुमारादूषण हमारेमतविषे प्राप्तहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी विशिष्टज्ञानविषे विशेषणज्ञानकूंकारणता सर्ववादियोंनैंअंगीकारकरीहै ॥ ताकारणताकूं जोतूं नहींअंगीकारकरेगा ॥ तो विशेषणज्ञानतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिके सोविशिष्टज्ञानहोतानहीं ॥ यातैं घटविशिष्टप्रागभावहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञान तुमारेमतविषे कदाचित्भीनहींहोवैगा ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ जैसे वंध्यापुत्रहै याप्रकारकेशब्दतैं वंध्यापुत्रका विकल्परूपज्ञानहोवैहै तैसे प्रागभावकालविषे ताघटकेअविद्यमानहुएभी ताघटरूपविशेषणका विकल्परूपज्ञान संभवहोइसकैहै ॥ ताविकल्परूपविशेषणज्ञानतैंअनंतर घटविशिष्टप्रागभावहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञान संभवैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ तुम्हारेमतविषे जैसे वंध्यापुत्र अत्यंतअसत्यहै ॥ तैसे प्रागभावकालविषे सोघटभी अत्यंतअसत्यहै ॥ यातैं जैसे वंध्यापुत्रकप्रागभावहै याप्रकारकेविशिष्टज्ञानहुएभी ताप्रागभावविषे वंध्यापुत्रकीकारणतानहीं है ॥ तैसे घटकाप्रागभावहै याप्रकारकेविशिष्टज्ञानहुएभी ताप्रागभावविषे घटकीकारणता नहींसंभवैगी ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती जिसकालविषे घटरूपकार्य उत्पन्ननहींभया ॥ तिसकालविषे यद्यपि ताप्रागभावका ताघटकेसाथसंबंधनहीं है ॥ तथापि जभी सोघटरूपकार्य उत्पन्नहोवैगा ॥ तभी ताघटरूपविशे

णोंविषेहै अथवा कार्योंविषेहै ॥ तहाँ ताप्रागभावकाप्रतियोगीपणा कारणोंविषेहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें सोप्रागभाव वादीकेमतविषेअनादिहै ॥ यातें ताअनादिप्रागभावका ॥ कोईकारणसंभवैनहीं ॥ और ताप्रागभावका प्रतियोगीपणा कार्योंविषेहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें जोवादीकार्योंविषे प्रागभावकाप्रतियोगीपणा अंगीकारकरैगा ॥ तौ कार्यकेअभावविषे कारणरूपतासिद्धहोवैगी ॥ और तावादीनें कार्यकेअभावविषे कारणरूपता अंगीकारकरीनहीं किंतु तावादीनें कारणकेअभावविषे कारणरूपता अंगीकारकरीहै ॥ तावादीकोप्रतिज्ञा हानिहोवैगी ॥ और तावादीनें अंगीकारकरी जोकारणकेअभावविषे कारणरूपता ॥ साजभी सिद्धिनहींभई ॥ तभी कारणतैंविनाहीं कार्यकोउत्पत्ति अंगीकारकरणीहोवैगी ॥ यातें कारणतैंविना कार्यकी उत्पत्तिविषे जेपूर्व सर्वव्यवहारोंकेअभावकीप्राप्तिरूप दूषणकहेहैं ॥ तेसर्वपूर्णदूषण यापक्षविषेप्राप्तहोवैंगे ॥ किंवा ॥ जोवादी प्रागभावकूंहींकारणमानैहै ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ ताप्रागभावविषे प्रागभावत्वरूपकरिके कारणताहै अथवा ॥ घटप्रागभावत्व पटप्रागभावत्व इत्यादिकविशेषरूपोंकरिके ताप्रागभावविषे कारणरूपताहै ॥ तहां प्रागभावत्वरूपकरिके ताप्रागभावविषे कारणरूपताहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जोप्रागभावत्वरूपकरिके ताप्रागभावकूंकारणताहोवै॥ तौ घटके प्रागभावतें पटादिककार्योंकोभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और घटकेप्रागभावतें पटादिककार्योंकोउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातें प्रागभावत्वरूप करिके ताप्रागभावविषे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ और घटप्रागभावत्व पटप्रागभावत्व इत्यादिकविशेषरूपोंकरिके ताप्रागभावकूं कारणताहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें घटकाप्रागभाव घटकाकारणहै तथा पटकाप्रागभाव पटकाकारणहै याकहणेतें यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ प्रतियोगितासंबंधकरिके घटरूपविशेषणविशिष्ट जोप्रागभावहै सोप्रागभाव घटकाकारणहै तथा पटरूपविशेषणविशिष्टजोप्रागभावहै सोप्रागभाव पटकाकारणहै ॥ सोप्रागभावविषे घटरूपविशेषणकरिकेविशिष्टरूपता तभी सिद्धहोवै ॥ जभी घटविशिष्टप्रागभावहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञानहोवै ॥ और सोविशिष्टज्ञान तभी उत्पन्नहोवै ॥ जभी प्रथम घटरूपविशेषण

नित्यप्रागभावकाभेदहोवैहै यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थप्रागभावका तथाप्रध्वंसाभावका
अप्रतियोगीहोवैहै ॥ सोपदार्थ नित्यहोवैहै ॥ जैसे आत्मा प्रागभावका तथाप्रध्वंसाभावका अप्रतियोगीहै ॥ यातैं सोआत्मा नित्यहै
॥ ऐसेनित्यपदार्थोंविषे ताप्रागभावकीप्रतियोगिता संभवैनहीं ॥ और प्रतियोगीकेभेदतैंहीं अभावकाभेदहोवैहै ॥ यातैं तानित्यपदार्थ
रूपउपाधिकेभेदतैं तानित्यप्रागभावकाभेद संभवैनहीं ॥ और अनित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतैंतानित्यप्रागभावकाभेदहोवैहै ॥ यहदूस
रापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे अनित्यघटादिकपदार्थोंकेभेदतैंप्रध्वंसाभावकाभेदहै ॥ तैसे अनित्यघटादिक
पदार्थोंकेभेदतैं जोकदाचित् ताप्रागभावकाभेद अंगीकारकरोगे ॥ तो ताप्रागभावतैंअतिरिक्त प्रध्वंसाभावका अंगीकारकरणा व्यर्थहोवैगा
किंतु सोप्रागभावही प्रध्वंसाभावरूपहोवैगा ॥ और जोवादी ताप्रागभावकूं प्रध्वंसाभावरूपभीअंगीकारकरे ॥ तो ताप्रागभावविषे
कारणरूपता नहींसिद्धहोवैगी ॥ किंतु जैसे प्रध्वंसाभावघटादिककार्योंकाविरोधीहोवैहै ॥ तैसे सोप्रागभावभी घटादिककार्योंकाविरोधीही
होवैगा ॥ किंवा याप्रसंगविषे जोवादी कारणकेअभावकूं प्रागभावरूपमानैहै ॥ तावादीकेमतविषेभी यहसंपूर्णपूर्वउक्तदूषण प्राप्तहोवैहैं ॥
काहेतैं जिसकारणकेप्रागभावकूं कारणरूपताहै ॥ सोकारण जोनित्यहोवैगा ॥ तो तानित्यकारणविषे ताप्रागभावको प्रतियोगिता नहीं
होवैगी ॥ और सोकारण जोअनित्यहोवैगा ॥ तो ताअनित्यकारणकेप्रागभावकूं प्रध्वंसाभावरूपता सिद्धहोवैगी॥और जैसे घटादिककार्यों
काप्रध्वंसाभाव तिनघटादिककार्योंकाविरोधीहोवैहै ॥ तैसे मृत्तिकादिककारणोंकाप्रध्वंसाभावभी घटादिककार्योंकाविरोधीहीहोवैहै ॥ यातैं
प्रध्वंसाभावरूपताकारणके प्रागभावविषे कारणरूपता संभवैनहीं॥इतनेकरिकै कारणकाप्रागभाव जगत्काकारणहै याद्वितीयपक्षकाखंड
नकऱ्या॥ अब कारणकाप्रध्वंसाभाव जगत्काकारणहै यातृतीयपक्षकाखंडनकरैहै ॥ तहां नास्तिकवादीकेअभिप्रायकूंजानणेवासते प्रथम
सिद्धांती तावादीसैंपूछैहैं ॥ हेवादी ॥ यालोकविषे नित्यरूपकरिकै तथा अनित्यरूपकरिकै प्रसिद्ध जेमृत्तिकातंतुआदिकभावपदार्थहैं ॥
तिनभावपदार्थोंकूंहीं संपूर्णलोक घटापटादिकोंकाकारणमानैं हैं ॥ तिनभावकारणोंकापरित्यागकरिकै तिनभावकारणोंकेअभावकूं जो

पणकेसाथ ताप्रागभावकासंबंधहोवैगा॥ताभावीसंबंधकूं अंगीकारकरिके ताघटकीउत्पत्तितैंपूर्वभी घटविशिष्टप्राग्भावहै याप्रकारकाकथनसं भवैहै ॥ जैसे बाल्यअवस्थाविषे राजाकेपुत्रका यद्यपि राजापणेकेसाथ संबंधनहींहै ॥ तथापि यौवनअवस्थाविषे ताबालकका राजापणेके साथ संबंधहोवैगा ॥ यातें ताभावीसंबंधकूंलेके सर्वलोक ताबालककूंराजाकहे हैं ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ यौवनअवस्थाविषे ताराजाकेपु त्रका ताराजापणेकेसाथ संबंधहोवैहै॥ यातें ताभावीसंबंधकूंअंगीकारकरिके बाल्यअवस्थाविषे यद्यपि ताराजाकेपुत्रविषे राजापणेकाकथन संभवैहै ॥ तथापि भावीसंबंधकूंअंगीकारकरिके ताप्रागभावविषे घटविशिष्टरूपताकाकथन संभवैनहीं ॥ काहेतें जिसकालविषे घटरूपका र्य उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसकालविषे जोकदाचित् सोप्रागभावरहताहोवे ॥ तौ ताप्रागभावका घटकेसाथसंबंधसंभवैहै ॥ परंतु घटरूपकार्यकीउ त्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभावरहतानहीं ॥ यातें भावीसंबंधकूंअंगीकारकरिकेभी ताघटकीउत्पत्तितैंपूर्व ताप्रागभावविषे घटविशिष्टरूपतासं भवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी घटादिकरूपकार्यकीउत्पत्तितैंअनंतर ताकार्यकेसाथ ताप्रागभावकासंबंध अंगीकारकरे ॥ तौ ताप्रागभावविषे नित्यरूपतासिद्धहोवैगी ॥ काहेतें प्रागभावकूं अंगीकारकरणेहारे जितनेकवादी हैं ॥ तेवादी कार्यकीउत्पत्तितैं ताप्रागभावकानाशमाने हैं ॥ ताकार्यकीउत्पत्तिनैंभी जभी ताप्रागभावकानाश नहीं कऱ्या ॥ तभी कार्यकीउत्पत्तितैं विना दूसराकोईपदार्थ ताप्रागभावकेनाश करणेहाराहैनहीं ॥ यातें सोप्रागभाव नित्यही होवैगा ॥ और जोपदार्थ तीनकालोंविषे अबाधितहोवे ताकानाम नित्यहै ॥ याप्रकारकी नित्यरूपता ताप्रागभावविषेसंभवै नहीं ॥ काहेतें कार्यकीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे ताकार्यकेउपादानकारण विषेरहणेहारा जोअभावहै ॥ ताकानाम प्रागभावहै ॥ या प्रकारका प्रागभावशब्दकाअर्थ तानित्यप्रागभावविषेघटेगानहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी ताप्रागभावकूं स्वरूपतैं नित्यमानेगा॥तौ तानित्यप्रागभावविषे अनेकरूपता नहींसंभवैगी॥काहेतें जोवादीताप्रागभावकूंनित्यरूपमानिके॥अनेकरूपमानैहैतावादी सैंयहपूछाचाहिये॥ प्रतियोगीरूपउपाधिकेभेदकरिकेही अभावकाभेदहोवे है॥स्वरूपतैं ताअभावकाभेदहोवैनहीं॥यातें तानित्यप्रागभावका जोभेदहै सो नित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतैंहोवैहै॥अथवा अनित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतैंहोवैहै ॥ तहां नित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतैं ता

ताकानाम वदतोव्याघातहै ॥ किंवा ॥ जोवादी बीजादिककारणोंकेअभावकूं अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिविषेकारणमानैहै ॥ ता वादीकेम
तविषे अनवस्थादोषकीभीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतें जैसे तावादीकेमतविषे बीजादिकोंकाअभाव कारणाभावरूपहै ॥ यातें सोबीजाभाव अं
कुरादिकोंकाकारणहै ॥ तैसे तिनबीजादिकोंकेअभावकाजोअभावहै सोभी बीजाभावरूपकारणकाअभाव रूपहै ॥ यातें सोबीजादिकोंके
अभावकाअभावभी अंकुरादिकोंकाकारणहोवैगा ॥ इसप्रकार तृतीयअभाव चतुर्थअभावतेंआदि लेके संपूर्णअभावोंकूं कारणकाअभावरू
पहोणेतें अंकुरादिककार्योंकोउत्पत्तिविषे कारणरूपताहोवैगो ॥ याप्रकार कारणोंकोअनवस्था प्राप्तहोवैगी ॥ किंवा ॥ कारणकाप्रध्वंसा
भाव कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहै ॥ यहवादोकाकहणा प्रत्यक्षप्रमाणतेंभी विरुद्धहै ॥ काहेतें याळोकविषे कुंडल कंकणादिक कार्योंकीउ
त्पत्तितेंअनंतर तिनकुंडलकंकणादिककार्योंविषे सर्वलोकोंकूं सुवर्णरूपकारण प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ तथा पटरूपकार्यकीउत्पत्तितेंअनंतर
तापटरूपकार्यविषे सर्वलोकोंकूं तंतुरूपकारण प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ इसतेंआदिलेके जेजेलोकविषेभावकार्यहैं ॥ तिनकार्योंविषे आपणाआ
पणाउपादानकारण अनुगतहोइकेप्रतीतहोवैहै ॥ जोकदाचित् कारणकाप्रध्वंसाभावहुआहोवै ॥ तो कुंडलकंकणादिककार्योंविषे सुवर्णरू
पकारण नहींप्रतीतहोणाचाहिये ॥ तथा पटरूपकार्यविषे तंतुरूपकारण नहींप्रतीतहोणाचाहिये ॥ यातें कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकाप्र
ध्वंसाभावकारणहै यहवादोकाकहणा सर्वलोकोंकेअनुभवतेंविरुद्धहै ॥ किंवा ॥ पूर्वजोवादीनें बीजकेनाशतें अंकुररूपकार्यकीउत्पत्तिकही
थी ॥ सोभी बीजरूपकारणकेनाशतें अंकुरकोउत्पत्तिहोवैनही ॥ किंतु ताबीजकेनाशहुएभी ताबीजकेअंतर वर्तमान जेपार्थिवअवयवहैं ॥
तेअवयव नाशकूंप्राप्तहोवैनही ॥ यातें तेबीजकेअवयवहीं ताअंकुररूपकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहैं ॥ किंवा ॥ कारणकाप्रागभावही जग
त्काकारणहै याद्वितीयपक्षविषे जेजेपूर्वविकल्पकरेथे ॥ तथा तिनविकल्पोंविषे जेजेपूर्वदूषणदियेथे ॥ तेसंपूर्णविकल्प तथातेसंपूर्णदूषण
याप्रध्वंसाभावपक्षविषे तथाअत्यंताभावपक्षविषे तथाअन्योन्याभावपक्षविषेभी प्राप्तहोइसकेहैं ॥ याकारणतेंभी ताकारणकेप्रध्वंसाभाव
विषे जगत्कीकारणरूपतासंभवैनहीं ॥ और यहघट पटतेंभिन्नहै तथायहपट घटतेंभिन्नहै याप्रकारकेज्ञानकाविषयजोभेदरूपअन्योन्या

तुमनैं कारणमान्याहै ॥ सोकिसप्रयोजनकीसिद्धिवासते मान्याहै ॥ सोप्रयोजन तूं हमारेप्रतिकह ॥ याप्रकार सिद्धांतीकरिकै पूछाहुआसो नास्तिकवादी याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेसिद्धांती ॥ यालोकविषे जबपर्यंत बीजादिककारणोंकानाशनहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैनहीं॥किंतु पृथिवीजलादिकोंकेसंबंधतैं जभी ताबीजकानाशहोवैहै ॥तभीहो ताअंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैहै याप्रकारकीव्यवस्थाकूंदेखिकै हमवादी बीजादिकभावपदार्थोंकूं अंकुरादिककार्योंकेप्रति कारण नहींमानैं हैं ॥ किंतु तिनबीजादिकभावपदार्थोंकेअभावकूंहीं हम अंकुरादिकोंकाकारणमानतेहैं ॥ याप्रकारके तावादीकेअभिप्रायकूं श्रवणकरिकै सोसिद्धांती तावादीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेवादी बीजादिकोंका जभी नाशहोवैहै ॥ तभी अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैहै याप्रकारका जोतुमनैं वचनकह्याहै ॥ तातुमारेवचनतैं यहतुमाराअभिप्राय जान्याजावैहै ॥ बीजादिककार्योंकाप्रागभाव अंकुरादिकोंकाकारणनहीं ॥ किंतु बीजादिककारणोंकाप्रध्वंसाभावही अंकुरादिकोंकाकारणहै ॥ सोबीजादिककारणोंकाप्रध्वंसाभावभी अंकुरादिरूपकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणरूपहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोकारणकाप्रध्वंसाभाव कार्यकीउत्पत्तिविषेहेतुहोवै ॥ तो याजीवोंकीजठराग्निविषे बीजादिकअनेककारणोंका प्रध्वंसाभावहोवैहै ॥ यातैं ताबीजादिककारणोंकेप्रध्वंसाभावतैं ताउदरविषे अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और याजीवोंकिउदरविषे अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं कारणकेप्रध्वंसाभावविषे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोपदार्थ जिसपदार्थकीउत्पत्तिकरैहै ॥ सोपदार्थ तापदार्थकाकारणहोवैहै ॥ जैसे तंतु पटरूपकार्यकी उत्पत्तिकरैहैं ॥ यातैं तेतंतु तापटकाकारणहैं ॥ और जोवादी बीजादिकोंविषे अंकुरादिककार्योंकी जनकता नहींअंगीकारकरैहै ॥ तावादीकेमतविषे बीजादिकोंविषे कारणरूपताहीनहीं ॥ यातैं अकारणरूपबीजादिकोंकेअभावकूं जोवादी कारणाभाव यानामकरिकेकथन करैहै॥तावादीका सोवचनकैसाहै॥जैसे कोईपुरुषकहै हमारेमुखविषेजिह्वानहीं है॥याप्रकारकावचनजैसे वदतोव्याघातदोषवालाहै ॥ तैसेसोवादीकावचनभी वदतोव्याघातदोषवालाहै॥जाअर्थकीसिद्धिकरणेवासते जोवचन उच्चारणकरिये॥तावचनकरिकै तिसीअर्थकाबाध जहांहोवै

भावहै ॥ ताअन्योन्याभावविषे जगत्कोकारणता किसीभीवादीकूंप्रतीतहोतीनहीं ॥ यातें कारणकाअन्योन्याभाव जगत्काकारणहै यह चतुर्थपक्षभी संभवैनहीं ॥ अब शून्यवादीकेमतकाखंडनकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ पूर्वउक्तदूषणोंकीप्राप्तिहोणेतें जभी ताअत्यंताभावविषे तथाप्रागभावविषे तथाप्रध्वंसाभावविषे तथाअन्योन्याभावविषे याजगत्कोकारणता नहींसिद्धिभई॥तभी शून्यकूंभी याजगत्कोकारणता संभवैनहीं ॥ काहेतें जेवादी शून्यकूंही जगत्काकारणमाने हैं ॥ तेवादी अत्यंताभावकूंहीं शून्य यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और सो अत्यंताभावरूपशून्य वंध्यापुत्रकी न्याई अत्यंतअसत्यहै ॥ यातें जैसे वंध्यापुत्रकूं ॥ किसीकार्य कीउत्पत्तिविषे कारणरूपतानहीं है ॥ तैसे ताअत्यंताभावरूपशून्यकूंभी किसीकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणरूपता संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी ता अत्यंताभावरूपशून्यकूंहीं कारणमानेहै ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ ताशून्यरूपअत्यंताभावका कौनप्रतियोगी है ॥ कार्य प्रतियोगी है अथवा कारण प्रतियोगी है अथवा कार्यकारण दोनोंप्रतियोगी हैं ॥ तहां ताशून्यरूपअत्यंताभावका कार्य प्रतियोगीहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सो संभवैनहीं ॥ काहेतें तावादी नें कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकेअभावकूं हेतुमान्याहै ताकापरित्यागकरिके सोवादी जोकार्यकेअभावकूंकारणमानैंगा ॥ तौ तावादीकेपूर्वप्रतिज्ञाकोहानिहोवेगी॥तथा आपणे सिद्धांतकापरित्यागरूप अपसिद्धांतदोषभी प्राप्तहोवेगा॥ किंवा ॥ जोवादी कार्यकेअत्यंताभावकूं कारणमानेहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये सोकार्यकाअत्यंताभाव लोकप्रसिद्धकारणोंकोअपेक्षातैंविनाहीं ताकार्यका उत्पत्तिकरैहै ॥ अथवा जैसे दंडरूपकारणचक्रकुलालादिककारणोंकोअपेक्षाकरिके घटरूपकार्यकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे सोकार्यका अत्यंताभावभी लोकप्रसिद्धकारणोंकोअपेक्षाकरिकेही ताकार्यकीउत्पत्तिकरैहै ॥ तहां सोकार्यकाअत्यंताभाव लोकप्रसिद्धकारणोंतैंनिरपेक्षहुआ कार्यकूंउत्पन्नकरैहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें पटादिककार्योंकोउत्पत्तितैंपूर्व तिनपटादिक कार्योंकाअत्यंताभाव जैसे तंतुआदिकोंविषेहै॥तैसे अन्यपदार्थोंविषेभीहै॥ यातें तिनसर्वपदार्थोंविषे पटादिकसर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और सर्व पदार्थोंविषे सर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और लोकप्रसिद्धकारणोंकोअपेक्षाकरिकेही सोकार्यकाअत्यंताभाव ताकार्यकूंउत्पन्नकरैहै

यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तावादीकेमतविषे जैसे वंध्यापुत्र अत्यंतअसत्यहै ॥ तैसे घटपटादिककार्य भी आपणीउत्पत्तितैंपूर्व अत्यंतअसत्यहैं ॥यातैं तावादीकेमतविषे जैसे लोकप्रसिद्धदंडचक्रकुलालादिककारणोंकरिकै सहकृत ताघटके अत्यंताभावतैं घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै॥ तैसे लोकप्रसिद्धवंध्यास्त्रीरूपकारणकरिकैसहकृत तावंध्यापुत्रकेअत्यंताभावतैं तावंध्यापुत्र कीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और वंध्यास्त्रीतैं पुत्रकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं इतरकारणसापेक्ष ताकार्यकेअत्यंताभावविषे कारणरूपता संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ जिसपदार्थविषे कार्यकेउत्पत्तिकरणेकीशक्तिहोवैहै ॥ सोपदार्थही ताकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहोवै है॥ जैसे मृत्तिकादंडचक्रादिकपदार्थोंविषे घटरूपकार्यकेउत्पत्तिकरणेकीशक्तिरहैहै ॥ यातैं तेमृत्तिकादंडचक्रादिकपदार्थ ताघटकेकारणहैं ॥ और वंध्यास्त्रीविषे पुत्ररूपकार्यकेउत्पत्तिकरणेकीशक्तिहैनहीं॥यातैं सोवंध्यास्त्री पुत्रकाकारणहोंनहीं॥ समाधान॥हेवादी॥जिसशक्तिकरिकै कार्यकीउत्पत्तिहोवैहै॥ ताशक्तिकाक्यास्वरूपहै॥ सोतुमारेकूंकह्याचाहिये॥शंका॥हेसिद्धांती जिसकेबलतैं सोकारण कार्यकीउत्पत्तिकरैहै ताकानाम शक्तिहै ॥ समाधान ॥हेवादी जिसशक्तिकेबलतैं सोकारण कार्यकाउत्पत्तिकरैहै ॥ सोशक्ति ताकारणतैं भिन्नहै अथवा अभिन्नहै तहां सोशक्ति ताकारणतैंभिन्नहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोशक्ति ताकारणकोअपेक्षातैंविनाहीं कार्यकाजनकहै ॥ अथवा ताशक्तिकी न्याई सोकारणभी ताकार्यकाजनकहै ॥तहां सोएकशक्तिही कार्यकाजनकहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ताशक्तितैंभिन्न जितनेकीलोकप्रसिद्धकारणहैं ॥ तेकारण जोकदाचित् कार्यकेजनकनहींहोवैं गे ॥ तो तिनलोकप्रसिद्धकारणोंविषे कारणरूपताहीनहींरहैगी॥ और तेलोकप्रसिद्धकारणभी कार्यकेजनकहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकप्रसिद्धकारणोंकरिकैभी जभी कार्यकीउत्पत्तिहोइसकैहै ॥ तभी ताशक्तिकूंकारणमानणा व्यर्थ होवैगा ॥ और सोशक्ति ताकारणतैंअभिन्नहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोशक्ति जोकदाचित् ताकारणतैंअभिन्नहोवैगी ॥ तो शक्ति कारण यहदोनोंनाम एकहीअर्थकेवाचकहोवैंगे ॥ याकारणतैंभी सोशक्ति व्यर्थहोवैगी ॥ इसप्र

स्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैनहीं॥यातें मृत्तिकादिकसत्यपदार्थोंविषे घटादिकअसत्यपदार्थोंकोकारणतासंभवैनहीं॥ किंवा ॥ जेअसत्यकार्यवादी नैयायिकादिक याप्रकारकथनकरे हैं ॥ घटपटादिककार्य आपणीउत्पत्तितैंपूर्व यद्यपि अत्यंतअसत्यहैं ॥ तथापि तेघटपटादिककार्य सत्ताजातिकेसंबंधतें सत्त्वरूपउत्पत्तिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ सोयहतिनोंकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें अत्यंत असत्यघटादिकपदार्थोंविषे जोकदाचित् सत्ताजातिकेसंबंधतें कार्यरूपताहोतीहोवै ॥ तो अत्यंतअसत्यवंध्यापुत्रविषेभी तासत्ताजातिका संबंध तथा तासत्ताजातिकेसंबंधतैंकार्यरूपता होणीचाहिये ॥ और वंध्यापुत्रविषे सत्ताजातिकेसंबंधतें कार्यरूपता प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें सत्ताजातिकेसंबंधतें असत्यकार्यकीउत्पत्तिमानणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा ॥ जोवादी कार्यकूंअसत्यमानैहै ॥ तावादीकेमतविषे कारणकूंभी असत्यरूपताहीसिद्धहोवैगी ॥ और सोवादीजोकदाचित् किसीयुक्तिप्रमाणतैंविना आपणीइच्छातैंहीं कार्यकूंअसत्यमानिके कारणकूंअसत्यमानेगा ॥ तो तावादीकेमतविषे अर्धजरतीयन्यायकी प्राप्तिहोवैगी॥ आपणीइच्छातैंहीकिसीअंगकाग्रहणकरणा तथा किसी अंगकापरित्यागकरणा याकानाम अर्धजरतीयन्यायहै ॥ किंवा ॥ ताअर्धजरती यन्यायकीनिवृत्तिवासते सोवादी जोकदाचित् कारणकूंभी असत्यहीमानैगा ॥ तो तावादीकेसिद्धांतकीहानिहोवैगी॥काहेतें सत्यकारणतें असत्यकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥याप्रकारका तावादीकासिद्धांत है सो नष्टहोवैगा ॥ किंवा ॥ यालोकविषे असत्यरूपकरिकेप्रसिद्ध जेवंध्यापुत्र नरशृंगादिकहैं ॥ तिनअसत्यपदार्थोंतें पटतैलादिककार्यों कीउत्पत्ति देखणेमेंआवैनहीं ॥ किंतु सत्यरूपकरिकेप्रसिद्ध जेतंतुतिलादिककारणहैं ॥ तिनसत्यकारणोंतैंहीं पटतैलादिककार्योंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवैहै ॥ याकारणतैंभी असत्यपदार्थोंविषे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ तंतुआदिकसत्यकारणोंकेविद्यमान हुए पटादिककार्योंकीउत्पत्ति तथा तंतुआदिकसत्यकारणोंकेअविद्यमानहुए पटादिककार्योंकोअनुत्पत्ति ॥ याप्रकारका जोलोकोंकाअ न्वयव्यतिरेकज्ञानहै॥सोअन्वयव्यतिरेकज्ञान जोकदाचित् यथार्थहोवै॥तो ताज्ञानकरिके तिनकारणोंविषेसत्यरूपतासिद्धहोवै ॥ परंतु सोअ न्वयव्यतिरेकज्ञान भ्रांतिरूपहै ॥ यातें ताभ्रांतिज्ञानकरिके कारणकीसत्यरूपता सिद्धहोइसकैनहीं समाधान ॥ हेवादी ॥ यालोक

कार जभी ताशक्तिकीसिद्धिनहींभई ॥ तभी जोवादी कार्यकेअत्यंताभावकूंहीं कारणमानेंहैं ॥ तावादीकेमतविषे घटादिककार्योंकी न्याईं वंध्यापुत्रकीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ आपणीउत्पत्तितेंपूर्व यद्यपि तेघटपटादिककार्य अत्यंतअसत्यहैं ॥ तथापि तेघटपटादिककार्य मृत्तिकातंतुआदिककारणोंतेंहीं उत्पन्नहोवेंहैं ॥ और वंध्यास्त्रीतो पुत्रकीउत्पत्तिविषेकारणहीनहीं ॥ यातें तावंध्या स्त्रीतें पुत्रकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ वंध्यास्त्रीविषे पुत्रकोकारणतानहीं है याप्रकारकाकथनकरणेहाराजोतूंहै ॥ तातुम्हा रेसें हम यहपूछतेहैं ॥ तावंध्याविषेपुत्रकोकारणतानहीं है याकेविषेकोनहेतुहै ॥ हेवादी जोतूंयहकहै ॥ पुत्ररूपकार्यकाजोअदर्शनहै सोईही ताकेविषेहेतुहै ॥ तो हमसिद्धांती तुम्हारेतैंयहपूछतेहैं ॥ तापुत्ररूपकार्यका जोदर्शननहींहोता ॥ ताकेविषेभी कोनहेतुहै ॥ हेवादी जोतूं यहकहै ॥ वंध्यापणा तथा वंध्याविषेकारणताकाअभाव यहदोनों तापुत्ररूपकार्यकेअदर्शनविषेहेतुहै ॥ सोयहतुम्हाराकहणासंभवै नहीं ॥ काहेतें तावंध्यास्त्रीविषे जभी वंध्यापणासिद्धहोवे ॥ तथा पुत्रकीकारणताकाअभाव सिद्धहोवे ॥ तभी तावंध्यापुत्रका अदर्शन सिद्धहोवे ॥ और जभी तावंध्यापुत्रकाअदर्शनसिद्धहोवे ॥ तभी तावंध्यास्त्रीविषे वंध्यापणा तथापुत्रकेकारणताकाअभाव सिद्धहोवे ॥ याप्रकारकेअन्योन्याश्रयदोषकोप्राप्तिहोवेगी ॥ किंवा ॥ हेवादी जैसे सत्कार्यवादीसांख्यादिक घटादिककार्यों कोउत्पत्तितेंपूर्व मृत्तिकादिककारणोंविषे तिनघटादिककार्योंकी सूक्ष्मरूपकरिकेस्थितिमानेंहैं ॥ तैसे तुमअसत्कार्यवादी अंगी कारकरतेनहीं ॥ किंतु तुम्हारेमतविषेतो घटादिककार्योंकीउत्पत्तितेंपूर्व तिनघटादिककार्योंका जैसे मृत्तिकादिककारणोंविषेअत्यंताभाव रहैहै ॥ तैसे तंतु आदिकोंविषेभी अत्यंताभावहीरहेहै ॥ यातें तुम्हारेमतविषे जैसे मृत्तिकातेंघटकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे तंतुवोंतेंभी घटकी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ इसप्रकार संपूर्णकार्य सर्वत्र उत्पन्नहोणेचाहिये ॥ और सर्वकार्योंकी सर्वत्र उत्पत्तिहोतीनहीं ॥ याकारणतेंभी तुम्हारामत असंगतहै ॥ किंवा ॥ जोवादी घटादिककार्योंकूं अत्यंतअसत्यमाने है ॥ तावादीकेमतविषे मृत्तिकादिकसत्यपदार्थोंकूं घटादिकोंकीकारणरूपता सिद्धनहींहोवेगी ॥ काहेतें समानस्वभाववालेपदार्थोंकाही परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ विलक्षण

विषे जितनेकोज्ञानउत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनसंपूर्णज्ञानोंकूं भ्रांतिरूपअंगीकारकरणा तुमारेकूंउचितनहीं ॥ किंतु धर्मीरूपवस्तुकूंविषयकरणेहारे जेज्ञानहैं ॥ तिनज्ञानोंकूं प्रमाणरूपहीमान्याचाहिये ॥ याकारणतैंहीं शास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ सर्वज्ञानंधर्मिण्यऽभ्रांतंप्रकारेतुविपर्ययः ॥ अर्थयह ॥ यालोकविषे प्रमारूपकरिके तथा अप्रमारूपकरिके प्रसिद्ध जितनेकोज्ञानहैं ॥ तेसंपूर्णज्ञान धर्मीअंशविषेप्रमारूपहीहोवैहैं ॥ और दोषकेवशतैं तेज्ञान जोकदाचित् अप्रमारूपहोवैहैं ॥ तोभी प्रकारअंशविषेही अप्रमारूपहोवैहैं ॥ धर्मीअंशविषे कोईभीज्ञान अप्रमारूपहोवैनहीं ॥ जैसे शुक्तिविषे इदंरजतं याप्रकारकाजोअप्रमाज्ञानहोवैहै ॥ सोभी इदंरूपधर्मीअंशविषे प्रमारूपहीहोवै है ॥ और रजतरूपप्रकारअंशविषे सोज्ञान अप्रमारूपहोवैहै ॥ १ ॥ ताधर्मीअंशविषे ज्ञानकोप्रमाणरूपताकूंअंगीकारकरिकेही पूर्वपक्षोंका तथासिद्धांतपक्षोंका निर्णयहोवैहै ॥ तहां धर्मीपदार्थकेवास्तवस्वरूपतैं बहिर्भूतजेपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकूंविषयकरणेहारेपक्षोंकानाम पूर्वपक्षहै ॥ जैसे रज्जुविषे सर्प दंड माला जलधारादिकपदार्थोंकूंविषयकरणेहारेपक्ष पूर्वपक्षरूपहैं ॥ और धर्मीपदार्थकेवास्तवस्वरूपकूंविषयकरणेहारे जेपक्षहैं ॥ तिनोंकानाम सिद्धांतपक्षहै ॥ जैसे यहरज्जुहै याप्रकार रज्जुरूपधर्मीकूंविषयकरणेहारापक्ष सिद्धांतपक्षरूपहै ॥ जोकदाचित् ताधर्मीअंशविषेभी तिनज्ञानोंकूं प्रमाणरूपता नहींअंगीकारकरिये ॥ तो तिनपूर्वपक्षोंका तथासिद्धांतपक्षोंका निर्णयनहींहोवैगा ॥ यातैं धर्मीअंशविषे तिनज्ञानोंकूंप्रमाणरूपता अवश्यअंगीकारकरीचाहिये ॥ किंवा घटादिककार्योंविषे तथा मृत्तिकादिककारणोंविषे जोअत्यंतअसत्यरूपताहोवै ॥ तो सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिके साअसत्यरूपता प्रतीतहोणीचाहिये ॥ और तिसकार्यकारणरूपजगत्विषे अस्मदादिकजीवोंकूंप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिके सोअसत्यरूपता प्रतीतहोतीनहीं ॥ उलटा ताकार्यकारणरूपजगत्विषे सत्यरूपताही अनुगतहुई प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैंभी ताकार्यकारणरूपजगत्कूं असत्यरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ कार्यरूपकरिके तथा कारणरूपकरिके प्रसिद्ध जितनाकोयहजगतहै ॥ सोजगत् जोकदाचित् वंध्यापुत्र शशशृंगकीन्याईं अत्यंतअसत्यरूपहोवै॥तोभी ताजगत्कोअसत्यरूपता साक्षीआत्मातैंविना किसीप्रमाणकरिके सिद्धहोइसकैनहीं॥किंतु तासाक्षीआत्माकूंआश्रयणकरिकेही ताजगत्की

असत्यरूपतासिद्धहोवैगी॥ यातें कार्यकारणरूपजगत्केअसत्यहुएभी ताजगत्केअसत्यरूपताकूंसिद्धकरणेहारा साक्षीआत्मा सत्यरूपह सिद्धहोवैगा ॥ किंवा ॥ यहकार्यकारणरूपजगत् जोकदाचित् अत्यंतअसत्यहोवै ॥ तो जैसे याजीवोंकूं भ्रांतिदशातैंविना प्रत्यक्षादिकप्र माणोंकरिकै वंध्यापुत्रनरशृंगकोप्रतीतिहोतीनहीं ॥ तैसे भ्रांतिदशातैंविना याजीवोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै याजगत्कीप्रतीति नहीं होणीचाहिये ॥ किंतु जैसे वंध्यापुत्रको तथानरशृंगको भ्रांतिदशाविषेही प्रतीतिहोवैहै ॥ तैसे याजगत्कीभीभ्रांतिदशाविषेही प्रतीतिहोणी चाहिये ॥ सोभ्रांतिदशाविषे याजगत्कीप्रतीतिहोतीनहीं ॥ किंतु सर्वजीवोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैही याजगत्कीप्रतीतिहोवैहै॥ यातें ताकार्यकारणरूपजगत्विषे अत्यंतअसत्यरूपतासंभवैनहीं ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ कार्यकाअत्यंताभाव तथा कारणकाअत्यंताभाव तथा कार्यकारणदोनोंकाअत्यंताभाव याजगत्काकारणहै ॥ यहतीनोंपक्ष संभवैनहीं ॥ किंवा यहकार्यकारणरूपजगत् जोकदाचित् अत्यं तअसत्यरूपहोवै ॥ तो जोअसत्यपदार्थहोवैहै ॥ ताका किसीप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेसाथ संबंधहोवैनहीं ॥ जैसे असत्यवंध्यापुत्रनरशृंगका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेसाथ संबंधहोतानहीं ॥ तैसे ताअसत्यजगत्काभी प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेसाथ संबंधहोवैगा ॥ और संबंधतैंविना तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण किसीअर्थकेज्ञानकूंउत्पन्नकरैंनहीं यातें संबंधतैंविना ताअसत्यजगत्का किसीभीप्रमाणकरिकेज्ञाननहींहोवैगा ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ जैसे वंध्यापुत्रहै याप्रकारकेशब्दतैं असत्य वंध्यापुत्रकाज्ञानहोवैहै ॥ तैसे ताकार्यकारणरूप असत्यजगत्काभी शब्दप्रमाणतैं ज्ञानसंभवैहै ॥ समाधान ॥ जिसशब्दका जिसअर्थविषे वाच्यवाचकभावसंबंध जिसपुरुषकूंग्रहणहोवैहै ॥ तिसपुरुषकेप्रति सोशब्द तिसीअर्थकाबोधकरैहै ॥ जैसे घट याशब्दका घटरूपव्यक्तिविषे यहघटव्यक्ति घटशब्दकावाच्यअर्थ है याप्रकारकावाच्य वाचकभावसंबंध जिसपुरुषकूंग्रहणभयाहै ॥ तिसीपुरुषकेप्रति सोघटशब्द ताघटरूपव्यक्तिकाबोधकरैहै ॥ अर्थकेसंबंधज्ञानतैंविना सोशब्द किसीअर्थकूंबोधनकरैनहीं ॥ और सोवंध्यापुत्ररूपअर्थ अत्यंतअसत्यहै ॥ यातें ताअत्यंतअसत्यअर्थविषे वंध्यापुत्र याशब्दकासंबंध किसीपुरुषकूं ग्रहणहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वंध्यापुत्र याशब्दतैंभी तावंध्यापुत्रकाज्ञान संभवैनहीं॥किंवा जेवादी वंध्यापुत्र

इत्यादिकशब्दोंतें असत्यवंध्यापुत्रादिकोंकाज्ञान अंगीकारकरैहैं ॥ तेवादीभी तिनअसत्यपदार्थोंकेज्ञानकूं प्रमारूपमानतेनहीं॥किंतु ताज्ञानकूं विकल्परूपमानैहैं ॥शंका॥ हेसिद्धांती ॥ जैसे वंध्यापुत्रादिकअसत्यपदार्थोंका विकल्परूपज्ञानहोवैहै ॥तैसे या कार्यकारणरूपजगत्काभी विकल्परूपज्ञानहोवैगा ॥ याकेविषे हमारीकोनहानिहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ जोतूं वंध्यापुत्रकेज्ञानकी न्याई याजगत्केज्ञानकूं विकल्परूपमानैंगा ॥ तो जैसे वंध्यापुत्रकेविकल्परूपज्ञानतैं किसीजीवकी प्रवृत्ति तथानिवृत्ति होवैनहीं ॥ तैसे याजगत्केज्ञानतैंभी किसी जीवकी प्रवृत्ति तथानिवृत्ति नहींहोवैगी ॥ यातैं प्रवृत्तिनिवृत्तितैंआदिलेके संपूर्णव्यवहारोंकालोप होवैगा ॥ यातैं वंध्यापुत्रकेज्ञानकोन्याई याजगत्केज्ञानकूं विकल्परूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जिसशब्दप्रमाणकरिकै सोवादी असत्यपदार्थकोसिद्धिकरैहै ॥ सोशब्दरूपकार्यही कारणकेसत्यरूपताकूंसिद्धकरैहै॥काहेतैं यालोकविषे वाकादिकइंद्रियोंकरिकेयुक्त जो देवदत्तादिकपुरुषोंकाशरीरहै ॥ ताशरीररूपसत्कारणतैंही ताशब्दरूपकार्यकोउत्पत्ति देखणेमेंआवै है ॥ और असत्यरूपकरिकेप्रसिद्ध जोवंध्यापुत्रकाशरीरहै ॥ ताअसत्यशरीरतैं ताशब्दरूपकार्यकोउत्पत्ति देखणेमेंआवतीनहीं ॥ याकारणतैंभी असत्यपदार्थोंविषे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ केवलयुक्तिकेवलतैं हम कारणकूंअसत्यरूपनहींमानते किंतु साक्षात्श्रुतिही कारणकूंअसत्यरूपकहैहै ॥ तहांश्रुति ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ततोवैसदजायत ॥ अर्थयह ॥ यहदृश्यप्रपंच आपणीउत्पत्तितैंपूर्व असत्यरूपहीहोताभया ॥ ताअसत्यकारणतैं यहसत्यरूपजगत् उत्पन्नहोताभया ॥ १ ॥ याश्रुतिविषे असत्यकारणतैंही जगत्कीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥यातैं ताश्रुतिकेअर्थकोअनुपपत्तिकरिकै कल्पनाकरीजामाया है ॥ तामायाकेबलतैं हमवादी असत्यकूंही जगत्काकारणमानतेहैं ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ तुमारेमतविषे जोकदाचित् वेदकूंप्रमाणरूपताहोवै ॥ तो ताश्रुतिकेअर्थकीअनुपपत्तिकरिकै कल्पनाकरीजामायाहै ॥ तामायाकेबलतैं असत्यपदार्थविषे कारणरूपतासिद्धहोवै ॥ परंतु तुमारेमतविषे वेदोंकूंप्रमाणरूपताहैनहीं॥यातैं तुमारेमतविषे ताश्रुतिकेबलतैंभी असत्यपदार्थविषे कारणरूपतासिद्धहोवैनहीं॥और हेवादी जोतूं वेदकूंप्रमाणरूपभीअंगीकारकरै॥ तोभी सोवेदभगवान् किसीभीस्थलविषे ताकार्यकारणकेअसत्यरूपताकूं कथनकरतानहीं

और प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकेतो याकार्यकारणरूपजगत्विषे असत्यरूपताप्रतीतहोतीनहीं॥यातेंतुमारेमतविषे साकार्यकारणकीअसत्य रूपता किसप्रमाणकरिकेसिद्धहोवेगी॥किंतुसाअसत्यरूपता किसीभीप्रमाणकरिकेसिद्धहोवेनहीं॥शंका॥हेसिद्धांती॥वेदविषेकहांभी असत्य पदार्थकूंकारणरूपतानहींकही यहजोवचन तुमनैंकह्या सोसंभवेनहीं॥काहेतें॥असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ यह श्रुति याजगत्केकारणकूंअसत्य रूपहीकहेहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ याश्रुतिविषेजोअसत्शब्दहै ॥ सोतुमारेअत्यंताभावरूपशून्यकूंबोधनकरतानहीं ॥ किंतु सोअसत् शब्द यास्थूलजगत्कीउत्पत्तितेंपूर्व अव्याकृतरूपसूक्ष्मअवस्थाकूंबोधनकरे है ॥ अथवा अत्यंताभावरूपशून्यकूंहीं जगत्काकारणमानणे हारे जेतुमशून्यवादीहो ॥ तिनतुमारेपूर्वपक्षका सोवचन अनुवादकरेहै ॥ परंतु तावचनका कारणकीअसत्यरूपताविषे तात्पर्यनहीं है ॥ जोकदाचित् ताश्रुतिवचनका कारणकीअसत्यरूपताविषे तात्पर्यकल्पनाकरिये ॥ तो कारणकेसत्यरूपताकूंबोधनकरणेहारीश्रु तिकाविरोधहोवेगा॥तहांश्रुति ॥ सदेवसोम्येदमग्रआसीत्॥अर्थयह ॥ हेप्रिय यहदृश्यप्रपंच आपणीउत्पत्तितेंपूर्व सत्यरूपहोताभया ॥ १ ॥ याश्रुतिविषे कारणकीसत्यरूपता कथनकरीहै सोअसंगत होवेगी ॥ यातें कारणकीअसत्यरूपताविषे ताश्रुतिवचनकातात्पर्यनहीं ॥ इत नैंग्रंथकरिके कारणकेअभावकूं तथाकार्यकेअभावकूं जगत्काकारणमानणेहारेवादियोंकेमतकाखंडनकऱ्या ॥ अब ब्रह्मविषे जगत्की कारणताकाखंडनकरेंहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे कारण केअभावविषे तथाकार्यकेअभावविषे याजगत्कीकारणतानहींसंभवेहै ॥ तैसे ब्रह्मविषे भी याजगत्कीकारणतासंभवेनहीं ॥ काहेतें देशकालपरिच्छेदतेंरहित तथासजातीय विजातीय स्वगत यातीनभेदोंतेंरहित जोसर्वतेंअ धिकवस्तुहै सोईही ब्रह्मशब्दकामुख्य अर्थहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्मविषे याजगत्कीकारणतासंभवेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यतोवाइमानिभूतानिजायंते ॥ अर्थयह ॥ जिसब्रह्मतें यहसंपूर्णभूतभौतिकजगत् उत्पन्नभयाहै ॥ इसतें आदिलेकेअनेकश्रुतिस्मृतियों विषे ब्रह्मकूंही याजगत्काकारणकह्याहै ॥ जोब्रह्म जगत्काकारणनहींहोवेगा॥तो तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंकी क्यागतिहोवेगी ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो॥जिनश्रुतिवचनोंविषे ब्रह्मकूं जगत्काकारणकह्याहै॥तिनश्रुतिवचनोंविषेभी निर्विकारअद्वितीयब्रह्मकूं जगत्काकारणकह्यानहीं ॥

किंतु ब्रह्मशब्दकागौणअर्थ जेआकाशादिकहैं ॥ तिनोंविषेही जगत्कीकारणताकथनकरीहै ॥ शंका हेभगवन् ॥ जैसे यह भौतिकप्रपंच उत्पत्तिवालाहै ॥ तैसे आकाशादिकभी उत्पत्तिवालेहैं ॥ यातैं तिनआकाशादिकोंकाभी कोईकारणमान्याचाहिये ॥ और ॥ आत्मनआकाशःसंभूतः ॥ याश्रुतिविषे आत्मातैंहींआकाशकीउत्पतिकहीहै ॥ यातैं तिनआकाशादिकोंकीकारणता ब्रह्मविषेसंभवैहै ॥ समाधान॥ हेब्राह्मणो ॥ वास्तवतैंतो ताअद्वितीयनिर्विकारब्रह्मविषे किसीपदार्थकीकारणताहैनहीं ॥ और बहुतश्रुतिस्मृतियोंविषे ब्रह्मकूंहीं जगत्काकारण कह्याहै यातैं ताअद्वितीयब्रह्मकेसमीपस्थितहोइके ताअद्वितीयब्रह्मविषे कारणताकीप्रतीतिकरावणेहारा कोईदूसरा अनादिकारणकल्पना कऱ्याचाहिये॥जिसकारणकेसंबंधतैं अद्वितीयब्रह्मविषेभी कारणताप्रतीतहोवै है॥यातैं हेब्राह्मणो ॥कारणतैंविनाहीं यहजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ अथवा अभावतैं यहजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ अथवा अद्वितीयब्रह्मतैं यहजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ यातीनोंपपक्षोंविषे पूर्वउक्तसर्वदूषणोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं तेतीनोंपक्ष असंगतहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तिनकारणोंतैंभिन्नकोईदूसरा याजगत्काकारणहै ॥ सो याजगत्काकारणकौनहै ॥ याप्रकारकाविचार हमसर्वब्राह्मणोंकूंकऱ्याचाहिये ॥ हेब्राह्मणो ॥ जिसकारणतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ ताकारणकेविचारकूं अभीतुम रहणेदेवो ॥ किंतु प्रथम हमसंपूर्णब्राह्मण यास्थूलशरीरकेकारणकाविचारकरैं ॥ जोयहहमारास्थूलशरीर किसकारणतैंउत्पन्नभयाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पिताकेवीर्यतैंहीं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यहवार्ता संपूर्णलोकजाणैहैं ॥ यातैं यासर्वलोकप्रसिद्ध अर्थविषे विचारकरणानिष्फलहै॥समाधान॥हेब्राह्मणो ॥ त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा वीर्य यासप्तधातुवोंविषे अंत्यकासप्तमधातुजो वीर्य है ॥ तावीर्यतैंहीं जोकदाचित् यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीहोवै॥तो पुरुषकेशरीरविषेस्थित तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और पुरुषकेशरीर विषेस्थित तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे स्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं॥शंका॥हेभगवन्॥त्वचादिकधातुवोंकेसाथ मिल्याहुआजोवीर्य है॥तावीर्यविषे यद्यपियास्थूलशरीरकीकारणतानहीं है॥ तथापितिनत्वचादिकधातुवों तैं पृथक्भावकूंप्राप्तहुआजोवीर्य है ॥ तावीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवैहै ॥ समाधान॥हेब्राह्मणो ॥ त्वचादिक

धातुवोंतैं भिन्नहुआसोवीर्य जोकदाचित् यास्थूलशरीरकेउत्पत्तिकाकारणहोवे ॥ तौ कामरूपअग्निकेतापकरिके तिनधातुवोंतैंपृथक्होइके पुरुषकेहृदयदेशविषेप्राप्तहुआजोवीर्य है ॥ तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्ति होतीनहीं ॥ यातैं त.वीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पुरुषकेशरीरविषेस्थितहुआ सोवीर्य यास्थूल शरीरकीउत्पत्तिकरैनहीं ॥ किंतु उपस्थइंद्रियद्वारा तापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याहुआसोवीर्य याशरीरकाकारणहोवेहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ पुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याहुआसोवीर्य जोकदाचित् याशरीरकाकारणहोताहोवे ॥ तौ निद्रादोषकरिके तापुरुषका उपस्थ इंद्रियद्वारा निकस्याजोवीर्यहै ॥ तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और तावीर्यतैं याशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ स्त्रीकेसंभोगकरिके यापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याजोवीर्यहै ॥ सोवी र्य यास्थूलशरीरकाकारणहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो स्त्रीकेसंभोगकरिके पुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याहुआ सोवीर्य जोकदाचित् यास्थूल शरीरकाकारणहोवे ॥ तौ स्वप्नविषे स्त्रीकेसंभोगकरिके तापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याजोवीर्यहै ॥ तावीर्यतैंभीयास्थूलशरीरकीउत्पत्ति होणीचाहिये ॥ और तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जाग्रतअवस्थाविषे स्त्रीकेसंभोगकरिके तापुरुषकेशरीरतैं बाहरनिकस्याजोवीर्यहै ॥ सोवीर्यही यास्थूलशरीरकाकारणहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जाग्रतअवस्थाविषे स्त्रीकेसंभोगकरिके यापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याहुआसोवीर्य जोकदाचित् यास्थू लशरीरकाकारणहोवे ॥ तौबाल्यस्त्रीकेसंभोगकरिके तथावृद्धस्त्रीकेसंभोगकरिके यापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याजोवीर्य है ॥ तावी र्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैंतावीर्यविषे याशरीरकी कारणता संभवे नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यौवनअवस्थावालीस्त्रीकेसंभोगकरिके यापुरुषकेशरीरतैं बाहरनिकस्या जो वीर्य है सो वीर्य यास्थूलशरीरकाकारणहै॥समाधान ॥ हेब्राह्मणोयुवान स्त्रीकेसंभोगकरिके यापुरुषकेशरीरतैं बाहरनिकस्या हुआ सोवीर्य जोकदाचित् यास्थूलशरीरकाकारणहोवे ॥ तौ यौवनअवस्थावाली वंध्यास्त्रीकेसंभोगकरिके यापुरुष केशरीरतैं

बाहरनिकस्याजोवीर्य है ॥ तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और तावीर्यतैं याशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जास्त्रीविषे गर्भकेधारणकरणेकीशक्तिहै ॥ तास्त्रीकेसंभोगकरिके यापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याजोवीर्य है ॥ सोवीर्य यास्थूलशरीरकाकारणहै ॥ वंध्यास्त्रीविषे गर्भकेधारणकरणेकीशक्तिहैनहीं ॥ यातैं तावंध्यास्त्रीकेसंभोगकरिके यापुरुषकेशरीरतैं बाहरनिकसेहुएवीर्यविषे याशरीरकीकारणताहोवैनहीं ॥समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ गर्भके धारणकरणेविषेसमर्थयुवानस्त्रीकेसंभोगकरिके यापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याहुआसोवीर्य जोकदाचित् यास्थूलशरीरकाकारणहोवै ॥ तो तास्त्रीकेसंभोगकरिके कामीपुरुषोंका दिनदिनविषेवीर्यनिकसैहै ॥ यातैं दिनदिनविषे तावीर्य तैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये और दिनदिनविषे तावीर्य तैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ यातैं हेब्राह्मणो यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिविषे किसीप्रकारकरिकेभी तावीर्यकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ और मातापिताविषेजो यास्थूलशरीरकीकारणताहोवैहै ॥ सोवीर्यद्वाराहोवैहै ॥ तावीर्यविषे जभी यास्थूलशरीरकीकारणतासिद्धनहींभई ॥ तभी तामातापिताविषे याशरीरकीकारणता किसप्रकारसिद्धहोवैगी ॥ किंतु सोमातापिताभी यास्थूलशरीरकाकारणनहीं है ॥ इतनेंकरिके वीर्यकेविद्यमानहुएभी यास्थूलशरीरकी अनुत्पत्तिरूप अन्वयव्यभिचार निरूपणकऱ्या ॥ अब तावीर्यकेअभावहुएभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिरूप व्यतिरेकव्यभिचारकानिरूपणकरे हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ मत्कुणयूकादिकजेस्वेदजशरीरहैं ॥ तथा वृक्षादिकजेउद्भिज्जशरीरहैं ॥ तेस्वेदजउद्भिज्जशरीर पुरुषकेवीर्यतैं विनाहीउत्पन्नहोवै हैं ॥ याकारणतैंभी तापुरुषकेवीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ इतनेंकरिके पुरुषकेवीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणताकाखंडनकऱ्या ॥ अब धर्मअधर्मरूपकर्मविषे याशरीरकीकारणताखंडनकरे हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जोवादी पुण्यपापरूपकर्मविषे याशरीरकीकारणता अंगीकारकरैहै॥तावादीसैंयहपूछाचाहिये॥ याशरीरकेकारणरूप जेपुण्यपापरूपकर्म हैं॥तिनकर्मोंका कौनकारणहै॥शुद्धआत्मा तिनकर्मोंकाकारणहै अथवा यहस्थूलशरीरही तिनकर्मोंकाकारणहै॥तहां शुद्धआत्मा तिनकर्मोंकाकारणहैयहप्रथमपक्ष

जोवादीअंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहे तें आत्मज्ञानकरिकै जिनपुरुषोंकामोक्षभयाहे ॥ तिनमुक्तपुरुषोंकाभी शुद्धआत्मा विद्यमानहे॥ यातें सोमुक्तपुरुषोंकाशुद्धआत्माभी पुण्यपापरूपकर्मोंकूंउत्पन्नकरेगा ॥ तथातापुण्यपापरूपकर्मकेसुखदुःखरूपफलकूंभीभोगेगा॥ओर जो पुरुष पुण्यपापकर्मकाकरताहोवे हे तथा ताकेफलकाभोक्ताहोवेहे॥ सोपुरुषमुक्तिकूंप्राप्तहोवेनहीं किंतु बंधकूंप्राप्तहोवैहे यातैंशुद्धआत्माविषे कर्मोंकीकारणतामानणेमैं किसीभीपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्तिनहींहोवेगी॥ओर यहस्थूलशरीरही तिनकर्मोंकाकारणहे यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरे तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ तिनकर्मोंकाकारणरूपजोयहस्थूलशरीरहे ॥ तास्थूलशरीरका कोनकारणहे ॥ सोपुण्यपापरूपकर्महीं तास्थूलशरीरकाकारणहे ॥ अथवा तापुण्यपापतैंभिन्न कोईदूसरापदार्थ ताशरीरकाकारणहे ॥ तहां पुण्यपापरूपकर्म तास्थूलशरीरका कारणहे यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं॥ काहेतें जभी प्रथम पुण्यपापरूपकर्म उत्पन्नहोवे ॥ तभी तिनकर्मोतें यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोवे ॥ ओर जभी प्रथम यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोवे ॥ तभी यास्थूलशरीरतें तिनकर्मोंकीउत्पत्तिहोवे ॥ याप्रकार अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ यातें यास्थूलशरीरविषे तिनकर्मोंकीकारणतासंभवैनहीं ॥ ओर पुण्यपापकर्मतैंभिन्न कोईदूसरापदार्थही यास्थूलशरीरकाकारणहे ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ तावादीनें सोदूसराकारणकह्याचाहिये ॥ तहां सोवादी यास्थूलशरीरका जोसूक्ष्मशरीर कारणमानें ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ सोसूक्ष्मशरीर किसीएकस्थूलशरीरकाकारणहे ॥ अथवा सोसूक्ष्मशरीर सर्वस्थूलशरीरोंकाकारणहे ॥ तहां सोसूक्ष्मशरीर किसीएकस्थूलशरीरकाकारणहे ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जोपदार्थ जिसकार्यकेकिसीएकव्यक्तिकूं उत्पन्नकरेहे॥ सोपदार्थ ताकार्यकाकारणहोवेनहीं ॥ किंतु सोपदार्थ ताकार्यकेप्रति अन्यथासिद्धहोवे हे ॥ जैसे कुलालकारासभ यद्यपि यत्किंचित्घटव्यक्तिकाकारणहे ॥ तथापि सोरासभ सर्वघटोंकाकारणहेनहीं ॥ यातें सोरासभ घटरूपकार्यकीउत्पत्तिविषेअन्यथासिद्धहे ॥ तैसे किसीएकस्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरणेहारा सोसूक्ष्मशरीरभी यास्थूलशरीररूपकार्यकीउत्पत्तिविषे अन्यथासिद्धहीहोवेगा ॥ इहां सर्वकार्यव्यक्तियोंकीउत्पत्तिविषे नियमकरिकैजेकारणहोवे हैं ॥ तिनकारणोंतैंभि

न्नपदार्थोंकानाम अन्यथासिद्धहै ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे किसीएकस्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ और सोसूक्ष्मशरीरसर्वस्थूलश
रीरोंकाकारणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं तासूक्ष्मशरीरविषे जोकदाचित् सर्वस्थूलशरीरोंकीकार
णताहोवै ॥ तो जैसे देवदत्तनामापुरुषकेसूक्ष्मशरीरतैं तादेवदत्तनामापुरुषकास्थूलशरीर उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसेतादेवदत्तनामापुरुषकेसूक्ष्म
शरीरतैं यज्ञदत्तनामापुरुषकास्थूलशरीरभी उत्पन्नहोणाचाहिये ॥ और देवदत्तनामापुरुषकेसूक्ष्मशरीरतैं यज्ञदत्तादिकपुरुषोंकेस्थूलश
रीर उत्पन्नहोतेनहीं ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे सर्वस्थूलशरीरोंकीकारणतासंभवैनही ॥ किंवा ॥ सोसूक्ष्मशरीर जोकदाचित् यास्थूल
शरीरकाकारणहोवै ॥ तो तासूक्ष्मशरीरतैंहीं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिसंभवहोइसकै है ॥ यातैं तावादीनैं अंगीकारकरी जापुण्यपापकर्म
विषे यास्थूलशरीरकीकारणता सोव्यर्थहोवैगी ॥ किंवा ॥ जैसे यहस्थूलशरीर उत्पत्तिवालाहै ॥ तैसे सोसूक्ष्मशरीरभी उत्पत्तिवालाहै॥
यातैं तासूक्ष्म शरीरकाभीकोईकारण तावादीनैंकह्याचाहिये ॥ तहां सोवादी जोकदाचित् अज्ञानकूंही तासूक्ष्मशरीरकाकारण
मानैं ॥ तो ताअज्ञानकरिकेही यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोइसकैहै ॥ तिनदोनोंकेमध्यविषे तासूक्ष्मशरीरकाअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥
किंवा ॥ सोअज्ञानभी पुण्यपापरूपकर्मकीअपेक्षातैंविनाहींतासूक्ष्मशरीरकाकारणहै ॥ अथवा सोअज्ञान पुण्यपापरूपकर्मोंकीअपेक्षावा
लाहुआ तासूक्ष्मशरीरकाकारणहै ॥ तहां सोअज्ञान कर्मकीअपेक्षातैंविनाहीं तासूक्ष्मशरीरकाकारणहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकार
करै सोसंभवैनहीं॥काहेतैंपुण्यपापरूपकर्मकीअपेक्षातैंविनाहीं सोअज्ञान जैसेतासूक्ष्मशरीरकीउत्पत्तिकरैहै तैसेसोनिरपेक्षअज्ञान यास्थूल
शरीरकोभीउत्पत्तिकरैगा ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे यास्थूलशरीरकीकारणतामाननी निष्फलहोवैगी ॥ और सोअज्ञान पुण्यपापरूप
कर्मकीअपेक्षावालाहुआ तासूक्ष्मशरीरकाकारणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं पुण्यपापादि
ककार्योंकीवासनाकरिकैयुक्तहुआ सोअज्ञान जैसे तासूक्ष्मशरीरकाकारणहोवैहै ॥ तैसे सोअज्ञान यास्थूलशरीरकाभीकारणहोवैगा ॥
यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे यास्थूलशरीरकीकारणतामाननी निष्फलहोवैगी ॥ किंवा ॥पुण्यपापरूपकर्मोंकीवासनावोंकूं जोकदाचित् तासू

क्ष्मशरीरकाकारणमानिये ॥ तो घटीयंत्रकीन्याई अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी॥ काहेतें संस्कारोंकानाम वासनाहै॥ तेवासनारूपसंस्कार विनाशअवस्थावालेपुण्यपापरूपकर्मोंतेंउत्पन्नहोवैहैं ॥ और जोवस्तु पूर्वविद्यमानहोवैहै ॥ ताकाही नाशहोवैहै ॥ अविद्यमानवस्तुकानाश होवैनहीं ॥ यातें तिनवासनारूपसंस्कारोंतेंपूर्व तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकीविद्यमानता अवश्यअपेक्षितहै ॥ यातेंयहअर्थसिद्धभया ॥ पुण्य पापरूपकर्मोंतें वासनारूपसंस्कार उत्पन्नहोवे हैं ॥ और तिनसंस्कारोंतें सूक्ष्मशरीर उत्पन्नहोवे है॥और तासूक्ष्मशरीरतें यहस्थूलशरीर उत्पन्नहोवे है॥ और यास्थूलशरीरतें पुनःपुण्यपापरूपकर्म उत्पन्नहोवे हैं ॥ याप्रकार घटी यंत्रकीन्याई अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥यातें हेब्राह्मणो ॥ याप्रकारकेपूर्वउक्तदूषण जिसविषेनहींप्राप्तहोवैं॥ ऐसाकोई यास्थूलशरीरकाकारण प्रतीतहोतानहीं ॥ तात्पर्ययह॥सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकेसिद्ध जोयहस्थूलशरीरहै ॥ तास्थूलशरीरकेकारणकाभी जभी हमलोकोंकूं निश्चयनहींभया ॥ तभी यासर्वजगत्के कारणकानिश्चय हमजीवोंकूं किसप्रकारहोवैगा ॥ और कारणतेंविना किसीकार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ यास्थूल शरीररूपकार्यकाभी कोईकारणहोवैगा ॥ परंतुताकारणकानिश्चय हमलोकोंकूंहैनहीं ॥ जोयहस्थूलशरीर इसकारणतेंउत्पन्नभयाहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ यहहमाराशरीर अन्नतेंउत्पन्नहोवे है ॥ याप्रकारकावचन जोवादी कहै॥सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें यास्थूलशरीरकीउत्प त्तितेंपूर्व कोईजीव अन्नकाभक्षणकरतानहीं ॥ किंतु यास्थूलशरीरकीउत्पत्तितेंअनंतरहीं याशरीरकीतृप्तिवासते तथापुष्टिवासते हमसर्व जीव अन्नकाभक्षणकरतेहैं ॥ यातें ताअन्नविषेभी यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ इतनेंकरिके यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिकेकारण काविचारकन्या ॥ अब याशरीरकीस्थितिकेकारणकाविचारकरे हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ यहव्रीहियवादिकअन्न जैसे यास्थूलशरीरकेउत्पत्तिका कारणनहीं है ॥ तैसे सोअन्न याशरीरकेजीवनकाभीकारणनहीं है ॥ काहेतें जोकदाचित् यहअन्न याप्राणियोंकेजीवनकाकारणहोवे ॥ तो ताअन्नकेविद्यमानहुए तिनप्राणियोंकामृत्यु नहींहोणाचाहिये ॥ और अन्नकेविद्यमानहुएभी तिनप्राणियोंकामृत्यु देखणेविषेआवैहै ॥ यातें याअन्नविषे जीवनकीकारणतासंभवैनहीं ॥ उलटा ताअन्नकेदोषतें याजीवोंकेशरीरविषे नानाप्रकारकीव्याधियां उत्पन्नहोवैहैं ॥

ताव्याधियोंकरिके तिनजीवोंकीमृत्युहोवैहै ॥ इसप्रकार चिकित्साशास्त्रविषे व्याधिकीउत्पत्तिद्वारा ताअन्नकूंहीं जीवोंकेमृत्युकाकारण कह्याहै ॥ यातें ताअन्नविषे जीवनकीकारणतासंभवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसेअन्नकीप्राप्ति यापुरुषोंकेजीवनकाकारणनहींहै॥ तैसेअन्य विषयोंकीप्राप्तिभी यापुरुषोंकेजीवनकाकारणनहीं है ॥ किंतु उलटा तिनविषयोंकीप्राप्ति यापुरुषोंके मरणकाहीकारणहै ॥ तहां स्त्रीरूप विषयकीप्राप्तितें याकामीपुरुषोंकूं हृदयविषे परमतापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें स्त्रीरूपविषयकीप्राप्तिभी यापुरुषोंकेदुःखकाहीकारणहै ॥ और जोरोगीपुरुष आपणेशरीरकेभीतर घंटाकेशब्दसमान प्राणवायुकेशब्दोंकूंश्रवणकरैहै ॥ सोरोगीपुरुष थोडेकालविषेही मृत्युकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार निमित्तशास्त्रकेजानणेहारेपुरुष कथनकरैहैं ॥ यातें शब्दरूपविषयभी याजीवोंकेमरणकाहीकारणहै ॥ अब स्त्रीरूप विषयकीप्राप्तिविषे मरणकीकारणता स्पष्टकरिकेदिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ वेदकेअर्थकूंजानणेहारे जेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तेविद्वान्पुरुष याप्र कार कथनकरैहैं ॥ जोकामीपुरुष शास्त्रकीमर्यादाकापरित्यागकरिके रात्रिदिनविषे आपणीस्त्रीमें वीर्यकापरित्यागकरैहै सोकामीपुरुष पापकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तापापकर्मकरिके सोकामीपुरुष शीघ्रही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और परस्त्रीविषेतो एकवार वीर्यकेपरित्यागकियेतैंभी याकामीपुरुषकूं पापकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तापापकर्मकरिके सोपरस्त्रीगामीपुरुष शीघ्रही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ प्राणंवाएतेप्रस्कं दंतियेदिवारत्यासंयुज्यंते ॥ अर्थयह ॥ जेपुरुष आपणीस्त्रीकेसाथ दिनविषे संभोगकरैहैं ॥ तेपुरुष आपणेप्राणोंकूंहीनष्टकरैहैं ॥ तहांस्मृ तिभी ॥ श्लोक ॥ परदारानगंतव्या सर्ववर्णेषुकर्हिचित् ॥ नहीदृशमनायुष्यं त्रिषुलोकेषुविद्यते ॥ अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिवर्णोंविषे किसीभीपुरुषनें परस्त्रीकागमननहींकरणा ॥ काहेतें यातीनलोकोंविषे ॥ जैसे परस्त्रीकागमन यापुरुषकेआयुष्यकीहानि करैहै ॥ तैसे दूसराकोईकर्म यापुरुषकेआयुष्यकीहानिकरतानहीं ॥ १ ॥ याप्रकार तेशास्त्रवेत्तापुरुष कथनकरैहैं ॥ और योगशास्त्रकेजान णेहारेजेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तेविद्वान्पुरुषतो याप्रकारकथनकरैहैं ॥ जैसे यालोकविषे जिसवृक्षकारस बाहरनहींनिकसैहै ॥ सोवृक्ष तारसके प्रभावतें चिरकालपर्यंत स्थितहोवैहै ॥ और जिसवृक्षकारस बाहरनिकसैहै ॥ सोवृक्ष थोडेकालमेंहीं सूखिके मूलसहितनष्टहोवैहै ॥ तैसे

जिसपुरुषकावीर्यरूपरस याशरीरतैंबाहरनहींनिकसैहै ॥ सोपुरुष तावीर्यरूपरसकेप्रभावतैं कामदेवकीन्याई सुंदरकांतिवालाहुआ चिरकालपर्यंत जीवैहै ॥ और जिसपुरुषका सोवीर्यरूपरस याशरीरतैंबाहरनिकसैहै ॥ सोपुरुष शीघ्रहीमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा ॥ जैसे वृक्षकी शाखावोंविषे तथास्कंधोंविषे स्थितजोरसहै॥तारसकेनिर्गमनहुएभी सोवृक्ष नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जभी तावृक्षकेमूलतैंरसनिकसैहै ॥ तभी सोवृक्ष शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यापुरुषकेहस्तपादादिकअंगोंविषेस्थित जेरुधिरादिकरसहैं ॥ तिनरुधिरादिकरसोंकेनिर्गमन हुएभी यहपुरुष नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जभी यापुरुषकेमस्तकतैं सोवीर्यरूपरसनिकसैहै ॥ तभी यहपुरुष शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवैहै यातैं रुधिरादिकसर्वधातुवोंतैं सोवीर्यरूपसप्तमधातु उत्कृष्टहै॥किंवा॥जैसे लोकप्रसिद्ध पिप्पलादिकवृक्षोंकामूलहोवैहै ॥ तैसे याशरीररूप वृक्षका यहमस्तकहीमूलहै ॥ तहांश्रुति ॥ ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाखएषोऽश्वत्थःसनातनः ॥ अर्थयह ॥ यालोकप्रसिद्धअश्वत्थादिकवृक्षोंकातो मूलनीचेहोवैहै और शाखा ऊपरहोवैहै॥और प्रवाहरूपकरिकेअनादि जोयहशरीररूपअश्वत्थकावृक्षहै॥ ताका मस्तकरूपमूलतो ऊपरहै ॥ और हस्तपादादिकअवयवरूपशाखा नीचेहैं॥किंवा॥ जैसे प्रसिद्धवृक्षकेमूलविषेमध्यभागहोवैहै॥तैसेयापुरुषकेमस्तकरूपमूलविषेमस्तिष्क नामामध्यभागरहेहै॥और जैसे तावृक्षकेमूलकेमध्यभागविषेस्थितजोरसहै ॥ सोरस तावृक्षकेजीवनकाकारणहै ॥ तैसे यापुरुषकेमस्तकरूप मूलकेमस्तिष्कभागविषेस्थित जोवीर्यरूपरसहै॥सोवीर्यरूपरसही यापुरुषकेजीवनकाकारणहै ॥ इहां पुरुषकेमस्तकविषेस्थित जोश्लेष्मलविशिष्टमांसकापिंडविशेषहै ताकानाम मस्तिष्कहै॥कैसाहैसोमस्तिष्क॥यापुरुषकेदशमद्वारकूंनिरोधकरणेहाराहै ॥ तथा चंद्रमाकेबिंब समान जाकाशुक्लवर्ण है ॥ तथा संपूर्णनाडीरूप सूत्रोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ और जिसमस्तिष्कविषे पद्मपत्रकेसमान सहस्रस्थूलनाडियां रहैहैं ॥ तथा तेसहस्रनाडियां तहां सहस्रदलवालेकमलकूंरचै हैं ॥ और जिसमस्तिष्कनामादेशविषे यहजीवरूपहंस गंगायमुनाकापरित्यागकरिके पश्चिमवाहनी सरस्वतीरूपमार्गकरिके प्राप्तहोवैहै॥कैसाहैसोजीवरूपहंस मनरूपीमानसरोवरविषे निवासकरणेहाराहै ॥ इहां इडानामाजावामनाडी है ताकानाम गंगाहै ॥ और पिंगलानामाजादक्षिणनाडीहै ताकानाम यमुनाहै ॥ और तिनदोनोंनाडियोंकेमध्यविषे

स्थित जासुषुम्नानामानाडीहै ताकानाम सरस्वतीहै ॥ यहवार्ता स्वरोदयशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहाँश्लोक ॥ इडागंगेतिविज्ञेया पिंगला
यमुनानदी मध्येसरस्वतीविद्यात्प्रयागादिसमस्तयोः ॥ अर्थयह ॥ इडानामावामनाडी गंगारूपहै ॥ और पिंगलानामादक्षिणनाडी यमु
नारूपहै ॥ और तिनदोनोंकेमध्यविषेस्थित सुषुम्नानामानाडी सरस्वतीरूपहै ॥ और तिनतीनोंकासंगम प्रयागकेसमानहै ॥ १ ॥ किंवा ॥
याशरीरविषेस्थित जेमूलाधार स्वाधिष्ठान मणिपूरक अनाहत विशुद्धि आज्ञा यहषट्चक्रहैं ॥ जेषट्चक्र कुंडलिनीनामानाडीकेविचरणे
कास्थानहैं ॥ ताषट्चक्ररूपीमार्गकाज्ञान यापुरुषकूं गुरुकीकृपातेंहींहोवैहै ॥ गुरुकीकृपातेंविना तिसषट्चक्ररूपीमार्गकाज्ञान यापुरुषकूं
होवैनहीं ॥ और गुरुकीकृपातेंरहितहुआ यहजीवरूपहंस जभी ताषट्चक्ररूपमार्गकूंनहींजाणेहै ॥ तभी सोजीवरूपहंस याशरीरकेअने
कनाडियोंविषे वारंवार भ्रमणकरैहै ॥ तथा तिननाडियोंविषेस्थित अन्नकेस्थूलसूक्ष्मरसोंकूंभोगै है ॥ परंतु ताजीवरूपहंसका ऊर्ध्वगम
नहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे जलकेसरोवरविषेस्थितजोप्रसिद्धहंसहै ॥ ताहंसका जभी ताजलकेऊपर आकाशविषे गमनकरणेकामार्ग
निरुद्धहोवैहै ॥ तभी सोहंस ताजलविषेहीभ्रमणकरैहै ॥ तथा ताजलकेपदार्थोंकूंभक्षणकरताहुआ सोहंस तहाँहींस्थितहोवैहै ॥ तैसे मोक्ष
कामार्गरूपजासुषुम्नानामानाडीहै ॥ ताकूं जोजीवरूपहंस नहींजानैहै ॥ सोजीवरूपहंस यासंसारविषेहीवारंवार भ्रमणकरैहै ॥ ऐसीसुषुम्ना
नामानाडीरूपमार्गद्वारा यहजीवरूपहंस जिसमस्तिष्कदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तामस्तिष्कविषेस्थित जोयहवीर्यरूपसप्तमधातुहै ॥ सोवीर्यरू
पसप्तमधातु त्वकादिकषट्धातुवोंकासाररूपहै ॥ और सोवीर्यरूपसप्तमधातुभी याशरीरविषे तीनप्रकारकेपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहाँ
कामदोषतेंरहितजोजीवोंकाहृदयकमलहै॥ताहृदयकमलविषे विशेषरूपकरिकेस्थितहुआसोवीर्य तथा अन्यहस्तपादादिकअंगोंविषे सामा
न्यरूपकरिकेस्थितहुआसोवीर्य बलरूपप्रथमपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥जोबल सर्ववैरियोंकूं भयकीप्राप्तिकरैहै॥और मस्तकविषेस्थितहुआसो
वीर्य सामर्थ्यरूपद्वितीयपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥जोसामर्थ्य याशरीरकेचिरकालपर्यंतस्थितिकाकारणहै॥और कामरूपअग्निकरिकेक्षोभकूंप्रा
प्तहुआभीजोवीर्य निरोधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जोवीर्य अधिकताकूंप्राप्तहोवैहै॥सोवीर्य ओजनामाअष्टमधातुरूप तृतीयपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥

जिस ओजकरिके यहपुरुषनिरोगरहेहे ॥ इतनेंकरिके तावीर्यकेनिरोधकरणेकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब तावीर्यकेपरित्यागकरणेविषे दोष
कानिरूपणकरेहैं ॥ याजीवोंका सोसप्तमधातुरूपवीर्य जभी याशरीरतैंबाहरनिकसैहे ॥ तभी सोपूर्वउक्तफल तिनजीवोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥
यातैं ताफलकीप्राप्तिवासते यहअधिकारीपुरुष मंत्र औषधि ध्यान इत्यादिकउपायोंकरिके तावीर्यकूं शरीरतैंबाहरनिकसणेनहींदेवे ॥ तहाँ
वीर्यकेनिरोधकायहलक्षणहे ॥ जैसे यालोकविषे अग्निकेसंबंधकरिके वृक्षोंकारस बाहरनिकसेहे ॥ तैसेस्त्रीरूपअग्निकेसंबंधहुएभी यापुरुषरू
पीवृक्षकावीर्यरूपरस जभी बाहरनहींनिकसे ॥ तभीयावीर्यकानिरोधजानणा ॥ तावीर्यकेनिरोधकरिके योगीपुरुषोंकूं आकाशविषेगमना
दिकसिद्धियोंकीप्राप्तिहोवैहे ॥ ताफलकूं वीर्यकेपरित्यागकरणेहाराभोगीपुरुष प्राप्तहोवैनहीं ॥ उलटा तावीर्यकेपरित्यागकरणेतैं सोभोगी
पुरुष नाशकूंहींप्राप्तहोवैहे ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निकेसंबंधकरिके जिसवृक्षकारस एकवारभी बाहरनिकस्याहे ॥ सोवृक्षभी जभी शीघ्र
हीनाशकूंप्राप्तहोवैहे तभी अनेकवार अग्निकेसंबंधकरिके जिसवृक्षकारस अनेकवार बाहरनिकसेहे ॥ सोवृक्ष शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवैहे याके
विषेक्याकहणाहे ॥ तैसे एकवार स्त्रीरूपअग्निकेसंबंधकरिके जिसपुरुषरूपीवृक्षका वीर्यरूपरस एकवारभी बाहरनिकसेहे ॥सोपुरुषभी जभी
नाशकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तभी अनेकवार स्त्रीरूपअग्निकेसंबंधकरिके अनेकवार वीर्यरूपरसकेनिकसणेतैं यहपुरुषरूपवृक्ष नाशकूंप्राप्तहोवे है
याकेविषेक्याकहणाहे ॥ यातैं यापुरुषनैं अनेकउपायोंकरिके तावीर्यकानिरोधकरणा ॥ हेब्राह्मणो इसप्रकार योगशास्त्रविषे स्त्रीकेसंभो
गकूं पुरुषकेमृत्युकाकारणकह्याहे ॥ यातैं सोस्त्रीकासंभोगरूपविषयभी यापुरुषकेजीवनकाकारणनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे स्त्रीकासं
भोगरूपविषय याजीवोंकेमरणकासाधनहे ॥ तैसे चंदनकपूरादिकोंकरिकेयुक्त जेनानाप्रकारकेलेपहैं ॥ तेलेपभी यापुरुषोंकेशरीरविषे
शीत वात कफ सन्निपातादिकरोगोंकीउत्पत्तिकरेहैं ॥ तिनशीतादिकरोगोंकरिके सोपुरुष शीघ्रहीमृत्युकूंप्राप्तहोवैहे ॥ यातैं चंदनादिकों
केलेपभी शीतादिकोंकीउत्पत्तिद्वारा यापुरुषकेमृत्युकेहीकारणहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ इसतैंआदिलेके जितनेकीनेत्रादिकइंद्रियोंकेरूपादिक
विषयहैं ॥ तेसंपूर्णविषय याजीवोंकेमृत्युकेहीकारणहैं ॥ तथा तिनविषयोंकेप्राप्तिकीइच्छावालेजेदुर्जनशत्रुहैं ॥ तथासिंहसर्पादिकहैं ॥

तेभी यापुरुषोंकेमृत्युकाहीकारणहैं ॥ तात्पर्यंयह ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंकेजेरूपादिकविषयहैं ॥ तेरूपादिकविषय जभी याशरीरोंकेजीवन
काकारणभीनहींभये ॥ तभी तेरूपादिकविषय याशरीरोंकीउत्पत्तिकेकारण किसप्रकारहोवेंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ प्राणोंकाजोश्वासप्र
श्वासरूपव्यापारहै ॥ सोव्यापारही याशरीरोंकेजीवनकाकारणहै॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ सोप्राणोंकाश्वासप्रश्वासरूपव्यापारभी याशरी
रोंकेजीवनकाकारणनहीं ॥ काहेतें वृक्षादिकस्थावरशरीरोंविषे सोप्राणोंकाव्यापार किसीकूंदेखणेविषेआवतानहीं ॥ तथापि तेवृक्षादिक
जीवनकूंप्राप्तहुए देखीतेहैं ॥ तथा मनुष्यादिकजंगमशरीरभी मूर्च्छाअवस्थाविषे ताप्राणकेव्यापारतैंरहितहुएभी जीवतेदेखीतेहैं॥ यातेंसो
प्राणोंकाश्वासप्रश्वासरूपव्यापारभी याशरीरोंकेजीवनकाकारणनहीं ॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ जठराग्नि तथारुधिर याशरीरोंकेजीवनकाकार
णहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जठराग्नि तथारुधिर यहदोनोंभी याशरीरकेजीवनकाकारणनहीं ॥ काहेतें कितनेकरोगीपुरुषोंकेनाडीकूं
शस्त्रकरिकैछेदनकियेहुएभी रुधिरनिकसतानहीं ॥ तथा कितनेकरोगीपुरुषोंकेशरीरकास्पर्शकिएहुएभी तिनोंकेशरीरविषेउष्णताप्रतीत
होतीनहीं ॥ तथापि तेरोगीपुरुष जीवतेहुएदेखणेमेंआवतेहैं ॥ यातें रुधिर तथाजठराग्नि यहदोनोंभी पुरुषकेजीवनकाकारणनहीं ॥ हेब्रा
ह्मणो ॥ हमसंपूर्णप्राणी किसपदार्थकरिकैजीवतेहैं ॥ याप्रकार जीवनकेकारणकानिश्चयकरणेविषेभी जभीहम समर्थनहींभये ॥ तभी याश
रीरोंकी उत्पत्तिकेकारणकानिश्चयकरणेविषे हम किसप्रकार समर्थहोवें गे॥किंतु ताकारणकेनिश्चयकरणेविषे हम समर्थनहींहोवेंगे ॥ इतनें
करिके याशरीरकेजीवनकेकारणकाविचारकऱ्या ॥ अब याशरीरकेआधारकाविचारकरे हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ यहहमाराशरीर जिसआधार
विषेस्थितहै ॥ ताआधारकूंभी हम जाणतेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहप्रत्यक्षभूमिहीं याशरीरकाआधारहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥
याभूमिविषे याशरीरकीआधारतासंभवेनहीं ॥ काहेतें याशरीरकाआधाररूपजाभूमिहै ॥ सोभूमि किसआधारविषेरहेहै ॥ और सोभू
मिकाआधारभी किसआधारविषेरहैहै ॥ इसप्रकार उत्तरउत्तर आधारकीकल्पनाकरणेतें अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ याका
रणतें यहभूमि याशरीरकाआधारनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ याशरीरकीअविशेषताहुएभी चित्तकीगति नानाप्रकारकीदेखणेविषे

आवेहै ॥ यातैं याशरीरकाजोआधारहै सोचित्तकाआधारसंभवैनहीं॥ किंतु याशरीरकेआधारतैंभिन्नहीकोई चित्तकाआधारं कदाचितहै॥ किंवा ॥ याभूमिविषे इसशरीरकीआधारतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं जापदार्थकेविद्यमानहुए आधेयवस्तुकानीचेपतननहींहोवै॥ तापदार्थकानाम आधारहै॥ जैसे स्तंभोंकेविद्यमानहुए गृहकानीचेपतनहोवैनहीं॥यातैं तेस्तंभ तागृहकाआधारहैं॥सोयाप्रकारका आधारकालक्षण याभूमिविषे घटतानहीं ॥ काहेतैं ऊंचीभूमिविषे अथवा किसीआसनविषे स्थितहुआभीयहपुरुष जभी निद्राकरिकेयुक्तहोवैहै ॥ तभी सोपुरुष आपणेशरीरकूंस्थितकरणेविषेसमर्थनहींहोवैहै ॥ किंतु तानिद्राकरिकें सोपुरुष नीचेपडिजावैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहशरीर भूमिकेआधारनहीं ॥ किंतु ताभूमितैंभिन्नकिसीआधारविषे यहशरीर स्थितहै ॥ हेब्राह्मणो ॥ ताशरीरकेआधारकूं तथा याभूमिकेआधारकूंभी जभी हम नहींजाणिसकते ॥ तभी याशरीरकेजीवनकेकारणकूं तथाउत्पत्तिकेकारणकूं हम किसप्रकार जाणिसकैंगे ॥ किंतु ताकारणकूं हम नहींजाणिसकैंगे ॥ इतनेंकरिके याशरीरकेआधारकाविचारकन्या ॥ अब याशरीरकेप्रवर्तकका विचारकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे यालोकविषे भूतकेआवेशकरिकेयुक्त जोपुरुषहै ॥ सोपुरुष आपणेइच्छातैंविनाहीं नानाप्रकारकेशुभअशुभकर्मोंकूंकरैहै ॥ तैसे शुभअशुभकर्मोंकेकरणेकीइच्छातैंरहितजोहमजीवहैं ॥ तिनोंकूं हृदयदेशविषेस्थितहोइके कौनदेव तिनकर्मोंविषे प्रवर्त्तकरैहै ॥ यहवार्ता पांडवगीताविषे दुर्योधननेंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ जानामिधर्मंनचमेप्रवृत्तिः जानामिपापंनचमेनिवृत्तिः ॥ केनापिदेवेनहृदिस्थितेन यथानियुक्तोस्मि तथाकरोमि ॥ अर्थयह ॥ मैंदुर्योधन धर्मकूंजाणताहूं ॥ तौभी ताधर्मविषे मेरीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ और मैं पापकर्मकूंजाणताहूं ॥ तौभी तापापकर्मतैं हमारीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ हमारेहृदयदेशविषेकोईदेवस्थितहै ॥ सोदेव जिसजिसकर्मविषे हमारेकूंप्रेरणाकरैहै ॥ तिसीतिसीकर्मकूं मैं पराधीनहुआकरताहूं ॥ सो नानाप्रकारकेशुभअशुभकर्मोंविषे हमारेकूंप्रवर्त्तकरणेहारा कौनदेवहै ॥ तादेवकूं हम जाणतेनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जिसपुण्यपापरूपकर्मोंकेसुखदुःखरूप फलकूं हम दिनरात्रिविषेभोगतेहैं ॥ तासुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे कौनकारणहै ॥ यहभी हमजाणतेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥

तासुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे हमजीवही स्वतंत्रकारणहैं ॥ समाधान ॥हेब्राह्मणो ॥ तासुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे हमजीव स्वतंत्रकारणनहीं ॥ काहेतें हमजीव कितनेककर्मोंकूं सुखकासाधनमानिकेकरते हैं ॥परंतु तेकर्म हमारेकूंसुखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ किंतु उलटा ते कर्म हमारेकूंदुःखकीहीप्राप्तिकरते हैं ॥ और हमजीव कितनेककर्मोंकूं दुःखकासाधनमानिकेकरते हैं ॥ परंतु तेकर्म हमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ किंतु उलटा तेकर्म हमारेकूंसुखकीहीप्राप्तिकरते हैं॥ जैसे कुपथ्यसेवनतैंभी कदाचित् रोगकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ जोकदाचित् हमजीव सुखदुःखरूपफलकेभोगविषेस्वतंत्रहोवैं॥तौ सर्वकर्मोंविषे हमारेकूं सुखकीहीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ और सर्वदा हमजीवोंकूं सुखकी प्राप्तिहोतीनहीं ॥ यातें यहजान्याजावै है ॥ ताशुभअशुभकर्मोंकेकरावणेहारा तथा ताकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकेदेणेहारा कोईस्वतंत्रदेव हमारेहृदयविषेविराजमानहै ॥ जादेवकीप्रेरणाकरिके हमजीव शुभअशुभकर्मोंविषेप्रवर्तहोते हैं ॥ तथा ताकर्मकेफलकूंभोगते हैं परंतु तादेवकूं हमजीव जाणिसकतेनहीं ॥ हेब्राह्मणो ॥ ऐसेअत्यंतसमीपदेवकूंभी जभीहमजीव नहींजाणिसकते ॥ तभी याशरीरके उत्पत्ति स्थिति जीवनकेकारणकूं हमजीव किसप्रकार जाणिसकेंगे ॥ यातें हेब्राह्मणो ॥ हमसंपूर्णबुद्धिमान्ब्राह्मण किसीदैवयोगतैंइहांआइकेएकठेभये हैं ॥ सोहमाराएकठाहोणा जिसप्रकार सर्वलोकोंकेउद्धारकरणेवासतैहोवै ॥ तिसप्रकार हमसंपूर्णब्राह्मण याजगत्केकारणकाविचार करें ॥ इसप्रकार तेब्रह्मवेत्ताब्राह्मण सर्वब्राह्मणोंकेप्रति वचनकहिके कालादिकोंकूंजगत्काकारणमानणेहारेवादियोंकेमतोंकाखंडनकरणेवासते प्रथम तिनोंकेमतकानिरूपणकरतेभये ॥ तहांप्रथम ज्योतिषशास्त्रवाले कालवादियोंकामत निरूपणकरे हैं॥हेब्राह्मणो ॥ कोईकब्राह्मणतौ याकालकूंहीं जगत्काकारणमाने हैं॥तेकालवादी याप्रकारकेवचनकहै हैं॥आकाशादिकपंचभूतोंतैंआदिलेके यहसंपूर्णजगत् कालतैंहींउत्पन्नहोवै है ॥ और कालविषेही सोजगत्स्थितहोवै है ॥ और कालविषेही सोजगत् लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और यहजीव कालकरिकैही स्वर्गकूंप्राप्तहोवै है॥तथा कालकरिकैही यहजीव नरककूंप्राप्तहोवै है ॥तथा कालकरिकैही यहजीव भूरादिकसप्तलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै॥ और कालकरिकैही यहजीव ब्रह्मादिकउच्चशरीरोंकूं प्राप्तहोवै है॥तथा कालकरिकैही यहजीवमनुष्यादिकमध्यमशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥तथाका

लकरिकेही यहजीव पशुआदिकनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ और कालकरिकेही यहजीव संपदाआपदाकूंप्राप्तहोवे है ॥और कालकरिकेही यहजीव सुखदुःखकेदेणहारेविषयोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ और भोगमोक्षकीदेणेहारीविद्याकूंभी यहजीव कालकरिकेहीप्राप्तहोवे है॥और उपकार करणेहारेजेसुहृदमित्रहैं॥तथा अपकारकरणेहारेजेदुर्जनशत्रुहैं ॥ तथा उपकारअपकारतेंरहित जेउदासीनपुरुषहैं ॥ तिनमित्रादिकोंकूंभी यहजीव कालकरिकेहीप्राप्तहोवे है॥और कालकरिकेही यहजीव जन्मकूंप्राप्तहोवे है ॥और कालकरिकेही यहजीव बाल्य यौवन वृद्ध याती नअवस्थानोंकूंप्राप्तहोवे है ॥और कालकरिकेही यहजीव मरणकूं तथा पुनःमातापिताकूं प्राप्तहोवे है॥और कालकरिकेही यहजीव भ्रातावों कूं तथा भगिनियोंकूं प्राप्तहोवे है ॥और कालकरिकेही यहजीव गर्भवासकूं तथा तागर्भ तें बाहरनिर्गमनकूं प्राप्तहोवे है ॥और कालकरिके ही यहजीव नानाप्रकारकेऐश्वर्यकूंप्राप्तहोवे है॥तथा ताऐश्वर्यकेनाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ और कालकरिकेही यहस्त्रियां ऋतुधर्मकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और कालकरिकेही यहस्त्रियां गर्भकूंधारणकरे हैं॥और वात वर्षा आतपइत्यादिकसंपूर्णपदार्थ ताकालतेंहींउत्पन्नहोवे हैं ॥हेब्राह्मणो इहां बहुतकहणेकाकछुप्रयोजननहीं॥तेकालवादी ज्योतिषशास्त्रवाले यासंपूर्णस्थावरजंगमरूपजगत्कीउत्पत्ति कालतेंहींअंगीकारकरे हैं ॥यातें तिनोंकेमतविषे यहकालही सर्वजगत्काकारणहै ॥याअर्थविषे तेकालवादीब्राह्मण याप्रकारकीयुक्तिभीकथनकरे हैं॥जोकदाचित् कोईभाव पदार्थकालकीअपेक्षातेंविनाही किसीकार्यकेपूर्ववर्तिहोवे॥तो तिसपदार्थविषेही कारणरूपताहोवे॥याकानिवारण हम करतेनहीं॥परंतु ऐसा कोईभावपदार्थहैनहीं ॥जोकालकी अपेक्षानहींकरताहोवे॥किंतु लोकप्रसिद्धसर्वकारणोंकेविद्यमानहुएभी याकालकीअपेक्षा अवश्यहोवेहै॥ यातें यहकालहीसर्वजगत्काकारणहै ॥ किंवा ॥ एककालतेंविना जितनेकलोकप्रसिद्धकारणहैं ॥ तेकारण कार्योंकोउत्पत्तिविषे परस्पर व्यभिचारीहैं ॥ और यहकालतो सर्वकार्योंकोउत्पत्तिविषे अव्यभिचारीहै ॥ याकारणतेंभीयहकालही सर्वजगत्काकारणहै ॥ किंवा ॥ जिसपदार्थकेपूर्वविद्यमानहुए जोपदार्थ उत्पन्नहोवे है॥और जिसपदार्थकेपूर्वअविद्यमानहुए जोपदार्थ नहींउत्पन्नहोवे है ॥ सोपदार्थ ताप दार्थकाकारणहोवे है ॥ जैसे मृत्तिकादंडचक्रकुलालादिकपदार्थोंकेविद्यमानहुए घटकीउत्पत्तिहोवे है ॥ और मृत्तिकादंडादिकोंकेअवि

द्यमानहुए ताघटकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं तेमृत्तिकादंडादिकपदार्थ ताघटकेकारणहैं ॥ याप्रकारका कारणकालक्षण याकालविषेहीघटैहै ॥ याकारणतैंभी यहकालही सर्वजगत्काकारणहै ॥ किंवा ॥ जैसे लोकविषे तंतुवों तैं पटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तथा मृत्तिकातैं घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै है॥ तथा बीजों तैं अंकुररूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तहां पटादिककार्योंकीउत्पत्तिविषे यद्यपितंतुआदिक विशेषकारणप्रतीतहोवै है ॥ तथापि तंतु मृत्तिका बीज इत्यादिकविशेषकारणोंविषे यहभूमि अनुगतहुईप्रतीतहोवै है ॥ यातैं पट घट अंकुर इत्यादिकपार्थिवकार्योंविषे ताभूमिकूंहीं कारणरूपताहै ॥और तंतु मृत्तिका बीज इत्यादिकविशेषपदार्थ तिनपटादिककार्योंकीउत्पत्तिविषे सहकारीहैं॥ तैसे यहकालभी सर्वत्रअनुगतहुआप्रतीतहोवै है ॥ यातैं नानाप्रकारकेकारणोंतैंउत्पन्नभयेजेकार्यहैं ॥ तिनकार्योंकीउत्पत्तिविषे यहकालही मुख्यकारणहै ॥ और दूसरेलोकप्रसिद्धनानाप्रकारकेकारण ताकेसहकारी हैं॥ काहेतैं यालोकविषे कालकीअपेक्षातैंविना कोईभीकारण किसीकार्यकीउत्पत्तिकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ तथा कालकीअपेक्षातैंविना सोकार्यभी आपणीउत्पत्तिविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी यहकालही सर्वजगत्काकारणहै ॥ किंवा ॥ जैसे याजगत्कीउत्पत्तिविषे कालतैंविना दूसराकोईपदार्थकारणनहीं है ॥ तैसे याजगत्कीस्थितिविषे तथा याजगत्केलयविषेभी ताकालतैंविना कोईदूसरापदार्थ कारणहोइसकैनहीं ॥ किंतु यहकालही याजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहै ॥ यातैं जेसांख्यादिकवादी प्रत्यक्षअनुमानादिकप्रमाणोंकेबलतैं प्रधान परमाणु आदिकोंकूंहीं याजगत्काकारणमानैं हैं ॥ तेप्रधानपरमाणुआदिकभीकालकीअपेक्षातैंविना स्वतंत्रही याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ किंतु याकालकेसंबंधकरिकैही तिनप्रधानपरमाणुआदिकोंविषे सामर्थ्यहोवै है ॥ यातैं यहकालही सर्वजगत्काकारणहै ॥ अब सोकालकूंकारणमाननेहारावादी परमाणुवोंविषे जगत्कीकारणताखंडनकरैहै ॥ तहांप्रथम परमाणुवोंकूंकारणमाननेहारे नैयायिकोंकीप्रक्रिया निरूपण करैहैं ॥ पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंकेजेपरमाणुहैं॥तेपरमाणुहीं याजगत्काकारणहैं॥तहां झरोखेद्वारा गृहविषेप्राप्तभयेजेसूर्यकेकिरणहैं॥ तिनकिरणोंविषेजोसूक्ष्मरजप्रतीतहोवै है ताकरजका जोषष्ठाभागहै ताकानाम परमाणुहै ॥ तेपरमाणु नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकेविषय

होवैनहीं ॥ तथा तेपरमाणु नित्यहोवै हैं ॥ तथा परमअणुत्वपरिमाणवालेहोवे हैं ॥ ऐसेपरमाणुवोंविषे परमेश्वरकीइच्छाकेवशतैंक्रिया उत्पन्नहोवे है ॥ ताक्रियातैं दोदोपरमाणुवोंका परस्पर संयोगसंबंधहोवे है ॥ तासंयोगतैंअनंतर द्व्यणुकरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवे है ॥ ता द्व्यणुकरूपकार्यविषे तेदोनोंपरमाणु समवायिकारणहैं ॥ और तिनदोपरमाणुवोंका परस्परसंयोगसंबंध असमवायिकारणहै ॥ और ईश्वरइच्छादिक निमित्तकारणहैं ॥ इसप्रकार तिनद्व्यणुकरूपकार्योंविषेभी प्रथम क्रिया उत्पन्नहोवे है ॥ ताक्रियातैंअनंतर तिनतीनद्व्यणुकोंका परस्पर संयोगसंबंधहोवे है ॥ तासंयोगतैंअनंतर त्र्यणुकरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवे है ॥ इसप्रकार चतुरणुकादिकोंकीउत्पत्तिक्रमतैं यहमहान्पृथिवी महान्जल महान्तेज महान्वायु उत्पन्नहोवे है ॥ और जिसकालविषे याजगत्काप्रलयहोवे है ॥ तिसकालविषे पुनः परमेश्वरकीइच्छाकेवशतैं तिनपरमाणुवोंविषे क्रिया उत्पन्नहोवे है ॥ ताक्रियातैंअनंतर तिनपरमाणुवोंका परस्पर विभागहोवे है ॥ ताविभागतैं अनंतर तिनपरमाणुवोंकेसंयोगकानाशहोवे है ॥ तासंयोगनाशतैंअनंतर द्व्यणुकरूपकार्यकानाशहोवे है ॥ ताद्व्यणुकरूपकारणकेनाशतैं अनंतर त्र्यणुकरूपकार्यकानाशहोवे है ॥ इसप्रकारचतुरणुकादिकोंकेनाशक्रमतैं यहमहान्पृथिवी महान्जल महान्तेज महान्वायु नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ इसप्रकार तेनैयायिक परमाणुवोंतैंही याजगत्कीउत्पत्तिअंगीकारकरे हैं ॥ सोयहतिनोंकामत तभीसिद्धहोवे ॥ जभी प्रथम तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपतासिद्धहोवे ॥ सो तिनपरमाणुवोंविषेही नित्यरूपतासंभवेनहीं ॥ काहेतें जैसे प्रसिद्धस्थूल पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंविषे क्रमतैं पृथिवीत्व जलत्व तेजत्व वायुत्व यहचारिधर्मरहे हैं याकारणतैं यहप्रसिद्धपृथिवीआदिकचारिभूत अनित्यहैं ॥ तैसे तिनपृथिवीआदिकचारिभूतोंकेपरमाणुवोंविषेभी क्रमतैं तेपृथिवीत्वादिकचारिधर्मरहे हैं ॥यातैं तेपृथिवीआदिकचारिभूतोंकेपरमाणुभी अनित्यहीसिद्धहोवे हैं॥ याकहणे तैं यहअनुमानसिद्धभया॥पृथिवीपरमाणु अनित्यहोणेयोग्यहैं॥पृथिवीत्वधर्मवालेहोणेतैं प्रसिद्ध पृथिवीकीन्याई ॥ इसप्रकार क्रमतैं जलत्व तेजत्व वायुत्व याहेतुवोंकरिकै तथा प्रसिद्धजलतेजवायुकेदृष्टांतकरिकै परमाणुरूपजलतेज वायुविषेभी अनित्यरूपताकेअनुमान बुद्धिमान्पुरुषनें जानिलेणे ॥ ऐसे अनित्यपरमाणुवोंविषे याजगत्कोकारणतासंभवेनहीं ॥ शंका

हेकालवादी॥परमाणुवोंविषे जोतुमनें अनित्यरूपतासिद्धकरी सोसंभवेनहीं ॥काहेतें यालोकविषे जिसजिसपदार्थविषे अनित्यपणाहोवैहै॥
तिसतिसपदार्थविषे मध्यमपरिमाण अवश्यहोवैहै॥जैसे घटादिकपदार्थोंविषे अनित्यपणाहै॥यातेंतिनघटादिकोंविषे मध्यमपरिमाणभीहै॥
सोमध्यमपरिमाण तिनपरमाणुवोंविषेहैनहीं॥यातेंतिनपरमाणुवोंविषे अनित्यपणाभीसंभवेनहीं॥याकहणेतें यहअनुमानसिद्धभया॥पृथिवी
आदिकोंकेपरमाणु नित्यहोणेयोग्यहैं मध्यमपरिमाणकेअभाववालेहोणेतें ॥जोपदार्थ नित्यनहींहोवे है॥सोपदार्थ मध्यमपरिमाणकेअभाव
वालाभीनहींहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ नित्यनहींहैं ॥ यातें मध्यमपरिमाणकेअभाववालेभीनहींहैं॥किंतु तेघटादिक मध्यमपरिमाणवा
लेहीहैं ॥ समाधान ॥ हेनैयायिक ॥अणुपरिमाण परममहत्परिमाण यादोनोंपरिमाणोंतेंभिन्नजोपरिमाणहै॥ ताकानाम मध्यमपरिमाणहै॥
तामध्यमपरिमाणकाअभाव जैसे परमाणुवोंविषेहै ॥ तैसे शब्दादिकगुणोंविषेभीहै ॥ यातें तिनपरमाणुवोंकीन्याईं शब्दादिकगुणोंविषेभी
नित्यरूपता सिद्धहोणीचाहिये ॥ और शब्दादिकगुणोंविषे नित्यरूपता तुमनैयायिक अंगीकारकरतेनहीं ॥ यातें मध्यमपरिमाणके अभा
व रूपहेतुतें तिनपरमाणुवोंविषेनित्यरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे मध्यमपरिमाणकाअभाव वस्तुकेनित्यपणेका प्रयोजकनहीं है॥
तैसे मध्यमपरिमाणभी वस्तुकेअनित्यपणेका प्रयोजकनहीं है काहेतें नैयायिकोंकेमतविषे रूपादिकगुणोंविषे तथाकर्मविषे रूपादिकगु
ण रहैंनहीं ॥ यातें मध्यमपरिमाणरूपगुणकेअभाववालेजेशब्दादिकगुणहैं तथाकर्महै तिनोंविषे अनित्यपणा नहींहोणाचाहिये ॥ और
तिनशब्दादिकोंविषे अनित्यपणातो प्रत्यक्षप्रमाणकरिकेप्रतीतहोवैहै ॥ यातें सोमध्यमपरिमाण वस्तुकेअनित्यपणेका प्रयोजकनहीं है ॥
किंतु आकाश काल दिक् आत्मा याचारिविभुपदार्थोंतेंभिन्नपणाहीं वस्तुकेअनित्यपणेका प्रयोजकमानणाहोवैगा ॥ सोविभुपदार्थोंतेंभिन्न
पणा जैसे प्रसिद्धघटादिकपदार्थोंविषेहै ॥ तैसे पृथिवीआदिकोंकेपरमाणुवोंविषेभी सोविभुपदार्थतेंभिन्नपणा विद्यमानहै ॥ यातें घटादिक
पदार्थोंकीन्याईं तिनपरमाणुवोंकूंभी अनित्यरूपहीमान्याचाहिये ॥ घटादिकमूर्त्तपदार्थोंकूं अनित्यमानिके परमाणुरूपमूर्त्तपदार्थोंकूं
नित्यमानणेविषे केवल तावादीका पक्षपातहीप्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेकालवादी ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ निरवयवहोवैहै ॥ सो

सोपदार्थ नित्यहीहोवैहै ॥ जैसे आत्मा निरवयवहै यातैं नित्यहै ॥ तैसे यहपरमाणुभी निरवयवहैं ॥ यातैं तेपरमाणु नित्यही हैं ॥ याकह णेकरिके यहअनुमानसिद्धभया ॥ पृथिवीआदिकोंकेपरमाणु नित्यहोणेकूंयोग्यहैं निरवयवहोणेतैं आत्माकीन्याई ॥ याअनुमानप्रमाणक रिके तिनपरमाणुवोंविषे नित्यपणाहीसिद्धहोवैहै ॥ यातैं तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यपणेकूंसिद्धकरणेहारा सोकालवादीकाअनुमान सत्प्र तिपक्षदोषवालाहै ॥ जिसहेतुकेसाध्यकेअभावकूं दूसराहेतुसिद्धकरैहै ॥ सोहेतु सत्प्रतिपक्षदोषवालाहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेनैयायिकवादी॥ तानिरवयवत्वरूपहेतुतैं तिनपरमाणुवोंविषे नित्यत्वरूपसाध्यकीसिद्धिहोइसकैनहीं॥काहेतैं तुमनैयायिकोंकेमतविषे जोहेतु आपणेसाध्यके अभाववालेपदार्थविषेरहैहै ॥ सोहेतु व्यभिचारीहोवैहै ॥ ताव्यभिचारीहेतुकरिके तासाध्यकीसिद्धि तुम अंगीकारकरतेनहीं ॥ और यह तुम्हारा निरवयवत्वरूपहेतुतौनित्यत्वरूपसाध्यकेअभाववालेगुणकर्मादिकोंविषेभीरहैहै ॥ यातैं सोनिरवयवत्वरूपहेतुभी व्यभिचारीहै ॥ ताव्यभिचारीहेतुकरिके तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपता सिद्धहोइसकैनहीं ॥ शंका ॥ हेकालवादी ॥ यद्यपि सोनिरवयवत्वरूपहेतु नित्य त्वरूपसाध्यकेअभाववालेगुणकर्मादिकोंविषेभीरहैहै ॥ यातैं सोनिरवयवत्वरूपहेतु व्यभिचारीहै॥तथापि निरवयवद्रव्यत्वरूपहेतु तिनगुण कर्मादिकोंविषेरहतानहीं यातैंसोनिरवयवद्रव्यत्वरूपहेतु व्यभिचारीनहीं है॥तानिरवयवद्रव्यत्वरूपहेतुकरिकेही हमनैयायिकतिनपरमाणुवों विषे नित्यरूपतासिद्धकरैहैं॥समाधान॥हेपरमाणुवादी नैयायिक ॥ पृथिवीआदिकोंकेपरमाणु अनित्यहोणेयोग्यहैं मूर्त्तपदार्थहोणेतैं प्रसिद्ध पृथिवीआदिकोंकीन्याई॥याहमारेअनुमानकेविद्यमानहुए सोतुम्हारानिरवयवद्रव्यत्वरूपहेतु तिनपरमाणुवोंविषेनित्यरूपता सिद्धकरिसकै नहीं॥शंका॥हेकालवादी॥जैसे तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यरूपताकोसिद्धिकरणेहारा जोतुम्हाराअनुमानहै॥ताअनुमानकेविद्यमानहुए हम नैयायिकोंकूं तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपताकानिश्चय होइसकैनहीं ॥ तैसे तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपताकोसिद्धिकरणेहारा जोहमाराअ नुमानहै ॥ ताअनुमानकेविद्यमानहुए तुम्हारेकूंभी तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यरूपताकानिश्चय होइसकेगानहीं ॥ समाधान ॥ हेपरमाणु वादीनैयायिक ॥ जिसस्थूलविषे परस्परविरोधीअर्थकोसिद्धिकरणेवासतै दोअनुमानप्रवृत्तहोवैहैं ॥ तिसस्थलविषे यद्यपि एकअ

र्थकानिश्चय होइसकेनहीं ॥ तथापि तिनदोनोंअनुमानोंविषे जिसअनुमानका श्रुतिस्मृतिआदिकप्रमाण सहकारीहोवैहैं ॥ सोअनुमान प्रबलहोवैहै ॥ और जिसअनुमानका श्रुतिस्मृतिआदिकप्रमाण सहकारीनहींहोवैहैं ॥ सोअनुमान दुर्बलहोवैहै ॥ और प्रबलकरिकेदुर्बलका बाध याळोकविषे प्रसिद्धदेख्याहै ॥ और यावद्विकारंतुविभागोऽलोकवत् ॥ याव्यासभगवान्केसूत्रविषे ॥ तथा ॥ अतोऽन्यदार्त ॥ याश्रुतिविषे भेदवालेपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे अनित्यरूपताहीकथनकरीहै ॥ सोभेदवालेपरिच्छिन्न परमाणुभी हैं॥ यातैं ताश्रुतिसूत्ररूपप्रमाणकी सहायतातैं प्रबलताकूंप्राप्तहुआ सोहमाराअनुमान तुमारेअनुमानकाबाधकरिके तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यरूपताही सिद्धकरैहै ॥ और तुमारेअनुमानविषे कोईश्रुतिस्मृतिरूपप्रमाण सहायताकरणेहाराहैनहीं ॥ यातैं तादुर्बलअनुमानकरिके तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपता सिद्धहोइसकेनहीं ॥ किंवा॥ जिसनिरवयवत्वरूपहेतुकरिके तुमनैयायिक तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपता सिद्धकरोहो॥सोनिरवयवत्वरूप हेतु तिनपरमाणुवोंविषे रहताहोनहीं॥ काहेतैं तुमनैयायिक तिनपरमाणुवोंका पूर्वादिकअष्टदिशावोंकेसाथ संयोगसंबंध अंगीकारकरोहो॥ तथा तिनपरमाणुवोंका परस्परभी संयोगसंबंध अंगीकारकरोहो ॥ और तासंयोगसंबंधकूं तुमनैयायिक अव्याप्यवृत्तिमानोहो ॥ तहां जोपदार्थ आपणेआश्रयके एकदेशविषेरहेहै तथा एकदेशविषेनहींरहे है ताकानाम अव्याप्यवृत्तिहोवैहै ॥ ऐसेअव्याप्यवृत्तिसंयोगसंबंध वाले परमाणुवोंविषे निरवयवरूपता संभवेनहीं ॥ किंतु संयोगसंबंधवालेमूर्तपदार्थ सावयवहीहोवैहैं ॥ जैसे घटपटादिकमूर्तपदार्थ संयोगसंबंधवालेहोणेतैं सावयवहीहैं ॥ तैसे संयोगसंबंधवालेहोणेतैं तेपरमाणुभी सावयवहीसिद्धहोवैंगे ॥ और जोजोपदार्थ सावयवहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकेजन्यहीहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ सावयवहोणेतैं मृत्तिकादिककारणोंकरिकेजन्यहैं ॥ तैसे तेपरमाणुभी सावयवहोणेतैं किसीकारणकरिके अवश्यजन्यहोवैंगे ॥ और सोतिनपरमाणुवोंकाकारणभी जोकिसीदूसरेकारणकरिकेजन्यमानिये ॥ तौ सोदूसराकारणभी किसीतीसरेकारणकरिकेजन्यहोवैगा ॥ याप्रकार कारणोंकीअनवस्थाप्राप्तहोवैगी॥यातैं तिनपरमाणुवोंके कारणकूंअजन्यहीमान्याचाहिये ॥ सोऐसाउत्पत्तितैंरहितकारण कालतैंविनादूसराकोई हैनहीं॥यातैं ताकालकूंही तिनपरमाणुवोंकाकारण

मानणाहोवैगा ॥ जभी ताकालविषे परमाणुवोंकीकारणता वादीनें अंगीकारकरी ॥ तभी ताकालकरिकेही सर्वजगत्कीउत्पत्ति संभव होइसकैहै ॥ तिनदोनोंकेमध्यविषे परमाणुवोंकूंकारणमानणा निष्फलहै ॥ किंवा ॥ जोनैयायिकवादी तिनपरमाणुवोंकूं नित्यभीअंगीकार करै ॥ तोभी तिननित्यपरमाणुवोंतैं सर्वदाजगत्कोउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ कदाचित्भी प्रलय नहींहोणाचाहिये ॥ सोसर्वदा जगत्की उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं याजगत्के उत्पत्तिप्रलयकी व्यवस्थाकरणेवासते तेपरमाणु कालकीअपेक्षा अवश्यकरेंगे ॥ याकारणतैंभी ताका लकूंहीं जगत्काकारणमानणा उचितहै ॥ किंवा ॥ प्रलयकालविषे तेपरमाणु परस्परविभागवालेहुए स्थितहोवैहैं ॥ याकारणतैं तेपरमाणु ताप्रलयकालमें याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ और जगत्कीउत्पत्तिकालविषे तिनपरमाणुवोंकापरस्पर संयोगसंबंध होवे है॥ याकारणतैं तेपरमाणु याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषेसमर्थहोवे हैं॥तासंयोगसंबंधकीउत्पत्तिविषे याकालकीअपेक्षा अवश्यहोवैगी॥ याकारणतैं यहकालहीसर्वजगत्काकारणहै ॥ ताकालतैंभिन्न परमाणुआदिकोंविषे याजगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ इतनेंकरिकै कालवा दीज्योतिषशास्त्रवालेपुरुषोंका मतनिरूपणकऱ्या ॥ अब स्वभावकूंहीं जगत्काकारणमानणेहारे जेस्वभाववादीलोकायतहैं तिनोंकेमत कानिरूपणकरैहैं ॥ तहाँ तेस्वभाववादी ताकालवादीकेमतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरैहैं ॥ हेकालवादी यासर्वजगत्काकारणरूप करिके तुमनें अंगीकारकऱ्याजोकालहै ॥ सोकाल आपणेस्वभावकी तथाकार्यकेस्वभावको अपेक्षाकरिकेही कारणहोवै है ॥ अथवा तास्वभावकीअपेक्षातैंविनाहीं सोकाल याजगत्काकारणहोवैहै ॥ तहाँ सोकाल तास्वभावकोअपेक्षातैंविनाहीं कारणहोवैहै यहद्वितीयपक्ष जोतुम अंगीकारकरो सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं वस्तुकेस्वभावकीअपेक्षातैंविनाहीं सोतुमाराकाल जोकदाचित् कार्यकीउत्पत्तिकरताहोवै ॥ तो प्रज्वलितमहान्अग्निविषे तथा आकाशविषे सोतुमारा काल जलकीउत्पत्ति किसवासतैनहींकरता ॥ और सोतुमाराकाल अग्निकरिकै जीवोंकेतृषाकीनिवृत्ति किसवासतैंनहींकरता॥और सोकाल अन्नतैंविनाहीं याजीवोंकेक्षुधाकीनिवृत्ति किसवासतेनहीं करता ॥ और सोतुमा राकाल पुत्रार्थी पुरुषोंकूं स्त्रीतैंविनाहीं पुत्रोंकीप्राप्ति किसवासतैनहींकरता ॥और सो तुमाराकाल मृतकशरीरकेसंयोगकरिकेभीयाजीवोंविषे

सुखदुःखकीउत्पत्ति किसवासतैंनहींकरता ॥ और ताकालकेप्रभावतैं यहमृतकशरीर हमारेसाथसंभाषण किसवासतैंनहींक्‌.ता ॥ और ताकालकेप्रभावतैं यहस्त्रियां पुरुषकेसंबंधतैंविनाहीं गर्भकाधारण किसवासतैंनहींकरतीयां ॥ और ताकालकेप्रभावतैं यहआकाश अवकाशभावतैंरहितहोणाचाहिये ॥ तथा यहपृथिवी रसातलविषेगईचाहिये ॥ तथा यहजल स्नेहभावतैंरहितहोणाचाहिये ॥ तथा यहअग्निआदिकतेज प्रकाशतैंरहितहोणेचाहिये ॥ तथा यहवायु निश्चलताकूंप्राप्तहोणाचाहिये ॥ किंवा ॥ सोतुमाराकाल जोकदाचित् वस्तुकेस्वभावकी अपेक्षातैंविनाहीं कार्यकीउत्पत्तिकरताहोवै ॥ तौ सोकाल यापुरुषोंकेमुखद्वारतैं मलमूत्रादिकोंकापरित्याग किसवासतैंनहींकरावता ॥ तथा सोकाल यापुरुषोंकेघ्राणइंद्रियकरिके शब्दकाश्रवण किसवासतैंनहींकरावता॥ तथासोकाल यापुरुषोंकेश्रोत्रइंद्रियकरिके गंधकाग्रहण किसवासतैंनहींकरावता ॥ तथा सोकाल यापुरुषोंकेनेत्रइंद्रियकरिके आहारकाग्रहण किसवासतैंनहींकरावता ॥ इसप्रकार सोकाल यापुरुषोंकेवाकादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंकाविपरीतभाव किसवासतैंनहींकरावता ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदूषणोंकोप्राप्तिहोवैगी ॥ जो ताकालकूं वस्तुकेस्वभावकीअपेक्षातैंविनाहीं याजगत्‌काकारणमानोंगे ॥यातैं तास्वभावकीअपेक्षातैंविना ताकालविषे जगत्‌कीकारणतासंभवैनहीं ॥ और सोकाल कारणके तथाकार्य के स्वभावकीअपेक्षाकरिकेही याजगत्‌काकारणहोवैहै ॥ यहप्रथमपक्ष सोकालवादी जोअंगीकारकरै ॥ तो जिसस्वभावकीअपेक्षाकरिके सोकाल याजगत्‌कोव्यवस्थापूर्वक उत्पत्तिकरैहै॥तास्वभावविषेही याजगत्‌कीकारणतासंभवहोइसकेहै ॥ यातैं स्वभाव जगत्यादोनोंकेमध्यविषे कालकूंजगत्‌काकारणमानणा निष्फलहोवैगा ॥ किंवा ॥ तास्वभावकूंहीं जगत्‌काकारणमानणेविषे पूर्वउक्तदोषोंकीभीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ काहेतैं यापुरुषोंकाचक्षुइंद्रिय आपणेस्वभावतैं रूपकूंहींग्रहणकरैहै॥रसादिकोंकूंग्रहण करैनहीं ॥ तथा श्रोत्रइंद्रियभी आपणेस्वभावतैं शब्दकूंहींग्रहणकरैहै ॥ रूपादिकोंकूंग्रहणकरैनहीं ॥ इसप्रकारदूसरेइंद्रियभी आपणेस्वभावकेबलतैं आपणेआपणेविषयकूंहींग्रहणकरैहैं ॥ अन्यइंद्रियकेविषयकूं अन्यइंद्रिय ग्रहणकरैनहीं ॥ इसप्रकार रूपादिकविषयभी आपणेआपणेस्वभावकेबलतैं आपणेआपणेनेत्रादिकइंद्रियोंकेही विषयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अन्यइंद्रियकाविषय अन्यइंद्रियकेविषयभावकूंप्राप्त

होवैनहीं ॥ इसप्रकार वस्तुकेस्वभावकाअंगीकारकरिकै पूर्वउक्तसर्वदोषोंकापरिहार होइसकैहै ॥ यातैं याजगत्कीप्रवृत्तिनिवृत्तिविषे तथा याजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयविषे यहस्वभावहीकारणहै ॥ यास्वभावतैंभिन्नदूसराकोईपदार्थ याजगतकाकारणहोवैनहीं ॥ इतनैंकरिकै स्वभावकारणवादी लोकायतोंकामतनिरूपणकऱ्या ॥ अब धर्मअधर्मरूपनियतिकूंहीं याजगत्काकारणमानणेहारे जेमीमांसकवादी हैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरे हैं ॥ तहां तेमीमांसकवादी ताधर्मअधर्मरूपनियतिविषे जगतकीकारणतासिद्धकरणेवासतै प्रथम तिनस्वभावकारणवादियोंकेमतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरे हैं ॥ हेस्वभाववादी ॥ याजगत्काकारणरूपकरिकै तुमनैंअंगीकारकऱ्याजोस्वभावहै ॥ सोस्वभाव धर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षाकरताहुआ याजगत्काकारणहै ॥ अथवा सोस्वभावतानियतिकीअपेक्षातैंविनाहीं याजगत्काकारणहै ॥ तहांधर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षातैंविनाहीं सोस्वभाव याजगत्काकारणहै॥ यहदूसरापक्ष जोतुम अंगीकारकरो सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तानियतितैंविनाहीं सोस्वभाव जोकदाचित् याजगत्काकारणहोवै ॥ तौ ताअनियतस्वभावकेबलतैं याउष्णस्वभाववालेअग्नितैंभी शीतलताउत्पन्नहोणीचाहिये ॥ तथाशीतलस्वभाववालेजलतैंभी उष्णताकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ याप्रकार सर्वकालविषे तथासर्वपदार्थों विषे सर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और सर्वकालविषे तथासर्वपदार्थोंविषे सर्वकार्योंकीउत्पत्ति देखणेमैंआवतीनहीं ॥ यातैं तानियतिकीअपेक्षातैंविना तास्वभावविषे जगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ और सोस्वभाव धर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षाकरिकैही याजगत्काकारणहै यहप्रथमपक्ष जोतुम अंगीकारकरो ॥ तौ जैसे स्वभावकीअपेक्षाकरताहुआ सोकाल याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहोवैहै ॥ याकारणतैं सोकाल याजगत्काकारणनहींहै ॥ किंतु सोस्वभावहीयाजगत्काकारणहै ॥ याप्रकारकीयुक्तिसैं तुमनैं कालकाखंडनकरिकै स्वभावकूंहीं जगत्काकारणमान्याहै ॥ तैसे सोतुमारास्वभावभी धर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षाकरिकैही याजगत्काकारणहोवैहै ॥ याकारणतैं सोतुमारास्वभावभी याजगत्काकारणहोइसकैनहीं॥किंतु सोधर्मअधर्मरूपनियतिही याजगत्काकारणमान्याचाहिये॥नियति जगत् यादोनोंके मध्यविषे स्वभावकूंकारणमानणा निष्फलहै ॥ इतनैंकरिकै धर्मअधर्मरूपनियतिकूं कारणमानणेहारे मीमांसकवादियोंकामत

निरूपणकऱ्या ॥ अब यदृच्छाकूंहीं याजगत्काकारणमानणेहारे जेकोईकवादी हैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरें हैं॥यहां कार्यकूं आपणीउत्प त्तिविषे कर्तादिकोंकीअपेक्षानहींहोणी याकानाम यदृच्छाहे ॥ तेयदृच्छाकारणवादी आपणेमतकीसिद्धिकरणेवासते ता नियतिवादीके मतविषे याप्रकारकेदूषणकहे हैं हेनियतिकारणवादी तुमनें याप्रकारका तानियतिकास्वरूपकह्याहे ॥ यहकार्य इसीहीकारणकरिकेउत्पन्न होवैहे ॥ इसकारणतैंभिन्न दूसरेकिसीकारणकरिके यहकार्य उत्पन्नहोवेनहीं ॥ तथा यहकार्य इसीप्रकारतें उत्पन्नहोवे हे ॥ दूसरेकिसीप्रका रतैंउत्पन्नहोवेनहीं ॥ तथा याकारणतें यहहीकार्य उत्पन्नहोवैहे दूसराकोईकार्य उत्पन्नहोवेनहीं ॥ याप्रकारकीनियतिकूंही तुमनें याजगत्का कारणमान्याहे ॥ जैसे ऋतुधर्मयुक्तास्त्रियोंकाजोरजहे ॥ सोरजही नियमकरिकेगर्भधारणेकाकारणहोवे हे ॥ सो याप्रकारकीनियतिकूं जगत् काकारणमानणा ॥ तुम्हारेकूंयोग्यनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे तानियतितैंविनाहीं कितनेककारणोंकी तथाकितनेककार्योंकी यदृच्छारूप हेतुतें प्राप्तिदेखणेमेंआवैहे ॥ जैसे यालोकविषे कितनेकधर्मात्मापुरुषोंकूं अकस्मात्तें दुःखकोप्राप्तिहोवे हे ॥ और कितनेकपापात्मा पुरुषोंकूं अकस्मात्तें सुखकोहीप्राप्तिहोवैहे ॥ और यालोकविषे सुखकासाधनरूपकरिकेप्रसिद्ध जेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ हैं ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकप दार्थभी कदाचित् याजीवकेदुःखकाहीकारणहोवें हैं ॥ और यालोकविषेदुःखकासाधनरूपकरिकेप्रसिद्ध जोपादादिकोंकाप्रहारहे ॥ सोभी कदाचित् परिश्रमयुक्तपुरुषोंकेसुखकाहीकारणहोवैहे ॥ इसतें आदिलेके अनेकप्रकारकाविपरीतभाव देखणेमेंआवे हे ॥ जोपूर्वउक्तनिय तिहीकारणहोवे तो याप्रकारकाविपरीतभाव नहींहोणाचाहिये ॥ और याप्रकारकाविपरीतभाव प्रसिद्धदेखणेमेंआवैहे यातें तानियतिविषे जगत्कीकारणतासंभवैनहीं किंतु सोयदृच्छाही याजगत्काकारणहे ॥ इतनेंकरिके यदृच्छाकारणवादियोंकामत निरूपणकऱ्या ॥ अब आकाशादिकपंचभूतोंकूं जगत्काकारणमानणेहारे जेकोईकवादीहैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरें हैं ॥ तहां तेभूतकारणवादी आपणेमतकी सिद्धिकरणेवासते तायदृच्छाकारणवादीकेमतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरे हैं ॥ हेयदृच्छाकारणवादी ॥ यालोकविषे जितनेकरूपर सादिकधर्म हैं ॥ तेधर्म घटादिकधर्मियोंकोअपेक्षातैंविना स्वतंत्ररहतेनही किंतु तेरूपरसादिकधर्म घटादिकधर्मियोंकीअपेक्षाकरिकेह।

स्थितहोवैहै ॥ तैसे सोतुमारीयदृच्छाभी धर्मरूपहै ॥ यातैं सोयदृच्छा किसीधर्मीकीअपेक्षातैंविना स्वतंत्रस्थितहोइसकैनहीं॥किंतु सोयदृच्छा किसीधर्मीकीअपेक्षाकरिकैही स्थितहोवैगी ॥ और जबपर्यंत प्रत्यक्षवस्तुकासंभवहोइसकै ॥ तबपर्यंत परोक्षवस्तुकोकल्पनाकरणी अनुचितहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम सर्वशास्त्रोंविषेकथनकऱ्याहै ॥ यातैं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध जेयहआकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तेभूतही तायदृच्छारूपधर्मका धर्मीरूप अंगीकारकरणेहोवैंगे यातैं सोयदृच्छा जिनभूतोंकीअपेक्षाकरिकै याजगत्काकारणहोवै है ॥ तिनभूतोंकरिकैही याजगत्कीउत्पत्तिकासंभवहोइसकैहै ॥ तिनदोनोंकेमध्यविषे यदृच्छाकूंजगत्काकारणमानणा निष्फलहोवैगा ॥यातैं आकाशादिकपंचभूतही याजगत्काकारणहैं॥इतनैंकरिकै आकाशादिकभूतोंकूं जगत्काकारणमानणेहारेवादियोंकामतनिरूपणकऱ्या॥अब प्रकृतिकूंहीं याजगत्काकारणमानणेहारे जेसांख्यशास्त्रवाले हैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरैं हैं ॥तहां तेप्रकृतिकारणवादी तिनभूतकारणवादियोंकेमतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरैं हैं ॥ हेभूतकारणवादी ॥ तुमनैं जिनभूतोंकूं जगत्काकारणमान्याहै तेभूत घटादिकपदार्थोंकीन्याईसावयवहैं ॥ और जोजोपदार्थ सावयवहोवै हैं ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्यहोवै हैं जैसे घटपटादिकपदार्थ सावयवहैं ॥ यातैं मृत्तिकातंतुआदिककारणोंकरिकैजन्यहैं ॥ तैसे तिनसावयवभूतोंकाभी कोईदूसराकारण तुमनैं अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ और यालोकविषे जिसप्रकारकाकार्यहोवै है ॥ तिसीप्रकारका कारणहोवै है ॥ कार्यतैं विलक्षणस्वभाववाला कारणहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिककार्योंकेसमानस्वभाववालीजोमृत्तिकाहै ॥ सोमृत्तिकाही तिनघटादिकोंकाकारणहोवैहै ॥ तैसे याजगत्रूपकार्यकेसमानस्वभाववालाहीकोईपदार्थ ताजगत्काकारणमान्याचाहिये ॥ और याजगत्विषे सुवर्ण स्त्रीरत्न वस्त्र इसतैंआदिलेकेजितनेकपदार्थहैं ॥तेसंपूर्णपदार्थ सुखरूपसत्वगुणकरिकैतथादुःखरूपरजोगुणकरिकै तथामोहरूपतमोगुणकरिकैयुक्तहैं॥तहांतेसुवर्णादिकपदार्थ जिसपुरुषकेहस्तविषेरहैं हैं॥तिसपुरुषकूंतो सुखकीप्रातिकरैं हैं॥और तासुवर्णादिकपदार्थोंवालेपुरुषकाजोशत्रुहोवैहै॥ताशत्रुकूं तेसुवर्णादिकपदार्थ दुःखकीहीप्रातिकरैं हैं ॥ और तिनसुवर्णादिकपदार्थोंकोप्रातितैंरहितजोलोभीपुरुषहै॥तालोभीपुरुषकूं तेसुवर्णादिकपदार्थमोहकीप्रातिकरैं हैं ॥ इसप्रकारयहसंपूर्णजगत्सत्त्व

रजतमयातीनगुणोंकरिकेयुक्तहै॥यातैंतात्रिगुणरूपजगत्काकारणभीकोईत्रिगुणरूपवस्तुमान्याचाहिये ॥सोऐसीत्रिगुणरूपतथासर्वकार्योंवि
षेअनुगतजडप्रकृतिहै ॥ यातैंसोजडप्रकृतिही याजगत्काकारणहोणेयोग्यहै॥याहीप्रकृतिकूं श्रुतिविषे योनि यानामकरिकेकथनकऱ्याहै॥
ऐसीजडरूपनित्यप्रकृतितैं प्रथममहत्तत्वउत्पन्नहोवे है॥तिसमहत्तत्वतैं अहंकार उत्पन्नहोवेहै॥ताअहंकारतैं शब्द स्पर्श रूप रस गंध यह
पंचतन्मात्रा तथा एकादशइंद्रिय उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रिय तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु
यहपंचकर्मइंद्रिय तथा मन यहएकादशइंद्रियकहेजावेहैं॥और तिनशब्दादिकपंचतन्मात्रावोंतैं यथा क्रमतैं आकाश वायु तेज जल पृथिवी
यहपंचमहाभूत उत्पन्नहोवे हैं ॥ इसरीतिसैं यहसंपूर्णजगत् प्रकृतितैंहींउत्पन्नहोवे है ॥ यातैं सोप्रकृतिही सर्वजगत्काकारणहै ॥ इतनैंक
रिके प्रकृतिकारणवादी सांख्यशास्त्रज्ञोंकामत निरूपणकऱ्या ॥ अब हिरण्यगर्भादिकपुरुषोंकूंहीं याजगत्काकारणमानणेहारे जेपुरुष
कारणवादी हैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरैं हैं ॥ तहां तेपुरुषकारणवादी आपणेमतकी सिद्धिकरणेवासते प्रथम तिनप्रकृतिकारणवादियोंके
मतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरैंहैं ॥ हेप्रकृतिकारणवादी ॥ कारणविषे कार्यकी सादृश्यताकूंअंगीकारकरिके जोतुमनैं त्रिगुणात्मकप्र
कृतिकूं याजगत्काकारणमान्याहै ॥ तातुमारेसैं हम यहपूछते हैं ॥ कार्यकारणकी सर्वरूपकरिकेसादृश्यताहोवे है ॥ अथवा यत्कि
चित्रूपकरिकेसादृश्यताहोवेहै ॥ तहां कार्यकारणको सर्वरूपकरिके सादृश्यताहोवे है ॥ यहप्रथमपक्ष जोतूंअंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥
काहेतैं कार्यकारणका जोअत्यंतसादृश्यहोवेगा ॥ तो तिसकार्यकारणका परस्पर भेदसिद्धनहींहोवेगा ॥ और यत्किंचित्भेदकीअपेक्षाक
रिकेही पदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवेहै ॥ अत्यंतअभिन्नपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवेनहीं ॥ यातैं कार्यकारणकीअत्यं
तसादृश्यताअंगीकारकियेतैं ताप्रकृतिविषे याजगत्कोकारणताही सिद्धनहींहोवेगी॥और कार्यकारणकीयत्किंचित्रूपकरिकेसादृश्यताहो
वे है यहद्वितीयपक्ष जोतुमअंगीकारकरो सोभीसंभवेनहीं ॥ काहेतैं तुमसांख्योंकेमतविषे कार्यकारणभावतैंरहित जोचेतनअसंगपुरुषहै
सोपुरुषभी भावत्वरूपयत्किंचित्धर्मकरिके याजगत्केसदृशहीहै ॥ यातैं सोअसंगपुरुषभी याजगत्काकारणहोणाचाहिये ॥ और ताअ

संगपुरुषकूं तुम सांखी याजगत्‌काकारणमानतेनहीं ॥ यातें कार्यकारणकी यत्किंचित्‌रूपकरिकेभी सादृश्यतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे यालोकविषे जडरूपकरिकेप्रसिद्ध जेशकटादिकपदार्थहैं ॥ तिनशकटादिकोंकीप्रवृत्ति चेतनपुरुषतैंविना स्वतंत्रहोवैनहीं ॥ किंतु चेतनपुरुषकेअधीनहीं तिनशकटादिकोंकीप्रवृत्तिहोवै है ॥ तैसे सातुमारीजडप्रकृतिभी चेतनपुरुषकीप्रेरणातैंविना स्वतंत्र किसीकार्यकरणेविषे प्रवृत्तनहींहोसकैगो ॥ यातें ताजडप्रकृतिकूं आपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरणेहारा कोईचेतनपुरुष तुमोंनें अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ यातें जिस चेतनपुरुषकीअपेक्षाकरिके साप्रकृति याजगत्‌कूंउत्पन्नकरेहै ॥ ताचेतनपुरुषकरिकेही याजगत्‌कीउत्पत्तिसंभवहोइसकेहै ॥ यातें चेतनपुरुष जगत्‌ यादोनोंकेमध्यविषे तीसरीप्रकृतिकूंकारणमानणा निष्फलहै ॥ यातें चेतनपुरुषही याजगत्‌काकारणहै ॥ इतनेंकरिके पुरुषकारणवादियोंकामत निरूपणकऱ्या ॥ हेब्राह्मणो ॥ इसप्रकार काल १ स्वभाव २ नियति ३ यदृच्छा ४ भूत ५ प्रकृति ६ पुरुष ७ यहसप्तपक्ष हमोंनें तुमारेप्रतिकथनकरे हैं ॥ तहां पूर्वपूर्वमतविषे दूषणोंकाकथनकरिके उत्तरउत्तरमतकाग्रहणकऱ्याहै ॥ परंतु यहसप्तमत पूर्वउक्तदूषणोंकरिकेदूषितहैं ॥ यातें इनसप्तमतोंविषे कोईभीमत ग्रहणकरणेयोग्यनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्‌ ॥ कालतैंआदिलेके प्रकृतिपर्यंत याषट्‌मतोंविषे यद्यपि पूर्व दूषणकथनकरे हैं ॥ तथापि यहचेतनपुरुषजगत्‌काकारणहै ॥ यासातैंमतविषे कोईदूषण कथनकऱ्यानहीं ॥ यातें यहपुरुषकारणवादही अंगीकारकरणेयोग्यहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे कालादिकोंविषे कारणतासंभवैनहीं ॥ तैसे ताचेतनपुरुषविषेभी साकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतें सोचेतनपुरुष सर्वसंगतैंरहितहै तथानिर्गुणहै तथासर्वव्यापारोंतैंरहितहै ॥ ऐसेनिष्क्रियअसंगपुरुषविषे याजगत्‌कोकारणतामानणी अत्यंतअसंगतहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्‌ ॥ ताचेतनपुरुषकेवासतै जोतिनकालादिकोंकासंयोगहै ॥ सोसंयोगही याजगत्‌काकारणहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ ताचेतनपुरुषकेविद्यमानहुएताचेतनपुरुषकेवासतै जोतिनकालादिकोंकासंयोगहै ॥ सोसंयोगभीताप्रकृतिकीन्याई जडहोणेतैं किसीअन्यकारणकोअपेक्षा अवश्यकरैगा ॥ और तिनकालादिकोंकेसंयोगकाभी कौनकारणहै ॥ याप्रकारकोजिज्ञासाभी निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातें जैसे कालादिकोंकूंकारणतानहींहै ॥ तैसे तिनकालादिकोंकेसंयोगकूंभी कारणतासंभ

वैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोशुद्धपरमात्मापुरुष असंगहै ॥ यातैं ताशुद्धपुरुषविषे यद्यपि कारणतासंभवैनहीं ॥ तथापि प्रतिबिंबरूपजी वात्माविषे याजगत्कीकारणता संभवहोइसकैहै ॥ समाधान हेब्राह्मणो ॥ यहजीव परतंत्रहै ॥ यातैं यहजीव आपणेसुखदुःखकीउत्पत्तिकर णेविषेभीसमर्थहोइसकैनहीं ॥ जभी यहजीव आपणेसुखदुःखकोउत्पत्तिकरणेविषेभी समर्थनहींभया ॥ तभी यासंपूर्णजगत्केउत्पन्नकरणे विषे यहजीव किसप्रकार समर्थहोवैगा ॥ किंवा ॥ यहजीवात्मा जोकदाचित् याजगत्कोउत्पत्तिकरणेविषे स्वतंत्रहोवैगा ॥ तो यहजीवात्मा आपणेसुखकेसाधनोंकूंही उत्पन्नकरैगा ॥ दुःखकेसाधनोंकूंउत्पन्नकरैगानहीं ॥ यातैं ताजीवात्माविषेभी याजगत्कोकारणतासंभवैनहीं ॥ इतनैंग्रंथकरिके याजगत्केकारणविषे जितनेकवादियोंकेपक्षथे तिनपक्षोंकानिरूपणकरिकेखंडनकऱ्या ॥ अब सिद्धांतपक्षकानिरूपणकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ याप्रकारकेवचन जभी तिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणों नैं सर्वसभावासीब्राह्मणोंकेप्रतिकहे॥ तभी तेशुद्धचित्तवाले संपूर्णसभावा सीब्राह्मण तिनपूर्वपक्षोंविषे नानाप्रकारकेदूषणोंकूंदेखिकरिके तिनपक्षोंकापरित्यागकरतेभये ॥ और तेब्राह्मण वेदकेवचनोंतैं ब्रह्मकूंहीजग त्काकारण जानतेहुएभी ताअर्थकीदृढताकरणेवासते नानाप्रकारकीयुक्तियोंकेजानणेकीइच्छाकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेसंपूर्णब्राह्मण योगशास्त्रकीरीतिसैं ता अद्वितीयब्रह्मविषे चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूपध्यान करतेभये ॥ इसप्रकार ध्यानकूंप्राप्तहोइके तेविद्वान्ब्राह्मण ता अद्वितीयआत्माकेआश्रित एकअविद्यारूपशक्तिकूंदेखतेभये ॥ कैसीहैसाअविद्यारूपशक्ति याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहारीहै ॥ तथा कुतर्कीपुरुषोंकरिके देखीजावैनहीं ॥ तथा आवरणविक्षेपादिकगुणोंकरिकेढाकीहुइहै ॥ ऐसीअविद्यारूपशक्तिकूंदेखिकरिके तेसंपूर्ण ब्राह्मण आश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये॥अबतामायारूपशक्तिकेगुणोंकानिरूपणकरैहैं॥स्वप्रकाशअद्वितीयआनंदरूप जोयहआत्मादेवहै॥ताकेविषे यहमायारूपशक्ति यद्यपिवास्तवतैं हैनहीं॥तथापि ताआनंदस्वरूपआत्माविषे भासमानहुईयहमायारूपशक्ति आपणेअसत्यजडदुःखरूपोंक रिके तासत्चित्आनंदरूपआत्माकूं आच्छादनकरिलेवैहै ॥ यातैं तामायारूपशक्तिका यहआवरणरूप स्वाभाविकगुणहै ॥ और याजग त्कीजोउत्पत्तिस्थितिलयहै ॥ तथा यास्थूलसूक्ष्मशरीरकेअध्यासतैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं प्राप्तहोणेहारे तथा ताअध्यासको

निवृत्तितैंनिवृत्तहोणेहारे जेकामक्रोधादिकअनेकविकारहैं ॥ तेसंपूर्णविकार तामायाशक्तिकेविक्षेपरूपगुणहैं ॥ ऐसेआवरणविक्षेपरूपअनेक
गुणोंकरिकैयुक्त जो मायाशक्तिहै तामायाशक्तिकूंदेखिकरिकै तेविद्वान्ब्राह्मण परमआश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये ॥ अब तामायाशक्तिकेअधिष्ठान
आत्माकास्वरूपनिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो॥यहमायाशक्ति जिसअधिष्ठानआत्माकेआश्रितरहैहै॥सोअधिष्ठानआत्माकैसाहै॥जैसे यहसू
र्यभगवान् घटादिकसर्वपदार्थोंकूंप्रकाशकरै हैं ॥ तैसे सो अद्वितीयआत्माभी आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै पूर्वउक्तकालादिकसर्वका
रणोंकूं व्याप्तकरैहै ॥ और जैसे यहआकाश घटमठादिकसर्वपदार्थोंविषे व्याप्तहै ॥ तैसे सोपरमात्मादेव प्रथम समष्टिरूपकालादिककारणों
कूंव्याप्तकरिकैं तिसतैंअनंतर व्यष्टिरूपजगत्कूंव्याप्तकरै है ॥ और हेसंन्यासियो ॥ सर्वविकारोंतैंरहित जोअसंगआत्माहै ॥ ताअसंग
आत्माविषे जोहमनैं कालादिककारणोंकीअधिष्ठानता तथा कार्यप्रपंचकीअधिष्ठानता कथनकरीहै ॥ साअधिष्ठानताभी यामायारूपशक्ति
केवलतैंहीहोवैहै ॥ वास्तवतैं ताअसंगआत्माविषे याकार्यकारणप्रपंचकीअधिष्ठानतासंभवैनहीं ॥ जैसे किसीव्यभिचारिणीस्त्रीनैं करेजे
मंत्रऔषधादिकउपायहैं ॥ ताउपायोंकरिकैमोहकूंप्राप्तहुआ कोईधनीपुरुष ताव्यभिचारिणीस्त्रीकेविलासोंविषेआसक्तहोवैहै ॥ तैसे तामा
यारूपशक्तिकरिकै मोहकूंप्राप्तहुआ यहआत्मादेव तामायाकेप्रपंचरूपविलासोंविषे आसक्तहोवै है और जैसेयालोकविषे सर्वसंगतैंरहितहु
आभी कोईमहात्मापुरुषआपणेशुद्धतत्त्वभावकरिकै जभी किसीदुष्टपुरुषकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी तादुष्टपुरुषकेसंगकरिकै
सोमहात्मापुरुष मिथ्यावचनरूपपापकूं तथातापापकेदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैंअसंगरूपआत्मादेव तामायारूपशक्ति
केसंबंधकूंपाइकै जभी जीवरूपताकूं तथा जगत्केकारणरूपताकूं प्राप्तहोवै है तभी सोआत्मादेव अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहो
वैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ वास्तवतैंसर्वसंगतैंरहित जोयहस्वयंज्योतिनिर्गुणआत्माहै ॥ ताअसंगआत्माकूंभी यहमायारूपशक्ति मोहित
करिलेवै है ॥ यातैं यामायाशक्तिकाप्रभाव बहुतआश्चर्यरूपहै ॥ याकारणतैंही वेदांतशास्त्रविषे तामायाशक्तिकूं अघटितघटना
पटीयसीयानामकरिकैकथनकरैहै ॥ ऐसीमायारूपशक्तिकेसंबंधकरिकैही यहअसंगआत्मादेव यासंसारचक्रविषेप्रवेशकरैहै ॥ अब

याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम यासंसारकूं चक्ररूपकरिकैवर्णनकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जोरथकाचक्रहे ॥ ताच
क्रका एकनेमिहोवे हे ॥ और दूसरानाभिहोवैहे ॥ और तीसरेअराहोवे हैं ॥ तहां पृथ्वीकेसाथ जाकासंबंधहोवे है ऐसाजोवर्तुलाकार काष्ठ
विशेषहे ताकानाम नेमिहे ॥ और जाकेविषेरथकीशलाकाफिरेहे ऐसाजोमध्यकाकाष्ठविशेषहै ॥ ताकानाम नाभिहे ॥ और तानेमिनाभि
दोनोंकेमध्यविषे जेकाष्ठविशेषहैं तिनोंकानाम अराहे ॥ तैसे माया शक्ति अज्ञान मूलप्रकृति प्रधान अव्याकृत इत्यादिकनामोंकरिकै कथ
नकरणेयोग्यजाअविद्याहे ॥ साअविद्या यासंसारकूं सर्वओरतैंव्याप्यकरिकैस्थितहे ॥ याकारणतैं साअविद्या यासंसाररूपचक्रकानेमिहे ॥
और जैसेप्रसिद्धरथकाचक्र लोहरजतसुवर्णादिकधातुमय पटिकाकरिकैजटितहोवैहे॥ तैसे यहसंसाररूपचक्रभी शुक्लवर्णवालासत्वगुण रक्त
वर्णवालारजोगुण कृष्णवर्णवालातमोगुण यातीनगुणरूपपटिकाकरिकै जडितहे ॥ और जैसे याप्रसिद्धचक्रकेनाभिविषे अराख्पकाष्ठोंके
रहणेवासते छिद्ररूपसंस्थानहोवे है ॥ तैसे यासंसाररूपचक्रकेनाभिविषे क्लेशादिरूपअराकेरहणेवासते षोडशविकाररूप छिद्रस्थानहैं ॥
तेषोडशविकार यहहैं ॥ श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसन, घ्राण यह पंचज्ञानइंद्रिय तथा वाक्, पाणि, पाद; पायु, उपस्थ यहपंचकर्मइंद्रिय
आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी यहपंचभूत एकमन इनोंकानाम षोडशविकारहे ॥ और जैसे प्रसिद्धचक्रविषे अराहोवे हैं ॥ तैसे यासं
साररूपचक्रविषे ५० पंचासअराहैं ॥ तेअरायहहैं पंचक्लेश ५ अष्टसिद्धि८नवतुष्टि ९ अठ्ठाईसअशक्ति२८तहांअविद्या अस्मिता राग द्वेष
अभिनिवेश यहपंचप्रकारकाक्लेशहोवैहे ॥ तहां अनात्मरूपदेहादिकोंविषे आत्मबुद्धिरूपजोविपर्ययहे ॥ ताविपरीतबुद्धिकानाम अविद्या
है ॥ याअविद्याकूंही शास्त्रविषे मत यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ १ ॥ और विचारहीनपुरुषोंकूं जोदेहादिकोंविषे अहंबुद्धिहे ताकानाम
अस्मिताहे॥याअस्मिताकूंही शास्त्रवेत्तापुरुष मोह यानाम करिकैकथनकरेहे॥२ ॥ और विषयसुखकेसाधन जेधनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ हैं तिनों
विषेजाअत्यंतआसक्तिहे याकानामरागहे ॥ याहीरागकूं शास्त्रवेत्तापुरुष महामोह यानामकरिकै कथनकरे हैं ॥ ३ ॥ और दुःखकीप्राप्तिक
रणेहारेशत्रुआदिकोंके अनिष्टकाजोचिंतनहे याकानामद्वेषहे ॥ याहीद्वेषकूं शास्त्रवेत्तापुरुष तामिस्र यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ ४ ॥ और

धनस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंके जोत्यागकीइच्छानहींकरणी ऐसीजा तिनधनादिकपदार्थोंविषेममताहै ॥ ॥ याकानाम अभिनिवेशहै ॥ याहीअभिनिवेशकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अंधतामिस्र यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥५॥ यहपंचप्रकारकेक्लेशहोवैहैं ॥और सुहृद्प्राप्ति १अध्ययन२ ऊह३शब्द४अध्यात्मदुःखकानाश५अधिदैवदुःखकानाश६अधिभूतदुःखकानाश७दान८यहअष्टसिद्धियांहोवैहैं॥और प्रकृति १उपादान २ काल ३ भाग्य ४ शब्दनिवृत्ति ५ स्पर्शनिवृत्ति ६ रूपनिवृत्ति ७ रसनिवृत्ति ८ गंधनिवृत्ति ९ यह नवप्रकारकोतुष्टिहोवैहै ॥ तहां प्रकृति आदिकचारि अंतरतुष्टिहैं ॥ और शब्दादिकपंच बाह्यतुष्टियां हैं ॥ और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथा वाकादिकपंचकर्मइंद्रिय एकमन याएकादशइंद्रियोंका जोकुष्ठादिकरोगोंकरिकेनाशहै ॥ अथवा तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेविद्यमानहुएभी तिनइंद्रियोंविषे जोआपणेकार्यक रणेकाअसामर्थ्यहै ॥ अथवा दूसरेपुरुषकेइंद्रियोंकोअपेक्षाकरिके जोतिनइंद्रियोंविषे अल्पकार्यकरणेकासामर्थ्य है ॥ यही तिनइंद्रियोंका नाशहै ॥ याप्रकार तिनएकादशइंद्रियोंकेएकादशनाशोंकरिके याबुद्धिविषे असामर्थ्यरूप एकादशअशक्तियां उत्पन्नहोवैहैं॥इसप्रकार पूर्व उक्तअष्टसिद्धियोंकेअप्राप्तिकरिके ताबुद्धिविषे अष्टअशक्तियां उत्पन्नहोवै हैं ॥ इसप्रकार नवतुष्टियोंकेअप्राप्तिकरिके ताबुद्धिविषे नवअश क्तियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसप्रकार संपूर्णमिलिके अट्ठाईसअशक्तियां होवैहैं ॥तेअट्ठाईसअशक्तियां तथा नवतुष्टियां तथा अष्टसिद्धियांतथा पंचक्लेश यहसंपूर्णमिलिकेपचासहोवैहैं॥ तेसंपूर्ण यासंसाररूपचक्रकेअराहैं॥ तहां पूर्व अविद्यादिकपंचक्लेशोंका सामान्यतैंनिरूपणकऱ्या था॥ अब तिसीपंचक्लेशोंका विस्तारतैंनिरूपणकरे हैं ॥ तहां अनात्मपदार्थोंविषेआत्मबुद्धिरूपजाअविद्याहै ॥ ताअविद्याकेअष्टप्रकारके विषयहोवैहैं ॥ ताविषयकेभेदकरिके साअविद्याभी अष्टप्रकारकीहोवैहै ॥ तेअष्टविषययहहैं ॥ कारणरूपप्रकृति महत्तत्व अहंकार पंचभूत याअष्टविषयोंकेभेदतैं सातमरूपअविद्याभी अष्टप्रकारकीहोवैहै॥ साअविद्या सुषुप्तिअवस्थाविषेभी बीजरूपहोइकेरहेहै॥१ ऐसीअविद्याका बीजरूपजाअस्मिताहै॥ साअस्मिताभी जाग्रतस्वप्नविषे तिसअविद्याकेप्रकृतिआदिकअष्टविषयोंकूंही अहंरूपकरिकेविषयकरेहै ॥ यातैं तिनप्रकृतिआदिकअष्टविषयोंकेभेदकरिके सामोहरूपअस्मिताभी अष्टप्रकारकीहोवैहै ॥ २ ॥ और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंके जेकमतैं

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध यहपंचप्रकारकेविषयहैं ॥ तेशब्दादिकपंचविषयभी दिव्य अदिव्य याभेदकरिके दोदोप्रकारकेहोवैहैं ॥ तहाँ स्वर्गादिकलोकोंकेजेशब्दादिकविषयहैं ॥ ते दिव्यविषयहैं ॥ और यामनुष्यलोककेजेशब्दादिकविषयहैं ॥ ते अदिव्यविषयहैं ॥ इसप्रकार दिव्यअदिव्यभेदकरिके दशप्रकारकेजेशब्दादिकविषयहैं ॥ तेदशप्रकारकेविषय याजीवोंकेसुखकासाधनहोणेतैं याजीवोंकेरागकाविषयहैं यातैं तादशप्रकारकेविषयोंकेभेदकरिके सोमहामोहरूपरागभी दशप्रकारकाहोवैहै ॥ ३ ॥ और अणिमा, गरिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशित्व, वशित्व, यहअष्टप्रकारकीसिद्धियां ॥ तथा पूर्वउक्तदिव्यअदिव्यभेदतैं शब्दादिकदशविषय ॥ यहअष्टादशविषय द्वेषकेविषयहैं ॥ यातैं तिनअष्टादशविषयोंकेभेदतैं सोद्वेषभी अष्टादशप्रकारकाहोवैहै ॥ अथवा पूर्वउक्तअस्मिताके जेप्रकृतिआदिकअष्ट विषयहैं ॥ तथा पूर्वउक्तरागके जेशब्दादिकदशविषयहैं ॥ तेअष्टादश द्वेषकेभीविषयहैं ॥ यातैं तिनअष्टादशविषयोंकेभेदकरिके सोद्वेषभी अष्टादशप्रकारकाहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यहअष्टादशविषय किसीनिमित्तकरिके जभी नाशकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तभी तेअष्टादशविषय याजी वविषे दुःखकोउत्पत्तिकरिके याजीवकेद्वेषकाविषयहोवे हैं ॥ ताअष्टादशविषयोंकेभेदकरिके सोतामिस्ररूपद्वेषभी अष्टादशप्रकारका होवैहै ॥ ४ ॥ और पूर्वउक्तअणिमादिकअष्टसिद्धियोंसहित जेशब्दादिकदशविषयहैं ॥ अथवा पूर्वउक्तअस्मिताके प्रकृतिआदिकअष्ट विषयोंसहित जेशब्दादिकदशविषयहैं ॥ तिनविषयोंकेनाशकरणेहाराजोकोईबलवान्पुरुषहै ॥ ताबलवान्पुरुषविषे आपणीप्रतिकूलता जाणिके जोतिनविषयोंकेनाशकाभयहै याकानाम अभिनिवेशहै ॥ सोअभिनिवेशभी तिनअष्टादशविषयोंकेभेदतैं अष्टादशप्रकारका हीहोवैहै ॥ ५ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ तमरूपअविद्या अष्टप्रकारकी ८ तथा मोहरूपअस्मिता अष्टप्रकारकी ८ तथा महामोहरूपराग दशप्रकारका १० तथा तामिस्ररूपद्वेश अष्टादशप्रकारका १८ तथा अंधतामिस्ररूपअभिनिवेश अष्टादशप्रकारका १८ यहसंपूर्णमि लिके ६२ बासठिसंख्याहोवे हैं ॥ इतनेंकरिके अविद्यादिकपंचक्लेशोंका निरूपणकन्या ॥ अब पूर्वउक्तअष्टसिद्धियोंकेस्वरूपका निरूपण करेहैं ॥ तहाँ ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा जोश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुहै ताकेप्राप्तिकानाम सुहृद्प्राप्तिहै॥१॥ताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं जोवेदांत

शास्त्रकाश्रवणकरणाहै याकानाम अध्ययनहै ॥ २ ॥ और ताश्रवणकरेअर्थका जोनानाप्रकारकोयुक्तियोंकरिकेमननकरणाहै याकानाम ऊहहै ॥ ३ ॥ और तामननकरेहुएअर्थविषे जोनिरंतर चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूप निदिध्यासनहै ॥ ताकानाम शब्दहै ॥ ४ ॥ और ज्वरादिकव्याधियोंकरिके तथा कामक्रोधादिकआधियोंकरिके उत्पन्नभयाजोदुःखहै ॥ तादुःखकेनाशकानाम अध्यात्मदुःखनाशहै ॥ ५॥ और अग्निजलादिकोंकरिके उत्पन्नभयाजोदुःखहै तादुःखकेनाशकानाम अधिदैवदुःखनाशहै॥ ६और सिंहसर्पादिकभूतोंकरिकेउत्पन्नभयाजोदुःखहै ॥ तादुःखकेनाशकानाम अधिभूतदुःखनाशहै ॥ ७ ॥ और पूर्ववृद्धमहान्पुरुषोंकेअनुसार जोवेदांतविद्याकेसंप्रदायकीप्रवृत्तिकरणीहै याकानाम दानहै ॥ ८ ॥ यहसुहृद्प्राप्तितैंआदिलेके जेअष्टसिद्धियां हैं ॥ तेसिद्धियां याजीवकेमोक्षकासाधनहैं ॥ यातैंयहअष्टही सिद्धिशब्दकामुख्यअर्थ हैं ॥ और पूर्वउक्तअणिमादिकअष्टसिद्धियांतो मायिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरणेहारियां हैं ॥ यातैं तेअणिमादिक तासिद्धिशब्दकामुख्यअर्थनहीं ॥ किंतु तासिद्धिशब्दकागौणअर्थ हैं ॥ इतनेकरिकेअष्टसिद्धियोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब पूर्वउक्तनवतुष्टियोंकास्वरूप निरूपणकरेहैं ॥ तहाँ प्रथम प्रकृतितुष्टिकास्वरूप निरूपणकरे हैं ॥ यहप्रकृतिरूपमायाहो यासंपूर्णजगत्को उत्पत्ति स्थिति लय करेहै ॥ तथा सामायारूपप्रकृतिही नानाप्रकारकेदुर्घटकार्योंकूंभीउत्पन्नकरे है ॥ यातैं सामायारूपप्रकृति जैसे याजगत् कूंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे साप्रकृति कदाचित् हमारेआत्मज्ञानकूंभीउत्पन्नकरैगी ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते हमाराउद्यम निष्फलहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिके जेआलसीमूढपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरे हैं ॥ याकानाम प्रकृतितुष्टिहै ॥१ ॥ और जोपदार्थ नियमकरिके ॥ जिसकार्यकीउत्पत्तिकरैहै ॥ सोपदार्थ ताकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहोवैहै ॥ और "दंडग्रहणमात्रेण नरोनारायणो भवेत्" इत्यादिकशास्त्रोंविषे संन्यासआश्रमकूंही आत्मज्ञानकाकारणकह्याहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिके जोपुरुष संन्यासआश्रम कूंधारणकरेहै ॥ और तासंन्यासआश्रमकरिकेही आपणेकूंकृतकृत्यमानताहुआ जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरेहै॥ याकानाम संप्रदानतुष्टिहै ॥ २ ॥ और यहकालही सर्वजगतकीउत्पत्तिस्थितिलयकरैहै ॥ यातैं यहकाल जैसे सर्वजगतकूंउत्पन्नकरैहै ॥तैसे सो

काल कदाचित् हमारेआत्मज्ञानकूंभीउत्पन्नकरेगा ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै हमाराउद्यम निष्फलहै ॥ याप्रकारकाविचार करिके जोबुद्धिहीनआलसीपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम कालतुष्टिहै ॥ ३ ॥ और यहजीव आपणे भाग्यतैंही राज्य कूंप्राप्तहोवे है ॥ तथा भाग्यतैंही यहजीव लक्ष्मीयशआदिकपदार्थोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ यातैं जोभाग्य हमारेकूं धनादिकपदार्थोंकोप्राप्तिकरैहै ॥ सोभाग्य कदाचित् हमारेआत्मज्ञानकूंभी उत्पन्नकरैगा ॥ ताआत्मज्ञानकोप्राप्तिवासतैहमाराउद्यमनिष्फलहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिके जोमूढआलसीपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम भाग्यतुष्टिहै ॥ ४ ॥ यहचारों अंतरतुष्टिहैं ॥ अब बाह्यपंचतुष्टि योंकास्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ जोपुरुष श्रोत्रइंद्रियकरिके नानाप्रकारकेशब्दोंकूं नहींश्रवणकरैहै ॥ और ताश्रोत्रइंद्रियके निरोधकरणेकरि केही आपणेकूंकृतकृत्यमानिके जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम शब्दनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ५ ॥ और जोपुरुष त्वक्इंद्रियकरिके नानाप्रकारकेस्पर्शोंकूंग्रहणनहींकरैहै ॥ और तात्वक्इंद्रियकेनिरोधकरणेकरिकेही आपणेकूंकृतकृत्यमानिके जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम स्पर्शनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ६ ॥ और जोपुरुष नेत्रइंद्रियकरिके नानाप्रकारकेरूपोंकूंनहीं देखैहै ॥ और तानेत्रइंद्रियकेनिरोधकरणेकरिकेही आपणेकूंकृतकृत्यमानिके जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम रूपनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ७ ॥ और जोपुरुष रसनइंद्रियकरिके नानाप्रकारकेमधुरादिकरसोंकूंनहींग्रहणकरैहै ॥ और तारसनइंद्रियके निरोध करणेकरिकेही आपणेकूंकृतकृत्यमानिके जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम रसनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ८ ॥ और जोपुरुष घ्राणइंद्रियकरिके नानाप्रकारकेगंधकूंग्रहणनहींकरैहै ॥ और ताघ्राणइंद्रियकेनिरोधकरणेकरिकेही आपणेकूंकृतकृत्यमानिके जो पुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम गंधनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ९ ॥ और कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौ तिनबाह्यपंचतुष्टियों का याप्रकारकास्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ याधनादिकपदार्थोंकाजोएकठाकरणाहै १ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजोरक्षणकरणाहै २ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजोखर्चकरणाहै ३ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजोभोगणाहै ४ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजोनाशहै ५

यहपांचों याजीवोंकूं क्लेशकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ तहांश्लोक ॥ अर्थानामर्जनेक्लेश स्तथैवपरिपालने॥ नाशेव्ययेचभोगेच धिगर्थान्क्लेशभाजिनः॥ अर्थयह ॥ याधनादिकपदार्थों के एकठेकरणेविषे तथा रक्षणकरणेविषे तथा नाशविषे तथा खर्चकरणेविषे तथा भोगणेविषे याजीवोंकूं क्लेशकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें सर्वदा क्लेशकीप्राप्तिकरणेहारेजेधनादिकपदार्थ हैं तिनोंकूंधिक्कारहै ॥ १ ॥ याप्रकारकाविचारकरिकैजोपुरुष पूर्वइकठेकियेहुएधनादिकपदार्थोंकाभी परित्यागकरिदेवैहै ॥ अथवा ताविचारकूंकरिके जोपुरुष तिनधनादिकपदार्थोंकूं एकठाहीनहीं करे है ॥ तापुरुषकेचित्तविषे तिसपंचप्रकारकेनिमित्तकरिके पंचप्रकारकीउपरामताहोवै है ॥ तापंचप्रकारकीउपरामताकरिकेही आपणे कूंकृतकृत्यमानिके जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरे है ॥ याकानाम बाह्यपंचप्रकारकीतुष्टिहै ॥ हेमु नीश्वरो ॥ यानवप्रकारकीतुष्टियोंविषे किसोभीतुष्टिकूंअंगीकारकरिके जोमूढबुद्धिपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरे है ॥ तामूढबुद्धिपुरुषकूं कदाचित्भी आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातें यहनवप्रकारकीतुष्टियां आत्मसाक्षात्कारकाविरोधीहोणे तें याजीवकेजन्ममरणादिरूपसंसारकेहीकारणहैं ॥ यातें मुमुक्षुजननें तिननवतुष्टियोंकापरित्यागकरिके श्रवणादिकसाधनोंविषे ही उद्यमानकरणा ॥ और हेमुनीश्वरो ॥ जैसे प्रसिद्धचक्रविषे एकमहान्‌अराहोवै हैं ॥ और दूसरेअल्पअराहोवे हैं ॥ तैसे यासंसाररूप चक्रके पूर्वउक्तक्लेशादिकपंचास महान्‌अराहैं ॥ और श्रोत्रादिकदशइंद्रिय तथा शब्दादिकदशविषय यहबीस २० तासंसारचक्रके अल्पअराहैं ॥ और हेमुनीश्वरो ॥ जैसे प्रसिद्धचक्रकेनेमिविषे तीक्ष्णधाराहोवे हैं ॥ तैसे यासंसाररूपचक्रविषे यहषट्‌अष्टकरूप तीक्ष्णधाराहैं ॥ अब ताषट्‌अष्टकोंकास्वरूप निरूपणकरे हैं ॥ भूमि १ जल २ तेज ३ वायु४ आकाश ५ मन ६ बुद्धि ७ अहंकार ८ यहप्रकृतिअष्टकहै ॥ अथवा प्रकृति १ भूमि २ जल ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ६ मन ७ अहंकार ८ याप्रकारका प्रकृतिअष्टक होवै है ॥ १ ॥ और यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ यहयोगांगअष्टकहै ॥ २ ॥ और सुहृद्प्राप्ति १ अध्ययन २ ऊह ३ शब्द ४ अध्यात्मदुःखनिवृत्ति ५ अधिदैवदुःखनिवृत्ति ६ अधिभूतदुःखनिवृत्ति ७

दान ८ यहसिद्धिअष्टकहै ॥ ३ ॥ और अणिमा १ गरिमा २ लघिमा ३ महिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८ यहसिद्धिअष्टकहै ॥ ४ और वाक् १ श्रोत्र २ त्वक् ३ चक्षु ४ रसन ५ घ्राण ६ मन ७ हस्त ८ यहग्रहअष्टकहै ॥ ५ ॥ और या वाकादि कइंद्रियोंके जेक्रमतें शब्दउच्चारण १ शब्द २ स्पर्श ३ रूप ४ रस ५ गंध ६ संकल्प ७ ग्रहण ८ यहअष्टप्रकारकेविषयहैं ॥ सोयहअष्ट विषय अतिग्रहअष्टकहै ॥ ६ ॥ इसप्रकार षट्अष्टकोंकास्वरूप कोईकविद्वान्पुरुष अंगीकारकरे हैं ॥ और कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतो याप्र कार तिनषट्अष्टकोंकास्वरूप निरूपणकरेहैं ॥ वाक् १ श्रोत्र २ त्वक् ३ चक्षु ४ रसन ५ घ्राण ६ मन ७ हस्त ८ यहग्रहअष्टकहैं ॥ १ ॥ और शब्दउच्चारण १ शब्द २ स्पर्श ३ रूप ४ रस ५ गंध ६ संकल्प ७ ग्रहण ८ यहअतिग्रहअष्टकहै ॥२॥याग्रहअतिग्रहोंकास्वरूप पंचम अध्यायविषे आर्त्तभागकेसंवादमें विस्तारतेंकहिआयेहैं ॥ और पृथिवी १ काम २ रूप ३ आकाश ४ तम ५ रूप ६ दल ७ रेत ८ यहआ यतनअष्टकहै ॥३॥ और अग्नि १ हृदय २ चक्षु ३ श्रोत्र ४ हृदय ५ चक्षु ६ हृदय ७ हृदय ८ यहलोकअष्टकहै॥४॥और अमृत १ स्त्री २ सत्य ३ दिशा ४ मृत्यु ५ प्राण ६ वरुण ७ प्रजापति ८ यहदेवताअष्टकहै ॥ ५ ॥और शारीर १ काममय २ आदित्य ३ श्रोत ४ छा यामय ५ प्रतिबिंब ६ उदकस्थ ७ पुत्रमय ८ यहपुरुषअष्टकहै ॥ ६ ॥ तहां आयतनअष्टक, लोकअष्टक, देवताअष्टक, पुरुषअष्टक याचारि अष्टकोंकास्वरूप पूर्वपंचमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिशाकल्यकेसंवादविषे विस्तारतेंनिरूपण करिआयेहैं ॥ याकारणतें इहांसं क्षेपतें नाममात्रलिखे हैं ॥ इसप्रकार जैसे कुलालकेचक्रविषे घटास्थितहोवेहै ॥ तैसे यहषट्प्रकारकेअष्टक यासंसाररूप चक्रके नेमिकी तीक्ष्णधाराहैं ॥ और हेमुनीश्वरो ॥ जैसे प्रसिद्धचक्रकेधारणकरणेहारे रज्जुआदिकपाशहोवेहैं ॥ तैसे यास्थावरजंगमरूपजगत्भाव कूंप्राप्तभया जोमायाविशिष्टपरमात्माहै ॥ सोपरमात्मादेव यासंसाररूपचक्रकेधारणकरणेहारा रज्जुरूपपाशहै ॥ और नेमि नाभि अरा इत्यादिकअवयवोंकरिकेयुक्त जोप्रसिद्धचक्रहै ॥ सोचक्र जैसे रज्जुआदिक बंधनोंतेंविना शीघ्रहो विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे यहसंसाररूपचक्रभी तापरमात्मारूपबंधनतेंविना शीघ्रहोविशीर्णभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और हेमुनीश्वरो ॥ ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरणेहारा

जोदेवयाननामामार्ग है ॥ तथा स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोपितृयाणनामामार्ग है ॥ तथा कीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकी प्राप्तिकरणेहारा जोतृतीयस्थाननामामार्ग है॥यहतीनप्रकारकेमार्ग तासंसाररूपचक्रकेभेदकाकारणहै॥तिनतीनमार्गोंकेयोगतें यहसंसाररूप चक्र तीननाभिवाला तथा तीननेमिवालाकह्याजावैहै॥ तात्पर्ययह॥ जैसे प्रथम वर्तुलाकार एकसूक्ष्ममंडललिखणा॥ तासूक्ष्ममंडलकूंबाह्य तीनमंडलोंकरिकैवेष्टितकरणा ॥तिनचारोंमंडलोंविषे जोप्रथममध्यकासूक्ष्ममंडलहै॥सोसर्वमंडलोंकेअंतरभूतहै ॥यातैंसोसूक्ष्ममध्यकामंड ल केवलनाभि रूपहीहै और तिनचारिमंडलोंविषे जो अंत्यका मंडलहै सो सर्वमंडलोंकी अपेक्षाकरिकैबाहरहै यातैंसोअंत्यकामंडल के वलनेमि रूपही है ॥ और तिनचारोंमंडलोंविषे जेमध्यकेदोमंडलहैं ॥ तिनदोमंडलोंविषेतो बाह्यमंडलकीअपेक्षाकरिकै नाभिरूपताहै ॥ और अंतरमंडलकी अपेक्षाकरिकै नेमिरूपताहै ॥ इसप्रकार यहसंसाररूपचक्र तीननेमिवाला तथातीननाभिवाला सिद्धहोवैहै ॥ तहां ब्रह्मलोककेप्राप्तिकरणेहारा देवयाननामामार्ग अंतर्मुखउपासकपुरुषोंकूंहीप्राप्तहोवै है ॥ यातें सोदेवयाननामामार्ग यासंसारचक्रका प्रथममध्यनाभिहै ॥ और स्वर्गादिकलोकोंकोप्राप्तिकरणेहारा जोपितृयाणनामामार्ग है॥सोमार्ग उपासकपुरुषोंकीअपेक्षा करिकै बहिर्मुखकर्मीपुरुषोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें सोपितृयाणनामामार्ग यासंसारचक्रका दूसरानाभिहै॥और कीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकी प्राप्तिकरणेहारा जोतृतीयस्थाननामामार्ग है ॥ सोमार्ग कर्मीपुरुषोंकोअपेक्षाकरिकै अत्यंतबहिर्मुखपापात्माजीवोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातें सो तृतीयस्थाननामामार्ग यासंसारचक्रकातीसरानाभिहै ॥ औरतिनकीटपतंगादिकजीवों तैंभी अत्यंतनिकृष्टजेवृक्षादिकतामसोजीवहैं ॥ ति नतामसीजीवोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य जातमरूपअविद्याहै ॥ सातमरूपअविद्या यासंसारचक्रका अत्यंतबाह्यनेमिहै ॥ और जैसे काष्ठमृत्ति का यहदोनों कुलालकेचक्रकाकारणहोवै है ॥ तैसे सुखदुःखरूपफलकूंदेणेहारे यहपुण्यपापरूपदोनोंकर्म यासंसारचक्रकेनिमित्तकारणहैं और हृदयदेशविषेस्थितआत्माकाभीविस्मरणकरिदेणा ऐसाजोतमरूपमोहहै ॥ सोमोह यासंसारचक्रका सर्वत्रअनुगतएकरूपहै ॥ हेसं न्यासियो ॥ ऐसेसंसारचक्रभावकूंप्राप्तभया जोमायाविशिष्टपरमात्माहै ॥ तापरमात्मादेवकूं तेवेदवेत्ताब्राह्मण ध्यानकरिकैदेखतेभये ॥

इतनैंकरिके तामायाविशिष्टपरमात्माकूं संसारचकरूपकरिकैवर्णनकऱ्या ॥ अब तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं नदीरूपकरिके वर्णनकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ तासंसारचकका उपादानकारण जामायारूपमहान्नदीहै ॥ तामायारूपनदीका पुनःयाप्रकारकास्वरूप तेब्राह्मणदेखतेभये ॥ श्रोत्र, त्वक, चक्षु, रसन, घ्राण यापंचज्ञानइंद्रियोंकेरहणेकेस्थान जेपंचगोलकहैं ॥ तेपंचगोलकस्थान यामायारूप नदीकेपंचस्रोतहैं ॥ जलवहणेकेजेस्थानविशेषहैं तिनोंकानाम स्रोतहै ॥ और जैसे प्रसिद्धनदियोंकेजल तिनस्रोतस्थानोंविषेचलेहैं ॥तैसे यहश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियभी गोलकरूपस्थानोंविषेगमनकरैहैं ॥यातें तेश्रोत्रादिकपंचइंद्रिय यामायारूपनदीके पंचप्रकारकेजलहैं॥ और जैसे प्रसिद्धनदियोंकेजलोंका मेघ कारणहोवे है ॥ तैसे आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी यह पंचभूत ताइंद्रियरूपजलोंका तथातागोल करूपस्रोतोंका कारणहै ॥ और जैसे वर्षाकालविषे लोकप्रसिद्धनदियोंके कुटिलप्रवाहहोवेहैं ॥ तैसे कामक्रोधादिक आसुरीसंपदावाले प्रमादोजीवोंविषे श्रोत्रादिकपंचइंद्रियोंकरिके उत्पन्नभये जेपंचप्रकारकेज्ञानहैं ॥ तेपंचज्ञान याजीवोंकेदुःखकाहेतुहैं ॥ यातें तेपंचप्रकार केज्ञान यामायारूपनदीकेअत्यंतउग्र तथा कुटिल पंचप्रवाहहैं ॥ अथवा जैसे लोकप्रसिद्धनदियोंविषे जलकाभ्रमणरूपजेचक्रहोवेहैं ॥ तेचक्र याजीवोंकूंनीचेलेजावैहैं ॥ तैसे शास्त्रसंस्कारतैंरहितप्रमादीपुरुषोंविषे श्रोत्रादिकपंचइंद्रियोंकरिके उत्पन्नभयेजेपंचप्रकारकेज्ञानहैं ॥ तेज्ञानभी तिनप्रमादीपुरुषोंकूं कीटपतंगादिकशरीरोंकोप्राप्तिरूप अधोगतिकोप्राप्तिकरैहैं ॥ यातें तेपंचप्रकारकेज्ञान यामायारूपनदीके पंचउग्रचक्रहैं ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धनदियोंविषे नानाप्रकारकेतरंगहोवे हैं तैसे प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान यहपंचप्राण यामाया रूपनदीके महान्पंचतरंगहैं ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धनदियोंकेमूलहोवे हैं ॥ तैसे शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंकूंविषयकरणेहारे जेशा स्त्रविहित अथवा शास्त्रनिषिद्ध पंचप्रकारकेज्ञानउत्पन्नहोवे हैं ॥ तथा पंचप्रकारकीइच्छाउत्पन्नहोवे हैं ॥ तेपंचज्ञान तथापंचइच्छा संस्का रद्वारा यामायारूपनदीके पंचमूलहैं ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धनदियोंविषे नानाप्रकारकेआवर्त्तहोवेहैं ॥ जिनआवर्त्तोंविषेप्राप्तहुआयहजीव बाहुरनिकसिसकतानहीं ॥ तैसेशब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध यहपंचविषय यामायारूपनदीके पंचमहान्आवर्त्त हैं ॥काहेतें जैसेलोकप्रसिद्ध

नदियोंतैं जोवोंकूंपारउतारणेहाराजोनाविकपुरुषहै ॥ सोनाविकपुरुषभी जोकदाचित् तिननदियोंकेआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवे है ॥ तो सोनाविकपुरुषभी तानदीकेआवर्त्तों तैं आपणेकूं निकासणेमैंसमर्थहोतानहीं ॥ तैसे अधिकारीपुरुषोंकूं शास्त्रकाउपदेशकरिकै मायारूपनदीतैं पारकरणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुषभी जोकदाचित् याविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवैहै ॥ तो सोविद्वान्पुरुषभी ताविषयरूपीआवर्त्तोंतैं आपणेकूंबाहरनिकासणेविषेसमर्थनहींहोवैहै ॥ और जैसे सोनाविकपुरुष अन्यलोकोंकूंनदीतैं पारकरिकै जभी आप तानदीकेआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवे है ॥ और तानदीकेआवर्त्तोंतैं आपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवे है ॥ तभी तानाविकपुरुषों नें जिनलोकोंकूं तानदीतैं पारकऱ्याथा ॥ तेलोक तानाविकपुरुषकूं नदीकेआवर्त्तोंविषेप्राप्तहुआदेखिकै कोइकलोकतो तानाविकपुरुषकाशोककरैहैं ॥ और कोईकलोक ताका उपहासकरैहैं ॥ तहां तानाविकपुरुषकेउपकारकूंजानणेहारे जेसज्जनपुरुषहैं ॥ तेसज्जनपुरुषतो तानाविकपुरुषकाशोककरे हैं ॥ और तानाविकपुरुषकेउपकारकूंनहींजानणेहारे जेकृतघ्नलोकहैं ॥ तेकृतघ्नलोकतो तानाविकपुरुषकाउपहासकरे हैं ॥ तैसे जोविद्वान्पुरुष शास्त्रकाउपदेशकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं मायारूपनदीतैंपारकरैहैं ॥ सोविद्वान्पुरुष जभी ताविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोइके ताविषयरूपआवर्त्तों तैं आपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवे है ॥ तभी ताविद्वान्पुरुषने जिनअधिकारीपुरुषोंकूं यामायारूपनदीतैंपारकऱ्याथा ॥ तेअधिकारीपुरुष याविद्वान्पुरुषकूं विषयरूपआवर्तोंविषेप्राप्तहुआदेखिकै कोईकसज्जनपुरुषतो ताविद्वान्पुरुषकाशोककरे हैं ॥ और कोईककृतघ्नपुरुषतो ताविद्वान्पुरुषकाउपहासकरैहैं ॥ यातैं हेमुनीश्वरो याविद्वान्पुरुषनैंभी ऐसाअभिमान कदाचित् नहींकरणा ॥ जोहमविद्वान्पुरुष शास्त्रकाउपदेशकरिकै सर्वजीवोंकूं यामायारूपनदीतैंपारकरणेहारेहैं ॥ यातैं हमविद्वानोंकूं यहविषयआवर्त्त क्याकरैंगे ॥ याप्रकारकाअभिमानकरिकै सोविद्वान्पुरुष जोकदाचित् तिनविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवैगा ॥ तो सोविद्वान्पुरुषभी लोकोंकेउपहासकातथाशोकका विषयहोवैगा यातैंकरामलककीन्याईं जिनपुरुषोंकूंआत्माकासाक्षात्कारप्राप्तभयाहै ऐसेविद्वान्पुरुषोंनैंभी याविषयरूपआवर्त्तों तैं सर्वदा भयहीकरणा ॥ और हेमुनीश्वरो ॥ जैसे लोकप्रसिद्धनदियोंकेआवर्त नाविकपुरुषोंकूं तथा अन्यपुरुषों

कूंअत्यंतदुस्तरहोवैहै ॥ तैसे यामायारूपनदीके विषयरूपआवर्त्तभी विद्वान्पुरुषोंकूं तथाअविद्वान्पुरुषोंकूं अत्यंतदुस्तरहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जिनविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहुआ यहविद्वान्पुरुषभी तिनविषयरूपआवर्त्तों तैं बाहरनहीं निकसिसकता ॥ ऐसे विषयरूपआवर्त्तोंतैंरक्षाकरणेहारा जोकोईउपायहै ॥ तो हमारेप्रतिकहो॥ समाधान ॥ हेमुनीश्वरो ! याविषयरूपआवर्त्तोंतैंरक्षाकरणेहारा एकहीउपाय शास्त्रविषेकह्याहै॥सोतुमश्रवणकरो ॥ जैसे लोकप्रसिद्धनदियोंविषेचलणेहारे नाविकपुरुष जभीतानदीकेआवर्त्तोंकूं आपणेवामभागकीतरफ अथवा दक्षिणभागकीतरफ परित्यागकरिकेचालेहैं तभीही तेनाविकपुरुष तिनआवर्त्तोंविषे नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे जोविद्वान्पुरुष तथामुमुक्षुजन शास्त्रविचारकेबलतैं याविषयरूपआवर्त्तोंकूं दूरतैंहीपरित्यागकरैहैं ॥ सोईहीपुरुष याविषयरूपआवर्त्तोंविषे नहींप्राप्तहोवे हैं ॥ यातैं विषयोंविषेदोषदृष्टिकरिके तिनविषयोंकासंगहीनहींकरणा॥यहही तिनविषयरूपआवर्त्तोंतैंरक्षाकाउपायहै ॥ याउपायकापरित्यागकरिके जोकदाचित् विद्वान्पुरुषभी तिनविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवैगा ॥ तो सोविद्वान्पुरुषभी तिनविषयरूपआवर्त्तों तैं आपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवैगा ॥ और जभी यहविद्वान्पुरुषभी तिनविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोइके तिनआवर्त्तों तैंआपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवे है ॥ तभी अविद्वान्पुरुष तिनविषयरूपआवर्त्तों तैं आपणेकूंनिकासणेविषे किसप्रकारसमर्थहोवैगा ॥ यातैं तिनविद्वान्पुरुषोंनैं तथामुमुक्षुजनों नैं यहविषयरूपआवर्त्त दूरतैंहींपरित्यागकरणे ॥ यासंगकापरित्यागरूपउपायकूंछोडिके दूसराकोईउपाय तिनविषयरूपआवर्त्तों तैंरक्षाकाहैनहीं ॥ यातैं यहशब्दादिकपंचविषय यामायारूपनदीकेपंचआवर्त्त हैं ॥ और तिनशब्दादिकपंचविषयों तैं याजीवोंविषे जोपंचप्रकारकासुखउत्पन्नहोवैहै ॥ सोविषयसुख नाशवान्है तथाभयकाकारणहै ॥ यातैं मधुविषयुक्तअन्नकीन्याई तेविषयजन्यसुख दुःखरूपही हैं ॥ ऐसेपंचप्रकारकेदुःखोंका जोरात्रिदिनविषेनिरंतरप्रवाहहै ॥ सोपंचप्रकारकेदुःखोंकाप्रवाह यामायारूपनदीका पंचप्रकारकावेगहै ॥ अथवा गर्भदुःख, जन्मदुःख, राजदुःख, व्याधिदुःख, मरणदुःख,यहपंचप्रकारकादुःखतामायारूपनदीकेपंचवेगहैं ॥ और तम, मोह, महामोह, तामिस्र, अंधतामिस्र, यहपंचप्रकारकेक्लेश यामायारूपनदीके पंचपर्व हैं ॥ इहां

विभागकानाम पर्व है यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ पंचइंद्रियोंकेगोळक १ पंचश्रोत्रादिकइंद्रिय २ आकाशादिकपंचभूत ३ पंचज्ञान ४ पंचप्राण ५ पंचबुद्धि ६ पंचइच्छा ७ पंचविषय ८ पंचदुःख ९ पंचक्लेश १० यापचास (५०) भेदकरिके सामायारूपनदी पचासभेदवाली है ॥ अथवा पंचक्लेश अष्टसिद्धि नवतुष्टि अट्ठाईसअशक्ति यह पूर्वउक्तपचासभेदकरिके सामायारूपनदी पचासभेदवालीहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ ऐसीमायाशक्तिकूं तेवेदवेत्ताब्राह्मण ध्यानकालविषे कारणब्रह्मकेआश्रित देखतेभये ॥ शंका ॥ हेभगवन् अद्वितीयब्रह्मकेध्यानपरायण जेविद्वान्ब्राह्मणथे ॥ तेब्राह्मण तामायाशक्तिकूं किसवासते देखतेभये ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ तेविद्वान्ब्राह्मण अद्वितीय ब्रह्मकेध्यानकरिके तामायाकूं सर्वदादेखतेनहीं ॥ किंतु जिसकालविषे तेविद्वान्ब्राह्मण ताअद्वितीयब्रह्मतें याजगत्केउत्पत्तिआदिकोंकी अनुपपत्तिकास्मरणकरैहैं ॥ तिसीकालविषे तेविद्वान्ब्राह्मण तामायाशक्तिकूंदेखेहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे पूर्व तेविद्वान्ब्राह्मण ब्रह्माकार वृत्तिकोंकेप्रवाहरूपध्यानकरिके तामायाशक्तिकूंदेखतेभयेहैं ॥ तैसे तुमभी जभी ताअद्वितीयब्रह्मविषे वृत्तियोंकाप्रवाहकरोगे तभी तामायाशक्तिकूं तुम आपहीजाणिलेवोगे ॥ यातें तुमसंन्यासियोंकेप्रति मैंश्वेताश्वतरऋषि ताअद्वितीयब्रह्मकाउपदेशकरताहूं ॥तुमसावधानहोइकेश्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो ॥ पूर्वउक्तकालादिकसर्वकारणोंकाअधिष्ठान जोनिर्गुणब्रह्महै ॥ जिसनिर्गुणब्रह्मकूं पूर्वमुनीश्वर ध्यानकरिकेदेखतेभयेहैं ॥ सोनिर्गुणब्रह्म तुम्हारेआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोनिर्गुणब्रह्म तुम्हाराआत्मारूपहीहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जोअद्वितीयब्रह्मरूपआत्मा तुम्हारेहृदयदेशविषेस्थितहोइके बुद्धिआदिकसंघातकूंप्रकाशकरैहै ॥ सोईहीब्रह्मरूपआत्मा मायारूपउपाधिकेसंबंधतैं ईश्वरसंज्ञाकूं तथाईश्वरसाक्षीसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और सोईहीब्रह्मरूपआत्मा अविद्यारूपउपाधिकेसंबंधतैं संसारचक्रविषेभ्रमणकरताहुआ जीवसंज्ञाकूं तथाजीवसाक्षीसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥तात्पर्ययह ॥ एकहीप्रकृति शुद्धसत्वगुणकीप्रधानताकरिके मायासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मलिनसत्वगुणकीप्रधानताकरिके अविद्यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां मायाविशिष्टचेतनकानाम ईश्वरहै ॥ और मायाउपहितचेतनकानाम ईश्वरसाक्षीहै ॥ इसीप्रकार अविद्याविशिष्टचेतनकानाम जीवहै ॥ और अविद्याउपहितचेतनकानाम जीवसाक्षीहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे कुलाल दंड

करिके चक्रकूं भ्रमणकरावैहै ॥ तैसे सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइके यहपरमात्मादेव कामक्रोधादिरूपदंडकरिके यापराधीनजी वोंकूं निरंतर भ्रमणकरावैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहजीवात्मा जबपर्यंत यासंसारविषेभ्रमणकरैहै ॥ तबपर्यंत याजीवात्माकूं अद्विती यआत्माकासाक्षात्कारनहींभया ॥ और जभी यहजीवात्मा गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिके ताअद्वितीयआत्माकूंनिश्चयकरे है ॥ तभी यहजीवा त्मा संसाररूपकार्यसहित ताअविद्याकूंनाशकरे है ॥ याकारणतैंही श्रुतिभगवती याजीवात्माकूं हंस यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ जोजीव अद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिके अविद्याकूंहननकरे है ताजीवकानाम हंसहै ॥ ऐसाजीवरूपहंस जभी आपणेआत्माकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरि केदेखे है ॥ तभी यहजीवात्मा जन्ममरणादिकविकारों तैं रहितहोइके मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवे है हेसंन्यासियो ॥ जिसअद्वितीयब्रह्मकूं यहजीवरूपहंस आपणाआत्मारूपकरिकेदेखेहै ॥ तिसीअद्वितीयब्रह्मकूं यहवेदांतशास्त्र प्रतिपादनकरे है ॥ तथा तिसीअद्वितीयब्रह्मरूपअ धिष्ठानविषे तेज जल पृथ्वी यहतीनभूतरहे हैं ॥ और सोईअद्वितीयब्रह्म सर्वकर्मफलोंकाअवधिरूपहै ॥ और आत्मसाक्षात्कारतैंविना कि सीउपायकरिके जिसकानाशनहींहोवेगा ॥ ऐसीजाआत्माकूंआवरणकरणेहारीमायाशक्तिहै सामायाशक्तिभी तिसीपरमात्मादेवकेआश्रितर हे है ॥ और पूर्व तेवेदवेत्ताब्राह्मणभी इसीस्वयंज्योतिआत्मादेवकूंमायातैंभिन्नजाणिके तथा अद्वितीयब्रह्मरूपजाणिके ताआवरणविक्षेपरूप मायातैं विमुक्तहोतेभयेहैं ॥ तथा इसीअद्वितीयब्रह्मविषे अभेदभावकूंप्राप्तहुए तेवेदवेत्ताब्राह्मण जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितभयेहैं॥यातैं तुमभी ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेजाणों ॥ अब तत्त्वमसि यावाक्यविषेस्थितजो तत्, त्वं यहदोपदहैं तिनोंकेअर्थका तथा ताकेविचारतैंमोक्षकेप्राप्तिका निरूपणकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ सर्वव्यापकजोपरमात्मादेवहै सो तत्पदकाअर्थहै ॥ और पूर्वहंसरू पकरिकेकथनकऱ्याजोजीवात्माहै सोत्वंपदकाअर्थहै ॥ और तिसतत्पदार्थरूपईश्वरका तथा त्वंपदार्थरूपजीवकाजोपरस्परभेदप्रतीतहोवे है ॥ सोभेद वास्तवतैंनहीं है ॥ किंतुसोभेदउपाधिकरिके है ॥ तहां श्रुतिविषे क्षर व्यक्त यादोनोंनामकरिकेकथनकऱ्या जोअंतःकरणादि ककार्यप्रपंचहै ॥ सोकार्यप्रपंच यात्वंपदार्थरूपजीवकाउपाधिहै ॥ और श्रुतिविषे अव्यक्त अक्षर यादोनोंनामकरिकेकथनकऱ्याजोकारण

अज्ञानहै ॥ सोकारणअज्ञान तत्पदार्थरूपईश्वरकाउपाधिहै ॥ तहांश्रुति ॥ "कार्योपाधिरयंजीवः कारणोपाधिरीश्वरः" ॥ अर्थयह ॥ अंतःकरणादिरूपकार्यउपाधिवाला जीवहोवै है ॥ और अज्ञानरूपकारणउपाधिवाला ईश्वरहोवै है ॥ १ ॥ तिसकार्यकारणरूपदोनोंउपाधियोंकाअधिष्ठानभी शुद्धपरब्रह्महै ॥ सोपरमात्मादेवही जभी बुद्धिकेसाथतादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइके आपणेवास्तवस्वरूपकूंनहींजाणे है ॥ तभी सोपरमात्मादेव जीवभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताजीवभावकरिकै सोपरमात्मादेव पुण्यपापकेवशतैं नानाप्रकारकेसुखदुःखोंकूंभोगे है ॥ और सोईहोपरमात्मादेव जभी मायाकृतजीवभावकापरित्यागकरिकै आपणेकूंअद्वितीयब्रह्मरूपजाणेहै ॥ तभी सोपरमात्मादेव सर्वबंधनोंतैंमुक्तहोइके मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे वास्तवतैंन्यूनअधिकभावतैंरहितजोआकाशहै ॥ सोआकाश जभी सूचीकेमूलछिद्रविषेस्थितहोवै है ॥ तभी सोआकाश अल्पकह्याजावै है ॥ और सोईहोआकाश जभी ब्रह्मांडरूपउपाधिविषेस्थितहोवै है ॥ तभी सोआकाश महान्कह्याजावैहै ॥ तैसे वास्तवतैंजीवईश्वरभावतैंरहितजोयहपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव जभी बुद्धिरूपउपाधिविषेस्थितहोवै है ॥ तभी सोपरमात्मादेव जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है और सोईहोपरमात्मादेव जभी मायारूपउपाधिविषे स्थितहोवै है ॥ तभी सोपरमात्मादेव ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं कार्यकारणरूपउपाधिकेभेदकरिकेही जीवईश्वरकाभेदप्रतीतहोवै है ॥ वास्तवतैं ताजीवईश्वरकाभेदहैनहीं ॥ यातैं ताकल्पितउपाधियोंकापरित्यागकरिकै यहजीवात्मारूपहंस जभी आपणेकूंअद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैजाणैहै ॥ तभी यहजीवात्मा मायारूपकारणसहित सर्वकामक्रोधादिकपाशोंतैं मुक्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ऐसेअद्वितीयआत्माविषे जीव ईश्वर ब्रह्म इत्यादिकभेदव्यवहार कोनकरावै है॥समाधान ॥ हेसंन्यासियो एकईश्वर, दूसराजीव, तीसराशुद्धब्रह्म, यातीनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अनादिकहै हैं ॥ सोतिनतीनोंविषे जोअनादिपणाहै तथा जन्मतैंरहितपणाहै ॥ सोभी यामायाकरिकेही कल्पितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सामायाशक्तिही तिनईश्वरादिकोंकूं अनादिरूपकरिकैकल्पनाकरै है॥और आकाशादिकप्रपंचकूं सादिरूपकरिकै कल्पनाकरै है ॥ और तामायानैं जीव ईश्वर शुद्धब्रह्म यातीनोंविषे जभी अनादिपणाकल्पनाक

न्या॥तभी तिसजीवईश्वरकाभेद तथा सामाया तथा मायाचेतनकासंबंध यातीनोंविषेभी अनादिपणा अर्थतैंहीसिद्धहोवे है॥ यहवार्ता सुरेश्वराचार्यनैंभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ "जीवईशोविशुद्धाचि द्विभागश्चतयोर्द्वयोः ॥ अविद्यातच्चितोर्योगः षडस्माकमनादयः" ॥ अर्थयह ॥ जीव ईश्वर शुद्धचेतन तिनदोनोंकापरस्परभेद अविद्या अविद्याचेतनकासंबंध यहषट् वेदांतशास्त्रविषे अनादिहोवैहैं॥ १ ॥ इसतैंआदिलैकेजोअद्वितीयआत्माविषेभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सोसंपूर्ण मायाकरिकेहीप्रतीतहोवैहै ॥ और यहअधिकारीपुरुष जभी जीव ईश्वर शुद्धचेतन यातीनोंकूं आपणेआत्मातैंअभिन्नकरिकेजानैहै ॥ तथा आपणेस्वरूपकूं सर्वत्रव्यापकरूपकरिकेजानैहै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ अब ताअनादिमायाके निवृत्तिकाउपाय वर्णनकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो जोअनादिमाया जगत्कीउत्पत्तिकालविषे भोक्ताभोग्यरूपकरिके याजीवकूं अनेकप्रकारकेसुखदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जामाया प्रलयकालविषे नामरूपात्मकजगत्भावतैंरहितहुई स्थितहोवैहै तामायाकूं श्रुतिभगवती अक्षर यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ और सोईहीमाया आत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तितैं अनंतर नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तामायाकूं क्षर यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वश्रुतिनैं यामायाकूं अक्षरनामकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ और अभीश्रुतिनैं तामायाकूं क्षरनामकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ सोअक्षरपणा तथाक्षरपणा एकपदार्थविषेसंभवैनहीं यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्पर विरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहअनादिमाया आत्मसाक्षात्कारतैंविना अन्यकिसीउपायकरिके नाशहोतीनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिनैं तामायाकूं अक्षरकह्याहै ॥ और आत्मसाक्षात्कारकरिके तामायाकानाशहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिनैं तामायाकूं क्षरकह्याहै ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्परविरोधहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो जोवस्तु नाशतैंरहितहोवैहै ताकानाम अक्षरहै ॥ ऐसाअक्षरपणा तामायाविषेसंभवैनहीं ॥ किंतु उत्पत्तिनाशतैंरहित यापरमात्मादेवविषेही सोअक्षरपणासंभवैहै ॥ ऐसाअक्षरपरमात्मादेव जभी याअधिकारीपुरुषोंकेवृत्तिविषेआरूढहोइके यामायाकाहरणकरैहै ॥ तभी यापरमात्मादेवकूं श्रुतिभगवती हर यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेव आपणीसत्ताकरिके तामायारूपकारणकूं तथा

जगद्रूपकार्यकूंनियमतैंप्रवृत्तकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं ईश यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ तुमोंनैं आपणेमनविषे याप्रकारकीअसंभावनानहींकरणी॥ क्योंकिहमारेकूं आत्माकाज्ञानतोभयाहै॥परंतु हमारे अविद्याकीनिवृत्तिभईनहीं॥यातैं आत्माकाज्ञान अविद्याकेनिवृत्तिका कारणनहीं ॥ याप्रकारकीअसंभावना तुमोंनैं कदाचित्भीनहींकरणी ॥ काहेतैं याअविद्याकीअनेक शक्तियां हैं ॥ तिनशक्तियोंकूं क्रमतैंही आत्मज्ञानकीअवस्था नाशकरैहैं ॥ अब तिनअज्ञानकेशक्तियोंका तथा तिनआत्मज्ञानकेअवस्थाओंका निरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ याजगत्विषे प्रथम सत्यबुद्धिकराइके पश्चात् ताजगत् विषे आसक्तिकरावणेहारी जाकोईकअविद्याकीशक्तिहै ॥ साअविद्याकीशक्ति अभिध्यानरूपज्ञानतैंनाशहोवैहै ॥ तहां यहसंपूर्णजगत् ॥ हमाराआत्मास्वरूपहै ॥ याप्रकारके चिंतनकानाम अभिध्यानहै ॥ ताअभिध्यानकीउत्पत्तितैंपूर्व याअधिकारीपुरुषकी जैसीपदार्थोंविषेआसक्तिहोवैहै ॥ तैसीआसक्ति ताअभिध्यानकीउत्पत्तितैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकीहोवैनहीं यातैं यहजान्याजावैहै ताअभिध्यानकरिके याअधिकारीपुरुषोंकी कोईकअविद्याकीशक्ति निवृत्तभई है जिसअविद्याशक्तिकेनाशकरिके यहविद्वान्पुरुष संसारविषेआसक्तअज्ञानीजीवोंतैं विलक्षणहोवैहै ॥ तथा रागद्वेषादिकोंतैंरहितहुआ सोविद्वान्पुरुषशांतिआदिकगुणोंवालाहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ याअर्थविषे तुमसंन्यासीही दृष्टांतहो ॥ काहेतैं सर्वात्मभावकाचिंतनरूपअभिध्यानतैंपूर्व जैसीतुमारी अनात्मपदार्थोंविषेआसक्तिथी ॥ तैसीआसक्ति अभी तुम्हारेविषैहैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ याजीवोंका परस्परभेदहै तथा जीवईश्वरका परस्परभेदहै ॥ याप्रकारकीभेदप्रतीतिकरावणेहारी जादूसरीअविद्याकीशक्तिहै ॥ सादूसरीशक्तियोजनातैंनिवृत्तहोवैहै ॥ तहां जीवईश्वरकेअभेदचिंतनकानाम योजनाहै ॥ और जैसे लौकिकपुरुष आपणे ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वादिकजातियोंविषे संशयविपर्ययतैंरहितहोवै हैं ॥ तैसे तायोजनाकरिकै ताअविद्याशक्तिकेनिवृत्तहुए यहविद्वान्पुरुष आपणेआत्माकेब्रह्मरूपताविषे संशयविपर्ययतैंरहितहोवै है ॥ और हेसंन्यासियो अनात्मपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे जेज्ञानकर्मवासनाहैं ॥ तिनोंकूंउत्पन्नकरणेहारी जातीसरीअविद्याकीशक्तिहै ॥ सातीसरीशक्ति तत्वभावतैंनाशहोवैहै ॥ तहां निरंतर अद्वितीय

आत्माकाचिंतनरूप जाआत्मनिष्ठाहै तानिष्ठाकानाम तत्त्वभावहै ॥ तातत्त्वभावकरिकै ताअविद्याशक्तिकेनाशहुए यहविद्वान्पुरुष जीव
तअवस्थाविषेभी विदेहमुक्तपुरुषकेसमानहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ यातत्त्वभावअवस्थाकेप्राप्तहुए याविद्वान्पुरुषोंकी शुभअशुभसंस्का
रसहितसर्वप्रकारकीअविद्या नाशहोवैहै ॥ और जैसे स्वप्नतैंजाग्रतहुआयहपुरुष स्वप्नकेप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ तैसे स्वप्रकाशआनंदस्वरूप
आत्माकेनिष्ठाकूंप्राप्तहुआ यहविद्वान्पुरुष शरीरादिकप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ समाधिअवस्था विषे यद्यपि ताविद्वान्
पुरुषकूं प्रपंचकाभानहोवैनहीं ॥ तथापि तासमाधितैंउत्थानकालविषे ताविद्वान्पुरुषकूंभी जगत्काभानहोवै है ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषकूं
भी जगत्कीप्रतीतिकरावणेहारी जाचतुर्थअविद्याकीशक्तिहै ॥ साशक्ति प्रारब्धकर्मकेनाशतैंअनंतरही नाशहोवै है॥इसप्रकार ज्ञानकीअव
स्थाविशेषोंकरिकै ताअविद्याकेशक्तियोंकानाशहोवै है ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकै निरूपण करैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहअधिकारीपु
रुष जभी सर्वात्मभावकाचिंतनरूप अभिध्यानकरिकै आत्माकूंसाक्षात्कारकरै है ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतैंमु
क्तहोवैहै ॥ कैसेहैंतेकामक्रोधादिक ॥ जिनकामक्रोधादिकपाशोंकरिकैबंधेहुआ यहअज्ञानीपुरुष नानाप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहो
वैहै॥तथा तिनऊंचनीचशरीरोंविषेभी अध्यात्म,अधिदैव अधिभूत यातीनप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसे कामक्रोधादिकदारुणपाश या
अधिकारीपुरुषोंके तभीनिवृत्तहोवैहैं॥जभी यहअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंयासंपूर्णजगत्कूंआपणाआत्मारूपकरिकैजाणैहै॥इतनैं
करिकै प्रथम अभिध्यानरूपअवस्थाकाफल निरूपणकऱ्या अब दूसरीयोजनारूपअवस्थाकाफल निरूपणकरै हैं॥हेसंन्यासियो॥जैसे घटा
काश महाकाशतैं अभिन्नहै तैसे यहहमाराआत्मा अद्वितीयब्रह्मरूपहै॥याप्रकार जीवब्रह्मकेअभेदचिंतनरूपयोजनातैं याअधिकारीपुरुषोंकूं
जभी अद्वितीयब्रह्मकाज्ञानहोवै है तभी याअधिकारीपुरुषके आत्माअनात्माकाअध्यासरूपहृदयग्रंथीकाभेदनहोवैहै॥तथाअविद्यादिकपंच
क्लेशोंकोनिवृत्तिहोवैहै तथा संपूर्णशुभ अशुभ कर्मोंकाक्षयहोवैहै॥तथा संपूर्णसंशयोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥भिद्यतेहृदयग्रंथिः छिद्यं
तेसर्वसंशयाः॥क्षीयंतेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टेपरावरे॥ अर्थयह ॥ अद्वितीयपरमात्माकेसाक्षात्कारहुए याअधिकारीपुरुषकी अध्यासरूप

हृदयग्रंथि भेदनकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा आत्माकूंविषयकरणेहारेसंपूर्णसंशय छेदनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा प्रारब्धकर्मतैंअतिरिक्तसंपूर्णकर्म क्षय कूंप्राप्तहोवे है॥१॥इसप्रकार आत्मसाक्षात्कारकरिके जभी याअधिकारीपुरुषोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥तभी अविद्या, अस्मिता,राग,द्वेष, अभिनिवेश,यापंचप्रकारकेक्लेशोंकी निवृत्तिहोवैहै ॥और तिनक्लेशोंकेनिवृत्तिहुए याअधिकारीपुरुषोंकूं पुनःदुःखोंकीप्राप्तिहोवै है नहीं ॥ हे संन्यासियोयाजीवोंविषे जबपर्यंत आपणे स्वरूपकाअज्ञानहोवै है॥तबपर्यंतही याजीवोंविषे अविद्यादिकपंचक्लेश उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा तिन क्लेशोंकरिके नानाप्रकारकेदुःखउत्पन्नहोवैहैं॥और याअधिकारीपुरुषोंकूं जभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥तभीताअ ज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ताअज्ञानकेनिवृत्तहुए याअधिकारीपुरुषोंके अविद्यादिकपंचक्लेश निवृत्तहोवैहैं॥तिनक्लेशोंकेनिवृत्तहुएया अधिकारी पुरुषोंके सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं सर्वदुःखोंतैं रहितहुआ यहविद्वान्पुरुष आपणेप्रारब्धकर्मकेस मातिकोइच्छाकरताहुआयासंसारविषेविचरैहै ॥और हेसंन्यासियो॥यादेहादिकसंघातविषेहेआत्मबुद्धिजिनोंकोऐसेजेअज्ञानीजीवहैंतेअज्ञानी जीव जैसे तासंघातके पूजनताडनादिकोंकरिके सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा अनुकूलप्रतिकूलपदार्थोंकीप्राप्तितैं सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु यहबुद्धिदेहादिकसंघातही पूर्वलेपुण्यकर्मतैंसुखकूंप्राप्तहोवै है और पूर्वलेपापकर्मतैं दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ मैंआत्मा ताबुद्धिआदिकसंघाततैंभिन्नहूं ॥ याप्रकारकाविचारकरिके सोविद्वान्पुरुष बुद्धिआदिकसंघातविषेही सुख दुःखादिकधर्ममानैहै ॥ आपणेआत्माकेधर्ममानैंनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे जोपुरुष आपणेशरीरतैंभिन्न दूसरेशरीरोंकेअभिमानतैंरहि तहै ॥ सोपुरुष तिनदूसरेशरीरोंकेसुखदुःखकरिके आपणेकूंसुखीदुःखीमानतानहीं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष आपणेशरीरकूंभी दूसरेशरीर कीन्याईजाणेहै याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष याशरीरकेसुखदुःखकरिके आपणेआत्माकूंसुखीदुःखीमानैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे या लोकविषे परस्परविवादकरणेहारेजेदोपुरुषहैं ॥ तिनदोनोंकेपक्षपाततैंरहितजोमध्यस्थपुरुषहै ॥ सोमध्यस्थपुरुष तिनविवादकरणेहारेपु रुषोंकेसुखदुःखकूंजाणताहुआभी तिससुखदुःखकूंआपणेविषेमानतानहीं ॥ तैसे यहअसंगविद्वान्पुरुषभी यासंघातकेसुखदुःखोंकूं

जाणताहुआभी आपणेस्वरूपविषे तासुखदुःखकूंमानतानहीं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष पूर्वलेकर्मवासनाके अनुसार नानाप्रकारकेस्वप्नकूंदेखैहे ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी प्रारब्धकर्मकेअनुसार समाधितैंउत्थानकालविषे यासुखदुःखादिकप्रपंचकूंदेखैहे॥हेस न्यासियो॥अभिध्यान योजना तत्त्वभाव यातीनअवस्थावोंविषे प्रथम अभिध्यानरूपअवस्थाका जोफलहमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्याहे॥सो ऐश्वर्यरूपफल देवराजइंद्रकूंभीदुर्लभहे ॥ और पूर्व योजनारूपदूसरीअवस्थाका जोफल हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहे ॥ सोऐश्वर्यरूप फल ब्रह्माकूंभीदुर्लभहे ॥ और तत्त्वभावरूपतीसरीअवस्थाकीप्राप्तिकरिके याविद्वान्पुरुषके अविद्यासहितसर्वसंस्कारोंकानाशहोवे हे ॥ ताकरिके याविद्वान्पुरुषकूं परमेश्वरकाऐश्वर्यरूपफल प्राप्तहोवे हे ॥ तातत्त्वभावरूपअवस्थाकेप्राप्तहुए यहविद्वान्पुरुष आपणेआत्माकूं तथाअन्यपदार्थोंकूं भिन्नरूपकरिकेस्मरणभीनहींकरैहे ॥ और तातत्त्वभावकेप्राप्तहुए यहआप्तकाम विद्वान्पुरुष सर्वभेदतैंरहितहोवे हे ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहोवैहे ॥ तथा सर्वउपमातैंरहितहोवे हे ॥ तथा स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपहोवैहे ॥ हेसंन्यासियो ॥ श्रुतिविषेसत्य शब्दकरिकेकथनकरेजेप्राणहैं ॥ तेप्राण जभी लोकांतरविषेगमननहींकरैहैं ॥ किंतु तेप्राण याशरीरविषेही लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रका रकेऐश्वर्यरूपफलकूं कोईविरलाहीपुरुष अंत्यजन्मविषेहोवैहे ॥ हेसंन्यासियो ॥ जिसविद्वान्पुरुषकेप्राण लोकांतरविषेगमननहींकरे हैं॥ऐसा अपरोक्षज्ञान्वालाविद्वान्पुरुष यालोकविषे अत्यंतदुर्लभहै॥काहेतें यालोकविषे सहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यहीमोक्षकेप्राप्तिकीइच्छा करैहे ॥ यातैं तिनमनुष्योंविषे मोक्षकीइच्छावालामुमुक्षुपुरुष दुर्लभहे॥और तिनसहस्रमुमुक्षुवोंविषेभी कोईएकहीमुमुक्षु श्रवणादिकसाध नोंकरिकेसंपन्नहोवैहे ॥ यातैं तिनमुमुक्षुजनोंविषे श्रवणादिकसाधनसंपन्नपुरुष दुर्लभहे ॥ और तिनश्रवणादिकसाधनसंपन्नसहस्रपुरुषोंवि षेभी कोईएकहीपुरुष आत्माकेपरोक्षज्ञानवालाहोवैहे ॥ यातैं तिनसाधनसंपन्नपुरुषोंविषे परोक्षज्ञानवालापुरुष दुर्लभहे ॥ और तिनपरोक्ष ज्ञानवालेसहस्रपुरुषोंविषेभी कोईएकहीपुरुष आत्माकेअपरोक्षज्ञानवालाहोवैहे ॥ यातैं रागद्वेषतैंरहित तथा सर्वभूतोंकूं आपणाआत्मारूप करिकेदेखणेहारा जोआत्माकेअपरोक्षज्ञानवालापुरुषहे॥सोविद्वान्पुरुष यालोकविषे अत्यंतदुर्लभहे ॥ यहवार्ता गीताविषे श्रीकृष्णभगवान

नेंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ मनुष्याणांसहस्रेषुकश्चिद्यततिसिद्धये ॥ यततामपिसिद्धानां कश्चिन्मांवेत्तितत्त्वतः ॥ अर्थयह ॥ हेअर्जुन ॥ यालोकमें सहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यही हमारीप्राप्तिवासते यत्नकरेहै ॥ और तिनयत्नकरणे हारेसहस्रमनुष्योंविषेभी कोईएकमनुष्यही मेरेवास्तवस्वरूपकूंजानेंहै ॥ १ ॥ यातें आत्माकेअपरोक्षज्ञानवालापुरुष यालोकविषे अत्यंत दुर्लभहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष जिसमातापितातें उत्पन्नहोवेहै ॥ तेमातापिताभी कृतार्थहोवे हैं ॥ तथा सोब्रह्मवेत्तापुरुष जिसकुलविषे उत्पन्नहोवेहै ॥ सोकुलभी कृतार्थहोवेहै ॥ तथा सोब्रह्मवेत्तापुरुष जिसपृथिवीविषेविचरेहै ॥ सापृथिवीभी कृतार्थहोवेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनमातापितादिकोंतें यहब्रह्मवेत्तापुरुष उत्पन्नहोवे है ॥ तिनमातापितादिकोंकामहिमाभी जभी वाणीकरिकेकह्याजावे नहीं ॥ तभी ताब्रह्मवेत्तापुरुषकामहिमा यावाणीकरिके किसप्रकारकह्याजावेगा ॥ हेसंन्यासियो॥जिसपुरुषकूं संशयविपर्ययतेंरहितआत्मा कासाक्षात्कारभयाहै ॥ सोब्रह्मवेत्तापुरुष जोकदाचित् ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकूंकरणेहारेमहापातकोजीवोंऊपर आपणीकृपादृष्टिकरेहै ॥ तौ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकीदृष्टिकेविषयहुए तेमहापातकोजीव तिनब्रह्महत्यादिकपापोंतेंमुक्तहोवें हैं ॥ यहवार्त्ताअन्यशास्त्रविषेभीकही है ॥ तहांश्लोक ॥ यस्यानुभवपर्यंता बुद्धिस्तत्त्वेप्रवर्त्तते ॥ तद्दृष्टिगोचराःसर्वे मुच्यंतेसर्वकिल्बिषैः ॥ अर्थयह ॥ जिसविद्वान्पुरुषकोबुद्धि अद्वितीयआत्माविषे अपरोक्षअनुभवपर्यंत प्रवर्त्तहोवेहै ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष जिनपुरुषोंऊपर आपणीकृपादृष्टिकरेहै ॥ तेपुरुष संपूर्णपापकर्मोतें मुक्तहोवेहैं ॥ १ ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे यालोकविषे जिसपुरुषकूंक्षयरोगहोवेहै ॥ सोपुरुष बहुतकालतेंपीछे आपणेशरीरकूं सर्वदोषोंका गृहजाणेहै ॥ और जिसपुरुषकूं याशरीरविषेकोईरोगनहींभयाहै ॥ सोनिरोगपुरुष याशरीरकेदोषोंकूंजाणतानहीं ॥ तैसे जोविद्वान्पुरुष बहुतकालपर्यंत याअद्वितीयआत्माकाध्यानकरेहै ॥ सोईहीविद्वान्पुरुष याआत्माके सत् चित् आनंद आदिकगुणोंकूंयथार्थजानेहै ॥ ऐसा विद्वान्पुरुष आपणेआत्माकूं परमेश्वररूपजाणिकरिके तापरमेश्वरके ऐश्वर्यरूपफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जाकरिके सोविद्वान्पुरुष किंचित्मात्रभी भयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेसंन्यासियो ॥ सर्वत्रव्यापकअद्वितीयब्रह्म हमाराआत्मारूपहै याप्रकारकाजोजीवब्रह्मकाअभेदज्ञानहै ॥

आत्मास्वरूपजोस्फुरण है ॥ तास्फुरणविषे कल्पितभेद अंगीकारकरिके आत्माकोसिद्धिविषे हेतुरूपतासंभवे है ॥ जैसे यालोकविषेप्रसि
द्ध जोलौकिकअग्निहै॥तथा वेदविषेप्रसिद्ध जोगार्हपत्यादिकवैदिकअग्निहै॥यहदोनोंप्रकारकाअग्नि काष्ठोंकेमथनरूपउपायतें याजीवोंकूंप्राप्त
होवेहै ॥ तैसे स्वर्गादिकलोकोंकेफलकाभोक्ता जोसंसारीआत्माहै ॥ तथा सर्वगुणोंतैंरहित जोशुद्धआत्माहै ॥ यहदोनोंप्रकारकाआत्मा
याअधिकारीपुरुषोंकूं स्फुरणरूपहेतुजन्यअनुमानरूपउपायतें प्राप्तहोवे है ॥ हेसंन्यासियो ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं जभी किसीप्रतिबंधके
वशतें तत्वमस्यादिकवेदवाक्योंकरिके कार्यसहितअविद्यातैंभिन्नरूपकरिके ब्रह्मात्माकासाक्षात्कार नहींप्राप्तहोवे ॥ तभीसर्वअर्थकूंजानणे
हारा महात्मागुरु तिनअधिकारियोंकेप्रति ॐकाररूपप्रणवकेध्यानकाउपदेशकरिके आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरे ॥ अब ताप्रणवकेध्यान
काप्रकार निरूपणकरे हैं ॥ जैसे यालोकविषे काष्ठरूपदोअरणियोंकेमथनतें लोक अग्निकूंप्रगटकरे हैं ॥ तैसे यहहमाराशरीर नीचेकीअर
णिहै ॥ और ब्रह्मकावाचकप्रणवमंत्र ऊपरकीअरणिहै ॥ और यहॐकाररूपप्रणव मैंब्रह्मरूपआत्माकाहीनामहै ॥ याप्रकार जोचित्तकेवृति
योंकानिरंतरप्रवाहहै ॥ सो तिनदोनोंअरणियोंकामथनहै ॥ हेशिष्य याप्रकारकेमथनकूं जभीतूं निरंतरकरेगा ॥ तभी यासंघातविषे
तूंशीघ्रही आत्मरूपअग्निकूं साक्षात्कारकरेगा ॥ याप्रकार प्रणवकेध्यानकाउपदेशकरिके सोब्रह्मवेत्तागुरु तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति
आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरे ॥ यातें प्रणवकाध्यानभी आत्मसाक्षात्कारकाउपायहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज
याचारिप्रकारकेशरीरोंविषे सोआत्मादेव नहींप्रतीतहोवेहै ॥ यातें सोआत्मादेव यासंघातविषेहैनहीं ॥ जोकदाचित् सोआत्मादेव यासंघा
तविषेहोता तौहमारेकूंप्रतीतहोता ॥ याप्रकारकोशंका तुमों नें आपणेमनविषे कदाचित्भीनहींकरणी ॥ काहेतें जोवस्तु जहांनहींप्रतीतहो
वेहै ॥ सोवस्तु तहांनहींहोवे है ॥ याप्रकारकानियम संभवेनहीं ॥ किंतु जोवस्तु जहां किसीउपायकरिकेभी नहींप्रतीतहोवे है ॥ सोवस्तु
तहांनहींहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम संभवैहै ॥ और यासंघातविषेतो अनेकउपायोंकरिके आत्माकीप्रतीतिहोवेहै ॥ यातें यासंघातविषे
आत्मानहीं है ॥ ऐसोआशंकाकरणीसंभवेनहीं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यासंघातविषेस्थितआत्माका उपायोंकरिके साक्षात्कारहोवैहै याअर्थकी

दृढताकरावणेवासते मैं तुम्हारेप्रति चारिदृष्टांतकहताहूं ॥ तिनोंकूं तुम श्रवणकरो ॥ जैसे तिलोंविषेस्थितजोतेलहै ॥ सोतेल यद्यपि प्रसिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तिनतिलोंकेपीडनरूपउपायकरिके सोतेल प्रसिद्धदिखाईदेवे है ॥ और जैसे दधिविषेस्थितजोघृतहै ॥ सोघृत यद्यपि प्रसिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तादधिकेविलोडनरूपउपायतें सोघृत प्रसिद्धदिखाईदेवैहै ॥ और जैसे नदीप्रवाहकेरेतविषेस्थित जोजलहै ॥ सोजल यद्यपि प्रसिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तारेतकाखननरूपउपायकरिके सोजलप्रसिद्धदिखाईदेवे है॥ और जैसे काष्ठों विषेस्थितजोअग्निहै ॥ सोअग्नि यद्यपि प्रसिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतें सोअग्नि प्रसिद्धदिखाईदेवैहै ॥ तैसे गुरुशास्त्रादिकउपायों तैंरहित जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं यद्यपि यासंघातविषेआत्माकादर्शनहोवैनहीं ॥ तथापि गुरुशास्त्रकेउपदेशके अनुसार वर्त्तणेहारे जेश्रद्धावानअधिकारीपुरुषहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष यमनियमादिकउपायोंकरिके यासंघातविषेही आत्माकूंसाक्षात्कारकरैहैं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे घृत क्षीरकेअंतरव्यापकहै ॥ तैसे यहआत्मादेव सर्वजगत्केअंतरव्यापक है ॥ तथा यहआत्मादेवही ईश्वररूपकरिके कर्मउपासनातपादिकधर्मोंके संप्रदायकाप्रवर्त्तकहै ॥ तथा तिनकर्मउपासनातपकेफलकादेणेहाराहै ॥ तथासर्वजगत्काकारणरूपहै ॥ ऐसेआत्मादेवकूं जोअविकारीपुरुष गुरुउपदिष्टमहावाक्यतें साक्षात्कारकरै है॥ सोईहीअधिकारीपुरुष वेदोंकावेत्ताहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहसर्वशास्त्रकाअर्थ हमनें संक्षेपतें तुम्हारेप्रति कथनकर्‍याहै ॥ अब तिसीअर्थकूं विस्तारकरिके हम तुम्हारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तुम सावधानहोइकेश्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो ॥ पूर्वहमनें तुम्हारेप्रति जोआत्मादेव हंसरूपकरिके तथाब्रह्मरूपकरिके कथनकर्‍याथा ॥ सोईहीआत्मादेव आपणेवास्तवस्वरूपकेज्ञानवासते जभी याअधिकारीपुरुषोंकेसंकल्परूपमनकूं ताआत्माकेस्वरूपविषे अष्टांगयोगकीरीतितेंजोडेहै तभी सोआत्मादेव निश्चयरूपबुद्धिकाकारणहोवै है ॥ और तानिश्चयरूपबुद्धिकरिकेयहअधिकारीपुरुष तास्वयंज्योतिरूपआत्माकूंनिश्चयकरैहै ॥ तानिश्चयतेंअनंतर यासंघाततैंभिन्नरूपकरिकेस्थित हुआ तथा यासंघातकानियंतारूपकरिकेस्थितहुआ ॥ सोविद्वान्पुरुष अंतरबाहरपूर्णरूपकरिकेस्थितहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ सूर्य

ताअभेदज्ञानतैंपरे याअधिकारीपुरुषोंकूं कोईवस्तुजानणेयोग्यनहीं॥किंतुयहजीवब्रह्मकाअभेदही याअधिकारीपुरुषोंकूंजानणेयोग्यहै॥हेसंन्यासियो ॥ यासंसाररूपचक्रविषेंहेस्थितिजिसकी ऐसाजोसुखदुःखकाभोक्ता जीवरूपहंसहै ॥ और तासंसारचक्रकीजननी जामायारूपनदी है ॥ और ताजीवरूपहंसकरिकेजानणेयोग्य जोपरमात्मादेव है ॥ जोपरमात्मादेव याजीवोंकूं शुभअशुभकर्मोंविषेप्रेरणाकरे है ॥ और जिसपरमात्माकेज्ञानतैं यहजीव ईश्वरभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ऐसा तत्पदकाअर्थब्रह्म तथा त्वंपदकाअर्थजीवरूपहंस तथा याजगत्कीजननीमाया यहतीनों वास्तवतैं अद्वितीयब्रह्मरूपही हैं ॥ और जैसे घटमठरूपउपाधियोंकेभेदकरिके आकाशविषेभेदप्रतीतहोवे है ॥ तैसे जीव ब्रह्म माया यातीनोंविषेजोभेदप्रतीतहोवे है ॥ सोभी कल्पितउपाधिकेभेदकरिकेहीप्रतीतहोवे है ॥ वास्तवतैं तिनतीनोंकाभेदहैनहीं ॥ याप्रकार जोअधिकारीपुरुष तत् त्वंपदार्थकाशोधनकरे है ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवे है ॥ और हेसंन्यासियो ॥ मायाकेकार्यजेदेहादिकपदार्थ हैं ॥ तिनदेहादिकों तैं यहआत्मादेव विलक्षणहोईकेप्रतीतहोतानहीं ॥ याकारणतैं याआत्मादेवविषे अद्वितीयरूपतासंभवेनहीं ॥ किंतु याआत्माविषे अनेकरूपताहीसंभवे है याप्रकारकोशंका तुमोंनें आपणेमनविषे कदाचित्भीनहींकरणी ॥ काहेतैं सातुमारीशंका तभी संभवे ॥ जभी यादेहादिकसंघातविषे किसीभीउपायकरिके आत्माकादर्शननहींहोवे ॥ परंतु यादेहादिकसंघातविषे अनेकउपायोंकरिके आत्माकीसत्ताप्रतीतहोवे है ॥ यातैं सातुमारीशंकासंभवेनहीं ॥ अब यासंघातविषे प्रथम अनुमानकरिके आत्माकी सत्तासिद्धकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसेकाष्ठोंविषेस्थितजोअग्निहै ॥ सोअग्नि यद्यपि स्वरूपतैंप्रतीतहोतानहीं ॥ तथापि तिनकाष्ठोंविषे सोअग्नि नहीं है यहवचन कह्याजावैनहीं ॥ काहेतैं ताकाष्ठोंविषेजोउष्णताप्रतीतहोवे है ॥ साउष्णता अग्नितैंविनासंभवेनहीं ॥ यातैं जैसे शरीरकीउष्णतातैं जीवकाअनुमानहोवे है ॥ तैसे ताउष्णतारूपहेतुतैं तिनकाष्ठोंविषे अग्निकाअनुमानहोवे है ॥ तैसे यादेहादिकसंघातविषे स्थित जोआत्मादेवहै ॥ सोआत्मादेव यद्यपि उपायतैंविनाप्रतीतहोतानहीं ॥ तथापि यासंघातविषेआत्मानहीं है ॥ याप्रकारकावचन कह्याजावैनहीं ॥ काहेतैं यादेहधारीजीवोंकूं घटपटादिकजडपदार्थोंका जोप्रकाशरूपस्फुरणहोवे है ॥ सोस्फुरण आत्माकीसत्तातैंविनासंभ

वेनहीं ॥ यातैं तास्फुरणरूपहेतुतैं यासंघातविषे आत्माकाअनुमानहोवे है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जिसस्फुरणरूपहेतुकरिकै यासंघातविषे आत्माकाअनुमानहोवे है ॥ सोस्फुरण भेदतैंरहितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहघटहै यहपटहै यहभित्तिहै इत्यादि कस्फुरणोंकाभेद प्रत्यक्षप्रतीतहोवे है ॥ यातैं तिनस्फुरणोंकाअभेद किसप्रकारहोवैगा ॥ समाधान॥ हेसंन्यासियो ॥ तास्थलविषेभी घट पटादिकपदार्थोंकाही भेदहोवे है ॥ प्रकाशरूपस्फुरणविषे सोभेदहोवेनहीं ॥ यातैं सोप्रकाशरूपस्फुरण सर्वदाअभिन्नहै ॥ और सोस्फुरण आपणेप्रकाशविषे दूसरेकिसीप्रकाशकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ याकारणतैं सोस्फुरण स्वप्रकाशरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ नेत्रादिकइंद्रि योंका जभी घटपटादिकपदार्थोंकेसाथ संबंधहोवे है ॥ तभीही यहघटहै यहपटहै इत्यादिकस्फुरण उत्पन्नहोवे है ॥ और यालोकविषे जो जोपदार्थ उत्पत्तिवालाहोवे है ॥ सोसोपदार्थ परप्रकाशहोवे है ॥ जैसे घटादिकपदार्थ उत्पत्तिवालेहोणेतैं परप्रकाशहैं ॥ तैसे नेत्रादिकइं द्रियोंकरिकेजन्यहोणेतैं सोस्फुरणभी परप्रकाशहीहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ नेत्रादिकइंद्रिय जोकदाचित् तास्फुरणकीउत्पत्ति करतेहोवैं ॥ तौ तास्फुरणविषे परप्रकाशतासिद्धहोवे ॥ परंतु तेनेत्रादिकइंद्रियतास्फुरणकीउत्पत्तिकरतेनहीं ॥ किंतु तेनेत्रादिकइंद्रिय अंतःकरणकेवृत्तिकीउत्पत्तिद्वारा ताप्रकाशरूपस्फुरणकीअभिव्यक्तिकरे हैं ॥ यातैं अंतरबाहरसर्वभेदतैंरहित सोस्फुरण स्वप्रकाशरूपही है ॥ और हेसंन्यासियो ॥ यहप्रकाशरूपस्फुरण देहादिकसर्वसंघाततैंअंतरहै॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तास्फुरणकूं आत्मारूपकहे हैं ॥ और यहस्फुरण सर्वपदार्थोंतैंअधिकप्रियहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तास्फुरणकूं आनंदरूपकहे हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहस्फुरण जभी आत्मारूपही है ॥ तभी तास्फुरणरूपहेतुकरिकै आत्माकाअनुमाननहींहोवैगा॥समाधान ॥ हेसं न्यासियो ॥ जैसे अग्नितैंअभिन्नजाउष्णताहै ॥ ताउष्णतारूपहेतुकरिकै ताअग्निकाअनुमानहोवे है ॥ तैसे आत्मातैंअभिन्न जोप्रकाशरूप स्फुरणहै ॥ तास्फुरणरूपहेतुतैं यासंघातविषे आत्माकाअनुमानसंभवे है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सत् चित् आनंद यहतीनोंधर्म यद्यपि वा स्तवतैंआत्मास्वरूपही हैं ॥ तथापि कल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकै तिनसत्यादिकधर्मोंकूं आत्माकास्वरूपलक्षणमानें हैं ॥ तैसे वास्तवतैं

मंडलविषेस्थित जोसवितानामाअंतर्यामीदेवहै ॥ ताअंतर्यामीदेवके ध्यानकेप्रभावतें पूर्व हमसरीखेअधिकारीपुरुष सर्वदुःखकीनिवृत्तिवा
सते तथाब्रह्मानंदकीप्राप्तिवासतै ताईश्वरपरायणशुद्धमनकरिके ज्ञानअभ्यासरूपयत्नकूंकरतेभयेहैं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ ताअंतर्या
मीदेवकीशक्तिकरिकेंयुक्तजोमनहै ॥ तामनकरिके यहअधिकारीपुरुष जिनवाकादिकइंद्रियोंकूं शुभकर्मविषेप्रवृत्तकरेहै ॥ तिनवाका
दिकइंद्रियोंकूंभी सोअंतर्यामीपरमात्मादेवही शुभकर्मविषेप्रवृत्तकरेहै ॥ कैसेंहैंतेवाकादिकइंद्रिय ॥ भूमानंदरूपनित्यसुखकेज्ञानकूं प्रगट
करणेहारेहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ तिनवाकादिकइंद्रियों तें उत्पन्नभईजाआत्माकारबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिरूपकार्यकीउत्पत्तितें यहअधिकारीपुरुष
तिनवाकादिकइंद्रियोंऊपर परमेश्वरकेअनुग्रहकाअनुमानकरिके तास्वप्रकाशपरमात्मादेवकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेसंन्यासियो ॥ अंतर्यामीईश्वर
केअनुग्रहतैंविना याअधिकारीपुरुषोंकी साआत्माकारबुद्धिहोवेनहीं ॥ यातें ताआत्माकारबुद्धिरूपकार्यतें ताअंतर्यामीदेवकाअनुग्रह अव
श्यजान्याजावेहै ॥ याकारणतैंहीं महात्मायोगीजन प्रथम आपणेसंकल्परूपमनकूं तापरमात्माविषेजोडेहै ॥ तिसतैंअनंतर तामनकेजोड
नेतें उत्पन्नभईजानिश्चयात्मकबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिकूंभी तिसीपरमात्माविषेजोडेहैं ॥ कैसीहैताबुद्धि तास्वयंज्योतिरूपपरमात्मादेवकेस्वरू
पभूतआनंदकूंविषयकरणेहारीहै ॥ ताबुद्धिकेप्रसादतें तिनमहात्मायोगीजनोंकूं इसीशरीरविषे आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ और हेसंन्या
सियो ॥ प्राण अपान यादोनोंप्रकारकेवायुका परस्परलयचिंतनरूपजोअंतरअग्निहोत्रहै ॥ ताअग्निहोत्रकूं पूर्व महात्मापुरुष करतेभये हैं ॥
तिनमहात्मापुरुषोंकेमनोरथोंकूं सोपरमातमादेव इसप्रकारपूर्णकरे है॥जिसप्रकार हमअधिकारीपुरुषोंका आत्मज्ञानकामनोर्थ पूर्णकर्‍याहै॥
काहेतें सत्मार्गविषेवर्त्तणेहारे अधिकारीजनोंऊपरअनुग्रहकरणा ईश्वरकास्वभावही है ॥ और हेसंन्यासियो ॥ याअंतर्यामीपरमात्मादेवके
एकआश्चर्यरूपस्वभावकूं तुमदेखो ॥ जोयहपरमात्मादेव मनवाणीकाअविषयहुआभी याअधिकारी पुरुषोंकेबुद्धिकाविषयहोवैहै ॥
ऐसे सर्वमनोर्थोंकी प्राप्तिकरणेहारे परमात्मादेवकीस्तुति हमअधिकारीजीवोंकूं सर्वदाकरणेयोग्यहै ॥ अब तास्तुतिकाप्रकार निरू
पणकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे अनेकप्रकारकेविघ्नहोवै हैं ॥ यातें तिनविघ्नोंकीनिवृत्ति

वासते याअधिकारीपुरुषनैं इसप्रकारपरमेश्वरकीस्तुतिकरणी ॥ हेतत्पदकाअर्थरूपब्रह्म हेत्वंपदकाअर्थरूपजीवात्मा तुमदोनोंकेअभेदरूप योगकूं हमअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रसहकृतशुद्धमनकरिकेकरैहैं ॥ काहेतें ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ इत्यादिकअवांतरवाक्योंकरिकैंसहकृत जेतत्त्वमस्यादिकमहावाक्यहैं तेमहावाक्य तुमदोनोंकेवास्तवस्वरूपकाअभेदही प्रतिपादनकरै हैं ॥ तथा आत्मावाइदमेकएवाग्रआसीत् ॥ इत्यादिकश्रुतिवचन याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व तुमदोनोंकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैकथनकरै हैं ॥ और जैसे लौकिकपुरुष लोकप्रसिद्धमार्ग करिके नगरकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे तुमारेध्यानकरिके सर्वविघ्नोंतैंरहितहुए यहअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानरूपमार्गकरिके ब्रह्मानंदरूपमोक्ष कूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और जिनअधिकारीपुरुषोंकूं तुमारासाक्षात्कारभयाहे ॥ तेअधिकारीपुरुष आपणेमोक्षरूपकीर्तिकूं बुद्धिमान्पुरुषोंकेमुख तें बहुतवारश्रवणकरे हैं और जैसे पिताकेधनविषे पुत्रकाभागहोवे है ॥ तैसे ब्रह्मानंदरूपमोक्षविषे तेसंपूर्णअधिकारीपुरुष भागवालेहोवे हैं ॥ और जे अधिकारीपुरुष हृदयादिकस्थानोंविषे तुमाराचिंतनकरै हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइके ताआत्मसा क्षात्कारकेप्रभावतें सूर्यचंद्रादिकोंविषेस्थित परमेश्वरकेतेजकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और वास्तवतें शुद्धब्रह्मरूप तथाभेदतैंरहित जोतुमदोनोंहो ॥ तिनतुमदोनोंकेप्राप्तिकेद्वारकूं हमअधिकारीजन गुरुशास्त्रकेउपदेशतें भलीप्रकारजाणते हैं ॥ काहेतें जैसे काष्ठोंकेमथनतैंउत्पन्नभया जोअग्निहे ॥ सोअग्निजिसस्थानतें उत्पन्नहोवे है ॥ तिसीस्थानविषेलयभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे वायुचंद्रसूर्यादिकजगत् जिसमायाविशिष्ट चेतनविषे उत्पत्तिलयकूंप्राप्तहोवे है ॥ सोमायाविशिष्टरूपही तुमदोनोंकेशुद्धस्वरूपकूंजनावैहे ॥ याकारणतें सोमायाविशिष्टस्वरूप तुमदोनोंकेप्राप्तिकामार्ग है ॥ काहेतें जैसे यालोकविषे मृत्तिकारूपकारणकेज्ञानहुएतैंअनंतर घटशरावादिककार्योंकाभेददर्शन निवृ त्तहोइजावैहे ॥ तैसे सर्वजगत्काकारणरूप जोमायाविशिष्टचेतनहे ॥ ताविशिष्टचेतनकेज्ञानहुएतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष भेद दर्शनजन्यसर्वभ्रांतिकापरित्यागकरिके शुद्धब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहे ॥ इसप्रकार शुद्धआत्माकेसाक्षात्कारहुएतैंअनंतर तत्पदकाअर्थरूप तूंईश्वर आपणेपरोक्षताकीनिवृत्तिवासते तादात्म्यसंबंधकरिके यात्वंपदार्थरूपजीवकासेवनकरैहैं ॥ और यहत्वंपदार्थरूपजीव

आपणेपरिच्छिन्नभावकीनिवृत्तिवासते तादात्म्यसंबंधकरिके तैंतत्पदार्थरूपईश्वरकासेवनकरे है ॥ ऐसीअभेददशाविषे तूंपरमात्मादेव आपणेसाक्षात्कारकरिके याअधिकारीपुरुषोंकेअविद्याकूंनाशकरे हैं ॥ कैसीहैसाअविद्या ॥ याजीवोंकेजन्ममरणादिकदुःखोंकाकारणहै ॥ तथा नानाप्रकारकेभेददर्शनकाकारणहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तुम्हारीप्राप्तिवासते अग्निहोत्रादिकइष्टकर्मोंकूं तथा कूपतडागादिकपूर्त्तकर्मोंकूं कदाचित्भीनहींकरे ॥ किंतु तुम्हारीप्राप्तिवासतैं यहअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानकाही अभ्यासकरैं ॥ आत्मज्ञानतैंविनादूसराकोईउपाय तुम्हारेप्राप्तिकाहैनहीं ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष ताअंतर्यामीपरमात्मादेवकीस्तुतिकरैहै ॥ ताअधिकारीपुरुषके सर्वपापकर्म निवृत्तहोवे हैं और तापापकर्मरूपप्रतिबंधकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकाचित्त शुद्धहोवैहै ॥ और ताचित्तशुद्धितैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकूं योगकेप्राप्तिकीइच्छाउत्पन्नहोवे है ॥ ताइच्छाकीउत्पत्तितैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष तायोगकूंकरे है ॥ और तायोगकरिके यहअधिकारीपुरुष साक्षीआत्माकूंदेखे है ॥ तासाक्षीआत्माकेदर्शनकरिके याअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं मुमुक्षुजननैं पूर्वउक्तरीतिसैं परमेश्वरकीप्रार्थना अवश्यकरणी ॥ अब ताअष्टांगयोगकानिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ यहयोगकेअष्टअंगहैं ॥ तहां अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंचप्रकारकायमहोवैहै ॥ तहां शरीरमनवाणीकरिके किसीजीवकूंपीडानहींकरणी याकानाम अहिंसाहै ॥ और परजीवोंकेहितवासते यथार्थवचनकहणा याकानामसत्यहै ॥ और बलात्कारसैं तथाछलसैं परधनादिकोंका नहीं हरणकरणा याकानाम अस्तेयहै ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंके निरोधपूर्वक जोउपस्थइंद्रियकानिरोधहै याकानाम ब्रह्मचर्य है ॥ और शरीरकेनिर्वाहतैंअधिक भोगकेसाधनोंकासंग्रहनहींकरणा याकानाम अपरिग्रहहै ॥ १ ॥ अब नियमरूपदूसरेअंगकानिरूपणकरे हैं ॥ तहां शौच संतोष तप स्वाध्याय ईश्वरप्रणिधान यह पंचप्रकारकानियमहोवैहै ॥ तहां शौच दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एक बाह्यशौचहोवैहै ॥ और दूसरा अंतरशौचहोवै है ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिके शरीरकूंशुद्धराखणा यहबाह्यशौचहै ॥ और मैत्री करुणा मुदिता इत्यादिक

धर्मोंकरिकै आपणेचित्तकूं द्वेषादिकविकारों तैंरहितकरणा याकानाम अंतरशौचहै ॥ और प्रारब्धयोगतैंप्राप्तभयेजेअन्नवस्त्रादिकपदार्थ ॥ तिनोंकरिकै आपणेप्राणोंकाधारणकरणा ॥ तिसतैंअधिकपदार्थोंकोतृष्णानहींकरणी ॥ याकानाम संतोषहै ॥ और शीतउष्णादिकोंकूं सहनकरणा तथाकृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतोंकूंकरणा याकानाम तप है ॥ और प्रणवादिकमंत्रोंकाअभ्यासकरणा याकानाम जप है ॥ और यहजीवजाणिकरिकै अथवा अजाणिकरिकै जिनशुभअशुभकर्मोंकूंकरै है ॥ तिनसर्वकर्मोंका ईश्वरविषेअर्पणकरणा याकानाम ईश्वर प्रणिधान है ॥ २ ॥ अब आसनकानिरूपणकरै हैं ॥ तहां आसनदोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतो बाह्यआसनहोवैहै ॥ और दूसरा शारीरक आसनहोवैहै ॥ तहां प्रथमकुशाबिछावणे ॥ तिनकुशाऊपर मृगचरम बिछावणा ॥ तामृगचरमऊपर वस्त्रबिछावणा ॥ याकानाम बाह्य आसनहै ॥ और पद्मासन स्वस्तिकासन भद्रासन इसतैंआदिलैकेजेअनेकप्रकारकेआसनहैं ॥ तिनआसनोंकानाम शारीरकआसनहै ॥ तहां वामपादकूं दक्षिणजंघकेऊरुऊपररारवणा ॥ और दक्षिणपादकूं वामजंघकेऊरुऊपररारवणा ॥ याका नाम पद्मआसनहै ॥ और वाम पादकूं दक्षिणजंघकेऊरुकेअंतररारिवकै दक्षिणपादकूं वामजंघकेऊरुकेअंतर राखणा याकानाम स्वस्तिकआसनहै ॥ और दोपादकेदोतलों कूं वृषणकेसमीप एकठाकरिकै तिनोंऊपर दोहस्त एकठेकरिकैराखणे याकानाम भद्रासनहै ॥ ३ ॥ अब प्रणायामकानिरूपणकरै हैं ॥ पूरक कुंभक रेचक याभेदकरिकै सोप्राणायाम तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां वाम नासिकाद्वारा बाहरलेवायुकूंखैंचिकै शरीरकेभीतरस्थि तकरणा याकानाम पूरकहै और तिसीवायुकूं दक्षिणनासिकाद्वारा शरीर तैंबाहरनिकासणा याकानाम रेचकहै ॥ और पूरकरेचकभावतैं रहित तावायुकूं शरीरकेभीतरनिरोधकरणा याकानाम कुंभकहै ॥ सोप्राणायामकरणेकाप्रकार गुरुमुखतैंहीजान्याजावै है ॥ ४ ॥ अब प्रत्याहारकानिरूपणकरै हैं ॥ रूपादिकविषयोंविषे दोषदर्शनतैं अनंतर चित्तकेअंतर्मुखहुए जोनेत्रादिकइंद्रियोंका तिनरूपादिक विषयों तैंनिरोधहै याकानाम प्रत्याहारहै ॥ ५ ॥ अब धारणाका निरूपणकरै हैं ॥ नाभिचक्र हृदय नासिकाग्र इत्यादिकस्थानोंविषे परमात्मादेवमैं आपणेमनकूंजोडना याकानाम धारणाहै ॥ ६ ॥ अब ध्यानकानिरूपणकरै हैं ॥ विजातीयवृत्तियोंकापरित्यागकरिकै तापरमात्मादेवविषे

जोसजातीयवृत्तियोंकानिरंतरप्रवाहहै याकानाम ध्यानहै॥७॥अब समाधिकानिरूपणकरेहैं॥समाधिदोप्रकारकाहोवैहै एक सविकल्पसमाधि होवैहै और दूसरा निर्विकल्पसमाधिहोवैहै ॥ तहां ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय यात्रिपुटीकेभानपूर्वक जो अंतःकरणकेवृत्तिकीअद्वितीयब्रह्मविषे स्थितिहै ॥ याकानाम सविकल्पसमाधिहै ॥ और तात्रिपुटीकेभानतैंरहित जो अंतःकरणकेवृत्तिकी अद्वितीयब्रह्मविषेस्थितिहै ॥ याका नाम निर्विकल्पसमाधिहै ॥ यादोनोंसमाधियोंविषे प्रथमसविकल्पसमाधि साधनरूपहै ॥ और दूसरानिर्विकल्पसमाधि फलरूपहै ॥ याकेविषेभी इतनीविशेषताहै ॥ अंगीरूपनिर्विकल्पसमाधिका जोअद्वितीयब्रह्मविषयहै॥ सोईहीअद्वितीयब्रह्म धारणा ध्यान समाधि याती नअंगोंकाभीविषयहै ॥ याकारणतैं तेधारणादिकतीनों योगकेअंतरंगसाधनहैं ॥ औरयमनियमआसन प्राणायाम प्रत्याहार यहपांचों निर्वि कल्पसमाधिकेविषयतैं भिन्नपदार्थों कूंविषयकरैहैं ॥ याकारणतैं तेयमादिकपंच तायोगकेबहिरंगसाधनहैं ॥ हेसन्यासियो ॥ इसप्रकार अ द्वितीयब्रह्मकेसाक्षात्कारहुए याअधिकारीपुरुषकीअविद्या नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ब्रह्मसाक्षात्कारकरिके एकवारनाशकूंप्राप्तहुई साअवि द्या पुनः कदाचित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ हेसन्यासियो ॥ इसप्रकार यमतैं आदिलैके समाधिपर्यंतअष्टांगयोग योगशास्त्रवेत्तामुनियोंनें क थनकऱ्याहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तपद्मादिकआसनोंविषे किसी आसनकूंग्रहणकरिके किसीपवित्रदेशविषेस्थितहोवै ॥ और उदर उर ग्रीवा इत्यादिकशरीरके अवयवोंकूं दंडकीन्याई सरलस्थापनकरै ॥ और इंद्रियरूपजेदुष्टअश्वहैं ॥ तिनोंकूंमनरूपरज्जुकेसाथवां धिकरिके हृदयदेशविषे स्थितबुद्धिरूपसारथिविषे समर्पणकरै ॥ और जैसे यालोकविषेपथिकपुरुषनौकाकरिके नदीकोतरैहै ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी ब्रह्मज्ञानरूपदृढनौकाकरिके याअविद्यारूपनदीके इंद्रियरूपप्रवाहोंकूंतरै ॥ हेसंन्यासियो ॥ याब्रह्मज्ञानतैंविना तिनइंद्रियोंकातरणा अत्यंतदुर्घटहै ॥ काहेतैं मनरूपरज्जुकरिकेबांधेहुएभी यह नेत्रादिकइंद्रिय जहाँतहाँचलायमानहोवै हैं ॥ और यहने त्रादिकइंद्रिय यासंसारीजीवोंकेदुःखवासतैही सर्वदाप्रवृत्तहोवैहैं ॥ ऐसेदुष्टइंद्रियोंकाजोनिरोधहै ॥ याकानाम प्रत्याहारहै ॥ और हेसंन्या सियो ॥ यहअधिकारीपुरुष गुरुकेउपदेशअनुसार प्रथम याशरीरकेमुखादिकनवद्वारोंकूंनिरोधकरै ॥ तिसतैंअनंतर तिनमुखादिक

द्वारोंविषेस्थितजोप्राणरूपवायुहे ॥ तावायुकूं हृदयदेशविषेनिरोधकरिके जबपर्यंत अंतरहीवायुकालयहोवे ॥ तबपर्यंत उत्साहपूर्वक
अभ्यासकरे॥इसप्रकार अंतरहीवायुकेलयतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष नासिकाद्वारा श्वासउच्छ्वासकरिके तावायुकूं शरीरतैंबाहरनिकासे॥
जबपर्यंत सोवायु सुक्ष्मताकूंनहींप्राप्तहोवे ॥ तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष ताअभ्यासकूंकरे ॥ इसप्रकार अभ्यासकरतेहुए याअधिका
रीपुरुषके जभी जभी सोप्राणरूपवायुवशवर्त्तीहोवे हे ॥ तभी यहमनभी वशवर्त्तीहोवेहे ॥ और याअधिकारीपुरुषके जभी यहमन
वशवर्त्तीहोवेहे ॥ तभी नेत्रादिकइंद्रियभी सुखेनहीं वशवर्त्तीहोवे हे ॥ काहेतें जैसे यालोकविषे सारथिपुरुष जभी दुष्टअश्वोंकेबंधनकरणे
हारीरज्जुकूं आपणेवशवर्त्तीकरेहे ॥ तभी सोसारथिपुरुष तिनदुष्टअश्वोंकूं सुखेनहीं आपणेवशवर्त्तिकरिलेवैहे ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष
जभी मनरूपरज्जुकूंआपणेवशवर्त्तीकरेहै॥तभी इंद्रियरूपदुष्टअश्वोंकूंभी सुखेनहीं आपणेवशवर्त्तीकरिलेवैहे ॥ अब तायोगकरणेकेदेशका
निरूपणकरेहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ योगाभ्यासकरणेहारेपुरुषोंकूं आसनकरणेवासते याप्रकारकादेश सुखकाहेतुहोवे हे ॥ जोदेश अत्यं
तऊँचाभीनहींहोवे ॥ तथा अत्यंतनीचाभीनहींहोवे ॥ तथा गोमयादिकोंकरिकेलेपितहोवे ॥ तथा नदीतैंआदिलैकेजलकेस्थानहैं ॥
तेजलकेस्थानभी जिसदेशकेअत्यंतसमीपनहींहोवे ॥ तथा जोदेश कंटकादिकोंतैंरहितहोवे ॥ तथा वालुका पाषाणकेसूक्ष्मकंकरोतैंरहि
तहोवे ॥ तथा जादेशविषे अत्यंतशीतभीनहींहोवे ॥ तथा अत्यंतउष्णताभीनहींहोवे ॥ तथा नानाप्रकारकेपक्षी आदिकोंकेशब्दतैंरहित
होवे ॥ तथा मशकादिकजंतुवोंतैंरहितहोवे ॥ तथा अत्यंतवायुतैंरहितहोवे ॥ तथा देखणेतैं नेत्रादिक इंद्रियोंकूं तथामनकूं आनंद
कीप्राप्तिकरणेहाराहोवे ॥ ऐसेपर्वतकीगुहाआदिकदेशविषे आसनकूंबांधिकरिके यह अधिकारी पुरुष योगाभ्यासकरे ॥ हेसंन्यासियो ॥
जादेशविषे यहअधिकारीपुरुष योगकरणेकाआरंभकरे ॥ तादेशविषे जोकदाचित्याअधिकारीपुरुषकूं किसीविघ्नकीशंकाहोवे ॥ तो यह
अधिकारीपुरुष तादेशविषे योगाभ्यासकूंनहींकरे ॥ हेसन्यासियो ॥ विघ्नकीनिवृत्तिवासतैं ताअधिकारीपुरुषकूं जैसेआसनकानियमकह्या
हे ॥ तैसे अन्नादिकोंकेभोजनकाभीनियमकह्याहे ॥ तहां सोयोगाभ्यासकरणेहारापुरुष आपणेउदरकेदोभाग अन्नकरिकेपूर्णकरे ॥ औरए

कभाग जलकरिकेपूर्णकरे ॥ हेसन्यासियो ॥ इसप्रकारअष्टांगयोगकरिके जोअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकीइच्छाकरे है ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूं फलकेसमीपकालविषे अणिमादिकसिद्धियां प्रगटहोवेहैं ॥ और सोअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तिनसिद्धियोंविषेआसक्तिकरेहै ॥ तो ताअधिकारीपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ यातैं तेअणिमादिकसिद्धियां आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे विघ्नरूपहैं ॥ अब तिनसिद्धियोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेसन्यासियो ॥ इसप्रकार योगाभ्यासकरतेहुए याअधिकारीपुरुषकूं जभी आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकाकाल समीपहोवेहै ॥ तभी सोयोगीपुरुष आपणेमनविषे कदाचित् नोहारकेसमानरूपकूंदेखे है ॥ और कदाचित् धूमकेसमानरूपकूंदेखे है ॥ और कदाचित् सूर्यकेसमानरूपकूंदेखे है ॥ और कदाचित् अग्निकेसमानरूपकूंदेखे है ॥ और कदाचित् वायुकेसमानरूपकूंदेखेहै ॥ इहांजलकेशुक्लरूपसमान शुक्लवर्णवालानोहारहोवेहै ॥ जानोहारकूं शास्त्रविषे तुषारभीकहेहैं ॥ और धूमका कृष्णवर्णहोवैहै ॥ और सूर्यका पिंगलवर्णहोवे है ॥ अनेकवर्णोंकेसमुदायकानाम पिंगलवर्णहै ॥ और अग्निका रक्तवर्णहोवे है ॥ और वायुका दुर्वाकेसमान श्यामवर्णहोवे है ॥ और कदाचित् सोयोगीपुरुष आपणेमनविषे खद्योतकेसमानरूपकूंदेखे है ॥ और कदाचित् विद्युत्‌केसमानरूपकूंदेखे है ॥ और कदाचित् स्फटिककेसमानरूपकूंदेखेहै ॥ और कदाचित् चंद्रमाकेसमानरूपकूंदेखे है॥ हेसंन्यासियो॥सोयोगीपुरुष जैसे नेत्रइंद्रियकरिके दिव्यरूपोंकूंदेखे है॥तैसे सोयोगीपुरुष श्रोत्रइंद्रियकरिके नानाप्रकारकेदिव्यशब्दोंकूंश्रवणकरे है ॥ और रसनइंद्रियकरिके नानाप्रकारकेदिव्यरसोंकूंग्रहणकरे है ॥ और घ्राणइंद्रियकरिके नानाप्रकारकेदिव्यगंधोंकूंग्रहणकरेहै ॥ और त्वकइंद्रियकरिके नानाप्रकारकेदिव्यस्पर्शोंकूंग्रहणकरेहै॥इतनेंकरिकेअंतरसिद्धियोंकानिरूपणकऱ्या ॥अववाह्यसिद्धियोंकानिरूपणकरे हैं ॥हेसंन्यासियो॥जैसेसमाधिकालविषेतायोगीपुरुषकूं दिव्यरूपादिकोंकादर्शनरूप अंतरसिद्धियां प्राप्तहोवेहैं॥तैसे समाधितैंउत्थानकालविषे तायोगीपुरुषकूं याप्रकारकी बाह्यसिद्धियांप्राप्तहोवेहैं॥जैसे अग्निकेसंबंधकरिके सुवर्णकेसंपूर्णमलादिकविकारनिवृत्तहोवे हैं॥ तैसे योगरूपअग्निकेप्राप्तहुएतायोगीपुरुषके पांचभौतिकस्थूलशरीरके संपूर्णरोग तथा जरामृत्यु नाशहोवेहै ॥ और तायोगकेप्रभावतैं तायोगीपुरुषकेशरीरविषे इतनेंगुण उत्पन्नहोवे

हैं ॥ इस्तपादादिकअंगोंकीजडताकाअभावरूप जोलघुपणाहै सोलघुपणा तायोगीकेशरीरविषेप्राप्तहोवेहै ॥ और तायोगीकेशरीरविषे अरोगताहोवे है ॥ और पृथिवीस्वर्गादिकलोकोंकि विषयोंविषे ता योगीकीइच्छानहींहोवे है ॥ और सुवर्णकेसमान तायोगीकेशरीरकावर्णहोवेहै और तायोगी केदर्शनतैं सर्वलोकोंकेमनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिहोवे है और ता योगीकास्वरभीमधुरहोवेहै ॥ और चंपकादिकपुष्पोंकेगंधसमान तायोगीकेशरीरकागंधहोवेहै ॥ और तायोगीकेशरीरविषे अन्नजलादिकोंका अत्यंतपाचनहोवे है ॥ यातैं बहुतअन्नजलकेभक्षणकरिकेभी तायोगीपुरुषके विष्ठामूत्रादिकमल अल्पहोवे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेफल तायोगीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारतैंप्रथमहोवेहैं ॥ और तिसकालविषे तायोगीपुरुषकूं अणिमादिकअष्टसिद्धियोंकीभीप्राप्तिहोवे है ॥ तिन सिद्धियोंविषे सोयोगीपुरुष जोकदाचित् आसक्तिकरैहै ॥ तो तायोगीपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवेनहीं ॥ किंतु सोयोगीपुरुष योगभ्रष्ट कह्याजावेहै ॥ और जभी सोयोगीपुरुष तिनसिद्धियोंकापरित्यागकरैहै ॥ तभी तायोगीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिहोवेहै ॥ ताआत्मसाक्षात्कारकरिके सोयोगीपुरुष कृतार्थहोवेहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे पूजनकरणेवासतै रजतादिकधातुवोंकरिकेरच्याहुआजोसूर्यका अथवा चंद्रमाका मंडलहै ॥ सोमंडल जभी मृत्तिकाकरिकेलिप्तहोवेहै तभी तामृत्तिकारूपआवर्णकीनिवृत्तितैंविना तामंडलकादर्शन होइसकैनही ॥ किंतु तामृत्तिकारूपआवरणकीनिवृत्तितैंअनंतरही तामंडलकादर्शनहोवेहै ॥ तैसे तायोगीपुरुषकूं जबपर्यंत तिनसिद्धियों विषेरागहोवेहै ॥ तबपर्यंत सोयोगीपुरुष ॥ आत्माकूंदेखिसकैनहीं ॥ और जभीसोयोगीपुरुष तिनसिद्धियोंकापरित्यागकरैहै ॥ तभीसोयोगीपुरुष अद्वितीयआत्माकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ तथा सर्वशोकों तैंरहितहोवे है ॥ हेसंन्यासियो ॥ तेयोगशास्त्रवालेपुरुष जैसे केवलत्वंपदार्थरूपआत्माकेज्ञानतैंही मोक्षकोप्राप्तिमानैं हैं ॥ तैसे तुमोंनैं केवल त्वंपदार्थरूपआत्माकेज्ञानतैं मोक्षकीप्राप्तिनहींमानणी॥किंतु यहमहान्भाग्यवालेअधिकारीपुरुष जभी प्रथम तायोगकेप्रभावतैं सर्वभेदतैंरहितस्वयंज्योतिरूप तत्पदार्थब्रह्मकेस्वरूपकूंजानैहैं ॥ तिसतैंअनंतर कार्यकारणभावतैंरहित तथा जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित त्वंपदार्थरूपआत्माकेस्वरूपकूंजाने हैं ॥ तिसतैंअनंतर सोअद्वितीयब्रह्ममैंहूं

याप्रकार तिनदोनोंकेअभेदकूंनिश्चयकरेहैं ॥ तभीहीं यहअधिकारीपुरुष अविद्यादिकसर्वपाशोंतेंमुक्तहोवै है ॥ केवलत्वंपदार्थकेज्ञानतें अ
विद्यादिकपाशोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो॥तेयोगीपुरुष जिसस्वयंज्योतिआत्माकूंसाक्षात्कारकरेहैं ॥ सोस्वयंज्योतिआत्माके
साहे॥ पूर्वादिकदशोदिशारूपहे॥तथा सोपरमात्मादेवही पूर्व हिरण्यगर्भरूपकरिकेउत्पन्नहोवैहे ॥तथा सोपरमात्मादेवहीब्रह्मांडरूपकरिके
जलादिकोंविषे स्थितहोवै हे॥तथा सोपरमात्मादेवही स्त्रियोंकेगर्भविषेस्थितहोवैहे ॥तथा सोपरमात्मादेवहीबुद्धिआदिकसंघातकेअंतरवर्त
मानहे तथा शरीरइंद्रियादिकसंघातकाभोक्तारूपहे॥तथा सोपरमात्मादेवही अग्निजलादिकमहाभूतोंविषेस्थितहे ॥और जेपदार्थ पूर्वउत्पन्न
भयेहैं ॥ तथाजेपदार्थ आगेउत्पन्नहोवैंगे॥तिनसंपूर्णपदार्थोंविषेभीसोपरमात्मादेवहीव्यापकहे॥और सोपरमात्मादेव संपूर्णविश्वकूंउत्पन्नक
रिकेंताविश्वविषे आपहीप्रवेशकरताभयाहे ॥ याकारणतें सोपरमात्मादेवसर्वजीवोंकेहृदयविषे साक्षीरूपकरिकेविराजमानहे ॥ और
सोपरमात्मादेव स्थावरजंगमसर्वपदार्थोंविषेस्थितहे॥याकारणतें सोपरमात्मादेव सर्वभूतरूपहे ॥ ऐसेसर्वरूपशुद्धपरमात्मादेवकेप्रतिहमार
वारम्वारनमस्कारहे ॥ हेसन्यासियो ॥ आत्मसाक्षात्कारकासाधनरूप जोअष्टांगयोगहे ॥ सोयोग हमनें तुमारेप्रति संक्षेपतेंकथनकऱ्याहे ॥
अब तायोगकरिकेप्राप्तहोणेयोग्य जोअद्वितीयआत्माहे ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार जिसविद्याकरिकेप्राप्तहोवै हे ताविद्याकूंतुम
श्रवणकरो॥ हेसंन्यासियो ॥जोहमनें पूर्व तुमारेप्रति परमात्मादेव कथनकऱ्याथा॥और जोहमनें अभी तुमारेप्रति परमात्मादेव कथनक
ऱ्याहे ॥ सोपरमात्मादेव तुमोंनें एकहीजानणा ॥ तथा यासंसाररूपजालका सोपरमात्मादेवही स्वामीहे ॥ और सोपरमात्मादेवही आप
णेवशवर्तीमायाकी अनेकशक्तियोंकरिके यासम्पूर्णलोकोंकूं आपणेवशवर्तीकरेहे॥और सोपरमात्मादेवही याजगत्केउत्पत्ति स्थिति लयक
रणेविषेसमर्थहे ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जे अधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतें साक्षात्कारकरे हैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ ऐसेपरमात्माकेसाक्षात्कारहुए याअधिकारीपुरुषोंकूं पुनः जन्मकोप्राप्तिहोतीनहीं ॥ और यालोकविषे जिसप
दार्थकाजन्महोवैहै ॥ तिसीपदार्थकानाशहोवैहे ॥ जेसे घटादिकपदार्थोंका जन्महोवैहे ॥ यातें कालपाइके तिनघटादिकोंकानाशभीअवश्य

होवैहै ॥ और यह विद्वान्पुरुषतो आत्मसाक्षात्कारकरिकै जन्मतैंरहितहोवैहै ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष पुनःमरणकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ यहपरमात्मादेव जैसे आपणीमायाशक्तिकरिकै याजगत्कीउत्पत्तिस्थितिकरैहै ॥ तैसे प्रलयकालकेप्राप्तहुए यहपरमात्मादेव याजगत्कूंनाशकरिकै सर्वजीवोंकेताई दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं रुद्र यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे ऊर्णनाभिजंतु आपणेशरीरतैं तंतुवोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा तिन तंतुवोंकापालनकरैहै ॥ तथा अंत्यविषे तिनतंतुवोंकूं आपणेविषेलय करैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी सृष्टिकालविषे याजगत्कूं आपणेतैंउत्पन्नकरैहै ॥ और स्थितिकालविषे याजगत्कापालनकरैहै ॥ और प्रलयकालविषे यासंपूर्णजगत्कूं आपणेविषेलयकरैहै ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंआपणेविषेलयकरिकै सोपरमात्मादेव एकअद्वितीयरूपकरिकेस्थितहोवैहै ॥ और हेसंन्यासियो यालोकविषे जितनेकीस्थावरजंगमशरीरहैं ॥ तथा तिनशरीरोंविषेस्थित जितनेकीनेत्रादिकज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथा वाकादिककर्मइंद्रियहैं ॥ तेसंपूर्णशरीरइंद्रियादिक याअंतर्यामीपरमात्मादेवकेही हैं ॥ और सोपरमात्मादेवही आपणीमायाशक्तिकरिकै प्रथम आकाशादिकपंचभूतोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तिसतैं अनंतर याशरीरादिकभौतिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरैहै हेसंन्यासियो ॥ जैसे पक्षोंकरिकेयुक्त तथादोभुजावोंकरिकेयुक्त जोप्रसिद्धपक्षीहै ॥ सोपक्षी आपणेगृहकूंरचैहै ॥ तैसे आकाशादिकपंचभूतरूपपक्षोंकरिकेयुक्त तथा पुण्यपापरूपदोभुजाकरिकेयुक्त जोयहपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव यासंपूर्णभौतिकप्रपंचकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा स्वर्गादिकऊपरिकेलोकोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा भूमिआदिकनीचेकेलोकोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ याकेविषे इतनोविशेषताहै ॥ यहलोकप्रसिद्धपक्षीतो आपणेतैंभिन्नगृहकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेवतो आपणेकूंहींजगत्रूपकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सोपक्षी आपणेगृहका केवलनिमित्तकारणहै उपादानकारणनहीं ॥ और यहपरमात्मादेवतो याजगत्का उपादानकारण तथा निमित्तकारण दोनोंहै ॥ यातैं केवलनिमित्तकारणताकूंलेके पक्षीकादृष्टांतदियाहै ॥ और निमित्तकारणता तथा उपादानकारणता यादोनोंकारणताविषेतौ पूर्वउक्तऊर्णनाभिकादृष्टांतहीसमीचीनहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जोरुद्रभगवान् यासंपूर्णवि

श्वतैंअधिकहै ॥ तथा संपूर्ण वेदोंके स्मरणकरणेहारा महान्‌ऋषिरूपहै ॥ तथा सर्वज्ञानोंकरिकैसंपन्नहै ॥ तथाअग्निआदिकदेवत
ओंके तथा वाकादिकइंद्रियोंके उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहाराहै ॥ तथा जोरुद्रभगवान्‌ पूर्व हिरण्यगर्भकूंउत्पन्नकरताभयाहै ॥ त
था स्थावरजंगमरूपसर्वशरीरोंकूं उत्पन्नकरताभयाहै ॥ सोरुद्रभगवान्‌ही हमअधिकारीजीवोंकूं शुभबुद्धिकोप्राप्तिकरैहै ॥ याका
रणतैं मैंश्वेताश्वतरऋषि पूर्व तारुद्रभगवान्‌केप्रति याप्रकारकीप्रार्थनाकरताभया ॥ हेरुद्रभगवान्‌ तुमारीदोमूर्तिहैं ॥ एकतो सात्त्वि
कीमूर्त्तिहै ॥ और दूसरो तामसीमूर्तिहै ॥ तिनदोनोंविषे ब्रह्मविद्याकेप्रवर्त्तकरणेहारी जातुमारीसात्त्विकीगुरुमूर्तिहै ॥ तागुरुमूर्त्तिकरि
कै हमविचारहीनअज्ञानीजीवोंकूं प्रकाशकरो ॥ हेभगवन्‌ जैसे यालोकविषे नेत्रोंतैंहीनअंधपुरुषोंकूं बुद्धिमानवैद्य नेत्रोंकीप्राप्तिकरिकै
प्रकाशकरावे है ॥ तैसे मोहरूपीरोगकरिकै अंधहुएहैंबुद्धिरूपनेत्रजिनोंके ऐसेजेहमअधिकारीजनहैं ॥ तिनहमारेकूं आपणेगुरुमूर्त्तिकाद
र्शनकराइके प्रकाशकरो ॥ और हेरुद्रभगवान्‌ पापीजीवोंकूंसंसाररूपगरतविषेपावणेवासतै जोतुम दूसरी नारीरूपतामसीमूर्त्तिकूंधारणक
रोहो ॥ साआपणीतामसीमूर्त्ति हमअधिकारीजनोंकेप्रति सुखकाहेतुकरो ॥ कैसीहैसाआपकीतामसीमूर्त्ति ॥ कामक्रोधादिकरूपलोहमयहै
तथा धनुषवाणकोन्याई वैरीआदिकोंकूंनिवारणकरणेहारीहै ॥ तथा अत्यंतभयानकरूपवालीहै ॥ हेभगवन्‌ ऐसीनारीरूपतामसीमू
र्त्तिकरिकै याजगत्‌रूपपुरुषकूं प्रमादरूपमृत्युकीप्राप्तिमतकरो ॥ तथा याआपणीतामसीमूर्त्तिकरिकै हमअधिकारीजीवोंके वास्तवस्व
रूपकूंआच्छादनमतकरो ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार जभी हमनें तारुद्रदेवकीप्रार्थनाकरी ॥ तभी हमाराअंतःकरण कामक्रोधादिक
विकारोंसैरहित शुद्धहोताभया ॥ ताचित्तशुद्धितैंअनंतर मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्‌के गुरुरूप सात्त्विकीमूर्तिकूंदेखताभया ॥
तामूर्तिकेदर्शनतैं मैं कृतकृत्यहोताभया ॥ हेसन्यासियो ॥ जैसे यालोकविषे पुत्ररहितधनवान्‌पुरुष पुत्रकूंप्राप्तहोइके आपणेकूंकृतकृत्य
मानेहै ॥ और जैसे सर्वदा स्त्रीकाचिंतनकरताहुआकामीपुरुष ताप्रियस्त्रीकूंप्राप्तहोइके आपणेकूंकृतकृत्यमानेहै ॥ और जैसे अत्यंतकृपण
लोभीपुरुष पूर्वनष्टहुएधनकूंप्राप्तहोइके आपणेकूंकृतकृत्यमानेहै ॥ तैसे तारुद्रभगवान्‌के गुरुरूपसात्त्विकीमूर्त्तिकूंप्राप्तहोइके मैंश्वेताश्वतर

आपणेकूंकृतकृत्यमानताभया ॥ हेसंन्यासियो ॥ तारुद्रभगवान्केगुरुरूपमूर्त्तिनें जोहमारेऊपरउपकारकर्‍याहै ॥ ताउपकारकेनिवृत्ति करणेवासतै मैंश्वेताश्वतर इसलोकविषेभी तथास्वर्गादिकलोकोंविषे तथा अनेकजन्मोंकरिकै कोईप्रतिउपकारकूंदेखतानहीं ॥हेसंन्यासियो जैसे मैं श्वेताश्वतरऋषि तारुद्रभगवान्केगुरुमूर्तिकूंदेखिकै कृतकृत्यभावकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तैसे तुमभी जभी पूर्वउक्तस्तुतिकूंकरिकै तारुद्र भगवान्केगुरुमूर्तिकूंदेखोगे ॥ तभी तुमभी कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवोगे ॥ हेसंन्यासियो ॥ सारुद्रभगवान्कीगुरुमूर्त्ति हमारेप्रति याप्रकार काउपदेशकरतीभईहै ॥ हेपुत्र ॥ कारण अज्ञानसहित जोयहसंसारचक्रहै ॥ तासंसारचक्रतैंपरेजोअद्वितीयब्रह्महै ॥ सोअद्वितीयब्रह्मही तुमारावास्तवस्वरूपहै ॥ कर्ताभोक्तारूपसंसारी तुमारावास्तवस्वरूपनहींहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ याप्रकार जभी नानाप्रकारकीयुक्तियों करिकै तारुद्ररूपगुरुमूर्त्तिनें हमारेप्रति आत्माकाउपदेशकर्‍या ॥ तभी ताउपदेशकरिकै मैंश्वेताश्वतर अनेकसंशयविपर्ययतैंरहितहोता भया ॥ और यासंसारजालतैंपरेस्थित जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मकूं मैं आपणाआत्मारूपजाणताभया ॥ कैसाहैसोअद्वितीय ब्रह्म सर्वतैंअधिकहै ॥ और तापरमात्मादेवतैंअधिक कोई भी पदार्थनहींहै और कारणअज्ञानसहित आकाशादिकपंचभूत जिसपर मात्मादेवकाशरीररूपहैं ॥ और वास्तवतैं शरीरतैंरहितहै और जैसे आकाश जिसजिसघटमठादिकउपाधियोंविषेस्थितहोवैहै ॥ तिस तिसउपाधिकेसमानआकारवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे जिसजिसजीवका जैसा जैसाशरीरहोवैहै ॥ तिसतिसशरीरविषे सोपरमात्मादे व तिस तिसरूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ समःप्रुषिणासमोमशकेन ॥ अर्थयह ॥ प्रुषिमशकादिकअल्पशरीरोंविषे तथा हस्ती आदिक महान्शरीरोंविषेस्थितहोइकै यहपरमात्मादेव तिनशरीरोंकेसमान आकारवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ १ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोपरमात्मादेव जो सर्वशरीरोंविषेस्थितहै ॥ तौं सर्वजीवोंकूं किसवासतैनहींप्रतीतहोता ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे सर्वकाष्ठोंके अंतरअग्निगुप्तहोइकेरहैहै ॥ याकारणतैं सो अग्नि तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतैंविना प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे सोपरमात्मादेवभी सर्व भूतप्राणियोंविषे गुप्तहोइकैरह्याहै ॥ याकारणतैं आत्मज्ञानरूपउपायतैंविना सोपरमात्मादेव प्रतीतहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो ॥

जैसे ऊर्णनाभिजंतु तंतुवोंकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिके तिनतंतुवोंविषेस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी यास्थावरजंगमरूपज
गत्कूं सर्वओरतैंव्याप्यकरिके ताजगत्‌विषेस्थितहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ यालोकविषे जेअधिकारीपुरुष तारुद्रभगवान्‌केगुरुरू
पमूर्तिकूंप्राप्तहोइके तापरमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहोवैहैं ऐसे माया
रूपतमतैंपरेस्थित स्वयंज्योतिव्यापकआत्माकूं मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्‌केप्रसादतैं जानताहूं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे
मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि गुरुकेउपदेशतैं ताअद्वितीयपरमात्माकूंनिश्चयकरिके यासंसाररूपमृत्युतैंरहितहुआहूं ॥ तैसे दूसरेभीअधि
कारीजन गुरुकेउपदेशतैं तापरमात्मादेवकूंनिश्चयकरिके यासंसाररूपमृत्युतैंरहितहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्व
क जोब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षहै ॥ तामोक्षकेप्राप्तिवास्तै आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्गनहींहै ॥ किंतु मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्र
कारकाअभेदज्ञानही तामोक्षकेप्राप्तिकामार्ग है ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं श्रवणमननादिकसाधनोंकरिके ताआत्मज्ञानकूंअवश्यसंपा
दनकरणा ॥ तहाँश्रुति ॥ तमेवविदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय ॥ अर्थयह ॥ ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजा
निके यहविद्वान्‌पुरुष संसाररूपमृत्युतैं पारहोवैहै ॥ और मोक्षकीप्राप्तिवास्तै आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्गनहींहै ॥ हेसंन्यासियो ॥
यहपरमात्मादेव सर्वजगत्‌काआत्मारूपहै ॥ याकारणतैं तापरमात्मादेवतैं कोईपदार्थ अधिकनहींहै ॥ तथा कोईपदार्थ सूक्ष्मनहींहै ॥
और जैसे यालोकविषे अनेकशाखापर्णोंकरिकेयुक्त जो कोईकमहान्‌वटकावृक्षहै ॥ सोवृक्ष बहुतअवकाशकूंव्याप्यकरिके स्थितहोवैहै ॥
तैसे यहपरमात्मादेवभी संपूर्णजगत्‌कूंव्याप्तकरिके आपणेस्वप्रकाशस्वरूपविषेस्थितहोवैहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ यद्यपि यहनिर्गुण
परमात्मादेवही समष्टिस्थूलशरीररूपउपाधिके संबंधतैं विराट्‌रूपहोवैहै ॥ तथा समष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिकेसंबंधतैं हिरण्यगर्भ
रूपहोवैहै ॥ तथा समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिकेसंबंधतैं ईश्वररूपहोवैहै ॥ तथापि सोपरमात्मादेवका विराट्‌रूप तथा हिरण्यगर्भ
रूप तथा ईश्वररूप केवलउपासनाकाउपयोगीहै ॥ परंतु सोउपाधियुक्तरूप मुमुक्षुजनोंकेजानणेयोग्यनहींहै ॥ किंतु तिनस्थूल

सूक्ष्मकारणतैंपरेस्थित जोआत्माकानिर्गुण स्वरूपहे ॥ सोनिर्गुणस्वरूपही मुमुक्षुजनोंकेजानणेयोग्यहे ॥ काहेतें विराट्‌विषे तथा हिरण्यगर्भविषे तथा ईश्वरविषे नाम रूप क्रिया यहतीनोंप्रकारकाजगत् विद्यमानहे ॥ और जोजोपदार्थ नामरूपक्रियाकरिकेयुक्त होवेहे॥सोसोपदार्थ मिथ्याहीहोवेहे॥और जोजोपदार्थमिथ्याहोवेहे॥सोसोपदार्थ रज्जुसर्पकीन्याईं नाशवान्‌होवेहे ॥ और तापरमात्मादेवके विराटादिकस्वरूपभी मिथ्याहोणेतैंनाशवान्‌हे॥याकारणतें तेविराटादिकस्वरूप मुमुक्षुजनोंकेजानणेयोग्यनहींहैं॥किंतु ताविराटादिकती नोंतैंपरेस्थित जोशुद्धनिर्गुणआत्माहे ॥ सोईही मुमुक्षुजनोंकेजानणेयोग्यहे ॥ऐसे निर्गुणशुद्धपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेजानेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ और जेपुरुष ऐसेनिर्गुणपरमात्माकूंआपणाआत्मारूपकरिके नहींजानेहैं ॥ तेपुरुष यासंसारविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तहाँश्रुति ॥ यएतद्विदुरमृतास्तेभवंत्यऽथेतरेदुःखमेवापियंति ॥ अर्थयह ॥ मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकार जेअधिकारीपुरुष आत्माकूंजानेहैं ॥ तेअधिकरीपुरुषही मोक्षरूपअमृत भावकूंप्राप्त होवेहैं ॥ और जेपुरुष ताअद्वितीयआत्माकूंनहींजानेहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष यासंसारविषे केवलदुःखकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ १ ॥ अब तापरमात्मादेवकी सर्वत्रव्यापकतानिरूपणकरेहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यालोकविषे जितनेकीजीवोंके मुख मस्तक ग्रीवा हस्त पादादिकअवयवहैं ॥ तेसंपूर्णअवयव तापरमात्मादेवकेही हैं ॥ और सोपरमात्मादेव सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहे ॥ तथा सर्वजीवोंकाआत्मारूपहे ॥ याकारणतें सोपरमात्मादेव सर्वगतहे ॥ और ताआनंदस्वरूपआत्मादेवविषे शोकादिकोंकाकारण रूपअविद्याहेनहीं ॥ यातेंतापरमात्मादेव विषेशोकादिकविकारभीसंभवेनहीं याकारणतैंहीं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शिव यानामकरिकेकथनकरे है ॥ हेसंन्यासियो ॥ सो आनंदस्वरूपआत्मादेव आकाशादिकमहान्‌पदार्थोंतैंभी अतिशेकरिकेमहानहे ॥ और सोपरमात्मादेव याजीवोंकेशरीररूपपुरविषे सर्वदाविराजमानहे ॥ कैसेहैंतेशरीररूपपुर ॥ दोचक्षु दोनासिका दोश्रोत्र मुख पायु उपस्थ नाभि मूर्द्धद्वार याएकादशद्वारोंकरिकेयुक्तहैं ॥ और सोपरमात्मादेव याजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइके तिनजीवोंकेबुद्धिकूं शुभअशुभकर्मोंविषेप्रवर्त्तकरेहे॥तथा सोपरमात्मादेव आप

णेस्वरूपभूतआनंदकूं आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकेहीजानैहै॥और भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेस्थित जितनेकोस्थूलसूक्ष्मपदा
र्थ हैं॥ तिनपदार्थोंका यहपरमात्मादेवही स्वामी है॥और सोपरमात्मादेव सूर्यादिकज्योतियोंकाभीज्योतिरूपहै॥तथा सोपरमात्मादेव नाश
तैंरहित साक्षीक्षेत्रज्ञरूपहै ॥ और हे संन्यासियो ॥ यहस्वयंज्योतिपरमात्मादेव यद्यपि वास्तवतैंआकाशकीन्याई सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ तथापि
जीवोंकेअंगुष्ठमात्रपरिमाण हृदयछिद्रविषेस्थितहुआ सोपरमात्मादेव अंगुष्ठमात्रपरिमाणवाला कह्याजावै है॥और यहपरमात्मादेव यद्यपि
स्थावरजंगमरूपसर्वजगत्विषे समानव्यापकहै ॥ तथापि हृदयदेशविषे बुद्धिआदिकसंघातकासाक्षीरूपकरिकै याचरमात्मादेवकी विशेष
करिकैप्रतीतिहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं हृदयदेशविषेस्थितकहैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ बुद्धिकेसर्ववृत्तियोंकूंप्रवृत्त
करणेहारा तथा श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकैयुक्त ऐसाजोअंतर्मुखशुद्धमनहै ॥ ताशुद्धमनकरिकैही सोपरमात्मादेव जान्याजावैहै ॥
यातैं जेअधिकारीपुरुष ताशुद्धमनकरिकै ताअंतर्यामीआत्माकूंसाक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥
और हेसंन्यासियो यहपरमात्मादेव सर्वभूतप्राणियोंकाआत्मारूपहै ॥ याकारणतैं यहपरमात्मादेव सहस्रमस्तकवालाहै ॥ तथा सहस्रने
त्रोंवालाहै ॥ तथा सहस्रपादोंवालाहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसेदशअंगुलपरिमाणवालाजोकाष्ठहै ॥ ताकाष्ठकूंव्याप्यकरिकै अग्नि ताकाष्ठतैं
बाह्यअधिकदेशविषेभीरहैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी विराट् हिरण्यगर्भ अव्याकृत यातीनोंकूंव्याप्यकरिकै तिनोंतैंअधिकदेशविषेभी
रहैहै ॥ सोअधिकदेश तापरमात्माकामहिमारूपहै ॥ यातैं आकाशकीन्याई यहआनंदस्वरूपआत्मा ब्रह्मांडकेअंतरबाह्य सर्वत्रव्याप्यक
रिकैस्थितहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेस्थितजितनाकोजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेव
करिकैव्याप्तहै ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेवही याअधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा कर्मउपासनाकरणेहारेपुरुषोंकूं
धर्म अर्थ काम या तीनप्रकारकेपुरुषार्थकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेवही यापृथिवीविषे अन्नरूपकरिकै प्रगटहोवैहै ॥ जिसअन्नके
भक्षणतैं यहमनुष्यादिकजंगमशरीर उत्पन्नहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहअंतर्यामीपुरुष सर्वजगत्काआत्मारूपहै ॥ याकारणतैं यहअंत

र्यामीआत्मा अद्वितीयब्रह्मरूपहै ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ यालोकविषे जितनेकीजीवोंके हस्त पाद नेत्र मुख श्रोत्र इत्यादिकअंगहैं ॥ तेसंपूर्ण अंग ताब्रह्मकेहीहैं ॥ तथा सोब्रह्म सर्वजगत्कूंव्याप्तकरिकेरहैहै ॥और वास्तवतैं नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंतैंरहितहुआभी सो परमात्मादेव तिननेत्रादिकइंद्रियोंकेरूपादिकसर्वविषयोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेवही यासर्वजगत्कास्वामीहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही यासंपूर्ण जगत्कूं आपणीआज्ञाविषेचलावैहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही यासर्वजगत्कारक्षणकरणेहाराहै ॥ तथा यासर्वजगत्ऊपर उपकारकरणेहाराहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे महाराजा आपणेपुरविषेप्रवेशकरिकेस्थितहोवैहै ॥ तैसे सोपरमात्मादेवही जीवरूपतैं याशरीररूपपुरविषे प्रवेशकरिकेस्थितहोवैहै ॥ और यहशरीर मुखादिकनवद्वारोंवालाहै ॥ याकारणतैं विवेकीपुरुष याशरीरकूं नवद्वारवालापुरकहैहैं ॥ और अन्नपानादिकोंकापरिणामरूपजेरसादिधातुहैं ॥ तिनधातुवोंकरिके यहशरीर नित्यहीपूर्णहोवैहै ॥ याकारणतैं विवेकीपुरुष याशरीरकूं पुर यानामकरिकेकथनकरैहैं ॥ ऐसेशरीररूपपुरविषेस्थितहोइके यहजीवात्मा आपणेकूंअद्वितीयब्रह्मरूपजाणिके जभीकार्यसहितअज्ञानकूं नाशकरैहै ॥ तभी यहजीवात्मा हंससंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसाजीवरूपहंस याशरीररूपपुरविषेस्थितहोइकेविषयोंकीप्राप्तिवासते बाहरिजाइके नानाप्रकारकीचेष्टाकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे यालोकविषे जोविषयासक्तकामीपुरुष स्त्रियोंकेवशवर्त्तीहोवैहै ॥ ताकामीपुरुषकूं लोक वशी यानामकरिकेकथनकरैहैं ॥ तैसे वास्तवतैं स्वतंत्रहुआभीयहपरमात्मादेव जभी अविद्यारूपउपाधिकेसंबंधतैं यासंसारचक्रकूं प्राप्तहोइके सर्वलोकोंकेवशवर्त्तीहोवैहै ॥ तभी यहपरमात्मादेव वशी यानामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अथवा यालोकविषे जीवोंकेवशकरणेकेसाधन जेमंत्रऔषधआदिकपदार्थहैं ॥ तेमंत्रऔषधादिक जिसपुरुषकेहस्तविषेहोवैहैं ॥ तापुरुषकूं लोक वशी यानामकरिकेकथनकरैहैं ॥ तैसे यास्थावरजंगमरूपजगत्के वशकरणेकासाधन जाचैतन्यरूपताहै ॥ साचैतन्यरूपता यापरमात्मादेवविषे सर्वदाविद्यमानहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं वशी यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ यहपरमात्मादेव पाणिइंद्रियतैंरहितहुआभी सर्वपदार्थोंकाग्रहणकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेव पादइंद्रियतैंरहितहुआभी मनतैंअधिकवेगवालाहोवैहै ॥ और यहपरमात्मादेव नेत्र

इंद्रियतैंरहितहुआभी सर्वरूपोंकूंदेखेहे ॥ और यहपरमात्मादेव श्रोत्रइंद्रियतैंरहितहुआभी सर्वशब्दोंकूंश्रवणकरेहे ॥ शंका ॥ हे भगवन् यहपरमात्मादेव सर्वजगत्काउपादानकारणहे ॥ यातैं तापरमात्मादेवविषे सर्वजगत्कासंबंधहोवे हे ॥ ऐसे परमात्मादेवविषे नेत्रादिक इंद्रियोंकाअभावकहणासंभवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ नेत्रादिकइंद्रिय तथा तिनइंद्रियोंकेगोलक यहसंपूर्ण सूक्ष्मस्थूलशरीर विषेरहेहैं ॥ आत्माविषेकोईरहेनहीं ॥ यातैं जिसआत्माका तास्थूलसूक्ष्मशरीरकेसाथ तादात्म्यअध्यासहे ॥ तिसीआत्माका तिनइंद्रियोंकेसाथसंबंधहे ॥ और ब्रह्मविद्याकरिकै जिसआत्माका तिनशरीरादिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यास निवृत्तभयाहे ॥ तामुक्तआत्माविषे तिनइंद्रियोंकासंबंधहेनहीं ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे तापरमात्मादेवकूं सर्वइंद्रियोंतैं रहितकह्याहे ॥ और मायाशक्तिकेसंबंधतैं तिसीपरमात्मादेवतैं सर्वइंद्रियोंकेव्यापारसिद्धहोवेहैं ॥ याकारणतैं तापरमात्मादेवकूं सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकाकर्त्तारूपकह्याहे ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहपरमात्मादेवही सर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंकूंकरे हे याअर्थविषे तुम आश्चर्यमतकरो ॥ किंतु जैसे एकहीमृत्तिकाघटशरावादिकअनेकरूपकूंप्राप्तहोवेहे ॥ तैसे यहजीव नेत्रादिकबाह्यकरणोंकरिकै तथा मनबुद्धिआदिकअंतरकरणोंकरिकै जिनजिनपदार्थोंकूंग्रहणकरेहे ॥ तिनसंपूर्णपदार्थरूप यहपरमात्मादेवहीहोवेहे॥याकारणतैं यहपरमात्मादेव देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित सर्वत्रव्यापकहे॥ऐसेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं यालोकविषे कोईजडचेतनपदार्थ विषयकरिसकतानहीं ॥ याकारणतैं ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वभी ताअद्वितीयआत्माकीस्थिति कथनकरेहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहपरमात्मादेव अणुपदार्थों तैंभी अत्यंतअणुहे ॥ तथा आकाशादिकमहान्पदार्थों तैंभी अत्यंतमहान्हे ॥ ऐसापरमात्मादेव याजीवोंकेहृदयरूपगुहाविषे ॥ सर्वदाविराजमानहे ॥ हेसंन्यासियो॥ सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषे विद्यमानहुआभी सोपरमात्मादेव पूर्णगुरुकीकृपातैंविना प्राप्तहोवेनहीं॥यातैं जेअधिकारीपुरुष विषयवासनातैंरहितहोइके गुरुकेशरणकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ और तागुरुकेउपदेशतैं तास्वयंज्योतिआत्माकूंसाक्षात्कारकरेहैं ॥ तेहीअधिकारीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतैंरहित होवे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जोरुद्रभगवान् आपणीकल्याणमूर्त्तिकरिकै हमसर्वअधिकारीजनोंका पालनकरेहे ॥ सोरुद्रभगवान्ही हमअधि

कारीजीवोंकागुरुरूपहै ॥ सोरुद्रभगवान्‌रूपगुरु याअधिकारीजनोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरैंहै ॥ हेशिष्य ॥ तूं पुण्यपापकर्मकाकर्त्ता नहीं है ॥ तथा तिनपुण्यपापकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकाभोक्तानहींहै ॥ किंतु जोवेदांतशास्त्रविषे अद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्मकथनकऱ्या है ॥ सोअद्वितीयब्रह्मरूपतूंहै ॥ याअर्थविषे तुमनें किंचित्‌मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ और तुम्हारेस्वरूपतैंभिन्न जितनाकी यहजगत्‌है सोजगत् स्वप्नकीन्याई नाशवानहै ॥ यातैं सोसंपूर्णजगत् तेरेस्वरूपविषेकल्पितही है ॥ हेसंन्यासियो ॥ याप्रकारकेरुद्रभगवान्‌केउपदेशतैं उत्पन्नभयाजोअद्वितीयआत्माकाज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकरिके तेअधिकारीपुरुष सर्वशोकतैंरहितहोवै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे रुद्रभगवान्‌केउपदेशतैं तेअधिकारीपुरुष अद्वितीयआत्माकूंसाक्षात्कारकरतेभयेहैं ॥ तैसे मैंश्वेताश्वतरनामाऋषिभी तारुद्रभगवान्‌के उपदेशतैं ताअद्वितीयआत्माकूं साक्षात्कारकरताहूं ॥ कैसाहैसोआत्मादेव ॥ अजरहै तथा सर्वजगत्‌काआत्मारूपहै तथापुरात नहै ॥ तथाविभुहोणेतैं सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ और अज्ञानीजीव ताआत्माकूंजन्ममरणवालाकहेहैं ॥ और ब्रह्म वेत्ताविद्वान्‌पुरुष ताआत्माकूंनित्यकहैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ ऐसे परमात्मादेवकासाक्षात्कार अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषकूं होवैनहीं ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिवासते तिनअधिकारीपुरुषोंनें प्रथम याप्रकार सगुणब्रह्मकाचिंतनकरणा ॥ तापरमात्मादेवके दोरूपहोवै हैं ॥ एकतो पररूपहोवैहै ॥ और दूसरा अपररूपहोवैहै ॥ तहां निर्गुणरूपकानाम परहै ॥ और सगुणरूपकानाम अपरहै ॥ तहांश्रुति ॥ देवा ब्रह्मणोरूपेपरंचापरंच ॥ ऐसापरअपररूपवाला सोपरमात्मादेव ॐकाररूपप्रणवकाअर्थरूपहै ॥ तहां परब्रह्म ताप्रणवकालक्ष्यअर्थहै ॥ और अपरब्रह्म ताप्रणवकावाच्यअर्थहै ॥ और मीमांसादिकशास्त्रोंविषे शब्दका आपणेअर्थकेसाथ तादात्म्यसंबंध अंगीकारकऱ्याहै ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव ताप्रणवरूपहै ॥ ऐसाप्रणवरूपपरमात्मादेव आपणीमायाशक्तिकरिके सृष्टिकेआदिकालविषे जीवोंकेभोग कीसिद्धिवासते ताप्रणवनामतैंही सर्वशब्दोंकूं तथा सर्वअर्थोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और सोईहीपरमात्मादेवप्रलयकालविषे तासंपूर्णप्रपंचकूं आपणेशांतस्वरूपविषेलयकरैहै ॥ ऐसापरमात्मादेव हमअधिकारीजीवोंकूं शुभबुद्धिकीप्राप्तिकरै ॥ जिसशुभबुद्धिकेप्रसादतैं हम

अधिकारीजीव आपणे आत्माकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकेनिश्चयकरैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकोशुभबुद्धिकरिके जानणे योग्यजोब्रह्महे ॥ सोब्रह्महीं अग्निरूपहे ॥ तथा सोब्रह्महीं आदित्यरूपहे ॥ तथा सोब्रह्मही वायुरूपहे ॥ तथा सोब्रह्महीं चंद्रमारूप है ॥ तथा सोब्रह्महीं अव्याकृतरूपहे ॥ तथा सोब्रह्मही तारामंडलरूपहे ॥ तथा सोब्रह्मही ऋगादिकवेदरूपहे ॥ तथा सोब्रह्म हीं सूक्ष्मपंचभूतरूपहे ॥ तथासोब्रह्मही हिरण्यगर्भरूपहे ॥ तथा सोब्रह्महीविराट्रूपहे ॥ तथा सोब्रह्मही मरीचिदक्षप्रजापति रूपहे ॥ इतनेंकरिके ताब्रह्मविषेअधिदेवरूपतानिरूपणकरी ॥ अब तिसोब्रह्मविषे अध्यात्मरूपतानिरूपणकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ सोब्रह्मही स्त्रीरूपहे ॥ तथा सोब्रह्मही पुरुषरूपहे ॥ तथा सोब्रह्महीं कुमाररूपहे ॥ तथा सोब्रह्मही कुमारीरूपहे ॥ तथा सोब्र ह्मही वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोइके दंडकूंहाथविषेग्रहणकरिके शनैःशनैःगमनकरेंहे ॥ इसतेंआदिलेके सोब्रह्मही सर्वशरीररूपहोवेंहे ॥ और सो ब्रह्महीं अंतःकरणकीवृत्तिरूपउपाधिकेभेदकरिके नानाज्ञानरूपहोवेंहे ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार स्त्रीआदिकशरीरोंकरिकेयुक्त जीवत्वंपद काअर्थरूपआत्माहे ॥ सोआत्मादेव तत्पदार्थरूपईश्वरतैंभिन्ननहीं हे ॥ किंतु उपाधिकापरित्यागकरके सोजीवात्मा ईश्वररूपही हे ॥ अब उपासनाकेवासते तापरमात्मादेवकूंपक्षीरूपकरिके वर्णनकरेंहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जेअधिकारीपुरुष तानिर्गुणब्रह्मकेजानणेविषे समर्थनहीं होवे हे ॥ ऐसेमंदबुद्धिअधिकारीजनोंऊपर अनुग्रहकरिके तेमहात्मापुरुष ताविराट्रूपपरमात्मादेवकूं पक्षीरूपकरिके वर्णनकरे हैं ॥ तहां जगत्काकारणरूप सोविराट्भगवान् पक्षीरूपहे ॥ और दूर्वादलकेसमान तापक्षीकाश्यामवर्ण हे ॥ और ताविराट्रूपपक्षीकेदोनोंनेत्र अग्निकेसमानरक्तवर्णवालेहैं ॥ और जैसे माताकेउदरविषे बालकरहे हे ॥ तैसे विद्युतकेसमान शीघ्रही उत्पत्तिनाशवालायहजगत् ताविरा ट्रूपपक्षीकेगर्भविषेरहेहे ॥ और वसंतऋतुतेंआदिलेके जोनानाप्रकारकाकालहे ॥ तथा क्षारसमुद्रतेंआदिलेके जेनानाप्रकारकेसमुद्रहैं यहसंपूर्ण ताविराट्रूपपक्षीकेपक्षरूपहैं ॥ और सोविराट्रूपपक्षीही उपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मांडतैंबाहरलेजावे हे ॥ और सोविराट्रूप पक्षीही याब्रह्मांडकेअंतरबाहरव्यापकहे ॥ और तिसोविराट्भगवान्तें चतुर्दशभुवन उत्पन्नहोवेंहैं ॥ तथा तिनभुवनोंकाकारणरूप

स्थूलभूत उत्पन्नहोवे हैं हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार सगुणब्रह्मकेध्यानकरिके जभी याअविकारीपुरुषोंकाअंतःकरणशुद्धहोवे है ॥ तभी तिनअधिकारीपुरुषोंकूं सुखेनही निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवे है ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहो है ॥ तहांश्लोक ॥ निर्विशेषंपरंब्रह्म साक्षात्कर्तुमनीश्वराः ॥ येमंदास्तेनुकंप्यंते सविशेषनिरूपणैः ॥ १ ॥ वशीकृतमनस्येषां सगुणब्रह्मशीलनात् ॥ तदेवाविर्भवेत्साक्षादपेतोपाधिकल्पनम् ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ जेमंदबुद्धिपुरुष निर्गुणब्रह्मकेसाक्षात्कारकरणेविषे समर्थनहीं हैं ॥ तिनमंदबुद्धिपुरुषोंऊपर अनुग्रहकरिके ब्रह्मवेत्तागुरु सगुणब्रह्मकाकथनकरे हैं ॥ तासगुणब्रह्मकेध्यानकरिके जभी तिनअधिकारीपुरुषोंकाअंतःकरणशुद्धहोवे है ॥ तभीतिनअधिकारीपुरुषोंकूंसुखेनही निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवे है॥इतनेंकरिकेसगुणब्रह्मकेध्यानप्रकार निरूपणकऱ्या॥अबशुद्धचित्तवालेपुरुषोंकेप्रति महावाक्यकाउपयोगीविचार निरूपणकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार तापरमेश्वरविषे पक्षीरूपताकल्पनाकरिके पुनःतेविद्वान्पुरुष तापरमात्मादेवविषे जीव ईश्वर माया यहतीनप्रकारकाभेद कल्पनाकरे हैं ॥ तहां सर्वजगत्काकारणरूपजामायाहे ॥ तामायाकाजन्म होवेनहीं ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तामायाकूं अजा यानामकरिकेकथनकरेहे ॥ साअजामाया तेज जल पृथिवी यातीनकार्यरूपकरिके तीनरूपवालीहोवेहे ॥ तहां अग्निरूपकरिके सामाया लोहितरूपवालीहोवे है ॥ और जलरूपकरिके सामाया शुक्लवर्ण वालीहोवे है ॥ और पृथिवीरूपकरिके सामाया कृष्णवर्णवालीहोवेहै॥इसप्रकार लोहित शुक्ल कृष्ण यातीनरूपवालीसामाया तातीन रूपोंकरिके आपणे समान सर्वजगतकूंउत्पन्नकरेहे ॥ जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जारक्तशुक्लनीलवर्णवालोअजाहे॥सा अजा आपणेसमानरूपवालेअजोंकूंहीउत्पन्न करेहे ॥ तैसे सामायारूपअजाभी आपणेसमानरूपवाले जगतकूंहीउत्पन्नकरेहे ॥ और जैसे यालोकप्रसिद्धअजाकेभोगणेकीइच्छावालाजो अजहे॥सो अज ताअजाकासेवनकरेहे॥और ताअजाकेभोगणेकीइच्छातेंरहितजोनिष्कामअजहे॥सोनिष्कामअज ताअजाकापरित्यागकरेहे तैसे त्वंपदकाअर्थरूप यहजीवात्मारूपअज तामायारूपअजाकेभोगणेकीइच्छावालाहे॥याकारणतें सोजीवरूपअजतामायारूपअजाकासेवनकरेहे॥तासेवनकरिके सोजीवरूपअज बंधायमानहोवेहे ॥ और तत्पदकाअर्थरूप जोईश्वरहे॥ सोईश्वररूपअज तामायारूपअजाकेभोग

पेकीइच्छातैंरहितहै॥याकारणतैं सोईश्वररूपअज तामायारूपअजाकापरित्यागकरैंहै॥याकारणतैंहीं सोईश्वर नित्यमुक्तहै ॥ अब दूसरीरी
तिसैंभी ताजीवईश्वरमायाकानिरूपणकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ कोईकमहात्मापुरुषतो जीव ईश्वर माया यातीनोंका याप्रकार वर्णनकरे
हैं ॥ जैसे यालोकविषे पिप्पलादिकवृक्षोंऊपरपक्षीरहैहैं ॥ तैसे यहकार्यसहितमायातो वृक्षरूपहै ॥ और तत्पदकाअर्थरूपईश्वर तथा
त्वंपदकाअर्थरूपजीव यहदोनोंपक्षीहैं ॥ कैसेहैं तेजीवईश्वररूपदोनोंपक्षी ॥ वास्तवतैंपरस्परअभिन्नहैं ॥ तथा समानरूपवाले हैं ॥ तथा
एकहीकार्यसहितमायारूपवृक्षकेआश्रितरहे हैं तिनदोनोंविषे बुद्धिविशिष्टजीवरूपपक्षीतो तामायारूपवृक्षकेपुण्यपापरूपपुष्पोंतैं उत्पन्नभ
येसुखदुःखरूपफलकूं स्वादुमानिकेभोगैहै ॥ और दूसराईश्वररूपपक्षीतो तासुखदुःखरूपफलकूं कदाचित्भीभोगतानहीं ॥ किंतु सोईश्वर
रूपपक्षी तासुखदुःखरूपफलकूं केवलप्रकाशहीकरैंहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ अजरूपकरिकै तथापक्षिरूपकरिकै जोश्रुतिनैं भोक्ता अभोक्तारूप
तैं जीवईश्वरकीविलक्षणता कथनकरीहै ॥ ताश्रुतिवचनका जीवकेभोक्तापणेविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु ताजीवकेभोक्तापणेकीनिवृत्तिविषे
तात्पर्य है ॥ काहेतैं लोकोंकरिकैअज्ञातजोअर्थ है ताअज्ञातअर्थकेबोधनकरणेकरिकैही शास्त्रविषे प्रमाणरूपताहोवैहै ॥ लोकप्रसिद्धअर्थके
बोधनकरणेकरिकै शास्त्रविषे प्रमाणरूपताहोवैनहीं ॥ और यालोकविषे अज्ञानीपुरुषोंकूं जीवविषे भोक्तापणा प्रत्यक्षसिद्धहै॥यातैं तालोकप्र
सिद्धजीवकेभोक्तापणेविषे ताश्रुतिकातात्पर्यसंभवैनहीं ॥ किंतु ताजीवकेभोक्तापणेकीनिवृत्तिविषेहीं तावचनकातात्पर्य है ॥ शंका ॥ हेभगव
न् ॥ सोश्रुतिवचन जीवकेभोक्तापणेकीनिवृत्तिनहींकरैहै ॥ किंतु सोश्रुतिवचन ईश्वरकेभोक्तापणेकीहीनिवृत्तिकरैंहै ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासि
यो ॥ जोवस्तु जिसस्थानविषे किसीप्रमाणकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तावस्तुकाहीं तिसस्थानतैंनिषेधहोवैहै ॥ और जोवस्तु जिसस्थानविषे किसी
प्रमाणकरिकैप्राप्तनहीं है ॥ तावस्तुका तिसस्थानतैंनिषेध होवैनहीं॥ यहसर्वशास्त्रोंकासिद्धांतहै ॥ यातैं सोश्रुतिवचन ईश्वरविषे भोक्तापणेकी
निवृत्ति तभीकरैगा ॥ जभी ताईश्वरविषे सो भोक्तापणा किसीप्रमाणकरिकैसिद्धहोवै ॥ सोईश्वरविषेभोक्तापणा किसीप्रमाणकरिकैसिद्धहैन
हीं ॥ किंवा ॥ जोवादी ताईश्वरविषे भोक्तापणाअंगीकारकरैंहै ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ ताईश्वरविषे भोक्तापणा प्रत्यक्षादिकलौकि

कप्रमाणोंकरिकैसिद्धहै ॥ अथवा किसीश्रुतिप्रमाणकरिकेसिद्धहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाण तो लोकप्रसिद्धघटादिकपदार्थोंकूंही विषयकरै हैं ॥ अलौकिकपदार्थकूंविषयकरैनहीं ॥ और सोईश्वर लोकप्रसिद्धहै नहीं ॥ यातैं सोईश्वरअलौकिकहै ॥ ऐसेअलौकिकईश्वरकूंतेप्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाण विषयकरिसकैनहीं ॥ और ताईश्वरविषे सोभोक्तापणा किसीश्रुतिप्रमाणकरिकेसिद्धहै यहदूसरा पक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ताईश्वरविषे भोक्तापणेकूंप्रतिपादनकरणेहारी कोईश्रुति प्रसिद्धहैनहीं ॥ उलटा ॥ नतदश्नातिकिंचन ॥ इत्यादिकश्रुतियां ताईश्वरविषेअभोक्तापणाहीकथनकरै हैं ॥ यातैं तातत्पदार्थरूपईश्वरविषे सोभोक्तापणा किसीप्रमाणकरिकेप्राप्तहैनहीं ॥ याकारणतैं ताश्रुतिवचन तैं ताईश्वरविषेभोक्तापणेकानिषेधभीसंभवै नहीं॥किन्तुसोश्रुतिवचन याप्रकारकेशंकाकीनिवृत्तिकरिके त्वंपदार्थजीवविषेही भोक्तापणेकीनिवृत्तिकरैहै॥ साशंकायहहै॥मैंब्रह्मरूपहूं यह जीवब्रह्मकेअभेदकूंबोधनकरणेहारावचन व्यर्थ है ॥ काहेतैं यहजीवतो कर्म केफलकाभोक्ताहै ॥ और ब्रह्म ताकर्मकेफलकाअभोक्ताहै ॥ ऐसेभोक्ताजीवका अभोक्ताब्रह्मकेसाथ अभेदसंभवैनहीं ॥ याप्रकारकीवादीकेशंकाकूं सोश्रुतिवचन निवृत्तकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जीव ईश्वरकूं अजरूपकरिके तथा पक्षीरूपकरिके वर्णनकरणेहारा सोश्रुतिवचन तावादीकेशंकाकीनिवृत्ति किसप्रकारकरैहै ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ सोश्रुतिवचन जिसरीतिसैं ताशंकाकीनिवृत्तिकरैहै॥तारीतिकूं तुम श्रवणकरो ॥ जैसे तत्पदार्थरूप निर्विकारईश्वरविषे अजरूपता तथा पक्षीरूपता यद्यपि शब्दकेवलतैंप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि ताईश्वरविषे साअजरूपता तथा पक्षीरूपता वास्तवतैं हैनहीं॥किंतु आरोपितहै ॥ तैसे त्वंपदार्थरूपजीवविषे यद्यपि बुद्धिकेसंबंधतैं भोक्तापणाप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि ताजीवविषे सोभोक्तापणा वास्तवतैं है नहीं॥किंतु आरोपितहै ॥ तात्पर्ययह॥अंतःकरणादिकउपाधियोंकरिकेयुक्तजोचेतनहै ताकानामजीवहै ॥ तहां अंतःकरणादिकउपाधिकापरित्यागकरिके ताजीवकाजो साक्षीकूटस्थस्वरूपहै ताकेविषेतो तीनकालमेंभोक्तापणानहीं है ॥ किंतु सोभोक्तापणा अंतःकरणविषेही है ॥ ताअंतःकरणकेभोक्तापणेका आत्माविषेआरोपणकरिके ताजीवकूं भोक्ताकह्याहै ॥ वास्तवतैंयहजीवभी अभोक्ताही है ॥ यातैं ताअभोक्ता

जीवका अभोक्ता ब्रह्मविषे अभेद संभवहोइसकेहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जीवईश्वररूपदोनोंपक्षियोंकेरहणेकास्थान जोयहकार्यसहितअविद्या रूपीवृक्षहै ॥ ताअविद्यारूपवृक्षविषे यहजीवरूपपक्षी आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैंही सुखदुःखरूपफलकूंभोगेहै ॥ तथा शरीरबुद्धि आदिकोंकेतादात्म्यअध्यासतैं सोजीव दुःखरूपसमुद्रविषेडूबैहै ॥ तथा असमर्थताकूंप्राप्तहोइके सोअज्ञानीजीव नानाप्रकारकेशो कोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ और सोत्वंपदकाअर्थरूपजीवात्मा जभी गुरुकीकृपातैंप्राप्तभईशुद्धबुद्धिकरिके यास्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्विती यआत्माकूं देहादिकोंतैंभिन्नकरिकेजाणेहै ॥ तभी यहजीवात्मा सर्वशोकोंतैंरहितहोवे है ॥ तथा तत्पदार्थईश्वरकेसाथ अभेदभावकूं प्राप्तहोइके ताईश्वरकेसर्वात्मभावरूपमहिमाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ ब्रह्मवेत्तागुरुकीकृपाकरिके यहविद्वान्पुरुष जिसत त्पदार्थईश्वरकेमहिमाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसीईश्वरकेस्वरूपकूं याज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गीकेप्रति अक्षररूपकरिकेवर्णनकऱ्याहै ॥ तिसीअक्षरप रमात्माविषे यहऋगादिकवेद स्थितहैं ॥ और तिसीअक्षरविषे विश्वेदेवता तथाअग्निआदिकदेवता स्थितहैं ॥ इसतैंआदिलेके यहसंपूर्ण जगत् ताअक्षरविषेहीस्थितहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार सर्वजगत्काअधिष्ठानरूप जोपरमात्मादेवहै॥ ताअक्षरपरमात्माकूं जेअधिकारी पुरुष सर्वांतर्यामीरूपकरिके नहींजानेहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष यालोकविषे व्यर्थहीजीवतेहैं ॥ और जेअधिकारीपुरुष ताअक्षरपरमात्माकूं सर्वांतर्यामीरूपकरिकेजानेहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकाजीवन सफलहै ॥ हे संन्यासियो ॥ जैसे गर्दभकेऊपरपाया जोचंदनकेकाष्ठोंका भारहै ॥ सोचंदनकाभार तागर्दभकेउपकारवासतेनहींहै ॥ किंतु क्लेशवासतैंहै ॥ तैसे जिनपुरुषोंने ऐसेअंतर्यामीपरमात्माकूंनहींजान्याहै ॥ तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं षट्अंगोंसहितचारिवेदोंकाअध्ययनभी किसीउपकारवासतेहोवेनहीं ॥ उलटा वेदोंकेअध्ययनकरिके तिनबहिर्मुख पुरुषोंकूं अभिमानकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जेतुमसरीखेविद्वान्पुरुष तथा हमसरीखेविद्वान्पुरुष तापरमात्मादेवकूं आपणा आत्मारूपकरिकेजानेहैं ॥ तेविद्वान्पुरुषही महाराजाकेसमान सुखपूर्वक स्थितहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ तिनऋगादिकवेदोंकेअध्ययनका फलभी यहआत्मज्ञानही है ॥ आत्मज्ञानतैंकोईअधिकफल तिनवेदोंकेअध्ययनकाहैनहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन् एकआत्माकेज्ञानतैं यह

अधिकारीपुरुष कृतकृत्यताकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहे तैं याअधिकारीपुरुषकूं आत्मातैंभिन्नअनेकपदार्थ जानणेयोग्यरहेहैं ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ आत्माकेज्ञानतैंविना यह अधिकारीपुरुष किसीअन्यउपायकरिकै यासर्वजगत्कूंजाणिसकैनहीं ॥ किंतु आत्माकेज्ञानकरिकेही यह अधिकारीपुरुष तासर्वजगत्कूंजाणिसकैहै ॥ काहेतें जैसे यालोकविषे घटपटादिककार्योंका मृत्तिकातंतुआदिककारणही वास्तवस्वरूपहोवै हैं ॥ कारणतैंविनादूसराकोईकार्यकावास्तवस्वरूपहोवैनहीं ॥ यातैं मृत्तिकादिककारणोंकेज्ञानहुएतैंअनंतर तिनघटादिककार्योंकाभी अवश्यज्ञानहोवैहै ॥ और जैसे मायावीऐंद्रजालिकपुरुष नानाप्रकारकेरूपोंकाकारणहोवैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवही आपणीमायाशक्तिकरिकै यासर्वजगत्काकारणहोवैहै ॥ तहां यहपरमात्मादेवही आपणीमायाशक्तिकरिकै गायत्रीआदिकनानाप्रकारकेछंदोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा ऋगादिकचारिवेदोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा अग्निष्टोमादिकनानाप्रकारकेयज्ञोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेशुभअशुभसंकल्पोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा तपतैंआदिलैके नानाप्रकारकेव्रतोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ इसतैंआदिलैके भूत भविष्यत्वर्तमान यातीनकालविषेस्थित जितनाकीजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेवतैंहीउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं तापरमात्मारूपकारणकेज्ञानकरिकै याजगत्रूपकार्यकाज्ञान संभवहोइसकैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसमायाशक्तिकरिकै यहपरमात्मादेव याजगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ तामायाकाक्यास्वरूपहै ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो॥जैसे अंधकार आपणीसिद्धिविषेसूर्यादिकप्रकाशोंकीअपेक्षानहींकरैहै॥तैसे जोवस्तु आपणीसिद्धिविषे किसीप्रमाणकीअपेक्षानहींकरैहै ॥ तथा सर्वकार्योंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तावस्तुकानाममायाहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष अविद्याकेबलतैं तास्वप्नविषे अनेकपदार्थोंकोउत्पत्तिस्थितिलयकरैहै॥तैसे सोपरमात्मादेवभी तामायाशक्तिकरिकै याजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार तापरमात्मादेवतैंउत्पन्नभया जोयहसंसारचक्रहै ॥ तासंसारचक्रविषे अविद्याकरिकैनिरुद्धहुआ यहजीव आपणेकूं तापरमात्मादेवतैंभिन्नकरिकैमानैहै ॥तथा कर्मरूपोबंधनगृहविषे कामक्रोधादिकपाशोंकरिकैबांध्याहुआ यहजीव नानाप्रकारकीदीनदशाकूं प्राप्तहोवैहै॥यातैं तामायाशक्तिका अत्यंतआश्चर्यरूपबलहै॥अब तामायाकेसामर्थ्यकानिरूपणकरैहैं ॥हेसंन्यासियो॥ तामायाकूं तुम प्रकृति

रूपजाणों ॥ और महेश्वरकूं तुम तामायाकाअधिष्ठानजाणों ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहपुरुष जिसकरिके अत्यंतदुर्घटकार्योंकूंकरे है ताका नाम प्रकृतिहै ॥ और यहपरमात्मादेव तामायाकरिके अत्यंतदुर्घटकार्योंकूंकरैहै॥ याकारणतें शास्त्रवेत्तापुरुष तामायाकूं प्रकृति यानाम करिकेकथनकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहपरमात्मादेव निर्गुणहै तथाअसंगहै ॥ तथा जन्मादिकसर्वविकारोंतेंरहितहै ॥ तथा एकअद्वितीय रूपहै ॥ ऐसेअद्वितीयआत्माविषे यहनानापणा अत्यंतदुर्घटहै ॥ तथापि यहमाया ताअद्वितीयपरमात्मादेवकूं कार्यरूपकरिके नानाभावकूंप्राप्तकरैहै ॥ यातें तादुर्घटकार्यकेकरणेहारीमायाकूं बुद्धिमान्पुरुष प्रकृतिकहे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यालोकविषेप्रसिद्ध जाऐंद्रजालिक पुरुषोंकीमायाहै ॥ तामायाविषे दोस्वभावप्रसिद्धहैं ॥ एकतो मिथ्यापदार्थोंकीउत्पत्तिकरणी ॥ और दूसरा एकपदार्थकूं नानारूपकरिके दिखावणा ॥ तादोनोंस्वभाववालीमायाकरिकेयुक्त जोऐंद्रजालिकपुरुषहै ॥ ताकूं लोकविषे मायी कहैहैं ॥ तैसे परमात्मादेवकेआश्रित जामायाहै ॥ तामायाविषेभी तेदोनोंस्वभाव विद्यमानहैं ॥ काहेतें सोएकहीअसंगनिर्गुणपरमात्मादेव तामायाकरिके अनेकप्रकारकाहोवैहै ॥ तथा आपणेअवयवरूपजेआकाशादिकपंचभूतहैं तथा इंद्रियादिकहैं ॥ तिनोंकरिके याचराचररूपसर्वजगत्कूं व्याप्तकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहअधिकारीपुरुष जिसीकिसीशरीरविषेस्थितहोइके जभी तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरैहैं ॥ तभीही तेअधिकारीपुरुष मोक्षरूपपरमशांतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारप्रकारके शरीरोंविषे एकरूपकरिकेस्थितहै ॥ तथा यासर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहाराहै ॥ तथा अधिकारीजनोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा सर्वबुद्धिआदिकोंकाप्रेरकहै ॥ तथा सर्वदेवताओंकरिके स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ ऐसेअद्वितीयपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूप जाणिकरिके यहअधिकारीपुरुष मोक्षरूपशांतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ इमअधिकारीजनोंकूं शुभबुद्धिकीप्राप्तिकरणेहारा तथा हिरण्यगर्भादिकदेवताओंकूंउत्पन्नकरणेहारा जोपरमात्मादेव हमनें पूर्व तुम्हारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ सोईहीपरमात्मादेव इंद्रादिकसर्व देवताओंकाअधिपतिहै ॥ और जैसे यहमनुष्यादिकशरीर पृथिवीकेआश्रितरहैहैं ॥ तैसे यहभूरादिकलोक जिसपरमात्मादेवकेआश्रि

तरहेहैं ॥ तथा जोपरमात्मादेव दोपादवालेमनुष्यादिकशरीरोंका तथा चारपादवालेअश्वादिकशरीरोंका नियंताईश्वरहे ॥ तथा वृक्षादिक स्थावरप्राणियोंका नियंताईश्वरहे ॥ ऐसेपरमात्मादेवकेप्रसन्नकरणेवासते हमअधिकारीजन घृत यव तिल आदिकहविषकरिके तथा नानाप्रकारकेअन्नकरिके पूजनकरेंहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जबपर्यंत हमअधिकारीजनोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिनहींभई ॥ तबपर्यंतही हमअधिकारीजन शास्त्रउक्तरीतिसें आपणेवर्णआश्रमकेअनुसार ताघृतादिरूपहविषकरिके तापरमात्मादेवकापूजनकरे हैं ॥ और जभी हमअधिकारीजनोंकूं गुरुशास्त्रकीकृपातें तापरमात्मादेवका आपणाआत्मारूपकरिकेसाक्षात्कारहोवे हे ॥ तभी सोपरमात्मादेव हमअधिकारीजीवोंका आत्मास्वरूपहोहोवे हे ॥ यातें ताआत्मज्ञानअवस्थाविषे हमअधिकारीजीव जिसअन्नपानादिकोंकरिके याशरीरकाधारणकरे हैं ॥ सोशरीरकाधारणही तापरमात्मादेवकापूजनहे हेसंन्यासियो ॥ यालोकविषे जोपदार्थ नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके नहीं जान्याजावेहे ॥ किंतु केवलबुद्धिकरिकेही जान्याजावेहे ॥ तापदार्थकानाम सूक्ष्महे ॥ और यहपरमात्मादेवतो ताबुद्धिकरिकेभी ग्रहण कन्याजावेनहीं ॥ यातें यहआत्मादेवसूक्ष्मतेंभी अति सूक्ष्महे ॥ और हेसंन्यासियो ॥ यहआत्मादेव आपणेस्वरूपकेअज्ञानतें पुण्यपाप कर्मोंकूंकरे हे ॥ तापुण्यपापकर्मकेवशतें अन्नद्वारा पिताकेशरीरविषेजावे हे ॥ तापिताकेशरीरतें वीर्यद्वारास्त्रीकेउदरविषेजावे हे ॥ तहां स्त्रीकेरजकेसाथमिलिके सोवीर्य फेनाकार कलिलअवस्थाकूंप्राप्तहोवेहे ॥ और ताकलिलरूपउपाधिविषेस्थितहोइके सोपरमात्मादेव नानाप्रकारकेशरीरोंकूंउत्पन्नकरेंहे ॥ इसप्रकार वटादिकबीजोंविषेस्थितहोइके नानाप्रकारकेवृक्षोंकूंउत्पन्नकरे हे ॥ कैसाहेसोपरमात्मादेव॥ शरीररूपउपाधिकेसंबंधतें नानारूपहुआभी वास्तवतें सर्वभेदतेंरहित एकअद्वितीयरूपहे ॥ तथा स्मरणमात्रकरिके हमअधिकारीजनोंके भयकीनिवृत्तिकरेंहे ॥ याकारणतें सोपरमात्मादेव मंगलरूपहे ॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीयपरमात्माकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेजाने हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोइके सर्वदुःखोंतें रहितहोवे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जोपरमात्मादेव वीर्यादिकबीजोंविषेस्थितहोइके याजगत्कूंउत्पन्नकरेंहे ॥ सोईहीपरमात्मादेव याजगत्कीस्थितिकालविषे काष्ठोंविषेअग्निकीन्याईं तासर्वजगत्केअंतरगुप्तरहिके

तासर्वजगत्कापालनकरैहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं विश्वाधिपति यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और तिसीपरमा त्मादेवविषे योगीजन तथा अंतर्मुखब्राह्मण तथा हिरण्यगर्भादिकदेवता स्थितहोवेहैं ॥ ऐसे परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष सर्वजगत्का उपादानकारणरूपकरिके तथा सर्वांतर्यामीरूपकरिके जानेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही ताज्ञानरूपअसिकरिके प्रमादजन्यकामक्रोधादिकपा शोंकूंछेदनकरेहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे यालोकविषे दधितैंनिकस्याहुआजोघृतहै ॥ सोघृत तादधितैंउत्कृष्टहोवे है ॥ और ताद्रवी भावघृततैंभी घनीभावयुक्तघृत अत्यंतस्वादुहोवेहै ॥ यातैं ताद्रवीभावघृततैं सोघनीभावघृत उत्कृष्टहै ॥ तैसे यास्थूलसूक्ष्मरूपजगत्तैं मायाविशिष्टसगुणब्रह्म उत्कृष्टहोवेहै॥और तासगुणब्रह्मतैंभी निर्गुणशुद्धब्रह्म उत्कृष्टहोवे है॥ऐसेआनंदस्वरूपशुद्धब्रह्मकूंजभीयहअधिकारी पुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेजानैहै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतैं मुक्तहोवे है ॥ हेसंन्यासियो ॥ पूर्वहमनें तुमारेप्रति जोपरमात्मादेव हृदयरूपउपाधिकेसंबंधतैं अंगुष्ठमात्र परिमाणवालाकह्याथा ॥ सोईहीपरमात्मादेव सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ तथा सर्वजगत्काकर्ताहै ॥ तथा मनबुद्धिआदिकोंका साक्षीरूपकरिके तथाप्रेरकरूपकरिके सर्वदाप्रसिद्धहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ ऐसे परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिके जाणेहैं ॥ तेहीअधिकारीपुरुष मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं जभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ब्रह्मआत्माकाअभेदज्ञानहोवे है ॥ तभीही यहसर्वजगत्कीजननीमायारूपतम नाशकूं प्राप्तहोवे है ॥ ताज्ञानअवस्थाविषे दिन रात्रि स्थूल सूक्ष्म इसतैंआदिलेकेसर्वपदार्थ लयभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ ताज्ञानअवस्थाविषे तिन विद्वान्पुरुषोंकूं एकस्वयंज्योतिअक्षरशिवरूपआत्माही प्रकाशमानहोवे है ॥ तिसीअक्षरपरमात्मादेवकूं गायत्रीआदिकमंत्र जगत्काकार णसूर्यरूपकरिकेवर्णनकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ तिसीपरमात्मादेवकेआराधनकरिके हमअधिकारीजीवोंकूं याशुद्धबुद्धिकीप्राप्तिभईहै ॥ जा शुद्धबुद्धिकरिके हमअधिकारीजीवोंनें ता तत्पदार्थरूपपरमात्मादेवकूं साक्षात्कारकऱ्याहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ गुरुकेउपदेशतैंपूर्व यद्यपि हमअधिकारीजनोंकूं साबुद्धिउत्पन्नहोतीभई ॥ तथा साबुद्धि दशोंदिशाविषेभ्रमणकरतीभई ॥ तथापि साबुद्धि याआनंदस्वरूपआत्माकूं

नहींग्रहणकरतीभई ॥ और अभी गुरुकेउपदेशकूंप्राप्तहोइके सो हमारीबुद्धि तापरमात्मादेवकूं सर्वत्रव्यापकरूपकरिकेग्रहणकरे है ॥ हेसं न्यासियो ॥ तापरमात्मादेवका केसास्वरूपहै याप्रकारकीशंका तुमोंनें कदाचित्भी नहींकरणी ॥ काहेतें जैसे यालोकविषे गौकेसमान स्वभाववाला गवयपशुहोवे है ॥ यातें तागवयपशुकेजनावणेवासते गौकूंउपमानकरीताहे ॥ तेसे यालोकविषे जोकोईपदार्थ तापरमात्मा देवकेसमानस्वभाववालाहोवे ॥ तो तापरमात्मादेवकेजनावणेवासते तापदार्थकूंउपमानकरिये ॥ परंतु यालोकविषे तापरमात्मादेवकेस मानस्वभाववाला कोईपदार्थहेनहीं ॥ यातें आत्माकेजनावणेविषे किसीअनात्मपदार्थकूं उपमानरूपतासंभवेनहीं ॥ और सोपरमात्मादेव सर्वअनात्मपदार्थोंतेंअत्यंतप्रियरूपहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं महद्यशः यानामकरिकेकथनकरे है ॥ हेसंन्यासियो ॥ ऐसे आनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकूं कोईभीपुरुष चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिके ग्रहणकरिसकेनहीं ॥ किंतु जिसअधिकारीपुरुषऊपर तारुद्र भगवान्कीकृपाभई है ॥ सोईहीअधिकारीपुरुष सर्ववृत्तियोंसहितमनकानिरोधकरिके ताआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरे है यातें हे संन्यासियो ॥ तारुद्रभगवान्केप्रसन्नकरणेवासते यहअधिकारीपुरुष याप्रकार तारुद्रभगवान्कीप्रार्थनाकरे ॥ हेरुद्रभगवान् ॥ आप जन्म मरणादिकसर्वविकारोंतेंरहितहो ॥ यातें हमअधिकारीजीवोंके कामक्रोधादिकपाशोंकेनिवृत्तकरणेविषे आप समर्थहो ॥ हेभगवन् ॥ जैसे यालोकविषे जीवताहुआकोईजंतु अग्निकेमध्यविषेस्थितहोइके दुःसहदुःखकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे मैं अज्ञानीजीव याशरीररूपअग्निविषे स्थितहुआ नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोताहूं ॥ हेभगवन् ॥ ज्वरादिकव्याधियोंकरिके तथा कामक्रोधादिकआधियोंकरिके उत्पन्नभयेजेअ ध्यात्मिकदुःखहैं॥तथा सिंहसर्पादिकोंकरिके उत्पन्नभयेजेअधिभूतदुःखहैं॥तथा अग्निजलादिकोंकरिके उत्पन्नभयेजेअधिदैवदुःखहैं ॥ याती नप्रकारकेदुःखोंकरिके मैं सर्वदापीडितरहताहूं॥और पुण्यपापकरिके पराधीनताकूंप्राप्तहुआ मैंपशु आपपशुपतिकेअधीनहूं ॥ हेभगवन् ॥ पुण्यपापकर्मकेफलकाप्रदाता जोआपईश्वरहो ॥ ताआपकेसमान यालोकविषे कोईउद्धारकरणेहाराकृपालुहैनहीं ॥ और मेरेसमान यालो कविषे कोईदीनपुरुषनहीं है ॥ यातें देवनें तुमाराहमारायोग्यसंबंधकऱ्याहै॥ हेभगवन् ॥ यहऋगादिकवेद जोकदाचित् प्रमाणरूपहैं॥तथा

सुखकेदेणेहारा शंकरनामादेव जोकदाचित् जीवत्अवस्थाविषे तथा मोक्षअवस्थाविषे परिपूर्णरूपहे ॥ तौ हमअधिकारीजनोंके जन्ममरणादिकदुःखोंकूं आप नाशकरो ॥ हेभगवन् ॥ रुद्रभगवान् शरणागतजीवोंकीरक्षाकरे हे ॥ याप्रकारकेवेदवचनोंतैं हमनैं आपकामहिमा श्रवणकऱ्याहे ॥ याकारणतैं जन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्तिकरणेवासते मैंअनाथ आपकेशरणागतकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यातैं आप हमारेप्रति आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै हमारेसर्वदुःखोंकीनिवृत्तिकरो ॥ शंका ॥ हेशिष्य ॥ तूं आपहीआत्माकाविचारकरिकै जन्ममरणादिकदुःखोंतैं रहितहोव ॥ हमारेअनुग्रहकाक्याप्रयोजनहे ॥ समाधान ॥ हेभगवन् मैंअल्पबुद्धिवालाजीव किसीअर्थकूंभीजाणतानहीं ॥ तो आपकेअनुग्रहतैंविना दुर्विज्ञेयआत्माकूं मैं कैसेजाणोंगा ॥ यातैं बुद्धिमानपुरुषोंविषे हमारीगिणतीनहीं ॥ शंका ॥ हेशिष्य ॥ जोतू किसीभीअर्थकूंनहींजाणता ॥ तौ तूं पाषाणकीन्याईं जडहोवेगा ॥ समाधान हेभगवन् ॥ जैसे सर्पव्याघ्रादिकोंकरिकैयुक्त किसीनिर्जनवनविषे किसी वालककूंएकलाछोडिदीजिये ॥ सोबालक तावनविषे भयकूंप्राप्तहोइकै केवलदुःखकाहीअनुभवकरैहे ॥ तैसे मैंभी यासंसाररूपवनविषे केवलदुःखकूंही अनुभवकरताहूं ॥ इतनैमात्रकरिकैही हमारेविषे चेतनताहै ॥ हेभगवन् यासंसाररूपवनविषे क्षुधापिपासारूपपिशाच हमारेकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ हेभगवन् तासंसाररूपवनविषेभी यहयौवनअवस्थारूपमहान्वनहे ॥ तायौवनरूपवनविषे प्राप्तभयाजोमैंअनाथहूं ॥ तामैंअनाथकूं यहकामदेवरूपसर्प वारंवार दंशकरै हे ॥ कैसाहैसोकामदेवरूपसर्प ॥ अत्यंतविषवालाहै ॥ जाविषके निवृत्तिकरणेहारा आपसमरारिकेध्यानतैंविना दूसराकोईउपायहैनहीं ॥ एकआपकाध्यानही ताविषकेनिवृत्तिकाउपायहे ॥ हेभगवन् ॥ तायौवनरूपवनविषे शब्द स्पर्श रूपरस गंध यहपंचप्रकारकेविषयरूपवृकरहे हैं ॥ तथा स्त्रीरूपीकाकरहे हैं ॥ तेविषयरूपवृक तथा स्त्रीरूपकाक हमारे धर्मविचाररूपशरीरकूं सर्वदाहननकरे हैं ॥ हेभगवन् ॥ तासंसाररूपवनविषे यहक्रोधरूपसिंहरहे हे ॥ ताकीगर्जनाकरिकै हमाराहृदय सर्वदा तपायमानहोवे हे ॥ हेभगवन् यासंसाररूपवनविषे यहलोभरूपतरक्षुरहेहे ॥ डाकनीकेवाहनकानाम तरक्षुहे ॥ ऐसाविचित्रवर्णवाला लोभरूपतरक्षु आपणेदर्शनतैं हमारेनेत्रोंकूं तपायमानकरे हे ॥याकारणतैंही लोभीपुरुषकूंदेखिकै तादातापुरुष आपणेनेत्रोंकूं

तालोभी पुरुषकीतरफतैं हटाइलेवैहैं॥हेभगवन्॥जैसे विंध्याचलादिकपर्वत सूर्यकेप्रकाशकूं आच्छादनकरे हैं ॥ तैसे यासंसाररूपवनविषे आत्मारूपसूर्यकेप्रकाशकूं आच्छादनकरणेहारा यहअहंकाररूप महान्पर्वतरहेहै ॥ हेभगवन् ॥ इसतैंआदिलेकेअसंख्यातदुःख हमारेकूं दिनदिनविषेप्राप्तहोवे हैं ॥ और आपकास्वभाव अत्यंतदयालुहै ॥ यातैं तिनहमारेदुःखोंके श्रवणकरणेविषेभी आप समर्थनहींहो ॥ याकारणतैं आपकेसमीप मैंआपणेबहुतदुःखोंकावर्णन नहींकरता ॥ और हेरुद्रभगवान् तत्पुरुष अघोर सद्योजात वामदेव ईशान यह जोआपकेपंचमुखहैं ॥ तेपंचमुख क्रमतैं पूर्वादिकचारि दिशाओंविषे तथा मध्यविषे स्थितहैं ॥ तिनमुखोंविषेभी दक्षिणकेतरफका जो आपका अघोरनामामुखहै ॥ सोअघोरनामामुख अधिकारीजनोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषे अत्यंतकुशलहै ॥ ऐसेगुरुरूपअघोर नामामुखकरिके हमअधिकारीजनोंकूं यासंसारदुःखोंतैं रक्षाकरो ॥ तथा हमअधिकारीजनोंकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिके सर्वशोकोंतैंरहितकरो ॥ तहांश्रुति ॥ तरतिशोकमात्मवित् ॥ अर्थयह ॥ आत्माकूंजानणेहारापुरुष सर्वशोकोंतैंरहितहोवेहै ॥ हेभगवन् ॥ ऐसासर्वशोकों कीनिवृत्तिकरणेहाराआत्मज्ञान हमअधिकारीजीवोंकूं जबपर्यंत नहींप्राप्तहोवे॥तबपर्यंत जैसे अन्यपापीजीवोंके पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकूं आप मृत्युरूपहोइके हननकरोहो ॥ तैसे हमअधिकारीजनोंके पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकूं आप मृत्युरूपहोइके मतहननकरो ॥ तथा हमअधिकारी जनोंकि पुत्रपौत्रादिकसंबंधियोंविषे तथा गोअश्वादिकपशुओंविषे किसीरोगादिकउपद्रवोंकी उत्पत्तिमतकरो ॥ हेभगवन् ॥ आप साक्षात् मोक्षकीप्राप्तिकरणेहारेहो ॥ यातैं आपकेआगे पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकेरक्षाकरणेकोप्रार्थनाकरणा यद्यपि हमारेकूंउचितनहीं है ॥ तथापि तिनपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेवियोगतैं हम अधिकारीजनोंकेचित्तविषे क्षोभकीप्राप्तिहोवे है॥ताक्षोभवालेचित्तविषे आपकाध्यानहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं हमारेमृत्युतैंपूर्व हमारेप्रियपुत्रोंकूं तथा हमारेप्रियभ्राताओंकूं तथा हमारेअप्रियोंकूं तथा हमारेऊपर उपकारकरणे हारेराजादिकोंकूं आप मृत्युरूपहोइकेहननमतकरो ॥ किंतु तिनसंपूर्णप्रियपदार्थोंकूं आप दीर्घआयुषवालाकरो ॥ हेभगवन् ॥ यद्यपि आप स्वभावतैं दयालुहो ॥ यातैं हमअधिकारीजनोंकेपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकूं आप कदाचित्भी हननकरतेनहीं ॥ उलटा तिनपुत्रा

दिकप्रियपदार्थोंकूं आप दीर्घआयुषकीप्राप्तिकरतेहो ॥ यातें आपकेआगे तिनपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेरक्षाकोप्रार्थनाकरणो हमअधिकारियों कूं उचितनहीं है ॥ तथापि ताआपकेदयालुस्वभावकाही हम अनुवादकरतेहैं ॥ पूर्वसिद्धअर्थका पुनःकथनकरणा याकानाम अनुवादहे ॥ हेभगवन् ॥ जिसधनधान्यादिकपदार्थोंकरिकेयुक्तहुए हमअधिकारीजन सुखपूर्वक आपकाआराधनकरैं ॥ तिसधनधान्यादिकपदार्थोंकरिकै युक्त हमअधिकारीजनोंकूं आपकरो ॥हेसंन्यासियो॥ इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष जभी ताRुद्रभगवान्कोप्रार्थनाकरे हैं ॥ तभी सोरुद्रभगवान् तिनअधिकारीजनोंऊपर प्रसन्नहोइके तिनअधिकारियोंकेप्रति भोग मोक्ष यादोनोंकोप्राप्तिकरे है ॥ यातें जिनअधिकारीजनोंकूं भोग मोक्ष दोनोंकेप्राप्तिकीइच्छाहोवे ॥ तिनअधिकारीजनोंनें तारुद्रभगवान्कोप्रार्थना अवश्यकरणो ॥ हेसंन्यासियो॥ शतशोपिपर्थवक्तव्यं ॥ अर्थयह ॥ जोपदार्थ अधिकारीजनोंकेहितकासाधनहोवे ॥ तापदार्थकूं अनेकप्रकारकरिके शास्त्रवेत्तापुरुषनें कथनकरणा ॥ याकेविषे कोईभीपुनरुक्तिदोष होवेनहीं ॥ याप्रकारकानियम शास्त्रविषे कथनकर्‍याहे ॥ यातें अधिकारीजनोंकेप्रति भोगमोक्षको प्राप्तिकरणेहारा जोपरमात्मादेवहे ॥ तापरमात्मादेवकाउपदेश मैंश्वेताश्वतरमुनि पुनःतुमारेप्रतिकरताहूं ॥ तुम सावधानहोइके श्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षोंविषे पत्रोंकरिके आच्छादित आम्रादिकफल गुह्यरहेहैं ॥ तैसे यावेदरूपीवृक्षविषे अविद्या विद्या यहदोनों गुह्यहोइकेरहे हैं ॥ तहां अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम अविद्याहे ॥ और ब्रह्मज्ञानकानाम विद्याहे ॥ और ताकर्मरूपअविद्या याजीवोंकूं स्वर्गादिरूपअनित्यफलकीप्राप्तिकरे है ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताकर्मरूपअविद्याकूं क्षर यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और ताब्रह्मज्ञानरूपविद्या य. अधिकारीजीवोंकूं मोक्षरूपनित्यसुखकीप्राप्तिकरे है ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताब्रह्मज्ञानरूपविद्याकूं अक्षर अमृत यानामकरिकेकथनकरेहै ॥ तेविद्याअविद्यादोनों मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुहै ॥ तहां ब्रह्मज्ञानरूपविद्यातो साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुहे ॥ और कर्मरूपअविद्यातें फलकीइच्छातैंरहितकरीहुई चित्तकीशुद्धिद्वारा मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुहोवे है ॥ तिनविद्याअविद्या दोनोंके प्रवृत्तकरणेहारा तथा तिनदोनों के फलकेदेणेहारा सोरुद्रभगवान्ही है ॥ हेसंन्यासियो ॥ ते विद्याअविद्यादोनों याजीवोंकेप्रति आपणेआपणेफलकूंनदेकरिके नाशकूंप्राप्त

होवैनहीं ॥ किंतु तेविद्याअविद्यादोनों याजीवोंकेप्रति आपणेआपणेफलकूंदेकरिके पश्चात् नाशकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तिनविद्याअविद्याकूं अनंत यानामकरिकेकथनकरैहे ॥ हेसंन्यासियो ॥ साकर्मरूपअविद्या तथा ब्रह्मज्ञानरूपविद्या यहदोनों शिवभगवान् केप्रसादतेंही जीवोंकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ दूसरेकिसीउपायकरिके प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें तिनविद्याअविद्यादोनोंका सोरुद्रभगवानही ईश्वरहे ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारप्रकारकेशरीरोंकीउत्पत्तिकेकारण जेबीजहैं ॥ तिनसर्वबीजोंकूंआश्रयणकरिके जोपरमात्मादेव स्थितहोवेहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव आकाशादिकसर्वभूतोंकूं तथा सर्वबीजोंकूं आपणेतेंउत्पन्नकरैहे ॥ और विचित्रवर्णवालाहोणेतें श्रुतिविषे कपिलपदकरिके कथनकऱ्याजोहिरण्यगर्भ हे॥ तथा सर्वपदार्थोंकाद्रष्टाहोणेतें श्रुतिविषे ऋषिपदकरिके कथनकऱ्या जोहिरण्यगर्भहे ॥ जोहिरण्यगर्भ यास्थूलजगत्तें पूर्वउत्पन्नभयाहे ॥ ऐसेहिरण्यगर्भकेप्रति जोपरमात्मादेव अर्थसहितचारवेदोंकूंदेके नानाप्रकारकेज्ञानोंकरिके भरणकरैहे ॥ तथा जोपरमात्मादेव ताहिरण्यगर्भकूं यास्थूलजगत्की उत्पत्तिकरणेविषेसमर्थदेखे हे ॥ऐसापरमात्मादेवहीतत्त्वमसि यावाक्यविषेस्थित तत्पदकाअर्थरूपहे ॥ हेसंन्यासियो ॥ सोपरमात्मादेव प्रथम जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारप्रकारकेयोनियोंकूंउत्पन्नकरैहे ॥ तिनचारप्रकारकेयोनियोंविषेभी एकएकयोनिकूं एकविंशतिलक्षप्रकारका करे हे ॥ तेसंपूर्णयोनियांमिलिके चौरासीलक्षयोनियांहोवे हैं ॥ तिनचौरासीलक्षयोनियोंविषेभी एकएकयोनिकूं अवांतरअनेकभेदकरिके जालकीन्याई अनेक प्रकारकाकरैहे ॥ इसप्रकार सृष्टिकालविषे सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिके सोपरमात्मादेव प्रलयकालविषे तासंपूर्णजगत्कूं आपणेमायारूपक्षेत्र विषे लयकरैहे ॥ तिसतेंअनंतरसृष्टिकालविषे सोपरमात्मादेव पुनःतामायारूपक्षेत्रतें पूर्वकीन्याई नानाप्रकारकेजगत्कूंउत्पन्नकरे हे ॥ तथा तिसजगत्केपालनकरणेहारे दिक्पालोंकूंउत्पन्नकरे हे ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिके सोपरमात्मादेव सर्वजगत्काअधिपतिहोवेहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे वृषभ भारकूंउठावे हे ॥ तैसे यहपरमात्मादेव सर्वविश्वकेभारकूंधारणकरे हे ॥ तथा सोपरमात्मादेव सर्वजगत्केउपकारवासते सूर्यरूपहोइके पूर्वादिकदशदिशाओंकूं प्रकाशकरे हे ॥ और सोपरमात्मादेवही अनेकशरीरोंकूंउत्पन्नकरिके

तिनशरीरोंकेअनेकस्वभावोंकूं आपणेविषेआरोपणकरिके स्थितहोवै है ॥ और पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकरणेहारे जेस्त्रीपुरुषोंकेस्वभावहैं ॥ तिनस्वभावोंकूंधारणकरिके सोपरमात्मादेवही तिनोंकूं फलकीप्राप्तिकरै है ॥ और सोपरमात्मादेवही नानायोनियोंकेशरीरोंकूं उत्तरउत्तरकालविषे परिणामकीप्राप्तिकरै है ॥ जैसे कभीतो यहशरीर बाल्यअवस्थावालाहोवै है और कभी यहशरीर युवाअवस्थावालाहोवै है॥ और कभी यहशरीर वृद्धअवस्थावालाहोवै है ॥ इसप्रकार सोपरमात्मादेव याशरीरोंकूं अनेकप्रकारकेपरिणामोंकीप्राप्तिकरै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहपरमात्मादेव सर्वपदार्थोंकाअधिष्ठानहै याअर्थविषे हम बहुतक्याकहैं ॥ किंतु नानाप्रकारकेस्वभाववालेयहसंपूर्णशरीर जिसब्रह्मांडकेगर्भविषेरहे हैं ॥ ताब्रह्मांडकूंभी यहपरमात्मादेवही धारणकरिरह्याहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही तिसब्रह्मांडवर्त्तीजीवोंकूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार यासर्वजगत्काकारणरूप जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ तिसअद्वितीयब्रह्मकूं मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्केअनुग्रहतैं साक्षात्कारकरताहूं ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ उपनिषद्रूपवेदकरिके प्रतिपादितहै ॥ तथा सनातनहै ॥ तथानानाप्रकारकेप्रवृत्तिरूपज्ञानोंविषे स्वप्रकाशरूपकरिकेस्थितहै ॥ तथा शास्त्रविचारतैंरहितमूढपुरुषोंकरिके दुर्विज्ञेयहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्केप्रसादतैं तत्पदार्थरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेजानताहूं ॥ तैसे पूर्व हिरण्यगर्भभगवान् तथा इंद्रादिकदेवता तथा सनकादिकऋषि तारुद्रभगवान्केप्रसादतैं तास्वयंज्योतिसर्वज्ञपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपकरिके जानतेभयेहैं ॥ तैसे इदानींकालविषेभी जोकोईबुद्धिमान्पुरुष तारुद्रभगवान्का आराधनकरेगा ॥ सोबुद्धिमान्पुरुषभी ताअद्वितीयब्रह्मकूं अवश्यजाणेगा ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार जेजेहिरण्यगर्भादिकदेवता तथा जेजेऋषि तथा जेजेमनुष्य ताअद्वितीय ब्रह्मकूंजानतेभयेहैं ॥ तेसंपूर्णविद्वान् ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइके मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ इतनेंकरिके आत्माकूं तत्पदार्थईश्वररूपकरिकेवर्णनकऱ्या अब तिसीआत्माकूं त्वंपदार्थजीवरूपकरिके निरूपणकरैं हैं ॥ हे संन्यासियो ॥ जैसे स्वभावतैं उष्णस्पर्शतैंरहित तथा गंधतैंरहित जोजलहै ॥ सोजल जभी अग्निकेसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोजल ताअग्निकेउष्णस्पर्शकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सोजल जभी

पुष्पादिकोंकेसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोजल तापुष्पादिकोंकेगंधगुणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वधर्मोंतैंरहित जोनिर्गुणपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव जभी आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइके अंतःकरणादिकउपाधियोंके तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोवै है तभी सोआत्मादेव तिनअंतःकरणादिकउपाधियोंके कामक्रोधादिकधर्मोंकूं तथा सत्त्व रज तम यातीनगुणोंकूं आपणेविषेमानेहै ॥ तिसतैं अनंतर यहआत्मादेव रागपूर्वक पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरे है ॥ और तापुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा सुखदुःखरूपफलकूं तथा सुखदुःखकेसाधनोंकूं उत्पन्नकरिके यहआत्मादेव तिसीअंतःकरणादिकउपाधियोंकेतादात्म्यअध्यासकरिके तिससुखदुःखरूपफलकूंभोगे है ॥ तिनशुभअशुभकर्मोंविषेभी उपासनारूपमानसकर्मकरिके यहजीवात्मा देवयाननामाउत्तममार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवे है ॥ और अग्निहोत्रादिकपुण्यकर्मोंकरिके यहजीवात्मा पितृयाणनामामध्यममार्गद्वारा स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकरिके यहजीवात्मा तृतीयस्थाननामाअधममार्गद्वारा कीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा निरंतर संसारविषेभ्रमणकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहआत्मादेव यद्यपि वास्तवतैं देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित सर्वत्रपरिपूर्णरूपहै ॥ तथापि अंगुष्ठमात्रहृदयरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव अंगुष्ठमात्रपरिमाणवालाहोवे है ॥ तथा सोआत्मादेव अहंकारकरिके तथा मनकेसंकल्पोंकरिके युक्तहोवैहै ॥ तथा बुद्धिके परिणामवृत्तिरूपगुणोंकरिकेयुक्तहोवैहै ॥ कैसेहैंतेवृत्तिरूपगुण॥मायाविशिष्टआत्माकरिकेरचितहैं॥यातैं आत्माकेभी तेगुणहैं ॥ तथा स्वप्नकेसमान मिथ्यारूपहैं॥ऐसेबुद्धिकेवृत्तिरूपगुणोंकूं प्रकाशकरणेहारा सोआत्मादेव सूर्यकीन्याईं स्वयंज्योतिरूपहै॥हेसंन्यासियो॥यहआत्मादेव यद्यपि वास्तवतैंमहान्है॥तथापि अल्पपरिमाणवालीबुद्धिविषेस्थितहोइके यहआत्मादेव आराकेअग्रभागसमान अल्पपरिमाणवालाहोवैहै॥तहां चर्मकेभेदनकरणेहारी जाचर्मकारकीसूईहै ताकानाम आराहै॥ हेसंन्यासियो॥ इसप्रकार बुद्धिरूपउपाधिके तादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव जीवभावकूंप्राप्तहोइके यद्यपि अविवेकीपुरुषोंकीदृष्टिविषे निकृष्टभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथापि विवेकीमहात्मापुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वतैंउत्कृष्टरूपकरिकेहीदेखैहैं ॥हेसंन्यासियो ताबुद्धिविषेस्थितहोइके यहजीवात्मा जिससूक्ष्मताकूं

प्राप्तहोवे है॥तासूक्ष्मताविषे कोईकसूक्ष्मदर्शीपुरुषयाप्रकारकादृष्टांत कथनकरै हैं ॥ एककेशकाजोअग्रभागहै॥ताके एकशत १००विभाग
करिये ॥ ताशतविभागोंविषे एकविभागकूं पुनःएकशत१००विभागकरिये॥सोएककेशकाविभाग जिससूक्ष्मपरिमाणवालाहोवै है ॥ तिसी
सूक्ष्मपरिमाणवाला यहजीवात्माहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ याजीवात्माकूं जबपर्यंत आपणेवास्तवस्वरूपकाअज्ञानहोवै है ॥ तबपर्यंतही
यहजीवात्मा बुद्धिकेतादात्म्यसंबंधतैं याप्रकारकीअल्पताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जभी यहजीवात्मा ताश्रुद्धभगवान्केप्रसादतैं आपणेकूंब्रह्म
रूपकरिकेजानै है ॥ तभी कार्यसहितअज्ञानकेनिवृत्तहुए यहजीवात्मा परिपूर्णब्रह्मभावकूंप्राप्तहो वे है ॥ हे संन्यासियो ॥ यहआत्मादेव
यद्यपि वास्तवतैं स्त्री पुरुष नपुंसक भावतैंरहितहै ॥ तथापि आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं यहआत्मादेव जिसजिसशरीरकूं तादात्म्यसंबंधक
रिकेग्रहणकरैहै ॥ तिसतिसशरीररूपहोइके प्रतीतहोवैहै ॥ जैसे नटपुरुष स्त्रीआदिकोंकेवेशकूंधारणकरिके स्त्रीआदिकरूपकरिकेप्रतीत
होवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ शब्दस्पर्शादिकविषयोंकरिकेजन्य जोबाह्यभोगहै ॥ तथा मनकेसंकल्पकरिकेजन्य जोअंतरभोगहै ॥ तथा सुख
केप्राप्तिकीजाइच्छाहै ॥ तथा नानाप्रकारकेअन्नजलकी जाप्राप्तिहै ॥ इत्यादिकअनेकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिके यद्यपि यहदेहादिकही बुद्धिकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ तथापि तिनदेहादिकोंकेतादात्म्यअध्यासतैं यहआत्मादेव ताबुद्धिकूं आपणेविषेमानैहै ॥ तथा तिनदेहादिकोंकीवासनाक
रिके यहआत्मादेव अनेकजन्मोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ याजीवोंकूं पूर्वलीवासनाकेअनुसार जोजन्ममरणवृद्धिआदिकप्राप्तहोवैहैं ॥
ताकेविषे पुण्यपापरूपकर्मभी निमित्तकारणहै ॥ तापुण्यपापकर्म केअनुसार यहजीवात्मा सुख दुःखकीप्राप्तिवासतै यासंसारविषे नानाप्र
कारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ कभीतो यहजीवात्मा नपुंसकशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कभी स्त्रीशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कभी पुरुषशरी
रकूंप्राप्तहोवै है और कभी स्वर्गादिकलोकोंविषे देवताशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥इसप्रकार पुण्यपापकर्म केवशतैं यहजीवात्मा अनेकजन्मोंवि
षेभ्रमणकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे यालोकविषे नटपुरुष अनेकप्रकारकेरूपोंकूंधारणकरे है॥तैसे यहआत्मादेवभी बुद्धिआदिकोंकेसाथ
तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके तापुण्यपापकेवशतैं कभी हस्ती आदिकस्थूलशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और कभी चींटीआदिकसूक्ष्मशरीरों

कूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ याजीवोंकूं निकृष्टभावकीप्राप्तिकरणेहारा जोआपणेस्वरूपकाअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकूं जभी यहजीवात्मा आपणेविषे आरोपणकरैहै ॥ तभी यहजीवात्मा श्रोत्रादिकएकादशइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके नानाप्रकारकेशरीरों कूंग्रहणकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ याआनंदस्वरूप आत्मादेवकूं वास्तवतैंजन्ममरणादिकोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं पूर्वहमनैं कलिलादिकबीजों विषेस्थित जिसपरमात्मादेवका कथनकऱ्याथा ॥ सो तत्पदकाअर्थरूप परमात्मादेव यात्वंपदकेअर्थरूपआत्मातैं भिन्ननहीं है ॥ किंतु यहजीवात्मा ब्रह्मरूपहीहै ॥ ऐसे आत्मादेवकेज्ञानतैं यहअधिकारीजन कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतैंमुक्तहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जोआत्मादेव पूर्वइंद्रनैं प्रतर्दनराजाकेप्रति प्राणप्रज्ञारूपकरिकेकथनकऱ्याथा ॥ सोआत्मादेव याअधिकारीजीवोंकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार केअभेदज्ञानतैंही प्राप्त होवै है ॥ याअभेदज्ञानतैंविना अन्यकिसीउपायकरिके सोआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ प्राण १ श्रद्धा २ आकाश ३ वायु ४ तेज ५ जल ६ पृथ्वी ७ श्रोत्रादिकदशइंद्रिय ८ मन ९ अन्न १० वीर्य ११ तप १२ मंत्र १३ यज्ञादिककर्म १४ लोक १५ नाम १६ याषोडशकलावोंकूं सोपरमात्मादेवही सृष्टिकेआदिकालविषेउत्पन्नकरै है ॥ तथा यासर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणभी सोपरमात्मादेवहीहै ॥ और यहस्वयंज्योतिपरमात्मादेव सर्वमंगलोंकाभीमंगलरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शिव यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ ऐसेअद्वितीयपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरै हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीररूपबंधनकापरित्यागकरिके मोक्षकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यापूर्वग्रंथविषे तापरमात्मादेवकूं सर्वजगत्काकारणरूपकरिके हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ अब वादियोंकेमतखंडनपूर्वक तिसीपरमात्मादेवकाउपदेश मैंश्वेताश्वतरनामामुनि तुमारेप्रति करताहूं ॥ तुम सावधानहोइकेश्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो ॥ केईकबुद्धिमानपुरुष काल स्वभाव नियती यहच्छाभूत प्रकृति पुरुष इनोंकूंही जगत्काकारणकहै हैं ॥ तिनवादियोंकेमतका विस्तारतैंनिरूपण पूर्वकहिआयेहैं ॥ परंतु तेकालादिकोंकूंकारणमानणेहारे वादी वेदभगवान्केयथार्थतात्पर्यकूं जाणि

सकतेनहीं ॥ याकारणतेंही मोहकूंप्रीतिहोइके तेवादी याजगत्केकारणविषे नानाप्रकारकांविवादकरे हैं ॥ जैसे जन्मकेअंधपुरुष दु ग्धादिकोंकेरूपविषे विवादकरे हैं ॥ तेसे तेवादीभी परस्परविवादकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ तिनवादियोंकेवचन प्रमाणतें तथायुक्तितें रहितहैं ॥ याकारणतें वेदकेयथार्थतात्पर्यकूंजानणेहारेबुद्धिमान्पुरुषों नें तिनवादियोंकेवचन कदाचित्भी नहींग्रहणकरणे ॥ अब तिनवादियोंकेमतविषे प्रमाणकाअभाव निरूपणकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ कालस्वभावादिक जगत्केकारणहैं याअर्थविषे कोई वेद कावचनरूपशब्दप्रमाणतो हेनहीं ॥ और सोसर्वजगत्काकारण नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके ग्रहणकऱ्याजावेनहीं ॥ याकारणतें ताजग त्केकारणविषे लोकोंकाप्रत्यक्षप्रमाणभी संभवेनहीं ॥ और प्रत्यक्षप्रमाणकूंआश्रयणकरिकेहीं अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवे हे ॥ यातें ताप्रत्यक्षप्रमाणकेअभावहुए ताकारणविषे अनुमानप्रमाणभीसंभवेनहीं ॥ यातें तिनवादियोंकेमतप्रमाणतें रहितहैं ॥ अब तिनवादियोंकेमतविषे युक्तियोंकाअभाव निरूपणकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ तेवादी जिसकालस्वभावादिकोंकूंकारणमाने हैं ॥ तेकालस्व भावादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ याकारणतें चेतनआत्मातेंविना स्वतंत्र तिनकालादिकोंविषे कारणरूपतासंभवेनहीं ॥ किंवा ॥ यालोकवि षे जोजोपदार्थ जडहोवे हे ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहीहोवे हे॥जैसे घटपटादिकपदार्थ जडरूपहैं यातेंकार्यरूपभीहे ॥ तेसे यहकालस्वभावा दिककारणभी जडरूपहैं यातें कार्यरूपभीअवश्यहोवेंगे॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूप होवेहे ॥सोसोपदार्थ किसीकारणकरिके जन्य अवश्यहोवेहे ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ कार्यरूपहोणेतें मृत्तिकातंतुआदिककारणोंकरिकेजन्यहोवेहैं ॥ तेसे तिनकालस्वभावादिक कार्योंकाभी कोईदूसराकारण कल्पनाकरणाहोवेगा ॥ यातें तिनकालादिकोंकेकारणतेंहो यासर्वजगत्कीउत्पत्तिसंभवहोइसकेहे ॥ तिस कार्यकारणकेमध्यविषे कालादिकोंकूंजगत्काकारणमानणा निष्फलहे ॥ यातें तिनवादियोंकेमत युक्तितैंभीरहितहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ वेदरूपसूर्यकेविद्यमानहुएभी तिनवादियोंकूं याप्रकारकामोह किसवासतेंहोवे हे ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो याजगत्केकारणविषे तिन वादियोंका जोनानाप्रकारकाविवाद देखणेविषेआवेहे ॥ सोकोईआश्चर्यरूपनहीं हे ॥ काहेतें जिसपरमात्मादेवकीमायाशक्ति यासंसाररूपच

कर्कूंभ्रमणकरावे है ॥ सा अद्भुतप्रभाववालीमायाशक्ति तिनवादियोंकूंभी मोहकीप्राप्तिकरे है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे वायु आकाशविषे तूलकूंभ्रमणकरावे है ॥ तैसे यहपरमात्मादेव आपणेमायाशक्तिकरिकै बुद्धिमानपुरुषोंकेभी बुद्धिकूं भ्रमणकरावे है ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जिसज्ञानस्वरूपपरमात्मादेवकरिकै यहसंपूर्णजगत्व्याप्तहै ॥ और जोपरमात्मादेव कालकाभीकालहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव सत्य काम सत्यसंकल्प इत्यादिकगुणोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव आपणेस्वप्रकाशज्ञानकरिकै सर्वजगत्कूंजाणे है ॥ तथा जोपर मात्मादेव याजीवोंकेप्रति शुभअशुभकर्मका सुखदुःखरूपफलदेवे है ॥ तथा जोपरमात्मादेव आकाश वायु तेज जल पृथ्वी यापंचभूत रूपकरिकै विवर्त्तभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ तहां आपणेस्वरूपका न परित्यागकरिकै जोअन्यरूपतैंप्रतीतिहै याकानाम विवर्तहै ॥ जैसे रज्जु आपणेवास्तवस्वरूपका नपरित्यागकरिकै सर्पादिकरूपतैं प्रतीतहोवेहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी आपणेवास्तवस्वरूपका नपरित्याग करिकै आकाशादिकरूपकरिकैप्रतीतहोवे है ॥ ऐसापरमात्मादेव मुमुक्षुजनोंनैं सर्वदाचिंतनकरणेयोग्यहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जिसपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवे ॥ सोअधिकारीपुरुष प्रथम फलकीइच्छातैंरहितहोइकै यज्ञादिककर्मोंकरिकै आपणेअंतःकरणकूंशुद्धकरै ॥ ता अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष मनसहितनेत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारतैंनिवृत्तकरे ॥ ताइंद्रियोंकेनिरोधतैंअनं तर सोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंयाआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरे ॥ कैसाहैयहआत्मादेव ॥ अविद्याएकतैंरहितहै ॥ त था पुण्यपाप यादोनोंकर्मों तैंरहितहै ॥ तथा सत्त्व रज तम यातीनगुणोंतैंरहितहै ॥ तथा आकाशादिकपंचभूत अव्यक्त बुद्धि अहंकार या अष्टों तैंरहितहै ॥ अथवा ॥ पंचमअध्यायविषे कथनकरेजे इंद्रियरूपअष्टग्रह तथा विषयरूपअष्टअतिग्रह तिनोंतैंरहितहै ॥ तथा कालतैं रहितहै ॥ तथा बुद्धिकेवृत्तिरूपगुणोंतैंरहितहै ॥ ऐसेआत्मादेवकूं तेशुद्धचित्तवालेअधिकारीजन साक्षात्कारकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्र कार वास्तवतैंसर्वधर्मोंतैंरहितहुआभी यहआत्मादेव सत्त्व रज तम यातीनगुणोंकेअभिमानकरिकै पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरे है ॥ तथा सुख दुःखकीप्राप्तिवासते यहआत्मादेव अंतरपदार्थोंकूं तथा बाह्यपदार्थोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषेजोडे है ॥ और सोईहीआत्मादेव जभी आ

पणेवास्तवस्वरूपविषे तिनसर्वपदार्थोंकेअभावकूंनिश्चयकरे है ॥ तभी ताआत्मज्ञानरूपअग्नि करिकै तिनसर्वकर्मोंकूंक्षयकरे है॥तिनकर्मोंके क्षयहुए यहविद्वान्पुरुष तिनसर्वअनात्मपदार्थोंतैंभिन्नरूपकरिकै आपणेब्रह्मस्वरूपकूंप्राप्तहोवैहै॥हेसंन्यासियो॥जोमायाकाआश्रयरूप परमात्मादेव याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व कारणरूपहोइकेस्थितहोवै है ॥ तथा आपणेचिदाभासकेसंबंधकरिकै कार्यसहितअविद्याकूं चेतनकीन्याई करे है ॥ तथा जिसपरमात्मादेवकूं महात्मापुरुष तीनकालोंतैंरहित तथा प्राणादिकषोडशकलावोंतैंरहित शुद्धरूपकरिकेदेखैहैं ॥ तथा जोपरमात्मादेव सर्वजगत्काआत्मारूपहै॥तथा जोपरमात्मादेव इंद्रादिकदेवतावोंकरिकै स्तुतिकरणेयोग्यहैतथा सर्वप्राणियोंकेचित्तविषेस्थित है ऐसेपरमात्मादेवकूं प्रथम उपासनाकरिकै यहअधिकारीजन सर्वविघ्नोंतैंरहितहोवै है॥तथा तागुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइके यहअधिकारीजन ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जोपरमात्मादेवयासंसाररूपवृक्षतैं तथा कालतैं तथाअविद्यातैं परेस्थित है ॥ तथा जिसपरमात्मादेवतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ तथा जोपरमात्मादेव स्मरणमात्रकरिकै याजीवोंकूं धर्मकीप्राप्तिकरे है ॥ तथा पापकीनिवृत्तिकरैहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव ऐश्वर्य धर्म यश श्रीज्ञान वैराग्य याषट्भगोंकाईश्वरहै ॥ अथवा जोपरमात्मादेव याजगत्कीउत्पत्ति स्थिति जीवोंकापरलोकविषेगमन तथापरलोकतैंआगमन विद्या अविद्या याषट्भगोंकाईश्वरहै ॥ कार्यकेकरणेविषे तथा नकरणेविषे तथा अन्यथाकरणेविषे जोसमर्थहोवै ॥ ताकानामईश्वरहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव याजीवोंकेपुण्यपापकर्मोंकास्वामी है ॥ तथा जोपरमात्मादेव जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषे जाकानिवासहै ॥ तथा स्वयंज्योतिअद्वितीयरूपहै ॥ तथा सर्वविश्वकाईश्वरहै ॥ तथा सूर्यादिकसर्वप्रकाशोंकाआश्रयरूपहै ॥ ऐसे परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूप करिकै साक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जोपरमात्मादेव ब्रह्मादिकईश्वरोंकाभीईश्वरहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव इंद्रादिकदेवतावोंकाभीदेवताहै॥तथा जोपरमात्मादेव मरीचिआदिकप्रजापतियोंकाभीपतिहै॥ तथा जोपरमात्मादेव भूरादिकचतुर्दशलोकोंकूं आपणीआज्ञाविषेचलावणेहाराहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं हमअधिकारीजन केवल वेदकेवचनोंतैंजानैहैं ॥ शंका ॥

हेभगवन् ताअद्वितीयआत्मादेवकूं वेदकेवचन किसप्रकारबोधनकरे हैं ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ तापरमात्मादेवका यहस्थूलप्रपंच रूपकार्यभीकोईनहीं॥तथा तापरमात्मादेवका नेत्रादिकइंद्रिययुक्तसूक्ष्मशरीररूपकारणभोकोई है नहीं॥और यालोकविषे तापरमात्मादेव केसमान कोईभीपदार्थहेनहीं ॥ जभी तापरमात्मादेवकेसमानभी कोईपदार्थनहींभया॥तभी तापरमात्मादेवतेंअधिक कौनपदार्थहोवेगा॥ और हेसंन्यासियो ॥ तापरमात्मादेवकी एकमायाशक्ति सर्वत्रप्रसिद्धहे ॥ सामायाभी प्रथम ज्ञानशक्ति क्रियाशक्तिकेभेदतें दोप्रकारकीहो वे हे ॥ तहां साज्ञानशक्ति प्रमाणसंशयादिकोंकेभेदकरिके अनेकप्रकारकीहोवे हे ॥ इसीप्रकार साक्रियाशक्तिभी बलवीर्यादिकोंकेभेदक रिके अनेकप्रकारकीहोवे हे ॥ हेसंन्यासियो ॥ जेसे यालोकविषे पिता आपणेपुत्रादिकोंकापालनकरे हे ॥ याकारणतें सोपिता तिनपुत्रा दिकोंका पतिहे ॥ और यालोकविषे महाराजा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र याचारिवर्णोंकूं आपणेआपणेधर्ममर्यादाविषेचलावे हे ॥ याकारणतें सोमहाराजा तिनचारिवर्णोंका नियंताहे॥और यालोकविषे पर्वतादिकोंमें धूमकूंदेखिके यालोकोंकूं अग्निकाज्ञानहोवे हे॥याका रणतें सोधूम अग्निकेजनावणेहारालिंगहोवे हे॥तैसे यापरमात्मादेवका कोईपतिहेनहीं ॥ तथा कोईनियंताहेनहीं तथा कोई लिंग हे नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सोपरमात्मादेव अंतर्यामीरूपकरिके सर्वजगत्कापालनकरे हे ॥ याकारणतें तापरमात्मादेवका कोईपतिहेनहीं॥और सोपर मात्मादेव ब्रह्मादिकदेवतावोंकूंभी आपणीआज्ञाविषेचलावे हे॥याकारणतें तापरमात्मादेवका कोईनियंताभीनहींहे ॥ और सोपरमात्मादेव असंगनिर्गुणहे॥याकारणतें तापरमात्मादेवका कोईजनावणेहारालिंगभीनहीं हे॥हेसंन्यासियो ॥ सोपरमात्मादेव सर्वजगत्काकारणहे॥तथा सो परमात्मादेव नेत्रादिकइंद्रियोंके सूर्यादिकदेवतावोंकाभी नियंताईश्वरहे॥ याकारणतें तापरमात्मादेवका कोईजनकहेनहीं॥तथा तापर मात्मादेवका कोईनियंताईश्वरभीनहींहे ॥ हेसंन्यासियो ॥ जेसे तंतुनाभनामाजंतु आपणेतंतुवोंकरिके गृहकूंव्यापतकरे हे ॥ तेसे जोपरमात्मादेव मायाजन्यपंचभूतरूपतंतुवोंकरिके अस्मदादिकजीवोंकूंव्यापतकरिके स्थितहुआहे ॥ ऐसास्वयंज्योतिअद्वितीय परमात्मादेव हमअधिकारीजनोंकेचित्तविषे आपणेनिर्गुणस्वरूपकाप्रकाशकरे ॥ तात्पर्ययह ॥ हमारेचित्तकीवृत्तिविषेआरूढहोइके सो

परमात्मादेव हमारेअज्ञानकूंनिवृत्तकरे ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे आकाश सर्वत्रव्यापकहे ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिपरमात्मादेवभी सर्व भूतोंविषेव्यापकहे ॥ और जैसे अग्निसर्वकाष्ठोंकेअंतर गुह्यहोइकेरहेहे ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिआत्मादेवभी सर्वप्राणियोंविषे गुह्यहोइके रहेहे ॥ और सोपरमात्मादेवही हमजीवोंकेप्रति पुण्यपापरूपकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकूंदेवेहे ॥ और सोपरमात्मादेवही सर्वजी वोंके शरीरोंविषे आत्मारूपकरिकेनिवासकरैहे ॥ और सोपरमात्मादेवही चेतन्यरूपहे ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव सर्वबुद्धिवृ त्तियोंका द्रष्टासाक्षीरूपहे ॥ हेसंन्यासियो ॥ तापरमात्मादेवविषे ॥ जोद्रष्टासाक्षीपणाहे ॥ सोभीबुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतैंहोहे ॥ वास्तवतैं तापरमात्मादेवविषे साक्षीपणाभीहैनहीं ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव केवलनिर्गुणरूपहे ॥ तथा सर्वसंगतैंरहितहे ॥ हेसंन्या सियो ॥ स्वभावतैं प्रवृत्तहोणेमेंअसमर्थ जेयहअनेकजडपदार्थ हैं ॥ तिनसर्वजडपदार्थोंकूं जोचेतनपरमात्मादेव आपणेआपणेकार्यवि षे स्वतंत्र प्रवृत्तकरै हे ॥ तथा संपूर्णस्थूलशरीरोंका बीजरूपजोहिरण्यगर्भहे ॥ ताहिरण्यगर्भकूं जोपरमात्मादेव सूक्ष्मउपाधिविषे प्रवेशक रिके उत्पन्नकरैहे ॥ और जोपरमात्मादेव एकही सर्वजगत्कीउत्पत्तिकरैहे ॥ ऐसे परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपक रिकेसाक्षात्कारकरे हैं तिनविद्वान्पुरुषोंकूंही सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिपूर्वक मोक्षरूपनित्यसुखकीप्राप्तिहोवे है ॥ ताआत्मज्ञानतैंरहित इतरजी वोंकू तानित्यसुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं मोक्षकीइच्छावालेअधिकारीजनोंनें ताआत्मसाक्षात्कारकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ हेसंन्यासियो ॥ यालोकविषे नित्यरूपकरिकेप्रसिद्ध जेआकाशादिकहैं ॥ तिनआकाशादिकनित्यपदार्थोंकाभी जोपरमात्मादेव नित्यरूप है ॥तथा यालोकविषे चेतनरूपकरिकेप्रसिद्ध जेप्रमाताजीवहैं ॥ तिनचेतनप्रमातावोंकाभी जोपरमात्मादेव चेतनरूपहे ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपरमात्मादेवकी नित्यताकूं तथा चेतनताकूं अंगीकारकरिके अनित्यजडरूपपदार्थभी नित्यचेतनरूपहोइकेप्रतीतहोवैहैं ॥ और जिस परमात्मादेवकेस्वरूपभूतसुखकूं अधिकारीजन ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकेप्राप्तहोवैहैं ॥ऐसापरमात्मादेव जभी याअधिकारीजनोंकूं आत्मा रूपकरिकेसाक्षात्कारहोवे हे ॥ तभी याअधिकारीजनोंकी अविद्या तथा अविद्याजन्यकामक्रोधादिकसर्वपाश छेदनकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ हेसं

न्यासियो ॥ ऐसेआत्मादेवकेप्राप्तिके दोसाधनहोवे हैं ॥ एक तौ विचाररूपसांख्यसाधनहे ॥ और दूसरायोगसाधनहे ॥ तहां प्रथम विचार रूपसांख्यसाधनकूं तुम श्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहमुमुक्षुजन ताआत्मादेवकीप्राप्तिवासते याप्रकारकाचिंतनकरे ॥ शास्त्रवेत्ताविद्वानपुरुष ताअद्वितीयब्रह्मकूं मनवाणीकाअविषयकहे हैं ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं मैंअधिकारीजन किसप्रकारजानोंगा ॥ यातें प्रथम मैं याप्रकारकाविचारकरौं ॥ सोब्रह्मरूपसुखमेरेकूं प्रतीतहोताहे ॥ अथवा नहींप्रतीतहोताहे ॥ और ताब्रह्मरूपसुखकेप्रतीतहुएभी सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं प्रकाशरूपकरिकेप्रतीतहोवे हे ॥ अथवा सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं अप्रकाशरूपकरिकेप्रतीतहोवे हे ॥ अथवा सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं विपरीतरूपकरिकेप्रतीतहोवे हे औरवास्तवतें ताब्रह्मरूपसुखकूं प्रकाशरूपताहुएभी सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूंघटादिकपदार्थोंकीन्याईं विषयरूप करिकेप्रतीतहोवे हे ॥ अथवा सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं अविषयरूपकरिकेप्रतीतहोवे हे ॥ हेसंन्यासियो ॥ आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतें सोमुमुक्षुजन याप्रकारकाविचारकरे ॥ परंतु याप्रकारकाविचार सोमुमुक्षुजन गुरुकेउपदेशतैंपूर्वनहींकरे ॥ किंतु श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरु जभी यामुमुक्षुजनकेप्रति तूंआनंदस्वरूपआत्मा ब्रह्मरूपहो हे याप्रकारकाउपदेशकरे ॥ तभीही सोमुमुक्षुजन याप्रकारकाविचारकरे ॥ अब पूर्व कहेविकल्पोंविषे एकअर्थकेनिश्चयकरणेवासते ताविचारका स्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ गुरुकेमुखतें वेदांतशास्त्रकाश्रवण करिके यहअधिकारीजन आपणेअसंभावनाकीनिवृत्तिवासते याप्रकारका विचाररूपमननकरे ॥ श्रीगुरुनें हमारेप्रति उपदेशकर्‌याजोआनंदस्वरूपआत्माहे ॥ सोआत्मास्वरूपआनंद चेतन्यरूपप्रकाशतैंभिन्नहे अथवा अभिन्नहे॥ तहां सोआत्मास्वरूपआनंद चेतन्यरूपप्रकाशतैंभिन्नहे यहप्रथमपक्षतोसंभवेनहीं ॥ काहेतें सोआनंद प्रकाशतैंभिन्नहे याप्रथमपक्षविषेभी यहविचारकर्‌याचाहिये ॥ आनंद प्रकाश यहदोनोंहीनित्यहैं ॥ अथवा तिनदोनोंविषे एकनित्यहे एकअनित्यहे ॥ तहां आनंद प्रकाश यहदोनोंनित्यहैं यहप्रथमपक्ष जोअंगीकार करिये तौ जैसे काल आकाश यादोनोंका परस्पर संयोग संबंध तथा समवायसंबंधहोवेनहीं ॥ तैसे निरवयवपरिपूर्णरूप जेआनंदप्रकाशहैं ॥ तिनदोनोंकाभी परस्पर संयोगसंबंध तथा समवायसंबंध संभवेनहीं ॥ तैसे आनंद प्रकाश यादोनोंका परस्पर तादात्म्यसंबंधभी

संभवेनहीं ॥ काहेतें जिनदोपदार्थोंविषे एकपदार्थ कल्पितहोवे है ॥ तिनदोनोंपदार्थोंकाहो परस्पर तादात्म्यसंबंधहोवे है ॥ जैसे घटरूप कार्यका तथा मृत्तिकारूपकारणका परस्पर तादात्म्यसंबंधहै तहां घटरूपकार्यतो कल्पितहै ॥ और मृत्तिकारूपकारण सत्यहै तैसे आनंदस्वरूपआत्माका तथा चैतन्यरूपप्रकाशका जोपरस्पर तादात्म्यसंबंध अंगीकारकरिये ॥ तो तिनदोनोंविषेभी एककूंकल्पितमान्याचाहिये॥तहां आनंदस्वरूपआत्माकूंकल्पितमानणा यहवार्तातोसंभवेनहीं॥ काहेतें जोकदाचित् सोआनंदस्वरूपआत्मा कल्पितहोवेगा ॥ तो कृतनाश ॥ अकृताभ्यागमरूप दोनोंदूषणोंकोप्राप्तिहोवेगी ॥ तहां करेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका जोफलकेभोगतेंविनाहीनाशहै ताकानामकृतनाशरूपदोषहै॥और न करेहुएपुण्यपापकर्मोंका जोसुखदुःखरूपफलकाभोगहै ताकानाम अकृताभ्यागमरूपदोषहै ॥ यातें ताआनंदस्वरूपआत्माविषेतो कल्पितरूपतासंभवेनहीं ॥ तैसे चैतन्यरूपप्रकाशविषेभीकल्पितरूपतासंभवेनहीं ॥ काहेतें सोचैतन्यरूपप्रकाश जोकदाचित् कल्पितहोवे॥तो ताप्रकाशतेंपूर्व ताआनंदस्वरूपआत्माकीसिद्धिनहींहोवेगी॥यातें ताचैतन्यरूपप्रकाशविषेभी कल्पितरूपतासंभवेनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे घटविषे रूपादिकगुणरहे हैं ॥ तैसे ताआनंदस्वरूपआत्माविषे सोचैतन्यरूपप्रकाश गुणरूपहोइकेरहे है ॥ याप्रकार जोअंगीकारकरिये ॥ सोभीसंभवेनहीं ॥ काहे तें ॥ साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥ याश्रुतिविषे ताआनंदस्वरूप आत्माकूं सर्वगुणोंतेंरहित निर्गुणकह्याहै ॥ यातें तानिर्गुणआत्माविषे प्रकाशरूपगुणसंभवेनहीं ॥ अब युक्तियोंकरिकेभी ताप्रकाशविषे गुणरूपताकाखंडनकरे हैं ॥ सोप्रकाशरूपगुण निर्गुणआत्माविषेरहैहै ॥ अथवा सगुणआत्माविषेरहै है ॥ तहां निर्गुणआत्मा विषे सोप्रकाशरूपगुण रहैहै यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये॥तो जैसे मेरेमुखविषेजिह्वानहीं है याप्रकारकावचन वदतोव्याघातदोषवालाहोवे है॥तैसे निर्गुणआत्माविषे प्रकाशरूपगुणरहैहै याप्रकारकावचनभी वदतोव्याघातदोषवालाहोवेगा ॥ और सगुणआत्मा विषे सो प्रकाशरूपगुणरहै है यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तो आत्माश्रय अन्योन्याश्रय चक्रिका अनवस्था याचारि दोषोंकोप्राप्तिहोवेगी ॥ काहेतें गुणवाले पदार्थकानाम सगुणहै ॥ तहां जासगुणआत्माविषे सोप्रकाशरूपगुणरहैहै ॥ सोआत्मा तिसीप्रकाशरूपगुणकरिकेसगुणहुआहै ॥ अथवा तिसप्रकाशरू

पगुणतैंभिन्न किसीदूसरेगुणकरिके सोआत्मा सगुणहुआहे ॥ तहांतिसीप्रकाशरूपगुणकरिके सोआत्मा सगुणहुआहे यहप्रथमपक्ष जो अंगीकारकरिये ॥ तौ ताप्रकाशरूपगुणकूं आपणीस्थितिविषे आपणीअपेक्षारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और ताप्रकाशरूप गुणतैंभिन्न किसीदूसरेगुणकरिके सगुणभावकूंप्राप्तभयाजोआत्माहे तासगुणआत्माविषे सोप्रकाशरूपगुणरहे हे यहदूसरापक्ष जोअंगीकार करिये ॥ तौयाकेविषेभी यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ सोदूसरागुणभी निर्गुणआत्माविषेरहे हे ॥ अथवा सगुणआत्माविषे रहे हे ॥ तहां सो दूसरागुण निर्गुणआत्माविषेरहेहे यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौ पूर्वकीन्याई वदतोव्याघातदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोदूसरा गुणभी सगुणआत्माविषेरहेहे यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तो याकेविषेभी यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ तादूसरेगुणकरिकेसगुणभा वकूंप्राप्तभया जोआत्माहे ॥ तासगुणआत्माविषे सोदूसरागुणरहे हे ॥ अथवा प्रथमप्रकाशरूपगुणकरिके सगुणभावकूंप्राप्तभयाजोआ त्माहे तासगुणआत्माविषे सोदूसरागुणरहे हे ॥ अथवा किसीतीसरेगुणकरिके सगुणभावकूंप्राप्तभयाजोआत्माहे तासगुणआत्माविषे सोदूसरागुणरहेहे ॥ तहां तादूसरेगुणविशिष्टआत्माविषे सोदूसरागुणरहे हे यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तो पूर्वकीन्याई आत्माश्रय दोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और ताप्रथमगुणविशिष्टआत्माविषे सोदूसरागुणरहे हे ॥ यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौ प्रथमगुणविशिष्ट आत्माविषे सोदूसरागुणरहे हे ॥ और तादूसरेगुणविशिष्टआत्माविषे सोप्रथमगुणरहे हे ॥ याप्रकारका अन्योन्याश्रयदोषहोवैगा ॥ और सोदूसरागुण किसीतीसरेगुणविशिष्टआत्माविषेरहे हे यहतीसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौ सोतीसरागुणभी जोआपणेक रिकेविशिष्टआत्माविषे आपरहेगा ॥ तौ आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोतीसरागुण जोद्वितीयगुणविशिष्टआत्माविषे रहैगा ॥ तो अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोतीसरागुण जोप्रथमगुणविशिष्टआत्माविषेरहेगा ॥ तौ सोतीसरागुण प्रथम गुणविशिष्टआत्माविषेरहे हे ॥ और सोप्रथमगुण दूसरेगुणविशिष्टआत्माविषेरहे हे और सोदूसरागुण तीसरेगुणविशिष्टआत्माविषेरहेहे ॥ और सोतीसरागुण प्रथमगुणविशिष्टआत्माविषेरहेहे ॥ याप्रकार चक्रकीन्याई भ्रमणरूप चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोतीसरा

गुण चतुर्थगुणविशिष्टआत्मा विषेरहेहै ॥ और सोचतुर्थगुण पंचमगुणविशिष्टआत्माविषेरहेहै ॥ याप्रकार आगेआगे गुणोंके अंगीकारकरणे तैं अनवस्थादोषको प्राप्तिहोवैगो ॥ याकारणतैं सोचैतन्यरूपप्रकाश गुणरूपकरिके आत्माविषेरहैनहीं ॥ किंवा ॥ आत्मस्वरूपआनंद तथा चैतन्यरूप प्रकाश यादोनोंकेमध्यविषे जोकदाचित् एकविषेनित्यपणाहोवै अथवा अनित्यपणाहोवै ॥ तो तिनदोनोंका परस्परसंबंधही संभवैगानहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे योग्यपदार्थका योग्यपदार्थकेसाथहो संबंधहोवै है ॥ योग्यपदार्थका अयोग्यपदार्थ केसाथ संबंधसंभवैनहीं ॥ यातैं तिनदोनोंके संबंधकीसिद्धिवासतै तिनदोनोंकूं नित्यहोअंगीकारकर्‍याचाहिये ॥ अथवा तिनदोनोंकूं अनित्यही अंगीकारकर्‍याचाहिये ॥ तहां आत्माकेअनित्यपणेविषे पूर्व कृतनाश अकृताभ्यागमरूप दोनोंदूषणोंकोप्राप्ति कथनकरिआये हैं ॥ तथा प्रकाशकेअनित्यपणेविषेभीपूर्वदूषणकहिआये हैं ॥ और आनंदस्वरूपआत्मा तथाप्रकाश यादोनोंका जोपरस्पर संबंधही नहींअंगीकारकरिये ॥ तो ता आनन्दस्वरूपआत्माविषे सर्वदा प्रकाशका अभाव अंगीकारकरणाहोवैगा॥और ताआनंदस्वरूपआत्माविषे प्रकाशकाअभावमानणा अत्यन्तविरुद्धहै ॥ काहेतैं ताआनंदस्वरूपआत्माविषे जोकदाचित् प्रकाशकाअभावहोवैहै ॥ तो हमजीवोंकूं ताआनंदस्वरूपआत्माकी अत्यंतप्रियरूपकरिकेप्रतीति नहींहोणीचाहिये ॥ और हमसर्वजीवोंकूं सोआनन्दस्वरूपआत्मा अत्यंतप्रियरूपकरिके प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सोआत्मास्वरूपआनंद ताप्रकाशकेसाथ नित्यसंबंधवालाहै ॥ अब आनंद प्रकाश या दोनोंकेअभेदसिद्धकरणेवासते प्रथम ताआनंदविषे आत्मरूपताकरिके नित्यतासिद्धकरै हैं ॥ सोआनंद जोकदाचित् आत्मातैंभिन्नहोवैगा ॥ तो ताआनंदतैंभिन्नहुआ सोआत्मा अत्यंतप्रियरू नहींहोवैगा ॥ किंतु ताआनंदतैंभिन्नहुआ सोआत्मा दुःखरूपहोवैगा ॥ अथवा स्रकचंदनादिकोंकीन्याई सोआत्मा सुखकासाधनहोवैगा ॥ और जोपदार्थ दुःखरूपहोवै है ॥ अथवा जोपदार्थ सुखकासाधनहोवै है ॥ तापदार्थविषे जीवोंको निरतिशयप्रीतिहोवैनहीं ॥ यातैं ताआत्माविषेभी जीवोंकी निरतिशयप्रीति नहींहोणीचाहिये॥और मेरा कदाचित्भीअभावनहीं होवै किंतु मैं सर्वदाविद्यमानहोवौं याप्रकारकीनिरतिशयप्रीति सर्वलोकोंकीआत्माविषे देखणेमैंआवैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ सोआनंद

आत्मारूपहीहै ॥ और आत्माकेउत्पत्तिकरणेहारा कोईकारणहैनहीं ॥ याकारणतैं सोआत्मा नित्यहै ॥ ऐसे नित्यआत्मातैं सोआनंदअभिन्नहै ॥ याकारणतैं सोआनंदभी नित्यही होवैगा ॥ और ऐसे आत्मारूपनित्यआनंदकेसाथ अनित्यप्रकाशकासंबंध संभवैनहीं ॥ याकारणतैं ताप्रकाशकूंभी नित्यहीअंगीकारकरणाहोवैगा॥ और जोकदाचित् ताप्रकाशकूं अनित्यअंगीकारकरिये॥तोताअनित्यप्रकाशकाताानित्यआनंदकेसाथ संबंधहोवैगानहीं ॥ और प्रकाशकेसंबंधतैंविना वस्तुकाभानहोवैनहीं याकारणतैं ताप्रकाशकेसंबंधतैंरहितहुआ सोआत्मास्वरूपआनंद हमजीवोंकूं कदाचित्भी प्रतीतनहींहोवैगा ॥ और यालोकविषे अज्ञातपदार्थविषे किसीभीजीवकीप्रीतिहोतीनहीं ॥ किंतु ज्ञातपदार्थोंविषेही सर्वजीवोंकीप्रीतिहोवैहै ॥ यातैं ताआनंदस्वरूपआत्माकेअज्ञातहुए हमजीवोंकूं ताआनंदस्वरूपआत्माविषे परमप्रीतिनहींहोवैगी ॥ और सर्वजीवोंको आपणेआत्माविषे परमप्रीतिदेखणेमैंआवै है ॥ याकारणतैं ताप्रकाशकूंभी आत्मास्वरूपआनंदकीन्याई नित्यहीअंगीकारकर्याचाहिये ॥ किंवा ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकेज्ञान नेत्रादिककरणोंकरिकैजन्यहोवै हैं ॥ तैसे ताआत्मास्वरूपआनंदकाज्ञान किसीकरणकरिकै जन्यहोवैनहीं काहेतैं जोपदार्थ जिसवस्तुकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोइके तावस्तुकेज्ञानकूंउत्पन्नकरै है ॥ सोपदार्थ तावस्तुकेज्ञानविषे करणहोवैहै ॥ जैसे नेत्रादिकइंद्रिय घटादिकपदार्थोंकेसाथ संयोगादिरूपसंबंधकूंप्राप्तहोइके ताघटादिकपदार्थोंकेज्ञानकूं उत्पन्नकरै हैं ॥ याकारणतैं तेनेत्रादिकइंद्रिय तिनघटादिकोंकेज्ञानविषे करणहोवै हैं॥तैसे आत्मास्वरूपआनंदकेसाथ जोकदाचित् किसी पदार्थकासंबंधहोताहोवै ॥ तो सोपदार्थ ता आत्मास्वरूपनित्यआनंदकेज्ञानविषे करणसंभवै ॥ परंतु ताआत्मास्वरूपनित्यआनंदकेसाथ किसीअनित्यपदार्थकासंबंधसंभवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ असंगोनहिसज्जते ॥ अर्थयह ॥ यह आनंदस्वरूपआत्मा स्वभावतैंअसंग है ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा किसीपदार्थकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ १ ॥ यातैं ताआत्मास्वरूपआनंदकेज्ञानविषे किसी अनात्मपदार्थकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ ताआत्मास्वरूपआनंदकेज्ञानविषे मनकूंही करणरूपताहै ॥ समाधान ताआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे जोकदाचित् मनकूंहीकरणरूपताहोवै ॥ तो यालोकविषे जोजोकरणहोवै है ॥ सो सो करणकिसीकर्ताकीअपे

क्षा अवश्यकरैहै ॥ जैसे कुठारादिककरण पुरुषरूपकर्त्ताकीअपेक्षाकरे हैं ॥ तैसे सोमनरूपकरणभी किसीकर्त्ताकीअपेक्षा अवश्यकरेगा ॥
तहां ताज्ञानरूपक्रियाविषे आत्माकूं कर्त्तारूपताहै ॥ अथवा ताकरणरूपमनकूंही कर्त्तारूपताहै ॥ तहां ताज्ञानरूपक्रियाविषे आत्माकूं
कर्त्तारूपताहै यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे जोपदार्थ जिसक्रियाकाकर्मरूपहोवैहै ॥ सोपदार्थ
तिसीक्रियाविषे कर्त्तारूपहोवैनहीं जैसे दर्शनरूपक्रियाका कर्मरूपजोघटहै ॥ सोघट तादर्शनरूपक्रियाका कर्त्तारूपहोवैनहीं तैसे ताज्ञान
रूपक्रियाका कर्मरूपजोआनंदस्वरूपआत्माहैं सोआनंदस्वरूपआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाविषे कर्त्तारूपहोवैनहीं ॥ और ताज्ञानरूप
क्रिया विषे तामनरूपकरणकूंही कर्त्तारूपताहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे जोपदार्थ
जिसकालविषे जिसक्रियाकेप्रति करणरूपहोवैहै ॥ सोपदार्थ तिसीकालविषे तिसीक्रियाकेप्रति कर्त्तारूपहोवैनहीं ॥ जैसे छेदनरूप
क्रियाकाकरणरूप जोकुठारहै ॥ सोकुठार तिसीछेदनरूपक्रियाका कर्त्तारूपहोवैनहीं ॥ तैसे ताज्ञानरूपक्रियाविषे करणरूपजो
मनहै ॥ सोमन तिसीज्ञानरूपक्रियाविषे कर्त्तारूपहोइसकैनहीं ॥ और ताज्ञानरूपक्रियाविषे जोमनकूंकर्त्तामानिये ॥ तौ
ताज्ञानरूपक्रियाविषे तामनकूं करणरूपतानहींहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ कर्त्ता उपकार्यहोवै है ॥ और करण उपकारक होवै
है ॥ तहां जिसऊपरउपकारकरिये ताकानाम उपकार्यहोवै है ॥ और जोउपकारकरै ताकानाम उपकारकहोवै है ॥ सोउपकार्यपणा
तथाउपकारकपणा एककालविषे एकवस्तुमेंरहै नहीं ॥ किंवा ॥ मेरामन इसवस्तुविषे गयाथा ॥ और मेरामन यावस्तुकेप्रातिकीइच्छा
करैहै ॥ यासर्वलोकोंकेअनुभवतें तामनविषेभी ज्ञानकीविषयता प्रतीतहोवैहै ॥ ताकेविषे यहविचारकर्‍याचाहिये ॥ तामनकूंविषयकरणे
हारेज्ञानविषे कौनकरणहै ॥ नेत्रादिकइंद्रिय करणहैं ॥ अथवा मनकरणहै ॥ तहां प्रथमपक्षतोसंभवैनहीं ॥ काहेतें नेत्रादिकइंद्रियतो बाह्य
स्थूलघटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषेहीकरणहोवै है ॥ अंतरपदार्थकेज्ञानविषे तिननेत्रादिकोंकूंकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ और तामनकूंविषयक
रणेहारेज्ञानविषे तामनकूंहींकरणताहै यहदूसरापक्षभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें सोमन ताज्ञानरूपक्रियाकाकर्मरूपहै ॥ यातें ताज्ञानरूपक्रिया

विषे तिसीमनकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ जोकदाचित् कर्मकूंभी करणरूपताहोवै ॥ तो घटकेज्ञानविषे ताघटकूंभी करणरूपताहोणीचाहिये ॥ और घटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषे घटादिकपदार्थोंकूं करणरूपताहैनहीं ॥ किंतु तिनघटादिकोंकेज्ञानविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूंहीकरणरूपताहै ॥ यातैं तामनकूंविषयकरणेहाराज्ञान किसीकरणकरिकैजन्यनहींहै ॥ किंतु सोज्ञान नित्यआत्मास्वरूपहीहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आनंद प्रकाश आत्मा यातीनोंपदोंका एकहीअर्थहै ॥ याप्रकारकेविचारकियेहुए आत्मारूपआनंद हमारेकूं प्रतीतहोताहै अथवा नहींप्रतीतहोताहै याप्रकारकासंशय संभवैनहीं ॥ अब आत्मास्वरूपआनंदके विपरीतभानपक्षका खंडनकरणेवासतै ताविपरीतभानकेकारणकाविचारकरै हैं ॥ सो आत्मास्वरूपआनंद किसनिमित्तकरिकै विपरीतप्रतीतहोवै है ॥ तहां ताआत्मारूपआनंदविषे जोआत्माकाभेदप्रतीतहोवैहै ॥ तथा ज्ञानकीविषयताप्रतीतहोवै है ॥ तथा विषयोंकीप्राप्तिकरिकै जो जन्यताप्रतीतहोवैहै ॥ यहतीनों ताआत्मास्वरूपआनंदविषे विपरीतरूपताहै ॥ काहेतैं जिसवस्तुका जोवास्तवस्वरूपहोवै ॥ सोवास्तवस्वरूप जिसज्ञानविषे नहींप्रतीतहोवै॥सोज्ञान विपरीतज्ञानहोवैहै॥जैसे रज्जुविषे यहसर्पहै याप्रकारकाजोज्ञानहोवैहै॥ताज्ञानविषे रज्जुकावास्तवस्वरूप प्रतीतहोवैनहीं॥याकारणतैं सोसर्पज्ञान विपरीत ज्ञानरूपहै ॥ तैसे विषयभावतैंरहित जोआत्मास्वरूप नित्यआनंदहै ॥ ताआनंदविषे आत्माकेभेदकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ तथा ताआनंदविषे विषयरूपताकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ तथा ताआनंदविषे विषयजन्यरूपताकूं विषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ यहसंपूर्णज्ञानविपरीतज्ञानरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोविपरीतज्ञानहोवै है ॥ सोसोविपरीतज्ञान मिथ्याहोवैहै ॥ जैसे शुक्तिकाविषेरजत ज्ञान तथा रज्जुविषेसर्पज्ञान विपरीतरूपहोणेतैं मिथ्यारूपहैं ॥ तैसे आत्मास्वरूपआनंदविषे भेदकूं तथाविषयताकूं तथाजन्यताकूं विषयकरणेहारे तेविपरीतज्ञानभी मिथ्याहीहोवैंगे ॥ और यालोकविषे कार्यकेसमानस्वभाववालापदार्थही कारणहोवैहै ॥ जैसे घटकेसमानस्वभाववालीमृत्तिका ताघटकाकारणहोवैहै ॥ तैसे तिनमिथ्याज्ञानोंका कोईकारणभी मिथ्याहीअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ सत्यपदार्थविषे तिनमिथ्याज्ञानोंकोकारणतासंभवैनहीं ॥ और ऐसामिथ्याकार मायातैंविना दूसरा

कोई हैनहीं ॥ यातें सामिथ्यामायाही तामिथ्याविपरीतज्ञानोंकाकारणहै ॥ याप्रकारकेविचारकानाम सांख्यहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जे अधिकारीपुरुष याविचाररूपसांख्यकूंकरे हैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं कार्यसहितमायातेंभिन्नरूपकरिके स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्मका साक्षात्कारहोवैहै ॥ इतनेकरिके सांख्यरूपउपायकानिरूपणकऱ्या ॥ अव योगरूपउपायकानिरूपणकरैंहैं ॥ हे संन्यासियो ॥ यज्ञदानादिरूप जे बाह्यकर्म हैं ॥ तथा उपासनारूप जे अंतरकर्म हैं ॥ यादोनोंप्रकारकेकर्मोंकानाम योगहै ॥ तानिष्कामकर्मरूपयोग करिके जभी याअधिकारीपुरुषोंकाअंतःकरण शुद्धहोवै है ॥ तभीही याअधिकारीपुरुषोंकूं स्वयंज्योतिआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ और ताब्रह्मसाक्षात्कारकेउत्पन्नहुए याअधिकारीपुरुषोंकोअविद्या नाशहोवै है ॥ और ताअविद्यारूपकारणकेनाशहुए याअधिकारीपुरुषोंके कामक्रोधादिकसर्वपाशोंकानाशहोवैहै ॥ इसप्रकार सोनिष्कामकर्मरूपयोगभी चित्तकीशुद्धिद्वारा आत्माकेप्राप्तिकाहीसाधनहै॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार सांख्ययोगरूपउपायकरिके उत्पन्नभयाजोब्रह्मज्ञानहै ॥ ताब्रह्मज्ञानकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं जोस्वयंज्योतिआत्मादेव प्रतीतहोवैहै ॥ तास्वयंज्योतिआत्मादेवकूं यहसूर्यचंद्रमादिकतेज प्रकाशकरिसकेनहीं ॥ किंतु उलटा सोस्वयंज्योति आत्मादेवही तिनसूर्यचंद्रमादिकतेजोंकूं प्रकाशकरे है ॥ तात्पर्ययह ॥ सूर्यचंद्रमादिकबाह्यतेजोंकूं प्रकाशकरणेहारा जोचिदाभासयुक्तअंतःकरणकोवृत्तिरूपज्ञानहै ॥ सोवृत्तिरूपज्ञानभी तास्वयंज्योतिआत्मादेवकूं प्रकाशकरिसकेनहीं ॥ किंतु सोस्वयंज्योतिआत्माहीं तावृत्ति ज्ञानकूंप्रकाशकरे है ॥ जभीसोवृत्तिरूपज्ञानभी तास्वयंज्योतिआत्माकूं प्रकाशनहींकरिसकेहै ॥ तभी तावृत्तिज्ञानकेविषय सूर्यचंद्रमादिकबाह्यजडतेज तास्वयंज्योतिआत्माकूं प्रकाशनहींकरिसके हैं याकेविषेक्याकहणाहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ ऐसास्वयंज्योतिपरमात्मादेवही सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही तीनलोकोंकेअंतरस्थितहै ॥ और सोपरमात्मादेवही आत्मसाक्षात्कारकरिके कार्यसहितअविद्याकूंनाशकरताहुआ हंसयानामकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सोपरमात्मादेवही वडवाग्निरूपहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही जठराग्निरूपहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही विराटरूपहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुषआपणाआत्मारूपकरिके सा

क्षात्कारकरे हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष यासंसाररूपमृत्युकाउल्लंघनकरिके ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवे हे ॥ हेसंन्यासियो ॥ यालोकविषे मैंब्रह्मरूप हूं याप्रकारकेआत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईउपाय ताब्रह्मभावकेप्राप्तिकादेनहीं ॥ किंतु सोजीवब्रह्मकाअभेदज्ञानहीं ताब्रह्मभावकेप्राप्तिका साधनहे ॥ यातैं ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकीइच्छावालेमुमुक्षुजनोंनें श्रवणादिकसाधनोंकरिके ताब्रह्मज्ञानकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ हेसंन्यासियो ॥ श्रवणादिकसाधनोंकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं जिसपरमात्मादेवकाज्ञानहोवै हे ॥ सोपरमात्मादेवकेसाहे ॥ यासंपूर्णचरअचर जगत्कूं सामान्यरूपकरिके तथा विशेषरूपकरिके जानणेहाराहे ॥तथा सर्वजगत्काकारणहे ॥ तथा कालकाभीकालहे ॥ तथा सर्वगुणों करिकेसंपन्नहे॥ओर सोपरमात्मादेवही क्षेत्रज्ञरूपजीवका तथा मायाका तथा मायाकेसत्वादिकगुणोंका पतिरूपहे॥तथा सोपरमात्मादेवही याजीवोंकेप्रति पुण्यपापरूपकर्मकेसुखदुःखरूपफलकोप्राप्तिकरे हे॥तथा सोपरमात्मादेवहीयाजीवोंकेबंधमोक्षकाकारणहे॥तथासोपरमात्मा देवही याजगत्केव्यवस्थाकूंकरे हे ॥ तथा याजगत्कापालनकरे हे ॥ हेसंन्यासियो ॥ प्रपंचरूपकरिकेदेख्याहुआ सोपरमात्मादेव याजीवों कूं बंधकीप्राप्तिकरे हे॥ओर जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितरूपकरिके देख्याहुआसोपरमात्मादेव याजीवोंकूं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरे हे॥ ओर जोपरमात्मादेव आपणेज्ञानस्वरूपविषेस्थितहोइके यासर्वजगत्कापालनकरे हे॥ओर जोपरमात्मादेव यासर्वजगत्कूंआपणीआज्ञाविषे चलावे हे॥ ओर जिसपरमात्मादेवकेऐश्वर्यतैं अधिकऐश्वर्यवाला कोईहैनहीं॥ऐसापरमात्मादेवही याअधिकारीजीवोंनें आपणाआत्मारूपकरिके जानणेयोग्यहे॥हेसंन्यासियो ॥ मैंश्वेताश्वतरमुनि तापरमात्मादेवकी जिसप्रार्थनाकरिके आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोताभयाहूं॥ताप्रार्थनाकूं तुम श्रवणकरो॥जोपरमात्मादेव पूर्व हिरण्यगर्भकूंउत्पन्नकरिके ताहिरण्यगर्भकेप्रति चारिवेदोंसहितज्ञानकू देताभया ॥ तथा जोपरमात्मादेव केवलआत्मज्ञानकरिकेहींप्राप्तहोवे हे ॥ ऐसेपरमात्मादेवकेशरणकूं मैंमुमुक्षुजन प्राप्तभयाहूं ॥ केसाहैसोपरमात्मादेव ॥ हस्तपादादिक अवयवोंतैंरहितहे ॥ तथा क्रियातैंरहितहे॥तथा शांतस्वरूपहे॥तथा सुखरूपहे॥तथा सर्वजीवोंकाआत्मारूपहे ॥ तथा सर्वदोषोंतैंरहितहे ॥ तथा कारणतैंरहितहे ॥ तथा मोक्षरूपअमृतकूं सेतुकीन्याई पारणकरणेहाराहे ॥ ओर जैसे काष्ठोंकूंदग्धकरिके अग्नि आपणेस्वरूपविषे

स्थितहोवे है ॥ तैसे कार्यसहितमायारूपउपाधितैंरहितहुआ सोपरमात्मादेव आपणेअद्वितीयरूपविषेस्थितहोवे है ॥ ऐसेअद्वितीयपरमा त्मादेवकेशरणकूं मैंमुमुक्षु प्राप्तभयाहूं ॥ हेसंन्यासियो ॥ याप्रकार जभीहमनें तापरमात्मादेवकीप्रार्थनाकरी॥तभी सोपरमात्मादेव कृपा करिके हमारेताई मोक्षकाकारणरूपआत्मज्ञान देताभया॥जिसज्ञानकेप्रभावतें मैंश्वेताश्वतरऋषि तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपजा नताभयाहूं ॥ तापरमात्मादेवकेज्ञानतैंविनायाजीवोंकूं कदाचित्भीमोक्षकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ अब आत्मज्ञानतैंविना मोक्षकेप्राप्तिकाअभाव निरूपणकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहदेहधारीजीव जोकदाचित् चर्मकीन्याई याआकाशकूं एकठाकरिलेवें गे॥तो यहदेहधारीजीव आत्म ज्ञानतैंविनाहीं मोक्षकूंप्राप्तहोवेंगे ॥ परंतु जैसे चर्मकीन्याई सोआकाश एकठाहोइसकेनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानतैंविना मोक्षकीप्राप्तिहोइसके नहीं ॥ तहांश्रुति ॥ यदाचर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यंतिमानवाः ॥ तदादेवमविज्ञाय दुःखस्यांतोभविष्यति ॥ अर्थयह ॥ यहमनुष्य जिसकाल विषे चर्मकीन्याई याआकाशकूंएकठाकरें गे ॥ तिसकालविषे परमात्मादेवकूंनजाणिकरिके तिनमनुष्योंके जन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृ त्तिहोवेगी ॥ १ ॥ हेसंन्यासियो ॥ जोआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मादेव हमनें तुमारेप्रति उपदेशकन्याहै ॥ सोईहीआत्मादेव यामुमु क्षुजनोंनें जानणेयोग्यहै ॥ तथा सोईहीपरमात्मादेव आपणीमायाशक्तिकरिके यासर्वजगत्काउपादानकारणहोवे है ॥ तथा सोईहीपरमा त्मादेव तुमारा तथाहमारा तथा अन्यस्थावरजंगमरूपजगत्काआत्मारूपहै ॥ तथा सर्वभेदतेंरहितहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे शुद्धआका शविषे नानाप्रकारकेमेघ कल्पितहैं॥तैसे यापरमात्मादेवविषेही पूर्वउक्तकालस्वभावादिककारण कल्पितहैं ॥ और जैसे भ्रांतपुरुषकूं आ काशविषे गंधर्वनगरप्रतीतहोवे है॥ तैसे अविवेकीपुरुषोंकूं यापरमात्मादेवविषे मायासहितजगत् प्रतीतहोवे है॥हेसंन्यासियो॥ जैसे स्वप्नअ वस्थाविषे यहएकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष अनेकरूपहोवे है॥तैसे यह एकहीपरमात्मादेव अविद्यादोषकरिके अनेकरूपहोवे है ॥और जैसे सुषुप्ति अवस्थाविषे नेत्रादिकइंद्रियोंके तथा रूपादिकविषयोंके लयहुए यहसंसारीजीव किंचित्मात्रभी द्वैतप्रपंचकूंदेखतानहीं॥तैसे मोक्षअवस्था विषे आत्मज्ञानकरिके कार्यसहित अविद्याकेनाशहुए यहविद्वान्पुरुष किंचित्मात्रभी द्वैतप्रपंचकूंदेखतानहीं॥और जैसे जाग्रत्अवस्थाके

प्राप्तहुए याजीवोंके सर्वस्वप्रपदार्थोंकालयहोवे हे ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतें याअधिकारीजनोंका संपूर्णप्रपंच लयभावकूंप्राप्तहो
वेहे ऐसेआत्मज्ञानकूं याअधिकारीजनोंनें अवश्यसंपादनकरणा ॥ अब ताआत्मज्ञानकेदुर्लभताका निरूपणकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जो
हमनें तुमारेप्रति आत्मज्ञानकाउपदेशकर्‍याहे ॥ सोआत्मज्ञान अत्यंतदुर्लभहे ॥काहेतें याआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते मनुष्योंनें नानाप्रका
रकेतपकरिके प्रसन्नकरेजेदेवतांहै ॥ तेदेवताभी तिनमनुष्योंकिताई याआत्मज्ञानकाउपदेशकरतेनहीं ॥ किंतु तेदेवता तिनमनुष्योंकिताई
दूसरेअनेकप्रकारकेवरदेवे हैं ॥ और जेमनुष्य तिनवरोंकरिकेसंतोषकूंनहींप्राप्तहोवे हैं ॥ तिनअधिकारीजनोंकेप्रति सत्यपाशकरिकेबांधे
हुए तेदेवता याआत्मज्ञानकाउपदेशकरे हैं ॥ जैसे पूर्व सत्यपाशकरिकेबांध्याहुआयमराजा नचिकेताकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभ
याहे ॥ यावार्ताकूं तुमसंन्यासिभी तपकेप्रभावतें जानतेहीहो ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहब्रह्मविद्या जोऐसीदुर्लभहे ॥ तो सभाविषेस्थितहोइ
के आपने साब्रह्मविद्या हमारेप्रति किसवासतेउपदेशकरीहे ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहब्रह्मविद्या यद्यपिअत्यंतदुर्लभहे ॥ तथापि
जिसविचारकरिके हमने यहदुर्लभब्रह्मविद्या तुमारेप्रति उपदेशकरीहे ॥ ताविचारकूं तुम श्रवणकरो ॥ यहअतिथिसंन्यासि हमारेआश्रम
विषेचलिके आयेहैं ॥ तथा ब्रह्मविद्याकेअधिकारी हैं ॥ जोमैंश्वेताश्वतरऋषि इनसंन्यासियोंकिताई ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरोंगा ॥ तो ह
मारेतैंविना दूसराकोनपुरुष इनसंन्यासियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरेगा ॥ किंतु मेरेसमानब्रह्मवेत्तापणा दूसरेकिसीविषे निश्चितनहीं
हे ॥ और दध्यङ्अथर्वणऋषिकीन्याई मैंश्वेताश्वतरनामाऋषिभी सर्वजीवोंकेउपकारवासते प्रवृत्तभयाहूं ॥ यातें इनअतिथिसंन्यासि
योंतें ब्रह्मविद्यागुह्यराखणी हमारेकूंयोग्यनहीं हे ॥ हेसंन्यासियो ॥ याप्रकारका आपणेमनविषेविचारकरिके मैंश्वेताश्वतरमुनि
तुमसंन्यासियोंकेप्रति यहगुह्यब्रह्मविद्या उपदेशकरताभयाहूं ॥ किंवा ॥ जोविद्वान्पुरुष अधिकारीजनोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरेहै॥
ताविद्वान्पुरुषऊपर परमेश्वरभी प्रसन्नहोवे हे ॥ याकारणतेंभी मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तुमसंन्यासियोंकेप्रति यागुह्यब्रह्मविद्याका
उपदेश करताभयाहूं ॥ यहवार्ता गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नेंभी अर्जुनकेप्रति कहीहे ॥ तहां श्लोक॥ यइदंपरमंगुह्यं मद्भक्तेष्वभिधा

स्यति भक्तिंमयिपरांकृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥ १ ॥ नचतस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मेप्रियकृत्तमः भवितानचमेतस्मादन्यःप्रि यतरोभुवि ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ हेअर्ज्जुन तुमारेप्रति जोहमनैं यहपरमगुह्यआत्मज्ञान उपदेशकऱ्याहे ॥ ताआत्मज्ञानकूं जोविद्वान्पुरुष मेरेभक्तोंविषेदेवैगा ॥ सोविद्वान्पुरुष मैंपरमेश्वरविषे परमभक्तिकूंकरिके मेरेविषेही प्राप्तहोवैगा ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभीतुमनैं संशय नहींकरणा ॥ १ ॥ ऐसे विद्वान्पुरुषतैंविना यामनुष्योंविषे कोईभीमनुष्य हमारेप्रसन्नताकरणेहारानहीं ॥ किंतु सोआत्मज्ञानकाउपदेश करणेहारा विद्वान्पुरुषही हमारेप्रसन्नताकरणेहाराहे ॥ और मैंपरमेश्वरकूंभी ताविद्वान्पुरुषतैंभिन्नकोईपदार्थ यालोकविषे प्रियनहीं है ॥ किंतु सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषही हमारेकूं अत्यंतप्रियहे ॥ २ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ सोश्वेताश्वतरनामाऋषि तिनसंन्यासियोंकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिके मौनकूंधारणकरिके स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ वेदवेदांगविद्याकेतात्पर्यकूंजानणेहारा सोश्वेताश्व तरनामाऋषि तपकेप्रभावतैं तथा ईश्वरकेप्रसादतैं आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइके आपणे आश्रमविषे अति आश्रमीसंन्यासियोंके प्रति आत्मज्ञानका उपदेशकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ यातीनआश्रमियोंतैं परमहंससंन्या सि अधिकहोवे हैं ॥ याकारणतैं श्रुतिविषे तिनपरमहंससंन्यासियोंकूं अतिआश्रमीकह्याहे ऐसेअतिआश्रमीसंन्यासि ताश्वेताश्व तरमुनितैं ब्रह्मात्मज्ञानकूं प्राप्तहोतेभये ॥ कैसाहैसोब्रह्मात्मज्ञान ॥ अत्यंतपवित्रहे ॥ तथा ब्रह्मभावकीप्राप्ति कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्ति रूप मोक्षकेप्राप्तिकाकारणहे ॥ तथा मोक्षकीइच्छावाले मुनिलोकोंकरिके सेवितहे ॥ पुनःकैसाहैसो आत्मज्ञान ॥ वेदांतोंविषे गुह्य रूपक रिकेकथनकऱ्याहे ॥ और इहांप्रसंगविषे पुराकल्परूपकरिकेकथनकऱ्याहे ॥ तहांजिसवेदकेभागविषे पूर्ववृद्धपुरुषोंके सृष्टिआदिकव्यवहार कथनकरिये ॥ तावेदभागकानाम पुराकल्पहे ॥ जैसे इहांप्रसंगविषे पूर्वब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणोंका जगत्केकारणकाविचारकरणेवासते स मागमभयाहे याकानाम पुराकल्पहे ॥ हेशिष्य ॥ जिसविचारकूंमनविषेराखिके सोश्वेताश्वतरनामाऋषि मौनकूंधारणकरताभया ॥ तावि चारकूं तूं श्रवणकर ॥ जोपुरुष ॥ शमदमादिकसाधनोंतैंरहितहोवे ॥ तथा जिसपुरुषकाचित्त विषयोंविषेआसक्तहोवे ॥ ऐसाविषयआसक्त

पुरुष जोकदाचित् किसीदयालुब्रह्मवेत्तागुरुकेआगे ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकोप्रार्थनाभीकरे ॥ तौभी ताब्रह्मवेत्तागुरुनैं ताविषयआसक्तपुरुषकेप्र
ति ताब्रह्मविद्याकाउपदेश कदाचित्भीनहींकरणा ॥ और सोपुरुष जोकदाचित् शमदमादिकसाधनोंकरिकेसंपन्न ताब्रह्मविद्याकाअधि
कारीभीहोवे ॥ परंतु सोअधिकारीपुरुष पुत्रभावतें तथा शिष्यभावतें रहितहोवे ॥ तौभी ताब्रह्मवेत्तागुरुनैं तापुत्रशिष्यभावतैंरहितपुरुष
केप्रति याब्रह्मविद्याकाउपदेश कदाचित्भी नहींकरणा ॥ और जोकदाचित् सोब्रह्मवेत्तागुरु किसीप्रतिज्ञादिकनिमित्तकरिके परवशहुआ
होवे ॥ तौभी ताब्रह्मवेत्तागुरुनैं तागुरुभक्तितैंरहितअधिकारीकेप्रति ताब्रह्मविद्याका यथार्थतात्पर्य कदाचित्भीनहींकहणा ॥ और जोपु
रुष विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकरिकेयुक्तहोवे तथा प्रमादतैंरहितहोवे ॥ तथा जोपुरुष साक्षात्परमेश्वरकी
न्याईं ब्रह्मवेत्तागुरुकूंदेखताहोवे ॥ ऐसेगुरुभक्तअधिकारीपुरुषकेप्रति सोब्रह्मवेत्तागुरु याब्रह्मविद्याकाउपदेशकरे और ऐसागुरुभक्तअधिका
रीही ताब्रह्मविद्याकेमोक्षरूपफलकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जोपुरुष गुरुभक्तितैंरहितहै ॥ सोपुरुष जोकदाचित् किसीदैवयोगतैं ताब्रह्मविद्या
काअध्ययनभीकरे है ॥ तौभी तागुरुभक्तितैंरहितपुरुषकूं ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकाफलहोवेनहीं ॥ उलटा तागुरुविमुखपुरुषकूं अनर्थकी
हीप्राप्तिहोवे है ॥ यहवार्ता पुराणादिकशास्त्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्आदिकोंनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ गुरुंयोमानवैरन्यैः समंप
श्यतिमोहतः ॥ नतस्यास्मिन्भवेल्लोके सुखंनैवपरत्रवा ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष आपणेप्रमादकरिके ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेहा
रेगुरुकूं दूसरेमनुष्योंकेसमानदेखताहै ॥ तिसपुरुषकूं इसलोकविषे तथा परलोकविषे किंचित्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ किंतु
तापुरुषकूं दोनोंलोकविषे दुःखकीहीप्राप्तिहोवेहै ॥ १ ॥ तहां श्लोक ॥ कर्मणामनसावाचा गुरुंयोनावमन्यते ॥ सयातिनरकान्घोरान्
महारौरवसंज्ञितान् ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष शरीरमनवाणीकरिके ब्रह्मविद्याप्रदातागुरुकीअवज्ञाकरेहै ॥ सोपुरुष महान्घोररौरवनर
कोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ इहां आपणेशरीरकरिके गुरुकूंखेदकीप्राप्तिकरणी याकानाम शरीरकृतअवज्ञाहै ॥ और आपणेमनविषे तागुरुकेदूष
णोंकाचिंतनकरणा याकानाम मनकृतअवज्ञाहै ॥ और आपणीवाणीकरिके तागुरुकीनिंदाकरणी याकानाम वाणीकृतअवज्ञाहै ॥ और

सहस्रवृश्चिककेसमानविषवाले अनेकजंतुवोंकरिकेपूर्णजोनरकहै ताकानाम रौरवनरकहै ॥ ऐसेनरकविषे सोगुरुकीअवज्ञाकरणेहारापुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ २ ॥ तहांश्लोक ॥ एकाक्षरप्रदातारं गुरुंयोनैवमन्यते ॥ समूढोनरकंयाति यावदाभूतसंप्लवं ॥ ३ ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मविद्याकेएकअक्षरमात्रकाभी उपदेशकरणेहाराजोगुरुहै ॥ तागुरुकूं जोमूढपुरुष नहींमाने है ॥ सोमूढपुरुष याजगत्केप्रलयपर्यंत तारौरवनरकविषेनिवासकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मविद्याकेएकअक्षरमात्रकाउपदेशकरणेहारेगुरुकूं नहींमानणेहारापुरुषभी जभी प्रलयपर्यंत नरकविषे निवासकरै है ॥ तभी संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारेगुरुकूं नहींमानणेहारापुरुष अनेकप्रलयपर्यंत नरकविषेरहै है याकेविषे क्याकहणाहै ॥ ३ ॥ तहांश्लोक ॥ कृतघ्नानांहियेलोका येलोकाब्रह्मघातिनां ॥ मृत्वातानभिसंयाति गुरुद्रोहपरोनरः ॥ ४ ॥ अर्थयह ॥ करेहुए उपकारकूंनमानणेहारेजेकृतघ्नपुरुषहैं ॥ तथा ब्राह्मणोंकाहननकरणेहारे जेब्रह्महत्यारेपुरुषहैं ॥ तेकृतघ्नपुरुष तथा ब्रह्महत्यारेपुरुष मरिकरिके जिननरकादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तिसीनरकादिकलोकोंकूं यहगुरुद्रोहीपुरुष मरिकेप्राप्तहोवै है ॥ ४ ॥ तहां श्लोक ॥ समहापातकीज्ञेयस्तथोपपातकीत्यपि गत्वाकल्पसहस्रांते विष्ठायांजायतेकृमिः ॥ ५ ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा जो गुरुहै ॥ तागुरुकेसाथ जोपुरुष द्रोहकरै है ॥ सोगुरुद्रोहीपुरुषही महापातकीजानणा ॥ तथा उपपातकीजानणा ॥ इहां ब्रह्महत्या मदिरापान सुवर्णकीचोरी गुरुस्त्रीकेसाथगमन इनपापकर्मोंकूंकरणेहारेपुरुषकानाम महापातकीहै ॥ और गोवधादिकपापकर्मोंकूं करणेहारेपुरुषकानाम उपपातकीहै ॥ ऐसागुरुद्रोहीपुरुष रौरवादिकनरकोंकूंप्राप्तहोइके तिननरकोंविषे सहस्रकल्पपर्यंत निवासकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोगुरुद्रोहीपुरुष विष्ठाविषेकृमिशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ ५ ॥ किंवा ॥ शास्त्रविषे जितनीकीविद्याहैं ॥ तिनसर्वविद्यावोंकीप्राप्तिविषे यहगुरुहीकारणहै ॥ याकारणतैं याअधिकारीपुरुषनैं महादेवकेपूजनसमान तागुरुकापूजनकरणा ॥ किंवा ॥ याअधिकारीपुरुषनैं शिवकेपूजनतैंभी गुरुकाअधिकपूजनकरणा ॥ तहांश्लोक ॥ शिवेरुष्टेगुरुस्त्राता गुरौरुष्टेशिवोनहि ॥ शिवादप्यधिकंतस्मात् गुरुंयत्नेनपूजयेत् ॥ ६ ॥ अर्थयह ॥ शिवभगवान्केक्रोधहुए याअधिकारीपुरुषकी गुरुरक्षाकरिसकैहै ॥ और गुरुकेक्रोधहुए याअधिकारीपुरु

वोंकोशिव रक्षाकरिसकैनहीं ॥ याकारणतें यहअधिकारीपुरुष शिवकेपूजनतेंभी गुरुकाअधिकपूजनकरे ॥ ६ ॥ किंवा ॥ जोपुरुष अभिमानकरिके आपणेगुरुकीअवज्ञाकरैहै ॥ तापुरुषकेपापकर्मकीनिवृत्तिकरणेहारा कोईप्रायश्चित्त यालोकविषेहैनहीं ॥ काहेतें ब्रह्महत्यादिक पापकर्मोकेनिवृत्तिकरणेकेप्रायश्चित्त धर्मशास्त्रोंविषेदेखीते हैं ॥ परंतु गुरुद्रोहीपुरुषकेपापकर्मकीनिवृत्तिकाप्रायश्चित्त किसीशास्त्रविषेदेखणेमें आवतानहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे अन्यपापीजीवोंतें ब्रह्महत्यारापुरुष अधिकपापीहोवै है ॥ और ताब्रह्महत्यारेतेंभी करेहुएउपकारकूंनहींमानणेहाराकृतघ्नपुरुष अधिकपापीहोवैहै॥ और ताकृतघ्नपुरुषतेंभी यहगुरुकेद्रोहकरणेहारापुरुष अधिकपापीहोवैहै ॥ काहेतें याअधिकारीजीवोंका गुरुहीमातापिताहै ॥ तथा गुरुही देवहै ॥ तथा गुरुही बंधुहै ॥ तथा गुरुही मित्रहै ॥ तथा गुरुही उपकारकरणेहारासुहृदहै ॥ ऐसेगुरुकेद्रोहकरणेहारापुरुष कृतघ्नपुरुषतेंअधिकपापी है याकेविषेकोईआश्चर्यनहीं है ॥ किंवा ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूंब्रह्मरूपकह्याहै ॥ यातें यहअधिकारीजीव आत्मज्ञानकरिके जिसब्रह्मकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ सोब्रह्म ब्रह्मवेत्तागुरुतें अभिन्नहै ॥ यातें ताब्रह्मवेत्तागुरुकीअवज्ञातें ब्रह्मकीहीअवज्ञाहोवै है ॥ और ॥ अयमात्माब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे याआत्माका ब्रह्मकेसाथ अभेदकह्याहै ॥ यातें ताब्रह्मकीअवज्ञातें याआत्माकीहीअवज्ञाहोवैहै ॥ और ऐतदात्म्यमिदंसर्वं ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे यासंपूर्णजगत्कूंआत्मारूपकह्याहै ॥ यातें ताआत्माकीअवज्ञातें सर्वजगत्कीअवज्ञाहोवैहै ॥ और सोअवज्ञारूपहनन शस्त्रकेहननतेंभी अत्यंतदारुणहै ॥ काहेतें शस्त्रकरिकेहननकऱ्याहुआयहपुरुष क्षणमात्रदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ कदाचित् नहींभीप्राप्तहोवैहै ॥ और ताअवज्ञारूपशस्त्रकरिकेहननकऱ्याहुआयहपुरुष स्मृतिद्वारा मरणपर्यंतदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें गुरुकेद्रोहकरिके सर्वजगत्कूंहननकरणेहारा जोगुरुद्रोहीपुरुषहै ॥ तागुरुद्रोहीपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातें जिसअधिकारीपुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकीइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषने शरीर मन वाणी करिके ताब्रह्मवेत्तागुरुकीप्रसन्नताहीकरणी ॥ और जैसे यह अधिकारीपुरुषशिवादिकदेवतावोंके पूजनकूं सावधानहोइकैकरैहै ॥ तैसेही याअधिकारीपुरुषने सावधानहोइके गुरुकापूजनकरणा ॥ और सोब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा

गुरु याशिष्यकेप्रति जोशुभ अथवा अशुभ कार्यकहे ॥ ताशुभअशुभकार्यकूं ताशिष्यनें प्रसन्नमनहोइकेकरणा ॥ ताकार्यकेकरणेविषे ता शिष्यनेंआपणेशरीरकेरक्षाकोचिंतानहीकरणी ॥ और ताशिष्यनें आपणेकर्णोंकरिके तागुरुकी सर्वदा कीर्तिहीश्रवणकरणी॥और ताशिष्य नें आपणेमुखकरिकेसर्वदा तागुरुकेस्तुतिकूंहीकरणा ॥ और ताशिष्यकेसमीप जोकोईदुष्टपुरुष ताब्रह्मवेत्तागुरुकेदोषोंकूंकथनकरे॥ तो ता शिष्यनें तानिंदकदुष्टपुरुषका यथाशक्ति अपमानहीकरणा॥और तानिंदकदुष्टपुरुषोंके अपमानकरणेविषे जोकदाचित् सोशिष्य समर्थ नहींहोवे ॥ तो जिसस्थानविषे तेदुष्टपुरुष निंदाकरतेहोवें ॥ तिसस्थानतें सोशिष्य दूरचल्याजावे ॥ और सोशिष्य जोकदाचित् तिस स्थानतें दूरजाणेविषे समर्थनहींहोवे ॥ तो सोबुद्धिमान्शिष्य तास्थानविषे आपणेकर्णोंकूंनिरोधकरिकेस्थितहो वे ॥ जाकरिके आपणे गुरुकीनिंदा श्रवणकरणेविषेनहींआवे ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसअधिकारीजनकूंआपणेसुखकी इच्छाहोवे ॥ तिसअधिकारीपुरुषनें शिवादिकदेवतावोंकेभक्तिकीन्याई रात्रिदिनविषे सावधानहोइके आपणेगुरुकीभक्तिकरणी॥ ता गुरुकीभक्तिकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षरूपपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवेहे ॥ तहांश्रुति ॥ "यस्यदेवेपराभक्तिः यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशंतेमहात्मनः" ॥ अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे परमभक्तिहे ॥ और जैसीपरमात्मादेवविषे परमभक्ति गुरुविषे हे ॥ तिसगुरुभक्त पुरुषकूंही यह वेदांतशास्त्रकेपदार्थ बुद्धिविषेप्रकाशकरे हैं ॥ तथा तिसगुरुभक्तपुरुषकूंही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यहचारि प्रकारकापुरुषार्थ प्राप्तहोवेहे ॥ किंवा ॥ जैसे ब्रह्मचर्यआश्रमविषे यहपुरुष ईश्वरकेआराधनविषे तथा वेदकेअध्ययनादिकोंविषे सावधानहुआवर्त्तेहे ॥ तैसेहीयाअधिकारीपुरुषनें गुरुकीभक्तिविषे सावधानरहणा॥काहेतें यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् ब्रह्मचर्यादिक साधनोंतेंभ्रष्टभीहोवे हे ॥ तोभीताशिष्यऊपर जोगुरुकीप्रसन्नताहोवे हे ॥ तो सोगुरु ताशिष्यकूं प्रायश्चित्तादिकउपायोंकरिके शोधन करिसकेहे॥और यहअधिकारीपुरुष जभी गुरुकीभक्तितेंभ्रष्टहोइके तागुरुतेंविमुखहोवेहे॥तभी तागुरुविमुखपुरुषकेरक्षाकरणेहारा कोईभी प्रायश्चित्तादिकउपायहेनहीं ॥ तहांश्लोक ॥ "गुरौविमुखतांयाते विमुखाःसर्वदेवताः ॥ भवंतिक्रियमाणंच पुण्यंपापंहिजायते" ॥ अर्थयह । ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा जोगुरुहे॥तागुरु तें जभी यहपुरुष विमुखहोवे हे ॥ तभी तागुरुविमुखपुरुषतें संपूर्णदेवता विमुखहोवेहे ।

और गुरुतैंविमुखहुआसोपुरुष जोकदाचित् पुण्यकर्मभीकरैहे ॥ तो सोपुण्यकर्मभी पापरूपहीहोवैहे ॥ १ ॥ यातैं जिनअधिकारीपुरुषोंकूं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष याचारप्रकारकेपुरुषार्थकेप्राप्तिकीइच्छाहोवे ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनैं सर्वप्रकारतैं देवताकीन्याईं गुरुकापूजनकरणा ॥ किंवा ॥ शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्त तथा आत्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्त जेजीवन्मुक्तपरमहंससंन्यासी हैं ॥ तिनजीवन्मुक्तसंन्यासियोंनैंभी सर्वप्रकारकरिके आपणेगुरुवोंकापूजनकरणा ॥ तहांस्मृति ॥ यावदायुस्त्रयोवंद्या वेदांतोगुरुरीश्वरः ॥ अर्थयह ॥ जबपर्यंत याविद्वान्पुरुषकाआयुषहोवे ॥ तबपर्यंत ताविद्वान्पुरुषकूंभी यहतीनों अवश्यवंदनाकरणेयोग्यहैं ॥ तहांएकतौ वेदांतशास्त्र ॥ और दूसरा वेदांतशास्त्रकेउपदेशकरणेहारागुरु ॥ और तीसराईश्वर ॥ तात्पर्ययह ॥ जभी विधिनिषेधतैंरहित जीवन्मुक्तसंन्यासियोंनैभी गुरुकापूजन अवश्यकरणेयोग्यहे ॥ तभी अन्यआश्रमवालेपुरुषोंनैं गुरुकाअवश्यपूजनकरणा याकोविषेक्याकहणाहे ॥ यातैं हेसंन्यासियो ॥ तुम्हारेकूं हमारेउपदेकरिके यद्यपि आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तभयाहे ॥ तथापि आपणेआपणेगुरुवोंकेपूजनकरणेवासते तुमसंन्यासियोंकूं तिनगुरुवोंकेसमीप अवश्यजाणाचाहिये ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिके सोश्वेताश्वतरनामाऋषि मौनकूंधारणकरताभया ॥ और ताश्वेताश्वतरमुनिके अभिप्रायकूंजाणिके तेविद्वान्संन्यासि ताश्वेताश्वतरमुनिकी यथायोग्यस्तुतिकरिके आपणेआपणेगुरुवोंकेसमीपजातेभये ॥ हेशिष्य पूर्वब्रह्मवेत्ताब्राह्मणों नैं जगत्केकारणकाविचारकरिके तथा मायाशक्तिकेदर्शनकरिके जाब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ सोईहीब्रह्मविद्या सोश्वेताश्वतरमुनि संन्यासियोंकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ और सोईहीब्रह्मविद्या हमनैं तुम्हारेप्रति उपदेशकरीहे ॥ अभीजिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुम्हारेकूंइच्छाहोवे ॥ सोअर्थ तुम हमारेसैंपूछो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे श्वेताश्वतरउपनिषत्सारार्थप्रकाशे श्वेताश्वतरसंन्यासिसंवादोनाम अष्टमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे नवमाऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशङ्कराचार्येभ्योनमः ॥ अथ नवमअध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वअष्टमअध्यायविषे यजुर्वेदके श्वेताश्वतरनामाउपनिषदकेअर्थकानिरूपणकर्‍या ॥ अब नवमअध्यायविषे तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीनामा उपनिषदकेअर्थकानिरूपणकरे हैं ॥ तहां पूर्वअष्टमअध्यायविषे जिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंनें शुद्धब्रह्मतैंभिन्नकरिकै मायाकास्वरूपदेख्याथा ॥ तिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणों केविचारकूंश्रवणकरिकै परमआनंदकूंप्राप्तहुआ सोशिष्य पुनः आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनें ऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषदका अर्थ निरूपणकर्‍याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे आपनें सनकादिकऋषियोंकि तथा वामदेवादिकसात्त्विकोप्रजाके संवादकरिकै वैराग्यादिकसाधनोंयुक्त नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और माताकेउदरविषेस्थितहोइके वामदेवनें जोआपणाअनुभव ताअधिकारीपुरुषों केप्रति कह्याथा ॥ सोभी आपनें प्रथमअध्यायविषे निरूपणकर्‍याथा ॥ और याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथा तृतीयअध्यायविषे आपनें तिसीऋग्वेदके कौषीतकी उपनिषद्काअर्थ निरूपणकर्‍याथा ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषे आपनें देवराजइंद्रके तथा प्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥और तृतीयअध्यायविषे आपनें अजातशत्रुराजाके तथा बालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनें यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकर्‍याथा॥तहां चतुर्थअध्यायविषे आपनें दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंकेऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद निरूपणकर्‍याथा॥ और ताचतुर्थअध्यायविषे आपनें दध्यङ्अथर्वणऋषिके तथा अश्विनीकुमारों के तथा देवराजइंद्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥और अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेतैं तादेवराजइंद्रनें जिसप्रकार तादध्यङ्ऋषिका मस्तकछेदनकर्‍याथा ॥ तथा ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकालोभकरिकै तिनअश्विनीकुमारों नें जिसप्रकार अश्वकेमस्तककूं दध्यङ्ऋषिकेग्रीवाऊपरराख्याथा ॥ तथा दध्यङ्ऋषिकेमस्तककूंअश्वकेग्रीवाऊपरराख्याथा॥यहसंपूर्णवार्त्ता आपनें ताचतुर्थअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेपंचमअध्या

यविषेजनकराजाकेयज्ञविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथा आश्वलादिकअनेकब्राह्मणोंके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनक
रीथी॥तथा य ज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ द्वेषकरणेहारेशाकल्यकामृत्यु आपनैं निरूपणकऱ्याथा॥और याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आप
नैंयाज्ञवल्क्य नेके तथा जनकराजाके दोवार संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥और याआत्मपुराणकेसप्तमअध्याय
विषे आपनैं याज्ञवल्क्यमुनिके तथा मैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या निरूपणकरीथी ॥ तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिके
संन्यासआश्रमका निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं श्वेताश्वतरमुनिके तथा संन्यासियोंके संवादकरि
के नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ हेभगवन्॥ताअष्टमअध्यायकेअन्तविषे आपनैं यह वार्ता कथनकरीथी॥यहब्रह्मविद्या अत्यन्त
दुर्लभहै ॥ काहेतैं यालोकविषे जेअधिकारीमनुष्य ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतै नानाप्रकारकातपकरिकै जिनदेवतावोंकूं प्रसन्नकरैहैं॥ तेदेवता
भी तिनमनुष्योंकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरतेनहीं ॥ किंतु तेदेवता तिनमनुष्योंकेताईं ताब्रह्मविद्यातैंभिन्न अनेकप्रकारकेवरोंकूं
देकै प्रसन्नकरैहैं ॥ और जेअधिकारीमनुष्य तिनवरोंकी प्राप्तिकरिकै प्रसन्ननहींहोवैहैं ॥ तिनअधिकारीमनुष्योंकेप्रति तेदेवता सत्यवचन
रूपपाशकरिकैबांधेहुए ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरे हैं ॥ जैसे पूर्व अन्यवरोंकरिकैसंतोषकूंनहींप्राप्तभया जोनचिकेताहै ॥ तानचिकेताके
प्रति यमराजा ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ यहवार्ता अष्टमअध्यायकेअंतविषे आपनैं कथनकरीथी ॥ हेभगवन् याकेविषे हमारेकूं
याअर्थकेश्रवणकरणेकीइच्छाहोवैहै ॥ सोयमराजा तानचिकेताकें प्रति किसप्रकार ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ और सोनचिकेता
किसप्रकार तायमलोकविषेजाताभया ॥ और साब्रह्मविद्या किसप्रकारकीथी ॥ यहसंपूर्णवृत्तांत आप कृपाकरिकैहमारेप्रतिकहो ॥ इसप्र
कार शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति वेदविषेकहीहुईकथाका उपदेशकरताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ अरुणऋ
षिकापुत्र एकउद्दालकनामा ऋषि पूर्व होताभया॥कैसाथासोउद्दालकऋषि सर्ववेदवेत्ताब्राह्मणोंविषे श्रेष्ठथा॥और यालोकविषे अन्नदानक
रिकै सोउद्दालक मुनि महान्कीर्तिकूंप्राप्तहोताभया॥याकारणतैंही सर्वअर्थीजन ताउद्दालकमुनिकीइच्छाकरतेभये॥ऐसाउद्दालकमुनि एक

कालविषेविश्वजित्नामायज्ञकरणेकाआरंभकरताभया॥ताविश्वजित्यज्ञविषे सोउद्दालकमुनि ब्राह्मणों केताईं आपणेसर्वधनदेणेकासंकल्प करताभया॥और ताउद्दालकमुनिका एकनचिकेतानामापुत्रथा॥सोनचिकेता पंचवर्षकाबालकथा॥याकारणतें तानचिकेताविषे ताउद्दाल कमुनिका बहुतस्नेहहोताभया॥और ताउद्दालकमुनिकेगृहविषे विशेषकरिकेतो गोवांरूपहीधनथा॥यातें सोउद्दालकमुनि तिनगोवोंके दोवि भागकरताभया॥तहां दुग्धकेदेणेहारियां तथा यौवनअवस्थाकरिकेयुक्त जेश्रेष्ठगोवांथीं ॥ तेश्रेष्ठगोवांतौं तानचिकेतापुत्रकेनामकीकरता भया॥और जेदुर्बलवृद्धगोवांथीं॥तेवृद्धगोवां आपणेनामकीकरिके सोउद्दालकमुनि तिनवृद्ध गोवोंकूं ब्राह्मणोंके ताईं देणेकाआरंभकरता भया॥कैसीथीतेवृद्धगोवां॥अन्नकेभक्षणकरणेविषे तथा जलकेपानकरणेविषेभी जिनगोवोंकासामर्थ्यनहींथा ॥ जभी अन्नजलकेभक्षणकरणे विषेभी तेगोवां समर्थनहींभई ॥ तभी ते गोवां गर्भकूंधारणकरेंगी तथा दुग्धकूं देवेंगी याकेविषे क्याआशाहै ॥ ऐसोदुर्बलवृद्धगोवोंकूं सोउद्दालकमुनि ब्राह्मणोंकेताईं देणेकाआरंभकरताभया ॥ और ताउद्दालकमुनिनें जिसनचिकेतापुत्रवासते सुंदरसुंदरगोवां राखीयांथीं ॥ सोनचिकेता स्वभावतेंही शास्त्रकेधर्मविषे श्रद्धावान्था ॥ तथा पंचवर्षकीअवस्थावालाथा ॥ सोनचिकेता ताउद्दालकपिताकेअंकविषे स्थितथा ॥ और ताउद्दालकपिताके ताअनुचितव्यवहारकूंदेखिके सोनचिकेता आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ यालोक विषे जोपुरुष जिसप्राणीकेताईं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे तिसोसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष यालोकविषे किसीप्राणीकूंदुःखकोप्राप्तिकरैहै ॥ सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे तिसोदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ यहसर्वशास्त्रोंकासिद्धां तहै ॥ और याहमारेपितानें इनब्राह्मणोंकेताईं जिनवृद्धगोवोंकेदेणेकाउद्यमकऱ्या है ॥ तेवृद्धगोवां दुग्धादिकोंकीप्राप्तिकरिके इनब्राह्मणों केसुखकाकारणनहीं हैं ॥ किंतु उलटा तेवृद्धगोवां आपणेभरणपोषणकीचिताद्वारा इनब्राह्मणोंकेदुःखकाहीकारणहोवैंगी ॥ यातेंतिन वृद्धगोवोंकेदानदेणेकरिके याब्राह्मणोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा यहहमारापिताभी दुःखकूंहीप्राप्तहोवैगा ॥ काहेतें यालोकविषे जोपु रुष ब्राह्मणोंकूंदुःखकोप्राप्तिकरैहै ॥ सोपुरुष सुखतेंरहितभयकेदेणेहारेलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार श्रुतिविषेकथनकऱ्या है ॥

यातें यहहमारापिता जैसे तिननरकादिकलोकोंकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ तैसे मैंनचिकेता यापिताकूं तिनवृद्धगौवोंकेदानकरणेतें निवारणकरो ॥ किंवा ॥ याहमारेपितानें हमारेवासतै जेसुंदरगौवांराख्याहैं ॥ तेसुंदरगौवां यहहमारापिता ब्राह्मणोंकेताईं किसवासतै नहींदेता ॥ और हमारेचिंताकरणेका यापिताकूं क्याप्रयोजनहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे पुत्र स्त्री सुवर्ण गौ इसतैंआदिलेकेजितनाकोधनहै ॥ सोधन जभी याधनीपुरुषके परलोकसुखकासाधनहोवै है ॥ तभीही धन यानामकरिकेकह्याजावैहै ॥ और जाधनकरिकै याधनीपुरुषकूं परलोककेसुखकीप्राप्तिनहींहोवै है ॥ सोधनकेवल याधनीपुरुषकेबंधनकरणेहारी लोहेकीशृंखलारूपहै ॥ और मैंनचिकेता याउद्दालकमुनिकापुत्रहूं ॥ यातैं शास्त्रकीरीतिसैं मैंभी यापिताकाधनहूं ॥ किंवा ॥ जिसपुत्रकेदेखतेहुए तापिताकूं कोईनरकदुःखकेप्राप्तिकानिमित्त आइकेप्राप्तहोवै ॥ और सोपुत्र तानरकदुःखकीप्राप्तिकेनिमित्तकूं निवृत्तनहींकरे ॥ सोपुत्र तापिताकापुत्रनहीं है ॥ किंतु सोपुत्र तापिताकेविष्ठामूत्रादिकमलकेसमानहै ॥ यातैं मैंनचिकेता यापिताकूं आपणेदानकरणेविषेप्रेरणाकरौं ॥ जोमैंपुत्ररूपधनकूं आप किसब्राह्मणकेताईदेवोगे ॥ याप्रकारकावचन जभी मैंनचिकेता पिताकेप्रतिकहौंगा ॥ तभी ताहमारेवचनकूंश्रवणकरिकै यहहमारापिता हमारेवासतैराखीहुई सुंदरगौवोंकेदानकरणेका हमारातात्पर्यजाणिकरिकै तिनसुंदरगौवोंकूं ब्राह्मणोंकेताईं देवैगा ॥ अथवा याहमारेअभिप्रायकूं यहपिता जोकदाचित् नहींजाणैगा ॥ तौभी ताहमारेवचनकूंश्रवणकरिकै यहपिता हमारेसैंपूछैगा ॥ तिसतैंअनंतर मैंनचिकेता यापिताकेप्रति आपणाअभिप्रायकहौंगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै सोनचिकेता ताउद्दालकमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेपिता जैसे यहगौवां आपकाधनहैं ॥ तैसेमैंपुत्रभी आपकाधनहूं ॥ यातैं मेरेकूं किसब्राह्मणकेताईं आप देवोगे ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तानचिकेतानैं दो तीनवार पिताकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोउद्दालकमुनि तानचिकेतापुत्रके पंडितपणेकेअभिमानकूंदेखिकै क्रोधवान् होताभया॥ और क्रोधवान्होइकै सोउद्दालकमुनि तानचिकेतापुत्रकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया॥हेनचिकेता तूं हमारेस्नेहकानिरादरकरिकै आपणापंडितपणादिखावताहै ॥ यातैं सर्वजगत्केनाशकरणेहारा जोमृत्युहै ॥ तामृत्युकेताईं मैं तुमारेकूंदेवौंगा॥हेशिष्य॥ताउद्दाल

कसुनिनें जभी याप्रकारकावचनकह्या ॥ तभी सोनचिकेता तापिताकेवचनकूंश्रवणकरिके आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया॥ जैसे यालोकविषे कोईविचारतैंरहिततामसीपुरुष आपणेकूंहीदुःखकोप्राप्तिकरणेहारावचन उच्चारणकरै है ॥ तैसे यहहमारापिता आपणेकूं दुःखकीप्राप्तिकरणेहारा यहवचन किसवासतै कहताभयाहै ॥ काहेतें पुत्रकेमरणेतैं जोपितामाताकूं दुःखहोवै है ॥ तादुःखकूं बुद्धिमान्पुरुष ब्रह्महत्याकाफलरूपकहे हैं ॥ और यहहमारापिताभी सर्वशास्त्रोंकेजानणेहारा बुद्धिमान्है ॥ यातें याहमारेपितानें आपणेकूं आपेहीं तापुत्रमरणजन्यदुःखकीप्राप्ति किसवासतेकरी ॥ यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवै हैं ॥ किंवा ॥ यापितानें जोहमारेकूंयमकेताईदियाहै ॥ याकेविषे कोईहमारीहानिनहींहै ॥ किंतु उलटा हमारेकूंतो पुण्यकीहीप्राप्तिहोवैगी॥काहेतें यालोकविषे जोजोशरीर उत्पन्नभयाहै ॥ सोसोशरीर किसीकालपाइके अवश्यमृत्युकेवशहोवैंगा ॥ ऐसेअवश्यभावीअर्थविषे मैंनचिकेता जोकदाचित् पिताकोआज्ञाकूंपालनकरिके तामृत्युकूं प्राप्तहोवौंगा ॥ तो इसधर्मतैंपरे दूसराकोईधर्म हमारेकल्याणकाहेतुनहीं है ॥ किंतु यहपिताकेआज्ञाकापालनकरणाही हमारेकल्याणकाहेतुहै ॥ परंतु हमारेवियोगकरिके याहमारेपिताकूं महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और मेरेतैंविना यहहमारापिता एकक्षणमात्रभी नहीरहिसकैगा ॥ तापिताकेदुःखकाविचारकरिके हमारेचित्तविषे महान्क्लेशहोवै है ॥आपणेमृत्युकरिके हमारेकूं किंचित्मात्रभीक्लेशहोतानहीं ॥ किंवा ॥ मैंनचिकेता जोकदाचित् यापिताकेदुःखकूंदेखिके तायमलोकविषे नहींजावौंगा ॥ अथवा अश्रद्धापूर्वकजावौंगा ॥ तो मैंनचिकेता अधमभावकूं प्राप्तहोवौंगा ॥ तहांश्लोक ॥ उत्तमश्चिंतितं कुर्यात् प्रोक्तकारीतुमध्यमः ॥ अधमोऽश्रद्धयाकुर्यात् प्रत्याख्यातायतद्वचः ॥ अर्थयह ॥ यालोकविषे पुत्र तथाशिष्य तीनप्रकारकेहोवै हैं ॥ एकतौ उत्तमहोवै हैं ॥ और दूसरे मध्यमहोवै हैं ॥ और तीसरे अधमहोवै हैं॥तहां पितानें तथा गुरुनें आपणेमनविषेचिंतनकऱ्याजोकोईकार्य है ॥ तापिताके तथागुरुके ताअभिप्रायकूं किसीनिमित्ततैंजाणिकरिके जेपुत्र तथाजेशिष्य विनाहीकहेतैं ताकार्यकूं श्रद्धापूर्वककरै हैं ॥ तेपुत्र तथातेशिष्य उत्तमकहेजावै हैं॥ और तापितानें तथागुरुनें आपणेमुखसैंकह्याजोकार्यहै ताकार्यकूं जेपुत्र तथाजेशिष्य श्रद्धापूर्वककरै हैं॥तेपुत्रतथातेशिष्यमध्यमकहेजावै हैं ॥ और पितानें तथागुरुनें आपणेमुखतैंकह्याजोकार्य है

ताकार्यकूं जेपुत्र तथाजेशिष्य अश्रद्धापूर्वककरेहैं ॥ अथवा ताकार्यकूंनहींकरेहैं ॥ तेपुत्र तथातेशिष्य अधमकहेजावेहैं ॥ १ ॥ यातें यापि ताकेजेबहुतशिष्यहैं तथा पुत्रहैं तिनसंपूर्णोविषे मैंनचिकेता अधमभावकूंनहींप्राप्तहोवौं ॥ किंतु उत्तमभावकूं अथवा मध्यमभावकूं मैं प्राप्तहोवौं ॥ साउत्तमभावकीप्राप्ति अथवा मध्यमभावकीप्राप्ति हमारेकूं यापिताकोआज्ञामानणेकरिकेंहीहोवैगी ॥ किंवा ॥ यालोककाप रित्यागकरिके मैंनचिकेता जभी यमलोकविषेजावौंगा॥तभी ताहमारेजाणेकरिके कोई धर्मराजाकाप्रयोजन सिद्धहोवेगानहीं ॥तथा हमारे जाणेकरिके हमारेपिताकाभी कोईप्रयोजन सिद्धहोवैगानहीं॥ उलटा हमारेवियोगकरिके यह हमारापिता उन्मत्तअवस्थाकूंप्राप्तहोइके परम दुःखकूं प्राप्तहोवैगा॥यातें याहमारेपितानें जोहमारेकूं यमकेताईदेणेकावचनकह्याहै ॥ सो केवलआपणेदुःखकेवासतेंहीकह्याहै॥किंवा॥हमारे वियोगतेंअनंतर याहमारेपिताकूं जोदुःखहोवैगा सोतोहोवैगा ॥ परंतु अभीही याहमारेपिताकूं परमदुःखकीप्राप्तिभई है ॥ काहेतें याहमा रेपिताकामुख अभी परमग्लानिकूंप्राप्तहुआहै ॥ और हमारेकूंदेखिकरिके यहहमारापिता आपणेनेत्रोंतें अश्रुओंकापरित्यागकरे है ॥ तथा यहहमारापिता स्नेहकरिके वारंवार हमाराआलिंगनकरैहै ॥ यातें यहजान्याजावै है ॥ यहहमारापिता अभीहीदुःखकूंप्राप्तभयाहै ॥ यातें मैं नचिकेता यापिताकेप्रतिऐसाकोईयुक्तिपूर्वकवचनकहौं ॥ जाकरिके यहहमारापिता हमारेस्नेहकापरित्यागकरे ॥ जोकदाचित् यहहमारा पिता हमारेस्नेहकरिके आपणेवचनकूंमिथ्याकरेगा ॥ तो तामिथ्यावचनरूपपापतें याहमारेपिताकूं नरककीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिके सोनचिकेता ताउद्दालकपिताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥नचिकेताउवाच ॥ हेपिता ॥ जन्मतेंलेकेअवपर्यंत आपने कोईमिथ्यावचननहींकह्या ॥ ऐसेआपणेसत्यपणेकूं तूंविचारकरिकेदेख ॥ और तुम्हारेकुलविषे जेपूर्व पिता पितामहादिकवृद्धपुरुषहुएहैं ॥ जेतुम्हारेवृद्धपुरुष आपणेमृत्युकेप्राप्तहुएभी मिथ्यावचनकूंनहींकहतेभये हैं ॥ ऐसेआपणेवृद्धोंकीतरफ आपदेखो ॥ और तुमारेवंश्यकेतुल्य जेदध्यङ्अथर्वणादिक सत्यवादीब्राह्मणहुएहैं ॥ तथा अन्यभी जेक्षत्रियवैश्य सत्यवादीहुएहैं ॥ तिन संपूर्णोंकीतरफ आपदेखो ॥ हेपिता ॥ ब्राह्मणकेरूपकूंधारणकरिकेप्राप्तभयाजोइंद्रहै ॥ ताइंद्रकेताईं कर्णराजा आपणीत्वचादेताभयाहै ॥

और शिविनामाकोईधर्मात्मापुरुष शरणागतकपोतकीरक्षाकरणेवासतै आपणेशरीरकामांस देताभयाहै ॥ और जीमूतवाहननामा कोईधर्मात्मापुरुष शरणागतकीरक्षाकरणेवासते किसीराक्षसकेताई आपणाशरीर देताभयाहै ॥ और दधीचिनामाऋषि देवताओंकेताई आपणीअस्थियदेताभयाहै ॥ और दध्यङ्अथर्वणनामाऋषि आपणेसत्यवचनकरणेवासतै आपणेमस्तककाछेदनकराइकेभी अश्विनीकुमारोंकेताई ब्रह्मविद्यादेताभयाहै ॥ और देवराजइंद्र आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते आपणेशत्रुप्रतर्दनराजाकेताई ब्रह्मविद्यादेताभयाहै ॥ और याज्ञवल्क्यमुनि आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते जनकराजाकेताई कामवरदेताभयाहै ॥ और दशरथराजा आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते प्राणोंतैंभीअत्यंतप्रियरामचंद्रपुत्रकूं महाभयानकवनविषे भेजताभयाहै ॥ इसतैंआदिलेकेअन्यभी अनेकसत्यवादीजन आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते नानाप्रकारकेक्लेशोंकूं सहनकरतेभयेहैं ॥ तिनसंपूर्णसत्यवादीजनोंकीतरफ आपदेखो ॥ किंवा ॥ जैसे सूर्यभगवान् आम्रादिकवृक्षोंकेफलोंकूं परिपक्वकरेहै ॥ तैसे यहकालभगवान् दिनदिनविषे याजीवोंकेशरीरोंकूं मृत्युकेसन्मुखकरै हैं ॥ और यहजीव पुण्यपापरूपकर्मोंकेवशतैं पुनःपुनःजन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेक्षणभंगुरअनित्यशरीरोंकूंप्राप्तहोइके याजीवोंनैं पापकर्मकासंपादननहींकरणा ॥ किंतु पुण्यरूपसत्यकाहीसंपादनकरणा ॥ हेपिता ॥ जोतुम स्नेहके वशहोइके हमारेकूं मृत्युकेताई नहींदेवोगे ॥ तौभी किसीकालपाइके मैं अवश्यमृत्युकूंप्राप्तहोवोंगा ॥ और आप तथायहअन्यप्राणीभी किसीकालपाइके अवश्यमृत्युकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं हे पिता हमारेस्नेहकापरित्यागकरिके तुम हमारेकूं यमकेताईदेके आपणेवचनकूंसत्यकरो ॥ तावचनकेसत्यकरणेकरिके तुमारा तथाहमारा दोनोंकाकल्याणहोवैगा ॥ और हमारे स्नेहकेवशतैं जोतू आपणेवचनकूंमिथ्याकरेगा॥तो तामिथ्यावचनजन्यपापतैं तुमारेकूंतोदुःखकीप्राप्तिहोवैंगी और पिताकेआज्ञाकूंनमाननेकरिके हमारेकूं अधमभावकोप्राप्तिहोवैंगी॥हेशिष्य॥याप्रकारकेवचन जभी तानचिकेतानैं उद्दालक पिताकेप्रतिकहे॥तभी सो उद्दालकमुनि आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते अत्यंतदुःखीहोइके तानचिकेतापुत्रकूं यमलोकविषेभेजताभया ॥ और सोनचिकेता पिताकीभक्तिकेप्रभावतैं तथा आपणेतपकेप्रभावतैं तथा चित्तकीशुद्धिकेप्रभावतैं यास्थूलशरीरसहितही तायमलोककूं

जाताभया ॥ औरआगेतैं सोयमराजा किसीदूसरेग्रामविषेगयाथा ॥ तावार्तोकूं यमकिंकरोंकेमुखतैंश्रवणकरिके सोनचिकेता तायमराजाके द्वारऊपरतीनदिनपर्यंत उपवासकरताभया॥हेशिष्य॥जिसविचारकरिके सोनचिकेता तीनदिनपर्यंत उपवासकरताभया॥ ताविचारकूं तुम श्रवणकरो॥पितानैं हमारेकूं यमराजाकेताई दियाहै॥सोयमराजा जोकदाचित् हमारेकूंनहीं अंगीकारकरेगा ॥ तो हमारेपिताका वचन मिथ्याहो वेगा॥यातैं मैंनचिकेता उपवासरूपहठकूंकरों॥जाहठकरिके सोयमराजा हमारेकूंअंगीकारकरे॥याप्रकारकाविचारकरिकेसोनचिकेता तीनउपवासोंकूंकरताभया॥और सोयमराजाभी तानचिकेताकेधैर्यकोपरीक्षाकरणेवासतै तीनदिन पर्यंत आपणेगृहविषे नहींआवताभया ॥ और सोसर्वज्ञयमराजा आपणेभृत्यों केप्रति याप्रकारकीआज्ञाकरिके बाहरगयाथा ॥ जोयहनचिकेता जभीइहांआवे ॥ तभी तुमोनैं नाना प्रकारकेउपदेशकरिके तानचिकेताकूं पुनःभूमिलोकविषेभेजणा ॥ और तेयमकिंकर तानचिकेताकूं यमलोकविषेआयाहुआदेखिके तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हेनचिकेता याभयानकयमपुरी विषे तूंब्राह्मणकाबालक किसवासतैंआयाहै ॥ इसप्रकार जभी तिनयमकिंकरों नैं तानचिकेतासैंपूछा ॥ तभी सोनचिकेता तिनयम किंकरों केप्रति आपणासंपूर्णवृत्तांत कहताभया ॥ यद्यपि सर्वज्ञ यमराजाकेसमीपरहणेहारे तेयमकिंकर पूर्वही तावृत्तांतकूंजाणतेथे ॥ तथापि पुनः तानचिकेताकेमुखतैं तिसवृत्तांतकूंश्रवणकरिके तेयमकिंकर तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेनचिकेता जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारप्रकारकेजीवोंविषे कोईभी जीव यमराजाकेताईं दीजिये अथवा नहींदीजिये॥परंतु आयुषकीसमाप्तितैंविना सोयमराजा किसीजीवकूंग्रहणकरतानहीं॥किंतु आयुषकी समाप्तितैंअनंतरही सोयम तिनजीवोंकूंग्रहणकरै है॥और सोयमराजाभी अभीइसकालविषे इहां हैनहीं॥यातैं हेनचिकेता तुम अभी शीघ्रही आपणेपिताकेगृहकूंजावो॥हेशिष्य॥याप्रकारकेवचन तेयमकिंकर तानचिकेताकेप्रति बहुतवारकहतेभये॥परंतु सोनचिकेता आपणेधैर्यतैं नहींचलायमानहोता भया॥और तानचिकेताकेधैर्यकूंदेखिके सोसर्वज्ञयमराजाभी तीसरेदिनतैंपीछे आपणेगृहकूंआवताभया॥और तायमराजाकूं आयादेखिके तेयमकिंकर तायमराजाकेप्रति याप्रकारकेवचनकहतेभये॥यमकिंकरउवाच॥हेयमराजा तुमारेगृहविषे अग्निरूप एक

ब्राह्मणकाबालकअतिथिआयाहै॥ताअतिथिरूपअग्निके शांतिकरणेवासते तुम शीघ्रही अर्घ्यपाद्यादिरूपजळकीप्राप्तिकरो ॥ हेयमराजा ॥ जैसे यालोकविषे प्रज्वलितमहान्अग्निकीशांति जळकरिकैहो वे है॥तैसे अतिथिरूपअग्निकीशांति अर्घ्यपाद्यादिरूपजलकरिकैहोवे है॥और जैसे यालोकविषे जळकरिकैनहींशांतकऱ्याहुआअग्नि गृहादिकसर्वपदार्थोंकूंदग्धकरे है॥तैसे अर्घ्यपाद्यादिरूपजळकरिकै यागृहीपुरुषों नैं शांतिकूंनहींप्राप्तकऱ्याहुआ जोअतिथिरूपअग्नि है॥सोअतिथिरूपअग्नि तिनगृहीपुरुषोंके सर्वपदार्थोंकूं दग्धकरे है॥अब याहीअर्थकूंस्पष्टक रिकैनिरूपणकरे हैं॥हेयमराजा॥जिसमंदबुद्धिगृहस्थपुरुषकेगृहविषे जोअतिथिब्राह्मण अन्नजळादिकोंकीप्राप्तितैंविना क्षुधातृषावाळारहेहै ॥ सोअतिथिब्राह्मण तागृहस्थपुरुषके आशा प्रतीक्षा संगत सूनृता इष्ट पूर्त पुत्र पशु इत्यादिकसर्वपदार्थोंकूंनाशकरे है॥इहां जिससुखकेप्रा प्तिकानिश्चयनहींहोवै॥तासुखकेप्राप्तिकीजाइच्छाहै ताकानाम आशाहै॥औरजिससुखकेप्राप्तिकानिश्चयहो वे ॥ तासुखकेप्राप्तिकीजाइच्छाहै ताकानाम प्रतीक्षाहै ॥ और यापुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहारे जेप्राणीहैं॥तिनप्राणियों केसाथ जोसमागमहै ताकानाम संगतहै ॥ और या लोकविषे तथा वेदविषे अर्थकूंप्रकाशकरणेहारो तथा सुखकीप्राप्तिकरणेहारो जावाणीहै ताकानाम सूनृताहै॥और अग्निकरिकैसिद्धहोणेहा रे जेअग्निष्टोमादिकयज्ञहैं तिनोंकानाम इष्टहै॥और सर्वजीवोंकेउपकारवासते जो कूप तलाव गृह आदिकोंकाकरणाहै याकानाम पूर्त है ॥ और पाणिगृहीतस्त्रीतैं उत्पन्नकरे जेसर्वलक्षणोंकरिकैसंपन्नसुतहैं तिनोंकानाम पुत्रहै ॥ और बहुतमूल्यवाळीजेश्रेष्ठगोआदिकहैं तिनोंका नाम पशुहै ॥ इसतैंआदिलेके जितनेको तागृहीपुरुषकेपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ नाशकूंप्राप्तहो वे हैं ॥ जिसगृहीपुरुषकेद्वारतैं अतिथिब्रा ह्मण निराशजावै है ॥ यातैं सर्वशास्त्रकेमर्यादाकूंजानणेहारे आपयमराजाकूंभी ताअतिथिब्राह्मणकासंतोषकऱ्याचाहिये ॥ हेशिष्य ॥ याप्र कारकेवचन जभी तिनयमकिंकरों नैं यमराजाकेप्रतिकहे ॥ तभी सोयमराजा अत्यंतभयवानहोताभया ॥ और सोयमराजा तानचि केताअतिथिब्राह्मणकेसमीपजाइके याप्रकारकावचन कहताभया ॥ यमराजाउवाच ॥ हेनचिकेता ॥ तूंअतिथिब्राह्मण हमारेगृहविषे तीनरात्रिपर्यंत अन्नजलकेग्रहणतैंविना रह्याहै ॥ ताकरिकै हमारेकूं महान्दोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं तादोषकीनिवृत्तिवासते मैं

यमराजा तुमारेताई तीनवरदेताहूं ॥ जोतुमारीइच्छाहोवै सोहमारेसैंमाँगो ॥ हेनचिकेता॥जोतूं हमारेप्रसन्नकरणेवासते उद्यमवालाहुआहै ॥ तो तुमारेभीकल्याणहोवैं ॥ और मैंयमराजाका तुमअतिथिब्राह्मणकेताई नमस्कारहोवै ॥ तुमअतिथिब्राह्मणकेप्रसादतैं कुटुंबसहितमैंयम राजाकूं किसीभीदुःखकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तायमराजानैं नचिकेताकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोनचिकेता तायमराजासैं तीनवरमाँगताभया ॥ तहाँ एकतो आपणेपिताकीप्रसन्नतारूपवर माँगताभया ॥ और दूसरा अग्निकाज्ञानरूपवर माँगता भया ॥ और तीसरा आत्माकाज्ञानरूपवर माँगताभया ॥ अब पिताकीप्रसन्नतारूप प्रथमवरका विस्तारतैंनिरूपणकरैहैं ॥ हेयमराजा ॥ जैसे मैंनचिकेता तुमारेलोकविषे तुमारेप्रसादतैं सर्वदुःखतैंरहितहुआस्थितहूं ॥ तथा प्रसन्नमनहूं ॥ तथा क्रोधतैंरहितहूं ॥ तैसे हमाराउद्दा लकनामापिताभी सर्वदुःखोंतैंरहितहोवै ॥ तथा मनकेसंतापतैंरहितहोवै ॥ तथा क्रोधतैंरहितहोवै ॥ और इसयमलोकतैं जभीमैं पिताकेस मीपजावोंगा ॥ तभी ताहमारेपिताका हमारेविषे अविश्वासनहींहोवै ॥ किंतु जैसे पूर्व हमारेकूं आपणापुत्रजाणिकरिकै हमारेसाथ संभाष णकरताथा ॥ तैसेहीपुनःहमारेसाथ संभाषणकरै ॥ याप्रकारकाप्रथमवर हमारेताईदेवो ॥ शंका ॥ हेनचिकेता सर्वमुनियोंविषेश्रेष्ठ जोउ द्दालकमुनिहै ॥ ताकेविषे दुःख संताप क्रोध अविश्वास यहचारोसंभवैंनहीं ॥ यातैं तिनोंकेनिवृत्तिकावर किसवासतै तुम हमारेसैंमाँग तेहो ॥ समाधान ॥ हेयमराजा ॥ सर्वशास्त्रोंकूंजानणेहारा जोहमारापिताहै ॥ ताकेविषे यद्यपि वास्तवतैं तेदुःखादिक संभवैंनहीं ॥ तथापि व्यवहारदृष्टिकूंलेके हमारेकूं तापिताविषे दुःखादिकोंकोसंभावनाहोवैहै ॥ काहेतें तापिताका हमारेविषेबहुतस्नेहथा ॥ यातैं हमारेवियोगकरिकै सोपिता अवश्यदुःखकूंप्राप्तहुआहोवैगा ॥ याप्रकार हमारेकूं तापिताविषे दुःखकोसंभावनाहोवैहै ॥ और तापितानैं क्रोधवानहोइकै हमारेप्रति याप्रकारकावचन कह्याथा ॥ हेनचिकेता हमारेस्नेहकानिरादरकरिकै हमारेआगे तू आपणेपंडितपणेकाअभिमा नकरताहै ॥ यातैं मैंउद्दालक तुमारेकूं मृत्युकेताईदेवोंगा ॥ याप्रकारके तापिताकेवचनकरिकै हमारेकूं तापिताविषे संतापकी तथाक्रो धकी संभावनाहोवैहै ॥ और यमलोकविषेजाइकै पुनःतिसीशरीरकरिकै कोईभीप्राणी भूमिलोकविषे आवतानहीं ॥ और मैंनचिकेता

“

जभी इसीशरीरकरिकै ताभूमिलोकविषेजावोंगा ॥ तभी हमारेविषे तापिताकाअविश्वास अवश्यहोवैगा ॥ ऐसीमेरेकूंसंभावनाहोतीहै ॥ यातें हेभगवन् ॥ मैंनचिकेतानैं तापिताविषे संभावनाकरेजे दुःख संताप क्रोध अविश्वास यहचारो तेदुःखादिकचारो हमारेपिताविषे नहींप्राप्तहोवैं ॥ यहप्रथमवर मैंनचिकेता आपसेमांगताहुं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तानचिकेतानैं यमराजाकेप्रतिकह्या ॥तभी सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता यहपिताकीप्रसन्नतारूपजोप्रथमवर तुमने हमारेसैंमांग्याहै ॥ सोप्रसन्नतारूपवर तुमारेपिताकूं आजदिनविषेहीप्राप्तहोवैगा ॥ हेनचिकेता हमारीप्रेरणाकरिकैजभीतु इहांसे भूमिलोकविषेजावैगा ॥ तभी सोतुमारापिता पूर्वकीन्याईही तुमारेशरीरविषे विश्वासकूंप्राप्तहोवैगा ॥ तथा दुःख संताप क्रोध यातीनोंतैंरहितहोवैगा॥ और मृत्युकेमुखतैं तुमारेकूं पुनःआयाहुआदेखिकरिकै सोउद्दालकमुनि स्वस्थचित्तहोइके पूर्वकीन्याई निद्राआहारादिकोंकूंकरैगा ॥ और जिसप्रकार तुमारा पिता दुःखादिकोंतैंरहितहोवैगा ॥ तैसे तूंभी दुःखादिकोंतैंरहितहोवैगा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार पिताकीप्रसन्नतारूप प्रथमवरकूं यमराजातैं लेकरिकै सोनचिकेता तायमराजासैं पुनःअग्निकाज्ञानरूपदूसरावर मांगताभया ॥ हेयमराजा हमनैं वेदवेत्ताब्राह्मणोंकेमुखतैं यहवार्ता श्रवणकरीहै ॥ जोस्वर्गलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकीऊपरकेलोकहैं॥तिनस्वर्गादिकलोकोंविषेप्राप्तभये जेअधिकारीमनुष्य हैं तिन मनुष्योंकूं मृत्युरूपतुमारेतैंभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और जराअवस्था ज्वरादिकव्याधि शत्रु क्षुधा तृषा शोक मोह इसतैंआदिलेके जेअनेकप्रकारकेविकारहैं ॥ तिनविकारोंतैंभी तिनमनुष्योंकूं भयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तेस्वर्गादिकलोकवासीजीव सुखकूंप्राप्तहोइके सर्वदाप्रसन्नरहे हैं ॥ याप्रकार हमनैं तिनवेदवेत्ताब्राह्मणोंकेमुखतैंश्रवणकर्‍याहै ॥ हेभगवन् तेस्वर्गादिकलोक याजीवोंकूं चयननामायज्ञ केअग्निकरिकै प्राप्तहोवैहैं ॥ यहभी हमनैं श्रवणकर्‍याहै ॥ और स्वर्गलोकविषेनिवासकरणेहारे जेआपदेवताहो ॥ तेआप ताअग्नि केस्वरूपकूं भलीप्रकारजाणतेहो ॥ यातें श्रद्धावानमैंशिष्यकेताई ताअग्निकेस्वरूपकाउपदेशकरो ॥ हेभगवन् ॥ याअग्निकरिकै स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहुए जेअधिकारीजनहैं ॥ तेअधिकारीजन ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपमुख्यअमृतकूंप्राप्तहोवै हैं ॥

और तेअधिकारीजन तिनस्वर्गादिकलोकोंविषे प्रलयपर्यंतस्थितिरूप गौणअमृतकूंभीप्राप्तहोवे हैं ॥ याप्रकारका ताअग्निकाप्रभाव हमनें तिनवेदवेत्ताब्राह्मणोंकेमुखतैंश्रवणकऱ्याहे ॥ यातैं ताअग्निकाज्ञानरूपदूसरावर आप कृपाकरिकै हमारेताईदेवो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी दूसरावर तानचिकेतानें यमराजासैंमांग्या ॥ तभी सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेनचिकेता ॥ स्वर्गादिकलोकोंकेप्राप्तिकासाधनरूप जोअग्निहे ॥ ताअग्निकेस्वरूपकूं हम भलीप्रकारजाणते हैं ॥ यातैं सर्व अंगोंकरिकेयुक्त ताअग्निकास्वरूप मैंयमराजा तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेनचिकेता ॥ स्वर्गादिक लोकोंकेप्राप्तिका तथास्थितिका कारणरूपजोअग्निहे ॥ सोअग्नि विराटरूपहे ॥ यातैं जैसे यहलोकप्रसिद्धअग्नि सर्वकाष्ठोंविषेरहे हे ॥ तैसे सोविराट्रूपअग्निभी तीनलोकों विषेस्थितहे ॥ तौभी सोअग्निगुह्यहे॥अथवा वास्तवतैंसाक्षीआत्मारूपहे ॥ यातैं ताअग्निकूं बुद्धिमान्पुरुषोंकेबुद्धिरूपगुहाविषेस्थितहुआ तूंजाण ॥ हेशिष्य॥याप्रकारकावचनकहिकै सोयमराजा तानचिकेता केप्रति सर्वलोकोंकाकारणरूप ताविराट्रूपअग्निकास्वरूप कहताभया॥और चयननामायज्ञविषे ताअग्निकेस्वरूपकीसिद्धिकरणेहारी जेइष्टकाहैं ते इष्टका जितनीसंख्यावालीहोवे हैं ॥ तथा जैसेरूपवाली होवे हैं ॥ तथा जिसप्रकार तेइष्टका रखीतीयां हैं॥तथा ताकेविषेउपयोगी जितनेकीदूसरेपदार्थ हैं तथामंत्रहैं तथाक्रियाहैं॥सासंपूर्णप्रक्रिया तानचिकेताकेप्रति सोयमराजा कहताभया ॥ हेशिष्य॥याप्रकार अग्निकास्वरूपकहिकै सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता ॥ मैंयमराजानें तुमारेप्रति जिसप्रकार अग्निकास्वरूपकह्याहे ॥ सासंपूर्णप्रक्रिया तुम हमारेआगेकथनकरो ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकारके यमराजाकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोनचिकेता जिसप्रकार तायमराजाकेमुखतैं अग्निकास्वरूप श्रवणकऱ्याथा ॥ तिसीप्रकार ताअग्निकास्वरूप कथनकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तानचिकेतानें भयतैंरहितहोइकै तायमराजाके समीप ताअग्निकास्वरूप कथनकऱ्या ॥ तभी सोयमराजा तानचिकेताकी अलौकिकबुद्धिदेखिकै बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हे नचिकेता ॥ हमारेकरेहुएउपदेशका तुमनें यथावत् कथनकऱ्याहे ॥ यातैं तुमारी

तीक्ष्णबुद्धिकूंदेखिके मैंयमराजा तुमारेऊपर बहुतप्रसन्नभयाहूं ॥ यातें पूर्वजोतुमनें तीनवरमांगे हैं ॥ सोतो मैं तुमारेताईं देवोंगा ॥ परंतु तिनतीनोंवरों तें यहअधिकवर मैं तुमारेताईं देताहूं ॥ तावरकूं तुम अंगीकारकरो ॥ हेनचिकेता॥ हमनें तुमारेप्रति जिस अग्निका उपदेश कऱ्याहै ॥ सोअग्नि आजदिनतेंलेके तुमारेनामकाहीप्रसिद्धहोवैगा ॥ तात्पर्यंयह ॥ यालोकविषे जबपर्यंत यहवेदरहेंगे ॥ तथा जबपर्यंत यहसूर्यभगवान्‌रहैगा ॥ तथा जबपर्यंत यहपांचभौतिकजगत्‌रहैगा ॥ तबपर्यंत वेदवेत्तामहात्मापुरुष ताअग्निकूं नाचिकेतअग्नि यानाम करिकेकथनकरेंगे ॥ नचिकेताकीजोअग्निहोवे ताकानाम नाचिकेतअग्निहै ॥ इसप्रकार यहअग्नि तुमारेनामकीप्रगटहोवैगी ॥ और हेनचिकेता दूसरा यहदिव्यमालारूपवर मैं तुमारेताईंदेताहूं तामालाकूं तुम आपणे कंठविषे धारणकरो ॥ कैसीहैसामाला ॥ मणियोंकेसमान जेश्रेष्ठसुवर्णकेदाणे हैं ॥ तेदाणे परोयेहुएहैं जिनोंविषे ऐसेअनेकसूत्रोंकरिकैयुक्तहै ॥ और बहुतमूल्यवाले जेवज्रादिकनवीनरत्नहैं तिनरत्नोंकरिकैजड़ितहै ॥ तथा स्थूलआमलकफलकेसमानजेअनेकमुक्ता हैं तिनोंकरिकैजड़ितहै ॥ तथा सूर्यकेसमान जाकाप्रकाशहै ॥ तथा नानाप्रकारकेशब्दोंकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसीविचित्रदिव्य मालाकूं तूं आपणेकंठविषेधारणकर ॥ जैसे मेघ विद्युत्‌कूंधारणकरे हैं ॥ तैसे तामालाकूं तूं धारणकर ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारका वचनकहिके सोयमराजा तानचिकेताकेताईं सादिव्यमालादेताभया ॥ अब तानाचिकेतनामाअग्निके महातमकूंवर्णनकरे हैं ॥ हेनचिकेता मेरेवरकरिके नाचिकेतसंज्ञाकूंप्राप्तभई जोयहअग्निहै ॥ ताअग्निकूं जोमातापितागुरुकरिकैं शिक्षित अधिकारी पुरुष चयननामायज्ञकरिकैं तीनवारसंपादनकरेगा ॥ और ताअग्निकरिके अग्निष्टोमादिकतीनयज्ञोंकूंकरेगा ॥ सोअधिकारी पुरुष ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा जन्ममृत्युकूंतरैगा ॥ अथवा सोअधिकारी पुरुष इसीजन्मविषे ब्रह्मज्ञानकेसाधनसंपत्तिकूंप्राप्तहोइके जन्ममृत्युकूंतरैगा ॥ अथवा सोअधिकारीपुरुष आपणेपुण्यकर्मपर्यंत पुनरावृत्तितेंरहितहुआ स्वर्गलोकविषेनिवासरूप जन्ममृत्युकेतरणकूं प्राप्तहोवैगा ॥ अथवा सोअधिकारीपुरुष मोक्षरूप जन्ममृत्युकेतरणकूं प्राप्तहोवैगा ॥ परन्तु तिनअधिकारीपुरुषों विषेभी मोक्षरूपफलकीप्राप्तितौ किसीएकनिष्कामअधिकारीकूंहीहोवेगी ॥ हेनचिकेता ॥ हिरण्यगर्भतें उत्पन्नभया जोयहविराटरूपअग्नि

है ॥ सोयहविराट्रूपअग्नि सर्वज्ञरूपहै ॥ तथा अत्यंतप्रकाशमानहै ॥ तथा संपूर्ण सुरअसुरोंकरिकै स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ ऐसेविराट् रूपअग्निकूं गुरुकेमुखतैंजाणिकरिके जेअधिकारीपुरुष यज्ञादिरूपकर्मोंकूं तथाउपासनाकूं करैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष आपणेआपणेभाव नाकेअनुसार स्वर्गरूपशांतिकूं अथवा मोक्षरूपशांतिकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति नानाप्रकारके फलसहित ताअग्निकाउपदेशकरिके पुनःयाप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता ॥ जोअग्नि तुमनैं हमारेसैंपूछाथा ॥ और जिसअग्नि काज्ञान नानाप्रकारकेफलोंसहित हमने तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सोयहअग्नि स्वर्गरूपकरिके प्रत्यक्षदीखैहै ॥ हेनचिकेता अग्निकाज्ञान रूप दूसरावर तुमनैं हमारेसैंमांग्याथा॥ सोहमनैं तुमारेताई दूसरावरदिया॥अबी तीसरावर तूं हमारेसैंमांग ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तायमराजानैं नचिकेताकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोनचिकेता तीसरेवरकेप्राप्तिकीइच्छाकरिके तायमराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कह ताभया ॥ हेयमराजा ॥ पूर्वहमनैं वेदवेत्तामहात्मापुरुषोंकेमुखतैं याप्रकारकेवचन श्रवणकरे हैं ॥ यालोकविषे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकरिकेयुक्त जितनेकीजीवहैं ॥ तेसंपूर्णजीव आपणे आपणेप्रारब्धकर्मकेसमाप्तहुएतैंअनंतर अवश्यमृत्यु कूंप्राप्तहोवै हैं॥यातैं यह जान्याजावैहै यहजीव पुण्यपापकर्मकेवशतैं जिसजिसशरीरकूंप्राप्तहोवै हैं॥तिसतिसशरीरकेसाथही तिनजीवोंकामृ त्यु उत्पन्नहोवैहै॥सोतिनजीवोंकामृत्युआजदिनविषेहोवै ॥ अथवा शतवर्षतैंअनंतरहोवै ॥ याकेविषे कोईनियमनहीं है ॥ परंतु जोजो जीव उत्पन्नहोवैहै॥ताजीवकामृत्यु अवश्यकरिकेहोवैहै ॥ हेभगवन् ॥ अस्मदादिकजीवोंकीक्यावार्ता है ॥ परंतु जन्मकरिकेयुक्त जेब्रह्मादिक देवताहैं॥तिनदेवतावोंकाभी मृत्युअवश्यहोवैहै॥तहांश्रुति॥अतोऽन्यदार्त्तं ॥ अर्थयह॥अधिष्ठानआत्मातैंभिन्न जितनाकीअनात्मजगत् है॥ सोजगत् मृत्युकरिकेयुक्तहै ॥ तहांस्मृति॥जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच॥अर्थयह॥जोजोप्राणी जन्मकूंप्राप्तभयाहै॥ताका मृत्युअव श्यहोवै है ॥ और जोजोअज्ञानीजीव मरणकूंप्राप्तभयाहै ॥ ताका जन्मभी अवश्यहोवैहै ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंतैं जन्मवालेपदार्थों का मृत्युअवश्यहोवैहै ॥ यहअर्थनिश्चयहोवैहै ॥ अब मरणअवस्थातैं अनंतर आत्मा विद्यमानहै अथवा नहींविद्यमानहै ॥ याप्रकारके

संशयकेदिखावणेवासते प्रथम जीवतअवस्थाविषेही तासंशयकानिरूपणकरेहैं ॥ हेयमराजा केईकचार्वाकादिकनास्तिक याशरीरक विद्यमानहुएभी आत्माकेसत्ताकाअभाव कथनकरेहैं ॥ ताअर्थविषे तेचार्वाकवादी याप्रकारकीयुक्तियां कथनकरेहैं ॥ वेदकूंमानणेहारेआ स्तिकपुरुषोंनें जोभावरूपआत्मामान्याहे ॥ सोआत्मा यासंघाततैंभिन्नहोइकेप्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं सोआत्मा यास्थूलसंघाततैंभिन्ननहीं हे ॥ किंतु यहसंघातही आत्मारूपहे ॥ किंवा ॥ जोवादो यासंघाततैं आत्माकूंभिन्नमानेहे ॥ तावादोसैं यहपूछनाचाहिये ॥ सोतुमारा आत्मा स्पर्शादिकगुणोंवालाहे ॥ अथवा तिनस्पर्शादिकगुणोंतैंरहितहे ॥ तहां सोआत्मा स्पर्शादिकगुणोंवालाहे यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोपदार्थ स्पर्शगुणवालाहोवैहे ॥ सोसोपदार्थ त्वकइंद्रियकरिकेग्रहणहोवे हे ॥ जैसे घटादिपदार्थ स्पर्शगुणवाले हैं ॥ यातैं तेघटादिकपदार्थ त्वकइंद्रियकरिकेग्रहणहोवे हे ॥ तैसे सोतुमाराआत्माभी स्पर्शगुणवालाहोणेतैं त्वकइंद्रियकरिके ग्रहणहोवेगा ॥ और तास्पर्शगुणवालेआत्माकाजोत्वकइंद्रियकरिकेग्रहणमानोंगे ॥ तो सोतुमाराआत्मा प्राणवायुरूप होवैगा ॥ और आत्माकूंतुमोनें नित्यअंगोकारकऱ्याहे ॥ और यहवायुरूपप्राण अनित्यहे ॥ यातैं आत्माकूंनित्यमानणेहारे तुमवादियोंके मतविषे ताआत्माकूं अनित्यप्राणवायुरूपतासंभवेनहीं ॥ किंवा ॥ जोप्राणआत्मवादी वायुरूपप्राणकूंही आत्मामानेहे ॥ ताप्राणात्मवा दीसे यहपूछाचाहिये यासंघातविषे जैसे वायुरूपप्राणविद्यमानहे ॥ तैसे तेज जल पृथ्वी यहतीनभूतभीविद्यमानहैं ॥ तिनचारोंविषे एकप्राणही आत्मारूपहे ॥ तेजादिकभूत आत्मारूपनहीं हे ॥ याअर्थकीसिद्धिकरणेवासते तुमोनें कोईयुक्तिकहीचाहिये ॥ शंका ॥ हे चार्वाकवादी ॥ जिसपदार्थकेअभावहुए याशरीरकेजीवनकाअभावहोवे तापदार्थकानाम आत्माहे ॥ याप्रकारका आत्माकालक्षण याप्रा णविषेहीघटेहे ॥ काहेतैं प्राणोंकेअभावहुएही याशरीरकेजीवनकाअभाव यालोकविषेदेखीताहे याप्रकारकीयुक्तिकरिके प्राणोंविषे ही आत्मरूपतासिद्धहोवैहे समाधान ॥ हेप्राणआत्मवादी ॥ तायुक्तिकरिके जैसे वायुरूपप्राणोंविषे आत्मरूपतासिद्धहोवैहे ॥ तैसे तायुक्तिकरिके तेज जल पृथ्वी यातीनभूतोंविषेभी आत्मरूपतासिद्धहोवैहे ॥ काहेतैं याशरीरविषे तेजरूपजाउष्णताहे ॥

तथा जलरूपजोरक्तहै ॥ तथा पृथिवीरूप जोवीर्यकासारभूत ओजनामाअष्टमधातुहै॥यातीनोंका जभीअभावहोवैहै॥तभी याशरीरोंकेजी
वनकाभी अभावहोवैहै॥यातैंवायुरूपप्राणकीन्याई तेज जल पृथिवी यातीनोंविषेभी आत्मरूपताहोणीचाहिये॥किंवा॥जिसकालविषेयाजी
वोंकामरणहोवैहै॥ तिसकालविषे याजीवोंकेशरीरमें प्राण उष्णता रक्त ओज याचारोंका समानहीअभावहोवैहै॥और तिनचारोंविषे जडरू
पताभीसमानहीहै ॥ यातैं तिनचारोंविषे एकवायुरूपप्राणकूंतो आत्मारूपमानणा॥और तेज जल पृथिवी यातीनोंकूं आत्मरूपनहींमान
णा॥यापक्षकेअंगीकारकरणेविषे कोईयुक्तिहैनहीं॥शंका॥हेचार्वाकवादी॥यासंघातविषे जोज्ञानउत्पन्नहोवे है॥ताज्ञानकाकारण वायुरूपप्रा
णहीहै॥तेजादिकतीनभूत ताज्ञानकेकारणहैं नहीं॥याकारणतैं सोवायुरूपप्राणही आत्मरूपहै॥तेजादिकतीनभूत आत्मारूपनहीं है॥ समा
धान॥हेप्राणात्मवादी॥जिसकालविषे याजीवोंकूं घटादिकपदार्थोंकाज्ञानहोवैहै॥तिसकाल विषे यासंघातमें जैसे सो वायुरूपप्राणविद्यमानहै
तैसे उष्णता रुधिरओज यह तीनोंभीविद्यमानहैं॥यातैं तिनचारोंकेविद्यमानएहुभी एकवायुरूपप्राणकाही सोज्ञानधर्महै॥तेजादिकतीनभूतों
कासो ज्ञान धर्मनहीहै॥यहकहणा अत्यंतविरुद्धहै॥यातैं शास्त्रयुक्तितैंरहित जेकोईमूढबालकवादीहै॥तिनवादियोंनें मोहमात्रतैं यहप्राणात्म
वाद प्रगटकऱ्याहै ॥ परंतु सोप्राणात्मवाद किसीयुक्तिप्रमाणतैं सिद्धहोइसकेनहीं ॥ किंवा ॥ जोप्राणात्मवादी प्राणकूंही आत्मामानैहै ॥
तावादीसे यहपूछाचाहिये ॥ सोतुमाराप्राणरूपआत्मा जभी परलोकविषेजावैहै ॥ तभी सोप्राणरूपआत्मा निराधारहुआ किसप्रकारजा
वे है॥ और जैसे यहलोकप्रसिद्धबाह्यवायु आकाशविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोप्राणरूपआत्माभी परलोकविषेजाताहुआ तामार्ग
विषेही लयभावकूं किसवासतैनहींप्राप्तहोता ॥ यादोनोंप्रश्नोंकाउत्तर तुमप्राणात्मवादियोंनें कह्याचाहिये ॥ किंवा ॥ यालोकविषे चर्मादि
कोंविषे निरोधकऱ्याहुआजोवायुहै ॥ सोवायु तबपर्यंतही ताचर्मादिकोंविषेरहेहै ॥ जबपर्यंत तिनचर्मादिकोंविषे कोईछिद्रनहींभया ॥
तिनचर्मादिकोंविषेछिद्रहुएतैंअनंतर तिनचर्मादिकोंविषेरहैनहीं ॥ किंतु तिनचर्मादिकों तैं सोवायु तिसछिद्रद्वारा बाहरनिकसजावे है॥यह
वायुकास्वभाव सर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्धहै ॥ और मुखादिकनवद्वारोंवाला जोयहशरीरहै ॥ ताशरीरविषेरहताहुआ सोतुमाराप्राणरूप

आत्मा याशरीरकापरित्यागकरिके बाहरकिसवासतेनहींजाता॥ और सोप्राण याशरीरकापरित्यागकरिके बाहरजातानहीं ॥ यातें यहजा न्याजावैहे ॥ याशरीरविषे कोईपदार्थ तिसप्राणकेबंधनकरणेहाराहे ॥ जिसपदार्थकरिकेबांध्याहुआ सोतुमाराप्राणरूपआत्मा याशरीरका परित्यागकरिके बाहरजातानहीं ॥ सोप्राणोंकेबंधनकरणेहारा कौनपदार्थ है ॥ सोपदार्थ तुमोंनें कह्याचाहिये ॥ शंका ॥ हेचार्वाकवादी जिनपुण्यपापरूपकर्मोंनें याशरीरकीप्राप्तिकरीहे ॥ तेपुण्यपापरूपकर्महीं याशरीरविषे ताप्राणकेस्थितिकाकारणहैं ॥ और तेपुण्यपाप रूपकर्म जभी सुखदुःखरूपभोगकूंदेकेसमाप्तहोवैहे ॥ तभी सोप्राणभी याशरीरविषेरहैनहीं ॥ समाधान ॥ हेप्राणात्मवादी ॥ तुमनें जिस पुण्यपापरूपकर्मकर्मोंकेअधीन यासंघातविषे प्राणोंकीस्थिति कथनकरीहे ॥ तेपुण्यपापरूपकर्म नित्यहैं॥ अथवा अनित्यहैं॥तहां तेपुण्य पापरूपकर्म नित्यहैं यहप्रथमपक्ष जोतू अंगोकारकरे॥तो जिनपुण्यपापरूपकर्मोंकरिके याशरीरविषे ताप्राणकीस्थितिविनाशहोवैहे॥तेपुण्य पापरूपनित्यकर्महीं आत्मारूप किसवासतेनहींहोवे॥और तेपुण्यपापरूपकर्मअनित्यहैं यहदूसरापक्ष जोतू अंगीकारकरे॥तो जैसे तापुण्यपा परूपकर्मोंकेनाशतें ताप्राणरूपवायुका याशरीरतेंबाहरनिकसणा तुम कल्पनाकरतेहो॥तैसेतापुण्यपापरूपकर्मकेनाशतेंअनंतरताप्राणरूप आत्माकानाश तुम किसवासतेनहींकल्पनाकरतेहो॥किंतु तापुण्यपापरूपकर्मोंकेनाशतेंअनंतर ताप्राणरूपआत्माकानाशभीतुमोंनें अंगी कारकऱ्याचाहिये॥सोप्राणरूपआत्माकानाश तुम अंगीकारकरतेनहीं॥यातें यहअर्थसिद्धभया॥जेवादी प्राणकूंहींआत्मामानें हैं ॥ तिनप्रा णात्मवादियोंकेमतविषेभी देहात्मवादियोंकीन्याई ताप्राणरूपआत्माका परलोकविषेगमनसंभवेनहीं॥यातें जेचार्वाकादिकनास्तिक पृथ्वी जल तेज वायु याचारिभूतोंकेसमुदायरूपशरीरकूं हीं आत्मामानेंहैं ॥ तिनचार्वाकनास्तिकोंकेमतकूं अंगीकारकरिकेहीं किसीनास्तिकनें नाममात्रकाभेदकरिके प्राणकूंआत्मामान्याहे ॥ परंतु वास्तवतेंविचारकरिकेदेखियेतो तिसप्राणात्मवादीकेमतविषेभीतिनवायुआदिकभूतों कूंहीं आत्मरूपता सिद्धहोवे हे॥यातें यासंघाततेंभिन्न कोईदूसरा स्पर्शगुणवालाआत्माहैनहीं॥किंवा॥यासंघाततेंभिन्नकिसीआत्माविषे जैसे स्पर्शगुण प्रतीतनहींहोवे हे ॥ तैसे रूप रस गंध यहतीनोंगुणभी प्रतीतहोवेंनहीं॥यातें यासंघाततेंभिन्न जैसे कोईस्पर्शगुणवाला आत्मा

नहीं हैं ॥ तैसे यासंघाततैंभिन्न कोईरूपगुणवाला तथा रसगुणवाला तथा गंधगुणवालाभी आत्माहैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादीयासंघाततैंभि न्न शब्दगुणवालाकोईआत्मामानैं सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं पृथ्वी जल तेज वायु यहचारिभूतहो शब्दगुणवालेहुए प्रतीतहोवै हैं ॥ याचा रिभूतों तैंभिन्न किसीभीपदार्थविषे सोशब्दगुण प्रतीतहोतानहीं ॥ जोकदाचित् सोवादी याचारिभूतों तैंभिन्नभीकिसीपदार्थकूं ताशब्दगुण वालाअंगीकारकरे ॥ तौ तावादीकेमतविषे याचारिभूतो तैंभिन्न वंध्यापुत्रभी मधुरशब्दवालाहोणाचाहिये ॥ किंवा ॥ जोवादी यासंघाततैं भिन्न किसीआत्माकूं शब्दगुणवालाअंगीकारकरे ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ तुमारेमतविषे ताशब्दगुणवालेआत्माकाज्ञान किसप्रमा णकरिकेहोवै है ॥ सोप्रमाण तुमनैं कह्याचाहिये॥ तहां सोवादी जोश्रोत्रइंद्रियकरिकै ताआत्माकाज्ञानमानैं सोसंभवैनहीं॥काहेतैं सोश्रोत्रइं द्रिय एकतौशब्दगुणकूंग्रहणकरै है ॥ तथा ताशब्दविषेवर्त्तणेहारी शब्दत्वादिक जातियोंकूंग्रहणकरै है ॥ तथा तिनशब्दों केअभावकूंग्रह णकरै है ॥ परंतु सोश्रोत्रइंद्रिय शब्दगुणवालेद्रव्यकूंग्रहणकरै है यहप्रक्रिया किसीभीवादीनैं अंगीकारकरीनहीं॥यातैं ताशब्दगुणवालेआ त्माकाज्ञान श्रोत्रइंद्रियकरिकैसंभवैनहीं॥शंका॥हेचार्वाकवादी॥ताशब्दगुणवालेआत्माकाज्ञान मनकरिकेहीहोवैगा ॥समाधान॥हेवादी॥म नकरिकेभी ताशब्दगुणवालेआत्माकाज्ञान होइसकैनहीं॥काहेतैं याजीवोंकामन जिसजिसमनोरथादिकोंकीकल्पनाकरै है॥तिसीतिसीमनो रथादिकपदार्थोंकूं यहजीवतामनकरिकेदेखैहै ॥ शब्दादिकगुणोंकूं तथा शब्दादिकगुणवालेद्रव्योंकूं यालोकविषे कोईभीजीव मनकरिकेदे खतानहीं ॥ किंवा ॥ स्पर्शादिकगुणोंवालाआत्माहै यापक्षविषे जैसे ताआत्माकूं अनित्यरूपताप्राप्तहोवै है ॥ तैसे स्पर्शादिकगुणरूपआ त्माहै यापक्षविषेभी ताआत्माकूं अनित्यरूपताहो प्राप्तहोवै है ॥ यातैं स्पर्शादिकगुणरूपभी सोआत्मानहीं है ॥ किंवा ॥ जोवादी स्प र्शादिकोंकूंगुणरूपमानै हैं ॥ और आत्माकूं द्रव्यरूपमानै हैं ॥ और गुणोंका तथाद्रव्योंका परस्परभेदमानै हैं ॥ तिनवादियों के मतविषे सोद्रव्यरूपआत्मा स्पर्शादिकगुणरूप किसप्रकारहोवैगा किंतु सोद्रव्यरूपआत्मा स्पर्शादिकगुणरूप कदाचित्भीनहीं होवैगा॥किंवा जैसे सोतुमाराआत्मा रूपस्पर्शादिकगुणरूपनहीं है॥तैसे सोआत्मा रूपस्पर्शादिकगुणों तैंभिन्नभी कह्याजावैनहीं ॥ काहेतैं

सोआत्मा जोवायुआदिकद्रव्यरूपकरिके तिनस्पर्शादिकगुणों तैंभिन्नहोवै॥अथवा वायु आदिकद्रव्यों तैंभी भिन्नहोवै॥यादोनोंपक्षोंविषे ता आत्माकेज्ञानविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं करणरूपतासंभवैनहीं॥काहेतें तेनेत्रादिकइंद्रिय रूपस्पर्शादिकगुणों के तथा तिनरूपस्पर्शादिकगुणोंवालेद्रव्यों के ग्रहणविषेहीसमर्थहोवै हैं ॥ तिसतैंभिन्नकिसोपदार्थकूं तेनेत्रादिकइंद्रिय ग्रहण करिसकैनहीं ॥ यातैं पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंकासमुदायरूप जोयहस्थूलशरीरहै ॥ सोस्थूलशरीरही आत्माहै ॥ या शरीरतैंभिन्न कोईआत्माहैनहीं ॥ हेयमराजा इसतैंआदिलेके जोतिनचार्वाकादिकनास्तिकों के कुतर्कवचनहैं ॥ तिनवचनोंकूं श्रवणकरिके बुद्धिमान्पुरुषभी याजीवतअवस्थाविषेही यासंघाततैं आत्माभिन्नहै अथवा यहसंघातही आत्मारूपहै याप्रकारकेव्यामोहकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेयमराजा ॥ जैसे तेचार्वाकादिकनास्तिक नानाप्रकारकीयुक्तियोंकेबलतैं यास्थूलसंघाततैंभिन्न ता आत्माका असत्यपणाकहेहैं ॥ तैसे कोईकआस्तिकवादी वेदवचनोंकेबलतैं यासंघाततैंभिन्न ताआत्माकासत्यपणाभीकहेहैं ॥ हेभगवन् ॥ इसप्रकार आत्माविषे सत्यपणा तथाअसत्यपणा श्रवण करिके ॥ हमारेकूं संशयप्राप्तभयाहै ॥ जोआत्मा सत्यहै अथवा असत्यहै ॥ हेभगवन् याहमारेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासते आप कृपाकरिके हमारेप्राति तिनदोनोपक्षोंविषे एकपक्षकोसिद्धिकरणेहारावचन कथनकरो ॥ याप्रकारका तीसरावर आप हमारेताईदेवो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार आत्मज्ञानकीप्राप्तिरूप तीसरावर जभी तानचिकेतानैं यमराजासैंमांग्या ॥ तभी सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति आपणेहस्तकी भ्रमणरूपचेष्टातैं निवारणकरताहुआ याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता याआत्माकास्वरूप तूं हमारेसैंमतपूछ ॥ काहेतैं पूर्वजेदेवता शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ तथा इदानींकालविषे जेदेवता शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ तेबुद्धिमान्देवताभी याआत्माकेस्वरूपविषे संशयकूंप्राप्तहोइके तास्वरूपकानिर्णयकरणेविषे समर्थनहींहोतेभये हैं ॥ तौ तूंबालक ताआत्माकेस्वरूपका निर्णयकरणेविषे कैसेसमर्थहोवैगा ॥ हेनचिकेता ताआत्माका जोसत्यपणाधर्म है तथा असत्यपणाधर्म है तेदोनोंधर्म अत्यंतसूक्ष्महैं ॥ याकारणतैं तेमहान्बुद्धिवालेदेवताभी ताआत्माकेसत्यपणेकूं तथा असत्यपणेकूं नहींजाणतेभयेहैं॥ऐसेदुर्विज्ञेयआत्माकाज्ञानरूपतीसरावर

तू हमारेसैंमतमाँग ॥ किंतु याआत्मज्ञानतैंभिन्न जिसपदार्थविषे तुमारीप्रीतिहोवे ॥ सोतीसरावर तू हमारेसैंमाँग ॥ यादुर्विज्ञेयआत्माके उपदेशकरणेविषे तू हमारेकूंप्रेरणामतकर ॥ हेनचिकेता ॥ सत्यवचनरूपपाशकरिकेबांध्याहुआ मैं यमराजा तुमारेवशकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यातैं तादुर्विज्ञेयआत्माकाप्रश्नरूपभार तुम हमारेऊपरमतपावो ॥ किंतु ताआत्मज्ञानतैंभिन्न कोईतोसरावर हमारेसैंमांगिके हमारेकूं तास त्यवचनरूपपाशतैं मुक्तकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तायमराजानैं नचिकेताके प्रतिकह्या तभी सोनचिकेता तायमराजाके प्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेयमराजा ॥ जिसआत्माकेवास्तवस्वरूपविषे देवतावोंकूंभी संशयहोवे है ॥ और जिसआत्माकीदु र्विज्ञेयता आपनैं कथनकरीहै ॥ तथा पूर्वमहात्माविद्वान्पुरुषोंनैंभी कथनकरीहै ॥ ऐसेदुर्विज्ञेयआत्माके उपदेशकरणेहारे आपसरीखेमहा त्मा दुर्लभहैं॥ हेभगवन्॥ऐसेआपसरीखेदुर्लभगुरुवोंकूंप्राप्तहोइकेभी जोमैंनचिकेता तादुर्विज्ञेयआत्माकूंनहींजाणोंगा॥तौया तीनलोकोंविषे तादुर्विज्ञेयआत्माका उपदेश हमारे प्रति कौनविद्वान्पुरुष करेगा ॥ किंतु तादुर्विज्ञेयआत्माकेउपदेशकरणेविषे आपतैंविना दूसराकोई समर्थहैनहीं ॥ यातैं हेयमराजा ॥ जोकदाचित् हमारेविषे तुमारीप्रीतिहै ॥ तथा जोकदाचित् सोतुमारावचन सत्यहै ॥ तौ यहआत्मज्ञा नकीप्राप्तिरूपहीतीसरावर आप हमारेताईदेवो ॥ हेभगवन् याआत्मज्ञानकीप्राप्तिरूपवरतैंपरे दूसराकोईवर मैं श्रेष्ठदेखतानहीं ॥ यातैं ताआत्मज्ञानरूपवरकूंछोड़िके अन्यकिसीवरदेणेकाउद्यम आप किसवासतेकरतेहो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तानचिकेतानैं यमराजाकेप्रति कथनकर्‍या ॥ तभीसोयमराजा तानचिकेताकेवैराग्यकीपरीक्षाकरणेवासते पुत्र १ पौत्र २ पशु ३ हस्ती ४ सुवर्ण ५ अश्व ६ मंडलाधिपत्य ७ चिरजीवन ८ वित्त ९ स्थिरजीविका १० चक्रवर्त्तिराजापणा ११ दिव्यमनुष्यकामभोगिपणा १२ सत्यकामप णा १३ दिव्यस्त्रियां १४ तिनस्त्रियोंकीदासियां १५ तिनस्त्रियोंका नृत्यवादित्रादिकोंविषे कुशलपणा १६ ॥ यहषोडशप्रकारकेवरतान चिकेताकेताई देताभया ॥ अब क्रमतैं तिनषोडशवरोंका निरूपण करैहैं ॥ हेनचिकेता ॥ शतवर्षपर्यंतजीवणेहारे तथा रूपयौवनविद्या दिकगुणोंकरिकेयुक्त जेअनेकश्रेष्ठपुत्रहैं ॥ तिनपुत्रोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ १ ॥ अथवा तिसोप्रकारकेश्रेष्ठगुणवालेजे

पौत्रहैं ॥ तिनपौत्रोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ २ ॥ अथवा बहुतमूल्यवाले जेगौआदिकश्रेष्ठपशुहैं तिनपशुवोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ३ ॥ अथवा पर्वतकेसमान जिनोंकाआकारहे ऐसेजेश्रेष्ठहस्ती हैं ॥ तिनहस्तियोंकोप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ४ ॥ अथवा स्वर्गलोकविषेस्थित जोसुमेरुपर्वतकेसमानसुवर्णहे ॥ तासुवर्णकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ५ ॥ अथवा सूर्यभगवान्केरथविषेस्थितजेअश्वहैं ॥ तिनअश्वोंकेसमान आकाशविषेगमनकरणेहारे जेश्रेष्ठअश्वहैं ॥ तिनअश्वोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ६ ॥ अथवा सर्वभूमिविषे आपणेशुभगुणोंकरिकेप्रसिद्ध जोनिष्कंटकभूमिमंडलकाराज्यहे ॥ ताराज्यकोप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ७ ॥ अथवा जितनेकालपर्यंत जीवनविषे तुमारीइच्छाहोवे ॥ तितनेकालपर्यंत दीर्घआयुषकी प्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ८ ॥ अथवा यातीनलोकविषेस्थित जोनानाप्रकारकाधनहे ॥ ताधनकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाँग ॥ ९ ॥ अथवा यालोकविषे जोचिरकालपर्यंत आपणीजीविकाहै॥ताजीविकाकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाँग॥१०॥ अथवा यासर्वभूमिविषे जोचक्रवर्त्तिराजापणाहे ॥ ताचक्रवर्त्तिराजापणेकोप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाँग ॥ ११ ॥ अथवा आपणी कामनाकेविषय जेपुत्रपौत्रादिकदिव्यपदार्थ हैं ॥ तिनदिव्यपदार्थोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसेमाँग ॥ १२ ॥ अथवा यातीनलोक विषे जेजेदुर्लभपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंकीआपणीइच्छामात्रतें प्राप्तिरूप जोसत्यकामपणाहे ॥ तासत्यकामपणेकोप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ १३ ॥ अथवा यास्वर्गलोकविषेस्थित जेदिव्यअप्सराहैं ॥ तिन दिव्यस्त्रियोंकोप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ कैसी हैंतिस्वर्गकीस्त्रियां॥स्वर्गकेरहणेहारेपुरुषोंके मनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकोप्राप्तिकरणेहारियां हैं ॥ और अश्वमेधादिकमहान्यज्ञोंकरिके याजी वोंकूं जिनस्त्रियोंकादर्शनहोवेहे॥ और आपणेपीनउन्नतदोस्तनोंकरिके चंद्रमंडलका तिरस्कारकऱ्याहे जिनस्त्रियों नें ॥ और नितंबस्थानविषेस्थित सुवर्णमणिमयकांचीकेमधुरशब्दोंकरिके व्याप्तकरीहैभूमि जिनस्त्रियोंनें ॥ और आपणेमुखरूपकमलकेसुगंधकरिके

युक्तजोवायुहे ॥ तावायुकरिके सुगंधिवालाकऱ्याहे गृहकामध्यभाग जिनस्त्रियोंनें ॥ और वृंततैंरहित जोचंपकपुष्पोंकीमालाहे ॥तामाला
केकोमलस्पर्शकूं आपणेशरीरकेकोमलस्पर्शकरिके तिरस्कारकऱ्याहे जिनस्त्रियोंनें ॥ तथा उत्कृष्टहावभावोंकरिके कामीपुरुषोंकेरसउल्ला
सकूं उत्पन्नकरणेहारे हैं विलास जिन स्त्रियोंके ॥ तथा कोकिलाकेसमानहैं मधुरस्वर जिन स्त्रियोंका ॥ और मंदमंदहास्यकरिकेयुक्त जो
स्निग्धमुखहे॥तामुखकरिके जे स्त्रियां विचित्रअर्थवालेपदोंकूंभाषणकरणेहारीयां हैं॥ और आपणेशरीरकीनिर्मलकांतिकरिके जिन स्त्रियोंनें
सूर्यचंद्रमाकीकांतिकूंभी तिरस्कारकऱ्याहे ॥और जे स्त्रियां सर्वलक्षणोंकरिकेसंपन्नहैं॥और प्रथमनवीनयौवनअवस्था प्राप्तभई हे जिन स्त्रि
योंकूं॥ और आपणेशरीरकोसुंदरताकरिके जे स्त्रियां कामकूंभी कामकीउत्पत्तिकरणेहारीयां हैं॥और प्रकाशमान तथा अमूल्य जेनानाप्र
कारकेविचित्रवस्त्रहैं तथा भूषणहैं ॥ तिनवस्त्रभूषणोंकरिके शोभायमानहैशरीर जिन स्त्रियोंका॥ औरभोक्तापुरुषोंकेअनेकपुण्यकर्मोंकरिके
रचितहेशरीर जिन स्त्रियोंका॥१४॥पुनःकेसीहैं ते स्त्रीयां॥आपणेसमानरूपवालियाँ तथासमानअवस्थावालियां जेएकएकशत१००दासियाँ
हैं तिनदासियोंकरिकेयुक्तहैं॥१५॥तथा नृत्यकरणेकेसाधन जेनानाप्रकारकेतर्यवीणादिकवादित्रहैं॥तिनवादित्रोंकरिकेयुक्तहैं ॥१६॥ऐसेस्वर्ग
की स्त्रियोंकेजेनेत्रोंकेकटाक्षहैं ॥ तेकटाक्ष याजीवोंकूं मोक्षरूपसुखतैंभी अधिकसुखकीप्राप्तिकरे हैं॥ जभी तिन स्त्रियोंकेकटाक्षमात्रभी याजी
वोंकूं मोक्षसुखतैंभी अधिकसुखकीप्राप्तिकरे हैं॥ तभी तिन स्त्रियोंकेअंगोंकास्पर्श याजीवोंकूं परमआनंदकीप्राप्तिकरे हे याकेविषेक्याकहणा
हे॥ हेनचिकेता मेरीआज्ञाविषेविचरणेहारे जेस्वर्गवासीपुरुषहैं ॥ तेस्वर्गवासीपुरुष ऐसीसुंदरस्त्रियोंकूं आलिंगनकरिके सर्वदा सुखकूंप्राप्तहो
वे हैं ॥ ऐसीसुंदर स्त्रियां मनुष्यलोकविषे किसीमनुष्योंकूं प्राप्तहोवैंनहीं॥ हेनचिकेता ऐसीस्वर्गकीसुंदर स्त्रियां मैंयमराजा तुमारेताईदेताहूं
तिन स्त्रियोंकेसाथतुम सुखपूर्वक रमणकरो ॥ परंतु मरणतैंअनंतर याशरीरतैंभिन्नरूपकरिके आत्माकासत्यपणाहे ॥ अथवा असत्य
पणाहे ॥ याप्रकारका मरणविषयकप्रश्न तुम हमारेसैंमतकरो ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे यालोकविषे काककेकितनेदंतहैं याप्रकारका काक
केदंतोंकीपरीक्षाकरणेतैं याजीवोंकूं किंचित्मात्रभी फलकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे मरणतैंअनंतर यहजीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहो

वे है अथवा भस्मभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ याप्रकारकेआत्मविचारकरणेतें तेरेकूं किंचित्मात्रभी फलकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ यहजे स्त्रीपुत्रादिकपदार्थ मैं तुमारेताईदेताहूं ॥ तेपदार्थ इसोकालविषे तुमारेकूंसुखरूपफलकीप्राप्तिकरेंगे ॥ और जोतू आत्माकाविचारकरताहै ॥ सोविचार आपसुखरूपनहीं है ॥ तथा सोविचार सुखकेप्राप्तिकासाधनरूपनहीं है ॥ यातें सोनिष्फलविचार तुमारेकूंकरणेयोग्यनहीं है ॥ हेनचिकेता॥ यालोकविषे जेजेबुद्धिमानपुरुषहोवे हैं ॥ तेबुद्धिमान्पुरुष तिसकार्यकूंकरे हैं जिसकार्य तैं आपणेकूंसुखरूपफलकीप्राप्तिहोवे है ॥ और जिसकार्यतें आपणेकूंसुखरूपफलकीप्राप्तिनहीहोवे है ॥ताकार्यकूं तेबुद्धिमान्पुरुष करतेनहीं॥और यालोकविषे सुखकीप्राप्तिकरणेहारे पुत्रस्त्रीआदिकपदार्थहीं हैं ॥ यातें तिनपुत्रस्त्रीआदिकपदार्थोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग॥ और आत्मज्ञानकीप्राप्तिरूपवरकरिके तुमारेकूं किंचित्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवेगीनहीं ॥ यातें सोआत्मज्ञानरूपवर तूं हमारेसैंमतमाँग ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार आत्मज्ञानकेप्रश्नतें निवृत्तकरणेवासते सोयमराजा तानचिकेताविषेलोभकूंउत्पन्नकरताहुआ नानाप्रकारकेवरोंकूं कथनकरताभया ॥ और तायमराजाकेवचनोंकूंश्रवणकरिके सोनचिकेताभी तायमराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेयमराजा ॥ जिनस्वर्गकी स्त्रियोंकूं तुमनैं यापुरुषोंकेसुखसाधनरूपकरिके वर्णनकऱ्याहै ॥ तेस्वर्गकी स्त्रियां आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथाआपणेनाशतैंअनंतर आपणेकूं तथापुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरेहैं अथवा नहींकरे हैं ॥ तहां आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथा आपणेनाशतैंअनंतर तेस्वर्गकीस्त्रीयां आपणेकूं तथाअन्यपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ यहप्रथमपक्ष जो आप अंगीकारकरो सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे उत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर किसीभीपदार्थविषे कारणरूपतादेखणेमैंआवतीनहीं॥जोकदाचित् उत्पत्तितैं पूर्व तथा नाशतैं अनंतरभी तावस्तुविषे कारणरूपताहोवे तो जिसकालविषे कुलालकीउत्पत्तिनहींभईथी॥तिसकालविषेभी ताकुलालतैं घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और जिसकालविषे ताकुलालकानाशहोवे है॥तिसकालविषेभी ताकुलालतैं तिसघटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥और ताउत्पत्तिकालविषे तथानाशकाल विषे ताकुलालतैं घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं वर्तमानकालविषेही तेस्वर्गकीस्त्रियां आपणेकूं तथा अन्यपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरे हैं

यहपक्षही आपनें अंगीकारकरणाहोवेगा ॥ सोयहपक्षभी वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो संभवैनहीं ॥ काहेतें ॥ आदावंतेचयन्नास्ति वर्त्तमानेपितत्तथा ॥ अर्थयह ॥ जोपदार्थ आद्यकालविषेनहींहोवे है तथा अंत्यकालविषे नहींहोवे है ॥ सोपदार्थ वर्त्तमानकालविषेभीनहींहोवे है ॥ जेसे रज्जुविषे सर्प आदिकालमेंनहीं है॥तथा तारज्जुकेज्ञानतैंअनंतरभीनहीं है॥यातें सोसर्प वर्त्तमानकालविषेभी तारज्जुमेंहैनहीं ॥ तैसे यहस्वर्गकीस्त्रियांभी आपणोउत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर आपणेकूं तथाअन्यकिसीपुरुषकूंसुखकीप्राप्तिकरतीयांनहीं ॥ यातें वर्त्तमानकालविषेभी यास्त्रीयोंविषे पुरुषोंकेसुखकीकारणतासंभवैनहीं॥और वर्त्तमानकालविषे यापुरुषोंकूं जोतिनस्त्रीयोंविषेआपणेसुखकीकारणता प्रतीतहोवे है ॥ ताप्रतीतविषे तिनस्त्रीयोंकास्वभाव कारणनहींहै किंतुताप्रतीतिविषे याविषयासक्तकामीपुरुषोंकी जोतिनस्त्रीयोंविषेरमणीकबुद्धिहै ॥ सारमणीकबुद्धिहीकारणहै ॥ हेयमराजा ॥ पूर्व तुमनें जिनस्वर्गलोककीस्त्रीयोंकावर्णनकऱ्याहै ॥ तेस्वर्गकीस्त्रीयांभी जभी विषयसंभोगकीप्राप्तिद्वाराही विषयासक्तकामीपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरें हैं ॥ तभी तिनस्वर्गलोककीस्त्रीयोंविषे मनुष्यलोककीस्त्रीयोंतैं कौनअधिकतासिद्धहोवेगी ॥ किंतु विचारकियेतें तिनोंविषेकोईभीअधिकतासिद्धहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ स्वर्गलोककीस्त्रीयोंविषे तथा मनुष्यलोककीस्त्रियोंविषे स्वभावतैंतो किसीपुरुषके सुखकीसाधनताहैनहीं ॥ किंतु जिसस्त्रीविषे जिसपुरुषकूं कामदोषजन्यरमणीकबुद्धिहोवे है ॥ सास्त्रीतिसीपुरुषके सुखकासाधनहोवे है ॥ सोकामदोषजन्यरमणीकबुद्धिवालेपुरुषोंकूं जैसे यहसुगंधिवालीस्वर्गकीस्त्रीयां सुखकीप्राप्तिकरें हैं ॥ तैसे दुर्गंधवालीमनुष्यलोककीस्त्रीयांभी कामदोषजन्यरमणीकबुद्धिवालेपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरें हैं ॥ यातें तामनुष्यलोककीस्त्रीयों तें यास्वर्गलोककीस्त्रीयोंविषे अधिकतासंभवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेयमराजा ॥ यालोकविषे जैसे श्वानिणीस्त्रीआपणेश्वानपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरे है ॥ और जैसे मनुष्यस्त्री आपणेमनुष्यपुरुषकूं सुखकी प्राप्तिकरे है ॥ तैसेही यहस्वर्गकीस्त्रीयां आपणेदेवतापुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरें हैं ॥ परंतु ताविषयजन्यसुखरूपफलविषे किंचित्मात्रभी न्यूनअधिकता नहीं है ॥ किंतु देवता मनुष्य श्वान यातीनोंकूं आपणीआपणीस्त्रीकेसंभोगतैं समानहीसुखहोवे है ॥ हेयमराजा ॥ जोकदाचित् यहस्त्रीयां

स्वभावतैंहींसुखकासाधनहो वैं तो सर्वजातिवालीस्त्रीयां सर्वजातिवालेपुरुषोंके सुखकाकारण होणीचाहिये ॥ और याप्रकारकाव्यवहार लोकविषेदेखीतानहीं ॥ किंतु जिसजिसपुरुषकी जिसजिसस्त्रीविषे रमणीकबुद्धिहोवे है॥ सा सा स्त्री तिसतिसपुरुषकूंहीं विषयसंभोगद्वारा सुखकीप्राप्तिकरे है ॥ इतरपुरुषोंकूं सा स्त्री सुखकोप्राप्तिकरेनहीं ॥ जैसे यास्वर्गकोस्त्रोयोंविषे देवतापुरुषोंकीरमणीकबुद्धिहै ॥ श्वानकी रमणीकबुद्धिहैनहीं ॥ यातैं तेस्वर्गकीस्त्रियां तिनदेवतापुरुषोंकूंहीं विषयसंभोगकरिके सुखकोप्राप्तिकरे हैं ॥ श्वानपुरुषकूं तेस्वर्गकोस्त्रीयां सुखकीप्राप्तिकरैंनहीं॥ तैसे श्वानिणोस्त्रीविषे श्वानपुरुषकूं रमणीकबुद्धिहै ॥ देवतापुरुषकूं ताश्वानिणीस्त्रीविषे रमणीकबुद्धिहैनहीं ॥ यातैं साश्वानिणोस्त्री विषयसंभोगकरिके ताश्वानपुरुषकूंहीं सुखकीप्राप्तिकरे है ॥ देवतापुरुषकूं साश्वानिणीस्त्रीसुखकोप्राप्तिकरेनहीं इसीप्रकार मनुष्य पशु पक्षी सर्प इत्यादिकसर्वजातिवालीस्त्रियां आपणेविषेरमणीकबुद्धिवालेपुरुषोंकूंहींसुखकोप्राप्तिकरे हैं ॥ रमणीकबुद्धितैंरहित निष्कामपुरुषकूं कोईभोस्त्री सुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ यातैं स्वर्गलोककीस्त्रियोंविषे मनुष्यलोककीस्त्रियोंतैं जोआपनें अधिकताकही सोसंभवे नहीं ॥ हेयमराजा ॥ जोतुम याप्रकारकावचनकहो ॥तेदेवतापुरुष जैसे स्वर्गकोस्त्रीयोंविषे सुंदररूपादिकगुणोंकूंदेखेंहैं॥तैसे तेदेवतापुरुष ताश्वानिणोस्त्रीविषे सुंदररूपादिकगुणोंकूं देखतेनहीं ॥ किंतु ताश्वानिणीस्त्रीविषे तेदेवता सर्वदा कुरूपादिकदोषोंकूंहींदेखे हैं ॥ याकारणतैं तिनस्वर्गकीस्त्रीयोंतैं साश्वानिणोस्त्री अत्यंतनिकृष्टहै ॥ सोयहतुमाराकहणासंभवेनहीं ॥ काहेतैं जैसे तेदेवतापुरुष स्वर्गकोस्त्रीयोंविषेतो गुणोंकूंदेखे हैं ॥ और श्वानिणोस्त्रीविषे दोषोंकूं देखे हैं ॥ तैसे सोश्वानपुरुषभी आपणीश्वानिणीस्त्रीविषेतो गुणोंकूंदेखे है ॥ और स्वर्गकीस्त्रीयोंविषे तथामनुष्योंकीस्त्रीयोंविषे सोश्वान सर्वदा दोषोंकूंहींदेखे है॥याकारणतैंहीं सोश्वान स्वर्गकोस्त्रीकूं तथामनुष्यस्त्रीकूं प्राप्तहोइके प्रसन्न होवेनहीं॥किंतु सोश्वान आपणोश्वानिणीस्त्रीकूंप्राप्तहोइकेही प्रसन्नहोवे है॥हेयमराजा॥जैसे यहदेवतापुरुष यास्वर्गकीस्त्रीयोंविषे नानाप्रकारकेगुणोंकूंदेखे हैं॥तैसे सोश्वानभी आपणीश्वानिणीस्त्रीविषे याप्रकारकेगुणोंकूंदेखे है॥ यहहमारी प्रियाश्वानणीस्त्रीसुंदरदीर्घमुखवाली है तथा अत्यंतकोमलस्पर्शवालीहै ॥तथा तीक्ष्णदांतोंवालीहै तथा रक्तमुखवालीहै॥तथा रक्तपुष्पकेसमान जाकीजिह्वाहै ॥ तथा मांसरुधिरकेभक्ष

णतें सुंदरगंधवालीहै ॥ तथादीर्घनेत्रोंवालीहै ॥ तथा ऊँचेकर्णोंवालीहै॥तथा सर्वदा शीघ्रगमनकरणेवालीहै॥तथा पुष्टशरीरवाली है ॥तथा
अल्पउदरवालीहै॥तथा ऊँचीपूंछवालीहै ॥ तथा संकुचितयोनिछिद्रवाली है ॥ तथा अत्यंतशोभायमानहै ॥ तथा उग्रुंकारशब्दोंकरिकै
तथा भंकारशब्दोंकरिकै मेरेमनकूं तथाकर्णोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ तथा हमारेसन्मुखगमनकरणेतैं तथा हमारेपीछेगमनकरणे
तैं यहस्त्री सर्वदा हमारासेवनकरैहै ॥ और यहस्त्री आपणेदर्शनकरिकै हमारेनेत्रोंकूं तथामनकूं आनंदकी प्राप्तिकरणेहारीहै ॥ इसतैंआदि
लेकेअनेकप्रकारकेगुणोंकूं सोश्वान ताआपणीश्वानिणीस्त्रीविषेदेखैहै ॥ हेयमराजा ॥ ताश्वानिणीस्त्रीकूंदेखिकरिकै ताश्वानपुरुषकूं जैसी
मनविषे प्रसन्नताहोवैहै ॥ तैसीप्रसन्नता इंद्राणीकूंदेखिकै इंद्रकूंभी होतीहोवैगी अथवा नहींहोतीहोवैगी ॥यातैं स्वर्गकीस्त्रियोंविषे जोआपनें
अधिकतावर्णनकरीहै सोसंभवैनहीं॥हेयमराजा॥जैसे स्वर्गकीस्त्रियां तथामनुष्यस्त्रियां तथा पशुस्त्रियां आपणेआपणेविषेरमणीकबुद्धिवाले
सजातीयपुरुषोंकूंही सुखकी प्राप्तिकरैहैं ॥ इतरजातिवालेपुरुषकूं इतरजातिवालीस्त्री सुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ तैसे देवतावों के तथा मनु
ष्यों के तथा पशुवों के जेजेपुत्र पौत्रादिकपदार्थ हैं ॥ तेपुत्रपौत्रादिकपदार्थभी आपणेआपणेविषे रमणीकबुद्धिवालेसजातीयपितामाता
दिकोंकूंही सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ इतरजातिवालेपितामातादिकोंकूं इतरजातिवालेपुत्रपौत्रादिकपदार्थ सुखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ याकारण
तैं तेपुत्रपौत्रादिकपदार्थभी सर्वलोकोंकेसमानहीं हैं ॥ हेयमराजा ॥ यहजीव पुण्यपापकर्मकेवशतैं जिसजिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै
॥ तिसतिसजातिवालेशरीरके जितनेकी स्त्री पुत्र अन्न पानादिकपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकूंही सोजीव स्वैपदार्थोंतैंअधिककरिकैमाने है
और इतरजातिवालेशरीरोंके जितनेकीस्त्री पुत्र अन्न पानादिकपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकूं सोजीव अत्यंतनिकृष्टकरिकैमानैहै ॥
हेयमराजा ॥ जैसे श्वानके जितनेकी स्त्री पुत्र अन्न पान आदिकभोगकेसाधनहैं ॥ तिनोंविषे तुमदेवतावोंकूं सर्वदाग्लानिहीरहैहै ॥ तैसे
तुमदेवतावोंके जितने की स्त्री पुत्र अन्न पान आदिकभोगकेसाधनहैं ॥ तिनोंविषे ताश्वानकूंभी सर्वदा ग्लानिहीरहैहै ॥ यातैं हेयमराजा ॥
स्वभावतैं किसी स्त्रीशरीरविषे तथापुरुषशरीरविषे सुखरूपताहैनहीं ॥ किंतु जैसे पित्तदोषकरिकै भ्रमकूंप्राप्तहुआयहपुरुष श्वेतशंखकूं

पीतरूपवालादेखेहै ॥ तैसे कामरूपज्वरकरिकैउत्पन्नभया जोयहव्यामोहरूपपित्तदोपहै ॥ ताव्यामोहरूपपित्तदोषकरिके भ्रमकूंप्राप्तहुए यहपुरुष आपणेआपणेसमानजातिवालीस्त्रियोंविषे सुखबुद्धिकरैहैं ॥ इतरजातिवालीस्त्रियोंविषे सुखबुद्धिकरेनहीं॥ तैसे तेस्त्रियांभी ताव्यामोहरूपदोषकरिकेभ्रमकूंप्राप्तहुई आपणेआपणेसमानजातिवाळेपुरुषोंविषेही सुखबुद्धिकरे हैं॥ इतरजातिवालेपुरुषोंविषे तेस्त्रियां सुखबुद्धि करैंनहीं ॥ यातैं तिनस्त्रियोंविषे जोतिनपुरुषोंकीसुखबुद्धिहै ॥ तथा तिनपुरुषोंविषे जोतिनस्त्रियोंकीसुखबुद्धिहै॥सासुखबुद्धि श्वेतशंखविषे पीतबुद्धिकीन्याईं केवलभ्रमरूपहै॥ अब स्त्रीशरीरविषे तथा पुरुषशरीरविषे स्वभावतैंसुखरूपताका खंडनकरे हैं ॥ हेयमराजा ॥ यास्त्रीशरीरविषे तथा पुरुषशरीरविषे स्वभावतैं सुखरूपतासंभवैनहीं ॥काहेतैं यहस्त्री जोकदाचित् आपहीसुखरूपहोवै ॥ तौयहस्त्री आपणेकूं आपही सुखकीप्राप्ति किसवासतैनहींकरती ॥ और हेयमराजा ॥ जोतुम यहकहो ॥ सा स्त्री आपणेशरीरतैंभिन्न किसीशरीरकूंसुखकीप्राप्तिकरे है ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनही ॥ काहेतैं सा स्त्री जोकदाचित् आपणेतैंभिन्नशरीरविषे सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै ॥ तौसास्त्री आपणेतैंभिन्न सपत्नी आदिकस्त्रियोंकूंसुखकीप्राप्ति किसवासतैनहीं करती॥ और हेयमराजा जोतुमयहकहो॥ सास्त्री आपणेतैंभिन्नपुरुषशरीरकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं सास्त्री जोकदाचित् आपणेतैंभिन्न पुरुषशरीरकूं सुखकीप्राप्तिकरती होवै ॥ तौ तानग्नस्त्रीकेहृदयदेशऊपरक्रीडाकरता जोबालकपुरुषहै ॥ ताबालकपुरुषकूं सास्त्री सुखकीप्राप्ति किसवासतैनहींकरती ॥ और हेयमराजा ॥ जोतुमयहकहो ॥ सास्त्री युवानपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥काहेतैं सास्त्री जोकदाचित् युवानपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै ॥ तौ सास्त्री आपणेपुत्रभ्रातादिकयुवानपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्ति किसवासतैनहींकरती है ॥ और हेयमराजा ॥ जोतुम यहकहो ॥ सास्त्री आपणेयुवानपतिकूं सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं सास्त्री जोकदाचित् आपणेयुवानपतिकूं सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै ॥ तौ तास्त्रीकेबहुतवारसंभोगकरिके कामरूपज्वरतैंनिवृत्तभयाजो सोयुवानपतिहै ॥ तायुवानपतिकूं सास्त्री पूर्वकीन्याईं सुखकीप्राप्ति किसवासतैनहींकरतीहै ॥ और हेयमराजा ॥ जोतुमयहकहो ॥ सास्त्री कामदोष

वालेयुवानपतिकूं सुखकीप्राप्तिकरे है सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं॥काहेतें स्त्री जोकदाचित् कामदोषवालेयुवानपतिकूं सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै ॥ तौ ज्वरादिकरोगोंकरिकेदुर्बलताकूंप्राप्तहुईस्त्री ताकामदोषवालेयुवानपतिकूं सुखकीप्राप्ति किसवासतैंनहींकरती ॥ यातैं किसीप्रकारकरिकेभी तिनस्त्रियोंविषे स्वभावतैं सुखरूपतासंभवैनहीं॥और हेयमराजा॥जैसे यास्त्रियोंविषे स्वभावतैं तिनपुरुषोंकेसुखकी कारणतानहीं है ॥ तैसे यापुरुषोंविषेभी स्वभावतैं तिनस्त्रियोंकेसुखकीकारणतानहीं है ॥ काहेतें यहपुरुष जोकदाचित्स्वभावतैंहींतिन स्त्रियोंकेसुखकाकारणहोवै॥तौसोपुरुष आपणेपुत्रीभगिनीआदिकस्त्रियोंकूं तासुखकीप्राप्ति किसवासतैंनहींकरता हेयमराजा ॥ याप्रकारकी युक्तियोंसें विचारकरिकेदेखियेतौ किसीस्त्रीशरीरविषे तथा पुरुषशरीरविषे स्वभावतैं सुखरूपता सिद्धहोवैनहीं॥तथापिस्त्रियोंकूंपुरुषोंकेशरीरविषे जोसुखबुद्धिहोवे है ॥ तथा पुरुषोंकूं स्त्रियोंकेशरीरविषे जोसुखबुद्धिहोवै है ॥ सोयहसंपूर्ण कामरूपज्वरकीहीमहिमाहै ॥ हेयमराजा ॥ जैसे यालोकविषे जोपुरुष धतूरेकेबीजोंकूं भक्षणकरे है ॥ सोपुरुष तादोषकरिके संपूर्णजगत्कूंपीतवर्णवालादेखेहै ॥ तैसे यहस्त्रियां तथायहपुरुष आपणेकामदोषकरिके आपणेसमानजातिवालेपुरुषोंविषे तथा आपणेसमानजातिवालीस्त्रीयोंविषे तौसुखबुद्धिकरे हैं ॥ और विजातीयपुरुषोंविषे तथा विजातीयस्त्रियोंविषे दुःखबुद्धिकरे हैं ॥ हेयमराजा ॥ जैसे यालोकविषे जराअवस्था यापुरुषोंके तथास्त्रियोंके कुरूपताका कारणहोवे है ॥ तैसे यास्त्रीपुरुषोंकीयौवनअवस्थाही ताकामरूपज्वरका कारणहोवे है॥हेयमराजा॥जेपुरुष ताकामरूपज्वरकरिके व्यामोहकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तेकामीपुरुषही तिनस्त्रियोंकीस्तुतिकरे हैं ॥ निष्कामपुरुष तिनस्त्रियोंकीस्तुतिकरतेनहीं ॥ यातैं यह जान्याजावे है ॥ आपनें जोतिनस्त्रियोंकीस्तुतिकरीहै ॥ सोभी तिनविषयासक्तकामीपुरुषोंकेअभिप्रायकूंग्रहणकरिकेहीकरीहै ॥ परंतु तिन दुःखरूपस्त्रीयोंकेस्तुतिकरणेविषे कोईआपका तात्पर्यहैनहीं ॥ हेयमराजा ॥ याकेविषे हम बहुतक्याकहैं ॥ जितनेकीस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ आपनें सुखकाकारणरूपकरिकेकथनकरे हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ अनित्यही हैं ॥ और यालोकविषे जोजोअनित्यपदार्थ जिसजिसजीवकूंअत्यंतप्रियहोवे है ॥ सोअनित्यप्रियपदार्थ आपणेवर्त्तमानकालविषे ताजीवकूं जितनेकीसुखकीप्राप्तिकरे है ॥ तिससुखतैं सहस्रगुणा

अधिकदुःख सोप्रियपदार्थ आपणेवियोगकालविषे ताजीवकूं प्राप्तकरे है ॥ यातें याल्लीपुत्रादिकपदार्थोविषे जोअनित्यपणा है ॥ सोअनित्य पणाहीतिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे दुःखरूपताकूंबोधनकरे है॥हेयमराजा॥प्रियस्त्रियां पुत्र पौत्र दीर्घआयुष सर्वभूमिकाराज्य हस्ती अश्व सुवर्ण इसतेंआदिलेके जितनेकीपदार्थ आपनें अत्यंतप्रियरूपकरिकेकथनकरे हैं ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थ आजदिनविषे तो हमारेकूं प्राप्तहैंनहीं ॥ और आपकेवरकरिके तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ हमारेकूंदूसरेदिनविषेप्राप्तहोवेंगे ॥ परंतु तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ अनित्यहैं ॥ यातें तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ तोसरेदिनविषे हमारेपासरहेंगे अथवा नाशहोइजावेंगे याप्रकारकानिश्चय कऱ्या जावेनहीं ॥ यातें तेस्त्रीपुत्रधनादि कअनित्यपदार्थ आपणेवियोगकालविषे हमारेकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरेंगे ॥ हेयमराजा ॥ यद्यपि वास्तवतेंविचारकरिकेदेखियेतो तेस्त्री पुत्रधनादिकपदार्थ क्षणभंगुरहैं ॥ तथापि विचारतेंरहितमूढपुरुषोंनें तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकूं चिरकालपर्यंतस्थायीमान्याहै ॥ यातें तिनमूढपुरुषोंकीदृष्टिकूंअंगीकारकरिके जोकदाचित् तिनपदार्थोंकूं चिरकालस्थायीभी मानिये ॥ तौभी तेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हमजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ किंतु तेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हमजीवोंकूं सर्वदा दुःखकीहीप्राप्तिकरे हैं ॥ अब प्रथम स्त्रियोंविषे दुः खकीकारणतादिखावे हैं ॥ हेयमराजा ॥ जैसे यालोकविषे पुष्पोंकेरसकूंनिकासणेहारा जोनलिकायंत्रहै ॥ तायंत्रकरिके यहअग्नि तिनपु ष्पोंकेसाररूपरसकूं बाहरनिकासेहै ॥ तारसकेनिकसणेकरिके तेपुष्प शोभातेंरहितहोवे हैं ॥ तथा शीघ्रहींनाशकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तैसे यहस्त्री रूपअग्निभी संभोगरूपीयंत्रकरिके यापुरुषरूपीपुष्पके वीर्य्यरूपरसकूं बाहरनिकासेहै ॥ तावीर्यरूपरसकेबाहरनिकसणेकरिके यापुरुषके नेत्रादिकइंद्रिय तथाआयुष शीघ्रहीं क्षयकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातें यहस्त्रीयां वर्तमानकालविषेभी यापुरुषकेदुःखकाहीकारणहोवे हैं ॥अब पुत्रों विषे दुःखकीकारणता निरूपणकरे हैं ॥ हेयमराजा ॥ जैसे यहस्त्रीयां पुरुषोंके वीर्यरूपरसकूंनाशकरे हैं ॥ तैसे यहपुत्रभी यापिताकेश्रोत्रादि कइंद्रियोंके तथामनके सत्त्वरूपरसकूंनाशकरे हैं जोसत्त्वरूपरस याजीवोंकेधर्मज्ञानकीवृद्धिकरे है॥हेयमराजा ॥ यहपुत्रपिताकेश्रोत्रादिक इंद्रियोंके तथामनके सत्त्वरूपरसकूं नाशकरे हैं॥याअर्थविषेहमारा उद्दालकपिताहीदृष्टांतहै ॥काहेतें मैंनचिकेतापुत्रकेजीवनकीचिंताकरिके

सोहमारा पिता ब्राह्मणोंकेताई दुर्बलवृद्धगोवां देताभया ॥ तावृद्धगोवोंकेदानकरणेतें ताहमारेपिताके धर्मकोहानिहोतीभई और हमारे
वियोगकरिके ताहमारेपिताकेमनविषे महान्क्षोभहोताभया॥ तामनकेक्षोभहुए ताहमारेपिताकेश्रोत्रादिकइंद्रियोंका तेजरूपबल क्षयहोता
भया ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंनचिकेतासरीसेआज्ञाकारीपुत्रभी जभी पिताकेदुःखकेहीकारणहुए ॥ तभी दूसरेलौकिकपुत्र आपणेपिताके
दुःखकेकारणहोवेंगे याकेविषेक्याकहणाहे ॥ यातें हेयमराजा ॥ यहस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ अनित्यहोणेतें दुःखरूपहीहैं ॥ ऐसेअनित्यदुःखरू
पपदार्थोंकूंभी जोकदाचित् तुमनें आपणेलोकपालरूपअधिकारकेपालनकरणेवासते प्रियरूपकरिकैग्रहणकऱ्याहोवे ॥ तो यहवार्त्ता आप
कूंयोग्यहे ॥ परंतु आत्मज्ञानकोइच्छावाला जोमैंनचिकेताहूं॥ ताहमारेकूं तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेग्रहणकरणेकीयोग्यतानहीं हे ॥ और
हेयमराजा ॥ जोपूर्वेआपनें परमआयुषकोप्राप्तिरूप तीसरावर देणेकोकह्याथा ॥ सोभी अत्यंततुच्छहे ॥ काहेतें यालोकोंविषे हिरण्यगर्भ
रूपब्रह्माकीआयुष सर्वतेंअधिकहे ॥ परंतु ताब्रह्माकेआयुषकीभी दोपरार्द्धपर्यंत अवधिहे॥ यातें सोब्रह्माकाआयुषभी अल्पहे ॥ जभी ता
ब्रह्माकाआयुषभी अल्पहुआ ॥ तभी ताब्रह्माकेआयुषकेअंतर्भूत जोदेवतामनुष्यादिकोंकाआयुषहे ॥ सोआयुष अल्पहे याकेविषेक्याक
हणाहे ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेयमराजा ॥ भूमिलोकवासोहममनुष्योंका जोएकवर्ष हे ॥ सोहमाराएकवर्ष
स्वर्गवासीदेवताओंका एकदिनरात्रिहोवेहे ॥ तहां हममनुष्योंका जोषट्मासकाउत्तरायणहे॥सोउत्तरायण तिनदेवताओंकादिनहोवे हे ॥
और हममनुष्योंकाजोषट्मासकादक्षिणायनहे ॥ सोदक्षिणायन तिनदेवताओंकोरात्रिहोवे हे ॥ ऐसादेवताओंकादिनरात्रि जभी तीनसे
साठ ३६० होवे हे ॥ तभी तिनदेवताओंका एकवर्षहोवे हे ॥ ऐसेदेवताओंकेवर्ष जभी द्वादशसहस्र१२०००होवे हैं॥ तभी कृत त्रेता
द्वापर कलि यहचारियुगहोवे हैं ॥ ऐसेचारयुग जभी एकसहस्र१००० वारवितीतहोवे हैं ॥ तभी ताब्रह्माका एकदिन होवे हे ॥ और
तादिनजितनीही ताब्रह्माकीरात्रिहोवे हे ॥ जिसब्रह्माकीरात्रिविषे यहतीनलोक नाशकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तिसीरात्रिकूं शास्त्रविषे नैमित्तिकप्र
लयकहेहैं ॥ तथा अवांतरप्रलयकहे हैं ॥ ऐसाब्रह्माकादिनरात्रि जभी तीनसैसाठ ३६० होवे हैं॥तभी ताब्रह्माकाएकवर्षहोवे हे ॥ ऐसा

एकशतवर्ष १०० ताब्रह्माका आयुषहोवैहै ॥ ताब्रह्माकेएकशतवर्षोंविषे प्रथमपचासवर्ष ५० प्रथमपरार्द्धहोवैहै ॥ और उत्तरपचासवर्ष ५० दूसरापरार्द्धहोवैहै ॥ तिनदोनोंपरार्द्धोंविषे प्रथमपरार्द्धतो वितीतहोगयाहै ॥ अभी दूसरापरार्द्ध वितीतहोताहै ॥ हेयमराजा ॥ जिसब्रह्माकेम रणतेंअनंतर यासर्वजगत्का महाप्रलयहोवैगा ॥ सोब्रह्माभी अभी अर्द्धआयुषवालाहुआस्थितहै ॥ और जैसे हममनुष्योंकूं मरणकाभयहो वैहै ॥ तैसे ताब्रह्माकूंभी आपणेमरणकाभयहोवे है ॥ याकारणतेंही सोब्रह्मा आपणेनेत्रोंकूंमूंदिकरिके अंतरआत्माकेध्यानकूंकरताहुआ स्थितहोवे है ॥ यातें हेयमराजा ॥ ऐसाब्रह्माभी जभी मरणकेभयकरिकेयुक्तहै ॥ तभी ताब्रह्माकाअंशभूत तुमदेवता हमारेताई परमआ युषकीप्राप्ति किसप्रकारकरोगे ॥ यातें हेयमराजा ॥ जलकेफेनबुद्बुदेकीन्याई क्षणभंगुर जोयहदुःखरूपसंसारसमुद्रहै ॥ तासंसारविषे स्थित जितनेकी हस्ती अश्व रथ इत्यादिकवाहनहैं ॥ तथा ॥ नृत्यगीतादिकोंकरिकेयुक्त जेयहसुंदरस्त्रीयां हैं ॥ तथा शुभगुणवाले जेपुत्रपौत्रादिकपदार्थ हैं ॥ इसतें आदिलेके जितनेकीपदार्थ पूर्वआपनें हमारेदेणवासतेकहेहैं ॥ तेसंपूर्णस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ आपके पासहीरहैं ऐसेअनित्यपदार्थोंकेप्राप्तिकी हमारेकूं इच्छाहैनहीं ॥ अब धनविषेभी दुःखकीकारणता निरूपणकरे हैं ॥ हेयमराजा ॥ जोतुम हमारेताई सुवर्णादिरूपधनदेतेहो ॥ सोधन कैसाहै जोकदाचित्किसीपुरुषकूं तीनलोकोंकाधनभीप्राप्तहोवे ॥ तोभी ताधन कीप्राप्तिकरिके तापुरुषकेतृष्णाकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तातीनलोकोंकेधनकूंप्राप्तहोयके सोपुरुष पुनःब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छाकरे है ॥ और जोकदाचित् किसीपुण्यकर्मकेयोगतें तापुरुषकूं ब्रह्मलोककीभीप्राप्तिहोवे है ॥ तोभीसोपुरुष ताब्रह्मलोकतैंनीचेपतनकेअभा वकीइच्छाकरैहै ॥ हेयमराजा ॥ जैसे यालोकविषे प्रज्वलितअग्नि काष्ठोंकरिके तथाघृतकरिके तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे यहस मुद्र जलोंकरिके तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे स्त्री पुरुषोंकरिके तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहपुरुष नानाप्रकारकेधनकरिके तृप्तिकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ उलटा जैसे काष्ठघृतकेपावणेतें अग्निकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ तैसे बहुतधनकेप्राप्तिकरिके यापुरुषकीतृष्णा वृद्धिकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताधनकेरक्षणकरिके तथा ताधनकेनाशकीभयकरिके याधनीपुरुषोंकूं सर्वदा क्लेशकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें ऐसेदुःखरूपधन

केप्राप्तिकी हमारेकूं इच्छानहीं है ॥ हेयमराजा ॥ याप्रकार वास्तवतैंविचारकरिकेंदेखियेतो यहधन जीवोंकेदुःखकाहीकारणहे तथापि लौकिकदृष्टिकूंअंगोकारकरिके जोकदाचित् ताधनविषे सुखकीकारणताभीमानिये ॥ तौभी ताधनकीप्राप्तिरूपवर हमारेकूं आपसेंमांगणा उचितनहींहै ॥ काहेतें आपणेदर्शनमात्रतें सर्वदुःखोंकेनाशकरणेहारे जोतुमदेवताहो ॥ तिसतुमारेकूं हमनें यामांसमयनेत्रोंकरिकेंदेख्याहे ॥ यातें जोधन हमारेकूं व्यवहारविषेअपेक्षितहोवेगा ॥ सोधन आपही हमारेकूंप्राप्तहोवेगा ॥ ताधनकीप्राप्तिवासते हम आपकेआगे प्रार्थनाकरतेनहीं ॥ अब तायमराजाकेस्वरूपकावर्णनकरे हैं ॥ मेघकीन्याई जायमराजाका श्यामवर्ण हे ॥ तथा दीर्घ जाकाशरीरहै ॥ तथा पीतांबरोंकूं जिसनें धारणकर्याहे ॥ तथा लाक्षारसकेसमान रक्तवर्णवाले स्वच्छविशाल जाके नेत्रहैं ॥ तथा दीर्घ जाकीग्रीवाहे॥ तथा विशाल जिसका उरस्थलहै ॥ तथा जानुपर्यंत जाकी दीर्घभुजाहैं ॥ तथा सूर्यकेसमानजिसकेतेजस्वीनेत्रहैं ॥ तथा सूर्यकेसमान जाकेशरीरकातेजहै ॥ तथा महान्महिषरूपवाहनऊपर जाकीस्थितिहै ॥ तथा पापीजीवोंकूंभयकीप्राप्तिकरणेहारादंड जाकेहस्तविषे हे ॥ तथा क्रोधवान्सर्पकोन्याई आपणेदर्शनकरिके पापोजीवोंकूं भयकीप्राप्तिकरणेहाराहे ॥ तथा आपणेचित्तविषे सर्वदा दयालुहे ॥ तथा वेदभगवान् नेंबोधनकर्या जोपुण्यपापकर्मके सुखदुःखरूपफलकोप्राप्तिरूपमार्गहै॥ तामार्गकारक्षणरूप जाका कर्महै॥तथा आत्मज्ञानकरिकेसंपन्नहै ॥ तथा सर्वरोगोंतेंरहितहै ॥ तथा संपूर्णभूतोंविषेजाकीसमदृष्टिहै ॥ तथा शत्रुमित्रभावतेंरहितहै ॥ हेयमराजा ॥ याप्रकारकेस्वरूपकरिकेयुक्त जोआपहो ॥सो आपहो यास्थावरजंगमरूपजगत्का मृत्युरूपहो॥ ऐसेसर्वजगत्केसंहारकरणेहारेआप जभी हमारे गुरुरूपहुए॥ तभी हमारेकूं किसकरिकेमृत्युकीप्राप्तिहोवेगी ॥ किंतु जबपर्यंत आप यादक्षिणदिशाविषेस्थितहोवेंगे ॥ तबपर्यंततो हम निःसंशयहोइके जीवेंगे ॥ यातें आपकेकृपाकटाक्षकोप्राप्तिकरिके सोचिरकालपर्यंतजीवन हमारेकूं स्वभावतेंहीसिद्धहै ॥ यातें ताचिरकालपर्यंत जीवनकीप्राप्तिरूपवर आपसेंमांगणा हमारेकूं उचितनहीं हे ॥ यातें हेयमराजा ॥ मरणतेंअनंतर आत्माकेसत्ताकाजोसंशयहै ॥ तासंशयकूं जोबोध निवृत्तकरे ॥ ताबोधकीप्राप्तिरूप तीसरावर आप हमारेताईदेवो ॥ हेयमराजा ॥ जरामरणतेंरहित जेआप स्वर्गवासीदेवताहो ॥ और

जरामरणकरिकेयुक्त जेभूमिलोकविषेरहणेहारे हममनुष्यहैं ॥ ऐसेहमसरीसेमनुष्य किसीदेवयोगतैं आपसरीखेदेवतावोंकोसमीप
ताकूंप्राप्तहोइके जोकदाचित् आत्म अनात्म पदार्थोंकेविचारकरिकेयुक्तहोवैं॥तौ तेअधिकारीमनुष्य यास्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकूंरमणीकजा
निकरिके ताचिरकालजीवनविषे किसप्रकार आसक्तिकरैंगे ॥ किंतु तेअधिकारीमनुष्य तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषेआसक्तिनहींकरैंगे ॥
कैसेहैंतेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ ॥ विचारवानपुरुषकूंतो सर्वदादुःखरूपहींप्रतीतहोवै हैं ॥ और विचारतैंरहितमूढपुरुषोंकूं तेस्त्रीपुत्रादिकपदा
र्थ आपणेदर्शनद्वारा तथाभोगद्वारा सुखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ हेयमराजा ॥ मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकीविषयजन्यसुखहैं
तथा सुखकीप्राप्तिके जितनेकी स्त्री पुत्र धन आदिकसाधनहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं पूर्वउक्तरीतिसें मैंनचिकेता दुःखरूपकरिकेहीजाण
ताहूं ॥ यातैं तिनपदार्थोंकेप्राप्तिकी हमारेकूं इच्छानहींहे ॥ यातैं हेयमराजा ॥ जरामरणतैंरहितदेवताभी जिसदुर्विज्ञेयआत्माविषे निर्णयतैं
विना संशयकूंप्राप्तहोवै हैं ताआत्माकानिर्णयरूप तीसरावर आप हमारेताईं देवो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार अनेकप्रकारकेवरोंकूंदेकरिके ता
यमराजानैं तानचिकेताकूंलोभायमानकराभी तौभी सोनचिकेता ताआत्मज्ञानतैंविना किसीदूसरेवरकूं नहींग्रहणकरताभया ॥ इसप्रकार
तानचिकेताके तीव्रवैराग्यकूंदेखिके सोयमराजा बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और तानचिकेताकूं ब्रह्मविद्याकाअधिकारीजाणिके सोयमराजा
तानचिकेताकेताईं आत्मज्ञानरूपतीसरावर देणेवासते याप्रकारकावचन कहताभया ॥ यमराजाउवाच॥हेनचिकेता ॥ इसलोकविषे तथा
परलोकविषे जीवोंकेप्राप्तहोणेयोग्यदोप्रकारकाफलहोवै है ॥ तहां एकतोश्रेयरूपफलहोवै है ॥ और दूसरा प्रेयरूपफलहोवै है ॥ तहां बु
द्धिमानपुरुषोंकेप्रीतिकाविषयजोमोक्षरूपनित्यसुखहै ॥ सोमोक्षरूपसुख सर्वतैंउत्कृष्टहै॥ याकारणतैं तामोक्षरूपनित्यसुखकूं श्रुतिभगवती
श्रेय यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और मूढपुरुषोंकेप्रीतिकाविषय जोसंसारसंबंधीविषयजन्यअनित्यसुखहै ॥ सोविषयजन्यसुख अत्यंत
निकृष्टहै ॥ याकारणतैं ताविषयजन्यअनित्यसुखकूं श्रुतिभगवती प्रेय यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और स्वरूप साधन प्रमाण अधिकारी
याचारोंकेभेदकरिके सोश्रेयरूपफल तथा प्रेयरूपफल परस्परविलक्षणहोवै है ॥ तहां प्रथम मोक्षरूपश्रेयका नित्यसिद्धआनंदस्वरूप

आत्माहीस्वरूपहै ॥ और मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञान ताश्रेयको साधनहै और उपनिषद्रूपवेदांतशास्त्र ताश्रेयविषे प्रमाणहै ॥ और विवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचतुष्टयसाधनसंपन्नपुरुष ताश्रेयका अधिकारीहै॥और दूसरा जोप्रेयरूपफलहै ॥ ताप्रेयकातो विषयजन्यअनित्यसुख स्वरूपहै ॥ और यज्ञादिककर्म ताप्रेयके साधनहैं ॥ और वेदकापूर्वकर्मकांड ताप्रेयविषे प्रमाणहै ॥ और सकामपुरुष ताप्रेयका अधिकारीहै ॥ याप्रकार तिनश्रेयप्रेयदोनोंका परस्परभेदहोवै है ॥ हेनचिकेता ॥ श्रेयप्रेय यादोनोंप्रकारके फलोंविषे जोअधिकारीपुरुष श्रेयरूपफलकूं संपादनकरै है॥ सोअधिकारीपुरुष आपणेप्रयोजनतैं भ्रष्टहोवै नहीं ॥ किंतु सोअधिकारीपुरुष कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोमूढबुद्धिपुरुष ताप्रेयरूपफलकूं संपादनकरै है ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष यासंसारविषे नानाप्रकारकेजन्ममरणादिकदुःखोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे जलविषेस्थितजोमत्स्यहै सोमत्स्य जभोलोहेकोकुंढोसाथबँधेहुएमांसकेभक्षणकरणेकीइच्छाकरिके प्रवृत्तहोवै है ॥ तभीसोमत्स्य सुखलेशतैंरहित मरणांतदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे यहसकामपुरुषभी जभी स्वर्गादिकभोगोंकी इच्छाकरिके यज्ञादिककर्मोंविषेप्रवृत्तहोवै है ॥ तभी सोसकामपुरुष सुखलेशतैंरहित जन्ममरणादिक अनेकदुःखोंकूं प्राप्तहोवै है और हेनचिकेता ॥ जैसे निर्धनदरिद्रीपुरुष दुष्टराजाकेदेशविषेस्थितहुआ भी बंधनादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे मोक्षरूपश्रेयकीइच्छावाले आपसरीखेनिष्कामपुरुष प्रारब्धकर्मकेयोगतैं यासंसारविषेवर्त्तमानहुएभी दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ नित्यसुखकीप्राप्तिकरणेहारा जोमोक्षरूपश्रेयहै ॥ सोमोक्षरूपश्रेयतो निष्कामपुरुषकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जन्ममरणादिरूपदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोविषयजन्यसुखरूपप्रेयहै ॥ सोप्रेय सकामपुरुषकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहां तुमारेसरीखे जेनिष्कामपुरुषहैं ॥ तेनिष्कामपुरुषतो मोक्षरूपश्रेयकेसाथही संबंधकूंप्राप्तहोवैहैं॥और विषयोंविषेआसक्त जेमंदबुद्धिसकामपुरुषहैं॥तेसकामपुरुषतो विषयजन्यसुखरूपप्रेयकेसाथही संबंधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेनचिकेता ॥ जिसकालविषे यह अधिकारीपुरुष वेदोंका तथा पुराणादिकशास्त्रोंका अध्ययनकरै हैं तथा तिनवेदोंके तथा पुराणोंके अर्थविषेकुशलहोवै हैं ॥ तिसीकालविषे याअधिकारीपुरुषोंकेसाथ श्रेयका तथाप्रेयका संबंधहोवै है ॥

तिनअधिकारियोंविषेभी जेतौ अत्यंततीक्ष्णबुद्धिवालेपुरुषहोवै हैं॥तेपुरुषतौ ताभोक्षरूपश्रेयकोहीइच्छाकरैहैं॥और विषयोंविषेआसक्त जेमं दबुद्धिपुरुषहोवैहैं ॥ तेमंदबुद्धिपुरुषतौं ताप्रेयकीहीइच्छाकरैहैं॥ हेनचिकेता॥सोप्रेयकीइच्छाकरणेहारा सकामपुरुष पूर्वअप्राप्तहुए स्त्रीपुत्र धनादिकपदार्थोंके प्राप्तिकीइच्छाकरैहे॥और पूर्वप्राप्तहुए तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेरक्षाकरणेकोइच्छाकरै हे ॥ परंतु तिन स्त्रीपुत्रा दिकपदार्थोंकीप्राप्ति तथा तिनपदार्थोंकारक्षण देवकेअधीनहे॥हमारीइच्छातैं तिनपदार्थों कीप्राप्ति तथारक्षण होइसकैनहीं ॥याप्रकारकेअ र्थकूं तेसकामपुरुष जाणतेनहीं ॥ याकारणतैं तेप्रेयअर्थीसकामपुरुष मंदबुद्धिवालेहैं ॥ और हेनचिकेता ॥ जेतुमारे सरीखेबुद्धिमान् नि ष्कामपुरुषहोवैहैं ॥ तेबुद्धिमान्पुरुषतौ तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिको तथा रक्षणकरणेकी इच्छाकरतेनहीं॥ किंतु तिनस्त्रीपुत्रादि कपदार्थोंकेप्राप्तिकूं तथा रक्षणकूं देवकेअधीनमानिकै तेनिष्कामपुरुष आपणेचित्तविषे निरंतर ताप्रेय का तथाश्रेयकाही विचारकरैहैं ॥ अब प्रथम प्रेयकेस्वरूपकाविचार निरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं जन्ममरणादिकदुःखोंकेनिवृत्तिकोइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताप्रेयकेस्वरूपविषे याप्रकारकाविचारकरै ॥ यहसंपूर्णजीव हमारेकूं सर्वदासुखकीप्राप्तिहोवै तथाहमारेकूं दुःखकीप्राप्ति कदाचित्भीनहींहोवै याप्रकार सुखकेप्राप्तिकी तथादुःखकेनिवृत्तिकीइच्छाकरैहैं परंतुतिनजीवोंकूं सुखकीप्राप्ति तथा दुःखाभावकीप्राप्तिहोती नहीं उलटा तिनपुरुषोंकूं दुःखकोहीप्राप्तिहोवै हे ॥ यातैं यहजान्याजावै हे ॥ कोईबलवान्दोष विद्यमानहे ॥ जादोषकेप्रभावतैं यहजीव सुख कीप्राप्तिवासतै उद्यमकरतेहुएभी दुःखकूंहीप्राप्तहोवै हे ॥ यातैं यहविचारकर्‍याचाहिये॥सोदुःखकीप्राप्तिकरणेहारादोष किसकाधर्म हे॥तहां पुण्यपापरूपकर्मोंकाकर्त्ता जोपुरुषहे ॥ तापुरुषकाही सोदोष धर्म हे ॥ अथवा सोदोष पुण्यपापरूपकर्मोंकाही धर्म हे ॥ तहां सोदोष पुरु षकाधर्म हे यहप्रथमपक्षतोसंभवै नहीं ॥ काहेतैं शास्त्रविषेकथनकरी जायज्ञादिककर्मोंकेकरणेकोरीतिहे ॥ ताशास्त्रकीरीतिसैं किंचित्न्यू नरूपकरिके अथवा किंचित्अधिकरूपकरिकै जोतिनयज्ञादिककर्मोंकाकरणाहे याकानाम वैगुण्यहे ॥ तावैगुण्यकरिकै तेयज्ञादिककर्म कर्त्तापुरुषकूं आपणेफलको प्राप्तिकरैंनहीं ॥ यातैं सोवैगुण्यही तापुरुषकादोष कहणाहोवैगा॥ और सोवैगुण्यदोष जिनपुरुषोंविषेहैनहीं ॥

किंतु जेपुरुषतिनयज्ञादिककर्मोंकूं शास्त्रकीरीतिसैं भलीप्रकारकरैहैंतिनपुरुषोंकूंभी दुःखकीप्राप्तिदेखणेमेंआवैहै॥यातैं सोदोष पुरुषकाधर्मन हीं है ॥ किंतु परिशेषतैं स्वर्गादिकलोकोंकोप्राप्तिवासतैं करेजेकाम्यकर्म हैं तिनकाम्यकर्मोंकाही सोदोष धर्म है ॥ यातैं काम्यकर्मही याजीवोंकूं दुःखकोप्राप्तिकरे हैं॥ अब लोकप्रसिद्ध सुखकेसाधनोंकानिरूपणकरे हैं॥यालोकविषे साक्षात् अथवा परंपराकरिकै विषयजन्य सुखोंकासाधनजोसुवर्णादिरूपधनहै॥ताधनकूं ब्राह्मणतौ प्रतिग्रहयाजन अध्यापन यातीनउपायोंकरिकै संपादनकरैहैं॥तहां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंविषे जिसपुरुषनैं शास्त्रकीरीतिसैं धर्मपूर्वक धनकासंपादनकऱ्याहोवै॥तथा जोपुरुष गुरुशास्त्रदेवताओंविषे श्रद्धाभक्तिवा लाहोवै ॥ तथा अनाचारतैंरहितहोवै ॥ ऐसेधर्मात्मापुरुषतैं याब्राह्मणनें धनकादानलेणा याकानाम प्रतिग्रहहै ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रिवर्णिकपुरुषोंकूं याब्राह्मणनें यथा अधिकार यज्ञकरावणा याकानाम याजनहै ॥ और वैराग्यादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जेअधिकारी पुरुषहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकेताईं ब्राह्मणनें विद्यादेणी याकानाम अध्यापनहै ॥ याप्रकारकेउपायोंकरिकै यहब्राह्मण धनकासंपाद नकरे हैं ॥ और क्षत्रियराजा प्रजाकोचोरादिकोंतैंरक्षाकरिकै धनकासंपादनकरे हैं ॥ और वैश्यपुरुष कृषिवाणिज्यादिकोंकरिकै धनकासं पादनकरे है ॥ और शूद्रपुरुष ब्राह्मणादिकतीनवर्णोंकीसेवाकरिकै धनकासंपादनकरे हैं ॥ इसप्रकार आपणीआपणीवृत्तितैं धनकूंएकठा करिकै तेब्राह्मणादिकचारवर्णोंकेपुरुष ताधनकरिकै नानाप्रकारकेअन्नकूं तथा स्त्रियोंकूं तथा गृहादिकपदार्थोंकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ तहां तेब्रा ह्मणादिकपुरुष अन्नकरिकैतौ तृप्तिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और स्त्रियोंकरिकै पुत्रपौत्रादिकप्रजाकूं प्राप्तहोवै हैं॥ और गृहादिकपदार्थोंकरिकै मन केसंतोषकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और तेब्राह्मणादिकपुरुष जोकदाचित् ताधनकरिकै यज्ञादिकरूपइष्टकर्मोंकूंकरे हैं ॥ तथा लोकोंकेसुखवासतै वापीकूप तडाग गृह इत्यादिकपूर्त्तकर्मकरे हैं ॥ तथा अन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकादानकरैहैं ॥ तौ तेब्राह्मणादिकपुरुष इसलोकविषेतौ यशकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ और मरणतैंअनंतर स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तास्वर्गविषे तेपुरुष नानाप्रकारकेदिव्यभोगोंकूंभोगे हैं ॥ और तापुण्य कर्मोंकेक्षयहुएतैंअनंतर तेसकामपुरुष तास्वर्गतैं ॥ पुनःभूमिलोकविषेप्राप्तहोवै हैं ॥ इसप्रकार घटीयंत्रकीन्याईं तेसकामपुरुष निरंतर

यासंसारविषेभ्रमणकरे हैं ॥ यातैं यालोकविषे जिन स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकूं यासकामपुरुषोंनैं सुखकासाधनरूपकरिकेमान्याहै ॥ तेसंपूर्णपदार्थ याजीवोंकेदुःखरूपवृक्षकेउत्पत्तिका बीजरूपकारणहैं ॥ अब तिनपदार्थोंविषे दुःखकोकारणता निरूपणकरे हैं ॥ यहसकाम पुरुष जभी तिनधनादिकपदार्थोंकूंएकठाकरे हैं ॥ तभी मरणकेसमानदुःखोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और तादुःखोंकूंसहनकरिकै जभी यहसकाम पुरुष ताधनादिकपदार्थोंकूंएकठाकरे है ॥ तभी यहसकामपुरुष तिनधनादिकपदार्थोंकेवियोगकाभयकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और धनादिकजडपदार्थोंकी तथा स्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकी जाअन्यपुरुषोंकेसमीपजाणेकीशंकाहे ॥ तथा अप्रियपदार्थोंकेप्राप्तिकी जाशंकाहे ॥ यहदोनोंप्रकारकीशंका तिनसकामपुरुषोंकेचित्तकूं अग्निकीन्याई दाहकरैहे ॥ और यालोकविषे तथा परलोकविषे स्थित जोआपणाशरीरहै ॥ तथा ताशरीरकेसंबंधी जेमातापितागुरुआदिकोंकेशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंकेमरणकाभयकरिकैभी यासकाम पुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहे ॥ और इसलोकविषे तथा परलोकविषे वर्तमानजोशरीरहै ॥ ताशरीरकेनाशतैंअनंतर पुनः पुण्यपा परूपकर्मोंकरिकै हमारेकूं किसशरीरकीप्राप्तिहोवैगी याप्रकारकीचिंताजन्यभयकरिकैभी यासकामपुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवे है॥और यालोकविषे तथा परलोकविषे आध्यात्मिकदुःख आधिदैविकदुःख आधिभौतिकदुःख यहतीनप्रकारकेदुःख तिनसकामपुरुषोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यासंसारविषे कोईभीपदार्थ याजीवोंकेसुखकासाधननहीं है ॥ और जैसे विषकरिकैमिल्याहुआअन्न मूढबालकोंकूं सुख कासाधन प्रतीतहोवे है ॥ तैसे यहस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थभी विचारहीनमूढपुरुषोंकूं सुखकेसाधन प्रतीतहोवे हैं ॥ इतनैंकरिकेप्रेयरूपफल काविचारकऱ्या ॥ अब श्रेयरूपफलकाविचार निरूपणकरे हैं ॥जैसे श्वानकामैथुन प्रथमकालविषे ताश्वानकूं सुखकीप्राप्तिकरे है ॥ और उत्त रकालविषे ताश्वानकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहे ॥ तैसे इसलोकविषे तथा परलोकविषे स्थित जितनाकोप्रेयहै ॥ सोप्रेय प्रथमकालविषेतो तिन भ्रांतपुरुषोंकूं किंचित्मात्र सुखकीप्राप्तिकरेहे ॥ और उत्तरकालविषे सोप्रेय तिनपुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैहे ॥ ऐसादुःखरूपप्रेय यद्यपि विचारहीनमूढपुरुषोंकूं ग्रहणकरणेयोग्यहै॥ तथापि बुद्धिमानमैंअधिकारीपुरुषकूं सोप्रेय ग्रहणकरणेयोग्यनहीं है ॥ किंतु शरीरतैंरहित

तथा सर्वदुःखोंतैंरहित जोमोक्षसुखरूपश्रेयहै॥सोश्रेयही हमारेकूं संपादनकरणेयोग्यहै॥ तामोक्षरूपश्रेयकूंछोडिके कोईदूसरापदार्थहमारेकूं संपादनकरणेयोग्यनहीं है ॥ और ताश्रेयकीप्राप्ति ब्रह्मवेत्तापुरुषकेउपदेशतैंविना होवैनहीं॥यातैं वेदोंकेतात्पर्यकूंजानणेहारे जेब्रह्मवेत्तामहात्मापुरुषहैं ॥ तिनब्रह्मवेत्तागुरुओंकेसमीपजाइके मैं अधिकारीजन याप्रकारका ताश्रेयकास्वरूपपूछौं ॥ हेभगवन् ॥ यालोकविषे शरीरतैंरहित कोईनित्यसुखहै अथवा नहीं है ॥ याप्रकार हमारेकरिकैपूछेहुए तेमहात्मापुरुष हमारेताई जिसवस्तुका उपदेशकरैंगे ॥ सोईही वस्तु हमाराश्रेयहोवैगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोनिष्कामअधिकारीपुरुष तिनमहात्मापुरुषोंकेआगे ताश्रेयकेप्राप्तिकोही प्रार्थनाकरैहै ॥ हेनचिकेता ॥ तामोक्षरूपश्रेयकोप्राप्तिवासतै महात्मागुरुकेआगे प्रार्थनाकरणेहारे तेरेसरीखेनिष्कामपुरुष यालोकविषेदुर्लभहैं ॥ हेनचिकेता॥यालोकविषे जीवोंकूंसुखकीप्राप्तिकरणेहारे जितनेकी स्त्री पुत्र धन आदिकपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ मैंयमराजा पूर्वतुमारेताईदेताभया ॥ परंतु तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकूं दुःखरूपजाणिके तुमनैं अंगीकारकऱ्यानहीं॥यातैं मोक्षरूपश्रेयकूंग्रहणकरणेहारा तूं हमाराशिष्य सर्वविवेकीपुरुषोंविषेश्रेष्ठहैं ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे यालोकविषे चोरादिकदुष्टपुरुषोंके हस्तपादोंविषेस्थित जालोहकीशृंखला है ॥ ताशृंखला तिनचोरादिकपुरुषोंकूं चलनेदेवैनहीं ॥ तैसे स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे आसक्तिरूप जासुवर्णमयशृंखलाहै ॥ साआसक्तिरूपशृंखलाभी यापुरुषोंकूं किसीशुभकर्मविषे प्रवृत्तहोणेदेवैनहीं ॥ ऐसीआसक्तिरूपशृंखलाकूं विचारकेबलतैंतोडिके तूंनचिकेता बाहर निकस्याहै ॥ यातैं यासंसाररूपज्वरतैं तूंअवश्यमुक्तहोवैगा ॥ कैसीहै सा आसक्तिरूपशृंखला ॥ जाआसक्तिरूपशृंखलाकरिकैबांधेहुए केइंकशास्त्रवेत्ताबुद्धिमान्पुरुषभी यासंसाररूपसमुद्रविषेही डुबरहेहैं ॥तासंसारसमुद्रतैं आपणेकूं निकासणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे आसक्तिरूपशृंखलाकरिकैबांधेहुए शास्त्रवेत्ताबुद्धिमान्पुरुषभी जभी आपणेकूं यासंसारसमुद्रतैंबाहरनिकासणेविषे समर्थनहींहोवे हैं ॥ तभी शास्त्रविचारतैंरहित अन्यजीवोंकीक्यावार्त्ता है ॥ ऐसीआसक्तिरूपशृंखलाकूं तुमनैं विचारकेबलतैं भेदनकऱ्याहै ॥ यातैं सर्वविचारवान्पुरुषोंविषे तू श्रेष्ठहै ॥ हेनचिकेता ॥ यालोकविषे दोप्रकारकेमार्गहैं ॥ एकतो यज्ञादिककर्मरूपमार्ग है

और दूसरा आत्मज्ञानरूपमार्ग है ॥ तेदोनोंमार्ग परस्पर दूरवर्त्तमानहैं काहेतैं यहकर्मरूपमार्गतो याजन्ममरणरूपसंसारकेस्थितिका कारणहै ॥ याकारणतैंही सोकर्मरूपमार्ग अनित्यविषयजन्यसुखरूप प्रेयरूपपुरकीप्राप्तिकरै है ॥ और दूसराआत्मज्ञानरूपमार्गतौ ताजन्ममरणरूपसंसारकेनिवृत्तिकाकारणहै ॥ याकारणतैंही सोआत्मज्ञानरूपमार्ग नित्यसुखमोक्षरूपश्रेयरूपपुरकीप्राप्तिकरै है ॥ हेनचिकेता ॥ पूर्वहमनैं तुमारेताईं स्त्रीपुत्रधनादिकअनेकपदार्थ देणेकरेथे ॥ तौभी तुमारामन चलायमाननहींहोताभया ॥ यातैं तिनदोनोंमार्गोंविषे आत्मज्ञानरूपमार्गकाअधिकारी मैं तुमारेकूंहीमानताहूं ॥ हेनचिकेता ॥ सोकर्मरूपमार्गभी दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ शास्त्रविहितयज्ञादिकशुभकर्मरूपमार्गहोवै है ॥ और दूसरा शास्त्रनिषिद्धहिंसादिकअशुभकर्मरूपमार्गहोवै है ॥ तहांप्रथम शुभकर्मरूपमार्गकूं तूं श्रवणकर ॥ यज्ञादिकशुभकर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामअज्ञानीपुरुषहैं ॥ तथा तिनसकामपुरुषोंकेकामनाकाविषय जितनेकीस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्ण याअविद्यारूपभूमिविषेही वर्तमानहैं ॥ कैसेहैं अज्ञानीकर्मीपुरुष ॥ यादेहादिकसंघातकूंही आत्मारूपमानिके तादेहादिकसंघातकीही सर्वदा स्तुतिकरै हैं ॥ और तेसकामकर्मीपुरुष हैंतौमूर्ख ॥ परंतु आपणेकूंपंडितमानैहैं ॥ ऐसेसकामकर्मीपुरुष ताअविद्याकरिके यासंसारविषे गर्भवासादिरूपदुर्गतिकूंप्राप्तहोइके नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ तेसकामकर्मीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंरहितहैं ॥ याकारणतैं तेसकामअज्ञानीपुरुष ताआत्मज्ञानरूपमोक्षमार्गकूं जाणिसकतेनहीं ॥ और तेअज्ञानीसकामकर्मीपुरुष गुरुरूप होइके अज्ञानीपुरुषोंकूंहीउपदेशकरै हैं ॥ और तिनअज्ञानीसकामकर्मीपुरुषोंके उपदेशकूंश्रवणकरिके तेअज्ञानीशिष्यभीतिसप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ जैसे अंधपुरुषकेपीछेचाल्याहुआ जोदूसराअंधपुरुषहै ॥ सोअंधपुरुष वारंवार भूमिविषेपडैहै ॥ तैसे अज्ञानीकर्मीगुरुओंकेपीछेचालणेहारे तेअज्ञानीशिष्यभी तिनगुरुओंकीन्याईं वारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंही प्राप्तहोवै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ याजन्ममरणरूपसंसारविषेप्राप्तहोणेहारे तेसकामअज्ञानीजीव यद्यपि वहुतप्रकारकेहैं तथापि तेसकामअज्ञानीपुरुष संक्षेपतैं दोप्रकारकेहोवै हैं ॥ एकसकामपुरुषतो पुण्यरूपअदृष्टद्वारा सुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहैं ॥ और दूसरेसकामपुरुषतो दृष्टउपायद्वारा तासुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरै

हैं ॥ तहां पुण्यरूपअदृष्टद्वारा सुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे सकामपुरुषतौ अर्थवादसहित कर्मकांडरूपवेदकूंप्रमाणमाने हैं ॥ और दृष्टउपायद्वारा सुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे दूसरेसकामपुरुषतौ तावेदप्रमाणकूंअंगीकारकरैनहीं ॥ किंतु तेबहिर्मुखपुरुष केवलप्रत्यक्ष प्रमाणकूंही अंगीकारकरैहैं ॥ तहांवेदकेकर्मकांडकूंमानणेहारे तेसकामकर्मीपुरुषतौ आपणेशिष्योंकेप्रति याप्रकारकेवचन कथनकरैहैं ॥ पिताने तथागुरुने जिसजिसमार्गकाग्रहणकऱ्याहोवे ॥ तिसोतिसोमार्गकूं पुत्रने तथाशिष्यने आपणेनेत्रोंकूंमूंदिकेग्रहणकरणा ॥ तात्पर्य यह ॥ पिताने तथागुरुने उपदेशकऱ्या जोकर्मकांडरूपमार्ग है ॥ ताकर्मकांडरूपमार्गकूं पुत्रने तथाशिष्यने श्रद्धापूर्वकहीग्रहणकरणा ॥ ताकेविषे आपणीकुतर्क नहींकरणी ॥ याप्रकारकेवचन तेकर्मीपुरुष आपणेशिष्योंकेप्रति कथनकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ तिनसकाम कर्मीपुरुषोंकेवचनविषेविश्वासराखिके जोमूढबुद्धिपुरुष तिनसकामकर्मोंकूंकरैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष यासंसाररूपमहान्वनकूंप्राप्तहोइके कभी स्वर्गादिकऊपरकेलोकोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और कभी पातालादिकनीचेलोकोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ इसप्रकार तेसकामपुरुष निरंतर यासं साररूपवनविषेभ्रमणकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ केवलप्रत्यक्षप्रमाणकूंहीअंगीकारकरणेहारे जे दूसरेसकामपुरुष हैं ॥ तेसकामपुरुषतौ स्वर्गा दिकलोकोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरैनहीं ॥ किंतु इसीलोकके स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरे हैं ॥ और तिनस्त्रीपुत्रादिकोंविषेआ सक्तिकरिके तिनस्त्रीपुत्रादिकोंकेभरणपोषणवासते चोरी निंदा हिंसा आदिकअनेकपापकर्मोंकूंकरैहैं ॥ तापापकर्मोंकरिके तेबहिर्मुख पुरुष रौरवादिकनरकोंविषेप्राप्तहोइके पुनःकीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ हेनचिकेता ॥ यज्ञादिकपुण्यकर्मोंकूंकरणेहारे जेस कामपुरुषहैं ॥ तथा चोरीआदिकपापकर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामपुरुषहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेसकामपुरुषोंकूं आपणेहृदयदेशविषेस्थित स्वयंज्योतिआत्मा प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्माकाअज्ञान तिनदोनोंकासाधारणधर्म है ॥ अब तिनदोनोंप्रकारकेसकाम पुरुषोंविषे किंचित्मात्रविशेषताभी निरूपणकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे दूरआकाशविषेभ्रमणकरताहुआभीपक्षी ताआकाशतैंनीचेभू मिविषेआइके वंधकपुरुषकेजालविषेफँसेहैं ॥ तैसे यज्ञादिकपुण्यकर्मकेप्रभावतैं तेसकामपुरुष ऊपरस्वर्गलोकविषेविचरतेहुएभी जभी

तापुण्यकर्मका भोगकरिकैक्षयहोवे है ॥ तथा पूर्वलेकिसीपापकर्मका उदयहोवे है ॥ तभी तेसकामपुरुष तास्वर्गलोककापरित्याग करिकै मैंयमराजाकेवशहोवे हैं ॥ तहांश्रुति ॥ कपूयचरणाःकपूयांयोनिमापद्यंते ॥ अर्थयह ॥ स्वर्गफलभोगकेअंतकालविषे याजीवोंका जोकदाचित् कोईपूर्वलापापकर्म फलदेणेवासते सन्मुखहोवेहै ॥ तभी तेजीव स्वर्गकापरित्यागकरिकै नरककीप्राप्तिद्वारा श्वानादिकनीच योनियोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातैं तेपुण्यवान्सकामपुरुष किसीकालविषे मैंयमराजाकेवशकूं अवश्यप्राप्तहोवे हैं और जिनपुरुषोंकी सर्वदा पापकर्मोंविषेहीप्रीतिहै ॥ तथा महामोहरूपतमकरिकै जेपुरुष प्रमादकूंप्राप्तहुएहैं ॥ ऐसेवेदबाह्यपापात्मासकामपुरुषतो नित्यही मैंयम राजाकेवशकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ तेवेदतैंविमुख सकामपुरुष जिसकुतर्ककरिकै पापकर्मोंकूंकरैहैं ॥ तेकुतर्क तू श्रवणकर ॥ यालोकविषे प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध जोयहस्थूलशरीरहै ॥ सोस्थूलशरीरही आत्माहै ॥ ताशरीररूपआत्माकेमृत्युहुएतैंअनंतर ताआ त्माकूंपरलोकविषे दूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवेगी याकेविषेकोनकारणहै ॥ किंतु परलोकविषे पुनःशरीरकीप्राप्तिकरणेहारा कोईकारणदेखी तानहीं ॥ यातैं परलोकविषे दूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ किंवा जेवादी शरीरतैंभिन्नआत्माकूंमानैहैं ॥ तेवादी दूसरेशरीरकीप्राप्तिविषे पुण्यपापरूपकर्मोंकूंहीकारणमानेहैं ॥ सोतिनवादियोंकाकहणाभी संभवेनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपुरुष तिनकर्मोंकाकर्त्ताहोवेहै ॥ सोईहीपुरुष तिनकर्मोंकेफलकाभोक्ताहोवेहै ॥ अन्यपुरुषकेकर्मोंकाफल अन्यपुरुष भोगेनहीं ॥ और यालोकविषे यहस्थूलशरीरतो पुण्यपापकर्मोंकूंकरैहै ॥ और यास्थूलशरीरतैंभिन्नआत्मा परलोकविषेजाइकै तापुण्यपापकर्मोंकेफलकूंभोगैहै ॥ याप्रकारकाविरुद्धअर्थ तिनवादियोंकेमतविषे कैसेघटैगा ॥ किंवा ॥ जेवादी याशरीरतैंभिन्न आत्माकूंमाने हैं ॥ तिनवादियोंकेमतविषे करेहुएकर्मोंका भोगतैं विनाहीनाशरूप कृतहानिदोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ और नकरेहुएकर्मोंकेफलभोगकीप्राप्तिरूप अकृताभ्यागमरूपदोष प्राप्तहोवेगा ॥ काहे तैं जिसशरीरने पुण्यपापरूपकर्मकरेथे ॥ सोशरीरतो मरणतैंअनंतर अग्निविषेभस्महोइजावे है ॥ यातैं ताशरीरकूंतो तिनपुण्यपापरूप कर्मोंका सुखदुःखरूपफल होवेनहीं ॥ और याशरीरतैंभिन्न जिसतुमारेआत्मानैं तेपुण्यपापरूपकर्म नहींकरेथे ॥ सोतुमाराआत्मा पर

लोकविषे तिनपुण्यपापकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकूंभोगेहै ॥ याप्रकार कृतनाश अकृताभ्यागम रूपदोनोंदूषण तिनवादियोंकेमतविषे प्राप्त होवै हैं॥किंवा॥कृतनाश अकृताभ्यागम यादोनोंदोषोंकीनिवृत्तिवासतै सोवादी जोकदाचित्ताआत्माकूं पुण्यपापरूपकर्मोंकाकर्त्ताअंगीकारकरैतौ तावादीनैं अक्रियत्वरूपहेतुतैं ताआत्माविषे जोनित्यरूपतासिद्धकरीहै॥सानित्यरूपता ताआत्माविषेनहींरहेगी॥और सोवादी जो कदाचित् ताआत्माकूं क्रियावालामानिकेभी नित्यरूपमानैं ॥ तौ जैसे क्रियावालेआत्माविषे तावादीनैं नित्यरूपता अंगीकारकरी है ॥ तैसे क्रियावाले याशरीरविषेभी सोवादी नित्यरूपता किसवासतैनहींमानता ॥ किंतु याशरीरविषेभी नित्यरूपता मानीचाहिये ॥ किंवा॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ क्रियावालाहोवै है ॥ सोसोपदार्थ स्पर्शगुणवालाभी अवश्यहोवै है ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ क्रियावाले हैं यातैं स्पर्शगुणवालेभीहैं ॥ तैसे सोवादीजोकदाचित् ताआत्माकूं क्रियावालामानैंगा ॥ तौ सोआत्मा स्पर्शगुणवालाभी अवश्यहोवैगा ॥ और क्रियावाला तथास्पर्शगुणवाला यहशरीरभीहै ॥ यातैं याशरीरतैं ताआत्माकाभेद सिद्धनहींहोवैगा ॥ किंतु यहशरीरही आत्मारूपसिद्ध होवैगा ॥ और याशरीररूपआत्माका परलोकविषेगमन संभवैनहीं ॥ यातैं मरण तैंअनंतर कोईपरलोकहैनहीं ॥ किंवा ॥ जोकदाचित् याशरीरतैंभिन्नकोईआत्मा परलोकविषेजाताहोवै॥तौ यालोकविषे जैसे कोईपुरुष आपणेगृहकापरित्यागकरिकै किसीविदेशविषेजावै है॥ सोपुरुष किसीकालपाइकै पुनःआपणेगृहविषेआइकै आपणेस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूंदेखैहै ॥ तैसे मरणतैंअनंतर लोकांतरकूंप्राप्तहुआ सोतुमाराआत्मा पुनःकदाचित् आपणेस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेदेखणेवासतै क्योंनहींआवता ॥ और मरणतैंअनंतर कोईभीपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकेदेखणेवासतैआवतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ इसलोकतैंभिन्न कोईपरलोकहैनहीं ॥ किंवा यमकिंकरआइकै याजीवात्माकूं परलोकविषेलेजावैहै याप्रकारजोवादी कथनकरै है सोभीअसंगतहै ॥ काहेतैं तेयमकिंकर जोकदाचित् याजीवात्माकूंबांधिकै याशरीरतैं बाहर परलोकविषे लेजातेहो वैं ॥ तौ जैसे यालोकविषे राजाकेभृत्य जभी किसीचोरपुरुषकूंबांधिकै गृहतैंबाहरनिकासैहैं ॥ तभी सोचोर पुरुष आपणेगृहतैंबाहरनिकसिकै ऊंचेशब्दोंकूंकरै है॥तैसे मरणकालविषे तिनयमकिंकरोंनैं याशरीरतैंबाहरनिकास्याहुआसोजीवात्माभी

ऊंचेशब्दोंकूंकिसवासतेनहींकरता ॥ और मरणकालविषे याशरीरतेंबाहरनिकसिके कोईभीजीवात्मा ऊंचेशब्दोंकूंकरतानहीं ॥ तथा किसीजीवऊपर उपकार तथाअपकार करतानहीं ॥ यातें यहजान्याजावे है ॥ याशरीरतेंभिन्न कोईआत्मानहीं है ॥ किंच ॥ यास्थूलशरीरतेंआत्माभिन्नहै ॥ सोआत्मा पुण्यपापरूपकर्मकेवशतें परलोकविषेजावैहै॥याप्रकारकेवचन जेवेदविषेदेखणेमेंआवै हैं ॥ तेवचनकोईईश्वरनें नहींउच्चारणकरे॥ किंतु लोकोंकेधनादिकपदार्थोंकेहरणेवासते किसीलोभीब्राह्मणों नें तेवचन वेदविषेपाये हैं॥किंच ॥ इसलोकविषे जोपुरुष आपणेपितरोंकीप्रसन्नतावासतै ब्राह्मणोंकेताईं अन्न जल वस्त्र भूषण गृह इत्यादिकपदार्थ दानदेवे है ॥ तेसंपूर्णअन्नादिकपदार्थ तापुरुषकेपितरोंकूं परलोकविषेप्राप्तहोवे हैं॥याप्रकारकेवचन जोतेवादीपुरुषकथनकरे हैं॥तेवचनभीमिथ्याहैं॥काहेतें इसलोकविषेस्थितब्राह्मणोंकेताईं दियेहुएअन्नादिकपदार्थ जोकदाचित् परलोकविषेस्थितपितरोंकूंप्राप्तहोतेहोवैं॥तो इसीलोकविषे किसीगृहकेकोणविषे मातापिताकूंबैठाइके पुत्रन तिनोंकीतृप्तिकरणेवासते तिसीगृहविषे ब्राह्मणोंकेताईं अन्नजलादिकपदार्थ दानदिये ॥ ताअन्नजलादिकोंकरिके तामातापिताकी क्षुधातृषा किसवासतेनिवृत्तनहींहोती ॥ तात्पर्ययह ॥ मातापिताकीतृप्तिवासतें जिसगृहविषे ब्राह्मणोंकेताईं अन्नादिकपदार्थदिये हैं ॥ तिसीगृहविषेस्थितमातापिताकीभी जभी ताअन्नादिकोंकरिके तृप्तिनहींभई ॥ तभी अत्यंतदूरपरलोकविषेस्थित तामातापिताकी ताअन्नकरिकेतृप्ति किसप्रकारहोवेगी ॥ यातें याशरीरतेंभिन्न कोईआत्मा परलोकविषेजावैहै यहातिनवादियोंकाकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ हेनाचिकेता ॥ इसतेंआदिलेकेअनेकप्रकारकोकुतर्कोंकूं तेवहिर्मुखमूढपुरुष कामक्रोधादिकोंकेवशहुए कथनकरे हैं ॥ ऐसेवेदबाह्यनास्तिकपुरुषोंकूं इसलोकतेंविना दूसराकोई परलोक प्रतीतहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ इसप्रकार वेदोंकोनिंदाकरणेहारे तथा आपणेशरीरकेपालनकरणेवासते तथा स्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेपालनकरणेवासते अनेकप्रकारकेपापकर्मोंकूंकरणेहारे जेवहिर्मुखनास्तिकपुरुषहैं ॥ तेवहिर्मुखपुरुषतो वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोइके मेंयमराजाकेवशकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे वनविषे किसीवृक्षकोशाखाविषेस्थित जोवानरहै ॥ सोवानर आपणेचंचलस्वभावतें धनुषवालेपुरुषकी तवपर्यंत अवज्ञाकरे है ॥ जवपर्यंत ताधनुषवालेपुरुषनें तावानरकीतरफ आपणे

धनुषतैं वाणनहींचलाया॥और जभीसोधनुषवालापुरुष तावानरकीतरफ वाणचलावैहै॥तभी सोमूढवानर ताअवज्ञाकेदुःखरूपफलकूं भलो प्रकारअनुभवकरैहै॥तैसे मैंयमराजानैं जवपर्यंत तिनवहिर्मुखपापीजीवोंकीउपेक्षाकरी हैं॥तवपर्यंतहीतेवहिर्मुखपापीजीव वेदोंकीतथा देवताओंकीतथामैंयमराजाकीनिंदाकरैहैं ॥औरजभीमैंयमराजा तिनवहिर्मुखपुरुषोंकूंहननकरताहूं ॥ तभीतेवहिर्मुखपुरुष तानिंदारूपपापकर्मके दुःखरूपफलकूं नरकविषे प्रलयपर्यंत अनुभवकरैहै॥हेनचिकेता॥तिनवहिर्मुखपापीपुरुषों नैं जोपूर्व ब्राह्मणोंकेदानदेणेविषेउपहासकऱ्याहै ॥ सोतिनोंकेकहणेविषे पदार्थोंकेसामर्थ्यकाअज्ञानही कारणहै॥काहेतैं यालोकविषे संपूर्णपदार्थदृष्टअर्थकेअनुसारिहीहोवैहैं॥याप्रकारकेनियम कूं अंगीकारकरिके तिनवहिर्मुखपुरुषोंने सोकुतर्ककऱ्याहै ॥ सोतिनोंकानियम सर्वत्र संभवैनहीं ॥ काहेतैं तानियमकूं जोकदाचित् सर्वत्रअंगीकारकरिये ॥ तो दिनविषे दीपककरिके अंधकारकीनिवृति देखीतीनहीं ॥ यातैं तादीपककरिके रात्रिविषे ताअंधकारकीनिवृत्ति नहीं होणीचाहिये॥और रात्रिविषे तादीपककरिके अंधकारकीनिवृति सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षदेखणेमैं आवैहै ॥ यातैं तिनवहिर्मुखपुरुषोंका सोनियम संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोपुरुष किसीरोगादिकोंकरिके मूर्च्छाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तापुरुषकेसंबंधी जभी तापुरुषके मूर्च्छाकेनिवृत्तकरणेवासते ब्राह्मणोंकेताई ग्रहादिकोंकादानदेवैहैं॥तभी तापुरुष कीमूर्च्छा निवृत्तहोइजावै है ॥ और तादानकेनहींदियेहुए तापुरुषकूं सामूर्च्छा वनीरहैहै ॥ यहवार्त्ता लोकविषे प्रत्यक्षदेखणेमैंआवे है ॥ यातैं जैसे इसलोकविषे ब्राह्मणोंकेताई दानदेणेकरिके याजीवोंकेमूर्च्छाकीनिवृत्तिहोवैहै तैसे इसलोकविषे ब्राह्मणोंकेताई अन्नादिकोंकेदानकरणेतैं परलोकविषे पितामातादिकोंकीतृप्तिहोवे है ॥ यहवार्त्ताभी संभवहोइसकैहै ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकीइच्छाहोवै ॥ तिसपुरुषने पूर्वउक्तकुतर्कोंका परित्यागकरणा ॥ तथा कुतर्कीपुरुषोंकेसंगकाभी परित्यागकरणा ॥ और वेदभगवान्नैं जिसजिसअर्थकावोधनकऱ्याहै ॥ तिसतिसअर्थकूं यापुरुषनैं श्रद्धापूर्वक अंगीकारकरणा ॥ हेनचिकेता ॥ यद्यपि तिनवहिर्मुखपुरुषों नैं पूर्व कृतनाश अकृताभ्यागम इत्यादिककुतर्कोंकरिके याशरीरतैंभिन्न आत्माकेअभावकोसिद्धिकरीहै ॥ तथापि तिनवहिर्मुखपुरुषोंकाकुतर्क किसीयुक्तिप्रमाणकूंसहारिसकैनहीं ॥ यातैं तिनकु

तर्कोंविषे किसीआस्तिकपुरुषनें विश्वासनहींकरणा ॥ और तिनबहिर्मुखपुरुषोंकेकुतर्कोंकरिके आत्माकावास्तवस्वरूप जान्याजावैनहीं ॥ किंतु जिनअधिकारीपुरुषोंके अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्म इकठेहोवैंहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतवचनोंकाश्रवणकरिके ताआत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणे हैं ॥ कैसाहैसोआत्मा॥ वास्तवतैं सर्वविकारोंतैंरहितस्वयंज्योतिरूपहुआभी अविद्याकेसंबंधतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइके कर्त्ताभोक्तापणेकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोईहीआत्मादेव ब्रह्मविद्याकरिकैपुनःआपणेसर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ अब ताआत्माकेश्रवणादिकोंकीदुर्लभता निरूपणकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यापंचप्रकारकेक्लेशोंकरिकै मोहकूंप्राप्तभये जेकोईपापात्मापुरुषहैं॥तिनपापात्मापुरुषोंकूंतो यहआत्मादेव श्रवणकरणेवासतैंभी प्राप्तहोवैनहीं॥यातैं सोआत्माकाश्रवणभी दुर्लभहै ॥ और हेनचिकेता ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे यहसंपूर्णजीव हृदयदेशविषे स्थित सत्यपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥याप्रकारकेवेदांतवचनोंकूंश्रवणकरिकैभी केईकपुरुष किसीप्रतिबंधकेवशतैं ताआत्माका निश्चयकरिसकैनहीं जैसे यालोकविषे किसीसत्यवादीपुरुषनें उपदेशकऱ्याजोकोईकार्य है ॥ ताकार्यकेमहान्‌पणेकूं मूढबालक जाणिसकतेनहीं ॥ तैसे तेपुरुष आत्माकूंजाणिसकतेनहीं ॥ यातैं याआत्मादेवकाज्ञानभी अत्यंतदुर्लभहै ॥ हेनचिकेता ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा मनवाणीकाअविषयहै ॥ यातैं जोपुरुष ऐसेअद्वितीयआत्माकाउपदेश आपणेशिष्योंकेप्रतिकरे है ॥ सोआत्माकावक्तापुरुषभी आश्चर्यरूपहै ॥ और ऐसेनिर्गुणआत्मादेवकूं जोपुरुष तागुरुकेउपदेशतैंसाक्षात्कारकरे है ॥ सोआत्माकेजानणेहारा लब्धापुरुषभी अत्यंतकुशलजानणा ॥ हेनचिकेता ॥ याअद्वितीयआत्माका प्रतिपादन तथाज्ञान यहदोनोंआश्चर्यरूपहैं ॥ याकारणतैं ताप्रतिपादनकरणेहारे वक्तापुरुषकूं तथा ताज्ञानवालेज्ञातापुरुषकूं श्रुतिभगवती आश्चर्यरूपकहे हैं ॥ और गुरुउपदिष्टमहावाक्यतैंउत्पन्नभया जोनिर्विकल्पकज्ञानहै ॥ तानिर्विकल्पकरूपसूक्ष्मज्ञानतैं यहआत्मादेव प्राप्तहोवै है ॥ यातैं ताआत्मज्ञानवालेपुरुषकूं श्रुतिभगवती कुशलकहै है ॥ हेनचिकेता ॥ याआत्माकेअपरोक्षज्ञानवाला जोकुशलगुरुहै ॥ सोब्रह्मवेत्तागुरु जभी याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरे है ॥ तभीही यहअधिकारीपुरुष ताआत्माके

वास्तवस्वरूपकूंआणेहै ॥ परोक्षज्ञानवालेगुरुकेउपदेशतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं अपरोक्षज्ञानकोप्राप्तिहोवैनहीं॥हेनचिकेता ॥ जिनपुरुषोंकूं ताब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतैं ॥ आत्माकासाक्षात्कारनहींभयाहै॥ऐसेअज्ञानीपुरुष जोकदाचित् किसीशिष्यकेप्रति बहुतकालपर्यंतभी आत्माकाउपदेशकरैं ॥ तौभी ताअज्ञानीपुरुषोंकेउपदेशतैं ताशिष्यकूं आत्माकाअपरोक्षज्ञान कदाचित्भीहोवैनहीं ॥ और ताब्रह्मवेत्ता कुशलगुरुकेउपदेशतैंविना जोपुरुष आपणेनानाप्रकारकेतर्कोंकरिकै आत्माकाचिंतनकरैहै ॥ तापुरुषकूंभी आत्माकासाक्षात्कारहोवै नहीं ॥ जैसे महान्वनविषेस्थितहुआकोईपुरुष आपणेग्रामकेमार्गकूंनजाणिकरिकै किसीदूसरेपुरुषतैं तामार्गकूंपूछे ॥ और आगेतैं सोदूस रापुरुषभी ताग्रामकेमार्गकूंनजाणताहुआ तापुरुषकेप्रति किसीमार्गकाउपदेशकरिदेवै ॥ तापुरुषकेवचनविषे विश्वासराखिकै सोपुरुष जोकदाचित् तिसमार्गविषेचालेहै॥तो सोपुरुष ताआपणेग्रामकूंप्राप्तहोवैनहीं॥किंतुउलटा तामार्गकेचलणेतैं सोपुरुष दुःखकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यासंसाररूपमहान्वनविषेस्थितहुआ यहअधिकारीपुरुष जभी किसीअज्ञानीकर्मीपुरुषतैं आत्मज्ञानरूपमोक्षकामार्ग पूछेहै ॥ तभी तिनअज्ञानीकर्मीपुरुषोंकेउपदेशतैं यह अधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानरूपमोक्षमार्गकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा ता अज्ञानीपुरुषोंके उपदेशतैं सो अधिकारीपुरुष विषयरूपसंसारमार्गकूंही प्राप्तहोवै है ॥ यातैं जिनपुरुषोंकूं मोक्षकोप्राप्तिकीइच्छाहोवै॥ तिनमुमुक्षुपुरुषोंनैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकूंही खोजणा ॥ तिसब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशकरिकैही यामुमुक्षुजनोंकूं आत्मसाक्षात्कार कीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेनचिकेता ॥ ऐसाब्रह्मवेत्ताकुशलवक्तापुरुषसर्वजगत्केआत्मारूपब्रह्मकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणे आत्मातैं अभिन्न करिकैजानैहै ॥ याकारणतैं सोब्रह्मवेत्ताकुशलपुरुष सर्वजगत्तैंअभिन्नहोवैहै॥ऐसाब्रह्मवेत्तागुरु जभी याअधिकारीपुरुषों केप्रति आत्माका उपदेशकरै है ॥ तभी ताब्रह्मवेतागुरुकूं ताआत्मज्ञानकरिकै जोअद्वितीयब्रह्मभावकोप्राप्तिरूपफलभयाहै॥ सोईहीब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपफल ताशिष्यकूंभीहोवैहै ॥ यातैं ऐसेब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतैंही यहशिष्य सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ परंतु ऐसाब्रह्मवेत्तागुरु यालोकविषे कोईविरलाहीहै ॥ हेनचिकेता ॥ याजीवोंकाआत्मा सूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अतिसूक्ष्महै ॥ यातैं ऐसादुर्विज्ञेयआत्मा केवलआपणेतर्ककरिकै

जान्याजावैनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतैंहीं सोआत्मा जान्याजावैहै ॥ हेनचिकेता ॥ ऐसेब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतैं जिसअधिकारीपुरुषकी आत्मकारमतिहुईहै ॥ तामतिकूं यहअधिकारीपुरुष किसीकुतर्ककरिकैदूरनहींकरै ॥ किंतु उलटा नास्तिकवादि योंनैंशरीरादिकोंविषे आत्मरूपतासिद्धकरणेवासतै जेजेनानाप्रकारकेकुतर्ककरे हैं ॥ तिनकुतर्कोंकूं श्रुतिउक्ततर्कोंतैंछेदनकरिकै यहअधि कारीपुरुष तातत्पदार्थरूपब्रह्मकेसाथ त्वंपदार्थरूपजीवकीसमानताकूं स्थापनकरै ॥ और ताश्रुतिउक्ततर्कोंतैंविना उत्पन्नभईसामति तिन कुतर्कोंकरिकै निष्फलताकूंहींप्राप्तहोवै है हेनचिकेता ॥ याआत्माकारमतिके उत्पत्तिविषे तथाफलविषे प्रतिबंधकरणेहारे जेनानाप्रकारके कुतर्क वादियोंनैं कल्पनाकरे हैं ॥ तिनबहिर्मुखवादियोंकेकुतर्कोंकूं तूं श्रवणकर ॥ तहां प्रथम तेबहिर्मुखपुरुष याप्रकारकीकुतर्ककरै हैं ॥ यासंपूर्णशरीरोंविषे यहआत्मा एकहै अथवा अनेकहै ॥ तहां सर्वशरीरोंविषे आत्माएकहै यह प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवै नहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषे आत्माएकहोवै ॥ तौ तू मैं अन्य इत्यादिकभेदव्यवहार नहींहोणाचाहिये ॥ और याप्रकारका भेदव्यवहार सर्वलोकोंविषे देखणेमैंआवताहै ॥ यातैं सर्वशरीरोंविषे आत्माएक नहीं है ॥ और सर्वशरीरोंविषे आत्मा अनेकहै ॥ यहदूसरा पक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् शरीरशरीरविषे आत्माकाभेदहोवै ॥ तौ तावादीनैं जोआत्माकीअद्वि तीयरूपताअंगीकारकरीहै ॥ साअद्वितीयरूपता ताआत्माविषेनहींरहैगी ॥ यातैं ताआत्माविषे अनेकरूपताभी संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ आत्माकूं एकअद्वितीयरूपमानणेहारा सोवादी जोकदाचित् शरीररूपउपाधिकेभेदतैं आत्माकाभेदअंगीकारकरै ॥ तौतावादीसैं यह पूछाचाहिये ॥ एकहीआत्माकूं एककालविषे नानाशरीरोंकीप्राप्ति किसप्रकारहोवैहै ॥ जैसे यालोकविषे कोईयोगीपुरुष आपणेयोगसिद्धि केप्रभावतैं एकहीकालविषे अनेकशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसे कोईयोगसिद्धि याआत्माकूंप्राप्तभईनहीं॥जिसयोगसिद्धिकरिकै यहएकहीआत्मा एकहीकालविषे अनेकशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा ॥ जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषे एकहीआत्मास्थितहोवै ॥ तौ जैसे आपणेएकशरीरविषे यहहमाराशरीरहै याप्रकारकाज्ञान ताआत्माकूंहोवैहै ॥ तैसे संपूर्णशरीरोंविषे यहसंपूर्णशरीर हमारेहैं याप्रकारज्ञान ताआत्माकूं किसवास

तैंनहींहोता ॥ और सर्वशरीरोंविषे यहसंपूर्णशरीर हमारे हैं याप्रकारकाज्ञान किसीआत्माविषे देखणेमैंआवतानहीं ॥ याकारणतैंभी सर्व शरीरोंविषे आत्मा एकनहीं है॥किंवा॥यह आत्मा जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषेएकहीहोवै ॥ तो यहआत्मा जैसे आपणेशरीरकेसुखदुःखोंकूं अनुभवकरैहै ॥ तैसे सर्वशरीरोंकेसुखदुःखोंकूं किसवासतै नहींअनुभवकरता ॥ और नानाप्रकारकोयोनियोंविषे भ्रमणतैंविना यहआत्मा एककालविषे सर्वशरीरोंकेसुखदुःखका अनुभवकरतानहीं॥याकारणतैंभी सर्वशरीरोंविषे सोआत्मा एकनहीं है॥किंवा॥तावादोनैंसर्वशरीरों विषे अंगीकारकऱ्याजोआत्माहै॥सोआत्मा घटादिकोंकीन्याई जडहै अथवा चेतनहै॥तहां सोआत्माजडहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोआत्मा जोकदाचित् घटादिकोंकीन्याई जडहोवैगा ॥ तो जडआत्माविषे कर्त्तापणा तथाभोक्तापणा संभवैनहीं ॥ यातैं ताजडआत्माका अंगीकारकरणाहीं निष्फलहोवैगा ॥ किंवा ॥ सोआत्मा जोकदाचित् घटादिकोंकीन्याई जडहोवैगा ॥ तो जैसे जडघटकेभोगवासतै दूसरेकिसीजडपदार्थकूं कोई उत्पन्नकरतानहीं ॥ तैसे ताजडआत्माकेभोगवासतै याजडशरीरका आरंभ नहींहोवैगा और आत्माकेसुखदुःखरूपभोगवासतैंही याजडशरीरका आरंभ होवैहै ॥ यातैं आत्माविषे जडरूपतासंभवैनहीं ॥ और सोआत्मा चेतनरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ज्ञानवालेकानाम चेतनहोवै है ॥ और चेतन केभोगवासतैंहीं यहशरीरादिकजडपदार्थ होवैहैं ॥ याकेविषे यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ यहशरीरादिकजडपदार्थ जोआत्माकेभोगवासतै होवैहैं ॥ सो ज्ञानरूपसंबंधतैंहोवैहैं ॥ अथवा ताज्ञानरूपसंबंधतैंविनाहींहोवै हैं ॥ तहां ताज्ञानरूपसंबंधतैंविनाहीं तेशरीरादिक आत्माके भोगवासतैहोवै हैं ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ ज्ञानकाविषय नहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ किसी पुरुषकेभोगकासाधनहोवैनहीं ॥ किंतु ज्ञानकेविषयहुएही तेसर्वपदार्थ याजीवोंकेभोगकासाधनहोवैहैं ॥ और तेशरीरादिकपदार्थ ताज्ञान रूपसंबंधतैंहीं याआत्माकेभोगकासाधनहोवै हैं ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जिसज्ञानरूपसंबं धतैं तेशरीरादिकपदार्थ याआत्माकेभोगकासाधनहोवै हैं ॥ सोज्ञान नित्यहै अथवा अनित्यहै ॥ तहां सोज्ञान नित्यहै यहप्रथमपक्ष जोवादी

अंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतैं सोज्ञान जोकदाचित् नित्यहोवे ॥ तौ ताशरीरादिकपदार्थोंकरिकै याआत्माकूं सर्वदा भोगकीप्राप्ति होणीचाहिये ॥ और तिनशरीरादिकपदार्थोंकरिकै याआत्माकूं सर्वकालविषे भोगकीप्राप्तिहोतीनहीं॥यातैं ताज्ञानविषे नित्यरूपतासंभवेन हीं ॥ और सोज्ञान अनित्यहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोअनित्यज्ञान आपणेकरिकैही आप प्रकाशितहै ॥ अथवा किसीदूसरेज्ञानकरिकै प्रकाशितहै ॥ तहां सोअनित्यज्ञान आपणेकरिकैही प्रकाशितहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ तौ एकहीज्ञानविषे ताप्रकाशरूपक्रियाकी कर्मरूपता तथाकर्त्तारूपता प्राप्तहोवेगी ॥ सोअत्यंतविरुद्धहै ॥ और सोअनि त्यज्ञान दूसरेज्ञानकरिकैप्रकाशितहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ तौ सोएकज्ञान दूसरेज्ञानकरिकै प्रकाशितहोवेगा ॥ और सोदूसराज्ञान तीसरेज्ञानकरिकैप्रकाशितहोवेगा ॥ और सोतीसराज्ञान चतुर्थज्ञानकरिकैप्रकाशितहोवेगा ॥ याप्रकार तिनज्ञानोंकीधारा मानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ हेनचिकेता इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेकुतर्कोंकूं तेवहिर्मुखमूढपुरुष कल्पनाकरैहैं ॥ तेसं पूर्ण तिनोंकेकुतर्क श्रुतिप्रमाणतैंविरुद्धहैं ॥ याकारणतैंही तेकुतर्क ककचकेसमान दुःखकाहेतुहैं ॥ हेनचिकेता ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं ताआत्माकारमतिकीउत्पत्तितैंपूर्वेही याकुतर्कोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताअधिकारीपुरुषविषे साआत्माकारमति उत्पन्नहोंनहींहोवैहै ॥ और जिसअधिकारीपुरुषकूं ताआत्माकारमतिकीउत्पत्तितैंअनंतरही तिनकुतर्कोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूं श्रुतिकेअर्थविषेअवि श्वासहोवैहै ॥ ताअविश्वासकरिकै तिसपुरुषकूं ताश्रुतिकेअर्थविषे संशयविपरीतभावनाहोवैहै ॥ तासंशयविपरीतभावनाकरिकै साआत्मा कारमति विनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं हेनचिकेता ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवे ॥ ताअधिकारीपुरुषनैं ताआत्माका रमतिरूपगौकी कुतर्करूपसिंहतैं अवश्यकरिकैरक्षाकरणी ॥ हेनचिकेता ॥ वेदोंकूंप्रमाणरूपमानणेहारे जेआस्तिकपुरुषहैं ॥ तथा वेदोंकूं अप्रमाणरूपमानणेहारे जेनास्तिकपुरुषहैं ॥ तेसंपूर्णपुरुष आपणीआपणीबुद्धिकेअनुसार जिसीकिसीप्रकारका आत्माकास्वरूप जाणते हीं हैं ॥ तथा ताआत्माकास्वरूप आपणेशिष्योंकेप्रति कथनभीकरैहैं ॥ यातैं आपणेआपणेगुरुकेउपदेशतैं साआत्माकारमति सर्वपुरुषों

विषेउत्पन्नहोवैहै ॥ कितनेकीचार्वाकादिकोंकूंतो याशरीरविषेही आत्माकारमतिहोवैहै ॥ और कितनेकवादियोंकूंतो प्राणादिकोंविषेही आत्माकारमतिहोवे है॥और कितनेकवादियोंकूंतो कर्त्ताभोक्ताविषेही आत्माकारमतिहोवैहै॥परंतु ताआत्माकारमतिकरिकै तिनमूढपुरुषोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं॥और अद्वितीयआत्माकेयथार्थज्ञानवाला तथा श्रुतिअनुकूलतर्कोंविषेकुशल ऐसाजोब्रह्मवेत्तागुरुहै ॥ सोब्रह्मवेत्तागुरु जभीयाअधिकारीपुरुषोंकेप्रति ताआत्माकारमतिकाउपदेशकरैहै॥तभीही याअधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेनचिकेता॥जिसअधिकारीपुरुषके पूर्वअनेकजन्मोंकेपुण्यकर्म एकठेहोवे हैं ॥ सोअधिकारीपुरुषही ताआत्माकारमतिकूंप्राप्तहोवे है ॥ जैसे तूनचिकेता किसी पूर्वलेपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं याआत्माकारमतिकूंप्राप्तभयाहै ॥ हेनचिकेता ॥ मैंयमराजानैं तुम्हारेप्रति स्त्रीपुत्रधनादिकअनेकपदार्थ देणेकरेभी ॥ तौभी तिनपदार्थोंकूं तू ग्रहणनहींकरताभया ॥ यातैं तुमाराधैर्य कोईआश्चर्यरूपहै ॥ ऐसेधैर्यवान्पुरुषोंकूंही यहआत्माकारमति प्राप्तहोवैहै ॥ और ऐसेधैर्यवान् तुम्हारेसरीखेशिष्य यालोकविषे अत्यंतदुर्लभहैं ॥ हेनचिकेता ॥ ऐसेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकालविषे जिसप्रकारकाधैर्य तुमारेकूंप्राप्तभयाहै ॥ तिसप्रकारकाधैर्य पूर्वकिसीपुरुषकूं प्राप्तभयानहींहै ॥ और अभीवर्त्तमान्कालविषे ऐसाधैर्य किसीपुरुषकूंहैनहीं ॥ और आगेकिसीपुरुषकूं होवैगानहीं ॥ हेनचिकेता ॥ दूसरेपुरुषोंकीक्यावार्त्ता है ॥ परंतु मैंयमराजाविषेभी तेरेजैसाधैर्यनहीं है ॥ काहेतैं यद्यपि मैंयमराजा आपणेहृदयदेशविषेस्थित ब्रह्मानंदरूपनिधिकूं नित्यजाणताहूं ॥ और लोकपालरूपअधिकारसहित आपणेदेवतापणेकूं अनित्यजाणताहूं॥ तथापि जैसे स्त्रीपुत्रादिकसर्वपदार्थोंविषे तुमारी त्यागबुद्धिहुई है ॥ तैसे तिनपदार्थोंविषे हमारीत्यागबुद्धिनहीं है ॥ हेनचिकेता ॥ तुमारेजैसीत्यागबुद्धि हमारेकूंइसकालविषेतौनहीं है ॥ परंतु ऐसीत्यागबुद्धि हमारेकूं पूर्वकाल विषेभीनहींभई है ॥ काहेतैं यहअधिकारीपुरुष यज्ञादिकअनित्यकर्मोंकरिकै मोक्षरूपनित्यसुखकूंप्राप्तहोवैनहीं॥याप्रकारकेअर्थकूं नजाणिकरिकै मैंयमराजा पशुइष्टकादिकअनित्यपदार्थोंकरिकै अग्निचयन अग्निष्टोम आदिकअनेकयज्ञोंकूंकरताभयाहूं ॥ तिन अग्निचयनादिक यज्ञोंकरिकै मैंयमराजा यालोकपालपदवीकूंप्राप्तभयाहूं ॥ जालोकपालपदवी प्रलयपर्यंत रहणेहारी है ॥ और जैसे अन्नकेभोजनकियेहुए

याजीवोंकी विनाहोयत्नतैं तृप्तिहोवे हे ॥ तैसे यालोकपालपदवीविषेभी विनाहोयत्नतैं हमारेकूं सर्वभोगोंकीप्राप्तिहोवे हे ॥ हेनचिकेता ॥ इसप्रकार पूर्वमहान्‌यत्नोंकरिके हमारेकूंप्राप्तभयाजोयहऐश्वर्य हे सोयहऐश्वर्य तुमारेकूंविनाहोयत्नतैं प्राप्तहोताथा ॥ तौभी ताहमारेऐश्वर्य कूं तू त्यागकरताभयाहे ॥ यातैं तुमाराधैर्य कोईआश्चर्यरूपहे ॥ हेनचिकेता ॥ जिसआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारवासते तू सर्वविषयों कापरित्याग करताभयाहे ॥ तिसआनंदस्वरूपआत्माकूं मैंयमराजा साक्षात्‌अनुभवकरताहुआभी तिनविषयोंकापरित्याग करिसकता नहीं ॥ याकारणतैंभी हमारेधैर्यतैं तुमाराधैर्य अधिकहे ॥ हेनचिकेता ॥ जिसआनंदस्वरूपआत्माकेजानणेवासते तुमनैं सर्वपदार्थोंका त्यागकऱ्याहे ॥ सोआनंदस्वरूपआत्माकैसाहे ॥ याभूमिलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकीविषयजन्यआनंदहैं ॥ तेसंपूर्णआनंद जिसआत्मास्वरूपआनंदके अंतरभूतहैं ॥ तथा सोआत्मादेवही यासर्वजगत्‌काआधारहे ॥ तथा सोआत्मादेवही आकाशकीन्याई सर्वत्रपूर्णहे ॥ तथा इंद्रादिकदेवतावोंकरिके सोआत्मादेवही स्तुतिकरणेयोग्यहे ॥ तथा सोआत्मादेवही सर्वत्रपरिपूर्णरूपकरिके तथा याजगत्‌केउत्पत्तिआदिकोंका कारणरूपकरिके जानणेयोग्यहे ॥ तथा सोआत्मादेवही नानाप्रकारकेसंकल्पोंका प्रवर्त्तकहे ॥ तथा सोआत्मादेवही देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहोणेतैं अनंतरूपहे ॥ तथा सोआत्मादेवही सर्वअभयका अवधिरूपहे ॥ जिसतैंपरेको ईअभयहेनहीं ॥ ऐसेआनंदस्वरूपआत्माकूं जाणताहुआभी मैंयमराजा जिनविषयोंकापरित्याग नहींकरिसकताहूं ॥ तिनविषयोंकूं तुमनैं ताआत्माकेजानणेकीइच्छाकालविषेही परित्यागकरिदियाहे ॥ यातैं हमारेधैर्य तैं तुमाराधैर्य अधिकहे ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपुरुषकूं ब्रह्मानंदकीप्राप्तिभईनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मानंदकेप्राप्तिकी केवलइच्छामात्रहे ॥ ऐसामुमुक्षुजनभी जभी तिनस्त्रीपुत्रधनादिक पदार्थोंका परित्यागकरैहे ॥ तभी ब्रह्मानंदकूंअनुभवकरणेहारे ब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं तो तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंका विशेषकरिके परित्यागकऱ्याचाहिये ॥ और हेनचिकेता ॥ यास्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकापरित्यागकरिके जिसआनंदस्वरूपआत्माविषे तुमा रेकूंप्रीतिहुई हे सोआनंदस्वरूपआत्माकैसाहे ॥ बुद्धिआदिकसर्वसंघातका साक्षीरूपहे ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंके तथा मन

केसंयमतेंरहित जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तिनबहिर्मुखपुरुषोंकरिके सोआत्मादेव देख्याजावैनहीं ॥ और जैसे अग्नि सर्वकाष्ठोंविषे
गुह्यहोइकेरहेहै ॥ तैसे सोआत्मादेवभी सर्वशरीरोंविषे गुह्यहोइकेरहेहै ॥ और जैसे आकाश घटमठादिकउपाधियोंविषे प्रवेशकरैहै ॥
तैसे सोआत्मादेवभी यासंपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरिके ताकेविषप्रवेशकरैहै॥और सोआत्मादेवहो हृदयदेशविषेस्थित बुद्धिरूपगुहाविषेनिवा
सकरे है तथा सोआत्मादेवही भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे एकरसहै और सत्यब्रह्ममैंहूं याप्रकारके निदिध्यासरूपयोगकरिके
सोआत्मादेवही प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ तथा सोआत्मादेवही स्वप्रकाशहै॥हेनचिकेता ॥ ऐसे आनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरिके जैसेतूं
हर्षशोकतेंरहितहुआहै॥तैसे जोकोईदूसराअधिकारीपुरुषभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंताआनंदस्वरूपआत्माकूंसाक्षात्कारकरैगा॥सोअधिकारी
पुरुषभी तिनहर्षशोकादिकोंतेंरहितहोवेगा॥हेनचिकेता॥तत्वमसि ॥ यामहावाक्यविषेस्थितजोतत् त्वं यहदोपदहैं ॥तिनदोनोंपदोंविषे सर्व
ज्ञपरिपूर्ण मायाविशिष्टसर्वज्ञईश्वर तत्पदकाअर्थहै॥और अज्ञानविशिष्ट अल्पज्ञजीवात्मा त्वंपदकाअर्थ है॥तहां जोअधिकारीपुरुष गुरुके
मुखतें तिसतत्त्वंपदार्थकाश्रवणकरिकेतातत्पदार्थकेमायासर्वज्ञतादिरूपवाच्यभागकापरित्यागकरिके एकचेतनमात्रलक्ष्यभागकाग्रहणक
रे है ॥ इसप्रकार त्वंपदार्थके अविद्याअल्पज्ञत्वादिरूपवाच्यभागकापरित्यागकरिके एकचेतनमात्रलक्ष्यभागकाग्रहणकरे है ॥ इसप्रकार
चेतनरूपलक्ष्यभागकाग्रहणकरिके जोअधिकारीपुरुष मैंअद्वितीयब्रह्महूं याप्रकार आपणेकूंब्रह्मरूपकरिकेजाणे है ॥ सोअधिकारीपुरुष
ब्रह्मानंदरूपमोक्षकूंप्राप्तहोइके सर्वदा प्रसन्नरहे है ॥ कैसाहैसोब्रह्मानंद ॥ सर्वप्राणियोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तहांश्रुति ॥ एषह्येवा
नंदयाति ॥ अर्थयह ॥ यहआनंदस्वरूपब्रह्मही सर्वप्राणियोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरे है ॥ हेनचिकेता ॥ हृदयरूपगुहाविषेस्थित जोब्रह्मानंद
रूपगृहहै ॥ सोब्रह्मानंदरूपगृह याअधिकारीपुरुषोंकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतेंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसाब्रह्मानंदरूपगृह तुमनचिकेताकेप्रति खुले
द्वारवालाहै ॥ हेनचिकेता ॥ मैंयमराजातो आपणेचित्तविषे ऐसामानताहूं ॥ जो ताब्रह्मानंदरूपगृहविषे तुमाराप्रवेश हुआही है ॥ काहेतें
ताब्रह्मानंदरूपगृहविषे प्रवेशकरणेकामार्ग चित्तकीअंतर्मुखताहै ॥ और तामार्गद्वारा ब्रह्मानंदरूपगृहकीप्राप्तिविषे यहविषयाकार अंतःकर

णकीवृत्तिरूपही प्रतिबंधकहै ॥ तिन विषयाकारवृत्तिरूपपाशोंकूं तुमनें विचारकेबलतें नष्टकऱ्याहै ॥ यातें अभीतुमारेकूं ताब्रह्मानंदरूप गृहकेप्रवेशकरणेविषे कोईदूसराप्रतिबंधकनहींहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाउपदेश जभी तायमराजानें नचिकेताकेप्रतिकऱ्या ॥ तभी सोनचिकेता मरणतेंअनंतर आत्माकेसत्ताकूं अर्थापत्तिरूपप्रमाणतें निश्चयकरताभया ॥ अत्र ताअर्थापत्तिरूपप्रमाणकानिरूपणकरै हैं ॥ इसयमराजानें मैंनचिकेताकेप्रति जोपूर्व सकाम निष्काम रूपअधिकारियोंकेभेदतें प्रेय श्रेय रूपफलकाभेद कथनकऱ्याथा ॥ और मरणतेंअनंतर यहपापीजीव वारंवार मैंयमराजाकेवशकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारकावचन जोइसयमराजानें पूर्वहमारेप्रतिकथनकऱ्याथा ॥ यहसंपूर्ण यमराजाकेवचन तभी सत्यहोवैंगे ॥ जभी यास्थूलशरीरतेंभिन्न कोईआत्माअंगोकारकरिये ॥ और जोकदाचित् यास्थूलशरीरकूंही आत्मारूपमानिये ॥ तो तेयमराजाकेवचन मिथ्याहोवैंगे ॥ काहेतें यहस्थूलशरीरतो इसलोकविषे अग्निकरिकैभस्महोइजावै है ॥ ऐसेअनित्यस्थूलशरीरकूं परलोकविषे सुखदुःखरूपभोगकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ यातें याशरीरतेंभिन्नहीकोईआत्मा परलोकविषेजावै है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोबुद्धिमाननचिकेता याशरीरतेंभिन्नरूपकरिकै ताआत्माकेसत्ताकूं आपहीनिश्चयकरताभया ॥ तिसतेंअनंतर सोनचिकेता ताआत्माकेविशेषस्वरूपकेजानणेकीइच्छाकरिकै तायमराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेयमराजा ॥ जोवस्तु धर्मअधर्मतेंरहितहै ॥ तथा जोवस्तु कार्यकारणभावतेंरहितहै ॥ तथा जोवस्तु भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंतेंरहितहै ॥ तथा जोवस्तु सुखदुःखतेंरहितहै ॥ ऐसेवस्तुकूं तूयमराजा भलीप्रकारजाणताहै ॥ यातें आप तावस्तुकाउपदेश मैंनचिकेताशिष्यकेप्रति करो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी तानचिकेतानें यमराजाकेप्रति कऱ्या ॥ तभी सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति ताशुद्धआत्माकेबोधकरणेवासते प्रथम प्रणवरूपकरिकै ताआत्माकाउपदेशकरताभया ॥ यमराजाउवाच ॥ हेनचिकेता जिसपरब्रह्मकूं यह अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै साक्षात्कारकरै हैं॥तथा जिसपरब्रह्मकूं यहऋगादिकसर्ववेद कथनकरै हैं॥तथा जिसपरब्रह्मकूं यहकृच्छ्रचांद्रायणादिकतप कथनकरै हैं॥तिसपरब्रह्मकूं तू प्रणवरूपकरिकै जान ॥शंका ॥ हेभगवन् शब्दरूपऋगादिकवेद

तापरब्रह्मकूं प्रतिपादनकरे हैं यहवार्त्ता यद्यपि संभवहोइसके है॥तथापि अर्थरूप कृच्छ्रचांद्रायणादिकतप तापरब्रह्मकूं प्रतिपादनकरे हैं ॥ यहवार्त्ता संभवैनहीं॥समाधान॥हेनचिकेता॥अशुद्धअंतःकरणविषे तापरब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ किंतु कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकरिकै जोअंतःकरणशुद्धभयाहैताशुद्धअंतःकरणविषेहीयाअधिकारीपुरुषकूंतापरब्रह्मकासाक्षात्कारहोवै है ॥ यातेंजैसेऋगादिकवेदतापरब्रह्मकूंप्रतिपादनकरे है॥तैसे यहकृच्छ्रचांद्रायणादिकतपभी तापरब्रह्मकूंहीं प्रतिपादनकरे हैं॥अब अष्टप्रकारकेमैथुनकापरित्यागरूपब्रह्मचर्यकेजनावणेवासते प्रथम ताअष्टप्रकारकेमैथुनका निरूपणकरे हैं तहां स्मरण १ कीर्तन२ क्रीडा ३ प्रेक्षण४ गुह्यभाषण५ संकल्प ६ अध्यवसाय ७ क्रियानिर्वृत्ति ८ यहअष्टप्रकारकामैथुनहोवै है तहां आपणेचित्तविषे जोस्त्रीयोंकाचिंतनकरणाहै याकानाम स्मरणहै ॥ १ ॥ और तिनस्त्रीयोंकेकीर्तनगावणे तथा तिनस्त्रीयोंकेसाथ संभाषणकरणा याकानामकीर्तनहै ॥ २ ॥ और तिनस्त्रीयोंकेसाथ जो द्यूतादिकव्यवहारकरणाहै याकानाम क्रीडाहै ॥ ३ ॥ और कामदोषयुक्तमनकरिकै प्रेरणाकरेहुएजेनेत्रहैं ॥ तिननेत्रोंकरिकै वारंवार तिनस्त्रीयोंकूंदेखणा याकानाम प्रेक्षणहै ॥ ४ ॥ और विषयसंभोगकेवासते तिनस्त्रीयोंके गुह्यअंगोंकाकथनकरणा याकानाम गुह्यभाषणहै ॥ ५ ॥ और यहस्त्रीहमारेसाथ विषयसंभोगकरे याप्रकारकाजोचिंतनहै याकानाम संकल्पहै ॥ ६ ॥ और यास्त्रीकेसाथ मैंअवश्यसंभोगकरौंगा याप्रकारकाजोनिश्चयहै याकानाम अध्यवसायहै ॥ ७ ॥ और विषयसुखकीप्राप्तिकरणेहारा जो तिसस्त्रीकेसाथसंभोगहै याकानाम क्रियानिर्वृत्तिहै ॥ ८ ॥ याअष्टप्रकारकेमैथुनतेंजोनिवृत्तिहै याकानाम ब्रह्मचर्य है ॥ हेनचिकेता ॥ जिसब्रह्मकोप्राप्तिवासते यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मचर्यकूंकरे है ॥ सोब्रह्म ओंकाररूपप्रणवशब्दका अर्थरूपहै ॥ अथवा सोब्रह्म ताप्रणवशब्दरूपप्रतीकवालाहै ॥ यातें ताब्रह्मकूं तूं प्रणवशब्दतेंअभिन्नकरिकैजाण ॥ जिसवस्तुविषे अन्यवस्तुकाआरोपणकरिकै ध्यानकरिये ॥ तावस्तुकानाम प्रतीकहै ॥ जैसे पाषाणरूपशालगरामविषे विष्णुकाआरोपण करिकै ध्यानकरीताहै ॥ यातें सोशालगराम प्रतीकहै ॥ हेनचिकेता ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं यहप्रणवरूपअक्षरही हिरण्यगर्भरूपकरिकै तथा परब्रह्मरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष ताप्रणवरूपअक्षरकूं ब्रह्मरूपकरिकैध्यानकरे हैं ॥ तेअ

धिकारीपुरुष हिरण्यगर्भभावकोप्राप्ति तथापरब्रह्मभावकोप्राप्ति यादोनोंफलोंविषे जिसफलकोइच्छाकरे हैं तिसीफलकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातें याअधिकारीपुरुषोंनें ताप्रणवरूपअक्षरकीप्रतीकउपासना अवश्यकरिकेसंपादनकरणी ॥ हेनचिकेता ॥ ओंकाररूपप्रणवविषे अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा यहचारिमात्राहोवे हैं ॥ तिनअकारादिकचारिमात्रावोंके यथाक्रमतें स्थूल सूक्ष्म कारण तुरीय यहचारिअवस्था वाच्य अर्थहोवे हैं॥ तिनचारिअवस्थाउपहितशुद्धचेतन मैंहूं याप्रकारकाजोनिरंतरचिंतनहै॥याकानाम आलंबनउपासनाहै॥ताआलंबनउपासनाकूं करणेहारेपुरुषकूं जोफल प्राप्तहोवे है ॥ ताफलकूं तूं श्रवणकर ॥ यहप्रणवरूपआलंबनहीं हिरण्यगर्भकेध्यानकाउपयोगीहै ॥ और यहप्रण वरूपआलंबनहीं परब्रह्मकेध्यानकाउपयोगीहे ॥ याप्रकार ताप्रणवकूंआलंबनकरिके जोअधिकारीपुरुष हिरण्यगर्भकाध्यानकरे है तथा परब्रह्मकाध्यानकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइके तहांमोक्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ इतनेकरिके फलसहित प्रतीकउपासनाका तथा आलंबनउपासनाका निरूपणकऱ्या ॥ अब ताउपासनाकरिके जिसअधिकारीपुरुषकाचित्तशुद्धभयाहे ॥ ताअधिकारीकेप्रति आत्माकेवा स्तवस्वरूपकाउपदेश निरूपणकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ ताप्रणवशब्दकरिके प्रतिपादनकरणेयोग्यजोब्रह्महे ॥ताब्रह्मके याप्रकारकेस्वभावकूं यहमुमुक्षुजन चिंतनकरें ॥ यहस्वयंज्योतिआत्मादेव जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतेंरहितहै॥ काहेतें यालोकविषे जोजोपदार्थ उत्पत्तिवाळा होवे है ॥ तिसतिसपदार्थका कोईकारण प्रतीतहोवे है ॥ जैसे घटादिकपदार्थ उत्पत्तिवाळेहैं ॥ यातें तिनघटादिकोंके मृत्तिकाकुलालादिक कारण प्रतीतहोवे हैं ॥ तैसे याआत्मादेवकी जोकदाचित् उत्पत्तिहोतीहोवे ॥ तो याआत्मादेवकाभी कोईकारण प्रतीतहोणाचाहिये॥और आत्माकेउत्पन्नकरणेहारा कोईकारण प्रतीतहोतानहीं॥ यातें याआत्मादेवका जन्मसंभवेनहीं॥और यहआनंदस्वरूपआत्मादेव वास्तवतें अद्वितीयरूपहे ॥ यातें याअद्वितीयआत्मातेंभीकोईपदार्थउत्पन्नहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ इसप्रकार सोआत्मादेव जन्मतेंरहितहे ॥ याका रणतें श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं अज नित्य यादोनोंनामकरिकेकथनकरे है ॥ और यहआत्मादेव अजहे तथानित्यहे ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं शाश्वत यानामकरिकेकथनकरे है ॥ जोवस्तु सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे वर्त्तमानहोवे ॥ तावस्तुकाना

म शाश्वतहे ॥ और यहआत्मादेव शाश्वतहे ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआत्मादेवकूं पुराण यानामकरिकैकथनकरे हे ॥ जोवस्तु पूर्व
कालविषेभी नवीन नहीं होवे ताकानाम पुराणहे॥हेनचिकेता॥जैसे घटरूपउपाधिकेनाशहुएभी ताघटविषेस्थितआकाशका नाशहोवैनहीं
तैसे याशरीररूपउपाधिकेनाशहुएभी ताशरीरविषेस्थितआत्मादेवका नाशहोवैनहीं ॥ और हेनचिकेता ॥ यहआत्मादेव यद्यपि वा
स्तवतैं किसीपदार्थकूं हननकरतानहीं ॥ तथा यहआत्मादेव आपभी किसीपदार्थकरिकैहननहोतानहीं ॥ तथापि जेअविवेकीपुरुष याआ
त्मादेवकूं हननक्रियाकाकर्त्तामाने हैं ॥ तथा जे अविवेकीपुरुष याआत्मादेवकूं हननक्रियाकाकर्ममानेहैं ॥ तेदोनोंप्रकारकेपुरुष याआत्मा
देवके वास्तवस्वरूपकूंजाणतेनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे कार्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेशरीरादिकस्थूलपदार्थ हैं ॥ तथा कारणरूपकरिकैप्रसि
द्ध जेइंद्रियादिकसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ तिनदोनोंकाही नाशदेखणेविषेआवैहे ॥ यातैं यहनियमसिद्धभया ॥ यालोकविषे जिसजिसपदार्थकाना
शहोवैहे ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहोवैहे ॥ अथवा कारणरूपहोवे हे ॥ कार्यकारणभावतैंरहित किसीभीपदार्थकानाशहोवैनहीं ॥ और यह
आत्मादेव कार्यकारणभावतैंरहितहे ॥ यातैं आत्मादेवकानाश संभवैनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ देहइंद्रियादिकोंतैंरहित तथा आकाशकीन्याई
निराकार जोयहआत्मादेवहे ॥ ताआत्मादेवकूं जोपुरुष हननरूपक्रियाका कर्त्तारूप तथाकर्मरूप माने हे ॥ सोपुरुष अत्यंतमूढबुद्धिहे ॥
हेनचिकेता ॥ जेपुरुष याअविनाशीअक्रियआत्माकूं हननक्रियाका कर्त्तारूप तथाकर्मरूप माने हैं ॥ तेपुरुष जोकदाचित् सर्वशास्त्रोंके
जानणेहारेभीहोवैं ॥ तौभी तेपुरुष विपरीतज्ञानवालेहीजानणे ॥ काहेतैं अन्यवस्तुविषे जोअन्यवस्तुकाज्ञानहे याकानाम विपरीतज्ञानहे ॥
जैसे रज्जुविषेसर्पकाज्ञान विपरीतज्ञानहे॥तैसे अकर्ताआत्माविषे कर्त्तापणेकाज्ञान तथाअविनाशीआत्माविषे नाशपणेकाज्ञान यहदोनोंप्र
कारकेज्ञानभी विपरीतज्ञानरूपहैं ॥ हेनचिकेता ॥ यालोकविषे जोपदार्थ सत्यहोवे हे॥तासत्यपदार्थका कदाचित्भी नाशहोवैनहीं ॥ और
यहआत्मादेवभी सत्यरूपहे ॥ यातैं असत्य देहादिकोंकीन्याई यासत्यस्वरूपआत्माकानाश किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु नहींहोवैगा ॥ हे
नचिकेता॥केईकनैयायिकादिकवादीतो पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंकेपरमाणुवोंकातथामनकाभी नाशमानतेनहीं॥और यहआत्मा

देवतो तिनपरमाणुवोंका तथा मनकाभी विवर्त्तउपादानकारणहे यातें यहआत्मादेव तिनपरमाणुवोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महे॥ऐसेअत्यंतसूक्ष्म याआत्माकानाशकिसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु नहींहोवैगा ॥ किंवा ॥ तिननैयायिकोंकेमतविषेतो आकाश काल दिशा यहतीनों महत्परिमाणवालेहोवे हैं॥ याकारणतैं तेनैयायिक तिनआकाशादिकमहान्पदार्थोंकानाश अंगीकारकरैंनहीं ॥ और यहआत्मादेवतो तिनआकाशादिकमहान्पदार्थोंकाभी अधिष्ठानरूपहै॥याकारणतैं यहआत्मादेव तिनआकाशादिकोंतैंभी अत्यंतमहान्है॥ऐसेअत्यंतमहान्आत्माका नाश किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु नहींहोवैगा ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे वस्त्रादिकसावयवपदार्थ आपणेपरिणामीरूपस्वभावतैंहीं नाशकूं प्राप्तहोवे हैं॥ तैसे यहनिरवयवआत्मादेव आपणेस्वभावतैंतो नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं जोवादी आत्माकानाश मानैहै ॥ तावादीनैं आत्माकेस्वभावतैंभिन्नहीकोईपदार्थ ताआत्माकेनाशका कारणमान्याचाहिये॥और यालोकविषे ताआत्माकेस्वभावतैंभिन्न जितनेकीकुठारऔषधादिक नाशकेकारणहैं॥तेकुठारादिककारण याशरीरकूंतथानेत्रादिकइंद्रियोंकूं प्राप्तहोइके तिनशरीरादिकोंकूंनाशकरिकै आपभी नाशहोइजावे हैं ॥ परंतु तेकुठारादिककारण बुद्धिकेनाशकरणेविषे प्रवर्त्तहोवैनहीं ॥ जभी बुद्धिकेनाशकरणेविषेभी तेकुठारादिक कारण प्रवर्त्तनहींहोवे हैं ॥ तभी ताबुद्धितैंभीपरेस्थित जोताबुद्धिकासाक्षीरूपआत्माहै ॥ तासाक्षीआत्माकेनाशकरणेविषे तेकुठारादिककारण किसप्रकार प्रवर्त्तहोवैंगे ॥ किंतु नहींप्रवर्त्तहोवैंगे ॥ यातैं यहआत्मादेव अविनाशीहै ॥ हेनचिकेता ॥ जिसअधिकारीपुरुषकाअन्तःकरणशुद्धभयाहै ॥ तथा जिस अधिकारीपुरुषने श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंजयकर्‍याहै ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषका दुःखविषे द्वेषनहीं है ॥ तथा सुखविषे रागनहीं है ॥ ऐसाउत्तमअधिकारीपुरुष जभी गुरुशास्त्रकीकृपातैं तापरमात्मादेवकेमहिमाकूं आपणेआत्मातैं अभिन्नकरिकैदेखैहै ॥ तभी सोविद्वानपुरुष न किसीकूं हननकरैहै॥ और नकिसीकरिकै हननहोवैहै॥ कैसाहै सोपरमेश्वरकामहिमा ॥ परमाणुवोंतैं आदिलेके जितनेकोसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ तथा आकाशतैंआदिलेके जितनेकोमहान्पदार्थ हैं॥तिनसंपूर्णोंकाअवधिरूपहै ॥ जिसमहिमातैंपरे कोईसूक्ष्मपदार्थनहीं हैतथाकोईमहान्पदार्थनहीं है ॥ और सोमहिमा आनंदआत्मास्वरूपहै ॥ यातैं

सोमहिमा सर्वभेदतैंरहितअद्वितीयस्वरूपहै ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे यालोकविषेस्थित जेयहस्थूलशरीरहैं ॥ तेशरीर परिच्छिन्नहैं यातैं तेशरीर जिसकालविषे स्थितहोवैंहैं॥तथा शयनकरैंहैं॥ तिसकालविषे तेशरीर दूरजाणेकूंसमर्थहोवैंनहीं ॥और यहआत्मादेव परिच्छिन्नहै नहीं ॥ किंतु सर्वत्रव्यापकहै ॥ यातैं यहआत्मादेव जिसकालविषे जाग्रतअवस्थाकूंदेखैहै॥ तथास्वप्न सुषुप्तिअवस्थाकूंदेखैहै ॥तिसकालवि षेभी यहआत्मादेव सर्वदेशकालविषे प्राप्तहोवै है॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे जल सेंदूर हरितालादिकपदार्थोंकेसंबंधतैं यद्यपि रक्तपीतादि कवर्णोंवालाहुआ प्रतीतहोवै है ॥ तथापि सोजल वास्तवतैं शुक्लवर्णवालाही है ॥ तैसे यहआत्मादेवभी बुद्धिआदिकउपाधियोंकेतादात्म्य संबंधतैं यद्यपि विद्यामद धनमद इत्यादिकविकारोंवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि सोआत्मादेव वास्तवतैं विद्यामदादिकसर्वविकारोंतैं रहितहै ॥ हेनचिकेता ॥ इसप्रकार वास्तवतैंतो मदतैंरहित तथा बुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतैं मदवाला ऐसाजोपरमात्मादेवहै ॥ तिस परमात्मादेवकूं मैंचेतनआत्मातैंभिन्न कोईपदार्थ जाणिसकैनहीं ॥ काहेतैं जोजोपदार्थ मैंचेतनआत्मातैंभिन्नहोवैगा ॥ सोसोपदार्थ घटा दिकोंकीन्याई अनात्माजडरूपहीहोवैगा ॥ सोअनात्मारूपजडपदार्थ ताचेतनआत्माकूं प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव स्वप्रकाशरूपहै ॥ हेनचिकेता ॥ यहआत्मादेवकैसाहै ॥ वास्तवतैंतो स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनोंशरीरोंतैंरहितहै ॥ तथा सोआत्मादेव ही याअनित्यशरीरोंविषेस्थितहोवै है ॥ तथा सोआत्मादेवही महान्विभुहै॥ ऐसेआत्मादेवकेस्वरूपकूं जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरै है ॥ तिसीकालविषे यहअधिकारीपुरुष सर्वशोकोंतैंरहितहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिरूपबंधकानाम शोकहै ॥ सोशोक अज्ञानतैंउत्पन्नहोवै है ॥ और ताविद्वान्पुरुषकाअज्ञान आत्मज्ञानतैंनाशहोइजावै है ॥ यातैं ताअज्ञानरूपकारणकेअभावहुए ताविद्वानपुरुषविषे शोकरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ जोयहआत्मादेव हमनैं तुमारेप्रति विभुरूपकरिके तथा स्वप्रकाशरूपकरिके कथनकऱ्याहै ॥ सोयहआत्मादेव अत्यंतदुर्लभहै ॥ काहेतैं यहआत्मादेव चारवेदोंकेअध्याप नकरावणेकरिकेभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा चारवेदोंकेअध्ययनकरिकेभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा अनेकशास्त्रोंकेज्ञानतैंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥

तथा कोटिजन्मोंकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ऐसादुर्लभआत्मा इमअधिकारीपुरुषोंकूं किसप्रकार प्राप्तहोवैगा ॥ समा धान ॥ हेनचिकेता ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि बहिर्मुखपुरुषोंकरिकैदुर्लभहै ॥ तथापि जिसअंतर्मुखअधिकारीपुरुषकेप्रति यहआ त्मादेव गुरुशास्त्ररूपहोइके आपणावास्तवस्वरूप अभेदरूपकरिकै साक्षात्कारकरावै है॥सोईहीअधिकारीपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूं प्राप्तहोवै है ॥ हेनचिकेता ॥ जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारनहींहोवै है ॥ और जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवै है ॥ तिनदोनों पुरुषोंकेलक्षणोंकूं तूं श्रवणकर ॥ तहां जोपुरुष पापकर्मोंतैंनिवृत्तनहींभयाहै ॥ तथा जोपुरुष शमदमादिकोंतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष ध्यानरूपसमाधितैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुषमनकीशांतितैंरहितहै ॥ ऐसेबहिर्मुखपुरुषकूं याआत्मादेवकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ और जो पुरुष पुण्यात्माहै ॥ तथा जोपुरुष सर्वजीवोंविषेक्रोधतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष क्षणक्षणविषे आत्माकाचिंतनकरै है ॥ तथा जोपुरुष रागद्वेषतैंरहितहै ॥ ऐसा अंतर्मुखपुरुषही मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकैसाक्षात्कारकरै है ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे यालोकविषे यहपुरुष ओदनविषे शाकदधिआदिकपदार्थ मिलाइके ताओदनकूंभक्षणकरै हैं ॥ तैसे जिसमायाविशिष्टईश्वरका यहब्राह्मणक्षत्रियादिकसर्वजगत् ओदनरूपहै ॥ और सर्वजगत्कूंनाशकरणेहारामृत्यु शाकादिरूपहै ॥ तामृत्युरूपशाकादिकोंकूं याजगत्रूपओदनविषेमिलाइके जोपरमेश्वर यासर्वजगत्कूंभक्षणकरै है ॥ सोमायाविशिष्टईश्वर जिसशुद्धआत्माविषेस्थितहै ॥ ताशुद्धआत्मादेवकूं जैसे मैं यमसजानैं साक्षात्कारकन्याहै ॥ तैसे ताशुद्धआत्माकूं दूसराकोनपुरुष साक्षात्कारकरिसकेगा ॥ किंतु नहींकरिसकैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ तत् त्वं पदार्थकेशोधनकालविषे जिसअधिकारीपुरुषनैं ताशुद्धपरमात्मादेवकूं आपणाआ त्मारूपकरिकेजान्याहै ॥ सोईहीअधिकारीपुरुष ताशुद्धपरमात्मादेवकूं महावाक्यकाअर्थरूपकरिकैभी जानिसकैहै ॥ ताविचारतैं रहित दूसराकोईपुरुष ताशुद्धपरमात्मादेवकूं जाणिसकैनहीं ॥ अब ताशुद्धआत्माकेजानणेकाप्रकार निरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ जिसध्यानरूपउपायकरिकै याआत्मादेवका साक्षात्कारहोवै है ॥ ताउपायकूं तूं श्रवणकर ॥ जैसे लोकप्रसिद्धपिप्प

लादिकवृक्षोंविषे पक्षीरहे हैं ॥ तैसे याशरीररूपवृक्षविषे दोपक्षीरहे हैं ॥ तहां एकतौ तत्पदकाअर्थ ईश्वररूपपक्षीहै और दूसरा त्वंपदकाअर्थ जीवरूपपक्षीहै ॥ तहां जीवरूपपक्षीतौ याशरीररूपवृक्षविषे पुण्यपापरूपकर्मके सुखदुःखरूपफलकूंभोगै है और दूसराअंतर्यामीईश्वररूपपक्षीतौ तासुखदुःखरूपफलकूंभोगतानहीं ॥ किंतु सोईश्वररूपपक्षी ताजीवरूपपक्षीकूं सोसुखदुःखरूपफल भोगावै है ॥ कैसेहैं तेजीवईश्वररूपदोनोंपक्षी ॥ बुद्धिरूपउत्कृष्टस्थानविषे एकठेस्थितहैं ॥ तथा भोक्ता अभोक्ता रूप करिकै तथा अल्पज्ञतासर्वज्ञतारूपकरिकै परस्पर विरुद्धधर्मवालेहैं ॥ हेनचिकेता ॥ जिनअधिकारी पुरुषोंनैं दक्षिणाअग्नि गार्हपत्य आहवनीय सभ्य आवसथ्य यापंचअग्नियोंकीउपासनाकरीहै ॥ तथा जिनअधिकारीपुरुषों नैं नाचिकेत अग्निका तीनवार चयनकऱ्याहै ॥ तेअधिकारीपुरुषही ताउपसनाकेबलतैं शुद्ध अंतःकरणवालेहुए तिनजीवईश्वरदोनोंकेस्वरूपकूं प्रतिपादनकरैंहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् दक्षिणाअग्निआदिक पंचअग्नियोंके स्वरूपकूंजानणेहारे जेकर्मीउपासकपुरुषहैं ॥ तिनोंकूंअद्वितीयब्रह्मकेज्ञान कीप्राप्ति देखणेमेंआवतीनहीं ॥ उलटा तेकर्मीपुरुष जीवब्रह्मकेभेदकूंहीकथनकरै हैं ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ तेपंचअग्नियोंकेजानणेहारेकर्मीपुरुष यद्यपि विशेषकरिकैतौ ब्रह्मज्ञानतैंरहितहीहोवै हैं ॥ तथा जीवईश्वरकेभेदकूंही कथनकरै हैं ॥ तथापि तेकर्मीपुरुष तबपर्यंत जीवईश्वरकाभेदकथनकरै हैं जबपर्यंत तिनकर्मीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकासमागमनहींभया ॥ और जभी तिनकर्मीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकासमागमहोवै है ॥ तभीनाचिकेतअग्निकेअनुष्ठानकरिकै तथा प्रणवकीउपासनाकेअनुष्ठानकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेहुए तेकर्मीपुरुष इसीकालविषे ताअभयब्रह्मकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ जैसे प्रसिद्धनदियोंकासेतु याजीवोंकूं तानदीकेपारकीप्राप्तिकरै है ॥ तैसे यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारे तथा यासंसारसमुद्रतैंपारहोणेकीइच्छावाले जेअधिकारीपुरुषहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं जोब्रह्म तत्पदार्थईश्वररूपकरिकै यासंसारसमुद्रतैं ॥ पारकरणेहारा सेतुरूपहै ॥ हेनचिकेता ॥ ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमागमतैं ॥ तेकर्मीपुरुष जिसविचारकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताविचारकूं तू श्रवणकर॥ पुण्यपापरूपकर्मकेफलकाभोक्ता जोयहत्वंपदार्थरूपजीवात्माहै॥सोजीवात्मा याशरीरकरि

केही संसारकूं तथामोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यहजीवात्मातो रथवालाहै ॥ और ताजीवात्माका यहशरीर रथरूपहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धरथकाचलावणेहारा सारथिहोवैहै ॥ तैसे याशरीररूपरथकाचलावणेहारा बुद्धिरूपसारथिहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धरथविषे अश्वहोवैहैं ॥ तथा तिनअश्वोंकेसाथबांधीहुईरज्जु तासारथिपुरुषकेहाथविषेहोवैहै ॥ तैसे यहनेत्रादिकइंद्रिय याशरीररूपरथकेअश्वहैं ॥ और मनरूपीरज्जुहै ॥ और जैसे प्रसिद्धरथकेअश्व भूमिविषे चालेहैं ॥ तैसे यहइंद्रियरूपअश्वभी शब्दस्पर्शादिकविषयरूपभूमिविषेचाले हैं ॥ और जैसे प्रसिद्धरथकरिके प्राप्तहोणेयोग्य ग्रामादिकस्थानहोवे हैं ॥ तैसे बुद्धिइंद्रियादिकोंतैंरहितशुद्धआत्मा याशरीररूपरथकरिके प्राप्तहोणेयोग्यस्थानहै ॥ हेनचिकेता ॥ यारथकेदृष्टांतकहणेका यहप्रयोजनहै ॥ कर्मउपासनाकरिके जिनअधिकारीपुरुषोंकाचित्तशुद्धभयाहै ॥ तेअधिकारीपुरुषही ताबुद्धिरूपसारथिद्वारा तिनइंद्रियरूपदुष्टअश्वोंकूं जयकरे हैं ॥ तिसतैंअनंतर तेअधिकारीपुरुष कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपपूर्वदेशकापरित्यागकरिके ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपउत्तरदेशकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ तात्पर्ययह रथवालेपुरुषनें जिसदेशविषेजाणाहोवे तिसदेशतैंभिन्न दूसरेकिसीदेशविषेरागकाअभावहोणा ॥ तथा अश्वादिकोंकेचलावणेका तथानिग्रहणकरणेका जोज्ञानरूपकुशलताहै ॥ यहदोनोंप्रकारकेगुण जिससारथिपुरुषविषेरहे हैं ॥ सोईहीसारथिपुरुष तिसरथवालेपुरुषकूं तिसदेशविषेप्राप्तकरैहै ॥ तादोनों गुणोंतैंरहित सारथिपुरुष तादेशकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ तैसे यहबुद्धिरूपसारथिभी जभी तिनदोनोंगुणोंवालाहोवे है ॥ तभीही यहबुद्धिरूपसारथि याजीवात्माकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरे है ॥ और जिसबुद्धिरूपसारथिविषे तेदोनोंगुणनहींहोवे हैं ॥ सोबुद्धिरूपसारथि याजीवकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ उलटा याजीवकूं संसारदुःखकोहीप्राप्तिकरे है ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ जिसअधिकारीपुरुषका यहबुद्धिरूपसारथि वैराग्यरूपकवचकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोअधिकारीपुरुषही ताबुद्धिरूपसारथिद्वारा मनरूपदृढरज्जुकरिके ताइंद्रियरूपअश्वोंकूं आपणेवशकरिके परमात्मारूपदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे यालोकविषे दुष्टअश्वसारथिपुरुषकेवशवर्तीहोवैनहीं ॥ तैसे जिसपुरुषकाबुद्धिरूपसारथि विषयोंविषेरागवालाहै ॥ तथा जिसपुरुषकामनरूपरज्जु धैर्यरूप

बलतैंरहितहै॥ तिसपुरुषके यहइंद्रियरूपदुष्टअश्व वशवर्तीहोवैनहीं॥ याकारणतैंही सोवहिर्मुखपुरुष याशरीररूपरथकरिकै तापरमात्मा
रूपदेशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे श्रेष्ठगुणोंवालेअश्व तासारथिपुरुषके सर्वदावशवर्तीरहे हैं ॥ तैसे जिसअधिकारीपुरु
षकाबुद्धिरूपसारथि विषयोंतैं वैराग्यकूंप्राप्तभयाहै ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषकामनरूपरज्जु धैर्यरूपबलकरिकैयुक्तहै ॥ तिसअधिका
रीपुरुषकेही यहइंद्रियरूपअश्व वशवर्तीरहे हैं ॥ याकारणतैंही सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेनचिकेता जिसपुरुष
काबुद्धिरूपसारथि विवेकतैंरहितहोवै है ॥ तथा जिसपुरुषकामनरूपरज्जु बहिर्मुखहोवै है ॥ तथा जोपुरुष सर्वदाअशुचरहै है ॥ ऐसा
विवेकहीनमूढपुरुष ताब्रह्मरूपदेशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोवैराग्यहीनपुरुष उलटा जन्ममरणरूपसंसारकूंही प्राप्तहोवै है और
हेनचिकेता॥ जिसअधिकारीपुरुषका बुद्धिरूपसारथि विवेकवालाहोवै है ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषका मनरूपरज्जु अंतर्मुखहोवै है ॥
तथा जोअधिकारीपुरुष सर्वदाशुचरहै है ॥ ऐसाअधिकारीपुरुषही याशरीररूपरथकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मरूपपदकूंप्राप्तहोवै है ॥ जिसअ
द्वितीयब्रह्मरूपपदकूंप्राप्तहोइकै सोअधिकारीपुरुष पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ इसप्रकार जिसअधिकारीपुरुषका बुद्धि
रूपसारथि विवेकवालाहै॥ तथा जिसपुरुषनैं मनरूपरज्जुकरिकै नेत्रादिरूपदुष्टअश्वोंकूं आपणेवशकऱ्याहै ॥सोअधिकारीपुरुषही या संसा
ररूपसमुद्रके परमात्मारूपपारकूं प्राप्तहोवै है ॥ याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ विषयों तैं वैराग्यवालीजाबुद्धिहै ॥ तथा विषयोंकेप्राप्तहु
एभी धैर्यवालाजोमनहै ॥ यहदोनों याअधिकारीपुरुषोंके मोक्षकासाधनहोवै हैं ॥ और विषयोंविषे रागवालीजाबुद्धिहै ॥ तथा धैर्यतैंरहि
तजोमनहै ॥यहदोनों याजीवोंकेबंधनकाकारणहोवै हैं॥यातैं आत्मज्ञानद्वारा मोक्षके प्राप्तिकी इच्छावालेमुमुक्षुजनोंनैं वैराग्यकूं तथाधैर्यकूं
अवश्यसंपादनकरणा॥ अब बंधमोक्षकेस्वरूपका निरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता अंतरभावकानाम मोक्षहै ॥ और बाह्यभावकानामबंधहै॥
सोअंतरभावपणा सर्वदा कारणविषेहोरहै है ॥और सोबाह्यपणा सर्वदा कार्यविषेहोरहै है ॥अब परमकारणरूपपरमात्मा देवविषे मोक्षरूप
तासिद्धकरणेवासतैं प्रथम कारणोंकोपरंपरा निरूपणकरै हैं॥हेनचिकेता॥शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचविषय आकाशादिकपंचभूतोंका

सारूपहैं ॥ यातैं तेशब्दादिकपंचविषय आकाशादिकपंचभूतरूपकरिके श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकेकारणहैं॥याकारणतैं तिनश्रोत्रादिक इंद्रियों तैं तेशब्दादिकविषय परहैं ॥ और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंके ग्रहणविषे यहमनहीप्रवृत्तकरैहै ॥ यातैं जैसे समुद्र लहरियोंकाकारणहोवैहै ॥ तैसे शब्दादिकविषयभावकूंप्राप्तहुए जेश्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनोंका यहमनहीकारणहै ॥ यातैं सोमन तिनश ब्दादिकविषयोंतैं परहै॥तात्पर्ययह॥जैसे शब्दादिकविषय आकाशादिकभूतरूपकरिके श्रोत्रादिकइंद्रियों तैंपरहैं॥तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियभाव कूंप्राप्तहुए जेशब्दादिकविषयहैं ॥ तिनशब्दादिकविषयों तैं मनकूंभी पररूपतासंभवैहै ॥ और मेरेकूं सुखकीप्राप्तिहोवे मेरेकूं दुःखकीप्राप्ति नहींहोवे याप्रकारकीइच्छारूप सोमनहै॥यातैं सोइच्छारूपमन आपणीउत्पत्तिवासतै निश्चयरूपबुद्धिकीअवश्यअपेक्षाकरैहै॥निश्चयरूपबु द्धितैविनाइच्छाकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं सानिश्चयरूपबुद्धि ताइच्छारूपमनकाकारणहै ॥ याकारणतैंही सानिश्चयरूपबुद्धि ताइच्छारू पमनतैंपरहै ॥ और सानिश्चयरूपव्यष्टिबुद्धिभी आपणीउत्पत्तिविषे समष्टिरूप हिरण्यगर्भकेबुद्धिकीअपेक्षाकरैहै ॥ जाहिरण्यगर्भकीबुद्धि सर्वस्थूलजगत्कानिमित्तकारणहै॥तथा जाबुद्धिकूं श्रुतिविषे महत्त्व यानामकरिकेकथनकर्याहै ॥ यातैं ताव्यष्टिबुद्धिका हिरण्यगर्भकी महत्तत्वनामासमष्टिबुद्धि कारणहै॥याकारणतैंही ताव्यष्टिबुद्धितैं सामहत्तत्वनामासमष्टिबुद्धि परहै ॥और सामहत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धिभीआप णीउत्पत्तिविषे मायासहित समष्टिसूक्ष्मशरीरकीअपेक्षाकरै हैं ॥ कैसाहैसो मायासहितसूक्ष्मशरीर ॥ यास्थूलशरीरतैंविलक्षणहै ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरकूं श्रुतिविषे अव्यक्त यानामकरिकेकथनकर्याहै ॥ यातैं तामहत्तत्व रूपसमष्टिबुद्धिका सोमायासहितसूक्ष्मशरीर रूपअव्यक्त कारणहै ॥ याकारणतैंही तामहत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धितैं सोअव्यक्त परहै॥और साअविद्यारूपमाया आपणेआश्रयविषयकीप्राप्ति वासतै चैतन्यपुरुषकीअपेक्षाकरै है ॥ याकारणतैं ताअविद्यारूपमायातैं सोचेतनरूपपुरुष परहै ॥ और सोचेतनरूपपुरुष आपणीउत्प त्तिविषे तथाआपणेज्ञानविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ याकारणतैं सोचेतनपुरुष सर्वतैंपरहै ॥ ताचेतनपुरुषतैंपरेकोईपदार्थ है नहीं ॥ ऐसेचेतनपुरुषकेबोधकरावणेवासतैंही शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं इंद्रियोंतैंआदिलैके ताचेतनपुरुषपर्यंत यहकारणोंकीपरंपरा कथनकरीहै॥

तहांश्रुति ॥ इंद्रियेभ्यःपराह्यर्था अर्थेभ्यश्चपरंमनः ॥ मनसश्चपराबुद्धि र्बुद्धेरात्मामहान्परः ॥महतःपरमव्यक्त मव्यक्तात्पुरुषःपरः ॥ पुरुषा
न्नपरंकिंचित् साकाष्ठासापरागतिः ॥ अर्थयह ॥ पूर्वकहीरीतिसैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं शब्दादिकअर्थ परहैं और तिनशब्दादिकअर्थोंतैं मन
परहै ॥ और तामनतैं व्यष्टिबुद्धि परहै ॥ और ताव्यष्टिबुद्धितैं महत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धि परहै ॥ और तामहत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धितैं अव्यक्त
परहै ॥ और ताअव्यक्ततैं चेतनपुरुष परहै ॥ और ताचेतनपुरुषतैंपरे कोईवस्तुहैनहीं ॥ किंतु सोचेतनपुरुषही काष्ठारूपहै ॥ तथा परा
गतिरूपहै ॥ १ ॥ हेनचिकेता ॥ यहस्वयंप्रकाशचेतनरूपसंवितही तुमनैं सर्वतैंपरेजानणा ॥ कैसाहैसोचेतनरूपसंवित् ॥ दिशाकालादि
कोंकेकल्पनाकाभी अधिष्ठानरूपहै॥तथा सर्वजगत्काविवर्त्तउपादानकारणहै॥ऐसेचेतनरूपसंवित्तैंपरे कोईगतिहैनहीं॥काहेतैं श्रोत्रादिक
इंद्रियों तैं शब्दादिकअर्थ परहैं ॥ और शब्दादिकअर्थों तैं मन परहै ॥ और मनतैंबुद्धि परहै ॥ याप्रकारकीकारणोंकोपरंपरा ताचेतनपु
रुषपर्यंतही प्राप्तहोवै है ॥ ताचेतनपुरुषतैंपरे साकारणोंकोपरंपरा चालैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताचेतनपुरुषकूं परमकाष्ठा
यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और ताचेतनपुरुषविषे कोईकारणहैनहीं ॥ यातैं ताचेतनपुरुषतैंपरे कोईदूसरीगति हैनहीं ॥ याकारणतैं
श्रुतिभगवती ताचेतनपुरुषकूं परमगति यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे अग्नि सर्वकाष्ठोंविषेगुह्यहोइकेरहै है ॥ तैसे
यहआत्मादेवभी सर्वशरीरोंविषे गुह्यहोइकैरहै है और जैसे तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतैं पूर्व सोअग्नि तिनकाष्ठोंविषे प्रतीतहोवैनहीं ॥
तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंपूर्व यह आत्मादेवभी याशरीरोंविषे स्पष्टरूपकरिकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ और जैसे तिनकाष्ठोंकेमथनतैं सोअग्नि
प्रत्यक्षहोवै है ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुनैं उपदेशकरेजेतत्त्वमसिआदिकमहावाक्यहैं ॥ तिनमहावाक्योंतैं उत्पन्नभई जाब्रह्माकारसूक्ष्मबुद्धिहै ॥
तासूक्ष्मबुद्धिकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं यहआत्मादेव स्पष्टप्रतीतहोवै है ॥ तहांश्रुति ॥ एषसर्वेषुभूतेषु गूढोत्मानप्रकाशते ॥ दृश्यते
त्वग्र्ययाबुद्धया सूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः ॥ अर्थयह ॥ सर्वभूतोंविषेगुह्यहोइकैरह्याहुआ यहआत्मादेव यद्यपि विचारहीनपुरुषोंकूं स्पष्टप्रतीत
होवैनहीं ॥ तथापि गुरुकेउपदेशतैं उत्पन्नभई जाब्रह्माकारसूक्ष्मबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिकरिकै सूक्ष्मदर्शीअधिकारीपुरुषों नैं यहआत्मादेव

स्पष्टदेखीताहै॥१॥अब ताआत्मज्ञानकेप्राप्तिवास्तै योगरूपसाधनकानिरूपणकरैहैं॥हेनचिकेता॥जिसअधिकारीपुरुषकूं आत्माकेसाक्षात्कारकीइच्छाहोवै॥सोअधिकारीपुरुष प्रथम याचारिअवस्थावालेयोगकूंकरै॥तिनचारिअवस्थावोंविषे प्रथमअवस्थायहहै॥जोमन सुखकेप्राप्तिकीकामनाकरिकै श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकूं तथा वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरैहै॥ तामनविषे यहअधिकारीपुरुष तिनश्रोत्रादिक इंद्रियोंकालयकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंके व्यापारोंतैं रहित केवलमनकाजोव्यापारहै ॥ यहही श्रोत्रादिकइंद्रियोंका मनविषेलयहै ॥ याप्रकारकी तायोगकीप्रथमअवस्थाहै॥तहांदृष्टांत ॥ जैसे यालोकविषे अश्वोंकूंशिक्षाकरणेहारापुरुष तिनदुष्टअश्वोंकूं वाह्यभूमिरूपदेशतैंलेआइके अंतरअश्वशालाविषेवांधेहै॥तहां तिनदुष्टअश्वोंका जोबाह्यभूमिविषे नानाप्रकारकाव्यापारथा तिससर्वव्यापारका निरोधहोवैहै॥ केवल ताअश्वकेशरीरमात्रकाचलनरूपव्यापार वाकोरहैहै ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष जभी तिन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरमनविषेलयकरैहै ॥ तभी तामनका पूर्व श्रोत्रादिकइंद्रियरूपकरिकै जोबाह्यनानाप्रकारकाव्यापारथा ॥ सोसंपूर्णव्यापार निरोधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंतु तामनका केवलशरीरकेअंतरहीं व्यापाररहैहै ॥ अब तायोगकेदूसरीअवस्थाकानिरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ॥ सोमनकैसाहै ॥ यहवस्तुहमारेकूंप्राप्तहोवै यहवस्तुहमारेकूंनहींप्राप्तहोवै याप्रकारकोइच्छारूपहै ॥ तथा सोमन गर्वयुक्तहै ॥ याकारणतैंहीं प्रमत्तहस्तीकीन्याईं सोमन वलात्कारसैं सर्वदा प्रमादकरणेविषेही उद्यमकरैहै ॥ और जैसे यालोकविषे महावतपुरुष ताप्रमत्तहस्तीकूं लोहेकेतीक्ष्णअंकुशकरिकै आपणेवशकरैहै ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी तामनरूपप्रमत्तहस्तीकूंवैराग्ययुक्त निश्चयात्मकवुद्धिरूपअंकुशकरिकै आपणेवशकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ ताइच्छारूपमनका निश्चयरूपवुद्धिविषेलयकरै ॥ अब तीसरी चतुर्थ यादोनोंअवस्थावोंकानिरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ तानिश्चयरूपव्यष्टिवुद्धिकूं यहअधिकारीपुरुष हिरण्यगर्भकीमहत्तत्त्वरूपसमष्टिवुद्धिविषे लयकरै ॥ कैसीहैसा महत्तत्त्वरूपसमष्टिवुद्धि ॥ अहंअस्मि ॥ यासामान्यज्ञानरूपहै ॥ तथा सामान्यरूपकरिकै सर्वजगत्कूं विषयकरणेहारीहै॥ याकारणतैंही विशेषरूपकरिकै जगत्कूंविषयकरणेहारीयां जेव्यष्टिवुद्धियां हैं तिनसर्ववुद्धियोंका सासमष्टिवुद्धिका

रणरूपहै ॥ और तासामान्यज्ञानरूपसमष्टिबुद्धिकूं यहअधिकारीपुरुष आनंदस्वरूपआत्माविषे लयकरे ॥ अब याहीश्रुतिकेअर्थकूं युक्तिकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यहअधिकारीपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं मनविषेलयकरे ॥ और तामनकूं व्यष्टिबुद्धिविषेलय करे ॥ और ताव्यष्टिबुद्धिकूं समष्टिबुद्धिविषेलयकरे ॥ और तासमष्टिबुद्धिकूं परमात्माविषेलयकरे ॥ याप्रकारको योगकीचारिअवस्था जोश्रुतिनें संक्षेपतैंकथनकरीयां हैं ॥ तिनचारिअवस्थावोंकेस्पष्टकरणेवासतै शास्त्रवेत्ताबुद्धिमान्पुरुष याप्रकारकीयुक्तियां कथनक रैहैं ॥ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय यादोनोंप्रकारकेइंद्रियोंकी जोशुभअशुभव्यापारविषे प्रवृत्तिहोवे है ॥ सो सुखकेप्रातिकीकामनाकरिकेही प्रवृत्तिहोवैहै तहां ताइंद्रियोंकेप्रवृत्तिकाकारणरूप जासुखकेप्रातिकीइच्छाहै ॥ तथा ताइ च्छाकेउत्पत्तिकाकारणरूप जोयहवस्तुरमणीकहै याप्रकारकास्मृतिरूपज्ञानहै ॥ तेदोनों केवळ मनकाविलासरूपकरिकेही स्थितहैं ॥ यातैं तेदोनों मनतैंभिन्ननहीं हैं ॥ याकारणतैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंका मनविषेलय संभवैहै ॥ हेनचिकेता ॥ इसप्रकार सुखकीइच्छा रूप तथास्मृतिज्ञानरूप जोमनहै ॥ तामनकीउत्पत्ति निश्चयरूपबुद्धितैंविनाहोवैनहीं ॥ किंतुनिश्चयरूपबुद्धितैंही ताइच्छारूपमनकी उत्पत्तिहोवे है ॥ काहेतें जिसपुरुषकूं पूर्व सानिश्चयरूपबुद्धिनहींभई ॥ तिसपुरुषकूं सासुखकीइच्छा तथाताइच्छाकाकारणरूप सोस्मृतिरू पज्ञान होवैनहीं ॥ किंतु पूर्वअनुभवरूपनिश्चयही संसकारद्वारा तास्मृतिज्ञानका तथाइच्छाकाकारणहोवे है ॥ याकारणतैंतामनका निश्चय रूपबुद्धिविषेलय संभवे है ॥ और हेनचिकेता ॥ सामनकाकारणरूपव्यष्टिबुद्धि आपणीउत्पत्तिविषे ताहिरण्यगर्भकेसामान्यबुद्धिकीअपे क्षाकरे है ॥ यातैं साहिरण्यगर्भको समष्टिरूपसामान्यबुद्धि याव्यष्टिरूपविशेषबुद्धिका कारणहोवे है॥तहांदृष्टांत ॥ जैसे तलावआदिकोंके जलोंका मेघोंविषेस्थितजल कारणहोवे है॥तैसे हिरण्यगर्भकेइच्छाकाकारणरूप जासमष्टिसामान्यबुद्धिहै॥सासमष्टिबुद्धि हमजीवोंकेव्यष्टि बुद्धिका कारणहोवे है ॥ और हेनचिकेता॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे हमजीवोंकी व्यष्टिबुद्धि तास्वप्नके जडचेतनरूपजगत्का कारणहोवे है तैसे साहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धि यासंपूर्णजगत्का कारणहोवे है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे निद्राविषेसोयाहुआपुरुष आपणेबुद्धिकेबलतैं

आकाशादिकपंचभूतोंकूंउत्पन्नकरे है ॥ तथा जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकूं उत्पन्नकरे है ॥ इसप्रकार तिनसर्वपदार्थोंकूंउत्पन्नकरिके सोस्वप्रद्रष्टापुरुष आपही तिनसर्वपदार्थोंविषेस्थितहोवे है ॥ तैसे सोहिरण्यगर्भभगवान्भी आपणेसमष्टि बुद्धिकेबलतैं याजडचेतनरूपजगत्कूंउत्पन्नकरिके तास्थावरजंगमरूपशरीरोंविषे आपहीस्थितहोवे है ॥ यातैं जैसे मठाकाशविषेस्थित घटाकाश तामठाकाशरूपहीहोवे है ॥ तैसे इमजीवोंकीव्यष्टिबुद्धि ताहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धिरूपहीहैं ॥ याकारणतैं ताव्यष्टिबुद्धिका तासमष्टिबुद्धिविषे लयसंभवैहै ॥ और हेनचिकेता ॥ ताहिरण्यगर्भकेसमष्टिबुद्धिका मायाविशिष्टपरमात्मादेवही उपादानकारणहै ॥ याकारणतैं तासमष्टिबुद्धिका तामायाविशिष्टईश्वरविषेलय संभवे है ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे यालोकविषे त्वचारूपकंचुककरिके विशिष्ट जेव्रीहिहैं ॥ तिनव्रीहियोंविषेहीं बीजरूपताहोवे है ॥ त्वचारूपकंचुकतैंरहित तिनव्रीहियोंविषे बीजरूपतासंभवेनहीं ॥ तैसे अविद्यारूपकंचुककरिकेविशिष्ट जोआत्मादेवहै ॥ ताविशिष्टआत्माविषेही याजगत्कीकारणरूपताहोवे है ॥ अविद्यारूपकंचुकतैंरहित शुद्धआत्माविषे याजगत्कीकारणतासंभवेनहीं ॥ और मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिके जभी ताअविद्यारूपकंचुकका नाशहोवे है ॥ तभी साहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धि केवलशुद्धआत्माविषेलयहोवे है ॥ यातैं तासमष्टिबुद्धिका सोशुद्धआत्माही अधिकारी पुरुषनें तासमष्टिबुद्धिका सर्वदाचिंतनकरणा॥ हेनचिकेता॥यासमष्टिबुद्धिका मायाविशिष्टईश्वर कारणहै याप्रकारकाचिंतन जोअधिकारी पुरुष सर्वदाकरे है ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषनें व्यष्टिअभिमानकापरित्यागकरिके समष्टिअभिमानकूंधारणकऱ्याहै ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषके अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिके संपूर्णपापकर्मरूपप्रतिबंधक निवृत्तभयेहैं ॥ ऐसेउत्तमअधिकारीपुरुषकूंही गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञान प्राप्तहोवे है ॥ कैसाहैसोआत्मज्ञान ॥भेददर्शनरूपपर्वतकूंइंद्रकेवज्रसमान भेदनकरणेहाराहै ॥ हेनचिकेता ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाब्रह्मज्ञान जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषकूंप्राप्तहोवे है ॥ तिसीकालविषे याअधिकारी पुरुषके अविद्याकानाशहोवे है ॥ और जिसकालविषे ताअविद्यारूपकारणकानाशहोवे है ॥ तिसीकालविषे तासमष्टिबुद्धिकानाशहोवे है

और जिसकालविषे तासमष्टिबुद्धिरूपकारणकानाशहोवै है ॥ तिसीकालविषे याव्यष्टिबुद्धिकानाशहोवै है ॥ और जिसकालविषे ताव्य
ष्टिबुद्धिरूपकारणकानाशहोवै है ॥ तिसीकालविषे याइच्छारूपमनके प्रवृत्तिकाअभावहोवै है॥ और जिसकालविषे ताइच्छारूपमनके प्र
वृत्तिकाअभावहोवै है ॥ तिसीकालविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेप्रवृत्तिकाअभावहोवै है ॥ और शब्दादिकविषयोंविषे जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंकी
प्रवृत्तिहै ॥ सोप्रवृत्तिही याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरे है ॥ यातें जिसकालविषे तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेप्रवृत्तिकाअभाव
होवै है ॥ तिसकालविषे याअधिकारीपुरुषकूं किंचित्मात्रभीदुःखकोप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष मनवाणीकाअ
विषय जोआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिअद्वितीयआत्माहै ताअद्वितीयआत्माकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ ताअद्वितीयआत्माकोप्राप्तिक
रिकैही ताविद्वान्पुरुषकूं शास्त्रवेत्तापुरुष कुशल अंत्यदेह आश्चर्य यानामोंकरिकैकथनकरे हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् याप्रकारकेयोग
रूपउपायतैं सर्वजगत्कालयकरिकै सोयोगीपुरुष जिसकालविषे मुक्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसकालविषे दूसरेअयोगीपुरुषोंकूं संसारकोप्राप्ति
किसवास्तेहोवै है ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ यामायाकाप्रभाव बहुतआश्चर्यरूपहै ॥ काहेतें सर्वजगत्काकारणरूप जायहमायाहै ॥
सामाया यद्यपि एकहीहै ॥ तथापि साएकहीमाया एकहीकालविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषविषेतौ लयव्यवहारकूंप्राप्तहोवै है ॥ और दूसरेअज्ञानी
जीवोंविषे सामाया अलयव्यवहारकूंप्राप्तहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसअधिकारीपुरुषविषे मैंशुद्धब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाब्रह्मज्ञान उत्पन्न
भयाहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूंतौ तामायाकादर्शनहोवैनहीं ॥ और जिसपुरुषविषे सोब्रह्मज्ञानउत्पन्ननहींभयाहै ॥ तिसअज्ञानीपुरुषकूं ता
मायाकादर्शनहोवै है ॥ इसप्रकार एकहीकालविषे एकहीमायाका दर्शन तथाअदर्शनयहदोनों सिद्धहोवै हैं यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नें
भीकहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ कृतार्थंप्रतिनष्टमप्यनष्टंतदन्यसाधारणत्वात् ॥ अर्थयह ॥ आत्मसाक्षात्कारकरिकै कृतार्थभयाजोविद्वान्पुरुषहै ॥
ताविद्वान्पुरुषकीदृष्टिकरिकै यद्यपि यहमायारूपअज्ञान नष्टभयाहै ॥ तथापि अज्ञानीजीवोंविषे सोअज्ञानविद्यमानहै ॥ यातें तिनअज्ञानी
जीवोंकीदृष्टिकरिकै सोअज्ञान नष्टनहींभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पातंजलशास्त्रकेमतविषे आत्माकाभेद अंगीकारकऱ्याहै ॥ यातें

तिनोंकेमतविषे यद्यपि साव्यवस्थासंभवैहै ॥ तथापि वेदांतसिद्धांतविषे आत्मा एकअद्वितीयरूपहै ॥ यातैं वेदांतविषे साव्यवस्था किस प्रकारसंभवैगो ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ वेदांतमतविषे यद्यपि आत्मा एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथापि अंतःकरणादिकरूपउपाधिकेभेदतैं साव्यवस्था संभवहोइसकैहै ॥ काहेतैं जैसे नेत्ररूपदोनोंगोलकविषे यद्यपि चक्षुइंद्रिय एकहीहै ॥ तथापि दक्षिणगोलकविषेस्थितहोइके सोचक्षुइंद्रिय जैसेस्पष्टदेखैहै ॥ तैसे वामगोलकविषेस्थितहोइके स्पष्टदेखैनहीं ॥ तैसे एकहीआत्मादेव योगीपुरुषकेशरीरविषेस्थितहोइके ताकार्यसहितमायाकूंदेखतानहीं ॥ और अयोगीपुरुषकेशरीरविषेस्थितहोइके सोआत्मादेव ताकार्यसहितमायाकूंदेखैहै ॥ याप्रकार शरीरादिकउपाधियोंकेभेदतैं साव्यवस्था संभवहोइसकैहै ॥ यातैं एकहीकालविषे एकहीमायाको कहांतोनिवृत्ति और कहांअनिवृत्ति याप्रकारकेविरोधकीआशंकाकूं सोमायाकादुर्घटस्वभावही निवृत्तकरैहै ॥ अब तामायाके दूसरेभीदुर्घटस्वभावोंकानिरूपणकरैं हैं॥हेनचिकेता ॥ यालोकविषे यहघटहै यहपटहै इत्यादिकजेज्ञानहैं ॥ तिनज्ञानोंका अंतःकरण आश्रयहै ॥ और घटपटादिकविषयहै ॥ इसप्रकार ज्ञानके आश्रयका तथाविषयका परस्परभेदहीदेख्याहै ॥ और यामायाकातौ एकहीस्वयंज्योतिअद्वितीयआत्मा आश्रयहोवैहैतथाविषयहोवैहै ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यहआत्मादेव सर्वभेदतैंरहितअद्वितीयरूपहुआभी प्रपंचरूपऐश्वर्यकीअपेक्षाकरिके महेश्वरभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यालोकविषे जहांआपणीस्थितिविषे आपणीअपेक्षाहोवैहै ॥ तहां आत्माआश्रयदोषकीप्राप्तिहोवै है ॥ और इहां मायासंबंधतैंरहितअद्वितीयआत्माविषे जोमायाकीस्थिति है सोमायाकरिकैही है ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यहमाया सत्यरूपनहीं है ॥ तथा असत्यरूपनहीं है ॥ तथा सत्यअसत्यउभयरूपनहीं है ॥ इसप्रकार अनिर्वचनीयरूपहुईभी सामाया भावरूपकरिके प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यहमाया वास्तवतैं जडरूपहुईभी यास्थूलसूक्ष्मजगत्का कर्त्तारूपहोवै है ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ यद्यपि वेदांतशास्त्रविषे मायाविशिष्टचेतनकूंहीं याजगत्काकर्त्ताकह्याहै ॥ तथापि तामायातैंरहित शुद्धचेतनविषे सोजगत्काकर्त्तापणानहीं ॥ यातैं परिशेषतैं तामायाविषेही सो

कर्तापणाघटेहे ॥ काहेतैं शास्त्रविषेयह नियम कथनकऱ्याहे ॥ विशिष्टपदार्थविषे जोविधिनिषेधप्राप्तहोवे ॥ सोविधिनिषेध जोकदाचित् विशेष्यपदार्थविषेनहीं घटताहोवे ॥ तो सोविधिनिषेध विशेषणविषेहीप्राप्तहोवे हे ॥ याप्रकारकेनियमतैं तामायाविषेकर्त्तापणासंभवे हे ॥ और मरणअवस्थाविषे तथासुषुप्तिअवस्थाविषे यहमाया स्पष्टरूपकरिकेनहींप्रतीतहुईभी आगेहोणेवालेशरीरोंकाबीजरूपहोइकेरहे हे ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहे ॥ और यहआत्मादेव अनादिभावरूपहे यातैं नाशकूप्राप्तहोवे नहीं और यहमायातो अनादिभावरूपहुईभी आत्मज्ञानतैंनाशहोइजावे हे ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहे ॥ और विद्वान्पुरुषोंकोअपेक्षाकरिके ताकार्यसहितमायाकेनाशहुएभी अज्ञानीजीवोंकीअपेक्षाकरिके ताकार्यसहितमायाकानाशहोवेनहीं ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घट हे ॥ और यहमाया किसीप्रमाणकातौविषयहेनहीं ॥ तोभीयहमाया बंधमोक्षादिकनानाप्रकारकीविचित्रताका कारण होवे हे ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहे ॥ हेनचिकेता ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेदुर्घटस्वभाव तामायाकेहैं ॥ तेमायाकेदुर्घटस्वभाव सर्वलोकविषे प्रसिद्ध हैं ॥ यातैं तिनमायाकेदुर्घटस्वभावोंकूंअंगीकारकरिके हममायावादिवेदांती तिनसर्ववादियोंके दूषणोंकूं निवारणकरिसकेहैं॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे गोपजनोंकीस्त्रीयोंकेदुकूलवस्त्रोंकूं हरणकरणेहारा जोश्रीकृष्णभगवान्हे ॥ ताकृष्णभगवान्विषे जोकामीपणाहे॥ और सर्वजगत्कासंहारकरणेहारा जोरुद्रभगवान्हे ॥ तारुद्रभगवान्विषे जोक्रोधीपणाहे ॥ सोकामीपणा तथाक्रोधीपणा ध्यानकरणेहारेभक्तजनोंकूं मनवांछितफलकीप्राप्तिकरणेहाराहे ॥ यातैं ताकृष्णभगवान्विषेकामीपणा तथारुद्रभगवान्विषेक्रोधीपणा कोईदूषणरूपनहीं हे ॥ किंतु भूषणरूपहे ॥ तैसे ताअविद्यारूपमायाविषे जोदुर्घटपणाहे सोदुर्घटपणा कोईदूषणरूपनहीं हे ॥ किंतु ताअविद्याका सोदुर्घटपणा भूषणरूपही हे ॥ हेनचिकेता ॥ जिसवस्तुविषे स्वभावतैंतो सुघटपणाहोवेहे ॥ और तिसवस्तुविषे जोकदाचित् किसीअंशविषे दुर्घटपणाप्रतीत होवे हे ॥ तो सोदुर्घटपणा तावस्तुकादूषणरूपहोवेहे ॥ जैसे किसीश्रेष्ठकवीपुरुषनैं रचाजोकाव्यहे ॥ताकाव्यविषे स्वभावतैंतो सुघटपणाहीहोवेहे ॥ परंतु ताकाव्यविषे जोकदाचित् किसीअंशविषे दुर्घटपणाप्रतीतहोवे॥ तो सोदुर्घटपणा ताकाव्यकादूषणरूपहीहोवे हे ॥ और

यहअविद्यारूपमायातो स्वभावतैंहीं दुर्घटरूपहे ॥ यातेंतामायाविषे सोदुर्घटपणा दूषणरूपनहीं हे ॥ किंतु भूषणरूपहे ॥ इहां युक्तिप्रमाण करिके जिसअर्थकीसिद्धिनहींहोइसके याकानाम दुर्घटपणाहे ॥ और युक्तिप्रमाणकरिके जिसअर्थकीसिद्धिहोइसकें याकानामसुघटपणाहे॥ और हेनचिकेता ॥ जिसस्थानविषे जिसपुरुषका वारंवार निरादरहोवे हे ॥ तिसस्थानविषे जोकदाचित् सोपुरुष स्थितहोवेहे ॥ तो तापुरुषकूं लोकविषेढीठकहेहैं ॥ सोऐसाढीठपणा जैसे अविद्याविषेहे ॥ तैसे दूसरेकिसीपदार्थविषेनहीं हे ॥काहेतें घटादिकविषयउपहितचेतनके आवरणकीनिवृत्तिकरणेहारे जेप्रत्यक्षादिकप्रमाणहें ॥ तिनप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंकरिके यहअविद्या अनेकवार निरादरकूंप्राप्तहोवेहे ॥ तोभी यह अविद्या ताअसंगचेतनतें निवृत्तहोवेनहीं ॥ किंतु यहअविद्या पुनःताअसंगचेतनविषेहीस्थितहोवेहे ॥ यातें याअविद्याकाढीठपणा कोईआश्चर्यरूपहे ॥ और ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकोदृष्टिविषेतो यह अविद्या तीनकालमेंहेनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ ऐसेढीठस्वभाववाली यहअविद्यारूपमाया एकआत्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीतें भयकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानतैंहीं भयकूंप्राप्तहोवेहे ॥ और यहमायाही सर्वजीवोंकूं जन्ममरणादिकदुःखोंकीप्राप्तिकरेहे ॥ यातें जिसअधिकारीपुरुषकूं तिनजन्ममरणादिकदुःखोंतें वैराग्यप्राप्तभयाहे॥ तिसअधिकारीपुरुषनें तामायाकेनिवृत्तिकाउपाय अवश्यकरिकेसंपादनकरणा हेनचिकेता ॥ ताअविद्यारूपमायाकेनिवृत्तिकाउपाय यह हे ॥ जिसअद्वितीयआत्माविषे साहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धि लयभावकूंप्राप्तहोवेहे ॥ ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारही तामायाके निवृत्तिकाउपायहे ॥ यातें ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषों नें अवश्यकरिकेयत्नकरणा ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे माता आपणेपुत्रोंकूं हितकाउपदेशकरेहे ॥ तैसे श्रुतिभगवती याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकार हितकाउपदेशकरेहे ॥ हेअधिकारीजनो ॥ यामायानें उत्पन्नकरी जोविवेकतेंविमुखतारूपजडताहे॥ताजडताकापरित्यागकरिके तुम आत्मविचारविषेसावधानहोवो॥ ताजडता करि कही तुमारेकूं अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माका विस्मरणरूपमोह प्राप्तभयाहे॥हेअधिकारीजनों॥जैसे यालोकविषेजेपुरुषनिद्राविषे सोयेहोवेहैं ॥ तिनपुरुषों के पशुसुवर्णादिकधनकूं चोरलेजावेहैं ॥ तैसे अविद्यारूपनिद्राविषेसोयेहुए जोतुमअधिकारीजनहो॥ तिनतुमअधिकारीजनों के

धर्मज्ञानरूपधनकूं यहकामक्रोधादिकचौर लेजावेहैं ॥ यातैं ताअविद्यारूपनिद्राकापरित्यागकरिकै तुम सावधानहोवो ॥ और हेअधिकारी जनो ॥ जैसे यालोकविषे निद्रामैंसोयेहुएपुरुषकूं नानाप्रकारकेस्वप्नकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तास्वप्नविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै॥ तैसे याअविद्यारूपनिद्राविषेसोयेहुएतुमअधिकारीजनोंकूं यहविपरीतभावरूपस्वप्न प्राप्तभयाहै ॥ तहां अन्यपदार्थविषे अन्यबुद्धिकानाम विपरीतभावहै ॥ जैसे देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे आत्मबुद्धिकानाम विपरीतभावहै ॥ जाविपरीतभावरूपस्वप्नविषे अहंता ममता यादोनोंप्रकारकेअध्यास करिकै तुमारेकूं अनेकप्रकारकेदुःख प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां प्रथम अहंताघटित विपरीतभावकानिरूपणकरैहैं ॥ हेअ धिकारीजनों॥जैसे यालोकविषे किसीपिशाचकरिकैग्रस्याहुआ कोइं ब्राह्मण आपणेकूंशूद्रमानेहै॥ तैसे वास्तवतैंजन्ममरणादिकविकारोंतैं रहित हुआभी यहआत्मादेव अहंतारूपपिशाचकरिकैग्रस्याहुआ आपणेकूंयाप्रकारमानेहै ॥ मैंआत्मा माताकेगर्भविषेस्थितहूं ॥ तथा मैं जन्माहूं ॥ तथा मैं कुमारहूं ॥ तथा मैं युवानहूं ॥ तथा मैं वृद्धहूं ॥ तथा मैं धनवान्हूं ॥ तथा मैंनिर्धनहूं ॥ तथा मैं सुखीहूं ॥ तथा मैं दुःखीहूं ॥ तथा मैं स्त्रीवालाहूं ॥ तथा मैं स्त्रीतैंरहितहूं ॥ तथा मैं पुत्रवालाहूं ॥ तथा मैं पुत्रतैंरहितहूं ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारका आपणेकूंमाने है ॥ अब ममताघटित विपरीतभावका निरूपणकरे हैं ॥ हेअधिकारीजनों ॥ जैसे साअहंता अनेकप्रकारकी है ॥ तैसे ताअ हंताकीपुत्री जाममताहै ॥ साममताभी अनेकप्रकारकीहै तहां यहपुरुष हमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरे है ॥यातैं हमाराशत्रुहै ॥ और यहपुरुष हमारेकूं सुखकोप्राप्तिकरे है ॥ यातैं हमारासुहृद्मित्रहै ॥ और यहपुरुष हमारेकूं सुखदुःखकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ यातैं हमारा उदासीनहै और यहहमारेक्षेत्रवस्त्रादिकपदार्थ बहुतकालपर्यंत रहैंगे ॥ और यहहमारेक्षेत्रवस्त्रादिकपदार्थ थोडेकालपर्यंतरहैंगे ॥ और यहकाम क्रोधलोभमोहादिकविकार हमारेविषेरहे हैं ॥ और यहकामक्रोधादिकविकार हमारेविषे नहींरहे हैं ॥ इसतैंआदिलेके साममता सहस्र प्रकारकीहोवै है ॥ अब ताअहंताममताके फलकानिरूपणकरे हैं ॥ हेअधिकारीजनो जेपुरुष याअहंताममताकरिकैयुक्तहैं ॥ तेपु रुष जन्मकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ ताजन्मतैंअनंतर मरणकूंप्राप्तहोवे हैं तामरणतैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ इसप्रकार ते अहंता ममता

वालेअज्ञानीपुरुष चक्रकीन्याईं यासंसारविषेभ्रमणकरे हैं ॥हेअधिकारीजनो॥ याप्रकार सर्वदुःखोंकाकारण यहविपरीतभावरूपस्वप्न तुमा रेकूं प्राप्तभयाहै ॥ तास्वप्नतैं तुम जाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहोवो ॥ जाकरिकै तुमारेसर्वदुःखोंकीनिवृत्तिहोवै ॥ हेअधिकारीजनो ॥ विपरीतभा वरूप अनेकस्वप्नोंकूंदिखावणेहारी जायइअविद्यारूपनिद्राहै ॥ साअविद्यारूपनिद्रा जैसे माताकेउदरविषेस्थितवामदेवऋषिकी आपही निवृत्तभई है तैसे साअविद्यारूपनिद्रा जोकदाचित् तुमारी आपहीनिवृत्तनहींहोवै ॥ तो तुमअधिकारीजन ताअविद्यारूपनिद्राकीनिवृत्ति करणेवासते ब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुवोंकेसमीपजावो ॥ कैसेहैंतेब्रह्मवेत्तामहात्मापुरुष ॥ ताअविद्यारूपनिद्रातैंरहितहैं ॥ तथा सर्वभूतप्रा णियोंविषे जिनोंकीकृपादृष्टिहै ॥ ऐसेमहात्मापुरुषोंकेसमीप जभी तुमअधिकारीजन जावोगे ॥ तभी तेदयालुमहात्मापुरुष तुमारेप्रति नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै आत्माकाउपदेशकरैंगे ॥ हेअधिकारीजनों ॥ तेब्रह्मवेत्तागुरु जोकदाचित् तुमारेकूं ब्रह्मविद्याकेउपदेशकाअधि कारी नहींदेखैंगे ॥ तौभी तेब्रह्मवेत्तागुरु कृपाकरिकै तुमारेअंतःकरणकी शुद्धिवासते धारणा ध्यान समाधिरूप नियमोंका उपदेशकरैंगे॥ कैसे हैं तेनियम ॥ समाधिरूपयोगके साधनरूपहैं ॥ तथा योगाभ्यासकरिकैजन्यहैं॥ हेअधिकारीजनों ॥ जैसे यहनचिकेता यमराजाकूं वर रूपपाशतैंबांधिकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माकूंजानताभयाहै ॥ तैसे तुमअधिकारीजनभी जडताका तथानिद्राका परित्यागकरिकै त था तिनब्रह्मवेत्तागुरुवोंकूं वररूपपाशोंतैंवशकरिकै ताआनंदस्वरूपआत्माकूं निश्चयकरो॥हेअधिकारीजनों ॥ याभारतखंडविषे अधिकारी मनुष्यशरीरकूंपाइकेभी जोतुमारेकूं आत्माकासाक्षात्कारनहींहोवैगा॥तो तुमारेकूं महान्हानिकीप्राप्तिहोवैगी॥ताहानिकरिकै तुमारेकूं अने कशरीरोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं तुमअधिकारीजन शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतेयत्नकरो ॥ और हेअधिकारीजनों ॥ यह आ त्मज्ञानरूपमार्ग अत्यंतदुर्लक्ष्य तथा अत्यंतविषमहै ॥ यातैं तुमअधिकारीजन प्रमादकापरित्यागकरिकै सावधानहोवो ॥ अब याहीअर्थ कूंदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरे हैं॥हेअधिकारीजनों॥जैसे सिंहव्याघ्रादिकोंकरिकैयुक्त तथा महान्वनविषेस्थित जोकोइकमार्ग है॥सोमार्ग तीनकां टेवाले अनेकगोक्षुरुकोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ अथवा तीनवारशाणकेघर्षणकरिकै अत्यंततीक्ष्णहुआ जोनापितपुरुषकाक्षुरनामाशस्त्रहै ॥

ताशस्त्रोंकीअनेकतीक्ष्णधारावोंकरिके सोमार्गयुक्तहोवे ॥ ऐसेतीक्ष्णमार्गविषे अश्वादिकवाहनोंतैंरहितपुरुष चलिसकेनहीं ॥ किंतु अश्वा
दिकवाहनोंवालापुरुषही तामार्गविषेचलिसकेहै ॥ तैसे मोक्षरूपपुरकेप्राप्तिकरणेहारा जोयहआत्मज्ञानरूपमार्ग है सोआत्मज्ञानरूप
मार्गभी नानाप्रकारकेविघ्नरूपकंटकोंकरिकेयुक्तहै ॥ यातैं अत्यंततीक्ष्णहै ॥ ऐसेआत्मज्ञानरूपमार्गविषे यहअधिकारीपुरुष
गुरुपरमेश्वरकेअनुग्रहरूपवाहनतैंविना चलिसकेनहीं ॥ किंतु गुरुपरमेश्वरकेअनुग्रहरूपवाहनकरिकेही यहअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञान
रूपमार्गविषे चलिसकेहैं ॥ यातैं गुरुभक्तितैंरहितपुरुषोंकूं सोआत्मज्ञानरूपमार्ग अत्यंतदुर्गमहै॥हेअधिकारीजनो॥ऐसेआत्मज्ञानरूपमार्ग
विषेचलनेकाप्रकारभी तेमहात्मापुरुष कथनकरे हैं ॥ जिनमहात्मापुरुषोंनें पूर्व ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं ताआत्मज्ञानरूपमार्गका भलीप्र
कारअनुभवकऱ्याहै ॥ और जिनपुरुषोंने ताआत्मज्ञानरूपमार्गकाअनुभवनहींकऱ्या ॥ तेपुरुष ताआत्मज्ञानरूपमार्गकेउपदे
शकरणेविषेसमर्थहोवैंनहीं ॥ तथा तिनोंकेउपदेशतैं किसीअधिकारीजनकूं ताआत्मज्ञानरूपमार्गकाबोधभीहोवैनहीं ॥ जैसे एकअंधपुरु
षकेउपदेशतैं दूसराअंधपुरुष किसीमार्गकूंजाणिसकेनहीं ॥ यातैं जिनमहात्मापुरुषोंनें पूर्व ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं ताआत्मज्ञानरूपमा
र्गकूं साक्षात्कारकऱ्याहै ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकेशरणकूं तुमप्राप्तहोवो ॥ जाकरिकै तुमारेकूंआत्मसाक्षात्कारकोप्राप्तिहोवै ॥ हेनचिकेता ॥
इसप्रकार साश्रुतिभगवती माताकोन्याई सर्वअधिकारीजनोंकेप्रति आत्मज्ञानरूपहितकाउपदेशकरतीभई है॥ यातैं ताआत्मज्ञानरूपमार्ग
विषे चलणेकाप्रकार हमसरीसेब्रह्मवेत्तापुरुषही कथनकरे हैं ॥ अब ताआत्मज्ञानरूपमार्गविषे दुर्लक्ष्यता बोधनकरणेवासतै ताआत्मा
देवविषे संपूर्णदृश्यप्रपंचकेधर्मोंकाअभाव निरूपणकरें हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मादेव सर्वशरीरोंविषे एकअद्वितीयरूपक
रकेस्थितहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ ऐसेआत्मादेवकेज्ञानरूपमार्गकूं ब्रह्मवेत्ताकुशलपुरुषही कथनकरे
हैं ॥ कैसाहैसोआत्मादेव ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचगुणोंतैं रहितहै ॥ याकारणतैं तानिर्गुणआत्माकूं श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण
यहपंचज्ञानइंद्रिय ग्रहणकरिसकेनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रइंद्रियतौ नीलपीतादिकरूपोंकूं तथा तारूपगुणवालेद्रव्यकूं ग्रहणकरे है ॥ और

त्वकइंद्रियतो शीतउष्णादिकस्पर्शोंकूं तथा तास्पर्शगुणवालेद्रव्यकूं ग्रहणकरैहै ॥ और श्रोत्र रसन घ्राण यहतीनइंद्रियतो क्रमतें शब्द रस गंध यातीनगुणोंकूंहीग्रहणकरैहैं ॥ तागुणोंकेआश्रयकूंग्रहणकरैनहीं ॥ और यहआत्मादेव तिनशब्दादिकगुणोंकाआश्रयरूपनहीं है ॥ तथा तिनशब्दादिकगुणरूपनहीं है ॥ यातें तानिर्गुणआत्माकूं कोईइंद्रिय ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ और हेनचिकेता ॥ शनैःशनैःकरिकैजोप दार्थकानाशहै ताकानाम व्ययहै ॥ सोनाशरूपव्यय स्पर्शगुणवालेवायुआदिकसावयवपदार्थोंकाहोहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव स्पर्शादि कगुणोंतैंरहितहै ॥ तथा निरवयवहै ॥ यातें याआत्मादेवका सोनाशरूपव्यय संभवैनहीं ॥ याकारणतें श्रुतीभगवती ताआत्मादेवकूं अव्यय यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और सोअव्ययआत्मादेव नाशतैंरहितहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं ॥ नित्य यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और यहआत्मादेव अनादिहै ॥ यातें नाशतैंरहितहै ॥ काहेतें यालोकविषे जोजोपदार्थ उत्पत्तिरूपआ दिवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ नाशरूपअंतवालाभीहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ उत्पत्तिरूपआदिवाले हैं ॥ यातें नाशरूपअंतवालेभीहैं ॥ और यहआत्मादेवतो उत्पत्तिरूपआदितैंरहित अनादि है ॥ यातें याआत्मादेवकांनाशरूपअंतभी संभवैनहीं ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं अनंत यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और हेनचिकेता ॥ उत्पत्तिनाशवाली जोहिरण्यगर्भकी महत्तत्वरूपबुद्धिहै ॥ तामहत्त त्वरूपसमष्टिबुद्धितें नानाप्रकारकीविक्रियायुक्तअव्याकृत परहै ॥ और ताअव्याकृततैंभी यहनिर्विकारआत्मा पर है ॥ तथा नाशतैंरहि तहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं ॥ ध्रुव यानामकरिकैकथनकरै है ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे सामहत्तत्वरूपबुद्धि उत्पत्तिनाश वालीहै ॥ तैसे यहआत्मादेव उत्पत्तिनाशवालानहीं है ॥ याकारणतें ॥ यहआत्मादेव नित्यहै ॥ हेनचिकेता ॥ जोअधिकारीपुरुष ऐसेआ नंदस्वरूपनित्यआत्माकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैंश्रवणकरैहै ॥ तथा श्रुतिअनुकूलयुक्तिरूपतर्कोंकरिकै मननकरै है ॥ तथा ताआत्माविषे निरंतरवृत्तियोंकाप्रवाहरूप निदिध्यासनकरै है ॥ सोअधिकारीपुरुष यासंसाररूपमृत्युकेमुखतें अवश्यमुक्तहोवैहै॥ हेनचिकेता॥ देशकाल वस्तुपरिच्छेदतैंरहित जोयहआनंदस्वरूपआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवकेसाक्षात्कारतें यहअधिकारीपुरुष यासंसाररूपमृत्युकेमुखतें मुक्त

होवै हैं यहवार्त्ता कोईआश्चर्यकाकारणनहीं है ॥ काहेतैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं प्रतिपादनकरणेहारा जोयहकठवल्ली उपनिषद्रूपग्रंथहै ॥ ताग्रंथकेकथनमात्रतैं तथाश्रवणमात्रतैंभी याअधिकारीपुरुषोंकूं अर्चिरादिकमार्गद्वारा ब्रह्मलोककीप्राप्तिहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ तायमराजानैं नचिकेताकेप्रति जोयाग्रंथके श्रवण मनन कीर्तनतैं अनंतफलकीप्राप्तिकहीहै ॥ ताअर्थविषे यहदोनोंश्रुतिवचन प्रमाणहैं ॥ तहांश्रुति ॥ नाचिकेतमुपाख्यानं मृत्युप्रोक्तंसनातनं ॥ उक्त्वाश्रुत्वाचमेधावीब्रह्मलोकेमहीयते ॥ १ ॥ यइमंपरमंगुह्यं श्रावयेद्ब्रह्मसंसदि ॥ प्रयतःश्राद्धकालेवा तदानंत्यायकल्पते ॥२॥ अर्थयह ॥ यमराजानैंकथनकऱ्या जोनचिकेताकासनातनआख्यान ॥ ताआख्यानकूंकथनकरिके तथा श्रवणकरिकै यहबुद्धिमान्पुरुष ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहोवैहै ॥१॥ और जोपुरुष पवित्रहोइकै यापरमगुह्यआख्यानकूं ब्राह्मणोंकीसभाविषेश्रवण करावैहै॥ सोपुरुषभी महान्फलकूंप्राप्तहोवैहै॥और जोपुरुष याआख्यानकूं श्राद्धकालविषेश्रवणकरै है॥सोश्राद्ध तापुरुषकूंअनंतफलकीप्राप्तिकरै है ॥ २ ॥ तात्पर्ययह ॥ ताआत्मादेवकाप्रतिपादनकरणेहारा जोयहशास्त्रहै॥ताशास्त्रकेश्रवणमात्रतैं कथनमात्रतैंभी जभी यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है॥तभीताआत्माकेसाक्षात्कारतैंयहअधिकारीपुरुष यासंसाररूपमृत्युकेमुखतैंमुक्तहोवै है याकेविषेक्याआश्चर्यहै ॥हेशिष्य॥ ॐकाररूपप्रणवहैप्रतीकजिसका तथाप्रणवहैआलंबनजिसका ऐसाजोब्रह्महैताब्रह्म कासंक्षेपतैंउपदेशकरिके सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति पुनःतिसीब्रह्मका विस्तारतैं उपदेशकरणेवासते याप्रकारकावचन कहताभया॥यमराजाउवाच॥हेनचिकेता॥हमनैं पूर्व तुमारेप्रति जोआनंदस्वरूपआत्मा संक्षेपतैंकथनकऱ्याहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकेग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ काहेतैं याजगत्कास्वतंत्रकर्त्ता जोपरमेश्वरहै ॥ सोपरमेश्वर तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंअंतरआत्मातैंबहिर्मुखही रचताभया ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका मानो हिंसनकरताभयाहै ॥ याप्रकार हमविवेकीपुरुषोंकूं प्रतीतहोवै है ॥ काहेतैं जैसे यालोकविषे कोईमहाराजा किसीआपणेमंत्रीकूं आपणेसमीपपुरकाअधिकार छुडाइकै जभी किसीदूरदेशविषेअधिकारदेवै है ॥ तभी सोमहाराजा तामंत्रीकेहिंसाकरणेहारेकीन्याईहोवै है ॥ तैसे तापरमात्मादेवनैंभी तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकिताई अंतरआत्मारूपविषय दियानहीं ॥ किंतु

तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरआत्मातैंविमुखकरिके बाह्यशब्दादिकविषयोंकीहीप्राप्तिकरी ॥ यातैं तेश्रोत्रादिकइंद्रिय हिंसाभावकूंप्राप्तहु एकेसमानहैं ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे तामहाराजातैं दूरदेशविषेरहणेहारे तथा शत्रुवोंकेसमीपप्राप्तहुए ऐसेजेतामहाराजाकेमंत्रीहैं ॥ तिनमंत्रियोंकूं ताराजाकेविरोधीशत्रु किसीछिद्रकूंपाइके हननकरे हैं तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकापरित्यागकरिके बाह्यविषयदेशविषेप्राप्तभये जे श्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अद्वितीयआत्माकेविरोधीकामक्रोधादिकविकार हननकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे तामहाराजातैंदूरदेशविषेगएहुए तेमंत्री यद्यपि तिसदेशविषेस्थितपदार्थोंकूंदेखे हैं ॥ तथापि तिनमंत्रियोंकूं तामहाराजाकादर्शनहोणा अत्यंतदुर्लभहे ॥ तैसे अंतर आत्माकापरित्यागकरिके बाह्यदेशकूंप्राप्तभयेजेश्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तेश्रोत्रादिकइंद्रिय यद्यपि तहांशब्दादिकविषयोंकूंतोदेखे हैं ॥ तथापि तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरआत्माकादर्शनहोणा अत्यंतदुर्लभहे॥शंका॥हेभगवन्॥ परमेश्वरने श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं बहिर्मुखहीरच्याहे ॥ यातैं तेश्रोत्रादिकइंद्रिय अंतरआत्माकूंमतदेखे ॥ तथापि मनकोक्यागतिहे ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ या जीवोंकामन दोप्रकारकाहोवे हे ॥ तहां एकमनतो सकामहोवे हे ॥ और दूसरामन निष्कामहोवे हे ॥ तहां सकाममनतो तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेअधीनहीहोवे हे ॥ यातैं सोसकाममनतो श्रोत्रादिकइंद्रियोंकीन्याई अंतरआत्माकूंजाणिसकेनहीं ॥ और दूसरा जोनिष्काममनहे ॥ सो निष्काममन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधतैं आत्मसाक्षात्कारकाहेतहोवे हे ॥ अब याहोअर्थकूं स्पष्टकरिके निरूपणकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ तेश्रोत्रादिकइंद्रिय जभी बाह्यशब्दादिकविषयोंविषे जावे हैं ॥ तभी सोसकाममनभी तिनइंद्रियोंकेपीछेहोजावे हे ॥ और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका जभी अंतरनिरोधहोवे हे ॥ तभी सोनिष्काममन बाहरजावेनहीं ॥ परंतु सोश्रोत्रादिकइंद्रियोंकाअंतरनिरोध देहाभिमानीपुरुषोंकूंसुखतैंकथनकरणाभी दुर्घटहे ॥ जभी सोअंतरइंद्रियोंकानिरोध तिनदेहाभीमानीपुरुषोंकूंसुखतैंकहणेविषेभीदुर्घटभया ॥ तभी सोइंद्रियोंकानिरोध तिनदेहाभिमानीपुरुषोंकूं करणेविषेदुर्घटहे याकेविषेक्याकहणाहे ॥ हेनचिकेता सहस्रमनुष्योंविषेकोई एकहीमनुष्य तादेहाभिमानतैंरहितहोइके तथा शमदमादिकसाधनसंपन्नहोइके तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरनिरोधकरे हे ॥

हेनचिकेता॥तेश्रोत्रादिकइंद्रिय जभी याशरीरकेअंतरहीस्थितहोवेहैं॥तभी ताइंद्रियरूपद्वारकेअभावहुए सोमनभीताशरीरकेअंतरहीस्थित होवे है॥तहांदृष्टांत॥ जैसे यालोकविषे किसोनवद्वारवालेगृहविषे किसीवानरकूंनिरुद्धकरिकैतागृहकेनवद्वारोंकूंबंदकरिदीजिये॥तहांसोवानर तागृहतैंबाहरनिकसणेविषेअसमर्थहुआ तागृहविषेही नानाप्रकारकीचेष्टाकरिके जभी परिश्रमकूंप्राप्तहोवे है ॥तभी सोवानर तागृहविषेही सुखपूर्वकस्थितहोवे है॥तैसे जिनअधिकारीपुरुषोंनें तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधपूर्वक तामनकाअंतरनिरोधकऱ्याहै॥तिनअधिकारीजनों का सोनिष्काममन श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकेयुक्तहुआताअंतरआत्माकेसाक्षात्कारकूं उत्पन्नकरे है ॥ यातें मुमुक्षुजनोंनें श्रोत्रादिकइं द्रियोंकेनिरोधपूर्वक तामनका अवश्यकरिकेनिरोधकरणा ॥ हेनचिकेता ॥ इसलोकविषे तथापरलोकविषेस्थित जे शब्दादिकविषयहैं ॥ तिनशब्दादिकविषयोंकूं जेविचारहीनपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकेग्रहणकरे हैं ॥ तेविचारहीनपुरुष शरीरशरीरविषेमैंयमराजाकेवशकूंप्राप्त होवे हैं॥ कैसामैंहूं ॥ आधि व्याधि शत्रु आदिकरूपोंकरिकेस्थितहूं ॥ और जैसे जालकरिकेबांधेहुएमत्स्य मृत्युकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेअधीनहुए तेअविवेकीपुरुष वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ इतनेंकरिकेअविवेकीपुरुषोंकावृत्तांत कथनकऱ्या ॥ अब विवेकीपुरुषोंकावृत्तांत निरूपणकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ ब्रह्मातेंआदिलेके स्तंवपर्यंत जितनेकीस्थावरजंगम प्राणीहैं॥ तेसंपूर्णप्राणी मृत्यके वशकूंप्राप्तहोवे है ॥ याप्रकारकीव्यवस्थाकूंदेखिकरिके तेविवेकीपुरुष कर्मउपासनाकेफलकूं अनित्यहीजाने हैं ॥ और आत्मज्ञानकेमोक्ष रूपफलकूं नित्यजाने हैं ॥ इसप्रकार ब्रह्मलोकपर्यंत कर्मकेफलकूंअनित्यजाणिके तेविवेकीपुरुष ताकर्मकेस्वर्गादिरूपफलकीइच्छाकर तेनहीं. जैसे तूनचिकेता स्वर्गादिकसुखोंकीइच्छाकरतानहीं ॥ तैसे तेविवेकीपुरुषभी तिनस्वर्गादिकसुखोंकीइच्छाकरतेनहीं ॥ किंतु तेवि वेकीपुरुष तुमारेन्याई मोक्षरूपनित्यफलकोहीइच्छाकरें हैं ॥हेनचिकेता ॥ तेविवेकीपुरुष जिसआत्माकेज्ञानकरिके तामोक्षकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ सोआत्मादेव कैसाहै ॥ नेत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंके तथावाकादिकपंच कर्मइंद्रियोंकेजेदर्शनादिकव्यापारहैं ॥ तिनदर्शनादिकव्यापारोंकूं यहजीव जिसअंतःकरणकरिकेजाने है॥ताविषयसहितअंतःकरणकूं यहजीव जिसस्वयंज्योतिरूपसाक्षीकरिके अनुभवकरे है॥ सोस्वयंज्यो

तिरूपसाक्षी ताआत्मादेवरूपहोहै॥जोतुमनें पूर्वं धर्मअधर्मादिकोंतैंरहितआत्माकास्वरूपपूछाथा ॥तास्वयंज्योतिरूपसाक्षीतैं सोआत्मादेव भिन्ननहीं है॥हेनचिकेता॥जैसे रज्जुविषे सर्पदंड जलधारा आदिककल्पितहोवे हैं॥तैसे भूत भविष्यत् वर्त्तमान यहतीनकालजोहैं तथाताती नकालोंविषेवर्त्तमान जितनेकोस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं॥तेसंपूर्णपदार्थयास्वयंज्योतिरूपसाक्षीआत्माविषे कल्पितहैं ॥ यातें यास्वयंज्योतिसाक्षी आत्मातें भिन्नसत्तावालाकोईभीपदार्थनहीं है ॥ याकारणतें सोआत्मादेव अद्वितीयरूपहै॥ और हेनचिकेता॥यहपुरुष जिसस्वयंज्योतिरूपसाक्षीकरिकै जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकूंदेखैहै ॥ तास्वयंज्योतिरूपसाक्षीकूंहीं तुमनें आपणाआत्मारूपकरिकेजानणा ॥ और पूर्वं हमनें तुमारेप्रति जोमहान्आत्मा सर्वत्रव्यापकरूपकरिकै कथनकऱ्याथा सोमहान्आत्माभी यास्वयंज्योतिरूपसाक्षीतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु सोमहान्आत्मा स्वयंज्योतिसाक्षीरूपहीहै ॥ जिसआत्मादेवके अद्वितीयरूपमहत्वकूंजाणिकरिकै विद्वान्पुरुष कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूपसर्वशोकोंकूं तरे हैं ॥ हेनचिकेता यहजीवरूपआत्मादेव बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूपकरिकै सर्वजीवोंकूं अत्यंतसमीपहै ॥ और लोकप्रसिद्धमधुकेसमान जोपुण्यपापकर्मोंका सुखदुःखरूपफलहै ॥ ताफलकाभी यहआत्मादेवहीभोक्ताहै ॥ ऐसेसर्वभेदतैंरहितअद्वितीय आत्माकूं जेअधिकारीपुरुष यासर्वजगत्काअधिपतिरूपकरिकेजाने हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष किसीसंशयकूं तथाकिसीकेनिंदाकूं करेनहीं ॥ इतनेंकरिकै त्वंपदार्थरूपजीवके शोधनकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥अब तत्पदार्थरूपईश्वरके शोधनकाप्रकार निरूपणकरे हैं॥हेनचिकेता ॥ जिसपरमात्मादेवतैं यहहिरण्यगर्भ उत्पन्नभयाहै ॥ कैसाहैसोहिरण्यगर्भ ॥ ब्रह्मांडकाआरंभकरणेहारे जेआकाशादिकस्थूलभूतहैं ॥तिनस्थूलभूतोंतैंभी जोहिरण्यगर्भ पूर्वउत्पन्नभयाहै और पूर्वजन्मोंविषे अनुष्ठानकरे जे कृच्छ्रचांद्रायणादिककर्म हैं तथा नानाप्रकारकोउपासनाहैं॥ ताकर्मउपासनारूपतपकेबलतैं जिसहिरण्यगर्भकीउत्पत्तिहोवे है॥ऐसे हिरण्यगर्भकूंभी उत्पन्नकरणेहारा जोपरमात्मादेवहै जोपरमात्मादेव सर्वशरीरोंविषे सर्वबुद्धिरूपगुहावोंविषेप्रवेशकरिकै तिनबुद्धियोंकूं साक्षीरूपकरिकेदेखताहुआ स्थितहोवे है ॥ तथा जोपरमात्मादेव आकाशकीन्याई सर्वत्रव्यापकहै॥ तिसपरमात्मादेवकूं तू अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकेजाण॥हेनचिकेता ॥ जोप्राणस्वरूपहिरण्यगर्भदेवता पूर्वकल्पके

कर्मउपासनारूपतपकेप्रभावतैंयास्थूलविराटतैंप्रथम उत्पन्नहोवे है सोहिरण्यगर्भदेवता यास्थूलप्रपंचरूपअन्नकूं भोजनकरे है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताहिरण्यगर्भदेवताकूं आदिति यानामकरिकै कथनकरे है ॥ और संपूर्णइंद्रादिकदेवता ताहिरण्यगर्भकेविभूतियां हैं ॥ यातैं सोहिरण्यगर्भभगवान् सर्वदेवमयहै और सो हिरण्यगर्भभगवान् संपूर्णव्यष्टिभूतप्राणियोंविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहे है यातैं सो हिरण्यगर्भभगवान् सर्वभूतमयहै ॥ ऐसाहिरण्यगर्भभग वान्भी जिसपरमात्मादेवका ध्यानकरणेयोग्यस्वरूपहै ॥ तिसपर मात्मादेव कूंतू अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ और हेनचिकेताऐसेअदितीनामाहिरण्यगर्भतैं उत्पन्नभयाजोविराटभगवान्है ॥ जावि राटभगवान्कूं शास्त्रविषेअग्निरूपकरिकैवर्णनकर्‍याहै ॥ याकारणतैंहोनीचेकाकाष्ठरूप जोअधरअरणीहै तथा ऊपरकाकाष्ठरूप जो उत्तरअरणी है ॥ तादोनोंअरणियोंतैं सोअग्निरूपविराट यज्ञविषेप्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवे है और जैसे यालोकविषे गर्भिणी स्त्रियां स्नेहपूर्वक गर्भकूंधारणकरेहैं ॥ तैसे यज्ञकेकरणेहारेपुरुष याअग्निरूपविराट्कूं श्रद्धापूर्वक दोनोंअरणियोंकरिकैधारणकरेहैं ॥ तथा निद्रातैंरहितयोगीजनभी ताअग्निरूपविराट्कूं आपणेअंतरधारणकरेहैं ॥ और सोअग्निरूपविराटही सर्वभूतोंविषेस्थितहै ॥ और स्वर्गकी इच्छावाले तथामोक्षकीइच्छावाले जेदेवतामनुष्यहैं ॥ तिनोंकरिकै यहअग्निरूपविराटही स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे अदि तिनामाहिरण्यगर्भ तापरमात्मादेवकास्वरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहै॥तैसे यहअग्निरूपविराटभी तापरमात्मादेवकास्वरूपकरिकै ध्यान करणेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ हिरण्यगर्भरूपकरिकै तथाविराटरूपकरिकै तापरमात्मादेवकाउपदेश आप किसवास्तेकरतेहो ॥ साक्षात्ही तापरमात्मादेवकेस्वरूपकाउपदेश आप हमारेप्रतिकरो ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ तापरमात्मादेवका वास्तवशुद्धस्वरूप मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा अध्यात्म अधिदेव अधिभूत इत्यादिकसर्वभेदतैंरहितहै ॥ यातैं तापरमात्मादेवकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षा त्कहणेविषे हम समर्थनहींहैं॥काहेतैं जातिवाला तथागुणवाला तथाक्रियावालाजोपदार्थहै ॥ तापदार्थकूंही यहशब्द साक्षात्कथनकरे हैं॥ जैसे घट यहशब्द घटत्वजातिवालेघटकूं कथनकरेहै ॥ और नीलघटयहशब्द नीलगुणवालेघटकूं कथनकरेहै ॥ और पाचक यहशब्द

पाकरूपक्रियावालेपुरुषकूंकथनकरैहै ॥ इसप्रकार संपूर्णशब्दकिसीजातिगुणादिकनिमित्तकूंअंगीकारकरिकेही आपणेआपणेअर्थकूं साक्षात्कथनकरैहैं॥और यहनिर्गुणपरमात्मादेवतो जातिगुणक्रियादिकधर्मों तैंरहितहै ॥ यातैं तापरमात्मादेवकूं कोईशब्द साक्षात्कथनकरिसकैनहीं ॥ याकारणतैं हिरण्यगर्भ विराट् इत्यादिक सविशेषरूपोंकरिकै तानिर्गुणपरमात्मादेवकेवास्तवस्वरूपकूं तूं जाण ॥ और हेनचिकेता ॥ जिसअधिदेववायुरूपप्राणतैं यहसूर्यचंद्रमादिकतेज उदयहोवै हैं॥ और जिसप्राणविषे तेसूर्यादिकतेज अस्तभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ और जैसे रथकेचक्रकेनाभिविषे अरास्थितहोवै हैं ॥ तैसे वाकादिकइंद्रिय तथाअग्निआदिकदेवता जिसप्राणविषे सर्वदास्थितहोवै हैं ॥ तहांश्रुति ॥ प्राणाद्वाएष उदेतिप्राणेऽस्तमेति सर्वंप्राणेऽर्पितं ॥ अर्थयह ॥ प्राणतैंही यहसूर्यादिकतेज उदयहोवै हैं ॥ तथा प्राणविषेही तेसूर्यादिकतेज अस्तभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताप्राणविषेही संपूर्णअग्निआदिकदेवता स्थितहोवै हैं ॥ १ ॥ और जिसप्राणकूं आपणेबलकरिकै उल्लंघनकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं है ॥ ऐसाप्राणभी जिसपरमात्मादेवका ध्यानकरणेयोग्यस्वरूपहै ॥ ऐसे परमात्मादेवकूंतूं ब्रह्मरूपकरिकेजाण ॥ इतनैंकरिकै तत्पदार्थरूपईश्वरकेशोधनकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥ अब ताशोधित तत् त्वं पदार्थोंका अभेदनिरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ तुमारेशरीरविषे तथाहमारेशरीरविषे तथा अन्यजीवों केशरीरविषे जोचैतन्यदेव सर्वबुद्धिवृत्तियोंका साक्षीरूपकरिकेस्थितहै ॥ सोईहीचैतन्यदेव परोक्षईश्वरशरीरविषे तथाहिरण्यगर्भशरीरविषे तथाविराट्शरीरविषे साक्षीरूपकरिकेस्थितहै ॥ और जोचैतन्यदेव ईश्वरहिरण्यगर्भादिकोंकेशरीरविषेस्थितहै ॥ सोईहीचैतन्यदेव अस्मदादिकजीवोंकेशरीरविषेस्थितहै ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे अखंडआकाशविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है ॥ तैसे याअखंडचैतन्यदेवविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है ॥ और जैसे भेदतैंरहित आकाश घटमठादिक उपाधियोंकेभेदकरिकै भेदकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे यहचैतन्यदेवभी अव्याकृत सूक्ष्म स्थूल इत्यादिकउपाधियोंकेभेदकरिकै ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट इत्यादिकभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे वास्तवतैंतीनकालविषे असत्यहुआभी गंधर्वनगर आकाशकेभेदकूंकरैहै ॥ तैसे वास्तवतैं तीनकालविषे असत्यहुआभी यहजडजगत् ता चैतन्यआत्माकेभेदकूंकरै है ॥ परंतु सोचैतन्यआत्मा

काभेद ॥ अज्ञानीपुरुषोंकीदृष्टिविषेही है ॥ और विद्वान्पुरुषकीदृष्टिकरिकेतौ ताअद्वितीयब्रह्मविषे कल्पितनानापणाभीनहीं है॥जभी ता
अद्वितीयब्रह्मविषे कल्पितनानापणाभीनहींभया ॥ तभी ताअद्वितीयब्रह्मविषे सत्यनानापणा किसप्रकारसंभवैगा ॥ हेनचिकेता ॥ ऐसेअ
द्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष कल्पितनानापणाभीदेखे है ॥ सोभेददर्शीपुरुष वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोमंदबुद्धिपुरुष पापकर्म
करिकेमोहितहुआ ताअद्वितीयब्रह्मविषे वास्तवभेदकूंदेखेहै॥सोभेददर्शीपुरुषतौ अनेकवार नरकोंकोहीप्राप्तहोवे है॥ तहांश्रुति॥मृत्योःसमृ
त्युमाप्नोति यइहनानेवपश्यति॥अर्थयह॥जोपुरुषयाअद्वितीयब्रह्मविषे नानापणेकीन्याईदेखेहै॥सोभेददर्शीपुरुष वारंवारमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥
यातैं मुमुक्षुजनोंनें ताब्रह्मकूं सर्वभेदतैंरहितएकअद्वितीयरूपकरिकेजानणा॥हेनचिकेताऐसेअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेदर्शनविषे यहबहिर्मुख
श्रोत्रादिकइंद्रिय करणहोइसकेनहीं यातैं याअधिकारीपुरुषनैं निष्कामशुद्धमनकरिकैहींताआत्मारूपब्रह्मकूं निश्चयकरणा औरहेनचिकेता ॥
जैसेअखंडआकाशविषे स्वभावतैंनानापणानहीं है॥तैसे याअखंडब्रह्मविषेभी स्वभावतैं नानापणानहीं है ॥किंतु जैसे घटमठरूपउपाधिकेभे
दतैंताआकाशकाभेदहोवे है ॥ तैसे देहादिकउपाधियोंकेभेदतैंही ताआत्माकाभेद कहणाहोवैगा ॥और यालोकविषे जोजोभेद उपाधिकृत
होवैहै॥सोसोभेद ताउपाधिवालेउपाहितपदार्थकूं स्पर्शकरेनहीं॥किंतु तिनउपाधियोंविषेही सोभेद स्थितहोवे है॥जैसे घटमठरूपउपाधिकृत
जोआकाशकाभेदहै ॥ सोभेद आकाशकूंस्पर्शकरतानहीं॥किंतु ताघटमठरूपउपाधियोंविषेहीं सोभेद स्थितहोवे है॥तैसे देहादिरूपउपाधि
कृत जोआत्माकाभेदहै॥सोभेदभी ताअद्वितीयआत्माकूंस्पर्शकरेनहीं॥किंतु तिनदेहादिरूपउपाधियोंविषही सोभेद स्थितहोवे है ॥ किंवा ॥
ताअद्वितीयब्रह्मतैंभिन्न जितनेकीदेहादिकपदार्थ हैं ॥ तेदेहादिकपदार्थ ताब्रह्मतैंभिन्नहुए नरशृंगकी न्याई असत्यहीहोवैंगे ॥ तिनअसत्यप
दार्थोंकरिके ताअद्वितीयब्रह्मकाभेद संभवैनहीं ॥ और ताअद्वितीयब्रह्मविषे भेदकेदर्शनतैं वारंवारमृत्युकीप्राप्ति पूर्व कथनकरिआये हैं ॥
यातैं याअधिकारीपुरुषोंनें वेदांतशास्त्रकेसंस्कारयुक्तशुद्धमनकरिके याआत्मारूपब्रह्मकूं अद्वितीयरूपकरिकेहीदेखणा ॥ हेनचिकेता ॥ ऐसा
अद्वितीयपरमात्मादेव जीवरूपकरिके यामनुष्योंकेहृदयदेशविषेस्थितहोवे है ॥ और यामनुष्योंकाहृदय विशेषकरिकेतौ अंगुष्ठमात्रपरि

माणवालाहोवे है ॥ ऐसेहृदयविषेस्थितहुआ सोपरमात्मादेवभी अंगुष्ठमात्रकह्याजावे है॥ ऐसे अंगुष्ठमात्रपरमात्मादेवकूं जेअधिआरीपुरुष भूतभविष्यत्पदार्थोंका ईशानरूपकरिकेजाने है ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं संशयादिकप्राप्तहोवेनहीं ॥हेनचिकेता॥ सोहृदयदेशविषेस्थित अंगुष्ठमात्रपुरुष केसाहै ॥ यासर्वजगत्काईशानहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकालोंविषे विपरीत भावकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ किंतु तीनोंकालविषे एकरसरहे है॥और जैसे यालोकविषे द्रवत्वरूपकरिकै तथास्नेहरूपकरिके जलकाभेदहोवेनहीं किंतु द्रवत्वरूपकरिके तथा स्नेहरूपकरिके सोजल सर्वत्रएकरूपहीहोवे है॥तैसे अस्ति भाति प्रिय यारूपकरिकेताआत्मादेवकाभेदहोवे ॥ नहीं॥किंतु अस्तिभातिप्रियरूपकरिके सोआत्मादेव सर्वत्रएकरूपहीहै॥औरहेनचिकेता॥जैसे ऊँचेपर्वतोंविषे मेघोंतैंपतनहुएजेजलहैं॥तेजल तिनऊँचेपर्वतोंतैं नीचेदेशविषे विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तैसे भेदरूपकरिकेदेख्याहुआयहआत्मादेवभी नानाप्रकारकीनीचयोनियोंकूंप्राप्त होवे है॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे तेमेघोंकेजल प्रथम तापर्वतकेशिखरविषेप्राप्तहोवे हैं ॥ तिसतैंअनंतर तेजल तापर्वतकेमध्यदेशविषे प्राप्तहोवे हैं ॥ तिसतैंअनंतर तेजल नीचीभूमिकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तानीचीभूमितैंपरे तेजल कहांजावेनहीं ॥ किंतु तेजल तानीचीभूमिविषेहीस्थापितहोवे हैं ॥ यातैं तानीचीभूमि ताजलोंकेविश्रामकास्थानहै॥तैसे यहजीवात्मारूपजलभी भेददर्शनरूपऊँचेपर्वततैंनीचेपतनहोइके पुण्य पापकर्मकेवशतैं नानाप्रकारकेयोनियोंविषेभ्रमणकरे है ॥ तिसतैंअनंतर पूर्वलेकिसीमहान्पुण्यकर्मकेयोगतैं यहजीवात्मा जभी आत्मज्ञान रूपनीचीभूमिकूंप्राप्तहोवे है॥तभी यहजीवात्मा ब्रह्मानंदरूपविश्रामकूंप्राप्तहोवे है ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे स्वभावतैंशुद्धजोजलहै ॥ सो जल जभी किसीपर्वतादिकशुद्धस्थलविषेप्राप्तहोवे है ॥ तभीसोजल शुद्धहीरहे है॥ और सोशुद्धजल जभी गेरकहरितालमयभूमिविषे प्राप्त होवे है ॥ तभी सोजल ताभूमिकेसंबंधतैं रक्तपीतादिकनानावर्णोंकूं प्राप्तहोवे है ॥ तैसे वास्तवतैंशुद्धयहआत्मादेवभी रागद्वेषतैंरहितशुद्ध मनविषेस्थितहोइके शुद्धभावकूंहीप्राप्तहोवे हैं॥ और रागद्वेषवालेअशुद्धमनविषेस्थितहोइके सोआत्मादेवभी अशुद्धभावकूंप्राप्तहोवे हैं॥औ र हेनचिकेता॥जैसे स्वभावतैंशुक्लवर्णवालाजोजलहै ॥ सोजल यद्यपि गेरकादिकोंकेसंबंधतैं रक्तादिकवर्णोंवालाप्रतीतहोवे है ॥ तथापि ता

जलकेस्वाभाविकशुक्लवर्णकीहानिहोवैनहीं॥तैसे यहआत्मादेवभी यद्यपि अंतःकरणादिकोंकेसंबंधतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपमलवालाप्रतीतहो वैहै ॥ तथापि ताआत्मादेवकेवास्तवशुद्धस्वरूपकीहानिहोवैनहीं॥और हेनाचिकेता॥ जैसे स्वभावतैंशीतलजोजलहै॥सोजल अग्निकेसंबंधतैं उष्णभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे स्वभावतैंसुखरूप यहआत्मादेवभी देहादिकोंके संबंधतैं दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया॥ शरीरके विद्यमानहुए याजीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिहोवैहै॥ और शरीरकेअभावहुए याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिके कारणशरीरसहित यास्थूलसूक्ष्मशरीरविषेही दुःखकीकारणतासिद्धहोवैहै ॥ हेनाचिकेता ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंविषेभी जोअ ज्ञानरूपकारणशरीरहै ॥ सोकारणशरीर याजीवोंकेदुःखका साक्षात्कारणहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् सोकारणशरीर साक्षात्दुःखकाकारण होवै ॥ तो सुषुप्तिअवस्थाविषेभी इमजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं जैसे बीज अंकुरादिद्वारा फलकाकारणहोवै है॥तैसे यहअज्ञानरूपकारणशरीरभी सूक्ष्मस्थूलशरीरद्वाराही याजीवों केदुःखकाकारणहोवै है॥ हेनचिकेता ॥ तिनसूक्ष्मस्थूलशरीरोंविषेभी यहसूक्ष्मशरीर साक्षात्अज्ञानरूपमायाकाकार्य है ॥ यातैं तामायारूपकारणकेनाशतैंविना सोसूक्ष्मशरीर नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और सोसूक्ष्मशरीरही याजीवोंकेस्थूलसंसाररूपपटकाकारणहै ॥ याकारणतैं ता सूक्ष्मशरीरकूं शा स्त्रविषे सूत्र यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ ऐसासूक्ष्मशरीर यास्थूलशरीरकेग्रहणतैंविना याजीवोंकूं भोगकीप्राप्तिकरे नहीं ॥ किंतु यास्थूल शरीरकूंग्रहणकरिकेही सोसूक्ष्मशरीर याजीवोंकूं भोगकीप्राप्तिकरै है ॥ यातैं तास्थूलशरीरविषेही गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिके सोआत्मादेव प्रत्यक्षहोवै है ॥ याकारणतैं मैंयमराजा तुमारेप्रति यास्थूलशरीरकाकथनकरताहूं तूं श्रवणकर ॥ सूक्ष्मशरीररूपजोपुरुषहै ॥ तथा त्वगा दिकजेसप्तधातुहैं ॥ तथा भक्षणकरेहुएअन्नपानादिकों के जेनानाप्रकारकेरसहैं ॥ तिनसंपूर्णों करिके यहस्थूलशरीर दिनदिनविषे पूर्णकरी ताहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती यास्थूलशरीरकूं पुर यानामकरिकेकथनकरे है॥अथवा जैसे लोकप्रसिद्धपुर राजादिकोंकरिकेयुक्तहोवै हैं तैसे यहस्थूलशरीरभी पूर्णपरमात्माकरिकेयुक्तहै॥याकारणतैं यास्थूलशरीरकूं पुर कहेहैं ॥ अब यास्थूलशरीररूपपुरविषे लोकप्रसिद्धपुर

कीसमानता निरूपणकरे हैं॥हेनचिकेता जैसे यहलोकप्रसिद्धपुर अनेकद्वारोंवालाहोवै है॥तथा कोईराजा तापुरकास्वामीहोवै है ॥ तैसे यह स्थूलशरीररूपपुरभी एकादशद्वारवालाहै॥तहां दोचक्षु दोनासिका दोश्रवण एकमुख यहसप्त याशरीररूपपुरकेऊपरलेद्वारहैं॥ और पायु उपस्थ यहदोनों नीचेकेद्वारहैं॥और उदरविषे स्थित जोनाभिछिद्रहै॥सोनाभिछिद्र दशमाद्वारहे ॥ और मस्तककेतीनकपालोंकोसंधिविषे स्थित जोछिद्रहै॥सोएकादशमाद्वारहै॥जाएकादशमेंद्वारविषे सुषुम्नानाडीरूपसरस्वती प्राप्तहोवै है॥कैसोहैसा सुषुम्नारूपसरस्वती॥अयोगी पुरुषोंकरिके दुर्लक्ष्यहै ॥ किंतु योगीपुरुषही तासुषुम्नाकूंजाणेहैं ॥ और जिससुषुम्नारूपसरस्वतीकरिके याशरीरतैंबाहरनिकस्याहुआ यह योगीपुरुष ब्रह्मलोककेदेवयानमार्गकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसेशरीररूपपुरविषे यहपरमात्मारूपइंद्र वाकादिकइंद्रियरूप तथाअग्निआदिकदेवता रूप प्रजाकेसहित निवासकरे है ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा बहिर्मुखजडमनतैंरहितहै ॥ तथा वाकादिकइंद्रियों तैंरहितहै ॥ हेनचिकेता ॥ ऐसापरमात्मादेव यद्यपि वास्तवतैंपुण्यपापरूप कर्मों तैंरहितहै ॥ तथापि कल्पितपुण्यपापरूपकर्मोंकेसंबंधतैं याशरीररूपपुरकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ऐसेदुःखरूपशरीरकूंप्राप्तहोइके भी यहआनं दस्वरूपआत्मादेव वास्तवतैंशोककूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहे तैं यालोकविषेजोजोशोकहोवै है ॥ सोसोशोक दुःखरूपकारणतैंही उत्पन्नहोवै है॥और सोदुःख अनिष्टपदार्थोंकेसंगतैंउत्पन्नहोवै है॥यातैं तादुःखकीउत्पत्तिद्वारा सोसंगही ताशोककाकारणहै ॥और यहआनंदस्वरूपआ त्मा सर्वसंगतैंरहितहै ॥ यातैं ऐसेअसंगआत्माकूं सोशोक किसप्रकारप्राप्तहोवैगा ॥ किंतु नहींप्राप्तहोवैगा ॥ हेनचिकेता ॥ जोपूर्वतुमनें ध र्मअधर्म तैंरहित आत्माकास्वरूपपूछाथा ॥ सोभी यहसर्वशोकतैंरहितस्वयंज्योतिआत्मा देवहीहै ॥ याकेविषे तुमनें किंचित्मात्रभी सं शयनहींकरणा ॥ हेनचिकेता ॥ यहअधिकारीपुरुष नित्यमुक्तआत्मास्वरूपकरिकेनित्यहीमुक्तरूपहै तथापि यास्वयंज्योतिआत्माके साक्षात्कारतैं कल्पितअज्ञानरूपबंधकापरित्यागकरिके तुमसरीसेअधिकारीपुरुष पुनःमुक्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ जैसेयालोकविषे कोईभाग्यवा नपुरुष पूर्व सुखकूंप्राप्तहुआभी पुनःसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेव पूर्वमुक्तिहुआभी पुनःमुक्तहोवैहै॥ हेनचिकेता ॥ जेवादी ताआ

त्माविषे बंध अंगीकारकरैहैं ॥ तिनवादियोंसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताआत्माविषे रज्जुआदिकोंकरिके वेष्टनरूपबंधहै ॥ अथवा संसर्गरूपबंध
है॥तहां ताआत्माविषे रज्जुआदिकोंकरिकेवेष्टनरूपबंधहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥काहेतैं यालोकविषे जिसजिस
पदार्थविषे रज्जुआदिकोंकरिकेबंधहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थविषे मूर्त्तपणाहीदेख्याहै॥जैसे घटादिकपदार्थोंविषे रज्जुकरिकेबंधहोवै है ॥ यातैं
तिनघटादिकपदार्थोंविषे मूर्त्तपणाभीहै ॥ और जिसपदार्थविषे मूर्त्तपणेकाअभावहोवैहै ॥ तिसपदार्थविषे रज्जुआदिकोंकरिकेबंधभीहोवै
नहीं॥ जैसे आकाशविषे मूर्त्तपणेकाअभावहै ॥ यातैं ताआकाशविषे रज्जुकरिकेबंधभीहोवैनहीं ॥ सोमूर्त्तपणेकाअभाव आत्माविषेभी
है ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे रज्जुआदिकोंकरिकेबंध संभवैनहीं ॥ और ताआत्माविषे संसर्गरूपबंधहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगी
कारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोवादियोंनैं संयोगसमवायसंबंधादिरूपबंधनकल्पनाकर्‍याहै ॥ सोसंयोगसमवायसंबंधादिरूपबंधन
कल्पितहै ॥ यातैं तेसंयोगसमवायादिक असत्यहैं ॥ अब तिनसंयोगसमवायादिकसंबंधोंविषे कल्पितरूपता स्पष्टकरणेवासतै प्रथम तिन
संयोगादिकोंविषेप्रमाणका खंडनकरैहैं॥ तहांजोवादी संयोगसमवायादिकसंबंधोंकूंअंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ तासंयोग
समवायसंबंधविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ अथवा अनुमानप्रमाणहै ॥ अथवा ॥ शब्दप्रमाणहै ॥ अथवा इनोंतैंकोइंभिन्नप्रमाणहै॥तहां संयोगसंबं
धविषे तथासमवायसंबंधविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तावादीकेमतविषे दंडवालापुरुष
है यास्थलविषे दंडका पुरुषकेसाथ संयोगसंबंधहोवै है ॥ और रूपवालाघटहै यास्थलविषे रूपगुणका घटकेसाथ समवायसंबंधहोवै है ॥
तहां तासंयोगसंबंधका दंडतो प्रतियोगीहोवै है ॥ और पुरुष अनुयोगीहोवै है ॥ इसीप्रकार तासमवायसंबंधकाभी रूपगुणतो प्रतियोगी
होवैहै ॥ और घट अनुयोगीहोवै है ॥ तहां प्रतियोगीकेस्वरूपका तथा अनुयोगीकेस्वरूपका जोभलीप्रकारविचारकरिदेखिये ॥ तो
ताप्रतियोगीअनुयोगीकेस्वरूपतैंभिन्नहोइके सोसंयोगसंबंध तथा समवायसंबंध प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं तासंयोगसमवायविषे प्रत्य
क्षप्रमाण संभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायविषे अनुमानप्रमाणहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ॥

जोवस्तुका किसीप्रकारकरिकेभी प्रत्यक्षनहींहोवै ॥ तावस्तुविषे अनुमानप्रमाणकीभी प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ काहेतें जोकदाचित् सर्वप्रकारतें अप्रत्यक्षवस्तुकीभी अनुमानप्रमाणतें सिद्धिहोतीहोवै ॥ तौ वंध्यापुत्रकीतथानरशृंगकीभी अनुमानप्रमाणतें सिद्धिहोणीचाहिये ॥ और अनुमानप्रमाणकरिके वंध्यापुत्रकी तथा नरशृंगकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ यातें प्रत्यक्षप्रमाणकेअभावहुए तासंयोगसमवायविषे अनुमानप्रमाणभी संभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायसंबंधविषे शब्द प्रमाणहै यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें सो शब्द दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतो लौकिकशब्दहोवै है ॥ और दूसरा वैदिकशब्दहोवै है ॥ तहां तासंयोगसमवायविषे लौकिकशब्द प्रमाणहै यहकहणातोसंभवैनहीं ॥ काहेतें प्रत्यक्षअनुमानादिकप्रमाणोंकीसहायतातेंविना सोलौकिकशब्द किसीअर्थकीभीसिद्धिकरिसकैनहीं ॥ किंतु प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीसहायताकूंअंगीकारकरिकेही सोलौकिकशब्द किसीअर्थकोसिद्धिकरैहै ॥ काहेतें जोकदाचित् सो लौकिकशब्द प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीसहायतातेंविनाही किसीअर्थविषे प्रमाणरूपहोवै ॥ तौ वंध्यापुत्रविषे तथानरशृंगविषेभी ता लौकिकशब्दकूं प्रमाणरूपताहोणीचाहिये ॥ और वंध्यापुत्रविषे तथानरशृंगविषे तालौकिकशब्दकूं प्रमाणरूपताहैनहीं ॥ यातें प्रत्यक्ष अनुमानप्रमाणकेअभावहुए तासंयोगसमवायविषे लौकिकशब्दकूंभी प्रमाणरूपतासंभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायसंबंधविषे वैदिक शब्द प्रमाणहै यहकहणाभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें दंडपुरुषका संयोगसंबंधहोवै है और रूपघटका समवायसंबंधहोवै है याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारा कोईश्रुतिवचन वेदविषेदेखीतानहीं ॥ जावैदिकवचनकरिकै तासंयोगसमवायकोसिद्धिहोवै ॥ यातें तासंयोगसमवाय विषे वैदिकशब्दकूंभी प्रमाणरूपतासंभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायविषे प्रत्यक्षअनुमान शब्द यातीनप्रमाणोंतें भिन्नहोकोईप्रमाणहै यहचतुर्थपक्ष जोवादो अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें प्रत्यक्ष अनुमान शब्द यातीनप्रमाणोंविषे किसीएकप्रमाणकी सहायताकूंअंगीकारकरिकेही उपमानअर्थापत्तिआदिकप्रमाण प्रवर्त्तहोवै है ॥ जभी तासंयोगसमवायविषे प्रत्यक्षादिकतीनप्रमाणोंकीप्रवृत्तिनहींभई ॥ तभी तासंयोगसमवायविषे उपमानअर्थापत्तिआदिकप्रमाण किसप्रकार प्रवर्त्तहोवैंगे ॥ किंतु नहींप्रवर्त्तहोवैंगे ॥ हेन

चिकेता ॥ याप्रकार आकाशादिकजडपदार्थोंविषेभी सोसंयोगसमवायसंबंध संभवैनहीं ॥ जभी आकाशादिकजडपदार्थोंविषेभी
तेसंयोगसमवायसंबंध नहींसिद्धभये ॥ तभी चैतन्यस्वरूपअमूर्त्तआत्मादेवविषे तेसंयोगसमवायसंबंध किसप्रकारसिद्धहोवैंगे ॥
शंका ॥ हेभगवन् ॥ संयोगसमवायसंबंधरूपबंध ताआत्माविषे मतहोवे ॥ तथापि कोईअनिर्वचनीयसंबंधरूपबंधताआत्मादेवविषे किस
वासतेनहींहोवे ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ योग्यपदार्थका किसीयोग्यपदार्थकेसाथही संबंधहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम शास्त्रविषे
कथनकऱ्याहै ॥ यातैं सोअनिर्वचनीयसंबंध अनिर्वचनीयशरीरादिकोंविषेहोसंभवैगा ॥ आनंदस्वरूपअसंगआत्माविषे सोअनिर्वचनीयसंबं
धभी संभवैनहीं ॥ यातैं सर्वसंबंधतैंरहितयहआत्मादेव यद्यपि पूर्वअज्ञानअवस्थाविषेभी नित्यमुक्तरूपहीथा ॥ तथापि आत्मसाक्षा
त्कारकरिके ताकल्पितमायारूपबंधकेनिवृत्तहुए यहआत्मादेव पुनःविशेषकरिके मुक्तिकूंप्राप्तहोवे है ॥ तहांश्रुति ॥ विमुक्तश्चविमुच्यते
अर्थयह ॥ विशेषकरिकेमुक्तहुआभीयहआत्मादेव आत्मसाक्षात्कारकरिके पुनःविशेषकरिकेमुक्तहोवे है ॥ १ ॥ इतनेंकरिके याआत्मा
देवविषे नित्यमुक्तरूपतादिखाई ॥ अब ताआवरणरहितशुद्धआत्माके प्रभावकावर्णनकरैहैं ॥ हेनचिकेता ॥ यहआत्मादेव आत्मसाक्षा
त्कारकरिके कार्यसहितअविद्याकूं हननकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआत्मादेवकूं हंस यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ अथवा ॥सर्वजी
वोंका बाह्यप्राणरूप जोयहसूर्यभगवान्है ॥ तासूर्यरूपकरिके यहआत्मादेवही तीनलोकोंकूंप्रकाशकरे है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ता
आत्मादेवकूं हंस यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ तहां श्रुति ॥ प्राणःप्रजानामुदयत्येषसूर्यः ॥ अर्थयह ॥ संपूर्णप्रजाका बाह्यप्राणरूप यह
सूर्य उदयहोवैहै ॥१॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मादेव शुद्धहृदयविषे अथवा आकाशविषे स्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ता
आत्मादेवकूं शुचिषत् यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ और जैसे यालोकविषे पुरुषोंकूं सुवर्णादिरूपधन प्रियहोवे है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूप
आत्माभी याजीवोंकूं अत्यंतप्रियहै॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं वसु यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआ
त्मादेव अंतरहृदयआकाशविषेतो आत्मारूपकरिके स्थितहोवे है॥और बाह्यआकाशविषे सूर्यरूपकरिकेस्थितहोवे है ॥ याकारणतैं श्रुति

भगवतीताआत्मादेवकूं अंतरिक्षसत् यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यह आत्मादेव यज्ञकर्त्तायजमानकेप्रसन्नकरणेवासतैं तासंस्कृतयज्ञभू मिविषे ऋत्विकरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं होता यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ अथवा ॥ यहआत्मा देव भोक्तारूपआत्मअग्निविषे सर्वअन्नकूं हवनकरे है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं होता यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यज्ञकेवेदीसमान जो मध्यछिद्रवालाहृदयहै ॥ ताहृदयविषे अथवा सूर्यमंडलविषे यहआत्मादेवही स्थितहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं वेदिषत् यानामकरिकैकथनकरैहै॥और हेनचिकेता ॥यहआत्मादेवही सोमयागविषेसोमवल्लीकारसरूपकरिकै कलश विषेस्थितहोवैहै औरयहआत्मादेवही श्रेष्ठगृहस्थपुरुषोंकेगृहविषे अतिथिरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तहांजिसपुरुषकेकुलका तथागोत्रका ज्ञा ननहींहोवै तथा मध्याह्नादिककालविषेआवे ॥ तथा अन्नकेप्राप्तिकीइच्छावालाहोवै तापुरुषकानाम अतिथिहै॥ और जिनोंकेकुलगोत्रादिकों काज्ञानहोवै ॥ ऐसेजेआचार्यऋत्विकादिकब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकानामभी अतिथिहै ॥ और हेनचिकेता ॥ वाकादिकइंद्रियोंविषे प्रगटभई जेनानाप्रकारकीशक्तियां हैं॥तथानानाप्रकारकेसुखदुःखका जोभोक्तापणाहै॥तेनानाप्रकारकीशक्तियां तथा सोभोक्तापणा चैतन्यआत्मातैं विना याजडसंघातविषेसंभवैनहीं॥यातैं ताशक्तियोंकरिकै तथाभोक्तापणेकरिकै याशरीरविषे ताआत्मादेवकीस्थिति जानणेविषेआवैहै ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे पृथ्वीआदिक जलादिकोंकेआश्रितरहैहैं ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिआत्मादेव किसीकेआश्रितरहतानहीं ॥ किंतु यह आत्मादेव आपणेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपविषेहीस्थितहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ सभूमाकस्मिन्प्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि ॥ अर्थयह ॥ सोव्यापकआत्मा किसविषेस्थितहोवैहै याप्रकारकोशंकाकेहुए ॥ सोव्यापकआत्मा आपणेस्वप्रकाशमहिमाविषे स्थितहोवैहै याप्रकारकाउत्तर श्रुतिनैंकह्याहै ॥ हेनचिकेता ॥ सुखदुःखरूपफलकी अवश्यकरिकैप्राप्तिकरणेहारे जेपुण्यपापकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंविषेभी यहआत्मादेवही फलरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ और हेनचिकेता ॥ सूर्यमंडलकेअंतरस्थित जोसूक्ष्मसम ष्टिरूपहिरण्यगर्भहै ॥ ताहिरण्यगर्भके समष्टिबुद्धिकेअंतरस्थितजोआकाशहै ॥ तथा जीवोंके सूक्ष्मव्यष्टिबुद्धिके अंतरस्थितजो

मनन निदिध्यासन करिके आत्मासाक्षात्कारकूंप्राप्तहुआ सोनचिकेता कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तायमराजाकेउपदेशतैं संपूर्णब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोइके सोनचिकेता याजीवतअवस्थाविषेही अद्वितीय परब्रह्मकूं प्राप्तहोताभया ॥ कैसाहैसोअद्वितीयब्रह्म स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा परमआनंदस्वरूपहै ॥तथा सर्वजीवोंका आत्मारूपहै ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजाणिके सोनचिकेता संपूर्णदुःखशोकोंतैंरहितहोताभया तथा जन्ममरणतैंरहितहोताभया ॥ और प्रारब्धकर्मकी भोगतैंविना निवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं ताप्रारब्धकर्मोंकरिकैरक्षित जोविक्षेपरूपअविद्याकालेशहै ॥ ताअविद्याकेलेशकी जभी प्रारब्धकर्मकेभोगतैंअनंतर निवृत्तिभई ॥ तभी सोनचिकेता विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ जैसे सोनचिकेता आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइके जीवन्मुक्तिकूं तथाविदेहमुक्तिकूं प्राप्तहोताभया है ॥ तैसे इदानींकाल विषेभी जोकोईअधिकारीपुरुष ताआत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैगा ॥ सोअधिकारीपुरुषभी जीवन्मुक्तिकूं तथाविदेहमुक्तिकूं प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषों नैं अवश्यकरिकै ताआत्मसाक्षात्कारकूंसंपादनकरणा ॥ हे शिष्य ॥ यहजोहमनैं तुमारेप्रति यमराजानचिकेताकाआख्यान कथनकऱ्याहै ॥ सोयहआख्यान पूर्व कठनामाऋषि त्रैवर्णिकअधिकारी शिष्यों के प्रति कथनकरताभयाहै ॥ हेशिष्य जीवब्रह्मकेअभेदकूंबोधनकरणेहारो जोयहब्रह्मविद्याहै ॥सोयहब्रह्मविद्या पूर्व नचिकेतादिक महान्पुरुष यमराजादिकदेवतावों तैं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ यातैं यहब्रह्मविद्या अत्यंतदुर्लभहै ॥ याकारणतैंही याब्रह्मविद्याकेकथनकरणेहारेगुरुकूं तथाश्रवणकरणेहारेशिष्यकूं पूर्व यमराजानें आश्चर्यरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसोदुर्लभब्रह्मविद्याकेउपदेशकालविषे ताब्रह्मविद्याकेवक्तागुरुकूं अथवा ताब्रह्मविद्याकेश्रोताशिष्यकूं अथवा गुरुशिष्यदोनोंकूं इंद्रादिकदेवता नानाप्रकारकेविघ्नकरे हैं ॥ यह वार्ता पूर्वचतुर्थअध्यायविषे दध्यङ्ऋषिइंद्रकेसंवादविषे हमनैं विस्तारकरिकै तुमारेप्रति कथनकरीथी ॥ हेशिष्य ॥ जिसअधिकारीशिष्य कागुरु ब्रह्मविद्याविषे कुशलनहींहोवै है॥ तिसअधिकारीशिष्यकूंही ब्रह्मविद्याकोप्राप्तिविषे तेदेवता विघ्नकरे हैं॥ और जिसअधिकारीशिष्य कागुरु ब्रह्मविद्याकीसंप्रदायविषेकुशलहोवै है ॥ तिसअधिकारीशिष्यकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे तेदेवता विघ्नकरिसकैंनहीं ॥ यातैं याअधि

ब्रह्मलोकपर्यंन्त प्राप्तभई है ॥ याकारणतैंहीं सासुषुम्नानामानाडी ताब्रह्मलोककाद्वाररूपहै ॥ जिससुषुम्नानामानाडीद्वारा यहजीव ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तासुषुम्नानामानाडीकूंछोडिके दूसरीजोएकशतनाडियां हैं ॥ तिननाडियोंद्वारा याशरीरतैंबाहर निकस्याहुआयहजीवात्माआपणेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसारनानाप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा मैंयमराजाकेवशकूंप्राप्त होवै है ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषों नैं इसीजन्मविषे आत्मसाक्षात्कारकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ अब संपूर्णकठवल्ली उपनिषद्करिके निरूपणकर्‍याजोअर्थ है ताअर्थकूं संक्षेपतैंनिरूपणकरे हैं ॥ हेनाचिकेता ॥ अंतःकरणरूपउपाधिकेसंबंधतैं अंगुष्ठ मात्रपरिमाणवाला जोयहआत्मादेवहै ॥ सोआत्मादेव अविद्यारूपअंतरकंचुककरिकै तथा सूक्ष्मशरीररूपबाह्यकंचुककरिकै आवृ तहुआ यासर्वजीवोंकेहृदयविषे विराजमानहोवै है ॥ कैसाहैसोसूक्ष्मशरीर ॥ अनेकप्रकारकेदुःखोंकाकारणहै तथा तासूक्ष्मशरीरविषे स्थितजोचित्तहै ॥ सोचित्तलोहेकेशृंखलाकीन्याईं याजीवोंकेबंधनकाकारणहै ॥ ऐसेसूक्ष्मशरीरतैं तथाअविद्यातैं यहअधिकारीपुरुष ताआत्मादेवकूं विवेकयुक्तशुद्धमनकरिकै भिन्नकरे ॥ जैसे यालोकविषे बालक मुंजरूपबाह्यत्वचातैं इषीकारूपमध्यकेतृणकूं भिन्नकरै हैं ॥ इसप्रकार अविद्यासूक्ष्मशरीरादिक सर्वजडउपाधियोंतैं विचारकरिकैभिन्नकर्‍याहुआ यहआत्मादेव उपाधिकृतपरिच्छिन्नभावकापरि त्यागकरिके आपणेपरिपूर्णस्वरूपकूं प्राप्तहोवै है ॥ और हेनचिकेता ॥ अंतःकरणादिकउपाधियोंकरिकेयुक्तहुआ यहजीवात्मा मरणतैंअने तर जैसे मैंयमराजाकेपाशोंकरिकै बंधायमानहोवैहै ॥ तैसे अंतःकरणादिकउपाधियों तैं रहितहुआ यहशुद्धआत्मादेव मैंयमराजाकेपाशों करिकै बंधायमानहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता॥इसप्रकार स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनउपाधियोंतैंरहित तथाजन्ममरणादिकसर्वविकारों तैं रहि त जोस्वयंज्योतिपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकूंही तुमनैं आपणाआत्मारूपकरिकै निश्चयकरणा॥यहजीवब्रह्मकाअभेदहीं सर्ववेदांत शास्त्रकासिद्धांतहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति साधनोंसहित संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै मौनकूंधारणकरताभया ॥ और सोनचिकेताभी ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै संतोषकूंप्राप्तहोताभया ॥ और ताब्रह्मविद्याके श्रवण

कालोंविषे मनवाणीकाविषयरूपकरिकेप्रसिद्ध जितनेकीस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं॥तेसंपूर्णपदार्थ मायाविशिष्टपरमात्मास्वरूपहैं॥और मनवाणी काअविषय जोशुद्धचैतन्यहै॥सो सत्यरूपहीहै॥याप्रकारकेवचनोंकूंकथनकरणेहारे जेआस्तिकपुरुषहैं॥ तिनआस्तिकपुरुषों के मतकापरित्यागकरिके जेबहिर्मुखपुरुष वेदबाह्यनास्तिकों केमतविषेश्रद्धाकरे हैं ॥ तिन बहिर्मुखपुरुषोंकूं आत्माकेवास्तवस्वरूपकासाक्षात्कारहोवै नहीं॥यातैं आत्मसाक्षात्कारकीइच्छावालेपुरुषनैं तिननास्तिकों केमतकापरित्यागकरिके तिनआस्तिकपुरुषोंकेमतविषेहीश्रद्धाकरणी ॥ हेनचिकेता॥यद्यपि यहआत्मादेव सत्वरूपधर्मतैंरहितहै॥यातैं सत्‌शब्दकरिकेभी कथनकऱ्याजावैनहीं ॥ और यहआत्मादेव सर्वजगत्‌के व्यवहारकूंसिद्धकरै है॥यातैं असतशब्दकरिकेभी कथन कऱ्याजावैनहीं ॥ तथापि ताआत्मादेवकेदर्शनविषे शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं याप्रकार काक्रम कथनकऱ्याहै॥यहअधिकारीपुरुष प्रथमताआत्मादेवकूं जगत्‌कीकारणतारूप सत्वरूपकरिकेदेखै ॥तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष तिसीआत्मादेवकूं तत्वभावरूप शुद्धस्वरूपकरिकेदेखै ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष ताआत्मादेवकूं अस्तिरूपकरिके तथातत्वभावरूपकरिके देखैहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेअंतःकरणविषे ताअस्तिरूपआत्माका तत्वभावरूपशुद्धस्वरूप आविर्भावहोवै है ॥ हेनचिकेता॥निरतिशयप्रीतिका विषयहोणेतैं परमआनंदस्वरूप जोआत्मादेवहै ताआत्मादेवविषे अस्तिरूपताहीहै॥नास्तिरूपता कदाचित्‌भी नहीं है॥ यातैं ताआत्मादेवविषे जोअस्तिरूपताहै ॥ साअस्तिरूपता तातत्वभावतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु साअस्तिरूपता तत्वभावरूपही है ॥ हेनचिकेता ॥ जोआत्मादेव नास्तिरूपताकूंभी सिद्धकरैहै ॥ ताआत्मादेवकूं नास्तिरूपकहणा संभवैनहीं ॥और यहसंपूर्णदृश्यप्रपंच जडरूपहै ॥ यातैं तादृश्यप्रपंचकी स्वतःसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु ताद्रष्टाआत्माकेअनुग्रहतैंही ताजडप्रपंचकोसिद्धिहोवैहै ॥ ऐसासर्वप्रपंचकूंसत्तादेणेहारा यहअस्तिरूपआत्मादेव गौणअस्तिरूपताकरिके सिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु सोआत्मादेवही मुख्यअस्तिरूपहै ॥ ताआत्मादेवकेअस्तिरूपताकूंअंगीकारकरिकेही दूसरेअनात्मपदार्थ अस्तिरूपकरिकेप्रतीतहोवै हैं ॥ जैसे गुडकेमधुरताकूंअंगीकारकरिकेही चणकादिकअन्न मधुरप्रतीतहोवै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यालोकविषे जिसपुरुषका जैसावास्तवस्वरूपहोवै है ॥ तिसपुरुष कूं तिसी

५४

वास्तवस्वरूपकरिके जोपुरुष देखेहै तथा कथनकरेहै ॥ तिसपुरुषऊपर सोपुरुष प्रसन्नहोवैहै ॥ जैसे महाराजाकूं जो पुरुष महाराजारूपकरिकेदेखे है तथा कथनकरे है ॥ तिसपुरुषऊपर सोमहाराजा प्रसन्नहोवै है ॥ तथा तापुरुषकूं सोमहाराजा सुखकोप्राप्तिकरे है ॥ तैसे अस्तिरूपआत्मादेवकूं जोपुरुष अस्तिरूपकरिकेदेखे है ॥ तथा अस्तिरूपकरिकेकथनकरे है ॥ तिसपुरुषऊपर यहआत्मादेव प्रसन्न होवै है ॥ तथा ॥ तापुरुषकूं यहआत्मादेव मोक्षरूपनित्यसुखकोप्राप्तिकरे है ॥ और जैसे तामहाराजाकूं जो मूढपुरुषकूं महाराजारूप करिके नहीं देखे है ॥ तथा महाराजारूपकरिके नहींकथनकरे है ॥ किंतु तामहाराजाकूं भृत्यरूपकरिकेदेखे है ॥ तथा भृत्यरूपकरिके कथनकरे है ॥ तिसपुरुषऊपर सोमहाराजा प्रसन्नहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा सोमहाराजा क्रोधवान्होइके तामूढपुरुषकूं दुःखकोहोप्राप्ति करे है ॥ तैसे अस्तिरूप याआत्मादेवकूं जोमूढपुरुष अस्तिरूपकरिके नहींदेखे है ॥ तथा अस्ति रूपकरिके नहींकथनकरेहै ॥ किंतु याआत्मादेवकूं नास्तिरूपकरिकेदेखे है ॥ तथा नास्तिरूपकरिके कथनकरे है ॥ तिसमूढपुरुषऊपर यहआत्मादेव प्रसन्नहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा यहआत्मादेव ताविपरीतदर्शीपुरुषकूं जन्ममरणादिकदुःखोंकोहीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं सुखकेप्राप्तिकी इच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं याआत्मादेवकूंअस्तिरूपकरिकेही जानणा ॥ तथा अस्तिरूपकरिकेही कथनकरणा ॥ और हमअधिकारीजनों केप्रति शास्त्रवेत्ताविद्वान्पुरुषों नैं प्रथम आत्माकेअस्तिरूपकाउपदेशकरिके पश्चात् ताआत्माकेतत्त्वभावकाउपदेशकऱ्या है ॥ यातैं तातत्त्वभावरूपकरिकेदेख्याहुआ यहआत्मादेव हमअधिकारीजनोंऊपर अवश्यप्रसन्नहोवैगा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तातत्त्वभावरूपकरिके याआत्मादेवकेदर्शनतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं किसफलकोप्राप्तिहोवै है ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ याजीवकेहृदय विषेस्थितजेकामहैं ॥ तेसंपूर्णकाम जिसकालविषेनिवृत्तहोवै हैं ॥ तिस कालविषे यहजीव अमृतभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा इसीशरीरविषे ब्रह्मरूपनित्यसुखकूंअनुभवकरे है ॥ यहही तातत्त्वदर्शनकाफलहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेनिरूपणकरेहैं ॥ हेनचिकेता ॥ याजीवों केहृदयविषेस्थित जोइसलोककेविषयजन्यसुखोंकारागहै ॥ तथा स्वर्गादिकलोकों केविषयजन्यसुखोंकारागहै ॥ तिसरागकानाम काम

है ॥ ऐसेरागरूपकामोंकूं तत्वभावरूपकरिकेदेख्याहुआयहआत्मादेव आपणीसौंदर्यतातैंनाशकरे है ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे रूपयौवनअवस्थाकरिकेयुक्त कामिनी आपणीसौंदर्यतातैं कामीपुरुषों के अन्यस्त्रीविषेरागकूं नाशकरै है ॥ और जैसे अग्निविषेतपायाहुआ जोसुगंधिवालानवीनगौकाघृतहै ॥ सोगौकाघृत आपणीसौंदर्यताकरिके यापुरुषों के तैलविषेरागकूं नाशकरै है ॥ तैसे तत्वभावरूपकरिकेदेख्याहुआ यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योति आत्मादेवभी आपणीसौंदर्यतातैं याजीवों के विषयसुखविषेरागकूं शीघ्रही नाशकरै है ॥ हेनचिकेता ॥ याजीवोंका जोविषयजन्य सुखविषेरागरूपकामहै ॥ सोकामही याजीवोंकामरणहै ॥ और ताकामरूपमरणकूंअंगीकारकरिकेही याजीवोंकूं शास्त्रविषे मर्त्येयानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ तारागरूपकामकेनिवृत्तहुए यहजीव मर्त्यभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु जीवत अवस्थाविषेही सोपुरुष अमरभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता ॥ शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे विद्वान्पुरुष यास्थूलशरीरकेनाशकूं मरणकहैनहीं ॥ किंतु सर्वदुःखोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोयहरागरूपकामहै ॥ ताकामकूंही तेविद्वान्पुरुष मरणकहै हैं ॥ ताकामरूपमरणकेनिवृत्तहुएतैं अनंतर अमरभावकूंप्राप्तहुआयहपुरुष सर्वदुःखों तैंरहितजीवनकूं किसवासतेनहींप्राप्तहोवैगा ॥ किंतु ताजीवनकूं अवश्यप्राप्तहोवैगा ॥ और हेनचिकेता ॥ आनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारहुए यहअधिकारीपुरुष किसवासतेब्रह्मरूपनहींहोवैगा ॥ किंतु आत्मसाक्षात्कारकेहुए यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपअवश्यहोवै है॥और सोब्रह्म सर्वदुःखों तैंरहितहै ॥यातैं ताब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूं प्राप्तहुआयहजीवात्माभी सर्वदुःखोंतैंरहितहोवै है ॥ और हेनचिकेता ॥ याजीवतकालविषे याआनंदस्वरूपआत्माका जोसाक्षात्कारहै ॥ सोसाक्षात्कारही ताब्रह्मकीप्राप्तिहै ॥ और अन्यवस्तुकेज्ञानकरिके अन्यवस्तुकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव ताब्रह्मतैंभिन्ननहीं है॥ किंतु यहआत्मादेव ब्रह्मरूपही है ॥ और जोकदाचित् सोब्रह्म आत्मातैंभिन्नहोवैगा ॥ तौ एकमेवाद्वितीयंब्रह्म याश्रुतिविषे जोब्रह्मकीअद्वितीयरूपताकथनकरीहै ॥ सो असंगतहोवैगी ॥ यातैं सोब्रह्म आत्मारूपही है ॥ और हेनचिकेता ॥ भावअभावतैंरहित तथासर्वभेदतैं रहित ऐसाजोयहस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआनंदस्वरूपआत्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुषजभी याशरीरविषेसाक्षात्कारकरैहै

तभी याअधिकारीपुरुषकूं सोअद्वितीयब्रह्म प्राप्तनहींभयाहै याप्रकारकेवचनकहणेविषे कौनपुरुष समर्थहोवैगा ॥किंतु कोईभीआस्तिकपुरुष तावचनकेकहणेविषे समर्थनहींहोवैगा ॥ यातें यहअर्थ सिद्धभया॥याअधिकारीपुरुषकूं जभी आत्माकेसाक्षात्कारकरिके सर्वकामोंकी निवृत्तिहोवैहै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष इसोशरीरविषेब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा सर्वदुःखों तैं रहित अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेनचिकेता ॥ जिनअधिकारीपुरुषोंकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञान प्राप्तभयाहै ॥ तिनपुरुषोंके संपूर्णसंशय तथाविपर्यय नाशकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ याकारणतैं याअधिकारीपुरुषोंनैं ताआत्मज्ञानकूं अवश्यसंपादनकारणा ॥ अब तिनकुतर्करूप संशयविपर्ययोंकानिरूपणकरैहैं ॥ यालोकविषे कोईब्रह्महैनहीं ॥ काहेतें जोकोईब्रह्म सत्यहोता ॥ तौहमारेकूंप्रतीतहोता ॥ और हमारेकूं सोब्रह्मप्रतीतहोतानहीं ॥ यातें सोब्रह्म हैनहीं ॥ किंवा ॥ जोकदाचित् सोब्रह्म प्रसिद्धभीहोवै ॥ तौभी सर्वधर्मोंतैंरहितसोनिर्गुणब्रह्मरूप मैंकर्ताभोक्ताजीव किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु मैंब्रह्मरूप नहींहूं ॥ इसतैंआदिलेकेअनेक प्रकारके संशय विपर्यय याअज्ञानीजीवोंकेहृदयविषे उत्पन्नहोवै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ गुरुशास्त्रकेअनुग्रहतैं जिसक्षणविषे याअधिकारीपुरुषोंके तेसंशयविपर्ययरूपहृदयग्रंथियां नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसीक्षणविषे सोअधिकारीपुरुष ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिके प्राप्तहोवैहै ॥ जैसे जिसक्षणविषे सूर्यकाउदयहोवैहै॥ तिसीक्षणविषे अंधकारकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और याअधिकारीपुरुषों नैं गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकैभी यहजीवब्रह्मकाअभेदही जानणेयोग्यहै ॥ इसतैंपरेकोईवस्तु जानणेयोग्यनहीं है ॥ और हेनचिकेता ॥ याप्रकारकेविचारकरिके जिनपुरुषोंकूं आत्माकासाक्षात्कार नहींप्राप्तभयाहै ॥ तिनपुरुषोंकी दोप्रकारकीगति शास्त्रविषेकथनकरीहै ॥ तहां एकतो उपासनाकरिके ब्रह्मलोककीप्राप्ति ॥ और दूसरा कर्मोंकरिकैस्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्ति ॥ यह दोनोंप्रकारकीगति जिननाडीरूपद्वारोंकरिकैहोवैहै ॥ तिननाडीरूपद्वारोंकूं तूं श्रवणकर ॥ हेनचिकेता ॥ याहृदयरूपमूलतैं एकऊपरएकशत १०१ प्रधाननाडियां निकसे हैं ॥ तिनसर्वनाडियोंविषे एकसुषुम्नानामानाडीमूर्द्धद्वारकूंभेदनकरिके सूर्यमंडलद्वारा

इंद्रदेवता जोवर्षाकरैहै ॥ सोभी तापरमात्मादेवकीभयतैंहीकरैहै ॥ और यालोकविषे यहवायु जोचलायमानहोवैहै ॥ सोभी तापरमात्मा देवकीभयतैंही चलायमानहोवैहै ॥ और सूर्य अग्नि इंद्र वायु याचारोंकीअपेक्षाकरिके पंचमाजोमैंमृत्युहूं ॥ सोमैंमृत्यु जोजीवोंकेशरीरतैंप्राणोंकूंहरणकरताहूं सोभी तापरमात्मादेवकीभयतैंही करताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ सूर्य अग्नि इंद्र वायु यमराजा इत्यादिकमहान्देवता भी जभी तापरमात्मादेवतैं भयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तभी दूसरेजीव तापरमात्मादेवतैंभयकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषेक्याकहणाहै ॥ हेनचिकेता॥ ताभयकेनिवृत्तिकाउपाय एकआत्मज्ञानहीं है ॥ आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईउपाय ताभयकेनिवृत्तिकाहैनहीं ॥ यातैं जिसअधिकारी पुरुषकूं तामृत्युतैंभयहोताहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं इसीजन्मविषे ताआत्मसाक्षात्कारकूंसंपादनकरणा ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषे भीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ मृत्योर्बिभेषिकिंमूढ भीतंमुंचतिकिंयमः ॥ अजातंनैवगृह्णाति कुरुयत्नमजन्मनि ॥ अर्थयह ॥ हेमूढपुरुष तूं मृत्युतैंभय किसवासतैकरताहै ॥ भयकरणेहारेपुरुषकूं सोयमराजा क्याछोडिदेवैगा ॥ किंतु नहींछोडेगा ॥ काहेतैं याजगत्विषे जिसजीवकाजन्महोवैहै ॥ तिसजीवकूं सोयमराजा कदाचित्भीनहींछोडता ॥ और याजगत्विषे जिसजीवकाजन्मनहींहोवैहै ॥ तिसजीवकूं सोयमराजा ग्रहणकरतानहीं॥यातैं जोतुमारेकूं तामृत्युतैंभयहोताहोवै॥तौ तूं ऐसायत्नकरजिसकरिके तुमारेकूं पुनः जन्मकीप्राप्तिनहींहोवै॥१॥ हेनचिकेता ॥ याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकेभी जिनपुरुषोंकूं याशरीरकेमरणतैंपूर्व आत्माकासाक्षात्कार नहींप्राप्त भया ॥ तेअज्ञानीपुरुष आपणेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार भूमिआदिकसर्वशुभअशुभलोकोंविषे नानाप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैं है॥ कैसेहैंतेसर्वशरीर ॥ मृत्युकेभयकरिकेयुक्तहैं तथा अनेकप्रकारकेदुःखोंकरिकेयुक्तहैं ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे शुद्धदर्पणविषे यहमुख स्पष्टप्रतीतहोवै है ॥ तैसे विवेकादिकचतुष्टयसाधनसंपन्न याअधिकारीशरीरविषे अंतर्मुखशुद्धबुद्धिविषे यहआत्मादेव स्पष्टप्रतीतहोवै है॥ और जैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवोंकूं आपणेआत्माकास्वरूप स्पष्टप्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे स्वर्गलोकविषे रमणीकभोगों के आसक्तिवाली बुद्धिविषे यहआत्मादेव स्पष्टप्रतीतहोवैनहीं ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे वास्तवतैं कंपादिकधर्मोंतैंरहित जोमुखहै॥सोमुख कंपायमानजल

विषे कंपादिकविपरीतधर्मवालाहुआप्रतीतहोवे है ॥ तैसे गंधर्वलोकविषेभी भोगासक्तपुरुषोंकूं यहआत्मादेव विपरीतरूपकरिकेही प्रतीत होवे है ॥ इसप्रकार दूसरेलोकोंविषेभी यहआत्मादेव यथार्थरूपकरिके प्रतीतहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ तिनगंधर्वादिकलोकोंविषे रहणे हारेपुरुष विषयभोगोंविषे अत्यंतआसक्तहोवे हैं ॥ यातें तिनपुरुषोंकूं जोकदाचित् आत्माकाज्ञान होवैभीहै ॥ तोभी विषयासक्तिरूप प्रतिबंधककेवशतें सोज्ञान आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं विषयकरैनहीं ॥ याकारणतें ताज्ञानकरिके तिनपुरुषोंके अविद्याकीनिवृत्तिहोवैनहीं॥ यातें स्वर्गादिकलोकोंविषे आत्मज्ञानकेप्राप्तिकोइच्छाकरिके याअधिकारीपुरुषोंनें इहां पुरुषार्थ तैंरहितनहींहोणा ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे छाया तथाआतप यहदोनों भिन्नभिन्नहोइकेप्रतीतहोवे हैं ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषे यद्यपि याजीवोंकूं सोआत्मादेव देहादिकोतैंभिन्नरूप करिके स्पष्टप्रतीतहोवे है ॥ तथापि सोब्रह्मलोक बहुतकालपर्यन्त उपासनाकरिके याजीवोंकूं प्राप्तहोवे है ॥ याकारणतें सो ब्रह्मलोक अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातें ताब्रह्मलोकविषे आत्मज्ञानकेप्राप्तिकोइच्छाकरिके याअधिकारीपुरुषों नें इहां आत्मज्ञानकेयत्नकूं शिथिलनहींकरणा ॥ किंतु जिसपुरुषकूं मोक्षरूपसुखकीइच्छाहोवे ॥ तिसपुरुषनें याभारतखंडविषेगुरुशास्त्रादिकसाधनसंपन्न या अधिकारीमनुष्यशरीरविषेही आत्माकेसाक्षात्कारकूंसंपादनकरणा॥हेनचिकेता॥ताआत्मसाक्षात्कारकोप्राप्तिविषे दोप्रकारकेसाधनहोवे हैं तहां एकतो विचाररूपसांख्य साधनहै ॥ और दूसरा इंद्रियादिकोंकानिग्रहरूपयोग साधनहै ॥ तहां प्रथम तासांख्यसाधनकूं तूं श्रवण कर ॥ आकाशादिकपंचभूतों तैं भिन्नभिन्नकरिकेउत्पन्नभयेजे आपणेआपणेव्यापारसहित श्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं जोचैतन्य आपणेस्वरूपतैं तथापरस्पर भिन्नकरिकेजानै है सोबुद्धिकासाक्षीरूपचैतन्य याअधिकारीपुरुषोंकूं आपणाआत्मारूपकरिके जा नणेयोग्यहै ॥ और जे अधिकारीपुरुष ताचैतन्यरूपसाक्षीकूंही आपणाआत्मारूपकरिकेमाने हैं ॥ तथा सर्वदृश्यप्रपंचकूं ताआत्माविषे कल्पितमाने हैं ॥ ते अधिकारीपुरुषही सर्वशोकों तैंरहितहोवे हैं ॥ ते अधिकारीपुरुषही शास्त्रकेतात्पर्यजानणेहारेविद्वान्‌हैं ॥ और हेनचि केता ॥ पूर्वहमनें तुमारेप्रति जोआत्मादेव कारणतैंरहित अजरूपकरिकेकथनकन्याथा॥सोपरमात्मादेव श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियों तैं तथा

तिनोंकेज्ञानरूपव्यापारों तैं परे साक्षीरूपकरिकेस्थितहे ॥ तथा सोईहीआत्मादेव वाकादिकपंचकर्मइंद्रियों तैं तथा तिनोंकेक्रियारूपव्यापारोंतैं परे साक्षीरूपकरिकेस्थितहे ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं॥हेनचिकेता ॥विशेषरूपवालेश्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं सामान्यरूपवालामन परहे ॥ और तासविकल्परूपमनतैं निर्विकल्परूपबुद्धि परहे ॥ और तानिर्विकल्परूपव्यष्टिबुद्धितैं समष्टिबुद्धि परहे ॥ और तासमष्टिबुद्धितैं अव्याकृत परहे ॥ और ताअव्याकृततैं सर्वांतर्यामीपुरुष परहे ॥ कैसाहैसोअंतर्यामीपुरुष ॥ स्थूलप्रपंचरूपकार्यतैंरहितहे ॥ तथा सूक्ष्मप्रपंचरूपकारणतैंरहितहे ॥ और जिसपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपजानिके यहअधिकारीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तथा अमृतभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यापरमात्मादेवविषे कार्यसहितअविद्याकीनाशरूपताहे ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष यापरमात्मादेवकूं मोक्षरूपकहे हैं॥और यापरमात्मादेवविषे भासमानआनंदरूपताहे॥ याकारणतैंशास्त्रवेत्तापुरुष यापरमात्मादेवकूं अमृतरूपकहे हैं ॥ हेनचिकेता॥यद्यपि मोक्षशब्दकाअर्थ तथाअमृतशब्दकाअर्थ यहदोनोंपरस्पर अभिन्नहैं॥तथापि कार्यसहितअविद्याके नाशरूपनिमित्तकूं अंगीकारकरिके तथापरमानंदतारूपनिमित्तकूं अंगीकारकरिके तेविद्वान्पुरुष तामोक्षअमृतदोनोंका किंचित्कल्पित भेद अंगीकारकरे हैं॥इतनैंकरिके विचाररूपसांख्यउपायका वर्णनकऱ्या॥अब इंद्रियादिकोंकेनिरोधरूप योगसाधनकानिरूपणकरे हैं ॥ हे नचिकेता ॥ यास्वयंज्योतिआत्मादेवकास्वरूप नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानविषे विषयभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं याआनंदस्वरूप आत्मादेवकूं कोईभीपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकेदेखिसकैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपदार्थ रूपस्पर्शादिकगुणोंवालाहोवै है ॥ तापदार्थकूंही यहनेत्रादिकइंद्रिय ग्रहणकरैहैं रूपादिकगुणों तैं रहितपदार्थकूं यहनेत्रादिक इंद्रिय ग्रहणकरैंनहीं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा भी रूपस्पर्शादिकगुणोंतैंरहित निर्गुणस्वरूपहे ॥ यातैं यानिर्गुणआत्मादेवकूं तेनेत्रादिकइंद्रिय ग्रहण करिसकैनहीं ॥ यहवार्ता पूर्वहम नैं तुमारेप्रति कथनकरीहे ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तिननेत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधरूपयोगकरिके तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूप करिके साक्षात्कारकरे ॥ कैसाहेसोयोग॥ संकल्पसहितमनकूंवशकरणेहारी जोअंतर्मुखशुद्धबुद्धिहे ॥ ताशुद्धबुद्धिकरिके याआनंदस्वरूप

आत्माविषे किंचित्मात्रभी दृश्यपदार्थका नसंकल्पकरिके जायोगकीउत्पत्तिहोवे है ॥ ऐसे योगरूपउपायकरिके जेअधिकारीपुरुष ताआ नंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरेहैं॥तेअधिकारीपुरुषही अमृतभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥हेनचिकेता॥जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषों के श्रो त्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथामनबुद्धि आपणेचंचलताकूंछोडिके निश्चल भावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥तिसकालविषे तिनों केनिश्चलताकूं विद्वान्पुरुष परमगति यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ मनबुद्धि इंद्रियोंकी जोनिरंतरएकाग्रताहै॥ ताएकाग्रतारूपअवस्थाकीप्राप्तिकेसमान कोईदूसरीअधिकगतिनहीं है ॥ किंतु ताएकाग्रतारूपअवस्थाकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं स्वयंज्योतिआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ जिस आत्मसाक्षात्कारकरिके यहअधिकारीपुरुष किंचित्मात्रभीसंसारदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतें सामनबुद्धिइंद्रियोंकीएकाग्रताही पर मगतिरूपहै ॥ हेनचिकेता ॥ नानाप्रकारकेविघ्नोंकरिकेभी नहींचलायमानभई जोमनबुद्धिइंद्रियोंकीएकाग्रतारूपधारणाहै ॥ ताधारणाकूं विवेकीपुरुष योग यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और सोयोगही ब्रह्मभावकीप्राप्तिद्वारा याजगत्केउत्पत्तिसंहारकरणेकीसामर्थ्यरूप ऐश्वर्य केप्राप्तिकाकारणहै ॥ यातें तायोगकेप्राप्तिवास्तें तूं प्रमादतेंरहितहोइके सावधानहो ॥ और हेनचिकेता ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जोजीवब्रह्मकाअभेद ज्ञानरूपयोगहै ॥ सोयोग ताइंद्रियोंकीएकाग्रतारूपधारणातेंविनाहोवैनहीं॥तथा कामसंकल्पादिकचित्तकेवृत्तियोंकी उत्पत्तिरूपप्रमादकेविद्यमानहुएभी सोयोग प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें जोअधिकारीपुरुष तिनमनबुद्धिसहितइंद्रियोंकेनिरोधकरिके तथाप्रमाद तेंरहितहोइके ताअभेदज्ञानरूपयोगकूंप्राप्तहोवैहै॥ सोअधिकारीपुरुष परमेश्वरकीन्याई याजगत्केउत्पत्तिसंहारकरणेविषेभीसमर्थहोवैहै ॥ हेनचिकेता ॥ तायोगरूपउपायतेंविना यहआत्मादेव मनवाणीकरिके तथा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिके प्राप्तहोइसकेनहीं ॥ किंतु ताएकयो गरूपउपायकरिकेही यहआत्मादेव प्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा जैसे तायोगरूपउपायकरिके प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे श्रद्धारूपउपायकरिकेभी यहआत्मादेव प्राप्तहोवैहै ॥ तहां वेदबाह्यनास्तिकोंकेविकल्पोंकापरित्यागकरिके सद्गुरुशास्त्रकेउपदेशविषे विश्वासराखिके जोआनंदस्वरूपआत्माकेसत्ताका निश्चयकरणाहै याकानाम श्रद्धाहै ॥ हेनचिकेता ॥ भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीन

तरही प्रतीतहोवैहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोपदार्थ अप्रकाशमानहोवैहे ॥ सोपदार्थही आपणेप्रकाशवासते दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरे
हे ॥ जैसे घटादिकपदार्थ अप्रकाशमानहैं ॥ यातैं तेघटादिक आपणेप्रकाशवासते सूर्यादिकप्रकाशोंकोअपेक्षाकरे हैं ॥ और यहसूर्या
दिकतेजतो आपहीप्रकाशरूपहे ॥ यातैं तिनसूर्यादिकतेजोंकूं दूसरेकिसीप्रकाशकोअपेक्षासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ एक
प्रकाशकूं दूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींहोवैहे ॥ याप्रकारकानियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे तेजरूपजोचक्षुइंद्रियहे ॥ सोचक्षुइंद्रिय
सूर्यरूपतेजकीअपेक्षाकरिकेही घटादिकपदार्थोंकूंप्रकाशकरैहे ॥ तैसे यहसूर्यादिकतेजभी तास्वयंज्योतिआत्माकीअपेक्षाकरिकेही पदा
र्थोंकूंप्रकाशकरै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जडतेजरूपकरिके सूर्यकेसमानजातिवालाजोचक्षुइंद्रियहे ॥ सोचक्षुइंद्रियभी जभी घटादिकपदार्थों
केप्रकाशकरणे वासते सूर्यादिरूपजडतेजकोअपेक्षाकरे हे ॥ तभी जडरूपकरिके चेतन्यआत्मातैंविलक्षण जेसूर्यादिकतेजहैं ॥ तेसूर्या
दिकजडतेज आपणेव्यवहारकीसिद्धिवासते चेतन्यरूपप्रकाशकीअपेक्षाकरैहैं याकेविषेक्याकहणाहे ॥ इतनेंकरिके ताअद्वितीयआत्मारू
पब्रह्म विषे स्वयंज्योतिरूपता निरूपणकरी ॥ अब तिसीस्वयंज्योतिब्रह्मकूं यासंसारका मूलकारणरूपकरिके वर्णनकरे हैं ॥ हेनचिके
ता जोसंसाररूप यहस्थूलशरीर पूर्वहमनें तुमारेप्रति एकादशद्वारवालापुररूपकरिकेवर्णनकऱ्याथा ॥ तिसीस्थूलशरीरकूं कोईकवेदवे
त्तामहात्मापुरुष अश्वत्थवृक्षरूपकरिकेवर्णनकरैहैं ॥ हेनचिकेता ॥ पूर्वहमनें तुमारेप्रति जोब्रह्म जगत्‌काकारणरूपकरिके तथा स्वयं
ज्योतिआनंदस्वरूपकरिके तथामोक्षरूपकरिके वर्णनकऱ्याथा ॥ सोईहीब्रह्म याशरीररूपअश्वत्थवृक्षका मूलरूपहे ॥ हेनचिकेता ॥ जो
वस्तु दूसरेदिनविषेस्थितनहींहोवे तावस्तुकानाम अश्वत्थहे ॥ सोयाप्रकारका अश्वत्थशब्दकाअर्थ याशरीरविषेभीघटैहे ॥ काहेतैं या
शरीरके एकक्षणपर्यंतस्थितिविषेभी बुद्धिमान्पुरुषोंकूं विश्वासहोवैनहीं ॥ तो दूसरेदिनपर्यंत यहशरीर स्थिररहेगा याकेविषे तिनबुद्धि
मानपुरुषोंकूं किसप्रकार विश्वासहोवैगा ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती यास्थूलशरीरकूं अश्वत्थ यानामकरिके कथनकरे हैं ॥ हेनचिके
ता ॥ याशरीररूपवृक्षकामूलरूप जोकारणब्रह्महे ॥ ताकारणब्रह्मरूपमूलकोअपेक्षाकरिके याशरीररूपअश्वत्थवृक्षकीशाखा नीचेहोवैहैं ॥

तहां पुण्यपापकर्मरूपस्कंधोंतैं उत्पन्नभयेजेनानायोनियोंकेशरीरहैं ॥ तथा नेत्रादिकइंद्रियोंकेसाहित जे सूक्ष्मशरीरहैं ॥ यहसंपूर्ण ताशरीररूपअश्वत्थवृक्षकीशाखारूपहैं ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे यहलोकप्रसिद्धवटादिकवृक्ष यद्यपि स्वरूपतैंअनित्यहैं ॥ तथापि तिनवटादिकोंकेबीजतैंअंकुरहोवैहे ॥ और ताअंकुरतैंपुनःबीजहोवैहे ॥ ताबीजतैंपुनःअंकुरहोवैहे ॥ याप्रकार बीजअंकुरोंकेप्रवाहरूपकरिके तेवटादिकवृक्ष नित्यरूपहैं ॥ तैसे यहशरीररूपअश्वत्थवृक्षभी यद्यपि स्वरूपतैंअनित्यहीहे ॥ तथापि ताशरीरतैं पुण्यपापकर्मोंकीउत्पत्ति और तापुण्यपापकर्मोंतैं पुनःशरीरकीउत्पत्ति याप्रकारकेप्रवाहरूपकरिके यहशरीररूपअश्वत्थवृक्ष नित्यरूपही हे ॥ हेनचिकेता ॥ याशरीररूपअश्वत्थवृक्षका जोब्रह्मरूपमूलहे ॥ तिसीब्रह्मविषे यहसंपूर्णलोक स्थितहोवैहे ॥ और तिसीब्रह्मकूं कोईपुरुष उल्लंघनकरिसके नहीं ॥ ऐसेअधिष्ठानरूपब्रह्मकेज्ञानतैंही याशरीररूपअश्वत्थवृक्षकानाशहोवैहे ॥ और जोपूर्वतुमनैं धर्मअधर्मतैंरहितवस्तुपूछाथा॥ सोभी यहआनंदस्वरूपब्रह्महीं हे ॥ और हेनचिकेता ॥ यहसंपूर्णजगत् जिसकारणरूपपरमात्माविषेस्थितहोइके आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्त्तहोवैहे ॥ और जिसपरमात्मादेवतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहे ॥ सोईहीपरमात्मादेव मृत्युरूपहोइके यासर्वजगत्कासंहारकरैहे ॥ याकारणतैं इंद्रकेवज्रकीन्याई सोपरमात्मादेवही संपूर्णदेहाभिमानी जीवोंकेभयकाकारणहे ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिके साक्षातकारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेनचिकेता ॥ तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूप जाणिकरिके यहअधिकारीपुरुष अमृताभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकहणेका यहअभिप्रायहे ॥ जैसे यहअग्नि यद्यपि आपणेतैंभिन्नकाष्ठादिकपदार्थोंकूं दग्धकरैहे ॥ तथापि सोअग्नि आपणेकूंदग्धकरैनहीं ॥ तैसे सोपरमात्मादेव यद्यपि मृत्युरूपहोइके सर्वजगत्कूंनाशकरैहे ॥ तथापि आपणाआत्मारूप जेब्रह्मवेत्तापुरुषहे ॥ तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं सोपरमात्मादेव नाशकरैनहीं ॥ याकारणतैं तेब्रह्मवेत्तापुरुष अमृतरूपहैं ॥ अब तापरमात्मादेवविषे सर्वलोकोंकेभयकोकारणता निरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ॥ यातीनलोकोंविषे यहसूर्यभगवान् तथा अग्नि जोप्रकाशकरैहैं ॥ तथा तपतकरैहैं ॥ सोभी तापरमात्मादेवकीभयतैंहीकरैहैं ॥ और यालोकविषे

ग्रस्तहीहोवैहे ॥ ऐसेजन्ममरणादिकविकारोंवालेसुखविषे सामान्यतैं सुखरूपताही संभवैनहीं ॥ जभी ताजन्मादिकविकारवालेसुखविषे
सामान्यतैंसुखरूपताही नहींसिद्धभई ॥ तभी ताविषयजन्यसुखविषे परमसुखरूपता किसप्रकारसंभवैगी ॥ यातैं सोविषयजन्यपरिच्छिन्न
सुख केवलदुःखरूपही है ॥ किंवा ॥ ताविषयजन्यसुखविषे जोलोकोंकूं सुखबुद्धिहोवैहे ॥ साबुद्धि भ्रांतिरूपही है ॥ काहेतैंजोवस्तु आ
दिकालविषे तथाअंतकालविषे दुःखरूपहोवैहे॥ सोवस्तु मध्यकालविषे सुखरूप किसप्रकारहोवैगा॥ किंतु सोवस्तु मध्यकालविषेभीदुःख
रूपहीहोवैहे ॥ तैसे यहविषयजन्यसुखभी जिसकालविषे यापुरुषोंकूं नहींप्राप्तहोवै है तिसकालविषे तिनपुरुषोंकूं इच्छाकीउत्पत्तिद्वारा
दुःखकोप्राप्तिकरैहैं और जिसकालविषे यहविषयजन्यसुख नाशकूंप्राप्तहोवैहै तिसकालविषे तेविषयजन्यसुख आपणेवियोगकरिके तिनपु
रुषोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरे हैं इसप्रकार आदिअंतकालविषे दुःखरूपहोणेतैं यहविषयजन्यसुख वर्तमानकालविषेभी दुःखरूपही है ॥ परंतु
जैसे वातरोगवालेपुरुष दुःखरूपमुष्टिकादिकोंकेप्रहारकूंभी सुखरूपकरिकेमाने हैं तैसे विषयासक्तमूढपुरुषभी तादुःखरूपविषयजन्यसुख
कूं सुखरूपकरिकेमाने हैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोवस्तु पूर्वउक्तकारकादिकोंकोअपेक्षातैंविनाही विद्यमानहोवै है ॥ सोवस्तुही परम
सुखरूपहोवै है ॥ सोऐसावस्तु यहआनंदस्वरूपआत्माहीहे ॥ यातैं यहआनंदस्वरूपआत्माही परमसुखरूपहे ॥ तिसतैंभिन्न यहसंपूर्णअ
नात्मपदार्थ दुःखरूपहीहे ॥ ऐसाजोआत्मारूपपरमसुखहे ॥ सो स्वप्रकाशचैतन्यरूपहीहे ॥ और जोस्वप्रकाशरूपचैतन्यहे ॥ सोपरमसु
खरूपहीहे ॥ इसप्रकार जभी तासुखप्रकाशका परस्पर अभेदसिद्धहोवै है ॥ तभीही सोआत्मास्वरूपपरमसुख याजीवोंकूं सर्वदाप्रतीतहो
वै है ॥ चैतन्यरूपप्रकाशकेसंबंधतैंविना तासुखकीसर्वदाप्रतीतिसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ सोआत्मारूपपरमसुख जो कदाचित् जीवोंकूंनहींप्र
तीतहोताहो वे ॥ तौ आपणेआत्माविषे सर्वजीवोंकी निरतिशयप्रीति नहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वजीवोंकी आपणेआत्माविषे निरतिशय
प्रीति देखणेमेंआवै है ॥ यातैं यहजान्याजावैहे ॥ सोआत्मारूपसुख यासर्वजीवोंकूं प्रतीतहोवै है ॥ किंवा ॥ विषयकीप्राप्तिकालविषे मेरेकूं
सुखप्रतीतहो वै है याप्रकारकेजेज्ञान लोकोंकूंहोवै हैं ॥ तिनज्ञानोंविषे अन्यवस्तुमेंअन्यवस्तुकाआरोपणरूपअध्यासही वर्त्तमानहे ॥ तात्प

र्थयह ॥ विषयकेसंबंधतैं उत्पन्नभईजोअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ तावृत्तिविषे आत्मास्वरूपसुखका आरोपणकरिकैही तेमूढलोक मेरेकूं याविषयतैंसुखप्राप्तहोवै है याप्रकारकाकथनकरैं हैं ॥ जैसे कामीपुरुषोंकूं स्त्रीकोप्राप्तिकालविषेताकेइच्छाकोनिवृत्तिकरिकै अभिव्यक्तभयाजोस्वरूपसुखहै ॥ तासुखकूं निंदितस्त्रीकेशरीरविषेआरोपणकरिकै तेकामीपुरुष तास्त्रीकूंसुखरूपकहैंहैं ॥ तहां सोआत्मारूपसुख जोकदाचित् याजीवोंकूं नहीं प्रतीतहोताहोवै ॥ तौ तासुखकाअन्यपदार्थोंविषेआरोपण नहींहोणाचाहिये ॥ और तासुखका अन्यपदार्थोंविषेआरोपण देखीताहै ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ सोआत्मास्वरूपसुख सर्व जीवोंकूं सर्वकालविषेप्रतीतहोवै है ॥ और जिसकालविषे याजीवोंकूं अत्यंतदुःखहोवै है ॥ तिसकालविषेभी तेजीव किसीसुखकूंआश्रयणकरिकैही जीवै हैं ॥ सुखतैंविना किसीभीप्राणीका जीवनहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ जेविरक्तमहात्मापुरुष इसप्रकार वारंवार विचारकरैंहैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकूं सोमनवाणीकाअविषयरूपपरमसुख करामलककीन्याई स्पष्टप्रतीतहोवै है ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे यालोकविषे सूर्यभगवान्केउदयहुए रात्रि निवृत्तहोइजावैहै ॥ तैसे अज्ञानंदरूप सूर्यकाहैउदयजिसविषे ऐसीजाब्रह्माकारवृत्तिहै ॥ ताब्रह्माकारवृत्तिकेउत्पन्नहुए यहसंसारदुःखरूपरात्रि निवृत्तहोइजावै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सूर्यभगवान् उदयाचलपर्वतऊपर आरूढहोइके रात्रिरूपअंधकारकोनिवृत्तिकरैंहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूप स्वयंज्योतिआत्मारूप सूर्यभी अंतःकरणकीवृत्तिरूपउदयाचलपर्वतऊपरआरूढहोइके मायारूपअंधकारकानाशकरै है ॥ हेनचिकेता ॥ ऐसेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं सूर्य चंद्रमा तारागण विद्युत् अग्नि इत्यादिकतेज प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ किंतु उलटा सोस्वयंज्योतिआत्मादेवही तिनसूर्यादिकोंकूंप्रकाशकरैंहै ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे स्वभावतैंअप्रकाशरूप लोहकापिंड प्रकाशमानअग्निकूंआश्रयणकरिकै पश्चात् प्रकाशमानहोवै है ॥ तैसे यहजडचेतनरूपजगत्भीताप्रकाशरूपआत्माकूंआश्रयणकरिकैही पश्चात् प्रकाशमानहोवै है ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे स्वभावतैंप्रकाशशक्तितैंरहित जे तैलवतीआदिकपदार्थ हैं ॥ ते तैलवतीआदिकपदार्थ दीपशिखाकेप्रकाशतैंअनंतरही प्रतीतहोवै हैं ॥ तैसे स्वभावतैंप्रकाशशक्तितैंरहित जितनाकीबुद्धिआदिकजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत्भी स्वयंज्योतिआत्माकेप्रकाशतैंअनं

श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेलयहुएभी सोआत्मादेव लयभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोआत्मादेव सर्वअवस्थावोंविषे साक्षीरूपकरिकेजागेहै ॥ हेनचिकेता॥इसप्रकार स्वप्रकाद्रष्टारूपकरिकै जोआत्माकास्वरूपहमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै॥सोईहीआत्माकास्वरूप चेतनरूपहोणे ते शुद्धस्वरूपहै॥तथा सोईहीआत्माकास्वरूप अद्वितीयब्रह्मस्वरूपहै ॥तथा मोक्षरूपहै॥हेनचिकेता भूरादिक जेचतुर्दशलोकहैं ॥तथा तिनलोकोंविषे स्थित जे जरायुज, अंडज, स्वेदज, उद्भिज्ज, यहचारिप्रकारकेशरीरहैं॥तेसंपूर्ण याआत्मादेवकेहीआश्रितहैं॥यातैं सर्वकाआधारहोणे तैं याआत्मादेवकूं ब्रह्मरूपतासंभवैहै ॥और हेनचिकेता॥यासंसाररूपसमुद्रके पारकेप्राप्तिकीइच्छावाले जेमुमुक्षुजनहैं ॥ तेमुमुक्षुजन ताआत्माकेस्वरूपकूं उल्लंघनकरिकेजावैनहीं ॥ किंतु तेमुमुक्षुजन यासंसाररूपसमुद्रकेपाररूप ताआत्मादेवकूंही प्राप्तहोवै हैं ॥ काहेतैं याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ मोक्षस्वरूपहैनहीं ॥ किंतु सोआनंदस्वरूपआत्माही मोक्षरूपहै ॥ अब इसीआत्माकेस्वरूपका विस्तारकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यहएकहीआत्मादेव संपूर्णस्थूलशरीरोंविषेस्थितहै ॥ तथा संपूर्णसूक्ष्मशरीरोंविषेस्थितहै॥तथा सर्वदेहधारीजीवोंकाआत्मास्वरूपहै॥हेनचिकेता॥जैसे यहअग्नि वास्तवतैंतेजरूपकारिके यद्यपिकाष्ठोंतैंविलक्षणहै॥ तथापि तिनस्थूलकाष्ठोंविषेस्थितहुआ सोअग्नि तिसतिसकाष्ठकेसमानरूपवालाहोवैहै ॥तैसे यहआत्मादेव यद्यपिवास्तवतैं सर्वस्थूलशरीरों तैं विलक्षणहै ॥ तथापि देव मनुष्य असुर आदिकोंकेस्थूलशरीरोंविषेस्थितहोइके यहआत्मादेव तिसतिसशरीरकेसमानरूपवालाहोवैहै ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे सूक्ष्मसमष्टिरूपवायु व्यष्टिसूक्ष्मशरीरोंविषेस्थितहोइके तिसतिससूक्ष्मशरीररूपहोइके यद्यपि प्रतीतहोवै है॥तथापि सोसमष्टिरूपवायु ताव्यष्टिसूक्ष्मशरीरोंतैं विलक्षणरूपकारिकेस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेवभी सूक्ष्मशरीरोंविषेस्थितहोइके यद्यपि तिसतिसशरीरकेसमानआकारवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥तथापि सोआत्मादेव वास्तवतैं सत्‌चित्‌आनंदरूपहोणेतैं तिनसूक्ष्मशरीरों ते विलक्षणही है ॥और हेनचिकेता ॥ जैसे यहसूर्यभगवान् सर्वजीवोंकेनेत्रइंद्रियोंकादेवताहै ॥ यातैं सोसूर्यभगवान् देवतारूपकारिके सर्वजीवोंकेनेत्रइंद्रियोंविषेस्थितहुआभी तिननेत्रइंद्रियोंकेअंधत्वादिकदोषोंकारिके तथा स्वच्छतादिकगुणोंकारिके लिपायमानहोवैनहीं ॥ तैसेयह

आत्मादेवभी साक्षीरूपकरिके यास्थूलसूक्ष्मशरीरोंविषे विद्यमानहुआभीतिनशरीरोंकेगुणदोषोंकरिके लिपायमानहोवैनहीं ॥ और हेन
चिकेता ॥ जैसे बाह्यआकाशविषेस्थितहुआ यहसूर्यभगवान् दोषवालेसर्वपदार्थोंतैं भिन्नहोइकेप्रतीतहोवैहे ॥ तैसे याहृदयआकाशविषे सा
क्षीरूपकरिकेस्थितहुआ यहआत्मादेवभी शास्त्रदृष्टिकरिके यास्थूलसूक्ष्मशरीरोंतैं भिन्नहोइकेप्रतीतहोवैहे ॥तथा तिनस्थूलसूक्ष्मशरीरोंके
धर्मोंकरिकेभी लिपायमानहोवैनहीं ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे तिसतिसदेशविषेरहणेहारे जेदेहधारीजीवहैं ॥ तिनजीवोंकूं आ
पणेआपणेनेत्रोंकेभेदकरिके तथातिसतिसदेशकेभेदकरिके एकहीसूर्य अनेकप्रकारकाप्रतीतहोवैहे ॥ परंतु ताएकसूर्यविषे जोनाना
पणेकाज्ञानहोवैहे ॥ सोज्ञान मिथ्यारूपहे ॥ तैसे एकहीयहस्वयंज्योतिआत्मा शरीरादिकउपाधियोंकरिके नानाप्रकारकाप्रतीत
होवैहे ॥ परंतु ताएकअद्वितीयआत्माविषे जोनानापणेकाज्ञानहे ॥ सोज्ञान मिथ्यारूपहे ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे एकसूर्यविषे नाना
पणेकूंविषयकरणेहारे जेमिथ्याज्ञानहैं ॥ तिनमिथ्याज्ञानोंकरिके ताएकसूर्यविषे भेदकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे एकहीआत्माविषे
नानापणेकूंविषयकरणेहारे जेज्ञानहैं ॥ तिनमिथ्याज्ञानोंकरिके ताअद्वितीयआत्माविषे भेदकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे वास्त
वतैं नानापणेतैंरहित सूर्यभगवान्विषे जोमूढबुद्धिपुरुष नानापणेकूंदेखेहे ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष लोकोंकेउपहासजन्यअनेकदुःखोंकूं
प्राप्तहोवैहे ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वभेदतैंरहित याआनंदस्वरूपआत्माविषे जोमूढबुद्धिपुरुष भेदकूंदेखेहे ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष वारंवार
जन्ममरणादिकदुःखोंकूं प्राप्तहोवैहे ॥ हेनचिकेता ॥ ऐसाअद्वितीयआत्मादेवयद्यपि वास्तवतैं मायातैंरहितहे ॥ तथापि सोस्वतंत्रआत्मा
देव आपणीमायाशक्तिकरिके एकहीआपणेस्वरूपकूं बहुतप्रकारकाकरेहे ॥ ऐसे हृदयदेशविषेस्थित अद्वितीयआत्माकूं जेब्रह्मचर्यादिकसा
धनसंपन्नअधिकारीजन गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरेहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूंही मोक्षरूपनित्यसुखकीप्राप्तिहोवैहे ॥ और जेपु
रुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताआत्मादेवकूंनहींजानैहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंतो जन्ममरणरूपदुःखकीप्राप्तिहोवे हे ॥ हेनचिकेता ॥
यालोकविषे नित्यरूपकरिकेप्रसिद्ध जेकालआकाशादिकहैं ॥ तिनकालादिकोंविषेभी यहआत्मादेव आपणीसत्तादेकरिके नित्यता

सिद्धकरे हैं ॥ यातैं यहआत्मादेव नित्यपदार्थोंकाभी नित्यस्वरूपहे ॥ और यालोकविषे चेतन्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेनेत्रादिकइंद्रिय हैं ॥ तथा तिनइंद्रियों तैं उत्पन्नभई जेअंतःकरणकीवृत्तियां हैं ॥ तिनोंविषे आपणेचिदाभासकीप्राप्तिकरिकेयहआत्मादेवही चेतनता कोसिद्धिकरे हे ॥ यातैं यहआत्मादेव चेतनपदार्थोंकाभी चेतनस्वरूपहे ॥ हेनचिकेता ॥ जिसपरमात्मादेवकूंसाक्षात्कारकरिके यहअधि कारीजन नित्यसुखकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और जोएकहीपरमात्मादेव सर्वजीवोंकूं मनवांछितपदार्थोंकोप्राप्तिकरे हे ॥ तथा सर्वदुःखोंकोनिवृ त्तिकरे हे॥तिसपरमात्मादेवका यह हीस्वरूपहे॥जोसर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थित स्वयंज्योतिचेतनहे ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहे ॥ हेनचिकेता ऐसेअद्वितीयआत्मादेवका स्वरूपभूत जोनित्यसुखहे ॥ सोआत्मारूपनित्यसुख यद्यपि मनवाणीकाअविषयहे तथापि जेमहा त्माविद्वान्पुरुष आपणेअनुभवविषे प्रीतिवालेहैं ॥ तेमहात्मापुरुष ताआत्मरूपसुखकूं अपरोक्षरूपकरिकेजाने हैं॥ अब ताआत्मारूप नित्यसुखविषे वाणीकीअविषयता बोधनकरणेवासते प्रथम विषयजन्यसुखविषेभी वाणीकीअविषयता कथनकरेहैं ॥ हेनचिकेता ॥ या देहधारीजीवोंविषे मिष्टअन्नकेभोजनादिकोंकरिके उत्पन्नभयाजोसुखहे ॥ ताविषयजन्यसुखकूंभी कोईपुरुष साक्षात्वाणीकरिकेकहिसक्ता नहीं ॥ और जोकदाचित् तेलौकिकपुरुष ताविषयजन्यसुखका कथनभीकरेहैं ॥ तोभी हमारेकूंसुखप्राप्तभयाहे याप्रकारसामान्यरूपतैं तासुखकाकथनकरेहैं ॥ परंतु इसप्रकारका हमारेकूंसुखभयाहे याप्रकार विशेषरूपकरिके तासुखकेकहणेविषे कोईभी पुरुष समर्थहोवै नहीं॥किंतु तेलौकिकपुरुष ताविषयजन्यसुखकेस्वरूपविषे किसीपदार्थकीसादृश्यता आरोपणकरिकेही ताविषयजन्यसुखकाकथनकरेहैं परंतु ताविषयजन्यसुखकूं कोईपुरुष साक्षात्कहिसक्तानहीं ॥ यातैं यालोकविषे जितनाकोविषयजन्यसुखहे ॥ सोसंपूर्णसुख वाणीकरिके कह्याजावैनहीं॥किंतु सोसुखआपणेअनुभवकरिकेही जान्याजावैहे॥हेनचिकेता॥जभी लौकिक विषयजन्यसुखभी वाणीकरिके नहींकह्या जावैहे॥तभी मनुष्य मनुष्यगंधर्व देवगंधर्व पितर आजानजदेव कर्मजदेव इंद्रबृहस्पति विराट्हिरण्यगर्भ इनसंपूर्णोंविषे पूर्वपूर्वकीअपेक्षाक रिके उत्तरउत्तर शतगुणअधिकआनंदहोवैहे तिनसंपूर्णोंविषे जोहिरण्यगर्भकूंविषयजन्यसुखहोवैहे॥तासुखतैंअधिकसुख किसीकूंभीहोवैनहीं

किंतुसोहिरण्य गर्भकासुख सर्वविषयजन्यसुखोंका अवधिरूपहै ऐसाहिरण्यगर्भकाविषयजन्यसुखभो जिसब्रह्मानंदरूपसमुद्रका एकबिंदुमात्रहै ॥ ऐसाब्रह्मानंदरूपनित्यसुख वाणोकरिकेनहींकह्याजावैहै याकेविषे क्याकहणाहै॥हेनचिकेता॥सोआत्मास्वरूपनित्यसुख मनवाणीका अविषयहै॥याकारणतैंही ब्रह्मवेत्तागुरुतथावेदकीश्रुतियां तानित्यसुखकेसाक्षात्‌कथनकरणेविषे नसमर्थहोइके याअधिकारीजनोंकेप्रति तानित्यसुखकूं सामान्यतैं प्रियतमरूपकरिके वर्णनकरैहैं ॥ हेनचिकेता॥इसप्रकार प्रियतमरूपकरिके गुरुशास्त्रनैंकथनकर्‍या जोआत्मारूप नित्यसुखहै ॥ तानित्यसुखकूं मैंकिसप्रकारसाक्षात् अनुभवकरौं याप्रकारकोइच्छाकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरै॥ अबताकेविचारकानिरूपणकरैहैं ॥ ताआत्मारूपनित्यसुखकेआवरणकोनिवृत्तिकरणेहारा जोआत्माकाज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकरिकेयुक्ततथाविषयोंविषे रागरूपप्रतिबंधकतैंरहित ऐसाजोमैंअधिकारीजनहूं ॥ तिसमेरेकूं सोआत्मारूपनित्यसुख यथार्थ प्रतीतहोवैहै ॥ अथवा विपरीतप्रतीतहोवैहै॥ याप्रकारकाविचार सोअधिकारीपुरुषकरै॥शंका ॥ हेभगवन् ॥वाणीकीअविषयतारूपलक्षण करिकेही सोनित्यसुख जानणेकूंयोग्यहै ॥ यातैं ताविचारकरणेकाकछुप्रयोजननहींहै॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥वाणीकोअविषयतारूप लक्षण जैसे आत्मारूपनित्यसुखविषेरहैहै॥ तैसे विषयजन्यसुखविषेभी सोलक्षणरहैहै ॥ यातैं अतिव्याप्तिरूपदोषवाले तालक्षणतैं आत्मारूपनित्यसुखकाज्ञानहोइसकैनहीं ॥ यातैं सोआत्मारूपनित्यसुख मेरेकूं यथार्थप्रतीतहोवैहै अथवाविपरीतप्रतीतहोवैहै याप्रकारका विचारकरणा युक्तहै ॥ किंवा ॥ कर्त्ता कर्म करण संप्रदान अपादान अधिकरण यहषट्प्रकारकेजेकारकहैं ॥ तथा पदार्थोंका जोपरस्पर संबंधहै ॥ तथा गमनादिकजेक्रियाहैं ॥ यहसंपूर्ण जिसपदार्थविषेप्राप्तहोवे हैं ॥ तिसपदार्थविषे भेदभोअवश्यहोवैहै ॥ भेदकूंछोडिके यह कारकादिकपदार्थ रहैनहीं ॥ और जोजोपदार्थ भेदवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ वस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ और जोजोपदार्थ परिच्छिन्न होवैहै ॥ सोसोपदार्थ मुख्यसुखरूपहोवैनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिनैं व्यापक वस्तुकूंहीं सुखरूपकह्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ योवैभूमातत्सुखं ॥ अर्थ यह जोवस्तु सर्वत्रव्यापकहै सोवस्तुही सुखरूपहोवैहै ॥ १ ॥ किंवा जोसुख भेदवालाहोवैहै ॥ सोसुख जन्ममरणादिकविकारोंकरिके

आकाशहे ॥ ताआकाशविषेभी यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माहीं साक्षीरूपकरिके स्थितहोवेहे ॥ और हेनचिकेता ॥ जलहैप्र धानजिनोंविषे ऐसेजेसूक्ष्मआकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तिनसूक्ष्मभूतों तें यह आत्मादेवही पूर्व हिरण्यगर्भरूपकरिकेउत्पन्नहोवेहे ॥ और मेघरूपकरिके परिणामकूंप्राप्तभईयां जेसूर्यकेकिरणेंहै ॥ तिनसूर्यकेकिरणोंतें यहआत्मादेवही जलरूपकरिकेउत्पन्नहोवेहे ॥ और हे नचिकेता ॥ सुखदुःखरूपफलकेदेणेवासते सन्मुखभयेजेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तिनपुण्यपापरूपकर्मोंतें यहआत्मादेवही सुखदुःखकी प्राप्तिकरणेहारे अनेकदेहइंद्रियादिरूपकरिके उत्पन्नहोवे है ॥ और पृथ्वीरूपकमलका कर्णिकारूपजोसुमेरुपर्वतहे ॥ तासुमेरुपर्वततें यहआत्मादेवही चतुराननब्रह्मारूपकरिके उत्पन्नहोवे है ॥ कैसाहैसोसुमेरुपर्वत ॥ ताब्रह्मारूपगर्भकेप्रादुर्भावविषे जरायुपटकेसमा नहे ॥ और यहआत्मादेवही हिमाद्रिपर्वततें गिरिजारूपकरिकेउत्पन्नहोवेहे ॥ हेनचिकेता ॥ याअर्थविषे हम बहुतक्याकहें ॥ पुण्य पापकर्मकाफलभूत जितनाकीस्थावरजंगमरूपजगतहे ॥ सोसंपूर्णजगत् ब्रह्मरूपही हे ॥ ब्रह्मतेंभिन्न कोईभीपदार्थनही हें ॥ तहां श्रुति ॥ सर्वंखल्विदंब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ यहसंपूर्णजगत् ब्रह्मरूपहीं है ॥ इहां सर्वजगत्का जोब्रह्मकेसाथअभेदकह्याहे ॥ सोबाधसामानाधिक रणकरिकेजानणा ॥ जैसे स्थाणुविषेप्रतीतभयाजोचोरहे ॥ ताचोरका स्थाणुकेसाथ बाधसामानाधिकरणकरिकेअभेदहोवे है ॥ इतनेंकरि के याआत्मादेवका सर्वात्मभावरूपप्रभाव वर्णनकऱ्या ॥ अब तिसीआत्माकेजनावणेहारे नानाप्रकारकेलिंगोंकानिरूपणकरेंहैं ॥ हेनचिके ता ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइके प्राणरूपवायुकूं ऊर्ध्वलेजावे हे ॥ और अपानरूपवायुकूं नीचेलेजावे हे ॥ यातें याशरीरविषे जोप्राणअपानवायुकाधारणहे ॥ सोधारणभी याआत्माकेजनावणेहारालिंगहे॥ और यापुरुषोंकेहृदयदेशका अंगुष्ठ मात्रजोमध्यदेशहे ॥ ताकेविषेस्थितहोइके यहआत्मादेव परिच्छिन्नकीन्याई प्रतीतहोवेहे ॥ और याआत्मादेवकूंहीं संपूर्णवाकादिकदेवता आश्रयणकरेंहैं ॥ और हेनचिकेता ॥ याशरीरविषेस्थित जोआत्मादेवहे ॥ सोआत्मादेव जभी मरणकेहेतुरूपकर्मोंकरिके याशरीरतेंबाहर गमनकरे हे ॥ तभी ताशरीरकेस्थितिकाकारण कोईरहतानहीं ॥ काहेतें याआत्माकेनिर्गमनहुएतेंअनंतर सोशरीर काष्ठकीन्याई केवल

दाहकरणेयोग्यहोवे हे ॥ यातें यहजान्याजावे हे ॥ तामरणकालविषे याशरीरकेस्थितिकाकारणरूपचेतन्यरहतानहीं ॥ यातें जोचेतन्य याशरीरकेस्थितिकाकारणहे ॥ सोचेतन्यहीं धर्म अधर्मतें रहित अद्वितीय ब्रह्मरूपहे ॥ जोब्रह्म पूर्वतुमनें हमारेसें पूछाथा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ याशरीरकेस्थितिकीकारणता जैसे चेतन्यआत्माविषेहे ॥ तैसे प्राणविषेभीहे ॥ यातें सोप्राणहीं आत्मारूपहे ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ यालोकविषे कोईभीदेहधारीजीव प्राणकरिके तथा अपानकरिके जीवतानहीं ॥ किंतु जिसअधिष्ठानचेतन्यविषे प्राण अपान यह दोनोंस्थितहोवेहैं॥तिसअधिष्ठानचैतन्यकरिकेही यह प्राणीजीवे हैं ॥ यातें यहप्राणअपानदोनों किसीभीप्राणीका आत्मारूपनहीं हैं॥ किंतु मरणमूर्च्छादिकअवस्थावोंविषे यहप्राण अपान जिसअधिष्ठानचैतन्यविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे हैं॥सोअधिष्ठानचैतन्यहीं सर्वजीवोंकाआत्मारूप है ॥ तहांश्रुति ॥ नप्राणेन नाऽपानेन मर्त्योजीवतिकश्चन॥इतरेणतुजीवंति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ ॥ अर्थयह ॥ कोईभीदेहधारीजीव प्राणकरिके तथाअपानकरिके जीवतानहीं ॥ किंतु जिसअधिष्ठानचेतनविषे यहप्राणअपानदोनों स्थितहैं ॥ तिसचेतनआत्माकरिकेही यहसंपूर्णप्राणीजीवतेहैं ॥ १ ॥ हेनचिकेता ॥ इतनेंग्रंथकरिके हमनें तुमारेप्रति धर्मअधर्मतेंरहित शुद्धआत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ और पूर्वतीसरेवरविषे जोतुमनें मरणतें अनंतर परलोकविषे आत्माकासत्व पूछाथा॥सोहम अभी तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तूं सावधानहोइके श्रवणकर॥हे नचिकेता ॥ मरणकेप्राप्तहुए या आत्मादेवका अत्यंतअभावहोवेनहीं ॥ किंतु मरणतेंअनंतर केईकजीवतो मनुष्यादिकजंगमशरीरोंकीप्राप्तिवासते तिनजंगमशरीरोंके बीजभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ और केईकजीवतो वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकोप्राप्तिवासतै तिनस्थावरशरीरोंकेबीजभावकूंप्राप्तहोवेहैं॥तहां मनुष्यादिकजंगमशरीरोंकीप्राप्तिविषे तथावृक्षादिकस्थावरशरीरोंकीप्राप्तिविषे दोप्रकारके कारणहोवे हैं॥एकतो शरीरमनवाणीकरिके करेहुए पुण्यपापरूपकर्म कारणहोवेहैं॥और दूसरा पूर्वपूर्वजन्मकेज्ञानकर्मजन्य संस्काररूपवासनाकारण होवेहैं॥अब पुण्यपापरूपकर्मोंविषे याशरीरोंकीकारणता निरूपणकरैहैं॥हेनचिकेता॥याजीवोंके पापकर्मकोअपेक्षाकरिके जभीपुण्यकर्मअधिकहोवे हैं तभी यहजीव मरणतेंअनन्तर मनुष्यादिकरूपजंगमशरीरोंकूंप्राप्तहोवे हैं॥और याजीवोंके पुण्यकर्मकोअपेक्षाकरिके जभी पाप

कर्मअधिकहोवे हैं॥तभी यहजीव मरणतें अनंतर वृक्षादिरूपस्थावरशरीरोंकूं प्राप्तहोवैहैं॥तहां जंगमशरीरोंविषेभी पुण्यपापकर्मकी न्यूनअ
धिकताकरिके यहजीव ब्रह्मातेंआदिलेकेकीटपर्यंत शरीरोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ अधिकपुण्यकर्मवालेजीव ऊंचजंगमशरीरोंकूंप्राप्त
होवे हैं॥और अल्पपुण्यकर्मवालेजीव नीचजंगमशरीरोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ हेनचिकेता ॥ जिनजीवोंकेपुण्यकर्मतो अणुकीन्याई अत्यंतसूक्ष्महो
वे हैं॥और पापकर्मतो पर्वतकीन्याई अधिकहोवे हैं॥तेजीवमरणतेंअनंतर वृक्षादिरूपस्थावरशरीरोंकूंही प्राप्तहोवे हैं॥जिनवृक्षादिकशरीरोंवि
षे केवलदुःखकीहीअधिकताहै॥तथा जेवृक्ष गमनआगमनादिकोंविषे स्वतंत्रतातैंरहितहैं॥इसप्रकार पुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसार याजीवोंकूं
ऊंचनीचशरीरोंकीप्राप्तिहोवे है॥अब संस्काररूपवासनाविषे याशरीरोंकीकारणतानिरूपणकरे हैं॥हेनचिकेता॥यहदेहधारीजीव पूर्वजन्मविषे
पितादिकवृद्धपुरुषोंकेमुखतैंजिसपुण्यकर्मकूं अथवा जिसपापकर्मकूं कर्तव्यतारूपकरिकेश्रवणकरे हैं॥तिसीपुण्यकर्मकूंअथवा पापकर्मकूं य
हजीवकरैहै॥ इसप्रकारपुण्यपापकर्मोंकूंकरिके तेजीव जभी मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥तभीतेजीव तिसपुण्यपापकर्मकेअनुसारही पुनःजन्मकूंप्राप्तहो
वैहैं ॥ ता जन्मकूंप्राप्तहोइके यहजीव पूर्वपूर्वकर्मोंकेवासनाअनुसार पुनःपितादिकवृद्धपुरुषोंके मुखतैं श्रवणकरिके तिसीतिसीपुण्यकर्मोंकूं
अथवापापकर्मोंकूं करे हैं॥तात्पर्ययह॥जिनजीवों नें पूर्वलेजन्मोंविषे पापकर्मोंकाश्रवणकरिके तिनपापकर्मोंकूंहीकन्याहै॥तिनजीवोंकूं उत्तर
उत्तरजन्मोंविषेभी तिनपापकर्मोंकेश्रवणविषे तथा तिनपापकर्मोंकेकरणेविषेही प्रीतिहोवे है ॥ और जिनजीवों नें पूर्वजन्मोंविषे पुण्यकर्म
काश्रवणकरिके तिनपुण्यकर्मोंकूंहीकन्याहे ॥ तिनजीवोंकूं उत्तरउत्तरजन्मोंविषेभी तिनपुण्यकर्मोंकेश्रवणविषे तथा तिनपुण्यकर्मोंकेकर
णेविषेही प्रीतिहोवे है ॥ और हेनचिकेता ॥ सर्वस्थूलप्रपंचतें पूर्वउत्पन्नभयाजोहिरण्यगर्भभगवान्है ॥ ताहिरण्यगर्भविषे पुण्यकर्मतो पर्व
तकेसमान अधिकरहे हैं ॥ और पापकर्मतो केशकेअग्रकेशतभागसमान अल्परहे हैं ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे ताहिरण्यगर्भकूंभी क्षुधाभ
यकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ यातें हिरण्यगर्भकाशरीरभी पुण्यपापदोनोंकरिकेरचितहै ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ हिरण्यगर्भ तेंआदिलेके
वृक्षादिरूपस्थावरपर्यंत जितनाकीयहजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् याजीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मों तेंउत्पन्नभयाहै ॥ और तेपुण्यपापरूपकर्म

पूर्वपूर्वशरीरों तैं उत्पन्नहोवे हैं ॥ और तेपूर्वपूर्वशरीर चेतनआत्मातैंविना संभवेनहीं॥ यातैं तिनपूर्वपूर्वशरीरोंकूं धारणकरणेहारा चेतनआत्मा अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मों तैं. जोसंसारकेउत्पत्तिकावर्णनहै ॥ तासंसारकेवर्णनकाभी आत्माकीसिद्धिविषेही तात्पर्य है॥यातैं तासंसारकेवर्णनकरिकै सोयमराजा जन्मांतरोंविषेआत्माके सत्ताकाकथनकरिकै तानचिकेताकेप्रति सर्वउपनिषदोंकासाररूप जीवब्रह्मकाअभेद कथनकरताभया ॥ शंका॥हेभगवन्॥सर्वउपनिषदोंकासाररूप जोजीवब्रह्मकाअभेदहैसोअभेद तानचिकेतानैं यमराजासैं पूछानहींथा ॥ यातैं विनाहीपूछेतैं सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति जीवब्रह्मकेअभेदकाउपदेश किसवासतेकरताभया ॥ शिष्यकेपूछेतैंविना उपदेशकरणेका शास्त्रविषे निषेधकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ नाऽपृष्टंकस्यचिद्ब्रूयात् नचाऽन्यायेनपृच्छतः ॥ जानन्नऽपिहिमेधावी जडवल्लोकमाचरेत् ॥ अर्थयह ॥ शास्त्रवेत्ता बुद्धिमान्पुरुष पूछेतैंविना किसीपुरुषकेप्रति शास्त्रकीवार्त्ता कदाचित्भी नहींकहे ॥ और जो पुरुष श्रद्धाभक्तितैंरहितहोइके केवलपरीक्षाकरणेवासतेपूछेहै॥ अथवा आपणेबुद्धिकीचातुर्यताजनावणेवासते पूछेहै॥ तापुरुषकेप्रतिभी सोविद्वान्पुरुष शास्त्रकीवार्त्ताकदाचित्भीनहींकहे ॥ १ ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तानचिकेतानैं यमराजासैं यद्यपि जीवब्रह्मकाअभेद साक्षात्नहींपूछाथा ॥ तथापि तानचिकेताका जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रश्न अर्थतैंसिद्धहोवे है॥ काहेतैं पूर्व यमराजानैं तानचिकेताकेप्रति तीनवरदियेथे॥तहां प्रथमवरकरिकै सोनचिकेता पिताकेप्रसन्नताकूं प्राप्तहोताभया ॥और दूसरेवरकरिकै सोनचिकेता अग्निविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तीसरेवरकरिकै संपूर्णब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीइच्छाकरताहुआ सोनचिकेता प्रथम ताआत्मादेवकूं त्वंपदार्थरूपकरिकैपूछताभया ॥ तिसतैंअनंतर तिसीआत्मादेवकूं धर्मअधर्मादिकोंतैंरहित तत्पदार्थरूपकरिकैपूछताभया ॥ ताप्रश्नकरिकै जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रश्नभी अर्थतैंहीप्राप्तहोवे है ॥ याप्रकारके तानचिकेताकेअभिप्रायकूंजाणिकरिकै सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति जीवब्रह्मकाअभेदरूप महावाक्यकाअर्थ उपदेशकरताभया॥अब ताउपदेशकाप्रकार निरूपणकरे हैं ॥हेनचिकेता॥संपूर्णजीवोंकाआत्मारूप जोयहस्वयंप्रकाशचेतनपुरुषहै॥सोचेतनपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे पुत्रगृहक्षेत्रादिकअनेकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरे है॥और तास्वप्नअवस्थाविषे

कारीपुरुषनैं ब्रह्मविद्याकेसंप्रदायजानणेहारेकुशलगुरुतैंही ब्रह्मविद्याकाश्रवणकरणा ॥ हेशिष्य ॥ जिसपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे देवता विघ्नकरेहैं॥तिसपुरुषकीबुद्धि पूर्वलेपापकर्मकेयोगतैं विपरीतहोइजावे है॥ताविपरीतबुद्धिकरिके सोशिष्य आपणेगुरुकेसाथ द्वेषकरैहै॥ तागुरुकेद्वेषकरिके सोशिष्य अनेकप्रकारकेनरकोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और यहअधिकारीशिष्य जभी ताब्रह्मवेत्तागुरुको शरीर मन वाणी करिकेसेवाकरे है ॥ तभी याअधिकारीशिष्यकूंगुरुको कृपातैं शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकोप्राप्तिहोवै है ॥ और यहअधिकारीशिष्य जभी देवतावोंकोसेवाकरे है ॥ तभी यहअधिकारीशिष्यकूं ताआत्मसाक्षात्कारके निष्ठारूपफलकोप्राप्तिहोवै है ॥ इसप्रकार ब्रह्मवेत्तागुरुकोसेवाकरिके तथादेवतावोंकोसेवाकरिके सर्वविघ्नों तैं रहितहुआ यहशिष्य फलसहितब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहै॥हेशिष्य ॥ स्वप्रकाशआत्मास्वरूप जोमोक्षरूपफलहै ॥ तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकूं हम देवतावोंकेअनुग्रहअधीन मानतेहैं ॥ यातैं तिनदेवतावोंकीप्रसन्नताकरणेवासते यामुमुक्षुजननैं शांतिमंत्रोंकापाठ अवश्यकरणा ॥ याप्रकारकावचन सोकठनामाऋषि आपणेशिष्योंकेप्रति कथनकरता भया ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे सोकठनामाऋषि आपणेशिष्योंकेप्रति याब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिके विघ्नोंकीनिवृत्तिवासते शांतिमंत्रोंकेपाठ करणेकाउपदेशकरताभयाहै ॥ तैसे तित्तिरिनामाऋषिभी नानाप्रकारकेआख्यानयुक्त यहब्रह्मविद्या आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरिके ताविघ्नोंकीनिवृत्तिवासते शांतिमंत्रोंकेपाठकरणेकाउपदेशकरताभयाहै ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामि उद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे काठकोपनिषत्सारार्थप्रकाशे यमनचिकेतःसंवादोनाम नवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

॥ इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेनवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे दशमाऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ दशमाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्व नवमअध्यायविषे यजुर्वेदकेकठवल्लीउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब दशमअध्यायविषे तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्‌का अर्थ निरूपणकरे हैं ॥ तहां पूर्वनवमअध्यायविषे यमनचिकेताके अद्भुतआख्यानकूं श्रवणकरिके सोशिष्य बहुत प्रसन्नहोताभया ॥ और सो शिष्य पुनः आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनें ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंके तथावामदेवादिकसात्विकीप्रजाके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनें तिसी ऋग्वेदकेकौषीतकिउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिके नाना प्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥और तृतीयअध्यायविषे अजातशत्रुराजाके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिके नानाप्रकारकी ब्रह्मविद्या आपने कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारअध्यायोंविषे आपनें यजुर्वेदके बृहदारण्यकउप निषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषे दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंकेऋषियोंकापरस्परभेद तथाअभेद आप नें निरूपणकऱ्याथा॥तथा सूक्ष्मदर्शीऋषिनें जो अश्विनीकुमारोंका गुह्यवृत्तांतकथनकऱ्याथा॥ सोभी आपनें निरूपणकऱ्याथा ॥ और दध्यङ्अथर्वणऋषिनें जाब्रह्मविद्या देवराज इंद्रकेप्रति तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेशकरीथी॥साब्रह्मविद्याभी आपनें कथनकरीथी ॥ और अश्वनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेतें देवराजइंद्रनेंजिसप्रकार तादध्यङ्ऋषिकामस्तकछेदनकऱ्याथा॥सोवृत्तांतभीआपनें कथनकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाआश्वलादिकअनेकब्राह्मणोंके संवादकरिके आपनें नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिके शाकल्यब्राह्मणकामृत्युभी आपनेंकथनक ऱ्याथा॥तथा सर्वब्राह्मणों तैं तायाज्ञवल्क्यमुनिकाजय आपने कथनकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेषष्ठअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके

तथाजनकराजाके दोवारसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥और याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्य मुनिके तथा मैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्रमका कथन कऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणके अष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअ ध्यायविषे ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणों के संवादकरिकै तथा श्वेताश्वतरसंन्यासियों के संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी॥ त था याजगत्केकारणोंका निरूपणकऱ्याथा॥ और याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ नि रूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै नाना प्रकारकोब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ हेभगव न् ॥ तानवमअध्यायकेअंतविषे आपनैं याप्रकारकावचन कह्याथा ॥ जोब्रह्मविद्याकोप्राप्तिविषे इंद्रादिकदेवता अनेकप्रकारकेविघ्नकरैहैं ॥ तिनविघ्नोंकीनिवृत्तिवासतै याअधिकारीशिष्यनैं शांतिमंत्रोंकापाठ अवश्यकरणा ॥ याप्रकारकावचन जैसे कठनामाऋषि आपणे शिष्योंकेप्रति कहताभयाहै ॥ तैसे तित्तिरिनामाऋषिभी आपणेशिष्योंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तिनविघ्नोंकी निवृत्तिवासतै तिनशांतिमंत्रोंकेपाठकरणेकाउपदेश करताभयाहै ॥ याप्रकारकावचन आपनैं नवमअध्यायकेअंतविषेकह्याथा ॥ और हेभगवन् याआ त्मपुराणके प्रथमअध्यायतैंलेके नवमअध्यायपर्यंतग्रंथविषे ऐतरेय कौषीतकि आदित्य दध्यङ् अथर्वण याज्ञवल्क्य श्वेताश्वतर कठ यासप्तऋषियों नैं आपणेआपणेशिष्योंकेप्रति जाजा ब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं आपके मुखतैंश्रवणकरीहै ॥ परंतु तातित्तिरिनामाऋषिनैं आपणे शिष्योंकेप्रतिजाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी हमारेकूं इच्छाहै ॥ आपकृ पाकरिकै साब्रह्मविद्या हमारेप्रति कथनकरो॥हेभगवन्॥सोतित्तिरिनामाऋषि नानाप्रकारकेआख्यानयुक्तब्रह्मविद्या आपणेशिष्यों के प्रति कथनकरताभया ॥ याप्रकारकावचन पूर्वनवमअध्यायकेअंतविषे आपनैं कथनकऱ्याथा॥ताआपकेवचनतैं हमारेकूं ऐसीसंभावनाहोवैहै ॥ जोतातित्तिरिऋषिउक्तब्रह्मविद्याविषे कोईअत्यंतविचित्रआख्यानहोवैगा॥ याकारणतैं ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेविषे हमारेकूंअत्यंतउत्कट

इच्छाहै॥जोआपकी हमारेऊपरकृपाहोवे ॥तो साब्रह्मविद्या हमारेप्रति उपदेशकरो ॥याप्रकारशिष्यकरिकेपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यऊ परअत्यंतप्रसन्नहोताभया॥और जाब्रह्मविद्या तितिरिऋषिनें आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरीथी ॥सासंपूर्णब्रह्मविद्यासोश्रीगुरु ताशिष्यके प्रति कथनकरताभया ॥ कैसीहैसाब्रह्मविद्या ॥ वनविषेपठनकरणेयोग्य जोयजुर्वेदकाब्राह्मणभागहै ताकेविषेस्थितहै ॥तथा श्रोतापुरुषके कर्णोंका तथामनका ताप हरणेहारीहै ॥ अब ताब्रह्मविद्याकानिरूपणकरे हैं श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ जाब्रह्मविद्या तितिरिनामाऋषिनें आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरीहै ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइकेश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ एकका लविषे सुमेरुपर्वतऊपर सर्वऋषियोंकासमाज एकठाहोताभया ॥ तहां तेऋषि परस्पर याप्रकारकासंकेत करतेभये ॥ अमुकदिनविषे जो ऋषि यासमाजविषे नहीं आवेगा ताऋषि कूं ब्रह्महत्याकी प्राप्तिहोवेगी ॥ याप्रकारके तिनऋषियों के संकेतकूं वैशंपायननामाऋषि भंगकरताभया ॥ और तासंकेतकेभंगकरणे तैं तावैशंपायनकूं ब्रह्महत्याकी प्राप्तिहोतीभई ताब्रह्महत्याके निवृत्तकरणेवासते सोवैशंपाय ननामाऋषिआपणेयाज्ञवल्क्यादिक शिष्यों के ताईं प्रायश्चित्तकरणेकी आज्ञाकरताभया और तावैशंपायन गुरुकेवचनकूं श्रवणकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि तावैशंपायनगुरुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेभगवन् आपकीवृद्धअवस्थाहुई है ॥ यातैं ताप्रायश्चितकर णेविषे आपकातो सामर्थ्य हैनहीं ॥ और यहआपकेशिष्य असमर्थबालकहैं ॥ यातैं ताप्रायश्चित्तकरणेविषे इनशिष्योंकाभी सामर्थ्य नहीं है ॥ किंतु मैंयाज्ञवल्क्यही ताप्रायश्चित्तकूंकरौंगा ॥ याप्रकारके तायाज्ञवल्क्यमुनिकेवचनकूंश्रवणकरिके सोवैशंपायननामाऋषि अत्यंतक्रोधवान्होताभया ॥ और सोवैशंपायन तायाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य तूं सर्वब्राह्मणों कीनिंदाकरणेहाराहै ॥ यातैं जोहमनें तुमारेप्रति विद्यादई है ॥ सासंपूर्णविद्या तुम शीघ्रही परित्यागकरो ॥ और जोतुम हमारीविद्याका परित्याग नहींकरैगा ॥ तो मैं शापदेके तुमारेकूं दग्धकरौंगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तावैशंपायननें याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति कह्या ॥ तभी सोअष्टांगयोगकेजानणेहारा याज्ञवल्क्यमुनि जैसे पानकरेहुएजलकूं हस्ती बाहरनिकासैहै तैसे सर्वविद्याकापरित्याग

करताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार वैशंपायनगुरुकेवचनकूंअंगीकारकरिके जभी तायाज्ञवल्क्यमुनिनें तिनयजुर्वेदकेमंत्रोंकापरित्याग
कन्या॥तभी अभिमानीदेवतारूपकरिके सूर्यकीनाई प्रकाशमान जेयजुर्वेदकेमंत्रहैं॥तेमंत्र भूमिविषेभिन्नभिन्नस्थितहोतेभये॥ और तायाज्ञ
वल्क्यमुनिनें वमनकरिके भूमिविषेपरित्यागकरे जेयजुर्वेदकेमंत्रहैं ॥ तिनप्रकाशमानमंत्रोंकूंदेखिकरिकेतेवैशंपायनकेसंपूर्णशिष्य आश्च
र्यकूंप्राप्तहोतेभये ॥ और तिनशिष्योंकूं आश्चर्यमानहुआदेखिके सोवैशंपायननामागुरु तिनशिष्योंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥
हेसर्वब्राह्मणो ॥ इसयाज्ञवल्क्यनामाशिष्यनें शास्त्रकीरीतिप्रमाण इनयजुर्वेदके मंत्रोंका अध्ययनकन्याथा ॥ याकारणतैंहीं यहयजु
र्वेदकेमंत्र सूर्यकीन्याई प्रकाशमान प्रतीतहोवैहैं ॥ हेब्राह्मणो॥यहयजुर्वेदकेमंत्र हमब्राह्मणोंका अक्षयधनहै ॥ यातैं यहयजुर्वेदकेमंत्र जैसे
याभूमिलोकका परित्यागकरिके ब्रह्माकीसभाकूं नहीं प्राप्तहोवै ॥ तैसे तुमसंपूर्ण ब्राह्मण शीघ्रही इनमंत्रोंकूंग्रहणकरो ॥ हेब्राह्मणो ॥ यह
यजुर्वेदकेमंत्र इसयाज्ञवल्क्यमुनिनें अन्नकीन्याई वमनकरे हैं ॥ यातैं इनवमनकरेहुएमंत्रोंकूं हमब्राह्मण किसप्रकार ग्रहणकरैं ॥याप्रकारका
विचारकरिके तुमों नें विलंबनहींकरणा ॥ काहेतैं यद्यपि यामनुष्य शरीरकरिके वमनकरीहुईवस्तुकूं भक्षणकरणायोग्यनहीं है ॥ तथापि
यामनुष्यशरीरतैं भिन्न किसीशरीरकरिके वमनकरीहुईवस्तु भी भक्षणकरीजावै है ॥ यातैं तुमसंपूर्णब्राह्मण तित्तिरिनामापक्षीकेरूपकूंधा
रणकरिके शीघ्रहीं यामंत्रोंकूंग्रहण करो ॥ हेशिष्य॥याप्रकारकावचन जभी तावैशंपायनऋषिनें आपणेशिष्योंकेप्रति कह्या ॥ तभी तेसंपू
र्णब्राह्मण तित्तिरिपक्षीकेरूपकूंधारणकरिके शीघ्रहीं तिनमंत्रोंकूंग्रहणकरतेभये ॥ जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जेतित्तिरिनामापक्षीहैं॥तेतित्तिरीप
क्षीजभी क्षुधाकरिकेआतुरहोवैहैं ॥ तभीभूमिविषेस्थित तथाआकाशविषेस्थित जेपतंगादिकक्षुद्रजंतुहैं तिनजंतुवोंकूं तेतित्तिरिपक्षी भक्षण
करे हैं ॥ तैसे भूमिविषेस्थित तथाआकाशविषेस्थित जो तेयजुर्वेदकेमंत्रथे॥ तिनसंपूर्णमंत्रोंकूं तेब्राह्मण तित्तिरिरूपकरिकेग्रहणकरतेभये॥
याकारणतैंहीं वेदविषे तिनब्राह्मणोंकूं तित्तिरि यानामकरिकेकथनकन्याहै ॥ औरतिनतित्तिरिनामाब्राह्मणों नें आपणेशिष्यों केप्रति जा
ब्रह्मविद्याउपदेशकरीहै ॥ ताब्रह्मविद्याकूं वेदवेत्तापुरुष तैत्तिरीयकउपनिषद् यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिनें

जिनयजुर्वेदकेमंत्रोंकावमनकन्याथा॥तिनमंत्रोंकूं तेब्राह्मणतित्तिरिपक्षीकारूपधारणकरिके भक्षणकरतेभये ॥ याकारणतें तिनमंत्रों का कृष्णयजुष् याप्रकारकानामहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ तिनयजुर्वेदकेमंत्रोंविषेभी वनविषेस्थितहोइकेपठनकरणेयोग्यजेमंत्रहैं ॥तिनमंत्रोंविषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहे ॥ ताब्रह्मविद्याकूं तूं सावधानहोइकेश्रवणकर ॥ तहां तातैत्तिरीयकउपनिषद्रूपब्रह्मविद्याविषे दोवल्लीहैं ॥ एक तोआनंदवल्लीहे ॥ और दूसरी भृगुवल्लीहे ॥ तहां प्रथम आनंदवल्लीकाअर्थ निरूपणकरे हैं ॥ ताआनंदवल्लीविषे प्रथम यहसूत्ररूपवचन कथनकन्याहे ॥ ब्रह्मविदाप्नोतिपरं ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकूंजानणेहारापुरुष परमपदकूंप्राप्तहोवे हे ॥ यावचनविषे संपूर्णब्रह्मविद्या स्थितहे ॥ याकारणतें यावचनकूं सूत्ररूपकहे हैं ॥ तहां जोवचन अल्पअक्षरोंकरिके बहुतअर्थकूंसूचनकरे तावचनकानाम सूत्रहे ॥ अब तासूत्ररूप वचनविषे सर्वअर्थकीसूचकता स्पष्टकरणेवासते प्रथम विषय प्रयोजन अधिकारी संबंध याचारअनुबंधोंका निरूपणकरे हैं ॥ जिसकेज्ञानतें याअधिकारीपुरुषोंकी शास्त्रविषेप्रवृत्तिहोवे हे ताकानाम अनुबंधहे ॥ तहां ब्रह्मविदाप्नोतिपरं यासूत्ररूपवचनविषेस्थित जोब्रह्मपद हे ताब्रह्मपदकरिके या तैत्तिरीयकउपनिषद्रूपशास्त्रका विषय कथनकन्या हे ॥ तहां जाशास्त्रजन्यप्रमाज्ञानकरिके निवृत्तहोणेयोग्यजोअज्ञानहे ॥ ताअज्ञानकरिके जोपदार्थ आवृत्तहोवे हे॥सोपदार्थ ताशास्त्रका विषयहोवे हे ॥ सो इहांप्रसंगविषे तैत्तिरीयकउपनिषद्रूपशास्त्रकरिकेजन्य जोप्रमारूपज्ञानहे ॥ ताज्ञानकरिकेनिवृत्तहोणेयोग्य जो अज्ञानहे ॥ ताअज्ञानकरिके सोब्रह्मआवृत्तहे ॥ यातें सोब्रह्म यातैत्तिरीयकउपनिषद्रूपशास्त्रकाविषय हे ॥ काहेतें ब्रह्मविदाप्नोतिपरं यावाक्यविषेस्थितब्रह्मशब्दकेश्रवणतें सामान्यरूपतें ताब्रह्मकेज्ञानहुयेभी सोब्रह्म याजीवोंकाआत्मारूपहे अथवा आत्मातेंभिन्न हे ॥ तथा सोब्रह्म चेतनरूपहे अथवा जडरूप हे इसतेंआदिलेकेअनेकप्रकारकेसंशय ताब्रह्मविषेहोवे हैं ॥ तिनसंशयोंकी निवृत्ति उत्तरवाक्योंकरिकेहोवे हे ॥ यातें सोसूत्ररूपवचन उत्तरवाक्योंविषे याअधिकारीपुरुषोंके जिज्ञासाकूंउत्पन्नकरे हे ॥ अब प्रयोजनकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥शास्त्रकाप्रयोजन दोप्रकारकाहोवे हे ॥ एकतो गौणप्रयोजनहोवे हे॥ और दूसरा मुख्यप्रयोजनहोवे हे॥तहां ताब्रह्मकूंविषयकरणेहारा जोअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानहे सोज्ञान यावेदांतशास्त्रका गौणप्रयोजनहे

और संपूर्णअनर्थोंकीनिवृत्तिपूर्वक जोपरब्रह्मभावकीप्राप्तिहे ॥ सो यावेदांतशास्त्रका मुख्यप्रयोजनहे ॥ अब अधिकारीकानिरूपणकरेंहैं ॥ हेशिष्य ॥ जिसपुरुषकूं तादोनोंप्रयोजनोंकेप्राप्तिकीइच्छाहे ॥ तथाविवेक वैराग्य शमदमादिकषट्संपत्ति मुमुक्षुतायाचारिसाधनोंकरिके संपन्नहे ॥ सोपुरुष यावेदांतशास्त्रकाअधिकारीहे ॥ अब संबंधकानिरूपणकरेंहैं ॥ हेशिष्य ॥ यावेदांतशास्त्रकासंबंधतो योग्यताकेवशतें अनेकप्रकारकाहोवेंहे ॥ तहां अधिकारीपुरुषका तथावेदांतशास्त्रका परस्पर बोध्यबोधकभाव संबंधहे ॥ इहां अधिकारीपुरुषतो बोध्यहे॥ और वेदांतशास्त्र बोधकहे ॥ और ब्रह्मज्ञानका तथावेदांतशास्त्रका परस्पर जन्यजनकभाव संबंधहे ॥ इहां ब्रह्मज्ञानतो जन्यहे ॥ और वेदांतशास्त्र जनकहे ॥ और ब्रह्मका तथावेदांतशास्त्रका परस्पर अभिव्यंग्य अभि व्यंजकभाव संबंधहे ॥ इहां ब्रह्मतो अभिव्यंग्यहे ॥ और वेदांतशास्त्र अभिव्यंजकहे ॥ जोपदार्थ पूर्वसिद्धवस्तुकोप्रतीतिकराइदे वे ॥ तापदार्थकानाम अभिव्यंजकहोवे हे ॥ और ताप्रतीतिकाविषय जोपदार्थहो वे हे ॥ ताकानाम अभिव्यंग्यहो वे हे ॥ जैसे हरीतकिआमलकादिकोंकाभक्षण जलकेमधुररसकीप्रतीतिकरावेहे ॥ यातें सोहरीतकिआमलकादिकोंकाभक्षण जलकेमाधुर्यताकाअभिव्यंजकहे॥और ताजलकीमाधुर्यता अभिव्यंग्यहे ॥ तैसे ॥ यहवेदांतशास्त्रभी पूर्वसिद्धब्रह्मका साक्षात्कारकरावे हे॥यातें यहवेदांतशास्त्रतो अभिव्यंजकहे॥और सोब्रह्म अभिव्यंग्यहे ॥ और अज्ञानका तथावेदांतशास्त्रका परस्पर निवर्त्यनिवर्त्तकभाव संबंधहे॥इहां अज्ञानतो निवृत्यहे॥और आत्मज्ञानद्वारा वेदांतशास्त्र ताकानिवर्त्तकहे॥हेशिष्य॥ब्रह्मविदाप्नोतिपरं यहवचन केवलचारिअनुबंधोंकीसूचना करिके सूत्ररूपनहीं हे॥किंतु यातैत्तिरीयकउपनिषदकीसमाप्तिपर्यंत यासूत्ररूपवचनकाही विस्तारतेंव्याख्यानकऱ्याहे ॥ याकारणतें तावचनकूं सूत्ररूपता संभवे हे॥अब तासूत्ररूपवचनका संक्षेपतें व्याख्यानकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मविदाप्नोतिपरं यासूत्ररूपवचनविषेस्थित जोब्रह्मपदहे ताब्रह्मपदकरिके श्रुतिविषे तत्पदकाअर्थरूपपरमात्मादेव कथनकऱ्याहे ॥ और लक्षणप्रमाणतेंविना वस्तुकीसिद्धिहोवेनहीं ॥ यातें ताब्रह्मका कोईलक्षण कह्याचाहिये ॥ तहां लक्षणभी दोप्रकारकाहोवे हे ॥ एक तो स्वरूपलक्षणहोवे हे ॥ और दूसरा तटस्थलक्षणहोवे हे ॥ तहां जोअसाधारणधर्मरूपलक्षण आपणेलक्ष्यपदार्थ तें अभिन्नहुआ ताकूं

पदार्थकूं इतरपदार्थों तैंभिन्नरूपकरिकेजनावे है ॥ सोअसाधारण धर्मस्वरूपलक्षणहोवै है ॥ और जोअसाधारणधर्म आपणेलक्ष्य पदार्थ विषे कदाचित्वर्त्तमानहुआ तालक्ष्यकूं इतरपदार्थों तैंभिन्नरूपकरिकेजनावे है॥सोअसाधारणधर्म तटस्थलक्षणहोवै है ॥तहां सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म॥यहश्रुतिवचन ताब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकूंकथनकरे है॥अर्थयह॥जिसब्रह्मकेसाक्षात्कारतें यहअधिकारीपुरुष मोक्षरूपपरमपदकूंप्राप्त होवै है॥सोब्रह्म सत्य ज्ञान अनंत स्वरूपहै॥यालक्षणवाक्यविषे कोईकवेदवेत्तापुरुषतो शास्त्रदृष्टिकूंअंगोकार करिके सत्यस्वरूपब्रह्महै ज्ञानस्वरूपब्रह्महै अनंतस्वरूपब्रह्महै यहतीनलक्षण ब्रह्मकेमाने हैं॥और कोईकवेदवेत्तापुरुषतो लोकदृष्टिकूंअंगीकारकरिके सत्यज्ञानअनंतरूपब्रह्महै यहएकहीलक्षण ब्रह्मकामानें हैं॥अब तिनदोनोंपक्षोंविषे प्रथम तीनलक्षणवालेपक्षका निरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म॥याश्रुतिविषेस्थित जोसत्यशब्दहै॥तासत्यशब्दका तीनकालविषेनाशतैंरहित यथार्थवस्तुही अर्थहै ॥ और जोवस्तुनाशतैंरहितहोवै है ॥सोनित्यवस्तु जडरूपहोवैनहीं॥किंतु सोनित्यवस्तु चैतन्यरूपज्ञानस्वरूपहीहोवै है ॥ यातैं सत्यशब्दकाअर्थ ताज्ञानशब्दकेअर्थ तैंभिन्न नहीं॥और जैसे रज्जुविषे सर्पदंडमालादिक कल्पित होवै हैं॥तैसे संपूर्णजडदृश्यपदार्थ चैतन्यज्ञानरूपद्रष्टाविषेकल्पितहैं ॥ ऐसासर्वजड प्रपंचकाअधिष्ठानरूपजोचैतन्यरूपज्ञानहै ॥ ताचैतन्यरूपज्ञानविषे परिच्छिन्नपणासंभवेनहीं ॥ यातैं सोचैतन्यस्वरूपज्ञान अनंतरूपहै ॥ याकहणे तैंयहअर्थसिद्धभया ॥ सत्यस्वरूपब्रह्महै यालक्षणविषे सत्यशब्दकरिके सत्यज्ञानअनंतरूपवस्तुकाहीबोधहोवै है ॥ यातैं यालक्षणको जडपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे ज्ञानस्वरूपब्रह्महै यालक्षणविषेभी ज्ञानशब्दकरिके ज्ञानसत्यअनंत रूपवस्तुकाहीबोधहोवै है ॥ यातैं यालक्षणकोभी अनित्यपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तैसेअनंतस्वरूपब्रह्महै यालक्षणविषेभी अनंतशब्दकरिके अनंतसत्यज्ञानरूपवस्तुकाहीबोधहोवै है ॥ यातैं यालक्षणकोभी असत्यजडपदार्थोंविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं सत्य ज्ञान अनंत यहतीनों ब्रह्मकेभिन्नभिन्नलक्षणहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ अतिव्याप्ति अव्याप्ति असंभव यातीनदोषोंकीनिवृत्तिवास्ते हीलक्षणविषे पदोंकानिवेशहोवै है ॥ साअतिव्याप्तिआदिकदोषोंकीनिवृत्ति जोकदाचित् एकहीपदकरिकेहोइसके ॥ तो तालक्षणविषे

दूसरेपदोंकानिवेशकरणाव्यर्थहोवैहै ॥ यातें ताश्रुतिवचनकरिके ब्रह्मकेतीनलक्षणमानणे उचितहैं॥अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवास्ते प्रथम
सत्यशब्दकाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जोवस्तु भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकालोंविषे अन्यथाभावकूंनहींप्राप्तहोवै तावस्तुकाना
म सत्यहै ॥ सोऐसासत्यशब्दकाअर्थ आनंदस्वरूपआत्माविषेहीघटैहै ॥ आत्मातैंभिन्न अनात्मपदार्थोंविषे सोसत्यशब्दकाअर्थ घटैनहीं ॥
काहेतें आत्मातैंभिन्न जितनेकीअनात्मपदार्थहैं॥तेसंपूर्णअनात्मपदार्थ किसीकालपाइके अन्यथाभावकूंअवश्यप्राप्तहोवैहैं ॥यातें तिनअना
त्मपदार्थोंविषे सत्यरूपतासंभवैनहीं ॥ और सर्वजगत्काआत्मारूप जोयहआत्मादेवहै॥ताआत्मादेवकेनाशकरणेहारा कोईकारणहैनहीं॥
यातें यहआत्मादेव नाशतैंरहितअविनाशीरूपहै ॥ ऐसेअविनाशीआत्माविषेही सत्यरूपतासंभवैहै॥किंवा जोवादी ऐसेआत्माकेनाशकूं
अंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोआत्माकानाश याजीवोंकरिके अज्ञातहै अथवा ज्ञातहै ॥ तहां सोआत्माकानाश अज्ञातहै
यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जैसे कोईपुरुष मेरीमातावंध्याथी याप्रकारकावचनकहै ॥ सोताकावचन
वदतोव्याघातदोषवालाहोवैहै ॥ तैसे आत्माकानाश किसीजीवकरिकेज्ञाततो हैनहीं ॥ परंतु आत्माकानाश विद्यमान्है ॥ याप्रकारका
तावादीकावचनभीवदतोव्याघातदोषवालाहै ॥ किंवाजोपदार्थ किसीभीजीवकरिके ज्ञातनहींहोवैहै॥तापदार्थविषेसत्यरूपता संभवैनहीं ॥
किंतुउलटातापदार्थविषे असत्यरूपताहीसंभवैहै॥जैसे वंध्यापुत्रनरशृंगादिक किसीभीजीवकरिकेज्ञातनहीं हैं॥यातैंतेवंध्यापुत्रनरशृंगादिक
असत्यरूपही हैं तैसे किसीभीजीवकरिकेअज्ञातहुआ सोआत्माकानाशभी असत्यरूपहीहोवैगा ॥ यातें सोआत्माकानाश अज्ञात है यह
प्रथमपक्ष संभवैनहीं ॥ और सोआत्माकानाश ज्ञातहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ताआत्माकेनाश
काज्ञाता आत्माहैअथवा अनात्माहै ॥ तहांआत्माकेनाशकाज्ञाता अनात्माहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें
आत्मातैंभिन्नजितनेकअनात्मपदार्थ हैं॥तेसंपूर्णअनात्मपदार्थ जडरूपहैं॥जडपदार्थोंकूं आपणा तथा परकाज्ञानहोवैनहीं ॥यातें तिनजड
पदार्थोंविषे ज्ञातापणा लोककरिके तथाशास्त्रकरिके विरुद्धहै ॥ काहेतें लौकिकपुरुष तथाशास्त्रवेत्तापुरुष चेतनआत्माविषेही ज्ञातापणा

मानें हैं ॥ घटादिकजडपदार्थोंविषे कोईभीपुरुष ज्ञातापणामानतानहीं॥और आत्माकेनाशकाज्ञाता आत्माहै यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगी
कारकरे ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ ताआत्माकेनाशकूं विनष्टआत्मा जानैहै ॥ अथवा अविनष्टआत्मा जानैहै तहां विनष्टआत्मा
ताआत्माकेनाशकूं जानैहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जिसआत्माकानाशहुआहै ॥ सोविनष्टआत्मा
आपणेनाशकेजानणेविषे समर्थहोइसके नहीं ॥ काहेतें यालोकविषे अन्यपुरुषकेनाशकूंही अन्यपुरुष जानैहै ॥ परंतु आपणेनाशकूं कोई
भीपुरुष जाणतानहीं ॥ और अविनष्टआत्मा ताआत्माकेनाशकूंजाणेहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरे ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें
आत्माकेविद्यमानहुए आत्माकानाश संभवैनही ॥ और पदार्थकेविद्यमानहुएही तापदार्थकाज्ञानहोवै है ॥यातें ताआत्मनाशकेअभावहुए
ताकाज्ञानभीसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती विद्यमानपदार्थकाहीज्ञानहोवैहै यहनियम संभवैनहीं ॥ काहेतें असत्यपदार्थोंकाभीज्ञान
लोकविषेदेखीताहै ॥ जैसे शत्रुविषे मित्रपणा अत्यंतअसत्यहै ॥ तौभी भ्रांतपुरुषोंकूं ताशत्रुविषे मित्रपणा प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे असत्यजो
आत्माकानाशहै ॥ ताका आत्माकूंज्ञान संभवैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी असत्यजोआत्माकानाशहै ताकूंआत्माजानैहै ॥ याप्रकार जोतूं
अंगीकारकरेगा ॥ तो ताआत्माकेनाशकूं वंध्यापुत्रशशशृंगकीतुल्यता प्राप्तहोवैगी ॥ सोहमारेकूंभी अंगीकारहे ॥ तात्पर्ययह॥जिसस्थल
विषे जिसवस्तुकेअभावकाअभाव बोधनकरियेहै ॥ तिसस्थलविषे तिसवस्तुकीहीसिद्धिहोवैहै॥जैसे भूतलविषे घटकाअभावनहीं है॥यास्थ
लविषे ताभूतलविषे ताघटकीविद्यमानताहीसिद्धहोवैहै ॥ तैसे आत्माकानाश असत्यहै याकहणेतैंभी आत्माकीसत्यरूपताहीसिद्धहोवैहै ॥
सोआत्माकीसत्यरूपता हमारेकूंइष्टहै ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार यहआत्मादेव विनाशतैंरहितहै॥ याकारणतैं यहआत्मादेव प्रियतमहै ॥ और
यहआत्मादेव प्रियतमरूपहै याकारणतैं यहआत्मादेव परमानंदस्वरूपहै ॥ और याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेकपुत्रस्त्रीधना
दिकपदार्थ याजीवोंके सुखकेकारणहैं ॥ तथा तिनपुत्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकैउत्पन्नभयाजो अंतःकरणकापरिणामरूप

सुखहै ॥ तासुखसहित तंसपूर्णपुत्रादिक पदार्थ जोजीवोंकूंप्रियलागेहैं ॥ सोआपणेआत्माकेवासतेंही प्रियलागे हैं ॥ स्वभावतें तिनपुत्रादि
कपदार्थोंविषे प्रियरूपताहैनहीं ॥ जोकदाचित् तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे स्वभावतेंहीप्रियरूपताहोवे ॥ तो जिसकालविषे तेपुत्रादिकपदा
र्थ यापुरुषकेप्रतिकूलहो वे हैं॥तिसकालविषेभी यापुरुषकूं तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे प्रियरूपता प्रतीतहोणीचाहिये ॥और प्रतिकूलताका
लविषे किसीभीपुरुषकूं तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे प्रियरूपता प्रतीतहोवेनहीं॥यातें यहजान्याजावे है ॥तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे स्वभावतें
प्रियरूपता नहीं है॥और आपणेआत्माविषे जोजीवोंकीप्रियरूपताहै॥सो किसीकेवासतेंनहीं है॥किंतु स्वभावतेंही यहआत्मादेव प्रियतम
रूपहै॥शंका॥हेभगवन्॥आत्मातेंभिन्नकिसीपदार्थविषे जोप्रियरूपतानहींहोवे॥तो आत्माविषे प्रियतमरूपताभी संभवेनहीं ॥ काहेतें प्रिय
प्रियतर यादोनोंकीअपेक्षाकरिकेही प्रियतमरूपताहो वे है॥समाधान॥हेशिष्य॥वास्तवतेंविचारकरिकेदेखियेतो किसीभीअनात्मपदार्थविषे
प्रियरूपता तथाप्रियतररूपता हैनहीं॥तथापि लोकोंकीदृष्टिकूंलेके पुत्रस्त्रीधनादिकपदार्थ प्रियरूपहैं॥और तिनपुत्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिक
रिकेउत्पन्नभयाजो अंतःकरणकापरिणामरूपसुखहै ॥ सोविषयसुख प्रियतररूपहै ॥ और सोविषयसुख जिसआत्माकेवासतेंहै ॥ सोआ
त्मा प्रियतमरूपहै ॥ याकारणतें सोविनाशतेंरहितआत्मा परमानंदरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषे
ब्रह्मकूंही सत्य ज्ञान अनंत रूपकह्याहै ॥ और आपनेंअभीनानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकेआत्माविषेही सत् चित् आनंद रूपतासि
द्धकरी ॥ ताकरिके ब्रह्मविषे सो सत् चित् आनंदरूपता किसप्रकारसिद्धहोवेंगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ व्याकरणकीरीतिसे आ
त्मशब्दकाअर्थ तथाब्रह्मशब्दकाअर्थ एकहीव्यापकचेतनहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वचतुर्थअध्यायविषे दध्यङ्अथर्वणइंद्रकेसंवादविषे हम तुमारे
प्रतिविस्तारतें करिआये हैं ॥ यातें सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषेस्थितजोब्रह्मशब्दहै ॥ ताब्रह्मशब्दकरिके यहआनंदस्वरूपआत्माही
लक्ष्यरूपकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा विनाशतेंरहितहै ॥ यातें ताअविनाशीआत्माके जेसत्यादिकलक्षणहैं ॥ते
सत्यादिकलक्षण ब्रह्मकेही हैं और जेब्रह्मकेसत्यादिकलक्षणहैं॥तेसत्यादिकलक्षणआत्माकेही हैं॥शंका॥हेभगवन्॥आत्मारूपब्रह्मकेस्वरूप

भूतजेसत्यादिकपदार्थ हैं तिनसत्यादिकपदार्थोंविषे ताब्रह्मकोलक्षणरूपता संभवैनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे जिनपदार्थोंकापरस्पर भेदहोवैहे ॥ तिनपदार्थोंकाही परस्पर लक्ष्यलक्षणभाव होवैहे ॥ भेदतैंविना लक्ष्यलक्षणभाव होवैनहीं॥ समाधान ॥हेशिष्य ॥ सोलक्ष्य लक्षणभाव आपणीसिद्धिवासतै कल्पितभेदकीअपेक्षाकरैहे ॥ अथवा वास्तवभेदकीअपेक्षाकरैहे ॥ तहां सोलक्ष्यलक्षणभाव कल्पित भेदकीअपेक्षाकरे हे यहप्रथमपक्ष जोतूं अंगीकारकरे ॥ तो याकेविषे कोईहमारेसिद्धांतकोहानिहोवैनहीं ॥ काहेतें लक्ष्यपदार्थविषे लक्षण काकल्पितभेद हमभी अंगीकारकरतेही हैं ॥ और सोलक्ष्यलक्षणभाव वास्तवभेदकीअपेक्षाकरैहे यहदूसरापक्षजोतूं अंगीकारकरे सोसं भवैनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे जितनेकोलक्ष्यपदार्थ हैं तथा जितनेकोलक्षणपदार्थ हैं ॥ तिनोंका जोपरस्परभेदहे ॥ सोभेदभी वास्तव तैंहेनहीं ॥ किंतु याजीवों नैं आपणीआपणीबुद्धिकरिके सोभेद कल्पनाकऱ्याहे ॥ जभी लोकप्रसिद्धलक्ष्यपदार्थोंविषेभी आपणेलक्षणोंका भेद कल्पितसिद्धभया ॥ तभी अद्वितीयब्रह्मरूपलक्ष्यविषे सत्यादिकलक्षणोंकाभेद कल्पितहे याकेविषेक्याकहणाहे ॥ अब लोकप्रसिद्धल क्ष्यपदार्थोंविषे लक्षणोंकेभेदकूं कल्पितरूपता निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥गंधगुणवालीपृथ्वीहोवैहे ॥ तथा पृथ्वीत्वजातिवाली पृथ्वीहोवैहे इसतें आदिलेके अनेकप्रकारकेलक्षण पृथ्वीआदिकपदार्थों के नैयायिकादिकवादियों नैं माने हैं॥ तहां गंधगुणरूपलक्षण तथा पृथ्वीत्वजा तिरूपलक्षणवास्तवतें तापृथ्वीरूपलक्ष्यतें भिन्ननहीं हैं ॥ काहेतें जोकदाचित् गंधगुणरूपलक्षण तथा पृथ्वीत्वजातिरूपलक्षण तापृथ्वी रूपलक्ष्यतैंभिन्नहोवे ॥ तो जैसे गौका तथाअश्वका परस्पर वास्तवतैंभेदहे॥यातें सोगौ अश्वकाधर्मनहीं हे ॥ और सोअश्व गौकाधर्म नहीं हे॥तैसे पृथ्वीत्वजातिगंधगुणरूपलक्षणका तथापृथ्वीरूपलक्ष्यका परस्पर धर्मधर्मीभावहो नहींसिद्धहोवैगा ॥और जिनपदार्थोंका परस्पर धर्मधर्मीभावसंबंधहोवे हे ॥ तिनपदार्थोंकाही परस्पर लक्षणलक्ष्यभाव संबंधहोवे हे यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ पृथ्वीआदिकलक्ष्यपदार्थों विषे गंधगुण पृथ्वीत्वजातिआदिकलक्षणोंकाभेद वास्तवतें हेनहीं ॥ किंतु नैयायिकादिकवादियों नैं आपणीबुद्धिकरिके सोभेद कल्प नाकऱ्याहे ॥ किंवा ॥ जोकदाचित् गंधगुणादिरूपलक्षण पृथ्वीआदिकलक्ष्यपदार्थों तें वास्तवतैंभिन्नहोवे ॥ तो जैसे घट पटतैंवास्तव

भेदवालाहे ॥ यातैं सोघट पटतैंभिन्नहोइकेप्रतीतहोवे हे ॥ तेसे पृथ्वीआदिकलक्ष्यपदार्थों तैं तेगंधगुणादिकलक्षणभी भिन्नहोइके प्रतीत होणेचाहिये ॥ और गंधादिकगुण पृथ्वीआदिकोंतैंभिन्नहोइके प्रतीतहोतेनहीं ॥ यातैं तिनोंका परस्पर वास्तवतैंभेदनहीं हे ॥ किंतु सोभेद कल्पितहे ॥ ताकल्पितभेदकूंअंगीकारकरिके जेसे तिनोंका परस्पर लक्ष्यलक्षणभाव संभवे हे ॥ तेसे अद्वितीयब्रह्मविषे सत्यादिकलक्षणोंका कल्पितभेदमानिके शास्त्रवेत्तापुरुष तिनोंका परस्पर लक्ष्यलक्षणभाव कथनकरे हैं ॥ अब तिनधर्मोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे ताअद्वितीयब्रह्मविषे कल्पितभेदकूंअंगीकारकरिके ब्रह्मत्वरूपधर्म रहे हे ॥ तेसे ताकल्पितभेदकूंअंगीकारकरिके ताअद्वितीयब्रह्मविषे आत्मरूपता आनंदरूपता सत्यरूपता ज्ञानरूपता अनंतरूपता यहपांचोधर्मरहे हैं ॥ याकारणतेंही वेदवेत्तापुरुष ताअधिष्ठानरूपसाक्षी आत्माके सत्य ज्ञान अनंत ब्रह्म आत्मा आनंद यहषट्‌नाम कथनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे वास्तवतैं गंधर्वनगरतैंरहितजोआकाशहे ॥ ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर कल्पितहोवे हे ॥ तेसे वास्तवतैं जगत्‌भावतैंरहित जोअद्वितीयआत्माहे ॥ ताअद्वितीयआत्माविषे यहसंपूर्ण जगत् कल्पितहे ॥ केसाहेसोजगत् ॥ अविवेकीलोकोंकूं नित्यरूपकरिकेप्रसिद्धहे ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंकरिकेयुक्त हे ॥ तथा नामरूपक्रियास्वरूपहे ॥ तथा सत्‌असत्‌रूपहे इहां जेपदार्थ नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकेविषयहें ॥ तिनपदार्थोंकानाम सत्‌हे ॥ और जेपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयनहीं हैं तिनपदार्थोंकानाम असत्‌हे ॥ ऐसेकल्पितजगत्‌का अधिष्ठानरूपजोआत्मादेवहे ॥ ताआत्मादेवकूंही विद्वान्‌पुरुष तासत्यादिकषट्‌नामोंकरिकेकथनकरे हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनें आत्माके सत्यादिकषट्‌नामकथनकरे ॥ ते सत्यादिकनाम एकहीआत्माके षट्‌लक्षणोंकूंकथनकरें गे ॥ और सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषे ब्रह्मरूपआत्माके तीनही लक्षण कथनकरे हैं ॥ यातैं ताश्रुतिकेसाथ आपकेकहणेकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सत्य ज्ञान अनंत ब्रह्म आत्मा आनंद यहषट्‌नाम यद्यपि एकहीचेतनआत्माकेबोधकहें ॥ तथापि तिनषट्‌नामोंविषे ब्रह्म आत्मा आनंद यातीननामोंके अर्थकूं लक्ष्यरूपमानिके सत्य ज्ञान अनंत यहतीननाम क्रमतैं ताआनंदआत्मारूपब्रह्मके तीनलक्षणोंकूंकथनकरे हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म

याश्रुतिविषे आत्मा आनंद यहदोनोंशब्द कथनकरेनहीं ॥ केवलब्रह्मशब्दकूंहीकथनकऱ्याहै॥ यातैं यहजान्याजावै है॥आत्मा आनंदयादो नोंशब्दोंके अर्थका लक्ष्यरूपब्रह्मविषे अंतरभावकरिकै ताश्रुतिनैं ब्रह्मशब्दकाकथनकऱ्याहै ॥ और सत्य ज्ञान अनंत यातीनशब्दोंकरिकै क्रमतैं ताश्रुतिनैं तालक्ष्यरूपब्रह्मके तीनलक्षण कथनकरे हैं॥हेशिष्य॥इसप्रकार उपनिषद्रूपवेदांतशास्त्रके सिद्धांतरूपसारकूंजानणेहारे जेब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषहैं तेब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष शास्त्रदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मके सत्य ज्ञान अनंत यहतीनप्रकारकेलक्षण माने हैं॥अब सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिवचनविषे लोकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै जेविद्वान्पुरुष एकहीलक्षणअंगीकारकरे हैं॥तिनों केमतका निरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥कोईकविद्वान्पुरुषतौ याप्रकार कथनकरे हैं॥सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषेस्थितजे सत्यज्ञान अनंत यहतीनपद हैं॥तेतीनोंपद मिलिकै ताअद्वितीयब्रह्मके एकहीलक्षणकूंकथनकरे हैं॥तात्पर्ययह॥सत्यब्रह्महै इतनाहीजोब्रह्मकालक्षणकरियै॥तौ नैयायिक सत्ताजातिवाले द्रव्य गुण कर्म यातीनपदार्थोंकूंसत्यमाने हैं॥तिनद्रव्यादिकपदार्थोंविषे तालक्षणकोअतिव्याप्तिहोवैगी॥अथवा ब्रह्मकी पारमार्थिकसत्ताहै॥औरआकाशादिकप्रपंचकीव्यवहारिकसत्ताहै॥और शुक्तिरजतकी तथास्वप्नपदार्थोंकी प्रातिभासिकसत्ताहै॥यातीनसत्ताकूं अंगीकारकरणेहारे जोकोईकवेदांतीहैं ॥ तिनों के मतकूंअंगीकारकरिकै व्यावहारिकसत्तावाले आकाशादिकपदार्थोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैगी ॥ और ज्ञानरूपब्रह्महै इतनाहीजोब्रह्मकालक्षणकरियै ॥ तौ नैयायिक ज्ञानकूं आत्माकागुणमानें हैं ॥ तागुणरूपज्ञानविषे तालक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैगी ॥ अथवा सिद्धांतविषे अंतःकरणकेवृत्तिकूंभी ज्ञानकहे हैं ॥ तावृत्तिरूपज्ञानविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैगी ॥ और अनंतरूपब्रह्महै इतनाहीजोब्रह्मकालक्षणकरियै ॥ तौ नैयायिक कालपरिच्छेदतैंरहित आकाशादिकनित्यपदार्थोंकूं अनंत माने हैं ॥ तिनआकाशादिकोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्ति होवैगी ॥ यातैं सत्य ज्ञान अनंत यातीनोंपदोंविषे एकएकपद ताब्रह्मकेलक्षणकूंबोधनकरेनहीं ॥ किंतु तेतीनोंपद मिलिकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मके एकहीलक्षणकूंबोधनकरे हैं ॥और ताएकलक्षणकेमानणेविषे पूर्वकी न्याई कोई अतिव्याप्तिआदिकदोष प्राप्तहोवैंनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥सोअद्वितीयब्रह्म मनवाणीकाअविषयहै॥याकारणतैं ताअद्वितीयब्रह्म

कूं तेसत्यादिकपद शक्तिवृत्तिकारिकेतो बोधनकरिसकेनहीं ॥ किंतु भागत्यागलक्षणाकारिकेही तेसत्यादिकपद ताअद्वितीयब्रह्मकूंबोधन करैंहै ॥ सोलक्ष्यअर्थ तिनसर्वपदोंकाएकहीहै ॥ यातैं एकपदकरिकेही ताअद्वितीयब्रह्मकाबोधहोइसकैहै॥ दूसरेपद व्यर्थहोवैंगे समाधान॥ हेशिष्य ॥ सत्य ज्ञान अनंत यहतीनोंपद लक्षणवृत्तिकरिके यद्यपि एकअद्वितीयब्रह्मकेहीबोधकहैं ॥ तथापि तिनसत्यादिकपदों नैं लक्ष्यरू पब्रह्मविषे बोधनकरीजेव्यावृत्तियां हैं ॥ तिनव्यावृत्तियोंका परस्पर भेदहै ॥ यातैं तिनसत्यादिकपदोंविषे पुनरुक्तिदोषकरिके व्यर्थरूप ताहोवैनहीं॥तहां लक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकेप्राप्तभया जोअसत्यपणाहै॥ताअसत्यपणेकीव्यावृत्तिकूं सत्यशब्द बोधनकरैहै ॥ और ताल्क्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकेप्राप्तभयाजोजडपणाहै॥ताजडपणेकीव्यावृत्तिकूं ज्ञानशब्द बोधनकरैहै ॥और तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकेप्राप्तभया जोपरिच्छिन्नपणाहै॥तापरिच्छिन्नपणेकेव्यावृत्तिकूं आनंदशब्द बोधनकरैहै ॥ याअर्थविषे वार्तिकग्रंथकेकर्तासुरेश्वराचार्य नैं इतनीविशेषता कथनकरीहै॥सत्य ज्ञान यहदोनोंशब्दतो तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे साक्षात् सत्यरूपता तथाज्ञानरूपता बोधनकरिकेअर्थ तैं असत्जडकीव्यावृत्तिकूंबोधनकरैहैं॥और अनंतशब्दतो साक्षात् परिच्छिन्नपणेकीव्यावृत्तिकूंबोधनकरिके अर्थ तैं तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मकूंबोधनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सत्य ज्ञान अनंत यहतीनोंपद तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे असत् जड परिच्छिन्न पणेकेव्यावृत्तिकूं बोधनकरे हैं॥यातैं जैसे नीलकमलहै यहवचननीलगुणके तथाकमलके परस्पर गुणगुणीभावसंबंधकूंबोधनकरैहै ॥ अथवा सोवचन नीलगुणविशिष्टकमलकूंबोधनकरैहै ॥ तैसे सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म यहश्रुतिवचन सत्यादिकधर्मोंके तथाब्रह्मके गुणगुणीभावसंबंधकूं तथासत्यादिकगुणविशिष्टब्रह्मकूं बोधनकरैनहीं ॥ किंतु भागत्यागलक्षणाकरिके सोश्रुतिवचन एकअद्वितीयअखंडब्रह्मकूंहीबोधनकरे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सत्य ज्ञान अनंतयातीनोंपदों नैं क्रमतैं ताब्रह्मविषे बोधनकरीजो असत्यपणेकीव्यावृत्ति तथाजडपणेकीव्यावृत्ति तथापरिच्छिन्नपणेकीव्यावृत्ति ॥ तिनअभावरूपतीनव्यावृत्तियोंकेभेदकरिकेही ताब्रह्मविषे अद्वितीयरूपताकीहानिहोवैगी॥समाधान॥हेशिष्य ॥ यद्यपि तेअभावरूपव्यावृत्तियां ब्रह्मविषेरहेहैं ॥ तथापि ताब्रह्मतैंभिन्नदूसराकोईभावपदार्थहैनहीं ॥ याकारणतैं सोब्रह्म अद्वितीयरू

पड़े ॥ याप्रकार भावअद्वैतपक्षकूंमानणेहारेजोहमसिद्धांतीहैं ॥ तिसहमारेमतविषे ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताकोहानिहोवेनहीं ॥ हेशिष्य ॥ वेदांतशास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे जेपूर्व नृसिंहआश्रमआदिकविद्वान्पुरुषहुएहैं ॥ तिनोनें जिसअभिप्रायकरिके यहभावअद्वैतपक्ष अंगीकारकऱ्याहे ॥ ताअभिप्रायकूं तूं श्रवणकर ॥ याब्रह्मरूपआत्माविषे जोकदाचित् सहस्रअभाव रहतेहोवें ॥तो निःशंकहोइके तेअभावरहें याअर्थकेमानणेविषे आत्माकेअद्वितीयरूपताकूंकथनकरणेहारेहमसिद्धांतियोंकी किंचित्मात्रभी हानिहोवेनहीं ॥ काहेतें सोद्वैतप्रपंचका अभाव वंध्यापुत्रनरशृंगकीन्याई अत्यंततुच्छहे ॥यातेंसोद्वैतप्रपंचकाअभाव ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताकीहानिकरणेविषे समर्थहोइसकेनहीं अबयाहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोवादी अभावोंकेभेदकरिके ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताकीहानि कथनकरेहे ॥ तावादीसेंयहपूछाचाहिये ॥ तेअभाव आपणेस्वरूपतेंहीभेदकूंप्राप्तहुए अद्वैतकीहानिकरे है ॥अथवा आपणेप्रतियोगियोंकेभेदकरिके भेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरेहैं॥अथवा तिनअभावोंकूंविषयकरणेहारे जेशब्दरूप तथाज्ञानरूप व्यवहारहैं ॥ तिनव्यवहारोंकेभेदकरिके भेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरेहैं ॥ तहां स्वरूपतेंभेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरेहैं यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे जितनेकीअभावहैं ॥ तिनअभावोंका प्रतियोगोकेभेदतेंविना स्वरूपतेंभेद कोईभीवादी अंगीकारकरेनहीं ॥ और प्रतियोगीपदार्थोंकेभेदकरिके भेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरेहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जिसकालविषे सर्वजगत्काकारणरूपअविद्या विद्यमानहे ॥ तिसकालविषे यद्यपि प्रतियोगीपदार्थोंकेभेदकरिके तिनअभावोंकाभेद संभवैहे ॥ तथापि जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषोंकूं आत्मसाक्षात्कारकोप्राप्तिहोवेहे ॥ तिसकालविषे नेहनानास्तिकिंचन ॥ अर्थयहयाअद्वितीयब्रह्मविषे किंचित्मात्रभी द्वैतप्रपंचनहीं हे यहश्रुतिरूपोनृसिंह कार्यसहितअविद्याकूं भक्षणकरिलेवे हे॥ यातें ताज्ञानअवस्थाविषे नाशकूंप्राप्तहुएतिनप्रतियोगीपदार्थोंविषे तिनअभावोंकेभेदकीकारणतासंभवेनहीं ॥काहेतें यालोकविषे विद्यमान्हुएप्रतियोगीपदार्थही अभावोंकेभेदकूंकरेहैं॥ जैसे विद्यमान्हुएघटपटादिकप्रतियोगी घटाभाव पटाभाव आदिकअभावोंका

भेदकरैहै ॥ और आपनेव्यवहारोंकेभेदकरिके भेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरैहैं यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवै नहीं ॥ काहेतैं अभावोंकूंविषयकरणेहारेजेज्ञानहैं तथा अभावोंकूंबोधनकरणेहारेजेशब्दहैं ॥ तिनदोनोंकानाम व्यवहारहै ॥ तिनव्यवहारों काभेद स्वरूपतैंहोवैनहीं ॥ किंतु तिनअभावोंकेजेप्रतियोगीहैं ॥ तिनप्रतियोगीपदार्थोंकेभेदकीअपेक्षाकरिकेही तिनव्यवहारोंकाभेदहोवै है ॥ जैसे घटपटरूपप्रतियोगीकेभेदकीअपेक्षाकरिकेही घटाभावहै पटाभावहै याप्रकारकेज्ञानरूपव्यवहारोंका तथाशब्दरूपव्यवहारोंका परस्परभेदहोवैहै ॥ तेअभावोंकेभेदकूंविषयकरणेहारेव्यवहारयद्यपि अज्ञानअवस्थाविषेसंभवैहैं ॥तथापिजिसकालविषे याअधिकारीपुरुषों कूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तिसज्ञानकालविषे याअधिकारीपुरुषोंकीबुद्धि सर्वअनात्मव्यवहारोंका परित्यागकरिके केवलआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माविषे एकाग्रभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ प्रतियोगीपदार्थोंकेभेदतैंविना अभावकाभेद संभवैनहीं ॥ और तेसंपूर्णप्रतियोगीपदार्थ ॥ आत्मसाक्षात्कारकेहुए नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं ताज्ञानअवस्थाविषे ताअद्वि तीयआत्माविषे नानाअभावरहैनहीं ॥ किंतु सर्वद्वैतप्रपंचका एकहीअभावरहैहै॥शंका ॥ हेभगवन्॥सोएकअभावही आत्माकेअद्वितीयरू पताकोहानिकरैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ताएकअभावका अधिष्ठानरूपजोआत्माहै ॥ ताअधिष्ठानरूपआत्माके वास्तवस्वरूपकावि चारकरिकेदेखियेतो सोएकअभावभी ताअधिष्ठानआत्मातैं भिन्नहोइकेस्थितहोवैनहीं ॥ किंतु सोकल्पितप्रपंचकाअभाव अधिष्ठानआत्मा रूपही है ॥जैसे कल्पितसर्पकाअभाव रज्जुरूपहीहोवैहै ॥ किंवा॥लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकेभी अधिष्ठानतैंभिन्नरूपकरिके ताअभाव कीसत्ता प्रतीतहोवैनहीं ॥यातैं साअप्रसिद्धअभावकीसत्ता अद्वैतकानाश किसप्रकारकरैगी॥किंतु साअप्रसिद्धअभावकीसत्ता ताअद्वैतका नाश कदाचित्भीनहींकरैगी ॥ काहेतैं यालोकविषे प्रसिद्धपदार्थही अन्यपदार्थकानाशकरैहै॥ अप्रसिद्धपदार्थ किसीपदार्थकानाशकरे न हीं ॥ जोकदाचित् अप्रसिद्धपदार्थभी किसीवस्तुकानाशकरताहोवै ॥ तो अप्रसिद्धवंध्यापुत्रकरिकेभी किसीशत्रुकानाशहोणाचाहिये ॥ और वंध्यापुत्र किसीशत्रुकानाशकरतानहीं॥तैसे अप्रसिद्धअभावकीसत्ताकरिके अद्वैतकानाश संभवैनहीं॥और जोवादी घटादिकपदार्थोंकीन्याई

ताअभावकीभीअधिष्ठानतैंभिन्नहीसत्ता अंगीकारकरै ॥ तौ घटादिकभावपदार्थोंका तथाअभावका परस्पर भेदसिद्धनहींहोवैगा ॥ किंवा ॥ सोअभाव स्वरूप विशेष सत्ता इत्यादिकसर्वधर्मोंतैंरहितहै ॥ यातैं ताअभावकूंअस्तिरूपकरिकेकथनकरणेविषे कोईभीजीव समर्थ नहीं है॥किंतु जैसे वंध्यापुत्र नरशृंग इत्यादिकअसत्पदार्थ विकल्पज्ञानकेविषयहोवैहैं ॥ तैसे सोअभावभी केवलविकल्पज्ञानकाहीविषयहै ॥ किसीप्रमाणजन्यज्ञानकाविषयहैनहीं ॥ तहां जिसशब्दकाअर्थ किसीदेशविषे तथाकिसोकालविषे किसीभीजीवकूं प्रसिद्धनहींहोवै ॥ तिस शब्दकेश्रवणतैं जोपुरुषोंकूं तिसअर्थकाज्ञानहोवैहै ॥ ताकानाम विकल्पज्ञानहै ॥ जैसे वंध्यापुत्र याशब्दकाअर्थ जोवंध्यास्त्रीकापुत्रहै ॥ सो वंध्यापुत्र किसीदेशविषे तथा किसो कालविषे किसीभीजीवकूं प्रसिद्धनहींहै ॥ यातैं वंध्यापुत्र याशब्दकेश्रवणतैं जोपुरुषोंकूं तावंध्यापुत्रका ज्ञानहोवैहै ॥ सोज्ञान विकल्परूपहै ॥ ऐसेविकल्परूपज्ञानकेविषयहोणेतैं जैसे वंध्यापुत्रनरशृंगादिकअसत्यपदार्थ तुच्छरूपहैं ॥ तैसे ताविकल्परूपज्ञानकाविषयहोणेतैं सोअभावभी तुच्छरूपहै ॥ ऐसातुच्छअभाव आत्माकेअद्वितीयरूपताकीहानि करिसकेनहीं ॥ किंवा॥सोअभावकाविकल्परूपज्ञानभी तवपर्यंत रहे है ॥ जबपर्यंत याअधिकारीपुरुषोंकूं अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार नहींप्राप्तभयाहै॥ और जभी याअधिकारीपुरुषोंकूं सोअद्वितीय आत्माकासाक्षात्कारहोवै है ॥ तभी सोविकल्परूपज्ञानभी नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसीआत्मसाक्षात्कारअवस्थाविषे सोद्वैतप्रपंचकाअभाव ताअद्वितीयआत्माविषे किसप्रकारस्थितहोवैगा ॥ किंतु नहींस्थितहोवैगा ॥ यातैं सोद्वैतप्रपंचकाअभाव आत्माकेअद्वितीयरूपताकीहानिकरैनहीं ॥ याप्रकारकेविचारकियेहुए सोब्रह्मरूपआत्मा सर्वद्वैततैंरहितहोवैहै यहअर्थसिद्ध भया ॥ अव सत्यं ज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषेस्थितअनंतपदनैं जिनपरिच्छिन्नपदार्थोंकोव्यावृत्ति बोधनकरीहै ॥ तिनपरिच्छिन्नपदार्थोंका निरूपण करै हैं ॥ हेशिष्य॥यालोकविषे आत्मातैंभिन्न जितनेकीअनात्मपदार्थ हैं ॥ तेअनात्मपदार्थ देशपरिच्छेद कालपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंकरिकेयुक्तहैं ॥ याकेविषेभी इतनीविशेषताहै॥कार्यरूपकरिकेप्रसिद्ध जितनेकीघटपटादिकपदार्थ हैं ॥ तेघट पटादिकपदार्थ किसीदेशविषेतो हैं ॥ और किसीदेशविषेनहीं हैं ॥ याकारणतैं तेघटादिकपदार्थ देशपरिच्छेदवाले हैं ॥ और तेघटपटादिक

पदार्थ किसीकालविषेतो है ॥ और किसीकालविषेनहीं है॥याकारणतें तेघटादिकपदार्थ कालपरिच्छेदवाले हैं॥और तादेशविषे तथाकाल
विषे देशपरिच्छेद तथाकालपरिच्छेद संभवैनहीं॥यातें तादेशविषे तथाकालविषे परस्परभेदरूपवस्तुपरिच्छेदही रहैहै॥यातैंतेदेशकालभी
परिच्छिन्नहीं हैं॥शंका॥हेभगवन् परस्परभेदरूपवस्तुपरिच्छेद जैसे देशकालविषेरहैहै ॥ तैसे घटपटादिकपदार्थोंविषेभीसोभेदरूपवस्तुप
रिच्छेदरहैहै॥यातें एकवस्तुपरिच्छेदकरिकेही सर्वजगत्विषे परिच्छिन्नपणा सिद्धहोइसकैहै यातेंदेशपरिच्छेद कालपरिच्छेद यादोनोंपरिच्छे
दोंकूंअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य॥यद्यपि वास्तवतैंविचारकरिकेंदेखियेतो एकवस्तुपरिच्छेदकरिकेही सर्वजगत्विषे
परिच्छिन्नपणा सिद्धहोइसकैहै ॥ तथापि मंदबुद्धिपुरुषोंऊपर अनुग्रहकरणेवास्ते शास्त्रविषे तीनपरिच्छेदोंका निरूपणकर्‍याहै॥हेशिष्य॥
जिसअभिप्रायकरिके शास्त्रवेत्तापुरुषों नैं तीनपरिच्छेदमाने हैं ॥ताअभिप्रायकूं तूं श्रवणकर ॥ केईकनैयायिकवादी पृथिवी जल तेज वायु
याचारिभूतोंके सूक्ष्मपरमाणुवोंकूंहीं याजगत्‌काकारणमानेहैं तिननैयायिकोंकेमतविषे तेपरमाणुनित्यहैं ॥ यातें तिनपरमाणुवोंविषे काल
परिच्छेदतो रहैनहीं॥और तिनपरमाणुवोंविषे यद्यपि भेदरूपवस्तुपरिच्छेदरहैहै॥तथापि ताभेदविषे वस्तुपरिच्छेदरूपता तेनैयायिक अंगी
कारकरतेनहीं॥यातें तिनपरमाणुवोंविषे वस्तुपरिच्छेदभीरहैनहीं॥किंतु तेनैयायिक तिन परमाणुवोंविषे केवलदेशपरिच्छेदही अंगीकारकरे
हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेअविषय जेपरमाणुहैं ॥ तेपरमाणु तिननैयायिकोंकेमतविषे किसप्रकार सत्यरूपहैं समा
धान हेशिष्य जैसे मूढबालकोंकेमतविषे असत्यवंध्यापुत्रभी सत्यरूपहोवैहै ॥तैसे तिननैयायिकोंकेमतविषे असत्यपरमाणुभी सत्यरूपहो
वैहैं काहेतें यालोकविषे ऐसाकौनपदार्थ है जोभ्रांतिज्ञानकाविषयनहींहोवै ॥ किंतु सर्वपदार्थ भ्रांतिज्ञानकेविषयहोइसके हैं और हेशिष्य ॥
कोईकसांख्यशास्त्रवालेवादीतौमहत्तत्वकूं विभुमाने हैं॥तथा सर्वविकारोंकाकारणमानेहैं ॥ यातें तिनसांख्योंकेमतविषे यद्यपि सोमहत्तत्व
देशपरिच्छेदतें तथा वस्तुपरिच्छेदतेंरहितहै॥तथापि सो महत्तत्व प्रलयकालविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥यातें सोमहत्तत्व केवलकालपरिच्छे
दवालाहीहोवैहै ॥ और हेशिष्य ॥ केईकवादीतो आकाश काल दिशा आत्मा याचारोंकूं विभुमानेहैं तथानित्यमाने हैं ॥ यातें तिनवा

दियोंकेमतविषे देशपरिच्छेदतथाकालपरिच्छेदयहदोनोंतिनआकाशादिकोंविषेरहैनहीं॥किंतुकेवलभेदरूपवस्तुपरिच्छेदहीतिनआकाशा
दिकोंविषेरहैहै ॥ इसप्रकार भ्रांतिकूंप्राप्तहुएजोवादीहैं॥तिनवादियोंकेबोधकरणेवासते तिनवादियोंकेअनुसार शास्त्रविषे तीनपरिच्छेदोंका
कथनकऱ्याहै ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकेंदेखियेतो एकवस्तुपरिच्छेदकरिकेही सर्वजगत्विषे परिच्छिन्नपणा सिद्धहोइसकेहै ॥हेशिष्य
सोभेदरूपवस्तुपरिच्छेदभी तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतो स्वगतभेदहोवैहै ॥ और दूसरा सजातीयभेदहोवैहै ॥ और तीसरा विजा
तीयभेदहोवैहै ॥ तहां आपणेस्वरूपविषे आपणेअवयवोंकाजोभेदहै ताकानाम स्वगतभेदहै ॥जैसे एकहीवटकेवृक्षविषे शाखा पत्र फला
दिकरूपअवयवोंकाभेदहै ॥ और समानजातिवाले पदार्थकाजोभेदहै ताकानाम सजातीयभेदहै ॥ जैसे एकवटकेवृक्षविषे दूसरेवट
केवृक्षकाभेदरहैहै ॥तहां वटत्वरूपजातितिनदोनों वृक्षोंविषेसमानहै ॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थकाजोभेदहैताकानामविजातीयभेदहै ॥
जैसे तावटकेवृक्षविषे पिप्पलकेवृक्षकाभेदहै॥तहां पिप्पलत्वरूपजाति वटकेवृक्षविषेरहैनहीं॥हेशिष्य॥इसप्रकारसजातीयभेदविजातीयभेद
स्वगतभेद यहतीनप्रकारकाजोभेदहै॥तथादेशपरिच्छेदकालपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद यहतीनप्रकारकाजोपरिच्छेदहै ॥इनसंपूर्णोंकानाम
परिच्छिन्नपणाहै॥सोपरिच्छिन्नपणायद्यपि ताब्रह्मविषेवास्तवतैंनहीं है॥तथापिताब्रह्मविषेसोपरिच्छिन्नपणा भ्रांतिकरिकेकल्पितहै॥ताभ्रांति
सिद्धपरिच्छिन्नपणेकूं सो अनंतशब्द निवारणकरै है ॥ हेशिष्य ॥ जिसब्रह्मविषे सोअनंतशब्द परिच्छिन्नपणेकीनिवृत्तिकरै है ॥ सोब्रह्मके
साहै ॥ वास्तवतैं पूर्वउक्तदेशादिकतीनपरिच्छेदों तैं तथास्वगतादिकतीनभेदोंतैं रहितहै ॥ तथा तिनपरिच्छेदोंके अभावतैंभीरहितहै ॥
काहे तैं ता ब्रह्मविषे जोकदाचित् सोअभाव भिन्नरूपकरिकेरहैगा ॥ तो सोअनंतशब्द पुनःबोधकूंप्राप्तहोवैगा ॥ याकारणतैं सोअनं
तशब्द तिनपरिच्छेदों केअभावकूंभी निवारणकरै है यातैं सोआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहित परिपूर्णब्रह्मरूपहै इतनेकरिकै ॥ सत्यं
ज्ञानमनंतं ब्रह्म याश्रुतिविषेस्थित जोअनंतपदहै ॥ ताअनंतपदकेफलकानिरूपणकऱ्या ॥अब ज्ञानपदकेफलकानिरूपणकरै हैं ॥हेशिष्य॥
सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे कथनकऱ्याजोआत्मारूपब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूं केईकनैयायिकवादी जडरूपमानै हैं॥यातैं तिनवादियोंको

भ्रांतिकरिकैसिद्ध जोब्रह्मविषेजडपणाहै ॥ ताजडपणेकूं यहज्ञानशब्द निवारणकरै है ॥ हेशिष्य ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषेस्थि
तजोज्ञानशब्दहै ॥ ताज्ञानशब्दका केईकनैयायिकवादी याप्रकारकाअर्थकरै हैं ॥ ज्ञानगुण जिसविषेरहै है ताकानाम ज्ञानहै ॥ याप्रकार
का ज्ञानशब्दकाअर्थकरिकै ताब्रह्मकूं ज्ञानगुणवालामाने हैं ॥ ज्ञानस्वरूपमानेनहीं ॥ याप्रकारका जोज्ञानशब्दकाअर्थ अंगीकारकरिये ॥
तौ सोज्ञानशब्द ताब्रह्मविषे जडपणेकीव्यावृत्ति करिसकैगानहीं ॥ काहेतें जैसे यहभूमि मनुष्यवालीहै याप्रकारकावचन ताभूमिविषे मनु
ष्यैंतंभिन्नपणेकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ तैसे ज्ञानगुणवालाब्रह्महै यहवचनभी ताब्रह्मविषे ज्ञानतैंभिन्नत्वरूपजडपणेकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ यातैं
सोज्ञानशब्द ज्ञानगुणवालेब्रह्मकाबोधनकरैनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मविषे जडपणेकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोज्ञानशब्द केवलज्ञानरूपताकूंहीबोध
नकरै है॥हेशिष्य ॥ यहज्ञानशब्द ताब्रह्मविषे जैसे जडरूपताकीव्यावृत्तिकरै है॥तैसे अप्रकाशरूपताकी तथापरप्रकाशतारूपकीभी व्या
वृत्तिकरै है॥काहेतें सोब्रह्म जोकदाचित् अप्रकाशरूपहोवै ॥ तौ जैसे अप्रकाशरूप होणेतैं घटादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ तैसे अप्रकाशरूप
होणेतैं सोब्रह्मभी जडरूपहोवैगा ॥ यातैं सोब्रह्म अप्रकाशरूपनहीं है ॥ किंतु प्रकाशरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ ताब्रह्मकूं प्रकाशरूपतासिद्धहुए
भी सोब्रह्म जोकदाचित् परप्रकाशहोवै ॥ तौ जैसे सूर्यचंद्रमादिकप्रकाश परप्रकाशहोणे तैं जडरूपहैं ॥ तैसे परप्रकाशहोणे तैं ताब्रह्मकूं
पुनःजडरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ यातैं ताजडतादोषकेनिवारणकरणेवासतै सोज्ञानशब्द ताब्रह्मविषे परप्रकाशरूपताकी निवृत्तिकरिकै केव
लस्वयंप्रकाशरूपताकूं बोधनकरै है॥ इतनैंकरिकै ज्ञान पदकेफलका निरूपणकऱ्या ॥ अब सत्यपदकेफलकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥
जैसे रज्जुविषेसर्प तथाशुक्तिविषेरजत असत्यहोवै है ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिब्रह्म असत्यरूपमतहोवै ॥ याप्रकारकीसंभावनाकरिकै ताब्रह्म
विषेप्राप्तभयाजोअसत्यपणाहै ॥ ताभ्रांतिसिद्धअसत्यपणेकूं यहसत्यशब्द निवारणकरै है ॥शंका॥ हेभगवन् शुक्तिरजतविषे तथारज्जुसर्प
विषेभी भ्रांतिकालपर्यंत सत्यपणाही विद्यमानहै ॥ यातैं यहसत्यशब्द ताब्रह्मविषे असत्यपणेकीव्यावृत्ति किसप्रकारकरै है ॥ समाधान ॥
हेशिष्य ॥ ज्ञानशब्दकी तथाअनंतशब्दकी समीपताकरिकै सोसत्यशब्द ताब्रह्मविषे असत्यपणेकीव्यावृत्तिकरै है ॥ काहेतें यालोकविषे

जोजोपदार्थ परिच्छिन्नहोवेहै तथाजडहोवेहै ॥ सोसोपदार्थ नाशकूंअवश्यप्राप्तहोवेहै ॥ जैसे रज्जुसर्पादिकपदार्थ तथाघटादिकपदार्थ परिच्छिन्नहैं तथाजडहैं ॥ यातैं तेपदार्थ किसीनिमित्तकरिकै नाशकूंभीअवश्यप्राप्तहोवेहैं ॥ और यहब्रह्मतौ परिच्छिन्नपणेतैं तथा जडपणेतैं रहितहै ॥ यातैं ताब्रह्मकूं कोईभीकारण नाशकरिसकैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषेस्थित जे सत्य ज्ञान अनंत यहतीनपदहैं ॥ तेतीनोंपद क्रमतैं असत्य जड परिच्छिन्नपणेकीनिवृत्तिकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मकूंबोधनकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ सोलक्ष्यस्वरूपब्रह्म यद्यपि सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ तथापि सोब्रह्म याबुद्धिरूपगुहाविषेही साक्षीरूपकरिकै स्पष्टप्रतीतहोवेहै ॥ ऐसेसाक्षीरूप ब्रह्मकूं जोअधिकारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मारूपकरिकैजानैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मकीन्याई सर्वजगतकूं आपणे अस्ति भाति प्रिय रूपकरिकै व्याप्तकरेहै ॥ और ता सर्वजगत्कूं व्याप्तकरिकै सोविद्वान्पुरुष एकहीकालविषे सर्वमनवांछितपदार्थोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ हेशिष्य ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे जोब्रह्मरूपआत्मा सत्यज्ञानअनंतरूपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ सोब्रह्मरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ या कारणतैं सोआत्मादेव अद्वितीयरूपहै ॥ ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताविषे याविद्वान्पुरुषोंनैं युक्तिकथनकरीहै ॥ तायुक्तिकूं तूं श्रवणकर ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवेहै ॥ सोसोकार्यपदार्थ आपणेकारणतैं भिन्नसत्तावालाहोवैनहीं ॥ जैसे मृत्तिकाकेकार्य जेघटशरावादिकहैं ॥ तेघटशरावादिककार्य मृत्तिकारूपकारणतैंभिन्ननहींहैं ॥ किंतु तेघटादिककार्य मृत्तिकारूपहीहैं ॥ तैसे ब्रह्मरूपआत्माका कार्यरूपजोयहआकाशादिकप्रपंचहै ॥ सोयहआकाशादिकप्रपंच ताआत्मारूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ किंतु सोआकाशादिकप्रपंच आत्मारूपहीहै ॥ याकारणतैं सोब्रह्मरूपआत्मा अद्वितीयरूपहीहै ॥ याप्रकार जगत्केउत्पत्तिकूंबोधनकरणेहारेवाक्यभी याब्रह्मरूपआत्माके अद्वितीयरूपताकूंही बोधनकरेहैं ॥ अब जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकोकारणतारूप तटस्थलक्षणकेबोधन करणेवासतै प्रथम ताब्रह्मरूपआत्मातैं याजगत्केउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यासत्यज्ञानअनंतब्रह्मरूप आत्मातैं प्रथम शब्दगुणवालाआकाश उत्पन्नहोताभया ॥ और ताआकाशतैं स्पर्शगुणवालावायु उत्पन्नहोताभया ॥ और

रूपनहीं हैं ॥ किंतु तेज्ञान आनंद आत्माकेस्वरूपभूतही हैं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ परिणामीकारणहोवे है ॥ तिसतिसपरि
णामीकारणकेगुणही कार्यविषेप्रतीतहोवे हैं ॥ जैसे आकाशादिकपरिणामीकारणोंकेशब्दादिकगुण वायुआदिककार्योंविषे प्रतीतहोवे हैं ॥
तैसे यहसत्चित्आनंदस्वरूपआत्मा जोकदाचित् आकाशादिकोंका परिणामीकारणहोवे ॥ तो याआत्माके सत्चित्आनंदादिकधर्म
तिनआकाशादिकभूतोंविषे प्रतीतहोणेचाहिये ॥ और याआत्माके सत्चित्आनंदादिकधर्म तिनआकाशादिकजडभूतोंविषे देखीतेनहीं ॥
यातें यहजान्याजावे है ॥ यहआत्मादेव याआकाशादिकजडजगत्का परिणामीउपादानकारण नहीं है ॥ किंतु यहआत्मादेव याजगत्
का विवर्तउपादानकारणहै ॥ और ताब्रह्मरूपआत्माविषे साविवर्तउपादानरूपता मायातैंविनासंभवेनहीं ॥ यातें सोपरमात्मादेव माया
करिकेही ताआकाशादिकप्रपंचका विवर्तउपादानकारणहोवे है ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे परिणामभावतैंरहितजोरज्जुहै ॥ सारज्जु माया
करिकेही सर्पकाविवर्तउपादानकारण होवेहै ॥ तैसे परिणामभावतैंरहित यहआत्मादेवभी मायाकरिकेही याजगत्का विवर्तउपादानकार
णहोवे है ॥ और ताआत्मातैंभिन्न जितनेकीआकाशादिकभूतहैं ॥ तिनआकाशादिकोंके शब्दादिकगुण वायुआदिककार्योंविषे
सर्वजीवोंकूं प्रतीतहोवे हैं ॥ यातें यहजान्याजावे है ॥ तेआकाशादिक वायुआदिकोंकेपरिणामीउपादानकारणहैं ॥ हेशिष्य ॥ वा
स्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो सर्वपरिणामोंतैंरहित सोआत्मारूपब्रह्मही सर्वत्रकारणहै ॥ ताब्रह्मतैंभिन्न जितनेकीआकाशादिकपदार्थ हैं ॥
ते संपूर्णपदार्थ ताब्रह्मकेही कार्य हैं ॥ तिनआकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंकीकारणतासंभवेनहीं ॥ काहे तैं जोकदाचित् आकाशादिकों
कूंही वायुआदिकोंका कारणमानिये ॥ और ब्रह्मकूं वायुआदिकोंका कारणनहींमानिये ॥ तो ब्रह्मकेज्ञानतैं जोश्रुतिनें सर्वजगत्काज्ञान
कथनकर्‍याहै सोअसंगतहोवैगा ॥ काहेतें कारणकेज्ञानतैंविना कार्यकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातें ताश्रुतितैं ब्रह्मविषेही सर्वजगत्कीकारण
तासिद्धहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् आकाशादिकसर्वकार्योंकेप्रति एकब्रह्मकूंहीकारणताहोवे ॥ तो आकाशादिकोंविषे वायु
आदिकोंकेकारणताकाकथन असंगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो संपूर्णकार्योंविषे ब्रह्मकूंही

तावायुतें रूपगुणवालाअग्नि उत्पन्नहोताभया ॥ और ताअग्नितें रसगुणवालाजल उत्पन्नहोताभया ॥ और ताजलतें गंधगुणवालीपृथिवी उत्पन्नहोतीभई ॥हे शिष्य संपूर्णकार्योंविषे आपणाआपणाकारण तादात्म्यसंबंधकरिकेरहे हे॥यातें सोसत्यरूपआत्मा आकाशरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकेरहे है॥और सोआकाश वायुरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकेरहे है॥और सोवायु अग्निरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंध करिकेरहे हे ॥ और सोअग्नि जलरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकेरहे हे ॥ और सोजल पृथिवीरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकेरहे हे ॥ इहां कल्पितभेदकरिकेयुक्त जोवास्तवअभेदहै ताकानाम तादात्म्यसंबंधहे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार आकाशादिककारणोंका वायुआदिककार्योंविषे तादात्म्यसंबंधहोवे हे ॥ याकारणतें ताआकाशविषेतो एकशब्दगुणहोरहे हे और ताआकाशतेंउत्पन्नभयाजोवायुहै॥तावायुविषे शब्द स्पर्श यहदोगुणरहे हैं ॥ तहां तावायुविषे स्पर्शगुणतो आपणाहे ॥ और शब्दगुण आकाशरूपकारणकाहे ॥ और तावायुतें उत्पन्नभयाजोअग्निहे ॥ ताअग्निविषे शब्द स्पर्श रूप यहतीनगुणरहे हैं ॥ तहां ताअग्निविषे रूपगुणतो आपणाहे ॥ और शब्द स्पर्शय हदोनोंगुण आकाशवायुरूपकारणके हैं ॥ और ताअग्नितेंउत्पन्नभयाजोजलहे ॥ ताजलविषे शब्द स्पर्श रूप रस यहचारगुणरहे हैं ॥ तहां ताजलविषे रसगुणतो आपणाहे ॥ और शब्द स्पर्श रूप यहतीनोंगुण क्रमतें आकाश वायु अग्निरूपकारणोंके हैं ॥ और ताजलतेंउत्पन्नभईजापृथिवीहे ॥ तापृथिवीविषे शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपांचगुणरहे हैं ॥ तहां तापृथिवीविषे गंधगुणतो आपणाहे ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस यहचारगुण क्रमतें आकाश वायु अग्निजलरूपकारणोंके हैं ॥ इसप्रकार आकाशादिककारणोंकेगुण वायुआदिककार्योंविषे प्राप्तहोवे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे आकाशादिकभूतोंके शब्दस्पर्शादिकगुणहैं ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माके ज्ञान आनंद गुणरूपनहीं हैं ॥ किंतु सोज्ञानआनंद आत्माकास्वरूपभूतहीहे ॥ काहेतें जोकदाचित् याचेतनआत्माके ज्ञान आनंद गुणरूपहोते ॥ तो जैसे आकाशादिककारणोंके शब्दादिकगुण वायुआदिककार्योंविषेप्रतीतहोवे हैं ॥ तैसे ताआत्मारूपकारणके तेज्ञानादिकगुणभी आकाशादिककार्यों विषे प्रतीतहोते ॥ परंतु तिनआकाशादिककार्योंविषे तेज्ञानादिकगुण प्रतीतहोतेनहीं ॥ यातें यहजान्याजावे हे ॥ तेज्ञानआनंद आत्माकेगुण

कारणताहै ॥ तथापि लोकोंकूं जोआकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंकीकारणताप्रतीतहोवैहै ॥ याकेविषेयहकारणहै ॥ उपाधितैंरहित शुद्ध ब्रह्मविषेतौ किसीभीपदार्थकी कारणतानहींहै ॥ किंतु मायादिकउपाधियुक्तब्रह्मकूंहीं याजगत्कीकारणताहै ॥ यातैं जैसे मायाविशिष्टब्रह्म आकाशकाकारणहै ॥ तैसे आकाशविशिष्टब्रह्म वायुकाकारणहै ॥ और वायुविशिष्टब्रह्म अग्निकाकारणहै ॥ और अग्निविशिष्टब्रह्म जलका कारणहै ॥ और जलविशिष्टब्रह्म पृथिवीकाकारणहै ॥ और पृथिवीविशिष्टब्रह्म घटादिकोंकाकारणहै ॥ इसप्रकार पूर्वपूर्व आकाशादिकका र्यविशिष्टब्रह्म उत्तरउत्तर वायुआदिककार्योंकेप्रति कारणहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं तिनआकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंकेकारणपणेका अभिमान लोकोंकूंहोवैहै॥और आकाशादिकोंके शब्दादिकगुणोंकूं वायुआदिककार्योंविषेदेखिकरिके वायुआदिककार्योंविषे यहशब्दादि कगुण आकाशादिककारणोंकेआयेहैं ॥ याप्रकारकाभ्रम लोकोंकूंहोवैहै ॥ यातैं सोब्रह्महीं सर्वजगत्काकारणहै यहअर्थसिद्धभया ॥ अब पू र्वप्रसंगकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ शब्दादिकपंचगुणोंवाली तथा सर्वब्रह्मांडकीजननी तथास्थावरजंगमरूपसर्वजगत्कूंधारणकरणेहारी जापृथिवी पूर्वजलतैंउत्पन्नभईथी ॥ तापृथिवीतैं अनेकप्रकारकीओषधियां उत्पन्नहोतीभई ॥ और तेओषधियां यद्यपि अनेकप्रकारकी हैं ॥ तथापि संक्षेपतैं ते ओषधियां दोप्रकारकीहोवैहैं ॥ तहां एकतो ग्राम्यओषधिहोवैहैं ॥ और दूसरी आरण्यओषधिहोवैहैं ॥ तहां पुरुषों केप्रयत्नकरिकेजन्य जेव्रीहियवमाषादिकहैं तिनोंकानाम ग्राम्यओषधिहै ॥ और पुरुषोंकेप्रयत्नतैंविनाहीं वनविषेहोणेहारे जेश्यामकादिक हैं तिनोंकानाम आरण्यओषधिहै ॥ ते दोनोंप्रकारकीओषधियां मनुष्यादिकजंगमप्राणियोंकरिके भक्षणकरणेयोग्यहैं॥ ऐसीओषधियों तैं व्रीहियवादिक नानाप्रकारकेअन्न उत्पन्नहोतेभये ॥ और तिनव्रीहियवादिकअन्नोंकूं स्त्रियां तथापुरुष भक्षणकरतेभये ॥ ताभक्षणकरेहुए अन्नतैं वीर्य उत्पन्नहोताभया ॥ कैसाहैसोवीर्य स्वर्ग मेघ भूमिलोक पुरुष योषित् यापंचअग्नियोंविषे योषित्रूपपंचमअग्निका आहुति रूपहै ॥ तिनपंचअग्नियोंका षष्ठेअध्यायविषे विस्तारतैं निरूपणकरिआयेहैं ॥ और तावीर्यतैं हस्तपादादिकअंगोंवाला यहपुरुष शरीर उत्पन्नहोताभया ॥ याकारणतैं यास्थूलशरीररूपपुरुषकूं श्रुतिभगवती अन्नरसमय यानामकरिके कथनकरैहै ॥ अन्नकेरस

काजोविकारहोवे ताकानाम अन्नरसमयहे ॥ शंका॥हेभगवन् जैसे यामनुष्यशरीरकी अन्नतैंउत्पत्तिहोवैहे ॥ तैसे गोअश्वादिकपशुवोंकी भी ताअन्नतैंही उत्पत्तिहोवैहे ॥ यातैं श्रुतिविषे केवलमनुष्यशरीरकीही अन्नतैंउत्पत्ति किसवासतेकथनकरीहै॥समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यद्यपि पूर्वउक्तरीतिसैं सर्वशरीरोंको अन्नतैंहोउत्पत्तिहोवै हे ॥ तथापि यहमनुष्यशरीर सर्वशरीरोंतैंश्रेष्ठहे ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीनैं ता अन्नतैं मनुष्यशरीरकोहीउत्पत्तिकथनकरीहै॥सर्वशरीरोंविषे यामनुष्यशरीरकोप्रधानता प्रथमअध्यायविषे कथनकरिआये हैं ॥ हेशिष्य॥ जैसे पितामातानैंभक्षणकऱ्याजोअन्नहे ॥ ताअन्नतैं शुक्रशोणितद्वारा यहस्थूलशरीर उत्पन्नहोवे हे ॥ याकारणतैं यास्थूलशरीरकूं श्रुति अन्नरसमयकहेहै॥तैसे दिनदिनविषे अन्नकेभक्षणकरणे तैं यास्थूलशरीरकीवृद्धिहोवे हे॥याकारणतैंभी श्रुतिभगवती यास्थूलशरीरकूं अन्नरसमय यानामकरिकेकथनकरे हे ॥ इतनैंग्रंथकरिके ताब्रह्मकोअद्वितीयरूपताजनावणेवासते ताब्रह्मतैं आकाशतैंआदिलैके यास्थूलशरीरपर्यंत जगत्केउत्पत्तिकानिरूपणकऱ्या ॥ अब स्थूलबुद्धिवालेपुरुषों केप्रति सर्वांतरयामीपरमात्मादेवकेबोधनकरणेवासते पंचकोशोंकानिरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥पूर्वहमनैं सत्यज्ञानअनंतरूपकरिके तथाआकाशादिकजगत्काकारणरूपकरिके जोब्रह्मरूपआत्मा तुमारेप्रति कथनकऱ्याथा॥ताआत्मादेवके स्थूल सूक्ष्म कारण यहतीनप्रकारकेशरीर प्रसिद्धहैं॥और तिन तीनशरीरोंविषेही तैतित्तिरिनामा ब्राह्मण अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यहपंचकोश कल्पनाकरे हैं॥ हेशिष्य ॥जैसे यालोकविषे खड्गकूंआवरणकरणेहारा जोकाष्ठविशेषहे ताकूं कोशकहे हैं तैसे यहअन्नमयादिकभी आत्माकूं आवरणकरे हैं ॥ याकारणतैं तिनअन्नमयादिकपांचोंकूं शास्त्रविषे कोश यानामकरिकेकथनकरे हे ॥ और असंगबुद्धिरूपशस्त्रतैंरहित जेअज्ञानीपुरुषहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकरिके तेअन्नमयादिककोश भेदनकरेजावैंनहीं॥याकारणतैं तिनअन्नमयादिककोशोंकूं दुर्भेयकहे हैं॥अब तिनपंचकोशोंका तीनशरीरोंविषे अंतरभाव निरूपणकरे हैं॥हेशिष्य यह प्रथमस्थूलशरीरतो एकअन्नमयकोशरूपहे॥और दूसरा सूक्ष्मशरीरतो प्राणमय मनोमय विज्ञानमय यातीनकोशस्वरूप हे ॥और तीसरा कारणशरीरतो एकआनंदमयकोशरूपहे ॥ इसप्रकार तीनशरीरोंविषेही तेपंचकोशरहे हैं॥हेशिष्य॥इसप्रकार तीनशरी

रोंविषे पंचकोशोंकीकल्पनाकरिके तेतित्तिरिनामाब्राह्मण आपणेशिष्योंकेबोधकरणेवासते तिनपंचकोशोंकूं पक्षीरूपकरिके कल्पनाकर तेभये ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धपक्षियोंके शिर वामपक्ष दक्षिणपक्ष उदर पुच्छ यहपंचअवयवहोवे हैं ॥ तैसे तेतित्तिरिनामाब्राह्मण तिन अन्नमयकोशादिरूपपक्षियोंके शिरादिकपंचअवयव कल्पनाकरतेभये ॥ अब प्रथमअन्नमयकोशविषे तिनपंचअवयवोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ यहस्थूलशरीररूप जोअन्नमयकोशरूपपक्षीहै ॥ ताका यहप्रसिद्धमस्तकतो शिरहै ॥ और दक्षिणभुजा दक्षिणपक्षहै ॥ और वामभुजा उत्तरपक्षहै ॥ और यहप्रसिद्धउदर ताकाउदरहै ॥ और यहदोनोंपाद प्रसिद्धपक्षीकेपुच्छकीन्याई दीर्घ हैं ॥ यातें यहदोनोंपाद ताकापुच्छहै ॥ और तेदोनोंपाद याशरीरकेस्थितिकाआधारहैं ॥ याकारणतें श्रुतिभगवतीतापादरूपपुच्छकूं प्रतिष्ठायानामकरिकेकथन करे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहलोकप्रसिद्धपक्षी आपणेपुच्छऊपर स्थितहोवेनहीं ॥ यातें ताप्रतिष्ठापदका स्थितिकीआधारतारूपअर्थ संभवेनहीं ॥ किंतु पक्षीकेशरीरकोसमातिही ताप्रतिष्ठापदकाअर्थहै॥समाधान॥हेशिष्य॥यद्यपि यहलोकप्रसिद्धपक्षी आपणेपुच्छऊपर स्थितहोवेनहीं॥तथापि कोईकवानरभल्लुकादिकजीव आपणेपुच्छऊपरहो स्थितहोवे हैं ॥ याकारणतें स्थितिकीआधारताहोताप्रतिष्ठाशब्दका अर्थहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार स्थूलशरीररूपअन्नमयकोशकाकथनकरिके तेतित्तिरिनामाब्राह्मण याअन्नमयकोशविषे याप्रकारका मंत्र रूपश्लोककथनकरेहैं ॥ रसवीजभावकूंप्राप्तभयाजोअन्नहै ॥ ताअन्नतेंही यहसंपूर्णपृथिवीविषेस्थितप्रजा उत्पन्नहोवेहै ॥ और ताअन्नकरि केही यहसंपूर्णप्रजा जीवनकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और तापृथिवीरूपअन्नविषेही यहसंपूर्णप्रजा लयभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेशिष्य स्थावररूपकरिके प्रसिद्ध जेयहवृक्षादिकहैं ॥ तिनवृक्षादिकस्थावरोंकी याजलरूपअन्नतेंही उत्पत्तिहोवेहै ॥ और ताजलरूपअन्नकरिकेही तिनवृक्षोंकाजीव नहोवेहै ॥ और ताजलरूपअन्नविषेही तिनवृक्षोंकालयहोवेहै ॥ हेशिष्य ॥ जलरूपअन्नकरिके जोतिनवृक्षादिकोंकी उत्पत्ति स्थिति लय कथनकऱ्याहै ॥ सोकेवलजलकरिकेही तिनवृक्षादिकोंकेउत्पत्तिआदिक तुमनें नहींजानणे ॥ किंतु भूमियुक्त ताजलरूपअन्नतेंही तिनवृ क्षादिकोंकी उत्पत्ति स्थिति लय होवेहै ॥ और मनुष्यादिकजंगमशरीरोंकी उत्पत्तिस्थितिलयविषेतो यहप्रसिद्धव्रीहियवादिकअन्नही

कारणहैं ॥ अब दूसरीरीतिसैं तिनस्थावरजंगमशरीरोंका अन्नविषेलय निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ यहवृक्षादिरूप जेस्थावरशरीरहैं॥तथा यहमनुष्यादिरूप जेजंगमशरीरहैं॥तेसंपूर्णशरीर जीवभावतैंरहितहुए किसीप्राणीके अन्नरूपताकूंप्राप्तहोइके नाशकूंप्राप्तहो वे हैं॥ तात्पर्यंय ह॥जिसवस्तुकूं यहप्राणी आपणेक्षुधाकीनिवृत्तिवासते भक्षणकरे हैं तिसवस्तुकानाम अन्नहै॥याप्रकारका अन्नशब्दकाअर्थ वृक्षादिरूपस्था वरशरीरोंविषे तथामनुष्यादिरूपजंगमशरीरोंविषे घटे है ॥ काहेतें वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकूं यहमनुष्यादिकजंगमप्राणी शाकादिरूपकरि केभक्षणकरे हैं ॥ तैसे यामनुष्यादिकजंगमशरीरोंकूंभी सिंहश्वानकृमिआदिकजीव भक्षणकरे हैं॥यातैं यहसंपूर्णस्थावरजंगमशरीर अन्नभा वकूंप्राप्तहोइके नाशकूंप्राप्तहोवे हैं यहवार्तासंभवे है ॥ किंवा ॥ यहपृथ्वी सर्वजीवोंके भोगकासाधनहै ॥ याकारणतें यहपृथ्वी सर्वजीवोंका अन्नरूपहै ॥ और यहसंपूर्णस्थावरजंगमशरीर आपणेनाशकालविषे तापृथ्वीतैंअभिन्नहोवे हैं ॥ याकारणतैंभी तिनसंपूर्णशरीरोंविषे अन्नरूपता संभवहोइसकेहै ॥ हेशिष्य ॥ यहसमष्टिरूपअन्न सर्वप्रजाके उत्पत्तिस्थितिलयका कारणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताअन्नकूं ज्येष्ठ यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और सर्वरोगरूप जोयहक्षुधाहै ताक्षुधारूपरोगकूं यहअन्न नाशकरे है ॥ या कारणतैं श्रुतिभगवती याअन्नकूं सर्वौषध यानामकरिकेकथनकरे है ॥ हेशिष्य ॥ ताअन्नविषे सर्वभूतोंके उत्पत्तिस्थितिलयकीकारणता रूपब्रह्मकेलक्षणकूं निश्चयकरिके जेअधिकारीपुरुष ताअन्नकूं ब्रह्मरूपकरिके उपासनाकरे हैं॥तेअधिकारीपुरुष मनवांछितअन्नकीप्राप्ति रूपफलकूं प्राप्तहोवे हैं॥इहां अन्नशब्दका दोप्रकारकाअर्थहै॥ व्यष्टिरूपकरिके जोवस्तु भूतोंकेभक्षणकूंप्राप्तहोवे तावस्तुकानाम अन्नहै ॥ अथवा समष्टिरूपकरिके जोवस्तु सर्वभूतोंकूंभक्षणकरे है तावस्तुकानाम अन्नहै॥हेशिष्य॥याअन्नमयादिकपंचकोशोंविषे जोएकएककोशके शिरादिकपंचपंचअवयवकहे हैं॥तिनअवयवोंविषे जिसअवयवकूंपुच्छशब्दकरिकेतथाप्रतिष्ठाशब्दकरिकेकथनकऱ्याहै॥तिसअवयवकूंतिस तिसकोशविषे प्रधानजानणा॥तथा कारणरूपजानणा॥तथा उत्तरउत्तरकोशकूं पूर्वपूर्वकोशकाकारणजानणा॥इतनैंकरिके अन्नमयकोशका निरूपणकऱ्या ॥ अब जिसनिमित्तकूंलेके एकहीसूक्ष्मशरीरविषे तीनकोशोंकीकल्पनाकरीहै ॥ तिननिमित्तोंकानिरूपणकरे हैं॥हेशिष्य ॥

यासूक्ष्मशरीरविषे क्रिया नाम रूप यहतीनों भिन्नभिन्नरहेहैं ॥ तहां तासूक्ष्मशरीरविषे जोक्रियाप्रधानअंशहै ॥ ताकानाम प्राण मयकोशहै ॥ और प्रमाणरूपजोनामहै ॥ तानामप्रधानजोअंशहै ॥ ताकानाम मनोमयकोशहै ॥ और प्रमेयस्वरूपजोरूपहै ॥ तारूपप्रधानजोअंशहै ॥ ताकानाम विज्ञानमयकोशहै ॥ नाम रूप यादोनोंशब्दोंकेअर्थकूं क्रमतें मनोमयकोशकेनिरूपणविषे तथा विज्ञानमयकोशके निरूपणविषे स्पष्टकरिकेकहेंगे॥अब प्राणमयकोशकानिरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥तापंचअवयवोंवालेस्थूलशरीररूपअन्नमयकोशतैंअन्यअंतर प्राणमयकोशस्थितहै ॥ सोप्राणमयकोशरूपपक्षीभी अन्नमयकोशकीन्याई शिरादिकपंचअवयवोंवालाहै ॥ और ताप्राणमयकोशतैंअंतर मनोमयकोशहै॥और तामनोमयकोशतैंअंतर विज्ञानमयकोशहै॥औरताविज्ञानमयकोशतैंअंतर अविद्यारूपआनंदमयकोशहै ॥तिनपांचों कोशोंविषे उत्तरउत्तरकोश पूर्वपूर्वकोशकेसदृशहीहोवैहै॥जैसे मूषाविषेपायेहुएजे द्रवीभूतताम्रादिकधातुहैं ॥ तिनताम्रादिकधातुओंकरिके सोमूषा सर्वओरतैंपरिपूर्णहोवैहै ॥ तैसे उत्तरउत्तरकोशकरिके पूर्वपूर्वकोश सर्वओरतैं परिपूर्णहोवैहै ॥ जैसे प्राणमयकोशकरिके यहअन्नमयकोश सर्वओरतैंपरिपूर्णहोवैहै ॥ और मनोमयकोशकरिके यहप्राणमयकोश सर्वओरतैंपरिपूर्णहोवैहै ॥ तहां अत्यंतअग्निके संबंधकरिके द्रवीभावहुएजेताम्रादिकधातुहैं ॥ तेताम्रादिकधातु जिसपात्रविषेपावणेकरिके मनुष्यादिकोंकेमूर्तिआकारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तापात्रकानाम मूषाहै ॥ अब ताप्राणमयकोशके शिरादिकपंचअवयवोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ मुखनासिकाद्वारा चलणेहारा जोप्राणरूपवायुहै ॥ सोप्राणरूपवायु याप्राणमयकोशरूपपक्षीका शिररूपहै ॥ और प्राणअपानकासंधिरूप जोव्यानरूपवायुहै ॥ सोव्यानरूपवायु याप्राणमयपक्षीका दक्षिणपक्षरूपहै ॥ और नीचेगमनकरणेहारा जोअपानरूपवायुहै ॥ सोअपान याप्राणमयपक्षीका उत्तरपक्षहै ॥ और आकाशहैदेवताजिसका ऐसाजोसमानवायुहै ॥ सोसमाननामावायु याप्राणमयपक्षीका उदररूपहै ॥ और पृथ्वीहै देवताजिसका ऐसाजोउदाननामावायुहै ॥ सोउदाननामावायु याप्राणमयपक्षीका पुच्छरूपहै तथा प्रतिष्ठारूपहै ॥ हेशिष्य ॥ मरणकालविषे याशरीरकापरित्यागकरिके लोकांतरविषेजाणेहारा जोयहउदाननामावायुहै ॥ सोउदाननामावायु जभी याशरीरतैंबाहर

निकसे हे ॥ तभी संपूर्णप्राण याशरीरतैंबाहरनिकसे हैं ॥ याकारणतें ताउदानवायुरूपपुच्छकूं प्रतिष्ठाकहे हैं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे सम
ष्टिरूपकरिकैध्यानकऱ्याहुआ यहअन्नमयकोश मनवांछितअन्नकीप्राप्तिरूपफलकाहेतुहोवे हे ॥ तेसे समष्टिरूपकरिकैध्यानकऱ्याहुआ
यहप्राणमयकोशभी दीर्घआयुषकीप्राप्तिरूपफलकाहेतुहोवे हे ॥ हेशिष्य ॥ याप्राणमयकोशविषेभी तेतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामं
त्ररूपश्लोक कथनकरे हैं ॥ प्राणव्यापारकूंकरणेहारा ओसमष्टिप्राणकाअभिमानीदेवताहे ॥ ता प्राणदेवताकूंआश्रयणकरिकेही संपूर्णदेव
ता तथासंपूर्णमनुष्य तथासंपूर्णपशु नानाप्रकारकोचेष्टाकरे हैं॥तथा जीवनकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ और याप्राणोंकेविद्यमानहुएही सर्वप्राणियों
काजीवनहोवे हे ॥ प्राणों तेंविना किसीभीप्राणीका जीवनहोवेनहीं ॥ यातें यहप्राण सर्वजीवोंकाआयुषरूपहे ॥ याकारणतैंही श्रुतिभगव
ती याप्राणकूं सर्वआयुष यानामकरिकेकथनकरे हे ॥ ऐसेप्राणकूं जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरे हैं तेअधिकारीपुरुष शतव
र्षसहस्रवर्षादिकसंपूर्णआयुषकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ हेशिष्य ॥ यह प्राणमयकोश तास्थूलशरीररूपअन्नमयकोशकूं सर्वओरतें व्याप्यकरिकेरहे
हे ॥ याकारणतें यहप्राणमयकोश ताअन्नमयकोशका आत्मारूपहे ॥ तात्पर्ययह ॥ याअधिकारीपुरुषनें ताअन्नमयकोशविषे आत्मत्वबु
द्धिकापरित्यागकरिके अंतरप्राणमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरणी ॥ अब तीसरेमनोमयकोशका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे याअ
न्नमयकोशतें भिन्नरूपकरिके तथाअंतररूप करिके तथा ताअन्नमयकोशकाआत्मरूपकरिके यहप्राणमयकोशस्थितहे ॥ तैसे याप्राणमय
कोशतैंभिन्न तथाताप्राणमयकोशतैंअंतर तथाताप्राणमयकोशकाआत्मारूप तीसरामनोमयकोशहे ॥ अब तामनोमयकोशरूपपक्षीके शि
रादिकपंचअवयवोंका निरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥तामनोमयकोशरूपपक्षीका यजुर्वेद शिरहे॥और ऋग्वेद दक्षिणपक्षरूपहे ॥और सामवेद
उत्तरपक्षहे॥और वेदकाब्राह्मणभाग उदररूपहे॥और अथर्वणवेद शांतिआदिकगुणोंकाकारणहोणे तें स्थितिकाहेतुहे ॥याकारणतें सोअथ
र्वणवेद यामनो मयपक्षीकापुच्छरूपहे तथाप्रतिष्ठारूपहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऋग् यजुष् साम अथर्वण यहचारोंवेद शब्दरूपहैं ॥ यातें
तिनशब्दरूपवेदोंविषे मनोमयकोशकीअवयवरूपता संभवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यद्यपि यहऋगादिकचारवेद शब्दोंकासमूह

रूपहीहै ॥ मानसज्ञानरूपनहीं हैं ॥ तथापि तिनऋगादिकवेदों केस्वरूपकाघटक तथातिनऋगादिकवेदों के प्रमाणरूपताकाघटक जेमा
नसवृत्तियाँ है ॥ तेवृत्तियां मनविषेहीरहेहैं ॥ यातैं तेऋगादिकशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै तिनमनकेवृत्तियोंकाहीबोधनकरेहै ॥ यातैं तिनश
ब्दरूपवेदोंविषे मनोमयकोशकीअवयवरूपताकाकथन विरुद्धनहीं है ॥ तात्पर्ययह ॥ केवलककारादिकवर्णोंकूं वेदरूपताहैनहीं ॥ किंतु
कंठादिकस्थानोंके तथाउदात्तादिकस्वरोंके अनुसंधानकरिकेविशिष्ट जेककारादिकवर्णहैं ॥ तिनवर्णोंकेसमूहकूंही वेदरूपताहै ॥ यातैं
तिनऋगादिकवेदोंकास्वरूप अनुसंधानरूपमानसवृत्तिकरिकै घटितहै ॥ तैसे तिनऋगादिकवेदोंविषे जाप्रमाज्ञानकीकारणतारूपप्रमाण
ताहै ॥ साप्रमाणताभी स्वभावतैं तिनवेदोंविषेहैनहीं ॥ किंतु मानसवृत्तिरूपप्रमाज्ञाननिरूपितसाप्रमाणताहै ॥ यातैं तिनवेदोंकीप्रमानभी
मानसवृत्तिकरिकेही घटितहै ॥ हेशिष्य ॥ यहब्रह्मरूपआत्मा किसीप्रमाणजन्यज्ञानका विषयहैनहीं ॥ यातैं सोमन जैसे वेदरूपप्रमाणक
रिकै याब्रह्मरूपआत्माकूं साक्षातविषयकरिसकेनहीं ॥ तैसे सोमन आपणेस्वरूपकरिकैभी ताब्रह्मरूपआत्माकूं विषयकरिसकेनहीं॥ हेशि
ष्य ॥ याअर्थविषेभी तैत्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूप श्लोक कथनकरे हैं॥जिसब्रह्मकूं नप्राप्तहोइके यहमनसहितवाणियां
जिसब्रह्मतैं निवृत्तहोइआवे हैं ॥ ताब्रह्मकेस्वरूपभूतआनंदकूं जाणताहुआ यहविद्वान्पुरुष किसीतैंभयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ ऋग्वे
दतैंआदिलेके जितनेकीवेदरूपवाणियां हैं ॥ तथा पूर्वउक्तरीतिसैं तिनवेदरूपवाणियोंकेस्वरूपकाघटक तथाप्रमाणताकाघटक जोमनहै ॥
तिसवेदवाणीरूपप्रमाणकूं तथातामनरूपप्रमाणकूं यद्यपि याआनंदस्वरूपआत्माकेप्रकाशकरणेविषे सामर्थ्यनहींहै ॥ तथापि शास्त्रकेसं
स्कारोंकरिकेयुक्तजोअंतर्मुखशुद्धमनहै॥ताअंतर्मुखशुद्धमनकरिकै यहअधिकारीपुरुषतामनोमयकेअंतरास्थित आत्मास्वरूपआनंदकूंजाण
ताहुआ याजन्ममरणादिरूपसंसारतैं भयकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तात्पर्ययह ॥ ताप्राणमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरिकै यहअधिका
रीपुरुष मनोमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरे ॥ अब विज्ञानमयकोशकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे क्रियारूपप्राणमयकोशतैं प्रमा
णरूप मनोमयकोश अंतरस्थितहै ॥ तैसे ताप्रमाणरूपमनोमयकोशतैं यहप्रमाताप्रमेयरूपविज्ञानमयकोश अंतरस्थितहै ॥ अब तावि

ज्ञानमयकोशरूपपक्षीके शिरादिकपंचअवयवोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ सर्वकर्मोंकामूलरूप जोगुरुशास्त्रकेवचनोंविषेविश्वासहै ॥ सोविश्वासरूपश्रद्धा याविज्ञानमयपक्षीका शिररूपहै॥और शास्त्रनैंविधानकरेजेयज्ञादिककर्म हैं ॥ तिनकर्मोंकेविचारविषे जामीमांसाशास्त्र जन्यमानसीबुद्धिहै ॥ सोबुद्धिरूपऋत याविज्ञानमयपक्षीका दक्षिणपक्षरूपहै ॥ और अनुष्ठानकरेहुए जेशास्त्रविहितयज्ञादिककर्म हैं॥तिन कर्मोंकूंविषयकरणेहारीजाबुद्धिहै ॥ सोबुद्धिरूपसत्य याविज्ञानमयपक्षीका उत्तरपक्षरूपहै ॥ और अध्यात्मशास्त्रकेअर्थजो निश्चयहै ॥ सो निश्चयरूपयोग याविज्ञानमयपक्षीका उदरहै ॥ और सर्वस्थूलप्रपंचकाकारणरूप जाहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धिहै॥ सोसमष्टिबुद्धिरूपयह या विज्ञानमयपक्षीका पुच्छरूपहै तथाप्रतिष्ठारूपहै ॥ हेशिष्य ॥ याविज्ञानमयकोशविषेभी तैतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरे हैं ॥ यहविज्ञानरूपबुद्धिही यज्ञादिकसर्ववैदिककर्मोंकूं तथागमनआगमनादिकसर्वलौकिककर्मोंकूं करे है ॥ और देवभावकूंप्राप्त होणेहारे सर्वअधिकारीपुरुष याविज्ञानरूपसमष्टि बुद्धिकूंही ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरे हैं ॥ और जेअधिकारीपुरुष याविज्ञानमयआत्मा कूं ब्रह्मरूपजाणिकरिके इतरपदार्थोंविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरे हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष देहअभिमानजन्यपापकर्मोंकापरित्यागक रिके मनवांछितसर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ हे शिष्य ॥ पूर्वउक्तमूषाताम्रादिकधातुवोंकेदृष्टांतकरिके यहविज्ञानमयकोश तामनोमयको शकूं सर्वओरतें परिपूर्णकरेहै ॥ यातें यहविज्ञानमयकोश तामनोमयकोशका आत्मारूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ याअधिकारीपुरुषनैं तामनोम यकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरिके याविज्ञानमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरणी ॥ अब आनंदमयकोशका निरूपणकरैहैं ॥ हे शिष्य ॥ ताविज्ञानमयकोशतें अन्य अंतरआत्मा आनंदमयकोशहै ॥ सोआनंदमयकोश अव्याकृतरूप है ॥ अब ताआनंदमयको शरूपपक्षीके शिरादिकपंचअवयवोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इष्टपदार्थकेदर्शनतैंउत्पन्नभयाजोसुखहै ॥ सोसुखरूपप्रिय याआनं दमयपक्षीका शिरहै ॥ और इष्टपदार्थकीप्राप्तिकरिके उत्पन्नभयाजोसुखहै ॥ सोसुखरूपमोद याआनंदमयपक्षीका दक्षिणपक्षरूपहै ॥और ताइष्टपदार्थकेभोगजन्यजोसुखहै॥सोसुखरूपप्रमोद याआनंदमयपक्षीका उत्तरपक्षरूपहै॥और तिनप्रियमोदादिकविशेषोंविषे जोसुख सामा

न्यरूपतैंअनुगतहे ॥ सोसामान्यसुखरूपआनंद याआनंदमयपक्षीका उदररूपहे ॥ और यासर्वजगत्काकारणरूप जोआनंदस्वरूपब्रह्महे ॥ सोअधिष्ठानरूपब्रह्म याआनंदमयपक्षीका पुच्छरूपहे तथाप्रतिष्ठारूपहे॥ और यहअज्ञानरूपआनंदमयकोशताविज्ञानमयकोशकूं सर्वओर तैं परिपूर्णकरिकेस्थितहे ॥ याकारणतैं यहआनंदमयकोश ताविज्ञानमयकोशकाआत्मारूपहे ॥ तात्पर्ययह ॥ याअधिकारीपुरुषनैं तावि ज्ञानमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरिके याआनंदमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरणी ॥ इतनैंग्रंथकरिके अन्नमयादिकपंचकोशों कानिरूपणकऱ्या ॥ अब जिसअभिप्रायकरिके श्रुतिभगवतीनैं अन्नमयादिकपंचकोशोंका निरूपणकऱ्याहे ताअभिप्रायकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे सर्वदेहधारीजीवोंका चित्त तथाश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय नित्यबहिर्मुखहीहोवे हैं ॥ याकारणतैं यहसंपूर्णजीव चित्तकरिके तथाइंद्रियोंकरिके बाह्यपदार्थोंकूंहींग्रहणकरेहैं और याशरीरकेअंतरस्थित जोआनंदकासमुद्र रूपआत्मादेवहे ॥ ताआनंदस्वरूपआत्माकूं कोईभीदेहधारीजीव ग्रहणकरतानहीं ॥ किंतु याअंतरआनंदस्वरूपआत्माकूंपरित्यागकरिके यहसंपूर्णजीव सुखकीप्राप्तिवासते बाहरहींभ्रमणकरेहैं ॥ और सुखकीप्राप्तिवासते बाहरभ्रमणकरतेहुएयहजीव किंचित्मात्रभी सुख कूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ उलटा ताबहिर्मुखताकरिकेयहजीव महान्दुःखरूपसमुद्रविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार तिनबहिर्मुखजीवोंकूंमो क्षरूपपुरुषार्थतैंभ्रष्टहुआदेखिके तथा जन्ममरणरूपसंसारविषेप्राप्तहुआदेखिके माताकीन्याई अत्यंतस्नेहयुक्तश्रुतिभगवती अ त्यंतदुःखीहोतीभई ॥ और ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैं तिनजीवोंकूं साक्षात्निवृत्तकरणेविषे असमर्थहुई साश्रुतिभगवती पंचको शरूपउपायकाविचारकरिके प्रथम अधिकारीब्राह्मणोंकूं ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैं निवृत्तकरतीभई ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ या ताकीन्याई सर्वजीवोंकेहितवासते प्रवृत्तभईजाश्रुतिभगवतीहे ॥ ताश्रुतिभगवतीनैं प्रथम केवलब्राह्मणोंकूंहीउपदेश किसवा सतैंकऱ्या ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ साश्रुतिभगवती जिसअभिप्रायकरिके प्रथम अधिकारी ब्राह्मणोंकेप्रतिहीउपदेशकर तीभईहे ॥ ताअभिप्रायकूं तूं श्रवणकर ॥ याअधिकारीब्राह्मणोंकूं जभी मैं ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैं निवृत्तकरौंगी ॥ तभी ताबहि

सुखप्रवृत्तितैं निवृत्तहुए यहब्राह्मण अन्यक्षत्रियोंकूं वेदकेवचनोंकाउपदेशकरिके तावहिर्मुखप्रवृत्तितैंनिवृत्तकरैंगे ॥ तथा अन्यशूद्रादिकों कूं पुराणकेवचनोंकाउपदेशकरिके तावहिर्मुखप्रवृत्तितैं निवृत्तकरैंगे ॥ हेशिष्य इसप्रकारकाविचारकरिकेसाश्रुतिभगवती याजीवोंकूं ब हिर्मुखप्रवृत्तितैंनिवृत्तकरणेवासते तिनअन्नमयादिकपंचकोशोंका उपदेशकरतीभई ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनअन्नमयादिकपंचकोशोंका कथनकरिके साश्रुतिभगवती याजीवोंके बाह्यप्रवृत्तिकूं किसप्रकार निवृत्तकरे है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे रूपयौवनादिकगु णोंकरिकेयुक्त जेपुरुषहैं ॥ तथा रूपयौवनादिकगुणोंकरिकेयुक्त जेस्त्रियां हैं ॥ तेपुरुष तथा स्त्रियां आपणेआपणेशरीरकरिके प्रसन्नताकूं प्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु तेपुरुष तथास्त्रियां सुखकीप्राप्तिवासते पिशाचकोन्याई आपणे शरीरतैंभिन्न किसीजीवतशरीरकूं अथवा मृतकशरी रकूंहो सेवनकरे हैं ॥ और तेपुरुष तथास्त्रियां सुखकीप्राप्तिवासते जिसपरशरीरकासेवनकरे हैं ॥ सोपरशरीरभी स्थूल सूक्ष्म कारण याभे दकरिके तीनप्रकारकाहो वे है ॥तहां प्रथम यहस्थूलशरीरतो अन्नकाविकाररूपहो वे है ॥ और दूसरासूक्ष्मशरीरतो प्राण मन विज्ञान या तीनरूपहो वे है ॥ और तीसराकारणशरीरतो अनादिअज्ञानरूपहो वे है ॥ हेशिष्य॥ केवलपरशरीरही अन्नप्राणादिरूपनहीं है॥किंतु याती नलोकोंविषे जितनाकीप्रपंचहै ॥ सोसंपूर्णप्रपंचअन्न प्राण मन बुद्धि अज्ञान यापंचकोशरूपहीहै ॥ और सोपंचकोशरूप संपूर्णप्रपंच या जीवोंकूं आपणेआपणेशरीरविषेही विराजमानहै ॥ यातैं ताअंतरपदार्थोंकूंपरित्यागकरिके याजीवोंकूं बाह्यपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरणी योग्यनहीं है ॥ तात्पर्ययह ॥ मधुके प्राप्तिकीइच्छावान्जोपुरुषहै ॥ तापुरुषकूं जोकदाचित् आपणेगृहकेसमीपही तामधुकीप्राप्तिहोवै ॥ तो तापुरुषकूं तिसमधुकीप्राप्तिवासते पर्वतऊपरजाणा योग्यनहीं है ॥ तैसे याजीवोंकूं याआपणेशरीरविषेही जोसर्वपदार्थोंकीप्राप्तिहोइस के ॥ तो तिनपदार्थोंकीप्राप्तिवासते याजीवोंकूं बाह्यभटकणा योग्यनहीं है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिके साश्रुतिभ गवती माताकीन्याई कृपाकरिके तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहतीभई ॥ हेपुत्र ॥ वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो या आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न किसीभीवस्तुविषे सुखरूपतानहीं है ॥ परंतु जोकदाचित् तुमारेकूं याप्रकारका चित्तविषेआग्रहहो वे ॥ जोआ

त्मातैंभिन्नवस्तुहो हमारेसुखकाकारणहैं ॥ तो आत्मातैंभिन्नवस्तु तुमारेसुखकाकारणहोवै ॥ ताका हम निवारणकरतेनहीं ॥ तथापि आत्मातैंभिन्न जिनअन्नमयादिकपदार्थोंकूं तुमोनें आपणेसुखकासाधन मान्याहे ॥ तेअन्नमयादिकपदार्थ तुमारेशरीरविषेही विद्यमान हैं ॥ तिनअन्नमयादिकपदार्थोंकूं तुम सेवनकरो ॥ आपणेशरीरविषेविद्यमान अन्नमयादिकपदार्थोंकापरित्यागकरिके तिनअन्नमयादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासते तुम बाह्यकिसवासतेभ्रमणकरतेहो ॥ अब याहोअर्थकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिके स्पष्टकरे हैं ॥हे शिष्य ॥ जैसे याळोकविषे क्षुधाकरिके तथाकामकरिके पीडितहुआ कोईकपुत्र आपणेगृहकापरित्यागकरिके जभी बाहरजाणेका उद्यमकरेहे ॥ तभी तापुत्रकीमाता तापुत्रकेहस्तकूंग्रहणकरिके तापुत्रकूं गृहतैंबाहरजाणेतें निवारणकरे हे ॥ और सामाता तापुत्रकेप्रति याप्रकारकावचनकहे हे ॥ हेपुत्र अन्नकीप्राप्तिवासते तथास्त्रीकीप्राप्तिवासते तूं आपणेगृहकापरित्यागकरिके बाहरमतजाव ॥ आपणेगृहतैंबाहरजाणेकरिके तेरेकूं बहुतदुःखकीप्राप्तिहोवैगी॥और जिसअन्नकीप्राप्तिवासते तथाजिनस्त्रियोंकीप्राप्तिवासते तूंआपणेगृहकापरित्यागकरिकेबाहरजाताहे॥तेनानाप्रकारकेअन्नादिकपदार्थ तथारूपयौवनअवस्थासंपन्नमनोरमस्त्रियांतुमारेसुखवासते मैं इसआपणेगृहविषेहो संपादनकरतीहूं ॥ तिनअन्नादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासते तुमारेकूं आपणेगृहतैंबाहरजाणा योग्यनहीं हे ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकार माताकेवचनोंकूंश्रवणकरिके सोपुत्र जोकदाचित् बुद्धिमानहोवैहे ॥ तो सोपुत्र गृहतैंबाहरजाणेकेआग्रहकापरित्यागकरिके कहांअन्नहे कहांस्त्रीहे याप्रकारकावचनकहताहुआ शीघ्रही आपणेगृहविषेप्रवेशकरेहे ॥ और आपणेगृहविषे प्राप्तहुआसोपुत्र तामाताकीकृपाकरिके संपूर्णमनवांछितपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तैसे आपणेशरीरतैंबाह्य परशरीरोंकूंसुखकासाधनमानिकरिके तासुखकीप्राप्तिवासते बाह्यभ्रमणकरतेहुए जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं अंतरसुखकरणे वासते श्रुतिभगवतीनें प्रथम अन्नमयकोशका कथनकऱ्याहे ॥ ताश्रुतिभगवतीकेउपदेशतें यहअधिकारी पुरुष बाह्यविषयोंकापरित्यागकरिके ताअन्नमयकोशविषे प्राप्तहोवैहे॥और बाह्यस्थूलविषयोंकरिके जन्यजोसुखहे॥तासंपूर्णसुखकूं यहअधिकारीपुरुष ताअन्नमयकोशविषेही प्राप्तहोवैहे॥ हेशिष्य इसप्रकार श्रुतिमाताकेउपदेशतें बाह्यविषयोंतैंनिवृत्तहोइके ताअन्नमयकोशविषे

स्थितहुआ यहअधिकारीपुरुष यद्यपि स्थूलविषयजन्यसुखकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथापि सोअधिकारीपुरुष ताअन्नमयकोशविषे आत्मारूप वास्तवसुखकूं प्राप्तहोवैनहीं॥याकारणतैं सोसुखकीइच्छावान्अधिकारीपुरुष श्रुतिरूपमाताकेवचनविषे विश्वासकरिके तास्थूलशरीररूपअन्नमयकोशकापरित्यागकरिके ताअन्नमयकोशतैंअनंतर तीनकोशरूपसूक्ष्मशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥ तासूक्ष्मशरीरविषेभी यहअधिकारीपुरुष प्रथम अन्नमयकोशकापरित्यागकरिके तिसतैंअनंतर प्राणमयकोशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताप्राणमयकोशविषेभी वास्तवआत्मारूप आनंदकूं नहींदेखताहुआ सोअधिकारीपुरुष प्राणमयकोशकाभीपरित्यागकरिके तिसतैंअनंतर मनोमयकोशकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ता मनोमयकोशविषेभी वास्तवआत्मारूपआनंदकूं नहींदेखताहुआ सोअधिकारीपुरुष तामनोमयकोशकाभीपरित्यागकरिके तिसतैंअनंतर विज्ञानमयकोशकूंप्राप्तहोवैहै॥और ताविज्ञानमयकोशविषेभी आत्मारूपवास्तवआनंदकूं नहीं देखताहुआ सोअधिकारीपुरुष ताविज्ञानमयकोशकाभीपरित्यागकरिकैतिसतैंअनंतर आनंदमयकोशकूंप्राप्तहोवैहै॥ताकारणशरीररूप आनंदमयकोशविषेप्राप्तहुआयहअधिकारीपुरुष संपूर्णकार्यप्रपंचका परित्यागकरै है ॥ और ताआनंदमयकोशविषे सोअधिकारीपुरुष प्रथम इष्टवस्तुकेदर्शनजन्यसुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष ताइष्टवस्तुकेप्राप्तिजन्यसुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष ताइष्टपदार्थकेभोगजन्यसुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष सामान्यसुखरूपआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैअनंतर सोअधिकारीपुरुष सर्व तैंअनंतर आनंदस्वरूपब्रह्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ जिसब्रह्मकूंश्रुतिनैं पुच्छरूपकरिके तथाप्रतिष्ठारूपकरिके कथनकऱ्याहै ॥ और इसीसर्वअधिष्ठानब्रह्मके जनावणेवासते श्रुतिभगवतीनैंस्थूलअरुंधतीन्यायकूंअंगीकारकरिके अन्नमयादिकपंचकोशोंकूं आत्मारूपकरिके वर्णनकऱ्याहै॥ हेशिष्य॥ इसप्रकार श्रुतिभगवतीनैं सर्वअधिकारीजनोंऊपर अनुग्रहकरिके उपदेशकऱ्याजोआनंदस्वरूपब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूं जोअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिके नहींजानैं है ॥ सोपुरुष जीवताहुआभी वंध्यापुत्रनरशृंगकीन्याई असत्यभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ याअर्थ विषेभीतैतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरै हैं ॥ जोपुरुष ब्रह्मनहीं है याप्रकारजानै है॥तिसपुरुषकाआत्मा असत्यंही

होवैहे ॥ और जोपुरुष ब्रह्महे याप्रकारजाने हे ॥ तिसपुरुषकूं विद्वान्पुरुष सत्यजाने हैं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे सर्वकाआत्मारूपकरिके विद्यमानजोब्रह्महे ॥ ताआनंदस्वरूपब्रह्मकूं जोपुरुष नास्तिरूपकरिकेजानताहे ॥ तथा नास्तिरूपकरिकेकथनकरताहे ॥ तिसपुरुषकूं तामिथ्याज्ञानतें तथामिथ्यावचनतें महान्पापकीप्राप्तिहोवे हे॥तापापकर्मरूपदोषकेप्रभावतें सोनास्तिकपुरुष आपणेअंतर ब्रह्मानंदतेंविमुखहोइके बाह्यविषयोंकीप्राप्तिवासते रात्रिदिनविषे भ्रमणकरे हे ॥ और ताभ्रमणकरिके अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोइके सोबहिर्मुखनास्तिक पुनःमृत्युकूंप्राप्तहो वे हे ॥ और तामृत्युतेंअनंतर सोनास्तिकपुरुष पुनःजन्मकूंप्राप्तहो वे हे ॥ और ताजन्मतेंअनंतर सोनास्तिकपुरुष पुनःनानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहो वे हे ॥ और तिनदुःखों तेंअनंतर सोनास्तिकपुरुष पुनःमृत्युकूंप्राप्तहोवे हे ॥ इसप्रकार यमराजाकेवशकूंप्राप्तहुआ सोदीनपुरुष निरंतर संसारविषेभ्रमणकरे हे ॥ और सोबहिर्मुखनास्तिकपुरुष अल्पआयुषवालाहोवे हे ॥ तथा सर्वजन ताकानिरादरकरे हैं ॥ इसप्रकार जन्ममरणादिकअनेकदुःखोंकूंप्राप्तहुआ सोनास्तिकपुरुष असत्यकीन्याई हो वे हे ॥ और हेशिष्य ॥ गुरुशास्त्रकेवचनोंविषेविश्वासकरणेहारा जोआस्तिकपुरुषहे ॥ सोआस्तिकपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतें ताब्रह्मकेअस्तिपणेकूंजानिके जन्ममरणादिकदुःखोंसहितमायाकूंनाशकरणेहाराजो आत्मज्ञानहे ताआत्मज्ञानकूंसंपादनकरेहे ॥ और ताआत्मज्ञानकेप्रभावतें सोआस्तिकपुरुष सर्वदुःखोंतेंरहितहुआ सर्वदा आनंदस्वरूपब्रह्मरूपकरिकेस्थितहोवे हे ॥ ऐसे ब्रह्मवेत्ताआस्तिकपुरुषकूं वेदवेत्तामहात्मापुरुष सत्यरूपकरिकेकथनकरेहैं ॥ यातें जिसअधिकारीपुरुषकूं सुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवे॥तिस अधिकारीपुरुषनें गुरुशास्त्रउपदिष्टअतिइंद्रियअर्थविषे नास्तिकपणा कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु तागुरुशास्त्रउपदिष्टअर्थविषे याअधिकारीपुरुषोंनें सर्वदाआस्तिकपणाहीकरणा ॥ अब कोईकवृत्तिकारएकदेशी आनंदमयकोशकूंही ब्रह्मरूपकरिकेमाने हैं तिनोंकेमनके खंडनकरणेवासतेअन्नमयादिकपंचकोशोंके शिरादिकअवयवोंकेपरंपराकी पुच्छरूपब्रह्मविषेपरिसमाप्तिका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यापंचकोशोंविषे एकएककोशके शिर दक्षिणपक्ष उत्तरपक्ष उदर पुच्छ यहपंचपंचअव

यव कथनकरे हैं॥तिनपंचकोशोंके पंचपंचअवयवमिलिकै२५पंचविंशतिअवयवहोवैहैं॥तेपंचविंशतिअवयवरूपभूमिका याबहिर्मुखचित्तके स्थिरकरणेका कारणहोवै हैं ॥ अब तिनोंकेध्यानकाप्रकार निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य यहअधिकारीपुरुष आपणेचित्तकीबहिर्मुखताकेनि वृत्तकरणेवासते प्रथम यास्थूलशरीररूप अन्नमयकोशरूपपक्षीके मस्तककूं शिररूपकरिकैध्यानकरे ॥ तिसतैंअनंतर दक्षिणभुजाकूं दक्षि णपक्षरूपकरिकैध्यानकरे ॥ तिसतैंअनंतर वामभुजाकूं उत्तरपक्षरूपकरिकैध्यानकरे ॥ तिसतैंअनंतर उदरकूं उदररूपकरिकैध्यानकरे ॥ तिसतैंअनंतर दोनोंपादोंकूं पुच्छप्रतिष्ठारूपकरिकैध्यानकरे ॥ तिनपुच्छरूपपादोंतैंपरेयाअन्नमयकोशविषे दूसराकोईपदार्थहैनहीं ॥ इस प्रकार अन्नमयकोशकाध्यानकरिकै तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताअन्नमयकोशकेअनंतर दूसरेप्राणमयकोशकाध्यानकरे ॥ ताप्रा णमयकोशविषेभी अन्नमयकोशकीन्याईं शिरादिकपंच अवयवोंका यथाक्रमतैंध्यानकरे ॥ इसीप्रकार यहअधिकारीपुरुष मनोमय विज्ञा नमय आनंदमय यातीनकोशोंके शिरादिकअवयवोंकाध्यानकरे ॥ इसप्रकार अन्नमयादिकपंचकोशोंके शिरादिकअवयवरूप पंचविंशतिभूमिकावोंकूं यहअधिकारीपुरुष क्रमतैंध्यानकरे ॥ ताध्यानकरिकै याअधिकारीपुरुषकाचित्त अंतरमुखहोवै है ॥ हेशिष्य॥जैसे अन्नमयकोशके शिरादिकपंचअवयवोंके अंतविषे पुच्छरूपकरिकै तथाप्रतिष्ठारूपकरिकै कथनकरेजेदोपादहैं ॥ तेदोनोंपाद याअन्नमयको शका आधाररूपहैं ॥ तैसे अन्नमयादिकपंचकोशोंकेशिरादिकपंचविंशतिअवयवों केअंतविषे पुच्छरूपकरिकै तथाप्रतिष्ठारूपकरिकै कथ नकऱ्याजोब्रह्महै ॥ ताअधिष्ठानरूपब्रह्मविषेही यहचतुर्विंशतिभूमिका स्थितहोवै हैं और इसीअधिष्ठानब्रह्मकेबोधकरावणेवासते श्रुतिभगव तीनें शिरादिकपंचअवयवोंकरिकैयुक्त अन्नमयादिकपंचकोशोंकानिरूपणकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ श्रुतिभगवतीनें पुच्छप्रतिष्ठाशब्दकरिकै कथनकऱ्याजो सर्वका अधिष्ठानरूपब्रह्महै॥ताअधिष्ठानब्रह्मके अज्ञानहुए याजीवोंकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे किंचित्मात्रभीसुखकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा ताअज्ञानकेप्रभावतैं ब्रह्मकूं नास्तिरूपकरिकैजाणताहुआ सोपुरुष दोनोंलोकोंविषे असत्यभावकूंहीप्राप्तहोवै है॥ और जोपुरुष ताअधिष्ठानरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानै है ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे सर्व

सुखकीप्राप्तिहोवैहे ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ जोअर्थ फलवालाहोवैहे तथा प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिके अज्ञातहोवैहे ॥ ताअर्थके बोधन करणेविषेही श्रुतिका तात्पर्यहोवैहे ॥ सोऐसाफलवाला तथाअज्ञात अधिष्ठानब्रह्मरूपअर्थहै ॥ अन्नमयादिकपंचकोश फलवाले तथाअज्ञातहैनहीं ॥ यातें ताअधिष्ठानब्रह्मविषेही श्रुतिका तात्पर्यहै ॥ अन्नमयादिकपंचकोशोंके आत्मरूपताबोधनकरणेविषे श्रुतिका तात्पर्यनहीं है ॥ इतनेंग्रंथकरिके श्रवणकीरीतिसें आत्माकेवास्तवस्वरूपका निरूपणकऱ्या ॥ अब उत्तरग्रंथकरिके तिसीआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं मननकीरीतिसें निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार आत्मारूपब्रह्मके सत्यादिकधर्मोंकाविचारकरिके तिनतित्तिरिनामाब्राह्मणोंनें जिस अर्थकानिश्चयकऱ्याहे ॥ ताअर्थकूं तू सावधानहोइकेश्रवणकर ॥ हेशिष्य ब्रह्मज्ञानविषे जोब्रह्मभावकेप्राप्तिकीकारणताहै ॥ ताकूं संशयतें रहितकरणेवासते तेतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकाविचारकरतेभये॥अब ताप्रमेयरूपब्रह्मविषे असंभावनारूपसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासते प्रथम ताब्रह्मविषे तीनप्रकारकेसंशय निरूपणकरे हैं ॥ तहां सोब्रह्म विद्यमानहे अथवा नहींहे ॥ १ ॥ और सोब्रह्म अविद्वान्पुरुषकूं प्राप्तहोणेयोग्यहे अथवा नहींप्राप्तहोणेयोग्यहे ॥ २ ॥ और सोब्रह्म विद्वान्पुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यहे अथवा नहींप्राप्तहोणेयोग्यहे ॥ ३ ॥ यहतीनप्रकारकेसंशयहैं ॥ तहां प्रथमसंशयविषे सोब्रह्मनहींहे यादूसरीकोटीका पूर्वपक्षकीरीतिसें निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ केईकवादी याप्रकारकाविकल्पकरेहैं ॥ जिनवेदांतियोंकेमतविषे सोब्रह्म सत्य ज्ञान अनंतरूपहे ॥ तिनवेदांतियोंकेमतविषे ताब्रह्मकाज्ञान व्यर्थहे ॥ काहेतें ऐसासत्यज्ञानअनंतरूपब्रह्म किसीभीजीवकूं प्रतीतहोतानहीं ॥ यातें सोब्रह्म कहांभीहैनहीं ॥ जोकदाचित् सोसत्य ज्ञान अनंतरूपब्रह्म कहांभीहोता ॥ तो जैसे यालोकविषे हमजीवोंकूं पृथिवीआदिकपदार्थ प्रतीतहोवैहैं॥ तैसे सोब्रह्मभी हमारेकूं प्रतीतहोता ॥ और सोब्रह्म हमजीवोंकूं प्रतीत होता नहीं ॥ यातें सोब्रह्म हैनहीं ॥ अब दूसरेसंशयविषे सोब्रह्म अविद्वान्पुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यहे याप्रथमकोटीकूं पूर्वपक्षरूपकरिकेनिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ केईकवादीतो याप्रकारकाविकल्पकरेहैं ॥ वेदांतमतविषे जो ब्रह्मरूपआत्मा अंगीकारकऱ्याहे ॥ सोब्रह्मरूपआत्मा विद्वान्पुरुषोंका तथा अविद्वान्पुरुषोंका समानहीं है ॥ ताब्रह्मरूपआत्माकूं किसी

विद्वान्अविद्वान्विषे पक्षपातहैनहीं ॥ यातैं जैसे सोविद्वान्पुरुष ताब्रह्मरूपआत्माका स्मरणकरिके ताब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सो अविद्वान्पुरुषभी ताब्रह्मरूपआत्माकूं किसवासते नहींप्राप्तहोता ॥ किंतु सोअविद्वान्पुरुषभी ताब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्त होणा चाहिये ॥ और सोविद्वान्पुरुषही ताब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अविद्वान्पुरुष ताब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ याप्रकारके अर्थविषे तुमवेदांतियोंनें कोईकारण कह्याचाहिये ॥ और अविद्वान्पुरुषकूं ताब्रह्मरूप आत्माका स्मरणनहीं होवै है यह जो वेदांतीक है सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तुमवेदांतियोंनें ताअद्वितीयब्रह्मकूं सर्वजीवोंका आत्मारूपमान्याहै ॥ यातैं सो अद्वितीयब्रह्म जैसे ताविद्वान् पुरुषका आत्मारूपहै ॥ तैसे ताअविद्वान्पुरुषकाभी आत्मारूपहै ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषकीन्याई ताअविद्वान्पुरुषकूंभी ताब्रह्मरूपआत्माका स्मरण तथाप्राप्ति अवश्यहोवैगी ॥ अब तीसरेसंशयविषे सोब्रह्म विद्वान्पुरुषोंकूंभी प्राप्तहोणेयोग्य नहीं है यादूसरीकोटीकूं पूर्वपक्षरूपकरिके निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य केईकवादीतो याप्रकारका विकल्पकरैहैं॥तुमवेदांतियोंनें अंगीकारकऱ्याजोब्रह्महै॥ताब्रह्मकूं जोकदाचित् अविद्वान् पुरुष नहींप्राप्तहोताहोवै॥तो सोतुम्हाराब्रह्म असत्यहीहोवैगा॥काहेतैं सोब्रह्म सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै॥और आपणाआत्मा सर्व जीवोंकूं नित्यहीप्राप्तहै॥यातैं ताब्रह्मकूं सर्वजीवोंकाआत्मारूपमानिके अप्राप्तकहणा अत्यंतविरुद्धहै॥और ताअविद्वान्पुरुषकूं अप्राप्तहोणेतैं सोब्रह्म जभी असत्यभया ॥ तभी जैसे यालोकविषे वंध्यापुत्रादिकअसत्यपदार्थोंकूं कोईभीपुरुष प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ताअसत्यब्रह्मकूं जैसे अविद्वान्पुरुष प्राप्तनहींहोवैहै ॥ तैसे विद्वान्पुरुषभी ताअसत्यब्रह्मकूं प्राप्तनहींहोवैगा ॥ और ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिवचनकूं अंगीकारकरिके तुमवेदांती ताब्रह्मकूं जोसत्यमानोंगे ॥ तो विद्वान्पुरुषकूं सोब्रह्म प्राप्तहोवैहै ॥ और अविद्वान्पुरुषकूं सोब्रह्म प्राप्तहोवैनहीं ॥ यहतुमाराकहणा असंगतहोवैगा ॥ काहेतैं जैसे एकहीआकाशकूं विद्वान्पुरुषतो प्राप्तहोवैहै ॥ और अविद्वान्पुरुष ताआकाशकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यहकहणा संभवैनहीं ॥ तैसे ताएकहीअद्वितीयब्रह्मकूं विद्वान्पुरुषतो प्राप्तहोवैहै और अविद्वान्पुरुष ताब्रह्मकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहकहणाभीसंभवैनहीं ॥ किंतु जैसे सर्वज्ञपुरुषकूं तथामूढबालककूं ताआकाशकीप्राप्ति समानहीहै ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकूं तथाअवि

द्वान्पुरुषकूं ताअद्वितीयब्रह्मकीप्राप्ति समानही है ॥ अब इनतीनप्रश्नोंकेउत्तरकहणेवासते प्रथम सूचीकटाहन्यायकरिके ताब्रह्मकेप्राप्तिकी तथाअप्राप्तिकी व्यवस्थाकूं निरूपणकरे हैं ॥ सूचीकटाहन्यायका यहअर्थ है ॥ जैसे यालोकविषे कोईलुहारपुरुष किसीकटाहकूंबणावता होवे ॥ तालुहारकेपास कोईपुरुष टेढोसूचीकूंसुधाकरावणेवासतेआवे ॥ तहां सोलुहारपुरुष ताकटाहकूंछोडिके प्रथम तासूचीकूंसुधाकरिदेवे है ॥ याकानाम सूचीकटाहन्यायहै ॥ तैसे पूर्वकहेहुएतीनप्रश्नोंकाउत्तर आगेविस्तारकरिकेकहणाहै ॥ ताउत्तरकेसुखपूर्वकबोधवासतै प्रथम ताब्रह्मके प्राप्तिअप्राप्तिकीव्यवस्था निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ तैतित्तिरिनामाब्राह्मण पूर्वउक्ततीनप्रश्नोंकीकल्पनाकरिके तिन प्रश्नोंका याप्रकारकाउत्तर कहतेभये ॥ यद्यपि सोब्रह्म विद्वान्पुरुषोंकेप्रति तथाअविद्वान्पुरुषोंकेप्रति समानहीप्राप्तहै ॥ और सोब्रह्म विद्वान्पुरुषका तथाअविद्वान्पुरुषका समानही आत्मारूपहै॥यातैंसोब्रह्म वास्तवतैं विद्वान्पुरुषकूं तथाअविद्वान्पुरुषकूं नित्यहीप्राप्तहै॥ तथापि सोअविद्वानपुरुष ताब्रह्मकूं कदाचित्भी प्राप्तहोतानहीं ॥ याप्रकारकाअर्थही युक्तिकरिकेसंभवे है ॥ काहेतें अविद्याकेनाशहुए जोआवरणरहितब्रह्मकाप्रकाशहै ॥ सोप्रकाशही ताब्रह्मकोप्राप्तिहै ॥ और सोअविद्याकानाश ब्रह्मविद्याकरिकेहीहोवेहै ॥ साब्रह्मविद्या ताअविद्वान्पुरुषकूं प्राप्तहैनहीं ॥ यातैं सोअविद्वान्पुरुष ताअविद्यातैंरहितहोइसकेनहीं ॥ याकारणतैंही सोअविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयब्रह्मकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकेस्पष्टकरे हैं॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे किसीदोपुरुषोंके आपणेआपणेगृहविषे सुवर्णादिरूपधन पृथिवीविषे दाब्याहोवे ॥ तहां एकपुरुषतौ ताधनरूपनिधिकूं जाणताहै ॥ और दूसरापुरुष ताधनरूपनिधिकूं जाणता नहीं ॥ तहां वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो तेदोनोंपुरुष ताधनरूपनिधिवालेहैं ॥ तथापि ताधनरूपनिधिकेज्ञानवालापुरुषतो ताधनरूपनिधिकूं प्राप्तहुआहैऔरताधनरूपनिधिकेअज्ञानवालापुरुष ताधनरूपनिधिकूं प्राप्तनहींभयाहै याप्रकार तानिधिकेप्राप्तिका तथाअप्राप्तिका व्यवहार लोकविषेहोवैहै॥तैसे विद्वान्पुरुषकूं तथाअविद्वान्पुरुषकूंयद्यपिवास्तवतैं ब्रह्मकोप्राप्ति समानही है तथापि जैसे विद्वान्पुरुषकूं ताब्रह्मकाज्ञानहै ॥ तैसे अविद्वान्पुरुषकूं ताब्रह्मकाज्ञानहैनहीं॥याकारणतैं सोअविद्वान्पुरुष अध्यात्मदुःखकरिके तथाअधिदेवदुःख

करिके तथाअधिभूतदुःखकरिके सर्वदा पीडितरहैहै याकहणेतैंयहअर्थ सिद्धभया ॥ आपणेसत्यस्वभावके बलतैं असत्यपणेकापरित्याग करिके सर्वत्र समानस्थितहुआजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मका विद्वान्पुरुषकूं जो ज्ञानहै ॥ सोब्रह्मकाज्ञानही ताविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्मकीप्राप्तिहै ॥ और अविद्वान्पुरुषकूं जो ताब्रह्मकाअज्ञानहै ॥ सोब्रह्मकाअज्ञानही ताअविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्मकीअप्राप्तिहै ॥ इतनैंकरिकेब्रह्मकेप्राप्तिअप्राप्तिकी व्यवस्था निरूपणकरी ॥ अब कामना विचार जगत्कीउत्पत्ति जगत्विषेप्रवेश भोग्यपदार्थरूपता यापंचहेतुओंकरिके ताब्रह्मविषे सत्यपणेकीसिद्धिकरैहैं॥हेशिष्य ॥ आकाशादिकपंचभूतरूप तथातिनपंचभूतोंकाकार्यरूप जितनाकीयहस्थूलसूक्ष्मजगत्है ॥ सोयहसंपूर्णजगत् जिसब्रह्मतैंउत्पन्नभयाहै ॥ सोब्रह्म असत्यहै याप्रकारकीशंकाकरणेविषेभी कोईवादी समर्थनही है जभी ताब्रह्मकेअसत्यपणेकीशंका करणेविषेभी कोईवादी समर्थनहींभया ॥ तभी ताब्रह्मकेअसत्यपणेकीसिद्धिकरणेविषे कोनवादी समर्थहोवैगा ॥ किंतु ताब्रह्मके असत्यपणेकूं कोईभीपुरुष सिद्धकरिसकेनहीं ॥ अब ताब्रह्मतैं जगत्केउत्पत्तिकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ अनादिजीवोंकेकर्मवासनाकरिके विचित्रभावकूंप्राप्तभईजामायाहै ॥ तामायारूपकंचुककरिकेयुक्तहुआ सोपरमात्मादेव याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व एकअद्वितीयरूपकरिके स्थितहोताभया॥और सोईहीपरमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषे जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंकरिकेप्रेरणाकऱ्याहुआ भूतभौतिकजगत्केउत्पन्नकरणेवासते याप्रकारकोकामनाकरताभया ॥ मैंपरमात्मादेव आपणाहीजन्मकरिके बहुतरूपहोवों ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार आगेउत्पन्नहोणेहारा जोनामरूपक्रियास्वरूप जडचेतनरूपजगत्है ॥ ताजगत्कूंविषयकरणेहारी कामनारूपचिंताकूंकरिकेसोपरमात्मादेव ताजगत्के विशेषनामरूपादिकोंकेकरणेवासते पुनःयाप्रकारकाविचारकरताभया ॥ पूर्वकल्पविषे याजगत्के जिसाजिसपदार्थका जिसाजिसप्रकारका नामरूपक्रियाथा ॥ इसकल्पविषेभी याजगत्के तिसतिसपदार्थका तिसातिसप्रकारका नामरूपक्रिया मैं उत्पन्नकरौं ॥ ॥हेशिष्य ॥इसप्रकारकाविचारकरिके सोपरमात्मादेव पूर्वकल्पकीन्याई यास्थावरजंगमरूपजगत्कूं उत्पन्नकरताभया ॥ और तिनसर्वपदार्थोंकेभिन्नभिन्ननामरूपक्रियाओंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ जैसे तापरमात्मादेवनैं पूर्वकल्पविषे सूर्यचंद्रमादिकजगत्कूं उत्पन्न

कऱ्याथा ॥ तैसे इसकल्पविषेभी सूर्य चंद्रमा स्वर्ग पृथ्वी अंतरिक्ष इसतैंआदिलैके जितनाकोभूतभौतिकजगत्‌है ॥ तासंपूर्णजगत्‌कूं सो परमात्मादेव उत्पन्नकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोपरमात्मादेव स्थावरजंगमरूपसर्वजगत्‌कूंउत्पन्नकरिके आपही जीवरूपकरिके ताजगत्‌विषेप्रवेशकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मविदाप्नोतिपरं॥यासूत्ररूपश्रुतिविषे जिसब्रह्मकेज्ञानतैं पूर्व मोक्षकोप्राप्तिकथनकरीथी ॥ और ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म॥याश्रुतिविषे पूर्व जिसब्रह्मकास्वरूपलक्षण कथनकऱ्याथा सोईहीब्रह्म या स्थावरजंगमरूपजगत्‌कूं उत्पन्नकरिके ताजगत्‌विषे जीवरूपकरिकेप्रवेशकरताभया ॥ इसप्रकार ॥ सोएकहीपरमात्मादेव नानारूपकरिकेउत्पन्नहोताभया ॥ अब तिननानारूपोंकानिरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥सोपरमात्मादेवही सत्‌रूप तथात्यत्‌रूप होताभया॥इहां पृथ्वी जल तेज यह तीनभूत नेत्रादिकइंद्रियोंकेविषयहैं ॥याकारणतैं तिनपृथ्वीआदिकतीन भूतोंकूं श्रुतिभगवती सत् यानामकरिकेकथनकरे है॥और वायु आकाश यहदोनोंभूतनेत्रादिकइंद्रियों केअविषयहैं॥याकारणतैंतिनदोनोंभूतोंकूं श्रुतिभगवती त्यत् यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और सोपरमात्मादेवहीनिरुक्तरूप तथाअनिरुक्तरूप होताभया॥इहां मनुष्यादिकजीवजिनआकाशादिकपंचभूतोंका तथा तिनभूतोंकेकार्यका नामरूपक्रियाकरिके निरूपणकरैहैं ॥ तिनभूतभौतिकपदार्थोंकानाम निरुक्तहै ॥ और मनुष्यादिकजीव जिनपदार्थोंका नामरूपक्रियाकरिके निरूपणनहींकरैहैं ॥ तिनपदार्थोंकानाम अनिरुक्तहै ॥ और सोपरमात्मादेव निलयनरूप तथाअनिलयनरूप होताभया ॥ इहां पृथिवीआदिकोंकेआश्रितरहनेहारे जेघटादिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकानाम निलयनहै ॥ और लोकविषे निराधाररूपकरिकेप्रसिद्ध जेआकाशादिकहैं ॥ तिनोंकानाम अनिलयन है ॥ और सोपरमात्मादेवही विज्ञानरूप तथाअविज्ञानरूप होताभया ॥ इहां लोकविषे चेतनरूपकरिकेप्रसिद्ध जेनेत्रादिकइंद्रियहैं तथाअंतःकरणहैं॥तिनोंकानाम विज्ञानहै॥और जडरूपकरिकेप्रसिद्ध जेघटपटादिकपदार्थ हैं॥तिनोंकानाम अविज्ञानहै ॥ औरसोपरमात्मादेवही सत्यरूप तथाअनृतरूप होताभया ॥ इहां व्यवहारकालविषे बाधतैंरहित जेभूमिघटादिकव्यावहारिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकानामसत्यहै ॥ और व्यवहारकालविषेहो बाध्यमान जेरज्जुसर्पादिकप्रातिभासिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकानाम अनृतहै ॥ आत्मज्ञानतैं और

ओरेजोकालहै ताकानाम व्यवहारकाल है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार आस्तिरूपकरिकै तथानास्तिरूपकरिकै प्रसिद्ध जितनाकीयह विचित्रजगत् है ॥ तिसजगत्‌रूपकूं सोएकअद्वितीयब्रह्महीप्राप्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ जैसे एकहीआकाश गंधर्वनगररूपकरिकै नानाभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे एकहीअद्वितीयब्रह्म जगत्‌रूपकरिकै नानाभावकूंप्राप्तहोवे है॥ओर हेशिष्य॥सोसत्यरूपब्रह्मही पूर्व याजगत्‌रूपकरिकेउत्पन्नभयाहै ॥ याकारणतैं वास्तवतैंअसत्यरूपभीयहजगत् याचितमंडनन्यायकरिकै सत्यरूपहुआप्रतीतहोवे है॥तात्पर्ययह॥जैसे आपणे गृहकेभूषणवस्त्रादिकपदार्थोंतैंरहित जोकोई निर्धनपुरुषहै॥सोनिर्धनपुरुष दूसरेधनवान्‌पुरुषोंतैं भूषणवस्त्रादिकपदार्थमांगिकेआपणेगृहकी शोभाकरैहै ॥ याकानाम याचितमंडनन्यायहै॥ तैसे स्वभावतैं आपणीसत्तातैंरहित जोयहजगत्‌है सोयहजगत् ताअधिष्ठानब्रह्मकेसत्ताकूं अंगीकारकरिकैही सत्यरूपहोवे है॥शंका॥हेभगवन् याजगत्‌विषे आपणीहोसत्ता किसवास्तैनहींहोवे॥समाधान॥हेशिष्य॥भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे जोपदार्थ एकरसहोवे ॥ किसीकालविषेभी अन्यथाभावकूंनहींप्राप्तहोवे ॥ सोपदार्थ सत्यरूपहोवे है ॥ ऐसीसत्यरूपता उत्पत्तिनाशवान्‌याजगत्‌विषे कदाचित्‌भीसंभवैनहीं किंतु उत्पत्तिनाशतैंरहितब्रह्मविषेही सासत्यरूपता संभवे है ॥ ओर हेशिष्य ॥ जोपदार्थ जहांआदिकालविषे तथा अंत्यकालविषे नहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ तहां मध्यकालविषेभीनहींहोवे है ॥ जैसे रज्जुविषे सर्प आदिकालविषेभीनहीं है ॥ तथा अंत्यकालविषेभीनहीं है ॥ याकारणतैं तारज्जुविषे सोसर्प मध्यकालविषेभीनहीं है ॥ तैसे ता अधिष्ठानब्रह्मविषे यहसंपूर्णजगत् आदिकालविषेभीनहीं है ॥ तथा अंतकालविषेभीनहीं है॥ऐसाजगत् मध्यकालविषे किसप्रकार सत्यहोवेगा ॥ किंतु यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् मिथ्यारूपहोहै ॥ ऐसामिथ्यारूपयहजगत् तासत्यरूपअधिष्ठानब्रह्मकीसत्ताकूंअंगीकारकरिकैहो सत्यरूपहुआ प्रतीतहोवे है॥जैसे अग्निभावतैंरहित जोलोहकापिंडहै॥सो अग्निकेसंबंधतैं अग्निरूपताकूंप्राप्तहोवे है ॥तैसे अधिष्ठानसत्यब्रह्मके तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकै यहमिथ्याजगत्‌भी सत्यरूपहुआ प्रतीतहोवे है ॥ हे शिष्य ॥ याअर्थविषेभी तैतित्तिरीनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरे हैं ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ततोवैसदऽजायत तदात्मानंस्वयमकुरुत तस्मात्तत्सुकृतमुच्यते॥ अर्थयह

यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व असत्रूपहोताभया ॥ ताअसत्तैं यहसत्जगत् उत्पन्नहोताभया ॥ और सोकारणब्रह्म आपणे आत्माकूंही प्रपंचरूपकरताभया ॥ याकारणतैं सोब्रह्म सुकृत यानामकरिकेकथनकरीताहे ॥१॥ अब याहीमंत्ररूपश्लोकके अर्थकूं स्पष्ट करिके निरूपणकरेंहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे गंधर्वनगर आपणीउत्पत्तितैंपूर्व आकाशविषे असत्होवैहे ॥ तैसे यहजगत्भी आपणीउत्पत्तितैं पूर्व ताब्रह्मरूपआत्माविषे असत्होताभया ॥ हेशिष्य ॥ इहां असत्शब्दकरिके तुमनैं अत्यंताभावरूपशून्यका ग्रहणनहींकरणा॥किंतु ताअसत्शब्दकरिके तुमनैं अस्पष्टनामरूपवालेजगत्का ग्रहणकरणा ॥ यातैं ॥ असद्वाइदमग्रआसीत्॥याश्रुतिवचनतैं यहजगत् आपणी उत्पत्तितैंपूर्व अस्पष्टनामरूपवालाहोताभया याप्रकारकाअर्थ सिद्धहोवैहे ॥ तिसतैंअनंतर सृष्टिकालविषे सोअस्पष्टनामरूपवालाजगत् अस्पष्टनामरूपवाला होताभया ॥ और यहसंपूर्णजगत् ताकारणरूपब्रह्मकीसत्ताकरिकेही सत्यरूपहोवैहे ॥ स्वभावतैं यहजगत् सत्यरूपहैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताब्रह्मकूं सुकृत यानामकरिकेकथनकरेहै ॥ और हे शिष्य ॥ यहजगत्केउत्पत्तिकाप्रकरण यद्यपि ताब्रह्मरूपआत्माकेसत्य रूपताकूं स्पष्टकरणेवासतेंही प्रवृत्तभयाहे ॥ तथापि ताप्रकरणकेअभिप्रायकूं नजाणिके केईकमंदबुद्धिपुरुष ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिवचननैं कारणकेअसत्यरूपताकूंही कथनकर्‍याहे याप्रकारकावचनकहे हैं ॥ जैसे वेदबाह्यनास्तिकपुरुष बीजकेप्रध्वंसाभावतैं अंकुरकीउत्पत्ति अंगीकारकरेहैं ॥ और कोईकअर्द्धवैनाशिकनैयायिकतो ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुति विषेस्थित जोकार्यप्रपंचका वाचकइदंशब्दहे ताइदंशब्दका असत्शब्दकेसाथ सामानाधिकरण्य कल्पनाकरिके याजगत्रूपकार्यकूंही उत्पत्तितैंपूर्व असत्कहेहैं ॥ और केईकमंदबुद्धिशून्यवादीतो ताश्रुतिविषेस्थितइदंशब्दकीअर्थरूपता कार्यकारण यादोनोंविषेमानिके तथाताइदं शब्दका असत्शब्दकेसाथ सामानाधिकरण्य कल्पनाकरिके कार्यकारणरूपसर्वजगत्कूं शून्यरूपमानैहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिके पूर्वउक्तयथार्थअर्थकूंनजाणिकरिके केईकमंदबुद्धिपुरुषतो कारणकूंही असत्यमानैहैं ॥ और केईकमंदबुद्धिपुरुषतो कार्यकूंही असत्यमाने हैं ॥ और कोईकमंदबुद्धिपुरुषतो कार्यकारण दोनोंकूंअसत्यमाने हैं ॥

तिनमंदबुद्धिपुरुषों तें यहपूछाचाहिये ॥ कारणादिकोंकूं जोतुम असत्मानतेहो ॥ सो केवलयुक्तियोंके बलतेंमानतेहो ॥ अथवा श्रुतिके बलतेंमानतेहो ॥ तहां केवलयुक्तियोंके बलतें तिनकारणादिकोंविषे असत्यरूपताहै यहप्रथमपक्ष जोतेवादी अंगीकारकरें सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें याआत्मपुराणके अष्टमअध्यायकेआदिविषे प्रागभावादिकोंविषे कारणताकेखंडनप्रसंगविषे तिनबहिर्मुखवादियोंके नानाप्रकारकीयुक्तियोंकाखंडन हम विस्तारतेंकरिआये हैं ॥ यातें युक्तियोंके बलतें तिनकारणादिकोंविषे असत्यरूपतासिद्धहोवेनहीं ॥ और श्रुतिप्रमाणकेतेंबलतें तिनकारणादिकोंविषे असत्यरूपताहै यहदूसरापक्ष जोतेवादी अंगीकारकरें सोभीसंभवेनहीं॥काहेतें॥सत्यंज्ञान मनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मकूंसत्यरूपकहिके तिसीसत्यब्रह्मतें जगत्केउत्पत्तिकूंकथनकरनेहारा जोवेदभगवान्है ॥ सोवेदभगवान् ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिवचनकरिके ताकारणरूपसत्यब्रह्मकूं असत्यरूप किसप्रकारकहेगा ॥ किंतु नहींकहेगा ॥ और जोकदाचित् सोवेदभगवान् प्रथम ताकारणकूंसत्यरूपकहिके पश्चात् तिसीकारणकूं असत्यरूपकहेगा ॥ तो जैसे मेरेमुखविषे जिह्वानहीं है याप्रकारकावचन वदतोव्याघातदोषवालाहै ॥ तैसे सोवेदभगवान्भी वदतोव्याघातदोषवालाहोवेगा ॥ यातें ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिका कारणकेअसत्पणेविषे तात्पर्यनहींहै ॥ और हेशिष्य ॥ ताश्रुतिके यथार्थअर्थकूंनजाणिकरिके जेअर्ध वैनाशिकनैयायिकवादी उत्पत्तितेंपूर्व याजगत्रूपकार्यकूं असत्यमानेहैं ॥ तिनवादियोंकेमतविषे अभीवर्तमानकालमें याजगत्रूपकार्यविषे सत्यपणा नहींहोणाचाहिये ॥ किंतु जैसे मृत्तिकाके घटशरावादिककार्योंविषे सर्वजीवोंकूं मृत्तिकाबुद्धिहोवे है ॥तैसे याकार्यरूपजगत्विषेभी सर्वजीवोंकूं असत् असत् याप्रकारकीअनुगतबुद्धिहोणीचाहिये ॥ और याकार्यरूपजगत्विषे किसीभीजीवोंकूं असत्यबुद्धिहोतीनहीं ॥ उलटा ॥ घटोस्ति पटोस्ति ॥ याप्रकारकीसत्यबुद्धिही होवे है ॥ यातें उत्पत्तितेंपूर्व याकार्यजगत्केअसत्यपणेविषे ताश्रुतिकातात्पर्यनहीं है ॥ किंवा ॥ जोकदाचित् याजगत्रूपकार्यकेअसत्यपणेविषेहो ताश्रुतिका तात्पर्यहोवे तो ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिवचनतेंअनंतर ताजगत्कीसत्यरूपताकूंकथनकरणेहाराजो ॥ ततोवैसदजायत ॥ यहश्रुतिवचनहै ॥ सो असंगतहोवेगा ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ यह कार्यरूपजगत् स्वभावतेंसत्यरूप मतहोवे ॥ तथापि कारणरूपब्रह्मकीसत्ताकरिके यहकार्यजगत् सत्यरूप किसवासतें नहींहोवे ॥

समाधान ॥ हेवादी सत्यब्रह्मकेतादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइके यहकार्यजगत् सत्यरूपहोवे है ॥ अहअर्थ जोतुमनें अंगोकारकऱ्याहे॥सोहमारे कूंभीइष्टहै ॥ ब्रह्मकीसत्ताकरिकै कार्यजगत्कीसत्यरूपताकूं हम निवारणकरतेनहीं ॥ और ताब्रह्मकीसत्ताकेप्रभावतैं यह असत्जगत्भी सत्यरूपहोवे है याअर्थ केबोधनकरणेवासतेही तिनतित्तिरिनामाब्राह्मणों नें असद्वा इत्यादिकश्लोकका कथनकऱ्याहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे याळोकविषे कोईपुरुष एकगृहतैंवस्तुकूंले के दूसरेगृहविषेलेजावैहे ॥ तैसे ब्रह्मकेसत्ताकूं प्रपंचविषे कौन लेजावे है॥समाधान॥हेशिष्य भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकाळोंविषे असत्रूप जोयहजगत्रूपकार्य है ॥ सोजगत्रूपकार्य कारणब्रह्मकीसत्ताकरिकेही हमारेकूं सत्यरूपप्रतोतहो वे है॥याकेविषे अनादिमायाकरिकेकऱ्याहुआ आत्माअनात्माकाअध्यासहोकारणहै॥तात्पर्ययह॥जैसे स्वभावतैं उष्णस्पर्शतैं रहितजोजळहै॥ताजळविषे अग्निकेसंगरूपदोषकरिकै उष्णता प्रतीतहोवे है ॥ तैसे स्वभावतैं आपणीसत्तातैंरहित जोयहजगत्है ॥ ताअसत्जगत्विषे सत्ब्रह्मकेतादात्म्यअध्यासरूपदोषकरिकै सत्यरूपता प्रतीतहोवे है ॥ यातैं यहअध्यासही ताब्रह्मकेसत्ताकूं जगत्विषेलेजावे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ब्रह्मतैंभिन्नहीकोईपदार्थ आपणीसत्ताकरिकै याकार्यरूपजगत्कूं सत्यरूप किसवासतैनहींकरता ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तासत्यस्वरूपब्रह्मतैंभिन्न जितनेकी कार्यरूप तथाकारणरूप पदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ अनात्मारूपहोणेतैं असत्यरूपही हैं ॥ यातैं ताब्रह्मतैंभिन्न किसीभीपदार्थकीसत्ताकरिकै याजगत्कीसत्यरूपता संभवेनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे याळोकविषे धनवान्पुरुषही अन्यनिर्धनपुरुषकूं धनवान्करिसकैहे ॥ और जोपुरुष आपहीनिर्धनहोवे है ॥ सोनिर्धनपुरुष अन्यनिर्धनपुरुषकूं धनवान् करिसकैनहीं ॥ तैसे तासत्यब्रह्मतैंभिन्नरूपताकरिकै आपहीअसत्यभावकूंप्राप्तहुआसोपदार्थ याअसत्यजगत्कूं सत्यरूपकरिसकैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे याळोकविषे किसीमहान्वनविषे भ्रमणकरताहुआकोईक नेत्रहीनअंधपुरुष जभी किसीअन्यनेत्रवालेपुरुषकूं मार्गकाउपदेश करे है॥तभी सोनेत्रोंवाळापुरुषताअंधपुरुषकेप्रति याप्रकारकाउपालंभदेवे है ॥ हे अंधपुरुष जिसमार्गका तूं हमारेप्रति उपदेशकरताहै॥तिसमार्गकूं तूं आप किसवासतेनहीं देखता॥तैसे ब्रह्मतैंभिन्न जोकोईपदार्थ याकार्यजगत्केसत्ताकूंसिद्धकरे है ॥ तापदार्थकेप्रति यहवचन कह्याचा

हिये ॥ हेपदार्थ ब्रह्मतैंभिन्नहुआ तूं आपहीअसत्यरूपहै ॥ यातैं प्रथम तूं आपणेसत्ताकूंतो सिद्धकर ॥ तिसतैंअनंतर तुमनैं याकार्यजगत्विषे सत्ताकीसिद्धिकरणी ॥ आपणीसत्ताकेसिद्धितैंविना दूसरेविषेसत्ताकीसिद्धिकरणी संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ ब्रह्मतैंभिन्नकोईपदार्थ आपणीसत्ताकरिके याकार्यजगत्कूं सत्यरूपकरैहै यहकहणा तभीसंभवै जभी किसीपदार्थ विषे ताब्रह्मकाभेद सिद्धहोवै ॥ सोब्रह्मतैंभिन्न कोईपदार्थहै नहीं ॥ किंतु यहसंपूर्ण स्थूलसूक्ष्मप्रपंच ताब्रह्मरूपहीहै ॥ और यहसंपूर्णप्रपंच ब्रह्मरूपही है याअर्थकूं सर्वंखल्विदंब्रह्म ॥इत्यादिकश्रुतिवचनोंकरिकै वेदवेत्तामहात्मापुरुष वारंवार कथनकरैहै ॥ यातैंताब्रह्मतैंभिन्न कोईभीपदार्थनहीं है॥किंवा जोकदाचित् कोईस्थूलपदार्थ तथासूक्ष्मपदार्थ ताब्रह्मतैंभिन्न अंगीकारकरिये ॥ तो ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिनैं कथनकरीजोब्रह्मविषेअनंतरूपता सा नहींसिद्धहोवैगी॥काहेतैं जैसेआकाशादिकपदार्थ पृथिवीआदिकोंतैंभिन्नहैं॥यातैं तेआकाशादिक भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालेहोणेतैंअनंतरूपनहीं हैं तैंसे सोब्रह्मभी भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोणेतैं अनंतरूप नहींहोवैगा औरसत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिनैं साअनंतता ब्रह्मकास्वरूपकह्याहै यातैं ताअनंततास्वरूपके अभावहुए ताब्रह्मकाभीअभाव प्राप्तहोवैगा ॥ जैसे यालोकविषे अग्निआदिकतेजका प्रकाश तथाउष्णता यह दोनोंस्वरूपहैं ॥ ताप्रकाश तथाउष्णता स्वरूपकेअभावहुए ता तेजकाभी अभावहीहोवे है ॥ तैसे ताअनंततास्वरूपकेअभावहुए ताब्रह्मकाभीअभावहीहो वैगा॥और ताब्रह्मकेअभावहुए ताब्रह्मकूंबोधनकरणेहारा जोउपनिषद्रूपज्ञानकांडहै सो अप्रमाणताकूंप्राप्तहो वैगा॥और ताउपनिषद्रूपज्ञानकांडकेअप्रमाणहुए ताज्ञानकेसाधनोंकूंबोधनकरणेहारा जोकर्मकांडहै तथाउपासनाकांडहै सोभी अप्रमाणताकूंप्राप्तहो वैगा ॥ और सर्वप्रमाणोंविषेराजारूप तथाभ्रमादिकदोषों तैं रहित जोवेदभगवान्है ॥ तावेदभगवान्केअप्रमाणहुए भ्रमादिकदोषोंकरिकैयुक्त जेलौकिकवचनहैं तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणहैं ॥ तेसंपूर्ण अप्रमाणताकूंप्राप्तहो वैं गे ॥ और तिनप्रत्यक्षादिकविशेषप्रमाणोंकूं अप्रमाणरूपताहुए सामान्यतैं प्रमाणमात्रकूंही अप्रमाणरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ और यालोकविषे किसीप्रमाणकरिकैही वस्तुकीसिद्धिहोवे है ॥ प्रमाणतैंविना वस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं तिनप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंविषे जभी अप्रमाणरूपताप्राप्तभई ॥ तभी ताब्रह्मतैंभिन्न किसीस्थू

लसूक्ष्मपदार्थंकी तथा किसीकार्यकारणपदार्थंकी किसप्रकारसिद्धिहोवैगी ॥ किंतु प्रमाणतैंविना तान्नह्मतैंभिन्न किसीभीपदार्थकीसिद्धि नहींहोवैंगी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ यालोकविषे कोईअसत्यपदार्थभी तान्नह्मरूपआत्मातैंभिन्ननहींहै ॥ जभी कोईअसत्यपदार्थभी तान्नह्मरूपआत्मातैंभिन्ननहींभया ॥ तभी तान्नह्मरूपआत्माकीसत्ताकूंपाइके सत्यरूपताकूंप्राप्तभयेजेपदार्थहैं ॥ तेसत्यपदार्थ तान्नह्मरूप आत्मातैंभिन्न किसप्रकारहोवैंगे ॥ किंतु तेसत्पदार्थ तान्नह्मतैंभिन्न कदाचित्भीनहींहोवैंगे ॥ और हेशिष्य॥असद्वाइदमग्रआसीत् ॥यहश्रुतिवचन कारणकेअसत्यरूपताकूं बोधनकरैहै ॥ अथवा कार्यकेअसत्यरूपताकूं बोधनकरैहै ॥ अथवा कारण कार्य यादोनोंकेअसत्यरूपताकूंबोधनकरैहै ॥याप्रकारकेतीनविकल्प जोपूर्व मंदबुद्धिपुरुषोंनेकरैहैं ॥सोतीनोंप्रकारकेविकल्प संभवतेनहीं ॥काहेतैंयालोकविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकेही वस्तुकीसिद्धिहोवैहै॥प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंतैंविना किसीवस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं॥और याजगत्रूपकार्यके असत्यरूपताकूं तथाकारणकेअसत्यरूपताकूं कोईप्रत्यक्षादिकप्रमाण सिद्धकरतानहीं॥उलटा तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण ॥ घटोअस्ति॥पटोअस्ति॥इत्यादिप्रतीतियोंकरिके ताकार्यकारणके सत्यरूपताकूंहीसिद्धकरैहैं॥किंवा॥कार्यविषे तथाकारणविषे जो असत्यरूपताहोवै॥तौ असद्वाइदमग्रआसीत्॥ याश्रुतिनें इदंशब्दकरिके ताकार्यकारणका जोकथनकर्‍याहै ॥ सोअसंगतहोवैगा॥ काहेतैं प्रत्यक्षज्ञानकाविषय तथासमीपवर्ति जोवस्तुहै ॥ तावस्तुकूंहीइदंशब्द कथनकरैहै ॥ साप्रत्यक्षज्ञानकीविषयता तथासमीपवर्तिपणा असत्यवस्तुविषे संभवैनहीं ॥ याकारणतैंभी ताकार्यकारणविषे असत्यरूपतासंभवैनहीं॥ किंवा ॥ याजगत्रूपकार्यविषे तथाताकेकारणविषे प्रत्यक्षज्ञानकीविषयताकूंअंगीकारकरिके जोमंदबुद्धिवादी ताकार्यकारणविषे असत्यरूपतामानैहै ॥सोअत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतैं सोप्रत्यक्षज्ञान विद्यमानवस्तुकूंही विषय करै है ॥ अविद्यमानवस्तुकूं सोप्रत्यक्ष विषयकरैनहीं ॥ याअर्थकूं सर्ववादी अंगीकारकरै हैं ॥ यातैं कार्यकारणकूं प्रत्यक्षज्ञानकाविषयमानिके तिनोंकूं असत्यकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंतु ॥ असत्यवस्तुका प्रत्यक्षज्ञान नहींहोवै है ॥ किंतु विद्यमानसत्यवस्तुकाही प्रत्यक्षज्ञानहोवै है ॥ याकारणतैंही पूर्वनष्टहुएपदार्थोंका तथाआगेहोणेहारेपदार्थोंका याजीवोंकूं प्रत्यक्षज्ञानहोतानहीं॥जोकदाचित् असत्यवस्तु

काभी प्रत्यक्षज्ञानहोताहोवे ॥ तो अतीतपदार्थोंका तथाभावीपदार्थोंकाभी याजीवोंकूं प्रत्यक्षज्ञानहोणाचाहिये ॥ यातें ॥ असद्वाइदमग्र आसीत् ॥ यहश्रुति कार्यकेअसत्यपणेकूं तथा कारणकेअसत्यपणेकूं तथाकार्यकारणदोनोंकेअसत्यपणेकूं कथनकरतीनहीं ॥ किंतु साश्रुतिअसत्शब्दकरिके यामायामयजगत्के अल्पघनामरूपसूक्ष्मअवस्थाकूंही कथनकरे है ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया॥जिसब्रह्मरूपआत्माके सत्ताकूंप्राप्तहोइके यहअसत्जगत्भी सत्यरूपताकूंप्राप्तहोवे है॥सोब्रह्मरूपआत्माही वास्तवतेंसत्यहै॥इतनेग्रंथकरिके ताब्रह्मरूपआत्माके सत्यरूपताका निरूपणकर्‍या ॥अब तासत्यब्रह्मके आनंदरूपताकानिरूपणकरें हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोब्रह्म आपणेआनंदरूपसत्ताकरिके यासर्वजगत्कूं सत्यरूपकरताभयाहै॥सोईहोब्रह्म आनंदस्वरूपहोणेतें यासर्वजगत्का साररूपहै॥शंका॥हेभगवन्॥यहब्रह्मरूपआत्मा आनंदरूपकरिकेविद्यमानहै याअर्थविषे कौनप्रमाणहै॥समाधान॥हेशिष्य॥याब्रह्मरूपआत्माकेआनंदरूपकरिके सत्यपणेविषे ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंका अनुभवहीप्रमाणहै काहेतें लोकप्रसिद्धविषयआनंदकोप्राप्तिकरणेहारे जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थहैं॥तिनपदार्थोंतेंरहितहुएभी यहविद्वान्पुरुष मैंब्रह्मरूपहूंयाप्रकारकेज्ञानकरिके ताआनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोइके सर्वदा आनंदविषेमग्नहुए प्रतीतहोवेहैं ॥ यातें यहजान्याजावेहै ॥ यहआत्मादेवही आनंदस्वरूपहे ॥ जिसआनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिकरिके यहविद्वान्पुरुष सर्वदा आनंदोरहेहैं ॥ और हेशिष्य ॥ सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थित यहआनंदस्वरूपआत्मा जोकदाचित् ताप्राणियोंके जीवनका तथा ताजीवनकेअनुकूल प्राणादिकों के क्रियाका कारणरूपनहींहोवे ॥ तो यादेहधारी जीवोंकेजीवनकूं तथा ताजीवनकेअनुकूल प्राणअपानादिकोंकेक्रियाकूं दूसराकोनकरेगा ॥ किंतु ताआनंदस्वरूपआत्मातेंविना दूसराकोईपदार्थ ताजीवनकूं तथाप्राणादिकोंकेक्रियाकूं करिसकेनहीं ॥ याकारणतेंभी यहआत्मादेव आनंदस्वरूपहे ॥ और हेशिष्य ॥ यासर्वजीवोंके हृदयदेशविषेस्थित जोयहआत्मादेवहे ॥ सो आनंदस्वरूपहे ॥ याअर्थविषे तुमनें संशयनहीं करणा ॥ काहेतें यालोकविषे जोजोजीव सुखकूंप्राप्तहोवे है ॥ सो इसीआनंदस्वरूपआत्मातेंही सुखकूंप्राप्तहोवेहे ॥ याआनंदस्वरूपआत्माकूंछोडिके किसीभीअनात्मपदार्थविषे सुखरूपतानहीं है ॥ शंका॥हेभगवन् ॥ जोकदाचित् यहआनंद आ

त्माकास्वरूपहीहोवे ॥ तो हमारेकूं विषयों तें आनंदप्राप्तहोवै है यालोकों केअनुभवतें जो ताआनंदविषे विषयोंकरिके जन्यता प्रतीतहो वै है ॥ सो नहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सोआत्मास्वरूपआनंद नित्यहै ॥ यातें सोआत्मा स्वरूपआनंद शब्दस्पर्शादि कविषयोंकरिकेजन्यहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे दीपकादिकप्रकाश घटादिकपदार्थोंकीप्रतीति करावैहैं ॥ तैसे तेशब्दादिकविषयभी इच्छाकीनिवृत्तिद्वारा ताआत्मास्वरूपआनंदकी प्रतीतिकरावै हैं ॥ याअर्थकूंनजाणिके ते मूढबुद्धिपुरुष ताआनंदकूं विषयजन्यमाने हैं ॥ और हेशिष्य ॥ यहआत्मादेवही आनंदस्वरूपहै ॥ याकारणतें यहआत्मादेवही सर्वजीवोंकूं आनंदकोप्राप्तिकरे है ॥ तहां जिनजीवोंके प्रति यहआत्मादेव अज्ञातरहै है ॥ तिनजीवों केताईं तो यहआत्मादेव परिच्छिन्न विषयजन्यआनंदकीप्राप्तिकरे है ॥ और जिनविद्वान्पुरुषों केप्रति यहआत्मादेव ज्ञातहोवै है ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंके ताईंतो यहआत्मादेव परिपूर्णआनंदकीही प्राप्तिकरैहै ॥ यातें आपणेआनंदकरिके सर्वजीवोंकूंआनंदकोप्राप्तिकरणेहारा यहआत्मादेवही आनंदस्वरूपहै ॥ इतनेकरिके ताब्रह्मरूपआत्माके आनंदरूप ताका वर्णनकऱ्या॥अब सोआनंदस्वरूपआत्मा विद्वान्पुरुषकूंही प्राप्तहोवै है याअर्थकानिरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा एकब्रह्मविद्याकरिकेही प्राप्तहोवै है अन्यउपायकरिके प्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतें ताब्रह्मविद्यावाला विद्वान्पुरुषही जीवन्मुक्तअवस्थाविषे तथाविदेहमुक्तअवस्थाविषे ताआत्मास्वरूपआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताब्रह्मविद्यातेंरहितअज्ञानीजीवतो ताआनंदकूं शब्दस्पर्शादिक विषयोंतेंजन्यमानैहैं ॥ याकारणतें तेअज्ञानीजीव ताआत्मस्वरूपआनंदकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ अब ताब्रह्मविद्याकेस्वरूपका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥यहअधिकारीपुरुष जभी त्वंपदार्थआत्माकेविचारतें अभयब्रह्मभावकेयोग्यहोवैहै ॥ तथा गुरुनैंउपदेशकऱ्या जो तत्त्वमसि यह महावाक्यहै ॥ तामहावाक्यतेंउत्पन्नभयाजो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञानहै ॥ ताअभेदज्ञानकरिके यहअधिकारीपुरुष तत्पदार्थब्रह्म रूपकेसाथअभेदभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभीही यहअधिकारीपुरुष ताअभयरूपब्रह्मानंदकूं प्राप्तहोवैहै कैसाहै सोतत्पदार्थरूपब्रह्म॥नेत्रादिकों काविषय जोबाह्यप्रपंचहै तिसतेंरहितहै ॥ तथा स्थूलशरीर सूक्ष्मशरीर कारणशरीर यातीनशरीरोंतेंरहितहै ॥ ऐसाअद्वितीयब्रह्म मैंहूं

याप्रकारकेअभेदज्ञानकानामही ब्रह्मविद्याहै ॥ इतनैंकरिके विद्वान्पुरुषोंकेप्रति ताब्रह्मानंदकीप्राप्ति निरूपणकरी ॥ अब अविद्वान्पुरुष ताब्रह्मानंदकूं प्राप्तहोवैनहीं याकोटीकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम ईश्वरविषे तिनअविद्वान्पुरुषोंकेभयकीकारणता निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे विद्वान्पुरुष ताआनंदस्वरूपब्रह्मकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे अविद्वान्पुरुष ताब्रह्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं जन्ममरणादिकदुःखोंकाकारण जाभेददृष्टिहै ॥ साभेददृष्टि ताअविद्वान्पुरुषविषे सर्वदाविद्यमानहै ॥ याकारणतैं सोभेददर्शीअविद्वान्पुरुष ताब्रह्मानंदकूंप्राप्तहोवै नहीं ॥ उलटा सोभेददर्शीपुरुष भयकूंहीप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ शास्त्रोंकूंजानणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुष ताजीव ब्रह्मकेवास्तवभेदकूंदेखतानहीं ॥ परंतु सोविद्वान्पुरुषभी जोकदाचित् बहिर्मुखताकरिके तथा आपणेपंडितपणेकेअभिमानकरिके ताजीवब्रह्मविषे व्यावहारिकभेदकूंभीदेखैहै ॥ तौ सोविद्वान्पुरुषभी ताभेदरूपपर्वतकीसमीपताकरिके परमभयकूंप्राप्तहोवै है ॥ जभी व्यवहारकालविषे जीवब्रह्मकेभेदकूंदेखणेहारा विद्वान्पुरुषभीभयकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी ताजीवब्रह्मकेवास्तवभेदकूंमानणेहारा जो अविद्वान्पुरुषहै ॥ सोअविद्वान्पुरुष साक्षात् तिनभेदरूपोपर्वतोंविषेनिवासकरताहुआ परमभयकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ हेशिष्य ॥ वास्तवतैं विद्वान्पणेतैंरहितहुआभी जोपुरुष भ्रांतिकरिके आपणेकूंविद्वान्मानै है ॥ तथा शास्त्रविचारतैंरहित जोकेवलअज्ञानीपुरुषहै ॥ तिनदोनोंकूं ताभेददर्शनकरिके जिसप्रकारकाभय प्राप्तहोवै है ॥ तिसीप्रकारकाभय प्रमादीविद्वान्पुरुषकूं भी प्राप्तहोवै है ॥ इहां जोपुरुष शास्त्रकेयथार्थअर्थकूंजाणिकरिकेभी ताशास्त्रकेअर्थोंविषे निष्ठानहींकरै है तापुरुषकानाम प्रमादीहै ॥ ऐसाप्रमादीविद्वान्पुरुषभी ताभेददर्शनकरिके अज्ञानीजीवोंकीन्याईंही जन्ममरणरूपसंसारभयकूं प्राप्तहोवै है ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं ताजन्ममरणरूपसंसारकेनिवृत्तकरणेकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं ताआनंदस्वरूपआत्माका श्रवणकरिके श्रुतिकेअनुकूलयुक्तियोंकरिके ताआनंदस्वरूपआत्माका निरंतरविचाररूपमननकरै ॥ और जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं ताआनंदस्वरूप अद्वितीयआत्माका विचाररूपमननहीकरैगा ॥ तोअनादीभेदवासनाओं के बलतैं सोअधि

कारीपुरुष वारंवार जन्ममरणरूपसंसारकूं प्राप्तहोवैगा ॥ हेशिष्य ॥ तिनभेदवासनावोंकानाश याआनंदस्वरूपआत्माके विचाररूपमनन तैंहींहोवै है ॥ मननतैंविना किसीअन्यउपायकरिकै तिनभेदवासनावोंकानाश होवैनहीं ॥ यातैं यहमुमुक्षुजन तिनभेदवासनावोंकी निवृत्तिवासतै निरंतर ताआत्माकेविचाररूपमननकूंकरै ॥ हेशिष्य॥याआनंदस्वरूप अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारतैंविना सोमायाविशिष्ट परमेश्वर विद्वान्‌देवतावोंकूंभी भयकोप्राप्तिकरैहै ॥ तौ शास्त्रविचारतैंरहितअज्ञानोजीवोंकूं सोपरमेश्वर भयकोप्राप्तिकरैहै याकेविषेक्या कहणाहै ॥ तहांश्रुति ॥ यदाह्येवैषएतस्मिन्नुदरमंतरकुरुते अथतस्यभयंभवति ॥ अर्थयह ॥ जिसकालविषे यहपुरुष याअद्वितीयआत्मा विषे किंचित्‌मात्रभीभेद कल्पनाकरैहै ॥ तिसकालविषे ताभेददर्शीपुरुषकूं परमभयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ अद्वितीयआत्माके ज्ञानतैंविना सोमाया विशिष्ट परमेश्वर सर्व जीवोंकूंभयकीप्राप्तिकरैहै ॥ याप्रकारकेअर्थविषेभी ते तित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्र रूपश्लोक कथनकरैहैं ॥ भीषाऽस्माद्वातःपवते भीषोदेतिसूर्य्यः ॥ भीषाऽस्मादग्निश्चेंद्रश्च मृत्युर्धावतिपंचमः ॥ अर्थयह ॥ यापरमात्मादेव केभयकरिकैही यहवायु चलायमानहोवैहै ॥ और यापरमात्मा देवकेभयकरिकैही यहसूर्य उदयहोवैहै ॥और यापरमात्मादेवकेभयकरिकै ही यह अग्नि प्रज्वलितहोवैहै ॥ और यापरमात्मादेवके भय करिकैही यहइंद्र वर्षाद्वारा यालोकोंकारक्षणकरैहै ॥ और यापरमात्मादेवक भयकरिकैही यहमृत्यु जहांतहांभ्रमणकरताहुआजीवोंकाहननकरैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ यासर्वजगत्‌केव्यवहारकूंसिद्धकरणेहारेजे वायु सूर्य अग्नि इंद्र यमयहपंचदेवताहैं॥तेवायुआदिकदेवताभी जभी तापरमेश्वरतैं भयकूंप्राप्तहोवै हैं॥तभी दूसरेजीव तापरमेश्वरतैंभयकूंप्राप्तहोवै हैं याकेविषेक्याकहणाहै ॥ इतनैंकरिकै भेददर्शीपुरुषोंकूं ईश्वरतैंभयकीप्राप्तिका निरूपणकर्‍या ॥ अब तिसीब्रह्मरूपआत्माविषे निरतिशय आनंदरूपताकेनिरूपणकरणेवासतै प्रथम विषयजन्यआनंदके न्यूनअधिकताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ सर्वजीवोंकूं आनंदकीप्रा तिकरणेहारा तथाभेददर्शीजीवोंकूं भयकीप्राप्तिकरणेहारा जोआनंदस्वरूपआत्मा पूर्व कथनकर्‍याहै ॥ तिसआत्माकास्वरूपभूतआनंद कितने परिमाणवालाहै याप्रकारकीजाशिष्यकीजिज्ञासाहै ॥ ताजिज्ञासाकेनिवृत्तकरणेवासतै तेतित्तिरिनामाब्राह्मण प्रथम विषयजन्य

आनंदोंविषे न्यूनअधिकता वर्णनकरिके ताआत्मास्वरूपआनंदकूं अनंतरूपकहतेभयेहैं ॥ अब प्रथम यामनुष्यलोकके आनंदकीअवधि का निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष योवनअवस्थाकरिकेयुक्तहोवे ॥ तथा सुंदररूपशीलादिकशुभगुणोंकरिके युक्तहोवे ॥ और पुराण न्याय मीमांसा धर्मशास्त्र ॥ यहचारिशास्त्र ॥ तथा शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त ज्योतिष छंद यहवेदकेषट अंग ॥ तथा ऋग यजुष् साम अथर्वण यहचारिवेद ॥ यहचतुर्दशविद्या धर्मके तथाज्ञानके जनावणेहारीयां हैं॥तिनचतुर्दशविद्यावोंका जिसपुरुषनें अध्ययनकऱ्याहोवे ॥ तथा जोपुरुष तिनविद्यावोंके अध्ययनकरावणेविषेभी समर्थहोवे ॥ और तिनविद्यावोंकेअर्थकी कल्पनाकरणेविषे जिसपुरुषकीबुद्धि अत्यंतकुशलहोवे ॥ और जोपुरुष प्रथम माताकरिकेशिक्षितहोवे ॥ तिसतें अनंतर पिताकरिके शिक्षितहोवे ॥ तिसतेंअनंतर आचार्यकरिकेशिक्षितहोवे ॥ तथा जोपुरुष विनयकरिकेयुक्तहोवे ॥ तथा वज्रसारकेसमान जिसके अंगहोवें ॥ तथा इंद्रकेसमान जिसकाबलहोवे ॥ और सुमेरुपर्वतहैमध्यविषेजिसके तथासुवर्णादिकधनकरिकेपूर्ण तथा व्रीहियवादिकधान्यकरिकेपूर्ण ऐसीजा यहसप्तसमुद्रपर्यंत पृथिवीहे ॥ सा संपूर्णपृथिवी जिसकेवशवर्त्तिहोवे ॥ तथा दीर्घ जिसकी आयुषहोवे ॥ हेशिष्य ॥ योवनअवस्थातेंआदिलेके दीर्घआयुषपर्यंत जितनेकीपदार्थ पूर्व कथनकरेहैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंकरिकेयुक्त जो कोईकचक्रवर्त्तिराजाहे ताचक्रवर्त्तिराजाकूं जोविषयजन्यआनंद प्राप्तहोवे हे ॥ सोआनंद यामनुष्यलोकोंके आनंदोंका अवधिरूप हे ॥ और ताचक्रवर्त्तिराजाके आनंदतें मनुष्यगंधर्वोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवे हे ॥ इहां जेमनुष्य कर्मउपासनाकेबलतें गंधर्वभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तिनोंकानाम मनुष्यगंधर्व हे और तिनमनुष्यगंधर्वोंकेआनंदतें देवगंधर्वोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवे हे ॥ और तादेवगंधर्वोंके आनंदतें पितरोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवे हे ॥ और तिनपितरोंकेआनंदतें आजानजदेवतावोंकाआनंद १०० शतगुणा अधिकहोवे हे ॥ इहां जेपुरुष स्मार्त्तकर्मोंकेअनुष्ठानकरिके देवताभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तिनोंकानाम आजानजदेवताहे ॥ और तिनआजानजदेवतावोंकेआनंदतें कर्मदेवतावोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवे हे ॥ इहां जेपुरुष अग्निहोत्रादिक श्रौतकर्मोंकेअनुष्ठानकरिके देवताभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तिनोंकानाम कर्मदेवताहे ॥ और तिनकर्मदेवतावोंकेआनंदतें वसुरुद्रादिकदेवता

वोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवै है॥ और तिनवसुरुद्रादिकदेवतावोंकेआनंदतैं देवराजइंद्रकाआनंद १०० शतगुणअधिकहोवै है॥ और तादेवराजइंद्रकेआनंदतैं बृहस्पतिकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवै है॥ और ताबृहस्पतिकेआनंदतैं प्रजापतिकाआनंद १०० शतगुणा अधिकहोवै है॥ इहां प्रजापतिशब्दकरिके विराट्भगवान्का ग्रहणकरणा ॥ और ताप्रजापतिकेआनंदतैं ब्रह्माकाआनंद १०० शतगुणा अधिकहोवै है॥ याब्रह्माकूं शास्त्रविषे हिरण्यगर्भनामकरिके तथासूत्रआत्मानामकरिके कथनकरे हैं॥ ताहिरण्यगर्भकेआनंदतैंअधिक कोईभीविषयजन्यआनंद नहीं है॥ किंतु संपूर्णविषयजन्यआनंदोंका सोहिरण्यगर्भकाआनंदही अवधिरूपहै॥ हेशिष्य॥ मनुष्यलोकतैं आदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकीविषयजन्यआनंद श्रुतिनैं कथनकरे हैं॥ तिनसंपूर्णआनंदोंविषे जिसजिसलोकके आनंदतैं यहअधिकारीपुरुष विरक्तहोवै है तिसतिसलोकतैं शतगुणाअधिकआनंदकूं सोअधिकारीपुरुष प्राप्तहोवै है॥ तात्पर्ययह॥ जिनमानुष्यादिकआनंदोंकूं यहजीव चिरकालपर्यंतअनेककर्मउपासनाकरिके प्राप्तहोवै हैं॥ तिनमानुष्यादिकआनंदोंकूं यहनिष्कामअधिकारीपुरुष सुखेनहींप्राप्तहोवै हैं॥ यातैं याअधिकारीपुरुषों नैं सर्वकामनावोंकापरित्यागकरिके अवश्य निष्कामहोणा॥ और हेशिष्य॥ यहअधिकारीपुरुष मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वविषयजन्यआनंदोंकेप्राप्तिकीइच्छाकापरित्यागकरिके जिसआत्मास्वरूपआनंदका अनुभव करे है॥ सोआत्मास्वरूपआनंद ताहिरण्यगर्भकेआनंदतैंभी अधिकहै॥ शंका॥ हेभगवन्॥ जैसे पूर्वपूर्व मानुष्यादिकआनंदोंकीअपेक्षाकरिके उत्तरउत्तर मनुष्यगंधर्वादिकोंकेआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवै हैं॥ तैसे सोआत्मास्वरूपआनंदभी ताहिरण्यगर्भकेआनंदतैं १०० शतगुणाअधिकहोवैगा॥ समाधान॥ हेशिष्य॥ यामनुष्यलोकादिकोंके आनंदकीअपेक्षाकरिके यद्यपि सोहिरण्यगर्भकाआनंद अधिकहै॥ तथापि सोहिरण्यगर्भकाआनंद ताआत्माआनंदरूपसमुद्रका एकबिंदुमात्रहै॥ यातैं सोआत्मास्वरूपआनंद अनंतहै॥ ऐसे अनंतआत्मास्वरूपआनंदविषे शतगुणीअधिकता तथासहस्रगुणीअधिकता कहीजावैनहीं॥ हेशिष्य॥ जोयहआत्मास्वरूपआनंद व्यष्टिउपाधिवालेत्वंपदार्थपुरुषविषे रहै है॥ सोईहोआत्मास्वरूपआनंद समष्टिउपाधिवालेतत्पदार्थआदित्यपुरुषविषे रहैहै॥ यातैं तात्वंपदार्थजीववि

षे तथातत्पदार्थईश्वरविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है ॥ किंतु सोआनंदस्वरूपआत्मा सर्वत्र एकहीहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीय आत्माविषे जोजीवोंकूं यहसूर्यादिक अधिदेवरूपहैं यहनेत्रादिक अध्यात्मरूपहैं यहरूपादिकविषय अधिभूतरूपहैं याप्रकारकाभेद प्रतीत होवै है ॥ सोभेदताअद्वितीयआत्माकेअज्ञानतैंही प्रतीतहोवै है॥और हेशिष्य ॥ याजीवोंकूं वस्तुकेपरोक्षज्ञानहुएभी जबपर्यंत तावस्तुका अपरोक्षज्ञान नहींहोवै है ॥ तबपर्यंत तिनजीवोंकूं तावस्तुविषे भ्रम निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु अपरोक्षज्ञानकेहुएहो ताभ्रमकोनिवृत्तिहोवै है॥ जैसे पूर्वदक्षिणादिकदिशावोंके परोक्षज्ञानहुएभी जबपर्यंत याजीवकूं तिनपूर्वादिकदिशावोंका अपरोक्षज्ञाननहींहोवै है ॥तबपर्यंत ताजीवकूं तिनपूर्वादिकदिशावोंकेभ्रमकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ किंतु तिनपूर्वादिकदिशावोंके अपरोक्षज्ञानकरिकेही तादिशाभ्रमकीनिवृत्तिहोवै है ॥ तैसे ताब्रह्मरूपआत्माके परोक्षज्ञानहुएभी जबपर्यंत याजीवोंकूं ताब्रह्मरूपआत्माका अपरोक्षज्ञान नहींहोवै है ॥ तबपर्यंत याजीवोंके अध्यात्म अधिदैव अधिभूत इत्यादिकभेदभ्रम निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मरूपआत्माकेअ परोक्षज्ञानकरिकेही ताभेदभ्रमकीनिवृत्तिहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ जोअधिकारीपुरुष याप्रकार भ्रमकेमर्यादाकूंजाणिकरिकै ताब्रह्मरूपआत्माकेसाक्षात्का रवासते यत्नकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तअन्नमयादिकपंचकोशोंविषे क्रमतैं आत्मबुद्धिकरिकै पंचमे आनंदमयकोशकेपुच्छरूपब्रह्मकूं साक्षात्कारकरे है॥हेशिष्य ॥ ऐसे आनंदस्वरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपक रिकै प्राप्तभया जोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं किसीभीपदार्थतैंभयकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ याप्रकारकेअर्थविषेभी तैतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरे हैं ॥ यतोवाचोनिवर्त्तते अप्राप्यमनसासह ॥ आनंदंब्रह्मणोविद्वान् नबिभेतिकुतश्चन॥अर्थयह॥शब्दोंविषेवाणीकीप्रवृत्तिहोवै है॥और तिनशब्दोंकेअर्थोंविषेमनकीप्रवृत्तिहोवै है॥औरयहअद्वितीयब्रह्मतो शब्दरूपप्रपंचतैं तथा अर्थरूपप्रपंचतै रहितहै॥यातैं ताअद्वितीयब्रह्मविषे वाणीकी तथामनकी प्रवृत्तिहोवैनहीं॥ऐसे आनंदस्वरूपब्रह्मकूं जोविद्वान्पुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेजाने है ॥ सोअभेददर्शीविद्वान्पुरुष किसीतैंभी भयकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ १ ॥और हेशिष्य ॥ जीवब्रह्मकेभेदकूंदेखणेहारा जोअज्ञानीपुरुषहै ॥ ताभेददर्शीअज्ञानीपुरुषकूं पुण्यकर्म तथापापकर्म यहदोनों तपायमानकरे हैं ॥ तहां

पुण्यकर्मतो नहींकऱ्याहुआ तिनअज्ञानीजीवोंकूं तपायमानकरे है ॥ और पापकर्मतो कऱ्याहुआ तिनअज्ञानीजीवोंकूं तपायमानकरे है तात्पर्ययह ॥ दूसरेपुण्यवान्पुरुषोंकूंसुखीहुआदेखिके तेअज्ञानीजीव याप्रकारका पश्चात्तापकरे हैं ॥ जिस पुण्यकर्मकरिके यापुरुषों कूं सुखकीप्राप्तिभई है ॥ सोपुण्यकर्म हमनें पूर्वजन्मोंविषेकऱ्यानहीं ॥ जोकदाचित् पूर्वजन्मोंविषेमैंभी ऐसापुण्यकर्मकरता ॥ तो हमारेकूंभी अभी ऐसेसुखकीप्राप्तिहोती ॥ याप्रकारका पश्चात्तापकरिके सोअज्ञानीपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरे है ॥ और सोअज्ञानीपुरु ष जभी पूर्वलेपापकर्मोंकादुःखरूपफलभोगे है ॥ तभी याप्रकारका पश्चात्तापकरे है ॥ मैं पूर्वजन्मोंविषे ऐसेपापकर्म किसवासतेकरता भया ॥ जिनपापकर्मोंकरिके मैं अभी परमदुःखकूंप्राप्तभयाहूं ॥ याप्रकारका पश्चात्तापकरिके सोअज्ञानीपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरे है हेशिष्य ॥ इसप्रकार ताभेददर्शीअज्ञानीपुरुषोंकूं जैसे नहींकरेहुएपुण्यकर्म तपायमानकरे हैं ॥ तथा करेहुएपापकर्म तपायमान करे हैं ॥ तैसे मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकरिके ब्रह्मभावकूंप्राप्तभयाजोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं नहींकरेहुएपुण्यकर्म तपायमानकरेनहीं ॥ तथा करेहुएपापकर्म तपायमानकरे नहीं ॥ हेशिष्य ॥ याविद्वान्पुरुषकूं पुण्यपापकर्म तपायमानकरेनहीं याके विषे यहकारणहै ॥ जैसे यालोकविषे अग्नि आपणेतें भिन्नकाष्ठादिकपदार्थोंकूंतो दाहकरे है ॥ परंतु सोअग्नि आपणेआत्माकूं दाहकरेनहीं तैसे मैंब्रह्मरूपहूं याअभेदज्ञानकेप्रभावतें तिनपुण्यपापकर्मोंकूंभी आपणाआत्मारूपकरिकेजानणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान्पु रुषकूं तेआत्मारूपपुण्यपापकर्म तपायमानकरेनहीं ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया॥ जोअधिकारीपुरुष याआनंदस्वरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मा रूपकरिकेजाने है ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं निश्चयकरिके अभयकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार ते तित्तिरिनामाब्राह्मण आपणेशि ष्योंकेप्रति याब्रह्मविद्याकाउपदेश करतेभये ॥ कैसीहैयहब्रह्मविद्या ॥ हमअधिकारीजनोंकूं आनंदस्वरूपआत्माकेप्राप्तिका कारणहै ॥ इतनैंग्रंथकरिकै आनंदवल्लीकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब भृगुवल्लीकाअर्थ निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ पूर्वआनंदवल्लीविषे यहअर्थ कथ नकऱ्याथा ॥ जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं याआनंदस्वरूपब्रह्मकाश्रवणकरिके तिसब्रह्मका वारंवार विचाररूपमनन करे

हे ॥ सोअधिकारीपुरुष याअन्नमयादिकपंचकोशोंकूं आत्मारूपकरिकेजाणतानहीं॥किंतु पंचमेआनंदमयकोशकापुच्छरूपजोब्रह्महै॥ताब्र
ह्मकूंही सोअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेजाणे है॥हेशिष्य॥याप्रकारकेअर्थविषे ते तित्तिरिनामाब्राह्मण पितापुत्रके इतिहासकूं क
थनकरतेभये हैं॥कैसाहैसोइतिहास ॥ ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशश्रवणतैंअनंतर मननकेस्वरूपकूंबोधनकरणेहाराहै ॥ ऐसेइतिहासकूं तूं सावधा
नहोइकेश्रवणकर॥हेशिष्य॥पूर्वकालविषे वरुणनामाऋषिकापुत्र एकभृगुनामाऋषि होताभयाहै ॥ सोभृगुनामाऋषि एककालविषे आपणे
वरुणपिताकेसमीपजाइके याप्रकारकाप्रश्नकरताभया॥भृगुरुवाच॥हेभगवन् जिसब्रह्मकूं आप जानतेहो ॥ सोब्रह्म हमारेप्रति उपदेशकरो ॥
हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी ताभृगुनें आपणेवरुणपिताकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोवरुणपिता आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करता
भया ॥ मैंवरुण याभृगुपुत्रकेप्रति प्रथम त्वंपदार्थआत्माके उपलक्षणपदार्थोंका कथनकरौं ॥ तथा तत्पदार्थब्रह्मके उपलक्षणपदार्थोंका
निरूपणकरौं ॥ जोकदाचित् यहभृगु बुद्धिमान् होवैगा ॥ तौ तिनउपलक्षणपदार्थोंकरिके उपलक्षितजोचैतन्यआत्माहै ॥ ताचैतन्यआ
त्माकूं यहभृगु आपहीजाणैंगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार भृगुपुत्रकेबुद्धिकीपरीक्षाकरणेवासते सोवरुणपिता प्रथम त्वंपदार्थआत्माकेउपलक्ष
णपदार्थोंका निरूपणकरताभया ॥ वरुणउवाच ॥ हेभृगु ॥ यहस्थूलशरीर तथा प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्राण तथा श्रोत्र
त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञान इंद्रिय तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मइंद्रिय ॥ तथा मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचा
रिअंतःकरण ॥ इतनेंही व्यष्टिसमष्टिरूपपदार्थ भोग्यरूपकरिके यासर्वजगत्विषेस्थितहैं ॥ तिनशरीरादिकपदार्थों तैंअधिककोईपदार्थ
याजगत्विषे हैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ स्थूलशरीरतैंआदिलैके जितनेकोयहभोग्यपदार्थ हैं ॥ तिनोंको किसीभोक्तारूपसाक्षीतैंविना सिद्धि
होवैनहीं ॥ यातैं तिनशरीरादिकभोग्यपदार्थोंका कोईभोक्तासाक्षीभीहै ॥ इतनेंकरिकै त्वंपदार्थजीवात्माके शरीरादिकउपलक्षणपदार्थों
का निरूपणकऱ्या ॥ अब तत्पदार्थब्रह्मके उपलक्षणपदार्थोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेभृगु ॥ जिसतत्पदार्थब्रह्मकेप्रादुर्भावकासाधन यालोक
विषे प्रसिद्धनहीं है ॥ ऐसेब्रह्मकेप्रादुर्भावकरणेवासते मैंवरुण तुमारेप्रति ताब्रह्मकालक्षण कथनकरताहूं ॥ तालक्षणकाविचारकरिकै तूं

आपणीबुद्धिकरिकै पूर्वकहेहुएशरीरादिकपदार्थोंविषे किसीपदार्थकूं ब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ अथवा तिनशरीरादिकपदार्थों तें भिन्न किसी पदार्थकूं ब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ सोजानणा तुमारेबुद्धिकेअधीनहै ॥ अब ताब्रह्मकेलक्षणका निरूपणकरैंहैं ॥ हेभृगु जिस उपादानकारणतैं यहसंपूर्णभूतभौतिकजगत् उत्पन्नभयाहै ॥ तथा जिसउपादानकारणविषे यहसंपूर्णजगत् स्थितहै ॥ तथा जिसउपादानकारणविषे यहसंपूर्णजगत् लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोउपादानकारणही ब्रह्महै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे पूर्वे ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे शास्त्रदृष्टि कूंअंगीकारकरिकै सत्य ज्ञान अनंत यहतीनलक्षण ब्रह्मकेकहेथे ॥ और लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै सत्य ज्ञान अनंत यहएकहीलक्षण ब्रह्मकाकह्याथा ॥ तैसे इहांभी वरुणऋषिनैं भृगुपुत्रकेप्रति शास्त्रदृष्टिकूंअंगीकारकरिकैतौ याजगत्के उत्पत्तिकोकारणता तथास्थि तिकीकारणता तथालयकोकारणता यहतीनलक्षण ब्रह्मकेकथनकरे हैं ॥ और लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकैतौ याजगत्के उत्पत्तिस्थि तिलयकीकारणता यहएकही ब्रह्मकालक्षण कथनकर्‍याहै ॥ इसप्रकार सोवरुणऋषि ताब्रह्मके जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकोकारणतारूप तटस्थलक्षणकूं कथनकरिकै पुनःताभृगुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेभृगुपुत्र ॥ ताब्रह्मके दोप्रकारकेलक्षण होवैहैं॥ एकतौ स्वरूपलक्षणहोवैहै ॥ और दूसरे तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ तहां ताब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकेजानणेविषे अभी तुमारीबुद्धि समर्थनहींहै ॥ याकारणतैं हमनैं तुमारेप्रति सोब्रह्मकास्वरूपलक्षण नहींकथनकर्‍याहै ॥ हेभृगु ॥ सूक्ष्मबुद्धिवालेअधिकारीपुरुषही आपणेसूक्ष्मबुद्धि करिकै ताब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकूंजानैहैं ॥ स्थूलबुद्धिकरिकै सोब्रह्मका स्वरूपलक्षण जान्याजावैनहीं ॥ और इसकालविषे तुमारीभीस्थूल बुद्धिहै ॥ याकारणतैं ताब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकापरित्यागकरिकै हमनैं तुमारेप्रति ताब्रह्मकेतटस्थलक्षणका कथनकर्‍याहै ॥ सोतटस्थल क्षण स्वरूपलक्षणकीअपेक्षाकरिकै स्थूलहोवैहै ॥ यातैं सो तटस्थलक्षण तुमारीबुद्धिविषे शीघ्रही आवैगा ॥ इहां लक्ष्यस्वरूपब्रह्मतैं ता तटस्थलक्षणकी जोबाह्यस्थितिहै ॥ यहही ता तटस्थलक्षणविषे स्थूलताहै ॥ अब ता तटस्थलक्षणकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम लोकप्रसिद्धदृष्टांतविषे तास्वरूपलक्षणका तथा तटस्थलक्षणका निरूपणकरैंहैं ॥ जैसे यालोकविषे सोमशर्मानामापुरुषकागृहस्थूलहै

तथा मनोरमहे तथाशुक्लवर्णवालाहै तथाविचित्रध्वजापताकाओंवालाहे तथामेघोंकूंस्पर्शकरैहे॥इहां तेस्थूलतादिकधर्म तागृहकेस्वरूपका घटकहैं॥यातें तेस्थूलतादिकधर्म तागृहकेस्वरूपलक्षणहैं॥और जहां तासोमशर्मापुरुषके गृहकेजनावणेवासते किसीपुरुषकेप्रति याप्रकार कावचन कहिये॥जिसगृहविषे विचित्रशब्दोंकूंकरणेहारे शुकसारिकादिकपक्षी स्थितहैं॥सोगृह तुमनें सोमशर्मापुरुषकाजानणा॥इहां शुकसारिकादिकपक्षी तागृहका तटस्थलक्षणहैं॥अब तटस्थलक्षणके तथास्वरूपलक्षणके लक्षणकानिरूपणकरैहैं ॥ जालक्षकपदार्थकेअभावहुएभी जहां,लक्ष्य पदार्थकाअभाव होवैनहीं॥तालक्षकपदार्थका नाम तटस्थलक्षणहै॥जैसे शुकसारिकादिकलक्षकपदार्थोंकेअभावहुएभी तागृहरूप लक्ष्यपदार्थका अभावहोवैनहीं॥यातें तेशुकसारिकादिकपक्षी तागृहका तटस्थलक्षणहैं ॥ और जालक्षकपदार्थकेअभावहुए जहां तालक्ष्यपदार्थकाभीअभावहोवैहे॥तालक्षकपदार्थकानाम स्वरूपलक्षणहै॥जैसे स्थूलतादिकलक्षकपदार्थोंकेअभावहुए तागृहरूपलक्ष्यपदार्थकाभी अभावहोवैहे ॥ यातें तेस्थूलतादिकधर्म तागृहका स्वरूपलक्षणहैं ॥ याकहणेतें यहदोलक्षणसिद्धभये ॥ जिसलक्षकपदार्थकाअभावतालक्ष्यपदार्थकेअभावकाप्रयोजकनहींहोवैहे॥सोलक्षकपदार्थ तटस्थलक्षणहोवैहे॥जैसेशुकसारिकादिकपक्षीहैं॥और जिसलक्षकपदार्थकाअभाव तालक्ष्यपदार्थकेअभावका प्रयोजकहोवैहे॥सोलक्षकपदार्थ स्वरूपलक्षणहोवैहे ॥जैसे तागृहके स्थूलतादिकधर्म हैं॥शंका॥हेभगवन्॥लक्ष्य वस्तुकास्वरूपभूतजेपदार्थ हैं॥तिनपदार्थोंविषे लक्षणरूपतासंभवैनहीं॥काहेतें यालोकविषे जोपदार्थआपणेलक्ष्यतैंभिन्नहोवैहे॥सोपदार्थही लक्षणरूपहोवैहे॥समाधान॥हेशिष्य॥जहां स्वरूपलक्षणहोवैहे॥तहां तास्वरूपलक्षणका लक्ष्यपदार्थकेसाथ वास्तवतैंभेदहोवैनहीं ॥ किंतु तालक्षणकावक्तापुरुष आपणीबुद्धिकरिकै ताभेदकी कल्पनाकरैहे॥यातें कल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकै तास्वरूपभूतपदार्थविषेभी लक्षणरूपता संभवहोइसकैहे ॥ और जहां तटस्थलक्षणहोवैहे॥तहांतो जैसे गौतें वास्तवभेदवाला अश्वहोवैहे ॥ तैसे तालक्ष्यपदार्थतैंवास्तवभेदवालाही सो तटस्थलक्षणहोवैहे ॥ याकहणेकरिकै यहदोलक्षण बोधनकरे ॥ जोपदार्थ आपणेलक्ष्यपदार्थतैं कल्पितभेदवालाहुआ तालक्ष्यपदार्थकूं इतरपदार्थोंतैंभिन्नकरिकैजनावैहे॥सोपदार्थतालक्ष्यपदार्थका स्वरूपलक्षणहोवैहे ॥ और जोपदार्थ आपणेलक्ष्यपदार्थ

तैं वास्तवभेदवालाहुआ तालक्ष्यपदार्थकूं इतरपदार्थों तैं भिन्नकरिकेजनावैहै॥सोपदार्थ तालक्ष्यपदार्थका तटस्थलक्षणहोवैहै ॥अब या त
टस्थलक्षणकेलक्षणकूं सिद्धांतविषेजोईहैं॥ हेभृगु ॥ जडत्वपरिच्छिन्नत्वादिकधर्मोंकरिके याजगत् विषे ब्रह्मकाभेद सर्वप्राणियोंकूंप्रसिद्धहै ॥
यातैं ताजगत्केधर्म जेउत्पत्तिस्थितिलयादिकहैं ॥ तिनउत्पत्तिआदिकधर्मोंविषे ताब्रह्मकीतटस्थलक्षणरूपता संभवहोइसकैहै ॥ और
हेभृगु ॥ जहांकिसीलक्ष्यपदार्थकेजनावणेवासते तटस्थलक्षणकहीताहै ॥ तहां ता तटस्थलक्षणकरिके तालक्ष्यपदार्थकावास्तवस्वरूप
शीघ्रही प्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे तालक्ष्यपदार्थकास्वरूप सामान्यतैं प्रतीतहोवैहै ॥ और तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष
जभी तातटस्थलक्षणकेबोधनकरणेहारेवचनका अनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिकेविचारकरैहै ॥ तभी याअधिकारीपुरुषकूं तालक्ष्यपदा
र्थकेवास्तवस्वरूपका साक्षात्कारहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम सर्वतटस्थलक्षणोंविषेप्रसिद्धहै ॥ यातैं हेभृगुपुत्र तूंभी ताब्रह्मकेतटस्थल
क्षणकूंबोधनकरणेहारेवचनकाविचारकरिके तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूंजाण ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ स्वभावतैंप्रमाणरूप जेवेद
केवचनहैं ॥ तिनवेदवचनोंकूं आपणेअर्थकेबोधनकरणेविषे विचाररूपमननकीअपेक्षा संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेभृगु ॥ तिनवेदकेवच
नोंकूं आपणेशाब्दबोधरूपफलकीउत्पत्तिविषे यद्यपि ताविचारकीअपेक्षानहीं है ॥ तथापि श्रोतापुरुषोंकेअपराधरूप जेअसंभावनादिक
दोषहैं ॥ तिनदोषोंकीनिवृत्तिवासतै तिनवेदवचनोंकूं ताविचाररूपमननकी अवश्यकरिकेअपेक्षाहै ॥ जैसे चक्षुइंद्रियकूं घटादिकपदार्थों
केदर्शनविषे यद्यपि अंजनकीअपेक्षानहीं है॥तथापि तिनघटादिकोंकेदर्शनविषेप्रतिबंधक जोचक्षुनिष्ठमलिनताहै ॥ तामलिनताकीनिवृत्ति
करणेवासते ताचक्षुइंद्रियकूं अंजनकीअपेक्षा अवश्यकरिकेहोवैहै॥ तैसे ब्रह्मसाक्षात्कारविषेप्रतिबंधक जेअसंभावनादिकदोषहैं॥तिनदोनों
कीवृत्तिकरणेवासतै तेवेदकेवचन ताविचाररूपमननकीअपेक्षा अवश्यकरैहैं और हेभृगु जैसे आपणेगृहकीभूमिविषे दाब्याहुआ जोसुवर्णा
दिरूपधनहै ताधनरूपनिधिकूं सोगृहवालापुरुष सिद्धअंजनतैंविना देखिसकैनहीं ॥ तैसे सर्वप्राणियोंकेदेहविषेविराजमान जोब्रह्महै ॥
ताब्रह्मकूंयहअधिकारीपुरुष ताविचाररूपमननतैंविना साक्षात्कारकरिसकैनहीं ॥ और हेभृगु ॥ जैसे भूमिविषेदाबेहुएधनकेदेखणेकासाधन

जोसिद्धअंजनहे ॥तासिद्धअंजनविषे कोईसर्वलोकप्रसिद्धऔषध कारणहोवेनहीं ॥ किंतु कोईविलक्षणऔषधही ताअंजनविषेकारणहोवे है
तैसे ताब्रह्मकेसाक्षात्कारविषेभी कोईसर्वलोकप्रसिद्धउपायहेनहीं ॥ किंतु श्रुतिअनुकूलअनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिके जो तालक्षणवाक्य
काविचारहै ॥ सोविचाररूपमननहीं ताब्रह्मसाक्षात्कारका उपायहै ॥ और हेभृगु ताब्रह्मकेलक्षणवाक्यकाजोज्ञानहे ॥ सोज्ञानतो ताब्रह्मसा
क्षात्कारविषे मुख्यउपायहे ॥ और जैसे रूपादिकपदार्थोंकेदर्शनविषे ताचक्षुइंद्रियका अंजनसहकारीहोवैहे ॥ तैसे ब्रह्मसाक्षात्कारकीउ
त्पत्तिविषे तालक्षणवाक्यकेज्ञानका तालक्षणवाक्यकेअर्थकाविचार सहकारीमात्रहोवैहे ॥ और हेभृगु ॥ ऐसा ब्रह्मकेलक्षणवाक्यकाज्ञान
रूपउपाय गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंप्राप्तहुआभी अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषोंकूं किंचित्मात्रभी फलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु शुद्धअंतःकरण
वालेपुरुषोंकूंहीं सोउपाय फलकीप्राप्तिकरैहै यातैं याअधिकारीपुरुषनैं आपणेअंतःकरणकूं अवश्यकरिके शुद्धकर्‌याचाहियै॥अब ताअंतः
करणकेशुद्धिकाउपाय निरूपणकरैहैं ॥ हेभृगु ॥ याअंतःकरणविषेजोअशुद्धहोवैहै ॥ सो विषयोंकेरागतैंहोवै है ॥ और सोविषयोंकाराग
याशरीरइंद्रियोंकेगर्वतैंहोवैहे॥ और सोशरीरइंद्रियोंकागर्व विषयोंकेसंबंधतैंहोवै है ॥ यातैं परंपराकरिके सोविषयोंकासंबंधही अंतःकरण
कीअशुद्धिविषेकारणहै ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आपणेअंतःकरणकेशुद्धिकरणेकीइच्छाहोवैहे ॥ सोअधिकारीपुरुष प्रथम विषयों
केबंधकापरित्यागकरे ॥ ताविषयसंबंधरूपकारणकेनाशहुएतैंअनंतर तेगर्वादिककार्य आपहीनाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् अन्न
पानादिकसर्वविषयोंकेपरित्यागकरणेतैं याअधिकारीपुरुषकाशरीरही नाशकूंप्राप्तहोवैगा समाधान हेभृगु यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित्
किंचित्मात्रभी अन्नपानादिकविषयोंकाग्रहण नहींकरैगा॥तो याअधिकारीपुरुषकाशरीर शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवैगा॥और जोकदाचित्यह
अधिकारीपुरुष अधिकअन्नपानादिकविषयोंकाग्रहणकरैगा॥तोयाअधिकारीपुरुषके शरीरइंद्रिय गर्वकूंप्राप्तहोवैगा ॥यातैं यहअधिकारीपुरु
ष इतनैंमात्र अन्नपानादिकविषयोंकाग्रहणकरे ॥ जितनैंकरिके याशरीरकानाशभीनहींहोवे ॥ तथा याशरीरइंद्रियोंविषे गर्वभी उत्पन्ननहीं
होवे ॥ इसप्रकार याशरीरकेजीवनमात्रविषेउपयोगी तथाआपणेवर्णआश्रमतैंअविरुद्ध ऐसेजेअन्नपानादिकविषयहैं ॥ तिनोंतैंअधिकविष

योंकासंग्रह नहींकरणा याकानाम तपहै ऐसे संयमरूपतपकेप्राप्तहुए याअधिकारीपुरुषोंकेशरीरइंद्रियोंकागर्व नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ और तागर्वकेनाशहुए सोविषयोंकारागभी नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ और तारागकेनाशहुए याअधिकारीपुरुषकाअंतःकरण शुद्धहोवे है ॥ इसप्रकार संयमरूपतपकरिकै रागद्वेषादिकमलतैंरहितहुआ यहअंतःकरण गुरुशास्त्रउपदिष्टवचनोंकेअर्थकाविचारकरिकै ताब्रह्मकूंनिश्चयकरैहै ॥ यातैं हेभृगु ॥ तूंभी तासंयमरूपतपतैं आपणेचित्तकूंशुद्धकरिकै तथा पूर्वउक्तब्रह्मकेलक्षणवाक्यकाविचारकरिकै ताब्रह्मकूं निश्चयकर ॥ हेभृगु ॥ ताब्रह्मकेलक्षणवाक्यका नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकैविचाररूपजोतपहै ॥ तथा शरीरइंद्रियादिकोंकासंयमरूपजोतपहै ॥ यह दोनोंप्रकारकातप ताब्रह्मकेसाक्षात्कारविषेकारणहै याप्रकारकावचन हम तुमारेप्रतिकहतेनहीं ॥ काहेतैं जोअर्थ शिष्यकूंअज्ञातहोवै है ॥ तिसअर्थकूंही गुरुशास्त्र उपदेशकरैहै ॥ ज्ञातअर्थका गुरुशास्त्र उपदेशकरैनहीं ॥ और यहतप सर्वमनवांछितपदार्थोंकेप्राप्तिकाकारणहै याअर्थकूं तूं आपही भलीप्रकारजाणताहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोभृगुऋषि आपणेवरुणपिताकेमुखतैं ताब्रह्मका तटस्थलक्षण श्रवण करिकै तथा ता तपविषे ब्रह्मज्ञानकीकारणतानिश्चयकरिकै प्रथम अंतःकरणकीशुद्धिवासतै पूर्वउक्तशरीरइंद्रियादिकोंकेसंयमरूपतपकूं करताभया ॥ तासंयमरूपतपकरिकै जभी ता भृगुका अंतःकरणशुद्धभया ॥ तभी सोभृगुऋषि पूर्वउक्तब्रह्मकेलक्षणवाक्यका विचाररूप मनन करताभया ॥ और ताविचाररूपतपकरिकै सोभृगु प्रथम अध्यात्म अधिदैव अधिभूतरूप जोयहसमष्टिव्यष्टिरूपस्थूलशरीरहै तास्थूलशरीररूपअन्नमयकोशविषे पूर्वउक्तब्रह्मकालक्षणजाणिकै तास्थूलशरीररूपअन्नमयकोशकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ तिसतैंअनंतर ताअन्नमयकोशविषेभी दोषोंकूंदेखिकै सोभृगु पुनःपिताकेसमीपजाताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ताअन्नमयकोशविषे ताभृगुनैं ब्रह्मकालक्षण किसप्रकार निश्चयकर्‍या ॥ और ताअन्नमयकोशविषे ताभृगुनैं कौनदोषदेखे ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ समष्टिव्यष्टिरूप जेयहस्थूलशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंतैंहीं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवे है ॥ और तिनशरीरोंविषेही यहसंपूर्णजगत् स्थितहै ॥ और नाशकालविषे यहसंपूर्णजगत् तिनशरीरोंविषेही लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ जैसे मृतकशरीर श्वान

कृमि अग्नि आदिकदेहोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार सोभृगु जगत्केउत्पत्ति स्थिति लयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण तासमष्टिव्यष्टिरूप स्थूलशरीरविषेही निश्चयकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर विचारकरिकै सोभृगु ताअन्नमयकोशविषे याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ यह समष्टिव्यष्टिरूपस्थूलशरीर यद्यपि याजगत्केकारणहैं ॥ तथापि यहस्थूलशरीर आप नाशवान्हैं तथापरिच्छिन्नहैं ॥ और ब्रह्मतौ उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ तथा सर्वत्र व्यापकहै ॥ यातैं यहस्थूलशरीर ब्रह्मरूप किसप्रकारहोवैंगे ॥ किंतु यहस्थूलशरीर ब्रह्मरूपनहीं है॥ किंवा॥जैसे यहव्यष्टिस्थूलशरीर उत्पत्तिनाशवान्हैं तथापरिच्छिन्नहैं॥ तैसे समष्टिविराट्भगवान्कास्थूलशरीरभी उत्पत्तिनाशवान्है तथापरिच्छिन्नहै ॥ यातैं तासमष्टिस्थूलशरीरविषेभी ब्रह्मरूपतासंभवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोभृगुनामाऋषि ताअन्नमयकोशविषेदोषोंकूंदेखिकै ताअन्नमयकोशके कारणकेपूछणेकीइच्छाकरिकै पुनःतावरुणपिताकेसमीपजाताभया ॥ और मेरेताई ब्रह्मकाउपदेशकरो याप्रकारकाप्रश्न जैसे ताभृगुनैंपूर्वकर्‍याथा ॥ तिसीप्रकारका प्रश्न सोभृगुपुनःतावरुणपिताकेप्रति करताभया ॥ और सोवरुणभी पूर्वकीन्याईं याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ हेभृगु ॥ जोविचाररूपतप हमनैं तुमारेप्रति बोधनकर्‍याहै ॥ तथा जोविचाररूपतप तुमनैं निश्चयकर्‍याहै ॥ सोविचाररूपतपही ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे मुख्यकारणहै ॥ तिसतपतैंविना दूसराकोईकारणनहीं है ॥ यातैं ताविचाररूपतपकरिकैही तूं याजगत्केकारणरूपब्रह्मकूं निश्चयकर ॥ हेभृगु यहविचाररूपतपही ताब्रह्मज्ञानका मुख्यकारणहै ॥ याकारणतैंहीं वेदवेत्तापुरुष ता तपकूं ब्रह्म यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तावरुणपितानैं ताभृगुपुत्रकेप्रति विचाररूपतपका उपदेशकर्‍या ॥तभीसोभृगुऋषि पूर्वकीन्याईं पुनःविचाररूपतपकूंकरताभया ॥ताविचाररूपतपकरिकै सोभृगु प्राणमयकोशकूंहीं ब्रह्मरूप जाणताभया ॥ और पुनःविचारकरिकै सोभृगु ताप्राणमयकोशविषेभी पूर्वकीन्याईं जडत्वादिकदोषोंकूंदेखिकै पुनःतावरुणपिताकेसमीप जाताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यापंचकोशोंकूं यथाक्रमतैं ब्रह्मरूपजाणिकै तथातिनपंचकोशोंविषे यथाक्रमतैं दोषोंकूंदेखिकै सोभृगुऋषि पंचवार तावरुणपिताकेसमीप जाताभया ॥ तहां सोभृगु पंचवार पिताकेसमीप

जाइके मेरेताई आप ब्रह्मकाउपदेशकरो याप्रकारकाहीप्रश्नकरताभया ॥ और आगेतैं सोवरुणपिताभी ताभृगुपुत्रकेप्रति विचाररूप तप करिके तूं ब्रह्मकूंजाण याप्रकारकाहीउत्तर पंचवार कहताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोभृगु तिनप्राणादिकोंविषे किसप्रकार ब्रह्मकालक्षण जानताभया ॥ और तिनप्राणादिकोंविषे सोभृगु कोनदोषोंकूंदेखताभया ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जिसप्रकार सोभृगु तिनप्राणादिकोंविषे ब्रह्मकालक्षण जानताभयाहे ॥ तथा तिनप्राणादिकोंविषे जोजोदोष ताभृगुनें देखे हैं ॥ तासंपूर्णअर्थकूं तूं श्रवणकर ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेदेह प्राणविशिष्टशरीरतैंही उत्पन्नहो वे हैं ॥ और ताप्राणनैंकन्याजोअन्नकाभक्षण ताकरिकेही याशरीरोंकीस्थितिहोवे हे ॥ और याशरीरोंकापरित्यागकरिके जभी तेप्राण लोकांतरविषेजावे हैं ॥ तभी यहशरीर नाशरूपलयकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातैं यहप्राणही ब्रह्मरूपहे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण ताप्राणविषेजाणिके सोभृगु ऋषि ताप्राणकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोभृगुऋषि विचारकरिके ताप्राणविषे याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ जैसे यह स्थूलशरीररूपअन्नमयकोश जडहे तथापरिच्छिन्नहे तथा उत्पत्तिनाशवालाहे ॥ तैसे यहप्राणमयकोशभी जडहे तथा परिच्छिन्नहे तथा उत्पत्तिनाशवालाहे ॥ यातैं याप्राणविषेभी ब्रह्मरूपता तथा सर्वजगत्कीकारणरूपता संभवेनहीं ॥ किंतु याजडप्राणकाभी कोईचेतनरूपकारण अवश्यहोवेगा ॥ और संपूर्णलोक हमारामन जाणताहे याप्रकारकावचन कथनकरे हैं ॥ यातैं यहजान्याजावे हे ॥ सर्वकूंजानणेहारा यहचेतनरूपमनही याप्राणादिकसर्वजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहे ॥ यातैं यहमनही ब्रह्मरूपहे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोभृगुऋषि याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण तामनविषेजाणिके तामनकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ और तिसतै अनंतर पुनःविचारकरिके सोभृगुऋषि पूर्वप्राणमयकोशकीन्याई तामनोमयकोशविषेभी याप्रकारके दोषोंकूंदेखताभया ॥ यहमनभी सविकल्पक संशयरूपहे ॥ यातैं यहमन कारणतैंरहितहोवेनहीं ॥ किंतु यासंशयरूपमनकाभी कोईकारण अवश्यहोवेगा ॥ काहे तैं यालोकविषे यह स्थाणुहे अथवा पुरुषहे इसतैंआदिले के जितनेकोसंशयहोवे हैं ॥ तेसंशय कारणतैंविनाहोवैंनहीं ॥ किंतु जिसधर्मीपदार्थविषे

स्थाणुत्व पुरुषत्व यहविरुद्धधर्म प्रतीतहोवै हैं ॥ ताधर्मींपदार्थका जोइदंरूपकरिके सामान्यज्ञानहै ॥ सोसामान्यज्ञान तासंशयका कारण होवै है ॥ तथा स्थाणुत्व पुरुषत्व यादोनोंकोटियोंकास्मरणरूपज्ञान तासंशयका कारणहो वै है॥और सोधर्मींपदार्थोदिकोंकाज्ञान निर्विक ल्पकबुद्धिरूपहै ॥ यातैं तासंशयरूपमनका सानिश्चयरूपबुद्धिही कारणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मंदअंधकारविषेस्थित जोसाढेतीनहस्तपरि माणवाला काष्ठविशेषहै ताकानाम स्थाणुहै ॥ तास्थाणुविषे यहस्थाणुहै अथवा पुरुषहै याप्रकारकासंशय जीवोंकूंहोवै है ॥ तहां तासं शयतैंपूर्व जिसजीवकूं तास्थाणुविषे मनुष्यपरिमाणऊंचापणा निश्चयहोवै है ॥ तिसोजीवकूं तास्थाणुविषे सोसंशयहोवै है ॥ तानिश्चय तैंरहित अन्यजीवकूं सोसंशयहो वैनहीं यातैं यहजान्याजावै है ॥ सानिश्चयरूपबुद्धि तासंशयरूपमनकाकारणहै ॥ यातैं साबुद्धिही ब्रह्म रूपहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तामनआदिकजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूपब्रह्मकालक्षण तानिश्चयरूपबुद्धिविषे जाणिके सो भृगुऋषि ताबुद्धिरूपविज्ञानमयकोशकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ और तिसतैंअनंतर पुनःविचारकरिके सोभृगुऋषि ताबुद्धिरूपविज्ञानम यकोशविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ यहनिश्चयरूपबुद्धिभी यास्थूलशरीरकीनाई परिच्छिन्नहै ॥ और जोजोपदार्थ परिच्छिन्न हो वै है ॥ सोसोपदार्थ उत्पत्तिनाशवान्हो वै है ॥ जैसे यहस्थूलशरीर परिच्छिन्नहै ॥ यातैं उत्पत्तिनाशवालाभीहै ॥ तैसे परिच्छिन्नहोणेतैं साबुद्धिभी उत्पत्तिनाशवालीहै ॥ और जोजोपदार्थ उत्पत्तिनाशवालाहो वै है ॥ सोसोपदार्थ सर्वकालविषे हो वैनहीं ॥ किंतु किसीकाल विषेहो वै है तथाकिसीकालविषेनहींहो वै है ॥ जैसे यहशरीर उत्पत्तिनाशवालाहै ॥ यातैं किसीकालविषे है तथा किसीकालविषेनहीं है ॥ तैसे उत्पत्तिनाशवान्होणे तैं साबुद्धिभी किसीकालविषे है तथाकिसीकालविषेनहीं है ॥ और जोपदार्थ कादाचित्कहोवै है ॥ सोपदार्थ ब्रह्मरूपहो वै नहीं ॥ जैसे यहशरीर कादाचित्कहै यातैं ब्रह्मरूपभीनहीं है ॥ तैसे कादाचित्क होणे तैं यहबुद्धिभी ब्रह्मरूपहोइसकेनहीं ॥ किंतु याबुद्धिकाभी कोईकारण अवश्यहो वेगा ॥ तहां यालोकविषे जाजाबुद्धिकीप्रवृत्तिहो वै है ॥ सासा सुखकीप्राप्तिवासतेहीहो वै है ॥ सुखकीप्राप्तितैंविना साबुद्धिकीप्रवृत्तिहो वैनहीं ॥ और कहां दुःखविषे तथा दुःखकेसाधनोंविषे तथा द्वेष्यपदार्थोंविषे तथा उपेक्ष्य

पदार्थोंविषे जाबुद्धिकीप्रवृत्ति देखणेमेंआवेहै ॥ साप्रवृत्तिभी भ्रमप्रमादादिकदोषोंकेवशतैंहीहोवे है ॥ स्वभावतैं साबुद्धि तिनदुःखादिकों
विषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥किंतु स्वभावतैं तो साबुद्धि सुखकीप्राप्तिवासतेही प्रवृत्तहोवे है॥किंवा॥सर्वइच्छातैंरहित समाधिविषेस्थितजेविद्वान्पुरु
षहैं ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकीबुद्धि तासमाधिकालपर्यंत उत्थानकूंप्राप्तहोवेनहीं॥और इच्छावान्अविवेकोपुरुषोंकीबुद्धि सर्वदाउत्थानकूंप्राप्तहो
वे है ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिके याइच्छाविषेही ताबुद्धिकोकारणता सिद्धहोवे है ॥ और यालोकविषे अस्मदादिकजीवोंकूं
जाजाइच्छाहोवे है ॥ सासाइच्छा सुखविषेहीहोवे है ॥ तासुखतैंभिन्न दुःखविषे तथादुःखकेसाधनोंविषे तथाद्वेष्यपदार्थोंविषे तथाउपेक्ष्यप
दार्थोंविषे किसोभीजोवकूं इच्छाहोतीनहीं ॥ इसप्रकार आपणेस्वभावतैंसुखविषेप्रवृत्तहुईभी साजीवोंकोइच्छा अनुपादेयरूपकरिके दुःखा
दिकोंकूंभीविषयकरेहै ॥ इहां जोपदार्थ प्राप्तहुआ पुरुषोंकेप्रयत्नकरिकेभी निवारणकऱ्याजावेनहीं ॥ तापदार्थकानाम अनुपादेयहै ॥
यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ स्वभावतैं केवलसुखकूंहीविषयकरणेहारीजाइच्छाहै ॥ साइच्छा ताबुद्धिकाकारणहै ॥ और तासुखविषयकइ
च्छाकरिकेजन्यहोणेतैं साबुद्धिभी सुखविषेही उत्पन्नहोवैहै ॥ और अनुपादेयरूपजेदुःखादिकहैं ॥ तेदुःखादिक जैसे ताइच्छाकोउत्पत्ति
विषे निमित्तनहींहै ॥ तैसे ताबुद्धिकीउत्पत्तिविषेभी तेदुःखादिक निमित्तनहीं हैं ॥ यातैं प्रियमोदादिकअवयवोंवाला जोआनंदमयहै ॥ सो
आनंदमयही ताविज्ञानमयबुद्धिका कारणरूपहै ॥ यातैं सोआनंदमयही ब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार बुद्धिआदिकजगत्के उत्पत्ति
स्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण ताआनंदमयकोशविषे जाणिके सोभृगुऋषि ताआनंदमयकोशकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ और
सोभृगुऋषि पुनःविचारकरिके ताआनंदमयकोशविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ याआनंदमयविषेभी प्रिय मोद प्रमोद यहतीन
अवयवतो अंतःकरणकीवृत्तिरूपहैं ॥ और आनंदरूपचतुर्थअवयव अविद्याकीवृत्तिरूपहै ॥ यातैं प्रिय मोद प्रमोद आनंद यहचारोंअव
यव कार्यरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवे है ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकेजन्य अवश्यहोवे है ॥ जैसे घटा
दिकपदार्थ कार्यरूपहैं ॥ यातैं मृत्तिकादिककारणोंकरिकेजन्यभीहैं ॥ तैसे कार्यरूपहोणेतैं तेप्रियादिकभी किसीकारणकरिकेजन्य अव

श्यहोवैंगे ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ किसोकारणकरिकैजन्यहोवे है ॥ सोसोपदार्थ नाशकूंभीअवश्यप्राप्तहोवे है ॥ जैसे घटादिक पदार्थ मृत्तिकादिककारणोंकरिकैजन्यहैं ॥ यातैं नाशकूंभीप्राप्तहोवे हैं ॥ तैसे कारणकरिकैजन्यहोणेतैं यहप्रियादिकभी नाशकूं अवश्यप्राप्तहोवैंगे ऐसेउत्पत्तिविनाशवाले तिनप्रियमोदादिकोंविषे ब्रह्मरूपतासंभवैनहीं ॥ किंतु उत्पत्तिनाशतैंरहित तथान्यूनअधिकतातैंरहित जो ब्रह्मस्वरूपआनंदहै ॥ सोब्रह्मस्वरूपआनंदही याबुद्धिआदिकजगत्काकारणहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार विचारकरिकै सोभृगुऋषि ताआनंदमयकोशके पुच्छप्रतिष्ठारूप आनंदस्वरूपआत्माकूंही ब्रह्मरूपकरिकैनिश्चयकरताभया ॥ काहेतैं यालोकाविषे जितनेकीकारणहैं ॥ तेकारण प्रथम आनंदकूंप्राप्तहोइकेही किसीकार्यकेउत्पन्नकरणेविषे समर्थहोवें हैं ॥ आनंदतैंविना कोईभी कार्यकूंउत्पन्नकरतानहीं ॥ जैसे स्त्री पुरुष दोनों प्रथम आनंदकूंप्राप्तहोइकेही पुत्रादिकप्रजाकोउत्पत्तिकरें हैं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ स्त्रीपुरुषादिकसर्वपदार्थोंविषे अनुगत जोआनंदहै ॥ सोआनंदहीयासर्वजगत्काकारणहै ॥ और सोजगत्काकारणरूपआनंद उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ यातैं सोकारणरूपआनंद नित्यहै ॥ और यालोकविषे सोआनंद यद्यपि स्त्रीआदिकविषयोंतैंजन्यहुआ प्रतीतहोवे है ॥ तथापि वास्तवतैं सोआनंद स्त्रीआदिकाविषयोंतैं जन्यहोवैनहीं ॥ किंतु इच्छाकीनिवृत्तिकरिकै चित्तकीएकाग्रताद्वारा तेस्त्रीआदिकविषय ताआनंदकीअभिव्यक्तिकरें हैं ॥ इसप्रकार निद्राआहार चंदनादिकोंकालेप स्त्रियां इत्यादिकविषयोंकेसंबंधतैं अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआ जोआत्मास्वरूपआनंदहै ॥ ताआनंदकरिकैही यहसंपूर्णभूतप्राणी जीवनकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और मरणकालविषे यहसंपूर्णस्थावरजंगमजीव यास्थूलसूक्ष्मशरीरकेअभिमानकापरित्याग करिकै हृदयदेशविषे ताआनंदस्वरूपब्रह्मविषेही तादात्म्यसंबंधकरिकै लयभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ताआनंदस्वरूपब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे यहअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकरिकै ब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ याकारणतैं याअधिकारीपुरुषकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे मरणकालविषे यहसंपूर्णजीव जोकदाचित् ताब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोतेहोवैं ॥ तौ याजीवोंकूंभी पुनःजन्मकीप्राप्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और मरणतैंअनंतर याअज्ञानीजीवोंकूं जन्मकोप्राप्ति अवश्यकार

के होवे है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जैसे आत्मज्ञानकरिके अज्ञानतैंरहितहुआ यहविद्वान्पुरुष ब्रह्मभावकूंप्राप्तहो वे है ॥ तैसे मरण काल
विषे यहजीव जोकदाचित् अज्ञानतैंरहितहुए ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैं ॥ तो याजीवोंकूंभी तामुक्तपुरुषकीनाईं पुनःजन्मकीप्राप्तिनहाहाव ॥
परंतु आत्मज्ञानतैंरहित यहअज्ञानीजीव तामरणकालविषे अज्ञानतैंरहितहुए ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥किंतु जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे य
हजीव अज्ञानयुक्तहुए ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहो वे हैं॥तैसे मरणकालविषेभी यहजीव अज्ञानयुक्तहुएही ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहो वे हैं ॥ याकारणतैं
यहअज्ञानोजीव मरणतैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसआत्मास्वरूपआनंदतैं याजगत्केउत्पत्तिस्थिति
लय होवे हैं ॥ सोआत्मास्वरूपआनंदही ब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार पूर्व सोभृगुऋषि विचाररूपमननकरिके आत्मसाक्षात्कारकूं
प्राप्तहोताभयाहै ॥ यातैं इदानींकालकेमुमुक्षुजनोंनैंभी ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते सोविचाररूपमनन अवश्यकरणा ॥ हेशिष्य ॥
वरुणऋषिनैं आपणेभृगुपुत्रकेप्रति उपदेशकरी जायहब्रह्मविद्याहै ॥ सायहब्रह्मविद्या हृदयदेशविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माकूंही ब्रह्मरू
पकरिकेबोधनकरे है ॥ यातैं याब्रह्मविद्याकरिके जैसे सोभृगुऋषि सर्वात्मभावरूपफलकूंप्राप्तभयाहै॥ तैसे दूसराभीजोकोईअधिकारीपुरुष
ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं याब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिके ताका विचाररूपमननकरेगा ॥ सोअधिकारीपुरुषभी तासर्वात्मभावरूपफलकूं अवश्य
प्राप्तहो वेगा ॥ यातैं इदानींकालकेमुमुक्षुजनोंनैंभी आपणेअसंभावनादोषकीनिवृत्तिवासते ताब्रह्मविद्याका विचाररूपमनन अवश्यकर्‍या
चाहिये॥हेशिष्य॥समष्टिरूपअन्नमयादिककोशोंकूं जोपुरुषआपणाआत्मारूपकरिकेजाणे है॥तिसपुरुषकूं जैसे श्रुतिउक्तसर्वअन्नकीप्राप्तिआ
दिकफल प्राप्तहो वे हैं॥तैसे आनंदस्वरूपब्रह्मकूं जोपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेजाणे है ॥ तिसपुरुषकूंभी ताआनंदस्वरूपब्रह्मकीप्राप्तिरू
पफल अवश्यप्राप्तहो वे है॥हेशिष्य॥इसप्रकार विचाररूपमननकेबलतैं यहविद्वान्पुरुष अन्नमयादिकपंचकोशोंकापरित्यागकरिके हावु इ
त्यादिकसामवेदकागायन करताहुआ जीवन्मुक्तरूपहोइकेस्थितहो वे है॥तथा ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं सोविद्वान्पुरुष याप्रकार सर्वात्मभा
वरूपफलका अनुभवकरे है यहबहुतआश्चर्य है ॥ जोयालोकविषे मैं एकहीआत्मादेव अन्नादिकभोग्यरूपकरिके तथापुरुषादिकभोक्तारूप

करिकैस्थितहुआहूं ॥ और देवताअतिथिआदिकों केप्रति अन्नकूंनहीं देकरिकै जेकृपणपुरुष आपणेउदरकूंहीभरणकरै हैं ॥ तिनकृपणपुरुषोंकूं मैंआत्मादेवही मृत्युरूपहोइकै भक्षणकरताहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव ईश्वररूपकरिकै याऋगादिकवेदोंके मंत्रोंकाकरताहूं ॥ तथा मैंहीआत्मादेव ऋषिरूपकरिकै तिनवेदों के मंत्रोंकाद्रष्टाहूं तथास्मरणकरताहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव कर्मउपासनाके स्वर्गादिफल रूपकरिकैस्थितहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव समष्टिसूक्ष्महिरण्यगर्भरूपकरिकै तथासमष्टिस्थूलविराट्रूपकरिकै संपूर्णव्यष्टिदेवतावों तैं प्रथमउत्पन्न भयाहूं ॥ और ब्रह्मानंदस्वरूपजोमोक्षहै तथा यहसंपूर्णसंसाररूपजोचक्रहै यादोनोंके मध्यविषे मैं आत्मादेवही नाभिकीनांईस्थितहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंआत्मादेवही याजीवोंकूंमोक्षकोप्राप्तिकरौंहूं तथा संसारकोप्राप्तिकरौंहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यह चारिप्रकारकापुरुषार्थरूपहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव अन्नादिकपदार्थरूपहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव अन्नादिकपदार्थोंकादातारूपहूं ॥ यातैं ऐसेअन्नादिरूपमैंआत्माकूं जोपुरुष अतिथिआदिकोंके तांई देकरिकै मृत्युतैंआपणेआत्माकीरक्षाकरै है ॥ सोअन्नदातापुरुषभी मैंआत्माकोहीरक्षाकरै है ॥ और जेकृपणपुरुष अतिथिआदिकोंके प्रति अन्नदान नहींकरै हैं ॥ किंतु केवलआपणेउदरकूं तथाआपणेस्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेउदरकूंही भरणकरै हैं ॥ ऐसे अन्नदानतैंरहितकृपणपुरुषोंकूं मैंआत्मादेवही दिनमासादिककालरूपकरिकै तथामृत्युरूपकरिकै भक्षणकरौंहूं ॥ और सुवर्णकीन्यांईप्रकाशमान् तथासूर्यमंडलविषेस्थित जोस्वयंज्योतिपुरुषहै ॥ ऐसेपुरुषरूपकरिकै मैंआत्मादेवही यासर्वजगततैंउत्कृष्टहूं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तेविद्वान्पुरुष तासामवेदकेगायनकेंव्याजकरिकै जोसर्वात्मभावकीप्राप्तिरूप आपणा अनुभव प्रगटकरै हैं ॥ सो किसीआपणेस्वार्थवासते नहींप्रगटकरै हैं किंतु यहअधिकारीपुरुष जिसीकिसीप्रकारसैं तासर्वात्मभावकोप्राप्तिवासते या ब्रह्मविद्याविषे प्रवर्त्तहोवैं याप्रकारकीकृपा हमअधिकारीजनोंऊपरकरिकै तेविद्वान्पुरुष श्रुतिभगवतीकीनांई ताआपणे अनुभवकूं प्रगटकरै हैं ॥ अब इसीअर्थविषे प्रमाणरूपकरिकै यजुर्वेदकेनारायणउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जिससर्वात्मरूपब्रह्मकूं तेविद्वान्पुरुष सामवेदकरिकैगायनकरै हैं ॥ तिसीसर्वात्मरूपब्रह्मकूं नारायणउपनिषद्भी प्रतिपादनकरै है ॥ यातैं

तानारायणउपनिषद्विषे याआनंदस्वरूपब्रह्मकूं जिसप्रकार सर्वात्मरूपकरिकेकथनकर्‍याहे ॥ ताअर्थकूंतू सावधानमनकरिकेश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ अविद्यारूपजलकरिकेपूर्ण जोयहसंसाररूपसमुद्रहे ॥ तथा तासंसाररूपसमुद्रविषेस्थित जेचतुर्दशभुवनहैं ॥ तिनसंपूर्णोंविषे यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिपरमात्मादेवही आकाशकीन्याई अनुगतहोयकेवर्त्ते है ॥ और यहपरमात्मादेव सर्वत्रव्यापकहे ॥ यातैं या लोकोंकी अपेक्षाकरिके ऊपरस्थितजोस्वर्गलोकहे ॥ तिसस्वर्गलोक तैं भी सोपरमात्मादेव ऊपर स्थितहे ॥ और महान् रूपकरिकेप्रसिद्ध जेआकाशादिकहैं ॥ तिनआकाशादिकमहान्पदार्थों तैं भी सोपरमात्मादेव अत्यंतमहान्है ॥ और अध्यात्मरूप करिके तथासूर्यादिकअधिदेवरूपकरिके स्थित जेजीवोंकेनेत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिननेत्रादिकइंद्रियोंविषे यहपरमात्मादेवही आपणेस्वयं ज्योतिचैतन्यरूपकरिके प्रवेशकरैहे ॥और स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनप्रकारकीउपाधियोंकेसंबंधकरिके क्रमतैं विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वर यातीनप्रकारकेसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहपरमात्मादेव सर्वात्मतारूपकरिके यासृष्टिकेपरंपराकूं प्रवर्त्तकरैहे ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताप रमात्मादेवकूं प्रजापति यानामकरिकेकथनकरैहे और अध्यात्म अधिदेव अधिभूतयातीनरूपकरिकेस्थित जितनेकीस्थावरजंगमप्राणी हैं तिनसर्वप्राणियोंकेहृदयदेशरूप आकाशविषे यहपरमात्मादेवहीसाक्षीरूपकरिकेविचरैहे ॥ और यहसंपूर्णस्थावरजंगमरूपजगत् आपणी उत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषे तथालयकालविषे यापरमात्मादेवकेअधीनहुआही स्थितहोवे है॥और विश्वेदेवनामादेवतावों तैंआ दिलेकेजितनेकोदेवताहैं॥तेसंपूर्णदेवताभी यापरमात्मादेवकेअधीनहुएहीस्थितहोवे हैं॥हेशिष्य यहसंपूर्णजगत् यापरमात्मादेवके अधीनहे याप्रकारकेवचनतैं तुमनैं परमात्माका तथा याजगत्का भेदनहींजानणा ॥किंतु भूत भविष्यत वर्त्तमान जितनाकीयहजगतहे॥सोसंपूर्णज गत् तापरमात्मारूपही है॥शंका॥ हेभगवन् ॥ऐसापरमात्मादेव किसवस्तुविषेस्थितहे ॥ समाधान॥ हेशिष्य ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मादेव दूसरेकिसीपदार्थविषेरहैनहीं॥ किंतु यहपरमात्मादेवचिदाकाशस्वरूपआपणेमहिमाविषेहो स्थितहोवैहे ॥ और यहआत्मादेवही आकाशकूं तथास्वर्गकूं तथाभूमिकूं सर्वओरतैंव्याप्यकरिकेरहैहे॥ और यासर्वलोकमंडलकेमध्यविषेस्थितहोइके जोयहसूर्यभगवान् प्रकाशकरैहेतासूर्य

भगवान्कूंभीयहपरमात्मादेवही आपणेस्वप्रकाशतेजकरिके प्रकाशमानकरैहै ॥ औैर हेशिष्य॥जैसे यालोकविषेतंतुवायपुरुष तंतुरूपसूत्रकूं पटभावकीप्राप्तिवासतेविस्तारकरैहै॥तैसे यासंसारसमुद्रविषेस्थित संपूर्णपदार्थरूपपटका सूत्ररूपजोपरमात्मादेवहै॥तापरमात्मादेवरूपसूत्र कूंवाल्मीकिआदिककवी जगत्पटरूपकरिके विस्तारकरैहैं॥ हेशिष्य॥वास्तवतैं मनवाणोकाअविषयहुआभी यहपरमात्मादेव याजगत्विषे तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोवे है॥ याप्रकार जो तापरमात्मादेवकावर्णनहै ॥ सोवर्णनही तापरमात्मारूपसूत्रका जगत्पटरूपकरिके विस्तारक रणाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सूत्रतैं पट भिन्ननहींहै ॥ यातैं पटकाजोवर्णनहै ॥ सो सूत्रकाहीवर्णनहै ॥ तैसे यहजगत्रूपपटभी तापरमात्मा रूपसूत्रतैंभिन्ननहींहै ॥ यातैं तेवाल्मीकिआदिककवी याजगत्कावर्णनकरतेहुए तापरमात्मादेवकाहीवर्णनकरै हैं ॥ तहांश्रुति॥यहमेवीणा यांगायंतिएतमेवतेगायंति ॥ अर्थयह ॥ यहलौकिकपुरुष जोवीणाविषे गायनकरैहैं ॥ सोभी यापरमात्मादेवकूंही गायनकरैहैं ॥ १ ॥ हेशि ष्य ॥ सर्वतैंउत्कृष्टअव्याकृतरूप जोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवविषेही यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् स्थितहोवे है ॥ और यापरमा त्मादेवतैंहीउत्पन्नहुआ हिरण्यगर्भरूपब्रह्मा आकाशादिकपंचमहाभूतोंकरिके यासंपूर्णप्रजाकूंउत्पन्नकरताभया॥तहां याभूमिलोकविषे व्री हियवादिकओषधिरूपकरिके मनुष्यपशुआदिकअनेकप्रकारकीप्रजाकूं उत्पन्नकरताभया॥इसप्रकार हिरण्यगर्भद्वारा सर्वजगत्कूंउत्पन्नक रिके सोपरमात्मादेवही जीवरूपकरिके ताजगत्विषेप्रवेशकरताभया ॥ और यहपरमात्मादेव परमाणुआदिकसूक्ष्मपदार्थों तैंभी अत्यंतसू क्ष्महै॥तथा आकाशादिकमहान्पदार्थों तैंभी अत्यंतमहान्है॥यातैं यापरमात्मादेवतैंपरे कोईसूक्ष्मपदार्थनहीं है तथाकोईमहान्पदार्थनहीं है॥किंतु यहपरमात्मादेवही अणुतैंअणुहै तथामहान्तैंमहान्है॥तहांश्रुति ॥अणोरणीयान् महतोमहीयान्॥यहांअणुशब्दकरिके दुर्विज्ञेयता काग्रहणकरणा॥और यहपरमात्मादेव सर्वभेदतैंरहितहै॥याकारणतैं अनंतहै ॥और यहपरमात्मादेव यासर्वजगत्का कारणहै ॥यातैं पुराण है॥और यहपरमात्मादेव कार्यसहितअज्ञानरूपतमतैंपरहै॥यातैंस्वयंज्योतिरूपहै॥और हेशिष्य॥शास्त्रकरिकेविहित जोमनकाव्यापारहैता कानाम ऋतहै॥और शास्त्रकरिकेविहित जोशरीरकाव्यापारहै ताकानामसत्यहै॥सोऋतनामापुण्यकर्म तथा सत्यनामापुण्यकर्महीयाजीवों

कूं सुखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोदोनोंप्रकारकापुण्यकर्मभी यहपरमात्मादेवही है ॥ और यहपरमात्मादेवही अग्निहोत्रादिकइष्टकर्म रूपहै ॥ और यहपरमात्मादेवही वापीकूपतडागादिकपूर्त्तकर्मरूपहै ॥ और भूत भविष्यत वर्त्तमानरूप जितनाकी यहजगत्है ॥ सोयहसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेवविषैहीस्थितहै ॥ याकारणतैं ब्रह्मवेत्तापुरुष तापरमात्मादेवकूं यासंसाररूपचक्रका नाभिरूपकरिकै कथनकरैहैं ॥ और यहपरमात्मादेवही अग्नि वायु सूर्य चंद्रमा मोक्ष सूक्ष्मभूत विराट् रूपहै ॥ और यापरमात्मादेवतैंही निमेष घटी मुहूर्त्त प्रहर दिन रात्रि पक्ष मास ऋतु संवत्सर इत्यादिककाल उत्पन्नहोवै हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोपरमात्मादेव सर्वजगत्कूंउत्पन्न करिकै आकाशादिकपंचभूतोंतैं तथा तापंचभूतमयत्रिलोकीरूपगौतैं नानाप्रकारकेभोगरूपदुग्धकूं दुहताभया ॥ जोभोगरूपदुग्ध हमजी वोंकूं सुखरूपहुआप्रतीतहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ यहपरमात्मादेव नेत्रादिकइंद्रियोंकाविषयहैनहीं ॥ याकारणतैं यापरमात्मादेवकूं जगत्के ऊपर तथानीचे तथामध्यविषे कोईपुरुष ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ और यहपरमात्मादेव किसी इंद्रियकरिकेग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥याकारणतैं यापरमात्मादेवका कोईनियंताभीनहीहै ॥ और यहपरमात्मादेव आत्मारूपकरिकै सर्वजीवोंकोनिरतिशयप्रीतिकाविषयहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीतापरमात्मादेवकूं 'महद्यशः'यानामकरिकेकथनकरैहै॥और यहपरमात्मादेव रूपस्पर्शादिकगुणोंतैंरहितहै॥याकारणतैं यापर मात्मादेवकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै कोईभीपुरुष देखिसकतानहीं॥किंतु मनकूंनिरोधकरणेहारी आभ्यंतरमुखशुद्धबुद्धिहै॥ताशुद्धबुद्धिकरि केही यहपरमात्मादेव जान्याजावैहै॥और हेशिष्य ॥ पूर्वसृष्टिकालविषे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंतैं तथापृथ्वीआदिकस्थूलभूतोंतैं उत्पन्न भयाजोहिरण्यगर्भनामा तथावैश्वानरनामादेवताहै॥सोहिरण्यगर्भनामादेवता तथावैश्वानरनामादेवताभी यापरमात्मादेवतैंहीउत्पन्नहोवैहै॥ और याव्यष्टिरूपजगत्तैं समष्टिरूपकरिकै अधिकभावकूंप्राप्तहुआ सोहिरण्यगर्भ यासंपूर्णव्यष्टिशरीरविषे व्याप्यकरिकै स्थितहोवैहै ॥ कैसाहैसोहिरण्यगर्भ॥यासंपूर्णदेहधारीजीवोंतैं प्रथम देहधारीजीवहै ॥तथा यहसंपूर्णस्थूलजगत् ताहिरण्यगर्भकाहीस्वरूपहै ॥ और यहही नारायणरूपपरमात्मादेव सूर्यमंडलविषैस्थितहोइके आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै याजगत्कूंभीअस्तिभातिप्रियरूपकरैहै॥और इसी

ही परमात्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मविद्याकरिकेप्राप्तहोवेंहे ॥ और याजगतकीउत्पत्तितैंपूर्व जोपरमात्मादेव अनंत निर्गुण चिद्घन इत्यादि रूपकरिकेस्थितहोवेंहे ॥ सोईहीपरमात्मादेव ताहिरण्यगर्भका वास्तवस्वरूपहे ॥ ऐसा मायारूपतमतैंपरे तथासूर्यकेसमान तेजवान् तथामहान् जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहे ॥ तिसपरमात्मादेवकूं मैंमंत्रद्रष्टाऋषि आपणाआत्मारूपकरिकेजाणताहूं ॥ और मेरेन्याई जोकोईदूसराभीअधिकारीपुरुष तास्वयंज्योतिपरमात्मादेवकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मारूपकरिकेजानेगा॥सो अधिकारीपुरुषभी याशरीरकेवर्तमानकालविषे ब्रह्मरूपहुआ मरणतैंअनंतर ताशुद्धब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवेगा॥ऐसेअद्वितीयब्रह्मकीप्राप्तिवासते ब्रह्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्गहेनहीं॥किंतु यहब्रह्मज्ञानही ताकेप्राप्तिकामार्गहे ॥ अब ताब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिवासते प्रथम त्वंपदार्थकेशोधन कानिरूपणकरेहैं॥हेशिष्य॥जैसे माताकेउदरविषे बालकस्थितहोवेंहे॥तैसे आदित्यमंडलविषेस्थितयहस्वयंज्योतिपुरुषही विराट्रूपकरिके सर्वजीवोंकेअंतरस्थितहोइके नानाप्रकारकीसृष्टिकूंउत्पन्नकरताहुआविचरेहे ॥कैसाहेसोपरमात्मादेव ॥ शरीरादिकउपाधियोंकेजन्महुए भी वास्तवतैं जन्ममरणतैंरहितहे ॥ और शास्त्रवेत्तापुरुष जैसे सूर्यमंडलादिकोंकूंसूर्यादिकों के किरणावोंका कारणमानेहैं ॥ तैसे तासर्वांतर्यामीपरमात्मादेवकूंही ताविराट्का कारणमानेहैं॥अब तत्पदार्थकाशोधनकरतेहुए प्रथमचित्तशुद्धिवासते तापरमात्मादेवकेआराधनका प्रकार निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ अग्निआदिकजेअधिदेवहैं ॥ तथा वाकादिकजेअध्यात्महैं ॥ तिनसंपूर्णोंकेउपकारवासते जोपरमात्मादेव आदित्यमंडलविषेस्थितहोइके सर्वत्रप्रकाशकरेहे ॥ और इंद्रादिकदेवतावोंकापुरोहित जोबृहस्पतिहे सोबृहस्पतिभी जिसपरमात्मादेवकीही विभूतिहे और जोपरमात्मादेवविभूतिरूपसर्वदेवतावोंतैंपूर्व आदित्यरूपकरिके प्रादुर्भावहोवेंहे ऐसे स्वप्रकाशचैतन्यरूपशुद्धपरमात्मादेवकेताईं हमारा वारंवार नमस्कारहोवे ॥ हेशिष्य ऐसेनारायणरूपपरमात्मादेवनें अग्निआदिकदेवताओंकेप्रति याप्रकारकावर दियाहे ॥ हेदेवतावो ॥ आदित्यरूप जोमैंआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहूं तिसमैंपरमात्मादेवकीप्रसन्नताकरणेवासते जेअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक मेरेताईंनमस्कारकरेंगे॥तिनअधिकारीपुरुषोंकेसर्वपापकर्म निवृत्तहोवेंगेओर तिनपापकर्मोंकीनिवृत्तितैंअनंतरतिनअधिकारीपु

रुषोंकाअंतःकरण शुद्धहोवैगा॥ताशुद्धअंतःकरणविषे तिनअधिकारीपुरुषोंकूं मैंपरमात्मादेवकासाक्षात्कार प्राप्तहोवेगा॥शंका॥हेभगवन् ॥
तापरमात्मादेवनैं तिनअग्निआदिकदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावर किसकालविषेदियाहे॥समाधान ॥ हेशिष्य ॥ पूर्व तेअग्निआदिकदेवता
ताप्रकाशमानआदित्यरूपपरमात्मादेवकूं नानाप्रकारकेनमस्कारोंकरिके प्रगटकरतेभये ॥ और वरकेप्राप्तिकीकामनाकरिके तेअग्निआ
दिकदेवता तापरमात्मादेवकेआगे याप्रकारकोप्रार्थनाकरतेभये ॥ हेभगवन् सर्वजगत्काआत्मारूप तथापरमआनंदस्वरूप जोआप
हो ॥ तिसआपकेताईं जोअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरे ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेहृदयदेशविषे आप सर्वदाप्रगटहोवो ॥
तात्पर्ययह ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं आपका आत्मारूपकरिकेसाक्षात्कारहोवे ॥ याप्रकारकावर आप हमारेप्रतिदेवो॥हेशिष्य॥इसप्रकार
जभी तिनअग्निआदिकदेवतावों नें तापरमात्मादेवकेआगे प्रार्थनाकरी॥तभी सोपरमात्मादेव तिनदेवतावोंकेप्रति सोवरदेताभया ॥ यातैंजो
अधिकारीपुरुष तापरमात्मादेवकेप्रति श्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरे है ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं तापरमात्मादेवकेवरकेप्रभावतें अध्यात्मसा
क्षात्कारकीप्राप्ति अवश्यकरिकेहोवे है॥हेशिष्य ॥इसप्रकार अग्निआदिक देवतावों केप्रति जोपरमात्मादेवनैं वरदियाहै॥तावरप्रदानरूपगुह्य
व्यवहारकूं जोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजाने है॥तिसअधिकारीपुरुषके तेसंपूर्ण देवता वशवर्तीहोवैं हैं ॥हेशिष्य॥आत्मसाक्षात्का
रकीप्राप्तिवासते तापरमात्मादेवकेप्रति नमस्कारकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष याप्रकार तापरमात्मादेवकीस्तुतिकरे॥हेपरमात्मादेव॥ऐ
श्वर्यकाअभिमानीदेवतारूपजाश्रीहै॥तथा सौंदर्यकाअभिमानीदेवतारूप जालक्ष्मीहे ॥तेश्रीलक्ष्मीदोनों आपकी पत्नीयां हैं॥और सर्वपदा
र्थोंकरिकेयुक्त जोदिनरूपकालहै तथा रात्रिरूपकालहै ॥तेदिनरात्रिरूपदोनोंकाल आपके पार्श्वस्थानहैं ॥ और यहसंपूर्णतारागण आपका
प्रकाशमानरूपहै ॥ और अश्विनीकुमारोंकीन्याईं द्वंद्वरूपकरिकेप्रसिद्ध जेस्वर्ग पृथ्वी यहदोनों हैं ॥ तेस्वर्गपृथ्वीदोनों आपका प्रसृतमुख
है ॥ हेदेवतावों के ईश्वर ॥ हमअधिकारीजनोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरणेवासते आपणास्वयंज्योतिआनंदस्वरूप प्रगटकरो॥हेभगवन् हमअधि
कारीजनोंका वारंवार आपकेताईं नमस्कारहोवे ॥ इतनैंकरिके वैश्वानरअंतर्यामीरूपकरिके तानारायणपरमात्मादेवकास्वरूप निरूपण

कऱ्या ॥ अब हिरण्यगर्भअंतर्यामीरूपकरिकेभी तानारायणपरमात्मादेवकास्वरूप निरूपणकरे हैं ॥ जोहिरण्यगर्भरूपदेव यासर्व जगत्
तेंपूर्वं प्रगटहोइके यासर्वजगत्का महेश्वरहोताभया ॥ और जैसे यालोकविषे स्तंभ गृहकूंधारणकरे हैं॥तैसे सोहिरण्यगर्भ देवभी यात्रिलो
कीरूपगृहकूं धारणकरताभया ॥ ऐसेहिरण्यगर्भरूपएकदेवके प्रसन्नताकरणेवासते हमअधिकारीजन आपणेवर्ण आश्रमकेअनुसार घृता
दिरूपहविष्यपदार्थोंकरिकै अर्चनकरे हैं ॥ और प्राणोंकुंधारणकरणेहारे तथाज्ञानकर्मइंद्रियोंकरिके नानाप्रकारकेव्यापारोंकूंकरणेहारे
जेचेतनप्राणी हैं ॥ तिनसंपूर्णचेतनप्राणियोंका जोहिरण्यगर्भ देव अधिपतिहोताभया ॥ याकारणतें सोहिरण्यगर्भ देव दोपादोंवालेमनु
ष्यादिकोंका तथाचारिपादोंवालेअश्वादिकोंका नियंताईश्वरहे ॥ ऐसेहिरण्यगर्भ देवकेशरणकूं मैं अधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा ॥ जो
हिरण्यगर्भ देव आत्मसाक्षात्कारवालेअधिकारीजनोंके प्रति आपणावास्तवस्वरूप प्राप्तकरे है॥तथा बल प्राप्तकरे है॥और जिसहिरण्यगर्भ
देवकूं आपणेशरीरविषेस्थितहोइकेसंपूर्ण देवता आराधनकरे हैं॥और जिस हिरण्यगर्भ देवके यहअग्निआदिकसर्व देवता शिष्यरूपहैं॥ और
जिसहिरण्यगर्भदेवतें यहसंपूर्णदेवता आशीर्वादकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और जैसे छाया यापुरुषोंकेअधीनहोवे है ॥ तैसे मोक्ष मृत्यु यहदोनों
जिसहिरण्यगर्भदेवकेकिंकरहैं ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा ॥ हिमालयतेंआदिलेकेजितनेकीपर्व
तहैं ॥ तेसंपूर्णपर्वत जिसहिरण्यगर्भका विभूतिरूपमहिमाहैं ॥ अथवा ॥ हिमालयादिकपर्वतों तैंभी जिसहिरण्यगर्भ देवकामहिमा अधिक
है ॥ और जैसे यालोकविषे जलकेतलाव बालकोंकेक्रीडाकास्थानहोवे हैं ॥ तैसे हिमालयआदिकपर्वतहैंतीररूपजिनोंके ऐसेजेसप्तसमुद्र
हैं तथापातालहैं ॥ तेसमुद्र तथापाताल जिसहिरण्यगर्भदेवके क्रीडाकेस्थानहैं ॥ और पूर्वादिकचारिदिशा तथा अग्निकोणादिकचारिउप
दिशा यहसंपूर्णदिशा जिसहिरण्यगर्भदेवकीभुजाहैं॥ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं॥किंवा॥जिसहिरण्यगर्भदेवकी
सत्ताकरिकै धारणकरीहुई यहपृथिवी जलऊपरस्थितहोवे है ॥ तथा जिसहिरण्यगर्भदेवकीसत्ताकरिकेधारणकऱ्याहुआ स्वर्ग आकाशविषे
स्थितहोवे है॥और जिसहिरण्यगर्भकेवास्तवस्वरूपकूं सापृथिवी तथास्वर्ग आपणेमनकरिके सर्वदा ध्यानकरे हैं॥ताध्यानकरिके सापृथ्वी

सर्वदाशोभायमानहैं ॥ और जिसहिरण्यगर्भदेवकूंआश्रयणकरिके सर्वतैंअधिकतारूपकरिकेउदयभयाजोयहसूर्य है ॥ सोयहसूर्यभी जिस हिरण्यगर्भदेवकोभयकरिके रात्रिदिनविषे नानाप्रकारकाभ्रमणकरैहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा॥ जिसहिरण्यगर्भदेवकोविभूतिरूप जेक्षत्रधर्मविषेप्रीतिवाले इंद्रादिकमहान्शूरवीरहैं ॥ तिसइंद्रादिरूपविभूतिकरिकेयुक्तहोणेतैं यहस्वर्गलोक उग्ररूपकरिकेप्रसिद्धहै ॥ और जिसहिरण्यगर्भदेवकेअनुग्रहकरिके यहपृथिवी अत्यंतबलकूंप्राप्तहोवे है ॥ जिसबलकेप्रभावतैं यहपृ थिवी ब्रह्मांडकेभारकरिकेयुक्तहुईभी नौकाकीन्याई जलविषेडूबतीनहीं ॥ और जैसे स्तंभोंकरिकेधारणकऱ्याहुआगृह नीचेपतनहोवै नहीं ॥ तैसे जिसहिरण्यगर्भदेवकरिके धारणकऱ्याहुआ यहस्वर्गलोक तथाअंतरिक्षलोक तथाब्रह्मलोक नीचेपतनहोवैनहीं ॥ और जोहिरण्यगर्भदेव रजोगुणकरिकेयुक्तहुआ स्वर्गलोकविषे विमानोंविषेस्थित नानाप्रकारकेभोगोरूपोंकूंधारणकरिके विषयसुखकीप्राप्ति वासते देवांगनावोंकेसुखरूपचंद्रमाविषे आपणेनेत्ररूपकमलोंकूंअर्पणकरैहै ॥ और अग्निआदिकसर्वदेवतावोंकेरहणेकामंदिर जोवैश्वानर है ॥तावैश्वानररूपकूंभी यहहिरण्यगर्भदेवहीधारणकरैहै ॥ याकारणतैं यहहिरण्यगर्भदेव मानतैंरहितहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा ॥ जैसे लोकप्रसिद्धगंगादिकनदियोंकेजल समुद्रकूं पतिरूपकरिके आश्रयणकरैहैं ॥ तैसे अव्या कृत प्रकृति माया इत्यादिकनामोंकरिकेप्रसिद्ध जाअविद्याहै ॥ तेअविद्यारूपजल जिससर्वात्मारूपहिरण्यगर्भदेवकूं पतिरूपकरिकेआश्र यणकरैहैं ॥ कैसेहैं तेअविद्यारूपजल ॥ आकाशादिकपंचभूतरूपगर्भकरिकेयुक्तहैं ॥ याकारणतैं महान्हैं ॥ पुनःकैसेहैं तेअविद्यारूप जल ॥ विराट्रूपजोवैदिकअग्निहै तथालोकप्रसिद्धजोयहअग्निहै तादोनोंप्रकारकेअग्निकूं सूक्ष्मबीजरूपकरिके आपणेविषेधारणकरैहैं ॥ तथा तिनदोनोंप्रकारकेअग्नियोंकूं आपणेतैंउत्पन्नकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ ताअविद्यारूपजलोंतैं केवल एकअग्निही उत्पन्ननहींभया ॥ किंतु वाकादिकअध्यात्मोंका तथा अग्निआदिकअधिदेवोंका धारणकरणेहारा जोयहप्राणहै ॥ सोप्राणभी तिनअविद्यारूपजलोंतैंहीउत्पन्न भयाहै ॥ याकारणतैंही यहप्राण जलतैंविना स्थितहोइसकैनहीं ॥ ऐसेअविद्यारूपजल जिसहिरण्यगर्भदेवकूं पतिरूपकरिकेआश्रय

णकरेहैं ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा ॥ जोहिरण्यगर्भदेव आपणेस्वप्रकाशचैतन्यरूपतेजकरिके ताअविद्यारूपजलोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ और जोहिरण्यगर्भदेव सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै ॥ और जोहिरण्यगर्भदेव इंद्रादिकदेवतावोंकाभी अधिपतिहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेप्रसन्नकरणेवासते घृतादिकहविष्यपदार्थोंकरिके तावेदकाअर्चनकरताहुआ मैंअधिकारीजन ताहिरण्य गर्भदेवकेशरणकूं प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा ॥ साधनहीनपुरुषोंकेताईं उपदेशकरणेकूंअयोग्य तथासर्वत्रव्यापक ऐसाजोचैतन्यस्वरूपहिरण्य गर्भदेवहै ॥ ताहिरण्यगर्भदेवकेताईं मैंअधिकारीजनका वारंवार नमस्कारहोवै ॥ और सर्वधर्मोंतैंरहित तथासर्वकाआत्मारूप ऐसा हिरण्यगर्भदेव मैंमुमुक्षुजनकेताईं ब्रह्मसाक्षात्कारकोप्राप्तिकरे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष तापरमात्मारूपनारायणदेवकूं हिरण्यगर्भरूपकरिके तथावैश्वानररूपकरिके नमस्कारकरे हैं तथास्तुतिकरे हैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति सोपरमात्मादेव अवश्यक रिके आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरेहै ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं पूर्व उक्तरीतिसैं तापरमात्मादेवकीस्तुति तथानमस्कार अवश्यकरिकेकरणा ॥ इतनैंग्रंथकरिके तानारायणदेवका वैश्वानररूपकरिके तथा हिरण्यगर्भरूपकरिके निरूपणकऱ्या ॥ अब तापरमात्मारूपनारायणदेवका साक्षात्हीनिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यहपरमात्मारूपनारा यणदेव यास्थूलजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व हिरण्यगर्भरूपकरिकेउत्पन्नहोताभयाहै ॥ याकारणतैं यहस्वयंज्योतिनारायणदेवही पूर्वादिक दिशारूपहै ॥ तथा अग्निकोणादिकउपदिशारूपहै ॥ और याब्रह्मांडगोलककेगर्भविषेस्थित जेतीनलोकहैं ॥ तेतीनलोकहैंशरीरजिसका ऐसाजोविराट्भगवान्है ॥ सोविराट्भगवान्भी यहनारायणदेवही है ॥ और भूत भविष्यत वर्त्तमान यातीनकालोंविषेउत्पन्नहोणेहारे जे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेशरीरहैं ॥ तेचारिप्रकारकेशरीरभी यहपरमात्मादेवही हैं हेशिष्य॥इसप्रकार जेअंतर्मु खअधिकारीपुरुष तापरमात्मादेवकूं बुद्धिआदिकसर्वपदार्थोंतैं अत्यंतसमोरूपकरिकेदेखेहैं॥तिनअधिकारीपुरुषोंकूं ताअंतर्मुखतारूपसमा धिविषे सोपरमात्मादेवही आपणाआत्मारूपकरिकेप्रतीतहोवैहै॥और यहपरमात्मादेव सर्वभूतप्राणियोंकाआत्मारूपहै॥याकारणतैं यालो

कविषे जितनेकीजीवोंकेचक्षुहैं तथाजितनेकीजीवोंकेमुखहैं तथाजितनेकीजीवोंकेहस्तपादहैं ॥ तेसंपूर्णचक्षुआदिक यापरमात्मादेवकेही हैं और आकाशादिकपंचभूतोंसहित जेजीवोंकेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तिनपुण्यपापकर्मरूपदोनोंभुजावोंकरिकै यहपरमात्मादेवही यासंपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करे है ॥ और यहपरमात्मादेवही स्वर्गरूपऊर्ध्वलोककूं तथापृथिवीरूपअधोलोककूं उत्पन्नकरे है॥शंका॥ हेभगवन् ॥ याप्रकार तापरमात्मादेवकोस्तुतिकरिकै पूर्वकिसीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिभई है अथवानहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य पूर्व एकवेननामागंधर्व होताभयाहै ॥ सोवेननामागंधर्वपूर्वउक्तरीतिसैं तापरमात्मादेवकोस्तुतिकरिकै तथानमस्कारकरिकै अंतःकरणकी शुद्धिद्वारातानारायणकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरताभयाहै॥और ताआत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै सोवेननामागंधर्व वामदेवऋषिकी न्याईसर्वअधिकारीजनोंऊपरकृपाकरिकै याप्रकारकाआपणाअनुभवकथनकरताभयाहै॥अबतावेननामागंधर्वकेअनुभवकानिरूपणकरैहैं ॥ जिसएकपरमात्मादेवविषे यहनानाप्रकारकाजगत् स्थितहै ॥ तथा जिसपरमात्मादेवतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवे है ॥ तथा जिसपरमात्मादेवविषे यहसंपूर्णजगत् लयभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जैसे तंतुरूपसूत्र पटविषेसर्वओरतैंओतप्रोतहोवे है ॥ तैसे याजगत्रूपपटविषे जोपरमात्मादेवरूपसूत्र सर्वओरतैंओतप्रोतहै ॥ और जोपरमात्मादेव जीवरूपकरिकै यासर्वशरीरोंविषे प्रवेशकरे है ॥ और जोपरमात्मादेवजन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीयपरमात्मादेवकूं मैंवेननामागंधर्व आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कार करोंहूं ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ चारिपादोंकरिकैयुक्तहै ॥ तहां तापरमात्मादेवका एकपाद तो यहसंपूर्णभूतभौतिकजगत्है ॥ और दूसरेतीनपादतो आपणेस्वप्रकाशसाक्षीस्वरूपविषेस्थितहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसेचारिपादवालीगौ परिच्छिन्नपरिमाणवालीहोवे है ॥ तैसे चारिपादवालासोपरमात्मादेवभी परिच्छिन्नहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यहसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेवकाएकपादहै ॥ और तीनपाद आपणेस्वप्रकाशस्वरूपविषेस्थितहैं ॥ याप्रकार जोश्रुतिनैंकथनकऱ्याहै॥ सोताश्रुतिका परमात्माकेपरिच्छिन्नपणेविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु ताश्रुतिका परमात्माकेअनंतपणेविषेही तात्पर्य है ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेसूर्यमंडलविषेस्थित नारायणरूपपरमात्मादेवके जे स्वप्र

काशसाक्षीरूपतीनपादहैं ॥ तिनतीनपादोंकूं जोविद्वान्पुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतें आपणाआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरे है॥ सोविद्वान् पुरुषही हमअधिकारीजनोंकाबंधुहै ॥ तथा सोविद्वान्पुरुषही हमारा मातापिताहै ॥ तथा सोविद्वान्पुरुषही हमाराआत्माहै॥तथा सोविद्वा न्पुरुषही हमारा ब्रह्माहै ॥ तिसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषतैंभिन्न दूसरेकोईपुरुष हमारेबंधुआदिकनहींहैं ॥ इसप्रकार सोवेननामागंधर्व आपणा अनुभव कथनकरताभया ॥ हेशिष्य सूर्यचंद्रमादिकतेजोंके रहणेकेजेस्थानहैं ॥ तिनसंपूर्णस्थानोंकूं यहविद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपकरिकेजाणे हैं॥ और ताब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेजाणेहैं ॥ यातैं सर्वजगत्कूंआपणाआत्मारूपकरिकेदेखणेहारा सोविद्वान्पुरुषही हमारा बंधु मातापितादिरूपहै ॥ और हेशिष्य ॥ अज्ञानरूपअव्याकृतकाअधिपति जोशुद्धब्रह्महै॥ताशुद्धब्रह्मकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मा रूपजाणिकरिके जैसे यहविद्वान्पुरुष जन्ममरणतैंरहितमोक्षकूंप्राप्तहोवे हैं॥ तैसे पूर्व अग्निआदिकदेवताभी ताब्रह्मकूंआपणाआत्मारूपजा णिकरिके तामोक्षकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे सोपरमात्मादेव आपणेभक्तजनोंकेताई अनेकप्रकारकेवरदेवे हैं ॥ तैसे तापर मात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपजाणिके तेअग्निआदिकदेवताभी आपणेभक्तजनोंकेप्रति वरदानादिकोंकरिके दिव्यस्थानकीप्राप्तिकरे हैं ॥ और तिसीब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं तेअग्निआदिकदेवता स्वर्गादिकसर्वलोकोंविषे तथापूर्वादिकसर्वदिशावोंविषे आपणोइच्छापूर्वकविचरे हैं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे कार्पासकेवृक्षतैं कार्पासरूपफल उत्पन्नहोवेहै ॥ और ताकार्पासरूपफलतैं तंतुरूपसूत्र उत्पन्नहोवे है॥और तातंतुरूपसूत्रतैं पट उत्पन्नहोवेहै ॥ और तापटरूपकार्यविषे सोसूत्ररूपकारण सर्वओरतैंअनुगतहोवेहै॥तैसे यहयागादिककर्मतो कार्पास कावृक्षरूपहैं॥और ताकर्मरूपकार्पासकेवृक्षतैं धर्मअधर्मरूप कार्पासफल उत्पन्नहोवे हैं ॥और ताधर्मअधर्मरूपकार्पासफलतैं स्थूलसूक्ष्मभू तरूपसूत्र उत्पन्नहोवे है ॥ और जैसे तेस्थूलसूक्ष्मभूत सूत्ररूपहैं ॥ तैसे तेस्थूलसूक्ष्मभूतहैंशरीरजिसका ऐसाईश्वरभी सूत्ररूपहीहोवेहै ॥ ऐसेईश्वररूपसूत्रतैं यहजगत्रूपपट उत्पन्नहोवे है ॥ ऐसे जगत्रूपपटविषे ताईश्वररूपसूत्रकूं अनुगतजाणिकरिके हमअधिकारीजन आ पणेआत्माकूं तासूत्रआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरतेभयेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपरमात्मादेव उपाधिकेसंबंधतैं जगत्काकारणसूत्रआ

त्मारूपहोवे है ॥ सोईहीपरमात्मादेव विचारकियेतैंअनंतर उपाधिकृतसूत्रआत्मरूपताकापरित्यागकरिके निर्गुणब्रह्मरूपहोवैहे ॥ ऐसानि
र्गुणब्रह्महीं हमाराआत्मारूपहे ॥हेशिष्य॥याप्रकारकेविचारकरिकै केवलहमअधिकारीजनोंकूंही ताब्रह्मात्मभावकीप्राप्तिनहींभई ॥ किंतु
पूर्वेहिरण्यगर्भभगवान्कूंभी याप्रकारकेविचारकरिकेही ताब्रह्मात्मभावकीप्राप्तिभई है ॥ काहेतें पूर्व सोहिरण्यगर्भभगवान् उत्कृष्टकर्मउ
पासनाकेबलतें स्वर्गादिकलोकोंका तथाजरायुजादिकचारिप्रकारकेप्राणियोंका तथाआकाशादिकपंचभूतोंका तथापूर्वादिकदशदिशा
वोंका स्वामीहोताभया ॥ और तिनस्वर्गादिकलोकोंकेस्वामीभावकूंप्राप्तहोइकेभी संतोषकूंनहींप्राप्तहुआ सोहिरण्यगर्भभगवान् जभी
अंतर्यामीआत्मादेवकाविचारकरताभया ॥ तभीही सोहिरण्यगर्भ तास्वयंज्योतिआनंदस्वरूपब्रह्मभावकूं प्राप्तहोताभया ॥ यातें यह
जान्याजावैहे ॥ याअंतर्यामीआत्मादेवकाविचारही ताब्रह्मभावकेप्राप्तिकासाधनहे ॥ ताआत्मविचारतैंविना नानाप्रकारकेबाह्यऐश्वर्यकरि
के ताब्रह्मभावकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ और हेशिष्य ॥ सर्ववेदायत्पदमामनंति ॥ अर्थयह ॥ संपूर्णवेद साक्षात् अथवा परंपराकरिके अद्वि
तीयब्रह्मकूंहीकथनकरे हैं ॥ याश्रुतिनें ब्रह्मकूंही सर्ववेदोंकरिकेप्रतिपाद्यकह्याहे ॥ यातें सदसंपत्ति इत्यादिकजेनारायणउपनिषद्केमंत्रहें ॥
तेमंत्र जिसअंतर्यामीपरमात्मादेवकूं अग्निआदिकदेवतावोंका आत्मरूपकरिकैकथनकरे हैं ॥ सोपरमात्मादेवही याविद्वान्पुरुषका
आत्मारूपहे और ॥ हेशिष्य ॥ जिसस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपपरमात्मादेवतें ऋत सत्य यहदोनोंप्रकारका कर्मकाफल उत्पन्न
होवे है ॥ तिसपरमात्मादेवकूंही यहविद्वान्पुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेप्राप्तहोवे हे ॥ इहां मनकरिकेकरेहुएशुभकर्मोंकाजोफलहे
ताकानाम ऋतहे ॥ और शरीरकरिकैकरेहुएशुभकर्मोंकाजोफलहे ताकानाम सत्यहे ॥ और केईकशास्त्रवेत्तापुरुषतो ऋत सत्य या
दोनोंशब्दोंकाअर्थ चंद्रमा सूर्यमाने हैं ॥ सोतिनोंकाकहणा पुनरुक्तिदोषवालाहे॥काहे तें सूर्यचंद्रमाकीउत्पत्ति आगेकथनकरणीहे॥यातें
इहां ऋत सत्य शब्दकरिके तासूर्यचंद्रमाकाकथन संभवेनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सृष्टिकेआदिकालविषे जभी सोऋतसत्यरूपकर्म
काफल उत्पन्नहोणेकूंसन्मुखभया॥तभी ताफलकीसिद्धिकरणेवासते तापरमात्मादेवतें अंधकार उत्पन्नहोताभया॥तथा आकाशादिकपंच

सूक्ष्मभूतउत्पन्नहोतेभये ॥ तिसतैं अनंतर आपणेभ्रमणकरिके रात्रिदिनकूंसिद्धकरणेहाराजोसूर्य है ॥तासूर्यरूप संवत्सरनामाकाल उत्पन्नहोताभया ॥ इसप्रकार हिरण्यगर्भरूपकरिके यासर्वजगतकूंउत्पन्नकरताहुआ सोपरमात्मादेव पूर्वकल्पतैं याजगतकूं विलक्षणनहींकरताभया ॥ किंतु जैसे पूर्वकल्पविषे तापरमात्मादेवनैं यास्थावरजंगमरूपजगत्कूंउत्पन्नकर्‍याथा तिसीप्रकार सोपरमात्मादेव याकल्पविषेभी जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेशरीर उत्पन्नकरताभया॥तथा आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी यापंचमहाभूतोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तथा श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन याएकादशइंद्रियोंकूंउत्पन्नकरताभया॥तथाप्राण आपन समान व्यान उदान यापंचप्राणोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तथा सूर्य चंद्रमा यादोनोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तथा स्वर्गलोक भूमिलोक अंतरिक्षलोक यातीनलोकोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ और हेशिष्य॥जलमयहैशरीरजिसका तथापापरूपरजकूंनाशकरणेहाराजोवरुणदेव यापृथिवीविषेप्रसिद्धहै सोवरुणदेवभी हिरण्यगर्भकीन्याईं तापरमात्मादेवकेतादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकैही आपणेकार्यविषेसमर्थहोवैहै तापरमात्मादेवकेसंबंधतैंविना कोईभीदेवता आपणेकार्यकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य ॥ सोजगत्काकर्तापरमात्मादेवही याजगत्कोस्थितिकालविषे सर्वलोकोंकेअंतरस्थितहोइकैयासर्वजगत्कापालनकरैहै ॥ और यहस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपपरमात्मादेवही पुण्यवान्पुरुषोंकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ और पापवान्पुरुषोंकूं नरकादिकोंकी तथामृत्युकेभयकी प्राप्तिकरैहै ॥ और यासंपूर्णलोकोंकेनीचेस्थितजोपृथिवीहै ॥तथा ऊपरिस्थितजोस्वर्ग है तिनदोनोंकेअंतरस्थितजोभयहै ताभयकरिके यहपृथिवी तथास्वर्ग लोकोंकूंधारणकरैहै ॥ सोपृथिवीआदिकोंकूं भयकोप्राप्तिभी यहपरमात्मादेवहीकरैहै ॥ और हेशिष्य ॥ जोचेतनपरमात्मादेव अग्निविषे तथा जलविषे तथाअन्यपदार्थोंविषे तादात्म्यसंबंधकरिकेस्थितहोवैहै ॥ सोपरमात्मादेवही पुण्यवान्पुरुषोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिकरैहै और साधनसंपन्नअधिकारीजनोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसाअद्वितीयब्रह्म याअहंशब्दकेलक्ष्यअर्थरूपआत्मातैं भिन्ननहीं है ॥ किंतु सो ब्रह्म आत्मारूपहै ॥और यहआत्मा ब्रह्मरूपहै ॥ याप्रकार तिनदोनोंका परस्परअभेदही है॥जोकदाचित् तिनदोनोंका परस्परभेदहोवैगा॥

तौ तिनदोनोंके स्वरूपकीहीहानिहो वेगी॥ऐसे अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेज्ञानकरिकै यहअधिकारीपुरुष माया पंचक्लेश कर्म वासना इत्या दिकसर्वबंधतैंमुक्तहोवे है ॥ काहे तैं जिसचिदाभासकूं तावंधकीप्राप्तिहोवे है ॥ ताचिदाभासकूं यहविद्वान्पुरुष ब्रह्माकारवृत्तिविषेआरूढ ब्रह्मरूपअग्निविषे पावे हैं ॥ याकारणतैं तिनविद्वान्पुरुषोंकूं तावंधकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष वेदवचनों केअर्थकाविचारकरिकै तथावेदउक्तशुभकर्मोंके अनुष्ठानकरिकै तथावेदवचनोंके जपकरिकै जभी कीर्तिकेयोग्यहोवे हैं ॥ तभीही तेशुद्ध मनवालेअधिकारीपुरुष ब्रह्मात्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे सुगंधिवाले पुष्पोंकरिकैयुक्त जोचंपककावृक्षहै ॥ तावृ क्षकेसंबंधकरिकै सुगंधविशिष्टहुआवायु दशोदिशाविषेचाले है ॥ और सोसुगंधिवालावायु सर्वजीवोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरे है ॥ तैसे पुण्यवा न्पुरुषोंकीकीर्तिभी दशोदिशाविषे जावे है ॥ और सापुण्यवान्पुरुषोंकीकीर्ति शास्त्रवेत्तासज्जनपुरुषोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरे है ॥ हेशिष्य जोपुरुष आपणेमरणतैंभी भयकूंनहींप्राप्तहोवे है ॥ और जो पुरुष आपणेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेवियोगतैंभी भयकूंनहींप्राप्तहोवे है ॥ किंतु एकपापकर्म तैंहो जोपुरुष भयकूंप्राप्तहो वे है ॥ तापुरुषकानाम पुण्यात्माहै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे किसीगर्त्त के ऊपर अनेक तीक्ष्णखड्गकीधारा बिछाईहोवैं ॥ तिनखड्गधारावोंके उल्लंघनकरणे तैं अश्वादिकवाहनों तैंरहित कोमलपादवालेपुरुषकूं जैसामहान् भय प्राप्तहोवे है ॥ तैसाहीभय याविद्वान्पुरुषकूं परमेश्वरतैंहोवे है ॥ यातैं तापरमेश्वरकेभयकरिकै यहविद्वान्पुरुष पापकर्मोंकूंकरे नहीं ॥ हेशिष्य ॥ जिसपरमात्मादेवकेभयकरिकै यहविद्वान्पुरुष पापकर्मों तैंनिवृत्तहोवे है ॥ और जिसपरमात्मादेवकूं यहविद्वान्पु रुष आपणा आत्मारूपकरिकेजाने है ॥ सोपरमात्मादेव यानारायणदेवतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु सोपरमात्मादेवही नारायणस्वरूपहै ॥ और हेशिष्य ॥ जोपरमात्मादेव परमाणुआदिकसूक्ष्मपदार्थों तैंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥ और जोपरमात्मादेव आकाशादिकमहान्पदार्थों तैंभीअत्यंतमहान्है ॥ और जोपरमात्मादेव याजीवोंके हृदयरूपगृहविषे बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूपकरिकेस्थितहै ॥ ऐसेशुद्ध परमा त्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेप्रसादतैं आपणाआत्मारूपकरिकेसाक्षात्कारकरे हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष सर्वशोक तैंरहितहोवे हैं॥

अब तापरमात्मादेवके अद्वितीयरूपताकूंस्पष्टकरणेवासते प्रथम तापरमात्मादेवविषे सर्वजगत्कीकारणताका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य पुण्यपापकर्मों केअनुसार सर्वपदार्थोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोजगत्काईश्वरहे ॥ सोईश्वरही अद्वितीयब्रह्मरूपहे ॥ काहे तें सप्तलोकोंविषेच संमान जेसप्तप्रकारकेशरीरहें ॥ तिनशरीरोंविषेरहणेकरिके सप्तप्रकारताकूंप्राप्तभयेजेप्राणहैं ॥ तेसप्तप्रकारकेप्राणभी तापरमात्मादेवतेंही उत्पन्नहो वे हैं ॥ और तापरमात्मादेवतेंहो भौम जाठर सूर्य चंद्रमा विद्युत् वाडव चक्षु यह सप्तप्रकारकेअग्नि उत्पन्नहोवे हैं॥ इहां काष्ठोंविषेस्थितजोअग्निहे ताकानाम भौमहे और उदरविषेस्थितजोअग्निहे ताकानाम जाठरहे ॥ और समुद्रविषेस्थितजोअग्निहे ताकानाम वाडवहे ॥ और तिसीपरमात्मादेवतेंही सप्तप्रकारकेसमिध उत्पन्नहो वे हैं तेसप्तप्रकारकेसमिध यहहैं ॥ स्वर्ग मेघ भूमिलोक पुरुष योषित यापंचअग्नियों के क्रमतें आदित्य वायु संवत्सर वाक् उपस्थ यहपंचसमिधहैं ॥ यहवार्त्ता षष्ठअध्यायविषे विस्तारतेंकहिआये हैं ॥ और श्रुतिप्रसिद्ध आहवनीयगार्हपत्यादिकअग्नियोंका काष्ठादिरूपसमिधहे ॥ और स्मृतिप्रसिद्ध आवसथ्यनामाअग्निकाभी काष्ठादिरूपसमिधहे ॥ और तापरमात्मादेवतेंही भूर भुवः स्वर महर जनतप सत्य यहसप्तलोक उत्पन्नहो वे हैं॥ और तापरमात्मादेवतेंही कालीकराली मनोजवा सुलोहिता धूम्रवर्णा स्फुलिंगिनो विश्वरूपी यहअग्निकीसप्तजिह्वा उत्पन्नहोवे हैं ॥ और तिनभूरादिकसप्तलोकोंविषेविचरणेहारे तथासर्वजीवोंकेवाह्यप्राण ऐसेजेएकोनपंचाशत्॥४९॥मरुतगणहैंते मरुद्गणभी तापरमात्मादेवतेंहीउत्पन्नहोवेहैं ॥और तापरमात्मादेवतेंहीं सप्तसमुद्र उत्पन्नहोवेहैं ॥ और तापरमात्मादेवतेंहीं हिमालयादिकपर्वत उत्पन्नहोवेहैं ॥ और तापरमात्मादेवतेंहीं संपूर्णनदियां उत्पन्नहोवेहैं ॥ और तास्सरूप परमात्मादेवतेंहीं यहव्रीहियवादिकओषधियां उत्पन्नहोवेहैं ॥ और तास्सरूपपरमात्मादेवतेंहीं यहशरीर जीवनकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ और सोईहीपरमात्मादेव तिनजीवतशरीरोंविषेस्थितहोवेहै ॥ और अग्निआदिकसर्वदेवतावोंकेमध्यविषे जिसपरमात्मादेवके हिरण्यगर्भादिकदेवता मुख्यविभूतियां हैं ॥ और जिसपरमात्मादेवकूं बुद्धिमान्पुरुष वेदवचनोंकेविचारकरिके जानैहैं॥और जिसपरमात्मादेवकूं बुद्धिमान्पुरुष घृतादिकद्रव्यरूपकरिके तथायज्ञरूपकरिकेवर्णनकरैहैं॥औरजोपरमात्मादेव इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकरि

के पूज्यहै ॥ तथा सर्वदेवतावोंतैंपूर्ववर्त्तमानहै ॥ और जोपरमात्मादेव सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइके चित्तकोसर्ववृत्तियोंकूंदेखे
है ॥ और जोपरमात्मादेव हिरण्यगर्भकूंउत्पन्नकरिके ताहिरण्यगर्भकूं आपणीअनुग्रहदृष्टितैं सर्वज्ञताकीप्राप्तिकरै है ॥ ऐसानारायणरूप
परमात्मादेव हमअधिकारीजनोंकूं शुभबुद्धिकीप्राप्तिकरै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभीयहअधिकारीपुरुष तापरमात्मादेवकीस्तुतिकरै हैं ॥
तभी सोपरमात्मादेव प्रसन्नहोइके तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति आपणावास्तवस्वरूपदिखावै है ॥ कैसाहैसोपरमात्माकास्वरूप ॥ जिसतैं
परेकोईपदार्थ अधिकनहीं है तथा जिसतैंपरे कोईपदार्थ सूक्ष्मनहीं है ॥ तथा जोस्वरूप वृक्षकीन्याईनिश्चलहै ॥ तथा आपणेस्वप्रकाश
स्वरूपविषेस्थितहै ॥ तथा एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथा जिसस्वरूपकरिके यहसंपूर्णजगत् परिपूर्ण है ॥ ऐसेआपणेस्वरूपकूं सोपरमात्मा
देव तिनअधिकारीजनों केप्रति दिखावै है ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेनारायणरूप परमात्मादेवकीप्राप्तियाजीवोंकूं अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकेभीहोवै
नहीं ॥ तथा अनेकपुत्रपौत्रादिरूप प्रजाकरिकेभी तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहो वैनहीं ॥ तथा सुवर्णादिरूपधनकरिकेभी तापरमात्मादेवकी
प्राप्तिहो वैनहीं॥किंतु तिनसर्वपदार्थोंकेत्यागकरिकेही तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहोवै है ॥तहांश्रुति ॥नकर्मणानप्रजयानधनेन त्यागेनैके अमृ
तत्वमानशुः॥अर्थयह॥पूर्व अधिकारीजन अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिके तथापुत्रपौत्रादिरूपप्रजाकरिके तथासुवर्णादिरूपधनकरिके ब्रह्मभाव
कीप्राप्तिरूपमोक्षकूं नहींप्राप्तहोतेभयेहैं॥किंतु कर्म प्रजा धन यासंपूर्णोंकेपरित्यागकरिकेही तेअधिकारीजन तामोक्षकूंप्राप्तहोतेभयेहैं॥हेशि
ष्य॥इसप्रकार पूर्व अनेकसहस्रमनुष्योंविषे कोईभाग्यवान्पुरुषही सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिके तानारायणस्वरूपमोक्षकूं प्राप्तहोतेभयेहैं
यातैं तापरमात्मारूपमोक्षकीप्राप्तिविषे त्यागतैंविना दूसराकोईसाधननहीं है ॥किंतु एकत्यागही तामोक्षकीप्राप्तिविषे मुख्यसाधनहै॥हेशि
ष्य ॥ स्वर्गादिकसुखों तैंभीपरमउत्कृष्ट जोआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहै ॥तापरमात्मारूपमोक्षकूं जैसे पूर्वअधिकारीजन सर्वपदार्थोंकेत्या
गकरिके प्राप्तहुएहैं ॥तैसे इदानींकालविषेभी जेअधिकारीपुरुष पुत्रएषणा धनएषणा लोकएषणा यातीनएषणावोंकापरित्यागकरिके सं
न्यास आश्रमकूंग्रहणकरै हैं॥तेअधिकारीजनही गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं तामोक्षकूंप्राप्तहोवै हैं॥और जेपुरुष शरीरादिकोंविषेअहंअभिमानक

रिके तथाशरीरसंबंधिपुत्रधनादिकोंविषे ममअभिमानकरिके तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकात्याग नहींकरे हैं ॥ तेरागवान्पुरुष ताआनंद स्वरूपपरमात्मादेवकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यालोकविषे कितनेकसंन्यासियोंकूंभी आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति देखीती नहीं ॥ यातें त्यागविषे आत्मसाक्षात्कारकीकारणता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ संन्यासकरिके तथाचित्तकेनिरोधरूपयोगक रिके जिनसंन्यासियोंकाअंतःकरण शुद्धभयाहे ॥ तथा जेसंन्यासी शमदमादिकसाधनोंकरिकेयुक्तहैं ॥ तथा जिनसंन्यासियों नें वेदांतवच नों केविचारकरिके तत् त्वंपदार्थका शोधनकऱ्याहे ॥ ऐसेसाधनसंपन्नसंन्यासियोंकूं जोकदाचित् किसीप्रतिबंधकेवशतें इसजन्मविषेआत्म साक्षात्कार नहींहो वे हे॥तो तेसंन्यासी ताशरीरकापरित्यागकरिके अर्चिरादिकमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेजावे हैं॥ओर ताब्रह्मलोकविषे ब्रह्मा केसमानताकूंप्राप्तहोइके तेसंन्यासी आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहो वे हैं ॥ ओर ताब्रह्माकेदेहपातहुए तेसंन्यासीभी ताब्रह्माकेसाथही विदेहमु क्तिकूंप्राप्तहो वे हैं ॥ यातें सर्वपदार्थोंकापरित्यागही आत्मज्ञानद्वारा मोक्षकासाधनहे ॥ ओर हेशिष्य ॥ एकादशहैंद्वारजिसविषे ऐसाजोयहशरीररूपपुर परमात्मादेवनेंउत्पन्नकऱ्याहे ॥ ताशरीरविषेस्थित जोअंगुष्ठपरिमाणहृदयकमलहे ॥ ताहृदयकमलरूपगृहविषे जोआनंदस्वरूपपरमात्मादेव विराजमानहे ॥ तापरमात्मादेवकूंआपणाआत्मारूपजाणिकरिकेहीं तेसंन्यासी इसलोकविषे तथाब्रह्मलोक विषे मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताआत्मसाक्षात्कारतैंविनाकिसीभीलोकविषे मोक्षकीप्राप्तिहोवैनही ॥ यातें हेसंन्यासियो ॥ ब्रह्मलोकविषेभी संन्यासियोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहे याप्रकारकावचनश्रवणकरिके तुमोंनें इसजन्मविषे ताआत्मसाक्षात्कारकेयत्नतें रहितनहीं होणा ॥ किंतु जिसआत्मसाक्षात्कारकरिके इसलोकविषे तथाब्रह्मलोविषे मोक्षकीप्राप्तिहोवैहे ॥ तिसआत्मसाक्षात्कारकूं तुमोनें यामनु ष्यशरीरविषेही संपादनकरणा ॥ बहुतकालतैंअनंतरप्राप्तहोणेहारेब्रह्मलोककी आशाकरिके तुमों नें इसजन्मविषे प्रयत्नकीशिथिलता नहींकरणी॥ अब ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतें प्रणवकेध्यानका निरूपणकरेहैं॥ हेशिष्य ॥ जिनअधिकारीपुरुषोंकूं महावाक्यकेवि चारकरिके आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तनहींहोवे हे॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं ॐकाररूपप्रणवकेविचारकरिकेहीं सोआत्मसाक्षात्कार प्राप्त

होवेहै ॥ सोविचारयहहै ॥ मनकेजीतणेकीइच्छावाले जेमहात्मापुरुषहैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकूं आनंदस्वरूपआत्माविषे यह ॐकाररूप प्रणवही क्रीडाकरावैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताॐकाररूपप्रणवकूं स्वर यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ जोॐकाररूपस्वर वेदकेआदिविषेकथनकऱ्याहै ॥ और जोॐकाररूपस्वर वेदकेअंतविषेकथनकऱ्याहै ॥ सोॐकाररूपस्वर आपणेलयअवस्थाविषे जिसपरानामा कारणविषेलयहोवे है ॥ तापरातैंभी जोशुद्धचेतनपरहै ॥ सोशुद्धचेतनहीं हमारावास्तवस्वरूपहै ॥ याप्रकार जोअधिकारीपुरुष सर्वदा चिंतनकरे है ॥ ताअधिकारीपुरुषकूंभी अवश्यकरिके आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ हृदयदेशविषेस्थित जोपरमात्मादेव पूर्व अणुतैंभीअणुकह्याया ॥ तापरमात्मादेवकूं तुमनें महान्तैंभीमहान्जानणा ॥ काहेतें यालोकविषे याजीवोंके जितनेकोमस्तकहैं ॥ तथा शरीर इंद्रिय प्राणहैं ॥तेसंपूर्णमस्तकादिक तापरमात्मादेवकेहीहैं ॥ और सोपरमात्मादेवही यासर्वजीवोंकूं आपणेपुण्यपापकर्मकेअनुसार सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ ऐसेस्वयंज्योतिसर्वात्मादेवकूं श्रुतिभगवती नारायण यानामकरिके कथनकरे है ॥ अब तानारायणशब्दका एकादशप्रकारकाअर्थ निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥ आपणीसमीपतामात्रकरिके जोचेतन सर्वपदार्थोंकूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रवर्त्तकरे है ॥ ताचेतनदेवकानाम नरहै ॥ ऐसेचेतनआत्मारूपनरका यहमाया दृश्यरूपकरिकेसंबंधीहै ॥ याकारणतैं तामायाकूं नारा यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और यहसूक्ष्मप्रपंच तामायाकाकार्य है याकारणतैं तासूक्ष्मप्रपंचकूं नार यानामकरिकेकथन करे हैं ॥ ऐसेमायारूपनाराविषे तथा सूक्ष्मप्रपंचरूपनारविषे यहपरमात्मादेव प्रतिबिंबरूपकरिकेवर्तै है ॥ याकारणतैं तामायाविशिष्टपरमात्मादेवकूं तथासूक्ष्मप्रपंचविशिष्टहिरण्यगर्भदेवकूं श्रुतिभगवती नारायण यानामकरिकेकथनकरे है ॥ १ ॥ अथवा परमात्मारूपनरनें उत्पन्नकरेजेजलहैं ॥ तिनजलोंकानाम नाराहै ॥ तेनारारूपजल याविराट्रूपपरमात्मादेवकाआधारहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविराट्रूपपरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकेकथनकरे है ॥ २ ॥ अथवा ॥ जैसे प्रसिद्धनदियोंकेजल नौकाकाआधारहोवे हैं ॥ तैसे याभूमिरूपनौकाकाआधार जेजलहैं ॥ तेजल यापरमात्मादेवतैंही उत्पन्नहोवे हैं ॥ यातैं तिनजलोंकानाम नाराहै ॥ ऐसेनारारूप

जलोंकूं यहपरमात्मादेवही सूत्रात्मारूपप्राणरूपकरिकै धारणकरे है याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकै कथनकरे है ॥ ३ ॥ अथवा स्थूलप्रपंचहै शरीरजिसका ऐसाजोविराट्है ॥ तथासूक्ष्मप्रपंचहै शरीरजिसका ऐसाजोहिरण्यगर्भ है ॥ तिनदोनोंकानाम नरहै॥तिनदोनोंनरोंकीस्थिति यापरमात्मारूपकारणविषेहीहोवे है॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकै कथनकरे है ॥ ४ ॥ अथवा तापरमात्मादेवकेप्रतिबिंबरूपजेयहजीवहैं तिनजीवोंकानाम नरहै ॥ तिनप्रतिबिंबभूतनरोंका निरूपण ताबिंबरूपपरमात्मादेवतैंहीहोवे है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरै है ॥ ५ ॥ अथवा ॥ याजीवोंविषेस्वभावतैंसिद्ध जेकामक्रोधादिकदोषहैं तिनदोषोंका नाम अरहै ॥ और तिनकामक्रोधादिरूपअरोंतैं उत्पन्नभये जेदुःखहैं तिनदुःखोंकानाम आरहै ॥ और तिनदुःखरूपआरोंका आश्रयरूप जो यहअज्ञानादिकजडप्रपंचहै ताजड प्रपंचकानाम आरायणहै॥सोजडप्रपंचरूपआरायण यास्वयंज्योति आनंदस्वरूपपरमात्मादेवविषे तीनकालमैंनहीं है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकै कथनकरे है ॥ ६ ॥ अथवा अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यहपंचक्लेश तथापुण्यपापरूपकर्म तथासुखदुःखरूपफल तथातिनोंकीवासना यहसंपूर्णअविद्यादिक यासंसाररूपचक्रकेअराहैं ॥ और तिनक्लेशादिरूपअरोंका यहमाया परिनामीउपादानकारणरूपकरिकै आश्रयहै॥यातैं तामायाकानाम आरायणहै ॥ यह और ताआरायणरूपमायातैं कूटस्थपरमात्मादेव भिन्नहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरे है ॥७॥ अथवाकल्पिततादात्म्यअध्यासरूपसंबंधकरिकै तामायारूपनारीकीस्थिति यापरमात्मादेवविषेहीहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायन यानामकरिकैकथनकरे है ॥ ८ ॥ अथवा ॥ परमेश्वररूपनरकीसंबंधी जायहलक्ष्मीहै ॥ तालक्ष्मीकानाम नारीहै ॥ कैसीहैसालक्ष्मी ॥ सर्वदेहधारीजीवोंकूंप्रियहै ॥ तथा अनेककलावोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा अनेकरूपोंवालीहै ॥ तथा अत्यंतमनोरमहै ॥ तथा पुण्यवानपुरुषोंकूं सर्वदा सुखदेणेहारीहै ॥ तथा पापीजीवोंकूं आपणीनप्राप्तिकरिकै तथानाशकरिकै सर्वदा दुःखकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥

ऐसोलक्ष्मीरूपनारी यापरमात्मापुरुषविषेही निश्चलस्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ ९ ॥ अथवा ॥ याआनंदस्वरूपद्रष्टाआत्माकेप्रति नानाप्रकारकेपदार्थोंकूंदिखावनेहारी जायहसर्वजीवोंकीबुद्धिहै ॥ ताबु द्धिकानाम नारीहै ॥ तानारीरूपजडबुद्धिका यहस्वयंज्योतिआत्मादेवही प्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तास्वयंज्योतिद्रष्टाआ त्माकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ १० ॥ अथवा ॥ यापरमात्मादेवतैंभिन्न किंचितमात्रभीवस्तुनहीं है ॥ याकारणतैं श्रुतिभ गवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ ११ ॥ इसप्रकार नारायणशब्दके एकादशप्रकारकेअर्थ शास्त्रवेत्तापुरुष कथनकरैहैं ॥ और यहनारायणदेवही स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा अक्षररूपहै ॥ तथा परमपदरूपहै ॥ तथा सर्वविश्वतैंपरहै ॥ तथा सर्व विश्वरूपहै ॥ तथा सनातनहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेनारायणरूपपरमात्मादेवका जेअधिकारीजन श्रद्धाभक्तिपूर्वकस्मरणकरैहैं तथाकीर्तन करैहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंके अविद्यादिकपंचक्लेशोंकूं तथासर्वपापकर्मोंकूं यहपरमात्मादेवही नाशकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं हरि यानामकरिकैकथनकरैहै॥ और यहपरमात्मादेवही यासंपूर्णजगतकूंउत्पन्नकरिकै ताजगतकापालनकरैहै ॥ याका रणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं पति यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेव आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै यासं पूर्णविश्वकूं व्याप्तकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं आत्मा यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेव सर्वमं गलोंकाभीमंगलरूपहै ॥ तथा परमकल्याणरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शिव यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यापरमात्मादेवरूपआनंदसमुद्रके एकबिंदुमात्रआनंदकूंग्रहणकरिकै यहहिरण्यगर्भदेवभी आनंदकूंप्राप्तहोइरह्याहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभ गवती तापरमात्मादेवकूं आनंद यानामकरिकैकथनकरैहै॥ और कालकरिकै जोघटादिकपदार्थोंकानाशहोवैहै तानाशकानाम च्युतिहै॥ साच्युति यापरमात्मादेवविषेहैनहीं ॥ काहेतैं यहपरमात्मादेव कालरूपमृत्युकूंभी भयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा कालकाभीकालहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अच्युत यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेव सूर्यअग्निआदिकसर्वजगतका

नियंताहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं ईश्वर यानामकरिकैकथनकरैहै॥और यहपरमात्मादेव किसीकालविषे तथाकिसी देशविषे अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं॥किंतु सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे एकरसरहैहै॥याकारणतैंश्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शाश्वत यानामकरिकैकथनकरैहै ॥और यहपरमात्मादेव ब्रह्मादिकमहान्पुरुषोंकरिकै जानणेयोग्यहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं महाज्ञेय यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेवही सर्वभूतोंकापरागतिहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं परायण यानामकरिकैकथनकरैहै॥और अग्निकीज्वालातैंआदिलेकेजेजडज्योतिहैं ॥ तथा बुद्धिआदिकोंविषेस्थित जेचिदाभासरूपचेतनज्योतिहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेज्योतियोंकीअपेक्षाकरिकै यहपरमात्मादेव अत्यंतउत्कृष्टहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं परमज्योति यानामकरिकैकथनकरैहै॥तथा ब्रह्म परंतत्व यानामकरिकैकथनकरैहै॥हेशिष्य॥ध्याता ध्यान ध्येय इसतैंआदिलेकेयहसंपूर्णजगत् तानारायणरूपही है॥और जितनाकीजगत् देखणेविषेआवैहै ॥ तथा जितनाकीजगत् श्रवणकरणेविषेआवैहै ॥ तासंपूर्णजगत्केअंतरबाहरव्याप्यकरिकै यहनारायणदेवही स्थितहै॥पुनःकैसाहैसोनारायणदेव॥आनंदस्वरूपहै॥तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै॥तथा स्वप्रकाशरूपहै ॥ तथा सर्व जगत्कूंप्रकाशकरणेहाराहै ॥ और यासंसाररूपसमुद्रकाकारण जामायाहै ॥ तामायाविषे नियंतारूपकरिकैस्थितहुआभी सोपरमात्मादेव वास्तवतैं तिनमायादिकविकारोंतैंरहितहै॥और हेशिष्य॥यद्यपि यहपरमात्मादेव सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि हृदयकमलकेअंतरस्थित सूक्ष्म बुद्धिकरिकैही जान्याजावैहै ॥ याकारणतैंही याआत्मादेवकूं पूर्व अणुकह्याथा ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम हृदयकमलका स्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे अष्टदलोंवाला तथारक्तवर्णवाला तथाकिंचित्मात्रविकासकूंप्राप्तहुआ कोई कमल होवैहै ॥ तैसे हृदयदेशकेशिरविषे लंबायमान एकअंतरकमलरहैहै॥कैसाहैसोअंतरकमल अत्यंतरमणीकहै॥तथा पंचछिद्रोंकरिकैयुक्तहै॥ तथा नीचेजाकामुखहै॥तथा नाभितैंद्वादशअंगुलऊपरलेदेशविषेस्थितहै॥तहां ताहृदयकमलका पूर्वछिद्रतोचक्षुरूपहै ॥ और दक्षिणछिद्र श्रोत्ररूपहै ॥और पश्चिमछिद्र वाकरूपहै ॥ और उत्तरछिद्र मनरूपहै ॥ और मध्यकाछिद्र प्राणरूपहै ॥और जिह्वा ताकमलकामूलस्था

नहे ॥ और वक्षस्थलतैं आदिलैके गलपर्यंत जोअंतरदेशहे ॥सोदेश ताकमलकाभूमिहे ॥ और यहहृदयकमल मनकेरहणेकास्थानहे ॥
याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताहृदयकमलकूं मानस यानामकरिकेकथनकरेंहे ॥ और सोहृदयकमल गलतैंद्वादशअंगुलनीचेदेशविषे
स्थितहे ॥ और सूर्य चंद्रमा अग्नि नक्षत्र विद्युत यापांचोंकेसमान याहृदयकमलकातेजहे ॥ तथासंपूर्णविश्वकाआधारहे ॥और यहहृदय
कमल अल्पपरिमाणवालाहुआभी यासर्वविश्वकाआधारहे ॥याकारणतैं विद्वान्योगीपुरुष ताहृदयकमलकूं महान्कहेहैं पुनःकैसाहैसोहृद
यकमल ॥ रजतादिकधातुवोंकरिकेरचितजेशिलाहैं तिनशिलावोंकेसमान उज्वलवर्णवालियां तथारुधिरमांसादिक धातुवोंकरिकेलिप्तहुई
ऐसीजेयाशरीरविषेस्थित नानाप्रकारकीअस्थियांहैं तिनअस्थियोंकरिके सोहृदयकमल चारोओरतैंवेष्टितहे और जैसे यालोकविषे किसी
महाराजाकेगृहकेभीतर तामहाराजाकेक्रीडाकरणेवासते जलकासरोवरहोवैहे तैसेहृदयकेमध्यविषेजोछिद्रहे सोछिद्र ताहृदयकमलकासरो
वरहे ऐसेहृदयकमलविषे सोपरमात्मादेव निवासकरेंहे कैसाहैसोपरमात्मादेव अद्वितीयआनंदस्वरूपहे ॥ तथा अग्निकेसमानप्रकाशमा
नहे॥तथा स्वयंज्योतिरूपहे तथा जिसपरमात्मादेवको चिदाभासरूपज्वालाबुद्धिआदिकसर्वजगत्विषेस्थितहैं॥तथा बुद्धिआदिकसर्वसंघा
ततैं अत्यंतसमीपहे॥और सोपरमात्मादेवही बुद्धिरूपउपाधिकूंअंगीकारकरिके सर्वविषयजन्यसुखोंकूंभोगेहे और सोपरमात्मादेवहीप्राण
जठराग्निरूपकरिके भोजनकरेहुएअन्नके स्थूल मध्यम सूक्ष्म यहतीनप्रकारकेविभागोंकूंकरताहुआ सर्वजीवोंकेउदरविषेस्थितहोवैहे और
ताजठराग्निरूपपरमात्मादेवकी क्षुधा तृषा क्रोधादिरूपकिरण नीचेऊपरमध्यविषे तेजकरिकेव्याप्तहैं ऐसेक्षुधातृषादिकरूपकिरणोंकरिके
सोजठराग्निरूपपरमात्मादेवपादतैंलैकेमस्तकपर्यंत यासंपूर्णशरीरोंकूं तपायमानकरेंहे हेशिष्य ऐसेपरमात्मादेवका यहअधिकारीपुरुष
ताहृदयकमलविषे ध्यानकरे ताध्यानकरिके याअधिकारीपुरुषकूं तापरमात्मादेवकासाक्षात्कार प्राप्तहोवैहे हेशिष्य ॥ याप्रकार ताहृदय
कमलविषे परमात्माकेध्यानकियेहुएभीजभी याअधिकारीपुरुषकूं सोपरमात्मादेव सत्चित्आनंदरूपकरिकेप्रतीतनहींहोवे तभीसोअधि
कारीपुरुषदूसरेप्रकारसैं तापरमात्मादेवकाध्यानकरे ताहृदयकमलकेमध्यविषे एकदीपककीशिखास्थितहे ॥ कैसीहैसादीपशिखा ॥ अत्यं

तसूक्ष्मदे ॥ तथा ऊर्द्ध्वदेशविषेप्रज्वलितहे ॥ तथा निश्चलहे ॥ तथा नीलमेघविषेस्थितविद्युत्‌रेखाकेसमान प्रकाशमानहे ॥ तथा श्यामककेशूककोन्याई अत्यंतसूक्ष्महे ॥ तथा सुवर्णकेसमान पीतवर्णवालीहे ॥ तथासूक्ष्महुईभी प्रकाशवालीहे ॥ ऐसेदीपशिखाकेमध्याविषे सोपरमात्मादेवस्थितहे ॥ केसाहेसोपरमात्मादेव ॥ ब्रह्मरूपहे तथाशिवरूपहे तथाहरिरूपहे ॥ तथा सर्वतेंसनातनहे तथा इंद्ररूपहे तथा अक्षररूपहे तथा सर्वजगत्‌काप्रभुहे॥तथा आपणेस्वप्रकाशरूपकरिके विराजमानहे॥हेशिष्य॥ऐसेपरमात्मादेवका यहअधिकारी पुरुष तादीपशिखाविषेध्यानकरे ॥ ताध्यानकरिके याअधिकारीपुरुषकूं तापरमात्मादेवकासाक्षात्कार प्राप्तहोवेहे ॥ हेशिष्य ॥ यहपरमात्मादेवही उपाधिकेसंबंधतें हिरण्यगर्भभावकूं तथाविराट्‌भावकूं प्राप्तहोवेहे ॥ याकारणतेंश्रुतिभगवती ताहिरण्यगर्भविराट्‌रूपपरमात्मादेवकूं आदित्यादिकअनेकरूपकरिके वर्णनकरे है ॥ ऐसेपरमात्मादेवकेसाक्षात्कारकरिकेही याअधिकारीजीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवेहे॥हेशिष्य॥ ऐसाआत्माकासाक्षात्कारविक्षेपवालेपुरुषोंकूंहोवेनहीं ॥ किंतु सर्वविक्षेपतेंरहित अंतर्मुखपुरुषोंकूंहीहोवे हे॥ याकारणतें श्रुतिभगवती धर्म १ सत्य २ तप ३ दम ४ शम ५दान ६ प्रजनन७ आहिताग्नि ८ अग्निहोत्र ९ यज्ञ १० मानस ११ याएकादशसाधनोंकीस्तुति करिकेतिनधर्मादिकसर्वसाधनोंतेंसंन्यासआश्रमविषे उत्कृष्टताबोधनकरेहे यातैंयहजान्याजावेहे ताश्रुतिभगवतीका तासंन्यासकेप्रधानताविषेही तात्पर्य है ॥ अब तासंन्यासकीउत्कृष्टताबोधनकरणेवासते प्रथम धर्मादिकएकादशसाधनोंकेस्वरूपका तथा तिनोंकेफलका निरूपणकरे हैं ॥ तहां प्रथम धर्मकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहचारवर्णजे हैं ॥ तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास यहचारआश्रमजेहैं ॥ तिनसंपूर्णवर्णआश्रमवालेपुरुषोंकूं यहधर्मही धर्म अर्थ काम मोक्ष याचारिप्रकारकेपुरुषार्थकीप्राप्ति करेहे ॥ तथा तिनपुरुषार्थोंकेसाधनोंकीप्राप्तिकरेहे॥काहेतें यालोकविषे जोकार्य अत्यंतकठिनहोवेहे ॥ तिसकार्यकूंभी यहधर्म सिद्धकरिदेवेहे॥और यहधर्मही सर्वजगत्‌केपालनकरणेहारी परमेश्वरकीसात्विकीमूर्तिहे॥याकारणतैंही जैसे मार्गविषेस्थित फलपत्रपुष्पादिकोंकरिके पूर्णवृक्षकूंमार्गकेचलणेहारेपुरुष सेवनकरेहैं॥तैसे ताधर्मात्मापुरुषकूं संपूर्णजन आश्रयणकरेहैं ॥ और यहजीव जाणिकरिके तथानजाणिक

रिकै जेजेपापकर्मकरे हैं ॥ तिनसंपूर्णपापकर्मोंकूं यहधर्मही नाशकरे है ॥ यातैं यहधर्मही जीवोंकेश्रेयकासाधनहै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे गौकेचा
रपादहोवै हैं ॥ तैसे याधर्मकेभी सत्य तप दया दान यहचारपादहोवै हैं ॥ ऐसेचारपादयुक्तधर्मकूं याअधिकारोजनोंनैं जन्मतैंलेकेमरण
पर्यंत अवश्यकरिकेसेवनकरणा ॥ अब ताधर्मके सत्यरूपप्रथमपादका फलसहित निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसावृत्तांत आपणेनेत्रों
करिकेदेख्याहोवै अथवा किसीधर्मात्मापुरुषकेमुखतैंश्रवणकर्‍याहोवै ॥ तैसाहीवृत्तांत आपणेमुखतैंकथनकरणा याकानाम सत्यहै ॥ अथ
वा आपणेमुखतैं जिसकार्यकरणेकोप्रतिज्ञाकरीहोवै तिसप्रतिज्ञातैं चलायमाननहींहोणा याकानामसत्यहै ॥ सोसत्य वाकइंद्रियकरिकेसि
द्धहोवै है ॥ यातैं तासत्यकूं वाचनिकधर्मकहे हैं ॥ हेशिष्य ॥कालांतरविषेहैफलजिनोंका ऐसेजेयज्ञादिक वैदिककर्म हैं तथावाणिज्यादिक
लौकिककर्महैं ॥ तिनदोनोंप्रकारके कर्मोंविषे जोजीवोंकोप्रवृत्तिहोवैहै ॥ सोसत्यवचनतैंहीहोवै है ॥ सत्यवचनतैंविना किसोभीकर्मविषे प्रवृ
त्तिसंभवैनहीं ॥ और युधिष्ठिरादिकराजा जोयास्थूलशरीरसहित स्वर्गविषेगयेहैं॥ तथा अबपर्यंत तास्वर्ग तैं नीचे पतननहींहोते॥सोभी या
सत्यवचनकेप्रभावतैंहीगयेहैं ॥और यासत्यधर्मकरिकेही यहवायु आपणेमर्यादाविषेचलैहै॥और यासत्यधर्मकरिकेही यहसूर्यभगवान् सर्व
लोकोंकूंप्रकाशकरे है ॥ और यासत्यधर्मकरिकेही यहपृथिवी जलऊपरस्थितहै॥इसतैंआदिलेकेसंपूर्णदेवता तासत्यधर्मकेबलतैंही आपणे
आपणेअधिकारकानिर्वाहकरे हैं॥ ऐसेसत्यकूं याअधिकारोपुरुषनैं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा॥अब ताधर्मके तपरूपद्वितीयपादका फल
सहित निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ आपणेमनविषेदृढसंकल्पधारणकरिकै जोशीतउष्णकासहारणाहै तथाक्षुधातृषाकासहारणाहै तथाअ
न्नादिकपदार्थों तैंरहितहोणाहै याकानाम तपहै ॥ हेशिष्य ॥ यातपकेप्रभावतैंही मुनिलोक तथाइंद्रादिकदेवता मनवांछितस्वर्गादिकसुख
कूंप्राप्तहोवैंहैं॥औरयातपकेप्रभावतैंही यालोकविषेयहमनुष्यशत्रुओं तैं जयकूंप्राप्तहोवै हैं॥और जैसेयहपटरूपकार्य तंतुरूपकारणविषेस्थि
तहोवैहै ॥ तैसे यहकार्यरूपजगत् ताकारणरूपतपविषेही स्थितहोवैहै॥और यातपकेप्रभावतैंही दुर्वासादिकमुनि वरशापदेणेविषेसमर्थहो
वैहैं ॥ और यहतपहीसर्वकार्योंकीसिद्धिविषे अत्यंततेजस्वीसाधनहै ॥ याकारणतैंही पूर्व विश्वामित्रादिकऋषि यातपकेप्रभावतैं नवीनही

सृष्टिकूं रचतेभयेहैं ॥ ऐसे तपकूं याअधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यकरिके संपादनकरणा ॥अब ताधर्मके दयारूपतीसरेपादका फलसहित नि
रूपणकरे हैं ॥हेशिष्य ॥दम शम यहदोनों तादयाकेकारणहैं॥तादमशमरूपकारणतैंविना सादया उत्पन्नहोवैनहीं॥याकारणतैं शास्त्रवेत्ता
पुरुष तादमशमकूं याजीवोंकेश्रेयकासाधनकहेहैं॥अब फलसहित तादमकेस्वरूपकानिरूपणकरेहैं ॥हेशिष्य॥जैसे यालोकविषे किसीप्रम
त्तवृषभका रज्जुआदिकबंधनोंकरिकेही भयहोवै है ॥ तैसे बाह्यशब्दादिकविषयोंविषे दोषदृष्टिकरिके जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंकानिरोधकरणाहै
याकानाम दमहै॥तादमकरिकेयुक्त यहब्रह्मचारीपुरुष फलसहितसर्वपापकर्मोंकापरित्यागकरिके मरणतैंअनंतर स्वर्गलोककूंअथवाब्रह्मलो
ककूंप्राप्तहोवै हैं॥यातैं ऐसेदमरूपसाधनकूं याअधिकारीपुरुषनैंअवश्यकरिकेसंपादनकरणा॥अबफलसहित शमकेस्वरूपका निरूपणकरेहैं
हेशिष्य ॥ जैसे स्त्रीआदिकविषयोंकेसमीपविद्यमानहुएभी ज्वरादिकरोगकेवशतैं यापुरुषोंकी तिनस्त्रीआदिकविषयोंविषेइच्छाहोतीनहीं ॥
तैसे अनेकप्रकारके दोषदर्शनकरिके तिनस्त्रीआदिकविषयोंकीइच्छाकापरित्यागकरिके केवलआनंदस्वरूपआत्माकीइच्छाकरणी याका
नाम शमहै॥ हेशिष्य॥ताशमकाफल यालोकविषे तथावेदविषे प्रसिद्धहीहै ॥ काहेतैं यालोकविषे शमकरिकेयुक्तमुनिलोक महान्‌वनविषे
स्थितहुएभी सिंहसर्पादिकोंतैंभयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तेमुनिलोक ताशमकेप्रभावतैं तिनसिंहसर्पादिकतामसीजीवोंकूंभी हिंसादिकपाप
कर्मोंतैं रहितकरेहैं॥और ताशमकेप्रभावतैं तेमुनिलोक कामक्रोधादिकविकारोंकूंजयकरिके स्वर्गादिकउत्तमलोकोंकूंप्राप्तहोवेहैं॥ऐसेशमकूं
याअधिकारीपुरुषों नैं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ तादमशमकरिकेही याजीवोंकूं सर्वभूतोंविषेदयाहोवै है ॥ इतनेंकरिके तादमशमके
प्राप्तहुए दयाकीप्राप्ति याप्रकारकेअन्वयकरिके तादमशमविषे दयाकीकारणता निरूपणकरी ॥ अब तादमशमकेअप्राप्तहुए तादयाकीअ
प्राप्ति याप्रकारकेव्यतिरेककरिकेभीतादमशमविषे दयाकीकारणता निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जोपुरुष ताशमतैंरहितहो
वै है ॥ सोपुरुष कामक्रोधादिकविकारवालाहीहोवै है ॥ और जोपुरुष तादमतैंरहितहोवै है ॥ सोपुरुष सर्वदा इंद्रियोंकेअधीनहीहोवै है॥
और जोपुरुष कामक्रोधादिकविकारोंवाला तथाइंद्रियों केअधीनहोवै है॥सोप्रमादीपुरुष शरीरमनवाणीकरिके अवश्य भूतप्राणियोंकीहिंसा

करे है ॥ और जोपुरुष शरीरमनवाणीकरिकै सर्वभूतोंकीहिंसाकरे है ॥ सोपुरुष दयातैंरहितहीहोवे है॥ऐसेनिर्दयपुरुषविषे कदाचित्‌भी दयाकोसंभावनाहोवैनहीं ॥ यातैं दयाकीउत्पत्तिद्वारा यहशमदमही जीवों केश्रेयकासाधनहै ॥अब ताधर्म के दानरूपचतुर्थपादकों फलसहित निरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥वाणीकादान तथाबुद्धिकादान तथाधनकादान तथाशरीरकादान इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकादानहोवे है॥ तहां अधिकारीपुरुषकेप्रति विद्यादेणी यहवाणीकादानहोवै है॥और किसीपुरुषकेप्रति श्रेष्ठबुद्धिदेणी यहबुद्धिका दानहोवैहै ॥और सुपात्र ब्राह्मणकेप्रति सुवर्णगौअन्नादिकपदार्थदेणे यहधनकादानहोवे है॥और शरणागतजीवोंको शत्रुआदिकों तैं रक्षाकरणी यहशरीरकादानहोवे है॥हेशिष्य॥यालोकविषे जेउदारपुरुष सुवर्णादिकपदार्थोंकादानकरे हैं॥तिनदानकर्त्तापुरुषोंको सर्व प्राणी स्तुतिकरे हैं ॥जैसे कर्णराजानें इंद्रकेप्रति आपणेत्वचाकादानकऱ्याहै ॥ और बलिराजानें वामनभगवान्‌केप्रति तीनलोकोंकादानकऱ्याहै ॥ और शिबिनामाकिसीधर्मात्मापुरुषनें शरणागतकपोतकोरक्षाकरणेवासते आपणामांस दानकऱ्याहै ॥ इसतैंआदिलैके दूसरेभीअनेकधर्मात्मापुरुषों नें नानाप्रकारके दानकरेहैं॥याकारणतैं तिनकर्णराजादिकधर्मात्मापुरुषोंको अबपर्यंत लोक स्तुतिकरे हैं ॥और तेदानकरणेहारेपुरुष याशरीरकेपरित्याग तैंअनंतर स्वर्गादिकउत्तमलोकोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातैं दानकर्त्ता पुरुषकूं दोनोंलोकविषेसुखकीप्राप्तिहोवैहै॥किंवा॥यालोकविषे दक्षिणारूप दानकरिकेही अश्वमेधादिकयज्ञ संपूर्णताकूंप्राप्तहोवे हैं॥और जैसे पुत्र पिताकूंआश्रयणकरे है॥तैसेदानकर्त्तापुरुषकूं सर्वप्राणी आश्रयणकरे हैं ॥ और यादानकरिकै शत्रुभी मित्रभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ याकारणतैंही साम दाम भेद दंड याचारप्रकारकेउपायोंकूंजानणेहारे राजादिकपुरुष यादानरूपउपायकरिकैहीशत्रुओंकूं आपणेवशकरे हैं ॥ और यादानविषेही यहसंपूर्णजगत्‌ स्थितहोवे है ॥ ऐसेदानकूं याअधिकारीपुरुषनें अवश्यकरिकैसंपादनकरणा॥ हेशिष्य ॥ सत्य तप दया दान याचारपादोंकरिकैयुक्त जोयहधर्म है ॥ सोधर्म यासर्वदेहधारीजीवोंका साधारणधर्म है ॥ ताधर्मविषे ब्राह्मणादिकचारवर्णोंकी तथाब्रह्मचर्यादिकचारआश्रमोंको तथाबाल्यादिकतीनअवस्थाओंकी अपेक्षानहीं है ॥ काहे तैं पंचवर्षकीअवस्थावाला ध्रुव तपरूपधर्मकरिकै परमपदकूंप्राप्तभयाहै ॥ यातैं याधर्मविषे किसीअवस्थाकीभी अपेक्षा

नहीं है ॥ और कपोतपक्षी अतिथिकेप्रति आपणेशरीरकादानकरिके उत्तमगतिकूंप्राप्तभयाहै ॥ यातें याधर्मविषे किसीवर्णआश्रमकोभी अपेक्षानहीं है ॥ किंतु सर्व देहधारीजीवोंकूं याधर्मकरणेविषेअधिकारहै ॥ इतनैंकरिके धर्म सत्य तप दम शम दान याषट्साधनोंकानिरूपणकर्या ॥ अब प्रजननरूपसप्तमसाधनका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे सोचारपादोंवालाधर्म वर्ण आश्रम अवस्था यातीनोंकीअपेक्षातैंविनाही सिद्धहोवे है ॥ तैसे यहपुत्रादिकप्रजाकोउत्पत्तिरूप प्रजनन साधन वर्ण आश्रम अवस्था यातीनोंकी अपेक्षातैंविना सिद्धहोवे नहीं ॥ किंतु यामनुष्यादिकसर्वजीवोंकूं गृहस्थआश्रमकी तथायौवनअवस्थाकी अपेक्षाकरिकेही पुत्रादिकप्रजाकीप्राप्तिहोवेहै॥स्त्रीतैंविना तथायौवनअवस्थातैंविना कोईभीपुरुष पुत्रकीउत्पत्ति करिसकेनहीं ॥ हेशिष्य ॥ दूसरे मनुष्यादिकोंकी क्यावार्त्ता है ॥ परंतु साक्षात्प्रजापतिभी यौवनअवस्थातैंविना तथास्त्रीतैंविना पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्तिकरणेविषे समर्थहोइसकेनहीं ॥ हेशिष्य॥ पुत्रपौत्रादिरूपप्रजावालापुरुष इसलोकविषे कीर्तिकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तथा सुखकूंप्राप्तहोवे है ॥ तथा शत्रुओं तैं जयकूंप्राप्तहो वे है ॥ और सोपुत्रवान्पुरुष पितरोंके ऋणतैंमुक्तहोइके मरणतैंअनंतर स्वर्गकूंप्राप्तहो वे है॥ हेशिष्य ॥यहपुत्रपौत्रादिरूपप्रजा याजीवों के संसारसंबंधीसुखकाही कारणहोवे है॥ मोक्षरूपसुखका कारण होवेनहीं॥ उलटा रागकीउत्पत्तिद्वारा सापुत्रादिरूपप्रजा याजीवों के मोक्षविषे प्रतिबंधकहीहोवे है॥अब जे विषयासक्तरागीपुरुष पुत्रादिकप्रजाकूंहीमोक्षका कारणमानेहैं ॥ तिनरागीपुरुषों के मतकेखंडनकरणेवासते प्रथम तिनरागीपुरुषोंकेमतका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ कामरूपज्वरकरिकेआतुरहुए केईकअविवेकीपुरुष पुत्रादिकप्रजाकूंही मोक्षकाकारणमानेहैं ॥ और तेविषयासक्तबहिर्मुखपुरुष ताअर्थकीसिद्धिकरणेविषे याप्रकारकीयुक्तिकूं कथनकरे हैं ॥ जैसे यालोकविषे सप्त महलवाला जोकोईऊँचागृहहै ॥ तागृहकेशिखरऊपर आरूढहोणेकी जोपुरुष इच्छाकरेहै ॥ सोपुरुष सोपानकूंग्रहणकरिकेही तागृहकेशिखरऊपरजावेहै ॥ तासोपानविषेभी सोपुरुष प्रथम प्रथमपोडीऊपर पादराखेहै ॥ तिसतैंअनंतर दूसरीपोडीऊपर पादराखेहै ॥ तिसतैंअनंतर तीसरीपोडीऊपर पादराखेहै ॥ याप्रकार शनैःशनैः तासोपानकीपोडियोंऊपर पादराखताराखता तागृहकेशिखरऊपर जावे है ॥ तासोपान

तैंविना सोपुरुष तागृहकेशिखरऊपर जाइसकेनहीं ॥ तैसे इहां धर्म अर्थ काम मोक्ष याचारिप्रकारकेपुरुषार्थकी जोजीवोंकूं प्राप्तिहोवे है ॥ सोभी पूर्वपूर्वकेप्राप्तितैंअनंतर उत्तरउत्तरकीप्राप्तिरूपक्रमतैंहीहोवे है ॥ ताक्रमतैंविना तिनपुरुषार्थोंकोप्राप्तिहोवे नहीं ॥ तहां यह जीव प्रथम धर्मकूंप्राप्तहोवे है॥और ताधर्मतैंअनंतर यहजीव अर्थकूंप्राप्तहोवे है ॥ और ताअर्थ तैंअनंतर यहजीव कामकूंप्राप्तहोवे है॥और ताकामतैंअनंतर यहजीव मोक्षकूंप्राप्तहोवे है॥याक्रमतैंविना यहजीव प्रथमही मोक्षकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ अब धर्मादिकोंविषे अर्थादिकोंकीकारणताका निरूपणकरे हैं ॥ यहधर्मही अर्थकारणहै॥काहेतैं यहलोक दुःखवालेदरिद्रीपुरुषकूं पापात्माकहे हैं॥और सुखवालेधनीपुरुषकूं पुण्यात्माकहे हैं॥यालोकोंकेव्यवहारतैं धर्मविषेही अर्थकोकारणता सिद्धहोवे है॥शंका ॥यालोकविषे कितनेकधनीपुरुष पुण्यकर्मकरतेनहीं॥यातैं तिनधनीपुरुषोंविषे पुण्यात्माव्यवहार संभवेनहीं॥समाधान॥ यालोकविषे दोप्रकारकाधर्महोवे है ॥ एकधर्म तो इसशरीरविषे कऱ्याहुआ इसीशरीरविषे फलकोप्राप्तिकरे है॥जैसे इसीशरीरकरिकेकऱ्याहुआ आकारीनामायज्ञ इसीशरीरविषे वृष्टिरूपफलकीप्राप्तिकरे है ॥ तथा इसीशरीरकरिकेकऱ्याहुआ पुत्रइष्टिनामायज्ञ इसीशरीरविषे पुत्ररूपफलकीप्राप्तिकरे है ॥ और दूसराधर्मतो इसशरीरकरिकेकऱ्याहुआ इसीशरीरविषे फलकीप्राप्तिकरेनहीं॥किंतु दूसरेशरीरविषे फलकीप्राप्तिकरे है ॥ जैसे कृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतहैं ॥ तहां जेधनवानूपुरुष इसजन्मविषे पुण्यकर्मोंकूंकरतेनहीं ॥ किंतु केवलपापकर्मोंकूंहीकरते हैं ॥ तिनधनवान्पुरुषोंविषे पूर्वजन्मकेपुण्यकर्म कल्पनाकरणे ॥ जिनपूर्वलेपुण्यकर्मोंकरिके तिनधनीपुरुषोंकूं इसजन्मविषे सुखकोप्राप्तिभई है ॥ तात्पर्ययह ॥ कारणतैंविना कार्यकोउत्पत्तिहोवेनहीं ॥ यहसर्वशास्त्रकारोंकासिद्धांतहै ॥ तहां जिसस्थलविषे कार्यतो प्रत्यक्षदीखे ॥ और कारण प्रत्यक्षदीखेनहीं ॥ तिसस्थलविषे कार्यरूपहेतुतैं कारणकाअनुमानहोवे है ॥ जैसे नदीविषे जोजलकीवृद्धिहोवे है ॥ ताजलकेवृद्धिकाकारण वृष्टिहै ॥ सावृष्टि दूरदेशविषेस्थित है॥यातैं लोकोंकूं प्रत्यक्षदीखेनहीं॥किंतु ताजलकीवृद्धिरूपहेतुतैं तेलोक तावृष्टिका अनुमानकरे हैं॥तैसे जोजोसुखहोवे है॥सोसोसुख पुण्यकर्मकरिकेजन्यहोवे है॥पुण्यकर्म तैंविना सुखकोप्राप्तिहोवेनहीं ॥यातैं सुखरूपहेतुतैं तिनपापात्माधनीपुरुषोंके पूर्वजन्मकेपुण्यकर्मोंका अनु

मानहोवेहे ॥ इसप्रकार श्वानादिकपशुवोंकूंभी जोस्त्रोसंभोगादिकों तैं आनंदहोवेहे ॥ सोभी पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकरिकेहीहोवेहे॥ और जैसे सोपुण्यकर्म दोप्रकारकाहोवे हे ॥ तैसे पापकर्मभी दोप्रकारकाहोवेहे ॥ तहां कोईकपापकर्मतो इसशरीरकरिकेकन्याहुआ इसीशरीरविषे दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरे हे॥ओर कोईकपापकर्मतो इसीशरीरकरिकेकन्याहुआ दूसरेशरीरविषे दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरे हे॥तहां इसशरीरविषे जिनपुरुषों नैं कोईबुद्धिपूर्वक पापकर्मनहींकन्याहे ॥ किंतु सर्वदा पुण्यकर्महोकरेहैं॥तिनपुण्यवान्पुरुषोंविषेभी अनेकप्रकारकेदुःख देखणेमेंआवे हैं॥यातें तादुःखरूपहेतुतें तिनपुण्यवान्पुरुषोंविषे पूर्वजन्मोंकेपापकर्मोंका अनुमानहोवेहे ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया॥ याजीवोंकूं जितनाकीविषयजन्यसुख प्राप्तहोवे हे॥सो धर्मकरिकेही प्राप्तहोवे हे॥और ताधर्मात्मापुरुषोंकूं जोविषयसुखप्राप्तहोवे हे ॥ सो अर्थतैंविना प्राप्तहोवेनहीं ॥काहेतैं यालोकविषे जोपुरुष धर्मात्माभीहे ॥ सोधर्मात्मापुरुषभी स्त्रीतैंविना ताविषयसुखकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ तथा पुत्रादिकप्रजाकूं तथा गृहस्थपणेकूं प्राप्तहोवेनहीं॥और सोधर्मात्मापुरुषभी अन्न तैं विना क्षुधाकूंनिवृत्तकरिसकेनहीं ॥ और निर्धनदरिद्रीपुरुषकेसमीपस्त्रीअन्नादिकपदार्थ विद्यमानहुएभी तानिर्धनपुरुषकूंसुखकीप्राप्तिकरेनहीं यातें धनादिरूपअर्थहीकामसुखकाकारणहे काहेतैं धनरूपअर्थ तैं रहितपतिकूं पतिव्रतास्त्रोभी परित्यागकरिदेवेहे ॥ और धनहीनदरिद्रीपुरुषकूं आपणेबांधव तथामित्र तथाअन्यलोकभी आदरकरतेनहीं किंतु सर्वलोक तानिर्धनपुरुषका निरादरहीकरेहैं ॥और जैसे मृतकशरीर किसीकार्यकरणेविषे समर्थहोवेनहीं॥तैसेनिर्धनपुरुषकाउत्तमकुलतथाशील तथानानाप्रकारकीविद्याकिंचित्मात्रभी कार्यकरणेविषेसमर्थहोवेनहीं और जोपुरुषधनवान्होवेहे॥सोपुरुषहीनानाप्रकारकेभोगोंकूंप्राप्तहोवेहे ॥ तथा स्वर्गकूंप्राप्तहोवेहे ॥ तथा महान्कीर्तिकूंप्राप्तहोवेहे तथा नानाप्रकारकेगुणोंकूंप्राप्तहोवेहे यातें यह अर्थसिद्धभया ॥ यहपुरुष धनरूपअर्थकरिकेही स्त्रीसंभोगरूपकामकूंप्राप्तहोवेहे धनरूपअर्थ तैं विनास्त्रीसंभोगरूपकामकूं प्राप्तहोवेनहीं॥ यातें सोअर्थ कामकाकारणहे ॥ किंवा॥विषयसुखकीइच्छारूपजोकामहे ॥ सोकाम जिसदेहधारीजीवकूं नहींप्राप्तहोवेहे ॥ ऐसाकोईदेहधारीजीवयातीनलोकोंविषे हेनहीं ॥ किंतु मनुष्यजातिविषे तथापशुजातिविषे जितनेकी बाल्यअवस्थावाले तथायौवनअवस्थावाले तथावृ

द्धअवस्थावाले स्त्री पुरुष नपुंसक रूपजंगमप्राणी हैं ॥ तथा जितनेकीवृक्षादिरूपस्थावरप्राणी हैं॥तेसंपूर्णप्राणी ताविषयसुखकीइच्छारूप कामकरिकेही व्याप्तहैं ॥ ताकामतैंरहित कोइंभीप्राणी नहीं है ॥ यातैं ताविषयसुखकेभोगतैंविना किसीभीजीवकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवै नहीं ॥ किंतु ताविषयसुखकेभोगतैंअनंतरहीं याजीवोंकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं ताविषयसुखकेभोगतैंपूर्व ब्रह्मचर्यआश्रमविषे यहजीव मोक्षकाअधिकारीहोवैनहीं ॥ किंतु गृहस्थआश्रमतैंअनंतरही यहजीव मोक्षकाअधिकारीहोवैहै ॥ किंवा ॥ वैराग्यवान्पुरुषही मोक्षकाअधिकारीहोवैहै ॥ यहवेदांतशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ तहां रागकेप्रध्वंसाभावकानाम वैराग्यहै ॥ सोरागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्य रागकीउत्पत्तितैंविनाहीहोवैहै अथवा रागकीउत्पत्तितैंअनंतर होवैहै ॥ तहां रागकीउत्पत्तितैंविनाहीं सोरागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्य होवै है ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रध्वंसाभावविषे प्रतियोगीभीकारणहोवै है ॥ प्रतियोगीतैंविना प्रध्वं साभावकीउत्पत्ति होवैनहीं ॥ जैसे दंडकरिकेउत्पन्नभया जोघटकाप्रध्वंसाभावहै ॥ताप्रध्वंसाभावविषे जैसे दंडकूंकारणताहै ॥ तैसे ताघट रूपप्रतियोगीकूंभी कारणताहै ॥ घटकीउत्पत्तितैंविना ताघटकाप्रध्वंसाभाव होवैनहीं ॥ तैसे रागरूपप्रतियोगीकीउत्पत्तितैंविना ता रा गकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्यभी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और रागकीउत्पत्तितैंअनंतरहीं सोरागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्य उत्पन्नहोवैहै यहदू सरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे याळोकविषे जीवोंकूंउत्पन्नभईजाक्षुधाहै ॥ साक्षुधा अन्नकीप्राप्तितैंविना निवृत्तहोवैनहीं॥किंतु अन्नकीप्राप्तिकरिकेही साक्षुधा निवृत्तहोवैहै ॥तैसे याजीवोंविषे उत्पन्नभयाजो विषयसुखोंकारागहै ॥ सोरागभी तिन विषयसुखोंकीप्राप्तितैंविना निवृत्तहोवैनहीं॥किंतु तिनविषयसुखोंकीप्राप्तिकरिकेही सोराग निवृत्तहोवैहै ॥ और तेविषयजन्यसुख ब्रह्मचर्य आश्रमविषे याजीवोंकूं प्राप्तहैनहीं॥यातैं ब्रह्मचर्यआश्रमविषे याजीवोंकूं रागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्यकीप्राप्ति संभवैनहीं॥तावैराग्यकेअभाव हुए मोक्षकीप्राप्तिवास्तैंउद्यमकरणा निष्फलहै॥शंका॥ताब्रह्मचर्यआश्रमविषे याजीवोंकूं यद्यपि विषयोंविषे राग उत्पन्नहोवैहै ॥ तथापितेअ धिकारीजीव शास्त्रविचारकेबलतैंतिनविषयोंविषे नानाप्रकारकेदोषोंकूंदेखिके तिनविषयोंकेरागका निरोधकरैहैं॥यातैं ताब्रह्मचर्यअवस्थावि

षेभी वैराग्य तथामुमुक्षुता संभवेहै॥समाधान॥याजीवोंकेचित्तविषे उत्पन्नभयाजोविषयोंकारागहै ॥ सोरागजबपर्यंत ताविषयकूंनहींप्राप्तहोवेहै॥तबपर्यंत सोराग याजीवोंकेचित्तकूं सर्वओरतैंनिरुद्धकरिकेस्थितहोवेहै॥ताचित्तविषे दूसरेविषयका प्रवेश होणेदेवैनहीं ॥ जैसे यालोकविषे स्त्रीकेउदरविषे जबपर्यंत बालकरहैहै ॥ तबपर्यंत सोबालक तास्त्रीकेउदरविषे दूसरेबालकका प्रवेशहोणे देवैनहीं ॥ किंतु सोबालक जभी तास्त्रीकेउदरतैंबाहरनिकसैहै॥तभीही तास्त्रीकेउदरविषे दूसरेबालकका प्रवेशहोवेहै॥तैसे याजीवोंकेचित्तविषेभी जबपर्यंत एकविषयकाराग रहैहै॥तबपर्यंत ताचित्तविषे दूसरेविषयकेरागकूं प्रवेशहोणेदेवैनही ॥ तात्पर्ययह ॥याचित्तविषे एकविषयकेरागहुए जभी लोकप्रसिद्धविषयभी प्रवेशनहींकरिसकैहै ॥ तभी ताविषयरागवान्‌चित्तविषे अलौकिक मोक्षकीइच्छा किसप्रकार प्रवेशकरेगी ॥ किंतु नहींप्रवेशकरेगो॥किंवा॥जैसे मदकरिकेप्रभिन्नहुआहैगंडस्थलजिसका ऐसोजोषष्टिवर्षकीअवस्थावाला कोईयुवानहस्तीहै॥सोहस्ती किसी महान्‌वनकेसूक्ष्ममार्गोंविषेविचरताहुआ जभी तासूक्ष्ममार्गकेद्वारदेशकूंनिरुद्धकरिके स्थितहोवैहै ॥ तभी सोप्रमत्तहस्ती दूसरेमृगादिकवनकेपशुवोंकूं तामार्गद्वारा तावनविषेप्रवेशकरणेदेवैनहीं ॥ तैसे चित्तरूपवनकेद्वारविषे जबपर्यंत यहविषयोंकारागरूपहस्ती विद्यमानहै ॥ तबपर्यंत मोक्षकोइच्छारूपमृगादिकोंकूं ताचित्तरूपवनविषे प्रवेशहोणेदेवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम लौकिकविषयोंकेरागविषे दूसरेलौकिकविषयोंकेरागकोप्रतिबंधकता दृष्टांतकरिकेनिरूपणकरेहैं अनेकस्त्रीजनोंकेमध्यविषेस्थितहुआ जोमंदोदरीकापति रावणथा सोरावण जभी सीताकेरागकरिकेयुक्तहुआ॥तभी तासीतातैंविना तीनलोकवर्त्तिपदार्थोंकीभी इच्छानहींकरताभया॥ किंतु ताएकसीताकेप्राप्तिकीहीइच्छाकरताभया ॥ और जैसे नलराजाविषेहैसंलग्नहृदयजिसका ऐसीजोदमयंतिनामास्त्रीथी ॥सा दमयंतिनामास्त्री स्वयंवरविषेप्राप्तहुएइंद्रादिकदेवतावोंकूंभीनहींवरतीभई॥किंतु सादमयंतिनामास्त्री तानलराजाकूंहीवरतीभई ॥इसप्रकार रागकरिकेअंधहुईहैबुद्धिजिनोंकी ऐसेदूसरेभीअनेकजीवपूर्वहुएहैं॥तथा अभीवर्त्तमानहैं॥तथा आगेहोवैंगे॥तेसंपूर्णरागीजीव जिसविषयकेरागकरिकेयुक्तहुएहैं तिसविषयतैंविना दूसरेकिसीभीविषयकीइच्छा नहींकरतेभये हैं ॥ यातैं यहजान्याजावेहै ॥ याजीवोंकेचित्तविषे जबपर्यंत एकविषयकाराग

रहे है तबपर्यंतताचित्तविषे दूसरेविषयकाराग होवैनहीं ॥ जभी याचित्तविषे एकविषयकेरागहुए दूसरेविषयकाभीराग संभवैनहीं ॥ तभी ताविषयराग वानचित्तविषे मोक्षकीइच्छा किसप्रकारसंभवैगी किन्तु नहींसंभवैगी॥शंका॥जिसपुरुषकूं प्रथम विषयसुखविषेरागहुआनहीं ॥ किंतुप्रथमही मोक्षरूपसुखविषे रागहुआहे॥सोपुरुषही संन्यासद्वारा आत्मज्ञानका तथामोक्षका अधिकारीहोवैगा ॥ समाधान॥जिनपुरुषों कूंयालोकप्रसिद्धविष यजन्यसुखविषे रागनहींभयाहे ॥ तिनपुरुषोंकूं प्रथमही अलौकिकमोक्षरूपसुखविषेराग किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु नहींहोवैगा॥ तात्पर्ययह॥जिसपुरुषकूं इसलोककेविषयजन्यसुखविषेसुखत्वरूपकरिके इष्टज्ञानभया है॥तिसपुरुषकूंहीस्वर्गलोककेविषयज न्यसुखविषे इच्छाहोवै है॥ताइष्टज्ञानतैंविना स्वर्गलोककेविषयजन्यसुखविषे किसीभीजीवको इच्छाहोवैनहीं॥तैसे जिसपुरुषकूं यालोकप्र सिद्धविषयजन्यसुखोंकाज्ञानभयाहे ॥ तिसपुरुषकूंही तामोक्षरूपसुखविषे इच्छाहोवै है॥विषयजन्यसुखकेज्ञानतैंविना प्रथमही तामोक्षकी इच्छासंभवैनहीं॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥आपणेहृदयविषेस्थित जेविषयसुखोंकी कामनाहै तिनकामनावोंकी ताविषयसुखोंकोप्राप्तितैं नहीं पूर्णताकरिके यहअधिकारीपुरुष प्रथमहीं तामोक्षकीप्राप्तिवासतैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणनहींकरे ॥ किंतु यहबुद्धिमान्पुरुष प्रथम तिनवि षयसुखोंकीकामनावोंकूं तिनविषयसुखोंकोप्राप्तितैंपूर्णकरिके पश्चात् मोक्षकीप्राप्तिवासतैं संन्यासआश्रमकाग्रहणकरे ॥ यहवार्त्ता मनुभग वान्नैंभोकहीहै॥तहांश्लोक॥ अनधीत्यद्विजोवेदान् अनुत्पाद्यतथासुतान् अनिष्ट्वाचैवयज्ञैश्च मोक्षमिच्छन्व्रजत्यधः ॥ अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकानाम द्विजहै ॥ जोद्विज वेदोंकूं नअध्ययनकरिके तथापुत्रोंकूं नउत्पन्नकरिके तथायज्ञादिककर्मोंकूं नकरिके प्रथमही मोक्षकेप्राप्तिकोइच्छाकरे है सोद्विज तामोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तामोक्षकीइच्छाकरताहुआसोद्विज अधोगतिकूंप्राप्तहो वै है ॥ १ ॥ यातैं जिसद्विजकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै॥सोद्विज प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रमविषे वेदोंकेअध्ययनकरिके ऋषियोंकेऋणतैंमुक्त होवै॥तिसतैंअनंतर गृहस्थआश्रमविषे पुत्रोंकूंउत्पन्नकरिके पितरोंकेऋणतैंमुक्तहोवै॥तथा यज्ञादिककर्मोंकूंकरिके देवतावोंकेऋणतैंमुक्तहो वै॥तिसतैंअनंतर मोक्षकीप्राप्तिवासतैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरे॥इसप्रकार ताविरागकेप्रभावकूंजानणेहारे मनुआदिकसर्वज्ञपुरुषों नैं व्यव

स्थाकरी है॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया॥सर्वप्रकारकेविषयोंकेभोगकरिके जभी याअधिकारीपुरुषोंकेचित्तविषे ताविषयोंकेरागकानाशहोवै॥ तभीही यहअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिके तामोक्षकीप्राप्तिवासते यत्नकरै ॥ विषयोंकेभोगतैंपूर्वही मोक्षकीप्राप्तिवासतेयत्न करणा निष्फलहै॥इतनैंग्रंथकरिके विषयासक्तपुरुषोंके मतकानिरूपणकऱ्या॥अब तिनोंकेमतकाखंडनकरैहैं॥हेशिष्य ःइसप्रकार तेविषया सक्तबहिर्मुखपुरुष धर्म अर्थ काम यातीनपुरुषार्थोंकीप्राप्तितैंअनंतरही चतुर्थमोक्षरूपपुरुषार्थकीप्राप्तिकाकथनकरे हैं॥सोतिनबहिर्मुखपुरु षोंकेवचनोंकूं विद्वान्पुरुष ग्रहणकरैनहीं॥किंतु विषयासक्तबहिर्मुखपुरुषही तिनोंकेवचनोंकूं ग्रहणकरे हैं ॥ और हेशिष्य ॥ तिनबहिर्मुख पुरुषोंनैं जोपूर्वंपुण्यकर्मविषे सुखकीकारणता कथनकरीथी ॥ तथा पापकर्मविषे दुःखकीकारणता कथनकरीथी॥सोतिनोंकावचन हमसि द्धांतीभी अंगीकारकरतेहैं ॥ परंतु तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं जोपूर्वं धनादिरूपअर्थविषे सुखकीकारणता कथनकरीथी ॥ सोतिनोंकावचन हम सिद्धांती अंगीकारकरतेनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे धनादिरूपअर्थतैंरहितहुएभी बहुतजीव सुखीहुए देखणेमेंआवे हैं॥और यालोकविषे धनादिरूपअर्थकरिकेयुक्तहुएभी बहुतजीव दुःखीहुए देखणे में आवे हैं॥ यातैं धनादिरूपअर्थविषे विषयसुखकीकारणता संभवैनहीं॥हेशि ष्य॥धनादिरूपअर्थतैंविनाभी यामनुष्यादिकजीवोंकूं विषय सुखकीप्राप्तिहोवै है यहवार्त्ता हम सप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमैत्रेयीकेसंवा दविषे विस्तारतैं कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं इहां कथनकरी नहीं ॥ और हेशिष्य ॥ धनादिरूपअर्थोंकेइकट्ठेकरणेविषे तथारक्षणकरणेविषे तथानाशविषे याजीवोंकूं परम दुःखकीही प्राप्तिहोवैहै याप्रकारकेअर्थकूंजानणेहारे जेविद्वान्पुरुषहैं॥तिनविद्वान्पुरुषोंकूंतो यहधनादिरूप अर्थ दुःखकेहीकारण प्रतीतहोवे हैं ॥ ऐसे धनादिरूप अर्थोंतैं तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं सुखकी प्राप्ति किसप्रकार होवैगी॥किन्तु नहींहोवैगी॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निके अंगारविषे मणिबुद्धिकरिके जोमूढबुद्धिपुरुष ताअंगारकूं आपणेहस्तविषे ग्रहणकरैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष दाहजन्यदुःखकूंही प्राप्त होवे है॥ तैसे दुःखकेदेणेहारे धनादिरूपअर्थोंविषे सुखसाधनताबुद्धिकरिके जोमूढबुद्धिपुरुष तिनधनादिरूपअर्थों के ग्रहणकरणे वासते प्रवृत्तहोवैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुषभी केवलदुःखकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं धनादिरूपअर्थविषे सुखकीकारणतासंभवैनहीं

और हेशिष्य॥अर्थहीन दरिद्रीपुरुषकूं स्त्रीपुत्रादिकसर्वबांधव परित्यागकरिदेवैहैं॥याप्रकारकावचन जोपूर्व तिनबहिर्मुखपुरुषों नें कथनक
र्‍याथा ॥ सोतिनोंकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे जितनेकीनिर्धनदरिद्रीपुरुषहैं ॥ तिनसर्वदरिद्रीपुरुषोंकूं स्त्रीपुत्रादिकबां
धव परित्यागकरैहैं॥ याप्रकारकानियम सर्वलोकोंविषे देखणेमैंआवतानहीं॥किंतु कोईकदुष्टस्वभाववाले स्त्रीपुत्रादिकबांधवही तानिर्धन
पुरुषका परित्यागकरैहैं ॥ साधुस्वभाववालेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तानिर्धनपुरुषका परित्यागकरैंनहीं ॥ और हेशिष्य॥ सर्वजीवोंकूं सुखकी
इच्छारहैहै॥यातेंसर्वजगत् कामकरिकेंव्याप्तहै याप्रकारकावचन जोपूर्वतिनबहिर्मुखपुरुषों नें कथनकर्‍याथा सोतिनोंकावचनभी मिथ्याहै
काहेतें यालोकविषे सर्वजीवोंकूं सुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवैहै ॥ यहवार्ता यद्यपि सत्यहै ॥ तथापि तासुखकीइच्छामात्रकरिके तिनसर्वजीवों
विषे कामीपणा सिद्धहोवैनहीं॥किंतु यालोकविषे जेपुरुष जिह्वाइंद्रियकेविषयविषेतथाउपस्थइंद्रियकेविषयविषे अत्यंतआसक्तिवालेहोवैहैं
तिनपुरुषोंकूंही लोकविषेकामीकहैहैं ॥ सुखमात्रकीइच्छावालेपुरुषकूं कोई कामीकहतानहीं ॥यातें तासुखकीइच्छामात्रकरिके सर्वजगत्
विषे कामीपणासंभवैनहीं ॥ और हेशिष्य ॥ याजीवोंकेचित्तविषेउत्पन्नभया जोएकविषयकारागहै ॥ सोराग ताचित्तविषे दूसरेविषयके
रागकूं उत्पन्नहोणेदेवैनहीं याप्रकारकावचन जोपूर्व तिनबहिर्मुखपुरुषोंनें कथनकर्‍याथा ॥ सोतिनोंकाकहणा हमसिद्धांतियोंकूं प्रतिकूल
नहीं है॥ किंतु सोतिनोंकाकहणा हमारेकूं अनुकूलहै ॥ काहेतें पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतें याअधिकारीपुरुषोंकेचित्तविषे जभी मोक्ष
काराग उत्पन्नहोवैहै ॥ तभीसोमोक्षकाराग ताचित्तविषे किसीभीविषयकेरागकूं उत्पन्नहोणेदेवैनहीं ॥ याकारणतेंही नचिकेतादिकम
हान्पुरुष तामोक्षकीइच्छाकालविषे किसीभीपदार्थकाग्रहण नहींकरतेभयेहैं ॥और हेशिष्य ॥ वेदोंकाअध्ययन तथापुत्रोंकीउत्पत्तितथा
यज्ञादिककर्म यातीनोंकूंनकरिके जोपुरुष मोक्षकीइच्छाकरैहै सोपुरुष अधोगतिकूंप्राप्तहोवैहै यहमनुभगवान्कावचन मोक्षकीनिंदाकरे है
याप्रकारकावचन जोपूर्व तिनबहिर्मुखपुरुषों नें कथनकर्‍याथा ॥ सोतिनोंकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें वेदोंविषे तथास्मृतियोंविषे
तथाइतिहासपुराणोंविषे जितनेकीनिंदावचनहोवे हैं ॥ तिननिंदावचनोंका किसीकीनिंदाविषे तात्पर्यहोवैनहीं ॥ किंतु तिननिंदावचनोंका

प्रसंगमेंप्राप्तअर्थकीस्तुतिविषेही तात्पर्यहोवैहै ॥ जैसे विष्णुपुराणविषे यहवचनकथनकन्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ वासुदेवंपरित्यज्य यउपास्तेऽन्यदेवतं ॥ तृषितोजाह्नवीतीरे कूपंखनतिदुर्मतिः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष विश्नुकापरित्यागकरिके अन्यशिवादिकदेवतावोंकी उपासना करैहै ॥ सोदुर्बुद्धिपुरुष तृषाकरिकेआतुरहुआ तातृषाकीनिवृत्तिकरणेवासते श्रीगंगाजीकेतीरऊपर कूपकूंखोदैहै ॥ १ ॥ और शिवपुराणविषेतो याप्रकारकावचन कथनकन्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ महादेवंपरित्यज्य यउपास्तेऽन्यदेवतं ॥ समूढोविषमश्नाति सुधांत्यक्त्वाक्षुधातुरः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष महादेवकापरित्यागकरिके अन्यविश्नुआदिकदेवतावोंकीउपासनाकरैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष क्षुधाकरिकेआतुरहुआ ताक्षुधाकोनिवृत्तिवासते अमृतकापरित्यागकरिके विषकूंभक्षणकरैहै ॥ १ ॥ यादोनोंप्रकारकेवचनोंविषे प्रथम ताविश्नुपुराणकेवचनका तिनशिवादिकदेवतावोंकीनिंदाविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु तावचनका विश्नुकीस्तुतिविषे तात्पर्य है ॥ तैसे ताशिवपुराणकेवचनकाभी तिनविश्नुआदिकदेवतावोंकीनिंदाविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु तावचनका महादेवकास्तुतिविषे तात्पर्य है ॥ जोकदाचित् तिनदोनोंका शिवविश्नुआदिकदेवतावोंकीनिंदाविषेही तात्पर्यहोवै ॥ तो किसीभिदेवताविषे पूज्यता सिद्धनहींहोवैगी ॥ तैसे तामनुभगवान्केवचनकाभी मोक्षकीनिंदाविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु अज्ञानिपुरुषोंकी कर्मोविषेप्रवृत्तिकरावणेवासते तामनुकेवचनका वर्णआश्रमकेकर्मोंकीस्तुतिविषेतात्पर्य है ॥ जोकदाचित् तामनुभगवान्का मोक्षकीनिंदाविषेही तात्पर्यहोता ॥ तो सोमनुभगवान् तिसीमनुस्मृतिकेषष्ठेअध्यायविषे मोक्षकेधर्मोंका नहींकथनकरता ॥ और मनुस्मृतिकेषष्ठेअध्यायविषे तामनुभगवान्नें मोक्षकेधर्मोंका विस्तारतैंनिरूपणकन्याहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै॥ तामनुभगवान्केवचनका मोक्षकीनिंदाविषे तात्पर्यनहीं है॥किंतु कर्मोंकीस्तुतिविषे तात्पर्य है ॥ किंवा ॥ सोबहिर्मुखवादी जोयाप्रकारकीशंकाकरै ॥ तामनुभगवान्का मोक्षकीनिंदाविषेही तात्पर्य है ॥ और तामनुस्मृतिकेषष्ठेअध्यायविषे जोमनुभगवान्नें मोक्षधर्मोंकाकथनकन्याहै॥सोभ्रमादिकदोषकेवशतैं कथनकन्याहै॥सोयहशंकासंभवैनहीं काहेतैं साक्षात्श्रुतिभगवतीही तामनुभगवान्कूं सर्वज्ञकहैहै ऐसेसर्वज्ञमनुभगवान्विषे तेभ्रमादिकदोष संभवैनहीं॥तहांश्रुति॥यद्वैकिंचनम

तुरवदत्तद्वेषजम्॥अर्थयह यहमनुभगवान् जिसजिसधर्मका कथनकरे है ॥ सोसोधर्म याजीवोंके कल्याणकाहेतुहै॥शंका ॥मनुभगवान्कूं
सोमोक्ष अंगीकारहै यहवार्त्ता यद्यपि सत्यहै ॥ तथापि तामनुभगवानकूं वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्ति यज्ञादिककर्म यातीनोंतैंअनंतर
ही सोमोक्ष अंगीकारहै ॥ यातीनोंतैंप्रथमही तामोक्षकाअंगीकारनहीं ॥ समाधान ॥ तामनुभगवान्केवचनका जोयुक्तितैंविचारकरिकेदेखि
ये ॥ तो तिनवेदअध्ययनादिकतीनोंतैंअनंतर तामोक्षकाअंगीकार सिद्धहोवैनहो ॥ काहेतैं पूर्व मनुभगवान्केवचनविषे बहुतवेदोंकाअध्य
यन तथाबहुतपुत्रोंकीउत्पत्ति तथाबहुतयज्ञोंकाकरणा कथनकऱ्याहै ॥ तहां सो बहुत्वपणा तीनपदार्थोंविषे रहेहै ॥ अथवा सोबहुत्वपणा
चार पंच षट् इसतैंआदिलेके अनेकपदार्थोंविषे रहेहै ॥ तहां अनेकशतशाखावोंकेभेदकरिके नानाविधकूंप्राप्तभये जेऋगादिकवेदहैं ॥
तिनसर्व वेदोंकेअध्ययनकरणेविषे महान्आयुषवालापुरुषभी समर्थहोइसकेनहीं ॥ तो इदानींकालकेअल्पआयुषवालेपुरुष तिनसर्व वेदों
केअध्ययनकरणेविषे किसप्रकारसमर्थहोवैंगे ॥ किंतु नहींसमर्थहोवैंगे ॥ यातैं सर्व वेदोंकाअध्ययनकरणा संभवैनहीं ॥ इसप्रकार
तीनपुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे तथाअनेकपुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषेभी यहजीव स्वतंत्र समर्थहोइसकेनहीं ॥ किंतु तिनबहुतपुत्रोंकीउत्पत्ति
पूर्वलेपुण्यकर्मरूपअदृष्टकारणोंकेअधीनहोवैहै ॥ तथा स्त्रीयुवाअवस्थादिकदृष्टकारणोंकेअधीनहोवै है ॥ जोकदाचित् तिनदृष्टअदृष्टकार
णोंकीअपेक्षातैंविनाही यहपुरुष तिनपुत्रोंकीउत्पत्तिविषे स्वतंत्रकारणहोवै ॥ तो यालोकविषे पुत्रकीइच्छावाला कोईभीपुरुष पुत्रोंतैंरहित
नहींहोणाचाहिये ॥ और यालोकविषे पुत्रोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहुएभी अनेकपुरुष पुत्रोंतैंरहित देखणेमैंआवैहैं ॥ यातैं बहुतपुत्रोंकीउत्प
त्तिकरणीभी संभवैनहीं ॥ इसप्रकार तीन यज्ञोंकेकरणेविषे तथाअनेकयज्ञोंकेकरणेविषेभी यहपुरुष स्वतंत्रहोइसकेनहीं ॥ किंतु स्त्रीपुत्र
धनादिकअनेकपदार्थोंकरिके तिनयज्ञोंकीसिद्धिहोवै है ॥ यातैं बहुतयज्ञोंकाकरणाभी संभवैनहीं ॥ और सोमनुभगवान्कावचन जोकदा
चित् ताबहुतवेदोंकेअध्ययनरूप अशक्यअर्थकूं बोधनकरेगा ॥तथा बहुतपुत्रोंकीउत्पत्तिरूप अशक्यअर्थकूं बोधनकरेगा॥तथा बहुतयज्ञों
काअनुष्ठानरूप अशक्यअर्थकूं बोधनकरेगा॥तो सोमनुभगवान्कावचन अप्रमाणरूपहोवैगा॥काहेतैं जोअर्थ याजीवकेसुखकासाधनहोवैहै

तथा याजीवोंकेप्रयत्नकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यहोवैहै ॥ तथा दूसरेप्रमाणकरिकैबाधित नहींहोवैहै ॥ ताअर्थकेबोधनकरणेकरिकैहीशास्त्रकूं प्रमाणरूपताहोवैहै ॥ यातें तामनुभगवान्केवचनका तिसवेदअध्ययनादिरूपअर्थविषे तात्पर्यनहीं है ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ तामनुस्मृतिकेवचनकरिकै तामनुभगवान्कूं तिनवेदअध्ययनादिकोंविषेअप्राप्तअर्थकेबोधनकरणेहारी अपूर्वविधि अंगीकारनहीं हैं॥ किंतु यालोकविषे जेपुरुष आपणेवेदकीशाखाकूंअध्ययनकरैंहैं ॥ तथा पुत्रादिकप्रजाकूंउत्पन्नकरैंहैं ॥ तथा यज्ञादिककर्मकरैंहैं ॥ तिनपुरुषोंविषेही सामोक्षकीइच्छादेखणेमैंआवैहै ॥ और जेपुरुष वेदअध्ययनादिकनहींकरैंहैं ॥ तिनपुरुषोंविषे सामोक्षकीइच्छाभी देखणेमैंआवती नहीं ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै यालोकोंकूं तिनवेदअध्ययनादिकोंविषे मोक्षकेइच्छाकीकारणताप्रसिद्धहै ॥ तालोकप्रसिद्ध कारणताकूं सोमनुभगवान्कावचन कथनकरैहै ॥ यातें सोमनुभगवान्कावचन अनुवादरूपहै ॥ जैसे अग्निविषे हिमकेनिवृत्तिकीकारणता सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥ तालोकप्रसिद्धअर्थकूंकथनकरणेहारा जो अग्निर्हिमस्यभेषजं यहवचनहै ॥ सोयहवचन अनुवादरूपहै तैसे सोमनुभगवान्कावचनभी अनुवादरूपहै ॥ अपूर्वविधिरूपनही ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ जिसअन्वयव्यतिरेकका किसीभीस्थलविषे व्यभिचारनहींहोवै है ॥ सोअन्वयव्यतिरेकही कारणताकीसिद्धिकरै है ॥ जैसे मृत्तिका कुलाल दंडादिकोंकेविद्यमानहुए घटरूपकार्यकीउत्पत्ति और मृत्तिकादिकोंकेअभावहुए ताघटरूपकार्यकीअनुत्पत्ति याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेकका किसीभीस्थलविषे व्यभिचारहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोअन्वयव्यतिरेक मृत्तिकादिकोंविषे घटकेकारणताकूंसिद्धकरै है ॥ और जिसअन्वयव्यतिरेककाकिसीभीस्थलविषे व्यभिचारहोवै है ॥ सोअन्वयव्यतिरेक कारणताकीसिद्धिकरिसकैनहीं ॥ जैसेताकुलालकेगृहविषेस्थितजोताकुलालकीस्त्रीहै तथारासभहै तिनदोनोंकेविद्यमानहुएभी ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै है ॥ और तिनदोनोंके नहींविद्यमानहुएभी ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै है ॥ यातें ताकुलालकेस्त्रीका तथारासभका जोघटकेप्रति अन्वयव्यतिरेकहै ॥ सो व्यभिचारीहै ॥ ताव्यभिचारी अन्वयव्यतिरेककरिकै ताकुलालकीस्त्रीविषे तथारासभविषे घटकीकारणतासिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनोंविषे घटकेकारणताका

बाधहीहोवे है ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे वेदअध्ययनादिकोंविषे मोक्षइच्छाकेकारणताकी सिद्धिकरणेवासतैं जो अन्वयव्यतिरेक तुम नें कथन कऱ्या है ॥ सो अन्वयव्यतिरेकभी व्यभिचारीहै ॥ काहेतैं याळोकविषे वेदकेअध्ययनकरणेहारे तथातीनपुत्रोंवाले तथातीनयज्ञोंवाले बहुतब्राह्मण देखणेमें आवतेहैं ॥परंतु तिनब्राह्मणोंविषे मोक्षकी इच्छा देखणेमेंआवतीनहीं ॥ उलटा बहुत स्थळविषेतो तेवेदअध्ययनकरणे हारे तथाबहुतपुत्रोंवाले तथाबहुतयज्ञकरणेहारे ब्राह्मण संसारसुखोंविषेआसक्तहुए तामोक्षतैंबहिर्मुखहुएही देखणेमें आवैहैं ॥ यातैं ताव्यभिचारीअन्वयव्यतिरेककरिके तिनवेदअध्ययनादिकोंविषे मोक्षइच्छाकीकारणता सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं सोमनुभगवान्‌कावचन अनुवादरूपसंभवेनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥तामनुस्मृतिकेवचनकरिके तामनुभगवान्‌नें नियमविधि कथनकरीहै ॥ अथवा परिसंख्याविधि कथनकरीहै॥समाधान॥हेवादी॥तामनुभगवान्‌केवचनाविषे नियमविधिरूपता तथापरिसंख्याविधिरूपताभी संभवेनहीं काहेतैं जिसस्थलविषे क्रमते दोपदार्थप्राप्तहोवैहैं तिसस्थळविषे जोवचन एकपदार्थकीनिवृत्तिकरिके एकपदार्थकाविधानकरेहै तावचनकानाम नियमविधिहै ॥ जैसे यज्ञकीअग्निविषे तुषोंतैंरहितव्रीहिरूपअन्नकी आहुती दईजावैहै ॥ तहां तिनव्रीहिरूपअन्नके तुषोंकीनिवृत्ति लोकविषे दोप्रकारकेउपायों तैं होवैहै॥तहां एकतो नखोंकरिकेहोवैहै ॥ और दूसरा मुषलकरिकेकूटणेतैंहोवैहै ॥ तिनदोनोंउपायोंविषे किसउपायकरिके तिनव्रीहिकेतुषोंकीनिवृत्तिकरणी ॥ याप्रकारकीशंकाकेहुए श्रुतिनें ॥ व्रीहीनऽवहन्यात् ॥ यावचनकरिके मुषलसेंव्रीहियोंकाकूटणाविधानकऱ्या ॥ और नखोंतैंतुषोंकीनिवृत्तिकरणेका निवारणकऱ्या ॥ याकारणतैं ॥ व्रीहीनऽवहन्यात्॥ यहवचन नियमविधिरूपहै॥तैसे तामनुभगवान्‌केवचनकूं जोनियमविधिरूप अंगीकारकरिये॥तौएकपक्षविषेतौमोक्षकीइच्छा प्राप्तभई॥और दूसरेपक्षविषे वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्ति यज्ञोंकाअनुष्ठान यहतीनोंप्राप्तभये॥तहां वेदअध्ययनादिकतीनों तैं पूर्वप्राप्तभईजामोक्षकीइच्छातामोक्षकीइच्छाकानिरोध करिकैयहअधिकारीपुरुष वेदअध्ययनादिकतीनोंकूंकरै याप्रकारका तामनुकेवचनकाअर्थ सिद्धहोवैगा॥सोनियमविधिरूपतावचनकाअर्थ तभीसंभवै ॥ जभी तामोक्षकीइच्छाकीनिवृत्तिकरणेविषे यापुरुषकीस्वतंत्रताहोवै॥परंतु ताइच्छाकेनिवृत्तकरणेविषे यापुरुषकीस्वतंत्रता

नहीं है ॥ यातें मोक्षरूपसुखके सौंदर्यताज्ञानकरिके याजीवोंविषे उत्पन्नभईजामोक्षकीइच्छाहे ॥ ताइच्छाकेनिवृत्तकरणेविषे कोईभीजीव समर्थहोइसकेनहीं ॥ तैसे बहुतवेदोंकेअध्ययनकरणेविषे तथाबहुतपुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे तथाबहुतयज्ञोंकेअनुष्ठानकरणेविषेभी यहजीव स्वतंत्र समर्थहोइसकेनहीं ॥ यातें तामनुभगवान्केवचनविषे नियमविधिरूपता संभवेनहीं ॥ तैसे तामनुभगवान्केवचनविषे परिसंख्याविधिरूपताभी संभवेनहीं ॥ काहेतें जिसस्थलविषे एकहीकालमें दोपदार्थ प्राप्तहोवेंहैं ॥ तिसस्थलविषे जोवचन एकपदार्थके निवृत्तिकूंहीबोधनकरेहे ॥ सोवचन परिसंख्याविधिरूपहोवेहे ॥ जैसे एकहीकालविषे रागकरिके याजीवोंकूं प्राप्तभयाजो शशक शल्लकी गोधा खडगी कूर्म यापंचनखवालेपंचजीवोंकाभक्षण तथा मनुष्यवानरादिकपंचनखवालेजीवोंकाभक्षण तिनदोनोंविषे ॥ पंचपंचनखाभक्ष्याः॥यहश्रुतिवचन पंचनखोंवाले शशकादिकपंचजीवोंतें भिन्न मनुष्यवानरादिकजीवोंकेभक्षणकीनिवृत्तिबोधनकरे है यातें पंचपंचनखाभक्ष्याः॥यहवचन परिसंख्याविधिरूपहे ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्तियज्ञोंकाअनुष्ठानयहतीनोंतें एककोटीहे और मोक्षकीइच्छा दूसरीकोटीहे ॥ तेदोनोंकोटी जभी यापुरुषोंविषे प्राप्तहोवें ॥तभी यापुरुषो नें वेदअध्ययनादिकोंकूंहीकरणा ॥ याप्रकार तामनुभगवान्केवचनका विपरिणामकरिके जभी तामोक्षकेइच्छाका निवारणकरिये ॥ तभीही सोमनुभगवान्कावचन परिसंख्याविधिरूप संभवे॥ और तामनुभगवान्केवचनकूं परिसंख्याविधिरूपमानिके जोमोक्षकेइच्छाका निवारणकरिये॥तो तामोक्षकीप्राप्तिवासते किसीभी पुरुषविषे परियत्न नहींहोणाचाहिये ॥ और मोक्षकेप्राप्तिवासते परियत्न तथामोक्षकीइच्छा कितनेकीअधिकारीपुरुषोंविषे देखणेमेंआवेहे तथा तामनुभगवान्नेंही मनुस्मृतिकेषष्ठेअध्यायविषे मोक्षधर्मोंका कथनकऱ्याहे ॥ यातें सोमनुभगवान्कावचन परिसंख्याविधिरूप संभवेनहीं ॥ किंवा॥सोमनुभगवान्कावचन जोकदाचित् मोक्षकेइच्छाकीनिवृत्तिकरताहोवे॥तो वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्ति यज्ञोंकाअनुष्ठान यातीनोंकूंकरिके यहअधिकारीपुरुषमोक्षकोइच्छाकरे याप्रकारकेवचननेंजोवेदअध्ययनादिकोंतेंअनंतर मोक्षकेइच्छाकाकथनकऱ्याहे सोअसंगतहोवेगा॥याकारणतेंभी सोमनुभगवान्कावचन परिसंख्याविधिरूपनहीं है॥किंवा॥ वेदअध्ययनादिकोंतेंपूर्वजोपुरुष मोक्षकीइच्छा

करे है सोपुरुष अधोगतिकूंप्राप्तहोवै है॥याप्रकारका तामनुभगवान्केवचनकाअर्थ जोपूर्ववादीनैं कथनकर्‍याथा॥सोअर्थ प्रत्यक्षश्रुतिकरि
केबाधितहै ॥ काहेतें श्रुतिभगवतीने तौ मोक्षकीप्राप्तिवासते ब्रह्मचर्यआश्रमतें अनंतरभी संन्यासकाविधानकर्‍याहै ॥ तहांश्रुति॥यदिवेतर
थाब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेत् ॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषकूं विषयोंविषे उत्कटवैराग्यनहीं है ॥ सोपुरुषतौ ब्रह्मचर्यआश्रमतें अनंतर गृहस्थआश्रम
कूंग्रहणकरे और तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरै॥और तावानप्रस्थआश्रमतैंअनंतर चतुर्थअवस्थाविषे संन्यासआ
श्रमकाग्रहणकरे॥और जिसपुरुषकूं विषयोंविषे उत्कटवैराग्यहै॥सोपुरुष तामोक्षकीप्राप्तिवासते ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतरहीं संन्यासआश्रम
कूंग्रहणकरे ॥१॥इत्यादिकश्रुतिवचनोंकरिके सोमनुकेवचनकाअर्थ बाधितहै ॥ यातैं सोमनु भगवान्कावचन विधिरूपनहीं है ॥ किंतु
अज्ञानीजनोंकी कर्मोंविषेप्रवृत्तिकरावणेवासते तिनकर्मोंकीस्तुतीकरताहुआ सोमनुभगवान्का वचन अर्थवादरूपहै॥शंका॥हेसिद्धांतियो
सोमनुभगवान्का वचन तामोक्षइच्छाकेनिषेधकूं सूचनकरैनहीं ॥ किंतु सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेअभावका विधानकरैहै ॥
जैसे॥नकलंजंभक्षयेत् ॥ यहवचन प्राभाकरमीमांसकोंकेमतविषे कलंजभक्षणके अभावका विधानकरे है ॥ तैसे सोमनुभगवान्कावचनभी
मोक्षइच्छाके अभावकाही विधानकरैहै॥विषयुक्तवाणकरिकैहननकर्‍याजोमृगहै॥तामृगकेमांसकानाम कलंजहै॥समाधान॥हेवादो॥मोक्षकी
इच्छाकाजोअभावहै ॥ सोअभाव विधानकरणेयोग्यहोवैनहीं ॥ काहेतैं॥स्वर्गकामोयजेत॥इत्यादिकवेदकेवचन यज्ञादिकभावपदार्थोंकाही
विधानकरैहै॥ अभावकूं कोईभीवचन विधानकरैनहीं॥और जोवादी तामनुभगवान्केवचनकरिके मोक्षइच्छाकेअभावकाविधान अंगीकार
करैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेप्रागभावका विधानकरैहै ॥ अथवा तामोक्षइच्छाकेअत्यंता
भावका विधानकरैहै ॥ अथवा ॥ तामोक्षइच्छाकेअन्योन्याभावका विधानकरैहै ॥ अथवा तामोक्षइच्छाकेप्रध्वंसाभावका विधानकरैहै ॥
तहां सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाके प्रागभावका तथाअत्यंताभावका तथाअन्योन्याभावका विधानकरैहै ॥ यहतीनपक्षतौसंभवै
नहीं॥काहेतैं जोपदार्थ पूर्व किसीप्रमाणकरिकैसिद्धनहींहोवैहै ॥ तापदार्थकाही शास्त्र विधानकरे है॥पूर्वसिद्धपदार्थका कोईभीशास्त्र विधान

करैनहीं॥और नैयायिकवादियोंकेमतविषे प्रागभावतौ उत्पत्तितैंरहितअनादिहै ॥ तथा प्रतियोगीकीउत्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभाव नाशकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ताअनादिप्रागभावका विधानसंभवैनहीं ॥और तिनवादियोंकेमतविषे अत्यंताभाव तथाअन्योन्याभाव यहदोनोंअभाव तौ उत्पत्तिनाश दोनोंतैंरहितहैं ॥ यातैं तिनोंकाभी विधानसंभवैनहीं ॥शंका॥हेसिद्धांतो॥ताप्रागभावकीयद्यपि उत्पत्तिसंभवैनहीं॥तथापि ताप्रागभावका नाशहोवैहै॥यातैं जैसे॥ब्राह्मणोनहंतव्यः॥यहश्रुतिवचन ताब्रह्महत्याकेप्रागभावकेरक्षणकरणेका विधान करैहै॥तैसे सोमनु भगवान्कावचनभी तामोक्षइच्छाकेप्रागभावकेरक्षणकरणेका विधानकरैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ जैसे शास्त्रनैं ब्रह्महत्याकरणेका निषेधकऱ्याहै॥तैसे जोकोईशास्त्र तामोक्षइच्छाकानिषेधकरताहोवै ॥तौ सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेप्रागभावका विधानकरै ॥ परंतु तामोक्षइच्छाकेनिषेधकरणेहारा कोईभीशास्त्र देखीतानहीं॥किंतुउलटा शास्त्रतौ मोक्षकीइच्छावान्पुरुषकूंमहान्फलकीप्राप्ति कथनकरैहै तहांश्रुति ॥ क्षणमेकंक्रतुशतस्य ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाराखिके एकक्षणमात्रभी आत्मविचारकरैहै॥तिसपुरुषकूं १०० शतअश्वमेधयज्ञोंकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ १॥ इसतैंआदिलैकेअनेकश्रुतिस्मृतिवचन तामोक्षइच्छाकेमहान्फल का कथनकरै हैं॥ यातैं तामोक्षकीइच्छाकेप्रागभावकेरक्षणकरणकाभी विधानसंभवैनहीं॥और सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेप्रध्वंसाभावका विधानकरैहै ॥ यहचतुर्थपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपदार्थ स्वतःसिद्धनहींहोवै है ॥ तापदार्थ काही शास्त्र विधानकरैहै ॥ और जोपदार्थ स्वतःहीसिद्धहोवै है ॥ तापदार्थका शास्त्र विधानकरैनहीं ॥ जैसे यालोकविषे अन्नकेभक्षणतैंक्षुधाकीनिवृत्ति स्वतःहीसिद्धहै॥यातैं ताअन्नकेभक्षणकरिकेक्षुधाकेनिवृत्तिकरणेका कोईशास्त्र विधानकरैनहीं॥ तैसे यहमोक्षकीइच्छाभी क्षणभंगुरहै यातैं ताइच्छाकाप्रध्वंसाभावभी स्वतःहीसिद्धहै ॥ तास्वतःसिद्धइच्छाके प्रध्वंसाभावकूं जोकदाचित् सोमनुभगवान्कावचन विधान करैगा ॥ तौ सोमनुभगवान्कावचन अप्रमाणरूपहीहोवैगा ॥ किंवा ॥ सोमनुभगवान्कावचन जो कदाचित् तामोक्षइच्छाके प्रध्वंसाभावका विधानकरैगा ॥ तौ सोमनुभगवान्कावचन व्यर्थहोवैगा ॥ काहेतैं यालोकविषे जिसपुरुष का जिसवस्तु

विषे जबपर्यंत सौंदर्यताज्ञान बनारहेहै ॥ तिसपुरुषकी तिसवस्तुविषे तबपर्यंत एकइच्छाकेनाशहुएभी पुनःदूसरीइच्छा उत्पन्नहोवै है ॥ तैसे मोक्षरूपनित्यसुखकोसौंदर्यताभी यालोकविषे तथावेदविषे प्रसिद्धहोहै ॥ यातैं एकमोक्षइच्छाकेनाशहुएभी याजीवोंकूं तासौंदर्यताज्ञानकरिकै पुनःदूसरीमोक्षइच्छाहो वेगो ॥ यातैं तामोक्षइच्छाकेप्रध्वंसाभावकेविधानणकरणेविषे तामनुभगवान्का तात्पर्यन हीं है॥किंतु विषयोंविषेआसक्तपुरुषोंका कर्मोंविषेअधिकारदेखिकै तामनुभगवान्नैं तिनविषयआसक्तपुरुषोंकूं कर्मोंविषेप्रवृत्तकरणेवासतै मोक्षकोनिंदाद्वारा तिनकर्मोंकोस्तुतिकरीहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ तामनुभगवान्केवचनका मोक्षइच्छाकेनिषेधविषे तात्पर्यनहीं है॥यह अर्थ तुमोनैंकिसप्रकारजान्याहै ॥ समाधान ॥ हेवादी तामनुभगवान्केवचनतैंही सोअर्थ हमो नैं निश्चयकऱ्याहै ॥ काहेतैं तामनुस्मृतिके द्वादशेअध्यायविषे तामनुभगवान्नैं यहवचनकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ सर्वभूतेषुचात्मानं सर्वभूतानिचात्मनि॥पश्यन्नात्मतयाजीवः स्वारा ज्यमधिगच्छति ॥ अर्थयह ॥ जोअधिकारीपुरुष याआत्मादेवकूं सर्वभूतोंविषे कारणरूपतैंअनुगत देखै है ॥ तथा तिनसर्वभूतोंका याअ धिष्ठानआत्माविषे कल्पितदेखै है॥सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मानंदरूपस्वाराज्यकूं आपणाआत्मारूपकरिकेप्राप्तहोवै है॥ १॥याप्रकारकेवचनोंकूं कथनकरताहुआ सोसर्ववेदांतकेअर्थकूंजानणेहारा सर्वज्ञमनुभगवान्तामुमुक्षुजनोंकूंमोक्षकोइच्छातैंनिवारण किसप्रकारकरेगा॥किंतु॥नहीं निवारण करेगा यातैं मोक्षकीनिंदाविषे तामनुभगवान्का तात्पर्यनहींहै॥किन्तुकर्मोंकोस्तुतिविषे तामनुभगवान्कातात्पर्य है॥तामनुभग वान्केतात्पर्यकूंनजाणिकरिकेतेविषयासक्तपुरुष तामनुभगवान्केवचनकूं मोक्षकीनिंदाविषेजोडैहैं॥ताकरिकैतेबहिर्मुखपुरुष केवलआपणो मूर्खताकूंहीं बोधनकरैहैं॥किंवा॥यहपुरुष जभी सर्वविषयोंकेभोगकरिकै वैराग्यकूंप्राप्तहोवैहै॥तभीही यहपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥याप्रकार कावचन जोपूर्व तिनविषयासक्तपुरुषोंनैं कथनकऱ्याथा ॥ सोतिनोंकाकहणाकैसाहै ॥ जैसे सन्निपातरोगकेवशतैं यहपुरुष अनेकप्रका रकेशब्दों का उच्चारणकरैहै ॥ तैसेकामरूपअग्निकेतापकरिकै उत्पन्नभईजा धातुवोंकीविषमता ताविषमतारूपदोषकेवशतैं सोति नोंकाकहणाहै ॥ यातैं सन्निपातरोगवालेपुरुषकेवचनकीन्याई सोतिनोंकावचन बुद्धिमान्पुरुषोंकूंग्रहणकरणेयोग्यनहीं है ॥ किंवा ॥

सर्वविषयोंकेभोगतैंअनंतर तिनविषयोंविषैवैराग्यकरिके याजीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकाअर्थ जोअंगीकारकरिये ॥तो यालोकविषे किसीभीजीवकूं तामोक्षकीप्राप्ति नहींहोणीचाहिये ॥ काहेतैं प्रथमतो मनुष्यादिकजीवोंकी चौराशीलक्षयोनियां हैं ॥ और तिनचौराशीलक्षयोनियोंविषेभी एकएकयोनिविषे अनंतव्यक्तियां हैं ॥ और तिनअनंतव्यक्तियोंविषेभी एकएकव्यक्तिविषे आपणीआपणी रुचिकेभेदकरिके अनेकविषयप्राप्तहैं॥ तिनसर्वविषयोंको एकमनुष्यशरीरविषेप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै॥ यातैं मोक्षकेकथनकरणेहाराशास्त्रअप्रमाणरूपहोवेगा ॥ किंवा ॥सर्वविषयोंकेभोगतैंअनंतर जोमोक्षकीप्राप्तिअंगीकारकरिये ॥ तो नरकविषेभीअनेकप्रकारकेविषयहैं ॥ यातैं सोमोक्षकीइच्छावालापुरुष तिनविषयोंकेभोगवासते नरकविषेभीप्राप्तहोवैगा॥और कंटकोंकेभक्षणतैंजोस्वादप्राप्तहोवैहै॥सोउष्ट्रजातिविषेही प्राप्तहोवैहै॥यातैं कंटकोंकेभक्षणजन्यस्वादकीप्राप्तिवासतेसोमोक्षकीइच्छावालापुरुष उष्ट्रशरीरकूंभीप्राप्तहोवैगा॥इसप्रकारतिसतिसजातिकेविषयभोगवासते सोमुमुक्षुजन तिसतिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवैगा॥किंवा॥स्वर्गादिकलोकोंविषेस्थितजेदुर्लभ्यविषयहैं॥जेविषयअनेकयज्ञोंकरिकेभीप्राप्तहोइसकैंनहीं ॥तिनसर्वविषयोंकूं कोनपुरुष प्राप्तहोइसकैगा॥किंतु तिनसर्वविषयोंकोप्राप्तिविषे कोईभीपुरुष समर्थ नहीहै शंका॥हेसिद्धांती यहअधिकारीपुरुष जभीउपासनाकरिकैहिरण्यगर्भभावकूंप्राप्तहोवै है॥तभीयहअधिकारीपुरुषकूं सर्वविषयभोगोंकी प्राप्तिहोवै है ॥ तहां सोअधिकारीपुरुष आपणेतैंभिन्न किसीभीभोग्यपदार्थकूंदेखतानहीं ॥ यातैं तिनसर्वविषयोंकेभोगअर्थहमअधिकारीजन ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिवासतेही प्रयत्नकरैंगे ॥ समाधान ॥ हेवादी ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिविषे याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेविघ्न होवै हैं ॥ यातैं नानाप्रकारकेउपायोंकरिके ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिही प्रथम दुर्लभहै ॥ ऐसेदुर्लभहिरण्यगर्भभावकी प्रतीक्षाकरिकै जोपुरुष याअधिकारीमनुष्यशरीरविषे मोक्षकेप्रयत्नतैंरहितहोवै है ॥ सोअधिकारीपुरुष सर्वबुद्धिमान्पुरुषोंकेउपहास्यका विषयहोवै है ॥ जैसे गृहकेसमीपस्थितमधुका परित्यागकरिके जोमूढबुद्धिपुरुष तामधुकीप्राप्तिवासते पर्वतऊपरजावै है ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष सर्वलोकोंकेउपहास्यकाविषयहोवै है ॥ किंवा ॥ जोपुरुष अहंग्रहउपासनाकरिके ताब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है॥तिसपुरुषकूं तहां मोक्षकीप्राप्तितो

अवश्यकरिकैहोवैहे ॥ यातें तामोक्षकेअधिकारीकावर्णनकरताहुआ यहमोक्षशास्त्र निष्प्रयोजनतारूपअप्रमाणताकूं प्राप्तहोवैगा ॥ और मोक्षशास्त्रविषे अप्रमाणताकथनकरणी अत्यंतअनुचितहै ॥ यातें सर्वविषयोंकेभोगतैंअनंतरही मोक्षकीप्राप्तिहोवैहे ॥ यहतिनवादियोंका कहणा अत्यंतविरुद्धहे ॥ किंवा ॥ विषयोंकेभोगतैं कामकीशांतिहोवैहे यहजोपूर्व तिनवादियों नें कथनकन्याथा ॥ सोतिनोंकाकहणाभी इतिहासपुराणादिकशास्त्रोंकेनजानणेकरिकैहे ॥ काहेतैं तिनशास्त्रोंविषेतो यहकथनकन्याहे ॥ बहुतविषयोंकेभोगकरिके यहकाम शांत कूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनविषयोंकेभोगतैं सोकाम पूर्वतैंभीअधिकवृद्धिकूंप्राप्तहोवैहे ॥ जैसे याछोकविषे घृतकाष्ठोंकेपावणेक रिकै यहअग्नि शांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनघृतकाष्ठोंकेपावणेकरिकै सोअग्नि पूर्वतैंभीअधिकवृद्धिकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तैसे बहुत विषयोंकेभोगणेकरिकै यहकाम शांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनबहुतविषयोंकेभोगकरिकै सोकाम पूर्वतैंभीअधिकवृद्धिकूंप्राप्त होवैहे ॥ किंवा ॥ यापृथ्वीविषे जितनेकीव्रीहियवादिकअन्नहैं ॥ तथा जितनेकीसुवर्णादिकधनहैं ॥ तथा जितनेकीगोअश्वादिकपशुहैं ॥ तिसपूर्णअन्नादिकपदार्थ जोकदाचित् किसीकामनावालेएकपुरुषकूंभीप्राप्तहोवैं ॥ तोभी ताकामनावालेपुरुषकेतृप्तिकरणेविषे तेसंपूर्णअ न्नादिकपदार्थ समर्थहोइसकेनहीं ॥ तो अल्पपदार्थोंकरिकै याजीवोंकेकामकीनिवृत्ति किसप्रकारहोवैगी ॥ किंतु नहींहोवैगी ॥ यातें बहुत विषयोंकाभोग यापुरुषोंकेवैराग्यकाकारणनहीं है ॥ किंतु उलटा सोबहुतविषयोंकाभोग यापुरुषोंकेरागकाहीकारणहे ॥ यातें तिनविषया सक्तपुरुषों नें जोपूर्वयहकह्याथा ॥ यहअधिकारीपुरुष प्रथमधर्मकूंकरेहे ॥ ताधर्म तैं धनादिरूपअर्थकूंप्राप्तहोवैहे ॥ ताधनादिरूपअर्थ तैं विषयभोगरूपकामकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताविषयभोगरूपकामतैंअनंतर वैराग्यकूंप्राप्तहोइके आत्मज्ञानद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवैहे ॥ सोयाप्रकार कावचन तिनकामीपुरुषों नें किसीशास्त्रप्रमाणकेअनुसार नहींकथनकन्याहे ॥ किंतु आपणेव्यामोहकेअनुसारही सोवचन तिनों नें कथन कन्याहे ॥ यातें तिनविषयआसक्तपुरुषोंका सोवचन बुद्धिमान्पुरुषों नें कदाचित्भी अंगीकारनहींकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विषय भोगकीप्राप्ति जोतारागकेनिवृत्तिकाकारणनहीं है ॥ तौ तारागकेनिवृत्तिका दूसराकौनकारणहे ॥समाधान॥हेशिष्य॥पुत्रस्त्रीधनादिकपदार्थों

विषे जोवारंवार दोषोंकादर्शनहै ॥ सोएकदोषदर्शनही यारागकेनिवृत्तिकाउपायहै ॥ तादोषदर्शनतैंविना दूसराकोईउपायताराग़केनिवृ
त्तिकाहैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे वामदेवादिकअधिकारियोंकेसंवादविषे सोविषयोंकेदोषदर्शनकाप्रकार हम
तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ तथा याआत्मपुराणकेचतुर्थअध्यायविषेभी दध्यङ्अथर्वणइंद्रकेसंवादविषे सोविषयोंकेदोषद
र्शनकाप्रकार हम तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरिआये हैं ॥ यातैं पुनःइहांकहणेका यद्यपि जरूरनहीं है ॥ तथापि ताकेस्मरणकरावणे
वासते पुनः संक्षेपतैं ताविषयोंकेदोषदर्शनकाप्रकार हम तुमारेप्रति कथनकरते हैं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ यामनुष्य
लोकतैंलेके ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंविषेस्थित जितनेकीविषयहैं ॥ तेसंपूर्णविषय अनात्मारूपहैं ॥ तथा नाशवानहैं ॥ तथा परिणामका
लविषे दुःखकेकारणहैं ॥ तथा पराधीनहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहपुरुष सर्वदाऐसीइच्छाकरै है ॥ जोयहधनादिकपदार्थ हमारेसमीप सर्वदाब
नेरहैं ॥ कदाचित्भी इनधनादिकपदार्थोंकानाश नहींहोवे ॥ तौभी यहधनादिकपदार्थ नाशहोइजावैहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहध
नादिकपदार्थ पराधीनहैं ॥ यापुरुषकेस्वाधीननहीं हैं ॥ और हेशिष्य ॥ ब्रह्मलोकविषेस्थित जोब्रह्माहै ॥ तथा याभूमिलोकविषेस्थित
जोश्वानादिकपशुहैं ॥ तथा नरकविषेस्थित जेनीचजीवहैं ॥ तिनसंपूर्णजीवोंकूं स्त्रीआदिकविषयोंकेभोग समानहीप्राप्तहैं ॥ तिनविषयभो
गोंविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहीं है ॥ और यहहमारेविषयभोग सर्वविषयभोगों तैं उत्कृष्टहैं याप्रकारकीविलक्षणता जोलोकोंकूं
आपणेआपणेविषयभोगोंविषे प्रतीतहोवैहै ॥ सोकेवल अहंममअभिमानकेवशतैं प्रतीतहोवैहै ॥ और हेशिष्य ॥ जैसेयाभूमिलोकविषे
स्थित श्वानकाशरीर आकाशादिकपंचभूतोंकरिकैरचितहै ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषेस्थित ब्रह्माकाशरीरभी तिनपंचभूतोंकरिकेहीरचितहै ॥
और जैसे याभूमिलोकविषे ताश्वानका जन्महोवैहै तथामृत्युहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषेभी ताब्रह्मका जन्महोवैहै तथामृत्युहोवै है ॥ और
जैसे याशरीरकेसंबंधतैं ताश्वानकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे शरीरकेसंबंधतैं ताब्रह्माकूंभी दुःखकीप्राप्तिहोवैहै॥हेशिष्य ॥ यहसंपूर्णविषय
भोग याजीवोंकेदुःखकाहीकारणहै ॥ यहवार्त्ता केवलहम नहींकहते ॥ किंतु संपूर्णब्रह्मवेत्तापुरुषोंका यहहीअभिप्रायहै ॥याकारणतैंही या

ज्ञवल्क्यादिकब्रह्मवेत्तापुरुष तिनविषयोंविषे अनेकप्रकारकेदोषोंकाविचारकरिकै तिनसर्वविषयोंका परित्यागकरतेभयेहैं॥ यातैं हेशिष्य॥ तापुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति रागकीउत्पत्तिद्वारा संसारकाहेतुहोणेतैं यद्यपि ताब्रह्मसाक्षात्कारकाहेतुनहीं है ॥ तथापिश्रुतिभगवतीनैं जोब्रह्मसाक्षात्कारकेसत्यादिकसाधनोंविषे तापुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिका कथनकर्‍याहै॥सो सकामपुरुषोंके स्वर्गादिकसुखवासतै कथनक र्‍याहै॥तात्पर्ययह॥जैसे पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति याजीवोंके संसारसंबंधीसुखकाकारणहोवैहै॥तैसे सत्यादिकसाधनभी याअधिकारीपुरुषों के ब्रह्मसाक्षात्कारकेहेतुहोवैहैं ॥ याप्रकार दृष्टांतकेबोधनकरणेवासतै ताश्रुतिनैं ज्ञानकेसत्यादिकसाधनोंविषे तापुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्ति का कथनकर्‍याहै॥किंवा॥यालोकविषे जोपदार्थ याजीवोंकूं रागकरिकैप्राप्तनहींहोवैहै॥तिसीपदार्थका शास्त्र विधानकरैहै ॥ और जोपदार्थ याजीवोंकूं रागकरिकैप्राप्तहोवैहै॥तापदार्थका शास्त्र विधानकरैनहीं॥जैसेयालोकविषे भोजननिद्रादिकपदार्थ याजीवोंकूं रागकरिकैहीप्राप्त हैं॥ यातैं तिनभोजननिद्रादिकपदार्थोंका शास्त्र विधानकरैनहीं॥ तैसे मनुष्य पशु पक्षी तैंआदिलेके सर्वजीवोंकूं पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति रागकरिकैहीप्राप्तहै ॥ यातैं तारागप्राप्तपुत्रादिकोंकेउत्पत्तिकूं साश्रुतिभगवती विधानकरैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् याअधिकारीपुरुषोंके प्रति मोक्षकीप्राप्तिवासतेश्रुतिनैं कथनकरेजेसत्यादिकधर्म हैं॥तिनसत्यादिकधर्मोंकेमध्यविषे रागकरिकैप्राप्त तथामोक्षविषेअनुपयोगी पुत्रा दिकप्रजाकेउत्पत्तिकाकथनकरणा अत्यंत असंगतहै॥ समाधान ॥ हेशिष्य॥मोक्षकीप्राप्तिवासतै सत्यादिकसाधनोंकाविधानकरणेहारीजा श्रुतिहै ॥ ताश्रुतिविषे स्थित जोप्रजननशब्द है ॥ सोप्रजननशब्दभी सत्यादिकशब्दोंकीन्याई आपणेअर्थका विधानहीकरैहै ॥ यहतुमा राकहणा हम अंगीकारकरै हैं ॥ परंतु ताप्रजननशब्दका पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्तिरूप अर्थ नहीं है॥किंतु विद्याका अध्यापनही ताप्रजन नशब्दकाअर्थ है ॥ काहेतैं यालोकविषे दोप्रकारकावंशहोवै है ॥ तहां एकतो शिष्योंकेप्रति विद्याअध्यापनकरिकैवंशहोवै है॥और दूसरा पुत्रादिकोंके जन्म करिकैवंशहोवै है ॥ यातैं यालोकप्रसिद्धितैं ताप्रजननशब्दकरिकै विद्याकाअध्यापनहीग्रहणकरणा ॥ शंका॥हेभगवन् ॥ सोप्रजनन शब्द जैसे पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकाविधान नहींकरैहै॥तैसे सोप्रजननशब्द विद्याअध्यापनकाभी विधानकरैनहीं ॥काहेतैं जोप

दार्थ रागकरिके तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिके नहींप्राप्तहोवे है ॥ सोपदार्थही शास्त्रकरिकै विधानकरणेयोग्यहोवैहै ॥ और जोपदार्थ पूर्व
रागकरिकै तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैप्राप्तहोवै है॥सोपदार्थ शास्त्रकरिकै विधानकरणेयोग्यहोवेनहीं ॥ जैसे क्षुधाकीनिवृत्तिवासतैं
अन्नादिकोंकाभक्षण रागकरिकै तथाप्रत्यक्षादिप्रमाणोंकरिके प्राप्तहै॥यातैं क्षुधाकेनिवृत्तिवासतै अन्नकेभक्षणका कोईशास्त्र विधानकैरनहीं॥
तैसे यहविद्याकाअध्यापनभी जीविकाकेवासतै ब्राह्मणोंकूं रागकरिकैहीप्राप्तहै॥तथा ॥याजनाध्यापनप्रतिग्रहैर्ब्राह्मणोधनमर्जयेत्॥अर्थयह॥
यज्ञकरावणा विद्यापढावणी प्रतिग्रहलेणा यातीनउपायोंकरिकै ब्राह्मण धनकूंसंपादनकरै ॥ यावचनकरिकैभी धनकीप्राप्तिवासतै
सोविद्याकाअध्यापन पूर्वप्राप्तहीं है ॥ यातैं ताप्रजननशब्दकारिकै विद्याअध्यापनकाविधान संभवैनहीं॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यहतुमारी
शंका तभीसंभवै ॥ जभी हम ताप्रजननशब्दकरिकै केवलविद्याअध्यापनकाहीग्रहणकरै ॥ परंतु ताप्रजननशब्दकरिकै हम केवलविद्या
अध्यापनका ग्रहणकरतेनहीं ॥ काहेतैं अद्वितीयआत्माकेस्वरूपकूंबोधनकरणेहारा जोयहब्रह्मविद्याकाप्रकरणहै ॥ ताप्रकरणविषे जैसे
सत्यादिकसाधनोंका उपयोगहै ॥ तैसे ताविद्याअध्यापनका उपयोगहै ॥ तैसे ताविद्याअध्यापनका उपयोगहै नहीं॥किंतु ताअध्यापनफल
भूत जोअद्वितीयब्रह्मविषे सर्ववेदांतशास्त्रकेतात्पर्यकानिश्चयरूपश्रवणहै ॥ताश्रवणकाही उपयोगहै॥याकारणतैं सोप्रजननशब्द लक्षणाप्रवृ
त्तिकरिकै ताश्रवणकाही बोधनकरैहै॥सोश्रवण रागकरिकै तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै पूर्व प्राप्तहैनहीं॥यातैं यापक्षविषे पूर्वउक्तदोष संभ
वैनहीं॥हेशिष्य॥पूर्वहमनैं प्रजननशब्दकरिकै पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति कथनकरीथी ॥तापूर्वपक्षविषेतौ तिनपुत्रादिकोंकीउत्पत्तिविषे यौव
नअवस्थाकी तथास्त्रीआदिकसाधनोंकी अवश्यकरिकैअपेक्षाहोवैहै॥औरअभी ताप्रजननशब्दकरिकैहमनैं श्रवणकाकथनकऱ्याहै॥यासिद्धां
तपक्षविषे ताश्रवणकीउत्पत्तिविषे यौवनअवस्थाकीतथास्त्रीआदिकसाधनोंकी अपेक्षाहैनहीं॥किंतु यापक्षविषेतौ ताश्रवणकीउत्पत्तिविषे या
अधिकारीपुरुषोंकूं केवलसंन्यासआश्रमकीही अपेक्षाहै॥तहांश्रुति॥संन्यस्यश्रवणंकुर्यात्॥अर्थयह॥यहअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकूंधार
णकरिकैही श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै॥इतनैंग्रंथकरिकै प्रजननरूपसप्तमसाधनका निरूपणकऱ्या ॥ अब आहित

विषे जिसका स्नेहनहींहोवे ॥ ऐसाब्राह्मण तावहूदकसंन्यासकूं ग्रहणकरे ॥ और सोवहूदकसंन्यासी यापंचमात्रावोंकूं सर्वदाधारणकरे
तहां एकतो तीनदंड १ और दूसरा जलकेराखणेवासते कमंडलु २ और तीसरा भिक्षाअन्नकेग्रहणकरणेवासते वस्त्र ३ और चतुर्थ
भिक्षाअन्नकेभोजनकरणेकापात्र ४ और पंचम जलकेशोधनकरणेकावस्त्र ५ यापंचमात्रावोंकूंधारणकरिकै सोवहूदकनामासंन्यासी कीट
कीन्याई शनैः शनैः पृथिवीऊपरविचरे॥और स्मृतियोंविषे जेवहूदकसंन्यासियोंकेधर्मकथनकरे हैं॥तिनसर्वधर्मोंकूं श्रद्धापूर्वककरे ॥ अब
हंससंन्यासके अधिकारीका तथाताकेधर्मोंका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ जोब्राह्मण विषयसुखोंविषेपरमवैराग्यकूंप्राप्तहोइकेभी कर्मोंविषे
किंचित्मात्रश्रद्धावालाहोवे ॥ सोब्राह्मण हंससंन्यासकूंग्रहणकरे ॥ और जैसे सामवेदकेअध्ययनकरणेहाराब्रह्मचारी शिखातैंरहित यज्ञोप
वीतकूंधारणकरे है ॥ तैसे सोहंससंन्यासीभी शिखातैंरहित यज्ञोपवीतकूंधारणकरिकै तथा एकदंडकूंधारणकरिकै कोटकीन्याई शनैः
शनैः पृथिवीऊपरविचरे ॥ तथा प्रणवादिकमंत्रोंकेजपतैंआदिलैके जितनेकोहंससंन्यासियोंकेधर्म स्मृतियोंविषेकहे हैं ॥ तिनसर्वधर्मोंकूं
श्रद्धापूर्वककरे ॥ अब परमहंससंन्यासके अधिकारीका तथाताकेधर्मोंका निरूपणकरे हैं॥ हेशिष्य जोब्राह्मण इसलोककेविषयसुखोंविषे
तथास्वर्गादिकलोकोंकेविषयसुखोंविषे परमवैराग्यकूंप्राप्तहुआहोवे॥और हृदयदेशविषेस्थित जो आनंदस्वरूपआत्माहै ताके प्राप्तिकीजिस
कूंनित्यहीइच्छाहोवे ॥ तथा कर्मोंकीवासनातैंरहितहोवे ॥ ऐसाब्राह्मणआपणेहस्तविषे वेणुकेएकदंडकूंधारणकरिकै परमहंससंन्यासकूंग्रह
णकरे ॥ और आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते नित्यही वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार कुटीचक बहूदक हंस परमहंस
यहचारिप्रकारकालिंगसंन्यास श्रुतिस्मृतियोंविषेकथनकऱ्याहे ॥ तिसचारिप्रकारकेसंन्यासविषेभी चतुर्थ परमहंससंन्यास सर्व तैंउत्कृष्ट
है॥ अब तासंन्यासआश्रमविषे सर्वधर्मोंतैंउत्कृष्टतास्पष्टकरणेवासते प्रथम उत्कृष्टपदार्थोंकीपरंपरा निरूपणकरे हैं॥ हेशिष्य जिनदेहधारी
जीवोंविषे प्राणोंकाश्वासप्रश्वासरूपव्यापार स्पष्टनहींहै ॥ ऐसेवृक्षादिकजीवों तैं स्पष्टप्राणव्यापारवालेकोटादिकजंतु श्रेष्ठहैं ॥ और तिनस्प
ष्टप्राणव्यापारवालेकीटादिकजंतुवोंतैंभी स्पष्टबुद्धिवालेसर्पादिकजीव श्रेष्ठहैं ॥ और तिनस्पष्टबुद्धिवालेसर्पादिकजीवोंतैंभी चारिपा

दवालेअश्वादिकपशु श्रेष्ठहैं ॥ और तिनचारपादवालेअश्वादिकपशुवोंतैंभी चारपादवालीगोवां श्रेष्ठहैं ॥ और तिनचारपादवाली गोवोंतैंभी दोपादवालेजीव श्रेष्ठहैं ॥ और तिनदोपादवालेजीवोंतैंभी शूद्रमनुष्य श्रेष्ठहैं ॥ कैसेहैंतेशूद्र ॥ जन्मतैंआदिलैके मरणपर्यंतजिनोंका एकहीवर्णआश्रमहोवे है ॥ और तिनशूद्रोंतैंभी वैश्य श्रेष्ठहैं ॥ और तिनवैश्योंतैंभी क्षत्रिय श्रेष्ठहैं ॥ और तिनक्षत्रियोंतैंभी ब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥ और यालोकविषे जैसे भूदेवब्राह्मण पूज्यहैं ॥ तैसे अग्निआदिकदेवताभी पूज्यहैं ॥ यातैं शास्त्रविषे तिनअग्निआदिकदेवतावोंकूं ब्राह्मणोंकेतुल्यही कथनकऱ्याहे ॥ और तिनजातिमात्रब्राह्मणोंतैंभी वेदपाठीब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥ और तिनवेदपाठीब्राह्मणोंतैंभी सामान्यतैंवेदकेअर्थकूंजानणेहारे ब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥ और तिन सामान्यतैंवेदअर्थकेजानणेहारेब्राह्मणोंतैंभी संशयविपर्ययतैंरहित वेदकेअर्थकूंजानणेहारे ब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥ और तिनसंशयविपर्ययतैंरहितब्राह्मणोंतैंभी आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूंकरणेहारे ब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥ और ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास याचारआश्रमोंविषेभी प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रमतैं गृहस्थआश्रम श्रेष्ठहे ॥ और तागृहस्थआश्रमतैंभी वानप्रस्थआश्रम श्रेष्ठहे ॥ और तावानप्रस्थआश्रमतैंभी संन्यास आश्रम श्रेष्ठहे ॥ और तासंन्यासआश्रमविषेभी प्रथम कुटीचकसंन्यासतैं बहूदकसंन्यास श्रेष्ठहे ॥ और ताबहूदकसंन्यासतैंभी हंससंन्यास श्रेष्ठहे ॥ और ताहंससंन्यासतैंभी परमहंससंन्यास श्रेष्ठहे ॥ हेशिष्य ॥ याचार प्रकारकेसंन्यासियोंविषेभी जेचतुर्थ परमहंससंन्यासिहैं ॥ तेपरमहंससंन्यासीतो ब्रह्मकेसाक्षात्कारवासतैंहीं तासंन्यासआश्रमकूंग्रहण करैहे ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीतिनपरमहंससंन्यासियोंकूं ब्रह्मवित् ब्रह्मनिष्ठ यानामकरिकैकथनकरे है ॥ हेशिष्य ॥ याआनंदस्वरूपआत्माकूं स्थूल सूक्ष्मकारण यातीनशरीरोंतैं भिन्नकरिके जानणेवासतेहीं श्रुतिनें यासंन्यासआश्रमका विधानकऱ्याहे ॥ और जोपुरुष तासंन्यास आश्रमकाधारणकरिकैभी ताआत्मविचारकूंनहींकरे हैं ॥ किंतु मोहकेवशहुआ जोपुरुष कर्मोंकूंहीकरैहे ॥ सोसंन्यासी पतितहोवैहे ॥ हेशिष्य ॥ यहवार्ता वार्तिकग्रंथकेकर्त्ता सुरेश्वराचार्यनेंभीकहीहे ॥ तहांश्लोक ॥ त्वंपदार्थविवेकाय संन्यासःसर्वकर्मणाम्॥श्रुत्याविधीयतेयस्मात् तत्त्यागीपतितोभवेत्॥अर्थयह॥श्रुतिभगवतीनें त्वंपदार्थआत्माकेविवेककरणेवासतैंहीं सर्वकर्मोंकासंन्या

स विधानकऱ्याहे ॥ यातें जोपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिके ताआत्मविचारकूंनहींकरैहै ॥ सोपुरुष पतितहोवैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ जोपुरुष तासंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिके निरंतर आत्माकाविचारकरैहै ॥ सोपुरुष ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ तहां श्रुति ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ॥ आत्मारूपब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरिके यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपहोहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषेकार्यकारणरूपकरिकै तथास्थूलसूक्ष्मरूपकरिके तथापरअपररूपकरिके जितनेकीपदार्थ प्रसिद्धहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ ब्रह्मरूपहीहैं ॥ तहांश्रुति ॥ सर्वंखल्विदं ब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहीहै ॥ ऐसे सर्वात्मारूपब्रह्मका जिनपुरुषोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकेसाक्षात्कारहोवैहै ॥ तेब्रह्म वेत्तापुरुषभी सर्वजगत्का आत्मारूपहीहोवैहैं ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषोंतें भूत भविष्यत् वर्त्तमान कोईभीपदार्थ उत्कृष्टनहींहै ॥ किंतु सोब्रह्मवेत्तापुरुषही सर्वतेंउत्कृष्टहै ॥ याकारणतें सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी सर्वजगत्तेंउत्कृष्टहै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे कार्यकारणरूपसर्व जगत्कीअपेक्षाकरिके सोब्रह्म परहै ॥ तैसे तापरब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारा यहसंन्यासभी तपादिकसर्वसाधनोंतें परहै ॥ और तासंन्यासतैंभिन्न जितनेकोतपादिकसाधनहैं ॥ तेसंपूर्णसाधन तासंन्यासतैंनिकृष्टहैं ॥ यहसंन्यासही तिनसर्वसाधनोंतें अधिकहै ॥ हेशिष्य ॥ तासंन्यासविषे ब्रह्मरूपताकेस्पष्टकरणेवासते तथा सर्वजगत्कीकारणरूपताकेस्पष्टकरणेवासते ते तित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकीयुक्ति कथनकरे हैं ॥ यालोकविषे जीवोंकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरणेहारा जोब्रह्मात्मसाक्षात्कारहै ॥ सोब्रह्मात्मसाक्षात्कार याअधिकारीपुरुषोंकूं संन्यासआश्रमकरिकेही प्राप्तहोवे है ॥ याकारणतें यहसंन्यास कारणब्रह्मरूपहै ॥ जिसमूलकारणरूपब्रह्मतें समष्टिसूक्ष्मभूतउपाधिवाला सूत्रआत्मा उत्पन्नहोवे है ॥ जासूत्रआत्माकूं शास्त्रविषे हिरण्यगर्भ ब्रह्मा यानामकरिकेकथनकरे हैं॥ओर ताहिरण्यगर्भरूपसूत्रआत्मातें समष्टिस्थूलउपाधिवाला प्रजापति उत्पन्नहोवे है॥जाप्रजापतिकूं श्रुतिभगवती विराट् संवत्सर आदित्य इत्यादिकनामोंकरिकेकथन करे है ॥ हेशिष्य ॥ याआदित्यमंडलविषे जो सुवर्णकेसमानवर्णवाला स्वयंज्योतिपुरुष स्थितहै॥ तास्वयंज्योतिपुरुषविषेही यासर्वजगत् कीकारणता प्रत्यक्षप्रतीतहोवे है काहेतें सोस्वयंज्योतिपुरुष आपणेशरीरतेंउत्पन्नहुईकिरणोंकरिके यापृथ्वीविषेस्थितसर्वजलकूं

आकर्षणकरे है ॥ और ताआकर्षणकरेहुएजलकूं पुनः आपणीकिरणोंद्वारा मेघोंविषेस्थापनकरे है ॥ और तिनमेघोंद्वारा तिसजलकूं याभूमिलोकविषे प्राप्तकरे है ॥ और ताजलतैं यापृथ्वीविषे वृक्षादिकस्थावरप्राणी उत्पन्नहोवे हैं ॥ तथा व्रीहियवादिकअनेकप्रकारकोओषधियां तथावनस्पतियां उत्पन्नहोवे हैं ॥ और तिनस्थावररूपओषधिवनस्पतियों तैं व्रीहियवादिअन्नउत्पन्नहोवे हैं ॥ और तिनव्रीहियवादिकअन्नों तैं यामनुष्यादिकसर्वप्राणियोंकी उत्पत्तिहोवे है ॥ तथा तिनसर्वजीवोंकेप्राणोंकाधारणहोवे है ॥ यातैं सोआदित्यमंडलविषेस्थित स्वयंज्योतिपुरुषही अन्नद्वारा यासर्वजगत्काकारणहे अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम ताव्रीहियवादिकअन्नविषे परंपरासंबंधकरिके स्वर्गादिकसुखको तथामोक्षको कारणता निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ ताव्रीहियवादिकअन्नते उत्पन्नभयेजेप्राणहैं ॥ तिनप्राणों तैं कर्मउपासनाकरणेकासामर्थ्यरूपबल उत्पन्नहोवे है ॥ और ताबलतैं शुद्धकर्मरूपतप उत्पन्नहोवे है ॥ जिसतपकूं भृगुऋषिनैं वरुणपिताकेउपदेशतैं संपादनकर्‍याहै ॥ और ताशुद्धकर्मरूपतपतैं परलोकविषे आस्तिकबुद्धिरूपश्रद्धा उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताश्रद्धातैं शास्त्रकेअर्थधारणकरणेविषेसमर्थबुद्धिरूपमेधा उत्पन्नहोवैहै ॥ और तामेधातैं मनकेरोकणेविषेसमर्थ बुद्धिकीवृत्तिरूपमनीषा उत्पन्नहोवैहै ॥ जिसमनीषाकरिके रोक्याहुआयहमन सर्वलौकिकपदार्थोंकापरित्यागकरिके केवल शास्त्रकेअर्थविषेही प्रवृत्तहोवैहै ॥ और तामनीषातैं शास्त्रअर्थकीवासनाकरिकेयुक्त शुद्धमन उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताशुद्धमनतैं आत्माकारवृत्तिरूप शांति उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताशांतितैं आत्माकेआनंदादिकस्वरूपकूंनिर्णयकरणेहारा अंतःकरणकीवृत्तिविशेषरूपचित्त उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताचित्ततैं गुरुउपदिष्टवेदवाक्योंकेअर्थकूंविषयकरणेहारीस्मृति उत्पन्नहोवैहै ॥ और तास्मृतितैं शोधिततत्त्वपदकेअर्थकाप्रकाशरूपस्मरउत्पन्नहोवैहै ॥ और तास्मरतैं ब्रह्मात्माकापरोक्षज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ और तापरोक्षज्ञानतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअपरोक्षज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोब्रह्मरूपसंन्यास ताव्रीहियवादिकअन्नका कारणरूपभीहै तथाफलरूपभीहै ॥ तहाँ आदित्यमंडलस्थपुरुषरूपकारिकैतो सोब्रह्मरूपसंन्यास ताअन्नका कारणरूपहै॥ और प्राणादिकपरंपराकरिकैतो सोब्रह्मरूपसंन्यास ताअन्नकाफल

अग्निहोत्र यज्ञ यातीनसाधनोंका फलसहित निरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंविषे जिसपुरुषनैं वेदकाअध्ययनक
न्याहे ॥ तथा जोपुरुष स्त्रीवालाहे ॥ तिसपुरुषकूंही आहितअग्निविषे तथाअग्निहोत्रविषे तथायज्ञविषे अधिकारहोवे है॥वेदअध्ययनादिकों
तैंरहितपुरुषकूं तिनोंविषेअधिकारहोवेनहीं ॥ यातैं तेतीनोंसाधन वेदअध्ययनकी तथास्त्रीआदिकोंकी अवश्यकरिकेअपेक्षाकरे हैं ॥ का
हेतें श्रुतियोंविषे तथा स्मृतियोंविषे याप्रकारकह्याहे॥ जोब्राह्मण तथाक्षत्रिय तथावैश्य स्त्रीवालाहोवे॥तथा पुत्रवालाहोवे॥तथाजिसकेकेश
कृष्णवर्णवालेहोवें ॥ तथा अंधत्वबधिरत्वादिकदोषों तैंरहितहोवे ॥ तथा वेदकेकर्मकांडविषेकुशलहोवे ॥तथाधनादिकसंपदावालाहोवे ॥
ऐसाब्राह्मण तथाक्षत्रिय वैश्य शास्त्रउक्तरीतिसैं दक्षिणाअग्नि गार्हपत्य आहवनीय सभ्य आवसथ्ययापंचअग्नियोंकूं आपणेगृहविषेस्थापन
करैं॥अथवा दक्षिणाअग्नि गार्हपत्य आहवनीय यातीनअग्नियोंकूं स्थापनकरे ॥ कैसे हैं तेपंचअग्नि श्रुतिउक्तसर्वकर्मोंकीसिद्धिकरणेहारे हैं ॥
याकारणतैं तिनअग्नियोंकूं शास्त्रविषे श्रौतअग्नि यानामकरिकेकथनकरे हैं॥हेशिष्य अथर्वणवेदकेअध्ययनकरणेहारे कोईकब्राह्मणतो एकऋ
षिनामा एकअग्निकूंही श्रौतअग्निकहे हैं॥ताएकऋषिनामाअग्निकाग्रहणतो विवाहकालतैंलेकरिकेही कथनकरे हैं॥और हेशिष्य॥कोईकगृह्य
सूत्रकारतो याप्रकार कथनकरे हैं॥जिसपुरुषकूं दक्षिणाअग्निआदिकश्रौतअग्नियोंकेग्रहणकरणेकासामर्थ्यनहींहोवे॥सोपुरुषएक औपासनना
मास्मार्तअग्निकाग्रहणकरे परंतु अग्निआधानतैंविनागृहस्थनें कदाचित्भीनहींरहणा॥इतनैंकरिके आहितअग्नियोंकास्वरूपनिरूपणकऱ्या॥
अबतिनअग्नियोंकाफल निरूपणकरेहैं॥हेशिष्य॥जेपुरुष तिनआहितअग्नियोंकरिके केवलकर्मोंकूंहीकरेहैं॥तेपुरुष इसलोकविषेतोमहान्की
र्तिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और मरणतैं अनंतर स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और जेपुरुष तिनआहितअग्नियोंकरिके उपासनासहितकर्मोंकूंकरे हैं ॥
तेपुरुषभी इसलोकविषेतो महान्कीर्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और मरणतैंअनंतर देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अब अग्निहोत्ररूपक
र्मसाधनका फल सहित निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥पूर्वउक्तआहितअग्नियोंविषे जोसायंकालमें तथाप्रातःकालमें आहुतिकापावणाहे याका
नाम अग्निहोत्रहै॥ताअग्निहोत्ररूपकर्मकूं यहगृहस्थपुरुषजबपर्यंतजीवेतबपर्यंतकरे॥याप्रकारकाविधानयद्यपिश्रुतिनैंकऱ्याहे॥तथापिताश्रुति

कायहअभिप्रायहै॥संन्यासकाकारणभूत जोवैराग्यहै॥सोवैराग्य जबपर्यंत यापुरुषकूं नहींप्राप्तभयाहै ॥ तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुषताअ
ग्निहोत्रकूं अवश्यकरिकेकरे ॥ और याअधिकारीपुरुषकूं जभी तिनविषयोंविषेवैराग्यहोवैहै ॥ तभी सोअधिकारीपुरुष ता अग्निहोत्रकापरि
त्यागकरिके संन्यासआश्रमकाहीग्रहणकरे ॥ अब ताअग्निहोत्रकाफल निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ गृहस्थपुरुषोंकेगृहविषे कंडनी दलनी
चुल्ली पेषणी मार्जनी यहपंचजीव हिंसाकेस्थानरहे हैं ॥ तहां जिसविषे व्रीहियवादिकअन्न कूटेजावैहैं ॥ ऐसीजोउलूखलीहै ताकानाम कंड
नीहै ॥ औरशाकादिकवस्तुवोंके भेदनकरणेकाजोसाधनहै ताकानाम दलनीहै ॥ और अन्नके पकावणेकाजोस्थानहै,ताकानाम चुल्लीहै
और अन्नके पीसणेकाजोसाधनहै ताकानाम पेषणीहै ॥ और गृहकेशुद्धकरणेका जोसाधनहै ताकानाम मार्जनीहै ॥ यापाचोंकरिके
जीवोंकोअवश्यहिंसाहोवै है॥ताहिंसाकरिकेउत्पन्नभयेजेपापहैं॥ तेपापकर्म ताअग्निहोत्रवालेगृहस्थकूंप्राप्तहोवैनहीं॥किंवा॥यहअग्निहोत्रीपुरु
ष सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे जोअग्निविषे आहुतिपावै है॥साआहुति ताअग्निद्वारा आदित्यकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताआहुतिविशिष्टआदि
त्यतें जलकोवृष्टि उत्पन्नहोवै है॥और ताजलकोवृष्टितें व्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोवै हैं ॥ और ताअन्नतें मनुष्यादिकप्रजा उत्पन्नहोवै है॥
यारीतिसें सोअग्निहोत्रीपुरुषही सर्वजगत्काकारणहोवै है॥तथा सर्वजगत्का पालनकरे है॥तात्पर्ययह ॥ सर्वजगत्कीतृप्तिकरणेतें जोपुण्य
उत्पन्नहोवै है॥सोपुण्य ताअग्निहोत्रीपुरुषकूं नित्यहीप्राप्तहोवै है ॥किंवा॥यालोकविषे जैसे क्षुधाकरिकेआतुरहुएबालक आपणीमाताकूं आश्र
यणकरे हैं॥तैसेस्वर्गविषेस्थित इंद्रादिकसर्वदेवता याअग्निहोत्रीपुरुषकूंही आश्रयणकरे हैं ॥ याकारणतें सोअग्निहोत्रीपुरुष तिनइंद्रादिक
देवतावोंकूं माताकेसमानहै॥किंवा ॥ यहअग्निहोत्रीपुरुष इसलोकविषेभी महान्कीर्तिकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथा धनादिकपदार्थोंकूंप्राप्तहोवै
है ॥ तथा दर्शपूर्णमासादिकयज्ञोंकेकरणेका अधिकारीहोवै है ॥ और सोअग्निहोत्रीपुरुष मरणतेंअनंतर स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवै
है ॥ और सर्व देवता ताकूं नमस्कारकरे हैं ॥ और जोपुरुष उपासनासहित अग्निहोत्रकूंकरे है ॥ सोपुरुषतो मरणतेंअनंतर देवयानमा
र्गद्वारा ब्रह्मलोककूंही प्राप्तहोवै है॥अब यज्ञरूपदशमसाधनका फलसहित निरूपणकरे हैं॥हेशिष्य ॥पूर्वउक्तआहितअग्नियोंकरिकेसिद्धहोणे

हारे जेअश्वमेधादिककर्म हैं तिनोंकानाम यज्ञहै ॥ और दानकरणेकरिके जिसफलकीप्राप्ति पूर्व कथनकरिआयेहैं ॥ तिसीफलकीप्राप्ति यज्ञकरिकेहोवे है ॥ यातें यज्ञकेफलका इहां विस्तारतेंनिरूपणकरतेनहीं ॥ अब मानसरूप एकादशेसाधनका फलसहितनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ धर्म सत्य तप दम शम दान प्रजनन आहितअग्नि अग्निहोत्र यज्ञ यहपूर्वकथनकरेजेदशसाधनहैं ॥ और आगे जिससन्यासका कथनकरैंगे ॥ यहसंपूर्णसाधन एकमानससाधनतेंहीं उत्पन्नहोवेहैं ॥ तामानससाधनतेंविना तेधर्मादिकसाधन फलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ इहां धैर्ययुक्तमनकानाम मानससाधनहै ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जिसपुरुषकामन धैर्यकरिकेयुक्तहोवेहै ॥ सोपुरुषही तिनधर्मादिकसाधनोंकूं संपादनकरिसकैहै ॥ और जिसपुरुषकामन धैर्यतेंरहित अत्यंतदीनहोवेहै ॥ सोदीनपुरुष तिनधर्मादिकसाधनोंकूं संपादनकरिसकैनहीं ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिके यामानससाधनविषेही तिनधर्मादिकसाधनोंकोकारणतासिद्धहोवे है ॥ हेशिष्य ॥यालोकविषे प्रवृत्तिरूप तथानिवृत्तिरूप जितनेकीवैदिककर्म हैं तथा जितनेकलौकिककर्म हैं तेसंपूर्णकर्म यामनकेहीअधीनहैं ॥ मनतेंविना कोईभीकर्म सिद्धहो इसकैनहीं ॥ याकारणतेंही श्रुतिनें ताधैर्ययुक्तमनकूं एकादशवांसाधनरूपकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ यहमानससाधनहीं सर्वसाध नोकामूलहै याअर्थविषे हिरण्यगर्भहदिष्टांतहै ॥ काहेतें सोहिरण्यगर्भभगवान् याधैर्ययुक्तमनकेप्रभावतेंही सृष्टिकेआदिकालविषे यासर्व स्थूलजगत्कूंउत्पन्नकरताभयाहै ॥ तथा आपणेस्मरणमात्रकरिके ॥ भक्तजनोंकेसर्वपापकर्मोंकानाशकरैहै॥तथा सर्वजगत्करिके स्तुतिक रनेयोग्यहै॥तथा सर्वजगत्करिके पूजणेयोग्यहै॥हेशिष्य॥ताधैर्ययुक्तमनकेप्रभावतें जैसे सोहिरण्यगर्भ सर्वतेंअधिकताकूंप्राप्तभयाहै ॥ तैसे दूसरेभीअनेकमुनिजन तथाअनेकदेवता तथाअनेकमनुष्यताधैर्ययुक्तमनकेप्रभावतें श्रेष्ठताकूंप्राप्तहोतेभयेहैं॥याकारणतेंही श्रुतिभगवतीनें मोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंकेप्रति तथास्वर्गकीइच्छावान्पुरुषोंकेप्रति तिनधर्मादिकसर्वसाधनोंतें तामानससाधनकीश्रेष्ठता कथनकरीहै॥यातें याअधिकारीपुरुषनें तामानससाधनकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ अब संन्यासरूपद्वादशेसाधनकी सर्वसाधनोंतेंउत्कृष्टतावर्णनकरणे वासते प्रथम तासंन्यासकेभेदकानिरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥सोसंन्यासआश्रम दोप्रकारकाहोवेहै॥तहां एकतौ लिंगसंन्यासहोवेहै ॥ और दूसरा

अलिंगसंन्यासहोवैहे ॥ तहां दंडादिकचिह्नधारणपूर्वक जोसंन्यासहे ॥ ताकानाम लिंगसंन्यासहे ॥और दंडादिकचिह्नतैंरहित जोसंन्यासहै ताकानाम अलिंगसंन्यासहे तहां प्रथम अलिंगसंन्यासविषेतो एकब्राह्मणकाही अधिकारहोवैहे ॥ क्षत्रियादिकोंका ताकेविषे अधिकारहे नहीं ॥ और दूसरे अलिंगसंन्यासविषेतौ क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री इत्यादिकसर्वोंकाअधिकारहे ॥ और तिनलिंगसंन्यासियोंके तथाअलिंग संन्यासियोंके एकदंडादिकचिह्नकूंछोडिके दूसरे भिक्षाअटनादिकबाह्यधर्म तथा शम दम अहिंसादिक अंतरधर्म तुल्यहीहोवैहैं ॥ हेशिष्य सोप्रथम लिंगसंन्यासभी दोप्रकारकाहोवैहे॥तहां एकतो त्रिदंडहोवैहे॥और दूसरा एकदंडहोवे हे॥तहां जिससंन्यासविषे तीनदंडोंकाधारण होवे ॥ तासंन्यासकानाम त्रिदंडसंन्यासहे॥और जिससंन्यासविषे एकदंडकाधारणहोवे॥तासंन्यासकानाम एकदंडसंन्यासहे ॥ हेशिष्य ॥ सोत्रिदंडसंन्यासभी दोप्रकारकाहोवैहे ॥ तहां एकतो कुटीचकनामा त्रिदंडसंन्यासहोवैहे ॥ और दूसरा बहूदकनामा त्रिदंडसंन्यासहोवैहे॥ हेशिष्य ॥ जैसे त्रिदंडसंन्यास दोप्रकारकाहोवैहे ॥ तैसे सोएकदंडसंन्यासभी दोप्रकारकाहोवैहे ॥ तहां एकतो हंसनामा एकदंडसंन्यास होवे हे ॥ और दूसरा परमहंसनामा एकदंडसंन्यासहोवैहे ॥ अब प्रथम कुटीचकसंन्यासकेअधिकारीका तथाताकेधर्मोंका निरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य ॥जोब्राह्मण पुत्रवालाहोवे ॥ तथा गृहवालाहोवे ॥ तथा धनवान्होवे ॥ तथा स्त्रीतैंरहितहोवे॥तथा जरा अवस्थाकरिकेयुक्तहोवे॥ तथा व्याधिकरिकेग्रस्तहोवे॥तथा पुत्रादिकोंविषे स्नेहवालाहोवे ॥ तथा भिक्षाभोजनकरणेविषे असमर्थहोवे ॥ तथा जिसकाशरीर क्लेश कूंनहींसम्हारिसकताहोवे ॥ ऐसाब्राह्मण त्रिदंडसंन्यासकूंग्रहणकरै॥और आपणेगृहविषेही कुटुंबतैंपृथक् कुटीबांधिके ताकेविषेनिवासकरै॥ और आपणेपुत्रोंतैंही अन्नवस्त्रादिकलेवे ॥ और प्रणवादिकमंत्रोंकेजपतैंआदिलेके जितनेकी स्मृतियोंविषे कुटीचकसंन्यासीकेधर्म कथन करेहैं॥तिनसर्वधर्मोंकूं सावधानहोइकेकरै॥अब बहूदकसंन्यासके अधिकारीका तथाधर्मोका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जिसब्राह्मणकीस्त्री मृत्युहुईहोवे॥और पुनःस्त्रीकेसंपादनकरणेविषे जाकीइच्छानहींहोवे॥अथवा जिसब्राह्मणकीस्त्री वृद्धअवस्थावालीहोवै॥तथा जिसब्राह्मणकी सर्वदा ब्रह्मचर्यधर्मविषेप्रीतिहोवै॥तथा संध्याउपासनादिककर्मोंविषे जाकीश्रद्धाहोवै॥तथा जराअवस्थाकरिकेयुक्तहोवे तथा पुत्रादिकबांधवों

रूपहै ॥ इसप्रकार ताव्रीहियवादिकअन्नकूं कारणरूपतैं तथाफलरूपतैं ताब्रह्मकेसंबंधवालाजानिके जेअधिकारीपुरुष अतिथिकेप्रतिता अन्नकादानकरै हैं॥तेअधिकारीपुरुष ताअन्नके पूर्वउक्तसर्वकारणोंका तथासर्वकार्योंका दानकरै हैं॥ शंका ॥ हेभगवन् कार्यकेदानकियेतैं ताकार्यकेसर्वकारणोंकादान तथाकारणकेदानकियेतैं ताकारणकेसर्वकार्योंकादान संभवतानहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जोकोईपुरुष किसीब्राह्मणकेप्रति याप्रकारकादानकरै है ॥ यहहमाराआम्रकावृक्ष जबपर्यंतरहै ॥ तबपर्यंत यावृक्षकेफल आपनैंग्रहणकरणे यास्थलविषे कार्यरूपफलोंकेदानकियेतैं तिनफलोंकेकारणरूपवृक्षकाभीदानहोवैहै ॥ यातैं कार्यकेदान कियेतैं कारणकादान संभवै है ॥ और जोपुरुष ब्राह्मणकेप्रति गौदानदेवै है ॥ सोपुरुष ताकारणरूपगौदानकियेतैं तागौकेकार्यरूपदुग्धादिकोंकाभी दानकरै है॥ यातैं कारणकेदानकियेतैं कार्यकादानभी संभवैहै ॥ तैसे अन्नकेदानकियेतैं ताअन्नके पूर्वउक्तसर्वकारणोंका तथा सर्वकार्योंका दान संभवैहै ॥ और हेशिष्य ॥ पूर्वउक्तअन्नमयकोशतैं प्राणमयकोश उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताप्राणमयकोशतैं मनोमयकोश उत्पन्नहोवै है ॥ और तामनोमयकोशतैं विज्ञानमयकोश उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताविज्ञानमयकोशतैं आनंदमयकोश उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार पंचकोशरूपकरिके यह अन्नहीस्थितहोवैहै ॥ याकारणतैंभी यहअन्नही सर्वजगत्‌काकारणहै ॥ हेशिष्य ॥ श्रुतिविषे विज्ञानमयकोशतैं जोआनंदमयकोशकी उत्पत्ति कथनकरीहै॥ताकायहअभिप्रायहै॥यहआनंदमयकोश पुच्छप्रतिष्ठाभूतशुद्धब्रह्मरूपकरिके यद्यपि उत्पत्तिनाशतैंरहितहै॥तथापि प्रिय मोद प्रमोद इत्यादिकवृत्तिविशिष्टरूपकरिके सोआनंदमयकोश उत्पत्तिनाशवालाहै ॥ यातैं ताप्रियादिकवृत्तिविशिष्टरूपकूंअंगीकारकरिके ताश्रुतिनै विज्ञानमयकोशतैं आनंदमयकोशकीउत्पत्ति कथनकरीहै॥अब ताआनंदमयपुरुषविषे वास्तवतैं उत्पत्तिनाशकाअभाव स्पष्टकरणेवासते प्रथम ताआनंदमयपुरुषकेविभूतिका निरूपणकरै हैं ॥हेशिष्य॥ सोएकहीआनंदमयपुरुष भूमि अंतरिक्ष स्वर्ग पूर्वादिकचारदिशा अग्निकोणादिकचारिउपदिशा या पंचरूपोंकरिके पंच प्रकारका उत्पन्नहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ ताआनंदमयपुरुषके यहकेवल पंचरूप नहीं हैं॥किंतु जैसे तंतुवोंकरिके यहपट सर्वओरतैंओतप्रोतहोवैहै॥तैसे यातीनलोकोंविषे भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे

स्थित जितनाकीस्थूलसूक्ष्मजगवहै ॥ सोसंपूर्णजगत् याआनंदस्वरूपआत्माकरिकेही व्याप्तहै ॥ यातैं सोआनंदस्वरूपआत्माही सर्वजगत् रूपहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्माही विचाररूपजिज्ञासाकरिके प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्माही फलरूपकरिके कर्मोतैं उत्पन्नहोवे है ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्माही सुवर्णादिकसमीचीनवस्तुवोंविषे अंशरूपकरिकेस्थितहोवे है ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्मा,याअधिकारीपुरुषोंकूं श्रद्धाकरिके तथासत्यकरिके प्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआनंदस्वरूपआत्माकूं श्रद्धासत्य यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और याआनंदस्वरूपआत्मा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं महस्वत् यानामकरिकेकथनकरेहै ॥ और भृगुऋषीनैं वरुणपिताकेउपदेशतैं जिसविचाररूपतपकूं कऱ्याथा ॥ तिसतपतैंभी यहआनंदस्वरूपआत्मा श्रेष्ठहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं तपसोवरिष्ठ यानामकरिकेकथनकरे है ॥ इतनैंकरिके ताआनंदस्वरूपआत्माकामहिमा कथनकऱ्या ॥ अब ता आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानकाफल निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेआनंदस्वरूपपरमात्मादेवकूं जभी यहअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेसाक्षात्कारकरे है ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष जीवतअवस्थाविषेतो अविद्यादिकसर्वक्लेशोंतैंरहितहोवे है॥और याशरीरकेमरणतैंअनंतर पुनःमृत्युकूंप्राप्तहोवैनहीं॥हेशिष्य॥जिसआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइके यहअधिकारी पुरुष पुनःमृत्युकूंनहींप्राप्तहोवे है॥सोअज्ञानकेनाशकरणेहारा आत्मज्ञान याजीवोंकूं इसलोकविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे जोप्राप्तहोवे है॥सो संन्यास केप्रभावतैंही प्राप्तहोवैहै॥याकारणतैंब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष तासंन्यासकूं पूर्वउक्तसत्यादिकसर्वसाधनोंतैं श्रेष्ठकहैहैं॥अब संन्यासकरिके प्राप्तहोणेयोग्य जो आत्माहै ताकेस्वरूपका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोस्वयंप्रकाश आनंदस्वरूपआत्मा संन्यासकरिकेप्राप्तहोवे है सोआत्मादेव उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ यातैंसत्यरूपहै ॥ और सोआत्मादेव दुर्विज्ञेयहै यातैंसूक्ष्मरूपहै ॥ और सोआत्मादेव आकाशादिकोंकाभीअधिष्ठानहै यातैं विभुरूपहै ॥ और सोआत्मादेव याशरीरकेअंतर प्राण अपानका नियंतारूपकरिकेस्थितहै ॥ तथा प्राण अपान यादोनोंके व्यानरूपसंधिकूंकरताहुआ सोआत्मादेव परिच्छिन्नतारूप वामनसंज्ञाकूंप्राप्तहोवे है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआ

त्मादेवकूं प्राणसंधाता यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ पुनःसोआत्मादेव केसाहे ॥ ब्रह्मरूपहे ॥ तथा सर्वजगत्का पालनकरणेहाराहे ॥ तथा सूर्यचंद्रमादिकोंकूं तेजकीप्राप्तिकरणेहाराहे ॥ तथा ब्राह्मणादिकोंकूं वर्चसकीप्राप्तिकरणेहाराहे ॥ इहां जो ज्योतिपदार्थ दाहका तथाप्रकाशका कारणहोवैहे ॥ ताज्योतिपदार्थकानाम तेजहे ॥ जैसे सूर्यचंद्रमादिकहैं ॥ और जो ज्योतिपदार्थ शरीरकेसौंदर्यताकाकारणहोवैहे ॥ ताज्योतिपदार्थकानाम वर्चसहे ॥ हेशिष्य ॥ यहआत्मादेव तिनब्राह्मणादिकोंकूं जो वर्चसकीप्राप्तिकरैहे ॥ सोजठराग्निरूपकरिकेकरेहे ॥ काहेतें यहजीवोंकाजठराग्नि जभी अन्नकूंपचावैहे ॥ तभीही रसादिकधातुद्वारा याशरीरोंविषे सौंदर्यताकाकारण वर्चसहोवैहे ॥ जावर्चसकरिके यहपुरुष रोगतेंरहितहोवे ॥ तथा सुंदरकांतिवालाहोवैहे ॥ और हेशिष्य ॥ सुवर्णदर्पणादिकस्वच्छपदार्थोंविषे जोसूर्यकेकिरणोंकेसंबंधकरिके परप्रकाशज्योतिरूप उत्पन्नहोवे हे ताकानाम शुभ्रहे ॥ ताशुभ्रकेदेणेहाराभी यहआत्मादेवही हे॥ अथवा ॥ सूर्यचंद्रमाकाजोतेजहे ताकानाम शुभ्रहे ॥ और अग्निकाजोतेजहे ताकानाम वर्चसहे जोआनंदस्वरूपआत्मा तासूर्यचंद्रमाकूं तथाअग्निकूं तातेजकीप्राप्तिकरैहे॥सोईहीआनंदस्वरूपआत्मा याअधिकारीपुरुषोंकूं संन्यासकरिकेप्राप्तहोणेयोग्यहे ॥ हेशिष्य ॥ अहिंसासत्यादिकपंचयम यासंन्यासके समीपरहैहैं॥याकारणतें श्रुतिभगवती तासंन्यासकूं उपयाम यानामकरिकेकथनकरैहे ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा ताउपयामरूपसंन्यासकरिकेही प्राप्तहोवैहे॥ याकारणतें श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं उपयामगृहीत यानामकरिकेकथनकरैहे॥ हेशिष्य॥यहआनंदस्वरूपआत्मा स्वप्रकाशहे॥याकारणतें श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं मह या नामकरिकेकथनकरैहे ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा सत्चित्आनंदस्वरूपहे॥याकारणतें श्रुतिभगवती याआत्मादेवकूंब्रह्म यानामकरिकेकथनकरैहे॥हेशिष्य॥जाबालआदिकउपनिषदोंविषे जोसंन्यासग्रहणकरणेकाप्रकार निरूपणकऱ्याहे ॥तिसप्रकारसें संन्यासआश्रमकाग्रहणकरिके तथाजीवब्रह्मकेअभेदकूंबोधनकरणेहारा जोप्रणवमंत्रहे ताकूंभलीप्रकारजानिकरिके तथाहंसादिकउपनिषदोंकरिकेकथनकऱ्याजोयोगहे तायोगकूंआश्रयणकरिके यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतें आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकेंचिंतनकरै॥ताचिंतनकरिके यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मभावकूं

प्राप्तहोवैहै॥अब कथनकरीहुई ब्रह्मविद्याका फलनिरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥तिन तित्तिरिनामाब्राह्मणोंनैंआपणेशिष्योंकेप्रति जायहब्रह्मविद्या कथनकरीहै॥सायहब्रह्मविद्या कैसीहै॥अज्ञानरूपमोहकेनाशकरणेहारीहै॥और अग्निआदिकदेवताभी निधिकीन्याई जिसब्रह्मविद्याका रक्षणकरैहैं॥याकारणतैं साब्रह्मविद्या अग्निआदिकदेवतावोंकाभीगुह्यधनहै॥ऐसीब्रह्मविद्याकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं निश्चयकरैहै॥सोअधिकारीपुरुषही ताअद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं ताब्रह्मभावकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै॥सोअधिकारीपुरुष सर्वप्रकारतैं याब्रह्मविद्याका संपादनकरे ॥ हेशिष्य ॥ यहआत्मज्ञानरूप ब्रह्मविद्या आपणीसमीपताकरिकै याकार्यसहितअज्ञानकानाशकरैहै ॥ याकारणतैं यहउपनिषद्शब्द ताब्रह्मविद्याकाही वाचकहै ॥ और ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरणेहारा यहतैत्तिरीयकनामाग्रंथहै ॥ याकारणतैं यातैत्तिरीयकनामाग्रंथकूंभी शास्त्रवेत्तापुरुष उपनिषद्नामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ यजुर्वेदकेतित्तिरिनामाशाखाविषे तिनतित्तिरिनामाब्राह्मणों नैं आपणेशिष्योंकेप्रति जाब्रह्मविद्या कथनकरी है ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे निरूपणकरी है ॥ इसब्रह्मविद्यातैंअधिककोईब्रह्मविद्या ता तित्तिरिशाखाविषेहैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ यानारायणउपनिषद्केअंतविषे ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेज्ञाननिष्ठारूपयज्ञके जो आत्मा यजमानहै श्रद्धा पत्नीहै इत्यादिअंग निरूपणकरे हैं ॥ सोआत्मसाक्षात्कारवासतै नहींकथनकरे हैं ॥ किंतु मंदबुद्धिपुरुषोंके चित्तकीशुद्धिकरणेवासतैं उपासनाकाप्रकार कथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ तित्तिरिनामाब्राह्मणों नैं आपणेशिष्योंकेप्रति जाब्रह्मविद्याकथनकरीथी सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोहमारेप्रतिकहो ॥ इतिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे तैत्तिरीयसारार्थप्रकाशो नाम दशमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १० ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ छ ॥ छ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

...یک دل تھا وہ بھی ناکامی نے بیدل کر دیا!

(جناب پنڈت ... صاحب ...)

کس نے میرے دل میں پیدا شوق منزل کر دیا	...ر کو اور مشکل کر دیا
سازِ محفل ہو کے مجھ کو سوزِ محفل کر دیا	...تو نے لے دل کر دیا
میں نے جب لے دل بپا شورِ سلاسل کر دیا	...نے گا تیرا آزادی کے راگ
میری نظروں سے مگر کیوں دور ساحل کر دیا	...میں ڈوبتے کا غم نہیں
دل نے جب خونِ تمنا ان میں شامل کر دیا	...میں اک نئی شان آ گئی
بیخودی نے دور فرقِ حق و باطل کر دیا	...بخانہ سب جا تا رہا
اشکِ خوں نے گل بداماں دامنِ دل کر دیا	...ت مجھکو نے ہمدم نہیں
ایک دل تھا وہ بھی ناکامی نے بیدل کر دیا	...سجدہ گاہِ آرزو
اس نے میرے سامنے آئینۂ دل کر دیا	...و پوچھا ان کے لہجے کا کمال
تو نے آ کر بیچ میں کیا پردہ حائل کر دیا	...لے غبارِ کارواں

لذتِ احساسِ الفت سے بھی اب محروم ہوں
دل کے کھو جانے نے مجھ کو غرقِ بیدل کر دیا

...، کیا بات ہے اپنی | بات بگڑا اور حریف کی بات پوری کر دی (بشیر حسین خاں)

...ی زندگی بسر کیجئے
اولاد کی تعلیم بڑھاپے کی مصیبت
بیٹی کی شادی
سے بے فکر ہونے کے لئے
وینس انشورنس بینک لمیٹڈ
... خط و کتابت کریں!

...ندرِ حفیظ

(... صاحب ...)

...جوشِ جنوں

(۱)

اس طور ... پیاری!
...ی ہے کیا کالی گھٹا
...ق ہے کیا ...
...ی ہے کیا نغمہ سرا
...م ہے کتنا جانفزا
پیاری اپنی جاں کیا؟ اس ...
میں رو کتا ہوں ... پیاری ...

(۲)

...لی ہے ...
...ل کی ہے ...
...ا کی ہے کیسی ...
... کو بھی ...
...ل ہے کیسی ...
پیاری اپنی جاں کیا؟ اس ...
میں رو کتا ہوں ... پیاری ...

ساس ... کا ...

بیوی۔ ... کیا۔
سالی۔ ... ایک ...
... کے ... ہمراہ ...
بیوی۔ ...
سالی۔ ...
...
بیوی۔ ...
سالی۔ ...
... پلیٹ فارم ...
بیوی۔ ... شام ...

॥अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे एकादशाऽध्यायप्रारंभः॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः॥ अथ एकादशोऽध्याय प्रारंभः॥ पूर्वदशमअध्यायविषे यजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का तथानारायणउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्या॥अब याएकादशेअध्यायविषे जाबालउपनिषद् १ गर्भउपनिषद् २ अमृतनादउपनिषद् ३ हंसउपनिषद् ४ क्षुरिकाउपनिषद् ५ आरुणेयउपनिषद् ६ ब्रह्मउपनिषद् ७ परमहंसउपनिषद् ८ महतउपनिषद् ९ आत्मप्रबोधउपनिषद् १० कैवल्यउपनिषद् ११ याएकादशउपनिषदोंका अर्थ निरूपण करे हैं॥तहां पूर्वदशमअध्यायविषे तित्तिरिनामाब्राह्मणोंके ब्रह्मविद्याकूं श्रवणकरिके सोशिष्य परमआश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया॥और साधनों सहिततथाफलसहित परमहंससंन्यासकेपूछणेकीइच्छाकरताहुआ सोशिष्यआपणेगुरुकेप्रतियाप्रकारकावचनकहताभया॥शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ऐतरेयऋषिनैं तथाकौषीतकिऋषिनैं तथासूर्यभगवान्नैं तथाश्वेताश्वतरऋषिनैं तथा तित्तिरिऋषिनैंतथाकठऋषिनैं आपणेआपणे शिष्योंकेप्रति जाजाब्रह्मविद्याउपदेशकरीथी॥सासंपूर्णब्रह्मविद्यापूर्वआपनैं हमारेप्रतिकथनकरी॥कैसीहैसाब्रह्मविद्या ॥दुःखरूपीससुद्रकेमुकावणेहारीहै ॥ हेभगवन् याआत्मपुराणके प्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथम अध्यायविषे सनकादिकऋषियोंके तथा वामदेवादिकअधिकारियोंके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेदूसरेअध्यायविषे तथातीसरेअध्यायविषे आपनैं किसीऋग्वेदके कौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहद्वितीयअध्यायविषे आपनैं देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिके आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराण केचतुर्थअध्यायविषे दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्पर भेद तथाअभेद आपनैं कथनकऱ्याथा॥तथाअश्विनीकुमारों केसाथ जोसर्वज्ञऋषिकासंवादहुआथा॥सोभीआपनैंकथनकऱ्याथा॥औरदध्यङ्ऋषिनैं जाब्रह्मविद्या दे

वराजइंद्रकेप्रति तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेशकरीथी ॥ साब्रह्मविद्याभी आपनें कथनकरीथी ॥ और तादध्यङ्ऋषिकोमहान्‌तां
तथाइंद्रकीदुरात्मताभी आपनें कथनकरीथी॥तथा ब्रह्मविद्याकेलोभकरिके गुरुकेमस्तककाछेदनरूप जोअश्विनीकुमारोंका अनुचितक
र्मथा ॥ सोभी आपनें कथनकऱ्याथा॥और याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञसभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाआश्व
लादिकब्राह्मणोंके परस्पर जल्परूपसंवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ तथाब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनिकेशाप
करिके शाकल्यब्राह्मणकामृत्युभीआपनें कथनकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके
दोवारसंवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके सप्तमअध्यायविषे तिसीयाज्ञवल्क्यमुनिके
तथामैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपने कथनकरीथी ॥ तथातायाज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्रमकाभी आपनें
निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ता
अष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरऋषिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ तथा सर्वजगत्‌के
कारणका निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्या
था ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और याआत्म
पुराणके दशमअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्‌का तथानारायणउपनिषद्‌का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ता
दशमअध्यायविषे अरुणऋषिके तथाभृगुऋषिके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ तथा वेननामा
गंधर्वकाअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ हेभगवन् तादशमअध्यायविषे आपनें धर्मतें आदिलेके संन्यासपर्यंत मोक्षकेसाधनोंकी
परंपरा कथनकरीथी ॥ तहां अंत्यविषे कुटीचक बहूदक हंस परमहंस याचारप्रकारकेसंन्यासविषे सर्वसाधनोंतेंश्रेष्ठता कथनकरी
थी ॥ तिनचारप्रकारकेसंन्यासविषेभी चतुर्थपरमहंससंन्यासकूंही सर्वतेंश्रेष्ठकह्याथा ॥ और हेभगवन् तादशमअध्यायकेअंतविषे

यहवार्त्ताभी आपनें कथनकरीथी ॥ जाबालादिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याजोसंन्यासहै तासंन्यासकूंग्रहणकरिके तथाहंसादिकउपनिषदों विषे कथनकऱ्याजोयोगहै तायोगकूंसंपादनकरिके यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतें आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिके निश्चयकरे ॥ यहसंपूर्णअर्थ आपनें तादशमअध्यायकेअंतविषेकह्याथा ॥ हेभगवन् याकेविषे हमारी मुख्यउत्कटइच्छातो परमहंससंन्यासके स्वरूपजाननेविषेहीहै ॥ यातें तापरमहंससंन्यासकेस्वरूपकूं में आपसे प्रथमपूछताहूं ॥ तिसतेंअनंतर जाबालादिकउपनिषदों विषे कथनकऱ्याजोसंन्यासहै ॥ तथा हंसादिकउपनिषदोंविषेकथनकऱ्याजोयोगहै ॥ तिनदोनोंकेस्वरूपकूंभी मैं आपसेपूछताहूं ॥ यातें हमारी उत्कटइच्छाकेअनुसार आप प्रथम परमहंससंन्यासकेस्वरूपकाही निरूपणकरो ॥ हेभगवन् याकेविषे हमारे इतनेप्रश्नहैं ॥ सोपरमहंससंन्यास किसअधिकारीपुरुषकूं करणेयोग्यहै ॥ १ ॥ तथा पूर्वं किसमहात्माजनोंनें तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकऱ्याहै ॥ २ ॥ तथा यापरमहंससंन्यासकरिके कोनवस्तु जानणेयोग्यहै ॥ ३ ॥ तथा यापरमहंससंन्यासके धर्मकोनहैं ॥ ४ ॥ तथा यापरमहंससंन्यासका फलकोनहै ॥ ५ ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता आप विस्तारसेंकथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकरिकेपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकी तीक्ष्णबुद्धिदेखिकरिके बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ तिसतेंअनंतर सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ यहपरमहंससंन्यासका जोतुमनें प्रश्नकऱ्याहै ॥ ताप्रश्नकरिके तुमनें वृद्धकुमारीवरन्यायकीरीतिसे जाबालादिकसर्वउपनिषदोंकेअर्थका प्रश्नकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे वृद्धअवस्थाकूं प्राप्तहुईकोई कुमारी तपकरिके इंद्रदेवताकूंप्रसन्नकरतीभई ॥ और सोइंद्रदेवताभी वरमाँग याप्रकारकावचन ताकुमारीकेप्रतिकहताभया ॥ आगेतेंसावृद्धकुमारी आपणेमनविषेविचारकरिके याप्रकारकावर मांगतीभई ॥ हेइंद्र ॥ हमारेपुत्र दधिकरिकेयुक्तओदनकूं सुवर्णकेपात्रोंविषे भोजनकरें ॥ यहवर तुम हमारेकूंदेवो ॥ याएकहीवरकरिके सावृद्धकुमारी देवराजइंद्रसें आपणीयौवनअवस्था तथापति तथापुत्र तथागोवां तथासुवर्णादिकधन यहसंपूर्णपदार्थ लेतीभई॥याकानाम वृद्धकुमारीवरन्यायहै॥तैसे ताएकपरमहंससंन्यासकेप्रश्नकरिके तुमनें जाबालादिकसर्वउपनिषदोंकेअर्थका प्रश्नकऱ्याहै ॥ काहेतें जाबाल ब्रह्म आरुणेय परमहंस

याचारउपनिषदोंविषेतो तापरमहंससंन्यासकेही धर्म कथनकरे हैं ॥ और आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषेउपयोगी जोयोगहै ॥ सोयोग हंसक्षुरिकादिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याहे ॥ और तायोगकीप्राप्तिविषे उपयोगीजोवैराग्यहै ॥ सोवैराग्य गर्भउपनिषद्विषेकथनक ऱ्याहे ॥ यातें तुमारे परमहंससंन्यासकेप्रश्नका जभीमैं उत्तरकहोंगा ॥ तभी तिनजाबालादिकउपनिषदोंकाअर्थभी अवश्यकरिके कह्या जावैगा ॥ अब तिनजाबालादिकउपनिषदोंविषे जिनऋषियोंनें तापरमहंससंन्यासकाप्रश्नकऱ्याहे ॥ तथा जिनऋषियोंनें तिनप्रश्नोंकाउत्तर कह्याहे ॥ तिनऋषियोंकिनामोंकानिरूपणकरेहैं॥हेशिष्य॥जाबालउपनिषद्केचतुर्थखंडविषे जनकराजानें याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति तापरमहं ससंन्यासकाप्रश्नकऱ्याहे ॥ और ताजाबालउपनिषद्के पंचमखंडविषे अत्रिऋषिनें तायाज्ञवल्क्यमुनिके प्रति तापरमहंससंन्यासकाप्रश्न कऱ्याहे ॥ और आरुणेयउपनिषद्विषे आरुणऋषिनें प्रजापतिकेप्रति तापरमहंससंन्यासकाप्रश्नकऱ्याहे ॥ और परमहंसउपनिषद्विषे नारदमुनिनें ताप्रजापतिकेप्रति तापरमहंससंन्यासकाप्रश्नकऱ्याहे॥और जोपरमहंससंन्यास जाबालआदिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याहे ॥ सोईहीपरमहंससंन्यास ब्रह्मउपनिषद्विषे किसीऋषिके प्रश्नउत्तरतेंविनाही वेदभगवान्नें आपही स्पष्टकरिकेकथनकऱ्याहे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जाबालादिकउपनिषदोंविषे जोपरमहंससंन्यास कथनकऱ्याहे ॥ सोईहीपरमहंससंन्यास तुमनें हमारेसें पूछाहे ॥ यातें तापरमहं ससंन्यासकास्वरूप हम तुमारेप्रति विस्तारतें कथनकरतेहैं ॥ तूं आपणेमनकूंसावधानकरिके श्रवणकर॥अब तापरमहंससंन्यासके साधनों केनिरूपणकरणेवासतेप्रथम जाबालउपनिषद्केपंचमखंडविषे कथनकरेजेविद्वत्संन्यासीहैं ॥ तिनोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥देवतावों कागुरुजोबृहस्पतिहै॥ताबृहस्पतिकाभ्राताएकसंवर्त्तकनामाऋषिपूर्वहोताभयाहै॥जिससंवर्त्तककामहिमा महाभारतकेअश्वमेधपर्वविषेवर्णन कऱ्याहे॥सोसंवर्त्तकभीतापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहे॥और अरुणऋषिकापुत्र एकआरुणिनामाऋषि पूर्वहोताभयाहै॥जिसआरु णिऋषिकूं उद्दालक यानामकरिकेभी कथनकरे हैं॥जोउद्दालक सर्वशास्त्रोंविषेबुद्धिमान्हुआहै॥सोउद्दालकमुनिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्र हणकरताभयाहै॥और ताउद्दालकमुनिका एकश्वेतकेतुनामापुत्र पूर्वहोताभयाहै॥सोश्वेतकेतुभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै॥

ओर महादेवकाअंशअवतारएकदुर्वासाऋषि पूर्वंहोताभयाहे॥जोदुर्वासाऋषि महान्तपस्वीहे॥सोदुर्वासाऋषिभी तापरमहंससन्यासकूं ग्रह
णकरताभयाहे॥ओर जैसे सनकादिकऋषि ब्रह्माके मानसपुत्रहैं॥तैसे ताब्रह्माकामानसपुत्र एकऋभुनामाऋषि पूर्वंहोताभयाहे॥सोऋभुनामा
ऋषिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहे॥ओर ताऋभुनामाऋषिकाशिष्य एकनिदाघनामाऋषि पूर्वंहोताभयाहे ॥जोनिदाघनामा
ऋषि ताऋभुकेउपदेशतेंपूर्व कर्मोंविषे अत्यंतआसक्तहोताभयाहे ॥ सोनिदाघनामाऋषिभीतापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहे ॥ ओर
एकजडभरत पूर्वंहोताभयाहे ॥ जोजडभरत मृगशरीरतेंपूर्व राजाहोताभयाहे ॥जिसराजाकेनाम करिके यहभारतखंडकह्याजावे हे॥सोज
डभरतभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहे ॥ओर विष्णुकाअवतार एकदत्तात्रेयमुनि पूर्वंहोताभयाहे॥सोदत्तात्रेयमुनिभी तापरम
हंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहे॥ओर रैवतनामाकोईब्राह्मण पूर्वंहोताभयाहे॥सोरैवतनामाब्राह्मणभी तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरताभया
हे॥ओर एकभारद्वाजनामाऋषि पूर्वंहोताभयाहे॥सोभारद्वाजनामाऋषिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहे॥हेशिष्य॥ संवर्त्तक १
उद्दालक २ श्वेतकेतु३ दुर्वासा ४ ऋभु ५निदाघ ६ जडभरत ७दत्तात्रेय ८ रैवत ९ भारद्वाज१०इनदशों तें आदिलेंके दूसरेभी शुकवा
मदेवादिकअनेकब्राह्मण तापरमहंससंन्यासकूं धारणकरतेभयेहैं ॥ जिनोंकीकथा पुराणादिकशास्त्रोंविषेप्रसिद्धहे ॥ तेसंपूर्णपरमहंससंन्या
सी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मसाक्षात्कारकरिके सर्वसंबंधनोंतें रहितहोतेभयेहैं॥अब तिनविद्वत्संन्यासियोंकेअव्यक्तचिह्नका तथाअव्यक्त
आचारका निरूपणकरेहैं ॥ जिसचिह्नकूं तथाजिसआचारकूं लोक नहींजाणिसकें ताकानाम अव्यक्तहे ॥ हेशिष्य ॥ तेसंवर्त्तकादिकसं
न्यासी नियमकरिके मुंडितभी नहींहोतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिके जटाधारीभी नहींहोतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिके एकदंडकूं अथ
वा तीनदंडकूंभी नहींधारणकरतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिके श्वेतवस्त्रोंकूंभी नहींधारणकरतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिके रक्तवस्त्रों
कूंभी नहींधारणकरतेभयेहैं ॥ हेशिष्य ॥ तिनब्रह्मवेत्तासंन्यासियोंका जैसे चिह्न अव्यक्तहोताभयाहे ॥ तैसे तिनोंकाआचारभी अव्य
क्तहीहोताभयाहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअव्यक्तआचार किसप्रकारकाहोवे हे ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तेअव्यक्तआचारवाले

महात्मापुरुष याप्रकार लोकविषेविचरे हैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकी मतिभी अव्यक्तहीहोवैहे ॥ और तिनमहात्मापुरुषोंकी आकृति भी अ
व्यक्तहीहोवैहे ॥ और तिनमहात्मापुरुषोंका चिह्नभी अव्यक्तहीहोवैहे ॥ औरकभीतो तेमहात्मापुरुष सर्वपदार्थोंकीइच्छातैंरहितहोवैहैं ॥
और कभी तेमहात्मापुरुष आसक्तपुरुषकीन्याई सर्वपदार्थोंकीइच्छाकरतेहुएप्रतीतहोवैहैं ॥ और कभीतो ते महात्मापुरुष सर्वज्ञपुरुषकी
न्याई सर्वअर्थकेज्ञाता प्रतीतहोवैहैं॥और कभी तेमहात्मापुरुष अज्ञानीपुरुषकीन्याई अज्ञाता प्रतीतहोवैहैं॥और कभीतो ते महात्मापुरुष
शास्त्रवेत्तापुरुषकीन्याई पंडित प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभी तेमहात्मापुरुष शास्त्ररहितपुरुषकीन्याई मूढ प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभीतो तेम
हात्मापुरुष बुद्धिमान्पुरुषकीन्याई नानाप्रकारकीचेष्टाकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभी तेमहात्मापुरुष जडपुरुषकीन्याई सर्वचेष्टातैंर
हितहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभीतो तेमहात्मापुरुष वाचालपुरुषकीन्याई नानाप्रकारके शब्दोंकूंउच्चारणकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और
कभी तेमहात्मापुरुष मूकपुरुषकीन्याई मौनकूंधारणकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभीतो तेमहात्मापुरुष रागअंधपामरपुरुषकीन्याई
अत्यंतरागवान्हुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभी तेमहात्मापुरुष विरक्तपुरुषकीन्याई सर्वरागतैंरहितहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभीतो तेमहा
त्मापुरुष श्रेष्ठपुरुषोंकीन्याई शास्त्रविहितआचारकूंकरैहैं ॥ और कभी तेमहात्मापुरुष अश्रेष्ठपुरुषोंकीन्याई शास्त्रनिषिद्धआचारकूंकरैहैं
॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तेपरमहंस संन्यासी अव्यक्तचिह्न तथाअव्यक्तआचारकूं धारणकरिके यालोकविषे विचरतेभयेहैं ॥
ऐसेपरमहंससंन्यासियोंकूंदेखिकरिके यह श्रेष्ठपुरुषहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणसकतानहीं ॥ तथा यह अश्रेष्ठपुरुषहै याप्रकार
भी कोईलोक तिनोंकूं जाणसकता नहीं ॥ तथा यह बहुतशास्त्रपढयाहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणसकतानहीं ॥ तथा यह
शास्त्रनहींपढयाहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणसकतानहीं ॥ तथा यह श्रेष्ठआचारवालाहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाण
सकतानहीं ॥ तथा यह अश्रेष्ठआचारवालाहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणसकतानहीं ॥ तथा यह ब्राह्मणहै याप्रकारभी कोईलोक
तिनोंकूं जाणसकतानहीं ॥ तथा यह चांडालहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणसकतानहीं॥तथा यह संन्यासीहै याप्रकारभीकोईलो

क तिनोंकूं जाणिसकतानहीं ॥ तथा यह गृहस्थहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणसकतानहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिनब्रह्मवेत्ता संन्यासियोंकूं किसीवर्णकारिके तथाकिसीआश्रमकरिके कोईबुद्धिमान्पुरुषभीजाणसकतानहीं॥तौविचारतैंरहितमूढपुरुषतिनोंकूं कैसेजाण सकेंगे॥किंतु नहींजाणसकैंगे॥यहवार्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥तहांश्लोक ॥यंनसंतंनचासंतं नाऽश्रुतं नबहुश्रुतं ॥ नसुवृत्तं नदुर्वृत्तं वेद कश्चित्सब्राह्मणः ॥ अर्थयह ॥यालोकविषे जिसविद्वान्पुरुषकूं श्रेष्ठ अश्रेष्ठ मूर्ख पंडित शास्त्रविहितआचार शास्त्रनिषिद्धआचार इत्यादि करूपोंकरिके कोईभीमनुष्य नहींजाण सकैहै ॥ सोविद्वान्पुरुषही ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापरमहंससंन्यासियों के आचारकूं कोईबुद्धिमान्पुरुषभी जाणसकतानहीं यहवार्ता दत्तात्रेयसंहिताविषे प्रसिद्धहै ॥ तहां यहप्रसंगहै ॥एककालविषे दत्तात्रेयस्वामी नर्मदानदीकेजलविषेस्थितथा॥ कैसाथा सोदत्तात्रेय स्वामी॥ रक्तवर्णवालेवस्त्रोंकरिकेयुक्तथा ॥ तथा यौवनअवस्थाकरिकेयुक्तथा ॥ तथा सूर्यकेसमान जाकेशरीरकीकांतिथी ॥ तथाएकहस्तविषे जिसनैं मदिराकेपात्रकूंधारणकर्याहै ॥ और दूसरेहस्तविषे दंडकूंधारण कर्याहै ॥ और मदकरिकेघूर्णितहैंनेत्रजिसके ऐसीसुंदरस्त्री जाके वामभाग विषेस्थितथी ॥ तास्त्रीकेमुखकूं वारंवार नेत्रोंकरिकेदेखता हुआ सोदत्तात्रेयस्वामी तास्त्रीकेप्रति श्रुतिवचनोंकरिके अद्वितीयब्रह्मकाउपदेशकरताथा ॥ ऐसेव्यवहारकरिकेयुक्त तादत्तात्रेयस्वामीकूं सहस्रबाहुअर्जुन देखताभया॥और सोचक्रवर्तीराजासहस्रबाहु आपणेमनविषे बहुतविचारकरताभया॥परंतु तादत्तात्रेयस्वामीकूं सोसहस्र बाहु नहींजाणताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेदत्तात्रेयादिकमहात्मापुरुष ऐसेशास्त्रनिंदितआचारकूं किसवासते धारणकरैहैं ॥ समाधान॥ हेशिष्य॥ जिसअभिप्रायकरिके तेमहात्मापुरुष याप्रकारकेआचारकूंधारणकरैहैं ॥ ताअभिप्रायकूं तूं श्रवणकर ॥शास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ अभिमानंसुरापानंगौरवंघोररौरवं ॥ प्रतिष्ठासूकरीविष्ठा त्रिणित्यक्कासुखीभवेत् ॥ अर्थयह ॥ अभिमानकूं मदिराकेसमानजाणिकरिके तथा गौरवकूं घोररौरवनरककेसमानजाणिकरिकेतथा लोकप्रतिष्ठाकूं सूकरकीविष्ठासमानजाणिकरिके यहविद्वान्पुरुषतिनतीनों कापरित्यागकरिके सुखकूंप्राप्तहोवै॥१॥इत्यादिकशास्त्रोंविषे विद्वान्पुरुषकूं अभिमान गौरव लोकप्रतिष्ठा यातीनोंकापरित्यागकह्याहै और

श्रेष्ठआचारविषेवर्त्तणेहारे विद्वान्पुरुषकी लोकविषे प्रतिष्ठा अवश्यकरिकेहोवे है ॥ और ताप्रतिष्ठाकरिके ताविद्वान्पुरुषकेसमीप बहुत लोकआवेहैं ॥ और ताबहुतलोकोंकेआवणेकरिके ताविद्वान्पुरुकाभीचित्त बहिर्मुखहोवैहै ॥ ताबहिर्मुखचित्तविषे जीवन्मुक्तिकासुख होवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिके ते दत्तात्रेयादिकब्रह्मवेत्तापुरुष लोकप्रवृत्तिरूपविक्षेपकीनिवृत्तिकरणे वासते ताविपरीतआचरणकूं ऊपरसैंधारणकरेहैं ॥ अथवा ॥ अधिकारीशिष्योंकेश्रद्धाकीपरीक्षाकरणेवासते तेब्रह्मवेत्तापुरुष ताविपरीत आचरणकूं ऊपरसैंधारणकरे हैं ॥ अथवा ॥ ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरिके किंचित्मात्रभी दोषोंकास्पर्शहोवैनहीं याप्रकार ताब्रह्मविद्याकेफल काबोधनकरणेवासते तेब्रह्मवेत्तापुरुष ताविपरीतआचरणकूं ऊपरसैंधारणकरेहैं ॥ परंतु मनकरिके तो तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वविकारोंतैंर हितहीहोवैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तिन दत्तात्रेयादिकमहान्पुरुषोंकी जाऐसीसिद्धअवस्थाहै ॥ सासिद्धअवस्था अस्मदादिकजीवोंकूं सहस्रजन्मों करिकेभी दुर्लभहै ॥ ऐसेदत्तात्रेयादिकमहान्पुरुषोंके पूर्वउक्तअभिप्रायकूंनजाणिकरिके जेअज्ञानीपुरुष तिनोंकेऊपरलेआचरणकूंग्रहण करिके यालोकविषे विचरेहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष नरककूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे महादेवनें सर्वलोकोंकीरक्षाकरणेवासतै अपणे योगकेप्रभावतैं कन्याजोविषकापान ॥ ताकूंदेखकरिके जोयोगसाधनतैंरहितपुरुष ताविषकूंपानकरेहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष मृत्युकूंहीप्राप्त होवैहै॥तैसे जोअज्ञानीपुरुष तिनदत्तात्रेयादिकोंकेऊपरलेआचारकूंग्रहणकरेहै॥सोअज्ञानीपुरुष नरककूंहीप्राप्तहोवैहै॥हेशिष्य ॥तेदत्तात्रेया दिकपरमहंससंन्यासी हम ब्रह्मरूपहैं याप्रकारकेआत्मसाक्षात्कारकरिके ब्रह्मभावकूंप्राप्तहुएहैं॥याकारणतैं तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वपुण्यपापक र्मोंकापरित्यागकरिके सर्वदा परमपदविषेहीस्थितहैं॥अब तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे पुण्यपापकर्मकाअभाव निरूपणकरेहैं॥हेशिष्य ॥ऐसेब्रह्म वेत्तापुरुषोंविषे जेभक्तजन प्रीतिकरे हैं ॥ तिनभक्तजनोंकेप्रतितो तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेसर्वपुण्यकर्म देवैहैं ॥ और तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे जेदुष्टजन सर्वदाद्वेषकरेहैं ॥ तिनदुष्टपुरुषोंकेप्रतितो तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेसंपूर्णपापकर्म देवैहैं॥इसप्रकार सुखदुःखरूपफलसहित संपूर्णपु ण्यपापकर्मोंकूंदेकरिके तेब्रह्मवेत्तापुरुष तापुण्यपापकर्मकेसुखदुःखरूपफलतैंरहितहोवैहैं॥तहांश्रुति॥सुहृदःसाधुकृत्यं द्विषंतःपापकृत्यम्॥

अर्थयह ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेपुण्यकर्मतो सेवाकरणेहारेभक्तजन लेजावेहैं ॥ और ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेपापकर्मतो द्वेषकरणेहारेदुष्टजन लेजावे हैं ॥ यातें सोब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वदाअसंगरहेहैं ॥ अब तिनब्रह्मवेत्तासंन्यासियोंका उन्मत्तपुरुषकीन्याईं आचरण निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ तेब्रह्मवेत्तापरमहंससंन्यासी कभीतो दिशारूपवस्त्रोंकूंहीं धारणकरेहैं ॥ और कभीतो नानाप्रकारके दुकूलोंकूंधारणकरेहैं ॥और कभीतो तेब्रह्मवेत्तासंन्यासी विष्ठामूत्रकरिकेलिप्तरहे हैं ॥ और कभीतो चंदनादिकसुगंधपदार्थोंकरिकेलिप्तरहेहैं ॥ और तेब्रह्मवेत्तापुरुष कभीतो हँसे हैं ॥ और कभी नानाप्रकारकागायनकरेहैं ॥कभीतो तेब्रह्मवेत्तापुरुषअश्वकीन्याईं शीघ्रगमनकरे हैं॥और कभीतो तेब्रह्मवेत्तापुरुष पिशाचोंकीन्याईं आपणेअंगोंका ताडनकरे हैं ॥ और कभीतो तेब्रह्मवेत्तापुरुष बालकोंकेसाथ नानाप्रकारकीक्रीडाकरे हैं ॥ और कभीतो तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वइच्छावों तैं रहितहोवेहैं ॥और कभीतो तेब्रह्मवेत्तापुरुष विनाहींकारणतैंरुदनकरे हैं॥और कभीतो तेब्रह्मवेत्तापुरुष दुष्टलोकोंकरिके ताडनकरेहुए तथाबांधेहुएभी परमआनंदकूंप्राप्तहोइके मेघोंकीन्याईं गर्जनाशब्दकूंकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तेदत्तात्रेयादिकब्रह्मवेत्तासंन्यासी आपणेवास्तवस्वरूपविषे लोकोंकेव्यामोहकरणेवासते उन्मत्तपुरुषकीन्याईं विपरीतचेष्टाकूंकरतेभयेहैं॥ परंतु तेब्रह्मवेत्तासंन्यासीवास्तवतें उन्मत्तहैंनहीं॥किंतुवास्तवतैंतो तेब्रह्मवेत्तासंन्यासी अहिंसासत्यअस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह या पंचप्रकारकेयमकीही सर्वदारक्षाकरणेहारे हैं शंका हेभगवन् ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषका उन्मत्तपुरुषकीन्याईं आचरण किसीभीशास्त्रनें विधानकऱ्यानहीं ॥ यातें ताउन्मत्तआचरणकूंधारणकरणायोग्यनहीं है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य आपणेस्वरूपकेगुप्तरारखणेवासतें ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंका उन्मत्तपुरुषकीन्याईं आचरण योगशास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ तथाचरेतवैयोगी सतांधर्ममदूषयन् जनायथाऽवमन्येरन् गच्छेयुर्नैवसंगतिं ॥ अर्थयह ॥ यहब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष श्रेष्ठपुरुषोंकेधर्मकारक्षणकरताहुआ ऊपरसें ऐसाआचरण राखे ॥ जिसआचरणकरिके ताब्रह्मवेत्तापुरुषका कोईलोक माननहींकरें ॥ तथा संगनहींकरें ॥ काहेतें लोकोंकेमानकरिके तथालोकोंके संगकरिके ताविद्वान्पुरुषकाभीचित्त बहिर्मुखहोवेहै॥१ ॥ हेशिष्य ॥ इत्यादिकशास्त्रोंकेवचनोंकाविचारकरिके तेब्रह्मवेत्तापुरुष ऊपरसें

लोकोंकेदिखावणेवासतैं नानाप्रकारकाविपरीतआचरणकुंकरतेहैं ॥ परंतु तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणे शरीरमनवाणीकरिके कदाचित्भी
ताविपरीतआचरणकुंकरतेनहीं ॥ किंतु तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणे शरीरमनवाणीकरिकेतो शास्त्रविहितधर्मकाहीपालनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥
जैसे यालोकविषे प्रज्वलितमहान्‌अग्नि शुष्ककाष्ठोंकूं तथाआर्द्रकाष्ठोंकूं दग्धकरेहे ॥ तैसे तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंका ज्ञानरूपअग्निभी संपूर्ण
शुभअशुभकर्मोंका नाशकरैहे ॥ यातैं ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूं किंचित्मात्रभी दोषकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यहलोकप्रसिद्धअग्नि
विषादिकसर्ववस्तुवोंकाभक्षणकरैहे ॥ ताअग्निकूंदेखिकरिके जोमूढबुद्धिपुरुष ताअग्निकीन्याई विषादिकसर्ववस्तुवोंकेभक्षणविषे प्रवृत्त
होवैहे ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तैसे इदानींकालविषे आत्मसाक्षात्कारतैंरहित जोपरमहंससंन्यासी तिन
दत्तात्रेयादिकमहान्‌पुरुषोंके ऊपरिलेआचरणकूं धारणकरैहे ॥ सोपरमहंससंन्यासी दोनोंलोकोंतैंभ्रष्टहोवैहे ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे
तो अपमानजन्यदुःखकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और परलोकविषे नरकदुःखकूंप्राप्तहोवैहे ॥ अबब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे शास्त्रकेविधिकाअभाव निरूपण
करे हैं ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेदत्तात्रेयादिकब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं जोयहफलरूपविद्वत्संन्यास प्राप्तभयाहे सो किसीशास्त्रकीविधिकरिके प्राप्तनहींभ
या ॥ किंतु स्वतःहीप्राप्तभयाहे ॥ यातैं तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं तासंन्यासविषे कर्त्तव्यताबुद्धिहैनहीं ॥ और तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं जैसे तासं
न्यासविषे कर्त्तव्यताबुद्धिनहीं हे॥तैसे बहिरंगसाधनोंविषे तथाअंतरंगसाधनोंविषेभी साकर्तव्यताबुद्धिहैनहीं ॥ काहेतैं जबपर्यंत फलकीउत्प
त्तिनहींहोवे है॥तबपर्यंतही बहिरंगअंतरंगसाधनोंकीअपेक्षाहोवे है॥ फलकीउत्पत्तितैंअनंतर तिनसाधनोंकाप्रयोजनरहेनहीं॥याकारणतैंही
यहवेदभगवान् तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंके प्रति प्रातःकाल मध्याह्नकालसायंकाल यातीनकालोंविषे स्नानकाभीविधानकरेनहीं ॥ काहेतैं ता
त्रिकालस्नानकाफल जोअंतःकरणकीशुद्धिहे ॥ साशुद्धि तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं पूर्वहीप्राप्तहे ॥ और सोवेदभगवान् तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंके
प्रति समाधिकरणेकाभी विधानकरेनहीं॥काहेतैं सासमाधिभी तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं स्वरूपकरिके तथाफलकरिके पूर्वहीसिद्धहे॥अब तिन
ब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे स्वरूपतैंसमाधिका निरूपणकरेहैं हेशिष्य॥तेब्रह्मवेत्तापुरुष जिसकालविषे पद्मादिकआसनकूंबांधिकरिकेबैठेहैं॥तथा

जिसकालविषे आपणेहस्तपादादिकअंगोंकूंपसारेहैं ॥ तथा जिसकालविषे ताआसनतेंउठेहैं॥तथा जिसकालविषे भोजनकरेहैं॥तथा जिस कालविषे जलपानकरेहैं॥तथा जिसकालविषे पृथ्वीऊपरफिरेहैं॥तथा जिसकालविषे शयनकरेहैं ॥ तिनसंपूर्णकालोंविषे तेब्रह्मवेत्तापुरुष समाधियुक्तहीरहेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यहवार्त्ता पूर्व वृद्धपुरुषोंनेंभीकथनकरीहै॥तहांश्लोक॥देहाभिमनेगलिते विज्ञातेपरमात्मानि॥यत्रयत्रमनो याति तत्रतत्रसमाधयः॥अर्थयह मैं अद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारके आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तहुए जभी याविद्वान्पुरुषका देहाभिमान निवृत्त होवे है ॥ तभी याविद्वान्पुरुषकामन जिसजिसपदार्थविषेजावे है ॥ तहांतहां समाधियांही होवे हैं॥तात्पर्ययह ॥ ताविद्वान्पुरुषकामन सर्वपदार्थोंविषे नामरूपअंशकाबाधकरिके अस्तिभातिप्रियरूप अद्वितीयब्रह्मकूंहीदेखेहै ॥ १ ॥ हेशिष्य जैसे पंचवर्षपर्यंत बालकऊपर शास्त्रकाविधि तथा निषेध होवेनहीं ॥ तैसे तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंऊपरभी शास्त्रकाविधि तथानिषेध होवेनहीं ॥ काहेतें जिन पुरुषोंविषे भेददर्शनरूपअविद्या रहेहै ॥ तिनपुरुषोंऊपरही शास्त्रकाविधि तथानिषेध होवे है ॥ साभेददर्शनरूपअविद्या तिनब्रह्म वेत्तापुरुषोंविषेहैनहीं॥यातें तिनब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंऊपर शास्त्रकाविधि तथानिषेध संभवेनहीं॥अब तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे भेददर्शनका अभाव निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेशरीरकूं तथाश्वानकेविष्ठाकूं विलक्षणदेखतेनहीं ॥ किंतु दोनोंकूंसमानहीं देखेहैं॥याकारणतेंही तेब्रह्मवेत्तापुरुष भक्तजनोंनें शरीरमनवाणीकरिके तथानानाप्रकारकेदुकूलोंकरिके तथाचंदनादिकोंकेलेपकरिके तथा सुगंधिवालेपुष्पोंकरिके तथानानाप्रकारकेअन्नादिकपदार्थोंकरिके पूजनकिएहुएभी किंचित्मात्रभी हर्षकूंप्राप्तहोवेनहीं॥हेशिष्य॥तेब्रह्मवेत्ता पुरुष याशरीरतें आपणेकूंभिन्नकरिकेमानेहैं ॥ यातें तेब्रह्मवेत्तापुरुष जैसे याशरीरकेपूजनादिकोंविषे हर्षकूंनहींप्राप्तहोवेहैं ॥ तैसे याशरीरके छेदनविषे तथाभेदनविषे तथाबंधनविषे तथाताडनविषे तथानिरादरविषे तेब्रह्मवेत्तापुरुष किंचित्मात्रभी खेदकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ हेशिष्य ॥ तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेशरीरविषे तथाभक्तजनोंकेशरीरविषे तथादुष्टजनोंकेशरीरविषे एकआत्माकूंही अनुगतजानेहैं॥याकारण तेंही तिनअभेददर्शीब्रह्मवेत्तापुरुषोंका यालोकविषे कोईमित्रनहींहै कोईशत्रुनहींहै॥तथा कोईउदासीननहीं है।तथा कोईपदार्थ आपणापराया

नहींहे ॥ तथा तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं कोईशीतउष्णनहींहे ॥ तथा कोईक्षुधापिपासानहींहे ॥ तथा कोईशोकमोहनहीं है ॥ तथा कोईज रामरणनहींहे ॥ तात्पर्ययह ॥ तेब्रह्मवेत्तापुरुष शरीरादिकउपाधियोंके शीतउष्णादिकधर्मजानिके आपणेवास्तवस्वरूपकूं सर्वदाअसंगजानेहैं ॥ और हे शिष्य ॥ यालोकविषे जेपुरुष तासमबुद्धितैंरहितहैं ॥ तिनविषमदर्शीपुरुषोंकूं मानतो सुखकीप्राप्तिकरेहे ॥ और अपमान दुःखकीप्राप्तिकरेहे ॥ और तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वत्र समबुद्धिवालेहैं॥यातैं तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं सोमान सुखकीप्राप्तिकरेनहीं॥तथा अपमान दुःखकीप्राप्तिकरेनहीं ॥हेशिष्य॥ इसप्रकार सर्वत्रसमबुद्धिवाले तथाजीवन्मुक्तिअवस्थावाले तेसंवर्तकादिकविद्वत्संन्यासी पूर्वहोतेभयेहैं ॥ तिनोंनें यहज्ञाननिष्ठारूप परमहंससंन्यास पूर्व धारणकन्याहे ॥ हेशिष्य॥वैराग्यतैंरहित जेवहिर्मुखपुरुषहैं ॥तिवहिर्मुखपुरुषतो याप्रकारके वचन कथनकरेहैं ॥ सतयुगत्रेतायुगादिककालविषेही सा वर्णआश्रमकेधर्मोकीव्यवस्थाथी ॥ इदानींकालविषे ऐसापरमहंससंन्यासियोंकाधर्म देखणेविषेआवतानहीं ॥ ऐसेवचनकहणेहारेवैराग्यहीनपुरुषोंकेप्रतिवैराग्यवान्महात्मापुरुष तापरमहंससंन्यासकेधर्मोंकूं प्रत्यक्षकरिकेदिखावैहैं ॥ यातैं वैराग्यही तासंन्यासकाकारणहे ॥ इतनैंग्रंथकरिके जाबालउपनिषद्‌विषे कथनकरेजे संवर्तकादिक परमहंससंन्यास हैं तिनोंका निरूपणकन्या ॥ अब तापरमहंससंन्यासके प्राप्तिका साधन जोवैराग्यहे तावैराग्यकीप्राप्तिवासते गर्भउपनिषद्केअर्थका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥गर्भउपनिषद्‌विषे कथनकरीजा याशरीरकीव्यवस्थाहे॥ ताकेविचारकरिकेही याअधिकारीपुरुषोंकूं सोवैराग्य प्राप्तहोवैहे ॥ याकारणतैं तागर्भउपनिषद्का अर्थ हम तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तू सावधानहोइकेश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्माकेशरीरतैं आदिलेके श्वानकेशरीरपर्यंत जितनेकशरीरहैं ॥ तेसंपूर्णशरीर पंचभूतरूपहैं ॥ तथा तिनपंचभूतोंकाकार्य जेश्रोत्रादिक इंद्रियहैं तिनोंकाआश्रयरूपहैं ॥ यातैं तेसंपूर्णशरीर समानहीहैं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ आकाश १ वायु २ तेज ३ जल ४ पृथिवी ५ यापंचोंकूं बुद्धिमान्पुरुष महाभूत यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और तेआकाशादिकपंचभूतही स्थूलसूक्ष्मरूपकरिके वर्तमानहुए सर्वप्राणियोंके स्थूलसूक्ष्मशरीररूपहोवैहैं ॥ अब प्रथम तिनसूक्ष्मभूतोंतैं सूक्ष्मशरीरकीउत्पत्ति निरूपणकरे

हैं ॥ हेशिष्य ॥ ताआकाशके सात्विकअंशतैं श्रोत्रइंद्रिय उत्पन्नहोवे है ॥ १ ॥ और वायुकेसात्विकअंशतैं त्वकइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥२॥ और तेजकेसात्विकअंशतैं चक्षुइंद्रिय उत्पन्नहोवे है ॥ ३ ॥ और जलकेसात्विकअंशतैं रसनइंद्रिय उत्पन्नहोवे है ॥ ४ ॥ और पृथिवीके सात्विकअंशतैं घ्राणइंद्रिय उत्पन्नहोवे है ॥५॥ यह श्रोत्रादिकपंचइंद्रिय शब्दादिकविषयोंकेज्ञानकाकारणहैं ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तिनश्रोत्रादिकपंचइंद्रियोंकूं ज्ञानइंद्रिय यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और हेशिष्य ॥ ताआकाशकेराजसअंशतैं वाकइंद्रिय उत्पन्नहोवे हैं ॥ १ ॥ और वायुकेराजसअंशतैं पाणिइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ २ ॥ और तेजकेराजसअंशतैं पादइंद्रिय उत्पन्नहोवे है ॥३॥ और जलके राजसअंशतैं उपस्थइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ ४ ॥ और पृथिवीकेराजसअंशतैं पायुइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ ५ ॥ यहवाकादिकपंचइंद्रिय शब्द उच्चारणादिकक्रियाकेकारणहोवे हैं ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तिनवाकादिकपंचइंद्रियोंकूं कर्मइंद्रिय यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और हेशिष्य ॥ तिनआकाशादिकपंचभूतोंके मिलेहुए सात्विकअंशतैं ज्ञानशक्तिवाला अंतःकरण उत्पन्नहोवैहै ॥ और तिनआकाशादिकपंचभूतोंके मिलेहुएराजसअंशतैं क्रियाशक्तिवालाप्राण उत्पन्नहोवैहै ॥ सोप्राणभी प्राण १ अपान २ व्यान ३ उदान ४ समान ५ याभेदकरिकेपांचप्रकारकाहोवैहै ॥ अथवा नाग १ कूर्म २ कृकल ३ देवदत्त ४ धनंजय ५ यापांचोंकूंमिलाइके सोप्राण दशप्रकारकाहोवे है ॥ और हेशिष्य ॥ सर्वदेहधारीजीवोंकेहृदयकमलविषेस्थित जोज्ञानशक्तिवालाअंतःकरणहै ॥ सोअंतःकरणभी मन १ बुद्धि २ चित्त ३ अहंकार ४ याप्रकारकेभेदकरिके चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ इसप्रकार पंचज्ञानइंद्रिय तथापंचकर्मइंद्रिय तथापंचप्राण तथाचतुष्टयअंतःकरण यासंपूर्णोकेसमुदायकानाम सूक्ष्मशरीरहै ॥ याहीकूंलिंगशरीरभीकहेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यहसूक्ष्मशरीर अपंचीकृत सूक्ष्मभूतोंका कार्य है॥तथा नेत्रादिकइंद्रियोंकाअविषयहै॥याकारणतैंशास्त्रवेत्तापुरुष ताशरीरकूं सूक्ष्मशरीर यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और यहस्थूलशरीरतौ पंचीकृतस्थूलभूतोंकाकार्य है तथा नेत्रादिकइंद्रियोंकाविषयहै॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताशरीरकूं स्थूलशरी रयानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ इतनेंकरिके स्थूलसूक्ष्मयादोशरीरोंका निरूपणकऱ्या ॥ अब अध्यात्म अधिदैव यादोप्रकारकेभेदक रिके तास्थूलसूक्ष्मशरीरकाचारिप्रकारकाभेद निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ सोसूक्ष्मशरीरभी अध्यात्म अधिदैव भेदकरिकेदोप्रका

रकाहोवे है ॥ और सोस्थूलशरीरभी अध्यात्म अधिदेव भेदकरिके दोप्रकारकाहोवे है ॥ तहां प्रथम तत्पदार्थरूपअधिदेवस्वरूपकूं तूंश्र
वणकर ॥तहांसमष्टिसूक्ष्मरूप हिरण्यगर्भ अधिदेवरूपसूक्ष्मशरीरहै ॥ और समष्टिस्थूलरूपविराट् अधिदेवरूप स्थूलशरीरहै ॥ कैसाहै
सोविराट् ॥ अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल५ रसातल६पाताल७यहनीचेकेसप्तलोकतो ताविराट्भगवान्के दोपादहैं
॥ और ऊपरकेसप्तलोकोंविषे प्रथम भूलोकतो ताविराट्भगवान्का जघनस्थानहै ॥ १ ॥ और अंतरिक्षलोकताविराट्भगवान्का नाभि
स्थानहै ॥ २ ॥ और स्वर्गलोक ताविराट्भगवान्का हृदयस्थानहै ॥ ३ ॥ और महरलोक ताविराट्भगवान्का गलतैंलेकेमुखपर्यंत
स्थानहै ॥ ४ ॥ और जनलोक ताविराट्भगवान्का मुखतैंलेकेनेत्रपर्यंत स्थानहै ॥ ५ ॥ और तपलोक ताविराट्भगवान्का ललाटस्था
नहै ॥ ६ और सत्यलोक ताविराट्भगवान्का शिरहै ॥ ७ ॥ इसप्रकार सोविराट्भगवान्हीं तिनचतुर्दशलोकोंकास्थानहै ॥ इतनैंकरिके
तत्पदार्थरूप अधिदेवसूक्ष्मशरीरका तथाअधिदेवस्थूलशरीरका निरूपणकऱ्या ॥ अब त्वंपदार्थरूप अध्यात्मसूक्ष्मशरीरका तथाअध्या
त्मस्थूलशरीरका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ अहंममअभिमानका विषय जोव्यष्टिसूक्ष्मव्यक्तिहै ताकानाम अध्यात्मसूक्ष्मशरीरहै ॥ जा
अध्यात्मसूक्ष्मशरीरकूं शास्त्रवेत्तापुरुष तेजस यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और अहंममअभिमानकाविषय जोव्यक्तिहै ताकानाम अध्या
त्मस्थूलशरीरहै॥जाअध्यात्मस्थूलशरीरकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विश्व यानामकरिकेकथनकरैहैं॥शंका ॥हेभगवन् अन्यशास्त्रोंविषेतो अध्यात्म
अधिदेव अधिभूत यहतीनप्रकारकाविभाग कथनकऱ्याहै॥यातैंइहांअध्यात्म अधिदेव यहदोप्रकारकाविभागकथनकरणा असंगतहोवैगा॥
समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तेस्थूलसूक्ष्मशरीरही जिसकालविषे अध्यात्मअवस्थाकीन्याई अपरोक्षरूपकरिकेप्रतीतहोवैहैं॥ तिसकालविषे ता
स्थूलसूक्ष्मशरीरकूंही बुद्धिमानपुरुष अधिभूत यानामकरिकेकथनकरैहैं ॥ यातैं तास्थूलसूक्ष्मशरीरविषेही तिनअधिभूतपदार्थोंका अंत
रभावहै ॥ और तिनस्थूलसूक्ष्मशरीरोंका जोअध्यात्मरूपहै ॥ तथाअधिभूतरूपहै ॥ तेदोनोंरूप मिलिकरिके जभी व्यवहारकेविषयहो
वे हैं ॥तभीही यहस्थावर जंगम भेदहोवे है॥यातैं सोस्थावरजंगमभेदभी तास्थूलसूक्ष्मशरीरतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु तेस्थावरजंगमशरीरभी

तास्थूलसूक्ष्मशरीरकेअंतरभूतहींहैं॥तात्पर्ययह॥संपूर्णस्थावरजंगमशरीर आपणेआपणेअभिमानीजीवकीअपेक्षाकरिकेतौअध्यात्मभावकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ और दूसरेद्रष्टापुरुषकीअपेक्षाकरिके अधिभूतभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ जैसे चैत्रपुरुषकाशरीर ताचैत्रनामापुरुषकी अपेक्षाकरिकेतो अध्यात्मरूपहै ॥ और दूसरेमैत्रनामापुरुषकीअपेक्षाकरिके अधिभूतरूपहै ॥ इसप्रकार सर्वशरीरोंविषेजानिलेणा ॥ और हेशिष्य ॥ तेव्यष्टिस्थूलशरीरभी जरायुज१अंडज२स्वेदज३उद्भिज्ज४याभेदकरिके चारिप्रकारकेहोवे हैं॥तहांमाताकेउदरविषे बालककूंआवरणकरणेहारा जो जरायुनामा चर्मविशेषहै ॥ ताजरायुचर्मतैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवे है ॥ तिनशरीरोंकानाम जरायुजहै ॥ जैसे मनुष्य गो अश्व अजा आदिकशरीरहैं ॥ १ ॥ और अंडतैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवे है ॥ तिनशरीरोंकानाम अंडजहै ॥ जैसे पक्षी सर्प मत्स्य पिपीलिका आदिकशरीरहैं ॥ २ ॥ और शरीरादिकोंकेस्वेदरूपमलतैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवे है ॥ तिनशरीरोंकानाम स्वेदजहै ॥ जैसे मत्कुणयूकादिकक्षुद्रशरीरहैं ॥ ३ ॥ और जिनशरीरोंका बीजरूपकारण ऊर्ध्वआकार परिणामकूंप्राप्तहोवे है ॥ तिनशरीरोंकानाम उद्भिज्जहै ॥ तेउद्भिज्जशरीरभी दोप्रकारकेहोवे हैं ॥ तहां एकतो पापकर्मजन्यहोवे हैं ॥ और दूसरे पुण्यकर्मजन्यहोवे हैं तहां याभूमिलोकविषे स्थित जेवृक्षलतादिकहैं तथानरकविषेस्थित जेयमयातनाकेशरीरहैं ॥ तेदोनोंप्रकारकेशरीर पापकर्मजन्य उद्भिज्जशरीरहैं॥ और स्वर्गलोकविषेस्थित जेदेवताशरीरहैं ॥ तेदेवताशरीर पुण्यकर्मजन्य उद्भिज्जशरीरहैं॥इतनेंकरिके चारिप्रकारकेशरीरोंका निरूपणकऱ्या ॥ अब आकाशादिकपंचभूतोंकेव्यापारोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ तिनचारिप्रकारकेशरीरोंविषेभी अवकाशदेणा यह आकाशकाव्यापारहै ॥ १ ॥ और पदार्थोंका परस्पर संयोगकरणा तथाविभागकरणा यह वायुकाव्यापारहै ॥ २ ॥ और अन्नादिकोंकूंपकावणा यह तेजकाव्यापारहै ॥ ३ ॥ और वस्त्रादिकपदार्थोंकूंआर्द्रीभावकरणा यह जलकाव्यापारहै ॥ ४ ॥ और सर्वपदार्थोंकाधारणकरणा यह पृथिवीकाव्यापारहै ॥५॥ अब पंचज्ञानइंद्रियोंकेव्यापारकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥ शब्दकाग्रहणकरणा यह श्रोत्रइंद्रियकाव्यापारहै॥१॥और स्पर्शकाग्रहणकरणा यह त्वकइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और रूपकाग्रहणकरणा यह चक्षुइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ३ ॥ और रसकाग्रहणकरणा

यह रसनइंद्रियकाव्यापारहे ॥ ४ ॥ और गंधकाग्रहणकरणा यह घ्राणइंद्रियकाव्यापारहे ॥ ५ ॥ अब पंचकर्मइंद्रियोंकेव्यापारका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ वचनकाउच्चारणकरणा यह वाक्इंद्रियकाव्यापारहे ॥ १ ॥ और वस्तुकाग्रहणकरणा यह पाणिइंद्रियकाव्यापारहे ॥ २ ॥ और गमनआगमनकरणा यह पादइंद्रियकाव्यापारहे ॥ ३ ॥ और पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकाकारण जोविषयआनंदहे ॥ सोविषयानंद उपस्थइंद्रियकाव्यापारहे ॥ ४ ॥ और मलकापरित्यागकरणा यह पायुइंद्रियकाव्यापारहे ॥ ५ ॥ अबप्राणोंकेव्यापारका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ मुखनासिकाद्वारा याशरीरतैंबाहरनिकसणा तथाशरीरकेभीतरजाणा यह प्राणकाव्यापारहे ॥ १ ॥ और मलादिकोंकूंनीचेलेजाणा यह अपानकाव्यापारहे ॥ २ ॥ और अन्नकेसूक्ष्मरसकूं सर्वनाड़ियोंविषे पहुँचावणा यह व्यानकाव्यापारहे ॥ ३ ॥ और अन्नादिकोंकूंऊर्ध्वलेजाणा यह उदानकाव्यापारहे ॥ ४ ॥ और भोजनकरेहुएअन्नकेपरिपक्वकरणेवासतै जठराग्निकूं प्रज्वलितकरणा यह समानकाव्यापारहे ॥ ५ ॥ और उद्गार नागकाव्यापारहे ॥ ६ ॥ और नेत्रोंकाउन्मीलन कूर्मकाव्यापारहे ॥ ७ ॥ और छिक्का कृकलकाव्यापारहे ॥ ८ ॥ और विजृंभण देवदत्तकाव्यापारहे ॥ ९ ॥ और शरीरकाफुलावणा धनंजयकाव्यापारहे ॥ १० ॥ और शरीरका जीवन तथामरणकालविषे लोकांतरमेंउत्क्रमण यहदोनों सर्वप्राणोंका साधारणव्यापारहे ॥ अब चतुष्टयअंतःकरणकेव्यापारका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ संशयरूपमनन मनकाव्यापारहे ॥ १ ॥ और पदार्थकानिश्चयकरणा यह बुद्धिकाव्यापारहे ॥ २ ॥ और वस्तुकास्मरणरूपसामान्यज्ञान चित्तका[illegible]पारहे॥ ३॥ और अहंअभिमानकरणा यह अहंकारकाव्यापारहे॥४॥अब आकाशादिकपंचभूतोंके स्वरूपलक्षणका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ अवकाशरूपछिद्र आकाशका स्वरूपलक्षणहे ॥ १ ॥ और चलायमानपणा वायुका स्वरूपलक्षणहे ॥ २ ॥ और उष्णपणा तथाप्रकाशपणा तेजका स्वरूपलक्षणहे ॥ ३ ॥ और द्रवीपणा तथास्नेहपणा जलका स्वरूपलक्षणहे ॥४॥ और कठिनपणा पृथ्वीका स्वरूपलक्षणहे॥अब आकाशादिकपंचभूतोंके तटस्थलक्षणका निरूपणकरेहैं॥हेशिष्य॥ शब्द गुण आकाशका तटस्थलक्षणहे॥१॥और शब्द स्पर्श यहदोनोंगुण वायुका तटस्थलक्षणहे ॥ २॥और शब्द स्पर्श रूप यहतीनोंगुण तेज

का तटस्थलक्षणहै ॥ ३ ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस यहचारिगुण जलका तटस्थलक्षणहै ॥ ४ ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस गंध यह पंचगुण पृथ्वीका तटस्थलक्षणहै ॥ ५ ॥ अब श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेविषयका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ शब्दगुणवालाआकाशतो श्रोत्रइंद्रियका विषयहोवेहै ॥ १ ॥ और शब्द स्पर्श यादोनोंगुणोंवालावायु त्वकइंद्रियका विषयहोवे है ॥ २ ॥ और शब्द स्पर्श रूप यातीनगुणोंवालातेज चक्षुइंद्रियका विषयहोवे है ॥ ३ ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस याचारिगुणोंवालाजल रसन इंद्रियका विषयहोवे है ॥ ४ ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचगुणोंवालीपृथ्वी घ्राणइंद्रियका विषयहोवे है ॥ ५ ॥ इहां आकाश जल पृथ्वी यातीनों विषे जोक्रमतें श्रोत्र रसन घ्राण यातीनइंद्रियोंकोविषयता कथनकरी है ॥ सो तिनआकाशादिकतीनोंविषे क्रमतें शब्द रस गंध यातीनगुणोंका तादात्म्यसंबंध अंगीकारकरिके कथनकर्‍याहै ॥ वास्तवतेंतो श्रोत्र रसन घ्राण यहतीनइंद्रिय क्रमतें शब्द रस गंध यातीनगुणोंकूंहीं विषयकरेहैं ॥ तिनगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं विषयकरेंनहीं ॥ और त्वक् चक्षु यहदोनोंइंद्रियतो रूपस्पर्शादिकगुणोंकूं तथातिन रूपादिकगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं यादोनोंकूंविषयकरे हैं ॥ और हेशिष्य ॥ जेआकाशादिकभूत नियमकरिके श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेविषयहोवे हैं ॥ तेहीआकाशादिकभूत नियमतेंविना वाकादिकइंद्रियोंकेभी विषयहोवेहैं ॥ जेसे हस्तइंद्रिय नियमकरिके पृथ्वीकाहीग्रहणकरेनहीं ॥ किंतु सोहस्तइंद्रिय जलकाभी ग्रहणकरेहै ॥ हेशिष्य ॥ पूर्वकथनकरेजे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतहैं ॥ तथा तिनपंचभूतोंकाकार्यरूप जेइंद्रिय प्राण अंतःकरण आदिकहैं ॥ यहसंपूर्ण व्यष्टिरूपकरिकेतो अध्यात्मसूक्ष्मशरीरविषे वर्तें हैं ॥ और समष्टिरूपकरिके अधिदैव सूक्ष्मशरीरविषे वर्तें हैं॥तेसंपूर्णपदार्थ अत्यंतसूक्ष्महैं॥याकारणतें नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके तिनसूक्ष्मपदार्थोंकाज्ञान होवेनहीं॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनआकाशादिकभूतोंकेसूक्ष्मताविषे कोनकारणहै॥समाधान ॥हेशिष्य॥ताव्यष्टिसमष्टिरूपसूक्ष्मशरीरकेघटक जेआकाशादिकहैं ॥ तिनआकाशादिकोंविषे जोसूक्ष्मताहै॥तासूक्ष्मताविषे पंचीकरणकाअभावही कारणहै॥शंका हेभगवन् जापंचीकरणकेअभावकरिके याआकाशादिकभूतोंविषेसूक्ष्मरूपताहोवेहै॥और जापंचीकरणकरिके याआकाशादिकभूतोंविषे स्थूलताप्राप्तहोवेहै॥तापंचीकरणका क्यास्वरूप

है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ आकाश १ वायु २ तेज ३ जल ४ पृथिवी ५ यापंचभूतोंविषे एकएकभूतके पंचपंचविभागहोवैहैं ॥ तहां
एकएकभूतके चारिचारिविभागतो पृथकहोवैहैं ॥ और पंचमापंचमाविभाग पृथकहोवैहैं ॥ और ताएकएकभूतके पंचमेपंचमेविभाग
केभी पुनः पंचपंचविभागहोवैहैं ॥ तिनपंचविभागोंविषे एकएकविभाग यथाक्रमतें एकएकभूतके चारिचारिविभागोंविषे जाइकेमिलेहैं ॥
ताकरिके एकएकभूतके२१एकविंशति एकविंशति विभागतो आपणेआपणेहोवैहैं॥और चारिचारिविभाग दूसरेदूसरेभूतोंकेहोवैहैं ॥ जेसे
एक आकाशकेपंचविभाग समानकरे॥तिनपंचविभागोंविषे चारिविभागतो पृथक्राखे ॥ और पंचमाविभाग पृथक्राख्या॥ तापंचमेविभा
गकेभी पुनः पंचविभागकरेतिनपंचविभागोंतें एकविभागतो आकाशकेचारिविभागोंविषेमिलाया ॥ और दूसराविभाग वायुविषेमिलाया
और तीसराविभागतेजविषेमिलाया ॥ और चतुर्थविभाग जलविषेमिलाया और पंचमाविभागपृथिवीविषेमिलाया॥याप्रकारकीरीति वायु
आदिकोंविषेभी जाणिलेणो॥तात्पर्ययह॥आकाशकेपंचमेविभागके जेपंचविभागकरेहैं॥तिनपंचविभागोंतें जोएकविभाग आकाशकूंप्राप्त
भयाहै ॥ ताएकविभागकेसमान ताआकाशकेपूर्वलेचारिविभागोंके २० विंशतिविभागहोवैहैं ॥ याअभिप्रायकरिकेही तिनआकाशादिकों
के आपणेआपणे२१एकविंशति एकविंशति विभागकथनकरेहैं॥शंका॥हेभगवन् पंचीकरणकरिके जोएकएकभूतविषेपंचभूतोंकाअंश अं
गीकारकरोंगे॥तो एकहीआकाशविषे वायुपणा तथातेजपणा तथाजलपणा तथापृथिवीपणा प्रतीतहोणाचाहिये॥तैसे वायुआदिकोंविषेभी
पांचोंभूत प्रतीतहोणेचाहिये॥समाधान॥हेशिष्य ॥ तापंचीकरणकेहुएभी तिनआकाशादिकभूतोंविषे आपणेआपणेतो२१एकविंशतिएक
विंशति विभागहैं॥और वायुआदिकभूतोंका एकएकविभागहै॥याकारणतें जेसे२१ एकविंशतितोलापरिमाणसुवर्णविषे एकतोलापरिमाण
ताम्रादिकोंकेमिलेहुएभी तासुवर्णविषे ताम्रबुद्धीहोवैनहीं॥किंतु तासुवर्णविषे सुवर्णबुद्धिहीहोवैहै॥तैसे आपणेअंशकीअधिकताकरिके तिन
आकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंकीप्रतीतिहोवैनहीं॥किंतु आकाशविषेतो आकाशपणाहीप्रतीतहोवैहै॥और वायुविषे वायुपणाहीप्रतीतहो
वैहै॥ऐसे तेजादिकोंविषेभीतेजपणादिकहीप्रतीतहोवैहै॥हेशिष्य॥यहवार्त्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे व्यासभगवान्नेंभी कथनकरीहै ॥तहां सूत्रं ॥ वैशे

ष्यात्तुतद्वादस्तद्वादः॥अर्थयह॥आकाशादिकपंचभूतोंका यद्यपिपंचीकरणकीरीतिसैं परस्पर विभाग मिल्याहुआहे॥तथापि तिनआकाशा दिकभूतोंकाआपणाआपणाअंश अधिकहै ॥ याकारणतैं लोकविषे यहपृथिवीहे यहजलहे इत्यादिकभिन्नभिन्नव्यवहारहोवैहे ॥ १ ॥ शंका हेभगवन् ॥ पंचीकरणवार्तिकग्रंथविषे आकाशादिकभूतोंविषे अर्द्धअर्द्धभागतो आपणाआपणाकह्याहे ॥ और अर्द्धअर्द्धभाग दूसरे भूतों काकह्याहे॥और याग्रंथविषे आपनैं आकाशादिकभूतोंविषे२१एकविंशतिविभागतो आपणेआपणे कथनकरे ॥ और चारिविभाग अ न्यभूतोंकेकथनकरे॥यातैं आपकेकहणेका तावार्तिकग्रंथकेसाथ विरोधहोवैहे॥समाधान॥हेशिष्य॥ तावार्तिकग्रंथविषेभी अर्द्धशब्दकरिके समानअर्द्धकानहीं कथनकऱ्याहे॥किंतु ताअर्द्धशब्दकरिके चारिविभागकाविषमअर्द्धकथनकऱ्याहे॥ यातैं तावार्तिकग्रंथका विरोधहोवैनहीं और हेशिष्य ॥ तावार्तिकग्रंथविषे अर्द्धशब्दकरिके जोकदाचित् समानअर्द्धकाभी ग्रहणकरिये॥तौभीविरोधहोवैनहीं काहेतैं तावार्तिकग्रंथ विषे जोपंचीकरणकीप्रक्रिया कथनकरीहे॥ताप्रक्रियातैं यहप्रक्रिया भिन्नहे ॥ तिनप्रक्रियावोंकेभेदहुएभी हमारेअद्वैतसिद्धान्तकीहानिहोवै नहीं॥उलटा सोप्रक्रियावोंकाभेद याजगत्‌विषेअनिर्वचनीयताकूंही बोधनकरे हैं॥हेशिष्य॥ऐसेपंचीकृतपंचभूतोंकाकार्य जोयहस्थूलशरीर है ॥ सोयहस्थूलशरीर आपणेविषे अनेकप्रकारकेरूपादिकगुणोंकूंधारणकरैहैं ॥ अब तिनगुणोंकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ यास्थूल शरीरविषे शुक्ल १ रक्त २ कृष्ण ३ धूम्र ४ पीत ५ कपिल ६ पांडुर ७ यहसप्तप्रकारकेरूपरहेहैं ॥ इहां धूम्रकेरूपकानाम धूम्रहे ॥ और कपिलागौकेरूपकानाम कपिलहे॥और कपिल वर्णकरिकेमिल्याहुआजोशुक्लहे ताकानाम पांडुरहे॥ और याशरीरविषे कोमल१कठिन २ मध्यम ३ उष्ण ४ शीत ५ अनुष्णाशीत ६ यहषट्प्रकारकेस्पर्शरहेहैं ॥ इहां जोस्पर्श कोमलभीनहींहोवे तथाकठिनभीनहींहोवे तास्पर्श कानाम मध्यमहे ॥ और जोस्पर्शउष्णभीनहींहोवे तथाशीतभीनहींहोवे तास्पर्शकानाम अनुष्णाशीतहे ॥ और याशरीरविषेसुगंध दुर्गंध येदोप्रकारकागंधरहेहे ॥ तहां सुगंधतो पुण्यवानयोगीपुरुषोंकूंहीं प्रत्यक्षहोवैहे ॥ दूसरेजीवोंकूं सोसुगंध प्रतीतहोवैनहीं ॥ और मुखनासिकादिक अंगोंविषेस्थित जेदुर्गंधहैं ॥ तिनदुर्गंधोंकूंतो सर्वजीव नित्यही अनुभव करैहैं ॥ और याशरीरविषे कटु १

तीक्ष्ण २ कषाय ३ क्षार ४ अम्ल ५ मधुर ६ यहषट्प्रकारकेरसरहेहैं ॥ और याशरीरविषे ध्वनिरूपशब्द तथावर्णरूपशब्द यहदोप्रकार केशब्दरहेहैं ॥ तहां ध्वनिरूपशब्दतो निषाद १ ऋषभ २ गांधार ३ षड्ज ४ मध्यम ५ धैवत ६ पंचम ७ याभेदकरिकैसप्तप्रकारकाहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ तिनध्वनिरूपसप्तस्वरोंकेजनावणेवासते नारदमुनिनैं याप्रकारकेदृष्टांतकथनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ षड्जंरौतिमयूरस्तु गावोनर्दंतिचर्षभं ॥ अजाविकौचगांधारं क्रौंचोनदतिमध्यमं ॥ १ ॥ पुष्पसाधारणेकाले कोकिलोरौतिपंचमं ॥ अश्वस्तुधैवतंरौति निषादंरौतिकुंजरः ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ मयूरपक्षीतो षड्जस्वरकाउच्चारणकरैहै ॥ १ ॥ और गोवां ऋषभस्वरकाउच्चारणकरैहैं ॥ २ ॥ और अजा अवि यहदोनों गांधारस्वरकाउच्चारणकरैहैं ॥ ३ और क्रौंचपक्षी मध्यमस्वरकाउच्चारणकरैहै ॥ ४ ॥ और कोकिलपक्षी पंचमस्वरकाउच्चारणकरैहै ॥ ५ ॥ और अश्व धैवतस्वरकाउच्चारणकरैहै ॥ ६ ॥ और कुंजर निषादस्वरकाउच्चारणकरैहै ॥ ७ ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रीराग १ बसंत २ पंचम ३ भैरव ४ मेघनाद ५ नटनारायण ६ यहषट्प्रकारकेरागहोवै हैं ॥ तिनषट्रागोंविषे एकएकरागके यह निषादादिक सप्तसप्तस्वरहोवैहैं ॥ तथा षट्षट्स्त्रियांहोवै हैं ॥ तहां गौडी १ कोलाहासी २ धालो ३ द्रविडी ४ मालवकोशिका ५ गंधारी ६ यहषट्रागिणी श्रीरागकीस्त्रियां हैं ॥ १ ॥ और आंदोली १ कौशिकी २ रामगरी ३ पुटमंजरी ४ गुंगरी ५ देशाख्या६ यहषट्रागिणी बसंतरागकीस्त्रियां हैं ॥ २ ॥ और भैरवी १ गुर्जरी २ भाषा ३ वेलीवती ४ कर्णाटकी ५ रक्तहंसा ६ यहषट्रागिणी पंचमरागकीस्त्रियां हैं॥ ३ ॥ और त्रिगुणा १ स्तंभतीर्था २ आभीरी ३ ककुभा ४ विराड़ी ५ सामेरी ६ यहषट्रागिणी भैरवरागकीस्त्रियां हैं ॥ ४ ॥ और बंगाला १ मधुरा २ कामदा ३ चोकमादिका ४ कंबुग्रीवा ५ देवाला ६ यहषट्रागिणी मेघनादरागकीस्त्रियां हैं ॥ ५ ॥ और त्रोटकी १ गांधारी २ शुद्धसुदगारी ३ इत्यादिकषट्रागिणी नटनारायणरागकीस्त्रियां हैं ॥ ६ याप्रकारकोछत्तीसरागिनी ३६ तथाषट्राग तथासप्तस्वर यहसंपूर्ण याशरीरविषेरहेहैं॥परंतु तेरागरागिणियोंसहितसप्तस्वर सर्वजीवोंकूं प्रत्यक्षहोवैंनहीं ॥ किंतु जैसे याशरीरविषेस्थितउत्तमसुगंधकूं पुण्यवान्योगीपुरुषहीजानैंहैं ॥ तैसे तिनसप्तस्वरोंकूंभी कोईपुण्यवान्पुरुषहीजानैंहैं ॥ तिननिषादादिकस्वरोंकूंही योगीपुरुष अनाहद

शब्दआदिकरूपकरिके अनुभवकरेहैं॥ओर गायनकरणेहारेपुरुषतो तिनसप्तस्वरोंकूं आपणेमुखतैंप्रगटकरेहैं॥हेशिष्य॥जैसे तेध्वनिरूपशब्द अनेकप्रकारकेहैं॥तैसे याशरीरविषे क ख ग इत्यादिकवर्णरूपशब्दभी अनेकप्रकारकेरहेहैं॥तेवर्णरूपशब्दभीयोगीपुरुषोंकूंतो शरीरकेभीतर हीअनुभवहोवेहैं॥ओर अन्यपुरुषोंकूंतो मुखविषेहीप्रसिद्धहोवेहैं॥ओर याशरीरविषे रस १ रुधिर २ मांस ३ मेद ४ अस्थि ५ मज्जा ६ वीर्य ७ यहसप्तधातुरहेहैं॥तिनसप्तधातुवोंकीउत्पत्ति अन्नजलतैंहीहोवेहै ॥तहां यामनुष्यादिकजीवोंनें आपणेउदरविषे पायाजो अन्न तथाजल॥सोअन्नजल पित्तकेतेजतैं परिपक्वहोइके चारिदिनकेपीछे प्रथम रसधातुरूपहोवेहै ॥ १ ॥ ओर सोरसधातुभी पित्तकेतेजतैंपरिपक्वहोइके चारिदिनके पीछे रुधिररूपहोवे है ॥ २ ॥ ओर सोरुधिरभी तापित्तकेतेजतैं परिपक्वहोइके चारिदिनकेपीछे मांसरूपहोवेहै ॥ ३ ॥ ओर सोमांसभी पित्तकेतेजतैं परिपक्वहोइके चारिदिनकेपीछे मेदरूपहोवेहै ॥ ४ ॥ ओर सोमेदभी पित्तकेतेजतैं परिपक्वहोइके चारिदिनकेपीछे अस्थि रूपहोवेहै ॥ ५ ॥ ओर तेअस्थिभी पित्तकेतेजतैं परिपक्वहोइके चारिदिनकेपीछे मज्जारूपहोवेहै ॥ ६ ॥ ओर सोमज्जाभी पित्तकेतेजतैं परिपक्वहोइके चारिदिनकेपीछे वीर्यरूपहोवेहै ॥ ७ ॥ इसप्रकार वैद्यकशास्त्रोंविषे तिनसप्तधातुवोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ ओर याशरीरविषे बतीस ३२ दंतरूपअस्थि रहेहैं ॥ ओर याशरीरविषे पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत सप्तऊपरएकशत १०७ मर्मस्थानरहेहैं ॥ तेमर्मस्थानभी मांसमर्म १ शिरामर्म २ स्नायुमर्म ३ अस्थिमर्म ४ संधिमर्म ५ याभेदकरिके पंचप्रकारकेहोवेहैं ॥ तिनमर्मोंविषे एकादश ११ मांसमर्महोवेहैं ॥ १ ॥ ओर एकतालीश ४१ शिरामर्महोवेहैं ॥ २ ॥ ओर सतावीश स्नायुमर्महोवेहैं ॥ ३ ॥ ओर अष्ट ८ अस्थिमर्महोवेहैं ॥ ४ ॥ ओर वीश २० संधिमर्महोवेहैं ॥ ५ ॥ तिनमर्मस्थानोंविषेभी कोईकमर्मस्थानतो शस्त्रादिकोंकरिकेभेदनकूंप्राप्तहुए शीघ्रही याजीवोंकेमृत्युकाकारणहोवेहैं ॥ ओर कोईकमर्मस्थानतो शस्त्रादिकोंकरिकेभेदनकूंप्राप्तहुए कालांतरविषे याजीवोंकेमृत्युकाकारणहोवेहैं ॥ ओर कोईकमर्मस्थानतो शस्त्रादिकोंकरिकेभेदनकूंप्राप्तहुए याजीवोंके असाध्यरोगोंकाकारणहोवेहैं ॥ तिनमर्मस्थानोंका विशेषकरिकेनिर्णय सुश्रुतादिकवैद्यकशास्त्रोंविषे कथनकर्‍याहै ॥ ओर याशरीरविषे अस्थियोंकीसंधियां एकशतअशी १८० रहेहैं ॥

और याशरीरविषे नवशत९०० स्नायुरहेहैं ॥और याशरीरविषे अष्टसहस्रकोटियां केशरोमरहेहैं ॥ और किसीशास्त्रविषेतो तिनकेशरोमों कीसंख्या साढीतीनकोटीकथनकरीहै ॥ सो तिनकेशरोमोंकेरहणेकेस्थानजे रोमकूपहैं ॥ तिनोंकेसंख्याकूंलेके कथनकरीहै ॥ और याश रीरकेमुखविषे जाजिह्वास्थितहै ॥ साजिह्वा द्वादशपल १२ परिमाणहोवेहै ॥ और याशरीरविषेरक्तवर्णवाला जोहृदय मध्यहै ॥ जिस हृदयमध्यकूं शास्त्रविषे हार्दपद्मकहेहैं ॥ सोहृदयमध्य अष्टपल ८ परिमानहोवेहै ॥ और याशरीरकेहृदयदेशविषे स्थित जोपित्तधातुहै ॥ सोपित्तधातु एकप्रस्थपरिमाणहोवेहै ॥ इहां पलपरिमाणका तथाप्रस्थपरिमाणका यहस्वरूपहै ॥ पंचगुंजापरिमाणकानाम माष है ॥ तिन षोडशमाषोंकानाम कर्ष है ॥ तिनचारिकर्षोंकानाम पलहै ॥ तिनचारिपलोंकानाम कुडवहै ॥ तिनचारिकुडवोंकानाम प्रस्थ है ॥ और याशरीरविषे विशेषकरिकैकंठदेशविषेस्थित जोकफधातुहै॥सोकफधातु चारिप्रस्थपरिमाणहोवे है ॥ और वीर्यरूपसप्तमधातु यासर्व शरीरविषेस्थितहुआभी कंठ हृदय मूर्द्ध यातीनस्थानोंविषे विशेषकरिकेरहेहै ॥ सोवीर्य यासर्वशरीरविषे कुडवपरिमाणरहेहै ॥ और याशरीरविषे मेदधातु दोप्रस्थपरिमाणरहेहै ॥ और याशरीरविषे बस्तिनामास्थानविषेस्थित जोमूत्रहै ॥ तथा संग्रहणीनामास्थानविषे स्थित जोपुरीषहै ॥ तिनदोनोंकीतो अधिकअन्यजलकेग्रहणतैं तो वृद्धिहोवेहै ॥और न्यूनअन्नजलकेग्रहणतैं न्यूनताहोवेहै ॥यातैं तिनमूत्र पुरीषकेपरिमाणका कोईनियमनहींहै॥हेशिष्य॥यागर्भउपनिषद्‌काद्रष्टा जोपिप्पलादनामाऋषिहैतापिप्पलादनामाऋषिनैं तागर्भउपनिषद् विषे याशरीरके जिह्वादिकअंगोंकापरिमाण याप्रकारकाकथनकर्‍याहै और रसरुधिरादिकधातुवोंकातोजलकीनव अंगुलिआदिकपरिमाण याज्ञवल्क्यादिकऋषियों नैं कथनकर्‍याहै ॥ अब यागर्भउपनिषद्‌विषे जेशरीरकेअवयव नहींकथनकरे हैं॥तिनअवयवोंकूं दूसरेशास्त्रोंके प्रमाणतैं इहां निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे सर्वजीवोंकाशरीर पादकेअग्रभागतैंलेके केशपर्यंत आपणे आपणे छियानवे अंगुल ९६ परिमाणदीर्घहोवेहै ॥ और याशरीरके दोनोंपासोंविषे धनुषकेआकार षोडश षोडश अस्थिरहेहैं ॥ और जैसे यालोकविषे पिप्पलादिकवृक्षकेएकमूलतैं प्रथम स्थूलस्कंधनिकसेहैं ॥ तिनस्थूलस्कंधों तैं अनेकस्थूलशाखानिकसेहैं ॥ और तिनस्थूलशाखावों तैं

अनेकसूक्ष्मशाखानिकसेहैं ॥ और तिनसूक्ष्मशाखावोंतैं अनेकअत्यंतसूक्ष्मशाखानिकसेहैं ॥ तैसे याहृदयदेशतैं प्रथम सुषुम्नानामानाडी निकसेहे ॥ तासुषुम्नातैं एकशत १०० नाडोनिकसेहैं ॥ ताएकशतनाड़ियोंविषेभी एकएकनाडोतैं एकएकशत १०० नाड़ियांनिकसेहैं ॥ तिनएकशतनाड़ियोंविषेभीएकएकनाडीतैं बाइत्तरिसहस्र ७२००० नाड़ियांनिकसेहैं ॥ यहसंपूर्णनाड़ियांमिलिके बहत्तरिकोटि दशसहस्र एकशत एक इतनीनाड़ियांहोवे हैं ॥ तेसंपूर्णनाडियां पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत यासर्वशरीरकूंव्यासकरिकेरहेहैं ॥ याप्रकार प्रश्नउपनिषद् विषे नाड़ियोंकीसंख्या कथनकरीहे ॥ और छियानवेअंगुल ९६ परिमाण जोयहशरीरहे तिसशरीरतैं यहप्राणवायु नासिकाद्वारा द्वादशअंगुल १२ परिमाण बाहरजावे हे ॥ याकारणतैं सोप्राणवायु अष्टोत्तरशतअंगुल १०८ परिमाणहोवे हे ॥ और याशरीरविषे पादकेअग्रभागतैंलेके अठतालीशअंगुल ४८ऊपर जोदेशहे ॥ अथवा केशकेअग्रभागतैंलेके अठतालीशअंगुल ४८ नोचेजोदेशहे ॥ सोदेश याशरीरका मध्यदेशहे ॥ तामध्यदेशविषे तप्तसुवर्णकेसमानतेजवाला तथा चारिकोणवाला एक अग्निकास्थानरहेहे ॥ सोअग्निरूपतेज नाडीमार्गद्वारा सर्वशरीरविषे व्याप्तहोइकेरहेहे ॥ तथा मस्तकविषेस्थितचंद्रमंडलपर्यंत व्याप्तहोइकेरहेहे ॥ यहवार्त्ता आगमशास्त्रविषे भगवान् महादेवनैंभी कथनकरीहे ॥ तहां श्लोक ॥ सर्वेषामपिजंतूनां मूर्ध्निर्तिष्ठतिचंद्रमाः॥अधोभागेरविःप्रोक्तो मृत्युकालेविपर्ययात् ॥ अर्थयह ॥ सर्वजीवोंकेमूर्धस्थानविषेतो चंद्रमारहेहे ॥ और नीचेस्थानविषे सूर्यरहेहे ॥ और याजीवोंकूं जभी मरणकाल प्राप्तहोवेहे ॥ तभीतो चंद्रमा नीचेस्थानविषेआवेहे ॥ और सूर्य मूर्धस्थानविषेजावे हे ॥ हेशिष्य ॥ ताचारिकोणवालेकुंडविषेस्थित जोअग्निरूपतेजहे ॥ सोअग्निरूपतेज याशरीरइंद्रियादिकसर्वसंघातकूं सामर्थ्यकोप्राप्तिकरे हे ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताअग्निरूपतेजकूं शक्ति यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और सोअग्निरूपतेज अत्यंतसूक्ष्महे ॥ यातैं याजीवोंकरिके जान्याजावेनहीं ॥ और सोअग्निरूपतेजही आपणेउष्णतारूपकरिके यासर्वप्राणियोंके जीवनकाकारणहे ॥ ऐसेअग्निरूपतेजकास्थान एकअंगुलपरिमाणहोवे हे ॥ और पायुस्थानतैंदोअंगुलऊपरदेशविषे तथाउपस्थस्थानतैंदोअंगुलनीचेदेशविषे सोअग्निकास्थानरहे हे ॥ हेशिष्य ॥ सोएकअंगुलपरिमाण चारिकोणवाला अग्निकास्थान

जिसशरीरकेमध्यदेशविषेरहे है ॥ तामध्यदेशविषे नवअंगुलपरिमाण अवकाशरहे है ॥ ताकेविषे चारिअंगुलपरिमाणदीर्घ तथाचा
रिअंगुलपरिमाणचौडा एक कंदकेसमान मांसकापिंडरहे है ॥ तामांसपिंडरूपकंदतें एक नाभिचक्ररूपकमलका नाल उत्पन्नहोवे है ॥
कैसाहैसोनाल ॥ दंडकीन्याई नवअंगुलपरिमाण दीर्घ है ॥ तथारसादिकसप्तधातुवोंकरिकेंवेष्टितहै ॥ तथा याशरीरके सर्वअवयवोंकामूल
रूपहै ॥ ऐसेनालकेमध्यविषे एकनाभिचक्ररहेहै ॥ कैसाहैसो नाभिचक्र ॥ जैसे लोकप्रसिद्धरथकेचक्रकेआराहोवे हैं॥ तैसे सोनाभिचक्रभी
द्वादशअराकरिकेयुक्तहैं ॥ तथा याशरीरकरिकेवेष्टितहै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे ऊर्णनाभोजंतु तंतुवोंविषे भ्रमणकरेहै ॥ तैसे पुण्यपापकर्म
रूपतंतुवोंकूंआश्रयणकरिके यहजीवात्मा इसीनाभिचक्रविषे भ्रमणकरेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत ॥ सर्वशरीरविषे
यहजीवात्मा व्याप्यकरिकेरहेहै ॥ यातें याजीवात्माकी एकनाभिचक्रविषेही स्थितिकहणी संभवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यहजीवा
त्मा यद्यपि पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत सर्वशरीरविषेस्थितहै ॥ तथापि नाभि हृदय कंठ चक्षु मूर्द्धा इत्यादिकस्थानोंविषे विशेषकरिके ता
जीवात्माकीअभिव्यक्तिहोवेहै ॥याकारणतें शास्त्रवेत्तापुरुष ताजीवात्माकीनाभिआदिकस्थानोंविषे स्थिति कथनकरे हैं॥हेशिष्य॥तिनजी
वकेस्थानोंविषेभी प्रथम चतुरकोणरूपकरिके वर्णनकऱ्या जोआधारचक्रहै ॥ ताआधारचक्रकूं मूलचक्रभीकहेहैं ॥ताआधारचक्रविषे यह
प्राणसहितजीव सर्वदा निवासकरेहै ॥हेशिष्य॥ताआधारचक्रतैंऊपर तथानाभिचक्रतैंनीचे सर्पकीन्याईवक्रआकार एककुंडलिनीनामाशक्ति
रहेहै ॥ साकुंडलिनीशक्ति कारणस्वरूपब्रह्मकी मूर्तिरूप है ॥ और भूमि १ जल २ अग्नि ३ वायु ४ आकाश ५ मन६बुद्धि ७अहंकार
८ यहअष्टप्रकारकीअपरप्रकृति जे गीताविषेकथनकरीहैं ॥ तिनोंकाभी यहकुंडलिनीनामाशक्तिहीकारणहै ॥ और यहकुंडलिनीनामाश
क्तिही प्राणवायुकरिके ताडनकरीहुई सर्व शब्दोंकूंउत्पन्नकरेहै ॥ और यहकुंडलिनीही प्राणोंके बाहरब्रह्मलोकजाणेविषे प्रतिबंधकहै ॥का
हेतें याजीवोंकेउदरविषेस्थित जो प्राणवायुहै॥सोप्राणवायुऊपरदशमद्वारविषेआइके बाहरब्रह्मलोककेजाणेकाउद्यमकरैहै ॥ परंतुसोप्राणवा
यु तादशमद्वारतैंबाहर निकसिसकैनहीं॥काहेतें तादशमद्वारतैंबाहरनिकसणेकामार्ग सुषुम्नानाडीहै ॥तासुषुम्नानाडीकेमुखकूंयहकुंडलिनी

आपणेसुखसैंनिरोधनकरिकै आपणेस्थानविषे शयनकरैहै ॥ याकारणतैं यहप्राणवायु तात्रह्मलोकविषेजाइसकेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥ साकुंडलिनी किसकालविषे जाग्रतकूंप्राप्तहोइके तासुषुम्नानाडीकेमुखका परित्यागकरैहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ योगसमाधानकरिकै चलायमानकन्याजोप्राणवायुहै ॥ ताप्राणवायुकारिकै जभी साकुंडलिनी जाग्रतकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी साकुंडलिनी हृदयआकाशकूंव्याप्तक रिकै स्फुरणहोवैहै ॥तथा दशमद्वारपर्यंत जावैहै॥कैसीहैसाकुंडलिनी ॥शेषनागकेसमान जाकीउज्ज्वलमूर्तिहै ॥ हेशिष्य ॥ जिसकालविषे योगसमाधानकरिकैचलायाहुआ सोप्राणवायु अंतरअग्निसहित तासुषुम्नानाडीकेमुखरूपमार्गद्वारा ताशरीरकेमध्यविषेप्रवेशकरैहै ॥ तिस कालविषे जाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहुई साकुंडलिनी तासुषुम्नानाडीकेमुखकूं निरोधनकरैनहीं॥ अबआधारचक्रादिकोंविषे प्राणोंकोस्थितिरूप जोप्रत्याहारहै ताकेनिरूपणकरणेवासतै प्रथम ताकेउपयोगीनाड़ियोंकास्वरूप निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य ॥ याशरीरकेमध्यविषेस्थित जो मांसकापिंडरूपकंदहै॥ताकंदकेमध्यविषे एकसुषुम्नानामानाडीरहैहै॥तासुषुम्नानाडीकेचारोंओरतैं दूसरीअनेकनाडियाँरहैहैं॥ तिनसर्वनाड़ि योंकेमध्यविषे यहचतुर्दशनाड़ियांप्रधानहैं॥सुषुम्ना १ इडा २पिंगला ३ सरस्वती४ कुहू ५ वारणा६यशस्विनी ७ पूषा ८ पयस्विनी ९ शंखिनी १०गांधारी ११ हस्तिजिह्वा १२ विश्वोदरा१३अलंबुषा १४॥ और याचतुर्दशनाडियोंविषेभी सुषुम्ना १ इडा२पिंगला ३ यहतीन नाड़ियां प्रधानहैं॥और यातीननाड़ियोंविषेभी एकसुषुम्नानाडी प्रधानहै ॥ जासुषुम्नानाडी ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा मुक्तिकामार्गहै॥ तथा सर्वविश्वकूंधारणकरणेहारीहै ॥अब याचतुर्दशनाडियोंकेस्थानोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तानाडीकंदकेमध्यदेशविषेतौ सा सुषुम्नानाडीस्थितहै ॥ और याशरीरके पृष्ठदेशकेमध्यविषेस्थित जोदीर्घअस्थिहै ॥ ताअस्थिरूपमार्गद्वारा सासुषुम्नानाडी मूर्द्धस्थानकूं प्राप्तहोवैहै ॥और तासुषुम्ना नाडीकेवामभागविषे इडानामानाडीस्थितहै ॥ और तासुषुम्नाकेदक्षिणभागविषे पिंगलानाडीस्थितहै ॥ और सुषुम्ना इडा पिंगला यातीननाड़ियोंकेअग्रभागविषे तथापृष्ठभागविषे एकएकनाडीरहैहै ॥ तहां सुषुम्नानाडीकेपृष्ठभागविषेतौ सरस्वती नाडीरहैहै ॥ और अग्रभागविषे कुहूनाडीरहैहै ॥ और इड़ानामानाडीके पृष्ठदेशविषेतौ गांधारीनाडीरहैहै॥और अग्रभागविषे हस्तिजिह्वा

नाडीरहेहै ॥ और पिंगलानामानाडीके पृष्ठभागविषेतो पूषानाडीरहेहै ॥ और अग्रभागविषे यशस्विनीनाडीरहेहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिननवनाड़ियोंकी तीनपंक्तिहोवे हैं ॥ तहां एकतो अग्रभागविषेस्थित तीननाड़ियोंकोपंक्ति ॥ और दूसरी मध्यभागविषेस्थित तीनना ड़ियोंकीपंक्ति ॥ और तीसरी पृष्ठभागविषेस्थित तीननाड़ियोंकीपंक्ति ॥ तहां सुषुम्नाकेवामभागकीतरफसें तिननाड़ियोंकोगिणतीकरणे तें यहक्रमसिद्धहोवे है ॥ हस्तिजिह्वा १ कुहू २ यशस्विनी ३ यहतीननाड़ियां अग्रभागकी प्रथमपंक्तिहैं ॥ और इडा १ सुषुम्ना २ पिंग ला ३ यहतीननाड़ियां मध्यभागकी दूसरोपंक्तिहैं ॥ और गांधारी १ सरस्वती२पूषा ३ यहतीननाड़ियां पृष्ठदेशकी तीसरोपंक्तिहैं ॥ इत नैंकरिके नवनाड़ियोंकेस्थानकहे ॥ अब बाकीके पंचनाड़ियोंकेस्थानोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ प्रथमपंक्तिविषे हस्तिजिह्वा कुहू यादोनोंनाड़ियोंकेमध्यविषे विश्वोदरानामानाड़ी रहेहै ॥ और तिसोप्रथम पंक्तिविषे कुहू यशस्विनी यादोनोंनाड़ियोंकेमध्यविषे वार णानामानाड़ी रहेहै ॥ और तिननाड़ियोंकीतीसरीपंक्तिविषे गांधारी सरस्वती यादोनोंनाड़ियोंकेमध्यविषे पयस्विनीनामानाडी रहेहै ॥ और तिसोतीसरीपंक्तिविषे सरस्वती पूषा यादोनोंनाड़ियोंकेमध्यविषे शंखिनीनामानाडी रहेहै ॥ और अलंबुषानामानाडी तार्कदके नोचे रहेहै ॥ यातें तिनचतुर्दशनाड़ियोंका यहक्रम सिद्धभया ॥ हस्तिजिह्वा १ विश्वोदरा २ कुहू ३ वारणा ४ यशस्विनी ५ यहपंच नाड़ियां प्रथम अग्रपंक्तिविषेस्थितहै ॥ और इडा १ सुषुम्ना २ पिंगला ३ यहतोननाड़ियां दूसरी मध्यपंक्तिविषेस्थितहैं ॥ और गांधारी १ पयस्विनी २ सरस्वती ३ शंखिनी ४ पूषा ५ यहपंचनाड़ियां तीसरी पृष्ठपंक्तिविषेस्थितहैं ॥ और एक अलंबुषानामानाड़ी तार्कदकेनीचेदेशविषेस्थितहै ॥ इतनैंकरिके तार्कददेशविषे नाड़ियोंकीस्थिति निरूपणकरी ॥ अब तेसुषुम्नआदिकनाड़ियां तार्क दतैंनिकसिके जिसजिसस्थानविषेजाइके जिसजिसव्यापारकूंकरैहैं॥तिनस्थानोंका तथा तिनव्यापारोंका निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥तार्कद तैंनिकसिके सासुषुम्नानामानाडीतो मूर्द्धस्थानविषेजाइके सर्वविश्वकाधारणरूपव्यापारकूं करैहै ॥ और इडा पिंगला यहदोनोंनाड़ियांतो यथाक्रमतें वामदक्षिणनासिकाविषेजाइके गंधकाग्रहणरूपव्यापारकूं करैहैं॥और गांधारोपूषा यहदोनोंनाड़ियांतोयथाक्रमतें वामदक्षिणनेत्र

विषेजाइके रूपकाग्रहणरूपव्यापारकूं करैहैं॥और शंखिनीयशस्विनीयहदोनोंनाड़ियांतो यथाक्रमतें वामदक्षिणकर्ण विषेजाइके शब्दका ग्रहणरूपव्यापारकूंकरैहैं ॥ और सरस्वतीनाडीतो रसनविषेजाइके रसकाग्रहणरूपव्यापारकूं करैहै ॥ और हस्तिजिह्वा पयस्विनी यह दोनोंनाड़ियांतो यथाक्रमतें वामदक्षिणपादकेअंगुष्ठविषेजाइके गमनरूपव्यापारकूं करैहै ॥ और अलंबुषानाडीतो पायुस्थानविषेजाइके मलादिकोंकापरित्यागरूपव्यापारकूं करैहै ॥ और कुहूनाडीतो उपस्थस्थानविषेजाइके विषयानंदरूपव्यापारकूं करैहै ॥ और विश्वोदरा वारणा यहदोनोंनाडियांतो यथाक्रमतें वामदक्षिणहस्तविषेजाइके वस्तुकाग्रहणरूपव्यापारकूं करैहैं ॥ हेशिष्य ॥ इनचतुर्दश नाड़ियोंतैंआदिलेके असंख्यातनाडियां याशरीरविषेस्थितहैं ॥ तिनसर्वनाड़ियोंविषे प्राणवायु भ्रमणकरैहै ॥ यातें प्राणोंकेगमनकी मार्गरूपता तिनसर्वनाड़ियोंका साधारणव्यापारहै ॥ इतनेकरिकै नाड़ियोंकेव्यापारकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिननाड़ियोंविषेविचरणेहारेप्राणोंके मुख्यमुख्यस्थानोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य जिसप्राणवायुके अपानादिकभेदहोवैहैं ॥ तथा जोप्राणवायु तानाडीकंद केनीचेरहैहै ॥ सोप्राणवायु मुख नासिका हृदय नाभि पादका अंगुष्ठ यास्थानोंविषेरहैहै ॥ और याशरीरकेनाभिस्थानतैंलेके जंघापर्यंत देशविषे अपानवायु रहैहै ॥ तादेशविषेभी पायु उपस्थ यादोनोंस्थानोंविषे सोअपान विशेषकरिकैरहैहै ॥ और दोश्रोत्र दोचक्षु दोहस्तपादोंकेगुल्फ पृष्ठदेशविषेस्थितदीर्घअस्थि कटि उर यास्थानोंविषे व्याननामावायु रहैहै ॥ और याशरीरकेसर्वसंधियोंविषे तथादोहस्तपादोंविषे उदाननामावायु रहैहै ॥ और समाननामावायुतो यासर्वशरीरकूंव्याप्यकरिकै रहैहै ॥ और सो समाननामावायुही अंतरअग्निकेसहित भोजन करेहुएअन्नकेरसकूं सर्वशरीरविषेव्याप्तकरैहै ॥ और सोसमानवायुही पूर्वउक्तसर्वनाडियों विषे विचरैहै और नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय, यहपंचवायुतो यथाक्रमतें त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि यापांचोंविषेरहैहैं ॥ इतनेंकरिकै प्राणोंकेस्थानका निरूपणकऱ्या ॥ अब तिनप्राणोंकेव्यापारोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ याशरीरतैं मुखनासिकाद्वारा वायुकूंबाहरकरणा याकानाम श्वासहै॥औरबाहरलेवायुकूं तामुखनासिकाद्वाराशरीरकेभीतरलेआवणायाकानाम प्रश्वासहै॥यहदोनों प्राणका

व्यापारहैं ॥ और मलमूत्रादिकोंकापरित्यागकरणा यह अपानवायुकाव्यापारहे ॥ और बलकरिकैसिद्धहोणेहारे जेग्रहण त्याग चेष्टा आदिकहैं ॥ सो व्यानवायुकाव्यापारहे ॥ और याशरीरकेउत्थानादिक उदानवायुकाव्यापारहे ॥ और सर्वशरीरविषेव्यापक जोप्राणोंकाचलणाहे ॥ सो समानवायुकाव्यापारहे ॥ और उदगार हिडकी यह नागवायुकाव्यापारहे ॥ और नेत्रोंकानिमीलन तथाउन्मीलन यह कूर्मवायुकाव्यापारहे ॥ और छिका कृकलवायुकाव्यापारहे ॥ और विजृंभण देवदत्तवायुकाव्यापारहे॥और शरीरकासूजणा धनंजयवायुकाव्यापारहे ॥ इतनैंकरिके प्राणोंकेव्यापारोंका निरूपणकऱ्या ॥ अब योगीपुरुषोंकूंकरणेयोग्य जोप्राणोंकानिरोधरूपप्रत्याहारहे ताप्रत्याहारविषेउपयोगी जेअष्टादशस्थान वशिष्ठभगवान्नें कथनकरे हैं तिनस्थानोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ पादकाअंगुष्ठ १ गुल्फ २ जंघोंकामध्य ३ चितिमूल ४ जानु ५ ऊरुकामध्य ६ पायुका मूल ७ शरीरकामध्य ८ उपस्थकामध्य ९ नाभि १० हृदय ११ कंठकूप १२ तालुकामूल १३ नासिकाकामूल १४ दोअक्षिका मध्य १५ दोभ्रूकामध्य १६ ललाट १७ मूर्द्धा १८ यहअष्टादशस्थान ताप्रत्याहारकेहैं ॥ और पूर्वजो सत्तऊपरशत १०७ मर्मस्थानकहेथे ॥ तेमर्मस्थान याअष्टादशस्थानोंकेसमीपवर्तिहोहैं ॥ याकारणतें तेमर्मस्थान याअष्टादशस्थानोंकेअंतरभूतही हैं ॥ इहां जंघोंकेपृष्ठदेशकामांस जिसस्थानतैंलेके वृद्धिकूंप्राप्तहोवे है ॥ तास्थानकानाम चितिमूलहे ॥ और कंठविषेस्थितघंटिकाकेअधोदेशकानाम कंठकूपहे ॥ पूर्व पादकेअग्रभागतैंलेके केशकेअग्रभागपर्यंत छियानवेअंगुल ९६ शरीरकापरिमाण लोकदृष्टिकेअनुसार कथनकऱ्याथा॥ अब वशिष्ठभगवान्ने जिसप्रकार याशरीरकापरिमाण कथनकऱ्याहे ताका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ पादकेअंगुष्ठतैंलेके याशरीरका पृथक्परिमाणवर्णनकरणा संभवेनहीं ॥ किंतु अंगुष्ठतेंआदिलेके जितनेंकी यापादकेअवयवहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका पादशब्दकरिकेहीग्रहणहोवे है॥ यातैं पादतैंलेकेही याशरीरकापरिमाण वर्णनकरणा उचितहे ॥तहां पादतैंलेके साढेचार अंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे गुल्फ रहेहे ॥ और तागुल्फदेशतैंलेके दशअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे जंघोंकामध्यरहे है ॥ और ताजंघोंकेमध्यदेशतैंलेके एकादशअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे चितिमूल रहेहे ॥ और ताचितिमूलदेशतैंलेके दो

अंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे जानु रहेहे ॥ और ताजानुदेशतेंलेके नवअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे ऊरुकामध्यरहेहे और ताऊरुकेमध्यदेशतेंलेके नवअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे पायुकामूल रहेहे ॥ और तापायुकेमूलदेशतेंलेके अढाईअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे शरीरकामध्य रहेहे और ताशरीरकेमध्यदेशतेंलेके अढाईअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे उपस्थ रहेहे ॥ और ताउपस्थदेशतेंलेके साढेदश अंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे नाभिरहेहे ॥ और तानाभिदेशतेंलेके चतुर्दशअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे हृदयकामध्यरहेहे और हृदयकेमध्यदेशतेंलेकेषट्अंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे कंठकूप रहेहे ॥ और ताकंठकूपदेशतेंलेके चारअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे जिह्वाकामूल रहेहे ॥ और ताजिह्वाकेमूलदेशतेंलेके चारअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे नासिकाकामूल रहेहे ॥ और तानासिकाकेमूलदेशतेंलेके अर्द्धअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे चक्षुकामध्य रहेहे ॥ और ताचक्षुकेमध्यदेशतेंलेके अर्द्धअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे भ्रूकामध्य रहेहे ॥ और ताभ्रूकेमध्यदेशतेंलेके तीनअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे ललाट रहेहे ॥ और ताललाटदेशतेंलेके तीनअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे मूर्द्धस्थानरहेहे इसप्रकार पादतेंलेकेमूर्द्धस्थानपर्यंत यासर्वशरीरका छियानवेअंगुलपरिमाण वशिष्टभगवान्नें कथनकऱ्याहे ॥ जिसशरीरकूं याजीवोंनें अहंबुद्धिकरिकेग्रहणकऱ्याहे ॥ इतनेंग्रंथकरिके याशरीरकावर्णनकऱ्या ॥ अब याशरीरके वर्णनका विवेकवैराग्यरूपफल निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य पिप्पलादऋषिनें गर्भउपनिषद्विषे जिसशरीरकूं भूतभौतिकरूपकरिके वर्णनकऱ्याहे ॥ सोयहशरीर इतनेअवयवोंकासमुदायरूपहे ॥ तेअवयव यहहैं ॥ आकाशादिकपंचमहाभूत तथाश्रोत्रादिकदशइंद्रिय तथा तिनइंद्रियोंके शब्दादिकदशविषय तथाअंतःकरणचतुष्टय तथादशप्राण तथात्वगादिकसप्तधातु तथाअसंख्यातनाड़ियां तथासप्त ऊपरएकशत मर्मस्थान तथापित्तादिकतीनदोष तथाकंठ तथाहृदयकमल तथाविष्ठामूत्र तथाअनंतकेशलोम इत्यादिकअवयवोंकेसमुदायकानामशरीरहे ॥ याप्रकारकेअवयवोंतेंभिन्नकरिके याशरीरकाकिंचित्मात्रभी स्वरूपसिद्धहोइसकेनहीं॥ऐसे निषिद्धशरीरविषे याजीवोंकूं आत्मबुद्धिकरणी योग्यनहींहे ॥ काहेतें जिनविष्ठामूत्रादिकमलिनवस्तुवोंकासमुदायरूप यहशरीरहे ॥ तेविष्ठामूत्रादिक

लिनवस्तु नरकादिकस्थानोंविषेभीरहेहैं ॥ यातें यहअज्ञानीजीव जैसे याशरीरविषेआत्मबुद्धिकरेहैं ॥ तैसे नरकादिकोंविषेस्थित तिनवि
ष्टामूत्रादिकपदार्थोंविषे आत्मबुद्धि किसवासतैंनहींकरते ॥ किंतु तिनोंविषेभी साआत्मबुद्धिकरीचाहिये ओर याशरीरतैंबाह्यस्थितजे
विष्टा मूत्र रुधिर मांस अस्थि आदिकमलिनपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंविषे जैसे कोईभीपुरुष आत्मबुद्धिकरतानहीं ॥ उलटा तिनविष्टामू
त्रादिकपदार्थोंके दर्शनतैं तथास्पर्श तैं लोक स्नानादिककरेहैं ॥ तैसे तिनविष्टामूत्रादिकपदार्थोंकासमूहरूप जोयहशरीरहै ॥ ताशरीरवि
षेभी आत्मबुद्धिकरणीयोग्यनहीं है ॥ किंतु उलटा याशरीरतैं गिलानिकरणीयोग्यहै ॥ किंवा ॥ जैसे दूसरेकिसीपुरुषकेशरीरविषेस्थित
जेकेशदंतादिकपदार्थ हैं ॥ तथा किसीमार्गविषेस्थितजेकेशदंतादिकपदार्थ हैं ॥ तिनकेशदंतादिकोंविषे जैसे याजीवोंकूं आत्मबुद्धिहोती
नहीं ॥ तैसे तिनकेशदंतादिकपदार्थोंकेसमूहरूपयाशरीरविषेभी आत्मबुद्धिकरणी योग्यनहीं है ॥ किंवा मरणअवस्थाविषे तथामूर्छा
अवस्थाविषे तथासुषुप्तिअवस्थाविषे किसीभीजीवकूं याशरीरविषे आत्मबुद्धिहोवैनहीं ॥ यातें जाग्रतअवस्थाविषे याजीवोंकूं याशरीर
विषे जाआत्मबुद्धिहोवैहै ॥ साबुद्धि मिथ्याही है ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपदार्थ कदाचित्तो प्रतीतहोवैहै॥ ओर कदाचित् नहींप्रतीतहोवैहै ॥
सोपदार्थ मिथ्याहीहोवैहै ॥ जैसे मृगतृष्णाकाजल कदाचित्तो प्रतीतहोवैहै ॥ ओर कदाचित् नहींप्रतीतहोवैहै ॥ यातें सोमृगतृ
ष्णाकाजल मिथ्याही है ॥ तैसे याशरीरविषेआत्मबुद्धिभी कदाचित् प्रतीतहोवैहै ॥ यातें साआत्मबुद्धिभी मिथ्याही है ॥ किंवा ॥
किसीव्याधिकरिके अथवा शस्त्रकरिके याशरीरविषे उत्पन्नभयाजोव्रणहै ॥ जोव्रण दुर्गंधकरिके तथाकृमिपूयकरिके युक्तहै ॥ ऐसेव्रण
कूंदेखिकरिके सर्वजीवोंकूं आपणेमनविषे गिलानिहोवैहै ॥ परंतु तिनव्रणादिकविकारोंकाकारणजोयहशरीरहै ॥ ताशरीरविषे याजी
वोंकूं गिलानिहोतीनहीं ॥ यह हमारेकूं बहुतआश्चर्यलागताहै ॥ किंतु ताव्रणतैंभी याशरीरविषे अधिकगिलानिकरीचाहिये ॥ किंवा ॥
यालोकविषे जैसे प्रसिद्धअन्नकाविकार जोविष्टाहै ॥ तथावमनहै तथादुर्गंधिवालाजोअन्नहै ॥ तिनविष्टादिकोंकूंदेखिके सर्वजीवोंकूं गिला
निहोवैहै ॥ तैसे यहशरीरभी ताअन्नकाहीविकारहै ॥ यातें याशरीरविषे हमविवेकीपुरुषोंकूं गिलानिकिसवासतैनहींहोती ॥ किंतु जैसे

नाहरलेविद्यादिकपदार्थोंविषे हमारेकूं गिलानिहोवैहै ॥ तैसे याशरीरविषेभी गिलानिहोणीचाहिये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार यहअधिकारी पुरुष जभी याशरीरकेदोषोंकाविचारकरैहै ॥ तभीही याअधिकारीपुरुषकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं याशरीरविषे अवश्यकरिके तिनदोषोंकाविचारकरणा ॥ अब दूसरीरीतिसैंभी ताशरीरकेवर्णनका वैराग्यरूपफलनिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ तागर्भउपनिषद्विषेकथनकऱ्याजो याजीवोंकाजन्महै ॥ ताजन्मकूं यहअधिकारीपुरुष दुःखरूपकरिकैचिंतनकरे ॥ ताचिंतनकरिकैभी याजीवोंकूं अवश्यकरिके वैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अब ताजन्मदुःखोंका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ पिताकेशुक्रतैं तथामाताकेशोणिततैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिनशरीरोंकानाम योनिजशरीरहै ॥ ऐसेमनुष्यादिकयोनिजशरीरोंके जितनेकीपितामाताहैं ॥ तिन पितामातावोंकेशरीर रसरुधिरादिकसप्तधातुरूपहोवैहैं ॥ तथा पितामाताके शुक्रशोणिततैंउत्पन्नहोवे हैं ॥ यहवार्त्ता सर्वबुद्धिमान्पुरुषोंकूं संमतहै ॥ ऐसेपितामाताकेशरीरतैं जेमनुष्यादिकशरीर उत्पन्नहोवैहैं ॥ तेशरीरभी तिसीप्रकारकेहोवैहैं ॥ हेशिष्य ॥ पंचभूतोंतैंआदिलेके केशलोमपर्यंत तिनसर्वअवयवोंकासमुदायरूप जोयहस्थूलदेह हमनैं तुमारेप्रति पूर्व वर्णनकऱ्याथा ॥ सोयहदेह क्षणक्षणविषे विशीरण भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती यादेहकूं शरीर यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहशरीर किसकारणकरिके क्षणक्षणविषे विशीरणभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ याशरीरकेभीतर तीनअग्निरहैहैं ते तीनअग्निही याशरीरकेविशीरणभावका कारणहैं ॥ तहां एकतो उदरविषेस्थित जठराग्निहै ॥ और दूसरा मनविषेस्थित जिज्ञासारूपअग्निहै ॥ और तीसरा श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषेस्थित विषयोंकीलोलुपतारूपअग्निहै॥यातीनअग्नियोंकरिके यहशरीरनिरंतर दाहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे यालोकप्रसिद्धअग्निके घृतकाष्ठादिकपदार्थ आहुतिहोवैहैं ॥ तैसे यातीनअग्नियोंके कौनपदार्थ आहुतिरूपहैं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ लेह्य, पेय, चोष्य, भोज्य, यह चारिप्रकारकाअन्न ताजठराग्निकी आहुतिहै ॥ इहां मधुआदिकपदार्थोंकानाम लेह्यहै ॥ और दुग्धादिकपदार्थोंकानाम पेयहै ॥ और इक्षुआदिकपदार्थोंकानाम चोष्यहै ॥ और ओदनादिकपदार्थोंकानाम भोज्यहै ॥ और शास्त्रकेअनु

सार जेउपासनादिकज्ञानहैं तथाशास्त्रतैंविरुद्ध जेलौकिकज्ञानहैं तथासुखदुःखरूपजोफलहै यहसंपूर्ण ताजिज्ञासारूपमानसअग्निका आहुतिहै ॥ और श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषेस्थित जोविषयोंकीलोलुपतारूपअग्निहै ॥ ताअग्निकेतो यथाक्रमतैं शब्दस्पर्शादिकविषयही आहुतिहैं॥ ऐसेतीनअग्नियोंकरिके यहदेह शीरणभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ याकारणतैं यादेहकूं शरीर यानामकरिकेकथनकरे है ॥ अब षष्ठेअध्यायविषे कथनकरीजापंचअग्निविद्याहै तापंचअविद्याकीरीतिसैं याजीवात्माका ताजठराग्निविषेप्रवेशकाप्रकार निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ दुग्ध घृत सोम इत्यादिकपदार्थहैंप्रधानजिनोंविषे ऐसीजेआहुतिहैं ॥ तिनआहुतियोंकूं जभी यहकर्मीपुरुष श्रद्धापूर्वक तथाशास्त्रविधिपूर्वक आहवनीयादिकअग्नियोंविषेपावे है ॥ तभी तेआहुतियां सूक्ष्मअवस्थारूपपरिणामकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और मरणतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष ताआहुतियोंकेसूक्ष्मअवस्थारूपपरिणामकेसाथमिलिके स्वर्गलोकरूपप्रथमअग्निकूंप्राप्तहोवे है॥तास्वर्गलोकविषे सुखरूपफलकेभोगकरिके जभी ताकर्मीजीवके पुण्यकर्म क्षयहोवे हैं ॥तभी सोकर्मीजीव तास्वर्गलोकतैं नीचेपतनहोइके मेघरूपदूसरीअग्निकूंप्राप्तहोवैहै॥और तिनमेघों तैं वर्षाद्वारा याभूमिलोकविषेप्राप्तहोइके सोकर्मीजीव व्रीहियवादिकअन्नभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताजीवमिलितअन्नकूं जभी पुरुष तथास्त्रियां आपणेक्षुधाकीनिवृत्तिकरणेवासते भक्षण करे हैं ॥ तभी सोजीवमिलितअन्नतिनपुरुषस्त्रियोंके जठराग्निविषेप्राप्त होवैहै ॥ और सोजठराग्नि प्राणवायुकीरकेप्रेरणाकर्‍याहुआ ताअन्नके असार मध्यम सार यातीनविभागोंकूंकरैहै ॥ तहां विष्ठामूत्र रूपअसारभागकूंतो पायुइंद्रियद्वारा याशरीर तैं बाहरनिकासैहै ॥ और ताअन्नकेमध्यमभागकूंतो सोअग्नि रसादिकसप्तधातुरूप करैहै ॥ और ताअन्नके सूक्ष्मसारभागकरिकेतो मनप्राणइंद्रियोंकूं तृप्तकरैहै ॥इसप्रकार सोजठराग्नि ताअन्नकेतीनभागोंकूंकरैहै ॥ अब ताअन्नकेमध्यमभागविषे रसादिकसप्तधातुरूपता निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ सोजीवमिलितअन्नकामध्यमभाग ताजठराग्निकेतेजतैंपरिपक्वहोइके प्रथम रसधातुरूपकूंप्राप्तहोवे है ॥ और सोरसधातुअग्निकेतेजतैं परिपक्वहोइके रुधिररूपहोवे है ॥ और सोरुधिर अग्निकेतेजतैंघनीभूतहोइकेमांसरूपहोवैहै ॥और सोमांस अग्निकेतेजतैंपरिपक्वहोइकेमेदरूपहोवैहै ॥ औरसोमेदअग्निकेतेजतैं कठिनहोइके

अस्थिरूपहोवैहै ॥ और तेअस्थि अग्निकेतेजतैं द्रवीभूतहोइके मज्जारूपहोवैहै ॥सामज्जा तिनअस्थियोंकेभीतरहीरहैहै ॥ तथायत्किंचितद्र वोभूतघृतकेसमान जामज्जाका आकारहोवैहै॥औरसामज्जा अग्निकेतेजतैंपरिपक्कहोइके वीर्यरूपहोवैहै॥सोवीर्य पुरुषकेशरीरविषेतो श्लेष्मके समानवर्णवालाहोवैहै॥और स्त्रीकेशरीरविषेतो सोवीर्य रुधिरकेसमानवर्णवालाहोवैहै ॥तहां पुरुषकेवीर्यकूं तो शुक्रकहैहैं ॥ और स्त्रीकेवीर्यकूं शोणितकहैहैं ॥तिनरसादिकधातुवोंकोउत्पत्ति चारिचारिदिनतैंपीछेहोवैहै यहप्रक्रिया इसीअध्यायविषे पूर्वकहिआयेहैं ॥हेशिष्य॥स्वर्ग नर क भूमि यातीनलोकोंविषेस्थित जितनेकोजीवहैं ॥तेजीव पूर्व शरीरकेत्यागतैंअनंतर जभी मनुष्यादिकयोनिजशरीरोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥तभी पू र्वउक्तरीतिसैंतेजीव रसादिकधातुद्वारा तापितामाताकेवीर्यविषे अवश्यकरिकेप्रवेशकरे हैं॥तिनजीवोंविषेभीकेईकजीवतो महान्दुःखकरिके मिलेहुए यत्किंचित्स्वर्गसुखकूंअनुभवकरिके तास्वर्ग तैं पतनहोइके मेघोंकीवृष्टिद्वारा याभूमिलोककूंप्राप्तहोवैहैं॥और केईकजीवतो भूमि विषे तथानरकविषेस्थितहुएही मरणतैंअनंतर तामेघोंकेवृष्टिद्वारा दूसरेदेशरूपभूमिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ इसप्रकार अन्नविषेप्रवेश सर्वजीवोंका समानहीं है ॥ इहां यद्यपि वृक्षादिकस्थावरजीव तथामत्कुणादिकस्वेदजजीव पूर्वशरीरकापरित्यागकरिके तास्थावर स्वेदजशरीरकी प्राप्तिवासते ताअन्नभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि तेस्थावर स्वेदजजीव ताशरीरकापरित्यागकरिके जभी किसीयोनिजशरीरकूंप्राप्त होवै हैं॥ तभी तेस्थावरस्वेदजजीवभी अवश्य करिके ताअन्नभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ याअभिप्रायकरिकेही श्रुतिविषे सर्वजीवोंकूंअन्न भावकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ अब पूर्वशरीरके त्यागतैंअनंतर यहजीव दुःखकाअनुभवकरिकेही याभूमिलोकविषेआवै है यापूर्वकहेअर्थ कूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरैहैं ॥हेशिष्य ॥ जैसे नरकविषे तथाभूमिलोकविषे तथामरणकालविषे यासर्वजीवोंकूं दुःखकीप्राप्ति प्रसिद्धहै ॥ तैसे तास्वर्गलोकविषेभी तादुःखकीप्राप्ति प्रसिद्धहै ॥काहेतैं जिसअधिकारीशरीरकेकर्मोंकरिके यहस्वर्गसुख प्राप्तहोवै है ॥ सोशरीर सर्वदा दुःखोंकरिकेहीव्याप्तहै ॥ अब तास्वर्गीपुरुषोंके दुःखोंकेस्पष्टकरणेवासते तास्वर्गकेमार्गकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ याभारतखंडविषे जोपुरुषअग्निहोत्रादिकइष्टकर्मोंकूंकरैहै ॥तथाजोपुरुष वापीकूपतडागादिकपूर्तकर्मोंकूंकरे है॥ तथाजोपुरुषनानाप्रकारके

दानकूंकरेंहे ॥ तथा जोपुरुष कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकूंकरेंहे॥ सोपुरुष मरणतैंअनंतर तास्वर्गकेपितृयाणनामामार्गकूंप्राप्तहोवेंहे ॥ तामार्गविषेभी सोकर्मीपुरुष प्रथम धूमकूंप्राप्तहोवेंहे ॥ ओर ताधूमतैंअनंतर रात्रिकूंप्राप्तहोवेंहे ॥ ओर तारात्रितैंअनंतर कृष्णपक्षकूंप्राप्तहोवेंहे ॥ ओर ताकृष्णपक्षतैंअनंतर षट्मासरूपदक्षिणायनकूंप्राप्तहोवेंहे ॥ जोदक्षिणायन देवतावोंकारात्रिरूपहे ॥ तादक्षिणायनतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष पितरलोककूंप्राप्तहोवेंहे ॥ओर तापितरलोकतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष चंद्रमाकूंप्राप्तहोवे हे ॥ जिसचंद्रमाकूं इंद्रादिकदेवता कृष्णपक्षविषेतो भक्षणकरेंहैं ॥ ओर शुक्लपक्षविषे वृद्धिकरेंहैं ॥ इहां धूम रात्रि आदिकशब्दोंकरिके तिनधूमरात्रिआदिकोंके अभिमानीदेवतावोंका ग्रहणकरणा ॥ हेशिष्य ॥ जेसे यालोकविषे सेवाकरणेहारेदास धनीपुरुषोंकेभोगकासाधनहोवेंहैं ॥ यातैं तेधनीपुरुष तिनदासोंकूंभोगेहैं ॥ तेसे ताचंद्रमाकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआ जोकर्मीपुरुषहे ॥ ताकर्मीपुरुषकूं तेवसुरुद्रादिकदेवता आपणेभोगकासाधनकरेंहैं ॥ यातैं तेदेवता ताकर्मीपुरुषकूंभोगेहैं ॥ ओर जेसे यालोकविषे सोसेवाकरणेहारादास ताधनीपुरुषकीअधीनताकरिके तथाभयकरिके सर्वदादुःखकूंहीप्राप्तहोवेंहे ॥ तेसे तास्वर्गलोकविषे सोकर्मीपुरुषभी तिनदेवतावोंकीअधीनताकरिके तथापुण्यकर्मोंकेनाशकीभीतिकरिके सर्वदादुःखकूंहीप्राप्तहोवेंहे ॥ ओर हेशिष्य ॥ जेसे यालोकविषे यहदेहधारीजीव स्त्रीआदिकोंकीअप्राप्तिकरिके तथाराजादिकोंकेभयकरिके तथाप्रियपदार्थोंकेवियोगकरिके परमदुःखकूंप्राप्तहोवेंहैं ॥ तेसे स्वर्गलोकविषेभी सोकर्मीपुरुष स्त्रीआदिकोंकी अप्राप्तिकरिके तथादेत्योंकेभयकरिके तथाप्रियपदार्थोंकेवियोगकरिके मरणतैंभीअधिकदुःखकूंप्राप्तहोवेंहे ॥ इसतैंआदिलेकेअनेककोटिदुःख तास्वर्गविषेप्राप्तहोवेहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तास्वर्गलोकविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिके सोकर्मीपुरुष किसीकालपाइके तास्वर्गतैंनीचेपतनहोवेहे ॥ तिसतैंअनंतर सोकर्मीपुरुषमेघोंकीवृष्टिद्वारा याभूमिलोकविषे अन्नभावकूंप्राप्तहोइके पिताकेजठराग्निविषेप्राप्तहोवेंहे ॥ ताजठराग्निविषे सोजीव अत्यंत तपायमानहोवे हे ॥ अब ताजीवकूं पिताकेतापद्वारा तापकीप्राप्ति वर्णनकरेंहे॥हेशिष्य ताजीवमिलितअन्नकूं जभी यहपुरुष भक्षणकरेंहे॥तभी यहयोवनअवस्थावालापुरुष कामरूपपिशाचकेवशकूंप्राप्तहोवेंहे ॥ ओर ताकालविषे सोकामीपुरुष स्त्रीतैंविना

किंचितमात्रभी सुखकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ किंतु तास्रीकास्मरणकरताहुआ सोकामीपुरुष सर्वदातपायमानहोवैहे ॥ और जैसे याल्लोकविषे विष्टामूत्रकेनिरोधकरणेतैंयापुरुषोंकूं दुःखकोप्राप्तिहोवेहे॥तिसतैंभीअधिकदुःखकीप्राप्ति तापुरुषकूं वीर्यकेनिरोधकरणेतैंहोवैहे ॥ऐसेवीर्यविषेप्राप्तहुआ सोजीव पिताकोकामरूपअग्निकरिके तथामाताकोकामरूपअग्निकरिके तपायमानहुआ माताकेयोनियंत्रविषेप्राप्तहोवैहे ॥जैसे याल्लोकविषे नलिकायंत्रविषेस्थित जेपुष्पहैं॥तिनपुष्पोंकारस अग्निकेसंबंधतैं तानलिकायंत्रतैंबाहरनिकसिके दूसरेपात्रविषेपडेहै॥ तैसेसो जीवमिलितवीर्यरूपरसभी कामरूपअग्निकेसंबंधतैं तापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकसिके स्त्रीकीयोनिविषेप्राप्तहोवैहे॥और तिसकालविषे सोवीर्यविषेस्थितजीव जिसप्रकारकीदीनदशाकूंप्राप्तहोवैहे ॥ तिसतैंभीअधिक तापिताकोदीनदशाकरेहे ॥ और तिसकालविषे सोवीर्यविषेस्थितजीव जैसेपिताकूं दीनदशाकीप्राप्तिकरैहे ॥ तिसतैंभीअधिक आपणीमाताकूं दीनदशाकीप्राप्तिकरैहे ॥ परंतु तिसकालविषे कामरूपपिशाचकरिकेमोहकूंप्राप्तहुईसास्त्री आपणेदीनदशाकूंजाणतीनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे सास्त्री बहुतहर्षकूंप्राप्तहोइके ताजीवमिलितवीर्यकूं आपणेयोनिमार्गद्वारा उदरविषेधारणकरैहे ॥ तावीर्यकेधारणकरिके सास्त्री पश्चात् दुःखकूंप्राप्तहोवैहे॥तहांदृष्टांत॥जैसे कोईमूढबालक विषवालेसर्पकूंसुंदरदेखिके आपणेहस्तविषेग्रहणकरैहे ॥ तासर्पकेग्रहणतैंअनंतर सोमूढबालक मृत्युदुःखकूंहीप्राप्तहोवेहे॥और जैसेकोई मूढपुरुष चोरादिकउपद्रववालेमार्गविषेचालेहे ॥ तामार्गके चलणेकरिके सोमूढपुरुष मृत्युकूंहीप्राप्तहोवैहे ॥ तैसे कामकरिकेमोहितहुई सास्त्री विषयभोगकेवासते तापुरुषकेसमीपजावैहे ॥ ताकरिके सास्त्री परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जैसेकोईधूर्तपुरुष अन्यकिसीपुरुषके मृत्युकरणेवासते याप्रकारकाउपायकरैहे॥प्रथम तापुरुषकूं अतिस्नेहतैंआलिंगनकरैहे ॥ तिसतैंअनंतर सोधूर्तपुरुष आपणेस्नेहकेजनावणेवासते किसीसोयेहुएसर्पकूं सुवर्णकेपात्रविषेपाइके तासुवर्णकेपात्रकूं नानाप्रकारकेपुष्पोंसेंपूर्णकरिके तथासुगंधिवालेचंदनादिकोंकालेपकरिके तापुरुषकेहस्तविषेदेवैहे॥तासुवर्णकेपात्रकूंग्रहणकरिके तापुरुषकामृत्युहीहोवैहे ॥तैसे यहकामीपुरुषभी तावीर्यकूंनहींसहारताहुआ नानाप्रकारकेआलिंगनतैं तास्त्रीकूंमोहउत्पन्नकरिके तावीर्यकूं तास्त्रीकेउदरविषेप्राप्तकरैहे॥और तावीर्यकूंधारणकरिके सास्त्री परमदुःखकूं

प्राप्तहोवे है ॥ यातें ताधूर्त्तपुरुषकीन्याई यहकामीपुरुषभी तास्त्रीका परमशत्रुहै ॥ और जैसे यालोकविषे जेदुष्टपुरुष ब्राह्मणोंकेधनकूं छल करिकेहरणकरे हैं ॥ तिनदुष्टपुरुषोंकूं सोब्राह्मणोंकाधन यद्यपि तिसकालविषेतो सुखकाहीकारणहोवे है ॥ तथापि मरणतैंअनंतर तिनदुष्टपुरुषोंकूं सोब्राह्मणोंकाधन नरकादिकदुःखोंकीहीप्राप्तिकरे है ॥ तैसे सोपुरुषकावीर्यभी जिसकालविषे तास्त्रीकेउदरविषेप्रवेशकरे है ॥ तिसकालविषेतो यद्यपि तास्त्रीकूंसुखकीप्राप्तिकरे है ॥ तथापि सोवीर्य जभीगर्भरूपहोइके तास्त्रीकेउदरतैंबाहरनिकसेहै ॥ तभी तास्त्रीकूं मरणांतदुःखकीप्राप्तिकरे है ॥ और जैसे विषकरिकेमिलाहुआ जोदुग्धहै ॥ सोदुग्ध यद्यपि पीणेकालविषे यापुरुषोंकेसुखकाहेतुहोवे है ॥ तथापि तापीणेतैंअनंतर सोदुग्ध तिनपुरुषोंकेमरणकाहीहेतुहोवे है ॥ तैसे यहवीर्यभी आपणेप्रवेशकालविषेतो यद्यपि तास्त्रीकेसुखकाहेतुहोवे है ॥ तथापि आपणेनिकसणेकालविषे सोवीर्य तास्त्रीकेमरणकाहीहेतुहोवे है ॥ याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे मरणकासाधन जोविषहै ॥ ताविषकूं जोकोईदुष्टपुरुष अन्यप्राणीकेप्रतिदेवे है ॥ ताविषदेणेकरिके जिसप्रकारकापाप तादुष्टपुरुषकूंहोवे है ॥ तिसीप्रकारकापाप ताकामीपुरुषकूं स्त्रीकेउदरविषेवीर्यकेपावणेतैंहोवे है ॥ और यालोकविषे जीवोंकेबंधनकरणेकाजोस्थानहै तथाजीवोंकीहिंसाकरणेकाजोस्थानहै ॥ तास्थानकेबनावणेहारेपुरुषकूं जिसप्रकारकापापहोवे है ॥ तिसोप्रकारकापाप यापिताकूं पुत्रशरीरकेउत्पत्तिकरणेविषेहोवे है ॥ काहेतें जिसपुत्रशरीरकूं यहपिता उत्पन्नकरे है ॥ सोशरीर तापुत्रकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ जोकदाचित् सोपिता तास्त्रीकेउदरविषे वीर्यकीप्राप्तिनहींकरता ॥ तो तापुत्रशरीरकोउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातें अन्वयव्यतिरेककरिके यहपिताही तापुत्रकेदुःखका तथास्त्रीकेदुःखका कारणहै ॥शंका ॥ हेभगवन्॥ ऋग्वेदविषे हरिश्चंद्रकेउपाख्यानविषे अपुत्रस्यनलोकोऽस्ति ॥ अर्थयह पुत्ररहितपुरुषकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ इत्यादिकवचनोंकरिके पुत्रकेउत्पत्तिकीस्तुतिकरीहै ॥ यातें पुत्रकेउत्पत्तिकरणेहारेपिताकूं दोषकीप्राप्तिसंभवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ताऋग्वेदकेवचननें कोईपुत्रकेउत्पत्तिकीस्तुतिनहींकरी ॥ किंतु याअधिकारीपुरुषोंकूं तिनपुत्रोंतैं वैराग्यकीप्राप्तिकरावणेवासतैं तावचननें कामीपुरुषोंकेमिथ्याअभिप्रायका अनुवादकऱ्याहै ॥ काहेतें तिसोऋग्वेदविषे तावचनतैं

अनंतर याप्रकारकावचनकह्याहै ॥ मातरंचस्वसारंचतेयांति॥अर्थयह ॥ तेकामीपुरुष तामिथ्याअभिप्रायकरिकै पशुवोंकीन्याईं आपणेमाताकेसाथ तथाभगिनीकेसाथभी गमनकरेहैं ॥ याप्रकारकेवचननैं पुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेहारेपुरुषोंविषे पशुवोंकेआचारकाप्रमाणदेकरिकै याप्रकार तिनकामीपुरुषोंकेनिंदाकूंबोधनकऱ्याहै ॥ हेकामीपुरुषो ॥ यालोकविषे जेश्वानादिकपशु आपणीमाताकेसाथ तथाआपणीभगिनीकेसाथभी विषयसंभोगकरे हैं ॥ तेश्वानादिकपशुभी अवश्यकरिकै पुत्रोंकूंउत्पन्नकरे हैं ॥ तिनश्वानादिकपशुवोंकेआचरणकूंअंगीकारकरिकै जोतुमअधिकारीमनुष्यभी पुत्रोंकूंहीउत्पन्नकरोगे ॥ तो ॥ आत्मावैपुत्रनामासि ॥ याश्रुतिनैं पिताकाही पुत्रनाम कथनकऱ्याहै ॥ यातैं सोतुमारापुत्रनाम तुमारेविषे श्वानादिकपशुवोंकीसमानताकूंबोधनकरताहुआ अत्यंतनिंदितनामहोवेगा ॥ और हेकामीपुरुषो ॥ आत्मावैजायतेपुत्रः ॥याश्रुतिनैं पुत्रकूं पिताकाआत्मारूपकह्याहै ॥ यातैं यहपिता जैसे आपणीमाताकेउदरतैंनिकसेहै ॥ तैसे पुत्ररूपहोइकै आपणीस्त्रीकेउदरतैंभीनिकसेहै ॥ यातैं एकपुत्रकीउत्पत्तितैंअनंतर सास्त्री यापुरुषकीमाताहोवैहै ॥ यातैं जैसे आपणीमाता कामभावनाकरिकै स्पर्शकरणेयोग्यनहीं है॥ तैसे एकपुत्रकीउत्पत्तितैंअनन्तर सास्त्रीभी कामभावनाकरिकै तुमारेकूं स्पर्शकरणेयोग्यनहीं है॥ और हेकामीपुरुषो॥तुमारेपुत्रभावकूंप्राप्तहोणेहारा जोजीवहै ॥ सोजीवपुण्यपापकर्मकेअधीनहै ॥ यातैं सोजीव परतंत्रहै॥ ऐसापरतंत्रजीव यादुःखरूपमाताकेउदरविषे जोप्रवेशकरैहै ॥ याकेविषेकोईआश्चर्यनहीं है॥ परंतु तुमपुरुष स्वतंत्रहोइकेभी ऐसेदुःखरूपस्त्रीकेउदरविषे पुत्ररूपहोइके जोप्रवेशकरतेहो सोयह हमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवे है ॥हेशिष्य ॥ ताहरिश्चंदकेउपाख्यानविषेस्थितवचनका याप्रकारकाहीतात्पर्यहै॥ कोईपुत्रोंकीस्तुतिविषे तावचनका तात्पर्यनहीं है ॥ किंवा॥ तावचनकेबलतैं जोकदाचित् यापिताकूं पुत्रकरिकै लोककीप्राप्तिभी अंगीकारकरिये ॥ तौभी इसमनुष्यलोककीहीप्राप्ति अंगीकारकरणीहोवेगी॥काहेतैं बृहदारण्यकउपनिषद्विषे ॥ पुत्रकरिकै पिताकूं यामनुष्यलोककेजयकीप्राप्तिही कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ पुत्रेणायंलोकजयः॥ अर्थयह॥ पुत्रकरिकै यापिताकूं इसमनुष्यलोककाजयप्राप्तहोवे है॥१॥ परंतु तिनपुत्रोंकरिकै यापिताकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे आपणेपुत्रकेसुखकीइच्छाकरणेहारी

जामाताहे ॥ सामाता तापुत्रकेरोगकीनिवृत्तिकरणेवासते तापुत्रकेप्रति कोईनिंबादिकटुऔषधि पानकरावैहे ॥ आगेतैं सोबालक ताक टुऔषधिकूं पानकरतानहीं ॥ और कटुऔषधिकेपानकरेतैंविना ताबालककारोग निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं सामाता ताबालककेप्रति ताक टुऔषधिकेपानकरावणेवासते याप्रकारकावचनकहेहे ॥ हेपुत्र ॥ जोतूं यहऔषधिपानकरेगा ॥ तौमैं तुमारीजिह्वाविषे गुडदेवोंगी ॥ याप्र कारके तामाताकेवचनकूंश्रवणकरिके सोमूढबालक तागुडकेलोभकरिके ताकटुऔषधिकूंपानकरेहे ॥ इहांतामाताका औषधिपिवाइके तापुत्रकेरोगकीनिवृत्तिकरणेविषे तात्पर्य है॥ तारोगोपुत्रकेप्रति गुडदेणेविषे तामाताका तात्पर्यनहीं हे ॥याकानाम गुडजिह्विकान्यायहे ॥ तागुडजिह्विकान्यायकरिके तिन हरिश्चंद्रउपाख्यानकेवचनोंका याअधिकारीपुरुषोंकेनिवृत्तिविषेही तात्पर्य है ॥ पुत्रादिकोंकीउत्पत्तिविषे तिनवचनोंका तात्पर्यनहींहे ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिके निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यासंपूर्णजीवोंकूं विषयोंकेरागतैंअंधहुआदेखिके माताकीन्याई अत्यंतहितकारी साश्रुतिभगवती बहुतखेदकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और तिनजीवोंकूंविषयोंके रागतैं निवृत्तकरणेवासते साश्रुति भगवतीयाप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेपुत्र ॥ तपरूपधनकेनाशकरणेहारो जेयहस्त्रियां हैं॥तिनस्त्रियोंविषे तुम गमनमतकरो॥तिनस्त्रियों केगमनतैं तुमारेकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और तिनदुःखोंकेभोगणेवासते तुमारेकूं अनेकप्रकार केशरीरोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ कैसेहैंतेशरीर ॥ बंधनगृहकेसमानहैं ॥ और जैसे चक्षु आपणेविषे अत्यंतसूक्ष्मवस्तुकूंभी सहारसकतानहीं ॥ तैसे किंचित्मात्रविक्षेपकूंभी नहींसहारणेहारे जेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकूं तेशरीर नरकतैंभीअधिकदुःखकीप्राप्तिकरणे हारेहैं ॥ ऐसेदुःखरूपशरीरोंकूं तुम प्राप्तहोवोगे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार साश्रुतिभगवती तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति स्त्रियोंविषेरमणीक बुद्धिरूपसंकल्पकेनिरोधकरणेका उपदेशकरतीभई ॥ और तासंकल्पकेनिरोधकरणेविषे जिनपुरुषोंकासामर्थ्यनहीं है ॥ तिनपुरुषोंकेप्रति साश्रुतिभगवती याप्रकारकाउपदेशकरतीभई ॥ हेपुत्र ॥ तासंकल्पकेनिरोधकरणेविषे जोतुमारा सामर्थ्यनहींहोवे ॥ तौभी तुम काम केवेगकानिरोधकरिके ब्रह्मचर्यधर्मकूंपालनकरो॥ताब्रह्मचर्यधर्मकूं जभीतुम पालनकरोगे॥तभी स्वर्गलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषेमैं तुमारेताईं

ऐसेस्त्रियोंकीप्राप्तिकरोंगी ॥ जेस्त्रीयां यामनुष्यलोककीस्त्रियोंतें रूपादिकगुणोंकरिके कोटिगुणाअधिकहैं ॥ और ताब्रह्मलोकविषे५०० पंचशतअपसरा पुष्पचंदनवस्त्रादिकपदार्थोंकूंआपणेहस्तविषेलेके तुमारेलेणेवासते आवैंगी ॥ और जैसे यामनुष्यलोककीस्त्रियोंकूं पुरुषकेसंबंधतेंगर्भहोवैहै ॥ तैसे स्वर्गलोककीस्त्रियोंकूं तथाब्रह्मलोककीस्त्रियोंकूं पुरुषकेसंबंधतें गर्भकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातें तागर्भक रिके तिनस्त्रियोंकूं तथातुमारेकूं किंचित्मात्रभीदुःखकीप्राप्तिहोवैगीनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार साश्रुतिभगवती याअधिकारीपुरुषोंके प्रति ब्रह्मचर्यधर्मकाउपदेशकरतीभई ॥ और जेपुरुष ताब्रह्मचर्यधर्मकेपालनकरणेविषेभी समर्थनहींहोतेभये ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंके प्रति साश्रुतिभगवती याप्रकारकाउपदेशकरतीभई ॥ हेपुत्र ताब्रह्मचर्यधर्मकेपालनकरणेविषेभी जोतुमारा सामर्थ्यनहींहोवे ॥ तोभी तुमोनें शरीरमनवाणीकरिके परस्त्रीकागमन कदाचित्भी नहींकरणा ॥ काहेतें जेपुरुष परस्त्रीकागमनकरे हैं ॥ तेपुरुष इसलोकविषे तथा परलोकविषे परमभयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसापरस्त्रीकागमन तुमोनें कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु कामकीनिवृत्तिकरणेवासते तुम आपणी स्त्रीकासंपादनकरिके गृहस्थहोवो ॥ तागृहस्थआश्रमकूंधारणकरिकेभी तुम शास्त्रनिषिद्धकर्मोंविषे कालव्यतीत मतकरो ॥ किंतु यज्ञ दानादिकश्रेष्ठकर्मोंकूंकरो ॥ और हेपुत्र ॥ तिनआपणीस्त्रियोंविषेभी तुमोनें याप्रकारकानियमराखणा ॥ दिनविषे तिनस्त्रीयोंकेसाथ तुमोनें कदाचित्भी नहींगमनकरणा ॥ किंतु रात्रिकालविषेगमनकरणा ॥ तिनरात्रियोंविषेभी एकादशी द्वादशी अमावास्या पौर्णमासी संक्रांति व्यतिपात प्रदोष इत्यादिकजेपर्वरात्रिहैं ॥ तिनपर्वरात्रियोंविषे तुमोनें तिनआपणीस्त्रीयोंकेसाथ कदाचित्भी नहींगमनकरणा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार श्रुतिभगवतीकेउपदेशकूंश्रवणकरिके जेअधिकारीपुरुष तिनपर्वरात्रियोंतेंभिन्नरात्रियोंविषे तिनस्त्रियोंविषेआसक्तहोवे हैं ॥ तिनपुरुषोंके आसक्तिकीनिवृत्तिकरणेवासते साश्रुतिभगवती तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकारकेनियमका उपदेशकरेहै ॥ हेपुत्र ॥ तिनपर्वरात्रियोंतेंभिन्नरात्रियोंविषेभी तुमोनें ऋतुकालतेंविना कदाचित्भी तिनस्त्रीयोंविषे गमननहींकरणा ॥ किंतु ऋतुस्नातस्त्रियोंविषेही तुमोनें शास्त्रउक्तसंस्कारोंकूंकरिके गमनकरणा ॥ ऐसेनियमकूंधारणकरिके जोतुम आपणीस्त्रियोंविषेगमनकरोगे ॥ तो तुमारेकूं शुभगुणवालेपुत्रोंकीप्राप्तिहोवैगी

हेशिष्य इसप्रकार मूढपुरुषोंकी विषयोंविषेआसक्तिकेछुडावणेवासते साश्रुतिभगवती पुत्रकेजन्मकीस्तुतिकरैहै ॥ यातैं ताश्रुतिवचनका निवृत्ति विषेहीतात्पर्य है॥पुत्रकेजन्मविषे ताश्रुतिका तात्पर्यनहीं है॥शंका॥हेभगवन् ॥ तिनश्रुतिवचनोंका पुत्रोंकीउत्पत्तिविषेही तात्पर्य क्योंनहींहोवैहै ॥समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जोपदार्थ याजीवोंकूं रागकरिकेप्राप्तनहींहोवे है तिसीपदार्थकूं शास्त्र विधानकरैहै ॥ रागकरिकेप्राप्तवस्तुका शास्त्र विधानकरैनहीं ॥ याप्रकारकानियम सर्ववादीअंगीकारकरैहैं ॥ और स्त्रियोंकेसंगतैंपुत्रोंकीउत्पत्ति तथास्त्रियोंकासंग यहदोनों शास्त्रतैंविनाही सर्वजीवोंकूं रागकरिकेहीप्राप्तहै ॥ काहेतैं यालोकविषे शास्त्रतैंरहित जेपशुपक्षीमत्स्यादिकजीवहैं ॥ तथा शास्त्रकेज्ञानतैंरहित जेम्लेच्छादिकहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं शास्त्रकेउपदेशतैंविनाही पुत्रोंकीउत्पत्ति तथास्त्रियोंकासंग रागकरिकेही प्राप्तहै ॥ यातैं तारागप्राप्तअर्थविषे ताश्रुतिका तात्पर्यसंभवैनहीं ॥ याकारणतैंही ताअथर्वणवेदकीश्रुतिनैं पुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेहारेरागी पुरुषोंविषे पशुवोंकादृष्टांतदियाहै ॥ और याकारणतैंही ॥ पतिर्जायांप्रविशति यहश्रुति एकपुत्रकीउत्पत्तितैंअनंतर यापुरुषकूं पुनःतास्त्री केसंबंधकानिषेधकरै है ॥ काहेतैं पुत्रकीउत्पत्तितैंपूर्व जास्त्री मातावाचकजायाशब्दकाअर्थनहीं है ॥ साईहीस्त्री पुत्रकीउत्पत्तितैंअनंतर ताजायाशब्दकाअर्थहोवै है ॥ यातैं याजीवोंकूंरागकरिकेप्राप्त जोपुत्रोंकीउत्पत्ति तथास्त्रीकासंबंध तिसकूं साश्रुतिविधानकरैनहीं ॥ किंतु यासंसारदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा तथाआनंदस्वरूपआत्माकूंआवरणकरणेहारा जोरागरूपकामहै ॥ ताकामकेनिवृत्तिकूंही साश्रुति बोधन करैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् साश्रुतिभगवती जोपुत्रकीउत्पत्तिकूं तथास्त्रीकेसंगकूं विधाननहींकरती॥तो साश्रुति किसअर्थकूंविधानकरैहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ याजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थित जोआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ सोआत्मादेव रागरहितपुरुषोंकूं ब्रह्मचर्यसा धनतैंही दीपककीन्याईं स्पष्टप्रतीतहोवैहै ॥और सोब्रह्मचर्यधर्म याजीवोंकूं शास्त्रतैंविना रागकरिकेभीप्राप्तहैनहीं॥ याकारणतैं साश्रुतिभग वती याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति ताब्रह्मचर्यधर्मकाही विधानकरैहै ॥ अब जिसप्रकार तैं साश्रुतिभगवती ब्रह्मचर्यधर्मकाउपदेशकरै है ताप्रकारकानिरूपणकरै हैं ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेजीव सर्वदा सुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरै हैं ॥ और ताश्रु

सकोप्राप्तिवासते यत्नभीकरे हैं ॥ परंतु तिनजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ ऐसेसुखतैंरहितजीवोंकूंदेखिकरिके तिनोंकेदुःखकूंनहींसहार तीहुई साश्रुतिभगवती अत्यंतखेदकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और हितकारीमाताकोन्याई आपणे कृपाजन्यदुःखजनावणेवासते आपणेमस्तक कूंताडनकरतीहुई साश्रुतिभगवती ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकअधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेअधिकारी जनों ॥ जो तुमारेकूंसुखकेप्राप्तिकोइच्छाहोवे ॥ तो तुम हमारेवचनविषेश्रद्धाराखिके कामकापरित्यागरूपब्रह्मचर्यधर्मकूं संपादनकरो ॥ ताब्रह्मचर्यकरिकेही तुमारेकूं सुखकीप्राप्तिहोवेगी हेअधिकारीजनों ॥ तुम श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिके तथाबुद्धिआदिकगुणोंकरिके युक्तहो॥ तथा श्रवणमननादिकसाधनोंकेकरणेविषेसमर्थहो ॥ याकारणतैं हमारेउपदेशकेधारणकरणेविषे तुमारेकूंहीं अधिकारहै ॥ तुमारेतैं भिन्नजीवोंकूं हमारेउपदेशकाअधिकार हैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जितनेकोवृक्षादिकस्थावरप्राणी हैं ॥ तेवृक्षादिकप्राणी श्रोत्रादिक इंद्रियों तैं रहितहैं ॥यातैं तेवृक्षादिकतो हमारेउपदेशकेश्रवणकरणेविषेभी समर्थनहीं ॥ और यालोकविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंवाले जितने कीगोअश्वादिकपशुहैं ॥ तेपशुतो शास्त्रकेअर्थकूंनिश्चयकरणेहारीबुद्धितैंरहितहैं ॥ यातैं तिनपशुवोंकूंभी हमारेउपदेशकाअधिकार हैनहीं ॥ और यालोकविषे जितनेकोशूद्रजातिवालेमनुष्यहैं ॥ तिनशूद्रोंकूंतो ॥ स्त्रीशूद्रौनाऽधीयाताम् ॥ इत्यादिकवचनोंकरिके वेदकेअ ध्ययनकानिषेधकऱ्याहै ॥ यातैं तिनशूद्रोंकूंभी हमारेउपदेशकाअधिकार हैनहीं ॥ किंतु तुमत्रैवर्णिकअधिकारियोंकूंहीं हमारेउपदेशकाअ धिकारहै ॥ यातैं तुमअधिकारीजन हमारेउपदेशकूंअंगीकारकरिके ताकामकापरित्यागकरो ॥ और हेअधिकारीजनो ॥ यालोकविषे जितनेकीजीव दुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सोकामकरिकेहीप्राप्तहोवैहैं ॥ कामतैंविना किसीभीजीवकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरे ककरिके यहकामहीं जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ ऐसेकामकेवशहोणा तुमअधिकारियोंकूं योग्यनहीं है ॥अब तैत्तिरीयकउपनिषद्कीरीतिसैं ताकामकेत्यागविषे सुखकीकारणता निरूपणकरेहैं॥हेअधिकारीजनों ॥चक्रवर्तिराजा १मनुष्यगंधर्व २देवगंधर्व३पितर ४आजानजदेव ५ कर्मदेव ६ वसुरुद्रादिकअधिकारकदेव ७इंद्र ८ बृहस्पति९विराट् १० हिरण्यगर्भ ११ याएकादशोंविषे पूर्वपूर्वकेआनंदतैं उत्तरउत्तरका

आनंद १०० शतगुणाअधिक कथनकऱ्याहे॥तिनसर्वआनंदोंकूं कामदोषरहितनिष्कामपुरुष प्राप्तहोवैहे ॥ और ताचक्रवर्ती राजातेंलेके हिरण्यगर्भपर्यंत जितनेकीविषयजन्यआनंद कथनकरे हैं ॥ तेसंपूर्णआनंद जिसब्रह्मानंदरूपसमुद्रके एकबिंदुमात्रहैं॥ताब्रह्मानंदकूंभी यह निष्कामपुरुषही प्राप्तहोवैहे ॥ कामदोषवाले तेचक्रवर्तीराजादिक ताब्रह्मानंदकूं प्राप्तहोइसकेनहीं ॥ हेअधिकारीजनों ॥ऐसेब्रह्मानंदकाजो साक्षात्कारहे॥ सोसाक्षात्कारही यामनुष्यशरीरकाफलहे ॥ यातैं याअधिकारीमनुष्यशरीरविषे पुत्रएषणा लोकएषणा वित्तएषणा या तीनप्रकारकीएषणावोंकापरित्यागकारिके तुमअधिकारीजन ताआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारकोइच्छाकरो ॥ और हेअधिकारी जनों ॥जोतुम ताकामदोषकापरित्याग नहींकरोगे॥तो तुमारेकूं श्वानादिकपशुवोंकीन्याई विषयभोगरूपपापकर्म अवश्यकरणाहोवेगा ॥ कैसाहेसोपापकर्म ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं स्त्रियोंके तथापुत्रोंके सर्वदादुःखकाहीकारणहे ॥ और हेअधिकारीजनों यालोकविषे जेश्वानादिकपशु शास्त्रज्ञानतैंरहितहैं ॥ तेश्वानादिकपशुभी आपणीस्त्रीकेसंभोगतैं पुत्रोंकोउत्पत्तिकरे हैं ॥ तथा तिनस्त्रीपुत्रादिककुटुंबका भरणपोषण भीकरेहैं ॥ तिनश्वानादिकपशुवोंकीन्याई तुमअधिकारीमनुष्यभी जोकदाचित् स्त्रियोंकेसंभोगतैं पुत्रोंकोउत्पत्तिकरोगे ॥ तथा तिनस्त्री पुत्रादिककुटंबका पालनकरोगे ॥ तो तुमअधिकारीमनुष्योंविषे तिनश्वानादिकपशुवोंतैं कौनअधिकता सिद्धहोवेगी ॥ किंतु तुमभी तिनश्वानादिकपशुवोंकेतुल्यहीहोवोगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् यद्यपि स्त्रियोंकेसंभोगकरणेविषे तथापुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे हमअधिकारी जनोंकूं श्वानादिकपशुवोंकीसमानता प्राप्तहोवे है ॥ तथापि गृहस्थपुरुषोंकूं स्वस्त्रीकासंभोग तथापुत्रोंकीउत्पत्ति शास्त्रनैंविधान करी है ॥ यातैं ताशास्त्रकीआज्ञामानिके हमअधिकारीपुरुष आपणेविषे पशुवोंकेसमानताकूंभी अंगीकारकरे हैं ॥ समाधान ॥ हेअधिकारीजनों तिनशास्त्रकेवचनोंकातात्पर्य तुमोनैं जान्यानहीं ॥ काहेतैं वेदविषे दोप्रकारकेविधिवचनहोवे हैं ॥ तहांएकतौ नित्यविधिरूप वचनहोवैहैं ॥ और दूसरे काम्यविधिरूप वचनहोवैहैं ॥ तहां जिसविधिवचनकेउल्लंघनकरणेतैं याअधिकारीपुरुषों कूं पापकीप्राप्तिहोवे है और ताकेकरणेतेपुण्यकीप्राप्तिहोवे ॥ ताविधिवचनकानाम नित्यविधिवचनहे ॥ जैसे ॥ अहरहःसंध्यामुपासीत ॥

इत्यादिकविधिवचन यात्रैवर्णिकअधिकारीपुरुषोंकेप्रतिदिनदिनविषे संध्यागायत्रिआदिकोंकेअनुष्ठानकाविधानकरैहैं॥तिनसंध्यागायत्रीआदिकनित्यकर्मोंकेनहींकरणेतैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूं पापकोप्राप्तिहोवैहे ॥ और तिनोंकेकरणेतैं पुण्यकोप्राप्तिहोवैहे ॥ यातैं तेवचन नित्यविधिरूपहैं ॥ और जिनविधिवचनोंकेउल्लंघनकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं पापकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ और तिनोंकेकरणे तैं किसीफलकी प्राप्तिहोवे ॥ ताविधिवचनकानाम काम्यविधिहे ॥ जैसे ॥ ज्योतिष्टोमेनस्वर्गकामोयजेत् ॥ इत्यादिक विधिवचन स्वर्गादिकोंकोकामनावालेपुरुषोंकेप्रति ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोंका विधानकरे हैं ॥ तिनज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्मोंके नहीं करणे तैं याअधिकारीपुरुषोंकूं पापकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ और तिनोंकेकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति स्वर्गादिकफलकोप्राप्तिहोवैहे ॥ यातैं तेवचन काम्यविधिरूपहैं ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे पुत्रोंकीउत्पत्तिआदिकोंकूंकथनकरणेहारे जेवेदकेवचनहैं ॥ तेवचन जोकदाचित् नित्यविधिरूपहोते ॥ तो तानित्यविधिके नकरणेकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोती ॥ परंतु तेवचन नित्यविधिरूपहैंनहीं ॥ किंतु तेवचन काम्यविधिरूपहैं ॥ यातैं ताकाम्य विधिकेनहींकरणेतैं निष्कामपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैनहीं॥जैसे॥ श्येनेनाऽभिचरन्यजेत ॥ यहकाम्यविधि शत्रुमारणेकीइच्छावान्पुरुषकेप्रति ताशत्रुकेमारणेवासते श्येननामायज्ञका विधानकरैहे ॥ ताश्येनयज्ञकेनहींकरणेतैं यापुरुषकूं पापकोप्राप्तिहोवैनहीं॥किंतु उलटा ताश्येनयज्ञकेकरणेतेहीं यापुरुषकूं नरकादिकदुःखकोप्राप्तिहोवे हे ॥ तैसे पुत्रादिकोंकेउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारे जेकाम्यविधिरूपवचनहैं ॥ तिनोंकेउल्लंघनकरणेतैं या अधिकारीपुरुषोंकूं पापकोप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनपुत्रादिकोंकीउत्पत्तिकरणेकरिके ही यापुरुषोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहे ॥ और हेअधिकारीजनों ॥ जैसे पुत्रकीउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारेवेदकेवचन रागवानपुरुषोंकेप्रतिही तापुत्रके उत्पत्तिकाविधानकरे हे ॥ तैसे तापुत्रकीउत्पत्तिकरणेवासतैं स्त्रीविवाहकूंकथनकरणेहारे जेवचनहैं तथा ताऋतुस्नातस्त्री विषे गमनकालकेनियमकूंकथनकरणेहारे जेवचनहैं ॥ तेसंपूर्णकाम्यविधिरूपवचन रागवान्पुरुषकेप्रतिही तिसतिसअर्थकाविधानकरैहे ॥ यातैं रागरहितनिष्कामपुरुषोंकूं तिनवचनोंकेउल्लंघनकरणेतैं किंचित्मात्रभी दोषकोप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा

महान्‌फलकीप्राप्तिहोवे है ॥ और हेअधिकारीजनों ॥ यानामकरिकेअंधहुए यहपुरुष आपणीभगिनीआदिकोंविषेभी गमनकरे हैं ॥ जैसे कामकरिकेअंधहुए श्वानादिकपशु आपणेभगिनीआदिकोंविषेभी गमनकरेहैं ॥ यातैं यहकामही सर्वअनर्थोंकाकारणहै ॥ ऐसेकामकूं तुम अधिकारीजन सर्वप्रकारसैंपरित्यागकरो ॥ हेअधिकारीजनों ॥ यहकामही जीवोंके सर्वअनर्थकाकारणहै ॥ यहवार्त्ता केवल हम नहींकहते ॥ किंतु ताकामविषे सर्वअनर्थकीकारणता यासर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥ काहेतैं यालोकविषे जेपुरुष कामकरिकेअंधहोवे हैं ॥ तेकामीपुरुष किसकिसअनर्थकूंनहींकरेहैं ॥ किंतु तेकामीपुरुष सर्वअनर्थोंकूंकरेहैं ॥ और याकामकरिकेहीअंधहुए तेकामीपुरुष आपणीस्त्रीकूंतो गर्भरूपदुःखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ और आपणेकूं पापरूपदुःखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ और जीवात्मारूपपुत्रकूं शरीरकासंबंधरूपदुःखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ यातैं यहकामही तुमारे अनर्थकाकारणहै ॥ ऐसेकामकूं जभीतुम परित्यागकरोगे ॥ तभीहो तुमारेकूं सुखकीप्राप्तिहोवेगी ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार साश्रुतिभगवती माताकीन्याई कृपाकरिके तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मचर्यधर्मकाउपदेशकरतीभई ॥ यातैं संपूर्णश्रुतिवचनोंका साक्षात् अथवा परंपराकरिके निवृत्तिविषेही तात्पर्यहै ॥ पुत्रादिकोंकीउत्पत्तिविषे किसीभीश्रुतिका तात्पर्यनहीं है यहअर्थसिद्धभया ॥ अथ कामीपुरुषोंविषे पुत्रकेदेहरूपदुःखकीकारणता स्पष्टकरणेवासते प्रथम तापुत्रकेशरीरकीउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ स्त्रीकेशोणितसाथ मिल्याहुआ यहपुरुषकावीर्यही तिनपुत्रोंकेशरीरकीउत्पत्तिकरेहै ॥ जिनशरीरोंकरिके तिनपुत्रोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवेहै ॥ और जैसे रक्तकफयादोनोंकेसंयोगतैं एकविलक्षणहीवर्ण उत्पन्नहोवे है ॥ तैसे ताशोणितवीर्यकेसंयोगतैंभी एकविलक्षणहीवर्ण उत्पन्नहोवे है ॥ ताशुक्रशोणितकेसंयोगतैंही यहजीवात्मा गर्भभावकीप्राप्तिद्वारा पुनःशरीरकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ पिताकेशरीरतैं तावीर्यकेनिकसणेकाप्रकार जिसरीतिसैं तागर्भउपनिषद्‌विषे कथनकर्‍याहै ॥ तारीतिकूं तूं श्रवणकर ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं सोजीवमिलितअन्न युवानपुरुषकेशरीरविषेप्राप्तहोइके रसरुधिरादिकधातुद्वारा वीर्यरूपसप्तमधातुभावकूंप्राप्तहोइके पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत यासर्वशरीरविषे व्याप्यकरिकेरहे है ॥ और जैसे अग्निकेसंबंधतैं पुष्पोंकारसनिकसेहै ॥ तैसे स्त्रियोंकेस्मरणादिकोंकरिके उ

त्पन्नभयाजोकामरूपअग्निहै ॥ ताकामरूपअग्निकेतापकरिकै यापुरुषकेसर्वअंगोंतैं सोवीर्यरूपरस निकसैहै ॥ और तिनसर्वअंगोंतैंनिकसि
के सोवीर्य प्रथम हृदयदेशविषेस्थितहोवैहै ॥ और जैसे महान्वायु वृक्षकूं चलायमानकरै है ॥ तैसे सोवीर्यभी ताहृदयकमलकूंचलायमा
नकरै है ॥ और ताहृदयकमलकेचलायमानहुए यहकामीपुरुष धैर्यतैंरहितहोवै हैं ॥ याकारणतैंही सोकामीपुरुष तिसकालविषे स्त्रीजनों
केअधीनहोवे है ॥ तथा धैर्यवानपुरुषोंकेशोककाविषयहोवे है ॥ और ताहृदयकमलविषे वीर्यकेप्राप्तहुए ताकामीपुरुषकूं जिसप्रकारकादुः
खहोवे है ॥ तिसीप्रकारकादुःख तावीर्यविषेस्थितजीवकूंभीहोवे है ॥ और जैसे समुद्रविषेस्थितनौका जभी महान्वायुकरिकेचलायमान
होवे है ॥ तभी तानौकाविषेस्थितपुरुष महान्दुःखकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तैसे ताहृदयकमलकेचलायमानताकरिकै सोजीवात्माभी महान्दुःख
कूंप्राप्तहोवे है ॥ इसप्रकार सोजीवात्मा ताहृदयदेशविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिकै ताहृदयकमलतैंअनंतर नाडीरूपमार्गद्वारा
तापिताकेसर्वशरीरविषेप्राप्तहोवे है ॥ तहां तापिताकेशरीरविषेस्थितजे रसरुधिरादिकसप्तधातुहैं ॥ तिनधातुवोंविषेस्थितजोअग्निहै ॥ तिस
अग्निकूं सोजीवात्मा प्राप्तहोवे है ॥ तामहान्अग्निविषेप्राप्तहुआ यहजीवात्मा दाहकूंप्राप्तहोइकै महान्दुःखकूंप्राप्तहोवे है और ता अग्निकरिकै
याजीवात्माका मरणभीहोवैनहीं ॥ तथा ताअग्नितैंयाजीवात्माका बाहरभीनिकसणाहोवैनहीं ॥ इसप्रकार ताअग्निविषे बहुतकालपर्यंत
दुःखकाअनुभवकरिकै सोजीवात्मा ताअग्नितैंअनंतर पित्तभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ कैसाहैसोपित्त ॥ अग्निकेसंबंधतैंद्रवीभूतहुएजेताम्रादिकधा
तुहैं तिनोंकेसमानहै ॥ तथा क्षार कटु रसकरिकेयुक्तहै ॥ ऐसेपित्तभावकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्मा नरकदुःखतैंभीअधिकदुःखकूंप्राप्तहोवे है
॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार पित्तविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिकै सोजीवात्मा तापित्ततैंअनंतर वातभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ कैसाहैसो
वात ॥ महान्वायुकेसमान वेगवालाहै ॥ और यालोकविषे किसीऊंचेपर्वतकेशिखरविषेस्थित जोकोईवस्त्रादिकोंतैंरहितपुरुषहै ॥ सोपुरुष
तहां महान्वायुकरिकेकंपायमानकऱ्याहुआ जिसप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवे है ॥ तिसीप्रकारकेदुःखकूं यहजीवात्मा तावातविषेप्राप्तहोवे है॥
हेशिष्य ॥ इसप्रकार तावातविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिकै सोजीवात्मा तावाततैंअनंतर पुनःहृदयकमलविषेप्राप्तहोवै

है ॥ हेशिष्य ॥ सोहृदय दोप्रकारकाहोवैहै ॥एकतो अस्थियोंकापंजररूपहृदयहोवैहै ॥ जिसहृदयकूं लोकविषे उरस्थल वक्षस्थल इत्यादिकनामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और दूसरा ताअस्थिपंजरकेभीतर मांसमयकमलरूपहृदयहोवे है ॥ तामांसमयकमलकूंहीशास्त्र विषे हृदयकमल हृदयपद्म इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरेहैं ॥ ऐसेहृदयकमलविषे सोजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥अब याहीअर्थकूं पुनःस्पष्टक रिकैनिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ अन्नकेसाथभक्षणकर्‍याहुआ सोजीवात्मा प्रथम तापिताके हृदयकमलकेसमीपजावैहै ॥ तिसतैंअनंतर ताअन्नकेसाथमिल्याहुआसोजीवात्मा तापिताकीजठराग्निविषेप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोजीवात्माताअन्नकेसूक्ष्मरसोंकेसाथमिलिके समानवायुकेबलतैं ऊपरगमनकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोजीवात्मा पित्तभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैं अनंतर सोजीवात्मा वातभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोजीवात्मा पुनःहृदयकमलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार सोजीवात्मा तापिताकेशरीरविषे कंदुककीन्याई भ्रमण करैहै॥हेशिष्य॥इसप्रकार तापिताकेशरीरविषे नीचेऊपरभ्रमणकरताहुआ सोजीवात्मा अनेकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥तिसतैं अनंतर पुण्यपाप कर्मोंकेवशतैं सोजीवात्मा वीर्यकेसाथमिलिके तापिताकेशरीरतैं बाहरनिकसिके माताकेउदरविषेप्राप्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ याजीवा त्माकूं दूसरेशरीरकीप्राप्तिवासते याप्रकारकामार्ग प्रजापतिनें उत्पन्नकर्‍याहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तामार्गकूं प्राजापत्ययानामक रिकैकथनकरैहै ॥ अब तीनमलोंकरिके याशरीरकेउत्पत्तिकानिरूपणकरे हैं॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जितनेकीमनुष्यादिकयोनिजशरी रहैं ॥ तिनशरीरोंके कार्मण मायीय आणव यहतीनप्रकारकेमल कारणहोवे हैं ॥ तहां पिताकेशुक्रकानाम कार्मणमलहै ॥ और माताकेशोणितकानाम मायीयमलहै ॥ और तिसराजोआणवनामामलहै ॥ ताकेविषे यहतीनप्रकारकेमतहैं ॥ तहां कोई कशास्त्रवेत्तापुरुषतो शुक्र शोणित यादोनोंमलोंके संधिकूं आणवमलकहे हैं ॥ कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतो पुण्यपापरूपकर्म कूंही आणवमलकहे हैं ॥ और कोईकविद्वान्पुरुषतो शुक्र शोणित यादोनोंमलोंकीअवस्थाविशेषकूंही आणवमल कहेहैं ॥ तिनतो नोंमतोंविषे यहअंतकामतही समीचीनहै ॥ काहेतैं शुक्र शोणित यादोनोंमलोंके योगतैंअनंतर तत्कालही एकविलक्षणवर्ण उत्पन्नहोवै

है ताविलक्षणवर्णकानाम आणवमलहै ॥ सोआणवनामातृतीयमल तिनदोमलोंतैंभिन्ननहीं हैं ॥ किंतु सोतृतीयमल तिनदोमलोंकेअंतर
भूतहीहैं ॥ हेशिष्य ॥ अविद्यादिकपंचक्लेशोंकरिकेयुक्त तथापुण्यपापकर्मोंकरिकेयुक्त तथापूर्ववासनावोंकरिकेयुक्त जोयहजीवात्माहै ॥सो
यहजीवात्मा यातीनमलोंकेसंबंधतैं जिसशरीरकूंप्राप्तहोवे है॥सोशरीर तिनपितामाताकेसमानहीहोवे है॥तिसपितामाताकेशरीरतैं सोशरीर
विलक्षणहोवेनहीं॥अब पुरुष स्त्री नपुंसक यातीनशरीरोंकेउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरें हैं ॥ हेशिष्य॥पुरुषस्त्रीकेसंभोगकालविषे जभी
पिताकाशुक्ररूपमल अधिकपतनहोवे है ॥ और माताकाशोणितरूपमल न्यूनपतनहोवे है ॥ तभी तिनदोनोंमलों तैं पुरुषशरीरकीउत्प
त्तिहोवे है ॥ और तासंभोगकालविषे जभी स्त्रीकाशोणितरूपमल अधिकपतनहोवे है॥और पिताकाशुक्ररूपमल न्यूनपतनहोवे है॥ तभी
तिनदोनोंमलों तैं स्त्रीशरीरकीउत्पत्तिहोवे है॥और तासंभोगकालविषे जभी पुरुषकाशुक्ररूपमल तथास्त्रीकाशोणितरूपमल समानहीपतन
होवे है ॥ तभी तिनदोनोंमलोंतैंनपुंसकशरीरकीउत्पत्तिहोवे है ॥ अब सुंदरबालककेउत्पत्तिकाप्रकार तथा कुरूपबालककेउत्पत्तिकाप्रकार
निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ जिसकालविषे यहपुरुष तथास्त्री दोनों किसीचिंताकरिकेव्याकुलनहींहोवेहैं ॥ किंतु स्वस्थचित्तवालेहोवेहैं ॥
तिसकालविषे सोपुरुष तथास्त्री जभी शास्त्रकोरीतिप्रमाण संभोगकरेहैं ॥ तभी तिनदोनोंके शुक्रशोणिततैं जोबालकउत्पन्नहोवे है ॥
सोबालक नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंकरिकेसंपन्नहोवे है ॥ तथा अनेकशुभगुणोंकरिकेसंपन्नहोवेहै ॥ तथा हस्तपादादिकसर्वअवयवोंकरिकेसुंदर
होवेहै ॥ और जभी यहपुरुष तथास्त्री दोनों किसीचिंताकरिकेव्याकुलहोवेहैं ॥ अथवा तिनदोनोंविषे एककामन व्याकुलहोवेहै ॥ तभी
संभोगकालविषे तिनदोनोंकावीर्य सर्वअंगोंतैंनिकसेनहीं ॥ और जोकदाचित् सोशुक्रशोणितरूपवीर्य तिनदोनोंकेसर्वअंगोंतैंनिकसेभीहै ॥
तोभी सोवीर्य बाहरनिकसणेकालविषे निरुद्धहोइजावेहै ॥ अथवा सोवीर्य कफादिकधातुवोंकरिकेमिळितहोवेहै ॥ ऐसेशुक्रशोणिततैं जो
बालक उत्पन्नहोवेहै ॥ सोबालक सर्वअंगोंकरिकेसुंदरहोवेनहीं॥किंतु सोबालक खंजहोवे है॥अथवा सोबालक पंगुहोवेहै॥अथवा सोबालक
हस्तपादकीअंगुलियों तैं रहितहोवेहै ॥ अथवा सोबालक न्यूनअंगुलियोंवालाहोवेहै ॥ अथवा सोबालक अधिकअंगुलियोंवालाहोवे है ॥

अथवा सोबालक श्यामनखोंवालाहोवैहै ॥ अथवा सोबालक एकपादएकहस्तवालाहोवैहै ॥ अथवा सोबालक नेत्रादिकसर्वइंद्रियों तें रहितहोवैहै ॥ अथवा सोबालक किसीएकइंद्रियतेंरहितहोवैहै ॥ अथवा सोबालक वामनहोवैहै ॥ अथवा सोबालक कुब्जहोवै है ॥ अथवा सोबालक अत्यंतदीर्घहोवैहै ॥ अथवा सोबालक अत्यंतभयवानहोवैहै ॥ इसतेंआदिलेके अनेकप्रकारकीकुरूपतावाला सोबालक उत्पन्न होवैहै ॥ अब एकहीकालविषे स्त्रीकेउदरविषे दोतीनबालकोंकेउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तास्त्रीपुरुषकेसंभोगकालविषे जभी तापुरुषका तथास्त्रीका ॥ अपानवायु किसीनिमित्तकरिकेक्षोभकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोअपानवायु तास्त्रीपुरुषकेगर्भाशयविषेजाइके तामिलेहुएशुक्रशोणितके जोकदाचित् दोविभागकरैहै ॥ तोतास्त्रीकेउदरविषे दोबालकोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और सोअपानवायु जोकदाचित् ताशुक्रशोणितकेतीनविभागकरैहै ॥ तो तास्त्रीकेउदरविषे तीनबालकोंकीउत्पत्तिहोवैहै॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मोंकेवशतें सोजीवात्मा तामाताकेउदरविषे अनेकप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब तामाताकेउदरविषे बालककेवृद्धिकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तास्त्रीकेउदरविषे प्राप्तभयाजो पुरुषकाशुक्रहै ॥ सोशुक्रतथास्त्रीकाशोणित यहदोनोंमल परस्परमिलिके प्रथमरात्रिविषेतो जलकेफेनकीन्याई कलिलअवस्थाकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ ताकलिलअवस्थाकापरिमाण माताकेअंगुष्ठपरिमाणहोवैहै ॥ और सप्तरात्रितेंअनंतर तेशुक्रशोणितदोनों ताफेनरूपकलिलअवस्थाकापरित्यागकरिके बुद्बुदअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इहां यत्किंचित्द्रवीभूत तथाअंडेकीन्याई वर्तुलाकार जोमांसविशेषहै ताकानाम बुद्बुदहै॥और एकपक्षतेंअनंतर सोबुद्बुदाकारमांस ताद्रवीभावताकापरित्यागकरिके आपणेअग्निवायुकेसंबंधतें तथामाताकेअग्निवायुकेसंबंधतें पिंडभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥तथा चारिकोणवालाहोवैहै ॥ इसप्रकार चारिकोणवालेपिंडभावकूं प्राप्तभयेजे तेशुक्रशोणितरूपदोमलहैं ॥ तेदोनोंमल ताचतुरकोणवालेपिंडतें दोअंडकोशरूपकरिके पृथक्भावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिसकालविषे अंतरप्राणवायुकरिके ऊपरप्रेरणाकरेहुएजे तेदोनोंमलहैं॥तिनदोनोंमलों तें प्रथम सुषुम्नानामानाडी उत्पन्नहोवैहै॥कैसीहैसासुषुम्नानाडी ॥ पूर्व नाडीकंदकेमध्यविषेस्थितरूपकरिके वर्णनकरीहै ॥ तथा अयोगीपुरुषोंकूंदुर्लक्ष्यहै॥तथा वर्तुलाकारहै ॥तथा अत्यंतसर

लहे ॥ तथा नाभि हृदय गळ तालु भ्रूमध्य यापंचस्थानोंकेभेदतें पंचपर्वा यानामकरिकेकथनकरीहै ॥ तथा वृक्षकीन्याई अधोमुख वालीहे ॥ ऐसी सुषुम्नानाडीकेदोनोंतरफ दूसरीदोनाडी उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तिनदोनोंनाड़ियोंविषेभी जानाडी वामभागअंडकोशतैंउठिके तासुषुम्नानाडीकेवामभागविषेसंबंधकूंप्राप्तहोवेहे ॥ और तासुषुम्नाकेवामभागतैंउठिके दक्षिणपार्श्वविषेस्थितछिद्ररूपमार्गद्वारा हृदय देशकूंप्राप्तहोवे है ॥ और ताहृदयदेशतैंउठिके वामस्कंधके तथावामजत्रुके मध्यछिद्ररूपमार्गकरिके वामनासिकाकूंप्राप्तहोवेहै ॥ इसप्रकार धनुष्यकीन्याईवक्रमार्गकरिके तावामनासिकाविषेप्राप्तभईजानाड़ीहे तानाडीकानाम इडाहे ॥ और जानाडी दक्षिणभागके अंडकोशतैंउठिके तासुषुम्नाकेदक्षिणभागविषे संबंधकूंप्राप्तहोवेहे ॥ और तासुषुम्नाकेदक्षिणभागतें उठिके वामपार्श्वविषेस्थितछिद्र रूपमार्गद्वारा हृदयदेशकूंप्राप्तहोवेहे ॥ और ताहृदयदेशतैंउठिके दक्षिणस्कंधके तथादक्षिणजत्रुके मध्यछिद्ररूपमार्गद्वारादक्षिणनासि काकूंप्राप्तहोवेहे ॥ इसप्रकार धनुष्यकीन्याईवक्रमार्गकरिके तादक्षिणनासिकाविषेप्राप्तभईजानाडीहे तानाडीकानाम पिंगलाहे ॥ इहां गळकेनीचलीअस्थिकानाम जत्रुहे ॥ और हेशिष्य ॥ तिसकालविषे तागर्भकेनाभिस्थानतें ॥ एकआप्यायनीनामानाडी उत्पन्नहोवे है ॥ ताआप्यायनीनाडीकूंही शास्त्रविषे अंतनी यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ साआप्यायनीनाड़ी तागर्भकेनाभिस्थानतैंनिकसिके तामाताके हृदयदेशविषेसंबंधकूंप्राप्तहोवेहे ॥ और जैसे याळोकविषे कूपादिकोंकाजल कुल्याद्वारा क्षेत्रविषेजाइके व्रीहियवादिकोंकीवृद्धिकरेहे ॥ तैसे तामातानैं भोजनकऱ्याजोअन्न तथाजल ॥ ताअन्नजलकासूक्ष्मरस ताआप्यायनीनाडीद्वारा तागर्भकेउदरविषेजाइके तागर्भ कीवृद्धिकरेहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥इडा पिंगला यहदोनोंनाडी अंडकोशतैंउठिके वामदक्षिणनासिकाविषे जावैहैं यहजोपूर्व आपनें कथन कऱ्याहे॥ सो यद्यपि पुरुषशरीरोंविषेघटेहे ॥ तथापि स्त्रीशरीरोंविषेघटेनहीं समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तिननाड़ियोंकामूलग्रंथिरूप जे दोअंडकोशहैं ॥ तेदोअंडकोश पुरुषशरीरोंविषेतो स्पष्टहीहोवैहैं ॥ और स्त्रीशरीरोंविषे अस्पष्टहोवेहे ॥ औरनपुंसकशरीरोंविषे यत्किंचि तस्पष्टहोवैहैं॥यातें स्त्रीनपुंसकशरीरोंविषेभीतिननाड़ियोंकीउत्पत्ति संभवैहै॥इसप्रकारएकपक्षकेसमाप्तहुए तागर्भविषेनाडियोंकीउत्पत्तिहो

वेहै ॥ और एकमासकेव्यतीतहुए सोचारिकोणवाला गर्भरूपपिंड कठिनभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ और दोमासतैंअनंतर ताकठिनमांसके पिंडतैं प्रथम शिर उत्पन्नहोवे है ॥ और तीनमासतैंअनंतर ताचारिकोणों तैं यथाक्रमतैं दोहस्त दोपाद उत्पन्नहोवे हैं ॥ और चारिमासतैं अनंतर तिनहस्तपादोंविषे अंगुलियां उत्पन्नहोवेहैं ॥तथा कटि उर उदरदोनोंपार्श्व कोईकअस्थियां इत्यादिकअवयव उत्पन्नहोवे हैं॥और पंचमासतैंअनंतर तागर्भकेपृष्ठदेशविषेस्थित दीर्घअस्थि उत्पन्नहोवे है॥और षष्ठमासतैंअनंतर तागर्भके मुखादिकनवद्वार तथा तिनद्वारोंविषेस्थितवाक्आदिकइंद्रिय उत्पन्नहोवे हैं॥और सप्तममासतैंअनंतर तागर्भविषे प्राणोंकाव्यापार स्पष्टहोवेहै ॥और अष्टममासविषे सोगर्भअंतरबाहर सर्वअंगोंकरिकेपूर्णहोवेहै परंतु ताअष्टममासविषे तागर्भविषे चैतन्यताप्रगटहोवेनहीं ॥ यातैं ताअष्टममासविषे सोगर्भ सुषुप्तपुरुषकीन्याईं स्थितहोवेहै ॥और ताअष्टममासविषे वातपित्तादिकधातुवोंकीविषमतारूपदोषतैं रहितहुआ सोगर्भ जोकदाचित् तामाताकेउदरतैं बाहर निकसिके जीवनकूंप्राप्तहोवेहै॥तो सोगर्भ भोग मोक्ष दोनोंकेसंपादनकरणेविषेसमर्थहोवेहै॥तहांप्रणवादिकोंकीउपासनाकरिकेतौ ब्रह्मलोकादिरूपभोगकूं प्राप्तहोवे है॥और आत्मसाक्षात्कारकरिके मोक्षकूंप्राप्तहोवे है॥याकहणेकरिके यहअर्थ बोधनकऱ्या॥जिसबालकका अष्टममासविषेजन्महोवे है ॥ तिसबालककेजीवनविषे संशयहीहोवे है ॥ और ताअष्टममासकी जभी समाप्तिहोवे है ॥ और नवममासकाप्रवेशहोवे है॥तभीसोगर्भ सर्वज्ञहोवे है॥और जैसे यालोकविषे विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्न कोईअधिकारीपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकीइच्छा करताहुआ विनयपूर्वक ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीप स्थितहोवे है॥तैसे तानवममासविषे सोगर्भभी विनयपूर्वक तामाताकेउदरविषेस्थितहोवे है ॥ और तानवममासविषे सोबालक पूर्वअनेकजन्मोंकेपुण्यपापकर्मोंकूंस्मरणकरताहुआ आपणेकूंधिक्कारकरे है॥हेशिष्य तानवममासविषे सोबालक जिसप्रकार पूर्वलेजन्मोंकास्मरणकरिके पश्चात्तापकरे है ॥ सोप्रकार तूं श्रवणकर ॥ यादुःखरूपसंसारसमुद्रविषे हमनैं पूर्व सुखदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे असंख्यातशरीर धारणकरेहैं॥तिनशरीरोंविषेभी अनेकवारतौ मैं श्वानशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥और अनेकवार मैं सूकरशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं खर उष्ट्र शरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं गोजाशरीरोंकूं प्र.

प्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार में अजाशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥और अनेकवार में मृगशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥और अनेकवार में प
क्षीशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार में गोधाशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥और अनेकवार में सर्पशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं और
अनेकवार में कीटादिकशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार में प्रतिलोमशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार में अनुलो
मशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ इहां उत्तमजातिवालीमाताविषे नीचजातिवालेपुरुषतें जोपुत्र उत्पन्नहोवेहे ॥ ताकानाम प्रतिलोमहे ॥और
नीचजातिवालीमाताविषे उत्तमजातिवालेपुरुषतें जोपुत्र उत्पन्नहोवे हे ताकानाम अनुलोमहे ॥ और अनेकवार में चांडालादिकनीचश
रीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार में ब्राह्मणादिकऊंचशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार में वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकूं
प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार में क्षपशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार में एकपादवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥
और अनेकवार में दोपादवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार में तीनचारिपादवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥
और अनेकवारमें पादतेंरहितशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवार में अनेकपादोंवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥और अनेकवार में
हस्ततेंरहितशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥और अनेकवारमें एकहस्तवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥और अनेकवार में अनेकहस्तवालेशरी
रोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥और अनेकवार में एकइंद्रियवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार में अनेकइंद्रियवालेशरीरोंकूं प्राप्त
होताभयाहूं ॥ इसप्रकार ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथाअंतरिक्षलोकविषे तथापृथिवीलोकविषे तथानरकविषे में अनेकप्रकारकेश
रीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥और जैसे उदंबरकाफल मच्छरजीवोंकरिके पूर्णहोवे है ॥ तैसे यहब्रह्मांडरूपउदंबरकाफलभी मेरेशरीररूपमच्छरों
करिके मानो पूर्णहोताभयाहै ॥ और जैसे वायुकरिकेचलायाहुआतृण निरंतर भ्रमणकरे है ॥ तैसे पुण्यपापकर्मोंकेवशतें मैंदीनजीवभी
अनेकशरीरोंकूंग्रहणकरताहुआ तथाअनेकशरीरोंकापरित्यागकरताहुआ नरकविषे तथास्वर्गविषे तथाभूमिलोकविषे निरंतर भ्रमणकर
ताभयाहूं॥और जैसे यालोकविषे कृषिकरणेहारेपुरुष रज्जुरूपपाशतें वृषभादिकपशुवोंकूंबांधिके आपणेकृषि आदिककार्योंविषे प्रवृत्तकरेहैं

तैसे मायारूपसूत्रतैंउत्पन्नभये जेपुण्यपापकर्मरूपपाशहैं ॥ तिनकर्मरूपपाशोंतैंबांधिके मैंपशुजीवकूं स्त्रीपुत्रादिककुटंबकेपालनकरणे
विषे कोईअंतर्यामीदेव प्रवृत्तकरताभयाहै ॥ परंतु ताअंतर्यामीदेवकूं मैंमूढबुद्धिजीव नहींजाणताभयाहूं ॥ और पूर्व हमारेकूंअनेकजाति
वालेशरीरोंकीप्राप्तिहोतीभई है ॥ तिसतिसशरीरकेसमानजातिवाली जेअनेकमाताहैं ॥ तिनमातावोंकेस्तनोंतैं पूयकेसमान निकसेजेदुग्ध
हैं ॥ जेदुग्ध विचारवानपुरुषोंकूं परमदुःखरूप प्रतीतहोवे हैं ॥ ऐसेनिंदितदुग्धोंकूंभी मैंदुरात्माजीव अनेकवार पानकरताभयाहूं ॥
और तिसतिसजातिवालेशरीरोंकरिके भक्षणकरणेयोग्य जेअनेकप्रकारकेआहारहैं ॥ जिनआहारोंकूंदेखिके दूसरेजातिवालेशरीरोंकूं
महान्‌ग्लानिहोवेहै ॥ ऐसे निंदितआहारोंकूंभी मैं अनेकवार भोजनकरताभयाहूं ॥ और पूर्व मैं जिसजिसशरीरकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ ति
सतिसशरीरविषे हमारेकूं जन्मकीप्राप्ति तथामरणकीप्राप्ति अवश्यकारिके होतीभईहै ॥ और तिसतिसशरीरकेसंबंधी जे पिता माता पुत्र
स्त्री बांधव गृह आहार आदिकपदार्थथे तिनपदार्थोंविषे हमारा अत्यंतरागहोताभया ॥ और तिसतिसशरीरकेनाशहुएतैंअनंतर तिन पिता
मातादिकपदार्थोंकास्वरूप तथातिनोंकाराग नाशकूंप्राप्तहोताभया ॥ और याभूमिविषे जितनेकीसूक्ष्मरजहैं ॥ औरयाआकाशविषे जित
नेंकीतारागणहैं ॥ तिनोंतैंभीअधिकशरीर पूर्व हमारेकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तथा तितनेहींपितामाता हमारेहोतेभयेहैं ॥ और जैसे यालोक
विषे कोईमनुष्य एकवारपीसेहुएअन्नकूं पुनःपीसतानहीं ॥ तैसेएकवार जन्मकूंप्राप्तहुएजीवका पुनःजन्महोणा तथाएकवार मृत्युकूंप्राप्त
हुएजीवका पुनःमृत्युहोणा यद्यपि अयुक्तहै ॥ तथापि ते जन्ममरण अनेक सहस्रवार हमारेकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ यहहमारेकूं बहुत आश्चर्य
होवेहै ॥ और जैसे कूपादिकोंके ऊपर घटीयंत्र फिरेहै॥तैसे प्रथमजन्मअवस्था तिसतैंअनंतर बाल्यअवस्था तिसतैंअनंतर यौवन अवस्था
तिसतैंअनंतर वृद्धअवस्था तिसतैंअनंतर मरणअवस्थातिसतैंअनंतर पुनःजन्मअवस्था याप्रकार जन्मादिकअवस्थावोंकाप्रवाहरूपघटी
यंत्र सर्वदा हमारेमस्तकऊपरफिरेहै ॥ और जैसे कोईदुष्टपुरुष इसलोककेसुखवासते ब्रह्महत्याकरैहै॥ तिसपुरुषकूं साब्रह्महत्या इसलोकवि
षे तथापरलोकविषे दुःखकीहीप्राप्तिकरेहै ॥तैसे मैंविचारहीन जिनकर्मोंकूं सुखकासाधनमानिकेकरताभयाहूं॥तैसंपूर्णकर्महमारेकूं अनेकप्र

कारकेदुःखोंकीहीप्राप्तिकरतेभयेहैं॥काहेतें तिनपुण्यपापकर्मोंकेकरणेविषे याजीवोंकूंइसलोकविषे तथापरलोकविषे दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहां तेपुण्यपापकर्म जोकदाचित् अत्यंतउग्रहोवैहैं॥तो इसीजन्मविषे ताकर्त्तापुरुषकूं सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहैं॥और तेपुण्यपापकर्म जोकदाचित् मंदहोवैहैं॥तो जन्मांतरविषे ताकर्त्तापुरुषकूं सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरे हैं॥ और जोकोईपुरुष याप्रकारकावचनकहेहैं ॥जो पापकर्मतो प्रथमआरंभकालविषे तथाभविष्यतकालविषे याजोवोंकूं दुःखकोहीप्राप्तिकरैहैं ॥ और पुण्यकर्मतो यद्यपि प्रथमआरंभकाल विषे याजीवोंकू दुःखकोप्राप्तिकरे हैं॥तथापि भविष्यतकालविषे दुःखकोप्राप्तिकैरनहीं॥किंतु तेपुण्यकर्म भविष्यतकालविषे याजीवोंकूं सुख कीहीप्राप्तिकरैहै ॥ सोयहतिनोंकाकहणा संभवेनहीं ॥ काहेतें तापुण्यकर्मकेसुखरूपफल काजभी भोगकारिकेनाशहोवे है ॥ तभी याजी वोंकूं परमदुःखकोप्राप्तिहोवैहै ॥और तासुखकेविद्यमानकालविषेभी दूसरेपुरुषोंकेअधिकसुखकूंदेखिके ईर्षाकोउत्पत्तिकारिके याजीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और तासुखकेअप्राप्तिकालविषे तासुखकोइच्छाकारिके याजोवोंकूं परमदुःखकोप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकार तापुण्यजन्यविषयसुखविषे सर्वदा दुःखकोकारणताकूं मैं अनेकवार अनुभवकरिआयाहूं ॥ यातें यहसंसार केवलदुःखकाहीसमुद्रहै ॥ ऐसे दुःखरूपसंसारसमुद्रविषे निमग्नहुआ मैं अज्ञानोजीव तासंसारदुःखकेनिवृत्तिकाउपाय देखतानहीं ॥ जिसउपायकरिके मैं यासंसारसमुद्रके पारकूंप्राप्तहोवों ॥ किंवा याअनादिसंसारविषे यहविषयरूपजुवारी मैंमूढबुद्धिजीवकूं पूर्व अनेकशरीरोंविषे पराजयकरतेभयेहैं ॥ और तिनविषयरूपजुवारियोंकिपराजयकरणेहारा यहअधिकारीमनुष्यशरीरहीहै ॥ तिनअधिकारीमनुष्यशरीरोंकूंप्राप्तहोइकेभी मैं मूढबुद्धिपुरुष इंद्रियरूपपाशकोंकानिरोधरूप जाकुशलताहै ताकुशलतातेंरहितहोताभया ॥ याकारणतें मैंमूढबुद्धिजीव तिनविषयरूपजुवारियोंकूं पराजयनहींकरताभया ॥ किंतु उलटा तेविषयरूपजुवारीही ताहमारेअधिकारीमनुष्यशरीरकूं पराजयकरतेभये ॥ और अभी जोकिसीपु ण्यकर्मकेप्रभावतें मैं यामाताकेउदरतेंबाहरनिकसौंगा ॥ तो पूर्वशरीरोंकीन्याईं अभीमैं प्रमाद नहींकरौंगा ॥ किंतु जन्ममरणादिकदुःखों केनाशकरणेहारा जोब्रह्मात्मज्ञानहै ॥ ताब्रह्मात्मज्ञानकूं मैं अष्टांगयोगादिकउपायोंकरिके संपादनकरौंगा॥और जोकदाचित् ताआत्मसा

क्षात्कारकेसंपादनकरणेविषे हमारा सामर्थ्यनहींहोवेगा ॥ तोभी पार्वतीकापतिजोमहादेवहे ॥ तथा लक्ष्मीकापतिजोविष्णुहे तिनदोनोंका आराधन मैं निरंतरकरौंगा ॥ परंतु यामाताकेउदरतैंबाहरनिकसिकै मैं पूर्वकीन्याई स्त्रीपुत्रादिककुटंबकेपालनकरणेविषे आपणेआयुषकूं व्यर्थनहींकरौंगा ॥ काहेतें पूर्वहमनें जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवों के पालनकरणेवासते अनेकप्रकारकेपुण्यपापकर्मकरेथे ॥ और मेरेप्रसादक रिकेही जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकू इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखकीप्राप्तिभईथी ॥ तेहमारेस्त्रीपुत्रादिकबांधव कैसेकृतघ्नभये ॥जैसे कोइं पुरुष आपणेगृहतेंविष्ठाकूंनिकासिकै बाहरछोडिआवेहे ॥ तैसे तेहमारेस्त्रीपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर हमारेकूंआपणेगृहतैंबाहरनिका सिकै स्मशानभूमिविषे एकलाछोडिकै आपणेगृहकूंजातेभये॥किंवा ॥हमारेजीवतकालविषे जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव हमारेपादोंऊपर आपणा मस्तकराखिकै नमस्कारकरतेथे॥तेहीस्त्रीपुत्रादिकबांधवमरणतैंअनंतरहमारेस्पर्शकरिकै आपणेकूंअशुद्धमानतेभये॥और ताअशुद्धिकीनि वृत्तिवासते स्नानकरतेभये॥किंवा॥हमारेजीवतअवस्थाविषे जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव हमारेशरीरऊपर चंदनादिकोंकालेपकरतेथे ॥ तेहीस्त्रीपुत्र दिकबांधव मरणतैंअनंतर हमारेकू महान्अग्निविषेपावतेभये॥ किंवा ॥ जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेपालनकरणेवासते मैं अनेकपापकर्मोंकूं करताभयाथा ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तापापकर्मकेफलभोगणेवासते किसीभीजन्मविषे हमारेसाथआयेनहीं ॥ किंतु तापापकर्मकेदुःखरू पफलकूं मैं एकलाहीभोगताभया ॥ ऐसे आगमापायीकृतघ्नबांधवोंकेसाथ स्नेहकरणा हमारेकूं उचितनहीं है ॥ किंवा ॥ जेसे यालोकविषे वेश्यास्त्री अंतरकेस्नेहतैंरहतहुईभी बाहरसैं नानाप्रकारकास्नेहदिखाइकै धनवानपुरुषोंकूं मोहितकरेहे ॥ तैसे तेस्त्रीपुत्रादिकबांधवभी अंत रकेस्नेहतैंरहतहुईभी बाहरसैंनानाप्रकारकास्नेहदिखाइकै आपणेस्वार्थकोसिद्धिकरणेवासते मैंमूढबुद्धिपुरुषकूं मोहकीप्राप्तिकरतेभये ॥ और जैसेसावेश्यास्त्रीताधनीपुरुषकेसर्वधनकाहरणकरिकैंनिर्धनतारूपआपदाकालविषे तापुरुषकापरित्यागकरिदेवेहे॥तैसे तेस्त्रीपुत्रादिक बांधवभी मरणरूपआपदाकालविषे हमारा परित्यागकरतेभये॥और तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके भरणपोषणकरणेवासते जेजेपापकर्म हम नैंकरेथे ॥तिनपापकर्मोंकेदुःखरूपफलकूं मैं एकलाहीभोगताभया॥हेशिष्य॥इसप्रकार तानवममासविषे सोबालक माताकेउदरविषेस्थित

होइके पूर्वअनेकजन्मोंकास्मरणकरिके पश्चात्तापकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर माताकेउदरविषेस्थित प्रसूतिवायु ताबालककामुख नीचेकरैहै ॥ और पादऊपरकरैहै ॥ और तिसकालविषे ताबालकके वात पित्त कफ यहतीनधातु क्षोभकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताधातुवोंकेक्षोभकरिके बहुत दुःखकूंप्राप्तहुआ सोबालक ताकालविषे आपणेकूं तथाअन्यकिसीपदार्थकूं जाणतानहीं ॥ और छियानवेअंगुल ९६ परिमाण जोमाताका शरीरहै ॥ तामाताकेशरीरविषे चारिअंगुलपरिमाण योनिस्थानहै ॥ ऐसेसंकीर्णयोनियंत्रविषे प्रसूतिवायुकरिके चलायाहुआ सोबालक प्राप्तहोवैहै ॥ और तामाताकेउदरविषे मूत्रकेरहणेका जोबस्तिनामास्थानहै ॥ तथा तामाताकेउदरविषे विष्ठाकेरहणेका जोसंग्रहणीनामा स्थानहै ॥ तेदोनोंस्थान प्रसूतिवायुकेचलणेतैं क्षोभकूंप्राप्तहोइके ताबालककेमस्तकऊपर विष्ठामूत्रकूंपावैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे याळोक विषे तीक्ष्णककचकरिके उदरकेछेदनकरणेतैं अस्मदादिकजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसेहीदुःखकीप्राप्ति तागर्भकेत्यागकालविषे ताग भिणीस्त्रीकूं तथाबालककूं होवैहै॥और जैसे किसीअल्पव्रणविषेस्थितहुआ कोईमहान्कीट आपणेकूं तथाताव्रणवालेपुरुषकूं परमदुःखकी प्राप्तिकरैहै ॥ तैसे तासंकीर्णयोनिद्वारविषेप्राप्तहुआ सोबालक आपणेकूं तथामाताकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जैसे कोईलोहेकाती क्ष्णशस्त्र अजादिकपशुवोंकेयोनिस्थानकूं विदारणकरैहै ॥ तैसे यहबालकभी तामाताकेयोनिस्थानकूं विदारणकरैहै ॥ और जैसे याळो कविषे राजादिकोंकेचोरीआदिकअपराधकरणेहाराजोपुरुषहै ॥ ताचोरपुरुषकूं ताराजाकेभृत्य दोककचोंकेमध्यविषे प्राप्तकरैहैं ॥ तैसे सोप्रसूतिकालकावायु ताबालककूं बलात्कारसैं तामाताकेयोनियंत्रविषेप्राप्तकरैहै ॥ और ताप्रसूतिकालविषे जरायुनामापटलैंरहितहुआ सोकोमलबालक अग्निकेस्पर्शकीन्याई तायोनियंत्रकेस्पर्श तैं दाहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार अनेकदुःखोंकूंअनुभवकरिके सोबालक नवममासविषे अथवा दशममासविषे पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकेभोगणेवासते तामाताकेयोनियंत्रतैंबाहरप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे किसीदुर्गंधव्रणतैंबाहरनिकसिके कीट भूमिविषेपतनहोवैहै ॥ तैसे सोबालक तामाताकेयोनियंत्रतैंबाहरनिकसिके भूमिविषेपतनहोवैहै ॥ और अनेकतीक्ष्णकंटकोंकेलागणेकरिके तथालोहेकेककचकरिके अंगोंकेछेदनहोणेतैं अस्मदादिकजीवोंकूं

जिसप्रकारकादुःख प्राप्तहोवे है ॥ तिसीप्रकारकादुःख ताबालककूं तामाताकेयोनियंत्रतैंनिकसणेकरिकेहोवे है॥हेशिष्य॥इसप्रकार माताके प्रसूतिवायुकरिकैचलायाहुआ सोबालक तायोनियंत्रकेनिकसणेकालविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंभोगकरिके तथाआपणेमाताकूंभीअनेक प्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरिके तासंकीर्णयोनियंत्र तैं बाहरभूमिविषेपतनहोवे है ॥ ताकालविषे मूर्च्छाअवस्थाकूंप्राप्तहोइके सोबालक किंचित्मात्रभीजानतानहीं ॥ हेशिष्य ॥ तामूर्च्छाअवस्थातैंअनंतर यहवैष्णववायु आपणेसंबंधकरिके ताबालकके पूर्वलेविचारका विस्मरण कराइदेवे है ॥ कैसाहैसोवायु ॥ तामाताकेउदरतैंबाहर सर्वत्रव्यापकहै ॥ और जीवोंकेव्यामोहद्वारा यासंसारचक्रकेनिर्वाहकरणेवासते विष्णुभगवान्नैं तावायुकूंउत्पन्नकऱ्याहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तावायुवायुकूं वैष्णववायु यानामकरिकेकथनकरे है ॥ हेशिष्य ॥ इसीवैष्णववायुकेभयतैं पूर्व व्यासभगवान्कापुत्र शुकदेवमुनिमाताकेउदरविषे योगकेबलतैं प्रसूतिवायुकूंजीतिकरिके बहुतकालपर्यंत स्थितहोताभयाहै ॥ हेशिष्य जैसे यालोकविषे सर्वपुरुषोंकेअभिप्रायकूंजानणेहारा जोकोईबुद्धिमान्सर्वज्ञपुरुषहै ॥ सोसर्वज्ञपुरुषभी पापी पुरुषोंकृतदुष्टमंत्र ओषधियोंकरिके शीघ्रही मूढअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे यावैष्णववायुकरिकेस्पर्शकऱ्याहुआ सर्वज्ञपुरुषभी मूढअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ याबालकनैं माताकेउदरविषेस्थितहोइके नवममासविषे जिसमनकरिके सोपूर्वउक्तविचारकऱ्याथा॥तिसमनकूं जभी यावैष्णववायुकास्पर्शहोताभया ॥ तभी सोमन पूर्वविचाररूपऋजुभावका परित्यागकरिके श्वानकेपुच्छकीन्याई वक्रभावकूं प्राप्तहोताभया ॥ और जैसे अग्निकरिकेदग्धहुएकाष्ठकेप्रभावपणेतैं अग्निकाभीभ्रमणहोवे है ॥ तैसे तावक्रमनकेतादात्म्यअध्यासतैं यहसाक्षीआत्माभी वक्रभावकूंप्राप्तहोताभया॥ तिसतैंअनंतर अत्यंतदुःखीहुआ सोबालक पूर्वलेसर्वविचारका विस्मरणकरिके कोइंकोइं याप्रकारकाशब्दउच्चारणकरे है॥हेशिष्य॥इसप्रकार गर्भउपनिषद्विषे याजीवोंकेजन्मका कथनकऱ्याहै॥ताजन्मकेविचारकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवे है ॥ यातैं वैराग्यकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषोंनैं तागर्भउपनिषद्कीरीतिसैं आपणेजन्मकाविचार अवश्य करिकेकरणा॥और हेशिष्य॥जैसेताजन्मअवस्थाकेविचारकियेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं तावैराग्यकीप्राप्तिहोवे है॥तैसे आपणेमरणअवस्था

केविचारकियेतैंभी याअधिकारीपुरुषोंकूं तावैराग्यकीप्राप्ति अवश्यकरिकेहोवे है ॥ यातैं तावैराग्यकीप्राप्तिवासतै याअधिकारीपुरुषोंनैं अपणेमरणअवस्थाकूंभी अवश्यकरिकेजान्याचाहिये ॥ ओर ताआपणेमरणकाज्ञान याजीवोंकूं ॥ जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥ इत्यादिकशास्त्रकेवचनोंकरिकेभीहोवे है ॥ तथा यालोकविषे जिसजिसप्राणीका जन्महोवे है ॥ तिसतिसप्राणीकामृत्युभी अवश्यकरिकेहोवे है ॥ जैसे हमारेमातापितादिकबांधवोंका जन्महुआथा ॥ यातैं तिनमातापितादिकबांधवोंका मृत्युभी अवश्यकरिकेहोताभया॥तैसे हमाराभी जन्महुआहे ॥ यातैं हमाराभी मृत्यु अवश्यकरिकेहोवेगा॥याप्रकारकेअनुमानप्रमाणतैंभी याजीवोंकूं आपणेमृत्युकानिश्चयहोवे है॥ परंतु सोहमारामृत्यु इतनैंदिनोंतैंपीछेहोवेगा॥याप्रकारकानिश्चय योगरहितपुरुषोंकूं होइसकैनहीं ॥ यातैं तामरणकालकेनिश्चयकरावणेवासतै ऋगवेदविषे कोषीतकिमुनिनैं अनेकप्रकारके मृत्युकेचिह्न कथनकरे हैं ॥ तथा वशिष्ठसंहिताविषे वशिष्ठभगवान्नैंभी तेमृत्युके चिह्न कथनकरे हैं॥तिनमरणचिह्नोंकेज्ञानतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं आपणेमरणकालकानिश्चयहोवे है ॥ ताकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवे है॥यातैं याअधिकारीपुरुषनैं तिनमरणकेचिह्नोंकूं अवश्यकरिकेजान्याचाहिये ॥ अब ऋगवेदकेकोषीतकिशाखाविषे जाग्रतअवस्थामेंदेखणेयोग्य जेमरणकेचिह्न कथनकरे हैं ॥ तिनचिह्नोंका निरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥यासूर्यमंडलविषे तथायापुरुषोंकेदक्षिणनेत्रविषे एकहीअंतर्यामीपुरुष दोस्वरूपकरिकेस्थितहोवे है ॥ तिनदोनोंस्वरूपोंका नाडीरूपकरणद्वारा परस्परसंबंध श्रुतिविषेकथन कऱ्याहे ॥ ओर यापुरुषकूं जभी मरणकाल समीपप्राप्तहोवे है ॥ तभी तिनदोनोंस्वरूपोंका सोसंबंध निवृत्तहोइजावे है ॥ ओर जिसकालविषे तिनदोनोंस्वरूपोंकासंबंध निवृत्तहोवे है ॥ तिसकालविषे तासमीपमृत्युवालेपुरुषकूं सोसूर्यभगवान् पूर्वकीन्याई प्रतीतहोवेनहीं ॥ किंतु तापुरुषकूं सोसूर्यभगवान् चंद्रमाकीन्याई शीतलहुआ प्रतीतहोवे है ॥ अथवा तापुरुषकूं मध्याह्नकालविषेभी संध्याकालकीन्याई सोसूर्यभगवान् किरणोंतैंरहितहुआप्रतीतहोवे है ॥ अथवा तापुरुषकूं सोसूर्यभगवान् छिद्रवालाप्रतीतहोवे है ॥ अथवा मंजिष्ठकरिके रंजित जोरक्तवस्त्रहै तावस्त्रकेसमान रक्तवर्णवालेआकाशविषेस्थितहुआसोसूर्यभगवान् तापुरुषकूं प्रतीतहोवे है ॥ इसप्रकार तासू

येभगवान्कूं विपरीतदेखणेहारापुरुष थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेशिष्य ॥ जोपुरुष पूर्वादिकचारदिशावोंकूं तथाअग्नि
कोणादिकचारउपदिशावोंकूं तथाअंतरिक्षलोककूं तथातारागणकूं सर्वदा रक्तवर्णवालादेखेहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्त
होवै है ॥ और जैसे मलकेपरित्यागकालविषे यापुरुषोंका पायुद्वार संकोचतैंरहितहोवै है ॥ तैसे जिसपुरुषका सोपायुद्वार सर्वदा संकोच
तैंरहितहोवै है ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेहीमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे अंडोंकरिकैयुक्त काककेगृहविषे दुर्गंधहोवै है ॥ तैसाहीदुर्गंध
जिसपुरुषकेमस्तकविषेहोवै है ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष आपणीछायाविषे छिद्रदेखेहै ॥ सोपुरु
षभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और दर्पणविषे तथाजलविषे स्थितजोआपणाप्रतिबिंबहै ॥ तथा भूमिविषेस्थित जोआपणी
छायाहै ॥ ताप्रतिबिंबाविषे तथाछायाविषे जिसपुरुषकूं आपणेमस्तककासंशयहोवैहै ॥ अथवा तिनोंविषे आपणेमस्तककेअभावकाही
निश्चयहोवै है ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष दूसरेपुरुषकेनेत्रकीकनीनिकाविषे आपणेप्रतिबिंबके
पादऊपरदेखेहै और मस्तक नीचेदेखेहै ॥ अथवा जोपुरुष दर्पणादिकोंविषेस्थित आपणेप्रतिबिंबविषे याप्रतिबिंबकामस्तक ऊपरहै
अथवा नीचेहै याप्रकारकासंशयकरै है ॥ सोपुरुष भी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अंगुलिकरिके आपणेनेत्रोंकेपीडनकि
येतैं अस्मदादिकपुरुषोंकूं जोकिरणोंयुक्ततेजविशेष प्रतीतहोवैहै ॥ सोतेजविशेष जिसपुरुषकूं नेत्रकेपीडनकियेतैं नहींप्रतीतहोवै है ॥
सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥और दोनोंअंगुलियोंकरिके आपणेदोनोंकर्णोंकेनिरोधकरणेतैं हमजीवोंकूं जोप्राणोंकाध्वनि
रूपशब्द श्रवणकरणेविषेआवैहै ॥ ताआपणेप्राणोंकेशब्दकूं जोपुरुष नहींश्रवणकरैहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेहीमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥
और जोपुरुष मयूरकेकंठसमान अग्निकूंनीलवर्णवालादेखेहै॥ तथा जोपुरुष मेघोंतैंविनाही आकाशविषेविद्युतकूंदेखेहै ॥ तथा जोपुरुष
मेघोंकेविद्यमानहुएभी ताविद्युतकूंदेखतानहीं॥सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष वर्षावालेमेघविषे सूर्यकेकि
रणोंकूंदेखेहै ॥ तथा जोपुरुष अग्नितैंरहितभूमिकूंभी अग्निकरिकैप्रज्वलितदेखेहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इत

नैंकरिके ऋग्वेदविषे कोषीतकिमुनिउक्त मृत्युचिह्नोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब वशिष्ठमुनिउक्त मृत्युचिह्नोंकानिरूपणकरे हैं॥ हेशिष्य ॥ एकहीदिनविषे प्रातःकालविषे तथासंध्याकालविषे जोपुरुषआपणेमस्तकतैंनिकसेहुएधूमकूँदेखेहै॥सोपुरुष महान्भयकूँप्राप्तहोवे है ॥अथवा मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे पंचदिनपर्यंत तामस्तकके धूमकूँदेखेहै॥सोपुरुष तीनवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जोपुरुष तामस्तककेधूमकूं चारिदिनपर्यंत देखेहै ॥ सोपुरुष दोवर्ष तैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥और जोपुरुष तामस्तककेधूमकूं तीनदिनपर्यंत देखेहै ॥ सोपुरुष एकवर्ष तैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष आपणेकर्णोंकूं दोनोंअंगुलियोंसैंनिरोधकरिके ताकर्णोंकेअंतर प्राणोंकेध्वनिरूपशब्दकूं नहींश्रवणकरेहै ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जिसपुरुषकाशरीर पूर्व कृशहोवे ॥ सोकृशशरीर किसीनिमित्ततैंविनाही स्थूलहोइजावे ॥ तथा जिसपुरुषकाशरीर पूर्व स्थूलहोवे ॥ सोस्थूलशरीर किसीनिमित्ततैंविनाही कृशहोइजावे ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूँप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष पूर्व क्रोधीस्वभाववालाहोवे है ॥ सोपुरुष अकस्माततैं शांतस्वभाववालाहोइजावे ॥ अथवा जो पुरुष पूर्व शांतस्वभाववालाहोवे है ॥ सो पुरुष अकस्माततैं क्रोधीस्वभाववालाहोइजावे ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जिसदिनविषे यापुरुषकूं विष्ठा मूत्र यादोनोंकापरित्याग एकहीकालविषेप्राप्तहोवे ॥ अथवा जिसपुरुषकूं क्षुधा पिपासा यहदोनों एकहीकालविषेप्राप्तहोवैं ॥ और ताविष्ठा मूत्रकेपरित्यागकालविषे तथाक्षुधापिपासाकालविषे तापुरुषकूं व्यामोहकीभीप्राप्तिहोवे ॥ सोपुरुष तिसदिनतैंलेके एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जोकोईपुरुष अकस्माततैं किसीवृक्षकेअग्रभागविषे गंधर्वनगरकूंदेखैहै ॥ अथवा जोकोईपुरुष आपणेशरीरकूं कृष्णवर्णवाला तथापिंगलवर्णवाला देखेहै ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवे है ॥ और गृध्र काक गोमायु सारस इत्यादिक जेमांसकेभक्षणकरणेहारेपक्षीहैं ॥ तथा खरउष्ट्रजेहैं॥तथा दांतोंतैंरहितजेवृश्चिकादिकजीवहैं॥तथा राक्षसभूतपिशाचजे हैं ॥ इसतैंआदिलेकेजितनेकीमांसकेभक्षणकरनेहारे दुष्टजीवहैं ॥ तिनगृध्रआदिकदुष्टजीवोंविषे कोईएकजीव अथवा बहुतजीव मांसकेभक्षणकरणेवासते जिसपुरुष

कीतरफ धावनकरेहैं ॥ सोपुरुषभी एकवर्ष तें अनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहे ॥इसप्रकार स्वप्नविषे जोपुरुष तिनगृध्रादिकोंकूंदेखे हे ॥ सोपुरुष एकवर्ष तें अनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहे॥और जिसपुरुषकेप्रति दूसरेलोक अरुंधतीतारा दिखावैं ॥ अथवा ध्रुवतारा दिखावैं ॥ अथवा पूर्ण चंद्रकेमध्यविषेस्थितश्यामता दिखावैं ॥ अथवा निर्मलआकाशविषे दक्षिणउत्तरदिशाविषेस्थित दीर्घमंदप्रभा दिखावैं ॥ और जो पुरुष तिनअरुंधतीआदिकोंकेदेखणेवासते प्रयत्नकरताहुआभी तिनअरुंधतीआदिकोंकूंदेखतानहीं ॥सोपुरुषभी एकवर्ष तें अनंतर मृत्यु कूंप्राप्तहोवैहे ॥ अथवा एकवर्षतैंपूर्वही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहे ॥ परंतु सोपुरुष जिसतिथिविषे तानिमित्तकूंदेखेहे ॥ वर्ष तें अनंतर पुनःतातिथि कूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इतनैंकरिके एकवर्षविषे मृत्युकीप्राप्तिकरणेहारे चिह्नोंका निरूपणकऱ्या ॥ अब षट्मासविषे मृत्युकेप्राप्तिकरणे हारेचिह्नोंका निरूपणकरे हैं ॥हेशिष्य ॥ जोपुरुष आपणेश्यामवस्त्रकूं श्वेतदेखे हे ॥ अथवा आपणेश्वेतवस्त्रकूंश्यामदेखेहे ॥ सोपुरुष षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जोपुरुष सूर्यकूं अथवा चंद्रमाकूं आकाशतैंनीचेपतनहुआदेखेहे ॥ अथवा जोपुरुष भूमिविषे स्थितपदार्थकूं आकाशविषेस्थितहुआदेखेहे ॥ अथवा आकाशविषेस्थितपदार्थकूं भूमिविषेस्थितहुआ देखेहे ॥ सोपुरुषभी षट्मासतैं अनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और रोगादिककारणोंतैंविनाही जिसपुरुषके ओष्ठ तथातालू शुष्कहोताजावैहे ॥ अथवा जिसपुरुषकाशरीर चक्रकीन्याई भ्रमणकरेहे ॥ अथवा जोपुरुष पर्वतादिकस्थावरपदार्थोंकाभ्रमणदेखेहे ॥ तथा चलतेहुएपदार्थोंका स्थिरपणादेखे हे ॥ सोपु रुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जोपुरुष घंटाकेशब्दकूंनहींश्रवणकरेहे ॥ अथवा पंकवालीभूमिविषे तथारजवालीभू मिविषे जिसपुरुषकेपादकाचिह्न खंडितहोवैहे ॥ सोपुरुषभी षट्मासकेभीतरही मृत्युकूंप्राप्तहोवै हे ॥ अब तीनमासविषेमृत्युकरणेहारेचि ह्नोंका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ अंगुलिकरिके नेत्रोंकेपीडनकिये तें अस्मदादिकपुरुषोंकूं खद्योतकेसमान जेतेजकेसूक्ष्मकण प्रती तहोवैहैं॥ते तेजकेसूक्ष्मकणजिसपुरुषकूं नेत्रोंकेपीडनकियेतैंविनाही प्रतीतहोवैहैं॥सोपुरुष तीनमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहे॥अब एक मासविषेमरणकीप्राप्तिकरणेहारेचिह्नोंका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ जिसपुरुषकेनेत्रादिकइंद्रिय रूपादिकविषयोंकूं पूर्वकीन्याई

यथार्थनहींग्रहणकरे हैं ॥ सोपुरुष एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिनदेवतादिकोंकाशरीर इमजीवोंकूं प्रत्यक्षप्रतीतहोता नहीं ॥ ऐसेदेवतादिक जिसपुरुषकेश्रवणकरणेयोग्यवचनोंकूं कथनकरैहैं ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिस पुरुषकामस्तक अग्निकीज्वालावोंकरिकेयुक्तहोवैहै ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष दिनविषे उल्कापा तकूंदेखैहै ॥ अथवा जोपुरुष रात्रिविषे इंद्रधनुषकूंदेखैहै ॥ अथवा जोपुरुष मेघरहितआकाशविषे विद्युत्कूंदेखैहै ॥ अथवा जोपुरुष मेघवालेआकाशविषेभी ताविद्युत्कूंनहींदेखैहै ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष दर्पणादिकोंविषे आपणेप्रतिबिंबकूं नहींदेखैहै ॥ अथवा जोपुरुष काककेमैथुनकूंदेखैहै ॥ अथवा जोपुरुष हंसकेमैथुनकूंदेखैहै ॥ अथवा जोपुरुष मयूरके मैथुनकूंदेखै है सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष रूक्षपदार्थोंकूं स्निग्ध देखैहै ॥ अथवा जोपुरुष शीतलपदार्थोंकूं उष्णदेखै ॥ अथवा जोपुरुष उष्णपदार्थोंकूंशीतलदेखैहै ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥और स्नानकियेतैंअनंतर जिसपुरुषके दूसरेसर्वअंगतो जलकरिकेआर्द्रहोवैं ॥ और हृदय पाद यहदोनोंअंग शीघ्रही शुष्कहोइजावैं॥सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब अर्द्धमासविषेमृत्युकीप्राप्तिकरणेहारे चिह्नोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोपुरुष अकस्माततैं भूमिविषेछिद्रकूंदेखैहै॥अथवा जोपुरुष ता भूमिकेछिद्रतैंउत्पन्नहुएशब्दोंकूंश्रवणकरैहै ॥ सोपुरुष अर्द्धमासतैंअनंतर मृत्युकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जिसपुरुषकूं सूर्यकेकिरण शीतलप्रतीतहोवै हैं ॥ अथवा जिसपुरुषकूं चंद्रमाकेकिरण उष्णप्रतीतहोवै हैं॥अथवा जिस पुरुषकामुख रक्तकमलकीन्याई रक्तवर्ण वालाहोवैहै ॥ अथवा जिसपुरुषकीजिह्वा प्रज्वलितअग्निकेसमानवर्णवालीहोवैहै ॥ अथवा जिसपु रुषकेदोनोंकर्ण अश्वकेकर्णोंकी न्याई स्तब्धहोवै हैं ॥ अथवा जिसपुरुषकेहृदयविषे तथा नाभिविषे तथातालुविषे कंपहोवै है ॥ सोपु रुषभी अर्द्धमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥अब सप्तदिनविषे मरणकीप्राप्तिकरणेहारेचिह्नोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य॥जिसपुरुषकेशरी रविषे अकस्माततैं अग्निकीज्वाला प्रगटहोवैहै॥ सोपुरुष सप्तदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥और तारामंडलविषेस्थित जेसप्तऋषि हैं॥

तथा आदित्यतैंआदिलेकेकेतुपर्यंत जेनवग्रहहैं ॥ तिनोंकूं जोपुरुष नहींदेखेहै ॥ सोपुरुषभी सप्तदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष आपणेनासिकाकूं तथाजिह्वाकूं नहींदेखेहै ॥ अथवा जोपुरुष किसीकार्यकूंकरिके तिसीकालविषे ताकार्यकेविस्मृतिकूंप्राप्तहोवै है ॥ अथवा जिसपुरुषकेशरीरका पूर्वअर्द्धतो उष्णरहेहै ॥ और अपरअर्द्ध शीतलरहेहै ॥ अथवा जिसपुरुषकेनेत्र अत्यंत विकासकरिके मंडलाकारहोवैहैं ॥ अथवा जिसपुरुषकेदोनोंकर्ण शिथिलताकरिके आपणेस्थानतैंच्युतहोवैहैं॥अथवा जिसपुरुषकीनासिका वक्रहोवैहै ॥ सोपुरुषभी सप्तदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब एकदिवसविषे मृत्युकीप्राप्तिकरणेहारेचिह्नोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ दक्षिणविषेसूर्यकेस्थितहुए यापुरुषोंकोछाया नियमकरिके उत्तरदिशाविषेहीस्थितहोवैहै ॥ तिसआपणीछायाकूं जोपुरुष दक्षिणदिशाकी तरफदेखेहै ॥ सोपुरुष उसीदिनविषे शस्त्रादिकोंकरिके मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिसपुरुषनें आपणेभोजनकरणेवासते अन्नकूंत्यागक- न्याहै ॥ ताअन्नकूं कोईअपूर्वस्त्री भोजनकरतीहै ॥ याप्रकार जोपुरुषदेखेहै ॥ सोपुरुषभी तिसीदिनविषे मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और वृषभ ऊपरआरूढहुआ अथवा महिषऊपरआरूढहुआ तथादंडजिसकेहस्तविषेहै ऐसाजोकोईभयानकपुरुषहै ॥ अथवा खुलेहुएहैंरक्तवर्णवाले केशजिसके तथा हस्तविषे पाशोंकूंग्रहणकन्याहैजिसनें ऐसीजाकोईभयानकस्त्रीहै ॥ ताभयानकपुरुषकूं अथवा ताभयानक स्त्रीकूं जोपुरुष अन्नकेभोजनकालविषेदेखेहै ॥ सोपुरुषभी तिसीदिनविषे मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ हे शिष्य ॥ इसप्रकार तीनवर्षके तथादो वर्षके तथाएकवर्षके तथाषट्मासके तथा एकमासके तथा एकपक्षके तथासप्तदिवसके तथा एकदिवसके जितनेकीमृत्युकेचिह्न पूर्व क- थनकरे हैं ॥ तिनचिह्नोंविषे किसीएकचिह्नकूं अथवा दोतीनचिह्नकूं अथवा बहुतचिह्नोंकूं जोपुरुष जिसतिथिविषेतथाजिसदिनविषे देखेहै ॥ सोपुरुष तिसतीनवर्षादिककालतैंअनंतर तिसतिथिकूं तथातिसदिनकूं पुनःप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु ता तीनवर्षादिककाल केभीतरही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥इतनेंग्रंथकरिकेजाग्रतअवस्थाविषे मरणकेचिह्नोंकानिरूपणकन्या ॥ अब वशिष्ठसंहिताविषेवसिष्ठभगवान्नें स्वप्नअवस्थाविषे जेमरणकेचिह्न कथनकरेहैं तिनोंकानिरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥जोपुरुष स्वप्नविषे कृष्णदंतवालेपुरुषकूं देखैहै अथवाकृष्ण

वर्णवालेपुरुषकूंदेखैहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुष थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्वप्नविषे जिसपुरुषकेशरीरकूं वराह तथामर्कट भक्षणकरैहै ॥ अथवा ताशरीरकूं तेवराहमर्कट लेजावैहैं ॥ ऐसेस्वप्नकाद्रष्टापुरुष षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे पीतवर्णवालेपदार्थोंकूंभोजनकरिके तिनपदार्थोंकावमनकरैहै ॥ अथवा जोपुरुष स्वप्नविषे मधुयुक्तअन्नकूं भक्षणकरै है ॥ अथवा जोपुरुष स्वप्नविषे कमलकीकोमलजटाकूं भक्षणकरैहै॥सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे श्वेतकमलकूं आपणेमस्तकविषे तथाकंठादिकोंविषे धारणकरै है ॥ अथवाजोपुरुष स्वप्नविषे गर्दभ वराह उष्ट्र करिके युक्त रथविषे आरूढहोवैहै ॥ अथवा तिनगर्दभवराहउष्ट्रऊपरही आरूढहोवैहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैं अनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे कृष्णवर्णवालेवत्सकरिकेयुक्त कृष्णवर्णवालीगोकूं दक्षिणदिशाकीतरफजाताहुआ देखै है ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे रक्तवर्णवालेजपाकुसुमोंकीमालाकूं आपणेकंठविषेधारणकरिके अथवा शेवालकीमालाकूंकंठविषेधारणकरिके तथाआपणेशरीरऊपर तेलकामर्दनकरिके अथवा नगनहोइके एकलाही तादक्षिणदिशाकीतरफजावैहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे आपणेहस्तविषेस्थित गृध्रकाकादिकोंकरिके भक्षणकूंप्राप्तहुआ तथाप्रसन्नतायुक्तहुआ तथारक्तवस्त्रोंकरिकेयुक्तहुआ तथारक्तगंधकरिकेयुक्तहुआ तथा तेलकरिकेयुक्तहुआ तथाक्षुधापिपासाकरिकेआतुरहुआ तथाश्वानादिकक्रूरजीवोंतैंभयकूंप्राप्तहुआ शीघ्रही दक्षिणदिशाविषेगमनकरै है ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे कृकलासजीवकूं आपणावाहनहुआदेखैहै ॥ सोपुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥और जोपुरुष स्वप्नविषे लोहकेदंडकूंधारणकरणेहारे कृष्णवर्णवालेपुरुषकूं देखैहै॥सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तीनदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥और जिसपुरुषकूं स्वप्नविषे कृष्णवस्त्रोंकूंधारणकरणेहारी तथाकृष्णगंधकरिकेयुक्त कोईस्त्री स्नेहपूर्वक आलिंगनकरैहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुष दशदिवसतैंपूर्वही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा सोपुरुष तिसीदिनविषे अरुणउदयकालविषे अथवा सूर्यउदयकालविषे

मृत्युकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार मृत्युकेचिह्न जिसस्वप्नविषेप्रतीतहोवेंहैं ॥ सोस्वप्नभी दोप्रकारकाहोवे है॥तहां एकस्वप्नतो पुण्य पापादिरूपअदृष्टसामग्रीकरिकेही जन्यहोवे है ॥ और दूसरास्वप्नतो वात पित्त कफ यातीनदोषोंकीविषमतारूप दृष्टसामग्रीकरिके जन्य होवे है ॥ तथा काम क्रोध लोभ भय चिंतन इत्यादिकदृष्टसामग्रीकरिके जन्यहोवे है ॥ तिनदोनोंप्रकारकेस्वप्नविषे जोस्वप्न तादृष्टसामग्री तैंविना केवलअदृष्टसामग्रीकरिके जन्यहोवे है॥ तास्वप्नविषेदेखेहुए तेपूर्वउक्तमृत्युकेचिह्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं अवश्यकरिके तामृत्युरूप फलकीप्राप्तिकरे हैं ॥ और जोस्वप्न तादृष्टसामग्रीकरिकेजन्यहोवेंहै ॥ तास्वप्नविषेदेखेहुए तेपूर्वउक्तमृत्युकेचिह्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तामृ त्युरूपफलकीप्राप्तिकरेनहीं ॥ किंतु सोस्वप्न निष्फलहीहोवे है ॥ और हेशिष्य ॥ ता वातपित्तादिकदृष्टसामग्रीतैंविना केवलपुण्यपापादि रूपअदृष्टसामग्रीकरिकेजन्य जोस्वप्नहै ॥ सोस्वप्नभी रात्रिकेचारप्रहरोंकेभेदकरिके भिन्नभिन्नफलकोहीप्राप्तिकरे है ॥ तहां यहस्वप्नद्रष्टा पुरुष रात्रिकेप्रथमप्रहरविषे जिसस्वप्नकूंदेखेहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टा पुरुषकूं एकवर्षतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरेहै ॥ और यहस्वप्नद्रष्टा पुरुष रात्रिकेद्वितीयप्रहरविषे जास्वप्नकूंदेखेहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं षट्मासतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरेहै ॥ और यहस्वप्नद्रष्टापु रुष रात्रिकेतृतीयप्रहरविषे जोस्वप्नकूंदेखेहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तीनमासतैंअनंतर ताफलकोप्राप्तिकरे है ॥ और रात्रिकेचतुर्थ प्रहरविषेभी दोदोघटिकाकेभेदतैं सोस्वप्नभिन्नभिन्नफलकीहीप्राप्तिकरेहै ॥ तहां यहस्वप्नद्रष्टापुरुष रात्रिकेचतुर्थप्रहरकीप्रथमदोघटिकाविषे जिसस्वप्नकूंदेखेहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं एकमासतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरे है ॥ और यहस्वप्नद्रष्टापुरुष ताचतुर्थप्रहरकीदूस रीदोघटिकाविषे जिसस्वप्नकूंदेखेहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं एकपक्षतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरे है ॥ और यहस्वप्नद्रष्टा पुरुष ताचतुर्थप्रहरकी तीसरीदोघटिकाविषे जिसस्वप्नकूंदेखेहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं दशदिनतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरेहै ॥ और यहस्वप्नद्रष्टापुरुष ताचतुर्थप्रहरकीचोथीदोघटिकाविषे जिसस्वप्नकूंदेखेहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तिसीदिनविषे ताफलकी प्राप्तिकरे है॥इसप्रकार यास्वप्नद्रष्टापुरुषोंकूं ताअदृष्टसामग्रीजन्यस्वप्नकाफल प्राप्तहोवे है॥औरहेशिष्य ॥ जैसे वात पित्त कफ काम क्रोध

इत्यादिकदृष्टसामग्रीकरिकेजन्यजोस्वप्नहै सो निष्फलहोवे है ॥ तैसे जिसस्वप्नकेउत्तरकालविषे दूसरास्वप्न प्राप्तहोवे है ॥ सोप्रथमस्वप्नभी निष्फलहीहोवैहै ॥ हेशिष्य इसप्रकार अनेकदोषोंकेवशतैं सोस्वप्न निष्फलभीहोवे है ॥ यातैं यहहमारास्वप्न वातपित्तादिरूपदृष्टसामग्री करिकेजन्यहै अथवा पुण्यपापादिरूपअदृष्टसामग्रीकरिकेजन्यहै याप्रकारकेविचारकियेतैंविना सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं नियमकरिके ताफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु ताविचारकियेतैंविना तास्वप्नकेफलविषे संशयहीरहैहै ॥ और जाग्रतअवस्थाविषे जेपूर्व मरणकेचिह्न कथनकरेथे ॥ तेचिह्नतो ताद्रष्टापुरुषकूं नियमकरिके ताफलकोप्राप्तिकरे हैं ॥ यातैं ताजाग्रतचिह्नोंकेफलविषे संशयनहीं है ॥ याप्रकार कौषीतकिऋषिनैं तथावशिष्टभगवान्नैं जाग्रतविषे तथास्वप्नविषे मृत्युचिह्नोंकेफलकीव्यवस्था कथनकरीहै ॥ हेशिष्य॥यालोकविषे जो पुरुष विषयोंविषे अत्यंतआसक्तहै ॥ तिसपुरुषकूंभी पूर्वउक्तमृत्युचिह्नोंकेदर्शनतैं अवश्यकरिके वैराग्यकीप्राप्तिहोवे है याकारणतैं कौषीतकिवशिष्ठादिकऋषियोंनैं तिनमृत्युचिह्नोंका कथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे गर्भउपनिषद्केविचारतैं तथामृत्युचिह्नोंकेदर्शनतैं यापुरुषोंकूंवैराग्यकीप्राप्तिहोवे है ॥ तैसे हंसादिकउपनिषदोंविषेकथनकऱ्याजोयोगहै ॥ तायोगकरिकेभी याअधिकारीपुरुषोंकूं परमवैराग्यकीप्राप्तिहोवे है ॥ यातैं तावैराग्यकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषनैं तायोगकूंभीअवश्यकरिके संपादनकरणा॥ अब तायोगकेनिरूपण करणेवासते प्रथम तायोगकेअंगोंका कथनकरणेहारी जाअमृतनादनामाउपनिषद्है ताकेअर्थकानिरूपणकरे हैं ॥ तहां प्रथम योगकेअधिकारीका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोपुरुष ब्रह्मचर्यधर्मवालाहोवे है ॥ तथा जिसपुरुषनैं अंतरमनकूं तथाबाह्यइंद्रियोंकूं आपणेवश कऱ्याहोवे ॥ तथा जोपुरुष धैर्यवालाहोवे है ॥ तथा जिसपुरुषकी गुरुशास्त्रविषे श्रद्धाभक्तिहोवे है ॥ ऐसेगुणोंवालापुरुष तायोगकाअधिकारीहोवे है॥ऐसाअधिकारीपुरुष प्रथम आपणेवर्णआश्रमकेअनुसार नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकरिके किसीवनादिरूपएकांतदेशविषे कुटीबांधिकरिके तहां योगाभ्यासकूंकरे ॥ कैसाहोवैसोदेश ॥ शीत आतप वायु इत्यादिकसर्वउपद्रवोंतैंरहितहोवे ॥ तथा मनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहोवे ॥ ऐसेएकांतदेशविषे यहअधिकारीपुरुष प्रथमदर्भोंकूंबिछावे ॥ तिनदर्भोंकेऊपर मृगचर्मकूंबिछावे ॥

तिसमृगचर्मकेऊपर व्याघ्रचर्मकूंविछावे ॥ अथवा तामृगचर्मकेऊपरकिसी कोमलवस्त्रादिकोंकूंविछावे ॥ जिसकरिके तापुरुषकेशरीर विषे किंचित्मात्रभीपीडा नहींहोवे ॥ और सोआसन अत्यंतऊंचाभीनहींहोवे ॥ तथा अत्यंतनीचाभीनहींहोवे ॥ ऐसेआसनऊपर स्थितहोइके यहअधिकारीपुरुष प्रथम आपणेशरीरके मध्यदेशकूं तथाग्रीवाकूं तथाशिरकूं दंडकीन्याई सूधाराखे ॥ और यहअधिकारी पुरुष आपणेनासिकाकेअग्रभागविषेदृष्टिकूंराखिके दूसरेकिसीदिशाकीतरफ दृष्टिकैरनहीं ॥ और यहअधिकारीपुरुष अहिंसा १ सत्य २ अस्तेय ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ यापंचप्रकारकेयमोंकूं सर्वदासेवनकरे ॥ तथा शौच १ संतोष २ तप ३ स्वाध्याय ४ ईश्वरप्रणिधान ५ यापंचप्रकारकेनियमोंकूं सर्वदा सेवनकरे ॥ तिनयमनियमोंकाअर्थ अष्टमअध्यायविषे विस्तारतेंकहिआये है ॥ हेशिष्य ॥ तायोगकरणेविषे याअधिकारीपुरुषोंकूं अनेकप्रकारकेविघ्नोंकीप्राप्तिहोवे है ॥ यातें तिन विघ्नोंकीनिवृत्तिकर णेवासतें यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तआसनऊपरस्थितहोइके आपणेचित्तकूंएकाग्रकरिके रुद्रभगवान्काध्यानकरे ॥ तारुद्रभगवान्के ध्यानकरणेतें याअधिकारीपुरुषके सर्वविघ्न निवृत्तहोवे हैं ॥ तिसतेंअनंतर यहअधिकारीपुरुष स्वस्तिक पदम भद्र यातीनआसनोंविषे किसीएकआसनकूंबांधिकरिके तथाउत्तरदिशाकीतरफमुखकरिके प्राणायामकूंकरे ॥ अब तिनआसनोंकेस्वरूपका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ वामजंघ ऊरु यादोनोंकेमध्यविषे दक्षिणपादकेतलकूंराखिके तथा दक्षिणजंघ ऊरु यादोनोंकेमध्यविषे वामपादकेत लकूंराखिके दंडकी न्याई सरलस्थितहोणा याकानाम स्वस्तिकआसनहै ॥ और आपणेवामऊरुऊपर दक्षिणपादकूंराखिके ताद क्षिणपादकेअंगुष्ठकूं आपणेपृष्ठदेशतेंपीछे दक्षिणहस्तकूंलेआइके ग्रहणकरणा ॥ इसीप्रकार आपणेदक्षिणऊरुऊपर वामपादकूंराखिके तावामपादकेअंगुष्ठकूं आपणेपृष्ठदेशतेंपीछे वामहस्तकूंलेआइके ग्रहणकरना ॥ तथा आपणेशरीरकूं दंडकीन्याई सरलराखणा ॥ याकानाम पदमआसनहै ॥ और आपणेदोनोंपादोंकेतलोंकूं वृषणकेनीचे एकठाकरिकेराखणा ॥ और तिनपादोंकेतलोंऊपर आपणेदो नोंहस्तोंकूं कच्छपकेआकार एकठाकरिकेराखणा ॥ तथा आपणेशरीरकूं दंडकीन्याई सरलराखणा ॥ याकानाम भद्रआसनहै ॥

हेशिष्य ॥ स्वस्तिक पद्म भद्र यातीनआसनोंविषे जिसआसनकेकरणेविषे यहपुरुष समर्थहोवै॥ तिसआसनकूंबांधिकरिकै यहअधिकारी पुरुष ताप्राणायामकूंकरे ॥ अब तायोगके षट्अंतरंगसाधनोंका निरूपणकरे हैं ॥ हे शिष्य ॥ प्राणायाम १ प्रत्याहार २ तर्क ३ धारणा ४ ध्यान ५ समाधि ६ याषट्अंगोंवालायोगहोवे है ॥ तहां प्रथम प्राणायामका फलसहितनिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे अग्निकेसंबंधतैं लोहादिकधातुवोंकेमलकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ तैसे याप्राणायामतैंहीं अंतःकरणकेदोषोंकी तथानेत्रादिकइंद्रियोंकेदोषोंकी निवृत्तिहोवे है ॥ हे शिष्य ॥ सोप्राणायामभी रेचक पूरक कुंभक याभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवे है ॥ तातीनप्रकारकेप्राणायामविषेभी एकएकप्राणायाम केकरणेकालविषे यहअधिकारीपुरुष प्रणवसहितसप्तव्याहृतियोंयुक्त तथाशिरयुक्त गायत्रीमंत्रकूं तीनवारउच्चारणकरे ॥ और संन्यासियों नैंतो तागायत्रीमंत्रकेतीनवारउच्चारणकरणेतैं जितनेकीअक्षरहोवे हैं तितनेही प्रणवोंकाउच्चारणकरणा ॥ इसप्रकार गायत्रीमंत्रकरिकै तथा प्रणवमंत्रकरिकै कन्याहुआसोप्राणायाम यापुरुषके सर्वदोषोंकोनिवृत्तिकरे है ॥ अब रेचक पूरक कुंभक यातीनोंकेस्वरूपका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ आपणेप्राणवायुकूं आधारचक्रतैं कुंडलिनीमार्गद्वारा ऊपरलेजाइके ताप्राणवायुकूं नासिकाद्वारा निकासिके शरीरतैंबाह्यआकाशविषेलयकरणा याकानाम रेचकहै ॥ और जैसे कमलकीनालद्वारा मुखकरिकै जलकाआकर्षणकरीताहै ॥ तैसे शरीरतैंबाह्यस्थितवायुकूं नासिकाद्वारा शरीरकेभीतर आकर्षणकरणा याकानाम पूरकहै ॥ और जैसे तप्तपाषाणऊपरपडाहुआजलकाबिंदु लयभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे ताप्राणवायुकेबाहरगतिकूं तथाअंतरगतिकूं निरोधकरिकै शरीरके भीतरहीं लयकरणा याकानाम कुंभकहै ॥ १ ॥ अब प्रत्याहारकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचविषयोंकूं क्रमतैंग्रहणकरणेहारे जे श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयविषे यहमनहीं प्रवृत्तकरेहै ॥ ताचंचलमनकूं आत्मविचारकेबलतैं निरोधकरिकै जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंका निरोधकरणाहै याकानाम प्रत्याहारहै ॥ तात्पर्य यह ॥ जैसे सूर्यकेकिरण सूर्यतैंभिन्ननहीं हैं ॥ तैसे यहसंपूर्णदृश्यप्रपंच चेतनआत्मातैं भिन्ननहीं है ॥ याप्रकारकीदृष्टिकरिकै जोमनसहित

इंद्रियोंकानिरोधकरणाहे याकानाम प्रत्याहारहे ॥ यहप्रत्याहारकालक्षण याज्ञवल्क्यमुनिनैंभी कह्याहे॥तहांश्लोक ॥ यद्यत्पश्यतितत्सर्वं प
श्येदात्मानमात्मनि॥प्रत्याहारःसचप्रोक्तो योगविद्भिर्महात्मभिः ॥ अर्थयह ॥ यहयोगीपुरुष जिसजिसपदार्थकूंदेखेहे ॥ तिनसर्वपदार्थोंकूं
आत्मरूपकरिकेदेखे ॥ योगवेत्तामहात्मापुरुषोंनें याहीकानाम प्रत्याहारकह्याहे ॥ २ ॥ अब तर्ककानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥ जे मत वेद
तैंबाह्यहैं ॥ तिनमतोंकापरित्यागकरिके सर्ववेदोंकेतात्पर्यका विषयरूपकरिके जोअंतरआत्मवस्तुका चिंतनकरणाहे याकानाम तर्क हे॥
३ ॥ अब धारणाकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जेपुरुष चोरकूंनहींदेखेहैं॥तिनपुरुषोंकूंही सोचोर अनर्थोंकोप्राप्तिकरेहे ॥ तेसे
जेपुरुष विचारदृष्टिकरिके यामनकूंनहींदेखे हैं॥तिनविचारहीनपुरुषोंकूंही सोमनसंकल्प विकल्परूप अनर्थोंकोप्राप्तिकरे है ॥ याप्र
कारकाविचारकरिके यामनकूं अंतरआनंदस्वरूपआत्माविषेजोडिकरिके जोसंकल्पविकल्पतेंरहितकरणाहे याकानाम धारणाहे ॥ ४ ॥
अब ध्यानकानिरूपणकरेहैं ॥हेशिष्य॥जिसआनंदस्वरूपआत्माविषे धारणाकरीहे॥तिसीआनंदस्वरूपआत्माविषे अनात्माकार विजातीय
वृत्तियोंकेव्यवधानतेंरहित जो निरंतर तैलधाराकीन्याई सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहकरणाहे याकानाम ध्यानहे ॥ ५ ॥ अब समाधिकानिरू
पणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जिसअवस्थाविषे अंतरआत्मास्वरूपआनंदकूंग्रहणकरिके ध्याता ध्यान ध्येय इत्यादिकसर्वद्वैतप्रपंचकाअनाद
रहोवे हे ॥ ताअवस्थाकानाम समाधिहे ॥ यहसमाधिकास्वरूप गीताविषे भगवान्नैंभीकह्याहे ॥ तहां श्लोक ॥ यंलब्ध्वाचापरंलाभं मन्य
तेनाधिकंततः॥अर्थयह॥यहविद्वान्पुरुष जिसआत्मास्वरूपआनंदकूंप्राप्तहोइके तिसतेंअधिक किसीदूसरेलाभकूंमानतानहीं ॥ ६ ॥
इतनेंकरिके प्राणायामादिकषट्साधनोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब योगीपुरुषकूंपरित्यागकरणेयोग्यजेपदार्थ हैं तिनोंकानिरूपणकरे हैं ॥
हेशिष्य ॥ जेसे रोगीपुरुष तारोगकीनिवृत्तिवासते कुपथ्यवस्तुकापरित्यागकरे हे ॥ तेंसे यहयोगीपुरुष तायोगकीसिद्धिवासते भय
क्रोध आलस्य यातीनोंकापरित्यागकरे ॥ तथाअत्यंतनिद्राकाभी परित्यागकरे ॥ तथा अत्यंतजागरणकाभी परित्यागकरे तथा अत्यंत
आहारकाभी परित्यागकरे ॥ तथा अत्यंतनिराहारकाभी परित्यागकरे॥ किंतु तिननिद्राआहारादिकोंकूं युक्तिसेंकरे ॥अब प्राणायामकरणे

काप्रकार निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ ताप्राणायामकरणेकाप्रकार वेदवेत्तापुरुषों नें याप्रकार कथनकऱ्याहे ॥ यहयोगीपुरुष प्रथम आपणेदक्षिणनासिकाकूं हस्तकेअंगुष्ठसैंनिरोधकरिके दूसरीवामनासिकाद्वारा बाह्यवायुकूंआकर्षणकरिके अंतरधारणकरे ॥ पुनःतिसीवायुकूं तादक्षिणनासिकाद्वारा शनैःशनैःकरिके बाह्यपरित्यागकरे ॥ इसप्रकार वामनासिकाकूं अंगुष्ठसैंनिरुद्धकरिके दक्षिणनासिकाद्वारा बाह्यवायुकूंआकर्षणकरिकेअंतरधारणकरे॥पुनःतिसीवायुकूं तावामनासिकाद्वारा शनैःशनैःकरिके बाह्यपरित्यागकरे॥हेशिष्य॥पूरक कुंभक रेचक यातीनप्रकारकेप्राणायामकूं यहयोगीपुरुष ॐकाररूपप्रणवमंत्रकरिकेकरे॥ताप्रणवमंत्रोंकीसंख्या मात्राकरिकेसिद्धहोवे है॥तहांयहअधिकारीपुरुष प्रथम एकमात्राकरिके पूरककरे॥और दोमात्राकरिकेरेचककरे॥और चारिमात्राकरिके कुंभककरे॥इसप्रकार दोमात्रा तीनमात्रा चारिमात्रा पंचमात्रातें आदिलेकेआगेआगेतिनपूरकादिकोंकूं शनैःशनैःकरिके बढावताजावे ॥ तहांसर्वत्र पूरकतैंद्विगुणाअधिक रेचककरणा॥और रेचकतैंद्विगुणाअधिक कुंभककरणा॥इहां मात्रानाम कालपरिमाणकाहे तामात्रापरिमाणकाअर्थ शास्त्रोंविषे अनेकप्रकारका कथनकऱ्याहे॥तहांमार्कंडेयपुराणविषेतो तामात्रा परिमाणका यहअर्थकथनकऱ्याहे॥व्यवधानतैंरहित द्वादशवार निमेषोंकेचलावणेविषेजितनाकाल व्यतीतहोवैहे ताकानाम मात्राहे ॥ अथवा व्यवधानतैंरहित द्वादशवार तालीवजावणेविषे जितनाकाल व्यतीतहोवैहे ताकानाम मात्राहे॥ अथवा व्यवधानतैंरहित द्वादशवार लघुअक्षरकेउच्चारणकरणेविषे जितनाकाल व्यतीतहोवे है ताकानाममात्राहे ॥ और वशिष्ठसंहिताविषे वशिष्ठभगवान्नैंतो यहकह्याहे ॥ पूरकादिकप्राणायामोंविषे जोषोडशादिकवार प्रणवमंत्रकीआवृत्तिकरणी है ॥ ताप्रणवमंत्रकेआवृत्तिकानाम मात्राहे ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिनैंतो यहकह्याहे ॥ जितनैंकालविषे व्यवधानतैंरहित तीनवार छोटिकामुद्राकरिये अथवा तीनवार आपणेजानुऊपर हस्तकूंफेरिये अथवा तीनवार तालीवजाइये ताकानाम मात्राहे ॥ चुटकीवजावणेकानाम छोटिकामुद्राहे ॥ और मांडूक्यउपनिषद्विषे तथा प्रश्नउपनिषद्विषेप्रणवके अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारिअवयवोंकूंही मात्रारूपकरिकेकथनकऱ्याहे और नादबिंदुउपनिषद्विषेतो तिनअकारादिकचारिमात्रावोंविषे एकएकमात्राकेउदात्त

अनुदात्त स्वरित यहतीनतीनअवयव कल्पनाकरिके तीनमात्रावोंकेद्वादशभेद कथनकरे हैं॥इसप्रकार भिन्न भिन्नशास्त्रोंविषे तामात्राशब्द
के अनेकप्रकारकेअर्थ कथनकरे हैं ॥तथापि याआत्मपुराणविषे व्यवधानतेंरहित तीनवार ताळीबजावणेविषे जितनाकाळ व्यतीतहोवे है
ताकानाम मात्राहै ॥ हेशिष्य ॥प्रणवमंत्रकाहेउच्चारणजिसविषे ऐसाजोयह पूरकादिरूपप्राणायामहै॥ताप्राणायामकूं जोयोगीपुरुष एकमा
त्राकरिके अनुष्ठानकरे है ॥ तायोगीपुरुषकूं आकाशतत्त्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवे है॥और दोमात्राकरिके तायोगीपुरुषकूं वायुतत्त्वका
अधिपतिपणा प्राप्तहोवे है ॥ और तीनमात्राकरिके तायोगीपुरुषकूं अग्नितत्त्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवेहै ॥ और चारमात्राकरिके
तायोगीपुरुषकूं जलतत्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवे है ॥ और पंचमात्राकरिके तायोगीपुरुषकूं पृथिवीतत्त्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवे है ॥
इसप्रकार ताप्राणायामकेअभ्यासकीदृढताकरिके तिनयोगीपुरुषोंकूं आकाशादिकपंचभूतोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवेहै ॥ और जिनपुरुषों
का सोप्राणायामकाअभ्यास शिथिलहै ॥ तिनपुरुषोंकूं सोभूतोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवेनहीं ॥ और हेशिष्य पुनःसोयोगीपुरुष तिनप्रण
वमात्रावोंविषे यथाक्रमतें शब्दादिकपंचतन्मात्रावोंकाआरोपणकरिके चिंतनकरे ॥ ताचिंतनकरिके तायोगीपुरुषकूं निर्विशेषब्रह्मरूपक
रिकेचिंतनकरणेयोग्य जोअर्द्धमात्रारूपप्रणवहै ॥ ताके अभ्यासकीप्राप्तिहोवेहै ॥ तिनशब्दादिकपंचतन्मात्रावोंकेध्यानकरणेका
यहप्रकारहै ॥ तहां पृथिवीतत्त्वकीधारणाविषे चिंतनकाविषयहोणेतें पार्थिवसंज्ञाकूंप्राप्तभयाजोप्रणवहै ॥ तापार्थिवनामाप्रणवकूं
यहयोगीपुरुष शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचतन्मात्रारूपकरिकेध्यानकरे ॥ और जलतत्त्वकीधारणाविषे चिंतनकाविषयहोणे तें
वारुणसंज्ञाकूंप्राप्तभयाजोप्रणवहै ॥ तावारुणनामाप्रणवकूं यहयोगीपुरुष शब्द स्पर्श रूप रस याचारितन्मात्रारूपकरिकेध्यान
करे ॥ और अग्नितत्त्वकीधारणाविषे चिंतनकाविषयहोणेतें आग्नेयसंज्ञाकूंप्राप्तभयाजोप्रणवहै ॥ ताआग्नेयनामाप्रणवकूं यहयो
गीपुरुष शब्द स्पर्श रूप यातीनमात्रारूपकरिकेध्यानकरे ॥ और वायुतत्त्वकीधारणाविषे चिंतनकाविषयहोणेतें मारुतसंज्ञा
कूंप्राप्तभयाजोप्रणवहै ॥ तामारुतनामाप्रणवकूं यहयोगीपुरुष शब्द स्पर्श यादोतन्मात्रारूपकरिकेध्यानकरे ॥ और आकाशत

त्वकीधारणाविषे आकाशसंज्ञाकूंप्राप्तभया जोप्रणवहै ॥ ॥ ताआकाशनामाप्रणवकूं यहयोगीपुरुष एकशब्दतन्मात्रारूपकरिकेध्यानकरे ॥ इसप्रकार अभ्यासकरिके जभी यायोगीपुरुषकाचित्त चंचलतातेंरहितहोइके स्थिरहोवे ॥ तभी सोयोगीपुरुष ताअर्द्धमात्रारूपप्रणवकूं ब्रह्मरूपकरिकेचिंतनकरे ॥ हेशिष्य ॥ अथवा सोयोगीपुरुष आपणेचित्तकीनिश्चलताकरणेवासतै ताप्राणायामकालविषे आपणेआपणेव्यापारयुक्त प्राणअपानादिकोंकाध्यानकरे ॥ अब ताध्यानकेप्रकारका निरूपणकरे हैं हेशिष्य ॥ प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंके जेजेआपणे असाधारणव्यापारहैं ॥ तेअसाधारणव्यापार पूर्वगर्भउपनिषद्केअर्थनिरूपणविषे हम तुमारेप्रति विस्तारतेंकथनकरिआयेहैं ॥ यातें तिनअसाधारणव्यापारोंका पुनःइहां कथनकरतेनहीं ॥ और तिनपंचप्राणोंका जोएकसाधारणव्यापारहै॥सो व्यापार हम तुमारेप्रतिकथनकरतेहैं॥तूंश्रवणकर याशरीरविषे यद्यपि अनंतनाडियां रहेहैं॥तथापि एकसहस्रछत्तीसनाडियां १०३६प्रधान हैं ॥ तिनसर्वनाडियोंविषेविचरणेहारे जेयहपंचप्राणहैं तिनपंचप्राणोंका हंसमंत्ररूप एकहीव्यापारहै ॥ और हंसःयहमंत्र हकार मकार अकार सकार विसर्ग यापंचअवयवोंवालाहै ॥ और दूसरेशास्त्रोंविषे यद्यपि ताहंसमंत्रकीसंख्या एकविंशतिसहस्र षट्शत २१६०० कथनकरीहै ॥ तथापि उपाधिकृतभेदकूंअंगीकारकरिके ताहंसमंत्रकीसंख्या एकलक्ष त्रयोदशसहस्र एकशत अशी ११३१८० इतनी संभवहोइसकैहै ॥ काहेतें प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंविषे एकएकप्राणके एकविंशतिसहस्र षट्शत २१६०० हंसमंत्र व्यापाररूपहैं ॥ तिनहंसमंत्रोंकूंपंचगुणाकरणेतें एकलक्ष अष्टसहस्र १०८००० संख्याहोवैहै ॥ और एकसहस्र षट्त्रिंशत १०३६ नाडियोंविषेविचरणेहारेजे तेपंचप्राणहैं ॥ तिनपंचप्राणोंकीसंख्या जोनाडियोंकीसंख्याकरिके पंचगुणीकरिये ॥ तो पंचसहस्र एकशत अशी ५१८० इतनीसंख्या होवैहै ॥तिनदोनोंप्रकारकीसंख्याकूंमिलाइके जोगणतीकरिये ॥ तो एकलक्ष त्रयोदशसहस्र एकशत अशी ११३१८० इतनीसंख्या सिद्धहोवे है॥इतनेंहंसमंत्र तिनपंचप्राणोंकाएकसाधारणव्यापारहै॥और हेशिष्य ॥गुदातेंलेके गलपर्यंत जो अंतरछिद्रहै ॥ सोछिद्र तीसअंगुल ३० परिमाणवालाहोवैहै ॥ ताछिद्रविषेस्थितहोइके तेप्राणादिकपंचवायु ताहंसमंत्रकाउच्चारणकरे

है ॥ यातैं तिनपंचप्राणोंविषेस्थित जोहंसमंत्ररूपएककार्यकोआरंभकताहै ॥ ताका सोतीसअंगुलपरिमाणवालाछिद्रही प्रयोजकहै ॥ याकारणतैं सोहंसमंत्र तिनप्राणअपानादिकसर्ववायुवोंका साधारणव्यापारहै ॥ तिनवायुवोंविषेभी मुखनासिकाविषेविचरणेद्वारा जोवायुहै सोवायु ताहंसमंत्ररूपव्यापारविषे प्रधानकारणहै ॥ याकारणतैंहीं शास्त्रवेत्तापुरुष तावायुकूं प्राण यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और दूसरेवायु ताहंसमंत्ररूपव्यापारविषे गौणकारणहैं ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तिनवायुवोंकूं अपानव्यान आदिकनामोंकरिकेकथनकरे हैं ॥ अब ध्यानकरणेवासते तिनपंचप्राणोंके स्थानोंका तथारूपोंका वर्णन करे हैं ॥ हे शिष्य ॥ प्राण अपान समान उदान व्यान यापंचप्राणोंविषे प्रथम प्राणवायुतो हृदयस्थानविषे रहैहै ॥ और अपानवायु गुदास्थानविषेरहे है ॥ और समानवायु नाभिस्थानविषेरहे है ॥ और उदानवायु कंठस्थानविषेरहे है ॥ और व्यानवायु सर्वशरीरविषेरहे है ॥ हे शिष्य ॥ प्राणवायुतो रक्तमणिकेसमान रक्तरूपवालाहै ॥ और ताप्राणवायुकेअधीन जोअपानवायुहै ॥ सोअपानवायुतो इंद्रगोपजंतुकेसमान अत्यन्तरक्तरूपवालाहै ॥ और ताअपानकेअधीन जोसमानवायुहै ॥ सोसमानवायुतो क्षीरकेसमान तथास्फटिकमणिकेसमान श्वेतवर्णवाला है और तासमानवायुकेअधीन जोउदानवायुहै॥सोउदानवायुतो यत्किंचित्पांडुरवर्णवालाहै ॥ और ताउदानवायुकेअधीन जोव्यानवायुहै ॥ सोव्यानवायुतो अग्निशिखाकेसमान वर्णवालाहै ॥ इहां यद्यपि प्राणवायुविषे रक्तश्वेतादिकरूप संभवैनहीं ॥तथापितिनश्वेतरक्तादिकरूपोंकूं तिनप्राणादिकोंविषेआरोपणकरिके तिनप्राणोंका ध्यानकरणा याअर्थविषे ताश्रुतिकातात्पर्य है॥हेशिष्य॥ज्ञानशक्तिवालाजोमनहै॥तथा क्रियाशक्तिवालाजोप्राणहै ॥यहदोनों एकठेही याशरीरविषेरहेहैं ॥ और एकठेही याशरीरतैंबाह्यजावेहैं ॥एककूंछोडिके दूसरारहैनहीं॥तहांश्रुति॥सहहिएतेसमुत्क्रामतःसहतिष्ठतः॥अर्थयह ॥ प्रज्ञारूपयहमन तथाप्राण दोनों याशरीरविषेएकठेहीरहेहैं॥और मरणतैंअनंतर तेदोनों एकठेही परलोकविषेजावेहैं॥१॥यहवार्ता याआत्मपुराणकेदूसरेअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं॥यातैं यापुरुषोंकामन जिसजिसमूलआधारादिकस्थानोंविषे स्थितहोवैहै ॥ तिसीतिसीस्थानविषे सोप्राणभी स्थितहोवैहै॥इसप्रकार ताप्राणका मनकेसाथ एकठेरहणेकास्वभाव जाणिकरिके यहयोगीपुरुषतिसमार्गका ध्यानकरै॥

जिसमार्गद्वारा याशरीरतैंबाह्यनिकसिके ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै ॥ अब तामार्गकानिरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य॥ याशरीरविषे मूलआधारतैंऊपर नाभिचक्रहै ॥ और तानाभिचक्रतैंऊपर हृदयकमलहै ॥ सोहृदयकमल सुषुम्नानाडीरूपमार्गकरिके संबद्धहै ॥ यातैं सोहृदयकमल ताब्रह्मलोककाद्वाररूपहै ॥ और सासुषुम्नानाडी तायोगीपुरुषके प्राणका तथामनका मार्गरूपहै ॥ ऐसासुषुम्नानाडीरूपमार्ग दशमद्वारकूंप्राप्तहोवैहै॥ केसाहैसोदशमद्वार॥सूर्यमंडलविषेस्थित तथामूर्द्धविषेस्थितचंद्रमंडलविषेस्थित जोबाह्यछिद्रहै ॥ताबाह्यछिद्रकेसाथ जिसदशमद्वारका अभेदहै॥ हेशिष्य॥जिसयोगीपुरुषकूं तीव्रवैराग्यनहीं है ॥ सोयोगीपुरुषभी यासुषुम्नानाडीरूपमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेजाइके तहां वैराग्य कूंप्राप्तहोइके मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिसयोगीपुरुषकूंतीव्रवैराग्यहै ॥ सोयोगीपुरुषतौ तिसमार्गकेनिकसणेकालविषेही विदेहमोक्षकूंप्राप्त होवैहै ॥ और पूर्व हंसमंत्ररूपव्यापारयुक्तप्राणोंका जो ध्यानकथनकर्‍याथा ॥ ताध्यानकाभी यहहीफलहै ॥ जो तासुषुम्नानाडीरूपमार्ग विषेप्रवेशकरिके ब्रह्मलोककूं अथवा विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोणा ॥ हेशिष्य ॥ यहयोगीपुरुष ताप्रणवमंत्रकरिके जभी प्राणायामकरे ॥ तभी ताप्रणवके अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारिमात्रावोंका चिंतनकरे ॥ तथा तिनअकारादिकचारिमात्रावोंके जेयथाक्रमतैं वैश्वानर हिरण्यगर्भ ईश्वर तुरीय यहचारिअर्थ हैं ॥ तिनोंकाभी चिंतनकरे ॥ हेशिष्य ॥ अथवा सोयोगीपुरुष ताप्रणवमंत्रका चिंतनकरे ॥ जैसे यालोकविषे यापुरुषोंकूं रथ मनवांछितग्रामकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे याअधिकारीपुरुषोंकूं यहप्रणवमंत्रभी मनवांछितलोककीप्राप्तिकरै है ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष ताप्रणवमंत्रकूं रथरूपकरिकेध्यानकरे ॥ और विष्णुरूपपरमात्मादेव अंतर्यामीरूपकरिके ताप्रणवरूपरथकूंप्रेरणाकरणेहाराहै ॥ यातैं ताविष्णुरूपपरमात्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष ताप्रणवरूपरथका सारथिरूपकरिकेध्यानकरे ॥ और ताप्रणवरूपरथकरिकेसकामपुरुषोंकूंतौ हिरण्यगर्भरूपसगुणब्रह्मकीप्राप्तिहोवैहै॥और निष्कामपुरुषोंकूंनिर्गुणशुद्धब्रह्मकीप्राप्तिहोवैहै॥ यातैं ताहिरण्यगर्भकूं तथाशुद्धब्रह्मकूं यहअधिकारीपुरुष ताप्रणवरूपरथका गंतव्यस्थानरूपकरिके ध्यानकरे ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारके योगाभ्यासकरणेविषे याअधिकारीपुरुषकूं अनेकप्रकारकेविघ्न प्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं तिनविघ्नोंकीनिवृत्तिकरणेवासते यहअधिकारीपुरुष मैं

रुद्ररूपहूं याप्रकार अभेदरूपकरिके तारुद्रभगवान्‌काध्यानकरे ॥ तारुद्रभगवान्‌केध्यानतैं सर्वविघ्नोंकोनिवृत्तिहोवे है॥हेशिष्य॥ताप्राणा
यामकालविषे पादकेअंगुष्ठकेअग्रभागतैंलेके जोप्राणोंका ऊपरआकर्षणकरणाहे ॥ सो अत्यंतकठिनहे ॥यातैं ताप्राणोंकेआकर्षणकूं शास्त्र
वेत्तापुरुष सूक्ष्म यानामकरिकेकथनकरे हे ॥ और तिसअंगुष्ठकीअपेक्षाकरिके मूलआधारतैंलेके तिनप्राणोंका ऊपरआकर्षणकरणा सुग
महे ॥ यातैं ताप्राणोंकेआकर्षणकूं शास्त्रवेत्तापुरुष स्थूल यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और तिसमूलआधारकीअपेक्षाकरिके नाभिचक्रतैं
लेके तिनप्राणोंकाऊपरआकर्षणकरणा अत्यंतसुगमहे॥यातैं ताप्राणोंकेआकर्षणकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अतिस्थूल यानामकरिकेकथनकरेहैं॥
इतनैंग्रंथकरिके योगाभ्यासका निरूपणकऱ्या ॥ अब तायोगाभ्यासकेफलका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य पूर्वकहीरीतिसैं जोपुरुष तायोगा
भ्यासकूंकरे हे ॥ तायोगीपुरुषकूं तीनमासतैंअनंतर दूरदेशविषेस्थित जेदिव्यविषयहैं तिनोंकाभीज्ञानहोवे हे ॥ और चारिमासतैंअनंतर
सोयोगीपुरुष इंद्रादिकदेवतावोंकेदर्शनकरणेविषेभी समर्थहोवे हे ॥ और पंचमासतैंअनंतर सोयोगीपुरुष संपूर्णविषयसुखोंकूंतुच्छजाणि
के तिनविषयसुखोंतैं वैराग्यकूंप्राप्तहोवे हे ॥ और षष्ठेमासतैंअनंतर सोयोगीपुरुष तायोगकेप्रभावतैं शुद्धअंतःकरणवालाहोइके तथासर्व
कर्मोंकासंन्यासकरिके आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावे हे ॥ तागुरुकेमुखतैं एकवारमहावाक्यकूंश्रवण
करिके संशयविपर्ययतैंरहित आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोवे हे ॥ और ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरिके सोयोगीपुरुष जीवत
अवस्थाविषेही मोक्षकूंप्राप्तहोवे हे ॥ अब ताजीवन्मुक्तपुरुषकेलक्षणोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ सोजीवन्मुक्तयोगीपुरुष सर्वपदार्थों
विषे अधिष्ठानरूपकरिकेआत्माकूंहीदेखे हे ॥ याकारणतैं सोजीवन्मुक्तपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके रूपादिकविषयोंकूंदेखताहुआभी नहीं
देखे हे ॥ और आपणेशरीरकूंभी शुष्ककाष्ठकीन्याईजाणिके उपेक्षाकरे हे ॥हेशिष्य॥ ऐसे जीवन्मुक्तिरूपफलके प्राप्तहुएतैंअनंतर यह
अधिकारीपुरुष तिनपूर्वउक्तसर्वउपायोंका परित्यागकरे ॥ काहेतैं यालोकविषे जितनैंकीउपायहोवे हैं ॥ तेसंपूर्णउपाय फलकीप्राप्तिवास
तेहोवे हैं ॥ ताफलकीप्राप्तितैंअनंतर तिनउपायोंका पुनःकछुप्रयोजनरहेनहीं॥यातैं जैसे मार्गविषेचलणेहारापुरुष नौकाऊपरबैठिके जभी

नदीकेपारकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी तानौकाका परित्यागकरिदेवे है ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी जभी ताजीवन्मुक्तिरूपफलकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी तिनक्लेशरूपसर्वउपायोंका परित्यागकरिदेवे है ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकार अमृतनादनामाउपनिषद्विषे जोयोगसाधनकानिरूपणकर्‍या है ॥ सोहमनें तुमारेप्रति कथनकर्‍या अब हंसउपनिषद्विषे जिसप्रकार तायोगसाधनका निरूपणकर्‍याहै ॥ सो हम तुमारेप्रति कथनकर तेहैं ॥ तिसकूं तूं सावधानहोइकेश्रवणकर अब तायोगाभ्यासकीसिद्धिवासते प्रथम षट्चक्रोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ याशरीरविषे पायुस्थानतें लेके भ्रूकेमध्यस्थानपर्यंत आधारचक्र १ स्वाधिष्ठानचक्र २ मणिपूरकचक्र ३ अनाहतचक्र ४ विशुद्धचक्र ५ आज्ञाचक्र ६ यहषट्चक्ररहे हैं ॥ अब आधारचक्रकानिरूपणकरें हैं ॥ हेशिष्य ॥ पायुस्थानतैंदोअंगुलऊपर आधारचक्ररहेहै ॥ जिसआधारचक्रकूं पूर्वगर्भउपनिषद्केअर्थनिरूपणविषे याशरीरका मध्यदेशरूपकरिकेवर्णनकर्‍याथा ॥ कैसाहैसोआधारचक्र चारिदलवालाहै तथा लाक्षारसकेसमानवर्णवालाहै ॥ और तिनचारिदलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकेस्थितजे 'वं शं षं सं' यहचारिअक्षरहैं ॥ तिनचारिअक्षरों करिके शोभायमानहै ॥ तथा कुंडलिनीरूपसर्पिणीकेपुच्छकरिकेयुक्तहै ॥ तथा मूषकदेवाहनजिसका ऐसाजोगणपतिदेवताहै तागणपतिदे वताकरिकेयुक्तहै ॥ १ ॥ अब स्वाधिष्ठानचक्रकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ ताआधारचक्रतैंऊपर उपस्थकेमूलदेशविषे स्वाधिष्ठानच क्ररहेहै ॥ कैसाहैसोस्वाधिष्ठानचक्र ॥ षट्दलवालाहै ॥ तथा सुवर्णकीन्याईपीतवर्णवालाहै ॥ तथा अत्यंततेजस्वीहै ॥ और तिनषट्द लोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकेस्थितजे यं रं लं वं भं मं यहषट्अक्षरहैं ॥ तिनषट्अक्षरोंकरिके शोभायमानहै ॥ तथा प्रजापतिदेवताकरिके युक्तहै ॥ २ ॥ अब मणिपूरकचक्रका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ तास्वाधिष्ठानचक्रतैंऊपर नाभिस्थानविषे मणिपूरकचक्ररहेहै ॥ कैसा हैसोमणिपूरकचक्र ॥ दशदलोंवालाहै ॥ तथाइंद्रनीलमणिकेसमान वर्णवालाहै ॥ तथा सूर्यचन्द्रमाकेतेजसमान जाकातेजहै ॥ और तिन दशदलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकेस्थितजो डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं यहदशअक्षरहैं॥तिनदशअक्षरोंकरिके शोभायमानहै॥तथा विष्णुदेव ताकरिकेयुक्तहै॥३॥अब अनाहतचक्रका निरूपणकरेहैं॥हेशिष्य॥तामणिपूरकचक्रतैंऊपर हृदयदेशविषे अनाहतचक्ररहेहै ॥ कैसाहैसोअ

नाहतचक्र॥गौकेक्षीरसमान श्वेतवर्णवालाहै॥तथा द्वादशदलोंवालाहै॥तथा मननेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और तिनद्वादशदला
विषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकेस्थितजे कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं यहद्वादशअक्षरहैं ॥ तिनद्वादशअक्षरोंकरिके शोभायमानहै ॥ तथा
रुद्रदेवताकरिकेयुक्तहै ॥ ४ ॥ अब विशुद्धचक्रका निरूपणकरें हैं ॥ हेशिष्य ॥ ताअनाहतचक्रतेंऊपर कंठदेशविषे विशुद्धचक्ररहे है ॥
कैसाहैसोविशुद्धचक्र ॥ विचित्रवर्णवालाहै ॥ तथा षोडशदलोंवालाहै ॥ और तिनषोडशदलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकेस्थितजे अ आ इ ई
उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः यहषोडशस्वरहैं ॥ तिनषोडशस्वरोंकरिके शोभायमानहै॥तथा जीवात्माकेरहणेकास्थानहै॥५॥
अब आज्ञाचक्रका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥ ताविशुद्धचक्रतेंऊपर दोनोंभ्रूकेमध्यविषे आज्ञाचक्ररहेहै ॥ कैसाहैसोआज्ञाचक्र ॥ यत्किं
चितरक्तवर्णवालाहै ॥ तथा दोदलोंवालाहै ॥ और सूर्यचंद्रमाकेसमानजे हं क्षं यहदोअक्षरहैं ॥ तेदोनोंअक्षर जिसकेदोनोंदलोंविषेस्थित
हैं ॥ तथापरमात्मादेवकेरहणेकास्थानहै ॥ ६ ॥ हेशिष्य याशरीरविषे मस्तकविषे एकसहस्रदलोंवाला पद्मरहे है ॥ कैसाहैसोपद्म ॥
अमृतकीवर्षाकरणेहाराजोचंद्रमाहै ॥ सोचंद्रमा जापद्मकेगर्भविषेरहेहै ॥ तथातापद्मकीकर्णिका दशमद्वारकूंप्राप्तभई हैं ॥
तथा तापद्मकेअमृतकरिकेकरीहुईतृप्ति तिनषट्चक्रोंविषेरहेहै ॥ तथा यहजीवात्मा तापद्मकाहंसहै ॥ अब ताजीवात्माविषे हंसरूप
ताका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जोपक्षी जिसप्रकारकेशब्दकूंउच्चारणकरेहै ॥ तिसपक्षीका तिसशब्दकेअनुसारही नाम
होवेहै ॥ जैसे काका याप्रकारकेशब्दकूंउच्चारणकरणेहाराजोपक्षीहै ॥ तापक्षीकूं काक यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ तैसे यह
जीवात्माभी हृदयकमलविषे तथाआधारचक्रादिकोंविषे प्राणसहित स्थितहोइके सत्रिदिनविषे एकविंशतिसहस्र षट्शत २१६००
श्वासप्रश्वासोंकरिके हंसःयामंत्रकाउच्चारणकरेहै ॥ तहां हकारकरिकेतौ यहप्राणवायु मुखनासिकाद्वारा याशरीरतें
बाहरजावेहै ॥ और सकारकरिके यहप्राणवायु तिसोमुखनासिकाद्वारा पुनः याशरीरविषे प्रवेशकरेहै ॥ याप्रकार प्राणोंकेश्वासप्रश्वासकरि
के यहजीवात्मा सर्वदा हंसमंत्रकाउच्चारणकरे है ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती याजीवात्माकूं हंस यानामकरिके कथनकरे है ॥ अब ध्या

नकरणेवासते ताजीवरूपहंसकूं पक्षीरूपकरिकेवर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे पक्षीविशेषकूं हंसकहेहैं ॥ यातैं याजीवात्माविषे ताहं
सशब्दकूंअर्थवालाकरणेवासतैं ते वेदवेत्तापुरुष याजीवात्माकूं पक्षीरूपकरिके वर्णनकरेहैं ॥ तहां भोक्तारूपअग्नि तथा भोग्यरूपसोम
यहदोनों ताजीवरूपहंसके दोनोंपक्षहैं ॥ और ओंकाररूपप्रणवमंत्र ताजीवरूपहंसका शिरहे ॥ और मूलशक्तिका जोक्रियाशक्तिवाला परि
णामविशेष हे ॥ सोपरिणामरूपबिंदु ताजीवरूपहंसका हृदयहे ॥ और जैसे महादेवकामुख सूर्य अग्नि सोम रूपतीननेत्रोंवालाहे ॥ तैसे
ताजीवरूपहंसकामुखभी सूर्य अग्नि सोम यातीननेत्रोंवालाहे ॥ और ताजीवरूपहंसका एकचरणतो रुद्ररूपहे ॥ और दूसराचरण रुद्राणी
रूपहे ॥ और यहत्वंपदकाअर्थ जीवरूपहंसही तत्पदार्थपरब्रह्मरूपहे ॥ तहां निरुपाधिकदृष्टिकरिकेतो सोजीवरूपहंस निर्गुणब्रह्मरूपहे ॥
और सोपाधिकदृष्टिकरिके सगुणब्रह्मरूपहे ॥ और सोसगुणब्रह्मभी वाम भागविषेतो अग्निरूपहे ॥ और दक्षिणभागविषे सोमरूपहे
पुनःकैसाहेसोजीवरूपहंस ॥ कोटिसूर्यकेसमान तेजवालाहे ॥ तथा नखतैंलेके शिखापर्यंत यासर्वशरीरविषेव्याप्यकरिकेरहेहे ॥ हेशिष्य॥
यहजीवरूपहंस यद्यपि सर्वशरीरविषेरहेहे ॥ तथापि हृदयकमलविषे विशेषकरिकेरहेहे ॥ ताहृदयकमलविषेभी अष्टदलोंकेभेदतैं ताजी
वरूपहंसकी अष्टप्रकारकीस्थितिहोवेहे ॥ ताअष्टप्रकारकीस्थितिकेप्रभावतैंही जाग्रतस्वप्नविषे पुण्यबुद्धिआदिककार्योंकीउत्पत्तिहोवे हे ॥
अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ पूर्वादिकअष्टदिशावोंकीतरफ ताहृदयकमलके तथाक्रमतैं अष्टदलरहेहैं ॥ तहां
मनकरिकेयुक्त यहजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके पूर्वदिशाकेदलऊपरस्थितहोवे हे ॥ तभी याजीवोंकूं पुण्यकर्मकरणेकीबुद्धिहोवे
हे ॥ और सोजीवरूपहंस जभीताहृदयकमलके अग्निकोणकेदलऊपरस्थितहोवेहे ॥ तभी याजीवोंविषे निद्राआलस्यादिकविकार उत्पन्न
होवे हैं और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके दक्षिणदिशाकेदलऊपरस्थितहोवेहे ॥ तभी याजीवोंविषे क्रोधादिकविकार उत्पन्न
होवे हैं ॥ और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके नैर्ऋतकोणकेदलऊपरस्थितहोवे हे ॥ तभी याजीवोंविषे पापकर्मकरणेकीबुद्धि उत्प
न्नहोवेहे ॥ और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके पश्चिमदिशाकेदलऊपरस्थितहोवेहे ॥ तभी याजीवोंकूं नानाप्रकारकेव्यवहारकरणे

विषे प्रीतिउत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके वायुकोणकेदलऊपरस्थितहोवैहै ॥तभी याजीवोंकूं किसीदेशविषेगम नकरणेकीप्रीति उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके उत्तरदिशाकेदलऊपरस्थितहोवैहै ॥ तभी याजीवोंकूं स्त्रीके संभोगविषेप्रीति उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके ईशानकोणकेदलऊपरस्थित होवै है ॥ तभी याजी वोंकी दानविषेप्रीति उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जभी ताअष्टदलोंकेमध्यदेशविषेस्थितहोवैहै ॥ तभी जैसे लोकप्रसिद्धहंसपक्षी मिलेहुएक्षीरनीरका विभागकरैहै ॥ तैसे यहजीवभी सत्यअसत्यवस्तुकाविचारकरिके सर्वविषयसुखोंतैं वैराग्यकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सोजी वरूपहंस जभी ताहृदयकमलके केसरविषेस्थितहोवैहै ॥ तभी याजीवोंकूं जाग्रतअवस्थाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके कर्णिकाविषेस्थितहोवैहै ॥ तभी याजीवोंकूं स्वप्नअवस्थाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और ताहृदयकमलकर्णिकाकेमध्यविषेस्थित जोरक्तवर्णवाला रुधिरकापिंडविशेषहै ॥ ताकेविषे जभी सोजीवरूपहंस स्थितहोवैहै ॥ तभी याजीवोंकूं सुषुप्तिअवस्थाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जभी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीपूर्णदृष्टिकरिके तापरिच्छिन्नहृदयकमलकेअभिमानकापरित्यागकरै है ॥ तभी जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकीअपेक्षाकरिके जाकोईतुरीयअवस्थाहै ॥ ताकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब तुरीयातीतनामा पंचमअवस्था केनिरूपणकरणेवासते प्रथम तातुरीयअवस्थाविषे जाग्रतादिकतीनअवस्थावों तैं श्रेष्ठताकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जाग्रतादिकती नअवस्थावोंकीअपेक्षाकरिके जातुरीयअवस्थाकथनकरीहै ॥ तातुरीयअवस्थाविषे आत्मारूपज्ञेयवस्तु ज्ञातारूपयोगीपुरुषतैं भिन्नहोइ केप्रतीतहोवैहै ॥ काहेतैं सोयोगीपुरुष तायोगाभ्यासकेबलतैं संप्रज्ञातसमाधिकूं तथाअसंप्रज्ञातसमाधिकूं प्राप्तहोवै है॥ तहां जासमाधिवि षे ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय तथा ध्याता ध्यान ध्येय याप्रकारकीत्रिपुटी प्रतीतहोवैहै ॥ तासमाधिकानाम संप्रज्ञातसमाधिहै ॥ और जासमाधि विषे सात्रिपुटीनहींप्रतीतहोवैहै ॥ तासमाधिकानाम असंप्रज्ञातसमाधिहै ॥ तहां जिसकालविषे तायोगीपुरुषकूं त्रिपुटीकेभानपूर्वक ब्रह्मा कारवृत्तिहोवै है ॥ तिसकालविषे सोयोगीपुरुष तुरीयअवस्थावाला कह्याजावै है ॥ और जिसकालविषे सात्रिपुटी अद्वितीयब्रह्मरूप

नादविषे लयभावकूं प्राप्तहोवे है ॥ तिसकालविषे सोयोगीपुरुष तुरीयातीतअवस्थावाला कह्याजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ॐकाररूपप्रणवविषे अकार उकार मकार बिंदु नाद यहपंचअवयवहोवे हैं ॥ तहां अकार उकार मकार यहतीनअवयवतौ यथाक्रमतैं विश्व तैजस प्राज्ञ या तीनोंकेवाचकहोवे हैं ॥ और अर्द्धमात्रारूप जोबिंदुनादहै॥तेबिंदुनाद दोनों ब्रह्मकेवाचकहोवे हैं ॥ तिनदोनोंविषेभी बिंदुतौ सविशेषब्रह्मका वाचकहोवे है ॥ और नाद निर्विशेषब्रह्मकावाचकहोवे है ॥ हेशिष्य॥ऐसी तुरीयातीतअवस्था अनेकविरक्तपुरुषोंविषेभी किसीएकविरक्तपुरुषकूंही प्राप्तहोवेहै ॥ सर्वकूंप्राप्तहोवैनहीं॥यातैं सातुरीयातीतअवस्था अत्यंतदुर्लभहै॥यहवार्त्ता गीताविषेभीभगवान्नैंकथनकरीहै ॥ तहां श्लोक॥मनुष्याणांसहस्रेषु कश्चिद्यततिसिद्धये ॥यततामपिसिद्धानां कश्चिन्मांवेत्तितत्वतः॥अर्थ यह ॥ अनेकसहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यही मेरीप्राप्तिवासतैं यत्नकरैहै ॥ और तिनयत्नकरणेहारेमनुष्योंविषेभी कोईएकमनुष्यहोमैंअद्वितीयब्रह्मकूं वास्तवस्वरूपतैं जाणैहै ॥१॥अब तातुरीयातीतभावकोप्राप्तिवासतै तायोगरूपउपायकानिरूपण करेहैं॥हेशिष्य॥सोयोगीपुरुषपूर्वउक्तरीतिसे याशरीरविषे तिनषट्चक्रोंसहित ताजीवरूपहंसकेस्वरूपकूंजाणिके प्रथम आपणेस्वरूपकाचिंतनकरै॥ तिसतैंअनंतर ताअद्वितीयब्रह्मरूपनादका चिंतनकरे ॥ तहां आधारचक्रतैंलेके दशमद्वारपर्यंत व्यापकरूपकरिके तथाअत्यंतश्वेतरूपकरिके ताअद्वितीयब्रह्मका चिंतनकरे ॥ इसप्रकार ताअद्वितीयब्रह्मविषे मनकूंएकाग्रकरिके सोयोगीपुरुष आपणे वायु उपस्थ यादोनोंद्वारोंकूं संकोचकरे ॥ तिसतैंअनंतर सोयोगीपुरुष आपणेपादकेअंगुष्ठकेअग्रभागतैंलेके प्राणवायुकूंऊपरआकर्षणकरिके प्रथम आधारचक्रविषे स्थापनकरे ॥ ताआधारचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं शनैःशनैःकरिके स्वाधिष्ठानचक्रविषे स्थापनकरे ॥ तिसस्वाधिष्ठानचक्रकेचारोंओरतैं ताप्राणवायुकूं तीन प्रदक्षिणाकरावे॥तास्वाधिष्ठानचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं मणिपूरकचक्रविषे स्थापनकरे ॥ तामणिपूरकचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं अनाहतचक्रविषे स्थापनकरे ॥ तिनअनाहतचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं विशुद्धचक्रविषे स्थापनकरे ॥ ताविशुद्धचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं आज्ञाचक्रविषे स्थापनकरे ॥ ताआज्ञाचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ता

प्राणवायुकूं दशमद्वारविषे स्थापनकरे ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार सोयोगीपुरुष जभी योगाभ्यासकेबलतैं ताप्राणवायुकूंऊपरलेजावे हैं ॥ तथा जीवरूपहंसकूंध्यातारूपकरिके चिंतनकरे है ॥ तथा ब्रह्मरूपनादकूं ध्येयरूपकरिकैंचिंतनकरैहै ॥ तथा ऋषि छंद देवता आदिकोंकरिके युक्त जोहंसमंत्रहै ताहंसमंत्रका एककोटिसंख्यापरिमाण जपकरै है ॥ तभी तायोगीपुरुषके शरीरकेअंतर योगफलकीसिद्धिविषे विश्वास करावणेहारे चिणिनाद १ चिणिचिणिनाद २ घंटानाद ३ शंखनाद ४ तंत्रीनाद ५ तालनाद ६ वेणुनाद ७ भेरीनाद ८ मृदंगनाद ९ मेघनाद १० यहदशप्रकारके नाद उत्पन्नहोवै हैं हेशिष्य ॥ तिनदशप्रकारकेनादोंविषेभी जोदशमामेघनादहै ॥ सोमेघनाद वारंवार अभ्यासकऱ्याहुआ तिनयोगीपुरुषोंकूं वैराग्यज्ञानादिकोंकीप्राप्तिकरै है याकारणतैं यहयोगीपुरुष तिननवनादोंका परित्यागकरिकै तामेघनादकाही निरंतर अभ्यासकरे ॥ तामेघनादकेअभ्यासकरिकै तिन योगीपुरुषोंका मन लय भावकूंप्राप्तहोवै है॥और तामनकेलयहुएतैंअनंतर पुण्य पाप संकल्प विकल्प इसतैंआदिलैके जितनैंकोमनकेधर्म हैं तेसंपूर्णधर्म लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥तहां यहवस्तु हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकोअभिलाषाकानाम ॥ संकल्पहै ॥ और संशयकानाम विकल्पहै॥हेशिष्य ॥ तेसंकल्पविकल्पादिकविक्षेपही आत्माकीअप्रतीतिविषेकारणथे ॥ तेसंकल्पविकल्पादिकविक्षेप जभी लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तभीयह आनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वप्रकाश चैतन्यरूपकरिकै सर्वदा तिनयोगीपुरुषोंकूं प्रत्यक्षहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार हंसउपनिषद विषे योगकानिरूपणकऱ्याहै ॥ सोहमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्या ॥ अब क्षुरिकाउपनिषदविषे जिसप्रकार तायोगकानिरूपणकऱ्याहै ॥ सोहम तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ तहां क्षुरिकानाम शस्त्रकाहै ॥ ताक्षुरिकाशस्त्रकीन्याई संसाररूपबंधकूंछेदनकरणेहारीजाधारणाहै ॥ ताधारणाकूंकथनकरणेहारी यहउपनिषदहै ॥ यातैं याउपनिषदकूं वेदवेत्तापुरुष क्षुरिका यानाम करिकैकथनकरै हैं ॥ हेशिष्य॥यहयोगीपुरुष प्रथम अहिंसादिकपंचनियमोंकूंकरै ॥ तिसतैंअनंतर शौचादिकपंचनियमोंकूंकरै ॥ तिसतैं अनंतर शब्दादिकविक्षेपतैंरहित किसीएकांतदेशविषे प्रथम दर्भोंकूंविछावै॥तिनदर्भोंऊपर मृगचर्मविछावै॥तामृगचर्मऊपर वस्त्रविछावै ॥

ऐसेआसनऊपर पद्मादिकआसनोंकूंबांधिके सोयोगीपुरुष स्थितहोवै ॥ और जैसे कूर्मजंतु आपणेहस्तपादादिकअंगोंका संकोचकरैहै ॥ तैसे सोयोगीपुरुष मनसहितनेत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै हृदयकमलविषे एकाग्रकरै॥याकानाम प्रत्याहारहै ॥ और तिसतैंअनंतर सोयोगीपुरुष द्वादशमात्रायुक्तप्रणवमंत्रकरिकै शनैःशनैःबाह्यवायुकरिकै आपणेशरीरकूंपूर्णकरै॥ याकानाम पूरकहै ॥ और तिसतैंअनंतर सोयोगीपुरुष मुखनासिकादिकसर्वद्वारोंका निरोधकरिकै तथा हृदय मुख कटी ग्रीवा इत्यादिकसर्वअंगोंकूंसूधाराखिकै तिनअंगोंविषेभी हृदयकूं किंचित्ऊँचाराखिकै ताहृदयविषे ताप्राणवायुकूं धारणकरै ॥ याकानाम कुंभकहै ॥ तिसतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं नासिकादिकद्वारोंकरिकै शरीरतैंबाहरनिकासे ॥ याकानाम रेचकहै ॥ इहां कुंभक दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ पूरकादिसापेक्ष कुंभकहोवैहै॥और दूसरा पूरकादिनिरपेक्ष कुंभकहोवैहै॥तहां पूरकादिसापेक्ष कुंभकका पूर्व निरूपणकऱ्या॥ अब पूरकादिनिरपेक्षकुंभककेनिरूपणकरणेवासतै प्रथमयाशरीरकेविशेषअंगोंविषे ताप्राणवायुकेनिरोधका निरूपणकरै हैं॥जिसनिरोधकूं योगीयाज्ञवल्क्यादिकोंनैं धारणा प्रत्याहार यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ यहयोगीपुरुष तिनपूरकादिकोंतैं विनाही ध्यानकेबलतैं ताप्राणवायुकूं प्रथम पादकेअंगुष्ठविषेस्थिरकरिकै प्रणवमंत्ररूपमात्राओंका जपकरताहुआ याप्रकारकोधारणाओंकूंकरै॥ तहां वामदक्षिण पादकेदोगुल्फोंविषे जभी यहयोगीपुरुष ताप्राणवायुकास्थापनकरै ॥ तभी दोदोमात्राओंकाजपकरै ॥ और दोनोंजंघोंविषे ताप्राणवायुके स्थापनकरणेविषे तीनतीनमात्राओंकाजपकरै॥और दोनोंजानुविषे तथादोनोंऊरुविषे ताप्राणवायुकेस्थापनकरणेविषे दोदोमात्राओंकाजपकरै और गुदा लिंग यादोनोंविषे ताप्राणवायुकेस्थापनकरणेविषेतीनतीनमात्राओंकाजपकरै ॥ और गुदा लिंग यादोनोंकेमध्यविषे ताप्राणवायुकेरहणेकास्थानरूप एककंद रहैहै ॥ कैसाहैसोकंद ॥ नाभिदेशकेसाथ जाकंदकासंबंधहै ॥ और सर्वमनुष्योंकेपृष्ठदेशविषे स्थि जोदीर्घअस्थिहै ॥ जादीर्घअस्थिरूपमार्गद्वारा सुषुम्नानाडी दशमद्वारकूंप्राप्तहोवै है ॥ तादीर्घअस्थिके समीपस्थितहै ॥ ऐसेकंदविषे सोयोगीपुरुष प्राणवायुरूपकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ और ताकंदविषे पूर्वउक्तदशनाडियोंकरिकै वेष्टितहुई एकसुषुम्नानाडीरहै है ॥ और

ताकंदविषे पीतवर्णवाली तथारक्तवर्णवाली तथाकृष्णवर्णवाली तथाताम्रवर्णवाली तथालोहितवर्णवाली अत्यंतसूक्ष्म तथाअत्यंत लघुऐ सीअनेकनाडियांरहेहैं ॥ तिनसर्वनाडियोंकापरित्यागकरिके सोयोगीपुरुष ताशुक्लवर्णवालीएकसुषुम्नानाडीकूंही आश्रयणकरे॥ औरजैसेऊ र्णनाभिजंतु सर्वतंतुओंकेजालविषे जोतंतु आपणेकूंप्रियहोवैहै ता तंतुविषेही विचरैहै ॥ दूसरेअप्रियतंतुओंका परित्यागकरैहै ॥ तैसे ताना डीकंदविषेस्थितहुआ सोयोगीपुरुष दूसरेसर्वनाडियोंकापरित्यागकरिके तासुषुम्नानाडीविषेही आपणेप्राणवायुका प्रवेशकरावे ॥ तिसनाडीकंदतैंअनंतर सोयोगीपुरुष हृदयकमलविषे प्राप्तहोवैहै ॥कैसाहैसोहृदयकमल रक्तपुष्पके समानवर्णवालाहै॥तथाजिसहृदयकम लकूं वेदांतशास्त्रविषे दहरपुंडरीक यानामकरिकेकथनकरै हैं ॥ ताहृदयकमलतैंअनंतर सो योगीपुरुष कंठविषेस्थित विशुद्धचक्रकूंप्राप्त होवे॥और ताविशुद्धचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष आज्ञाचक्रकूंप्राप्तहोवै॥तिसआज्ञाचक्रतैंअनंतरसोयोगीपुरुष मूर्द्धविषेस्थित सहस्रदलवाले पद्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ तामूर्द्धस्थानविषेस्थितहोइके सोयोगीपुरुष आधारचक्रतैंलेके तासहस्रदलवालेपद्मपर्यंत तासुषुम्नानाडीका निरंतर ध्यानकरैहै ॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिनषट्चक्रोंकाभेदनकरिके सोयोगीपुरुष मनरूपखड्गकरिके देहाभिमानीपुरुषोंकूं बंधनकीप्राप्तिक रणेहारे जेमर्म हैं तिनोंकूंछेदनकरे ॥ कैसाहैसोमनरूपखड्ग ॥ प्राणरूपलोहमयहैशरीरजिसका ॥ तथा सगुणनिर्गुणब्रह्मकूंकथनकरणे हारीजाब्रह्मविद्याहै ॥ ताब्रह्मविद्यारूपशाणकेघर्षणकरिके जोमन निर्मलभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ ऐसेमनरूपखड्गकरिके सोयोगीपुरुष तिनम र्मोंकाछेदनकरे॥अबयाहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ सोनिर्मलमनहैतीक्ष्णधाराजिसकी ऐसाजो यहखड्गकन्याहुआप्राण वायुरूपखड्ग है ॥ ताप्राणवायुरूपखड्गकरिके यहयोगीपुरुष आपणेपादतलकेऊपरस्थित अंगुष्ठगुल्फादिकमर्मोंकूंछेदनकरे ॥ और योगसाधनतैंरहितपुरुषोंकरिके इंद्रकेवज्रकीन्याई दुर्भेद्य जेजंघोंविषेस्थितमर्म हैं ॥ तिनमर्मोंकूं यहयोगीपुरुष ध्यानरूपबलयुक्त तामन रूपखड्गकरिके छेदनकरे ॥ और ऊरुस्थानविषेस्थितजेमर्म हैं ॥ जिनमर्मोंकेभेदनहुए याजीवोंकूंमृत्युकीप्राप्तिहोवै है ॥ तिनमर्मोंकूंभी यहयोगीपुरुष प्रातःकाल मध्यान्हकाल सायंकाल रात्रिकाल याचारकालविषेकन्याजोअभ्यास ताअभ्यासवालेयोग तैं छेदनकरे

इसप्रकार गुदा शिश्न कंद नाभि हृदयकमल कंठ इत्यादिकस्थानोंविषेस्थित जितनैंकीमर्म हैं ॥ तिनसर्वमर्मोंकूं यहयोगीपुरुष तायोग केवलतैंछेदनकरै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिनमर्मोंकूंछेदनकरिकै सोयोगीपुरुष नाडियोंकूंभीछेदनकरै ॥ तहां याशरीरविषे एकशत एक नाडी १०१ प्रधानरहेहैं तिनप्रधाननाडियोंविषेभी एकएकनाडीकीशाखारूप बहत्तरबहत्तरसहस्र ७२००० नाडियांरहेहैं ॥ तिनसर्वना डियोंविषे एकसुषुम्नानाडीही प्रधानहै ॥ जासुषुम्नानाडी दशमद्वारविषेप्राप्तभईहै ॥ तासुषुम्नानाडीविषे आपणेप्राणोंकाप्रवेशकराइकै यह योगीपुरुष दूसरीसर्वनाडियोंकाछेदनकरै ॥ मैं इनमर्मोंविषे तथानाडियोंविषे स्थितनहींहूं याप्रकारकाजोबाधनिश्चयहै सोइही तिनमर्मना डियोंकाछेदनहै ॥ हेशिष्य इसप्रकार जोयोगीपुरुष तायोगाभ्यासकेबलतैं तिनमर्मस्थानोंकूं तथासुषुम्नातैंभिन्ननाडियोंकूं छेदनकरिकै आपणेप्राणवायुकूं तासुषुम्नानाडीविषे प्रवेशकरावैहै ॥ सोयोगीपुरुष इसजन्मविषे अथवा दूसरेजन्मविषे वैराग्यकूंप्राप्तहोइकै आत्म ज्ञानद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ज्ञानरूपअग्निकरिकैंप्रकाशमान जोशुद्धमनरूपखड्गहै ॥ तामनरूपखड्गकरिकै यहयोगीपुरुष तिनसर्वनाडीरूपबंधनकाछेदनकरै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार योगाभ्यासकेबलतैं जिसयोगीपुरुषकाचित्त वैराग्यकूंप्राप्तभयाहै॥तथा जोयोगी पुरुष सर्वदा एकांतदेशविषे निवासकरैहै ॥ तथाजोयोगी पुरुष सर्वसंगतैंरहितहै ॥ तथा जोयोगीपुरुष तायोगकेसर्व अंगोंकूंजानणेहाराहै ॥ ऐसायोगीपुरुष पूर्वउक्तसाधनोंकीभी अपेक्षानहींकरताहुआ शनैःशनैःकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे यालोकविषे पाशोंकरिकैबां ध्याहुआ कोईहंसपक्षी तिनपाशोंकूंछेदनकरिकै निःशंकहोइकै आकाशविषेउडैहै ॥ ताआकाशकेउडणेविषे ताहंसकूं दूसरेकिसीसाधन की अपेक्षाहोवैनहीं ॥तैसे सोयोगीपुरुषभी तिननाडीरूपपाशोंकाछेदनकरिकै ब्रह्मलोकविषेजाइकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा जैसे अ ग्निआदिकविशेषतेज काष्ठादिकइंधनोंकूंदग्धकरिकै आपणेसामान्यतेजभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसेसोयोगीपुरुषभी तायोगाभ्यासकेबलतैं सर्वकर्मोंकूंदग्धकरिकै इसीशरीरविषे ब्रह्मभावरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ प्राणायामकरिकैंसूक्ष्मकऱ्याहुआ तथा प्रणवरूप मात्राहैंआधारजिसका तथावैराग्यरूपशाणकरिकैघर्षणकऱ्याहुआ ऐसाजोमनरूपखड्गहै ॥ तामनरूपखड्गकरिकै यहयोगीपुरुष

तिननाडीरूपबंधनोंकाछेदनकरिके मोक्षकूंप्राप्तहोवै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार ताक्षुरिकाउपनिषद्विषे योगकानिरूपणकऱ्याहे ॥ सोसंपूर्ण हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्या ॥ इतनैंग्रंथकरिके परवैराग्यकीप्राप्तिकरणेहारेयोगका निरूपणकऱ्या अब तापरमहंससंन्यासकेनिरूपणकर णेवासते प्रथम जाबालउपनिषद्केचतुर्थखंडविषेकथनकऱ्याजो तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकाकाल तथातापरमहंससंन्यासकाअ धिकारी तिनदोनोंकानिरूपणकरैहैं ॥ तहांप्रथम कालकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ यासर्वअधिकारीपुरुषोंकूं सर्वअवस्थाओंविषे तापरम हंससंन्यासकेग्रहणकरणेविषे यहवैराग्यही मुख्यकारणहै ॥ तावैराग्यतैंविना किसीभीअवस्थाविषे तापरमहंससंन्यासकाग्रहणहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोवैराग्यही तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका कालहै ॥ तहांश्रुति ॥ यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत् ॥ अर्थयह ॥ याअ धिकारीपुरुषकूं बाल्यअवस्थाविषे तथा युवाअवस्थाविषे तथावृद्धअवस्थाविषे जिसदिनविषे तथाजिसक्षणविषे तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष तिसीअवस्थाविषे तथातिसीदिनविषे तथातिसीक्षणविषे संपूर्णकर्मोंकापरित्यागकरिके संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरे ॥१॥ ता तीव्रवैराग्यतैंविना याअधिकारीपुरुषोंनैं बाल्यअवस्थाविषे तथायौवनअवस्थाविषे तथावृद्धअवस्थाविषे तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकर णेका संकल्पमात्रभीनहींकरणा॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुषोंनैं तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका वैराग्यहीकालकह्याहै॥और तावैराग्यकी उत्पत्तिविषे पूर्व गर्भदुःखोंकाविचार तथामरणकालकाज्ञान तथायोगाभ्यास यहतीनकारण कथनकरिआयेहैं ॥ और संपूर्णउपनिषदों विषे जो नानाप्रकारकीउपासना कथनकरी हैं॥ तेउपासनाभी तावैराग्यकीउत्पत्तिविषेही कारणहैं॥शंका॥हेभगवन् ॥ तेउपासना साक्षात् मुक्तिकेहीकारण किसवासतेनहींहोवैं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तेउपासना विपरीतज्ञानरूपअध्यासकरिकेजन्यहोवैहैं ॥ यातैं तिनउपास नाओंविषे साक्षात्मुक्तिकीकारणतासंभवैनहीं ॥ जैसे नाम रूप क्रिया स्थान गुण यापांचोंतैंरहित जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मका उत् यहनामहै॥तथा सुवर्णकीन्याई रूपहै॥तथाऊर्ध्वलोकोंकापालन कियाहै ॥ तथा आदित्यमंडल स्थानहै॥तथा सर्वतैंश्रेष्ठपणा गुणहै ॥ इसप्रकार तानिर्गुणब्रह्मविषे नामादिकोंकाआरोपणकरिके सर्वत्र उपासनाहोवैहै॥यातैं तेसंपूर्णउपासना विपरीतज्ञानरूपअध्यासकरिकेजन्य

होवैहैं॥हेशिष्य॥तेउपासनाभी अनेकप्रकारकीहोवैहैं ॥ तहां उपनिषदोंविषे किसीस्थलविषेतो साक्षात् ताब्रह्मकीहीउपासना कथनकरीहै ॥ और किसीस्थलविषेतो ताब्रह्मकेविभूतियोंकीउपासना कथनकरीहै ॥ तिनविभूतियोंविषेभी कोईक विभूतियांतो कारणरूपहोवैहैं तथासमष्टिरूपहोवैहैं तथाअधिदेवरूपहोवैहैं ॥जैसे हिरण्यगर्भ विराट् आदित्य आदिकहैं ॥ और कोईक विभूतियांतो कार्यरूपहोवैहैं तथाव्यष्टिरूप होवैहैं तथाअध्यात्मरूपहोवैहैं ॥जैसे मन प्राण वाकादिकहैं ॥ तिन कारणकार्यरूपविभूतियोंकोही ब्रह्मरूपकरिकेउपासना कथनकरीहै ॥ और किसीस्थलविषेतो प्रणवादिकमंत्रोंका तथातिनमंत्रोंकेब्रह्मरूपअर्थकापरस्पर तादात्म्यरूपकरिके उपासनाकथनकरीहैं॥तेउपासनाभी दोप्रकारकोहोवैहैं ॥ तहां एकउपासनाओंविषेतो प्रणवादिकमंत्र प्रधानहोवै हैं ॥ और तिनमंत्रोंकाब्रह्मरूपअर्थ गौणहोवै है ॥ और दूसरी उपासनाओंविषेतो प्रणवादिकमंत्र गौणहोवैहैं ॥ और तिनमंत्रोंकाब्रह्मरूपअर्थ प्रधानहोवैहै ॥ तहां अथर्वशिर योगशिखा पूर्वतापनीय उत्तरतापनीय मांडूक्य आत्मबोध दोनोंनारायण अमृतनाद अमृतबिंदु इत्यादिकउपनिषदोंविषेतो प्रणवादिकमंत्रोंकी प्रधानरूपकरिके उपासना कथनकरीहै ॥ और तिनोंकेअर्थकी गौणरूपकरिके उपासना कथनकरीहै ॥ और प्रश्न मुंडक बृहदारण्यक छांदोग्य कठवल्ली इत्यादिकउपनिषदोंविषेतो तिनप्रणवादिकमंत्रोंकेअर्थकी प्रधानरूपकरिके उपासनाकथनकरीहै ॥ और तिनप्रणवादिकमंत्रोंकी गौणरूपकरिके उपासनाकथनकरीहै ॥ और रुद्राध्यायविषे तथामंडलब्राह्मणविषे तथापुरुषसूक्तविषेतो स्तुति रहस्यनाम मंत्र यातीनोंसहित ताब्रह्मकीउपासना कथनकरीहैं ॥ इसप्रकार जितनीको चारवेदोंविषेउपनिषदहैं ॥ तिनसर्वउपनिषदोंविषे याप्रकारकी अनेकउपासना कथनकरी हैं ॥ तेसर्वउपासना वैराग्यकेहीकारणहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति आपणाआत्मारूपकरिके निर्गुणब्रह्मकेबोधकरावणेवासते प्रवृत्तहुईयांजेसर्वउपनिषद्हैं॥तिनउपनिषदोंविषेनानाप्रकारकीउपासनाओंकाकथनकरणा असंगतहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तेउपनिषद् यद्यपि निर्गुणब्रह्मकूंहीकथनकरैहैं ॥ तथापि सोनिर्गुणब्रह्म जिनपुरुषोंकेबुद्धिविषेनहींआवैहै ॥ तिनमंदबुद्धिपुरुषोंऊपर अनुग्रहकरके तेउपनिषद् स्थूलअरुंधतीन्यायकूंअंगीकारकरिकेनानाप्रकारसें ताब्रह्मकावर्णनकरिके तिनमंदबुद्धि

पुरुषोंकेचित्तविषे तानिर्गुणब्रह्मकाज्ञानकरावेंहैं ॥ यातें तिनउपनिषदोंविषे उपासनाओंकावर्णन असंगतनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥सोब्रह्म सर्वदा एकरसहै ॥ यातें ताएकरसअद्वितीयब्रह्मका नानारूपकरिकेवर्णन संभवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सोअद्वितीयनिर्गुणब्रह्म अधिष्ठानरूपकरिके यासर्वजगत्काआत्मारूपहै ॥ और जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानका इदंअंश कल्पितसर्पादिकोंविषे अनुगतहोइकेप्रतीतहोवे है ॥ तैसे सोअधिष्ठानरूपब्रह्मभी आपणेसत्यरूपकरिके यासर्वजगत्विषे अनुगतहोइकेप्रतीतहोवेहै ॥ ताकल्पितजगत्रूपउपाधिकेसंबंधतें तानिर्गुणब्रह्मकूंभी तेउपनिषद् नाम रूप क्रिया स्थान गुण यापंचरूपोंकरिकेविशिष्ट कथनकरे हैं ॥ यातें कल्पितउपाधियोंकेसंबंधतें ताअद्वितीयब्रह्मका नानारूपकरिकेवर्णन संभवहोइसके है ॥ हेशिष्य ॥ नाम रूप क्रिया स्थान गुण यापांचोंकरिकेविशिष्ट जोसविशेषब्रह्महै ॥ तासविशेषब्रह्मकेबोधनकरणेविषे तिनउनिषदोंकी जाप्रवृत्तिहोवेहै ॥ साप्रवृत्ति दोप्रकारकीहोवे है ॥ तहां एकतो तिननामरूपादिकउपाधियोंके अनिषेधपूर्वक प्रवृत्तिहोवे है ॥ और दूसरी तिननामरूपादिकउपाधियोंके निषेधपूर्वक प्रवृत्तिहोवे है ॥ तहां यहअधिकारीपुरुष शुद्धअंतःकरणवालेहोइके आपही तिननामरूपादिकउपाधियों कापरित्यागकरिके तानिर्गुणब्रह्मकूंजानैंगे याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिके जेउपनिषद् सविशेषब्रह्ममात्रकूंकथनकरिके निर्विशेषब्रह्मकेकथनतें उपरामताकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तेउपनिषद् प्रथमप्रवृत्तिकरिके तासविशेषब्रह्मकूंकथनकरे हैं ॥ और यहअधिकारीपुरुष हमारेउपदेशतेंविना तानिर्विशेषब्रह्मकूं किसप्रकारजाणेंगे याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिके तिनअधिकारीपुरुषोंऊपर अत्यंतकरुणाकरिके जेउपनिषद् तिननामरूपादिकसर्वउपाधियोंकानिषेधकरिके वारंवार तानिर्विशेषब्रह्मकूंही कथनकरे हैं ॥ तेउपनिषद् तादूसरीप्रवृत्तिकरिके ताब्रह्मकाकथनकरे हैं॥ हेशिष्य ॥ तादूसरीप्रवृत्तिकूंअंगीकारकरिके निर्गुणब्रह्मकूंकथनकरणे हारी जेबृहदारण्यक आदिकउपनिषदें हैं ॥ तिनोंकाअर्थ हम तुमारेप्रति पूर्व कथनकरिआये हैं ॥ और तिनबृहदारण्यकआदिकउपनिषदोंतेंभिन्न दूसरो जितनीकोउपनिषद् तानिर्विशेषब्रह्मकूंकथनकरे हैं ॥ तिनसर्वउपनिषदोंकाअर्थ आगे हम तुमारेप्रति स्पष्टकरिकेकथनकरेंगे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार नानाप्रकारकीउपासनाओंकरिके जोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मकाआराधनकरे है ॥ सोअधि

कारीपुरुष थोडेहीकालविषे शुद्धअंतःकरणवालाहोइके वैराग्यकूंप्राप्तहोवै है ॥यातें जैसे गर्भदुःखोंकाविचार तथामरणकालकाज्ञान तथा अष्टांगयोग यहतीनों वैराग्यकेकारणहैं ॥ तैसे सापरमेश्वरकोउपासनाभी वैराग्यकाहीकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं तिनउपासनाओंकेकरणेविषे सामर्थ्यनहींहै ॥ सोअधिकारीपुरुष तावैराग्यकीप्राप्तिवासतै कौनउपायकरे ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं तिनउपासनाओंकेकरणेविषे सामर्थ्यनहीं है॥ सोअधिकारीपुरुष याप्रकारकाउपायकरे ॥ वेदोंकेकर्मकांडविषेकथनकन्येजे आपणेवर्णआश्रमकेकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंकूं यहअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतरकरे ॥ परंतु तिनकर्मोंकेफलकीइच्छाकरे नहीं ॥ तानिष्कामकर्मोंकरिकेभी सोअधिकारीपुरुष बहुतकालकेपीछे अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तावैराग्यकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातें तेनिष्कामकर्मभी वैराग्यकेहीकारणहैं ॥ और हेशिष्य ॥ जोअधिकारीपुरुष तिननिष्कामकर्मोंकेकरणेविषेभी समर्थनहींहोवे ॥ सोअधिकारीपुरुष तावैराग्यकीप्राप्तिवासतै याप्रकारकाउपायकरे॥ तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंति यज्ञेनदानेनतपसाऽनाशकेन ॥ याश्रुतिनैं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै वेदोंकाअध्ययन यज्ञ दान तप अनशन यापांचधर्मोंकाविधानकन्याहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिके जोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मकेसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै तिनयज्ञदानादिककर्मोंकूंकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुषभी अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तावैराग्यकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥यातें ब्रह्मज्ञानकोप्राप्तिवासतै जेयज्ञदानादिककर्महैं ॥ तेकर्मभी वैराग्यकेहीकारणहैं ॥ और हेशिष्य॥जोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै कर्मोंकेकरणेविषेभी समर्थनहींहोवे ॥ सोअधिकारीपुरुष तावैराग्यकीप्राप्तिवासतैं याप्रकारकाउपायकरे ॥ यत्करोषियदश्नासि यज्जुहोषिददासियत् ॥ यत्तपस्यसिकौंतेय तत्कुरुष्वमदर्पणम् ॥ याभगवत्गोताकेश्लोकविषे सर्वकर्मोंका परमेश्वरविषे अर्पण कथनकन्याहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिके जोअधिकारीपुरुष आपणेसर्वकर्मोंका परमेश्वरविषेअर्पणकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुषभी अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तावैराग्यकूंहीप्राप्तहोवै है ॥ यातें ते परमेश्वरअर्पणकर्मभी वैराग्यकेहीकारणहैं ॥ हे शिष्य ॥ इसप्रकार गर्भदुःखोंकाविचार १ तथामृत्युकालकाज्ञान २ तथाअष्टांगयोग ३ तथाउपासना ४ तथानिष्कामकर्म ५ तथा

ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिअर्थकर्म ६ तथाईश्वरअर्पणकर्म ७ यासप्तप्रकारकेउपायोंकरिकेहो याअधिकारीपुरुषोंकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवै है ॥ तिनस
प्तउपायोंविषे जिसउपायकेकरणेविषे याअधिकारीपुरुषकूं सामर्थ्यहोवै ॥ ताउपायकूंग्रहणकरिके यहअधिकारीपुरुष तावैराग्यकूंउत्पन्न
करे ॥ तावैराग्यतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरे ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया॥यामनुष्यलोकतैंलेके ब्रह्मलोकपर्यं
त जितनेंकोविषयजन्यसुखहैं तथा स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंतैंआदिलेके जितनेको तिनविषयसुखोंकेसाधनहैं॥तिनसंपूर्णों तैं जोवैराग्यहै॥सो
तीव्रवैराग्यहो यापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकाकालहै ॥ इतनैंकरिके तासंन्यासग्रहणकरणेकेकालका निरूपणकऱ्या ॥ अब तासंन्यास
केअधिकारीका निरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥धनएषणा लोकएषणा पुत्रएषणा यहतीनप्रकारकोएषणा सर्वलोकोंविषेप्रसिद्धहैं ॥ तहां धन दो
प्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ देवधनहोवै है॥ और दूसरा मानुष्यधनहोवै है ॥ तहां कर्मउपासनारूप देवधनहै ॥ और सुवर्णादिकपदार्थ मनु
ष्यधनहै॥और स्वर्गलोक पितृलोक मनुष्यलोक इत्यादिकलोकहैं॥एषणानाम इच्छाकाहै॥ऐसेतिनएषणाओं तैं जोपुरुष रहितहै॥सोवैराग्य
वान्पुरुषही यापरमहंससंन्यासका अधिकारीहै॥ अबजाबालउपनिषद्के चतुर्थखंडविषेस्थितवचनों के अर्थका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥
जिसअधिकारीपुरुषविषे तेतीनोएषणा विद्यमानहैं ॥ सोअधिकारीपुरुष तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु सोअधिकारीपुरुष
प्रथमब्रह्मचर्यआश्रमकूंग्रहणकरे ॥ ताब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरे॥तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंग्रह
ण करे ॥ तावानप्रस्थआश्रम तैंअनंतर कुटीचक बहूदक हंस यातीनसंन्यासोंविषे किसीएक संन्यासकूं ग्रहणकरे ॥ परंतु सोतीनएषणा
वान्रागीपुरुष तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका मनविषेसंकल्पभीनहींकरे ॥ काहे तैं जिसअधिकारी पुरुषकूंइसलोकके विषयसुखोंविषे
तथापरलोककेविषय सुखोंविषे इच्छानहींहोवैहै ॥ सोपुरुषही तापरमहंससंन्यासकाअधिकारीहोवैहै॥विषय सुखकीइच्छावान् पुरुष तापर
महंससंन्यासका अधिकारी होवैनहीं ॥ और हेशिष्य ॥ जोअधिकारीपुरुष मोक्षकीइच्छावालाहै॥ तथातीनएषणाओंतैंरहितहै ॥ सोवैराग्य
वान् पुरुषतो ब्रह्मचर्य आश्रमतैंअनंतरही तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरे ॥ अथवा गृहस्थ आश्रमतैंअनंतर तापरमहंससंन्यासकूंग्रहण

कर ॥ अथवा वानप्रस्थआश्रमतैंअनंतर तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरे ॥ ताकेविषेकोईनियमहैनहीं परंतु तावैराग्यवान्पुरुषनैंभी ब्रह्म
चर्य आश्रमतैंपूर्व तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरणानहीं ॥ हेशिष्य ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूंतीव्रवैराग्यकीप्राप्तिभईहै ॥ सोअधिकारीपुरुष
आपणेवर्णआश्रमके धर्मोंकरिकेयुक्तहोवे ॥ तथा नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंकरिकेसंपन्नहोवे ॥ अथवा सो अधिकारीपुरुष आपणेवर्णआश्रमके
धर्मोंतैंरहितहोवे ॥ तथानेत्रादिकइंद्रियोंतैंरहितहोवे ॥ सर्वप्रकारसैं सोतीव्रवैराग्यवान्पुरुषहीयापरमहंससंन्यासका अधिकारी है ॥ अब
याही अर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपण करे हैं ॥ हेशिष्य ॥ वेदविद्याकोप्राप्तिकरणेहारेजे ब्रह्मचारीके गुरुकुलवासादिकधर्महैं ॥ तिन धर्मों
वालेपुरुषकानाम व्रतीहै ॥ और तिनधर्मोंतैंरहितपुरुषकानाम अव्रती है ॥ और जोपुरुष गुरुकेसमीपनिवास करिके समग्रएकवेदकूं
अथवा दोवेदोंकूं अथवा चारवेदोंकूं अध्यनकरिके ताब्रह्मचर्य आश्रमकी समाप्तिकरैहै ॥ तापुरुषकानाम स्नातकहै और जोपुरुष
ताएकवेदकेभी किसीएकअंशका अध्ययन करैहै ॥ तापुरुषकानाम अस्नातकहै और जिसपुरुषनैं पूर्व श्रौत अग्निका अथवा स्मार्तअग्निका
ग्रहणकऱ्याहोवे ॥ परंतु किसीस्त्रीमरणादिकनिमित्तकरिके सोअग्नि जिसका नष्टहुआहोवे ॥ तापुरुषकानाम उत्सन्नअग्निकहै ॥ औरजिस
पुरुषनैं तास्त्रीमरणादिकनिमित्तकरिके ताश्रौतस्मार्त्तअग्निका ग्रहणहीनहींकऱ्याहोवे ॥ तापुरुषकानाम अनग्निकहै ॥ अथवा ॥ जोपुरुष
तिनश्रौतस्मार्त्तअग्नियोंका अंगीकारहीनहींकरे है ॥ तापुरुषकानाम उत्सन्नअग्निक है ॥ और तिनश्रौतस्मार्त्तअग्नियोंके ग्रहणकरणेविषे
उपयोगी जेधनादिकपदार्थ हैं ॥ तिनधनादिकोंकूंही जोपुरुष ग्रहणनहींकरे है ॥ तापुरुषकानाम अनग्निकहै ॥ हेशिष्य ॥ व्रती १ अव्र
ती २ स्नातक ३ अस्नातक ४ उत्सन्नाऽग्निक ५ अनग्निक ६ यहषट्प्रकारकेपुरुषोंविषे जिसपुरुषकूं जिसकालविषे ता तीव्रवैराग्यकी
प्राप्तिहोवे ॥ सोपुरुष तिसीकालविषे तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरे ॥ और कुटीचक बहूदक हंस यातीनप्रकारकेसंन्यासियोंकूंभी
जोकदाचित् ता तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवे ॥ तौ तेकुटीचक बहूदक हंससंन्यासीभी तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरे ॥ परंतु वैराग्यतैंविना
किसीभी अधिकारीपुरुषनैं तापरमहंससंन्यासका ग्रहणकरणानहीं ॥ इतनैंकरिकेतापरमहंससंन्यासके अधिकारीकानिरूपणकऱ्या ॥ अब

धर्मशास्त्रोंकेअनुसार तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकोरीतिका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥जैसे विवाहादिकशुभकार्योंविषे नानाप्रकारके मंगलहोवे हैं ॥ तैसे तासंन्यासग्रहणतैंपूर्वदिनविषे नानाप्रकारकेमंगलोंकरिकेयुक्तहुआ सोअधिकारीपुरुष प्रथम नांदीमुखश्राद्धकूंकरे ॥ और तानांदीमुखश्राद्धविषे सोसंन्यासकर्त्तापुरुष प्रथम वसु सत्य यानामवालेविश्वेदेवताओंकापूजनकरे ॥ और तानांदीमुखश्राद्धकेअंतर देवश्राद्ध १ ऋषिश्राद्ध २दिव्यश्राद्ध ३मानुष्यश्राद्ध ४भूतश्राद्ध ५पितृश्राद्ध ६ मातृश्राद्ध ७ आत्मश्राद्ध८यहअष्टश्राद्धहोवे हैं ॥ और याअष्टश्राद्धोंकेआदिविषे नवमा वैश्वदेवश्राद्धहोवे है ॥ यहनवश्राद्ध तानांदीमुखश्राद्धकेअंतरहोवे हैं ॥ तिननवश्राद्धोंकूंकरे ॥ हे शिष्य ॥ कोईक शौनकादिकऋषितो मातृश्राद्धतैं मातामहश्राद्धकूंभिन्नमानिके तादशमेमातामहश्राद्धकाभी विधानकरे है ॥ और कोईक आपस्तंबादिकऋषितौं तामातृश्राद्धतैं तामातामहश्राद्धका अभेदमानिके तामातामह श्राद्धका भिन्नविधानकरेनहीं ॥ यातैं तिनशौनकादिकऋषियोंकेमतविषेतौं तावैश्वदेवश्राद्धतैंउत्तरनवश्राद्धहोवे हैं॥और आपस्तंबादिकऋषियोंकेमतविषेतौ तावैश्वदेवश्राद्धतैंउत्तरअष्टश्राद्ध होवे हैं ॥ हेशिष्य ॥ मातृश्राद्ध मातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंका परस्परभेद अथवा परस्परअभेद आपणे आपणेकुलकेआचारकरिकेही जान्याजावे है ॥ हेशिष्य ॥ सोमातृश्राद्ध तामातामहश्राद्धतैंभिन्नहै याभेदपक्षविषेभी अनेकऋषियोंकेमतभेदकरिके तामातृश्राद्धविषे देवताओंकाभी भेदकथनकऱ्याहै॥तहां कोईकऋषितो तामातृश्राद्धके माता पितामही प्रपितामही यहतीनदेवतामानेहैं॥और कोईकऋषितो तामातृश्राद्धके माता मातामही प्रमातामही यहतीनदेवतामानेहैं ॥ और तामातृश्राद्धतैंभिन्नजोमातामहश्राद्धहै ॥तामातामहश्राद्धविषेतो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह यह तीनदेवतामाने हैं ॥ इसप्रकार मातृश्राद्ध मातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंकेभेदकूंअंगीकारकरिके तेशौनकादिकऋषि तिनदोनोंश्राद्धोंकेदेवताओंकाभी भेदहीअंगीकारकरेहैं ॥ और हेशिष्य ॥ जिनआपस्तंबादिकऋषियोंकेमतविषे मातृश्राद्ध मातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंका अभेदहीकथनकऱ्याहै ॥ तिनऋषियोंकेमतविषेभी आपणेआपणे कुलआचारकेभेदकरिके तामातृश्राद्धकेदेवताओंका भेदहीकथन कऱ्याहै॥तहां कोईकऋषितो तामातृश्राद्धकेमाता पितामही प्रपितामही यहतीनदेवतामानेहैं और

कोईकऋषितो तामातृश्राद्धकेमाता मातामही प्रमातामही यहतीनदेवतामानेहैं॥हेशिष्य ॥इसप्रकार भिन्नभिन्नशास्त्रोंविषे तिनऋषियोंनैंतौ मातृश्राद्धकेदेवताओंका भेदकथनकऱ्याहे॥परंतुतिनदेवताओंकेपूजनकरणेविषे आपणेआपणेकुलकाआचारहीप्रमाणहे॥और जिसपुरुषकूं आपणे आपणेकुलकाआचार विस्मरणहोइगयाहोवे॥तिसपुरुषनैंतौतामातृश्राद्धविषे माता पितामही प्रपितामही यातीनदेवताओंकाहीपूजन करणा ॥ काहेतें यालोकविषे बहुतविद्वान्पुरुषतौ तामातृश्राद्धविषे माता पितामही प्रपितामही यातीनदेवतावोंकाईपूजनकरेहैं ॥ यातैं तिनबहुतोंकेआचारकूंहीअंगीकारकरणा ॥ इहांप्रसंगविषे पिताकेपिताकानाम पितामहहै ॥ और तापितामहकेपिताकानाम प्रपितामहहै॥ और ताप्रपितामहकेपिताकानाम वृद्धप्रपितामहहै ॥ और पिताकेमाताकानाम पितामहीहै ॥ और पितामहकोमाताकानाम प्रपितामहीहै ॥ और ताप्रपितामहकोमाताकानाम वृद्धप्रपितामही है ॥ और माताकेपिताकानाम मातामहहै ॥ और तामातामहकेपिताकानाम प्रमातामहहै ॥ और ताप्रमातामहकेपिताकानाम वृद्धप्रमातमहहै ॥ और माताकेमाताकानाम मातामही है ॥ और तामातामहोकेपतिकी माताकानाम प्रमातामहीहै॥ और ताप्रमातामहोकेपतिकीमाताकानाम वृद्धप्रमातामहीहै॥ ऐसेआगे भीजानिलेणा॥इतनैंकरिके मातृश्राद्ध मातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंके भेदका तथाअभेदका विचारकऱ्या अब पूर्वउक्तअष्टश्राद्धोंके देवताओंका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर यहतीनों देवश्राद्धकेदेवता हैं ॥ १ ॥ और देवऋषि राजऋषि मनुष्यऋषि यहतीनों ऋषिश्राद्धकेदेवताहैं ॥ २ ॥ और वसु रुद्र आदित्य यहतीनों दिव्यश्राद्धकेदेवताहैं ॥ ३ ॥ और सनक सनंदन सनत्कुमार यहतीनों मानुष्यश्राद्धकेदेवताहैं ॥ ४ ॥ और पृथिवीआदिकपंचभूत नेत्रादिक दशइंद्रिय जरायुआदिकचारयोनियां यहतीनों भूतश्राद्धके देवताहैं ॥ ५ ॥ और पिता पितामह प्रपितामह यहतीनों पितृश्राद्धकेदेवताहैं ॥ ६ ॥ और माता पितामही प्रपितामही यहतीनों मातृश्राद्धकेदेवताहैं ॥७॥ औरजिन पुरुषोंकेकुलआचारविषे तामातृश्राद्धतैंभिन्नहीमातामहश्राद्धहोवे॥तिनपुरुषोंनैंभी तामातामहश्राद्धकूं तामातृश्राद्धतैंपश्चात्हीकरणा॥तामातृश्राद्धतैं पूर्वनहींकरणा॥तामातामहश्राद्धके मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह यहतीनदेवता पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥और तामातृश्राद्धतैं

अनंतर अथवा मातामहश्राद्धतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणाश्राद्धकरे ॥ याकानाम आत्मश्राद्धहै ॥ ताआत्मश्राद्धके सोसंन्यास
कर्त्तापुरुष पिता पितामह यहतीनदेवताहैं ॥ ८ ॥ इसप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तानांदीमुखश्राद्धविषे प्रथम वैश्वदेवश्राद्धकूंकरिके
तिसतैंअनंतर आपणेकुलआचारकेअनुसार अष्टश्राद्धोंकूं अथवा नवश्राद्धोंकूं श्रद्धापूर्वककरे॥हेशिष्य॥प्रथमवैश्वदेवश्राद्धकूंछोडिकेदेवश्रा
द्धतैंआदिलेके आत्मश्राद्धपर्यंत जेअष्टश्राद्धहैं॥अथवा नवश्राद्धहैं॥तिनश्राद्धोंविषेएकएकश्राद्धविषे तीनतीनदेवताहोवेहैं॥तिनदेवताओंविषे
एकएकदेवताकेप्रति एकएकपिंड दियाजावेहै ॥ यातैं अष्टश्राद्धपक्षविषेतो तिनदेवताओंकोसंख्यापरिमाण तेसंपूर्णपिंड चतुर्विंशति २४
होवे हैं॥ और नवश्राद्धपक्षविषेतो तिनदेवताओंकोसंख्यापरिमाण तेसंपूर्णपिंड सप्तविंशति २७ होवेहैं ॥ हेशिष्य ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष
तिनपिंडोंविषे दधि लाजा अक्षत बदरीफल मधु दूर्वा कुंकुम इत्यादिकमंगलपदार्थोंकूंपावे ॥ तथातिनपिंडोंकेमध्यविषे मधुशर्करा
दिक बहुतपावे ॥ और तानांदीमुखश्राद्धविषे करणेयोग्यजे वैश्वदेवादिकश्राद्धहैं ॥ तिनश्राद्धोंविषे एकएकश्राद्धविषे दोदोब्राह्मणोंकूंभोज
नकरावे ॥ यातैं सोसंन्यासकर्त्तापुरुष नवश्राद्धपक्षविषेतो अष्टादश १८ ब्राह्मणोंकूंभोजनकरावे ॥ और दशश्राद्धपक्षविषेतो
विंशति २० ब्राह्मणोंकूंभोजनकरावे ॥ तिनब्राह्मणों तैं न्यूनअधिकब्राह्मणोंकूंभोजननहींकरावणा ॥ और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोकदाचि
त् धनवान्होवे ॥ तो तिनब्राह्मणोंकेप्रति दुकूलकंकणादिकभूषण छत्र उपानह इत्यादिकपदार्थ दक्षिणादेवे ॥ और सो संन्यासकर्त्तापुरुष
जोकदाचित् अत्यंतधनवान्होवे ॥ तो तिनब्राह्मणोंकेप्रति भूमिदानदेवे ॥ तथा गृहोंविषे अन्नवस्त्रादिकपदार्थराखिके तेगृह दानदेवे ॥
जादानकरिके तिनब्राह्मणोंकीदरिद्रता निवृत्तहोइजावे ॥ और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोकदाचित् निर्धनहोवे ॥ तो यथाशक्तिपरिमाण
तिनब्राह्मणोंकेताईं दक्षिणादेवे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तापिंडदानतैंअनंतर तिनब्राह्मणोंकूंभोजनकराइके तथा यथाशक्तिपरिमाण
तिनब्राह्मणोंकेताईं दक्षिणादेकरिके सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तिनब्राह्मणोंकेउच्छिष्टअन्नकूंछोडिके आपणेयथाशक्तिपरिमाण दूसरेदीनअनाथों
केताईं नानाप्रकारकेअन्नकादानकरे ॥ तथा तिनदीनअनाथोंकेप्रति वस्त्रधनादिकपदार्थोंकादानकरे ॥ हेशिष्य इसप्रकार सोसंन्या

सकर्त्तापुरुष आपणे ऋषिप्रणीतसूत्रोंकेअनुसार पितृश्राद्धकीन्याई तानांदीमुखश्राद्धकूंकर ॥ और तिसनांदीमुखश्राद्धकेदिनविषे पूर्वउक्त दानादिकोंकूंकरिके प्रसन्नताकूंप्राप्तहुआ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेबांधवोंकेसाथ तथास्त्रीपुत्रादिकोंकेसाथ यथायोग्यसंभाषणकरे ॥और कलदिनकेहोमवासते यत्किंचितद्रव्यकूंभिन्नराखिके तथाकंथाकोपीनादिकवस्त्रोंकूंभिन्नराखिके दूसरेसंपूर्णधनादिकपदार्थ आपणेपुत्रोंकेताई विभागकरिकेंदेवे ॥ याप्रकारकेसर्वकार्यकूंकरिके सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेबांधवोंकेसाथ एकपंक्तिविषेबैठिके पुण्याहं याप्रकारकाव चनउच्चारणकरिके भोजनकूंकरे ॥ परंतु तिसदिनविषे तासंन्यासकर्त्तापुरुषकेचित्तविषे जोकोईविक्षेपनहींहोवे तोभोजनकरे॥ और तिसदिनविषे जोकदाचित् तासंन्यासकर्त्तापुरुषकूं चित्तकीविक्षेपताकरिके अन्नविषेरुचिनहींहोवे॥तो सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताश्राद्धकेशेषअन्नका घ्राणसें गंधग्रहणकरिके तिसदिनविषे उपवासकूंहीकरे॥और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोतिसदिनविषेभोजनकरे॥तो दूसरेदिनविषे उपवासकरे हेशिष्य ॥ जिसदिनविषे पिंडदानकरणा ॥ तिसदिनविषे उपवासनहींकरणा ॥किंतु दूसरेदिनविषे उपवासकरणा यहपक्ष बहुतशास्त्रोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ यातें यहपक्षमुख्यहै ॥ और जिसदिनविषे पिंडदानकरणा ॥ तिसदिनविषेउपवासकरणा ॥ यहपक्ष किसीशास्त्रविषेकथन कऱ्याहै ॥ यातें यहपक्ष गौणहै ॥ हेशिष्य ॥ तामुख्यपक्षकूंअंगीकारकरिके सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तापिंडदानतैंदूसरेदिनविषे उपवास करे ॥ और ताउपवासकेदिनविषे सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेकक्षोंकेवाल तथाउपस्थकेवाल तथाशिखाकेवाल यातीनोंवालोंकूंछोडिकरिके दूसरेसर्वशरीरकेकेशलोमोंका मुंडनकरावे ॥ और तामुंडनतैंअनंतर स्नानकरिके दूसरेशुद्धवस्त्रकूंधारणकरे ॥ और होमवासते स्थापनकऱ्याजोद्रव्यहै ॥ ताद्रव्यकूंछोडिके आपणेगृहविषेस्थितजे शालग्राम तथाकंबलादिकवस्त्र तथापुस्तक तथामृगचर्म इत्यादिक पदार्थ हैं ॥ जेपदार्थ संन्यासियोंकूंभीग्रहणकरणेविषे निषिद्धनहींहोवे ऐसे शालग्रामादिकपदार्थोंकूंग्रहणकरिके सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेब्रह्मवेत्तागुरुकेआगे अर्पणकरे॥यद्यपि तेशालग्रामादिकपदार्थ तासंन्यासकर्त्तापुरुषकूंभी अपेक्षितहैं ॥तथापि सोब्रह्मवेत्तागुरु जोकदाचित् तिनपदार्थोंकूंअंगीकारकरे॥तो तेसंपूर्णपदार्थ तागुरुकेही अर्पणकरे॥हेशिष्यजोसंन्यासी आत्माकेउपदेशकरणेविषे अत्यंतकुशलहोवे

तथा ब्रह्मनिष्ठहोवे ॥ तथा शमदमादिकसर्वगुणोंकरिकेयुक्तहोवे ॥ ऐसेश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठसंन्यासीकूं सोसंन्यासकर्त्तापुरुष बहुतकालसैंपरी
क्षाकरके गुरुधारणकरे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेगुरुकेप्रति शालग्रामपुस्तकादिकपदार्थ अर्पणकरके तथा
आपणेशीतादिकोंकीनिवृत्तिवासते कोपीनकंथादिकवस्त्रोंकूं पृथकराखिके ताकोपीनादिकवस्त्रोंकूं तथावेणुकेदंडकूं ताअग्निकुंडकेसमीप
स्थापनकरे ॥ कैसाहोवे सोवेणुकादंड ॥ जलकरिकेशुद्धकर्‍याहोवे ॥ तथा छिद्रतैंरहितहोवे ॥ तथा देखनेविषे सुंदरहोवे ॥ तथा तासं
न्यासकर्त्तापुरुषकेशरीरपरिमाण ऊंचाहोवे ॥ हेशिष्य ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जिसदिनविषेहोमकरे ॥ तादिनकोरात्रिविषे जागरणकूं
करे ॥ तहां ताहोमकरणेवासते तथारात्रिकेजागरणकरणेवासते याप्रकारकादेश चाहिये॥ कितो महान्‌नदीकातीरहोवे॥अथवा विष्णुआ
दिकदेवतावोंकामंदिरहोवे ॥ अथवा वनहोवे ॥ अथवा गोशालाहोवे ॥ अथवा मनुष्योंतैंरहित कोईएकांतगृहहोवे ॥ यास्थानोंविषे कि
सीएकस्थानविषे सोसंन्यासकर्त्तापुरुष होमकरे ॥ तथा रात्रिविषेजागरणकरे ॥ हेशिष्य ॥ऐसेपवित्रएकांतदेशविषेजाइके सोसंन्यासकर्त्ता
पुरुष आपणेआसनऊपरस्थितहोवे ॥ और आपणेदोनोंहस्तोंकूंजोडिके तथामनसहितइंद्रियोंकूंनिरोधकरिके सोसंन्यासकर्त्तापुरुष प्रथम
ब्रह्म इंद्र सोम सूर्य आत्मा अंतरात्मा परमात्मा विज्ञानात्मा याअष्टरूपवालेपरमेश्वरका स्मरणकरे ॥ तथा प्रणवपूर्व ब्रह्मणेनमः इंद्रायन
मः सोमायनमः सूर्यायनमःआत्मनेनमःअंतरात्मनेनमः परमात्मनेनमः विज्ञानात्मनेनमः याअष्टमंत्रोंका मानसजापकरे ॥तामानसजापका
स्वरूप व्यासभगवान्‌नैंयाप्रकार कह्याहै ॥ तहांश्लोक॥धियायदक्षर श्रेणि वर्णस्वरविभूषिता ॥ उच्चरेदर्थसंस्मृत्या सउक्तोमानसोजपः ॥
अर्थयह ॥ ककारादिकवर्णोंकरिके तथा उदात्तादिक स्वरोंकरिके युक्त जोअक्षरोंकीपंक्तिहै ॥ ताअक्षरोंकीपंक्तिकूंयहजपकरतापुरुष
अर्थकीस्मृतिपूर्वक बुद्धिकरिकेहीउच्चारणकरे ॥ याकानाम मानसजपहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ तामानसजपतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष
एकमुष्टिपरिमाणसक्तुवोंकाभक्षणकरिके तीनवारआचमनकरे॥तिसतैंअनंतरसोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेहस्तकूंनाभिदेशविषेराखिकेप्रणव
पूर्वकआत्मनेस्वाहा अंतरात्मनेस्वाहा प्रजापतयेस्वाहायातीनमंत्रोंकाउच्चारणकरे॥तिसतैंअनंतरसोसंन्यासकर्त्तापुरुष पय दधि घृत याती

नपदार्थोंविषे एकएकपदार्थकूं तीनतीनवार भक्षणकरे॥औरपूर्वेसत्कुवोंकेभक्षणविषेतथा पय दधि घृत यातीनोंकेभक्षणविषे तासंन्यासकर्त्ता पुरुषनैंप्रणवमंत्रकाहीउच्चारणकरणा॥और तिसतैंअनंतर आचमनकरिके सोसंन्यासकर्त्तापुरुष पूर्वदिशाकीतरफमुखकरिके यथाशक्ति परिमाण प्रणवमंत्रका तथा गायत्रीमंत्रकाजपकरे॥तथा उपवासकरणेकासंकल्पकरे तिसतैं अनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सर्ववेदोंकाआदिरूप जोप्रणवमंत्रहै ताकाउच्चारणकरे॥अथवा ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंकेआदिविषेस्थितजेयथाक्रमतैं अग्निमीळइति इषेत्वेति अग्नआयाहीति यहतीनमंत्रहैं तिनमंत्रोंका प्रणवपूर्वक उच्चारणकरे ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सावित्रीप्रवेशकेमंत्रकाउच्चारणकरे ॥ तहां प्रणवमंत्रपूर्वकजो भूः भुवः स्वः यहतीनव्याहृतियां हैं ॥ तातीनव्याहृतियोंविषे एकएकव्याहृतिकेउच्चारणपूर्वक ॥ सावित्रीप्रविशामि ॥ यावचनकूं दोदोवार उच्चारणकरे ॥ यारीतिसैं तोसावित्रीप्रवेशके षट्मंत्रसिद्धहोवे हैं ॥ तिनषट्मंत्रोंविषे यथाक्रमतैं त्रिपदा गायत्रीमंत्रकेपादोंका उच्चारणकरणा ॥ तहां प्रथममंत्रविषेतो तागायत्रीमंत्रकेप्रथमपादका उच्चारणकरणा ॥ और दूसरेमंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेदूसरेपादकाउच्चारणकरणा ॥ और तीसरेमंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेतीसरेपादका उच्चारणकरणा ॥ और चतुर्थमंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेआदिकेदोपादोंका उच्चारणकरणा ॥ और पंचममंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेतीसरेपादका उच्चारणकरणा ॥ और षष्ठेमंत्रविषे तासमग्रगायत्रीमंत्रका उच्चारणकरणा ॥ तिनषट्मंत्रोंकेउच्चारणकाक्रमयहहै ॥ प्रथम प्रणवमंत्रकाउच्चारणकरणा तिसतैंउत्तर व्याहृतिका उच्चारणकरणा तिसतैंउत्तर सावित्रीप्रवेशवाक्यउच्चारणकरणा ॥ तिसतैंउत्तर गायत्रीकेपादकाउच्चारणकरणा ॥ यहसंपूर्णमिलिके एकमंत्रहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सावित्रीप्रवेशकेषट्मंत्रोंकूंउच्चारणकरिके तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ब्रह्मान्वाधाननामाकर्मकूंकरे ॥ ताकर्मकी यहरीतिहै ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सूर्यकेअस्तहुएतैंपूर्व आपणेऋषिप्रणीतसूत्रोंकेअनुसार होमकरणेवासते श्रौतअग्निकूं अथवा स्मार्त्तअग्निकूं अथवा किसीपवित्रस्थानविषेस्थित लौकिकअग्निकूं लेआइके कुंडविषे अथवा भूमिविषे स्थापनकरे॥ तिसतैं अनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेऋषिप्रणीतसूत्रोंकेअनुसार सायंकालविषे ताअग्निविषे अग्निहोत्रनामाहोमकूंकरे ॥ तहां आ

ज्यभागपर्यंत सर्वअंगोंकूं विधिपूर्वककरिके तिसतैंअनंतर प्रणवपूर्वक स्वाहामंत्रकरिके तिसअग्निविषे आज्याहुतिकूंपावे ॥ और तिसी मंत्रकरिके ताअग्निविषे पूर्णाहुतिकूंपावे ॥ याप्रकारकेकर्मकूं शास्त्रविषे ब्रह्मान्वाधान यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुषताब्रह्मान्वाधानकर्मकूंकरिके तिसतैंअनंतर सायंसंध्याकीउपासनाकरे॥तिसतैंअनंतर ताअग्निकेउत्तरदिशाविषे दर्भोंकूं बिछाइके तिसऊपरबैठे ॥ और गायत्रीमंत्रने कथनकऱ्याजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूंमनविषे स्मरणकर्त्ताहुआ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ता रात्रिविषे जागरणकरे ॥ हेशिष्य ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तारात्रिविषे इष्टिकूंभीकरे ॥ तहां सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोकदाचित् गार्हपत्यादिकश्रौतअग्नियोंवालाहोवे ॥ तो सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तिनश्रौतअग्नियोंकरिके प्रथम अग्निदेवतासंबंधी वैश्वानरीनामाइष्टिकूंकरे ॥ तिसतैं अनंतर राजाधिराजस्वराट् इत्यादिकगुणविशिष्टजोदेवताविशेषहै ॥ तादेवतासंबंधी त्रैधातवीनामाइष्टिकूंकरे॥और सोसंन्यासकर्त्ता पुरुष जोकदाचित् औपासननामास्मार्त्तअग्निवालाहोवे॥तो सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तास्मार्त्तअग्निकरिके प्राजापत्यनामाइष्टिकूंकरे॥और जिसपुरुष कापूर्वगृहस्थआश्रम नष्टहोइगयाहै ॥ और उत्तरआश्रम जिसपुरुषनें ग्रहणकऱ्यानहीं तापुरुषकानाम विधुरहै॥सोविधुरपुरुषभी विधुर अग्निकरिके ताप्राजापत्यइष्टिकूंहीकरें ॥ पृष्ठोदिवी इत्यादिकमंत्रकरिके उत्पन्नकऱ्याजोअग्नि है ॥ ताकानाम विधुरअग्नि है ॥ और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोब्रह्मचारीहोवे ॥ अथवा वानप्रस्थहोवे ॥ तो सोब्रह्मचारी तथावानप्रस्थतो किसीपवित्रस्थानतैंअग्निकूंलेआइके तालौकिकअग्निकरिके ताप्राजापत्यइष्टिकूंकरें ॥ हेशिष्य ॥ कोईकऋषितो याप्रकारकहे हैं ॥ आहिताऽग्निपुरुषोंकूं तथाअनाहिताऽअग्निपुरुषोंकूं तथाअनऽग्निपुरुषोंकूं साप्राजापत्यनामाइष्टिहीकरणेयोग्यहै॥इहांश्रौतअग्निवालेपुरुषकानामआहिताऽग्निहै ॥ और स्मार्त्तअग्निवालेपुरुषकानाम अनाहिताऽग्निहै और श्रौतस्मार्त्तअग्नितैंरहितविधुरादिकोंकानाम अनऽग्नि है ॥ और कोईकऋषितो तीनोंकेप्रति प्राजापत्यइष्टिकूं विधानकरेनहीं ॥किंतुपूर्वकहीरीतिसे आहितअग्निपुरुषकेप्रतितो वैश्वानरीइष्टिका तथा त्रैधातवीइष्टिकाविधानकरे हैं ॥ और अनाहिताऽग्निपुरुषोंकेप्रति तथाअनऽग्निपुरुषोंकेप्रति प्राजापत्यइष्टिकाविधानकरेहैं॥हेशिष्य॥किसअधिकारीपुरुषनें कौनइष्टिकरणी यहसंपूर्णव्यवस्था

हम आगेस्पष्टकरिकैकहैंगे ॥ यातैं अभी हम ताव्यवस्थाकूंकथनकरतेनहीं ॥ किंतु अभी तासंन्यासकर्त्तापुरुषकूं तीसरेदिन विषे जो कार्य करणेयोग्यहै ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ब्राह्ममुहूर्त्तविषे तादर्भकेआसनतेंउठिकै जलकरिकै अथवा शन्नआप इत्यादिकमंत्रोंकरिकै अथवा भस्मकरिकै यथाशक्तिपरिमाण स्नानकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताआपणेअग्नि विषे चरुकूंपकावे ॥ तापक्कचरुकूं ताअग्नितैंउत्तारिकै तिसअग्निकेपूर्वदिशाविषे अथवा उत्तरदिशाविषे स्थापनकरै ॥ तिसतैंअनंतर तापक्कओदनरूपचरुकूं घृतयुक्तकरिकै पश्चात् प्रणवपूर्वक भूरादिकतीनव्याहृतियोंकूंपठनकरै ॥ तथा सहस्रशीर्षा इत्यादिकषोडशऋचारूप पुरुषसूक्तकूंपठनकरै ॥ तथा प्रणवपूर्वक इंद्रायस्वाहा प्रजापतयेस्वाहा विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा ब्रह्मणेस्वाहा याचारिमंत्रोंकाजपकरै तिसतैंअनंतर पुण्याहं याप्रकारकावचन उच्चारणकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यास कर्त्तापुरुष शुचिनामापात्रविषे संस्कृतघृतकूंग्रहण करिकै प्रणवपूर्वक अग्नयेस्वाहा यामंत्रकरिकै अग्निमुखनामाआहुतिकूं ताअग्निविषेपावे ॥ और भोजनकेआदिकालविषे करणेयोग्यजा प्राणअग्निहोत्रहै ॥ ताप्राणअग्निहोत्रविषे जैसे प्रणवपूर्वक प्राणायस्वाहा अपानायस्वाहा व्यानायस्वाहा उदानायस्वाहा समानायस्वाहा यापंचमंत्रोंकरिकै पंचग्रासरूप पंचआहुति पाईजावेहै ॥ तैसे तिनपंचमंत्रोंकरिकै ताअग्निविषे आहुतिकूंपावे ॥ तथा आपणे वेदकीशाखाविषे पठनकऱ्याजो सहस्रशीर्षापुरुष इत्यादिकपुरुषसूक्तहै ॥ तापुरुषसूक्तकेएकएकऋचाकापाठकरिकै ताअग्निविषे आहुतिकूंपावे ॥ हेशिष्य ॥ ताअग्निविषे आहुतिपावणेका यहक्रमहै ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष प्रथम ताअग्निविषे काष्ठारूपसमिधकूंपावे ॥ तिसतैं अनंतर घृतकूंपावे ॥ तिसतैंअनंतर ओदनरूपचरुकूंपावे ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताअग्निविषे प्रणवपूर्वक स्विष्टकृतेऽग्नये स्वाहा यामंत्रकरिकै घृतकीआहुतिकूंपावे॥तथा आपणेवेदकीशाखाकेअनुसार तापुरुषसूक्तकाजपकरै॥हेशिष्य॥इसप्रकार होमकूं करिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताहोमतैं अनंतर पुनःदूसरेविरजाहोमकूंकरै ॥ तहां तिसीअग्निविषे पूर्वकीन्याई दूसराचरुपकाइकै ताचरुकूं घृतयुक्त करिकै पूर्णआहुतिपर्यंत ताविरजाहोमकूंकरै ॥हेशिष्य॥ ताविरजाहोमका यहक्रम शास्त्रविषेकथनकऱ्याहै॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुषशास्त्रउक्त

मंत्रोंकरिके ताअग्निविषे घृतयुक्तचरुकरिके विरजाहोमकूंकरे॥तिसतैंअनंतर ताहोमतैंबाकीरहेहुए घृतयुक्तचरुकूं भक्षणकरे॥तिसतैंअनंतर आचमनकरिके प्रणवपूर्वकस्वाहामंत्रकरिके ताअग्निविषे पूर्णआहुतिकूंकरे॥अब पूर्वकथनकरीहुईइष्टिकेनिर्णयकरणेवासते प्रथम ताकेविषे तीनमतोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ कोईऋषितो याप्रकार कथनकरैहैं ॥ वैश्वानरीइष्टितैंआदिलैके जितनेकोइष्टिहैं ॥ तेसंपूर्णइष्टियां श्रौतअग्निवालेपुरुषनेंही करणी ॥ स्मार्त्तअग्निवालेपुरुषनें तथाअग्नितैंरहितपुरुषनें कोईभीइष्टि करणीनहीं ॥ १ ॥ और हेशिष्य ॥ दूसरेऋषितो याप्रकार कथनकरैहैं ॥ एकप्राजापत्यइष्टिकूंछोडिके दूसरीइष्टितो ताश्रौतअग्निवालेपुरुषनैंहीकरणी ॥ और प्राजापत्यइष्टितो स्मार्त्तअग्निवालेपुरुषनैंभी करणी ॥ और श्रौतस्मार्त्तअग्नितैंरहित अनऽग्निपुरुषनैंतो कोईभीइष्टि नहींकरणी ॥ २॥ और हेशिष्य॥ तीसरेऋषितो याप्रकार कथनकरैहैं ॥ जैसे निषादस्थपतिंयाजयेत् ॥ याश्रुतिवचनकरिके शास्त्रवेत्तापुरुषों नें वर्णसंकरजातिवालेनिषादकूंभी इष्टिकरणेकाअधिकार कल्पनाकऱ्याहै ॥ तैसे श्रौतस्मार्त्तअग्नितैंरहित जेविधुर ब्रह्मचारी वानप्रस्थहैं ॥ तिनोंकूंभी ताप्राजापत्यइष्टिकाअधिकार संभवहोइसकैहै ॥ काहेतैं श्रुतियोंविषे तथास्मृतियोंविषे इष्टिपूर्वकही संन्यासकरणेकाविधानकऱ्याहै ॥ यातैं विधुरादिकोंकूं संन्यासकाअधिकारमानिके इष्टिकाअधिकारनहीं मानणा यहवार्त्ता संभवतीनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ब्राह्मीमिष्टिंनिर्वपेत् ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मदेवतावालीइष्टिकूंकरिके संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरे ॥ तहांस्मृति ॥ प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिं सर्ववेदसदक्षिणां ॥ आत्मन्यग्नीन्समारोप्य ब्राह्मणःप्रव्रजेद्गृहात् ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीब्राह्मण सर्वदक्षिणायुक्त प्राजापत्यइष्टिकूंकरिके तथा आपणेउदरविषे सर्वअग्नियोंकूं समारोपणकरिके आपणेगृहकापरित्यागकरिके संन्यासआश्रमकूं धारणकरे ॥ १ ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंविषे इष्टिपूर्वकही संन्यासआश्रमकाविधानकऱ्याहै ॥ यातैं श्रौतस्मार्तअग्नितैंरहित विधुरादिकपुरुषनैंभी संन्यासतैंपूर्व लौकिकअग्निविषे ताप्राजापत्यइष्टिकूं अवश्यकरिकेकरणा ॥ ३ ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकार ताइष्टिकेकरणेविषे ऋषियोंके तीनमतहैं॥तहां श्रौतअग्निविषेही साप्राजापत्यइष्टिहोवैहै याअभिप्रायकरिकेतो प्रथममतकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ और स्मार्त्तअग्निविषेभी साप्राजापत्यइष्टिहोवैहै याअभिप्रायक

रिके दूसरेमतकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ और लौकिकअग्निविषेभी ताप्राजापत्यइष्टिहोवैहै याअभिप्रायकरिके तीसरेमतकीप्रवृत्तिहोवैहै॥हेशिष्य ॥ यातीनोंपक्षोंविषे जोसिद्धांतपक्ष जाबालादिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ तासिद्धांतपक्षकूं तूं श्रवणकर ॥ श्रौतअग्निवाला जोअग्निहोत्रीपुरुषहै ॥ सोअग्निहोत्रीपुरुष जोकदाचित् तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरे ॥ तो वैश्वानरीइष्टिकूं तथात्रेधातवीइष्टिकूंहीकरै॥ और सोअग्निहोत्रीपुरुष जोकदाचित् कुटीचक बहूदक हंस यातीनसंन्यासोंविषे किसीएकसंन्यासकूंग्रहणकरे ॥ तो सोअग्निहोत्रीपुरुषभी ताप्राजापत्यइष्टिकूंहींकरे और श्रौतअग्नितैंरहितजोपुरुषहै ॥ ताकूं किसीभीइष्टिविषे अधिकारहैनहीं ॥ याप्रकारकासिद्धांतपक्ष तिनवेदवेत्ताऋषियोंनैं कथनकऱ्याहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकालविषे अग्निहोत्रीपुरुषनैंतो वैश्वानरीइष्टिकूं तथात्रेधातवीइष्टिकूं अवश्यकरिकेकरणा ॥ याकेविषे किसीभीऋषिकाविवादहैनहीं ॥ और प्राजापत्यइष्टिविषे पूर्वउक्तरीतिसैं नानाप्रकारकाविवाद देखणेविषेआवैहै ॥ सो ताविवादकाभी यथायोग्यविकल्पकूंअंगीकारकरिके बुद्धिमान्पुरुषोंनैं समाधानकरणा ॥ हेशिष्य ॥ ताइष्टिकूंछोडिकै जेपूर्वअष्टश्राद्धकहेथे ॥ तथा होमकह्याथा ॥ तिनश्राद्धोंकेकरणेविषे तथाहोमकेकरणेविषे किसीभीशास्त्रकारका विवादहैनहीं ॥ किंतु तासंन्यासग्रहणकालविषे सर्वअधिकारीपुरुषोंनैं तिनश्राद्धादिककर्मोंकूंकरणा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुष श्रौतअग्निविषे अथवा स्मार्त्तअग्निविषे अथवा लौकिकअग्निविषे पूर्वउक्तसर्वकर्मोंकूंकरिके तिसतैंअनंतर उत्तरनारायणीयउपनिषद्केपाठकूंकरताहुआ आपणेगृहतैंनिकसिके किसीजलकेस्थानऊपरजावे ॥ और तिसकालविषे सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सर्वऊपर अनुग्रहरूपअमृतकोवृष्टिकूंकरे ॥ सोअनुग्रहयहहै ॥ श्राद्धादिककर्मोंकूंकरावणेहारेजे ऋत्विक्ब्राह्मणहैं तिनब्राह्मणोंकेताईं गोदानदेवे ॥ तथा सुवर्णदानदेवे ॥ तथा चरुकाशेषअन्नदेवे ॥ तथा होमतैंशेषरह्याहुआघृतदेवे ॥ तथा दूसरेभीअन्नादिकपदार्थ यथाशक्तिपरिमाण दानकरे ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तिनऋत्विक्ब्राह्मणोंतैं तथाआपणेबंधुजनोंतैं आपणेअपराधकूंक्षमाकरावै॥तिसतैंअनंतरआपणेपुत्रस्त्रीआदिकबांधवोंकूं आशीर्वादादिकोंतैंप्रसन्नकरिके विदाकरे ॥ और जैसे संन्यासग्रहणतैंउत्तरकालविषे तापुरुषनैं निःसंगहोणा है ॥ तैसे

पूर्वेही निःसंगहोवै॥ओर तासंन्यासकर्त्तापुरुषकेआज्ञाकूंपाइके तेस्त्रीपुत्रादिकबांधवभी तिसकालविषे प्रसन्नमनहुए आपणेआपणेगृहकूंचले जावें ॥ अथवा जैसे दूसरेउदासीनपुरुष कोतुकदेखणेवासते तहांस्थितहोवे हैं ॥ तैसे तेस्त्रीपुत्रादिकबांधवभी स्नेहकापरित्यागकरिके तहां ही स्थितहोवें ॥ हेशिष्य ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जैसे प्रातःकालविषे नित्यहीहोमकरेहे ॥ तैसे तापूर्वउक्तहोमदेशविषेताहोमकूंकरिके ॥ समासिंचंतुमरुतःसमिंद्र ॥ इत्यादिकमंत्रकरिके ताअग्निकाउपस्थानकरे ॥ तिसतैंअनंतर ॥ यातेअग्नेयज्ञियातनूः ॥ इत्यादिकमंत्रकूं अथ वा ॥ अयंतेयोनिर्ऋत्वियो ॥ इत्यादिकमंत्रकूं तीनवारपठनकरिके ताआपणेश्रौतस्मार्तअग्निकूं ताअग्निकेउष्णतापानपूर्वक आपणेउदर विषे समारोपणकरे ॥ हेशिष्य ॥ जिससंन्यासकर्त्तापुरुषकूं श्रौत स्मार्त्त लौकिक यातीनोंअग्नियोंविषे कोईभीअग्नि प्राप्तनहींहोवे॥सोपुरुष ताअग्निसाध्यहोमादिकसर्वकर्मोंकूं जलविषेहीकरे ॥ तथा भावनामयअग्निकाही आपणेउदरविषे ॥ समारोपणकरे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिनबाह्यअग्नियोंकूं आपणेउदरविषेसमारोपणकरिके तहां भावनामयकुंडविषे तिनअग्नियोंकूंस्थापनकरिके पूर्वउक्तसावित्रीप्रवेशकेमंत्रोंकूं पठनकरे ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताजलकेसमीपजावे ॥ तहां नाभिपरिमाणजलविषेस्थितहोइके संध्यागायत्रीकीउपासना करे ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष पूर्वदिशाकीतरफमुखकरिके तथा आपणेदोनोंभुजावोंकूंऊंचाकरिके ॥ अहंवृक्षस्य ॥ इसवचन तैंआदिलेके ॥ त्रिशंकोर्वेदानुवचनं ॥ इसवचनपर्यंत संपूर्णवचनोंकूं पठनकरे ॥ तथा ॥ यश्छंदसां ॥ याशांतिमंत्रविषेस्थितजे नववाक्यहैं तिनोंकाजपकरे ॥ तिसतैंअनंतर ॥ पुत्रेषणायावित्तेषणाया ॥ इत्यादिकवचनकापाठकरे ॥ तिसतैंअनंतर प्रणवपूर्वक भूरादिकतीनव्याहृ तियोंविषे एकएकव्याहृतिकेउच्चारणपूर्वक क्रमतैं मंद मध्यम उत्तम यातीनस्वरोंकरिकेप्रैषमंत्रकाउच्चारणकरे॥अब प्रसंगतैंआतुरसंन्यासका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ यह अष्टश्राद्धतैंआदिलेके जलविषेस्थितिपर्यंत जोसंन्यासकेसाधनोंकानिरूपणकऱ्याहे ॥ सोस्वस्थशरीरवा लेपुरुषकेवासते कथनकऱ्याहे ॥ ओर जिसअधिकारीपुरुषकाशरीर रोगादिकोंकरिकेव्याकुलहोवे ॥ तिसआतुरपुरुषनैंतो केवल प्रैषमंत्र काहीउच्चारणकरणा ॥ ताप्रैषमंत्रकेउच्चारणमात्रकरिकेही ताकासंन्याससिद्धहोवे है॥ ताआतुरसंन्यासविषे तिनश्राद्धादिकसाधनोंकेकरणेका

कछुजरूरनहीं है ॥हेशिष्य॥यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् वाणीकरिकेभी ताप्रैषमंत्रकेउच्चारणकरणेविषे समर्थनहींहोवै॥तो सोअधिकारीपुरुष तामरणकालविषे मनकरिकेही ताप्रैषमंत्रकाउच्चारणकरे ॥तहांश्रुति॥यद्यातुरःस्यान्मनसावावासंन्यसेत्॥अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी अत्यंतआतुरहोवै ॥ तभी मनकरिके अथवा वाणीकरिके संन्यासकूंकरे ॥ १ ॥ यातें आतुरपुरुषोंकूं तासंन्यासकेग्रहणविषे तिनश्राद्धादिककर्मोंकेकरणेका विधानहैनहीं ॥ किंतु वाणीकरिके अथवा मनकरिके उच्चारणकऱ्याजोप्रैषमंत्रहै ॥ ताप्रैषमंत्रकरिकेही तिनआतुरपुरुषोंकूं तासंन्यासकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अब प्रसंगतें तासंन्यासकेफलका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तासंन्यासआश्रमकूं धारणकरिकें जोअधिकारीपुरुष याशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष प्रतिबंधकेअभावहुए शीघ्रही ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ और किसीप्रतिबंधके विद्यमानहुएतो कालांतरविषे ताब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ यहसंन्यासकाफल कपिलादिकऋषियोंनेंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ संन्यस्तमितियोब्रूयात् प्राणैःकंठगतैरपि ॥ससूर्यमंडलंभित्त्वा ब्रह्मलोकेमहीयते ॥ अर्थयह ॥ मरणकालविषे कंठदेशविषेप्राणोंकेस्थितहुयेभी जोअधिकारीपुरुष ताप्रैषमंत्रकाउच्चारणकरिके संन्यासआश्रमकूंधारणकरै है ॥ सोपुरुष मरणतेंअनंतर सूर्यमंडलकूंभेदनकरिके ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहोवै है ॥ १ ॥ और महाप्रलयकेप्राप्तहुए जभी ताब्रह्माकामरणहोवै है ॥ तभी सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताब्रह्माकेसाथ निर्गुणब्रह्मरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ १ ॥ हेशिष्य तासंन्यासकाफल दक्षप्रजापतिनेंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ त्रिंशत्परांस्त्रिंशदपरां स्त्रिंशच्चपरतःपरान्॥सद्यःसंन्यसनादेव नरकात्त्रायतेपितॄन् ॥ अर्थ यह ॥ यह संन्यासकर्त्तापुरुष आपणेसंन्यासआश्रमकेप्रभावतें पूर्वव्यतीतहुए ९० नवे वंशपर्यंत सर्वपितरोंकूं नरकतेंउद्धारकरैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ तासंन्यासकाफल जाबालउपनिषद्विषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां श्रुति ॥ शतंकुलानांपुरतोबभूव तथाकुलानांत्रिशतंसमग्रं ॥ एतेभवंतिसुकृतस्यलोके येषांकुलेसंन्यसतीहविप्रः ॥ अर्थयह ॥ जिसकुलविषे जोब्राह्मण तासंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै है ॥ ताकुलविषे पूर्वव्यतीतहुए एकशत १०० पुरुष तथाआगेहोणेहारे तीनशत ३०० पुरुष स्वर्गादिकउत्तमलोकविषेप्राप्तहोवै हैं ॥१॥ हेशिष्य॥ संन्यास यानामविषे दोपदहैं ॥ एकतो सं यहपदहै ॥ और दूसरा न्यास यहपदहै ॥ तहां संपदकातो सम्यक्पणाअर्थ है ॥ और

न्यासपदका त्यागअर्थ है तहां त्यागरूपन्यासविषे सोसम्यक्पणायहहै ॥ सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे सर्वपदार्थोंका शरीरमनवाणीकरि केत्यागकरणा ॥ याप्रकारका संन्यासशब्दकाअर्थ मुख्यकरिकेतो परमहंससंन्यासविषेहीघटैहै ॥ दूसरे कुटीचकादिकोंविषे सोसंन्यासश ब्दकाअर्थगौणहै ॥ इतनेंकरिके तासंन्यासकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब ताआतुरसंन्यासकेप्रसंगतेंही तापरमहंससंन्यासीकेमरणतें अनंतर ताकेपुत्रादिकबांधवों नें तथादूसरेभक्तजनोंनें जोकार्यकरणेयोग्यहै ताका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ याब्राह्मणनें परमहंससंन्या सकूंग्रहणकऱ्याहै ॥ याप्रकार लोकोंकरिकेजान्याहुआ सोपरमहंससंन्यासी जभी मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी ताकेपुत्रादिकबांधवोंतें आदिले के नगरकेराजापर्यंत तिनसर्वभक्तजनोंने तासंन्यासीकेशरीरके जेजेसंस्कारकरणेयोग्यहैं ॥ तेसंपूर्णसंस्कार शौनकबोधायनादिकऋषियोंनें धर्मशास्त्रोंविषेकथनकरे हैं ॥ तिनोंकूं तूं श्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी जभी मृत्युकूंप्राप्तहोवै ॥ तभी तेअधिकारीजन तासं न्यासीकेशरीरकेलेजाणेवासते किसीसुंदररथकूंत्यार करैं॥अथवा किसी सुंदरविमानकूंत्यारकरैं ॥ अथवा किसीसुंदरपालकीकूंत्यारकरे ॥ अथवा कोईसुंदरछिका त्यारकरे॥तेरथादिककैसेहो वैं॥विस्तारवालेहोवैं॥तथाअत्यन्त कोमलहोवैं तथा अत्यंतदृढहोवैं॥और जैसे महादेवके भक्तजनतथाविष्णुकेभक्तजन शिवरात्रिविषे तथाकृष्णजन्मअष्टमीविषे नानाप्रकारकेवादित्रबजावे हैं तथा नृत्यकरे हैं॥तथा जयजयशब्द उच्चारणकरे हैं ॥ तथा वेदोंकेशब्दोंकाउच्चारणकरे हैं ॥ तैसे तेअधिकारीजनभी नृत्यकरे ॥ तथा नानाप्रकारकेवादित्रोंकूंबजावैं॥ तथा वेदकेशब्दोंका उच्चारणकरैं ॥ और जैसे वसंतमासकेहोलिकाविषे यहलोक नानाप्रकारकाउत्सवकरे हैं ॥ तैसे तेसर्वअधिकारीजन प्रथम स्नानकूंकरैं ॥ तथा नानाप्रकारकेदुकूलादिकवस्त्रोंकूंधारणकरैं ॥ तथा आपणेशरीरविषे चंदनकूंलगावें ॥ तथा आपणेमुखविषे तांबूलकूंपावें ॥ तथा आपणेगलेविषे सुगंधिवालेपुष्पोंकीमालावोंकूंधारणकरे ॥ तथा हरिद्राकाचूर्ण दुग्ध फल सुगंधिवालेपुष्प इत्या दिक मंगलीकपदार्थोंकूं आपणेहस्तोंविषेधारणकरे ॥ और तिनअधिकारीजनोंकेपास जोबहुतधनकीसंपत्तिहोवै ॥ तो जिसमार्ग करिके तासंन्यासीकेशरीरकूं बाहरलेजाणाहै॥तिसमार्गकूं तथागृहादिकोंकूं सर्वओरतेंमार्जनकरिके शुद्धकरावें ॥ तथा चंदनकर्पूरादिकोंके

जलकरिके तिनमार्गादिकोंकूंसिंचनकरे ॥ और जैसे भक्तजन शिवविष्णुकीप्रतिमाकूं पंचामृतकरिके स्नानकरावे हैं।तैसे तेभक्तजनभी ता
संन्यासीकेशरीरकूं पंचामृतकरिके स्नानकरावे ॥ तथा श्रीगंगादिकपवित्रजलोंकरिके स्नानकरावे ॥ तथा चंदनादिकसुगंधकरिके तासंन्या
सीकेशरीरकालेपकरे ॥ तथा तासंन्यासीकेशरीरकूं नानाप्रकारकेपुष्पोंकीमालाकरिके शोभायमानकरे ॥ तथा ताशरीरकूं चंदन अगर
कर्पूर इत्यादिकसुगंधपदार्थोंका वारंवार धूपदेवे ॥ तथा कर्पूरयुक्तआर्तिदीपकोंकरिके वारंवार ताकोआर्तिकरे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार ते
अधिकारीजन तासंन्यासीकेशरीरकापूजनकरिके ताविमानादिकोंविषेबैठावे ॥ और विष्णुआदिकदेवतावोंकीन्याई तथामहाराजाकीन्याई
तासंन्यासीकेशरीरकूं तिसस्थानतैंउठाइके वेदकेशब्दोंकूंउच्चारणकरतेहुए बाहरलेजावें ॥ तहां वनविषे मलअस्थिआदिकोंतैंरहित जोको
ईपिप्पलकावृक्षहै ॥ अथवा मनुष्योंतैंरहित जोकोईवनस्पतिहै ॥ अथवा विष्णुशिवादिकदेवतावोंकाजोस्थानहै ॥ अथवा गौवोंकेरहणे
कीजा गोशालाहै ॥ अथवा महान्नदीकाजोतीरहै॥अथवा दूसराभीजोकोईपवित्रस्थानहै॥इत्यादिकस्थानोंविषे किसीएकस्थानविषे तासं
न्यासीकेशरीरकूंलेजाइके ताशुभस्थानविषेतेअधिकारीजनकूपकीन्याई वर्तुलाकार तथापुरुषपरिमाणनीचा एकखातकूंखोदैं॥और तासात
केखोदणेहारेब्राह्मण वारंवारभूरादिकव्याहृतियोंकापाठकरैं॥और ताखातकूंखोदिकरिके तेअधिकारीजन भूरादिकसप्तव्याहृतियोंकेपाठक
रिके ताखातकूं जलसैंप्रोक्षणकरैं ॥ तिसतैंअनंतर ताखातकेनीचेभूमिविषे प्रणवमंत्रकरिके दर्भोंकाआसनबिछावैं ॥ और ताखातकेवाम
देशविषे तासंन्यासीकेशरीरकूंस्थापनकरिके सावित्रीमंत्रकेपाठयुक्तस्नानकराइके मृत्तिकादिकमलतैंरहितकरैं॥ तिसतैंअनंतर तेअधिकारी
पुरुष तासंन्यासीकेशरीरविषे विष्णुबुद्धिकरिके पुरुषसूक्तमंत्रकेपाठपूर्वक स्नानकरावैं ॥ तथा पूर्वकीन्याई सुगंधपुष्पोंकीमालावोंकरिके
शोभायमानकरैं ॥ तिसतैं अनंतर ॥ विष्णोहव्यंरक्षस्व ॥ यामंत्रकाउच्चारणकरिके तासंन्यासीकेशरीरकूं ताखातविषे पूर्वदिशाकीतर
फमुखकरिके बैठावैं॥ तिसतैंअनंतर तासंन्यासीकेदंडकूं तीनविभागकरिके तासंन्यासीकेदक्षिणहस्तविषेदेवे॥हेशिष्य॥जोअधिकारीब्राह्मण
आतुरसंन्यासकूंधारणकरिके तिसीकालविषेमृत्युकूंप्राप्तभयाहै ॥ तिसब्राह्मणकूं यद्यपि पूर्व शास्त्रकीरीतिसैं दंडप्राप्तनहीं है ॥ तथापि

मरणतैंअनंतर ताआतुरसंन्यासीकेहस्तविषे कोईविद्वान्पुरुष ॥ इदंविष्णुर्विचक्रमे ॥ यामंत्रकरिकेदंडकूंदेवे ॥ तिसीदंडके तीनविभागक
रिके ताआतुरसंन्यासीकेदक्षिणहस्तविषेदेवें ॥तिसतैंअनंतर तेअधिकारीजन तासंन्यासीकेहृदयदेशविषे आपणा हस्तराखिके ॥ हंसः
शुचिषत् ॥ इत्यादिकमंत्रका जापकरैं ॥ तथा तासंन्यासीके भ्रूमध्यदेशविषे आपणाहस्तराखिके पुरुषसूक्त मंत्रोंका जापकरैं ॥
॥ तथा तासंन्यासीके मूर्द्धस्थानविषे आपणाहस्तराखिके ॥ ब्रह्मजज्ञानं ॥ इत्यादिकमंत्रकाजापकरैं॥तिसतैंअनंतर तेअधिकारीजन॥भूमि-
र्भूमिमगात् ॥यामंत्रकाउच्चारणकरिके तासंन्यासीकेमस्तककूं पाषाणसैं भेदनकरैं॥तिसतैंअनंतर तेअधिकारीजन॥प्रणवमंत्रकूं तथाभूरादि
कव्याहृतियोंकूं वारंवार उच्चारणकरतेहुए तासातकूं पाषाणोंकरिके तथामृत्तिकाकरिके दृढ पूरणकरैं॥जैसे तासंन्यासीकेशरीरकूं कोई
श्वानशृगालादिकजंतु भक्षणनहींकरिजावें तैसेतासातकूंदृढकरिकेपूरणकरे ॥ काहेतें जिसदेशविषे तासंन्यासीकेशरीरकूं श्वानशृगालादिक
जंतु भक्षणकरिजावैंहैं ॥तिसदेशविषे दुर्भिक्षादिकउपद्रव प्राप्तहोवैंहै ॥ याप्रकार बोधायनऋषिनें कथनकऱ्याहै ॥ यातैं तिनअधिकारी
जनोंनें तासंन्यासीकेशरीरकूं दृढकरिकेपूरणकरणा॥हेशिष्य॥तापरम हंससंन्यासीकेमरणतैंअनंतर जेजेसंस्कारहमनें तुमारेप्रतिकथनकरेहैं
तेसंपूर्णसंस्कार विधिपूर्वककरेहुए यद्यपि तामुक्तसंन्यासीकूं किसीपुण्यकीप्राप्तिकरैंनहीं ॥ तथा नहींकरेहुए तेसंस्कार तामुक्तसंन्या
सीकूं किसीपापकीप्राप्तिकरैंनहीं ॥ तथापि जेअधिकारीपुरुष तासंन्यासीकेमरणतैं अनंतर तिनसंस्कारोंकूं विधिपूर्वककरैंहैं ॥ तिनअधि
कारीपुरुषोंकूंतो पुण्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जेअधिकारीजन तिनसंस्कारोंकूंनहींकरैंहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥
तेब्रह्मवेत्तापरमहंससंन्यासी यद्यपि याप्रकारकीइच्छाकरैंहैं॥मरणतैंअनंतर याहमारेशरीरकूं तुमोंनें छेदनकरिके श्वानशृगालादिकजंतुवोंके
ताईं भक्षणकरणेवासतेदेणा ॥ तथापि स्वर्गादिकसुखोंकीइच्छाकरतेहुएतेअधिकारीजन तासंन्यासीकेशरीरकूं श्वानशृगालादिकजंतुवोंके
ताईं देणेकीइच्छाकरतेनहीं॥किंतु तेअधिकारीजन शास्त्रकेविधिपूर्वक ताशरीरकेसंस्कारकरैंहैं॥हेशिष्य॥तासंन्यासीकेशरीरकूं ताभूमिविषे
जोदृढकरिकेपूरणाहै॥सोतिनपूरणकरणेहारे ब्राह्मणादिकचारिवर्णोंकूंहीसुखकाकारणहै॥यातैं तिनब्राह्मणादिकअधिकारीजनोंनें तासंन्यासी

केशरीरकूं भलीप्रकारसैंपूरणकरणा॥हेशिष्य॥कुटीचक बहूदकहंस यातीनप्रकारकेसंन्यासियोंकूं शिखासूत्रविद्यमानहै॥यातैंकितनैंकऋषि योंनैंतो तिनकुटीचकादिकसंन्यासियोंकेमरणतैंअनंतर तिनोंका अग्निविषेदाहकाविधानकऱ्याहै ॥ और कितनैंकऋषियोंनैं तिनकुटीच कादिकों के पृथिवीविषे पूरणेका विधानकऱ्याहै॥ यातैं मरणतैंअनंतर तिनकुटीचकादिकसंन्यासियोंकूं याअधिकारीजनोंनैं अग्निविषेदाह करणा अथवा पृथिवीविषपूरणा॥और तिनसर्वऋषियोंनैं यापरमहंससंन्यासीकेदाहकरणेका सर्वथानिषेधकऱ्याहै ॥ यातैं याअधिकारी पुरुषोंने तापरमहंससंन्यासीकेशरीरकादाह कदाचित्भीनहींकरणा ॥ यहवार्ता कपिलमुनिनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ अनग्नेर्दहनं कार्यं पूर्वभिक्षोर्यथाविधि॥विदुषस्तुनतत्कार्यमेकोद्दिष्टादिकर्हिचित्॥अर्थयह ॥ श्रौतस्मार्त्तअग्नितैंराहित जोकुटीचकादिकतीनसंन्यासीहैं॥ तिनोंका मरणतैंअनंतर अग्निविषेदाहकरणा॥परंतु चतुर्थपरमहंससंन्यासीका अग्निविषेदाह कदाचित्भीनहींकरणा॥ १ ॥ हेशिष्य॥देवता केप्रतिमाकीन्याई भक्तजनोंकेताई सर्वमनोरथोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोयह परमहंससंन्यासीकाशरीरहै ॥ ताशरीरका जभी अग्निविषेदाह होवे है ॥ अथवा श्वानशृगालादिकोंकरिकेभक्षणहोवे है ॥ तभी तिनप्राणियोंकेसंपूर्णमनोरथ नाशकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातैं या अधिकारीजनोंनैं तापरमहंससंन्यासियोंकेशरीरकूं अग्निविषेदाहकरणानहीं ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसैं ताशरीरकूं पृथिवीविषेदृढकरिके पूरणा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तापरमहंससंन्यासीकेशरीरकूं तापृथिवीविषेपूरिके तिसतैंअनंतर तेअधिकारीजन ॥ अग्निनाऽग्निःसमिध्यते ॥ इत्यादिकमंत्रका पाठकरैं ॥ तथा ॥सूर्यांते इत्यादिकमंत्रकापाठकरैं ॥ हेशिष्य॥ जैसे विवाहादिकउत्सवविषे यहलोक प्रसन्नहोवे हैं ॥ तैसे प्रसन्नमुखहोइके तथासर्व शोकक्लेशों तैं रहितहोइके तेसंपूर्णअधिकारीजन तापृथ्वीविषे पूरणकरेहुएसंन्यासीकेशरीरकूं यथाशक्ति प्रदक्षिणाकरैं ॥ तथा नमस्कारकरैं ॥ और तापृथिवीकेऊपर देवालयकूंकरैं ॥ अथवा वटपिप्पलादिकपवित्रवृक्षकूंस्थापनकरैं ॥ और तादेवालयविषे विष्णुकीप्रतिमाकूंस्थापनकरैं ॥ अथवा महादेवकेलिंगकूंस्थापनकरैं ॥अथवा सूर्य गणपति देवी आदिकोंकीप्रतिमाकूंस्था पनकरैं ॥ ताप्रतिमाकीतिनअधिकारीजनों नैं सर्वदापूजाकरणी ॥ हेशिष्य ॥ याअर्थविषे हम बहुतक्याकहैं ॥ परंतु याअधिकारीपुरुषों नैं

ऐसाकोईउपायकरणा ॥ जाकरिकै बहुतदिनोंकेपीछेभीतास्थानविषे किसीमलअस्थिआदिकअशुचपदार्थोंका संबंधनहींहोवे ॥ ऐसेउपायकीअवश्यकर्त्तव्यताकेप्राप्तहुएभी जेअधिकारीजन तास्थानविषे देवालयकास्थापनकरेहैं ॥ तेअधिकारीजन बहुतबुद्धिमान्जानणे ॥ जैसे आपणेआम्रकेवृक्षोंविषे जल अवश्यपावणाहै॥परंतु जेपुरुष ताआम्रवृक्षोंविषे जलकूंपावतेहुए ताजलकूं पितरोंकेअर्पणकरेहैं॥तेपुरुष अत्यंतबुद्धिमान्होवे हैं॥तैसे तास्थानविषे देवालयकूंकरणेहारेपुरुषभी अत्यंतबुद्धिमान्जानणे॥हेशिष्य॥जैसे दूसरेमृतकशरीरकेदर्शनकरणेकरिकै तथास्पर्शकरणेकरिकै यापुरुषोंकूं आपणेशरीरविषे अशुचित्वबुद्धिहोवे है॥तैसेतापरमहंससंन्यासीके मृतकशरीरके दर्शनकरणेतैं तथास्पर्शकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंनैं आपणेविषे अशुचित्वबुद्धि कदाचित्भीनहींकरणी॥किंतु विष्णुकीप्रतिमाकेदर्शनकरणे तैं तथा स्पर्शकरणेतैं जैसे भक्तजनोंकूं आपणेशरीरविषे शुचित्वबुद्धिहोवे है॥ तैसे याअधिकारीपुरुषोंनैंभी तामृतकसंन्यासीकेदर्शनतैं तथास्पर्शतैं आपणेविषेशुचित्वबुद्धिकरणी॥ और जिसनदीआदिकोंकेजलकरिकै तामृतकसंन्यासीकूंस्नानकरायाहै ॥ सोनदीआदिकोंकाजलभी तीर्थरूपहोवे है॥यातैं तानदीआदिकोंकेजलविषे तिनअधिकारीजनों नैं तीर्थबुद्धिकरिकैस्नानकरणा॥परंतु आपणेविषेअशुचित्वबुद्धिकरिकै तिनअधिकारीजनों नैं स्नाननहींकरणा ॥ और तिनअधिकारीजनोंकूं जोकदाचित् स्नानकरणेकीइच्छानहींहोवे॥तो नहींस्नानकरैं॥तास्नानविषे तिनपुरुषोंकीइच्छाहीकारणहै ॥ कोईअशुचिपणा कारणनहींहै ॥काहेतैं तापरमहंससंन्यासीकाशरीर मरणतैंपूर्वतो साक्षात्विष्णुरूप है॥और मरणतैंअनंतर ताविष्णुकीप्रतिमाकेतुल्यहै॥हेशिष्य॥यहवार्त्ताअत्रिऋषिनैंभी कथनकरीहै॥तहांश्लोक॥ द्वेरूपेवासुदेवस्य चलंचाचलमेवच॥चलंसंन्यासिनांरूपमचलंप्रतिमादिकं ॥ १॥देवताप्रतिमांदृष्ट्वा यतिंदृष्ट्वैवदंडिनं ॥ प्रणिपातमकुर्वाणो नरकंरौरवंव्रजेत्॥२॥अर्थ यह ॥ वासुदेवविष्णुके दो रूपहोवे हैं ॥ एकतो चलरूपहोवे है ॥ और दूसरे अचलरूपहोवे है ॥ तहां यहपरमहंससंन्यासीतो ताविष्णुका चलरूपहै॥और शालग्रामादिकप्रतिमा ताविष्णुका अचलरूपहै॥१॥तहां जोपुरुष ताविष्णुकेशालग्रामादिकप्रतिमावोंकूंदेखिकरिकै ताप्रतिमाकूंनमस्कारनहींकरैहैं॥तथादंडीपरमहंससंन्यासीकूंदेखिकरिकै ताकूंनमस्कार नहींकरैहै॥सोपुरुषरौरवनरककूंप्राप्तहोवे है॥२॥हेशिष्य॥

॥ यहवार्त्ता महाभारतविषे व्यासभगवान्नैंभीकहीहै॥तहांश्लोक॥ दुर्वृत्तोवा सुवृत्तोवा मूर्खःपंडितएववा॥ काषायदंडमात्रेण यतिःपूज्योद्वि
जैःसदा ॥ अर्थयह ॥ सोपरमहंससंन्यासी अश्रेष्ठआचारवालाहोवै ॥ अथवा श्रेष्ठआचारवालाहोवै ॥ अथवा मूर्खहोवै अथवा पंडितहोवै॥
परंतु जोसंन्यासी काषायवस्त्रोंकरिकै तथादंडकरिकै युक्तहोवै॥ तासंन्यासीकूं ब्राह्मणादिकोंनैं विष्णुरूपकरिकै पूजनकरणा ॥ हेशिष्य ॥
यहवार्त्ता ॥ अपमानेकृतेतेषां देवाःसर्वेऽपकारिताः ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै नारदमुनिनैंभी कथनकरीहै॥तिनवचनोंकायहअभिप्रायहै॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र लोकपाल वसुआदिकदेवगण यहसंपूर्णदेवता तापरमहंससन्यासीकेशरीरविषेरहे हैं ॥ यातैं जेअधिकारीपुरुष
श्रद्धाभक्तिपूर्वक तापरमहंससंन्यासीका पूजनकरे हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष तिनब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंका पूजनकरे हैं ॥ और जेपुरुष तापर
महंससंन्यासीका निरादरकरैहैं ॥ तेपुरुष तिनब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंका निरादरकरे हैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं तापरमहंससंन्यासी
का कदाचितभी निरादरकरणानहीं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे विष्णुभगवान् आपणेशालग्रामादिकप्रतिमावोंविषे सर्वदा स्थितरहे हैं ॥
तैसे सोविष्णुभगवान् तापरमहंससंन्यासीकेशरीरविषेभी सर्वदास्थितहोवे है ॥ यातैं सोपरमहंससंन्यासी जिसजिसस्थानविषेस्थि
तहोवैहै ॥ तिसतिसस्थानविषे साक्षात् सोविष्णुभगवान्ही स्थितहोवे है॥ यातैं याअधिकारीजनोंनैं तापरमहंससंन्यासीका अवश्यकरिकै
पूजनकरणा ॥ और हेशिष्य ॥ यालोकविषे जेपुरुष तापरमहंससंन्यासीकीस्तुतिकरे हैं अथवा निंदाकरैहैं अथवा अन्नवस्त्रादिकदेवे हैं ॥
तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं सोसंन्यासी विष्णुभगवान्केताईं अर्पणकरैहै ॥ सोविष्णुभगवान् आपही तिनदेणेहारेपुरुषोंकूं यथायोग्य सुखदुःखरू
पफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहचारिवर्णवालेपुरुष जोकदाचित् तासंन्यासीकूं आपणेधर्मतैंभ्रष्टहुआभीदे
खें ॥ तोभी तिनचारिवर्णवालेपुरुषोंनैं तासंन्यासीकूं किसीदंडदेणेकासंकल्प करणानहीं ॥ काहेतैं तिनसंन्यासियोंकेशिक्षाकरणेहारे
तीनहोवै हैं ॥ तहां एकतो गुरु शिक्षाकरणेहाराहोवे है ॥ और दूसरा राजा शिक्षाकरणेहाराहोवै है ॥ और तीसरा यम शिक्षाकरणेहारा
होवे है ॥ तहां जिनसंन्यासियोंकूं आपणेधर्मविषे संशयहोवै है ॥ तिनसंन्यासियोंकूंतो आपणागुरुही शिक्षाकरे है ॥ यहवार्त्ता जमदग्नि

नामाऋषिनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ अथवायद्गुरुर्ब्रूयात्तत्कार्यमविशंकया ॥ निग्रहेऽनुग्रहेचापि गुरुःसर्वत्रकारणं ॥ अर्थयह ॥ यासंन्यासीकेप्रति जोवचन आपणागुरु कथनकरे ॥ तावचनकूं सोसंन्यासी संशयतैंरहितहोइके अंगीकारकरे ॥ काहेतें तासंन्यासीके निग्रहकरणेविषे तथाअनुग्रहकरणेविषे सर्वत्र सोगुरुही कारणहै ॥ १ ॥ और यालोकविषे जेसंन्यासी मद्यपान स्त्रीगमन आदिकपाप कर्मोंकूं प्रसिद्धहीकरे हैं ॥ तिनदुराचारीसंन्यासियोंकूं यहराजा शिक्षाकरैहै ॥ यहवार्ता दक्षप्रजापतिनैंभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ पारिव्राज्यंगृहीत्वातु यःस्वधर्मेनतिष्ठति श्वपदेनांकयित्वातं राजाशीघ्रंप्रवासयेत् ॥ अर्थयह ॥ जोब्राह्मण तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरिके आपणेधर्मविषे स्थितनहींहोवैहै ॥ किंतु मद्यपान स्त्रीगमन आदिकपापकर्मोंकूंही करैहै ॥ तादुराचारीसंन्यासीकूं यहराजा मस्तकविषे श्वानकेपादकाचिह्नकरिके आपणेदेशतैंबाहरनिकासिदेवै ॥ १ ॥ और जेसंन्यासी राजादिकोंतैंगुप्तहोइके तिनपापकर्मोंकूंकरैहैं ॥ तिन दुराचारीसंन्यासियोंकूं यमराजा शिक्षाकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ गुरु राजा यम यातीनोंतैंभिन्न दूसराकोईपुरुष तिनसंन्यासियोंकूं शिक्षाकरणेहाराहैनहीं ॥ याप्रकारकी शास्त्रकेमर्यादाकूं जाणिकरिकै याअधिकारीपुरुषोंनैं आपणेधर्मकीवृद्धिकरणेवासते तथास्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिवासते तासंन्यासीकूं शरीरमनवाणीकरिकै सुखकीहीप्राप्तिकरणी ॥ ताकरिकै तिनअधिकारीजनोंकूं सर्वमनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ यापरमहंससंन्यासीकाशरीर अग्निविषे दाहकरनेयोग्यनहीं है ॥ यातैं जैसे अन्यपुरुषोंकेमरणतैंअनंतर अशौचादिकहोवे हैं ॥ तैसे तापरमहंससंन्यासीकेमरणतैंअनंतर अशौचहोवैनहीं ॥ तथा तिलांजलिदानभीहोवैनहीं ॥ तथा घृतकापानकरणाभी होवैनहीं ॥ तथा अग्निकातपनकरणाभी होवैनहीं ॥ तथा निंबकेपत्रोंकाभक्षणभी होवैनहीं ॥हेशिष्य॥ जेअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक तापरमहंससंन्यासीकेशरीरकूं उठाइलेजावैहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं एकएकपादकेउठावणेकरिकै अश्वमेधयज्ञकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ और विष्णुभगवान्‌की शालग्रामादिकप्रतिमावोंके दर्शनकरणेतैं तथास्पर्शकरणेतैं भक्तजनोंकूं जिसप्रकारकाफल प्राप्तहोवैहै॥तैसाहीफल तिनअधिकारीजनोंकूं तामृतकसंन्यासीके दर्शनकरणेतैं तथास्पर्शकरणेतैं होवैहै॥हेशिष्य ॥जेपुरुष मनकरिकै अथवा वाणीकरिकै प्रेषमंत्रकाउच्चारण

करिके तापरमहंससंन्यासकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिनपरमहंससंन्यासियोंकेशरीरकूं याअधिकारीजनों नैं अग्निविषेदाह कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसैं तासंन्यासीकेशरीरकूं पृथ्वीविषेही पूरणकरणा ॥ तथा तिनपरमहंससंन्यासियोंकेमरणतैंअनंतर अशौच तिलांजलि आदिककर्मभीनहींकरणे ॥ हेशिष्य ॥ जेअधिकारीजन तापरमहंससंन्यासीकेशरीरकूं उठाइलेचले हैं ॥ तथा जेपुरुष तिनोंकेसाथचले हैं॥ तथा जेपुरुष ताभूमिविषे गर्तकूंखोदेहैं ॥ तथा जेपुरुष तासंन्यासीकेशरीरकूं तागर्तविषे पूरणकरेहैं ॥ तेसंपूर्णअधिकारीजन सर्वदा शुद्धहीरहै हैं ॥ हेशिष्य ॥ मरणतैंअनंतर तिनपरमहंससंन्यासियोंविषे यद्यपि अग्निदाहादिकसंस्कार तथापिंडोदकक्रिया होवैनहीं ॥ तथापि तापरमहंससंन्यासीकेमरणतैंअनंतर एकादशदिनविषे तासंन्यासीकेपूर्वगृहस्थआश्रमकेपुत्र पार्वणनामाश्राद्धकूंकरैं॥तहां जैसेविवाहादिककालविषे उत्सवहोवैहै ॥ तैसे उत्सवपूर्वक तेपुत्र ताएकादशदिनविषे विष्णुकेनामउच्चारणपूर्वक ताआपणेपिताकानामउच्चारणकरिके शास्त्रविधिपूर्वक तापार्वणश्राद्धकूंकरे ॥ और तिनपुत्रोंतैंभिन्न जेदूसरेअधिकारीजनहैं ॥ तिनोंनैंतो विष्णुकीप्रसन्नतावासते द्वादशदिनविषे केवल नारायणबलिहीकरणा पार्वणश्राद्धकरणानहीं ॥ और तासंन्यासीकेपुत्रोंनैंतो एकादशदिनविषे पार्वणश्राद्धकरणा ॥ और द्वादशदिनविषे नारायणबलिकरणा ॥ अब बौधायनऋषिउक्तरीतिसैं तानारायणबलिकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ ताद्वादशदिनविषे तेअधिकारीजन याप्रकारसैं तानारायणबलिकूंकरैं ॥ प्रथमतो षोडशउपचारोंकरिके विष्णुकीमहापूजाकरैं ॥ तेषोडशउपचार यहहैं ॥ आवाहन १ आसन २ पाद्य ३ अर्घ्य ४ आचमनीय ५ स्नान ६ वस्त्र ७ उपवीत ८ गंध ९ पुष्प १० धूप ११ दीप १२ अन्न१३ नमस्कार १४ प्रदक्षिणा १५ विसर्जन १६ ॥ तामहापूजातैंअनंतर ताविष्णुदेवकेताईं पायसरूपनैवेद्य अर्पणकरैं ॥ तिसतैंअनंतर तापायसकूं प्रणवपूर्वक भूरादिकतीनव्याहृतियोंकाउच्चारणकरिके अग्निविषेहोमकरैं॥इसप्रकार होमकरिके संस्कारकूंप्राप्तभयाजो विष्णुकानैवेद्यरूपपायसहै ॥ तापायसकूं सर्वब्राह्मणोंकेताईंदेवैं ॥और तिनअधिकारीजनोंनैं तानारायणबलिविषे त्रयोदशपुरुषोंकूं प्रधानकरिके पूजणा ॥ तापूजणेकायहक्रमहै॥तानारायणबलिकर्त्तापुरुषनैं द्वादशसंन्यासियोंकूं निमंत्रणदेकरिके आपणेगृहविषेलेआवणा॥और जोकदा

चित् द्वादशसंन्यासी नहींप्राप्तहोवेंहैं ॥ तो श्रेष्ठआचारविषे वर्त्तणेहारे गृहस्थब्राह्मणोंकूं निमंत्रणदेकरिके आपणेगृहविषेलेआवणा ॥ और केशवायनमः ॥ इत्यादिकद्वादशमंत्रोंकरिके तिनद्वादशसंन्यासियोंका अथवा श्रेष्ठब्राह्मणोंका गंधपुष्पादिकोंकरिके पूजनकरणा ॥ तिस तैंअनंतर प्रीतिपूर्वक तिनोंकू भोजनकराणा ॥ तहां तेद्वादश जेसंन्यासीहोवें ॥ तो तिनसंन्यासियोंकेताईं नानाप्रकारकेवस्त्रदेणे ॥ और तेद्वादश जोगृहस्थब्राह्मणहोवें ॥ तो तिनब्राह्मणोंकेताईं दक्षिणासहित वस्त्रदेणे ॥ हेशिष्य ॥ जोकदाचित् तिनद्वादशसंन्यासियोंकी प्राप्तीनहींहोवे ॥ तोभी तात्रयोदशसंख्याकेपूर्णकरणेवासते तथापूजाकरणेवासते एकविद्वान्संन्यासीकूंतो अवश्यकरिके लेआवणा ॥ और तात्रयोदशसंन्यासीकीतो पुरुषसूक्तविषेस्थित षोडशऋचारूपमंत्रोंकरिके तिनषोडशउपचारोंकरिकेपूजाकरणी ॥ औरजोकदाचित् सोएकपरमहंससंन्यासीभी नहींप्राप्तहोवे ॥ तो तिसत्रयोदशस्थानविषेकिसीविद्वान्धर्मात्माब्राह्मणकूंस्थापनकारिके ताके विषे विष्णुबुद्धिकारिके तिनषोडशऋचारूपमंत्रोंकरिके ताषोडशउपचारोंकरिके पूजनकरणा ॥ और जिसस्थानविषे त्रयोदशसंन्यासी अथवात्रयोदशब्राह्मण भोजनकरे हैं ॥ ॥ तिसस्थानके समीपदेशविषे दर्भोंकूं बिछाइके जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिभूतप्राणियोंकेताईं नानाप्रकारकेमधुरअन्नकाबलिदेणा॥तहां तिनचारिभूतप्राणियोंविषे एकएकभूतप्राणीकानामउच्चारणकरिकेयथाक्रमतैं प्रणवपूर्वक॥भूःस्वाहा भुवःस्वाहा स्वःस्वाहा भूर्भुवःस्वःस्वाहा॥याचारिमंत्रोंकरिके बलिदानदेणा॥हेशिष्य॥तानारायणबलिकर्त्तापुरुषकेगृहविषे जोकदाचित् धनसंपत्ति नहींहोवे ॥ तो अन्नवस्त्रमात्रकीप्राप्तिकरिके संतोषकूंप्राप्तहोणेहारेजेसंन्यासीहैं ॥ तिनत्रयोदशसंन्यासियोंकूंहीं तहां भोजनकरावणा ॥ और तानारायणबलिकर्त्तापुरुषकेगृहविषे जोकदाचित् धनसंपत्ति बहुतहोवे ॥ तो वस्त्रभूषणादिकपदार्थोंकेग्रहणकरणे योग्य जोश्रेष्ठब्राह्मणहैं॥तिनब्राह्मणोंकूंही तहां भोजनकरावणा॥परन्तु ताधनीपुरुषनैंभी एकसंन्यासीकूंतो अवश्यकरिके भोजनकरावणा॥ हेशिष्य॥दानादिककर्मोंकाविधानकरणेहारा जोशास्त्रहै॥सोशास्त्र ताकर्मकर्त्तापुरुषकीशक्तिकेअनुसारही तिनकर्मोंका विधानकरैहै॥यातैं तानारायणबलिविषे पूर्वकथनकरेजेपक्ष तिनपक्षोंविषे एकपक्षकानियमहम कथनकरतेनहीं॥किंतु तानारायणबलिकर्त्तापुरुषकूं जैसीशक्ति

होवे ॥ ताशक्तिपरिमाण तिनत्रयोदशसंन्यासियोंकूं अथवा त्रयोदशब्राह्मणोंकूं भोजनकराइके वस्त्रादिकपदार्थ दानदेणे ॥ तिसतें अनंतर यथाशक्तिपरिमाण दूसरेअनेकब्राह्मणोंकूं नानाप्रकारकेमधुरअन्नोंका भोजनकरावणा ॥ तथा तिनब्राह्मणोंकेप्रति यथाशक्तिपरिमाण दक्षिणादेणो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जेअधिकारीजन तासंन्यासीकेमरणतेंअनंतर नारायणबलिकूंकरे हैं ॥ तेअधिकारीजन इसलोकविषेतो मनवांछितपदार्थोंकूंप्राप्तहोवे हे॥ओर मरणतेंअनंतर तेअधिकारीजन आपणेसर्वपितरोंसहित विष्णुलोककूंप्राप्तहोवे हैं॥यातें याअधिकारीजनोंनें तासंन्यासीकेमरणतेंअनंतर तानारायणबलिकूं अवश्यकरिकेकरणा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार आतुरसंन्यासकेप्रसंगतें तापरमहंससंन्यासीकेमरणतेंउत्तर जोकार्य करणेयोग्यहोवे हे ॥ सो हमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्या॥अब पूर्वलेप्रसंगकूं तूं श्रवणकर॥हेशिष्य ॥ तीनदंडोंकूंधारणकरणेहारा तथाशिखायज्ञोपवीतकूंधारणकरणेहारा तथाआपणेपुत्रकेगृहविषेभिक्षाकरणेहारा जोकुटीचकसंन्यासी है ॥ ओर तीनदंडोंकूंधारणकरणेहारा तथाशिखायज्ञोपवीतकूंधारणकरणेहारा तथासप्तगृहों तें भिक्षामांगिकेभोजनकरणेहारा तथा देशोंविषे विचरणेहारा जोबहुदकसंन्यासीहे॥ओर एकदंडकूंधारणकरणेहारा तथा शिखारहितयज्ञोपवीतकूंधारणकरणेहारा तथाएकवार अन्नकेअष्टग्रासोंकूंभोजनकरणेहारा जोहंससंन्यासीहे ॥ते कुटीचक बहूदक हंस संन्यासीभी जोकदाचित् तीव्रवैराग्यकोप्राप्तिकरिके तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकीइच्छाकरें ॥ तो तिनकुटीचकादिक संन्यासियों नें तेअष्टश्राद्ध तथाहोमादिकर्म करणेनहीं॥ किंतु जैसे आतुरपुरुष केवलप्रैषमंत्रकाउच्चारणकरिकेही तापरमहंससंन्यासकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तैसे तेकुटीचकादिकसंन्यासीभी ताप्रैषमंत्रकाउच्चारणकरिकेही तापरमहंससंन्यासकूंधारणकरें ॥ अब तिनकुटीचकादिकसंन्यासियोंकूं ताप्रैषमंत्रकेउच्चारणकरणेकोविधिका निरूपणकऱ्याहे॥ हेशिष्य ॥ ते कुटीचकादिकसंन्यासी प्रथमआपणेहस्तकीअंजलिकूंजलसेंपूर्णकरिके भूरादिकतीनव्याहृतियोंविषेएकएकव्याहृतिकूं प्रणवपूर्वक उच्चारणकरिके अभयं यापदतेंलेके स्वाहा यापदपर्यंत समग्रमंत्रकूं मंद मध्यम उत्तम यातीनस्वरोंकरिके उच्चारणकरे ॥ ओर आपणेयज्ञोपवीतकूं उतारिके तथाआपणेशिखाकूंहस्तसेंतोडिके तिनदोनोंकूं आपणेहस्तकीअंजलिविषेस्थितकरिके प्रणवपूर्वक ॥ भूस्वाहा ॥ यामंत्रकरिके

ताशिखायज्ञोपवीतकूं जलविषेपरित्यागकरैं ॥ अथवा भूमिविषेपरित्यागकरैं॥तहांश्रुति॥ उपवीतं भूमौवाऽप्सुवाविसृजेत् ॥ अर्थयह॥ सो संन्यासकर्त्तापुरुष आपणेयज्ञोपवीतकूं तथाशिखाकूं पूर्वउक्तमंत्रकरिकै भूमिविषेपरित्यागकरै॥ अथवा जलविषे परित्यागकरै ॥ १ ॥तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष विरक्तहोइकै तथानग्नहोइकै उत्तरदिशाकीतरफ अथवा पूर्वदिशाकीतरफजावै ॥ और तासंन्यासकर्त्तापुरुषकूं जोकदाचित् आत्माकेजानणेकीइच्छाहोवै॥तो श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकूंआश्रयणकरै॥हेशिष्य॥ कुटीचक बहूदक हंस यहतीनप्रकारके संन्यासी दंड१कमंडलु२शिक्य ३ भिक्षापात्र ४ पवित्र ५ यापंचमुद्रावोंकूं सर्वदाधारणकरै हैं ॥ जिनपात्रविषे भिक्षाअन्न माँगिलेआइये तापात्रकानाम शिक्यहै॥ और जलकेशोधनकरणेवासते जोएकवितस्तिपरिमाणवस्त्रहै ताकानाम पवित्रहै॥तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकालविषे तिनकमंडलुआदिकचारमुद्रावोंसहित एकदंडकूंतो हंससंन्यासी परित्यागकरै ॥ और तिनचारमुद्रावोंसहित तीनदंडोंकूं कुटीचक बहूदकसंन्यासी परित्यागकरैं॥हेशिष्यकुटीचकबहूदक हंस यातीनप्रकारकेसंन्यासतैंउत्तर तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेविषे जोशिखायज्ञोपवीतादिकोंकेत्यागकरणेकीविधि हमनैं तुमारेप्रति कथनकरीहै ॥ तिसीप्रकारकीविधि ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ यातीनआश्रमोंतैंउत्तर तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेविषेभी जानिलेणी॥हेशिष्य॥हंससंन्यासीकूंयद्यपि शिखाहोवैनहीं॥तथापि यज्ञोपवीततौहंससंन्यासीकूंहोवैहै॥यातैं सोहंससंन्यासी तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकालविषे तायज्ञोपवीतकूं पूर्वउक्तमंत्रकरिकै जलविषे अथवा पृथिवीविषे परित्यागकरै॥ तथा पूर्वआश्रमविषेग्रहणकरेजे दंड कमंडलुआदिकहैं ॥ तिनोंकाभी परित्यागकरै ॥ इतनैंकरिकै ब्राह्मणोंके संन्यासग्रहणकरणेकाप्रकार वर्णनकर्‍या ॥ अब क्षत्रिय वैश्यके संन्यासग्रहणकरणेकाप्रकार जो जाबालादिकउपनिषदोंविषेकथनकर्‍याहै ताका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं जिसक्षत्रियकूं तथाजिसवैश्यकूं तीव्रवैराग्यकोप्राप्तिहोवै ॥ सोक्षत्रिय तथावैश्य जोकदाचित् संन्यासआश्रमकेधारणकरणेकीइच्छाकरै ॥ तो सोक्षत्रिय तथावैश्य पूर्वउक्तरीतिसैं अष्टश्राद्धहोमादिकसर्वकर्मोंकूंकरिकै शिखासहितयज्ञोपवीतकूं जलविषे अथवा भूमिविषे परित्यागकरै ॥ तिसतैंअनंतर नग्नहोइकै उत्तरदिशाविषे अथवा पूर्वदिशाविषे चल्या

जावे ॥ परंतु जैसेब्राह्मणसंन्यासी ताउत्तरदिशातैंफिरआइके दंडादिकचिह्नोंकूंधारणकरैहै ॥ तैसे सोक्षत्रियवैश्यसंन्यासी तिसदंडादिक चिह्नकूंधारणकरैनहीं ॥ और सोक्षत्रियवैश्यसंन्यासी जड उन्मत्त पिशाचकीन्याई नग्नहोइकेविचरे ॥ और अंतरसें विद्वान्हुआभी बाहर सें अविद्वान्कीन्याई प्रतीतहोवे ॥ हेशिष्य ॥ यद्यपि तापरमहंससंन्यासविषे आपणेस्वरूपकेछपावणेवासते नानाप्रकारकेचिह्नोंकाधारण करणा संभवे है ॥ तथापि विष्णुसंबंधी जोदंडरूपचिह्नहै ॥ तावैष्णवदंडरूपचिह्नकेधारणकरणेविषे एकब्राह्मणकूंही अधिकारहै ॥ क्षत्रिय वैश्यकूं तादंडकेग्रहणकरणेका अधिकारहैनहीं ॥ तहांषट्ग्रंथिवालेदंडकानाम सुदर्शनहै ॥ और अष्टग्रंथिवालेदंडकानाम वासुदेवहै ॥ या कारणतें तादंडकूं वैष्णवदंड यानामकरिकेकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ सोक्षत्रियसंन्यासी तथावैश्यसंन्यासी पूर्वउक्तरीतिसें शिखायज्ञोपवी तका परित्यागकरिके तथानग्नहोइके पुनरावृत्तितैंरहितहुआ उत्तरदिशाविषे अथवा पूर्वदिशाविषे चल्याजावे ॥ यहजोपूर्व हमनें तुमारे प्रति कथनकऱ्याहै ॥ याकेविषे यहकारणहै संन्यासकर्त्ताब्राह्मण जभीशिखायज्ञोपवीतकापरित्यागकरिके तथानग्नहोइके ताउत्तरदिशाकी तरफ जावैहै ॥ तभी पूर्वउक्तश्राद्धादिककर्मोंकूंकरावणेहाराआचार्यब्राह्मण तासंन्यासकर्त्ताब्राह्मणकेसमीपजाइके दंडवत्प्रणामकरे है ॥ तथा प्रार्थनाकरिके कौपीनादिकवस्त्र पहिरावैहै ॥तथा तासंन्यासीकूं ताउत्तरदिशातैंफिराइके ब्रह्मवेत्तासंन्यासीगुरुकेसमीप लेआवे है ॥सो आचार्यब्राह्मणको दंडवत्प्रणामपूर्वक प्रार्थना ताक्षत्रियवैश्यके आगे संभवैनहीं ॥ और आचार्यब्राह्मणकीप्रार्थनातैं विना सोसंन्यासकर्त्ता पुरुष कौपीनादिकवस्त्रोंकूं धारणकरैनहीं ॥ तथा ताउत्तरदिशातैंपीछेभी फिरैनहीं ॥ याकारणतैं तिनक्षत्रियवैश्यसंन्यासियोंकूं ताउ त्तरादिकदिशातैं पीछेफिरणा तथा कौपीनादिकवस्त्रोंकूंधारणकरणा तथादंडरूपचिह्नकूंधारणकरणा यहतीनोंसंभवैनहीं ॥यातैं जैसे ऋष भदेवनें तथापंचपांडवोंनें वीरमार्गकरिकेआपणेशरीरका परित्यागकऱ्याहै ॥ तैसे सोक्षत्रियतथावैश्यभी तासंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिके तावीरमार्गकरिके आपणेशरीरका परित्यागकरे ॥ हेशिष्य ॥ सिंहादिकोंकेशब्द तैं तथाजलअग्निआदिकों तैं तथाव्याघ्रादिकजीवों तैं भयतैं रहितहोइके शरीरकेनाशपर्यंत जोभूमिविषेविचरणाहै याकानाम वीरमार्ग है ॥ हेशिष्य ॥ तेब्रह्मवेत्ता क्षत्रियसंन्यासी तथावैश्य

संन्यासी आपणेस्थूलशरीरकूं दुःखरूपजाणिके किसीजलविषेपाइकेनाशकरैं ॥ अथवाकिसीअग्निविषेपाइकेनाशकरैं ॥ अथवा अन्नजलका परित्यागकरिके नाशकरैं ॥ अथवा किसीएकदिशाविषे निरंतर गमनकरिके नाशकरैं ॥ इतनैंकरिके क्षत्रियवैश्यके संन्यासकाप्रकार वर्णनकऱ्या ॥ अब शूद्र स्त्री आदिकोंकेसंन्यासकाप्रकार वर्णनकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जिनशूद्रोंकूं तथाजिनस्त्रीयोंकूं तथाजिनव र्णसंकरोंकूं पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं जभी यासंसारतैंतीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तभी तेशूद्रादिकपूर्वउक्तअष्टश्राद्धों तैं आदिलेके प्रैषमंत्रपर्यंत कर्मोंकूं कदाचित्भी नहींकरैं ॥ किंतु तेशूद्रादिक आपणेमनविषे तासंन्यासकासंकल्पकरिके ताक्षत्रियवैश्यसंन्यासी कीन्याईं तावीरमार्गकरिके आपणेशरीरका परित्यागकरैं ॥ यावीरसंन्यासविषे सर्वकाअधिकारहै ॥ यावीरसंन्यासकूंहीं अलिंगसंन्यास कहैहैं ॥इतनैंकरिके क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री आदिकोंकेसंन्यासका वर्णनकऱ्या ॥ अब पुनःपूर्वलेप्रसंगकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेशिष्य ॥ जभी सोब्राह्मणसंन्यासी शिखायज्ञोपवीतकापरित्यागकरिके तथानग्नहोइके उत्तरदिशाकीतरफजावै है ॥ तभी सोश्राद्धादिककर्मोंकेकरावणे हारा आचार्यब्राह्मण ताकेसमीपजाइके ताब्राह्मणसंन्यासीकेताईं दंडवत्प्रणामकरैहै ॥ तथा आपणेदोनोंहस्तोंकूं तासंन्यासीकेदोनों पादऊपरराखिके सोआचार्यब्राह्मण तासंन्यासीकेप्रति याप्रकारकीप्रार्थनाकरै है ॥ हेब्राह्मण ॥ यालोकविषे जोब्राह्मण वेदवेत्ताहोवै है ॥ ताब्राह्मणकेशरीरविषे संपूर्णदेवता निवासकरैहैं ॥ याकारणतैं सोवेदवेत्ताब्राह्मण ईश्वररूपहै ॥ ऐसावेदवेत्ताब्राह्मण तूंभीहै ॥ यातैं याउत्तमब्राह्मणशरीरकूं व्यर्थहीपरित्यागकरणा तुमारेकूं उचित्नहीं है ॥ और हेब्राह्मण ॥ जेअधिकारीजन तुमारेदर्शनकरिके तथातु मारेवचनोंकेश्रवणकरिके कृतार्थहोवैंगे ॥ तिनअधिकारीजनोंकाही यहतुमाराशरीरहै ॥ तुमारा यहशरीरनहीं है ॥ यातैं जैसे यालोकविषे बुद्धिमान्पुरुष परायेपदार्थकानाश करैनहीं॥तैसे तेबुद्धिमान्पुरुषकूंभीयापरायेशरीरकानाशकरणाउचितनहीं है॥किंतुयादुर्लभअधिकारी शरीरकूंपाइके तुम ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरिके तथामनननिदिध्यासनकरिके आत्मसाक्षात्कारकूंसंपादनकरो ॥ताआ त्मसाक्षात्कारकीप्राप्तितैंअनंतर जोतुमारीइच्छाहोवै सोकरो॥हेब्राह्मण॥जिसब्रह्मवेत्तागुरुकी तुमनैं बहुतकालपर्यंतसेवाकरीहै॥तातुमारेगुरु

नैं हमारेप्रति यहआज्ञाकरीहै ॥ जो याहमारेशिष्यकूं अनेकउपायोंकरिकैंभी पीछेफिराइलेआवो ॥ यातैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते तुमं आपणेगुरुकीआज्ञाकूंहीं पालनकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोआचार्यब्राह्मण जभी तासंन्यासीकेप्रति नानाप्रकारकीप्रार्थनाकरे ॥ तथा इहांखडेरहोइहांखड़ेरहोयाप्रकारकावचनउच्चारणकरे॥तभीसोसंन्यासी ताआचार्यब्राह्मणकीप्रार्थनाकूंअंगीकारकरिकैतहांस्थितहोवै॥तिसतैं अनंतर सोआचार्यब्राह्मण तासंन्यासीकेताई वेणुकादंडहस्तविषेदेवे ॥ तथा कटिविषेबांधणेवासते सूत्रकादोरादेवे ॥ तथा कौपीनादिक काषायवस्त्रदेवे ॥ तहां सोसंन्यासी ॥ इंद्रस्यवज्रोसि ॥ इत्यादिकमंत्रकरिकैंतो ता दंडकूंग्रहणकरे ॥ और प्रणवमंत्रकरिकै तिनकौपीनादिकवस्त्रोंकूंग्रहणकरे ॥ इसप्रकार ताआचार्यब्राह्मणकीप्रार्थनातैं दंडकमंडलुवस्त्रादिकोंकूंग्रहणकरिकै सोसंन्यासी ताउत्तरदिशातैंफिरआइके आपणेब्रह्मवेत्तासंन्यासीगुरुकूं दंडवत्प्रणामकरे ॥ और ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते ताब्रह्मवेत्तागुरुकी शरीरमनवाणीकरिकै सेवाकरे ॥ इतनैंग्रंथकरिकै श्रुतिस्मृतिकेअनुसार तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥ अब जाबालादिकउपनिषदोंविषे कथनकरेजे परमहंससंन्यासियोंकेधर्म हैं तिनधर्मोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी तावेणुकेदंडकूंधारणकरे ॥ तथा शिखायज्ञोपवीततैंरहितहोवे ॥ तथा प्रसन्नमुखहोवे ॥ और सोपरमहंससंन्यासी दोकौपीनोंकूंग्रहणकरे ॥ तथा शीतकीनिवृत्तिवासते एककंथाकूंग्रहणकरे ॥ और सोसंन्यासी जभी ग्रामविषे भिक्षामांगणेवासतेजावे ॥ तभी ताकौपीनकेऊपरबांधणेवासते कटिवस्त्रराखे ॥ सोकटिवस्त्र जीर्णहोवे ॥ अथवा नवीनहोवे ॥ और शौचादिकक्रियाकेकरणेवासते सोसंन्यासी आपणेहस्तविषे तुंबिकापात्रराखे ॥ अथवा काष्ठकापात्रराखे ॥ अथवा वेणुकापात्रराखे ॥ अथवा मृत्तिकाकापात्रराखे ॥ याचारप्रकारकेपात्रोंविषे जोपात्र प्राप्त होवे तापात्रकूंराखे ॥ और सोपरमहंससंन्यासी प्रयोजनतैंविना आपणेहस्तपादादिकअंगोंकूं चलायमानकरेनहीं ॥ और सोसंन्यासी वाक्भेदादिकोंविषेभी चपलहोवेनहीं॥तावाक्भेदकायहस्वरूपहै॥तिसीअर्थकेजनावणेवासते किसीपुरुषनैं जोवचनकह्या॥तावचनकूंकिसी दूसरेअर्थविषेजोडिके तापुरुषकूं दोषदेणा याकानाम वाक्भेदहै ॥ जैसे किसीपुरुषनैं यहदेवदत्तनामापुरुष नवकंबलवालाहै याप्रकारका

वचनकह्या॥तावचनविषेस्थितजो नव यहशब्दहै तानवशब्दकेदोअर्थहोवे हैं॥एकतो नवीन यहअर्थहोवे है॥और दूसरा नवत्वसंख्यावाला यहअर्थहोवे है॥तहां तावचनकहणेहारेपुरुषकातो यहदेवदत्त नवीनकंबलवालाहै याप्रथमअर्थविषेही तात्पर्य है॥परन्तु तानवशब्दका नवत्वसंख्यावालेविषे तात्पर्यकल्पनाकरिके तावचनकहणेहारेपुरुषकेप्रति याप्रकारकादोषदेणा ॥ जोयादरिद्रीदेवदत्तकूं एककंबलकीप्राप्ति होणीभीदुर्लभहै ॥ तो यादेवदत्तकेपास नवकंबल कहांसेहोवेंगे ॥ याकानाम वाक्छल है ॥ यावाक्छलकूंहीं नैयायिक छलयानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ याप्रकारकेवाक्छलविषेभी सोसंन्यासी चपलहोवैनहीं ॥ और सोसंन्यासी जभी किसीमार्गविषेचाले ॥ तभी आपणेशरीरतैंआगे चारिहस्तपरिमाणभूमिकूंदेखताजावे ॥ जिसकरिके कोईजंतु पादकेनीचेनहींआइजावे ॥ और आपणेआसनविषेस्थितहुआ सोसंन्यासी आपणेनासिकाकेअग्रभागकूंदेखतारहै ॥ अथवा वेदांतकेपुस्तककूंदेखतारहै ॥ जाकरिके चित्त बहिर्मुखनहींहोवे ॥ और सोपरमहंससंन्यासी इतनेंस्थानोंविषे निवासकरे ॥ तहां सोपरमहंससंन्यासी किसीशून्यगृहविषे निवासकरे ॥ अथवा किसीदेवताकेमंदिरविषे निवासकरे ॥ अथवा किसीपृथिवीकीगर्त्तविषे निवासकरे ॥ अथवा किसीपलालादिकतृणोंकेसमुदायविषे निवासकरे॥अथवा किसीवृक्षकेमूलविषे निवासकरे ॥ अथवा जिसस्थानविषे कुलाल मृत्तिकाकेपात्र बणावे है ॥ ताकुलालकीशालाविषे निवासकरे ॥ अथवा अग्निहोत्रीब्राह्मणके अग्निकीशालाविषे निवासकरे ॥अथवा किसीनदीकेपुलविषेनिवासकरे ॥ अथवा किसीपर्वतकीगुफाविषे निवासकरे ॥ अथवा किसीवृक्षकेकोटरविषे निवासकरे ॥ अथवा किसीसमानभूमिविषेनिवासकरे ॥अथवा किसीबगीचेविषेनिवासकरे ॥ इत्यादिकएकांतस्थानोंविषे निवासकरिके सोपरमहंससंन्यासी सर्वदाआपणेशरीरकूं तथाअंतःकरणकूं शुद्धराखे॥ और सोसंन्यासी भिक्षामांगणेवास्तेग्रामविषेजावे ॥ तहांआपणेस्थानतैंनिकसिकें ताग्रामविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिके जेगृहआवें॥ तिनगृहोंतैं भिक्षाअन्नकूंग्रहणकरे ॥ और सोसंन्यासी आपणेउदरकूंहीं पात्रकरिके अथवा आपणेहस्तोंकूंहीं पात्रकरिके ताभिक्षाअन्नकूंग्रहणकरे ॥ इहां जोसंन्यासी आपणेहस्तविषे भिक्षाअन्नकूंग्रहण करता नहीं ॥ किंतु दूसराकोईभक्तजन ताकेमुखविषेअन्नदेवे है ॥ तासंन्यासीका उदरहीपात्रहै ॥ और जोसंन्यासी आपणेहस्तविषे

भिक्षाअन्नग्रहणकरिकै भोजनकरे है ॥ तासंन्यासीका हस्तहीपात्रहै॥और जोसंन्यासी आपणेउदरकूं तथाहस्तोंकूं पात्रकरणेविषेसमर्थनहीं होवे ॥ सोसंन्यासी किसीवस्त्रादिकोंकू पात्रकरिकै ताकेविषे भिक्षाअन्नकूंग्रहणकरे ॥ और ताभिक्षाअन्नकूं औषधिकीन्याईं ग्रहणकरे ॥ तात्पर्ययह जैसे रोगीपुरुष आपणेरोगकीनिवृत्तिवासते औषधिकूंभक्षणकरे है ॥ कोईस्वादकेवासते औषधिकाभक्षणकरेनहीं ॥ तैसे सो संन्यासीभी केवल क्षुधाकीनिवृत्तिवासते ताभिक्षाअन्नकूंभक्षणकरे ॥ किसीस्वादवासते अथवा शरीरकेपुष्टकरणेवासते ताभिक्षाअन्नकूं भोजनकरेनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ औषधवदशनमाचरेत् ॥ और सोपरमहंससंन्यासी किसीपदार्थकी निंदाभीनहींकरे ॥ तथा किसीपदार्थकी स्तुतिभीनहींकरे ॥ और भिक्षाअन्नकेप्राप्तहुए अथवा नहींप्राप्तहुए सोसंन्यासी एकरसरहे ॥ और आदरपूर्वक नानाप्रकारकेरसयुक्त भिक्षाअन्नकूंप्राप्तहोइकै सोसंन्यासी प्रसन्ननहींहोवे ॥ और निरादरपूर्वक रसादिकगुणोंतेंरहित भिक्षाअन्नकूंप्राप्तहोइकै सोसंन्यासी ग्लानिकूंनहीं प्राप्तहोवे ॥ तथा सुख दुःख शीत उष्ण इत्यादिकद्वंद्वधर्मोंविषे समानरहे ॥ तथा उपकारकरणेहारेभक्तजनोंविषे तथा अपकारकरणेहारे दुष्टजनोंविषे समानरहे ॥ और सोपरमहंससंन्यासी इतनेंपरिमाणअन्नकाभोजनकरे ॥ जिसकरिकै यहशरीर अत्यंतस्थूलभीनहींहोवे ॥ तथा अत्यंतकृशभीनहींहोवे॥और सोपरमहंससंन्यासी दोमासतेंअनंतर दोऋतुकोंसंधिविषे पूर्णमासीकेदिनविषे केशश्मश्रुनखोंका मुंडन करावे ॥ परंतु कक्षविषेस्थितवालोंका तथाउपस्थविषेस्थितवालोंका मुंडनकरावेनहीं ॥ और वर्षाकालविषे सोसंन्यासी केशोंकामुंडनकरावे अथवा नहींकरावे ॥ यहदोनोंपक्ष शास्त्रविषेकहेहैं ॥ और सोपरमहंससंन्यासी आषाढमासकीपौर्णमासीविषे व्यासपूजाकूंकरे ॥ ताव्यासपूजाविषे व्यासपंचक १ कृष्णपंचक २ आचार्यपंचक ३ गुरुपंचक ४ आत्मपंचक ५ यापंचपंचकोंकीपूजाकरे ॥ तहां पूर्वादिक चारिदिशावोंविषे यथाक्रमतेंस्थितजे वैशंपायन सुमंत जैमिनि पैल यहचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषेस्थितजो व्यासभगवान्है ॥ यापांचोंकानाम व्यासपंचकहै ॥ १ ॥ और पूर्वादिकचारिदिशावोंविषे यथाक्रमतेंस्थितजे वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध यहचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषेस्थितजो कृष्णभगवान्है ॥ यापांचोंकानाम कृष्णपंचकहै ॥ २ और पूर्वादिकचारि

दिशावोंविषे यथाक्रमतैंस्थितजे विश्वरूप पद्मनाभ हस्तामलक तोटक यहचारि हैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषे स्थितजो शंकराचार्य है ॥ यापांचोंकानाम आचार्यपंचकहे ॥ ३ ॥ और पूर्वादिकचारिदिशावोंविषे यथाक्रम तैं स्थितजे परमगुरु परमेष्ठिगुरु गोविंदपाद गौडपाद यहचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषेस्थितजो आपणागुरुहे ॥ तिनपांचोंकानाम गुरुपंचकहे ॥ ४ ॥ और पूर्वादिकचारिदिशावोंविषे यथाक्रमतैंस्थितजे अंतरात्मा ज्ञानात्मा परात्मा आनंदात्मा यहचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषेस्थितजो आत्मा है ॥ यापांचोंकानाम आत्मपंचकहे ॥ ५ ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी तापूजामंडलविषे याप्रकार तिनपंचकोंकास्थापनकरिके तिनोंका पूजनकरे॥तहां तापूजामंडलकेमध्यविषेतो कृष्णपंचककास्थापनकरे॥और ताकृष्ण पंचककी पूर्वदिशाविषे आत्मपंचककूं स्थापनकरे॥ और ताकृष्णपंचककी दक्षिणदिशाविषे आचार्यपंचककूं स्थापनकरे ॥ और ताकृष्णपंचककी पश्चिमदिशाविषे गुरुपंचककूं स्थापनकरे ॥ और ताकृष्णपंचककी उत्तरदिशाविषे व्यासपंचककूं स्थापन करे ॥ औरताकृष्णपंचकके पूर्वदक्षिणदिशाकेमध्यविषे स्थितजोअग्निकोणहे ॥ ताअग्निकोणविषे गणपतिकास्थापनकरे ॥ और दक्षिणपश्चिमदिशाकेमध्यविषेस्थित जोनैर्ऋतकोणहे ॥ तानैर्ऋतकोणविषे दुर्गादेवीकूं स्थापनकरे ॥ और पश्चिमउत्तरदिशाके मध्यविषेस्थित जोवायुकोणहे ॥ तावायुकोणविषे सरस्वतीकूं स्थापनकरे ॥ और उत्तरपूर्वदिशाकेमध्यविषेस्थित जोईशानकोणहे ॥ ताईशानकोणविषे क्षेत्रपालकूं स्थापनकरे ॥ और ताकृष्णपंचककेसर्वओरतैं सनंदन सनक सनत्कुमार सनत्सुजात याचारोंकूं स्थापनकरे ॥ और ताकृष्णपंचककेअग्रभागविषे नरनारायण यादोनोंकूं स्थापनकरे ॥ और ताकृष्णपंचककेपृष्ठदेशविषे ब्रह्मा विष्णु महेश्वर यातीनोंकूं स्थापनकरे ॥ और तानरनारायणकेअग्रभागविषे नारदमुनिकूं स्थापनकरे ॥ इसप्रकार दूसरे भी मुनियोंकूं तथादिकपालादिकोंकूं यथायोग्य आपणेआपणेस्थानोंविषे स्थापनकरे ॥ तिनसंपूर्णोंविषे कृष्णभगवान्कातो मूलमंत्रकरिकेपूजनकरे ॥ और दूसरेकातो प्रणवपूर्वक ॥ गुरवेनमःआत्मनेनमः ॥इत्यादिकनाममंत्रोंकरिके पूजनकरे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार आषाढमासकीपौर्णमासीविषे व्यासादिकसर्वदेवतावोंकापूजनकरिके सोपरमहंससंन्यासी तास्थानविषे दोमास

रहणेकासंकल्पकरिके अथवा चारिमासरहणेकासंकल्पकरिके तहां निवासकरे ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी ताचातुर्मासविषेजोएक स्थानविषेनिवासकरेहे ॥ताकेविषे यहकारणहे ॥ ताचातुर्मासकालविषे यहभूमि अनेककोटिस्थावरजंगमजीवोंकरिके पूर्णरहे हे॥ताचातुर्मासविषे चलणेकरिके तिनजीवोंकीहिंसा अवश्यकरिकेहोवेहे ॥ यातें तिनजीवोंकीरक्षाकरणेवासते तथाशास्त्रकेआज्ञाकूंपालनकरणेवासते सोसंन्यासी तावर्षाकालविषे एकस्थानविषेहीनिवासकरेहे॥अब तासंन्यासीविषे यमनियमादिकसाधनोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी स्थावरजंगमशरीरोंविषे किसीभीशरीरकी हिंसाकरेनहीं ॥ तथा असत्यवचनकूंभी उच्चारणकरेनहीं ॥ तथा किसी जीवके तृणकोभीचोरी करेनहीं ॥ तथास्त्रियोंविषे विषयभोगकीइच्छा करेनहीं ॥ तथा विषयभोगकेसाधनोंकूंभी एकठाकरेनहीं ॥ तथाकिसीदंभयुक्तचेष्टाकूंभी करेनहीं ॥तथा किसीव्यर्थवचनकूंभी उच्चारणकरेनहीं ॥और सोपरमहंससंन्यासी सर्वदा महादेवविष्णुकेस्मरणकीर्त्तनादिकोंकूंकरे ॥ तथा प्रातःकालादिकोंविषे प्राणायामकूंकरे ॥ तथा निरंतर वेदांतशास्त्रकाविचारकरे तथा त्रिकालस्नानकरे ॥ तथा आपणागुरु जिसप्रकारकीआज्ञाकरे ॥ तिसप्रकार गुरुकीभक्तिकरे ॥ और वर्षाकालतेंभिन्नकालविषे एकस्थानविषेनहींरहे ॥ और तावर्षाकालविषेभी जिसदेशविषेरहे ॥ तिसकेपदार्थोंविषे रागद्वेषतेंरहितहोवे ॥ तथा प्रियपदार्थोंकीप्राप्तितें हर्षकूंनहींप्राप्तहोवे ॥ तथा अप्रियपदार्थोंकीप्राप्तितें द्वेषकूंनहींप्राप्तहोवे ॥ और शत्रुमित्रविषे तथामानअपमानविषे समानरहे ॥ तथा सर्वभूतप्राणियोंकूं आपणेआत्माकीन्याईजाणिके शरीरमनवाणीकरिकेतिनभूत प्राणियोंकूं सुखकीहीप्राप्तिकरे ॥ किसीभीप्राणीकूं दुःखकीप्राप्तिकरेनहीं ॥ और सुवर्णादिकपदार्थोंकूं तथासुंदरस्त्रियोंकूं काकविष्ठाकेसमान तुच्छजाणिके दूरतें तिनोंकापरित्यागकरे ॥ तथा तिनोंका मनविषे स्मरणभीनहींकरे ॥ और सोसंन्यासी सर्वदा आपणेमनकेप्रति याप्रकारकाबोधकरे॥हेमन॥जिसशरीरविषे तूतादात्म्यअभिमानकरेहे ॥ सोशरीरकैसाहे॥पितामाताकेशुक्रशोणितरूपमलतें उत्पन्नभयाहे ॥ तथा विष्टामूत्रादिकमलोंकेरहणेकास्थानहे ॥ तथासर्वअवस्थावोंविषे कामक्रोधादिकअनेकरोगों करिके ग्रस्तहे ॥ तथा नाशवान्‌हे ॥ ऐसेनिंदितशरीरविषे तादात्म्यअभिमानकरणा तुमारेकूं उचितनहींहे ॥ और

हेशिष्य॥सोपरमहंससंन्यासी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकीप्राप्तिवासते ताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतें वेदांतवचनोंकाश्रवणकरिके तिनव चनोंकेअर्थका मननकरे ॥ तथा निदिध्यासनकरे ॥ और तासंन्यासीकूं जबपर्यंत ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति नहींहोवे ॥ तबपर्यंत सोसं न्यासी आपणेअंतःकरणकीशुद्धिवासते यथाशक्तिपरिमाण प्रणवमंत्रकाजपकरे ॥ तथा हंसमंत्रकाजपकरे ॥ तथा दूसरेभीमंत्रकाजपकरै॥ परंतु मुख्यकरिकेतो प्रणवमंत्रका तथाहंसमंत्रकाही जपकरे ॥ और सोसंन्यासी अश्वादिकोंऊपरआरूढहोवैनहीं ॥ तथा धनादिकपदार्थों कूं इकठाकरेनहीं ॥ किंतु जिनअन्नवस्त्रादिकपदार्थों तें विना याशरीरकापरित्यागहोइजाताहोवे ॥ तिनअन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकूंग्रहणकरे ॥ शरीरकेनिर्वाहतेंअधिकपदार्थोंका ग्रहणकरेनहीं ॥ अब परमहंसउपनिषद्विषे तापरमहंससंन्यासीके जेधर्म कथनकरे हैं तिनधर्मोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ प्रातःकाल मध्याह्नकाल सायंकाल यातीनसंध्यावोंविषे जैसे ब्राह्मणादिक संध्याकर्मकूं अवश्यकरिकेकरे हैं॥ तैसे सोसंन्यासीभी तातीनसंध्यावोंविषे तासंध्याकर्मकूं अवश्यकरिकेकरे ॥ तहां गुरुकेउपदेशतें जीवब्रह्मकेअभेदकूं निश्चयकरिके मैंब्रह्म रूपहूं याप्रकारका जोनिरंतरचिंतनकरणाहै ॥ यहही तासंन्यासीका संध्याकर्महै ॥ और किसीजीवविषे विद्यमानजेकामक्रोधादिकदोषहैं ॥ तिनदोषोंका विनाहीप्रसंगतें कथनकरणा याकानामनिंदाहै ॥ अथवा जिसजीवविषे तेकामक्रोधादिकदोषहैंनहीं ॥ परंतु तेकामक्रोधा दिकदोष ताजीवविषेआरोपणकरिके तिनदोषोंकाकथनकरणा याकानाम निंदाहै ॥ ऐसीकिसीनिंदाकूंभी सोसंन्यासी करेनहीं ॥ और मैं विद्यादिकगुणोंकरिके सर्वतेअधिकहूं याप्रकारकी जोआपणेविषे सर्वतेंअधिकताबुद्धिहै याकानाम गर्वहै ॥ ऐसेगर्वकूंभी सोसंन्यासीकरे नहीं ॥ और यापुरुषका किसीभीप्रकारकरिके लोकविषेअपमानहोवे याप्रकार दूसरेकीअधिकताकूंनहींसहनकरणा याकानाम मत्सरहै ॥ ऐसेमत्सरकूंभी सोसंन्यासी करेनहीं ॥ और आपणेशरीरमनवाणीकरिके कर्याजोकोईशुभकर्महै ॥ ताआपणेशुभकर्मकूं आपणीमहानता जनावणेवासते दूसरेलोकोंकेआगे प्रगटकरणा याकानाम दंभहै ॥ ऐसेदंभकूंभी सोसंन्यासी करेनहीं ॥ और श्रुतिविरुद्धकुतर्कोंकरिके कि सीदूसरेवादीकेपक्षकाखंडनकरणा याकानाम दर्पहै ॥ ऐसेदर्पकूंभी सोसंन्यासीकरेनहीं ॥ और सोसंन्यासी सुखविषे तथासुखके

साधनोंविषे राग नहींकरै ॥ और दुःखविषे तथादुःखकेसाधनोंविषे द्वेषनहींकरै ॥ और सोसंन्यासी स्वप्नविषेभी स्त्रीकेसंभोगकीइच्छा करैनहीं ॥ और आपणेशरीरमनवाणीकरिकै किसीभीकालविषे भूतप्राणियोंकाद्रोह करैनहीं॥ और दैवयोगतैंप्राप्तहुए सुवर्णादिकपदार्थों कूं ग्रहणकरैनहीं ॥ तथा अनात्मारूपदेहादिकोंविषे आत्मबुद्धि करैनहीं ॥ और क्षुद्रचित्तवाळेजीवोंविषेस्थित जेविद्याअभिमानादिकधर्म हैं ॥ तिनोंकूंदेखिकै तासंन्यासीनै क्षमातैंरहितनहींहोणा ॥ किंतु तिनोंऊपरभी क्षमाहीराखणी ॥ और सोसंन्यासी याआपणेशरीरविषे अहंअभिमान नहींकरै ॥ तथा शरीरकेसंबंधी वस्त्रादिकपदार्थोंविषे ममअभिमान नहींकरै॥हेशिष्य॥ जिससंन्यासीकूं आपणेमोक्षकीइच्छा होवै ॥ सोसंन्यासी मिथ्यावचनकूं वाणीकरिकै तथामनकरिकै कदाचित्‌भी नहींउच्चारणकरै॥ और जिसचेष्टाकरिकै यहलोक बहुतप्रसन्न होवैं॥तथाआपणेविषेप्रीतिकरैं ॥ ऐसीचेष्टाकूं सोसंन्यासी कदाचित्‌भी नहींकरै॥और सोसंन्यासी याआपणेशरीरकूं सर्वदा विष्ठा मूत्र मृत ककेसमानदेखै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी स्तुतितैंभीरहितहोवै ॥ तथा नमस्कारतैंभीरहितहोवै॥तथा स्वधाकारतैंभी रहितहोवै॥तथा नियमकरिकै एकस्थानविषे रहैनहीं ॥ किंतु आपणीइच्छापूर्वकविचरे ॥ और सोसंन्यासी आत्मातैंविना किसीकाभी पूजनकरैनहीं ॥ तथा दूसरेजीवोंकूं किसीशुभकर्म तैं निवृत्तकरैनहीं॥और आत्मातैंभिन्नअर्थकूंकथनकरणेहारेजेमंत्रहैं तिनमंत्रोंका सोसंन्यासी जपकरैनहीं तथा आत्मातैंभिन्नपदार्थोंकेध्यानकूं तथा उपासनाकूं करैनहीं॥किंतुसर्वदा आत्माकाही ध्यान उपासनाकरै॥हेशिष्य॥सोपरमहंससंन्यासी यासर्वजगत्‌कूं आपणाआत्मारूपकरिकैदेखैहै ॥ याकारणतैं तापरमहंससंन्यासीकूं यालोकविषे यहकर्म हमारेकूं अवश्यकरणेयोग्यहै याप्रकारकीबुद्धिकरिकै कोईकर्म करणेयोग्यनहींरहैहै ॥ और यहकर्म हमारेकूं नहींकरणेयोग्य है याप्रकारकीबुद्धिकरिकै कोईक र्म परित्यागकरणेयोग्यनहीं हैं ॥ किंतु सोविद्वान्‌संन्यासी बालककीन्याईं ग्रहणत्यागतैंरहितहोइकैविचरे है ॥ और तापरमहंससं न्यासीकूं आत्मातैंभिन्नरूपकरिकै याजगत्‌कूंविषयकरणेहाराज्ञान होवैनहीं ॥ तथा आत्मातैंभिन्नरूपकरिकै याजगत् कूंविषयकरणेहाराज्ञानभी होवैनहीं ॥ और तासंन्यासीकूं कोईइच्छाकाविषयप्रयोजनभी होवैनहीं ॥ तथा मैं तूं

जगत् इत्यादिकभेदभीहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ जोअद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्म सर्वजगत्काआत्मारूपहै ॥ तथा आश्रयतैंरहितहै ॥ ताआनं दस्वरूपब्रह्मविषेही तासंन्यासीकीसर्वदा स्थितिरहेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मठादिकसर्वपदार्थोंविषे ममत्वकापरित्यागकरिकै सोसंन्यासी ताअद्वितीयब्रह्मविषेहीं सर्वदा स्थितिकरै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी रागपूर्वक सुवर्णादिकपदार्थोंकूंदेखेनहीं ॥ तथा तिनसुवर्णादिकोंका रागपूर्वक स्पर्शनहींकरे ॥ तथा तिनसुवर्णादिकपदार्थोंका संग्रहनहींकरै काहेतैं यहसुवर्णादिक हमारेकूं प्राप्तहोवैं याप्रकारकेरागकरिकै जोसंन्यासी तासुवर्णादिकपदार्थोंकूंदेखेहै ॥ सोसंन्यासी ब्राह्मणोस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैंउत्पन्नहुएपुत्रकेसमानहोवैहै ॥ और जोसंन्यासी तारागपूर्वक तिनसुवर्णादिकोंका स्पर्शकरे है ॥ सोसंन्यासी शूद्राणीस्त्रीविषे निषादपुरुषतैंउत्पन्नहुएपुत्रकेसमानहोवैहै ॥ और जोसं न्यासी तिनसुवर्णादिकोंका संग्रहकरैहै ॥ सोसंन्यासी आत्महत्याराहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव सर्वजगतरूपहै ॥ यातैं याआत्माकेहनन कियेतैं तासर्वजगत्काहननहोवैहै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी विवेक वैराग्य शम दम इत्यादिकसाधनोंयुक्तहोइकै आपणेयज्ञोपवीतके स्थानविषे आत्मज्ञानरूपयज्ञोपवीतकूंधारणकरे ॥ तथा शिखाकेस्थानविषेभी ताआत्मज्ञानरूपशिखाकूंधारणकरे ॥ काहेतैं ब्रह्मउपनिष द्विषे तथापरमहंसउपनिषद्विषे तथा आरुणिकउपनिषद्विषे ताआत्मज्ञानरूपयज्ञोपवीतशिखाकाधारणकरणा विधानकऱ्याहै ॥ तहां प्रथम ब्रह्मउपनिषद्केवचनोंकाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे ब्राह्मणादिकोंकेगलेविषेस्थित जोतीनदोरवाला यज्ञोपवीतहै ॥ तायज्ञोपवीतका एकएकदोरतीनतीनतंतुवोंकाहोवैहै ॥ यातैं सोयज्ञोपवीत नवतंतुरूपहोवैहै ॥ तैसे ताब्रह्मवेत्तासंन्या सीके हृदयदेशविषेस्थितजेनवतत्त्वहैं ॥ तेनवतत्त्वहीं तासंन्यासीका यज्ञोपवीतहैं ॥ तेनवतत्त्व यहहैं ॥ ईश्वर १ हिरण्यगर्भ २ विराट् ३ विश्व ४ तेजस ५ प्राज्ञ ६ प्राण ७ अपान ८ व्यान ९ ॥ हेशिष्य ॥ जैसे नवतंतुरूपसूत्रतैंउत्पन्नभया जोउपवीतहै॥सोउपवीत यज्ञादिक कर्मोंका साधनरूपहै॥याकारणतैंताउपवीतकूं शास्त्रवेत्तापुरुष यज्ञोपवीतयानामकरिकैकथनकरैहै॥तैसेतिननवतत्त्वोंकेविचारकरिकै प्रगट भयाजो अखंडचैतन्यहै ॥ सोचैतन्य ज्ञानरूपयज्ञका अंगरूपहै॥यातैं ताचैतन्यकूं शास्त्रवेत्तापुरुष यज्ञोपवीत यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥

और ॥ यज्ञोपवीतंपरमंपवित्रं ॥ यहमंत्रभी गुरुपवृत्तिकरिके ताचैतन्यरूपयज्ञोपवीतकूंही कथनकरैहै ॥ काहेतें परमपवित्ररूपता ताचै
तन्यतेंविना दूसरेकिसीअनात्मपदार्थविषे संभवेनहीं ॥ किंतु सोचैतन्यही परमपवित्ररूपहै ॥ ऐसेचैतन्यरूपयज्ञोपवीतकूं आपणेहृदयदे
शविषेजाणिकरिके यहविद्वान्पुरुष शास्त्रकोरीतिसें तावाह्यलेयज्ञोपवीतशिखाका परित्यागकरे ॥ तथा संपूर्णदृश्यप्रपंचकूं मिथ्याजा
णिके परित्यागकरे ॥ और आकाशादिकसर्वप्रपंचका अधिष्ठानरूप जोअक्षरपरब्रह्महै॥तापरब्रह्मकूंही सोविद्वान्पुरुष सूत्ररूपकरिकेनिश्च
यकरे ॥ काहेतें जैसे लोकप्रसिद्धतंतु आपणेविषेस्थितपटकूं प्रकाशकरै है॥याकारणतें तिनतंतुवोंकूं सूत्र यानामकरिकेकथनकरैहैं ॥ तैसे
सोपरब्रह्मभी आपणेविषेस्थित जगत्‌रूपपटकूं प्रकाशकरैहै ॥ यातें तापरब्रह्मकूं शास्त्रवेत्तापुरुष सूत्र यानामकरिकेकथनकरैहैं॥हेशिष्य॥
जिसविद्वान्पुरुषनें ऐसेपरब्रह्मरूपसूत्रकूं आपणाआत्मारूपकरिके जान्याहै ॥ सो विद्वान्पुरुषही सर्ववेदोंकेअर्थकूं जानणेहाराहै॥हेशिष्य॥
जैसे सूत्रकेआधार सर्वमणियांरहैहैं ॥ तैसे जिसचैतन्यरूपब्रह्मविषे यहसंपूर्णदृश्यप्रपंचस्थितहै ॥ ताचैतन्यरूपसूत्रकूंही यहविद्वान्पुरुष
धारणकरे ॥ हेशिष्य ॥ जोपुरुष अष्टांगयोगकूंजाणैहै ॥ तथा नित्यअनित्यवस्तुकेविवेकवालाहै ॥ सोपुरुषही ताचैतन्यरूपसूत्रकेधारणे
विषे समर्थहोवैहै ॥ तिनसाधनों तें हीनपुरुष ताचैतन्यरूपसूत्रकेधारणकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ जीवब्रह्मकेअभेदकूंजानणे
हारा जोविद्वान्पुरुष वाह्यसूत्रकापरित्यागकरिके ताचैतन्यब्रह्मरूपसूत्रकूं धारणकरैहै ॥ सोविद्वान्पुरुषही चेतनहै ॥ ताब्रह्मवेत्ताविद्वान्
तैंभिन्न दूसरेपुरुष यद्यपि शास्त्रोंकेजानणेहारेभीहैं ॥ तथापि तेपुरुष पाषाणादिकोंकीन्याई जडहीहैं ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेचैतन्यरूप
सूत्रकूं जिसविद्वान्पुरुषनें धारणकर्‍याहै ॥ सोविद्वान्पुरुष किसीभीकालविषे उच्छिष्टहोवैनहीं ॥ तथा अशुचिभीहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥
जिनविद्वान्पुरुषोंकेहृदयदेशविषे सोचैतन्यब्रह्मरूपसूत्र प्रकाशमानहोवैहै ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकूं सोआत्मज्ञानही प्रधानकर्म है ॥ और
तिनविद्वान्पुरुषोंकूं कायिक मानस वाचनिक यातीनप्रकारकेपापकर्मोंतें शुद्धकरणेहाराभी सोज्ञानही है ॥ तहांस्मृति ॥ नहिज्ञाने
नसदृशंपवित्रमिहविद्यते ॥ अर्थयह ॥ यालोकविषे आत्मज्ञानकेसमान दूसराकोईपदार्थ पवित्रहैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे अग्निकीज्वाला

रूपशिखा ताअग्नितैंभिन्ननहींहै ॥ तैसे जिसविद्वान्पुरुषकी नित्यविज्ञानरूपशिखा आपणेस्वरूपतैंभिन्ननहींहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकूंहीं
वेदवेत्तापुरुष शिखी यानामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ प्रसिद्धकेशोंकूं मस्तकविषेधारणकरणेहारेपुरुषोंकूं शिखी यानामकरिकैकथनकरैंनहीं ॥
काहेतैं प्रसिद्धकेशोंकूंतो शूद्रस्त्रीआदिकभी धारणकरैंहैं ॥ परंतु तिनशूद्रादिकोंकूं शिखी यानामकरिकैकथनकरैंनहीं ॥ शंका ॥ हेभग
वन् ॥ जभी सोज्ञानरूपयज्ञोपवीत तथाज्ञानरूपशिखाही सर्वतैं श्रेष्ठहै ॥ तभी यासर्वब्राह्मणादिकोंनैं ॥ ताबाह्ययज्ञोपवीतशिखाका परित्या
गकर्‍याचाहिये ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ वेदभगवान्नैं कथनकरेजेअग्निहोत्रादिककर्महैं ॥ तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंविषे जिनब्राह्मणादि
कोंकाअधिकारहै ॥ तिनब्राह्मणादिकोंनैंतो तिनकर्मोंकीसिद्धिकरणेवासतै ताबाह्ययज्ञोपवीतकूं तथाशिखाकूं अवश्यकरिकैधारणकरणा॥
और जेशुद्धचित्तवालेविद्वान्पुरुष तिनकर्मोंकेअधिकारीनहींहैं॥तिनविद्वान्पुरुषोंनैंतो अंतर ज्ञानरूपयज्ञोपवीतशिखाकूंही धारणकरणा॥
हेशिष्य ॥ केईकब्रह्मवेत्तापुरुष याप्रकारकेवचन कहेहैं ॥ सर्वकाअधिष्ठान अद्वितीयब्रह्मरूप मैंहूं याप्रकारकेज्ञानरूपयज्ञोपवीतकूं
तथाताज्ञानरूपशिखाकूं जिसपुरुषनैं धारणकर्‍याहै तिसब्रह्मवेत्तापुरुषविषेही संपूर्णब्राह्मणपणाहै ॥ और जोपुरुष ताआत्मज्ञानरूप
यज्ञोपवीतशिखातैंरहितहै ॥ किंतु बाहरलेसूत्ररूपयज्ञोपवीतकूं तथाकेशरूपशिखाकूं धारणकरणेहाराहै ॥ तापुरुषविषे सोब्राह्मणपणा
मुख्यनहींहै ॥ किंतु ताकेविषे सोब्राह्मणपणा गौणहै ॥ काहेतैं वज्रसूचिनामाउपनिषद्विषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूंही ब्राह्मणकह्याहै ॥
तहांश्लोक ॥ जन्मनाजायतेशूद्रो व्रतबंधाद्द्विजःस्मृतः ॥ वेदाऽभ्यासाद्भवेद्विप्रो ब्रह्मजानातिब्राह्मणः ॥ अर्थयह ॥ यहदेहधारीजीव
जन्मकरिकै शूद्रसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यज्ञोपवीतसंस्कारकरिकै द्विजसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और वेदकेअध्ययनकरिकै विप्रसंज्ञाकूंप्राप्त
होवैहै ॥ और ब्रह्मकेज्ञानकरिकै ब्राह्मणसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ १ ॥ यातैं सोब्रह्मवेत्तापुरुषही ब्राह्मणशब्दकामुख्यअर्थ है ॥ और सोब्रह्म
वेत्तापुरुषही यज्ञादिककर्मरूपहै ॥ तथा यज्ञादिककर्मोंकाकर्त्तारूपहै॥हेशिष्य ॥ जैसे ताआत्मज्ञानरूपयज्ञोपवीतशिखातैं विना यापुरुष
विषेमुख्ययज्ञोपवीतपणा तथाशिखीपणासंभवैनहीं॥तैसेताआत्मज्ञानरूपदंडकीप्राप्तितैंविनाकेवलकाष्ठकेदंडधारणकरणेकरिकै यासंन्यासी

विषे देदीपणा सिद्धहोवेनहीं ॥ काहेतें तापरमहंससंन्यासीकेधर्मोंकूंकथनकरणेहारीजापरमहंसउपनिषद्है ॥ तापरमहंसउपनिषद्विषे याप्रकार कथनकऱ्याहै ॥ ज्ञानदंडोधृतोयेन एकदंडीसउच्यते ॥ काष्ठदंडोधृतोयेन सर्वाशीज्ञानवर्जितः ॥ सयातिनरकान्घोरान्महारौरवसं ज्ञकान् ॥ अर्थयह ॥ जिससंन्यासीनें आत्मज्ञानरूपदंडकूं धारणकऱ्याहै ॥ सोसंन्यासीही एकदंडी कह्याजावे ॥ और जिससंन्यासीनें केवल काष्ठ केदंडकूंधारणकऱ्याहै ॥ और आत्मज्ञानरूपदंडतेंरहितहै ॥ तथा विषयोंविषेआसक्तहै ॥ सोविषयासक्तअज्ञानीसंन्यासी याशरीरकापरित्या गकरिकै रौरवादिकमहान्घोरनरकोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ यातें यापरमहंससंन्यासीनें श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकै ताआत्मज्ञानकूं अवश्यक रिकै संपादनकरणा ॥ जिसजीवब्रह्मकेअभेदज्ञानकरिकै यासंन्यासीकूं पुनः भेदबुद्धि उत्पन्नहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ यद्यपि याजीवात्माविषे ब्रह्मरूपता हमने तुमारेप्रति अनेकवार कथनकरीहै ॥ तथापि ताअर्थकीदृढताकरावणेवासतें पुनः हमतुमारेप्रति कथनकरे हैं ॥ जिसब्रह्मात्म ज्ञानकीप्राप्तितें यहअधिकारीपुरुष कृतार्थहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी आपणेमन विषे सर्वदा याप्रकारकाविचारकरै ॥ जैसे मध्याह्नकालकासूर्य अंधकारतेंरहितहै ॥ तैसे जोअद्वितीयब्रह्म आपणेस्वयंज्योतिरूपकरिकै सर्वदा अविद्यातेंरहितहै ॥ सोआनंदस्वरूप अद्वितीयब्रह्म याजीवात्माविषे सर्वदा अभेदरूपकरिकैहीस्थितहोवैहै ॥ तटस्थरूपकरिकैस्थितहोवैनहीं ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ सर्वभेदतेंरहि तहै यातें अद्वितीयरूपहै ॥ और सोब्रह्म अद्वितीयरूपहै यातें जन्ममरणादिकसर्वविकारों तें रहितहै ॥ और सोअद्वितीयब्रह्म आकाशकीन्याई सर्वत्रव्यापकहै ॥ यातें सर्वक्रियातेंरहित निश्चलरूपहै ॥ और ॥ जोअद्वितीयब्रह्म अविद्यादिकविकारोंतेंरहितहै ॥ सोअद्वितीयब्रह्म हमारे आत्मातेंभिन्न नहींहै ॥ किंतु सोअद्वितीयब्रह्म हमारा आत्मारूपही है ॥ जोकदाचित् ताआत्मारूपब्रह्मतें में भिन्नहोवोंगा ॥ तौ घटा दिकोंकीन्याई हमारेविषेभी अनात्मरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ यातें मैं ताअद्वितीयब्रह्मतें भिन्ननहींहूं ॥ और यहआत्मास्वरूपब्रह्मही हमारा सर्वतेंउत्कृष्टप्रियस्थानहै ॥ तहां श्रुति ॥ सभूमाकस्मिन्प्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि ॥ अर्थयह ॥ सोव्यापकआत्मादेव किसविषेस्थितहै ॥ याप्रकार कीजिज्ञासाकेहुए सोव्यापकआत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपमहिमाविषेहीस्थितहै ॥ यहउत्तरश्रुतिनें कह्याहै ॥ १ ॥ और सोअद्वितीयब्रह्म केवल

हमाराहीआत्मारूप नहीं है॥किंतु सोअद्वितीयब्रह्म यासर्वजगत्काआत्मास्वरूपहै॥यातैं सोज्ञानस्वरूपब्रह्मही हमारीशिखाहै॥तथासोज्ञान स्वरूपब्रह्महीहमारा यज्ञोपवीतहै॥तथा सोज्ञानस्वरूपब्रह्मही हमारादंडहै॥ काहेतें यालोकविषे राजादिकपुरुष जिसउपायकरिकै शत्रुआ दिकोंकूं आपणेवशकरैहै॥ताउपायकानाम दंडहै॥सोयाप्रकारकादंडशब्दकाअर्थ मुख्यवृत्तिकरिकै ताज्ञानस्वरूपब्रह्मविषेहीघटैहै॥काहेतें य हज्ञानस्वरूपब्रह्मही महावाक्यजन्यअंतःकरणकीवृत्तिविषेआरूढहोइके कार्यसहितअज्ञानरूपशत्रुकीनिवृत्तिकरे है ॥ यातैं यहज्ञानस्वरूप ब्रह्मही तादंडशब्दका मुख्यअर्थ है॥और हमारेहस्तविषेस्थित जोयह काष्ठकादंडहै ॥ सोकेवल मनकेवशकरणेका स्मरणकरावैहै ॥ यातैं यहकाष्ठकादंड तादंडशब्दका मुख्यअर्थनहीं है ॥ किंतु गौणअर्थ है ॥हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोपरमहंससंन्यासी जभी य। आनंदस्वरूपआत्माविषेस्थितहोवै है ॥ तभी सोपरमहंससंन्यासी सर्वकर्मोंकेअधिकारतैंरहितहोइकै ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारू पकरिकैदेखैहै ॥ हेशिष्य ॥ जिसअद्वितीयब्रह्मकूं यहविद्वान्पुरुष आपणाआत्मारूपकरिकै अपरोक्षदेखैहै ॥ सोब्रह्म सर्वजगत्विषेव्यापक है तथा निरतिशयआनंदरूपताकरिकै सर्वतैंउत्कृष्टपदहै ॥ और जैसे याजीवोंकेप्रत्यक्षज्ञानका अविषयहुआभी यहचक्षुइंद्रिय घटादिकप दार्थोंकूंप्रकाशकरे है ॥ तैसे अज्ञानीजीवोंकूंहृदयदेशविषेस्थितहुआभी सोस्वप्रकाशब्रह्म बुद्धिआदिकसर्वपदार्थोंकूंप्रकाशकरे है ॥ इतनें करिकै परमहंसउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब त्वंपदार्थजीवकाशोधनकरिकै ताजीवकूंब्रह्मरूपकरिकैकथनकरणेहारी जाब्रह्मउप निषद्है ताकेअर्थका निरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥यात्वंपदार्थजीवात्माकेस्पष्टकरणेवासतै ताब्रह्मउपनिषद्विषे जेचारिअवस्थाकथनकरी हैं तिनोंकूं तूंश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मा यद्यपि वास्तवतैंतो सर्वअवस्थावोंतैंरहित है ॥ तथापि मायाके वशतैं यहआत्मादेव जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीय याचारअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिनजाग्रदादिकचारिअवस्थावोंके यथाक्रमतैं नाभि कंठ हृदय मूर्द्धा यहचारस्थान हैं ॥ हेशिष्य॥यहअंतःकरणविशिष्टजीवात्मा जभी नाभितैं लेकेनेत्रपर्यंतदेशविशेष विषेकरिकेस्थितहोवै है ॥ तभी यहजीवात्मा विश्वसंज्ञाकूंप्राप्तकरणेहारी जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और यहजीवात्मा जभी कंठदेशविषे विशेषकरिकै

स्थितहोवे है तभी तेजससंज्ञाकूंप्रातकरणेहारी स्वप्नावस्थाकूंप्रातहोवे है॥और यहजीवात्मा जभी हृदयकमलविषे विशेषकारिकेस्थितहोवे है ॥ तभी प्राज्ञसंज्ञाकूंप्रासकरणेहारी सुषुप्तिअवस्थाकूंप्रातहोवे है ॥ और यहजीवात्मा जभी समाधिकेप्रभाव तैं मूर्द्धास्थानविषेस्थितहोवैहै तभी शुद्धआत्मरूपताकूंप्रातकरणेहारी तुरीयअवस्थाकूंप्रातहोवैहै॥अब तिनचारअवस्थावोंके देवतावोंका निरूपणकरे हैं ॥हेशिष्य॥ ताजाग्रत्अवस्थाका विराट् देवताहै ॥ और स्वप्नअवस्थाका हिरण्यगर्भ देवताहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाका रुद्रदेवताहै ॥ और तुरीयअवस्थाका परमात्मादेवताहै ॥ हेशिष्य ॥ तातुरीयअवस्थाकादेवतारूप जोपरमात्मादेवहै॥सोपरमात्मादेव मायारूपउपाधिकेसंबंधकरिकेतो सर्वजगत्‌रूपहोवैहै ॥ और वास्तवतैं सोपरमात्मादेव कार्यकारणभावतैंरहितहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा स्वयंज्योति आनंदस्वरूपहै ॥ और जिसपरमात्मादेवविषे यहकर्मकाफलरूपशब्दादिकविषय आपणेविषयस्वभावकापरित्यागकरिदेवैहै ॥हेशिष्य ॥ ता तुरीयरूपपरमात्मादेवविषे जैसे तेशब्दादिकविषय आपणेस्वभावकापरित्यागकरे हैं ॥ तैसे तापरमात्मादेवविषे देव वेद यज्ञ माता पिता स्नुषा इत्यादिक ममअध्यासकेविषयपदार्थ भी आपणेस्वभावकापरित्यागकरिदेवैहैं ॥ और अहंअध्यासकेविषयजे ब्राह्मणत्व क्षत्रियत्व वैश्यत्व शूद्रत्व चांडालत्व पुल्कसत्व इत्यादिकजातियां हैं ॥ तेजातियांभी तिसपरमात्मादेवविषे वास्तवतैंहैंनहीं ॥ इहां ब्राह्मणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैंउत्पन्नभयाजोपुत्रहै ताकानाम चांडालहै ॥ और क्षत्रियाणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैंउत्पन्नभयाजोपुत्रहै ताकानाम पुल्कसहै ॥ और तापरमात्मादेवविषे ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास यहचारिआश्रमभी हैंनहीं ॥ और उत्तम मध्यम कनिष्ठ यह तीनप्रकारकेजे कर्मकेकर्त्ता हैं।।तथा इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखदुःखरूपफलकी प्राप्तिकरणेहारेजेनानाप्रकारकेसाधनहैं॥तथाइसलोकविषे तथापरलोकविषे प्रासहोणेहारे जेसुखदुःखरूपफलहैं ॥ इसतैंआदिलेके जितनाकोयहसंसारहै ॥ सोसंसारभी तापरमात्मादेवविषे वास्तवतैंहै नहीं ॥ ऐसा कार्यसहितअज्ञानतैंरहित अद्वितीयब्रह्म शुद्धचित्तवालेअधिकारीजनोंकूं आपणेस्वयंज्योतिरूपकरिके प्रतीतहोवे है ॥ और सोपरमात्मादेव इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकूं आपणीआज्ञाविषे चलावणेहाराहै ॥ यातैं ऋषि पितर देवता इत्यादिक महा

पुरुषभी तापरमात्मादेवके नियमकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिके जानेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष अनाथपुरुषकीन्याईं तिनऋषिदेवतावोंके किंकरभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ ताअद्वितीयपरमात्माविषे ईश जीव जगत् इत्यादिकद्वैतभाव हमजीवोंनेंही कल्पनाकऱ्याहे ॥वास्तवतें तापरमात्मादेवविषे सो द्वैतप्रपंचहैनहीं ॥जैसे वास्तवतें अंधकारतैंरहितसूर्यविषे घूकादिकपक्षी अंधकार कल्पनाकरैहैं ॥ तैसे यहजीव ताअद्वितीयब्रह्मविषे जगत्कीकल्पनाकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे अग्नि संपूर्णकाष्ठोंविषे गुह्यहोइकेरहे है ॥ तैसे यालोकविषे कार्यकारणरूपकरिकैंप्रसिद्धजे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारप्रकारकेभूतप्राणी हैं॥ तिनसर्वभूतप्राणियोंविषे सोस्वयंज्योतिएकपरमात्मादेव गुह्यहोइकेरह्याहे॥ और सोपरमात्मादेव आकाशकीन्याईं सर्वत्र व्यापकहे ॥ तथा स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंविषे साक्षीरूपकरिकैस्थितहे॥ तथा राजाकीन्याईं सर्वभूतोंकूंआपणेवशकरिके तिनभूतोंविषे निवासकरे है ॥ और जैसे यालोकविषे मध्यस्थपुरुष विवादकर्त्तापुरुषोंकेव्यापारोंकूं साक्षीरूपहोइकेंदेखेहे ॥ तैसे सोपरमात्मादेवभी साक्षीरूपहोइके तिनभूतोंकेव्यापारोंकूंदेखेहे ॥ और सोपरमात्मादेव सर्वजडपदार्थोंतें विलक्षणहे ॥ यातें चिद्घनरूपहे॥ तथा अद्वितीयरूपहे तथा निर्गुणरूपहे ॥ तहांश्रुति ॥ साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥ हेशिष्य ॥ याश्रुतिविषेस्थित जोचेताशब्दहे ॥ ताचेताशब्दकाअर्थ यद्यपि कोईकभेदवादी चैतन्यगुणवाला मानैहैं ॥ तथापि सोपरमात्मादेव ज्ञानादिकगुणोंवालाहोवैनहीं॥काहे तें जोकदाचित् तापरमात्मादेवविषे ज्ञानादिकगुण अंगीकारकरिये॥तो तिसीश्रुतिविषे निर्गुणशब्दकरिके तापरमात्मादेवकूं ज्ञानादिकसर्वगुणोंतैंरहितकह्याहे ॥सोअसंगतहोवैगा॥और तिसीश्रुतिविषेस्थित जोकेवलशब्दहे॥ताकेवल शब्दकरिके तापरमात्मादेवकूं अद्वितीयरूपकह्याहे॥ऐसेअद्वितीयनिर्गुणपरमात्माविषे तिनज्ञानादिकोंका गुणगुणीभाव संभवे नहीं॥यातें सोचेताशब्द चैतन्यस्वरूपआत्माकूंहीकथनकरेहे॥हेशिष्य ॥सोपरमात्मादेव मायाकेसंबंधतें आपणेस्वरूपकूंहीं याजगत्रूपकरैहे॥यातें सोकारणरूपपरमात्मादेवही यासर्वजगत्कास्वामीहे॥तथा सर्वजगत्कूं आपणी आज्ञाविषेचलावणेहाराहे॥हेशिष्य॥जैसे सर्वकाष्ठोंविषे गुह्यहोइकेरह्याजोअग्निहे सोअग्नि तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतेंही प्रगटहोवैहे॥तैसे अ

ब्रवेत्तापुरुषोंनें ताअद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारवासते याप्रकारकाउपाय कथनकर्‍याहे॥यहअधिकारीपुरुष आपणेशरीरकूं अथवा बुद्धिकूं नीचेकीअरणिरूपकरिके चिंतनकरे ॥ और अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारमात्रावोंकरिके यथाक्रमतें विश्व तेजस प्राज्ञ तुरीय याचारअवस्थावालेआत्माकूं कथनकरणेहारा जोॐकारहे ॥ ता ॐकारकूं ऊपरिलीअरणिरूपकरकेचिंतनकरे ॥ और जैसे यालोक विषे काष्ठरूपदोनोंअरणियोंकेमथनकरणेतें ॥ अग्नि प्रगटहोवेहे॥तैसे शरीरबुद्धि तथाॐकार यादोनोंअरणियोंकेमथनकरणेतें आत्मसाक्षात्काररूपअग्नि प्रगटहोवेहे ॥ जोआत्मज्ञानरूपअग्नि कार्यसहितअज्ञानकूंनाशकरेहे ॥ हेशिष्य॥यहअधिकारीपुरुष प्रथम विश्व तेजस प्राज्ञ तुरीय याचारोंकूं यथाक्रमतें विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वर परमात्मा याचारों तें अभिन्नरूपकरिकेचिंतनकरे ॥ तिसतेंअनंतर तिनविश्वादिक चारोंकूं यथाक्रमतें अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याॐकारकीचारमात्रावो तें अभिन्नरूपकरिके चिंतनकरे ॥ याप्रकारका जोनिरंतर ध्यानकरणाहे ॥ सोध्यानहीं तिनदोनोंअरणियोंका मथनहे ॥ हेशिष्य ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि काष्ठोंविषेअग्निकीन्याई यासंघातविषेगुप्तहोइकेरह्याहे ॥ तथापि ताध्यानरूपमथनतें यह आत्मादेव शीघ्रहीं प्रगटहोवेहे ॥ याअर्थविषे तुमनें किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेशिष्य ॥ जैसे तिलोंविषेगुप्तहोइके रह्याजोतेलहे ॥ सोतेल यंत्रविषेपीडनरूपउपायतें याजीवोंकूंप्राप्तहोवेहे ॥ और जैसे दुग्धविषे गुप्तहोइकेरह्याजोघृतहे ॥ सोघृत विलोडन रूपउपायतें याजीवोंकूं प्राप्तहोवेहे ॥ तैसे याबुद्धिआदिकसंघातविषे गुप्तहोइके रह्याजोआत्मादेवहे॥सोआत्मादेव याजीवोंकूं ताध्यानरूपउपायकरिके तथा तप सत्य विवेक आदिकउपायोंकरिके प्राप्तहोवेहे॥और हेशिष्य यह आनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतें जीवईश्वरभावतेंरहितहे ॥ तथापि अविद्याकेसंबंधतें जीवभावकूंप्राप्तहोइके यहआत्मादेव जाग्रत्स्वप्नादिकसंसारविषे भ्रमणकरेहे ॥ और यहअधिकारीपुरुष जभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतें ताआत्मादेवकूं साक्षात्कारकरेहे ॥ तभी सोआत्मादेव ताकल्पितजीवभावकापरित्यागकरिके अद्वितीयब्रह्मरूपहोवे हे ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे ऊर्णनाभिजंतु तंतुवोंकूंउत्पन्नकरेहे तथालयकरेहे ॥तैसे यहजीवात्माभी जाग्रत्स्वप्नविषे अनेकप्रकारकेपदार्थोंकूंउत्पन्नकरेहे तथालयकरेहे ॥ और यहजीवात्मा

जभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतें आपणेहृदयदेशविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरे है ॥ तभीहीं यहजीवात्मा आपणेजीवत्वभावकापरित्यागकरिके ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ जिसस्वयंज्योतिआत्माकूं यहमनसहितवाकादिकइंद्रिय विषयकरिसकतेनहीं ॥ और जिसस्वयंज्योतिआत्माकेज्ञानतें याजीवोंकूं आनंदस्वरूपता प्रगटहोवे है ॥ ऐसेस्वयंज्योतिआत्माकूं साक्षात्कारकरिकेहीं यहविवेकीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे क्षीरविषे घृत व्याप्यकरिकेरहेहे ॥ तैसे यहआत्मादेवयासर्वजगत्विषे व्याप्यकरिकेरहे है ॥ और कर्मउपासनाकाफलरूप जोयहसंपूर्णसंसारहै ॥ तासंसारकाभी यहआत्मादेवहीकारणहै ॥ ऐसेआत्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष मनकानिग्रहकरिके साक्षात्कारकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुषहीं मोक्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ तामनकेनिग्रहतैंविना अनेककोटिजन्मोंकरिकेभी यहजीव ताआत्माकूंजाणिसकतानहीं ॥ यातें मोक्षकीइच्छावान्पुरुषनैं सोमनकानिग्रह अवश्यकरिकेकरणा ॥ इतनेंकरिके ब्रह्मउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब याहीअर्थविषेप्रमाणरूपकरिके ब्रह्मबिंदुउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं मनकेनिग्रहकरणेतेंहीं मोक्षकीप्राप्तिहोवे है ॥ यहवार्ता ब्रह्मबिंदुउपनिषद्विषेभी कथनकरी है ॥ ताकूं तूं श्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ याजीवोंकामन दोप्रकारकाहोवे है ॥ एकतो शुद्धमनहोवे है ॥ और दूसरा अशुद्धमनहोवे है ॥ तहां जिसमनविषे विषयोंकारागहोवे है ॥ सो अशुद्धमनहोवे है ॥ और जोमन निष्कामकर्मउपासनाकरिके विषयोंकेरागतेंरहितहुआहै सो शुद्धमनहै ॥ हेशिष्य ॥ यहदोप्रकारकामनहीं यामनुष्योंके बंधका तथामोक्षका कारणहोवे है ॥ तहां विषयोंविषेआसक्त जोअशुद्धमनहै सोअशुद्धमनतो यामनुष्योंकेबंधका कारणहोवे है ॥ और विषयोंकीआसक्तितेंरहित जोशुद्धमनहै ॥ सोशुद्धमनतो यामनुष्योंकेमोक्षका कारणहोवे है ॥ यातें मोक्षकीइच्छावान् अधिकारीपुरुषोंनैं तामनकूं अवश्यकरिके विषयोंतेंरहितकरणा ॥ और हेशिष्य ॥ सर्वविषयोंकीआसक्तितेंरहित सोशुद्धमन जभी हृदयदेशविषे निरोधकूंप्राप्तहोइके जीवब्रह्मकेअभेदकूं निश्चयकरे है ॥ तभी याअधिकारीपुरुषकूंमोक्षरूपफलकीप्राप्तिविषे किंचित्मात्रभी विलंबहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे भोजनकेसमानकालविषेहीं तृप्तिकीप्राप्तिहोवे है॥तैसे याअधिकारी पुरुषकूं तिसोआत्मज्ञानकीप्राप्तिकालविषेहीं

मोक्षकीप्राप्तिहोवे है ॥ और हेशिष्य॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहमन आपणेस्वरूपकेज्ञानकरिके मिथ्याद्वैतप्रपंचकेआकारकूंप्राप्तहोइके नानाप्रकारकेविकारोंकूंप्राप्तहोवे है॥तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी सोमन ताअज्ञानकरिकेमिथ्याद्वैतप्रपंचकेआकारकूंप्राप्तहोइके नानाप्रकारकेविकारोंकूंप्राप्तहोवे है॥हेशिष्य॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे अज्ञानकरिके द्वैतप्रपंचकेआकारकूंप्राप्तहुआभी सोमन वास्तवतैं अधिष्ठानचेतन्यरूपकरिके द्वैतभावतैंरहितहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी सोमन वास्तवतैं अधिष्ठानचेतनरूपकरिके ताद्वैतभावतैंरहितही है ॥ हेशिष्य ॥ याअधिकारीपुरुषकामन जभी अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिके द्वैतप्रपंचकारवृत्तियोंका परित्यागकरे है ॥ तभी सोअधिकारीपुरुष द्वैतप्रपंचकाअग्रहणरूप अमनसभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जिसकालविषे सोमन अमनसभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ तिसकालविषे याआत्माका किसप्रकारकास्वरूप याकोरहे है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जिसकालविषे सोप्रसिद्धमन ताअमनसभावकूंप्राप्तहोवे है॥ तिसकालविषे वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवका याप्रकारकास्वरूपकथनकरे हैं ॥ ताकालविषे याआत्मादेवकूं एकब्रह्महीं जानणेयोग्यहोवे है ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव सर्वकल्पनातैंरहितहोवे है॥और सोआत्मादेव नित्यहोणेतैं जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहितहोवे है॥और ताजन्मतैंरहितज्ञानकरिकेजन्मतैंरहितवस्तुकाहीबोधहोवे है॥दूसरेअनात्मपदार्थोंकाबोधहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव ज्ञेयवस्तुतैंअभिन्नस्वप्रकाशज्ञानरूपहोवेहै॥हेशिष्य॥कोई भ्रांतपुरुषतो याप्रकार कथनकरे हैं॥यहमन जिसप्रकार सुषुप्तिअवस्थाविषेलयहोवे है॥तिसीप्रकारयहमन जभी लयभावकूंप्राप्तहोवे है॥तभीहीं अमनसभावकीप्राप्तिहोवे है॥सोयहतिनोंकाकहणा संभवेनहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे जोमनकालयहै तथासमाधिअवस्थाविषे जोमनकानिरोधहै यादोनोंविषे महान्विशेषता प्रतीतहोवे है ॥ अब ताविशेषताकानिरूपण करे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोमन विषयोंतैंनिग्रहकूंप्राप्तहुआहै ॥ तथा जोमन सर्वकल्पनातैंरहितहुआहै ॥ तथा जोमन महावाक्यजन्यविद्याकरिके संस्कृतहुआहै ॥ ऐसेशुद्धमनकी जाग्रत्अवस्थाविषे जोब्रह्माकारतारूपअवस्थाहोवे है ॥ ताअवस्थातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे तामनकी विलक्षणहीं अवस्थाहोवे है ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषेतो सोमन आपणेकारणअज्ञानविषे सूक्ष्मरूपहोइकेस्थित

होवैहै ॥ और समाधिअवस्थाविषेतो सोमन कारणअज्ञानविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तासमाधिअवस्थाविषे सोमन अधिष्ठानब्रह्म
विषे बाधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब सुषुप्ति समाधि यादोनोंविषे दूसरीविशेषताभी निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तासमाधिअवस्थाविषे ज्ञाता
ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकभेदतैंरहितहुआ सोनिरुद्धमन अद्वितीयब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ कैसाहैसोअद्वितीयब्रह्म द्वैतभावतैं रहितहोणेतैं निर्भयहै ॥
तथा स्वप्रकाशज्ञानस्वरूपहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथा जन्मादिकविकारोंतैं रहितहै ॥ तथा अज्ञानरूपनिद्रातैंरहितहै ॥ तथा अ
हं मम इत्यादिकसर्वअध्यासों तैं रहितहै॥तथा नामरूपादिकधर्मोंतैंरहितहोणेतैं नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंका अविषयहै ॥ और जिसब्रह्मकेज्ञा
नतैं एकवार नाशकूंप्राप्तहुईअविद्या पुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोब्रह्म एकवारहीआविर्भूतहोवै है तथा सोब्रह्म चैतन्यमात्रस्व
रूपहै ॥ ऐसे अद्वितीयब्रह्माकारताकूं सोमन समाधिअवस्थाविषे प्राप्तहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेतो सोमन अविद्याविशिष्टचेतन
विषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मकेआकारताकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थातैं तासमाधिविषे महान्‌विशेषताहै ॥
अब तासमाधिकीदुर्लभता निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ पूर्वलेअनेकपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं जभी याअधिकारीपुरुषकामन ताअमनसभाव
कूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष तानिर्विकल्पसमाधिकूं प्राप्तहोवै है ॥ कैसाहैसोनिर्विकल्पसमाधि ॥ बाह्यइंद्रियकेविषय जेसर्वश
ब्दहैं तिनों तैंरहितहै ॥ तथा अंतःकरणकी चिंतादिकसर्ववृत्तियों तैं रहितहै ॥हेशिष्य ॥ ऐसेनिर्विकल्पसमाधिविषे सर्व द्वैतकाअभावहोवै
है ॥यातैं तासमाधिविषेस्थितहुआ यहविद्वान्‌पुरुष किसीपदार्थका ग्रहण अथवा त्याग करैनहीं॥तथा किसीविषयकीचिंताभीकरैनहीं ॥
हेशिष्य ॥ याअधिकारीपुरुषकामन जभी अद्वितियआत्माकूंनिश्चयकरिके सर्वविक्षेपोंतैंरहित निश्चलताकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथा अद्वितीय
आत्मारूपहोवै है ॥ तथा सर्वसंकल्पविकल्पों तैंरहितहोवै है॥तथा समताभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभीहीयाअधिकारीपुरुषकूं निर्विकल्पसमा
धिकीप्राप्तिहोवै है॥हेशिष्य॥ऐसेनिर्विकल्पसमाधिकूं यद्यपि वेदांतशास्त्रकेवचन कथनकरैहैं॥तथापि ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंही याअधिका
रीपुरुषकूं तासमाधिकीप्राप्तिहोवै नहीं॥गुरुकेउपदेशतैंविना तासमाधिकीप्राप्तिहोवै है॥हेशिष्य॥यहनिर्विकल्पसमाधिज्ञाता ज्ञान ज्ञेय ध्या

ता ध्यान ध्येय इत्यादिकसर्वसंबंधतैंररहितहे ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष यासमाधिकूं अस्पर्शयोग यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ ऐसेनिर्विक ल्पसमाधिकूं वेदांतविचारतैंररहितयोगीपुरुष देखिसकतेनहीं॥काहेतैं जैसे भयतैंरहित ओएकांतस्थानहे॥ताएकांतस्थानविषे भयकीकारण ताका आरोपणकरिके मूढबालक तास्थानतैंभयकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तैसे सर्वभयतैंरहित तानिर्विकल्पसमाधिविषे भयकीकारणताकाआरोप णकरिके तेवेदांतविचारतैंरहितयोगीपुरुष तानिर्विकल्पसमाधितैं भयकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ ओर हेशिष्य ॥ जैसे जन्मतैंअंधपुरुष प्रसिद्धरूपकूं भीदेखतेनहीं ॥ तैसे तेवेदांतविचारतैंरहितयोगीपुरुष अंतरआत्माकेअज्ञानतैं ताअमनसभावरूपसमाधिकूं सुषुप्तिकेतुल्य कथनकरेंहैं ॥ हे शिष्य ॥ तिन वेदांतविचारतैंरहित योगीपुरुषोंकूं जो तानिर्विकल्पसमाधितैंभयहोवे है ॥ ताभयविषे एकतो आत्माकेस्वरूपकाअज्ञान ही कारणहे॥ओर दूसरा शास्त्रविरुद्ध नानाप्रकारकेकुतर्क कारणहैं॥अब तिनकुतर्कोंका निरूपणकरे हैं तहां प्रथम सांख्यशास्त्रकेअनुसा री योगीपुरुषोंकेकुतर्कोंका निरूपणकरे हैं॥सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयआत्माही सर्वशरीरोंविषेव्यापकहे॥तथा सोअद्वितीयआत्मा सत् चित्आनंदस्वरूपहे ॥ याप्रकारका आत्माकास्वरूप वेदान्तशास्त्र विषे कथनकर्‍याहे सो संभवेनहीं ॥ काहेतैं यासर्वभूतप्राणियोंविषे जो एकहीआत्माहोवे ॥ तो यालोकविषे एकजीवकेसुखीहुए सर्वजीव सुखीहोणेचाहिये ॥ तथा एकजीवकेदुःखीहुए सर्वजीव दुःखीहुएचाहिये ॥ ओर ऐसीवार्त्ता यालोकविषे देखणेमेंआवती नहीं किंतु यालोकविषे कोईजीवतो सुखीहे ओर कोईजीव दुःखीहे ॥ तथा कोईजीवतो जन्मताहे ओर कोईजीव मरताहे ॥ याप्रकारकोव्यवस्था देखणेमेंआवेहे ॥ यातैं यहजान्याजावेहे ॥ यासर्वशरीरोंविषे आ त्मा एकनहींहे ॥ किंतु एकएकशरीरविषे एकएकआत्मारहेहे ॥ तेशरीर अनंतहैं ॥ यातैं तेआत्माभी अनंतहैं ॥ तिनअनेकआत्मावोंकूं भोगमोक्षकीप्राप्तिकरणेहारी एकप्रकृति अंगीकारकरीचाहिये ॥ साएकप्रकृति यद्यपि संसारदशाविषे महत्तत्वआदिकअनेकरूपोंकरिके स्थितहे॥तथापि साप्रकृति मोक्षअवस्थाविषे यापुरुषके अदर्शनभावकूंप्राप्तहोवेहे॥अथवा साप्रकृति संसारदशाविषे बंधरूपअनुलोमपरिणा मकूंप्राप्तहुईभी मोक्षकालविषे मुक्तिरूपप्रतिलोमपरिणामकूंप्राप्तहोवेहे॥अथवा साप्रकृति आपणेस्वरूपतैं यापुरुषकूं बंधकीप्राप्तिकरेनहीं ॥

किंतु साप्रकृति मनरूपकरिके यापुरुषकूं बंधकीप्राप्तिकरेहै ॥ यातैं मुक्तिअवस्थाविषे कृतार्थहुआ सोमनहीं आपणेकारणविषे लय रूपता कूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहतीनप्रकारकीरीतिहीं संभवहोइसकैहै ॥ और वेदांतियोंनैं तामनका अद्वितीयब्रह्मविषे तादात्म्यरूपजो लयमान्याहै सो संभवतानहीं ॥ काहे तैं यालोकविषे कार्यका आपणेकारणविषेही लयहोवैहै ॥ अकारणविषे लयहोवैनहीं ॥ जैसे घटरूपकार्यका मृत्तिका रूपकारणविषेहीं लयहोवैहै ॥ तंतुआदिकअकारणोंविषे लयहोवैनहीं ॥ और निर्विकारअद्वितीयब्रह्मविषे तामनकीकारणतासंभवैनहीं॥ यातैं ताअद्वितीयब्रह्मविषे तामनकालय संभवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकीकुतर्कोंकरिके तेवेदांतविचारतैंरहित योगीपुरुष तानिर्विकल्पसमाधितैं भयकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तथा श्रुतिविद्वान्पुरुषोंकेअनुभवकरिकेसिद्ध जोपूर्वउक्त अमनसभावहै ॥ ताका परित्यागकरिके ताअमनसभावकूं सुषुप्तिकेतुल्यमानेहैं ॥ याकारणतैं तेयोगीपुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूं प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ ते वेदांतविचारतैंरहित योगीपुरुष यद्यपि वृक्षकीन्याई ज्ञानतैंरहित हैं ॥ तथापि आपणेकूंपंडितमानैहैं ॥ और तेयोगीपुरुष यद्यपि पाषाणकीन्याई निश्चलहैं ॥ तथापि भस्राकीन्याई व्यर्थहीश्वासोकूं उठावैहैं ॥ तहां बाहरलेवायुकरिके पूर्णकन्याजो अजादिकोंका चर्महै जिसचर्मकेवायुकरिके लोहारपुरुष अग्निकूंप्रज्वलितकरैहैं ॥ ताचर्मकानाम भस्राहै ॥ हेशिष्य॥ जैसे जन्मतैंअंधपुरुष आपणेहस्त विषेस्थितनिधिकूंभी देखतेनहीं ॥ तैसे ते वेदांतविचारतैंरहित योगीपुरुष आपणेहृदयदेशविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माकूंभी देखिसक तेनहीं ॥ इतनैंकरिके सांख्यशास्त्रवालेपुरुषोंके कुतर्कोंका निरूपणकन्या ॥ अब नैयायिकआदिकोंकेकुतर्कोंका संक्षेपतैंनिरूपणकरे हैं॥ बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूप तथासर्वउपाधियोंतैरहित ऐसाजोआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माहै॥ताआत्मादेवकूं केईकनैयायिकवादी स्वभा वतैं ज्ञानतैंरहितजडमानैहैं ॥ और केईकशून्यवादी माध्यमिकतो सुख ज्ञान यादोनोंकूं अत्यंतअसत्यमानैहैं॥तहां नैयायिकोंकेमतवि षेतो जिसकालविषे आत्माकेसाथ मनका संयोगसंबंधहोवे है ॥ तिसीकालविषे ताआत्माविषे ज्ञान सुख आदिकगुण उत्पन्नहोवे हैं ॥ और जिसकालविषे ताआत्माकेसाथ मनका संयोगसंबंधनहींहोवैहै॥तिसकालविषे तेज्ञानसुखादिकगुण आत्माविषे उत्पन्नहोवैनहीं ॥और माध्य

मिकोंकेमतविषेतो तेज्ञानसुखादिक अत्यंत असत्यहीहोवेहैं ॥ और तिननैयायिकोंकेमतविषे सोआत्मा मोक्षकालविषेही तामनकेसंबंधतैंरहितहोवैहै ॥ जीवतअवस्थाविषेहोवैनहीं ॥ यातैं तेवादी जीवतअवस्थाविषे ताअमनसभावकूं अंगीकारकरैनहीं ॥ किंतु मोक्षकालविषेहीं ताअमनसभावकूं अंगीकारकरैहैं ॥ याकारणतैं तेभ्रांतवादी तानिर्विकल्पसमाधितैं सर्वदा भयकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ हेशिष्य ॥ ऐसे शास्त्रविरुद्धकुतर्कोंकापरित्यागकरिके जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुवेदांतशास्त्रके संप्रदायकेअनुसार तामनकानिग्रहकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइके मोक्षरूपनित्यसुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा सर्वभयतैंरहितहोवैहैं ॥ तथा जन्ममरणादिकसर्वदुःखोंतैंरहितहोवैहैं ॥ यातैं जिनअधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवे ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनैं प्रथम आपणेमनकूंहींजयकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोमन अत्यंतप्रबलहै ॥यातैं तामनकेजयकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहींहै ॥ समाधान ॥ हे शिष्य ॥ तामनकेजय करणेविषे जो किसीजीवका सामर्थ्यनहीं होता ॥ तो श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्र तामनकेजयकरणेका विधाननहींकरता ॥ काहेतैं जिसकर्मकेकरणेविषे या अधिकारीपुरुषोंका सामर्थ्यहोवैहै ॥ तिसीकर्मकेकरणेका सोशास्त्र विधानकरैहै ॥ और जिसकर्मकेकरणेविषे यापुरुषोंका सामर्थ्यनहींहोवैहै ॥ ताकर्मके करणेका सोशास्त्र विधानकरैनहीं ॥ जैसे अग्निहोत्रादिककर्मोंकेकरणेविषे याअधिकारीपुरुषोंकासामर्थ्यहै ॥ यातैं सोशास्त्र तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंका विधानकरैहै ॥ और अग्निकेभक्षणकरणेविषे तथासमुद्रकेउल्लंघनकरणेविषे यापुरुषोंका सामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं ताअग्निकेभक्षणकरणेका तथासमुद्रकेउल्लंघनकरणेका कोईभीशास्त्र विधानकरैनहीं ॥ और तामनकेजयकरणेकातो वारंवार सोशास्त्र विधानकरैहै ॥ तथा सोमनकाजयकरणा अनेकविद्वान्पुरुषोंके अनुभवकरिकेभीसिद्धहै ॥ यातैं गुरुशास्त्रकेउपदेशतै तामनका जय अवश्यकरिकेसिद्धहोवैहै ॥ हे शिष्य ॥ तामनकेनिग्रहकरणेविषे याअधिकारीपुरुषका उद्वेगतैंरहित दृढउत्साहहीं कारणहै ॥ जैसे पूर्व किसीटिटिभपक्षीनैं दृढउत्साहकरिके जलकेएकबिंदुकूंग्रहणकरणेहारी आपणीचंचुसैं समुद्रकूं जलसैंरहितकऱ्याहै ॥ तैसे याअधिकारीपुरुषनैभी उद्वेगतैंरहितहोइके तथादृढउत्साहकरिके तामनकानिग्रहकरणा ॥ हेशिष्य ॥ लोकपरंपराकरिकेप्राप्त जो टि

टिभपक्षीकावृत्तांतहै ॥ ताकूं तूं श्रवणकर ॥ समुद्रकेजलकीलहरियोंकरिकैयुक्त जोसमुद्रकातीरहै ॥ तासमुद्रकेंतीरविषे एकटिटिभपक्षी
आपणेअंडोंकूंराखताभया ॥ और तिसकालविषे यद्यपि टिटिभीस्त्री तांटिटिभपक्षीकूं बहुतवार निवारणकरतीभई ॥ तथापि सोटिटिभप
क्षी आपणेअहंकारकरिके तास्त्रीकेवचनकूंनहींमानताभया ॥ तथा समुद्रकूं तुच्छमानिके तासमुद्रकेतीरविषेही आपणेअंडोंकूंराखताभया
॥ और सोटिटिभपक्षी आपणीस्त्रीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेटिटिभी तूं यासमुद्रतैंभयमतकर ॥ जोकदाचित् यहसमुद्र
आपणेगर्वकरिके हमारेअंडोंकाहरणकरेगा ॥ तो यामदकरिकैमत्तसमुद्रकूं मैं अभी जलतैंरहितकरोंगा ॥हेटिटिभी मेरेकोपकरिकेउत्पन्नभ
याजोभय ताभयकरिके तेजतैंरहितहुएयासमुद्रकूं तूं देख॥ हेशिष्य इसप्रकार तांटिटिभपतिकेगर्वयुक्तवचनोंकूंश्रवणकरिके सोटिटिभीस्त्री
तापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेपति ॥ मैं समुद्रकूंजलतैंरहितकरोंगा याप्रकारकावचन जोतूं कथनकरताहै ॥ सोयहवा
र्त्ता अत्यन्तदुर्घटहै ॥ काहेतैं यासमुद्रकाबल कहां है ॥ और तुमाराबलकहांहै ऐसे महान्‌समुद्रकेसुकावणेविषे तुमारा सामर्थ्य हैनहीं ॥हे
शिष्य ॥ इसप्रकार बहुतवारकहिके सोटिटिभीस्त्री पुनःकहणेतैंउपरामहोतीभई ॥ और सोटिटिभपक्षीभी तास्त्रीकेप्रति तूं समुद्रतैंभयमत
कर याप्रकारकावचन वारम्वार कहिके तासमुद्रकेतीरविषे आपणेअंडोंकूंराखताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोटिटिभपक्षी आपणीस्त्रीकूंसाथ
लेके कहीं आहारकेवास्ते जाताभया॥ हेशिष्य ॥ तांटिटिभपक्षी नैं आपणीस्त्रीकेप्रति जेजेवचनकहेथे ॥ तिनसंपूर्णवचनोंकूं सोसमुद्र श्र
वणकरताभया ॥और तास्त्रीसहितटिटिभपक्षीकेगयेतैंअनंतर सोसमुद्र आपणेमहानपणेकूंस्मरणकरिके तथा तांटिटिभपक्षीकेअल्पपणेकूं
स्मरणकरिकेमंदमंदहसताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोसमुद्रपर्वतकेसमानऊंचीजलकीलहरोंकूंपसारिके तांटिटिभपक्षीकेअंडोंकूंहरणकरताभ
या॥औरतिनअंडोंकूंग्रहणकरिकेसोसमुद्रपरमेश्वरकूंसर्वजगत्‌केभयकाकारणमानताहुआआपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभयायालो
कविषे जितनेकीस्थावरजंगमजीवहैं॥तिसंपूर्णजीवपरमेश्वरकीविभूतियांहैयातैंकिसीजीवकीशक्तिस्वरूपकरिके तथादेशकरिकेतथाकालकरि
केतथानिमित्तकरिकेजानीजातीनहीं॥काहेतैंसर्वशक्तियोंकाआश्रयजोपरमेश्वरकोमायाहै॥सामायादुर्घटअर्थकूंभीसिद्धकरिदेवेहै॥याकारणतैं

हीं शास्त्रवेत्तापुरुषोंनें अघटितघटनापटीयसीमाया यहमायाकास्वरूप कथनकऱ्याहै॥ और यहटिटिभपक्षीभी तापरमेश्वरकीविभूतिरूप है॥ यातें याटिटिभपक्षीका कौनदेशहै तथाकौनकालहै तथाकौनमित्रहै तथाकौनशक्तिहै यहवार्त्ता सर्वज्ञपरमेश्वरतेंविनाहमजीव जानि सकतेनहीं ॥ यातें इसटिटिभपक्षीकेअंडोंकूं मैं नाशनहींकरों ॥ किंतु किसीगुह्यस्थानविषे मैं इनअंडोंकूंराखिछोडों ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार काविचारआपणेमनविषेकरिके सोसमुद्र तिनअंडोंकूं किसीगुह्यस्थानविषेराखताभया ॥ और महान्गर्जनारूपशब्दोंकूंकरताहुआ सोसमुद्र पूर्वकीन्याई निर्भयस्थितहोताभया ॥तिसतेंअनंतर सोटिटिभपक्षी आपणेउदरकीपूर्णताकरिके ताटिटिभीस्त्रीसहित तासमुद्रकेतीररूप रिआवताभया॥और तहां आपणेपुत्रोंकेअंडोंकूंनदेखिकरिके सोटिटिभपक्षी आपणेनेत्रोंकूंरक्तकरताभया ॥ तथा क्रोधकरिकेमूर्छितहोता भया ॥ और यहसमुद्र हमारेअंडोंकूलेगयाहै याप्रकारकाअनुमानकरिके सोटिटिभपक्षी तासमुद्रकेसुकावणेकानिश्चयकरताभया ॥ तिस कालविषे साटिटिभीस्त्री आपणेपतिकेअभिप्रायकूंजानिकेतापतिकेहितवासते याप्रकारकेनीतियुक्तवचनोंकूं कहतीभई ॥ टिटिभीउवाच॥ हेपति॥सर्वनदियोंकापति जोयह समुद्रहै॥ताकाबल अत्यंत महान्है ॥ और तुमाराबल अत्यंतअल्पहै ॥ ऐसेमहान्बलवालेसमुद्रकेसाथ जोतू वैरकरताहै सो नीतिशास्त्रतें विरुद्धकरताहै ॥ काहेतें तानीतिशास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ जैसे मैत्री तथाविवाह यहदोनों समानपुरुषों केहीहोवे हैं ॥ न्यूनअधिकपुरुषोंका परस्पर मैत्री तथाविवाह होवेनहीं ॥ तैसे परस्पर वैरभी समानबलवालेपुरुषोंकाहीहोवे है॥न्यूनअधिकबलवालेपुरुषोंका परस्पर वैर संभवेनहीं ॥ औरयासमुद्रकेबलसमान् तुम्हाराबल हमारेकूंदेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातें यासमुद्रकेसाथ वैरकरणा तुमारेकूं उचित्नहीं है ॥ और ॥ हेपति याळोकविषे देशबल १ कालबल २ मित्रबल ३ धनबल ४ शारिरबल ५ कुलबल ६ यहषट्प्रकारका बलहोवे है सोषट्प्रकारकाबल यासमुद्रविषेतो देखणेमेंआवे है ॥ परंतु तुमारेविषे सोषट्प्रकारकाबल हमारेकूं देखणेविषेआवतानहीं ॥ काहेतें शिरतेंलेकेपुच्छपर्यंत तुमारेशरीरकीदीर्घतातो षोडशअंगुलपरिमाणहै ॥ और तुमारेदोनोंपक्ष द्वादशअंगुलपरिमाणदीर्घ हैं॥यातेंवामपक्षकेअग्रभागतेंलेकेदक्षिणपक्षकेअग्रभागपर्यंतयहतुमाराशरीर एकहस्तपरिमाण चौडाहै ॥औरआम्रफलके

वृंतसमान तुमारे दोनोंपादहैं॥और कुशाकेअग्रभागकेसमान तुमाराचंचुहै॥और जीर्णवस्त्रकेसमान अत्यंतशिथिल तुमारेदोनोंपक्षहैं॥इसतैं अधिकदेश तुमारा अंतरनहींहै तथाबाहरनहीं है ॥ यातैं देशबलभी तुमारेविषेनहीं है ॥ और हेपति हमपक्षीआदिकनीचजातियोंविषे जन्मतैंलेकेनाशपर्यंत यहकाल एकरूपहीरहेहै॥देव दैत्य मनुष्य इत्यादिकउत्तमजातियोंविषेही सोकाल उत्कृष्टता तथानिकृष्टता प्राप्तकरै हैं ॥ यातैं कालबलभी तुमारेविषेनहीं है॥और हेपति॥पुत्रोंकेवियोगकरिके दीनभावकूंप्राप्तभई जोमैंस्त्रीहूं तास्त्रीतैंबिना तुमारा दूसराकोई मित्रहैनहीं ॥ यातैं मित्रबलभी तुमारेविषेनहींहै ॥ और हेपति॥यालोकविषे जोधनवानपुरुषहै ॥ ताधनीपुरुषके धनकेप्राप्तिकीआशाकरिके अमित्रपुरुषभी मित्रभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥सोधन तुमारेपासहैनहीं ॥यातैं धनबलभी तुमारेविषेनहीं है ॥ और हेपति ॥ किसीबलवान् पुरुषनें आकाशविषेचलायाजोबाणहै ॥ सोबाण जितनैंपर्यंत जाइके नीचे पतनहोवैहै ॥ तितनैंपर्यंत उडनेविषेभी तुमारा सामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं शरीरबलभी तुमारेविषेनहींहै ॥ और हेपति ॥ तुमारा जन्म टिटिभपक्षीकेकुलविषेहुआहै ॥ सोटिटिभपक्षी सर्वपक्षियोंविषे निकृष्टहोवे है ॥ यातैं कुलबलभी तुमारेविषेनहीं है ॥ इतनें करिके टिटिभपक्षीविषे तापट्प्रकारकेबलकाअभाव निरूपण कऱ्या ॥ अब समुद्रविषे तापट्प्रकारकेबलकीविद्यमानता निरूपणकरेहैं ॥ हेपति ॥ यहसमुद्र ओरलेकिनारेविषेतो एकलक्षयोजन परिमाण विस्तारवालाहै ॥ और पारलेकिनारेविषे दोलक्षयोजनपरिमाण विस्तारवालाहै ॥ और नीचेपृथिवीविषेतो यासमुद्रका पातालपर्यंत विस्तारहै ॥ और जैसे तलावकाजल कुल्याद्वारा सर्वक्षेत्रभूमिकूंव्याप्यकरिकेस्थितहोवे है ॥ तैसे यहसमुद्रभी प्रलय कालविषे तीनलोकोंकूंव्याप्यकरिकेस्थितहोवैहै ॥ यातैं यहसमुद्र देशबलवालाहै ॥ और हेपति ॥ यासमुद्रादिकमहान्पुरुषोंकेयह काल सर्वदाअनुकूलरहेहै ॥ यातैं यहसमुद्र कालबलवालाभीहै॥ और हेपति॥याभूमिविषे जितनैंकोजातिकेप्राणीरहेहैंतितनैंहीजातिकेरत्न यासमुद्रविषेरहेहैं ॥ यातैं यहसमुद्र धनबलवालाभी है ॥ और हेपति ॥ यहसमुद्र इंद्रादिकदेवतावोंकूं तथामुनिलोगोंकूं तथामनुष्योंकूं अनेक प्रकारकेरत्नोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ यातैं तेसंपूर्णइंद्रादिकदेवता यासमुद्रकेमित्रहैं ॥ यातैं यहसमुद्र मित्रबलवालाभीहै ॥ और हेपति ॥

यहसमुद्र साक्षात् महेश्वरतैंउत्पन्नभयाहे ॥ यातैं यहसमुद्र कुलबलवालाभीहै ॥ और हेपति ॥ अनेकशतयोजनहैविस्तारजिनोंकाऐसेजे मैनाकादिकपर्वततथे ॥ तेपर्वत ॥ इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहोइके यासमुद्रकेशरणकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिनपर्वतोंकूं यहसमुद आपणेजलविषेस्थितक रिके पालनकरताभयाहे ॥ यातैं यहसमुद्र शरीरबलवालाभीहै ॥ हेपति ॥ इसप्रकार आपणेबलकूं तथायासमुद्रकेबलकूं तूं भलीप्रकार विचारकरिकेदेख ॥ आपणे नाशकरणेवासते तूं यासमुद्रसैं व्यर्थविरोध मतकर ॥ हेपति तुमनैं आपणीमूर्खताकरिके प्रथमतो हमारेकूं पुत्रोंतैंरहितकन्याहे ॥ अभी आपणेनाशकरिके हमारेकूं विधवाभावकीप्राप्ति मतकर ॥ हेशिष्य ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेवचन जभी ताटिटिभीस्त्रीनैं आपणेपतिकेप्रति कहे ॥ तभीसोटिटिभपक्षी तास्त्रीकेवचनोंकूंश्रवणकरिके तास्त्रीकेप्रति याप्रकारकेवचन कहता भया ॥ टिटिभउवाच ॥ हेस्त्री ॥ यालोकविषे संपदाकालविषेतो आपणेस्वार्थवासते कोटिसहस्र मित्रहोवेहैं ॥ परंतु आपदाकालविषे कोई मित्रहोतानहीं ॥ और जो आपदाकालविषे मित्रहोवेहे ॥ सोईही मित्रकह्याजावेहे ॥ और हेस्त्री ॥ जोदेहधारीजीव आपदा कालविषे जिसपुरुषका परित्यागकरिदेवेहे॥सा देहधारीजीव तिसपुरुषकाशत्रुहीहोवेहे॥सो आपणीस्त्रीहोवे अथवा आपणापुत्रहोवे अथवा आपणाभ्राताहोवे ॥ ताकूं शत्रुहीजानणा॥और हेस्त्री ॥ या लोकविषे जोदेहधारीजीव जिसपुरुषके पुण्यपापरूपकर्मोंविषे तथासुखदुःखरू पभोगविषे अनुसारीवर्तेहै ॥ सोदेहधारीजीवही तिसपुरुषका मित्रकह्याजावेहे ॥ और हेस्त्री ॥ यालोकविषे जिसपुरुषनैं जिसबुद्धिमान मनुष्यकूं आपणेआत्माकीन्याईं विश्वासकापात्रकरिके मान्याहे ॥ सोबुद्धिमानमनुष्यतिसपुरुषकूं जभी आपदाकालविषे चित्तकेउत्साह कूंनष्टकरणेहारेवचन कहेहे ॥ तभी सोबुद्धिमानमनुष्य तापुरुषका शत्रुहीजानणा ॥ और हेस्त्री ॥ यालोकविषे जोपुरुष केवल आपणेयोगक्षेमकीहीइच्छाकरे है ॥ आपणेमित्रके योगक्षेमकीइच्छाकरतानहीं ॥ ऐसेकपटीमित्रकूं यहबुद्धिमानपुरुष प्रथमही नाशकरे ॥ तिसतैंअनंतर आपणेसाक्षातशत्रुकूंनाशकरे ॥ याप्रकारकेवचन नीतिशास्त्रविषे बुद्धिमानपुरुषोंनैं कथनकरेहैं ॥ हेस्त्री ॥ यद्यपि पूर्वं तूं हमारेकूं मित्ररूपहोइकेप्रतीतहोतीथी॥तथापि याआपदाकालविषे तुमनैं हमारेप्रति उत्साहकेनाशकरणेहारे कठोरवचन कहेहैं॥यातैं अभी

हमारेकूं तूं शत्रुरूपहोइकेप्रतीतहोतीहै ॥ और जोदेहधारीजीव अंतरविषेतो शत्रुपणाराखेहै ॥ और बाहरसैं मित्रपणादिखावैहै ॥ ऐसे कपटीमित्रकेमारणेविषे यद्यपि नीतिशास्त्रनैं दोष कह्यानहीं ॥ तथापि मैं तुम्हारेकूं मारतानहीं ॥ काहेतें शास्त्रविषे दोप्रकारके वचनहोवे हैं॥ तहां एकतो सामान्यवचनहोवे है ॥ और दूसरे विशेषवचनहोवे हैं॥जैसे या अधिकारी पुरुषनैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरणी यह सामान्यवचनहै ॥ और याअधिकारीपुरुषनैं यज्ञविषे पशुकोहिंसाकरणी यहविशेषवचनहै ॥ तहां सामान्यवचनतें विशेषवचन बलवान् होवैहै ॥ तैसे यापुरुषनैं कपटीमित्रकूंमारणा यहसामान्यवचनहै ॥ और स्त्रीबालककूं नहींमारणा यहविशेषवचनहै ॥ सोयहविशेषवचन तासामान्यवचनतें बलवान्है ॥ याप्रकारकी शास्त्रकीव्यवस्थाकूंविचारिके मैं तुमारेकूंमारतानहीं ॥ और हेस्त्री तुमारेनमारणेविषे एकदूस राभीकारणहै ॥ जिसपुरुषकेसाथ जोपुरुष प्रीतिपूर्वक सप्तवचन उच्चारणकरैहै ॥ अथवा भूमिविषे सप्तपाद एकठेचलावेहै ॥ सोपुरुष ताका मित्रहोवैहै ॥ याप्रकारका मित्रकालक्षण कोईक बुद्धिमान्पुरुष कथनकरैहै ॥ सोयहमित्रकालक्षण तुमारेविषेभीघटेहै ॥ काहेतें मैंने तुमा रेसाथ स्वस्थचित्तहोइके बहुतकालपर्यंत निवासकऱ्याहै ॥ यातें तुमारेकूं मृत्युरूप शरीरकादंड मैं करतानहीं ॥ और पूर्वउक्तशत्रुकेल क्षणभी तुमारेविषेघटेहैं ॥ यातें हेदुष्टस्त्री तूं हमारेसमीपतें कहांअन्यत्र चलीजाउ यहकठोरवचनरूप धिक्दंड मैं तुमारेकूंकरताहूं॥हेस्त्री॥ मैं एकलाही आपणेबलकरिके यासमुद्रकूंसुकावोंगा ॥ आपणेदोनोंपक्षोंकरिके तथाआपणेचंचुकरिके यासमुद्रकेजलकूंग्रहणकरिके बाह रभूमिविषेजाइके पावेंगा ॥ याप्रकार थोडेहीकालविषे यासमुद्रकूं अंधकूपकोन्याई जलतैंरहितकरोंगा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकेवचन ता स्त्रीकेप्रतिकहिके सोटिटिभपक्षी क्रोधवान्होइके आकाशविषेउडताभया ॥ और सोटिटिभपक्षी तिसोप्रकार तासमुद्रकेसुकावणेवासते प्रवृ त्तहोताभया ॥ तिसतें अनंतर सापतिव्रताटिटिभीस्त्रीभी तापतिका समुद्रकेसुकावणेका दृढनिश्चयदेखिके तापतितैं आपणाअपराधक्षमा करावतीभई ॥ और तिसोप्रकार साटिटिभीस्त्रीभी तासमुद्रकेसुकावणेवासतै प्रवृत्तहोतीभई ॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोटिटिभपक्षी तथाटि टिभीस्त्री दोनों उद्वेगतैंरहितहोइके रात्रिदिनविषे निरंतर तासमुद्रकेसुकावणेविषे प्रयत्नकरतेभये ॥ और तेस्त्रीपुरुषदोनोंपक्षी आपणेदोनों

पक्षोंकरिके तथाआपणेचंचुकरिके तासमुद्रकेजलकूंग्रहणकरिके बाहरभूमिविषेआइके ताजलकूंपावैं ॥ यद्यपि तेदोनोंपक्षी समुद्रके जलकूंग्रहणकरिके जभी आकाशविषेउडैं ॥ तभी तिनोंकेवेगतैंउत्पन्नभयाजोपवनहै॥तापवनकरिके सोजल मार्गविषेही सूकिजावै॥तथापि तेपक्षीताप्रयत्नतैं उपरामहोवैंनहीं ॥ किंतु वारंवार ताजलकूंग्रहणकरिकें बाहरभूमिविषेजाइकेपावैं ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार तािटिटिभोंकूं समुद्रकेसुकावणेविषे प्रवृत्तहुआदेखिके दूसरेअनेकटिटिभपक्षी तहांआवतेभये ॥ और तेदूसरेटिटिभपक्षी तिनोंकेवृत्तांतकूंजाणिके तिनदोनोंकूंतासमुद्रसुकावणेकेउद्यमतैं निवृत्तकरणेवासते अनेकप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ परंतु तेदोनोंस्त्रीपुरुष तिनदूसरेटिटिभपक्षियों के वचनोंकूं नहींमानतेभये ॥ और तेदोनोंस्त्रीपुरुष तिनसर्वटिटिभपक्षियोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेटिटिभपक्षियो॥जोतुम हमारेसाथ मित्रतारासतेहो ॥ तो हमारेन्याईं तुमभी यासमुद्रकेसुकावणेविषे प्रयत्नकरो ॥ और जोतुम हमारेसाथ मित्रतानहींरासतेहो ॥ तो तुम आपणेघरोंकूंचलेजावो ॥ हमतो यासमुद्रकूं अवश्यकरिकेसुकावैंगे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिनदोनोंस्त्रीपुरुषकेवचनोंकूं श्रवणकरिके तेसंपूर्णटिटिभपक्षी तिनदोनोंकीन्याईं तासमुद्रकेसुकावणेविषे उद्यमकरतेभये ॥ और तिनसर्वटिटिभपक्षियोंकूं समुद्रकेसुकावणेविषे प्रवृत्तहुआदेखिके दूसरेभी अनेकजातिवालेपक्षी तहांआवतेभये ॥ तेसंपूर्णपक्षीभी तिनटिटिभपक्षियोंकीन्याईं तासमुद्रकेसुकावणेविषे उद्यमकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥इसप्रकार तिनसर्वपक्षियोंकेप्रवृत्तहुएतैंअनंतर आपणीइच्छाकरिके तीनलोकोंविषेविचरणेहारा नारदमुनि किसीदैवयोगतैं तहांआवताभया ॥ और सोनारदमुनि तिनसर्वपक्षियोंकेवृत्तांतकूंजाणिके तिनपक्षियोंकूं तासमुद्रकेसुकावणेतैंनिवृत्तकरणेवासते अनेकप्रकारकेवचन कहताभया ॥ परंतु दुःखकरिकेआतुरहुएतेपक्षी तानारदमुनिकेवचनकूं अंगीकार नहींकरतेभये॥तिसतैं अनंतर सोनारदमुनि तिनपक्षियोंके दृढनिश्चयकूंदेखिके कृपाकरिकेयुक्तहुआ तिनपक्षियोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥हेसर्वपक्षियो॥विष्णुभगवान्कावाहन जो गरुडपक्षीहै॥सोगरुडपक्षी तुमसर्वपक्षियोंकाराजाहै॥यातैं तुमसर्वपक्षी तागरुडकेसमीपजाइके इहांलेआवो ॥ तोतुमाराकार्यसिद्धहोवैगा॥हेशिष्य॥याप्रकारकेतानारदमुनिकेवचनोंकूंश्रवणकरिके तेसंपूर्णपक्षी गरुडकेसमीपजाइके आपणावृत्तांतकहिके

तागरुडकूं तहांलेआवतेभये ॥ तहां गरुडकूंआयाहुआदेखिके सोसमुद्र भयकरिके विह्वलताकूं प्राप्तहोताभया ॥ और जिनअंडोंकूं सोस मुद्र पूर्व लेगयाथा ॥ तेसंपूर्णअंडे ताटिटिभपक्षीकेताईं देताभया ॥ हेशिष्य ॥ याटिटिभपक्षीकेदृष्टांतकहणेका यहअभिप्रायहै ॥ जैसे सो टिटिभपक्षी आपणेदृढपुरुषार्थकरिके तासमुद्रकूंजयकरताभयाहै ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी आपणेदृढपुरुषार्थकरिके यामनकूंजयकरै॥ हेशिष्य॥जैसे ताटिटिभपक्षीनें जभी तासमुद्रकेसुकावणेका दृढनिश्चयकर्याथा॥ तभीही ताटिटिभपक्षीकी गरुडभगवान्नें आइके सहा यताकरीथी ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी जभी तामनकेजीतणेका दृढनिश्चयकरै है ॥ तभी याअधिकारीपुरुषकी संपूर्णदेवता सहायता करे हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोगरुड पक्षित्वरूपकरिके ताटिटिभपक्षीका सजातीयथा ॥ यातें टिटिभपक्षीकीसहायताकरणी यद्यपि गरु डपक्षीविषेतो संभवे है ॥ तथापि तेदेवता हममनुष्योंकेसजातीयहैंनहीं ॥ यातें तिनदेवताओंविषे हममनुष्योंकीसहायताकरणी संभवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ समानजातिवालेही सहायताकरे हैं ॥ याप्रकारकानियम संभवेनहीं ॥ किंतु किसीस्थलविषे विजातीयपुरुषभी सहायताकरे हैं ॥जैसे सीताकेवियोगजन्यदुःखकीनिवृत्तिकरणेवासतै रावणकेसाथ युद्धरूपकार्यविषे प्रवृत्तभयेजोश्रीरामचंद्रहैं ॥ ताश्री रामचंद्रकीसहायता विजातीयवानरोंनें करी है ॥ तैसे दृढनिश्चयपूर्वक तथाश्रद्धाभक्तिपूर्वक किसीशुभकर्मविषे प्रवृत्तभया जोअधिकारीपु रुषहै ॥ ताअधिकारीपुरुषकीसहायता सर्वदेवताकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ उद्यम साहस धैर्य बल बुद्धि पराक्रम यहषट्गुण जिसपुरुषविषे वि द्यमानहोवेहैं ॥ तिसपुरुषकूं कोईभीपदार्थ दुर्लभनहीं है ॥ किंतु सोपुरुष सर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोइसकेहैं ॥ तहां पुरुषार्थकानाम उद्यमहै ॥ और इंद्रियोंकाजयरूप जोदमहै ताकानाम साहसहै ॥ और अनेकविघ्नोंकेप्राप्तहुएभी चित्तविषे उद्वेगनहींहोणा याकानाम धैर्यहै॥और दृष्ट साधनोंकीसंपत्तिहोणी याकानाम बलहै ॥ और नानाप्रकारकीचातुर्यताहोणी याकानाम बुद्धिहै॥और शरीरकेबलकानाम पराक्रमहै॥हेशि ष्य ॥ यहअधिकारीपुरुष तापराक्रमकूंतो सिंहतैंसीखे॥काहेतें जैसे सिंह आपणेसन्मुखभूमिविषे पादकूंराखे है ॥तहां अनेकशस्त्रोंकेप्रहारहु एभी सोसिंह तापादकूं पीछेउठावतानहीं॥ तैसे यहअधिकारी पुरुषभी आरंभकरेहुए किसीमहान्शुभकार्यकूं अथवा किसीअल्पशुभका

र्यकूं परित्यागकरेनहीं ॥किंतु ताकार्यकोसमाप्तिहीकरे॥हेशिष्य ॥ अंगीकारकरेहुए किसीकार्यकूं परित्यागनहींकरणा याअर्थविषे बहुतम हात्मापुरुष दृष्टांतरूपहैं ॥ जैसे अंगीकारकरेहुएकालकूटविषकूं महादेव परित्यागकरतानहीं ॥ और जैसे अंगीकारकरेहुए वडवाग्निकूं समुद्र परित्यागकरतानहीं ॥ और जैसे अंगीकारकरेहुए पृथिवीकेभारकूं कूर्म परित्यागकरतानहीं ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी आरंभकरे हुए शुभकार्यकूं परित्यागकरेनहीं॥हेशिष्य॥याप्रकारकाविचारकरिके जोअधिकारीपुरुष तामनकेनिग्रहकरणेविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ और मर णांतसंकटकेप्राप्तहुएभी तिसउद्यमतें निवृत्तहोतानहीं॥ सोअधिकारीपुरुष अवश्यकरिके तामनकाजय करैहै॥हेशिष्य॥रजोगुणकाकार्यजो इच्छारूपकामहै॥तथा सत्वगुणकाकार्य जोविषयसुखकाअनुभवरूपभोगहै॥ताकामभोगविषे तत्परहुआ जोयहमनहै॥तथा तामसनिद्रारू पलयविषे जाग्रतस्वप्नकेविक्षेपतेंरहितहुआ जोयहमनहै॥तामनकूंयहअधिकारीपुरुष किसीउपायकरिके निग्रहकरे ॥ हेशिष्य ॥जैसे सोका मभोग याअधिकारीपुरुषोंके अनर्थकाकारणहै॥ तैसे सर्वदोषोंकाभी सोनिद्रारूपलयभीअनर्थकाहीकारणहै॥ यातें यहअधिकारीपुरुष ता निद्रारूपलयतेंभी यामनकूंनिवृत्तकरे ॥ अब तामनकेनिग्रहकरणेकाउपाय वर्णनकरेहैं॥हेशिष्य ॥यामनकेनिग्रहकरणेवासते दोउपाय शा स्त्रविषेकथनकरेहैं ॥ एकतो वैराग्यरूपउपायहै ॥ और दूसरा अभ्यासरूपउपायहै ॥तहांयहसंपूर्ण द्वैतप्रपंच याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुः खोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ यातें यहसंपूर्णजगत् दुःखरूपहीहै॥अथवा यहसंपूर्णजगत् याजीवोंके ब्रह्मानंदकूंआच्छादनकरणेहाराहै ॥यातें दुःखरू पहीहै ॥ इसप्रकार गुरुशास्त्रकेउपदेशतें यासर्वजगत्कूंदुःखरूपजाणिके किसीपदार्थकेप्राप्तिकीइच्छानहींकरणी याकानाम वैराग्यहै॥और यहसंपूर्णजगत् ब्रह्मरूपहीहै ॥ ब्रह्मतेंभिन्न याजगत्का कोईवास्तवस्वरूपहैनहीं ॥ जैसे मृत्तिकातेंभिन्न कोईघटका वास्तवस्वरूपनहीं है॥ याप्रकार वारंवार आपणेमनविषेचिंतनकरणा याकानाम अभ्यासहै ॥ ऐसे वैराग्यअभ्यासउपायकरिकेही यामनकानिग्रहहोवै है ॥ यह वार्त्ता गीताविषे भगवाननेंभीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ असंशयंमहाबाहो मनोदुर्निग्रहंचलं अभ्यासेनतुकौंतेय वैराग्येणचगृह्यते ॥ अर्थयह ॥ हेअर्ज्जुन तुमनें जोपूर्व मनकोदुर्निग्रहता कहीहै ॥ सोवार्त्ता यद्यपि सत्यहै ॥ तथापि अभ्यासकरिके तथावैराग्यकरिके

तामनकानिग्रह होइसकेहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ मनकानिरोधरूपजोयोगहै ॥ तायोगविषे याचित्तकी लय विक्षेप कषाय यहतीनअवस्था
विरोधीहोवे हैं ॥ तिनतीनोंअवस्थावोंकूं यहअधिकारीपुरुष ताअभ्यासवैराग्यरूपदोउपायोंकरिकैनाशकरै ॥ तहां यहचित्त जभी तानि
द्रारूपलयविषे प्रवर्त्तमानहोवे ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष ताचित्तकूं आत्मचिंतनरूपअभ्यासविषेजोडे ॥ और यहचित्त जभी ताकामभो
गविषे तत्परतारूपविक्षेपअवस्थाकूंप्राप्तहोवे ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष तिनविषयभोगोंविषे अनेकप्रकारके दोषोंकाचिंतनरूप वैराग्य
करिके तिनविषयभोगों तें चित्तकूंनिवृत्तकरे ॥ और रागादिकोंकेसंस्कारकरिके याचित्तविषे जोआत्मअनात्मआकारवृत्तितैंरहिततारूप
स्तब्धअवस्था है याकोंनामकषायहै॥ताकषायदोषयुक्तचित्तकूंदेखिके यहअधिकारीपुरुष तावैराग्यअभ्यासरूपउपायकरिके ताकषायदो
षकीनिवृत्तिकरे ॥ इसप्रकार उपायकरिके याअधिकारीपुरुषकाचित्त जभी ब्रह्माकारताकूं प्राप्तहोवे ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष ताचित्त
कूं ब्रह्माकारअवस्थातैं चलायमानकरैनहीं ॥ किंतु ताब्रह्माकारअवस्थाका परिपालनकरे ॥ हेशिष्य ॥ तासमाधिकालविषे सत्वगुणकी
अधिकतातैं उत्पन्नभयाजोसुखविशेषहै ॥ तासुखविषेभी यहअधिकारीपुरुष आसक्तिकरैनहीं ॥ किंतु विचारकरिके तासुखतैंभीनिःसंग
होवे ॥ और ब्रह्माकारताकूंप्राप्तहोइकेभी यहचित्त जभी बाह्यजावे ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष प्रयत्नकरिके ताचित्तकूं पुनःब्रह्माकारकरे ॥
हेशिष्य ॥ जिसकालविषे यहचित्त लय विक्षेप कषाय यातीनोंदोषों तें रहितहोवे है ॥ तथा चलनतैंरहितहोवे है ॥ तथा सर्वदृश्यपदार्थों
केसंबंधतैंरहितहोवे है ॥ तिसकालविषेही सोचित्त ब्रह्मभावकूंप्राप्तहुआजानणा ॥ हेशिष्य ॥ सर्वविक्षेपतैंरहितहुआ सोचित्त जिसब्रह्मभाव
कूंप्राप्तहोवे है ॥ सोब्रह्मकैसाहै ॥ शुद्धहै तथासर्वअनर्थोंतरहितहै ॥ तथा नित्यमुक्तहै ॥ तथा वाकादिकसर्वइंद्रियोंकाअविषयहै ॥ तथा
भूमाआनंदरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ जबपर्यंत साक्षीआत्माविषे यामनका बाधरूपलयनहींहोवे ॥ तबपर्यंत याअधिकारीपुरुषनें तामनकूं अव
श्यकरिकैनिरोधकरणा ॥ तानिरोधकरेहुएमनकूं जोब्रह्मभावकोप्राप्तिहोवे है ॥ यहही तामनकाबाधहै ॥ हेशिष्य ॥ यहब्रह्माकारतारूप
जोमनकानिरोधहै॥सोनिरोधहीवेदांतवाक्योंकेविचाररूपसांख्यकाफलहै॥तथासोनिरोधहीयोगकाफलहै॥यामनकेनिरोधतैंअधिकदूसराकोई

फलतासांख्ययोगकाहेनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिके निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥जोअधिकारीपुरुष यामनकेनिग्रहकूंनकरिके तथा तामनकेनिग्रहकूंप्रतिपादनकरणेहारे अध्यात्मशास्त्रका नअध्ययनकरिके दूसरेअनेकशास्त्रोंका अभ्यासकरे है ॥ सोपुरुष बहुतवाचालहोवे है॥ तथा व्यवहारविषेकुशलहोवे है॥तथा बहुतबोलणेकरिके तापुरुषके उरकंठादिकसूकतेजावे हैं ॥ इसतेंपरेदूसराकोईफल तिसपुरुषकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ और जोअधिकारीपुरुष यामनकेनिग्रहकूं प्राप्तहोवे है सोअधिकारीपुरुष थोडेग्रंथकेपठनकरिकेभी परमपुरुषार्थकूं प्राप्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ यामनकेनिग्रहकूंछोडिके तथामनकेनिग्रहकूंप्रतिपादनकरणेहारे वेदांतशास्त्रकूंछोडिके जोपुरुष दूसरेन्यायमीमांसादिकअनेकशास्त्रोंकूं अध्ययनकरे है ॥ तथा अध्ययनकरावे है तिसपुरुषकूंतेन्यायमीमांसादिकअनेकशास्त्र किंचित्मात्रभी शांतिकी प्राप्तिकरतेनहीं ॥ उलटा तेअनात्मशास्त्र तापुरुषकूं अहंकारकोहीप्राप्तिकरे हैं ॥ यातें याअधिकारीपुरुषनें तामनकेनिग्रहकूं अवश्यकरिके संपादनकरणा ॥मनकेनिग्रहकियेतेंविना यहजीव जिसजिसकर्मकूंकरे है ॥ सोकर्म ताजीवकूं फलकीप्राप्तिकरेनहीं ॥ तहांश्लोक ॥ दानमिज्यातपःशौचं तीर्थवेदाःश्रुतंतथा॥अशांतमनसःपुंसः सर्वमेतन्निरर्थकं ॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषकामन विषयवासनाकापरित्यागकरिके शांतिकूंनहींप्राप्तभया ॥ तिसपुरुषके दान यज्ञ तप शौच तीर्थ वेद श्रवण इत्यादिकसर्वकर्म निष्फलहीहोवे हैं ॥ जैसे हस्तीकास्नान निष्फलहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ इसलोकविषेप्राप्तहोणेयोग्य जितनेंकोशुभफलहैं ॥ तथा परलोकविषेप्राप्तहोणेयोग्य जितनेकीशुभफल हैं ॥ तेसंपूर्णशुभफल यापुरुषकूं मनकेनिरोधकरणेतेंही प्राप्तहोवे हैं ॥मनकेनिरोधकियेतेंविना किसीफलकीप्राप्तिहोवेनहीं॥हेशिष्य॥यहमोक्षकीइच्छावानअधिकारीपुरुष जभी तामनकानिरोधकरे है॥तभी यहअधिकारीपुरुष सुखेनहीं ताब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेप्राप्तहोवे है॥कैसाहैसोब्रह्म॥मनकरिकेभी चिंतनकऱ्याजातानहीं॥यातें श्रुतिभगवती ताब्रह्मकूं अचिंत्य यानामकरिकेकथनकरेहै॥और जैसेयहमन शब्दादिकविषयोंकूं बाह्यरूपकरिकेचिंतनकरे है ॥तैसे यहमन ताब्रह्मकूं बाह्यरूपकरिके चिंतनकरिसकेनहीं ॥किंतु यहशुद्धमन ताब्रह्मकूं अर्थतेंअंतररूपकरिके चिंतनकरे है ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताब्रह्मकूं चिंत्य यानामकरिकेकथनकरे है ॥ हेशिष्य ॥ एकहीब्रह्मकूं जो

श्रुतिनें मनकरिकेअचिंत्यकह्याहै ॥ तथामनकरिकेचिंत्यकह्याहै ॥ ताकायहअभिप्रायहै ॥ यासंसारकेविषयसुखोंविषे आसक्त जोमन है॥ ताअशुद्धमनकरिके यहअविवेकीजीव ताब्रह्मकाचिंतनकरिसकेनहीं ॥ यातें श्रुतिनें ताब्रह्मकूं अचिंत्यकह्याहै ॥ और विषयवासना तेंरहित जोशुद्धमनहै ताकरिके सोब्रह्म चिंतनकऱ्याजावेहै॥यातें तुममुमुक्षुजनोंनें विषयोंकाचिंतन नहींकरणा याप्रकार तिनमुमुक्षुजनोंकेउप देशकरणेवासते ताश्रुतिनें ब्रह्मकूंचिंत्यकह्याहै॥हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे जीवोंकूं आपणेशत्रुमित्रादिकोंविषे पक्षपातहोवैहै ॥तैसे ताब्रह्मकूं किसीभीपदार्थविषे पक्षपातनहींहै॥किंतु सोब्रह्म सर्वजगत्‌विषे समानव्यापकहै॥तहांश्रुति॥समःप्लुषिणा समोमशकेन समोनागेन॥अर्थयह ॥ प्लुषि मशक आदिकअल्पशरीरोंविषे तथाहस्तीआदिकमहान्‌शरीरोंविषे सोब्रह्म समानहीहै॥ १॥हेशिष्य॥शब्दादिकविषयोंकेसाथ जो यामन कासंबंधहै ॥ सोविषयोंकासंबंधहीं यामनकूं ब्रह्मतेंभिन्नकरणेहाराहै ॥ और यहमन जभी ताविषयोंकेसंबंधकापरित्यागकरिके निरंतर आत्माकाचिंतनकरेहै॥तभी यहमन ब्रह्मभावकूंहीप्राप्तहोवैहै॥हेशिष्य॥यहअधिकारीपुरुष तामनकेनिरोधकरिके जिसब्रह्मकूंजानेहै ॥ सोब्रह्मकेसाहै ॥ परमपदरूपहै॥ तथा निरवयवहै ॥ तथा सर्वविकल्प तेंरहितहै॥तथा कार्यसहित अज्ञानतेंरहितहै॥तथा देशकालवस्तुपरि च्छेदतेंरहितहै ॥ तथा हेतुदृष्टांततेंरहितहै॥ तथा प्रमाणजन्यज्ञान काअविषयहै ॥ तथा ग्रहणत्यागतेंरहितहै॥तथा जिसब्रह्मकेज्ञानतें बुद्धि मानपुरुष मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै॥ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं जोअधिकारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मारूपकरिकेजानेहै ॥सोअधिकारी पुरुष ताब्रह्मभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेब्रह्मात्माकेज्ञानकरिके जिसविद्वान्‌पुरुषकामन ताअधिष्ठानब्रह्मविषे लयभावकूंप्राप्तहो वैहै ॥ऐसेविद्वान्‌योगीपुरुषकूं यहआत्मा देवयाप्रकार सर्वधर्मोंतेंरहितहुआप्रतीतहोवैहै ॥ याअद्वितीयआत्मादेवविषे वास्तवतें याजगत्‌का निरोधभीनहींहै॥तथा याजगत्‌की उत्पत्तिभीनहींहै॥तथा बद्धभीनहीं है॥तथा साधकभीनहीं है तथा मुमुक्षुभीनहींहै॥तथा मुक्तभीनहीं है॥ यहही सर्वशास्त्रका वास्तवअर्थ है॥ इहां नाशकानाम निरोधहै ॥ और कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूपसंसारवालेकानाम बद्धहै॥और यज्ञादिकब हिरंगसाधनोंके करणेहारे पुरुषकानाम साधकहै ॥और शमदमादिकअंतरंगसाधनोंयुक्तपुरुषकानाम मुमुक्षुहै॥और ज्ञानवानपुरुषकानाम

मुक्तहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसे सर्वधर्मोंतैंरहितअद्वितीयआत्माकूं सोईपुरुष साक्षात्कारकरैहै॥जोपुरुषआपणेस्वरूपकूं जाग्रतादिकतीनअवस्था वोंतैं भिन्नकरिकेजानैहै ॥ ऐसाविद्वान्पुरुष पुनः जन्ममरणादिकोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहआत्मादेव जोएकअद्वितीयरू पहोवै ॥ तौ याआत्माविषे यहनानाप्रकारभेद किसवास्तेप्रतीतहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जैसे आकाशविषेस्थितचंद्रमाविषे यद्य पि वास्तवतैं भेदनहींहै ॥ तथापि जलपात्ररूपउपाधिकेएकहुए सोचंद्रमा एकप्रकारकाप्रतीतहोवैहै॥ और ताजलपात्ररूपउपाधियोंकेअने कहुए सोचंद्रमाभी अनेकप्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे या आत्मादेवविषे यद्यपि वास्तवतैंनानापणानहीं है ॥ तथापि यहआत्मादेव कारणअज्ञानरूप एकउपाधिविषेस्थितहोइके एकप्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ और कार्यरूप अनेकउपाधियोंविषेस्थितहोइके अनेक प्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैंतो यहआत्मादेव एकता अनेकता इत्यादिकसर्वधर्मोंतैंरहितहै ॥हेशिष्य॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं यासर्वभूतप्राणियोंविषे एकअद्वितीयआत्माकूंहीं व्यापक जाणैहै ॥सोअधिकारीपुरुष जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति यातीन अवस्थावोंविषेभी एकहीआत्माकूंनिश्चयकरैहै ॥ और यहएकअद्वितीयआत्मा जैसे जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंतैंरहितहै ॥ तैसे ताअद्वितीयआत्माकूंजानणेहाराविद्वान्पुरुषभी तिनजाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैंरहितहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी गुरुशास्त्रकेउपदेशते तासर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयआत्माकूं जानैहै ॥ तभी उपाधिकेयोगतैं याजीवात्माविषे प्रतीतभयाजोनाना पणाहै ॥ तानानापणेकूं सोअधिकारीपुरुष युक्तिकरिकेनिवृत्त करैहै ॥ सायुक्तियहहै ॥ जैसे याघटका एकदेशतैंदूसरेदेशविषे गमनहुएभी ताघटविषेस्थितआकाशका तहां गमनहोवैनहीं॥ तैसे यास्थूलसूक्ष्मशरीरका एकदेशतैंदूसरेदेशविषेगमनहुएभी ताशरीरविषेस्थितजीवा त्माका तहाँ गमनहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे घट जडहै॥ यातैं आपणेजन्ममरणादिकविकारोंकूंजाणतानहीं॥तैसे यहशरीरभीजडहै ॥यातैं आपणेजन्ममरणादिकविकारोंकूंजाणतानहीं॥यातैं घटकीतथायाशरीरकी यद्यपि समानतासंभवैहै॥तथापि घटाकाशकी तथाजीवात्माकी समानता संभवैनहीं ॥ काहेतैं सोघटाकाशतो जडहै॥यातैं सोघटाकाश ताघटकेजन्ममरणादिकविकारोंकूंजाणतानहीं ॥और याशरीरविषे

स्थितजो जीवात्माहै॥सोजीवात्मा चेतनरूपहै॥यातैं याशरीरकेजन्ममरणादिकसर्वविकारोंकूंसाक्षीरूपकरिकेदेखेहै ॥ इसप्रकार यह जीवा
त्मा यद्यपि ताघटाकाशतैंविलक्षणहै ॥ तथापि जैसे घटाकाशविषे ताघटरूपउपाधिके गमनआगमनादिकधर्म स्पर्शकरतेनहीं॥तैसे याजी
वात्माविषेभी याशरीररूपउपाधिके जन्ममरणादिकधर्म स्पर्शकरतेनहीं॥इतनेंअंशकूंग्रहणकरिके ताघटाकाशकादृष्टांत दियाहै ॥ अवता
जीवका निर्विकारब्रह्मकेसाथ अभेदनिरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य॥यहजीव आत्मादेवतैंभिन्ननहीं है ॥ काहेतैं जोवादी याजीवकूं आत्मादेवतैंभ
भिन्नमानैं है ॥ तावादीसे यहपूछाचाहिये॥सोजीव एकहै अथवा अनेकहै॥ तहां सोजीव एकहै यहप्रथमपक्ष जो वादी अंगीकारकरै सोसंभ
वैनहीं॥काहेतैं॥एकोदेवः सर्वभूतेषुगूढः॥इत्यादिकश्रुतियोंनें याआत्मादेवकूंही एककह्याहै॥ यातैं ताएकआत्मादेवतैं सोएकजीव किसप्र
कार भिन्नहोवैगा॥किंतु भिन्ननहींहोवैगा॥ओर तेजीव अनेकहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तापक्षविषेभी तिनअनेकजीवोंका आ
त्मातैंभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं आत्मानाम आपणेस्वरूपकाहै ॥ ताआत्मास्वरूपतैं जभीतेजीव भिन्नहोवैंगे॥ तभी तिनजीवोंकूं वंध्या
पुत्रकीन्याई निःस्वरूपताप्राप्तहोवैगी ॥ यातैं तेअनेकजीवभी आत्मातैंभिन्ननहीं हैं॥शंका ॥ हेभगवन् ॥ अनेकजीवोंकेसाथ जोआत्माकाअ
भेदहोवैगा॥तोआत्माविषेभी अनेकरूपताप्राप्तहोवैगी ॥ यातैं आत्माअद्वितीयरूपहै यासिद्धांतकीहानिहोवैगी॥समाधान॥हेशिष्य ॥
जैसे नैयायिकोंकेमतविषे घटत्वजाति अनेकघटव्यक्तियों विषे रहेहै ॥ तहांतिनघटव्यक्तियोंकेभेदहुएभी ताघटत्वजातिकाभेदहोवै नहीं
तैसे यहआत्मादेवभी सर्वजीवोंविषेअनुगतहोइकेरहै है यातैं तिनजीवोंकेभेदहुएभी ताआत्मादेवका भेदहोवैनहीं॥ओर हेशिष्य॥वास्तवतैं
विचारकरिकेदेखियेतो तिनजीवोंकाभी भेदसंभवैनहीं ॥ काहेतैं अज्ञानविशिष्टचेतनकानामजीवहै ॥ अथवा अंतःकरणविशिष्टचेतनका
नाम जीवहै ॥ ताजीवविषे जोचेतनअंशहै ॥ सोतो सर्वत्रएकहीहै ॥ याते ताचेतनअंशविषेतो भेदसंभवैनहीं॥ परिशेषतैं अंतःकरणादिक
उपाधियोंकाहीभेदअंगीकारकरणाहोवैगा ॥ ओर तिनअंतःकरणादिकउपाधियोंतैंभी जभी अधिष्ठानरूपसत्‌अंशकूंभिन्नकरिये ॥ तभी
तिनकल्पितउपाधियोंकाभी भेदसंभवैनहीं ॥ यातैं यहजीव अद्वितीयआत्मास्वरूपहीहै ॥ हेशिष्य ॥ याजीवकूं जोआत्मातैंअभिन्न नहीं

मानिये॥तो श्रुतिनें याजीवात्माविषे जोघटाकाशकादृष्टांतदियाहै सोअसंगतहोवेगा॥काहेतें स्थूल सूक्ष्म कारण रूपयासंघातविषे यहजीवतो घटाकाशकीन्याईं है ॥ और आत्मादेव महाकाशकीन्याईं है ॥ तहांघटरूपउपाधिकेभेदकापरित्यागकरिकेजैसे ताघटाकाशका महाकाशतेंभेदनहीं है ॥ तैसे यासंघातरूपउपाधिकापरित्यागकरिके याजीवकाभी ताआत्मादेवतेंभेदनहीं है ॥ हेशिष्य ॥ यहघटाकाशरूपदृष्टांत केवल जीवआत्माकेअभेदकूंसिद्धकरतानहीं ॥ किंतु सोघटाकाशरूपदृष्टांत दूसरेभीअनेकअर्थोंकूंसिद्धकरे है ॥ तिनअर्थोंकूं तूं श्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेनिवृत्तहुएतेंअनंतर सोघटाकाश महाकाशविषे अभेदभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे अंतःकरणादिकउपाधियोंके निवृत्तहुएतें अनंतर यहजीवभी ताव्यापकआत्मादेवविषे अभेदभावकूं प्राप्तहोवेहै॥ओर हेशिष्य जिसकालविषे सोएकघटाकाश धूलिधूमादिकोंकरिके युक्तहोवेहै॥तिसकालविषे दूसरेघटाकाश तिनधूलिधूमादिकोंकरिकेयुक्तहोवेनहीं॥तैसे जिसकालविषे यहएकजीव सुखदुःखकूंप्राप्तहोवेहै॥तिसकालविषे दूसरेजीव सुखदुःखकूंप्राप्तहोवेनहीं॥तात्पर्य यह॥जेसुखदुःखादिकधर्म केवल अंतःकरणादिकउपाधियोंविषेहीं हैं॥तेअंतःकरणादिकउपाधियां सर्वशरीरोंविषे भिन्नभिन्नहीं हैं॥यातें एकजीवकेसुखीदुःखीहुएभी तेसर्वजीव सुखीदुःखीहोवेनहीं ॥ ओर हेशिष्य ॥जैसे ताघटाकाशविषे वर्तुल दीर्घ इत्यादिकरूपोंकाभीभेदहै ॥ तथा जलकाआनयन धारणनिवास इत्यादिककार्योंकाभीभेदहै ॥ तथा घटाकाश मठाकाश इत्यादिकनामोंकाभीभेदहै ॥ इसप्रकार नाम रूप कार्य यातीनोंकेभेदहुएभी आकाशकाभेदहोवेनहीं ॥ तैसे अंतःकरणादिकउपाधियोंकेयोगतें तिनजीवोंकेभेदहुएभी आत्मादेवकाभेदहोवेनहीं ॥ ओरहेशिष्य ॥ जैसेनिर्विकार तथा निरवयव जोमहाकाशहै तामहाकाशका सोघटाकाश विकाररूपनहीं है॥तथा अवयवरूपनहीं है॥तैसे सर्वविकारोंतें रहित तथानिरवयव जोआत्मादेवहै ताआत्मादेवका यहजीव विकाररूपनहीं है॥ तथा अवयवरूपनहीं है॥ ओर हेशिष्य ॥ जैसे वास्तवतें सर्वमलोंतेंरहित जोमहाकाशहै ॥ सोमहाकाश मूढबालकोंकूं मलिनप्रतीतहोवे है ॥ तैसे वास्तवतेंसर्वबंधतेंरहित जोयहआत्मादेवहै ॥ सोआत्मादेव अविवेकीमूढपुरुषोंकूं बंधवालाप्रतीतहोवे है ॥ ओर हेशिष्य ॥ जैसे घटादिकउपाधियोंके जन्म मरण गमन आगमन

हुएभी तिनघटादिकउपाधियोंविषेस्थित आकाश तिनजन्मादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे याशरीरादिकउपाधियोंके जन्म मरण गमन आगमन हुएभी तिनशरीरादिकउपाधियोंविषेस्थित यहआत्मादेव तिनजन्मादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य जैसे स्वप्नविषेप्रतीतभयाजोजीवहै ॥ तथा ऐंद्रजालिकपुरुषोंनें आपणीमायाकेप्रभावतें दिखाया जोकोईजीवहै ॥ सोमिथ्याजीव यद्यपि भ्रान्त पुरुषोंकीदृष्टिकरिके जन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहुआ प्रतीतहोवैहै॥तथापि सोजीव वास्तवतें जन्ममरणादिकविकारोंतेंरहितहै॥तैसे भ्रान्त पुरुषोंकीदृष्टिकरिके यद्यपि यहजीव जन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि वास्तवतें यहजीव जन्ममरणादिकविकारोंतेंरहितहै ॥ यातें कोईभीजीव तिनजन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु यहचित्तही आप जन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहोइके तिनआपणेजन्ममरणादिकविकारोंकूं याजीवात्माविषे प्रतीतकरावैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार यहसर्वजीव वास्तवतेंतो सर्वदा तिनजन्ममरणादिकविकारोंतेंरहितहै ॥ तथापि जन्ममरणादिक विकारवालेचित्तकेयोगतें यहजीव जन्ममरणादिकविकारोंवालेहुए प्रतीतहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं अलातकेदृष्टांतकरिके स्पष्टकरेंहैं ॥ हेशिष्य ॥ अग्निकरिकेप्रज्वलित जोकोईक काष्ठविशेषहै ताकानाम अलातहै ॥ ताअलातका जोभ्रमणरूपव्यापारहै ॥ सोभ्रमणरूपव्यापार कभीतो दंडकीन्याईं सरलप्रतीतहोवैहै ॥ और कभीतो चक्रकीन्याईं वर्तुलाकार प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमात्मा देवतें उत्थानरूप जोमनकास्पंदहै ॥ सोमनका स्पंदभी ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकत्रिपुटीरूपकरिकेप्रतीतहोवैहै ॥ और हेशिष्य जैसे ताभ्रमणरूपस्पंदतेंरहितहुआ सोअलात ताकल्पित दंडचक्राकाररूपोंतेंरहित होवैहै ॥ तथा तिनकल्पितरूपोंकरिके जन्मतेंरहित होवैहै ॥ तैसे तास्पंदतेंरहितहुआयहचित्तभीताकल्पितत्रिपुटीरूपतेंरहित होवैहै तथा तिनकल्पितरूपोंकरिके जन्मतेंभीरहितहोवैहै ॥ किंतु सोशांतचित्त तिसकालविषे चेतनरूपहीहोवैहै॥और हेशिष्य॥ताअलातकेभ्रमणरूपस्पंदकालविषे जेदंडचक्रादिकआकारप्रतीतहोवैंहैं ॥ तेदंडचक्रादिकआकार किसीदूसरे स्थानतेंचलिके ताअलातविषे उत्पन्नहोतेनहीं ॥ तथा ताअलातके भ्रमणकाआभावरूपनिस्पंदकालविषेतेदंडचक्रादिकआकारताअलाततें

निकसिके किसीदूसरेस्थानविषेभीजातेनहीं ॥ तथा तेदंडचक्रादिकआकार ताअलातविषेभीप्रवेशकरतेनहीं॥काहेतैं तिनदंडचक्रादिकआ
कारोंका ताअलातविषेआवणा तथा ताअलाततैंबाहरजाणा तथा ताअलातविषेप्रवेशकरणा प्रत्यक्षदेखितानहीं ॥ और तेदंडचक्रादिक
आकार कोईवस्तुहैनहीं याकारणतैंभी तिनोंका आवणाजाणासंभवेनहीं ॥ यातैं ताअलातविषे तेदंडचक्रादिकआकार रज्जुसर्पकीन्याईं
मिथ्याहीहै ॥ तैसे यामनकेस्पंदहुए जे ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकआकार प्रतीतहोवे हैं ॥ तेआकार किसीदूसरेपदार्थतैंचलिआइके
तामनविषे उत्पन्नहोवेनहीं तथा तामनकेनिस्पंदहुए तेआकार तामनतैंनिकसिके किसीदूसरेस्थानविषेभीजातेनहीं॥तथा तेआकार तिस
मनविषे भीप्रवेशकरतेनहीं॥यातैं ते ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकमनकेआकारभी रज्जुसर्पकीन्याईं मिथ्यानहीं हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥
तेआकार जोमिथ्याहोवैं ॥ तो हमजीवोंकूं तेआकार किसवासतेप्रतीतहोवे हैं ॥ समाधान॥हेशिष्य ॥ जैसे यामनुष्योंविषे शृंग यद्यपि
वास्तवतैंहै नहीं ॥ तथापि यामनुष्यविषेशृंगहै याशब्दरूपदोषकेप्रभावतैं तामनुष्यविषेभी शृंग प्रतीतहोवे है ॥ और जैसे आकाशविषे
गंधर्वनगर यद्यपि वास्तवतैंहैनहीं॥तथापि मायारूपदोषकेबलतैं ताआकाशविषे गंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै॥तैसे याआत्मादेवविषे यहद्वैतप्रपंच
यद्यपि वास्तवतैंहैनहीं ॥ तथापि शब्दकेबलतैं तथामायाकेबलतैं याआत्माविषे यहद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैहै ॥ यातै नरशृंगकीन्याईं तथा
गंधर्वनगरकीन्याईं यहसंपूर्णजगत् असत्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जिसमायाकेबलतैं तथाशब्दकेबलतैं यहजगत् प्रतीतहोवैहै॥तिसमाया
विषे तथातिसशब्दविषे सोअसत्यपणा किसप्रकार सिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जैसे नरशृंगहै याशब्दमात्रकरिकेही तानरशृंग
कीसिद्धिहोवैहै किसीप्रमाणकरिके तानरशृंगकीसिद्धिहोवेनहीं ॥ तैसे माया अज्ञान अविद्या प्रकृति इत्यादिकशब्दोंकेबलतैंही तामा
याकीसिद्धिहै ॥ किसीप्रमाणकेबलतैं तामायाकीसिद्धिहैनहीं ॥ यातैं तामायाभी तानरशृंगकीन्याईं असत्यहीहै ॥ तैसे शब्दकीभी
शब्दकरिकेहीसिद्धिहै ॥ यातैं सोशब्दभी असत्यहीहै ॥ तहाँश्रुति ॥ वाचारंभणंविकारोनामधेयंमृत्तिकेत्येवसत्यं ॥ अर्थयह ॥ मृत्तिकाके
विवर्तरूप जितनेकीघटशरावादिकविकारहैं ॥ तेविकार केवल घटशराव इत्यादिकनाममात्रही हैं ॥ तानामतैं बिना तिनविकारोंविषे

हीहै ॥ और तिनघटशरावादिकविकारोंकाउपादानकारणजामृत्तिकाहै॥ सामृत्तिकाहीसत्यहै ॥ १ ॥ तैसे मनवाणीकाअविषयजोआत्माहै ॥ सोआत्माही सत्यहै ॥ ताआत्मातैंभिन्न यहसंपूर्णजगत् मिथ्याहीहै ॥ और हेशिष्य ॥ शब्दमात्रहै स्वरूपजिसका ऐसाजोयहजगत्रूप विकारहै ॥ तथा ताजगत्रूपविकारका कारणरूप जा यहमायाहै॥ तिनदोनोंकरिकेआवृतहुआ यहजीवात्मा आपणेवास्तवस्वरूपकूंजा णिसकतानहीं॥किंतु यहजीवात्मा परिच्छिन्नरूपकरिकेप्रतीतहोवे है॥जैसे जलकेमध्यविषेस्थितहुआ महान्घटभी अल्परूपकरिकेप्रतीत होवे है ॥ तैसे तामायाजगत्करिकेआवृतहुआ यहमहान्आत्माभी परिच्छिन्नरूपकरिकेप्रतीतहोवे है॥और जभी आत्मसाक्षात्कारकरिके ता कार्यसहितमायाकीनिवृत्तिहोवे है॥तभी यहजीवात्मा आपणेव्यापकअद्वितीयस्वरूपकूंप्राप्तहोवे है ॥ और हेशिष्य ॥ अकार उकार मकार यातीनमात्रावालेप्रणवविषे यथाक्रमतैं समष्टि स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनउपाधिवालाब्रह्म तादात्म्यसंबंधकरिकेरहै है॥तासोपाधिकब्रह्मका प्रणवकीमात्राओंसहित जभी यहअधिकारीपुरुष लयचिंतनकरैहै॥तभी नाशतैंरहिततुरीयब्रह्मही बाकीरहै है॥सोतुरीयब्रह्महो सर्वभेदतैंरहि त एकअद्वितीयरूपहै॥यातैं जिस अधिकारीपुरुषकूं ताअद्वितीयब्रह्मकेजानणेकीइच्छाहोवे॥सोअधिकारीपुरुष प्रथम ताप्रणवमंत्रकूं ब्रह्मरू पकरिकेचिंतनकरे ॥ अब याही अर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ याअधिकारीपुरुषनें गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं दोब्रह्मकूं अव श्यकरिकेजानणा ॥ तहांएकतो प्रणवरूपशब्दब्रह्मकूंजानणा ॥ और दूसरा निर्विशेषशुद्धब्रह्मकूंजानणा ॥ तिनदोनोंब्रह्मविषेभी याअधिका रीपुरुषनें प्रथम प्रणवरूपशब्दब्रह्मकूंही निश्चयकरणा ॥ ताशब्दब्रह्मकूं यहअधिकारीपुरुष जभी भलीप्रकारकरिकेनिश्चयकरैहै॥ तभी यह अधिकारीपुरुष सुखपूर्वकही तानिर्विशेषब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरे है ॥ हेशिष्य॥याअधिकारीपुरुषकूं जबपर्यंत तानिर्विशेषब्रह्मकासाक्षात्कार नहींप्राप्तहोवे ॥ तबपर्यंतही यहअधिकारीपुरुष ताशब्दब्रह्मकाचिंतनकरे ॥ तानिर्विशेषब्रह्मकेसाक्षात्कारहुएतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताशब्दब्रह्मका परित्यागकरिदेवे ॥ तथा सर्वशब्दरूपप्रपंचका परित्यागकरिदेवे ॥ जैसे व्रीहिरूपधान्यकेप्राप्तिकीइच्छावान्पुरुष तिनधा न्योंकूंप्राप्तहोइके ताकेपलालका परित्यागकरिदेवे है॥हेशिष्य ॥ यालोकविषे शुक्ल नील पीत रक्त इत्यादिकभिन्नभिन्नवर्णोंवाली जेअनेक

गौवां हैं ॥ तिनसर्वगौवोंकादुग्ध एकशुक्लवर्णवालाहीहोवे है ॥ तैसे यानानाप्रकारकेशरीरोंविषे यहज्ञानस्वरूपआत्मा एकरूपहीहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार यहआत्मादेव यद्यपि सर्वशरीरोंविषे समानव्यापकहै ॥ तथापि यहआत्मादेव अशुद्धमनकरिकेजान्याजावैनहीं ॥यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ ताअधिकारीपुरुषनैं श्रवणादिकसाधनयुक्त शुद्धमनकरिकेही याआत्मादेवकूं जानणा ॥ हेशिष्य ॥ तामनकोशुद्धिकरणेवासतै श्रुतिभगवतीनैं याप्रकारकाध्यान कथनकऱ्याहै ॥ जैसे यालोकविषे दधिविषे दीर्घकाष्ठरूप मंथाकूंपाइके तामंथकेसाथ दीर्घरज्जुकूंबांधिके तादधिकूंमंथनकरैहैं ॥ तामंथनकरिके तिसदधितैंमाखणकूंनिकासै हैं॥ तैसे यहअधिकारी पुरुष यासर्वभूतभौतिकजगत्कूं दधिरूपकरिकेचिंतनकरै ॥ और यामनकूं मंथारूपकरिकेचिंतनकरै ॥ और मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकूं तारज्जुरूपकरिकेचिंतनकरै ॥ और आनंदस्वरूपपरमात्मादेवकूं माखणरूपकरिकेचिंतनकरै ॥ और गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिके याआत्मादेवका जोसंसारसमुद्रतैं मोक्षरूपउद्धारकरणाहै ॥ सोईही यापरमात्मादेवरूपमाखणका याजगत्रूपदधितैंउद्धारहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष याजगत्रूपदधितैं ताअद्वितीयब्रह्मरूपमाखणकूंउद्धारकरिके ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरै ॥ ताब्रह्मात्माकेसाक्षात्कारकरिके यहअधिकारीपुरुष सर्वशोकतैंरहितहोवै है॥ हेशिष्य ॥ जिसअद्वितीयब्रह्मकेज्ञानतैं यह विद्वान्पुरुष सर्वशोकतैंरहितहोवै है॥ताब्रह्मविषेही यहसंपूर्णजगत् निवासकरैहै ॥ अथवा सोब्रह्मही यासर्वजगत्विषेनिवासकरैहै ॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअद्वितीयब्रह्मकूं वासुदेव यानामकरिकेकथनकरै हैं ॥तथा तेवेदवेत्तापुरुष तावासुदेवरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेजाने हैं॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार मनकेनिग्रहपूर्वक जोब्रह्मकावास्तवस्वरूप ब्रह्मबिंदुउपनिषद्विषेकथनकऱ्याहै ॥सो हमनैं तुम्हारेप्रति कथनकऱ्या॥अबनारायणीयउपनिषद्विषे तथामहोपनिषद्विषे तथाआत्मप्रबोधउपनिषद्विषे जोसंक्षेपतैं ताब्रह्मकास्वरूपकथनकऱ्याहै॥ सोहम तुम्हारेप्रति कथनकरतेहैं॥तूसावधानहोइकेश्रवणकर॥तहांप्रथम नारायणीयउपनिषद्का(अर्थनिरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥यहपरमात्मादेव आपणे अस्तिभातिप्रियरूपकरिके यासर्वजगत्कूं पूर्णकरे है॥याकारणतैं श्रुतिभगवती यापरमात्मादेवकूं पुरुष यानामकरिकेकथनक

रैहै॥अथवा यहपरमात्मादेव यासर्वशरीररूपपुरविषे अंतर्यामीरूपकरिकेनिवासकरे है॥याकारणतैं श्रुतिभगवती यापरमात्मादेवकूं पुरुष यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और हेशिष्य ॥ यहविराट्रूपपरमात्मादेव प्रलयकालविषे यासंपूर्णलोकोंकूंआपणेउदरविषेग्रहणकरिके क्षीरसमुद्रविषे शेषनागकीशय्याऊपर बालककीन्याई शयनकरे है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकेकथनकरे है ॥ अथवा जैसे माताकेगर्भरूपशय्याविषे बालक शयनकरे है ॥ तैसे व्यष्टिसूक्ष्मउपाधिवाले तैजसनामाजीवरूपप्रतिबिंबोंका बिंबरूप यहहिरण्यगर्भभगवान् यामायारूपशय्याविषेस्थितहोवे है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकेकथनकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ परमात्मारूपनरकासंबंधीजामायाहै ॥ तामायाकानाम नारहै ॥ सोमायारूप नार तापरमात्मादेवकास्थान है ॥ यातैं तापरमात्मादेवकूं नारायणकहेहैं ॥ अथवा जीवरूपनरोंका जोसमूहहै ताकानाम नारहै ॥ ताजीवोंकेसमूहरूपनारकूं जिसबिंबभूतपरमात्मादेवतैं आपणेस्वरूपकालाभहोवे है ॥ यातैं तापरमात्मादेवकूं नारायणकहेहैं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे बालक कंदुककूंदूरदेशविषेफेंकेहै॥तैसे सर्वदोषतेंरहित यहपरमात्मादेव कार्यकारणअविद्यारूपकंदुककूं दूरदेशविषे फेंकेहै॥याकारणतैंश्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकेकथनकरे है ॥ तात्पर्ययह ॥ यासंसाररूपचक्रके जेरागद्वेषादिकअराहैं ॥ तेअरा यापरमात्मादेवविषेहैंनहीं॥ यातैं तापरमात्मादेवकूं नारायणकहे हैं ॥ अथवा याजीवरूपनरोंको ताअंतर्यामीदेवतैंही प्रवृत्तिहोवे है ॥ यातैं ताअंतर्यामीदेवकूं नारायणकहे हैं ॥ अथवा तुरीयशुद्धरूपकरिकेजानेहुए तापरमात्मादेवतैंही याजीवोंकेअविद्याकीनिवृत्तिहोवे है ॥ यातैं तापरमात्मादेवकूं नारायणकहे हैं ॥ तुरीयशुद्धरूपकरिकेजानेहुए तापरमात्मादेवतैंही याजीवोंकेअविद्याकीनिवृत्तिहोवे है ॥ यातैं तापरमात्मादेवकूं नारायणकहे हैं ॥अथवा ताबदरिकाआश्रमवासीगुरुमूर्तितैंही याजीवोंकेअविद्याकीनिवृत्तिहोवे है ॥ यातैं तागुरुमूर्तिपरमात्मादेवकूं नारायणकहे हैं ॥ दूसरेनारायणशब्दके अर्थ दशमअध्यायविषे निरूपणकरिआये हैं ॥ सोतहातैंजानिलेणें ॥ हेशिष्य ॥ ऐसानारायणदेव याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व एकअद्वितीयरूपहोताभया॥सोनारायणदेव जीवोंकेपुण्यपापकर्मोंकरिकेप्रेरणाकऱ्याहुआ सृष्टिकेआदिकालविषे मैं जगत्कूंउत्पन्नकरों याप्रकारकीइच्छाकरताभया ॥ ताइच्छातैंअनंतर सोनारायणदेव सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरताभया ॥ नानाप्रकारकी

सामर्थ्यकरिकेयुक्तजो ब्रह्मा इंद्र आदित्य रुद्र वसु विश्वेदेव साध्य इत्यादिकदेवताहैं ॥ तिनसर्वदेवताओंकूं सोनारायणदेव उत्पन्नकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मादिकदेवताओंतैंआदिलेके जितनाकी यहस्थावरजंगमजगत्‌है ॥ सोसंपूर्णजगत्‌ तानारायणदेवतैंही उत्पन्नहोवै है ॥ तथा सोसंपूर्णजगत्‌ तानारायणदेवविषेही स्थितहै तथा प्रलयकालविषे सोसंपूर्णजगत्‌ तानारायणदेवविषेही लयकूंप्राप्तहोवै हैं॥हेशिष्य॥ जैसे घटकी उत्पत्ति स्थिति लय मृत्तिकाविषेही होवै है ॥ यातैं सो घट मृत्तिकातैं भिन्ननहीं है ॥ तैसे याजगत्‌की उत्पत्ति स्थिति लय तानारायणदेवविषेहीहोवै है ॥ यातैं यहजगत्‌ तानारायणदेवतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र आदित्य अश्विनीकुमार इनतैं आदिलेकेजितनैंकीदेवताहैं ॥ तेसंपूर्णदेवता तानारायणरूपही हैं ॥ तथा पूर्वादिकदशोंदिशातथाआकाशादिकपंचमहाभूत तथास्थावर जंगमशरीर इनतैंआदिलेके जितनाकी भूतभविष्यत्‌वर्तमानकालविषेस्थितजगत्‌है॥तथा जितनाकी स्थूलसूक्ष्मजगत्‌है॥तथा जितनाकी प्रत्यक्षपरोक्षजगत्‌है ॥ सोसंपूर्णजगत्‌ तानारायणरूपही है ॥ हेशिष्य॥ जिसनारायणदेवकास्वरूप यहसंपूर्णजगत्‌है ॥ सोनारायणदेव नाशतैंरहित नित्यस्वरूपहै ॥ तथा प्राण श्रद्धा आकाश वायु तेज जल पृथ्वी इंद्रिय मन अन्न वीर्य तप मंत्र कर्म लोक नाम याषोडशकलाओंतैंरहितहै ॥ तथा सोनारायणदेव याजगत्‌रूपविकल्पतैंरहितहै ॥ तथाकारणअज्ञानरूपअंजनतैंरहितहै ॥ और सर्वशुद्धितैंरहित जो यहजडमायाहै ॥ ताजडमायातैंभी यहनारायणदेव सर्वदारहितहै ॥ तथा तामायाकृतसर्वभेदतैंरहितहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसे नित्यशुद्धनारायणदेवतैंभिन्न कोईपदार्थ पूर्वहुआनहीं और अभीहैनहीं और आगेहोवैमानहीं ॥ किंतु यहसर्वजगत्‌ तानारायणदेवरूपहीहै ॥ हेशिष्य ॥ जोअधिकारीपुरुष मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीशुद्धबुद्धिकूंसारथिकरिके तथा श्रवणादिकसाधनयुक्त शुद्धमनरूपरज्जुकूं ताबुद्धिरूपसारथिकेवशकरिके जीत्येहुए इंद्रियरूपअश्वोंकरिकेयुक्त याशरीररूपरथविषेस्थितहोवै है ॥सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार तानारायणदेवकूं याजीवका आत्मारूपकरिके प्रतिपादनकरणेहारो जोयह नारायणीयनामा उपनिषद्‌है॥ ताउपनिषद्‌कूंजोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैंअर्थसहितजाने है॥सोअधिकारीपुरुषयाजीवतअवस्थाविषेतो सर्वआपदाओंतैं रहित

होइके मनवांच्छितभोगोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ और मरणतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइके तहां मोक्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ यातैं या अधिकारीपुरुषनें तानारायणीयउपनिषद्केअर्थका अवश्यकरिकेविचारकरणा॥हेशिष्य॥ऐसेनारायणदेवकास्मरणकरावणेहाराजो ॥ ओंन मोनारायणाय ॥ यहअष्टअक्षरोंवालामंत्रहे ॥ सोअष्टाक्षरमंत्र जापकरणेहारेसर्वजीवोंकूं मनवांच्छितपदार्थोंकोप्राप्ति करणेहाराहे ॥ यातैं ब्रा ह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णवालेपुरुषोंनैंतो प्रणवपूर्वक तामंत्रकाजपकरणा ॥ और स्त्रियोंनैं तथाशूद्रपुरुषोंनैंतो प्रणवकूंछोडिके तामंत्र काजपकरणा॥हेशिष्य॥याअधिकारीपुरुषकूं साक्षात्नारायणकेज्ञानतैं जिसप्रकारकाफल प्राप्तहोवैहै॥तिसो प्रकारकाफल याअधिकारी पुरुषकूं ताअष्टाक्षरमंत्रकेज्ञानतैंहोवैहै ॥ यातैं यहअष्टाक्षरमंत्र तानारायणदेवकेसमानहे ॥ और हेशिष्य॥जैसे याअधिकारीपुरुषोंकूं प्रणव मंत्र तानारायणदेवकेप्राप्तिका उपायहे॥तैसे यहअष्टाक्षरमंत्रभी तानारायणकेप्राप्तिका उपायहे ॥ यातैं यहअष्टाक्षरमंत्र ताप्रणवमंत्रकेसमा नहे ॥ हेशिष्य॥ जेपापात्माशूद्रपुरुष तथास्त्रियां श्रद्धापूर्वक तथाअर्थज्ञानपूर्वक यामंत्रकाजपकरेहैं॥तेशूद्रपुरुष तथास्त्रियांभी सर्वपापो तैंरहितहोइके तानारायणदेवकूं आपणाआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरैहै॥तात्पर्ययह॥पापात्माशूद्रपुरुष तथास्त्रियांभी जभी यामंत्रकेज पतैं तानारायणदेवकूं आपणाआत्मारूपजाणिके मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं॥तभी सर्वपापोंतैंरहित ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहत्रैवर्णिकअधिकारीपुरुष ताअष्टाक्षरमंत्रकेजपतैं तानारायणदेवकूं आपणाआत्मारूपजाणिके मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषेक्याकहणाहे ॥ यातैं सर्वमुमुक्षुजनोंनैं ता अष्टाक्षरमंत्रकाजप अवश्यकरिकेकरणा ॥ हेशिष्य ॥ तानारायणीयउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरी है ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुम्हारेप्रति कथनकरी॥अब महोपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहे ॥ साब्रह्मविद्या हम तुम्हारेप्रति कथनकरतेहैं॥तूं सावधानहोइकेश्रव णकर ॥ हेशिष्य॥प्राचीनवृत्तांतकूंजानणेहारे वेदवेत्ताऋषि याप्रकारकेवचन कहतेभयेहैं॥याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व एकनारायणदेवही स्थि तहोताभया॥तासृष्टितैंपूर्वकालविषे ब्रह्मादिकदेवताभी नहींहोतेभये॥तथा आकाशादिकपंचमहाभूतभी नहींहोतेभये ॥ तथा तिनपंचभूतों काकार्यरूप यह स्थावरजंगमशरीरभी नहींहोतेभये॥तथा पृथिवीस्वर्गतैं आदिलेके यहसर्वकार्यप्रपंचभी नहींहोताभया॥इसप्रकार सर्वद्वैत

प्रपंचतैंरहित एकाकीस्थितहुआ सोनारायणदेव ताकालविषे किंचित्मात्रभी क्रीडानहींकरताभया॥तिसतैंअनंतर सोनारायणदेव क्रीडा करणेवासते दूसरेपदार्थकाध्यानकरताभया॥ताध्यानतैंअनंतर तांनारायणदेवका मायारूपस्त्रीकेसाथ संबंधहोताभया ॥ तामायारूपस्त्रीके संबंधतैं तानारायणदेवकूं त्रयोदशपुत्रउत्पन्नहोतेभये॥तथाबहुतपुरुषोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारी एक व्यभिचारिणीकन्या उत्पन्नहोतीभई ॥तिसतैंअनंतर साकन्या आपणेकूं अधिदेव अध्यात्म अधिभूत यातीनरूपकरतीभई ॥तथा तेत्रयोदशपुत्रभी आपणेकूं अधिदेव अध्यात्म अधिभूत यातीनरूपकरतेभये॥तहां समष्टिशरीरकेषटकपदार्थोंकानाम अधिदैवहै ॥और व्यष्टिशरीरकेषटकपदार्थोंकानाम अध्यात्म है॥और इदंरूपकरिके दृश्यमानपदार्थोंकानाम अधिभूतहै॥जैसे सूर्यादिकदेवता अधिदेवरूप हैं ॥ और नेत्रादिकइंद्रिय अध्यात्मरूपहैं ॥ और रूपादिकविषय अधिभूतरूपहैं॥हेशिष्य ॥ वास्तवतैंएकअद्वितीयरूपसोनारायणदेव आपणेवास्तवस्वरूपकेअविवेकतैं ताबहुतरूप वालीपुत्रीकेसाथ तथाबहुतरूपवाले तिनत्रयोदशपुत्रोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिके आपणेकूंभी बहुतरूप मानताभया ॥ हेशिष्य ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे सोनारायणदेव प्रथम तिसपुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रोंकेकारणोंकूंउत्पन्नकरताभया॥तिसतैंअनंतर तिनकारणों तैं तापुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर क्रियाशक्तिकूं उत्पन्नकरताभया ॥ कैसीहै साक्रियाशक्ति॥ पूर्वउत्पन्नहुएपदार्थों विषे कितनेंकपदार्थोंकातौ कार्यरूपहै॥और कितनेकपदार्थोंकीस्थितिका कारणरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥तिसपुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रों के कौनकारणहैं ॥ तथा तापुत्रीसहितत्रयोदशपुत्र कौनहैं ॥तथा साक्रियाशक्ति कौनहै ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता आप निर्णयकरिकेकहो ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहपंचभूत तिसपुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रोंका कारणरूपहैं ॥ तेआकाशादिकपंचभूतभी स्थूल सूक्ष्म या भेदकरिके दोप्रकारकेहोवे हैं ॥ तहां पंचीकृतपंचमहाभूतोंकानाम स्थूलहै ॥ और पंचीकरणतैंरहित शब्द स्पर्श रूप रस गंध] यापंचतन्मात्राओंकानाम सूक्ष्महै ॥ तिनपंचभूतरूपकारणोंकूंदोप्रकारकाहोणे तैं तिनोंकाकार्यभी स्थूल सूक्ष्म भेदकरिके दोप्रकारकाहीहोवेहै ॥ हेशिष्य ॥ प्राणवायुकानाम क्रियाशक्तिहै सोक्रियाशक्तिरूपप्राण तिनआकाशादिकपंचभूतोंकातौ कार्यरूप

है ॥ और तापुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रोंकेस्थितिका कारणरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ अहंकार मन चित्त श्रोत्र त्वक् चक्षु रसना घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहत्रयोदशपुत्रहैं ॥ और बुद्धिरूपपुत्रीहै ॥ यहसंपूर्ण तानारायणदेवतैंउत्पन्नहुएहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्ध भया ॥ पंचतन्मात्रा पंचमहाभूत एकप्राण अहंकारादिकत्रयोदशपुत्र एकबुद्धिरूपीपुत्री ॥ यहसंपूर्णमिलिके पंचविंशति २५ तत्त्वहोवैहैं॥ तापंचविंशतितत्वोंके हिरण्यगर्भादिकतो अधिदेवरूपहैं ॥ और यहस्थावरजंगमशरीर अधिभूतरूपहैं॥याकेविषेभीइतनीविशेषताहै ॥ अधिभूतरूपकरिकेकथनकर्‍येजेशरीरहैं॥तिनशरीरोंविषे जिसजिसशरीरविषे जिसजिसजीवकीअहंबुद्धिहै ॥ सोसोशरीर तिसतिसजीवकेप्रति तो अध्यात्मरूपहै ॥ और तिसजीवतैंभिन्नदूसरेजीवोंकूं सोशरीर इदंरूपकरिकेप्रतीत होवैहै ॥ यातैं तिनदूसरेजीवोंकीअपेक्षाकरिके सोशरीर अधिभूतरूपहै ॥ जैसे देवदत्तपुरुषकाशरीर तादेवदत्तपुरुषकीअपेक्षाकरिके तो अध्यात्मरूपहै॥ और दूसरेयज्ञदत्तपुरुषकीअपेक्षाकरिके अधिभूतरूपहै ॥ याप्रकारकीरीति सर्वत्र जानिलेणी॥हेशिष्य ॥सर्वभूतप्राणियोंके उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहारा जोयहकालहै ॥ताकालकूंभी सोनारायणदेवही उत्पन्नकरताभयाहै॥इसप्रकार आकाशादिकसर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिके सोनारायणदेव सूत्रआत्मारूपकरिके सर्वदेवतावोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरणेहारा सोनारायणदेव किसीअनिर्वचनीयनिमित्तकरिके आपणेविषेक्रोधकूंप्रगटकरताभया ॥ ताक्रोधकरिके कुटिलहुई जाभृकुटीहै ॥ ताभृकुटीयुक्तआपणेललाटदेशतैं सोनारायणदेव रुद्रभगवान्कूंउत्पन्नकरताभया ॥ अब ध्यानकेवासते तारुद्रभगवान्कास्वरूप वर्णनकरैहैं ॥ हेशिष्य॥ सोरुद्रभगवान्कैसाहै ॥ जारुद्रभगवान्का नीलकंठहै॥तथा जारुद्रके लोहितअंगहैं॥तथा जारुद्रके सूर्य चंद्रमा अग्नि यहतीननेत्रहैं॥तथा जिसरुद्रभगवान्नें त्रिशूलकूंधारणकर्‍याहै ॥ तथा अनेकबलकरिकेसिद्धहोणेहारेजेदुर्घटकर्महैं॥तिनदुर्घटकर्मोंकूंजिसरुद्रभगवान्नेंधारणकर्‍याहै ॥ तथा जिसरुद्रभगवान्केसमान दूसरा कोईहैनहीं॥और जोरुद्रभगवान् तानारायणदेवतैंअभिन्नहै॥याकारणतैं सोरुद्रभगवान् संपूर्णऐश्वर्यकाआधारहै॥तथा संपूर्णधर्मकाआधारहै॥ तथा संपूर्णयशकाआधारहै।तथासंपूर्णश्रीकाआधारहै।तथा संपूर्णज्ञानकाआधारहै।तथासंपूर्णवैराग्यकाआधारहै।तथा संपूर्णसत्यकाआधारहै।

तथा ब्रह्मचर्यकाआधारहै॥तथा ज्ञानकाआधारहै॥तथा इंद्रियोंकेनिग्रहरूपतपकाआधारहै॥तथा संपूर्णवेदशास्त्रोंकाआधारहै॥ऐसे सर्वगुणों केआधाररूप तारुद्रभगवान्तैंही याइंद्रादिकदेवतावोंकूं ऐश्वर्यादिकसर्वगुण प्राप्तहोवे हैं ॥ और यहरुद्रभगवान्ही तिनसर्वदेवतावोंकूं तथासर्वमुनियोंकूं तथासर्वमनुष्योंकूं नानाप्रकारकेविद्याकीप्राप्तिविषे गुरुरूपहैं ॥ और जैसे तूलकीराशि अग्निकेसंबंधकूंप्राप्तहोइके शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे प्रलयकालविषे यहतीनलोकरूपतूल तारुद्ररूपअग्निकूंप्राप्तहोइके शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसारुद्रभगवान् तानारायणदेवकेललाटतैं उत्पन्नहोताभया ॥ और सोसर्वजगत्काद्रष्टारूप नारायणदेव पुनःध्यानरूपतपकूंकरताभया ॥ताध्यानरूपतप करिके श्रमकूंप्राप्तहुए तानारायणदेवकेललाटतैं स्वेदकेबिंदु पतनहोतेभये॥ कैसे हैं तेस्वेदकेबिंदु ॥ यासर्वब्रह्मांडकेतथाब्रह्मांड वर्तीसर्व लोकोंके उत्पन्नकरणेविषेसमर्थहैं ॥ जिनजलकेबिंदुवोंकूं शास्त्रविषे नारा यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ तिनस्वेदरूपजलोंविषे सोनारायण देव आपणेतेजरूपवीर्यकूंपावताभया ॥ कैसाहैसोतेजरूपवीर्य ॥ सुवर्ण केसमानवर्णवालाहै ॥ तथा अत्यंतमनोरमहै ॥ तथा कोटिसूर्यके समान तेजवालाहै ॥ ऐसातेजरूपवीर्य तिनजलोंविषेप्राप्तहोइके अंडकेआकार परिणामकूंप्राप्तहोताभया ॥ और ताअंडकेमध्यविषे ना भिकमलतैं चतुर्मुखब्रह्मा उत्पन्नहोताभया ॥ अब ध्यानकरणे वासते ताब्रह्माकेस्वरूपकावर्णनकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ सोब्रह्माकैसाहै॥ सर्वभूत प्राणियोंका आदिरूपहै ॥ तथा जिनब्रह्माके पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण याचारिमुखों तैं यथाक्रम तैं गायत्री त्रिष्टुप् जगती अनुष्टुप् यहचा रिप्रकारकेछंद उत्पन्नहोवे हैं ॥ तथा भूःभुवः स्वःमहः यहचारिव्याहृतियां उत्पन्नहोवे हैं ॥ तथा ऋग् यजुष् साम अथर्वण यहचारिवेद उत्पन्नहोवे हैं ॥ इसतैंआदिलेके यहसंपूर्णस्थावरजंगमजगत् ताब्रह्मातैंही उत्पन्नहोताभयाहै॥ ऐसाचतुर्मुखब्रह्माभी तानारायणदेवतैंही उत्पन्नहोताभयाहै ॥ हेशिष्य ॥इसप्रकार सोएकअद्वितीयनारायणदेव आपणीमायाशक्तिकरिके यद्यपिनानाभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ तथापि सोनारायणदेव वास्तवतैं नानारूपहैनहीं ॥ किंतु वास्तवतैंतो सोनारायणदेव सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयरूपही है॥हेशिष्य ॥ याप्रकार केविचारकरिकेभी जभीयहअधिकारीपुरुष तानारायणदेवकूं नहींजानिसकै॥तभीयहअधिकारीपुरुषतानारायणदेवकेध्यानकूंकरै॥सोध्या

नकरणेकाप्रकार याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे नारायणउपनिषद्केअर्थ निरूपणविषे विस्तारतैंकथनकरिआये हैं॥ताध्यानरूपयोग
करिके यहअधिकारीपुरुष तानारायणदेवकूंसाक्षात्कारकरे ॥ हेशिष्य जो अधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक यामहोपनिषद्नामग्रंथका
विचारकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष पूर्व अश्रोत्रीहुआभी श्रोत्रीभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकामहात्मयाउपनिषद्का
वर्णनकऱ्याहे ॥ जभी यामहोपनिषद्केविचारतैंही महान्फलहोवे है ॥तभी याउपनिषद्केविचारतैं उत्पन्नभयाजोआत्माकासाक्षात्कारहै॥
जिसआत्मसाक्षात्कारकरिके यहकार्यसहितमाया नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ ताआत्मसाक्षात्कारका महान्महात्म्यहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥
हेशिष्य॥इसप्रकार तामहोपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ तासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुम्हारेप्रति कथनकरी ॥ अब आत्मप्रबोधना
माउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या निरूपणकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या हम तुम्हारेप्रति कथनकरते हैं ॥ तू सावधानहोइकेश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥
ताआत्मप्रबोधनामाउपनिषद्विषे प्रथम आत्मसाक्षात्काररूपफलकीप्राप्तिवासते दोप्रकारकेउपाय कथनकरे हैं ॥ तहां एकतो प्रणवमंत्र
रूपउपायहै ॥ और दूसरा अष्टाक्षरमंत्ररूपउपायहै ॥ तहां जिसअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकावाचक प्रणवमंत्रहै ॥ तिसीआनंदस्वरूप
आत्माकावाचक अष्टाक्षरमंत्रभीहै तहां मंत्ररूपवाचकका तथाआत्मारूपवाच्यका श्रुतिनैं अभेदरूपकरिके ध्यानकथनकऱ्याहै ॥ यातैं
याअधिकारीपुरुषनैंभी तावाच्यवाचकका अभेदहीचिंतनकरणा ॥ तहां अकार उकार मकार यातीनवर्णोंकासमुदायरूपजो ओंकारहै ॥
ताओंकारकानाम प्रणवमंत्रहै ॥ और ताप्रणवसहितजो ॥ नमोनारायणाय ॥ यहमंत्रहै ॥ ताकानाम अष्टाक्षरमंत्रहै ॥ यहदोनोंमंत्र याअ
धिकारी पुरुषोंकूं मनवांच्छितफलकीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोअधिकारीपुरुष यादोनोंमंत्रोंकाजपकरे है ॥ तथा जोअधिकारी
पुरुष यादोनोंमंत्रोंकरिके देवताओंकापूजनकरे है ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष यादोनोंमंत्रोंके अकारादिकमात्रावोंकेसाथ विश्वादिकपादों
काअभेदचिंतनरूपउपासनाकरे है॥ताअधिकारीपुरुषोंकूं संशयविपर्ययतैंरहित ब्रह्मकानिश्चयहोवे है॥तिसतैंअनंतरताअद्वितीयब्रह्मकूंआप
णाआत्मारूपजाणिकरिके सोअधिकारीपुरुष याजन्ममरणरूपसंसारबंधन तैं मुक्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ यादोनोंमंत्रोंका वाच्यअर्थरूपजो

ब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकाजोवास्तव निर्गुणस्वरूपहै॥जोनिर्गुणस्वरूप याकार्यसहितअविद्याकाध्वंसरूपमोक्षका अधिष्ठानहै॥तथा अद्वितीयरूपहै ॥ ऐसेनिर्गुणब्रह्मकूं जबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारनहींकरै ॥ तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मके सगुणरूपकाध्यानकरै ॥ तासगुणब्रह्मकेध्यानकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं सुखेनहीं तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवै है॥हेशिष्य॥यद्यपि श्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे तासगुणब्रह्मकास्वरूप ब्रह्मा विष्णु रुद्र सूर्य इत्यादिकभेदकरिकै अनेकप्रकारकावर्णनकऱ्याहै ॥ तथापि नारदादिकमुनियोंनैं अत्यंतआदरपूर्वक जिससगुणस्वरूपकाकथनकऱ्याहै ॥ ताकूं तूं श्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ जैसे काष्ठरूपअरणि अग्निकूं प्रगटकरै है ॥ तैसे यापृथ्वीविषे सर्वब्राह्मणोंकीरक्षाकरणेवासतै ॥ तथातपादिकधर्मोंकीरक्षाकरणेवासतै जोपरमात्मादेवज्योति देवकीवसुदेवतैं आपणेकूंकृष्णरूपकरिकै प्रगटकरताभयाहै ॥ जिसकृष्णभगवान्केताईं अंगिरसगोत्रवाला घोरनामाब्राह्मण संपूर्णविद्या देताभयाहै ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्नें अर्जुनकेप्रति तथायशोदामाताकेप्रति आपणाविश्वरूपदिखायाहै ॥ सोकृष्णभगवान्ही सर्व तैं श्रेष्ठहै॥और सोकृष्णभगवान् आपणेस्मरणमात्रकरिकै याजीवोंकेसर्वपापकर्मोंकूंहरणकरै हैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताकृष्णभगवान्कूं हरि या नामकरिकेकथनकरै है ॥ हेशिष्य ॥ भारतादिकग्रंथोंविषे वेदव्यासनैंभी इसीकृष्णभगवान्काप्रभाव वर्णनकऱ्याहै ॥ तथा भागवतपुराणविषे शुकदेवमुनिनैंभी इसीकृष्णभगवान्काप्रभाव वर्णनकऱ्याहै ॥ तथा दूसरेपुराणोंविषे तथाआगमोंविषे नारदादिकमुनियोंनैंभी इसीकृष्णभगवान्काप्रभाव वर्णनकऱ्याहै ॥ यातैं यहकृष्णभगवान् सर्वतैंश्रेष्ठहै ॥हेशिष्य ॥यद्यपि इंद्रादिकसर्वदेवता याकृष्णभगवान्केहीरूपहैं ॥ तथापि तेसर्वदेवता याकृष्णभगवान्रूपबिंबके प्रतिबिंबरूपहैं ॥ यातैं जैसे यालोकविषे दर्पणादिकउपाधियोंकेनीलपीतादिकधर्म प्रतिबिंबविषेहीप्रतीतहोवै हैं ॥सुखरूपबिंबविषे प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे यामायारूपउपाधिके कामक्रोधादिकधर्म तिनदेवतारूपप्रतिबिंबोंविषेही प्रतीतहोवै हैं ॥ ताकृष्णभगवान्रूपबिंबविषे तेधर्म प्रतीतहोवैंनहीं ॥ याकारणतैंही किसीदेवताविषेतो कामकीअधिकताहै ॥ और किसीदेवताविषे क्रोधकीअधिकताहै ॥ और किसीदेवताविषे लोभकीअधिकताहै ॥ और किसीदेवताविषेतौ अहंकारादिकदूषणरहे हैं ॥

और याकृष्णभगवान्‌विषे तेकामक्रोधादिकदूषण तीनकालमैंनहीं है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकृष्णभगवान्‌विषे तेकामक्रोधादिकदूषण नहीं हैं ॥यहवार्त्ता कैसीजानीजावै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सोकृष्णभगवान् अर्जुनका सारथिहुआहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ ताकृष्ण भगवान्‌विषे अहंकारनहींहै॥औरसोकृष्णभगवान् दुर्योधनराजाकापरित्यागकरिकैपांडवोंकेपक्षविषेहुवाहै॥यातें यहजान्याजावैहै॥ताकृष्ण भगवान्‌विषे लोभभीनहींहै और सोकृष्णभगवान् आपणेबलभद्रभ्राताके अनेककठोरवचनोंकूं सहनकरताभयाहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ताकृष्णभगवान्‌विषे क्रोधभीनहींहै ॥ और कामकाअवतारजोप्रद्युम्नहै ॥ ताका सोकृष्णभगवान् साक्षात्‌पिताही है॥ पुत्रकाबल पिता ऊपरचलैनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ताकृष्णभगवान्‌विषे कामभीनहींहै ॥ और सोकृष्णभगवान् स्कंदकेशक्तिकूं आपणेवामह स्ततैंउठाइकै तास्कंदके ब्रह्मण्यताकेगर्वकूं निवृत्तकरताभयाहै ॥ यातें सोकृष्णभगवान् तीनलोकोंविषे ब्रह्मण्य यासंज्ञाकूंप्राप्तहोता भयाहै ॥ यहवार्त्ता महाभारतविषे स्कंदोपाख्यानविषे विस्तारतैं कथनकरीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपरमात्मादेव सत्यरूपतपकेरक्षणकरणे वासते देवकीकेपुत्रभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव वेदोंकेरक्षाकरणेवासते हयग्रीवादिकरूपोंकूंधारणकरिकै मधुआदिकदैत्योंकूं हननकरताभयाहै॥तथा जोपरमात्मादेव महादेवकीपूजाविषे आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतेएककमलकेस्थानविषेआपणेनेत्रकूंचढावता भयाहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव विष्णुरूपकारिकै आपणेवक्षस्थलविषे भृगुऋषिकेपादकेचिह्नकूंधारणकरताभयाहै ॥ ऐसेपरमात्मादे वकृष्णभगवान्‌तैंविना दूसरा कौनब्रह्मण्यहै ॥ किंतु एककृष्णभगवान्‌हीब्रह्मण्यहै ॥ सर्वतेंउत्कृष्टकानाम ब्रह्मण्यहै ॥ हेशिष्य ॥ सोकृ ष्णभगवान् रूप लावण्य सौभाग्य इत्यादिकगुणोंकेरहणेकास्थानहै ॥ याकारणतैं ताकृष्णभगवान्‌केशरीरविषे विश्वकर्माकीचातुर्यताभी प्रवृत्तहोइसकैनहीं ॥ इहां मुक्ताकेसमान जोअंगोंकीकांतिहै ताकानाम लावण्यहै ॥ और मनोहरताकानाम सौभाग्यहै ॥ हेशिष्य ॥ तिस कृष्णभगवान्‌विषेजिनजीवोंकाचित्त कामादिकबुद्धिकरिकैभी संलग्नभयाहै ॥ तेजीवभी दिव्यलोककूंप्राप्तहोतेभये हैं ॥ तहां व्रजभूमिकी गोपियांतौताकृष्णभगवान्‌विषेकामभावनाकरिकै तादिव्यलोककूंप्राप्तभया है॥और कंसराजा ताकृष्णभगवान्‌कीभयतैंतादिव्यलोककूंप्राप्त

होताभयाहै॥ और शिशुपालादिकराजा ताकृष्णभगवान्केद्वेषतैं तादिवलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं॥और यादव ताकृष्णविषे बांधवबुद्धिकरिके तादिवलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥और अर्जुनादिकपांडव तथाद्रौपदी ताकृष्णभगवान्विषे स्नेहकारिके तादिवलोककूंप्राप्तहोतेभये हैं॥औरनारदादिकमुनि ताकृष्णभगवान्कीभक्तिकारिके तादिवलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं॥इसतैंआदिलेके अनेकजीव ताकृष्णभगवान्के ध्यानतैं तादिवलोककूंप्राप्तभयेहैं ॥ इहां श्रुतिस्मृतियोंविषे ब्रह्मलोकनामकरिकेप्रसिद्ध जोवैकुंठहै ॥ तावैकुंठ कानाम दिवलोकहै ॥ जिस ब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकेसाथ परब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइके संन्यासी ताब्रह्मलोकतैं पुनःसंसारविषे प्राप्तहोतेनहीं ॥ ऐसेब्रह्मलोकरूपवैकुंठविषे तेकृष्णकेभक्त प्राप्तहोवैहैं ॥ अब ध्यानकरणेवासते ताकृष्णभगवान्कास्वरूप वर्णनकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ सोकृष्णभगवान् द्वारकापुरीकेविषे तथामथुरापुरीविषे निवासकरैहै ॥ तथा गोपबालकतारूपकरिके सोकृष्णभगवान् गोकुलादिकस्थानोंविषे निवासकरैहै ॥ और जलयुक्तमेघका जैसाश्यामवर्णहोवैहै ॥ तैसाहीश्यामवर्ण जिसकृष्णभगवान्काहै ॥ तथा सोकृष्णभगवान् अत्यंतशोभायमानहै ॥ और सोकृष्णभगवान् इंद्रनीलमणिकेसमान वर्णवालाहै ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्कीशोभा कोटिसूर्यकेसमानहै ॥ और जिसकृष्णभगवान्कीदोनोंभुजा जानुपर्यंतदीर्घ हैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्कीग्रीवा शंखकीन्याई तीनरेखावालीहै ॥ और जिसकृष्णभगवान्काहनु महान्है ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केगंडस्थल ऊँचेहैं ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केनेत्र कर्णपर्यंतविस्तारवालेहैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्कीनासिका ऊँचीहै तथातीक्ष्णहै ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केओष्ठ रक्तवर्णवालेहैं तथामंदमंदहास्ययुक्तहैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्कालल्लाट तथादोनोंकपोल तथादोनोंकर्ण अत्यंतशोभायमानहैं ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केकेश अत्यंतनीलवर्णवालेहैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्नें आपणेनखदंतोंकीप्रभाकरिके चंद्रमाकीप्रभाकूंभी जीतलियाहै ॥ और जिसकृष्णभगवान्कावक्षस्थल विशालहै तथा ऊँचाहै तथा भृगुब्राह्मणकेपादकेचिह्नकरिकेशोभायमानहै॥और जिसकृष्णभगवान्केदोनों हस्त तथादोनोंपाद मंडलाकारहैं तथाऊँचेहैं॥ऐसेहस्तपादरूपकमलोंकरिकै शोभायमानहै ॥ औरजिसकृष्णभगवान्के गुल्फ जानु अंश

जावोंकीसंधि इत्यादिकस्थान अत्यंतपुष्टहैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्काउदर कृशहै॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केहस्तपादादिक अंग पुष्ट हैं॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केअंगोंकीरचना वज्रकेसमान सघनहै ॥ तथा जोकृष्णभगवान् षोडशवर्षकी अवस्थावालाहै॥तथा जोकृष्ण भगवान् पीनउन्नतजघनस्थानोंकरिके शोभायमानहै ॥ और जैसे वृक्ष शाखावोंकरिके शोभायमानहोवेंहै ॥ तैसे दोहस्तोंविषे तथादोपादों विषे स्थित जे वर्तुलाकार तथादीर्घ अंगुलिहैं ॥ तिनअंगुलियोंकरिके जोकृष्णभगवान् शोभायमानहै ॥ तथा जो कृष्णभगवान् चारि भुजावोंकरिके शोभायमानहै ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्काशरीर महान्है॥ तथा जिसकृष्णभगवान्नें रेशमकेपीतांबरकूं धारणकऱ्याहै ॥ तथा जोकृष्णभगवान् कटीदेशविषेस्थितकांचीभूषणके घंटिकावोंकेमधुरशब्दकरिके शोभायमानहै॥औरअनेकप्रकारकेरत्नोंकरिकेजडित कंकण जिसकृष्णभगवान्केहस्तोंविषेहैं ॥ तथा अनेकरत्नोंकरिकेजडित अंगद जिसकृष्णभगवान्कीभुजावोंविषेहैं ॥ तथा अनेकरत्नों करिकेजडित नूपुर जिसकृष्णभगवान्केपादोंविषेहैं॥तथा अनेकरत्नोंकरिकेजडित जेअंगुलिभूषणहैं॥तेभूषण जिसकृष्णभगवान्के हस्त पादकीअंगुलियोंविषे विराजमानहैं ॥ और ग्रीवाविषेस्थितभूषणसहित कौस्तुभमणिकूं जिसकृष्णभगवान्नें कंठविषेधारणकऱ्याहै ॥ और मुक्तावोंकेहारकूं तथापत्रपुष्पमय वनमालाकूंजिसकृष्णभगवान्नें वक्षस्थलविषे धारणकऱ्याहै ॥ तथा आपणेदोनोंकर्णोंविषे जिसकृष्णभगवान्नें मकराकार कुंडलोंकूं धारणकऱ्याहै॥और मयूरकेपक्षोंकरिकेयुक्त जोसुवर्णरत्नमयमुकुटहै॥तामुकुटकूं जिसकृष्णभगवान्नें आपणेमस्तकविषेधारणकऱ्याहै॥तथा जिसकृष्णभगवान्नें आपणे ललाटविषे केशरकेतिलककूं धारणकऱ्याहै॥और अनेकप्रकारकेरत्नोंकरिके जडित तथाअनेकप्रकारकेपुष्पोंकरिकेयुक्त जासुवर्णमयविचित्ररक्षाहै ॥तारक्षाकूं जिसकृष्णभगवान्नें आपणेमूर्द्धविषेधारणकऱ्याहै ॥ तहां जिसकरिके मस्तककेकेश बांधीतेहैं ताकूंरक्षाकहेहैं॥और जोकृष्णभगवान् तीनलोकवर्तीस्त्रियोंके मनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणे हाराहै ॥ और जोकृष्णभगवान् आपणेचारिहस्तोंविषे प्रदक्षिणाक्रमतें शंख गदा पद्म चक्र याचारोंकूंधारणकरेहै ॥ तहांदक्षिणभागके नीचलेहस्तविषेतोशंखकूंधारणकरे है॥ और तादक्षिणभागकेऊपरलेहस्तविषे गदाकूंधारणकरेहै ॥और वामभागकेऊपरलेहस्तविषे पद्मकूं

धारणकरे है ॥ और तावामभागकेनीचलेहस्तविषे चक्रकूंधारणकरे है ॥ और जोकृष्णभगवान् गौवां पृथ्वी ब्राह्मण इनसर्वकेपीडाकूं नाशकरणेहाराहै॥और दैत्योंकेसमान यज्ञादिकधर्मोंका तथादेवताओंका द्रोहकरणेहारे जेअधर्मीराजे हैं॥ तिनराजोंकूं जोकृष्णभगवान् सर्वदा दुःखकीप्राप्तिकरेहैं ॥ और यापृथिवीविषे जिसजिसकालमें धर्मकालोपहोइजावे है ॥तथा अधर्मकीवृद्धिहोवेहै ॥तिसतिसकालविषेय हदेवकीकापुत्र कृष्णभगवान् धर्मात्मापुरुषोंकीरक्षाकरणेवासतै तथादुष्टजनोंकेनाशकरणेवासते यापृथिवीविषे अवतारकूंधारणकरेहै॥यह वार्त्ता श्रीगीताविषे कृष्णभगवान्नें आपहीकहीहै॥तहांश्लोक ॥परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृतां ॥ धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामियुगे युगे॥अर्थयह॥धर्मात्मापुरुषोंकेरक्षाकरणेवासतेतथापापात्माजीवोंकेनाशकरणेवासते मैंकृष्णभगवान्युगयुगविषे अवतारकूंधारणकरौंहूं १॥ और यहकृष्णभगवानही साक्षात् नारायणरूपहै ॥ तथा सर्वदेवतावोंका आत्मारूपहै ॥ और सोप्रणवमंत्र तथाअष्टाक्षरमंत्रभी याकृष्ण भगवान्केस्वरूपकूंही प्रतिपादनकरेहै ॥ यातैं यहकृष्णभगवान् सर्वसगुणरूपोंतैंश्रेष्ठहै ॥ हेशिष्य ॥ याअधिकारीपुरुषकूं जबपर्यंत तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारनहींहोवै॥तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तवस्त्रभूषणादिकोंसहित ताकृष्णभगवान्काध्यानकरै॥ हेशिष्य ॥ हृदयकमलविषेस्थित तथासूर्यमंडलविषेस्थित तथागोकुलादिकस्थानोंविषे स्थित तथापूर्वउक्तलीलादिकगुणोंकरिकेयुक्त जोकृष्णभगवान्है॥सोकृष्णभगवान् जभी याअधिकारीपुरुषकेचित्तविषे प्रयत्नतैंविनाही सर्वदा प्रतीतहोवेहै॥तभी जैसे दीपकघटादिकपदार्थोंकेप्रकाशकाहेतुहोवेहै॥तैसे सोकृष्णभगवान्भी आपणेनिर्गुणस्वरूपके साक्षात्कारविषे हेतुहोवेहै ॥हेशिष्य॥यहअधिकारीपुरुष ताकृष्णभगवान्के ध्यानतैं शुद्धअंतःकरणवालाहोइके जिसनिर्गुणब्रह्मकूंआपणाआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरेहै॥सोनिर्गुणब्रह्मकैसाहै॥सर्वभूतोंकेअंतरस्थितहै॥तथा सर्वजगत्काकारणहै॥तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै॥तथा सर्वशोकमोहादिकोंतैं रहितहै॥ऐसेब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजाणिके यह विद्वान्पुरुषभी तिसीप्रकारकाहोवेहै॥यातैं श्रीकृष्णभगवान्केध्यानकरणेहारा योगीपुरुष पुनःसंसारदुःखोंकूं नहींप्राप्तहोवेहै ॥ यहजोवचन श्रुतिविषेकथनकर्याहै सोयथार्थहीहै॥हेशिष्य॥याअधिकारीपुरुषनें जबपर्यंत ताकृष्णभगवान्केध्यानकरिके तानिर्गुणब्रह्मकूंआपणाआत्मा

रूपकरिकेनहींजान्याहै ॥ तबपर्यंतही याअधिकारीपुरुषकूं यहद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवै है॥और यहअधिकारीपुरुष जभी ताकृष्णभगवान्के ध्यानतैं तानिर्गुणब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेजाणै है॥ तभी याअधिकारीपुरुषकूं सोद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैनहीं॥किंतु जैसे रज्जुकेज्ञानतैंअनंतर कल्पितसर्प रज्जुरूपहीहोवै है ॥ तैसे ताअद्वितीयब्रह्मकेज्ञानतैंअनंतर यहद्वैतप्रपंचभी अद्वितीयब्रह्मरूपहीहोवै है ॥ अब भेददर्शनविषे अनर्थकीकारणता दिखावै हैं ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेअद्वितीयनिर्गुणब्रह्मविषे जोपुरुष भेदकूंदेखै है ॥ सोभेददर्शीपुरुष अनेकवार संसारकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा अनेकवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ जैसे निर्गुणब्रह्मविषे सोभेदवास्तवतैंनहीं है ॥ तैसे मायाविशिष्टसगुणब्रह्मविषेभी सोभेद वास्तवतैंनहींहै ॥ काहेतैं जैसे मृत्तिकाकेकार्य घटशरावादिकतामृत्तिकारूपकारणतैं भिन्ननहीं हैं ॥ तैसे ताब्रह्मकाकार्यरूपयहजगत्भी ताब्रह्मरूपकारणतैंभिन्ननहीं है ॥ यातैं सगुणब्रह्मविषे तथानिर्गुणब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैं हैनहीं ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष भेदकूंदेखैहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष अत्यन्तदारुणदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ यहजोश्रुतिनैंकह्याहै ॥ सोयथार्थकह्या है ॥ हेशिष्य ॥ विपरीतदर्शीपुरुषकूं अनर्थकीप्राप्तिहोवै है यहवार्ता केवलश्रुतिप्रमाणतैंहो सिद्धनहीं है ॥ किंतु यहवार्ता सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकेभीसिद्धहै॥काहेतैंयालोकविषे जोभ्रांतपुरुषविषकूं अमृतजाणिके ताविषकूंभक्षणकरैहै॥सोविपरीतदर्शीपुरुष मृत्युकूंहीप्राप्तहोवै है॥और जोभ्रांतपुरुष अग्निकूं जलरूपजाणिके ताअग्निविषेप्रवेशकरै है ॥ सोविपरीतदर्शीपुरुष दाहकूंही प्राप्तहोवै है॥ और जैसे विषविषे अमृतबुद्धिकरणी तथाअग्निविषे जलबुद्धिकरणी यहदोनों विपरीतदृष्टिहैं ॥ तैसे सर्वद्वैततैंरहितअद्वितीयब्रह्मविषे द्वैतबुद्धिकरणी यहभी विपरीतदृष्टिही है ॥ ऐसेद्वैतदर्शनरूप विपरीतदृष्टि तैं यापुरुषकूं जोवारम्वार जन्ममृत्युकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोकोई अनुचितवार्त्तानहीं है ॥ काहेतैं यालोकविषे यहजीव जैसा जैसाबीज बोवै हैं ॥ तैसेही फलकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ जैसे नीमकेबीजबोये तैं नीमकेफलोंकूंहीप्राप्तहोवै हैं ॥ आम्रफलोंकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तैसे अद्वितीयआत्माविषेभेददृष्टिकरिकै सोपुरुष वारम्वार जन्ममृत्युकूंहीप्राप्तहोवैहै॥मोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तात्पर्ययह॥गौणआत्मामिथ्याआत्मामुख्यआत्मा यहतीनप्रकारकाआत्माहोवै है॥तहां पुत्रादिकपदार्थगौणआत्माहै॥और शरीर मिथ्याआत्मा

है॥ और साक्षीकूटस्थ मुख्यआत्माहै ॥ तहां जोकोईपुरुष किसीजीवकेपुत्ररूपगौणआत्माकाहननकरे है ॥ अथवा किसीजीवकेशरीर रूप मिथ्याआत्माकाहननकरे है ॥ तिसहननकरणेहारेपुरुषकूं राजादिक महान्ताडनाकरैहैं ॥ जभी गौणआत्माके तथामिथ्याआत्माके हननकरणेहारापुरुषभी राजादिकोंकेताडनाकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी साक्षीकूटस्थरूपमुख्यआत्माकूं भेददृष्टिरूपशस्त्रकरिकेहननकरणेहारा पुरुष बारम्बार जन्ममृत्युकूंप्राप्तहोवे है याकेविषे क्याकहणाहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥अन्यथासंतमात्मानम न्यथायोऽभिमन्यते ॥ किंतेननकृतंपापं चौरेणात्मापहारिणा॥ अर्थयह॥अद्वितीय सत् चित् आनंद व्यापक आत्माकूं जोपुरुषद्वैत असत् जड दुःख परिच्छिन्न रूपकरिकेमाने है ॥ सोपुरुष आपणेआत्माकाही हननकरणेहाराहै ॥ ऐसे आत्महत्यारेचोरपुरुषनैं यालोकविषेकौन पापनहींकरे॥किंतुसंपूर्णपापकर्म तापुरुषनैंकरे ॥१॥ यातैंयाअधिकारीपुरुषों नैं ताअद्वितीयआत्माविषे कदाचित्भी भेददृष्टिनहींकरणी हेशिष्य॥याजीवोंकेहृदयकमलविषेविराजमान सर्वभेदतैंरहिततथासर्वबुद्धिकाप्रकाशक तथासर्वजगत्काआधाररूपतथासूर्यादिकसर्वप्रका शोंकाकारण ऐसाजो आनंदस्वरूपअद्वितीयकृष्णभगवान्है॥ताकृष्णभगवान्कूं जोअधिकारीपुरुष मैंकृष्णरूपहूं याप्रकारआपणाआत्मा रूपकरिकेजाने है ॥ सोअधिकारीपुरुष किंचित्मात्रभी संसारदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं ऐसेजीवब्रह्मकेअभेदज्ञानकूं याअधिकारीपुरुष नैं अवश्यकरिके संपादनकरणा ॥ हेशिष्य ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे ऐतरेयउपनिषद्केअर्थनिरूपणविषे जोआत्मा प्रज्ञारूप करिकेकथनकऱ्याथा॥ सोईहीआत्मा याऐतरेयशाखाविषेस्थितआत्मप्रबोधनामाउपनिषद्विषे प्रज्ञानेत्र यानामकरिकेकथनकऱ्याहै॥जैसे याजीवोंकेनेत्र बाह्यसर्वव्यवहारकीसिद्धिकरे हैं॥तैसे याआत्मादेवका ज्ञानरूपप्रज्ञानेत्रभी सर्वव्यवहारोंकीसिद्धिकरेहै॥यातैं याआत्मादेवकूं श्रुतिभगवती प्रज्ञानेत्र यानामकरिकेकथनकरे है ॥ हेशिष्य ॥ जाचैतन्यरूपप्रज्ञा यासर्वजगत्काआधारहै ॥ तथा जिसप्रज्ञाविषे यासर्वज गत्कीस्थितिरूप प्रतिष्ठाहै ॥ तात्वंपदार्थरूपप्रज्ञाकूं ॥ प्रज्ञानमानंदंब्रह्म ॥ इत्यादिकमहावाक्य ब्रह्मरूपकरिकेकथनकरे हैं॥हेशिष्य ॥ता प्रज्ञाप्रतिष्ठारूपब्रह्मकूं यहअधिकारीपुरुषजभीआपणाआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरेहै॥तभी देहादिकअनात्मपदार्थोंविषेआत्मबुद्धिरूप

अविद्याकापरित्यागकरिके यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मभावकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार ताअद्वितीयआत्माकेविचार करणेहारापुरुष जोकदाचित् विषयोंविषेरागवान्होवैहै ॥ तो तिसपुरुषकूं तारागरूपप्रतिबंधकेवशतैं यद्यपि इसजन्मविषे ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथापि सोरागवान्पुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइके तहां नानाप्रकारकेदिव्यभोगोंकूंभोगिके ताब्रह्माकेसाथ परब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोअधिकारीपुरुष जोविषयरागतैंरहितहोवैहै ॥ तो इसीजन्मविषे ताब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताविषयरागकापरित्यागकरिके ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै दृढप्रयत्नकरणा ॥ हेशिष्य॥जिसअद्वितीयब्रह्मविषे स्वप्रकाशप्रज्ञारूपज्योति तथा निरतिशयआनंद स्वरूपभूतहोइके सर्वदा स्थितहोवैहै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मकी प्राप्तिवासते यहअधिकारीपुरुष ताकृष्णभगवान्की याप्रकार प्रार्थनाकरे ॥ हे वासुदेवस्वरूपकूंधारणकरणेहारा कृष्णभगवान् ॥ हे देवकीमाताकेनेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारा कृष्णभगवान् ॥ हे वसुदेवकेपुत्रकृष्णभगवान् ॥ मैं अधिकारीजन तुम्हारेशरणकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यातैं मैं अधिकारीजनकूं आपणेवास्तवनिर्गुणस्वरूपकी प्राप्तिकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष जभीताकृष्णभगवान्कीप्रार्थनाकरैहै ॥ तभी याअधिकारीपुरुषकेताईं सोकृष्णभगवान् वेदांतकेअर्थधारणकरणेविषेसमर्थ बुद्धिरूपमेधाकी प्राप्तिकरैहै ॥ ताशुद्धबुद्धिकरिके याअधिकारीपुरुषकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं याअधिकारीपुरुषके जन्ममरणादिकसर्वदुःख निवृत्तहोवैहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताकृष्णभगवान्की प्रार्थना तथाध्यान अवश्यकरिकैकरणा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार आत्मप्रबोधनामाउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुम्हारेप्रति कथनकरी ॥ अब कैवल्यउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या हम तुम्हारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तूं सावधानहोइकेश्रवणकर ॥ हेशिष्य पूर्व ऋग्वेदकाआचार्य एक आश्वलायननामाऋषि होताभयाहै ॥ सोआश्वलायननामाऋषि एककालविषे ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीइच्छाकरिके ब्रह्माजीकेसमीप जाताभया ॥ ताब्रह्माकेसमीपजाइके सोआश्वलायननामाऋषि याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ आश्वलायनउवाच ॥ हेभगवन् ॥ जाब्रह्मविद्यासर्वविद्याओंतैंश्रेष्ठ

है ॥ तथा शमदमादिकसाधनोंयुक्त विद्वान्पुरुष आपणेहृदयकमलविषे जिसब्रह्मविद्याकूं सर्वदा सेवनकरे हैं ॥ तथा जाब्रह्मविद्या विषयास क्तअनधिकारीपुरुषोंकेताईं नहींदेणेयोग्यहै ॥ तथा जिसब्रह्मविद्याकेप्रभावतैं यहविद्वान्पुरुष सर्वपापोंकापरित्यागकरिके परब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसीब्रह्मविद्याकूं आप भलीप्रकारजाणतेहो ॥ यातैं साब्रह्मविद्या हमारेताईं आपकृपाकरिके उपदेशकरो ॥ हेशिष्य ॥ इस प्रकार जभी ताआश्वलायनऋषिनैं ब्रह्माकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोब्रह्मा ताआश्वलायनऋषिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ ब्रह्माउवाच ॥ हेआश्वलायन ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे आस्तिक्यबुद्धिरूपश्रद्धाहै ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषकी ब्रह्मउपदेष्टागुरुविषे परमभक्तिहै ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष ब्रह्माकारवृत्तिरूपध्यानकरिकेयुक्तहै ॥ सोअधिकारीपुरुषही ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ श्रद्धा भक्ति ध्यान यातीनोंतैंरहितपुरुषकूं ताब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिके श्रद्धा भक्ति ध्यान यहतीनोंही ताब्रह्मज्ञानकेसाधनहैं ॥ हेआश्वलायन ॥ जैसे श्रद्धा भक्ति ध्यान यहतीनों ब्रह्मज्ञानकेसाधनहैं ॥ तैसे संन्यासआश्रमभी ताब्रह्मज्ञानकासाधनहै ॥ काहेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्त्तकर्मोंकरिकेभी ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथा याअधिकारीपुरुषोंकूं पुत्रपौत्रादिकप्रजाकरिकेभी ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथा याअधिकारीपुरुषोंकूं कर्मउपासनारूपदैवधनकरिके तथासुवर्णादिरूपमानुषधनकरिकेभी ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु एकत्यागरूपसंन्यासआश्रमकरिकेही याअधिकारीपुरुषोंकूं ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेआश्वलायन ॥ कर्म प्रजा धन यातीनोंकरिके जोकदाचित् सोब्रह्मज्ञान उत्पन्नभीहोवैहै ॥ तौभी सोब्रह्मज्ञान परोक्षहीहोवैहै॥ अपरोक्षहोवैनहीं ॥ केवलसंन्यासआश्रमकरिकेही याअधिकारीपुरुषोंकूं ताअपरोक्षज्ञानकीप्राप्तिहोवै है ॥तहांश्रुति ॥ नकर्मणा नप्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः ॥ अर्थयह ॥ कर्मोंकरिके तथापुत्रादिकप्रजाकरिके तथासुवर्णादिकधनकरिके अमृतभावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु पूर्वविद्वान्पुरुष कर्म प्रजा धन यातीनोंकेत्यागरूपसंन्यासकरिकेही ताअमृतभावकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ १ ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं॥ हेआश्वलायन ॥ यहआनंदस्वरूपब्रह्म स्वर्गलोकतैंपरहुआभी अमृतरूपहै ॥ तथा सो

ब्रह्म सर्वजीवोंकेहृदयरूपगुहाविषेस्थितहै ॥ यातें स्वयंप्रकाशरूपहै॥ऐसे स्वप्रकाशनित्यअपरोक्षब्रह्मका जोपरोक्षरूपकरिकेज्ञानहै ॥ सो ज्ञान भ्रांतिरूपहै ॥ताभ्रांतिज्ञानतैं मोक्षकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ किंतु अपरोक्षब्रह्मज्ञानतैंही मोक्षकीप्राप्तिहोवे है ॥ ऐसेब्रह्मकेअपरोक्षज्ञानकूं सर्वप्रतिबंधतैंरहित संन्यासीही प्राप्तहोवे हैं ॥ इतरपुरुष ताअपरोक्षज्ञानकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ हेआश्वलायन ॥ जेसंन्यासी ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतवचनोंकाश्रवणकरिके तिनवचनोंका अद्वितीयब्रह्मविषे तात्पर्यनिश्चयकरे हैं ॥ तथा जेसंन्यासी ताश्रवणकरेहुएअर्थका वारंवार मननकरे हैं तथा तामननकऱ्येहुएब्रह्मविषे निरंतर चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूप निदिध्यासनकरे हैं ॥ तिनसंन्यासियोंकूं जोकदाचित् ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छारूप प्रतिबंधहोवे है ॥ तो तेसंन्यासी इसशरीरविषे ताब्रह्मज्ञानकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ किंतु तेसंन्यासी याशरीरकापरित्यागकरिके ताब्रह्मलोकविषेजाइके ताब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और जिनसंन्यासियोंकूं ताब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छानहींहै ॥ तेसंन्यासीतो इसीजन्मविषे ताब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और हेआश्वलायन ॥ तेसंन्यासी जभी ब्रह्मलोकविषेजावेहैं ॥ तभी तिनसंन्यासियोंकूं तिसीजानेकालविषेही ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ किंतु जभी ताहिरण्यगर्भरूपब्रह्माके आयुषकीसमाप्तिहोवे है ॥ तभीहीतेसंन्यासी ब्रह्माकेसाथ परब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातें ताब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छाकापरित्यागकरिके यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मभावकीप्राप्तिवासते याप्रकारकायोगकरे ॥ तहां यहअधिकारीपुरुष किसीएकांतनिर्मलदेशविषे प्रथमदर्भोंकूंबिछावे ॥ तिनदर्भोंऊपर मृगचर्मबिछावे ॥ तामृगचर्मऊपर वस्त्रबिछावे ॥ ऐसेआसनऊपर पद्मादिकआसनकूंबांधिकरिकेस्थितहोवे॥और शास्त्रकीरीतिसें अंतरशौचकूं तथाबाह्यशौचकूंकरिके तथाश्रमतैंरहितहोइके सोयोगीपुरुष आपणेमस्तककूं तथाग्रीवाकूं तथा शरीरकूं दंडकीन्याईं सूधाराखे ॥ इसप्रकार आसनकूंदृढकरिके सोयोगीपुरुष नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंका तथामनरूपअंतरइंद्रियका निरोधकरे ॥ तथा आपणेगुरुकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरे ॥ तिसतेअनंतर सोयोगीपुरुष पंचछिद्रयुक्तहृदयकमलकाध्यानकरे ॥ कैसाहैसोहृदयकमल ॥ सूर्य चंद्रमा अग्नि यातीनोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा रागद्वेषादिकराजसधर्मोंतैंरहितहै॥तथा मोहादिकतामसधर्मोंतैंरहितहै ॥ ऐसे हृदयकमलकाध्यानकरिके सोयोगीपुरुष ताहृदय

कमलविषे निराकारब्रह्मकाध्यानकरे ॥ केसाहेसोनिराकारब्रह्म ॥ सर्वदुःखोंतेंरहितहे ॥ तथा अद्वितीयआनंदस्वरूपहे ॥ तथा मनवाणीक
रिकेअचिंत्यहे ॥ तथा शब्दस्पर्शादिकगुणोंतेंरहितहे ॥ तथा जन्मतेंरहितहे ॥ तथा शिवरूपहे ॥ तथा मायातेंरहितहे ॥ तथा देशका
लवस्तुपरिच्छेदतेंरहितहे ॥तथा श्वासोंकीन्याई विनाहीप्रयत्नतें चारवेदोंकूंउत्पन्नकरणेहाराहे ॥ तथा जन्ममरणादिकविकारोंतेंरहितहे ॥
तथा एकअद्वितीयरूपहे ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहे ॥ तथा सर्वशक्तिसंपन्नहे ॥ तथा रूपादिकगुणोंतेंरहितहे ॥ तथा आश्चर्यकरणेहाराहे
॥ इसप्रकार तानिर्गुणब्रह्मकाध्यान सोयोगीपुरुषकरे॥ तानिर्गुणब्रह्मकेध्यानतें तायोगीपुरुषकूं सुखेनहीं तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवे हे
॥ और हेआश्वलायन ॥ जिसअधिकारीपुरुषकाचित्त तानिर्गुणब्रह्मकेध्यानकरणेविषे समर्थनहींहोवे ॥ सोअधिकारीपुरुष ताहृदयकमल
विषे याप्रकार सगुणब्रह्मकाध्यानकरे ॥ केनउपनिषद्विषे जाउमानामादेवी ब्रह्मविद्यारूपकरिके वर्णनकरीहे ॥ सारूपयौवनअवस्थासंप
न्न उमादेवीजिसपरमेश्वरकी स्त्रीरूपकरिकेस्थितहे ॥ केसीहेसाब्रह्मविद्यारूपउमादेवी ॥यालोकविषे नानाप्रकारकेजातिवाली जेस्त्रियां हैं॥
तिनसर्वस्त्रीरूपप्रतिबिंबोंका जाउमादेवीबिंबरूपहे॥तथा जाउमादेवी सर्वशक्तिरूपहे ॥ तथा जाउमादेवी महदादिकसर्वतत्वरूपहे ॥ और
जिसउमादेवीकेअनुग्रहकरिके इंद्रादिकदेवता तथामनुष्यादिकजीव स्वर्गादिकोंकूंप्राप्तहोवे हैं॥तथा मोक्षकूंप्राप्तहोवे हैं॥तथा इसलोकविषे
नानाप्रकारकेसुखोंकूंप्राप्तहोवे हैं॥और जगत्कीउत्पत्तिरूप जोब्रह्माकाकर्म हे॥तथाजगत्कीस्थितिरूप जोविष्णुकाकर्म हे॥तथा जगत्का
संहाररूप जोरुद्रकाकर्म हे॥तथा इंद्रादिकदेवताओंका जोनानाप्रकारका ऐश्वर्य हे॥तेसंपूर्ण जगत्केउत्पत्तिस्थितिआदिककर्म जिसउमा
देवीकेकृपाकटाक्षोंतें उत्पन्नहोवे हैं ॥ और जिसउमादेवीके क्रूरकटाक्षों तें तिनसंपूर्णोंकानाशहोवे हे ॥ और जिसउमादेवीकेदोनोंस्तन
पीनउन्नतहैं ॥ तथा जिसउमादेवीके जघनस्थान विशालहैं ॥ तथा जिसउमादेवीकामुख चंद्रमाकेसमानहे ॥ तथा जिसउमादेवीके
दोनोंनेत्र मीनकेसमानचंचलहैं ॥ तथा जिसउमादेवीकेकेश भ्रमरकेसमान श्याम हैं॥ तथा जिसउमादेवीकेसर्वअंग सुंदरहैं ॥
तथा जाउमादेवी महादेवकेधैर्यकूं हरणेहारीहे ॥ और जाउमादेवी विचित्रकांचीसूत्रकरिके शोभायमान हे ॥ तथा जा

उमादेवीनानाप्रकारकेरत्नोंकरिकेजडित कंकण अंगद नूपुर करिकेशोभायमानहै॥तथा जाउमादेवी मुक्तादिकरत्नोंकरिकेजडितहारोंकरिके तथाकंठकेभूषणोंकरिके शोभायमानहै ॥ तथा जाउमादेवी नानाप्रकारकेरत्नोंकरिकेजडित विचित्रमुकुटकरिके तथाकुंडलादिकभूषणों करिके शोभायमानहै ॥ तथा जिसउमादेवीकास्वरूप उपमानतैंरहितहै ॥ तथा जाउमादेवी भूषणोंकूंभीभूषितकरणेहारी है ॥ तथा जाउमादेवी सर्वजगत्काकारणरूपकरिके अनादीहुईभी षोडशवर्षकी अवस्थावालीहै ॥ ऐसीउमादेवीकेसहितविराजमान तथाताउ मादेवीकापति जोश्रीमहादेवहैं॥सोमहादेवकेसेहैं॥ताउमादेवीतैंभी अधिकगुणवालेहैं॥तथा जोमहादेव ब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंकाप्रभुहै॥ तथा जोमहादेव नानाप्रकारकेभूषणोंकरिके शोभायमानहै ॥ तथा जोमहादेव व्याघ्रकेचर्मरूपीवस्त्रोंकूं धारणकरणेहाराहै ॥ अथवा दिशारूपी वस्त्रोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा जिसमहादेवकेसर्वअंग भस्मकरिकेयुक्तहैं ॥ तथा जोमहादेव ब्रह्माकेमस्तकोंकोमालाकरिके शोभा यमानहै ॥ तथा जिसमहादेवकाललाटस्थल द्वितीयाकेचंद्रमाकरिके शोभायमानहै ॥तथाजिसमहादेवने आपणीजटाओंविषे श्रीगंगाजीकूं धारणकर्‍याहै॥तथा जिसमहादेवकामुख मंदमंदहास्यकरिके युक्तहै तथा जिस महादेवकाशरीर गोकेक्षीरसमान उज्ज्वलहै॥तथाजिसमहादे वकाशरीर कोटिकंदर्पकेसमान सुंदरहै ॥ तथा जिसमहादेवकेशरीरकीप्रभा कोटिसूर्यकेसमानहै ॥ तथा जोमहादेव यासर्वजगत्के उत्पत्ति स्थितिलयका कारणहै तथा जोमहादेव आप उत्पत्ति स्थिति लयतैं रहितहै॥तथा जिसमहादेवका मुखरूपकमल पूर्णिमाकेचंद्रसमान सुंदरहै ॥ तथा जिसमहादेवके सूर्य चंद्रमा अग्नि यहतीनोंनेत्र अत्यंत तेजस्वी हैं ॥ तथा जिसमहादेवके सर्वअंग सुंदरहैं ॥ तथा जिसमहादेवकीग्रीवाशंखकीन्याई तीनरेखावोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा जोमहादेव आपणीशोभाकरिके जीवोंकेमनकूंहरणेहाराहै ॥ तथाजिसमहादेवकीदोनोंभुजा जानुपर्यंत दीर्घ हैं ॥ तथा जिसमहादेवका शेषनाग यज्ञोपवीतरूपहै ॥ तथा जोमहादेव पद्म आसनकूंबांधिके तथानासिकाकेअग्रभागविषे दृष्टिदेके स्थितहै ॥ और जिसमहादेवकी ईशान तत्पुरुष अघोर सद्योजात वामदेव यह पंचमूर्तिहैं॥तथा जोमहादेव तिनपंचमूर्तिकरिके यथाक्रमतैं याजगत्को उत्पत्ति स्थिति संहार प्रवेश अनुग्रह यापंचकार्योंकोसिद्धिकरेहै॥

तथा जोमहादेव सनकादिकमुनियोंकाभी गुरुरूपहै॥तथा जोमहादेव स्वयंज्योतिस्वरूपहै ॥ तथा अद्वितीयआनंदस्वरूपहै॥और समष्टि स्थूलप्रपंचकूं उत्पन्नकरणेहारा तथादेवतामनुष्यादिकोंकूं आपणीआज्ञाविषेचलावणेहारा जोहिरण्यगर्भभगवान्है ॥ सोहिरण्यगर्भभगवान्भी जिसमहादेवतैं उत्पन्नभयाहै ॥ तथा जोमहादेव यासर्वविश्वकाईश्वरहै ॥ तथा जोमहादेव आपणेस्मरणमात्रकरिकै भक्तजनोंके सर्व पापोंकूंनाशकरणेहाराहै ॥ ऐसे उमादेवीसहित नीलकंठमहादेवका सोयोगीपुरुष ताआपणेहृदयकमलविषे ध्यानकरै ॥ अथवा सोयोगीपुरुष ताउमादेवीसहित महादेवका सूर्यमंडलविषेध्यानकरै ॥ अथवा सोयोगीपुरुष तामहादेवका अग्निविषेध्यानकरै ॥ अथवा सोयोगीपुरुष तामहादेवका चंद्रमंडलविषेध्यानकरै ॥ अथवा सोयोगीपुरुष तामहादेवका कैलासादिकपर्वतोंविषे ध्यानकरै ॥ हे आश्वलायन ॥इसप्रकार ताउमादेवीसहित महादेवरूपसगुणब्रह्मकेध्यानकरिकै जभी तायोगीपुरुषकामन स्थिरताकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी सोयोगीपुरुष सुखेनही तानिर्गुणब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरै है ॥ कैसाहैसोनिर्गुणब्रह्म मायाशक्तिकूंअंगीकार करिकै यासर्वजगत्काकारणहै ॥ तथा मनवाणीका अविषयहै ॥ तथा अज्ञानरूपतमतैंपरहै॥तथा ताअज्ञानरूपतमतैंरहितहै ॥ तथा बुद्धिआदिकसर्वप्रपंचकासाक्षीरूपहै ॥ तथा बुद्धिआदिकों तैं रहितहै ॥ ऐसेअद्वितीयनिर्गुणब्रह्मकूं सोयोगीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैजानैहै ॥ अब तानिर्गुणब्रह्मविषे अद्वितीयरूपता स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेआश्वलायन ॥ जिसब्रह्मकूं उमादेवीसहित सगुणरूपकरिकैवर्णनकऱ्याहै ॥ सोसगुणब्रह्म निर्गुणब्रह्मतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु उपाधिकेपरित्यागकियेतैं सोसगुणब्रह्मही निर्गुणब्रह्मरूपहै ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मतैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ है नहीं॥ किंतु ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्रादिकदेवता अग्नि सूर्य चंद्रमा काल एकादशइंद्रिय चतुष्टय अंतःकरण पंचप्राण आकाशादिक पंचभूत पूर्वादिकदशदिशा जरायुआदिकचारभूतप्राणी ब्रह्मांड विराट् हिरण्यगर्भ जीव ईश्वर माया तामायाकाकार्यरूप स्थूल सूक्ष्म जगत् भूतपदार्थ भविष्यत्पदार्थ वर्त्तमानपदार्थ इसतैंआदिलैके जितनाकीयहजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् ताब्रह्मरूपही है ॥ ताब्रह्मतैंभिन्न कोईभीपदार्थनहीं है ॥ तहांश्रुति ॥सर्वंखल्विदंब्रह्म॥अर्थयह॥यहसंपूर्णजगत् ब्रह्मरूपहीहै॥हेआश्वलायन ॥

जैसे स्वप्नअवस्थाविषे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष नानाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोएकहीपरमात्मादेव मायाकेसंबंधतैं नानाजगतरूपकरिके स्थितहोवैहै ॥ और जैसे वास्तवतैं गंधर्वनगरतैंरहितजोआकाशहै ॥ ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर उत्पत्ति स्थिति लयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वद्वैतप्रपंचतैंरहित जोयह आनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआत्मादेवविषे यहद्वैतप्रपंच उत्पत्ति स्थिति लयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ॥हेआश्वलायन ऐसेअद्वितीयपरमात्मादेवकेज्ञानतैंविना दूसराकोई मुक्तिकेप्राप्तिकामार्ग अभीहैनहीं ॥ और पूर्वहुआनहीं ॥ और आगे होवैगानहीं ॥ किंतु मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञानहीं तामुक्तिकेप्राप्तिकामार्गहै ॥ तहांश्रुति ॥ नान्यःपंथाविद्यतेअयनाय ॥ अर्थयह ॥ मोक्षकीप्राप्तिवास्ते आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोई मार्ग है नहीं ॥ किंतु मैंब्रह्मरूपहूं यह आत्मज्ञानहीं तामोक्षकेप्राप्तिकामार्गहै ॥ १ ॥ हेआश्वलायन ॥जोअधिकारीपुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वभूतोंविषे व्यापकदेखेहै ॥ तथा तिनसर्वभूतोंकूं याआत्मादेवविषे कल्पितरूपकरिकेदेखे है ॥ सोअधिकारीपुरुषही ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेआत्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिके ताब्रह्मभाव कीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ और हेआश्वलायन ॥ यापूर्वकहीरीतिसैं जोअधिकारीपुरुष ताआत्मादेवकेजाननेविषेसमर्थनहींहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष प्रथम याप्रकारकाध्यानकरै ॥ जैसे यहलोक एककाष्ठ रूपअरणिकूंनीचेराखिके तथाएककाष्ठरूपअरणिकूंऊपरराखिके तथा तिनदोनोंअरणियोंकेमध्यविषे एकदीर्घकाष्ठरूपमंथा राखिकेतथातामंथाकेसाथ रज्जुबांधिके तारज्जुकूं वारंवारआकर्षणकरिके अग्निकूंप्रगटकरे हैं॥तैसे यहअधिकारीपुरुष आपणेशरीरकूं नीचे की अरणिरूपकरिके ध्यानकरे ॥ और अकार उकार मकार यातीनमात्रावालेप्रणवकूं ऊपरकीअरणिरूपकरिकेध्यानकरे ॥ और मंथनकूं मंथारूपकरिके ध्यानकरे ॥ और ताध्यानरूपक्रियाकूं रज्जुरूपकरिकेध्यानकरे ॥ इसप्रकारचिंतनकरिके सोअधिकारीपुरुष निरंतर ताध्यानकी आवृत्तिरूपमंथनकूंकरे ॥ इसप्रकार मंथनकरिके याअधिकारीपुरुषकूं याशरीरविषे अद्वितीयआत्मारूपअग्नि प्रगटहोवैहै॥सो अद्वितीय आत्मरूपअग्नि एकवारप्रगटहुआभी कामक्रोधादिकसर्वपाशोंकूं दग्धकरे है॥तिनकामादिकसर्वपाशोंकेदग्धहुएतैंअनंतरयहअधि

कारीपुरुष ताअद्वितीयब्रह्मरूपकरिकेस्थितहोवैहै॥हेआश्वलायन॥जोजीव मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेज्ञानरूपअग्निकरिकेकामादिकसर्वपाशोंकूं दाहकरे है ॥ सोत्वंपदार्थरूपजीव तत्पदार्थरूपब्रह्मतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु सोजीव केवलब्रह्मरूपहीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहजीव जो ब्रह्मरूपहीहै ॥ तो याजीवकूं जन्ममरणरूपसंसारकीप्राप्ति किसवासतेहोवे है ॥ समाधान ॥ हेआश्वलायन ॥ चेतनकेआश्रितरहणेहारी तथाचेतनकूंविषयकरणेहारी जाअविद्यारूपमायाहै ॥ तामायाकरिकेआवृत्तहुआ यहब्रह्महीजीवरूपहोवे है ॥ यातैं ताअज्ञानकरिकेही यहजीव संसारकूंप्राप्तहोवे है ॥ और तिसीमायाकरिकेआवृतहुआ सोपरमात्मादेव नानाउपाधियोंविषेनिवासकरे है॥तथापुरुषसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेआश्वलायन ॥ तामायाकेसंबंधकरिकेही यहआत्मादेव जीवभावकूंप्राप्तहोइके नानाप्रकारकेपुण्यपापकर्मोंकूंकरे है ॥ तथा तिनपुण्यपापकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकूंभोगेहै ॥ और तिसमायाकरिकेयुक्तहुआ यहआत्मादेव जाग्रतअवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेशरीरोंकूंग्रहणकरे है ॥ और सोआत्मादेव वास्तवतैं जन्यभोगोंकीतृप्तितैं रहितहुआभी तामायाके संबंधतैं तिसतिसजातिवालेशरीरोंविषेस्थित अनेकभोगोंकरिके तृप्तिकूंप्राप्तहोवे है ॥ और सोईहीआत्मादेव मूर्च्छाकेसमान सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोइके तहां विक्षेपरूपप्रतिबंधतैंरहितहोइके आत्मास्वरूपआनंदकूंभोक्ताहुआभी जिसमायाकेसंबंधतैं ताआत्मास्वरूपआनंदकूंजाणतानहीं ॥ और जैसे यालोकविषे किसीमंत्रऔषधादिकोंकरिके मूढअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष आपणेब्राह्मणत्व क्षत्रियत्व आदिकस्वरूपोंकूंजाणतानहीं ॥ तैसे यासंसारविषे मायाकरिके मूढअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहजीवात्मा आपणेवास्तवस्वरूपकूं जाणतानहीं ॥ और जैसे यालोकविषे स्वभावतैं चोरीआदिकदोषोंतैंरहितहुआभी कोईधर्मात्मापुरुष जभी चोरादिकदुष्टपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्त होवे है ॥ तभी सोधर्मात्मापुरुषभी बंधनकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे वास्तवतैं जन्ममरणादिकसंसारतैंरहितहुआभी यहजीवात्मा जभी तामायाकेसंगकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी यहजीवात्मा जन्ममरणादिकसंसारकूंप्राप्तहुएकीन्याई प्रतीतहोवे है ॥ और जैसे वास्तवतैं रूपरहितआकाशविषे यहपुरुष मोहकेवशतैं नीलरूपकूंदेखेहै ॥ तैसे वास्तवतैं मायारहितआत्माविषे सामायाभी माया

करिकेही प्रतीतहोवै है ॥ यातैं जैसे याअद्वितीयआत्माविषे यहजगत् मायाकरिकेकल्पितहोणे तैं मिथ्याहीहै ॥ तैसे तामायाभी मायाक रिकेकल्पितहोणे तैं मिथ्याहीहै ॥ यद्यपि आपणीसिद्धिविषे आपणीअपेक्षाहुए आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवै है ॥ तथापि दुर्घटकार्योंकेकर णेकरिके अघटितघटनापटीयसी यानामकूंप्राप्तहुई तामायाविषे सोआत्माश्रयदोप संभवैनहीं ॥ और हेआश्वलायन ॥ जैसे सर्व शास्त्रोंकेजानणेहारा विद्वान्पुरुषभी स्वप्नअवस्थाविषे निद्रादोषकरिके नानाप्रकारकेमोहकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वमोहतैंरहित हुआभी यहआत्मादेव तामायारूपदोषकरिके यासंसारविषे नानाप्रकारकेमोहकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे निद्राविषेसोयाहुआयह पुरुष तानिद्राकेनाशपर्यंत तास्वप्नदुःखोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे यहजीवात्माभी तामायारूपनिद्राकेनाशपर्यंत यासंसारस्वप्नकेअनेकदुः खोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे तास्वप्नअवस्थाविषे सिंहसर्पादिकोंकूंदेखिके दुःखकरिकेरुदनकरताहुआ तथाहिडकीशब्दकेसमान भयानकशब्दोंकूंकरताहुआ जोस्वप्नद्रष्टापुरुषहै ॥ तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं कोईदयालुपुरुष भेरीआदिकोंकेऊँचेशब्दकरिके जाग्रतकरैहै ॥ तैसे मायारूपी निद्राविषे यासंसाररूपस्वप्नकरिकेपीडित तथातीनतापकरिकेयुक्त जोयहजीवात्माहै ॥ ताजीवात्माकूं यहब्रह्मवेत्ता दयालुगुरु महावाक्यरूपभेरीकेशब्दकरिके तामायारूपनिद्रातैंजाग्रतकरै है ॥ और जैसे जाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहुआ सोस्वप्नद्रष्टापुरुष पुनःतास्वप्नसंबंधीदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशकरिके अविद्यारूपनिद्रातैं ब्रह्मज्ञानरूपजाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यह अधिकारीपुरुष पुनः यासंसाररूपस्वप्नकेदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेआश्वलायन ॥ ऐसेब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति याजीवोंकूं अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्म करिकेहोवैहै ॥ यातैं साब्रह्मज्ञानरूपतुरीयअवस्था अत्यंतदुर्लभहै ॥ किसीभाग्यवान्पुरुषकूंही प्राप्तहोवै है ॥ शंका ॥ हेभग वन् ॥ तुरीयनाम चतुर्थकाहै ॥ सो तीनकीअपेक्षाकरिके तुरीयहोवै है ॥ यातैं इहांप्रसंगविषे ब्रह्मज्ञानरूपतुरीयअवस्थाकूं किसतीनअवस्थावोंकीअपेक्षाकरिके तुरीयरूपताहै ॥ समाधान ॥ हेआश्वलायन ॥ जाग्रतरूपस्थूलअवस्था तथास्वप्नरूपसूक्ष्म अवस्था तथासुषुप्तिरूपकारणअवस्था यहतीनोंअवस्था याजीवात्माकेक्रीडाकरणेकास्थानहै ॥ यातैं तिनतीनोंअवस्थावोंकूं पुर कहे

हैं ॥ तेतीनोंअवस्थारूपपुर ताब्रह्मज्ञानरूपतुरीयअवस्थाकीप्राप्तिहुएही नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताब्रह्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिकैं नाशहोवैनहीं ॥ यातैं तिनकल्पिततीनअवस्थावोंकीअपेक्षाकरिके ताब्रह्मज्ञानरूपअवस्थाविषे तुरीयरूपता संभवहोइसकेहै ॥ और हेआश्वलायन ॥ जबपर्यंत याजीवात्माकूं ताब्रह्मज्ञानरूपतुरीयअवस्थाकीप्राप्ति नहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत यहजीवात्मा पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोइके वारंवार स्थूलशरीरोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तथा वारंवार तिनस्थूलशरीरोंका परित्यागकरै है ॥ और यहजीवात्मा जन्मकूंप्राप्तहोइके बाल्यअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताबाल्यअवस्थातैंअनंतर यौवनअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और तायौवनअवस्थातैंअनंतर वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तावृद्धअवस्थातैंअनंतर मरणअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और तामरणअवस्थातैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा घटीयंत्रकीन्याई यासंसारविषे भ्रमणकरै है ॥ यहही ताजीवात्माकी तिनस्थूलादिकतीनपुरोंविषे क्रीडाहै ॥ हेआश्वलायन ॥ याजीवात्माकूं जबपर्यंत मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकी प्राप्तिनहींभई ॥ तबपर्यंतही यहजीवात्मा तापुण्यपापकर्मकेअनुसार अनेकप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और तिनपुण्यपापरूपप्रारब्धकर्म के अनुसार मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तितैंअनंतर यहजीवात्मा पुनःजन्ममरणकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेआश्वलायन ॥ यहजीव गुरुशास्त्रकेउपदेश तैं जिसआत्माकेतुरीयरूपकूंजानिके जन्ममरणतैंरहितहोवै है ॥ सोआत्माका तुरीयस्वरूपकैसाहै ॥ यासर्वजगत्का आधाररूपहै ॥ तथा केवलश्रुतिकरिके प्रतिपादनकरणेयोग्यहै ॥ तथा स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपहै ॥ तथा यासर्वजगत्काकारणहै ॥ तथा वास्तवतैं कार्यकारणभावतैंरहितहै ॥ ऐसे तुरीयपरमात्मादेवतैंही यहप्राण उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा मन उत्पन्नहोवै है ॥ तथा वाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवै है ॥ तथा आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहपंचभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ ऐसे तुरीयपरमात्मादेवकास्वरूप ब्रह्मवेत्तामहात्मागुरु अधिकारीशिष्यों के प्रतियाप्रकार आत्मारूपकरिकेउपदेशकरै है ॥ हेशिष्य ॥ जो परब्रह्म सर्वकाआत्मारूपहै ॥ तथा सर्वविश्वकाआधारहै ॥ तथा तीनपरिच्छेदों तैं रहितहै॥तथा सूक्ष्मपदार्थ तैं भी अत्यंत

सूक्ष्महै ॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ सोअद्वितीयब्रह्मही तुमारास्वरूपहै ॥ और जोतुमारास्वरूपहै ॥सोईही ताअद्वितीयब्रह्मकास्व रूपहै इसप्रकार तेब्रह्मवेत्तागुरु तिनअधिकारीशिष्योंकेप्रति जीवब्रह्मकेअभेदकाउपदेशकरे हैं ॥ हेआश्वलायन ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थारूपप्रपंचकूं जोसाक्षीचैतन्य प्रकाशकरे है ॥ सोसाक्षीचैतन्य और जोब्रह्महै सो मैंहूं ॥ याप्रकार जोअधिकारीपुरुष जीवब्रह्मकेअभेदकूंनिश्चयकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष कार्यसहितअविद्यारूपसर्वबंधोंतैंरहितहोवै है ॥ और हेआश्वलायन ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थाविषे यथाक्रमतैं स्थूल सूक्ष्म आनंद यहतीनप्रकारके भोग्यरहे हैं ॥ तथा विश्व तैजस प्राज्ञ यहतीनप्रकारके भोक्तारहे हैं ॥ तथा ताभोग्यपदार्थकूंविषयकरणेहारी अंतःकरणकी अथवा अज्ञानकी वृत्तिरूपभोगरहे हैं ॥ तिन भोग्य भोक्ता भोगकूं मैंशुद्धआत्मा साक्षीरूपकरिकेप्रकाशकरोंहूं ॥ यातैं मैंचैतन्यस्वरूपशुद्धआत्मा तिनभोग्यादिकतीनोंतैं विलक्षणहूं ॥ तथा सर्वदा तुरीयशिवरूपहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ विशिष्टस्वरूप यद्यपि शुद्धस्वरूपतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ तथापि शुद्धस्वरूप विशिष्टस्वरूपतैंभिन्नहोवैनहीं यहशास्त्रकारोंकासिद्धांत है ॥ जैसे घटत्वादिकधर्मविशिष्टमृत्तिका यद्यपि शुद्धमृत्तिकातैंभिन्ननहीं है॥ तथापि शुद्ध मृत्तिका ताघटत्वादिकधर्मविशिष्टमृत्तिकातैंभिन्नहै ॥ तैसे विश्व तैजस प्राज्ञ आदिकविशिष्टस्वरूप यद्यपि शुद्धचेतनतैंभिन्ननहीं हैं ॥ तथापि सोशुद्धचेतन तिनविशिष्टस्वरूपों तैं भिन्नहै ॥ काहेतैं मोक्षअवस्थाविषे तिनविशिष्टस्वरूपोंकेबाधहुएभी सोशुद्धचेतन स्वरूपरहे हैं ॥ याअभिप्रायकरिकेही ॥ त्रिषुधामसुयद्भोग्यं भोक्ताभोगश्चयद्भवेत् ॥ तेभ्योविलक्षणःसाक्षी चिन्मात्रोहंसदाशिवः ॥ याश्रुतिनैं तिनविशिष्टस्वरूपोंतैं शुद्धचैतन्यकूंविलक्षणकह्याहै ॥ हेआश्वलायन ॥ इसप्रकार ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंश्रवणकरिके यहअधिकारीपुरुष याप्रकार ताआत्माकेस्वरूपकामननकरे ॥ यहसंपूर्णजगत् मैंआत्माविषेही उत्पन्न भयाहै ॥ तथा मैंआत्माविषेही स्थितहै ॥ तथा मैंआत्माविषेही लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयब्रह्म मैंहूं ॥ मेरेतैं भिन्न ब्रह्मनहीं है ॥ याकारणतैं सर्ववेदकीश्रुतियां मेरेकूं विश्वरूप कहेहैं ॥ तथा पुराणपुरुष कहे हैं ॥ तथा सर्वतेजोंकानिधि कहे हैं ॥

तथा संपूर्णज्ञानकर्मइंद्रियोंतैंरहित कहे हैं ॥ तथा प्राणबुद्धिआदिकोंतैंरहित कहे हैं ॥ तथा भगवान्परमेश्वर कहे हैं ॥ तथा सर्वज्ञ कहेहैं ॥ तथा सर्वद्वैततैंरहितअद्वितीय कहेहैं ॥ तथा मनवाणीकाअविषय कहेहैं ॥ तथा सर्ववेदोंकरिकेवेद्य कहेहैं ॥ तथा ॥ सर्ववेदांतकेअर्थका प्रकाशक कहेहैं ॥ तथा सर्वविद्याकागुरु कहेहैं ॥ तथा देव कहेहैं ॥ तथा सर्वप्रपंचतैंरहित कहेहैं ॥ काहेतें जैसे निर्मलआकाशविषे गंधर्वनगर कल्पितहोवे है ॥ तैसे आनंदस्वरूप मैंअद्वितीयआत्माविषे यहमायासहित संपूर्णभूतभौतिकजगत् कल्पितहै ॥ और कल्पितवस्तुतें अधिष्ठानकाभेदहोवैनहीं ॥ यातें याकल्पितजगत्करिके मेरेस्वरूपविषे तीनकालमें भेदनहीं है ॥ हेआश्वलायन ॥ याप्रकार आत्माकाविचारकरिके यहअधिकारीपुरुष जिसशुद्धब्रह्मकूंप्राप्तहोवे है ॥ सोशुद्धब्रह्मकैसाहै ॥ अद्वितीयआनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वबुद्धियोंविषेस्थितहै ॥ तथा ॥ सर्वबुद्धियोंकासाक्षी है ॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ तथा स्थूलसूक्ष्मजगत्तैंरहितहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोब्रह्मा आश्वलायनऋषिकेप्रति सगुणनिर्गुण ब्रह्मकेध्यानपूर्वक आत्मज्ञानकाउपदेशकरताभयाहै ॥ यातें याअधिकारीपुरुषोंनैंभी ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिवासते निर्गुणब्रह्मकाध्यान अथवासगुणब्रह्मकाध्यान अवश्यकरिकेकरणा ॥ हेशिष्य ॥ यहअधिकारीपुरुषजभी अंतःकरणकीमलिनतादोषकरिके पूर्वउक्तसगुणब्रह्मकूं तथानिर्गुणब्रह्मकूं साक्षात्कारकरणेविषेसमर्थनहींहोवे ॥ तभी सोअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते शीघ्रहीं संन्यासकूंकरैनहीं ॥ किंतु सोअधिकारीपुरुष प्रथम अंतःकरणके शुद्धिकाउपायकरे ॥ तहां अंतःकरणकीशुद्धिके जितनेकीशास्त्रविषे साधनकहे हैं ॥ तिनसर्वसाधनोंविषे नमस्ते इत्यादिकरुद्राध्यायकेपाठकेसमान दूसरा कोईसाधनहैनहीं ॥ किंतु सोरुद्राध्यायकापाठही सर्वपापोंकेनिवृत्तिकरणेहाराहै ॥ यातें यहअधिकारीपुरुष आपणेअंतःकरण कीशुद्धिवासते श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतर तारुद्राध्यायकाजपकरे ॥ तारुद्राध्यायकेजपकरिके याअधिकारीपुरुषकूं जभी अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा वैराग्यकीप्राप्तिहोवे ॥ अथवा पूर्वउक्तगर्भदुःखोंकेविचारतें तथामरणकालकेज्ञानतें तथाअष्टांगयोगतें तथाउपासनादिकोंतें वैराग्यकीप्राप्तिहोवे ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष तासंन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरे ॥ हेशिष्य ॥ तासंन्यासकेग्रहण

कियेहुएभी याअधिकारीपुरुषकूं जबपर्यंत ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति नहींहोवै ॥ तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष तारुद्राध्यायकेजपपूर्वक उमादेवीसहितमहादेवकेध्यानकूं अवश्यकरिकेकरै ॥ तामहादेवकेध्यानतैं याअधिकारीपुरुषकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मोक्षकीप्राप्ति अवश्यकरिकेहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ उमासहायंपरमेश्वरंप्रभुं त्रिलोचनंनीलकंठंप्रशांतं ॥ ध्यात्वामुनिर्गच्छतिभूतयोनिं समस्तसाक्षितम सःपरस्तात् ॥ अर्थयह ॥ उमादेवीसहितविराजमान तथापरमेश्वर तथासर्वकाप्रभु तथातीननेत्रवाला तथाअत्यंतशांतस्वरूप तथानील कंठ ऐसेमहादेवकाध्यानकरिके यहअधिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ सर्वभूतभौतिकजगत्काकारणहै ॥ तथा सर्वजगत्कासाक्षीहै ॥ तथा अज्ञानरूपतमतैंपरहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ यहअधिकारीपुरुष तासंन्यासआश्रमकूंधारणकरिके श्रद्धापूर्वक निरंतर ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै ॥ तथा मनननिदिध्यासनकूंकरै ॥ तथा ब्रह्मवेत्तागुरुकीभक्तिकूंकरै ॥ तावेदांतश्रवणादिकोंकरिके तासंन्यासीकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ जोब्रह्मज्ञान पूर्वहम ब्रह्मउपनिषदादिकोंविषेकथनकरिआये हैं यातैं यासंन्यासियों नैं निरंतर वेदांतशास्त्रकाही चिंतनकरणा ॥ तहांश्लोक ॥ आसुप्तेरामृतेःकालं नयेद्वेदांतचिंतया ॥ दद्यान्नावस रंकिंचित् कामादीनांमनागपि ॥ अर्थयह ॥ संन्यासआश्रमकूंधारणकरिके यहअधिकारीपुरुष सुषुप्तितैंलेकेमरणपर्यंत निरंतर वेदांतशास्त्रकेचिंतनकरिकेही कालकूंव्यतीतकरै ॥ तावेदांतचिंतनकरिके सोसंन्यासीआपणेचित्तविषे कामक्रोधादिकविकारोंकूं किंचितमात्रभी अवसरनहींदेवै ॥ १ ॥ इसप्रकार निरंतर वेदांतचिंतनकरणेहारेसंन्यासीकूं शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ ऐसे परमहंससंन्यासकरिके याअधिकारीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ याअर्थविषे सर्वज्ञश्वेतकेतुही दृष्टांतहै ॥ काहेतैं सर्वसंन्यासियोंविषेश्रेष्ठ सोश्वेतकेतुनामासंन्यासी पूर्व छांदोग्यउपनिषद्‌केषष्ठअध्यायके श्रवणमननादिकोंकरिके तथापूर्वउक्तवैराग्यादिकसाधनोंकरिके आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणताभयाहै ॥ यातैं इदानींकालके परमहंससंन्यासियोंनैंभी श्रवणा दिकउपायोंकरिके ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ काहेतैं यापरमहंससंन्यासियोंका सोआत्मज्ञानकीनिष्ठारूपआ

चारही मुख्यहै ॥ ताज्ञाननिष्ठारूपआचारतैंविरुद्धदूसरेसर्वआचारगौणहैं ॥ यातैं यापरमहंससंन्यासियों नें दूसरेसर्वआचारोंकापरित्याग करिकै केवल ताज्ञाननिष्ठारूपआचारकूंही संपादनकरणा ॥ हेशिष्य ॥ जोतुमनें पूर्व परमहंससंन्यासविषे प्रश्नकऱ्याथा ॥ सोहमनें तुम्हारेप्रति तापरमहंससंन्यासकास्वरूप तथाताकेअधिकारीकास्वरूप तथाताकेवैराग्यादिकसाधनोंकास्वरूप तथाताकेग्रहणकरणेको रीति विस्तारतैंकथनकरी ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुम्हारेकूंइच्छाहोवै ॥ सो तुम हमारेसैंपूछो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामीउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतात्मपुराणे गर्भोपनिषत्सारार्थप्रकाशोनाम एकादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे द्वादशोऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥श्रीशंकराचार्येभ्योनमः॥ अथद्वादशाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वएकादशेअध्यायविषे जाबालउपनिषद् गर्भउपनिषद् अमृतनादउपनिषद् हंसउपनिषद् क्षुरिकाउपनिषद् आरुणेयउपनिषद् ब्रह्मउपनिषद् परमहंसउपनिषद् महत्उपनिषद् आत्मप्रबोधउपनिषद् केवल्यउपनिषद् याएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब याद्वादशेअध्यायविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ तहां पूर्वअध्यायोंविषे नानाप्रकारकीविचित्रकथावोंकूंश्रवणकरिके प्रसन्नताकूं प्राप्तहुआ सोश्रद्धावानशिष्य श्वेतकेतुकीकथाकेश्रवणकरणेवासते पुनः आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ॥ पूर्व ऐतरेयऋषिनें तथाकौषीतकिऋषिनें तथासूर्यभगवान्नें तथाश्वेताश्वतरऋषिनें तथाकठऋषिनें तथातित्तिरिऋषिनें तथा जाबालादिकऋषियोंनें आपणेआपणेशिष्योंकेप्रति जाजाब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ तथा ताब्रह्मविद्याके जितनेंकी वैराग्य योग उपासनां संन्यास आदिकसाधन कथनकरेथे ॥ तिनसर्वसाधनोंसहित सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनेंआपकेमुखतें श्रवणकरी ॥ तथा ताब्रह्मविद्याकेप्रसंगतें नानाप्रकारकेविचित्रआख्यानभी हमनें आपकेमुखतेंश्रवणकरे ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनें ऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषेयहवार्त्ता आपनें कथनकरीथी॥प्रजाकूंदुःखीदेखिकरिके करुणाकरिकेंयुक्तहुए सनकादिकमुनि ताअधिकारीप्रजाकेहितवासते ब्रह्मात्मज्ञानकाउपदेशकरतेभये ॥ तथा तिनअधिकारीपुरुषोंविषे कोईवामदेवनामाअधिकारी मृत्युकूंप्राप्तहोइके माताकेगर्भविषे स्थितहोइके तिनविचारवान्अधिकारीपुरुषोंकेहितवासते ब्रह्मात्मज्ञानकाउपदेशकरताभया॥जिसउपदेशकेविचारकरणेतें याअधिकारीपुरुषोंकूं करामलककीन्याई देहादिकजडसंघाततेंविलक्षणसाक्षीआत्माका ब्रह्मरूपकरिकेज्ञानहोवे है॥ तथा जिसउपदेशकेश्रवणमननकियेतें विषयासक्तकामीपुरुषोंकूंभी आपणेशरीरविषे तथास्त्रीपुत्रादिकोंकेशरीरविषे तीव्रवैराग्य उत्पन्नहोवे है ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता ताप्रथमअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनें तिसीऋग्वेदके कौषीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहां द्वितीयअध्यायविषेतो आपनें यहवार्त्ता कथनकरी

थी ॥ इंद्रकेसाथयुद्धकरणेकीइच्छाकरिकै दिवोदासराजाकापुत्र प्रतर्दनराजा स्वर्गलोकविषेजाताभया ॥ तहां सोप्रतर्दनराजा युद्धकरि
कै इंद्रकूंजीतताभया ॥ और ताप्रतर्दनराजाकेपुरुषार्थकूंदेखिकरिकै प्रसन्नहुआ सोइंद्र ताप्रतर्दनराजाकेताई वरदेताभया ॥ जिसवरकीप्रा
प्ति यादेहधारीजीवोंकूं अत्यंतदुर्लभहै ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता आपनैं ताद्वितीयअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके
तृतीयअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ बालाकिब्राह्मण संपूर्णदेशोंकेविद्वानोंकूंजीतकरिकै श्रीकाशीविषे अजातशत्रुराजाकेस
मीपजाताभया ॥तहां राजाकेकठोरवचनोंकूंश्रवणकरिकै अभिमानतैंरहितहुआ सोबालाकिब्राह्मण तिसीअजातशत्रुराजातैं ब्रह्मविद्याकाउप
देशलेताभया ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता आपनैं तातृतीयअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम या
चारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकर्‍याथा ॥ तहां चतुर्थ अध्यायविषेतौ आपनैं यहवार्त्ता कथ
नकरीथी ॥ दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेदभीसंभवै है ॥तथापरस्परअभेदभीसंभवै है॥और दध्यङ्
अथर्वणऋषि इंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै क्रोधवान् हुआसोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकेप्रति पुनः ता
ब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेकीआज्ञाकरताभया॥तिसतैंअनंतर सोदध्यङ्अथर्वण आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते सोब्रह्मविद्या अश्विनी
कुमारोंकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ताकरिकैक्रोधवान्हुआ सोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकेमस्तककूंछेदनकरताभया॥और ते अश्विनीकुमारभी ब्र
ह्मविद्याकेलोभकरिकै आपणेगुरुकेमस्तककूंकाटिकै अश्वकीग्रीवाऊपरराखतेभये ॥और अश्वकेमस्तककूंकाटिकै तादध्यङ्गुरुकेग्रीवाऊप
रराखतेभये॥यहसंपूर्णवार्त्ता आपनैं ताचतुर्थअध्यायविषेकथनकरीथी॥और हेभगवन् याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे आपनैं जनक
राजाकेयज्ञसभाविषे आश्वलादिकब्राह्मणोंकेसाथ याज्ञवल्क्यमुनिकेजल्पकथाका निरूपणकर्‍याथा ॥तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरि
कै शाकल्यकामृत्युकथनकर्‍याथा॥तहां परस्पर जीतणेकीइच्छाकरिकै जोशास्त्रकेअर्थकाविचारकरणाहै ताकानाम जल्पकथाहै॥और
हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं तिसीयाज्ञवल्क्यमुनिको जनकराजाकेसाथ दोवार वादकथानिरूपणकरीथी ॥ तहां तत्त्व

जाननेकीइच्छाकरिके जोपरस्पर शास्त्रकेअर्थकाविचारकरनाहै ताकानाम वादकथाहै ॥ और हेभगवन् ॥याआत्मपुराणकेसप्तमअध्याय विषे आपनैं तायाज्ञवल्क्यमुनिके तथामैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥तथा याज्ञवल्क्यमुनिके संन्यास आश्रमका निरूपणकऱ्याथा ॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके अष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतर नामाउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरमुनिका तथासंन्यासियोंका तथापूर्ववेदवेत्ताब्राह्मणोंका परस्पर याजगत्केकार णोंविषेविचार निरूपणकऱ्याथा॥और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तानवमअध्यायविषे यमराजाका तथानचिकेताका नानाप्रकारकेवरोंयुक्तआख्यान निरूपणकऱ्याथा ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके दशमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तादशमअध्यायविषे यहवार्त्ता आपनैं निरूपणकरीथी ॥ वैशंपायनगुरुकीआज्ञाकूंमानिके याज्ञवल्क्यमुनिनैं वमनकरेजेयजुर्वेदकेमंत्र ॥ तिनमंत्रोंकूं ब्राह्मण तित्तिरीपक्षी कारूपधारणकरिके भक्षणकरतेभये॥याकारणतैं तिनमंत्रोंविषे कृष्णयजुशरूपता प्राप्तहोतीभई ॥ और ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते भृगुऋषि वरुण पिताकेसमीप पंचवार जाताभया ॥ और वेननामागंधर्वनैं जिसप्रकार आपणेआत्माकाअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ सोभी आपनैं निरूपणकऱ्याथा ॥ तथा सत्यादिकसाधनोंकाकथनकरिके तिनसर्वसाधनों तैं संन्यासरूपसाधनकूंउत्कृष्टरूपकरिकेवर्णनकऱ्याथा ॥ तथा तासंन्यासकी ब्रह्मरूपकरिकेस्तुतिकरीथी ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता तादशमअध्यायविषे निरूपणकरीथी ॥ औरहेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेएकादशेअध्यायविषे आपनैं जाबालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा तहां जाबालउपनिषद्विषे तथापरमहंसउपनिषद्विषे तथाआरुणिउपनिषद्विषे जिससंन्यासका कथनकऱ्याथा ॥ सोसंन्यास वेदकेशाखावोंकेभेदहुएभी भिन्नहोवैनहीं ॥ किंतु तिनसर्व उपनिषदोंविषे सोएकहीसंन्यासकथनकऱ्याहै ॥ यहवार्त्ता आपनैं ताएकादशेअध्यायविषे निरूपणकरीथी ॥ तथा तासंन्यासकी प्राप्तिविषे उपयोगीजोवैराग्यहै ॥ तावैराग्यकीप्राप्तिवासतै आपनै मरणकेअनेकनिमित्तोंसहित नानाप्रकारकेयोगका कथनकऱ्याथा ॥ तथा

गर्भउपनिषद्विषे तायोगकेउपयोगी अनेकपदार्थोंका निरूपणकरिके ताप्रसंगकरिके वसिष्ठमुनियुक्त अद्भुतयोगका वर्णनकऱ्याथा ॥
और अमृतनादउपनिषद्विषे तथाहंसउपनिषद्विषे तथाक्षुरिकाउपनिषद्विषे वेदकीशाखावोंकेभेदकरिके जोजोयोग निरूपणकऱ्याहै ॥
सोयोगभी आपनैं भिन्नभिन्नकरिके निरूपणकऱ्याथा ॥ और ब्रह्मउपनिषद् अमृतबिंदुउपनिषद् नारायणीयउपनिषद् महोपनिषद् आ
त्मप्रबोधउपनिषद् कैवल्यउपनिषद् यावद्उपनिषदोंविषे जाजाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्याभी आपनैं कथनकरीथी ॥
तथा तापरमहंससंन्यासविषेस्थित संवर्त्तकादिकसंन्यासी सर्वलोकोंतैंविलक्षणआचारवालेहुएवर्ततेहैं ॥ यहवार्त्ताभी आपनैं कथनकरीथी ॥
और तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका वैराग्यहीकालहै यहवार्त्ताभी आपनैं कथनकरीथी ॥ और गर्भदुःखोंतैंआदिलेके नानाप्रकारकेउ
पायोंकरिके वैराग्यकूंप्राप्तहुए जेपुरुषहैं ॥ तेपुरुषही यापरमहंससंन्यासकेअधिकारी हैं ॥ यहवार्त्ताभी आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा ता
संन्यासग्रहणकरणेकीरीति तथातासंन्यासीकेमरणतैंअनंतरसंस्कार तथातासंन्यासीकावेश तथातासंन्यासीकाआचार यहसंपूर्णवार्त्ता
आपनैं विस्तारतैं कथनकरीथी ॥ हेभगवन् ॥ ताएकादशेअध्यायके अंतविषे आपनैं श्वेतकेतुकावर्णनकऱ्याथा ॥ जोश्वेतकेतु ब्रह्मज्ञान
तैंपूर्वभी सर्वज्ञथा ॥ हेभगवन् ॥ यहश्वेतकेतुकीवार्त्ताबहुतआश्चर्यकाकारणहै ॥ यातैं यावार्त्ताकेश्रवणकरणेकी हमारेकूं बहुतअभिलाषा
है ॥ हेभगवन् ॥ आपनैंपूर्व ताएकादशेअध्यायकेआदिविषे सर्वलोकोंतैंविलक्षणआचारवाले संवर्त्तकादिकसंन्यासी कथनकरेथे ॥ तिन
संन्यासियोंविषे श्वेतकेतुकाभी कथनकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायकेअंतविषे पुनः तिसीश्वेतकेतुकाकथन आपनैं किसवासते कऱ्याहै॥
हेभगवन् ॥ सोसर्वज्ञश्वेतकेतु किसदोषकरिके अज्ञताकूं प्राप्तहोताभया ॥ तथाकिसमहात्मानैं ताश्वेतकेतुकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या
था ॥ तथा साब्रह्मविद्या किसप्रकारकीथी ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता आप कृपाकरिके मैंश्रद्धावान्शिष्यकेप्रति कथनकरो ॥ इसप्रकार
बुद्धिमानशिष्यकरिकेपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताश्रद्धावान्शिष्यकेप्रति छांदोग्यउपनिषद्विषे कथनकरीहुईकथाकूं कहताभया ॥
श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ पूर्व एकश्वेतकेतुनामा ऋषिकाबालक होताभयाहै ॥ ताश्वेतकेतुबालकविषे मातापिताका बहुतस्नेहहो

तौ सोपिता अथवा आचार्य तापुत्रकेप्रति तथाशिष्यकेप्रति ताडनाकरिके शिक्षानहींकरे ॥ किंतु मित्रकीन्याई वाणीकरिके शिक्षाकरे ॥ याप्रकारकीरीति तानीतिशास्त्रविषेकथनकरीहै ॥ यातें पितामाताने पुत्रकूं अवश्यकरिके शिक्षाकरणी ॥ हे पुत्र ॥ जोमूढबुद्धिपुत्र आपणेमाताकेशिक्षाकूं तथापिताकेशिक्षाकूं तथाआचार्यकेशिक्षाकूं ग्रहणनहींकरेहै॥सोमूढबुद्धिपुरुष यौवनअवस्थाकेप्राप्तहुए परमक्लेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां सोमूढबुद्धिपुरुष इसलोकविषेतो राजादिकों तें भयकूंप्राप्तहोवे है ॥ और परलोकविषे यमराजातेंभयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेपुत्र ॥ यालोकविषे पुत्रकूं मातापितानें तथाआचार्य नें अवश्यकरिकेशिक्षाकरीचाहिये॥ जोकदाचित् तापुत्रऊपरकोईदूसरापुरुष शिक्षाकरणेवालाहोवैभी तोभी तापुत्रकूं मातापितानें तथाआचार्य नें अवश्यकरिके शिक्षाकरणो ॥ और तुम्हारीमाता नें तथामैंपितानें तुम्हारेकूं शिक्षाकरीनहीं ॥ याकारणतें तूं ब्रह्मचर्य तें रहितहुआ द्वादशवर्षकाहुआहै ॥ और किसीअनाचारीनिकृष्टब्राह्मणकीन्याई तूं हमारेकुलविषे नहींउत्पन्नहुएकीन्याई प्रतीतहोताहै ॥ हेपुत्र ॥ नीतिशास्त्रकेमर्यादाकापरित्यागकरिकें हमनें स्नेहकेवशतें इतनेकालपर्यंत तुम्हारा लालनकर्‍याहै ॥ यातें मैंपिता तुम्हारेउपनयनसंस्कारकूंकरिके तुम्हारेकूंशिक्षाकरों यहवार्त्ता अत्यंतदुर्घटहै ॥ और स्नेहयुक्तमैंपिताविषे तुम्हारीभीश्रद्धाहोवैगीनहीं ॥ और श्रद्धातेंविना विद्याकाउपदेशकरणा भस्मविषेआहुतिकीन्याईव्यर्थहोवैहै ॥ यातें तूं किसीदूसरेआचार्यगुरुकेसमीपजाइके ताआचार्यकेउपदेशतें विद्याअध्ययनादिक ब्रह्मचारीकेधर्मोंकूंसंपादनकर ॥ हेपुत्र ॥ जोतूं ब्रह्मचर्यआश्रमकूंधारणकरिके वेदविद्याकाअध्ययन नहींकरैगा ॥ तौ इसलोकविषे नरकदुःखतेंभीअधिकदुःखकेदेणहारी तुम्हारी अपकीर्तिहोवेगी ॥ और तुम्हारा हमारेकुलविषेजन्महुआहै ॥ यातें तुम्हारीअपकीर्तिकरिके हमारी तथाहमारेवृद्धपुरुषोंकीभी अपकीर्तिहोवेगी॥और श्रेष्ठपुरुषोंकीजा अपकीर्तिहै ॥ सामरणतेंभीअधिकहै ॥ यातें हेपुत्र ॥ तूं किसीवेदवेत्तागुरुकेसमीपजाइके वेदविद्याकाअध्ययनकर ॥ हे शिष्य ॥ इसप्रकारकेवचन जभी ताआरुणिपितानें ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति कथनकरे ॥ तभी सोश्वेतकेतु तापिताकेवचनोंकूंश्रवणकरिके विचारकूं प्राप्तहोताभया॥और तापिताकीआज्ञालेके सोश्वेतकेतु आपणेगृहकापरित्यागकरिके किसीअन्यदेशविषेजाताभया ॥ तहांजाइके

सो श्वेतकेतु किसीवेदवेत्ता ब्राह्मणोंकूंगुरुधारणकरिकें व्याकरणादिकषट्अंगोंसहित चारिवेदोंका अध्ययनकरताभया ॥ तथा उपनिषद्रूपवेदांतभागकूंछोडिके सो श्वेतकेतु तिनसर्ववेदोंकेअर्थकाभी विचारकरताभया ॥ इसप्रकार अर्थसहित चारिवेदोंकाअध्ययनकरिके सो श्वेतकेतु तिनगुरुवोंतेंआज्ञालैके आपणेगृहकेप्रति आवताभया ॥ और मार्गविषेआवताहुआ सो श्वेतकेतु आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया॥सर्ववेदोंकेपाठकूं तथासर्व वेदोंकेअर्थकूं हमनें भलीप्रकारअध्ययनकऱ्याहे॥यातें मैं श्वेतकेतु अत्यंतबुद्धिमानहूं॥और जैसा हमारेकूंवेदोंकापाठ तथाअर्थ आवेहे॥तैसा हमारेपिताकूंभी आवतानहीं॥काहेतें जोकदाचित् हमारापिता तिनवेदोंकेपाठकूं तथाअर्थकूं जाणता होता॥तो मैंप्रियपुत्रकूं दूसरेब्राह्मणोंकेसमीप किसवासतेभेजता ॥और सोहमारापिता विद्याअध्ययनकरणेवासतें हमारेकूं दूसरेब्राह्मणों के पास भेजताभयाहे ॥ यातें यहजान्याजावेहे ॥ हमारेपिताकूं यथार्थ वेदविद्या आवतीनहीं ॥ किंवा ॥ जिसगुरुवोंकेसमीप हमनें वेदविद्याकाअध्ययनकऱ्याहे ॥ तेगुरुभी हमारीतीक्ष्णबुद्धिकूंदेखिके आपणेपुत्रों तें भी अधिकस्नेह हमारेविषेकरतेभयेहैं॥जोमैं अधिकबुद्धिमानन हींहोता ॥ तो तेहमारेगुरुहमारेऊपर अधिकस्नेहनहींकरते ॥ याकारणतेंभी मैं पितातें अधिकबुद्धिमानहूं॥किंवा ॥तेहमारेगुरु किसीप्रसंगपाइकेस्नेहपूर्वक अनेकशपथोंकूंकरिके हमारेप्रतियाप्रकारकावचन कहतेभयेहैं हे श्वेतकेतु जितनीकिवेदविद्या हमारेकूं आवतीथी सासंपूर्णवेदविद्या हमों नें तुम्हारेप्रति उपदेशकरीहे॥इसतैंअधिककोईविद्या हमारेपासहैनहीं॥ऐसेगुरुवोंकेवचनों तें भी यहजान्याजावेहे॥ जोमैं श्वेतकेतु ताआरुणिपितातें अधिकविद्यावालाहूं ॥किंवा॥ पुत्र पितातेंभीअधिकबुद्धिमानहोवेहे ॥ यावार्त्ताविषे कोईआश्चर्यनहीं है ॥ ॥ काहेतें जैसे पूर्व बृहस्पति तथा ताबृहस्पतिका कचनामापुत्र आपणेपितातेंभी अधिकविद्यावानहुआहे ॥ नामकचकूं शास्त्रविषे अंगु या नामकरिकेभी कथनकरे हैं ॥ सोकच शुक्रतें मृत्युसंजीवनीविद्याकूंपढिके बृहस्पतिआदिकसर्वदेवतावोंकूं साविद्या पढावताभयाहे ॥ यह वार्त्ता वेदकेशतपथब्राह्मणविषे तथामनुस्मृतिविषे प्रसिद्धहे ॥ तैसे मैं श्वेतकेतुभी आपणेपितातें अधिकविद्यावानहुवाहूं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाचिंतनकरिके सो श्वेतकेतु महान्गर्वकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तागर्वदोषकरिके उत्पन्नभयाजोमोहहे ॥ तामोहकरिके सो श्वेतकेतु

आपणेगृहविषेजाइके आपणेपिताकेपादोंऊपर नमस्कार नहींकरताभया ॥ किंतु स्तंभकीन्याई नम्रभावतैंरहितहोइके ऊंचेआसनऊपर स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार ताश्वेतकेतुपुत्रकूं नम्रतातैंरहितदेखिकेभी सोआरुणिपिता तापुत्रऊपर क्रोधनहींकरताभया ॥ किंतु कृपाकरिकेयुक्तहुआ सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेहितवासते याप्रकारकावचन तापुत्रकेप्रति कहताभया ॥ आरुणिरुवाच ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जिसअतिशयताकेअभिमानकरिके तूंस्थाणुकीन्याई नम्रतातैंरहितहुआहै ॥ तथा जिसअतिशयताकेअभिमानकरिके तूं आपणेकूं षट्अंगोंसहितचारवेदोंकावेत्ता मानताहै ॥ तथा जिसअतिशयताकेअभिमानकरिके तूं आपणेकूंसर्वविद्वानों तैं अधिकमानताहै ॥ साअतिशयता तुमारेविषेकौनहै ॥ यहवार्त्ता तूं हमारेप्रतिकहु ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तुमने आपणेगुरुकेप्रति कभी यहप्रश्नकऱ्याहै ॥ जो जिसएकवस्तुकेश्रवणकरिके संपूर्णअश्रुतपदार्थोंकाभीविज्ञान श्रवणहोवै है॥तथा जिसएकवस्तुकेमननकरिके संपूर्णअमननकरेहुएपदार्थोंकाभीमननहोवै है॥तथा जिसएकवस्तुकेविज्ञानकरिके संपूर्णअविज्ञातपदार्थोंकाभीविज्ञानहोवैहै ॥ऐसावस्तु तुमनें कभी आपणेगुरुवोंतैंपूछाहै॥जोतूं तावस्तुकूंजाणताहोवै ॥ तौहमारेप्रति कथनकर॥हेशिष्य॥ इसप्रकारकावचन जभी ताआरुणिपितानें श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति कह्या ॥ तभी सोश्वेतकेतु तावस्तुकूंनजानताहुआ तागर्व तैं रहितहोताभया ॥ और पिताकेवचनकूंश्रवणकरिके परमआश्चर्यकूंप्राप्त हुआ सोश्वेतकेतु श्रद्धाभक्तिपूर्वक तापिताकूंनमस्कारकरिके याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ हेभगवन् ॥ जिस एकवस्तुके श्रवणकरिके तथामननकरिके तथाविज्ञानकरिके सर्वपदार्थोंका श्रवण मनन विज्ञान होवै है ॥ ताएकवस्तुकूं मैं जाणतानहीं ॥ यातैं आप कृपाकरिके तावस्तुकाउपदेश हमारेप्रति करो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी ताश्वेतकेतुनें आरुणिपिताके प्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ आरुणिरुवाच हेश्वेतकेतु ॥ ताएकवस्तुकेजानणेवासते तूं प्रथम तीनदृष्टांतोंकरिके यासर्वजगत्‌कूं तेज जल पृथिवी यातीनभूतरूपकरिके निश्चयकर ॥ तिसतैंअनंतर तिसीतीनदृष्टांतोंकरिके तेज जल पृथिवी यातीनोंकाकारण जोपरमात्मादेवहै तापरमात्मारूपकरिके तासर्वजगत्‌कूं निश्चयकर ॥

अब तिन तीनदृष्टांतोंका निरूपणकरै हैं ॥ हे श्वेतकेतु ॥जैसेयालोकविषे पृथिवीरूपमृत्तिकापिंडकेज्ञानहुएतैंअनंतर तामृत्तिकाकेकार्यरूप घटशरावादिकसर्वपदार्थोंका ज्ञानहोवै है ॥ १ ॥ और जैसे तेजरूप सुवर्णपिंडकेज्ञानहुएतैंअनंतर तासुवर्णकेकार्यरूप कटककुंडलादिक सर्वपदार्थोंकाज्ञानहोवै है ॥ २ ॥ और जैसे नखनिकृंतनादिकपिंडविषेस्थित जोलोहहै ॥ तालोहपिंडकेज्ञानहुएतैं अनंतर तालोहकेकार्य रूप खड्गादिकसर्वपदार्थोंका ज्ञानहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपुरुष एकवार तामृत्तिकाकेघटरूपकार्यविषे यहमृत्तिकाहीहै याप्रकारका निश्चयकरैहै ॥ सोपुरुष ताघटतैंभिन्न दूसरेमृत्तिकाकेकार्योंकूंदेखिके यहमृत्तिकाहै ॥ अथवानहीं है याप्रकारकेसंशयकूं प्राप्तहोवैनहीं॥किंतु तिनसर्वकार्योंकूं मृत्तिकारूपकरिकेहीदेखैहै ॥ यहरीति सुवर्णपिंडविषे तथालोहपिंडविषेभी जानिलेणी॥तैसे तेज जल पृथिवी यातीनभूतों काकारण जोपरमात्मादेवहैतापरमात्मादेवकेज्ञानहुएतैंअनंतर याजीवोंकूं तेजजलपृथिवीरूप यासर्वजगत्काज्ञानहोवैहै॥शंका॥हेभगवन्॥ मृत्तिकाकापिंड पृथिवीरूपहै यातैंतापृथिवीभूतविषे तामृत्तिकापिंडकादृष्टांत संभवै है॥तैसे सुवर्णपिंडभी तेजरूपहै ॥ यातैं तातेजभूतविषे सुवर्णपिंडकादृष्टांतभी संभवैहै॥तथापि नखनिकृंतनरूपलोहपिंड जलरूपहैनहीं॥यातैं ताजलभूतविषे तालोहपिंडकादृष्टांत संभवतानहीं॥ समाधान ॥ हे श्वेतकेतु ॥ यद्यपि द्रवीभूतजलकेसंबंधतैंही पृथिवीआदिकोंतैं नानाप्रकारकेकार्य उत्पन्नहोवै हैं ॥ जलकेसंबंधतैं विना तिन पृथिवीआदिकोंतैं कोईभीकार्य उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिके तिनजलोंविषे कारणता प्रसिद्धहै ॥ तथापि पृथिवीआदिकों केसंबंधतैंरहित केवल जलपिंडविषे कोईकारणता लोकविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥ याकारणतैं यालोकोंकेबुद्धिकूंअंगीकारकरिके ताश्रुति भगवतीनैं हिमकरकादिरूपजलकेसमान निर्मलतारूपकरिकेप्रसिद्ध जोनखनिकृंतनादिरूपलोहहै तालोहकूं तीसरादृष्टांतरूपकरिकेकथन कऱ्याहै ॥ यातैं ताजलभूतविषे तालोहपिंडकादृष्टांत संभवै है ॥ अब एककारणवस्तुकेज्ञानतैं सर्वकार्योंकाज्ञानहोवै है यानियमविषे गौणरूपतामानणेहारे जेभेदवादीहैं ॥ तिनभेदवादियोंकेमतकेखंडनकरणेवासते प्रथम तिनभेदवादियोंकेमतका निरूपणकरै हैं ॥ हे श्वे तकेतु ॥ एककारणरूप परमात्माकेज्ञानतैं याकार्यरूपसर्वजगत्काज्ञानहोवै है ॥ याश्रुतिअर्थविषे कोईकभेदवादीपुरुष स्थालीपुलाक

न्यायकूंअंगीकारकरिके गौणरूपतामाने हैं॥ तिनभेदवादियोंका यहअभिप्रायहै ॥ जिसपात्रविषे तंदुलपकाते हैं तापात्रकानाम स्थालीहै ॥ और तिनतंदुलोंकानाम पुलाकहै ॥ तहां तिनतंदुलोंकूंपकावणेहारेपुरुष अग्निऊपर जलयुक्तस्थालीपात्रकूंराखिके तापात्रविषे तंदुलोंकूं पावेहैं ॥ तिसतेंअनंतर तेपाचकपुरुष यहतंदुल मलियेहैं ॥ अथवा काचेहैं ॥ याप्रकारकीपरीक्षाकरणेवासते तिनतंदुलोंविषे एकतंदुल कादाणा बाहरनिकासिकेदेखेहैं ॥ जोवो सोएकतंदुलकादाणा पकियाहोवेहै ॥ तो तिनसर्वतंदुलोंकूं पकाहुआजाणेहैं॥और सोएकतंदुल कादाणा जोकाचाहोवेहै ॥ तो तिनसर्वतंदुलोंकूंकाचाजाणे हैं ॥ याकानाम स्थालीपुलाकन्यायहै ॥ तास्थालीपुलाककीन्याईंहीं तेभेदवादीपुरुष ताएकआत्माकेज्ञानतें सर्वजगत्काज्ञान कथनकरेहैं ॥ ऐसेभेदवादीपुरुषों तें अद्वैतब्रह्मवादीपुरुषों नें यहपूछाचाहिये॥ हेवादी ॥ एकपरमात्माकेज्ञानतें. सर्वजगत्केज्ञानकूंकथनकरणेहारोश्रुतिविषे जोतुमनें यह स्थालीपुलाकन्याय कल्पनाकन्याहै ॥ सोआपणीबुद्धिकरिके कल्पनाकन्याहै ॥ अथवा श्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिकरिके कल्पनाकन्या है ॥ अथवा वृद्धपुरुषोंकोपरंपरारूपसंप्रदायकेबलतें कल्पनाकन्याहै ॥तहां ताश्रुतिकेअर्थविषे आपणीबुद्धिकरिके सोन्याय हमों नें कल्पनाकन्याहै यहप्रथमपक्ष जोतुम अंगीकारकरो सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें श्रुतिप्रमाणतेंरहित केवलपुरुषकीबुद्धितो बहुतस्थानोंविषे आपणेअर्थतें व्यभिचारीही देखीहै ॥ जैसे रज्जुविषेसर्पबुद्धि तथाशुक्तिविषेरजतबुद्धि आपणे सर्परजतरूपअर्थ तें व्यभिचारीहीहोवेहै॥याकारणतेंहीं वेदवेत्तापुरुष केवलपुरुषबुद्धिकूं किसीअर्थकीसिद्धिविषे प्रमाणरूपतामानतेनहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे सर्वतार्किकोंविषेमुख्यजे कपिल बुद्ध कणाद गोतम आदिकमहात्पुरुषहैं॥तेकपिलादिकभी श्रुतिप्रमाणतेंविरुद्ध जिस जिसआपणीबुद्धिकरिके जिसजिसअर्थकीसिद्धिकरे हैं ॥ सा सा तिनोंकोबुद्धि तिसतिसअर्थविषे अप्रमाणहीं होवेहै ॥ तिनबुद्धियोंकीअप्रमाणताविषे यहकारणहै ॥ तेकपिलादिकमुनि श्रुतिप्रमाणतेंविरुद्ध केवलआपणीबुद्धिकरिके जगत्केकारणकूं तथाआत्माकेस्वरूपकूं तथाबंधमोक्षकूं भिन्नभिन्नहीं कथनकरे हैं ॥ याकारणतें तिनोंकोयुक्तियां परस्परही खंडितहोइजावेहैं ॥ जैसे यालोकविषे परस्परविरुद्धअर्थकूंजनावणेहारियां जेलोकोंकोबुद्धियांहैं ॥ तिनबुद्धियोंविषे किसीएकबुद्धिकूंभी प्रमाणतासिद्धहोवेनहीं ॥ ते

से परस्परविरुद्धअर्थकूंविषयकरणेहारियां जेतिनकपिलादिकोंकीबुद्धियांहैं ॥ तिनबुद्धियोंविषे किसीएकबुद्धिकूंभी प्रमाणरूपता संभवै नहीं ॥ जभी कपिलादिकमहान्पुरुषोंकेबुद्धियोंविषेभी स्वतंत्र प्रमाणरूपता सिद्धनहींभई ॥तभी इतरजीवोंकेबुद्धियोंविषे स्वतंत्र प्रमाणरूपता नहीं है याकेविषेक्याकहणाहै ॥ यातें श्रुतिप्रमाणतेंरहित केवलपुरुषकीबुद्धिविषे प्रमाणरूपता संभवेनहीं यहअर्थसिद्धभया ॥ और ताश्रुतिअर्थविषे श्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिकेबलतें हम तास्थालीपुलाकन्यायकीकल्पना करतेहैं यहदूसरा पक्ष जोवादीअंगीकारकरे ॥ सोभी संभवेनहीं ॥ काहेतें श्रुतिप्रमाणविषे अविश्वासकरणेहारे जोतुम भेदवादीहो ॥ तिनतुमारेकूं ताश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिकरिके तामनवांछित अर्थकीसिद्धिहोणीअत्यंत दुर्घटहै ॥ और ताश्रुतिअर्थविषे संप्रदायकेबलतें हम तान्यायकीकल्पनाकरेंहैं यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकार करे ॥ सोभी संभवेनहीं॥काहेतें कपिल बुद्ध गौतम कणाद इत्यादिक महान्पुरुषोंकेशिष्यों ने आपणेगुरुसंप्रदायकूंअंगीकारकरिकेभी श्रुतिअर्थकेनिर्णयकरणेविषे किसीनिमित्तकूं पायानहीं ॥ यातें यहजान्याजावेहै॥आपणेवृद्धोंकीसंप्रदायकेअंगीकारकरणे तें भी पुरुषकी बुद्धिही अंगीकारकरीजावे है ॥ तापुरुषकीबुद्धितें भिन्न दूसराकोईप्रमाण अंगीकारकन्याजावेनहीं ॥ काहेतें तेकपिलादिक सांप्रदायिक पुरुष जोकदाचित् ताश्रुतिअर्थविषेउपयोगी किसीप्रमाणकूंप्राप्तहोतेतो तेसांप्रदायिकपुरुष ताश्रुतिअर्थविषे परस्पर विवादनहींकरते ॥ और श्रुतिअर्थविषे तिनोंका परस्परविवाद प्रत्यक्षदेखणेविषेआवताहै ॥ एककेयुक्तियोंकूं दूसरा खंडनकरिदेवे है ॥ तादूसरेकेयुक्तियोंकूं तीसराखंडनकरिदेवेहै ॥ यातें संप्रदायकेअंगीकारकिये तें भी पुरुषकीबुद्धिही अंगीकारकरीजावेहै ॥ और पुरुषकीबुद्धिविषे पूर्व प्रथमपक्षविषे दोषोंकाकथनकरिआये हैं ॥ तेसंपूर्णदूषण यातृतीयपक्षविषेभी प्राप्तहोवे हैं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ तासंप्रदायकरिके जोहम वृद्धपुरुषोंकीपरंपराकूं अंगीकारकरें ॥ तौ प्रथमपक्षकी तथातृतीयपक्षकी समानताप्राप्तहोवे ॥ परंतु तासंप्रदायपदकरिके हम तावृद्धपुरुषोंकी परंपराकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु तासंप्रदायकरिके हम लक्षणावृत्तितें न्यायकाअंगीकारकरे हैं तान्यायकूंश्रुति अर्थकेनिर्णयकरणेविषे सावधानता सर्ववादियोंकूंसंमतहै ॥ यातें तातृतीयपक्षका प्रथमपक्षविषेअंतर्भाव संभवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेवा

दी ॥ संप्रदायशब्दकरिकै जिसन्यायका तुमनें अंगीकारकऱ्याहै ॥ तान्यायका क्यास्वरूपहै ॥ यहतुमारेकूं कह्याचाहिये ॥ तात्पर्ययह
जैसे जहांजहां धूमरहे है तहांतहां अग्निरहे है ॥ याप्रकार धूमअग्निका बहुतवार सहचारदेखिकै उत्पन्नभईजा धूमअग्निकाव्याप्यहै
याप्रकारकीबुद्धिहै ताकानाम न्यायहै ॥ अथवा अग्निकेअभाववालेपर्वतविषेभी धूम रहे है यावादीकेशंकाकोनिवृत्तिकरणेवासतै उत्पन्न
भयाजो जोधूम अग्निकेअभाववालेविषेरहैगा तो सोधूम अग्निकरिकैजन्यनहींहोवैगा यहतर्कहै ॥ ता तर्ककानाम न्यायहै ॥ तहां वारम्वार
सहचारदर्शनतैंजन्यबुद्धिकानाम न्यायहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं यापक्षविषेभी पुरुषकीबुद्धितैंभिन्न
कोईन्यायकास्वरूपसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु तापुरुषकीबुद्धिकूंहीं न्यायरूपतासिद्धहोवै है ॥ यातैं यान्यायरूपसंप्रदायपक्षकाभी ताप्रथमप
क्षतैंभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा वारम्वार सहचारदर्शनतैंजन्यबुद्धिकूंजोप्रमाणरूपमानिये॥तौजहांजहां पृथिवीत्वधर्मरहे है ॥तहांतहां लोह
लेख्यत्वधर्मरहे है ॥ याप्रकारकेवारम्वारसहचारदर्शनतैं उत्पन्नभईजा पृथिवीत्वधर्म लोहलेख्यत्वधर्मकाव्याप्यहै याप्रकारकोबुद्धिहै ताबु
द्धिभी प्रमाणरूपहोणीचाहिये ॥ ओर ताबुद्धिविषे प्रमाणरूपताहैनहीं ॥ काहे तैं वज्रमाणिविषे पृथिवीत्वधर्मतोरहे है ॥ परन्तु लोहलेख्य
त्वधर्म तहां रहतानहीं ॥ ओर तर्ककानाम न्यायहै यहअद्वितीयपक्षजोवादी अंगीकारकरे ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ तान्यायविषे
तर्करूपता किसप्रकारहै ॥ तहां सोवादी जोयहकहै ॥ जैसे न्याय प्रमाणऊपरअनुग्रहकरे है ॥ तैसे सोतर्कभी प्रमाणऊपरअनुग्रहकरे है
॥ याकारणतैं सोन्याय तर्करूपहै ॥ याप्रकारकहणेहारेवादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणऊपर किसप्रकारकाउपकारक
रे है ॥ यहतुमारेकूंकह्याचाहिये ॥ तात्पर्ययह ॥ सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणविषे प्रमाणताकोसिद्धिरूप उपकारकरे है ॥ अथवा सोतर्करू
पन्यायताप्रमाणऊपर ताप्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिरूप उपकारकरे है ॥ अथवा सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणऊपर प्रमाणताकीअभिव्य
क्तिरूप उपकारकरे है ॥ तहां सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणऊपर प्रमाणताकीसिद्धिरूप उपकारकरे है ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अं
गीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ताप्रमाणविषे विषयोंकोप्रकाशकतारूप जाप्रमाणताहै ॥ ताप्रमाणताकूं कोईशास्त्रवाले तो स्व

तोग्राह्यमाने हैं ॥ और कोईकशास्त्रवालेतो परतोग्राह्यमाने हैं ॥ तहां ताप्रमाणताधर्मकेआश्रयकूं जितनीकोसामग्रीग्रहणकरे है ॥ तितनी हींसामग्री ताप्रमाणताधर्मकूंभीग्रहणकरे याकानाम स्वतोग्राह्यताहै ॥ और ताप्रमाणताधर्मकेआश्रयकूं जितनीकोसामग्रीग्रहणकरे है ॥ तितनीसामग्री ताप्रमाणताधर्मकूं नहींग्रहणकरे याकानाम परतोग्राह्यताहै ॥ तहां वेदांतमतविषे तथामीमांसामतविषेतो स्वतोग्राह्यताहै ॥ और नैयायिकोंकेमतविषे परतोग्राह्यताहै ॥ तहां स्वतोग्राह्यतापक्षविषेतो ताप्रमाणतारूपकीसिद्धि सोप्रमाण आपहीकरे है ॥ ताप्रमाणताकेसिद्धिविषे ताप्रमाणकूं दूसरेकिसीकीअपेक्षाहोवेनहीं ॥ जैसे दीपक घटादिकविषयोंकेप्रकाशकरणेविषे दूसरेकिसीप्रकाशकीअपेक्षा करतानहीं ॥ तैसे सोप्रमाणभी विषयोंकीप्रकाशकतारूप प्रमाणताविषे दूसरेकिसोकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ जोकदाचित् सोप्रमाण विषयों केप्रकाशकरणेविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाकरेगा ॥ तो ताप्रमाणविषे अप्रमाणरूपताही प्राप्तहोवेगी ॥ यातें सोप्रमाण आपणेसमानविषयक तर्ककी अपेक्षाकरेनहीं ॥ और सोतर्क जोकदाचित् ताप्रमाणकेविषयतेंभिन्नपदार्थोंकूंविषयकरताहोवे ॥ तौभी तातर्कका प्रमाणऊपरउप कार संभवेनहीं ॥ काहेतें ॥ ताप्रमाणविषे विषयोंकोप्रकाशकतारूप जाप्रमाणताहै ॥ साप्रमाणता तातर्ककीप्रवृत्तितेंपूर्वहीसिद्धहै ॥ तापूर्वसिद्धप्रमाणताकीसिद्धिवासते ताप्रमाणकूं तातर्ककीअपेक्षा संभवेनहीं ॥ किंवा अप्रमाणरूपजोतर्कहै तातर्कका प्रमाणकेविषयविषेप्रवेश भ्रमकरिकेभीहोइसकेनहीं ॥ काहेतें याळोकविषे प्रमाण तथाअप्रमाण यहदोनों आपणेस्वरूपकेभेदकरिके तथाआश्रयकेभेदकरिके तथा विषयकेभेदकरिके परस्पर विलक्षणहीहोवे है॥किंचित्मात्रभीतिनोंविषे सादृश्यताहोवेनहीं॥और ळोकविषेसमानस्वभाववालेपदार्थोंकाही परस्परउपकार्यउपकारकभाव देख्याहै ॥ विरुद्धस्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर उपकार्यउपकारकभाव कहांदिख्यानहीं ॥ याकारणतेंभी ताप्रमाणऊपर ताअप्रमाणरूपतर्कका उपकारसंभवेनहीं ॥ और सोवादीजोयहदूसरापक्ष अंगीकारकरे ॥ जैसे याळोकविषे याजीवों के अनिष्टकेकारण विषादिकपदार्थ प्रसिद्धहैं ॥ तैसे तिनविषादिकोंकीनिवृत्तिरूपउपकारके औषधिमंत्रादिककारणभी प्रसिद्धहैं ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे सोतर्क ताप्रमाणऊपर ताप्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिरूपउपकार करे है ॥ सोयहदूसरापक्षभीसंभवेनहीं ॥

काहेतें जैसे याछोकविषे सो विरोधीकीनिवृत्तिरूपउपकार प्रसिद्धहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे सोविरोधीकोनिवृत्तिरूपउपकार संभवतानहीं ॥ काहेतें प्रमाण तथाताकाविरोधीअप्रमाण यहदोनों जोकदाचित् एकदेशविषेही इकट्ठेरहतेहोवैं ॥ तो सोतर्क ताअप्रमाणकीनिवृत्तिरूप उपकार ताप्रमाणऊपरकरै ॥ परंतु सोप्रमाण तथाअप्रमाण यहदोनों एकदेशविषे इकट्ठेरहतेनहीं॥और एकदेशविषे तथाएककालविषे रह णेहारेपदार्थोंकाही परस्परविरोधहोवै है ॥ भिन्नदेशकालविषे रहणेहारेपदार्थोंका परस्परविरोध कहांदेख्यानहीं ॥ जैसे मक्षिकारूपग्रासकूं ग्रसताहुआजोमंडूकहै ॥ तामंडूककूं दूसरासर्प ग्रसैहै ॥ तैसे प्रमाण अप्रमाण यादोनों विषे एककूंग्रसणेहारा कोईदूसराप्रसिद्धहैनहीं ॥ जि सविरोधीकीनिवृत्तिरूपउपकार सोतर्क प्रमाणऊपरकरै ॥ किंवा ॥ जिस स्थलविषे समानबलवाले दोप्रमाणोंकी एकविषयविषेप्रवृत्तिहो वैहै ॥ तिसस्थलविषेही बुद्धिमान्पुरुष तिनदोनोंप्रमाणोंका परस्परविरोध अंगीकार करे हैं॥ सोइहांप्रसंगविषेहैनहीं काहे तें प्रमाणकीतो सत्यवस्तुविषे प्रवृत्तिहोवैहै ॥ और अप्रमाणकी असत्यवस्तुविषे प्रवृत्तिहोवैहै ॥ और जैसे ताप्रमाणके तथाअप्रमाणके विषयकाभेदहै ॥ तैसे ताप्रमाणके तथाअप्रमाणके धर्मोंकाभी भेदहै ॥ तहां प्रमाणत्वधर्मतो केवलप्रमाणविषेहीरहेहै ॥ अप्रमाणविषेरहेनहीं ॥ तैसे अप्रमाणत्वधर्मभी केवलअप्रमाणविषेहीरहेहै ॥ प्रमाणविषेरहैनहीं ॥इसप्रकार भिन्नभिन्नअर्थकूंविषयकरणेहारे तिनप्रमाणअप्रमाणविषे पर स्पर विरोधीपणासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी प्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिरूप तर्ककाउपकार ताप्रमाणऊपर अंगीकारकरै है ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ सो तुम्हारातर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूं अप्रमाणरूपजाणिके निवृत्तकरै है ॥ अथवा सोतर्क ताप्रमाणकेविरो धीकूं प्रमाणरूपजाणिके निवृत्तकरै है ॥ तहांसोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूं अप्रमाणरूपजाणिके निवृत्तकरै है यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें याछोकविषे जैसे कोई पुरुष पीसेहुएअन्नकूं पुनः पीसतानहीं ॥ तथा मरेहुएशरीरकूं पुनः मारता नहीं ॥ तैसे ताप्रमाणकेविरोधीकूं अप्रमाणरूपकरिकेजाणताहुआ सोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिकरणेविषे प्रवृत्तहोवैगानहीं ॥ जैसे रज्जुकेसर्पकूंमिथ्याजाणताहुआ यहपुरुष तामिथ्यासर्पकेनिवृत्तकरणेविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ और सोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूं प्रमाणरू

पजाणिके निवृत्तकरे है यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरे ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ताप्रमाणकेविरोधीविषे प्रमाणरूपताकूं विषयक
रणेहारा जोतर्कहै ॥ तातर्ककरिके ताप्रमाणकेविरोधीकोनिवृत्तिसंभवैनहीं ॥ जोकदाचित् सोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूंप्रमाणरूपजाणि
केभी ताकीनिवृत्तिकरेगा ॥ तो सोतर्क कदाचित् ताप्रमाणकूंभीनिवृत्तकरेगा ॥ यद्यपि श्रुतिअनुकूलतर्ककरिके ताप्रमाणकेविरोधीकीनि
वृत्ति संभवैहै ॥ तथापि श्रुतिप्रमाणतैंविना केवलदुराग्रहतैंअर्थकीसिद्धिकरणेहारे जोतुमवादीहो ॥ तिनतुमवादियोंकूं ताशुष्कतर्ककेबलतैं
तावांछितअर्थकीसिद्धिहोणी अत्यंतदुर्घटहै॥इतनैंकरिके ताप्रमाणविषे स्वतःप्रमाणताकाअंगीकारकरिके ताप्रमाणऊपर तर्ककेउपकारका
अभाव वर्णनकऱ्या ॥अब ताप्रमाणविषे परतःप्रमाणताकाअंगीकारकरिके ताप्रमाणऊपर तर्ककेउपकारकाअभाव वर्णनकरे हैं॥हेवादी ॥
ताप्रमाणविषे जोकदाचित् परतः प्रमाणताभीमानिये ॥ तोभी ताप्रमाणऊपर तातर्कका कोनउपकारहै ॥ सोतर्ककाउपकार तुमनें कह्या
चाहिये ॥ तात्पर्ययह॥तातर्कका ताप्रमाणऊपर विषयोंकाप्रकाशरूपउपकारतो संभवैनहीं ॥काहेतें सोविषयकाप्रकाशतो ताप्रमाणकरिके
हीसिद्धिहै ॥ तैसे तातर्कका प्रमाणऊपर प्रमाताकेअसंभावनाकीनिवृत्तिरूपउपकारभीसंभवैनहीं ॥काहे तैं ताप्रमातानिष्ठअसंभावना पूर्व
लेपापकर्मोंकरिकेजन्यहोवै है ॥ यातैं तिनपापकर्मोंकेविरोधी पुण्यकर्मोंकरिकेही ताअसंभावनाकीनिवृत्ति संभवैहै ॥ तर्ककरिके ताअसं
भावनाकीनिवृत्तिसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ तातर्ककरिके जोकदाचित् प्रमाताकेअसंभावनाकीनिवृत्तिभी अंगीकारकरिये ॥ तोभी तातर्कका
ताप्रमाताऊपरही उपकार सिद्धहोवैगा ॥ ताप्रमातातैंभिन्न ताप्रमाणऊपर तातर्ककाउपकार सिद्धहोवैगानहीं ॥ किंवा ॥ विषयकेप्र
काशकरणेविषेअसमर्थ जोअप्रमाणहै ॥ ताअप्रमाणविषेतो सहस्रतर्कोंकरिकेभी प्रमाणरूपतासिद्धहोइसकेनहीं ॥ और विषयके
प्रकाशकरणेविषेसमर्थ जोप्रमाणहै ॥ ताप्रमाणविषे साप्रमाणरूपता तातर्ककीप्रवृत्तितैंपूर्वहीसिद्धहै ॥ यातैं तापूर्वसिद्धप्र
माणताकीभी किसी तर्ककरिकेसिद्धिसंभवैनहीं ॥ और सोतर्क ताप्रमाणऊपर प्रमाणत्वधर्मकीअभिव्यक्तिरूप उपकारकरे है ॥
यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोतर्क अप्रमाणरूपहै ॥ अथवा सोतर्क प्रमाणरूपहै ॥ तहां

सोतर्क अप्रमाणरूप है ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें याक्षोकविषे जोजोपदार्थ अप्रमाज्ञानकाविषयहोवै है ॥ सोसोपदार्थ मिथ्याहीहोवै है ॥ जैसे अप्रमाज्ञानकेविषय शुक्तिरजतादिक मिथ्याहीहोवै हैं ॥ तैसे सोअप्रमाणरूपतर्कभी जिसप्रमाणके प्रमाणत्वधर्मकीअभिव्यक्तिकरैगा ॥ सोप्रमाणभी मिथ्याहीहोवैगा ॥ यातें ताअप्रमाणरूपतर्ककरिके ताप्रमाणताकीअभिव्यक्तिसंभवैनहीं और सोतर्क प्रमाणरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं॥काहेतें तातर्कविषे किसीभीवादीनें प्रमाणरूपतामानीनहीं ॥ किंतु सर्ववादी तातर्कविषे अप्रमाणरूपताहीमानें हैं ॥ यातें तातर्कविषे प्रमाणरूपतामानणेविषे आपणेसिद्धांतकीहानिरूप अपसिद्धां तदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा ॥ ताप्रमाणके प्रमाणरूपताकी अभिव्यक्तिकरणेहाराजोतर्क है ॥ तातर्ककूं जोप्रमाणरूपमानोंगे तो तातर्ककेप्रमाणताकोअभिव्यक्तिकरणेहारा कोईदूसरातर्कअंगीकारकरणाहोवैगा ॥ और तादूसरेतर्कके प्रमाणताकीअभिव्यक्तिकरणेहारा कोईतीसरातर्क अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ इसप्रकार परम्परा तर्कोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा ॥ जोवादी तातर्ककूंप्रमाणरूपमानैहै ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ सोतर्क स्वतन्त्रप्रमाणहै ॥ अथवा सोतर्क प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेअंतर्भूतहुआ प्रमाणहै ॥ तहां सोतर्क स्वतन्त्रप्रमाणहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहे तें तातर्कविषे स्वतन्त्रप्रमाणता किसीभीवादीनें अंगीकारकरीनहीं ॥ और सोतर्क प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेअंतर्भूतहुआ प्रमाणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ताप्रमाणरूपतर्कका प्रत्यक्षप्रमाणविषेतो अंतर्भावसंभवतानहीं ॥ यातें तातर्कका अनुमानादिकप्रमाणोंविषेही अंतर्भावकहणाहोवैगा ॥ सोतिनअनुमानादिकप्रमाणोंविषेभी इसप्रमाणविषे तातर्ककाअंतर्भावहै यहनियमकऱ्याजावैनहीं ॥ काहेतें तिनअनुमानादिकोंके प्रमाणरूपताविषे सर्ववादियोंकी एकसंमतिहैनहीं ॥ किंतु तिनप्रमाणोंविषे नानाप्रकारकाविवाद देखणेमेंआवै है ॥ तहां चार्वाकतो एकप्रत्यक्षप्रमाणहीमानें हैं ॥ और वैशेषिक बौद्ध आर्हत यहतीनोंतो प्रत्यक्ष अनुमान यहदोप्रमाणमानें हैं ॥ और सांख्यशास्त्रवालेतो प्रत्यक्ष अनुमान शब्द यहतीनप्रमाणमानें हैं ॥ और नैयायिकोंकेएकदेशीतो प्रत्यक्ष अनुमान उपमान

यहतीनप्रमाणमाने हैं ॥ और नैयायिकतो प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द यहचारिप्रमाणमाने हैं ॥ और प्राभाकरतो प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति यहपंचप्रमाणमाने हैं ॥ और भट्ट वेदांत यहदोनोंतो प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति अनुपलब्धि यहषट्प्रमाणमानेहैं ॥ और पौराणिकतो प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति अनुपलब्धि संभव ऐतिह्य यहअष्टप्रमाणमाने हैं ॥ और तंत्रशास्त्रवालेतो प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति अनुपलब्धि संभव ऐतिह्य चेष्टा यहनवप्रमाणमाने हैं ॥ इसप्रकार तेवादी भिन्नभिन्नप्रमाणोंकूंअंगीकारकरे हैं ॥ तिनसर्वप्रमाणोंविषे तातर्करूपन्यायका किसप्रमाणविषेअंतर्भावहे यहतुमारेकूं कह्याचाहिये ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ जोप्रमाण आपणेविषयतैंव्यभिचारी नहींहोवे हे ॥ सोईही प्रमाणहोवे हे ॥और जोआपणेविषयतैंव्यभिचारीहोवेहे ॥ सो प्रमाणहोवेनहीं ॥ याप्रकारके प्रमाणलक्षणकेविचारकियेतैं पूर्व यद्यपि सोतर्क किसीप्रमाणकेअंतर्भूतहोइसके हे ॥ तथापि ताप्रमाणलक्षणकेविचारकियेतैंपश्चात् सोतर्क अप्रमाणताकूंप्राप्तहोवे है ॥ यातैं पूर्वउक्त विनिगमनाविरहदोषकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ इसप्रकार पूर्वउक्तप्रमाणकेलक्षणकरिके तिनप्रमाणोंकेविचारकियेतैं जोकदाचित् तिनप्रत्यक्षादिकषट्प्रमाणोंविषे आपणेआपणे अर्थ तैं अव्यभिचारितारूप प्रमाणता होवे ॥ तौभी सोन्यायरूपतर्क किसप्रमाणकेअंतर्भूतहोवे हे ॥ यहपूर्वउक्त विनिगमनाविरहरूप दोष तुमारेमतविषे बलातकारसैंप्राप्तहोवे हे ॥काहेतैं भट्टपादादिक विद्वान्पुरुषोंनैं तिनप्रत्यक्षादिकषट्प्रमाणोंकूं आपणेआपणेविषयविषे नियमतैं प्रमाणता सिद्धकरीहे ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ नानाप्रमाणरूप जोअनुमानप्रमाणहे ॥ ताअनुमानप्रमाणकेअंतर्भूत सोन्यायरूपतर्क हे ॥ याकारणतैं सोन्यायरूपतर्क तिनप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोकेअंतर्भूतहे ॥ याप्रकारमानणेविषे सोपूर्वउक्तविनिगमनाविरहरूपदोष प्राप्तहोवेनहीं ॥ तहां अनुमानप्रमाणकूं सर्वप्रमाणरूपता याप्रकारहे ॥ प्रतिज्ञा१हेतु२उदाहरण३उपनय४निगमन ५यापंचवाक्यरूपअवयवोंका समुदायरूप परार्थअनुमानहोवे हे ॥ जेसे प्रसिद्धअनुमानविषे ॥ पर्वतोवह्निमान् ॥ अर्थयह यहपर्वत वह्निवालाहे यह प्रतिज्ञाअवयवहे ॥ १ ॥ धूमवत्त्वात् ॥ अर्थयह धूमवालाहोणे तैं यहहेतुअवयवहे ॥ २ ॥ योयोधूमवान् सवह्निमान् यथामहान्

सः ॥ अर्थयह जोजो धूमवालाहोवै है सोसोवह्निवालाहोवै है जैसे रसोईकरणेकास्थानहै यहउदाहरणअवयवहै ॥ ३ ॥ तथाचायं ॥
अर्थयह यहपर्वतभी तामहानसकीन्याई वह्निव्याप्यधूमवालाहै यहउपनयअवयवहै ॥ ४ ॥ तस्मात्तथा अर्थयह वह्निव्याप्यधूमवाला
होणेतैं यहपर्वतभी तामहानसकीन्याई वह्निवालाहै यहनिगमनअवयवहै ॥ ५ ॥ तहां प्रथम प्रतिज्ञाअवयवतो आगमप्रमाणरूपहै ॥
और दूसरा हेतुअवयव अनुमानप्रमाणरूपहै ॥ और तीसरा उदाहरणअवयव प्रत्यक्षप्रमाणरूपहै ॥ और चतुर्थ उपनयअवयव उप
मानप्रमाणरूपहै ॥ और तस्मात् याअंशकरिके पूर्वउक्तसर्वप्रमाणोंकासंग्रहकरणेहारा जोनिगमनअवयवहै ॥ सोसर्वप्रमाणरूपहै ॥
इसरीतिसैं तोअनुमानप्रमाण सर्वप्रमाणरूपहै ॥ ताअनुमानप्रमाणकेअंतर्भूतहुआ सोन्यायरूपतर्कभी सर्वप्रमाणरूपहै ॥ यातैं
सोपूर्वउक्तविनिगमनाविरहरूपदोष हमारेमतविषे प्राप्तहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी यहतुमारावचन असंख्यातदूषणोंकरिकेयुक्तहै
॥ काहेतैं तिनदूषणोंकूंकहणेहारा जोमैंवक्ताहूं ॥ तथा तिनदूषणोंकूंश्रवणकरणेहारा जोतूं श्रोताहै ॥ तिनहमदोनोंका जोकदाचित्
ब्रह्माकेसमान महान्आयुषहोवै तो हम तिनसर्वदूषणोंकेकहणेविषे समर्थहोवैं ॥ तथा तूं तिनसर्वदूषणोंकेश्रवणकरणेविषे समर्थ
होवै ॥ परंतु ताब्रह्माकेसमानआयुष हमारा तुमारा हैनहीं ॥ यातैं तेसंपूर्णदूषण यद्यपि हमारेसैंकहेजातेनहीं ॥ और तुमा
रेसैं श्रवणकरेजातेनहीं तथापि तान्यायरूपतर्कविषे अभिनिवेशवालाजोतूंवादीहै ॥ तिसतुमारेप्रति मैंसिद्धांती संक्षेपतैं तिन
दूषणोंकीरीतिमात्र कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइके श्रवणकर ॥ हेवादी ॥ जिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं तुमनैं अनुमानप्रमाणकेअं
तर्भूतमान्याहै ॥ तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण एकहीकार्यकूंकरे हैं ॥ अथवा तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण भिन्नभिन्न अनेककार्योंकूंकरे हैं ॥ तहां
तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण अनेककार्योंकूंकरेहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जिसअनुमानप्रमाणकूं
तुमनैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंका समुदायरूपमान्याहै ॥ताअनुमानप्रमाणविषेस्थितहुएभीतेप्रत्यक्षादिकप्रमाण आपणेअनेककार्योंकाकर्तृत्व
रूपस्वभावकूं परित्यागकरैंगेनहीं ॥ किंतु तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण ताअनुमानविषेस्थितहुएभी आपणेआपणेकार्यकूं अवश्यकरैंगे ॥ यातैं

तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं एकअनुमानप्रमाणकेअंतर्भूतमानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण एककार्यकूंकरे हैं ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ सोभीसंभवेनहीं ॥ काहेतें तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण एकहीकार्यकूंकरेंहैं ॥ याप्रकारका जोनियम अंगीकारकरिये ॥ तो अनुमानतैंभिन्न तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंविषे स्वतंत्र प्रमाणतानहींहोणीचाहिये ॥ और सोवादी जोकदाचित् याअर्थविषे इष्टापत्तिकरे ॥ सो संभवेनहीं ॥ काहे तें तिनप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंविषे अनुमानप्रमाणकीअपेक्षाकरिके तभी प्रमाणतासिद्धहोवे ॥ जभीतिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकू आपणेआपणेविषयविषे स्वतंत्र प्रमाणता नहींदेखणेमेंआवे ॥ सोऐसाहैनहीं ॥ किंतु तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकू आपणेआपणेविषयविषे स्वतंत्रप्रमाणता सर्वबुद्धिमानपुरुषोंकूं अनुभवसिद्धहै॥यातें तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंका अनुमानविषेअंतर्भाव संभवेनहीं ॥ किंवा ॥ पूर्वउक्त प्रतिज्ञादिकपंचअवयवोंविषे दूसरेहेतुरूपअवयवकूं तावादीनें अनुमानरूप अंगीकारक्याहै ॥ ताहेतुरूपअनुमानविषे प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणरूपता अंगीकारकरणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतें ताहेतुरूपअवयवविषे तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाअंतर्भाव देखणेविषेआवतानहीं ॥ और सोवादी जोकदाचित् ताहेतुअवयवविषे तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाअभ्याहारकरिके ताहेतुरूपअनुमानकूं सर्वप्रमाणरूपताअंगीकारकरे ॥ तौपंचमोविभक्ति जिसकेअंतविषेहोवे ऐसाजोलिंगकाबोधकवचनहै ताकानाम हेतुहै ॥ यालक्षणनें बोधनकरी जाताहेतुविषे साधनरूपताहै ॥ सासाधनरूपताका अभावहोवैगा ॥ किंवा ॥ पूर्वउक्त प्रतिज्ञादिकपंचअवयवोंविषे वाक्यरूपतातुल्यहीहै॥ तावाक्यरूपताकेसमानहुएभी एकप्रतिज्ञावाक्यविषेही आगमप्रमाणरूपता अंगीकारकरणी दूसरेवाक्योंविषे आगमप्रमाणरूपता नहींअंगीकारकरणी यहवादीकाकहनाभी युक्तितेंरहितहै ॥ किंवा ताप्रतिज्ञाअवयवकूं आगमप्रमाणरूपता जोवादीनें अंगीकारकरीहै ॥ सो संभवेनहीं ॥ काहेतें सोप्रतिज्ञावचनतौ संदिग्धअर्थकूंकथनकरै है ॥ और सोआगमप्रमाणतौ संदिग्धअर्थकूं कथनकरैनहीं ॥ किंतु सोआगमप्रमाण निश्चितअर्थकूंहीकथनकरै है ॥ जोकदाचित् सोआगमप्रमाण संदिग्धअर्थकूंभी कथनकरैगा ॥ तौ आपणीआगमरूपतातैंही रहितहोवैगा ॥ यहवार्त्ता तुमवादियोंकेमतविषेभीसिद्ध है ॥ ऐसे परस्पर विरुद्धअर्थकूंकथन

करणेहारे प्रतिज्ञानका तथाआगमका अभेदमानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और उपनयवाक्यविषेस्थित जोतथाशब्दहै॥तथा निगमनवाक्यवि
षेस्थितजो तस्मात् शब्दहै ॥ तेदोनोंशब्द पक्षविषे व्याप्तिमानहेतुकेसंबंधमात्रकूंहीबोधनकरै हैं ॥ सादृश्यादिकोंकूंकथनकरैनहीं ॥ यातैं
ताउपनयवाक्यकूं उपमानप्रमाणरूपता संभवैनहीं ॥ तथा निगमनवाक्यकूं पूर्वउक्तसर्वप्रमाणरूपता संभवैनहीं ॥ और तर्ककेजीवनका
औषधिरूपजोव्याप्तिहै ॥ साव्याप्ति केवलकल्पनारूपहीहै ॥ यातैं ताकल्पनारूपव्याप्तिकूंकथनकरणेहारे उदाहरणवाक्यविषे प्रत्यक्षप्रमा
णरूपतासंभवैनहीं ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेदूषण तावादीकेकहणेविषे प्राप्तहोवे हैं ॥ यातैं आगमप्रमाणरूपसूर्यकीउपेक्षाकरिके
केवल कल्पनाजन्यतर्कविषे जोतावादीका अत्यंतआदरहै ॥ सोईही तावादीके विचाररूपदृष्टिकीमंदताकूं स्पष्टकरे है ॥ शंका ॥ हेसिद्धां
ती ॥ तान्यायरूपतर्ककरिके जोकदाचित् किसीअर्थकीसिद्धिनहींहोतीहोवै ॥ तौ ॥ मंतव्यः ॥ इत्यादिकश्रुतियों नें विचाररूपतर्कका वि
धान किसवास्तेकऱ्याहै ॥ समाधान हेवादी ॥ यद्यपि यहन्यायरूपतर्कवृद्धआचार्यों नें विचाररूपमननविषे उपयोगीकह्याहै ॥ तथापि
सोतर्क श्रुतिप्रमाणकीसहायतातैंविना स्वतंत्र किसीअर्थकेनिश्चयकरावणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ किंतु सोतर्क श्रुतिप्रमाणकीसहायताकूं
अंगीकारकरिकेही किसीअर्थकानिश्चयकरावैहै ॥ यातैं आचार्यों नें ॥ मंतव्यः ॥ इत्यादिकवचनोंविषे जोतर्कका अंगीकारकऱ्याहै ॥ सोश्रु
तिअनुकूलतर्ककाही अंगीकारकऱ्याहै॥श्रुतिप्रतिकूलशुष्कतर्कका ग्रहणनहींकऱ्याहै॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥साश्रुतिस्थालीपुलाकन्याय
करिकेही एकआत्माकेज्ञानतैं सर्वजगत्काज्ञान कथनकरैहै ॥ याप्रकारकेअर्थकीकल्पनाविषे ताकल्पनाकरणेहारेपुरुषकीबुद्धि हेतुहै ॥
अथवा श्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिहेतुहै ॥ अथवा उपदेशकरणेहारेगुरुवोंकी परंपरारूपसंप्रदायकीअनुकूलता हेतुहै ॥ यापूर्वउक्ततीनपक्षोंविषे
प्रथमपक्षविषे तथातृतीयपक्षविषेतो पूर्वअनेकप्रकारकेदूषण कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं तेदोनोंपक्षतो संभवैनहीं ॥ परिशेषतैं श्रुतिप्रमाण
जन्यबुद्धि हेतुहै यहदूसरामध्यकापक्षही अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ साश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धितो तावादीकेइष्टअर्थकीसिद्धिकरैनहीं ॥ शंका॥
हेसिद्धांती ॥ साश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिहीतातर्कतैंविना किसप्रकार उत्पन्नहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ व्याकरणादिकलौकिकउपायों तैं

पदोंकेअर्थकूंजानिकरिकै तथाउपक्रम उपसंहारादिकषट्लिंगों तैं वाक्योंकेअर्थकूंजाणिकरिके तिनशुष्कतर्कों तैं विनाही या अधिकारी पुरुषकूं साश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धि प्राप्तहोइसकैहै ॥ यातैं ताश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिविषे तिनशुष्कतर्कोंकीअपेक्षाहैनहीं ॥ तैसे इहांप्रसंगविषेभी तास्थालीपुलाकन्यायकी उपेक्षाकरिकैही साश्रुतिभगवती मृत्पिंड लोहमणि नखनिकृंतन यातीनपदों तैं उपादानकारणकास्वरूपकथनकरिके ताउपादानकारणकेसाथ तिनोंकेकार्योंका अभेदकथनकरे है ॥ यातैं एकपरमात्मादेवकेज्ञानतैं यासर्वजगत्केज्ञानकूंकथनकरणेहारी साश्रुति तास्थालीपुलाककीन्याई संभावनामात्ररूप सर्वजगत्केज्ञानकूं कथनकरैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ तास्थालीपुलाकन्यायकूं अंगीकारकरिके जो ताश्रुतिकीप्रवृत्ति नहींहोवै है ॥ तो किसन्यायकूंअंगीकारकरिके ताश्रुतिकी प्रवृत्तिहोवे है ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ विवर्त्तवादविषेस्थित जेरज्जुसर्पादिकन्यायहैं ॥ तिनोंकूंअंगीकारकरिकैही ताश्रुतिकीप्रवृत्तिहोवे है ॥ जैसे अधिष्ठानरूपरज्जुकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानतैं तारज्जुविषेकल्पितसर्पदंड जलधारा मालाइत्यादिकसर्वोंका वास्तवतैंज्ञानहोवैहै॥तैसेयाअधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैं ताआत्माविषेकल्पित सर्वजगत्काज्ञानहोवै है॥हेशिष्य॥यापूर्वउक्तसर्वअभिप्रायकूंमनविषेराखिके सोआरुणिपिताताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रतिमृत्तिकासुवर्णलोहयातीनदृष्टांतोंकरिके यासर्वजगत्केकारणरूपब्रह्मका उपदेशकरताभया॥हेशिष्य॥सोआरुणिपिताताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति सर्वस्थलविषेकारणतैंभिन्नरूपकरिके जोकार्यकाअसत्यपणाहै सोईही ताकारणकेअद्वितीयपणेकूंसिद्धकरै है याअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै याप्रकारकीयुक्तिकथनकरताभया ॥ हेश्वेतकेतु ॥ यहघटशरावादिककार्य केवल वाणीमात्रकरिकैही प्रतीतहोवें हैं ॥ तावाणीतैंविना वास्तवतैं प्रतीतहोवेनहीं ॥ याकारणतैं तेघटशरावादिककार्य घट शराव याप्रकारकेनाममात्रही हैं ॥ तिननामोंतैंभिन्न तिनघटशरावादिककार्योंका कोईवास्तवस्वरूपहैनहीं ॥ और तेघटशरावादिककार्य मृत्तिकामात्रही हैं॥तायातैं मृत्तिकानैं घटशरावादिककार्योंका आरंभकरोताहै यहभीकह्याजावैनहीं ॥काहेतैं सामृत्तिका मृत्तिकाकाआरंभकरैनहीं॥कार्यकारणकेभेदकूं अंगीकारकरिकैही सोआरंभहोवै है ॥ जैसे नैयायिक कपालरूपकारणतैंभिन्नघटकूं तिनकपालोंकरिकैआरब्ध अंगीकारकरे हैं ॥यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥तिनघटशरावादिककार्योंविषे जोमृत्तिका

दिककारणों तैं भेदप्रतीतहोवे है ॥ सोभेद वास्तवतैं हैनहीं ॥ किंतु घट शराव इत्यादिकनामविशिष्ट तिनघटादिककार्योंविषे सोमृत्तिका
काभेद प्रतीतहोवे है ॥ और विशिष्टपदार्थविषे प्रतीतभयाजोधर्म है ॥ सोधर्म जोकदाचित् विशेष्यपदार्थविषे नहींसंभवे है ॥तौसोधर्म
केवलविशेषणविषेही प्राप्तहोवे है ॥ यहसर्वशास्त्रकारोंका नियमहै॥तैसे इहां घट शराव इत्यादिकनामविशिष्ट घटशरावादिककार्योंविषे
प्रतीतभयाजो मृत्तिकारूपकारणकाभेदहै ॥ सोभेद घटशरावादिरूपविशेष्यपदार्थोंविषेतौ संभवतानहीं ॥ यातैं परिशेषतैं सोमृत्तिका
काभेद घट शराव इत्यादिकनामरूपविशेषणोंविषेही प्राप्तहोवैगा ॥ यहरीति सर्वकार्यकारणभावस्थलविषे जानिलेणी ॥ अब याहीअर्थ
कूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरे हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसेयालोकाविषे पटभावकूंप्राप्तहुएजेतंतुहैं तिनतंतुवोंकूं तापटतैंभिन्नकरिकै तापटरूपकार्यकूं
कोनबुद्धिमान्पुरुष देखिसकेगा ॥ किंतु नहींदेखिसकेगा ॥ तैसे घटादिककार्यभावकूंप्राप्तहुए जेमृत्तिकादिककारणहैं ॥ तिनमृत्तिकादिक
कारणोंकूं तिनघटादिककार्योंतैंभिन्नकरिकै तिनघटादिककार्योंकूं कोनबुद्धिमान्पुरुष देखिसकैगा किंतु कोईनहीं देखिसकैगा॥ यातैं हेश्वे
तकेतु॥यालोकविषे जेमृत्तिकादिकारण हैं ॥ तेकारणही सत्यहैं ॥ और घटशरावादिककार्यंतौ केवलनाममात्रतैंप्रतीतहोवे हैं ॥ यातैं ते
घटशरावादिककार्य मिथ्याही हैं॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे रज्जुविषे सर्पदंडादिक मिथ्याहीप्रतीतहोवे हैं ॥ तथा जैसे आकाशविषे गंधर्वनगर
मिथ्याहीप्रतीतहोवे है ॥ तैसे मृत्तिकादिककारणोंविषे घटशरावादिककार्यभी मिथ्याहीप्रतीतहोवे हैं ॥अब याहीविवर्त्तवादकेस्पष्टकरणे
वासते परिणामवादकाखंडनकरे है ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे यालोकविषे गोआदिकोंकाक्षीर दधिरूपपरिणामकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे यहमृत्तिका
सुवर्णादिककारण घट शराव भूषणादिरूपपरिणामकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥काहेतैं तेमृत्तिकादिककारण जोकदाचित् घटशरावादिरूपपरिणामकूं
प्राप्तहोतेहोवैं ॥ तो जैसे दधिरूपपरिणामकूंप्राप्तहुआ सोक्षीर नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे तेमृत्तिकादिककारणभी नाशकूंप्राप्तहोवैंगे॥और घटा
दिककार्यभावकूंप्राप्तहुए मृत्तिकादिककारणोंकानाश देखणेविषेआवतानहीं॥यातैं तेघटशरावादिककार्य तिनमृत्तिकादिककारणोंके परिणा
मरूपनहीं हैं॥शंका॥हेभगवन्॥दधिभावकूंप्राप्तहुआक्षीर नाशकूंप्राप्तहोवे है॥ और घटशरावादिकभावकूंप्राप्तहुईमृत्तिका नाशकूंनहींप्राप्त

होवे है ॥ यहवार्त्ता कैसेजानीजावे ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे घटशरावादिकभावकूंप्राप्तहुईभी सामृत्तिका पूर्वकीन्याई मृत्तिकारूपकरिकेहीप्रतीतहोवे है ॥ तैसे दधिभावकूंप्राप्तहुआ सोक्षीर पूर्वकीन्याई क्षीररूपहोइके प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें यहजान्याजावे है॥ सोक्षीर दधिभावकालविषे नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ और सामृत्तिका घटभावकालविषे नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतेंही ॥ वाचारंभणंविकारोनामधेयंमृत्तिकेत्येवसत्यं॥साश्रुतिविषे मृत्तिकारूपकारणकूंसत्यकह्याहे ॥ और हेश्वेतकेतु॥जोपरिणामीकारणहोवे है ॥ सो उपादानकारण होवैनहीं ॥ किंतु निमित्तकारणहीहोवे है ॥ काहेतें जोकारण आपणेकार्यविषे अनुगतहोवे है॥सोकारणही ताकार्यका उपादानकारणहोवे है ॥याप्रकारका उपादानकारणकालक्षण शास्त्रकारोंनें कथनकऱ्याहे ॥ सोलक्षण परिणामीकारणविषे घटतानहीं ॥ यातें सोक्षीर तादधिरूपकार्यकाउपादानकारणनहीं है॥किंतु सोक्षीर तादधिका निमित्तकारणहै॥शंका॥हेभगवन्॥यालोकविषे जोजोभावकार्य उत्पन्नहोवे है ॥ सोसो उपादान निमित्त यादोकारणोंकरिकेजन्यहोवे है ॥ और सोदधिभी भावकार्य है ॥ यातें तादधिरूपकार्यका ताक्षीरतैंभिन्न कोई उपादानकारणकह्याचाहिये ॥ सोउपादानकारणकोनहै ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंके जेकोईकअवयवहैं ॥ तेअवयवही गोआदिकोंनें भक्षणकरेहुए घासादिकोंविषेस्थितहोइके ताक्षीरकेउपादानकारणहोवे हैं ॥ तथा दधि तक्र घृत इत्यादिक कार्योंके उपादानकारणहोवे हैं ॥ काहेतें ते तेजादिकतीनभूतोंकेअवयवही यथाक्रमतें रोहित शुक्ल कृष्ण यातीनरूपोंकरिके सर्वत्रप्रतीत होवे हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे विशेषआकारवालाजोमृत्तिकाकापिंडहै ॥ सोमृत्तिकाकापिंड घटरूपकार्यकीउत्पत्तिकालविषे ताघटरूपकार्यविषे अनुगतहोइकेप्रतीतहोवैनहीं ॥ याकारणतें सोमृत्तिकाकापिंड ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिविषे उपादानकारणनहीं है ॥ किंतु निमित्तकारणहै ॥ तैसे सोक्षीरभी तादधिरूपकार्यकीउत्पत्तिकालविषे तादधिरूपकार्यविषे अनुगतहोइकेप्रतीतहोतानहीं ॥ यातें सोक्षीर तादधिरूपकार्यका उपादानकारण नहीं है किंतु निमित्तकारणहै ॥ और हेश्वेतकेतु॥ जैसे चूर्णपिंडादिकविशेषआकारतैंरहित जोशुद्धमृत्तिकाहै॥ साशुद्धमृत्तिका तिनघटशरावादिकसर्वकार्योंविषेअनुगतहोइकेप्रतीतहोवैहै ॥ यातैंसाशुद्धमृत्तिकातिनघटशरावादिककार्योंका उपादान

कारणहै ॥ तैसें घटादिकोंविषे अवयवरूपकरिकेस्थित जे तेज जल पृथिवी यहतीनभूतहैं ॥ ते तीनभूतही यासर्वकार्योंविषे अनुगतहोइ के प्रतीतहोवैहैं॥ यातें तेजादिकतीनभूतही तिनदधिआदिककार्योंकेउपादानकारणहैं ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ जो वस्तु परिणामीहो वैहै॥ सोवस्तु क्षीरकीन्याईं उपादानकारणहोवैनहीं ॥ और जोवस्तु परिणामीनहींहोवै है ॥ सोवस्तुही उपादानकारणहोवैहै ॥ यातें श्रुति विषे लोहमणिपदकरिके कथनकऱ्या जोसुवर्णहै ॥ तथा नखनिकृंतनपदकरिके कथनकऱ्या जोलोहहै ॥ तासुवर्णलोहकूं परिणामित्वरूप करिके दृष्टांतरूपता ताश्रुतिनैंनहींकथनकरी किंतु तासुवर्णलोहकूं विवर्त्तउपादानत्वरूपकरिकेदृष्टांतरूपता श्रुतिनैं कथनकरी है काहेतें तेसुवर्णादिक जोकदाचित् भूषणादिककार्यों के परिणामीकारणहोवैं ॥ तो जैसेदधिरूपकार्यकेउत्पत्तिकालविषे सोदुग्धरूपपरिणामी कारण प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे कुंडलकंकणादिककार्योंकीउत्पत्तिकालविषे तेसुवर्णादिककारणभी नहींप्रतीतहोणेचाहिये ॥ और कुंडला दिककार्योंकीउत्पत्तिकालविषे तेसुवर्णादिककारण सर्वलोकोंकूंप्रतीतहोवै हैं ॥ याकारणतें तेसुवर्णादिक तिनकुंडलादिककार्योंके परिणा मीकारणनहीं हैं ॥किंतु विवर्त्तउपादानकारणहैं ॥ इतनैंकरिके कारणविषे सत्यरूपता निरूपणकरी ॥ अब तिसीकारणविषे अद्वितीयरू पताकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम कारण कार्य दोनोंके भेदाभेदपक्षका तथाकेवलभेदपक्षका खंडनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ सांख्यशास्त्रवाले तथाभट्टपादादिकमीमांसक उपादानकारणका तथाकार्यका परस्पर भेदाभेदमानेहैं॥और नैयायिकवादीतौ ताउपादानकारणका तथाका र्यका केवलभेदही मानेहैं ॥ सोतिनदोनोंका मत अयुक्तहै ॥ काहेतें यालोकविषे जिन जिनपदार्थोंका परस्पर भेदहोवै है ॥ तेतेपदार्थ पर स्पर भिन्नभिन्नदेशविषेहीवर्तेहैं ॥ जैसे गौ अश्व यादोनोंकापरस्परभेदहै ॥ यातें सोगौ तथाअश्व परस्पर भिन्नभिन्नदेशविषेहीवर्तें हैं ॥और तंतु पटविषे तथामृत्तिकाघटविषे सोभिन्नभिन्नदेशविषेवृत्तिपणा हैनहीं॥ यातें तिनोंविषे परस्परभेदभी संभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निरूपव्यापककेअभावहुए धूमरूपव्याप्यकाभीअभावहोवैहै ॥ तैसे भिन्नदेशवृत्तित्वरूपव्यापककेअभावहुए भेदरूपव्याप्यकाभी अभा वहोवैहै॥याकहणेकरिके यहअनुमानसिद्धभया ॥ मृत्तिका घट यहदोनों परस्पर अभिन्नहैं ॥ भिन्नदेशवृत्तित्वकेअभाववालेहोणे तें ॥ जे

परस्पर अभिन्ननहींहोवे हैं ॥ ते भिन्नदेशवृत्तित्वकेअभाववालेभी नहींहोवे हैं जैसे गो अश्व यहदोनों हैं ॥ याअनुमानकरिके ताकारणकार्यका अभेदहीसिद्धहोवे है ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ पटादिककार्यतैं तंतुआदिकदेशविषेरहेहैं ॥ और तेतंतुआदिककारण भूतलादिकदेशविषेरहेहैं ॥ यातैं ताउपादानकारणका तथाकार्यका भिन्नभिन्नहींदेशहै॥यातैं सोतुमाराहेतु पक्षविषेअवृत्तिहोणेतैं स्वरूपासिद्धनामाहेत्वाभास है ॥ तास्वरूपासिद्धहेतुतैं ताकारणकार्यकाअभेद सिद्धहोइसकेनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ ताकारणकार्यका जोतुमनैं भिन्नभिन्नदेश कथनकऱ्याहै ॥ सोकेवल आपणीकल्पनामात्रकरिके कथनकऱ्याहै ॥ वास्तवतैं तिनोंका भिन्न भिन्नअधिकरणनहीं है॥ काहेतैं भूतलादिकोंविषे घटपटादिकपदार्थोंकेवृत्तिपणेकूअनुभवकरणेहारे जेलोकहैं॥तिनलोकोंनैं सोकार्यकारणका भिन्न भिन्नअधिकरण अनुभवकरीतानहीं ॥ यातैं सोकार्यकारणकाभेदपक्ष संभवैनहीं ॥ और भेद अभेद यहदोनों परस्पर विरुद्ध हैं ॥ जहां भेदरहेहै तहां अभेद रहेनहीं ॥ और जहां अभेद रहेहै तहांभेद रहेनहीं ॥यातैं सोभेदाभेदपक्षभी संभवैनहीं॥यातैं ताकारणकार्यका केवलअभेदपक्षही सर्ववादियोंकूअंगीकार कऱ्याचाहिये ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्पदंडादिकहैं ॥ तेसर्पादिक रज्जुरूपकारणतैं भिन्नहोइकेप्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातैं तेसर्पादिक रज्जुतैंअभिन्नहैं ॥ तैसे यहघटादिककार्यभी मृत्तिकादिककारणों तैं भिन्नहोइके प्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातैं यहघटादिककार्यभी तिनमृत्तिकादिककारणों तैं अभिन्नहैं ॥ और जैसे तारज्जुकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानहुए तेसर्पादिक प्रतीतहोवैंनहीं ॥ तैसे तिनमृत्तिकादिककारणोंकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानहुए तेघटादिककार्यभी प्रतीतहोवैंनहीं ॥ इसप्रकार कारणकीअद्वितीयरूपता सर्वविद्वान्पुरुषोंकू अनुभवकरिके सिद्धहै ॥ किंवा ॥ याळोकोंकू घटादिककार्योंविषे जोभेदभ्रमहोवैहै ॥ सोभेदभ्रम अपरोक्षरूप है ॥ यातैं ताअपरोक्षभ्रमकीनिवृत्ति ताकारणकेपरोक्षज्ञानतैंहोवेनहीं ॥ किंतु ताकारणकेअपरोक्षज्ञानकरिकेही ताभेदभ्रमकीनिवृत्तिहोवे है ॥ जैसे पूर्वादिकदिशावोंविषे जोपश्चिमादिकदिशावोंकाभ्रमहै ॥ सोभ्रम अपरोक्षरूपहै ॥ यातैं तिनपूर्वादिकदिशावोंकेपरोक्षज्ञानहुएभी ताभ्रमकीनिवृत्तिहोवै नहीं ॥ किंतु तिनपूर्वादिकदिशावोंकेअपरोक्षज्ञानतैंही ताभ्रमकीनिवृत्तिहोवे है ॥ तैसे कारणकेअपरोक्षज्ञानतैंही ताकार्यकेभेदभ्रमकीनि

वृत्तिहोवे है ॥ और हेश्वेतकेतु ॥ जैसे घटशरावादिकपदार्थ परस्परभेदवालेहोणे तैं कार्यरूपहैं ॥ और कार्यरूपहोणे तैं तेघटशरावादिकपदार्थ पृथिवी जल तेज रूपकारणतैं भिन्नसत्तावालेनहींहैं ॥ तैसे तेपृथिवीजलतेजभी परस्परभेदवालेहोणे तैं कार्यरूपहीहैं ॥ और कार्यरूपहोणे तैं तेपृथिवीआदिक तापरमात्मारूपकारणतैं भिन्नसत्तावाले नहींहैं॥तात्पर्ययह॥यहअधिकारीपुरुष प्रथम पृथिवी जल तेज यातीनभूतरूपकारणोंविषे घटादिककार्योंकेभेदकेअभावकूंनिश्चयकरिके तिसतैंअनंतर तिसीदृष्टांतकरिके तापृथिवीजलतेजरूपकार्यकेभेदकेअभावकूं परमात्मारूपकारणविषे निश्चयकरे॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ घटादिकपदार्थ भेदवालेहैं यातैं कार्यरूपहैं ॥ यहजोआपनैं भेदरूपहेतुतैं कार्यरूपता सिद्धकरीहै ॥ सोसंभवेनहीं ॥ काहेतैं जोहेतु आपणेसाध्यपदार्थकूं छोडिके अन्यत्र नहींरहेहै ॥ ताहेतुतैंहो तासाध्यपदार्थकी सिद्धिहोवे है ॥ और जोहेतु आपणेसाध्यकूंछोडिके अन्यत्रभीरहेहै ॥ सोहेतु व्यभिचारीहोवे है ॥ ताव्यभिचारीहेतुतैं साध्यकीसिद्धिहोवेनहीं॥और सोभेदरूपहेतुभी कार्यत्वकेअभाववालेआत्माविषेरहेहै॥यातैं सोभेदरूपहेतुभी व्यभिचारीहै॥ताभेदरूपहेतुतैं कार्यपणेकीसिद्धिहोवे नहीं॥समाधान॥हेशिष्य॥जडताधर्मविशिष्टजोभेदहै ॥ सोभेदरूपहेतुहीकार्यपणेकीसिद्धिकरेहै ॥ सोजडताविशिष्टभेद आत्माविषेहैनहीं ॥ यातैं ताआत्माविषे कार्यरूपता सिद्धहोवेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोजडताविशिष्टभेद अविद्याविषेभीरहेहै॥परंतु सिद्धांतविषे ताअविद्याकूं कार्यरूप अंगीकारकऱ्यानहीं ॥ किंतु सिद्धांतविषे ताअविद्याकूंअनादिमान्याहै ॥ यातैं सोजडताविशिष्टभेदरूपहेतुभी व्यभिचारीहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ताअविद्याविषे यद्यपि उत्पत्तिरूपकार्यतारहैनहीं॥तथापिअधिष्ठानविषेकल्पितत्वरूपकार्यता ताअविद्याविषेभीरहेहै ॥ यातैं सोजडताविशिष्टभेदरूपहेतु व्यभिचारीनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताआत्माविषे ताजडताविशिष्टभेदरूपहेतुकेअभावहुएभी सोकार्यपणा किस्वास्तेनहींहोवे ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ताआत्माविषे जडताविशिष्टभेदरूपहेतुकेअभावहुएभी जोवादी कार्यरूपता अंगीकारकरे है॥तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताआत्माविषेस्थित जोकार्यताहै ॥ साकार्यता कारणतैंरहितहै ॥ अथवा साकार्यता कारणसहितहै ॥ तहां ताकार्यता कारणतैंरहितहै यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतैं

जैसे आत्माविषेस्थितकार्यता कारनतेंरहितहे ॥ तैसे घटपटादिकजगत्‌विषेस्थितकार्यताभी कारणतेंरहितहोणीचाहिये॥ओर सोवादी जो याअर्थविषे इष्टापत्तिकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें घटपटादिककार्योंविषे मृत्तिकातंतुआदिकोंकूंकारणता सर्वलोकोंकूं अनुभवकरिकेसिद्ध हे॥ ओर याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे कारणतेंविनाही कार्यकीउत्पत्तिविषे अनेकप्रकारकेदूषण कथनकरिआये हैं ॥ यातें कारण तेंविना कार्यकीउत्पत्तिसंभवेनहीं ॥ओर साआत्माविषेस्थितकार्यता कारणसहितहे॥यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ तावादीसें य हपूछाचाहिये ॥ सोआत्माकाकारण असत्यरूपहे अथवा सत्यरूपहे॥तहां सोआत्माकाकारण असत्यरूपहे यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगी कारकरे सो संभवेनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे सत्यरूपकरिकेप्रसिद्ध जेघटपटादिककार्य हैं ॥ तेसत्यकार्य मृत्तिकातंतुआदिकसत्यकार णोंतेंही उत्पन्नहोवे हैं ॥ असत्यतें सत्यकीउत्पत्ति कहांभीदेखणेविषेआवतीनहीं ॥ ओर यहआत्मादेवभी सर्वलोकोंकेअनुभवकरिके त थाश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिके सत्यरूपतेंहीप्रतीतहोवे हे॥यातें तासत्यआत्माकी असत्यकारणतेंउत्पत्ति संभवेनहीं ॥ जोकदाचित् ताआ त्माकी असत्यकारणतें उत्पत्तिहोवेगी॥ तो सोआत्माभी ताकारणकीन्याईं असत्यरूपहीहोवेगा ॥सो आत्माकूंअसत्यकहणा अत्यंतविरु द्धहे ॥ किंवा आत्माकाकारण असत्यरूपहे यावचनविषेस्थितजोअसत्यशब्दहे ॥ ताअसत्यशब्दकाअर्थ सत्यवस्तुकाअभाव प्रतीतहोवे हे ॥ओर यालोकविषे जोजोअभावहोवे हे॥सो आपणेज्ञानविषे प्रतियोगीकीअपेक्षा अवश्यकरे हे ॥प्रतियोगीकेज्ञानतें विना अभावकाज्ञा नहोवेनहीं ॥ यातें सोसत्यकाअभावरूपअसत्यभी आपणीसिद्धिविषे सत्यरूपप्रतियोगीकीअपेक्षा अवश्यकरिकेकरेगा ॥ यातें तासत्यव स्तुविषेही आत्माकीकारणता संभवहोइसकेहे ॥ तासत्यवस्तुकेअभावविषे आत्माकीकारणतामानणी निष्फलहे ॥ किंवा यालोकविषे कोईभीअभाव किसीभीकार्यकेप्रति कारणहोइसकेनहीं ॥ यहवार्त्ता पूर्वअष्टमअध्यायविषे कारणोंकेविचारप्रसंगमें विस्तारतेंकथनकरिआ येहें॥यातें ताआत्माकाकारण असत्यहे यहप्रथमपक्ष संभवेनहीं ॥ ओर ताआत्माकाकारण सत्यहे यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरे ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ सोआत्माका सत्यकारण परिच्छिन्नहे ॥ अथवा अपरिच्छिन्नहे ॥तहां सोआत्माका सत्यकारण परिच्छिन्न हे

यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे जोजोपदार्थ परिच्छिन्नहोवे है ॥ सोसोपदार्थ जडहीहोवे है ॥ और जोजोपदार्थ जडहोवे है ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहीहोवे है ॥ और जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवे है ॥ सोसोपदार्थ आपणीउत्पत्तिविषे दूसरे कारणोंकीअपेक्षा अवश्यकरे है ॥ जैसे घटादिकपदार्थ परिच्छिन्नहोणेतें जडहैं ॥ और जडहोणेतें कार्यरूपहैं॥और कार्यरूपहोणतें कारण कीअपेक्षावालेहैं ॥ तैसे सोआत्माका सत्यकारणभी परिच्छिन्नहोणेतें जडरूपहोवेगा॥ और जडरूपहोणे तें कार्यरूपहोवेगा॥और कार्यरूपहोणेतें आपणीउत्पत्तिविषे किसोदूसरेकारणकीअपेक्षा अवश्यकरेगा ॥ आगेतें सोकारणभी आपणीउत्पत्तिविषे किसीदूसरेकारणकीअपेक्षाकरेगा ॥ सोदूसराकारण किसीतीसरेकारणकीअपेक्षाकरेगा ॥ इसप्रकार कारणोंकीपरम्परामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ ताअनवस्थादोषकेनिवारणकरणेवासते सोआत्माका सत्यकारण चेतनरूपहै तथाअपरिच्छिन्नरूपहै॥ यहदूसरापक्षही तावादीनें अंगीकारकरणाहोवेगा ॥ याकेविषेभी यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ सोआत्माका सत्तारूपकारण आत्मातेंभिन्नहै ॥ अथवा आत्मातेंअभिन्नहै ॥ तहां तोसत्तारूपकारण आत्मातेंभिन्नहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे जोजोपदार्थ आत्मातेंभिन्नहोवे है ॥ सोसोपदार्थ अनात्मारूपहीहोवे है ॥ जैसे गृहादिकपदार्थ आत्मातेंभिन्नहोणेतें अनात्मारूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ अनात्मरूपहोवे है ॥ सोसोपदार्थ भोक्ताआत्माके सुखकासाधनहोवे है ॥ जैसे गृहशय्याआदिकपदार्थ अनात्मरूपहोणेतें भोक्ताआत्माके सुखकेसाधनहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ भोक्ताआत्माकेसुखकासाधनहोवे है ॥ सोसोपदार्थ जडहोवे है ॥ जैसे भोक्ताआत्माके सुखके साधनहोणे तें तेगृहादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ जडहोवे है ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहोवे है ॥ जैसे जड रूपहोणेतें तेगृहादिक कार्यरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवे है ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकेजन्यहोवे है ॥ जैसे कार्यरूपहोणेतें तेगृहादिकपदार्थ मृत्तिकादिककारणोंकरिकेजन्यहैं ॥ तैसे सोआत्माकासत्तारूपकारणभी आत्मातेंभिन्नहोणेतें पूर्वउक्तपरम्पराकरिकेकार्यरूपभी अवश्यहोवेगा ॥ और कार्यरूपहोणे तें किसीदूसरेकारणकरिकेजन्यभी अवश्यहोवेगा ॥

आगेतैं सोदूसराकारणभी किसीतीसरेकारणकरिकेजन्यहोवैगा ॥ इसप्रकार कारणोंकोपरम्परामानणेविषे पुनःपूर्वकीन्याईं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ ताअनवस्थादोषकीनिवृत्तिवासतै ताआत्माके सत्तारूपकारणकूं तावादीनैं आत्मारूपमान्याचाहिये ॥ तथा चेतनरूप मान्याचाहिये ॥ तथा आनंदरूपमान्याचाहिये ॥ तथा सर्वभेदतैंरहित अपरिच्छिन्न मान्याचाहिये ॥ तथा कारणतैंरहितमान्याचाहिये ॥ ऐसे आत्मारूपसत्ताकूं जभी तावादीनैं आत्माकाकारणमान्या ॥ तभी ताआत्मारूपसत्तारूपकारणतैंभिन्न दूसरेकिसीकार्यविषेतौ आत्मरूपतासंभवैनहीं ॥ यातैं तावादीनैं जोआत्माका सत्तारूपकारणमान्याहै ॥ तासत्तारूपकारणकूंहीं हमवेदांती आत्मारूपमाने हैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया॥यहआत्मादेव किसीकारणकरिके उत्पन्नहोवैनहीं॥याकारणतैंहीं वेदकीश्रुतियां ता आत्मादेवकूं अजकहे हैं॥तथा नित्य कहे हैं ॥ तथा अग्निआदिकसर्वकारणोंकाभीकारणकहे हैं ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपकहे हैं ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितकहे हैं ॥ ऐसे आत्मादेवकूंहीं यहछांदोग्यउपनिषद्कीश्रुति सत्शब्दकरिकेकथनकरे है ॥ हेश्वेतकेतु ॥ साश्रुति तासत्शब्दकरिके याआत्मादेवके केवल सत्यरूपताकूंकथनकरैनहीं ॥ किंतु साश्रुति तासत्शब्दकरिके याआत्माके चेतनरूपताकूं तथाआनंदरूपताकूंभी कथनकरे है ॥ काहेतैं सत् चित् आनंद आत्मा याचारिपदार्थोंका जोकदाचित् परस्परभेद अंगीकारकरिये॥ तो ताभेदरूपवस्तुपरिच्छेदरूपहेतुतैं तिनसत्यादिकचारोंविषे घटादिकोंकीन्याईं जडतासिद्धहोवैगी ॥ और ताजडतारूपहेतुतैं तिनसत्यादिकोंविषे घटादिकोंकीन्याईं कार्यरूपता सिद्धहोवैगी ॥और ताकार्यतारूपहेतुतैं तिनसत्यादिकोंविषे घटादिकोंकीन्याईं कारणकीअपेक्षासिद्धहोवैगी॥औरतिनसत्यादिकोंकेकारणकूंभी आपणी उत्पत्तिविषे किसीदूसरेकारणकीअपेक्षाहोवैगी॥और तादूसरेकारणकूंभी आपणीउत्पत्तिविषे किसीतीसरेकारणकीअपेक्षाहोवैगी॥इसप्रकार कारणोंकीपरम्परामानणेविषे पूर्वकीन्याईं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥यातैं सत् चित् आनंद आत्मा याचारोंविषे किंचित्मात्रभी भेद संभवैनहीं ॥ किंतु सत् चित् आनंद आत्मा याचारोशब्द एकहीअर्थकेवाचककहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सत् चित् आनंद आत्मा यहचारोशब्द जोएकहीअर्थकेवाचकहोवैंगे ॥ तो पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥याआत्मादेवविषे भ्रांतिकरिकेप्राप्तभया

जोअसत्यपणाहै ॥ ताअसत्पणेकूं सत्शब्द निवृत्तकरेंहै ॥ और ताआत्माविषे भ्रांतिकरिकेप्राप्तभया जोजडपणाहै ॥ ताजडपणेकूं चित् शब्द निवृत्तकरे है ॥ और ताआत्माविषे भ्रांतिकरिकेप्राप्तभया जोदुःखपणा है ॥ तादुःखपणेकूं आनंदशब्द निवृत्तकरे है ॥ और ताआत्माविषे भ्रांतिकरिकेप्राप्तभया जोपरिच्छिन्नपणाहै॥तापरिच्छिन्नपणेकूंआत्मशब्द निवृत्तकरेंहै॥इसप्रकार असत्जडदुःख परिच्छिन्न तारूपकीनिवृत्तिकरिके तेसत्यादिकशब्द पूर्वअज्ञातआत्माकेस्वरूपकूं कथनकरेंहैं॥यातें तिनसत्यादिकशब्दोंविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्ति होवेनहीं॥यातें यहअर्थसिद्धभया॥जेसे आकाशतें गंधर्वनगर उत्पन्नहोवे है॥तेसे सत्यस्वरूपआत्मादेवतें यहतेज जल पृथिवी रूपसर्वजगत् उत्पन्नहोवेहै ॥ अब ताआत्मदेवविषे विवर्त्तउपादानरूपताकरिके परमसत्यरूपताकूं अनेकयुक्तियोंसें निरूपणकरे हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जेसे घटशरावादिककार्योंविषे मृत्तिकारूपकारण सर्वदा अनुगतहुआ प्रतीतहोवेहै॥ तेसे आत्मारूपसत्ताभी याजगत्‌विषे सर्वपदार्थोंविषे अनुगतहुई प्रतीतहोवेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जेसे रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुएतेंअनंतर सर्परूपअध्यासकी निवृत्तिहोइजावे है॥तेसे ताअधिष्ठानरूपसत्ताकेज्ञानहुएतेंअनंतर यासंसाररूपअध्यासकीनिवृत्तिहोणीचाहिये ॥ और ताअधिष्ठानरूपसत्ताके ज्ञानहुएभी यासंसाररूपअध्यासकीनिवृत्ति देखणेविषेआवतीनहीं ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जेसे यद्यपि मूढबालकोंकूं मनुष्यरूपकरिकेतो महाराजाज्ञातहै ॥ तथापि तिनमूढबालकोंकूं पितादिकवृद्धपुरुषोंकेउपदेशतेंविना सोमहाराजा राजारूपकरिकेज्ञातहोवेनहीं ॥ किंतु तिनपितादिकवृद्धपुरुषोंकेउपदेशकरिकेही तेबालक ताराजाकूं महाराजारूपकरिकेजानेहै ॥तेसे साआत्मारूपसत्ता सर्वत्रभास्यमानहुईभी यापुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतेंविना सासत्ता आपणाआत्मारूपकरिकेप्रतीतहोवेनहीं॥और जबपर्यंत याअधिकारीपुरुषकूं तातत्पदार्थरूपसत्ताका आपणा आत्मारूपकरिकेज्ञाननहीं होवे है ॥ तबपर्यंत अज्ञानरूपमायाकीनिवृत्तिहोवेनहीं ॥ और जबपर्यंत ताअज्ञानरूपमायाकीनिवृत्तिनहींभई तबपर्यंत तामायाकाकार्यरूप यहजगत्‌भी निवृत्तहोवेनहीं ॥ और यहअधिकारीपुरुष जभीतागुरुशास्त्रकेउपदेशतें तापरमात्मारूपसत्ताकूं आपणाआत्मारूपकरिकेदेखेहै ॥ तभी याअधिकारीपुरुषके ताअज्ञानरूपमायाकी निवृत्तिहोइजावेहै ॥तामायारूपकारणकेनिवृत्तहुएतेंअ

नंतर यह अधिकारीपुरुष ताजगत्रूपअध्यासकूं कदाचित्भी देखतानहीं ॥ जैसे दोषरहितआकाशविषे गंधर्वनगर कदाचित्भीप्रतीतहोवेनहीं ॥ तैसे तामायारूपदोषरहित आत्मादेवविषे यहजगत् कदाचित्भी प्रतीतहोवेनहीं ॥ हे श्वेतकेतु ॥ जैसे ताआकाशके अज्ञानतेंही सोगंधर्वनगर उत्पन्नहोवे है ॥ तैसे याआत्मादेवकेअज्ञानतेंही यहसर्वजगत् उत्पन्नहोवेहै ॥ और जैसे ताआकाश विषे सोगंधर्वनगर वास्तवतेंतो तीनकालविषेहैनहीं ॥ किंतु ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर केवलनाममात्रतेंप्रतीतहोवेहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्मादेवविषे भी यहजगत् वास्तवतें तीनकालमें हैनहीं ॥ किंतु याआत्मादेवविषे यहजगत् केवल नाममात्रतें प्रतीतहोवैहै ॥ यातें यहजगत्भी तागंधर्वनगरकीन्याईं मिथ्याही है ॥ और हे श्वेतकेतु ॥ ताआकाशविषे तीनकालमेंअसत्यहुआभी सोगंधर्वनगर जैसे मायाकेवशतें किसीदोषदर्शीपुरुषकूं मध्यकालविषे प्रतीतहोवे है ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे तीनकालमेंअसत्यरूपहुआभी यहजगत् मायाकेवशतें किसीदोषदर्शीपुरुषकूं मध्यकालविषे प्रतीतहोवेहै ॥ याकारणतें भी यहजगत् मिथ्याही है॥और हे श्वेतकेतु ॥जैसे तामायाकरिकेमोहित पुरुषोंनें ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर देख्याहुआभी तामायादोषतेंरहितपुरुष ताआकाशविषे तागंधर्वनगरकूंदेखतेनहीं ॥ तैसे मायादोषवालेअज्ञानीपुरुषोंनें याआनंदस्वरूपआत्माविषे यहजगत् देख्याहुआभी तामायादोषतेंरहितविद्वान्पुरुष ताआत्मादेवविषे याजगत्कूंदेखतेनहीं ॥ याकारणतेंही तेअज्ञानीजीवतोबंधकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और ते विद्वान्पुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हे श्वेतकेतु ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहएकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष अनेकरूपोंकूंधारणकरिके किसीरूपकरिकेतो बंधकूंप्राप्तहोवे है ॥ और किसीरूपकरिके मोक्षकूं प्राप्तहोवे है ॥ तैसे यहएकहीआत्मादेव अविद्याकेसंबंधतें अनेकरूपोंकूंधारणकरिके किसीरूपकरिकेतो बंधकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और किसीरूपकरिके मोक्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ और हे श्वेतकेतु ॥ जैसे तास्वप्नअवस्थामें तास्वप्नद्रष्टापुरुषविषे सोबंधमोक्ष वास्तवतेंहैनहीं ॥ तैसे याजाग्रतअवस्थामें याआत्मादेवविषे सोबंधमोक्ष वास्तवतें हैनहीं ॥ हे श्वेतकेतु ॥ जोआत्मादेव ताबंधमोक्षादिकसर्वजगत्कूं सर्वदा साक्षीरूपकरिकेदेखेहै सोआत्मादेवही परमसत्यरूपहै ॥ ताआत्मादेवतेंभिन्न यहसर्वदृश्यप्रपंच मिथ्याही है ॥ हे श्वेतकेतु ॥ यालोक

विषे जोसर्वजगत्काद्रष्टासाक्षीहै ॥ सोद्रष्टासाक्षीही सर्वजगत्काकारणहोणेतैं परमसत्यरूपहै॥और यालोकविषे जेजेदृश्यपदार्थ हैं॥तेदृश्य पदार्थ कार्यरूपहोणेतैं तथानाममात्रहोणेतैं असत्यही हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तापरमात्मारूपकारणविषेही परमसत्यरूपताअंगीकार करिके सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति मृत्तिका सुवर्ण लोह यातीनोंविषे आपणेआपणे कार्यकोअपेक्षाकरिके सत्यरूपता कहता भयाहै ॥ तथा घट भूषण खड्ग इत्यादिककार्योंविषे असत्यरूपता कहताभयाहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे मृत्तिका सुवर्ण लोह यहतीनों आपणेआपणे घट भूषण खड्ग इत्यादिककार्योंकीअपेक्षाकरिके सत्यरूपहैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी पृथिवी जल तेज रूपसर्वजगत्की अपेक्षाकरिके परमसत्यरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं सत्यकासत्ययानामकरिकेकथनकरे है॥ ऐसापरमात्मादेव तुमारेकूंभी अवश्यकरिके जानणेयोग्यथा॥जिसपरमात्मादेवकेजान्येहुए यालोकविषे कोईभीपदार्थ जानणेयोग्यरहतानहीं ॥ परंतु ऐसा परमात्मादेव तुमनें प्रमादकेवशतैं आपणेगुरुवोंसैं पूछानहीं॥यातैं हेश्वेतकेतु ॥ तापरमात्मादेवकेजानणेवासते तूंअभी पुनः तिनगुरुवोंके समीपजाइके प्रश्नकर॥ तिनगुरुवोंकेउपदेशतैं तापरमात्मादेवकेस्वरूपकूं जानिके तूं पुनः शीघ्रही हमारेपासआव ॥ हेशिष्य॥ताआरु णिपितानें जभी इसप्रकारकावचन ताश्वेतकेतुकेप्रति कह्या तभी सोश्वेतकेतु ताआरुणिपिताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्वेत केतुरुवाच ॥ हेपिता ॥ जिसपरमात्मादेवकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवै है ॥ तापरमात्मादेवकेस्वरूपकूं तेहमारेगुरु जाणतेनहींथे ॥ काहेतैं जोकदाचित् तेहमारेगुरु तापरमात्मादेवकूंजाणतेहोते तो हमारेविषेअत्यंतस्नेहवाले तेहमारेगुरु मैंश्रद्धावान्शिष्यकेताईं तापरमा त्मादेवकाउपदेश अवश्यकरिकेकरते ॥ परंतु तापरमात्मादेवकाउपदेश तिनगुरुवों नें हमारेप्रति कभीभीनहींकऱ्या ॥ यातैं यहजान्याजा वे है॥ तेहमारेगुरु तापरमात्मादेवकेस्वरूपकूंजाणतेनहीं ॥ हेपिता ॥ तेहमारेगुरु मैंश्वेतकेतुशिष्यकूं आपणेपुत्रोंतैंभीप्रियजाणतेथे॥यातैं तिनहमारेगुरुवोंनें हमारे सैं कोईभीविद्या गुह्यराखीनहीं॥किंतु जितनीकोविद्यातेहमारेगुरु जानतेथे॥सासंपूर्णविद्या तिनगुरुवों नेहमारे प्रति उपदेशकरीहै ॥ यातैं पुनः तिनगुरुवोंकेसमीपजाणेविषे हमारा कोईप्रयोजन सिद्धहोवेगानहीं ॥ हेपिता ॥ तिनगुरुवोंकेआज्ञाकूंपाइ

के मैं श्वेतकेतु समावर्त्तननामासंस्कारकूंप्राप्तहोइके आपणेगृहविषेआयाहूं ॥यातैं अविश्वासीपुरुषकीन्याई पुनः तिनगुरुवोंकेसमीपजाइके प्रश्नकरणा हमारेकूंउचितनहीं है ॥ यातैं हेभगवन् ॥ जिसपरमात्मादेवकेज्ञानतैं सर्वज्ञातअज्ञातपदार्थोंकाज्ञानहोवे है ॥ तिसपरमात्मादेवकेबोधकरणेवासते आपही हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ आपपिताकूंछोडिके मैं दूसरेकिसीगुरुकेसमीपजातानहीं॥हेशिष्य॥ इसप्रकारकावचन जभी ताश्वेतकेतु नैं आपनेआरुणिपिताकेप्रति कह्या॥तभी सर्वविद्वानोंविषेश्रेष्ठसोआरुणिऋषि ताश्वेतकेतुपुत्रकेवचनकूं अंगीकारकरिके ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥आरुणिरुवाच॥हेचंद्रमाकीन्याई प्रियदर्शन श्वेतकेतुपुत्र जोपरमात्मादेवकास्वरूप श्रुतिनैं कथनकऱ्याहे॥तथा जोपरमात्मादेवकास्वरूप तुमनैं हमारेसैंपूछाहे॥सो परमात्मादेवकास्वरूपमैं तुमारेप्रति उपदेशकरताहूं॥तूं गर्वकापरित्यागकरिके तथामनकूंसावधानकरिके श्रवणकर॥अब जिसपरमात्मादेवकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवे है तापरमात्मादेवविषे अद्वितीयरूपताका निरूपणकरेहैं॥ हे श्वेतकेतु॥जोयह नाम रूप क्रिया स्वरूप जगत्देखणेविषेआवे है॥केसाहैयहजगत्॥यथाक्रमतैं स्थूलसूक्ष्मकेवाचक जे सत् असत् यहदोशब्दहैं ॥ तासत्असत्शब्दकरिके कथनकरणेयोग्यहै॥ तथा तिससत्असत्शब्दतैं उत्पन्नभईजा स्थूलसूक्ष्मविषयकबुद्धिहै ताबुद्धिकाविषयहै ॥ तथा तासत्असत्शब्दबुद्धिकरिकेयुक्तहै ॥ ऐसा यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैं पूर्व सत्तामात्रहोताभया ॥ तथा सत् असत् याप्रकारकेशब्दज्ञानतैंरहितहोताभया ॥ ताकालविषे यहसर्वजगत् तासत्तातैं भिन्ननहीं होताभया ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे नैयायिकवादी घटपटादिकपदार्थोंविषे एकसत्तानामा जातिअंगीकारकरे हैं ॥ तैसे तुमनैं यासत्ताशब्दकरिके सासत्तानामाजडजाति अंगीकारनहींकरणी ॥ किंतु जोहमनैं पूर्वतुमारेप्रति चिदानंदरूपसत्ता कथनकरीथी ॥ साचेतनरूपसत्ताही तुमनैं यासत्ताशब्दकरिके ग्रहणकरणी ॥ काहेतैं तासत्ताशब्दकरिके जोकदाचित् जातिरूपजडसत्ताकूंग्रहणकरिये ॥ तौ यालोकविषे जोजोपदार्थ जडहोवे है ॥ सोसोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवे है ॥ और जोजोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवे है॥सोसोपदार्थकार्यरूपहोवे है॥जैसे घटादिकजडपदार्थ भेदवालेहोणेतैं कार्यरूपहैं॥तैसे साजडसत्ताभी भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालीहोणे

तैंकार्यरूपहोवैमी॥ताकार्यरूपसत्ताविषे सर्वजगत्कीकारणतासंभवेनहीं ॥ यातैं इहां सर्वजगत्काकारणरूपकरिकेकथनकरीजासत्ता है ॥ सोकारणरूपसत्ता ताजातिरूपजडसत्तातैंविलक्षणही तुमनैंजानणी॥हेश्वेतकेतु जैसे सूर्यकेउदयतैंपूर्वसर्वओरतैं अंधकाररहे है॥तैसे याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व यहसत्ताही याकीरहे है॥और याहीकारणरूपसत्ताकूं मायारूपउपाधिकेसंबंधतैं श्रुतिभगवती अव्याकृतनामकरिकेकथन करे है ॥ हेश्वेतकेतु ॥ याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व जोसत्तावस्तु कारणरूपहोइकेस्थितहोवे है ॥ तथा जासत्तारूपकारणकूं श्रुतिनैं अव्याकृतनामकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ सोसत्तारूपकारणवस्तु निर्गुणब्रह्मरूपहीहै ॥ जिसनिर्गुणब्रह्मविषे ॥ यतोवाचोनिवर्त्तते अप्राप्यमनसासह ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं विद्वान्पुरुषकेभी मनसहितवाणीकीनिवृत्ति कथनकरीहै ॥ तथा जिसनिर्गुणब्रह्मविषे यहदेशकाल तथास्थूलसूक्ष्मपदार्थ पूर्वकाल विषेहुएनहीं ॥ तथा अभीवर्त्तमानकालविषेहैनहीं ॥ तथा आगेभविष्यतकालविषे होवैंगेनहीं ॥ ऐसेनिर्गुणब्रह्मविषे जो ॥ सदेवसोम्येदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिनैं आसीत्पदकरिके पूर्वअतीतकालका कथनकऱ्याहै ॥ सोभी कालकीवासनायुक्तशिष्यकोबुद्धिके अनुसार कथनकऱ्याहै ॥ वास्तवतैं सोअतीतकालभी ताब्रह्मविषेनहीं है ॥ अब तानिर्गुणब्रह्मविषे स्वगतभेद सजातीयभेद विजातीयभेद यातीनभेदोंकाअभाव निरूपणकरे हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे यालोकविषे एकहीवृक्ष आपणे पत्र पुष्प फल शाखा स्कंध इत्यादिकअवयवोंकेभेदकरिके स्वगतभेदवालाहोवे है ॥ तैसे यहपरमात्मादेव निरवयवहोणेतैं तास्वगतभेदवालाहैनहीं॥और जैसे यालोकविषे गोअश्वादिक आपणेसमानजातिवालेदूसरेगोअश्वादिकोंतैं सजातीयभेदवालेहोवे हैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेव तासजातीयभेदवालाभीहैनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे तेगोअश्वादिक आपणेतैंविरुद्धजातिवालेमहिषादिकोंतैं विजातीयभेदवालेहोवे हैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेव ताविजातीयभेदवालाभीहैनहीं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ यहपरमात्मादेव सजातीय विजातीय स्वगत यातीनभेदोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष यापरमात्मादेवकूं सत्तारूपकहे हैं इतनैंकरिके॥एकमेवाद्वितीयं॥याश्रुतिविषेस्थित एकशब्दकरिके तापरमात्मादेवविषे सजातीयभेदकाअभाव दिखाया॥और ताश्रुतिविषेस्थित एवशब्दकरिके स्वगतभेदकाअभाव दिखाया ॥ और ताश्रुतिविषेस्थित अद्वितीयशब्दकरिके विजा

तीयभेदकाअभाव दिखाया ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वं यद्यपि ताब्रह्मविषे यहकार्यजगत्हैनहीं ॥ तथापि ताकालविषे माया विद्यमानहै ॥ यातैं तामायाकरिकैही ब्रह्मविषे सद्वितीयपणा सिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥तानिर्गुणब्रह्मविषे जगत्केकारणताकीसिद्धिकरणेहारी सामाया यद्यपि द्वितीयरूपकरिकैसंभावनाहोवैहै ॥ तथापि ताब्रह्मविषे सामाया वास्तवतैं हैनहीं ॥ किंतु तामायाकरिकैमोहितअज्ञानीजीवही तामायाकूंब्रह्मविषेदेखेहैं ॥यातैं सामाया ताब्रह्मविषे मायाकरिकैहीसिद्धहै॥जैसे हममनुष्योंकूं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धजोदिनहै ॥तादिनकूं उलूकपक्षी रात्रिमानेहैं॥तहां दिनकेरात्रिरूपताविषे ताउलूकपक्षीका आपणाअनुभवही प्रमाणहै ॥ ताके विषे दूसराकोईप्रमाणहैनहीं ॥तैसे तामायाविषेभी तिनअज्ञानीपुरुषोंकाअनुभवही प्रमाणहै ॥दूसराकोईप्रमाण तामायाविषेहैनहीं ॥ यातैं सामाया मायाकरिकैहीसिद्धहै॥हेश्वेतकेतु ॥जैसे वास्तवतैंअंधकारतैंरहित जोसूर्यभगवान्है ॥ सोसूर्यभगवान् जभी सुमेरुपर्वतकेपृष्ठदेशविषेजावैहै ॥ तभी रात्रिविषे मूढपुरुष तासूर्यविषे अंधकार कल्पनाकरैहैं॥तैसे वास्तवतैं मायातैंरहितजोपरमात्मादेवहै तापरमात्मादेवविषे मूढअज्ञानीपुरुष मायाकल्पनाकरैहैं ॥ और हेश्वेतकेतु ॥ जैसे नेत्रोंकरिकैदेखेहुएसूर्यभगवान्केउदयहुएतैंअनंतर यापुरुषोंकूं सोअंधकार दिखाईदेवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशजन्य आत्मसाक्षात्कारकेउदयहुएतैंअनंतर याविद्वान्पुरुषोंकूं सामाया दिखाईदेवैनहीं ॥ और जैसे यासूर्यभगवान्कूं सोअंधकार तीनकालविषेस्पर्शकरैनहीं ॥ तैसे याआत्मादेवकूंभीसामाया तीनकालविषे स्पर्शकरैनहीं ॥ और हेश्वेतकेतु ॥ जैसे अंधकार अथवा मेघादिक याद्रष्टापुरुषोंकेनेत्रोंकूंआच्छादनकरिकैही आकाशविषेस्थितसूर्यमंडलकूं आच्छादनकरैहैं॥तैसे यहअज्ञानरूपमायाभी अज्ञानीपुरुषोंकेबुद्धिकूंआच्छादनकरिकैही तापरमात्मादेवकूंआच्छादनकरैहै॥यातैंयहअर्थ सिद्धभया॥तापरमात्मादेवविषे यहमायावास्तवतैं हैनहीं॥तथा तामायाका स्थूलसूक्ष्मकार्यभी वास्तवतैं हैनहीं ॥ यातैं याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वसोसत्परमात्मादेवहीस्थितहोताभया॥तापरमात्मादेवतैंभिन्नयहस्थूलसूक्ष्मजगत्तथाताकाकारणमायानहींहोतेभये॥ इतनेकरिकैतासत्परमात्मारूपकारणविषेअद्वितीयरूपतासिद्धकरी॥अब तद्धैकआहुरसदेवेदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतस्मादसतःसज्जायत॥याश्रुतिनेसं

डनकरणेवासते कथनकऱ्याजो असत्कारणवादियोंकामत तामतका निरूपणकरे हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ इसप्रकार सर्वभेदतैंरहित सत्तारूप
कारणकेसिद्धहुएभीकेईकब्रह्मबोधतैंरहितपंडितजन तासत्तारूपकारणकेस्थानविषे असत्ताकूंअंगोकारकरिके ताअसत्ताकूंहीयाजगत्काका
रणमानेंहैं ॥ और परमात्मारूपसत्ताकूं याजगत्काकारणमानणेहारे जेहमवेदांतीहैं ॥ तिनवेदांतियोंकेमतविषे तेअसत्कारणवादीपुरुष
याप्रकारकेदोष कथनकरेंहैं ॥ तुमवेदांतियों नें सर्वजगत्का उपादानकारणरूपकरिके अंगीकारकरीजा सत्ताहै ॥सासत्ता सत्रूपहै ॥ अ
थवा असत्रूपहै ॥ तहांसासत्ता सत्रूपहै यहप्रथमपक्ष जोवेदांतीअंगोकारकरे ॥ तावेदांतीसें यहपूछाचहिये ॥तासत्ताविषे जोसत्रूपता
है ॥ सासत्रूपता आपणेस्वरूपतैंसिद्धहै ॥ अथवा सासत्रूपता किसीधर्मरूपदूसरीसत्ताकरिकेंसिद्धहै ॥ तहां तासत्ताविषे सासत्रूपता
स्वरूपतैंहीसिद्धहै यहप्रथमपक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरे ॥ तो तासत्ताविषेअसत्तातैंविलक्षणता सिद्धनहींहोवेगी ॥ काहे तें जैसे तासत्ता
विषे स्वरूपतैं सत्रूपताहै ॥ तैसे ताअसत्ताविषेभी स्वरूपतैंसत्रूपतासंभवहोइसकेहै ॥ ताकेनिवृत्तकरनेविषे कोइभीवादी समर्थहोइ
सकेनहीं ॥ और सोवेदांती जोयहकहे ॥ तासत्ताविषेतो अस्ति याप्रकारकीविधिमुखप्रतीतिकीविषयतारहे है ॥ और असत्ताविषे सावि
धिमुखप्रतीतिकीविषयतारहतीनहीं ॥ यातें साविधिमुखप्रतीतिकीविषयताही तासत्ताविषे ताअसत्तातें विलक्षणताहै ॥ सोयहताकाकहणा
भी संभवेनहीं ॥ काहेतें तासत्ताविषेही साविधिमुखप्रतीतिकोविषयतारहे है ॥ असत्ताविषेरहेनहीं॥यहवार्त्ता जोवेदांतीनेंअंगोकारकरीहै॥
सोकेवल आपणेकुलधर्मकीन्याईं आपणेवृद्धपुरुषोंकिसंकेतमात्रतैंहोसिद्धहै ॥ कोईवस्तुकेस्वभावकेअनुसारनहींहै ॥ यातें सोतिनोंकेवृद्धपु
रुषोंकासंकेत ताअसत्ताविषे विधिमुखप्रतीतिकोविषयतामानणेविषे प्रतिबंध करिसकेनहीं॥एकअधिकरणवृत्तिपदार्थोंकाही परस्पर प्रतिब
ध्यप्रतिबंधकभावहोवे है ॥यातें तासत्ताकीन्याईं ताअसत्ताविषेभी साविधिमुखप्रतीतिकीविषयता संभवे है ॥ किंवा ॥ याजगत्कीउत्पत्ति
कालविषे यद्यपि तासत्ताविषे विधिमुखप्रतीतिकीविषयता संभवहोइसकेहै॥तथापि याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे तासत्ताविषे साविधि
मुखप्रतीतिकीविषयता संभवतीनहीं॥काहेतें चिदाभासयुक्तअंतःकरणकीवृत्तिकानाम प्रतीतिहै ॥साप्रतीति चिदाभासयुक्तअंतःकरणरूप

प्रमाताकेआश्रितरहेहै ॥ सोप्रमाता याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषेहैनहीं ॥ ताप्रमाताकेअभावहुए ताकालविषे प्रतीतिभीसंभवैनहीं ॥ यातैं ताजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे आपहीअविद्यमानहुई साविधिसुखप्रतीति तासत्ताकीसिद्धि किसप्रकारकरैगी॥किंतु नहींसिद्धकरैगी और तासत्ताविषे सत्यरूपता किसीदूसरीसत्ताकरिकेसिद्धहै यहदूसरापक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरे ॥ तो तादूसरीसत्ताविषे सत्यरूपताके सिद्धकरणेवासते कोईतीसरीसत्ता कल्पनाकरणीहोवैगी॥और तातीसरीसत्ताविषे सत्यरूपताकेसिद्धकरणेवासते कोईचतुर्थसत्ता कल्पनाकरणीहोवैगी ॥ इसप्रकार पूर्वपूर्वसत्ताविषे सत्यरूपताकेसिद्धकरणेवासतैं कल्पनाकरी जेउत्तरउत्तरसत्तांहैं ॥ तेसर्वसत्तानियतसंख्यातैंरहित असंख्यातहैं ॥अथवा तेसत्ता नियतसंख्यावालीहैं॥तहां तेसत्ता असंख्यातहैं यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ सोसंभवैनहीं ॥काहेतैं ते असंख्यातसर्वसत्ता क्रमकरिके अथवा एककालविषे किसीभीजीवकूं प्रतीतहोवैनहीं॥यातैं तिनअसंख्यातसर्वसत्तावोंविषे कोईएकसत्ताहीसिद्धहोवैगी॥सर्वसत्ता सिद्धहोवैनहीं ॥ और तेसत्ता नियतसंख्यावालीहैंयहदूसरापक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरे ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं तिनसर्वसत्तावोंविषे जोअंतकीसत्ताहै॥ साअंतकीसत्ता ताअसत्तातैंविलक्षण सिद्धनहींहोवैगी ॥ किंतु साअंतकीसत्ता ताअसत्ताकेसमानहींहोवैगी॥और ताअंतकीसत्ताविषे दूसरीसत्तातैंविनाही जोसत्यरूपताव्यवहारकीसिद्धिमानोंगे ॥तो ताअंतकीसत्तातैंपूर्वसत्तावोंविषेभी उत्तरउत्तरसत्तातैंविनाही सत्यरूपताव्यवहार सिद्धहोइसकेगा॥यातैं ताअंत्यसत्तातैंपूर्वपूर्वसत्तावोंकीकल्पना व्यर्थहोवैगी॥किंवा तिनवेदांतियोंनैं सर्वजगत्काउपादानकारणरूप जासत्ताअंगीकारकरीहै॥सासत्ता निर्विकारस्वभाववालीहोणेतैं एकरूपहै॥अथवा परिणामीस्वभाववालीहोणेतैं अनेकरूपहै॥तहां सासत्ता एकरूपहै यहप्रथमपक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरे ॥ तोताएकरूपसत्ताविषे ताअसत्तातैं कौनविलक्षणता सिद्ध होवैगी ॥ किंतु सासत्ताभीताअसत्ताकेही तुल्यहोवैगी ॥ और सासत्ता अनेकरूपहै यहदूसरापक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरे ॥ तो तासत्ताविषे घटादिकपदार्थोंकीतुल्यता प्राप्तहोवैगी ॥ किंवा याअंत्यपक्षविषे घटादिकपदार्थोंकेतुल्यताकूंप्राप्तभई जासत्ताहै ॥ तासत्ताकी जोकदाचित् याजगत्तैंपूर्व स्थितिअंगीकारकरोगे ॥ तो ताकालविषे घटादिकपदार्थोंने कौनअपराधकऱ्या है ॥ किंतु यह

घटादिकपदार्थभी तासत्ताकीन्याई याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व अवश्यकरिकैरहेंगे ॥ यातैं तापूर्वकालकी तथाइदानींकालकी परस्पर विशेषता सिद्धनहींहोवैगी ॥ यातैं तासत्ताविषे अनेकरूपताभी संभवैनहीं ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदूषण तासत्ताविषेप्राप्त होवै हैं ॥ यातैं सासत्ता याजगत्काकारणनहीं है ॥ किंतु असत्ताही याजगत्काकारणहै ॥ इतनैंकरिकैतिनअसत्कारणवादियोंकामत निरूपणकऱ्या ॥ अब तिनअसत्कारणवादियोंकेमतका खंडनकरै हैं॥हे श्वेतकेतु॥इसप्रकार असत्कारणकीसिद्धि करणेवास्ते तेमंदबुद्धिवादी अनेकप्रकारकी कुतर्क कथनकरै हैं ॥ और तेवादी वास्तवतैंपंडितपणेतैंरहितहुएभी आपणेकूं मिथ्याहीपंडितमानैहैं॥ऐसेवादियोंकेप्रति यहपूछाचाहिये ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे ताअसत्कारणतैं जोयहजगत्रूपकार्य उत्पन्नहोवै है ॥ सोकार्यसत्रूपहोवैहै ॥ अथवा सोकार्य असत्रूपहोवै है ॥ तहां सोकार्यसत्रूपहोवैहै यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं जैसे सृष्टिकेआदिकालविषे असत्कारणतैंसत्कार्यकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे इदानींकालविषेभी असत्कारणतैं सत्कार्यकीउत्पत्ति किसवास्तेनहींहोती ॥किंतु होणीचाहिये ॥ और सृष्टिकेआदिकालविषेतो ताअसत्कारणतैं सत्कार्यकीउत्पत्ति होवैहै ॥ और इदानींकालविषे असत्कारणतैं सत्कार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ याअर्थकीसिद्धिकरणेहारी कोईयुक्ति तावादीनैं कहीचाहिये ॥ और सोकार्य असत्रूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं॥काहेतैं असत्कारणतैं असत्कार्यकीउत्पत्ति तीनकालविषेभीहोवैनहीं॥ जैसे असत्वंध्यापुत्ररूपकारण तैं असत्नरशृंगरूपकार्यकी उत्पत्ति कदाचित्भीहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् असत्कारणतैं असत्कार्यकीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तो असत्वंध्यापुत्र तैं असत्नरशृंगकीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ यातैं जैसे असत्वस्तुविषे कारणरूपतानहींसंभवैहै ॥ तैसे असत्वस्तुविषे कार्यरूपताभीसंभवैनहीं ॥ यातैं तिनसर्ववादियोंनैं ताकार्यकूं सत्यरूपहीमान्याचाहिये ॥ तासत्कार्यकी असत्कारणतैंउत्पत्ति कदाचित्भीसंभवैनहीं ॥ यातैं तासत्कार्यका कारणभी सत्यहीमान्याचाहिये ॥ यातैं ताअसत्कारणवादीनैं पूर्व जेजेविकल्पकरेथे ॥ तेसंपूर्णविकल्प व्यर्थही हैं अब तावादीनैं पूर्व विकल्पकरिके जेजेदूषणकथनकरेथे तिनदूषणोंकीनिवृत्तिकरैहैं ॥ किंवा ॥ ताकारणरूपसत्ता आपणेस्वरूपतैंही सत्यरूपताकूं

प्राप्तहोवैहै ॥ यापक्षकेअंगीकारकियेहुए हमसिद्धांतियोंकूं कौनदोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती जैसे सासत्ता आपणेस्वरूपतैंहीं सत्यरूपताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे साअसत्ताभी आपणेस्वरूपतैंहीं सत्यरूपताकूंप्राप्तहोवैगी ॥ याप्रकारका प्रतिबंदीरूपदूषण तुमारेमतविषे प्राप्तहोवैहै ॥ समाधान॥हेवादी तर्कविषेकुशलजेबुद्धिमान्पुरुषहैं॥तेबुद्धिमान्पुरुष दूसरेप्रतिवादीकेप्रति सोप्रतिबंदीरूपदूषण देतेनहीं किंतु तर्कविषेअकुशलपुरुषही सोप्रतिबंदीरूपदूषण देवैहैं ॥ किंवा ॥ तासत्ताविषे जोस्वरूपतैंसत्यरूपताअंगीकारकरोगे॥तौ असत्ताविषेभी स्वरूपतैंसत्यरूपताहोणीचाहिये ॥ यहजोवादीनैं दूषणकथनकन्याहै ॥ सोदूषण व्याप्तितैंरहितहै ॥ काहेतैं जहांजहां स्वरूपहोवैहै तहांतहां सत्यरूपताहोवैहै याप्रकारकीव्याप्तिसंभवैनहीं ॥ जो याप्रकारकीव्याप्ति अंगीकारकरिये ॥ तौ स्वरूपतैं अग्निविषे उष्णतारहे है ॥ यातैं स्वरूपतैं जलविषेभी उष्णताहोणीचाहिये ॥ और जैसे पार्थिवहोणेतैं घट जलकेआनयनरूपक्रियाकूं सिद्धकरैहै तैसे पार्थिवहोणेतैं लोष्टभी ताजलकेआनयनरूपक्रियाकूं किसवास्तेनहींसिद्धकरता ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेदूषण तिसवादीकेमतविषे प्राप्तहोवै हैं ॥ तिनसर्वदूषणोंकेकथनकरणेतैं तावादीकाउपहास तथाकथनकरणेहारेपुरुषकेकंठतालूआदिकोंकाशोषण यहदोनोंदोष प्राप्तहोवैहैं ॥ तिनदोनोंदोषों तैं अधिककोईफलहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ तावादीकेकहणेतैंहीं साहमारीसत्तासिद्धहोवै है ॥ काहे तैं असत्तातैं जोभिन्नहोवै ताकानाम सत्ताहै ॥ और सत्तातैं जोभिन्नहोवै ताकानाम असत्ताहै ॥ याप्रकार सत्ताअसत्ताशब्दकाअर्थ तावादीनैंहीं अंगीकारकन्याहै ॥ जोकदाचित् सोवादी सत्ताकूंअंगीकार नहींकरेगा ॥ तौ तासत्ताकेभेदवाली असत्ताही सिद्धनहींहोवैगी ॥यातैंअसत्ताकीसिद्धिवास्ते तावादीनैंभी सत्ताकूंअवश्यअंगीकारकन्याचाहिये॥किंवा॥तासत्ताकेस्थानविषे तावादीनैं अंगीकारकरीजाअसत्ताहै॥ताअसत्तारूपकारणकूं आपणेस्वरूपकेबलतैं जोवादीनैं सत्यरूपताकथनकरीहै ॥ सो हमसत्कारणवादियोंकूं कोईअनिष्टनहीं है॥किंतु सोहमारेकूंभी इष्टहै काहेतैं सर्वपदार्थोंका आत्माहीं वास्तवस्वरूपहै॥ताआत्माकीसत्यरूपता हमारेकूंइष्टहै॥किंवा ॥अस्ति याप्रकारकीविधिमुखप्रतीतिकाजो विषयहोवै ताकानाम सत्ताहै ॥ याप्रकारकेसत्ताकेलक्षणविषे जोवादी नैं कुलधर्मकोसमानता कथनकरीथी ॥ सोदूषण तावादीकेमतविषे

भीप्राप्तहोवे है ॥काहेतें नास्ति याप्रकारकोनिषेधमुखप्रतीतिकाजोविषयहोवे ताकानामअसत्ताहे॥ यहजोवादीनें ताअसत्ताकालक्षणकऱ्या है ॥ तालक्षणविषेभी केवल आपणेकुलकोपरम्पराही अंगीकारकरणोहोवेगो ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ जोकदाचित् तासत्ताको तथाअसत्ताकी आपणेकुलधर्मकीन्याई सिद्धिमानोंगे ॥ तो तिनदोनोंकाभेद सिद्धनहींहोवेगा ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ तासत्ताविषे तथाअसत्ताविषे एकरूपताकेप्राप्तहुएभी तिनदोनोंकामहान्भेदहे ॥ काहेतें सत्तातो भावरूपहे ॥ और असत्ता अभावरूपहे॥याप्रकार तिनोंकाभेद सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकेसिद्धहे ॥ यातें तिनदोनोंकोएकरूपतासिद्धहोवेनहीं ॥ इतनेंकरिके लोकदृष्टिकूंअंगीकारकरिके तावादीकेशंकाका समाधानकऱ्या ॥ अब आपणेसिद्धांतकूंअंगीकारकरिके तावादीकेशंकाकासमाधानकरे हैं॥हेवादी ॥अस्ति याप्रकारकेविधिमुखप्रतीतिका जोविषयहोवे है ताकानाम सत्ताहे ॥ यहसत्ताकालक्षण जोतुमनें पूर्वखंडनकऱ्याथा॥सोहमारेकूंभी अंगीकारहे॥ काहेतें हमारेसिद्धांतविषे अद्वितीयब्रह्मकानाम सत्ताहे॥ ताअद्वितीयब्रह्मरूपसत्ताविषे विधिमुखप्रतीतिकीविषयतारूपलक्षण संभवतानहीं॥किंतु ताब्रह्मरूपसत्ताका मनवाणीकीअविषयतारूपही लक्षणहे ॥ अथवा सर्वलक्षणोंतेंरहितपणाहीलक्षणहे ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ जेसे सत्ता मनवाणीकाअविषयहे ॥ तथा सर्वलक्षणोंतेंरहितहे तेसे वंध्यापुत्रादिकअसत्पदार्थभी मनवाणीकेअविषयहें ॥ तथा सर्वलक्षणोंतेंरहितहें ॥ यातें तिनअसत्पदार्थोंविषेभी तासत्ताकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवेगी॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ प्रतियोगी अनुयोगी रूपदोसत्यपदार्थोंकरिकेही अभावकानिरूपणहोवे है ॥ यहसर्वशास्त्रकारोंकासिद्धांतहे ॥ यातें तिनअसत्पदार्थोंविषे मनवाणीकीविषयताकाअभाव तथा सर्वलक्षणोंकाअभावसंभवेनहीं ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ यालोकविषे जेमूढबुद्धिपुरुष सूर्यभगवान्विषे धूलिपावे हैं ॥ तेमूढबुद्धिपुरुषही ताधूलिकरिकेव्याप्तहोवे हैं ॥ सूर्यभगवान्कूं ताधूलिकासंबंधहोवेनहीं ॥ तेसे वेदविषेकथनकऱ्याजोसत्तारूपकारणहे ॥ तासत्तारूपसूर्यविषे जेमूढबुद्धिवादी कुतर्करूपोधूलिपावे हैं ॥ तेमूढबुद्धिपुरुष ताकुतर्करूपोधूलिकरिके आपहीपराजयकूंप्राप्तहोवे हैं॥ तासत्तारूपसूर्यकूं ताकुतर्करूपीधूलिका स्पर्शहोवेनहीं ॥ यातें हेश्वेतकेतु असत्ही याजगत्काकारणहे याप्रकारकेतिनवादियोंकेवचन

मिथ्याही है॥यातें मोक्षकीइच्छावानपुरुषों नें तिनतार्किकोंकेवचन कदाचितभी नहीं अंगीकारकरणे॥किंतु वेदविषेकथनकऱ्याजोसत्तारूपकारणहै ॥ ता सत्तारूपकारणकूंहीं यामुमुक्षुजनों नें अंगीकारकरणा ॥ काहेतें यालोकविषे असत्कारणतें सत्कार्यकीउत्पत्तिदेखणेविषे आवतीनहीं ॥ यातें याजगतरूपसत्कार्यका कारणभी सत्यरूपही मान्याचाहिये॥और यालोकविषे जैसे मृत्तिका सुवर्ण लोह रूपकारणकेज्ञानतें घट भूषण सड्ग आदिकसर्वकार्योंकाज्ञानहोवे है ॥ तैसे तासत्तारूपकारणकेज्ञानतें यासर्वजगत्रूपकार्यकाज्ञानहोवे है ॥ यातें सर्वज्ञतारूपफलकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषनें तासत्तारूपकारणकूं अवश्यकरिकेजानणा ॥ अब तासत्तारूपकारणविषे अद्वितीयरूपताकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम याजगत्केउत्पत्तिकाप्रकार वर्णनकरे हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ पूर्वहमनेंअद्वितीयरूपकरिकेकथनकऱ्याजोसत्तारूपब्रह्महै ॥ सोसत्ब्रह्म जिसप्रकार यासर्वजगतकूं उत्पन्नकरताभयाहै ॥ ताप्रकारकूं तू श्रवणकर ॥ सर्वभेदतेंरहित तथावास्तवतें मायाकेसंबंधतेंरहित ऐसाजोसत्ब्रह्महै ॥ सोसत्ब्रह्म कल्पितमायाकेसंबंधकूंपाइके सृष्टिकेआदिकालविषे याप्रकारका चिंतनकरताभया ॥ मैंपरमात्मादेव आपही बहुतरूपकरिकेउत्पन्नहोवों ॥तामेरेजन्मकरिकेही साबहुतरूपतासिद्धहोवैगी ॥ मेरेजन्मतेंविना साबहुतरूपता कदाचितभी नहींहोवेगी॥इसप्रकारकाचिंतनकरिके सोपरमात्मादेव यथाक्रमतें आकाशादिकपंचभूतोंकूं रचताभया ॥ हेश्वेतकेतु ॥ सोपरमात्मादेव केवल आकाशादिकभूतोंकीउत्पत्तितेंपूर्वही ताचिंतनकूंहींकरताभयाहै ॥ किंतु एकएकभूतकीउत्पत्तितेंपूर्वभी ताचिंतनकूंकरताभयाहै ॥ शंका ॥हेभगवन् ॥ तैत्तिरीयकउपनिषद्विषे आकाश वायु तेज जल पृथिवी यापंचभूतोंकी उत्पत्ति कथनकरीहै॥और याछांदोग्यउपनिषद्विषे तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंकीही उत्पत्तिकथनकरीहै ॥ यातें तिनदोनोंउपनिषदोंका परस्पर विरोधप्राप्तहोवैगा॥समाधान ॥ हेश्वेतकेतु॥तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंकेउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारी याछांदोग्यश्रुतिका यहअभिप्रायहै॥ अल्पबुद्धिवालेपुरुषोंकूंपंचीकरणकीप्रक्रियाजानणीअत्यन्तकठिनहै॥यातेंतापंचीकरणविषेउपयोगीजोआकाशवायुहै॥ तादोनोंकेउत्पत्तिकीउपेक्षाकरिकेताश्रुतिभगवतीनेंस्थूलबुद्धिवालेपुरुषोंऊपरअनुग्रहकरिकेके तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंकात्रिवृत्करणकथनकऱ्याहै॥याकारणतें ताछांदोग्यश्रुतिनें

तेज जल पृथ्वीयातीनभूतोंकीही उत्पत्तिकथनकरीहै॥परंतु वास्तवतैंताछांदोग्यश्रुतिकाभी पंचीकरणविषेहीतात्पर्य है॥तापंचीकरणकेनिषे धविषेतात्पर्यनहीं है॥यातैं तैत्तिरीयकश्रुतिका तथाछंदोग्यश्रुतिका परस्पर विरोधसंभवैनहीं ॥ अब तेजादिकतीनभूतोंके उत्पत्तिकाक्रम कथनकरे हैं॥ हेश्वेतकेतु ॥ सोसतब्रह्म प्रथम तेजकूंउत्पन्नकरताभया॥तातेजतैंअनंतर जलोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ताजलोंतैंअनंतर पृथ्वी कूंउत्पन्नकरताभया ॥ तापृथ्वीकूं श्रुतिविषे अन्नशब्दकरिकेकथनकर्‌याहै॥ इसप्रकार तेज जल पृथ्वी यातीनभूतोंकूंउत्पन्नकरिके सोका रणब्रह्म तिनभूतोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोताभया॥ हेश्वेतकेतु॥ जैसे सृष्टिकेआदिकालविषे तेज जल पृथ्वी यातीनभूतोंविषे प्रथम तेज जलका कारणहोवे है॥और सोजल पृथ्वीकाकारणहोवे है॥ तैसे इदानींकालविषेभी देखणे मेंआवे है॥काहेतैं इदानींकालविषेभी जभी अत्यंत तपत पडेहै ॥ तभी ता तपत तैं जलकीवृष्टिहोवे है ॥ और ताजलकी वृष्टितैं अन्नहोवे है॥यहवार्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ हेश्वेतकेतु॥ तेज जल पृथ्वी यहतीनभूतही यासर्वजगत्‌केकारणहैं ॥ यातैं ताकारणकेस्वभावकूंअनुसारकरिकेही शास्त्रवेत्तापुरुषों नें यासर्वदेहधारीजीवोंके तीनप्रकारकेकारण कथनकरे हैं ॥ तहां जरायुजनामा जीवोंकीजाति प्रथम देहधारीजीवोंकाबीजहै ॥ काहेतैं गर्भकूंवेष्टनकरणेहारा जोजरायुनामाचर्महै ॥ सोजरायु जठराग्निकेतेजकरिकेजन्यहोवे है ॥ याकारणतैं सोजरायु तैजसपदार्थ है ॥ तिस तैंअनंतर दोप्रकारकेस्वेदज उत्पन्नहोवे हैं ॥ तहां एकतौ मशकादिरूपस्वेदज उद्भिज्जरूपहोवे हैं॥ और दूसरे यूकादिरूपस्वेदज अंडज रूप होवे हैं॥यातैं एकहीस्वेदजका जलीयउद्भिज्जरूपकरिके तथापार्थिवअंडजरूपकरिके संग्रह संभवहोइसकेहै ॥ यातैं जरायुज उद्भिज्ज अंडज यहतीनही सर्वदेहधारीजीवोंकेबीजरूपहैं ॥ शंका॥ हेभगवन्॥ब्रह्मसूत्रोंकेतृतीयअध्यायकेप्रथमपादविषे व्यासभगवान्‌ने स्वेदजका उद्भिज्जविषेही अंतर्भावकथनकर्‌याहै ॥ और इहांआपने तास्वेदजका उद्भिज्ज अंडज यादोनोंविषेअंतर्भाव कथनकर्‌या ॥ यातैं तासूत्रके साथ तुम्हारेवचनका विरोधहोवैगा॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ताव्यासभगवान्‌का यहअभिप्रायहै॥ जैसे यहप्रसिद्धवृक्षादिक भूमिकूंऊर्ध्व भेदनकरिकेउत्पन्नहोवे है ॥ तैसे मशकादिरूपउद्भिज्ज तथायूकादिरूपअंडज यहदोप्रकारकेस्वेदजभी आपणेउपादानकारणरूपजलों

कूं ऊर्ध्वभेदनकरिकैही उत्पन्नहोवे हैं॥यातैं मशकादिकउद्भिज्जोंकीन्याईं यूकादिकअंडजोंविषेभी सोउद्भिज्जशब्दकाअर्थघटेहै ॥ याप्रकारके अर्थकेजनावणेवासतैंहीं ताव्यासभगवान्नैं उद्भिज्जविषे तास्वेदजकाअंतर्भाव कथनकऱ्याहै ॥ परंतु ताअंडजविषे तास्वेदजकाअंतर्भावनहीं है ॥ याअर्थकेबोधनकरणेविषेताव्यासभगवान्का तात्पर्यनहींहै॥किंवा॥ ऐतरेयउपनिषद्विषे जरायुज अंडज उद्भिज्ज यातीनोंकीअपेक्षा करिकै कथनकऱ्याजो चतुर्थस्वेदजहै॥ तास्वेदजका असत्यपणानहीं है॥किंतु जरायुजादिकतीनोंकोन्याईं सोस्वेदजभी विद्यमानहै॥याप्रकार तास्वेदजकेअसत्यपणेकीनिवृत्तिकरणेविषे ताव्यासभगवान्कातात्पर्य है ॥ उद्भिज्जविषेही तास्वेदजकाअंतर्भावहै याअर्थविषे तासर्वज्ञव्यासभगवान्कातात्पर्यनहीं है॥किंतु ताव्यासभगवान्का यहतात्पर्य है ॥ पक्षीसर्पयूकादिकजीव अंडजहैं ॥ और वृक्षमशकादिकशरीर उद्भिज्जहैं ॥ तिनदोनोंतैंभिन्न सर्वजीव जरायुजहैं ॥ हेश्वेतकेतु॥ जैसे यालोकप्रसिद्ध शरीरादिकअध्यात्मकार्योंकेकारणोंविषे जरायुज उद्भिज्ज अंडज यातीनभेदकरिकै तीनरूपतारहे है॥तैसे यासर्वजगत्केकारणोंविषेभी तेज जल पृथ्वी यातीनभेदकरिकै तीनरूपतारहेहै ॥ शंका हेभगवन् ॥ याप्रकार ॥ तेजादिककारणोंकेज्ञानतैं या अधिकारीपुरुषकूं किसफलकीप्राप्तिहोवे है ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे तेज जल पृथ्वी यहतीनकारण आपणेआपणेकार्यविषे अनुगतरूपहोइकेरहेहैं ॥ तैसे तेज जल पृथ्वी यातीनोंविषे सोपरमात्मादेव आपणेसत्तारूपतैं अनुगतहोइकेरहेहै ॥ ऐसा सर्वजगतकाकारणरूप परमात्मादेवही हमअधिकारीजनोंकूं जानणेयोग्यहै ॥ याप्रकार तापरमात्मारूपकारणविषे जोयाअधिकारीपुरुषोंकेबुद्धिकीस्थितिहै ॥ साबुद्धिकीस्थितिही ताकारणकेविचारकाफलहै ॥ अब तापरमात्मादेवरूप परमकारणका तिनतेजादिकभूतोंविषेअनुगतपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे घटशरावादिककार्योंविषे मृत्तिका कारणरूपकरिकैप्रवेशकरेहै ॥ तैसे तेज जल पृथ्वी यातीनोंविषे सोपरमात्मादेव पूर्व कारणरूपकरिकैप्रवेशकरताभयाहै ॥ काहेतैं तापरमात्मादेवका असाधारणधर्मरूपईक्षण ॥ तत्तेजऐक्षत ॥ इत्यादिकश्रुतियों नैं प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सृष्टिकेआदिकालविषे सोसत्परमात्मादेव मैंबहुतरूपहोइकेउत्पन्नहोवौं याप्रकारकाविचारकरिकै बहुतरूपहोताभयाहै ॥ तैसे तेज तथाजल यहदोनोंभी

ताविचारकूंकरिके बहुतरूपहोतेभये हैं ॥ तहां जडतेजविषे तथाजडजलविषे चेतनकेप्रवेशतैंविना सोविचार संभवतानहीं यातैं यहजा
न्याजावै है ॥ सोचेतनपरमात्मादेवही तातेजजलविषेप्रवेशकरिके ताविचारकूंकरताभयाहै ॥शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोपरमात्मादेव तिनते
जादिकोंविषे जोकदाचित् पूर्वहीं अनुगतहुआहोवे ॥ तौ श्रुतिनें तापरमात्मादेवका पुनःजीवरूपकरिकेप्रवेश किसवासतेकथनकर्याहै
॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ यद्यपि यहसतपरमात्मादेव कारणरूपकरिकेतौ तिनतेजादिकोंविषे पूर्वहीं प्रविष्टहुआहै ॥ तथापि सोपरमा
त्मादेव जीवरूपकरिके तिनतेजादिकोंविषे पूर्वप्रविष्टहुआनहीं ॥ काहेतें जो प्राणोंकूंधारणकरे है ताकानाम जीवहै ॥ तेप्राणधारणा
दिकजीवकेधर्म तिसकालविषे हैं नहीं ॥हेश्वेतकेतु॥ जोचेतन प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंकूंधारणकरे है ॥ तथा वारंवार
जन्ममरणकीप्राप्तिरूप संसारकूंप्राप्तहोवे है ॥ तथा शुभअशुभफलकूंप्राप्तहोवे है ॥ तथा बंधकीनिवृत्तिरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ ताचेतनका
नाम जीवहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥ यासर्वदेहधारीजीवोंका आपणेआपणेअंगुष्ठपरिमाण हृदयकमलहोवे है ॥ ताहृदयकमलविषे ज्ञानशक्तिवाला
अंतःकरण सर्वदारहै है ॥ ताअंतःकरणकेसाथ जोचेतन तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोवे है ॥ ताअंतःकरणउपहितचेतनकानाम जीवहै ॥
शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोअंतःकरणकूंहीं जीवकाउपाधिरूपअंगीकारकरोंगे ॥ तौ सुषुप्तिअवस्थाविषे ताअंतःकरणकानाशहोइजावे है ॥
यातैं ताजीवकाभी तहांनाशहोणाचाहिये ॥ और सुषुप्तिविषे ता जीवकानाशसिद्धांतमेंअंगीकारहैनहीं ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ सुषुप्ति
अवस्थाविषेभी ताअंतःकरणका सर्वथा नाशहोवैनहीं ॥ किंतु तासुषुप्तिअवस्थाविषेभी सोअंतःकरण संस्कारभूतसूक्ष्मवासनारूपकरिके
बन्यारहैहै ॥ काहेतें तासुषुप्तितैंपूर्वकालविषे जिसप्रकारकाअंतःकरण प्रतीतहोवे है ॥ तिसीप्रकारकाअंतःकरण तासुषुप्तितैंउत्तरजाग्रत्
कालविषेभी प्रतीतहोवे है॥जोकदाचित् सोअंतःकरण तासुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वथानाशकूंप्राप्तहुआहोवे ॥तौ पूर्वदिनकेअंतःकरणतैं उत्तर
दिनका अंतःकरण विलक्षण प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और सोअंतःकरण विलक्षण प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावे है॥सोअंतःकरण सु
षुप्तिअवस्थाविषे नाशकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अंतःकरणकूं तथा अंतःकरणकेवासनावोंकूं जोकदाचित् ताजीवात्माका

उपाधिरूपअंगीकारकरोगे॥तो तेअंतःकरण तथावासना अनेकहैं॥यातैं तेजीवभी अनेकहोवैंगे॥और॥अजोह्येकोजुषमाणोनुशेते॥इत्यादिक श्रुतियोंविषे एकहीजीवकह्याहै तिनश्रुतियोंकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु॥तामायाविशिष्टपरमात्मादेवरूपकारणविषे याअंतः करणवासनाविशिष्टजीवका तादात्म्यसंबंध शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं कथनकऱ्याहै ॥याकारणतैंही अंतःकरणादिरूपकार्यकेसाथ ताजीवात्माका तादात्म्यअध्यास विनाहीप्रयत्नतैं प्राप्तहोवे है ॥ जोकदाचित् ताअंतःकरणकेकारणकेसाथ याजीवात्माका तादात्म्यसंबंधनहींहोवे॥तो ता अंतःकरणकेउदयकालविषेही ताजीवात्माका जोअंतःकरणकेसाथ तादात्म्यअध्यासहोवे है ॥ सोनहींहोणाचाहिये॥हेश्वेतकेतु॥ताअंतःक रणकीउत्पत्तिहुए तथानाशहुएभी याजीवात्माका उत्पत्तिनाशहोवैनहीं ॥किंतु सोजीवात्मा सर्वदा एकरूपही है॥हेश्वेतकेतु॥यद्यपि भिन्न भिन्नअंतःकरणोंविषेस्थितहोइके सोजीवात्मा भिन्नभिन्नरूपकरिके प्रतीतहोवे है॥तथापि सोजीवात्मा तिनअंतःकरणोंकेकारणभूतअज्ञान केसाथभी तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोवे है॥सोअंतःकरणकीवासनावोंकाआधारभूतअज्ञान एकही है ॥ और आत्मज्ञानतैंविना ताअज्ञानका नाशभीहोवैनहीं ॥ ऐसेअज्ञानरूपउपाधिकूं ग्रहणकरिकेही शास्त्रवेत्तापुरुष ताजीवात्माकूंएककहेहैं ॥ तथानित्यकहे हैं ॥ और हेश्वेतके तु ॥ जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंका निमित्तकारणभूत जेसंस्काररूप कर्मवासनाहैं ॥ तथा वृत्तिज्ञानरूपअंतःकरणका निमित्त कारणभूत जे संस्काररूप ज्ञानवासनाहैं ॥ तिनसर्ववासनावोंकाआश्रय अज्ञानहै ॥ ताअज्ञानरूपआश्रयकेनाशकरिके जभी तिनसर्व वासनावोंकानाशहोवे है ॥ तभी यहजीवात्मा मोक्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ अब अन्वयव्यतिरेककरिके तावासनावोंकेनाशविषे मोक्षकीकारणता निरूपणकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे याभूमिविषेस्थित जितनेकीवृक्षहैं ॥ तिनवृक्षोंविषे जिसवृक्षका मूलबीज नाशहोवे है॥सोवृक्षही नाश कूं प्राप्तहोवे है ॥ दूसरेवृक्ष नाशकूंप्राप्तहोवेनही ॥ तैसे यामायाविषेस्थित जितनेंकीजीवहैं ॥ तिनजीवोंविषे जिसजीवकेअंतःकरणकी वासनावोंकानाशहोवे है ॥ सोजीवही मोक्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जिनजीवोंकेअंतःकरणकीवासनावोंकानाश नहींहुआहै ॥ तेजीव तामोक्ष कूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु तेजीव बंधकूंहीप्राप्तहोवे हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं एकहीजीवकथनकऱ्याथा ॥ और अभीआपनैं नाना

जीव कथनकरे ॥ यातें पूर्वउत्तरवचनोंका विरोधप्राप्तहोवेगा ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहएकही स्वप्नद्रष्टा पुरुष अज्ञानकेवशतें अनेकरूपोंकूंधारणकरिके किसीरूपकरिकेतो बंधकूंप्राप्तहोवेहे ॥ तथा किसीरूपकरिके मोक्षकूंप्राप्तहोवेहे॥ तैसे यहएकही जीवात्मा मायाकेवशतें अनेकरूपोंकूंधारणकरिके किसीरूपकरिकेतो बंधकूंप्राप्तहोवेहे ॥ और किसीरूपकरिके मोक्षकूंप्राप्तहोवेहे ॥ और जैसे तास्वप्नकेनिवृत्तहुएतें अनंतर तेस्वप्नकेबंधमोक्ष तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माके साक्षात्कारहुएतें अनंतर सोबंधमोक्ष प्राप्तहोवेनहीं ॥ यातेंयहअर्थसिद्धभया॥ जीवोंका परस्परभेद तथातिनजीवोंका परमात्माकेसाथ भेद जोप्रतीतहोवेहे ॥ सोकेवल उपाधिकेसंबंधतें प्रतीतहोवेहे ॥ वास्तवतेंतो यहजीवात्मा अद्वितीयब्रह्म रूपही है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहपरमात्मादेवही याजगत्विषे प्रवेशकरेहे यहजोवार्ता पूर्वआपनेंकथनकरीथी ॥ सोसंभवतीनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे परिच्छिन्नवस्तुकाही प्रवेशदेखणेमें आवेहे ॥ व्यापकवस्तुकाप्रवेश देखणेविषेआवतानहीं ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे सर्प आपणेबिलविषेप्रवेशकरेहे ॥ तैसे यहपरमात्मादेव जगत्विषेप्रवेशकरेनहीं ॥ किंतु जैसे सर्वत्रव्यापकहुआभी यह आकाश घटादिकउपाधियोंविषे प्रवेशकरेहे॥तैसे सर्वत्रव्यापकहुआभी यहपरमात्मादेव तिनतेजादिकभूतोंविषेप्रवेशकरेहे॥और हेश्वेतकेतु॥जैसे सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहुआयहपुरुष सामान्यरूपतें यद्यपि याशरीरविषेप्रविष्टहुआहे ॥ तथापि विशेषरूपतें प्रविष्टहुआनहीं ॥ और सोईहीपुरुष पुनः जाग्रत्अवस्थाविषे विशेषरूपकरिकेयाशरीरविषे प्रवेशकरेहे ॥ तैसे तेज जल पृथिवी यातीन भूतोंविषे सोपरमात्मादेव यद्यपि सामान्यरूपकरिके पूर्वही प्रविष्टहुआहे॥तथापि विशेषरूपकरिके पूर्व प्रविष्टहुआनहीं॥और सोईही परमात्मादेव पुनः तिनतेजादिकोंविषे जीवात्मारूपविशेषस्वरूपकरिके प्रवेशकरेहे ॥ और सोपरमात्मादेव ताविशेषरूपकरिके प्रवेशकरणेवासते याप्रकारकाविचार करताभया॥आपणेआपणेकार्यविषे प्रविष्टहुए जेयह तेजजलपृथिवीरूपतीनभूतहैं॥ तिनोंविषे मैंपरमात्मादेव आपणेजीवरूपतेंप्रवेशकरिके नाम रूप यादोनोंकूं विविधप्रकारकाकरों ॥तथा तानामरूपकूं स्पष्टकरों ॥ और तानामरूपकेविविधप्रकारकरणेविषे तथास्पष्टकरणेविषे याप्रकारकाउपाय हमारेकूंप्रतीतहोवेहे ॥ तेज जल पृथिवी यहजे

तीनभूतरूपदेवताहैं ॥ तिनोंविषेप्रवेशकरिके मैंपरमात्मादेव तिसएकएकभूतकूं नवनवप्रकारकाकरों ॥ तिनभूतोंकूं नवनवप्रकारकरणे
तैंहीं यहनामरूपदोनों स्पष्टभावकूंप्राप्तहोवैं गे ॥ तिसतैंहीं यहसर्वजगत् उत्पन्नहोवैगा॥इसप्रकारकाविचारकरिके सोपरमात्मा देव तिसी
प्रकार करताभया ॥ तात्पर्ययह॥तेज जल पृथिवीयातीनभूतोंविषे एकएकभूतके तीनतीनविभाग समानकरे ॥ तहांतिनतीनोंभूतोंकेदोदो
विभागतो पृथक्पृथक्राखे ॥ और तिनभूतोंके तीसरे तीसरेविभागके पुनःतीनतीनविभागकरे ॥ तिनतीनोंविभागोंविषे एकएकविभागकूं
यथाक्रमतैं तिनतीनभूतोंकेदोदोविभागोंविषेमिलाया॥ इसप्रकार तेजादिकभूतोंके आपणेआपणेतोंसप्तसप्तविभागहोवे हैं॥और दूसरेभूतोंके
दोदोविभागहोवैहैं ॥ याहीप्रक्रियाकूं छांदोग्यश्रुतिविषे त्रिवृत्करण यानामकरिकेकथनकऱ्याहे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोआरुणिपिता ता
श्वेतकेतुपुत्रकेप्रतिअध्यारोपभूत त्रिवृत्करणरूपसृष्टिकाकथनकरिके यहकार्यजगत् कारणमात्ररूपहे याप्रकारकेअपवादकेकहणेवासते
अग्नि आदित्य चंद्रमा विद्युत् यहचारदृष्टांत कथनकरताभया ॥ हेश्वेतकेतु अग्नि आदित्य चंद्रमा विद्युत् याचारोंविषे जोरक्तरूप
प्रतीतहोवैहे ॥ सोरक्तरूप तासप्तभागवालेतेजकाहीजानणा ॥ और तिनअग्निआदिकचारों विषे जोशुक्लरूप प्रतीतहोवे है सोशुक्लरूप
ताजलकेअष्टमभागका जानणा॥ और तिनअग्निआदिकचारोंविषे जोकृष्णरूप प्रतीतहोवैहे॥सोकृष्णरूप पृथिवीकेनवमभागकाजानणा ॥
इसप्रकारतेअग्निआदिकचारों तेज जल पृथिवी यहतीनभूतरूपही हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे रक्तरूपवालाजोतेजहे तथाशुक्लरूपवालाजोजलहे
तथाकृष्णरूपवालीजापृथ्वीहे ॥ यातीनोंकारणकूं जभी तिनअग्निआदिककार्योंतैंभिन्नकरिये ॥ तभी तेअग्निआदिककार्य प्रती
तहोवैंनहीं ॥ याकारणतैं तेअग्निआदिककार्य मिथ्याही हैं ॥ तैसे जलरूपजेनदीआदिकहैं ॥ तथा पृथ्वीरूपजेपर्वतादिकहैं ॥
[illegible]भी पूर्वकहीरीतिसैं तेज जल पृथ्वी यातनिभूतोंकेहीकार्य हैं ॥ तिनतेजादिककारणोंकूं जभीतिननदीपर्वतादिककार्योंतैं पृथक्करिये ॥
[illegible]भी तेनदीपर्वतादिककार्य प्रतीतहोवैंनहीं यातैं तेनदीपर्वतादिकपदार्थभी मिथ्याही हैं ॥ काहेतैं तेअग्निआदिकविकार केवलवाणीमात्र
करिकेहीसिद्धहैं ॥ वास्तवतैं तेअग्निआदिकविकार हैंनहीं ॥ यातैं तेज जल पृथिवी यातीनकारणोंतैंभिन्नकरेहुए तेअग्निआदिक

विकार मिथ्याहीहोवे हैं ॥ यातें तिनअग्निआदिकविकारोंकेकारणरूपजे तेजादिकतीनभूतहैं तेतीनभूत तिनविकारोंकीअपेक्षाकरिकेसत्यरू
पहैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे अग्निआदिकविकार कार्यरूपहोणेतें मिथ्याहैं ॥ तैसे तेज जल पृथिवी यहतीनभूतभी कार्यरूपहोणे तें मिथ्याही
हैं ॥तिनमिथ्यातेजादिकभूतोंका जोपरमात्मादेवरूपकारणहै ॥ सोपरमात्मादेवही सत्यहै ॥ तापरमात्मादेवतेंभिन्न यहसर्वजगत् मिथ्या
हीं है ॥ तासत्यपरमात्मादेवकेज्ञानतेंहीं यासर्वजगत्काज्ञानहोवे है ॥ अब याहीअर्थविषे विद्वान्पुरुषोंकाअनुभव निरूपणकरे हैं ॥ हे
श्वेतकेतु ॥ इसप्रकार कारणकेसत्यरूपताकूंजाणिके परमहर्षकूंप्राप्तहुए केईकविद्वान्ब्राह्मण परस्परमिलिके पूर्व याप्रकारकेवचन कहते
भयेहैं ॥ हमविद्वान्ब्राह्मणोंके वियारूपकुलविषे जितनेकोपुरुष उत्पन्नहोवेंगे ॥ तिनोंविषे कोईभीपुरुष किसीअज्ञातवस्तुका कथनकरेंगा
नही ॥ किंतु सोपुरुष कारणकेसत्यरूपताकूं तथाकार्यकेमिथ्यारूपताकूं जाणिकरिके ज्ञातवस्तुकाही कथनकरेगा ॥ काहेतें यालोकवि
षे आपणेकारणतें सोकार्य किंचित्मात्रभीभिन्नहोवेनहीं ॥ यातें ताकारणकेज्ञानतें तेसर्वपुरुष सर्वज्ञताकूंप्राप्तहोवेंगे ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तिन
विद्वान्पुरुषोंका जोयाप्रकारकाकहणाहै ॥ सोअसंगतनहीं है किंतु यथार्थही है॥ काहेतें यासर्वजगत्काकारणरूपजे तेज जल पृथिवी यह
तीनभूतहैं ॥ तिनभूतोंकूंभी तेविद्वान्पुरुष भलीप्रकार जाणतेभये हैं ॥ और तिनतेजादिकतीनभूतोंकाकारणरूप जोसतपरमात्मादेव
है तापरमात्मादेवकूंभी तेविद्वान्पुरुष भलीप्रकार जाणतेभये हैं ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषोंकूं यासर्वजगत्काज्ञानहोणाकोईदुर्लभनहीं है इतनेंक
रिके अग्निआदिकबाह्यप्रपंचविषे तेजादिकतीनभूतोंकीकार्यता निरूपणकरी॥अब यास्थूलसूक्ष्मशरीरविषे तिनतेजादिकभूतोंकीकार्यता
निरूपणकरेहैं॥हेशिष्य॥इसप्रकार सोउद्दालकनामाआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याबाह्यप्रपंचविषे भौतिकपणा कथनकरिके मनप्रा
णादिकअंतरप्रपंचविषेतिनतेजादिकभूतोंकीकार्यतातथातिनभूतोंद्वारात्रह्मकीकार्यताकहणेकीइच्छाकरताहुआयाप्रकारकावचनकहताभया
॥हेश्वेतकेतु॥यालोकविषे अन्नजलकूं भक्षणकरणेहारेजितनेंकीदेहधारीजीवहैं॥तेदेहधारीजीवजिसत्रिवृतरूपअन्नकूंभक्षणकरे हैं॥तथाजिसत्रि
वृतरूपजलकूंपानकरे हैं॥सोअन्नतथाजल जठराग्निकेसंबंधकरिके पृथिवी जल तेजयातीनरूपकरिकेतीनप्रकारकाहोवे है॥हेश्वेतकेतु ॥ इस

प्रकार तीनविभागोंकूंप्राप्तहुआजो अन्नजलहै॥ताअन्नजलकाजोतैजसभागहै॥सोतैजसभागभी सूक्ष्म मध्यम स्थूल याभेदकरिकेतीनप्रकार काहोवे है॥तहां सूक्ष्मतेजसभागतो वाक्रूपकरिकेपरिणामकूंप्राप्तहोवे है॥और मध्यमतेजसभाग मज्जारूपकरिकेपरिणामकूंप्राप्तहोवे है ॥ और स्थूलतेजसभाग अस्थिरूपकरिकेपरिणामकूंप्राप्तहोवेहै॥तैसे सोजलीयभागभी सूक्ष्म मध्यम स्थूल यातीनरूपकरिके तीनप्रकारका होवे है॥तहां सूक्ष्मजलकाभागतो प्राणरूपकरिकेपरिणामकूंप्राप्तहोवे है॥और मध्यमजलकाभाग रक्तरूपकरिकेपरिणामकूंप्राप्तहोवे है॥औ रस्थूलजलकाभाग मूत्ररूपकरिकेपरिणामकूंप्राप्तहोवे है ॥ इसप्रकार सोपृथिवीकाभागभी सूक्ष्म मध्यम स्थूल यातीनभेदकरिकेतीनप्रका रकाहोवे है ॥ तहां सूक्ष्मपार्थिवभागतो मनरूपकरिकेपरिणामकूंप्राप्तहोवे है ॥ और मध्यमपार्थिवभाग मांसरूपकरिकेपरिणामकूंप्राप्तहोवे है॥ और स्थूलपार्थिवभाग पुरीषरूपकरिके परिणामकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ वाक् तेजकाकार्य है ॥ और प्राण जलकाकार्य है ॥ और मन पृथिवीरूपअन्नकाकार्य है ॥ याप्रकारके अर्थकूंश्रवणकरिके सोश्वेतकेतु आपणेपिताकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ श्वेत केतुरुवाच ॥ हेपिता ॥ अन्नजलादिरूपकूंप्राप्तभयेजे तेज जल पृथिवी यहतीनभूतहैं ॥ तेअत्यन्तस्थूलहैं ॥ और वाक् प्राण मन यहतीनों अत्यन्तसूक्ष्म हैं ॥ ऐसे तेजादिकस्थूलभूतों तैं वाकादिकसूक्ष्मोंकीउत्पत्तिसंभवेनहीं ॥ काहेतें यालोकविषे समानस्वभाववाले तंतुपटादि कोंकादी परस्पर कार्यकारणभाव देखणेविषेआवे है ॥ विलक्षणस्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभाव देखणेविषेआवतानहीं ॥ यातें हेभगवन् तापूर्वकहेअर्थकूं आपहमारेप्रति पुनः किसीयुक्तिकरिकेकथनकरो ॥ जाकरिके ताअर्थका हमारेकूं यास्तवरूपतैंज्ञानहोवे॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी ताश्वेतकेतुनें आपणेआरुणिपिताकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रका रकावचनकहताभया ॥ आरुणिरुवाच ॥ हेश्वेतकेतु ॥ स्थूलतैंसूक्ष्मकीउत्पत्तिविषे तूंदृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ जैसे यालोकविषे घनीभावक रिकेस्थूलताकूंप्राप्तभयाजोदधिहै ॥ तास्थूलदधिविषे यद्यपि मंथनकरणेतैंपूर्व तक फेन घृत यहतीनरूपप्रतीतहोवेंनहीं॥तथापि मंथनक रिके तास्थूलदधि तक फेन घृत यातीनसूक्ष्मरूपकरिकेपरिणामकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे अन्नजलभावकूंप्राप्तहुए तेज जल पृथिवी यहतीन

स्थूलभूतभी वाक् प्राण मन यातीनसूक्ष्मरूपकरिके परिणामकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और हेश्वेतकेतु जैसे मथनकरेहुए दधिका जोसूक्ष्मअंशहै ॥ सोघृतरूपकरिकेऊर्ध्वदेशकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ तैसे अन्नजलरूपकरिके जठराग्निविषेस्थित जे तेज जल पृथिवी हैं ॥ तिनतीनोंतें कथाक्रमतें वाक् प्राण मन यातीनोंकाउपादानकारणरूप सूक्ष्मअंशभी ऊर्ध्वदेशकूंप्राप्तहोवे है ॥ इसप्रकार तेज जल पृथिवी यातीनस्थूलभूतोंतें यथा क्रमतें वाक् प्राण मन यहतीनोंसूक्ष्म उत्पन्नहोवे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी ताआरुणिपितानें ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति उत्तरकह्या॥तभी सोश्वेतकेतु ताआरुणिपिताकेप्रति पुनः याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ हेपिता पूर्वआपनें वाक्विषे जोतेजरूपता कथ नकरी सोयद्यपि संभवे है ॥ काहेतें यालोकविषे जैसे जलकरिके तेजकापराभव देखणेमेंआवे है ॥ तैसे याशरीरविषे जलरूपकफधातुकी वृद्धिकरिके जभी तेजकापराभवहोवे है॥तभी सर्वदेहधारीजीवोंका सोवाक् शिथिलताकूंप्राप्तहोवे है ॥ और ताकफधातुकेवृद्धिकेअभावहुए सोवाक् स्पष्टप्रतीतहोवे है॥याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिके तावाक्विषे तेजकीकार्यता निश्चयहोइसकेहै॥तथापि प्राणविषे जलकीकार्य ता तथामनविषे पृथिवीरूपअन्नकीकार्यता किसप्रकार निश्चयकरीजावे॥ तावाककीन्याई याप्राणमनविषे कोईअन्वयव्यतिरेक देखणेमेंआ वतानहीं ॥हेशिष्य॥इसप्रकार जभी ताश्वेतकेतुनें उद्दालकपिताकेप्रतिप्रश्नकर्‍या ॥ तभी सोउद्दालकपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति ताप्राण मनविषेभी सोअन्वयव्यतिरेक दिखावताहुआ याप्रकारकावचन कहताभया ॥ आरुणिरुवाच ॥ हेश्वेतकेतु ॥ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय तथाआकाशादिकपंचभूत एकप्राण याषोडशतत्वोंकासमुदाय तप्तलोहपिंडकीन्याई चेतनकेतादात्म्यसंबंध करिकेयुक्तहुआ पुरुषनामकरिकेकह्याजावे है॥और चंद्रमाईदेवताजिसका ऐसाजोमनहै॥ सोमनहेप्रधानजिसविषे ऐसाजोसोपुरुषहै ॥ ताम नोमयपुरुषकी वेदवेत्तापुरुषोंनें षोडशकला कथनकरी हैं ॥ इहां दिनदिनविषेभोजनकर्‍याजोअन्नहै॥ ताअन्नतेंउत्पन्नभईयाजे मनकेवृत्ति योंकाउपादानकारणरूप शक्तियांविशेषहैं ॥ तिनशक्तियोंकानाम कलाहै ॥ तहां एकएकदिनविषे ताअन्नकेभक्षणकियेतें तामनविषे एकएककलाउत्पन्नहोवे है॥इसप्रकार षोडशदिनपर्यंत ताअन्नकेभक्षणकरणेतें तामनोमयपुरुषविषे षोडशकला उत्पन्नहोवे हैं॥और जोपु

रुष अन्नकूंभक्षणनहींकरेहे ॥ तिसपुरुषकी एकएकदिनविषे एकएककला नाशकूंप्राप्तहोतीजावे है ॥ षोडशदिनपर्यंत ताअन्नकेनहींभक्षणकियेतें तेसर्वेकला नाशकूंप्राप्तहोवे हैं॥याअर्थविषे तुमनें किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ परंतु यहसर्ववार्त्ता रोगरहितपुरुषविषेहीघटे है॥रोगीपुरुषविषेतो वातपित्तादिकदोषकीही साशक्तिहेविहे ॥ हे श्वेतकेतु॥यहप्राण जलतैंविना एकदिनमात्रभी याशरीरविषे स्थितहोइसकेनहीं॥और ताप्राणकेमएहुएतेंअनंतर सोअन्वयव्यतिरेक जान्याजावेनहीं ॥यातैंताअन्वयव्यतिरेककेज्ञानविषेउपयोगी जो है ॥ ताप्राणीकीरक्षाकरणेवासते तूं जलकूंतो आपणीइच्छापूर्वक पानकर॥ परंतु अन्नकूं पंचदशदिनपर्यंत तूं भक्षणमतकर॥ताअन्नकेनहींभक्षणकियेतें तूं आपही ताअन्वयव्यतिरेककूंनिश्चयकरेगा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताआरुणिपितानें श्वेतकेतुपुत्रकेप्रतिकह्या॥तभीसोश्वेतकेतु तापिताकेआज्ञाकूंमानिके पंचदशदिनपर्यंत अन्नकूंनहींभक्षणकरताभया ॥ तापंचदशदिनतैंअनंतर सोश्वेतकेतु पुनःताआरुणिपिताकेसमीपजाइके स्थितहोताभया ॥ और क्षुधाकरिकेक्षीणहुआहेमनजिसका ऐसाजोश्वेतकेतुहै ॥ ताश्वेतकेतुकूं आपणेसमीपआयाहुआ देखिके सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेपुत्र जोतुमनें पूर्व ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंके पाठका तथाअर्थका अध्ययनकऱ्याहे ॥ तिनअर्थसहितवेदोंकू हमारेसमीप कथनकरो॥ हेशिष्य ॥इसप्रकारकावचन जभी ताआरुणिपितानें श्वेतकेतुकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोश्वेतकेतु पूर्वअध्ययनकरेहुएवेदोंकाचिंतनकरताहुआभी ताकालविषे किंचित्मात्रभी तिनवेदोंकास्मरणनहीं करताभया ॥ जैसे दुर्बुद्धिपुरुष किसीभीअर्थकूं स्मरणकरिसकतानहीं ॥ तैसे सोश्वेतकेतुभी तापूर्वअध्ययनकरेहुएअर्थकूं किंचित्मात्रभी स्मरणनहींकरताभया तिसतैंअनंतर ग्लानिकरिकेयुक्तहुआ सोश्वेतकेतु आपणेआरुणिपिताकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेपिता पूर्वहमनें जिनऋगादिकवेदोंका अर्थसहितअध्ययनकऱ्याथा ॥ तेऋगादिकवेद जभी हमारेकूं प्रतीतहोतेनहीं ॥ किंतु जैसेकिसीपुरुषनें बहुतकाल पर्यंत आराधनकऱ्याजोमंत्रहे ॥ सोमंत्र तापुरुषकेभाग्यकेक्षयहुए निष्फलहीहोवे हे ॥ तैसे हमनें पूर्व जितनाकीवेदोंका अध्ययनकऱ्याथा ॥ सोसंपूर्णअध्ययन हमारा निष्फलहोताभयाहे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताश्वेतकेतुनेंकह्या ॥ तभी

सोआरुणिपिता ताबुद्धिमान्श्वेतकेतुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तूअभी अन्नकूंभक्षणकर ॥ ताअन्नकेभक्षणकिये तैंअनंतर तू तिनसर्व वेदोंकेअर्थकूं पूर्वकीन्याई जाणैंगा॥ हेश्वेतकेतु ॥जैसे महान्प्रज्वलितअग्निके अभी काष्ठादिकइंधनोंकानाशहोवे है॥ तभी अग्निके खद्योतजंतुकेसमान कोईकअंगारकण बाकीरहेहैं॥ताखद्योतकेसमानअग्निकेअंगारकणोंकरिके पूर्वप्रज्वलितअग्निकीन्याई महान्काष्ठोंकादाहरूपकार्य उत्पन्नहोवेनहीं॥तैसे पंचदशदिनपर्यंत अन्नकेनहींभोजनकरणेकरिके तातुम्हारेमनकी पंचदशकलातो नाशहो इगईयाहैं॥बाकी एककलारहीहै॥याकारणतैं सोतुम्हारामन किंचित्मात्रभीअर्थकेजानणेविषे तथा स्मरणकरणेविषे समर्थहोतानहीं ॥ यातैं तूअभी अन्नकेभोजनतैं आपणेमनके कलावोंकीवृद्धिकरिके पुनः हमारेसमीपआव॥हेशिष्य ॥ इसप्रकारकेपिताकेवचनकूंअंगीकारकरिके सोश्वेतकेतु अन्नकूंभोजनकरिके पुनः आपणेपिताकेसमीपआताभया ॥ ताश्वेतकेतुपुत्रकूंदेखिके सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रतैं पुनःपूर्व अध्ययनकरेहुएवेदोंकाअर्थ पूछताभया॥तिसतैं अनंतर सोश्वेतकेतु ताआरुणिपिताकेप्रति सोसर्व वेदोंकाअर्थ कथनकरताभया॥ हेशिष्य॥इसप्रकार सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति अन्नकेअभावहुए मनकाभी अभावहोवे है याप्रकारकेव्यतिरेककूंअग्निकेदृष्टांततैंकथन करिके तिसतैंअनंतर अन्नकेविद्यमानहुए मनकोभीविद्यमानताहोवे है याप्रकारकेअन्वयकूं तिसीअग्निकेदृष्टांततैं कथनकरताहुआ याप्रकार कावचन कहताभया॥हेश्वेतकेतु॥जैसे सोखद्योतकेसमानसूक्ष्मअंगार सूक्ष्मशुष्कतृणोंकेपावणेकरिके शनैःशनैः वृद्धिकूंप्राप्तहोइके महान्शुष्ककाष्ठोंकूं तथामहान्आर्द्रकाष्ठोंकूंभी दाहकरिसकेहैं॥तैसे आहारकेग्रहणतैंपूर्व जोतुम्हारामन एककलामात्र बाकीरह्याथा॥सोईहीतुमारा मन अभीआहारकेग्रहणकरणेतैं पुनःसर्वज्ञताकूं प्राप्तहुआहै॥याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिके तुमनैंभी आपणेमनविषे अन्नमयता निश्चय करीहै॥हेश्वेतकेतु॥जैसेवाक्विषे तथामनविषे अन्वयव्यतिरेककरिके तुमनैं तेजोमयता तथाअन्नमयता निश्चयकरीहै॥तैसे प्राणविषेभी तुमनैं जलमयता निश्चयकरणी॥काहेतैं जैसे अन्नतैंविना मनकाक्षयहोवे है ॥ तैसे जलतैंविना प्राणकाभीक्षयहोवे है॥इतनैंग्रंथकरिके सर्वजगत्काकारणरूप जो अद्वितीयब्रह्महै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मरूप तत्पदार्थकाशोधन निरूपणकऱ्या ॥ अब ता तत्पदार्थविषे प्रत्यक्आत्मा

रूप त्वंपदार्थरूपता निरूपणकरेहैं ॥ तहां त्वंपदार्थरूपआत्माविषे साप्रत्यक्‌रूपता तीनप्रकारकी वेदांतशास्त्रोंविषेकथनकरीहै॥तहांएक तो अंतःकरणादिकोंविषेस्थित चिदाभासकीविंबरूपताकरिकै प्रत्यक्‌रूपताकहीहै ॥ और दूसरा शरीरकीअधिष्ठानतारूपकरिकै प्रत्यक्‌रूपता कथनकरीहै ॥ और तीसरा इंद्रियोंकीअधिष्ठानतारूपकरिकै प्रत्यक्‌रूपता कथनकरीहै ॥ तहां प्रथमप्रत्यक्‌रूपताकूं याछांदोग्यश्रुतिविषे शकुनिपक्षीकेदृष्टांतकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ ताका अभीनिरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥पूर्वकहीरीतिसैं वाक् प्राण मन आदिकोंकेउपादानकारणरूप अद्वितीयब्रह्मकूंनिश्चयकऱ्याहै जिसनें ऐसाजो श्वेतकेतुहै॥ता श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति सोउद्दालकनामाआरुणिपिता त्वंपदार्थआत्माकेशोधनकरणेवासतैं पुनः याप्रकारकावचन कहताभया॥हेश्वेतकेतु॥पूर्वहमनैंतुमारेप्रति जोमन अन्नमयरूपकरिकेकथनकऱ्याहै॥तिसमनकाही यहतेजजलपृथिवीरूपसर्वजगत् विलासहै॥तिसमनकेविद्यमानहुएही यहपुरुष वारंवार अध्यासरूपमोहकूंप्राप्तहोवे है॥जोकदाचित् यहमन नहींहोवे ॥ तो तामनविषेप्रतिबिंबरूप मोहकूंभी यहजीव प्राप्तहोवैनहीं ॥ ताप्रतिबिंबरूपमोहकेअभावहुए याजीवात्माकूं रागद्वेषादिकविकारभीप्राप्तहोवेनहीं ॥ तिनरागद्वेषादिकविकारोंकेअभावहुए यहजीवात्मा पुनःसंसारकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहचिदाभासयुक्तमनही यासर्वजगत्‌कानिर्वाह करणेहाराहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यामनकूंभी उपादानकारणतारूपकरिकै आपणेवशविषेस्थापनकरणेहारा कौनवस्तुहै ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु कारणरूपजोप्रथमशरीरहै सोकारणशरीरही यामनकूं आपणेवशकरणेहाराहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम तीनप्रकारकेशरीरोंका निरूपणकरेहैं स्थूलशरीर सूक्ष्मशरीर कारणशरीर यहतीनप्रकारकेशरीरहोवै हैं ॥ तहां प्रथम कारणशरीरका निरूपणकरे हैं ॥ सर्वदेहधारीजीवोंका जोअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकानाम कारणशरीरहै ॥ सोअज्ञान एकहोणे तैं सर्व देहधारीजीवोंकूं साधारणहै ॥ तथा सर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ याकारणतैं सोअज्ञानरूपकारणशरीर स्थूलसूक्ष्म शरीरोंकी अपेक्षाकरिकै उत्कृष्टहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ताअज्ञानरूपकारणशरीरविषे कौनप्रमाणहै ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ यहसर्व देहधारी जीव सुषुप्तितैं उठिकै याप्रकारकास्मरणकरेहैं ॥ जोहम सुखीसोतेभये तथाकिंचित्‌मात्रभीनहींजाणतेभये यासर्वलोकोंकेस्मरणतैं यह

जान्याजावेहे ॥ जोयहजीव सुषुप्तिअवस्थाविषेजाइके तहां सर्वदुःखोंतेंरहितआनंदकूंअनुभवकरेहै॥ तथा अज्ञानकूंअनुभवकरे हैं ॥ ताअ
नुभवजन्यसंस्कारोंतेंही याजाग्रत्अवस्थाविषे ताआनंदकी तथाअज्ञानकी स्मृतिहोवेहे ॥ यातें याजीवोंकेजाग्रत्अवस्थाकेस्मरणरूपहेतु
तें अनुमानकर्याजोसुषुप्तिकाअनुभवहे ॥ ताजीवोंके अनुभवकरिकेही सोअज्ञानरूपकारणशरीर सिद्धहोवेहे ॥ अब सूक्ष्म शरीरका नि
रूपणकरे हैं॥हेश्वेतकेतु॥ताकारणअज्ञानविशिष्टआत्मादेवतें आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूत तथामनइंद्रियादिकभौतिकपदार्थ उत्पन्नहोवेहैं ॥
तिनसमष्टिसूक्ष्मपदार्थोंकाअभिमानीजोहिरण्यगर्भ हे॥ताहिरण्यगर्भकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अधिदेवयानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ ओर मनहैप्र
धानजिसविषे ऐसाजोव्यष्टिसूक्ष्मकाअभिमानी तेजसहे ॥ तातेजसकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अध्यात्म यानामकरिके कथनकरेहैं ॥ अब स्थूलश
रीरकावर्णनकरे हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तिनसूक्ष्मभूतोंतें यहस्थूलभूत उत्पन्नहोवेहे॥तथा स्थूलशरीरादिकभौतिकपदार्थ उत्पन्नहोवेहैं ॥ तिनस
मष्टिस्थूलभूतभौतिकपदार्थोंकेअभिमानीदेवताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विराट् यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ ओर व्यष्टिस्थूलकेअभिमानीकूं
शास्त्रवेत्तापुरुष विश्व यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ तहांविराट्तो अधिदेवरूपहे ॥ ओर विश्व अध्यात्मरूपहे ॥ अब जाग्रतादिकतीनअव
स्थावोंकेआश्रयका निरूपणकरे हैं ॥ हेश्वेतकेतु यासर्वदेहधारीजीवोंकूं भिन्नभिन्नरूपकरिके जोआपणाआपणास्थूलशरीर प्रतीतहोवेहे
॥ सोयहस्थूलशरीरतो जाग्रत्अवस्थाका स्थानहोवेहे ॥ ओर सूक्ष्मशरीर स्वप्नअवस्थाका स्थानहोवेहे ओर तास्वप्नअवस्थाकाआश्र
यरूप जोअंतःकरणहे ॥ ताअंतःकरणकी दोअवस्थाहोवेहैं ॥ एकतो स्वरूपतेंअभिव्यक्तिरूपअवस्थाहोवेहे ॥ ओर दूसरी संस्काररूप
तेंस्थितिरूपअवस्थाहोवेहे ॥ ताअंतःकरणकीदोअवस्थावोंकेभेदकरिके तास्वप्नअवस्थाभी दोप्रकारकीहोवे हे ॥ तहां एकतो सस्वप्नअव
स्थाहोवेहे ॥ ओर दूसरी स्वप्नरहितअवस्थाहोवेहे ॥ तहां प्रसिद्धस्वप्नअवस्थाकूं सस्वप्नअवस्थाकहेहैं ॥ ओर प्रसिद्धसुषुप्तिअवस्थाकूं स्व
प्नरहितअवस्थाकहे हैं ॥ जिससुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वदुःखोंकालयहोवेहे ॥ काहेतें तासुषुप्तिअवस्थाविषे यहप्रतिबिंबरूपजीव आपणे
बिंबरूपपरमात्मादेवविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे हे ॥ केसाहेसोपरमात्मादेव ॥ परमआनंदस्वरूपहे ॥ तथा सर्वभेदतेंरहितहे ॥ याकारण

तैंही सोपरमात्मादेव क्षुधा पिपासा हर्ष शोक जन्म मरण यापट्ऊर्मियोंतैंरहितहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवविषे लयभावकूंप्राप्तहोइके यहजीवभी सर्वदुःखोंतैंरहितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे दर्पणरूपउपाधिकेलयहुए तादर्पणविषेस्थितप्रतिबिंब आपणेवास्तवस्वरूप बिंबविषेलय होवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तामनरूपउपाधिकेलयहुए तामनविषेस्थितप्रतिबिंबरूपजीव आपणेवास्तवस्वरूपपरमात्मादेवरूपबिंबविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेश्वेतकेतु॥कोईक बुद्धिमानपुरुष लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिके याअवस्थाकूं स्वपिति यानामकरिकेकथन करैहैं ॥ और कोईक विद्वान्पुरुषतो याप्रकारकावचनकहेहैं ॥ यहस्वपितिनाम ताअवस्थाकावाचकनहीं है ॥ किंतु सोस्वपितिनाम तापरमात्मादेवकाहीवाचकहै ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा जिसआपणेवास्तवस्वरूप परमात्मादेवकूंप्राप्तहोवे है ॥ तिसपरमात्मादेवकूं श्रुतिभगवती स्वमपीत यानामकरिकेकथनकरै है ॥ और श्रेष्ठपुरुषोंकीन्याई इंद्रादिकदेवतावोंकूं परोक्षनामही प्रियहोवे है ॥ याकारणतैं तेपरोक्षप्रियदेवता तापरमात्मादेवकूं स्वमपीत यासाक्षात्नामकरिकेकथनकरैंनहीं ॥ किंतु स्वपिति यापरोक्षनामकरिकेकथनकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु॥जैसे जाग्रत्अवस्था तथास्वप्नअवस्था यामनकाही परिणामरूपहोवे है॥तैसे तासुषुप्तिअवस्थाभी यामनकाही परिणामरूपहोवे है ॥ काहेतैं जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे जोमन पूर्वादिकदशोंदिशाविषे भ्रमणकरै है॥सोईहीमन ताभ्रमणकेपरिश्रमकरिकेयुक्तहुआ लयरूपसुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है ॥ जैसे याळोकविषे किसोपुरुषनें पंजरविषे दृढसूत्रकरिकेबांध्याहुआजोशकुनिपक्षीहै ॥ सोशकुनिपक्षी आहारकीकामनाकरिके तापंजरकेअंतरदेशविषेही आपणेपक्षोंकूंचलायमानकरिकेउडेहै ॥ ताकरिके सोशकुनिपक्षी आहारकूंप्राप्तहोइके अथवा नहींप्राप्तहोइके जभी परिश्रमकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोशकुनिपक्षी तापंजरकेमध्यदेशविषे आपणेबैठणेकेस्थानकूंप्राप्तहोइके पूर्वभ्रमणकालकेदुःखतैंरहितहोइके तथानिश्चलहोइके लीनहुएपुरुषकीन्याई तहांस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहमनभी पुण्यपापकर्मरूपसूत्रकरिके याशरीररूपपंजरविषे हृदयदेशविषेबांध्याहुआहै ॥ तथा रागरूपक्षुधाकरिके उत्पन्नभयेजे अध्यात्म अधिदेव अधिभूत यहतीनप्रकारकेदुःखहैं ॥ तिनदुःखोंकरिकेतपायमानहै ॥ ऐसामनरूपशकुनिपक्षी विषयसुखोंकीप्राप्तिवासतैं

जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे सर्वदा भ्रमणकरे है ॥ ताभ्रमणकरिके जभी सोमन अत्यन्तपरिश्रमकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथा ताजाग्रत्स्वप्नकेभोगदेणेहारेकर्मोंका जभीक्षयहोवै है ॥ तभी सोमन तापरिश्रमकीनिवृत्तिकरणेवासते ताहृदयदेशविषे सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तासुषुप्तिअवस्थाविषे कारणअज्ञानउपहित जोआनंदस्वरूप परमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेवही ताइंद्रियोंसहितमन के लयकास्थानहै ॥ ताअज्ञानउपहित परमात्मादेवतैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ तामनकेलयकास्थाननहीं है ॥ यातैं यहमन ताअज्ञानउप हितपरमात्मादेवकूंछोडिके दूसरेकिसीवस्तुकूं आश्रयणकरतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ तासुषुप्तिअवस्थाविषे सोमनतो कारणअज्ञानविषेलय होवै है ॥ और तामनविषे स्थितप्रतिबिंबतो परमात्मारूपबिंबविषेलयहोवै है ॥ हेश्वेतकेतु ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहमन ताअज्ञानउपहि तपरमात्मादेवतैंविना दूसरेपदार्थकूं आश्रयणकरैनहीं ॥ याअर्थविषे यहहेतुहै ॥ आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनैंकोस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ मनकरिकेकल्पितहोणेतैं यामनकाहीकार्यरूपहैं ॥ और यालोकाविषे जोजोकार्यहोवै है ॥ सोसो कारणतैंपश्चात्भावीही होवै है ॥ जैसे घटपटादिककार्य मृत्तिकातंतुआदिककारणोंतैं पश्चात्भावीहैं॥तैसे यहस्थूलसूक्ष्मपदार्थभी तामनरूपकारणतैंपश्चात्भावी ही है ॥ ऐसेकार्यरूपपदार्थ तामनरूपकारणका किसप्रकार आश्रयहोवैंगे किंतु नहींहोवैंगे ॥ हेश्वेतकेतु ॥ सोप्रतिबिंबसहितमन सुषुप्तिअ वस्थाविषे जिसपरमात्मादेवविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोपरमात्मादेवही पूर्वउक्त तेज जल पृथिवी यातीनोंकाकारणहै ॥ तथा तिसी सत्परमात्मादेवविषे तुमनैं सर्वांतरयामीपणा जानणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ परमात्मादेवकीप्राप्तिकरिके याजीवोंके संसारबंधकोनिवृत्ति होवै है ॥ यहवेदांतशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ यातैं तासुषुप्तिअवस्थाविषे तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहुएभी याजीवोंकूं पुनःसंसारकीप्राप्तिकिसवास तेहोवै है ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ यद्यपि तासुषुप्तिअवस्थाविषे याजीवोंकूं परमात्मादेवकीप्राप्तिहोवै है ॥ तथापि तासुषुप्ति अवस्थाविषे तथामुक्तिअवस्थाविषे इतनोविशेषताहै ॥ यासुषुप्तिअवस्थाविषे कारणअज्ञानविषेलयभावकूंप्राप्तहुआभी यहमन सूक्ष्मसंस्काररूपकरिकेवाकीरहै है ॥ याकारणतैंही सोमन जाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे पुनःउत्पन्नहोवै है ॥ और मुक्तिअवस्थाविषे

तो अधिष्ठानआत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहुआसोमन पुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ काहेतें तासुक्तिअवस्थाविषे आत्मज्ञानरूपअग्निकरिके तामन केसंस्कारोंकाआश्रयरूपअज्ञान नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारकाभेद तासुक्तिअवस्थाविषे तथासुषुप्तिअवस्थाविषे विद्यमानहै ॥ यातें सुषुप्तिअवस्थाविषे तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहुएभी पुनःसंसारकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ हेश्वेतकेतु॥यहआत्मादेव यद्यपि सर्वत्रएकहीहै॥तथापि यासर्वजीवोंका सोमन एकनहीं है ॥ किंतु तेमन अनेकहैं ॥ और सुखदुःख बंधमोक्ष इत्यादिकसर्वधर्म मनकेहीहोवै हैं ॥ यातें यालोकवि षे कोईसुखीहै कोईदुःखीहै कोईबद्धहै कोईमुक्तहै इत्यादिकसर्वव्यवस्था बनिसकेहै ॥ इतनैंकरिके मनविषेस्थितजोचिदाभासहै ताचिदाभा सका बिंबरूपत्वकरिके ताआत्माविषे प्रत्यक्रूपता निरूपणकरी ॥ अब शरीरकाअधिष्ठानत्वरूपकरिके ताआत्माविषे प्रत्यक्रूपताका निरूपणकरे हैं ॥इहांसर्वतैंअंतरपणेकानाम प्रत्यक्रूपताहै॥हेश्वेतकेतु॥ सुक्तिकीअपेक्षाकरिके किंचित्न्यूनतावाली जासुषुप्तिअवस्था हम नें तुमारेप्रतिकथनकरीहै॥सासुषुप्तिअवस्था जैसे वासनारूपमनद्वारा आनंदस्वरूपआत्माकेसंबंधवालीहै ॥ तथा बिंबप्रतिबिंबकेएकताज्ञा नरूपफलवालीहै॥तैसे दूसरी स्वप्नजाग्रत्रूपअवस्थाभी तामनद्वारा आत्माकेसंबंधवालीहै ॥ तथा बिंबप्रतिबिंबकेएकताज्ञानरूपफलवाली है॥हेश्वेतकेतु॥वास्तवतैं सर्वनामरूपतैंरहितहुआभी यहआत्मादेव तिसस्थूलशरीरकेअभिमानवालीजाग्रतअवस्थाविषे तथासूक्ष्मशरीर केअभिमानवालीस्वप्नअवस्थाविषे अशनाया उदन्या यादोनोंनामोंकूंप्राप्तहोवै है॥जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे सोआत्मादेव स्वपिति यानामकूं प्राप्तहोवै है॥हेश्वेतकेतु॥ अशनाया उदन्या यहदोनोंनाम जो आत्माविषेप्रवृत्तहोवैं हैं ॥ सो प्राणरूपउपाधिकूंलेकरिकेही प्रवृत्तहोवैं हैं ॥ काहेतें या आनंदस्वरूपआत्माविषे साक्षात्क्षुधाभीनहीं है॥तथा पिपासाभीनहीं है ॥ किंतु तेक्षुधापिपासा साक्षात्तो प्राणविषेहीरहेहैं ॥ और यहप्राण सर्वशरीरविषेव्यापकहै ॥ यातें यहप्राण सर्वजीवोंकेउदरविषेस्थितअन्नजलकूं नाडीद्वारा सर्वअंगोंविषेलेजावै है ॥ याकारण तें अशनाया उदन्या यहदोनोंनाम मुख्यवृत्तिकरिके ताप्राणविषेहीघटेहैं ॥ और ताप्राणकेसाथ आत्मादेवका तादात्म्यसंबंधहै ॥ यातें ताप्राणद्वारा तेदोनोंनाम आत्माकेभीहोवै हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ अशनाया उदन्या यहदोनोंनाम यद्यपि आत्माकीअपेक्षाकरिकेतो

प्राणविषेहीमुख्यहैं ॥ तथापि जल तेज यादोनोंकीअपेक्षाकरिके तेदोनोंनाम ताप्राणविषेभी मुख्यनहीं है ॥ किंतु जलतेजविषेही तेदोनों नाम मुख्यहैं ॥ काहेतें भोजनकऱ्येहुएअन्नकूंतो यहजलही द्रवीभावकरिके लेजावैहै ॥ याकारणतें तिनजलोंकूं अशनाया यानामकरिके कथनकरे हैं ॥ और पानकरेहुएजलकूं यहशोषणकरणेहारातेज लेजावैहै ॥ याकारणतें तातेजकूं उदन्या यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ जैसे यालोकविषे जेपुरुष गौवोंकूंलेजावैहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं गोनाया यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और जेपुरुष अश्वोंकूंलेजावे हैं ॥ तिनपुरुषोंकूं अश्वनाया यानामकरिकेकथनकरे हैं॥ तैसे यहजलभी द्रावकस्वभाववालेहोणेतें भक्षणकरेहुएअन्नकूं लेजावैहैं ॥ यातें तिनजलोंकूं श्रुतिभगवती अशनाया यानामकरिकेकथनकरेहै ॥ और यहतेज शोषणस्वभाववालाहोणेतें पानकरेहुएजलकूंलेजावैहै ॥ याकारणतें श्रुति भगवती ता तेजकूं उदन्या यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और याआनंदस्वरूपआत्मादेवका ताजलकेसाथ तथातेजकेसाथ तादात्म्य अध्यासहै ॥ याकारणतें ताजलतेजद्वारा सोआत्मादेवभी तिनदोनोंनामोंकरिकेकथनकऱ्याजावैहै॥अब तासत्परमात्मादेवविषे सर्वतेंअनंतररूपता बोधनकरणेवासते प्रथम कार्यकारणोंके परंपराकावर्णनकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतु तूं प्रथम यास्थूलशरीरकूंकार्यरूपकरिकेजाण ॥ तिसतेंअनंतर तूं अन्नकूं कार्यरूपकरिकेजाण॥तिसतेंअनंतर तूं पृथिवीकूं कार्यरूपकरिकेजाण ॥ तिसतेंअनंतर तूं जलकूं कार्यरूपकरिके जाण ॥ तिसतेंअनंतर तूं तेजकूं कार्यरूपकरिकेजाण ॥ हे श्वेतकेतु ॥ शरीर १ अन्न २ पृथिवी ३ जल ४ तेज ५ यापंचकार्योंविषे जोपंचमातेजरूपकार्यहै ॥ तातेजरूपकार्यकातो पूर्वउक्तसत्वस्तुही मूलकारणहै ॥ और सोतेज जलकामूलकारणहै ॥ और सोजल पृथिवीका मूलकारणहै ॥ और सापृथिवी अन्नकामूलकारणहै ॥ और जलतेजकरिके परिणामकूंप्राप्तकऱ्याहुआ सोअन्न याशरीरकामूलकारणहै ॥ और हेश्वेतकेतु ॥ जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षोंका एकमूलहोवैहै॥और दूसरा अंकुरहोवैहै॥तैसे श्रुतिभगवतीनें शुंगपदकरिके यहशरीरादिकविकारतों अंकुररूपकरिकेकथनकरे हैं॥ और अन्नतेंलेके सत्यवस्तुपर्यंतपदार्थ मूलरूपकरिकेकथनकरे हैं ॥ यातें जैसे अंकुररूपलिंगकरिके मूलकाअनुमानहोवैहै॥तैसे याशरीररूपकार्यकरिके तूं अन्नरूपमूलकारणकूंनिश्चयकर ॥ तथा ताअन्नरूपकार्यकरिके तूं पृथिवीरूपमूल

कारणकूंनिश्चयकर ॥ तथा तापृथिवीरूपकार्यकरिकै तूं जलरूपमूलकारणकूंनिश्चयकर॥तथा ताजलरूपकार्यकरिकै तूं तेजरूपमूल कारणकूंनिश्चयकर ॥ तथा तातेजरूपकार्यकरिकै तूं तापरमात्मारूपमूलकारणकूंनिश्चयकर ॥ हेश्वेतकेतु ॥ सोपरमात्मारूपसत्वस्तुही यासर्वभूतभौतिकजगत्केउत्पत्तिकाकारणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तासत्वस्तुकूं मूल यानामकरिकैकथनकरै है॥ और सोसत्वस्तुही यासर्वजगत्केस्थितिकाकारणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तासत्वस्तुकूं आयतन यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और सोसत्वस्तुही यासर्वजगत्केलयकाकारणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तासत्वस्तुकूं प्रतिष्ठा यानामकरिकैकथनकरैहै॥और वास्तवतैंतौ सोसत्वस्तु मूल आयतन प्रतिष्ठा यातीनोंतैंरहितहै ॥ हेश्वेतकेतु॥ इसप्रकार जाग्रतअवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे क्षुधापिपासाकरिकैआतुर जोप्राणादिकउपाधिवालाजीवहै ॥ सोजीव पुण्यपापकर्मकेअनुसार सर्वदासुखदुःखकाहीअनुभवकरै है ॥ इतनैंकरिकै याशरीरकाअधिष्ठानत्वरूपकरिकै याआत्मादेवविषे प्रत्यक्‌रूपतानिरूपणकरी ॥ ताकरिकै त्वंपदार्थकाशोधन सिद्धभया ॥ अब मरणकालविषे इंद्रियोंकीअधिष्ठानतारूपकरिकै ताआत्मादेवविषे प्रत्यक्‌रूपतावर्णनकरतेहुए ता तत् त्वं पदार्थका अभेदवर्णनकरैहैं ॥ तहां ॥ तत्त्वमसिश्वेतकेतो॥ यहमहावाक्य नववार उद्दालकनैं श्वेतकेतुकेप्रति उपदेशकर्‌याहै ॥ ताकेविषे प्रथमवाक्यकेअर्थका निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति यापूर्वउक्ततीनअवस्थावोंविषे विचरणेहारा यहजीवात्मा अज्ञानकेवशतैं अनेकशरीरोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तथा अनेकशरीरोंकापरित्यागकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहजीवात्मा किसप्रकार तिनशरीरोंकापरित्यागकरैहै॥समाधान॥ हेश्वेतकेतु ॥ यहजीव जिसकालविषे मरणअवस्थाकेसमीपप्राप्तहोवैहै॥तिसकालविषे यहजीव आपणेपूर्वलेपापकर्मोंकास्मरणकरिकै पश्चात्तापकरैहै तथाताउपुरुषकूं पुत्रादिकबांधव कठिनभूमिविषेशयनकरावै हैं॥तथा सर्वबांधव तापुरुषकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिकैस्थितहोवै हैं ॥ तथा सोपुरुष हिडकीकरिकैतथाऊंचेश्वासोंकरिकैयुक्तहोवै है॥तथा तापुरुषके दोनोंनेत्र ऊपरआकाशकीतरफ खुलिजावैं हैं॥तथा तापुरुषकामुख लालाकरिकैयुक्त होवैहै ॥ऐसीमरणअवस्थाकूंप्राप्तहुएपुरुषका जोनेत्रादिकइंद्रियोंसहित वाक्‌इंद्रियहै तावाक्‌इंद्रियकी आपणेकार्यकरणेकीसामर्थ्यरूपवृत्ति

तापुरुषकेमनविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ और तामनकी आपणेकार्यकरणेकीसामर्थ्यरूपवृत्ति क्रियारूपप्राणकी वृत्तिविषेलयभावकूंप्रा
प्तहोवे है ॥ और साप्राणकीवृत्ति सूक्ष्मपंचभूतोंयुक्तजीवात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ औरसो पंचभूतोंसहितजीवात्मा सुषुप्तिकीन्याई
संस्कारस्वरूपवाकीरह्याहुआ मायाउपहित आनंदस्वरूपआत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरण
अवस्थाविषे केवल संस्कारमात्ररूपबंधवाला जोयहजीवात्माहै ॥ ताजीवात्माका जोसत्वस्तु लयकास्थानहै ॥ तथा जोसत्वस्तु जी
वरूपकरिके यासंघातविषेप्रविष्टहुआहै ॥ तथा जोसत्वस्तु पूर्व तेजादिकभूतोंका कारणरूपकरिकेकथनकन्याहै ॥ सोसतवस्तुही तुमा
राआत्माहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जोसत्वस्तु तुमारा आत्माहै ॥ सोसत्वस्तु कैसाहै ॥ सूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यन्तसूक्ष्महै ॥ तथा कालआका
शादिकमहान्पदार्थोंतैंभी अत्यन्तमहान्है ॥ और जैसे रज्जुविषेकल्पितजे सर्प दंड जलधारा आदिकहैं ॥ तेकल्पितसर्पादिक रज्जुमात्र
रूपही हैं ॥ तैसे तेजजलपृथिवीरूप यासर्वजगत्का सोसत्वस्तुही वास्तवस्वरूपहै ॥हेश्वेतकेतु॥ ऐसासर्वजगत्काअधिष्ठानरूपपरमात्मा
देव तुमारेस्वरूपतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु सोपरमात्मादेव तूंहै ॥ देहादिकसंघातरूप तूनहीं है ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जोआत्मादेव बुद्धिआदिकों
कासाक्षीरूपकरिके सर्वत्र प्रतीतहोवे है ॥ तथा जोआत्मादेव अद्वितीयरूपहोणेतैं परम आनंद स्वरूपहै ॥ तथा जोआत्मादेव सर्वजड
पदार्थोंकाप्रकाशकहोणेतैं स्वयंजोतिस्वरूपहै॥ऐसा आत्मादेवही तुमारावास्तवस्वरूपहै॥यातैं तूंकर्तानहीं है ॥ तथा भोक्तानहीं है तथा
प्रमातानहीं है॥हेश्वेतकेतु॥तैंप्रियपुत्रकेताईं जोहमनैं यहहितकाउपदेशकन्याहै॥सोउपदेशतुमारेगर्वदोषकीनिवृत्तिकरणेहाराहै॥याकारणतैं
ताउपदेशकूं हमनैं आदेश शब्दकरिकेकथनकन्याहै॥दुष्टपुरुषोंकेप्रति जोराजादिकशासनाकरे हैं ताशासनाकानाम आदेशहै॥हेश्वेतकेतु
जिससर्वांतर्यामीआत्मादेवकाउपदेश हमनैंतुमारेप्रतिकन्याहै॥तापरमात्मादेवके श्रवणतैं तथामननतैं तथाविज्ञानतैंसर्वअश्रुतपदार्थोंकाभी
श्रवणहोवे है॥तथा मननकेअविषयपदार्थोंकाभी मननहोवे है॥तथा अविज्ञातपदार्थोंकाभी विज्ञानहोवे है ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकार जभी ताउ
द्दालकपितानैं ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रतिजीवब्रह्मकेअभेदकाउपदेशकन्या॥तभी सोश्वेतकेतुसंशययुक्तहोइके पुनःताउद्दालकपिताकेप्रति अष्ट

प्रश्नकरताभया॥और सोउद्दालकपिताभीताश्वेतकेतुपुत्रके संशयकीनिवृत्तिकरणेवासते तिनअष्टप्रश्नोंके यथाक्रमतैं अष्टउत्तरकरताभया॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ताउद्दालकमुनिनैं ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति ॥ तत्त्वमसिश्वेतकेतो॥याप्रथममहावाक्यकाउपदेशकरिके जीवब्रह्मकाअभेद निश्चयकराया ॥ तामहावाक्यकेअर्थकूंजाणिकरिकेभी ताश्वेतकेतुकूं पुनःसंशय किसवासतेहोताभया॥समाधान ॥ हेशिष्य ॥ महावाक्य कूंश्रवणकरिकेभी ताश्वेतकेतुकूं जोअष्टवार संशयहुआहे ॥ ताअष्टप्रकारकेसंशयोंविषे ताश्वेतकेतुके यहअष्टप्रकारकेकुतर्कही कारणहैं॥ जिनअष्टकुतर्कोंकूं सोउद्दालकमुनि अष्टवारमहावाक्यकेउपदेशतैं निवृत्तकरताभयाहे ॥ अब ताश्वेतकेतुकेप्रश्नरूपअष्टकुतर्कोंकानिरूपण करे हैं ॥ अथप्रथमप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन्॥पूर्वआपनें सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूं सत्वस्तुकीप्राप्तिकथनकरी ॥ याकेविषे हमारेकूं यहसंशयहोवे है॥ जोकदाचित् सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे यासर्वजीवोंकूंतासत्वस्तुकीप्राप्तिहोतीहोवै ॥ तोतेसर्वजीव तहां सत्वस्तुकूं हम प्राप्तहुएहैं याप्रकार तासत्वस्तुकूं किसवासतेनहींजाणते ॥ और तेसर्वजीव तहां स त्वस्तुकूंजाणतेनहीं ॥ यातैं तासत्वस्तुकेप्राप्तहुएभी जो सत्वस्तुकाअज्ञानहोवे है ॥ याकेविषे आपनें कोईदृष्टांतकह्याचाहिये॥जिसदृ ष्टांतकरिके ताहमारेसंशयकीनिवृत्तिहोवे है ॥१॥अथ द्वितीयप्रश्ननिरूपणम् ॥ हेभगवन् ॥ तासुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे वाकादिकसर्वइंद्रियोंकेलयहुएभी अविद्यारूपमाया तहां विद्यमानहे ॥ यातैं जैसे याळोकविषे आपणेगृहतैंबाहरआयेहुएपुरुषकूं मैंआपणे गृहतैंआयाहूं याप्रकारकाअनुभवहोवे है ॥ तैसे तासुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव तासत्वस्तुकूंप्राप्तहोइके जभी जाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी याजीवोंकूं हमसत्वस्तुतैंआये हैं याप्रकारकाअनुभव किसवासतेनहींहोता ॥ याहमारेशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतेभी आपनें कोई दृष्टांतकह्याचाहिये॥२॥अथतृतीयप्रश्ननिरूपणम्॥हेभगवन् ॥ जैसे संपूर्णनदियां समुद्रविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थावि षे तथामरणअवस्थाविषे याजीवोंका सत्वस्तुविषेलयहोवे है ॥ याप्रकार नदियोंकेदृष्टांतकरिके जोयाजीवोंका तासत्वस्तुविषेलय अंगीकारकरोगे ॥ तो जैसे समुद्रविषे लयभावकूंप्राप्तहुईनदियोंका पुनः तासमुद्रतैंउद्भवहोतानहीं ॥ किंतु तेनदियां तासमुद्रकूं

प्राप्तहोइके नाशकूँहीप्राप्तहोवे है॥तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे यहजीवभीनासत्वस्तुकूंप्राप्तहोइके नाशकूंहीप्राप्तहोवैंगे॥
तिनजीवोंकेनाशहुए तासत्यब्रह्मकीप्राप्ति किसकूंहोवेगी ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेभी आपनें कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ३ ॥ अ
थ चतुर्थप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन् ॥ यहआत्मादेव अत्यंतसूक्ष्महै ॥ यातें यहसूक्ष्मआत्मादेव यास्थूलजगत्काआधार किसप्रकारहोवे
गा ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेभी आपणे कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ४ ॥ अथ पंचमप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन् ॥ याअधिकारी
पुरुषोंकूं यहआत्मादेव श्रद्धाकरिकेही प्राप्तहोवे है ॥ याप्रकारकावचन आपने कथनकर्‍याहै ॥ साश्रद्धा अनुभवकरेहुएपदार्थविषेहोहो
वे है ॥ और जिसपदार्थका कदाचित्भी अनुभवनहींभया ॥ तिसपदार्थविषे शब्दभीप्रवेशकरिसकैनहीं ॥ तो तिसपदार्थविषे साश्रद्धा
किसप्रकारहोवैगी ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेभी आपनेंकोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ५ ॥ अथ षष्ठप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन् ॥ या
लोकविषे जोवस्तुकास्वरूप इंद्रियोंकरिकेग्रहणकरणेयोग्यहोवे है ॥ सोईहोवस्तुकास्वरूप किसीइंद्रियकरिकेग्रहणकर्‍याजावे है ॥ जैसे ने
त्रादिकइंद्रियोंकाअविषयहुआभीरस रसनइंद्रियकरिकेग्रहणकर्‍याजावे है ॥ और यहआत्मादेवतो किसीभीइंद्रियकरिकेग्रहणकर्‍याजावे
नहीं ॥ ऐसाइंद्रियोंकाअविषयआत्मा किसउपायकरिकेजान्याजावे है ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेंभी आपनें कोईदृष्टांतकह्याचा
हिये ॥ ६ ॥ अथ सप्तमप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन् ॥ जैसे मरणकालविषे अज्ञानीजीवोंकेइंद्रियादिक सूक्ष्मरूपकरिकेस्थितहोवे हैं ॥ तैसे
तामरणकालविषे जोकदाचित् विद्वानपुरुषकेभीइंद्रियादिक सूक्ष्मरूपकरिकेरहतेहोवैं ॥ तो जैसे मरणतेंअनंतर तिनअज्ञानीजीवोंका
पुनःजन्महोवे है ॥ तैसे ताविद्वान्पुरुषकाभी पुनः जन्म किसवासतेनहींहोता ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेभी आपनें कोई
दृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ७ ॥ अथ अष्टमप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन् ॥ जैसे मरणअवस्थाविषे तिनविद्वान्पुरुषोंकेवाकादिक निरवशेषलयकूं
प्राप्तहोवे हैं ॥ तैसे अज्ञानीपुरुषोंकेभी तेवाकादिक निरवशेषलयकूं किसवासतेनहींप्राप्तहोते ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेभी
आपनें कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ८ ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोश्वेतकेतु ताउद्दालकपिताकेप्रति आपणेसंशयकेजनावणेहारे अष्टप्रश्न

करताभया ॥ आगेतें सोउद्दालकमुनिभी ताश्वेतकेतुकेप्रति यथाक्रमतें तिनअष्टप्रश्नोंकाउत्तरकहताभया ॥ तहां अब प्रथमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे यालोकविषे मधुकरजंतु आपणेअपूपाकारगृहविषे नानाप्रकारकेवृक्षोंकेरसकूंलेजाइके तारसकूं मधु रूपकरिके परिणामकूंप्राप्तकरेहै ॥ तेमधुभावकूंप्राप्तहुए नानावृक्षोंकेरस मैं आम्रवृक्षकारसहूं जंबीरवृक्षकारस नहींहूं ॥ याप्रकार आपणेकूं जाणतेनहीं ॥ तैसे यासुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरनअवस्थाविषे तेनानाजातिवालेजीव तासत्वस्तुकूं प्राप्तहोइके तासत्वस्तुकेसाथ एक ताभावकूंप्राप्तहुएभी आपणेआत्माकूं विशेषरूपकरिके जाणतेनहीं॥इहां यहतात्पर्यहै॥मधुरूपदृष्टांतविषे जोआपणेस्वरूपकाअविवेकहै॥ सो आपणेजडस्वभावतेंहीहै॥और दार्ष्टांतिकजीवविषे जोआपणेस्वरूपकाअविवेकहै॥सो आपणे स्वभावतैंनहीं है॥किंतु अविद्याकृतआवर णकरिके सोअविवेककऱ्याहुआहै ॥ अथवा तामधुरूपदृष्टान्तविषे तिनरसोंतेंभिन्नभ्रमतापुरुषविषेस्थित जोअविवेकहैताअविवेककातिन रसोंविषेआरोपणहोवे है॥और दार्ष्टांतिकविषेतो अज्ञानकरिकेआवृतजीवोंविषेही सोअविवेकमुख्यहै ॥ याप्रकार तादृष्टांतदार्ष्टांतिकविषे विशेषताकेहुएभी ताविशेषताकापरित्यागकरिके केवलअज्ञानकीसमानतामात्र तिनदोनोंविषेग्रहणकरीहै॥शंका॥हेभगवन्॥तासुषुप्तिअव स्थाविषे यहजीव जोकदाचित् तासत्वस्तुकेसाथएकताकूं प्राप्तहोतेहोवें तो तासुषुप्तितैंउठेहुएतिनजीवोंकूं पुनः तिसजातिवालेशरीरकी प्राप्ति नहींहोणीचाहिये॥समाधान॥हेश्वेतकेतु॥व्याघ्रसर्पादिकजे तामसजातिवालेजीवहैं॥तथा राजादिकजे राजसजातिवालेजीवहैं॥तथा ब्रा ह्मणादिकजे सात्विकजातिवालेजीवहैं॥तेसंपूर्णजीव जिसजिसशरीरवालेहुए जासुषुप्तिविषे सत्वस्तुकूंप्राप्तहोवे है ॥ तेसंपूर्णजीव तासुषुप्तितैं उठिके तिसीतिसीशरीरकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तिसतैंविलक्षणशरीरकूंप्राप्तहोवेंनहीं॥काहेतें जैसे वर्षाकालकेनिवृत्तहुएतेंअनंतर सर्वमंडूक मृत्तिका भावकूंप्राप्तहोवे हैं॥परंतु तिनमंडूकोंकेसूक्ष्मअवयवरूपसंस्कार ताप्रथ्वीविषेरहे हैं॥जभी पुनःवर्षाकालहोवे है तभीतेमंडूक तिनसंस्कारों केवशतें पुनः तिसीतिसीशरीरकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तिसतैंविलक्षणशरीरकूं प्राप्तहोवेंनहीं ॥ तैसे तासुषुप्तिअवस्थाविषे तिनसर्वजीवोंके लयहुएभी तिनजीवोंके वासनारूपसूक्ष्मसंस्कार तहांरहेहैं तिनसंस्कारोंकेवशतेंही तेजीव सुषुप्तितैंउठिके तिसीतिसीशरीरकूंप्राप्तहो

वे हैं ॥ १ ॥ अब दूसरेप्रश्नकाउत्तरकहेहैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे यहगंगादिकनदियां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रभावकूंप्राप्तहो
वे हैं ॥ और तेनदियां पुनःमेघोंद्वारा वृष्टिरूपकरिकै तासमुद्रतैंबाहरआइकेभी हमनदियां समुद्रतैं आई हैं याप्रकार तेनदियां जाणती
नहीं ॥ तैसे यहजीव तासुषुप्तिअवस्थाविषे तासत्ब्रह्मकूंप्राप्तहोइकेभी तासुषुप्तितैंउठिके हम सत्ब्रह्मतैंआयेहैं याप्रकार जाणतेनहीं ॥
काहेतैं तासतब्रह्मकीप्राप्तिकालविषे जिसमूलाज्ञाननैं तासत्ब्रह्मकेभानका प्रतिबंधकऱ्याथा ॥ सोमूलाज्ञान याजाग्रतअवस्थाविषेभी
विद्यमानहै ॥ ताअज्ञानकरिकैमोहितहुएयहजीव तासत्ब्रह्मकूंजाणिसकतेनहीं ॥ २ अब तृतीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरै हैं हेश्वेतकेतु॥
यहजीव जिसजातिवालेहुए तासुषुप्तिअवस्थाविषे जासतवस्तुकूंप्राप्तहोवै है ॥ तासतवस्तुतैंआइके यहजीव तिसीजातिवालेहोवे हैं ॥
तिसतैंभिन्नजातिवालेहोवैंनहीं ॥ काहेतैं जोजोजीव तासुषुप्तिअवस्थाविषे सत्वस्तुकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहुएथे ॥ तिनजीवोंका जो
कदाचित् उत्थाननहींहोताहोवै ॥ तो सुषुप्तिविषे तासत्वस्तुविषेलयमात्रकरिकेही दिनदिनविषे तिनजीवोंकेदेहकापातहोणाचाहिये॥
और ऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं जेजीव तासुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तेजीवही तासुषुप्तितैंउठे हैं ॥ किंवा याजीवकानाश
किसीभीपुरुषनैंदेख्यानहीं ॥ किंतु जिसजिसपदार्थकूं यहजीव परित्यागकरै है ॥ तिसीतिसीपदार्थकानाश देखणेविषेआवैहै ॥ जैसे वृ
क्षविषेस्थितजोजीवहै ॥ सोजीव तावृक्षकीशाखावोंविषे जिसजिसशाखाकापरित्यागकरैहै ॥ तिसतिसशाखाका शोषणहोइजावै है ॥ ता
जीवतैंरहितहुई कोईभीशाखा जीवनकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे ता वृक्षविषेस्थितजीव जिसशाखाकापरित्यागकरैहै ॥
ताशाखाविषे जोकदाचित् दूसराकोईजीव प्रवेशकरै है ॥ तो सा शाखा सूखतीनहीं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव तासत्ब्रह्मकूंप्राप्त
होइके यद्यपि मुक्तहोइजावैहै ॥ तथापि कोईदूसराजीव याशरीरविषेप्रवेशकरिकै याशरीरकूंउठावै है ॥ याकारणतैं दिनदिनविषे या
शरीरकापातहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तावृक्षकेशाखाकीन्याई जोकदाचित् सुषुप्तिकालविषे याशरीरविषे दूसराकोईजी
वप्रवेशकरिकै याशरीरकूंउठावताहोवै तो यालोकविषे किसीभीशरीरकानाश नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतैं जोदूसराजीव सुषुप्तितैंअनं

तर याशरीरविषेप्रवेशकरिके याशरीरकूंउठावे है ॥ सोदूसराजीव मरणतैंअनंतरभी याशरीरविषेप्रवेशकरिके याशरीरकूंउठावेगा ॥ यातैं
यालोकविषे किसीभीशरीरकानाश नहींहोवेगा॥ सोऐसा देखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं जोजीव तासुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है ॥ सोईही
जीव तासुषुप्तितैंउठैहै ॥ कोईदूसराजीव उठेनहीं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे जोजीव सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है ॥ सोईही जीव तासुषुप्तितैंउठै है
तैसे जोजीव मरणअवस्थाविषे तासत्ब्रह्मकूंप्राप्तहोवे है ॥ सोईहीजीवतामरणअवस्थातैंअनंतर पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं दूसरेशरीरकूंप्रा
प्तहोवे है ॥ ताजीवतैंभिन्नकोईदूसराजीव तादूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवेनहीं॥इसप्रकार ताजीवरूपअधिकारीकूं नित्यहोणेतैं मोक्षशास्त्रकीभी व्य
र्थताहोवेनहीं ॥ तथा कृतनाश अकृताभ्यागम रूपदोषकीभी प्राप्तिहोवेनहीं ॥३॥ अब चतुर्थप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥
जैसे यालोकविषे अत्यंतसूक्ष्म जोवटकाबीजहै॥ सोवटकाबीज महान्वटकेवृक्षकाआधारहोवे है॥काहेतैं सोवटकावृक्ष आपणीउत्पत्तितैंपूर्व
जोकदाचित् तावटकेबीजविषे अत्यंतअसत्होवे ॥ तो अत्यंतअसत्पदार्थकी कदाचित्भी उत्पत्तिहोतीनहीं ॥ जैसे अत्यंतअसत्वंध्यापु
त्रकी कदाचित्भी उत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं सोमहान्वृक्ष आपणीउत्पत्तितैंपूर्व ताबीजविषेरहै है॥परंतु ताबीजदशाविषे सोवटकावृक्ष ता
बीजविषे स्कंध शाखा पत्र इत्यादिकभेदकरिकेप्रतीतहोवेनहीं ॥ तैसे याजगत्केसूक्ष्मसंस्कारोंयुक्तजामायाहै॥तामायाउपहित यहआत्मा
देव सूक्ष्महुआभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व यासर्वजगत्काआधारहोवे है॥परंतु याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे सोआत्मादेव विद्यमानहै
याप्रकारकानिश्चय शास्त्रदृष्टितैंरहितपुरुषोंकूंहोवेनहीं॥किंतु॥ सदेवसोम्येदमग्रआसीत्॥इत्यादिकशास्त्ररूपीचक्षुवालेविद्वान्पुरुषोंकूंही सो
निश्चयहोवे है॥४॥अब पंचमप्रश्नकेउत्तरकानिरूपणकरे हैं॥हेश्वेतकेतु॥यासर्वजगत्काउपादानकारणरूपजोआत्मादेवहै॥सोआत्मादेव यद्य
पि प्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाणोंकरिकेजान्याजावेनहीं॥तथापि यहआत्मादेव गुरुशास्त्रकेवचनोंविषेविश्वासरूपश्रद्धाकरिके जान्याजावे है॥
जैसे जलविषेस्थितजोलवणहै ॥ सोलवण यद्यपि चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकेजान्याजावेनहीं॥तथापि रसनइंद्रियकरिके सोलवण जान्याजावे
है ॥ तैसे यहआत्मादेव यद्यपि यासर्वजडप्रपंचविषे विद्यमानहै ॥ तथापि गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे विश्वासरूपश्रद्धातैंरहितपुरुष या

आत्मादेवकूंजाणिसकतेनहीं ॥ किंतु गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे श्रद्धावान्पुरुषही ॥ तत्त्वंपदार्थकाशोधनकरिके याआनंदस्वरूपचैतन्यआ
त्माकूं साक्षात्कारकरे हैं ॥ ८ ॥ अब षष्ठप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ यद्यपि यालोकप्रसिद्धइंद्रियादिकउपायोंकरिके या
आत्मादेवकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ तथापि ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशरूपअपूर्वउपायतें याआत्मादेवकासाक्षात्कार होवे है ॥ जैसे गांधारदेश
विषेरहणेहारेकिसीपुरुषकूं कोईचौरपुरुष महान्वनविषेलेआइके तापुरुषकेदोनोंनेत्रोंकूंबांधिके तावनविषेछोडतेभये ॥ और सोपुरुष पुनः
आपणेगांधारदेशकेप्राप्तिकीइच्छाकरताहुआ अत्यन्तदुःखकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तामहान्वनविषेदुःखकूंप्राप्तहुआसोपुरुष इसमहान्वन
विषे मेरेकूं चोर गांधारदेशतें लेआयेहैं याप्रकारकेआपणेवृत्तांतकूं उच्चैःस्वरतैंपुकारताभया ॥ ऐसेमहान्वनविषेपुकारतेहुएपुरुषकेसमीप
कोईमार्गविषेचलणेहारा दयालुपुरुष आवताभया ॥ सोदयालुपुरुष तापुरुषकूं वनविषे दुःखीदेखिकरिके तापुरुषकेदोनोंनेत्रोंकूंखोलता
भया ॥ और तापुरुषकेप्रति सोदयालुपुरुष याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेपुरुषइसदिशाविषेस्थितगांधारदेशतें तूं आयाहै ॥ यातें तूं
इसीदिशाविषे सुखपूर्वकचल्याजाव ॥ इसप्रकार तादयालुपुरुषकेवचनोंकूंश्रवणकरिके परमहर्षकूंप्राप्तहुआसोपुरुष तादयालुपुरुषकेवचन
विषेविश्वासराखिके तादिशाविषेचलताहुआ शनैःशनैःकरिके ताआपणेगांधारदेशकूंप्राप्तहोवे है ॥ इसप्रकार यहबुद्धिमानअधिकारीपुरुष
भी ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतें आपणेआत्मारूपदेशकूंप्राप्तहोवे है ॥ तात्पर्ययह याअधिकारीपुरुषकूं कामक्रोधादिकचोरों नें आपणेआत्मा
रूपदेशतैंलेआइके संसाररूपवनविषेप्राप्तकऱ्याहै ॥ तथा तिनकामक्रोधादिकचोरों नें यापुरुषकेसाक्षीरूपनेत्रोंका अज्ञानरूपीदृढबंधनक
ऱ्या है ॥ ताकरिके यहजीव यासंसाररूपवनविषे सर्वदाभ्रमणकरताहुआ परमदुःखकूंप्राप्तहोवे है ॥ ऐसेसंसाररूपवनविषे ब्रह्मवेत्तागुरुरूप
दयालुपुरुष जभी महावाक्यरूपआपणेहस्तकरिके याअधिकारीपुरुषकेसाक्षीरूपनेत्रका अज्ञानरूपीबंधन खोले है ॥ तभी अज्ञानरूपआ
वरणतैंरहितहुआ यहअधिकारीपुरुष आपणेअद्वितीयआत्मारूपदेशकूंप्राप्तहोवे है ॥ और ताब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतें तिनकामक्रोधादिक
चोरोंकूं यासंसाररूपवनकेप्राप्तिकाहेतुरूपजाणिकेसोअधिकारीपुरुषपुनःकभीभीतिनकामक्रोधादिकचोरोंकेवशहोवेनहीं ॥यातैंब्रह्मवेत्तागुरु

काउपदेशही याआनंदस्वरूपआत्माकेप्राप्तिकाउपायहै ॥ ६ ॥ अब सप्तमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं॥ हेश्वेतकेतु॥मरणकालविषे वाकादिकइंद्रियोंका मनादिकोंविषे स्वरूपतैंलयहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेवृत्तिरूपकरिकेलयहोवै है ॥ संस्काररूपकरिके तिनवाकादिकोंकास्वरूप तामरणकालविषेभीबन्यारहै है ॥ यहवार्त्ताजो हमनैं पूर्वतुमारेप्रतिकथनकरीथी ॥ सोअज्ञानीपुरुषोंकेमरणकेअभिप्रायतैं कथनकरीथी ॥ और विद्वानपुरुषोंकेतो ब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं तामरणकालविषे आपणेआपणेव्यापारसहित सर्ववाकादिकप्रपंचस्वरूपतैंहीलयभावकूंप्राप्तहोवै है॥याकारणतैं सोविद्वानपुरुष अज्ञानीजीवोंकीन्याई पुनःशरीरकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेश्वेतकेतु॥विद्वानपुरुषकेमरणविषे तथाअज्ञानीपुरुषकेमरणविषे यहजोहमनैं विशेषताकहीहै ॥सोशास्त्रदृष्टिकूंअंगीकारकरिकेकहीहै॥और लोकदृष्टिकरिकेतो विद्वानपुरुषोंकामरण तथाअज्ञानीपुरुषोंकामरण तुल्यही है ॥ काहेतैं यहअज्ञानीपुरुष जभी मरणकेसमीप प्राप्तहोवै है॥तभी तापुरुषकूं आपणे मातापितादिकबांधव चारोंओरतैंवेष्टनकरिके रुदनकरे हैं॥और तेबांधव तामरणहारेपुरुषकेप्रति याप्रकारकेवचनकहेहैं॥हेपुत्र प्राणकेसमानप्रिय मैंमाताकूं तूं जानताहै हेभ्राता प्राणोंकेसमानप्रिय मैंभ्राताकूं तूं जानताहै॥इत्यादिकबांधवोंकेवचन सोपुरुष तबपर्यंतश्रवणकरेहै॥जबपर्यंत तापुरुषकेवाकादिकइंद्रिय लयभावकूंनहींप्राप्तभये॥तिनवाकादिकइंद्रियोंकेलयहुएतैंअनंतर सोपुरुष किसीभीवस्तुकूंजाणतानहीं॥इसप्रकार सोविद्वानपुरुषभी जभी मरणकेसमीपकालकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी तिनवाकादिकइंद्रियोंकेलयपर्यंततो तिनबांधवोंके नानाप्रकारकेवचनोंकूंश्रवणकरेहै॥ और तिनवाकादिकइंद्रियोंके लयहुएतैंअनंतर सोविद्वानपुरुषभी किसीवस्तुकूंजाणिसकतानहीं॥ इसप्रकार लोकदृष्टिकरिके ताविद्वानकेमरणविषे तथाअविद्वानके मरणविषे समानताहुएभी यहमहान्‌विशेषताहै जो विद्वानपुरुषतो पुनः जन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और अज्ञानीपुरुष पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवै है॥७॥अबअष्टमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं॥हेश्वेतकेतु॥विद्वानपुरुषकेतथाअविद्वानपुरुषकेमरणअवस्थाकेसमानहुएभी यहविद्वान्‌पुरुषतौमरणतैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं॥और अविद्वानपुरुष मरणतैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहै॥ याप्रकारकीविशेषताविषे यहहेतुहै॥सोविद्वानपुरुषतो सत्यस्वरूपआत्मादेवकूंहीजानेहै॥और अविद्वानपुरुषतो मिथ्यारूपतीनशरीरोंकूंही

आत्मारूपकरिकेजानेहै ॥ याकारणतैंहीं सोविद्वानपुरुषतो सत्यआत्मादेवकेसाक्षात्कारकरिकै मायारूपपाशतैंरहितहुआ मरणकालविषे
वाकादिकइंद्रियोंकेलयतैंअनंतर पुनः जन्मकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और सोअविद्वानपुरुषतो मिथ्यातीनशरीरोंकूं आत्मारूपकरिकेजाणताहु
आ तामरणकालविषे वाकादिकइंद्रियोंकेलयतैंअनंतर संस्कारोंकेवशतैं पुनः शरीरकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥ यालोकविषेभी जिसपुरु
षका सत्यविषेअभिप्रायहोवेहै ॥ सोपुरुष जोकदाचित् किसीमिथ्याकलंककूंभीप्राप्तहोवेहै ॥ तोभी सोसत्यवादीपुरुष तामिथ्याकलंकतैं
मुक्तहीहोवेहै ॥ और जिसपुरुषका मिथ्याविषेअभिप्रायहोवेहै ॥ सोमिथ्यावादीपुरुष दुःखकूंहीं प्राप्तहोवेहै ॥ जैसे यालोकविषे एकचोरपु
रुषथा ॥ और दूसरा साधुपुरुषथा ॥ तिनदोनोंपुरुषोंकूं राजाकेभृत्योंनें बलात्कारसैं ग्रहणकऱ्या ॥ और यहदोनोंपुरुष चोरहैं यातैं
दंडदेणेकूंयोग्यहैं याप्रकारतेराजाकेभृत्य निश्चयकरतेभये ॥ और तेभृत्य तिनदोनों पुरुषोंकूं राजाकीसभाविषेलेजातेभये ॥ तासभाविषे
जाइके सोचोरपुरुष मैंचोरनहींहूं याप्रकार पुकारताभया ॥ और सोसाधुपुरुष भी मैंचोरनहींहूं याप्रकार पुकारताभया ॥ तिनदोनों
केवचनकूंश्रवणकरिकै तिनराजाकेप्रधानभृत्योंकूं याप्रकारका संशयहोताभया॥जोइनदोनोंविषे कोनचोरहै॥कौनसाधुहै तासंशयकेनिवृत्त
करणेवासते तेराजाकेभृत्य अग्निविषे लोहकेपरशुकूंतपाइके तिनदोनोंकेहस्तोंविषेदेतेभये ॥ तहांजोसत्यवादीसाधुपुरुषथा ॥ सो तातप्त
परशुकरिकै दाहकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ और जोमिथ्यावादीचोरथा ॥ सो तातप्तपरशुकरिकै दाहकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिनदोनोंविषे तात
प्तपरशुकेग्रहणतैं तासाधुपुरुषकेहस्तोंकूं नहींदग्धहुआदेखिकै तेराजाकेभृत्य तासाधुपुरुषकूं सत्यवादीजाणिकै छोडिदेतेभये ॥ और तात
प्तपरशुकेग्रहणतैं ताचोरपुरुषकेहस्तोंकूंदग्धहुआदेखिकै तेराजाकेभृत्य ताचोरपुरुषकूं मिथ्यावादीजाणिकै ताकूं बंधनगृहविषेप्राप्तकरतेभ
ये ॥ तथा ताडनाकरतेभये॥इसप्रकार विद्वानपुरुषके तथाअविद्वानपुरुषके मरणकेसमानहुएभी सत्यआत्माकूंजानणेहाराजोविद्वानपुरुष
है॥ ताविद्वानपुरुषकेवाकादिकइंद्रियतो तामरणकालविषे स्वरूपतैंहीलयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ याकारणतैं सोसत्यात्मवादीविद्वानपुरुषतो
पुनःजन्मादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और मिथ्यादेहादिकोंकूंहीं आत्मारूपजानणेहारा जोअविद्वानपुरुषहै ॥ ताअविद्वानपुरुषकेवाका

दिकइंद्रिय तामरणकाळ विषे स्वरूपतैंलयभावकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु संस्काररूपहोइकेरहेहैं ॥ याकारणतैं सोमिथ्यावादी अविद्वान्पुरुष वारंवार जन्मादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ८ ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार सोउद्दालकपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति॥तत्वमसिश्वेतकेतो॥याप्रकारकामहावाक्य नववार उपदेशकरताभया ॥ तापिताकेउपदेशकूंश्रवणकरिकै संशयतैंरहितहुआ सोश्वेतकेतु तानवमेवचनविषे प्रथमवचनविषेकथनकरेहुएआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरताभया ॥ हेशिष्य ॥इसप्रकार पिताकेउपदेशतैं आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइके सोमहान्तेजवाळाश्वेतकेतु किंचित्कालपर्यंत आपणेगृहविषे निवासकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोश्वेतकेतु परमवैराग्यकूंप्राप्तहोइके आपणे उद्दाळकपिताकीन्याईं परमहंससंन्यासकूंग्रहणकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ सोउद्दाळकमुनि ताश्वेतकेतुपुत्रकूं अत्यंतबुद्धिमानजाणिकेताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति ताआत्मरूपसत्ताविषे सुखरूपता नहींउपदेशकरताभया॥काहेतें जोसूक्ष्मबुद्धिवाळापुरुषहोवे है सो नहींकहेहुएअर्थकूंभी आपहीजानिलेवे है और ताश्वेतकेतुनें ताउद्दालकपिताकेप्रति यहकारणरूपसत्ता सुखरूपहै अथवासुखरूपनहीं है याप्रकारकाप्रश्नभी नहींकन्याथा ॥ याकारणतैंभी सोउद्दाळकमुनि ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति ताआत्मारूपसत्ताविषे सुखरूपता नहींकथनकरताभया॥और पूर्व नारदमुनिकेप्रश्नकरिकै संतोषकूंप्राप्तभयाजो भगवान्सनत्कुमारहै॥सोभगवान्सनत्कुमारतौ तानारदमुनिकेताईं विनाहींपूछेतैं ताआत्मारूपसत्ताकीसुखरूपता कथनकरताभयाहै॥हेशिष्य॥पूर्व जोतुमनें श्वेतकेतुकेअज्ञानकाकारणपूछाथा सोहमनें तुमारेप्रति कथनकन्या ॥ तथा ताश्वेतकेतुकूं पुनः उद्दाळकपिताकेउपदेशकरिकै जिसप्रकार आत्मज्ञानकीप्राप्तिभईथी ॥ सोभी हमनें तुमारेप्रति कथनकन्या ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकीतुमारेकूंइच्छाहोवे सो हमारेसैंपूछो ॥ इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे छांदोग्यसारार्थप्रकाशे आरुणिश्वेतकेतुसंवादो नाम द्वादशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १२ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ इति द्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे त्रयोदशोऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः॥श्रीशंकराचार्येभ्योनमः॥अथ त्रयोदशाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्व द्वादशेअध्यायविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्केषष्ठअध्यायकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ अब यात्रयोदशेअध्यायविषे तिसीछांदोग्यउपनिषद्के सप्तमेअध्यायकाअर्थ निरूपणकरे हैं ॥ इसप्रकार सोशिष्य गुरुकेमुखतें आपणेआत्माकीब्रह्मरूपताकूंश्रवणकरिके पुनःप्रश्नकरणेकीकामनाकरताहुआ याप्रकारकावचनकहताभया॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनें ऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकमुनि वामदेवादिकअधिकारीपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरतेभये ॥ तथा वामदेवमुनि माताकेगर्भविषेस्थितहोइके तिनअधिकारीजनोंकेप्रति आपणासर्वात्मभाव कथनकरताभया ॥ इसतेंआदिलेके अनेकप्रकारकीवार्त्ता आपनें ताप्रथमअध्यायविषेकथनकरीथी॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनें तिसीऋगवेदके कौषीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषेतो देवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकेप्रति प्राणप्रज्ञारूपकरिके आत्माकाउपदेशकरताभया ॥ और याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे अजातशत्रुराजा बालाकि ब्राह्मणकेप्रति तिनप्राणादिकोंतेंभिन्नकरिके आत्माकाउपदेशकरताभया और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके चतुर्थपंचम षष्ठ सप्तम याचारअध्यायोंविषे आपणें यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहांचतुर्थअध्यायविषेतो दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेद तथापरस्पर अभेद वर्णनकऱ्याथा॥ और दध्यङ्अथर्वण देवराजइंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्या उपदेशकरताभया ॥ ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिके सोइंद्र उलटा तादध्यङ्ऋषिऊपर क्रोधवानहोइके ताब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ और सोदध्यङ्ऋषि आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते साब्रह्मविद्या अश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ तिसतेंअनंतर सोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकामस्तक छेदनकरताभया ॥ और तेअश्विनीकुमार ब्रह्मविद्याकेलोभकरिके आपणेगुरुकेमस्तककूंकाटिके अश्वकीग्रीवाऊपर राखतेभये ॥ और अश्वकामस्तककाटिके आपणेगुरुकीग्रीवाऊपर राखतेभये ॥ इसतें आदिलेकेअनेकप्रकारकीवार्त्ता

आपनें ताचतुर्थअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेपंचमेअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ताकथनकरीथी॥जो जन
कराजाकेयज्ञसभाविषे आश्वलादिकब्राह्मण याज्ञवल्क्यमुनिकेजीतणेकीइच्छाकरिके तायाज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ अनेकप्रकारकाविवादकर
तेभये ॥ तथा तासभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिके शाकल्यब्राह्मणकामृत्युहोताभया॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्या
यविषे आपनें यहवार्त्ता कहीथी॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताजनकराजाकेप्रति दोवार ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिके ताजनकराजाकूं कृतकृत्यभा
वकोप्राप्तिकरताभया॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी॥सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमैत्रेयी
स्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिके तामैत्रेयीकूं कृतकृत्यभावकोप्राप्तिकरताभया ॥ तिसतेंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूं
ग्रहणकरताभया ॥ औरहेभगवन्॥ याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या
था ताअष्टमअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ताकथनकरीथी ॥ संपूर्णसंन्यासी याजगत्केकारणविषे विवादकरिके श्वेताश्वतरमुनिके आश्रम
विषे जातेभये ॥ तिनसंन्यासियोंकेप्रति सोश्वेताश्वतरमुनि पूर्ववेदवेत्ताब्राह्मणोंकाआख्यानकहिके याजगत्केकारणकानिश्चयकरावताभया
और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेनवमेअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्या
यविषे आपनें यहवार्त्ताकथनकरीथी ॥ पिताकेसत्यवचनकरणेवासते नचिकेता यमराजाकेलोकविषेजाताभया ॥ तानचिकेताकेधैर्यकूंदे
खिकेप्रसन्नहुआसोयमराजा तानचिकेताकेप्रति संपूर्णब्रह्मविद्या उपदेशकरताभया ॥ और ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेदश
मेअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का तथानारायणीयउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशम
अध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी भृगुऋषि आपणेवरुणपिताकेसमीपजाइके ब्रह्मविद्याकीप्रार्थनाकरताभया ॥
और सोवरुणपिता कथनकरी ताभृगुपुत्रकेप्रति साब्रह्मविद्याउपदेशकरताभया ॥ और वेननामागंधर्व आपणेसर्वात्मभावका
अनुभवकहताभया ॥ तथा सत्यादिकसर्वसाधनोंविषे संन्यासआश्रमकीअधिकता वर्णनकरीथी ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणके

एकादशअध्यायविषे आपनैं जाबालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ताएकादशअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनक रीथी ॥ तापरमहंससंन्यासकूं पूर्व संवर्त्तकादिकमहात्मापुरुष ग्रहणकरतेभयेहैं ॥ और तापरमहंससंन्यासकेग्रहणविषे वैराग्यहीकालहै ॥ तावैराग्यकोउत्पत्तिविषे गर्भउपनिषद्काविचार तथामरणकेचिह्नोंकाज्ञान तथाअष्टांगयोग इत्यादिकउपायकारण हैं ॥ और तापरमहंस संन्यासविषे वैराग्यवान्पुरुषही अधिकारीहै॥और तापरमहंससंन्यासीको शिखासूत्रादिकों तैंरहितपणा बाह्यआचारहै॥और अहिंसादिकध र्म अंतरआचारहै ॥ और तापरमहंससंन्यासीकामुख्यधर्मतो आत्मज्ञानहीहै ॥ सोआत्मज्ञानतो ब्रह्मउपनिषदादिकोंविषे आपनैं कथनक ऱ्याथा ॥ और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेद्वादशअध्यायविषे आपनैं सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्केषष्ठअध्यायकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ ताद्वादशेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ उद्दालकमुनि श्वेतकेतुपुत्रकेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासते॥तत्त्वमसिश्वेतकेतो ॥या महावाक्यका नववार उपदेशकरताभया ॥ ताउपदेशकूंश्रवणकरिकै॥सोश्वेतकेतु संशयतैंरहित आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोताभया॥हेभगवन् ॥ ताद्वादशेअध्यायकेअंतविषे आपनैंयहकह्याथा ॥ जो उद्दालकमुनि श्वेतकेतुपुत्रकूंबुद्धिमान्जानिके ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति विनापूछे तैं आत्माकीसुखरूपता नहींकथनकरताभया ॥ और पूर्व सनत्कुमारतो नारदमुनिकेप्रति विनाहीपूछेतैं ताआत्माकीसुखरूपताकथनकरता भयाहै ॥ हेभगवन् ॥ तासनत्कुमारनैं नारदमुनिकेप्रति याब्रह्मविद्या उपदेशकरीथी ॥ ताब्रह्मविद्या मैं आपकेमुखतैंश्रवणकरणेकीइच्छा करताहूं ॥ आप कृपाकरिके ताब्रह्मविद्या हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ इसप्रकार ताश्रद्धावान्शिष्यकरिकेपूछाहुआ सोश्रीगुरुताशिष्यके प्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ पूर्वएककालविषे संसारकेतापकरिकेतप्तहुआ नारदमुनि एकांतदेशविषे स्थितसनत्कुमारोंकेसमीपआइके याप्रकारकावचन कहताभया ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन् जोब्रह्म यासर्वजगत्का अधिष्ठानहै ॥ तथा जोब्रह्म सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ तथा जिसब्रह्मकेज्ञानतैं विद्वान्पुरुष कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकअध्यासरूपसर्वशोकोंकूंतरे हैं॥ताब्रह्मकेस्वरूपकूं आप भलीप्रकारसैंजाणतेहो ॥ यातैं हेभगवन् ॥ जोब्रह्मज्ञान सर्वशोकोंकेनिवृत्तिकाकारणहै ॥ सोब्रह्मज्ञान मैंशिष्यकेप्रति आप कृपाकरिके

उपदेशकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी तानारदमुनिनैं भगवान्सनत्कुमारकेप्रति कह्या ॥ तभी सोभगवान्सनत्कुमार मंदमंद
हंसताहुआ तानारदकेअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेवासते याप्रकारकावचन कहताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद ॥ तूं सर्व लोकोंविषे
सर्वज्ञतारूपकरिकेप्रसिद्धहै ॥ यातैं तुम्हारेकूं जितनीकीविद्या आवतीहै ॥ तासंपूर्णविद्या तुम हमारेप्रतिकहो॥ तातुम्हारीसर्वविद्याकूंश्रवण
करिके पश्चात् हम तुम्हारेप्रति ब्रह्मज्ञानकाउपदेशकरेंगे ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकारकावचन जभी तिससनत्कुमारनैं नारदमुनिकेप्रति कह्. ॥
तभी सोनारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति दंडवत्प्रणामकरिकै आपणीसर्वविद्या कहताभया॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन् ॥ मंत्र ब्राह्मण यादो
रूपकरिके दो॰प्रकारताकूंप्राप्तहुएजे ऋग् यजुष् साम अथर्वण यहचारिवेदहैं ॥ तिनचारिवेदोंकूंभी मैं आपणेब्रह्मापिताकेप्रसादतैं
भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥ तिनचारिवेदोंविषे जेवचन पूर्वब्राह्मणादिकोंकेकथाप्रसंगकूं प्रतिपादनकरैंहैं ॥ तिनवचनोंकानाम
इतिहासहै॥तिनइतिहासोंकूंभी मैं भलीप्रकारसैंजाणताहूं॥और हेभगवन्॥तिनवेदोंविषे जेवचन याजगत्केउत्पत्तिस्थितिआदिकोंका कथ
नकरैंहैं॥तिनवचनोंकानाम पुराणहै॥तिनपुराणोंकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं॥और हेभगवन्॥यहशब्दसाधुहै यहशब्दअसाधुहै याप्रकारके
ज्ञानकाहेतुजोव्याकरणहै ॥ जाव्याकरणकूं श्रुतिनैं वेदानांवेद यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताव्याकरणकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥
और हेभगवन्॥श्राद्धादिककर्मोंकेरीतिकूं कथनकरणेहाराजोपित्र्यनामाशास्त्रहै॥ ताशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥
सहस्रलक्षादिकसंख्याकेस्वरूपका निर्णयकरणेहारा जोगणितशास्त्रहै ॥ जागणितशास्त्रकूं श्रुतिनैं राशि यानामकरिकैकथनकऱ्याहै॥ताग
णितशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥ जीवोंकेउत्पातादिकोंकेस्वरूपकानिर्णयकरणेहाराजोशास्त्रहै ॥ जाशास्त्रकूं
दैव याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥ जिसशास्त्रकरिके भूमिविषेदाबेहुएध
नका ज्ञानहोवैहै ॥ जाशास्त्रकूं निधि याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥ तर्क
हैप्रधानजिसविषे ऐसाजो अक्षपादप्रणीतन्यायशास्त्रहै ॥ तान्यायशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ तथा वेदविषेस्थित जोप्रश्न

उत्तरभागहै॥ताकूंभीमैंभलीप्रकारजानताहूं॥जिसन्यायशास्त्रकूं तथा प्रश्नउत्तररूपवेदकेभागकूं श्रुतिविषे वाकोवाक्य यानामकरिके कथन कर्‍याहै ॥ और हेभगवन् ॥ अनेकप्रकारकेव्यवहारोंकेनियमकूं कथनकरणेहाराजो नीतिशास्त्रहै ॥ जिसनीतिशास्त्रकूं श्रुतिविषे एकायन यानामकरिकेकथनकर्‍याहै ॥ तानीतिशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥ वेदकाअंगरूप जोनिरुक्तशास्त्रहै ॥ तानिरुक्तशास्त्रके जितनेभागविषे सर्वदेवतावोंकूं सर्वात्मरूपकरिकेकथनकर्‍याहै ॥ तानिरुक्तकेभागकानाम देवविद्याहै ॥ तादेवविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥ तादेवविद्यारूपनिरुक्तभागकूंछोडिके बाकीरह्यानोनिरुक्तशास्त्रहै ॥ तथा शिक्षा कल्पहै ॥ यह तीनों वेदकेअंगहोणेतें वेदकेउपकारकहैं ॥ यातें निरुक्त शिक्षा कल्प यातीनोंकूं देवविद्या यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ तावेदविद्याकूंभी मैं भली प्रकारजानताहूं ॥और हेभगवन् ॥ यहआयुर्वेद तथा सुश्रुतादिकवैद्यककेग्रंथ सर्वभूतप्राणियोंकेरोगकीनिवृत्तिकरिके सर्वभूत प्राणियोंऊपर उपकारकरे हैं ॥ यातें सुश्रुतादिकग्रंथसहित ताआयुर्वेदकूं भूतविद्या यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ ताआयुर्वेदरूपभूतविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ तथा शांतिपुष्टिआदिकफलोंकीप्राप्तिकरणेहारे जेनानाप्रकारकेमंत्रहैं ॥ ॥ तिनमंत्रोंकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं॥और हेभगवन्॥अस्त्रविद्यासहितजोधनुर्विद्याहै॥ताधनुर्विद्याकानाम क्षत्रविद्याहै॥ताक्षत्रविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥और हेभगवन्॥राहुकेतुआदिकग्रहोंकेस्थितिआदिकोंकूंप्रतिपादनकरणेहारा जोज्योतिषशास्त्रहै॥ ताज्योतिषशास्त्रकानाम नक्षत्रविद्याहै ॥ तानक्षत्रविद्याकूंभीमैंभलीप्रकारजानताहूं॥और हेभगवन्॥सर्पोविषेजेदेवशरीरहैं॥तिनोंकेवशकरणेकासाधन जागारुडविद्याहै॥ तागारुडविद्याकानाम सर्पदेवविद्याहै॥तासर्पदेवविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं॥और हेभगवन्॥सर्वलोकोंकेमनकूंरंजनकरणेहारा तथागीतादिकोंकूंप्रतिपादन करणेहारा जोगांधर्वशास्त्रहै॥तागांधर्वशास्त्रकानाम जनविद्याहै॥ताजनविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं॥हेभगवन्॥इसप्रकार ऋग्वेदतें आदिलेके गांधर्वशास्त्रपर्यंत सर्वविद्याओंकूं मैं भलीप्रकारजानताहूं॥परन्तु तिनवेदोंकेतात्पर्यकाविषयरूप जोआपणेमोक्षकासाधनहै ॥तामोक्षकेसाधनकूं मैं जानतानहीं ॥ हेभगवन् ॥ यद्यपि तिनवेदोंकेअर्थकूं सामान्यतें मैं जानताहूं ॥ तथापि तिनवेदोंकेतात्पर्यकाविषय

भूत जोअद्वितीयआत्माहे ॥ तिसआत्मादेवकूं मैं जाणतानहीं ॥ यातें मैं केवलवेदमंत्रोंकेपाठकूंजानणेहाराहूं ॥ तिनमंत्रोंकेअर्थकूं मैं जानतानहीं ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वं आपसरीलेमहात्मापुरुषोंकेमुखतें हमनें याप्रकारकावचन श्रवणकऱ्याहे ॥ जो आत्माकूंजानणेहारापुरुष मूलकारणसहितसर्वशोकोंकूं तरेहे ॥ हेभगवन् ॥ जैसे याळोकविषे तीनकोणवाळेअग्निकेकुंडविषे पतनभयाजोकोईपंगुपुरुषहे॥तापंगुपुरुषकूं महान्‌शोककीप्राप्तिहोवे हे॥तैसे अध्यात्मदुःख अधिदेवदुःख अधिभूतदुःख यातीनदुःखोंकरिके हमारेकूं सर्वदाशोककोप्राप्तिहोवे हे ॥हेदीनदयालुसनत्कुमार ॥ जैसे कोईपतिव्रतास्त्री छोटेबालकोंवाळीहोवे॥ अथवा पुत्रोंतेंरहितहोवे ॥ तथा योवनअवस्थावाळीहोवे ॥ तथा धनतेंरहितहोवे ॥ तथा बांधवोंतेंरहितहोवे ॥ ऐसीपतिव्रतास्त्रीका जभी तायोवनअवस्थाविषेही पतिमृत्युहोइजावे हे तभी सास्त्री हादेव हमारी कौनगतिहोवेगी याप्रकार निरंतर आपणाशोककरे हे॥तैसे मैंनारदभी हादेव मेरीकौनगतिहोवेगी याप्रकार निरंतर आपणाशोककरताहूं॥ तथा अध्यात्म अधिदेव अधिभूत यातीनतापोंकेवशकूंप्राप्तहुआहूं ॥ तथा विचारहीनपुरुषोंकरिकेदुस्तर जोयहशोकरूपीसमुद्रहे॥ ताशोकरूपीसमुद्रविषे मैं सर्वदाडूबाहूं ॥ तथा ताअगाधशोकरूपीसमुद्रकेपारलेकिनारेकेप्राप्तिकी मैं सर्वदाइच्छाकरताहूं॥ ऐसेमैंदीनकूं आप कृपाकरिके याशोकरूपीसमुद्रतें पारकरो ॥हेशिष्य॥ इसप्रकार तानारदमुनिके दीनतापूर्वकवचनोंकूंश्रवणकरिके सोभगवान्‌सनत्कुमार तानारदकेप्रति स्थूलाऽरुंधतीन्यायकरिके आत्माकेवास्तवस्वरूपकेबोधनकरणेवासतें याप्रकारकावचन कहताभया॥सनत्कुमारउवाच ॥ हे नारद पूर्वउक्तजितनेकीशास्त्रोंकूं तूं अध्ययनकरिकेजाणताभयाहे ॥ तेसंपूर्णशास्त्र शब्दरूपही हैं ॥ काहेतें यासंपूर्णप्रपंचका एकदेशरूप जितनेकीवस्तुहैं ॥ तिनसर्ववस्तुवोंकूं यहवाकादिकइंद्रिय नामत्वरूपकरिकेही कथनकरें हैं ॥ जोकदाचित् याळोकविषे सोशब्दरूपनाम नहींहोवे ॥ तो कोईभीपुरुष किसीभीवस्तुकेकहणेविषे समर्थनहींहोवेगा ॥ नामकरिकेही सर्ववस्तुवोंकाव्यवहारहोवे हे ॥ यातें यहनाम सर्ववस्तुरूपहे ॥ ऐसेसर्ववस्तुरूपनामकूं तूं ब्रह्मरूपकरिकेंचिंतनकर ॥ हेनारद ॥ तुम्हाराचित्त द्वैतवासनावोंकरिकेकुंठितहोइगयाहे॥जभी तूं तापूर्वअभ्यासकरेहुएनामविषे ब्रह्मभावना करैगा ॥ तभी सो तुम्हाराचित्त साक्षात्‌ब्रह्मकेजानणेविषेयोग्य होवेगा ॥ हेनारद ॥ याळोक

विषे जोपुरुष संपूर्णशब्दरूपनामोंकूं ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरे है ॥ तिसपुरुषकूं नामकरिकेसंबद्धसर्वजगत्विषे स्वतंत्रतारूपफलकीप्राप्तिहोवे है ॥ जैसे महाराजाकूं आपणेदेशविषेस्वतंत्रताहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तासनत्कुमारभगवान्नें नारदकेप्रति शब्दरूप नामकी ब्रह्मरूपकरिकेउपासना कथनकरी ॥ तभी सोनारदमुनि ताभगवान्सनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥हेभगवन् या शब्दरूपनामविषे ब्रह्मदृष्टिमात्रकरिके ताशोककीनिवृत्तिहोवेनहीं॥यातें जोवस्तु तानामतैंभीअधिकहोवे॥ सोवस्तु हमारेप्रति कथनकरो॥ इसप्रकार तानारदकरिकेपूछाहुआ सोभगवान्सनत्कुमार तानारदकेप्रति पूर्वपूर्वकीअपेक्षाकरिके उत्तरउत्तरविषेअधिकतानिरूपणकरताहुआ वाक्इंद्रियतेंलेके आशापर्यंत त्रयोदशतत्त्वोंका वर्णनकरताभया ॥ तथा तिनत्रयोदशतत्त्वोंविषे एकएकतत्वकी ब्रह्मरूपकरिकेउपासना कथनकरताभया ॥ तथा जैसेनामकूंब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरणेहारेपुरुषकूं तानामकरिकेसंबद्धसर्वजगत्विषे स्वतंत्रतारूपफल प्राप्तहोवे है॥तैसे तिनवाकादिकोंकूं ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरणेहारेपुरुषोंकूंतिनवाकादिकोंकरिकेसंबद्धसर्वजगत्विषे स्वतंत्रतारूपफल प्राप्तहोवे है ॥ याप्रकार तिनवाकादिकोंकेउपासनावोंकाफलभी वर्णनकरताभया ॥ अब तिनवाकादिकत्रयोदशतत्वोंकेस्वरूपका वर्णनकरे हैं ॥ हेनारद ॥ यहशब्दरूपनाम वाक्इंद्रियतैंउत्पन्नहोवे है ॥ यातें ताशब्दरूपकार्यतें सोवाक्रूपकारण अधिकहै ॥ १॥ और तावाक्इंद्रियकूं आपणेकार्यविषे यहइच्छारूपमनहीं प्रेरणाकरे है ॥ यातें तावाक्इंद्रियतें सोइच्छारूपमन अधिकहै ॥ २ ॥ और यहकार्य हमारेकूंकरणेयोग्यहै अथवा नहींकरणेयोग्यहै॥याप्रकार कर्त्तव्य अकर्त्तव्यरूप दोनोंकोटियोंकूं भिन्नभिन्नरूपकरिके विषयकरणेहारी जासंकल्परूपअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ तासंकल्परूपवृत्तिही ताइच्छारूपमनकूंउत्पन्नकरे है॥यातें ताइच्छारूपमनतें सोसंकल्प अधिकहै॥३ ॥ और यहअनुसंधानरूपचित्त जभी सुखसाधनतारूपकरिके तथादुःखसाधनतारूपकरिके पूर्वअनुभवकरेहुएपदार्थोंकीसादृश्यता सन्मुखदेशवृत्तिपदार्थोंविषेविषयकरे है ॥ तभीही सोकर्त्तव्यअकर्त्तव्यविषयसंकल्पहोवे है यातें सोअनुसंधानरूपचित्त तासंकल्पतैंअधिकहै ॥४ ॥ और वृत्तिज्ञानोंकाप्रवाहरूपजाचिंताहै ॥ सोचिंतारूपध्यान पूर्वसंस्कारोंकेउद्बोधद्वारा तास्मृतिरूपअनुसंधानकाजनकहै ॥ यातें सोचिंतारूप

ध्यान ताअनुसंधानरूपचित्ततैंअधिकहै ॥ ५ ॥ और याळोकविषे जिसवस्तुकूं उपेक्षाज्ञानतैंभिन्नविशेषज्ञान विषयकरे है तिसीवस्तुका ध्यानकऱ्याजावे है ॥ यातैं सोविशेषज्ञानरूपविज्ञान ताध्यानतैंअधिकहै ॥६ ॥ और अन्नकेभक्षणकरिकेउत्पन्नभयाजो अवयवोंकीवृद्धि रूपबलहै ॥ जिसबलतैं सर्वशत्रु भयकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ ऐसेबलयुक्तमनकरिकेही सोविज्ञानसिद्धहोवे है ॥ यातैं सोबल ताविज्ञानतैंअधिक है ॥ ७ ॥ और सोबल भूमिरूपअन्नतैंउत्पन्नहोवे है ॥ यातैं सोभूमिरूपअन्न ताबलतैंअधिकहै ॥ ८ ॥ और सोभूमिरूपअन्न वृष्टिरूप जलोंतैंउत्पन्नहोवे है ॥ यातैं तेजल ताभूमिरूपअन्नतैंअधिकहैं ॥ ९ ॥ और याळोकविषे जभी उष्णतारूपतेजकीअधिकताहोवे है ॥ तभीही ताजलकीवृष्टिहोवे है ॥ यातैं सोतेज तिनजलोंतैंअधिकहै ॥ १० ॥ और यहआकाश तातेजकाआधाररूपहै॥यातैं यहआकाश तातेजतैंअधिकहै ॥११॥इहां यद्यपि तातेजतैंवायुविषेअधिकताकहणीयोग्यथी ॥ तथापि जैसेउष्णतारूपतेज जलकेवृष्टिकाकारणहोवे है तैसे यहवायवायुभी ताजलकेवृष्टिकाकारणहै ॥ यातैं तावायुका तेजविषेअंतर्भावमानिके तावायुयुक्ततेजतैं आकाशकूंअधिककह्याहै ॥ और सुषुप्तिकेअंतविषे जोपूर्वदृष्टआकाशकास्मरणहोवे है ॥ सोस्मरणहीं ताआकाशकेउत्पत्तिकाकारणहै ॥ जैसे पूर्वअनुभवकरेहुएघ टकास्मरणहीं उत्तरघटकेउत्पत्तिकाकारणहोवे है ॥ पूर्वघटकेस्मरणतैंविना उत्तरघटकीउत्पत्तिहोवेनहीं ॥ यातैं सोस्मरणरूपकारण ता आकाशरूपकार्य तैं अधिकहै॥१२ ॥ और यहकार्य इसोप्रकारहोवेगा याप्रकारकीजाआशाहै॥साआशाही तास्मरणकाकारणहोवे है॥ ता आकाशतैंरहितनिष्कामपुरुषकूं तास्मरणकरणेविषे किंचित्मात्रभी प्रयोजनहोवेनहीं॥यातैं साआशा तास्मरणतैंअधिकहै॥१३॥हेशिष्य॥ इसप्रकार सोभगवान्‌सनत्कुमार तानारदमुनिकेप्रति वाक्१मन२संकल्प३चित्त ४ ध्यान ५ विज्ञान६बल७अन्न८जल९तेज १० आकाश ११स्मरण १२ आशा १३ यात्रयोदशतत्वोंविषे पूर्वपूर्वतत्त्वकीअपेक्षाकरिके उत्तरउत्तरतत्त्वविषेअधिकताकथनकरिके तिनवाकादिकत त्वोंकीअधिकताविषे याप्रकारकीयुक्ति कथनकरताभया॥अब प्रथमनामतैं वाक्‌कीअधिकताविषे युक्तिका निरूपणकरे हैं॥हेनारद॥जोतुम नें पूर्व ऋग्वेदतैंआदिलेकेमांथर्वशास्त्रपर्यंत संपूर्णशब्दरूपशास्त्र कथनकरे हैं॥तेसंपूर्णशब्दरूपशास्त्र लोकों नें वाक्‌इंद्रियकरिकेहीजानीते

हैं॥तथा तिनऋगवेदोंदिकोंकेअर्थ तथास्वर्गादिकलोक तथाआकाशादिकपंचभूत तथाइंद्रादिकदेवता तथाअसुरादिक तथामनुष्यादिक जंगमजीव तथावृक्षादिकस्थावरजीव इसतेंआदिलेकेजेअनेककोटिपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ वालोकों नें वाक्इंद्रियकरिकेही जानीतेहैं ॥ तथा धर्म सत्य साधु हृदयज्ञ अधर्म असत्य असाधु अहृदयज्ञ यहअष्टपदार्थभी लोकोंनें वाक्इंद्रियकरिकेही जानीतेहैं ॥ वाक्इंद्रियतें विना याअष्टपदार्थोंकेज्ञानविषे कोईभीसमर्थहोइसकेनहीं ॥ तहां सुखकेकारणकानाम धर्महै ॥ और जिस पदार्थका जैसास्वरूप अनुभवकऱ्याहोवे ॥ तिसपदार्थका तैसाहीस्वरूप कथनकरणा याकानाम सत्यहै ॥ और दूसरे प्राणियोंऊपर उपकारकरणेहाराजोवचनहै ॥ तावचनकानाम साधुहै ॥ और शीघ्रही लोकोंकेमनकीप्रसन्नताकरणेहाराजोवचनहै ॥ तावचनकानाम हृदयज्ञहै ॥ और ताधर्मतें विपरीतकानाम अधर्म है॥ और तासत्यतैंविपरीतकानाम असत्यहै ॥ और तासाधुतैंविपरीतकानाम असाधुहै ॥ और ताहृदयज्ञतैंविपरीतकानाम अहृदयज्ञहै ॥ इसप्रकार तावाक्इंद्रियही शब्दरूपनामोंके तथासर्वपदार्थोंके व्यवहारकाकारणहै यातैं तावाक्इंद्रिय तानामतैंअधिक हैयाकारणतैंही तावाक्इंद्रिय पूर्वउक्तनामकीन्याईं ब्रह्मरूपकरिके उपासनाकरणेयोग्यहै॥और तानामकीउपासनाका जोसर्वत्रस्वतंत्रतारूपफल पूर्वकथनकऱ्याथा॥ सोईहीफल यावाक्इंद्रियके उपासनाकाभीहोवे है ॥ १ ॥ अब तावाक्तैं मनकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णन करेहैं ॥ हेनारद ॥ जैसे दोबदरीफलोंकूं अथवा दोआमलकफलोंकूं यहहस्तरूपमुष्टि आपणेविषेअंतर्भावकरेहै ॥ तैसे पूर्वकथनकरेहुए शब्दरूपनामकूं तथावाक्इंद्रियकूं यहमनही आपणेविषे अंतर्भावकरे है ॥ काहेतें याअमनकेअभावहुए सोशब्दरूपनाम तथावाक्इंद्रिय प्रतीतहोवेनहीं॥ यामनकेविद्यमानहुएही तेवाकादिक प्रतीतहोवे हैं ॥ और यहपुरुष तामनकेविचारकरिकेही वेदोंकेअध्ययनकूंकरे है ॥ तथा यज्ञादिककर्मोंकाअनुष्ठानकरे है ॥तथा इसलोककेफलकी तथापरलोककेफलकी अभिलाषाकरे है ॥ तथा ताफलकीप्राप्तिकरणेहारे साधनोंकीअभिलाषाकरे है ॥ और यहशरीर तथावाकादिकइंद्रिय तथानानाप्रकारकालौकिकसुख यहसंपूर्ण तामनकेविद्यमानहुएही विद्यमानहोवे हैं॥तथा मनकेअविद्यमानहुए अविद्यमानहोवे हैं॥यातैं तेशरीरइंद्रियादिकसंपूर्ण मनरूपहीहैं ॥ याकारणतैं यहमन तावाक्इंद्रिय

तैंअधिकहै॥ ऐसेमनकूं तू ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकर ॥ २ ॥ अब तामनतैं संकल्पकीअधिकताविषे युक्तिकानिरूपणकरे हैं॥हेनारद॥ जो
पुरुष पूर्वउक्तसंकल्पकरिकेयुक्तहोवे है॥सोसंकल्पवान्पुरुषही तासर्वमानसव्यापारोंकूंकरे है ॥ तामानसव्यापारतैंअनंतर सोपुरुष वाकइं
द्रियकेव्यापारकूंकरे है ॥ तावाकइंद्रियकेव्यापारतैंअनंतर तानामरूप शब्दकेव्यापारकूंकरैहै ॥ शब्दरूव्यापार विषे संपूर्णवेदादिकोंके
शब्दोंकासमूह अंतर्भावहोवैहै ॥ और ताशब्दोंकेसमूहविषे सुखकीप्राप्तिकरणेहारेसर्वकर्म स्थितहोवे हैं ॥ इसप्रकारकीपरंपराकरिके सो
संकल्पही तिनसर्वकर्मोंकाकारण सिद्धहोवे है ॥काहेतैं तिनयज्ञादिककर्मोंकी उत्पत्तिकरणेविषे तथास्थितिकरणेविषे तथासंहारकरणेविषे
यहसंकल्पही कुशलहै ॥ और स्वर्गादिकलोक तथापृथ्वीआदिकभूत जिसचराचरविश्वकूंउत्पन्नकरे हैं ॥ ताविश्वकीउत्पत्ति संकल्परूपनि
मित्तकेविद्यमानहुएहीहोवैहै ॥ संकल्पतैंबिना याजगत्कीउत्पत्तिहोवेनहीं ॥ काहेतैं लोकोंके तथाभूतोंके संकल्पकरिकेतो वृष्टिउत्पन्नहो
वैहै॥ और तावृष्टिकेसंकल्पकरिके अन्नउत्पन्नहोवे है ॥ और ताअन्नकेसंकल्पकरिके याभूतोंकेइंद्रियसहितप्राण उत्पन्नहोवे हैं ॥ और
तिनप्राणोंकेसंकल्पकरिके मंत्रउत्पन्नहोवे हैं ॥और तिनमंत्रोंकेसंकल्पकरिके कर्मउत्पन्नहोवे हैं और तिनकर्मोंकेसंकल्पकरिके धर्मरूपअ
पूर्व उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताधर्मरूपअपूर्वकेसंकल्पकरिकें स्वर्गादिकफल प्राप्तहोवे हैं ॥ इहां लोक भूत वृष्टि अन्न प्राण मंत्र कर्म अपूर्व या
शब्दोंकरिके तिनलोकादिकोंके अभिमानीदेवतावोंका ग्रहणकरणा ॥ तिनचेतनदेवतावोंतैंबिना जडलोकादिकोंविषे सोसंकल्पसंभवेनहीं
इसरीतिसैं यहसंकल्पही सर्वजगत्काकारणहै ॥ यातैं सोसंकल्प तामनतैंअधिकहै ॥ ऐसे संकल्पकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरे
है ॥ सोपुरुष सर्वदुःखों तैं रहित तथानाशतैंरहित तथाअतिशयतातैंरहित ऐसेलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै॥और सोउपासकपुरुष आपभी सर्वदुः
खों तैं रहितहोवैहै ॥तथानाशतैंरहितहोवैहै॥तथा अतिशयतातैंरहितहोवैहै॥३॥अबतासंकल्पतैं सामान्यज्ञानरूपचित्तकीअधिकता विषेयु
क्तिकावर्णनकरेहैं॥हेनारद॥यासर्वजगत्काकारणरूपकरिके कथनकऱ्याजोसंकल्पहै॥सोसंकल्पभी तभीहोवैहै॥जभीसोपूर्वउक्तसामान्यज्ञान
रूपचित्तहोवैहै॥ताचित्ततैंबिना सोसंकल्पहोवेनहीं ॥याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिके यहचित्तहीतासंकल्पकाकारणसिद्धहोवैहै॥ और या

चित्तकोअधिकता लोकविषेभीप्रसिद्धहै ॥ काहेतैं यालोकविषे सर्वज्ञपुरुषभी जभी अनुसंधानरूपचित्ततैंराहितहोवैहै ॥ तभी ताचित्तरहित पुरुषकूं पुत्रादिकसर्वबांधव याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेहुए अनादरकीप्राप्तिकरै हैं॥जोकदाचित् यहपुरुष सर्वज्ञहोवै ॥ तौ अनुसंधानरूपचि त्ततैंरहितहुआ किसवासतेप्रतीतहोताहै ॥ और यहपुरुषतो पाषाणादिकजडपदार्थोंकीन्याई अनुसंधानरूपचित्ततैंरहितहुआ प्रतीतहोवैहै ॥यातैं यहपुरुष सर्वज्ञनहीं है॥इसप्रकार सोचित्तरहितपुरुष सर्वदा निरादरकूंहीप्राप्तहोवैहै॥और यालोकविषे जोपुरुष ताअनुसंधानरूपचि त्तवालाहोवैहै॥तिसपुरुषकूं संपूर्णलोक साक्षीपणेविषे ग्रहणकरैहैं॥तथा ताचित्तवालेपुरुषकेमुखतैंयहसंपूर्णजन लौकिकवचनोंकूं तथावैदिक वचनोंकूं श्रद्धापूर्वक श्रवणकरै हैं॥तथा ताचित्तवालेपुरुषनैं विधानकरेजे गुरुत्व उत्तमवर्णत्व आदिकधर्म हैं ॥ तिनधर्मोंकूंभी यहलोक श्र द्धापूर्वक अंगीकारकरैहैं ॥ याकारणतैं यहअनुसंधानरूपचित्त तासंकल्पतैंअधिकहै ॥ ऐसेचित्तकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरै है ॥ तापुरुषकूं तासंकल्पकीउपासनातैंभी अधिकफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ३ ॥ अब ताचित्ततैं ध्यानकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरै हैं॥ ॥ हेनारद ॥ स्वर्गलोक अंतरिक्षलोक भूमिलोक यहतीनोंलोक तथाआकाशादिकपंचभूत तथाहिमालयादिकपर्वत तथादेवताओंके समान शमदमादिकसाधनसंपन्नमनुष्य यहसंपूर्ण निश्चलतारूपकरिकेस्थितहुए ध्यानकरतापुरुषकीन्याई प्रतीतहोवै हैं ॥याकारणतैं सो ध्यान अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ और यालोकविषे जेपुरुष आपणेशमदमादिकगुणोंकरिके यासर्वमनुष्योंविषेपूज्यताकूंप्राप्तहुएहैं॥तेपुरुष ताध्यानके यत्किंचितफलकूंप्राप्तहुएकीन्याई जानणे॥ताध्यानतैंविना इसजन्मविषे तथाजन्मांतरविषे सोमहानतारूपफल प्राप्तहोवैनहीं॥और यालोक विषे जेपुरुष सर्वदा परायेदूषणोंकाहीकथनकरतेरहतेहैं॥तथा सर्वदा निंदाकरतेरहतेहैं ॥तथा अन्यपुरुषोंके अपकारविषे तथाकलहविषे जे पुरुष सर्वदा उद्यमवालेहोवै हैं॥तेपुरुष सर्वमनुष्योंविषे अधमजानणे॥ऐसेअधमपुरुष ताध्यानकेअभावतैं सर्वदाविक्षेपयुक्तचित्तवालेहोवै हैं॥ ऐसेचित्तकेविक्षेपकूं तेध्यानवालेमहान्पुरुष प्राप्तहोवैंनहीं॥किंतु तेध्यानवालेमहान्पुरुष ताध्यानकेप्रभावतैं सर्वदा मान्यहोवै हैं॥ याकारणतैं सोध्यान ताचित्ततैंअधिकहै ॥ ऐसेध्यानकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरैहै ॥सोपुरुष ताचित्तकीउपासनातैंभी अधिकफलकूंप्राप्तहोवै

है ॥ ५ ॥ अब ताध्यानतैं विज्ञानकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरे हैं ॥ हेनारद ॥ ऋगवेदतैंआदिलेके अहृदयज्ञपर्यंत जितनाकीवाक
इंद्रियकाविषय पूर्वकथनकऱ्याया॥तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं तथातिसतैंभीअधिकपदार्थोंकूं यहपुरुष ताविज्ञानकरिकेजानेहै॥काहेतैं भक्षणकर
णेयोग्य जोनानाप्रकारकाअन्नहै॥ताअन्नविषेस्थितजे मधुर अमल लवण कटु कषाय तिक्त यहषट्प्रकारकेरसहैं॥तिनषट्रसोंकूंभी यहपुरु
ष ताविज्ञानतैंहीजानेहै॥तथाइसलोकके तथा परलोकके सर्वव्यवहारोंकूंभी यहपुरुष ताविज्ञानतैंहीजानेहै॥याकारणतैं सोविज्ञान ताध्यान
तैंअधिकहै॥ऐसेविज्ञानकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरेहै॥सोअधिकारीपुरुष शास्त्रकेअर्थकूं विषयकरणेहाराजोविज्ञानहै
ताव्यवहारविषेकुशलतारूपजोज्ञानहै तिसज्ञानविज्ञानकरिकेसंपन्नलोकोंकूं प्राप्तहोवे है ॥ ६ ॥ अब ताविज्ञानतैं बलकीअधिकताविषे यु
क्तिकावर्णनकरेहैं॥हेनारद॥यालोकविषे एकही बलवानपुरुष आपणेबलकरिके ताविज्ञानयुक्तएकशतपुरुषोंकूं कंपायमानकरे है॥और सो
बलवानपुरुषही यापृथ्वीकूं धारणकरणेहारा भूपतिहोवे है ॥ और सोबलवानपुरुषही प्रथमतो उद्यमवालाहोवे है ॥ ताउद्यमतैंअनंतर सो
बलवानपुरुष गुरुआदिकोंकेसेवाकरणेविषेसमर्थहोवे है ॥ तिसतैंअनंतर तागुरुकीसेवाविषेप्रीतिमानहुआसोपुरुष तिनगुरुआदिकोंकेसमी
प गमनकरे है ॥ तिसतैंअनंतर तागुरुकेसमीपनिवासकरणेविषेप्रीतिमानहुआ सोपुरुष द्रष्टाहोवे है ॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुष श्रोताहोवे है
॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुष मंताहोवे है ॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुष बोद्धाहोवे है ॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुष कर्त्ताहोवे है ॥ तिसतैंअनंतर सो
पुरुष विज्ञाताहोवे है ॥ इहां उपदेशकरणेहारेपुरुषोंके परीक्षारूपदर्शनकेकरणेहारेपुरुषकानाम द्रष्टाहै ॥ और तिनगुरुवों नें कथनकऱ्या
जोअर्थ है ताअर्थकूंश्रवणकरणेहारेपुरुषकानामश्रोताहै॥और ताश्रवणकरेहुएअर्थकूं युक्तियों सें चिंतनकरणेहारेपुरुषकानाममंताहै॥और
यहअर्थ इसीप्रकारहै याप्रकारकेनिश्चयकरणेहारेपुरुषकानामबोद्धाहै॥और तानिश्चयकरेहुए विहितअर्थके अनुष्ठानकरणेहारेपुरुषकानाम
कर्त्ता है ॥ और तिनविहितकर्मोंकेफलकूं साक्षात्कारकरणेहारेपुरुषकानाम विज्ञाताहै ॥ इसप्रकारकेसाधनोंकीपरम्परा यापुरुषकूं बलक
रिकेहीप्राप्तहोवे है ॥ याकारणतैं सोबल ताविज्ञानतैंश्रेष्ठहै॥किंवा॥स्वर्गलोक अंतरिक्षलोक भूमिलोक यहतीनलोक तथाआकाशादिकपंच

भूततथाहिमालयादिकपर्वत तथाइंद्रादिकदेवता तथामनुष्यादिकजंगमप्राणी तथावृक्षादिकस्थावरप्राणी यहसंपूर्ण बलकूंआश्रयणकरिके हीं स्थितहोवे हैं ॥ बलतैंविना किसीकोभीस्थितिहोवेनहीं ॥ याकारणतैंभी सोबल ताविज्ञानतैंश्रेष्ठहे ॥ ऐसेबलकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरे है ॥ तापुरुषकूं ताबलयुक्तसर्वलोकोंकोप्राप्तिहोवे है ॥ ७ ॥ अब ताबलतैं अन्नकोअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरे हैं ॥ हेनारद॥ यालोकविषे जोकोईबलवानपुरुषभी जभी दशरात्रिपर्यंत अन्नकूंभोजननहींकरे है ॥ तभी सोबलवानपुरुषभी नानाप्रकारकेविक्षेपकूंप्राप्तहोवे है ॥तथा सोपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकेव्यापारों तैं तथामनकेव्यापारतैं रहितहोवे है ॥ याकारणतैं सोपुरुष जीवताहुआभी मरेकेतुल्यहोवे है ॥ अथवासाक्षात्मृत्युकूंहीप्राप्तहोवे है ॥ और सोईहीपुरुष जभी पुनः अन्नकूंभक्षणकरिकेबलवानहोवे है ॥ तभी सोपुरुष मनसहितसर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंकूंसिद्धकरे है ॥ याकारणतैं सोअन्न ताबलतैंअधिकहै ॥ ऐसेअन्नकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरे है ॥ सोपुरुष नानाप्रकारकेअन्नपानयुक्तलोकोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ ८ ॥ अब ताअन्नतैं जलोंकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरे हैं ॥ हे नारद ॥जिसकालविषे यहवृष्टिरूपजल उत्पन्नहोवे है ॥ तिसीकालविषे सोअन्नउत्पन्नहोवे है॥ तावृष्टिरूपजलकेअभावहुए ताअन्नकोउत्पत्तिहोवेनहीं ॥ और ताअन्नकेअभावहुए याजीवोंकेप्राण शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और ताअन्नकेविद्यमानहुए तेप्राण वृद्धिकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ याकारणतैं तेजल अन्नतैंअधिकहैं॥ किंवा ॥ स्वर्ग भूमि पाताल यहतीनलोकजेहैं ॥तथा तिनलोकोंविषेस्थित जितनेंकीस्थावरजंगमप्राणीहैं ॥ तेसंपूर्ण अन्नभावकूंप्राप्तहुएजलरूपही हैं॥तिनजलो तैं भिन्न कोईभीपदार्थनहीं है॥याकारणतैंभी तेजल अन्नतैंअधिकहैं॥ऐसेजलोंकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष सर्वकामनाकेविषयपदार्थोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ तथा सर्वदातृप्तिकूंप्राप्तहोवे है॥ ९ ॥अब तिनजलों तैं तेजकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरे हैं॥हेनारद॥यहतेज प्रथम आपणेउष्णताकूंदिखाइके तथाविद्युत्कूं तथापूर्वदिशाकेवायुकूं उत्पन्नकरिके पश्चात् जलकीवृष्टिकरे है ॥ याकारणतैं सोतेज जलतैंअधिकहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोपुरुष तेजकरिकेयुक्तहोवे है ॥ सोतेजस्वीपुरुष आपणेश्रीमत्तरूपकरिके प्रकाशमानहोवे है ॥ तथा तमदोषतैंरहितहोवे है ॥ याकारणतैंभी सोतेज

तिनजलोंतेंअधिकहै ॥ ऐसेतेजकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरै है ॥ तापुरुषकूं महान्फलकीप्राप्तिहोवै है ॥ १० ॥ अब तातेजतें
आकाशकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरै हैं हेनारद ॥ तेजवायुतेंआदिलेके जितनाकीयहनानाप्रकारकाजगत्है॥ सोसंपूर्णजगत् याआ
काशविषेही स्थितहोवै है ॥ याकारणतें तावायुसहिततेजतें सोआकाशअधिकहै ॥ किंवा ॥ यहदेहधारीजीव याआकाशकूंआश्रयणकरि
केही वाकादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंकूं करै है ॥ तथा पुण्यपापकर्मके सुखदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा तिससुखदुःखरूपफलकेसाध
नोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताआकाशतेंविना किसीभीकार्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ याकारणतेंभी सोआकाश तातेजतेंअधिकहै ॥ ऐसेआकाशकूं
जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरै है ॥ सोपुरुष विस्तारप्रकाशकरिकेयुक्तकीर्त्तिमान्लोकोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ ११ ॥ अब ताआकाशतें
स्मरणकीअधिकताविषे युक्तिकानिरूपणकरै हैं ॥ हेनारद ॥ यालोकविषे यहदेहधारीजीव पूर्वअनुभवकरेहुए आकाशादिकजगत्के
स्मरणतेंहीं उत्तर उत्तर ताआकाशादिकजगत्कोकल्पनाकरै हैं ॥ तथा यहदेहधारीजीव स्मरणतें वाकादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंकाआ
रंभकरैहैं ॥ तथा तास्मरणतेंहीं यहजीव पुण्यपापकर्मकेसुखदुःखरूपफलकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथा तासुखदुःखकेसाधनोंकूं प्राप्तहोवै हैं ॥
स्मरणतेंविना किसीभीकार्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ याकारणतें सोस्मरण ताआकाशतेंअधिकहै ॥ ऐसेस्मरणकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेउ
पासनाकरैहै ॥ सोपुरुष तास्मरणकेविषयभूतसर्वपदार्थोंविषे स्वतंत्रतारूपफलकूं प्राप्तहोवै है ॥ १२ अब तास्मरणतें कामनारूपआ
शाकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरै हैं ॥ हेनारद ॥ यालोकविषे जोपुरुष कामनारूपआकाशकरिकेयुक्तहोवै है ॥ सोआशावान
पुरुषही तास्मरणकरिके सर्वपुण्यपापकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथा तापुण्यपापकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकेभोगवासते दोनोंलोकोंविषेभ्रमणकरैहै
॥ और जोपुरुष ताआशातेंरहितहोवै है ॥ सोनिष्कामपुरुष तास्मरणकूंभीकरैनहीं ॥ तथा दूसरेकिसीव्यापारकूंभीकरैनहीं॥याकारणतें
साआशा तास्मरणतेंअधिकहै ॥ ऐसीआशाकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरैहै ॥ सोपुरुष सर्वमनवांछितपदार्थोंकूंप्राप्तहोवै है॥तथा
सत्यसंकल्पहोवै है॥१३॥हेशिष्य॥इसप्रकारसोनारदमुनि ताभगवान्सनत्कुमारकेप्रति नामतेंकोनअधिकहै इत्यादिकत्रयोदशप्रश्नकरताभ

या ॥ और सोभगवान्सनत्कुमारभी तानारदकेप्रति नामतैंवाकअधिकहे इत्यादिकत्रयोदशउत्तर कथनकरताभया ॥ तथा सोभगवान् सनत्कुमार तानारदकेचित्तविषेलोभउत्पन्नकरणेवासते तिनवाकादिकोंकेउपासनाअन्यफलोंकूंभी तहांतहां कथनकरताभया ॥ तिसतैं अनंतर सोबुद्धिमाननारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति पुनःयाप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ हेभगवन् ताकामनारूपआशातैं कौनअधिकहे ॥ इसप्रकार तानारदकरिकेपूछाहुआ सोसनत्कुमार याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेनारद ॥ यासर्वजीवोंनें आत्मारूपकरिकेनिश्चयकऱ्या जोप्राणहे ॥ सोप्राण ताआशातैंअधिकहे ॥ अब ताप्राणोंकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरे हैं ॥ हेनारद ॥ जैसे रथकेचक्रकेजेअराहैं ॥ तेअरा ताचक्रकेनाभिकेआश्रितरहे हैं ॥ तैसे यहसंपूर्णविश्व प्राणोंकेआश्रितरहे हे ॥ काहेतैं यहप्राणही सर्वकारकरूपहे ॥ जैसे देवदत्तनामापुरुष अश्वकरिके ग्रामकूं गमनकरेहे ॥ यास्थलविषे गमनक्रियाकाकर्त्ताजोदेवदत्तहे ॥ तथा तागमनक्रियाकाकारणरूपजोअश्वहे ॥तथा तागमनक्रियाकाकर्मरूपजोग्रामहे ॥ यहतीनोंप्राणरूपहीहैं॥तथा यहपुरुष सुपात्रब्राह्मणकेताईं गो देवे हे ॥ यास्थलविषेभी दानरूपक्रियाकाकर्तारूपजोपुरुषहे ॥ तथा तादानरूपक्रियाका संप्रदानरूपजोब्राह्मणहे तथा तादानरूपक्रियाका कर्मरूपजोगौहे॥यहसंपूर्णताप्राणरूप हीहैंतथा पिता माता आचार्य ब्राह्मण भ्राता स्वसास्नुषा जाया पुत्र इसतैंआदिलेके जितनेकीदेहधारीजीवहैं॥तेसंपूर्णजीव प्राणरूपही हैं ॥ ताप्राणतैं भिन्न यालोकविषे किंचित्मात्रभीनहीं हे ॥ अब याहीअर्थकूंलोकप्रसिद्धअन्वयव्यतिरेककरिकेदृढकरेहैं ॥हेनारद ॥ यालोकविषे जभीकोईपुरुष ताप्राणकेविद्यमानहुए आपणेपितामातादिकोंकेशरीरकूं वाणीमात्रकरिकेभी तिरस्कारकरेहे ॥ तभी तातिरस्कारकरणेहारे पुरुषकेप्रति दूसरेबुद्धिमानपुरुष याप्रकारकेवचनकहे हैं॥जिनपितामातादिकमहान्पुरुषोंका तूं वाणीकरिकेतिरस्कारकरेहे ॥ तिनमहान् पुरुषोंका तुमनें वधकऱ्याहे ॥ काहेतैं उत्तमपुरुषोंका जोवाणीकरिकेनिरादरकरणाहे ॥ सोनिरादरही तिनउत्तमपुरुषोंका विनाशरूपतैंवधहे ॥ यातैं तूं पितृहाहे ॥ तथा मातृहाहे ॥ इत्यादिकवचन तेलोक तापुरुषकेप्रति कथनकरे हैं ॥ और तिनपितामातादिकोंकेशरीरतैं प्राणोंकेनिर्गमनहुएतैंअनंतर यहपुरुष जभी तिनपितामातादिकोंकेशरीरकूं महान्अग्निविषे तीक्ष्णकाष्ठसे

वारंवार वेधनकरिके दग्धकरे है ॥ तभी तादाहकरणेहारेपुरुषकूं यह लोक पुण्यकर्त्ता कहे हैं तथा पिता मातादिकोंका भक्तकहे हैं ॥ या प्रकारकाअन्वयव्यतिरेक यासर्वलोकविषे प्रसिद्धहै ॥ ताअन्वयव्यतिरेककरिके यहप्राणही तापितामातादिरूपसिद्धहोवै है ॥ हेनारद ॥ बाह्यचक्षुआदिकइंद्रियोंकरिके जितनाकीव्यवहारहोवैहै॥तथा अंतरमनबुद्धिआदिकोंकरिके जितनाकीव्यवहारहोवे है॥तासर्वव्यवहारकाल विषे जोपुरुष याप्राणकूंही सर्वकारक रूपदेखे है ॥ सोपुरुषही अतिवादीहोवे है॥काहेतें सोपुरुष प्राणकूंही सर्व तेंअधिककहेहै॥तात्पर्ययह॥ यालोकविषे जोपुरुष किसीदूसरेपुरुषकेप्रति मैं तुमारापिताहूं याप्रकारकावचन जभीकहेहै ॥ तभी तापुरुषकेप्रति तू मर्यादाकाअतिक्रमणकरिके किसवासतें यहवचनकहताहै याप्रकारकाउपालंभ लोक देवें हैं ॥ परंतु सोपुरुष मैं तुमारापिताहूं याप्रकारकेवचनमात्रकहणे करिके मुख्यअतिवादीहोवेनहीं ॥ किंतु सोपुरुष गौणअतिवादीहोवे है ॥ काहेतें तापितातेंभिन्न आचार्यादिकबहुतपदार्थ याकीरहतेहैं ॥ तिनोंकूं तिसपुरुषनें आत्मारूपजान्यानहीं ॥ और जोपुरुष पितामातादिकसर्वपदार्थरूपप्राणमैं हूं याप्रकारकावचनकहेहै ॥ सोपुरुषही मुख्यअतिवादी कह्याजावैहै ॥ हेनारद ॥ ताप्राणात्मवादीपुरुषकेप्रति जोकदाचित् कोइकपुरुष तू किसप्रकारअतिवादी है याप्रकारकाप्रश्नकरे ॥ तोभी सोप्राणात्मवादीपुरुष मैंअतिवादीनहींहूं याप्रकारकावचन कदाचित्भी नहींकथनकरै ॥ किंतु सोप्राणात्मवादीपुरुष मैं अतिवादीहूं याप्रकारकावचन निःशंकहोइकेकथनकरे ॥ ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तासनत्कुमारभगवान्नें नारदकेप्रति प्राणोंकीअधिकताकथनकरी ॥ तभी सोनारदमुनि ताप्राणतेंपरेतत्वकेपूछणेविषे असमर्थहुआ तूष्णीभावकूंप्राप्तहोइके पुनः प्रश्नकरणेतेंउपरामहोता भया ॥ काहेतें यालोकविषे जिसपुरुषकूं जिसपदार्थका सामान्यरूपतेंज्ञानहोवे है ॥ सोपुरुषही तिसपदार्थकेविशेषरूपजानणेवासते प्रश्न करेहै ॥ तासामान्यज्ञानतेंविना विशेषरूपकाप्रश्नहोवेनहीं ॥ जैसे यहपुरुषब्राह्मणहै याप्रकारकेसामान्यज्ञानहुएतेंअनंतरही यहपुरुष कोनब्राह्मणहै याप्रकारका विशेषप्रश्नहोवे है ॥ सामान्यज्ञानतेंविना विशेषरूपकाप्रश्नहोवेनहीं ॥ सोइहांप्रसंगविषे प्राणोंतेंपरेजोतत्व है ॥ सोतत्व मनका तथावचनोंका तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंका अविषयहै ॥ यातें ताप्राणतेंपरेतत्वकूं सोनारद नहींजानताभया ॥ याका

रणतैंही सोनारद तातत्त्वकाप्रश्न नहींकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥सोनारद तासनत्कुमारकेप्रति ताप्राणकेउपासनाकाफल किसवास्तैनहींपूछताभया ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तासनत्कुमारभगवान्नैं तानारदकेप्रति तू प्राणोंकीब्रह्मरूपकरिके उपासनाकर याप्रकारकावचन जो पूर्व कथनकऱ्याहोता ॥ तौ सोनारद ताप्राणोंकेउपासनाकाफल पूछता परंतु सोवचन तासनत्कुमारनैं कथननहीं कऱ्याथा ॥ यातैं सोनारद ताउपासनाकेफलकाप्रश्न नहींकरताभया ॥ हेशिष्य इसप्रकार तानारदमुनिकूं तूष्णीहुआदेखिके सोभगवान्सनत्कुमार कृपाकरिकेयुक्तहुआ तानारदमुनिकेप्रति आपही ताप्राणतैंपरेतत्त्वकाउपदेशकरताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद प्राणकेज्ञानतैंही सोअतिवादीपणाहोवे है यहतुमनैं निश्चयकरनानहीं ॥ काहेतैं ताप्राणतैंपरे जोकोईअधिकवस्तुनहींहोता ॥ तौ ताप्राणकेज्ञानतैं अतिवादीपणा सिद्धहोता ॥ परंतु ताप्राणतैंभी सत्यवस्तुअधिकहै ॥ यातैं ताप्राणकेज्ञानतैं अतिवादीपणाहोवेनहीं ॥ किंतु जोपुरुष निरंतर तासत्यवस्तुकाही कथनकरेहै ॥ तिसीपुरुषकूं तुमनैं मुख्यअतिवादी जानणा ॥ हेशिष्य ॥ सत्यवस्तुकेकथनकरणेहारा पुरुषही मुख्यअतिवादीहोवे है याप्रकारकेवचनकरणेहारे तासनत्कुमारका यहतात्पर्य है ॥ जोपरब्रह्म पूर्वअध्यायविषे याजगत्काकारणरूपकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ ओर जोपरब्रह्म याअध्यायविषेआगे सुखरूपकरिकेवर्णनकरणाहै ॥ तथा जोपरब्रह्म नामतैंलेके प्राणपर्यंत सर्वविश्वरूपकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ सोपरब्रह्महीं तासत्यशब्दकाअर्थहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिके सोभगवान्सनत्कुमार तानारदकेप्रति पुनःयाप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेनारद ॥ ताप्राणतैंपरे जोसत्यवस्तुहै ॥ सोसत्यवस्तुही तुमारेकूं जानणेयोग्यहै ॥ तासत्यवस्तुकेविचारतैंविना तुमनैं आपकूं कृतकृत्यमानिके स्थितहोणानहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी तासनत्कुमारनैं नारदमुनिकेप्रति कथनकऱ्या ॥तभी सोनारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति पूर्वकीन्याईं याप्रकारकाप्रश्न करताभया॥हेभगवन् तासत्यवस्तुकेजानणेकीमैं इच्छाकरताहूं॥आपकृपाकरिके हमारेप्रति तासत्यवस्तुकाउपदेशकरो॥हेशिष्य॥जैसेसोसनत्कुमारभगवान् तानारदमुनिकेप्रति तासत्यवस्तुकेजिज्ञासाकाजनकवचन कहताभया॥तैसे विज्ञान १मनन२श्रद्धा३निष्ठा४कृति५सुख६याषट्पदार्थोंकीजिज्ञासाकूंउत्पन्नकरणेहारे

षट्वचनोंकूं कथनकरताभया ॥ तिनषट्वचनोंकूंश्रवणकरिके सोनारदमुनिभी तासनत्कुमारकेप्रति षट्वार प्रश्नकरताभया॥ तात्पर्ययह ॥ हेभगवन् मैं तासत्वस्तुकेजानणेकीइच्छाकरताहूं इसप्रकारकाप्रथमप्रश्नकरिके तिसतैंअनंतर मैं विज्ञानकेजानणेकीइच्छाकरताहूं इत्यादिकषट्प्रश्नकरताभया ॥ इहां आनंदस्वरूपसत्यवस्तुतौ उपेयहे ॥ और दूसरेविज्ञानादिकषट्पदार्थतौ उपायरूपहैं ॥ तथा पूर्वपूर्ववस्तु केप्राप्तिकासाधनरूपहैं ॥ तहां उपायकरिकेप्राप्तहोणेयोग्यवस्तुकूं उपेयकहे हैं ॥ याप्रकारकीविशेषताकेहुए तिनोंविषे पुनरुक्तिदोषकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ याकेविषेभी यहविशेषताजानणी ॥ कामनाकीविषयतारूपकरिके तासुखविषे उपायरूपताहै ॥ और स्वभावसिद्धसत्यरूपकरिके तासुखविषे उपेयरूपताहै ॥ अब तिनविज्ञानादिकषट्पदार्थोंकास्वरूप तथा उत्तरउत्तरपदार्थविषे पूर्वपूर्वपदार्थकेप्राप्तिकीसाधनता निरूपणकरे हैं ॥ हेनारद ॥ जोपुरुष तासत्यस्वरूपब्रह्मकूं प्रत्यक्षजानताहै ॥ सोपुरुषही तासत्यवस्तुका स्पष्टकरिकेकथनकरे है ॥तासत्यवस्तुकेज्ञानतैंरहितपुरुष तासत्यवस्तुका कथनकरिसकैनहीं॥ यातैं यहजान्याजावे है ॥ तासत्यवस्तुकेकथनविषे तासत्यवस्तुकाप्रत्यक्षप्रमाणरूपविज्ञानहीकारणहै ॥ १ ॥ और हेनारद नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिके तासत्यवस्तुकाचिंतनरूपजोमननहै ॥ तामननकरिके जभी तासत्यवस्तुरूपप्रमेयके असंभावनाकीनिवृत्तिहोवे है ॥ तभीही तासत्यवस्तुकाविज्ञानहोवे है ॥ तामननतैंविना सोसत्यवस्तुकाविज्ञान होवैनहीं ॥ यातैंयहजान्याजावे है ॥ सोमनन ताविज्ञानकाकारणहै॥ २ ॥ और हेनारद ॥ गुरुशास्त्रकेउपदेशविषेविश्वासरूपजाश्रद्धाहै ॥ ताश्रद्धावालापुरुषही तामननकरणेविषेप्रवृत्तहोवै है ॥ ताश्रद्धातैंरहितनास्तिकपुरुष तामननविषे प्रवृत्तहोवैनहीं॥यातैंयहजान्याजावैहै॥साश्रद्धा तामननकाकारणहै॥३॥और हेनारद॥यहवेदांतशास्त्र जीवब्रह्मकेअभेदकूंकथनकरे है अथवाभेदकूंकथनकरैहै याप्रकारकीजाप्रमाणगतअसंभावनाहै॥ताअसंभावनाकूंनिवृत्तकरणेहारीतथाअद्वितीयब्रह्मविषे तिनवेदांतोंकेतात्पर्यकूंनिश्चयकरावणेहारीजे युक्तियां हैं॥तिनयुक्तियोंकेचिंतनकानाम निष्ठाहै ॥ ऐसीनिष्ठावालापुरुषही ताश्रद्धावालाहोवै है ॥तानिष्ठातैंरहितपुरुषकूं साश्रद्धाहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावे है ॥ सानिष्ठा ताश्रद्धाकाकारणहै ॥ ४ ॥ और हेनारद ॥ यज्ञादिकजेबहिरंगसाधनहैं ॥ तथा शमदमादिक जेअंतरंगसाध

नहीं॥तिनदोनोंप्रकारकेसाधनोंकाजोअनुष्ठानहै ताअनुष्ठानकानामकृतिहै॥जोपुरुष याप्रकारकीकृतिकरिकेयुक्तहोवे है॥सोपुरुषही अंतःकरणकीशुद्धि तथाएकाग्रता करिकेयुक्तहुआ तानिष्ठावालाहोवे है ॥ ताकृतितैंविना सानिष्ठाहोवेनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावे है ॥साकृति तानिष्ठाकाकारणहै ॥ ८ ॥ और हेनारद ॥ यालोकविषे जोपुरुष सुखरूपपुरुषार्थकेप्राप्तिकीइच्छाकरे है ॥ सोपुरुषही तिनबहिरंगअंतरंगसाधनोंकू करेहै ॥ सुखकीइच्छातैंविना कोईभीपुरुष तिनसाधनोंविषेप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ यद्यपि दुःखकेअभावकीइच्छाकरिकेभी यालोकोंकी तिनसाधनोंविषेप्रवृत्तिहोवे है ॥ तथापि सोदुःखाभाव स्वतःपुरुषार्थरूपनहीं है ॥ किंतु सोदुःखाभाव सुखकेअभिव्यक्तिकासाधनरूपहोणेतैं याजीवोंकेइच्छाकाविषयहोवेहै ॥ यातैं यहजान्याजावे है ॥ सोसुख ताकृतिकाकारणहै ॥९॥ हेशिष्य ॥इसप्रकार तासनत्कुमारभगवान्केवचनोंकूंश्रवणकरिके सांसारिकसुखतैंविरक्तहुआ सोनारदमुनि तासांसारिकसुखकूं दुःखपक्षविषेपावताहुआ मुख्यसुखकीजिज्ञासा प्रगटकरताभया ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन् ॥ हमारेकूंमोक्षकीप्राप्तिहोवे याप्रकारकीकामना जिसपुरुषकेचित्तविषेहै॥तिसपुरुषनैं तासुखकावास्तवस्वरूप अवश्यकरिकेजाननेयोग्यहै ॥ हेभगवन् ॥ जिससुखकेज्ञानतैंमोक्षकीप्राप्तिहोवे है ॥सोसुख यासंसारविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥ काहेतैं यासंसारविषे याजीवोंकू विषयों तैं जोसुखप्राप्तहोवे है ॥सोविषयजन्यसुखरूपनहीं है॥किंतु सोविषयजन्यसुख दुःखरूपहीहै ॥ काहेतैं यालोकविषे जिसवस्तुका जोस्वभावहोवे है॥ तिसवस्तुका सोस्वभाव कदाचित्भी अन्यथाहोवेनहीं ॥ जैसे अग्निकाउष्णस्वभाव किसीकालविषेभी अन्यथाहोवेनहीं ॥ तैसे यहविषयजन्यसुखभी जोसुखरूपहोवे॥ तो यहविषयजन्यसुख किसीकालमैंभी दुःखरूपनहींहोणाचाहिये॥ सोऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ किंतु यहविषयजन्यसुख आपणीअप्राप्तिकालविषेभी याजीवोंकू दुःखकीहीप्राप्तिकरे है ॥ और आपणेवियोगकालविषेभी याजीवोंकू दुःखकीहीप्राप्तिकरे है ॥ इसप्रकार आदिअंतविषे दुःखकीप्राप्तिकरणेहारा यहविषयसुख मध्यकालविषे याजीवोंकू सुखरूप किसप्रकारहोवेगा ॥ किंतु आदिअंतकीन्याई मध्यकालविषेभी सोविषयजन्यसुख दुःखरूपहीहै ॥ हेभगवन् ॥ ऐसेदुःखरूपविषयसुखविषे जोजीवोंकू सुखरूपताप्रतीतहोवे है ॥ सोकेवल अज्ञानकेवशतैं प्रतीतहोवे है ॥ जैसे यालोकविषे शस्त्रकाप्रहार यद्यपि

दुःखरूपहे ॥ तथापि परिपक्कव्रणविषे सोशस्त्रकाप्रहार सुखरूपहोइकेप्रतीतहोवेहे ॥ तैसे यहविषयजन्यसुख यद्यपि वास्तवतें दुःखरूप
हीं हे॥ तथापि ताअज्ञानकेवशतें यहविषयसुख याजीवोंकूं सुखरूपहोइकेप्रतीतहोवेहे ॥ यातें हेभगवन् जोवास्तवसुखहे सोहमारेप्रति क
थनकरो ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार जभी तानारदमुनिनें तासनत्कुमारभगवान्केप्रति सुखकास्वरूपपूछा॥तभी सोसनत्कुमारभगवान् तानार
दकेप्रति तावास्तवसुखकास्वरूप कथनकरताभया॥सनत्कुमारउवाच॥ हेनारद ॥देशपरिच्छेद कालपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद यातीनपरि
च्छेदोंतेंरहित जोव्यापकवस्तुहे ॥ तावस्तुकूंही विद्वान्पुरुष सुखरूपकहेहें ॥हेनारद तिनसर्वपरिच्छेदोंतेंरहितहोणेतें जिसवस्तुकूं श्रुतिने
भूमा याशब्दकरिकेकथनकर्‍याहे ॥ ताभूमावस्तुकूंही तूं सुखरूपकरिकेजान ॥ ताभूमातेंभिन्न सर्वपदार्थ दुःखरूपही हे ॥ हेनारद ॥ जो
तुमारेकूं तावास्तवसुखकेस्वरूपनिर्णयकरणेकीइच्छाहोवे ॥ तो तूं ताभूमापदार्थकेजानणेकोइच्छाकर ॥ हेशिष्य॥इसप्रकारके तासनत्कु
मारभगवान्केवचनोंकूंश्रवणकरिके सोनारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति ताभूमापदार्थकाप्रश्नकरताभया ॥ तानारदकेप्रश्नकूंश्रवणकरिके
सोभगवान्सनत्कुमार तानारदकेप्रति याप्रकार ताभूमाकास्वरूप कथनकरताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद ॥ जिसतत्त्वविषेस्थि
तहुआ यहविद्वान्पुरुष आपणेतेंभिन्नरूपकरिके किसीभीपदार्थकूं नेत्रइंद्रियकरिकेदेखतानहीं ॥ तथा श्रोत्रइंद्रियकरिकेश्रवणकरतानहीं॥
तथा मनकरिकेजाणतानहीं ॥ सोतत्त्वही भूमाशब्दकाअर्थ हे ॥ तथा सुखशब्दकाअर्थ हे ॥ और हेनारद ॥ जिसपदार्थकेबुद्धिविषेआ
रूढहुए यहपुरुष आपणेआत्मातेंभिन्नपदार्थोंकूं नेत्रइंद्रियकरिकेदेखेहे ॥ तथा श्रोत्रइंद्रियकरिकेश्रवणकरे हे ॥ तथा मनकरिकेजाने हे ॥
सोपदार्थ अल्परूपहे ॥ तथा दुःखरूपहोवेहे ॥ तहांश्रुति ॥ द्वितीयाद्वैभयंभवति॥अर्थयह॥आत्मातेंद्वितीयवस्तुतेंभयकोप्राप्तिहोवे हे ॥ हे
नारद॥जोहमनें तुम्हारेप्रति सुखरूपभूमा कथनकर्‍याहे॥सोसुखरूपभूमातो मरणादिकसर्वविकारोंतेंरहितहे ॥ यातें सोभूमा अमृतरूपहे॥
और ताभूमातेंभिन्न जितनेंकीअल्पपदार्थहें ॥ तेअल्पपदार्थतो तिनमरणादिकसर्वविकारोंवालेहें॥यातें तेपदार्थ मर्त्यरूपहें ॥हेनारद॥ ऐसे
सुखरूपभूमाकूं जभी यहअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतेंजानेहे ॥ तभीही यहअधिकारीपुरुष मुख्यअतिवादीहोवेहे ॥ ताभूमातेंभिन्न

प्राणादिकोंकेज्ञानतें यहपुरुष मुख्यअतिवादीहोवेनहीं ॥ यातें तामुख्यअतिवादीपणेकीप्राप्तिवासतें याअधिकारीपुरुषों नें तासुखरूप
भूमाकूंअवश्यकरिकेजानणा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तासनत्कुमार भगवान्नें नारदकेप्रति भूमाकाउपदेशकऱ्या ॥ तभी सोनारद
आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ यासनत्कुमारभगवान्नें जोहमारेप्रति सुखरूपभूमाकाउपदेशकऱ्याहे॥ताभूमाका कोईआ
धारहे अथवा सोभूमा निराधारहे ॥ तहां ताभूमाका जोकोईआधारमानिये ॥ तो सोभूमाभी घटादिकपदार्थोंकीन्याई परिच्छिन्नहोवेगा ॥
और ताभूमाकूं जोनिराधारमानिये ॥ तो सोनिराधारभूमा हमारेबुद्धिविषे किसप्रकारआरूढहोवेगा ॥ याप्रकारकीचिंताकरिकेयुक्तहुआ
सोनारद तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ हेभगवन् ॥ सोसुखरूपभूमा किसआधारविषेस्थितकूंप्राप्तहोवे है ॥ सोभूमा
काआधार हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तानारदकेप्रश्नकूंश्रवणकरिके सोभगवान्सनत्कुमार तानारदकेप्रति याप्रकारका
वचनकहताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद ॥ ताभूमाका जोतू आधार पूछताहे ॥ सो व्यवहारमात्रविषेउपयोगीआधार पूछताहे ॥
अथवा वास्तवआधारपूछताहे ॥ तहां प्रथमपक्षकूं जोतू अंगीकारकरे ॥ तो मायातें आदिलेकेयहसर्वप्रपंच ताभूमाकीविभूतिहे ॥ तावि
भूतिरूपमहिमाविषेही सोभूमास्थितहोवे है ॥ यातें सोविभूतिरूपमहिमाही ताभूमाकाआधारहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यालोकविषे वि
भूतिरूपमहिमाका तथा तामहिमावालेका परस्पर भेदही देख्याहे॥यातें ताविभूतिरूपमहिमातें भिन्नहुआसोभूमा घटादिकोंकीन्याई वस्तु
परिच्छेदवालाहोवेगा ॥ समाधान ॥ हे नारद ॥ जैसे यालोकविषे देवदत्तनामापुरुषकी गौ अश्व हस्ति हिरण्य दास भार्या क्षेत्र गृह
इत्यादिकजाविभूतिहे ॥ साविभूतिरूपमहिमा तादेवदत्तपुरुषतें भिन्नहुईप्रतीतहोवे है ॥ और सोदेवदत्तपुरुष ताभिन्नविभूतिकेआश्रित
हुआप्रतीतहोवेहे ॥ तैसे इहां यहमायासहितप्रपंचरूपमहिमा तासुखरूपभूमातें भिन्ननहीं है ॥ किंतु सोमहिमा ताभूमातें
अभिन्नही है ॥ यातें ताभूमाविषे भेदरूपवस्तुपरिच्छेदकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् सोमहिमा ताभूमातेंअभि
न्नहोवेगा ॥ तो तामहिमाका तथाभूमाका परस्पर आधारआधेयभाव नहींहोवेगा ॥ काहेतें यालोकविषे परस्परभिन्नपदार्थों

काही परस्पर आधारआधेयभावहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेनारद ॥ जैसे ॥ स्वयंदासास्तपस्विनः ॥ अर्थयह ॥ तपस्वीपुरुष आपही आप
णेदासहैं ॥ यास्थलविषे एकहीतपस्वियोंविषे स्वामीदासभावहोवैहै ॥ तैसे तासुखरूपभूमाका सर्वपरिच्छेदतैंरहितजोआपणास्वरूपहै
॥ सोआपणास्वरूपही ताभूमाकामहिमाहै ॥ तास्वरूपभूतमहिमाविषे सोभूमा व्यवहारदृष्टिकरिकै स्थितहोवैहै ॥ और ताभूमाका कोई
वास्तवआधारहै यहदूसरापक्ष जोतूं अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं पूर्वउक्तआपणेमहिमा स्वरूपतैंभिन्नपदार्थोंविषेतौ सोभूमा कदा
चित्भीरहैनहीं ॥ और आपणेस्वरूपभूतमहिमाविषे जोताभूमाकीस्थिति कथनकरीहै ॥ सोभी व्यवहारदृष्टिकूंलेकेकथनकरीहै ॥ ताव्य
वहारदृष्टिकेपरित्यागकियेतैं सोभूमा आधारतैंरहित निराधारकह्याजावैहै ॥ अब सोनिराधारभूमा किसप्रकार बुद्धिविषे आरूढहोवैगा
॥ ऐसीनारदकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै प्रथम ताभूमाकूं तत्पदार्थरूपकरिकैवर्णनकरे हैं ॥ हेनारद यहतत्पदार्थरूपभूमाही दशोंदि
शाविषेस्थितहै ॥ तथा तीनकालोंविषेस्थितहै ॥ और जैसे निर्मलआकाश विषे गंधर्वनगरकल्पितहोवै है ॥ तैसे सर्वभेदतैंरहितयाभूमा
विषे यहदेशकालतैंआदिलेके सर्वस्थूलसूक्ष्मपदार्थ कल्पितहैं ॥ और कल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ याकारण तैं सोभूमाही
यासर्वजगत्रूपहै ॥ इसप्रकार यासर्वजगत्काअधिष्ठानरूपकरिकै ताभूमाकूं तूं प्रथम आपणीबुद्धिविषेआरूढकर ॥ तिसतैंअनंतर ताभू
माकीतटस्थरूपताकेनिवृत्तकरणेवासतै सोसर्वत्रव्यापकभूमा अहंअस्मि याप्रकार ताभूमाकूं तूं आपणाआत्मारूपकरिकैजान ॥ शंका॥हे
भगवन्॥परिच्छिन्नअहंकारविशिष्टकावाचक जोअहंशब्दहै॥ताअहंशब्दका व्यापकभूमाविषे प्रयोगकरणा संभवैनहीं॥समाधान॥हेनारद॥
यद्यपि अहं याशब्दतैंअहंकारकीप्रतीतिहोवैहै ॥ तथापि ताअहंकारकी ताभूमाविषे सादृश्यताहै ॥ तासादृश्यताकूंग्रहणकरिकै सोअहं
शब्द गौणीलक्षणाकरिकै ताभूमाकाहीबोधनकरैहै ॥ अब ताअहंकारकी तथाभूमाआत्माकी सादृश्यता निरूपणकरे हैं ॥ हेनारद ॥
पूर्वादिकदशोंदिशाविषे तथा भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकालोंविषे स्थित जितनेकीदेहधारीजीवहैं॥तेसंपूर्णजीव प्रथम अहं याप्रकार
काअनुभवकरतेहुएही पश्चात् वचनउच्चारणादिकव्यवहारोंकूंकरैहैं ॥ ता अहंअनुभवतैंविना कोईभीव्यवहार सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं यहजा

न्याजावैहै ॥ यहअहंकारही याजीवोंकेसर्वव्यवहारोंकाकारणहै ॥ ऐसासर्वव्यवहारोंकाकारणभूत अहंकार जैसे सर्वदिशाओंकूं तथासर्वभूत प्राणियोंकूं व्याप्यकरिकेस्थितहुआहै ॥ वैसे ताअहंकारकाआश्रयरूपकरिके यहजीवात्माभी तिनसर्वदिशाओंकूं तथासर्वभूतप्राणियोंकूं व्याप्यकरिकेस्थितहुआहै ॥ याप्रकार अहंकारकी तथाभूमाआत्माकी सर्वत्रव्यापकतारूप सादृश्यताहै ॥ तासादृश्यताकूंअंगोकारक रिके सोअहंशब्द लक्षणावृत्तिकरिके सर्वउपाधितैंरहितकूटस्थआत्माकूंहीबोधनकरे है ॥ तिसीकूटस्थआत्माका तत्पदार्थरूपभूमाकेसा थ अभेद तत्त्वमसिआदिकमहावाक्योंनैं प्रतिपादनकरीताहै ॥ अब ताअभेदज्ञानका जीवन्मुक्तिरूपफल निरूपणकरे हैं ॥ हेनारद॥जैसे यालोकविषे यहअज्ञानीपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके तथामनकरिके सर्वव्यवहारोंकूंकरतेहुएभी आपणेमनुष्यपणेकूंविस्मरणकरतेनहीं ॥ किंतु आपणेमनुष्यपणेकूं संशयविपर्ययतैंरहितहोइके सर्वदा अनुभवकरेहैं ॥ तैसे जोपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं तिनअहंकारादिकउ पाधियोंकाविस्मरणकरिके मैंआत्मा भूमारूपहूं याप्रकारके संशयविपर्ययतैंरहितज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोविद्वान्पुरुष वेदांतशास्त्रके चिंत नकालविषे आनंदस्वरूपआत्माविषेही क्रीडाकरताहुआ स्थितहोवैहै ॥ जैसे बालक बालकोंकेसमुदायविषे क्रीडाकरताहुआ स्थितहोवै है॥और सो विद्वान्पुरुष स्नानभोजनादिककालविषेभी ताआनंदस्वरूपआत्माविषेही चित्तकीशक्तिरूपरतिकूंधारणकरताहुआ स्थितहोवै है ॥ जैसे कामीपुरुष विदेशविषेस्थितहुआभी चित्तकी शक्तिरूपरतिकूं सर्वदा आपणीस्त्रीविषेहीराखेहै॥इतनैंकरिके यहअर्थबोधनकऱ्या जीवन्मुक्तपुरुषकी दोप्रकारकीदशाहोवैहै ॥ एकतो समाधिदशाहोवैहै ॥ और दूसरी तासमाधितैंउत्थानदशाहोवैहै ॥ तहां तासमाधितैं उत्थानदशाभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतो वेदांतशास्त्रकाचिंतनरूप उत्थानदशाहोवैहै ॥ और दूसरीस्नानभोजनादिकव्यवहाररूप उत्थानदशाहोवैहै ॥ तहां वेदांतशास्त्रका चिंतनरूप प्रथमउत्थानदशाविषे सोविद्वानपुरुष जोआत्माकाचिंतनकरेहै॥ ताआत्मचिंतनकूं श्रुतिनैं क्रीडाशब्दकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ और स्नानभोजनादिकव्यवहाररूप दूसरीउत्थानदशाविषे सोविद्वान्पुरुष जोआत्माकाचिंतन करेहै ॥ ताआत्मचिंतनकूं श्रुतिनैं रतिशब्दकरिकेकथनकऱ्याहै और जैसे साव्युत्थानदशा दोप्रकारकीहोवैहै तैसे सासमाधि

दशाभी दोप्रकारकीहोवे है ॥ एकतो सविकल्पसमाधिहोवे है ॥ और दूसरानिर्विकल्पसमाधिहोवे है ॥ तहां सविकल्पसमाधिविषे सोविद्वान् जोआत्माकाचिंतनकरे हैं ॥ ताआत्माचिंतनकूं श्रुतिनें मिथुन याशब्दकरिकेकथनकऱ्याहे ॥ और निर्विकल्पसमाधिविषे सोविद्वान्पुरुष जोआत्माकाचिंतनकरेहे ॥ ताआत्माचिंतनकूं श्रुतिने आनंद याशब्दकरिकेकथनकऱ्याहे ॥ तहां क्रीडारति यादोनों शब्दोंकाअर्थ पूर्वनिरूपणकऱ्या ॥ अब मिथुन आनंद यादोनोंशब्दोंकाअर्थ निरूपणकरे हैं ॥ हेनारद ॥ जैसे यालोकविषे गृहकेसर्व व्यवहारोंकापरित्यागकरिके एकांतदेशविषे स्थितहुए जेस्त्रीपुरुषहैं ॥ तिनस्त्रीपुरुषदोनोंका जोपरस्परमिथुनीभावहे ॥ सोमिथुनीभाव तिनदोनोंके परस्पर विषयानंदकाहेतुहोवे है ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषका ध्याताध्येयभावकरिके जोआत्माविषे मिथुनीभावहे ॥ सोमिथुनीभावही याविद्वान्पुरुषकूं सविकल्पसमाधिकालविषे आनंदकाहेतुहोवैहे॥और हेनारदजैसेयालोकविषे गांधर्वादिकविषयोंकीप्राप्तितेंअनंतर परीक्षकपुरुषोंकूं जोतादृशआनंदरूपफलकाअनुभवहोवे है ॥ सोआनंदकाअनुभवनिर्विकल्पहीहोवे है ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषकूं निर्विकल्प समाधिकालविषे जोनिरतिशयआनंदकाअनुभवहोवे है ॥ सोआनंदकाअनुभवभी ध्याता ध्यान ध्येय इत्यादिकत्रिपुटीरूपविकल्पतैंरहितहीहोवे है ॥ हेनारद ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं जोआत्माविषेहीआनंदहोवे है ॥ याकेविषे यहकारणहे ॥ अद्वितीयआत्माकूं साक्षात्अनुभव करताहुआ सोविद्वान्पुरुष जन्ममरणादिकसर्वदुःखोंकीनिवृत्तिविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ याकारणतें सोविद्वान्पुरुष विराट् भगवान्कीन्याई स्वराट् यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवे है ॥ और सोविद्वान्पुरुषही ब्रह्मरूपहोणेतें सर्व जीवोंकाआत्मारूपहे ॥ याकारणतें सोविद्वान् पुरुष संपूर्णश्रेष्ठलोकोंविषे कामचारहोवे है ॥ इहां प्रतिबंधतैंरहित तिनसर्वलोकोंकेप्राप्तिकानाम कामचारहे ॥ इतनेंकरिके ताभूमाआत्माकेज्ञानकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब ताज्ञानतैंरहितपुरुषोंकूं अनर्थकेप्राप्तिकावर्णनकरे हैं ॥ हेनारद ॥ जेमूढपुरुष ताभूमाकूं आपणाआत्मारूपकरिकेनहींजाने हैं ॥ किंतु मोहकेवशतें ताभूमाकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकेजाने हैं॥तेमूढपुरुष सर्वदा पराधीनताकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तथा नाशवान्लोकोंकूंप्राप्तहोवे हैं॥तथा स्वतंत्रतातैंरहितहोवे हैं॥तथा वारम्वार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ अब तिनविद्वान्

पुरुषोंकूं जगत्काकर्त्ताईश्वररूपकरिकेवर्णनकरे हैं ॥ हेनारद ॥ जोपुरुष पूर्वउक्तप्रकारसें ता तत्पदार्थरूपभूमाकूं आपणाआत्मारूपकरिकेजाने है ॥ ताविद्वान्पुरुषतैंही नामतैंआदिलेकेप्राणपर्यंत पूर्वउक्तपंचदशतत्त्व उत्पन्नहोवे हैं ॥ जेसे रज्जुतैं सर्प उत्पन्नहोवे है ॥ तैसे ताविद्वान्पुरुषतैंही नामादिकउत्पन्नहोवे हैं ॥ और यज्ञादिककर्मोंसहित तथास्वर्गादिकफलोंसहित जेमंत्रब्राह्मणरूप ऋगादिकचारवेद हैं ॥ तेचारवेदभी ताविद्वान्पुरुषतैंही उत्पन्नहोवे हैं ॥ हेनारद ॥ याकेविषे हम बहुतकयाकहैं यहजितनाकोस्थूलसूक्ष्मजगतहै ॥ सोसंपूर्णजगत् ताविद्वान्पुरुषतैंही उत्पन्नहोवे है ॥ हेनारद ॥ जिनपुरुषोंकूं ताभूमाआत्माकासाक्षात्कारहोवे है ॥तिनपुरुषों के तेसंपूर्णजन्ममरणादिकदुःख निवृत्तहोवे हैं ॥ यहजो हमनैं तुम्हारेप्रति आत्मज्ञानकाफल कथनकऱ्याहै ॥ ताकेविषे वेदवेत्तापुरुष याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरे हैं ॥ नपश्योमृत्युंपश्यति नरोगंनोतदुःखतां॥ सर्वंहपश्यःपश्यति सर्वमाप्नोतिसर्वशः॥अब याश्लोकका अर्थ निरूपणकरे हैं॥हेनारद॥ यहजीवात्मा आपणेज्ञानके बलतैं शुभअशुभरूपसर्वसंसारकूं तथामोक्षकूं देखेहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती याजीवात्माकूं पश्य यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और मृत्युनाम मरणकाहै ॥ तामृत्युशब्दकरिकेज्वरादिकरोगों तैंविना जितनैंकीयाशरीरकेजन्मादिकधर्म हैं तिनसर्वधर्मोंकाग्रहणकरणा ॥ और उदरविषे जठराग्निकरिकेपरिपक्वकऱ्याहुआजोअन्नकारसहै ॥ तारसकीन्यूनअधिकतातैं उत्पन्नभयेजेज्वरादिकव्याधिहैं ॥ तिनज्वरादिकोंकानाम रोगहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तामंत्ररूपश्लोकविषेस्थितमृत्युशब्दकरिके जैसे जन्मादिकविकारोंकाग्रहणहोवे है ॥ तैसे तामृत्युशब्दकरिके ज्वरादिकरोगोंकाभी ग्रहणहोइसकैहै ॥ यातैं श्रुतिविषे ज्वरादिकरोगोंका पृथकग्रहणकरणा असंगतहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जैसे याजीवोंकामरण अल्पकालपर्यंत स्थायीरहे है॥तैसे याजीवोंकेजन्मादिकभी अल्पकालपर्यंत स्थायीरहे हैं ॥ यातैं अल्पकालस्थायीतारूप सामान्यधर्मकूं अंगीकारकरिके सोमृत्युशब्द तिनजन्मादिकोंकाभी बोधनकरे है॥और ज्वरादिकोंविषे सोअल्पकालपर्यंतस्थायीपणाहैनहीं ॥किंतु तिनज्वरादिकोंविषे चिरकालपर्यंत स्थायीपणाहै॥यातैं श्रुतिविषे तामृत्युशब्दकरिकें तिनज्वरादिकोंकाग्रहणकऱ्यानहीं॥ किंतु तामृत्युशब्दतैंभिन्न रोगशब्दकरिके तिनज्वरादिकोंकाग्रहणकऱ्याहै ॥ और जरायुज अंडज स्वे

दज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेभूतप्राणियोंकी जेनानाप्रकारकी विलक्षणबुद्धियां हैं॥तिनबुद्धियोंविषे प्रतिबिंबितत्वरूपकरिके नानाप्रकारके भेदवालेजेजीवहैं ॥ तिनजीवोंका जोजन्मादिकअनेकधर्मवालेशरीरकेसाथ अहंममअध्यासरूपसंबंधहे ताकानाम दुःखहे ॥ ऐसे मरणादिक विकारोंकूं तथाज्वरादिकरोगोंकूं तथाअहंममअध्यासरूपदुःखकूं सोपश्यनामाजीव देखतानहीं ॥ हेनारद ॥ सोपश्यनामाविद्वान्जीव तिन मृत्युआदिकोंकूंजोनहींदिखेहे॥याकेविषेयहकारणहे ॥ स्थूलसूक्ष्मरूपकरिकेप्रसिद्ध जितनाकी यहद्वैतप्रपंचहे ॥ सोसंपूर्ण द्वैतप्रपंच आत्मा विषेकल्पितहे ॥ ताकल्पितप्रपंचकी तबपर्यंत स्थितिहोवेहे ॥ जबपर्यंत ताप्रपंचविषे कल्पितरूपताकूंविषयकरणेहाराज्ञान नहींउत्पन्नभ या॥ताज्ञानकेउत्पन्नहुएतेंअनंतर ताकल्पितप्रपंचका पुनःदर्शनहोवेनहीं॥इसप्रकार यासर्वद्वैतप्रपंचकूं अधिष्ठानआत्माविषे कल्पितरूप करिकेदेखणेहारा सोविद्वान्पुरुष तिनमरणादिकविकारोंकूंदेखतानहीं ॥ और याभूमाआत्माकेज्ञानतेंअनंतर यहसंपूर्णजगत् ताभूमात्मावि षे अनन्यभावकूंप्राप्तहोवे है सोअनन्यभावही याजीवात्माकूं यासर्वजगत्कीप्राप्तिहे॥काहेतें सर्ववेदोंकेतात्पर्यकाविषय जोयहभूमाआत्माहे॥ ताभूमाआत्माविषेही यहसंपूर्ण यज्ञलोकादिरूपवेदकाअर्थ अंतर्भूतहे ॥ ताभूमाआत्मातेंभिन्न कोईवेदकाअर्थ हैनहीं ॥ यातें ताभूमाआ त्माकेज्ञानतें यहजीवात्मा तिनसर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोवे है यहवार्त्ता संभवहोइसकेहे ॥ अब ताविद्वान्पुरुषविषे उपाधिकेयोगतें नानारूपता का निरूपणकरे हैं ॥ हेनारद ॥ मैं भूमारूपहूं याप्रकारकेज्ञानयुक्त सोविद्वान्पुरुष आपणेवास्तवभूमारूपकरिकेएकहुआभी आपणी मायाकरिके नानारूपहोवे है ॥ तहां सोविद्वान्पुरुष आत्मा माया तामायाकाकार्य यातीनरूपोंकूंग्रहणकरिकेतो तीनप्रकारका होवे है ॥ और सोविद्वान्पुरुष आकाश वायु तेज जल पृथ्वी यापंचभूतोंकूंग्रहणकरिके अथवा श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकूंग्रहणकरिके पंचप्रकारकाहोवे है ॥ और सोविद्वान्पुरुष भूरादिकसप्तलोकोंकूंग्रहणकरिके सप्तप्रकारकाहोवे है ॥ और सोविद्वान्पुरुष आदित्य चंद्रमा मंगल बुद्ध बृहस्पति शुक्र शनि राहु केतु यानवग्रहोंकूंग्रहणकरिके नवप्रकारकाहोवे है ॥ और पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय एक मन याएकादशइंद्रियोंकूंग्रहणकरिके सोविद्वान्पुरुष एकादशप्रकारकाहोवे है ॥ और तिनएकादशइंद्रियोंविषे एकएकइंद्रियके दशदश

प्रकारकीवृत्तियोंकूं अंगोकारकरिके सोविद्वान्पुरुष एकशतदस ११० प्रकारकाहोवे है ॥ और दिनरात्रिविषे एकविंशतिसहस्र षट्शत २१६०० श्वासप्रश्वासचालेहैं॥तिन श्वासप्रश्वासरूपहंसमंत्रोंकेभेदकूंग्रहणकरिके सोविद्वान्पुरुष एकविंशतिसहस्रषट्शत प्रकारकाहोवे है ॥ इसप्रकार सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष वास्तवतैंएकअद्वितीयरूपहुआभी उपाधिकेभेदकूंअंगीकारकरिके नानाप्रकारकाहोवे है ॥अब ताआत्मज्ञानके आहारशुद्धिआदिकसाधनोंका निरूपणकरेहैं ॥ हेनारद ॥ जेपुरुष बाह्यतो सर्वदा पुण्यकर्मोंकाअनुष्ठानकरे हैं ॥ परंतु जिनोंकेमनविषे सर्वदा पापवासनारहेहे ॥ ऐसे पुरुषोंकूं शतकोटिजन्मोंकरिकेभी यहसर्वात्मज्ञान अत्यंतदुर्लभहै ॥ जभो अंतरपापवासनायुक्त पुण्यवान्पुरुषोंकूंभी यहआत्मज्ञान दुर्लभहुआ ॥तभी बाह्यअंतर सर्वदा पापकर्मोंकेआचरणकरणेहारेपुरुषोंकूं यहआत्मज्ञान दुर्लभ है याकेविषेक्याकहणाहै ॥ यातें जिसअधिकारीपुरुषकूं ताआत्मसाक्षात्कारकी इच्छाहोवे है ॥ तिसअधिकारीपुरुषनें प्रथम आपणेचित्तकूंशुद्धकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ साचित्तशुद्धि किसप्रकारसेहोवे है ॥ समाधान॥हेनारद ॥ आपणेआपणेवर्णआश्रमकेअनुसार प्राप्तभये जेअन्नपानादिकविषयहैं ॥ तिनविषयोंकेग्रहणकानाम आहारहै ॥ सोआहार जिसपुरुषका रागद्वेषतैंरहितबुद्धिकरिके पापतैंरहितशुद्धहुआ है ॥ तिसीपुरुषकाचित्त शुद्धहोवे है ॥ ताआहारकीशुद्धितैंविना चित्तकीशुद्धिहोवेनहीं ॥ हेनारद ॥ जैसे आहारशुद्धिवालेपुरुषकी पापकर्मोंविषेप्रीतिहोवेनहीं ॥ तैसे जोपुरुष बीज योनि व्यवहार यातीनोंकेशुद्धिवालाहोवे है ॥ तिसपुरुषकी आपदाकालविषेभी पापकर्मविषेप्रीतिहोवेनहीं॥इहां पितृकुलकानाम बीजहै॥और मातृकुलकानाम योनिहै ॥और पदार्थोंकेग्रहणत्यागकानाम व्यवहारहै॥हेनारद॥इसप्रकार आहार व्यवहार बीज योनि याचारोंकी शुद्धिकरिके जिसपुरुषकाचित्तशुद्धहुआहै॥तिसपुरुषकी कदाचित्भी पापकर्मविषेप्रीतिहोतीनहीं॥ और पापकर्मही चित्तकेएकाग्रताका प्रतिबंधकहोवे है॥जभो तिनआहारादिकोंकीशुद्धिकरिके यहपुरुष तिनपापकर्मोंतैंरहितहोवे है॥तभी याअधिकारीपुरुषकाचित्त एकाग्रताकूंप्राप्तहोवेहै॥ऐसेशुद्धचित्तवालापुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंशीघ्रही आपणेभूमास्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरे है॥जैसेभिल्लपुरुषोंकरिकेपालनकऱ्याहुआ कोईक्षत्रियराजाकापुत्र किसीमहात्मापुरुषकेमुखतैं तूक्षत्रियराजाकापुत्रहैयाप्रका

रकेवचनकूंश्रवणकरिके शीघ्रही आपणेक्षत्रियस्वरूपकूंस्मरणकरे है॥ तैसे तुम्हारूपदे याप्रकारकेब्रह्मवेत्तागुरुकेवचनकूंश्रवणकरिके सोशु
द्धचित्तवालापुरुष शीघ्रही आपणेब्रह्मरूपकूंस्मरणकरेहै॥हेनारद॥जोकोईपुरुष पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतें ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशकरिके याभू
माआत्माकेस्मृतिकूंप्राप्तहोवे है ॥ सोपुरुष ताआत्मज्ञानरूपखड्गकरिके कामक्रोधादिकग्रंथियोंकूं शीघ्रही छेदनकरे है ॥ ताआत्मज्ञानतें
विना तेकामक्रोधादिकग्रंथियां कदाचित्भी निवृत्तहोवेंनहीं ॥ यातें याअधिकारीपुरुषनें ताकामक्रोधादिकबंधकेनिवृत्तकरणेवासते ताभू
माआत्माकेज्ञानकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा॥अब तानारदमुनिविषे ब्रह्मविद्याकेअधिकारीकेविशेषणोंकानिरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥सोना
रदमुनि पूर्वउक्तआहारादिकोंकीशुद्धिकरिके शुद्धचित्तवालाहोताभया ॥ताचित्तशुद्धितेंअनंतर सोनारदमुनि कामक्रोधादिकोंतेंरहितहोता
भया॥हेशिष्य॥हरीतकीआदिकोंतेंउत्पन्नभयाजोरसहे॥जिसरसकेसंबंधतें वस्त्रादिकोंविषे कुसंभादिकोंकारंग अत्यंतदृढहोवे है॥ ताहरीतकी
आदिकोंकेरसकूं बुद्धिमानपुरुष कषाय याशब्दकरिकेकथनकरे हैं ॥ ताकषायरसकीन्याई यहकामक्रोधादिकविकारभी याचित्तरूपवस्त्रकूं
रंजितकरे हैं ॥ याकारणतें तिनकामक्रोधादिकोंकूंभी शास्त्रवेत्तापुरुष कषाय याशब्दकरिकेकथनकरे हैं ॥ और जैसे वस्त्रविषेस्थित ताक
षायरसकी क्षारादिकोंकरिकेनिवृत्तिहोवे है ॥ तैसे तिनकामक्रोधादिककषायोंकीभी ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकेनिवृत्तिहोवे है॥ और सोना
रदमुनि तिनब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकेसंपन्नथा ॥ तथा यासंसारसमुद्रतेंवैराग्यवानथा॥याकारणतें श्रुतिभगवतीनें तानारदमुनिकूं मृदित
कषाय यानामकरिकेकथनकर्‍याहे ॥ ऐसेमृदितकषायनारदमुनिकेताईं सोभगवान्सनत्कुमार मूलअज्ञानरूपतमका भूमारूपपरपार दि
खावताभया ॥ जैसे यालोकविषे यहपुरुष आपणेशत्रुकेप्रति दुःख दिखावे है॥तैसे तानारदमुनिकेप्रति सोभगवान्सनत्कुमार भूमाआत्मा
दिखावताभया ॥ जिसभूमाआत्माकेदर्शनकरिके यहअधिकारीपुरुष पुनः संसाररूपशोककूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ हेशिष्य ॥ सोसनत्कुमारभग
वान् तानारदमुनिकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभयाहे ॥ सोसनत्कुमारभगवान् दूसरेजन्मविषे स्वामिकार्तिकेयअवतारकूंधारणकर
ताभयाहे ॥ हेशिष्य ॥ याअर्थविषे इतिहासकूंजानणेहारेब्राह्मण याप्रकारकीकथा कहतेभयेहैं ॥ तिसकथाकूं तूं श्रवणकर ॥ किसी

कालविषे किसीनिमित्तपाइके सर्वमुनिजन श्रीकाशीजीविषेजातेभये ॥ तहां तेमुनिजन प्रातःकालविषे स्नानादिकनित्यकर्मोंकूंकरिके श्री गंगाजीकेतीरविषेस्थितहोतेभये ॥ और तेसर्वमुनिजन आपणीआपणीबुद्धिकरिके परब्रह्मकाचिंतनकरतेभये ॥ तिसकालविषे भवानीदेवीसहित श्रीमहादेव तहांआवताभया ॥ तिसकालविषे यद्यपि सोमहादेव आपणेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपकरिके तिनमुनिलोकोंकेध्यानकाविषयथा ॥ तथापि सोमहादेव कृपाकरिके तिनमुनिलोकोंके मांसमयनेत्रोंकाविषयहोताभया ॥ ताभवानीसहितमहादेवकूंदेखिके तेसर्वमुनिजन आपणेआपणेआसनतेंउठतेभये ॥ तथा अत्यंतहर्षकूंप्राप्तहोतेभये ॥ जैसे प्राणोंकेप्रवेशतें यहशरीर उठे है ॥ तथा हर्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे तेमुनीश्वर महादेवकूं देखिकेउठतेभये ॥ तथा हर्षकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिनसर्वमुनियोंविषे एकसनत्कुमारभगवान् आपणेआसनते नहींउठताभया काहेतें सोसनत्कुमारभगवान् सर्वकालविषे एकअद्वितीय आत्माकूंही अंतरबाह्यसर्वत्र परिपूर्णदेखेहै ॥ और तिसकालविषेतो सोसनत्कुमारभगवान् विशेषकरिकेसमाधिविषेस्थितथा ॥ याकारणतें सोसनत्कुमार महादेवकूंदेखिके अभ्युत्थान नहींकरताभया ॥ और तासनत्कुमारतेंविना दूसरेमुनिजनतो तामहादेवकूंदेखिके अभ्युत्थान करतेभये ॥ तथा ताभवानीसहितमहादेवकूं प्रणामकरतेभये ॥ और तिनमुनिजनोंविषे कितनेंकीमुनिजनतो वेदकेपाठादिकोंकरिके तामहादेवकीस्तुतिकरतेभये ॥ और कितनेंकीमुनिजनतो आपणेनवीनस्तोत्रबनाइके तिनस्तोत्रोंकरिके तामहादेवकीस्तुतिकरतेभये ॥ और कितनेकीमुनिजनतो प्राचीनपुरुषोंकरिकेकरेहुएस्तोत्रोंकरिके तामहादेवकीस्तुतिकरतेभये ॥ इसप्रकार सर्वमुनिजन ताभवानीसहितमहादेवकीप्रसन्नताकरिके आपणेआपणेआसनऊपर स्थितहोतेभये ॥ इसप्रकार तामुनिजनोंकीश्रद्धाभक्तिकूंदेखिकरिके अत्यंतप्रसन्नहुआ सोमहादेव तिनसर्वमुनिजनोंकूं मनवांछितवरोंकीप्राप्तिकरताभया ॥ तिसतेंअनंतर सोभवानीसहितमहादेव तिसस्थानतेंजाणेकीइच्छाकरताहुआ तहां सर्वमुनिजनोंकूं जहांतहां देखतेभये ॥ तासमाजविषे सनत्कुमारकूं ध्यानविषेस्थितहुआदेखिके सोभगवान्महादेव परमहर्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ परंतु तासनत्कुमारकूंदेखिके साभवानी हर्षकूंनहींप्राप्तहोतीभई ॥ किं

तु साभवानी आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरिके आपणेस्त्रीस्वभावतें परमक्रोधकूंप्राप्तहोतीभई ॥ अब ताभवानीकेविचारकावर्णनक
रे हैं ॥ यहभगवान्महादेव अनादिपुरुषहे ॥ और यहमहादेव सर्वदा योगीजनोंकेहृदयविषेस्थितहे ॥ तथा अष्टांगयोगकरिकेयुक्तपुरुषोंक
रिके यहमहादेव सर्वदा ध्यानकरणेयोग्यहे ॥ तथा यहमहादेवही सर्वविद्यावोंका परमगुरुरूपहे और जैसे यालोकविषे राजादिकपुरुषोंके
गर्भदासपुरुष किंकरहोवे हैं ॥ तैसे ब्रह्मा विष्णु इंद्र सर्वलोकपाल इसतैंआदिलेकेजितनेंकोदेवताहैं ॥ तेसर्वदेवता यामहादेवकेही गर्भदास
किंकरहैं ॥ हहां धनकरिकेमोलळीनीजोदासीहे ॥ तादासीविषेउत्पन्नहुएपुत्रोंकानाम गर्भदासहे ॥ तैसे यामहादेवनें सत्तास्फूर्तिरूपधनदे
के यामायारूपदासीकूं आपणेवशकऱ्याहे ॥ तामायारूपदासोतैंहीं तिनब्रह्मादिकदेवतावोंकीउत्पत्तिहोवे है ॥ यातें तेब्रह्मादिकदेवता या
महादेवके गर्भदासहैं ॥ और यहमहादेवही महदादिकतत्त्वोंका तथास्थावरजंगमभूतोंका जनकहे ॥ तथा तिनमहदादिकोंकापालनकरणे
हाराहे ॥ तथा तिनमहदादिकोंका संहारकरणेहाराहे ॥ और यामहादेवकेसमान पूर्व कोईहुआनहीं ॥ और आगेकोईहोवेगानहीं ॥ और अ
भीकोई हेनहीं ॥ जभी यामहादेवके समानभीकोईनहींभया ॥ तभी यामहादेवतेंअधिक कोनहोवेगा ॥ किंतु यामहादेवतें कोईभीअधिक
नहीं है ॥ और यामहादेवनें कामदेवकूंनाशकऱ्याहे ॥ यातें यहमहादेवही ब्रह्मचर्यधर्मवालाहे ॥ ऐसेजगद्गुरुमहादेवकूं मेंस्त्रीसहितदेखिके
यहसनत्कुमार स्त्रीकेअधीनमानताभयाहे ॥ और यहसनत्कुमार आपणेकूंब्रह्मचारीमानिके महान्गर्वयुक्तहुआहे ॥ याकारणतेंही यहसन
त्कुमार श्रीमहादेवकूंदेखिके अभ्युत्थान तथानमस्कार नहींकरताभयाहे ॥ यातें याअभिमानीसनत्कुमारकेप्रति में कोईदारुणशापदेवों ॥
हेशिष्य ॥ इसप्रकार साभवानीदेवीतासनत्कुमारकेप्रति शापदेनेकानिश्चयकरिके पुनःसाभवानी यासनत्कुमारकेप्रति में
कौनशापदेवों याप्रकारकाविचारकरतीभई ॥ तहां यालोकविषे महान्दुःखकीप्राप्तिकरणेहारेजेस्थानहैं ॥ तिनस्थानोंविषेनिवासकरणेहारे
यद्यपि अनेकजीवहैं ॥ तथापि तिनसर्वजीवोंविषे अश्वोंकीसेवातें आपणाजीवनकरणेहारेपुरुष मुख्यहैं ॥ काहेतें दुर्गंधकरिकेयुक्त
जाअश्वोंकीशालाहे ॥ तादुर्गंधशालाविषे तिनपुरुषोंका सर्वदा निवासरहेहे ॥ तथा बहुतसेवाकरणेतेंभी तिनोंकूं अल्पधनकीप्राप्तिहो

वेहै ॥यातैं अश्वोंकोसेवाकरणेहारेमनुष्य सर्वमनुष्योंतैं नीचहैं ॥ ऐसे अश्वोंकोसेवाकरणेहारेपुरुषोंकेकुलविषे यासनत्कुमारकाजन्महोवे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाविचारकरिके साभवानी तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाशापदेतीभई ॥ हेसनत्कुमार तुमनें हमारे महादेवभक्तों काअपमानकऱ्याहै॥यातैं अश्वोंकोसेवाकरणेहारेपुरुषोंकेकुलविषे तुमाराजन्महोवेगा ॥ हेशिष्य॥जिसकालविषे साभवानीदेवीतासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाशापदेतीभई ॥ तिसकालविषे सोमहादेव ताभवानीकेप्रति ताशापदेणेतैं बहुतनिवारणकरताभया ॥ तथापि क्रोधकेवशहुई साभवानी तामहादेवकेवचनकूंभी नहींअंगीकारकरतीभई ॥ हेशिष्य ॥ ताभवानीकेशापतैं अनंतर सोसनत्कुमार तापूर्वशरीरका परित्यागकरिके अश्वोंकेसेवाकरणेहारेशरीरकूंप्राप्तहोताभया ॥ ताशरीरविषेभी सोसनत्कुमार परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया ॥ काहेतैं पूर्वब्राह्मणशरीरविषे स्नानादिकनित्यनैमित्तिककर्मोंकेकरणेकरिके जेक्लेशहोतेथे॥ तेसर्वक्लेश याअश्वसेवकशरीरविषे निवृत्तहोतेभये ॥और अश्वोंकेभक्षणकरणेयोग्यजेचणकादिकअन्नहैं ॥तिनोंकूंभक्षणकरिके सोसनत्कुमार अत्यंतस्थूलशरीरवालाहोताभया ॥ और सोसनत्कुमार ताअश्वसेवकशरीरविषे अत्यंतआलसीहोताभया॥यातैं ताकेसंबंधियोंनें तासनत्कुमारकूं अत्यंतआलसीदेखिके दूसरेकिसीकार्यविषय लगायानहीं॥किंतु ताअश्वशालाकेद्वारमात्रकीरक्षाकरणेवासते तासनत्कुमारकूं ताअश्वशालाकेद्वारऊपरबैठावतेभये ॥और सोसनत्कुमार तिनोंकेआज्ञाकूंमानिके ताअश्वशालाकेद्वारऊपर रात्रिदिनविषे सुखपूर्वक स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार किसीकालकेव्यतीतहुएतैंअनंतर तामहादेवसहित साभवानीदेवी ताअश्वशालाकेसमीप आवतीभई ॥ और साभवानीदेवी तासनत्कुमारकूं तिसनीचशरीरविषे परमआनंदकूंप्राप्तहुआदेखिके प्रसन्नहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर साभवानीदेवी तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेसनत्कुमार मैं तुमारेऊपरप्रसन्नभईहूं ॥ यातैं जोतुमारेकूंइच्छाहोवे ॥ सोहमारेसेंवरमांग ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताभवानीदेवीनेंकहा ॥ तभी सोसनत्कुमार ताभवानीदेवीकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेदेवी आपनें कृपाकरिके हमारेताई जोयहशरीरदियाहै ॥ सोयहशरीर यद्यपि पूर्वब्राह्मणशरीरतैंश्रेष्ठहै ॥ तथापि याशरीरविषे विष्ठामूत्रादिकोंकेपरित्यागकरणेवासते उठिकेदूरजाणेकरिके

हमारेकूं बहुतक्लेशहोवै है ॥ यातैं आप कृपाकरिके हमारे प्रति ऐसेशरीरकीप्राप्तिकरो ॥ जिसशरीरविषे जोकदाचित् मैंबैठाहुआभी विष्ठा मूत्रकापरित्यागकरों ॥ तौभी सोविष्ठामूत्र हमारेशरीरतें दूरजाइकेपडे ॥ ताविष्ठामूत्रका हमारेशरीरकेसाथ स्पर्शहोवैनहीं ॥ ऐसेशरीर कीप्राप्तिरूपवर हमारेप्रतिदेवो ॥ हेशिष्य ॥ तासनत्कुमारनें जभी ताभवानीदेवीसें याप्रकारकावर मांग्या ॥ तभी ताभवानीदेवी पुनः क्रोधवानहोइके याप्रकारकाशापदेतीभई ॥ हेसनत्कुमार उष्ट्राशरीरविषे तेविष्ठामूत्रादिकमल शरीरतैंदूरजाइकेपडेहैं ॥ यातैं तूं ताउष्ट्रश रीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार ताभवानीकेशापतैं अनंतर सोसनत्कुमार ताअश्वसेवक शरीरकापरित्यागकरिके राजाकेगृहविषे उष्ट्रशरीरकूंप्राप्तहोताभया ॥ तहां उष्ट्रोंकेशिक्षाकरणेहारेपुरुषों नें ताउष्ट्रकूं बहुतप्रकारकोशिक्षाकरी ॥ परंतु सोउष्ट्र किंचित्मात्रभी तिनपुरुषोंकीशिक्षाकूं नहींमानताभया ॥ तिसतैंअनंतर तेउष्ट्रोंकेशिक्षाकरणेहारेपुरुष ताउष्ट्रकूंअत्यंतआलसीजानिके वनविषेपरित्यागक रतेभये ॥ तावनविषेप्राप्तहुआसोउष्ट्र परमसुखकूंप्राप्तहोताभया ॥ काहेतें तावनविषे सोउष्ट्र करीरादिकबहुतकंटकोंकूं भक्षणकरताभया ॥ तथा श्रीगंगाजीकेमधुरजलकूंपानकरताभया ॥ और बैठाहुआही सोउष्ट्र मलमूत्रकापरित्यागकरताभया ॥ याकारणतें सोसनत्कुमारमुनि ताउष्ट्रशरीरविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया ॥ किंवा ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे ब्रह्माने जितनैंकीपशुशरीरोंकूं उत्पन्नकन्याथा ॥तिनसर्वश रीरोंविषे याउष्ट्रशरीरकूंसुखरूपजानिके सोब्रह्मा याउष्ट्रशरीरकूं सर्वतैंप्रथम उत्पन्नकरताभयाहै यातैं यहउष्ट्रशरीर सर्वपशुशरीरोंतैंश्रेष्ठहै ॥ याप्रकार ताउष्ट्राशरीरविषे सर्वशरीरों तैं श्रेष्ठताकाविचारकरिकेभी सोसनत्कुमारमुनि ताउष्ट्रशरीरविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार कितनेककालकेव्यतीतहुएतैंअनंतर तामहादेवसहित साभवानीदेवी तावनविषेआवतीभई ॥ और तासनत्कुमा रकूं ताउष्ट्रशरीरविषेभी परमआनंदकूंप्राप्तहुआदेखिके साभवानी तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकावचनकहतीभई ॥ हेसनत्कुमार ॥ मैंतु म्हारेऊपरप्रसन्नभईहूं॥यातैं जोतुम्हारेकुंइच्छाहोवै सोहमारेसैंवरमांग॥हेशिष्य॥इसप्रकारके ताभवानीकेवचनकूंश्रवणकरिके सोसनत्कुमार ताभवानीकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेदेवी॥आपनें कृपाकरिके हमारेताईं जोयहउष्ट्रकाशरीरदियाहै ॥ इसतैंपरे कोईअधिकवर

मैं देखतानहीं ॥ याउद्रशरीरविषेही मैं कृतकृत्यहूं ॥ हेदेवो ॥ याउद्रशरीरविषे हमारेकूं वेदों तैं तथालोकों तैं भयकोप्राप्ति तथालज्जाकी प्राप्ति होतीनहीं ॥ और याउद्रशरीरविषे जोकदाचित् मैंबैठाहुआभी विष्ठामूत्रकापरित्यागकरताहूं ॥ तौभी तेविष्ठामूत्र हमारेशरीरकूंस्प र्शकरतेनहीं ॥ किंतु तेविष्ठामूत्र याहमारेशरीरतैं दूरआइकेपडेहैं ॥ हेदेवी ॥ मैंने याउद्रशरीरविषे परमसुखकाअनुभवकर्‍याहै ॥ यातैं जोकदाचित् परमेश्वर हमारेकूं आगेशरीरोंकोप्राप्तिकरै ॥ तौ याउद्रशरीरोंकोही वारंवार प्राप्तिकरै ॥ ऐसोप्रार्थना मैं परमेश्वरकेआगेक रताहूं ॥ हेदेवी ॥ याअनादिसंसारविषे मैंनेपूर्व अनेकप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंका अनुभवकर्‍याहै ॥ परंतु याउद्रशरीरकेसमान सुखका हेतु याब्रह्मांडविषेकोईभीशरीर हमनैं देख्यानहीं॥ यातैं इसउद्रशरीरतैंपरे किसीभी वरकी मैं इच्छाकरतानहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकेव चन जभी तासनत्कुमारनैं ताभवानीकेप्रतिकहे ॥ तभी साभवानी तासनत्कुमारकूं निष्कामदेखिके महादेवकेसाथ विचारकरिके याप्रकार कावचनकहतीभई ॥ हेसनत्कुमारमुनि सर्वकामनावों तैं रहितहोणेतैं जोतूं हमारेसैंवरनहींमांगता ॥ तौ तूं हमारेप्रति मनवांछितवरदेहु ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारके ताभवानीकेवचनकूं श्रवणकरिके सोसनत्कुमार ताभवानीकेवचनकूं अंगीकारकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर साभ वानी तूंहमारापुत्रहोहु याप्रकारकावर मांगतीभई ॥ तावरकूंदेके सोसनत्कुमार ताभवानीदेवीका स्कंदनामापुत्रहोताभया ॥ तिसीस्कंदकूं शास्त्रवेत्तापुरुष स्वामिकार्तिकेय यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ जो कामकूं आपणेवशकरै ताकूंस्कंदकहेहैं॥सोसनत्कुमार तास्कंदनामाअव तारविषेभी पूर्वकीनाईं ब्रह्मचर्यधर्मविषेही स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार पूर्व सनत्कुमारभगवान्‌नैं नारदमुनिकेप्रति जोसुखरू पभूमाकाउपदेशकर्‍याहै ॥ सोसंपूर्णउपदेश हमनैं तुमारेप्रति कथनकर्‍या॥हेशिष्य ॥ जैसे आरुणिऋषि श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याआत्मादेव का सत्यरूपकरिकेउपदेशकरताभयाहै॥और जैसे सनत्कुमारभगवान् नारदमुनिकेप्रति याआत्मादेवका आनंदरूपकरिकेउपदेशकरताभ याहै॥तैसे ब्रह्मा इंद्रकेप्रति तथाविरोचनकेप्रति याआत्मादेवका जाग्रतादिकतीनअवस्थावों तैं रहितरूपकरिके उपदेशकरताभयाहै॥परंतु तिनदोनोंविषे देवराजइंद्रतौ शुद्धआहारवालाथा तथा शुद्धचित्तवालाथा तथापूर्वउक्तस्मृतिवालाथा तथाकामक्रोधादिकग्रंथियोंकेपरित्याग

करणेविषे यत्नवोलायो ॥ यातैं सोइंद्र ताब्रह्माकेउपदेशतैं जाग्रतादिकतीनअवस्थावों तैं भिन्नकरिकै ताआत्माकूं साक्षात्कारकरताभया ॥ और विरोचन निजआहारशुद्धिआदिकोंतैंरहितथा ॥ यातैं सोविरोचन जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैंभिन्नकरिकै ताआत्माकूं नहींजानताभया ॥ किंतु सोविरोचन यास्थूलशरीरकूंही आत्माजानताभया ॥ हेशिष्य ॥ यात्रयोदशेअध्यायकेआदिविषे जोतुम नैं आत्माकीसुखरूपतापूछीथी ॥ सोहमनैं तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरी ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूं इच्छाहोवै ॥ सोहमोरैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे छांदोग्यसारार्थप्रकाशे सनत्कुमारनारदसंवादो नाम त्रयोदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १३ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

॥ इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेत्रयोदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे चतुर्दशोऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशङ्कराचार्येभ्योनमः ॥ अथ चतुर्दशाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वत्रयोदशेअध्यायविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्के सप्तमअध्यायकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब याचतुर्दशेअध्यायविषे तिसीछांदोग्य उपनिषद्केअष्टमअध्यायकाअर्थ निरूपणकरेहैं॥तहां पूर्वत्रयोदशेअध्यायविषे ताभूमाआत्माकोसुखरूपताकूंश्रवणकरिके परमआनंदकूं प्राप्तहुआ सोशिष्य ॥ पुनः जाग्रतादिकतीनअवस्थावों तेंभिन्नरूपकरिके ताभूमाआत्माकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहुआ आपणेगुरुकेप्र ति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके प्रथमअध्यायविषे आपनें ऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषद् काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकमुनियोंके तथावामदेवादिकअधिकारीजनोंकेसंवादकरिके आपनें नानाप्र कारकोब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ औरहेभगवन् याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथा तृतीयअध्यायविषे आपनें तिसीऋग्वेदके कौ षीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिके आपनें नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याकथनकरीथी॥और याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुकेतथाबालाकीब्राह्मणकेसंवादकरि के आपनें नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥औरहेभगवन्॥याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनें यजु र्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहां याआत्मपुराणके चतुर्थअध्यायविषे आपनें प्रथम एकस्त्रीवंश दोपुरुषवंश यहती नप्रकारकाऋषियोंकावंश कथनकऱ्याथा ॥ और दध्यङ्अथर्वणऋषिनें जाब्रह्मविद्या देवराजइंद्रकेप्रति तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदे शकरीथी॥साब्रह्मविद्याभी आपनें कथनकरीथी॥तथा तादध्यङ्ऋषिका देवराजइंद्रतेंमरणभी आपनें कथनकऱ्याथा ॥ तथातादध्यङ्ऋषि के क्षमादिकगुणोंकाभी आपनें कथनकऱ्याथा॥इसतेंआदिलेकेअनेकप्रकारकोवार्त्ता ताचतुर्थअध्यायविषे आपनें कथनकरीथी॥औरहेभग वन्॥याआत्मपुराणकेपंचमेंअध्यायविषे जनकराजाकोयज्ञसभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाआश्वलादिकब्राह्मणोंके संवादकरिके आपनें ना नाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिके शाकल्यब्राह्मणकामृत्युकथनकऱ्याथा॥और हेभगवन् याआत्मपुरा

णकेषष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके दोबारसंवादकरिकै आपणे नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ जाब्रह्मवि
द्या सूर्यभगवान् याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति देताभयाहै ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथा मैत्रेयी
स्त्रीके संवादकरिके आपनें नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्रमका कथनकऱ्याथा ॥ और हेभ
गवन् याआत्मपुराणके अष्टमेअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे
श्वेताश्वतरमुनिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै आपनें याजगत्केकारणका निरूपणकऱ्याथा ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराण
केनवमअध्यायविषे आपनैंतिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथन
करीथी ॥ नचिकेता पिताकेवचनकूंसत्यकरणेवासते यमलोकविषेजाताभया तहां सोनचिकेता तायमराजातें पिताकीप्रसन्नता अग्निवि
द्या आत्मज्ञान यहतीनवरलेताभया ॥ तावरकेप्रभावतें सोनचिकेता तायमराजाकेमुखतें वैराग्यादिकसाधनोंसहित आत्मज्ञानकूंश्रवण
करताभया ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेदशमेंअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का तथानारायणीयउपनि
षद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे आपनें वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिकै ब्रह्मकास्वरूपलक्षण तथा तटस्थ
लक्षण निरूपणकऱ्याथा ॥ तथा अन्नमयादिकपंचकोशोंतैंभिन्नकरिकै ताब्रह्मकास्वरूप वर्णनकऱ्याथा ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्म
भावरूपअनुभव आपनें कथनकऱ्याथा ॥ तथा सत्यादिकसाधनोंकानिरूपणकरिकै तिनसर्वसाधनोंतैं संन्यासआश्रमकीअधिकता वर्णन
करीथी॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेएकादशेअध्यायविषे आपनें जाबालादिएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ताएकादशे
अध्यायविषेआपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी॥पूर्वसंवर्तकादिकमहान्पुरुष तापरमहंससंन्यासकूंधारणकरतेभये हैं॥और तापरमहंससंन्यासके
प्राप्तिकाएकवैराग्यहीकारणहै॥और तावैराग्यकीप्राप्ति गर्भदुःखोंकेविचारतैंहोवे है॥तथा मरणकेज्ञानतैंहोवे है॥तथा अष्टांगयोगतैंहोवे है ॥
और सोवैराग्यवान्पुरुषही तासंन्यासकाअधिकारीहै ॥ और तापरमहंससंन्यासीका बाह्यअंतरभेदकरिकै दोप्रकारकाआचारहोवे है ॥

तहां दंडकमंडलुभिक्षाआदिक बाह्यआचारहोवे है ॥और शमदमादिक अंतरआचारहोवे है ॥ तहां मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानका तो सोशमदमादिरूपअंतरआचारहो मुख्यकारणहै ॥ सोब्रह्मज्ञानभी आपनें ब्रह्मउपनिषदादिकोंविषेकथनकऱ्याथा ॥ इत्यादिकसर्ववार्त्ता आपनें ताएकादशेअध्यायविषेवर्णनकरीथी ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणकेद्वादशेअध्यायविषे आपनेंसामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ ताद्वादशेअध्यायविषे उद्दालकमुनिके तथाश्वेतकेतुके संवादकरिके आपनें नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके त्रयोदशेअध्यायविषे आपनें तिसीछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तात्रयोदशेअध्यायविषे आपनें सनत्कुमारके तथानारदके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥हेभगवन् तात्रयोदशेअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ प्रजापतिब्रह्मा इंद्रकेप्रति तथाविरोचनकेप्रति तीनअवस्थातेंरहितभूमाआत्माका उपदेशकरताभया ॥ तिनदोनोंविषे इंद्रतो ताभूमाआत्माकूंजानताभया ॥ और विरोचन ताभूमाआत्माकूं नहींजानताभया हेभगवन् ॥ याप्रकारकेविचित्रआख्यानकूं मैं आपकेमुखतेंश्रवणकरणेकोइच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिके हमारेप्रति सोसर्ववृत्तांत कथनकरो ॥इसप्रकार ताश्रद्धावान्शिष्यकरिके पूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति छांदोग्यउपनिषद्के अष्टमअध्यायविषेकथनकरीहुईकथाकूं कहताभया॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य॥ जोब्रह्मा इंद्रकेप्रति तथाविरोचनकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभयाहै ॥ सोब्रह्मा सर्वदा जिसब्रह्मलोकविषे निवासकरे है ॥ सोब्रह्मलोक कैसाहै ॥ अत्यंतविस्तारवालाहै ॥ तथा सर्वदुःखोंकूंनाशकरणेहाराहै ॥तथा जोब्रह्मलोक शुद्धअंतःकरणवालेसंन्यासियोंकूं अर्चिरादिकमार्गकरिके प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ तथाभृगुआदिकप्रजापतियोंके जेमहरादिकलोकहैं ॥ तिनसर्वलोकोंतें सोब्रह्मलोक ऊपरस्थितहै ॥ और ताब्रह्मलोकविषे ऐरंमदीयनामा एकमहान्सरोवरहै ॥ सोसरोवर अनेकप्रकारकेकमलोंकरिकेशोभायमान्है ॥ तथा तीनतापोंकीनिवृत्तिकरणेहाराहै ॥ तथा उपासनाकेबलतें अल्पफलकेदेणेहारेपुण्यपापकर्मोंकेक्षयहुएतेंअनंतर याउपासकपुरुषोंकूं तासरोवरकीप्राप्तिहोवे है ॥ और सोसरोवर इरानामाअन्नकारसरूपहै ॥ तथा मदकाहेतुहै याकारणतेंशास्त्रवेत्तापुरुष तासरोवरकूं ऐरंमदीय यानामकरिकेकथ

नकरे हैं ॥ ओर जिसब्रह्मलोकविषे अश्वत्थवृक्षकेआकार एकसोमसवननामा कल्पद्रुमरहेहे ॥ सोकल्पवृक्ष माताकीनाई सर्वभूतप्राणियोंकूं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिकरे है ॥ तावृक्षतैं सर्वदा अमृतस्रवैहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तावृक्षकूं सोमसवन यानामकरिकेकथनकरे हैं॥ ओर जिसब्रह्मलोकविषे एक अरनामा तलावरहेहे ॥ ओर दूसरा ण्यनामा तलावरहेहे ॥कैसेहैंतेदोनोंतलाव ॥ समुद्रकेतुल्य विस्तारवालेहैं ॥ तथा दुग्ध दधि घृत यातीनोंकरिकेपूर्ण हैं ॥ ओर जैसे राजाकेभृत्य राजाकेपुत्रकूं आदरपूर्वक राजदरबारविषेलेजावे हैं ॥ तैसे विद्युतलोकविषेप्राप्तहुए उपासकपुरुषकूं अमानवपुरुष ताविद्युतलोकतैं जिसब्रह्मलोकविषेलेजावे हैं ॥ ओर जिसब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुए उपासकपुरुषकेप्रति ब्रह्माकरिकेप्रेरणाकरीहुई पंच शत ५०० अप्सरा सन्मुखआवे हैं ॥ कैसीहैंतेअप्सरा ॥ सूर्यकेसमान तेजवालीहैं ॥ तथा षोडशवर्षकीअवस्थावालीहैं ॥ तथा रूपयौवनकरिकेसंपन्नहैं ॥ तथा तुर्यादिकवादित्रोंके मधुरशब्दकरिकेशोभायमानहैं ॥ तथा ताउपासकपुरुषकेदेखणेकीहैउत्कंठाजिनोंकूं ॥ तथा ताउपासकपुरुषकेशरीरकूं ब्रह्माकेसमान अलंकारोंकरिके शोभायमानकरणेहारीहैं ॥ जिनअप्सरावोंकूं श्रुतिविषे अंबा अंबायवीय यादोनामोंकरिकेकथनकर्‍याहे ॥ ऐसीपंचशतअप्सरा ताउपासकपुरुषकेसमीपआवे है ॥ तिनपंचशतअप्सरावोंविषेभी एकशत १०० अप्सरातो ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवासते नानाप्रकारकेसुगंधवालेपुष्पोंकीमालावोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवेहैं ॥ ओर एकशत १०० अप्सरातो ताउपासकपुरुषकेलगावणेवासते नानाप्रकारकेअंजनोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवे हैं॥ओर एकशत १०० अपसरातो ताउपासकपुरुषकेलगावणेवासते नानाप्रकारकेचूर्णोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवे हैं ॥ ओर एकशत १०० अप्सरातो ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवासते नानाप्रकारकेवस्त्रोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवे हैं ॥ ओर एकशत १०० अप्सरातो ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवासते नानाप्रकारकेभूषणोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवे हैं ॥ इहां शरीरकेचाकचिक्यकाहेतु जेसुगंधिवालेतेलादिकहैंतिनोंकानाम अंजनहै ॥ ओर शरीरकेमर्दनकरणेयोग्य जेसुगंधिवाले केईकपदार्थ हैं तिनोंकानाम चूर्ण है ॥ इत्यादिकअनेकपदार्थोंकूं आपणेहस्तविषेलेके तेअप्सरा ताउपासकपुरुषकेसमीपआवे हैं ॥ ओर जिसब्रह्मलोकविषे एकआरनामाह्रदरहेहे ॥ तथा

एकदुस्तरविरजानामा नदीरहेहै ॥ ताआरनामाह्रदके तथाविरजानामानदीके मध्यविषे येष्टिहनामा मुहूर्तोंकेअभिमानीदेवतारहेहैं ॥ तिन देवतावोंकूं सोउपासकपुरुष आपणेविवेकयुक्तमनकरिके दूरभगा इदेवे हैं ॥ ओर ताब्रह्मलोकविषे यहउपासकपुरुष जभी ताह्रदनदीकूंत रिके इल्यनामावृक्षकेसमीपजावेहै ॥ तभी ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्माकेग्रहणकरणेयोग्य दिव्यगंध प्राप्तहोवे है ॥ ओर ताब्रह्मलोकविषे यह उपासकपुरुष जभी सालजन्यनामा संस्थानकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्माकेग्रहणकरणेयोग्य दिव्यरस प्राप्तहोवे हैं ॥ ओर ताब्रह्मलोकविषे यहउपासकपुरुष जभी अपराजितनामा आयतनकेसमीपजावे है ॥ तभी ताउपासकपुरुषकूं नानाप्रकारकेदिव्यरूप प्राप्तहोवे हैं ॥ तथा ताउपासकपुरुषविषे ब्रह्माकातेज प्रवेशकरे है ॥ ओर तिसब्रह्मलोकविषे महान्तेजवाले इंद्र तथाप्रजापति यहदोनों द्वारपालहैं ॥ तेदोनोंद्वारपाल ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्माकेतेजयुक्तदेखिक भययुक्तपुरुषकीन्याई शीघ्रही भीतरजाणेकेमार्गकीप्राप्तिकरे हैं ॥ ओर ताब्रह्मलोकविषे एकहिरण्यमयनामा ब्रह्माकाप्रासादहै ॥कैसाहैसोप्रासाद ॥ महान्विस्तारवालाहै ॥ तथा अनेकप्रकारकेरत्नोंकरिके जडितहै ॥ तथा सभास्थानकरिकेयुक्तहै ॥ ओर ताब्रह्माकेप्रासादविषे विचक्षणानामा बुद्धिरूपवेदिकाहै ॥ कैसीहैसाबुद्धिरूपवेदिका ॥ सर्वशुभलक्षणोंकरिकेसंपन्नहै॥तथा सर्वजगत्काकारणहै ॥ ओर ताब्रह्मारूपवेदिकाविषे एक अमितौजसनामा प्राणरूपपर्यंकस्थितहै ॥ जिसप्राणकूं वाजसनेयशाखावालेब्राह्मण उद्गातारूपकरिकेउपासनाकरेहैं ॥ ओर छांदोग्यशाखावालेब्राह्मण ताप्राणकूं उद्गीथरूपक रिके उपासनाकरे हैं ॥ कैसाहैसोप्राणरूपपर्यंक ॥ जिसपर्यंकके पूर्वदिशाकीतरफकेदोपादतौभूतभविष्यत्जगत्रूपहैं ॥ ओर लक्ष्मी पृथ्वी यहदोनों तापर्यंकके पश्चिमदिशाकी तरफकेदोपादहैं ॥ ओर बृहत्साम रथंतरसाम यहदोप्रकारकासामवेद तापर्यंकके दक्षिण उत्तरदिशाकेतरफकी दीर्घकाष्ठमयदोपटिकाहैं॥ओर भद्रसाम तथायज्ञायज्ञीयसाम यहदोप्रकारकासामवेद तापर्यंकके पूर्वपश्चिमदिशाके तरफकी अल्पकाष्ठमयदोपटिकाहैं ॥ ओर मंत्ररूपऋग्वेद तथामंत्ररूपसामवेद यहदोनों तापर्यंकके पूर्वपश्चिमदिशाकेतरफकी दीर्घ सूत्रमयपटियां हैं ॥ ओर मंत्ररूपयजुर्वेद तापर्यंकके दक्षिणउत्तरदिशाकेतरफकी अल्पसूत्रमयपटियां हैं ॥ जिनसूत्रमयपटियोंकूं

लोकविषे नवारकहे हैं ॥ और जिसपर्यंकका चंद्रमाकीकिरणमय उपस्तरणहे ॥ जिसउपस्तरणकूं लोकविषे गादलाकहे हैं ॥ और उद्गी
थनामासामवेद ताउपस्तरणकेऊपरविछावणेयोग्य श्वेतवस्त्ररूपहे ॥ और लक्ष्मी तापर्यंककासिराणाहे ॥ ऐसेप्राणरूपपर्यंकविषे जोब्रह्मा
सर्वदा विराजमानहे ॥ कैसाहेसोहिरण्यगर्भरूपब्रह्मा ॥ जगत्रूपपटकरिकेआवृतहे ॥ तथा जाहिरण्यगर्भकाशरीर पृथिवीआदिकपं
चभूतोंकरिकेपुष्टहुआहे ॥ तथा जोहिरण्यगर्भ सर्वजीवोंकासमष्टिरूपहे ॥ और श्रुतिविषे अंबया याशब्दकरिकेकथनकरीजे उपासनारूप
नदियां हैं ॥तिननदियोंकेनीरकूं जोब्रह्मा सर्वदा पानकरेहे ॥ और ताब्रह्माकी दोप्रियस्त्री हैं ॥ तहांएकतो प्रतिरूपानामाप्रियाहे ॥ कैसीहे
साप्रतिरूपानामाप्रिया ॥ समष्टिरूपतेजकेपुंजकूं आपणेअभिमानकाविषयकरिके विराजमानहे ॥ तथा सर्वचक्षुइंद्रियोंका उपादानका
रणरूपहे और ताब्रह्माकी दूसरीप्रिया मानसीनामाहे ॥ जामानसीप्रिया सरस्वतीरूपकरिकेप्रसिद्धहे ॥ ऐसीदोपत्नियोंसहित सोब्रह्मा
तासभाविषेस्थितहोवेहे ॥ कैसाहेसोब्रह्मा ॥ इंद्रादिकसर्व देवतावोंकादेवताहे ॥ और सर्वब्रह्मांडविषे व्यासहैं विभूतियांजिनोंकी ऐसेजे
इंद्रादिकदेवताहैं ॥ तिनसर्व देवतावोंकरिके जोब्रह्मा उपासनाकरणेयोग्यहे ॥ ऐसाप्रजापतिब्रह्मा सर्वभूतोंकेहितकोइच्छाकरताहुआ तिनस
र्वभूतोंकूंसुखकीप्राप्तिकरणेवासते किसीप्रसंगपाइकेतासभाविषे याप्रकारकावचनकहताभया ॥ जोवस्तुअत्यंतदुर्लक्ष्यत्वरूपकरिकेकथ
नकऱ्याहे ॥ तथा जोवस्तु भूमारूपकरिकेवर्णनकऱ्याहे ॥ तथा जोवस्तु सर्वदेहधारीजीवोंकूं प्रत्यक्रूपकरिकेप्रसिद्धहे ॥ सोवस्तु सर्वअ
नात्मपदार्थोंतें निरतिशयप्रीतिकाविषयहे ॥ याकारणतें तावस्तुकूं आत्मा याशब्दकरिकेकथनकरेहे ॥ तथा ताआत्मवस्तुकूं अहंकारा
दिकोंतेंपरे कथनकरे हैं॥ और अनित्यफलकोप्राप्तिकरणेहाराजोकर्म हे ॥ ताकर्मकानाम पाप्माहे ॥तापाप्मानामा कर्मोंकाआश्रयभूतजो
यहस्थूलसूक्ष्मशरीरहे ॥ तिनदोनोंशरीरोंकेसंगतें सोआत्मादेव रहितहे ॥ याकारणतें ताआत्मादेवकूं अपहतपाप्मा यानामकरिकेकथन
करेहे॥और सोआत्मादेव जरा मरण शोक मोह क्षुधा पिपासा याषट्ऊर्मियोंतेंरहितहे ॥ काहेतें जरा मरण जन्म इत्यादिक यास्थूलशरी
रकेधर्म हैं॥ और शोक मोह राग इत्यादिक मनकेधर्म हैं॥ और क्षुधा पिपासा यहदोनों प्राणकेधर्म हैं ॥तिनजरामरणादिकधर्मोंविषे कोई

भी आत्माकाधर्मनहीं है ॥ याकारणतें ताआत्मादेवकूं श्रुतिभगवती विजर विमृत्यु विशोक विजिघत्स अपिपास इत्यादिकनामोंक रिकेकथनकरेहै॥और ताआत्मादेवका इच्छारूपकाम सत्यहै ॥ तथा ज्ञानरूपसंकल्प सत्यहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं सत्यकाम सत्यसंकल्प यानामकरिकेकथनकरे है॥काहेतें देह मन प्राण यातीनोंकेअध्यासरूपसंबंधतें याआत्मादेवकूं जन्ममरणादिकसं सारकीप्राप्तिहोवैहै॥तासंसारकालविषे यहआत्मादेव जितनीकोइच्छारूपकामनाकरेहै॥तथा जितनैंकोज्ञानरूपसंकल्पकरे है॥तेसंपूर्ण कामना तथासंकल्प बाधितअर्थविषयकहोणेतें मिथ्याहोहोवे हैं ॥ और आत्मज्ञानकरिके जभी तिनदेहमनप्राणादिकोंकाबाधहोवे है ॥ तभी तेइच्छासंकल्पादिक प्रथमतो उत्पन्नहीनहींहोवे हैं ॥ और ताज्ञानअवस्थाविषे जोकदाचित् बाधितानुवृत्तिकरिके तेइच्छादिक उत्पन्नभी होवे हैं ॥ तोभी तेइच्छादिक मिथ्याहोवैंनहीं॥काहेतें ताज्ञानकालविषे सोविद्वान्पुरुष ताइच्छासंकल्पादिकसर्वजगत्कूं आत्ममात्ररूपक रिकेहीअनुसंधानकरे है॥ अधिष्ठानआत्मातेंभिन्नरूपकरिके तिनइच्छादिकोंकूंदेखेनहीं॥और तेइच्छासंकल्पादिक आपणीउत्पत्तितेंपूर्वभी सत्मात्ररूपही हैं॥याकारणतें ताआत्मादेवके इच्छासंकल्पादिकसत्यरूपहैं ॥ और सोआत्मादेव यासंसारकेसर्वपदार्थोंतेंरहितहै॥तथा बुद्धिआदिकोंतेंविलक्षणहै॥ऐसाआत्मादेव याअधिकारीपुरुषोंकूं अवश्यजानणेयोग्यहै॥ताआत्माकेजानणेकायहप्रकारहै॥यहअधिकारीपुरुष प्रथम ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्नहोइके ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजावे ॥ तिसतेंअनंतर प्रमाणगतअसंभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासते सोअधिकारी पुरुषताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतें वेदांतवचनोंकूंश्रवणकरे॥तिसतेंअनंतर प्रमेयगतअसंभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासते यहअधिकारीपुरुष तिनवेदांतवचनोंकेअर्थकामननकरे ॥ तिसतेंअनंतर विपरीतभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासतें यहअधिकारीपुरुष तामननकरेहुएअर्थविषे चित्तके वृत्तियोंकाप्रवाहरूप निदिध्यासनकूंकरे ॥ इहांवेदांतशास्त्र जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रतिपादकहै अथवा भेदकाप्रतिपादकहै याप्रकारकेसंशय कानाम प्रमाणगतअसंभावनाहै॥और यहप्रत्यक्आत्मा ब्रह्मतेंअभिन्नहै अथवा भिन्नहै इत्यादिकसंशयोंकानाम प्रमेयगतअसंभावनाहै॥और परिपूर्णआत्माकूंपरिच्छिन्नजानणा इत्यादिकोंकानाम विपरीतभावनाहै ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष श्रवणादिकसाधनोंकरिके

तिसआत्मादेवकूंसाक्षात्कारकरेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष सर्वात्मभावकीप्राप्तिकरिकै सर्वभेदतैंरहितहुआ भूरादिकसर्वलोकोंकूंप्राप्तहोवे है ॥तथा तिनभूरादिकलोकोंविषेवर्त्तमान सर्वभोगोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ काहेतैं सोविद्वान्पुरुष तिनसर्वलोकोंकूं तथातिनसर्वभोग्यपदार्थोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकेजाने है ॥ यासर्वात्मज्ञानही तिनसर्वपदार्थोंकीप्राप्तिहै ॥ हेशिष्य॥इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिब्रह्मानैं सभाविषेस्थितहोइके कथनकर्‍या॥तभी ताब्रह्माकेवचनकूं देवता तथा असुर दोनों श्रवणकरतेभये ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आपणेआपणेलोकविषेस्थित जेदेवताहैं तथाअसुरहैं॥तेदेवता तथा असुर ताब्रह्माकेवचनकूं किसप्रकार श्रवणकरतेभये ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ताब्रह्माकीसभाविषेताब्रह्माके वामभागकीतरफ तथादक्षिणभागकीतरफ अनेकसहस्रदेवता तथाअसुर रहेहैं ॥ तहां असुर देवतावों तैंज्येष्ठहैं॥यातैं तेअसुर ताब्रह्माकेदक्षिणहस्तकीतरफरहे हैं ॥ और देवता तिनअसुरोंतैंकनिष्ठहैं॥यातैं तेदेवता ताब्रह्माके वामहस्तकीतरफरहेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ द्वयाहवेप्राजापत्याज्यायांसोऽसुराःकनीयांसोदेवाः॥अर्थयह॥असुर तथादेवता दोनों प्रजापतितैंउत्पन्नहुएहैं॥तिनोंविषे असुरतो ज्येष्ठहैं ॥ और देवता कनिष्ठहैं ॥ १ ॥ कैसेहैंतेदेवता तथा असुर ॥ अत्यंतउग्रतेजवालेब्रह्माविषे जिनोंकेनेत्रोंकीदृष्टिलागीहै ॥ तथा परस्परविरोधकरिकेयुक्तहैं ॥ याकारणतैं ताब्रह्मकीसभाविषे तेदेवतातो असुरोंकूंनहींदेखते ॥ और तेअसुर देवताओंकूंनहीं देखते॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी ताब्रह्माकीसभाविषे ताब्रह्माकेमुखतैं मोक्षकेसाधनकूंप्रकाशकरणेहारेवचन निकसे ॥ तभीतिनब्रह्माकेवचनोंकूं तेसभावासी देवता तथाअसुर श्रवणकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेदेवतातोतीनलोकवर्तिसर्वदेवताओंकेप्रति सावार्त्ता कहतेभये ॥ और तेअसुरतो तीनलोकवर्तिसर्वअसुरोंकेप्रति सावार्त्ता कहतेभये ॥ तहां सर्व देवताओंकाराजाइंद्र तावार्त्ताकूंश्रवणकरिके आपणे सर्वदेवताओंकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेदेवताओ ॥ ब्रह्माकेमुखतैं जोयहवार्त्ता निकसीहै ॥ तावार्त्ताकूं हमारेशत्रुअसुर जैसे नहींजानिसके ॥ ऐसाकोईप्रयत्न तुमोंनैं करणा ॥ इसप्रकार सोसर्वअसुरोंकाराजाविरोचनभी तावार्त्ताकूंश्रवणकरिके आपणेसर्वअसुरोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेसर्वअसुरो ॥ ब्रह्माकेमुखतैं जोयहवार्त्ता निकसीहै ॥ तावार्त्ताकूं हमारेशत्रुदेवता जैसे नहींजानिसकें ॥ ऐसा

कोईप्रयत्न तुम्हनैंकरणा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोइंद्र तथाविरोचन आपणेआपणेअनुचरोंकेप्रति तावार्त्ताकेप्रगटकरणेका निवारणकर तेभये ॥ तिसतैंअनंतर देवराजइंद्रतो आपणेदेवताओंकेसाथ तथाविरोचन आपणेअसुरोंकेसाथ याप्रकारकामंत्र करताभया ॥ हेबुद्धिमान् अनुचरो ॥ जिसआत्माकेज्ञानतैं हम विनाहीप्रयत्नतैं सर्वलोकोंकूंप्राप्तहोवैं ॥ तथा तिनसर्वलोकवर्तिभोग्यपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैं ॥ ऐसाआत्मा काज्ञान हमारेकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणेयोग्यहै ॥ परन्तु आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै जोकदाचित् हमसर्व आपणेराज्यकापरित्याग करिके ताब्रह्माकेसभाविषेजावैंगे ॥ तोहमारेछिद्रोंकूंसर्वदादेखणेहारे जोहमारेशत्रुहैं॥तेहमारेशत्रु याहमारेत्रिलोकीकेराज्यकूं आइकेआपणेव शकरिलेवैंगे ॥ यातैं जैसे कोईपुरुष आपणेमूलधनकीवृद्धिकरणेवासतै किसीव्यापारविषेप्रवृत्तहोवै ॥ और ताव्यापारविषे तापुरुषका सोमूलधनभीनष्टहोइजावै ॥ तैसे याप्रकारकान्याय हमारेविषेभीप्राप्तहोवेगा ॥ यातैं आपणेराज्यकापरित्यागकरिके हमसर्वोंकूं ताब्रह्मलोक विषे जाणायोग्यनहीं है ॥ किंतु हमसर्वोंविषे कोईएक बुद्धिमान्पुरुष ताब्रह्मलोकविषेजावै ॥ जोबुद्धिमान्पुरुष ताब्रह्मातैं आत्मज्ञानकाउ पदेशलेके हमसर्वोंकेप्रति गुरुरूपहोइके ताआत्मज्ञानकाउपदेशकरै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तेदेवता तथाअसुर आपणेआपणेविषे परस्प रमंत्रकरिके तिनदेवताओंविषेतो देवराजइंद्र निकसताभया ॥ और तिनअसुरोंविषे विरोचनराजा निकसताभया ॥ सोदेवराजइंद्र तथा विरोचनराजा दोनों कैसे हैं ॥ बलबुद्धिआदिकगुणोंकरिकेयुक्तहैं ॥ तथाधैर्यवान्हैं ॥ तथा सर्वलोकविषेयशवाले हैं ॥ तथा दोनों ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीइच्छावालेहैं ॥ तथा दोनों अत्यन्तअभिमानयुक्तहैं ॥ तथा तेदोनों परस्पर जीतणेकीइच्छावालेहैं ॥ ऐसे इंद्र तथा विरोचन दोनों समिधआदिकपदार्थोंकूंहस्तविषेग्रहणकरिके एकहीकालविषे षट्कुटीप्रभातन्यायकीरीतिसैं ताब्रह्माकेसमीपजातेभये ॥ ताषट्कुटीप्रभातन्यायका यहअर्थ है ॥ नदीकेतीरविषे स्थितजाकुटीहै ॥ जिसकुटीविषेस्थितहोइके राजाकेभृत्य लोकों तैं अन्नादिक पदार्थोंकामहसूललेवै हैं ॥ ताकुटीकानाम षट्कुटीहै ॥ ताषट्कुटीविषेस्थितराजाकेभृत्योंकेप्रति महसूलदियेतैंविनाही आपणेदेशविषे जाणेकीइच्छाकरतेहुए कोईकवणिक्पुरुष ताकुटीकेमार्गकापरित्यागकरिके किसीदूसरेमार्गविषे रात्रिकूंचलतेभये ॥ तिनवणिक्पु

रुषोंकूं देवयोगतें तामार्गकाविभ्रमहोइके तिसीषट्कुटीकेसमीपआइके प्रभासहोताभया ॥ याकानाम षट्कुटीप्रभातन्यायहै ॥ ताषट्कुटी
प्रभातन्यायकीरीतिसें सोदेवराजइंद्र तथाअसुरोंकाराजाविरोचन दोनों एकहीकालविषे ताब्रह्माकेसमीपआवतेभये ॥ और यहवार्त्ताहमारे
शत्रु नहींजानें याप्रकारकोजाइच्छा तिनोंनें करोथी॥सातिनोंकीइच्छा पूर्णनहींहोतीभई॥हेशिष्य॥सोइंद्र तथाविरोचन दोनों आपणेआपणे
कार्यकोसिद्धिकरणेविषे अत्यंतबुद्धिमान्थे ॥ यातें अंतरविषेपरस्परशत्रुभाववालतेहुएभी बाहरसें आपणेभ्राताकीन्याईं परस्परस्नेहकरते
भये ॥ और तेइंद्रविरोचनदोनों ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते ताब्रह्माकेपादोंऊपर दंडवत्प्रणामकरिके ताब्रह्माकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाप्रश्न
करतेभये ॥और सर्वभूतप्राणियों तें पूर्वउत्पन्नभयेजेमनुआदिकहैं॥तिनमनुआदिकों तें भीपूर्वउत्पन्नभया जोचतुर्मुखब्रह्माहै ॥ सोब्रह्मा ति
नदोनोंकेअंतरकेसर्वअभिप्रायकूंजानिके तिनदोनोंकेगर्वादिकदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवासते बतीस३२वर्षपर्यंत किसीकार्यांतरविषे संलग्नपु
रुषकीन्याईं स्थितहोताभया ॥ और सोब्रह्मा तिनदोनोंकेवचनोंकूंश्रवणकरताहुआभी नहींश्रवणकरतेकीन्याईं स्थितहोताभया ॥ हेशि
ष्य ॥ इसप्रकार ताब्रह्मानेंकन्याजो उपेक्षारूपनिरादर तानिरादरकूंप्राप्तहुए तथासर्वभोगोंतेंरहितहुए तेइंद्रविरोचनदोनों ताब्रह्माकेसमीप
स्थितहोतेभए ॥ जैसे यालोकविषे महाराजाकेस्नेहकापात्रभूत जोकोईपुरुषहै ॥ तिसपुरुषके किसीमहान्अपराधकूंदेखिके जभी सोमहा
राजा तापुरुषकीउपेक्षाकरिदेवे है ॥ तभी सोदोषवानपुरुष ताउपेक्षारूपनिरादरकूंप्राप्तहुआ तथासर्वभोगोंतेंरहितहुआ तथाताराजाकेमुख
कूंसर्वदादेखताहुआ महान्ग्लानिपूर्वक ताराजाकेसमीपनिवासकरैहै ॥ तिसीप्रकार तेइंद्रविरोचनदोनों ताब्रह्माकेसमीप निवासकरते
भये ॥ हेशिष्य ॥ सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे करणेयोग्यजेभोजनादिकहैं॥तेभोजनादिकक्रियाभी तिनदोनोंको नियमपूर्वक नहीं
होतीभई ॥ जभी भोजनादिकभी तिनदोनोंकूं नियमपूर्वक नहींप्राप्तहोतेभये ॥ तभी स्त्रीसंभोगादिकोंकेप्राप्तिकीक्याआशाहै ॥
हेशिष्य ॥ इसप्रकार तेइंद्रविरोचनदोनों बत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यधर्मकूंपालनकरतेभये ॥ तथा यहब्रह्माकभीहमारेऊपरअनुग्रहकरैगा याप्र
कारकीइच्छाकरिके सर्वदा ताब्रह्माकेमुखकीतरफदेखतेभये ॥तिनबत्तीसवर्षोंकेव्यतीतहुएतेअनंतर सोब्रह्मा तिनदोनोंकेमुखकीतरफदेख

ताभया ॥ तथा सोब्रह्मा तिनदोनोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेइंद्र हेविरोचन तुम्हारेभोगणेयोग्य जेस्वर्गादिकलोकोंकेस्थूल भोगहैं तिनस्थूलभोगोंतैंरहित तथामहान्दुःखकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यजोयहब्रह्मलोकहै॥ताब्रह्मलोकविषेमहान्दुःखपूर्वकआइके तुमदोनों किस प्रयोजनवासते निवासकरतेभयेहो ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार जभी ताप्रजापतिनैं इंद्रविरोचनसैंपूछा॥तभी सोइंद्रविरोचनदोनों याआत्माऽपहत पाप्मा ॥ इत्यादिकपूर्वउक्तब्रह्माकेवचनकापाठकरिके ताब्रह्माकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं आत्माकेज्ञानतैं सर्वलोकोंकी तथातिनसर्वलोकवर्तिभोग्यपदार्थोंकी प्राप्तिहोवे है ॥ याप्रकारकावचन पूर्वआपनैं सभाविषेकह्याथा ॥ ताआपकेवचनकूं श्रवणकरिके तिसआत्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहुए हमदोनों आपकेसमीप बत्तीसवर्षपर्यंत निवासकरतेभये हैं ॥ यातैं आप कृपाकरिके हमारेप्रति ताआत्मज्ञानकाउपदेशकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताइंद्रविरोचननैं ब्रह्माके प्रतिकह्या॥तभी मंदमंदहंसताहुआ सोप्रजापति तिनदोनोंकेप्रति प्रथमजाग्रत अवस्थाकेसाक्षीआत्माका चक्षुविषेस्थितरूपकरिके उपदेश करताभया॥ब्रह्माउवाच ॥ हेइंद्र हेविरोचन ॥ याअधिकारीपुरुषोंनैं शास्त्रसंस्कारयुक्तबुद्धिकरिके चक्षुविषे जोपुरुषदेखता है ॥ सो चक्षु स्थपुरुषही आत्माहै ॥ तथा सोचक्षुस्थपुरुषही अपहतपाप्माविजर विमृत्यु विशोक विजिघत्स अपिपास सत्यकाम सत्यसंकल्प इत्या दिस्वरूपहै ॥ तथा सोचक्षुस्थपुरुषही भयतैंरहितनिर्गुणब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य॥जैसे गुड यद्यपि स्वभावतैंमधुरहीहोवैहै ॥तथापि जिनपुरु षोंकेरसनविषेपित्तदोषहोवैहै ॥ तेपुरुष तामधुरगुडकूंभी कटुरूपकरिकेग्रहणकरैहैं ॥तैसे सोप्रजापतिकावचन यद्यपि आत्माकेवास्तवस्व रूपकाप्रतिपादकहै ॥ तथापि आपणेविषयसंस्काररूपदोषकेवशतैं तेइंद्रविरोचनदोनों ताब्रह्माकेवचनका कोईदूसराअर्थकल्पनाकरिके ताब्रह्माकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ याशरीरकाप्रतिबिंबरूपजोछायाहै॥साछायाही ताचक्षुविषेदेखणेमैंआवै है ॥ यातैं आपनैं ताचक्षुविषेस्थितछायाकूंही आत्मारूपकरिकेकथनकर्‍याहै॥ताछायाआत्माकास्वरूप हमआपणीबुद्धिकेबलतैं ताचक्षुतैंभिन्न स्थल विषेभीजानतेहैं ॥ काहेतें जैसे चक्षुविषे सोछायारूपआत्मा प्रतीतहोवैहै ॥ तैसेस्वच्छदर्पणविषे तथास्वच्छजलविषे तथास्वच्छखड्ग

विषेभी सोछायारूपआत्माप्रतीतहोवे है ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनैं यहवचनकह्याथा॥ दक्षिणचक्षुविषे जोपुरुष देखणेमेंआवेहै ॥ सोपुरुषही आत्माहै ॥ सोयहआपकावचन द्रष्टापुरुषकेअभिप्रायकरिकेसंभवेनहीं ॥ काहेतें याळोकविषे जिसपुरुषकूं आपणी छायाकेदेखणेकीइच्छाहोवे है॥सोपुरुष दर्पणादिकोंतेंविना केवळआपणीचक्षुविषे आपणोछायाकूंदेखिसकतानहीं ॥ किंतु सोपुरुष दर्पणादिकोंविषेही आपणीछायाकूं देखिसकेहै ॥ यातें हमोंनैंकथनकरेजे दर्पण जळ खड्ग आदिकोंविषेस्थितछायारूपआत्माहै ॥ तथा आपनैंकथनकऱ्याजो चक्षुविषेस्थितछायाआत्माहै॥तिनसर्वछायाआत्मावोंविषे कौनछायाआत्मा ग्रहणकरणा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताइंद्रविरोचननैं आपनैंपंडितपणेकेअभिमानकरिके ताप्रजापतिकेप्रति कथनकऱ्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनदोनोंकेभ्रांतिकूंजानताहुआभी तिनोंकेभ्रांतिकीउपेक्षाकरिके आपणेयथार्थअनुभवकेअनुसार तिनदोनोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्रविरोचन ॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा तिनदर्पणादिकसर्वउपाधियोंविषे साक्षीरूपकरिकेप्रतीतहोवे है ॥ यातें सोआनंदस्वरूपआत्मातिनदर्पणादिकसर्वउपाधियोंविषे विद्यमानहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोब्रह्मा ताइंद्रविरोचनकेप्रति आत्माकाउपदेशकरिके आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ याइंद्रविरोचनकेप्रति हमनें आनंदस्वरूपस्फुरणकाही आत्मारूपकरिकेउपदेशकऱ्याथा ॥ परंतु याइंद्रविरोचनकूं आपणेबुद्धिकेदोषतें जैसे प्रथमहमारेउपदेशतें आत्माकाबोधनहोभयाथा ॥तैसे यादूसरीवारउपदेशतैंभी इन्होंकूं ताआत्माकाबोधहुआनहीं॥किंतु हमारेदोनोंउपदेशतें इन्होंनें छायाकूंही आत्माजान्याहै ॥ याप्रकारका आपणेमनविषेविचारकरिके सोब्रह्मा तिनदोनोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्रविरोचन जळकरिकेपूर्णजोयहशरावनामा मृत्तिकाकापात्रहै ॥ ताशरावविषे तुमदोनों आपणेआत्माकूंजाइकेदेखो ॥ ताशरावविषे जिसवस्तुकूं तुमदेखो ॥ सोवस्तु तुम पुनःहमारेप्रतिआइकेकथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ ताब्रह्मानैं इंद्रविरोचनकेप्रति जोयाप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै ॥ तावचनकहणेविषे ताब्रह्माकायहअभिप्रायहै ॥ दर्पणजळादिकउपाधियोंविषेस्थितजोछायाहै ॥ साछाया नित्यहैनहीं॥किंतु तिनदर्पणादिकउपाधियोंकेभेदकरिके साछाया परिणामीहै॥यातें घटपटादिकपदार्थोंकीन्याई ताछायाविषे अना

स्वरूपता स्पष्टहोवे है ॥ और सोस्फुरणरूपसाक्षी अंतरबाहर सर्वत्रपरिपूर्ण है ॥ यातें सोस्फुरणरूपसाक्षीही आत्मारूपहै ॥ याप्रकार साक्षी आत्माविषे तथाछायाविषे महान्‌विशेषताहै ॥ ताविशेषताकूं यहदोनों नहींग्रहणकरतेभये हैं ॥ काहेतें यादोनोंकूं आपणेपंडितपणेका बहुतअभिमानहै ॥ तथा परस्परद्वेषकरिके इनदोनोंकाचित्त मलिनहुआहै ॥ याकारणतें यहदोनों हमारेउपदेशतें तास्फुरणरूपसाक्षीआत्माकूं नहींजानतेभयेहैं ॥ किंतु उलटा छायाकूंहीआत्मामानिके यहदोनों दर्पणादिकोंविषेस्थित छायाआत्मावोंविषे कौनछायाआत्मा ग्रहणकरणा याप्रकारकेसंशयकूंप्राप्तहुएहैं ॥ जोमैं इनदोनोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहोंगा ॥ हमनैं तुम्हारेप्रति जोआत्माकास्वरूप उपदेशकऱ्याहै ॥ ताहमारेउपदेशकूं तुमोंनैं यथार्थग्रहणनहींकऱ्या ॥ किंतु ताहमारेउपदेशकूं तुमोंनैं विपरीतग्रहणकऱ्याहै ॥ याप्रकारकावचन जोमैं इनदोनोंकेप्रति कहोंगा ॥ तो इनदोनोंका मानभंगहोवेगा॥तामानकेभंगहुए इनदोनोंकूं महान्‌लज्जाकीप्राप्तिहोवेगी ॥ तालज्जाकरिकेइन्होंकी बुद्धि कुंठितहोइजावेगी ॥ ताकुंठितबुद्धिकरिके इन्होंकूं हमारेवचनकाअर्थ किंचित्‌मात्रभी नहींप्रतीतहोवेगा ॥ यातें तुमोंनैं हमारेउपदेशकूं विपरीतग्रहणकऱ्याहै याप्रकार इन्होंकीभ्रांतिकूंप्रगटकरिके पुनःइन्होंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरणा हमारेकूं योग्यनहीं है ॥ किंतु इनदोनों अभिमानियोंकेप्रति मैं किसी उपायकरिके ताआत्माकाबोधकरों ॥ काहेतें शास्त्रविषे याप्रकारकानियमकह्याहै ॥ जिसप्रकारकी शिष्यकीबुद्धिहोवे ॥ तिसीप्रकारकेबुद्धिकूंग्रहणकरिके यहगुरु ताशिष्यकेप्रति बोधकरे ॥ शिष्यकेबुद्धिकीउपेक्षाकरिके यहगुरु ताशिष्यकेप्रतिबोधकरेनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ उत्तम मध्यम मंद याप्रकारकेभेदकरिके शिष्य तीनप्रकारकेहोवे है ॥ तहां जिसशिष्यविषे सत्वगुणतो अधिकहोवे है ॥ और रजो तमोगुण अल्पहोवे है ॥ सोशिष्य उत्तमकह्याजावे हैं ॥ और जिसशिष्यविषे रजोगुण अधिकहोवे है ॥ और सत्वगुण तमोगुण अल्पहोवे है ॥ सोशिष्य मध्यमकह्याजावेहै ॥ और जिसशिष्यविषे तमोगुणअधिकहोवे है ॥ और सत्वगुण तथारजोगुण अल्पहोवे है ॥ सोशिष्य मंदकह्याजावे है ॥ औरउत्तम मध्यम मंद यहतीनप्रकारकेशिष्यभी बुद्धिकीतीक्ष्णताकरिके तथाबुद्धिकीमध्यमताकरिके तथाबुद्धिकीमृदुताकरिके तीनतीनप्रकारकेहोवे हैं॥तिनशिष्योंविषे ॥ जिसजिसशिष्यकी जैसीजैसीबुद्धिहोवे ॥

तिसतिसशिष्यके तैसीतैसीबुद्धिकूंग्रहणकरिकैही यागुरुनैं बोधकरणा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिके सोप्रजापति
ताइंद्रविरोचनकेप्रति दर्पण जल चक्षु आदिकसर्वउपाधियोंविषे सोआत्माव्यापकहै याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ हमनैं तुम्हारेप्रति प्र
त्यक्वस्तुकाउपदेशकऱ्याहै ताकूंनजाणिके तुम अनात्मछायाकूं किसवासतेआत्मामानतेहो याप्रकारकाउत्तर सोब्रह्मा तिन्होंकेप्रति नहीं
कहताभया ॥ और तिसीअभिप्रायकूं अंगीकारकरिके सोप्रजापति तिनदोनोंकेप्रति तुमदोनों जलकरिकेपूर्णशरावविषे आपणेकूंदेखो
याप्रकारकाउपदेशकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ ताब्रह्माकेउपदेशकूंअंगीकारकरिके तेइंद्रविरोचनदोनों तहांतैंजाइके शरावविषेआपणेकूंदेख
तेभये ॥ ताशरावविषेआपणेकूंदेखिके तेदोनों पुनः ताप्रजापतिकेसमीपजातेभये ॥ तिनदोनोंकूंआयाहुआदेखिके सोप्रजापति तिनदोनों
केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ हेइंद्रविरोचन ॥ तुमदोनो नैं याजलयुक्तशरावविषे आपणेप्रतिबिंबकेदेखणेकरिके किसतत्त्व
कूंनिश्चयकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं ताइंद्रविरोचनकेप्रतिकह्या ॥ तभी जैसेमूढबालक आपणेअभि
प्रायकूं पिताकेआगे कथनकरे है॥तैसे तेइंद्रविरोचनदोनों ताप्रजापतिकेआगे याप्रकारकाआपणाअभिप्राय कथनकरतेभये॥हेभगवन्॥पाद
तैंलेकेमस्तकपर्यंत नखकेशादिकोंकरिकेयुक्त जोयहहमाराशरीरहै॥ताशरीररूपआत्माकूंही हमदोनों याशरावविषेदेखतेभयेहैं ॥ हेशिष्य ॥
इसप्रकारकावचन जभी ताइंद्रविरोचननें प्रजापतिकेप्रतिकथनकऱ्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनोंकेभ्रांतियुक्तवचनकूंश्रवणकरिके आपणे
उपदेशकरणेकेप्रयत्नकूं निष्फलमानिके बहुतखेदकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर पुनः तिनदोनोंकेबोधकरणेवासते सोप्रजापति आपणे
चित्तविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ याइंद्रविरोचनकेबुद्धिकूंमोहकीप्राप्तिकरणेहारा कोईविचित्रदोषहै ॥ जिसदोषकेबलतैं यहइंद्रवि
रोचन हमारेउपदेशकूं विपरीतहीग्रहणकरे है ॥ काहेतैं प्रथम हमनैं इन्होंकेप्रति सूक्ष्मरीतिकरिके चक्षुविषेआत्माकाउपदेशकऱ्याथा ॥ ता
उपदेशतैंयहदोनों छायाकूंही आत्मामानतेभये ॥ तिसतैंअनंतर हमनैं इनदोनोंकेप्रति मध्यमरीतिकरिके दर्पणजलादिकसर्वउपाधियोंवि
षे ताआत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ताउपदेशतैंभी यहदोनों ताछायाकूंहीआत्मामानतेभये ॥ तिसतैंअनंतर हमनैं इनदोनोंकेप्रति मृदुरीतिक

रिके शरावविषेदेखणेकाउपदेशकऱ्या ताउपदेशतें यहदोनों यास्थूलशरीरकूंही आत्मामानतेभये ॥ परंतु तुमदोनों याजलकेशरावविषे आपणेकूंदेखो यातीसरीवारकेउपदेशकरिके इन्द्रोंकूं पूर्वलेदोवारकेउपदेशतें इतनाविशेषबोधहुआहे॥ पूर्वइन्द्रों नें दर्पणादिकउपाधियोंविषे स्थित आपणीछायाकूंही आत्मामान्याथा॥और अभी शरावकेदेखणेकरिके यहदोनों ताछायाकापरित्यागकरिके यास्थूलशरीरकूंही आत्मामानतेभये हैं ॥ और इनदोनोंनें जोछायाआत्माकापरित्यागकऱ्याहे ॥ सो याप्रकारकेविचारकरिकेकऱ्याहे ॥ भेदतेंरहित जोयहद्रष्टा पुरुषकाशरीरहे ॥ सोशरीरही दूसरेपुरुषोंकेचक्षुविषे तथादर्पणविषे तथाजलादिकोंविषे प्रतीतहोवे है ॥यातें ताद्रष्टापुरुषकेशरीरविषे भेद नहीं है ॥ और चक्षु दर्पण जल खड्ग इत्यादिकउपाधियोंविषे जाप्रतिबिंबरूपछाया प्रतीतहोवे है ॥ साछायातो परिमाणकेभेदकरिके तथारूपादिकगुणोंकेभेदकरिके भेदवालीहोहोवे है ॥ याकारणतें साछायाआत्मानहीं है ॥ किंतु तिनदर्पणादिकउपाधियोंविषे भेदतेंरहित जोयहस्थूलशरीरहे ॥ सोयहशरीरही आत्माहे ॥ याप्रकारकाविचारकरिके इनदोनों नें ताछायाकेआत्मरूपताकापरित्यागकऱ्याहे ॥ यातें जैसे छायाविषे नानारूपताकूंदेखिके यादोनोंनें ताछायाकेआत्मरूपताकापरित्यागकऱ्याहे ॥ तैसे यहदोनों याशरीरविषेभी नानापणेकूंदेखिके याशरीरकेआत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरे ॥ ऐसाकोईउपाय मैं करों ॥ सोउपाय हमारेकूंयहप्रतीतहोवे है ॥ यहइंद्रविरोचनदोनों पूर्व जलशरावविषे जिसशरीरकूंदेखतेभये हैं ॥ सोइन्द्रोंकाशरीर नखकेशादिकोंकरिकेयुक्तथा ॥ तथा मलिनथा ॥ तथा मलिनवस्त्रोंवालाथा ॥ अभी इन्द्रोंकेशरीरकूं नखकेशादिकोंतेंरहितकराइके तथास्नानकराइके पुनः ताजलशरावकेदेखणेका उपदेशकरों॥ताआपणेशरीरकूं पूर्वले शरीरतें विलक्षणदेखिके यहदोनों ताछायाकीन्याईं याशरीरविषेभी आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरेंगे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाविचारकरिके सोभगवान्प्रजापति ताइंद्रविरोचनकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्र हेविरोचन ॥ तुमदोनों आपणेनखकेशोंकामुंडनकराइके तथास्नानकरिके तथासुंदरवस्त्रोंकूंपहरिके तथाश्रेष्ठअलंकारोंकूंधारणकरिके पुनः ताजलशरावविषे आपणेआत्माकूंदेखो ॥ ताजलशरावविषे जिसवस्तुकूं तुमदेखो ॥सोवस्तु आइकेहमारेआगेकथनकरो॥हेशिष्य ॥इसप्रकारकावचन अभी ताप्रजापतिनें ताइंद्रविरोचनके

प्रतिकथनकऱ्या ॥ तभी सोइंद्रविरोचन ताब्रह्माकेवचनकूंअंगीकारकरिके आपणेनखकेशोंकामुंडनकराइके तथावस्त्रभूषणादिकोंकूंधारणक
रिके पुनः ताजलशरावविषे आपणेआत्माकूंदेखतेभये ॥ तादेखणेकरिके तेदोनों पुनःभी याशरीरविषेही दृढआत्मरूपताग्रहणकरिके
ताप्रजापतिकेसमीपआइके याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ हमदोनोंकूं जैसे यास्थूलशरीरविषेही आत्मरूपतासिद्धहोवे ॥
तैसेहमोनें याजलशरावविषे आपणेआत्माकूंदेख्याहे ॥ यातें यास्थूलशरीरहीआत्माहे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताइंद्रविषे
इंद्रविरोचननेंताप्रजापतिकेप्रतिकह्या॥तभीसोप्रजापतिपुनःभीतिनोंकेभ्रांतिकीदृढतादेखिके आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया॥
अल्पबुद्धिवाळे येयहहमारेदोनोंशिष्यहैं ॥ तिनदोनोंकेप्रति हमनें अन्वयव्यतिरेककरिके आत्माकेबोधकरणेकाप्रारम्भकऱ्याथा ॥ तहां
सर्वपदार्थोंविषे जोआत्माकाअनुगतपणाहे ताकानाम अन्वयहे ॥ और दृश्यपदार्थोंविषे जोआगमापायीरूपताहे ताकानाम व्यतिरेकहे ॥
और तुमदोनों आपणेकूंयाजलशरावविषेदेखो यहजोउपदेश हमनें इनोंकेप्रतिकऱ्याथा ॥ ताउपदेशकरिकेभी हमनें याशरीरकेनखके
शादिकधर्मोंकी आगमापायीतादिखाइके याशरीरतें भिन्नकरिकेही आत्माकानिरूपणकऱ्याथा ॥ याशरीरकी आत्मरूपताविषे
कोईहमारातात्पर्यथानहीं ॥ परन्तु यादोनों नें आपणेबुद्धिकेदोषतें याशरीरतें भिन्नरूपकरिके ताआत्माकूंजान्यानहीं ॥ किंतु उलटा
यास्थूलशरीरकूंही इनों नें आत्मारूपकरिकेजान्याहे ॥ यातें इनदोनों केभ्रांतिकीनिवृत्तिकरणेवासते हमारेकूं कोईउपायकऱ्याचाहिये ॥
सोउपाय हमारेकूं यहप्रतीतहोवेहै॥यालोकविषे यादेहरूपआत्माविषे जोजोचंदनलेपादिकसंस्कारकरीतेहैं॥तेसर्वसंस्कार छायारूपआत्मा
विषेप्रतीतहोवे हैं॥ताशरीरकेसंस्कारोंतेंविनाताछायाआत्माविषे स्वभावतेंकिंचित्मात्रभीसंस्कारहोवेनहीं॥यातें चंदनलेपादिरूपवास्तव
संस्कारोंकाआश्रयपणहोणेतें याशरीरही आत्माहे ॥ और यहछाया आरोपितधर्मोंकाआश्रयहोणेतें आत्मारूपनहीं है॥किंवा॥सुखकाअनुभ
वरूपजोफलहै॥सोफलभीयाजीवोंकूं याशरीरकेविद्यमानहुएहीहोवे हे ॥ ताछायाकेविद्यमानहुए सोसुखरूपफल किसीकूंभीप्राप्तहोवेनहीं॥
याकारणतेंभी यहशरीरहीआत्माहे ॥याप्रकार याशरीरकेउत्कृष्टताकूंविषयकरणेहारीबुद्धिकूंअंगीकारकरिके इनदोनों नें याशरीरविषेही आ

त्मरूपताहृढकरीहै ॥ यातैं इनोंकिबुद्धिकूंअंगीकारकरिकेही मैंइनोंकीशरीरविषेआत्मत्वबुद्धिछुडाइके स्फुरणरूपमुख्यआत्माविषे इनोंकेबुद्धिकूंजोडौं ॥ सोमुख्यआत्माविषेबुद्धिकेजोडणेकाप्रकार यहहै जिसस्थूलशरीरकूं इनोंनैं आत्मामान्याहै ॥ सोस्थूलशरीरकेसाहै॥ स्वभावतैंजन्ममरणादिकविकारोंवाला देखणेमैंआवे है ॥ तथा शत्रुवोंतैंभयकूंप्राप्तहुआ देखणेमैंआवे है ॥ तथा परिच्छिन्नदेखणेमैंआवे है॥ऐसेअनित्यशरीरविषे अमरत्वादिकधर्म जिसस्फुरणकेतादात्म्यसंबंधकरिकेप्रतीतहोवे है॥तास्फुरणकूंभी इनदोनोंनैंहमारेसर्वउपदेशोंविषेदेख्या है ॥ काहेतैं जिसशरीरकूं इनों नैं आत्मामान्याहै ॥ तिनशरीरादिकसर्वपदार्थोंविषे यहआत्मा आध्यासिकसंबंधकरिकेअनुगतहै ॥ तास्फुरणरूपआत्मातैंविना कोईभीपदार्थ प्रतीतहोवेनहीं ॥ यातैं जैसे याशरीरविषेस्थितधर्मोंकाछायाविषेअसंभवदेखिके इनोंनैं ताछायाकापरित्यागकरिके याशरीरकूंही आत्मामान्याहै ॥ तैसे यास्थूलशरीरविषेभी नहींसंभवहोणेहारे जेअमरत्वादिक स्फुरणकेधर्म हैं तिनधर्मोंकामैं कथनकरौं जिनधर्मोंकूंदेखिके यहदोनों आपही याशरीरविषेआत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाविचारकरिके सोप्रजापति ताइंद्रविरोचनकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेइंद्रविरोचन ॥ यहस्फुरणरूपआत्मा मरणतैंरहितहै ॥ तथा भयतैंरहितहै ॥ तथा देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै॥ तथा ब्रह्मरूपहै॥ऐसेआत्मादेवकेस्फुरणस्वरूपकूं तुमों नैं हमारेसर्वउपदेशोंविषे सामान्यरूपतैंअनुभवकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं ॥ ताइंद्रविरोचनकेप्रतिकह्या॥तभी सोइंद्रविरोचन ताउपदेशकरिकेभी पुनः ताशरीरविषेही आत्मरूपतानिश्चयकरतेभये॥और ताप्रजापतिनैं जोआत्माकेअमरत्वअभयत्वादिकधर्म कथनकरेथे ॥ तेअमरत्वादिकधर्मभी यास्थूलशरीरविषेहीअंगीकारकरतेभये ॥ हेशिष्य॥यास्थूलशरीरविषे यद्यपि अमरत्वअभयत्वादिकधर्म संभवतेनहीं॥ तथापि जिसअभिप्रायकरिके ताइंद्रविरोचननैं यास्थूलशरीरविषे तेअमरत्वअभयत्वादिकधर्म अंगीकारकरे हैं॥ ताअभिप्रायकूं तूं श्रवणकर यालोकविषे जरारोगादिकोंकीनिवृत्तिकरणेहारे जेरसायनरूपऔषधहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेमंत्रकल्पादिकउपायहैं ॥ तेसंपूर्णरसायनादिक उपाय याशरीरकूं जरामरणादिकोंतैंरहितकरेहैं ॥ यातैं तिनरसायनादिकउपायोंकरिके यास्थूलशरीरविषेभी अमरपणासंभवहोइसकेहै ॥

यातैं यास्थूलशरीरकेअमरकरणेवासते हमोंनैं तेरसायनमंत्रकल्पादिकउपाय अवश्यकऱ्येचाहिये ॥ और जभी याहमारेशरीरविषे तिनर सायनादिकोंकरिकै अमरपणा सिद्धहोवेगा ॥ तभी याशरीरविषे अभयपणाभी विनाहीयत्नतैंसिद्धहोवेगा॥काहेतैं यालोकविषे जेजीव मर णवालेहैं ॥ तिनजीवोंकूंही आपणेमरणकेकारणोंतैंभयकीप्राप्तिहोवे है ॥ और जोपुरुषअमरहै॥सोपुरुष आपणेशत्रुआदिकोंतैं कदाचित्भी भयकूंप्राप्तनहींहोता ॥ और यहशरीर जभीअभयहोवे है॥ तभी याशरीरविषे ब्रह्मरूपताभी संभवहोइसकेहै ॥ काहेतैं व्याकरणकीरीति सें ब्रह्मशब्दकाअर्थ वृद्धिवालाहै ॥ ॥ और संकोचकेअभावकानाम वृद्धिहै ॥ तासंकोचकीप्राप्ति याजीवोंकूं भयकरिकैहोवे है ॥ भयतैं रहितपुरुषकूं किसीतैंभीसंकोचहोवैनहीं ॥ अथवा नानाप्रकारकेरूपोंकेधारणकरणेकाजोसामर्थ्यहै ताकानाम वृद्धिहै ॥ याप्रकारकीवृद्धि भी याशरीरविषे संभवहोइसकेहै ॥ काहेतैं यहपुरुष योगकेबलतैं तथादिव्यओषधिसेवनकेबलतैं मृग अश्व हस्ती महिष इत्यादिकश रीरोंकेधारणकरणेविषे समर्थहोइसकेहै ॥ तथा पर्वतकेसमानआकारके धारणकरणेविषेभी समर्थहोइसकेहै ॥ तथा साक्षात् पर्वतरूप केधारणकरणेविषेभी समर्थहोइसकेहै॥याकारणतैं याशरीरविषेही सात्रह्मरूपतासंभवैहै॥किंवा ॥ उपदेशकेप्रारंभकालविषे जोब्रह्माने आ त्माके अपहतपाप्मा विजर विमृत्यु विशोक विजिघत्स सत्यकाम सत्यसंकल्प इत्यादिकलक्षणकथनकऱ्येथे॥तेसर्वलक्षण योगादिकउपा योंतैं याशरीरविषेसंभवहोइसकेहै ॥ काहेतैं यहशरीररूपआत्मा तिनरसादिकोंकरिकै जभी जरामरणतैंरहितहोवे है ॥ तभी शोकतैंभीर हितहोवे है ॥ काहेतैं यालोकविषे जरामरणादिकविकारोंवालेजीवही सर्वदाशोककूंप्राप्तहोवे हैं॥और मंत्रओषधादिकोंकेबलतैंयहशरीर क्षुधापिपासादिकोंतैंभीरहितहोवे है ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष आपणेशरीरकूं रसायनमंत्रादिकउपायोंकरिकै अमरअभया दिरूपकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष आपणेबलकेप्रभावतैं भूरादिकसर्वलोकोंकूं तथा तिनलोकवर्तिसर्वभोग्यपदार्थोंकूं प्राप्तहोवे है ॥ या अर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहीं है ॥ किंवा ॥ याप्रजापतिनैं जोपूर्व हमारेप्रति चक्षुविषे तथाजलशरावविषे आपणीछायादेखणेकाउ पदेशकऱ्याथा॥ताउपदेशकरिकैभी याप्रजापतिनैं ताछायाकेदृष्टांतकरिकै याशरीररूपआत्माकूंही जरा मरण पाप शोक भय इत्यादिक वि

कारोंतैंरहितहुआथा ॥ ताब्रह्माकेकहणेकायहअभिप्रायथा ॥ जैसे यहछाया शस्त्रोंकरिके तथाअग्निआदिकोंकरिके नाशकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ तथा याछायाकूं पाप शोक भय इत्यादिकविकारभी प्राप्तहोवैनहीं॥तैसे यास्थूलशरीरविषेभी जैसे ते मरण पाप शोक भय आदिकविकार नहींप्राप्तहोवैं ॥ ऐसाकोईउपाय याअधिकारीपुरुषों नें करणा ॥ किंवा ॥ जैसे प्रातःकालविषे तथासायंकालविषे यहछाया वृद्धिकूंप्राप्तहोवे है॥तैसे यहशरीरभी उपायोंतैंवृद्धिकूंप्राप्तहोवे है ॥ याकारणतैंभी यहशरीरहीआत्माहै॥ किंवा॥जैसे स्वभावतैंनाशतैंरहितहुईभीयहछाया कारणकेनाशतैं नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे स्वभावतैंनाशतैंरहितहुआभीयहशरीर कारणकेनाशतैं नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ किंवा॥जैसे ताप्रतिबिंबरूपछायाका यहशरीररूपआत्माही कारणहै ॥ तैसे याशरीररूपआत्माकाभी त्वगादिकसप्तधातुहीकारणहैं॥ जभी शस्त्रप्रहारादिक बाह्यनिमित्तोंकरिकेतथारोगादिकअंतरनिमित्तोंकरिके वात पित्त कफ यहतीनदोष क्षोभकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तभी तेत्वगादिकसप्तधातुभी क्षोभकूंप्राप्तहोइके याशरीरकानाशकरेहैं ॥ यातें जैसे याशरीररूपबिंबकीस्थिरताकरिके प्रतिबिंबरूपछायाकोस्थिरताहोवेहै ॥ तैसे यह अधिकारीपुरुष जभीमंत्रऔषधादिकोंकेसेवनतैं शस्त्रअग्निआदिकबाह्यनिमित्तोंकूं तथारोगादिकअंतरनिमित्तोंकूं नहीं उत्पन्नहोणेदेवे है ॥ तभीयाअधिकारीपुरुषके वात पित्त कफ यहतीनदोष क्षोभकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ तिनदोषोंकेक्षोभतैंविना तेत्वगादिकसप्तधातुभी क्षोभकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और जभी तेत्वगादिकसप्तधातु क्षोभकूंनहींप्राप्तहोवेहैं ॥ तभी यहशरीर दाहछेदनादिकोंकरिके कदाचित्भी नाशहोवे नहीं ॥ किंवा ॥ योग मंत्र रसायनादिकऔषध इत्यादिकउपायोंकरिके सिद्धिकूंप्राप्तहुआशरीरहै ॥ सोशरीर अग्निविषेतो जल कीन्याई शीतलरहे है ॥ और जलविषे सोशरीर पाषाणकीन्याई रहे है ॥ और पृथिवीविषे सोशरीर पृथिवीकेसमानरहे है ॥ अथवा जलकेसमानरहेहै और वायुविषे सोशरीर वायुकेसमानरहेहै ॥ और आकाशविषे सोशरीर आकाशकीन्याईहोवे है ॥ किंवा ॥ योगाभ्यास कालविषेयहपुरुष जभी पृथ्वीआदिकपंचभूतोंकोधारणाकरेहै ॥ तभी यापुरुषकाशरीर तापृथ्वीआदिकपंचभूतोंकेसादृश्यताकूंप्राप्त होवे है ॥ याकारणतैं सोशरीर शस्त्रादिकोंकरिकेभी भेदनकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और जैसे बाणादिकोंकरिकेभेदनकूंप्राप्तहुआभीजल

पुनः पूर्वकीन्याईस्थितहोवे है ॥ तैसे तायोगसिद्धपुरुषकाशरीर बाणादिकोंकरिकेभेदनकूंप्राप्तहुआभी पुनः पूर्वकीन्याई स्थितहोवे है॥या
तें मंत्रओषध योग आदिकउपायोंकरिके यास्थूलशरीरविषेभी अजरत्व अमरत्व अभयत्व आदिकधर्मसंभवहोइसकेहे ॥ हेशिष्य॥याप्र
कारकाविचार आपणेमनविषेकरिके कुबुद्धिकूंप्राप्तहुए तथाअर्थशास्त्रके तथाकामशास्त्रके संस्कारोंकरिके दूषितहैचित्तजिनोंका ऐसेइंद्र
विरोचनदोनों यास्थूलशरीरकूंहीआत्मामानतेभये ॥ और ताब्रह्माकेउपदेशतें याशरीरकूंआत्माजानिके तेइंद्रविरोचनदोनों आपणेमन
विषे बहुतप्रसन्नहोतेभये ॥ तथा आपणेकूंकृतकृत्यमानतेभये ॥ तिसतेंअनंतर तेइंद्रविरोचनदोनों ताप्रजापतिकूंनमस्कारकरिके ताब्रह्म
लोकतें आपणेलोकविषेजातेभये ॥ और तिसकालविषे सोप्रजापति मौनकूंधारणकरिकेस्थितथा ॥ याकारणतें सोब्रह्मा तिनोंकेप्रति जा
णेवासते तथारहणेवासते किंचित्मात्रभी वचन नहींकहताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तेइंद्रविरोचन यास्थूलशरीरकूंआत्मामा
निके ताब्रह्मलोकतें आपणेगृहकूंजातेभये ॥ तभी सोब्रह्मा तिनदोनोंकूंजाताहुआदेखिके आपणेमनविषे याप्रकारकावचनकहताभया ॥
यहदेवतावोंकापतिइंद्र तथाअसुरोंकापतिविरोचन दोनों आपणेकूंपंडितमानतेहैं ॥ तथालोकविषेभी यहइंद्रविरोचन महाबल
बुद्धिवालेहैं याप्रकारप्रसिद्धहैं ॥ तथा इनदोनोंकी परस्परबहुतस्पर्द्धा है ॥ तथा पर्वतकेसमानइनोंकूंअभिमानहै ॥ याकारणतें
इनदोनोंनेंहमारेप्रति पुनःप्रश्नकर्‌यानहीं ॥ किंतु याशरीरकूंहींआत्मामानिके यहदोनों हमारेकूंनमस्कारकरिके शीघ्रही आपणेलोकविषे
जातेभयेहैं ॥ जोमैं अभी किसीआपणेअनुचरकूंभेजिके तुमदोनोंकूं आत्माकायथार्थबोधनहींभया यातें तुम आपणेलोकविषेमतजावो
याप्रकारकावचनकहिके इनोंकूंजाणेतेंनिवारणकरोंगा ॥ तो राजसप्रकृतिवाले यहइंद्रविरोचनदोनों आपणेअभिमानकेनाशहुएतें
क्रोधवान्होइके आपणेजीवनेविषेभी आशातेंरहितहोवेंगे ॥ काहेतें मानकेभंगकरणेहाराजोवचनहै ॥ ताअल्पवचनकेश्रवणकरिके
भी यहदोनों क्रोधरूपशत्रुकेवशकूंप्राप्तहुए हमारेकूंदेखणेविषेआवे हैं ॥ ऐसेइंद्रविरोचनकूं जोमैं मानभंगकरिके क्रोधवान्करोंगा ॥
तो क्रोधकूंप्राप्तहुएयहदोनों महायुद्धकरेंगे ॥ कैसेहैंयहदोनों ॥ देवतावोंकी तथाअसुरोंकी जेस्त्रीहैं ॥ तिनस्त्रियोंकेपतियों

कूंनाशकरिके तिनस्त्रियोंकूं विधवाभावकीप्राप्तिकरणेहारे हैं॥तथा मांसकेभक्षणकरणेहारे जेगृध्रादिकजीवहैं तिनोंकूंआनंदकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ तथा साधुस्वभाववालेपुरुषोंकूं भयकीप्राप्तिकरणेहारे हैं॥ ऐसेइंद्रविरोचनदोनों क्रोधकूंप्राप्तहोइके हस्ती अश्व रथ पदाति याचतुरंगसेनाकूंनाशकरणेहारीयुद्धकूंकरें गे ॥ यातें इनदोनोंकेआत्मज्ञानकेप्रसंगविषे किसीनिमित्ततैंविना अकस्मातवैंही सर्वभूतोंकानाशहोवेगा ॥ सोसर्वभूतोंकानाश मतहोवे ॥ याकारणतें इनदोनोंकूं आणेतें निवारणकरणा ॥ योग्यनहीं है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ युद्धकेभयतें ताब्रह्मातिसइंद्रविरोचनकूं आणेतैंनिवारणकर्यानहीं ॥ यहवार्त्ता ॥ ब्रह्मानें श्रेष्ठनहींकरी ॥ काहेतें यादेहकूंआत्माजानिके तेइंद्रविरोचन जभी आपणेआपणेलोकविषे जावें गे ॥ तभी सर्वजीवोंकेप्रति यादेहात्मवादकाउपदेश करें गे ॥ तादेहात्मवादकूंनिश्चयकरिके तेसर्वजीव अनर्थकूंप्राप्तहोवें गे ॥ समाधान ॥ हेशिष्य॥तादेहात्मवादतैं सर्वलोकोंकूंनिवृत्तिकरणेवासते सोप्रजापति तादेहात्मवादियोंकेप्रति याप्रकारकाशापदेताभया ॥ जिनदेवतावोंकेप्रति तथाजिनअसुरोंकेप्रति तथा जिनमनुष्योंकेप्रति यहइंद्रविरोचन साक्षात्गुरुरूपहोइके तथापरम्परागुरुरूपहोइके यादेहात्मवादकाउपदेशकरें गे ॥ तेसर्वइनोंके शिष्य इसजन्मविषे तथाभावीजन्मविषे श्रेयकेमार्गतैंभ्रष्टहोवें गे ॥ काहेतें ते मूढपुरुष यादेहकूंहीआत्मामानिके तादेहकेरक्षणकरणेवासते नानाप्रकारकेउपायकरें गे ॥ तेसर्वउपाय जभी निष्फलहोवें गे ॥ तभी ते मूढपुरुष महान्दुःखकूंप्राप्तहोवेंगे ॥ काहेतें जैसे ओदनादिरूपपक्वअन्न अथवा खेतिरूपपक्वअन्न नानाप्रकारकेउपायोंकरिकेभी नाशतैंरहितहुआ स्थितहोवेनहीं॥किंतु ॥ सोपक्वअन्न अवश्यकरिकेनाशकूंप्राप्तहोवेंहै ॥ तैंसे यहस्थूलदेहभी नानाप्रकारकेउपायोंकरिकेभी नाशतैं रहितहुआ स्थितहोवेनहीं ॥ किंतु यहदेह अवश्यकरिकेनाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ किंवा ॥ जिसकालविषे सर्वभूतप्राणियोंकूंधारणकरणेहारी तथामहान्पर्वतोंकरिकेयुक्त यहपृथ्वीभी नाशकूंप्राप्तहोवेगी ॥ तथा जलकरिकेपूर्णसप्तसमुद्रभी सूकिजावें गे ॥ तथा तेज वायु आकाश यहतीनोंभी नाशकूंप्राप्तहोवें गे॥तिसकालविषे जलकेफेनबुदबुदकेसमान यहशरीर किसप्रकारस्थितहोवें गे॥किंतु तिसकालविषे यहशरीरनहींस्थितहोवें गे ॥ किंवा॥ज्वरादिकव्याधिरूपशत्रु तथामृत्युरूपशत्रु जिसदेहकेअन्नजलकेसाथमिलेहुएरहे हैं ॥ तथा रक्तवर्णवालेअंगार

रूपअग्निकेसमान क्षुधारूपदाह जिसदेहकेउदरविषे सर्वदारहे है ॥ तथा जिसदेहकेवाह्यदेशविषेभी सर्ववृश्चिकादिकभूतरूपदाह सर्वदारहे है॥ तथा जिसदेहके शस्त्रअस्त्ररूपमृत्यु वाह्यविचरणेहारे हैं ॥ और जैसे कदलीवृक्षकास्तंभ त्वचामात्रहोणेतें निःसारहोवे है ॥ तैसे विचारकियेतेंयहदेहभी निःसारहीहोवे है ॥ ऐसायहस्थूलदेह किसप्रकारअमरहोवेगा ॥ किंतु यादेहविषे किसीप्रकारकरिकेभी अमररूपतासंभवेनहीं ॥ किंवा ॥ सर्वजीवोंकायहस्थूलदेह पुण्यपापकर्मरूपनिमित्तकारणतें उत्पन्नहोवे है॥तथा पृथ्वीआदिकपंचभूतरूपउपादानकारणतें उत्पन्नहोवे है॥जभी तिनकर्मोंका तथापृथ्वीआदिकभूतोंकाभी नाशहोवेगा ॥ तभी यहदेह किसप्रकार स्थितहोवेगा ॥किंतु नहींस्थितहोवेगा ॥किंवा॥यादेहका कारणरूपजोकर्महै ॥ सोकर्म यद्यपि एकशतवर्ष १०० आयुष यामनुष्योंकूंदेवे है॥तथापि ताशतवर्ष तें अनंतर सोकर्म अधिकआयुष देवैनहीं ॥काहेतें जगत्केकर्ताईश्वरनें सृष्टिकेआदिकालविषे जैसीजैसीव्यवस्थाकरीहै॥तिसीतिसीप्रकार तेकर्मादिक फलकूंदेवेहैं ॥यातें एकशतवर्षतेंउत्तर यादेहविषे सोअमरपणा किसप्रकारहोवेगा॥किंतु नहींहोवेगा ॥ किंवा॥वैद्यकशास्त्रविषे ऋषिलोकोंनें जेरसायनादिकऔषध कथनकरे हैं॥सोकेवल यादेहकेरोगादिकोंकीनिवृत्तिवासतेकथनकरे हैं॥यादेहकेअमरकरणेवासते नहींकथनकरे हैं॥तथा योगाभ्यासकालविषे धारणाकरिकेवशकरेजे पृथ्वीआदिकपंचभूतहैं ॥ तेपंचभूतभी तायोगीपुरुषके बलकीवृद्धिकरणेवासतेंहीहोवे हैं ॥ तायोगीपुरुषकेअमरकरणेवासतेहोवेनहीं ॥ जोकदाचित् रसायनादिकऔषधोंकरिके तथा पंचभूतोंकीधारणाकरिके यहदेह अमरहोताहोवे॥ तो जिनपुरुषों नें तेरसायनादिकऔषध प्रवृत्तकरे हैं तथा सापंचभूतोंकोधारणाप्रवृत्तकरी है ॥ तेपुरुष मृत्युंकूंनहींप्राप्तहोणेचाहिये ॥ और तेरसायनादिकऔषध प्रवृत्तकरणेहारेपुरुषभी मृत्युकूंप्राप्तहोतेभये हैं ॥ यातें तिनरसायनादिकोंविषे यादेहकेअमरकरणेकासामर्थ्यं संभवेनहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ जन्मवालाहोवे है ॥ तिसतिसपदार्थकानाश अवश्यकरिकेहोवे है ॥ जैसे घटपटादिक पदार्थ जन्मवालेहैं ॥ यातें तिनोंकानाशभी अवश्यकरिकेहोवे है ॥ तैसे यहदेहभी जन्मवाला है ॥ यातें यादेहका नाशभीअवश्य करिकेहोवेगा ॥ किंवा ॥ यहसर्वमनुष्योंकेशरीर पंचवर्षपर्यंततो बाल्यअवस्थावालेहोवे हैं ॥ तिसतेंअनंतर षोडशवर्षपर्यंत कुमार

अवस्थावालेहोवे हैं ॥ तिसतेंअनंतर षष्ठिवर्षपर्यंत यौवनअवस्थावालेहोवे हैं ॥ तिसतेंअनंतर वृद्धअवस्थावालेहोवे हैं ॥ इसप्रकार सर्वदेह धारीजीवोंकूं आपणेआपणेदेहकानाश अनुभवकरिकेसिद्धहै ॥ ऐसानाशवान्देह किसप्रकारसेंनित्यहोवेगा ॥ किंवा ॥ याजीवोंकामरण या देहकेसाथही उत्पन्नहोवे है ॥ तादेहकेविद्यमानहुए तामरणकेनिवृत्तकरणेका कोईभीउपायनहीं है॥ ॥ यहवार्त्ता पुराणविषे व्यासभगवान् नेंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ मृत्युर्जन्मवतांवीर देहेनसहजायते ॥ अद्यवाऽब्दशतांतेवा मृत्युर्वैप्राणिनांध्रुवः ॥ अर्थयह ॥ हेवीर जन्मवाले प्राणियोंकामृत्यु देहकेसाथहीउत्पन्नहोवे है ॥ सोमृत्यु आजदिनविषेहोवे ॥ अथवा शतवर्षतेंअनंतरहोवे ॥ परंतु जन्मवालेप्राणियोंका मृत्युअवश्यकरिकेहोणाहै ॥ १ ॥ किंवा ॥ तामृत्युकेनिवृत्तकरणेका यहएकउपायहै ॥ जोपुनः यादेहकाग्रहणनहींहोय॥ याउपायकूंछोडिके दूसराकोई मृत्युकेनिवृत्तकरणेकाउपाय तीनलोकविषेहैनहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ मृत्योर्बिभेषिकिंमूढ भीतंमुंचतिकिंयमः अजातंनैषगृह्णाति कुरुयत्नमजन्मनि ॥ अर्थयह ॥ हेमूढ मृत्युतें तूं क्योंभयकरताहै ॥ तुम्हारेकूंभययुक्तदेखिके क्या यमराजाछोडिदेवैगा ॥ किंतु नहींछोडेगा ॥ जिसपुरुषकाजन्मनहींहोता ॥ तिसपुरुषकूं सोयमराजा ग्रहणकरतानहीं ॥ यातें जोतुमारेकूं यमराजातेंछूटणेकीइच्छाहोवे तोजन्मतेंरहितकरणेहारे आत्मज्ञानविषे तूं प्रयत्नकर ॥ १ ॥ ऐसा जन्ममरणकीनिवृत्तिकरणेहारा आत्मज्ञान यादेहात्मवादियोंकूं अत्यंतदुर्लभहै॥ काहेतें जोयहस्थूलदेह मरणतेंअनंतर श्वानादिकोंकरिकेभक्षणकऱ्याहुआतो विष्ठारूपहोवे है॥ तथा अग्निविषेदग्धकऱ्याहुआ भस्मरूपहोवे है ॥ तथा पृथ्वीविषेपूरणकऱ्याहुआ मृत्तिकारूपहोवेहै॥ऐसेनाशवान्देहकूं जिनोंनें आत्मारूपमान्याहै ॥ ऐसेदेहात्मवादीपुरुष ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते मनकरिकेभी प्रयत्ननहींकरेंगे ॥ किंवा ॥ सर्वदेहात्मवादियोंकागुरुरूप जोयहप्रह्लादकापुत्रविरोचनहै तथादेवराजइंद्रहै तिनदोनोंकादेहभी मरणतेंअनंतर विष्ठाभस्मपृथ्वीरूपअवश्यहोवैगा ॥जभी तिनदोनोंका देहभी याप्रकारकीगतिकूंप्राप्तहोवैगा ॥ तभी इतरजीवोंकेदेहोंकीक्यावार्त्ता है ॥ किंवा तेमूढपुरुष यादेहकूंहीआत्मामानिके विवेकसंतोषादिकगुणोंतेंरहितहोइके केवलपापकर्मोंकूंही करेंगे ॥ तिनपापकर्मोंकरिके तेदेहात्मवादीपुरुष परलोकविषे किंचित्मात्रभी सुखकूंनहीं

प्राप्तहोवैगा ॥ किंतु केवलदुःखकूंहीप्राप्तहोवैंगे ॥ जिनदुःखोंकूंवाणीकरिकैकहणेविषेभी कोईसमर्थनहीं है ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ याइंद्र करिके तथाविरोचनकरिके उपदेशकऱ्याजोदेहात्मवादहै ॥ सोदेहात्मवाद जिसजिसजीवकोबुद्धिविषेप्रवेशकरेगा ॥ तेसर्वजीव दोनोंलोक विषे दुःखकूंहीप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं यहदेहात्मवाद महामोहमयहै हेशिष्य इसप्रकार देहात्मवादकरिकैलोकोंकूं अनर्थकीप्राप्तिरूपफलका चिंतनकरिकेभी सोप्रजापति युद्धकेभयतैं तिनदोनोंकेप्रति किंचित्मात्रभीवचन नहींकहताभया ॥ किंतु सोप्रजापति मौनकूंधारणकरिके स्थितहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर तेइंद्रविरोचनदोनों आपणेआपणेलोकविषेजातेभये ॥ अब तिनदोनोंविषे प्रथम विरोचनकावृत्तांत निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ देहरूपआत्माकूंजानिके अत्यंतप्रसन्नहुआ सोविरोचन ताब्रह्मलोकतैं शीघ्रही आपणेअसुरोंकीसभाविषेआवता भया ॥ कैसेहैं तेअसुर ॥ स्वभावतैंहीतामसी हैं ॥ तथा रजोगुणकरिकेआवृत हैं ॥ तथा सत्वगुणकेलेशमात्रतैंभीरहितहैं ॥ तथा सर्वदा विचारतैंरहितहैं ॥ ऐसेअसुरोंकीसभाविषे सोविरोचन आवताभया ॥ तासभाविषे असुरोंकरिकैबहुतसन्मानकऱ्याहुआ सोसूर्यकेसमान तेजस्वीविरोचन ऊंचेआसनउपरस्थितहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोमूढात्माविरोचन ताब्रह्मलोकविषे महान्कष्टकरिके जिसदेहात्मज्ञान कूं ग्रहणकऱ्याथा ॥सोदेहात्मज्ञान तिनसर्वअसुरोंकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ तेअसुरताउपदेशतैंपूर्वभी अनेकप्रकारकीकुतर्कोंकरिके या देहकूंही आत्मामानतेथे ॥ तिसीदेहात्मवादकूं गुरुसंप्रदायतैंजानिके अत्यंतदृढनिश्चयकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोविरोचन तिन सर्वअसुरों केप्रति ताप्रजापतिकासर्वउपदेशश्रवणकराइके पुनः याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेअसुरो ॥तुमोनें यादेहरूपआत्माकाही सर्वदापूजनकरणा ॥ यादेहरूपआत्मातैंभिन्न जितनेंकीअग्निब्राह्मणादिकहैं तिनोंका तुमों नें कदाचित्भीपूजननहींकरणा ॥ काहेतैं याश रीरतैंभिन्न जितनेकीअग्निब्राह्मणादिकहैं ॥ तेसर्व यादेहरूपर उपकारकरेहैं ॥ याकारणतैं तेसर्व यादेहरूपआत्माकेशेषभूतहैं ॥ यहदेहरू पआत्माही तिनसर्वोकाशेषीरूपहै ॥ ऐसेदेहरूपआत्माका जोसर्वतैंउत्कृष्टरूपकरिकेज्ञानहै ॥ सोज्ञानही ताआत्माकापूजनहै ॥ और हेअ सुरो ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं दोनोंलोकोंकेसुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ सोपुरुष आपणेगुरुकीन्याई यादेहरूपआत्माकाही नानाप्रकार

केदुकूलोंकारिकेपूजनकरे तथा सुवर्णकारिकेजडित नानाप्रकारकेरत्नोंकारिकेपूजनकरे॥तथा हस्तियोंकेमस्तकतैंनिकसेजेमोती हैं॥ तिनमो
तियोंकेगुच्छोंकारिके तादेहरूपआत्माका पूजनकरे ॥ तथा सूर्यकेसमानतेजवाले जेनानाप्रकारकेअलंकारहैं ॥ तिनअलंकारोंकारिके
ताकापूजनकरे ॥ और कोमलस्पर्शवाले तथासुंदररूपवाले तथासुगंधिवाले ऐसेजेविचित्रमालारूपपुष्पहैं ॥ तिनपुष्पोंकारिके तादे
हरूपआत्माका पूजनकरे ॥ और कर्पूरादिकोंकरिकेयुक्त तथाशीतलजलकरिकेयुक्त जोचंदनहै ॥ ताचंदनकरिके ताका पूजनकरे॥तथा
शय्या आसन अन्न पान इत्यादिकपदार्थोंकरिके तादेहरूपआत्माकापूजनकरे ॥ इसप्रकार जोपुरुष अनेकप्रकारकेपदार्थोंकरिके
श्रद्धाभक्तिपूर्वक यादेहरूपआत्माकापूजनकरेहै ॥ सोपुरुष दोनोंलोकविषेसुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातें सुखकीइच्छावानपुरुषनें यादेह
रूपआत्माका अवश्यकरिकेपूजनकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ प्रत्यक्षनाशवानजोयहदेहहै ॥ ताकेपूजनकरणेकरिके किसफल
कीप्राप्तिहोवेगी किंतु नहींहोवेगी ॥ समाधान ॥ हेअसुरो ॥ रसायनादिकउपायोंकरिकेसिद्धिकूंप्राप्तभयाजोयहदेहहै ॥ तादेहरूप
आत्माका कदाचित्भी मरणहोवैनहीं ॥ और जोदेह रसायनादिकउपायोंकरिकेसिद्धिकूंनहींप्राप्तभयाहै ॥ तादेहकीमरणअवस्था
यद्यपि विचारहीनमूढपुरुषोंनेंमानीहै ॥ तथापि विवेकीपुरुषों नें यहदेह मरणकूंप्राप्तहुआहै याप्रकारकीमरणबुद्धिकरिके तादेहकूं
अग्निविषेदाहकरणानहीं ॥ काहे तें जैसेसंग्रामशालाविषे शस्त्रअस्त्रोंकेप्रहारकरिकेपीडितहुआकोईशूरवीर किंचित्कालपर्यंतता
थविषे सर्वचेष्टातेंरहित मूर्छितहुआ शयनकरेहै ॥ तैसे यहदेहभी रसायनादिक सिद्धियोंकेअप्राप्तहुए किंचित्कालपर्यंत मरेहुए
कीन्याई मूर्च्छाकूंप्राप्तहुआ शयनकरे है ॥ परंतु सोदेह मृत्युकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें यादेहरूपआत्माकेबांधवों नें मरणकीशंकाकरिके
तादेहकूं अग्निविषेदाहकरणानहीं ॥ किंतु तिनबांधवों नें प्रथमतो तादेहकूंश्रेष्ठजलोंकरिकेस्नानकरावणा ॥ तथा तादेहकूं सुगंधि
वालेपुष्पचंदनादिकोंकरिके शोभायमानकरणा ॥ तथा तादेहकूं नानाप्रकारकेवस्त्रोंकरिके तथानानाप्रकारकेमालावोंकरिके शोभा
यमानकरणा ॥ तथा तिनबंधुजनों नें तादेहकूं विमानऊपरबैठाइके नानाप्रकारकेवादित्रोंकेशब्दसहित बाहरलेजाणा ॥ तथा
भक्षणकरणेयोग्य जे भक्ष भोज्य लेह्य चोष्य यहचारिप्रकारकेअन्नहैं ॥ तिनअन्नोंकूंबाहरलेजाणा ॥ तथा सुगंधिवालेशीतल

जलकरिकेपूर्ण कलशोंकूंबाहरलेजाणा ॥ तहांजाइके तादेहकेनिवासकरणेयोग्य भूमिविषे खातरूपगृहकरणा ॥ ताखातरूपगृहकूं सर्व ओरतैंशुद्धकरणा ॥ तथा तागृहविषे कोमलआसनविछावणा ॥ ताखातरूपगृहविषे तामृतकदेहकूंराखणा ॥ और तादेहकेदोनोंतरफ ते भक्षणकरणेयोग्य भक्षभोज्यादिकपदार्थ राखणे ॥ तथा तेजलकेकलश राखणे ॥ जैसे महाराजाकेभृत्य तामहाराजाकेवासते नानाप्रकार की सामग्री त्यारकरिकेरक्खेहैं ॥ तैसे तिनबंधुजनों नैं तामृतकदेहकेसमीप नानाप्रकारकेभोग्यपदार्थ त्यारकरिकेराखणे ॥ और तिनबांध वों नैं ताभूमिविषे इसप्रकारकागृह बनावना॥जिसकरिके यादेहरूपआत्माकरिके तादीर्घनिद्राविषे स्थिति नाशकूंनहींप्राप्तहोवे॥ और तिन बांधवोंनैं ताभूमिगृहकेऊपर एकमंडपरूपवेदिकाकरणी ॥ जिसकरिके ताभूमिगृहकाचिरकालपर्यंतभी नाशनहींहोवे॥तथा तागृहविषे वृष्टि काजल प्रवेशनहींकरे ॥ तथा ग्रीष्मऋतुकातापभी तागृहविषेप्रवेशनहींकरे ॥ तथा मासकूंभक्षणकरणेहारे जंबुकादिकजीवभी तागृहवि षेप्रवेशनहींकरें ॥ ऐसीवेदिका ताभूमिगृहकेऊपरबनावणी ॥ इसप्रकार तेबांधव जभी भलीप्रकारसैंरक्षणकरेहैं ॥ तभी सोदेहरूपआत्मा महाराजाकीन्याईं सुखपूर्वक बहुतकालपर्यंत शयनकरेहे ॥ हेअसुरो ॥जबपर्यंत सोदेहात्मवादकेप्रवृत्तकरणेहाराब्रह्मा तिनआपणेशिष्योंकूं देखणेवासतेनहींआवे है ॥ तबपर्यंत सोदेहसुखपूर्वक तहांशयनकरेहे ॥ और जभी सोभगवान्ब्रह्मा कृपाकरिके आपणेदेहात्मवादीशिष्यों केदेखणेवासते आवेगा ॥ तभी वायुनें सर्वत्रव्यापककऱ्याजो ताब्रह्माकेदेहकासुगंध है ॥ तासुगंधकरिके तेसर्व देह तादीर्घनिद्रातैंउठेंगे ॥ जैसे शस्त्र अस्त्रोंकेप्रहारकरिके मूर्छाकूंप्राप्तहुआकोईशूरवीर किसीवायुकेस्पर्शतैं शीघ्रहीतामूर्च्छा तैंउठेहे ॥ तामूर्च्छा तैंउठिके सोशूरवीर पुरुष पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं पुनः आपणेशत्रुवोंकूंनाशकरे है ॥ तैसे रसायनादिकउपायोंकायत्नकरतेहुए यहपुरुष जभी तादीर्घ निद्राविषेसोइजावे है ॥ तभी ताब्रह्माकेसुगंधकरिके तेपुरुष तादीर्घनिद्रातैंउठिके पूर्वसंस्कारोंकेवशतैं पुनः तिनरसायनादिकोंकीप्रा तिवासतैं प्रयत्नकरेहैं ॥ हेअसुरो ॥ इसप्रकार प्रयत्नकरतेहुए यहदेह किसीकालपाइके तिनरसायनादिकोंकूंप्राप्तहोइके अवश्यकरिकेअ मरहोवेंगे ॥ ताअमरपणेकूंप्राप्तिहुए तिनयोगीपुरुषोंकेदेह कदाचित्भीनाशकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ यातैं हेअसुरो॥यादेहरूपआत्माकेअमरकरणे

यासतें तुमसर्व दैत्य रसायनादिकोंकूंसिद्धकरो ॥ तथा योगपरायणहोवो॥ तथा दयातैंरहितहोइके आपणेशत्रुदेवतावोंकूंनाशकरो ॥ और हेअसुरो ॥ याअविवेकीलोकोंकरिकेपूजणेयोग्यजे ब्राह्मण गौवां देवता साधु इत्यादिकहैं ॥ तिनब्राह्मणादिकोंकाशरीर इतरशरीरोंतें विलक्षणप्रतीतहोवेनहीं ॥ किंतु समानहींप्रतीतहोवे हे ॥ काहेतें दोपादवालेजेब्राह्मणादिकहैं ॥ तिनब्राह्मणादिकोंविषे दोपादवालेशूद्रादिकों तें किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं है ॥ किंतु तेदोनों समानहीं हैं तथा चारिपादवालीजेगौवां हैं ॥ तिनगौवोंविषे चारिपादवालेअश्वादिकों तें किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं है ॥ किंतु तेदोनों समानहीं हैं ॥ ऐसेसमानस्वभाववालेशरीरोंविषे यहब्राह्मणादिक पूज्यहैं यहशूद्रादिक अपूज्यहैं याप्रकारकीविषमताकल्पनाकरणी अयोग्यहे ॥ और हे असुरो ॥ जैसे तिन ब्राह्मणादिकोंकेशरीरविषे विशेषतानहीं हैं॥ तैसे तिनशरीरोंकेकारणोंविषेभी विशेषतानहीं है ॥ काहेतें जैसे तिनब्राह्मणादिकोंकाशरीर कामयुक्तपितामाताके शुक्रशोणिततेंउत्पन्नहोवे है॥ तैसे इतरशूद्रादिकोंकेशरीरभी ताकामयुक्तपितामाताके शुक्रशोणिततेंउत्पन्नहोवे हैं॥यातें कारणकीविशेषताकरिकेभी तिनब्राह्मणादिकोंविषे विशेषतासंभवेनहीं॥और हेअसुरो॥जोतुम यहकहो॥सर्वजगत्काकर्त्ता जोईश्वरहे ताईश्वरका ब्राह्मणादिकोंविषेही पक्षपातहै॥याकारणतें तिनब्राह्मणादिकोंविषे सर्वतेंअधिकताहै॥सोयहतुमारा कहणाभी संभवेनहीं॥काहेतें शास्त्रवालेपुरुषों ने जोईश्वरकालक्षण कथनकऱ्या है॥सोलक्षण याकामविषेहीघटेहे॥यातें कामतेंभिन्न दूसराकोईईश्वरहेनहीं॥अब सोईश्वरकालक्षण कामविषेदिखावेहे॥हेअसुरो॥यहकामही सर्वजीवोंकीजननीहे॥तथा यहकामही सर्वजीवोंकापिताहै॥तथा यहकामही विप्रहे॥तथा यहकामही गौहे॥तथा यहकामही देवताहे॥तथा यहकामहीसाधुहे॥तथा यहकामही भ्रातादिकबंधुरूपहे ॥ तथा यहकामही दातारूपहे ॥ तथा यहकामही बलात्कारसें तथाआपणीइच्छा करिके वस्तुकेग्रहणकरणेहारा प्रतिग्रहीतारूपहे ॥ याकारणतें यहकामही सर्वजगत्काकारणहे॥ताकामतेंविना दूसराकोईजगत्काकारण हेनहीं॥ और हेअसुरो ॥ जैसे पृथ्वीविषेस्थितसर्व जल अंशरूपहे ॥ तिनअंशरूपजलोंकीअपेक्षाकरिके समुद्र अंशरूपहे ॥ याकारणतें सोसमुद्र तिनअंशरूपसर्वजलों तें श्रेष्ठहे॥तैसे यालोकविषे यादेहतेंभिन्नपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे जितनेकीकामहैं॥तिनसर्वकामों तें यहदेह

विषयककामही श्रेष्ठहै ॥ काहेतें याब्रह्मांडविषे जितनेंकदेवतामुनीश्वरहैं ॥ तथा जितनेंकहमदेत्यहैं ॥ तथा तीनकालोंविषेवर्त्तमान
जितनेंकमनुष्यादिकप्राणी हैं ॥ तेसंपूर्णहम तिसतिसभोग्यपदार्थोंकीकामनाकरिकेंही आपणेआपणेदेहकेव्यापारकूंकरे हैं ॥ कामनातैंवि
ना कोईभीप्राणीकिसीव्यापारविषेप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ यातें यहजान्याजावे है ॥ यादेहतैंभिन्न सर्वभोग्यपदार्थविषयकजितनेंककामहैं तेसर्व
कामभी आपणेदेहवासतेही हैं ॥ यातें तिनकामों तें तथातिनकामोंकेविषयसर्वभोग्यपदार्थों तें यहदेहही अत्यंतश्रेष्ठहै ॥यातें हेअसुरो ॥
याआस्तिकलोकोंकरिकेरक्षणकरणेयोग्य जेब्राह्मणहैं ॥ तथा गो देवता साधु आदिकहैं ॥ तिनसर्वों तें यहआपणादेहश्रेष्ठहै ॥ तथा तेसर्व
यादेहकेऊपरउपकारकरणेहारे हैं ॥ यातें तुमनें याआपणेदेहकूंही ब्राह्मण गो देवता साधु रूपमानिकें सर्वदारक्षणकरणा ॥ ओर हेअसु
रो ॥ यालोकविषे जोकर्म सुखकीप्राप्तिकरेहै ॥ ताकर्मकूं पुण्यकहेहैं ॥ ओर जोकर्म दुःखकीप्राप्तिकरेहै ॥ ताकर्मकूं पापकहेहैं ॥ ओर प
शुआदिकोंकीहिंसा ॥ तथापरस्त्रीगमन तथापरद्रव्यकाहरण इत्यादिककर्म याजीवोंकूं प्रसिद्धसुखकीहीप्राप्तिकरे हैं ॥ यातें तेहिंसादिक
कर्मही पुण्यकर्म हैं ॥ ओर प्रातःकालस्नान तथाअग्निहोत्र तथाचांद्रायणादिकव्रत इत्यादिककर्मतो याजीवोंकूं प्रसिद्धदुःखकीहीप्राप्तिकरे
हैं ॥यातें तेप्रातःकालस्नानादिककर्म पापकर्म हैं ॥ऐसेपापकर्मोंकूं तुमनें कदाचितभीनहींकरणा ॥किंतु हिंसादिकपुण्यकर्मोंकूंहींकरणा
॥ ओर हेअसुरो ॥ यादेहरूपआत्माके जोअनुकूलवर्ते है ॥ तिसोकूं तुमनें देवताजाणना ॥ तथा तिसीकूं तुम नें साधुजानणा ॥ ओर
यादेहरूपआत्माके जोप्रतिकूलवर्ते हैं तिसोकूं तुमनें असुरजानणा ॥ ऐसेदेहकेप्रतिकूलवर्त्तणेहारेअसुरोंकूंतुम ने अवश्यकरिकेमारणा ॥
हेअसुरो ॥जोकदाचित् आपणेपितादिकभी यादेहरूपआत्माके प्रतिकूलवर्त्ततेहोवें॥ तो तिनपितादिकोंकूंभी तुम नें नाशकरणा ॥काहेतें
यालोकविषेभी पिता माता भगिनी भ्राता स्नुषा जाया पुत्र इत्यादिकसंबंधियोंविषे जोकोईसंबंधी आपणेप्रतिकूलहोवे है॥तिससंबंधीकूं को
ईभीपुरुष आपणामित्रमानतानहीं॥किंतु ॥ तिसकूं सर्वपुरुष आपणाशत्रुहीमानते हैं॥यातें यादेहरूपआत्माके जोप्रतिकूलहोवे॥तिसकूं तु
मनेंअवश्यकरिकेमारणा॥इतनेंकरिके ताविरोचननेसर्वअसुरोंकेप्रति आपणेमतकाकथनकऱ्या॥अबवेदिकमतविषे दोषकानिरूपणकरे हैं॥

हेअसुरो॥ब्राह्मणादिकोंकेमारणेविषेपापहोवे है॥तथा परस्त्रीकेसंभोगकरणेविषे पापहोवे है ॥तथा परधनकेहरणकरणेविषे पापहोवे है ॥ या प्रकारकेवचन जोवेदिकपुरुषोंनें कथनकरे हैं ॥ तेसर्ववचन मिथ्याहैं ॥ काहेतें जिसकर्मकरिके यापुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिहोवे है ॥ ताकर्मकानाम पापकर्म है॥सोयहपापकर्मकालक्षण तिनब्राह्मणवधादिककर्मोंविषेघटतानहीं ॥ काहे तें आपणेविरोधीब्राह्मणादिकोंकेहिंसातेंअनंतर यापुरुषोंकूं सुखकीहीप्राप्तिहोवे है ॥ तथा परस्त्रीकेसंभोगतें तथापरधनकेहरणतेंभी यापुरुषोंकूं सुखकीहीप्राप्तिहोवेहे ॥ दुःखकी प्राप्तिहोवेनहीं ॥ यातें तेहिंसादिक पापकर्मनहीं हैं ॥ किंतु पुण्यकर्म हैं ॥ ओर हेअसुरो॥ तेवेदिकपुरुष जोयाप्रकारकावचनकहे हैं ॥ ते हिंसादिककर्म यद्यपि वर्त्तमानकालविषेतो सुखकोहीप्राप्तिकरे हैं ॥ तथापि तेहिंसादिककर्म कालांतरविषे यापुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरेंगे ॥ सोयहभीतिनोंकाकहणा संभवेनहीं ॥ काहेतें कार्यकोउत्पत्तितें अव्यवहितपूर्वक्षणविषे जोपदार्थरहे है ॥ सोपदार्थ ताकार्यकी उत्पत्तिविषे कारणहोवे है ॥ जेसे मृत्तिकाकुलालादिक घटरूपकार्यकोउत्पत्तितें अव्यवहितपूर्वक्षणविषेरहे हैं ॥ यातें तेमृत्तिकाकुलालादिक ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहोवे हैं ॥ याप्रकारका कारणकालक्षण तिनहिंसादिककर्मोंविषेघटतानहीं॥ काहेतें तेहिंसादिककर्म तीनचारक्षणमात्र स्थितरहे हैं ॥तिसतेंअधिककालपर्यंत तेहिंसादिककर्म रहेंनहीं ॥ यातें भावीकालविषेउत्पन्नहोणेहारेदुःखपर्यंत ते हिंसादिक कर्म रहेनहीं ॥ ओर पूर्वनष्टहुएकर्मोंकूंभी जोभावीदुःखकाकारणमानिये ॥ तो पूर्वनष्टहुआकुलालभी भावीघटकाकारणहोणाचाहिये ॥ओर पूर्वनष्टहुआकुलाल जेसे भावीघटकाकारणनहींहोवे है॥तेसे तेनष्टहुएहिंसादिककर्मभी ताभावीदुःखकेकारणहोइसकेनहीं॥ओर हेअसुरो॥तेवेदिकपुरुष जोयाप्रकारकावचनकहे हैं ॥तेहिंसादिककर्म यद्यपि तिसीकालविषेनष्टहोइजावे हैं ॥ तथापि तिनहिंसादिककर्मोंतें एकपापरूपअदृष्ट उत्पन्नहोवे है॥सोपापरूपअदृष्ट ताभावीदुःखपर्यंतरहे है ॥ यातें तापापरूपअदृष्टतेंही सोभावीदुःख उत्पन्नहोवे है ॥ सो यहतिनोंकाकहणाभी संभवेनहीं ॥ काहेतें जिसस्थलविषे दृष्टकारणनहींसंभवेहे ॥ तिसस्थलविषेही अदृष्टकारणकी कल्पनाकरीजावे है॥ दृष्टकारणकेसंभवहुए अदृष्टकारणकीकल्पनाहोवेनहीं ॥ ओर ताभावीदुःखकीउत्पत्तितो कुपथ्यसेवनादिकदृष्टकारणोंतेंही संभवहो

इसकैहै ॥ यातैं पापरूपअदृष्टकारणतैं ताभावीदुःखकीउत्पत्तिमानणी निष्फलहै ॥ और हेअसुरो ॥ अहिंसा सत्य ब्रह्मचर्य इत्यादिकजेत
पहैं ॥ तथा यज्ञदानादिकजेकर्म हैं ॥ तेसर्व याजीवोंकूं क्लेशकीहीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ यातैं तिनतपयज्ञदानादिकसर्वकर्मोंकूं पापरूपजानि
के तुमने परित्यागकरणा ॥ हेअसुरो ॥ तिन तपयज्ञादिककर्मोंविषे केवलहमही पापरूपतानहींकथनकरते ॥ किंतु तिनवैदिकपुरुषोंके
वचनतैंही तिनतपयज्ञादिककर्मोंविषे पापरूपतासिद्धहोवैहै॥काहेतैं तिनवैदिकपुरुषों नैं तापुण्यपापकर्मोंका याप्रकारकालक्षणकथनकऱ्या
है ॥ जिसकर्म तैं याजीवोंकूं सुखरूपफलकीप्राप्तिहोवै है ॥ ताकर्मकानाम पुण्यहै और जिसकर्म तैं याजीवोंकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिहोवै
है ॥ तिसकर्मकानाम पापहै ॥ सोयहपापकालक्षण तपयज्ञादिककर्मोंविषेहीघटैहै ॥ और सोपुण्यकर्मकालक्षणहिंसापरस्त्रीगमनादिककर्मों
विषेहीघटैहै ॥ यातैं तिनतपयज्ञादिकपापकर्मोंकापरित्यागकरिके तुमसर्वअसुर हिंसापरस्त्रीगमनादिकपुण्यकर्मोंकूंकरो॥ और हेअसुरो ॥
सृष्टिकेआदिकालविषे परंपराउपदेशरूप वेदोंकासंप्रदाय दोप्रकारकाप्रवृत्तहुआहै॥तहां हिंसादिककर्मोंकेकरणेकरिके हमारेकूं महान् अन
र्थकीप्राप्तिहोवैगी याप्रकारकोभयकरिके दूषितहैचित्तजिनोंका ऐसेजेभीरुपुरुषहैं ॥ तिनभीरुपुरुषोंविषेतो याप्रकारकासंप्रदायप्रवृत्तहुआ
है ॥ शीघ्रही सुखकीप्राप्तिकरणेहारे जेहिंसादिककर्म हैं ॥ तेहिंसादिककर्मतो पापरूपहैं ॥ और शीघ्रही दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जेतपयज्ञा
दिककर्म हैं ॥ तेतपयज्ञादिक पुण्यकर्मरूपहैं ॥ याप्रकारकासंप्रदाय तिनभीरुपुरुषोंविषेप्रवृत्तहुआहै ॥ और ताभयदोषतैंरहित जेवीरपुरु
षहैं ॥ तिनवीरपुरुषोंविषेतो याप्रकारकासंप्रदाय प्रवृत्तहुआहै ॥ शीघ्रही दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जे तपयज्ञादिककर्म हैं॥तेतपयज्ञादिकक
र्मतौ पापकर्म हैं ॥ और शीघ्रही सुखकीप्राप्तिकरणेहारेजे हिंसादिककर्म हैं ॥ तेहिंसादिककर्म पुण्यकर्मरूपहैं ॥ याप्रकारकासंप्रदाय
वीरपुरुषोंविषेप्रवृत्तहुआहै ॥ इसप्रकार सृष्टिकेआदिकालविषे भीरुपुरुष तथावीरपुरुष यादोप्रकारकेअधिकारियोंकेभेदतैं सोवेदकासं
प्रदायभी दोप्रकारकाप्रवृत्तहोताभयाहै ॥ हेअसुरो ॥ तासृष्टिकेआदिकालतैंलेके अबपर्यंत सोभीरुपुरुषोंकासंप्रदाय तथावीरपुरुषोंकासं
प्रदायविद्यमानहै ॥ तहां सोभीरुपुरुषोंकासंप्रदायतो इनब्राह्मणोंविषे तथदेवताओंविषे वर्त्तमानहै ॥ और दूसरावीरपुरुषोंकासंप्रदाय

तौ एकहमारेविषेही वर्त्तमानहै ॥ दूसरेकिसीविषेहैनहीं ॥ हेअसुरो ॥ यावीरसंप्रदायकूं एकतोब्रह्माजानताहै ॥ और दूसरा मैंजानताहूं ॥ हमदोनोंतेंविना दूसराकोईपुरुष यावीरसंप्रदायकूं जानतानहीं ॥ काहेतें हमदोनों तेंभिन्न दूसरेजितनेकोब्राह्मणदेवतादिकहैं ॥ तेसर्व अज्ञानकरिके तथादुष्टसंगकरिके तथाअसामर्थ्यकरिके दूषितहैं याकारणतें तेब्राह्मणदेवतादिक यावीरसंप्रदायकूंग्रहणकरसकतेनहीं ॥ उलटा तेब्राह्मणादिक मोहकेवशतें यावीरसंप्रदायकीनिंदाकरेहैं ॥ हेअसुरो ॥ ऐसाउत्तमवीरसंप्रदाय तुम्हारेकूं पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतें हमारेउपदेशतें प्राप्तभयाहै ॥ हेअसुरो॥सर्वलोकोंकूंसुखकीप्राप्तिकरणेहारा तथाहिंसादिकपुण्यकर्मोंकाकारण जोयहवीरसंप्रदायहै॥तावीरसंप्रदायकूं तुमसर्वअसुर आपणेभुजावोंकेवलतें यातीनलोकोंविषे प्रवृत्तकरो ॥ हेअसुरो ॥ यावीरसंप्रदायकीप्रवृत्ति तभी होवेगी ॥ जभी तुम यावीरसंप्रदायकेविरोधीपुरुषोंका हननकरोगे ॥ तिनविरोधीपुरुषोंकेहननतेंविना यावीरसंप्रदायकीप्रवृत्ति होवेगीनहीं ॥ हेअसुरो ॥ यज्ञादिककर्मोंविषेप्रीतिवाले तथाब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकेसंपन्न जेब्राह्मणहैं ॥ तेब्राह्मणभी यावीरसंप्रदायकेविरोधी हैं ॥ और स्वभावतेंहमारेशत्रुजेदेवताहैं ॥ तेदेवताभी यावीरसंप्रदायकेविरोधी हैं ॥ और हमारेशत्रुवोंकेपक्षविषेस्थित तथासर्वदा हमारीनिंदाकरणेहारे दूसरेभीअनेकदुर्बलप्राणी यावीरसंप्रदायकेविरोधी हैं॥ औरहेअसुरो॥तेब्राह्मणदेवता केवल यावीरसंप्रदायकेविरोधीनहीं हैं॥किंतु तेब्राह्मणदेवता हमअसुरोंकेभीविरोधी हैं ॥ तथा तेब्राह्मणदेवता वेदकेअर्थकूंभीअन्यथाकरणेहारे हैं ॥ ऐसेपापात्माब्राह्मणदेवतावोंकूं तुमजाइकेहननकरो ॥ हेअसुरो याप्रकारके हमारे उपदेशकूं अंगीकारकरिके जभीतुम दयातेंरहितहोइके तिनब्राह्मणदेवतावोंकाहननकरोगे ॥ तभी तुमारेकूं इसलोकविषेभी सुखकीप्राप्तिहोवेगी ॥ तथा परलोकविषेभी सुखकीप्राप्तिहोवेगी ॥ हेशिष्य इसप्रकार जभी ताविरोचनराजानें सर्वअसुरों के प्रति उपदेशकऱ्या॥तभी तेअसुर तिसीप्रकार सर्वजगत्‌कूं दुःखकीप्राप्तिकरतेभये ॥ कैसेथेतेअसुर॥ताउपदेशतें पूर्वभी स्वभावतेंहीपापात्माथे ॥ तथा दयातेंरहितथे ॥ तथा क्रूरकर्मोंकूंकरणेहारेथे॥हेशिष्य ॥ ब्राह्मणादिकोंकेसाथ विरोधकरणा ॥ तथा जीवतअवस्थाविषे सर्वदा यास्थूलदेहकाहीपोषणकरणा ॥ तथा मरणतेंअनंतर यादेहकूं नानाप्रकारकेअलंकारोंकरिके शोभायमानकरणा ॥ तथा

सर्वदा हिंसादिककर्मकरणे ॥ याप्रकारकाजोअसुरोंकासंप्रदायहै ॥ सोसंप्रदाय अबपर्यंत नष्टनहीं भया ॥ किंतु सोसंप्रदाय इदानीं कालवि
षेभी बहुतलोकोंविषे देखणेमें आवेहै ॥ हेशिष्य ॥ सोअसुरोंकासंप्रदाय इदानींकालविषेभी बहुतमनुष्योंविषेवर्तेहै ॥ या अर्थविषे महात्मा
पुरुषोंकेवचनभी प्रमाणहैं ॥ काहेतें यालोकविषे जोपुरुष मोक्षकीइच्छातेंरहितहोवेहै ॥ तथा हिंसादिकपापकर्मोंविषेप्रीतिवालाहोवैहै ॥
तथा शास्त्रतेंविपरीतआचरणकरणेहाराहोवैहै ॥ ऐसेनास्तिकपुरुषकूंदोसिके महात्माआस्तिकब्राह्मण याप्रकारकावचनकहेहैं ॥ असुरोंकूंप्रि
य जेहिंसादिकपापकर्म हैं ॥ तिनपापकर्मोंकूं यहपुरुष सर्वदाकरेहै ॥ याकारणतें यहपुरुष असुरोंकीसंप्रदायविषेहै ॥ जोकदाचित् यहपु
रुष असुरोंकीसंप्रदायविषे नहींवर्त्तताहोवै ॥ तौ यहपुरुष नास्तिकपणेकरिके यज्ञादिककर्मोंतेंविमुख किसवासतेंहोता ॥ किंवा ॥ यहपु
रुष मरणतेंअनंतर तामृतकदेहकूं नानाप्रकारकेअन्नादिकपदार्थोंकरिके तथानानाप्रकारकेवस्त्रभूषणादिकोंकरिके शोभायमान्करेहैं ॥ या
तेंयहजान्याजावैहै ॥ यहपुरुष आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानरूपमायाकरिके मूढभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ किंवा ॥ मरणतेंअनंतर यामृतकदेह
केपूजनकियेतें तादेहात्माकूं परलोककाजयरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेवचन जोयहमूढपुरुष कथनकरेहैं ॥ सोतिनोंकेवचनोंतें
यहजान्याजावैहै ॥ जो तिनमंदबुद्धिपुरुषोंविषे कोईआश्चर्यरूप मूर्खताकामाहात्म्य विद्यमानहै ॥जिसमूर्खताकेमाहात्म्यकरिके यहमूढपुरुष
प्रथमतो यास्थूलदेहकूंही आत्मामानेहै ॥ और दूसरा तादेहरूपआत्माकेमरणतेंअनंतर तामृतकदेहकेअलंकारकरणेतें तादेहरूपआत्माकूं
परलोकविषे श्रेष्ठफलकीप्राप्तिमानेहैं ॥ हेशिष्य ॥ विचारकरिकेदेखियेतो तिनदेहात्मवादियोंकेमतविषे लेशमात्रभीयुक्तिसंभवेनहीं ॥ का
हेतें मरणतेंअनंतर पृथिवीविषेपूरणकऱ्याहुआ यहस्थूलदेह पृथिवीरूपहीहोइजावैहै ॥ ऐसेदेहका पुनः उत्थान किसप्रकारहोवैगा ॥
किंतु नहींहोवैगा ॥ और हेशिष्य ॥ ताआपणेमतकीसिद्धिकरणेवासते ॥ तेदेहात्मवादी जोयाप्रकारकीयुक्तिकथनकरेहैं ॥ जैसे
जलकेतलावविषेस्थित जेमंडूकहैं ॥ तेमंडूक ताजलकेसूकणेअनंतर मृत्तिकाविषेलयहोइजावैहैं ॥ जभी वर्षाकरिके सोतलाव ज
लसेंपूर्णहोवैहै ॥ तभी तेसर्वमंडूक पुनःजीवनकूंप्राप्तहोइकेउठेहैं ॥ तैसेमरणतेंअनंतर यापृथ्वीविषे लयभावकूंप्राप्तहुएभी तेदेह

तावर्षाकेसुगंधकरिकें पुनःजीवनकूंप्राप्तहोइकेउठैंमे ॥ सोयहतिनोंकादृष्टांतभी संभवेनहीं। काहेतें ताजलकेसूकणेतैंअनंतर तेमंडूकसर्वप्र कारसैं नाशकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ किंतु सर्वअंगोंकरिकेसंपन्नहुए तेमंडूक जलकेवियोगतैंमूर्च्छाभावकूंप्राप्तहुए तामृत्तिकाविषेरहेहैं॥जभी वर्षाके जलका तिनोंकेसाथ संबंधहोवेहे तभी तेमंडूक पुनः जीवनकूंप्राप्तहोइके उठेहैं ॥ और जिनमंडूकोंकेअवयवोंकूं काकादिक पक्षी भक्षणक रिगयेहैं ॥ तेमंडूक तावर्षाजलकेसंबंधकरिकें कदाचित्भीउठतेनहीं ॥ तैसे यहदेहभी तापृथ्वीविषे बहुतकालतैंपीछे सर्वप्रकारसैंनाशहोइ जावेहैं ॥ तानष्टहुएशरीरका पुनःउत्थानमानणा अत्यंतविरुद्धहे ॥ किंवा ॥ प्रजापतिकेशरीरकूंस्पर्शकरिकेचलायमानभयाजोवायुहे ॥ तावा युकेसंबंधकेप्रभावतैं पृथ्वीविषेलयहुएदेहभी पुनःउत्थानकूंप्राप्तहोवे हैं॥याप्रकारकावचन जोतादेहात्मवादीविरोचननैं कथनकऱ्याहे॥ सोता काकहणा उष्ट्रलगुडन्यायकरिकेताविरोचनकीयुक्तिसैंही खंडनहोइसके हे ॥ इहां लकडियोंकेभारयुक्तजोउष्ट्रहे ॥ ताउष्ट्रकूं तिसलकडियोंके भारतैं एकलकडीनिकासिकेमारणा याकानाम उष्ट्रलगुडन्यायहे ॥ तैसे तादेहात्मवादीविरोचननैं वैदिकपुरुषोंकेखंडनकरणेवासते जोयह युक्तिकहीथी ॥ जबपर्यंत दृष्टवस्तुकासंभवहोइसके तबपर्यंत अदृष्टवस्तुकीकल्पनाकरणीअयोग्यहे ॥ यातैं आवीदुःखविषे पापरूपअदृष्ट कारणनहीं हे ॥ किंतु कुपथ्यसेवनादिक दृष्टनिमित्तही तादुःखविषेकारणहैं ॥ सोयहअदृष्टअर्थकीकल्पनारूपदूषण ताविरोचनकेमतविषेही प्राप्तहोवेहे ॥ काहेतैं पृथ्वीविषे लयहुएशरीरोंका प्राजापत्यवायुके संबंधतैंउत्थानमानणाभी अदृष्टकल्पनाही हे॥ नष्टहुएदेहका पुनःउत्था न कहांदेखणेमैंआवतानहीं ॥किंवा ॥ तादेहात्मवादीविरोचननैं जोवैदिकपुरुषोंकेसंप्रदायकूं भीरुपुरुषोंकासंप्रदायकह्याथा॥सोतिसकाकहणा भी केवलअज्ञानतैंही हे॥ काहेतैं यालोकविषे नारदमुनिभृगुऋषि देवराजइंद्र स्वायंभुवमनु इसतैंआदिलेके जेमहान्पराक्रमवाले तथामहान्बु द्धिवाले पुरुषहुएहैं ॥ तेसर्वमहान्पुरुष किसप्रकार भी रुकहेजावेंगे॥किंतु तिननारदादिकमहान्पुरुषोंकूं भीरुकहणा अत्यंतअनुचितहे॥यातैं दैत्योंकीसभाविषेस्थितहोइके सोविरोचन आत्मज्ञानतैंरहितमूढअसुरोंकेप्रति जेजेवचन कहताभयाहे ॥तिसर्ववचन मिथ्याहीकहताभयाहे॥ यातैं ताविरोचनकूं आस्तिकपुरुषोंनैं कामकरिकेमोहितचित्तवालाजानणा ॥ ऐसेसर्वप्रमाणतैंविरुद्ध विरोचनकेमतकूं उन्मत्तपुरुषकेवचनों

केसमानजानिके आस्तिकपुरुषोंनें सर्वथापरित्यागकरणा ॥ हेशिष्य ॥ जोकामातुरपुरुष नरकरूपग्रामकेमार्गविषेस्थितहोइके ताअसुर मतकूं अंगीकारकरिके पूर्वउक्तकुतर्कोंकरिके हिंसादिपापकर्मोंकूं पुण्यरूपजानिकेकरेहे ॥ सोपापात्मापुरुष इसलोकविषे तो महान्‌अकी र्तिकूंप्राप्तहोवेहे ॥ और परलोकविषे निवृत्तिकेउपायतेंरहित महान्‌दुःखकूंप्राप्तहोवेहे ॥ याप्रकारकेवचन श्रीगीतादिकशास्त्रोंविषे श्रीकृष्ण भगवानादिकश्रेष्ठपुरुषोंनें कथनकरे हैं ॥ यातें जिनपुरुषोंकूं सुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवे ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनें जबपर्यंत कंठविषेप्राण स्थितहोवे तबपर्यंत याविरोचनकेसंप्रदायविषे कदाचित्‌भीप्रवेशनहींकरणा ॥ किंतु याविरोचनकेसंप्रदायका तिनआस्तिकपुरुषोंनें दूर सेंपरित्यागकरणा ॥ इतनैंग्रंथकरिके विरोचनकावृत्तांत कथन कऱ्या ॥ अब ताइंद्रकावृत्तांत निरूपणकरेहैं॥हेशिष्य॥ताब्रह्मलोकतें जभी तेइंद्रविरोचनदोनों आपणेआपणेलोकविषेचलेथे ॥ तभी अर्द्धमार्गविषे सोदेवराजइंद्र ताविरोचनकूंतामसीदेखिके शनैःशनैःचलनेकेमिस करिके ताविरोचनकापरित्यागकरताभया ॥ ताविरोचनकापरित्यागकरिकेतथाआपणेदेवसभाकूंनप्राप्तहोइके सोदेवराजइंद्र तामार्गविषे किसीएकांतदेशविषेस्थितहोताभया ॥ तहांस्थितहोइके सोसात्विकस्वभाववालाइंद्र आपणेमनविषेविचारकरिके पूर्वग्रहणकरेहुएआत्मा विषे याप्रकारकेदोष देखताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे बृहदारण्यकउपनिषद्‌विषे देवता मनुष्य असुर यहतीनों प्रजापतिसें आपणेश्रेय कासाधनपूछतेभये ॥ तिनोंकेप्रश्नकूंश्रवणकरिके सोप्रजापति दकारअक्षरकूंउच्चारणकरताभया॥तादकारअक्षरकूंश्रवणकरिके आपणेआप णेभावनाकेअनुसार देवतातो इंद्रियोंकेनिग्रहरूपदमकूंही श्रेयकासाधनरूपकरिकेग्रहणकरतेभये ॥ और मनुष्यतो गोसुवर्णादिकपदार्थों केदानकूंही श्रेयकासाधनरूपकरिकेग्रहणकरतेभये ॥ और असुरतो दयाकूंही श्रेयकासाधनरूपकरिकेग्रहणकरतेभये ॥ तैसे प्रजापतिनें ताइंद्रविरोचनदोनोंकेप्रति ॥ यएषोऽक्षिणिपुरुषोदृश्यतएषआत्मा याप्रकारकावचन समानकह्याथा ॥ तावचनकूंश्रवणकरिके सोविरोचन तो तावचनकोलक्षणाकरिके छायाकेसदृशदेहकूंही आत्मामानताभयाथा ॥ और सोइंद्रतो ताब्रह्माकेयथाश्रुतवचनतें छायाकूंही आत्मा मानताभयाथा ॥ याकारणतें सोदेवराजइंद्र ताछायाआत्माविषे याप्रकारकेदोषोंकाविचारकरताभया ॥ याछायाकेस्वरूपकीसिद्धिकर

णेहारा जोयहदेहहै ॥ तादेहविषे जन्ममरणतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेविकार प्रतीतहोवे हैं तिनजन्ममरणादिकविकारोंकेविद्यमानहुए यह देह अमृतत्व अभयत्व आदिकधर्मोंवाला किसप्रकारहोवेगा ॥ किंतु नहींहोवेगा ॥ यातैं जैसे जन्ममरणादिक विकारोंवाले घटादिपदार्थ आत्मानहीं हैं ॥ तैसे यहदेहभी आत्मानहीं है ॥ जभी यादेहविषेभीआत्मारूपतासिद्धनहींभई ॥ तभी ताबिंबरूपदेहकेअधीन चक्षुदर्पणादिकोंविषेस्थितछायाविषेसाआत्मरूपता किसप्रकारसंभवेगी ॥ किंतु नहींसंभवेगी ॥ काहेतैं ताप्रजापतिनें आत्माकूं अमृत अभय ब्रह्मरूपकह्याथा ॥ तेअमृतत्वादिकधर्म याछायाविषेसंभवतेनहीं ॥ यातैं यहछाया आत्मारूपनहीं है ॥ किंवा ॥ याप्रतिबिंबरूपछायाविषे यद्यपि बिंबकीअपेक्षातैंविना स्वभावतैं मरण तथाभय देखतानहीं ॥ यातैं याछायाआत्माविषेअमरत्व तथाअभयत्व संभवेहै ॥ तथाप्रातःकालविषे तथासंध्याकालविषे याछायाकीवृद्धिभीदेखणेविषेआवैहै ॥ यातैं याछायाविषे ब्रह्मरूपताभीसंभवेहै ॥ तथापि यास्थूलदेहकीन्याई यहछायाआत्माभी परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ काहेतैं यहछाया सर्वदा यास्थूलदेहकेगुणोंकूं तथादोषोंकूं आपणेविषेधारणकरैहै ॥तहां यहबिंबरूपदेह जभी वस्त्र भूषण छत्र इत्यादिकअलंकारोंकरिकेयुक्तहोवैहै ॥ तभी सोछायाआत्माभी तिसी प्रकारकेअलंकारोंवालाहुआ प्रतीतहोवेहै ॥ और यादेहकेअन्धहुए सोछायाआत्माभी अन्धहुआप्रतीतहोवैहै ॥ और यादेहकेश्लेष्मयुक्तहुए सोछायाआत्माभी श्लेष्मयुक्तहुआप्रतीतहोवेहै ॥ और यादेहकेहस्तपादादिकअंगोंतैंरहितहुए सोछायाआत्माभी हस्तपादादिकअंगोंतैंरहितहुआप्रतीतहोवैहै ॥ इस प्रकार याबिंबरूपदेहकेअनुसार प्रतीतहोणेहारा जोयहछायाआत्माहै ॥ सो छायाआत्मा स्वभावतैं जडहै ॥ तथा नाशवान्है ॥ तथा भोगोंकेभोगणेकीयोग्यतातैंरहितहै ॥ याकारणतैं याछायाआत्माविषे भोक्तापणासंभवेनहीं ॥ और ब्रह्मानें आत्माकेज्ञानतैं सर्वलोकवर्त्तिभोगोंकीप्राप्तिकथनकरीथी ॥ सो याजडछायारूपआत्माकेज्ञानतैं सर्वभोगोंकीप्राप्तिरूपफलकूं मैं देखतानहीं ॥ यातैं यहछाया आत्मानहीं है ॥ किंतु याछायातैंभिन्नही कोईआत्माहै ॥ किंवा याबिंबरूपदेहका जभी नाशहोवैहै ॥ तभी याछायाकाभीनाशहोवैहै ॥ यातैं पुण्यपापकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकेभोगणेवासते ॥ छायाआत्माकातो परलोकविषे गमनसंभवेनहीं ॥ किंतु तापरलो

कविषे सुखदुःखरूपफलकेभोगणेवासते याछायातैंभिन्नहीकोईआत्मा अंगीकार करणाहोवैगा ॥ अन्यथाकन्येहुएकर्मों काफलकेभोगतैंविनाहीनाशरूप कृतनाशदोषकोप्राप्तिहोवैगी ॥ याकारणतैंभी यह छाया आत्मानहीं है ॥ किंतु छायातैं तथायादेहतैं भिन्नहीकोईआत्माहोवैगा ॥ ताछायादेहतैंभिन्नआत्माकूं मैं पुनःताब्रह्माकेसमीपजाइकेपूछौं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिके सोसात्विकस्वभाववाला देवराजइंद्र ताआत्माकेजानणेकी इच्छाकरताहुआ समिदादिकपदार्थोंकूं आपणेहस्तविषेग्रहणकरिके विनयपूर्वक पुनः ताप्रजापतिगुरुकेसमीपजाताभया ॥ और तादेवराजइंद्रकूं पुनःआयाहुआदेखिके मंदमंदहँसताहुआ सोप्रजापति तादेवराजइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहता भया ॥ हेइंद्र ॥ तूं विरोचनकेसहित प्रसन्नमनहुआ याब्रह्मलोकतैंगयाथा ॥ अभी किसप्रयोजनवासते तूं पुनःइहां आयाहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी ताइंद्रनैं छायाविषे तथादेहविषे जितनैंकीपूर्वदोष निश्चय कन्येथे ॥ तिनसर्वदोषोंकूं सोइंद्र ताप्रजापतिकेप्रति कथनकरताभया ॥ ताइंद्रकेवचनोंकूंश्रवणकरिके सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्र ॥ यहस्थूलदेह तथाछाया यहदोनोंजडहैं ॥ यातैं तिनोंविषे भोक्तापणासंभवतानहीं ॥ याप्रकारकावचन जोतुमनैं कह्याहै ॥ सो यथार्थकह्याहै ॥ परंतु जिसआत्माकेअविज्ञानतैं तुमनैं अनुक्तउपालंभकेसमान यहपरिश्रम कन्याहै ॥ सोदेहछायातैंभिन्नआत्मा पुनःमैं तुम्हारेप्रति उपदेशकरताहूं ॥ जोआत्मा विरोचनकेसहित तुम्हारेताई हमनैं पूर्वभीउपदेशकन्याथा ॥ सोइहीआत्मा मैंपुनः तुम्हारेप्रति उपदेशकरताहूं॥ इहांकथनकन्येहुएवचनके यथार्थअर्थकूंनजाणिके तथातावचनका विपरीतअर्थ ग्रहणकरिके तावचनकहणेहारेपुरुषकूं जोउपालंभदेणाहै य.कानाम अनुक्तउपालंभहै ॥ सोइहांप्रसंगविषे ॥ यएषोऽक्षिणिपुरुषोदृश्यतएषआत्मा ॥ यावचनकरिके ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रति यादेहछायातैंविलक्षण साक्षीआत्माकाहीबोधनकन्याथा ॥ ताब्रह्माकेवचनके यथार्थअर्थकूंनजाणिकरिके तथातावचनका छायादेहरूपविपरीतअर्थकल्पनाकरिके ताइंद्रनैं जोब्रह्माकेप्रति उपालंभदियाहै ॥ सोभी अनुक्तउपालंभहीहै ॥ प्रजापतिरुवाच हेइंद्र ॥ पूर्वजोतुमनैं बत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकन्याथा ॥ सो

हमारेवचनतैं संकल्पपूर्वक नहींकऱ्याथा ॥ किंतुविनाहीसंकल्पतैं कऱ्याथा यातैं आपणेचित्तकीशुद्धिवासतै तूंपुनः बत्तीसवर्षपर्यंत ताब्र
ह्मचर्यकूंकर॥तिसतैंअनंतर मैं तुम्हारेप्रतिताआत्माकाउपदेशकरोंगा ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥
तभी सोइंद्र ताब्रह्माकेआज्ञाकूंमानिके पुनः बतीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोइंद्र ताप्रजापतिकेसमीपजाताभया ॥
ताइंद्रकूंआयाहुआदेखिके सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति स्वप्नअवस्थाकासाक्षीरूपकरिके ताआत्माकाउपदेशकरताभया ॥ हेइंद्र ॥ पूर्वहमनैंच
क्षुविषे तथाजलशरावविषे जिसपुरुषकाउपदेशकऱ्याथा ॥ सोइहीपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे आपणेविभूतिरूप नानाप्रकारकेविषयोंकूं साक्षी
रूपकरिकेअनुभवकरताहुआ स्थितहोवैहै ॥ तिसोपुरुषकूं तूं आत्मारूपकरिकेंजान ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं
इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोइंद्र ताब्रह्माकेवचनतैं अंतःकरणादिकविशिष्ट तैजसनामाजीवकूं आत्माजानिके बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और
सोइंद्र पूर्वकीन्याईं ताप्रजापतिकूंनमस्कारकरिके पुनः आपणेलोककूंजाताभया॥ तहां अर्द्धमार्गविषेजाइके किसीएकांतदेशविषेस्थितहोइ
के सोइंद्र पुनः आपणेमनविषे विचारकरताभया॥ ताविचारकरिके सोइंद्र तास्वप्नद्रष्टापुरुषविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ जैसे
छायाआत्मा यास्थूलदेहकेगुणदोषोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष यद्यपि यास्थूलदेहकेगुणदोषोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि यास्व
प्नद्रष्टापुरुषविषे याप्रकारकेमहान्दोष हमारेकूं प्रतीतहोवैहैं ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं कोईकशत्रुपुरुष हननकरैहैं ॥ और
जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे कोईप्रमत्तहस्ती क्रोधवान्होइके आपणेसुंडकूं ऊपरउठाइके मूढबालकोंकूं भयकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्था
विषे तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं वृक व्याघ्र सर्प आदिकजीव भयकीप्राप्तिकरैहैं॥ और तास्वप्नविषे सोस्वप्नद्रष्टापुरुष आपणेसुहृदोंकेवियोगकूंदेखि
के परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥ तथा रुदनकरैहै ॥ इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेदोष तास्वप्नद्रष्टापुरुषविषे देखणेमेंआवैहैं ॥ और प्रजापतिनैं
हमारेप्रति आत्मा अमृत अभय ब्रह्मरूपहै याप्रकारकाआत्माकालक्षण कथनकऱ्याथा सोयाप्रकारकालक्षण यास्वप्नद्रष्टापुरुषविषेघटतानहीं
यातैं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष आत्मानहीं है॥ किंतु यास्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्नहीकोईआत्माहोवैगा ॥ ताआत्माकेजानणेवासतैं मैंइंद्र पुनः ताप्र

जापतिकेसमीपजावो ॥ हे शिष्य ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकें सोइंद्र पुनः ताप्रजापतिकेसमीप जाताभया ॥ ताइंद्रकूं पुनः आयाहुआदे
खिके सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्र पूर्वतूं आत्माकाउपदेशश्रवणकरिकें प्रसन्नमनहुआ आपणेलोककूं
गयाथा ॥ अभीपुनःकिसप्रयोजनवासतें तूं इहांआयाहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी ताइंद्रनैं
मार्गविषे जितनेंकीदोष तास्वप्नद्रष्टापुरुषविषेदेखेथे ॥ तिनसर्वदोषोंकूं सोइंद्र ताप्रजापतिकेआगे कहताभया ॥ ताइंद्रकेवचनकूंश्रवणकरि
के सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति पुनः बत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरणेकोआज्ञाकरताभया॥ ताप्रजापतिगुरुकेआज्ञाकूंमानिकें सोदेवराजइंद्र पुनः
बत्तीस वर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोइंद्र पुनःताप्रजापतिकेसमीपजाइके ताआत्माकाप्रश्नकरताभया ॥ ताइंद्रकेप्रश्नकूं
श्रवणकरिके सोप्रजापति पुनः सुषुप्तिअवस्थाकासाक्षीरूपकरिके ताआत्माकाउपदेशकरताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र ॥ जिसकाल
विषे यहपुरुष सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआ शयनकरैहै ॥ तिसकालविषे सोपुरुष जिसहार्दाकाशरूप ब्रह्मलोकविषे एकताभावकूंप्राप्तहो
इके सर्वदुःखोंतैंरहितहोवैहै ॥ तथा सर्वइंद्रियों तेंरहित होवे है ॥ तथा जिसहार्दाकाशरूपब्रह्मलोकविषे प्राप्तहुआभीयहपुरुष ताहार्दाकाश
कूंनजानिकरिके पुनःपुनः बाहरआवैहै ॥ सोमायामात्रउपाधिवाला ॥ हार्दाकाशरूपब्रह्मलोकही अमृतअभयब्रह्मरूपहोणेतें तुमारा आ
त्माहै ॥ यहहीआत्मा हमनें पूर्वभीतुम्हारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं देवराजइंद्रके प्रति
कह्या ॥ तभी सोइंद्र ताप्रज्ञाकेवचनतैं अज्ञानविशिष्टप्राज्ञनामाजीवकूं आत्माजानिकें बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और पूर्वकीन्याई ताप्रजाप
तिकूंनमस्कारकरिके सोइंद्र पुनः आपणेलोककूंजाताभया ॥ तहां अर्द्धमार्गविषेजाइके सोइंद्र पुनः किसीएकांतदेशविषेस्थितहोइके आ
पणेमनविषे विचारकरताभया ॥ ताविचारकरिके सोइंद्र तासुषुप्तिकेप्राज्ञनामाआत्माविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूं देखताभया॥ यहसुषुप्तिअ
वस्थाविषेस्थित प्राज्ञनामापुरुष यद्यपि स्वप्नद्रष्टापुरुषकीन्याईं भयादिकोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि यहप्राज्ञनामापुरुष मैं इसप्रकारका
हूं याप्रकार आपणेकूंभीजानतानहीं ॥ और हमारेतैंभिन्नयहपुरुष इसप्रकारकाहै या प्रकार दूसरेकूंभीजानतानहीं ॥ जैसे यालोकविषे

मदिरादिकोंकेपानकरिकेमूढहुआपुरुष आपणेकूं तथापरकूं जानतानहीं ॥ तैसे तासुषुप्तिविषे सोप्राज्ञनामापुरुषभी आपणेकूं तथापरकूं जानतानहीं ॥ किंतु तासुषुप्तिविषे विद्यमानहुआभी सोप्राज्ञनामापुरुष नाशहुएकीन्याई स्थितहोवेहे ॥ यातें ताप्रजापतिनें जोआत्मा अमृतअभयब्रह्मरूपतालक्षण कह्याथा ॥ सोलक्षण याप्राज्ञनामापुरुषविषेघटतानहीं ॥ यातें तालक्षणवाला याप्राज्ञनामापुरुषतें भिन्नहीं कोई आत्माहोवेगा ॥ ताआत्माकेनिश्चयकरणेवासते मैंइंद्र पुनः ताप्रजापतिकेसमीपजावो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारका मनविषेविचार करिके सोइंद्र पुनः ताप्रजापतिकेसमीपजाताभया ॥ ताइंद्रकूंआयाहुआदेखिके सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहता भया ॥ हेइंद्र ॥ पूर्वहमारेउपदेशतें तूं आत्माकूंजानिके प्रसन्नमनहुआ आपणेलोककूंगयाथा ॥ अभी पुनः तू किसप्रयोजनवासतें इहां आयाहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनें इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी ताइंद्रनें मार्गविषेजितनेंकोदोष ताप्राज्ञ नामापुरुषविषे देखेथे ॥ तिनसर्वदोषोंकूं सोइंद्र ताप्रजापतिके आगेकहताभया ॥ ताइंद्रकेवचनकूंश्रवणकरिके सोप्रजापति ताइंद्रके प्रति पुनः ब्रह्मचर्यकरणेकी आज्ञाकरताभया ॥ परंतु याचतुर्थवारमें सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति पंचवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरणेकीआज्ञा करताभया ॥ हेशिष्य ॥ सोदेवराजइंद्र प्रथमतो ताप्रजापतिके वचनतेंविनाही बत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरताभया ॥ तिसतेंअनंतर दूसरीवार तथा तीसरी वार सोइंद्र प्रजापतिकेवचनतें बत्तीसबत्तीसवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ और चतुर्थवारतो सोइंद्र ता प्रजापतिकेवचनतें पंचवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ इस प्रकार चारोंवारमिलिके एकशतएकवर्ष १०१ पर्यंत सोइंद्र ताप्रजाप तिकेआगे ब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ अब ताब्रह्मचर्यकेमाहात्म्यकावर्णनकरेहैं ॥ हे शिष्य ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ अत्यंतदुर्लभहोवेहैं ॥ तिनदुर्लभ पदार्थोंकूंभी यहपुरुष ताब्रह्मचर्यकरिकेहीप्राप्तहोवेहै ॥ काहेतें वेदवेत्तापुरुष याब्रह्मचर्यकूंही सर्वयज्ञादिरूपकरिकेकथनक रेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जोकोईपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूंजानेहै ॥ सोपुरुष याब्रह्मचर्यतेंही ताआत्माकूंजानेहै ॥ ता ब्रह्म चर्यतेंविना ताआत्माकाज्ञानहोवेनहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं यज्ञ यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और हे शिष्य ॥ दर्श

पौर्णमासादिककर्म या अधिकारीपुरुषोंकूं स्वर्गादिकइष्टपदार्थोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तिनदर्शपौर्णमासकर्मोंकूं इष्ट यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ सोइष्टकर्मरूपभी यहब्रह्मचर्यहीहै ॥ काहेतें सर्वपदार्थोंकोअपेक्षाकरिके अत्यंतप्रियरूपताकरिके इष्टशब्दका मुख्यअर्थ जोआत्माहै ॥ ताइष्टआत्माकूं यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मचर्यकरिकेहीजानेहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं इष्ट या नामकरिकेकथनकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यद्यपि कोशादिकलौकिकप्रमाणोंकेबलतें यज्ञशब्दकेअर्थका तथाइष्टशब्दकेअर्थका भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु तेदोनोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहैं ॥ तथापि मीमांसकोंनें तिनदोनोंका याप्रकारसेभेद कथन कऱ्याहै॥सोमपशुआदिकपदार्थों करिकेसिद्धहोणेहारेजे ज्योतिष्टोमादिककर्महैं ॥ तिनज्योतिष्टोमादिकोंकानाम यज्ञहै ॥ और पशुआदिकोंतेंविना केवल औषधादिकपदार्थोंकरिकेसिद्धहोणेहारेजे दर्शपौर्णमासादिककर्महैं ॥ तिनदर्शादिककर्मोंकानाम इष्टहै ॥ और हेशिष्य ॥ नानापुरुषोंने मिलिकेकऱ्याजो यागविशेषहै ॥ तायागविशेषकानाम सत्रायणहै ॥ सोसत्रायणरूपभी यहब्रह्मचर्यहीहै ॥ काहेतें यहअधिकारीपुरुष आपणेसत्यस्वरूपआत्माकूं याब्रह्मचर्यकरिकेही जन्ममरणरूपसंसारतें रक्षाकरेहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं सत्रायण यानामकरिकेथनकरेहै ॥ और हेशिष्य ॥ मननशीलपुरुषकाजोभावहोवै ताकानाम मौनहै ॥ तामौनशब्दकाप्रसिद्धअर्थतो वाणीकानिरोधरूपतपहै अथवा संन्यासआश्रमहै ॥ सोमौनशब्दभी याब्रह्मचर्यकाहीवाचकहै ॥ काहेतें सर्वअधिकारीपुरुष याब्रह्मचर्यकेप्रभावतेंही आत्माकेमननकरणेविषेसमर्थ होवैहैं ॥ ताब्रह्मचर्यतेंविना कोटिजन्मोंकरिकेभी ताआत्माकामननहोवैनहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं मौन यानामकरिके कथनकरेहैं ॥ और हेशिष्य ॥ लोकप्रसिद्धउपवासपरायणताकावाचक जोअनाशकायनपदहै ॥ सोअनाशकायनपदभी याब्रह्मचर्यकाही वाचकहै ॥ काहेतें याब्रह्मचर्यकरिके प्राप्तहुआजोआत्माहै ॥ सोआत्मा कार्यसहितअज्ञानरूपप्रतिबंधकेदाहहुये कदाचित्भी नाशकूंप्राप्त होवैनहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं अनाशकायन यानामकरिकेकथनकरेहैं॥और हेशिष्य॥लोकप्रसिद्ध वनवासकावाचक जो अरण्यायनशब्दहै सोअरण्यायनशब्दभी याब्रह्मचर्यकाहीवाचकहै काहेतें समुद्रकेसमानविस्तारवालेजेअरण्यनामादोह्रदहैं तिनदोह्रदोंकरि

के युक्तजोब्रह्मलोकहै ॥ताब्रह्मलोककूंभी यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मचर्यकरिकेहीप्राप्तहोवेहै॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं अरण्या
यन यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ याब्रह्मचर्यकेप्रभावतैंही यहपुरुष प्रतिबंधतैंरहितहुआ आपणीइच्छापूर्वक सर्वलोकोंविषेविचरे
है ॥ जैसे नारदमुनि ब्रह्मचर्यकेप्रभावतैं आपणीइच्छापूर्वक सर्वलोकोंविषेविचरताभयाहै ॥ और हे शिष्य ॥याब्रह्मचर्यकरिकेसंपन्नहुए
यहब्राह्मणादिकअधिकारीजन ऋगादिकवेदोंकाअध्ययनकरिके क्षीर मधु घृत दधि अमृत सोमरस इत्यादिकपदार्थोंकरिके अग्निआदिकदे
वतावोंकीतृप्तिकरेहैं ॥ तिनअग्निआदिकदेवतावोंकेप्रसादतैं तेअधिकारीपुरुष आपभी तिनक्षीरादिकपदार्थोंकूं आपणीइच्छापूर्वक पानकरेहैं
हेशिष्य ॥ सर्वलोकोंविषेस्वतंत्रविचरणा तथाक्षीरादिकपदार्थोंकापानकरणा यहजोशास्त्रविषे ब्रह्मचर्यकाफलकथनकऱ्याहै॥सोअवांतरफल
कथनकऱ्याहै ॥ ताब्रह्मचर्यकामुख्यफलतौयहहै ॥ जो तेब्रह्मचर्यवालेअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूंजानिके यामृत्युदुःखरूप
संसारकूंतरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ तुमारेप्रति हम बहुतक्याकहैं ॥ यालोकविषे जितनेंकीसाधनविद्यमानहैं ॥ तेसर्वसाधन याब्रह्मचर्यविषेही अं
तर्भूतहैं जैसे हस्तीकेपादविषे सर्वपादोंकाअंतर्भावहोवेहै ॥ तैसे याब्रह्मचर्यविषेही सर्वसाधनोंकाअंतर्भावहोवेहै ॥ ताब्रह्मचर्यतैंअधिक को
ईभीसाधननहींहै ॥ और हेशिष्य ॥ याअधिकारीपुरुषोंकीशुद्धिकरणेहाराजोशौचहै ॥ तथा याअधिकारीपुरुषकूं स्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्ति
करणेहाराजोतपहै ॥ ताशौचरूप तथा तपरूपभी यहब्रह्मचर्यही है ॥ ऐसेब्रह्मचर्यकरिकेस्थित जेब्राह्मणहैं ॥ ते बहुतब्राह्मण देवलोककूंप्रा
प्तहोतेभयेहैं ॥ हेशिष्य ॥ ते ब्रह्मचर्यसंपन्नपुरुष केवलदेवलोककूंप्राप्तनहींहोवेहैं ॥ किंतु तेब्रह्मचर्यवालेपुरुष देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलो
ककूंभी प्राप्तहोवेहैं ॥ कैसाहै सोदेवयानमार्ग ॥ पुनरावृत्तितैंरहितहै ॥ तथा जैसे कर्मकांडकेउपदेशकरणेहारे अठासीसहस्रमुनि ८८०००
दक्षिणमार्गविषेस्थितहोवेहैं ॥ तैसे उपासनाकांडकेउपदेशकरणेहारे अठासीसहस्रमुनि तादेवयानमार्गविषेस्थितहोवेहैं ॥ ऐसेदेवयानमार्ग
द्वारा तेब्रह्मचर्यवालेपुरुष ताब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवेहैं ॥हेशिष्य॥ यालोकविषे जेपुरुष दूसरेसर्वसाधनोंकरिकेसंपन्नभीहैं ॥ तथाविद्याविषेभीकु
शलहैं ॥ परंतु एकब्रह्मचर्यसाधनतैंरहितहैं ॥ तेपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ किंतु तेविषयासक्तपुरुष जन्ममरणरूपक्लेशकूंहीप्राप्त

होवैहै ॥ याअर्थविषे सोभरिआदिककोटिपुरुष दृष्टांतरूपहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे समुद्रकेतरणेविषे एकनौकाहीसाधनहै ॥ तैसे याजन्ममरण रूपसंसारकेतरणेविषे यहब्रह्मचर्यहीसाधनहै ॥ हेशिष्य ॥ यहब्रह्मचर्य केवलदुःखकीहीनिवृत्तिनहींकरेहै ॥ किंतु ताब्रह्मचर्यकरिकै यहपुरुष स्वर्गकूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ तथा मोक्षकूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ तथा दीर्घआयुषकूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ तथा इसलोकविषे महान्सुखकूं तथामहान्यशकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा तेब्रह्मचर्ययुक्तपुरुष सर्वरोगोंतैंरहितहोवैहै । तथा सुंदरकांतिवाळेहोवैहै ॥ तथा सर्वदुःखोंतैंरहितहोवै हैं ॥ तथा सर्वपाप तैंरहितहोवैहैं ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकामहात्म्य ताब्रह्मचर्यका शास्त्रोंविषेकथनकर्याहै॥ हेशिष्य ॥ जोपुरुष याप्रकारकेमहात्म्यकूं जानिकेभी ताब्रह्मचर्यकेस्थिरकरणेविषे समर्थनहींहोवै ॥ सोपुरुष याप्रकारकाविचारकरिकै ताब्रह्मचर्यकूंस्थिरकरे ॥ आपणीमाताकेशरी रविषे तथा आपणीस्त्रीकेशरीरविषे कौनविशेषताहै ॥ जिसविशेषताकूंदेखिकै यहपुरुष ताब्रह्मचर्य तें भ्रष्टहोवैहै ॥ किंतु तिनदोनोंकेश रीरविषे किंचित्मात्रभी विशेषतानहीं है ॥ सर्वस्त्रीयोंका पांचभौतिकशरीर समानहीं है ॥ यातैं सर्वस्त्रीयोंकूं आपणीमाताकेसमानजानिकै यहपुरुष ताब्रह्मचर्यकरिरक्षाकरे ॥ किंवा ॥ मूत्रकापात्र तथा अपानवायुकरिकैदूषित जास्त्रीकीयोनिहै ॥ तायोनिविषेगमनकरणेहारेपुरुषकूं कौनसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ किंतु किंचिन्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा जैसे शरीरकेकंडूयनकरिकै हस्तोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै तैसे तिनकामीपुरुषोंकूं ताविषयभोगतैं केवलदुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरतेहुएभी यापुरुषकूं जभी किसीपू र्वलेपापकर्मकेवशतैं तास्त्रीके त्यागकरणेकीबुद्धि नहींहोवै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष तिसत्यागबुद्धिकेप्राप्तिवासते अंतर्यामीपरमेश्वरके आगे याप्रकारकीप्रार्थनाकरे ॥ हेअंतर्यामीईश्वर ॥ सर्वब्राह्मणक्षत्रियादिकोंका आत्मारूपजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मभावकेप्राप्तिकी मैं सर्वदा इच्छा करताहूं ॥ याकारणतैंही मैं सत्मार्गविषेस्थितिरूपचर्याकी अभिलाषावालाहूं ॥ जोकदाचित् मेरेकूं ब्रह्मभावकीइच्छानहींहोती ॥ तोमैं सत्मार्गविषेस्थितिकीअभिलाषाकिसवासतेकरता ॥ और मेरेकूं सर्वदा ब्रह्मभावकेप्राप्तिकीइच्छारहैहै ॥ साब्रह्मभावकीप्राप्ति ब्रह्मच र्यतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं हमारेऊपर आप यहअनुग्रहकरो ॥ जोमैं पुनःयास्त्रीकीयोनिविषेगमननहींकरौं ॥ जायोनि हमनें म

ताकेउदरतैंनिकसणेकालविषे अनेकवार अनुभवकरीहे ॥ कैसीहे यहस्त्रीकीयोनि ॥ सर्वदामूत्रकरिकेगीलीरहेहे तथा बहुतलोभकरिकेयुक्त हे॥ तथा यापुरुषोंके बल विवेक वैराग्य आदिकगुणोंकूनष्टकरणेहारीहे ॥ तथा पक्वव्रणकेसमान रक्तवर्णवालीहे ॥ तथा अत्यंतदुर्गंधवालीहे ॥ तथा सर्वजन्मोंविषेदुःखकीप्राप्तिकरणेहारीहे ॥ ऐसीनिंदितस्त्रीकीयोनिविषे जैसे पुनः हमारामननहींहोवे ॥ ऐसीआपकृपाकरो ॥ हेशिष्य ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी तापरमेश्वरकेआगे इसप्रकारकी प्रार्थनाकरेहे ॥ तभी सोपरमेश्वर ताअधिकारीपुरुषकूं तिनस्त्रियोंके मैथुनविषे वैराग्यकोप्राप्तिकरेहे ॥ ताबैराग्यकरिके यहअधिकारीपुरुष तामैथुनविषेप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ केवलस्त्रीकेसंभोगका नाम मैथुननहीं हे॥ किंतु तासंभोगकेसाधनरूपजे स्मरण १ कीर्त्तन २ केलि ३ प्रेक्षण ४ गुह्यभाषण ५ संकल्प ६ अध्यवसाय ७ यहसतैं ॥ तिनोंकूभी शास्त्रविषेमैथुनकहेहैं ॥ तहां स्त्रियोंका मनविषेचिंतनकरणा याकानाम स्मरणहे ॥और तिनस्त्रियोंकेसौंदर्यादिकगुणोंका मुखतैंकथनकरणा याकानाम कीर्त्तनहे ॥ और तिनस्त्रियोंके साथ जुवादिकक्रीडाकरणी तथापरिहासकरणा याकानाम केलिहे ॥ और रागपूर्वक वारंवार तिनस्त्रियोंकूदेखणा याकानाम प्रेक्षण हे ॥ और एकांतदेश विषे तिनस्त्रियोंकेसाथ संभाषणकरणा याकानाम गुह्यभाषण हे॥अथवा तिनस्त्रियोंकेगुह्यअंगोंका कथनकरणा याकानाम गुह्यभाषणहे॥और तिनस्त्रियोंविषे रमणीकबुद्धिकरणी याकानाम संकल्प हे॥और यास्त्रीकेसाथ मैं अवश्य संभोगकरौंगा याप्रकारकेनिश्चयकानाम अध्यवसायहे॥यहअष्टप्रकारकामैथुनही तिनस्त्रियोंविषेप्रीतिकाहेतु है ता अष्टप्रकारकेमैथुनकेत्यागकियेहुए यापुरुष कीतिनस्त्रियोंविषेप्रीतिहोवैनहीं ॥ और ताअष्टप्रकारकेमैथुनकेपरित्यागकानाम ब्रह्मचर्य हे॥हेशिष्य॥ इसप्रकारकेब्रह्मचर्यकरिकेयुक्तजोपुरुषहे॥सोपुरुष विनाहींयत्नतैं सर्वदुःखोंतैंरहित आनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माकूंप्राप्तहोवैहे ॥ यातैं सर्वमुमुक्षुजनोंने ताब्रह्मचर्यधर्मकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ और जोपुरुष विषयोंविषेआसक्तिकरिके ताब्रह्मचर्यका परित्यागकरेहे ॥ सोपुरुष नानाप्रकारकेयोनियोंकूं अवश्यकरिकेप्राप्तहोवैहे ॥ काहेतैं ब्रह्मचर्यतैंरहितविषयासक्तपुरुषकूं अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेस्थितआत्मा कदाचितभी प्रतीतहोतानहीं ॥ किंतु ताविषयासक्तपुरुषकेचित्तविषे विष्ठामूत्रादिकमलोंकासमूहरूपस्त्रीही स

सर्वदा प्रतीतहोवे है ॥ और निरंतर तास्त्रीकेध्यानतें उत्पन्नभयेजेसंस्कार तिनसंस्कारोंकेबलतें सोविषयासक्तपुरुष स्वप्नमनोरथादिकोंविषे भी तास्त्रीकूंहीदेखेहै ॥ इसप्रकार सर्वदा तास्त्रीकूंदेखताहुआ तथातास्त्रीकाध्यानकरताहुआ सोविषयासक्तपुरुष मरणतेंअनंतर इसलोकविषे अथवा परलोकविषे तिसीस्त्रीकेउदरविषे जन्मकूंप्राप्तहोवे है ॥ अथवा तास्त्रीकेसजातीयकिसीदूसरीस्त्रीकेउदरविषेजन्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अथवा किसीविजातीय पशुआदिकस्त्रीकेउदरविषे जन्मकूंप्राप्तहोवे है ॥ ताजन्मतेंअनंतर सोपुरुषपूर्वलेसंस्कारोंकेवशतें पुनःतिनस्त्रियोंकूं देखेहै ॥ तथा तिनस्त्रियोंका सर्वदा ध्यानकरेहै ॥ तिसतेंअनंतर मरणकूंप्राप्तहोइके सोविषयासक्तपुरुष पुनःतिनस्त्रियोंकेउदरविषे जन्मकूं प्राप्तहोवे है ॥ ताजन्मतेंअनंतर पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतें पुनःतिनस्त्रियोंविषे आसक्तहोवे है ॥ इसप्रकार ब्रह्मचर्यतेंरहितहुआ सोविषयासक्त पुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूंनजाणिकरिके वारम्वार जन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार अन्वयव्यतिरेककरिके याब्रह्मचर्यकूंही ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीकारणता है ॥ याकारणतेंही सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति आत्मज्ञानकोप्राप्तिवासते तीनवार बत्तीसबत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ और चतुर्थवार सोप्रजापति ताइंद्रकेचित्तकूंशुद्धहुआदेखिके तथाअल्पदोषयुक्तदेखिके ताअल्पदोषकीनिवृत्तिकरणेवासते पंचवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ ताब्रह्माकेआज्ञाकूंमानिके सोइंद्र पंचवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरिके पुनः ताप्रजापतिकेसमीप आवताभया ॥ ताइंद्रकूंआयाहुआदेखिके सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकार तुरीयआत्माकाउपदेशकरताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतेंविलक्षण जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा हमनें तुमारेप्रति पूर्वही चक्षुआदिकस्थानोंविषे उपदेशकऱ्याथा ॥ परन्तु आपणेअज्ञानकेवशतें तूं ताआत्माकूं अन्यथाहीग्रहणकरताभया ॥ अब तीनशरीरोंतेंभिन्नरूपकरिके ताआत्माकेबोधकरणेवासते प्रथम धर्मोंसहिततीनशरीरोंकावर्णनकरेहैं ॥ हेइंद्र ॥ जिसशरीरविशिष्टआत्माकूं तुमनें ग्रहणकऱ्याहै ॥ सोआत्माकाउपाधिरूपशरीर स्थूल सूक्ष्म कारण याभेदकरिकेतीनप्रकारकाहोवे है॥सोतीनप्रकारकाशरीर केवलअज्ञानकरिकेहीसिद्धहै॥ताअज्ञानकेअभावहुए कार्यकारणरूपकरिके तिनशरीरोंकीसिद्धिहोवेनहीं

॥ हेइंद्र ॥ तेतीनोंशरीर अविद्याकरिकेकल्पितहैं ॥ यातें मरणवत्ताधर्म तिनोंविषे यद्यपि समानहीं है ॥ तथापि यहस्थूलशरीरसर्वदा ता
मरणवत्ताधर्मवालाहै ॥ काहेतें जैसे सर्प आपणाभक्ष्यरूपकरिके मंडूककूंग्रहणकरेहै ॥ तैसे प्रमादरूपमृत्युनें आपणाभक्ष्यरूपकरिके
सर्वदा यास्थूलशरीरकूं ग्रहणकर्‍याहै ॥ ऐसे यास्थूलशरीरविषे अजरत्व अमरत्व अभयत्व आदिकआत्माकालक्षण संभवतानहीं ॥ यातें
यहस्थूलशरीर आत्मानहीं है ॥ किंतु यास्थूलशरीरतैंविलक्षणहीआत्माहै ॥ और हेइंद्र ॥ जैसे यहस्थूलशरीर आत्मानहीं है ॥ तैसे
सोसूक्ष्मशरीरभी आत्मानहीं है ॥ काहेतें जैसे अनुकूलरूप प्रियता तथाप्रतिकूलरूपअप्रियता यहदोनोंधर्म यास्थूलशरीरविषेरहेहैं ॥ तैसे
तासूक्ष्मशरीरविषेभी तेप्रियअप्रियताधर्मरहेहैं ॥ और आत्मा तिनप्रियअप्रियतादिकधर्मोंतैंरहितहै ॥ यातें यासूक्ष्मशरीरविषेभी आत्मरू
पतासंभवेनहीं ॥ किंतु यासूक्ष्मशरीरतैंभी आत्माविलक्षणहै ॥ और हेइंद्र जैसे यहस्थूलसूक्ष्मशरीर आत्मानहींहै ॥ तैसे तीसरा अज्ञा
नरूपकारणशरीरभी आत्मानहींहै ॥ काहेतें तासुषुप्तिकेकारणशरीरविषे यद्यपि तासुषुप्तिकालविषे दुःखनहीं है ॥ तथापि ताअज्ञानरूप
कारणशरीरविषे भावीउत्पन्नहोणेहारेसर्वदुःख बीजरूपहोइकेरहेहैं ॥ यातें सर्वदुःखोंकाबीजरूपहोणेतें सोअज्ञानरूपकारणशरीरभी आत्मा
होइसकेनहीं ॥ किंतु ताकारणशरीरतैंभी आत्माविलक्षणहै ॥ हेइंद्र ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतें तथातिनशरीरोंकेप्रियअप्रिय
तादिकधर्मोंतें रहितजोयहआत्माहै ॥ सोयहआत्मादेव जैसे दुःखतैंरहितहै ॥ तैसे विषयजन्यसुखतैंभीरहितहै ॥ काहेतें विषयजन्यसुखभी
दुःखकेसमानहीहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् आत्माविषे सुखदुःखनहींहोवे ॥ तो मैं सुखीहूं मैं दुःखीहूं याप्रतीतिसैं आ
त्मामैं सुखदुःख किसकारणतैंभासताहै ॥ समाधान ॥ हेइंद्र याआनंदस्वरूपआत्माविषे जोप्रीतिकरणेहारासुखप्रतीतहोवे है ॥ तथा
अप्रीतिकरणेहारादुःखप्रतीतहोवे है ॥ सोकेवल शरीरकेतादात्म्यअध्यासतैंप्रतीतहोवे है ॥ ताशरीरकेतादात्म्यअध्यासतैंविना आत्मा
विषे सोसुखदुःखप्रतीतहोवेनहीं जोशरीरकेतादात्म्यअध्यासतैंविनाभी आत्माविषे सोसुखदुःख प्रतीतहोता ॥ तो समाधिअवस्थाविषेभी
विद्वानपुरुषोंकूं सोसुखदुःख प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और समाधिअवस्थाविषे सोसुखदुःख प्रतीतहोवेनहीं ॥ यातें यहजान्याजावे है ॥

शरीरकेतादात्म्यअध्यासतेंही आत्माविषे सोसुखदुःख प्रतीतहोवे है ॥ अब याहीअर्थकूंदृष्टांतकरिकेस्पष्टकरे हैं ॥ हेइंद्र ॥ यालोकवि
षे वायुअग्निआदिकजेभूतहैं ॥ तथा विद्युतमेघादिक जेभौतिकपदार्थ हैं ॥ यहसंपूर्ण घनीभावअवयवोंवालेदेहतेंरहितहैं ॥ याकारणतें यह
वायुआदिक ताप्रियअप्रियतेंभीरहितहैं ॥ काहेतें जैसे हममनुष्यादिकोंकादेह सर्वलोकोंकूं प्रतीतहोवे है ॥ तैसे तिनवायुमेघादिकोंका
घनीभूतदेह किसीपुरुषनें किसीदेशविषेदेख्यानहीं ॥ किंतु जीवोंकेपुण्यपापरूपअदृष्टादिककारणोंकेवशतें अकस्मात्तैंप्रगटहोइके
तेमेघादिक वृष्टिआदिककार्योंकूंकरेहैं ॥ यातें यहशरीरकासंबंधही सुखदुःखकाकारणहै ॥ और हेइंद्र ॥ जैसे तेवायुमेघादिककार्य
आपणेअद्वितीयब्रह्मरूपकारणकूंप्राप्तहोइके सर्वभेदतेंरहितअद्वितीयरूपकरिकेस्थितहोवे हैं ॥ तैसे सोसुषुप्तिविषेस्थित प्राज्ञनामाजीवा
त्माभी तिनशरीरोंकेअभिमानकापरित्यागकरिके हार्दाकाशरूपस्वयंज्योतिब्रह्मकूंप्राप्तहोइके आपणेवास्तवअद्वितीयरूपकरिके स्थित
होवे है ॥ हेइंद्र ॥ वायुआदिकभूतपदार्थ तथाविद्युदादिकभौतिकपदार्थ ताब्रह्मतेंहीउत्पन्नहोवे हैं ॥ और कार्यकाआपणेउपादान
कारणविषेही लयहोवे है ॥ याकारणतें लयकालविषे तेवायुविद्युदादिककार्य ताब्रह्मरूपकारणकूंहीप्राप्तहोवे हैं ॥ दूसरेकिसीपदा
र्थकूंप्राप्तहोवेंनहीं ॥ काहेतें सर्वजगत्कूंसत्तास्फूर्तिदेणेहारा जोब्रह्मरूपआत्माहै ॥ ताआत्मातें जोजोपदार्थ रहितहोवेगा ॥ सोसोपदा
र्थ शशशृंगकीन्याई निःस्वरूपहीहोवैगा ॥ ऐसे निःस्वरूपपदार्थविषे तिनवायुविद्युदादिकपदार्थोंकालयसंभवेनहीं ॥ हेइंद्र ॥ जैसे
तिनवायुआदिककार्योंका चैतन्यआत्माविषेलयहोवे है ॥ तैसे याघटादिककार्योंकाभी केवलमृत्तिकादिकोंविषेलयहोवेनहीं ॥ किंतु तिनमृ
त्तिकादिकउपहित चैतन्यआत्माविषेही तिनघटादिककार्योंकालयहोवे है ॥ किंवा ॥ जैसे ताम्रधातुकूं पूर्वरक्तरूपकेविद्यमानहुए सुवर्ण
भावकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ तथा सर्वथानष्टहुएताम्रधातुकूंभी सुवर्णभावकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ किंतु पूर्वरूपकेत्यागतेंअनंतर विद्यमानताम्रधा
तुकूंही सुवर्णभावकीप्राप्तिहोवे है ॥ तैसे यहघटादिकपदार्थ आपणेआत्मास्वरूपतेंभिन्न केवलघटादिस्वरूपकरिकेतौ कदाचित्भी कारण
विषेलयहोवेनहीं ॥ काहेतें आत्मास्वरूपतेंभिन्नहुए तेघटादिककार्य आपही शशशृंगादिकोंकीन्याई निःस्वरूपताकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ और

निःस्वरूपशशशृंगादिकोंका किसीपदार्थविषेलय देखणेविषेआवतानहीं ॥ तैसे अनात्मारूपपटविषे अनात्मरूपघटकालयभी देखणेवि षेआवतानहीं ॥ यातें घटादिककार्योंका मृत्तिकादिकजडपदार्थोंविषेलयहोवेनहीं ॥ किंतु मृत्तिकाउपहितचेतनविषेही तेघटादिककार्य आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकेलयहोवे हैं ॥ हेइंद्र ॥ जभी घटादिकजडपदार्थभी आपणेलयकालविषे चेतनब्रह्मभावकूंहीप्राप्तहोवे हैं॥ तभी सर्वदा तिसब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहुआ जोयहचेतनजीवात्माहे ॥ सोचेतनजीवात्मा आपणेलयकालविषे चेतनब्रह्मभावकूंप्राप्त होवे हे याकेविषेक्याकहणाहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ याजीवात्माका जोसर्वदा ब्रह्मकेसाथअभेदहोवे तो याजीवात्माकूं संसारदशातें मोक्ष दशाविषे कोनविशेषता प्राप्तहोवे हे ॥ समाधान ॥ हेइंद्र॥ यात्वंपदार्थरूपजीवात्माविषे मैंकर्त्ताहूं मैंभोक्ताहूं याप्रकारके जेकर्तृत्वभोक्तृत्व आदिकधर्म प्रतीतहोवे हैं ॥ तेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिकरूप अविद्याकरिकेकल्पितहोणेतें मिथ्याहोहैं ॥ और ताजीवात्माका स्वयंप्रकाशता तथाअद्वितीयआनंदरूपता वास्तवस्वरूपहे ॥ और ताजीवात्माका जोवास्तवस्वरूपहे ॥ सोईहीवास्तवस्वरूप तत्पदार्थरूपब्रह्मकाभीहे यातें वास्तवस्वरूपकरिके तेजीवब्रह्मदोनों अभिन्नहैं ॥ और संसारदशाविषे जो ताजीवब्रह्मकाभेद प्रतीतहोवे हे ॥ ताभेदभ्रमकाहेतु स्थूल सूक्ष्मशरीरसहितकारणअज्ञानहीं है ॥ ताअज्ञानरूपकारणकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोकल्पितभेदभी निवृत्तहोइजावे हे ॥ हेइंद्र ॥ मैंब्रह्मरू पहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकरिके जभी ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवे हे॥ तभी तेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिककल्पितरूपभी आपही निवृत्तहोइजावे हैं॥ यहही तासंसारदशातें मोक्षदशाविषेविशेषताहे ॥ हेइंद्र ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानकरिके जभी तारज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्तिहो वेहे ॥ तभी सोकल्पितसर्प तथातासर्पके भयउत्पादकत्व मोहउत्पादकत्व आदिकधर्म आपहीनिवृत्तहोइजावे हैं ॥ तैसे अधिष्ठानब्रह्म केज्ञानतें जभी ताब्रह्मविषयकअज्ञानकी निवृत्तिहोवे हे ॥ तभी तेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिकधर्म आपहीनिवृत्तहोइजावे हैं॥ और हेइंद्र॥ जैसे घट रूपउपाधिनिवृत्तहुए सोघटाकाश आपणेमहाकाशरूपकरिके स्थितहोवे हे ॥ तैसे स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतें तथातिनोंकेकर्तृ त्वभोक्तृत्वादिकधर्मोंतें रहितहुआयहजीवात्मा आपणेपरिपूर्णब्रह्मरूपकरिके स्थितहोवे हे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विद्युदादिकजडपदा

योंकूं तथाजीवात्माचेतनकूं उभयकालविषे जोसमानही ब्रह्मभावकोप्राप्तिहोतीहोवे॥तो श्रुतिविषे जीवात्माकूं ब्रह्मभावकोप्राप्तिविषे जोविद्युता
दिकोंकादृष्टांतदियाहै सो असंगतहोवेगा ॥ काहेतें किंचित्मात्रविलक्षणताकूंअंगीकारकरिकेही उपमानउपमेयभावहोवे है ॥ यातें तिनों
विषे किंचित्मात्र विलक्षणताकहीचाहिये॥समाधान॥हेशिष्य॥यद्यपि श्रुतिनें उभयअवस्थाविषे जैसे जीवात्माकूं परब्रह्मभावकोप्राप्तिकथन
करीहै॥तैसे विद्युतादिकजडपदार्थोंकूंभी परब्रह्मभावकीप्राप्तिकथनकरीहै॥तथापि तादृष्टांतदार्ष्टांतिकविषे कार्यअकार्यतारूपकरिकें विल
क्षणता प्रसिद्धहीहै॥तहां विद्युतादिरूपदृष्टांतविषेतो कार्यत्वधर्मरहेहै ॥ और जीवात्मारूपदार्ष्टांतिकविषे सोकार्यत्वधर्मरहेनहीं ॥ किंतु
अकार्यत्वधर्म रहेहै॥यातें दृष्टांतदार्ष्टांतिकदोनोंकोविलक्षणता संभवहोइसकेहै॥शंका॥हेभगवन्॥तिनविद्युतादिकोंकीन्याई ताजीवात्मावि
षेभीकार्यरूपताकिसवास्तेनहींहोवे॥समाधान॥हेशिष्य॥तिनमेघविद्युतादिकोंकीन्याई याजीवात्माविषेभीजोकार्यरूपताअंगीकारकरिये॥
तो जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवे है ॥ सोसोपदार्थ नाशवान्होवे है ॥ जैसे यहदेहादिक कार्यरूपहैं यातैंनाशवान्भी हैं॥ तैसे कार्यरूपहोणेतें
ताजीवात्माकाभी अवश्यकरिकेनाशहोवेगा ॥ यातें आत्मा अजर अमर अभय ब्रह्मरूपहै याप्रकारआत्माकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारा
सोप्रजापति मिथ्यावादीहोवेगा ॥ किंवा ॥ पूर्व तीनवार आत्माविषे विनाशतारूपदोषकूंदेखिके सोइंद्र ताप्रजापतिकेसमीपआवताभया
था ॥ जोकदाचित् अभी चतुर्थवारभी ताइंद्रकूंअविनाशीआत्माकालाभ नहींहोता ॥ तो ताइंद्रकाआवनाही व्यर्थहोता ॥ और पूर्वकी
न्याई ताआत्माविषेभी विनाशीपणादेखिके सोइंद्र पुनःभी ताप्रजापतिकेसमीपआवता॥किंवा॥याजीवात्माका जोनाशअंगीकारकरिये॥
तो ताप्रजापतिनें इंद्रकेप्रति स्वयंज्योतिब्रह्मकीप्राप्तिपूर्वक आपणेपरिपूर्णरूपकरिकेस्थितिरूप जोफलकथनकऱ्याथा ॥ सोभी असंगत
होवेगा ॥ काहेतें तानष्टहुएजीवकूं सामान्यतैंकिसीपदार्थकोभीप्राप्तिसंभवेनहीं ॥ जभी नष्टहुएजीवकूं सामान्यतें किसीवस्तुकोभीप्राप्ति
नहींभई ॥ तभी तानष्टहुएजीवकूं ताप्राप्तिपूर्वक स्वरूपकरिके स्थिति किसप्रकारहोवेगी ॥ किंतु नहींहोवेगी ॥ इत्यादिकअनेकप्रकार
केदोष प्राप्तहोवैंगे॥यातें ताजीवात्माविषे कार्यरूपतासंभवेनहीं॥किंवा ॥ वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो तावायुमेघविद्युतादिकदृष्टांतविषे

तथाजीवात्मारूपदार्ष्टांतिकविषे साकार्यअकार्यतारूपविलक्षणता अपेक्षितहैनहीं ॥ व्यक्तियोंकेभेदमात्रकरिकेभी तिनोंविषेदृष्टांतरूपता संभवहोइसकेहै ॥ याअभिप्रायकरिके तावायुमेघविद्युतादिकदृष्टांतविषेभी वास्तवर्तेकार्यरूपताकाखंडनकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ तावायुमेघादिकदृष्टांतविषे जोकदाचित् नैयायिकोंकेमतकीन्याईं वास्तवर्तें कार्यरूपताहोवै॥तौ ताना्शवान्वायुआदिकदृष्टांतविषे श्रुतिनें समानधर्मरूपकरिकेकथनकरेजे समुत्थान प्राप्ति स्वरूपावास्थिति यहतीनधर्म तेनहींसंभवें ॥ परंतु तिनवायुआदिकोंविषे कारणतेंपृथक्‌सत्तारूप वास्तवकार्यताहैनहीं ॥ किंतु कारणही कार्यरूपकरिकेस्थितहोवैहै॥सोकार्य कारणतेंभिन्नरूपकरिके सत्नहीं हैं॥काहेतें ताकारणतेंभिन्न हुआ सोकार्य मिथ्याहोहोवै है॥जोकदाचित् नैयायिकोंकेमतकीन्याईं सोकार्य आपणेकारणतेंपृथक्‌रूपकरिके स्थितहोवै॥तौ सोकार्य आपणेविनाशकरिकेअसत्ताकूंभीप्राप्तहोवै॥ताकरिके पूर्वउक्तसर्वदोष प्राप्तहोवै॥परंतुताकार्यकूं हम कारणतेंपृथक्‌सत्तावाला अंगीकारकरतेनहीं॥ यातें यापक्षविषे सोपूर्वउक्तदोष प्राप्तहोवैनहीं॥शंका॥हेभगवन्॥वायुमेघादिरूपदृष्टांतविषेस्थितकार्यपणेकूं जोमिथ्यामानोंगे॥तौ दार्ष्टांतिकरूपजीवविषेभी सोमिथ्यापणासिद्धहोवैगा॥समाधान॥हेशिष्य॥जैसे दृष्टांतविषेस्थितकार्यरूपता मिथ्याहै तैसे सोजीवपणाभी मिथ्याहोवैगा याप्रकारकीतुल्यताविषे जोतुम्हारा आग्रहहोवे ॥ तौ यहवार्त्ता हमारेकूंअनिष्टनहीं है ॥ काहेतें ताजीवपणेकूं हमभी मिथ्यामानतेहैं ॥ याकारणतेंही ॥ मायाभासेन जीवेशौकरोति ॥ याश्रुतिनें जीवईश्वरकीस्थिति मायाकेअधीनकथनकरी है॥ जैसे घटरूपउपाधिकेनाश हुए घटाकाशपणा मिथ्याहीहोवे है ॥ तैसे तीनशरीरोंकेविवेककियेतें सोजीवपणाभी मिथ्याहीहोवे है ॥ और जैसे घटाकाशरूपसंघातविषे विशेष्यरूपकरिकेस्थित जोआकाशहै ॥ सोआकाश सत्यरूपहै ॥ तैसे जीवरूपसंघातविषे विशेष्यरूपकरिकेस्थित जो आनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्माभी सत्यरूपहै॥यातें वायुमेघादिकदृष्टांतविषे तथाजीवरूपदार्ष्टांतिक स्थित जोनामरूप लक्षणमायाकाअंशहै ॥ तामायाकेअंशविषे जोकोईवादी मिथ्यापणाकथनकरै ॥ तौ ताकेविषे सोमिथ्यापणा निःशंकहोवे ॥ तामायाकेनामरूपअंशकूं हमभी सत्यकहतेनहीं॥किंतु जोपरमात्मादेव अस्ति भाति प्रिय रूपकरिके सर्ववस्तुओंविषेअनुगतहै ॥ तापरमात्मा

देवकूंही इम सत्यकहेहैं॥ और स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकरिकेविशिष्टजोजीवहै ॥ सोजीवतो ताआनंदस्वरूपआत्माकेसत्ताकूं
अंगीकारकरिकेही सत्यरूपहोवे है ॥ स्वभावतें ताजीवविषेभी सत्यरूपताहोवेनहीं ॥ इसप्रकार वायुमेघादिकभी तापरमात्मादेवकीसत्ता
कूंअंगीकारकरिकेही सत्यरूपप्रतीतहोवेहैं ॥ स्वभावतें तिनोंविषेभी सत्यरूपतानहीं ॥ इतनीअंशकीसमानताकूंअंगीकारकरिकेही तिन
वायुमेघादिकोंविषे उपमानरूपता कथनकरीहै ॥ और जीवात्माविषे उपमेयरूपता कथनकरीहै ॥ परंतु तिसवायुमेघादिकदृष्टांतविषे
स्थितजाकार्यताहै ॥ ताकार्यताअंशविषे ताजीवात्माकूं तादृष्टांतकीसमानतानहीं है ॥ जोकदाचित् तिनवायुमेघादिकोंकीन्याई
ताजीवविषेभी कार्यरूपताहोवे ॥ तो जोजोपदार्थ उत्पत्तिमान्होवे है ॥ सोसोपदार्थ नाशवान्होवेहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ उत्पत्ति
मान्होणेतें नाशवान्हैं ॥ तैसे कार्यरूपहोणेतें सोजीवात्माभी नाशवानहोवेगा ॥ ताजीवात्माकेनाशहुए करेहुएकर्मोंकाफलभोगतेंविना
शरूपकृतनाशदोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ तथा न करेहुएकर्मोंकेफलकीप्राप्तिरूपअकृताऽभ्यागमरूपदोषकीप्राप्तिहोवेगी और ऐसेनाशवान्
आत्माकेउपदेशकरणेकरिके ताप्रजापतिकूंभी मिथ्यावादीपणासिद्धहोवेगा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे वायुमेघादिकोंविषेकार्यरूपताहै॥
तैसे घटादिकपदार्थोंविषेभीकार्यरूपताहै॥ यातें प्रसिद्धघटादिकपदार्थोंकूंछोडिके ताप्रजापतिनें वायुमेघादिकोंकादृष्टांत किसवास्तेदि
याहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सोप्रजापतिवायुमेघादिकोंकूं जोदृष्टांतरूपकरिकेकथनकरताभयाहै ॥ ताप्रजापतिकेवचनका कार्यरूपता
केबोधनकरणेविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु प्रियअप्रियतातेंरहितकरणेद्वारा जोअशरीरभावहै ॥ ताअशरीरभावकेबोधनकरणेविषे ताप्रजा
पतिकेवचनका तात्पर्य है ॥ और घटादिकपदार्थोंकी वायुमेघादिकोंकीन्याई शरीरतेंरहितहोइकेस्थिति संभवेनहीं॥याकारणतें ताप्रजाप
तिनें तिनघटादिकोंकादृष्टांतदियानहीं ॥ हेशिष्य ॥ ताप्रजापतिका यहअभिप्रायहै ॥ जैसे घनीभूतअवयवोंवालेशरीरतेंरहितहुए तेवायु
मेघादिक प्रियअप्रियभावकूंप्राप्तहोवेनहीं॥ तैसे यहजीवात्माभी तीनशरीरोंतेंरहितहुआ ताप्रियअप्रियभावकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और जैसे
प्रलयकालकेप्राप्तहुए तेशरीरतेंरहितवायुआदिक परमज्योतिरूप कारणकूंप्राप्तहोइके आपणेपरिपूर्णस्वरूपकरिकेस्थितहुए पुनःकदा

चित्भी संसारसंबंधीदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे शरीरकेअभिमानतेंरहित यहजीवात्माभी परमज्योतिरूपपरमात्मादेवकूंप्राप्तहोइके आप
णेपरिपूर्णरूपकरिकेस्थितहुआ पुनःकदाचित्भी संसारसंबंधीदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ तापरमात्मारूप ज्योतिविषे जोपरमज्यो
तिरूपताकथनकरीहै ॥ सोस्वप्रकाशतारूपकरिकेकथनकरीहै काहेतें तास्वयंज्योतिपरमात्मादेवतेंभिन्न जितनेक सूर्यचंद्रमाअग्निआदि
कज्योतिहैं ॥ तेसूर्यादिकज्योति आपणीसिद्धिवासते आपणेतेंभिन्न ज्ञानरूपज्योतिकीअपेक्षाकरे हैं ॥ यातें तिनसूर्यादिकोंविषे परमज्यो
तिरूपता संभवैनहीं ॥ और सोज्ञानरूप परमात्मादेव आपणीसिद्धिवासते किसीदूसरेज्ञानकीअपेक्षा करतानहीं ॥ याकारणतें श्रुतिभग
वती तापरमात्मादेवकूं परमज्योति यानामकरिकेकथनकरेहै ॥ किंवा ॥ सोआत्मास्वरूपज्ञान जोकदाचित् आपणीसिद्धिवासते किसी
दूसरेज्ञाताकीअपेक्षाकरेगा॥तो आत्माश्रय अन्योन्याश्रयचक्रिका अनवस्था याचारिदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी॥काहेतें ज्ञानवालेकूंज्ञाताकहेहैं॥
सोआत्मास्वरूपज्ञान आपणीसिद्धिवासते जिसज्ञाताकी अपेक्षाकरेहै ॥ सोज्ञाता ताप्रथमज्ञानकरिकेज्ञानवालाहुआ ताप्रथमज्ञा
नकीसिद्धिकरेहै ॥ अथवा किसीदूसरेज्ञानकरिकेज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता ताप्रथमज्ञानकीसिद्धिकरेहै ॥ तहां प्रथमपक्षकेअंगीकार
करणेविषेतो आपणीसिद्धिविषे आपणीअपेक्षारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोदूसरापक्ष अंगीकारकरिये ॥ ताकेविषे
भी यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ सोज्ञाता तादूसरेज्ञानकीजोसिद्धिकरेहै सो तिसीदूसरेज्ञानकरिकेज्ञानवालाहुआ तादूसरेज्ञानकीसिद्धि
करेहै ॥ अथवा प्रथमज्ञानकरिकेज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता तादूसरेज्ञानकीसिद्धिकरेहै ॥ अथवा किसीतीसरेज्ञानकरिकेज्ञानवालाहुआ सो
ज्ञाता तादूसरेज्ञानकीसिद्धिकरेहै ॥ तहां प्रथमपक्षकेअंगीकारकियेहुए पुनःपूर्वकीन्याईं आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी॥और दूसरेपक्षके
अंगीकारकियेहुए अन्योऽन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें प्रथमज्ञानकूं आपणीसिद्धिविषेतो दूसरेज्ञानकीअपेक्षा ॥ और तादूसरे
ज्ञानकूं आपणीसिद्धिविषे ताप्रथमज्ञानकीअपेक्षा ॥ याप्रकारकाअन्योन्याश्रयदोष प्राप्तिहोवैगा ॥ और जोतीसरापक्ष अंगीकारकरिये ॥
ताकेविषेभी यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ सोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीजोसिद्धिकरेहै ॥ सो तिसीतीसरेज्ञानकरिकेज्ञानवालाहुआ तातीसरेज्ञान

कीसिद्धिकरेहै अथवा दूसरेज्ञानकरिकेज्ञानवालाहुआ सोज्ञातातातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरे हैअथवा प्रथमज्ञानकरिकेज्ञानवालाहुआसोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरे है ॥ अथवा किसीचतुर्थज्ञानकरिकेज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरेहै ॥ तहां प्रथमपक्षकेअंगीकारकियेहुएतौ पुनःपूर्वकीन्याई आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ और दूसरेपक्षकेअंगीकारकियेहुए पूर्वकीन्याई पुनः अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ और तीसरेपक्षकेअंगीकारकियेहुए चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥काहेतें प्रथमज्ञानकूं आपणीसिद्धिविषे दूसरे ज्ञानकीअपेक्षा ॥ और तादूसरेज्ञानकूंआपणीसिद्धिविषे तीसरेज्ञानकीअपेक्षा ॥ और तातीसरेज्ञानकूं आपणीसिद्धिविषे पुनःप्रथमज्ञानकीअपेक्षा ॥ याप्रकारचक्रकीन्याईभ्रमणरूप चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ और किसीचतुर्थज्ञानकरिकेज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरे है ॥ यहचतुर्थपक्षजोअंगीकारकरिये ॥ तौ सोचतुर्थज्ञान आपणीसिद्धिवासते किसीपंचमज्ञानकीअपेक्षाकरेगा ॥ और सोपंचमज्ञानभी आपणीसिद्धिवासतें किसीषष्ठेज्ञानकीअपेक्षाकरेगा ॥ याप्रकार उत्तरउत्तर ज्ञानोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ यातें सोआत्मास्वरूपज्ञान आपणीसिद्धिविषे किसीदूसरेज्ञाताकीअपेक्षाकरेनहीं ॥ किंतु सोआत्मास्वरूपज्ञान स्वप्रकाशरूपहै ॥ याकारणतें ताज्ञानरूपस्वयंज्योतिआत्माकूं श्रुतिभगवती परंज्योति यानामकरिकेकथनकरे है ॥ ऐसेपरंज्योतिरूप परमात्मादेवकूंप्राप्तहोइके यहजीवात्मा आपणेपरिपूर्णअद्वितीयस्वरूपकरिकेस्थितहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् याजीवात्माकूं तापरमज्योतिकीजाप्राप्तिहै ॥ साप्राप्तिही आपणेस्वरूपकरिकेस्थितिरूपहै ॥ यातें संपत्ति याशब्दकरिके ताप्राप्तिकूंकथनकरणेहारी तथा स्वरूपाभिनिष्पत्ति याशब्दकरिके तास्थितिकूंकथनकरणेहारीजा परंज्योतिरूपसंपद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यते ॥ यहश्रुतिहै ॥ ताश्रुतिविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ महावाक्यतेंउत्पन्नभयाजो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानकानाम संपत्तिहै ॥ और ताजीवब्रह्मकेअभेदज्ञानतेंउत्पन्नभयाजो सर्वद्वैततेंरहिततारूपफलहै ॥ ताफलकानाम स्वरूपाभिनिष्पत्तिहै ॥ यातें ताश्रुतिविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र ॥ ताअद्वितीयभावरूपफलकीप्राप्ति

कालविषे जो ताजीवब्रह्मकाअभेदस्वरूपहोवे है ॥ सोअभेदस्वरूप सर्वकार्यकारणरूपपंचतें श्रेष्ठहै ॥ तथा सर्वउपाधियोंविषेपरिपूर्ण है॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताजीवब्रह्मकेअभेदस्वरूपकूं उत्तमपुरुष यानामकरिकेकथनकरे है ॥ ताअभेदस्वरूपतैंपरेदूसराकोईपदार्थ उत्तमपुरुषरूपनहीं है ॥ अब जीवन्मुक्तपुरुषोंकेस्थितिकाप्रकार वर्णनकरे हैं ॥ हेइंद्र ॥ महावाक्यतें जीवब्रह्मकेअभेदकूंजानणेहारा जोउ त्तमपुरुषहै ॥ सोउत्तमपुरुष आपणेप्रारब्धकर्मकीसमाप्तिपर्यंत जिसप्रकार निवासकरे है ॥ ताप्रकारकूं तूं श्रवणकर ॥ तहां निर्विकल्प समाधिविषेस्थितहुआ सोजीवन्मुक्तपुरुष सर्वप्रकारसें अद्वितीयब्रह्मकूंहीदेखेहै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मतैंविना किसीभीअनात्मपदार्थकूंदेखता नहीं ॥ और तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषेतौ ॥ सोजीवन्मुक्तपुरुष सर्वजगत्कूंआपणाआत्मारूपदेखताहुआ सर्वलोकोंविषे आपणीइच्छा पूर्वक स्वतंत्रविचरेहै ॥ जैसे महाराजा स्वतंत्रहोइके आपणेदेशविषेविचरेहै ॥ तैसे सोजीवन्मुक्तपुरुषभी स्वतंत्रहोइकेविचरे है ॥ और हेइं द्र ॥ सोसर्वात्मारूपविद्वान्पुरुष सर्वप्राणिरूपकरिकै भक्ष्यअभक्ष्यपदार्थोंकूंभोजनकरे है ॥ तथा बालकोंकेसमान नानाप्रकारकीक्रीडाक रे है॥तथा महान्पुरुषोंकरिके आदरकूंप्राप्तहोवे है॥तथा सोविद्वान्पुरुष इंद्रादिरूपकरिके देवांगनावोंकेसाथ रमणकरे है॥तथा नानाप्रका रकेरथादिकवाहनोंविषेआरूढहोवे है ॥ तथा अनेकसखियोंकेसाथ रमणकरे है॥तथा आपणेबंधुजनोंकेसाथ विराजमानहोवे है ॥ इसप्रकार अनेकव्यवहारोंकूंकरताहुआभी सोविद्वान्पुरुष तिनव्यवहारोंसहित याआपणेदेहकूं कदाचित्भी स्मरणकरतानहीं ॥ जैसे सुषुप्तपुरुष ता सुषुप्तिकालविषे आपणेदेहादिकोंका स्मरणकरतानहीं॥शंका ॥ हेभगवन् ॥ देहादिकसर्वपदार्थोंकूंविस्मरणकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष मं दबुद्धिकह्याजावैगा ॥ समाधान ॥ हेइंद्र जैसे कोईपुरुष उन्मत्तदशाकूंप्राप्तहोइके ताउन्मत्तदशाविषे नानाप्रकारकेविपरीतव्यवहारोंकूंकरे है॥ जभी तापुरुषकी साउन्मत्तदशानिवृत्तहोवे है ॥ तभी सोपुरुष ताउन्मत्तदशाकेसर्वव्यवहारोंकूं विस्मरणकरताहुआभी मंदबुद्धिकह्या जावेनहीं ॥ तैसे सोविद्वान्पुरुषभी आविद्यकव्यवहारोंकूंविस्मरणकरताहुआभी मंदबुद्धिकह्याजावेनहीं॥ उलटा आविद्यकव्यवहारोंकेस्मर णतेंही मंदबुद्धिकह्याजावे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं जोकदाचित् देहादिकसर्वपदार्थोंकाविस्मरणहोताहोवे ॥ तौ ता

विद्वान्पुरुषकेशरीरकीस्थिति किसप्रकारहोवैगी ॥समाधान ॥ हेइंद्र ॥ जैसे सुषुप्तपुरुषकूं तासुषुप्तिकालविषे यद्यपि आपणेशरीरकेरक्ष
णकरणेकीचिंतानहीं है ॥ तथापि तासुषुप्तपुरुषकेशरीरकी यहप्राण रक्षाकरैहै ॥ तैसे तामुक्तपुरुषकेशरीरकीभी सोप्राणहीरक्षाकरैहै ॥
और हेइंद्र ॥ जैसे रथऊपर सारथिपुरुषकेसोयेहुएभी तारथविषेजुडेहुए शिक्षितअश्व तारथकूं पूर्वकीन्याई नियमपूर्वक लेजावै हैं ॥ तैसे
याविद्वान्पुरुषकेउपरामहुएभी याविद्वान्पुरुषकेदेहकूं तेप्राण पूर्वकीन्याई नियमपूर्वक चलावै हैं ॥ और हेइंद्र॥जैसे महाराजाकेसोयेहुए
भी तामहाराजाकेमंत्री पूर्वकीन्याई ताराज्यकारक्षणकरै हैं ॥ तैसे तामुक्तपुरुषकेउपरामहुएभी तामुक्तपुरुषकेदेहका तेप्राण रक्षणकरै हैं॥
हेइंद्र॥ जैसे तामुक्तपुरुषकेदेहकेरक्षाकाहेतु तेप्राणहोवै हैं ॥ तैसे तामुक्तपुरुषकेभोगकाहेतु मनसहितश्रोत्रादिकइंद्रियहोवै हैं ॥ अब विष
यभोगकालविषे अज्ञानीजीवोंतैं ताविद्वान्पुरुषविषे विशेषताकावर्णनकरैहैं ॥ हेइंद्र ॥ जैसे मूढबालक अथवा कोईउन्मत्तपुरुष श्रोत्रादि
कएकादशइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकअनेकविषयोंकूंग्रहणकरताहुआभी पश्चात् तिनविषयोंकास्मरणकरतानहीं ॥ तैसे सोजीवन्मुक्तपुरुष
भी श्रोत्रादिकएकादशइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयोंकूंग्रहणकरताहुआभी आपणेआत्मातैंभिन्न किसीभीपदार्थकूंजाणतानहीं ॥ हेइंद्र ॥
शब्दादिकविषयोंविषे आसक्तितैंरहितहुआभी यहविद्वान्पुरुष ब्रह्मलोकादिकलोकोंविषेवर्तमानभोगोंकूं सूर्यादिकदेवतावोंकरिकैप्रेरणाक
रेहुएनेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै ग्रहणकरैहै॥ आपणीआसक्तिपूर्वक तिनविषयोंकूंग्रहणकरैनहीं ॥ याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष सर्वदुःखों तैं
रहितहोवै है ॥ अब ताविद्वान्पुरुषविषे ब्रह्मरूपताकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम सर्वदेवतावोंकरिकैउपास्यतारूपब्रह्मकाधर्म ताविद्वान्विषेनि
रूपणकरैहैं ॥ हेइंद्र जिसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकूं हमनें उत्तमपुरुष यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तासर्वात्मारूपविद्वान्पुरुषकूं शमदमादि
कसाधनोंयुक्तदेवता जबपर्यंत आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारनहींकरैहै॥तबपर्यंत तेदेवता ताविद्वान्पुरुषकूं नानाप्रकारकेसविशेष
रूपोंकरिकै उपासनाकरै हैं॥तासर्वात्मारूपविद्वान्पुरुषकीउपासनाकरिकैही तिनदेवतावोंकूं सर्वलोकोंविषे तथासर्वभोगोंविषे स्वतंत्रताहो
वैहै॥हेइंद्र जैसे तेदेवतातासर्वात्मारूपविद्वान्पुरुषकीउपासनाकरिकै सर्वलोकवर्तिभोगोंकूं प्राप्तहोवैहैं॥तैसेइदानींकालविषेभी जोअधिकारी

पुरुष तासर्वात्मारूपविद्वान्पुरुषकूं आपणाआत्मारूपजानिके उपासनाकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुषभी सर्वलोकवार्तेभोगपदार्थोंकूंप्राप्तहो
वे है ॥ याअर्थविषे तुमने किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेइंद्र ॥ सर्वजगत्काअधिष्ठानरूपकरिके जोतत्पदार्थरूपपरमात्मादेव
हमनें तुमारेप्रति कथनकर्याहे ॥ सोपरमात्मादेवही सर्वभूतप्राणियोंकेहृदयाकाशविषे त्वंपदार्थजीवरूपकरिकेस्थितहोवे है ॥ तथा
संघातरूपउपाधिकेसंबंधतें शबलसंज्ञाकूंप्राप्तहोवे है ॥ ऐसेआनंदस्वरूपपरमात्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिके सा
क्षात्कारकरैहै ॥ सोविद्वान्पुरुष महान्पापोंकरिकेभी लिपायमानहोवेनहीं ॥ हेइंद्र ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं पापकर्म नहीं स्पर्शकरे हैं ॥ याके
लिये यहकारणहे ॥ जिसविद्वान्पुरुषकूं सर्वकालविषे परमार्थसत्यसाक्षीही हमाराआत्माहे याप्रकार आवरणतेंरहितआत्माकाज्ञानहुआ
है ॥ सोविद्वान्पुरुष किसप्रकार पापकर्मोंकूंकरेगा ॥ किंतु नहींकरेगा ॥ काहेतें पापकर्मोंविषेप्रवृत्तिकाहेतुभूत जोद्वैतदर्शनहे ॥ सो
द्वैतदर्शन ताविद्वान्पुरुषका निवृत्तहोइगयाहे ॥ हेइंद्र ॥ जोविद्वान्पुरुष सर्वदा सुखरूपआत्माकूंही प्रियजाने है ॥ ताआत्मातेंभिन्न
विषयसुखकूंप्रियजानतानहीं ॥ ऐसाविद्वानपुरुष ताविषयसुखकीप्राप्तिवासते किसप्रकार पापकर्मोंकूंकरेंगा ॥ किंतु नहीं करेगा ॥ हेइंद्र ॥
जन्ममरणादिकविकारोंकूंभी अन्यहीप्राप्तहोवे है ॥ मैंसाक्षीआत्मा जन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा शुभअशुभकर्मोंके सु
खदुःखरूपफलकूंभी अन्यहीभोगेहे॥ मैंसाक्षीआत्मा ताफलकाभोक्तानहींहूं ॥ याप्रकार सर्वदा आपणेकूंअसंगजानताहुआ सोविद्वान्पुरुष
जभी पुण्यकर्मोंकाकर्त्ताभी आपणेकूंमानतानहीं ॥ तभी सोविद्वान्पुरुष पापकर्मोंकूंनहींकरेहे याकेविषेक्याकहणाहे॥शंका ॥ हेभगवन् ॥
व्यवहारविषेस्थितहुए ताविद्वान्पुरुषका ऐसामहिमा किसप्रकारहोवेगा ॥ समाधान ॥ हेइंद्र ॥ जोविद्वान्पुरुष सर्वभूतप्राणियोंकाआ
त्मारूपहे ॥ तथा सर्वभूतप्राणियोंकूंअभिन्नकरिके देखेहे ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषके निष्ठारूपमार्गविषे अनेकबुद्धिमान्पुरुषभी मोहकूं
प्राप्तहोवेहैं ॥ और जेदेवता ताविद्वान्पुरुषकेनिष्ठारूपमार्गकेप्राप्तिकीइच्छाकरे हैं ॥ तेदेवता धन्यहैं ॥ हेइंद्र ॥ सर्वपुण्यपापकर्मों तें रहित
जो ब्रह्मवेत्तापुरुषोत्तमहे ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूं यहपुण्यवान्हे अथवा यहपापीहे याप्रकार कोईपुरुष जानिसकतानहीं ॥ हेइंद्र ॥

इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतें ताआनंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरे है ॥ सोविद्वान्पुरुष अवश्यकरिके मोक्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ याअर्थविषे तुमनें किंचितमात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेशिष्य इसप्रकार सोसर्व ज्ञप्रजापति तादेवराजइंद्रकेप्रति तीनअवस्थाओंतेंरहितभूमाब्रह्मका आपणाआत्मारूपकरिके उपदेशकरताभया ॥ कैसाहैसोभूमाब्रह्म ॥ सर्वभूतप्राणियोंका हृदयाकाशरूपहै ॥ तथा आपणीसत्तास्फूर्तिदेकरिके नामरूपात्मकसर्वजगत्कानिर्वाहकरणेहाराहै ॥ तथा सर्वदा तानामरूपात्मकजगत्तेंपरहै॥तथा तानामरूपात्मकजगत्केसंबंधतेंरहितहै॥ऐसेभूमाब्रह्मकूं सोइंद्र आपणाआत्मारूपकरिकेजानताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार गुरुशिष्यकोपरम्परारूपविद्याकासंप्रदाय दोप्रकारकाप्रवृत्तहोताभया ॥ तहां एकसंप्रदायतो देवराजइंद्रतेंलेके प्रवृत्तहोताभया ॥ और दूसरासंप्रदायतो स्वायंभूमनुतेंआदिलेके प्रवृत्तहोताभया ॥ काहेतें ताप्रजापतिनें जैसे देवराजइंद्रकेप्रति साविद्या उपदेशकरीथी ॥ तैसे तास्वयंभूमनुकेप्रतिभी साविद्याउपदेशकरीथी ॥ तहां सोमनुभगवान् भूमिलोकविषे आदिगुरुहोइके अधिकारीपुरुषोंकेप्रति साब्रह्मविद्याकहताभया ॥ और ताब्रह्मविद्याविषेअधिकारकोसिद्धिकरणेहारी जाअंतःकरणकीशुद्धिहै ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धितेंरहित ब्राह्मणक्षत्रियवैश्योंकूंदेखिके सोमनुभगवान् तिनोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरताभया ॥ हेत्रैवर्णिकपुरुषो ॥ तुम्हारेकूं जबपर्यंत अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक आत्माकाज्ञाननहींहोवे ॥ तबपर्यंत तुम चारआश्रमोंविषेकिसीआ श्रमकूंधारणकरिके आपणेआपणेयज्ञादिककर्मोंकूं सावधानहोइकेकरो ॥ और तिननिष्कामकर्मोंकरिके अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा जभी तुमारेकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवे ॥ तभीही तुमोंनें आत्मसाक्षात्कारवासते परमहंससंन्यासकूंग्रहणकरणा ॥ तावैराग्यतेंविना तुम्होंनें तापर महंससंन्यासकूंग्रहणकरणानहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोमनुभगवान् अधिकारीजनोंकेप्रति यथाअधिकार विद्याका उपदेशकरताभया ॥ और सोदेवराजइंद्रभी ताप्रजापतितें तादुर्लभब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोइके साब्रह्मविद्या अग्निवायुआदिकदेवताओंकेप्रति कथनकरताभया ॥ और ताउमारूपब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतें तेअग्निवायुआदिकदेवताभी तातीनअवस्थातेंरहित भूमाब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेसाक्षा

त्कारकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥ तेदेवता सात्विकस्वभाववालेथे ॥ यातैं तिनदेवताओंविषे परमेश्वरका महान्पक्षपातथा ॥ याकारण तैंही तेइंद्रादिकदेवता ताब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥ याअध्यायकेआदिविषे जोतुमनैं जाग्रतादिकतीनअवस्थाओंतैंरहित भूमाआत्माकास्वरूपपूछाथा ॥ सोसंपूर्णहमनैं तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकऱ्या ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकीतुम्हारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तूंहमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामीउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामीचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे छांदोग्यसारार्थप्रकाशे प्रजापतिइंद्रविरोचनसंवादोनाम चतुर्दशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे पञ्चदशाऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः ॥ अथ पंचदशाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वचतुर्दशेअध्यायविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषदकाअर्थ निरूपणकन्या ॥ अब यापंचदशेअध्यायविषे तिसीसामवेदकेकेनउपनिषद्का अर्थ निरूपणकरे हैं ॥ तहां पूर्वचतुर्दशेअध्यायकेअंतविषे अग्निवायुआदिकदेवताओंकूं ब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतें ब्रह्मज्ञानकोप्राप्तिकथनकरो थी ॥ ताकूंश्रवणकरिके सोशिष्य ताअर्थकेपूछणेकीइच्छाकरताहुआ आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हे भगवन् ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनें ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकन्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकमुनियोंके तथावामदेवादिकअधिकारोप्रजाके संवादकरिके नानाप्रकारकोब्रह्मविद्या आपनेंकथनकरोथी ॥ तथा गर्भविषेस्थितवामदेवका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकन्याथा ॥ तथा वामदेवादिकसर्वअधिकारियोंके ज्ञानवैराग्यादिकसाधनकरेथे ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनें तिसीऋग्वेदके कौषीतकोउपनिषद्काअर्थ निरूपणकन्याथा ॥तहां द्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिके आपनें प्राणप्रज्ञास्वरूपआत्माका कथनकन्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणकेसंवादकरिके आपनें तिसीआत्माकूं प्राणादिकोंतेंभिन्नकरिके कथनकन्याथा ॥और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारअध्यायोंविषे आपनें यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकन्याथा ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषेतो आपनें दोपुरुषवंश एकस्त्रोवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद वर्णन कन्याथा ॥ तहांदध्यङ्अथर्वणऋषिदेवराजइंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया॥ ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिके क्रोधवान्हुआसोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकूं पुनःताब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेतें निवारणकरताभया॥तिसतेंअनंतर सोदध्यङ्ऋषि आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते अश्विनोकुमारोंकेप्रति साब्रह्मविद्या उपदेशकरताभया॥ताकरिकेक्रोधवान्हुआ सोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकामस्तकछेदनकरताभया ॥इत्यादिकसर्व वार्त्ता ताचतुर्थअध्यायविषे आपनें कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी॥ज

नकराजाकेयज्ञसभा विषे याज्ञवल्क्यमुनि आश्वलायनादिकसर्वब्राह्मणोंकूंजीतताभया॥तहांयाज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकेशाकल्यब्राह्मणक
मृत्युहोताभया ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेषष्ठअध्यायविषे आपनें याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके दोवारसंवादकरिके न
नाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथा मैत्रेयीस्त्रीके संवादकरि
के नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी॥तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्रयका निरूपणकऱ्याथा॥और हेभगवन्॥याआत्म
पुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरनामाउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरऋ
षिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिके आपनें याजगत्केकारणोंकाविचार निरूपणकऱ्याथा ॥ और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेनवमअध्या
यविषे आपनें तिसीयजुर्वेदकेकठवल्लीउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिके
आपनें नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ औरहेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेदशमेअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउप
निषद्का तथानारायणोपउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिके पंचको
शोंकाविचार कथनकऱ्याथा ॥ तथा वेननामागंधर्वकाअनुभव कथनकऱ्याथा तथा सत्यादिकसर्वसाधनों तें संन्यासआश्रमकीअधिकताक
थनकरीथी ॥ औरहेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे आपनें जाबालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥
ताएकादशेअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ संवर्त्तकादिकमहान्पुरुष तापरमहंससंन्यासकूं धारणकरतेभयेहैं ॥ और त
परमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका वैराग्यहीकालहै ॥ तथा यमनियमादिकसाधनोंवालेविरक्तपुरुषही तासंन्यासकेअधिकारीहैं ॥ तथा तासं
न्यासीका दंड कमंडलु काषायवस्त्र इत्यादिकबाह्यवेशहै ॥ तथा भिक्षाअटन एकांतवास वेदांतचिंतन इत्यादिक आचारहै ॥ इत्यादिक
सर्ववार्त्ता ताएकादशेअध्यायविषे आपनें कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश यातीनअध्यायोंविष
आपनें सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहां द्वादशेअध्यायविषे उद्दालकमुनिके तथा श्वेतकेतुके संवादकरिके आपनें

नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥और याआत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्यायविषे भगवान्‌सनत्कुमारके तथानारदमुनिके संवादकरिके आ
पनें नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेचतुर्दशेअध्यायविषे आपनें प्रजापतिके तथा इंद्रविरोचनके संवादक
रिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ हेभगवन् ॥ ताचतुर्दशेअध्यायकेअंतविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ तिनदेवताओंके
मध्यविषे इंद्र अग्नि वायु आदिकदेवताओंकूं ब्रह्मविद्यारूपउमादेवीकेअनुग्रहतें विशेषकरिके ब्रह्मकाज्ञानहोताभया ॥ याआपकेकहणेतें ह
मारेकूंऐसाप्रतीतहोवे है ॥ याप्रसंगविषे कोईआश्चर्यरूपवार्त्ता होवेगी ॥ यावार्त्ताकेश्रवणकरणेको मैं इच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिके
साआश्चर्यरूपवार्त्ता हमारेप्रति कथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकरिकेपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताश्रद्धावान्‌शिष्यकेप्रति केनउपनिषद्‌विषेस्थि
तकथाका उपदेशकरताभया ॥ कैसीहैसाकथा ॥ अधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ श्रीगुरुउवाच ॥ हेशिष्य ॥ तेशुद्धअं
तःकरणवाले अग्निवायुआदिकदेवता तादेवराजइंद्रतें ब्रह्मविद्याकूंपाइके तासभाविषेस्थितइंद्रकेसमीपजाइके याप्रकारकामनन करतेभ
ये देवताउवाच ॥ हेदेवराजइन्द्र ॥ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकूं तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंकूं तथामनकूं तथाप्राणोंकूं आपणेआपणेकार्य
करणेविषे कोनप्रेरणाकरताहै ॥ हेभगवन् तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे यहजीवही प्रेरणाकरेहै ॥ याप्रकारकावचन जो
आपकहो ॥ सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें यहजीव आपणेमनविषे याप्रकारकासंकल्पकरेहै ॥ जो इसइंद्रियकरिके मैं याव्यापारकूं कदाचित्‌भी
नहींकरोंगा ॥ याप्रकारकेसंकल्पकूंकरिकेभी यहजीव तिसीव्यापारकूंकरेहै ॥ जैसे भूतकेआवेशकरिकेयुक्तहुआ यहपुरुष आपणेप्रतिकू
लव्यापारोंकूंभीकरेहै ॥ तैसे यहजीवभीताव्यापारकेनकरणेकीइच्छाकरताहुआभी अवश्यकरिकेताव्यापारकूंकरेहै ॥ यातें यहजान्याजा
वेहै॥ यहजीव स्वतंत्र नहीं है ॥ किंतु परतंत्रहै ॥ ऐसेपरतंत्रजीवोंविषे तिनइंद्रियोंकीप्रेरकतासंभवेनहीं ॥ और हेभगवन् ॥ सुषुप्तसारथिर
याअन्यायकरिके जैसे जीवन्मुक्तपुरुषकेश्रोत्रादिकइंद्रिय स्वतंत्रहोइके आपणेआपणेव्यापारोंकूं करेहैं ॥ तैसे सर्वप्राणियोंकेश्रोत्रादिक
इंद्रिय स्वतंत्रहोइके आपणेआपणेव्यापारोंकूंकरे हैं याप्रकारकावचन जोआपकहो ॥ सोभी संभवेनहीं ॥ काहेतें याछोकविषेबहुतजनतो

जिसवस्तुविषे आपणीअनुकूलताकाविचारकरे हैं ॥ तावस्तुविषेतो प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और जिसवस्तुविषे आपणीप्रतिकूलताकाविचारक
रे हैं ॥ तिसवस्तुतें निवृत्तहोवे हैं ॥ सोअनुकूलताकाविचार तथाप्रतिकूलताकाविचार जडइंद्रियोंविषे संभवैनहीं ॥ किंतु चेतनविषेही सो
विचारसंभवैहै ॥ और मुक्तपुरुषोंकेइंद्रियोंकेव्यापारविषेभी चक्रभ्रमिन्यायकरिकै व्यवहितचेतनकेव्यापारकाहो अनुमानकऱ्याजावे है ॥
यातें तिनपरतंत्रइंद्रियोंकेप्रेरणाकरणेहारा कोईचेतन अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ और हेभगवन् ॥ यहश्रोत्रादिकइंद्रियहीचेतनहैं याप्रकार
कावचन जोआपकहो ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंही चेतनरूपमानिये ॥ तौ एकही शरीरविषे अनेकचेतनआत्मा
होवैंगे ॥ तेअनेकचेतनआत्माभी भिन्नभिन्नमतवालेहोवैं गे ॥ यातें जैसे एकग्रामविषेरहणेहारे भिन्नभिन्नमतवाले अनेकप्रधानपुरुष ताग्रा
मकाही नाशकरे हैं ॥ तैसे भिन्नभिन्नमतवाले तेअनेकचेतनभी याशरीरकाही नाशकरैं गे ॥ यातें तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंविषे साचेतनरूप
तासंभवैनहीं ॥ और हेभगवन् ॥ पुण्यपापकर्मही याश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरेहैं ॥ याप्रकारकावचन जो
आपकहो॥सोभीसंभवैनहीं॥काहेतें जैसे तेश्रोत्रादिकइंद्रिय जडहोणेतेंस्वतंत्रनहीं हैं॥तैसेतेपुण्यपापरूपकर्मभी जडहोणेतें स्वतंत्रनहीं हैं॥
यातें तिनकर्मोंविषेभी तिनइंद्रियोंकीप्रवर्तकता संभवैनहीं ॥ हेभगवन् ॥ यालोकविषे सर्वप्राणीआपणीअनुकूलताकाविचारकरिकेतो
प्रवृत्तहोवे हैं ॥ और आपणीप्रतिकूलताकाविचारकरिकेनिवृत्तहोवे हैं॥ ताअनुकूलताप्रतिकूलताकेविचारतेंविना किसीभीप्राणीकी प्रवृत्ति
निवृत्तिहोवैनहीं ॥ सोअनुकूलताप्रतिकूलताकाविचार यादेहइंद्रियादिकजडसंघातविषे संभवतानहीं ॥ यातें यहजान्याजावे है ॥तादेहइंद्रि
यादिकजडसंघातकूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरणेहारा कोईतासंघाततेंभिन्न चेतनहोवेगा॥सोकोनचेतनहै यहआप कृपाकरिकेकहो॥
हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाप्रश्न जभी तिनअग्निआदिकदेवताओंनें तादेवराजइंद्रकेप्रतिकऱ्या ॥ तभी सोइंद्र तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारका
उ तरकहताभया॥इंद्रउवाच॥हेदेवतावो॥जोआत्मादेव श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकाभी इंद्रियरूपहै॥तथाजोआत्मादेवमनकाभीमनरूपहै॥तथा
जोआत्मादेव प्राणकाभी प्राणरूपहै ॥ तथा जिसआत्मादेवकूं ब्रह्मानें जाग्रतादिकतीनअवस्थावों तेंरहितकह्याथा ॥ सोआत्मादेवही आप

णोसमीपतामात्रकरिके सर्वदेहधारीजीवोंका तथाश्रोत्रादिसर्वइंद्रियोंका प्रेरकहै ॥ हेदेवताओ ॥ जोआत्मादेव श्रोत्रादिकइंद्रियोंका तथाम
नका प्रेरकहै ॥ सोईहीआत्मादेव प्राणोंकाभीप्रेरकहै ॥ काहेतें यालोकविषे कोईभीदेहधारीजीव प्राणकरिके तथाअपानकरिके जीवता
नहीं ॥ किंतु जिसआत्मादेवकेआश्रित यहप्राणअपानरहेहैं ॥ ताआत्मादेवरूपप्राणकरिकेही यहसर्वप्राणीजीवनकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातें ता
आत्मादेवकूंश्रुतिभगवतीनें प्राणोंकाभीप्राणकह्याहै ॥ और यहश्रोत्रादिकइंद्रिय तथामन ताआत्मादेवकीसत्तास्फूर्तिकूंपाइकेही आपणे
आपणे कार्यकरणेविषेसमर्थहोवे हैं ॥ याकारणतें ताआत्मादेवकूं श्रुतिभगवतीने इंद्रियोंकाभीइंद्रियकह्याहै ॥ तथा मनकाभीमनकह्याहै
हेदेवताओ इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतें ताइंद्रियादिकोंकेप्रवर्तकआत्मादेवकूं श्रवणकरिके पश्चात् शुद्धमनक
रिके ताआत्मादेवकाविचारकरे हैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही जाग्रतादिकतीनअवस्थारूपबंधतेंमुक्तहोइके ताअंतर्यामीअद्वितीयआत्माकूंनि
श्चयकरे हैं॥हेदेवताओ॥ ऐसेइंद्रियादिकोंकेप्रवर्तकआत्माकेज्ञानतेंही यहविद्वान्पुरुष जन्ममरणादिकविकारोंकोनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मभावको
प्राप्तिरूपअमृतकूंप्राप्तहोवे है ॥ ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइके यहविद्वान्पुरुष पुनः जन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ हेदेवताओ ॥ जिसआ
नंदस्वरूपआत्मादेवविषे मनसहितसर्वइंद्रिय प्रवृत्तहोइसकतेनहीं॥ ऐसे आनंदस्वरूपआत्मादेवकूं मैंइंद्र भलीप्रकारजानताभीहूं॥तथापि
लोकप्रसिद्ध सामान्यरूपकरिके तथा विशेषरूपकरिके ताआत्मादेवकेकथनकरणेकूं मैं जानतानहीं॥ हेदेवताओ॥लोकवासनाकरिकेयुक्त
जेतुमदेवताहो तिनतुम्हारेकूं ताआत्मादेवका सामान्यरूपकरिके तथाविशेषरूपकरिके उपदेश अपेक्षितहै और सोआत्मादेव सामान्यवि
शेषभावतेंरहितहै ॥ तथा मनसहित सर्वइंद्रियोंका अविषयहै ॥ ऐसेआत्मादेवका साक्षात्उपदेश मैं तुम्हारेप्रति किसप्रकारकरिसकोंगा॥
किंतु ताआत्मादेवकेसाक्षात्उपदेशकरणेविषे हमारा सामर्थ्यनहीं है॥यातें निषेधमुखकरिके ताआत्माकाउपदेश मैं तुम्हारे प्रति करताहूं॥
तुम सावधानहोइकेश्रवणकरो ॥ हेदेवताओ ॥ जोआत्मादेव तुम्होंने हमारेसेंपूछाहै ॥ तथा जिसआत्मादेवकेप्रतिपादनकरणेका
हमनें उद्यमकर्‍याहै ॥ सोआत्मादेव विदितपदार्थों तेंभीभिन्नहै ॥ तथा अविदितपदार्थों तेंभी भिन्नहै ॥ हेदेवताओ ॥ याछोकविषे जे

पदार्थ पृथ्वीत्वादिकसामान्यरूपकरिके तथाघटत्वादिकविशेषरूपकरिके जानेजावे हैं ॥ तेसर्वेपदार्थ विदितकहेजावे हैं ॥ तेसर्वेविदित पदार्थ घटादिकोंकीन्याई अनात्मारूपहोणेतें त्यागकरणेयोग्यहैं ॥ और हेदेवताओ ॥ जेपदार्थ याजीवोंकूं कदाचितभी प्रतीतहोतेनहीं ॥ तिनपदार्थोंकूं अविदितकहे हैं ॥ तेअविदितपदार्थभी वंध्यापुत्रकीन्याई अत्यंतअसत्‌होणेतें अनात्मारूपहोहैं ॥ यातें तेअविदितपदार्थभी परित्यागकरणेयोग्यहैं॥ हेदेवताओ इसप्रकार विदितअविदित पदार्थोंतैंभिन्न आत्माकेस्वरूपकूं हम पूर्वआचार्योंकेमुखतें श्रवणकरतेभयेहैं ॥ हेदेवताओ ॥ तिनपूर्वआचार्योंनें हमारेप्रति जिसप्रकार आत्माकाउपदेशकर्‍याहै ॥ ताप्रकारकूं तुमश्रवणकरो ॥ जोप्रत्यक्‌चेतन श्रोत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकरिके तथावाकादिककर्मइंद्रियोंकरिकेभी जान्याजावैनहीं ॥ तथा मनकरिकेभीजान्याजातानहीं ॥ तथा सर्वदेवतादेविभूतिजिसकी ऐसाजोक्रियाशक्तिप्रधानप्राणहै ॥ ताप्राणकरिकेभी जान्याजातानहीं ॥ और जोप्रत्यक्‌चेतन आपणेसाक्षीस्वरूपकरिके तिनसर्वइंद्रियोंकूं जानेहै ॥ तथा तामनकूं जाने है ॥ तथा ताप्राणकूं जानेहै ॥तथा तिनइंद्रियमनप्राणकेव्यापारोंकूंजाने है॥तथा जोप्रत्यक्‌चेतन आपणीसमीपतामात्रकरिके तिनइंद्रियादिकोंकूं आपणेआपणेव्यापारोंविषे प्रवृत्तकरे है ॥ तिसीप्रत्यक्‌चेतनकूं तुमदेवता ब्रह्मरूपकरिकेजानों ॥ और जिसवस्तुकूं तुमदेवता पराक्‌रूपकरिकेउपासनाकरतेहो ॥ सोपराक्‌वस्तु ब्रह्मरूपनहींहै ॥ हेदेवताओ ॥हमदेवता दिनदिनप्रति ताआत्मादेवकेस्वरूपकीउपासनाकरेहैं ॥यातें सोआत्माकास्वरूप हमदेवताओंकूं सुखेंनहीं जानणेयोग्यहै ॥ याप्रकार जोतुम आपणेचित्तविषे मानतेहोवो ॥ सोऐसातुम्हनें मानणानहीं ॥ काहेतें जिसआत्माके दहराकाशनामारूपकूं तुमदेवता उपासनाकरतेहो ॥ सोदहराकाशरूप केवल ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ कोईजानणेयोग्यनहीं है ॥ ऐसेदहराकाशनामा ध्येयरूपकूं जोतुमदेवता ज्ञेयरूपकरिकेमानतेहो यहबहुतआश्चर्य है ॥ हेदेवताओ ॥ अधिकारीपुरुषोंकरिकेजानणेयोग्य जोआत्माकास्वरूपहै ॥ सोआत्माकास्वरूपतो त्वं अहं इदं इत्यादिकसर्वशब्दोंतें रहितहै ॥ ऐसेबुद्धिआदिकोंकेसाक्षीआत्माकेप्राप्तिवासते तुमसर्वदेवता परस्परमिलिकेविचारकरो ॥ हेदेवताओ ॥ श्रुतिकेयथार्थतात्पर्यकूंजानणेहारेजेविद्वान्‌पुरुषहैं॥तेविद्वान्‌पुरुषतो ताआत्मादेवकूं अविज्ञेय विज्ञेय सुविज्ञेय दुर्विज्ञेय याचारनामोंकरिकेक

थनकरे हैं ॥ हेदेवताओ ॥ यालोकविषे जितनैंकी देहाभिमानीजीवहैं ॥ तेदेहाभिमानीजीव ताआत्मादेवकूं सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपकरिके कदाचित्‌भी जानिसकतेनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं अविज्ञेय यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और यालोकविषे सर्वदेहधारीजीव ताआत्मादेवकूं अहंअस्मि याप्रकार आत्मारूपकरिके जाने हैं ॥ याकारणतैं तेवेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं विज्ञेय यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुके उपदेशतैं ताआत्मादेवकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकेजाने हैं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं सुविज्ञेय यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और श्रुतिप्रतिकूलतर्केंहैंप्रधानजिनोंविषे ऐसेशास्त्रोंकरिके सोआत्मादेव कदाचित्‌भी जान्याजावेनहीं॥ याकारणतैं तेवेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं दुर्विज्ञेय यानामकरिके कथनकरेहैं॥अब याहीअर्थकूं पुनःस्पष्ट करिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहसत्‌चित्‌आनंदस्वरूप स्वयंज्योतिआत्मा यद्यपि सर्वप्राणियोंकेहृदयकमलविषे विराजमानहै ॥ तथा सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूंप्राप्तहोवे है ॥तथापि संसारकेक्लेशोंकरिकेतप्तहुए तथापरमेश्वरकोमायाकरिकेमोहितहुए यहजीव ताआत्मादेवकूंजानिसकतेनहीं ॥जैसे जन्मअंधपुरुष आपणेहस्तविषेस्थितनिधिकूंभी जानिसकतेनहीं॥तैसे यहअज्ञानीजीव ताआत्मादेवकूं जानिसकतेनहीं ॥ उलटा यहजीव ताआत्मादेवतैंभिन्न अनात्मपदार्थोंकूंही सर्वदादेखेहैं ॥ ताअनात्मपदार्थोंकेदर्शनतैं याजीवोंकूं वारंवार जन्ममरणकीही प्राप्तिहोवे है ॥ और हेदेवताओ ॥ यहआत्मादेव अहंअस्मि याप्रकारकेशब्दका तथा ताशब्दजन्यज्ञानका विषयहुआ प्रतीतहोवे है ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव सर्वप्राणियोंकूं विदितहै ॥ किंवा यहआत्मादेव केवल अहंअस्मि याप्रकारकोप्रतीतिकरिकेविदितनहीं है ॥ किंतु जाग्रतविषे तथास्वप्नविषे अस्तिभाति प्रिय इत्यादिकप्रतीतियोंकरिकेभी विदितहोवे है॥अस्ति भाति प्रिय इत्यादिक अंशोंकेपरित्यागकियेहुए घटादिकपदार्थोंका किंचित्‌मात्रभी व्यवहारहोवेनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं विज्ञेय यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और हेदेवताओ यहअधिकारीपुरुष पूर्वलेअनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिके तथाब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिके जभी ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकेसाक्षात्कारकरे हैं ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष आपणेहृदयकमलवि

षेस्थित स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं सुखेनहीं प्राप्तहोवे है ॥ याकारणतें तेवेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सुविज्ञेय यानामकरिकेक
थनकरे हैं और हेदेवतावो ॥ जिसद्रव्यविषे ज्ञानसुखादिकगुण समवायसंबंधकरिकेरहेहैं ॥ ताद्रव्यकानाम आत्माहे ॥ याप्रकारके नैया
यिकोंकेतर्ककूंअंगीकारकरिके यहपुरुष जभी ताआत्माकेनिश्चयकरणेविषेप्रवृत्तहोवे है ॥ तभी ताआत्माविषे ज्ञानरूपताकूं तथाआनं
दरूपताकूं सिद्धकरणेहारे जेश्रुतिअनुकूलतर्कहैं तिनतर्कोंकूंदेखिके सोपुरुष आत्मा ज्ञान सुखादिकगुणोंवाला है अथवा ज्ञानसुखादिस्व
रूपहे याप्रकारकेसंशयकूंप्राप्तहोवे है ॥ ऐसेसंशययुक्तपुरुषकूं यहआत्मादेव अत्यंतदुर्विज्ञेयहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ महानबुद्धिवाले
जेलौकिकपुरुषहैं तथा शास्त्रवेत्तापुरुषहैं ॥ तेबुद्धिमानपुरुष ताब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविनाहीं आपणीबुद्धिकेबलतें ताआत्मादेवकूं कि
सवास्तेनहींजानते ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ यहअधिकारीपुरुषता ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतेंविना केवलआपणीबुद्धिकेबलतें ताआत्मा
देवकूं कदाचित्भीनहींजानिसकते ॥ जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतेंविना केवलआपणीबुद्धिकेबलतें ताआ
त्मादेवकूंजानैंगेभी ॥ तोभी वास्तवस्वरूपकरिके ताआत्माकूं जानैंगेनहीं ॥ किंतु लोकप्रसिद्धविशेषरूपकरिके अथवा सामान्यरूप
करिकेही ताआत्माकूंजानैंगे ॥ हेदेवतावो ॥ यहआत्मादेव सर्वविशेषोंतेंरहित निर्विशेषरूपहे ॥ यातें जोपुरुष तानिर्विशेषआत्माकूं
विशेषरूपकरिकेजानेहे ॥ सोभ्रांतपुरुष ताआत्माकेस्वरूपकूंजानतानहीं जैसे सर्पभावतेंरहितरज्जुकूं सर्परूपकरिकेदेखणेहारापुरुष
तारज्जुकेस्वरूपकूंजाणतानहीं ॥ तैसे निर्विशेषआत्माकूं सविशेषरूपकरिकेदेखणेहारापुरुषभी ताआत्माकेस्वरूपकूंजाणतानहीं ॥
और हेदेवतावो ॥ यहआत्मादेव विशेषरूपकोअपेक्षाकरणेहारे सामान्यरूपतैंभीरहितहे ॥ यातें तासामान्यभावतेंरहितआत्मादेवकूं
जोपुरुष सामान्यरूपकरिकेजानेहे ॥ सोभ्रांतपुरुषभी ताआत्माकेस्वरूपकूंजानतानहीं ॥ यातें ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविन
याअधिकारीपुरुषोंकूं ताआत्माकायथार्थज्ञान कदाचित्भीहोवेनहीं ॥ और हेदेवतावो ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी ब्रह्मवेत्तागुरुके
मुखतें ताआत्माकाश्रवणकरेहे ॥ तभी ताआत्माकेयथार्थस्वरूपकूं अवश्यकरिकेनिश्चयकरेहे ॥ सोआत्माकायथार्थस्वरूप श्रुतिनें स

गान्यविशेषभाववैंरहित कथनकऱ्याहे ॥ तहांश्रुति ॥ यस्यामतंतस्यमतं मतंयस्यनवेदसः ॥ अविज्ञातंविजानतां विज्ञातमविजानतां॥अब याश्रुतिकेअर्थका विस्तारतैंनिरूपणकरे हैं॥ हेदेवतावो ॥ जिसपुरुषकेसिद्धांतविषे यहआत्मारूपब्रह्म माता मान मेय यात्रिपुटीगोचरहो नकाविषयहै ॥ सोपुरुष ताब्रह्मकेअद्वितीयस्वभावतैंविपरीत त्रिपुटीरूपभेदकूंदेखेहै ॥ यातैं सोभेददर्शीपुरुष ताब्रह्मकूं जानतानहीं॥इतनैं करिके ॥ मतंयस्यनवेदसः ॥ याश्रुतिकेदूसरेपादकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब ॥ यस्यामतंतस्यमतं॥याश्रुतिकेप्रथमपादकाअर्थनिरूप णकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं तात्रिपुटीरूपद्वैततैंरहितअद्वितीयब्रह्मकूं साक्षात्कारकरिके मैंने अद्वितीय ब्रह्म जान्याहैयाप्रकारकासिद्धांतकरेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष ताब्रह्मके अद्वितीयरूपवास्तवस्वरूपकूं होजानेहै ॥ यातैं तिसविद्वान्पुरुषकूं सो अद्वितीयब्रह्म ज्ञातहीहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आपनैं ताब्रह्मज्ञानकेअप्रमाणताविषे भेदकोविषयतारूप हेतुकह्या ॥ और ताब्रह्मज्ञा नकेप्रमाणताविषे भेदकीअविषयतारूप हेतुकह्या॥सो संभवतानहीं॥समाधान॥हेदेवतावो॥ताब्रह्मज्ञानके प्रमाणताविषे तथा अप्रमाणताविषे जोहमनैं दोप्रकारकेहेतुकहेहैं॥तिदोनोंहेतु ताश्रुतिनैंही कथनकरे हैं॥तहां अविज्ञातंविजानतां ॥ याश्रुतिकेतीसरेपादकरिके ताब्रह्मज्ञानकेअ प्रमात्वकाहेतु वर्णनकरेहैं॥हेदेवतावो॥जेपुरुष मायाकरिकेमोहितहुए प्रमाता प्रमाण प्रमेय इत्यादिरूपकरिके ताअद्वितीयब्रह्मकूं नानाविध मानेहैं॥ ऐसेभेददर्शीपुरुषोंकूं सोअद्वितीयब्रह्म सर्वदा अज्ञातहीरहेहै ॥ काहेतैं सर्वदा अभिन्नस्वभाववालासोब्रह्म कदाचितभीभेदवालाहो वेनहीं ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मविषे भेदकूंविषयकरणेहारा जोतिनभेदवादियोंकाज्ञानहै ॥ सोज्ञान अप्रमारूपही है ॥ अब ॥ विज्ञातमविजा नतां ॥ याश्रुतिकेचतुर्थ पादकरिके ताब्रह्मज्ञानकेप्रमात्वकाहेतु निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ जेअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपअद्विती यनिर्गुणब्रह्मकूं ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिरूपकरिके नानाविधनहींजाने हैं ॥ तिनअभेददर्शीविद्वान्पुरुषोंकूं सोअद्वितीयब्रह्म सर्वदा विज्ञातही है ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषोंका सोब्रह्मज्ञानभी प्रमारूपही है ॥ १ ॥ हेदेवतावो ॥ जोअधिकारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेबोधक रिके क्षणक्षणविषे आपणेआत्मस्वरूपकाचिंतनकरेहै ॥ ऐसेमहात्मापुरुषकूं आपणेआत्माकास्वरूप ज्ञातही है ॥ काहेतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्र

कारकेअभेदज्ञानतैंहीं सर्वअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ ताअभेदज्ञानतैंविना किसीउपायकरिकेभी ताआत्मादेव कीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ कैसाहैसोआनंदस्वरूपआत्मा ॥ जन्ममरणादिकविकारों तैंरहितहै॥याकारणतैंहीं ताआत्मादेवकूं वेदवेत्तापुरुष अमृत यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ अब ताआत्मज्ञानकरिके अमृतभावकीप्राप्तिविषे युक्तिकावर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ जेअधिकारीपुरुष ब्रह्म चर्यादिकसाधनोंकरिकेसंपन्नहैं ॥ तथा कृपणतादिकदोषों तैंरहितहैं तेअधिकारीपुरुषही ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतें शुद्धमनकरिके ब्रह्मवि द्यारूपवीर्यकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ ताब्रह्मविद्यारूपवीर्यकरिकेही तेअधिकारीपुरुष ताआत्मानंदरूपअमृतकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तामोक्षरूपअमृतभा वकूंप्राप्तहोइके यहअधिकारीपुरुष पुनः मरणकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और हेदेवतावो ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी इसअधिकारीशरीरविषे आप णेहितकाविचारकरिके ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकूंकरेहै ॥ तभीयहअधिकारीपुरुष थोडेप्रयत्नकरिकेही आत्मानंदरूपमहतफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जिसआनंदरूपमहतफलकेप्राप्तहुए यहजीवात्मा आनंदकासमुद्ररूपहोवे है॥औरमायातथामायाकेकार्यसर्वदुःखरूपफेनबुद्बुदादिकोंतैंरहित होवे है ॥ और याआत्मानंदरूपफलतैंपरे कोईभोग्यपदार्थ याजीवोंकेप्रार्थना काविषयनहींहोवे है॥और याआत्मानंदरूपफलतैंपरे दूसराकोई लाभ यालोकविषेहैनहीं ॥ ऐसेआत्मास्वरूपआनंदकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषोंनें अवश्यकरिकेप्रयत्नकरणा॥हेदेवतावो॥याअधिका रीशरीरकूंपाइके यहपुरुष जभी परमेश्वरकीमायाकरिकेमोहितहुआ तथामूढपुरुषोंकरिकेसेवितविषयोंविषेआसक्तहुआ ताआनंदस्वरूप आत्माकूंनहींजानेहै ॥ तभी यहकामक्रोधादिकजुवारी यापुरुषकी महान्हानिकरेहै ॥ जिसहानिकरिके यहपुरुष वारंवार जन्ममरणादिक दुःखोंकूंप्राप्तहोवेहै॥कैसेहैंतेकामक्रोधादिकजुवारी॥बहुतधूर्त्त हैं॥तथा विषयरूपभूमिविषेइंद्रियरूप पाशकोंकेचलावणेविषेअत्यंतकुशलहैं॥ तथा नानाप्रकारकेरूपग्रहणकरणेविषेसमर्थ हैं ॥ तथा अनेकजन्मोंविषे यापुरुषकापराजयकरिआये हैं॥हेदेवतावो॥ऐसेकामक्रोधादिकजु वारियोंकरिके पराजयकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष निंदाकापात्रहोणेतैं जीवताहुआही मृतककेसमानहोवेहै ॥ तथा नानाप्रकारकेशरीरोंकेग्रह णकरिके वारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ तथा आशारूपीअनेकपाशोंकरिकेबांध्याहुआ तथा क्रोधलोभादिकोंकेवशहुआ

सोअज्ञानीपुरुष कालकर्मकेवशतें अनेकप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंविषे प्राप्तहोवैहै ॥ तिनअनेकशरीरोंविषे नानाप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवक रताहुआ यहअज्ञानीजीव नष्टहुएजेसाहोवे है ॥ यातें धैर्यवानपुरुषनें तिनजन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्तिवासते याअधिकारीशरीरविषे ताआनंदस्वरूपआत्माकूंअवश्यकरिकेजानणा ॥ हेदेवतावो ॥ सोमोक्षरूपफलसहितआत्मज्ञान याअधिकारीशरीरविषेदुर्लभहै ॥ याप्र कारकोशंकाकरिके तुमोनें प्रयत्नतेंशिथिलहोणानहीं॥काहेतें सोफलसहितआत्मज्ञान याअधिकारीशरीरविषेहीप्राप्तहोवेहै॥यहवार्त्ता सर्व विद्वानपुरुषोंकेअनुभवकरिकेसिद्धहै॥काहे तें पूर्वजेअधिकारीपुरुषयाअधिकारीशरीरविषेस्थितहोइके ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकूंकरतेभये हैं॥ तथापरमधैर्यकरिकेयुक्तहुएहैं॥तेअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतें आकाशकीन्याई सर्वत्रव्यापकस्वयंज्योति आनंदस्वरूप निर्गुण अद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानिके जीवतअवस्थाविषे अथवा मरणअवस्थाविषे अमृतभावकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ ताअमृतभा वकूंप्राप्तहोइके तेविद्वानपुरुष पुनः जन्ममरणादिकविकारों तें रहितहोतेभये हैं ॥ यातें आत्मज्ञानकरिके अमृतभावकोप्राप्तिरूपफल तिनसर्वविद्वानपुरुषोंकेअनुभवकरिकेसिद्धहै ॥ हेदेवतावो ॥ सर्वभूतप्राणियोंविषेस्थित जोपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव वास्तवतेंएक ही है ॥ परंतु देहादिकउपाधियोंकेभेदतें सोपरमात्मादेव नानारूपहोइकेप्रतीतहोवे है॥जेसे वास्तवतेंएकहुआभीचंद्रमा जलपात्रोंकेभेदक रिके बहुतरूपहोइकेप्रतीतहोवेहै ॥ तेसे सोएकपरमात्मादेवभी उपाधिकेभेदतें बहुतरूपहुआ प्रतीतहोवे है ॥ ऐसेसर्वत्रव्यापकपरमात्मादे वकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेजानेहैं॥तेअधिकारीपुरुष तिनपूर्वविद्वानपुरुषोंकीन्याई सर्वलोकोंकूं तथासर्वभोग्यपदार्थोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकेप्राप्तहोवे हैं ॥ याप्रकारकेफलविषे तुमोनें किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा॥हेदेवतावो॥जेसे मृष्टअन्नकेभोजनका मुख्यफलतौ क्षुधाकीनिवृत्तिही है ॥ और पुष्टि ताभोजनका नांतरीयकफलहै॥तेसे ताब्रह्मज्ञानका मुख्यफलतौ अमृतभावकोप्राप्तिही है ॥ और शत्रुवोंकाजयआदिक ताब्रह्मज्ञानका नांतरीयकफलहै ॥ इहांमुख्यफलकीप्राप्तिकरनेहारेप्रयत्नतेंही जिसफलकीसिद्धिहोवे है ताका नाम नांतरीयकफलहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तेअग्निवायुआदिकदेवता ताइंद्रकेमुखतें ब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिके ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोतेभये ॥

और ताब्रह्मविद्याकेप्रभावतें तेअग्निवायुआदिकदेवता सर्वलोकोंकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तथा सर्वकामोंकूंप्राप्तहोतेभये ॥तथा सर्वशत्रुवों तें जय कूंप्राप्तहोतेभये ॥ तथा सर्वदुःखों तेंरहितहोतेभये ॥ इसप्रकार ब्रह्मविद्याकेफलकूंप्राप्तहोइके स्वर्गभोगोंविषेस्थितहुएभी तेदेवता सर्वदा ब्रह्मकेचिंतनपरायणहोतेभये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतें ब्रह्मरूपताकूंप्राप्तहुएजे तेइंद्रादिकदेवताहैं ॥ तिनदेवता वोंकोसमीपतातें सर्वअसुर क्षयकूंप्राप्तहोतेभये ॥ जैसे अग्निकोसमीपतातें पतंग नाशकूंप्राप्तहोवै है तैसे तिनब्रह्मवेत्तादेवतावोंकीसमीपता तें तेअसुर क्षयकूंप्राप्तहोतेभये ॥ हेशिष्य ॥ जैसे अग्निकरिकेतप्तहुआ लोहकापिंड शुष्कआर्द्रतृणोंकूं दाहकरेहै ॥ तैसे ब्रह्मरूपअग्निकरि केप्रकाशमानहुए तेदेवता तिनअसुरोंकूंदग्धकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥ जैसे सोलोहकापिंड जोतृणोंकूंदाहकरेहै ॥ सोअग्निकेसामर्थ्यतेंहींदा हकरेहै ॥ स्वभावतें तालोहकेपिंडविषे दाहकरणेकासामर्थ्य हैनहीं ॥ तैसे तेइंद्रादिकदेवता जो तिनअसुरोंकूंदाहकरतेभये ॥ सोब्रह्मरू पअग्निकेसामर्थ्यतेंहीं ॥ दाहकरतेभये ॥ स्वभावतें तिनदेवतावोंविषे असुरोंकेदाहकरणेकासामर्थ्य थानहीं ॥ हेशिष्य ॥ तैसे सामुद्रिक शास्त्रविषेकथनकरेजे श्रेष्ठलक्षणहैं ॥ तिनश्रेष्ठलक्षणोंकेबलतेंहीं याजीवोंकूं धनादिकपदार्थोंकोप्राप्तिहोवै है तिनधनादिकपदार्थोंकोप्राप्ति विषे आपणेप्रयत्नसाध्यताकाअभिमानकरणा व्यर्थही है ॥ तैसे ताब्रह्मकेबलतेंहीं तिनदेवतावोंकाविजयहोताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् सोब्रह्मही आपणेबलतें देवतावोंकेजयकाकारणहोवैगा ॥ तथा असुरोंकेपराजयकाकारणहोवैगा ॥ तो ताब्रह्मविषे अस्मदादि कजीवोंकीन्याई विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जैसे सर्वप्रकाशमानहुआभी यहसूर्यभगवान् अत्यन्तनिर्मलसूर्य कांतमणिविषे विशेषकरिकेप्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे सर्वत्रव्यापकहुआभी सोब्रह्म सत्गुणप्रधानदेवतावोंविषे विशेषकरिकेसंबंधकूं प्राप्तहोवै है॥याकारणतें तेदेवताविशेषतेजवालेहोतेभयेहैं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे पुत्तलियोंकूंनृत्यकरावणेहारा सूत्रधारपुरुष सूत्रोंकरिके काष्ठकोपुत्तलियोंकूंचलायमानकरताहुआ तिनपुत्तलियोंविषे किसीपुत्तलियोंकूंतो जयकीप्राप्तिकरेहै॥और किसीपुत्तलियोंकूंप राजयकीप्राप्तिकरे है ॥ तैसे याजगत्रूपीलीलाकरणेविषेप्रवृत्तहुआजो परमात्मादेवरूपसूत्रधारहै ॥तिसपरमात्मादेवनें यादेवताअसुररूप

पुत्तलियोंविषे किसीनकिसीपुत्तलियोंकाजयतो अवश्यकरिकेंकरणाहै ॥यातें अशोकवनिकान्यायकरिके सोपरमात्मादेव तिनदेवतावोंका हीजयकरताभया ॥ यातें ताईश्वरविषे पक्षपातदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ अशोकवनिकान्यायका यहअर्थ है ॥ जैसे रावणनैंसीताकूं किसीस्थानविषेअवश्यराखणाथा ॥ देवयोगतें सोरावण तासीताकूं अशोकवनविषेहीराखताभया ॥ और हेशिष्य॥जैसे क्रीडाकरताहुआ बालक ताक्रीडाकेसाधनरूपपदार्थोंविषे कितनेंकपदार्थोंविषेतो इनपदार्थोंकीउत्कृष्टताकेहुए हमारीहीउत्कृष्टताहोवे है याप्रकारकाअ भिमानकरे है॥ और कितनेंकपदार्थोंविषे सोबालक ताअभिमानकूंनहींकरेहै ॥ तैसे सोपरमात्मादेवभी तिनदेवतावोंविषेही सोअभिमान करताभया ॥ यातें ताबालककीन्याई ताईश्वरविषे विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेब्रह्मकीविभूतिरूपमहिमाकरिके तेइंद्रा दिकदेवता युद्धविषे तिनबलवानअसुरोंकूंजीततेभये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तेब्रह्मवेत्तादेवताभी किसीकालपाइके परमेश्वरकीमायाकरि केमोहितहोतेभये ॥ तथा विषयभोगोंविषेआसक्तहोतेभये ॥ ताकरिके तेइंद्रादिकदेवता ताब्रह्मकेप्रभावतेंहीं हमारा असुरोंतेंजयहुआहै ॥ याप्रकारके ताब्रह्मकेउपकारकाविस्मरणकरतेभये ॥ किंतु उलटा तेइंद्रअग्निवायुआदिकदेवता हमारा आपणेबलकेप्रभावतेंजयहुआहै याप्रकारकानिश्चयकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे महान्दुःखकूंप्राप्तहुए कोईमनुष्य देवतामुनियोंकेअनुग्रहतें तादुःखतेंनिवृत्तहो इकेभी पुनः धनादिकोंकेमदकरिकेदूषितहुए तेमनुष्य तिनदेवतामुनिआदिकोंका विस्मरणकरिदेवे हैं ॥ तैसे यहदेवताभी ताब्रह्मकेअनु ग्रहतेंपूर्व अनेकवार दैत्योंकरिकेपराजयकूंप्राप्तहुएथे ॥ तिसतैंअनंतर ताब्रह्मकेअनुग्रहकरिके तेदेवता तिनअसुरोंकूंजीततेभये ॥ तिसतैंअ नंतर रजोगुणकरिकेयुक्तहुए तेदेवताताआपणेजयकेकारणरूपब्रह्मकूं विस्मरणकरतेभये॥किंतुआपणेबलकेप्रभावतेंहीं तिनअसुरोंतेंजयकूं मानतेभये ॥हेशिष्य॥जैसे यालोकविषे छलयुक्तजुवाविषेतत्पर जेकोईवंचकपुरुषहैं ॥ तेवंचकपुरुष आपणेऊपरउपकारकरणेहारेपुरुषका भी विस्मरणकरिदेवेहैं॥तैसेताापरब्रह्मकेअनुग्रहते कृतार्थभावकूंप्राप्तहुए यहइंद्रादिकदेवताभीताउपकारकरणेहारेपरमेश्वरका विस्मरणकर तेभये॥याकारणतें तेदेवता कृतघ्नपुरुषकेसमानताकूंप्राप्तहोतेभये॥हेशिष्य॥तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूंरजोगुणकेप्रभावतें महान्अभिमानहो

ताभया॥जिसअभिमानकरिके यहजीव सर्वदा विनाशकूंप्राप्तहोवे है॥अब तिनदेवतावोंकेअभिमानकानिरूपणकरे हैं॥हमदेवताहीमनकानि
ग्रहरूपशमवालेहैं ॥ तथा हमदेवताही इंद्रियोंकानिग्रहरूपदमवाले हैं ॥ तथा हमदेवताही महान्कुलतेंउत्पन्नहुएहैं ॥ तथा हमदेवताही
सुंदररूपयोवनकरिकेयुक्तहैं ॥ तथा हमदेवताही विद्याविनयकरिकेयुक्तहैं॥तथा हमदेवताही महान्कीर्तिवालेहैं ॥ तथा हमदेवताही महा
न्भाग्यवालेहैं॥तथा हमदेवताही नानाप्रकारकेभोग्यपदार्थोंवाले हैं ॥ तथा हमदेवताही आपणीशक्तिकरिके तीनलोकोंकापालकरेहैं॥ऐसे
हमदेवतावोंकेबलकेआगे इनअसुरोंकेबलकी क्यागिणतीहै ॥ किंतु हमारेबलकेआगे इनअसुरोंकाबल अत्यंततुच्छहै ॥ कैसेहैंतेअसुर ॥
अंजनकेपर्वतसमान कालेवर्णवालेहैं ॥ तथा काल अंतक यम यातीनोंकेसमान हैं ॥ इहांदिनमासादिकसमयकाअभिमानी जोदेवताहै
ताकानाम कालहै ॥ ओर जगत्केसंहारकरणेहारेमृत्युकानाम अंतकहै ॥ ओर धर्मराजाकानाम यमहै ॥ पुनःकैसेहैंतेअसुर ॥ अत्यंतमा
यावीहैं तथा युद्धविषे अत्यंतकुशलहैं ॥ तथा अत्यंत पराक्रमवाले हैं ॥ तथा अधिकबलवीर्यवालेहैं ॥ तथा यात्रिलोकीकेग्रसनकरणेविषे
समर्थ हैं ऐसेसर्वअसुरोंविषे एकअसुरकेसाथभी हमदेवतावोंतेंबिनादूसराकोईपुरुष युद्धकरणेविषे समर्थनहीं है ॥ ऐसेअसुरोंकूं हमदेवता
आपणेबलकेप्रभावतें जीततेभये हैं ॥ यातें हमारेसमान दूसराकोनहै ॥ इतनैंकरिके सर्वदेवतावोंकासाधारणअभिमान निरूपणकऱ्या ॥
अब देवराजइंद्रका विशेषकरिकेअभिमान निरूपणकरे हैं वज्रहैहस्तविषेजिसके ऐसाजो मैं इंद्रहूं ॥ सो मैं इंद्र आपणेबलतें यावज्र
करिके महान्ऊंचेपर्वतोंकूंभी चूर्णकरिदेवोंहूं ॥ कैसाहैयहहमारावज्र ॥ एकशतग्रंथिहैं जिसविषे ॥ तथा एकशततीक्ष्णधाराहैं जिस
विषे ॥ तथा जोवज्र चलायाहुआ कदाचित्भी निष्फलहोतानहीं ॥ ऐसेवज्रवालामैं इंद्र सर्वतें अधिकबलवान्हूं ॥ अब वायुदेवताके
अभिमानकानिरूपणकरेहैं ॥ मैंवायुदेवता यासर्वजगत्कूं आपणीकुक्षिविषेपाइके तृणतूलकीन्याई याब्रह्मांडगोलकतें बाह्यदेशविषे लेजा
णेमैंसमर्थहूं ॥ यातें मैंवायुदेवताकेसमान दूसराकोईबलवान्हैनहीं ॥ अब अग्निदेवताकेअभिमानकावर्णनकरे हैं ॥ शुष्कआर्द्ररूप जित
नाकीयहघनीभूतसर्वजगत्है॥ ता[illegible]र्वजगत्कूं मैं अग्निदेवता तूलकीन्याई शीघ्रहीभस्मकरिदेवों॥यातें हमारेसमान दूसराकोईबलवान्हैनहीं

॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार दूसरेवरुणादिकदेवताभी आपणेआपणेबलकूंप्रकटकरिके महान्गर्वकूंप्राप्तहोतेभये ॥ कैसाहै सोतिनोंकागर्व ॥ रजोगुणकरिके जिसगर्वकीउत्पत्तिहै ॥ तथा पापकेप्रतिकाकारणहै ॥ तथा पराक्रमकानाशकरणेहाराहै ॥ तथा कीर्तिकानाशकरणेहारा है ऐसेअनिष्टकीप्राप्तिकरणेहारे देवतावोंकेगर्वकूंदेखिके सोपरब्रह्म पिताकीन्याई तिनदेवतावोंकेहितकीइच्छा करताहुआ याप्रकारकाचिंतनकरताभया ॥ यहइंद्रादिकदेवता मेंपरब्रह्मकेअनुग्रहतेंही सर्वलक्षणोंकरिकेयुक्तहुएहैं ॥ तथा हमारे अनुग्रहतेंही इनदेवतावोंका जयहोताभयाहै॥और इसवर्त्तमानकालविषेभी यहदेवताहमारेअनुग्रहतेंही महान्पराक्रमवालेहैं॥ऐसेयहदेवता मेंपरब्रह्मकीमायाकरिकेमोहितहुए कृतघ्नपुरुषोंकीन्याई उपकारकरणेहारेमेंपरब्रह्मकूंही विस्मरणकरतेभये हैं ॥ यातें यहदेवताअत्यंतमूढबालकहैं ॥ अब ताकृतघ्नतादोषकोनिवृत्तिवासते प्रथम ताकृतघ्नतादोषका अनर्थरूपफल वर्णनकरे हैं ॥ यालोकविषे जोपुरुष जिसपुरुषकेअनुग्रहतें उत्कृष्टताकूंप्राप्तहोवे है॥ सोपुरुष जोकदाचित् मोहकेवशतें तावपकारकर्त्तापुरुषका विस्मरणकरे है ॥ सोकृतघ्नपुरुष शतअयुतजन्मपर्यंत महान्दुःखोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ किंवा ॥ जोमूढपुरुष आपणेउपकारकर्त्तापुरुषकूं मानतानहीं ॥ सोमूढपुरुष ताकृतघ्नतादोषतें कोटिकल्पपर्यंत विष्ठाविषेकृमिशरीरकूंप्राप्तहोवे है ॥ किंवा जोपुरुष किसीपुरुषकेकन्येहुएअल्पउपकारकूंभीनहींमानता ॥ सोपुरुष कृतघ्नकह्याजावे है ॥ सोकृतघ्नपुरुष यालोकविषे ब्रह्महत्याकरेतेंभी अधिकपापीहै ॥ काहेतें ताब्रह्महत्याकेनिवृत्तकरणेवासते मनुआदिकवेदवेत्तापुरुषोंनें प्रायश्चित्तकाविधानकन्याहै ॥ और याकृतघ्नतादोषकीनिवृत्तिवासते तिनमनुआदिकों नें कोईप्रायश्चित्तकाविधानकन्यानहीं ॥ यातें यहजान्याजावे है ॥ ताकृतघ्नतादोषकीनिवृत्तिकरणेहारा कोईप्रायश्चित्तहैनहीं ॥ और ब्रह्महत्याकोनिवृत्तिकरणेवासतेतो मनुआदिकोंनें प्रायश्चित्तकाविधानकन्याहै॥ यातें यहकृतघ्नतादोष ताब्रह्महत्यातेंभी अधिकदुःखकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ किंवा ॥ यादेवताओंविषे केवल एककृतघ्नतादोषनहीं है ॥ किंतु आपणी स्तुतिकरिके तथादूसरेप्राणियोंकीनिंदाकरिके इनदेवताओंविषे आत्मघातीपणा तथाविश्वघातीपणा यहदोनोंदोषभी वियमानहैं ॥ काहेतें यालोकविषे जोभेददर्शीपुरुष गर्वकरिकेयुक्तहुआ आपणेकर्मको मनकरिकेभीस्तुतिकरेहै ॥ तथा दूसरेपुरु

र्मोकेकर्मकीनिंदाकरे है॥ सोअविवेकीपुरुष ताभेददृष्टिकरिके आपणेकूं तथापरकूं हननकरे है ॥ काहेतें शास्त्रवेत्तापुरुषों नें भेददृष्टिपूर्वक आपणीस्तुतिकरणेविषे आत्महत्याकीप्राप्तिकथनकरी है ॥ तथा परकीनिंदाविषे परहत्याकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ किंवा ॥ जोपुरुष आपणीस्तुतिकरिके आत्माकाहननकरे है ॥ सोपुरुष यालोकविषे अत्यंतपापात्माजानणा ॥ ओर जैसे कृतघ्नतादोषकेनिवृत्तकरणेवासते शास्त्रविषे कोईप्रायश्चित नहींकथनकऱ्या ॥ तैसे ताआत्महत्याकेनिवृत्तकरणेवासतेभी शास्त्रविषे कोईप्रायश्चित कथनकऱ्यानहीं ॥ यातें साआत्महत्याभी ताकृतघ्नताकेसमानही है ॥ किंवा यहदेवता सर्वदा आपणीतोस्तुतिकरते हैं ॥ तथा आपणेतेंभिन्नसर्वलोकोंकी निंदाकरते हैं ॥ यातें इनदेवतावोंकूं दिनदिनविषे आत्महत्याकीप्राप्तिहोवे है ॥ तथा सर्वविश्वकेहत्याकीप्राप्तिहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ऐसेआत्महत्यादिकअनर्थरूपकर्मोविषे यहजीव किसवासते प्रवृत्तहोवे है ॥ समाधान ॥ मैंपरमात्मादेवकीमायाकरिकेमोहितहुए तथाकालपाशकेवशकूंप्राप्तहुए यहअज्ञानीजीव आपणेअल्पकार्यकीसिद्धिवासतेंभी ताआत्महत्याकूं तथाकृतघ्नताकूं तथाविश्वहत्याकूं करे हैं ॥ याकेविषे कोईआश्चर्यरूपतानहीं है ॥ किंवा ॥ कृतघ्नतादिकपापकर्मोविषे प्रीतिवाले जेयहदेवतायें ॥तेदेवता यद्यपि असुरोंकीन्याईं दंडकरणेयोग्यहैं ॥ तथापि इनदेवतावोंकूं असुरोंकीन्याईं दंडदेणा हमारेकूंउचितनहीं है ॥ काहेतें यालोकविषे जिसपुरुषनें आपणेहस्तोंकरिके विषकावृक्षभीलगायाहै ॥ तथा अत्यंतप्रयत्नतें ताविषकेवृक्षकापालनकऱ्याहै ॥ तिसपुरुषकूं आपणेहस्तोंकरिके सोविषकावृक्षभी छेदनकरणेयोग्यनहीं है ॥ जभीपालनकऱ्याहुआ विषकावृक्षभी छेदनकरणेयोग्यनहींभया ॥ तभी यहश्रेष्ठदेवता किसप्रकार दंडदेणेयोग्यहोवेंगे ॥ किंतु यहदेवता दंडदेणेयोग्यनहीं हैं ॥ किंवा ॥ पापकर्मकेआचरणकरणेहारेपुरुषोंकेप्रति दंडकरणेवासते यहपुरुष आप पाप आचरणवालानहींहोवे ॥ किंतु जिसउपायकरिके आपणेकूंपापकीप्राप्तिनहींहोवे ॥ ऐसेउपायकरिकें यहपुरुष तिनपापात्मापुरुषोंकूंशिक्षाकरे ॥ काहेतें जोपुरुष पापकर्मोंकेकरणेकीइच्छाकरे है ॥ सोपुरुषतो आपही तापापकर्मकरिकेहननहुआहै ॥ ऐसेपापात्मापुरुषकूं जोकोईसाधुस्वभाववालापुरुष किसीक्रूरकर्मकरिकेशिक्षाकरे है ॥ तिससाधुपुरुषकूं दोप्रकारकेदोषकीप्राप्तिहोवे है ॥ तहां

एकतो आपणेसाधुस्वभावकापरित्यागहोवे है ॥ और दूसरा पिष्टपेषणकीन्याई मरेहुएकापुनःमारणारूपदोष प्राप्तहोवे है ॥ किंवा ॥ यह सर्वदेवता मेंपरमात्मादेवकेपुत्रहैं ॥ तिनदेवतावोंकूं मैंने भलीप्रकारसेंपालनकऱ्याहे ॥तथा इनदेवतावोंकूं मैंने असुरों तें जयकीप्राप्तिकरी है ॥ऐसेदेवतावोंकाहननकरणा बिलाडीकेकर्मकीन्याई पापरूपही है ॥ यातें आत्महत्या कृतघ्नता विश्वहत्या यातीनदोषोंकीप्राप्तिकरणे हारा जोइनदेवतावोंकागर्व है ॥ तासर्वदोषकूं मैंपरमात्मादेव किसीअन्यउपायकरिकेनिवृत्तकरों ॥ जिसगर्वकोनिवृत्तिकरिके इनदेवतावों काकल्याणहोवे ॥ याप्रकारकाविचार सोपरमात्मादेव करताभया ॥ हेशिष्य ॥ जैसे अर्जुनकेप्रति कृष्णभगवान्नें उपदेशकऱ्याजोगीता शास्त्र ॥ तागीताशास्त्रकूं सोअर्ज्जुन किसीकालपाइके भोगोंकोआसक्तिकरिके विस्मरणकरताभया ॥ ताअर्ज्जुनकेविस्मृतिकूं सोकृष्णभगवान् पुनःअनुगीताकेउपदेशकरिके निवृत्तकरताभया ॥ तैसे सोपरमात्मादेवभी तिनदेवतावोंकूं पुनःआपणेस्वरूपकोस्मृतिकरावणेवासते तथातिनोंकेअभिमानकोनिवृत्तिकरणेवासते सोपूर्वउक्तविचारकरिके एकअद्भुतयक्षकास्वरूपधारणकरिके तिनदेवतावोंकेनेत्रोंकाविषयहोताभया ॥कैसाहैसोयक्ष ॥ असंख्यातहैंमस्तकजिसके ॥ तथा असंख्यातहैंनेत्रआदिकइंद्रियजिसके ॥ तथा सर्वजातिवालेजीवोंकेजेसुखहैं तिनसर्वसुखोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा जिसयक्षविषे सर्वभूतभौतिकपदार्थ विद्यमानहैं ॥ तथा सर्वआयुधोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा सर्वमालावोंकूंधारणकरणेहाराहै तथा सर्ववस्त्रादिकोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा स्त्री पुरुष नपुंसक यातीनोंचिह्नोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ ऐसे अद्भुतरूपवालेयक्षकूंदेखिके तेसर्वस्वर्गवासीदेवता आश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये॥तथा यहकौनहै२याप्रकारकेवचन परस्परकहतेभये॥हेशिष्य॥ जेबुद्धिमान्देवता अन्यपुरुषोंके आकारकूंदेखिके तथाअवयवोंकीक्रियाकूंदेखिके तथागतिकूंदेखिके तथाचेष्टाकूंदेखिके तथाशब्दकूंश्रवणकरिके तथामुखनेत्रोंके अन्यथाभावकूंदेखिके तिनपुरुषोंकेमनकेवृत्तांतकूंजाने हैं॥ऐसेबुद्धिमानदेवताभी तायक्षकेस्वरूपकूंदेखिकेनिश्चयकूं नहींप्राप्तहोवेभये ॥ हेशिष्य॥ऐसेअद्भुतयक्षकूंदेखिके विस्मयकूंप्राप्तहुआहै मनजिनोंका तथाउत्फुल्लहुएहैंनेत्रकमलजिन्हों के तथारोमांचसहितहुएहैं जिन्होंके ऐसेतेदेवता यहकौनहै यहकौनहै याप्रकारकावचनहीवारंवारकहतेभये ॥ हेशिष्य ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज

याचारिप्रकारकेशरीरोंकेलक्षणकरिकेयुक्त जोयक्षहै ॥ जिसयक्षकेस्वरूपकूं पूर्वकिसीनेंभी अनुभवकर्‍यानहीं ॥ ऐसेअपूर्वयक्षकेदर्शनतेंति
नदेवतावोंकीमनविषे महान्‌क्षोभहोताभया॥हेशिष्य ऐसेयक्षकेस्वरूपकूंदेखिके भयकरिकेयुक्तहुआहै हृदयजिन्होंका तथाविस्मरणहुआहै
आपणाप्रभावजिन्होंकूं ऐसेतेदेवता तायक्षकेसमीपजाणेविषे समर्थनहींहोतेभये ॥ तिसतेंअनंतर तेइंद्रादिकसर्वदेवता अग्निदेवताकूंआज्ञाक
रतेभये ॥ हेअग्निदेवता तूं यायक्षकेसमीपजाइके यहनिश्चयकर॥जोयहयक्ष कौनहै ॥ हमदेवतावोंकेअनुकूलहै ॥ अथवा हमदेवतावोंकेप्रति
कूलहै ॥ कैसाहैसोअग्निदेवता ॥ तथा सर्वदेवतावोंतेंकनिष्ठहै ॥ सर्वदेवतावों तेंप्रथमपूज्यहै ॥ तथा सर्वतेजोंकासमुदायरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥
अग्निरवमोदेवानांविष्णुःपरमोदेवता ॥ अर्थयह ॥ अग्निदेवता सर्वदेवतावोंतेंकनिष्ठहै ॥ और विष्णुदेवता सर्वदेवतावों तेंश्रेष्ठहै ॥ १ ॥
ऐसाअग्निदेवता तिनसर्वदेवतावोंकेआज्ञाकूंमानिके निःशंकहोइके तायक्षकेसमीपजाताभया ॥ ताअग्निदेवतासें सोयक्ष तूंकौनहै याप्रकार
पूछताभया ॥ तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिके सोअग्निदेवता निःशंकहोइके मैंजातवेदानामकरिकेप्रसिद्ध अग्निदेवताहूं याप्रकारकावचन
तायक्षकेप्रति ॥ कहताभया ॥ इहां ॥ जातवेदोधनंयस्मात्सजातवेदा ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकेतो सोजातवेदाशब्द धनकेदाताकावा
चकहै ॥ और जातेजातेविद्यते सजातवेदा ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिके सोजातवेदाशब्द व्यापककावाचकहै ॥ इसप्रकारकावचन जभी
ताजातवेदानामाअग्निनें तायक्षकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयक्ष ताअग्निकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेजातवेदानामअग्नि तुम्हारे
विषेकितनाबलहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन तभी तायक्षनें अग्निदेवताकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोअग्निदेवता तायक्षकेप्रति
याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेयक्ष ॥ यहजितनाकीमूर्तिमानविश्वहै ॥ तासर्वविश्वकूं मैंअग्निदेवता एकक्षणविषेदाहकरिदेवों ॥ इतना
सामर्थ्य हमारेविषेहै ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताअग्निदेवतानें तायक्षकेप्रतिकह्या॥ तभी सोयक्ष मंदमंदहँसताहुआ ताअग्निदेवताकेआगे
एकशुष्कतृणकूंरासिके ताअग्निकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥हेअग्निदेवता तुम्हारेविषे जोइतनासामर्थ्य है ॥तो याशुष्कतृणकूं तूं
भस्मकर ॥ याप्रकारके तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिके सोअग्निदेवता आपणेसर्ववेगकरिके तथासर्वप्रयत्नकरिकेतातृणकेदग्धकरणेकाउद्यम

करताभया॥परंतु सोअग्निदेवता तातृणकूंदग्धनहींकरिसकताभया॥हेशिष्य॥ इसप्रकार जभी ताअग्निदेवतासैं तातृणकादाहनहींभया ॥ तभी सो अग्निदेवता तागर्व तैं रहितहोताभया॥तथा लज्जावान्होताभया॥और देवताओंकीसभाविषेआइके सोअग्निदेवता तिनसर्व देवताओंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥हेदेवताओ॥जिसयक्षनैं हमारेसर्वबलकूंनाशकऱ्याहै॥तिसयक्षकूं मैंअग्नि जानिसकतानहीं॥जोयह यक्ष हमदेवताओंकेअनुकूलहै ॥ अथवा हमदेवताओंकेप्रतिकूलहै ॥ यातैं तायक्षकेस्वरूपनिर्णयकरणेवासते तुमदेवते किसीदूसरेदेवताकूं भेजो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार ताअग्निदेवताकेवचनकूंश्रवणकरिके तेइंद्रादिकदेवता वायुदेवताकूं तायक्षकेसमीपभेजतेभये॥तिनसर्व देवताओंकीआज्ञाकोमानिके सोवायुदेवता तायक्षकेसमीपजाताभया॥ तावायुदेवताकूंआयाहुआदेखिके सोयक्ष तावायुदेवताकेप्रति तू कौनहै याप्रकार पूछताभया ॥ तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिके सोवायुदेवता तायक्षकेप्रति मातरिश्वनामकरिकेप्रसिद्ध मैं वायुदेवताहूं याप्रकारका वचन कहताभया ॥ तावायुदेवताकेवचनकूंश्रवणकरिके सोयक्ष तावायुदेवताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेवायुदेवता॥तुमारे विषे कितनाबलहै ॥ इसप्रकार तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिके सोवायुदेवता निःशंकहोइके तायक्षकेप्रति आपणाबल कहताभया॥ हेयक्ष ॥ जैसे बालक आपणेमुखकरिके सूक्ष्मतृणकूंलेजावे है ॥ तैसे मैंवायुदेवता यासर्वविश्वकूं आपणीकुक्षिविषेपाइके याब्रह्मांडगोलकतैंबाह्यदेश विषे लेजाणेमैंसमर्थ हूं॥इतनासामर्थ्य हमारेविषेहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी तावायुनें यक्षकेप्रति कह्या॥तभी सोयक्ष पूर्वअग्निकीन्याईं तावायुकेआगेभी एकशुष्कतृणराशिके तावायुकेप्रतियाप्रकारकावचन कहताभया॥ हेवायुदेवता ॥ जो तुमारेविषेइतनाबलहै ॥ तो याशुष्कतृणकूं तूं लेजाव ॥ इसप्रकार तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिके सोवायुदेवता आपणेसर्ववेगकरिके तातृणकेउडावणेका उद्यमकरताभया ॥ परंतुसोवायु तातृणकूं किंचित्मात्रभीचलायमाननहींकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर अग्निदेवताकीन्याईं गर्वतैंरहित होइके तिनदेवतावोंकीसभाविषे जाताभया ॥ और सोवायुदेवता तिनसर्व देवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो ॥ यहयक्ष हमदेवतावोंकेअनुकूलहै अथवा हमदेवतावोंकेप्रतिकूलहै याप्रकारकेनिश्चयकरणेविषे मैं समर्थनहींहूं ॥ यातैं तुम दूसरेकि

सोदेवताकूंभेजिके यावात्तांकानिश्चयकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी तावायुदेवतानें सर्वदेवतावोंकेप्रतिकह्या ॥ तभी तेसर्वस्व
भावासीदेवता देवराजइंद्रकेप्रतिकहतेभये ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहयक्ष हमदेवतावोंकेअनुकूलहै अथवा प्रतिकूलहै यावात्तांकूं आप वाइकेनि
श्चयकरो ॥ हेशिष्य ॥इसप्रकार सर्वदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिके सोदेवराजइंद्र जैसेपूर्व अग्नि वायु तायक्षकेसमीपगयेथे ॥ तैसे तायक्षके
समीपजाताभया ॥ ताइंद्रकूं समीपआयाहुआदेखिके सोयक्ष ताइंद्रकेविशेषअभिमानकीनिवृत्तिकरणेवासते तहां अंतर्धानहोताभया ॥
तायक्षकूंअंतर्धानहुआदेखिके सो देवराजइंद्र चारोदिशाविषे तायक्षकूंदेखताहुआ तिसीस्थानविषे स्थितहोताभया ॥ और तायक्षकेदेख
णेकीउत्कटइच्छाकरिके निवृत्तहुएहैंगर्वादिकदोषजिसके ऐसासोदेवराजइंद्र तायक्षकेअंतर्धान देशविषे किसीअपूर्वस्त्रीकूंदेखताभया ॥
कैसीहैसास्त्री ॥ हिमाचलपर्वतकीपुत्रीहै ॥ तथा सर्वकल्याणगुणोंकरिके तथा श्रेष्ठ लक्षणोंकरिके शोभायमानहै ॥ तथा आपणीकांतिक
रिकेशोभायमानहै ॥ तथा उपमातेंरहितशरीरकूंधारणकरणेहारीहै ॥ तथा देवराजइंद्रऊपर माताकीन्याई तथाभगिनीकीन्याई कृपा
रूपीस्नेहकरणेहारीहै ॥ तथा जिसउमाभवानीदेवीकूं शास्त्रवेतापुरुष ब्रह्मविद्या यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ पुनःकैसीहैसाउमादेवी॥जिस
उमादेवीकेअनुग्रहतें तीनलोकविषेस्थितपुरुष अद्भुतसौंदर्यताकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तथा मनवांछितसंपदावोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और जिसउमा
देवीकेअनुग्रहतें ब्रह्मचारीपुरुष अखंडितब्रह्मचर्यकूंप्राप्तहोवे है ॥ तथा चारिवेदोंकूंप्राप्तहोवे है॥और जिसउमादेवीकेअनुग्रहतें गृहस्थपुरुष
दोनोंलोकविषेसुखकीप्राप्ति करणेहारेगृहस्थपणेकूंप्राप्तहोवे हैं ॥और जिसउमादेवीकेअनुग्रहतें वनविषेरहणेहारेवानप्रस्थ तपकूंप्राप्तहोवेहैं ॥
और जिसउमादेवीकेअनुग्रहतें संन्यासी स्वधर्मकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ जिसस्वधर्मकरिके तेसंन्यासी ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और जाब्रह्मविद्या
रूपउमादेवी माताकीन्याई कृपाकरिके परमहंससंन्यासियोंकूं आपणेब्रह्मविद्यास्वरूपकीप्राप्तिकरेहै ॥ जिसब्रह्मविद्याकेदर्शनतें
तिनपरमहंससंन्यासियोंके अविद्यारूपबंधनगृह नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ तथा कामक्रोधादिरूपशृंखला नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जाउमा
देवी श्रीमहादेवकेमुखकीसौंदर्यताकूंदेखिके आपणीसौंदर्यताकरिके सर्वजीवोंकेमनकूंमोहितकरतीहुई स्थितहोवे है ॥ और जिसउमा

देवीकेशरीरकीप्रभा कोटिसूर्य के समानहै ॥ तथा जिसउमादेवीकीशीतलता कोटिचंद्रमाकेसमानहै ॥ और याउमादेवी आपणेशरीरकी लावण्यताकरिकै कोटिकामदेवताकेसमानहै ॥ और याउमादेवी नानाप्रकारकीऐश्वर्यताकरिकै कोटिलक्ष्मीकेसमानहै ॥ और किसीप्रसिद्ध देशविषे अथवा किसीअप्रसिद्धदेशविषे स्थितहुए यहदेहधारीजीव जिसजिससामर्थ्यकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ सो याउमादेवीकेअनुग्रहतैंही तिसतिससामर्थ्यकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और याउमादेवी भक्तजनोंकेदुःखकोनिवृत्तिकरणेवासते शांतस्वरूपहुईभी इतरअभक्तजनोंकेप्रति आपणेतेजकीअतिशयताकरिकै दुर्विज्ञेयताकूंप्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैंही ताइंद्रकेगर्वकीनिवृत्तिकरणेवासते साउमादेवी आपणेदर्शनतैं ताइंद्रकेसहस्रनेत्रोंविषेस्थिततेजकूं हरणकरतीभई ॥ और याउमादेवी देवराजइंद्रनैं यात्रिलोकीविषे पूर्वकभीदेखीनहीं ॥ तथा याउमादेवी दिव्यगंधकूं तथादिव्यमालावोंकूं तथादिव्यवस्त्रोंकूं धारणकरणेहारीहै॥ तथा याउमादेवी आपणेदर्शनतैं सर्वप्राणियोंकेनेत्रोंकूं तथामनकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ तथा सर्वभूषणोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा मंदमंदहास्यपूर्वक वचनोंकूंउच्चारणकरणेहारी है॥और याउमादेवी ब्रह्मविद्यारूपकरिकै सर्वदा उपनिषदोंविषेरहै है ॥ तथा ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्न परमहंससंन्यासियोंकेमनविषेरहै है ॥ और कामदेवकूंनष्टकरणेहारा तथायक्षरूपकूंधारणकरणेहारा जोपरब्रह्मरूप त्रिलोचनमहादेवहै ॥ तामहादेवरूपभर्ताकेवामभागविषे याउमादेवी सर्वदास्थितहै ॥ ऐसीउमादेवीकूं तहांस्थितहुआदेखिकै सोदेवराजइंद्र ताउमादेवीसैं याप्रकारपूछताभया॥ हेदेवीमाता यास्थानविषे जोयक्ष पूर्वप्रादुर्भावहोइकै अंतर्धानहोताभया ॥ सोयक्ष कौनथा ॥ तायक्षकेस्वरूपकूं जोतूं जानतीहोवै ॥ तौकृपाकरिकै हमारेप्रतिकथनकर ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी ताइंद्रनैं ताउमादेवीकेप्रतिकह्या ॥ तभी साउमादेवी ताइंद्रकेप्रति ताब्रह्मरूपमहादेवकेवास्तवस्वरूपका कथनकरतीभई ॥ तथा जिसप्रयोजनवासते सोपरब्रह्मरूपमहादेवयक्षकास्वरूपधारणकरिकै तहांआयाथा॥सोसंपूर्णप्रयोजन तिनदेवतावोंकेप्रति कथनकरतीभई ॥ हेशिष्य ॥ ताउमादेवीकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोदेवराजइंद्र तागर्वतैंरहितहोताभया ॥ तथा पूर्व विस्मरणकरेहुए तामहादेवकेब्रह्मभावरूपवास्तवस्वरूपकूं पुनःस्मरणकरताभया ॥ तथा सोइंद्र तापरब्रह्मकूंही आपणेजयकाकारणमानताभया ॥ हेशिष्य

इसप्रकार सा जन्ममरणरूपसंसारकेनाशकरणेहारो भवानीदेवी ताइंद्रकेप्रति सर्वब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिके तिसीआकाशविषेअंतर्धान होतीभई ॥ तिसतैंअनंतर सोदेवराजइंद्र ताआकाशविषेअंतर्धानहुए महादेवभवानीकूं नमस्कारकरिके देवतावोंकीसभाविषेआवता भया ॥ तासभाविषेआइके सोदेवराजइंद्र तिनसर्वदेवतावोंके प्रति सोयक्षउमादेवीकावृत्तांत कथनकरताभया ॥ तावृत्तांतकूंश्रवणकरिके तेअग्निवायुआदिकसर्वदेवता तिनगर्वादिकदोषों तें रहितहोतेभये ॥ हेशिष्य ॥ तेइंद्रादिकदेवता सात्विकीहैं ॥ यातें तेदेवता स्वभावतें तिनगर्वक्रोधादिकदोषों तें रहितहैं ॥ तथा प्रमादतेंरहितहैं ॥ तथा परीक्षाकरिकेसर्वकार्योंकूंकरणेहारे हैं ॥ तथा आपणेहितअहितकूंजानणे हारे हैं ॥ ऐसेदेवताभी किसीकाळपाइके परमेश्वरकीमायाकरिके तथारजोगुणकरिके मोहकूंप्राप्तहोतेभये ॥ ऐसेदेवतावोंकेप्रति साब्रह्मवि द्यारूपउमादेवीब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिके पुनःपूर्वकीन्याई सावधानकरतीभई॥हेशिष्य॥ताब्रह्मविद्याकेअनुग्रहकरिके तेइंद्रादिकदेवता ता परब्रह्मकूंही याऽयंजगत्काउपादानकारण तथा निमित्तकारणमानतेभये॥हेशिष्य॥जोपरब्रह्मदूसरेदेवतावोंकूं तथामनुष्यादिकोंकूं अत्यंत दुर्लभहै ॥ तापरस्वरूपपरब्रह्मकूं सोइंद्रदेवता तथाअग्निवायुदेवता अत्यंतसमीपतारूपकरिके प्राप्तहोतेभये ॥ याकारणतें सोइंद्रदेवता तथाअग्निवायुदेवता दूसरेसर्वदेवतावों तें अधिकहैं ॥ और इंद्र अग्नि वायु यातीनोंविषेभी सोइंद्रदेवता अधिकहै ॥ काहेतें सोदेवराजइंद्र साक्षात् ताउमादेवीकेमुखतेंही तापरब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरताभयाहै॥याकारणतें सोइंद्र तिनसर्वदेवतावों तें श्रेष्ठहै॥हेशिष्य जिसपरब्रह्मकूं सोअग्निवायुदेवता प्राप्तहोताभया ॥ तथा जिसपरब्रह्मकूं सोइंद्रदेवता निश्चयकरताभया ॥ तापरब्रह्मकूं वेदवेत्ताब्राह्मण अधिदेव अध्यात्म यादोनोंरूपकरिके उपासनाकरे हैं ॥ अब तापरब्रह्मके अधिदेवरूपकावर्णनकरे हैं ॥ हेशिष्य जोहिरण्यगर्भभगवान् विराट्भगवान्काभीजनकहै ॥ तथा जिसहिरण्यगर्भभगवान्का यहसंपूर्णविश्व शरीरहै ॥ तिसहिरण्यगर्भभगवान्के समष्टिरूपदेहकेअं तर जोविद्युतकेप्रकाशसमानतत्त्वहै ॥ तथा चेतनरूपहोणेतें ताजडविद्युततेंविलक्षणहै ॥ तथा आपणीसमीपतामात्रकरिके सर्वप्राणियोंकेइं द्रियोंका तथामनका प्रेरकहै ॥सोतत्त्वही तापरब्रह्मका अधिदेवरूपहै॥अब तापरब्रह्मकेअध्यात्मरूपकावर्णनकरेहैं॥हेशिष्य॥जैसे तापरब्रह्म

काअधिदेवरूप श्रुतिविषेकथनकऱ्याहै ॥ तैसे तापरब्रह्मका अध्यात्मरूपभीकथनकऱ्याहै ॥ तहां जोतत्त्व यादेहधारीजीवोंके प्रत्येकश रीरविषेस्थितहोइके तासंघातविषेस्थितबुद्धिकेजाग्रतादिकअवस्थावोंकूं साक्षीरूपकरिकैप्रकाशकरेहै ॥ सोसाक्षीस्वरूपतत्त्व तापरब्रह्मका अध्यात्मस्वरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ सोसाक्षीस्वरूपतत्त्व यासंसाररूपवनविषेप्रविष्टहुआ सर्वांतर्यामोपरब्रह्मरूपहीहै ॥ तथा सोसाक्षीस्वरूप तत्त्व सर्वजनोंकेनिरतिशयप्रीतिकाविषयहोणेतैं तिनसर्वजनोंकूं भजनीयहै ॥ याकारणतैं ताप्रत्यक्साक्षीआत्माकूं वेदवेत्तापुरुष वनं याना मकरिकैकथनकरे हैं ॥ हेशिष्य॥जेपुरुष वनं यानामकरिकै तापरमात्मादेवकीउपासनाकरे हैं ॥ तिनपुरुषोंकूं सर्वजन आराधनाकरणे वासतेइच्छाकरेहैं अब ताब्रह्मविद्याकेसाधनोंकावर्णनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जाब्रह्मविद्या हमनें तुमारेप्रति पूर्वकथनकरी है ॥ साब्रह्मविद्या साधनों तैंविनाप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं संक्षेपतैं ताब्रह्मविद्याकेसाधनोंकूं हम तुमारेप्रतिकथनकरते हैं ॥ तिनसाधनोंकूं तूं सावधानहोइ केश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ सर्व देहधारीजीवोंकेप्रति आपणेआपणे वर्णआश्रमकेअनुसार जेवेदभगवान्नें नित्यनैमित्तिककर्म विधानक रे हैं ॥ तेकर्मभी निष्कामकरेहुए अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ताब्रह्मविद्याकेसाधनहैं ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपभी ताब्रह्मविद्याकेसाध नहैं ॥ तथा शमदमादिकभी ताब्रह्मविद्याकेसाधनहैं ॥ तथा वेदविषेकथनकरीजे नानाप्रकारकीउपासनाहैं ॥ तेउपासनाभी चित्तकेविक्षेप कीनिवृत्तिद्वारा ताब्रह्मविद्याकेसाधनहैं तथा याश्रुतिविषेकथनकरी जावेदवाणीरूपधेनुकीउपासनाहै ॥ साउपासनाभी आत्मज्ञानार्थी पुरुषनें अवश्यकरिकेकरणी॥तहां तावाक्रूपधेनुकें ऋग यजुष् साम अथर्वण यहच्यारिवेदतो च्यारिपादरूपहैं॥औेर तिनवेदोंकेजेशिक्षादि कअंगहैं॥तेशिक्षादिकअंग तावाक्रूपधेनुके शिरादिकअवयवरूपहैं ॥ तथा स्वाहाकार वषट्कार हंतकार स्वधाकार यहच्यारोमंत्र तावाक् रूपधेनुकेच्यारिस्तनहैं ॥ औरश्रुतिविषे सत्यशब्दकरिकेकथनकऱ्याजोब्रह्महै॥सोब्रह्म यावाक्रूपधेनुका भूमिरूपआधारहै ॥ और मनकी वृत्तिरूपजोबोधहै ॥ सोबोध तावाक्रूपधेनुका वत्सहै॥ हेशिष्य॥इसप्रकारकीरीतिसैं जोपुरुष तावाक्रूपधेनुकीउपासनाकरे है॥सोपुरुष चित्तकीशुद्धिद्वारा ताआत्मज्ञानकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै सोविद्वानपुरुष अद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्मविषेस्थितिकूं

प्राप्तहोवे है ॥ जिसआनंदस्वरूपब्रह्मविषेस्थितहुआ सोविद्वान्पुरुष पुनःजन्ममरणरूपसंसारविषेप्राप्तहोवेनहीं ॥ हेशिष्य ॥ पूर्वचतुर्दशे अध्यायविषे सोइंद्र प्रजापतिकाशिष्यरूपकरिकेवर्णनकऱ्याथा ॥ सोइंद्र ब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतैं ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूप करिकेजानताभया ॥ हेशिष्य ॥ जैसे ताप्रजापतिका देवराजइंद्र शिष्यहोताभयाहै ॥ तैसे ताप्रजापतिका एकअथर्वानामाज्येष्ठपुत्रभी शिष्यहोताभयाहै ॥ जिसअथर्वानामाब्रह्माकेपुत्रतैंप्रवृत्तहुईसंप्रदायतैं साब्रह्मविद्या बहुतविस्तारकूंप्राप्तहोतीभई ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मविद्या रूपउमादेवीकेअनुग्रहतैं तेइंद्रादिकदेवता किसप्रकारब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोतेभये ॥ यहजोप्रश्न पूर्वतुमनैंकऱ्याथा ॥ सो ताब्रह्मविद्याकेप्रसं गतैं सर्ववार्त्ता हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेको तुमारेकूं इच्छाहोवे ॥ सोअर्थ तूं हमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे तलवकारोपनिषत्सारार्थप्रकाशोनाम पंचदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १५ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

॥ इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेपञ्चदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे षोडशोऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथषोडशाऽध्यायप्रारम्भः ॥ याआत्मपुराणके प्रथम द्वितीय तृतीय यातीनअध्यायोंविषे ऋगवेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और याआत्मपुराणकेचतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम अष्टम नवम दशम यासप्तअध्यायोंविषे यजुर्वेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और याआत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे ऋगादिकसर्ववेदोंकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्या॥और याआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश पंचदश याचारिअध्यायोंविषे सामवेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब याआत्मपुराणके षोडश सप्तदश अष्टादश यातीनअध्यायोंविषे अथर्वणवेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकरे हैं॥तहांयाषोडशअध्यायविषे ताअथर्वणवेदके मुंडकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरेहैं॥तहां पूर्वअध्यायविषेब्रह्मविद्यायुक्त अत्यन्तसुंदरकथाकूं श्रवणकरिके सोशिष्यबहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और अथर्वाऋषिउक्तब्रह्मविद्याकेपूछणेवासते सोशिष्यआपणे गुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनेंऋगवेदके ऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ताप्रथमअध्यायविषे आपनेंसनकादिकमुनियोंके तथावामदेवादिकअधिकारीप्रजाके संवादकरिके वैराग्यादिक साधनोंयुक्त नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥तथा माताकेउदरविषेस्थित वामदेवका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनेंतिसीऋगवेदके कौषीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और तृतीय अध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनें यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषे आपनें दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद कथनकऱ्याथा ॥ तथा दध्यङ्अथर्वणऋषि गुरुरूपहोइके अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ ताब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणे तें सोदध्यङ्

अथर्वणऋषि देवराजइंद्रतें महान्दुःखकूंप्राप्तहोताभया ॥ इत्यादिकसर्ववार्त्ता आपनें ताचतुर्थअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हेभग
वन् ॥ याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सर्वशास्त्रोंकावेत्ता याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेयज्ञसभावि
षेजाइके जल्पकथाकरिके आश्वलादिकसर्वब्राह्मणोंकूं जीतताभया ॥तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिकेशापतें शाकल्यब्राह्मणकामृत्युहोताभया॥
इहां जीतणेकीइच्छाकरिके जोशास्त्रकेअर्थकाविचारकरणाहै ताकानाम जल्पकथाहै ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे
आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ अत्यंतदुस्तर संसारसमुद्रविषे डूब्याहुआ तथातासंसारसमुद्रतेंपारहोणेकीइच्छाकरताहुआ जोराजाजन
कथा ॥ ताराजाजनककूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि दोवारब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिके तासंसारसमुद्रतें पारकरताभया॥और हेभगवन् ॥ याआत्म
पुराणकेसप्तमअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि चतुर्थअवस्थाविषे आपणेमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउ
पदेशकरिके यासंसारसमुद्रतेंपारकरताभया ॥ तिसतेंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूंधारणकरताभया ॥ और हेभगवन् ॥
याआत्मपुराणकेअष्टमेअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्व
तरऋषिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिके आपनें याजगत्केकारणोंकाविचारकऱ्याथा ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेनवमअध्या
यविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिके
नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके तैत्ति
रीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तथा नारायणीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके
तथाभृगुपुत्रके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनक
ऱ्याथा ॥ तथा आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै सत्यतेंआदिलेकेसंन्यासपर्यंत साधनोंकाकथनकऱ्याथा ॥ तथा तिनसत्यादिकसर्वसाधनोंतें
संन्यासआश्रमकीअधिकता कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेएकादशेअध्यायविषे आपनें जाबालादिकएकादशउप

निषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ तापरमहंससंन्यासकूं पूर्व संवर्तकादिकमहा
न्पुरुष धारणकरतेभये हैं ॥ और तापरमहंससंन्यासकीप्राप्तिविषे वैराग्यहीकारणहै ॥ और तावैराग्यकीप्राप्तिविषे गर्भदुःखोंकाविचार
कारणहै ॥ तथा मरणकेचिह्नोंकाज्ञान कारणहै ॥ तथा अष्टांगयोग कारणहै ॥ और तापरमहंससंन्यासविषे विरक्तपुरुषही अधिकारी
है॥ और तापरमहंससंन्यासीका शिखासूत्रादिकों तें रहितपणाश्रेष्ठहै ॥ तथा तापरमहंससंन्यासीका ब्रह्मज्ञानरूपमुख्यआचारहै ॥ इत्या
दिकसर्ववार्त्ता ताएकादशेअध्यायविषे आपनें कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश यातीनअध्यायों
विषे आपनें सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वादशेअध्यायविषे आपनें उद्दालकपिताके तथाश्वेतकेतुपुत्रके
संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याकथनकरीथी॥जेउद्दालकतथाश्वेतकेतु जाबालउपनिषद्विषेसर्वसन्यासियोंविषे मुख्यकरिकैकथनकरे
हैं॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्यायविषे आपनेंभगवान्सनत्कुमारके तथानारदमुनिके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मवि
द्याकथनकरीथी ॥ और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके चतुर्दशेअध्यायविषे आपनें प्रजापतिब्रह्माके तथाइंद्रविरोचनके संवादकरिकै नानाप्र
कारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणकेपंचदशेअध्याय विषे आपनें सामवेदकेतलवकारशाखाविषेस्थित केन
उपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तापंचदशेअध्यायविषे देवराजइंद्रकूं ब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतें ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति आपनें कथनकरीथी ॥
इत्यादिकसर्ववार्त्ता आपनें मैंश्रद्धावानशिष्यकेप्रति कथनकरीथी ॥ हेभगवन् तापंचदशेअध्यायकेअंतविषे आपनें यहवार्त्ता कथनक
रीथी ॥ जैसे ताप्रजापतिब्रह्माका देवराजइंद्र शिष्यहोताभयाहै ॥ तैसे ताब्रह्मका अथर्वानामाज्येष्ठपुत्रभी शिष्यहोताभयाहै ॥ हेभगवन्
॥ सोब्रह्मा ताअथर्वानामा पुत्रकेप्रति आब्रह्मविद्या उपदेशकरताभयाहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी मैं इच्छाकरताहूं ॥ और सोअथ
र्वानामामुनि ताब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोइके कोनशिष्योंकेप्रति साब्रह्मविद्या उपदेशकरताभया ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता आप कृपाकरिकै हमा
रेप्रतिकथनकरो ॥ इसप्रकार ताश्रद्धावानशिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति मुंडकउपनिषद्विषे कथनकरीहुई

कथाकूं कथनकरताभया केसीहेसाकथा ॥ श्रोतापुरुषोंके मनकूं तथाश्रोत्रइंद्रियकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहारीहे ॥ तथा अद्वितीयब्रह्मकेस्व
रूपकूं कथनकरणेहारीहे ॥ अब हिरण्यगर्भभगवान्कीप्रथमताकेस्पष्टकरणेवास्ते प्रथम मनुभगवान्उक्तसृष्टिक्रमकूंआश्रयणकरिके तासृ
ष्टिकालकेपूर्वअवस्थाका वर्णनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ यहसंपूर्णकार्यजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तमरूपहोताभया ॥ केसाहेसोतम ॥ प्रत्यक्ष
प्रमाणकेअयोग्यहे ॥ तथा कार्यरूपहेतुतैं अनुमानकरणेअयोग्यहे ॥ तथा कुतर्कोंकेअयोग्यहे ॥ तथा शब्दकरिकेभीकथनकऱ्याजावेनहीं
॥ तथा सुषुप्तपुरुषकीन्याईं कार्यकेआरंभकरणेविषे असमर्थ है ॥ ऐसातम याजगतकोउत्पत्तितैंपूर्वहोताभया ॥ इहां तमकेसमानआवर
णकरणेहारा जो अव्याकृत माया अविद्याइत्यादिकशब्दोंकावाच्य अर्थरूपज्ञानहे ॥ ताअज्ञानउपहितसत्यवस्तुकानाम तमहे ॥ अब
याहीअर्थविषे ॥ नासदासीन्नोसदासीत्तदानीं किंत्वऽभूत्तमः ॥ याश्रुतिकाअर्थप्रमाणरूपकरिकेवर्णनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे असत्
शब्दकरिकेकथनकरणेयोग्य जोअभावहे सोअभावभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वनहींहोताभया ॥ और यालोकविषे सत्शब्दकरिकेकथन
करणेयोग्य जोभावपदार्थ हे॥सोभावपदार्थभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व नहीं होताभया॥और यालोकविषे तेजकाविरोधीरूपकरिकेप्रसिद्ध
जोअंधकारहे ॥ सोअंधकारभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वनहींहोताभया ॥ और यहआकाशादिकपंचभूतभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व नहीं
होतेभये॥और याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व यहदिनरात्रिभी नहीं होताभया॥और प्रातःकाल तथासायंकाल यहदोनोंप्रकारकीसंध्याभी याजग
त्कीउत्पत्तितैंपूर्व नहींहोतीभई॥और तिनदोनोंप्रकारकीसंध्याके चिह्नरूप जेसूर्यचंद्रमादिकतेजहैं तेसूर्यादिकतेजभी याजगत्कीउत्पत्तितैं
पूर्वनहींहोतेभये॥किंतु प्रसिद्धतमकीन्याईं आत्माकेस्वरूपकूंआच्छादनकरणेहारा कारणतत्त्वही याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वहोताभया ॥ जो
कारणतत्त्व मृत्युरूपकरिकेभीज्ञातनहीं है ॥ तथा अमृतरूपकरिकेभीज्ञातनहीं है ॥ इहां संहारकरणेहारेकानाम मृत्युहे ॥ और वृद्धि
काकारणरूपजो आहुतिकापरिणामहे॥ताकानाम अमृतहे॥तेमृत्युअमृतदोनों द्वैतदशाविषेरहेहैं॥अद्वैतदशाविषेरहेंनहीं॥पुनःकेसाहेसो॥का
रणतत्त्व याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषेअस्पष्टनामरूपवालाहोइकैरहेहे॥याकारणतैं वेदांतशास्त्रविषे ताकारणतत्त्वकूं अव्याकृत यानाम

करिकेकथनकरे हैं ॥ ओर सोअव्याकृतनामातत्त्वही यासर्वजगत्केनामरूपकाकारणहे ॥ तथा सोअव्याकृत आप कारणकीअपेक्षातैंरहि
तहे ॥ तथा एकअद्वितीयरूपहे ॥ तथा केवलश्रुतिवाक्यकरिकेगम्यहे ॥ तथा सर्वलक्षणों तें रहितहे ॥ ओर यालोकविषे वास्तव तथा
विद्यमान पदार्थही कारणहोवे हे ॥ अवास्तव तथा अविद्यमान पदार्थ कारणहोवेनहीं ॥ ओर सोअव्याकृतनामातत्त्वतो वास्तवतैंअवि
द्यमानहुआभी याजगत्काकारणहोवे हे ॥ ओर यालोकविषे अनादिभावरूपपदार्थोंकूं अविनाशीपणाहीप्रसिद्धहे॥जैसे आत्मा अनादिभा
वरूपहोणे तैं अविनाशीहे॥ओर यहअव्याकृतनामातत्त्वतो अनादिभावरूपहुआभी आत्मज्ञानतैंनाशकूं प्राप्तहोवे हे ॥ ओर यहअव्याकृत
नामातत्त्व जडरूपहोणेतैं परतंत्रहुआभी अक्रियअसंगआत्माके संगकर्मादिकोंकाकारणहोवे हे ॥इसतैंआदिलेके अनिर्वचनीयताकेबोधक
अनेकप्रकारकेदुर्घटलक्षणोंकरिकेयुक्तहे ॥ ऐसेशुद्धब्रह्मकेप्रतिबिंबयुक्तअव्याकृतनामाकारणतैं हिरण्यगर्भभगवान् उत्पन्नहोताभया ॥ के
साहेसोहिरण्यगर्भ ॥ सर्वव्यष्टिजीवोंकाईश्वरहे ॥ तथा समष्टिअभिमानिरूपताकरिके जोहिरण्यगर्भ जीवघन यानामकरिकेकह्याजावे हे ॥
एकअंतःकरण पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय एकप्राण पंचसूक्ष्मभूत यासतदशतत्त्वोंकेसमुदायरूपशरीरविषे सोहिरण्यगर्भरूपआत्मा
निवासकरे हे ॥ ताहिरण्यगर्भभगवान्तैं आकाशादिकपंचस्थूलभूत उत्पन्नहोतेभये ॥ तिनस्थूलभूतोंविषेअभिमानकरिके सोहिरण्यगर्भ
भगवान् विराट्संज्ञाकूंप्राप्तहोताभया॥तिसतैंअनंतर तिनस्थूलभूतोंविषेनिवासकरताहुआ सोहिरण्यगर्भभगवान् आपणेनिवासकरणेवास्ते
ब्रह्मांडरूपगोलककेउत्पन्नकरणेकीइच्छाकरताभया ॥ताहिरण्यगर्भभगवान्केसत्यसंकल्पकेवशतैंतेआकाशादिकपंचभूत जलऊपरस्थित
सुवर्णमयअंडरूपकरिके परिणामकूंप्राप्तहोतेभये ॥ केसाहेसोअंड ॥ कोटिसूर्यकेसमान जाअंडकीप्रभाहे ॥ तथा जिसअंडविषे सूरादिक
सप्तलोककल्पितहैं ॥ तथा पातालादिकलोककल्पितहैं ॥ तथा संवत्सरादिरूपकाल कल्पितहे ॥ ओर तिसब्रह्मांडकेअंतरस्थित जोभूमि
रूपपद्महे॥ताभूमिरूपपद्मका कर्णिकारूपजोमेरुहे॥तामेरुतैं जोहिरण्यगर्भभगवान् चतुर्मुखब्रह्मारूपकरिके प्रगटहोताभया ॥ केसाहेसोच
तुर्मुखब्रह्मा ॥ इंद्रादिकसर्वदेवतावोंतैंश्रेष्ठहे ॥ तथा इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकरिकेपूज्यहे ॥ तथा यासंपूर्णजगत्काकर्त्ता हे॥तथा यासर्वजगत्

का पालनकरणेहाराहै ॥ तथा यासर्वजगत्‌कासंहारकरणेहाराहै ॥ ऐसेब्रह्माका अथर्वानामा एकज्येष्ठपुत्र होताभया तिसअथर्वानामा
ज्येष्ठपुत्रकेताईं यहवक्ष्यमाणब्रह्मविद्या देताभया ॥ कैसीहैयहब्रह्मविद्या ॥ मूलाज्ञानकानाशकरणेहारीहै ॥ याकारणतें यहब्रह्मविद्या सर्व
विद्यावोंकाआधारभूतहै ॥ ऐसीब्रह्मविद्याकेप्राप्तहुए इतरविद्यावोंकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ काहेतें याब्रह्मविद्यातें इतर जितनीकीविद्याहैं ॥
तेविद्या किंचित्‌किंचित्‌अर्थका प्रकाशकरैहैं ॥ और यहब्रह्मविद्यातो सर्वअर्थकाप्रकाशकरैहै ॥ यातें तेसर्वविद्या फलरूपकरिकै याब्रह्मवि
द्याविषेही अंतर्भूतहोवै हैं ॥ जैसे तृप्तिरूपफलकीसिद्धिविषे सर्वग्रासोंकारस अंतर्भूतहोवै है ॥ तैसे याब्रह्मविद्याविषेही इतरसर्वविद्या
अंतर्भूतहोवै हैं ऐसीब्रह्मविद्या सोब्रह्मा ताअथर्वानामाशिष्यकेप्रति देताभया और ताअथर्वानामाऋषिका अंगिरनामाऋषि शिष्यहोता
भया ॥ और ताअंगिरनामाऋषिका भारद्वाजनामाऋषि शिष्यहोताभया ॥ जिसभारद्वाजकूं लोकविषे सत्यवह यानामकरिकैभी कथ
नकरे हैं ॥ और तिसभारद्वाजनामाऋषिका अंगिरसनामाऋषि शिष्यहोताभया ॥ और ताअंगिरसनामाऋषिका शौनकनामाऋषि शिष्य
होताभया ॥ ओशौनकऋषि बहुतअन्नदानादिकोंकरिकै महान्‌गृहस्थपणेकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसशौनकनामाऋषिके सर्वद्विज शिष्यहोते
भये॥हेशिष्य॥यामुंडकउपनिषद्‌विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै॥ साब्रह्मविद्या प्रथमतो ब्रह्मानें अथर्वानामापुत्रकेप्रति कथनकरीहै ॥ ताअथ
र्वानामाऋषिकेमुखकूंप्राप्तहोइकै जाब्रह्मविद्यापूर्वउक्तरीतिसें बहुतशिष्यपरंपराकूंप्राप्तहोतीभई है ॥ साब्रह्मविद्या मैं तुमारेप्रति कथनकर
ताहूं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर॥ अब अंगिरसऋषिके तथाशौनकऋषिके संवादकरिकै ताब्रह्मविद्याकावर्णनकरे हैं॥ हेशिष्य॥पूर्वएक
कालविषे अंगिरसनामाऋषि प्रातःकालविषे स्नानादिकनित्यकर्मोंकूंकरिकै किसीएकांतदेशविषेस्थितहोताभया ॥ कैसाथासो अंगिरसना
माऋषि॥सर्ववेदोंकावेत्ताथा ॥ तथा तिनवेदोंकरिकैप्रतिपादित अद्वितीयब्रह्मकूं जानणेहाराथा ॥ तथा सर्वइच्छातेंरहितनिष्कामथा ॥ ऐसे
श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठ अंगिरसनामाऋषिकूंदेखिकै सोशौनकऋषि समिदादिकपदार्थोंकूंहस्तविषेग्रहणकरिकै विधिपूर्वक ता अंगिरसऋषिके
समीपजाइकै याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ शौनकउवाच ॥ हे भगवन् अंगिरस ॥ किसएकवस्तुकेज्ञानतें यासर्वजगत्‌काज्ञानहोवैहै॥जि

सएकवस्तुकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवे है ॥ सोएकवस्तु आप कृपाकरिके हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाप्रश्न जभी ताशौनकऋषिनैं ताअंगिराऋषिकेप्रतिकन्या ॥ तभी सोअंगिरानामाऋषि ताशौनककेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ अंगिराउवाच ॥ हेशौनक ॥ अद्वितीयब्रह्मरूपएकआत्मवस्तुकेज्ञानहुएही यासर्वजगत्काज्ञानहोवे है ॥ हेशौनक ॥ तापरब्रह्मकीप्राप्ति वासते ब्रह्मवित्‌उपनिषदादिकोंविषे शब्दब्रह्मकाज्ञानहीं श्रेष्ठउपायकथनकन्याहे ॥ तहां शिक्षादिकषट्‌अंगोंसहितजेचारिवेदहैं ॥ तेचारिवेदहैंशरीर जिसब्रह्मका ॥ ताब्रह्मकानाम शब्दब्रह्महे ॥ ऐसेशब्दब्रह्मविषे जोपुरुष कुशलहे ॥ सोपुरुषही तापरब्रह्मकुंप्राप्तहोवैहे ॥ याकारणतैं मुमुक्षुजननैं दोप्रकारकोविद्याकुं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ तिनदोनोंविद्यावोंविषे एकविद्यातो साधनरूपहोणे तैं अपरानामाहे ॥ और दूसरीविद्या फलरूपहोणे तैं परानामाहे ॥ तहां अपरा परा यादोनोंविद्यावोंविषे प्रथम अपराविद्याकुं तूं श्रवणकर ॥ हेशौनक ॥ शिक्षादिकषटअंगोंसहित जे ऋग यजुष साम अथर्वण यहचारिवेदहैं ॥ तेचारिवेदहैं विषय जिसविद्याके ताविद्याकानाम अपराविद्याहे ॥ याअपराविद्याकरिकेही सापराविद्या प्राप्तहोवेहे ॥ जाविद्या अद्वितीयब्रह्मकुंविषयकरेहे ॥ ताब्रह्मविद्याकानाम पराविद्याहे ॥ और जिसब्रह्मकुं सापराविद्याकथनकरेहे ॥ तिसब्रह्मकुं श्रुतिविषे अक्षर यानामकरिकेकथनकन्याहे ॥ ताअक्षरस्वरूपब्रह्मका वेदवेत्तापुरुषोंनैं याप्रकारकालक्षण कथनकन्याहे सोअक्षरब्रह्म मनसहितपंचज्ञानइंद्रियों तैं तथापंचकर्मइंद्रियों तैं रहितहे ॥ तथा पंचप्राणों तैं भीरहितहे॥तथा आकाशादिकपंचभूतोंतैंभीरहितहे॥तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचज्ञानइंद्रियोंकेविषयोंतैंभीरहितहे ॥ तथा वचन आदान गमन विसर्ग आनंद यापंचकर्मइंद्रियोंकेव्यापारों तैंभीरहितहे॥याकारणतैं सोअक्षरब्रह्म नेत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकरिकेभी देख्याजावेनहीं ॥ तथा पादादिककर्मइंद्रियोंकरिकेभी ग्रहणकन्याजावेनहीं ॥ और सोअक्षरब्रह्म नाम रूप क्रिया यातीनों तैं रहितहे॥तथा जन्मादिकविकारोंतैंरहितहे॥याकारणतैं सोअक्षरब्रह्म कुलरूपगोत्रतैंभीरहितहे॥तथाब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वादिरूपवर्णोंतैंभीरहितहे॥ और सोअक्षरब्रह्म आकाशकीन्याई सर्वत्रव्यापकहे ॥ यातैं देशकृतपरिच्छेदतैं रहितहे ॥ और सोअक्षरब्रह्म साधनहीनपुरुषोंकुं दुर्वि

ज्ञेयहै यातैं सूक्ष्महै ॥ और सोअक्षरब्रह्म उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ यातैं कालकृतपरिच्छेदतैंरहितहै॥और सोअक्षरब्रह्म मायाकेवशतैं यासर्व जगत्काकारणरूपहुआभी वास्तवतैं तासर्वजगत्रूपद्वैततैंरहितहै॥याकारणतैं सोअक्षरब्रह्म वस्तुपरिच्छेदतैं रहितहै॥और जिसअक्षरब्रह्मकूं ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्नपुरुषही आपणेचित्तविषे देखे हैं॥ साधनहीनपुरुष देखिसकेनहीं॥ ऐसे अक्षरब्रह्मकूंही तुमनैं आपणाआत्मारूपक रिकेजानणा ॥ ताअक्षरब्रह्मतैंभिन्नकुलवर्णादिकोंकूं तुमनैं आपणाआत्मारूपकरिकेजानणानहीं ॥ ताअक्षरब्रह्मकेज्ञानतैंही यासर्वजगत्का ज्ञानहोवैहै ॥ अब ताअक्षरब्रह्मकेज्ञानतैं यासर्वजगत्केज्ञानकीसिद्धिकरणेवासतैं ताअक्षरब्रह्मविषे याजगत्कीकारणताकूं तीनदृष्टांतों करिकेसिद्धकरैहैं ॥ हे शौनक ॥ यहअक्षरब्रह्मही यासर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयका अभिन्ननिमित्तउपादानकारणहै ॥ याअर्थविषे वेद वेत्तापुरुषऊर्णनाभिजंतुकादृष्टांत कथनकरैहैं ॥ जैसे ऊर्णनाभिजंतु आपणेतैंभिन्नदूसरेकारणकी अपेक्षातैंविनाही तंतुवोंकीउत्पत्तिस्थि तिलयकरैहै ॥ तैसेयहअक्षरब्रह्मभी आपणेतैंभिन्नदूसरेकारणकोअपेक्षातैंविनाही यासर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरैहै ॥ यातैं जैसे ऊर्णनाभिजंतु तिनतंतुवोंका उपादानकारण तथानिमित्तकारण दोनों है ॥ तैसे सो अक्षरब्रह्मभी यासर्वजगत्का उपादानकारण तथानि मित्तकारण दोनों है ॥ और हेशौनक ॥ याजगत्विषे कोईसुखी है कोईदुःखीहै कोईधनीहै कोईनिर्धनहै इत्यादिकअनेकप्रकारकीविलक्ष णता प्रतीतहोवैहै ॥ ऐसेविलक्षणजगत्का जोएकअक्षरब्रह्म कर्त्तामानिये ॥ तो ताअक्षरब्रह्मविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषको प्राप्तिहोवैगी याप्रकारकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासते तेवेदवेत्तापुरुष भूमिकादृष्टांत कथनकरैहैं ॥ जैसे अनेकप्रकारकेस्थावरजंगमरूपशरीर एकहीभूमितैं उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे एकही अक्षरब्रह्मतैं यहनानाप्रकारकाजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसेएकहीभूमितैं बीजोंकीविल क्षणताकरिके नानाप्रकारकेस्थावरजंगमशरीर उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे एकहीअक्षरब्रह्मतैं जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंकी तथासंस्कारोंकी विल क्षणताकरिके नानाप्रकारकाजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं ताअक्षरब्रह्मविषे विषमता निर्दयता यादोनोंदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं॥और हेशौनक॥ यालोकविषे समानस्वभाववाले मृत्तिकाघटादिकपदार्थोंकाही परस्पर कारणकार्यभावदेख्याहै ॥ विलक्षणपदार्थोंका परस्पर कारणकार्य

भाव कहांदेख्यानहीं ॥ यातें चेतनब्रह्मतें जडजगत्कीउत्पत्ति संभवेनहीं ॥ याप्रकारकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै तेवेदवेत्तापुरुष यापुरुष काद्दष्टांत कथनकरेहैं ॥ जैसे जीवतअवस्थाविषे चेतनरूपकरिकेप्रसिद्ध जोयहपुरुषहै ॥ ताचेतनपुरुषतें नखकेशलोमादिक अचेतनकार्य उत्पन्नहोवेहै ॥ तैसे ताचेतनरूपअक्षरब्रह्मतें यहजडजगत् उत्पन्नहोवेहै ॥ यातें सर्वथा समानस्वभाववालेपदार्थोंकाही परस्पर कार्यकारणभावहोवेहै ॥ याप्रकारकानियम सर्वत्रसंभवे नहीं ॥ हेशौनक ॥ ताअक्षरब्रह्मतें याजगतका जन्म स्थिति लय यहतीनोंहोवें हैं ॥ तिन जन्मादिकतीनोंविषे प्रथम याजगत्केजन्मकाप्रकार तेविद्वानपुरुष इसरीतिसेकथनकरेहैं ॥ सो अक्षरब्रह्म याजगत्कीउत्पत्तितेंपूर्व ताउत्पन्नकरणेयोग्यजगत्कूंविषयकरणेहारेज्ञानरूपतपकूंकरताभया ॥ कैसाहैसोजगत् ॥ वेदकरिकेप्रसिद्धहैंनानाप्रकारकेनामरूपजिसके ॥ ऐसेजगतविषयकज्ञानरूपतपतेंअनंतर सोअक्षरब्रह्म याजगत्केउत्पत्तिकी अनुकूलता रूपस्थूलताकूं प्राप्तहोताभया ॥ जैसे जलकरिकेगीलीहुई पृथिवीविषेप्राप्तहुआबीज स्थूलताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे सोअक्षरब्रह्म भी तास्थूलताकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतेंअनंतर ताज्ञानरूपतपकरिके तास्थूलताकूंप्राप्तहुएअक्षरब्रह्मतें यथाक्रमतें आकाशादिकपंचभूत उत्पन्नहोतेभये ॥ तिनपंचभूतोंतें यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोताभया ॥ तिनपंचभूतोंकूं श्रुतिविषेअन्न शब्दकारककथनकऱ्याहै ॥ अथवा ॥ अन्नशब्दकरिके इहां अव्याकृतकाग्रहणकरणा ॥ सोनामरूपात्मकजगत्काआरंभकरणेहारा अव्याकृत रूपअज्ञान यद्यपि सिद्धांतमतविषेअनादिहै ॥ तथापि याजगत्कीउत्पत्तिकालविषे प्रधानताकीप्राप्तिरूपजन्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताचेतनकेप्रतिबिंबयुक्तअव्याकृतरूपअन्नतें मनप्राणादिकसमष्टिसूक्ष्मशरीरवाला हिरण्यगर्भ उत्पन्नहोताभया ॥ जिसहिरण्यगर्भकूंबृहदारण्यकउपनिषद्विषे मृत्यु यानामकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ तिसहिरण्यगर्भतें समष्टिस्थूलभूतरूपशरीरवालाविराट् उत्पन्नहोताभया ॥ जिसविराट्कूंश्रुतिविषे सत्यशब्दकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ ताविराट्कीउत्पत्तितेंअनंतर ताविराट् विषेस्थित भूरादिकसप्तलोकउत्पन्नहोतेभये॥तिसतेंअनंतर तिनलोकोंविषेरहणेहारेजनहैंअधिकारीजिनोंके ऐसेवेदउक्तसर्वकर्म उत्पन्नहोतेभये ॥ तिनवेदउक्तकर्मोंतें स्वर्गादिरूपफल उत्पन्नहोताभया॥सोकर्मोंकाफल याजीवोंकूं अवश्यकरिकेप्राप्तहोवेहै॥यातें ताकर्मकेफलकूं श्रुति

भगवती अमृत यानामकरिकेंकथनकरेंहै ॥ इतनेंकरिके विषयसहितपराविद्याका संक्षेपतैंनिरूपणकऱ्या ॥ अब वैराग्यकीप्राप्तिवासते
ताविषयसहितअपराविद्याका निरूपणकरेंहैं ॥ हे शौनक ॥ यहअक्षरब्रह्म सामान्यतैं सर्वजगत्कूं जानेंहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअ
क्षरब्रह्मकूं सर्वज्ञ यानामकरिकेंकथनकरेंहैं ॥ और सोअक्षरब्रह्म विशेषरूपकरिकेंभी यासर्वजगत्कूंजाने है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष
याअक्षरब्रह्मकूं सर्ववित् यानामकरिकेंकथनकरे हैं ॥ ऐसेसर्वज्ञसर्ववित्अक्षरब्रह्मतैं समष्टिसूक्ष्मकाअभिमानी हिरण्यगर्भ उत्पन्नहोताभया ॥
ताहि रण्यगर्भतैं समष्टिस्थूलकाअभिमानीविराट उत्पन्नहोताभया ॥ हेशौनक ॥ ताहिरण्यगर्भकाशरीररूप जितनाकीसूक्ष्मसमष्टिविश्वहै ॥
तथा ताविराट्काशरीररूप जितनाकीस्थूलसमष्टिविश्वहै ॥ सोसर्वविश्व तिनवेदवेत्तापुरुषों नें कर्मकाफलरूपकरिकेंवर्णनकऱ्याहै ॥ और
सोकर्मकाफल कर्म तैंअनंतर याजीवोंकूं अवश्यकरिकेंप्राप्तहोवे है ॥ याकारणतैं श्रुतिविषे ताकर्मकेफलकूं सत्यशब्दकरिकेंकथनकऱ्या
है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोहिरण्यगर्भादिकोंकाऐश्वर्य किसकर्मकाफलहै ॥ समाधान ॥ हेशौनक ॥ अधिकारीपुरुषोंकेप्रति वेदभगवा
नूनें विधानकरेजे दर्शपौर्णमासादिकयज्ञोंसहित अग्निहोत्रादिककर्म हैं ॥ जे अग्निहोत्रादिककर्म दधि घृत यजमान मंत्र देश काल इत्या
दिकपदार्थोंकेभेदकरिके नानाप्रकारकेहैं ॥ ऐसेअग्निहोत्रादिककर्मोंकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं ताऐश्वर्यरूपफलकोप्राप्तिहोवेहै ॥ हेशौ
नक ॥ जेअधिकारी पुरुष वेदविहितअग्निहोत्रादिक कर्मोंकूंनहींकरे हैं ॥ तथा वेदनिषिद्धहिंसादिककर्मोंकूंकरे हैं ॥ तथा नेत्रादिकइंद्रियों
केरूपादिकविषयोंविषे अत्यंतआसक्तहैं ॥ तेपुरुष अधोगतिकूंप्राप्तहोवे हैं॥ और जेअधिकारीपुरुष वेदविहितअग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरेहैं ॥
तथा वेदनिषिद्धहिंसादिककर्मोंकापरित्यागकरेहैं ॥ तथा इंद्रियोंकेविषयोंविषेआसक्तितैंरहितहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष स्वर्गादिकउत्तमलो
कोंविषे देवताशरीरकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेशौनक ॥ तेअग्निहोत्रादिककर्म केवल स्वर्गादिकसुखोंकेही कारणनहींहोवे हैं॥किंतु निष्कामकरेहुए
तेअग्निहोत्रादिककर्म अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानकेभीहेतुहोवेहैं ॥ काहेतैं तेअग्निहोत्रादिककर्म सकाम निष्काम भेदकरिकेंदोप्रका
रकेहोवेहैं ॥ तहां स्वर्गादिकसुखोंकोप्राप्तिकरणेहारे अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम सकामकर्म है ॥ और अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे

अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम निष्कामकर्म है ॥ तहां प्रथम सकामकर्मोंकातो स्वर्गादिरूपफल हमनें तुम्हारेप्रति कथनकऱ्या ॥ अब अंतःकरणकीशुद्धिवासते करेहुएनिष्कामकर्मोंका वैराग्यरूपफलकूं तूं श्रवणकर ॥ हेशौनक॥ स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरों तें रहितजो मोक्षहै ॥ तामोक्षकूंभी सोकर्मीपुरुष प्राप्तहोवैहै याप्रकारकीआशा तुमनें कदाचित्भी नहींकरणी ॥ काहे तें जोजोफल कर्मकरिकेजन्य होवैहै ॥ सोसोफल अनित्यहीहोवै है ॥ जैसे स्वर्गादिरूपफल कर्मकरिकेजन्यहै ॥ यातें अनित्यही है ॥ तैसे सो मोक्षभी जोकर्मकरिके जन्यहोवैगा ॥ तौ सोमोक्षभी अनित्यहीहोवैगा और वेदवेत्तापुरुष मोक्षकूंअनित्यमानैंनहीं ॥ किंतु सर्व विद्वान्पुरुष तामोक्षकूंनित्यमाने हैं ॥ यातें तामोक्षविषे कर्मकीफलरूपतासंभवैनहीं ॥ और हेशौनक ॥ ज्योतिष्टोमनामायज्ञतेंआदिलेके जितनेंकी अग्निहोत्रादिककर्म हैं ॥ तेसर्वकर्म याअधिकारीपुरुषकूं यासंसाररूपसमुद्रके मोक्षरूपपरपाराकीप्राप्तिकरणेविषे समर्थहोवैंनहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे महान्समुद्रकेजलविषे तृणकाष्ठादिकोंकरिकेरचेहुए जेतरणकेसाधनरूपप्लुवहैं ॥ तेप्लुव केवल मत्स्यादिक जीवोंकेमारणेवासतैंही उपयोगविषे आवैहैं ॥तासमुद्रकेपारकरणेविषे तेप्लुव समर्थहोवैंनहीं॥काहेतें तेप्लुव अत्यंतअल्पहैं॥तथा दृढतातैंरहितहैं॥तथा समुद्रकीलहरियोंकरिकेव्याकुलहैं॥तथा समुद्रकेजलविषे डूबेहुएकीन्याईस्थितहैं ॥ तथा तासमुद्रकेजलकरिकेपूर्णहुए तेप्लुव अत्यंतकंपायमानहैं ॥ याकारणतेंही तेप्लुव आपणेआश्रितपुरुषोंकूं सर्वदा भयकीप्राप्तिकरणेहारेहैं॥ऐसे तेप्लुव यापुरुषोंकूं तासमुद्रतैंपारकरणेविषे समर्थहोवैनहीं॥तैसे यासंसाररूपमहान्समुद्रविषे तेअग्निहोत्रादिककर्मरूपप्लुवस्थितहैं ॥कैसेहैं तेकर्मरूपप्लुव ॥ यासंसारसमुद्रके कामक्रोधादिरूपलहरियोंकरिके सर्वदाकंपायमानहैं ॥ तथा अल्पविघ्नकरिकेभी तेकर्म नष्टहोइजावैहैं ॥ यातें तेकर्मरूपप्लुव दृढतातैंरहितहैं ॥ ऐसेकर्मरूपप्लुवोंकूं परमेश्वरनें यासंसारसमुद्रविषेस्थित स्वर्गादिकसुखरूपमत्स्योंकीप्राप्तिवासतैंही रचाहै ॥ यासंसारसमुद्रतैंपारकरणेवासते तिनकर्मरूपप्लुवोंकूंरचानहीं ॥ शंका हेभगवन् ॥ जैसे यालोकप्रसिद्धसमुद्रविषेस्थितप्लुवोंकेचलावणेहारे धीवरपुरुषहोवैहैं ॥ तैसे यासंसारसमुद्रविषेस्थित अग्निहोत्रादिककर्मरूपप्लुवोंकेचलावणेहारे धीवरपुरुषोंकेसमान कोनहैं ॥ समाधान ॥ हेशौनक ॥ अध्वर्युतेंआदिलेके षोडशऋत्विज एक

यजमान एकतायजमानकीस्त्री यहअष्टादश १८ तिनअग्निहोत्रादिककर्मरूपप्लवों के चलावणेहारे हैं॥यज्ञादिककर्मों केकरावणेहारे ब्राह्मणों कानाम ऋत्विजहै ॥ तिनषोडशऋत्विजों के यहनामहैं ॥ तहां यजुर्वेदकेजानणेहारे अध्वर्यु प्रतिप्रस्थाता नेष्टा नेता यहचारिऋत्विजहो वेहैं॥ और ऋग्वेदकेजानणेहारे होता मैत्रावरुण अच्छावाक ग्रावस्तुत यहचारिऋत्विजहोवे हैं ॥ और सामवेदकेजानणेहारे उद्गाता प्रस्तोता प्रतिहर्त्ता सुब्रह्मण्य यहचारिऋत्विजहोवे हैं ॥ और ऋक् यजुष् साम यातीनवेदों केजानणेहारे ब्रह्म ब्राह्मणाच्छंदसी अग्नीध्रपोता यहचारिऋत्विजहोवेहैं॥तिसर्वेमिलिकेषोडशऋत्विजहोवे हैं॥तिन[illegible]ऋत्विजों तैंविना तथायजमानतैंविना तथातायजमानकी स्त्रीतैंविना ते अग्निहोत्रादिककर्म सिद्धहोवैंनहीं ॥ यातैं तेअष्टादश तिनकर्मरूप प्लवों केचलावणेहारे धीवरहैं ॥ और हेशौनक ॥ यासंसारसमुद्रविषे स्थित जेकर्मरूपअल्पप्लवहैं ॥ तिनकर्मरूपप्लवोंविषे श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुरूपधीवरहैनहीं ॥ तथा ब्रह्मचर्यादिकसाधनरूप अनुकूलवायुभीहै नहीं ॥ और तेकर्मरूपप्लव आपतो स्वभावतैं क्षणक्षणविषेनाशवान्हैं ॥ तथा दृढतातैं रहितहैं ॥ ऐसेकर्मरूपप्लवोंकूंआश्रयणकरिके कौनबुद्धिमान्पुरुष निःशंकहोइके यासंसाररूपसमुद्रविषेप्रवेशकरेगा ॥ किंतु यासंसारसमुद्रकेतरणेवासते कोईभीबुद्धिमान्पुरुष तिन कर्मरूपप्लवोंकूं आश्रयणकरतानहीं ॥ विचारहीनमूढपुरुषही तिनकर्मरूपप्लवोंकूं आश्रयणकरेहैं ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूप नित्यसुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवे ॥ तिसमुमुक्षुजननें यासंसारसमुद्रकेतरणेवासते तिनकर्मरूपप्लवोंकूं कदाचित्भी आश्रयणकरणानहीं ॥ और हेशौनक ॥ यासंसारसमुद्रविषेस्थित स्वर्गसुखादिरूपमत्स्योंकीप्राप्तिकरणेहारे जेयह अग्निहोत्रादिककर्मरूपप्लवहैं ॥ तिनकर्मरूप प्लवोंकूंआश्रयणकरिके जेमूढकर्मीपुरुष आपणेकूंकृतकृत्यमानिके स्थितहोवे हैं॥ तेकर्मीपुरुष कदाचित्भी यासंसारसमुद्रतैंपारहोतेनहीं॥ किंतु उलटा तेकर्मीपुरुष कामक्रोधादिकलहरियोंकरिके याकर्मरूपप्लवों केचलायमानहुए यासंसारसमुद्रकेजन्ममरणरूपजलविषेही वारं वारडूबेहैं ॥ कदाचित्भी सुखकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और हेशौनक ॥ अविद्यारूपजलहैजिसविषे ऐसाजोयहसंसाररूपसमुद्रहै ॥ तासंसार समुद्रविषे यहकर्मीपुरुष लोकप्रसिद्धधीवरपुरुषोंकीन्याई आपणेकूं तथाअन्यजीवोंकूं क्लेशकीप्राप्तिकरतेहुए स्थितहैं ॥ कैसेहैं तेकर्मीपुरुष

आपणेकूं तथाआपणेशिष्योंकूं अनर्थकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ याकारणतैं तेकर्मीपुरुष दुर्बुद्धिहैं ॥ ऐसीदुर्बुद्धिवालेहुएभी तेकर्मीपुरुष आपणेकूंपंडितमानेहैं ॥ तथा अनेकप्रकारकेरोगादिकअनर्थोंकरिकै विक्षेपकूंप्राप्तहुए तेकर्मीपुरुष मायारचितमोहरूपगर्त्तविषे वारंवारपत नहोवैहैं ॥ पुनः कैसेहैं तेकर्मीजन ॥ अनित्यसुखकोप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंकूंही मोक्षकासाधनमानेहैं ॥ याकारणतैं तेकर्मीपुरुष अत्यंतमूढ बुद्धिहैं॥ और तेकर्मीपुरुष आपणेविवेकतैंरहितहैं ॥ और तिनकर्मीपुरुषों के गुरुभी विवेकतैंरहितहैं याकारणतैं तिनकर्मीपुरुषोंकूं करणे योग्यअर्थकानिर्णय आपणेगुरुतैंभीहोवैनहीं ॥ जैसे आपणेविवेकतैंरहित कोईअंधपुरुष किसीदूसरेअविवेकीअंधपुरुषकेपीछेचलेहुए वारंवार गर्त्तविषेपडेहैं ॥ तैसे आपणेविवेकतैंरहित तथास्वर्गसुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे यहकर्मीपुरुषभी विवेकहीनकर्मीगुरुके पीछेचले हुए मायारूपनीरयुक्तसंसारसमुद्रविषे महान्दुःखकूंप्राप्तहोवैहैं॥और जैसे भूतकेआवेशकरिकै आतुरहुआ यहपुरुष आपणेदुःखकूं तथाताडुः खकीनिवृत्तिकेउपायकूं जानतानहीं ॥ तैसे कामक्रोधादिरूपपिशाचकेआवेशकरिकै आतुरहुए तेकर्मीपुरुषभी आपणेदुःखकूंतथाताडुःख कोनिवृत्तिकेउपायकूं जानिसकतेनहीं॥किंतु उलटा तेअल्पबुद्धिवालेकर्मीपुरुष इनअग्निहोत्रादिक कर्मोंकरिकै हम कृतार्थहुएहैं इसतें परेको ईहमारेकूंकर्त्तव्यनहींरह्या याप्रकारमानिकेपिशाचोंकीन्याईं नृत्यकरेहैं तथाहँसेहैं॥और तेकर्मीपुरुष कामरूपपिशाचकेवशहुए तथापरमेश्वर कीमायाकरिकैमोहितहुए यापांचभौतिकशरीरविषेही परमसुखबुद्धिकरेहैं ॥ और ताकामरूपपिशाचकेवशहुए तेकर्मीपुरुष सर्वदा याप्रकारकाचिंतनकरेहैं ॥ यह शत्रु हमनैं आपणेबलतैं हननकऱ्याहै ॥ और यहशत्रु पुनःउत्थितहुआहै ॥ इसशत्रुकूंभी मैं आपणे बलतैं हननकरोंगा ॥ और यहहमारामित्र महान्बलवानहुआहै यातैं हमारेकूं अभीकिसीतैंभयनहीं है ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकी चिंताकरिकै व्याप्तहुआहैचित्तजिन्होंका॥ तथा प्रमादरूपग्रहकेवशकूंप्राप्तहुआहै चित्तजिन्होंका ॥ ऐसेतेकर्मीपुरुष आपणेहृदयदेशविषे स्थित आनंदस्वरूपआत्माकेजानणेंविषे समर्थहोइसकेनहीं ॥ याकारणतैं तेकर्मीपुरुष वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेशौ नक ॥ जे पुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकाविस्मरणकरिकै तथा यहअग्निहोत्रादिककर्मही हमारेश्रेयकासाधनहै याप्रकारकानिश्चयकरिकै

यासंसारकेसुखोंविषेआसक्तहोवैहैं ॥ तेकर्मीपुरुष स्वर्गविषे तिनपुण्यकर्मोंकेफलकूंभोगिके किसीकालपाइके तास्वर्गलोकतें शोकयुक्त हुए नीचेपतनहोवैहैं ॥ हेशौनक ॥ जैसे यालोकविषे पुत्रादिककुटंबकरिकेयुक्त जेधनवानपुरुषहैं ॥ तेधनवानपुरुष आपणेमृत्युकालविषे जिसप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसीप्रकारकेदुःखकूंतेकर्मीपुरुष स्वर्गतेंनीचेपतनकालविषे प्राप्तहोवैहैं॥ और जैसे यालोकविषेमहान्सुख वालाजोकोईराजाहै॥ताराजाकूं आपणेमरणकालविषे जिसप्रकारकादुःखहोवैहै॥तिसीप्रकारकादुःख तिनकर्मीपुरुषोंकूं स्वर्गतेंनीचेपतनकाल विषे प्राप्तहोवैहै ॥ यद्यपि मरणकालविषे सर्वदेहधारीजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथापि धनवानपुरुषोंकूं तथाराजावोंकूं बहुतभोगों कीआसक्तीकरिके तामरणकालविषे दूसरेजीवोंतेंअधिकदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतें तास्वर्गतेंनीचेपतनजन्यदुःखविषे धनीपुरुषोंका तथाराजाका दृष्टांतदियाहै ॥ और हेशौनक ॥ तिनकर्मीपुरुषोंकूं केवल स्वर्गतेंनीचेपतनकालविषेही दुःखनहींहोवैहै ॥ किंतु तास्वर्ग विषेभी तिनकर्मीपुरुषोंकूं इंद्रादिकदेवतावोंकीपरतंत्रताकरिके महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा अधिकभोगोंकीअप्राप्तिकरिकेभी महान् दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जैसे यालोकविषे धनीपुरुषोंकूं धनकेनाशतें महान् दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे स्वर्गादिकलोकोंविषे तिनकर्मी पुरुषोंकूं पुण्यकर्मोंकेनाशतें महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार तिनकर्मीपुरुषोंकूं तिनकर्मोंके अनुष्ठानकालविषेभी दुःखकीही प्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तिनकर्मोंकेफलकीप्राप्तिकालविषेभी दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तिनस्वर्गसुखादिरूपफलकेनाशतेंअनंतर तिनकर्मी पुरुषोंकूं पुनःजन्मकरिकेदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें आदिकालविषे तथा मध्यकालविषे तथा अंतकालविषे यहकर्म दुःखकेहीकारणहैं ॥ हेशौनक ॥ स्वर्गकूंप्राप्तहोइके पुनःभूमिलोकविषेजन्मकूंप्राप्तहोणेहारा यहकर्मीपुरुष कोनशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ किसीउत्तमशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ अथवा किसीमध्यमशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ अथवा किसीअधमशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ अथवा किसी नारकीयशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ याप्रकार तापुरुषकेकर्मकेफलकूं सर्वज्ञईश्वरतेंविना कोनपुरुष जानिसकेगा किंतु सर्वज्ञईश्वरतेंविना ताकर्मकेफलकूं कोईभीपुरुष जानिसकतानहीं ॥ हेशौनक ॥ अग्निहोत्रादिकइष्टकर्मोंकूंकरणेहारे तथा बांपीकूपतडागादिरूप पूर्त

कर्मोंकूंकरणेहारे जेकर्मीपुरुषहैं ॥ तिनकर्मीपुरुषोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिकरणेहारा यहदक्षिणमार्ग हमनें तुमारेप्रति कथनकर्‌या ॥ अब देवयाननामा उत्तरमार्गविषेगमनकरणेहारेपुरुषोंकीगतिकूं तूं श्रवणकर ॥ हेशौनक जैसे स्वर्गकीप्राप्तिकरणेहारा सोदक्षिणमार्ग यासंसारके अंतरस्थितहै ॥ तैसे ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरणेहारा यहदेवयाननामा उत्तरमार्गभी यासंसारकेही अंतर्भूतहै ॥ परंतु सोदेवयाननामामार्ग यासंसारसमुद्रकेपरपारकेसमीपस्थितहै ॥ याकारणतें सोदेवयाननामामार्ग बहुतजनोंकूं प्राप्तहोवे नहीं ॥ किंतु किसीवैराग्यवानपुरुषोंकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेनिरूपणकरेहैं ॥ हेशौनक ॥ जे अधिकारीपुरुष हम आपणेवीर्यकूंपरित्यागनहींकरेंगे ॥ याप्रकारकादृढसंकल्पकरिके याशरीरकरिके स्त्रीकेसाथ संभोगनहींकरे हैं ॥ ऐसेनैष्ठिक ब्रह्मचारी ताउत्तरमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेजावे हैं ॥ तथा दहरादिकउपासनाकरणेहारेपुरुषभी ताउत्तरमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेजावे हैं ॥ तथा स्वर्गादिकपंचअग्नियोंकीउपासनाकरणेहारे कोईकगृहस्थपुरुषभी ताउत्तरमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेजावे हैं ॥ तेब्रह्मचर्यादिकसाधन अत्यंतकठिनहैं ॥ यातें सोदेवयानमार्ग किसीपुरुषकूंहीं प्राप्तहोवे है सर्वकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ हेशौनक ॥ ताउत्तरमार्गकरिकेप्राप्तहोणेयोग्य जोब्रह्मलोकहै ॥ ताब्रह्मलोकविषेभी सर्वपुरुषोंकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मलोकविषे जिनअधिकारीपुरुषोंकूं दैवयोगतें ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवे है ॥ ते अधिकारीपुरुषही ताहिरण्यगर्भ तें परेवर्त्तमान अद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेप्राप्तहोवे हैं ॥ जैसे याभूमिलोकविषेस्थितअधिकारीजन ताआत्मज्ञानकरिके अद्वितीयब्रह्मकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषेस्थित अधिकारीजनभी ताआत्मज्ञानकरिकेही अद्वितीयब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें याभूमिलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे आत्मज्ञानकरिके मोक्षकीप्राप्ति समानहीहै ॥ और जिनअधिकारीपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिनहींहोवे है ॥ तेअधिकारीपुरुष ताब्रह्मलोकतेंभी पुनः यामनुष्यलोककूंप्राप्तहोवे है ॥ परंतु तेअधिकारीपुरुष इसमन्वंतरविषे अथवा इसकल्पविषे ताब्रह्मलोकतें यामनुष्यलोककूंप्राप्तहोवे नहीं ॥ किंतु दूसरेमन्वंतरविषे अथवा दूसरेकल्पविषेयामनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैहै॥यातें जैसे सोदक्षिणमार्ग पुनरावृत्तिकरिकेयुक्तहै॥तैसेयहदेवयानमार्गभी पुनरावृत्तिकरिकेयुक्तहै॥यातेंयामुमुक्षु

अनों नें तादक्षिणमार्गकीन्याई यहउत्तरमार्गभी परित्यागकरणेयोग्यहै॥ हेशौनक ॥उपासनादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जेनैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं॥ तथागृहस्थहैं तथावानप्रस्थहैं तथासंन्यासीहैं॥तिनसर्वअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकविषे अथवा स्वर्गलोकविषे अथवाभूमि लोकविषे अथ वा पाताल विषे अथवा नरकविषे सोब्रह्मात्मज्ञानही मुक्तिकाकारणहै॥ताब्रह्मज्ञानतेंविना किसीभीलोकविषे मोक्षकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ याअ र्थविषे तुमनें किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ और हेशौनक॥जैसेब्रह्मज्ञानतेंविना किसीभीलोकविषे मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ तैसे यह शरीर किसीभीलोकविषे सुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु यहशरीर भूमिलोकतेंलेकेब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंविषे दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ और ताशरीरकासंबंध जैसे याभूमिलोकविषेहै ॥ तैसे ताशरीरकासंबंध ब्रह्मलोकविषेभी रहे है॥यातें सोब्रह्मलोकभी पूर्वउक्तरीतिसें स्वर्ग लोककीन्याई दुःखकाहीकारणहै ॥ यातें विद्वान्पुरुषों नें ताब्रह्मलोककूंभी नरककी न्याई दुःखकाहीकारणजानणा ॥ हेशौनक ॥ यद्यपि मनुष्य देवता पशु इत्यादिकभेदकरिके याशरीरोंकीविलक्षणताप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि ताशरीरजन्यदुःखरूपफल सर्वत्रसमानही है ॥जैसे महाराजाकेनिवासवासतेंरचाजो कोईसप्तमहलोंवालाऊंचागृहहै ॥ तागृहकेऊपरस्थितपुरुषकूं तथाभूमिविषेस्थितपुरुषकूं ज्वरादिक व्या धियोंजन्यदुःखरूपफल समानहीहोवै है॥ तैसे स्वर्गादिकलोकोंविषेस्थितदेवतावोंकूं तथाभूमिविषेस्थितमनुष्यादिकोंकूं याशरीरकेसंबंधतें दुःखरूपफल समानहीहोवै है ॥ तादुःखरूप फलविषे किंचित्मात्रभी न्यूनअधिकतानहीं है ॥ और हेशौनक ॥ जैसे यालोकविषे एक सुवर्णमयशृंखलाहोवै है ॥ और दूसरीलोहमयशृंखलाहोवै है ॥ तिनदोनोंप्रकारकीशृंखलावोंविषे यापुरुषोंकेबंधनकीकारणता समान हीहोवैहै ॥ तैसे कोईदेवताशरीरहै कोईमनुष्यशरीरहै ॥ तिनदोनोंप्रकारकेशरीरोंविषे याजीवोंकेदुःखकीकारणता समानही है॥ और हे शौनक ॥ सर्वतेंउत्तम जोहिरण्यगर्भकाशरीरहै ॥ तथा सर्वतेंनिकृष्टजोश्वानकाशरीरहै ॥ तिनदोनोंशरीरोंविषे अविद्याकीकार्यता त थापंचभौतिकपणा समानही है ॥ यातें विचारकियेतें तिनदोनोंशरीरोंका किंचित्मात्रभी भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ और जैसे तिनदोनोंशरीरों काभेद सिद्धहोवैनहीं ॥तैसे तिनदोनोंशरीरोंकेअभिमानीजीवोंकाभी भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ हेशौनक ॥जिसजिसजीवनें जिसजिस शरीर

कूंग्रहणकऱ्याहै॥तिसतिसजीवकूं सोसोशरीर सर्वतेंअधिकहुआ प्रतीतहोवै है॥ताआपणेशरीरतेंभिन्नदूसरेसर्वशरीर ताजीवकूं निकृष्टप्रतीत होवै हैं ॥ यातें अभिमानकृतउत्कृष्टताभी ब्रह्मातेंआदिलेकेश्वानपर्यंत सर्वशरीरोंविषेसमानहै ॥ हेशौनक ॥ जिसशरीरविषे याजीवों नें अधिकतामानीहै सोयहशरीर कैसाहै ॥ आधिव्याधिजन्यसर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ तथा सर्वदादुर्गंधकरिकेयुक्तहै ॥ तथा सर्वदा अशुचरहेहै॥ ऐसामलिनशरीरभी याजीवोंकूं जिसदेवकेप्रभावतें दुःखकाकारणरूपकरिके प्रतीतहोतानहीं ॥ तथा दुर्गंधअशुचिरूपकरिके प्रतीत होतानहीं॥सोजीवोंकाविचित्रदेव बुद्धिमान्पुरुषोंकूं शोचकरणेयोग्यहै ॥ हेशौनक ॥ यहशरीर यद्यपि दुर्गंधादिकअनेकदोषोंकरिके युक्त है ॥ तथापि कर्म काम अविद्या यातीनोंकेप्रभावतें याजीवोंकूं तेशरीरकेदुर्गंधादिकदोष प्रतीतहोतेनहीं ॥ किंतु उलटा याजीवोंकूं सोशरीर अमृतकेसमान प्रियप्रतीतहोवैहै ॥ इहां प्रारब्धकर्मकेफलकानाम कर्महै ॥ और रागकानाम कामहै ॥ और अध्यासकानाम अविद्या है ॥ हेशौनक ॥ जिस कर्म कामअविद्याकेबलतें यहमलिनशरीरभी अमृतकेसमानप्रतीतहोवै है ॥ तिसकर्मकूंभी धिकारहै ॥ तथा तिसकामकूंभी धिकारहै ॥ तथा तिसअविद्याकूंभी धिकारहै॥जिस अध्यासरूपअविद्याकरिकेमोहकूंप्राप्तहुआ यहजीव आपणेमुखविषेस्थितलालावोंकूंपानकरताहुआभी ग्लानिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ हेशौनक ॥ जे विष्टा मूत्र रुधिर कफ आदिकपदार्थ वैतरणीआदिक नरकोंविषे विद्यमानहैं ॥ तेविष्टामूत्रादिकपदार्थंही यादेहविषे विद्यमानहैं ॥ नरककेपदार्थोंविषे तथायाशरीरकेपदार्थोंविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है ॥ तथापि याजीवोंकूं पापादिकदोषोंकेवशतें तेमलिनपदार्थभी सौंदर्यतारूपकरिकेप्रतीतहोवै हैं ॥ यातें याजीवोंकेपापादिकदोषोंका बहुत आश्चर्यरूपमहिमाहै ॥ हेशौनक ॥ इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोकतेंआदिलेके यामनुष्यलोकपर्यंत सर्वलोकोंकूं अनर्थरूपजानिके तिनसर्वलोकों तें वैराग्यकूं प्राप्तहोवै ॥ तहांश्रुति ॥ परीक्ष्यलोकान्कर्मचितान् ब्राह्मणोनिर्वेदमायात् ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तरीतिसें कर्मरचितसर्वलोकोंकूं अनित्यतादिकदोषोंवालाजानिके तिनलोकों तें वैराग्यकूंप्राप्तहोवै ॥ ३ ॥ हेशौनक ॥ या अधिकारीपुरुषोंकूं केवल पूर्वउक्तदोषोंकाविचारकरिके यहलोक परित्यागकरणेयोग्यनहीं है ॥ किंतु कर्मजन्यहोणेतें अनित्यतादोषकरिकेभीतेलो

क परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ काहेतें भूमि अंतरिक्ष स्वर्ग यातीनलोकोंकेअंतर्गत जितनेंकीलोकहैं ॥ तेलोकतो याजीवोंकूं यज्ञादिरूपशारीरककर्मोकरिकेप्राप्तहोवेहैं ॥ और तिन तीनलोकों तेंबाह्यजेब्रह्मलोकादिकहैं॥तेब्रह्मलोकादिकतो याजीवोंकूं उपासनारूपमानसकर्मकरिके प्राप्तहोवेहैं॥याप्रकारकानियम किसीकालविषेभी अन्यथाहोवेनहीं॥ यातें यहसंपूर्णलोक कर्मजन्यहैं॥और यालोकविषे जोजोपदार्थ कर्मजन्यहोवेहै सोसोपदार्थ अनित्यहीहोवेहै जैसे घटादिकपदार्थ कर्मजन्यहोणेतें अनित्यहैं ॥ तैसे कर्मजन्यहोणेतें तेस्वर्गादिकलोकभी अनित्यहीहोवेंगे ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ अनित्यहोवेहै ॥ सोसोपदार्थ आपणेवियोगकालविषे याजीवोंकू दुःखकीप्राप्ति अवश्यकरेहैं ॥ जैसे धनादिकपदार्थ अनित्यहोणेतें आपणेवियोगकालविषे याजीवोंकूं अवश्यकरिकेदुःखकीप्राप्तिकरेहैं ॥ तैसे अनित्यहोणेतें तेस्वर्गादिकलोकभी याजीवोंकू अवश्यकरिकेदुःखकीप्राप्तिकरेंगे ॥ याकारणतेंभी याअधिकारीपुरुषोंकू तेस्वर्गादिकलोक परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ इहांशंका ॥ जैसे स्वर्गादिकलोक कर्मजन्यहैं ॥ तैसे यहमोक्ष कर्मजन्यनहीं है काहेतें स्वर्गादिकलोकोंकीन्याई जोकदाचित् सोमोक्षभी कर्मजन्यहोवेगा ॥ तो सोमोक्षभी तिनस्वर्गादिकलोकोंकीन्याई अनित्यहीहोवेगा ॥ और जोकदाचित् तामोक्षकूंभी अनित्य मानिये तो मोक्षकीप्राप्तिवासते अधिकारीपुरुषोंकाप्रयत्नही व्यर्थहोवेगी ॥ किंवा ॥ तामोक्षकूंभी जोकदाचित् कर्मजन्यमानिये तो तामोक्षविषे स्वर्गकीअपेक्षाकरिके विशेषतानहींहोवेगी॥किंतु तामोक्षकूंभी स्वर्गविशेषरूपता प्राप्तहोवेगी॥काहेतें जैसे विश्वजित्नामायज्ञकरिके प्राप्तहोणेहारा जोस्वर्ग है ॥ तथा ज्योतिष्टोमनामायज्ञकरिके प्राप्तहोणेहारा जोस्वर्ग है ॥ तिनदोनोंप्रकारकेस्वर्गोविषे यद्यपि यत्किंचित् अवांतरविशेषताहै ॥ तथापि स्वर्गत्वरूपकरिके तथाअनित्यरूपकरिके तिनदोनोंस्वर्गोविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहीं है ॥ किंतु दोनों समानहीं हैं ॥ तैसे कर्मजन्यस्वर्गविषे तथाकर्मजन्यमोक्षविषे यत्किंचित् अवांतरविशेषताकेहुएभी स्वर्गत्वरूपकरिके तथा अनित्यत्व रूपकरिके तिनदोनोंविषे समानताहीहोवेगी ॥ किंवा स्वर्गादिकोंकीन्याई तामोक्षकूंभी जो अनित्यमानिये ॥ तो ॥ नसपुनरावर्त्तते॥ यहश्रुतिवचन मुक्तपुरुषों के पुनरावृत्तिकेअभावकूंकथनकरणेहारा व्यर्थहोवेगा॥ तथा सर्वशास्त्रों के आचार्योंकी जोमोक्षकीनित्य

ताविषेप्रसिद्धिहै ॥ साप्रसिद्धिभी व्यर्थहोवेगी ॥ याकारणतेंभी तामोक्षविषे अनित्यतासंभवेनहीं ॥ किंवा ॥ नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय ॥ अर्थयह ॥ मोक्षकीप्राप्तिवास्ते आत्मज्ञानतेंविना दूसराकोईमार्ग हैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानहीं तामोक्षकेप्राप्तिकामार्ग है ॥ १ ॥ ब्रह्मवे दब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारी पुरुष अद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानिके ताब्रह्मरूपहीहोवे है ॥ २ ॥ यहदोनोंश्रुति एक आत्मज्ञानकरिकेही तामोक्षकेप्राप्तिकाकथनकरे हैं ॥ जोकदाचित् तामोक्षकूंभी स्वर्गादिकोंकीन्याईकर्मजन्यमानिये ॥ तो तेदोनोंश्रुति व्यर्थहोवेंगी ॥ और श्रुतिकोव्यर्थता किसीभीआस्तिकवादीकूं अंगीकारहैनहीं ॥ याकारणतेंभी तामोक्षविषे कर्मजन्यतासंभवेनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंयुक्तिकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ अविद्यारूपआवर्णतेंरहित जो आनंदस्वरूपब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूंहीं वेदवेत्तापुरुष मोक्ष यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और जिसअविद्यारूपआवर्ण तेंरहितहुआब्रह्म मोक्षस्वरूपहोवे है ॥ जिसअविद्याकूं तेविद्वान्पुरुष माया अज्ञान अव्याकृत शक्ति इत्यादिकनामोंकरिकेकथनकरे हैं ॥ ऐसेअज्ञानकी निवृत्ति केवलज्ञानकरिकेहीहोवे है ॥ काहेतें यालोकविषे जिसवस्तु विषयकअज्ञानहोवे है ॥ तिसवस्तुविषयकज्ञानतेंहीं ताअज्ञानकी निवृत्तिहोवे है ॥ दूसरेकिसीकर्मादिकउपायोंकरिके ताअज्ञानकीनिवृत्ति होवेनहीं॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्पकाकारणरूप जोअज्ञानहै ॥ सो अज्ञान रज्जुविषयकहोवे है ॥ तारज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्ति तारज्जु विषयकज्ञानतेंहीहोवे है ॥ दूसरेकिसीकर्मादिकउपायोंकरिके तारज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्तिहोवेनहीं ॥ और तारज्जुविषयकज्ञानकरिके जभी तारज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्तिहोवे है ॥ तभी ताअज्ञानकाकार्यरूपसर्प आपही निवृत्तहोइजावे है ॥ यहवार्ता सर्वलोकोंकूं अनु भवसिद्धहै ॥ तैसे यासंसारकाकारणरूपजोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञानभी ब्रह्मात्मविषयकहोवे है ॥ यातें ताब्रह्मात्मविषयकज्ञानकरिकेही ता अज्ञानकीनिवृत्तिहोवे है ॥ ताब्रह्मात्मज्ञानतेंविना दूसरेकर्मउपासनादिकउपायों तें ताअज्ञानकीनिवृत्ति संभवेनहीं ॥ और ताब्रह्मात्मज्ञान करिके जभी ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ तभी ताअज्ञानजन्यदुःखोंकीनिवृत्ति आपहीहोइजावे है ॥ किंवा ॥ जेवादी तासंसारसंबंधीदुः खोंकूं अज्ञानजन्यनहींमानेहैं ॥ किंतु नैयायिकोंकेमतकीन्याईं आत्मारूपसमवायिकारणादिकोंसहित तादुःखकूं सत्यमाने हैं॥तिनवादियों

केमतविषे सोदुःख आत्माकीन्याई सर्वदा विद्यमानहोवेगा ॥ यातें तादुःखकीनिवृत्तिरूपमोक्षकीप्राप्तिवासतें सर्वअधिकारीजनोंकाप्रयत्न व्यर्थहोवेगा ॥ और सोवादी जोकदाचित् घटादिकपदार्थोंकीन्याई तादुःखकूंसत्यमानिकेभी अनित्यमानें ॥ तौभी तादुःखकीनिवृत्तिरूप मोक्षकोप्राप्तिवासतें तिनअधिकारीपुरुषोंकाप्रयत्न व्यर्थहोवेगा ॥ काहेतें यालोकविषे जोजोभावपदार्थ अनित्यहोवे है॥ सोसोपदार्थ किसी कालपाइके आपहीनाशहोइजावे है ॥ जैसे कुशूलविषेस्थितधान्य किसीकालपाइके आपहीनाशहोइजावे है ॥ तैसे सोअनित्यदुःखभी किसीकालपाइके आपहीनाशहोइजावेगा ॥ ताअनित्यदुःखकीनिवृत्तिकरणेवासते प्रयत्नकरणा व्यर्थहीहै ॥ किंवा ॥ जैनैयायिक तादुःखकूं अविद्याजन्य नहींमाने हैं ॥ किंतु आत्मजन्यमाने हैं तिननैयायिकोंकेमतविषे तादुःखका अत्यंतनाश संभवेनहीं ॥ काहेतें तिननैयायिकोंनें तादुःखकेसमवायिकारणआत्माकूं नित्यमान्याहै ॥ यातें एकदुःखकेनाशहुएभी तानित्यआत्मातें पुनःदुःखकीउत्पत्तिहोवेगी ॥ कारणकेविद्यमानहुए कार्यकेउत्पत्तिकूं कोइभी निवारणकरिसकेनहीं ॥ किंवा तादुःखकाकारणरूप जोयहद्वैतप्रपंचहै ॥ सोद्वैतप्रपंच जोकदाचित् सत्यहोवे ॥ तो साक्षात्ईश्वरभी तादुःखकेनिवृत्तकरणेविषे समर्थनहींहोवेगा ॥ काहेतें सोईश्वर जोकदाचित् सत्यवस्तुकीभीनिवृत्तिकरताहोवे ॥ तो तुमवादियोंकेमतविषे सत्यरूपकरिकेप्रसिद्ध जोयहजगत्है तासत्यजगत्कासंहारकरिके सोईश्वर पुनःताजगत्कीउत्पत्तिहीनहींकरेगा ॥ सो ऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातें तासत्यद्वैतविषे दुःखकोकारणतासंभवेनहीं॥किंतु आत्माकेअज्ञानतेंही तादुःखकी उत्पत्तिहोवे है ॥ यभी आत्मज्ञानकरिके ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवे है ॥ तभी सोदुःख पुनः कदाचित्भी उत्पन्नहोवेनहीं ॥ यहउपनिषदोंकामतही युक्तिमानहै ॥ तहां दृष्टांत॥ जैसे रज्जुकेअज्ञानकरिके उत्पन्नभयाजो सर्पादिदर्शनजन्य भयकंपादिरूपदुःखहै ॥सोदुःख तारज्जुकेअज्ञानकेनिवृत्तहुए पुनः उत्पन्नहोवेनहीं ॥ तैसे आत्माकेअज्ञानतेंउत्पन्नभयाजो यहसंसारकादुःखहै ॥ सोदुःख ताआत्माकेअज्ञानकेनिवृत्तहुएपुनःउत्पन्नहोवेनहीं ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ अनर्थकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मानंदकीप्राप्तिरूप जोमोक्षहै॥सोमोक्ष केवलआत्मज्ञानकरिकेहीहोवे है ॥ कर्मउपासनाकरिके तामोक्षकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ नास्त्यऽकृतःकृतेन ॥ अर्थयह ॥ कार्यभावतेंरहितजो

नित्यमोक्षहै ॥ सोमोक्ष कर्मउपासनाकरिके प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानकरिकेही सोमोक्ष प्राप्त होवै है ॥ अब ताब्रह्मात्मज्ञानकेप्रा सिकाप्रकार वर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ ब्रह्मरूपआत्माकाज्ञान याअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउप देशतेंहीहोवे है ॥ काहे तें सर्वअर्थकूं प्रकाशकरणेहारीश्रुतिभगवतीही साक्षात् याअर्थकूंकथनकरे है ॥ तहांश्रुति ॥तद्विज्ञानार्थंसगुरुमेवाभि गच्छेत्समित्पाणिःश्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठं॥ अर्थयह ॥ विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्न यहअधिकारीपुरुष समिदादिकपदार्थोंकूंहस्तविषेग्रहणकरिके ताब्रह्मात्मज्ञानकीप्राप्तिवासते श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावे ॥ १॥ इहां जोगुरु शास्त्रउक्तअनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिके शिष्यकेसं शयकोनिवृत्तिकरणेविषेसमर्थहोवे॥ तागुरुकानाम श्रोत्रियहै ॥ और जिसगुरुकी ब्रह्मविषेनिष्ठाहोवै ॥ तागुरुकानाम ब्रह्मनिष्ठहै ॥ ऐसेश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुके विधिवत्शरणकूंप्रा सभयाजो श्रद्धावानशिष्यहै ॥ ताशिष्यकेप्रति सोश्रीगुरु सर्वदुःखोंकेनाशकरणेहारो ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरे ॥ जिसब्रह्मविद्याकरिके सोब्रह्मचर्यसत्यादिकसाधनसंपन्न अधिकारीपुरुष ताअक्षरब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेनिश्चयकरे ॥ अब पूर्वसंक्षेपकरिकेकथनकरीहुई परविद्याका विस्तारतैंनिरूपणकरे हैं ॥ हेशौनक॥ सोविरक्तमुमुक्षुजन ताश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं जिसब्रह्मकूं सत्यरूपकरिकेजाने है॥ तथा ताब्रह्मतैंभिन्न सर्वजगत्कूं असत्यरूपकरिकेजानेहै ॥ तासत्यब्रह्मतैंही यहसंपूर्णविश्व उत्पन्नहोवे है ॥ तथा तासत्यब्रह्मविषेही यह सर्वजगत् स्थितहोवे है ॥ तथा तासत्यब्रह्मविषेही यहसर्वजगत् लयकूंप्राप्तहोवे है ॥ अब ताजगत्कीउत्पत्तिविषेदृष्टांतकहे हैं ॥ हेशौ नक ॥ जैसेमहान्प्रज्वलितअग्नितैं प्रकाशतारूपकरिके ताअग्निकेसमानरूपवालेविस्फुलिंग उत्पन्नहोवे हैं ॥ तथा ताअग्नितैंमलिनतारूपक रिके विरुद्धधर्मवालेधूम उत्पन्नहोवे हैं ॥ तैसे ताअक्षरब्रह्मतैं समानरूपवालेचेतनपदार्थ तथाविरुद्धरूपवालेजड़पदार्थ उत्पन्नहोवे हैं ॥ हेशौनक ॥ जिसपरब्रह्मतैं यहजड़चेतनरूपजगत् उत्पन्नहोवे है ॥ सोपरब्रह्मकैसाहै ॥ स्वयंप्रकाशरूपकरिके यासर्वजगत्तैंविलक्ष णहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं दिव्य यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और सोपरब्रह्म आकाशकीन्याई सर्वत्रव्यापकहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अमूर्त्त यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और सोपरब्रह्म सर्वदेहादिकउपाधियोंविषे बाह्यअंतर

परिपूर्ण है ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं पुरुष यानामकरिकेकथनकरे है॥और सोपरब्रह्म यास्थूलशरीरतेंरहितहै॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अज यानामकरिकेकथनकरे है॥और सोपरब्रह्म सूक्ष्मशरीरतेंभीरहितहै॥याकारणतें श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अप्राण अमनाः यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और सोपरब्रह्म मायारूपकारणशरीरतेंभीरहितहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं शुभ्र यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और आकाशादिकजगत्‌रूपकार्यकीअपेक्षाकरिके सामाया चिरकालपर्यंतरहे है ॥ याकारणतें तामायाकूं अक्षरकहे हैं ॥ और आपणेकार्यरूपजगत्‌कीअपेक्षाकरिके साकारणरूपमाया परभीहै॥ऐसे पररूपअक्षरमायातेंभी सोपरब्रह्मपरहै॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अक्षरात्परतःपरः यानामकरिकेकथनकरे है ॥ इतनेंकरिके तापरमात्मादेवकास्वरूप वर्णनकऱ्या॥ अब तापरमात्मादेवकेअद्वितीयरूपताकोसिद्धिकरणेवासते तापरमात्मादेवतेंयासर्वजगत्‌केउत्पत्तिका कथनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ इसीमायाउपहितपरमात्मादेवतें प्राण तथामन उत्पन्नहोवे है ॥ और तिसीपरमात्मादेवतें श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय उत्पन्नहोवे हैं ॥ और तिसीपरमात्मादेवतें आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी यहपंचभूत उत्पन्नहोवे हैं ॥ इतनेंकरिके सूक्ष्मसप्तदशतत्त्वरूपहिरण्यगर्भकीउत्पत्ति कथनकरी ॥ अब स्थूलविराट्‌कीउत्पत्ति कथनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ तिसपरमात्मादेवका जोस्थूलविराट्‌स्वरूपहै ॥ ताविराट्‌स्वरूपकूं वेदवेत्तापुरुष याप्रकार वर्णनकरे हैं ॥ यहस्वर्गलोक जिसविराट्‌भगवान्‌का शिररूपहै ॥ और यहसूर्यचंद्रमा जिसविराट्‌भगवान्‌के दोनोंनेत्ररूपहैं ॥ और यहपूर्वादिकदशोदिशा जिसविराट्‌भगवान्‌के श्रोत्ररूपहै ॥ और यहऋगादिकचारिवेद जिसविराट्‌भगवान्‌का वाकइंद्रियरूपहैं ॥ और यहबाह्यवायु जिसविराट्‌भगवान्‌का प्राणरूपहै ॥ और यहसंपूर्णजगत् जिसविराट्‌भगवान्‌का हृदयरूपहै ॥ और यहसंपूर्णपृथ्वी जिसविराट्‌भगवान्‌का पादरूपहै ॥ याप्रकारकेशरीरवाला तथासर्वव्यष्टिभूतोंका आत्मारूप जोपरमेश्वरकास्वरूपहै ॥ तास्वरूपकूं वेदवेत्तापुरुष विराट् यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ अब याविराट्‌भगवान्‌तें लोकोंकेवृद्धिकरणेहारेपंचअग्नियोंकीउत्पत्ति कथनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ ताविराट्‌स्वरूपतें यहप्रसिद्धअग्नि तथाअधिदेवरूपस्वर्गलोकरूपअग्नि

उत्पन्नहोताभया ॥ केसाहेसोअग्नि आहवनीयगार्हपत्यादिरूपकरिके तथास्वर्गादिफलरूपकरिके अग्निहोत्रादिकसर्वकर्मोकेप्रवृत्तिका कारणहै ॥ और ताअग्निकेआदित्यरूपसमिधतैंआदिलेके ज्वाला धूम विस्फुलिंग अंगार इत्यादिकसर्वपदार्थ उत्पन्नहोतेभये ॥ तिन स्वर्गादिकपंचअग्नियोंकेसमिधादिकपदार्थ याआत्मपुराणकेपष्ठेअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं तेसर्वजानिलेणे ॥ और तास्वर्ग रूपअग्नितैंअनंतरचंद्रनामासोम उत्पन्नहोताभया ॥ केसाहेसोसोम ॥ सूर्यभगवान्‌तैं उत्पन्नहुई तथाकलारूपकरिकेपरिणामकूंप्राप्तहुई जेअग्निहोत्रकीआहुतियां हैं तिनआहुतियोंकरिके वृद्धिकूंप्राप्तहुआहै शरीरजिसका ॥ याकारणतैंहीं सोसोमरूपचंद्र अग्निहोत्रादिककर्मोंकूं करणेहारेकर्मीपुरुषोंकूंही प्राप्तहोवे है ॥ ऐसेद्रवीभावकूंप्राप्तहुएसोमतैं पर्जन्यनामादूसराअग्नि उत्पन्नहोताभया ॥ तामेघरूपपर्जन्यतैं वृष्टिद्वारा पृथ्वीरूपतीसरेअग्नितैं व्रीहियवादिकसर्वओषधिउत्पन्नहोतेभये ॥ और पुरुषरूपचतुर्थअग्निविषे अन्नरूपकरिकेप्राप्तहुएजे व्रीहियवादिकओषधिहैं ॥ तिनओषधियों तैं तापुरुषविषे वीर्यरूपरेत उत्पन्नहोताभया ॥ और सोवीर्यरूपरेत योषितरूपपंचमअग्निविषेप्राप्तहोइके गर्भरूपकरिकेप्रादुर्भावहोवे है ॥ जिसगर्भरूपकूंप्राप्तहुएवीर्यतैं पुत्रादिरूपअनेकप्रकारकीप्रजा उत्पन्नहोवे है ॥ जिसपुत्रादिरूपप्रजाकरिके लौकिकवैदिकसर्वव्यवहारोंकीसिद्धिहोवे है ॥ हेशौनक ॥ जिसपरमात्मादेवतैं सोपूर्वउक्तविराट् उत्पन्नहोवे है ॥ तिसी परमात्मादेवतैं श्वासप्रश्वासोंकीन्याई विनाहीप्रयत्नतैं यहऋग्आदिकवेद उत्पन्नहोतेभये हैं ॥ याकारणतैंहीं वेदवेत्तापुरुष तिनऋगादिक वेदोंकूं अपरब्रह्म यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और तिसीपरमात्मादेवतैं दर्शपौर्णमासादिकयज्ञ उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा ज्योतिष्टोमादिक क्रतु उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा तिसीपरमात्मादेवतैं तिनयज्ञादिककर्मोकेसिद्धकरणेहारे वसंतादिकऋतु उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा गोसुवर्णादिरूपदक्षिणा उत्पन्नहोतीभई हैं ॥ तथा कर्मकर्तापुरुषकेनानाप्रकारकेनियमरूपदीक्षा उत्पन्नहोतीभई हैं ॥ तथा संवत्सरादिरूपकाल उत्पन्नहोताभयाहै॥तथा स्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकीकामनावाला अधिकारीयजमानउत्पन्नहोताभयाहै ॥तथाल्ता विशेषप्रकारसरूप सोमद्रव्य उत्पन्नहोताभयाहै ॥ तथा स्वर्गलोककेशरीरकाआरम्भकरणेहारा सोमरूपफल उत्पन्नहोताभयाहै ॥ तथा स्वर्गादि कलोकसहित सूर्यभ

गवान् उत्पन्नहोताभयाहे ॥ इसतेंआदिलेके सर्वस्थूलसूक्ष्मपदार्थ तापरमात्मादेवतेंहीं उत्पन्नहोतेभयेहें ॥हेशौनक तिसपरमात्मादेवतेंहीं वसुआदिकदेवता उत्पन्नहोतेभयेहें ॥ तथा साध्यनामादेवता उत्पन्नहोतेभये हैं ॥ तथा मनुष्य पशु पक्षी उत्पन्नहोतेभये हैं ॥ तथा प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्रकारकेप्राण उत्पन्नहोतेभयेहें ॥ तथा व्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोतेभये हैं ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिकतप उत्पन्नहोतेभयेहें ॥ तथा आस्तिकतारूपश्रद्धा उत्पन्नहोतीभईहे ॥ तथा अवश्यभावीकर्मकाफलरूपसत्य उत्पन्नहोताभयाहे ॥ तथा यथार्थभाषणरूपसत्य उत्पन्नहोताभयाहे ॥ तथा उपस्थइंद्रियकासंयमरूपब्रह्मचर्य उत्पन्नहोताभयाहे ॥ तथा वेदविहितकर्मरूप विधि उत्पन्नहोताभयाहे ॥ और तिसीपरमात्मादेवतें सप्तप्राण तथासप्तअर्चिष तथासप्तसमिध तथासप्तहोम तथासप्तलोक यहसंपूर्ण उत्पन्नहोतेभये हैं ॥ तहां मस्तकविषेस्थितजे दोश्रोत्र दोचक्षु दोघ्राण एकवाक् यहसप्तइंद्रियेहें तिनोंकानाम प्राणहे ॥ और तिनप्राणों तें उत्पन्नभईजे सप्तप्रकारकीवृत्तियां हैं ॥तिनवृत्तियोंकानाम अर्चिषहे ॥ और तिनसप्तप्राणोंकेजोविषयहें ॥ तिनविषयोंकानाम समिधहे ॥ और तिनविषयोंका तिनप्राणोंविषेळयचिंतनरूपजेउपासनाहें ॥ तिनउपासनावोंकानाम होमहे ॥ और तिनप्राणोंकेरहणेकास्थानरूप जेगोलकहें ॥ ति गोलकोंकानामलोकहे ॥ यहसंपूर्ण सप्तसप्तपदार्थ तापरमात्मादेवतेंहीं उत्पन्नहोतेभयेहें ॥ और तिसपरमात्मादेवतेंहीं यहसप्तसमुद्र उत्पन्नहोतेभयेहें ॥ तथा हिमाचलादिकपर्वत उत्पन्नहोतेभयेहें ॥ तथा श्रीगंगादिकनदियांउत्पन्नहोतीभई हैं॥तथा वृक्षादिक स्थावरशरीर उत्पन्नहोतेभयेहें ॥ तथा मनुष्यादिकजंगमशरीर उत्पन्नहोतेभयेहें ॥ इसतेंआदिलेके भूतभविष्यत्वर्त्तमानकालविषेस्थित जितनाकोजगत्हे ॥ सोसर्वजगत् तापरमात्मादेवतेंहीं उत्पन्नहोताभयाहे॥इतनेंकरिके तापरमात्मादेवतेंजगत्कीउत्पत्तिरूपअध्यारोपका वर्णनकऱ्या ॥ अब ताजगत्काअपवादकरिके तापरमात्मादेवविषे अद्वितीयशुद्धरूपताकावर्णनकरेहें॥हेशौनक॥जोपरमात्मादेव यासर्वजगत्कूं उत्पन्नकरताभयाहे॥तिसपरमात्मादेवतें यहजगत् भिन्ननहीं हे॥किंतु यहसर्वजगत् तापरमात्मादेवरूपही हे ॥ केसाहेयहजगत् तप कर्म वेद यातीनस्वरूपहे ॥ इहां उपासनाकेफलकानाम तपहे ॥ और यागादिककर्मोंकेफलकानाम कर्म हे ॥ और तिनदोनोंकेप्रकाशक

रणेहारे अपौरुषेयवचनोंकानाम वेदहै ॥ सोयह तपकर्मादिरूपसर्वजगत् अमृतब्रह्मस्वरूपही है ॥ तापरब्रह्मतैंभिन्न किंचित्मात्रभीहैनहीं ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव एकअद्वितीयस्वरूपहै ॥ हेशौनक ॥ इसप्रकार सर्वत्रव्यापक तथासर्वकाआत्मारूप तथाउत्पत्तिनाशतैं रहित तथासर्वभूतप्राणियोंकेहृदयकमलविषेनिवासकरणेहारा जोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेजानेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष मैंअज्ञानीहूं याप्रकारकीअविद्याग्रंथितैंरहितहोवे है ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषों नैं तापरमात्मादेवकूं अवश्यकरिकेजानणा ॥ अब पूर्वउक्तउपदेशकरिके जिसअधिकारीपुरुषकूं ताअक्षरब्रह्मकाबोधनहींहोवे ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेप्रति दूसरीरोतितैं साधनोंसहित ताअक्षरब्रह्मकेबोधकावर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ जोअक्षरब्रह्म स्वप्रकाशतारूपकरिके सर्वदा आविर्भूतहै ॥ तथा बुद्धिरूपगुहाविषेस्थितहोणेतैं जोअक्षरब्रह्म अत्यंतसमीपहै ॥ तथाजोअक्षरब्रह्म सर्व तैं उत्कृष्टहै ॥ तथा जोअक्षरब्रह्म याअधिकारीशरीरविषेही प्राप्तहोवे है ॥ और जैसे रथकेचक्रविषेस्थितअरोंका नाभिअधिष्ठानहोवे है ॥ तैसे जोअक्षरब्रह्म प्राणोंका तथाइंद्रियोंका अधिष्ठानरूपहै ॥ तथा जोअक्षरब्रह्म आपणीसमीपतामात्रकरिके तिनप्राणइंद्रियोंकेसर्वव्यापारोंकाकारणरूपहै ॥ तथा सनातनहै ॥ तथा बुद्धिआदिकउपाधियोंतैंपरहै ॥ ऐसाअक्षरब्रह्मही याअधिकारीपुरुषों नैं आपणाआत्मारूपकरिकेजानणेयोग्यहै ॥ पुनःकैसाहैसोअक्षरब्रह्म ॥ मायाकेसंबंधतैं स्थूलसूक्ष्मरूपताकूंप्राप्तहुआभी वास्तवतैं तास्थूलसूक्ष्मभावतैंरहितहै ॥ तथा जोअक्षरब्रह्म विवेकीपुरुषोंकरिके प्रार्थनाकरणेयोग्यहै ॥ तथा जोअक्षरब्रह्म सर्वदेहधारीजीवोंकूं अत्यंतप्रियहै ॥ और जोअक्षरब्रह्म आपणेस्वयंज्योतिप्रकाशकरिके प्रकाशमानहै ॥ और जोअक्षरब्रह्म दुर्लक्ष्यपदार्थों तैं भी अत्यंतदुर्लक्ष्यहै॥ और जिसअक्षरब्रह्मविषे इंद्रादिकलोकपालोंसहित यहसर्वलोकस्थितहैं ॥ हेशौनक॥पूर्वजो तुमनेपूछाथा॥किसवस्तुकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवे है॥सोवस्तु यहअक्षरब्रह्मही है॥ याअक्षरब्रह्मकेज्ञानतैंही सर्वजगत्काज्ञानहोवे है ॥ इसीअक्षरब्रह्मकूं वेदवेत्तापुरुष प्राणइंद्रियरूपकरिकेकथनकरैहै ॥ तथा इसीअक्षरब्रह्मकूं स्वर्गरूपकरिके तथा मोक्षरूपकरिके कथनकरे हैं ॥ अब ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते ध्यानरूपउपायका वर्णनकरैहैं ॥ हेशौनक ॥

जैसे यालोकविषे कोइंशूरवीरपुरुष आपणेधनुषतें बाणकूंचढाइके किसीलक्ष्यवस्तुकूं वेधनकरेहै ॥ तैसे जोअधिकारीपुरुष धैर्यकरिके युक्तहै ॥ तथा आत्माकेविवेककरिकेयुक्तहै ॥ तथा कामक्रोधादिकशत्रुवोंकूं सर्वदा भयकोप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषनैं पूर्व उक्तअक्षरब्रह्मकूं लक्ष्यरूपकरिके वेधनकरणा ॥ हेशौनक ॥ महावाक्यरूपवेदांतहैंउदरविषेजिसके ऐसाजोओंकाररूपप्रणवमंत्रहै ॥ सोप्र णवमंत्रतो धनुष्यरूपहै ॥ और ध्यानकर्त्तापुरुषका जोशोधितकूटस्थआत्माहै ॥ सोआत्मा बाणरूपहै ॥ और मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार जोमहावाक्यकेअर्थकाचिंतनहै ॥ सोचिंतन ताप्रणवरूपधनुषका आकर्षणरूपहै ॥ और शुद्धब्रह्मलक्ष्यस्वरूपहै ॥ जिसशुद्धब्रह्मरूपल क्ष्यविषेप्राप्तहुआ यहकूटस्थआत्मारूपबाण तालक्ष्यस्वरूपहीहोवैहै ॥ हेशौनक ॥ जिसअक्षरब्रह्मविषे भूमिलोक अंतरिक्षलोक स्वर्गलोक यहतीनोंलोकस्थितहैं॥तथा जिसअक्षरब्रह्मविषे यहआकाशादिकपंचभूतस्थितहैं॥तथा जिसअक्षरब्रह्मविषे मन प्राण इंद्रिय आदिकभौतिक पदार्थ स्थितहैं ॥ तथा जिसअक्षरब्रह्मविषे यहऋगादिकवेद स्थितहैं ॥ जिनवेदोंकूं विद्वान्पुरुष शब्दब्रह्म यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ऐसा सर्वजगत्काअधिष्ठानरूपअक्षरब्रह्महीं याअधिकारीपुरुषोंकूंजानणेयोग्यहै ॥ तिसअधिष्ठानब्रह्मतैंभिन्न अनात्मपदार्थ याअधिकारीपुरुषों कूंजानणेयोग्यनहीं है ॥ हेशौनक ॥ जैसे याअधिकारीपुरुषकूं ताअक्षरब्रह्मतैंभिन्नअनात्मपदार्थ परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ तैसे ताअक्षरब्र ह्मतैंभिन्न अनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ काहेतें तेअनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचन केवल वाक् तालु कंठ इत्यादिकस्थानोंकूं परिश्रमकोहीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ तिसपरिश्रमतैंभिन्न दूसराकोईफल तिनवचनोंकाहैनहीं ॥ यातें जिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं एकवेदांतवचनोंतैंविना दूसरेअनात्मवस्तुकेप्रतिपादकवच नोंकूं कदाचित्भीनहींउच्चारणकरणा ॥ तथा तिनअनात्मवस्तुकेप्रतिपादकवचनोंका श्रवणभीनहींकरणा ॥ काहेतें एकवेदांतवचनोंकूं छोडिके दूसरेजितनेंकोवचनहैं ॥ तेसर्ववचन अनात्मरूपद्वैतकेहीप्रतिपादकहैं ॥ यातें तेवचन याअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूपअमृतकोप्रा प्तिकरेनहीं ॥ किंतु तिनअनात्मवस्तुकेप्रतिपादकवचनोंविषे कोईवचनतो यापुरुषकूं धर्मकोप्राप्तिकरेहैं ॥ और कोईवचनतो धनादिरूप

अर्थकीप्राप्तिकरेहैं ॥ और कोईवचनतो विषयसुखरूपकामकीप्राप्तिकरेहैं ॥ और कोईवचनतो केवलदुःखकीहीप्राप्तिकरे हैं ॥ याचारों तैं भिन्न दूसराकोईफल तिनवचनोंकाहोवेनहीं ॥ हेशौनक ॥ धर्म अर्थ काम यहतीनों यद्यपि विचारहीनपुरुषोंकूं सुखरूपहोइकेप्रतीतहोवेहैं ॥ तथापि विचारकरिकेदेखियेतो तेधर्मअर्थकाम आपणीअप्राप्तिकालविषे तथाआपणीप्राप्तिकालविषे तथाआपणेवियोगकालविषे याजीवोंकूं केवल दुःखकीहीप्राप्तिकरेहैं ॥यातैं तिनधर्मादिकोंकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी केवल दुःखकेहीकारणहैं॥याकारणतैं विद्वान्पुरुष तिनदुःखकीप्राप्तिकरणेहारेवचनोंकूं कदाचित्भी उच्चारणकरतेनहीं ॥ और तिनविद्वान्पुरुषोंकेसमीप जोकोईदूसरेपुरुषभी तिनअनात्मवचनोंकाउच्चारणकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूंभी तेविद्वान्पुरुष तिनअनात्मवचनोंके उच्चारणकरणे तैं निवारणकरे हैं ॥ यहश्रेष्ठपुरुषोंका आचार प्रसिद्धहै ॥ तिनश्रेष्ठपुरुषोंकेआचाररूपप्रमाणतैंभी तिनअनात्मवचनोंकेउच्चारणका निषेधहीप्राप्तहोवेहै॥हेशौनक॥केवल तिनश्रेष्ठपुरुषोंकेआचाररूपप्रमाणतैं तिनअनात्मवचनोंकानिषेधप्राप्तनहीं है ॥ किंतु साक्षात् श्रुतिभगवतीही तिनअनात्मवचनोंकानिषेधकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ तमेवैकंजानथआत्मानमन्यावाचोविमुंचथ ॥ अर्थयह ॥ हेअधिकारीपुरुषो वेदांतवचनोंकरिके तिसएकअद्वितीयआत्माकूंहीजानो ॥ तथा तिनवेदांतवचनोंतैंभिन्न अनात्मवस्तुकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनोंका परित्यागकरो ॥ १ ॥ कैसेहैं तेअनात्मवचन ॥ मृतकपुरुषोंकेवृत्तांतकथनकीन्याईं निष्फलहैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ काकस्यकतिवादंतामेषस्यांडंकियत्पलम् ॥ गर्दभेकतिरोमाणीत्येषामूर्खविचारणा ॥ अर्थयह ॥ काककेकितनेदंतहोवेहैं ॥ और मेषकाअंड कितनेंपलपरिमाण होवेहै ॥ और गर्दभविषे कितनेंरोमहोवे हैं ॥ याप्रकारकाविचार मूर्खपुरुषहीकरे हैं ॥ १ ॥ सोतिनमूर्खपुरुषोंकाविचार जैसे निष्फलहोवेहै॥तैसे अनात्मवचनोंकाउच्चारणकरणाभी निष्फलहीहोवेहै॥अब पूर्वकथनकरेहुएअर्थकूं पुनःस्पष्टकरिकेकथनकरेहैं॥हेशौनक ॥धनादिरूपअर्थकीप्राप्तिकरणेहारे जेवचनहैं॥तथा विषयभोगरूपकामकीप्राप्तिकरणेहारेजेवचनहैं॥तेदोनोंप्रकारकेवचन याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरेहैं॥काहेतैं सोअर्थ तथाकाम दोप्रकारकाहोवेहै॥एक अर्थकामतो शास्त्रतैंअविरुद्धहोवेहै॥और दूसरा अर्थकाम शास्त्रतैंविरुद्धहोवेहै ॥तहां

शास्त्रतैंअविरुद्धजेअर्थकामहैं ॥ तेअर्थकामतो आपणीअप्राप्तिकालविषे इच्छाकीउत्पत्तिद्वारा याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरेहैं॥और आपणी प्राप्तिकालविषे रक्षाकरणेकीचिंताद्वारा याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरेहैं॥और आपणेनाशकालविषे वियोगद्वारा याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ इसप्रकार तीनकालोंविषे तेअर्थकाम याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरेहैं ॥यातैं तिनअर्थकामोंकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी याजीवोंकेदुःखकाहीकारणहैं ॥ और दूसरेजे शास्त्रतैंविरुद्धअर्थकामहैं ॥ तेअर्थकामभीपूर्वकीन्याई आपणे अप्राप्तिकालविषे तथा आपणेप्राप्तिकालविषे तथाआपणेनाशकालविषे याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरेहैं॥हेशौनक॥इसप्रकार शास्त्रविहित अर्थकामविषे तथाशास्त्रनिषिद्धअर्थकामविषे दुःखकीकारणताकेसमानहुएभी ॥ तिनदोनोंविषेइतनीविशेषताभीहै ॥ शास्त्रविहित अर्थकामतो इसलोकविषे निंदाद्वारा दुःखकी प्राप्तिकरेनहीं॥औरपरलोकविषे नरककीप्राप्तिद्वारा दुःखकीप्राप्तिकरेनहीं॥और शास्त्रकरिकेनिषिद्धअर्थकामतो याजीवोंकूं इसलोकविषेतो निंदादिकोंकरिके दुःखकीप्राप्तिकरे है ॥ और परलोकविषे नरकादिकोंकरिके दुःखकीप्राप्तिकरे है ॥ यातैं तिनशास्त्रविरुद्धअर्थकामकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी याजीवोंकूं दुःखकेहीकारणहैं ॥ ऐसेदुःखकेदेणेहारेवचनोंकूं कोनबुद्धिमान्पुरुष उच्चारणकरेगा ॥ किंतु नहीं उच्चारणकरेगा ॥ हेशौनक ॥ जैसेअर्थकामकूं प्रतिपादनकरणेहारेवचन याजीवोंके दुःखकेहीकारणहैं॥ तैसे धर्मकेप्रतिपादकवचनभी या पुरुषोंके दुःखकेहीकारणहैं ॥ काहेतैं अग्निहोत्रादिककर्मों तैं उत्पन्नभयाजोधर्म है ॥ ताधर्मकरिके याजीवोंकूं जिनस्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्ति होवे है ॥ तेस्वर्गादिकसुख अनित्यहैं तथासातिशयतादोषवालेहैं ॥ यातैं आपणेवियोगकालविषे तथाआपणेवर्त्तमानकालविषे तेस्वर्गादिकसुख याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरेहैं ॥ यातैं ताअनित्यफलवाले धर्मकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्ति करे हैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ धर्मकीप्राप्तिकरणेहारे तथाअर्थकीप्राप्तिकरणेहारे तथाकामकीप्राप्तिकरणेहारे जितनेंकीवचनहैं ॥ तिसर्ववचन पूर्वउक्तरीतिसैं याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनैं तिनअनात्मवचनोंकाउच्चारण कदाचित्भीनहीं करणा ॥ किंतु जिनवेदांतवचनोंकरिके याअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिहोवे है ॥ तिनवेदांतवचनोंकाही याअधिकारीपुरुषनैं

सर्वदा अभ्यासकरणा ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै तहांश्लोक ॥ आसुप्तेरामृतेःकालं नयेद्वेदांतचिंतया॥दद्यान्नावसरंकिंचित् कामादीनांमनागपि ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष प्रातःकालतेंलेके सुषुप्तिपर्यंत तथाविद्याप्राप्तिकालतेंलेके मरणपर्यंत वेदांतशास्त्रके चिंतनकरिकेही कालकूंवितीतकरे ॥ तावेदांतविचारकरिके कामादिकविकारोंकू किंचित्कालपर्यंतभी चित्तविषे अवसरनहीं देवे॥१॥ हेशौनक ॥ जैसे यालोकाविषे सेतुरूपमार्गकरिकेही नदीआदिकोंकेपारकीप्राप्तिहोवे है ॥ तैसे आत्मज्ञानरूपसेतुकरिकेही यासंसारसमुद्रके मोक्षरूपपरंपराकीप्राप्तिहोवे है ॥ याकारणतें यहआनंदस्वरूपआत्मा मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिवासते सेतुकीन्याई स्थितहै ॥ तिसआत्माकेस्वरूपभूतआनंदकूंग्रहणकरिकेही यहविद्वान्पुरुष सर्वभयतेंरहितहोवे है ॥ तहांश्रुति ॥ आनंदंब्रह्मणोविद्वान्नबिभेतिकुतश्चनेति ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मकेस्वरूपभूतआनंदकूंजानिके किसीतेंभीभयकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ १॥हेशौनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्राणियोंकेहृदयाकाशविषेविराजमानहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं दहराकाश यानामकरिकेकथनकरेहै ॥ और जैसे रथचक्रकेनाभिविषे अरा स्थितहोवे हैं ॥ तैसे ताहृदयकमलविषे हितानामा शतसहस्रनाड़ियां स्थितहैं ॥ ऐसेहृदयकमलके अंतर सोआनंदस्वरूपआत्मा सर्वदा विचरे है ॥ कैसाहैसोआत्मादेव ॥ वास्तवतें जन्मतेंरहितहुआभी शरीरादिकउपाधियोंकेजन्मतें जन्मवालेकीन्याई प्रतीतहोवे है ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेजन्मतें आकाश जायमानहुआप्रतीतहोवेहै ॥ हेशौनक ॥ याप्रकार आत्माकेउपदेशकरिकेभी जोअधिकारीपुरुष किसीपापकर्मरूपप्रतिबंधकेवशतें मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार ता आत्माकेजानणेविषेसमर्थनहींहोवेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूं प्रणवमंत्रकरिकेचिंतनकरे॥हेशौनक॥इसप्रकार जो अधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूं प्रणवमंत्रकरिके चिंतनकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताध्यानरूपदीपककेबलतें प्रतिबंधकपापरूपअंधकारतें रहितहोइके ताब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताब्रह्मज्ञानकरिके सोविद्वान्पुरुष याअविद्यारूपसमुद्रके मोक्षरूपपरंपराकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेशौनक ॥ जैसे ताआत्माके ध्यानकरिकेप्रतिबंधकपापकीनिवृत्तिहोवेहै तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुकेआशीर्वादकरिके तथापुनःपुनःउपदेशकरिकेभी तिनपापकर्मरूपप्रतिबंधकों

कोनिवृत्तिहोवे है ॥ याकारणतैंही महात्मादयालुगुरु आपणेशिष्योंकेप्रति हेशिष्यो तुमारेकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे सर्वविघ्नोंकोनिवृत्ति होवे याप्रकारकाआशीर्वाददेके वारंवार आत्माकाउपदेशकरे हैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनें आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते ब्रह्मवेत्तागुरुकीप्रसन्नता अवश्यकरिकेसंपादनकरणी ॥ अब तापरमात्मादेवकेस्वरूपकावर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ जोपरमात्मादेव यासर्वजगत्कूं सामान्यरूपकरिके तथाविशेषरूपकरिके जाने है ॥ और जिसपरमात्मादेवको यहजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयरूपविभूति सर्व लोकविषेप्रसिद्धहे सोपरमात्मादेव याब्रह्मपुरविषेस्थितदिव्यव्योमविषेस्थितहे॥हेशौनक॥जैसे उत्पन्नहुआघट आकाशकरिकेपूर्णहोवे है॥ तैंसे उत्पन्नहुआ यह शरीर ब्रह्मकरिकेपूर्णहोवे है॥याकारणतैं श्रुतिभगवती याशरीरकूं ब्रह्मपुर यानामकरिकेकथनकरे है॥ताब्रह्मपुरविषेस्थित जोदिव्यव्योमहे सोदिव्यव्योम स्वयंप्रकाशआत्मारूपही है ॥ तिसीदिव्यव्योमकूं श्रुतिविषे दहराकाश यानामकरिकेकथनकऱ्याहे ॥ ऐसेआपणेस्वरूपविषेहीसोपरमात्मादेवस्थितहे ॥ तहांश्रुति ॥ सभूमाकुत्रप्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि ॥ अर्थयह ॥ सोभूमाआत्मा किसविषेस्थितहे याप्रकारकीजिज्ञासाकेहुएसोभूमाआत्मा आपणेस्वरूपभूतमहिमाविषेस्थितहे यहउत्तर श्रुतिनें कथनकऱ्याहे ॥अब अज्ञातआत्माका तथा ज्ञातआत्माकास्वभाववर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ जिसकालविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा अज्ञातरहे है ॥तिसकालविषे यहआत्मादेव मनकेतादात्म्यअध्यासतैं मनोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ प्राणोंकूं तथादेहकूं तथाइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारोंविषेप्रवृत्तकरे है॥तथा जबपर्यंत ब्रह्मात्मज्ञानकीप्राप्तिनहींहोवे है ॥ तबपर्यंत सोमनोमयआत्मा सर्वजगत्केबीजभूतमूलाज्ञान विषे तादात्म्यअध्यासकरिकेस्थितहोवे है ॥ और जिसकालविषेब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्न अधिकारीजन याआत्मादेवके वास्तवस्वरूपकूं जाने हैं ॥ तिसकालविषे तेअधिकारीजन याआत्मादेवकूं परमानंदस्वरूपकरिकेदेखे हैं ॥ तथा जन्ममरणतैंआदिलेकेजितनेंकोसंसारसंबंधीधर्म है ॥ तिनसर्वधर्मोंतैंरहित देखेहैं ॥ तथा ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकत्रिपुटीरूपद्वैततैंरहित देखे हैं ॥ अब ताआत्मज्ञानकेफलकावर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ जोअधिकारीपुरुष तापरब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेजाने है ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूं याप्रकारकेफलकीप्राप्ति श्रुतिनें कथनकरी है ॥ तहांश्रुति ॥

भिद्यतेहृदयग्रंथि श्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ अर्थयह ॥ कामक्रोधादिकोंकाकारणरूप जोआत्मअ
नात्माकाअध्यासहै ॥ जोअध्यास याजीवोंकूं सर्वदुःखोंकीप्राप्तिकरे है ॥ ताअध्यासकानाम हृदयग्रंथिहै ॥ और त्वंपदार्थजीवविषे संसा
रीपणा तथाअल्पज्ञता देखिके और तत्पदार्थब्रह्मविषे असंसारीपणा तथासर्वज्ञता देखिके यहजीव ब्रह्मरूपहै अथवाब्रह्मतैंभिन्नहै इत्या
दिकजे आत्माविषयकअसंभावनाहैं ॥ तिनोंकानाम संशयहै ॥ और जिनपुण्यपापकर्मोंनें यहशरीरदियाहै ॥ तिनप्रारब्धकर्मोंकूंछो
डिके ॥ जितनेंकोसंचितक्रियमाणरूप पुण्यपापकर्म हैं ॥ जिनपुण्यपापकर्मोंकरिके यहजीव अनेकशरीरोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ तिनसंचितक्रि
यमाणकर्मोंकानाम कर्म है ॥ तेसर्वकर्म तथातेसर्वहृदयग्रंथि तथातेसर्वसंशय सर्वात्मारूपब्रह्मकेसाक्षात्कारहुए निवृत्तहोइजावे हैं ॥ १ ॥
हेशोनक॥जिसआत्मसाक्षात्कारकरिके संशयकर्मादिकोंकीनिवृत्तिहोवेहै॥तिसीआत्मसाक्षात्कारकूं विद्वान्पुरुष श्रवणादिकसाधनोंकाफल
रूपकहे हैं॥जिसआत्मसाक्षात्कारकेहुए यहसर्वदुःखकेकरणेहारीअविद्या निवृत्तहोइजावे है॥हेशोनक॥जिसआत्माकेसाक्षात्कारतैं यहकार्य
सहितअविद्यानिवृत्तहोवेहै॥सोआत्मादेव कैसाहै॥अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यापंचकोशोंविषे जोअंत्यकाआनंदमय
कोशहै ॥ ताआनंदमयकोशविषे पुच्छप्रतिष्ठाभूतब्रह्मरूपकरिकेस्थितहै ॥ और सोआत्मादेव आवरणकरणेहारी मायारूपरजतैंरहितहै ॥
याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं विरज यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और सोपरमात्मादेव तामायाकेकार्यरूपकलावोंतैंरहितहै ॥
याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं निष्कल यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और सोपरमात्मादेव स्वप्रकाशरूपहै ॥ तथा लोकप्र
सिद्धसूर्यचंद्रमादिकज्योतियोंकाभी प्रकाशकरणेहाराहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं ज्योतिषांज्योति यानामकरिकेक
थनकरे है ॥ और सोपरमात्मादेव अद्वितीयतारूपकरिके परमआनंदस्वरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शुभ्र याना
मकरिकेकथनकरे है ॥ अब ताआत्मादेवविषे स्वप्रकाशताकावर्णनकरे हैं ॥ हेशोनक ॥ शास्त्रवेत्ताविद्वान्पुरुष ताआत्मादेवविषे याप्र
कार स्वप्रकाशता वर्णनकरे हैं ॥ यालोकविषेप्रसिद्धजे सूर्य चंद्रमा तारागण विद्युत् अग्नि यहवाह्यतैजसपदार्थ हैं ॥ तथा अंतर

स्यितजे मनबुद्धिआदिकतेजसपदार्थ हैं ॥ तिनतेजसपदार्थोंकरिकेसहकृतहुआ जोतत्व स्फुरणहोवेनहीं ॥ किंतु जोतत्व तिनतेजसपदा
र्थोंकीसहायतातैंविना स्वतःहीस्फुरणहोवैहै ॥ तथा जिसतत्वकेप्रकाशकूंअनुसरणकरिकेही यहजडचेतनरूपसर्वजगत् प्रकाशमानहो
वैहै ॥ तिसआत्मतत्वकूं विद्वान्पुरुष स्वप्रकाशकहैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे याळोकविषे ॥ तातंमच्छंतमनुगच्छतिपुत्रः ॥ अर्थ
यह ॥ गमनकरतेहुएपिताकूं अनुसरणकरिकेपश्चात् पुत्र गमनकरैहै ॥ यावाक्यतैं पिताकोगमनरूपक्रियातैं पुत्रकीगमनरूपक्रिया भिन्न
प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे ॥ तमेवभातमनुभातिसर्वं ॥ याश्रुतिवचनतैंभी ताआत्माकेप्रकाशतैं याजगत्काप्रकाश भिन्नहींसिद्धहोवेगा ॥ समा
धान ॥ हेशोनक ॥ जैसे पिताकोगमनरूपक्रियातैं पुत्रकोगमनरूपक्रिया भिन्नहोवैहै ॥ तैसे आत्माकेप्रकाशतैं याजगत्काप्रकाशभिन्नहोवे
है ॥ याअर्थविषे ताश्रुतिका तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु ताश्रुतिका यहतात्पर्य है ॥ जैसे तपाहुआलोह अग्निकरिकेप्रकाशितहुआही प्रका
शमानहोवैहै ॥ ताअग्नितैंविना स्वतःप्रकाशमानहोवेनहीं ॥ तैसे तापरमात्मादेवकेप्रकाशकरिके भासमानहुआयहजगत् प्रकाशमानहो
वे है ॥ ताआत्मादेवकेप्रकाशतैंविना स्वतः सोजगत् ॥ प्रकाशमानहोवेनहीं इसप्रकार आपणेप्रकाशकरिके सर्वजगत्कूंप्रकाशमानकरणे
हारा जोआनंदस्वरूपआत्माहै॥ताआत्मादेवकूं विद्वान्पुरुष स्वप्रकाश यानामकरिकेकथनकरेहैं॥यहहीस्वप्रकाशआत्मा सूर्यादिकबाह्य
ज्योतियोंका तथाबुद्धिआदिकअंतर्ज्योतियोंका प्रकाशकहै ॥ अब तास्वप्रकाशआत्माको सर्वात्मरूपतावर्णनकरेहैं ॥ हेशोनक॥सोस्वप्र
काशज्योतिब्रह्म पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर अधःऊर्ध्व इत्यादिकसर्वदिशावोंविषेव्यासहै ॥ तथा सोब्रह्मही पूर्वादिकदिशासहित सर्वविश्वरू
पहै ॥ तथा सोपरब्रह्मही भूतभविष्यतव र्तमान यातीनकालरूपहै ॥तथा सोपरब्रह्मही स्थूलसूक्ष्मकारणात्मकसर्वजगतरूपहै ॥ तापरब्रह्म
तैंभिन्न किंचित्मात्रभीवस्तुनहीं है ॥ अब जीवब्रह्मकाअभेदरूपमहावाक्यार्थकेनिरूपणकरणेवासते प्रथम तत्त्वंपदार्थोंकाशोधन निरू
पणकरेहैं ॥ हेशोनक ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी तिनश्रुतिवचनोंतैं तामहावाक्यार्थरूप ब्रह्मात्माकूंनहींजानिसके ॥ तभी ताअधिकारीशि
ष्यकेप्रति सोब्रह्मवेत्तागुरु याप्रकार तत्त्वंपदार्थकाकथनकरे॥शरीररूपअश्वत्थकेवृक्षविषे जीवईश्वररूपदोपक्षीरहेहैं॥कैसेहैंतेदोनोंपक्षी ॥

सर्वदा एकंठेरहेहैं ॥ तथा सत्चित्आनंदरूपताकरिकै समानस्वभाववाले हैं ॥ तथा याशरीररूपवृक्षकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिनदोनोंपक्षियोंविषे एकपक्षीतो याशरीररूपवृक्षकेपुण्यपापकर्मरूपपुष्पों तैं उत्पन्नहुए सुखदुःखरूपफलकूंभोगताहुआ जीवसंज्ञाकूंप्राप्त होवे है ॥ सोभोक्ताजीव त्वंशब्दकाअर्थरूपहै ॥ और दूसरापक्षीतौं तासुखदुःखरूपकर्मकेफलकूंनहींभोगताहुआ केवल ताकर्मकेफलकूं प्रकाशहीकरेहै ॥ याकारणतें सोअभोक्तापक्षी ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवेहै ॥ सोसर्वत्रव्यापकअद्वितीयईश्वर तत्पदकाअर्थरूपहै ॥ हेशौनक ॥ जिसशरीररूपवृक्षविषे सो ईश्वररूपपक्षी निवासकरेहै ॥ तिसीशरीररूपवृक्षविषे यहजीवरूपपक्षीभी निवासकरेहै ॥ परंतु यहजीवरूप पक्षी आपनेकूं पुण्यपापकर्मोंकाकर्तामानिकै तथातिनपुण्यपापकर्मों के फलकाभोक्तामानिकै दीनताकूंप्राप्तहुआ सर्वदा शोककूंप्राप्तहो वेहै ॥ और सो ईश्वररूपपक्षी ताकर्तृत्वभोक्तृत्वधर्म नहीं है ॥तैसे तात्वंपदार्थजीवविषेभी वाकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ हेशौनक ॥ जैसे ता तत्प दार्थरूपपरमात्मादेवविषे कर्तृत्वभोक्तृत्वधर्म नहीं है ॥ तैसे तात्वंपदार्थजीवविषेभी वास्तवतें कर्तृत्वभोक्तृत्वधर्म नहीं है ॥ किंतु अंतःकर णादिकउपाधियोंकेसंबंधतेंही याजीवविषे सोकर्तृत्वभोक्तृत्वधर्म प्रतीतहोवे है॥यातें जिसकालविषे यहत्वंपदार्थरूपजीवात्मा ता तत्पदार्थ रूप ईश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकेदेखेहै ॥ तिसकालविषे यहजीवात्मा ता परमात्मादेवकेअद्वितीयतारूपमहिमाकूंप्राप्तहोवे है ॥ कैसा हैसोतत्पदार्थरूपपरमात्मादेव ॥वास्तवतें यात्वंपदार्थजीवतेंअभिन्नहुआभी उपाधिकेसंबंधतें भिन्नहोइकेप्रतीतहोवेहै ॥ तथा आनंदकास मुद्रहै ॥ याकारणतेंही सोपरमात्मादेव याजीवोंके परमप्रेमकाविषयहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवके अद्वितीयतारूपमहिमाकूंप्राप्तहोइके यहजी वात्मा सर्वदुःखोंतेंरहितहोवे है ॥ हे शौनक ॥ यहत्वंपदार्थरूपजीवात्मा जिसकालविषे तातत्पदार्थरूपस्वयंज्योतिपरमात्मादेवकूं आपणा आत्मारूपकरिकेदेखेहै ॥ तिसकालविषे यहजीवात्मा नामरूपतेंरहितहुआ तथाविद्वान्‌भावकूंप्राप्तहुआ तापरमात्मादेवकेअद्वितीयभावकूं प्राप्तहोवेहै ॥ हेशौनक॥यहपरमात्मादेव प्राणउपहितहिरण्यगर्भद्वारा सर्वव्याष्टिभूतोंविषेव्यापकहै ॥तथा जीव ईश्वर जगत् इत्यादिकभेदवि शिष्टतारूपकरिकै कल्पितहुएकीन्याईं प्रतीतहोवे है ॥ ऐसेशुद्धपरमात्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष जभी आपणाआत्मारूपकरिकेजानैहै ॥

तभी यहअधिकारीपुरुष अतिवादी यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवे हे ॥ हेशौनक॥ताविद्वान्पुरुषविषे जोअतिवादीपणाहे ॥ताअतिवादीपणेका यहस्व
रूप वेदवेत्तापुरुष कथनकरे हैं ॥ जैसे बालक नानाप्रकारकीक्रीडाकरे हे ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयआत्माविषे सर्वदा क्रीडाक
रेहे॥ और जैसे युवानपुरुष आपणीयुवानस्त्रीविषेही रतिकरेहे ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयआत्माविषेही रतिकरे हे ॥ और जैसे
यज्ञकर्त्तापुरुष नानाप्रकारकीक्रियाकरेहे ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषकी नानाप्रकारकीक्रियाभी ताअद्वितीयआत्माविषेहीहोवे हे ॥ इसप्रकार
जोविद्वान्पुरुष सर्वदा आत्माकाहींचिंतनकरेहे ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं वेदवेत्तापुरुष अतिवादीयानामकरिकेकथनकरेहैं॥ सोअतिवादीवि
द्वान् सर्वब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषेश्रेष्ठहे ॥ अब जिसब्रह्मविद्याकरिके सोअतिवादीपणा प्राप्तहोवे हे ॥ ताब्रह्मविद्याकेसाधनोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हे
शौनक ॥ सत्य तप ब्रह्मचर्य यातीनसाधनोंसहित जोपूर्वउक्ततत्त्वंपदार्थकाशोधनहे ॥ तातत्त्वंपदार्थकेशोधनरूपज्ञानकरिकेही याअ
धिकारीपुरुषोंकूं सोमहावाक्यकाअर्थरूपआत्मादेव प्राप्तहोवे हे ॥ जिसआत्मादेवकूं कामक्रोधादिकदोषों तैं रहितसंन्यासी सर्वदा आ
पणेचित्तविषेदेखेहे ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सत्यादिकसाधनोंसहित तत्त्वंपदार्थकाशोधन ताआत्मज्ञानविषेकारणहे ॥ तैसे सोसंन्या
सभी ताआत्मज्ञानविषेकारणहे ॥ इहां मिथ्यावचनकेपरित्यागकरणेकानाम सत्यहे ॥ और मनसहितश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीएकाग्रताका
नाम तपहे ॥ और उपस्थइंद्रियकेसंयमकानाम ब्रह्मचर्य हे ॥ अब तासत्यकीउत्कृष्टता वर्णनकरेहैं ॥ हेशौनक ॥ सोमिथ्यावचन
कापरित्यागरूपजोसत्यहे ॥ सोसत्य ताब्रह्मज्ञानकाकारणहोणे तैं सर्वसाधनों तैंउत्कृष्टहे ॥ यातैं सोसत्य इसभूमिलोककेसुखकाभीकारण
हे ॥तथा स्वर्गलोककेसुखकाभीकारणहे ॥ तथा ब्रह्मलोककेसुखकाभीकारणहे ॥ याकेविषेकोईआश्चर्यनहीं हे ॥ अब ताआत्माकेदु
र्विज्ञेयताकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशौनक ॥ जोसत्यब्रह्म याअधिकारीपुरुषोंकूं महावाक्यजन्यज्ञानकरिके प्राप्तहोवे हे ॥ सो
सत्यब्रह्म आकाशादिकमहान्पदार्थोंकाभी आधाररूपहे ॥ यातैं सोसत्यब्रह्म महान्पदार्थों तैंभी अत्यंतमहान्हे ॥ और सोपरब्रह्म पर
माणुआदिकसूक्ष्मपदार्थोंकेभी अंतरव्यापकहे ॥ यातैं सोपरब्रह्म सूक्ष्मपदार्थों तैंभी अत्यंतसूक्ष्महे ॥ और सोपरब्रह्म स्वप्रकाशतारूप

करिके सर्वलोकतैंविलक्षणहै ॥ याकारणतैं सोपरब्रह्म दिव्यरूपहै ॥ और सोपरब्रह्म मनकरिकेभीचिंतनकऱ्याजावैनहीं ॥ याकारणतैं सोप रब्रह्म अचिंत्यरूपहै ॥ और सोपरब्रह्म बहिर्मुखपुरुषोंकूं अत्यंतदुर्विज्ञेयहै॥यातैं सोपरब्रह्म दूरपदार्थों तैंभी अत्यंतदूरहै ॥ और सोपरब्रह्म साधनसंपन्नअंतर्मुखपुरुषोंकूं अत्यंतसुलभहै ॥ यातैं सोपरब्रह्म अत्यंतसमीपपदार्थों तैंभी अत्यंतसमीपहै ॥ और तिसपरब्रह्मविषे मनस हितनेत्रादिकइंद्रिय प्रकाशकरिसकतेनहीं ॥ यातैं सोपरब्रह्म सत्चित्रूपकरिकेंसर्वत्रभासमानहुआभी प्रत्यक्अद्वितीयरूपकरिके लोक विषे प्रतीतहोवैनहीं ॥ और सोपरब्रह्म सर्वजीवोंकेबुद्धिरूपगुहाविषेस्थितहै ॥ तथा सर्वपदार्थोंका प्रकाशकहै ॥ ऐसापरब्रह्म एकमहावा क्यजन्यब्रह्मात्मज्ञानतैंबिना दूसरेकिसीउपायकरिके प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु एकमहावाक्यजन्यब्रह्मात्मज्ञानकरिकेही याअधिकारीपुरुषोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकेप्राप्तहोवै है ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ सर्वइंद्रियोंकूं धारणकरणेहाराजोप्राणहै॥सोप्राणभी चित्तकेसहित जिसप रमात्मादेवविषेस्थितहै ॥ ऐसासर्वप्राणइंद्रियादिकोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे प्रेरणाकरणेहारा सोपरमात्मादेव यादेहधारीजीवोंकूं जानणे विषेसुगमनहीं है ॥ किंतु अत्यंतदुर्लभहै ॥ हेशौनक ॥ यहआत्मादेव यद्यपि दुर्लभहै ॥ तथापि ताआत्मादेवकेप्राप्तिका एकउपाय शास्त्र वेत्तापुरुषों नें कथनकऱ्याहै ॥ सोउपाययहहै ॥ जिसअधिकारीपुरुषका चित्त रागद्वेषादिकदोषोंतैंरहितहै॥ तथा वेदांतशास्त्रकेसंस्कारोंक रिकेयुक्तहै ॥ ऐसेशुद्धचित्तकरिके यहश्रवणादिकसाधनसंपन्नअधिकारीपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ एषोऽणुरात्माचेतसावेदितव्यः॥अर्थयह ॥ यहदुर्विज्ञेयआत्मा शुद्धचित्तकरिकेजानणेयोग्यहै ॥ हेशौनक ॥ जोशुद्धचित्तवालापुरुष आ पणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिके साक्षात्कारकरे है ॥ सोविद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपहीहोवै है ॥ यातैं सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष यासर्वजगत्कीउत्पत्ति स्थितिलयकरणेविषेभी समर्थहोवै है ॥ और सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुषही यासर्वजीवोंकेप्रति पुण्यपापकर्मके सुखदुःखरूपफलकादेणेहाराहै॥ तथा याजीवोंकूं प्राप्तहोणेहारेजितनेंकोभोगहैं ॥ तेसर्वभोग ताविद्वान्पुरुषकीआज्ञाकरिकेही वर्तते हैं॥तथा याजीवोंकेसर्वप्राणबुद्धिइंद्रिया दिकभी ताविद्वान्पुरुषकीआज्ञाकरिकेही वर्त्तते हैं ॥ और सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष याजीवोंकूं शापदेणेविषे तथाअनुग्रहकरणेविषेभी

सर्वदा समर्थहै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषके पूजनअर्चनकरणे तें यहपुरुष पुण्यवान्होइके सुखकूंप्राप्तहोवे है॥और ताब्रह्मवेत्ताकीअवज्ञाकरिके
पापवान्हुयायहपुरुष सर्वदा दुःखकूंप्राप्तहोवे है ॥ यातें जिसपुरुषकूं पुत्रधनादिकपदार्थरूपऐश्वर्यकेप्राप्तिकीभीइच्छाहोवे ॥ सोसकामपुरु
षभी ताब्रह्मवेत्तापुरुषका सर्वदा पूजनअर्चनकरे ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकीअवज्ञाकूं यहबुद्धिमान्पुरुष मनकरिकेभीनहींकरे ॥ तथा स्वप्न
विषेभी ताअवज्ञाकूंनहींकरे ॥ ऐसेश्रद्धावान्पुरुषकूं मनवांछितपदार्थोंकोप्राप्तिहोवे है ॥ तहांश्रुति ॥ आत्मज्ञंह्यऽर्चयेद्भूतिकामः ॥ अर्थ
यह ॥ धनादिकऐश्वर्यताकीकामनावालापुरुष ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषका पूजनअर्चनकरे ॥तापूजनअर्चनकरिके तिसपुरुषकूं सर्वमनवांछित
पदार्थोंकीप्राप्तिहोवे है ॥ हेशौनक ॥ जेविवेकीपुरुष निष्कामहोइके ताब्रह्मवेत्तापुरुषकासेवनकरेहैं ॥ तेविवेकीपुरुष सर्वदुःखोंतेंरहितपर
ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ काहेतें सोब्रह्मवेत्तापुरुष याशरीरविषेस्थितहुआभी ताआनंदस्वरूपब्रह्मकूंहीं साक्षात् आत्मारूपकरिकेजाने है॥
तथा तापरब्रह्मकोही अभेदरूपकरिकेउपासनाकरे है ॥तथा तापरब्रह्मविषेही अभेदरूपकरिकेस्थितहोवे है॥ ऐसेब्रह्मरूपब्रह्मवेत्तापुरुषकी
जेअधिकारीजन श्रद्धापूर्वक भक्तिकरे हैं ॥ तेभक्तजनभी ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेअनुग्रहतें ब्रह्मवेत्ताहोइके तिसब्रह्मवेत्तापुरुषके समानताकूं
प्राप्तहोवे हैं ॥ यातें ताब्रह्मभावरूपमोक्षकोप्राप्तिवास्ते याअधिकारीपुरुषों नें निष्कामहोइके ताब्रह्मवेत्तापुरुषकासेवनकरणा ॥ अब सका
मताकीनिंदाकरिके निष्कामताकीश्रेष्ठता वर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ जेसकामपुरुष स्त्रीपुत्रधनादिकविषयोंकेप्राप्तिकीकामनाकरे हैं ॥ ते
सकामपुरुष नानाप्रकारकेशरीरोंकूंग्रहणकरिके तिसतिसशरीरविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातें यहजान्याजावे है ॥ तेकाम
नाहीं सर्वदुःखोंकाकारणहैं ॥ हेशौनक ॥ जेविवेकीपुरुष तिनसर्वकामनावोंकापरित्यागकरिके ब्रह्मात्मज्ञानकूंप्राप्तहोवे हैं॥तेनिष्कामपुरुष
इसलोकविषे तथापरलोकविषे किंचित्मात्रभी दुःखकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ यातें यहनिष्कामताही सर्वसुखकेप्राप्तिकाकारण है ॥ ऐसीनिष्का
मताकूं याअधिकारीपुरुषनें अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ अब ताआत्मज्ञानकेप्राप्तिकाप्रधानसाधन निरूपणकरे हैं ॥हेशौनक॥यहआनं
दस्वरूपआत्मादेवयाअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेअनुग्रहतेंविना केवळ वेदोंकेअध्यापनकरावणेकरिकेभी प्राप्तहोवेनहीं॥तथा तिनवे

दों के अध्ययनकरिकेभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा तीक्ष्णबुद्धिकरिकेभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु केवल ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंहीं सोआत्मादेव याअधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोवे है ॥ हेशौनक ॥ ब्रह्मात्मज्ञानकरिके ब्रह्मरूपताकूंप्राप्तभयाजोगुरुहै ॥ सोब्रह्मवेत्तागुरु जिसशिष्यऊपर अनुग्रहकरे है ॥ तिसशिष्यऊपर सोपरब्रह्मभी अनुग्रहकरे है ॥इहां ताशिष्यकेचित्तविषे आपणेअद्वितीयस्वरूपकाप्रादुर्भावकरणा यहही तापरब्रह्मकाअनुग्रहहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताब्रह्मात्मज्ञानकीप्राप्तिवास्ते ताब्रह्मवेत्तागुरुकेअनुग्रहकूंअवश्यकरिकेसंपादनकरणा॥ तहांश्रुति ॥ नायमात्माप्रवचनेनलभ्यो नमेधयानबहुनाश्रुतेन ॥ यमेवैषवृणुतेतेनलभ्य स्तस्यैषआत्मावृणुतेतनूंस्वां याश्रुतिका यहपूर्वउक्तअर्थहीजानिलेणा ॥ अब ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे सहकारीसाधनोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ कामक्रोधादिकशत्रुवोंकरिके नहींदबायाहुआजो मनइंद्रियादिकोंकाधैर्यहै ॥ ताधैर्यकानाम बलहै ॥ ताबलतैंरहितपुरुषकूंभी यहआत्मादेव प्राप्तहोइसकेनहीं ॥ किंतु ताबलवान्पुरुषकूंहीं यहआत्मादेव प्राप्तहोवे है ॥ हेशौनक ॥ ताधैर्यरूपबलतैंरहितपुरुषोंकूं केवल आत्माकेप्राप्तिकाअभाव नहींहोवे है॥ किंतु तेधैर्यरूपबलतैंरहितपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे दुःखकूंहीं प्राप्तहोवे हैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं ताधैर्यरूपबलकूंभी अवश्यकरिकेसंपादनकरणा हेशौनक ॥ जैसे ताबलकेअभावतैंयहआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं तैसे प्रमादतैंभी यहआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा किसीआश्रमतैंरहितपालेहरूपतपतैंभी यहआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं ॥ इहां विषयोंकेसमीपप्राप्तहुए जोधैर्यकानाशहोइजाणाहै याकानाम प्रमादहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं अप्रमादयुक्तधैर्य तैं तथास्वाश्रमधर्मसहकृततप तैं ब्रह्मात्मज्ञानकी प्राप्तिहोवे है॥ताब्रह्मात्मज्ञानकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिहोवे है ॥ अब ताब्रह्मात्मज्ञानके जीवन्मुक्तिआदिक फलोंकीव्यवस्थाका निरूपणकरेहैं॥ हेशौनक ॥ पूर्व जेजेमहात्मामुनिजन याआनंदस्वरूपप्रत्यक्आत्माकूं साक्षात्कारकरिके ताआत्मा स्वरूपआनंदविषे मग्नहोतेभये हैं॥तेमुनिजनताआत्मज्ञानकालविषेही ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोतेभये हैं॥ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइके तेमुनिजन पुनः यासंसारविषेप्राप्तहोवैंनहीं॥और जिसपरमहंससंन्यासियोंकूं ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छारूप प्रतिबंधकेवशतैं इसजन्मविषे ताब्रह्मसाक्षात्का

रकीप्राप्ति नहींहोवे है ॥ तिनसंन्यासियोंकूंभी ब्रह्मलोकविषेजाइके सोब्रह्मज्ञान अवश्यकरिके प्राप्तहोवे है ॥ हेशौनक ॥ जिनसंन्यासि
योंनें इसजन्मविषे महावाक्यरूपवेदांतवचनोंकेअर्थका भलीप्रकारसेंविचारकऱ्याहै ॥ तथा जिनसंन्यासियोंकाअंतःकरण रागद्वेषादिक
दोषोंतेंरहितहोइके शुद्धहुआहै ॥ ऐसेसंन्यासीही ताब्रह्मलोककूंप्राप्तहोइके ताहिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेमरणकालविषे ताब्रह्माकीन्याई अद्वि
तीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ हेशौनक ॥ इसलोकविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे अथवा किसीअन्यलोकविषे यहब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष जभी
प्रारब्धकर्मकूंभोगिके विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी याविद्वान्पुरुषके देवदत्तादिकनामोंकूंछोडिके दूसरेप्राणादिकपंचदशकला आप
णेआपणेकारणोंविषेलयकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तेपंचदशकलायहहैं ॥ श्लोक ॥ प्राणाश्रद्धाखादिभूत पंचकंचेंद्रियंमनः ॥ अन्नंवीर्यंतपोमंत्राः
कर्मलोकाश्चताः कलाः ॥ अर्थयह ॥ प्राण १ श्रद्धा २ आकाश ३ वायु ४ तेज ५ जल ६ पृथिवी ७ वाकादिकइंद्रिय ८ मन ९ अन्न१०
वीर्य ११ तप १२ मंत्र १३ कर्म १४ लोक १५ यहपंचदशकलाहोवे हैं ॥ १ ॥ और ताब्रह्मवेत्तापुरुषके जेअध्यात्मरूपवाकादिकइंद्रि
योंकेअग्निआदिकदेवताहैं ॥ तेअग्निआदिकदेवता आपणेआपणेअधिदेवरूपकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेशरीरविषेस्थित जोबु
द्धिविशिष्टविज्ञानमयनामाजीवहै ॥ सोविज्ञानमयजीव शुद्धपरमात्मादेवविषेलयभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ इसप्रकार सर्वकार्यकारणरूपउपाधि
केलयहुएतेंअनंतर सोविद्वान्पुरुष एकअद्वितीयब्रह्मरूपकरिकेस्थितहोवे है ॥ हेशौनक ॥ जैसे यालोकविषे पूर्वादिकसर्वदिशावोंविषे
सहस्रनदियां विद्यमानहैं ॥ तेसर्वनदियां समुद्रकूंप्राप्तहोइके आपणेनामरूपकापरित्यागकरिदेवे हैं ॥ तैसे यहविज्ञानमयपुरुषभी आपणेना
मरूपकापरित्यागकरिके ताअद्वितीयब्रह्मविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेशौनक ॥ जैसे ताब्रह्मवेत्तापुरुषके प्राणादिकपंचदशकलावोंकाल
यहोवे है ॥ तैसे तानामरूपषोडशवींकलाकाभीलयहोवे है ॥ तथापि श्रुतिविषेजो नामकूंछोडिकेप्राणादिकपंचदशकलावोंकालयकथनक
ऱ्याहै ॥ ताकायहअभिप्रायहै ॥ यद्यपि शुकवामदेवादिकमहान्पुरुष पूर्वमुक्तहोइगयेहैं ॥ तथापि तिनमुक्तपुरुषोंके शुकवामदेवादिकना
मोंकूं अबपर्यंत लोक वाणीकरिकेउच्चारणकरेहैं ॥ यातें तेशुकवामदेवादिकनाम नाशकूंनहींप्राप्तहोवे हैं ॥ याप्रकारकी आलोकोंकीबुद्धि

है ॥ तालौकिकबुद्धिकूंअनुसरणकरिके ताश्रुतिनैं प्राणादिकपंचदशकलावोंकाही उपकथनकन्या है ॥ नामकालप कथनकन्यानहीं ॥ और हेशौनक ॥ जैसे पूर्वलेब्रह्मवेत्तापुरुष ताब्रह्मज्ञानकेबलतैं ताअद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोतेभये हैं ॥तैसे इदानींकालविषेभी जेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेसाक्षात्कारकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषभी ताब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं ताअद्वितीयब्रह्मभावकूंहीं प्राप्तहोवे हैं ॥ हेशौनक ॥ जिसपुरुषनैं ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकेजान्याहै ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषके विद्यामयवंशविषेस्थित जेशिष्यप्रशिष्यादिकहैं तथाजन्ममयवंश विषेस्थित जेपुत्रपौत्रादिकहैं ॥ तेशिष्यादिक तथापुत्रादिक ब्रह्मज्ञानतैंरहितहोतेनहीं ॥ किंतु तेसर्व ब्रह्मज्ञाननिष्ठावालेहीहोवे हैं ॥ तहांश्रुति ॥ नाऽस्याऽब्रह्मवित्कुलेभवति॥अर्थयह ॥ याब्रह्मवेत्ताविद्वानपुरुकेकुलविषे कोईपुत्र अथवा कोईशिष्य ब्रह्मज्ञानतैंरहितहोवेनहीं॥किंतु तेसर्व ब्रह्मवेत्ताहीहोवे हैं ॥ हेशौनक॥यहब्रह्मवेत्तापुरुष ताब्रह्मज्ञानकेप्रभाव तैं कारणअज्ञानसहित सर्वपापकर्मोंकूंनाशकरिके कामक्रोधादिकसर्वदोषोंतैंरहितहुआ तथासर्वशोकों तैंरहितहुआ ताआनंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्मकूं अभेदरूपकरिकेप्राप्तहोवे है॥ अब यापूर्वउक्तब्रह्मविद्याकेअधिकारीकानिरूपणकरे हैं॥हेशौनक ॥ जायहब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकरी है ॥ सायहब्रह्मविद्या तुमनैं जिसीकिसीअनधिकारीपुरुषकेप्रति कथनकरणीनहीं ॥ किंतु शांतिआदिकगुणोंकरिकेयुक्तअधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही यहब्रह्मविद्या तुमनैं उपदेशकरणी ॥ हेशौनक ॥ जिनपुरुषों नैं विधिपूर्वक वेदोंकाअध्ययनकन्या है ॥ तथा तिनवेदउक्तकर्मोंकेअनुष्ठानकरिके जिनपुरुषोंकाचित्त शुद्धहुआहै ॥ तथा जिनपुरुषों नैं एकर्षिनामाअग्निकाआराधनकन्याहै॥तथा जिनपुरुषों नैं ब्रह्मचर्यआश्रमविषे आपणेशिरऊपर अग्निकाधारणरूपव्रतकन्याहै ॥ तथा जेपुरुष शमदमादिकसाधनोंकरिकेयुक्तहैं ॥ तथा ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेहारेगुरुविषे जिनपुरुषोंकीअत्यन्तश्रद्धाभक्तिहै ॥ ऐसेगुणोंवालेअधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही तुमनैं यहब्रह्मविद्या कथनकरणी॥कैसीहैयहब्रह्मविद्या॥सर्वदा श्रेष्ठपुरुषोंकरिके सेवनकरणेयोग्यहै ॥तथा अत्यंतदुर्लभहै॥श्रीगुरुरुवाच॥हेशिष्य॥जाब्रह्मविद्या तुमनैं हमारेसैंपूछीथी ॥ तथा जाब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या पूर्व ताअंगिराऋषिकूं परंपराकरिके ब्रह्मातैं

प्रासहोतीभई है ॥ तिसीब्रह्मविद्याकूं सोअंगिराऋषि शौनकऋषिकेप्रति कथनकरताभयाहै ॥ और जैसे सोअंगिरानामाऋषि शौनकनामा ऋषिकेप्रति साब्रह्मविद्या कथनकरताभयाहै ॥ तैसे पिप्पलादनामामुनिभी संसारदुःखकरिकैपीडितसुकेशादिकषट्शिष्योंकेप्रति यहब्रह्मविद्या कथनकरताभयाहै ॥ कैसीहैसाब्रह्मविद्या ॥ षट्प्रश्नउत्तरोंकरिकै अत्यंतस्पष्टकरीहुई है ॥ हेशिष्य ॥ याषोडशेअध्यायकेआदिविषे जाअथर्वामुनिउक्तब्रह्मविद्या तुमनें हमारेसैंपूछीथी ॥ सासर्वब्रह्मविद्या हमनें तुमारेप्रति कथनकरीहै ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवे ॥ ॥ सोअर्थ तुं हमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे मुंडकोपनिषत्सारार्थप्रकाशे अंगिरःशौनकसंवादोनाम षोडशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ॥ १६ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

॥ इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेषोडशोऽध्यायः समाप्तः ॥

देव संपूर्णशरीररूपउपाधियोंविषेस्थितहोइके नानाप्रकारके अन्नोंकूंभक्षणकरे है ॥ याकारणतें ताआत्मादेवकूं श्रुतिभगवती अन्नाद यानामकरिकेकथनकरे है ॥ और यहआत्मादेवही दानकरतापुरुषोंकूं कर्मकेफलकीप्राप्तिकरे है ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं वसुदान यानामकरिकेकथनकरे है ॥ इसप्रकार अन्नादरूपकरिके तथा वसुदानरूपकरिके तासगुणआत्माकीउपासना जोअधिकारी पुरुषकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष लोकोंनें श्रद्धापूर्वकदियेजे नानाप्रकारकेअन्नादिकपदार्थ तिनोंकूंभोगेहै ॥ तथा इसजन्मविषे अथवा जन्मांतरविषे सोउपासकपुरुष नानाप्रकारकेधनादिकपदार्थोंकूं लोकोंकेताईंदेवे है ॥ अब निर्गुणआत्माकेस्वरूपका तथाताकेज्ञानकेफलका निरूपणकरें हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोविज्ञानआनंदस्वरूपआत्मा याज्ञवल्क्यमुनिनें जनककेप्रति अभयब्रह्मरूपकरिके उपदेशकऱ्याहै ॥ सोनिर्गुणआत्मादेव जराअवस्थातेंरहितहै यातें अजरहै ॥ और सोआत्मादेव मरणअवस्थातेंरहितहै यातें अमरहै ॥ और यहआत्मादेव अजरअमरहै याकारणतेंअभयहै ॥ काहेतें जोपुरुष जराअवस्थाकरिकेमरणकूंप्राप्तहोवेहै ॥ सोईहीपुरुष जन्ममरणकेदुःखकूं तथा तिन दुःखोंतेंभयकूं प्राप्तहोवेहै ॥ और यहआत्मादेव अजरअमरहै याकारणतें यहआत्मादेव जन्ममरणकेदुःखकूं तथाभयकूं प्राप्तहोवेनहीं॥पुनः कैसाहैसोआत्मादेव ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरों तैंरहितहै ॥ तथा आकाशकीन्याईं सर्वत्रव्यापकब्रह्मरूपहै ॥ ऐसेअभयब्रह्मकूं जोपुरुष आपणाआत्मारूपकरिके साक्षात्कारकरे है॥सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष अभयब्रह्मरूपहोवेहै॥हेशिष्य॥जनकराजाकेप्रति जोब्रह्मविद्या याज्ञवल्क्यमुनिनें उपदेशकरीथी॥सोसंपूर्णब्रह्मविद्या हमनें तुमारेप्रति कथनकरीहै॥अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सो अर्थ हमारेसेंपूछो॥इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे बृहदारण्यकयाज्ञवल्क्यकांडसारार्थप्रकाशे याज्ञवल्क्यजनकसंवादोनामषष्ठोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ६ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

॥ इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषात्मपुराणेषष्ठोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे सप्तदशोऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ सप्तदशाऽध्यायप्रारंभः ॥
पूर्वषोडशेअध्यायविषे अथर्वणवेदके मुंडकउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब यासप्तदशेअध्यायविषे तिसोअथर्वणवेदके प्रश्नउप
निषद्काअर्थ निरूपणकरे हैं ॥ तहां पूर्वषोडशेअध्यायविषे अथर्वामुनिउक्तब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै परमआनंदकूंप्राप्तहुआ सोश्रद्धावान्
शिष्य पुनः तागुरुकेमुखतैं पिप्पलादऋषिउक्तब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहुआ ताश्रीगुरुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया॥
शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअ
ध्यायविषे सनकादिकमुनियोंके तथासातिकोप्रभाकेसंवादकरिकै वैराग्यादिकसाधनोंसहित नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याआपनैंकथनकरीथी॥
तथा माताकेउदरविषेस्थित वामदेवऋषिका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके द्वितीयअ
ध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसो ऋग्वेदके कौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणकेद्वितीय
अध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी॥ और याआत्मपुराणके तृतीय
अध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ या
आत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहांयाआ
त्मपुराणके चतुर्थअध्यायविषे आपनैं दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषे स्थितऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद कथ
नकऱ्याथा॥तथा दध्यङ्अथर्वणऋषिनैं जाब्रह्मविद्या देवराजइंद्रकेप्रति तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति कथनकरीथी ॥ साब्रह्मविद्याभी आपनैं
कथनकरीथी ॥ तथा तिनअश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकरिकै सोदध्यङ्अथर्वणऋषि जिसप्रकार ताइंद्रतैं क्लेशकूंप्राप्तहु
आया॥सासर्ववार्त्ता आपनैंकथनकरीथी ॥ और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी॥जनकराजा
केयज्ञसभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिरूपसूर्य आश्वलादिकब्राह्मणरूपनिशाचरोंकूंजीतकरिकै शाकल्यब्राह्मणरूपअंधकारकूं निवृत्तकरताभया॥

और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ जैसे सूर्यभगवान् आपणेकिरणोंकरिके अंधकारकी निवृत्तिकरिके लोकोंकूं रूपादिकपदार्थ दिखावे हैं ॥ तैसे सोयाज्ञवल्क्यमुनिरूपसूर्यभी आपणेउपदेशरूपकिरणोंकरिके जनकराजाकेअज्ञानरूपअंधकारकीनिवृत्तिकरिके ताजनकराजाकूं अद्वितीयब्रह्म दिखावताभया ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेसप्तमेअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी॥सोयाज्ञवल्क्यमुनिरूपसूर्य आपणेउपदेशरूपकिरणोंकरिके मैत्रेयीस्त्रीके अज्ञानरूपअंधकारकीनिवृत्तिकरिके तामैत्रेयीस्त्रीकेप्रति अद्वितीयब्रह्म दिखावताभया तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरताभया॥और हेभगवन् याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरमुनिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिके आपनें याजगत्केकारणोंकानिरूपणकऱ्याथा ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके नवम अध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयउपनिषद्का तथानारायणीयउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ तथा सत्यादिकसर्वसाधनोंतैं संन्यासआश्रमकीअधिकता कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे आपनें जाबालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ तापरमहंससंन्यासकूं संवर्त्तकादिकमहान् पुरुष धारणकरतेभयेहैं ॥ और तासंन्यासकेप्राप्तिका वैराग्यही कारणहै ॥ और गर्भदुःखोंकाविचार तथामृत्युचिह्नोंकाज्ञान तथा अष्टांगयोग इत्यादिकउपाय तावैराग्यकेकारणहैं ॥ और तासंन्यासविषे विरक्तपुरुषोंकाही अधिकारहै ॥ और दंड कमंडलु काषाय वस्त्र इत्यादिकोंकाधारणकरणा तासंन्यासीका बाह्यवेशहै ॥ तथा तिनसंन्यासियोंका ब्रह्मचर्यादिरूप आचारहै ॥ इत्यादिकसर्ववार्त्ता ता

एकादशेअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश यातीनअध्यायोंविषे आपनें सामवेद
केछांदोग्यउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणके द्वादशेअध्यायविषे उद्दालकपिताके तथाश्वेतकेतु पुत्रके संवादक
रिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्यायविषे सनत्कुमारोंके तथानारदमुनिके संवाद
करिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके चतुर्दशेअध्यायविषे प्रजापतिके तथाइंद्रविरोचनके संवादक
रिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथो ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेपंचदशेअध्यायविषे आपनें तिसीसामवेदके केन
उपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तापंचदशेअध्यायविषे देवराजइंद्रकूं ब्रह्मविद्यारूपउमादेवीकेप्रसादतें दृढआत्मज्ञानकीप्राप्ति आपनें
कथनकरीथी और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके षोडशेअध्यायविषे आपनें अथर्वणवेदके मुंडकउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥
ताषोडशेअध्यायविषे अंगिरामुनिके तथाशौनकऋषिके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ हेभगवन् ॥ ताषोड
शेअध्यायकेअंतविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथो ॥ जैसे अंगिरानामामुनि शौनकऋषिकेप्रति साब्रह्मविद्या उपदेशकरताभयाहै ॥ तैसे
षट्प्रश्नउत्तरोंकरिकेयुक्त साब्रह्मविद्या पिप्पलादमुनि सुकेशादिकषट्ऋषियोंकेप्रति कथनकरताभयाहै ॥ हेभगवन् ॥ जाब्रह्मविद्या सोपि
प्पलादनामामुनि सुकेशादिकषट्ऋषियोंकेप्रति उपदेशकरताभयाहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी मैंइच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिके
साब्रह्मविद्या हमारेप्रति कथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकरिकेपूछाहुआ सोश्रीगुरु अथर्वणवेदकेशौनकीयशाखाविषेस्थित जाप्रश्नउपनिषद्
है ॥ ताप्रश्नउपनिषद्विषेकथनकरीहुईकथा ताशिष्यकेप्रति कथनकरताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य पूर्वकिसीकालविषे तथाकिसी
देशविषे किसीनिमित्तपाइके षट्मुनि एकठेहोतेभये ॥ कैसेथेतेमुनि ॥ परस्पर अत्यन्तस्नेहवालेथे ॥ तथा प्रातःसंध्यादिकनित्यकर्मों
विषे प्रीतिमानथे ॥ अब तिनमुनियोंकेनामोंकावर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ एकतो गोत्रकरिकेभारद्वाजसंज्ञावाला सुकेशानामाऋषिथा ॥१॥
और दूसरा शिबिनामाऋषिकेकुलविषेउत्पत्तिकरिके शैब्यसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ सत्यकामनामाऋषिथा ॥ २ ॥ और तीसरा गोत्रक

रिकेगार्ग्यसंज्ञावाला सौर्यायणिऋषिथा॥३॥और चतुर्थ कोशलऋषिकेकुलविषेउत्पत्तिकरिकेकौशल्यसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ आश्वलायननामाऋ
षिथा ॥ ४ ॥ और पंचमा विदर्भऋषिकेकुलविषे उत्पत्तिकरिके वैदर्भिसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ भार्गवनामाऋषिथा ॥ ५ ॥ और षष्ठा कतऋषि
केकुलविषेउत्पत्तिकरिके कात्यायनसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ कबंधीनामाऋषिथा ॥ ६ ॥ यहषट्ऋषि व्याकरणादिकषट्अंगोंसहितचारवेदोंकूंअ
ध्ययनकरिके तिनवेदउक्तनित्यनैमित्तिककर्मोंकूं तथासगुणब्रह्मकेउपासनावोंकूं करतेभये ॥ तिसतैंअनंतर ताकर्मउपासनाकेप्रभावतैं
शुद्धहुआहैअंतःकरणजिनोंका ऐसेतेषट्ऋषि निर्गुणब्रह्मकेजाननेकीइच्छाकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेषट्ऋषि परस्परमिलिके याप्रकार
काविचार करतेभये ॥ जोविद्वान्पुरुष विद्यादिकगुणोंकरिकेहमारेतैंअधिकहोवे ॥ तथा श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठहोवे॥सोविद्वान्पुरुषही हमारेप्रति
निर्गुणब्रह्मकाउपदेशकरेगा ॥ परंतु ऐसाश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठविद्वान्पुरुष कोनहै ॥ जिसकेहम शरणकूंप्राप्तहोवैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकीचिं
ताकरिकेयुक्तजे तेषट्ऋषिहैं ॥ तिनऋषियोंऊपरअनुग्रहकरिके भगवान्पिप्पलादमुनि आपणीइच्छापूर्वकविचरताहुआ तास्थानविषेआ
वताभया ॥ तापिप्पलादमुनिकूं दूरसैंआवताहुआदेखिके प्रसन्नमनहुए तेषट्ऋषि परस्पर याप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ यहजोपिप्पला
दमुनिआवताहै ॥ सो हमारेसर्वप्रश्नोंकाउत्तरकहेगा ॥ और सोपिप्पलादमुनि जभी तिनषट्ऋषियोंकेसमीपगया ॥ तभी तेषट्ऋषि आप
णेआपणेआसनतैंउठतेभये ॥ तथा यथायोग्य तापिप्पलादमुनिका पूजनअर्चनकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेषट्ऋषि तापिप्पलादमुनि
केप्रति दंडवत्प्रणामकरिके तथाआपणेदोनोंहस्तोंकूंजोडिके तथाशास्त्रकीविधिपूर्वक समिदादिकपदार्थोंकूं हस्तविषेधारणकरिके
याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ यासंसारकेजन्ममरणरूपदुःखोंतैंभयकूंप्राप्तहोइके हमसर्व आपकेशरणकूंप्राप्तहुएहैं ॥ आप
कृपाकरिके हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ जिसब्रह्मविद्याकरिके हमारे सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिहोवे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकी
प्रार्थना जभी तिनषट्ऋषियोंने तापिप्पलादमुनिकेप्रतिकरी ॥ तभी सोपिप्पलादमुनि तिनषट्ऋषियों के प्रति याप्रकारकावचन
कहताभया ॥ हेऋषियो ॥ जोशिष्य विवेकादिकसाधनोंकरिकेसंपन्नभीहोवे तथागुरुशास्त्रविषेश्रद्धावान्भीहोवे ॥ परंतु सोशिष्य

एकवर्षपर्यंत जिसगुरुकेसमीपनहींरह्याहोवे ॥ तिसशिष्यकेप्रति सोगुरु ब्रह्मविद्याकाउपदेश करैनहीं ॥ किंतु ता साधनसंपन्न श्रद्धावानशिष्यकीभी एकवर्षपर्यंत परोक्षाकरिके तिसतैंअनंतर सोगुरु ताशिष्यकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरे यहशास्त्रकीमर्यादाहै ॥ ताशास्त्रकेमर्यादाकूं तुमभी जानतेहीहो ॥ यातैं तुमसर्वऋषि यद्यपि स्वभावतैंही तपस्वीहो ॥ तथा सर्वदा ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकेयुक्तहो ॥ याकारणतैं तुमसर्व ब्रह्मविद्याकेअधिकारीहो ॥ तथापि ताशास्त्रके मर्यादाकेपालनकरणेवासते तुमसर्व एकवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकूंधारणकरिके हमारेसमीप निवासकरो ॥ तावर्षकालपर्यंतनिवासकरणेतैंअनंतर जबपर्यंत तुमारेकूं तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कार नहींहोवेगा॥तबपर्यंत तुमारेसर्वप्रश्नोंकेउत्तरकूं मैं भलीप्रकारसैंकथनकरोंगा ॥ यहहमारावचन जोतुमारेकूंअंगोकारहोवै ॥ तोतुमसर्व तिसोप्रकारकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी तापिप्पलादमुनिनैं तिनसर्वऋषियोंकेप्रतिकह्या ॥ तभी तेसर्वऋषि श्रद्धाभक्तिपूर्वक एकवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरतेभये ॥ ताएकवर्षकेव्यतीतहुएतैंअनंतर प्रथम कबंधीनामाकात्यायनऋषि तापिप्पलादमुनिकेसमीप जाइके दंडवत्प्रणामकरिकें याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ तहां पूर्वमुंडकउपनिषद्विषे परा अपरा यहदोप्रकारकीविद्या कथनकरीथी ॥ तहांकर्म उपासना याभेदकरिकेदोप्रकारकोजाअपराविद्याहै ॥ ताअपराविद्याकेफलकानिर्णयकरणेवासते सोकबंधीनामा कात्यायनऋषि प्रथम याजगत्केउत्पत्तिकाप्रश्न करताभया कात्यायनउवाच ॥ हेभगवन् ॥ यहसंपूर्णप्रजा किसकारणतैं जन्मकूंप्राप्तहोवै है॥सोप्रजाकेउत्पत्तिकाकारण हमारेप्रति कथनकरो॥ हेशिष्य॥इसप्रकार जभी ताकात्यायननैं पिप्पलादमुनिकेप्रति प्रश्नाकऱ्या॥तभी सोपिप्पलादमुनि ताकात्यायनकेप्रति प्रजापतिनामाविराट्तैंउत्पन्नहुईसृष्टिका कथनकरताभया ॥ यद्यपि तापिप्पलादमुनिकूं मायाविशिष्टपरमेश्वरतैंउत्पन्न हुई आकाशादिकपंचभूतरूप तथाहिरण्यगर्भादिरूप महासृष्टिही कथनकरणेयोग्यथी ॥ तथापि याकात्यायननैं पूर्वशास्त्रतैंही सामहासृष्टि भलीप्रकारसैंजानीहै याप्रकारकाविचारकरिके सोपिप्पलादमुनि ताईश्वरसंबंधीमहासृष्टिकीउपेक्षाकरिके ताविराट्भगवान्तैं उत्पन्नहुईसृष्टिकाकथनकरताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच॥हेकात्यायन ॥ पूर्व याजगत्केवृद्धिकरणेकीइच्छाकरताहुआ सोप्रजापतिरूपविराट्भगवान्

यहअग्निसोमदोनों परस्परमिलिके नानाप्रकारकीसृष्टिकरणेविषेसमर्थ हैं याप्रकारकाविचारकरिके भोक्तारूपअग्निकूं तथाभोग्यरूपसोमकूं उत्पन्नकरताभया ॥ अब तिनदोनोंविषे प्रथम भोक्तारूपअग्निकी सर्वात्मरूपता वर्णनकरे हैं ॥ हेकात्यायन॥ सोभोक्तारूपअग्नि अध्यात्म अधिदेवरूपकरिके दोप्रकारकाहोवे है ॥ तहां यासंघातविषेस्थितजोप्राणहे ॥ सोप्राण अध्यात्मअग्निरूपहे ॥ ताप्राणरूपअध्यात्मअग्नि विषे यासंघातकावशकरणारूपभोक्तापणा स्पष्टही है ॥ और आदित्यरूपअधिदेवहे ॥ केसाहेसोआदित्यरूपअग्नि ॥ आपणेउदयअस्त भावकरिके पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण इत्यादिकसर्वदिशावोंका विभागकरणेहाराहे ॥ तथा सर्वप्रकाश्यवस्तुवोंका भोक्तापुरुषहे ॥ तथा सर्वविश्वकाआत्मारूपहोणेतें सर्वविश्वरूपहे ॥ तथा तप्तसुवर्णकेसमान जिसआदित्यकीप्रभाहे ॥ तथा जिसआदित्यतें सर्ववस्तुविषयकज्ञा नरूपधन उत्पन्नहुआहे ॥ तथा जोआदित्यरूपअग्नि आपणेसहस्रकिरणोंकरिके प्रगटज्योतिरूपहे ॥ तथा जोआदित्य यासर्वजीवोंकाभी प्रमाणहे ॥ तथा जोआदित्य अनेकव्यष्टिरूपोंकरिकेवर्त्तमानहे ॥ अब ताप्राणरूपअग्निविषे संवत्सररूपकालरूपकरिके यासृष्टिकाकर्त्ता पणा बोधनकरणेवासते प्रथम उत्तरायणादिककालविषे ताप्राणरूपअग्निकीअवयवरूपता वर्णनकरे हैं ॥ हेकात्यायन ॥ द्वादशमासकाजो संवत्सरहे ॥ तासंवत्सरका षट्मासरूपजोउत्तरायणहे ॥ सोउत्तरायणभी ताप्राणअग्निरूपहीहे ॥ याकारणतेंही ताउत्तरायणमार्गकरिके ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्न उपासकपुरुष याआदित्यमंडलकूंभेदनकरिके ऊपरजावे हैं ॥ हेकात्यायन ॥ यहअधिकारीउपासकपुरुष यासूर्यमंडलकूंभेदनकरिके जिसपरोक्षस्थानकूंप्राप्तहोवे हैं॥सोस्थान समष्टिप्राणरूपहिरण्यगर्भकेनिवासकास्थानहे ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तास्थानकूं प्राणायतन यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥और सोस्थान मृत्युभयतेंरहितहे॥याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तास्थानकूं अमृत अभय यादोनोंनामकरिकेकथनकरे हैं॥और सोस्थान हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेरहणेकालोकहे॥यातें तास्थानकूं ब्रह्मलोक यानामकरिकेकथनकरे हैं॥ सोब्रह्मलोकरूपस्थान यासूर्यमंडलतेंभी परेवर्त्तमानहे ॥ हेकात्यायन॥जिनअधिकारीपुरुषोंनें तासगुणब्रह्मकीअभेदरूपकरिकेउपासनाकरीहे ॥ तथा जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यधर्मकरिकेयुक्तहें ॥ ऐसेअहंग्रहउपासनावालेपुरुष ताउत्तरायणमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेप्राप्तहोइके

पुनःयासंसारमंडलविषेआवतेनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मलोकविषेही मोक्षकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ हेकात्यायन॥जैसे सोषट्मासरूपउत्तरायण उपासकपुरु
षोंकूं सूर्यमंडलकीप्राप्तिकरणेहारादे ॥ यातें वेदवेत्तापुरुषों नें ताउत्तरायणकूं प्राणअग्निरूपकरिकेकथनकऱ्यादे ॥ तैसे ताषट्मासरूप
उत्तरायणकेघटक जेशुक्लपक्षहैं ॥ तथा तिनशुक्लपक्षोंकेघटक जेदिनहैं ॥ तिनशुक्लपक्षोंकूं तथातिनादिवसोंकूंभी तेवेदवेत्तापुरुष ताप्राणअ
ग्निरूपकरिकेकथनकरे हैं ॥ काहेतें जैसे सोषट्मासरूपउत्तरायण तादेवयानमार्गका घटकहे ॥ तैसे यहशुक्लपक्ष तथादिवसभी तादेवया
नमार्गकेघटकहैं ॥ यातें तिनोंविषेभी प्राणअग्निरूपतासंभवे हे ॥ इतनेंकरिके ताभोक्तारूपअग्निके आदित्यादिकरूपोंकावर्णनकऱ्या॥अब
ताभोग्यरूपसोमकेरूपोंकावर्णनकरे हैं ॥ हेकात्यायन॥यहचंद्रमा भोग्यअमृतादिरूपहोणेतें सोमरूपहे ॥ और यहषट्मासरूपदक्षिणायन
कर्मीपुरुषोंकूं ताचंद्रमारूपसोमकोप्राप्तिकरे हे ॥ यातें वेदवेत्तापुरुष तादक्षिणायनकूंभी सोम यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ जिसदक्षिणाय
नकरिके अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणेहारे श्रद्धावान्कर्मीपुरुष ताचंद्रमालोककूंप्राप्तहोवे हैं ॥ हेकात्यायन ॥ जैसे सोषट्मासरूपदक्षिणायन
सोमरूपहे तैसे तादक्षिणायनकेघटक जेकृष्णपक्षहैं तथारात्रिहैं ॥ तेकृष्णपक्ष तथारात्रिभी तासोमरूपही हैं ॥ जिनरात्रियोंविषे आपणी
स्त्रीकेसाथ संभोगकरणेहारे गृहस्थपुरुषोंकेब्रह्मचर्यकाभंगहोवेनहीं ॥ इतनेंकहणेकरिके यहअर्थकथनकऱ्या ॥ यहदिवस प्राणात्मकअग्नि
रूपहे ॥ यातें तादिवसविषे आपणीस्त्रीकेसाथ संभोगकरणेहारेपुरुषोंके केवल ब्रह्मचर्यधर्मकोहानिनहींहोवे हे ॥ किंतु तिनपुरुषोंके प्राणों
कोभीहानिहोवे हे ॥ तहांश्रुति ॥ प्राणंवाएतेप्रस्कंदंति येदिवारत्यासंयुज्यंते ब्रह्मचर्यमेवतद्यद्रात्रौरत्यासंयुज्यंते ॥ अर्थयह ॥ जेगृहस्थपु
रुष दिनविषेस्त्रीसंभोगकरे हैं ॥ तेपुरुष आपणेप्राणोंकूंहीनष्टकरे हैं ॥ और जेगृहस्थपुरुष रात्रिविषे स्त्रीसंभोगकरे हैं ॥ तेपुरुष ब्रह्मचर्य
धर्मकूंहीपालनकरे हैं॥ १ ॥ हेकात्यायन ॥ उत्तरायन शुक्लपक्ष दिवस यातीनस्वरूपजोअग्निहे ॥ तथा दक्षिणायन कृष्णपक्ष रात्रि यातो
नस्वरूपजोसोमहे ॥ तिसअग्निसोमदोनोंकाजो परस्परमिथुनीभावहे ॥ ताकानाम संवत्सरहे ॥ सो संवत्सर प्रजापतिरूपहे ॥ कैसा
हैसोसंवत्सररूपप्रजापति ॥ वसंतादिकषट्ऋतुरूपपादोंकरिकेयुक्तहे ॥ तथा मार्गशीर्षादिकद्वादशमासोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा

जोसंवत्सररूपप्रजापति षट्ऋतुरूपअरोंकरिकेयुक्त शिशुमारनामाचक्रविषे सूर्यरूपकरिकेस्थितहै ॥ तथा स्वर्गलोककेऊपरस्थितहै ॥ तथा वर्षायुक्तमेघोंकाकारणरूपहोणेतैं यासर्वजगत्कापितारूपहै ॥ काहेतैं सूर्य चन्द्र उत्तरायन दक्षिणायन इत्यादिरूपकरिके अग्निसोम रूपजोयहप्रजापतिहै ॥ ताप्रजापतितैं वृष्टिद्वारा ब्रीहियवादिरूपनानाप्रकारकाअन्न उत्पन्नहोवै है ॥ और सोब्रीहियवादिरूपअन्न क्षुधातुर पुरुषोंकेजठराग्निविषेप्राप्तहोइके जभी परिपक्वहोवै है ॥ तभी ताअन्नतैं वीर्यरूपरेत उत्पन्नहोवै है ॥ तावीर्यतैं यहनानाप्रकारकीप्रजा उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार ताअग्निसोमद्वारा सोप्रजापतिही याजगत्काकारणहै ॥ १ ॥ इतनेंकरिके याप्रथमप्रश्नविषे उपासनाकरणेयोग्य प्राणके सूर्यादिरूपकरिकेअधिदेवप्रभावका वर्णनकऱ्या ॥ अब ताप्राणके अध्यात्मप्रभावकेनिर्णयकरणेवासते द्वितीयप्रश्नउत्तरकानिरूपण करे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूंश्रवणकरिके जभी सोकात्यायनऋषि तूष्णीहोताभया ॥ तभी सोवैदर्भिनामा भार्गवऋषि ता पिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ भार्गवउवाच ॥ हेभगवन् ॥ याअध्यात्मसंघातरूपजगत्कूं धारणकरणेहारे कितनें देवताहैं ॥और तिनदेवतावोंविषेभी प्रकाशकरणेहारे कितनेंदेवताहैं ॥ और तिनसर्वदेवतावोंविषेभी कौंसिअतिश्र[illegible]गुणोंवाला सर्वतैंश्रेष्ठदेवता कौनहै ॥ यातीनोंप्रश्नोंकाउत्तर आपकृपाकरिके हमारेप्रति कथनकरो॥ हेशिष्य॥इसप्रकार जभी ताभार्गव नें तापिप्पला दमुनिकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोपिप्पलादमुनि ताभार्गवकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ पिप्पलादउवाच ॥ हेभार्गव ॥ आ काशादिकपंचभूत श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियवाकादिकपंचकर्मइंद्रिय एकमनएकप्राणयहसप्तदशदेवताही यासर्वशरीरोंकेधारणकरणेहारे हैं॥ और तिनसप्तदशदेवतावोंविषेभी श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय एकमन यहषट्देवता रूपादिकपदार्थोंकूं प्रकाशकरणेहारे हैं ॥ और याशरीर विषे प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचवृत्तिरूपकरिकेस्थितजोप्राणहै ॥ सोप्राण तिनसर्वदेवताओंतैंश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं दूसरेश्रोत्रनेत्रा दिकइंद्रियोंकेनष्टहुएभी बधिरअंधादिरूपकरिकेयाशरीरकीस्थिति देखणेविषेआवै है ॥ परन्तु याप्राणकेनिकसणेतैंअनंतर याशरीरकी स्थितिदेखणेविषे आवतीनहीं ॥ यातैं यहप्राणदेवता तिनसर्वदेवतावोंतैंश्रेष्ठहै॥अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेभार्गव ॥

जैसे यालोकविषे मधुमक्षिकावोंविषे मधुकरराजनामा प्रधानमक्षिकाहोवे है ॥ तेमधुकरराजनामा प्रधानमक्षिका जभी तामधुदेशविषे स्थितहोवे हैं॥तभी दूसरीसर्वमक्षिका तामधुदेशविषेस्थितहोवे हैं ॥ और जभीतेमधुकरराजनामाप्रधानमक्षिका तामधुदेशतैंचलीजावे हैं॥ तभी तेदूसरीसर्वमक्षिकाभी तामधुदेशतैंचलीजावे हैं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे याशरीरविषे जबपर्यंत यहप्राण स्थितहोवे है ॥ तबपर्यंत यहवाकादिकसर्वइंद्रिय स्थितहोवे हैं ॥ और यहप्राण जभी याशरीरतैंबाह्यनिकसिजावे है ॥तभी तेवाकादिकसर्वइंद्रियभी याशरीरतैं बाह्यनिकसिजावे हैं ॥ यातैं याशरीरविषे प्राणोंकेविद्यमानहुए दूसरेचक्षुआदिकइंद्रियोंकेअभावहुएभी यासंघातकाजीवनरूप जोअन्वयहै॥ तथा याप्राणों के उत्क्रमणहुए तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकीव्याकुलतारूपजोव्यतिरेकहै ॥ ताअन्वयव्यतिरेककरिके याप्राणों विषेही सर्वकीविधारकतारूपश्रेष्ठता निश्चयहोवे है ॥ ताप्राणोंकीश्रेष्ठताकूंदेखिकरिके तेचक्षुआदिकइंद्रियोंकेअभिमानीदेवता याप्रकार ताप्राणकीस्तुतिकरतेभये ॥ हेप्राणदेवता ॥ अग्नि सूर्य पर्जन्य विद्युत् वायु इंद्र आकाशादिकपंचभूत सोम सत् असत् अमृत ऋगादिक चारिवेद इसतैंआदिलेकेजितनाकी नामरूपक्रियास्वरूपविश्वहै ॥ सोसर्वविश्वस्वरूप तूंही है ॥ इहां पर्जन्यशब्दकरिके वर्षावालेमेघोंका ग्रहणकरणा ॥ और सोमशब्दकरिके भोग्यपदार्थोंकाग्रहणकरणा ॥ और सत्शब्दकरिके मूर्त्तपदार्थोंकाग्रहणकरणा ॥ और असत्शब्दक रिके अमूर्त्तपदार्थोंकाग्रहणकरणा ॥ और अमृतशब्दकरिके देवतावोंकेभोग्यपदार्थोंकाग्रहणकरणा ॥और हेप्राणदेवता॥जैसे रथचक्रकेना भिविषे अरा स्थितहोवे हैं ॥ तैसे यहसंपूर्णविश्व तुमारेविषेही स्थितहै ॥ याकारणतैं तूंप्राणदेवता सर्वविश्वकाआत्मारूपहै ॥ और हेप्रा णदेवता॥यालोकविषे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेप्राणीरूपकरिकेभी तूंही उत्पन्नहोवे है ॥ तथा विराट्हिरण्यगर्भ रूपकरिकेभी तूंही उत्पन्नहोवे है तुमारेतैंबिना दूसराकोईश्रेष्ठहैनहीं ॥ और हेप्राणदेवता ॥ यालोकविषे ऐश्वर्यतावाले जितनेंकप्राणी हैं॥ जैसे देवतावोंविषे अग्निहै ॥ और पितरोंविषे नांदीमुख हैं ॥ और ऋषियोंविषे सत्यपरायण आंगिरस अथर्व आदिकहैं ॥ जेऐश्वर्यवालेअग्नि आदिक देवतावोंकेप्रसन्नकरणेहारे स्वाहाशब्दकरिकेयुक्तहैं ॥ तथा पितरोंकेप्रसन्नकरणेहारे स्वधाशब्दकरिकेयुक्तहैं ॥ तेसर्व

अग्नि आदिक तुम्हारेही स्वरूपहैं ॥ और हेप्राणदेवता तुम्हारीमूर्तिंही चक्षुआदिकसर्वइंद्रियोंविषे बलकूंधारणकरिके स्थितहुईहै॥ ताआप णेमूर्तिकूं तू सर्वदा अनुकूलपरिणामवाळाकर ॥ हमसंपूर्ण तुम्हारेहोंकिंकरहैं ॥ यातें हमारेअपराधकूंक्षमाकरिके आप इसशरीरतेंबाह्य कदाचित्‌भी उत्क्रमणनहींकरो ॥ और हेप्राणदेवता ॥ स्वर्ग अंतरिक्ष भूमि यातीनलोकविषेस्थित जितनेंकभूतभौतिकपदार्थ हैं ॥ ते संपूर्णपदार्थ तुम्हारेहो वशवर्त्तिहैं ॥ ऐसेतुम्हारेस्वरूपकूंजानणेहारेजेहमहैं ॥ तिनहमपुत्रोंका आप माताकीन्याई रक्षणकरो ॥ तथा हमा रेताईं चारिवेदरूप ब्राह्मणोंकेधनकीप्राप्तिकरो ॥ तथा सुवर्णादिरूप क्षत्रियोंके धनकीप्राप्तिकरो ॥ तथा हमारेताईंसद्बुद्धिकीप्राप्तिकरो ॥ इसप्रकार तेसर्वइंद्रियोंकेदेवता ताप्राणदेवताकीस्तुति करतेभये ॥ यातें यहप्राणही तिनसर्व देवताओं तेंश्रेष्ठहै ॥२॥इतनेंकरिके द्वितीय प्रश्नकाउत्तर निरूपणकऱ्या ॥ अथ तृतीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोवैदर्भिनामा भार्गवऋषि प्राणोंकीश्रेष्ठ ताकूं निश्चयकरिके तूष्णीभावकूंप्राप्तहोताभया॥तिसतें अनंतर सोआश्वलायननामा कौशल्यऋषि ताप्राणकेउत्पत्तिस्थितिआदिकोंकेनिर्ण यकरणेवासते तापिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकेषट्प्रश्न करताभया ॥ आश्वलायनउवाच ॥ हेभगवन्‌पिप्पलादमुनि ॥ याप्राणको किस वस्तुतें उत्पत्तिहोवे है ॥ १ ॥ और किसनिमित्तकरिके याप्राणका सर्वशरीरोंकेसाथसंबंधहोवे है ॥ २ ॥ और यहप्राण आपणेकूं भिन्न भिन्नकरिके किसप्रकार याशरीरोंविषेस्थितहोवे है ॥ ३ ॥ और यहप्राण याशरीरतेंबाह्य किसद्वारकरिके तथाकिसवृत्तिविशेषकरिके तथाकिसनिमित्तकरिके उत्क्रमणकरे है ॥ ४ ॥ और यहप्राण बाह्यअधिभूतअधिदेवरूपसर्वजगत्‌कूं किसप्रकार धारणकरे है ॥ ५ ॥ और यहप्राण अंतर अध्यात्मजगत्‌कूं किसप्रकार धारणकरे है ॥ ६ ॥ याषट्प्रश्नोंकरिकेयुक्त याहमारेप्रश्नका आप कृपाकरिके उत्तरकहो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाप्रश्न जभी ताआश्वलायननें पिप्पलादमुनिकेप्रतिकऱ्या ॥ तभी सोपिप्पलादमुनि ताआश्वलायनके प्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेआश्वलायन ॥ तुमनें यहअत्यंतसूक्ष्मप्रश्नकरे हैं ॥ यातें यासर्वमुनियोंके समाजविषे तुम्ब्रह्मिष्ठ हैं॥जोपुरुष अतिशयकरिके ब्रह्मपरायणहोवे है ॥ ताकानामब्रह्मिष्ठहै ॥ ऐसेब्रह्मिष्ठतेंउत्तमअधिकारीकेप्रतिमैं तिनसर्व

प्रश्नोंकाउत्तर कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइकेश्रवणकर ॥ अब याप्राणकीकिसवस्तुतेंउत्पत्तिहोवे है याप्रथमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं॥ हेआश्वलायन ॥ जैसे यास्थूलदेहतें दर्पणादिकोंकोसमीपतारूपनिमित्तकरिके प्रतिबिंबरूपछाया उत्पन्नहोवे है ॥ तैसे परमार्थसत्य स्वरूपआत्मारूपबिंबतें यहजीवभूतप्राणरूपप्रतिबिंब उत्पन्नहोवे है॥इतनेंकरिकेयहअर्थ बोधनकऱ्या॥ जैसे दर्पणादिकोंविषेस्थितप्रतिबिंब को मुखादिरूपबिंबतें भिन्नसत्ताहोवेनहीं ॥ यातें सोप्रतिबिंब ताबिंबमात्रकेहीआश्रितहै॥तैसे यहप्राणभी ताआत्मामात्रकेहीआश्रितहै ॥१॥ अब किसनिमित्तकरिके याप्राणका तिनसर्वशरीरोंकेसाथ संबंधहोवे है याद्वितीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं ॥ हेआश्वलायन॥यहजीवरूप प्राण तिसतिसशरीरकेसाथ जोसंबंधकूंप्राप्तहोवे है ॥ तासंबंधविषे याविज्ञानरूपकरिकेकऱ्येहुएपुण्यपापकर्महीं निमित्तकारणहैं ॥ तामनकृ तकर्मोंकरिकेही यहजीवरूपप्राण तिसतिसशरीरकूंप्राप्तहोवे है॥काहेतें आत्माकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरिके चेतनभावकूंप्राप्तभयाजोमनहै ॥ सो चिदाभासयुक्तमन यासंसारविषे जिसपुण्यपापकर्मोंकूंकरे है ॥ सोईहीमन तिसपुण्यपापकर्मोंकेफलकूंभोगे है ॥ यातेंयहमनही कर्ता भोक्ताहै जिसमनकाकार्यरूप जोमानसकर्म है ॥ तिसमानसकर्मोंकरिकेही यहजीवरूपप्राण तिसतिसशरीरविषेप्राप्तहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ दूसरेशास्त्रोंविषेतो शरीरकृतकर्म तथावाणीकृतकर्म तथामनकृतकर्म यातीनप्रकारकेपुण्यपापकर्मोंविषेही या जन्ममरणरूपसंसारकोनिमित्तकारणता कथनकरीहै ॥ और इहां आपनें केवलमानसकर्मोंकूंही यासंसारकीकारणताकथनकरी है ॥ यातें तिनदूसरेशास्त्रोंकेसाथ आपके वचनकाविरोधहोवेगा ॥ समाधान ॥ हेआश्वलायन ॥ यहवाकादिकइंद्रिय तथायहशरीर ताम नतेंविना स्वतंत्रहोइके किसीकार्यकरनेविषेसमर्थहोइसकेनहीं ॥ किंतु तामनकूंआश्रयणकरिकेही तेवाकादिकइंद्रिय तथाशरीर किसी शुभअशुभकर्मकरनेविषे समर्थहोवे हैं ॥ यातें ताशरीरकृतकर्मोंविषे तथावाणीकृतकर्मोंविषेभी तामनकीहीप्रधानताहै ॥ ताप्रधानताकूं अंगीकारकरिके हमनें केवलमानसकर्मोंकूंही यासंसारकीकारणता कथनकरीहै ॥ अब तामनकीप्रधानता निरूपणकरे हैं ॥ हेआश्वलाय न ॥ तामनकीसहायतातेंविना केवल याशरीरकरिके तथावाकादिकइंद्रियोंकरिके जोजोकर्महोवे है ॥ तिसकर्मविषे पुण्यरूपता अथवा पा

परूपता किसीभीशास्त्रविषे कथनकरीनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥मनकेव्यापारतैंविना केवल शरीरइंद्रियादिकोंकरिके कऱ्येहुएकर्मविषे जोपुण्यपापरूपतानहींहोतीहोवे॥तो धर्मशास्त्रविषे जोमनकेविज्ञानरूपव्यापारतैंविना केवलशरीरइंद्रियादिकोंकरिकेकऱ्येहुए ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकेनिवृत्तकरणेवासते एकगुणाप्रायश्चित्त विधानकऱ्याहै ॥ और तामनकेविज्ञानरूपव्यापारपूर्वक कऱ्येहुएब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकेनिवृत्तकरणेवासते त्रिगुणाप्रायश्चित्त विधानकऱ्याहै सोधर्मशास्त्र असंगतहोवेगा ॥ समाधान ॥ हेआश्वलायन ॥ यद्यपि धर्मशास्त्रविषे अबुद्धिपूर्वककऱ्येहुएपापकर्मों के निवृत्तकरणेवासते प्रायश्चित्तकाविधानकऱ्याहै ॥ तथापि सोप्रायश्चित्त तामानसव्यापारकेयोगतैंही कऱ्याजावेहै ॥ तामानसव्यापारतैंविना सोप्रायश्चित्त कऱ्याजावेनहीं ॥ काहेतैं जिसपुरुषनैं आपणीबुद्धिपूर्वक पापकर्मनहींकऱ्या ॥ सोपुरुष जभी मैंनेअबुद्धिपूर्वकपापकर्मकऱ्याहै याप्रकारका आपणेमनकरिकेविचारकरेहै ॥ तभीही सोपुरुष ताप्रायश्चित्तकरणेकाअधिकारी होवेहै ॥ तामानसविचारतैंविना सोपुरुष ताप्रायश्चित्तकाअधिकारीहोवेनहीं ॥ यातैं तामनकेविज्ञानरूपव्यापारतैंही सोअबुद्धिपूर्वकपापोंका प्रायश्चित्तहोवेहै ॥ मनकेव्यापारतैंविना सोप्रायश्चित्तहोवेनहीं ॥ यातैंअबुद्धिपूर्वककऱ्येहुएकर्मविषे मनकेयोगतैंहीं पुण्यरूपता अथवापापरूपताप्राप्तहोवेहै ॥ तामनकेयोगतैंविना ताकर्मविषे पुण्यपापरूपता प्राप्तहोवेनहीं॥किंवा ॥तिनपुण्यपापकर्मोंकाकर्त्तापणा तथाभोक्तापणा शुद्धआत्माविषेहै ॥ अथवा देहइंद्रियादिकोंविषेहै ॥ अथवा मनविषेहै ॥ यहविचारकऱ्याचाहिये॥तहां शुद्धआत्मातो असंगनिर्विकारहै॥यातैं ताशुद्धआत्माविषेतो सोकर्त्तापणा तथाभोक्तापणा संभवेनहीं॥और यहदेहइंद्रियादिकतो जडहैं तथापरतंत्रहैं ॥ यातैं तिनदेहइंद्रियादिकोंविषेभी सोकर्त्ताभोक्तापणा संभवेनहीं ॥ किंतु परिशेषतैं सोकर्त्ताभोक्तापणा तथापुण्यपापकर्म तामनविषेही स्थितहैं ॥यातैं यहचिदाभासयुक्तमनहीं तिनपुण्यपापकर्मोंकूंकरेहै॥तामनकृतपुण्यपापकर्मों करिकेही यहदेहइंद्रियादिकसंघात उत्पन्नहोवेहै ॥तथा तामनकृतपुण्यपापकर्मोंकेवशतैंही यहजीवरूपप्राण तिसतिसशरीरकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवे है ॥ २ ॥ अब सोप्राण आपणेकूंभिन्नभिन्नरूपकरिके याशरीरोंविषे किसप्रकारस्थितहोवेहै यातृतीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरेहैं ॥हेआश्वलायन ॥ जैसे यालोकविषे महाराजा आपणेमं

त्रियोंकूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रेरणाकरेहै॥तैसे याशरीरविषेस्थितहुआ यहक्रियाशक्तिवालाप्राणभी आपणेकूं प्राण अपान समान व्यान उदान यापंचप्रकारकाकारके नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रेरणाकरेहै ॥ अब तिनपंचप्राणोंकेस्थानका तथाकार्यका वर्णनकरे हैं ॥ हेआश्वलायन ॥ तिनपंचप्राणोंविषे जोप्रथम प्रधानप्राणहै॥ सोप्राणतो शिरविषेस्थितजे दोनासिका दोश्रोत्र दोनेत्र एकमुख यहसप्तछिद्रहैं तिनसप्तछिद्रोंविषेस्थितहै ॥ तथा मुखनासिकाद्वारा बाह्यगमनागमनकरे है ॥ और दूसराजोअपानहै ॥ सोअपानतो पायुउपस्थ यादोनोंविषेस्थितहै ॥ तथा विष्ठामूत्रकेविभागकूंकरे है॥और तीसराजोसमाननामाप्राणहै ॥ सोसमानतो भोजनकरेहुएअन्नकूं तथा पानकरेहुएजलकूं समानकरे है॥ यातें सर्वशरीरविषे व्यापकहुआभीसोसमान पूर्वउक्तसप्तछिद्रोंके तथाआधारचक्रके मध्यदेशविषे विशेषरूपकरिकेरहे है ॥ अब व्याननामाप्राणकेआश्रयकहणेवासते प्रथमनाडियोंकीपरमसंख्या कथनकरे हैं ॥ हेआश्वलायन ॥ यादेहधारीजीवोंके हृदयदेशविषे बहत्तरिकोटि दशसहस्र एकशत एक ७२००१०१०१ इतनीनाडियांरहे हैं ॥ जैसे याळोकविषेप्रसिद्धपिप्पलादिकवृक्षोंका एकमूलहोवे है ॥ तामूलतें स्कंधनिकसेहै ॥ तास्कंधोंतें स्थूलशाखा निकसे हैं॥तिनस्थूलशाखोंतें दूसरीसूक्ष्मशाखा निकसेहैं॥तिन शूक्ष्मशाखावोंतेंभी दूसरीअत्यंतसूक्ष्मशाखा निकसे हैं ॥ तैसे तिनसर्वनाडियोंविषे जोसुषुम्नानामानाडी है ॥ सासुषुम्नानाडीतौ वृक्षकेमूलसमान मुख्यहै ॥ और तासुषुम्नारूपमूलकीस्कंधरूपदूसरीदशनाडीहोवे हैं॥और तिनस्कंधरूपदशनाडियोंविषे एकएकनाडीकीस्थूलशाखारूप दूसरीनवनवनाडीहोवे है॥तहांएकसुषुम्नानाडीकूंछोडिके दूसरीदशस्कंधरूपनाडी तथातिनोंकीस्थूलशाखारूपनव्वेनाडी९०यहसर्व मिळिके एकशत१००नाडीहोवे हैं॥तिनएकशतनाडियोंविषे एकएकनाडीकी सूक्ष्मशाखारूप दूसरीएकएकशत१००नाडीहोवे हैं ॥ तेसूक्ष्मशाखारूपसर्वनाडियां मिळिके १०००० दशसहस्रहोवे हैं ॥ और तिनसूक्ष्मशाखारूपदशसहस्रनाडियोंविषे एकएकनाडीको अत्यंत सूक्ष्मशाखारूप दूसरी बहत्तरिबहत्तरिसहस्र ७२००० नाडीहोवे हैं ॥ तेअत्यंतसूक्ष्मशाखारूपसर्वनाडियां मिळिके बहत्तरिकोटिहोवे हैं ॥ इसप्रकार बहत्तरिकोटि दशसहस्र एकशत एक इतनीसर्वनाडीहोवे हैं ॥ तहां एकसुषुम्नानाडीकूंछोडिके दूसरीसर्वनाडियोंविषे सो

व्याननामाप्राण वर्तैहै॥तिसीव्यानकूं श्रुतिविषे प्राणअपानकीसंधिरूपकरिकेवर्णनकऱ्याहै॥तथा बलवान्‌कर्मोका साधकरूपकरिके कथनक
ऱ्याहै॥ओर तासुषुम्नानाडीकरिकेतो उदाननामाप्राणही विचरैहै॥कैसाहैसोउदाननामाप्राण सर्वदा ऊर्ध्वगमनकरनेकाहैस्वभावजिसका॥२॥
इतनेकरिके यहप्राण याशरीरतैंबाह्य किसद्वारकरिके तथाकिसवृत्तिविशेषकरिके तथाकिसनिमित्तकरिके उत्क्रमणकरैहै यातीनविकल्पोंक
रिकेयुक्त चतुर्थप्रश्नविषे प्रथमदोविकल्पोंकासमाधान कथनकऱ्या॥काहेतैं यहप्राण सुषुम्नानाडीरूपद्वारकरिके तथाउदानवृत्तिरूपकरिकेया
शरीरतैं बाह्यउत्क्रमणकरैहै॥यावचनतैं तिनदोनोंविकल्पोंकाउत्तर सिद्धहोवे है॥अब किसनिमित्तकरिके यहप्राण शरीरतैंउत्क्रमणकरैहै
यातृतीयविकल्पकासमाधान वर्णनकरे हैं ॥ हेआश्वलायन॥मरणकालविषे जिनजीवोंके अग्निहोत्रादिकपुण्यकर्म फलदेणेवासते सन्मुखहोवे
हैं ॥ तिनजीवोंकूंतो यहउदाननामाप्राण स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्ति करे है ॥ ओर तामरणकालविषे जिनजीवोंके पापकर्म फलदेणेवा
सते सन्मुखहोवे हैं ॥ तिनजीवोंकूं सोउदाननामाप्राण नरकादिकोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ ओर तामरणकालविषे जिनजीवोंके पुण्यपापरूपदो
नोंकर्म फलदेणेवासते सन्मुखहोवे हैं ॥ तिनजीवोंकूं सोउदाननामाप्राण मनुष्यलोककीप्राप्तिकरैहै ॥ ओर तामरणकालविषे जिनपु
रुषोंकूं तिनस्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरणेहारे पुण्यपापकर्मरूपप्रतिबंधक नहींहोवे हैं ॥ तिनपुरुषोंकूंतो सोउदान तासुषुम्नानाडीद्वारा
ब्रह्मलोककीहीप्राप्तिकरैहै ॥ ओर जिनपुरुषोंके आत्मसाक्षात्कारकरिके पुण्यपापरूपसर्वकर्म निवृत्तहुएहैं ॥ तिनविद्वान्‌पुरुषोंका सोउदा
ननामाप्राण शरीरतैंबाह्य उत्क्रमण करतानहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिके यापुण्यपापकर्मोंविषेही ताप्राणकेउत्क्रमणकीनिमित्त
कारणता सिद्धहोवैहै ॥ इतनेंकरिके चतुर्थप्रश्नउत्तरकानिरूपणकऱ्या ॥ ७॥ अब यहप्राण बाह्यअधिभूतअधिदैवप्रपंचकूं किसप्रकार धार
णकरैहै ॥ तथा अंतर अध्यात्मरूपजगत्‌कूं किसप्रकारधारणकरैहै ॥ यापंचमषष्ठदोनोंप्रश्नोंकाउत्तर निरूपणकरैहैं ॥ हेआश्वलायन॥यह
प्राण बाह्यआदित्यपृथ्वीआदिकरूपोंकरिके याअधिभूतअधिदैवरूपसर्वजगत्‌कूंधारणकरैहै ॥ ओर यहप्राण प्राण अपान समान व्यान
उदान यापंचमुख्यस्वरूपोंकरिके तथाचक्षुआदिकगौणस्वरूपोंकरिके अंतरअध्यात्मजगत्‌कूंधारणकरैहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवा

सते पंचप्राणोंके क्रमतें बाह्यरूपोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेआश्वलायन ॥ चक्षु तथाआदित्य यहदोनों प्राणस्वरूपहैं ॥ यातें तिनदोनोंकाप
रस्परभेदनहीं है ॥ किंतु तिनदोनोंका अभेदही है ॥ यातें ताप्राणवायुका बाह्यरूपआदित्यहै ॥ और यापृथ्वीदेवताकरिकेही अपानवा
युकाआकर्षणहोवेहै ॥ यातें ताअपानका सापृथ्वी बाह्यरूपहै ॥ और जैसे यहसमान शरीरकेमध्यदेशविषेरहेहै ॥ तैसे भूमिलोकके तथा
स्वर्गलोकके मध्यदेशविषे यहआकाशरहेहै ॥ यातें तासमानका सोस्वर्गपृथ्वीकेमध्यवर्तिआकाश बाह्यरूपहै ॥ और जैसे व्यान सर्वइं
द्रियोंविषेव्यापकहै ॥ तैसे यहबाह्यवायुभी व्यापकहै ॥ यातें ताव्यानका यहवायु बाह्यरूपहै ॥ और जैसे याउदानका ऊर्ध्वगमनकर
णेकास्वभावहै ॥ तैसे अग्निरूपतेजकाभी ऊर्ध्वगमनकरणेकास्वभावहै ॥ यातें ताउदानका यहतेज बाह्यरूपहै ॥ हेआश्वलायन ॥ याश
रीरविषेस्थित जोअंतःकरणकीवृत्तिरूप तथाउष्णतारूपतेजहै ॥ सोतेज जिसकालविषे शांतहोइजावे है ॥ तिसकालविषे यहजीव
ऊर्ध्वश्वासरूपप्राणवृत्तिवालाहोवेहै ॥ सोप्राण यद्यपि आपोमयःप्राणः याश्रुतिविषे जलमयरूपकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ तथापि मरणका
लविषे सोप्राण तेजोरूपउदानवृत्तिकरिकेयुक्तहुआ ताजीवकूं लोकांतरविषेलेजावेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वउक्ततेजतैंविना याशरीरविषे ताउ
दानकीस्थितिहोवेनही ॥ याकारणतैंभी सोतेज उदानरूपही है ॥ हेआश्वलायन ॥ मरणकालविषे जोजीव कर्मकेवशतें भावीप्राप्तहोणेहा
रेशरीरकेज्ञानजन्यसंस्कारोंवालाहै ॥ तथा जोजीव इंद्रियमनप्राणोंकेसाथ तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहुआहै ॥ ऐसेजीवकूंही सोक्रियाशक्तिप्राण
लोकांतरविषेलेजावे है॥अब यापूर्वउक्तविद्याका फल वर्णनकरेहैं ॥ हेआश्वलायन॥जोप्राण पूर्वउक्तरीतिसैं परमात्मादेवतें उत्पन्नभयाहै ॥
तथा जोप्राण पुण्यपापकर्मोंकेवशतें अनेकशरीरोंकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तथा जोप्राण नाडीआदिकअनेकस्थानोंविषेरहेहै ॥तथा जोप्रा
णसर्वकाप्रेरकहै ॥ तथाजोप्राण अध्यात्मअधिदेवरूपहै ॥ सोप्राण मैंहूं ॥ याप्रकार जोअधिकारीपुरुष ताप्राणकीअभेदउपासनाकरेहै॥तिस
अधिकारी पुरुषका शिष्यप्रशिष्यादिकोंकीपरंपरारूपविद्यावंश तथापुत्रपौत्रादिकोंकीपरंपरारूपजन्मवंश कदाचित्भी नष्टहोवेनहीं ॥
किंतुताउपासकपुरुषका सोदोनोंप्रकारकावंश सर्वदाबन्यारहेहै ॥ हेआश्वलायन ॥ ताप्राणोंकेउपासकपुरुषकूं केवल सोवंशकोवृद्धिरू

पफल नहींहोवे है ॥ किंतु तिनउपासकपुरुषोंकूं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मसाक्षात्कारकीभीप्राप्तिहोवे है ॥ ताआत्मसाक्षात्कारकरि
के॥ तेउपासकपुरुष मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तामोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोइके तेउपासकपुरुष पुनःयासंसारदुःखकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥
यातें अंतःकरणकीशुद्धिवास्ते याअधिकारीपुरुषों नें साप्राणकीउपासना अवश्यकरिकेकरणी ॥ ३ ॥ इहां पूर्व प्रसंगविषे कात्यायन भा
र्गव आश्वलायन यातीनऋषियोंके तीनप्रश्नउत्तरोंकरिकें सगुणविद्याकाविषय निरूपणकऱ्या ॥ अब निर्गुणविद्याकेविषयकानिश्चयकरणे
वास्ते चतुर्थप्रश्नउत्तरकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तापिप्पलादमुनिकेवचनकूंश्रवणकरिकें सोआश्वलायनऋषि तूष्णीभा
वकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतेंअनंतर गार्ग्यनामा सौर्यायणिऋषि तापिप्पलादमुनिकेप्रति यहपंचप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ गार्ग्यउवाच ॥
हेपिप्पलादमुनि॥ याशरीरविषे आपणेआपणेव्यापारकीउपरामतारूपशयनकूं कौन प्राप्तहोवे हैं ॥ इहां याप्रथमप्रश्नका जाग्रतअवस्था
केआश्रयकानिर्णय प्रयोजनहै ॥काहेतें जिसकेव्यापारकीउपरामताकरिकें जाग्रतकीनिवृत्तिरूपशयन होवेगा ॥ तिसीकूंही जाग्रतकीआ
श्रयता अर्थ तैंसिद्धहोवेगी ॥ १ ॥ और हेभगवन् ॥ याशरीरविषे सर्वदा आपणेआपणेव्यापारविषेस्थितहुए कौन जाग्रतकूंप्राप्तहोवे हैं ॥
याद्वितीयप्रश्नका याशरीरकेरक्षाकरणेहारेकानिर्णय प्रयोजनहै ॥ काहेतें जो सर्वदासावधानहोवे है ॥ तिसविषेही रक्षकपणा संभवैहै ॥
असावधानविषे रक्षकपणासंभवेनहीं ॥ २ ॥ और हेभगवन् ॥ यासंघातविषे नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूं कौनदेखैहै ॥ यातृतीयप्रश्नका स्वप्न
अवस्थाकेआश्रयकानिर्णयही फलहै ॥ काहेतें जोवस्तु स्वप्नअवस्थाविषे सावधानरहैगा ॥ तिसवस्तुविषेही स्वप्नकीआश्रयतासंभवैहै
॥ ३ ॥ और हेभगवन् ॥ यासंघातविषे सुषुप्तिकेसुखकूं कौनभोगैहै ॥ याचतुर्थप्रश्नका सुषुप्तिअवस्थाकेआश्रयकानिर्णयहीफलहै ॥
काहेतें जोवस्तु सुषुप्तिकालकेसुखकूंभोगैगा ॥ तिसवस्तुविषेही सुषुप्तिअवस्थाकीआश्रयता संभवैहै ॥ ४ ॥ और हेभगवन् ॥ तासुषुप्ति
अवस्थाविषे यहसंपूर्णप्राणादिक किसआधारविषेस्थितहोवे हैं ॥ यापंचमप्रश्नका तुरीयअक्षरआत्माकानिर्णयहीप्रयोजनहै ॥५॥ हेशिष्य॥
इसप्रकार जभी तागार्ग्यऋषिने तापिप्पलादमुनिकेप्रति पंचप्रश्नकरे॥ तभी सोपिप्पलादमुनि तागार्ग्यकेप्रति यथाक्रमतें तिनपंचप्रश्नोंका

उत्तर कहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेगार्ग्य ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहचक्षुआदिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय मनकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके आपणेआपणेव्यापारतेंनिवृत्तिरूपशयनकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेतो तेचक्षुआदिक दशइंद्रिय मनकेसहितही ताशयनकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातें सोचक्षुआदिकइंद्रियविशिष्टमनहीं याजाग्रतअवस्थाकाआश्रयहे ॥ १ ॥ अब द्वितीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं ॥ हेगार्ग्य ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे मनसहितइंद्रियोंकेलयहुएभी प्राण अपान व्यान समान उदान यहपंचप्रकारकाप्राण जठराग्निसहित आपणेआपणेव्यापारविषेस्थितिरूपजाग्रतकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ याकारणतेंहीं तासुषुप्तिविषे याजीवोंकेउदर विषेस्थितअन्नकापरिपाकहोवे है ॥ यातें जठराग्निसहित तेपंचप्राणहीं याशरीरकारक्षणकरणेहारे हैं ॥ २ ॥ इहां सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित विद्वान्पुरुषकूं श्रुतिनें अग्निहोत्रकीप्राप्तिकथनकरीहे ताकानिरूपणकरेहैं ॥ हेगार्ग्य॥ जैसे प्रसिद्धअग्निहोत्रीपुरुषोंका गार्हपत्यनामाअग्नि सर्वदास्थिररहे है ॥ और आहवनीयनामाअग्नितो होमकरणेवासते तागार्हपत्यअग्नितेंउठाइके प्रज्वलितकऱ्याजावे है ॥तैसे इहां प्रसंगविषे अंतःप्रवेशकरणेहारेअपानवायुतें बाह्यगमनकरणेहाराप्राणवायु उठायाजावे है॥याप्रकारकीसमानताकूंग्रहणकरिके श्रुतिभगवती ताविद्वान् पुरुषकेप्राणकूंतो आहवनीयअग्निरूपकहेहे ॥ और ताअपानकूं गार्हपत्यअग्निरूपकहेहे ॥ और ताविद्वान्पुरुषका व्याननामावायु अन्वाहार्यपचनरूपहे ॥ इहां ओदनविशेषकानाम अन्वाहार्य है ॥ सोअन्वाहार्यरूपओदन जिसअग्निविषेपकायाजावेहे ॥ ताअग्निकानाम अन्वाहार्यपचनहे ॥ याअन्वाहार्यपचनकूंहीं वेदवेत्तापुरुष दक्षिणअग्निकहेहैं ॥ तादक्षिणअग्निरूप सोव्याननामावायुहे ॥ काहेतें जैसे प्रसिद्धअग्निहोत्रकीशालाविषे सोदक्षिणअग्नि दक्षिणदिशाकेकुंडविषेस्थितहोवे है ॥ तैसे यहव्याननामावायुभी हृदयकेपंचछिद्रोंविषे दक्षिणछिद्रविषेस्थितहोवे है ॥ याप्रकारकीसमानताकूंअंगीकारकरिके श्रुतिनें ताव्यानकूं दक्षिणअग्निरूपकह्याहे ॥ और ताविद्वान्पुरुषका समाननामावायुतो तिनगार्हपत्यादिकअग्नियोंविषेपक्षपाततेंरहितहोतारूपहे ॥ जैसे प्रसिद्धअग्निहोत्रविषे जभी यजमान किसीदूसरेकार्यविषेसंलग्नहोवे है ॥ तभी तायजमानकाप्रतिनिधिरूपकरिके शिष्यादिकहोताहोवे हैं ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषकेप्राणरूपअग्निहोत्र

विषे सोसमाननामावायुहीहोतारूपहै॥ काहेतें यहसमाननामावायु उच्छ्वासनिःश्वासरूपदोनोंआहुतियोंकूं न्यूनअधिकभावतेंरहितसमानता कूंप्राप्तकरे है ॥ और यहउदाननामावायुतो ताविद्वान्पुरुषके प्राणअग्निहोत्रका फलरूपहै ॥ काहेतें याप्रसिद्धअग्निहोत्रविषेभी यजमानपुरु षकूं ताउदाननामावायुकेवतक्रमणकरिकेही स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिहोवे है ॥ याकारणतें सोउदाननामावायु ताविद्वान्पुरुषकेअग्निहोत्र काफलरूपहै ॥ और याविद्वान्पुरुषकेप्राणअग्निहोत्रविषे ताविद्वान्पुरुषकामन यजमानरूपहै ॥ और जैसे बाह्यअग्निहोत्रविषे प्रसिद्धगा र्हपत्यादिकअग्नियां तायजमानपुरुषकूं स्वर्गरूपफलकीप्राप्तिकरे हैं॥ तैसे यहप्राणरूपअग्नियांभी तामनरूपयजमानकूं सुषुप्तिअवस्थाविषे हृदयकमलविषेस्थित ब्रह्मानंदरूपस्वर्गकीप्राप्तिकरे हैं ॥ इसप्रकार ताब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषका सर्वदा अग्निहोत्रहोवे है ॥ अथ तृतीयचतु र्थप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं ॥ हेगार्ग्य ॥ जोमन स्वप्नअवस्थाविषेभीजागे है ॥ तथाजोमन सुषुप्तिअवस्थाविषे ताविद्वान्पुरुषके प्राण अग्निहोत्रका यजमानरूपहै ॥ सोईहोमन चेतनकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरिके प्रकाशमानहुआ नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूंदेखे है ॥ याकारणतें सो चिदाभासयुक्तमनही तास्वप्नअवस्थाकाआश्रयहै ॥ ३ ॥ और हेगार्ग्य ॥ सोमनही तासुषुप्तिकेसुखकूंप्राप्तहोवे है ॥ काहेतें तासुषुप्ति अव स्थाविषे जैसे यहसंसार यद्यपि स्पष्टकरिकेप्रतीतहोवेनहीं ॥ तथापि तासुषुप्तिविषे यहसंसार सूक्ष्मबीजरूपकरिकेरहे है ॥ तैसे तासुषु प्तिविषे यहमन यद्यपि स्पष्टरूपकरिकेप्रतीतहोवेनहीं ॥ तथापि सोमन तासुषुप्तिविषे सूक्ष्मबीजरूपकरिकेरहे है ॥ यातें तासूक्ष्मबीजरूप करिकेस्थितहुआ यहमनहीतासुषुप्तिकाआश्रयहै॥४॥अब पंचमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं॥हेगार्ग्य ॥ जोचेतनस्वरूपआत्मा तामनविषे प्रतिबिंबरूपकरिकेस्थितहै॥ताचेतनआत्माविषेही यहप्राणादिकसर्वजगत् स्थितहै॥जैसे यालोकविषे सायंकालविषे अनेकदिशावोंतेंआये हुए अनेकपक्षी किसीमहान्वृक्षविषेस्थितहोवे हैं ॥ तैसे पृथ्वीआदिकपंचभूत तथातिनपृथ्वीआदिकभूतोंकेगंधादिकगुण तथाचक्षुआदि कदशइंद्रिय तथाचारप्रकारकाअंतःकरण तथापंचप्रकारकाप्राण यहसंपूर्णपदार्थ ताचेतनआत्माविषेही स्थितहैं॥हेगार्ग्य ॥ताचेतनआत्मा विषे केवल यहजडप्रपंचही स्थितनहीं है ॥ किंतु इंद्रियअंतःकरणप्राणादिकोंकेव्यापारविशिष्टरूपकरिके यहजीवभी ताशुद्धआत्माविषेही

स्थितहै॥यातैंसोआत्मादेवही सर्वकाआधारहै॥हेगार्ग्य॥सोयहआत्मादेव चक्षुआदिकइंद्रियोंकेसाथमिलिकै दर्शनादिकअनेकव्यापारोंकूंकरे है॥यातैं सोआत्मादेव द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोताइत्यादिकगुणोंवालाहोइकै जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहुआभी वास्तवतैंपरमात्मारूपही है॥ताजीवपरमात्मा विषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है॥अब याकथनकरीहुईनिर्गुणविद्याके फलकानिरूपणकरे हैं॥हेगार्ग्य ॥ जोआत्मादेव सर्वत्रव्यापकहुआभी शुद्धमनविषे विशेषकरिकेअभिव्यक्तहोवे है॥तथा जोआत्मादेव सर्वजगत्काअधिष्ठानरूपहै॥तथा जोआत्मादेव स्थूल सूक्ष्म कारण याती नशरीरों तैंरहितहै ॥तथा जोआत्मादेव स्वप्रकाशअक्षरआनंदस्वरूपहै॥ऐसेआत्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरे है ॥सोअधिकारीपुरुष यासर्वजगत्कूंसामान्यरूपकरिकै तथाविशेषरूपकरिकै साक्षात्कारकरे है ॥ तथा यासंसारकेजन्ममरणादिकसर्वतापों तैं मुक्तहोवे है ॥ हेगार्ग्य॥जिसअक्षरपरमात्मादेवविषे यहजीव स्थितहै ॥ तथा जिसअक्षरविषे ताजीवकेउपाधिरूपप्राणइंद्रियादिकस्थितहैं ॥ ताअक्षरपरमात्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेसाक्षात्कारकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष सर्वज्ञहुआ ब्रह्मभावरूपपरमपदकूंप्राप्तहोवे है ॥ ९ ॥ इतनैंकरिकै चतुर्थप्रश्नउत्तरकानिरूपणकऱ्या ॥ अब ताअक्षरआत्माकेएकवारउपदेशतैं जोअधिकारीपुरुष ताअक्षरआत्माकेजानणेविषे समर्थनहींहोवे है ॥ ताअधिकारीपुरुषकेप्रति प्रणवकोउपासनाविधानकरणेवासते पंचमप्रश्नउत्तरकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तापिप्पलादमुनिनें गार्ग्यऋषिकेप्रति उत्तरकह्या तभी सोगार्ग्यऋषि तूष्णीभावकूं प्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोसत्यकामनामा शैल्यऋषि तापिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन् पिप्पलादमुनि ॥ जोअधिकारीपुरुष आपणेमरणपर्यंत ॐकाररूपप्रणवकाध्यानकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष भूमिआदिकलोकोंविषे किसलोककूंप्राप्तहोवे है ॥ याहमारेप्रश्नकाउत्तर आप कृपाकरिकेकथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाप्रश्न जभी तासत्यकामनें तापिप्पलादमुनिकेप्रति कऱ्या ॥ तभी सोपिप्पलादमुनि तासत्यकामकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेसत्यकाम ॥ जिसवर्णकूं वेदवेत्तापुरुष ॐकार यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ सोॐकार अक्षरस्वरूपपरब्रह्म

कानामहै ॥ तथा प्राणस्वरूपअपरब्रह्मकाभी नामहै ॥ कैसाहैसोॐकार ॥ तापरब्रह्मकेसाथ तथाअपरब्रह्मकेसाथ अभिन्नहै ॥ काहेतें
वाच्यअर्थका तथावाचकनामका वेदवेत्तापुरुषों नें अभेदहीकथनकर्‍याहै ॥ अथवा देवताप्रतिमाकीन्याई सोॐकार तापरअपरब्रह्मकाप्र
तीकरूपहै ॥ याकारणतें सोॐकार तापरअपरब्रह्मतेंअभिन्नहै ॥ अन्यविषेअन्यदृष्टिकाजोआलंबनहोवे है ताकानाम प्रतीकहै ॥ जैसे
शालग्रामविषे जोविष्णुदृष्टिहै तादृष्टिकाआलंबन शालग्रामहै ॥ यातें सोशालग्राम ताविष्णुकाप्रतीकरूपहै ॥ तैसे सोॐकारभी तापर
अपरब्रह्मका प्रतीकरूपहै ॥ हेसत्यकाम ॥जोअधिकारीपुरुष याॐकाररूपप्रणवकूं परब्रह्मरूपकरिके चिंतनकरे है ॥ सोअधिकारी
पुरुष ताध्यानकेप्रभावतें तापरब्रह्मकूंही प्राप्तहोवेहै ॥ और जोअधिकारीपुरुष ताप्रणवकूं अपरब्रह्मरूपकरिके चिंतनकरे है ॥ सोअधिका
रीपुरुष ताध्यानकेप्रभावतें ताअपरब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवे है ॥ हेसत्यकाम॥ ताफलकेभेदविषे केवल पुरुषकीकामनाकाभेद कारणनहीं है ॥
किंतु ताप्रणवकेमात्रावोंकाभेदभी ताफलकेभेदविषेकारणहै ॥ काहे तें ताप्रणवमंत्रविषे अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा यहसाढेतीनमा
त्रारहे हैं ॥ तहां जोपुरुष प्रथम अकारमात्राकूं ऋग्वेदरूपकरिकेंचिंतनकरेहै ॥ तिसउपासकपुरुषकूं ताऋग्वेदकेअभिमानीदेवता याभू
मिलोककीप्राप्तिकरे है ॥ और जोपुरुष अकार उकार यादोनोंमात्राओंकूंयजुर्वेदरूपकरिके चिंतनकरेहै॥तिसउपासकपुरुषकूं तायजुर्वेदके
अभिमानीदेवता स्वर्गलोककीप्राप्तकरेहैं॥ और जोपुरुष अकार उकार मकार यातीनोंमात्रावोंकूं सामवेदरूपकरिकेंचिंतनकरेहै॥तिसउपा
सकपुरुषकूं तासामवेदकेअभिमानीदेवता ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरेहैं॥याब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुआ सोउपासकपुरुष पुनःभूमिलोकविषेआवेनहीं॥
याकारणतें यामुमुक्षुजनोंनें तातीनमात्रावालेप्रणवकाही ध्यानकरणा ॥एकमात्राका अथवादोमात्राका ध्यानकरणानहीं ॥ काहे तें याप्रण
वकीजेअकारउकार रूपदोमात्राहैं ॥ तेदोनोंमात्रा याउपासकपुरुषकूं पुनरावृत्तियुक्त भूमिस्वर्गलोककेसुखकोही प्राप्तिकरे हैं ॥ पुनरा
वृत्तितेंरहितसुखकीप्राप्तिकरेनहीं ॥ और सोतीनमात्रायुक्तप्रणवतो याउपासकपुरुषोंकूं पुनरावृत्तितेंरहितब्रह्मलोककीप्राप्तिकरे है ॥ यातें
याअधिकारीपुरुषनें तातीनमात्रावोंयुक्तप्रणवकाही ध्यानकरणा ॥ हेसत्यकाम ॥ जैसेएकअकारमात्राप्रधानप्रणवका चिंतनकर

णेहारापुरुष याभूमिलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अकार उकार यादोमात्राप्रधानप्रणवका चिंतनकरणेहारापुरुष स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ और अकार उकार मकार यातीनमात्राप्रधानप्रणवकाचिंतनकरणेहारापुरुष ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है तैसे जोपुरुष अर्द्धमात्राप्रधान प्रणवका चिंतनकरैहै ॥ सोपुरुष अद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार याअधिकारीपुरुषोंकू ताॐकाररूपप्रणवतैंही सर्वभोग्यपदार्थोंकी तथामोक्षकी प्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं यहप्रणवमंत्र सर्वमंत्रोंतैंश्रेष्ठहै ॥ ८ ॥ इतनैंकरिके पंचमप्रश्नउत्तरकानिरूपणकऱ्या ॥ अब चतुर्थप्रश्नविषेकथनकरेहुए अक्षरपरमात्मादेवविषे प्रत्यक्रूपतानिश्चयकरावणेवासते षष्ठप्रश्नउत्तरकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तापिप्पलादमुनिनैं तासत्यकामकेप्रति उत्तरकह्या ॥ तभी सोसत्यकामनामाऋषि तूष्णीभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैं अनंतर सुकेशनामाभारद्वाजऋषि तापिप्पलादमुनिसैं प्रत्यक्आत्मास्वरूपपूछताभया ॥ सुकेशाउवाच ॥ हेभगवन्पिप्पलादमुनि॥वेदवे तापुरुषोंनैं जोषोडशकलावोंवालापुरुष कथनकऱ्याहै॥ तापुरुषकेनिर्णयकरणेवासते मैं बहुतवार विचारकरताभयाहूं ॥ परंतु तापुरुषके स्वरूपकू मैंअबपर्यंत निश्चयनहींकरताभयाहूं॥हेभगवन्॥पूर्व किसीकालविषे कोशलदेशकाअधिपति हिरण्यनाभनामाराजा हमारेसमीप आवताभया॥और सोहिरण्यनाभनामाराजा बहुतविनयपूर्वकताषोडशकलावालेपुरुषकास्वरूप हमारेसैं पूछताभया ॥ ताराजाकेप्रश्नकूं श्रवणकरिके मैं ताहिरण्यनाभराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥हेराजन् ॥ जोषोडशकलावालापुरुष तुमनैं हमारेसैंपूछाहै॥ताषोडशकलावालेपुरुषकू मैंजानतानहीं॥हेराजन् ॥ यालोकविषे जोपुरुष मोहकेवशतैं मिथ्यावचनकूंउच्चारणकरे है ॥ सोमिथ्यावादीपुरुषरूप वृक्ष दोनोंलोककेसुखरूपफलकूंनप्राप्तहोइके भाग्यरूपमूलसहित नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकार तामिथ्यावचनके महान्दुःखरूपफलकूंजानताहुआमैं स्वप्नविषेभी तामिथ्यावचनकूंकहतानहीं॥तो जाग्रतअवस्थाविषे तामिथ्यावचनकू मैं कैसेकहूंगा ॥ यातैं यासुकेशनामाऋषिनैं ताषोडशकलावालेपुरुषकूंजानिकरिकेभी हमारेप्रति नहींकथनकऱ्या ॥याप्रकारकीशंका तुमनैं आपणेमनविषे कदाचित्भी नहींकरणी॥ हेभगवन् पिप्पलादमुनि ॥ याप्रकारकावचन जभी हमनैं ताहिरण्यनाभराजाकेप्रतिकह्या ॥ तभीसोहिरण्यनाभराजा तूष्णीभावकूंप्राप्त

होइके आपणेदेशकूंजाताभया ॥ तिसदिनतें लेके हमारेचित्तविषे ताषोडशकलावालेपुरुषकेजानणेकीबहुतउत्कटइच्छालगिरहीहै ॥ आप कृपाकरिके ताषोडशकलावालेपुरुषकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो॥हेशिष्य॥इसप्रकार जभी तासुकेशानामाऋषिनें तापिप्पलादमुनिके प्रति प्रश्नकऱ्या॥तभी सोपिप्पलादमुनि तासुकेशाऋषिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥पिप्पलादमुनिरुवाच॥हेसुकेशा ॥ जोतुमनें षोडशकलावालापुरुष पूछाहै॥सोपुरुष कोईदूरस्थितनहीं है॥किंतु जिसपुरुषविषे तेषोडशकलारहेहैं॥सोपुरुष यातुमारेशरीरविषेही प्रत्यकूआत्मारूपकरिकेस्थितहै केसाहैसोपुरुष॥तासर्वजगत्रूपषोडशकलाओंकाअधिष्ठानहोणे तें यासर्वजगत्कानियंताहै॥अब तापरमात्मादेवरूपपुरुषकी अद्वितीयरूपतास्पष्टकरणेवासते तापरमात्मादेवतें तिनषोडशकलाओंकीउत्पत्ति कथनकरे हैं॥हेसुकेशा॥जोपरमात्मादेव प्रत्यकूरूपकरिके याशरीरविषेस्थितहै॥सोईहीपरमात्मादेव याजगत्कीउत्पत्तितेंपूर्व जरायुचर्मकीन्याई बंधनकरणेहारीउपाधिकेकरणेकी इच्छाकरताहुआ याप्रकारकाविचारकरताभया॥मैंपरमात्मादेव याशरीरविषेस्थितहुआभी सर्वत्रव्यापकहूं तथा विक्रियातेंरहितहूं ॥ ऐसा मैंपरमात्मादेव उत्क्रमण गमन आगमन इत्यादिकधर्मोंवालेसंसारकूं किसउपाधिकरिकेप्राप्तहोवोंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिके सोपरमात्मादेव प्रथम प्राण अपान समान व्यान उदान यापंचवृत्तिवाले प्राणरूपकलाकूं उत्पन्नकरताभया केसाहैसोप्राण ॥ याशरीरतें उत्क्रमणका तथापरलोकविषे गमनका तथापरलोकतेंआगमनका कारणहै ॥ १ ॥ तिसप्राणतेंअनंतर सोपरमात्मादेव श्रद्धारूपदूसरीकलाकूं उत्पन्न करताभया ॥ इहां शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तकरणेहारीआस्तिक्यबुद्धिकानाम श्रद्धाहै ॥ २ ॥ तिसश्रद्धातेंअनंतर सोपरमात्मादेव कर्मोंकेकरणेका तथातिनकर्मोंकिफलभोगका आधाररूपजे आकाश वायु तेज जल पृथ्वी यहपंचभूतहैं ॥ तिनपंचभूतरूप पंचकलाओंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ७ ॥ तिनपंचभूतोंतेंअनंतर सोपरमात्मादेव ज्ञानकासाधनरूपजेश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियहैं॥तथाकर्मकासाधनरूपजे वाकादिकपंचकर्मइंद्रियहैं ॥ तादशइंद्रियरूपअष्टमीकलाकूंउत्पन्नकरताभया ॥ ८ ॥ तिसतेंअनंतर सोपरमात्मादेव तिन इंद्रियोंकूं प्रवृत्तकरणेहारेमनरूपनवमीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥९॥ तिसतेंअनंतर सोपरमात्मादेव तामनकीस्थितिकरणेहारे अन्नरूपद

शमीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ १० ॥तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव वीर्यरूपएकादशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया॥इहां ताअन्नकरिकेज
न्य जोसामर्थ्य है ताकानाम वीर्य है ॥ ११ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव तावीर्य तैं जन्य जोशुद्धिकरणेहारातपहै तातपरूपद्वादशीक
लाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ १२ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव मंत्ररूपत्रयोदशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इहां वेदोंकेअध्ययनकाना
ममंत्रहै॥१३॥तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव लौकिकवैदिककर्मरूपचतुर्दशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया॥१४ ॥इहां मंत्रशब्दकोजोवेदकेअ
ध्ययनविषेलक्षणाकरीहै ताकायहकारणहै॥यद्यपि मंत्ररूप तथाब्राह्मणरूपजेवेदहैं॥तेवेद साक्षात्प्राणतैंहीप्रगटहुएहैं॥तहांश्रुति॥अस्यमह
तोभूतस्यनिःश्वसितमेतदृग्वेदोयजुर्वेदःसामवेदोऽथर्वांगिरसइति ॥ अर्थयह ॥ इसमहान्परमात्मादेवकेही ऋग् यजुष् साम अथर्वण यह
चारिवेद श्वासरूपहैं ॥ १ ॥ याश्रुतिनैं साक्षात् प्राणोंतैं तिनवेदोंकाप्रगटहोणा कथनकऱ्याहै॥यातैं सामर्थ्यरूपवीर्य तैं तिनवेदोंकीउत्पत्ति
हुईनहीं॥तथापिअन्नहैआदिकारणजिसका ऐसाजोसामर्थ्यरूपवीर्य है तथातपहै॥तावीर्यकरिकै तथातपकरिकै तेवेद अध्ययनादिरूपविस्ता
रकूंप्राप्तहोवे हैं॥यातैं तेवेद अध्ययनद्वाराही तिनवीर्यादिकोंतैंप्रगटहोवे हैं ॥साक्षात्प्रगटहोवेनहीं ॥ यातैं तामंत्रपदकी वेदकेअध्ययनविषे
लक्षणाकरणीयुक्तहै॥ और तिनकर्मों तैंअनंतर सोपरमात्मादेव लोकरूपपंचदशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इहांतिनकर्मों तैंउत्पन्नभया
जोसुखदुःखरूपफलहै ताकानाम लोकहै ॥ १५ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव नामरूपषोडशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इहां श
रीरावच्छिन्नचेतनकेवाचकजे देवदत्त यज्ञदत्त इत्यादिकशब्दहैं तिनोंकूंनामकहेहैं॥जोषोडशीकलारूपनाम मुक्तपुरुषोंकाभी निवृत्तहोवे
नहीं ॥ किंतु सोनामप्रलयकालपर्यंत स्थिररहेहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे तानामकूं अनंत यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ १६ ॥
यहषोडशकला तापरमात्मादेवतैं उत्पन्नहोवे हैं॥तहांश्रुति॥सप्राणमसृजतप्राणाच्छ्रद्धां खंवायुर्ज्योतिरापःपृथ्वींद्रियंमनोऽन्नमन्नाद्वीर्यंतपोमं
त्राःकर्मलोकालोकेषुचनामच ॥ १ ॥ याश्रुतिका यहपूर्वउक्तअर्थही जानिलेणा ॥ हेसुकेशा ॥ जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कार
हुआहै ॥ तामुक्तपुरुषकीदृष्टिकरिकैतो यहप्राणादिकषोडशकला आपणेअधिष्ठाननिर्गुणपुरुषकूंप्राप्तहोइकै अदर्शनभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥

जैसे याळोकविषे श्रीगंगायमुनादिकनदियां जबपर्यंत समुद्रकूंप्राप्तनहींभई ॥ तबपर्यंत तेनदियां आपणेआपणे भिन्नभिन्ननामरूपकूंधार
णकरे हैं ॥ और तेनदियां जभी तासमुद्रकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तभी तेनदियां आपणेभिन्नभिन्ननामोंकूं तथाभिन्नभिन्नरूपोंकूं परित्यागकरिके
तासमुद्रकेनामरूपकूंहीं धारणकरेहैं ॥ तैसे तामुक्तपुरुषके यहप्राणादिकषोडशकला जबपर्यंत तानिर्गुणपुरुषकूंनहींप्राप्तभई ॥ तबपर्यंत
हीं आपणेआपणेभिन्नभिन्ननामरूपकूंधारणकरे हैं ॥ और तेप्राणादिकषोडशकला जभी तानिर्गुणपुरुषकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तभी तेप्राणादिक
कला आपणे भिन्नभिन्ननामरूपकापरित्यागकरिके तानिर्गुणपुरुषकेनामरूपकूंहीं धारणकरे हैं ॥ हेसुकेशा ॥ जिसपुरुषविषे यहप्राणादि
कषोडशकला लयभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ सोपुरुषकेसाहे ॥ वास्तवतें नामरूपतेंरहितहे ॥ तथा निरवयवहे ॥ तथा आनंदस्वरूपहे ॥ तथा
स्वयंज्योतिअमृतस्वरूपहे ॥ और जैसे रथचक्रकेनाभिविषे अरास्थितहोवे हैं ॥ तैसे जिसपुरुषविषे यहप्राणादिकषोडशकलास्थितहो
वे हैं॥ हेसुकेशा ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जोपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेसाक्षात्कारकरे है ॥ तिसपुरुषकूं याशरीरकेनाशतेंअनंतर पुनः
प्रमादरूपमृत्युतेंभयकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ यातें याअधिकारीपुरुषोंनें ताब्रह्मात्मज्ञानकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ ६ ॥ हेशिष्य ॥
इसप्रकार सोपिप्पलादमुनि तासुकेशानामाभारद्वाजऋषिकेप्रति आत्माकाउपदेशकरिके पुनः तिनसर्वऋषियोंकेप्रति याप्रकारकावचन
कहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेसुकेशादिकसर्वब्राह्मणो ॥ यहजोअद्वितीयब्रह्मकास्वरूप हमनें तुम्हारेप्रति उपदेशकऱ्याहे ॥
इतनाहीं मैंजानताहूं ॥ इसतेंपरेकोईवस्तु मैं जानतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोब्रह्मकावास्तवस्वरूप हमनें तुम्हारेप्रति उपदेशकऱ्याहे ॥
तिसतेंपरेदूसराकोईवस्तुउपदेशकरणेयोग्यनहीं है ॥ यातेंताअद्वितीयब्रह्मकूं तुमसर्व आपणाआत्मारूपकरिके निश्चयकरो॥हेशिष्य॥इसप्र
कार जभी तापिप्पलादमुनिनेंतिनसुकेशादिकषट्ऋषियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याका उपदेशकऱ्या॥तभीतेसर्वऋषिता।पिप्पलादमुनिका देवताकी
न्याई अर्चनपूजनकरतेभये॥और तेसर्वऋषि तापिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकेवचनकहतेभये॥हेभगवन्॥आपनें कृपाकरिके हमारे सर्व
संशयोंकूंछेदनकऱ्याहे॥और हमारेकूं मायातेंपर निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारकराइकेआपनेंकृतार्थकऱ्याहे ॥ हेभगवन् ॥ आपकेउपदेशककेरि

ब्राह्मणभावकूंप्राप्तहुए हमसर्व आजदिनविषे आपतें ब्रह्मवित्स्वरूपकरिकेउत्पन्नहुएहैं॥काहेतें॥ब्रह्मजानातिब्राह्मणः ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरिकेही मुख्यब्राह्मणभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ यातें आपही हमारेपिताहो ॥ तथा आपहीहमारीमाताहो ॥ आपतें विना दूसराकोई हमारापितामातानहीं है ॥ काहेतें यहलोकप्रसिद्धपितामातातो याशरीररूपमिथ्याआत्माकीहो उत्पत्तिकरेहैं ॥ जाशरीर केसंबंधतें हमजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता मनुभगवान्नेंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान्ब्रह्मदः पिता ॥ ब्रह्मजन्महिविप्रस्य प्रेत्यचेहचशाश्वतं ॥ अर्थयह ॥ यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरणेहाराजोपिताहै ॥ तथा ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरणेहाराजोगुरुहै ॥ तिनदोनोंविषे ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरणेहारा गुरुरूपपिता अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतें याअधिकारीपुरुषका ताब्रह्मउपदेष्टागुरुतें जोब्रह्मवित्स्वरूपकरिकेजन्महै ॥ सोब्रह्मवित्स्वरूपजन्म याजीवतअवस्थाविषे तथामरणतेंअनंतर सर्वकालविषे नित्यहै ॥ ताब्रह्मवित्स्वरूपजन्मका कदाचित्भीनाशहोवैनहीं ॥ १ ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ शरीरमेतौकुरुतः पितामाताचभारत ॥ आचार्यदत्तायाजातिः सानित्यासाजरामरा ॥ अर्थयह ॥ हेभारत॥यहलोकप्रसिद्धपितामाता जिसशरीरकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ सोशरीरतो जरामरणकरिकेयुक्तहै ॥ और यहब्रह्मवेत्तागुरु याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति जिसब्रह्मवित्स्वरूपजातिकोप्राप्तिकरेहै ॥ साब्रह्मवित्स्वरूपजाति नित्यहै तथाअजरअमरहै ॥ यातें यहब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारागुरु यालोकप्रसिद्धपितामातातें अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ १ ॥ हेभगवन् ॥ कामक्रोधादिकमगरोंकरिकेयुक्त जोयहअविद्यारूप दुस्तरसमुद्रहै ॥ ताअविद्यारूपसमुद्रतें आपनें ब्रह्मविद्यारूपमहान्नौकाकरिके हमारेकूं पारकऱ्याहै ॥ याआपकेमहान्उपकारकीनिवृत्तिकरणेवासते हम तीनलोकविषे कोईपदार्थदेखतेनहीं ॥ जोपदार्थ आपकेताईदेकरिके हम आपकेऋणतेंमुक्तहोवैं॥यातें आपब्रह्मवेत्तागुरुवोंकेप्रसन्नकरणेवासते हमारा सर्वदानमस्कारहोवे॥ताहमारेनमस्कारमात्रकूं अंगीकारकरिकेही आप प्रसन्नहोवो ॥ हेशिष्य॥ याप्रकारकेवचन जभी तिनसुकेशादिषट्ऋषियों नें तापिप्पलादमुनिकेप्रति कथनकरे ॥तभी सोपिप्पलादमुनि प्रसन्नहोइके आशीर्वादपूर्वक तिनऋषियोंकूंविदाकरताभया ॥ तथा सोपिप्पलादमुनि आपभी तास्थानतें सुखपूर्वक

जाताभया ॥ हेशिष्य ॥ मोक्षकीप्राप्तिकरणेहाराजोयहआत्मज्ञान है सोआत्मज्ञान महान्ब्रह्मवेत्तागुरुवोंकरिकेउपदेशकन्या हुआभी शुद्धचित्तवालेअधिकारीपुरुषोंकूंहीं प्राप्तहोवै है ॥ अशुद्धचित्तवालेपुरुषोंकूं सोआत्मज्ञान प्राप्तहोवैनहीं ॥ और साचित्तकी शुद्धि उपासनाकरिकै प्राप्तहोवै है ॥ उपासनातेंविना साचित्तकीशुद्धिहोवैनहीं ॥ जैसे पूर्व नृसिंह भगवान्कीउपासनाकरिके शुद्ध हुआहै चित्तजिनोंका ऐसेदेवता प्रजापतिरूपगुरुकेउपदेशतें ताब्रह्मात्मज्ञानकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ हेशिष्य यासप्तदशेअध्यायकेआ दिविषे जोतुमनें पिप्पलादमुनिउक्तब्रह्मविद्या हमारेसैंपूछीथी ॥ सोसंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी ॥ अब जिसअर्थके श्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तूं हमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्य पादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे प्रश्नोपनिषत्सारार्थप्रकाशे पिप्पलादसुकेशादिकसंवादो नाम सप्तदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १७ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृत भाषाआत्मपुराणे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

॥इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेसप्तदशोऽध्यायःसमाप्तः॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे अष्टादशाऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः॥अथ अष्टादशाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वस सदशेअध्यायविषे अथर्वणवेदके प्रश्नउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या॥अबयाअष्टादशेअध्यायविषे तिसीअथर्वणवेदकेनृसिंहपूर्वोत्तरतापनी यउपनिषद्का तथा ईशावास्यउपनिषद्का अर्थनिरूपणकरे हैं ॥ तहां पूर्वअध्यायोंविषे नानाप्रकारकोब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिके तृप्तिकूंप्रा प्तहुआभी सोशिष्य पूर्वसप्तदशेअध्यायकेअंतविषे नृसिंहभगवान्‌के उपासकदेवतावोंकेवृत्तांतकूं श्रवणकरिके पुनःप्रश्नकरणेकीइच्छाकरता भया ॥ और ब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिके अत्यंतहर्षकूंप्राप्तहुआहैमनजिसका तथाचित्तकोप्रसन्नताकरिके विकासितहुआहैमुखरूपकमलजि सका ऐसासोशिष्य ताआपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनें हमारेप्रति ऐतरेयादिक अनेकमुनियोंकरिकेकथनकरीहुई तथाइंद्रआदित्यादिकअनेकदेवतावोंकरिकेकथनकरीहुई नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ ताब्र ह्मविद्याकेश्रवणकरिके हमारा घोरसंसारकीप्राप्तिकरणेहारा आवरणरूपअज्ञान निवृत्तहोताभयाहे ॥ याकारणतेंही हमारेकूं स्वयंज्योति आत्माही सर्वदा प्रतीतहोवे है ॥ जैसे विषयासक्तकामीपुरुषकूं आपणेहृदयविषे सर्वदा कामिनीहीप्रतीतहोवे है ॥ तैसे हमारेकूं आपणेहृ दयविषे सोआनंदस्वरूपआत्माही सर्वदा प्रतीतहोवे है ॥ हेभगवन् ॥ आपकेउपदेशतें आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजानिके मैं अभी कृत कृत्यभावकूंप्राप्तहुआहूं ॥ यातें ताआत्माकेस्वरूपविषे हमारेकूं किंचित्मात्रभी संशयरह्यानहीं ॥ यातें ताआत्माकेनिर्णयकरणेविषे हमा रेकूं अभी किंचित्मात्रभी पूछणेयोग्यरह्यानहीं ॥ तथापि जैसे पितामाता बालकका लालनकरे हैं॥ तैसे आपनेंभी हमारालालनकऱ्याहै ॥तहां हमनें वारंवार करेजेप्रश्नहैं तिनप्रश्नोंका लोभतैंरहितहोइके जोआपनें उत्तरकह्याहै यहही आपनें हमारालालनकऱ्याहै ॥ यातें ताबालभावकूंअंगीकारकरिके हमारेकूं किसीअर्थकेजानणेकीइच्छारूप एककौतूहलहै ॥ सोआपकृपाकरिके हमारेप्रति कथनकरो ॥ अब सोशिष्य तालालनरूपताकरिके पूर्वश्रवणकरीहुई सर्वकथाकूं वर्णनकरे है ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके प्रथमअध्यायविषे आपनें ऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे आपनें ऐतरेयमुनिउक्तआत्मज्ञान कथनकऱ्या

था जोआत्मज्ञान सनकादिकमुनियोंके तथावामदेवादिकप्रजाके संवादकरिकेयुक्तहै ॥ तथा जोआत्मज्ञान द्विजोंकूं अत्यन्तदुर्लभहै ॥ काहेतें तिनसर्वद्विजोंविषे जेअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकूं श्रवणकरिकेजीवे हैं॥तेहमारेसरीखेभाग्यवान्श्रोता यालोकविषे विरलेही हैं ॥ तथा ताआत्मज्ञानकेकथनकरणेहारे आपसरीसेभाग्यवान्वक्तापुरुषभी दुर्लभही हैं ॥ ऐसादुर्लभआत्मज्ञान आपनें हमारेप्रति कथन कऱ्याथा ॥ और हेभगवन् ॥याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनें तिसीऋग्वेदके कौषीतकिउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादोनोंअध्यायोंविषे आपनें कौषीतकिमुनिउक्तज्ञान कथनकऱ्याथा ॥ जोकौषीतकिमुनिउक्तज्ञान इदानींकाल विषे लुप्तसंप्रदायहुआ वर्त्तमानहै ॥ काहेतें सोकौषीतकिमुनिउक्तज्ञान इदानींकालविषे किसीविरलपुरुषोंविषेही विद्यमानहै ॥ परन्तु अमुकदेशविषे ताकौषीतकिशाखाकेअध्ययनकरणेहारे ब्राह्मण विद्यमानहैं ॥ याप्रकारतें ताज्ञानकीप्रसिद्धिहैनहीं ॥ ताकौषीतकिमुनिउक्त विज्ञानविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिके आपनें नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ तथा राजाअजातशत्रुके तथा बालाकिब्राह्मणके संवादकरिके आपनें नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ जोअजातशत्रुबालाकिकासंवाद आश्चर्यकाकारणहै ॥ तथा श्रोतापुरुषोंकेबुद्धिकीवृद्धिकरणेहाराहै ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनें यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहांयाज्ञवल्क्यमुनि स्वकृत याज्ञवल्क्यस्मृतिनामाग्रंथविषे संन्यासियोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेश करताभयाहै॥हेसंन्यासियो॥जावृहदारण्यकउपनिषद् मैंयाज्ञवल्क्यसूर्यभगवान्तें अध्ययनकरताभयाहूं॥साबृहदारण्यकउपनिषद्भी यामुमुक्षुजनों नें अवश्यकरिके अर्थसहित जानणेयोग्यहै॥कैसाहैसोबृहदारण्यकउक्तविज्ञान ॥ मधुकांड याज्ञवल्क्यकांड खिलकांड यातीनकांडोंकरिके प्रकाशितहै ॥ तथा दोपुरुषवंश एकब्रह्मवंश यातीनवंशोंकूं कथनकरणेहाराहै ॥ तथा मधुब्राह्मणविषे प्रधानताकरिके परिनवसानकूं प्राप्तहुआहै ॥ ऐसाविज्ञान उपासनाभागकूंछोडिके आपनें कथनकऱ्याथा॥हेभगवन्॥जिसबृहदारण्यकउपनिषद्केविज्ञानविषे मधुकांडविषेस्थितसर्वमंत्रोंकेअर्थकीप्रगटताकरिके तासर्वमधुकांडका महान्अर्थ आपनें प्रगटकऱ्याथा॥तामधुकांडकेमं

त्रेकिअर्थविषेही खिलकांडकेअर्थकाअंतर्भावकरिके आपनेंकथनकऱ्याथा तामधुकांडविषे आपनेंदध्यङ्अथर्वणके तथाअश्विनीकुमारों के संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और तिनअश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकरिके जिसप्रकार देवराज इंद्रनें तादध्यङ्मुनिकेमस्तककाछेदनकऱ्याथा ॥ तथा तिनअश्विनीकुमारों नें जिसप्रकार तादध्यङ्मुनिका जीवनकऱ्याथा ॥ सासंपूर्ण वार्त्ता आपनें ताचतुर्थअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् पंचम षष्ठ यादोअध्यायरूप जोयाज्ञवल्क्यकांडहै ॥ तायाज्ञवल्क्यकांडविषे यथाक्रमतें प्रवृत्तभईजा जल्पकथा वादकथा यहदोप्रकारकीकथाहै ॥ जाकथा श्रद्धावानपुरुषोंकूं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकरनेहारीहै॥सादोप्रकारकीकथाभी आपनें अध्यायोंकेभेदकरिकेकथनकरीथी ॥ तहां याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञसभाविषेस्थित आश्वलादिकब्राह्मणोंके तथागार्गी के हृदयविषेस्थितजेसंशयथे ॥ जेसंशय तर्करूपबलतें तिनों नें प्रगटकरेथे॥तिनसर्वसंशयोंकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि जल्पकथाकरिके भेदनकरताभया॥और सोयाज्ञवल्क्यमुनि शाकल्यब्राह्मणकेतो शरीरसहिततिनसंशयोंकूं भेदनकरताभया॥ इहां परस्परजीतनेकीइच्छाकरिके जोशास्त्रकेअर्थकाविचारकरणाहै ताकानाम जल्पकथाहै ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ताकथनकरीथी ॥ मिथिलापुरीकानाथ राजाजनक यासंसाररूपवनतैंभयकूंप्राप्तहोताभया ॥ ताजनकराजाकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि वादकथाकरिके तासंसारवनतैं बाह्यकरताभया ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी॥सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीमैत्रेयीस्त्रीकूं तावादकथाकरिके तासंसाररूपवनतैंबाह्यकरताभया॥तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरताभया॥इहां तत्ववस्तुकेनिर्णयकरणेवासते जोगुरुशिष्यकासंवादहै ताकानाम वादकथाहै॥और हेभगवन्॥ याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरमुनिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याआपनें कथनकरीथी॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा॥तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिके नानाप्र

कारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे आपनें तिसीयजुर्वेदकेतैत्तिरीयकउपनिष
द्काअर्थ तथानारायणीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिकेनानाप्र
कारकी ब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ तथा सत्यादिकसर्वसाधनों
विषे संन्यासआश्रमकीअधिकता कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे आपनें जाबालादिकएकादशउप
निषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ जाबालादिकउपनिषदोंविषेकथनकऱ्याजो
परमहंससंन्यासहै ॥ तापरमहंससंन्यासकूं पूर्वसंवर्त्तकादिकमहानपुरुष ग्रहणकरतेभयेहैं॥और तापरमहंससंन्यासविषे वैराग्यहीकारणहै ॥
सोवैराग्य गर्भदुःखोंकेविचारकरिके तथामृत्युचिन्होंकेज्ञानकरिके तथाअष्टांगयोगकरिके प्राप्तहोवे है ॥ और तापरमहंससंन्यासविषे
विरक्तपुरुषोंकाहीअधिकारहै ॥ और तिनपरमहंससंन्यासियोंका शिखायज्ञोपवीतकेत्यागपूर्वक एकदंडकाधारणरूप बाह्यवेशहै ॥ तथा
तिनसंन्यासियोंका ब्रह्मचर्यादिकधर्मोंकापालनरूप आचारहै ॥ तथा आत्मज्ञानरूपमुख्यआचारहै ॥ इत्यादिकसर्ववार्त्ता आपनें ताए
कादशेअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश यातीनअध्यायोंविषे आपनें सामवेदकेछां
दोग्य उपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहांद्वादशेअध्यायविषेउद्दालकमुनिके तथाश्वेतकेतुके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या
आपनें कथनकरीथी॥और याआत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्यायविषे भगवान्सनत्कुमारके तथानारदमुनिके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्म
विद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेचतुर्दशेअध्यायविषे प्रजापतिके तथाइंद्रविरोचनके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्म
विद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेपंचदशेअध्यायविषे आपनें तिसीसामवेदके केनउपनिषद्काअर्थ निरूप
णकऱ्याथा ॥ तापंचदशेअध्यायविषे ब्रह्मविद्यारूपउमादेवीकेअनुग्रहतें सोदेवराजइंद्र यक्षरूपब्रह्मकूंदेखताभया यहवार्त्ता आपनें कथनक
रीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेषोडशेअध्यायविषे आपनें अथर्वणवेदके मुंडकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तापोडशे

अध्यायविषे जाब्रह्मविद्या ब्रह्मानें अथर्वामुनिकेप्रति उपदेशकरीथी ॥ साब्रह्मविद्या अंगिरामुनिके तथाशौनकमुनिके संवादकरिके आपनें कथनकरीथी और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेसप्तदशेअध्यायविषे आपनें तिसीअथर्वणवेदके प्रश्नउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ तासप्तदशेअध्यायविषे पिप्पलादमुनिके तथासुकेशादिकषट्मुनियोंके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ हेभगवन् ॥ इसप्रकार पूर्व जोजोअर्थ हमनें आपसेंपूछाथा ॥ सोसर्वअर्थ आपनें हमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ यातें अभीभी मैं बालक आपसेंकिंचित् अर्थकेपूछणेकीइच्छाकरताहुं ॥ आप कृपाकरिके ताहमारे प्रश्नकाउत्तरकहो ॥ हेभगवन् ॥ यहजोप्रश्न मैं आपकेआगे करताहुं ॥ सोअंधरज्जुन्यायकीरीतिसें पूर्वउक्तआपकेअर्थका विस्मरणकरिके करतानहीं ॥ किंतु आपकेकहेहुएसर्वअर्थकूं मनविषे स्मरणकरिकेही सोप्रश्नमैं आपकेआगेकरताहुं ॥ यातें हमारेप्रश्नकाउत्तर आपकूंअवश्यकह्याचाहिये ॥ सोहमाराप्रश्नयहहै ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वसप्तदशेअध्यायकेअंतविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ नृसिंहभगवान्कीउपासनाकरिके शुद्धभयाहै अंतःकरणजिनोंका ऐसेदेवता प्रजापतिरूपब्रह्माकेउपदेशतें ब्रह्मात्मज्ञानकूंप्राप्तहोतेभये हैं॥हेभगवन्॥ताब्रह्मात्मज्ञानकेश्रवणकरणेकी मैं इच्छाकरताहुं ॥आप कृपाकरिके सोब्रह्मात्मज्ञान हमारेप्रति कथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकरिकेपूछाहुआसोश्रीगुरु अथर्वणवेदविषेस्थित नृसिंहभगवान्कीकथा ताशिष्यकेप्रति कथनकरताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच॥हेशिष्य॥पूर्वजोहमनें नृसिंहभगवान्केउपासकदेवता कथनकरेथे ॥ तेचक्षुआदिकोंकि अधिष्ठाता सूर्यादिकदेवताही हैं॥अबतानृसिंहभगवान्केस्वरूपकावर्णनकरेहैं॥हेशिष्य॥जोमनुष्यरूपहोवैतथासिंहरूपहोवे ताकानाम नृसिंहहै॥ऐसानृसिंहभगवान्ही याअधिकारीपुरुषोंकू उपासनाकरणेयोग्यहै॥कैसाहैसोनृसिंहभगवान्॥कोपवानहोइके सर्वप्राणियोंकेसंहारकूंकरेहै ॥ याकारणतें सोनृसिंहभगवान्ही रुद्ररूपहै ॥ और सोनृसिंहभगवान्ही यासर्वजगत्कूंउत्पन्नकरेहै॥यातें सोनृसिंहभगवान्ही ब्रह्मारूपहै ॥ और सोनृसिंहभगवान्ही यासर्वजगत्कापालनकरेहै ॥ यातें सोनृसिंहभगवान्ही विष्णुरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ सब्रह्मासशिवःसहरिः ॥ और अथर्वणशिरनामाउपनिषद्विषे कथनकऱ्याजोरुद्रभगवान्है ॥ सोरुद्रभगवान्भी यानृसिंहभगवान्काहीस्वरूपहै ॥ कैसाहै

सोरुद्रभगवान् ॥ शरणागतजीवोंका पालनकरणेहाराहै ॥ तथा जोरुद्रभगवान् कैलासरूपस्वर्गकूं अथवा सत्ववृत्तिरूपस्वर्गकूं प्राप्तहुए त
थातूकोनहै याप्रकारपूछतेहुए सर्वदेवताओंकागुरुरूपहै॥तथा जोरुद्रभगवान् तिनदेवताओंकेप्रति आपणेसर्वव्यापिस्वरूपकाउपदेशकरि
के तथासर्व तैंअनंतरआपणेप्रत्यक्ष्भावकूं गोपकरिके तिनदेखतेहुएदेवताओंकाअनादरकरिके आपणेशरीरकूं अंतर्धानकरताभया॥और
जिसउमापतिभगवान्के ब्रह्माविष्णुआदिकसर्व देवता विभूतिरूपहैं ॥ और जिसउमासहितरुद्रभगवान्रूपआत्माकूंदेखिके प्रसन्नमनहुए
तेसर्व देवता सर्वलोकोंऊपरअनुग्रहकरिके आपणेसमीपस्थित अधिकारीजनोंकेप्रति याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हेअधिकारीजनों ॥ ह
मदेवता उमादेवीसहितमहादेवरूपीअमृतकूं आपणेनेत्ररूपीपात्रकरिके पानकरतेभये हैं ॥ यातैं हमदेवता महान्भाग्यवाले हैं ॥ तथा मर
णतैंरहितअमृतहुएहैं ॥ और हमदेवता श्रद्धाभक्तिपूर्वक तारुद्रभगवान्काही आराधनकरतेभये हैं॥याकारणतैंही हमदेवता तापरमज्यो
तिआनंदस्वरूप अद्वितीयरुद्रभगवान्कूं आपणाआत्मारूपकरिकेप्राप्तहोतेभये हैं ॥ तारुद्रभगवान्कीप्राप्तिकरिके हमदेवता जन्ममरणा
दिकसर्वदुःखों तैंरहितहोतेभये हैं॥यातैं अभीहमदेवता आपणेइंद्रादिकदेवतास्वरूपकूं आपणाआत्मारूपकरिके कदाचितभीनहींजानैंगे ॥
किंतु सोउमापतिरुद्रभगवान्ही हमाराआत्माहै ॥ किंवा कामदेवकूं नष्टकरणेहाराजो उमापतिरुद्रभगवान्है ॥ ताउमापतिरुद्रभगवान्कूं
हमदेवता आपणाआत्मारूपकरिके जानतेभये हैं ॥ यातैं हमदेवताओंकूं सोकामरूपशत्रु तथाक्रोधादिकशत्रु अभी किंचित्मात्रभी अनर्थ
कीप्राप्तिकरिसकैंगेनहीं ॥ कैसाहैसोकामरूपशत्रु ॥ जैसे यालोकविषे कपटीजुवारी यत्किंचित्धनादिरूपपुण्यकूं मध्यविषेराखिके लोकों
केसर्वधनादिकपदार्थोंकूं हरणकरिलेवै हैं॥तैसे यहकामभी अत्यंततुच्छनारीशरीररूपपण्यकरिके यासर्वलोकोंके धर्मादिरूपसर्वधनकूंहरण
करिलेवै हैं ॥ यातैं यहकाम अत्यंतधूर्त है ॥ किंवा ॥ सर्व देवताओंकाआत्मारूप जोरुद्रभगवान्है ॥ सोरुद्रभगवान् हमदेवताओंकेहृदय
विषे सर्वदानिवासकरे है ॥ याकारणतैं तेसर्व देवताभी हमारेहृदयविषेनिवासकरे हैं ॥और सोरुद्रभगवान् हमजीवोंके प्राणअपानदोनों के
मध्यविषे स्थितहोइके तिनप्राणअपानदोनोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे प्रवृत्तकरे है ॥ और स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनवाच्यअर्थोंकेसाथ

तादात्म्यभावकूंप्राप्तभयाजो अकार उकार मकार यातीनमात्राओंवाला ॐकाररूपप्रणवहै ॥ ताप्रणवतैंभी जोरुद्रभगवान् तुरीयरूपक रिके परेवर्त्तमानहै ॥ और मनहैप्रधानजिसविषे ऐसाजो प्राणइंद्रियादिकोंकासमुदायरूप सूक्ष्मलिंगशरीरहै ॥ तालिंगशरीरकूंभी सोरुद्रभ गवान्ही साक्षीरूपकरिकेंप्रकाशकरे है ॥ कैसाहैसोलिंगशरीर ॥ जैसे यहलोकप्रसिद्धपट नानाप्रकारकेचित्रोंकाआधाररूपहोवे है॥तैसे जो सूक्ष्मलिंगशरीररूपपट यास्थूलजगत्रूपचित्रोंकाआधाररूपहै ॥ तथा जिससूक्ष्मलिंगशरीरविषे तिसतिसअर्थकूंविषयकरणेहारी यह क्षुधातृषाकामक्रोधादिकोंकीसूक्ष्मअवस्थारूप अनेककोटिवासना रहेहैं ॥ जिनवासनाओंकरिके यहसंपूर्णसंसार प्रवर्त्तमानहोवे है ॥ ऐसे लिंगशरीरकूंभी सोरुद्रभगवान्ही प्रकाशकरेहै ॥ और अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा यासाढेतीनमात्रावालेप्रणवमंत्रकेसाथ तादात्म्य भावकूं प्राप्तभयाजो रुद्रभगवान्है ॥ तारुद्रभगवान्के यहअष्टादशनाम वेदवेत्तापुरुषों नें कथनकरेहैं ॥ ॐकार १ प्रणव २ सर्वव्यापी ३ अनंत ४ तारक ५ सूक्ष्म ६ शुक्ल ७ वैद्युत ८ परब्रह्म ९ एक १० एकोरुद्र ११ ईशान १२ भगवान् १३ महेश्वर १४ महादेव १५ विष्णु १६ ब्रह्मा १७ प्रजापति १८ यहअष्टादशनामहैं ॥ अब यथाक्रमतें तिनअष्टादशनामोंकाअर्थ निरूपणकरे हैं ॥ उच्चारणकर्‌याहुआ यहरुद्ररूपप्रणव यालोकोंकेप्राणोंकूं शिररूपऊर्ध्वस्थानविषे प्राप्तकरे है॥अथवा उत्कृष्टलोकविषेप्राप्तकरे है॥याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ता प्रणवरूपरुद्रभगवान्कूं ॐकारयानाम करिकेकथनकरेहैं॥ १ ॥और सोरुद्रभगवान् आपणेब्राह्मणादिकभक्तजनोंकूं ऋगादिकचारिवेदरूप शब्दब्रह्मकोप्राप्तिकरेहै॥अथवा भूमिलोकतेंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंविषेविद्यमान जेनानाप्रकारकेआनंदहैं तिनसर्वआनंदोंकी प्राप्तिकरे है ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं प्रणव यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ अथवा भक्तजनोंके दुःखसहित पापादिकसर्व विकारोंकाजो आत्यंतिकलयहै ॥ सोआत्यंतिकलय तारुद्रभगवान्तैंहीहोवे है ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं प्रणव यानामकरिकेकथनकरे है ॥ २ ॥ और जैसे पीसेहुएतिलोंकेपिंडकूं तथाघनीभूतदधिपिंडकूं तैलघृतादिरूपस्नेह आपणेस्वरूपकरिके अंतरबाह्यव्याप्तकरे है ॥ तैसे सोरुद्रभगवान्भी आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिके यासर्वजगत्कूं अंतरबाह्यव्याप्तकरे है ॥ याकारणतें

वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं सर्वव्यापी यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥३॥ और सोरुद्रभगवान् देशकृतपरिच्छेद कालकृतपरिच्छेद वस्तु
कृतपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंतेंरहितहै ॥तथा याअधिकारीपुरुषोंकूं आपणेहृदयविषे उपासनातेंप्रतीतहोवे है॥याकारणतें वेदवेत्तापुरुष
तारुद्रभगवान्कूं अनंत यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ ४ ॥ और सोरुद्रभगवान् आपणेभक्तजनोंकूं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिके यादुःखरू
पसंसारसमुद्रतें पारकरे है ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं तारक यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ ५ ॥ और सोरुद्रभगवान् या
सर्वशरीरोंविषे अत्यंतसूक्ष्मजीवरूपकरिके स्थितहोवे है॥याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं सूक्ष्म यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥
तहां एककेशकेअग्रभागकाजोशततमाभागहै ताशततमेभागकाभीजो शततमाभागहै ॥ ताभागकीन्याईं सोरुद्रभगवान् जीवरूपकरिके
सूक्ष्महै ॥ तासूक्ष्मताभी अंतःकरणादिक उपाधियोंकेसंबंधतें है वास्तवतैंनहीं ॥ वास्तवतैंतो सोरुद्रभगवान् आकाशादिकमहान्पदार्थोंतें
भीमहान्है ॥ तहां श्रुति ॥ महतोमहीयान् ॥ अथवा योगीपुरुषोंका जोपरशरीरविषेप्रवेशहोवे है ॥ ताप्रवेशकाकारण तिनयोगीपुरुषोंका
प्राणहै ॥ सोयोगीपुरुषोंकाप्राण तापरशरीरविषेस्थितनाडीआदिक सर्वसूक्ष्म अंगोंविषेप्रवेश करे है ॥ यातें सोप्राण अत्यंतसूक्ष्महै ॥ ताप्रा
णतैंभी यहरुद्रभगवान् अत्यंतसूक्ष्महै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं सूक्ष्म यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ ६ ॥ और यहरु
द्रभगवान् आपणेभक्तजनोंके अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यापंचक्लेशोंको आत्यंतिकनिवृत्तिकरे है॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष
तारुद्रभगवान्कूं शुक्ल यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ ७ ॥ और यहरुद्रभगवान् निर्गुणसाक्षीरूपकरिके यासंघातकेअंतरप्रकाशकरे है ॥और
सूर्यादिकसगुणरूपकरिके बाह्यप्रकाशकरे है ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं वैद्युत यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥८॥और यह
रुद्रभगवान् याआकाशादिकसर्वजगत्तें महान्है ॥तथा आपणीसत्तास्फूर्तिदेकरिके यासर्वजगत्केवृद्धिकाकारणहै॥याकारणतें वेदवेत्तापु
रुष तारुद्रभगवान्कूं परब्रह्म यानामकरिके कथनकरे हैं ॥९॥ और यहरुद्रभगवान् यासर्वजगत्कोउत्पत्तिस्थितिलयकरणेहाराहै ॥ यातें
यहरुद्रभगवान्ही यासर्वजगत्रूपकरिकेस्थितहोवे है ॥ सोजगत्काकारणरूपरुद्रभगवान् अज्ञानकेवशतें कल्पितभेदवालाप्रतीतहुआभी

वास्तवतें सर्वभेदतेंरहितहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं एक यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ १० ॥ और यहरुद्रभगवान् सर्वभेदतेंरहित अद्वितीयरूपहै तथा आपणीमायाशक्तिकरिके यासर्वजगत्का पालनकरे है ॥ तथा आपणेभक्तजनोंकूं तुरीयपदकोप्राप्ति करिके सर्वदुःखोंकोनिवृत्तिकरे है॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं एकोरुद्र यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥११ ॥ और जैसे पट कदाचित् संकोचवालाहुआ स्थितहोवे है॥और कदाचित् सोपट विकासवालाहुआ स्थितहोवे है ॥ तैसे यहरुद्रभगवान्भी याजगत्केप्रल यकालविषेतो संकोचवालाहुआ स्थितहोवे है ॥ और याजगत्कोउत्पत्तिकालविषे विकासवालाहुआ स्थितहोवे है ॥ तथा यासर्वजगत्का पालनकरेहै ॥ तथा सोरुद्रभगवान् यासर्वजीवोंकेबुद्धियोंकाकारणरूपहै ॥ तथातिनबुद्धिआदिकोंके रागद्वेषादिकसर्वधर्मोंतेंरहितहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं ईशान यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहरुद्रभगवान्ही यासर्वजगत्का अभिन्न निमित्तउपादानकारणहै ॥ तथा बुद्धिआदिकसर्वजगत्तेंअंतरहै ॥ तथा विषमतादिकदोषोंतेंरहितहै॥ याकारणतें सोईशानशब्द मुख्यता करिके यारुद्रभगवान्विषेहीघटे है ॥और ॥अनीशयाशोचतिमुह्यमानः॥इत्यादिकश्रुतियोंविषे जीवोंकूंपरतंत्रकह्याहै॥यातें तिनजीवोंविषे सोईशानशब्द मुख्यनहींहै किंतु गौणहै॥और सोरुद्रभगवान् यासर्वजगत्कूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरे है॥याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याप्रकारसें तारुद्रभगवान्कीस्तुतिकरेहै ॥ यहरुद्रभगवान् असुरोंकेसाथयुद्धकरणेकालविषे अनेकगुणोंकरिकेयुक्तहोवे है ॥ यातेंयहरुद्रभ गवान्ही महान्शूरवीरहै ॥ अथवा यहरुद्रभगवान् आपणेआत्मसाक्षात्काररूपबलकरिके कामक्रोधादिकअंतरशत्रुवोंकूं भक्षण करेहै ॥याकारणतेंभी यहरुद्रभगवान्ही महान्शूरवीरहै॥और यहरुद्रभगवान् कामरूपस्मरकेदेहकूं दग्धकरताभयाहै॥याकारणतें यारुद्र भगवान्कूं स्मरदेहघ्नयानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ हेरुद्रभगवान् हमअधिकारीजन आपकीस्तुतिरूपवचनोंकरिके सर्वदा आपका आरा धनकरेहैं॥कैसे होआप ॥ यासर्वजीवोंकेहृदयकमलविषे सर्वदा निवासकरणेहारेहो ॥ तथा आपकूं आपणीस्तुतिही प्रीतिकाहेतुहै ॥ और हेरुद्रभगवान् ॥ जैसे पृथ्वीन्याईविशालहै दुग्धकेरहणेकास्थानरूपऊधस् जिन्होंका ऐसोजेनवीनप्रसूतहुईगौवां हैं ॥ जिनगौवोंका

दुग्धदुग्धानहीं ॥ ऐसीगौवां हुंकाररूपस्नेहशब्दोंकरिके आपणेवत्सोंकूंबुलावे हैं ॥ तैसे परमानंदरूपदुग्धकरिकेयुक्त जेआपकीस्तुतिरूप गौवां हैं ॥ तेआपकीस्तुतिरूपगौवां ताआनंदरूपदुग्धकीप्राप्तिकरणेवासते हमभक्तजनरूपवत्सोंकूं प्रेमकरिकेआपहीबुलावे हैं ॥ हमव त्सोंकेप्रयत्नकीअपेक्षाकरतीनहीं ॥ जिसकारणतें तेआपकीस्तुतिरूपगौवां हमभक्तजनरूपवत्सोंके सर्वदुःखोंकूंनाशकरणेहारीहैं ॥ इस प्रकार तेवेदवेत्तापुरुष ताईशाननामारुद्रभगवान्‌की सर्वदा स्तुतिकरे हैं ॥ १२ ॥ और यहरुद्रभगवान् संपूर्णऐश्वर्य १ संपूर्णधर्म २ सं पूर्णयश ३ संपूर्णश्री ४ संपूर्णज्ञान ५ संपूर्णवैराग्य ६ याषट्‌भगोंकाआश्रयहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्‌कूं भगवान् या नामकरिकेकथनकरे हैं ॥ १३ ॥ और यालोकविषेजितनेंकरागादिकहैं ॥ तेरागादिकपुरुष यत्किंचित्‌देशविषेस्थितप्राणीरूपभूतोंकेई श्वरहोवेहैं ॥ तथा तिनप्राणियों तैंभिन्नस्थितहोवे हैं और यहरुद्रभगवान्‌तौ आकाशादिकपंचमहाभूतोंकाभीईश्वर है ॥ तथा तिनआका शादिकभूतोंके उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहोणेतें तिनआकाशादिकभूतोंका अभिन्ननिमित्तउपादानकारणहै याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ता रुद्रभगवान्‌कूं महेश्वर यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥१४॥ और जोआनंदस्वरूपआत्मा सर्वतेंमहान्‌है॥तथा स्वप्रकाशअद्वितीयरूपहै॥तथा सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपहै॥तथा सर्वभेदतैंरहितहै॥ऐसेमहान्‌आत्मादेवकूं यहब्रह्मविद्यारूपउमाकापतिरुद्रभगवान् सर्वदा आपणाआत्मारू पकरिकेदेखेहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्‌कूं महादेव यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥१५॥ और यासर्वजगत्‌कूं सत्तास्फूर्तिदे णेहारा जोयहरुद्रभगवान्‌है ॥ सोरुद्रभगवान् यासर्वजगत्‌विषे सत्तादिरूपकरिकेप्रवेशकरेहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्‌कूं विष्णु यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ अथवा तारुद्रभगवान्‌विषे योगीपुरुष अभेदरूपकरिके प्रवेशकरेहैं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्र भगवान्‌कूं विष्णु यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और सोरुद्रभगवान् सर्वत्रव्यापकतारूपमहत्वकरिके सर्व तेंअधिकहै ॥ तथा सर्वप्रकाशका नियंता है ॥ याकारणतें तारुद्रभगवान्‌कूं नृसिंहपूर्वतापनीयविषे महाविष्णु यानामकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ तहां पूर्वतापनीयविषे ॥ उग्रंवी रंमहाविष्णुं ज्वलंतंसर्वतोमुखं॥नृसिंहंभीषणंभद्रं मृत्युमृत्युंनमाम्यहं ॥याएकादशपदोंवालेमंत्रविषे तामहाविष्णुरूप नृसिंहभगवान्‌काहो

प्रतिपादनकन्याहै ॥ कैसाहैसोमंत्र॥बत्तीसअक्षरोंवालाजोअनुष्टुपछंदहै ताअनुष्टुपछंदवालाहै॥तथा जिसमंत्रकास्वरविशेषरूप सामकरिके उच्चारणहोवैहै ॥ पुनःकैसाहैसोमंत्र ॥ प्रणवादिकअंगमंत्रोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा चारिपादोंकरिकेयुक्तहै ॥ ऐसेमंत्रकरिकेकथनकन्याजोनृसिंहभगवान्‌है ॥ सोनृसिंहभगवान् याअधिकारीपुरुषोंकूं अवश्यकरिकेउपासनाकरणेयोग्यहै ॥ हेशिष्य ॥ यहप्रणवरूप तथारुद्ररूप नृसिंहभगवान् केवल तामंत्रकाअर्थरूपकरिके उपासनाकरणेयोग्यनहींहै ॥ किंतु महाचक्रकानाभिरूपकरिकेभी उपासनाकरणेयोग्यहै ॥ तामहाचक्रकास्वरूप आचार्योंनें याप्रकारसैंवर्णनकन्याहै ॥ प्रथम ॐकाररूप प्रणवकूंलिखणा तिसप्रणवतैंबाह्यदेशविषे सुदर्शनमंत्रके षट्अक्षरोंकरिकेयुक्त षट्कोणवाला कमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे अष्टाक्षरमंत्रकेअष्टअक्षरोंकरिकेयुक्त अष्टकोणवालाकमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे द्वादशअक्षरमंत्रकेद्वादशवर्णोंकरिकेयुक्तद्वादशकोणवालाकमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे मातृकादिकषोडशस्वरोंकरिकेयुक्त षोडशकोणवालाकमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे पूर्वउक्तअनुष्टुपछंदकेबत्तीसअक्षरोंकरिकेयुक्त बत्तीसकोणवालाकमललिखणा ॥ तिसतैंअनंतर मायाबीजकरिके तथाभूवलयकरिके तथामातृकावर्णोंकरिके ताचक्रकूं बाह्यतैं वेष्टनकरणा ॥ तथा षट्कोणतैंआदिलेके षोडशकोणपर्यंत एकएककोणरूपदलकूं बिंदुसहितईकारकरिकेवेष्टनकरणा ॥ याकानाम नृसिंहाख्यमहाचक्रहै ॥ तहां श्लोक ॥ षट्कोणस्थसुदर्शनंवसुदलभोल्लासिताष्टाक्षरं बाह्येद्वादशवर्णपत्रकमलेतत्षोडशार्णच्छदं द्वात्रिंशन्मनुवर्णपत्रकमलंवृत्तोल्लसन्मातृकं मध्यस्थध्रुवभूर्विबीजवलयंचक्रंनृसिंहाह्वयं॥१॥ याश्लोककाअर्थ यहपूर्वउक्तहीजानिलेणा॥ऐसेमहाचक्रविषे रथचक्रकेनाभिकीन्याईंस्थित जोप्रणवरूपनृसिंहभगवान्‌है ॥ तानृसिंहभगवान्‌कीउपासना याअधिकारीपुरुषोंकूं अवश्यकरणेयोग्यहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तापूर्वउक्तमंत्रकाअर्थरूप तथामहाचक्रकानाभिरूप तथाक्षीरसमुद्रविषेविष्णुरूपकरिकेस्थित तथासर्वप्राणियोंकेहृदयादिकोंविषेस्थित जोनृसिंहभगवान्‌है ॥ तानृसिंहभगवान्‌कीउपासनाकूं जेअधिकारीपुरुष निरंतरकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष यामहान्‌संसारसमुद्रकूं गौकेपदकीन्याईं अल्पजानिके तरिजावैहैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनें तानृसिंहभगवान्‌कीउपासना अवश्यकरिकेकरणी ॥ १६ ॥

और यासृष्टिकूंउत्पन्नकरणेहारा जोचतुर्मुखोंवालाभगवान्है ॥ ताचतुर्मुखभगवान्कूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्मा यानामकरिकेकथनकरे हैं॥१७॥
और सोब्रह्माही समष्टिसूक्ष्मरूपकरिके व्यष्टिस्थूलशरीरोंकूंउत्पन्नकरे हैं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्माकूं प्रजापतियानामकरिकेक
थनकरे हैं ॥ १८ ॥ कैसाहैसोब्रह्मा सुवर्णमयजोयहब्रह्मांडगोलकहै॥ताब्रह्मांडरूपगोलकविषेस्थित जोयहभूमिरूपकमलहै ॥ जिसभूमिरू
पकमलका यहमेरुपर्वत कर्णिकारूपहै ॥ ताकेविषे तथासत्यलोकविषे जोब्रह्मादेवतावोंकेउपकारकरणेवासतेस्थितहै॥सोब्रह्माप्रजापतिभी
तारुद्ररूपनृसिंहभगवान्काहीस्वरूपहै ॥ इतनैंग्रंथकरिके ॐकारादिकअष्टादशनामोंकेनिरूपणप्रसंगकरिके नृसिंहपूर्वतापनीयविषेकथन
करीजा प्रणवहैगौणजिसविषे तथा पूर्वउक्तअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रहैप्रधानजिसविषे ऐसीसगुणविद्या तासगुणविद्याकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥
अब पूर्वउक्तअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रहैगौणजिसविषे तथाप्रणवहैप्रधानजिसविषे ऐसीसगुणविद्याकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारी तथाकेवलप्रणवहैप्र
धानजिसविषे ऐसीसगुणविद्याकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारी तथातुरीयप्रणवहैप्रधानजिसविषे ऐसीनिर्गुणविद्याकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारी
जोनृसिंहउत्तरतापनीयहै॥ताकेअर्थकानिरूपणकरणेवासतेप्रथम तानृसिंहभगवान्केउपासकदेवतावोंकीजिज्ञासाकावर्णनकरे हैं॥हेशिष्य॥
पूर्वएककालविषे अग्निआदिकसर्वदेवता ताप्रजापतिकेसमीपजातेभये ॥ कैसाहैसोप्रजापति ॥आपणीमानसीनामाप्रियाकेसहित अमितौज
सनामा पर्यंकविषेस्थितहै ॥तथा सर्व तें उत्कृष्टशोभावालाहै ॥ तथाजिसप्रजापतिकूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्मायानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ऐसेप्र
जापतिकेसमीप तेअग्निआदिकदेवता जातेभये॥ कैसेहैंतेअग्निआदिकदेवता ॥ ताप्रजापतिके समष्टिस्थूलरूपविराट्शरीरविषेस्थितहैं ॥
तथा ताअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रकीविद्याविषे ताप्रजापतिके शिष्यतारूपकरिके कुशलहैं ॥ तथा प्रणवहैप्रधानजिसविषे ऐसीजा महात्म्यभाव
कूंबोधनकरणेहारी विद्याहै ॥ ताविद्याकेप्राप्तिकीहैइच्छाजिन्होंकूं ॥तथापूर्वउक्तविद्याकरिके शुद्धभयाहै मनजिन्होंका॥ऐसेते अग्निआदिक
देवता ताप्रजापतिकेप्रति दंडवत्प्रणामकरिके तथाआपणेदोनोंहस्तजोडिके याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ देवताउवाच ॥ हेभगवन्॥पूर्व
आपनें हमारेप्रति सर्वमंत्रोंविषेराजारूप जोअनुष्टुप्छंदरूपमंत्र प्रणवादिकअंगमंत्रोंसहित तथाबीजसहित तथाशक्तिसहित तथासामउपास

नासहित तथामहावाक्यसहित कथनकऱ्याथा ॥ कैसाहैसोमंत्रराज ॥ मृत्युभयकीनिवृत्तिकरणेहाराहै ॥ तामंत्रराजकेनिरूपणविषे आपनें संक्षेपतें चारिपादोंवाला प्रणवमंत्रभीकथनकऱ्याथा ॥ कैसाहैसोप्रणव ॥ आपनेंचारिपादोंकावाच्यरूपजो चारिप्रकारकाआत्माहै ताआत्माकेसाथ अभिन्नहै ॥ हेभगवन् ॥ यासंसाररूपअग्निकरिकेसंतप्तजेहमदेवताहैं ॥ तिनहमदेवतावोंकेताईं आप कृपाकरिके ताप्रणवका उपदेशकरो ॥ तथा ताप्रणवकरिकेप्रतिपादित जोअत्यन्तदुर्विज्ञेयआत्माहै ॥ ताआत्माका उपदेशकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाप्रश्न जभी तिनअग्निआदिकदेवतावों नें प्रजापतिकेप्रतिकऱ्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो ॥ तुमों नें पूर्व जिसमंत्रराजकोउपासनाकरीहै ॥ सोमंत्रराजचारिपादोंवालाहै ॥ यातें तामंत्रकेचारिविभागकरिके तिनचारिविभागोंकूं यथाक्रमतें प्रणवमंत्रकेचारिमात्रावोंविषे मिलावणा॥तिसतैंअनंतर जोनृसिंहभगवान् पूर्वतापनीयकेमंत्रराजविषेस्थित एकादशपदोंका सविशेषअर्थरूपकरिके कथनकऱ्याथा ॥तिसनृसिंहभगवान्कूं सर्वपदार्थों तेंरहित तुरीयलक्ष्यस्वरूपजानिके यथाक्रमतें ताप्रणवमंत्रकेचारिमात्रावोंकावाच्यार्थरूप तथातामंत्रराजकेचारिपादोंकावाच्यार्थरूप जेआत्माकेकल्पितचारिपादहैं तिनचारिपादोंकेसाथ ताल्ह्यकाअभेदचिंतनकरे॥तथा यहअधिकारीपुरुष तानृसिंहभगवान्के ब्रह्मा विष्णु रुद्र सर्वेश्वर यहचारिरूपकल्पनाकरिके यथाक्रमतें नाभि हृदय भ्रूमध्य दशमद्वार याचारिस्थानोंविषे तानृसिंहभगवान्का तिनमंत्रोंकरिकेपूजनकरे ॥ हेदेवतावो ॥ ताॐकाररूपप्रणवकी अकार उकार मकार नाद याचारिमात्राहोवे हैं ॥ तिन अकारादिकचारिमात्रावोंविषे एकएकमात्रा स्थूलसूक्ष्मादिकभेदकरिके चारिचारिप्रकारकीहोवे है ॥ तहां तिनअकारादिकवर्णोंकी वैखरीनामास्थूलअवस्थातो वाक्विषेरहे है ॥ ओर तिनअकारादिकवर्णोंकी दूसरी मध्यमानामासूक्ष्मअवस्था हृदयदेशविषेरहेहै ॥ ओर तिनअकारादिकवर्णोंको तीसरी पश्यंतीनामाबीजअवस्था कुंडलिनीविषेरहेहै ॥ ओर तिनअकारादिकवर्णोंको चतुर्थपरानामाअवस्थातो साक्षीरूपकरिकेसर्वत्रव्यापकहै ॥ इसप्रकार अकारादिकचारिमात्रावोंकूं चारिचारिप्रकारकाहोणे तें तिनमात्रावोंकासमुदायरूपप्रणव षोडशअवयवोंवालासिद्धहोवे है ॥ अथवा ते

अकारादिकचारिमात्रा प्लुत दीर्घ ह्रस्व साक्षी याचारिभेदकरिकेचारिचारिप्रकारकीहोवे हैं ॥ याते तिनसर्वमात्रावोंकासमुदायरूपप्रणव षोडशअवयवोंवालाकह्याजावेहै ॥ अब आत्माकेषोडशभेदोंकावर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे ताप्रणवके अकार उकार मकार नाद यहचारिपादहोवे हैं ॥ तैसे ताप्रणवकेवाच्यअर्थरूपआत्माकेभी चारिपादहोवे हैं ॥ तहां व्यष्टिस्थूलशरीररूपउपाधिवाला जोविश्वहै ॥ सोविश्व याआत्मादेवका प्रथमपादहै ॥ और व्यष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिवाला जोतैजसहै ॥ सोतैजस याआत्मादेवका द्वितीयपादहै ॥ और व्यष्टिकारणशरीररूपउपाधिवाला जोप्राज्ञहै ॥ सोप्राज्ञ याआत्मादेवका तृतीयपादहै ॥ और तिनतीनोंकूं प्रकाशकरणेहारा जो साक्षीरूपतुरीयहै ॥ सोतुरीय याआत्मादेवका चतुर्थपादहै ॥ यहचारोंपाद यथाक्रमतें ताप्रणवमंत्रकेअकारादिकचारिमात्रावोंका अर्थरूपहै ॥ तेचारोंपाद अध्यात्मरूपहैं ॥ और हेदेवतावो ॥ ताआत्मादेवके जैसे विश्वादिकचारि अध्यात्मपादहैं ॥ तैसे ताआत्मादेवके चारिअधिदैवपादभीहैं ॥ तहां समष्टिस्थूलशरीररूपउपाधिवाला जोविराट्है ॥ सोविराट् प्रथमपादहै ॥ और समष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिवाला जोहिरण्यगर्भहै ॥ सोहिरण्यगर्भ द्वितीयपादहै ॥ और समष्टिकारणशरीररूपउपाधिवाला जोईश्वरहै ॥ सोईश्वर तृतीयपादहै ॥ और तिनसर्वोंकूंप्रकाशकरणेहारा परमात्मादेव चतुर्थपादहै ॥ यहचारों ताआत्मादेवके अधिदैवपादहैं ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे ताप्रणवकीअकारादिकचारिमात्रा चारिचारिप्रकारकीहोवे हैं ॥ तैसे याआत्मादेवके विराटादिकचारिअधिदैवरूपोंतेंअभिन्न जेविश्वादिकचारिपादहैं ॥ तेविश्वादिकचारिपादभीतीव्र मध्यम मंद तुरीय याचारिभेदकरिके चारिचारिप्रकारकेहोवे हैं ॥ तहां जाग्रतरूपविश्वका जोस्वरूप नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके रूपादिकविषयोंकूंग्रहणकरेहै ॥ सोस्वरूप ताविश्वका तीव्रनामा प्रथमपाद है ॥ और ताविश्वका जोस्वरूप मनोरथोंकूंकरेहै ॥ सोस्वरूप ताविश्वका मध्यमनामा द्वितीयपादहै ॥ और ताविश्वका जोस्वरूप मोहकरिकेतूष्णीभावकूंप्राप्तहोवे है ॥ सोस्वरूप ताविश्वका मंदनामा तृतीयपादहै ॥ और ताविश्वका जोसर्वउपाधितेंरहितनिर्विशेषतुरीयस्वरूपहै ॥ सोनिर्विशेषस्वरूप ताविश्वका चतुर्थपादहै ॥ इसप्रकार स्वप्रकाद्रष्टातैजसभी चारिप्रकारकाहोवे है ॥ तहां स्वप्नअवस्थाविषे जोतै

जसकास्वरूप सत्यमंत्रादिकोंकूंग्रहणकरेहै ॥ सोस्वरूप तातैजसका तीव्रनामा प्रथमपादहै ॥ और तातैजसका जोस्वरूप स्वप्नकूंस्वरूपकरिकेहीजानेहै ॥ सोस्वरूप तातैजसका मध्यमनामा द्वितीयपादहै ॥ और तातैजसका जोस्वरूप तास्वप्नविषे मोहकरिके सूक्ष्मभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ सोस्वरूप तातैजसका मंदनामा तृतीयपादहै ॥ और तातैजसका जोस्वरूप निर्विशेषतुरीयरूपहै ॥ सोनिर्विशेषतुरीयस्वरूप तातैजसका चतुर्थपादहै ॥ इसप्रकार सुषुप्तिअवस्थावाला प्राज्ञभी चारिप्रकारकाहोवै है ॥ तहां सात्विकवृत्तिहैप्रधानजिसविषे ऐसा जोप्राज्ञकास्वरूपहै ॥ सोस्वरूप ताप्राज्ञका तीव्रनामा प्रथमपादहै ॥ और राजसवृत्तिहै प्रधानजिसविषे ऐसाजोताप्राज्ञकास्वरूपहै ॥ सोस्वरूप ताप्राज्ञका मध्यमनामा द्वितीयपादहै ॥ और तामसवृत्तिहैप्रधानजिसविषे ऐसाजोताप्राज्ञकास्वरूपहै ॥ सोस्वरूप ताप्राज्ञका मंदनामा तृतीयपादहै ॥ और ताप्राज्ञका जोस्वरूप निर्विशेषतुरीयरूपहै ॥ सोनिर्विशेषस्वरूप ताप्राज्ञका चतुर्थपादहै ॥ और पूर्व प्रणवमंत्रकी जोनादनामा चतुर्थमात्राकथनकरीथी ॥ तानादमात्राकी बीज बिंदु शक्ति शांत यहचारिअवस्था कथनकरी हैं॥तिनचारों के यथाक्रमतें ओत अनुज्ञाता अनुज्ञा अविकल्प यहतुरीयआत्माकेचारिपादअर्थरूपहैं ॥ अब तिनओतादिकचारिपादोंकूं तीव्रादिरूपकरिकेवर्णनकरे हैं॥ तहां जैसे अंगारोंविषे अग्नि अनुगतहोइकेरहे है ॥ तैसे जोआत्मादेव सर्वस्थूलसूक्ष्मकारणशरीरोंविषे साक्षीरूपकरिके अनुगतहै ॥ तथा सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै ॥ तथा जिसआत्मादेवकरिके यहसर्वप्रपंच आपणेआपणेरूपकरिके जान्याजावैहै ॥ ताअंतर्यामीआत्मादेवकानाम ओतहै ॥ सोओतनामाआत्मा तातुरीयआत्माका तीव्रनामा प्रथमपादहै और जोआत्मादेव ध्याता ध्यान ध्येय ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकजगत्कूं आपणीसत्तास्फूर्त्तितैंरहितदेखिके तथा हमारीसत्तास्फूर्त्ति याजगत्कूंप्राप्तहोवै याप्रकारकाविचारकरिके आपणीसत्तास्फूर्त्ति ताजगत्विषेप्राप्तकरे हैं ॥ ताआत्मादेवकानाम अनुज्ञाता है सोअनुज्ञातानामाआत्मा तिसतुरीयआत्मादेवका मध्यमनामा द्वितीयपादहै॥और जोआत्मादेव कल्पितजगत्तें आपणीसत्तास्फूर्त्तिकूंआकर्षणकरिके ताकल्पितजगत्कूंलयकरिके केवलआपणेअद्वितीयरूपकूं जाणेहै॥ताआत्माकूं अनुज्ञा यानामकरिकेकथनकरे हैं॥सोअनुज्ञानामाआत्मा तिसतुरीयआत्मादेव

का मंदनामा तृतीयपादहै ॥ और जिसआत्मादेवकेस्वरूपविषे याकल्पितद्वैतप्रपंचकी स्मृतिभीनहींहोवे है ॥ तथा जोआत्माकास्वरूप योगीपुरुषोंकूं अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिके प्राप्तहोवे है ॥ ताआत्माकेस्वरूपकानाम अविकल्पहै ॥ सोअविकल्पस्वरूपतिसतुरीयआत्माका चतुर्थपादहै ॥ हेदेवतावो ॥ सोअविकल्पनामा तुरीयआनंदस्वरूप तिनचारोंअवस्थावोंविषे अधिष्ठानतारूपकरिकेअनुगतहुआ प्रतीतहोवे है ॥ और तिसीअविकल्पनामातुरीयआत्माकोसत्तास्फूर्तितें यहपूर्वउक्तषोडशप्रकारकाआत्माकास्वरूप प्रतीतहोवे है ॥ तहां यद्यपि आत्माकेतुरीयस्वरूपविषेकल्पितरूपतासंभवेनहीं ॥ तथापि तातुरीयआत्माविषे जोतुरीयतारूपधर्म है ॥ सोतुरीयताधर्म आपणेतेंभिन्न तीनवस्तुवोंकीअपेक्षाकरे है ॥तिनकीअपेक्षाकरिकेही तुरीयकह्याजावे है॥यातें सोतुरीयताधर्मभी कल्पितहै ॥ परंतुतातुरीयताधर्मकाआश्रयरूपआत्मा कल्पितनहीं है ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे निर्मळआकाशविषे गंधर्वनगर प्रतीतहोवे है॥यातें सोगंधर्वनगर कल्पितकह्याजावे है ॥तैसे ताअविकल्परूपशुद्धआत्माविषे यहसर्वजगत् प्रतीतहोवे है॥यातें यहजगत्‌भी कल्पितकह्याजावे है॥और यहअविकल्पआत्मादेव सर्वभयतेंरहितहै ॥ तथा जन्मादिकसर्वविकारोंतेंरहितहै ॥ तथा यहआत्मादेव परमाणुआदिकसूक्ष्मपदार्थोंतेंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥ और आकाशादिकमहान्‌पदार्थोंतेंभी अत्यंतमहान्‌है ॥ ऐसेआत्माकेसाक्षात्कारतेंही मोक्षकीप्राप्तिहोवे है ॥ अब ताआत्मज्ञानकेअधिकारीकावर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ याअविकल्पनामाआनंदस्वरूपआत्माकेजानणेकीइच्छाकरतेहुए यहब्राह्मणादिकअधिकारीपुरुष वेदविहितअग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरे हैं ॥तथा हिंसादिकनिषिद्धकर्मोंका परित्यागकरे हैं ॥तथा तेअधिकारीपुरुष सत्य तप दया दान ब्रह्मचर्य अहिंसा इत्यादिकशुभकर्मोंकूंकरे हैं॥इतनेंकरिके मंद मध्यम यादोप्रकारकेअधिकारीकावर्णनकऱ्या॥अब उत्तमअधिकारीकावर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो॥याअविकल्पस्वरूपआत्माकेजानणेकीइच्छाकरतेहुए कोईकब्राह्मण पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा यातीनप्रकारकेएषणावोंकापरित्यागकरिके तथापरमहंससंन्यासकेग्रहणपूर्वक सर्वकर्मोंकापरित्यागकरिके केवळ भिक्षावृत्तिकूंधारणकरे हैं ॥ ऐसेउत्तमअधिकारीपुरुषयाआनंदस्वरूपआत्माकूंसाक्षात्कारकरिके अंतरतेंसर्वद्वहुएभीबाह्यतें अंधमूकपुरुषकीन्याई याभूम्योविषेविचरे हैं ॥ याकारणतेंहो

अविवेकीलोक तिनविद्वान्पुरुषोंकूं जानिसकतेनहीं ॥ जैसे पूर्व संवर्तकादिकसंन्यासी याळोकोंकरिकेअज्ञातहुए विचरतेभये हैं॥ यातें या अधिकारीपुरुषोंनें ताअविकल्पआत्माकेसाक्षात्कारकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ अब तापूर्वउक्तअनुष्टुपछंदरूपमंत्रसहित प्रणवकेउपासनाका तथाकेवळप्रणवकेउपासनाका निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित्किसीपापकर्मरूपप्रतिबंधकेवशतें ताआत्मादेवकूं अविकल्परूपकरिकेनहींजानिसके ॥ तो याअधिकारीपुरुषोंनें तापापरूपप्रतिबंधकोनिवृत्तिकरणेवासते कोईउपाय अवश्यकरिकेकरणा ॥ सोउपाययहहै ॥ पूर्वजोचारपादोंवाला मंत्रराजकह्याथा ॥ तामंत्रकेचारपादोंका तथाक्रमतें विश्व तेजस प्राज्ञ तुरीय याचारआत्माकेस्वरूपोंकावाचक जे अकार उकार मकार नाद यहप्रणवकीचारमात्राहैं तिनचारमात्रावोंकेसाथ अभेदचिंतनकरणा ॥ तहां प्रणवमंत्रकेमात्रावोंकीविभूति याप्रकार श्रुतिनें कथनकरी है ॥ ब्रह्मा वसु गायत्री गार्हपत्य पृथ्वी ऋग्मंत्र ऋग्वेद यहसंपूर्ण अकाररूपहैं ॥ और विष्णु रुद्र त्रिष्टुप् दक्षिणाग्नि यजुर्मंत्र यजुर्वेद अंतरिक्ष यहसंपूर्ण उकाररूपहैं ॥ और रुद्र आदित्य जगती आहवनीय स्वर्ग साममंत्र सामवेद यहसंपूर्ण मकाररूपहैं ॥ और विराट् मरुत् एकर्षिरूपअग्नि प्रणव अथर्वणमंत्र अथर्ववेद संवर्तकाग्नि सोम लोक यहसंपूर्ण नादरूपहैं ॥ इसप्रकारकोविभूतियोंसहित तिनअकारादिकचारमात्रावोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतेंजानिके यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्त मंत्रराजकेचारपादोंका यथाक्रमतें याअकारादिकचारमात्रावोंविषे अभेदचिंतनकरे ॥ तिसतेंअनंतर यहअधिकारीपुरुष तामंत्रके चारपादोंसहित तिनअकारादिकमात्रावोंका लयचिंतनकरे ॥ अथवा केवलअकारादिकमात्रावोंकाही लयचिंतनकरे ॥ सोलय चिंतनकरणेकाप्रकार शास्त्रवेत्तापुरुषोंनें याप्रकारसें कथनकऱ्याहै ॥ अकारादिकपूर्वपादोंकूं उकारादिकउत्तरपादोंविषेलयकरे ॥ तैसे उकारादिकपादोंकूंभी उत्तरमकारादिकपादोंविषेलयकरे इसप्रकार तुरीयपर्यंत तिनोंकालयकरे ॥ तिसतेंअनंतर बीज बिंदु शक्ति शांत याचारअवस्थावाळे तुरीयरूपप्रणवकूं मनकरिकेचिंतनकरे ॥ हेदेवतावो ॥ ताप्रणवमंत्रकावाच्यअर्थरूप जोपुरुषहै तापुरुषकी जोयहपादरूपषोडशकला कथनकरी है ॥ तेषोडशकला यथाक्रमतें पूर्वउक्तषोडशअवयव

वालेप्रणवमंत्रविषेही तादात्म्यसंबंधकरिकेस्थितहोवे हैं ॥ सर्वभेदतैंरहित शुद्धपरमात्मादेवविषे लेकला रहैंनहीं ॥ यातैं तिनसर्वकलाओंका
लय संभवेहै ॥ अब दूसरेप्रकारकावर्णकरेहैं॥हेदेवताओ ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं चारिचारिअवयवोंवाली जेअकारादिकचारिमात्राहैं ॥ तिनचारि
मात्राओंकेसाथ यथाक्रमतैं पूर्वउक्तअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रराजकेचारिपादोंकेमिलावणेकरिके तामंत्रराजकेभी षोडशअवयवसिद्धहोवे हैं ॥
काहेतैं सोअनुष्टुप्छंद बत्तीसअक्षरोंकाहोवे है ॥ और ताअनुष्टुप्छंदके अष्टअष्टअक्षरकेचारिपादहोवे हैं ॥ ताअष्टअष्टअक्षरवालेचारिपादोंकूं
भी यथाक्रमतैं चारिचारिअवयवोंवालीअकारादिकचारिमात्राओंकेसाथमिलाया ॥ तभी तामंत्रकेदोदोअक्षरोंकूं एकएकअवयवको
वाचकतासिद्धहोवे है ॥ तिनषोडशअवस्थाओंकू याअधिकारीपुरुषनें शनैःशनैःकरिकेजयकरणा ॥ चित्तविषे प्रतिबंधतैंरहित जोतिनभूमि
काओंकी दृढप्रतीतिहै यहही तिनभूमिकाओंकाजयकरणाहै ॥ तिनभूमिकाओंविषेभी यहअधिकारीपुरुष जिसजिसभूमिकाकाजयकरे ॥
तिसतिसभूमिकाकापरित्यागकरिके उत्तरउत्तरभूमिकाकूंआश्रयणकरे ॥ इसप्रकार शनैःशनैःअभ्यासकरतेकरते याअधिकारीपुरुषकूं
अभीकिसीपूर्वलेपुण्यकर्मके प्रभावतैं ताअविकल्पतुरीयआत्माकोप्राप्तिहोवे ॥ तभी याअधिकारीपुरुषकूं कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्ति
होवे है ॥ तिसतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकूं किंचित्मात्रभीकर्तव्य बाकीनहींरहेहै ॥ यातैं ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते याअधिका
रीपुरुषोंनें ताप्रणवकीउपासना अवश्यकरिके करणी ॥ अब जिसब्रह्मकेज्ञानकरिके कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिहोवे है ताब्रह्मकेस्वभावकी
अभिव्यक्तिकरणेहारीयुक्तियोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेदेवताओ ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकीअपेक्षाकरिके जोतुरीयरूपअविकल्प
आत्माहै ॥ सोअविकल्पशुद्धआत्मा वाकादिकदशबाह्यइंद्रियोंका अविषयहै ॥ तथा मनकाभीअविषयहै ॥ याकारणतैं ताआत्मादेवकेप्र
श्नकरणेविषेभी कोईपुरुष समर्थनहीं है ॥ तथा ताआत्माकेउत्तरकहणेविषेभी कोईपुरुष समर्थनहीं है ॥ याकारणतैंही श्रद्धावान्शिष्योंक
रिकेपूछेहुएभी कोईकब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष तिनशिष्योंकेप्रति सोसत्चित्आनंदस्वरूपअविकल्पआत्मा मौनकरिकेही उपदेशकरतेभये
हैं ॥ काहेतैं जोजोवस्तु वाणीकरिकेकथनकऱ्याजावेहै ॥ तिसतिसवस्तुविषे नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकीविषयता अथवा अंतरमनबुद्धिआदि

र्योंकीविषयता अवश्यकरिकेहोवे है ॥ तिनबाह्यअंतरइंद्रियोंकोविषयतातैंविना केवलवाणीकीविषयतासंभवेनहीं ॥ यातैं तिनइंद्रियोंको
विषयतातो व्यापकहै ॥ और वाणीकोविषयताव्याप्यहै ॥ और जहांव्यापककाअभावहोवे है ॥ तहां व्याप्यकाभीअभावहोहोवे है॥जैसे
अग्निरूपव्यापककेअभावहुए धूमरूपव्याप्यकाभीअभावहोहोवे है॥तैसे इहांप्रसंगविषे सर्वअवस्थाओंविषेअनुगत जोअद्वितीयब्रह्मरूपआ
त्माहै॥ताआत्मादेवविषे तेनेत्रादिकइंद्रिय तथामनबुद्धि प्रवृत्तहोइसकेनहीं॥यातैं ताआत्मादेवविषे वाणीकोविषयताभी संभवेनहीं॥किंवा॥
याअधिष्ठानआत्माकरिके प्रेरणाकरेहुए ॥ तेनेत्रादिकइंद्रिय तथामनबुद्धिशरीरादिक आपणेआपणेकार्यविषे प्रवृत्तहोवेहैं ॥ परंतु ते
मनसहितनेत्रादिकइंद्रिय आपणेप्रवर्तकआत्माविषे प्रवृत्तहोवेनहीं ॥ तात्पर्ययह॥आपणीसमीपतामात्रकरिके सर्वव्यवहारोंकोसिद्धिकर्त्ता
जो आत्मा है ता कर्ता आत्मविषे जोमनसहितइंद्रियोंकीविषयतारूपकर्मतामानिये॥तो एकहीआत्माविषे कर्तापणा तथाकर्मपणा प्राप्तहोवेगा
सो अत्यंत विरुद्धहै ॥ याकारणतैंभी ताआत्माविषे तामनसहितइंद्रियोंकीविषयता संभवेनहीं ॥ किंवा॥यहवाक्इंद्रियतो केवलशब्दोंकूंहो
विषय करेहै अर्थकूंविषयकरेनहीं ॥ और तेशब्द तिनपदार्थोंकूंविषयकरेंहैं ॥ जेपदार्थ नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकेविषयहोवे हैं अथवा मनबु
द्धिरूपअंतःकरणकेविषयहोवे हैं ॥ सर्वपदार्थोंकूं तेशब्द विषयकरेंनहीं ॥ और तेनेत्रादिकइंद्रियभी तिनपदार्थोंकूंविषयकरेंहैं ॥ जिनपदा
र्थोंविषे अनात्मताधर्म रहेहै ॥ तथारूपस्पर्शादिकगुणरहेहैं ॥ सोअनात्मताधर्म तथारूपस्पर्शादिकधर्म आत्माविषेहैंनहीं ॥ यातैं ताआ
त्मादेवविषे तिनइंद्रियोंकोविषयताभी संभवेनहीं ॥ और इंद्रियोंकोविषयताकेअभावहुए ताआत्मादेवविषे शब्दकोविषयताभीसंभवे
नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकइंद्रियतो नियमकरिके रूपस्पर्शादिकधर्मोंकूं तथारूपस्पर्शादिकधर्मवालेपदार्थोंकूंहो विषयकरेंहैं॥औरमन
रूपअंतरइंद्रियतो नियमकरिके सुखदुःखादिकधर्मोंकूं तथासुखदुःखादिकधर्मवालेपदार्थकूंहो विषय करे है॥तेरूपस्पर्शादिकगुण तथासुखदु
खादिकधर्मआत्माविषेहैंनहीं ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे तिनइंद्रियोंकोप्रवृत्तिसंभवेनहीं ॥ किंवा ॥ अहंसुखी अहंदुःखी याप्रतीतिकरिके
यद्यपि सुखदुःख आत्माविषेप्रतीतहोवे है ॥ तथापि सोसुखदुःख ताआत्माविषे वास्तवतैंहैनहीं॥किंतु जैसे रज्जुविषे सर्पकल्पितहोवे है ॥

तैसे सोसुखदुःखभी आत्माविषेकल्पितहै ॥ और कल्पितवस्तुकाज्ञान किसीइंद्रियकरिकेहोवैनहीं॥ किंतु साक्षीआत्माकरिकेही ताकल्पि तवस्तुकाज्ञान होवे है ॥ यातें सोकल्पितसुखदुःखभी आत्माविषे मनकोविषयताकूंसिद्ध करिसकेनहीं ॥ अब ताआत्माविषे इंद्रियोंकोअ विषयता सिद्धकरणेवासते प्रथम अधिष्ठानत्व सिद्ध करेहैं ॥ हेदेवतावो ॥कल्पितपदार्थोंकाउपादानकारणरूपजोअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानका जोविषयहोवै ताकानाम अधिष्ठानहै ॥ सोअधिष्ठान सर्वकल्पितपदार्थोंकाएकहीहोवे है॥ जैसे एकहीरज्जुरूपअधिष्ठानविषे कल्पितजे सर्प दंड जलधारा भूविलय इत्यादिकपदार्थ हैं ॥ तिनसर्वकल्पितपदार्थोंका एकहीरज्जु अधिष्ठानहोवे है ॥ तैसे सर्वकल्पितपदार्थोंका एकही अधिष्ठानहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ कल्पितरजतादिकोंकेअधिष्ठानरूप जेशुक्तिआदिकहैं ॥ तिनशुक्तिआदिकोंतें कल्पितसर्पादिकों केअधिष्ठानरूपरज्जुआदिकोंका भेददेखणेविषेआवे है ॥ यातें सर्वकल्पितपदार्थोंका एकही अधिष्ठानहोवे है यहवार्त्ता संभवेनहीं॥ समा धान ॥ हेदेवतावो॥ यद्यपि अविचारकालविषे कल्पितसर्पादिकोंका तथा कल्पितरजतादिकोंका भिन्नभिन्नही अधिष्ठानप्रतीतहोवे है ॥ तथापि विचारकरिकेदेखियेतो तिनरज्जुआदिकोंकू कल्पितसर्पादिकोंकोअधिष्ठानता संभवेनहीं ॥ किंतु तिनरज्जुशुक्तिआदिकोंविषे अनुगत जोसामान्यचेतन्यहै ॥ ताचेतनविषेही तिनकल्पितसर्पादिकोंकोअधिष्ठानतासंभवे है ॥ काहे तें कल्पितवस्तुकाउपादानकारण जोअज्ञानहै ताअज्ञानकाजोविषयहोवे है ताकानाम अधिष्ठानहै ॥ सोअज्ञान स्वभावतें आवृतरज्जुआदिकजडपदार्थोंकूंविषयकरेनहीं ॥ किंतु तिनरज्जुआदिकोंविषेअनुगत जोचेतनहै ॥ ताचेतनकूंही सोअज्ञान विषयकरे है ॥ यातें सोचेतनही तिनकल्पितपदार्थोंका अधि ष्ठानहै ॥ सोचेतनरूपअधिष्ठान सर्वत्रएकही है ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरणेवासते प्रथम स्थूलारुंधतीन्यायकरिके इदंतारूपसामान्य अंशविषे अधिष्ठानरूपता निरूपणकरे हैं॥हेदेवतावो॥भ्रमकालविषे जोवस्तुजिसकल्पितपदार्थकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिकेप्रतीतहोवेहै॥ सोवस्तुही ताकल्पितपदार्थकाअधिष्ठानहोवे है॥तिसवस्तुतेंभिन्न दूसराकोईवस्तु ताकल्पितपदार्थकाअधिष्ठानहोवैनहीं ॥यहअधिष्ठानका लक्षण रज्जुशुक्तिआदिकोंविषेसंभवतानहीं॥किंतु तिनरज्जुशुक्तिआदिकोंविषेअनुगतजोइदंतारूपसामान्यअंशहै ॥ताइदंताविषेही सोअधि

ष्ठानकालक्षणसंभवै है ॥ काहेतैं ताभ्रमकालविषे रज्जुःसर्पः शुक्तीरजतं याप्रकारकोप्रतीतिहोवे नहीं॥किंतु ताभ्रमकालविषे सर्वप्राणियोंकूं अयं सर्पः इदंरजतंयाप्रकारकोहीप्रतीतिहोवे है॥यातैं कल्पितसर्पादिकोंकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिकेप्रतीतहोणेहारो जोइदंतारूपसामान्यअंशहै॥ सोइदंताअंशही तिनसर्पादिकोंकाअधिष्ठानहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ बाधसामानाधिकरण्य १ अध्याससामानाधिकरण्य २ विशेषणसामानाधिकरण्य ३ ऐक्यसामानाधिकरण्य ४ यहचारप्रकारकासामानाधिकरण्य शास्त्रोंविषेकथनकऱ्याहै ॥ तहां स्थाणुविषेचोरभ्रमकेउत्तरकालविषे तथारज्जुविषे सर्पभ्रमकेउत्तरकाल विषे तास्थाणुरज्जुकेज्ञानहुएतैंअनंतर जो चोरोऽयंस्थाणुः सर्पोऽयंरज्जुः याप्रकारकोप्रतीति होवे है ॥ ताकानाम बाधसामानाधिकरण्यहै ॥ और अयंसर्पः इदंरजतं याकानाम अध्याससामानाधिकरण्यहै ॥और नीलोघटःयाकानाम विशेषणसामानाधिकरण्यहै॥और सोयंदेवदत्तः याकानाम ऐक्यसामानाधिकरण्यहै॥तहां जैसे अध्याससामानाधिकरण्यविषे इदंताअंशका ताकल्पितसर्पकेसाथ तादात्म्यसंबंध प्रतीतहोवे है ॥ तैसे बाधसामानाधिकरण्यविषे रज्जुकाभी तासर्पकेसाथ तादात्म्यसंबंध प्रतीतहोवे है ॥ यातैं ताइदंताविषे कल्पितसर्पादिकोंकोअधिष्ठानतासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवताओ॥ताबाधसामानाधिकरण्यविषे यद्यपिरज्जु आदिकोंकासर्पादिकोंकेसाथ तादात्म्यप्रतीतहोवे है ॥ तथापि ताबाधसामानाधिकरण्यकालविषे तेकल्पितसर्पादिक तहां हैंनहीं ॥ यातैं ताबाधकाल विषे शास्त्रवेत्तापुरुषोंकूं जो सर्पोऽयंरज्जुः याप्रकारकाज्ञानहोवे है ॥ सोज्ञान वंध्यापुत्रविषयकज्ञानकीन्याईं विकल्पमात्रही है ॥ ताविकल्प ज्ञानकरिके तिनरज्जुआदिकोंविषे सर्पादिकोंकीअधिष्ठानता सिद्धहोवेनहीं ॥ जोकदाचित् विकल्पज्ञानतैंभी वस्तुकी सिद्धिहोतीहोवे॥तोवंध्यापुत्रहै याप्रकारकेविकल्पज्ञानतैं वंध्यापुत्रकीभीसिद्धिहोणीचाहियै॥यातैं इदंतारूपसामान्यअंशही सर्पादिकसर्वकल्पितपदार्थोंकाअधिष्ठानहै ॥ इतनैंकरिके इदंताविषे अधिष्ठानरूपतासिद्धकरी ॥ अब ताइदंताविषे ब्रह्मरूपतासिद्धकरणेवासते प्रथम ताइदंताविषे भेदतैंरहितपणा निरूपणकरे हैं॥ हेदेवताओ ॥ इदंतारूपसामान्यअंशविषे जोइमारेकूंभेदप्रतीतहोवे है ॥ सोभेद केवल शब्दमात्रकरिकेही प्रतीतहोवे है ॥ वास्तवतैं ताइदंतारूपअर्थविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तिनशब्दोंके

भदतैंहीं अर्थकाभेद किसवास्तैनहींहोवे ॥ समाधान ॥ हेदेवताओ ॥ याळोकविषे शब्दोंकेभेदहुएभी अर्थकीएकताहीदेखीहै॥जैसे एकही देवदत्तनामापुरुषकूं कोईपुरुष अयंदेवदत्तः याशब्दकरिकेकथनकरेहै ॥ और कोईकपुरुष तादेवदत्तकूं त्वं याशब्दकरिके कथनकरेहै ॥ और कोईकपुरुष स्नेहकरिके देवदत्तोऽहमेव याप्रकारकेशब्दकरिकेकथनकरे है और कोईकपुरुषतो यहदेवदत्त मेरासर्वबांधवहै याप्रकारकेशब्दकरिकेकथनकरेहै ॥ इसप्रकार एकहीदेवदत्तपुरुष अनेकवक्तापुरुषोंकरिकेउच्चारणकरेहुएअनेकशब्दोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ परंतु तिनशब्दोंकेभेदकरिके तादेवदत्तनामापुरुषकाभेदहोवेनहीं ॥ तैसे ताइदंताकेवाचकशब्दोंकेभेदहुएभी ताइदंतारूपसामान्य अर्थविषे भेदसिद्धहोवेंनहीं ॥ किंवा ॥ याळोकविषे जितनेंकीपदार्थ हैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंविषे एकत्व स्वभावतेंही सिद्धहै ॥ तास्वभाव सिद्धएकत्वकेविद्यमानहुये तापदार्थविषे तिनशब्दोंकेभेदकरिके सोनानात्व कदाचित्भीनहींरहेगा ॥ जोकदाचित् तास्वभावसिद्धएकपदार्थविषेभी शब्दोंकेभेदतें नानापणाप्रतीतहोवेगा ॥ तोभी सोनानापणा गंधर्वनगरकीन्याईं मिथ्याहीहोवेगा ॥ तामिथ्यानानापणेकरिके वास्तवएकताकीहानिहोवेनहीं ॥ किंवा ॥ याळोकविषे प्रमाणकरिके ही वस्तुकीसिद्धिहोवे है ॥ प्रमाणतैंविना वस्तुकीसिद्धहोवेनहीं ॥ यातें सोइदंतारूपअर्थकाभेद किसप्रमाणकरिकेसिद्धहोवे है यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ तहां भेदरूपराजाका मुख्ययोद्धाजोशब्दथा सोशब्दतो याइदंतारूपअर्थ तैं पराजयकूंप्राप्तहोताभया है ॥ काहेतें ताइदंताअर्थविषे स्वभावतैंरह्याजोअभेदहै ॥ ताअभेदकरिके भेदकीनिवृत्तिहोइगई है ॥ याकारणतें ताभेदरूपराजाकेअनुसारकरिके ताअर्थविषेप्रवेशकरणेकोइच्छाकरणेहाराजोशब्दहै ॥ सोशब्दभी ताअर्थविषेप्रवेशकरिसकेनहीं ॥ किंतु सोशब्द कल्पितभेदमात्रकूंअंगीकारकरिकेही संतोषकूंप्राप्तहोवे है ॥ सत्यभेदकीअपेक्षाकरेनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे सोशब्द ताइदंतारूपअर्थ के भेदकूंग्रहणनहींकरेहै ॥ तैसे यहचक्षुआदिकइंद्रियभी ताभेदकूंग्रहणनहींकरेहैं ॥ किंतु तेचक्षुआदिक इंद्रिय वस्तुकेस्वरूपमात्रकूंग्रहणकरिकेही कृतकृत्यहोवे हैं ॥ जैसे दोषयुक्तचक्षु शुक्तिविषे यहरजतहै याप्रकार रजतमात्रकाग्रहणकरिकेही कृतकृत्यहोवे हैं ॥ शुक्तिविषे तारजतकेभेदकूंग्रहणकरेनहीं ॥ जोकदाचित् सोदुष्टचक्षु ताभेदकूंभी ग्रहणकरताहोवे ॥ तो भ्रममात्र

काहेतेंलोपहोवेगा ॥ किंवा ॥ याचक्षुआदिकइंद्रियोंतें जभी स्वप्रकेइंद्रियोंकीन्याईं ताइदंताभीसिद्धनहींभई ॥ तभी तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंतें ताइदंताकाभेद किसप्रकार सिद्धहोवेगा ॥ किंतु नहींसिद्धहोवेगा॥काहेतें तीनकालविषे बाकाबाधनहींहोवेहै ऐसीजोसत्ताहै ॥ सास्ताही इदंतारूपहै ॥ याकारणतेंही याळोकविषे इदंसत् इदंसत् याप्रकारकीप्रतीतिहोवे है॥ताप्रतीतितें इदंशब्दकेअर्थका तथासत्शब्दकेअर्थका अभेदहीसिद्धहोवे है ॥ यातें तासत्तारूपइदंताकूं तथाताकेभेदकूं यहचक्षुआदिकइंद्रिय ग्रहणकरिसके नहीं ॥ किंवा ॥पूर्वउक्तयुक्तियोंतें जभी ताइदंताविषेभी भेदसिद्धनहींभया ॥ तभी जिसपरमात्मादेवका सोइदंताभीविशेषरूपहै॥ऐसाजोसर्वत्रअनुगतपरमात्मादेवहै ॥तिसपरमात्मादेवविषे सोभेद किसप्रमाणकरिकेसिद्धहोवेगा ॥ किंतु तापरमात्मादेवविषे किसीभीप्रमाणकरिके ताभेदकी सिद्धिहोवे नहीं ॥ अब ताइदंतारूपसत्ताकेभानविषे दूसरेकीअनपेक्षाबोधनकरणेवासते प्रथम तासत्ताका स्फुरणतेंअभेदसिद्धकरेहैं ॥तहां दृष्टिसृष्टिसिद्धांतविषे अभासमानपदार्थकी सत्ताहोवेनहीं ॥ किंतु भासमानपदार्थकीही सत्ताहोवे है॥याकारणतें सासत्ता तास्फुरणतेंभिन्ननहीं है ॥ किंतु सासत्ता स्फुरणरूपही है ॥ और सोस्फुरण स्वप्रकाशरूपहीहोवे है॥यहवार्ता पूर्वअनेकवार कथनकरिआयेहैं ॥यातें तास्वप्रकाशस्फुरणतेंअभिन्नहुई सासत्ताभी स्वप्रकाशहीसिद्धहोवे है॥अब तास्फुरणकेस्वप्रकाशताविषे किंचित्युक्तिकाभी वर्णनकरे हैं॥हेदेवतावो॥याळोकविषे जोजोवस्तु चैतन्यतातेंरहित अचैतन्यस्वरूपहै॥सोसोअचैतन्यवस्तु चैतन्यकरिकेहीसिद्धहोवे है ॥ याअर्थविषे किसीभीवादीका विवादहैनहीं॥किंतुयहअर्थ सर्ववादियोंकूंसंमतहै॥जोकदाचित् सोचैतन्यभी तिसचैतन्यकरिकेही प्रतीतहोवेहै याप्रकारअंगीकारकरिये ॥ तौयाकेविषे यहविचारकर्‍याचाहिये॥जिसचैतन्यकी चैतन्यकरिकेप्रतीतिहोवेहै॥सोप्रतीतिकाविषयरूपचैतन्य स्फुरणतेंविलक्षणहै॥अथवा सोचैतन्य स्फुरणरूपहै॥तहां जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरे सोसंभवेनहीं ॥ काहेतें स्फुरणतेंविलक्षणवस्तुविषे चैतन्यरूपतामानणेविषे किंचित्मात्रभीप्रमाणनहीं है॥तथा ताकेमानणेका कोईप्रयोजनभीहैनहीं ॥ काहेतें तास्फुरणरूपचैतन्यकूंप्रकाशकरणेहाराजोचैतन्यहै ॥ ताचैतन्यकरिकेही सर्वकानिर्वाहहोइसकेहै ॥ तास्फुरणरूपचैतन्यकाअंगीकारकरणा व्यर्थही है ॥ और सोचैतन्य स्फुरणरूपहै यहदूस

रापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवेनहीं ॥ काहेतें ताचैतन्यकूं जोवादी स्फुरणरूपअंगीकारकरैगा ॥ तो सोस्फुरणरूपचैतन्य सर्वबु
द्धिवृत्तियोंकासाक्षीरूपआत्माहीं सिद्धहोवैगा ॥ तास्फुरणरूपसाक्षीकूं आपणेप्रकाशविषे दूसरेकिसीकोअपेक्षासंभवेनहीं ॥ जोकदाचित्
तास्फुरणरूपचैतन्यकूं आपणेप्रकाशविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाहोवैगी ॥ तो तास्फुरणरूपचैतन्यविषे घटादिकोंकीन्याई अनात्मरूपता
प्राप्तहोवैगी ॥ यातें सोस्फुरणरूपचैतन्यआत्मा स्वप्रकाशरूपहै ॥ इतनेंकरिके ताआत्मादेवकी सत्चित्रूपता निरूपणकरी ॥ अब ता
आत्मादेवविषे आनंदरूपता निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ जोहमनें सत्चित्स्वरूपआत्मा तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सोआत्मादेव या
देहधारीजीवोंकूं सर्वपदार्थोंतें अत्यन्तप्रियरूपहै ॥ यातें सोआत्मादेव परमआनंदस्वरूप है ॥काहेतें यालोकविषे याजीवों नें आपणाआ
त्मारूपकरिकेअंगीकारकऱ्याजोयहशरीरहै ॥ ताशरीररूपआत्माकेनाशकाप्रसंग जभी आइकेप्राप्तहोवैहै ॥ तथाकिसीविषयसुखकेनाश
काप्रसंग जभीआइकेप्राप्तहोवे है ॥ तभी यहबुद्धिमान्पुरुष ताशरीररूपआत्माकीरक्षाकरणेवासते ताविषयजन्यसुखकाही परित्यागक
रे है ॥ और यालोकविषे अधिकसुखवासतेंहीं अल्पसुखकापरित्याग देखणेविषेआवैहै ॥ अल्पसुखवासते अधिकसुखकापरित्यागकरणा
कहांभीदेखणेविषेआवतानहीं ॥यातें यासर्वलोकों के व्यवहारतेंभी ताविषयसुखतें तथाताविषयसुखकेसाधनों तें आत्माविषेही परमानंद
रूपता सिद्धहोवे है ॥ हेदेवतावो ॥ यापूर्वउक्तअभिप्रायकूंबोधनकरणेहारा जोविद्वान्पुरुषोंकामौनहै ॥ तामौनकरिकेही तेब्रह्मवेत्तापुरुष
आपणेशिष्योंकेप्रति तासत्चित्आनंदस्वरूपआत्माका उपदेशकरतेभये हैं ॥ और जेअल्पबुद्धिवालेशिष्य ताब्रह्मवेत्तागुरुके मौनरूपउ
पदेशकरिके तासत्चित्आनंदस्वरूपआत्माकूं नहींजानिसकेहैं ॥ तिनशिष्योंकेप्रति सोब्रह्मवेत्तागुरु कृपाकरिके ताअद्वितीयआत्माविषे
किंचित्धर्मोंकाआरोपणकरिकेयाप्रकारकाउपदेशकरे ॥ सर्हा यालोकविषे जोवस्तु वचनकरिकेस्पष्टकह्याजावे है ॥ तावस्तुकूं विद्वान्
पुरुष सत् यानामकरिकेकथनकरे हैं॥और जोवस्तु केवल मनकरिकेही चिंतनकऱ्याजावैहै॥तावस्तुकूं विद्वान्पुरुष असत् यानामकरिके
कथनकरे हैं॥और याआत्मादेवकास्वरूपतो सत् असत् यादोनों तें रहितहै॥ऐसेआत्मादेवविषे सोब्रह्मवेत्तागुरु सत् असत् रूपदोधर्मोंकूं

आरोपणकरिके ताशिष्यकेप्रति याप्रकारका उपदेशकरे ॥ हेशिष्य ॥ अनुभवकरिकेसिद्ध जोसत्‌चित्‌आनंदस्वरूपआत्माहै॥सोसर्वक्लेशों
तैंरहितआत्मादेव तूंहै ॥ तहां सोमंदबुद्धिशिष्य तासत्‌का क्यास्वरूपहै याप्रकारकाजोप्रश्नकरे ॥ तो सोब्रह्मवेत्तापुरुष ताशिष्यकेप्रति
याप्रकारकावचनकहै ॥ जोवस्तु सर्वपदार्थोंविषे इदंइदं याप्रकारतैंप्रतीतहोवे है तावस्तुकूंहीं तूं सत्‌रूपकरिकेजान ॥ तहां पूर्वस्थूलारुंध
तीन्यायकरिके ताइदंताविषेकथनकरीजाआत्मता ताआत्मताकूं अभी मुख्यआत्माविषेप्राप्तकरे हैं ॥ हेशिष्य जिस मन वाणीकेअविषयरू
पस्फुरणविषे सापूर्वउक्तइदंताभी कल्पितहै॥सोस्फुरणहीं हमनैंतुमारेप्रति सत्‌ यानामकरिकेकथनकऱ्याहै॥तिसोस्फुरणकूं विद्वान्‌पुरुषअ
नुभूति यानामकरिकेकथनकरे हैं॥ओर हेशिष्य॥यहसत्‌रूपअनुभूति किसविषेस्थितहै॥याप्रकारकाप्रश्नजोतूंहमारेप्रतिकरे ॥तो हमतुमारे
प्रति तास्थानसहितअनुभूतिकेस्वरूपका कथनकरे हैं॥ताकूं तूं श्रवणकर॥हेशिष्य॥ सर्वजीवोंकेबुद्धिविषे प्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहुईतथासर्व
विषयोंविषे इयंचित्‌ इयंचित्‌ याप्रकारसैंअनुगतप्रतीतहुई जाप्रसिद्धचित्‌है॥ताचित्‌कानाम अनुभूतिहै ॥ जिसचित्‌केस्वरूपविषे सापूर्वउ
क्तइदंताभी बाधितहोवे है ॥ यातैं साबुद्धिही ताअनुभूति केउपलब्धिकास्थानहै॥हेदेवतावो॥इसप्रकार अभी तेश्रद्धावान्‌शिष्य तिनब्रह्मवे
त्तागुरुवोंकेप्रति आत्माकास्वरूपपूछेंहैं ॥ तभी तेब्रह्मवेत्तागुरु तिनाशिष्योंकेप्रति ताअद्वितीयआत्माविषे वाकादिकइंद्रियोंकियोग्य सत्ता
दिकधर्मोंकाआरोपणकरिके ताआत्मादेवकाउपदेशकरेंहैं ॥ हेदेवतावो ॥ वास्तवतैंमनवाणीकाअविषयजोआत्मा है ॥ ताआत्मादेवविषे
जामनवाणीकीप्रवृत्तिहोवे है ॥ ताप्रवृत्ति अध्यासतैंबिनाहोवेनहीं ॥ किंतु अध्यासकूंअंगीकारकरिकेही सामनवाणीकीप्रवृत्तिहोवे है ॥
यातैं पूर्वजोहमनैं तुमारेप्रति सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपआत्माका कथनकऱ्याहै ॥ सोआत्माकास्वरूप ताअध्यासतैंबिना वाणीकरिकेक
थनकऱ्याजावेनहीं ॥ तथामनकरिकेभी जान्याजावेनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं केमुत्यकन्यायकरिकेस्पष्टकरे हैं॥हेदेवतावो ॥ यालोकविषे
जीवोंकूं सुखदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जितनेंकीभावपदार्थ हैं ॥ तेभावपदार्थ आपणेसहकारीसाधनोंसहित क्षणक्षणविषे परिणामकूंप्राप्तहो
वे हैं ॥ ऐसेपदार्थोंकूंभी कोईपुरुष वर्णनकरिसकतानहीं॥जैसे मोती दुग्ध चंद्र कुंदपुष्प याचारोंकेरूपविषे श्वेतताधर्मकेसमानहुएभीतिन

चारोंरूपोंविषे जोअवांतरविशेषताहै ॥ ताविशेषताकेकहणेकूं कोईभीपुरुष समर्थहोइसकेनहीं ॥ जभी नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके प्रत्यक्षग्रह
णयोग्य यहभावपदार्थभी वाणीकरिकेनहींकहेजावे हैं ॥ तभी सर्वइंद्रियोंकाअविषयआत्मा तावाणीकरिकेनहींकह्याजावे है याकेविषेक्याक
हणाहै ॥ किंवा ॥ विषयइंद्रियोंकेसंबंधतेंउत्पन्नभयाजोसुखहै सोविषयसुखही मनकाविषयहोवे है ॥ और जोआत्मास्वरूपसुख याअधिका
रीपुरुषोंकूं तपादिकअनेकउपायोंकरिकेप्राप्तहोवे है ॥ सोआत्मास्वरूपसुख तामनकीविषयताकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ जभी ताआत्मस्वरूपसुख
विषे मनकीभीप्रवृत्तिनहींभई ॥ तभी तास्वरूपसुखविषे वाणीकीप्रवृत्तिनहींहोवे है याकेविषेक्याकहणाहै ॥ किंवा जोविषयजन्यसुख या
जीवोंकूं मनकरिकेप्रतीतहोवे है ॥ सोविषयसुखभी आपणेअनुभवकरिकेही जान्याजावे है ॥ परंतु सोआपणाविषयसुख दूसरेपुरुषकेप्रति
वाणीकरिकेकह्याजावेनहीं ॥ जभी सोआपणाविषयसुखभी दूसरेकेप्रति वाणीकरिकेनहींकह्याजावे है तभी मनवाणीकाअविषयजोस्वरूप
सुखहै ॥ तास्वरूपसुखकूं जानतेहुएभीब्रह्मवेत्तागुरु आपणेशिष्योंकेप्रति तास्वरूपसुखकूं वाणीकरिकेनहींकहिसकेहैं याकेविषेक्याकह
णाहै ॥ हेदेवतावो ॥ इसप्रकार सोआत्मादेव साक्षात्वाणीकरिकेकह्याजावेनहीं ॥ यातें तेब्रह्मवेत्तागुरु ताआनंदस्वरूपआत्माविषे भाव
अभावरूपधर्मोंकूंआरोपणकरिकेही आपणेशिष्योंकेप्रति ताआत्मादेवकाउपदेशकरे हैं ॥ तहां सत्यत्व चेतनत्व आनंदत्व इत्यादिकध
र्मतो भावरूपहैं ॥ और अस्थूल अनणु अह्रस्व अदीर्घ इत्यादिकधर्म अभावरूपहैं ॥ हेदेवतावो ॥ इसप्रकार ताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतें
आत्माकास्वरूपश्रवणकरिके तेश्रद्धावान्शिष्य जभी ताआत्माकामननिदिध्यासनकरे हैं॥तभीही तेशिष्य आपणेअनुभवकरिके ताभा
वअभावधर्मोंतेंरहित शुद्धआत्माकूं साक्षात्कारकरे हैं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते सर्वजीवोंकेआत्माविषे निष्प्रपंचतारूपब्रह्मका
धर्म निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यासर्वदेहधारीजीवोंकाजोआत्माहै ॥ सोआत्मादेव सर्वदा याप्रपंचतेंरहितहै ॥ शंका हेभगवन् याजा
ग्रतादिरूपप्रपंचकेविद्यमानहुए ताआत्मादेवविषे सानिष्प्रपंचरूपता किसप्रकार संभवेगी ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ यहजाग्रतादिरूप
सर्वप्रपंच रज्जुसर्पकीन्याईं मिथ्याहीहै ॥ यातें सोमिथ्याप्रपंच ताआत्मादेवकेवास्तवनिष्प्रपंचताकूं निवृत्तकरिसकेनहीं ॥ अब ताजगत्

केमिथ्यात्वसिद्धकरणेवासतैं दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं ताजगत्केउत्पत्तिलयका निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहआत्मादेव जभी जाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी यहआत्मादेव याजाग्रतअवस्थाकूं उत्पन्नकरे है ॥ तथा यास्थूलशरीरकूं उत्पन्नकरे है ॥ तथा यास्थूलशरीरतैंभिन्न बाह्यघटादिकपदार्थोंकूंउत्पन्नकरे है ॥ और यहआत्मादेव जभी स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी यहआत्मादेव तासूक्ष्मशरीरकूं उत्पन्नकरे है ॥ तथा तासूक्ष्मशरीरतैंभिन्न बाह्यवर्तमानस्यादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ और यहआत्मादेव तास्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिके जभी जाग्रतविषेआवे है ॥ तभी तिनस्वप्नकेपदार्थोंकूंदेखतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव तास्वप्नप्रपंचकूं जाग्रतविषे संहारकरे है॥ और यहआत्मादेव जभी ताजाग्रतअवस्थाकापरित्यागकरिके स्वप्नअवस्थाविषेआवे है॥तभी तिनजाग्रतकेपदार्थोंकूंदेखतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव ताजाग्रतप्रपंचकूं तास्वप्नविषे संहारकरे है॥और यहआत्मादेव जभी ताजाग्रतस्वप्नदोनोंकापरित्यागकरिके सुषुप्तिविषेआवे है॥तभीयहआत्मादेव ताजाग्रतस्वप्न दोनोंप्रकारकेप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेवतासुषुप्तिविषे तादोनोंप्रकारकेप्रपंचकासंहारकरे है॥और यहआत्मादेव जभी समाधिअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है॥तभी तासुषुप्तिअवस्थाके तमरूपअज्ञानकूंभी देखतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव तासमाधिविषे ताअज्ञानकाभी संहारकरे है॥कैसाहैसोतमरूपअज्ञान॥जिसतमरूपअज्ञानकरिकेमोहितहुआ यहजीवात्मा आपणेस्वरूपानंदकूंभीजानतानहीं ॥ तथा तासर्वद्वैतप्रपंचकेसंहारका जोसाक्षीरूपज्ञानहै तासाक्षीरूपज्ञानकूंभी जानतानहीं ॥ हेदेवतावो ॥ तुरीयरूपशुद्धआत्माविषे ताअज्ञानकालयरूपजानिवृत्तिहै ॥ताअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकीकृपाकरिकेहीसमर्थहोवे है ॥ तागुरुकीकृपातैंविना ईश्वरभी ताअज्ञानकेनिवृत्तकरणेविषे समर्थहोवेनहीं॥तो अन्यजीवोंकीक्यावार्ता है ॥ हेदेवतावो ॥ हिरण्यगर्भादिकजेईश्वरहैं॥तिनईश्वरोंकूं जोआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवे है॥सोभी गुरुतैंविना स्वतंत्रहोवेनहीं॥किंतु वेदभगवान्रूपगुरुकेवचनोंकेस्मरणतैंही तिनहिरण्यगर्भादिकोंकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवे है ॥ यातैं ताअज्ञानकेनिवृत्तकरणेहारेआत्मज्ञानका ब्रह्मवेत्तागुरुही कारणहै ॥ तागुरुतैंविना किसीकूंभी ज्ञानकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे हिरण्यगर्भादिकईश्वरोंकूं स्मरणकरेहुएवेद

रूपगुरुतें आत्मज्ञानहोवैहै ॥ तैसे इदानींकालकेपुरुषोंकूं त.स्मरणकरेहुएवेदरूपगुरुतें आत्मज्ञानहोतानहीं ॥ याकेविषे ईश्वरपणेका
अभाव कारणनहीं है ॥ किंतु चित्तकेशुद्धिकाअभावही कारणहै ॥ काहेतें इसलोकविषेभी जोकोईपुरुष ताहिरण्यगर्भकीन्याई शुद्धचि
त्तवालाहोवे ॥ तो यापुरुषकूंभी ताहिरण्यगर्भकीन्याई ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवे ॥ परंतु ताहिरण्यगर्भकीन्याई चित्तकीशुद्धिहोणी
अत्यंतदुर्लभहै ॥ याकारणतें इदानींकालकेपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतेंही आत्मज्ञानहोवैहै ॥ और इदानींकालकेपुरुषोंकेअज्ञानकी
निवृत्ति ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतेंहीहोवे है याएकवार्त्ताकूंछोडिके दूसरी याजगत्‌केउत्पत्तिलयकोकारणता जैसे ताहिरण्यगर्भविषेहै ॥ तैसे
याजीवात्माविषेभी पूर्वउक्तदृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं ताजगत्‌केउत्पत्तिलयकीकारणताहै ॥ यातैं यहजीवात्मापुरुष परमेश्वररूपही है ॥
और हेदेवतावो ॥ याजगत्‌कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेविषे ईश्वरही स्वतंत्रकारणहै ॥ दूसराकोईकारणनहीं है ॥ याप्रकारकेवचन जोवे
दांतशास्त्रविषे कथनकरेहैं ॥ तेवचनभी मिथ्यानहीं हैं ॥ किंतु तेवचनभी यथार्थही हैं॥परंतु तिनवचनोंका यहअभिप्रायहै ॥ सोईश्वरही
हमसर्वजीवोंकाआत्माहै ॥ ताईश्वरतेंभिन्न कोईआत्माहैनहीं ॥ तहांश्रुति॥नान्योतोऽस्तिद्रष्टा॥अर्थयह॥तापरमात्मादेवतेंभिन्न दूसराकोई
द्रष्टाहैनहीं ॥ याअभिप्रायकरिकेही तिनश्रुतियोंविषे ईश्वरकूंजगत्‌काकारणकह्याहै ॥ अब ताआत्माकीएकताकावर्णनकरे हैं॥हेदेवतावो॥
जैसे एकहीईश्वर रावणकेशत्रुभावकूंअंगीकारकरिके श्रीरामचंद्र कह्याजावैहै ॥ और कंसकेशत्रुभावकूंअंगीकारकरिके श्रीकृष्ण कह्याजा
वे है॥तैसे एकहीपरमात्मादेव व्यष्टिअज्ञानरूपउपाधियोंकेसंबंधतें जीवकह्याजावे है ॥ और समष्टिअज्ञानरूपउपाधिकेसंबंधतें ईश्वरकह्या
जावे है ॥ और हेदेवतावो ॥ जैसे एकहीईश्वरविषे कर्मकेभेदकरिके ईश्वर अनीश्वर यहदोनोंप्रकारकाव्यवहारहोवे है ॥ जैसे दशरथकापुत्र
श्रीरामचंद्र रावणकेमारणेविषेसमर्थहै ॥ यातैं सोरामचंद्र ईश्वरकह्याजावे है॥और क्षीरसमुद्रविषे शेषनागऊपरशयनकरणेहारा विष्णुभ
गवान् तारावणकेहननकरणेविषे असमर्थ है ॥ यातैं सोविष्णुभगवान् अनीशकह्याजावैहै ॥ तैसे यहएकहीपरमात्मादेव समष्टिव्यष्टिउपा
धिकेयोगतें ईश अनीश कह्याजावैहै ॥ और हेदेवतावो ॥ जैसे रामचंद्रअवतारके रावणवधादिरूपकार्यकूंनहींकरताहुआभी सोशेष

शायीविष्णुभगवान् आपणेविचित्रकार्योंकोअपेक्षाकरिके ईश्वरहीकह्याजावे है ॥ तैसे यहव्यष्टिअभिमानीजीवभी आपणे आपणेविचित्र कार्योंकीअपेक्षाकरिके ईश्वररूपही है अब याजीवोंविषे ईश्वररूपताकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम याजीवोंविषे विचित्रशक्तिकानिरूपणकरेहैं॥ हेदेवतावो ॥ यालोकविषे जितनेंकदेहधारीजीवहैं तेसर्वजीव एकदूसरेकीअपेक्षाकरिके विचित्रशक्तिवालेप्रतीतहोवे हैं यातें यासर्वजी वोंके आपणेआपणेकार्यभी आश्चर्यकेहीकारणहैं ॥ जैसेयालोकविषे स्पष्टवचनकेउच्चारणकरणेकीशक्ति केवल मनुष्योंविषेहीरहेहे ॥ दूसरेपशुआदिकोंविषे साशक्तिरहेनहीं ॥ ओर आकाशविषेगमनकरणेकीशक्ति केवल पक्षियोंविषेहीरहेहे॥ मनुष्यादिकोंविषे साशक्तिरहे नहीं ॥ ओर पृथ्वीकेअल्पछिद्रविषेभीप्रवेशकरणेकीशक्ति केवल सर्पोंविषेहीरहेहे ॥ दूसरेमनुष्यादिकोंविषेसाशक्तिरहेनहीं ॥ ओर निश्च लताकरिके स्थितहोणेकीशक्ति केवल वृक्षोंविषेहीरहे है ॥ दूसरेमनुष्यादिकोंविषे साशक्तिरहेनहीं ॥ ओर सर्वजीवोंकेदेखतेहुए अंतर्धान होणेकीशक्ति केवल देवतादिकोंविषेहीरहेहे मनुष्यादिकोंविषे साशक्तिरहेनहीं॥इसप्रकार दूसरेभी जातिगोत्रकुलादिकोंकेभेदकरिके भिन्न ताकूंप्राप्तहुए अनेकप्रकारकेजीव नानाप्रकारकीशक्तियोंकरिकेयुक्तहैं॥जिनजीवोंकेकार्यकूं दूसरेजीव करिसकतेनहीं ॥जैसे यामनुष्योंविषे कोईकमनुष्यतोमहान्शूरवीरहै ओर कोईमनुष्यतो सर्वमनुष्योंकूंआपणी आज्ञाविषेचलावणेहारेराजेहैं ॥ओर कोईकमनुष्यतो सर्वमंत्रोंकूं जानणेहारेहैं॥ओर कोईकब्राह्मणादिकमनुष्यतो सर्ववेदोंकूंजानणेहारेहैं॥ओर कोईकमनुष्यतोशास्त्रोंकेकर्ता हैं॥ओर कोईकमनुष्यतो तिन शास्त्रोंके यथार्थ अर्थकूंकहणेहारेहैं॥ओर कोईकमनुष्यतो तिनवेदशास्त्रोंकेअर्थका अनुष्ठानकरणेहारेहैं ॥ औरकोईकमनुष्यतो गंधर्वनाट कादिकउपविद्याविषे कुशलहैं ॥ ओर कोईकमनुष्यतो कामक्रोधादिरूपआसुरीसंपदावालेहैं॥ओर कोईकमनुष्यतो शांतिदांतिआदिकदै वीसंपदावालेहैं॥इसप्रकार सापरमेश्वरकीशक्ति तिसतिसउपाधिविषे विचित्रभावकूंप्राप्तहोतीभई है ॥ ओर सोईहीईश्वरकीशक्ति वरशापके देणेविषेसमर्थऋषियोंकेशरीरोंविषेरहेहे॥तथा सोईहीईश्वरकीशक्ति स्त्रीपुरुषादिकोंकेशरीरविषेरहेहे ॥ तथा सोईहीईश्वरकीशक्ति सर्वइंद्रि योंविषेरहेहे ॥ काहेतें याशरीरविषेस्थितजे नासिका कर्ण मुख उपस्थ पायु इत्यादिकछिद्रहैं ॥ तेनासिकादिकछिद्र यद्यपितौ समानही

प्रतीतहोवे हैं ॥ परंतु तिननासिकादिकछिद्रोंविषे अंतर विशेषताकेसिद्धकरनेहारी कोईशक्तिहै ॥ जिसशक्तिकेवलतें तिननासिकादिकोंका गंधग्रहणादिरूपकार्य परस्परविलक्षणहीहोवे है॥एकइंद्रियकेकार्यकूं दूसराइंद्रिय करिसकतानहीं ॥ यातें यहअर्थ सिद्धभया ॥ यालोकवि षेजितनेंकोपदार्थ हैं॥तेसर्वपदार्थ अचिंत्यशक्तिवालेंहैं ॥ याकारणतेंही तेपदार्थ अनिर्वचनीयस्वभाववालेंहैं ॥ तथा विचित्रशक्तिवालेए कईश्वरकेआश्रितहैं ॥यातें सोएकहीआनंदस्वरूपपरमात्मादेव शरीरादिकउपाधियोंकेभेदकरिके ईश जीव पुरुष स्त्री विप्र पंडित मूर्ख गौ वृक्ष पक्षी चारिपादवाला दोपादवाला पादोंतेंरहित तीनपादोंवाला अनेकपादोंवाला इत्यादिकनामोंकूं प्राप्तहोवे है॥हेदेवताओ॥इसप्रकार अविचारकालविषे देहादिकउपाधियोंकेसंबंधतें तेसर्वनाम तापरमात्मादेवकेहोवे हैं॥और विचारकालविषेतो पुरुष स्त्री हस्ती अश्व वृक्ष सर्प वृषभ इत्यादिकसर्वनाम यास्थूलशरीरकेहीसिद्धहोवे हैं ॥ ताशरीरकेसाक्षीआत्माका कोईभीनामहोवेनहीं ॥ हेदेवताओ॥वास्तवतेंतो सो आनंदस्वरूपआत्मा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा सर्वभेदतेंरहितहै ॥ तथा कल्पितभेदकरिके सत्यज्ञानादिकगुणोंवालाहुआभी वास्तव तेंनिर्गुणस्वरूपहै ॥ तथा सर्वउपाधियों तेंरहितहै ॥ ऐसाआत्मादेव अनादिमायाकेसंबंधकरिके नानाप्रकारकेकार्योंकूंकरैहै ॥ तथा ताकार्य सहितअनादिमायाविषेस्थितहोइके सोपरमात्मादेव जीवईश्वरादिकभेदवालाहुआ प्रतीतहोवे है ॥ जैसे एकही आकाश घटमठादिरूप उपाधियोंकेभेदकूंग्रहणकरिके महाकाश घटाकाश मठाकाश इत्यादिकभेदकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे एकहीआत्मादेव अज्ञानादिकउपा धियोंकूंअंगीकारकरिके जीवईश्वरादिकभेदकूंप्राप्तहोवे है ॥ और हेदेवताओ ॥ जैसे आकाशविषे मायाकरिकेकल्पितजोगंधर्वनगर है ॥ सोकल्पितगंधर्वनगर ताआकाशविषे नानाप्रकारकेमिथ्याभेदकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे मायाकरिकेकल्पित जोयहनानाप्रकारकाद्वैतप्रपंचहै ॥ सोद्वैतप्रपंच ताआत्मादेवविषे नानाप्रकारकेमिथ्याभेदकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और हेदेवताओ ॥ जैसे कुशूलादिकोंकाधारणरूप जोगृहाकाशकाकार्य है ताकार्यकूं सोघटाकाश करिसकेनहीं ॥ तैसे ईश्वरके कार्यकूं यहजीव करिसकेनहीं ॥ और हेदेवताओ ॥ जैसे घटाकाश गृहाकाश यादोनोंकाभेद ताघट गृहरूपदोनोंउपाधियोंकरिकेही

है ॥ वास्तवतें ताआकाशकाभेदहैनहीं ॥ तैसे याजीवईश्वरदोनोंकाभेदभी अंतःकरणअज्ञानरूपदोनोंउपाधियोंकरिकेहीहै ॥ वास्तवतें
ताजीवईश्वरकाभेदहैनहीं ॥ और हेदेवताओ ॥ जैसे सोगृहाकाशघटाकाशकाभेद नाममात्रहीहै ॥ तैसे सोजीव ईश्वरकाभेदभी नाममात्र
हीहै वास्तवतें हैनहीं ॥ यातें सर्वभेदतेंरहित सोएकपरमात्मादेवही यासर्वशरीरोंविषेस्थितहै ॥ ताईश्वररूपताकूंग्रहणकरिके यहसर्वजी
व तिसतिसमनुष्यादिकशरीररूपउपाधियोंविषेस्थितहुएभी दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसें आपनेदर्शनतेंतो याजगत्कीउत्पत्तिकरेहै ॥ और
अदर्शनतें याजगत्कालयकरे है ॥ साहदृष्टिसृष्टिवादकोरीति याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे विस्तारतेंनिरूपणकरिआयेहैं ॥ शंका॥हे
भगवन् शारीरकमीमांसाकेचतुर्थअध्यायकेचतुर्थपादविषे ॥ जगद्व्यापारवर्जं ॥ यासूत्रविषे व्यासभगवान्नें सगुणब्रह्मकी अहंग्रहउपास
नाकरणेहारेपुरुषोंकूं एकजगत्कीउत्पत्तिआदिकव्यापारकूंछोडिके दूसरेसर्व ऐश्वर्यकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ और इहांआपनें सर्वजीवोंकूं या
जगत्केउत्पत्तिकीकारणता कथनकरीहै ॥ यातें ताव्यासभगवान्केवचनसें आपकेवचनकाविरोधहोवेगा ॥समाधान॥हेदेवताओ॥सोव्यास
भगवान् तासूत्ररूपवचनकरिके उपासनारूपयोगकेफलकानियमकथनकरताभयाहै ॥ परंतु तिसतिसउपाधिविषेप्रविष्टईश्वरविषेस्थित जा
जगत्केउत्पत्तिआदिकोंकीशक्तिहै॥ताशक्तिकेनियमकूं सोव्यासभगवान्कावचन कथनकरतानहीं ॥ तात्पर्ययह॥यहअधिकारीपुरुष जभी
ताअहंग्रहउपासनारूपयोगकेफलकूंप्राप्तहोवे है॥तभी तेउपासकपुरुष याजगत्केउत्पत्तिआदिकव्यापारकूंछोडिके दूसरेसर्व ऐश्वर्यकूंप्राप्त
होवेहैं ॥ याप्रकार ताउपासनाकेफलकीपरिच्छिन्नताकूं सोवचन कथनकरेहै ॥ यहहीतावचनकातात्पर्य है॥और जैसे शरीरादिकसर्वउपाधि
योंविषेस्थितईश्वर याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषेप्रवृत्तहुआ विशेषरूपकरिके तथासामान्यरूपकरिके याजगत्कीउत्पत्तिआदिकोंकूंकरे
है ॥ तैसेजीवभावकीप्राप्तिकरणेहारे अंतःकरणादिकउपाधियोंविषेस्थितहुएभी यहपुरुष वामदेवकीन्याई मैंही सर्वरूपहूं याप्रकारको
शास्त्रजन्यब्रह्मदृष्टिकरिकेयुक्तहुए याजगत्कूं सामान्यविशेषरूपकरिके उत्पन्नकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ कर्मउपासनाकेजेफलहैं ॥ तिनफ
लोंकातोसृष्टिकेआदिकालविषे ईश्वरनें नियमकरिरख्याहै॥यातें कर्तृत्वअभिमानपूर्वक तिनकर्मउपासनाओंकूंकरणेहारेपुरुष नियमपूर्वक

तितनेंहीफलकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तिसतेंअधिककलकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और जभी तेअधिकारीपुरुष सर्वत्रपरिपूर्णब्रह्मदृष्टिकरिकेतापरिच्छि
न्नपणेकेअभिमानकापरित्यागकरेहैं ॥ तभी तिनविद्वान्पुरुषोंकाभेद निवृत्तहोइजावे है ॥ यातें ताकालविषे जोईश्वरकाकर्म है ॥ सोईही
कर्म तिनविद्वान्पुरुषोंकाहै ॥ और सोईश्वरतो व्यष्टिशरीरविषेस्थितहोइकेभी समष्टिउपाधिकेकार्यकरणेकूं समर्थहोवे है॥ जैसे सोपरमेश्वर
विश्वामित्रकेशरीरविषेस्थितहोइके त्रिशंकुकेहितवासते दूसरेस्वर्गकूंरचताभयाहै ॥ यहवार्त्ता रामायणादिकोंविषेप्रसिद्धहै ॥ यातें यहजा
ग्रतप्रपंचादिकोंकीसृष्टिभी ताईश्वरकाहीकर्म है ॥ याअर्थकूं कोईभीवादी निवारणकरिसकेनहीं ॥ अथवा ॥ जगद्व्यापारवर्ज्यं ॥ यासूत्र
का यहअभिप्रायहै ॥ तिनयोगीपुरुषोंका ब्रह्मविद्याकेबलतें ताईश्वरकेसाथ अभेदहुएभी तिनयोगीपुरुषों तें सोईश्वर अधिकहै ॥ काहेतें
यहईश्वरतो सर्वदा याजगत्काकर्त्ता है ॥ और तिनयोगीपुरुषोंविषे ताब्रह्मविद्यातेंपूर्व सोसर्वजगत्काकर्त्तापणायानहीं ॥यातें तेयोगीपुरुष
सर्वदा यासर्वजगत्केकर्त्तानहीं हैं॥ याप्रकार तापरमेश्वरकोअधिकताकाकारण तासूत्रविषे व्यासभगवान्नें कथनकऱ्याहै ॥ परन्तु ता
सूत्रकरिके व्यासभगवान्नें योगीआदिकजीवोंके आपणेआपणेईश्वरताकूंनिवारणकऱ्यानहीं ॥ जोकदाचित् सोसूत्र समष्टिउपाधिवाले
ईश्वरकेअधिकताकूं तथाव्यष्टिउपाधिवालेजीवोंकेअनीश्वरताकूं कथनकरेगा ॥ तो तासूत्रविषे वाक्यभेदरूपदोषकोप्राप्तिहोवैगो ॥ यातें सो
सूत्र केवल ताईश्वरकेअधिकताकूंही कथनकरे है॥किंवा यादेहधारीजीवोंविषे कितनेंकजीवतो बहुत पदार्थोंकेउत्पत्तिसंहारकूंकरतेहुए प्रती
तहोवे हैं ॥ और कितनेंकजीवतो अल्पपदार्थोंकेउत्पत्तिसंहारकूंकरतेहुए प्रतीतहोवे हैं ॥ सोउत्पत्तिसंहारकीकारणतारूपधर्म केवल तिन
जीवोंका नहीं है ॥ किंतु सोउत्पत्तिसंहारकीकारणतारूपधर्म ईश्वरकाभी है ॥ जैसे चक्रवर्तिमहाराजाका ॥ जिसप्रकारका प्रजाकापालन
रूपव्यापारहोवे है ॥ तिसीप्रकारकाव्यापार ताचक्रवर्तिराजाकेअधीन दूसरेमंडलेश्वरराजाओंकाभीहोवे है ॥ और तिसीप्रकारकाव्यापार
एकएकग्रामकीरक्षाकरणेहारेप्रधानपुरुषोंकाभीहोवे है ॥ और तिसीप्रकारकाव्यापार दूसरेभृत्योंकाभीहोवे है ॥ तहां जैसे मंडलेश्वररा
जाओंतेंआदिलेकेभृत्यपुरुषोंपर्यंत सर्वोंविषेजोप्रभुपणारहेहै ॥ तासर्वोंकेप्रभुपणेविषे ताचक्रवर्तिराजाकाप्रभुपणा अनुगत होइकेरहे है

तैसे यासर्वजीवोंकेकर्त्तापणेविषे तापरमेश्वरकाकर्त्तापणा अनुगतहोइकैरहे है ॥ तहां प्रथम मायाविशिष्टईश्वरतो चक्रवर्त्तिराजाकेसमानहै ॥ और ताईश्वरका साक्षात्कार्यरूप जोसमष्टिसूक्ष्मउपाधिवाला हिरण्यगर्भभगवान्है ॥ सोहिरण्यगर्भभगवान् तामंडलेश्वरराजाकेसमानहै ॥ और ताहिरण्यगर्भकाकार्यरूप जोसमष्टिस्थूलउपाधिवाला विराट्भगवान्है ॥ सोविराट्भगवान् एकग्रामकेअधिपतिकेसमानहै ॥ और ताविराट्भगवान्काकार्यरूप जोयहस्थावरजंगमरूप व्यष्टिप्राणीहैं ॥ तेव्यष्टिप्राणी तिनभृत्योंकेसमानहैं ॥ तिनहिरण्यगर्भादिकसर्वोंकेकर्त्तापणेविषे सोईश्वरकाकर्त्तापणा अनुगतहोइकेरहे है ॥ और जोयह अंतःकरणादिकउपाधिवालेजीव अज्ञानकेबलतें आपणेस्वरूपभूतईश्वरतैंभी भेदकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिनजीवोंका यहजाग्रतादिकतीनअवस्थाही कार्यरूपहैं ॥ इसप्रकार साक्षात् अथवा परंपराकरिके सोईश्वरही सर्वजगत्काकारणहै ॥ हेदेवतावो ॥ यहजीवात्मा जिसजिसअवस्थाकूंदेखे है ॥ तिसीतिसीअवस्थाकूं उत्पन्नकरे है ॥ और यहजीवात्मा जिसजिसअवस्थाकूंनहींदेखे है ॥ तिसतिसअवस्थाकूं आपणेविषेलयकरे है ॥ यादृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं यहजीवात्माही तिनजाग्रतादिकअवस्थावोंकेउत्पत्तिलयकाकारणहै ॥ और हेदेवतावो ॥ यद्यपि यहस्थूलशरीर पिताके शुक्रशोणिततैं उत्पन्नहोवे है ॥ और यहसूक्ष्मशरीर पंचभूतोंद्वारा मायाविशिष्टईश्वरतैं उत्पन्नहोवे है ॥ यहवार्त्ता लोकविषे तथाशास्त्रविषे प्रसिद्धहै ॥ तथापि साप्रक्रिया मंदबुद्धिपुरुषोंकेबोधवासते शास्त्रनें कथनकरीहै ॥ उत्तमअधिकारीपुरुषकेप्रतितो यहदृष्टिसृष्टिप्रक्रियाही मोक्षकेप्राप्तिकाद्वारहै ॥ तादृष्टिसृष्टिप्रक्रियारूपमोक्षकेद्वारकूं वेदांतोंविषे गुप्तकरिकेराख्याहै ॥ यातैं यहस्थूलशरीरादिकपदार्थ आपणेदर्शनकालविषेतो उत्पन्नहोवे है॥ और आपणे अदर्शनकालविषे लयभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यहश्रुतिअनुभवकरिकेसिद्ध दृष्टिसृष्टिप्रक्रियाही बुद्धिमान्पुरुषोंनें अंगीकारकरणेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् दर्शनअदर्शनतैं याशरीरादिकोंका उत्पत्तिलयहोताहोवे ॥ तो याजीवोंकूं सोउत्पत्तिलय किसवासतेनहींप्रतीतहोता ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ यहशरीरादिकपदार्थ दर्शनअदर्शनकालविषे पूर्वशरीरादिकोंकेसमानआकारवालेही उत्पन्नहोवे हैं ॥ यातैं यहपुरुष तिनशरीरादिकोंकेउत्पत्तिनाशकूं जानिसकतेनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिके

निरूपणकरेहैं॥हेदेवताओ॥वास्तवतैंजन्ममरणतैंरहित जोयहआत्मादेवहै ॥ताआत्मादेवका यास्थूलशरीरकेसाथ जोतादात्म्यअध्यासरूप अभिमानहै ॥ सोअभिमानही याआत्मादेवका जन्महै॥और ताशरीरकेअभिमानकीनिवृत्तिही ताआत्म देवकामरणहै ॥ और याशरीरादि कदृश्यपदार्थोंकातो दर्शनहीजन्महै ॥ और अदर्शनहीमरणहै ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ यहजीवात्मा यासंसारदशाविषे जिसजिसपदा र्थकूंदेखेहै ॥ तिसतिसपदार्थकूं तादर्शनकालविषेही उत्पन्नकरेहै ॥ और यहजीवात्मा जिसजिसपदार्थकूंनहींदेखेहै ॥ तिसतिसपदार्थका तावदर्शनकालविषे संहारकरेहै ॥ इसप्रकार दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसें यहजीवात्मा जाग्रतादिकतीनअवस्थाओंविषे शरीरादिकपदार्थोंका उत्पत्तिसंहारकरतेहुएभीआपणेकूं ईश्वररूपकरिकेजानतेनहीं ॥ याकारणतैंही जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और जभी याअधिकारीजीवोंका जाग्रतादिकतीनअवस्थाओंकाकारणरूपअज्ञान गुरुकीकृपाकरिकेप्राप्तहुएआत्मज्ञानकरिके नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी यहअधिकारी जीव तीनअवस्थाओं तैंरहित तुरीयरूपपरमपदकूंप्राप्तहोवे है ॥ यातें याअधिकारीपुरुषनें ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ अब पूर्वउक्तप्रणवमंत्रकरिकेजानणेयोग्य शुद्धआत्मा जिसप्रकार गुरुओं नें शिष्यकेप्रति उपदेशकरीताहै तथा ताशिष्यनें जिसप्रकार सो आत्मा जानीताहै ताप्रकारका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार अग्निआदिकदेवता ताप्रजापतिकेमुखतें शमदमादिकउपायोंसहित ताप्रणवरूपआत्माका श्रवणकरिके पुनःकेवलशुद्धआत्माकेपूछणेकीइच्छाकरतेहुए ताब्रह्माकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देव ताउवाच ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनें हमारेप्रति प्रणवरूपआत्मा उपायरूपकरिकेकथनकऱ्याथा ॥ अब ताप्रणवरूपउपायकरिके प्राप्तहोणे योग्यजो निर्विशेषशुद्धआत्माहै॥सो शुद्धआत्मा हमारेप्रति उपदेशकरो॥हेशिष्य इसप्रकारकाप्रश्न जभी तिनदेवताओंनें ताप्रजापतिकेप्रति कऱ्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनदेवताओंकेप्रति याप्रकारकाउत्तरकहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवताओ ॥ मनवाणीकाअविषय जो शुद्धआत्माहै ॥ ताशुद्धआत्मादेवके साक्षात्उपदेशकरणेविषे कोईभीसमर्थनहीं है ॥ यातें ताआत्मादेवविषे नानाप्रकारकेधर्मोंकाआरोप णकरिके मैं तुम्हारेप्रति कथनकरताहूं॥तुम सावधानहोइकेश्रवणकरो॥काहेतैंचित्तकीशुद्धितैंअनंतर सोशुद्धआत्मादेव तुम्हारेताईं अवश्यक

रिकैउपदेशकरणेयोग्यहे॥हेदेवताओ॥पूर्वहमनैं तुम्हारेताईं जोसत्‌चित्‌आनंदस्वरूप नृसिंहपरमात्मादेव तत्त्वमसि यावाक्यविषेस्थित त
त्‌पदार्थरूपकरिकेकथनकऱ्याया ॥ सोईहीपरमात्मादेव यात्वंपदार्थजीवकेसाथ एकताकूंप्राप्तहुआ आपणीसमीपतामात्रकरिके सर्वबुद्धि
आदिकोंका द्रष्टारूपहे ॥ तथा वास्तवतैं तिनबुद्धिआदिकोंकेसंबंधतैंरहितहे ॥ और हेदेवताओ ॥ यासंघातविषे याजीवोंकामन जभी शु
भअशुभकर्मकूंकरेहे ॥ तभी सोद्रष्टाआत्मादेव ताकर्मविषे अनुमतिकूंकरे हे ॥ प्रवृत्तहुएकूं निवृत्तनहीं करणा याकानाम अनुमतिहे ॥
काहेतैं सोआत्मादेव पंगुपुरुषकीन्याईं सामर्थ्यतैंरहितहोणेतैं उदासीनहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोआत्मादेव तामनकीप्रवृत्तिविषे जोअ
नुमतिकरैगा ॥ तो सोआत्मादेव विकारवान्‌होवेगा॥समाधान॥हेदेवताओ ॥ सोआत्मादेव चैतन्यस्वरूपहे ॥ तथा सर्वविकारोंतैंरहितहे ॥
तथा सुखदुःखादिकोंतैंरहितहे॥तथा मनबुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूपहे ॥ तथा सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपहे॥तथा सर्वजगत्‌विषेएकरूपहे॥और
यहसंपूर्ण द्वैतप्रपंच याआत्मादेवविषे वास्तवतैंहैनहीं॥किंतु यहसर्व द्वैतप्रपंच ताअद्वितीयआत्माविषे मायाकरिकेकल्पितहे ॥ याकारणतैं
ही याअद्वितीयआत्मातैंभिन्नकरिके याद्वैतप्रपंचकोसत्तासिद्धहोवेनहीं॥हेदेवताओ॥जिसमायानैं यापरमात्मादेव विषे यहजगत् कल्पनाक
ऱ्याहे ॥ तामायाका यहस्वरूप वेदवेत्तापुरुषों नैं कथनकऱ्याहे ॥ जा आपतो प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकेप्रतीतहोवेनहीं ॥ और जिसका
कार्य प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकेप्रतीतहोवे ॥ ताकूं दुर्घटमाया यानामकरिकेकथनकरे हे ॥ हेदेवताओ ॥ सामाया आपतो सत्‌रूपहैनहीं ॥
तो तामायाका यहजगत्‌रूपकार्य किसप्रकार सत्‌होवेगा ॥ किंतु तामायाकीन्याईं यहजगत्‌भी असत्‌रूपहीहे ॥ परंतु यहजगत् तादुर्घट
मायाकेप्रभावतैं सत्‌रूपकरिकेप्रतीतहोवे हे ॥ यातैं अद्वितीयआत्माविषे यहजगत् मिथ्याहीहे वास्तवतैं हैनहीं ॥ हेदेवताओ ॥ जैसे
आकाशविषे जोगंधर्व नगर प्रतीतहोवेहे ॥ सो विचारतैंविनाही प्रतीतहोवे हे ॥ विचारकियेतैं सोगंधर्वनगर प्रतीतहोवेनहीं ॥ तैसे या
अद्वितीयआत्माविषे जो द्वैतप्रपंचप्रतीतहोवे हे ॥ सोभी विचारतैंविनाही प्रतीतहोवे हे ॥ विचारकियेतैं याअद्वितीयआत्माविषे किंचित्
मात्रभी जगत्‌नहीं हे॥हेदेवताओ॥ यासर्वजीवोंके जाग्रतादिकतीनअवस्थाओंविषेअनुगत जोयहआत्मादेवहे॥सोआत्मादेव सत्‌चित्‌आनंद

स्वरूपहै ॥ यातैं यहत्वंपदार्थरूपआत्मादेव तत्पदार्थपरब्रह्मरूपही है॥हेदेवतावो॥जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित प्राज्ञनामाजीव किंचित्
मात्रभी दुःखकूंजानतानहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मादेव सर्वकालविषे किंचित्मात्रभी दुःखकूंजानतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥
यहआत्मादेव जोकदाचित् सर्वदुःखोंतैंरहितहोवे ॥ तो याजीवोंकूंअहंदुःखी याप्रकार दुःखकीप्रतीति किसवासतेहोवे है ॥ समाधान ॥
हेदेवतावो ॥ सर्वदुःखोंतैंरहित जोपरब्रह्महै ॥ तापरब्रह्मकेसाथ याआत्मादेवका वास्तवतैंअभेदहै ॥ यातैं याआत्मादेवविषेभी वास्तवतैं
दुःखहैनहीं ॥ ऐसेदुःखरहितआत्मादेवविषे जोदुःख प्रतीतहोवे है॥ सोअविद्याकरिकेहीप्रतीतहोवे है॥ वास्तवतैं याआत्मादेवविषे सोदुःख
हैनहीं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते ताअविद्याकास्वरूप वर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंउत्पन्नभयाजो मैंब्रह्म
रूपहूं याप्रकारकाज्ञानहै ॥ ताअभेदज्ञानकूं विद्वान्पुरुष विद्या यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ ताविद्याकेसाथ जा विरोधवालीहोवे ॥ तथा
सर्वजीवोंकेदुःखकाकारणहोवे ॥ ताकूं वेदवेत्तापुरुष अविद्या यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ कैसीहैसाअविद्या ॥ मैं याशरीरविषेहीस्थितहूं
सर्वत्रव्यापकनहींहूं इसप्रकारतैं यासर्वदेहधारीजीवोंकेअनुभवकरिकेसिद्धहै ॥ तथा उत्पत्तितैंरहितहै ॥ तथा सत्असत्रूपकरिके कथन
करीजावेनहीं ॥ तथा संसारतैंरहितआत्माविषेभी संसारकीकारणता सिद्धकरणेहारीहै ॥ याकारणतैंही विद्वान्पुरुष याअविद्याकूं दुर्घट
यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ सादुर्घट अविद्या जडहोणेतैं यद्यपि आत्मातैंभिन्न है ॥ तथापि साअविद्या आत्मातैंभिन्नहुई
प्रतीतहोवेनहीं ॥ किंतु अधिष्ठानआत्माकेआश्रितहुईही साअविद्या प्रतीतहोवे है ॥ यातैं साअविद्या वास्तवतैंअस्वतंत्रहुईभी शत्रुकीन्याईं
याआत्मादेवकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरे है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअविद्याकूं स्वतंत्रकहेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहस्वयंज्योति
आनंदस्वरूपनिर्गुणआत्मादेव वास्तवतैंअद्वितीयरूपहुआभी याअविद्याकरिके भेदवालाहुआप्रतीतहोवे है ॥ जिसभेददृष्टिकरिके
यहजीव अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ यातैं ताभेददृष्टिद्वारा यहअविद्याही सर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ और हेदेवतावो ॥ ज्ञातसुख
विषेही सर्वजीवोंकीप्रीतिहोवे है ॥ अज्ञातसुखविषे किसीभीजीवकीप्रीतिहोवेनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्ध है ॥ और यासर्व

जीवोंकी आपणेआत्माविषेप्रीति देखणेविषेआवे है ॥ यातें यहजान्याजावे है ॥ यहसर्वजीव आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूंजानतेही हैं ॥
तथापि ताअविद्याकरिकेआवृतहुए यहजीव ताआत्मास्वरूपआनंदकूं विशेषरूपकरिकेजानतेनहीं ॥ याकारणतेंही यहजीव ताआनंदस्व
रूपआत्मातेंभिन्न अल्पविषयोंविषे सुखबुद्धिकरिके सर्वदा दुःखकूंहीप्राप्तहोवे हैं ॥यातें आनंदस्वरूपआत्माकेआवरणद्वारा यहअविद्याही
जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ और हेदेवतावो ॥ जाग्रतअवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे यहजीव जोआपणेआनंदस्वरूपआत्माकूंनहीं
जाने हैं ॥ सोभ्रमरूपकार्यअविद्याकेबलतेंही नहीं जाने हैं॥और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव जो ताआनंदस्वरूपआत्माकूंनहींजाने है॥ सो
अज्ञानरूपकारणअविद्याकेबलतेंनहींजाने हैं ॥ यातें कार्यकारणरूपकरिके यहअविद्याही सर्वजीवोंकूंमोहकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ और
हेदेवतावो ॥ तासुषुप्तिअवस्थाविषे चैतन्यस्वरूपआत्माविषे जोअज्ञताप्रतीतहोवे है ॥ ताअज्ञताविषे आत्माकेचैतन्यस्वरूपकानाश
कारणनहीं है ॥ किंतु सर्व द्वैतप्रपंचकाअभावही ताअज्ञताविषेकारणहै ॥ सोआत्माकाचैतन्यस्वरूप तासुषुप्तिविषेभी विद्यमानहै ॥ तहां
श्रुति ॥ नहिद्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपोविद्यतेअविनाशित्वात् ॥ अर्थयह ॥ द्रष्टाआत्माका स्वरूपभूत जोचैतन्यदृष्टिहै॥साचैतन्यरूपदृष्टि नाशतें
रहितहै ॥ यातें ताचैतन्यरूपदृष्टिका किसीअवस्थाविषेभी अभावहोवेनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ तासुषुप्तिअवस्थाविषे जोकदाचित् ताआत्मा
देवके चैतन्यस्वरूपकानाशहोताहोवै ॥ तो सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव तमरूपअज्ञानकूंभी नहींजानेंगा ॥ और तासुषुप्तिअव
स्थाविषे यहआत्मादेव तातमरूपअज्ञानकूंतो अवश्यकरिकेजाने है ॥काहेतें सुषुप्तितेंउत्थाहुआयहजीव मैंकिंचित्मात्रभीनहींजानताभया
याप्रकारकास्मरणकरे है ॥ सोजाग्रतकास्मरण अज्ञानकूंहीविषयकरेहै ॥ और पूर्वअनुभवकरेहुएवस्तुकाही स्मरणहोवे है ॥ यातें या
आत्मादेवनेंतासुषुप्तिविषेअज्ञानकूंअवश्यकरिकेअनुभवकर्‍याहै॥जिसअनुभवजन्यसंस्कारतेंजाग्रतअवस्थाविषेताअज्ञानकास्मरणकरेहै ॥
यातें तासुषुप्तिविषे याआत्मादेवकोचैतन्यस्वरूपता नाशहोवेनहीं॥अब ताअज्ञानकीतुच्छरूपता निरूपणकरेंहैं॥ हेदेवतावो ॥ इसप्रकार
सुषुप्तिविषे अनुभवकाविषयरूपकरिकेसिद्धकर्‍याजो आत्मातेंभिन्नजडरूपअज्ञानहै ॥ सोतमरूपअज्ञान प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिके ग्रहण

होवैनहीं ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं तुच्छकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ यालोकविषे जोपदार्थ तीनकालोंविषेसत्तातैंरहितहोवैहै ॥ तथा स्वरूपतैंरहितहोवे है ॥ तथा नाममात्रकरिके जाकीप्रतीतिहोवे है ॥ तापदार्थकूं लोकविषे तुच्छकरेहैं ॥ जैसे वंध्यापुत्रनरशृंगादिक पदार्थ तीनकालविषे सत्तातैंरहितहैं ॥ तथा स्वरूपतैंरहितहैं ॥ तथा वंध्यापुत्र नरशृंग इत्यादिकनाममात्रकरिके तिनोंकीप्रतीतिहोवेहै ॥ यातैं तावंध्यापुत्रकूं तथानरशृंगकूं लोकविषे तुच्छकहे हैं ॥ तैसे यहअज्ञानभी तीनकालविषेसत्तातैंरहितहै ॥ तथा स्वरूपतैंरहितहै ॥ तथा अज्ञान अविद्या माया इत्यादिकनाममात्रकरिके ताकीप्रतीतिहोवेहै॥यातैं ताअज्ञानकूं विद्वान् पुरुष तुच्छकहेहैं॥हेदेवतावो ॥ ऐसा तुच्छहुआभी यहअज्ञान यासर्वसंसारकाकारणहोवे है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं दुर्घट यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो ॥ यहअज्ञान यद्यपि वंध्यापुत्रकीन्याईं तुच्छरूपहै ॥ तथापि सोअज्ञान भावरूपकरिकेप्रतीतहोणहारेयाजगत्काकारणरूपहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं भावरूपकहेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ तुच्छरूपता तथाभावरूपता यहदोनोंधर्म परस्परविरोधी होणेतैं एकवस्तुविषेरहैंनहीं ॥ याप्रकारकेअनुपपत्तिकाविचारकरिके तेविद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं अनिर्वचनीय यानामकरिकेकथनकरेहैं॥ और हेदेवतावो ॥ यहअज्ञान ताचैतन्यस्वरूपआत्मातैंभिन्नहै ॥ तथा याजडजगत्काकारणरूपहै॥तथा ताचेतनआत्माकूं आवरणकरणेहाराहै ॥ याकारणतैं तेविद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं जडकहेहैं॥और हेदेवतावो॥जैसे घटादिकपदार्थ आपणी उत्पत्तितैंपूर्व मृत्तिकादिकोंविषे स्थितप्रागभावकेप्रतियोगित्वरूपअंतवालेहोवे हैं ॥ तैसे यहअज्ञान ताकालिकपरिच्छेदरूपअंतवालाहैनहीं ॥ याकारणतैं विद्वानपुरुषया अज्ञानकूं अनंतर यानामकरिकेकथनकरेहैं॥हेदेवतावो॥तैसे घटादिकपदार्थोंके मृत्तिकादिक कारणहोवेहैं॥तैसे याअज्ञानकाभीजोकोईकारण अंगीकारकरिये ॥ तो ताअज्ञानकेकारणकाभी कोईदूसराकारणहै अथवानहीं है ॥ तहां जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरिये॥तो तादूसरेकारणकाभी कोईतीसरा कारणहोवैगा॥तीसरेकाचतुर्थहोवैगा इसप्रकार कारणोंकीपरंपरामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी॥ और ताअज्ञानके कारणका कोईदूसराकारणनहीं है ॥ यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥तो ताअज्ञानकेकारणकरिकेही सर्वव्यवहारकीसिद्धिहोइ

सकेहै॥ताप्रथमअज्ञानविषे ध्यर्थताप्राप्तहोवैगी ॥ यातें ताअज्ञानकी किसीकारणतेंउत्पत्तिहोवैनहीं यहहीअंगीकारकरणाउचितहै॥याअभि
प्रायकरिकेही तेविद्वानपुरुष याअज्ञानकूं अनंतकहेहैं ॥ अथवा ॥ याप्रपंचकेअंतकूं कोईभीपुरुष जानिसकता नहीं ॥ याकारणतें यहप्र
पंच अनंतहै ॥ सोअनंतप्रपंच किसीपरिच्छिन्नकारणतें उत्पन्नहोइसकेनहीं ॥किंतु सोअनंतप्रपंच ताअज्ञानरूपकारणतेंहीं उत्पन्नहोवैहै ॥
याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं अनंत यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ अथवा ॥ यहअज्ञानब्रह्मज्ञानतेंविना दूसरेसहस्रकारणोंकार
केभी नाशरूपअंतकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतें विद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं अनंत यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो ॥ वास्त
वतें सर्वमोहतेंरहित जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माहै ॥ ताआत्मादेवकूंभीयहअज्ञान आवृतकरिलेवैहै ॥ याकारणतें वेद
वेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं मोहरूप यानामकरिकेकथनकरेहैं और हेदेवतावो ॥ यह अज्ञानरूपअविद्या तास्वयंज्योतिआत्माविषे पूर्वक
भीहुईनहीं ॥ और आगेकभीहोवेगीनहीं ॥ और अभीभीहैनहीं ॥ इसप्रकार आत्माकेस्वरूपतें नित्यनिवृत्तहुईभीयहअविद्या आपणेअचिं
त्यशक्तिरूपबलतें तास्वयंज्योतिआत्मादेवकूं नानाप्रकारकेमोहकी प्राप्तिकरे है ॥ अब ताअविद्याकृतमोहकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ हेदे
वतावो ॥ आकाशादिकपंचभूतोंकाकार्यरूप जोयहस्थूलशरीरहै तथासूक्ष्मशरीरहै॥तादोनोंप्रकारकेशरीरोंविषे यह आनंदस्वरूपआत्मा
अहंबुद्धिकूं तथाममबुद्धिकूंकरेहै ॥ तहां यहआत्मादेव जिसभूतोंकेकार्यकूं प्रत्यक्आत्मारूपकरिकेमानेहै ॥ तिसभूतोंकेकार्यविषेतौं अहं
बुद्धिकरेहै ॥ और यहआत्मादेव जिसभूतोंकेकार्यकूं आपणेआत्मातेंबाह्यकरिकेमानेहै॥तिसभूतोंकेकार्यविषे ममबुद्धिकरेहै ॥ और वास्त
वतें सर्वद्वैतप्रपंचतेंरहितहुआभी यहआनंदस्वरूपनिर्गुणआत्मादेव ताअविद्यारूपमायाकरिकेमोहितहुआ तिनशरीरादिकोंकेपरिच्छिन्नत्वा
दिकधर्मोंकूं आपणेविषेमानेहै ॥ इसतेंआदिलेके अनेकप्रकारकेमोहकूं यहआत्मादेव प्राप्तहोवैहै ॥ हेदेवतावो॥इसप्रकार आत्माकेमोहका
कारणरूपकरिके तथातुच्छजडरूपकरिके तथायासर्वजगत्काकारणरूपकरिके तथाअनादिअनंतरूपकरिके पूर्वकथनकरयाजोमायारू
पअज्ञानहै॥सोअज्ञान सिद्धत्वधर्मकरिकेविशिष्टहुआ प्रतीतहोवैहै॥याकारणतें विद्वान्पुरुष ताअज्ञानका सत्त्वरूप कथनकरेहैं॥और सोअ

ज्ञानअसिद्धस्वरूपकरिकेविशिष्टहुआ प्रतीतहोवे है॥याकारणतें विद्वान्पुरुष ताअज्ञानका असत्स्वरूप कथनकरे हैं॥अब ताअज्ञानकेसिद्ध
स्वअसिद्धस्वरूपका निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ इंद्रियादिकोंकोविषयताकानाम सिद्धत्वहै ॥ सोसिद्धत्व कार्यरूपकरिके ताअज्ञानवि
षेभीरहे है ॥ याकारणतें ताअज्ञानकूं सिद्धकहे हैं ॥ और स्वरूपतें ताअज्ञानविषे इंद्रियादिकोंकोविषयताहैनहीं॥ याकारणतें ताअज्ञानकूं
असिद्धकहे हैं ॥ अथवा ॥ यहअज्ञान मैंअज्ञानीहूं याप्रकारकेसर्वजीवोंकेअनुभवकाविषयहोवे है ॥ याकारणतें ताअज्ञानकूं सिद्धकहे हैं ॥
और विचारकरिके ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोइजावे है ॥ याकारणतें ताअज्ञानकूं असिद्धकहे हैं ॥ अथवा यालोकविषे स्वतंत्रपुरुषकूं सिद्धक
हे हैं ॥ और परतंत्रपुरुषकूं असिद्धकहे हैं ॥ सास्वतंत्रता तथापरतंत्रता याकारणरूपअज्ञानविषेभीरहे है ॥ याकारणतें याअज्ञानकूं सिद्ध
असिद्ध यादोनोंनामकरिकेकथनकरे हैं ॥अब ताअज्ञानकेस्वतंत्रताका निरूपणकरे हैं॥हेदेवतावो ॥ वेदवेत्तापुरुषों नें याअज्ञानकी याप्रका
रतें स्वतंत्रताकथनकरी है ॥ यहअज्ञानस्वरूपतें जडतुच्छरूपहुआभी अनादिअनंतरूपकरिकेप्रसिद्धहै ॥ तथा यहअज्ञान वास्तवतैंमोह
तैंरहितअद्वितीयआत्माकूंभी मोहकोप्राप्तिकरे है ॥ याकारणतें यहअज्ञान स्वतंत्रकह्याजावे है ॥ अथवा जैसे मध्याह्नकेसूर्यविषे अंधकार
कोस्थितिहोणी अत्यंतदुर्घटहै॥ तैसे स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माविषे दुःखकेकरणेहारेअज्ञानकोस्थितिहोणीभी अत्यंतदुर्घटहै॥तोभी
यहअज्ञान आपणेबलतें तास्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माविषेही स्थितहोवे है ॥ याकारणतें विद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं स्वतंत्रकहे हैं ॥
अथवा यहमायारूपअज्ञान तास्वयंज्योतिआत्मादेवकेही आश्रितरहे है ॥ यातें यहअज्ञान ताआत्मादेवकेअधीनहै॥और यहअज्ञान जिस
आत्मादेवकेअधीनरहे है ॥ तिसीआत्मादेवकूंआपणेवशकरे है ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याअज्ञानकूं स्वतंत्रकहे हैं अब ताअज्ञानरूपअ
विद्याविषे परतंत्रताकानिरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो॥यहअज्ञानरूपअविद्या आपणेआश्रयकी तथाविषयकी अपेक्षाकरिकेही सिद्धहोवे है ॥
आश्रयविषयकीअपेक्षातैंविना ताअविद्याकोसिद्धिहोवेनहीं ॥ याकारणतैंविद्वान्पुरुष ताअविद्याकूं परतंत्रकहे हैं॥शंका ॥ हेभगवन् ॥ताअ
विद्याकास्वरूपही ताअविद्याकेआश्रयभावकूं तथाविषयभावकूं प्रासहोवेगा ॥ यातें ताअविद्याकूं दूसरेआश्रयविषयकीअपेक्षा संभवेनहीं॥

समाधान॥हेदेवतावो॥जैसे याळोकप्रसिद्धअंधकारकाअंधकार विषयहोवैनहीं॥किंतु ताअंधकारतैंभिन्न गृहादिकपदार्थही ताअंधकारकावि षयहोवे हैं॥ तैसे ताअविद्याकाभी अविद्या विषयहोवैनहीं॥किंतु ताअविद्यातैंभिन्न चेतनआत्माही ताअविद्याकाविषयहोवे है॥काहेतैं जोप दार्थ जिसपदार्थविषे किसीअतिशयतारूपफळकीउत्पत्तिकरे है ॥ सोअतिशयतारूपफळकाआश्रयपदार्थही ताफळकर्त्तापदार्थकाविषय होवे है ॥ सोअतिशयतारूपफळकीउत्पत्ति आपणेतैंभिन्नपदार्थविषेही करीजावे है ॥ आपणेविषे आपही ताअतिशयतारूपफळकीउ त्पत्तिकरणेविषे कोईभीसमर्थहोवैनहीं ॥ यातैं ताअविद्याकी अविद्याविषेविषयता संभवैनहीं॥और मैंअज्ञानीहूं मैंदुःखीहूं याप्रकारकेअनु भवकरिकेसिद्ध जोआवरणविक्षेपरूपफळहै ॥ ताआवरणविक्षेपरूपफळकूं साअविद्या आनंदस्वरूपआत्माविषेही उत्पन्नकरे है ॥ यातैं ता अविद्याका सोआत्मादेवही विषयहै ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे ताअविद्याका अविद्याविषयनहीं है ॥ तैसे ताअविद्याका अविद्या आश्रयभीनहीं है॥जैसे याळोकप्रसिद्धअंधकारकाअंधकार आश्रयनहीं है॥किंतु ताअंधकारतैंभिन्न गृहादिकपदार्थहो ताअंधकारका आश्रयहैं॥तैसेताअ विद्याकाभी ताअविद्यातैंभिन्नआत्मादेवही आश्रयहै॥काहेतैं याळोकविषे जोपदार्थ जिसपदार्थतैंभिन्नहोवे है ॥ तथा जिसपदार्थतैंअधिकहो वे है॥सोपदार्थही तिसपदार्थका आश्रयहोवे है॥ सोअविद्याविषे अविद्यातैंभिन्नरूपतातथाअधिकरूपता संभवैनहीं ॥ यातैं साअविद्याही अविद्याकाआश्रयहोइसकैनहीं॥और यहचैतन्यस्वरूपआत्मादेवतो ताअविद्यातैंभिन्नभी है॥तथा ताअविद्यातैअधिकभी है॥यातैं सोचैतन्य स्वरूपआत्मादेवही ताअविद्याकाआश्रयहै ॥ जैसे शुक्तिविषयकअज्ञान रजतभ्रमवाळेपुरुषविषेहीरहे है ॥ तैसे साअविद्या आत्माविषेही रहे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे ताशुक्तिविषयकअज्ञानका आश्रयतोभ्रांतपुरुषहै ॥ और शुक्ति ताअज्ञानकाविषयहै ॥ तैसे ताअज्ञान रूपअविद्याकाभी आश्रय तथाविषय भिन्नहीहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ यद्यपि ताशुक्तिकेअज्ञानरूपदृष्टांतविषे ताअज्ञानकेपुरु षरूपआश्रयतैं शुक्तिरूपविषय भिन्नप्रतीतहोवे है ॥ तथापि वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो ताअज्ञानकाभी शुक्तिविषयनहीं है ॥ किंतु ताशुक्तिकेअंतररह्याहुआ शुक्तिअवच्छिन्नचेतनआत्माही ताअज्ञानकाविषयहै ॥ काहेतैं शुक्तिआदिकजडपदार्थतो स्वभावतैंहीआवृत

हैं ॥ तिनजडपदार्थोंविषे अज्ञानकृतआवरण संभवैनहीं ॥ यातें परिशेषतें सोअज्ञान पूर्वइदंतारूपकरिकेकथनकरेहुए शुक्तिअवच्छिन्न चेतनकूंही विषयकरे है ॥ इहां ताचेतनआत्माकेस्वरूपकूंआवरणकरणा यहही ताचेतनआत्माविषे अज्ञानकोविषयताहै ॥ शंका हेभग वन् सोअज्ञान जोकदाचित् चेतनकूंही विषयकरताहोवे ॥ तौ शुक्तिविषे ताअज्ञानकीविषयता नहींप्रतीतहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ हे देवतावो ॥ पूर्वइदंतारूपकरिकेवर्णनकऱ्याजो स्फुरणरूपसामान्यचेतन्यहै ॥ तासामान्यचेतन्यविषे यहशुक्तिअवच्छिन्नविशेषचेतन्य ता दात्म्यसंबंधकरिकेरहेहै ॥ ताशुक्तिअवच्छिन्नविशेषचेतन्यकूंही यहकल्पितरजतकाउपादानकारणरूपअज्ञान आवृतकरे है॥सामान्यचे तन्यकूं सोअज्ञान आवृतकरेनहीं ॥ यातें सोअज्ञान अवच्छेदकतारूपकरिके ताशुक्तिकूंभी विषयकरे है ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकेही शुक्तिविषयकअज्ञानहै याप्रकारकाव्यवहारहोवे है ॥ हेदेवतावो ॥ याशुक्तिआदिकपदार्थोंविषेस्थित जोस्फुरणरूपचेतनहै ॥ सोचेतन अंतरआत्मातैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु तास्फुरणरूपचेतनकूं वेदवेत्तापुरुष अंतरआत्मास्वरूपही कथनकरे हैं ॥ यातें शुक्तिआदिकदृष्टांतों विषेभी सोअंतरआत्माही ताअज्ञानकाविषयहै ॥ हेदेवतावो ॥ सोअज्ञान आत्माकेआश्रितरहे है ॥ याअर्थविषेतो किसीभीवादीका विवा दहैनहीं ॥ किंतु सर्ववादीता अज्ञानकूं आत्माकेहीआश्रितमाने हैं॥ ओर अज्ञानकेविषयविषेतो वादियोंका परस्पर विवादहैलणेविषेआवे है ॥ कोईकवादी अनात्मपदार्थोंकूंभी ताअज्ञानकाविषयमानें हैं ॥ सोतिनवादियोंकेभ्रमकी पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकेनि 'त्तिकरी ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ वास्तवतेंअविद्यातैंरहित जोसत्चित्आनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोआत्मादेवही ताअविद्याकाआश्रयहै तथाविषयहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै॥तहांश्लोक॥आश्रयत्वविषयत्वभागिनी निर्विभागचितिरेवकेवला॥पूर्वसिद्धतमसोहिपश्चिमो नाश्र योभवतिनापिगोचरः॥अर्थयह॥जीवईशादिकभेदतैंरहित जोअद्वितीयचेतनहै॥सोअद्वितीयचेतनही याअनादिअज्ञानका आश्रयहै तथावि षयहै ॥ ताचेतनवस्तुतैंभिन्न दूसरेसर्वपदार्थ ताअज्ञानकेकार्य हैं ॥ यातें तेअनात्मपदार्थ ताअनादिअज्ञानका आश्रयरूप तथाविषयरूप होइसकेनहीं॥ १॥इसप्रकार आश्रयतारूपकरिके तथा विषयता रूप करिके यहअविद्या ताआनंदस्वरूपआत्माकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहुई है ॥

याकारणतें यहअविद्या परतंत्रहोहे ॥ ओर हेदेवताओ ॥ जैसे आश्रयविषयकीअपेक्षा ताअविद्याविषे परतंत्रतासिद्धकरेंहे ॥ तैसे जडता धर्मभी ताअविद्याविषे परतंत्रताहीसिद्धकरेहे ॥ काहेतें याळोकविषे जडतारूपकरिकेप्रसिद्ध जेरथादिकपदार्थ हैं ॥ तेरथादिकपदार्थ अश्ववृषभादिकचेतनपदार्थों तैंविना स्वतंत्र प्रवृत्तहोवेंनहीं ॥ किंतु अश्ववृषभादिकचेतनपदार्थोंकेसंबंधतेंहो ॥ तिनरथादिकोंविषे क्रिया होवेहे ॥ यातें यहजान्याजावे है याळोकविषे जितनेंकजडपदार्थहोवे हैं ॥ तेसर्वजडपदार्थ अस्वतंत्रही होवे हैं ॥ ओर यहअज्ञानरूपअ विद्याभी तिनरथादिकोंकोन्याई जडरूपहे ॥ यातें यहअविद्याभी परतंत्रहोहे ॥ याकहणेकरिके यहअनुमान बोधनकन्या ॥ अविद्या परतं त्रहोणेकूंयोग्यहे जडहोणेतें रथादिकोंकोन्याई ॥ हेदेवताओ॥इसप्रकार याअविद्याविषे परतंत्रता सिद्धहोवे हे ॥ ओर याळोकविषे जोपदार्थ अस्वतंत्रहोवे हे॥तापदार्थकूं असिद्धकहे हैं ॥ यातें अस्वतंत्रहोणेतें यहअविद्याभी असिद्धहोहे॥ओर याळोकविषे जोपदार्थ असिद्धहोवेहे॥ सोपदार्थ असत्यहोहोवे हे॥जैसे शशशृंगवंध्यापुत्रादिक असिद्धहोणेतें असत्हैं ॥ तैसे असिद्धहोणेतें यहअविद्याभी असत्यहीहे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोयहअविद्या अस्वतंत्रत्व असिद्धत्व असत्त्व इत्यादिकधर्मोंवाळीहोवे ॥ तो पूर्वआपनें याअविद्याविषे स्वतंत्रत्व सिद्धत्व सत्त्व इत्यादिकधर्म किसवासतेकथनकरेथे ॥ समाधान ॥ हेदेवताओ जिसअभिप्रायकारिके हमनें ताअविद्याविषे स्वतंत्रतादिकधर्म कथन करे हैं ॥ ताअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो ॥ याळोकविषे जोजोपदार्थ असतहोवे हे॥सोसोपदार्थ किसीकार्यकाआरंभकरतानहीं॥जैसे अस त्यवंध्यापुत्र किसीकार्यकाआरंभकरेनहीं ॥ यातें असत्त्वधर्मतो व्याप्यहै ॥ ओर कार्यकाअनारंभकत्वधर्म व्यापकहे ॥ ओर जहांव्या पककाअभावहोवे हे ॥ तहां ताकेव्याप्यकाभी अभावहोहोवे हे ॥ जैसे महान्जलविषे अग्निरूपव्यापककाअभावहोवे हैं ॥ यातें ताजल विषे ताके धूमरूपव्याप्यकाभी अभावहोवे हे ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे सर्वजगत्काआरंभकरणेहारी तथाअसंगनिर्गुणआत्मादेवकूंभी मोहकीप्राप्तिकरणेहारी याअविद्याहे ॥ ताअविद्याविषे सोकार्यकाअनारंभकत्वरूपव्यापकधर्म रहतानहीं॥यातें ताका व्याप्यरूप असत्त्व धर्मभी ताअविद्याविषेरहेनहीं ॥ यातें याअविद्याकूं पूर्वहमनें सत्य यानामकरिकेकथनकन्याथा ॥ ओर सोअसत्त्वधर्म असिद्धत्वधर्म

काव्यापकहै ॥ जभी ताअविद्याविषे असत्त्वरूपव्यापकधर्मकाअभावहुआ ॥ तभी ताअविद्याविषे असिद्धत्वरूपव्याप्यधर्मकाभी अभाव
होहोवैगा ॥ याकारणतें पूर्वहमनें ताअविद्याकूं सिद्ध यानामकरिकेकथनकऱ्याथा ॥ और सोसिद्धत्वधर्म अस्वतंत्रत्वधर्मकाव्यापकहै ॥
जभी ताअविद्याविषे असिद्धत्वरूपव्यापकधर्मकाअभावहुआ ॥ तभी ताअविद्याविषे अस्वतंत्रत्वरूपव्याप्यधर्मकाभी अभावहोहोवैगा ॥
यातें पूर्वहमनें ताअविद्याकूं स्वतंत्र यानामकरिकेकथनकऱ्याथा॥ याप्रकार ताअविद्याविषे सत्त्व असत्त्व सिद्धत्व असिद्धत्व स्वतंत्रता अ
स्वतंत्रता इत्यादिकसर्वधर्म संभवहोइसकेहैं॥याकारणतेंही वेदवेत्तापुरुष ताअविद्याकूं अनिर्वचनीय दुर्घट इत्यादिकनामोंकरिकेकथनकरे
हैं ॥ अब साअविद्या याआत्मादेवविषे जिसव्यामोहकूंकरेहै ताव्यामोहकानिरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ याजीवोंविषे मैं अज्ञानीहूं मैंदुः
खीहूं याप्रकारकाजोबोधहोवे है सोबोध सर्वदा होवेनहीं॥किंतु कदाचित्होहोवेहै॥और यालोकविषे जोजोपदार्थ कदाचित्होवे है॥सोसो
पदार्थ कार्यरूपहीहोवे है॥जैसे घटादिकपदार्थ कदाचित्कहोणेतें कार्यरूपहैं॥तैसे सोबोधभी कदाचित्कहोणेतें कार्यरूपहीहोवैगा ॥ और
यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवे है॥सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकेही जन्यहोवे है॥कारणतेंविना कार्यकीउत्पत्तिहोवेनहीं॥जैसे घटा
दिकपदार्थ कार्यरूपहोणे तें मृत्तिकादिककारणोंकरिकेंजन्यहैं॥तैसे सोबोधभी कार्यरूपहोणेतें किसीकारणकरिकें अवश्यजन्यहोवैगा॥औ
र अहंअज्ञः अहंदुःखी याप्रकारकेविपरीतबोधका अविद्यातेंविना दूसराकोईकारण संभवतानहीं ॥ किंतु सा अघटितघटनापटीयसीनामा
अविद्याही ताबोधकाकारण संभवे है ॥ काहेतें वास्तवतें स्वयंप्रकाश जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआत्मादेवविषे मैं अज्ञानीहूं मैं
दुःखीहूं याप्रकारकाविपरीतबोध कदाचित्भीसंभवतानहीं ॥ यातें परिशेषतें ताबोधकाकारणरूप यहअविद्याही कल्पनाकरीजवे हैं ॥
हेदेवतावो ॥ जैसे लोकविषे आदरकूंप्राप्तहुआनीचपुरुष ताआदरकरणेहारेपुरुषके मस्तकऊपरचढिजावे है ॥ तैसे कल्पनाकरीहुई
सानीचअविद्याभी आपणेआश्रयरूपआत्माका तिरस्कारकरिके आपही विलासकूंप्राप्तहोवे है ॥ और ताअविद्याकरिके तिरस्कारकूं
प्राप्तहुआ जो सर्वजगत्काअधिष्ठान चेतनदेवहै ॥ ताचेतनदेवका सर्वतेंअंतर आनंदस्वरूपआत्मा ताअविद्याकेप्रभावतें असत्केसमानहो

वे है ॥ हेदेवतावो॥ अनेकप्रकारकेविलासोंकरिकेयुक्त यायहमायारूपअविद्याहै ॥ ताअविद्याका कूटस्थआत्माहैनहीं याप्रकारकाअसत्वा
पादनरूप प्रथमविलास कथनकऱ्याहै ॥ जिसविलासकरिके यहआत्मादेव आपणेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपकूंभी विस्मरणकरताभयाहै ॥
हेदेवतावो ॥ इसप्रकार यहआत्मादेव ताअसत्वापादनरूप अविद्याकेविलासकूंदेखिके दूसरेभी अनेकप्रकारकेविक्षेपरूपविलासोंकूंदेखेहै ॥
तिनविक्षेपरूपविलासोंकूं तुम श्रवणकरो ॥ मैं जन्म्याहूं मैंबालकहूं मैंयुवानहूं मैंवृद्धहूं मैंमरोंगा मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं मैंस्वर्गीहूं मैंनरकीहूं मैं
स्त्रीहूं मैंपुरुषहूं मैंनपुंसकहूं मैंपापीहूं मैंधर्मीहूं इसतेंआदिलेके अनेकप्रकारकेअहंअभिमानरूपदुःखोंकूं यहजीवात्मादेखे है ॥ तथा ताजन्मा
दिकोंकेअहंअभिमानकरिकेयुक्तहुआ यहजीवात्मा पश्चात् ममत्वअभिमानकरिकेयुक्तहोवे है ॥ताममत्वअभिमानकेवशतें यहजीवात्मा
यहहमारापिताहै यहमेरीमाताहै यहमेरापुत्रहै यहमेरीस्त्री है यहमेरेबांधवहैं यहमेराधनहै यहमेरागृहहै इसतेंआदिलेके नानाप्रकारके ताअ
विद्याकेविलासोंकूंदेखे है ॥ जेअविद्याकेविलास यासंसारकेस्थितिकेकारणरूपहैं ॥ ऐसेअविद्याकेविलासोंकीप्राप्तितेंअनंतर देहरूपबंधनगृह
कूंप्राप्तहुआ तथाकामक्रोधादिकशृंखलावोंकरिकेबांध्याहुआ तथामैंसर्वदाहोवों मेराअभाव कदाचित्भीनहींहोवे याप्रकारकीप्रार्थनाकरिके
आपणेशरीरकारक्षणकरताहुआ यहमूढजीव अनेकजन्मोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ तिनअनेकजन्मोंविषेभी यहमूढजीव तास्वयंज्योतिआनंदस्वरूप
अद्वितीयआत्माकूं नहींदेखताहुआ तथा अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंदेखताहुआ निरंतर यासंसारविषेभ्रमणकरे है॥ताकरिके विद्यमानहुआभी
यहजीवात्मा असत्यकेसमानहोवे है ॥ याकारणतें यहमायारूपअविद्या अत्यंतविचित्रहै ॥ तथा अत्यंतदुर्घटहै ॥ तथा सर्वजीवोंकूं दुःख
कीप्राप्तिकरणेहारी है ॥ तथा यासंसाररूपविषवृक्षकीजननी है॥तथा विचारहीनमनुष्योंकरिके दुर्विज्ञेयहै॥ऐसीअविद्याकेप्रभावतें यह जी
वात्मा मैंअज्ञानीहूं मैंदुःखीहूं मैंब्राह्मणहूं मैंमहानकुलवालाहूं इत्यादिकविपरीतज्ञानोंकरिकेयुक्तहुआ यासंसारसमुद्रविषे वारंवार डूबे है ॥
अब वटबीजादिकोंकीन्याईं याअविद्याकीव्यवस्थाकहणेवासते प्रथम याअविद्याविषे यासंसारवृक्षकीबीजरूपता तथापरिणामस्वभावता
वर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ ताअविद्या यासंसारवृक्षकाबीजरूपहै ॥ तथा ज्ञानकर्मके जेसंस्काररूपवासनाहैं ॥ ताअनेककोटि

वासनारूपमभंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा पटकीन्याईं संकोचविकासस्वभाववालीहै ॥ तहांसुषुप्ति मूर्च्छा मरण महाप्रलय इत्यादिककालोंविषेतो यहअविद्या संकोचभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तिनसुषुप्तिआदिककालोंतैंभिन्न जाग्रतादिककालोंविषे साअविद्या विकासभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेदेवतावो ॥ यहजीवात्मापुरुष नानाप्रकारकेशरीरोंविषे जाग्रतअवस्थाविषे तथा स्वप्नअवस्थाविषे परतंत्रहुआ ताअविद्याकेविकासभावोंकरिके अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सोअविद्याकाविकासभाव याजीवोंकेदुःखकाही कारणहै ॥ और हेदेवतावो ॥ तिनजाग्रतादिकअवस्थावोंविषेभोगदेणेहारेकर्मोंका जभीक्षयहोवैहै ॥ तभी यहअविद्या तासंकोचभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तासुषुप्तिआदिकसंकोचकालविषे यहजीवात्मा जाग्रतादिकअवस्थावोंकेपरिश्रमकापरित्यागकरिके तहां शयनकरेहै ॥ जैसे आकाशविषे उडणेकरिके परिश्रमकूं प्राप्तहुआपक्षी तापरिश्रमकापरित्यागकरिके आपणेगृहविषे शयनकरेहै ॥ तैसे यहजीवात्मा जाग्रतादिकोंकेविक्षेपकापरित्यागकरिके तासुषुप्तिआदिकोंविषे शयनकरे है ॥ ताकालविषे यहजीवात्मा यद्यपि दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि भावीदुःखोंकाबीजरूपजाअविद्या है॥साअविद्या तासुषुप्तिआदिककालोंविषेभी विद्यमानहै ॥ यातैं ताअविद्याकेसंबंधतै यहजीवात्मा तहांभी दुःखीहीकह्याजावैहै ॥इसप्रकार संकोच विकास यादोनोंस्वभावोंकरिके यहअविद्याही संसारकाकारणहोवैहै ॥ जाअविद्या अहंअज्ञः याप्रकारके सर्वजीवोंकेअनुभवकरिके सिद्धहै ॥ तथा अत्यंतदुर्घटहै ॥ हेदेवतावो ॥ पूर्वउक्तनानाप्रकारकेविलासोंकरिकेयुक्त जायहमिथ्याअविद्याहै ॥ साअविद्या जैसे याजीवोंकेसंसारकाकारणहै ॥ तैसे गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं जान्याहुआ यहआत्मादेव याजीवोंकेमोक्षकाकारणहै ॥ और जैसे तासंसारदशाविषे याजीवोंकूं ताआनंदस्वरूपआत्माकोअप्रतीतिहोवैहै अथवा विपरीतप्रतीतिहोवैहै ॥ तैसे मोक्षदशाविषे विद्वानपुरुषोंकूं ताअविद्याकीअप्रतीतिहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ एकहीसाअविद्या अनेकजीवोंकेव्यवहारकूं किसप्रकारसिद्धकरेगी ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ सामायारूपअविद्या वास्तवतैंएकरूपहुईभी वटबीजकीन्याईं नानारूपहोइकेप्रतीतहोवै है ॥ अब तावटबीजकेदृष्टांतका स्पष्टकरिके निरूपणकरे है ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे वटबीजोंविषेअनुगत जोजातिरूपसामान्यहै ॥ सोजातिरूपसामान्यही तिनवटवृक्षोंकाकारण

होवे है ॥ और तेवटबीजरूपव्यक्तियांतो नाशवानहोणे तें सर्वत्रअनुगतहैनहीं ॥ यातें तेबीजव्यक्तियां सर्वत्र कारणताकेयोग्यहोवैंनहीं ॥ तैसे घटपटादिकसर्वकार्यों के प्रसिद्धकारणरूप जेमृत्तिकातंतुआदिकहैं ॥ तिनसर्वकारणोंविषेअनुगत जोसामान्यहै ॥ तासामान्यकूंही वे दवेत्तापुरुष अविद्या माया अज्ञान शक्ति इत्यादिकनामोंकरिकेकथनकरेंहैं ॥ साअविद्यारूपमायाही तिनसर्वकार्योंकाकारणरूपहै ॥ और जैसे वटबीजरूपव्यक्तियोंकेनाशहुएभी तिनसर्वबीजोंविषेअनुगत सोजातिरूपसामान्य नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे सुषुप्तिआदिकअवस्था वोंविषे सर्वकार्योंकेनाशहुएभी तिनोंकाकारणरूप सामान्यमाया नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे सोवटबीजोंविषेस्थित जातिरूपसा मान्य तिसतिसवटवृक्षोंकेकारणीभूतबीजव्यक्तियोंकिविशेषताकूं अंगीकारकरिके भिन्नभिन्नकार्यकूंकरेहै ॥ तैसे यहअविद्यारूपमायाभी तिसतिसकार्यकेसूक्ष्मअवस्थारूपसंस्कारोंकूंअंगीकारकरिके नानाप्रकारके जगत्काकारणरूपहोवे है ॥ और जैसे तिनवटबीजोंविषेस्थित सामान्यरूपजातिकेनहींनाशहुएभी तिसतिसवटवृक्षकीउत्पत्तितें अनंतर तिसतिसबीजव्यक्तियोंका नाशहोइजावे है ॥ तैसे तामायाके नहींनाशहुएभी तिसतिसकार्यकीउत्पत्तितेंअनंतर तिसतिससंस्कारोंकानाशहोइजावे है ॥ और जैसे एकहीवटकाबीज वटवृक्षरूपपरि णामकूंप्राप्तहोइके फलोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ ताफलीभूतवटवृक्षतें वसंतऋतुविषे अनेककोटिरूपफलकरिकेउत्पन्नहोवे है ॥ तिनसर्वबीजव्यक्तियों विषे पुनःएकएकबीजव्यक्ति तावटवृक्षकीउत्पत्तिद्वारा अनेककोटिरूपकरिकेउत्पन्नहोवे हैं ॥ तैसे यहसामान्यरूपमायाभी आपणेसंस्कार रूपव्यक्तियोंकरिके अनेकप्रकारकीउत्पत्तिहोवे है ॥ काहेतें तामायातें एककार्यकेउत्पन्नहुएतेंअनंतर तिसकार्य तें पुनः नानाप्रकारके कार्य उत्पन्नहोवे हैं ॥ तिनअनेककार्योंविषे पुनः एकएकव्यक्ति अनेकरूपहोइके उत्पन्नहोवे है ॥ इसप्रकार यासंसारविषे अनंतरूपता सिद्धहोवे है हेदेवताओ ॥ तासामान्यरूपमायाके विशेषव्यक्तिरूपसंस्कार यद्यपि अनंतहैं ॥ तथापि वेदवेत्तापुरुषों नें संक्षेपतें तेसंस्कार चारिप्रकारकेकथनकरेंहैं ॥ काहेतें तिनसंस्कारोंकाकार्य देह इंद्रिय क्रिया भोग याभेदकरिके चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ यातें तेसंस्कारभी चारिप्रकारकेहीहोवे हैं॥हेदेवताओ॥जैसे बीजतेंअंकुरहोवे है ॥ और ताअंकुरतें पुनर्बीजहोवैहै ॥ ताबीजतेंपुनःअंकुरहोवे है ॥ इसप्रकार

ताबीजका तथाअंकुरका निरंतर प्रवाह चल्याजावेहै ॥ तैसे याअनादिसंसारविषे तिनसंस्कारोंतें देहादिकहोवे हैं ॥ औरतिनदेहादिकोंतें पुनःसंस्कारहोवेहै॥तिनसंस्कारोंतें पुनःदेहादिकहोवे हैं इसप्रकार तिनसंस्कारोंका तथादेहादिकोंका निरंतर प्रवाहचल्याजावे है ॥ तिनसंस्कारोंविषे तथादेहादिकोंविषे कोईभीव्यक्ति स्थिररहेनहीं॥अब तिनदेहादिकचारिप्रकारकेकार्योंका तीनतीनप्रकारकाभेद वर्णनकरे हैं॥हेदेवतावो नानाप्रकारकेअवांतरभेदकरिकेयुक्तजे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेप्राणीहैं ॥ तिनचारि प्रकारकेप्राणियोंविषेस्थितजे देह इंद्रिय क्रिया भोग यहचारिप्रकारकेकार्यहैं॥तेचारिप्रकारकेकार्य उत्तम अधम मध्यम याभेदकरिके तीन तीनप्रकारकेहोवें है ॥ तहां यालोकविषे तिसतिसजातिवालेजीवअनंतहैं ॥ यातें तिनसर्वजीवोंविषे ते उत्तमादिकरूप कथनकरेजावेनहीं ॥ यातें सर्ववर्णोंतेंश्रेष्ठ जाब्राह्मणजातिहै ॥ ताब्राह्मणजातिविषे तेउत्तमादिकभाव निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहब्राह्मणत्वजातिवाले भूदेवरूपब्राह्मण याभूमिलोकविषे उत्पन्नहुएहैं तथासुखदुःखदोनोंकूंभोगेहैं॥यातें यहब्राह्मणत्वजातिवालेशरीरभी पुण्यपापदोनोंकरिकेरचितहैं॥ तिनब्राह्मणशरीरोंविषे जाउत्तमताहै ॥ साउत्तमता अनेकप्रकारकेनिमित्ततें होवे है ॥ तहां पिता माता आचार्य यातीनोंकेकुल विद्या तप आदिकोंकीउत्कृष्टतातेंभी पुत्रादिकोंविषे साउत्तमता प्राप्तहोवेहै ॥ तथा पितामाताकाअंशरूपजोवीर्यहै ॥ तिनदोनोंवीर्योंका अवस्थाविशेषकरिकेजोपरिपाकहै ॥ तिसतेंभी तापुत्रविषे उत्तमताप्राप्तहोवेहै॥तथा तापुत्रका दशमासरूपकालकेपूर्णहुएतेंअनंतरजोमाताकेउदरतें बाह्यनिकसणाहै॥तिसतेंभी तापुत्रविषे उत्तमताहोवेहै॥तथा सुंदरगौररूप लावण्य सदाचार श्रेष्ठलक्षण इत्यादिकगुणोंकरिकेभी शरीरविषे उत्तमताहोवेहै॥इसतेंआदिलेके अनेकप्रकारकेनिमित्तोंकरिके साउत्तमताहोवे है॥अब इंद्रियोंकीउत्तमताका वर्णनकरे हैं॥ हेदेवतावो॥जैसे देहकीउत्तमता अनेकनिमित्तोंकरिकेहोवे है ॥ तैसे नेत्रादिकइंद्रियोंकीउत्तमताभी अनेकनिमित्तोंतेंहोवे है ॥ तहांरूपादिकविषयोंकेग्रहणकरणेविषेजास्फुटताहै॥तिसतेंभी तिननेत्रादिकइंद्रियोंविषे उत्तमताहोवेहै॥तथा सुंदररचनाविशेषतेंभी तिनइंद्रियोंकी उत्तमताहोवेहै ॥ तथा विस्तारादिरूपपरिमाणतेंभी तिनइंद्रियोंविषे उत्तमताहोवेहै ॥ अब क्रियाकीउत्तमता वर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥

क्रियारूपजेकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंविषे श्रद्धाभक्तिपूर्वक देवताध्यानादिरूपप्रज्ञाकरिके उत्तमताप्राप्तहोवे है ॥ तथा शास्त्रविहितदानादिकोंके करणेतें तथाशास्त्रनिषिद्धहिंसादिकोंकेपरित्यागतेंभी तिनकर्मोंविषे उत्तमताप्राप्तहोवे है अब भोगोंकेउत्तमताका वर्णनकरेहैं॥हेदेवतावो॥ पितामातादिकोंकेविद्यमानतातेंभी यापुरुषोंकेभोगोंविषे उत्तमताप्राप्तहोवेहै ॥ तथा आपणेबांधवोंकेसुशीलस्वभावतें तथाआपणेसुशील स्वभावतेंभी तिनभोगोंविषे उत्तमताहोवेहै ॥ तथा नानाप्रकारकेविद्यावोंकोप्राप्तितेंभी तिनभोगों विषे उत्तमताहोवे है ॥ तथा तिनविद्या वोंकेबलतें तिनबांधवोंकेशरीरमनविषे तथाआपणेशरीरमनविषे भयाजोपीडाकाअभाव तापीडाकेअभावतेंभी तिनभोगोंविषे उत्तमता होवे है ॥ तथा पूर्वलेअनेकपुण्यकर्मों तें तथाआपणीबुद्धिकीकुशलतातेंभी तिनभोगोंविषे उत्तमताहोवेहै ॥ हेदेवतावो ॥ कोईकशास्त्र वेत्तापुरुषतो आचार्य पिता माता इसतेंआदिलेकेसर्वबांधवोंकूं याजीवोंकेभोगकाकारणमानेहैं ॥ और कोईकश्रेष्ठबुद्धिवालेविद्वान्पुरु षतो श्रुतिप्रमाणकेअनुसार स्त्री पुरुष यादोनोंकूंहीं परस्परभोगकाकारणमानेहैं ॥ आचार्यादिकोंकूं भोगकाकारण मानेंनहीं ॥ काहेतें बृहदारण्यकउपनिषद्विषे याज्ञवल्क्यमुनि आपणीमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभयाहै ॥ नवाअरेपत्युःकामाय पतिः प्रियोभवति आत्मनस्तुकामायपतिःप्रियोभवति नवाअरेजायायैकामायजायाप्रियाभवति आत्मनस्तुकामायजायाप्रियाभवति॥याश्रु तिवचनकरिके सोयाज्ञवल्क्यमुनि स्त्रीपुरुषदोनोंविषेप्रीतिकरिकेप्राप्तहुईभोगसाधनताकूंहीं निवारणकरताभयाहै ॥ पितामातादिकोंविषे भोगसाधनताका निवारणकर्यानहीं॥यातेंस्त्रीपुरुषदोनोंविषेही परस्परभोगकीहेतुताहै॥अथवा॥एकशरीरविषेभोगसंभवेनहीं॥यातेंतेदोनों शरीर अपेक्षितहैं॥याअर्थविषेही तिनशास्त्रवेत्तापुरुषोंकातात्पर्यहै॥अथवा॥कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतोयाप्रकार कथनकरेहैं॥शिष्यादिकोंके पुण्यरूपअदृष्टकरिकेही तेआचार्यादिकउत्पन्नहोवे हैं॥और जोपदार्थ जिसजीवकेपुण्यपापरूपअदृष्टतेंउत्पन्नहोवेहै॥सोपदार्थ तिसजीवके सुखदुःखरूप भोगकाहेतुहोवेहै ॥ यातें तेआचार्यादिकभी तिनशिष्यादिकोंकेभोगकाहेतुहै ॥ और कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतो यहकहे हैं॥ गुरुशिष्यदोनोंका तथापितापुत्रादिकदोनोंका परस्पर उपकार्यउपकारकभाव देखणेविषेआवताहै ॥ यातें तेदोनोंभी परस्परभोगके

हेतुहैं ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो आचार्य माता पिता इत्यादिकबांधवभी याजीवोंकेभोगकाहीहेतुहैं यहमत किसीस्थूलदृष्टि
वाल्योंकाहै ॥ सूक्ष्मबुद्धिवालेपुरुषतो तिनआचार्यादिकोंकूं याजीवोंके साक्षात्भोगकाहेतुमानैंनहीं ॥ किंतु तिनआचार्यादिकोंकूं धर्मअर्थ
दोनोंकाहेतुमाने हैं ॥ काहेतैं तेआचार्यादिक याशिष्यादिकोंकेप्रति श्रेष्ठविद्याकाउपदेशकरिके धर्मकोप्राप्तिकरे हैं ॥ तथा कर्मउपासना
रूपदेवधनकीप्राप्तिकरे हैं ॥ तथा ताविद्याद्वारा सुवर्णादिरूपलौकिकधनकीप्राप्तिकरे हैं ॥ तिनधनादिकोंकरिकेयाजीवोंकूं भोगकीप्राप्ति
होवे है ॥ इतनैंकरिके देह इंद्रिय क्रिया भोग याचारोंविषेउत्तमताकावर्णनकऱ्या ॥ अब तिनदेहादिकचारोंविषे मध्यमताका तथाअधम
ताकावर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ पूर्व देह इंद्रिय क्रिया भोग याचारोंकेउत्तमताविषे जेहेतुकथनकरेथे ॥ तिनहेतुवोंविषे जभी कोईकेहेतु
वोंकाअभावहोवे है ॥ तभी तिनदेहादिकचारोंविषे मध्यमता प्राप्तहोवे है ॥ और तिनपूर्वउक्तसर्वहेतुवोंका जभी अभावहोवे है ॥ तभी
तिनदेहादिकचारोंविषे अधमता प्राप्तहोवे है॥इसप्रकार देह इंद्रिय क्रिया भोग यहचारो उत्तम मध्यम अधम याभेदकरिके तीनतीनप्रकारके
होवे हैं ॥ और तिनदेहादिकचारोंविषेस्थितजे उत्तमत्व मध्यमत्व अधमत्व यहतीनहैं॥तिनउत्तमत्वादिकतीनोंविषे एकएककूं जभी पुनः
उत्तमत्व मध्यमत्व अधमत्व यातीनोंकेसाथजोडिये॥तभी तिनोंकेनवभेद सिद्धहोवे हैं ॥ तेनवभेदयहहैं ॥ उत्तमउत्तम १ उत्तममध्यम२
उत्तमअधम ३ मध्यमउत्तम ४ मध्यममध्यम ५ मध्यमअधम ६ अधमउत्तम ७ अधममध्यम ८ अधमअधम ९ और तिननवोंविषेभी
एकएककूं जभी मृदुत्व मध्यत्व उत्कटत्व यातीनोंकेसाथजोडिये ॥ तभी तिनोंके सप्तविंशतिभेद २७ सिद्धहोवे हैं ॥ जैसे उत्तम उत्तममृदु
उत्तमउत्तममध्य उत्तमउत्तमउत्कट इसप्रकार दूसरेउत्तममध्यमादिकअष्टोंविषेभी तीनतीनभेदजानिलेणे ॥ और तिनसप्तविंशतिपदार्थों
विषेभी एकएकपदार्थकूं जभी पुनःमृदुमध्यउत्कट यातीनोंकेसाथजोडिये॥तभी तिनोंकेएकाशीभेद८१सिद्धहोवे हैं॥जैसे उत्तमउत्तममृदु
मृदु उत्तमउत्तममृदुमध्यउत्तमउत्तममृदुउत्कट॥इसप्रकारदूसरेछब्बीसपदार्थोंकेभी तीनतीनभेदजानिलेणे॥और तिनएकाशी८१भेदोंविषे
भी जभी एकएककूं कर्मद्वारा कृतत्व कारितत्व अनुमोदितत्व यातीनधर्मोंकेसाथजोडिये ॥ तभी तिनोंके दोशतत्रितालीसभेद २४३

सिद्धहोवे हैं ॥ इसतैंआदिलैके तिनदेहादिकोंकेअनंतभेदसिद्धहोवे हैं ॥ तेभेद अत्यन्तसूक्ष्महैं ॥ यातैं किसीतैं वर्णनकरेजावैंनहीं ॥ अब देह इंद्रिय क्रिया भोग इनचारोंका तथातिनोंकेसंस्कारोंका परस्पर बीजअंकुरकीन्याईं कार्यकारणभावनिरूपणकरणेवासते प्रथम यादेहकीप्रधानता निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यादेहोंकेसंस्कारों तैं पुनःदेहउत्पन्नहोवे हे ॥ और तिनदेहों तैं पुनः देहादिकचारोंके जनक संस्कार उत्पन्नहोवे हैं ॥ यातैं यादेहतैंही तेसर्वइंद्रियादिक प्रगटहोवे हैं॥ हेदेवतावो ॥ यादेहतैंही तेइंद्रियक्रियाभोग प्रगटहोवे हैं॥ याअर्थविषेभी वेदवेत्तापुरुष याप्रकारकीयुक्तिकथनकरे हैं ॥ जोपुरुष प्रथम देहकरिकेयुक्तहोवे हे ॥ सोदेहीपुरुषही वशकरेहुएइंद्रियों सहित पापादिककर्मोंकाकर्त्ताहोवे हे॥तथा तिनकर्मोंकेफलकाभोक्ताहोवे हे॥देहतैंविना तिनकर्मोंकाकर्त्तापणातथाभोक्तापणासंभवेनहीं॥ और तादेहीभावतैंअनंतर पुनः देहोभावकेप्राप्तकरणेहारे संस्कार उत्पन्नहोवे हैं तिनसंस्कारों तैं पुनः देहादिकहोवे हैं ॥ इसप्रकार यह देहहीसर्वकाकारण हे ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे यहदेह सर्वकाकारणहे ॥ तैसे यहइंद्रिय तथाभोगभी कर्मादिद्वारा सर्वसंघातकाकारणहे ॥ तहां नेत्रादिकइंद्रियोंकेरूपादिकविषयोंविषे लंपटजेपुरुषहैं ॥ तिनपुरुषोंका कोईभीकर्म संपूर्णहोवे नहीं ॥ यातैं विषयों तैं निरोधकरेहुए इंद्रियोंविषेही कर्मद्वारा सर्वसंघातकीकारणताहोवे हे ॥ बहिर्मुखइंद्रियोंविषे साकारणताहोवेनहीं॥ अब कर्मोंतैं सर्वकासंभव कथनकरे हैं॥ हेदेवतावो ॥ पुण्यपापरूपकर्मकरिके युक्तजोपुरुषहे ॥ सोपुरुषही तिनइंद्रियोंकरिकेयुक्तहोवे हे ॥ तथा देहकरिकेयुक्तहोवे हे ॥ तथा नानाप्रकारकेभोगोंकूंप्राप्तहोवे हे तापुण्यपापकर्म तैं विना यहपुरुष किसीभीपदार्थकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ यातैं तिनपुण्यपापकर्मोंतैंहीं तिनदेहादिकसर्वोंकासंभवहोवे हे ॥ अब भोगों तैं सर्वकासंभव निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यालोकविषे जोपुरुष भोगीहोवे हे ॥ सोभोगीपुरुषही कर्मोंकेकरणेविषे समर्थहोवे हे ॥ तथा वशवर्तिइंद्रियोंसहितहोवे हे ॥ काहे तैं यालोकविषे सर्वप्रकारकेभोगोंके तथाभोग्यपदार्थोंके अनुभवहुएतैंअनंतरही कर्मोंकेअनुष्ठानकीवृद्धि देखणेविषेआवे हे ॥ ताभोगोंके तथाभोग्यपदार्थोंके अनुभवतैंविना कर्मोंकेअनुष्ठानकीवृद्धि होवेनहीं ॥ काहे तैं यालोकविषे जोपुरुष जिसविषयकूंप्राप्तहोवे हे ॥ सोपुरुष पुनः

तिसोविषयकीइच्छाकरे है ॥ ताइच्छाकीउत्पत्तितैंअनंतर सोपुरुष तिसीविषयकेप्राप्तिवासते कर्मोंकूंकरे है ॥ जैसे यामनुष्योंनें स्वर्गकीदे
वांगना अनुभवकरीनहीं ॥ किंतु यामनुष्यलोककीस्त्रियां अनुभवकरीयां हैं ॥ यातें यामनुष्योंकूं तिनदेवांगनावोंविषे इच्छाहोवेनहीं ॥
किंतु यामनुष्यलोककीस्त्रियोंविषेही इच्छाहोवे है ॥ तथा श्वानोंनें यहमनुष्यस्त्रियां अनुभवकरीयांनहीं॥किंतु श्वानिणीस्त्रीयां अनुभवकरी
यां हैं ॥ यातें तिनश्वानोंकूं यामनुष्यस्त्रीयोंविषे इच्छाहोवेनहीं ॥ किंतु तिनश्वानिणीस्त्रीयोंविषेही इच्छाहोवे है॥ तथा स्वर्गवासीदेवतावोंनें
यामनुष्यलोककीस्त्रीयां तथाअन्नपानादिकभोग्यपदार्थ अनुभवकरेनहीं ॥ किंतु स्वर्गलोककीस्त्रीयां तथा स्वर्गलोककेभोग्यपदार्थ अनु
भवकरे हैं ॥ यातें तिनदेवतावोंकूं यामनुष्यलोककीस्त्रीयोंविषे तथाअन्नपानादिकभोग्यपदार्थोंविषे इच्छाहोवेनहीं ॥ किंतु तिनस्वर्गकीस्त्री
योंविषे तथाअन्नपानादिकभोग्यपदार्थोंविषेही इच्छाहोवे है॥यातें अन्वयव्यतिरेककरिके यहभोगोंकाअनुभवही तिनभोगोंकीप्राप्तिकरणेहारे
कर्मोंकेवृद्धिकाकाकारणहै ॥ और यहजीव जिनजिनभोगोंकूंअनुभवकरे है॥तिनभोगोंविषे वैराग्यकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥किंतु दिनदिनविषे यह
जीव तिनभोगोंविषेकुशलहोताजावे है ॥ यहवार्त्ता योगभाष्यविषेभी कही है ॥ योगाभ्यासमनुविवर्द्धंतेकामःकौशलानिचेंद्रियाणां ॥ अर्थ
यह ॥ भोगोंकेअनुभवतैंअनंतर दिनदिनविषेकामना वृद्धिकूंप्राप्तहोतीजावे हैं॥तथा तिनभोगोंविषे इंद्रियोंकीकुशलताभी वृद्धिकूंप्राप्तहोती
जावे है १ हेदेवतावो ॥ अनेकभोगोंकेप्राप्तहुएभी कामना वृद्धिकूंहीप्राप्तहोवे हैं ॥ याअर्थविषे कामीपुरुष तथाबलवान्पुरुष तथाधनीपुरु
षही दृष्टांतरूपहैं ॥ काहेतें यालोकविषे तेकामीबलवान्धनीपुरुष अनेकप्रकारकेभोगोंकूंप्राप्तहोइके तिनभोगोंविषेकुशलहुए पुनःपुनः
तिनभोगोंकीइच्छाकरतेहुए प्रतीतहोवे हैं ॥ यातें यहजान्याजावे है ॥ बहुतभोगोंकेप्राप्तहुए कामनाकीवृद्धिहीहोवे है ॥जैसे घृतकाष्ठादिकों
केपावणेकरिके अग्निकीवृद्धिहीहोवे है ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे अनुभवकरेहुएयहभोग स्वविषयकइच्छाकीउत्पत्तिद्वारा यादेहइंद्रियकर्मादि
रूपसंसारकाकारणहोवे हैं॥तैसे अनुभवकूंप्राप्तहुए यहदेहइंद्रियकर्मभी स्वविषयकइच्छाकीउत्पत्तिद्वारा यासंसारकेहीकारणहोवे हैं॥काहेतें
यहजीवात्मा इच्छासंस्कारोंकरिकेयुक्त जिसजिसदेहादिकोंकूं रागपूर्वक सेवनकरे है ॥ सोजीवात्मा ताइच्छासंस्कारोंकेवशतें तिसीतिसी

जातिवालेदेहादिकोंकूं अनेकवार प्राप्तहोवे है ॥ हेदेवतावो॥इसप्रकारदेह इंद्रिय क्रिया भोग यहचारो अनुभव इच्छासंस्कार यातीनोंकरि
केहीप्राप्तहोवे है ॥ यातें तेदेहादिक जन्मजन्मविषेवृद्धिकूंप्राप्तहुएभी यादेहतेंउत्तर पुनःयहहीदेहप्राप्तहोवे है याप्रकारकेनियमकाविषयहोवे
नहीं ॥ काहेतें तिनदेहादिकोंकाकारणरूपजे अनुभवइच्छासंस्कारहैं ॥ तिनोंका कोईनियमहैनहीं ॥ तो तिनोंकेदेहादिककार्योंकानियम
किसप्रकारहोवेगा ॥ किंतु सोनियमसंभवेनहीं ॥ और यहजीवात्मा इच्छासंस्कारोंकेवशतें पुनःतिसीजातिवालेदेहकूंप्राप्तहोवे है ॥ याक
हणेकातो यहअभिप्रायहै याअनादिसंसारविषे याजीवनें पूर्वअनेकजातिवालेशरीरोंकाअनुभवकऱ्याहै ॥ तहां मरणकालविषे याजीवकूं
पुण्यपापकर्मकेवशतें जिसजिसजातिवालेशरीरकेसंस्कार उद्बुद्धहोवे हैं ॥ मरणतेंउत्तर तिसीतिसीशरीरकूं यहजीव प्राप्तहोवेहै ॥ यह
वार्त्ता याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकरिआये हैं ॥ हेदेवतावो ॥ इंद्रिय क्रिया भोग यातीनोंकरिकेयुक्तजे जरायुज
अंडज स्वेदज उद्भिज यहचारप्रकारकेदेहहैं॥ तेदेहतो वटवृक्षकेसमानहैं॥और संस्कार वटबीजकेसमानहैं॥और तिनसर्वसंस्कारोंविषेस्थित
जो सामान्यहै ॥ तासामान्यकूं वेदवेत्तापुरुष माया यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ कैसीहैसामाया ॥ सर्वजगत्‌काकारणरूपहै ॥ तथा
अनादिहै ॥ और हेदेवतावो ॥ जैसे तिनवटबीजोंविषे तथाअंकुरोंविषे अनुगतजोसामान्यहै ॥ सोसामान्य नाशतेंरहितहै ॥ याकारणतेंही
सोसामान्य कारणरूपहै और तासामान्यका विशेषरूपजेबीजअंकुरहैं ॥ तेबीजअंकुर तासामान्यरूपकारणतेंभिन्नहैंनहीं॥यातें सोसामान्य
अद्वितीयरूपहै॥और परस्परकारणकार्यरूपकरिकेप्रसिद्ध जेबीजअंकुरहैं तेबीजअंकुरदोनों नाशवानहैं॥तैसे कारणकार्यरूपकरिकेप्रसिद्धजे
संस्कारदेहहैं ॥ तिनदोनोंकेनाशहुएभी सामाया नाशकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और हेदेवतावो ॥ जैसे तावटबीजतें वटवृक्ष उत्पन्नहोवे है॥और
तावटवृक्षतें पुनः बीजउत्पन्नहोवे है ॥ और तिसबीजतें पुनः वटवृक्ष उत्पन्नहोवे है ॥ इसप्रकार प्रवाहरूपकरिके तिनदोनोंका पर
स्परकार्यकारणभावहोवे है ॥ तैसे संस्कारोंतेंदेहहोवेहै ॥ तादेहतें पुनःसंस्कारउत्पन्नहोवे हैं ॥ तिनसंस्कारोंतें पुनःदेहहोवे है ॥
इसप्रकार प्रवाहरूपकरिके तिनदोनोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवे है ॥ और हेदेवतावो ॥ जैसे कारणकार्यरूपकरिकेप्रसिद्धजे वट

बीज तथावृक्ष यहदोनों हैं ॥ तिनदोनोंविषे पृथ्वीकेअवयव अनुगतहोवें हैं ॥ और तिनअवयवोंविषे पृथ्वी अनुगतहोवे है ॥ सापृथ्वी वट
बीजके तथावटवृक्षके नाशहुएभी प्रलयअग्निर्तेविना नाशकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ तैसे यादेहादिकोंविषे तथातिनदेहादिकोंके कारणभूतसंस्का
रादिकोंविषे अनुगतजामायाहे ॥ सामाया तिनदेहादिकोंकेनाशहुएभी ब्रह्मज्ञानरूपकालाग्निर्तेविना नाशकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ शंका ॥ हे
भगवन् ॥ जोमायाही सर्वकार्यकरणेविषेसमर्थहोवे तोब्रह्मकूं किसवासतेअंगीकारकरणा ॥ याशंकाकोनिवृत्तिकरणेवासते मायाकास्वरूप
तथाब्रह्मकास्वरूप भिन्नभिन्नकरिकेनिरूपणकरेहैं ॥ हेदेवताओ ॥ सर्वकार्योंविषे तथासर्वकारणोंविषे अनुगतजोपरिणामभागहै ॥ तापरि
णामभागकूं वेदवेत्तापुरुष माया यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और तिनकार्यकारणदोनोंका तथातिनदोनोंविषेअनुगतपरिणामभागका
प्रकाशकरणेहारा जोस्फुरणरूपसत्वस्तुहै ॥ तास्फुरणरूपसत्वस्तुकूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्म आत्मा यानामकरिकेकथनकरेहैं॥हेदेवताओ ॥
यालोकविषे जितनेंकोस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं तिनसर्वपदार्थोंविषे परिणामरूपकरिकेतो मायाकाअनुगतपणा देखणेविषेआवे है ॥ और
सत्तारूपकरिके ब्रह्मकाअनुगतपणा देखणेविषेआवे है ॥ यातें सामाया तथाब्रह्म दोनोंजगत्केउपादानकारणहैं ॥ परंतु ब्रह्मतो विवर्त्त
उपादानकारणहै ॥ और माया परिणामीउपादानकारणहै ॥ अब माया ब्रह्म यादोनोंविषे स्पष्टकरिके याजगत्कीकारणताका निरूपण
करे हैं हेदेवताओ ॥ सर्वदाएकरूपसत्ताही जोकदाचित् यासर्वकार्योंविषे अनुगतहुईदिखाई देवे ॥ तो मायाकूं कारणरूपतानहींसिद्ध
होवे ॥ परंतु याजगत्विषे केवलएकसत्ताकाहीअनुगतपणा दिखाई देतानहीं ॥ किंतु सापरिणामरूपमायाभी अनुगतहुईप्रतीत
होवे है ॥ और जोकदाचित् सापरिणामरूपमायाही केवल याजगत्विषेअनुगतहुईप्रतीतहोवे ॥ तो तासत्तारूपब्रह्मकूं कारणता
नहींसिद्धहोवे ॥ परंतु सापरिणामरूपमायाभी केवल अनुगतहुईप्रतीतहोवेनहीं ॥ किंतु सोब्रह्मभी आपणेसत्तारूपकरिके सर्वत्रअनुगत
हुआप्रतीतहोवे है ॥ यातें सोसत्तारूपब्रह्म तथामाया दोनोंही जगत्काकारणहैं ॥ तापरिणामसामान्यरूपमायाका तथास्फुरणरूपसत्
ब्रह्मका परस्परभेद विद्वान्पुरुषोंनें कथनकऱ्याहै ॥ यातें याजगत्कीकारणताविषे तामायाकीन्याईं ब्रह्मकूंभी अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहि

ये सब जडविकारोंका ताकारणरूपमायाकेस्वरूपतें अभेद निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवताओ ॥ जैसे सर्ववटबीजोंविषेअनुगत जोसामान्य है ॥ सोसामान्य सर्ववीजोंविषे अनुगतसत्तारूपब्रह्मकाशक्तिरूपहुआ आपणेस्वरूपतेंअभिन्न नानाप्रकारकेवटवृक्षोंकूंउत्पन्नकरेहै ॥ तैसे ब्रह्मकीशक्तिरूप सापरिणामरूपमायाभी देहादिरूपअनेकविश्वकूंउत्पन्नकरेहै ॥ कैसाहैसोविश्व ॥ ताकारणरूपमायातेंअभिन्नहै ॥ तथा बीजअंकुरकीन्याई परस्पर कार्यकारणरूपहै अवपरस्पर व्याप्यव्यापकरूपकरिकै स्थित जेमायाकेतीनस्वरूपहैं तिनोंकानिरूपणकरेहैं॥ हेदेवताओ ॥ जैसे एकएकवटवृक्षविषेअनुगत कार्यशक्तिनामासामान्य भिन्नहै ॥ और एकएकवटबीजविषे अनुगत कारणशक्तिनामा सामान्य भिन्नहै ॥ और वटवृक्ष तथावटबीज यादोनोंविषे समानरूपकरिकेअनुगत जोपृथ्वीरूपसामान्यहै ॥ सो तृतीयसामान्यहै ॥ तहां जैसे वटवृक्ष तथावटबीज यहदोनों परस्पर कारणरूपहैं ॥ तैसे तिनदोनोंविषेअनुगतजो तीसरापृथ्वीरूपसामान्यहै ॥ सोपृथ्वीरूप सामान्यभी तिनदोनोंकाकारणरूपहै ॥ यातें सोतीसरासामान्य व्यर्थनहीं है ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे सोपृथ्वीरूपसामान्य वट बीजोंकेसंबंधकरिके॥तथावटवृक्षोंकेसंबंधकरिकेतो दोप्रकारकाहुआ स्थितहोवेहै॥और वटबीज वटवृक्षयादोनोंविषेअनुगतरूपताकरिके सो सामान्य एकरूपहुआ स्थितहोवेहै॥ तैसे सामायारूपशक्तिभी कार्यकेसंबंधकरिके तथाकारणकेसंबंधकरिकेतो दोप्रकारकीहुई स्थितहोवै हैं ॥ और सर्वकार्य तथासर्वकारण यादोनोंविषेअनुगतहुईसामायाशक्ति एकरूपहुई स्थितहोवै है ॥ हेदेवताओ ॥ यहमाया यद्यपि व्यापकरूपकरिकेएकहीहै ॥ तथापि यहमाया कार्यविषे तथाकारणविषे व्याप्तहोइकेस्थितहोवै है ॥ याकारणतें सामाया भिन्न हुएकीन्याई स्थितहोवे है ॥ तहां साएकहीमाया कार्यावच्छिन्नशक्तिरूपकरिकेतो जीवकेभेदकाकारणहै ॥ और कारणावच्छिन्नशक्तिरूप करिके ईश्वरकेभेदकाकारणहै ॥ हेदेवताओ ॥ जैसे एकहीभूमि घटरूपकूं तथागृहरूपकूं प्राप्तहोइके घटाकाशगृहाकाश यादोनोंकेभेदका हेतुहोवैहै ॥ तैसे यहएकहीमाया आपणेकार्यकारणदोनोंरूपकरिके जीवईश्वरदोनोंकेभेदकाकारणहोवै है ॥और हेदेवताओ॥जैसे साएकही भूमि इलाधात्री कुः पृथ्वी धरणी क्षमा इत्यादिकअनेकनामोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे सापरिणामरूपएकहीमाया शक्ति दुर्भेणा अविद्या

तम मोह अज्ञान भ्रांति विपर्यय सनातनी इत्यादिकअनेकनामोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब तामायाकेचित्रत्वादिकविशेषणोंका निरूपणकरेहैं॥ हेदेवतावो ॥ साजीवईश्वरकेभेदकरणेहारी परिणामसामान्यरूपमाया अत्यंतअद्भुतशरीरवालीहै ॥ तथा नानाप्रकारकेसंस्काररूपचित्रों करिकेयुक्तहै ॥ और जैसे रजकपुरुष वस्त्रोंकूं नानाप्रकारकेनीलपीतादिकचित्रोंकरिकेयुक्तकरेहै ॥ तैसे यहमायाभी याविचित्रप्रपंचकूं आपणेसंस्काररूपचित्रोंकरिकेउत्पन्नकरेहै ॥ अब तामायाकीदृढता वर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहमाया आत्मज्ञानतेविना नाशतेंर हितहोणेते दृढकहीजावे है ॥ काहेतें सर्वजगततेंउत्कृष्टजोईश्वरहै सोईश्वरभी यामायाकूं नाशकरिसकेनहीं ॥ जिसवास्ते सोईश्वर यामाया कृतबलकरिकेयुक्तहुआही याजगत्कोउत्पत्तिस्थितिलयकरणेकीसामर्थ्यरूपईश्वरताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तामायातेंविना सोईश्वरपणा सिद्ध होवैनहीं ॥ ऐसीउपकारकरणेहारीमायाकूं सोईश्वर किसप्रकारनाशकरेगा ॥ किंतु सोईश्वर तामायाकूंनाशकरेनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ यालोकविषे जेशास्त्रवेत्तापुरुषहैं॥तेशास्त्रवेत्तापुरुष यद्यपि यामायाकूंअनर्थकाकारणजानिके नाशकरणेविषे समर्थ हैं॥तथापि यामायाने आपणेप्रभावते तिनशास्त्रवेत्तापुरुषोंकेबुद्धिकूं स्त्रीपुत्रधनादिकविषयोंविषे तत्परकीरराख्याहै ॥ याते तेशास्त्रवेत्तापुरुषभी यामायाकूंनाशक रिसकतेनहीं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते यामायाकूं महाअटवीरूपकरिकेवर्णनकरेहै ॥ महान्वनकानाम महाअटवीहै ॥ हेदेव तावो॥यहमायारूपमहाअटवी नानाप्रकारकेचिदाभासरूपजीवोंकरिकेव्याप्तहै ॥ तथा पंचमहाभूतरूपवृक्षोंकरिकेपरिपूर्ण है ॥ तथा विषयों विषेरागरूपजेस्नेहहैं ॥ तिनस्नेहरूपमूलोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा नानाप्रकारकेदुःखरूपफलोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा पुत्रस्त्रीआदिरूपपुष्पोंकरि केयुक्तहै ॥ तथा मातापितादिरूपपक्षीयोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा बांधवरूपीशाखावोंकरिकेयुक्तहै ॥तथा मेरेकूंयहसुखप्राप्तहोवैगा याप्रकारकी दीर्घआशारूपबीजोंकरिकेयुक्तहै॥तथा मृत्युरूपदावाग्निकरिकेयुक्तहै ॥ और तामायारूपमहाअटवीकूंनाशकरणेहारी जाशमदमादिरूप विवेकराजाकीसेनाहै ॥ ताशमदमादिरूपसेनाकूंभक्षणकरणेहारीजा कामक्रोधादिरूप महामोहराजाकीसेनाहै ॥ तिनकामक्रोधादिरूपसिं होंकरिकेपूर्ण है ॥ तथा दुर्जनपुरुषरूपीसर्पकंटकोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा नारीरूपपिशाचोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा जन्ममरणादिकवृश्चिकोंक

रिकैयुक्तहै ॥ ऐसीमायारूपमहाअटवीकूं शास्त्रवेत्तापुरुष ध्यानयोगादिकउपायोंकरिकै नाशकरणेविषेसमर्थ हैं ॥ तथापि यामायारूपअटवीनैं तेशास्त्रवेत्तापुरुष स्त्रीपुत्रादिकोंकेदीनताकूंप्राप्तकरे हैं ॥ यातैं तेशास्त्रवेत्तापुरुषभी यामायारूपमहाअटवीकूं नाशकरणेविषेसमर्थहोतेनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ भद्र मंद्र मृग याभेदकरिकै तीनप्रकारकेहस्तीहोवे हैं ॥ तिनतीनोंप्रकारकेहस्तियोंविषे भद्रजातिवालाहस्ती महाबलवान्होवे है ॥ तथा श्रेष्ठलक्षणोंकरिकैयुक्तहोवे है ॥ तथा सर्वतैंनिर्भयहोवे है ॥ सोभद्रजातिवालाहस्ती जैसे महान्वनकेनाशकरणेविषेसमर्थहोवे है ॥ तैसे यहब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्तीभी यामायारूपमहाअटवीकेनाशकरणेविषे समर्थहोवे है ॥ परन्तु ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष यालोकविषे कोईविरलाहीहोवे है ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष यामायाकूं दृढा यानामकरिकेकथनकरे हैं॥ अब तामायाके बहुअंकुरत्व गुणभिन्नत्व सर्वत्रब्रह्मादिव्याप्तत्व यातीनधर्मोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ नानाप्रकारकेभावीशरीरोंकोप्राप्तिकरणेहारियां जेमरणकालकीअनेकवासनाहैं॥तावासनारूपअंकुरोंकरिकै सामायारूपअटवीयुक्तहै॥ तथा सत्वरज तम यात्रिगुणात्मकपदार्थोंकरिकै नानाप्रकारकीहुई स्थितहै ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे यालोकप्रसिद्धमहान्वनविषे केईकमहान्वृक्षहोवे हैं ॥ तैसे यामायारूपमहाअटवीविषे ब्रह्मा विष्णु शिव यहतीन महान्वृक्षस्थितहैं ॥ कैसेहैंतेवृक्ष ॥ सर्वत्रव्यापकहैं ॥ तथा अनेकप्रकारकेफलोंकीप्राप्तिकरिकै यासर्वजीवोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ और यामायामहाअटवीतैंबाह्यनिकसणेविषे समर्थ जोविद्वान्रूपभद्रहस्तीहै ॥ सोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती जोकदाचित् कामक्रोधादिरूपसिंहों तैं तथामृत्युरूपदावाग्नितैं भयभीतहुआभागे ॥ तो सोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती ब्रह्मा विष्णु शिव यातीनवृक्षोंविषे किसीएकवृक्षकूंआश्रयणकरे ॥तहां तिनब्रह्मादिकदेवतावोंकीजोउपासनाकरणी है यहही तिनोंकाआश्रयणकरणा है॥तिनब्रह्मादिकवृक्षोंके आश्रयणकरणेकेप्रभावतैं यहविद्वान्पुरुष तिनकामक्रोधादिजन्यसर्वतापोंतैं रहितहोवैहै॥हेदेवतावो॥अद्वितीयरूप जेयहब्रह्मादिकतीनवृक्ष हैं ॥तिनब्रह्मादिकतीनवृक्षोंविषे यहकामक्रोधादिकसिंह तथामृत्युरूपदावाग्नितथादेहाभिमानीदुर्जनमनुष्ययहसर्व प्रवेशकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं॥काहेतैंदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितजोतिनब्रह्मादिकदेवतावोंकास्वरूपहै ॥ तापरिपूर्णस्वरूपतैंयहपरिच्छिन्नकामक्रोधादिकसर्वदा

भयकूंहीप्राप्तहोवे हैं ॥ याकारणतें तिनब्रह्मादिकवृक्षोंकेसमीपजाइसकैनहीं हेदेवताओ ॥ जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षोंऊपरलताहोवे हैं ॥ तैसे ब्रह्मारूपवृक्षविषेतो सरस्वतीरूपलताहै ॥ और विष्णुरूपवृक्षविषे लक्ष्मीरूपलताहै ॥ और शिवरूपवृक्षविषे भवानीरूपलताहै ॥ और ब्रह्मारूपवृक्षतो सुवर्णकेसमानवर्णवालाहै ॥ और विष्णुरूपवृक्ष तमालकीन्याई श्यामवर्णवालाहै ॥ और शिवरूपवृक्ष क्षीरकेसमानशुक्ल वर्णवालाहै ॥ तेब्रह्मादिकतीनोंवृक्ष देखणेहारेपुरुषोंकेमनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ और ताब्रह्मारूपवृक्षकीलतारूपसरस्वतीतो श्वेतवर्णवाली है॥और विष्णुरूपवृक्षकीलतारूपलक्ष्मी पीतवर्णवालीहै॥और शिवरूपवृक्षकीलतारूपभवानी श्यामवर्णवाली है॥ और हेदेवताओ ॥ ब्रह्मा विष्णु शिव यहतीनवृक्ष तथा सरस्वती लक्ष्मी भवानी यहतीनलता निर्विशेषरूपकरिकेतो सर्ववर्णों तैंरहितहैं॥ और सर्वविश्वरूपहोणेतें सर्ववर्णवालेभी हैं॥और दंभयुक्तपुरुषोंकेप्रतितो फलतैंरहितहैं॥और शरणागतभक्तजनोंकेप्रति नानाप्रकारकेफलों सहित हैं ॥ और अनादिहोणेतेंतो बीजतेंरहितहैं ॥ और मंत्ररूपबीजवालेहोणेतें सबीजहैं ॥ तथा आदिअंततेंरहितहैं ॥ तथा सर्वप्रपंचका बीजरूपहैं ॥ तथा नित्यहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेब्रह्मादिकवृक्ष ॥ आपणेआश्रितभक्तजनोंके संसारतापकीनिवृत्तिकरणेहारे हैं ॥ तथा मनवांछितरूपोंकूंधारणकरणेहारे हैं ॥ तथा महान्पदार्थोंकीगिणतीविषे अत्यन्तमहान्हैं ॥ तथा सूक्ष्मपदार्थोंकीगिणतीविषे अत्यन्त सूक्ष्महैं ॥ हेदेवताओ ॥ यद्यपि यहअविद्यारूपमहाअटवी याजीवोंकूं महान्दुःखोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ तथापि जिसब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्तीनें याब्रह्मादिरूपवृक्षोंकेछायाकूंआश्रयणकर्‍याहै ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूं ताअविद्यारूपमहाअटवी दुःखकोप्राप्तकरैनहीं ॥ हेदेवताओ ॥ यहलताओंसहितब्रह्मादिकवृक्ष आपणेचैतन्यरूपप्रकाशकरिके प्रकाशमानहुए सर्वजगत्कूंप्रकाशकरेहैं ॥ यातें तिनस्वयंप्रकाशरूप वृक्षोंकेशरणकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष अज्ञानरूपअंधकारतैंरहितहोवे है ॥ हेदेवताओ ॥ यहब्रह्मादिकतीनवृक्ष स्वभावतैंतो स्वप्रकाशरूपहैं ॥ तथा आनंदस्वरूपहैं ॥ परंतु पुरुषोंकीभावनाकेअनुसार जंगमरूपहोवे हैं ॥ तथा स्थावररूपहोवे हैं ॥ और धर्म अर्थ काम मोक्ष याचारप्रकारकेपुरुषार्थोंकिप्राप्तिकोइच्छाकरिके आराधनकरणेहारेजेभक्तजनहैं ॥ तिनभक्तजनोंकेप्रति ताचारप्रकारकेपुरुषार्थोंकीप्राप्ति

२८

करणेहारे हैं ॥हेदेवताओ॥ याब्रह्मादिकतीनवृक्षोंकूं तथासरस्वतीआदिकतीनलताओंकूं जोपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक आश्रयणकरेहै॥सोपुरुष कदाचित्भी दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तिनब्रह्मादिकतीनवृक्षोंकूं कल्पवृक्ष यानामकरिकेकथनकरेहैं॥और तिनसरस्वतीआदिकतीनलताओंकूं कल्पलता यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ यातें हेदेवताओ ॥ यामायारूपमहाअटवीविषेहैउत्पत्तिजिसकी तथा ब्रह्मज्ञानरूपहैशुंडजिसकी ऐसाजो यहब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्तीहै॥सोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती याक्लेशरूपीदृढमूलवालीअविद्यारूपमहाअटवीकूं अवश्यकरिकेनाशकरे॥और सोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती जबपर्यंतआपणेब्रह्मज्ञानरूपशुंडकूंबालभावकरिके तथाकामक्रोधादिरूपसिंहकृतउपद्रवकरिके दुर्बलदेखे ॥ तबपर्यंत सोब्रह्मवेत्तारूपहस्ती याब्रह्मादिकतीनवृक्षोंकूं आश्रयणकरिकेस्थितहोवे ॥ तिनब्रह्मादिकवृक्षोंका कदाचित्भी परित्यागनहींकरे॥हेदेवताओ॥यामायारूपमहाअटवीविषे यहब्रह्माविष्णुशिवरूपतीनवृक्ष यासर्वविश्वकूंव्याप्तकरिकेरहेहैं ॥ और तिनोंकेस्वभावकाभी सर्वत्रअनुगतपणा प्रतीतहोवे है ॥ याकारणतेंही यहसर्वजगत् अधिदेव अध्यात्म अधिभूत यातीनरूपकरिकेउत्पन्न हुआहै ॥ तहां सर्वजगत्विषे जोसृष्टापणाहै सोब्रह्माकास्वभावहै ॥ और पालकत्वधर्म विष्णुकास्वभावहै॥और संहारकर्तृत्व रुद्रकास्वभाव है ॥ हेदेवताओ यामाया ब्रह्मा विष्णु रुद्र यातीनोंकेसंबंधकरिके तथा सत्व रज तम यातीनगुणोंकरिके तीनप्रकारकीहोवैहै॥तामायाके संबंधकरिके यहआत्मादेवभी कर्त्ता पालक संहरता यातीनरूपोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥तथा जाग्रतादिकतीनअवस्थारूपसंसारविषे अहंममअभिमानकूंकरेहै॥और सोआत्मादेवही समष्टिस्थूलउपाधिकेसंबंधतें विराट्संज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और समष्टिसूक्ष्मउपाधिकेसंबंधतें सोआत्मादेव हिरण्यगर्भसंज्ञाकूंप्राप्तहोवे है ॥ और समष्टिकारणउपाधिकेसंबंधतें सोआत्मादेव ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अब हिरण्यगर्भभगवान्विषे जीवरूपता तथाईश्वररूपता सिद्धकरणेवासते ताहिरण्यगर्भकूं अध्यात्म अधिदेवरूपकरिकेवर्णनकरे हैं ॥ हेदेवताओ ॥ जिसहिरण्यगर्भभगवान्के विश्व तैजस प्राज्ञ अध्यात्मयहतीनभेदहैं ॥ सोहिरण्यगर्भभगवान्ही समष्टिजाग्रत्विषेस्थितहुआ अधिदेवरूपविराट् कह्याजावैहै ॥ और व्यष्टिस्थूलशरीरोंकेअभिमानकरिके सोहिरण्यगर्भभगवान् विश्वसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और विविधप्रकारतेंविराजमान

होणेतें विराट्संज्ञाकूंप्राप्तहोवे है ॥ और समष्टिसूक्ष्मविषे अहंअभिमानकरताहुआ सोआत्मादेव हिरण्यगर्भसंज्ञाकूंप्राप्तहोवे है ॥ और तेजो
प्रधानव्यष्टिसूक्ष्मशरीरकेअभिमानतें सोआत्मादेव तेजससंज्ञाकूंप्राप्तहोवे है॥और केवलअज्ञानविषे अहंअभिमानकरताहुआ सोआत्मादेव
निर्विक्षेपसाक्षीरूपज्ञानवालाहोणेतें प्राज्ञसंज्ञाकूंप्राप्तहोवे है ॥ तथा सर्वविश्वकाकारणहोणेतें ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेदेवताओ ॥
जोआत्मादेव अधिदेवमर्यादाविषे हिरण्यगर्भ यानामकरिकेकथनकऱ्याहे ॥ सोहिरण्यगर्भरूपआत्मादेव यासर्वजगतविषे अहंअभिमान
कूंप्राप्तहोवे है ॥ और जोकारणउपाधिवाला आत्मादेव अधिदेवईश्वररूपकरिके कथनकऱ्याहे ॥ सोईहीआत्मादेव यासर्वजगतकूं आपणी
आपणी मर्यादाविषेस्थापनकरे है ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूंनियंता अंतर्यामी यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ हेदेवताओ ॥
जैसे कारणउपाधिवालाईश्वर अध्यात्म अधिदेव अधिभूत यातीनरूपकरिकेस्थितहोवे है ॥ तैसे यहकार्यउपाधिवाला हिरण्यगर्भनामाजी
वभी सर्वत्रव्यापकहोणेतें अध्यात्म अधिदेव अधिभूत यातीनरूपकरिकेस्थितहोवे है ॥ और जैसे सोईश्वर स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपहै॥
तथा सर्वत्रव्यापकहै ॥ तैसे यहहिरण्यगर्भभी स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै॥यातें यहहिरण्यगर्भ ताईश्वररूपहीहै॥
यद्यपि यहहिरण्यगर्भ क्रियाशक्तिरूपप्राणवालाहै ॥ तथा ज्ञानशक्तिरूपबुद्धिवालाहै ॥ ईश्वर ताप्राणबुद्धिरूपउपाधिवालाहैनहीं ॥
यातें तिनदोनोंकोविलक्षणताभी संभवे है ॥ तथापि यहहिरण्यगर्भभगवान् स्वतःसिद्धज्ञानकरिके आपणेस्वरूपकूं सर्वउपाधियोंतैंर
हित निर्विशेषस्वरूपहीमाने है ॥ यातें याहिरण्यगर्भविषे ईश्वररूपता संभवहोइसकेहै ॥ हेदेवताओ ॥जोचेतन मायारूपउपाधिकेसंबंधतें
ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवे है॥सोईश्वररूपचेतनही ज्ञानशक्तिरूप तथाक्रियाशक्तिरूप उपाधिवालाहुआ हिरण्यगर्भकह्याजावे है॥जिसहिरण्यगर्भ
विषे मायाकरिकेकऱ्याहुआ अनेकप्रकारकाविक्षेप प्रतीतहोवे है ॥ याकारणतैंभी सोहिरण्यगर्भ ईश्वररूपही है ॥ अब दोनोंउपाधियोंके
अभेदद्वाराभी तिनदोनोंकाअभेद निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवताओ ॥ सामायाही आत्माकूंआवरणकरतीहुई अविद्याकहीजावे है ॥ जिसअवि
द्यारूपमायातें ज्ञान क्रिया दोनोंकीउत्पत्तिहोवे है ॥ तिनदोनोंकीउत्पत्तिकरिके यासर्वजगत्कीउत्पत्तिहोवे है ॥ काहेतें पंचभूतोंसहित

प्राणबुद्धिआदिकजितनेकीपदार्थ विषयशब्दकरिकेकथनकरेआये हैं ॥ तेसर्वपदार्थ ज्ञानक्रियाशक्तिरूपही हैं ॥ ज्ञानकूं अथवा क्रियाकूं नहींउत्पन्नकरताहुआ कोईभीपदार्थ देखणेविषेआवतानहीं ॥ और सर्वपरिणामोंविषेअनुगतजोसामान्यहै ॥ तासामान्यकूं पूर्व अविद्यायानामकरिकेकथनकरिआये हैं ॥ तामायारूपअविद्याही ईश्वरकीउपाधिहै ॥ और तासामान्यरूपमायाकाकार्यरूप जोज्ञानक्रियाहै॥ता ज्ञानक्रियाविषेअनुगतजोकार्यशक्तिहै ॥ साकार्यशक्ति हिरण्यगर्भकीउपाधिहै ॥ और याछोकविषे मृत्तिकादिककारणोंका तथाघटादिक कार्योंका अभेदहीदेखणेविषेआवे है ॥ यातें तामायारूपईश्वरकेउपाधिका तथाकार्यशक्तिरूपहिरण्यगर्भकेउपाधिका अभेदहीसिद्धहोवे है ॥ तिनउपाधियोंकेअभेदहुए ताईश्वरहिरण्यगर्भकाभी अभेदहीसिद्धहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यापूर्वउक्तरीतिसें हिरण्यगर्भकी परमात्माकेसाथ एकतासिद्धहुएभी व्यष्टिजीवोंकी तापरमात्माकेसाथ एकता किसप्रकारसिद्धहोवेगी ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ ताहिरण्यगर्भकाउपाधिरूप जोसमष्टिलिंगशरीरहै॥ तालिंगशरीरकेतुल्यहै रूपजिसका तथा नानासंस्कारोंकाआश्रयहोणेतें विचित्रहैरूपजिसका तथामायातें है उत्पत्तिजिसकी ऐसाजो अनेकप्रकारकालिंगशरीरहै ॥ सोलिंगशरीर याव्यष्टिजीवोंका उपाधिरूपहै ॥ और जैसे वटवृक्षोंविषेस्थित तथावटबीजोंविषेस्थितजो जनकतारूपसामान्यहै ॥ सोजनकतारूपसामान्य एकएकव्यक्तिविषे परिपूर्णतारूपकरिकेवर्तें है ॥ तैसे यहअविद्यारूपमायाभी हिरण्यगर्भके समष्टिसूक्ष्मउपाधिविषे तथाजीवोंके ज्ञानक्रियाशक्तिरूपव्यष्टिउपाधिविषे परिपूर्णतारूपकरिके वर्ते है ॥ जैसे मृत्तिका आपणे घटशरावादिकसर्वकार्योंविषे अनुगतहोइकेरहे है॥ तैसे यहईश्वरकीउपाधिरूपमायाभी अधिदैवअधिभूतरूपबाह्यप्रपंचविषे तथाअध्यात्मरूपअंतरप्रपंचविषे अनुगतहोइकेरहे है ॥ याकहणेतेंयहअर्थसिद्धभया ॥ व्यष्टिसमष्टिरूपसर्वउपाधियोंका सर्वशक्तिसंपन्नमायाकेसाथतादात्म्यसंबंधहै ॥ यातें तेसर्वउपाधियां सर्वरूपहैं ॥ यातें जैसे उपाधियोंकेअभेदद्वारा ताहिरण्यगर्भका परमात्माकेसाथअभेदहै ॥ तैसे तिनव्यष्टिजीवोंकाभी तापरमात्माकेसाथ अभेदही है ॥ तात्पर्ययह ॥ अविद्यारूपउपाधिविषे तथाउपहित चेतनआत्माविषे कभी भेदसिद्धनहींभया ॥ तभी व्यष्टिजीवोंविषे तथा ताजीवकीकार्यरूपउपाधिविषे सोभेद किसनिमित्तकरिकेसिद्ध

होवेगा॥किंतु किसीभीनिमित्तकरिके सोभेद संभवेनहीं ॥ शंका॥हेभगवन् ॥जोव्यष्टिसमष्टिका अभेदहीहोवे॥तो व्यष्टिविषे परिच्छिन्न ता
किसवासतैंप्रतीतहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकूंप्राप्तहोणहारेजे जरायुज अंडज स्वेदज
उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेजीवहैं॥तेसर्वजीव वास्तवतैं हिरण्यगर्भरूपईश्वरकेतुल्यरूपवालेहुए यद्यपि महान्पदार्थों तैं भी अत्यंतमहान्हैं॥
तथापि परिच्छिन्नबुद्धिआदिकोंकेयोगतैं तेजीव परिच्छिन्नहुएकीन्याईं प्रतीतहोवैहैं ॥ जैसे वास्तवतैंपरिपूर्णहुआभीआकाश घटमठादिक
उपाधियोंकेसंबंधतैं घटाकाश मठाकाश इत्यादिकपरिच्छिन्नरूपकरिकेप्रतीतहोवे है ॥ हेदेवतावो ॥ जोसत्चित्आनंदस्वरूपआत्मा
हमनें पूर्व तुमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ सोईहीआत्मादेव हिरण्यगर्भरूपहोइकेस्थूलविराट्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा अग्निआदिकदेवतावों
सहित वाकादिकइंद्रियोंकूंउत्पन्नकरे है ॥ तथा आकाशादिकपंचभूतोंकूंउत्पन्नकरे है तथाअन्नमयादिकपंचकोशोंकूंउत्पन्नकरे है ॥
इसप्रकार सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिके सोआत्मादेवही जीवरूपकरिके याजगत्विषेप्रवेशकरताभयाहै ॥ ताप्रवेशतैंअनंतर तिनदे
हादिकोंविषे अहंममअभिमानरूपकंचुककरिके युक्तहुआ सोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्मा वास्तवतैंसर्वज्ञहुआभी मूढकीन्याईं
स्थितहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर स्थूलादिकतीनशरीरोंविषे वर्तमानजे नानाप्रकारकेव्यवहारहैं ॥ तिनव्यवहारोंकूं साक्षीरूपकरिकेदेख
ताहुआभी तिनव्यवहारोंकू आपणेआत्माविषेमानेहै ॥ हेदेवतावो ॥ वास्तवतैं जीवईश्वरादिकभेदतैंरहित जोआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेव
विषे जोयहजीवईश्वरादिकभेद प्रतीतहोवे है॥ताभेदविषे यहमायाहीकारणहै ॥ कैसीहैसामाया॥चेतनकेअधीनहै॥तथा अनादिहै॥तथा
अधिष्ठानकीसत्तातैंभिन्नसत्तातैंरहितहै॥तथा वास्तवतैं तुच्छरूपहै ॥ऐसीमिथ्याभूतमायाकरिके प्रतीतभयाजोजीवईश्वरादिकभेदहै॥सोभे
दप्रपंचभी मिथ्याही है ॥ अब प्रपंचकेमिथ्यात्ववर्णनकरिके आत्माविषेसिद्धभयेजे अद्वितीयत्वादिकलक्षण तिनोंकावर्णनकरैहैं ॥ हेदेव
तावो ॥ सोभेद यातुच्छरूपमायाकाकार्य है ॥ यातैं याआत्मादेवविषे सोकिंचित्मात्रभीभेदहैनहीं॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादे
वकूं अद्वितीय यानामकरिकेकथनकरैहैं ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे स्वप्नद्रष्टापुरुषनें देख्याजो जीवईश्वरादिरूपअनेकप्रकार

काभेदहै ॥ ताकल्पितभेदकरिके तास्वप्नद्रष्टापुरुषका किंचित्मात्रभीभेदहोवैनहीं ॥ तैसे मायाकल्पितभेदकरिके ताअद्वितीयआत्मा विषे किंचित्मात्रभी द्वैतभावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ याआत्माके जेसत्चित्आनंदस्वरूपहैं ॥ तिनसत्यादिकस्वरूपोंकावो परस्पर भेदसंभवैनहीं ॥ तथा पूर्वउक्तरीतिसें कल्पितप्रपंचकाभी ताआत्माविषे भेदसंभवैनहीं ॥ याकारणतें सोआत्मादेव अद्वितीयरूपहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा अद्वितीयरूपहै ॥ याकारणतें यहआत्मादेव सत्यरूपहै ॥ और हेदेवतावो ॥ किसीभीवादीनें सत्ताकानाश अंगीकारकऱ्यानहीं ॥ किंतु सर्ववादी तासत्ताकूं नाशतेंरहितमानेहैं ॥ और जेनास्तिकवादी सत्पदार्थकूं क्षणिकमानेहैं ॥ तेनास्तिकवादीभी तासत्ताकेआश्रयरूपपदार्थोंकूंहीं क्षणिकमानेहैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंविषे अनुगतसत्ताकूं क्षणिकमानेंनहीं ॥ यातें नाशकेकारणोंतेंरहित तासत्तारूपआत्मादेवकूं वेदवेत्तापुरुष नित्य यानामकरिकेकथनकरेहैं॥और हेदेवतावो॥यालोकविषे जोजोपदार्थ जडतारूपकरिके अशुद्धहोवैहै ॥ सोसोपदार्थही नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे घटादिकजडपदार्थ अशुद्धहोणेतें नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआत्मादेवता तिनजडघटादिकोंतेंविलक्षणचेतनरूपहै॥यातें यहआत्मादेव नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं शुद्ध यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वयंप्रकाशरूपकरिके सर्वदा आपणे स्वरूपकूंअनुभवकरेहै ॥ यातें यहआत्मादेव जडअशुद्धरूप जगत्तें विलक्षणहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं शुद्ध यानामकरिकेकथनकरेहैं॥और हेदेवतावो॥यालोकविषे जोजोपदार्थ मिथ्यारूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ आनंदतेंभिन्नहीहोवैहै॥जैसे मिथ्यारूपशुक्तिरजत आनंदतेभिन्नहै॥और यहआत्मादेवतो स्वयंज्योतिरूपहोणेतें तिनमिथ्यापदार्थोंतेंविलक्षण आनंदस्वरूपहै॥याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सत्य यानामकरिकेकथनकरेहैं॥और हेदेवतावो॥यालोकविषे जोजोपदार्थ सत्यहोवै है॥सोसत्यपदार्थ आपणेविषेकल्पितमिथ्यापदार्थोंकरिके बंधायमानहोवैनहीं॥जैसे एकहीरज्जुविषे दोषयुक्तअनेकद्रष्टापुरुषोंनें कल्पनाकरेजेअनेकसर्प हैं ॥ तिन अनेकमिथ्यासर्पोंकरिके सासत्यरज्जु बंधायमानहोवैनहीं ॥ तैसे सोसत्यआत्माभी आपणेविषेकल्पितमिथ्याजगत्करिके बंधायमानहोवै

नहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तासत्यआत्माकूं मुक्त यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और हेदेवतावो ॥ उत्पन्नहुएबंधका जोकारणहोवे है ताकूं भंजनकरे हैं ॥ जैसे सर्पकेबंधनकाकारणहोणे तें रज्जु भंजनरूपहै॥और याआत्मादेवविषे कदाचित्‌भी बंधहुआनहीं॥ यातें याआत्मादेवविषे ताबंधकेनिवृत्तकरणेहारेसाधनोंका किंचित्‌मात्रभीउपयोगहैनहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष यानित्यमुक्तआत्मादेवकूं निरंजन यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और हेदेवतावो ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवे है ॥ सोसोपदार्थ परिच्छिन्नहोवे है ॥ जैसे घटादिकपदार्थ कार्यरूपहोणे तें परिच्छिन्नहैं ॥ और यहआत्मादेव कार्यरूपहैनहीं ॥ यातें याआत्मादेवविषे परिच्छिन्नरूपताभी संभवे नहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं विभु यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और हेदेवतावो ॥यालोकविषे जोजोपदार्थ अधिष्ठान होवे है ॥ सोसोपदार्थ आरोपितपदार्थों तें उत्कृष्टहोवे है ॥ जैसे रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानआरोपितसर्परजतादिकों तें उत्कृष्टहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माभी यासर्वजगत्‌काअधिष्ठानरूपहै ॥ यातें यहआत्मादेव ताआरोपितजगत्‌तें उत्कृष्टहै॥याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूंपर यानामकरिकेकथनकरे है॥और हेदेवतावो जैसे बाह्यघटादिकपदार्थोंकीअपेक्षाकरिके नेत्र अंतर हैं ॥तैसे बुद्धिआदिकदृश्यपदार्थोंकीअपेक्षाकरिके यहद्रष्टाआत्मा सर्व तेंअंतरहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं प्रत्यक्‌ यानामकरिके कथनकरे है ॥और हेदेवतावो॥ जैसे नीलपीतादिकअनेकवर्णोंवालीगोवोंकाक्षीर मधुरतारूपकरिके एकरसहोवे है॥तैसे यहआत्मादेवभी सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपकरिके सर्वत्र परिपूर्ण है॥तथा तेसत्‌चित्‌आनंदरूपभी परस्परभेदतेंरहितहैं ॥याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं एकरसयानामकरिकेकथनकरेहै ॥ हेदेवतावो ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मादेव स्फुरणरूपहै ॥यातें पूर्वउक्त अद्वितीय यानामतेंआदिलेके एकरस यानामपर्यंत सर्वनामोंकरिके सोआत्मादेवही जान्याजावे है ॥ तथा दृश्यपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे जेस्फुरणरूपबोधहैं ॥ तिनबोधोंकरिकेभी सोआत्मादेवही जान्याजावे है ॥ तथा प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंकरिकेभी सोआत्मादेवही जान्याजावे है ॥ अब याही अर्थकूं स्पष्टकरिके निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ प्रमाज्ञानकाजोकारणहोवे है ॥ तिसीकूंही सर्ववादीप्रमाणकहे हैं ॥ और

बहुतशास्त्रवालेतो ताप्रमाज्ञानकूं स्फुरणरूपमाने है ॥ और कोईशास्त्रवालेतो तास्फुरणकाअभिव्यंजक जाअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ तावृत्तिकूंही प्रमाज्ञानमानेंहै॥तादोनोंप्रकारसे तिनप्रमाणोंका स्फुरणकेसाथसंबंध अवश्यकरिकेहोवेंहै ॥और सर्वकालविषेवर्तमानजोस्फुरणहै॥ सोस्फुरणही सत्तारूपहै॥यहवार्त्ता पूर्वकथनकरिआयेहैं॥यातें सर्वबोधोंविषे सत्तारूपकरिकेभासमान जोस्फुरणहै॥सोस्फुरणहो आवरणकी निवृत्तिकरणेहारीवृत्तियोंकाविषयहै ॥ काहेतें ॥ सत्तामात्रंसर्वं ॥ याश्रुतिनें तासत्तारूपस्फुरणतेंभिन्नसर्ववस्तुवोंकाअभाव कथनकर्‍याहै ॥ यातें तासत्तारूपस्फुरणतेभिन्न घटपटादिकपदार्थोंविषे किसीभीज्ञानकूं नियमकरिकेंप्रमाणरूपता अथवा अप्रमाणरूपता कहीजावे नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ अयंघटः ॥ याप्रकारकाजोघटविषयकज्ञानहै ॥ सोज्ञान सर्वघटव्यक्तियोंकूंतो विषयकरेनहीं॥किंतु किसीकघटविशेषकूंनहींविषयकरताहुआ किसीकघटविशेषकूंविषयकरेहै ॥ यातें ताघटज्ञानविषे अर्थबोधकत्व तथाअर्थअबोधकत्व यहदोनोंधर्मरहेंहैं ॥ तहां अर्थबोधकत्वधर्मतो प्रमाणरूपताका साधकहै॥और अर्थअबोधकत्वधर्म अप्रमाणरूपताका साधकहै॥तेदोनोंधर्म परस्परविरोधीहैं॥ याते तिनज्ञानोंविषे नियमकरिके प्रमाणरूपताका अथवा अप्रमाणरूपताका निश्चयहोणेदेवेनहीं ॥ यातें जैसे मीमांसकोंकेमतविषे परस्परव्यभिचारी घटादिकव्यक्तियां घटादिकशब्दोंकावाच्यअर्थ होवेनहीं ॥ किंतु तिनघटादिकसर्वव्यक्तियोंविषेअनुगत जेघटत्वादिक जातियांहैं ॥ तेघटत्वादिकजातियांही तिनघटादिकपदोंकावाच्यअर्थ हैं ॥ तैसे सिद्धांतविषे श्रीपरस्परव्यभिचारीघटादिकव्यक्तियां तिन ज्ञानोंकाविषयनहीं हैं ॥ किंतु सर्वत्रअनुगतसत्तारूपस्फुरणहीतिनज्ञानोंकाविषयहै ॥ किंवा ॥ जेप्रत्यक्षादिकप्रमाण जिसअर्थ विषयक निश्चयरूपज्ञानकूं उत्पन्नकरेंहैं ॥ तिसीअर्थविषे तिनप्रत्यक्षादिकोंकीप्रमाणरूपता सर्ववादियोंनें अंगीकारकरीहै ॥ और घटो अस्ति पटोअस्ति इत्यादिकसर्वज्ञानोंविषे घटपटादिउपलक्षितसत्ताही प्रतीतहोवे है ॥ यातें सर्वलोकोंके प्रमारूपकरिके तथाअप्रमारूपकरिकें प्रसिद्ध जितनेंकीज्ञानहैं ॥ तेसर्वज्ञान तासत्तामात्रकूंहीविषयकरेंहैं ॥ यातें तिनसर्वबोधोंकूं तास्फुरणरूपसत्ताविषेही प्रमाणरूपताहै यहवार्त्ता वार्तिककार सुरेश्वराचार्यनेंभीकथनकरीहै तहांश्लोक ॥ ततोऽनुभवएवैको विषयोऽज्ञातलक्षणः ॥ अक्षादीनांस्वविषये

यत्रतेषांप्रमाणता ॥ अर्थयह ॥ स्फुरणरूपसत्ताही अज्ञानकाआश्रयविषयहोणेतें प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाविषयहै ॥ जिसवासते तास्फुरण
रूपसत्ताकेबोधनकरिकेही तिनप्रत्यक्षादिकोंकूं प्रमाणताकीप्राप्तिहोवे है ॥ अनात्मपदार्थोंकेबोधनकरिके तिनप्रत्यक्षादिकोंकूंप्रमाणताप्राप्त
होवेनहीं ॥ १ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ घटोअस्ति याज्ञानविषे जैसे सत्ताप्रतीतहोवे है ॥ तैसे ताघटकेअसत्ताकाअभावभी प्रतीतहोवे है ॥
यातें सोअसत्ताकाअभावही सर्वप्रमाणकाविषय किसवासतेनहींहोवे ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ जेज्ञानविशेष असत्ताकेनिवृत्तिकूंबोधन
करेंहैं ॥ तेज्ञानभी अंतविषेजाइके तासत्वस्तुविषेहींसंबंधकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तासत्वस्तुतें विना दूसराकोईपदार्थ तिनज्ञानोंकाआश्रयहोइ
सकेनहीं ॥ किंतु सोसत्वस्तुही तिनज्ञानोंकाआश्रयहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सत्अधिष्ठानतें विना भ्रमहोवेनहीं ॥ और भ्रमकरिकेप्राप्तपदार्थ
काही निषेधहोवेहै ॥ यहशास्त्रवेत्तापुरुषोंकासिद्धांतहै ॥ तासिद्धांतकूंअंगीकारकरिके किसीसत्अधिष्ठानविषे ताअसत्ताकाआरोपणक
रिकेनिषेधकरणाहोवैगा ॥ यातें ताअसत्ताकीनिवृत्तितेंअनंतर तासत्अधिष्ठानकीस्फूर्तिकूं कौन निवारणकरेगा ॥ किंतु ताअसत्ताकीनिवृ
त्तितेंअनंतर तासत्अधिष्ठानकीस्फूर्ति अवश्यकरिकेहोवेगी ॥ अब सर्वज्ञानोंका सत्वस्तुविषेपरिअवसान स्पष्टकरणेवासते सर्वत्र आधा
रकीअपेक्षाका वर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो॥असत्ताकूंप्रतिपादनकरणेहारा जो वंध्यापुत्रोनास्ति यहवचनहै॥तावचनविषेही प्रथम यहविचार
कऱ्याचाहिये॥वंध्यापुत्रोनास्तियावचनविषेआधारकावाचकजोकुत्र याप्रकारकाशब्दहैताकुत्रशब्दकीअपेक्षाहै॥अथवानहीं है तहांदूसरापक्ष
जोवादी अंगीकारकरे॥सोसंभवतानहीं॥काहेतें तावचनविषे आधारवाचकपदकीअपेक्षा हमसर्वलोकोंकूं अत्यंतस्पष्टप्रतीतहोवेहै ॥ तासर्व
अनुभवसिद्धअर्थकेनहीं अंगीकारकरणेविषे तावादीका केवलहठमात्रही है ॥ और वंध्यापुत्रोनास्ति या[illegible]विषे आधारकेवाचककुत्रश
ब्दकीअपेक्षाहै यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरे॥तो परिशेषतें तासत्ताकीहीसिद्धिहोवे है॥काहेतें॥वंध्यापुत्रोनास्ति यावचनकूंअपेक्षितजो
आधारकावाचक कुत्रशब्दहै ॥ ताकुत्रशब्दका लोकविषेअप्रसिद्धहोणेतें जोअद्भुतअर्थ प्रतीतहोवेहै ॥ सोअर्थ परिशेषतें सत्तारूपही है ॥
कैसीहैसासत्ता॥ सर्वपदार्थोंकूं आपणेविषे आश्रयदेणेहारी है ॥ तात्पर्ययह ॥भूतलेघटोअस्ति इत्यादिकस्थलोंविषे जहां लोकप्रसिद्ध

भूतलादिक घटादिकोंकाआधाररूपकरिकेप्रतीतहोवे है ॥ तहांतो तिनभूतलादिकोंकाआधाररूपकरिके तासत्ताकीप्रतीतिहोवे है ॥ और जहां वंध्यापुत्रोनास्ति इत्यादिकस्थलोंविषे कोईलोकप्रसिद्धआधारसंभवेनहीं ॥ तहांतो साक्षात् सत्ताकीहीआधाररूपकरिकेप्रतीतिहोवे है॥यातें यहअर्थसिद्धभया ॥घटोअस्ति पटोअस्ति इसतेंआदिलेकेजितनेंकोज्ञानहें॥तेसर्वज्ञान सत्वस्तुविषेस्थितिकूंप्राप्तहुएही प्रमाणरूपहोवे हैं ॥ और तासत्वस्तु आत्मास्वरूपही है ॥ यहवार्त्ता पूर्वकथनकरिआयेहें ॥ यातें तेसर्वज्ञान आत्माविषेही प्रमाणरूपहें॥हेदेवतावो ॥ यादेहतेंआदिलेके जितनाकोभूतभौतिकरूपद्वैतप्रपंचहे ॥ सोद्वैतप्रपंच जिससत्तारूपअधिष्ठानविषे कल्पितहे ॥ सोसत्तारूपअधिष्ठानही परमार्थतें सत्यरूपहे ॥ और सोसत्तारूपअधिष्ठान सर्वभेदतेंरहितहोणे तें ब्रह्मआत्मारूपहे ॥ तथा सत्चित्आनंदस्वरूपहे ॥ यहवार्त्ता हम पूर्वतुमारेप्रति कथनकरिआयेहें ॥ हेदेवतावो ॥ जोपुरुष तासत्ता सामान्यदृष्टिकूंअंगीकारकरिके स्थितहोवे है ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं याद्वैतप्रपंचकाअनुभवहोवेनहीं ॥ यातें सोसर्वकाअधिष्ठानरूप सत्ब्रह्म अद्वितीयरूपहीसिद्धहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ याप्रत्यक्षसिद्धद्वैतप्रपंचकेविरोधहोणेतें ताअद्वैतकीसिद्धि किसप्रकारहोवेगी॥समाधान॥हेदेवतावो॥एकदेशविषे तथाएककालविषे वर्त्तमानपदार्थोंकाही परस्परविरोधहोवेहे॥भिन्नदेशविषे तथाभिन्नकालविषे वर्त्तमानपदार्थोंका परस्पर विरोधसंभवेनहीं ॥ सोइहांप्रसंगविषे अद्वैतकीप्रतीति तथाद्वैतकीप्रतीति यहदोनों एकदेशविषे तथाएककालविषेवर्त्तेनहीं ॥ किंतु तेदोनों भिन्नभिन्नदेशकालविषे वर्त्ते हैं ॥ यातें तिनदोनोंका परस्परविरोधसंभवेनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ जिनअज्ञानीपुरुषोंकूं अद्वैतकाअनुभवनहीं है ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंनें देख्याजो द्वैतप्रपंचहे ॥ सोद्वैतप्रपंच ताअद्वितीयरूपअधिकरणविषे कदाचित्भी संबंधकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और जिनविद्वान्पुरुषोंकूं ताअद्वितीयवस्तुकाअनुभवहे ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकेमतविषेभी ताअद्वितीयवस्तुरूपअधिकरणविषे वहद्वैतप्रपंच कदाचित्भीसंबंधकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ यातें भिन्नदेशकालवृत्तिहोणेतें ताअद्वैतकेसाथ याद्वैतकाविरोधसंभवेनहीं ॥ यातें पूर्वकथनकऱ्याजो अद्वैतविषेद्वैतप्रपंचकाअभाव सोसंभवहोइसकेहे ॥ हेदेवतावो ॥ जो कदाचित् किसीअज्ञानीपुरुषोंकूं याद्वैतप्रपंचकाअनुभवहोवेहे ॥तो निःशंकहोवे ॥ ताभ्रांतपुरुषोंके

अनुभवसिद्धद्वैतप्रपंचकरिके इसविद्वान्पुरुषोंकेअनुभवसिद्धअद्वैतकी किंचित्मात्रभीहानिहोवेनहीं ॥ काहेतें सोमिथ्याद्वैत अधिष्ठानव
स्तुकूं स्पर्शकरतानहीं ॥ तथा सोद्वैतप्रपंच अविचारकरिकेही प्रतीतहोवे है ॥ विचारकूंसहारिसकेनहीं ॥ यातें सोद्वैतप्रपंचमायामयहै ॥
मायामयहोणेतेंही सोद्वैतप्रपंच अद्वितीयअधिष्ठानविषेकल्पितहै ॥ ताकल्पितद्वैतकरिके वास्तवअद्वैतकीहानिहोवेनहीं ॥ शंका ॥
हेभगवन् ॥ ताकल्पितद्वैतप्रपंचकरिकेतो अद्वैतकीहानि मतहोवे तथापि ताकल्पितद्वैतकेअभावकरिके ताअद्वैतकीहानिहोवेगी ॥
समाधान ॥ हेदेवतावो जैसे कल्पितद्वैतप्रपंच ताअद्वितीयकीहानिकरेनहीं॥ तैसेताकल्पितद्वैतकाअभावभी ताअद्वितीयकीहानिकरेनहीं॥
काहेतें वेदांतसिद्धांतविषे कल्पितवस्तुकाअभाव अधिष्ठानस्वरूपहीहोवेहै अधिष्ठानतें भिन्नहोवेनहीं ॥ जैसे कल्पितसर्पकाअभाव
रज्जुरूपअधिष्ठानस्वरूपहीहोवे है ॥ तैसे याआकाशादिककल्पितप्रपंचकाअभावभी अधिष्ठानस्वरूपहीहोवे है॥और याकल्पितप्रपंचका
तथाताप्रपंचकेअभावका अद्वितीयआत्माहीं अधिष्ठानहै॥यातें सोकल्पितद्वैतप्रपंचकाअभाव आपणेस्वरूपभूतअद्वितीयआत्माकीहानिक
रिसकेनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ याशुद्धआत्मादेवविषे यहद्वैतप्रपंच पूर्वकभीहुआनहीं ॥ और आगेकभीहोवेगानहीं ॥ और अभीभीहैनहीं ॥
याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं अद्वैत यानामकरिकेकथनकरे हैं॥हेदेवतावो॥जैसे आकाशविषे गंधर्वनगर कल्पितहोवे है ॥तैसे
याआनंदस्वरूपआत्माविषेयहद्वैतप्रपंच कल्पितहै॥यातेंताकल्पितद्वैतकरिके आत्माकेअद्वितीयरूपताकीहानिहोवेनहीं॥शंका हेभगवन्॥
याकल्पितप्रपंचकरिके ताआत्मादेवविषे द्वैतमतहोवे ॥ तथापि यासर्वप्रपंचकाकारणरूपजोमायाहै तामायाकरिके ताआत्मादेवविषे द्वैत
भावकीप्राप्तिहोवेगी ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्व द्वैततेंरहितहै ॥ तथा बुद्धिआदिकसर्वजगत्कासाक्षीरूपहै॥
तथा जन्ममरणादिकसर्वविकारों तेंरहितहै॥तथा सूर्यभगवान्कीन्याईं प्रकाशमानहै॥ऐसेआत्मादेवविषे सूर्यविषेअंधकारकीन्याईं यहतम
रूपअविद्या संभवतीनहीं॥ किंतु तास्वयंज्योतिरूपआत्माकेप्रभावतें यहअविद्यारूपमाया आपहीनिवृत्तहोइजावे है॥यातें तास्वयंज्योति
आत्माविषे जोमायाकीस्थितिहोवे है॥सास्थितिमायादृष्टिकरिकेही है ॥वास्तवदृष्टिकरिकेतामायाकीस्थितिहोवेनहीं॥हेदेवतावो॥जैसेप्रका

शमानसूर्यविषे घूकादिकोंनें कल्पनाकऱ्याजोअंधकाररूपतमहै॥सोतम तांघूकादिकल्पित तमकेवलतैंहीं सिद्धहोवै है।सूर्यतेजकरिके ता तमकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ जिसवासते तेजका तथातमका परस्पर अत्यन्तविरोधहै ॥ तैसे अद्वितीयस्वयंज्योतिआत्माविषे अज्ञानीपुरुषों नें कल्पनाकरीजाअविद्यारूपमायाहै॥साअविद्यारूपमायाभीतामायाकरिकेही सिद्धहोवै है॥किसीप्रमाणकरिके तामायाकीसिद्धिहोवैनहीं॥ हेदेवतावो ॥ वास्तवतैं कार्यसहितमायातैंरहित जोआनंदस्वरूपआत्माहै॥ ताआत्मादेवविषे जैसे यहमायाकाकार्यरूपप्रपंच कल्पितहै॥ तैसे साजडमायाभी कल्पितहै॥तापरमात्मादेवतैं यहकार्यसहितमायाभिन्नसत्तावालीनहीं है॥इतनैंकरिकेसर्वद्वैतप्रपंचविषे कल्पितरूपता निरूपणकरी॥अब योऽयंचोरःस्थाणुरेव॥याप्रकारबाधसमानाधिकरण्यकरिके यासर्वजगत्विषेपरमेश्वरदृष्टिकानिरूपणकरेहैं॥हेदेवतावो पूर्वहमनें तुमारेप्रति जोस्वयंज्योतिपरमात्मादेव सत्चित्आनंदस्वरूपकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ सोपरमात्मादेवही तामायासहितयासर्व विश्वरूपहै॥तथा ब्रह्मा विष्णु शिव इंद्र इसतेंआदिलेके जितनाकोयहस्थावरजंगमरूपजगत्है॥तासर्वजगत्रूपभी सोपरमात्मादेवहीं है ॥ हेदेवतावो ॥ ऐसा सर्वात्मारूपपरमात्मादेव यादेहधारीजीवोंकूं यद्यपि नित्यहीप्राप्तहै ॥ तथापि मायाकेबलतैं याजीवोंकूं सोपरमात्मादेव अप्राप्तहुएकीन्याई स्थितहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ सर्वजगत्काअधिष्ठानरूपहै ॥ तथा तीनकालोंविषेसत्यरूपहै ॥तथा नाशतैंरहित है ॥तथा स्वप्रकाशसुखरूपहुआभी दुःखरूपदेहादिकोंकेअध्यासतैं अन्यथाहोइकेप्रतीतहोवै है ॥ अब सर्वत्रआत्मदृष्टिविषे ताआत्मादेव केप्रासिको उपायरूपता बोधनकरणेवासते याप्रपंचविषेभी सत्यरूपतासिद्धकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ पूर्वहमनें तुमारेप्रति जोयहमायासहित सर्वप्रपंच कल्पितरूपकरिकेवर्णनकऱ्याहै॥ सोयहप्रपंचभी वंध्यापुत्रकीन्याई अत्यन्तअसत्रूपनहीं है ॥ काहेतैं याप्रपंचकूं जोकदाचित् वंध्यापुत्रकीन्याई अत्यन्तअसत्मानिये ॥ तौ ताप्रपंचका सोअसत्तारूपधर्मभी किसप्रकारहोवैगा ॥ जिसवासते सोअसत्तारूपधर्मभी किसीधर्मीकेआश्रितहीरहैहै ॥ धर्मी तैंविना धर्मकीस्थितिसंभवैनहीं ॥ शंका हेभगवन् ॥ इसप्रकार जगत्की सत्यरूपताकेअंगीकारकि येहुएभी वंध्यापुत्रनरशृंगादिकअसत्यपदार्थोंविषे साआत्मदृष्टिकरणी संभवैनहीं ॥ यातैं सर्वत्रआत्मदृष्टिकरणी अत्यन्तदुर्घट है ॥

समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ असत्पदकाअर्थरूपकरिकेप्रसिद्धजेवस्तुहैं ॥ तिनोंविषेभी शास्त्रवेत्तापुरुषोंनें सत्रूपताहो कथनकरी है ॥ जैसे अनऽश्व यापदविषेस्थितजो अन् यहपदहै ॥ सोअन्पद अश्वकेअभावकूंकथनकरेनहीं ॥ किंतु जोभावरूपवस्तु अश्वतैंभिन्नहोवे है ॥ तथा ताअश्वकेसदृशहोवे है ॥ ताभावरूपवस्तुकूंही सोअनऽश्वपद कथनकरे है॥ तैसे नानाप्रकारकेकार्यकरणेविषेसमर्थजे प्रसिद्धसत्पदार्थ हैं॥ तिन सत्पदार्थों तें कार्यकरणेविषेअसमर्थतारूपकरिकेविलक्षण जेसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ तिनसूक्ष्मपदार्थोंकूंहो वेदवेत्तापुरुष असत् यानामक रिकेकथनकरे हैं ॥ और आत्माकीसत्ताकूंअंगीकारकरिके सत्यरूपतातो तिनसत्असत्रूप सर्वपदार्थोंविषे समानही है॥ यहवार्त्ता याआ त्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे कथनकरिआये हैं ॥ यातें आत्माकीसत्ताकूंअंगीकारकरिके यासर्वजगत्कूंसत्रूपमानणेविषे किंचित्भीहा निहोवेनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ यहकार्यप्रपंचसहितमाया ताआनंदस्वरूपआत्माविषेकल्पितहै॥यातें यहकार्यप्रपंचसहितजडमाया वास्तवतें ताआत्मादेवकास्वरूपनहीं है ॥ काहे तें यहकार्यप्रपंचसहितमाया आपणीसत्तातेंरहितहै ॥ किंतु जैसे कोईनिर्धनपुरुष दूसरेधनीपुरुषोंतें भूषणादिकपदार्थमांगिके आपणेदेहकोशोभाकरे है ॥ तैसे यहकार्यप्रपंचसहितमायाभी अधिष्ठानआत्माकीसत्ताकूंअंगीकारकरिके सत्रू पहुंईप्रतीतहोवे है ॥ शंका हेभगवन् ॥ यहकार्यप्रपंचसहितमाया जोआत्माकावास्तवस्वरूपनहींहोवे ॥ तौ ताआत्मादेवका कोनवास्तव स्वरूपहै ॥समाधान॥ हेदेवतावो सत्चित्आनंदस्वरूप तथासर्वकासाक्षीरूप तथास्वयंज्योतिरूप जोआत्मादेवकास्वरूप पूर्वहम कथनक रिआये हैं ॥ सोईही ताआत्मादेवकावास्तवस्वरूपहै ॥ हेदेवतावो ॥ सोआत्मादेवकास्वरूप सर्वदानित्यहै॥यातें आपणीसिद्धिविषे किसी दूसरेकीअपेक्षाकरेनहीं ॥ और तानित्यआत्मातेंभिन्न जितनाकीयहसर्वजगत्है ॥ सोसर्वजगत् जडहोणेतें आपणीसिद्धिविषे परकीअपेक्षा वालाहै ॥ याकारणतें यहसर्वजगत् अनित्यहै ॥ ऐसेअनित्यजगत्विषे नित्यरूपताकी संभावनाभी होवेनहीं ॥ यातें कोननित्यहै याप्रकार काजो मंदबुद्धिपुरुषोंकाप्रश्नहै सो व्यर्थही है ॥ हेदेवतावो ॥ ताचेतनआत्माकेबलतेंही याजडप्रपंचकीसिद्धिहोवे है ॥ ताचेतनआत्मा तैंबिना स्वभावतें याजडप्रपंचकीसिद्धिहोवेनहीं ॥ याकारणतें याजडप्रपंचविषे ताअनित्यरूपता स्पष्टहीप्रतीतहोवे है ॥ यातें यहजगत्

नित्यहै अथवा अनित्यहै याप्रकारकासंशय तुमोनें कदाचित्‌भीनहींकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहसर्वजगत् किसप्रकार ताआत्मा करिकेसिद्धहोवे है ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतेंरहित तथाअविद्यारूपमायानेंरहित जोबुद्धिकासाक्षीरूप आत्मा देवहै ॥ सोआत्मादेवही साक्षात् अथवा बुद्धिवृत्तिद्वारा सर्वजगत्काप्रकाशकरे है ॥ तहां बाह्यपदार्थोंकूंतो सोआत्मादेव चिदाभासयुक्त बुद्धिवृत्तिद्वारा प्रकाशकरे है ॥ और अंतर अज्ञानादिकपदार्थोंकूंतो सोआत्मादेव साक्षात्‌ही प्रकाशकरे है ॥ तथा सोआत्मादेव सर्वसंग तेंरहितहै ॥याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं नित्य सिद्ध यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ हमनें तुम्हारेप्रति जोयहआ त्मादेव उपदेशकऱ्याहै ॥ सोआत्मादेव तुमोनें निश्चयकऱ्याहै॥अथवा नहींकऱ्याहै ॥ यहवार्त्ता हमारेप्रति तुम कथनकरो ॥ हेशिष्य इस प्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनें तिनदेवतावोंकेप्रतिकह्या॥तभी तेदेवता पूर्वउपदेशतें चिदाभासकूंआत्मारूपमानिके ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देवता बोले ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वउपदेशविषे आपनें हमारेप्रति लौकिकव्यवहारोंतेंरहित तथामनवाणीकाअ विषय तथाबुद्धिउपाधिवाळा तथाअल्पपरिमाणवाळा ऐसाआत्मादेव कथनकऱ्याथा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारके तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रव णकरिके सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेभ्रांतिकोनिवृत्तिकरणेवासतै ताचिदाभासविषे नहींसंभवहोणेहारेधर्मोंकरिके ताआत्माकास्वरूप वर्ण नकरताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो ॥ पूर्वहमनें तुम्हारेप्रति अल्पपरिमाणवाळेआत्माका उपदेशनहींकऱ्याथा ॥ किंतु यासर्वज गत्कासाक्षीरूपकरिके ताआत्माकाउपदेशकऱ्याथा ॥ कैसाहैसोसाक्षीआत्मादेव ॥ नानाप्रकारकेविषयोंकरिकेकरीजाविशेषताहै ताविशे षतातेंरहितहैस्वरूपजिसका ॥ तथा तुम्हारेतेंआदिलेकेजितनेकप्रमाताहैं तिनप्रमातावोंकेसाथ अधिष्ठानतारूपकरिके तादात्म्यसंबंध वाळाहै॥तथा सुखदुःखादिकसर्वधर्मोंतेंरहितहै ॥ तथा अद्वितीयरूपहै॥तथासर्वतेंउत्कृष्टहै तथा सर्वसंघातोंकापालकहै ॥ तथा सर्वज्ञहै ॥ तथा सर्वभेदतेंरहितहोणेतें अनंतहै ॥ तहां ताआत्मादेवविषे जासर्वज्ञताहै सासर्वज्ञता कदाचित्क ज्ञ.नकरिकेनहीं है ॥ किंतु तीनकाळविषेवर्त्तमान स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकेही सासर्वज्ञताहै ॥ हेदेवतावो ॥ इत्यादिक आत्माकेवास्तवस्वरूपों तें जोता

आत्माविषे विपरीतरूपताप्रतीतहोवे है ॥ ताकेविषे यामायाकाकल्पितसंबंधही कारणहै ॥ यातैं याब्रह्मरूपआत्माका जोपूर्वस्वरूप वर्णन कर्‌याहै ॥ सोस्वरूपहीयथार्थहै ॥ हेदेवताओ ॥ जोआत्मादेव हमनैं तुम्हारेप्रति वर्णनकर्‌याहै ॥ तथा जोआत्मादेव हमनैं पूर्वतुम्हारेसैं पूछाया ॥ ताआत्मादेवतैंभिन्न किंचित्मात्रभी पदार्थ हैनहीं ॥ यातैं सोआत्मादेव तुमदेवतावोंका स्वरूपहीहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सो प्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरिके तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारपूछताभया ॥ हेदेवताओ ॥ याहमारेउपदेशतैं तुमोनैं स्वप्रकाशरूपअद्वितीयआत्मा देख्याहै अथवा नहींदेख्याहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारके ताप्रजापतिकेवचनकूंश्रवणकरिके तेदेवता द्वैतके अनुभवतैं ताआत्माकीस्वप्रकाशताविषे असंभावनाकरतेहुए ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन करतेभये ॥ देवताबोले ॥ हेभगवन् ॥ ताआत्मादेवकीस्वप्रकाशताही किसप्रकारसंभवैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिनदेवताओंकरिकेपूछाहुआ सोप्रजापति तिनदेवताओंके प्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवताओ ॥ यामायाकेस्वरूपकूंप्रकाशकरणेहारा जोआत्मादेवहै ॥ ताआत्मा देवविषे यहमाया स्थितहोवैनहीं॥जोकदाचित् यहमाया ताआत्मादेवविषेस्थितहोवैगी ॥ तो यहमाया ताआत्मादेवकरिके प्रकाशितनहीं होवैगी जैसेचक्षुविषेस्थितअंजन ताचक्षुकरिकेप्रकाशितहोवैनहीं॥यातैं यामायाकेअभावहोणेतैं याआत्मादेवविषे तामायाकृतद्वैततो संभवै नहीं॥और ताआत्मादेवतैंविना दूसराकोईप्रकाशकरणेहाराहैनहीं ॥ यातैं परिशेषतैं याआनंदस्वरूपआत्माविषेही स्वयंज्योतिरूपता सिद्ध होवे है ॥ हेदेवताओ ॥ इसप्रकार ताआत्मादेवकोस्वप्रकाशताकेबोधनकरणेवासतेही श्रुतिविषे अद्वितीयरूपता कथनकरीहै ॥ ता अद्वितीयरूपताकेकथनकरिकेही याआत्मादेवविषे मायारहितत्व तथास्वयंप्रकाशत्व सिद्धहोवे है ॥ हेदेवताओ जिसआत्मज्ञानदशाविषे यहद्वैतप्रपंच किंचितमात्रभीनहींरहेहै॥तिसआत्मज्ञानदशाविषे तुम्हाराही सर्वभेदतैंरहितस्वयंज्योतिआनंदस्वरूप बाकीरहेहै ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकार जभी ताप्रजापतिनैं तिनदेवताओंकेप्रति आत्माकोअद्वितीयस्वप्रकाशरूपता कथनकरी ॥ तभी तेदेवता आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करतेभये ॥ जोकदाचित् यहआत्मादेव अद्वितीयरूपहोवे तो रागादिकदोषोंकरिकेदुष्ट जोयहकार्यप्रपंचसहितमायाहै

तामायाकाभी ताआत्माकेस्वप्रकाशस्वरूपविषेही प्रवेशहोवेगा ॥ तासंगवान्मायाकेप्रवेशतैं सोआत्मादेवभी संगवान्होवेगा ॥ तासंगवान्आत्माविषे स्वप्रकाशतासंभवेनहीं याप्रकारकाविचारकरिके तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति पुनः याप्रकारकाप्रश्न करतेभये ॥ देवता बोले॥हेभगवन् याजडप्रपंचकेतादात्म्यसंबंधरूपसंगकरिकेयुक्तहुआ तथाहमद्रष्टापुरुषोंकेदृश्यभावकूंप्राप्तहुआ तथामायारूपउपाधिके संबंधतैं ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ जोयहआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवविषे असंगता तथास्वप्रकाशता संभवेनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाप्रश्न जभी तिनदेवतावों नैं ताप्रजापतिकेप्रतिकऱ्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया॥प्रजापतिरुवाच॥ हेदेवताओ ॥ तुम्हारेकूं जोआत्मा द्वैतसहितप्रतीतहोवे है ॥ सोकेवल अविद्यारूपमायाकेप्रभावतैंही प्रतीतहोवेहै ॥ वास्तवतैं ताआत्मा देवविषे सोद्वैतहैनहीं ॥ ऐसेअद्वितीयआत्माविषे जोद्वैतकादर्शनहै ॥ यहही मूढताकाचिह्नहै ॥ हेदेवताओ ॥ जोकदाचित् तुम्हारेस्वरूप विषे वास्तवतैं कोईभेदसंभवे तो द्रष्टाआत्माके तथादृश्यप्रपंचके तादात्म्यसंबंधतैं तास्वरूपविषे संग तथापरप्रकाशता संभवे॥ परंतु तुम्हारेवास्तवस्वरूपविषे किंचित्मात्रभीभेदहै नहीं ॥ किंतु तुमही सर्वद्वैतभावतैंरहित शुद्धआत्मास्वरूपहो ॥ तुम्हारेस्वरूपतैं भिन्न किंचित्मात्रभी यहद्वैतप्रपंचनहीं है ॥ याकारणते तुम स्वप्रकाशस्वरूपहो ॥ ऐसेतुम्हारेअद्वितीयआत्मास्वरूपविषे सोसंग तथापर प्रकाशता किसप्रकारहोवेगा ॥ यातेसोतुम्हाराअसंगआत्मा स्वप्रकाशरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिने तिन देवतावोंकेप्रति कह्या ॥ तभी तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देवता बोले ॥ हेभगवन् ॥ हमदेवता जैसे घटा दिकबाह्यपदार्थोंकूं संवित्रूपज्ञानका विषयरूपकरिकेजानें हैं ॥ तैसे प्रपंचभावकूंप्राप्तहुएआपणेआत्माकूंभी हम तासंवित्रूपज्ञानका विषयरूपकरिकेजानतेहैं ॥ यातैं हमारेविषे जोआपनें स्वप्रकाशरूपताकथनकरीहै सो संभवेनहीं ॥ हेभगवन् ॥ यहसर्वजगत्हैशरीर जिसका ऐसाजो ईश्वरहै ॥ सोईश्वरभी हमारेतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु सोईश्वर हमाराहीस्वरूपहै याकारणतैं हम अद्वितीयस्वरूपहैं ॥ और अद्वितीयरूपहोणेतैंही हम असंगरूपहैं ॥ ऐसेअद्वितीयअसंगरूपहुएभी हमदेवता सर्वप्रपंचरूपआपणेआत्माकूं तासंवित्रूपज्ञानक

विषयरूपकरिकेजानेहैं ॥ यातें अद्वितीयभावकेहुएभी विषयविषयीभावरूपभेदकी निवृत्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य इसप्रकार जभीतिनदेवता
वोंनें तांप्रजापतिकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदे
वतावो ॥ जितनेंकालपर्यंत ताआत्माकीअद्वितीयरूपता नहींप्रतीतहोवैहै ॥ तितनेंकालपर्यंतही कार्यसहितमायाकीस्थितिकरिके याद्वैत
कीप्रतीतिहोवैहै ॥ औरजिसकालविषे ताकार्यसहितमायाकूंनाशकरणेहारा अद्वितीयरूपताकाबोध उत्पन्नहोवै है॥तिसकालविषे तुमारे
अद्वितीयस्वरूपविषे तासंवित्रूपज्ञानकीविषयता संभवैनहीं॥हेशिष्य॥इसप्रकारके ताप्रजापतिकेवचनकूंश्रवणकरिके तेदेवता ताप्रजाप
तिकेप्रति पुनःयाप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देवताउवाच ॥ हेभगवन् ॥ यहअद्वितीयआत्मा तासंवित्रूपज्ञानकाविषयहै याअर्थकी
दृढताकरावणेहारीयुक्तिकूंतो हम जानतेनहीं ॥ परंतु अबपर्यंतभी हमदेवता ताप्रपंचरूपआत्माकूं तासंवित्रूपज्ञानकाविषयरूपकरिके
हीजानतेहैं ॥ स्वप्रकाशरूपताकरिके ताआत्माकूं हम जानतेनहीं ॥ यातें शास्त्रकेउपदेशका तथाहमारेअनुभवका महान्विरोधहोवैहै ॥
ताविरोधकीनिवृत्तिकरणेहारेआपही हमारा प्रमाणरूपहो ॥ जोअर्थ आप कथनकरोगे॥तिसीअर्थकूं हम निश्चयकरेंगे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्र
कारकावचन जभी तिनदेवतावोंनें ताप्रजापतिकेप्रति कह्या॥तभी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ प्रजा
पतिरुवाच॥हेदेवतावो॥तुमदेवता सर्वशास्त्रोंविषे अत्यंतकुशलहो॥तथा अत्यंतबुद्धिमान्हो ॥ ऐसेतुमबुद्धिमान् देवतावोंकूंभी जभी ताआ
त्माकीविषयताविषे कोईयुक्ति नहींप्रतीतहोती॥तभी दूसराकोनपुरुष ताअर्थविषेयुक्तिकहेगा ॥ किंतु ताआत्माकेविषयताकूंसिद्धकरणेहारो
कोईभीयुक्तिहैनहीं ॥ यातें ताआत्मादेवविषे अद्वितीयरूपताकरिके जोस्वप्रकाशरूपता पूर्वसिद्धकरीहै ॥ तास्वप्रकाशरूपताकूंहीतुमनि
श्चयकरो ॥ जोकदाचित् तास्वप्रकाशआत्माकूं तुमविषयतारूपकरिकेजानोगे ॥ तोतुमारेविषे अनात्मज्ञत्वकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेदेवतावो॥
जोकदाचित् आत्माका तथासंवित्रूपज्ञानका परस्पर वास्तवभेदहोता ॥ तो तिनदोनोंके विषय विषयीभावविषे तुमारेकूं कोईयुक्ति
स्फुरणहोती ॥ परंतु तास्वयंज्योतिअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्मादेवविषे तासंवित्रूपज्ञानकाभेदहैनहीं॥किंतु सोसंवित्रूपज्ञान आत्मा

स्वरूपही है ॥ याकारणतें तिनदोनोंकेविषयविषयीभावविषे तुमारेकूं कोईयुक्ति स्फुरणहुईनहीं॥यातें तास्वयंज्योतिअद्वितीयआत्माविषे
ताविषयताकाअभावही है ॥ हेदेवतावो॥जिसद्वैतप्रतीतिकेप्रथमक्षणविषे तथासमाधिकालविषे यहआत्मादेव अहं अस्मि याप्रकार प्रत्य
क्‌रूपकरिकेप्रतीतहोवै है॥तिसकालविषे वास्वयंज्योतिअद्वितीयआत्माविषे सोविषयविषयोभावरूपभेद किंचित्‌मात्रभीप्रतीतहोवैनहीं॥
जोकदाचित् सोभेद याआत्मादेवविषे वास्तवतैंहोता तो समाधिकालविषेभी सोभेदप्रतीतहोता ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ व्यवहारकेबलतें
याआत्मादेवविषे सोभेद सिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ताव्यवहारकेकारणरूप जोमनवाणीहै ॥ तामनवाणीतैंभी यहआत्मा
देवपरहै ॥ तथा तामनवाणोकाविषयरूपजोभेदहै ॥ तासर्वभेदतें यहआत्मादेव रहितहै ॥ याकारणतें यहस्वयंज्योतिआत्मादेव किसोभी
व्यवहारकाविषयहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ऐसेमनवाणीकेअविषयआत्मादेवका उपदेशहोनहींसंभवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥
सोस्वयंज्योतिअद्वितीयआत्मा मनवाणीकाअविषयहै ॥ याकारणतैंहो ब्रह्मवेत्तागुरु आपणेशिष्योंकेप्रति मौनरूपतैंही याआत्मादेवकाउप
देशकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ सत्‌शब्दकाअर्थरूपजो स्थूलप्रपंचहै॥तथा असत्‌शब्दकाअर्थरूपजो सूक्ष्मप्रपंचहै ॥ तास्थूलसूक्ष्मप्रपंचविषेही
वाणीको तथामनकी प्रवृत्तिहोवै है ॥ और यहआत्मादेव तास्थूलसूक्ष्मजगत्‌तैंरहितहै ॥ यातें याआत्मादेवविषे तामनवाणीकीप्रवृत्ति
संभवैनहीं ॥ अब कारणादिकतीनअवस्थावों तैं आत्माकोभिन्नरूपतास्पष्टप्रकरणेवासते प्रथम अधिदेवादिरूपकरिके तिनअवस्थावों
विषे व्यवहारकीविषयताका निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहकारणशरीररूपअविद्या स्वभावतैंतुच्छरूपहुईभी याजगत्‌रूपकार्यकूं
उत्पन्नकरतीहुई सत्यकीन्याई प्रतीतहोवैहै ॥ और साअविद्या आपणीसत्तातैंरहितहुईभी ताआत्माकूंआश्रयणकरिके सत्ताकूंप्राप्तहोवै है ॥
तासत्ताकूंप्राप्तहोइके साअविद्या नानाप्रकारकेकार्योंकूंकरेहै॥ याकारणतैंही साअविद्या नानाप्रकारकेव्यवहारोंकेयोग्यहोवैहै॥और ताअवि
द्याविषेप्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहुआ चेतनआत्मा ईश्वर यानामकरिकेकह्याजावै है ॥ सोईहीईश्वरआत्मा जभी आपणेसंकल्पकरिके प्राण
बुद्धिआदिकउपाधियोंवालाहोवै है ॥ तभी जीव यानामकरिकेकह्याजावै है ॥ तहां प्रथमकार्यरूपकरिकेप्रसिद्ध जोसमष्टिसूक्ष्मकाअभि

मानी हिरण्यगर्भनामाजीव है ॥ सोहिरण्यगर्भनामाजीव स्वतःसिद्धज्ञानवालाहै ॥ तथा अनंतशक्तिवालाहै ॥ यातें सोहिरण्यगर्भनामाजी
वही ईश्वर यानामकरिकेकह्याजावे है ॥ तथा सोहिरण्यगर्भभगवानही समष्टिस्थूलउपाधिवालाहुआ विराट् यानामकरिकेकह्याजावे है ॥
हेदेवतावो ॥ जैसे समष्टिरूप कारण सूक्ष्म स्थूल यातीनउपाधियोंकेसंबंधतें सोआत्मादेव ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट् यातीननामोंकरिकेक
ह्याजावे है ॥ तैसे व्यष्टिरूप कारण सूक्ष्म स्थूल यातीनउपाधियोंकेसंबंधतें सोआत्मादेव प्राज्ञ तेजस विश्व यातीननामोंकरिकेकह्याजावै
है ॥ हेदेवतावो ॥ इसप्रकार सोचेतनआत्मादेवही सुषुप्तिआदिकअवस्थावोंकूं प्राप्तहुआ जीव यानामकरिकेकह्याजावे है ॥ याकारणतें
ईश्वर हिरण्यगर्भादिकसर्वेशब्द तापकचेतनआत्माविषेही वर्तेहै ॥ हेदेवतावो ॥ इसप्रकार सर्वव्यवहारोंकीसिद्धिकरणेहारी जेतीनअव
स्थाहैं ॥ तिनतीनोंअवस्थाओं तैंरहित तथामनवाणीकाअविषय जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माहै॥सोआत्मादेव तुरीय यानामकरिके
कह्याजावे है ॥ हेदेवतावो ॥ताआत्मादेवविषे जोतुरीयरूपकरिकेव्यवहारहोवे है ॥ सोव्यवहारभी तीनअवस्थावोंकरिकेनिरूपित
कल्पितभेदकीअपेक्षाकरिकेहीहोवे है ॥ स्वभावतें ताआत्मादेवविषे सोतुरीयव्यवहारभी संभवेनहीं ॥ शंका हेभगवन् ॥ सोआत्मा
देव जोकिसीभी व्यवहारकाविषयनहींहोवे है ॥ तो आपनें हमारेप्रति ताआत्माकाउपदेशही किसप्रकारकऱ्याहै समाधान ॥
हेदेवतावो मनवाणीकाअविषय जोआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवविषे तुरीयत्वधर्मकीन्याई कोईकधर्मोकाआरोपणकरिकेही
हमनें तुमारेप्रति ताआत्मादेवकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तिनधर्मोंकेआरोपणतैंविना केवलनिर्गुणआत्माकेउपदेशकरणेविषे हमभी सम
र्थनहीं हैं हेशिष्य ॥ तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकार आत्माकाउपदेशकरिके सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति पुनः याप्रकारका
वचनकहताभया हेदेवतावो ॥ जिसआत्माका हमनें तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ सोआत्मा तुमने जान्याहै अथवा नहींजान्या
है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारके ताप्रजापतिकेवचनकूंश्रवणकरिके तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हे
भगवन् ॥ हमाशिष्योंसैं आत्माकास्वरूपपूछणेहारेजो आपगुरुहो ॥ ताआपगुरुवोंकेप्रति ताआत्माकास्वरूप यद्यपि हमारेकूं

अवश्यकरिकेकहणेयोग्यहै ॥ तथापि ताआत्मादेवविषे ज्ञातत्व तथाअज्ञातत्व यहदोनोंधर्म संभवतेनहीं ॥ यातें तिनदोनोंधर्मोंविषे किस धर्मविशिष्टआत्माकूं हम आपकेप्रति कथनकरें ॥ हेभगवन् आपनें हमारेप्रति जिसआत्मादेवकाउपदेशकऱ्याहै ॥ सोआत्मादेव ज्ञानके विषयरूपविदितपदार्थों तें तथाज्ञानकेअविषयरूपअविदितपदार्थों तें अत्यंतविलक्षणहै ॥ यातें ताआत्माकास्वरूप हम याप्रकारसेंकथ नकरें हैं ॥ सोआत्मादेव ज्ञातहुआभी अविषयहोणेतें अज्ञातकीन्याई वर्तें है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तिनदेवतावोंनें त्वंपदार्थरूप करिके ताआत्मादेवके यथार्थस्वरूपकूंजान्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति तिसीत्वंपदार्थरूपआत्माका तत्पदार्थरूपकरिके उपदेशकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति पूर्वअनेकवार ताआत्माकाउपदेशकरिआयाहै ॥ यातें पुनःपुनः तिसीआत्माकेउपदेशकरणेविषे ताप्रजापतिकूं पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य यहआत्मादेव अत्यंतदु र्विज्ञेयहै॥यातें शिष्योंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरणेविषेप्रवृत्तहुए जेब्रह्मवेत्तागुरु हैं तेब्रह्मवेत्तागुरु जभी तिनशिष्योंकेप्रति ताआत्मादेवका वारंवार उपदेशकरे हैं ॥ तभी ताउपदेशकरिके तिनशिष्योंके विपरीतभावनारूप तथादुर्वासनारूप प्रतिबंधककीनिवृत्तिहोवे है ॥ ताप्रतिबंधककीनिवृत्तितें अनंतर तिनशिष्योंकूं दृढआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवे है ॥ यातें ताआत्मादेवके पुनःपुनः उपदेशकरणेविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ फलतैंरहित सुविज्ञेयवस्तुके पुनः पुनः उपदेशकरणेविषेही सोपुनरुक्तिदोष प्राप्तहोवे है ॥ याप्रकारकेफ लकूंविचारकरिके सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति पुनः पुनः ताआत्मादेवकाउपदेशकरताभया है ॥ और जैसे पुनः पुनः आत्माकाउप देश तिनदुर्वासनावोंकेनिवृत्तिकाकारणहोवे है ॥ तैसे चारिपादोंवालेप्रणवकरिके ताआत्माकाचिंतनभी तिनदुर्वासनावोंकेनिवृत्तिकाका रणहोवे है ॥ याप्रकारकाविचारकरिके सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो ॥ अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारिपादोंवालेप्रणवविषे विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय याअध्यात्मरूपचारिपादोंकरिके अथवा विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वर परमात्मा याअधिदैवरूपचारिपादोंकरिके तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआ जोआत्मादेवहै ऐसेप्रणव

रूपआत्मादेवका जभी तुमध्यानकरोगे तभी तुमारी कोईभीदुर्वासना रहेगीनहीं ॥ किंतु तेसर्वदुर्वासना नाशकूंप्राप्तहोवेंगी ॥ हेदेवतावो ॥ ताआत्मज्ञानकरिके जभी तुमारीदुर्वासना नाशकूंप्राप्तहोवेंगी ॥ तभीही तुम ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवोगे ॥ ताब्रह्मभावकीप्राप्तिकरिके तुमारेकूं पुनःसंसारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवेगीनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ जिसआत्मादेवकूं तुम अहंशब्दकरिकेकथनकरोहो ॥ सोत्वंपदार्थरूपआत्मा तत्पदार्थब्रह्मरूपहीहै ॥ और जोतत्पदार्थरूपब्रह्महै ॥ सोसत्यब्रह्म त्वंपदार्थरूपआत्मातें भिन्ननहीं है ॥ किंतु सोतत्पदार्थरूपब्रह्म त्वंपदार्थरूपआत्मातें अभिन्नहीहै ॥ इसप्रकार तत्पदार्थरूपब्रह्मकूं तथात्वंपदार्थरूपआत्माकूं परस्पर अभिन्नरूपकरिके तुम जानो ॥ ताजीवब्रह्मकेअभेदविषे तुमोनें किंचित्मात्रभीसंशयकरणानहीं ॥ हेदेवतावो ॥ जोप्रणवरूप तथासत्यब्रह्मरूप आत्मा हमनें तुमारेप्रति महावाक्यकाअर्थरूपकरिके वर्णनकर्‍याहै ॥ ताब्रह्मरूपआत्माकूं सूक्ष्मबुद्धिवालेपुरुषही आपणाआत्मारूपकरिके जानेहैं ॥ स्थूलबुद्धिवालेपुरुष ताआत्मादेवकूं जानिसकतेनहीं ॥ कैसाहैसोआत्मादेव ॥ आकाशादिकपंचभूतोंके यथाक्रमतें जे शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचगुणहैं ॥ तिनपंचगुणोंतेंरहितहै ॥ और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंके तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंके जेशब्दादिकविषयहैं तथानानाप्रकारकेव्यापारहैं ॥ तिनसर्वोतेंरहितहै॥तथा मनबुद्धिप्राणआदिकोंकेव्यापारोंतेंरहितहै ॥ तथा इंद्रिय मन बुद्धि प्राण पंचमहाभूत भौतिकपदार्थ माया इत्यादिकसर्वोतें रहितहै ॥ तथा सर्वधर्मोतेंरहितहै ॥ हेदेवतावो ॥ तुमारेप्रति जोहमनें यहसत्चित्आनंदस्वरूपआत्मा पूर्वउपदेशकर्‍याहै ॥ सोआत्मादेव यद्यपि स्वप्रकाशहै ॥ तथापि सोआत्मादेव उपनिषद्‌रूपवेदांतोंविषेही प्रतिपादनकर्‍याजावे है ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं औपनिषद यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मादेव स्वप्रकाशरूपहै॥यातें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सुविभात यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और यहआत्मादेव ब्रह्मज्ञानतें एकवारही आवरणतेंरहितहुआ प्रतीतहोवेहै ॥ पुनःताअज्ञानरूपआवरणकीउत्पत्तिहोवेनहीं॥याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सकृद्विभात यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और यहआत्मादेव अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानोंविषे प्रतिबिंबरूपकरिके पुनःपुनःप्रतीतहोवेहै ॥ याकार

णतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सर्वतःपुरतोविभात यानामकरिकेकथनकरैहैं ॥ हेदेवतावो ॥ इत्यादिकसर्वगुणोंकरिकेयुक्त जोअद्विती
यआत्माहै ॥ ताअद्वितीयआत्माकूं तुमदेवता तत्त्वंपदार्थका परस्परअभेदरूपकरिकेसाक्षात्कारकरो ॥ हेशिष्य ॥ सोप्रजापतिभगवान्
तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकार आत्माकाउपदेशकरिके तिनदेवतावोंसैं पुनःयाप्रकारपूछताभया ॥ हेदेवतावो ॥ हमनैं तुमारेप्रति जोआ
त्मा उपदेशकऱ्याहै ॥ सोआत्मादेव तुमोंनैं साक्षात्कारकऱ्याहै अथवा नहींकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी ताप्रजापतिनैं तिन
देवतावोंसैंपूछा ॥ तभीतेदेवता पूर्वकोन्याई पुनः विदितअविदितपदार्थोंतैंविलक्षणरूपकरिके ताआत्माकास्वरूप कथनकरतेभये ॥
तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिके सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेबुद्धिकोपरीक्षाकरणेवासते तिनदेवतावोंसैं याप्रकारपूछताभया ॥ हेदेव
तावो ॥ पूर्वहमनैं तुमारेप्रति आनंदस्वरूपआत्माकास्वरूपभूत जोअनुभूति उपदेशकरीहै ॥ तास्वप्रकाशरूपअनुभूति किसआधारविषे
स्थितहोवे है ॥ सोआधार तुम हमारेप्रतिकहो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंसैंपूछा ॥ तभी तेदेवता ताप्रजा
पतिकेप्रति याप्रकारकाउत्तर देतेभये ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनैं हमारेप्रति आधारतैंरहितआत्माकाउपदेशकऱ्याथा ॥ जभी तिसअनु
भूतिरूपआत्माकाआधार हमारेसैं आप किसवासतेपूछतेहो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी तिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिकेप्रति
कथनकऱ्या तभी सोप्रजापति पुनः तिनदेवतावोंकीपरीक्षाकरणेवासते याप्रकार तिनदेवतावोंसैंपूछताभया ॥ हेदेवतावो॥पूर्वहमनैं तुमारे
प्रति जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्मा उपदेशकऱ्याहै॥ताज्ञातहुएआत्मादेवकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं कौनफलकीप्राप्तिहो
वैहै॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंसैंपूछा ॥ तभी तेदेवता ताप्रजापतिगुरुकेप्रति याप्रकारकाउत्तरकहतेभये ॥
हेभगवन् ॥ सोज्ञातआत्मा आपहीफलरूपहै॥तिसज्ञातआत्माका दूसराकोईफलहैनहीं ॥ जैसे याळोकविषे फलअवस्थाकूंप्राप्तहुएजेआ
म्रादिकवृक्षहैं ॥ तिनफलीभूतआम्रादिकवृक्षोंतैं दूसराकोईफल उत्पन्नहुआदेखणेविषेआवतानहीं॥किंतु अंकुरपुष्पादिकअवस्थावाळेआम्रा
दिकवृक्षोंतैंही फलकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे ताफलरूपज्ञातआत्मातैं दूसराकोईफल उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु सोज्ञातआत्मा आपहीफल

रूपहै॥हेशिष्य ॥ इसप्रकारके तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति पुनः तिनदेवतावोंकेज्ञानकोपरीक्षाकरणेवासतै याप्रकारका
वचन तिनदेवतावोंकेप्रति कहताभया ॥ हेदेवतावो ॥ अत्यन्तआश्चर्यरूपजामायाहै॥तामायाकूंभी ब्रह्मरूपताकरिकै तुमसत्तादेणेहारेहो ॥
याकारणतैं तुमदेवता अत्यन्तआश्चर्यरूपहो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंकेप्रतिकह्या ॥ तभी तेदेव
ता प्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ यालोकविषे जितनैंकोपदार्थ हैं ॥ तेसर्वपदार्थ ब्रह्मरूपकरिकै ताआश्चर्य
रूपमायाकूं सत्ताकोप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ यातैं तेसर्वपदार्थ आश्चर्यरूपहैं ॥ केवलहमदेवतावोंविषे ही नियमकरिकै ताआश्चर्यरूपताकहणी
संभवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारके तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥
हेदेवतावो ॥ घटादिकदृश्यपदार्थोंकूंभी ब्रह्मरूपताकरिकै जभी तुमोनें आश्चर्यरूपकरिकैजान्या ॥तभी सोआश्चर्यरूपवालाब्रह्म तिनघटा
दिकपदार्थोंकीन्याई इदंतारूपकरिकैभी तुमोनें जान्याहै यहअर्थतुमारेकहणेतैंसिद्धहोवै है ॥ यातैं ताॐकाररूपप्रणवकेअनुसंधानपूर्वक
सोप्रत्यक्आत्मादेव हमोनें जान्याहै याप्रकारकावचन तुम किसवासतेनहींकहते ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकेताप्रजापतिकेवचनकूं श्रवणक
रिकै तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ सर्वत्रव्यापक जोएकअद्वितीयआत्माहै ॥सोआत्मादेव किसी
इंद्रियादिकोंकाविषयहैनहीं ॥ यातैं सोआत्मादेव ज्ञातभीकह्याजावैनहीं ॥ और यहआत्मादेव अस्तिरूपकरिकै सर्वत्रप्रतीतहोवै है ॥यातैं
सोआत्मादेव अज्ञातभीकह्याजावैनहीं ॥ और ज्ञातत्व अज्ञातत्व यहदोनोंधर्म परस्परविरोधीहोणेतैं एकअधिकरणविषैरहैनहीं ॥ यातैं
यहआत्मादेव ज्ञातत्व अज्ञातत्व यादोनोंधर्मोंवालाभी कह्याजावैनहीं ॥ यातैं हमदेवता ज्ञातरूपकरिकै तथाअज्ञातरूपकरिकै तथादोनों
रूपोंकरिकै ताआत्मादेवकेकहणेविषे किसप्रकार समर्थहोवैंगे ॥ याकारणतैंही याअसमानाधिकरण्यकरिकै सर्वपदार्थोंविषे हमोनें
ब्रह्मरूपताकथनकरीहै ॥ ताकरिकै याआत्मादेवकेप्रत्यक्रूपताकीहानिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारके तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवण
करिकै सोप्रजापतितिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो ॥ जोतुमारेकूं इसप्रकार आत्माकास्वरूपनिश्चयहुआ

है ॥ तो तुमदेवता यहआत्मादेव हमारेकूं आपणेअनुभवकरिकेसिद्धहै याप्रकारकावचन हमारेप्रतिकहो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारके ता ब्रह्माकेवचनकूंश्रवणकरिके तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ आपगुरुवोंकीकृपातैंहमदेवता ताआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकूं प्रत्यक्षरूपकरिकेजानते हैं ॥ विषयविषयीभावरूपभेदकरिके ताआत्मादेवकूं हमजानतेनहीं ॥ यातें ता आत्मादेवविषे विषयतारूपकीप्राप्तिकरणेहारेजेविशेषणहैं ॥ ताआत्माकेविशेषणोंकेकहणेविषे हमदेवताकिसप्रकार समर्थहोवेंगे ॥ किंतु नहींसमर्थहोवेंगे ॥ हेसर्वलोकोंकेपितामह प्रजापतिगुरु ॥ आपगुरुवोंकेतांई हमदेवतावोंका वारम्वार नमस्कारहोवे ॥ हेभगवन् ॥ सर्व जगत्केईश्वरआप सर्वज्ञहुएभी अज्ञानीकेसमानहोइके जोहमारेसें वारम्वार पूछतेहो॥सोकेवल हमारेज्ञानकीपरीक्षाकरणेवासते पूछतेहो॥ दूसराकोईपूछणेकाकारणनहीं है ॥ हेभगवन् ॥ आपनें ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिके हमारेकूं कृतार्थकन्याहै ॥ यातें अभीआप हमारोपरो क्षमतकरो ॥ हेभगवन् ॥ सत्चित्आनंदस्वरूपआत्माकोप्राप्तिकरणेहारेजोआपहो ॥ तिसआपकेतांई हमारा वारम्वार नमस्कारहोवे ॥ हेभगवन् ॥ हमशिष्योंऊपर आपगुरु सर्वदाप्रसन्नहोवो ॥ आपकीप्रसन्नताकरिकेही हमारेकूं दुर्लभआत्मादेवकीप्राप्तिहुई है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तिनदेवतावों नें आपणेकृतकृत्यभावकेबोधकवचनकहे ॥ तभी तिनदेवतावोंकेवचनोंकूंश्रवणकरिकेभी सोप्रजापति तिन देवतावोंकेज्ञानकीदृढताकरणेवासते तिनदेवतावोंकीपरीक्षाकरताहुआ पुनः याप्रकारकावचन कहताभया हेदेवतावो ॥ तुमोनें हमारेप्रति वारम्वार नमस्कारकन्या है ॥ तथा प्रार्थनाकरीहै तानमस्कारकरिके तथाप्रार्थनाकरिके तुमारेऊपर हमारीबहुतप्रसन्नताहुई है॥यातें हमा रेप्रति पुनःपुनः प्रश्नकरणेविषे तुमोनें किंचित्मात्रभीभयकरणानहीं ॥ हेदेवतावो जोतुमारेहृदयविषे किंचित्मात्रभीसंशयहोवे ॥ तो तुम हमारेसेंप्रश्नकरो ॥ तातुमारेसर्वसंशयकूं हम छेदनकरेंगे ॥ याअर्थविषे तुमों नें किंचित्मात्रभी संशयकरणानहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनें तिनदेवतावोंके प्रति कह्या ॥ तभी तेदेवता ताप्रजापतिगुरुकेप्राति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ सर्वकालविषे सिद्धहैस्वरूपजिसका ऐसाजोआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवकेवर्णनकेप्रसंगविषे साध्यतारूपकरिके

तासिद्धआत्मातैंविलक्षणजो अनुजानीथं याप्रकारकीअनुज्ञा आपनें कथनकरी है ॥ साअनुज्ञा हमारेकूं असंगतप्रतीतहोवे है ॥ याकार
णतैंही हमदेवतावोंकूं तापूर्वउक्तअर्थविषे संशयहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी तिनदेवतावोंनें ताप्रजापतिकेप्रतिकह्या॥तभी
सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो ॥ तानित्यसिद्धआत्मादेवकेवर्णनकेप्रसंगविषे हमनें तुमारे
प्रति साध्यरूपअनुज्ञा कथननहींकरी ॥ किंतु अद्वैतआत्मारूपअनुज्ञाही हमनें तुमारेप्रति कथनकरी है ॥ काहेतें द्वैतप्रपंचकेविस्मरणक
रणेवासते ज्ञातिरूपप्रणवकीअवस्थाकावाच्यार्थभूत अनुज्ञारूपआत्माही याअधिकारीपुरुषोंकूं चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ याप्रकारकाअर्थ
हमनें तुमारेप्रति कथनकर्‍याहै ॥हेशिष्य ॥इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनें तिनदेवतावोंकेप्रति कह्या ॥ तभी तेदेवता दूसरोकिसी
प्रकारतें ताप्रजापतिगुरुकेउपकारकीनिवृत्तिनहींदेखतेहुए पूर्वकीन्याईं नमस्कारकरिके ताप्रजापतिकेप्रति आपणाआत्माही अर्पणकरते
भये ॥तथा हेभगवन्॥हमारेऊपरप्रसन्नहोवो याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेभये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार पूर्व सोप्रजापतिनामाब्रह्मा तिनदेवतावों
केप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश करताभयाहै ॥ जिसब्रह्मविद्याविषे तैं ज्ञानवान्शिष्यकूंभी उत्कटजिज्ञासाहोतीभई है ॥हेशिष्य॥यासंसाररूप
शूलका मूलरूपजोअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकूंनाशकरणेहारा यहआत्मज्ञान हमनें तुमारेप्रति कथनकर्‍याहै ॥ जोआत्मज्ञान तैं श्रद्धावान्शि
ष्यनें याअष्टादशेअध्यायकेआदिविषे हमारेसैंपूछाथा ॥ अब पूर्वग्रंथविषे विस्तारतैंकथनकर्‍याजोअर्थ ताअर्थकूं संक्षेपतैंकथनकरे हैं॥
हेशिष्य॥हमनें तुमारेप्रति पूर्वग्रंथविषे जोअर्थ विस्तारतैंकथनकर्‍याहै ॥ तिसोअर्थकूं तूंअभी संक्षेपतैंश्रवणकर ॥ अहंअज्ञः याप्रकारकेअ
नुभवकाविषय जाअज्ञानरूपमायाहै ॥ताअज्ञानरूपमायाकूं वेदवेत्तापुरुष कारणशरीर यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ ताकारणशरीररूपमा
यातैं सूक्ष्मशरीर स्थूलशरीर याभेदकरिके दोप्रकारकादृश्यप्रपंच उत्पन्नहोवे है॥ कैसाहैसोदृश्यप्रपंच ॥ भूतभौतिकरूपहै ॥ तथा अधिदेव
अध्यात्म अधिभूत स्वरूपहै ॥ तहां याग्रत्प्रपंचकानाम स्थूलहै॥ओर स्वप्नप्रपंचकानाम सूक्ष्महै॥ओर मायारूपअविद्याकानाम सुषुप्तिहै॥
ते स्थूल सूक्ष्म कारण यहतीनोंशरीर याअधिकारीपुरुषों नें परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ हेशिष्य ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनों तैं परेजो

वस्तुहै ॥ तावस्तुकूं वेदवेत्तापुरुष तुरीय यानामकरिकेकथनकरे हैं॥सोतुरीयभी ओत अनुज्ञाता अनुज्ञा अविकल्प याभेदकरिकेचारप्रकारकाहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ अधिदेवरूपसाक्षीआत्माको यहओतादिकचारअवस्थाहैं ॥ तिनओतादिकअवस्थावोंकीप्राप्तिविषे स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकाअभिमान प्रतिबंधकहै॥तादेहाभिमानकीनिवृत्तिहुए यहविद्वान्पुरुष समाधितैंव्युत्थानकालविषे बाह्यअंतरविश्वकूं ब्रह्मरूपकरिकेअनुभवकरे है ॥ तिसव्युत्थानकालविषे तासर्वविश्वकूंप्रकाशकरनेहाराजोचेतन्यहै ॥ ताचेतन्यकूं वेदवेत्तापुरुष ओत यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और ध्याता ध्यान ध्येय यात्रिपुटीकरिकेयुक्त जोसविकल्पसमाधिहै॥ तासविकल्पसमाधिविषेस्थितहुआ यहविद्वान्पुरुष यासर्वविश्वकूं ब्रह्मरूपकरिकेदेखे है ॥ तिससविकल्पसमाधिकालविषे जोचेतन्य यासर्वविश्वकूं सत्ताकीप्राप्तिकरे है ॥ ताचेतन्यकूं वेदवेत्तापुरुष अनुज्ञाता यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और जिसनिर्विकल्पसमाधिविषे स्थितहुआ यहविद्वान्पुरुष ध्याता ध्यान ध्येय इत्यादिकसर्वत्रिपुटीकापरित्यागकरिके सर्वजगत्केसत्ताकूंआकर्षणकरनेहारे जिसचेतन्यरूपआत्माकूं अनुभवकरे है ॥ ताचेतन्यस्वरूपआत्माकूं वेदवेत्तापुरुष अनुज्ञा यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ और जिसकालविषे ब्रह्मज्ञानरूपअग्निकरिके यासंसारदुःखरूपशूलका मूलभूतअज्ञान नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ तथा मनवाणीकाअविषयरूप जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माहै ॥ ताअद्वितीयआत्माकूं यहविद्वान्पुरुष अविषयतारूपकरिकेदेखताहुआभी विषयतारूपकरिकेदेखतानहीं ॥ तथा यहमेंहूं यहदूसराहै इत्यादिकभेदकूंदेखता नहीं ॥ तथा ताभेदकेअभावकूंभी देखतानहीं ॥ तथा मैंजीवताहूं मैंमर्याहूं इत्यादिक विशेषोंकूंभी देखतानहीं ॥ तिसकालविषेस्थित चेतन्यस्वरूपआत्माकूं वेदवेत्तापुरुष अविकल्प यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति यहतीनोंअवस्था भेददोषकरिकेयुक्तहैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषकूं तेजाग्रतादिकअवस्था परित्यागकरनेयोग्यहैं॥तैसे यातुरीयआत्माके ओत अनुज्ञाता अनुज्ञा यहतीनरूपभी ताभेदरूपदोषकरिकेयुक्तहैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषकूं तेओतादिकतीनरूपभी परित्यागकरनेयोग्यहैं ॥ और यातुरीयआत्माका जोचतुर्थ अविकल्पस्वरूपहै ॥ सोअविकल्पस्वरूप मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा द्वैतप्रपंचतैंरहित आनंद

स्वरूपहै॥तथा याशरीररूपद्वारवतीपुरीविषेस्थितहै ॥ तथा सर्वआश्रयों तैंरहितहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै॥तथा मायातैंरहितस्वयंज्यो
तिरूपहै ॥ तथा सर्वप्राणियोंकेहृदयकमलविषे सर्वदा साक्षीरूपकरिकेभासमानहै ॥ ऐसेअविकल्पस्वरूपआत्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष
घटादिकदृश्यपदार्थोंकीन्याई इदंतारूपकरिकेनहींदेखताहुआ अहंअस्मि याप्रकार प्रत्यकरूपकरिकेदेखे ॥ यहही परमफलरूपज्ञानका
स्वरूपहै ॥ और याअविकल्परूपआत्माकाज्ञानहीं याशास्त्रकाप्रयोजन है ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम ताअविकल्पआ
त्माकेज्ञानविषे असंभावनाकूं दृष्टांतकरिके निवृत्तकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे आकाशविषे गंधर्वनगर कल्पितहोवे है ॥ तैसे याआनंदस्व
रूपआत्माविषे यहमायादिकद्वैतप्रपंचभी कल्पितहै ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे निरवयव आकाशका कल्पितजोकोईएकदेशहै ॥ ताएक
देशविषे आकाशकेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं सागंधर्वनगरकोकल्पना होवे है ॥ तैसे वास्तवतैंनिरवयवआत्माका कल्पितजोकोईएकदे
शहै ॥ ताएकदेशविषे ताआत्माकेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं सामायादिकप्रपंचकीकल्पना होवे है ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे ताआकाश
केवास्तवस्वरूपकेज्ञानतैं सोगंधर्वनगर लयभावकूंप्राप्तहोवेहै॥तैसेताआत्माकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानतैं यहदृश्यप्रपंचलयभावकूंप्राप्तहोवे है॥
और हेशिष्य॥जैसे ताआकाशकेज्ञानतैं केवलगंधर्वनगरकोहीनिवृत्तिहोवेनहीं॥किंतु तागंधर्वनगरकाकारणरूपजोअज्ञानहैताअज्ञानकीभी
निवृत्तिहोवे है ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतैं केवल याकार्यप्रपंचकीही निवृत्तिहोवेनहीं ॥ किंतु याकार्यप्रपंचकाकारणरूपजोअ
ज्ञानहै ताअज्ञानकीभी निवृत्तिहोवे है ॥ और हेशिष्य ॥ अपरोक्षभ्रमकीनिवृत्तिकरणेवासते अधिष्ठानकाअपरोक्षज्ञानहीं अपेक्षितहोवे है ॥
परोक्षज्ञानकरिके अपरोक्षभ्रमकीनिवृत्तिहोवेनहीं ॥ जैसे पूर्वादिकदिशावोंविषे जोपश्चिमादिकदिशावोंकाभ्रमहोवे है ॥ ताअपरोक्षभ्रमकी
पूर्वादिकदिशावोंकेपरोक्षज्ञानतैं निवृत्तिहोवेनहीं ॥ किंतु तिनपूर्वादिकदिशावोंकेअपरोक्षज्ञानतैंही ताअपरोक्षभ्रमकीनिवृत्तिहोवे है ॥ तैसे
याआत्मादेवकेपरोक्षज्ञानतैं याअपरोक्षरूपसंसारभ्रमकीनिवृत्तिहोवेनहीं ॥ किंतु याआत्मादेवकेअपरोक्षज्ञानतैंही यासंसारभ्रमकीनिवृत्ति
होवे है ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष निद्रादोषकेवशतैं अनेकप्रकारकाहुआ प्रतीतहोवे है ॥ तैसे यहएकहीआ

त्मादेव आपणेस्वरूपकेअज्ञानतें अनेकप्रकारकाहुआ प्रतीतहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे मध्याह्नकेसूर्यविषे अंधकारकीस्थिति संभवेनहीं ॥ तैसे भासमानस्वयंज्योतिआत्माविषे याअज्ञानकीस्थिति संभवेनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यहमाया अत्यंतदुर्घटहै ॥ तथा दुस्तरहै ॥ तथा याजीवोंकूं अत्यंतदुःखकीप्राप्तिकरणेहारी है ॥ तथा यासंसाररूपवृक्षकीजननी है ऐसीमायाकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अघटितघटनापटीयसी यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ ताआपणेस्वभावकेबलतेंही यहमाया तास्वयंज्योतिआत्माविषेस्थितहोवे है ॥ हेशिष्य॥ जैसे यालोकविषे वृश्चिकी आपणेगर्भतेंनाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे सर्वभेदतेंरहितयाआनंदस्वरूपआत्माकूंविषयकरणेहारा जोमहावाक्यजन्य अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानहै ॥ ताज्ञानरूपगर्भतेंही यहमायारूपवृश्चिकी नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ यहअविद्यारूपमाया आनंदस्वरूपसाक्षीआत्मातें कदाचित्‌भी भयकूंप्राप्तहोतीनहीं ॥ किंतु महावाक्यतेंउत्पन्नभई जोअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ तावृत्तिविषेस्थित तासाक्षीआत्माकेप्रतिबिंबतेंही यहमाया सर्वदा भयकूंप्राप्तहोवे है॥तात्पर्ययह॥ जैसे काष्ठोंकूंप्रकाशकरणेहाराभी अग्नि कुठारादिरूपलोहविषेस्थितहोइके तिनकाष्ठोंकूंभेदनकरे है ॥ तैसे यहआत्मादेव आपणेसाक्षीरूपकरिके तामायाकाबाधकहुआभी महावाक्यजन्यअंतःकरणकीवृत्तिविषेस्थितहोइके तामायाकाबाधकहोवे है ॥ याकारणतेंही वेदवेत्तापुरुषों नें याअनादिमायाकेनाशकरणेवास्ते एक महावाक्यजन्यआत्मज्ञानरूपउपायही कथनकऱ्याहै ॥ताआत्मज्ञानतेंबिना दूसराकोईउपायहैनहीं॥हेशिष्य॥जैसे यालोकविषे मनुष्योंके शरीरविषेप्रवेशकरिके अनेकप्रकारके दुःखोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोकोईपिशाचहै॥ सोपिशाच किसीमहान्मंत्रकरिकेही निवृत्तहोवे है ॥तैसे याजीवोंकूं जन्ममरणादिक अनेकदुःखोंकीप्राप्तिकरणेहारी यामायारूपपिशाचीहै॥तामायारूपपिशाची ब्रह्मात्मज्ञानरूपमहामंत्रकरिकेही नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ ताआत्मज्ञानतेंबिना दूसरेकिसीउपायकरिके यहमायारूपपिशाची नाशकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ यातें सोमुमुक्षुजन शांतिआदिकगुणोंकरिकेयुक्तहै ॥ तथा चित्तकीएकाग्रताकरिकेयुक्तहै ॥ तथा तामायारूपपिशाचीतें भयकूंप्राप्तहुआहै ॥ सोमुमुक्षुजन ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइके याआत्मज्ञानरूपमंत्रकूंसंपादनकरे ॥ यहआत्मज्ञानही यावेदांतशास्त्रकाप्रयोजनहै ॥ हेशिष्य ॥ यामुमुक्षुजनों

नें यहआत्मज्ञानही अवश्यकरिके संपादनकरणेयोग्यहै ॥याआत्मज्ञानतेंभिन्नउपायोंकेकरणेविषे यापुरुषोंकूं पुनःपुनःसंसारकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें ताआत्मज्ञानतेंभिन्न कोईभीउपाय याअधिकारीपुरुषोंकूंकरणेयोग्यनहींहै ॥ अब श्रीशंकरानंदमुनि आपणेशिष्यकेताईं याब्रह्मविद्याकेउपदेशकीपरिपूर्णता निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ ऋक् यजुष् साम अथर्वण याचारिवेदोंविषेप्रसिद्धजेऐतरेयादिकउपनिषद्रूप वेदांतहैं ॥ तिनउपनिषद्रूपवेदांतोंविषे जोवेदांतभाग केवल उपासनावोंकूंही प्रतिपादनकरेहै ॥ तावेदांतभागकूंछोडिके दूसरेसर्वउपनिषद्रूपवेदांतोंकाअर्थरूप ब्रह्मात्मज्ञान हमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ कैसाहैसोज्ञान॥सर्व दोषों तें रहित शुद्धब्रह्मात्मविषयकहोणे तें सर्वदाहढहै ॥ ऐसेब्रह्मात्मज्ञानकीपरिपूर्णताहुएतेंअनंतर हमारेकूं तुमारेप्रति पूर्वकीन्याईं तूं अभी किसअर्थकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहै याप्रकारकाप्रश्नकरणा उचितनहीं है ॥ तथा ताआत्मज्ञानकेवास्ते अभी हमारेकूं दूसराकछुकरणेयोग्यभीनहीं है॥ इसप्रकार उपासनाभागतेंरहित सर्ववेदांतोंकरिकेप्रतिपादित निर्गुणआत्माकेज्ञानकूं गुरुकेमुखतेंश्रवणकरिके सोश्रद्धावानशिष्य कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोताभया॥ तथा आपणेगुरुकेताईं दंडवत्प्रणामकरताभया ॥ तथा आपणेगुरुकीस्तुतिकरताभया ॥ इसप्रकार आपणेगुरुकापूजनकरिके परमआनंदकूंप्राप्तहुआ सोशिष्य तागुरुउपदिष्टआत्मज्ञानकूं आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ जिनशिष्योंकरिकेविस्तारकूंप्राप्तहुआ सो आत्मज्ञान अभीकलिकालविषेभी याअधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ काहे तें पूर्वऐतरेयादिकउपनिषदोंविषे जाजाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ सा सर्वब्रह्मविद्याही याआत्मपुराणरूपकरिके परिणामकूंप्राप्तहुई है ॥ यातें यहआत्मपुराणग्रंथ साक्षात्वेदकेतुल्यहै ॥ तथा यासंसाररूपशूलका मूलकारण जो मायारूपअज्ञानहै ॥ ताकार्यसहितअज्ञानका नाशकरणेहाराहै ॥ यातें मुमुक्षुजनों नें याआत्मपुराणग्रंथकूं अवश्यकरिकेविचारणा ॥ अब याआत्मपुराणविषे प्रसिद्धपुराणोंकेलक्षण घटावे हैं ॥ याआत्मपुराणविषे याजगत्के उत्पत्तिका तथास्थितिका तथा संहारका वर्णनकऱ्याहै ॥ तथा याआत्मपुराणविषे आकाशादिभूतोंका तथाविराटादिकभौतिकोंका वंशभी वर्णनकऱ्याहै ॥ तथा याआत्मपुराणविषे स्वायंभुवमनुकी उत्पत्तिआदिकोंकाभी वर्णनकऱ्याहै ॥ तास्वायंभुवमनुकेकथनकरिके ताकेविभूतिरूप

दूसरेमनुवोंकाभी अर्थतैंहीकथनसिद्धहोवैहै ॥ और याआत्मपुराणविषे आकाशादिकभूतोंके तथातिनभूतोंकेकार्यरूपइंद्रियादिकोंके तथा मनुवंशविषेस्थितप्रतर्दनादिकराजोंके अनेकप्रकारकेव्यापार कथनकरेहैं ॥ और याआत्मपुराणविषे वेदरूपमूलप्रमाणतैंरहित किंचित्मात्रभीअर्थ कथनकऱ्यानहीं ॥ किंतु जो अर्थ ब्रह्मसूत्रोंविषे तथाताकेभाष्यविषे तथाभगवत्गीतादिकस्मृतियोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ सोईही अर्थ याआत्मपुराणविषे कथनकऱ्याहै ॥ और तिनब्रह्मसूत्रादिकोंविषे वेदमूलकता सर्वविद्वान्पुरुषोंकूंसंमतहै ॥ यातैंवेदकेअर्थका विस्तारतैंप्रतिपादकत्वरूप पुराणपणैंतो याआत्मपुराणविषे अत्यंतस्पष्टहीहै ॥ अब जिससंस्कृतआत्मपुराणका यहप्राकृतभाषाआत्मपुराणहुआहै ॥ तासंस्कृतआत्मपुराणके उत्पत्तिकादेश वर्णनकरे हैं ॥ दक्षिणदेशविषेस्थितजा कावेरीनामाएकपवित्रनदीहै ॥ ताकावेरीनदीकेतीरविषेनिवासकरिके श्रीशंकरानंदमुनि केवलअनुग्रहकरिके आपणेश्रद्धावान्शिष्यकेप्रति यहआत्मपुराणनामाग्रंथ कथनकरताभयाहै ॥ अब याग्रंथके आत्मपुराणनामराखणेका प्रयोजन वर्णनकरेहैं ॥ सर्वपुराणइतिहासादिकोंविषे अनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारी जेराजादिकोंकीनानाप्रकारकीकथाहैं ॥ तिनकथावोंकूंश्रवणकरिके तिनअनात्मकथावोंतैंविरक्तहुआ तथायासंसाररूपशूलकरिकेसंततहुआ सो शिष्य यापुराणकेआरंभविषे आपणेगुरुवोंसैं तामूलसहितसंसारशूलकेनाशकरणेहारा आत्मज्ञानहीपूछताभयाहै ॥ अनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारी कोईराजादिकोंकीकथा पूछीनहीं ॥ यातैं याआत्मपुराणविषे कोईभीअनात्मकथा कथनकरीनहीं ॥ किंतु आरंभतैंलेके समाप्तिपर्यंत आत्मज्ञानका तथाताआत्मज्ञानकेवैराग्यादिकसाधनोंकाही यापुराणविषेप्रतिपादनकऱ्याहै ॥ याकारणतैं याग्रंथका आत्मपुराण यहनाम राख्याहै ॥ और ताशंकरानंदमुनिकेशिष्यकीन्याईं जोपुरुष अनात्मकथावोंकेरागतैंरहितहै ॥ तथा यासंसारशूलकरिकेसंततहुआहै॥तथा विषयसुखोंतैंविरक्तहै॥सोपुरुषही याआत्मपुराणग्रंथका अधिकारीहै॥शंका॥ इसप्रकारकाअधिकारीपुरुष साक्षात्उपनिषद्रूपवेदांतोंतैंही आत्मज्ञानकूंसंपादनकरैगा ॥ यातैं यहआत्मपुराणनामाग्रंथ व्यर्थही है ॥ समाधान ॥ असंभावनादिकदोषोंकरिकेयुक्तजेपुरुषहैं ॥ तिनपुरुषोंका साक्षात्वेदकेअर्थविषे प्रवेशहोइसकेनहीं ॥ किंतु असंभावनादिकदोषोंतैंरहितपुरुषोंकाही तासाक्षात्वेदकेअर्थविषे

प्रवेशहोवैहै ॥ यातैं ते असंभावनादिकदोष तावेदअर्थकेनिश्चयकरणेविषेप्रतिबंधकहैं ॥ ताअसंभावनादिकदोषोंकोनिवृत्तिकरणेवासतै
ताशंकरानंदमुनिनैं यहआत्मपुराणनामाग्रंथ कथनकर्‍याहै ॥ सोयहआत्मपुराण सर्वउपनिषद्रूपवेदांतोंकेसारअर्थका प्रतिपादनकरणे
हाराहै ॥ यातैं याआत्मपुराणग्रंथतैंअधिक आत्माकेप्रतिपादनकरणेहारा दूसराकोईग्रंथहैनहीं ॥ सोयहआत्मपुराणनामाग्रंथ यद्यपि पूर्व
उक्तमुख्यअधिकारीवासतैहीं प्रवृत्तभयाहै ॥ तथापि याग्रंथविषेइतनासामर्थ्यहै ॥ जोबहिर्मुख तथारागवान्पुरुषभी श्रद्धापूर्वक याआत्म
पुराणग्रंथका निरंतरश्रवणकरैहै ॥ सोबहिर्मुखरागीपुरुषभी ताश्रवणकेप्रभावतैं अंतर्मुखहोइके तथा वैराग्यवानहोइके ताआत्मज्ञानकूंप्रा
प्तहोवैहै ॥ यातै मोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंनैं अवश्यकरिके याआत्मपुराणग्रंथकाविचारकरणा तथाश्रवणकरणा ॥ और श्रद्धावानशिष्य
केप्रति उपदेशकरणेहारे जोश्रीशंकरानंदगुरुहैं ॥ तेशंकरानंदस्वामी शंकरमहादेवकूं सर्वदा आपणाआत्मारूपकरिकेदेखैहैं ॥ यातैं
ताशंकरानंदगुरुकेशरीरविषेस्थितहोइके सोसाक्षात् शंकरमहादेवही याआत्मपुराणग्रंथकाकर्त्ताहै ॥ कैसाहैसोश्रीशंकर ॥ जिसकेवा
णीविषे नित्यही सरस्वतीनिवासकरैहै ॥ और सोशंकरही ब्रह्माविष्णुरूपहै॥तथा इंद्रादिकसर्वदेवतारूपहै ॥ यातैं जोपुरुष याआत्मपुरा
णग्रंथकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं श्रवणकरैहै तथा विचारकरैहै॥सोपुरुष अर्थकेधारणकरणेहारीबुद्धिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा
आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै॥याप्रकारके प्रत्यक्षफलविषे किसीनैंभी संशयकरणानहीं ॥ अब याआत्मपुराणग्रंथके विषय संबंध यादोनोंअनुबं
धोंकेनिरूपणकेमिषकरिके याग्रंथकोसमाप्तिविषे मंगलाचरणकूंकरताहुआ ग्रंथकार ईशावास्यउपनिषद्केअर्थकानिरूपणकरैहैं ॥ ईशावा
स्यउपनिषद्करिकेप्रतिपादनकर्‍याजो परमात्मादेवहै॥जिसपरमात्मादेवरूप यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्है ॥ ऐसासर्वजगत्रूप परमा
त्मादेवही याआत्मपुराणग्रंथविषे प्रतिपादनकर्‍याहै ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंईश्वररूपदेखिके वेदवेत्तापुरुष आपणेशिष्योंकेप्रति याप्रका
रकाउपदेश करतेभयेहैं ॥ हेशिष्यो ॥ यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् अभिन्ननिमित्तउपादानकारणरूपईश्वरनैं व्याप्तकर्‍याहै ॥ अब याही
अर्थकूं अनेकदृष्टांतोंकरिकेनिरूपणकरैहैं॥ जैसे उपादानकारणरूपमृत्तिकानैं यहघटशरावादिककार्य व्याप्तकरैहैं ॥ तैसे उपादानकारणरू

यईश्वरनैं यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ और जैसे राजानैं दृष्टिद्वारा आपणेसर्वनगरादिक व्याप्तकरेहैं ॥ तैसे निमित्तकारणरूपईश्वरनैं यह सर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ और जैसे यामनुष्योंकाशरीर वायुतैं वस्त्रोंनैं व्याप्तकऱ्याहै ॥ तैसे यहसर्वजगत् विभुईश्वरनैंव्याप्तकऱ्याहै॥और जैसे सुगंधिवालेपुष्प आपणेसुगंधिवालेसूक्ष्मअवयवोंकरिके शीतलजलकूंव्याप्तकरतेहुए ताजलविषे रमणीकता प्राप्तकरेहैं ॥ तैसे यहई श्वरभी आपणीसत्तास्फूर्तिकरिके यासर्वजगत्कूंव्याप्तकरताहुआ याजगत्विषे रमणीकता प्राप्तकरेहै॥ और जैसे प्रवृतिकाकारणरूप वास नावोंनैं याजीवोंकामन व्याप्तकऱ्याहै ॥ तैसे अंतर्यामीईश्वरनैं यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ यातैं आपणे तथापराये जितनैंकोस्त्रीपुत्रधना दिकपदार्थ हैं॥तेसर्वपदार्थ यापूर्वउक्तरीतिसैं ईश्वररूपहीहैं ताईश्वरतैंभिन्नसत्तावाला कोईभीपदार्थनहीं है॥यातैं तेसर्वपदार्थ ईश्वरकेही हैं॥ याजीवोंकाकोईभीपदार्थनहीं है॥ जैसे गंधर्वनगर आकाशरूपहोणेतैं ताआकाशकाही है॥तैसे यहसर्वजगत्भी ईश्वररूपहोणेतैं ताईश्वरका हीहै॥और जैसे राजादिकमहान्पुरुषोंविषे तथातिनोंकेधनादिकपदार्थोंविषे बुद्धिमान्पुरुष स्वत्वदृष्टिकरेनहीं॥आपणीइच्छापूर्वक जोतिन पदार्थोंका ग्रहणत्यागकरणाहै यहही तिनपदार्थोंविषेस्वत्वदृष्टिहै ॥ तैसे तास्वत्वदृष्टितैंरहितहुआ ॥ यहपुरुष यहस्त्रीपुत्रधनादिकप दार्थ ईश्वररूपही हैं याप्रकार तिनसर्वपदार्थोंकूं ईश्वररूपजानिके अथवा यहसर्वपदार्थ ताईश्वरकेही हैं याप्रकार तिनसर्वपदार्थोंकूं ईश्वर काजानिके तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेकामनाका परित्यागकरै॥तहां यहसर्वजगत् ईश्वररूपहै याप्रथमदृष्टिविषेतो तासर्वप्रपंचकेबाध करिके तास्वत्वदृष्टिकेपरित्यागहुए परिशेषतैं निर्गुणब्रह्मकाज्ञानरूपफल सिद्धहोवैहै ॥ और यहसर्वजगत् ईश्वरका है यादूसरीदृष्टि विषेतो सगुणब्रह्मकाज्ञानरूपफल सिद्धहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते दोदृष्टांत कथनकरेहैं ॥ जैसे मिथ्यागंधर्वनगरविषे स्वत्वकोआशा यापुरुषोंकूंदुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ और जैसे महाराजाकेस्त्रीआदिकपदार्थोंविषे स्वत्वकीआशा यापुरुषोंकूं दुःखकीहीप्रा प्तिकरैहै ॥ तैसे आपणेमानेहुएस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकीआशाभीयापुरुषोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं सर्वका मनावोंकापरित्यागकरिके सर्वकाअधिष्ठानरूपईश्वरही आपणाआत्मारूपकरिकेदेखना ॥ अथवा सर्वजगत्काप्रेरकरूपकरिके ताई

श्वरकाआराधनकरणा ॥ हेशिष्यो ॥ चित्तशुद्धिकेअभावहुए जोकदाचित् तुमारेकूं तासगुणब्रह्मज्ञानविषे तथानिर्गुणब्रह्मज्ञानविषे अधिका
रनहींहोवे ॥ तोभी तुम यहस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ ईश्वरकेही हैं हमारेनहीं हैं याप्रकारजानिके कर्मोंकेफलरूपभोगोंकापरित्यागकरो ॥
तिसतैंअनंतर आपणेवर्णआश्रमकेअनुसार तुम शरीरमनवाणीकरिके निष्कामकर्मोंकूंकरो ॥ इसप्रकार जभी तुम निष्कामकर्मोंकूंकरोगे
॥ तभी इसजन्मविषे अथवा दूसरेजन्मविषे तुमाराअंतःकरण शुद्धहोवेगा ॥ ताअंतःकरणकोशुद्धितैंअनंतर तुमारेकूं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति
होवेगी ॥ ताब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं तुमारेजन्ममरणादिकसर्वदुःखोंकोनिवृत्तिहोवेगी ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते तीनमार्गोंकानिरू
पणकरे हैं ॥ हेशिष्यो ॥ स्वर्गब्रह्मलोकरूपजोअभ्युदयहै ॥ तथा मोक्षरूपजोनिःश्रेयसहै ॥ ताअभ्युदयनिःश्रेयसकीप्राप्तिकरणेहारे
तीनप्रकारकेमार्गहोवे हैं ॥ तहां अग्निहोत्रादिरूपइष्टकर्मोंकूं तथावापीकूपतडागादिरूप पूर्तकर्मोंकूं करणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तिनकर्मीपुरु
षोंकूं स्वर्गरूपअभ्युदयकीप्राप्तिकरणेहारा पितृयाणनामा दक्षिणमार्ग है ॥ और अहंग्रहादिकउपासनाओंकूंकरणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तिनउ
पासकपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकरूपअभ्युदयकीप्राप्तिकरणेहारा देवयाननामा उत्तरमार्ग है ॥ और श्रवणादिकसाधनोंकरिकेसंपन्नजेनिष्कामपुरु
षहैं ॥ तिननिष्कामपुरुषोंकूं मोक्षरूपनिःश्रेयसकीप्राप्तिकरणेहारा ब्रह्मज्ञानरूपमार्ग है ॥ यातीनमार्गोंतैंभिन्न दूसराकोईभीमार्ग प्राणीओंकूं
सुखकीप्राप्तिकरणेहारानहीं है॥ हेशिष्यो॥ पितृयाण देवयान ब्रह्मज्ञान यातीनमार्गोंकापरित्यागकरिके जेपुरुष केवलपापकर्मोंकूंहीकरे हैं॥
तेअल्पबुद्धिवालेपुरुष सर्वदा दुःखोंकूंहीप्राप्तहोवे हैं ॥ अब तिनतीनोंमार्गोंविषेभी तीसरेब्रह्मज्ञानरूपमार्गकोश्रेष्ठता वर्णनकरे हैं ॥
हेशिष्य ॥ ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे स्थित जेदेवताहैं ॥ तिनदेवताओंविषेभी जेदेवता ब्रह्मज्ञानतैंरहितहैं ॥ तिनअज्ञानीदेवता
ओंकूंभी वास्तवतैं किंचित्मात्रभीसुखहोवेनहीं ॥ काहेतैं महान्पुरुषोंकाजो तिरस्कारकरणाहै ॥ सोतिरस्कारही तिनमहान्पुरुषोंकाह
ननहै ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और जेपुरुष सर्वतैंमहान्आत्मादेवकूंनहींजानेहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष ताआत्मादेवका तिरस्का
ररूपहननकरतेहुए आत्महत्यारेकहेजावे हैं ॥ तिनआत्महत्यारेपुरुषोंकूं श्रुतिनें संसाररूपदुःखकीप्राप्तिही कथनकरी है ॥ तहां श्रुति ॥

असुर्यानामतेलोका अंधेनतमसावृताः ॥ तांस्तेप्रेत्याभिगच्छंति येकेचात्महनोजनाः ॥ अर्थयह ॥ जेपुरुष आपणेआत्माविषेही भलीप्रकारसें रमणकरे हैं ॥ तिनपुरुषोंकानाम सुरहे ॥ ऐसेआत्माराम विद्वान्पुरुषहैं ॥ तिनविद्वान्पुरुषों तैंभिन्न अज्ञानीपुरुषोंकानाम असुरहे ॥ तिनअसुरपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यजे शुभअशुभकर्मजन्यलोकहैं ॥ तिनलोकोंकानाम असुर्य हे ॥ तेअसुर्यनामालोक आत्माकूं आवरणकरणेहारेअज्ञानरूप अंधतमकरिकेव्याप्तहैं ॥ ऐसेअसुर्यलोकोंकूं तेआत्महत्यारेपुरुष मरणतैंअनंतर प्राप्तहोवे हैं ॥३॥ अब जिसआत्माकेज्ञानतैं तिनअसुर्यलोकोंकोप्राप्ति नहींहोवे हे ॥ ताआत्माकास्वरूप वर्णनकरे हैं ॥ हेशिष्यो ॥ तिनअसुरपुरुषोंकरिकेअज्ञातयहआत्माकास्वरूप अत्यंतआश्चर्यरूपहे ॥ काहेतें यहआत्मादेव आप क्रियातैंरहितहुआभी मनतैंभीअधिकवेगवालाहे ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसजिसपदार्थकूं यहमन आपणेसंकल्पद्वारा प्राप्तहोवे हे ॥ तिसतिसपदार्थविषे यहआत्मादेव तामनकेगमनतैंपूर्वही परिपूर्ण है ॥औरयह आत्मादेव नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकेअगम्यहुआभीमहाज्ञानकरिकेगम्यहोवेहे॥और यहआत्मादेव आप पर्वतकीन्याईनिश्चलहुआभीशीघ्रगमनकरणेहारेवायुआदिकोंकूंभी उल्लंघनकरिकेआगेजावेहे ॥ और तिसअंतर्यामीआत्मादेवकरिकेप्रेरितहुआही यहसूत्रात्मारूपवायु सर्वशरीरोंविषे अग्निहोत्रादिककर्मोंकेकरणेविषे समर्थहोवे हे॥ जिन मेघादिभावकूंप्राप्तहुई अग्निहोत्रकीआहुतियोंरूपकरिके यहअनेककर्मोंकाफलरूपविश्व उत्पन्नहोवे है ॥ और ॥ सोआत्मादेव वास्तवतैंसर्वक्रियातैंरहितहुआभी सर्वक्रियावालाहोवे है ॥ और सोआत्मादेव अज्ञानीपुरुषोंकूं अत्यंतदूरहुआभी विद्वान्पुरुषोंकूं अत्यंतसमीपहे ॥ तथा यहआत्मादेव याद्दश्यप्रपंचके अंतरबाह्य परिपूर्ण है॥अब वर्णनकरेहुएआत्माकेज्ञानकाफल निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्यो ॥ जेविवेकीपुरुष याजीवतअवस्थाविषे ब्रह्मातैंआदिलेके पिपीलिकापर्यंत सर्वशरीरोंकूं आपणेआत्मास्वरूपविषे कल्पितरूपकरिकेंदेखेहैं ॥ तथा तिनसर्वशरीरोंविषे आपणेआत्माकूं अनुगतरूपकरिकेदेखेहैं ॥ तेविवेकीपुरुष किंचित्मात्रभी दुःखकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ हेशिष्य ॥ जिसविद्वान्पुरुषकूं आत्मज्ञानकेप्रभावतें यहसर्वभूतप्राणी आत्मभावकूंप्राप्तहुएहैं॥तथा जिसविद्वान्पुरुषनें अधिष्ठानआत्माकेएकत्वस्वभावकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतें साक्षात्कारकर्‍याहे ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषकूं आवरण

रूपमोहकीभीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथा विक्षेपरूपशोककीभी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्यो॥जोअधिकारीपुरुष स्वयंप्रकाशआनंदस्वरूपईश्वरकूं
आपणेतैंअभिन्नरूपकरिकैसाक्षात्कारकरे है ॥ सोपुरुष सर्वत्रव्यापकआत्माकूंहीं देखेहै ॥ कैसाहैसोआत्मादेव ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण या
तीनशरीरों तैंरहितहै ॥ तथा निर्गुणनिरवयवहै ॥ ऐसेआत्मादेवकूं ईश्वररूपकरिकैजानणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै॥सोविद्वान्पुरुषही सोपा
धिकदृष्टिकरिकै आराधनकरणेयोग्यईश्वररूपभीहोवे है ॥ कैसाहैसोईश्वर ॥ संकोचतैंरहितदर्शनस्वभाववालाहै ॥ तथा सर्वमनकेप्रवृत्ति
योंकेजानणेहारासर्वज्ञहै ॥ तथा अज्ञानादिकशत्रुवोंका तिरस्कारकरणेहाराहै ॥तथा सर्वकारणों तैं रहित होणे तैं स्वयंभुरूपहै॥ तथा लो
कप्रसिद्धसर्वकारणोंकाभीकारणरूपहै ॥हेशिष्यो ॥ ऐसेआत्मादेवकेसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे चित्तकीशुद्धिद्वारा उपासनासहितकर्महीं उ
पायरूपहै ॥ ताकर्मकूं वेदवेत्तापुरुष असंभूति अविद्या यादोनामोंकरिकैकथनकरे हैं और ताउपासनाकूं वेदवेत्तापुरुष संभूति विद्या या
दोनामोंकरिकैकथनकरे हैं ॥ तेदोनों अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाएकाग्रताद्वारा आत्मज्ञानकाकारणहैं ॥ अब कर्म उपासना यादोनों
केसमुच्चयविधानकरणेवासते प्रथम उपासनातैंरहित केवलकर्मोंकीनिंदाकरे हैं ॥ हेशिष्यो ॥ जेपुरुष केवलकर्मोंकूंहीकरेहैं ॥ तेपुरुष ति
नकर्मोंकेप्रभावकरिकै स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे परमआसक्तिकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तथा स्वर्गादिकअनित्यलोकोंकू प्राप्तहोवे हैं ॥ तथा ना
नाप्रकारकेरागद्वेषकरिकैयुक्तहोवे हैं ॥ इसप्रकार संसारकेसुखविषेआसक्तहुए तेकर्मीपुरुष वारम्वार जन्ममृत्युकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ अब कर्मों
तैंरहित केवलउपासनाकीनिंदाकरेहैं हेशिष्यो ॥ जेपुरुष केवलउपासनाविषेही प्रीतिवालेहोवे हैं ॥ तेउपासकपुरुष ताउपासनाकेऐश्वर्य
तारूपफलविषे आसक्तहुए तिनकर्मीपुरुषों तैं भी अधिकदारुणतमकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ काहेतैं जेपुरुष वेदविहितकर्मोंकापरित्यागकरिकै
केवलउपासनाविषे तत्परहोवे हैं॥तिनकेवलउपासकपुरुषोंविषे दोअनर्थकेहेतुहोवे हैं॥तहां एकतो विहितकर्मोंकात्याग॥और दूसरा ना
नाप्रकारकेऐश्वर्यविषेआसक्ति॥तिनदोनोंदोषों तैं तेउपासकपुरुषतिनकर्मीपुरुषों तैं भीअधिकदुःखकूंप्राप्तहोवेहैं॥यातैंयाअधिकारीपुरुषों नैं
वेदविहितकर्मोंसहितउपासनाकाहीअनुष्ठानकरणा॥केवलकर्मोंका तथाकेवलउपासनाका अनुष्ठानकरणानहीं ॥ हेशिष्यो ॥इसप्रकार कर्म

उपासना यादोनोंकरिकेयुक्त जोतत्वज्ञानार्थीपुरुषहै ॥ सोअधिकारीपुरुष चित्तकूंएकाग्रकरिके ॥ हिरण्मयेनपात्रेण ॥ इत्यादिकमंत्रकरि
के याआदित्यभगवान्की पुनःपुनः प्रार्थनाकरै ॥ कैसाहैसोआदित्यभगवान् ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा क्रममुक्तिकी
प्राप्तिवासते आपणेमंडलविषे छिद्ररूपमार्गकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ हेशिष्यो ॥ जोकर्मउपासनावालापुरुष हिरण्मयेनपात्रेण॥यामंत्रकरिके
तासूर्यभगवान्कीप्रार्थनाकरै है ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं याप्रकारकीशुभबुद्धिप्राप्तहोवै है॥जोआदित्यमंडलविषेस्थित स्वयंज्योतिपुरुषहै॥
सोस्वयंज्योतिपुरुषही हमारा वास्तवस्वरूप है यह देहइंद्रियादिरूपसंघातमेरावास्तवस्वरूपनहीं है ॥ काहेतें यादेहादिरूपसंघात
आकाशादिकपंचभूतोंकाकार्यरूपहै ॥ तथा मरणतेंअनंतर भस्मादिरूपपरिणामकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसायहसंघात प्रणवपदकेवाच्यअर्थ
रूपआत्माकूंजानणेहारेमेंविद्वान्पुरुषकास्वरूप किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु यहसंघात हमारास्वरूपनहीं है ॥ हेशिष्यो ॥ इसप्रकार कर्म
उपासनाकरिकेयुक्त तथा यासंघातविषे वैराग्यवान् जोअधिकारीपुरुषहै ॥ सोअधिकारीपुरुष आपणेमनकेप्रति याप्रकारकावचनकहै ॥
हेमन पूर्व जिसदेशविषे तथाजिसकालविषे जिसजिसपदार्थकूं तू प्राप्तहोताभयाहै ॥ तिसतिसपदार्थकूं तू संकल्पसहितकर्मोंकरिकेहीप्राप्त
होताभयाहै॥संकल्पसहितकर्मतेंबिना किंचित्मात्रपदार्थकीभीप्राप्तिहोवैनहीं इसप्रकारका तासंकल्पका तथाकर्मकामाहात्म्य तुमनें अभी
किसवास्ते विस्मरणकऱ्याहै ॥ किंतु इसकालविषे तुम्हारेकूं तासंकल्पकामाहात्म्य विस्मरणकरणेयोग्यनहीं है ॥ यातें वेदविहित
कर्म तथाउपासनारूपसंकल्प यादोनोंकेमाहात्म्यकूं अभीस्मरणकरिके तूं ताकर्मसंकल्पविषे तत्परहो ॥ हेशिष्यो ॥ इसप्रकार मनकेआ
गेप्रार्थनाकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष जभी हिरण्मयेनपात्रेण ॥ यावेदिकमंत्रकरिके तथालौकिकस्तोत्रोंकरिके ताआदित्यभगवान्की
प्रार्थनाकरैहै ॥ तथा अग्निदेवकीप्रार्थनाकरैहै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष सर्वपापोंतें रहितहोइके क्रमतें ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥
अब ताअग्निदेवताकेप्रार्थनाकानिरूपणकरैहैं ॥ हेअग्निदेवता ॥ आप हमारेकूं सर्वदुःखोंतेंरहित तथाप्रकाशमान ऐसेदेवयानमार्ग
करिके ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरो ॥ तथा पापकीप्राप्तिकरणेहारे हमारेकामक्रोधादिकसर्वशत्रुओंकूं नाशकरो ॥ और आपअग्निदेवता हमसर्व

जीवोंके चित्तकेवृत्तांतकूं जानणेहारेहो ॥ यातें तेहमारेकामक्रोधादिकसर्वशत्रु तुमारेकूं अज्ञातनहीं हैं ॥ किंतु तसर्वशत्रु आपकूं ज्ञातहैं ॥ इसप्रकार हमअधिकारीजनोंके कामक्रोधादिकसर्वशत्रुवोंकूं नाशकरणेहारे तथाहमअधिकारीजनोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरणेहारे जोआपअग्निदेवताहो ॥ ताआपकेउपकारकेनिवृत्तकरणेविषे हम समर्थनहीं हैं ॥ यातें हमअधिकारीजनोंका आपकेताईं वारंवार नमस्कार होवे ॥ अब सूर्यभगवान्केप्रार्थनाकूंकथनकरणेहाराजो ॥ हिरण्मयेनपात्रेण ॥ इत्यादिकमंत्रहै तामंत्रकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्यो ॥ यहअधिकारीपुरुष याप्रकार तासूर्यभगवान्कीप्रार्थनाकरे ॥ हेभगवन् ॥ तप्तसुवर्णकेसमान अत्यंतप्रकाशमान जोयह आवरणकरनेहारेपात्रकेसमान तेजोमंडलहै ॥ तातेजोमंडलरूप हिरण्मयपात्रकरिके आदित्यमंडलविषेस्थित आपब्रह्मका उपासकपुरुषोंकेप्राप्तिकाद्वारभूत छिद्ररूपमुख आवृतहोइरह्याहै ॥ हेसर्वजगत्केपोषणकरणेहारेसूर्यभगवान् ॥ सत्यपरायणतारूपधर्मवालेहमअधिकारीजनोंकूं आपणादर्शनदेके यासंसारतेंरक्षाकरणेवासते ताआपणेमुखकेआवरणकूं निवृत्तकरो ॥ हेभगवन् ॥ स्मरणमात्रकरिके सर्वअनर्थोंकूंनष्टकरणेहारा जोआपकावास्तवस्वरूपहै ॥ ताआपकेवास्तवस्वरूपकूं जिसप्रकार मैंअधिकारीजन साक्षात्कारकरों॥तिसप्रकार आप हमारेऊपर अनुग्रहकरो ॥ याप्रकारसें ताआदित्यभगवान्कीप्रार्थना यहअधिकारीपुरुष करे ॥ इसप्रकार तेवेदवेत्तापुरुष जिसपरमात्मादेवकीप्राप्तिवासते आपणेशिष्योंकेप्रति नानाप्रकारकोविद्या उपदेशकरेहैं सोपरमात्मादेवही याआत्मपुराणग्रंथविषे सर्वत्रप्रतिपादनकर्‍याहै ॥ तापरमात्मादेवतेंभिन्न किसीभीअनात्मपदार्थका याआत्मपुराणग्रंथविषे प्रतिपादनकर्‍यानहीं॥यातें जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुतें याआत्मपुराणग्रंथका पठनकरेहै॥ तथा जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतें याआत्मपुराणग्रंथकाश्रवणकरेहै ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष दूसरेमुमुक्षुजनोंकेप्रति याआत्मपुराणग्रंथका कथनकरेहै॥तथा जोअधिकारीपुरुष याआत्मपुराणग्रंथकेअर्थकूं निरंतर चिंतन करेहै॥तेसर्वअधिकारी जन तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपजानिके कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातें मोक्षकीइच्छावानपुरुषों नें श्रद्धाभक्तिपूर्वक याआत्मपुराणग्रंथका अवश्यकरिकेविचारकरणा॥इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राज

काचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचित्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे नृसिंहपूर्वोत्तरतापनीयेशाखा स्यसारार्थप्रकाशे प्रजापतिदेवतासंवादो नाम अष्टादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १८ ॥ समाप्तश्चायमात्मपुराणनामाग्रंथः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीशंकरानंदमुनिभ्योनमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां वैश्यवंशावतंस श्रीकृष्णदासात्मजेन क्षेमराजेन
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयेऽङ्कयित्वा प्रकाशितम् ॥
संवत् १९५५, शके १८२०.

विक्रय्यपुस्तकोंकी संक्षिप्त–सूची।

वेदान्तग्रंथाः।

नाम.	की. रु. आ.	ट. म. रु. आ.
शारीरक (शाङ्करभाष्य) रत्नप्रभाटीका व्यासाधिकरणमाला और भक्तिसूत्र सभाष्य अक्षर बड़ा	१०–०	१–०
ब्रह्मसूत्र (शारीरक) भाषाटीका	१–८	०–३
वेदांतसार संस्कृतमूल और संस्कृतटीका तथा भाषाटीकासहित	०–१२	०–२
पंचदशीसटीक	२–८	०–४
पंचदशी पं० मिहिरचंद्रकृत अत्युत्तम भाषाटीका सहित	४–०	०–८
पंचदशी भाषा-आत्मस्वरूपजीकृत ...	४–०	०–८
गीता चिद्घनानंदस्वामिकृत गूढार्थदीपिका मूल अन्वय पदच्छेदके सहित भाषाटीका ...	७–०	१–०
गीता आनंदगिरिकृतभाषाटीका	३–०	०–६

नाम.	की. रु. आ.	ट. म. रु. आ.
श्रीमद्भगवद्गीता सान्वयब्रजभाषा दोहासहित ...	१-४	०–३
गीतामृततरंगिणी भाषाटीका (रघुनाथप्रसादकृत) अक्षरबड़ा	१–४	०–३
गीतामृततरंगिणी भाषाटीका पाकिटबुक ...	०–१२	०–१॥
श्रीरामगीता मूल	०–२	०–॥
श्रीरामगीता भाषाटीका–पदप्रकाशिका अनुवादसमुच्चय और विषमपदीके सहित	०–८	०–१
श्रीमद्भगवद्गीतापंचरत्नअक्षरमोटागुटकारेशमी	१–०	०–४
" पंचरत्न अक्षरबडा खुलापत्रा छोटीसंची ...	१–८	०–३
" पंचरत्न अक्षरबडा लंबीसंची खुला ...	१–०	०–३
" पंचरत्न भाषाटीका	२–०	०–४
गीता श्रीधरीटीका सहित	१–०	०–३
गीता बडे अक्षरकी १६ पेजी गुटका ...	०–१२	०–२
गीता बडेअक्षरकी खुली १२ पेजी ...	०–१०	०–२

नाम.	की. रु. आ.	ट. म. रु. आ.
गीता गुटका विष्णुसहस्रनाम सहित ...	०–८	०–१
गीता पंचरत्न और एकादशरत्न	०–१२	०–२
" पंचरत्न द्वादशरत्न	०–१०	०–१॥
गीतापंचरत्न नवरत्न पाकिट बुक ...	०–७	०–१
गीता गुटका पाकिट बुक	०–५	०–॥
अष्टावक्रगीता अत्युत्तम सान्वय भाषाटीका ...	१–०	०–२
शिवगीता भाषाटीकासहित	०–१२	०–२
गणेशगीता भाषाटीकासहित	०–६	०–१
गीतापंचदश भाषाटीका-[काश्यपगीता, शौनकगीता, अष्टावक्रगीता, नहुषगीता, सरस्वतीगीता, युधिष्ठिरगीता, बकगीता, धर्मव्याधगीता, श्रीकृष्णगीतादि] ...	०–१२	०–१
पाण्डवगीता भाषाटीकासह	०–३	०–॥
तथा मूल ४ रत्न बडा अक्षर	०–२	०–॥
अपरोक्षानुभूति संस्कृत टीका भाषाटीका सहित	०–१०	०–१

नाम.	की. रु. आ.	ट. म. रु. आ.
आत्मबोध भाषाटीका	०–३	०–॥
तत्त्वबोध भाषाटीका	०–२	०–॥
वेदांतग्रंथपंचकम् (वाक्यप्रदीपःवाक्यसुधारसः हस्तामलकःनिर्वाणपंचकं मनीषापंचकं)	०–८	०–१
वेदस्तुति भाषाटीका सह	०–८	०–१
गीतारामानुजभाष्य	२–०	०–४
वेदांत डिमडिम्	०–१॥	०–॥
वैराग्यभास्कर भाषाटीका	०–८	०–१
सिद्धांतचंद्रिका सटीक (वेदांत)	०–८	०–१
हरिमीडेस्तोत्रसटीक	०–१४	०–२
द्वादशमहावाक्यविवरण	०–४	०–॥
त्रोटक सटीक	०–१०	०–१
वेदांतरामायण भाषाटीका सह	१–८	०–४
वेदान्तसंज्ञा भाषाटीका	०–८	०–१
शांडिल्यसूत्र सभाष्य (भक्तिमीमांसा) ...	०–८	०–१